lL H 491.433
lAL

123741
LBSNAA

त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
.. Academy of Administration
मसूरी
MUSSOORIE
पुस्तकालय
LIBRARY

अवाप्ति संख्या
Accession No. — 123741 ~~303~~

वर्ग संख्या
Class No. GLHR 491.433

पुस्तक संख्या
Book No. NAL नालन्दा

# नालन्दा अद्यतन कोश

[ शब्द संख्या-६०५५४ ]

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, ग्रामीण, ब्रजभाषा आदि में आने वाले भिन्न विषयों के नवीन शब्द साहित्य, अलंकार, आयुर्वेद, इतिहास, भूगोल, पुराण, दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष, संसद्, व्यवस्थापिका-सभाओं, सचिवालयों, शासन-कार्यालयों न्यायालयों आदि के शब्दों तथा वाक व्यवहारों का विशाल शब्द-संग्रह।

सम्पादक—

**पुरुषोत्तम नारायण अग्रवाल**

**आदीश बुक डिपो**

7A/29 W E A करोल बाग, देहली-५

प्रकाशक—

**ला० फूलचन्द जैन,**

आदीश बुक डिपो,

7A/29 W.E.A. देहली-५

मूल्य ६।।।)

मुद्रक :— पियरसन्स प्रैस,

४, फैज बाजार देहली

# दो शब्द

आधुनिक हिन्दी का 'नालन्दा अद्यतन शब्द कोश' आपकी सेवा में प्रस्तुत है। जैसे कि इसके नाम से ही प्रकट है इसमें बड़ी संख्या में संसद, सचिवालयों, न्यायालयों, युद्ध संबंधी नवीन उपकरणों तथा प्रामाणिक अद्यतन शब्दों का समावेश किया गया है और साथ ही अंग्रेजी पर्याय अन्त में दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त इसमें व्याकरण, छन्द, रस, अलंकार, नायक-नायिकाओं के भेद-प्रभेद तथा सर्व प्रकार के साहित्यिक शब्द आपको मिलेंगे।

इस शब्द कोश में अबतक के सभी प्रचलित अरबी, फारसी, अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द भी देखने को मिलेंगे। इसे विशेषतः साहित्य के सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी बनाने का भरकस प्रयत्न किया गया है। इसी से लगभग ६१ हज़ार शब्दों या रूपों का समावेश करना पड़ा है।

वैसे तो अनेक शब्द सागर प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु इनका मूल्य इतना अधिक है कि सामान्य स्थिति के पाठकों के लिए इनका उपयोग करना कठिन है। विशेषतः इस मांग को पूरा करने के लिए इस कोश का निर्माण किया गया है। यदि इससे उन्हें यथेष्ट सहायता मिल सकी तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

—पुरुषोत्तम नरायण अग्रवाल

# हिन्दी भाषा का विकास

संस्कृत के 'स' अक्षर की ध्वनि फारसी में 'ह' के रूप में पाई जाती है इसलिए संस्कृत के 'सिंधु' तथा सिंधी शब्दो का फारसी रूप 'हिन्द' एवं 'हिन्दी' शब्द फारसी भाषा का ही है। फारसी में 'हिन्दी' का शब्दार्थ 'हिन्द-सम्बन्धी' है, किन्तु इसका प्रयोग 'हिन्द के निवासी' अथवा 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में होता रहा है। 'हिन्दी' शब्द के साथ-साथ ही 'हिन्दू' शब्द भी फारसी से ही आया है। फारसी मे हिन्दू शब्द का प्रयोग 'इस्लाम धर्म पर विश्वास न करने वाले हिन्दवासी' के अर्थ मे प्राय मिलता है। इसी अर्थ के साथ यह शब्द अपने देश में प्रचलित हो गया है।

शब्दार्थ के विचार से 'हिन्दी' शब्द का व्यवहार हिन्द अथवा भारत में बोली जाने वाली किसी भी आर्य, द्राविड़ या अन्य भाषा के लिए हो सकता है किन्तु वस्तुत: इसका व्यवहार उत्तर-भारत के मध्यभाग के हिन्दुओं की आधुनिक साहित्यिक भाषा के अर्थ में विशेषतया, और इसी भू-भाग की बोलियों एवं उनसे सम्बन्धित प्राचीन साहित्यिक रूपों के अर्थ में सामान्यतया होता है। पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी सिरे तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पूरब में भागलपुर दक्षिण-पूर्व में रायपुर और दक्षिण-पश्चिम में खंडवा तक इसकी सीमाएं पहुँचती हैं। इस भू-भाग में हिंदुओं के साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं, शिष्ट बोलचाल एवं पाठ-शालाओं में पढ़ाई जाने वाली एक मात्र भाषा हिन्दी ही है। सामान्यत: 'हिन्दी' शब्द का व्यवहार लोगों में इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है किन्तु साथ ही इन स्थानों के ग्रामीण क्षेत्रों की मारवाड़ी ब्रज, छत्तीसगढ़ी, मैथली आदि की ओर प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिन्दी भाषा मे ही समझा जाता है। हिन्दी भाषा का यही अर्थ भारत स्वतन्त्र होने से पहले प्रचलित था।

शब्द समूह के विचार से प्रत्येक भाषा एक प्रकार से खिचड़ी होती है। किसी भी भाषा के विषय में यह नही कह सकते कि वह अपने प्रारम्भिक विशुद्ध रूप मे अब तक चली आई है। दो व्यक्ति अथवा समुदाय भाषा के माध्यम की सहायता से अपने विचार परस्पर प्रकट करते है तब भाषा का मिश्रित होना कोई आश्चर्य की बात नही। भाषा के सम्बन्ध में 'विशुद्ध' शब्द का व्यवहार करने से केवल इतना ही समझा जा सकता है कि किसी विशेष काल या देश में उसका वह विशेष रूप प्रचलित था या है। जो भाषा आज 'विशुद्ध कहलाती है वह पांच-सौ वर्ष पश्चात् दूसरे रूप में कहलायेगी।

सामान्यत: हिन्दी शब्द-समूह तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—

१—भारतीय आर्य भाषाओ का शब्द समूह।

२—भारतीय अनार्य भाषाओ से आये शब्द।

३—विदेशी भाषाओं के शब्द।

## भारतीय आर्य भाषाओं का शब्द-समूह

हिन्दी शब्द-समूह मे सबसे अधिक संख्या उन शब्दों की है जो प्राचीन आर्य भाषाओं से मध्यकालीन भाषाओं में होते हुए चले आ रहे है। व्याकरणों की परिभाषा में ऐसे शब्दों को 'तद्भव' कहते है, क्योकि यह संस्कृति से उत्पन्न माने जाते थे। इनमें से अधिकतर का सम्बन्ध संस्कृत शब्दों से जोडा जा सकता है किन्तु जिन शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत से नहीं जुड़ता उनमें ऐसे शब्द भी हो सकते हों जिनकी व्युत्पत्ति प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के ऐसे शब्दों से हुई हो जिनका व्यवहार प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के साहित्यिक रूप (संस्कृत) में न होता हो। इसलिए तद्भव शब्द का संस्कृत शब्द से सम्बन्ध निकल आना आवश्यक नही है। इस कोटि के शब्द प्रायः मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं में होकर हिन्दी में आये हैं इसलिये इनमें से अधिकतर के रूपों में बहुत परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक है। सर्वसाधारण की बोली में तद्भव शब्द अत्यधिक संख्या में मिलते हैं। साहित्यिक हिन्दी मे गँवारू समझे जाने के कारण इनकी संख्या कम हो जाती है। वस्तुतः ये असली हिन्दी शब्द हैं तथा इनके प्रति हमारी विशेष ममता होनी चाहिये। 'कृष्ण' शब्द की अपेक्षा 'कन्हैया' अथवा 'कान्हा' शब्द हिन्दी का अधिक सच्चा शब्द है।

साहित्यिक हिन्दी में संस्कृत के विशुद्ध शब्दों की संख्या का सदा से आधिक्य रहा है और आधुनिक साहित्यिक भाषा में तो यह संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इसके मूल मे दो बातें रहती हैं एक नवीन आवश्यकताएँ दूसरे विद्वत्ता प्रकट करने की प्रबल आकांक्षा और इसी कारण अधिकांश तत्सम (विशुद्ध संस्कृत) शब्दों का आधुनिक काल में समावेश हुआ। आधुनिक समय में जो संस्कृत का 'कृष्ण' शब्द तत्सम है तथा 'कान्हा' उसका तद्भव रूप है किन्तु आजकल बिगड़ कर 'किशन' हो गया है यह उसका अर्द्ध-तत्सम रूप है।

बँगला, मराठी, पंजाबी आदि भारतीय आर्य भाषाओं का हिन्दी पर प्रभाव अपवाद मात्र है क्योंकि हिन्दी बोलने वाले लोगों ने सम्पर्क में आने पर भी इन भाषाओं के बोलने का कभी प्रयत्न नही किया प्रत्युत इन भाषाओं के शब्दों पर हिन्दी की छाप अधिक गहरी है।

## भारतीय अनार्य भाषाओं से आये हुए शब्द

हिन्दी के तत्सम तथा तद्भव शब्दों में अधिकांश शब्द ऐसे हैं जो प्राचीनकाल में अनार्य भाषाओं से तत्कालीन आर्य भाषाओं मे आ मिले थे जो हिन्दी के लिए वस्तुतः आर्यभाषा के शब्दों के सदृश्य हैं। प्राकृत वैयाकरण जिन प्राकृत शब्दों को संस्कृत शब्दों में नहीं पाते थे उन्हें अनार्य भाषाओं में आये हुए समझ लेते थे। इन्होंने बहुत से बिगड़े हुए तद्भव शब्दों को भी देशी समझ रखा था। तेलगू, तामिल, द्राविड़, कोल आदि

अन्य अनार्य भाषाओं से आधुनिक काल में आये हुए शब्द हिन्दी मे अपवादमात्र हैं।

द्राविड़ शब्दों का प्रयोग हिन्दी मे प्रायः बुरे अर्थों में होता है। द्राविड़ 'पिल्लै' शब्द का अर्थ पुत्र होता है, यही शब्द हिन्दी में 'पिल्ला' होकर कुत्ते के बच्चे के अर्थ में व्यवहृत होता है। मूर्द्धन्य वर्णों वाले शब्द यदि सीधे द्राविड़ भाषाओं से नही आये हैं तो कम से कम यह तो मानना ही पड़ेगा कि उन पर द्राविड़ भाषाओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। हिन्दी पर कोल भाषाओं का प्रभाव उतना स्पष्ट नहीं है पर ऐसा जान पड़ता है कि 'कोड़ी' जो बीस की संख्या का द्योतक है कदाचित कोल भाषा से ही आया है।

## विदेशी भाषाओं के शब्द

एक लम्बे समय तक भारत विदेशी शासन में रहा इस कारण यह स्वाभाविक है कि विदेशी भाषा का प्रभाव हिन्दी पर पड़े। इसे दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—पहला इस्लामी और दूसरा यूरोपीय प्रभाव जो प्रायः सैद्धांतिक रूप में बहुत कुछ समान हैं। एक प्रकार के वे शब्द जो कचहरी, सेना, स्कूल आदि विदेशी संस्थाओं में प्रयुक्त होते थे दूसरे वे शब्द जो विदेशी प्रभाव के कारण आई हुई नवीन वस्तुओं तथा नये ढङ्ग के पहनावे, खाने, खेल, यन्त्रों के नाम आदि होते थे।

फारसी, अरबी, तुर्की और पश्तो के शब्दों का प्रभाव १००० ई० के लगभग से होने लगा प्रायः ६०० वर्ष तक हिन्दी-भाषी जनता पर तबतक रहा जबतक हिन्दी-भाषी जनता पर तुर्क, अफगान और मुगलों का शासन रहा जिनके कारण बहुत से शब्द ग्रामीण भाषा तक में समाविष्ट हो गये। सूर, तुलसी आदि वैष्णव महाकवि भी विदेशी शब्दों के प्रभाव से न बच सके। मुसलमानों के राजत्वकाल में हिन्दी में प्रचलित विदेशी शब्द अधिकतर फारसी से ही आये क्योंकि तत्कालीन मुसलमान शासकों ने राजकीय भाषा फारसी को ही मान रखा था। अरबी और तुर्की आदि के जो शब्द हिन्दी में मिलते है वे भी फारसी में से ही होकर आये, यथा— कैंची, काबू, गलीचा, तोप, बीबी, दरोगा आदि।

१५०० ई० के लगभग यूरोपीय लोगों का भारत में आना-जाना आरम्भ हो गया था। किन्तु इनकी भाषा का प्रभाव तीन-सौ वर्ष तक नहीं पड़ा इसका कारण यह था कि इनका कार्यक्षेत्र आरम्भ में समुद्रतटवर्ती प्रदेशों में ही विशेषकर रहा इसी कारण प्राचीन हिन्दी साहित्य यूरोपीय भाषा से अछूता रहा १८०० ई० के लगभग जब मुगल राज्य का क्षय होगया और अंग्रेजों ने शासनसत्ता हथियाली तब हिन्दी शब्दों पर अंग्रेजी भाषा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। यथा-अपील, अस्पताल, आर्डर, आफिस, इंच, इनकम-टैक्स, इस्कूल, इस्पीच, एजंट, ऐक्टर, कलक्टर, कलेंडर, कापी, गजट, गिलास, गैम, चाक, चिक, जपर जज, जेल आदि बहुत से शब्द हिन्दी-भाषा में आ मिले जिनको निकालना सर्वथा असम्भव

है। कुछ पुर्तगाली डच और फ्रांसीसी शब्द तो हिन्दी में ऐसे घुल मिल गये हैं कि सहसा विदेशी नहीं मालूम पड़ते। यथा-अलमारी, आचार, इस्पात, कमीज, कनस्तर, कमरा, काज, गमला, गिर्जा, गोभी, तौलिया, नीलाम, परात, पिस्तौल, पीपा, बाल्टी, मेज सितार आदि। फ्रांसीसी-कार्तूस, कूपन, अंग्रेज-डच-तुरुप, बम (गाड़ी का)।

सामान्यत: हिन्दी भाषा का विकास तीन मुख्य कालों में बांटा जा सकता है-१-प्राचीन काल (जो ११०० से १५०० ई० तक)। २-मध्यकाल (१५०० से १८०० ई० तक) और ३-आधुनिक काल जिसका आरम्भ १८०० से होता है।

## प्राचीनकाल

हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ तबसे हुआ जब अपभ्रंश और प्राकृतों का प्रभाव ११०० ई० में हिन्दी की बोलियों के निश्चित स्पष्ट रूप विकसित नहीं हो पाये थे। इस काल में तीन प्रकार की सामग्री थी, जो १-शिलालेख, ताम्रपत्र और प्राचीन पत्र आदि, २-अपभ्रंश काव्य और, ३-चारण काव्य आदि रूपों में मानी जाती है।

## मध्यकाल

इसका प्रारम्भ उस समय होता है जब हिन्दी से अपभ्रंशों का प्रभाव बिल्कुल छूट गया था हिन्दी की बोलियां विशेषत व्रज और अवधी अपने पैरों पर स्वतंत्रतापूर्वक खड़ी हो गई थी।

## आधुनिक-काल

जब से हिन्दी की बोलियों के मध्यकाल के रूप में परिवर्तन आरम्भ होगया है तथा साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से खड़ी बोली ने हिन्दी की दूसरी बोलियों को दबा दिया है और आज जब भारत स्वतत्र हो गया है और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हो गया है तब ऐसी अवस्था में हिन्दी के शब्द-भण्डार को बढ़ाने की अत्यंत आवश्यकता है।

—नालन्दा विशाल शब्द सागर से उद्धृत

## (लघ्ववलि) सङ्केत-चिह्नों का विवरण

| | | | |
|---|---|---|---|
| अव्य० | अव्यय | (अं) | अंग्रेजी भाषा |
| उप० | उपसर्ग | (अ०) | अरबी ,, |
| क्रि० वि० | क्रिया-विशेषण | (गुज०) | गुजराती ,, |
| प्रत्य० | प्रत्यय | (डिं०) | डिंगल ,, |
| वि० | विशेषण | (तु०) | तुर्की ,, |
| पुं० | पुंलिङ्ग | (देश०) | देशज ,, |
| स्त्री० | स्त्रीलिङ्ग | (फा०) | फारसी ,, |
| सर्व० | सर्वनाम | (सं) | संस्कृत ,, |
| स्त्री० प्र० | स्त्रीलिङ्ग-प्रधान (स्त्रीलिङ्ग में ही प्रयुक्त होने वाला) | (हिं) (हि) | हिन्दी ,, |

### अन्य सङ्केत-चिह्न

| | | | |
|---|---|---|---|
| आयु० | आयुर्वेद | मुसल० | मुसलमानों में प्रचलित |
| का० | कानून | यू० | यूनानी |
| क्रि० | क्रिया | योग | योगशास्त्र |
| ज० | जरमन | रामा० | रामायण |
| ज्या० | ज्यामित | लै० | लैटिन |
| ज्यो० | ज्योतिष | वा० | वाक्य |
| न्या० | न्याय | वै० | वैदिक |
| पा० | पाली | व्यं० | व्यंग्य |
| पु० | पुराण | व्या० | व्याकरण |
| फ्रें० | फ्रैंच | सा० | साहित्य |
| बौद्ध | बौद्धसाहित्य | सूफी० | सूफीमत |
| भाग० | भागवत | सू० | सूरदास |
| मनु० | मनुस्मृति | | |

### हिन्दी अक्षरों का क्रम

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, क-क्ष, ख, ग, घ, ङ, च, छ,ज-ज्ञ, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त-त्र, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह।

# अ (अ)

**अ** देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर तथा पहिला स्वर। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है। इसकी सहायता के बिना इसका उच्चारण नहीं होता। यह निषेधसूचक अथवा विपरीत अर्थवाचक है यथा—अकारण, असमर्थ आदि। (संज्ञा पुं०) ब्रह्मा, सृष्टि, अमृत।

**अइना** पुं० (फा) आइना, दर्पण।

**अइया** स्त्री० (हि) नानी, दादी इत्यादि के लिए प्रयुक्त

**अइलो** प्रा० (हि) आता हूँ।

**अइसा** वि० (हि) ऐसा।

**अउ** अव्य० (हि) और।

**अउठा** पुं० (हि) कपड़ा नापने की लकड़ी।

**अउर** अव्य० (हि) और।

**अऊत** वि० (हि) सन्तानहीन।

**अऊलना** क्रि० (हि) जलना।

**अएरना** क्रि० (हि) १-अङ्गीकार करना, २-सहना।

**अंक** पुं० (हि) १-चिह्न, २-एक से नौ तक की गिनती, ३-लेख, लिखावट। ४-भाग्य। ५-धब्बा। ६-शरीर ७-गोद।

**अंकक** पुं० (हि) गिनती करने वाला। रबर की मुहर।

**अंककार** पुं० (सं) खेलों आदि में हार-जीत का निर्णायक।

**अंक-गणित** पुं० (सं) वह विद्या जिसमें संख्याओं के जोड़ने, घटाने तथा गुणा-भाग आदि की रीति बतलाई जाती है। हिसाब।

**अंकटा** पुं० (हि) १-छोटा कङ्कड़। २-अनाज आदि में पाया जाने वाला कङ्कड़ का छोटा टुकड़ा।

**अंकड़ा** पु० (हि) कङ्कड़ या पत्थर का छोटा टुकड़ा।

**अंकन** पुं० (सं) १-चिह्न करना। २-लिखना। ३-चित्र बनाना। ४-गिनना।

**अंकना** क्रि० (हि) आँकना। कूतना।

**अंकनी** स्त्री० (सं) लकड़ी या धातु की बनी लेखनी जिसमें मसाले की सलाई होती है और लिखने के काम में आती है। (पेंसिल)।

**अंकनीय** वि० (स) अंकन योग्य।

**अंकपट्ट** पुं० (सं) १-टेलीफून का वह गोल भाग जिसमें शून्य से नौ तक अंक होते हैं और जिसे घुमाकर नम्बर मिलाये जाते हैं (डायल)। २-घड़ी का सम्मुख भाग। (डायल)।

**अंकपत्र** पुं० (सं) टिकट (स्टाम्प)।

**अंकपत्रित** वि० (सं) टिकट या अंकपत्र लगा हुआ (स्टाम्पड)।

**अंकमाल** पुं० (सं) गले लगाना। आलिङ्गन।

**अँकरा** पुं० (हि) १-अंकुर। २-अँकटा।

**अँकरोरी, अँकरौरी** स्त्री० (हि) कंकड़ी।

**अँकवाई** स्त्री० (हि) १-आँकने की क्रिया या भाव। २-आँकने के निमित्त दिया जाने वाला पारिश्रमिक

**अँकवाना** क्रि० (हि) १-अन्य से आँकने का कार्य कराना। २-अंकित कराना।

**अँकवार** स्त्री० (हि) १-गोद, कोख, २-छाती, हृदय।

**अँकवारना** क्रि० (हि) गले लगाना, भेंटना।

**अंकविद्या** स्त्री० (सं) अंकगणित।

**अँकाई** स्त्री० (हि) देखो 'अकवाई'।

**अँकाना** क्रि० (हि) अन्य से आँकने का कार्य कराना।

**अंकावतार** पु० (हि) नाटक के एक अंक के अन्त में अगले अंक की घटना का संकेत।

**अंकित** वि० (स) १-चिह्नित। २-लिखित। ३-वर्णित ४-जिस पर रबर की मोहर लगी हो।

**अंकितक** पु० (स) किसी वस्तु पर चिपकाया हुआ लिखित कागज का टुकड़ा। चिप्पी (लेबुल)।

**अंकित-मूल्य** पुं० (सं) वह मूल्य जो किसी वस्तु पर अंकित रहता है पर किन्हीं कारणों या विशेष अवस्थाओं में घटता बढ़ता है। (फेसवैल्यू)।

**अँकुड़ा** पुं० (हि) १-लोहे का मुड़ा हुआ छड़। २-पशुओं के पेट की पीड़ा।

**अंकुर** पुं० (सं) १-अखुआ। २-कोंपल। ३-भरते घाव में दीखने वाले नये छोटे छोटे दाने।

**अंकुरण** पुं० (सं) अंकुरित होने का भाव (जरमिनेशन)।

**अँकुरना** क्रि० (हि) उगना। अंकुरित होना।

**अंकुरित** वि० (सं) १-अंकुर निकला हुआ। २-उत्पन्न

**अंकुरित-यौवना** स्त्री० (सं) वह जिसमें यौवन के लक्षण आ रहे हों।

**अंकुश** पुं० (सं) १-हाथी चलाने का कांटा। २-रोक, दबाव। ३-प्रतिबन्ध।

**अंकुसी** स्त्री० (हि) कटिया।

**अंकूर** पुं० (हि) अंकुर।

**अंकोड़ा** पुं० (हि) लोहे का कांटा जिसमें रस्से को फंसाकर पानी में नाव रोकी जाती है।

**अंकोर** पुं० (सं) १-अंकवार। २-भेंट। ३-रिश्वत।

**अंक्य** वि० (सं) अंकित करने योग्य।

**अंखड़ी** स्त्री० (हि) १-आँख। २-चितवन।

**अँखाना** क्रि० (हि) आँख दिखाना।

**अंखिया** स्त्री० (हि) १-नक्काशी की कलम। २-आँख ३-नव-अंकुर।

**अँखुआ** पुं० (हि) अंकुर।

**अँखुआना** क्रि० (हि) अंकुर फूटना।

**अंग** पुं० (सं) १-शरीर, देह। २-अवयव। ३-अंश ४-पक्ष, भाग। ५-प्रेम अथवा आपसदारी का सूचक एक सम्बोधन। ६-बिहार में भागलपुर के आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

**अंगकद** पुं० (हि) चित्रकारी में इस प्रकार का विचार कि आकृति के सब अंग उसके कद अथवा ऊंचाई के अनुपातानुसार ठीक हों।

**अंगचारी** पुं० (सं) सखा, साथी।

**अंगच्छेद** पुं० (सं) शरीर का कोई अवयव निकालना अथवा अलग करना।

**अंगज** पुं० (सं) १-पुत्र। २-पसीना। ३-केश। ४-रोम। वि० (सं) अंग से उत्पन्न।

**अंगजा** स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री।

**अंगजाई** स्त्री० (हि) कन्या। पुत्री।

**अंगजात** पुं० (सं) देखो 'अंगज'।

**अंगजाया** पुं० (हि) पुत्र।

**अंगड़ाई** स्त्री० (हि) जम्हाई के साथ अंगों को फैलाना या ऐंठाना।

**अंगड़ाना** (हि) अंगड़ाई लेना।

**अंगण** पुं० (सं) आँगन। चौक।

**अंगत्राण** पुं० (सं) कुरता। अंगरखा।

**अंगद** पुं० (सं) १-बाजूबन्द। २-बाली का पुत्र ३-लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।

**अंगन** पुं० (सं) घर का आँगन।

**अँगना** पुं० (हि) आँगन।

**अंगना** स्त्री० (सं) १-रूपवती स्त्री। २-सार्वभौम दिग्गज की हथिनी का नाम।

**अंगनाई** स्त्री० (हि) आंगन।

**अंगप्रोक्षण** पुं० (सं) १-गीले कपड़े से शरीर का मैल साफ करना। २-शरीर या देह पोंछना।

**अंग-भंग** पुं० (सं) १-शरीर के किसी अंग या अवयव का टूटना अथवा नष्ट होना। २-अपाहिज।

**अंगभंगी** स्त्री० (हि) स्त्रियों को मोहित करने वाली क्रिया या चेष्टा। हावभाव।

**अंगभाव** पुं० (सं) नृत्य आदि में मन के भावों को प्रदर्शित करने के निमित्त मटकना।

**अंगरक्षक** पुं० (सं) रक्षा के निमित्त रखा गया भृत्य।

**अंगरक्षणी** स्त्री० (सं) अंग की रक्षा का कवच।

**अँगरखा** पुं० (हि) घुटने तक के पुरुषों के वस्त्र विशेष जिसमें बाँधने के लिये बंद लगे रहते हैं। चपकन।

**अंगरा** पुं० (हि) १-अंगारा। २-बैलों को होने वाला एक रोग।

**अंगराई** स्त्री० (हि) अंगड़ाई।

**अंगराग** पुं० (सं) १-चंदन केसर आदि का लेप या उबटन। २-महावर। ३-शरीर की सजावट ४-शरीर के सजावट की सामग्री।

**अंगराना** क्रि० (हि) अंगड़ाना।

**अंगरी** स्त्री० (हि) १-कवच। २-अंगुस्ताना।

**अंगरेज** पुं० (हि) इङ्गलिस्तान का निवासी।

**अंगरेजियत** स्त्री० (हि) अंग्रेज होने का भाव। अंग्रेजीपन।

**अंगरेजी** वि० (हि) अंगरेजों की भाषा या बोली।

**अंगलेट** पुं० (हि) शरीर का ढाँचा या गठन। काठी।

**अँगवाना** क्रि० (हि) १-अंगीकार करना। २-सिर पर लेना। ३-सहन करना।

**अँगवारा** पुं० (हि) १-गांव के थोड़े से भाग का स्वामी २-एक दूसरे की सहायता पहुँचाना।

**अंग-विकृति** स्त्री० (सं) अंग का विकार। २-मिरगी, मूर्च्छा आदि रोग।

**अंग-विक्षेप** पुं० (सं) १-अंगों को हिलाना। २-चमकाना, मटकाना। ३-नाच।

**अंगविद्या** स्त्री० (सं) सामुद्रिक विद्या।

**अंगशोष** पुं० (सं) १-अंगों को सुखाने वाला रोग। क्षय रोग। २-सुखण्डी रोग।

**अंग-संधि** स्त्री० (हि) देखो 'संध्यंग'।

**अंग-संस्कार** पुं० (सं) शरीर या देह का बनाव-शृङ्गार।

**अंग-संस्थान** पुं० (सं) जीवविज्ञान के अन्तर्गत वह अंग अथवा शाखा जिसमें प्राणियों वनस्पतियों आदि के अंगों तथा आकृतियों का विवेचन होता है

**अंगहीन** वि० (सं) बिना अंग का।

**अंगांगीभाव** पु० (सं) १-गौण तथा मुख्य भाव का परस्पर सम्बन्ध। २-अलंकार में संकर का एक भेद।

**अंगा** पु० (सं) अंगरखा। नवकान।

**अंगाकड़ी** स्त्री० (हि) अंगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी, बाटी।

**अंगाना** क्रि० (हि) अपने अंग से अथवा अपने ऊपर लेना।

**अंगार** पु० (सं) जलता या दहकता हुआ कोयला।

**अंगारक** पु० (सं) १-अंगार। २-मंगल ग्रह। ३-वह अधातवीय तत्व जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों, खनिज पदार्थों आदि में पाया जाता है। कोयला। पैट्रोल आदि सब इसी की शक्ति से जलते हैं। (कार्बन)।

**अंगारशकटी** स्त्री० (सं) अंगीठी।

**अंगारा** पु० (हि) अंगार।

**अँगारी** स्त्री० (हि) १-ईख का पत्तियों वाला ऊपर का भाग। २-गंडेरी।

**अंगारी** स्त्री० (हि) १-चिनगारी। २-बाटी। ३-अंगीठी

**अंगिका** स्त्री० (सं) १-स्त्रियों के पहिनने की कुरती। (ब्लाउज)। २-अंगिया।

**अँगिया** स्त्री० (हि) चोली। कुरती। कंचुकी।

**अंगिरस, अंगिरा** पु० (सं) १-दस प्रजापतियों में से गिना जाने वाला एक ऋषि। २-बृहस्पति का नाम

**अंगिराना** क्रि० (हि) अंगड़ाना।

**अंगी** वि० (सं) देहधारी। पु० (सं) नाटक का प्रधान नायक।

**अंगीकार** पु० (स०) स्वीकार। मंजूर।

**अंगीकृत** वि० (सं) अंगीकार किया हुआ। स्वीकृत।

**अंगीकृति** स्त्री० (सं) स्वीकृति। मंजूरी।

**अंगीठा** पु० (हि) बड़ी अंगीठी।

**अंगीठी** स्त्री० (हि) आग रखने का पात्र। गोरसी।

**अंगुर** स्त्री० (हि) अंगुल।

**अंगुरी** स्त्री० (हि) अंगुली।

**अंगुल** पु० (हि) आठ जौ की नाप। २- उँगली।

**अंगुलांक** पुं० (सं) उँगली या उँगलियों का चिन्ह। (फिङ्गर-प्रिंट)।

**अंगुलित्राण** पुं० (सं) अंगुस्ताना।

**अंगुलिपर्व** पुं० (सं) उँगली की पोर।

**अंगुलि-प्रतिमुद्रा** स्त्री० (सं) हस्ताक्षर के स्थान पर लगाई जाने वाली उँगलियों के अग्रभाग की छाप। (फिंगर-प्रिंट)।

**अंगुलिमुद्रा** स्त्री० (सं) मुहर लगाने के निमित्त नाम खोदी हुई अँगूठी।

**अंगुलिस्फोटन** स्त्री० (सं) उँगली चटखाना।

**अंगुली** स्त्री० (हि) १- उँगली। २- हाथी की सूँड का अग्रभाग।

**अंगुल्यादेश, अंगुल्यानिर्देश** पु० (सं) उँगली उठाना। दोषारोपण।

**अंगुश्तरी** पु० (फा) अंगूठी।

**अंगुश्ताना** पु० (फा) दर्जियों की उंगली में पहिनने की लोहे या पीतल की टोपी।

**अंगुष्ठ** पु० (सं) अंगूठा।

**अंगुसा** [illegible] अंकुर

**अँगुसाना** क्रि० (हि) अंकुरित होना।

**अँगुसी** स्त्री० (हि) १- हल की फाल। २- सुनारों का एक औजार जिससे दीपक की लौ को फूंक कर टांका जोड़ते हैं।

**अंगूठा** पु० (हि) हाथ अथवा पैर की सबसे मोटी उंगली।

**अंगूठी** स्त्री० (हि) मुद्रिका। मुंदरी।

**अंगूर** पु० (फा) १-बेर के आकार का हलके हरे रंग का बेल में लगने वाला फल। दाख। २- वह लाल दाने जो घाव भरने के समय दिखाई देते हैं।

**अंगूरी** वि० (फा) १- अंगूर के रंग का। २- अंगूर का बना हुआ।

**अंगेजना** क्रि० (हि) १-ग्रहण अथवा अंगीकृत करना। २- सहना।

**अंगेट** स्त्री० (हि) शरीर की शोभा या चमक।

**अंगेठा** पुं० (हि) बड़ी अंगीठी।

**अंगेठी** स्त्री० (हि) अंगीठी।

**अंगेरना** क्रि० (हि) अंगेजना।

**अंगोछ, अंगोछना** क्रि० (हि) गीली देह को वस्त्र से पोंछना।

**अंगोछा** पु० (हि) १- तौलिया। गमछा। २- उपरन। कंधे पर डालने का वस्त्र।

**अंगोछी** स्त्री० (हि) छोटा अंगोछा।

**अंगोजना** क्रि० (हि) अंगेजना।

**अंग्रेज** पु० (अं) देखो 'अंगरेज'।

**अंग्रेजी** वि० (अं) देखो 'अंगरेजी'।

**अंघड़ा** पुं० (हि) कांसे का गहना, जो पैर के अंगूठे में गरीब ग्रामीण स्त्रियां पहनती हैं।

**अंघस** पुं० (सं) पाप।

**अंघ्रि** पुं० (सं) चरण। पैर।

**अंचरा** पुं० (हि) आँचल। अंचल।

**अंचल** पुं० (सं) १-साड़ी या ओढ़नी का वह सिरा जो छाती पर रहता है। २-सीमावर्ती प्रदेश ३-तट। किनारा।

**अंचला** पुं० (सं) पल्ला। छोर।

**अंचवन** पुं० (हि) आचमन।

**अंचवना** क्रि० (हि) १-आचमन करना। २-पीना।

**अंचवाना** क्रि०(हि) १-आचमन कराना। २-पिलाना।
**अंचाना** क्रि० (हि) अंचवना।
**अंचित** वि० (सं) पूजित। आराधित।
**अंछर** पुं० (हि) १-अक्षर। २-मंत्र विशेष जो जादू-टोना करने के लिये पढ़ा जाता है।
**अंछा** (हि) इच्छा। अभिलाषा।
**अंज** पुं० (सं) कमल। अम्बुज।
**अंजन** पुं० (सं) १-सुरमा। काजल। २-स्याही। ३-रात। पुं० (हि) अंजन।
**अंजनवा** पुं० (सं) सुरमा।
**अंजनकेश** पुं० (सं) दीपक।
**अंजनशलाका** स्त्री० (सं) सुरमा लगाने की सलाई।
**अंजनसार** वि० (सं) सुरमा लगा हुआ।
**अंजनहारी** स्त्री० (हि) आंख की पलक के किनारे पर होने वाली फुंसी। [illegible] गुहेरी।
**अंजना** स्त्री० (हि) १-हनुमान की माता। २-अंजन-हारी।
**अंजनानंदन** पुं० (सं) हनुमान।
**अंजनिक** पुं० (सं) [illegible]। (इंजीनियर)।
**अंजनी** स्त्री० (हि) हनुमान की माता का नाम।
**अंजनीनंदन** पुं० (सं) हनुमान।
**अंजन** [illegible] पुं० [illegible] ठठरी।
**अंजरि** स्त्री० (हि) [illegible]।
**अंजल** पुं० (हि) [illegible] नल। दाना-पानी।
**अंजलि** स्त्री० (सं) [illegible] सम्पुट।
**अंजलिपुट** पुं० (सं) [illegible] खाली स्थान जो दोनों [illegible] है।
**अंजलिबद्ध** [illegible] हाथ जोड़कर। करबद्ध।
**अंजली** स्त्री० [illegible] 'अंजलि'।
**अंजसा** [illegible] से।
**अंजहा** वि० (हि) [illegible] के मेल से बना हुआ। [illegible]
**अंजही** स्त्री० (हि) अनाज की मण्डी। वि० (हि) अन्न वाला। [illegible]
**अंजाना** क्रि० (हि) काजल या सुरमा लगवाना। वि० (हि) १-नासमझ। अनजान। २-[illegible]
**अंजाम** पुं० (फा) १-परिणाम। २-समाप्ति। [illegible]
**अंजित** वि० (स) १-(वह आँखें) जिनमें सुरमा लगा हो। २-आराधित।
**अंजीर** पु० (फा) एक वृक्ष या उसका फल।
**अंजुमन** पु० (फा) सभा। समाज।
**अंजुरी, अंजुली** स्त्री० (हि) देखो 'अंजली' 'अँजली'
**अंजोर** पु० (हि) प्रकाश। उजाला।
**अंजोरना** क्रि० (हि) १-(दीपक) जलाना। २-(दीपक जलाकर) घर में उजाला करना। ३-लेना। बटोरना हरना।
**अंजोरा** वि० (हि) उजाला।
**अंजोरी** स्त्री० १-चाँद की चाँदनी। २-उजाला। ३-आभा। चमक।
**अंझना** क्रि० (हि) समाप्त होना।
**अंझा** पु० (स) छुट्टी। अनाध्याय।
**अंटना** क्रि० (हि) १-समाना। २-पूरा होना। ३-पूरा पड़ना।
**अंटा** पुं० (हि) १-बड़ा गोला। २-सूत आदि का लच्छा। ३-वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाये।
**अंटा-घर** पुं० (हि) वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाता है।
**अंटा-गुड़गुड़** वि (हि) [illegible]।
**अंटा-चित** वि० (हि) १-[illegible] में बेसुध पड़ा हुआ। २-जो [illegible] किसी योग्य न रहा हो।
**अंटाना** क्रि० (हि) १-[illegible] अन्दर भरना। २-[illegible] कोई वस्तु (पर्याप्त) पूर्ण होजाये
**अंटिया** स्त्री० (हि) १-अंटी। २-छोटा गट्ठा।
**अँटियाना** क्रि० (हि) १-उंगलियों के चारों ओर लपेट कर [illegible] बनाना। २-उंगली में छिपाना। ३-गायब करना।
**अंटी** स्त्री० (हि) १-उँगलियों के मध्य का स्थान। २-कमर पर की [illegible]। ३-लच्छी।
**अंठीलन** पुं० (हि) वह [illegible] जो बैल की आँखें ढकने के लिये बांधा जाता है।
**अंठई** स्त्री० (हि) [illegible] किलनी।
**अंठी** स्त्री० (हि) १-[illegible] गुठली। २-गिलटी ३-गांठ। गिरह।
**अंड** पुं० (स) १-अंडा। २-अंडकोश। ३-विश्व। ब्रह्मांड।
**अंडकटाह** पु० (स) [illegible]।
**अंडकोश** पु० (स) १-[illegible] पेली। २-सम्पूर्ण विश्व
**अंडज** वि० (स) अंडे से उत्पन्न।
**अंडजा** स्त्री० (स) कस्तूरी।
**अँड़ना** क्रि० (हि) अड़ना।
**अंडबंड** वि० (हि) १-असम्बद्ध। बे सिर पैर का। २-अनुचित और बेमेल। खराब। पु० (हि) व्यर्थ की
**अंडस** स्त्री० (स) कठिनाई।
**अँड़सना** क्रि० (हि) [illegible] फँसना कि सरलता से निकल न सके।
**अंडा** पुं० (हि) वह पिंड जिसमें से मछलियों, पक्षियों आदि के बच्चे निकलते हैं।
**अंडाकार, अंडाकृति** वि० (स) अंडे के समान आकार वाला।
**अंडी** स्त्री० (हि) १-रेंड का वृक्ष अथवा बीज। २-एक प्रकार का मोटा रेशमी कपड़ा।
**अंडुआ** पुं० (हि) आँड़ू। बिना बधिया किया गया पशु
**अंडुआना** क्रि० (हि) पशु को बधिया कराना।

**अंतःकरण** पुं० (सं) १–भीतर की वह इन्द्रिय जो संकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुख-दुःख आदि अनुभव करती है। २–हृदय। मन।
**अंतःकालीन** वि० (सं) दो कालों अथवा घटनाओं के मध्य का। अस्थायी।
**अंतःक्रिया** स्त्री० (सं) १–मन को शुद्ध करने वाला कर्म २–अप्रकट कर्म।
**अंतःपुर** पुं० (सं) रनिवास। जनानखाना।
**अंतःशुल्क** पुं० (सं) कुछ विशेष वस्तुओं पर लगने वाला राज्य कर। (एक्साइज ड्यूटी)।
**अंतःशुद्धि** स्त्री० (सं) अन्तःकरण की निर्मलता।
**अंतःस्वर** पुं० (सं) हृदय में स्थित करुणा, प्रेम आदि सात्त्विक गुण अथवा उनका उद्गम।
**अंत** पुं० (सं) १–समाप्ति। २–मृत्यु। ३–छोर। ४–परिणाम। ५–अन्तिम भाग। (हि) १–हृदय। २–रहस्य। ३–थाह। स्त्री० (हि) आँत।
**अंतक** पुं० (सं) १–मृत्यु। २–यमराज। वि० (सं) नष्ट करने वाला।
**अंतकाल** पुं० (सं) मरणकाल। आखिरी वक्त।
**अंतकृत** पुं० (सं) यमराज।
**अंतक्रिया** स्त्री० (सं) अन्त्येष्टि कर्म।
**अंतग** पुं० (सं) निपुण।
**अंतघाई, अंतघाती** वि० (हि) विश्वासघाती।
**अंतड़ी** स्त्री० (हि) आँत।
**अंततः** क्रि० वि० (सं) १–अन्त में। आखिरकार। २–[illegible]।
**अंतरंग** पुं० (सं) १–आत्मीय। जिगरी। २–बिलकुल अन्दर का। भीतरी।
**अंतरंग-मंत्री** पुं० (सं) निजी-सचिव। (प्राइवेट-सेक्रेटरी)।
**अंतरंग-सभा** स्त्री० (सं) किसी सभा का व्यवस्थित रूप से संचालन करने वाली समिति। कार्यकारिणी।
**अंतर** पुं० (सं) १-भेद। फरक। २–दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। फासला। ३–मध्यवर्ती समय। ४–परदा। आड़। क्रि० वि० (सं) दूर। अलग। क्रि० वि० (हि) अन्दर। भीतर। वि० (हि) अंतर्द्धान।
**अंतर-अयन** पुं० (सं) वह परिक्रमा जो किसी तीर्थ के चारों ओर की जाये।
**अंतर-खंड** पुं० (सं) घरों या मकानों की वह पंक्ति जो सुविधा की दृष्टि से बनाई जायें। (डिस्टिंक्ट ब्लाक)
**अंतरचक्र** पुं० (सं) १–शरीर के भीतर के छःचक्र (तंत्र)। २–स्वजन समूह। ३–चिड़ियों की बोली के आधार पर शुभाशुभ जानने की विद्या। ४–दिशा-विदिशा के मध्य के अंतर का चतुर्थांश। ५–मनुष्यों का वह भीतरी वर्ग या चक्र जो भीतर के समस्त कार्य करता हो तथा जो बाहर के लोगों या जन-साधारण से अलग हो। (इनर सरकिल)।
**अंतरजामी** वि० (हि) अन्तर्यामी।
**अंतरज्ञ** वि० (सं) १–अन्तर्यामी। २–भेद जानने वाला।
**अंतरण** पुं० (सं) १–एक से दूसरे के हाथ बिकना। २–किसी कार्यकर्त्ता या अधिकारी का अन्य विभाग में बदलना। बदली। ३–धन का एक खाते से दूसरे खाते में जाना। (ट्रान्सफरेन्स)।
**अंतरण-कर्त्ता** पुं० (सं) अंतरितक।
**अंतरतम** पुं० (सं) १–किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग। २–हृदय का भीतरी भाग। ३–विशुद्ध अंतःकरण।
**अंतरदिशा** स्त्री० (सं) विदिशा। कोण।
**अंतरपट** पुं० (सं) १–परदा। २–एक रस्म जो विवाह में होती है।
**अंतरण-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा सम्पत्ति सत्ता आदि हस्तान्तरित की जाती है। (ट्रांसफरेन्स-डीड)।
**अंतरपुरुष** पुं० (सं) आत्मा।
**अंतररति** स्त्री० (सं) मैथुन के सात आसन।
**अंतरशायी** पुं० (सं) जीवात्मा।
**अंतरस्थ** वि० (सं) भीतर का। पुं० (सं) आत्मा।
**अँतरा** पुं० (हि) १–अंतर। नागा। २–एक प्रकार का ज्वर।
**अंतरा** पुं० (हि) गीत की टेक के अतिरिक्त शेष पद। वि० (हि) अतिरिक्त। मध्य।
**अंतराना** क्रि० (हि) १–अलग करना। २–अन्दर करना।
**अंतरात्मा** पुं० (सं) १–जीवात्मा। २–प्राण। ३–मन।
**अंतराय** पुं० (सं) विघ्न। बाधा। प्रतिबन्ध।
**अंतरायण** पुं० (सं) किसी व्यक्ति को उसके निवास-स्थान में ही नजरबन्द रखने का कार्य।
**अंतराल** पुं० (सं) १–कोना। २–मध्य। बीच। ३–आवृत स्थान।
**अंतराल-दिशा** पुं० (सं) दो दिशाओं के मध्य की दिशा।
**अंतराल-राज्य** पुं० (सं) दो देशों या राष्ट्रों की सीमाओं के मध्य का वह स्वतन्त्र राज्य जिसके कारण उन दोनों देशों में प्रत्यक्ष संघर्ष की नौबत नहीं आने पाती। (बफर-स्टेट)।
**अंतरिक्ष** पुं० (सं) १–आकाश। २–स्वर्ग।
**अंतरिक्ष-विज्ञान** पुं० (सं) वायुमंडल के विक्षोभ के आधार पर सरदी, गरमी, वर्षा आदि का विवेचक विज्ञान। (मीटीरियालोजी)।
**अंतरिख, अंतरिच्छ** पुं० (हि) अंतरिक्ष।
**अंतरित** वि० (सं) १–भीतर रखा अथवा छिपाया हुआ। २–स्थानांतरण किया हुआ। ३–एक से दूसरे के हाथ में गया अथवा बिका हुआ। (ट्रान्स्फर्ड)।

**अंतरितक** पुं० (सं) वह जो अपनी सम्पत्ति तथा उससे सम्बन्धित अधिकार आदि हस्तांतरित करे अथवा दे। (ट्रान्सफरर)।
**अंतरिती** पुं० (हि) वह जिसके हाथ कोई अपनी सम्पत्ति तथा संबंधित स्वत्वादि दे या अन्तरित करे। (ट्रान्सफरी)।
**अंतरिम** वि० (सं) अलग-अलग दो कालों या समय के मध्य का। मध्यवर्ती। (इंटेरिम)।
**अंतरिम-आज्ञा** स्त्री० (सं) मध्यवर्ती आदेश या हुक्म।
**अंतरिम-काल** पुं० (सं) मध्यवर्ती काल या समय। (इन्टेरिम पीरियड)
**अंतरिया** पुं० (हि) वह ज्वर जो एक दिन छोड़कर एक दिन आता है।
**अंतरीख** पुं० (हि) अंतरिक्ष।
**अंतरीप** पुं० (सं) भूमि का वह भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो। (केप)।
**अंतरीय** पुं० (सं) वह वस्त्र जो भीतर पहना जाता है वि० (सं) भीतरी। अन्दर का।
**अंतरौटा** पुं० (हि) १-साड़ी के नीचे पहिनने का कपड़ा। २-अस्तर।
**अंतर्कथा** स्त्री० (सं) किसी कथा अथवा प्रसंग के अंतर्गत छिपी हुई कोई अन्य प्रसंग, घटना आदि में संकेत रूप में कही हुई बात। (एलुजन)।
**अंतर्गत** वि० (सं) १-भीतर आया हुआ। २-छिपा हुआ। गुप्त।
**अंतर्गतक** पुं० (सं) अन्य कागज-पत्रों के साथ नत्थी करके भेजागया कागज-पत्र। (एनक्लोजर)। प्रत्यय-अंतर्गत होकर रहने वाला।
**अंतर्गति** स्त्री० (सं) चित्तवृत्ति। हार्दिक अभिलाषा।
**अंतर्गृही** स्त्री० (सं) वह यात्रा जो नगर के मध्यवर्ती भागों में स्थित देवालयों, तीर्थों आदि के निमित्त की जाये।
**अंतर्ग्रस्त** वि०(सं) विपत्ति, अपराध, कठिनाई आदि में लिप्त या ग्रस्त। (इनवाल्वड)।
**अंतर्घट** पुं० (सं) अंतःकरण।
**अंतर्ज्योति** स्त्री० (सं) अंतर्यामी। परमात्मा।
**अंतर्ज्ञान** पुं० (सं) अंतःकरण की बात जानना परिज्ञान।
**अंतर्दशा** स्त्री० (सं) भीतरी दशा या अवस्था।
**अंतर्दाह** पुं० (सं) मन की जलन। घोर मानसिक पीड़ा।
**अंतर्देशीय** वि० (सं) किसी देश के आंतरिक भागों में होने अथवा उससे सम्बन्ध रखने वाला।
**अंतर्देशीय-जलपथ** पुं० (सं) देश के भीतर के जल-मार्ग।
**अंतर्देशीय-वाणिज्य** पुं० (सं) देखो 'अंतर्वाणिज्य'।
**अंतर्दृष्टि** स्त्री० (सं) ज्ञान चक्षु।
**अंतर्द्धान** वि० (सं) लुप्त। गायब।
**अंतर्द्वार** पुं० (सं) चोर दरवाजा।
**अंतर्धारा** स्त्री० (सं) १-नदी, जलाशय आदि के धरातल से नीचे बहने वाली पानी की धारा। २-किसी वर्ग अथवा समाज में फैली ऐसी आन्तरिक धारणा या विचार जिसके सम्बन्ध में साधारणतः कुछ पता न चलता हो। (अण्डर-करेण्ट)।
**अंतर्नयन** पुं० (सं) ज्ञानचक्षु।
**अंतर्निहित** वि० (सं) अन्दर छिपा हुआ। गुप्त।
**अंतर्पट** पुं० (सं) १-आड़। ओट। परदा। २-आवरण।
**अंतर्प्रादेशिक** वि० (सं) एक से अधिक प्रदेशों से सम्बन्ध रखने वाला (इण्टर-प्रॉविन्शियल)।
**अंतर्बोध** पुं० (सं) १-वह मानसिक अनुभूति अथवा ज्ञान जिससे हम समस्त बातों के प्रकार, रूप आदि समझते हैं। (इण्टयूशन) २-अन्तर्ज्ञान।
**अंतर्भाव** पुं० (सं) १-शामिल होना। अंतर्गत होना। २-छिपाव। ३-अभाव। ४-आंतरिक अभिप्राय। आशय।
**अंतर्भावना** स्त्री० (सं) मनन। चिन्तन।
**अंतर्भावित** वि० (सं) १-जो किसी में मिला गया हो। समाविष्ट। २-छिपाया हुआ।
**अंतर्भुक्त** वि० (सं) किसी में आया, समाया अथवा मिला हुआ।
**अंतर्भूत** वि० (सं) अंतर्भावित।
**अंतर्भूमि** स्त्री० (सं) भूगर्भ।
**अंतर्भौम** वि० (सं) भूगर्भ का।
**अंतर्मना** वि० (सं) उदास।
**अंतर्यामी** वि० (सं) हृदय या अन्तःकरण की बात जानने वाला। पुं० (सं) ईश्वर।
**अंतर्रति** स्त्री० (सं) मैथुन।
**अंतर्राष्ट्रीय** वि० (सं) सब अथवा कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धित। (इण्टर-नेशनल)।
**अंतर्राष्ट्रीय-मुद्राकोष** पुं० (सं) संयुक्त राष्ट्रसंघ के संरक्षण में स्थापित वह निधि जिसका काम सदस्य राष्ट्रों या देशों की मुद्राओं के विनिमय-मूल्य स्थिर बनाये रखने में सहायता प्रदान करना और विदेशी मुद्राओं की कमी पड़ने की अवस्था में प्राप्यांश से अधिक मुद्राएं निकालने की सुविधा देना होता है। (इण्टरनेशनल-मॉनेटरी फण्ड)।
**अंतर्लीन** वि० (सं) निमग्न।
**अंतर्लापिका** स्त्री० (सं) वह पहेली जिसका उत्तर उसी के अंतर्गत हो।
**अंतर्वर्ग** पुं० (सं) किसी वर्ग या विभाग में का कोई अन्य छोटा वर्ग या विभाग।
**अंतर्वर्ण** पुं० (सं) अन्तिम वर्ण का। शूद्र।
**अंतर्वर्त्ती** वि० (सं) मध्यवर्ती। स्त्री० (सं) गर्भवती।

**अंतर्वस्तु** स्त्री० (सं) किसी वस्तु के अन्तर्गत रहने वाली अन्य वस्तु। (कण्टेण्ट्स)।
**अंतर्वाणिज्य** पु० (सं) किसी देश के आन्तरिक भागों में होने वाला वाणिज्य या व्यवसाय।
**अंतर्वेद** पुं० (सं) १-गङ्गा यमुना का मध्यवर्ती प्रदेश।
**अंतर्वेदना** स्त्री० (सं) मानसिक पीड़ा।
**अंतर्वेश्म** पुं० (सं) १-मकान में की भीतरी कोठरी या कमरा। २-अन्तःपुर।
**अंतर्हित** वि० (सं) छिपा हुआ। तिरोहित।
**अंतसमय** पु० (सं) अन्तिम समय। मरणकाल।
**अंतस** पु० (हि) अन्तःकरण।
**अंतस्थ** वि० (सं) १-भीतर का या बीच का। मध्यवर्ती २-अन्त का। अन्तिम। पु० (सं) य, र, ल और व यह चारों वर्ण।
**अंतस्सलिल** वि० (सं) जिसके जल का प्रवाह भीतर हो और बाहर न दीखे।
**अंताराष्ट्रीय** वि० देखो 'अंतर्राष्ट्रिय'।
**अंतावरी** स्त्री० (हि) अन्तड़ी या आँतों का समूह।
**अंतिक** वि० (सं) निकट। समीप।
**अंतिम** वि० (सं) १-आखिरी। २-सबसे बढ़कर।
**अंतिमेत्थम** पु० (सं) अन्तिम चुनौती। (अल्टीमेटम)
**अंतेउर** पुं० (हि) अन्तःपुर। जनानखाना।
**अंतेवासी** पुं० (सं) १-शिष्य। २-वह व्यक्ति जो नौकरी पाने की आशा से किसी के पास या किसी कार्यालय आदि में कार्य करता या सीखता है। (अप्रेण्टिस) ३-अंत्यज।
**अंत्य** वि० (सं) अन्तिम। आखिरी।
**अंत्यज** वि०(सं) जो अन्तिम वर्ण से उत्पन्न हुआ हो। शूद्र।
**अंत्यवर्ण** पुं० (सं) १-पद के अन्त में आने वाला अक्षर। २-अन्तिम वर्ण या अक्षर 'ह'।
**अंत्यशेष** पु० (सं) खाता बंद करने के समय बाकी के रूप में निकलने वाली राशि।
**अंत्याक्षर** पुं० (सं) देखो 'अंत्यवर्ण'।
**अंत्याक्षरी** स्त्री० (सं) किसी कहे हुए छन्द अथवा पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाला दूसरा छन्द।
**अंत्यानुप्रास** पुं० (सं) पद्य के चरणों के अन्तिम अक्षरों का मेल। तुकान्त।
**अंत्येष्टि** पुं० (सं) मृतक व्यक्ति का क्रिया कर्म।
**अंत्र** पुं० (सं) आँत।
**अंत्रकूजन** पुं० (सं) अंतड़ियों की कुड़कुड़ाहट।
**अंत्रवृद्धि** स्त्री० (सं) आँतों के उतरने का एक रोग।
**अंत्री** स्त्री० (हि) अंतड़ी। आँत।
**अंथऊ** पुं० (हि) सन्ध्या होने से पूर्व किया जाने वाला भोजन।
**अंदर** क्रि० वि० (फा) भीतर।
**अंदरसा** पु० (हि) तिल और चावलों के मेल से बनने वाली मिठाई।
**अंदरी** वि० (हि) भीतरी। अन्दरूनी।
**अंदरूनी** वि० (फा) भीतर को। आंतरिक।
**अंदाज** पुं० (फा) १-अनुमान। २-ढब। ढंग। ३-स्त्रियों की चेष्टा या हावभाव।
**अंदाजन** क्रि० वि० (फा) अनुमानतः। लगभग।
**अंदाजा** पुं० (फा) १-अनुमान। २-कूत।
**अँदाना** क्रि० (हि) बचाना।
**अंदु** पुं० (हि) १-पाजेब। २-हाथी बांधने का सांकड़ा।
**अंदुआ** पुं० (हि) कांटेदार, लकड़ी का भारी चौखटा जो हाथी के पैर में डाला जाता है।
**अंदेशा** पुं० (फा) १-चिन्ता। २-संशय। ३-आशंका।
**अँदोर** पुं० (हि) १-कोलाहल। २-आन्दोलन।
**अंध** वि० (सं) १-नेत्रहीन। २-मूर्ख। ३-उन्मत्त। ४-असावधान।
**अंधकार** पुं० (सं) १-अँधेरा। २-अज्ञान।
**अंधकारमय** स्त्री० (सं) अन्धकार से परिपूर्ण।
**अंधकूप** पुं० (सं) १-सूखा हुआ। २-अंधकार वाला कुँआ।
**अंधखोपड़ी** वि० (हि) मूर्ख।
**अंधड़** पुं० (हि) आँधी।
**अंधता** स्त्री० (सं) अंधापन।
**अंधतामिस्र** पुं० (सं) १-एक नरक का नाम। २-घोर अँधेरा।
**अंधधुंध** स्त्री० (हि) अंधाधुंध।
**अंधपरंपरा** स्त्री० (सं) बिना सोचे समझे पुरानी प्रथा का अनुकरण।
**अंधवाई** स्त्री० (हि) आँधी।
**अंधरा** वि० (हि) अंधा।
**अंधरी** वि० (हि) अंधी (स्त्री के लिये)।
**अंधविश्वास** पुं० (सं) बिना सोचे समझे किसी बात का निश्चय।
**अंधा** वि० (हि) बिना आँख का। नेत्रहीन।
**अंधा कूआँ** पुं० (हि) १-अंधकूप। २-उदर। पेट।
**अंधाधुंध** क्रि० वि० (हि) १-बिना सोचे-समझे। बेधड़क। २-बहुतायत से। स्त्री० (हि) १-घोर अंधकार। २-अन्याय। कुप्रबन्ध।
**अँधार, अंधियारा** वि० (हि) अँधेरा।
**अँधियारी** स्त्री० (हि) १-अँधेरा २-एक प्रकार की पट्टी जो उपद्रव करने वाले घोड़ों और शिकारी जन्तुओं को आँखों पर बाँधते हैं।
**अंधेर, अंधेर-खाता** पुं० (हि) १-अन्याय। अत्याचार। २-कुप्रबन्ध।
**अंधेरनगरी** स्त्री० (सं) वह नगरी या स्थान जहाँ कुप्रबन्ध और अन्याय का बोलबाला हो।
**अँधेरा** पुं० (हि) १-उजाले या प्रकाश का उल्टा।

अंधकार । २-धुंधलापन ।
**अंधेरा-पक्ष** पुं०(हि) कृष्णपक्ष।
**अंधेरिया** स्त्री० (हि) १-अंधेरा। २-कृष्णपक्ष।
**अंधेरी** स्त्री० (हि) अंधियारी रात। २-अंधेरा। ३-आँधी। वि० (हि) प्रकाशरहित।
**अंधेरी-कोठरी** स्त्री० (हि) १-उदर। २-वह स्थान जिसके भीतर का कोई पता न चले।
**अंधोटी** स्त्री० (हि) घोड़े की आँख पर बांधा जाने वाला ढक्कन।
**अंधोटा** पुं० (हि) वह ढक्कन जो घोड़े, बैल आदि की आँखों पर बांधा जाता है।
**अंध्यार** पुं० (हि) अंधेरा।
**अंध्यारी** स्त्री० (हि) अंधियारी।
**अंब** स्त्री० (सं) माँ। अंबा। पुं० देखो 'आम'।
**अंबक** पुं० (सं) १-नेत्र। आंख। २-पिता।
**अंबख** पुं० (हि) १-नेत्र। २-पिता।
**अंबर** पुं० (सं) १-वस्त्र। २-आकाश। ३-बादल। पुं० (अ) ह्वेल मछली की आँतों में से निकलने वाला सुगंधित द्रव्य।
**अंबरडंबर** पुं० (सं) संध्या समय की लाली।
**अंबरबेलि** स्त्री० (हि) आकाश बेल।
**अंबराई** स्त्री० (हि) आम का बगीचा।
**अंबराव** पुं० (हि) वह बाग जिसमें आम के वृक्ष हों।
**अंबरी** वि० (हि) १-जिसमें अंबर या आम पड़ा या मिला हो। २-अंबर या आम की सुगंधि से युक्त।
**अंबरीष** पुं० (सं) १-भाड़। २-विष्णु। ३-शिव। ४-सूर्य। ५-एक सूर्यवंशी राजा का नाम।
**अंबष्ठ** पुं० (सं) १-पंजाब के मध्य भाग का प्राचीन नाम। २-इस देश का निवासी। ३-महावत।
**अंबा** स्त्री० (सं) १-माता। अम्मा। २-पार्वती। पुं० (हि) आम।
**अंबाड़ा** पुं० (हि) आमड़ा।
**अंबापोली** स्त्री० (हि) अमावट। अमरस।
**अंबार** पुं० (फा) राशि। ढेर।
**अंबारी** स्त्री० (फा) (हाथी का) हौदा।
**अंबालिका** स्त्री० (सं) १-माता। २-काशी राजा की छोटी लड़की।
**अंबिका** स्त्री० (सं) १-माता। २-पार्वती। दुर्गा। ३-काशी राजा की मझली कन्या।
**अंबिया** स्त्री० (हि) छोटा कच्चा आम।
**अंबिरथा** क्रि० वि० (हि) वृथा।
**अंबु** पुं० (सं) १-जल। २-चार की संख्या।
**अंबुज** पुं० (सं) १-कमल। २-बेंत। ३-शंख। ४-ब्रह्मा। वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला।
**अंबुद** पुं० (सं) १-बादल। २-नागरमोथा।
**अंबुधर** पुं० (सं) बादल।
**अंबुधि, अंबुनाथ, अंबुनिधि** पुं० (सं) समुद्र।
**अंबुपति** पुं० (सं) १-सागर। २-वरुण।
**अंबुरुह** पुं० (सं) कमल।
**अंबुशायी** पुं० (सं) विष्णु।
**अंबोधि** पुं० (सं) समुद्र।
**अंभ** पुं० (सं) १-जल। २-चार की संख्या। ३-आकाश। ४-पितृलोक।
**अंभसार** पुं० (हि) मोती।
**अंभोज** पुं०(सं) १-कमल। २-चन्द्रमा। ३-कपूर। ४-शंख। ५-सारस पक्षी।
**अंभोद** पुं० (सं) बादल।
**अंभोद-नाद** पुं० (सं) मेघनाद।
**अंभोधि, अंभोनिधि** पुं० (सं) समुद्र। सागर।
**अंभोरुह** पुं० (सं) कमल।
**अँवरा, अंवला** पुं० (हि) आँवला।
**अंवदा** वि० (हि) औंधा।
**अंश** पुं० (सं) १-खंड। भाग। २-हिस्सा। बांट। ३-पृथ्वी की ३६०वां भाग। ४-भिन्न की रेखा की ऊपर की संख्या।
**अंशक** पुं० (सं) १-भाग। टुकड़ा। २-हिस्सेदार। वि० (सं) विभाजक।
**अंशतः** क्रि० वि० (सं) किसी अंश या कुछ अंशों में ही।
**अंशदाता** पुं० (सं) वह जो औरों के साथ सहायता आदि के रूप में अपना भाग या अंश देता हो। (कान्ट्रिब्यूटर)।
**अंशदान** पुं० (सं) अपना भाग या अंश सहायता आदि के रूप में देना। (कान्ट्रिब्यूशन)।
**अंशधर** पुं० (सं) हिस्सेदार। (शेयरहोल्डर)।
**अंश-पत्र** पुं० (सं) वह कागज या पत्र जिसमें साझियों का हिस्सा लिखा हो। भाग-नामा।
**अंश-मापन** पुं० (सं) किसी वस्तु के अंश को नापना।
**अंशापन** पुं० (सं) किसी वस्तु के अंशों का विभाजन।
**अंशावतार** पुं० (सं) जो पूर्ण अवतार न हो।
**अंशी** पुं० (सं) हिस्सेदार।
**अंशु** पुं० (सं) १-सूर्य की किरण। २-सूत। ३-तागे का सिरा।
**अंशुक** पुं० (सं) १-वस्त्र। २-रेशमी वस्त्र। ३-मलमल।
**अंशुमालि, अंशुमान** पुं० (सं) सूर्य।
**अंशुमाला** स्त्री० (सं) सूर्य किरणों का समूह।
**अंशुमाली** पुं० (सं) सूर्य।
**अंस** पुं० (हि) १-देखो 'अंश'। २-कन्धा।
**अँसुआ** पुं० (हि) आंसू। अश्रु।
**अँसुआना** क्रि० (हि) आंसू से आँखों का भर जाना।
**अंहुठा** पुं० (हि) लकड़ी का गज।
**अउ** संयो० अव्य० (हि) और। तथा।
**अउठा** पुं० (हि) लकड़ी का गज जो दो हाथ लम्बा होता है।
**अउर** संयो० अव्य० (हि) और।

**अऊत** वि० (हि) निस्सन्तान । निपूता ।
**अऊलना** क्रि० (हि) १-गरमी पड़ना । जलना । २-छीलना ।
**अएरना** क्रि० (हि) अंगीकार या स्वीकार करना ।
**अकंटक** वि० (स) कंटकरहित । निर्विघ्न ।
**अक** पुं० (सं) १-पाप । २-दुःख ।
**अकच्छ** वि० (हि) नंगा व्यभिचारी ।
**अकड़** स्त्री० (हि) १-ऐंठ । तनाव । २-घमण्ड ।
**अकड़तकड़** पुं० (हि) १-ऐंठन । २-घमण्ड ।
**अकड़ना** क्रि० (हि) १-सूखकर सिकुड़ना तथा कड़ा हो जाना । २-ठिठुरना । ३-तनना । ४-हठ या जिद करना । ५-शेखी या घमण्ड दिखाना ।
**अकड़बाई** स्त्री० (हि) शरीर की ऐंठन । २-वात रोग
**अकड़बाज** वि० (हि) घमण्डी । अभिमानी ।
**अकड़बाजी** स्त्री० (हि) अभिमान । शेखी ।
**अकड़ाव** पुं० (हि) ऐंठन । तनाव ।
**अकड़ैत** वि० (हि) अकड़बाज ।
**अकत** वि० (हि) समूचा । समग्र । सम्पूर्ण । क्रि० वि० (हि) पूरी तरह से ।
**अकथ** वि० (हि) अवर्णनीय ।
**अकथनीय** वि० (सं) जिसका वर्णन न हो सके । जो कही न जा सके । अवर्णनीय ।
**अकथ्य** वि० (सं) न कहने योग्य ।
**अकधक** पुं० (हि) १-भय । २-आशङ्का । असमंजस
**अकनना** क्रि० (हि) १-सुनना । २-चोरी से दूसरों की बातें सुनना ।
**अकना** क्रि० (हि) उकताना ।
**अकबक** स्त्री० (हि) प्रलाप । वि० (हि) चकित । भौंचक्का
**अकबकाना** क्रि० (हि) १-भौंचक्का होना । २-घबराना
**अकबर** वि० (फा) बड़ा । महान । पुं० एक मुसलमान शासक का नाम ।
**अकबरी** स्त्री० (अ) १-एक प्रकार की मिठाई । २-पुराने ढंग की तलवार विशेष । वि० (अ) अकबर शासक और उससे सम्बन्ध रखने वाली ।
**अकर** वि० (स) १-न करने योग्य । दुष्कर । २-बिना हाथ का । ३-जिसका महसूल या कर न लगे ।
**अकरकरा** पुं० (हि) पौधा विशेष जो औषधि के काम में आता है ।
**अकरखना** क्रि० (हि) १-खींचना । तानना । २-चढ़ाना ।
**अकरण** पुं० (सं) १-कर्म का अभाव । २-कर्त्तव्य को न निभाना । ३-करने पर भी न किये की सी तरह हो जाना । ४-ईश्वर । वि० (स) १-न करने लायक । २-अनुचित । ३-कठिन ।
**अकरणीय** वि० (सं) न करने योग्य ।
**अकरन** वि० (हि) अकरणीय ।
**अकरा** वि० (हि) १-महँगा । २-अमूल्य ।
**अकराथ** वि० (हि) अकारथ । व्यर्थ ।
**अ-करार** वि० (हि) १-अनिश्चित । २-मर्यादाहीन ।
**अकरार** पुं० (हि) १-इकरार । २-करार ।
**अकरास** स्त्री० (हि) १-अंगड़ाई । २-सुस्ती ।
**अकरासू** वि० (हि) जो गर्भ से हो ।
**अकरुण** वि० (सं) करुणाहीन । कठोर ।
**अकर्तव्य** वि० (सं) अनुचित ।
**अकर्ता, अकर्त्ता** वि० (सं) कुछ न करने वाला । पुं० (सं) सांख्य के मत में वह पुरुष जो सब कुछ करने पर भी कर्मरहित माना जाता है ।
**अकर्तृत्व** पुं० (सं) कुछ न करने का भाव ।
**अकर्म** पुं० (सं) १-बुरा काम । २-कर्म का अभाव ।
**अकर्मक** वि० (सं) व्याकरण में वह क्रिया जिसका कर्म न हो ।
**अकर्मण्य** वि० (सं) निकम्मा ।
**अकर्मण्यता** स्त्री० (सं) निकम्मापन ।
**अकर्मा** वि० (सं) काम न करने वाला । निकम्मा ।
**अकर्षण** पुं० (सं) खिंचाव । आकर्षण ।
**अकलंक** वि० (सं) निष्कलंक । दोषरहित ।
**अकलंकता** स्त्री० (सं) निष्कलंकता । पवित्रता ।
**अकलंकी** वि० (हि) निर्दोष ।
**अकलंकित** वि० (सं) निर्दोष ।
**अकल** वि० (स) १-अंगहीन । २-पूरा । समूचा । ३-निर्गुण । पु० (सं) ईश्वर । स्त्री० देखो 'अक्ल' ।
**अकलुष** वि० (स) १ जिसमें किसी प्रकार का कलुष या मैल न हो । २-शुद्ध । ३-निर्मल ।
**अकल्पित** वि० (स) १-अकृत्रिम । वास्तविक । २-जिसकी कल्पना भी न की गई हो ।
**अकल्याण** पुं० (स) अशुभ । अमंगल ।
**अकवन** पुं० (स) आक । मदार ।
**अकस** पुं० (अ) बैर । शत्रुता ।
**अकसना** क्रि० (हि) बैर या शत्रुता करना ।
**अकसर** क्रि० वि० (अ) प्रायः । बहुधा । क्रि० वि० (हि) अकेले ।
**अकसीर** वि० (अ) अत्यधिक गुणकारी । अचूक । स्त्री० (अ) सब रोगों के लिये अचूक दवा ।
**अकस्मात्** क्रि० वि० (स) १-अनायास । अचानक । सहसा । २-संयोगवश । अकारण । दैवयोग से ।
**अकह** वि० (हि) न कहने योग्य । अनुचित ।
**अकहुआ** वि० (हि) अकथनीय ।
**अकांड** वि० (स) बिना डाल का ।
**अकांड-तांडव** पुं० (सं) बिना कारण उपद्रव या झगड़ा ।
**अकाज** पुं० (हि) १-बुरा काम । २-हानि ।
**अकाजना** क्रि० (हि) १-हानि होना । २-जाता रहना ।
**अकाजी** वि० (हि) विघ्नकारी ।
**अकाट्य** वि० (सं) जो काटा न जा सके ।

**अकाथ** क्रि० वि० (हि) अकारथ। वृथा। वि० अकथ्य।
**अ-कादर** वि० (हि) जो कादर या कायर न हो। शूर-वीर।
**अ-काम** वि० (सं) कामनारहित। निस्पृह। क्रि० वि० (सं) व्यर्थ।
**अकामतः** क्रि० वि० (सं) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।
**अकामिक** वि० (सं) जिसकी कामना न की गई हो।
**अकामी** वि० (सं) निस्पृह।
**अकाय** वि० (सं) १-काया या देह रहित। अशरीरी। २-निराकार। ३-अजन्मा।
**अकार** पुं० (सं) 'अ' अक्षर अथवा उसकी मात्रा। पुं० (हि) आकार।
**अकारज** पुं० (हि) अकाज। कार्य की हानि।
**अकारण** वि० (सं) बिना कारण या वजह। निष्प्रयोजन।
**अकारथ** क्रि० वि० (हि) व्यर्थ।
**अकारन** वि० (हि) अकारण।
**अकार्य** पुं० (सं) अकर्म।
**अकाल** पुं० (सं) १-कुसमय। २-दुर्भिक्ष। वि० (सं) अविनाशी।
**अकाल-कुसुम** पुं० (सं) १-बिना ऋतु के विकसित हुआ फूल। २-असामयिक-वस्तु।
**अकाल-पुरुष** पुं० (सं) सिक्ख धर्मानुसार ईश्वर का नाम।
**अकाल-मृत्यु** स्त्री० (सं) अचानक या अनायास होने वाली मृत्यु। अपमृत्यु।
**अकालवृष्टि** पुं० (सं) असमय की बरसात।
**अकालिक** वि० (सं) असामयिक।
**अकाली** पुं० (हि) सिख सम्प्रदाय में एक दल का नाम
**अकाव** पुं० (हि) आक। मदार।
**अकाश-दिपक** पुं० (हि) आकाश दीप।
**अकास** पुं० (हि) आकाश। आसमान।
**अकास-दीया** पुं० (हि) वह दीया जो बाँस के सहारे बड़ी ऊँचाई पर लटका दिया जाता है। आकाश दीप
**अकास-बानी** स्त्री० (हि) आकाशवाणी।
**अकास-बेल** स्त्री० (हि) अमरबेल।
**अकासी** स्त्री० (हि) १-चील। २-ताड़ी (मादक पदार्थ)
**अकिंचन** वि० (सं) १-जिसके पास कुछ भी न हो। निर्धन। २-साधारण या मामूली।
**अकिंचनता** स्त्री० (सं) निर्धनता।
**अकिंचित्** वि० (सं) नगण्य। तुच्छ।
**अकि** अव्य० या। अथवा।
**अकिल** स्त्री० (हि) अक्ल। बुद्धि।
**अकिल-दाढ़** स्त्री० (हि) दाँत विशेष जो वयस्क मनुष्य के निकलता है।
**अकीरत** स्त्री० (हि) अकीर्ति।
**अकीर्त्ति** स्त्री० (सं) अपकीर्त्ति या अपयश। बदनामी।
**अकीर्त्तिकर** वि० (सं) अपयश देने वाली। बदनामी
**अकुंठ** वि० (सं) तेज। तीक्ष्ण।
**अकुताना** क्रि० (हि) उकताना। ऊबना।
**अकुल** पुं० (सं) १-छोटा या बुरा कुल। २-जिसके कुल में कोई न हो।
**अकुलाना** क्रि० (हि) १-घबड़ाना या आकुल होना। २-ऊबना। ३-शीघ्रता करना।
**अकुलिनी** वि० (हि) कुलटा।
**अकुलीन** वि० (सं) नीच कुल या वंश का। कुलहीन।
**अकुशल** पुं० (सं) अमंगल। वि० (सं) अनाड़ी।
**अकूट** वि० (सं) सच्चा। असली।
**अकूत** वि० (हि) १-जो कूता न जा सके। २-अपरमित। क्रि० वि० (हि) १-आप से आप। २-अचानक।
**अकूल** वि० (सं) जिसका कोई तट, किनारा अथवा अन्त न हो। असीम।
**अकूल पाथार** पुं० (हि) महासागर।
**अकूहल** वि० (हि) अत्यधिक।
**अकृत** वि० (सं) १-बिना किया हुआ। २-बिगड़ा हुआ। ३-कर्महीन।
**अकृतकार्य** वि० (सं) विफल।
**अकृतकाल** वि० (सं) जिसके लिये कोई काल या समय न हो। बे-मियाद।
**अकृतघ्न** वि० (सं) कृतज्ञ।
**अकृतज्ञ** वि० (सं) उपकार न मानने वाला। कृतघ्न।
**अकृति** वि० (सं) अकर्मण्य। निकम्मा।
**अकृती** वि० (सं) १-अकर्मण्य। २-जिसने कुछ भी न किया हो।
**अकृत्य** पुं० (सं) निकम्मा काम।
**अकृत्रिम** वि० (सं) १-प्राकृतिक। नैसर्गिक। २-वास्तविक। ३-हार्दिक।
**अ-कृषिक** वि० (सं) कृषि से सम्बन्ध न रखने वाली। (नानएग्रिकलचरल)।
**अकृषित** वि० (सं) बिना बोया या जोता हुआ। (अन-कल्टिवेटेड)।
**अकेल, अकेला** वि० (हि) १-एकाकी। २-जिसके जोड़ का अन्य कोई न हो। ३-एकान्त।
**अकेले** क्रि० वि० (हि) १-एकाकी। २-केवल। सिर्फ।
**अकेहरा** वि०(हि) एक परत का। दोहरे का एक भाग।
**अकोट** वि० (हि) १-करोड़ों। २-अत्यधिक।
**अकोतर-सौ** वि० (हि) एक सौ एक।
**अकोर** पुं० (हि) गोद। अँकोर।
**अकोरना** क्रि० (हि) भुनना। तलना।
**अकोरी** स्त्री० [illegible] अँकवार। गोद।
**अकोसना** क्रि० [illegible]

भला कहना।

**अकौआ** पुं० (हि) १-आक। मदार। २-गले के अंदर की घण्टी। कौआ।

**अकौटा, अकौता** पुं० (हिं) वह डंडा जिस पर पहिया घूमता है। धुरी।

**अकौशल** पुं० (सं) दक्षता या कुशलता का अभाव। (इन-एफिशिएन्सी)।

**अक्कड़** पुं० (शामी) १-तीन हजार पूर्व के एक सुन्दर नगर का नाम जो मेसोपोटामिया में था। २-उस-नगर का निकटवर्ती प्रदेश।

**अक्कड़ी** वि० (हि) अक्कड़नगर या प्रदेश से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० (हि) अक्कड़ का निवासी। स्त्री० (हि) अक्कड़ की भाषा।

**अक्खड़** वि०(हि) १-उद्धत। २-झगड़ालू। ३-निर्भय। ४- उजड्ड। अशिष्ट। ५-अपनी बात पर अड़ा रहने वाला तथा किसी की न सुनने वाला।

**अक्खड़पन** पुं० (हि) अक्खड़ होने का भाव।

**अक्खर** पुं० (हिं) अक्षर।

**अक्त** वि० (स) युक्त।

**अक्रम** वि० (सं) १-क्रमरहित। २-वह जो कोई कार्य न करे अथवा जिसका कार्य रुक गया हो।

**अक्रमातिशयोक्ति** पुं० (सं) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद।

**अक्रियमाण** वि०(सं) १-कार्यान्वित न हो। २-जिसकी क्रिया या कार्य शिथिल या स्थिर हो। (इनऑपरेटिव)

**अक्लित** वि० (हि) १-असंपादित। २-विफल।

**अक्रूर** वि० (सं) दयालु। पु० (सं) श्रीकृष्ण के चाचा का नाम।

**अक्रोध** पुं० (स) सहिष्णुता।

**अक्ल** स्त्री० (अ) समझ। ज्ञान। बुद्धि।

**अक्ल-मंद** पुं० (अ+फा०) चतुर। बुद्धिमान। समझ-दार।

**अक्लमंदी** स्त्री०(अ+फा०) विज्ञता, बुद्धिमानी, समझ-दारी।

**अक्ष** पुं० (सं) १-पासा जिससे जूआ खेलते हैं। २-पहिये की धुरी। ३-वह कल्पित सीधी रेखा जो आरपार दोनों ध्रुवों से मिलती है तथा जिस पर पृथ्वी घूमती है। ४-रुद्राक्ष। ५-आँख। ६-इन्द्रिय।

**अक्षक** वि० (सं) जुआरी।

**अक्ष-क्रीड़ा** स्त्री० (स) चौपड़ का खेल। चौसर।

**अ-क्षणिक** वि० (स) स्थिर।

**अक्षत** वि० (सं) बिना टूटा हुआ। अखण्डित। पुं० (सं) १-बिना टूटे चावल जो पूजा के काम में आते हैं। २-जौ। ३-गणित में पूर्णाङ्क जो भिन्न न हो।

**अक्षतयोनि** पुं० (स) १-वह योनि जिसमें वीर्यपात न हुआ हो। २-वह कन्या जिसने पुरुष के साथ समा-गम न किया हो।

**अक्ष-पटल** पुं० (स) १-प्राचीन काल में भारत के राज्य के आय-व्यय के लेखों का मुख्य विभाग। २-इस विभाग का मुख्य अधिकारी।

**अक्षपाद** पुं० (स) १-न्यायशास्त्र के रचयिता गौतम-ऋषि। २-नैयायिक, तार्किक।

**अक्षम** वि० (स) १-जिसमें क्षमता न हो, असमर्थ। (डिसएबल्ड)। जिसमें किसी काम के करने की योग्यता न हो। (इनकैपेबुल)। २-क्षमारहित।

**अक्षमता** स्त्री० (स) १-अक्षम होने का भाव। असमर्थता। (डिसएबिलिटी) २-असहिष्णुता।

**अक्षम्य** वि० (स) क्षमा न करने योग्य।

**अक्षय** वि० (स) अविनाशी।

**अक्षय-तृतीया** स्त्री० (स) आखातीज। वैशाख शुक्ल की तृतीया।

**अक्षय-नवमी** स्त्री० (स) कार्तिक शुक्ला नवमी।

**अक्षय-वट** पुं० (स) प्रयाग तथा गया का बरगद का वृक्ष।

**अक्षया** स्त्री० (सं) सोमवती अमावस्या।

**अक्षय्य** वि० (स) जिसका क्षय न हो।

**अक्षर** पुं० (स) १-अकारादि वर्ण, हरफ। २-आत्मा ३-ब्रह्मा। ४-मोक्ष। वि० (स) अविनाशी, नित्य।

**अक्षर-क्रम** पुं० (स) वर्णमाला के क्रमानुसार शब्दों नामों आदि के रखने का क्रम। (एल्फाबेटिक आर्डर)

**अक्षर-न्यास** पुं० (सं) १-लिखावट। २-तन्त्रशास्त्र की एक क्रिया जिसमें मन्त्र के एक-एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक, कान आदि छूते हैं।

**अक्षरमाला** स्त्री० (स) वर्णमाला

**अक्षर-योजना** स्त्री० (स) कुछ अक्षर इस प्रकार बैठाना कि उनसे विशेष अर्थ निकले।

**अक्षर-विन्यास** पुं० (स) लेख। लिपि।

**अक्षरशः** क्रि० वि० (स) अक्षर-अक्षर। ज्यों का त्यों।

**अक्षरारम्भ** पुं० (स) पहली बार अक्षरों का ज्ञान कराना या पढ़ना आरम्भ करना।

**अक्षरी** स्त्री० (सं) शब्द में आने वाले अक्षरों का क्रम। हिज्जे। (स्पेलिंग)।

**अक्ष-रेखा** स्त्री० (सं) धुरी की रेखा।

**अक्षरौटी** स्त्री० १-अखरौटी, वर्णमाला। २-वे पद जो वर्णमाला के क्रमानुसार होते हैं।

**अक्ष-शाला** स्त्री० (स) वह विभाग जिसके अधिकार में सोने, चाँदी तथा टकसाल का प्रबन्ध रहता था।

**अक्षांश** पुं० (सं) भूगोल में पूर्व से पश्चिम पृथ्वी पर कल्पित समानान्तर रेखाएं। (लैटिट्यूड की डिग्री)।

**अक्षि** स्त्री० (सं) आंख।

**अक्षिगत** वि० (सं) आंख पर चढ़ा हुआ (वैरी)।

**अक्षुण्ण** वि० (स) बिना टूटा हुआ, अखण्ड।

**अक्षोट** पुं० (स) अखरोट।

**अक्षोनि, अक्षोनी** स्त्री० (स) अक्षौहिणी।

**अक्षौहिणी** स्त्री० (स) वह सेना जिसमें १०६३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ तथा २१८७० हाथी हों।

**अक्स** पु० (अ) १-प्रतिबिम्ब, परछाईं। २-चित्र।

**अक्सर** क्रि० वि० (अ) प्रायः, बहुधा।

**अक्सीर** देखो 'अकसीर'।

**अखंग** वि० (हि) [illegible]।

**अखंड** वि० (स) १-जिसके टुकड़े न हों, सम्पूर्ण, पूरा। २-जिसका क्रम न टूटे। ३-निर्विघ्न।

**अखंडनीय** वि० (स) १-जिसका खंड या टुकड़ा न हो सके। २-दृढ़। पुष्ट।

**अखंडल** वि० (हि) देखो 'अखंड'। पु० (स) इन्द्र।

**अखंडित** वि० (स) १-अविच्छिन्न। २-समूचा, पूरा। ३-बाधारहित।

**अखज** वि० (हि) [illegible]।

**अखड़** वि० (हि) [illegible], अनाड़ी।

**अखड़ा** पु० (हि) [illegible]।

**अखड़ैत** पु० (हि) १-पहलवान। २-[illegible] विषय में दक्ष।

**अखनी, अखनीज** [illegible] [illegible]।

**अखनी** [illegible] [illegible]।

**अखबार** पु० (अ) [illegible]।

**अखय** [illegible]।

**अखर** पु० (हि) अक्षर।

**अखरना** [illegible] बुरा लगना। खलना।

**अखरा** [illegible] पु० (हि) १-अक्षर। [illegible]।

**अखरावट** [illegible]।

**अखरोट** [illegible] जो मेवों में गिना जाता है।

[illegible]

**अखाड़ा** [illegible] १-कुश्ती [illegible] का स्थान। २-[illegible]। ३-[illegible] दिखाने वाले तथा [illegible]।

**अखाड़े** [illegible] में करतब दिखाने [illegible]।

**अखाड़** पु० (स) १-[illegible]। २-[illegible]।

[illegible]

[illegible] न [illegible] अखाद्य।

[illegible] के उपर रखा मिट्टी का लौंदा।

**अखारा** पु० (हि) अखाड़ा।

**अखिल** वि० (स) समग्र। समस्त। पु० (सं) संसार।

**अखिलेश, अखिलेश्वर** पु० (स) सबका स्वामी ईश्वर।

**अखीन** वि० (हि) न घटने वाला। स्थिर।

**अखीर** पु० (फा) १-अन्त। छोर। २-समाप्ति।

**अखुटित** वि० (हि) अटूट। क्रि० वि० (हि) लगातार।

**अखूट** वि० (हि) अक्षय। अखंड।

**अखेट** पु० (हि) अखेट।

**अखेटक** पु० (हि) आखेटक।

**अखै** वि० (हि) अक्षय।

**अखैबर** पु० (हि) अक्षयवट।

**अखोटा** पु० (हि) कान का एक प्रकार गहना।

**अखोर** वि० (हि) १-भद्र। २-सुन्दर। ३-निर्दोष। वि० (फा) निकम्मा। पु० १-कूड़ा-करकट आदि निकम्मी वस्तु। २-[illegible] या चारा।

**अख्तियार** पु० (अ) १-अधिकार। २-अधिकार-क्षेत्र। ३-[illegible]। ४-प्रभुत्व।

**अख्यान** पु० (हि) आख्यान।

**अग** वि० (सं) १-अचल, स्थावर। २-टेढ़ा चलने वाला। पु० (सं) १-वृक्ष। २-पर्वत। ३-सूर्य।

**अगज** वि० (सं) १-पर्वत से उत्पन्न होने वाला। २-पर्वत पर होने या पाये जाने वाला। पहाड़ी। पु० (सं) १-शिलाजीत। २-हाथी।

**अग-जग** वि० (हि) चलने और न चलने वाला, सब।

**अगटना** क्रि० (हि) एकत्रित होना।

**अगड़** पु० (हि) [illegible]।

**अगड़धत्त, अगड़धत्ता** वि० (हि) १-ऊँचा, लम्बा और तगड़ा। २-श्रेष्ठ।

**अगड़बगड़** वि० (हि) १-अंडबंड। २-व्यर्थ का काम।

**अगण** पु० (हि) छन्दशास्त्र के मतानुसार चार निषिद्ध गण जगण, रगण, सगण और तगण।

**अगणित** वि० (सं) अगणनीय, असंख्य।

**अगण्य** वि० (सं) १-जो गिना न जा सके, अत्याधिक। २-तुच्छ, नगण्य।

**अगता** वि० (हि) अप्रिय।

**अगति** स्त्री० (सं) १-गतिहीन होना। २-नियमानुसार मृतक का संस्कार आदि न होना। वि० (सं) अचल।

**अगतिक** वि० (सं) १-अशरण, निराश्रय। २-मरने पर जिसका अंत्येष्टि संस्कार न हुआ हो।

**अगत्तर** वि० (हि) आने वाला।

**अगत्या** क्रि० वि० (सं) १-विवश या लाचार होकर। २-सहसा। अकस्मात्।

**अगद** वि० (सं) १-नीरोग। २-निष्कंटक।

**अगन** स्त्री० (हि) आग, अग्नि। पु० (हि) देखो

**अगनइता**, 'अगण' ।
**अगनइता** स्त्री० (हि) अग्नि कोण या दिशा ।
**अगनि** स्त्री० (हि) अग्नि । आग ।
**अगनिउ** पुं० (हि) उत्तर-पूर्वी कोण, ... दिशा ।
**अगनी** स्त्री० (हि) आग, अग्नि । वि० (हि) अगणित ।
**...न, अगनेत** पुं० (हि) अग्नि-कोण ।
**अगम** वि० (हि) १-दुर्गम । २-कठिन । ३-अथाह । ४-विकट । ५-अधिक ।
**अगमन** क्रि० वि० (हि) आगे से आगे ।
**अगमना** क्रि० वि० (हि) आगे चलते ।
**अगमनीया** वि० (सं) न गमन करने योग्य (स्त्री) ।
**अगमानी** स्त्री० (हि) अगवानी । पुं० (हि) अगुआ । सरदार ।
**अगम्य** वि० (सं) १-विकट । २-दुर्गम । ३-अथाह ।
**अगम्या** स्त्री० (सं) न गमन करने योग्य (स्त्री) । स्त्री० (स) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध है, जैसे—गुरुपत्नी, राजपत्नी, मां, कन्या आदि ।
**अगर** अव्य० (फा) यदि । पुं० (सं) एक सुगन्धित वृक्ष ।
**अगरचे** अव्य० (फा) यद्यपि ।
**अगरना** अव्य० (हि) आगे बढ़ना ।
**अगरबत्ती** स्त्री० (हि) सुगन्धित पदार्थों से लिपटी सींक जो सुगन्ध के निमित्त जलाई जाती है ।
**अगरा** वि० (हि) १-अगला । २-श्रेष्ठ । ३-अधिक ।
**अगराना** क्रि० (हि) १-प्यार अथवा दुलार में करना । २-अंगड़ाना ।
**अगरी** स्त्री० ... १-किवाड़ की आगल । २-अनुचित बात ।
**अगरु, अगरू** पुं० (स) अगर की लकड़ी ।
**अगरो** वि० (हि) १-अगला । २-बड़ा । ३-चतुर । ४-... ।
**अगल-बगल** क्रि० वि० (हि) आस-पास ।
**अगला** वि० (हि) १-आगे का । २-पहिला । ३-प्राचीन ४-आगामी । ५-एक के बाद दूसरा ।
**अगवना** क्रि० (हि) अगवानी करना ।
**अगवाई** स्त्री० (हि) अगवानी, अभ्यर्थना ।
**अगवाड़ा** पुं० (हि) घर के आगे का भाग ।
**अगवान** पुं० (हि) वह जो आगे बढ़कर स्वागत करता है । अभ्यर्थी ।
**अगवानी** स्त्री० (हि) आगे जाकर या बढ़कर स्वागत करना ।
**अगवार** पुं० (हि) १-अगवाड़ा । २-खेतिहर मजदूर के लिये खलिहान से निकाला हुआ भाग ।
**अगसरन** क्रि० (हि) अग्रसर होना, आगे बढ़ना ।
**अगसार** क्रि० वि० (हि) आगे
**अगस्त्य** पुं० (सं) १-एक ऋषि का नाम । २-भादों मास में उदय होने वाला तारा । ३-एक वृक्ष ।
**अगह** वि० (हि) १-अग्राह्य । २-चंचल ।
**अगहन** पुं० (हि) कार्तिक के बाद आने वाला महीना, मंगसिर ।
**अगहनिया, अगहनी** वि० (हि) अगहन मास में काटा या तैयार होने वाला (अन्न) ।
**अगहर** क्रि० वि० (हि) १-आगे से । २-पहिले से ।
**अगहुँड़** वि० (हि) आगे चलने वाला ।
**अगाऊ, अगाऊ** क्रि० वि० (हि) १-आगे से । २-पहिले से
**अगाऊ** वि० (हि) (धन) जो किसी कार्य के निमित्त पहिले से दिया जाय, अग्रिम, पेशगी । (एडवांस)
**अगाड़** ... आगे का भाग ।
**अगाड़ी** ... क्रि० वि० (हि) १-आगे । २-भविष्य में । ३-घोड़े के गरदन में बांधने की रस्सी ।
**अगाध** वि० (सं) १-अथाह । २-अपार । ३-जिसका कोई पार न पा सके ।
**अगान** देखो 'अज्ञान' ।
**अगार्म, अगार, अगारी** क्रि० वि० (हि) आगे । पहिले
**अगाह** वि० १-अथाह । २-बहुत । ३-गंभीर ।
**अगिंदाह** पुं० (हि) अग्निदाह ।
**अगिन** स्त्री० (हि) १-अग्नि, आग । २-एक प्रकार की घास । ३-चिड़िया विशेष । वि० (हि) अगणित । असंख्य ।
**अगिन-गोला** पुं० (हि) आग लगाने वाला गोला या बम ।
**अगिन-बोट** पुं० (हि) भाप के इंजिन द्वारा चलने वाली बड़ी नाव ।(स्टीमर) ।
**अगिनित** वि० (हि) अगणित
**अगिया** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की घास । २-एक बैताल का नाम । ३-एक पहाड़ी पौधा । ४-नीली चाय या अगिन नामक घास । वि० (हि) आग के समान जलन करने वाला ।
**अगियाना** क्रि० (हि) आग के समान जलना या जलन उत्पन्न करना ।
**अगिया-बैताल** पुं० (हि) १-विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक का नाम । २-मुख से आग फेंकने वाला भूत ।
**अगियारी** स्त्री० (हि) आग में धूप आदि सुगंधित द्रव्य डालने की क्रिया ।
**अगियासन** पुं० (हि) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्ती के छूने से जलन होती है ।
**अगिला** वि० (हि) अगला ।
**अगिलाई** स्त्री० (हि) १-अग्निदाह । २-आपस में लड़ाई झगड़ा करना ।
**अगिहाना** पुं० (हि) चूल्हा, अंगीठी ।
**अगीतपछीप** पुं० (हि) अगवाड़ा-पिछवाड़ा । क्रि० वि० (हि) आगे-पीछे ।
**अगुआ** पुं० (हि) १-अग्रणी । २-नेता । मुखिया ।

३-मार्गदर्शक।
**अगुआई** स्त्री० (हि) १-आगे होने का भाव। २-नेतृत्व। ३-मार्गदर्शन।
**अगुआना** क्रि० (हि) १-आगे होना या बढ़ना। २-अगुआ बनना।
**अगुआनी** स्त्री० (हि) अगवानी, अभ्यर्थना।
**अगुण** वि० (सं) १-गुणरहित, निर्गुण। २-मूर्ख। पुं० (हि) अवगुण, दोष।
**अगुताना** क्रि० (हि) उकताना।
**अगुन** वि० (हि) १-गुणहीन। २-नासमझ।
**अगुमन** क्रि० वि० (हि) आगे, पहिले।
**अगुरु** वि० (सं) १-हल्का। २-निगुरा।
**अगुवा** पुं० (हि) अगुआ।
**अगुसरना** क्रि० (हि) आगे बढ़ना।
**अगुसारना** क्रि० (हि) आगे बढ़ाना।
**अगेर** क्रि० वि० (हि) आगे।
**अगेला** पुं० (हि) वह आभरण जो हाथ में सबसे आगे पहिना जाता है। वि० (हि) आगे वाला।
**अगेह** वि० (सं) बिना घरबार का।
**अगोई** वि० (हि) १-जो छिपा न हो। २-प्रकट।
**अगोचर** वि० (सं) जो इन्द्रियों से न जाना जा सके।
**अगोट** स्त्री० (हि) आड़, ओट।
**अगोटना** क्रि०(हि) १-रोकना। २-कैद करना। ३-छिपाना। ४-चारों तरफ से घेरना।
**अगोता** क्रि० वि० (हि) आगे, सामने।
**अगोरदार** पुं० (हि) पहरेदार।
**अगोरना** क्रि० (हि) १-बाट जोहना। २-पहरा देना। ३-रोकना।
**अगोरा, अगोरिया** पुं० (हि) रखवाला।
**अगोही** स्त्री० (हि) ढेंकना। पुं० (हि) नुकीले सींग-वाला बैल।
**अगौड़ी** स्त्री० (हि) ईख के ऊपर का भाग। अगाव।
**अगौंहैं** क्रि० वि० (हि) आगे।
**अगौढ़** पुं० (हि) पेशगी।
**अगौनी** स्त्री० (हि) अगवानी। क्रि० वि० (हि) आगे।
**अगौला** पुं० (हि) ईख के ऊपर का नीरस भाग।
**अग्नि** स्त्री० (सं) १-आग। २-पाचन शक्ति। ३-पूर्व तथा दक्षिण के बीच का कोण।
**अग्निकण** पुं० (सं) चिनगारी, स्फुलिंग।
**अग्नि-कर्म** पुं० (सं) १-अग्निहोत्र। २-शवदाह।
**अग्नि-कवच** वि० (सं) देखो 'अग्निसह'।
**अग्नि-कांड** पुं० (सं) ऐसा आग लगना जो सब ओर फैल जाय। (कानफ्लेगरेशन)।
**अग्निकोण** पुं० (सं) पूर्व तथा दक्षिण का कोण।
**अग्नि-क्रीड़ा** स्त्री० (सं) आतिशबाजी।
**अग्नि-चक्र** पुं० (सं) १-आग का चक्कर अथवा गोला। २-हठयोग के अनुसार 'कुण्डलिनी' का एक नाम।
**अग्निज** वि० (सं) १-अग्नि से उत्पन्न होने वाला। २-आग या उसकी गरमी से होने अथवा बनने वाला। (इग्नियस)।
**अग्नि-जीत** वि० (सं) देखो 'अग्निसह'।
**अग्निदाह** पुं० (सं) १-आग में जलाने का काम। २-शवदाह।
**अग्निदीपक** वि० (सं) पाचनशक्ति को बढ़ाने या जठराग्नि को प्रज्वलित करने वाला।
**अग्नि-दीपन** पुं० (सं) पाचनशक्ति को बढ़ाने वाली दवा।
**अग्निपरीक्षा** स्त्री० (सं) १-सोने चांदी आदि को आग में तपाकर खोटा-खरा देखना। २-अग्नि पर चल-कर दोषादोष की परीक्षा करना। ३-ऐसी कठिन परीक्षा या जांच, जिसमें सर्वसाधारण जल्दी पूरे न उतर सकें। (एसिड टेस्ट)।
**अग्नि-पुराण** पुं० (सं) अठारह पुराणों में से एक।
**अग्निपूजक** पुं० (सं) अग्नि को देवता के समान पूजने वाला, पारसी।
**अग्निबाण** पुं० (सं) वह बाण जिसके चलाने से अग्नि की ज्वाला प्रकट हो।
**अग्निमांद्य** पुं० (सं) भूख न लगने का रोग।
**अग्निमुख** पुं० (सं) १-देवता। २-ब्राह्मण। ३-प्रेत।
**अग्निरक्षक** वि० (सं) देखो 'अग्निसह'।
**अग्निरक्षण** पुं० (सं) वह क्रिया या ढंग जिसके द्वारा अग्नि से रक्षा की जा सके।
**अग्निवर्त** पुं० (सं) एक मेघ (पुराण)।
**अग्निवर्द्धक** वि० (सं) वह जिससे भूख बढ़े।
**अग्निवर्षा** स्त्री० (सं) १-आग बरसाना। २-गोलाबारी
**अग्निवाण** पुं० (सं) देखो 'अग्निबाण'।
**अग्नि-शिखा** स्त्री० (सं) आग की लपट।
**अग्नि-संस्कार** पुं० (सं) मुरदा जलाने का काम, दाह-क्रिया।
**अग्निसह** वि० (सं) (पदार्थ) जो अग्नि के प्रभाव से भी न जले और उसके असर या शक्ति से रक्षित रहे (फायरप्रूफ)।
**अग्निस्फुलिंग** पुं० (सं) आग की चिनगारी।
**अग्निहोत्र** पुं० (सं) वेदमंत्रों द्वारा अग्नि में आहुति डालने की क्रिया।
**अग्निहोत्री** पुं० (सं) वह जो यज्ञ, हवन आदि करता है
**अग्नीष्टक** स्त्री० (सं) ऐसी पक्की ईंटें जो रात-दिन आग में रहने पर भी खराब न हों।
**अग्न्यस्त्र** पुं० (सं) १-अग्निबाण। २-बन्दूक। ३-तोप पिस्तौल। ४-बमगोला।
**अग्य** वि० (हि) अज्ञानी, नासमझ।
**अग्या** स्त्री० (हि) आज्ञा।
**अग्यात** वि० (हि) अज्ञात।
**अग्यान** वि० (हि) अज्ञान।

**अग्र** वि० (सं) १-अगला। २-मुख्य, प्रधान क्रि० वि० (सं) आगे।
**अग्र-क्रम** पुं० (सं) १-क्रम विशेष में मिलने वाला प्रथम स्थान। २-जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है, हकसफा। (प्रिएम्प-शन)।
**अग्रगणनीय, अग्रगण्य** वि० (सं) १-प्रथम। २-श्रेष्ठ
**अग्रगामी** पुं० (सं) आगे चलने वाला व्यक्ति, नेता।
**अग्रगामी-दल** पुं० (सं) भारत का एक राजनैतिक दल जिसके संस्थापक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे (फार-वर्ड ब्लाक)।
**अग्रज** पुं० (सं) बड़ा भाई। ज्येष्ठ भ्राता। वि० (सं) १-जो सब से पहले जन्मा हो। २-श्रेष्ठ, उत्तम।
**अग्रजन्मा** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-ब्राह्मण। ३-बड़ा भाई।
**अग्रणी** पुं० (सं) अगुआ, मुखिया, नेता। वि० (सं) उत्तम, श्रेष्ठ।
**अग्रतर** वि० (सं) और आगे का या कहे हुए के बाद का। (फरदर)।
**अग्रदान** पुं० (सं) अग्रिम, पेशगी।
**अग्रदूत** पुं० (हि) वह जो किसी के आगमन की पहले से आकर सूचना दे। (हेरल्ड)।
**अग्रधर्षण** पुं० (सं) १-किसी राज्य अथवा देश पर किया गया प्रथम आक्रमण। २-बिना पूर्व सूचना के अकारण किसी देश पर किया गया आक्रमण, (एग्रेशन)।
**अग्र-पूजा** स्त्री० (सं) औरों से पहले की जाने वाली पूजा।
**अग्रयान** पुं० (सं) १-सेना का पहला धावा। २-आगे बढ़ती हुई फौज।
**अग्र-लेख** पुं० (सं) समाचार पत्रों में सम्पादक की ओर से दैनिक घटनाओं पर लिखा जाने वाला मुख्य लेख, (लीडिंग आर्टिकल)।
**अग्रवर्ती** वि० (सं) आगे रहने वाला, अगुआ।
**अग्रशोची** पुं० (सं) दूरदर्शी, दूरंदेश।
**अग्रसंधानी** स्त्री० (सं) यमराज की वही।
**अग्रसर** वि० (सं) आगे बढ़ा हुआ। पुं० (सं) १-अगुआ, नेता। २-प्रगतिशील।
**अग्रसरण** पुं० (सं) १-सेना आदि का आगे बढ़ना, (एडवांस)। २-आगे बढ़ना।
**अग्रसारण** पुं० (सं) १-आगे की ओर बढ़ने की क्रिया या भाव। २-किसी के निवेदन, प्रार्थना आदि उचित आदेश के निमित्त अपने बड़े अधि-कारी के पास भेजने का कार्य, (फारवर्डिंग)।
**अग्रसारित** वि० (सं) १-आगे बढ़ाया या भेजा हुआ २-(आवेदन पत्र आदि) जो आगे (किसी उच्चा-धिकारी के पास) भेज दिया गया हो। (फारवर्डेड)
**अग्रहायण** पुं० (सं) अगहन।
**अग्रासन** पुं० (सं) सबसे आगे का तथा ऊँचा आसन जो आदर और श्रद्धा व्यक्त करने के निमित्त दिया जाता है।
**अग्राह्य** वि० (सं) १-न ग्रहण करने योग्य। २-न लेने योग्य। ३-त्याज्य।
**अग्रिम** वि० (सं) १-अगाऊ, पेशगी। २-आगे-वाला, आगामी।
**अग्रिमधन** पुं० (सं) किसी वस्तु के मूल्य अथवा किसी कार्य के पारिश्रमिक का वह अंश जो करने वाले को उसके पूरा होने के पूर्व ही दे दिया जाता है। अगाऊ, (एडवाँस)।
**अघ** पुं० (सं) १-पाप। २-दुःख। ३-व्यसन।
**अघट** वि० (सं) १-न होने वाला। २-कठिन। ३-बेमेल, अनुपयुक्त।
**अघटन** पुं० (सं) १-न होना। २-असम्भव।
**अघटित** वि० (सं) १-जो घटित न हुआ हो। २-न होने लायक। ३-अनिवार्य। ४-अनुपयुक्त।
**अघमय** वि० (सं) पाप से परिपूर्ण।
**अघमर्षण** वि० (सं) पाप का नाश करने वाला।
**अघवाना** क्रि० (हि) १-भरपेट खिलाना। २-मन भरना।
**अघाई** स्त्री० (हि) अघाने का भाव, तृप्ति।
**अघाउ** पुं० (हि) अघाने या पेट-भर खाने का भाव, तृप्ति।
**अघात** पुं० (हि) आघात, प्रहार। वि० (हि) खूब, पेटभर।
**अघाती** वि० (हि) १-घात, प्रहार या नाश न करने वाला। २-विश्वसनीय।
**अघाना** क्रि० (हि) पेट-भर खाना। २-संतुष्ट या तृप्त होना। ३-प्रसन्न होना। ४-ऊबना। ५-पूर्णता को पहुँचना।
**अघाव** पुं० (हि) तृप्ति।
**अघासुर** पुं० (सं) एक असुर जो कंस का सेनापति था।
**अघी** वि० (सं) पापी।
**अघुण** वि० (हि) १-सूक्ष्म। २-अचिन्त्य।
**अघोर** वि० (हि) सौम्य, घोर या भीषण का उलटा।
**अघोरपंथ** पुं० (हि) अघोरियों का मत या संप्रदाय।
**अघोरपंथी, अघोरी** पुं० (हि) अघोर पंथ का अनुयायी। औघड़।
**अघोष** वि० (सं) १-नीरव। चुप। २-अल्प ध्वनि-युक्त। ३-व्याकरण के अनुसार वह वर्ण समूह जिसमें क, ख, च, छ, ट, ठ, तथा प, फ, श, स और ष हैं। (ब्रीथ्ड)।
**अघ्रान** पुं० (हि) १-सूँघना। २-अघाना।

**अघ्रानना** पुं० (हि) सूँघना।
**अचंभव** पु० (हि) अचंभा।
**अचंभा** पुं० (हि) १-विस्मय। २-अचरज की बात
**अचंभित** वि० (हि) चकित, विस्मित।
**अचंभो, अचंभौ** पुं० (हि) अचंभा, आश्चर्य
**अचक** वि० (हि) भरपूर, पूर्ण। पुं० (हि) आश्चर्य
**अचकन** स्त्री० (हि) एक प्रकार का बंद गले का लम्बा कोट।
**अचकरी** स्त्री० (हि) अशिष्टता।
**अचकाँ, अचका, अचक्का** क्रि० वि० (हि) अकस्मात् अचानक।
**अचगरा** वि० [illegible] दुष्ट, पाजी, नटखट।
**अचगरी** स्त्री० (हि) [illegible] पाजीपन, नटखटपना।
**अचना** क्रि० (हि) [illegible] पीना।
**अ-चपल** वि० (सं) [illegible] जिसमें चपलता न हो, गम्भीर। २-अ[illegible]।
**अ-चपली** स्त्री० [illegible] १-अ-चपल होने का भाव, गम्भीर। २-वह [illegible] चपलता के कारण किये जाते हैं। ३-वह [illegible] मनोविनोद के लिये की जाती। [illegible], क्रीड़ा।
**अचभौन** पु० (हि) [illegible] आश्चर्य।
**अचमन** पु० (हि) आचमन।
**अचयना** क्रि० (हि) [illegible] करना।
**अचर** वि० (स) स्थावर, जड़।
**अचरज** पुं० (हि) आश्चर्य, विस्मय।
**अचरा** स्त्री० (हि) देखो 'अँचरा'।
**अचरित** वि० (स) १-अप्रचलित। अछूता।
**अचल** वि० (स) १-जो अपनी जगह से चले या हिले नहीं। (इम्मूवेबुल)। २-स्थिर।
**अचल-संपत्ति** स्त्री० (स) अपनी जगह से न हटाई जाने वाली सम्पत्ति। स्थिर संपत्ति (इम्मूवेबुल-प्रॉपर्टी)
**अचला** वि० (स) न चलने वाली। स्थिर।
**अचवन** पुं० (हि) आचमन।
**अचवना** क्रि० (हि) १-आचमन करना। २-भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना तथा कुल्ली करना। ३-छोड़ देना।
**अचवाना** क्रि० (हि) आचमन कराना।
**अचाक** क्रि० वि० (हि) बिना पूर्व सूचना के, अकस्मात्
**अचाक,** [illegible] क्रि० वि० (हि) अचानक, अकस्मात्।
**अचानक** [illegible] (हि) बिना पूर्व सूचना के, अकस्मात्, सहसा।
**अचार** पुं० (फा) मसालों के साथ में कुछ दिन रखे गये एक [illegible] पुं० (हि) १-आचरण। २-चिरौंजी का पेड़।
**अचारज** पुं० (हि) आचार्य।
**अचारी** स्त्री० (हि) प्रकार विशेष जो आम का होता। पुं० (हि) आचार-विचार से रहने वाला व्यक्ति।
**अचाह** स्त्री० (हि) चाह या इच्छा का न होना। वि० (हि) जिसे किसी पदार्थ की इच्छा न हो।
**अचाहा** वि० (हि) १-न चाहा हुआ। अवांछित। २-जो प्रेमपात्र न हो।
**अचाही** वि० (हि) जिसे किसी बात या पदार्थ की इच्छा न हो। निस्पृह।
**अचिंत** वि० (स) चिन्तारहित। बेफिक्र।
**अचिंतनीय** वि० (स) १-जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। २-चिंता न करने योग्य।
**अचिंतित** वि० (स) १-बिना सोचा-विचारे, आकस्मिक २-निश्चिंत। बेफिक्र।
**अचिंत्य** वि० (सं) १-जिसका चिंतन न हो सके। कल्पनातीत। २-जिसका अंदाजा न हो सके। अतुल। ३-आशा या उम्मीद से अधिक। ४-आकस्मिक।
**अचिकित्स्य** वि० (सं) चिकित्सा आदि से ठीक न हो सकने वाला (रोग), असाध्य, (इनक्योरेबुल)।
**अचिर** क्रि० वि० (स) १-शीघ्र। २-तुरन्त, तत्काल। वि० (सं) १-थोड़े समय तक रहने वाला। २-थोड़ा अल्प।
**अचिरात** क्रि० वि० (स) १-तत्काल, तुरन्त। २-जल्दी
**अचीता** वि० (हि) १-बिना सोचा समझा। २-आकस्मिक
**अचीर** वि० (सं) वस्त्रहीन, नंगा।
**अचूक** वि० (हि) १-न चूकने वाला २-जो अपना प्रभाव या फल अवश्य दिखाये। ३-भ्रमहीन, ठीक, पक्का। क्रि० वि० (हि) १-अवश्य। २-कौशल से।
**अचेत, अचेतन** वि० (स) १-जिसमें चेतना या संज्ञा का अभाव हो। २-बेहोश। ३-प्राणहीन।
**अचेतनीकरण** पुं० (स) चिकित्सा पद्धति में दवाओं आदि के प्रभाव या प्रयोग से शरीर के किसी अंग को चेतना रहित या सुन्न करना। (एनीसथेसिस)।
**अचेष्ट** वि० (स) निश्चेष्ट, बेहोश, ज्ञानशून्य।
**अचेष्टता** वि० (सं) ज्ञानशून्यता।
**अचेष्टित** वि० (स) जिसके लिये कोई चेष्टा न की हो।
**अचैतन्य** वि० (स) चेतनारहित, जड़।
**अचैन** पुं० (हि) बेचैनी। वि० (हि) विकल, बेचैन।
**अचौना** पुं० (हि) आचमन करने का पात्र। क्रि० (हि) आचमन करना।
**अच्छ** वि० (सं) स्वच्छ। पुं० (हि) देखो 'अक्ष'।
**अच्छत** वि० (हि) अक्षत। पुं० (हि) चावल विशेष।
**अच्छय** वि० (हि) अक्षय।
**अच्छर** वि० (हि) अक्षर।
**अच्छरा, अच्छरिय, अच्छरी** स्त्री० (हि) अप्सरा।
**अच्छा** वि० (हि) १-उत्तम। २-स्वस्थ, निरोग। क्रि० वि० (हि) अच्छी प्रकार, खूब।
**अच्छाई** स्त्री० (हि) अच्छा होने का भाव, उत्तमता।
**अच्छापन** पुं० (हि) देखो 'अच्छाई'।

**अच्छि** स्त्री० (हि) आँख, नयन।
**अच्छोत** वि० (हि) अधिक, बहुत।
**अच्छे** वि० (हि) अच्छी प्रकार से। पुं० (हि) १-बड़े आदमी। २-गुरुजन।
**अच्छोत** वि० (हि) बहुत, अधिक।
**अच्छोहिनी** स्त्री० (हि) अक्षौहिणी।
**अच्युत** वि० (स) १-जो गिरा न हो। २-दृढ़, अटल। ३-जो न चूके। पुं० (स) १-विष्णु। २-कृष्ण।
**अछंभो** पुं० (हि) अचम्भा, आश्चर्य।
**अछक** वि० (हि) भूखा, अतृप्त।
**अछकना** क्रि० वि० (हि) अतृप्त होना। भूखे रहना।
**अछत** क्रि० वि० (हि) १-रहते हुए। २-उपस्थिति में।
**अछताना** क्रि० (हि) पछताना का अनुकरण।
**अछताना-पछताना** क्रि० (हि) खेद करना।
**अछन** पुं० (हि) बहुत दिन। चिरकाल। क्रि० वि० (हि) धीरे-धीरे। ठहरकर।
**अछना** क्रि० (हि) विद्यमान या मौजूद होना। रहना
**अछप** वि० (हि) प्रकट, जाहिर।
**अछय** वि० (हि) अक्षय।
**अछरा** स्त्री० (हि) अप्सरा।
**अछरी** स्त्री० (हि) १-अप्सरा। २-अक्षरी।
**अछरौटी** स्त्री० (हि) वर्णमाला।
**अछल** वि० (हि) छलरहित, निष्कपट।
**अछवाई** स्त्री० (हि) १-अच्छाई। २-स्वच्छता। सफाई
**अछवाना** क्रि० (हि) १-साफ करना। २-सँवारना।
**अछवानी** स्त्री० (हि) प्रसूता स्त्री को पिलाया जाने वाला एक मसाला।
**अछाम** वि० (हि) मोटाताजा, बलवान।
**अछूत** वि० (हि) १-अछूता। २-काम में न लाया हुआ। ३-अस्पृश्य।
**अछूता** वि० (हि) १-बिना छुआ हुआ। २-जो बरता न गया हो। नया, कोरा। ताजा। ३-जिसपर अभी तक किसीने विचार या विवेचना व्यक्त न की हो।
**अछूतोद्धार** पुं० (हि) अछूतों अथवा अंत्यजों का उद्धार।
**अछेद** वि० (हि) जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। पुं० (हि) जिसमें भिन्नता या भेद न हो।
**अछेद्य** वि० (स) जो छेदा न जासके, अभेद्य।
**अछेब** वि० (हि) निर्दोष।
**अछेह** वि० (हि) अखंडित। क्रि० वि० (हि) निरन्तर
**अछोप** वि० (हि) बिना ढपा हुआ, नंगा।
**अछोभ** वि० (हि) क्षोभरहित। २-अचंचल। ३-खेद-रहित। ४-निडर।
**अछोर** वि० (हि) १-असीम। २-बहुत, अधिक।
**अछोह, अछोही** वि० (हि) दयाहीन, निर्दय।
**अज** वि० (सं) जिसका जन्म न हुआ हो, स्वयम्भू। पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-बकरा। ३-विष्णु। ४-मेंढ़ा
**अजका** वि० (हि) उद्धत, उद्दण्ड।
**अजगर** पुं० (सं) बकरे को भी निगल जाने वाला भारी साँप।
**अजगरी** स्त्री० (हि) अजगर के समान निरुद्यम वृत्ति वि० (हि) बिना परिश्रम की।
**अजगव** पुं० (सं) शिवजी का धनुष, पिनाक।
**अजगुत** पुं० (हि) आश्चर्य की बात।
**अजगुतसहाय** वि० (हि) अनोखा।
**अजगूता** वि० (हि) अद्‌भुत घटना।
**अजगैब** पुं०(फा+अ) १-गुप्त। २-आकस्मिक।
**अजदाह** पुं० (फा) अजगर।
**अजनबी** वि० (फा) १-अपरिचित। २-अनजान।
**अजन्ता** स्त्री० (सं) हैदराबाद (दक्षिण) राज्य में स्थित एक संसार प्रसिद्ध गुफा।
**अजन्म, अजन्मा** वि० (सं) जन्मरहित, अविनाशी।
**अजप** पुं० (सं)१-गड़रिया। २-बुरा जाप करने वाला
**अजपा** वि० (सं) १-जो जपा न जाय। २-जो जप न करे। पुं० (सं) मन ही मन तांत्रिकों द्वारा किया जाने वाला जप।
**अजब** वि० (अ) विलक्षण।
**अजमाइश** स्त्री० (फा) जाँच, परीक्षा।
**अजमाना** क्रि० (हि) परखना या जाँच करना।
**अजय** पुं० (सं) १-पराजय। २-एक प्रकार का छप्पय छन्द। वि० (सं) जो जीता न जासके।
**अजर** वि० (सं) जिसे जरा या बुढ़ापा न आवे, जो सदा एक रस रहे। पुं० (हि) आँगन।
**अजरायल, अजराल** वि० (हि) स्थायी। पक्का।
**अजवाइन, अजवायन** स्त्री० (हि) एक प्रकार का पौधा या उसके सुगंधित बीज।
**अजस** पुं० (सं) अपयश।
**अजसी** वि० (हि) १-जिसे अच्छा कार्य करने पर भी यश प्राप्त न हो। २-बदनाम।
**अजस्र** पुं० (सं) अपरमित। वि० (सं) निरन्तर।
**अजहत-लक्षणा, अजहत-स्वार्था** स्त्री० (सं) लक्षणा के तीन भेदों में एक।
**अजहद** वि० (फा) बहुत अधिक।
**अजहूँ** अव्य० (हि) अभी तक। अब भी।
**अजा** स्त्री० (सं) १-बकरी। २-दुर्गा।
**अजाचक** पुं० (हि) सम्पन्न व्यक्ति, जिसे कुछ माँगने की आवश्यकता न हो।
**अजाची** पुं० (हि) अजाचक। वि० (हि) भरापूरा, सम्पन्न।
**अजात** वि० (सं) १-जिसका जन्म न हुआ हो। २-कभी जन्म न लेने वाला। वि० (हि) १-जिसकी कोई जाति न हो। २-जाति से निकाला हुआ।
**अजात-शत्रु** वि० (स) जिसका कोई शत्रु या वैरी न हो। पुं० (सं)१-युधिष्ठिर का एक नाम। २-मगध-

पति बिंबसार के पुत्र का नाम।
**अजाती** वि० (हि) जाति से निकाला हुआ।
**अजाद** वि० (हि) आज़ाद।
**अजादी** वि० (हि) आज़ादी।
**अजान** वि० (हि) १-अनजान, अबोध। २-अज्ञात, अपरिचित। पुं० (हि) अज्ञान, अनभिज्ञता।
**अजानता, अजानपन** पुं० (हि) अज्ञानता, नासमझी।
**अजानबीरो** पुं० (हि) पौधा विशेष।
**अजाय** वि० (हि) अनुचित।
**अजायब** पुं० (अ) आश्चर्यजनक वस्तु या पदार्थ।
**अजायबखाना, अजायबघर** पुं० (अ) वह स्थान या भवन जिसमें संग्रह की हुई वस्तुएं प्रदर्शनार्थ रक्खी रहती हैं। (म्यूज़ियम)।
**अजिऔरा** पुं० (हि) दादी के पिता का घर।
**अजित** वि० (स) जिसे जीत न सकें। अपराजित।
**अजिर** पुं० (स) १-आँगन, सहन। २-वायु। ३-शरीर। ४-इन्द्रियों का विषय।
**अजी** अव्य० (हि) सम्बोधनसूचक शब्द, हे जी।
**अजीत** वि० (सं) अपराजित। जो जीता न गया हो।
**अजीब** वि० (अ) विलक्षण, विचित्र।
**अजीरन** पुं० (हि) अजीर्ण, बदहज़मी।
**अजीर्ण** पुं० (सं) १-अपच, बदहज़मी। २-किसी वस्तु का इतना अधिक मात्रा या परिमाण में हो जाना कि वह संभाली न जा सके। वि० (सं) जो जीर्ण न हो, नया।
**अजीव** वि० (सं) बिना प्राण का, निर्जीव।
**अजुगत** वि० (हि) १-अनोखा। २-अभूतपूर्व।
**अजुगति** स्त्री० (हि) अनहोनी बात।
**अजू** अव्य० (हि) अजी।
**अजूजा** पुं० (हि) मुरदा खाने वाला जानवर।
**अजूबा** वि० (अ) अनोखा, अनूठा।
**अजूरा** वि० (हि) पृथक, अलग। पुं० (अ) १-मजदूरी २-भाड़ा।
**अजूह** पुं० (हि) युद्ध।
**अजे** पुं० (हि) पराजय।
**अजेइ, अजेय** वि० (हि) न जीते जाने योग्य। अजय।
**अजै** पुं० (हि) पराजय, हार।
**अजैव** वि० (सं) जो जीवन से युक्त न हो, प्राण-विहीन। (इन-आर्गेनिक)।
**अजो** वि० पुं० देखो 'अजय'।
**अजोग** पुं० (हि) १-अयोग्य। २-बेजोड़। ३-निकम्मा।
**अजोरना** क्रि० (हि) १-जोड़ना, जमा करना। २-बटोरना, छीनना।
**अजौं** क्रि० वि० (हि) अबतक।
**अज्ञ** वि० (सं) अज्ञानी, मूर्ख।
**अज्ञता, अज्ञत्व** स्त्री० (सं) मूर्खता, नासमझी।
**अज्ञा** स्त्री० (हि) आज्ञा।
**अज्ञात** वि० (सं) १-अविदित। २-छिपा हुआ, गुप्त। ३-अगोचर।
**अज्ञातनामा** वि० (सं) १-जिसका नाम मालूम न हो, अविदित। २-जिसे कोई जानता न हो, अविख्यात
**अज्ञातयौवना** स्त्री० (सं) वह मुग्धा नायिका जिसे अपनी उभरती हुई जवानी का भास न हो।
**अज्ञातवास** पुं० (सं) गुप्त रूप से रहना।
**अज्ञान** पुं० (सं) १-ज्ञान या बोध न होने का भाव। २-मूर्खता, जड़ता। ३-अध्यात्मवाद में जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से अलग न समझने का अविवेक। ४-न्यायशास्त्र के मत से एक निग्रह स्थान। ५-किसी विषय के ज्ञान का अभाव। (इग्नोरेन्स)। वि० (स) मूर्ख, बिना ज्ञान का।
**अज्ञानता** स्त्री० (सं) मूर्खता, नासमझी।
**अज्ञानपन** स्त्री० (हि) अज्ञानता, मूर्खता।
**अज्ञानी** वि० (स) मूर्ख, अनाड़ी।
**अज्ञेय** वि० (स) जो जाना न जा सके, बोधागम्य।
**अज्ञेयवाद** पुं० (स) वह मत या सिद्धांत कि दीख पड़ने वाले जगत से परे जो कुछ है, वह जाना नहीं जा सकता, (एग्नास्टिसिज़्म)।
**अज्यों** क्रि० वि० (हि) अबतक।
**अझर** वि० (हि) १-जो न झरे या गिरे। २-जो न बरसे।
**अझूना** वि० (हि) स्थायी।
**अझोरी** स्त्री० (हि) झोली।
**अटंबर** पुं० (हि) ढेर, अटाला।
**अट** स्त्री० (हि) बन्ध, शर्त।
**अटक, अटकन** स्त्री० (हि) १-रोक, रुकावट। २-अड़चन, बाधा। ३-संकोच।
**अटकना** क्रि० (हि) १-रुकना, अड़ना। २-फँस कर रुकना। ३-झगड़ा करना।
**अटक-भटक** स्त्री० (हि) छोटे बालकों का खेल, भूल-भुलैया।
**अटकर, अटकल** स्त्री० (हि) अनुमान, अंदाज।
**अटकरना** क्रि० (हि) अटकल लगाना।
**अटकलपच्चू** वि० (हि) अनुमान।
**अटका** पुं० (हि) वह भात या धन जो जगन्नाथ जी पर चढ़ाया जाता है।
**अटकाना** क्रि० (हि) १-रोकना। २-अड़ाना, फँसाना ३-पूरा करने में देर करना।
**अटकाव** पुं० (हि) १-अटकने की क्रिया अथवा भाव। २-रुकावट। ३-बाधा।
**अटखट** वि० (हि) छिन्नभिन्न।
**अटखेली** स्त्री० (हि) चचलता, क्रीड़ा।
**अटन** पुं० (सं) घूमना, फिरना।

**अटना** क्रि० (हि) १–घूमना, फिरना । २–यात्रा करना । ३–पूरा पड़ना । ४–आड़ या ओट करना ।
**अटपट, अटपटा** वि० (हि) १–बे सिर-पैर का । २–विकट, कठिन । ३–असम्बद्ध ।
**अटपटाना** क्रि० (हि) १–लड़खड़ाना । २–गड़बड़ाना । ३–सङ्कोच करना, हिचकना ।
**अटपटी** स्त्री० (हि) नटखटी, अनरीति ।
**अटब्बर** पुं० (हि) आडम्बर, दर्प ।
**अटल** वि० (स) १–स्थिर, अचल । २–नित्य । ३–अवश्यम्भावी । ४–पक्का, ध्रुव ।
**अटवाटी-खटवाटी** स्त्री० (हि) सोने या शयन करने का सामान ।
**अटवी** स्त्री० (सं) १–वन । २–मैदान ।
**अटहर** पुं० (हि) १–ढेर, समूह । २–चिरस्थायी ।
**अटा** स्त्री० (हि) अटारी, कोठा ।
**अटाउ** पुं० (हि) १–ऐब । २–शरारत ।
**अटाटूट** वि० (हि) अत्यधिक । क्रि० वि० (हि) एकदम से, बिलकुल ।
**अटारी** स्त्री० (हि) ऊपर के खण्ड पर बनी हुई कोठरी ।
**अटाल, अटाला** पुं० (हि) राशि, ढेर ।
**अटित** वि० (हि) १–गुमावदार । २–अटारियों या ऊँचे मकानों वाला (नगर) ।
**अटिया** स्त्री० (हि) १–झोंपड़ी । २–मुट्ठा ।
**अटूट** वि० (हि) १–न टूटने वाला । २–अजेय । ३–अखड । ४–अत्यधिक ।
**अटेकरी** वि० (हि) निर्दोष ।
**अटेरन** पुं० (हि) १–सूत की आँटी बनाने का यन्त्र । २–घोड़े को चक्कर देने की एक रीति ।
**अटेरना** क्रि० (हि) १–अटेरन द्वारा सूत की आँटी बनाना । २–हद से ज्यादा नशा करना ।
**अटोक** वि० (हि) बिना रोक-टोक का ।
**अट्ट** पुं० (हि) १–अट्टालिका, बड़ा मकान । २–अटारी । ३–हाट, बाजार । वि० (हि) ऊँचा ।
**अट्ट-सट्ट** वि० (हि) १–ऊटपटांग । २–इधर उधर की । स्त्री० (हि) चुगली ।
**अट्टहास** पुं० (सं) बहुत जोर की हँसी, ठहाका ।
**अट्टा** पुं० (हि) १–अट्टालिका । २–मचान ।
**अट्टालिका** स्त्री० (हि) १–बड़ा तथा ऊँचा मकान भवन । २–अटारी ।
**अट्टी** स्त्री० (हि) अटेरन पर लपेटा हुआ हुआ सूत या ऊन, लच्छी ।
**अठंग** पुं० (हि) अष्टांग योगी ।
**अठ** वि० (हि) आठ ।
**अठाव** पुं० देखो 'अड़पाव' ।
**अठकौशल, अठकौसल** पुं० (हि) १–गोष्ठी, पंचायत २–सलाह, मंत्रणा ।
**अठखेली** स्त्री० (हि) १–चुलबुलापन, चपलता । २–मादक या मतवाली चाल ।
**अठन्नी** स्त्री० (हि) आठ आने या आधे रुपये का सिक्का ।
**अठपतिया** स्त्री० (हि) वह जिसमें आठ पत्तियाँ हों ।
**अठपहला, अठपहलू** वि० (हि) आठ पहल या पार्श्वे का ।
**अठपाव** पुं० (हि) उपद्रव, ऊधम ।
**अठमासा** पुं० (हि) १–आठ माशे की तोल । २–आठ महीने का । ३–आषाढ़ से माघ तक के समय-समय पर जोता जाने वाला खेत जिसमें ईख बोई जाती है । ४–सीमन्त संस्कार ।
**अठमासी** स्त्री० (हि) आठ माशे का सिक्का, गिन्नी ।
**अठलाना** क्रि० (हि) १–इतराना । २–चोचला या नखरा करना । ३–मदोन्मत्त होना ।
**अठवना** क्रि० (हि) १–जमना । २–ठनना ।
**अठवांसा** वि० (हि) आठ मास में उत्पन्न होने वाला (गर्भ) ।
**अठवारा** पु० (हि) १–आठ दिन का समय या काल । २–सप्ताह ।
**अठसिल्या** स्त्री० (हि) सिंहासन ।
**अठाई** वि० (हि) नटखट, उत्पाती ।
**अठान** पुं० (हि) १–अयोग्य या कठिन कार्य । २–बैर ३–झगड़ा ।
**अठाना** क्रि० (हि) १–सताना । २–मचाना, ठानना ।
**अठाव** पुं० (हि) अठपाव ।
**अठिलाना** क्रि० (हि) इठलाना, इतराना ।
**अठे** क्रि० वि० (हि) यहाँ ।
**अठेल** वि० (हि) बलवान ।
**अठोठ** पु० (हि) आडम्बर ।
**अठोतर-सौ** वि० (हि) एक सौ आठ ।
**अठंग** पुं० (हि) अष्टांग योग साधने वाला ।
**अड़ंग** पुं० (हि) हाट, बाजार, मंडी ।
**अड़ंगा** पुं० (हि) १–रुकावट, २–बाधा ।
**अडंड** वि० (हि) १–अदण्डनीय । २–निर्भय ।
**अंबर** पुं० (हि) प्रातःकालीन या सायंकालीन लाली जो सूर्य की किरणों के कारण दिखाई देती है
**अड़** स्त्री० (हि) हठ, जिद ।
**अड़काना** क्रि० (हि) १–रोकना । २–उलझाना, फँसाना ।
**अडग** वि० (हि) अडिग, स्थिर ।
**अड़गड़ा** पुं० (हि) १–वह स्थान जहाँ बैलगाड़ियाँ ठहरती है । २–वह स्थान जहाँ बैल, घोड़े आदि की बिक्री होती है ।
**अड़चन, अड़चल** स्त्री० (हि) १–बाधा, रुकावट । २–कठिनता ।
**अड़तल** स्त्री० (हि) १–आड़, ओट । २–बहाना । ३–अड़चन । ४–शरण ।

**अड़दार** वि० (हि) १-अड़ियल। २-हठी। ३-घमंडी ४-मस्त।
**अड़न** स्त्री० (हि) अड़, जिद।
**अड़ना** क्रि० (हि) १-रुकना, अटकना। २-हठ करना
**अड़बंग** वि० (हि) १-टेढ़ा-मेढ़ा। २-विकट, कठिन ३-विलक्षण।
**अड़र** वि० (हि) निडर।
**अड़हुल** पुं० (हि) गहरे लाल रंग का फूल, जवापुष्प
**अड़ाड़** पुं० (हि) पशुओं को बाँधने का हाता या बाड़ा।
**अड़ाड़ा** पुं० (हि) ढकोसला।
**अड़ान** पुं० (हि) १-रुकने का स्थान। २-पड़ाव।
**अड़ाना** क्रि० (हि) १-अटकाना। २-डाट लगाना ३-ठूसना। ४-टरकाना। पुं० (हि) १-एक राग (जो कान्हड़ा का भेद है)। २-चाँड़।
**अड़ानी** स्त्री० (हि) १-बड़ा पंखा। २-कुश्ती का एक पेच।
**अड़ायता** वि० (हि) १-आड़ या ओट करने वाला। २-शरणागत की रक्षा करना।
**अड़ार** पुं० (हि) १-समूह। २-ईंधन की दुकान। ३-ईंधन का ढेर। वि० (हि) टेढ़ा।
**अड़ारना** क्रि० (हि) डालना।
**अड़िग** वि० (हि) स्थिर, निश्चल।
**अड़ियल** वि० (हि) १-अड़ने वाला, चलते चलते रुक-जाने वाला। २-हठी, जिद्दी।
**अड़िया** स्त्री० (हि) साधुओं की कुबड़ी या तकिया जिसको टेककर वह बैठते हैं।
**अड़ी** स्त्री० (हि) १-जिद, हठ। २-रोक। ३-आवश्यक समय, मौका।
**अड़ीखंभ** पुं० (हि) शक्तिशाली।
**अडीठ** वि० (हि) १-अदृष्ट। २-छिपा हुआ।
**अड़ूलना** क्रि० (हि) उड़ेलना।
**अड़ूसा** पुं० (हि) पौधा विशेष जिसके पत्ते तथा फूल औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं।
**अड़ैतो** वि० (हि) आड़ करने वाला।
**अडोल** वि० (हि) १-स्थिर। २-स्तब्ध।
**अड़ोस-पड़ोस** पुं० (हि) आसपास।
**अड़ोसी-पड़ोसी** पुं० (हि) आसपास रहने वाला।
**अड्डा** पुं० (हि) १-ठहरने या टिकने की जगह। २-मिलने या इकट्ठा होने का स्थान। ३-प्रधान स्थान। ४-लम्बे बाँस पर लगी हुई टट्टी जिस पर कबूतर बैठते हैं। ५-करघा। ६-वह स्थान जहाँ कारीगर बैठकर काम करते है। ७-वह स्थान या बाजार जहाँ वेश्याएं बैठती या रहती हैं।
**अढ़तिया** पुं० (हि) दलाली पर माल बेचने वाला।
**अढ़म** पुं० (हि) धाक, मर्यादा।
**अढ़वना** क्रि० (हि) काम में लगाना।
**अढ़ार** वि० (हि) १-न डरने वाला, जो किसी पर अनुरक्त न हो। २-निर्दय।
**अढ़ारटंकी** पुं० (हि) धनुष।
**अण, अणक** वि० (सं) अधम, नीच।
**अणद** पुं० (हि) आनन्द।
**अणमण** वि० (हि) १-अप्रसन्न। २-बीमार।
**अणसंक** वि० (हि) निडर।
**अणास** पुं० (हि) कठिनाई।
**अणि** स्त्री० (सं) १-नोक। २-धार। ३-सीमा। ४-किनारा। ५-पहिये की धुरी की कील।
**अणिमा** पुं० (सं) १-अतिसूक्ष्म परिमाण। २-आठ सिद्धियों में से प्रथम जिससे योगी लोग अणु के समान सूक्ष्म शरीर धारण कर लेते हैं।
**अणियाली** स्त्री० (हि) कटारी।
**अणी** स्त्री० (हि) देखो 'अणि'।
**अणीय** वि० (हि) झीना, बारीक।
**अणु** पुं० (सं) १-परमाणु से बड़ा तथा द्व्यणुक से छोटा। २-कण। ३-रजकण। ४-सूक्ष्म कण।
**अणुतरंग** स्त्री० (सं) विद्युत से निकलने वाली अति सूक्ष्म तरङ्ग विशेष, (माइक्रोवेव)।
**अणुबम** पुं० (सं) एक महाविनाशकारी बम।
**अणुवाद** पुं० (स) १-वह सिद्धांत जिसमें अणु से ही सृष्टि की उत्पत्ति मानी जाती है। २-वैशेषिक-दर्शन।
**अणुवादी** पुं० (सं) अणुवाद में विश्वास करने वाला
**अणुवीक्षण** पुं० (सं) १-सूक्ष्म वस्तुओं को देखने का यंत्र, खुर्दबीन। २-छिद्रान्वेषण।
**अणुव्रत** पुं० (सं) गृहस्थ धर्म का एक अंग (जैन)।
**अतंक** पुं० (हि) आतंक।
**अतंद्रिक** वि० (सं) १-आलस्यरहित। २-विकल।
**अतः, अतएव** अव्य० (सं) इस हेतु, इस कारण से इसलिये।
**अतद्गुण** पुं० (सं) वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु के समीप की अन्य वस्तु के गुण ग्रहण करने का उल्लेख होता है।
**अतन** वि० (हि) देखो 'अतनु'।
**अतन-जतन** पुं० (हि) प्रयत्न।
**अतनु** वि० (सं) बिना देह का।
**अतबान** वि० (हि) अत्यधिक।
**अतर** पुं० (हि) पुष्पसार, इत्र।
**अतरक** वि० (हि) अतर्क्य, तर्करहित।
**अतरदान** पुं० (हि) इत्रदान।
**अतर्कित** वि० (सं) १-जिसकी पहले से कल्पना न हो २-आकस्मिक। ३-अचानक आ पड़ने वाला।
**अतर्क्य** वि० (स) जिसके सम्बन्ध में तर्क-वितर्क या विवेचना न हो सके।
**अतल** वि० (सं) १-जिसका तल न हो। २-गहरा।

पुं० (सं) सात पातालों में से एक।

**अतल-स्पर्शी** वि० (सं) अतल को छूने वाला, बहुत गहरा।

**अतलांतक** पुं० (हि) अफ्रीका तथा अमरीका के मध्य का महासागर।

**अतवान** वि० (हि) बहुत, अधिक।

**अताई** वि० (अ) १–निपुण। २–धूर्त। ३–अर्धशिक्षित

**अ-तारांकित** वि० (सं) जिस पर तारे का चिह्न न हो। पुं० देखो 'अ-तारांकित-प्रश्न'।

**अ-तारांकित-प्रश्न** पुं० (सं) संसद् या विधान सभाओं में पूछा जाने वाला वह प्रश्न जिसका उत्तर लिखित रूप से दिया जाता है।

**अति** वि० (सं) अतिशय, बहुत। स्त्री०(सं) अधिकता, ज्यादती।

**अतिउक्ति** स्त्री० (हि) अत्युक्ति।

**अतिउत्पादन** पुं० (सं) अधिक फसल या कल कारखानों में माल की इतनी अधिकता होना कि मंडियों में उसकी खपत पूर्णतया न हो सके, (ओवर-प्रोडक्शन)।

**अतिकर** पुं० (सं) वह कर जो साधारण कर के अतिरिक्त हो तथा बहुत अधिक आय वालों से लिया जाय, अधिकार, (सुपरटैक्स)।

**अतिकाल** पुं० (सं) १–विलम्ब, देर। २–कुसमय।

**अतिक्रम** पुं० (सं) नियम या मर्यादा का उल्लंघन

**अतिक्रमण** पुं० (सं) सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना जहाँ जाना अथवा रहना अनुचित या नियमानुसार न हो, सीमा का अनुचित रूप से किया गया उल्लंघन, (एनक्रोचमेंट)।

**अतिक्रांत** वि० (सं) १–सीमा के बाहर गया हुआ। २–बीता हुआ।

**अतिक्रामक** पुं० (सं) जो अपने अधिकार अथवा स्वत्व की सीमा का उल्लंघन करे, दूसरे के स्वत्व या अधिकारों में हस्तक्षेप करने वाला।

**अतिगति** स्त्री० (सं) मोक्ष, मुक्ति।

**अतिचरण** पुं० (सं) १–अतिक्रमण। २–अतिचार।

**अतिचार** पुं० (सं) अधिकृत सीमा के बाहर अनुचित रूप से जाना, (ट्रांसग्रेशन)।

**अतिचारी** पुं० (सं) अति पार करने वाला व्यक्ति।

**अति-जीवन** पुं० (सं) साधारणतया औरों का अन्त हो जाने की अवस्था में भी बचा रहना, (सरवाइवल)।

**अतिथि** पुं० (सं) १–मेहमान, अभ्यागत। २–एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरने वाला साधु, व्रात्य। ३–अग्नि। ४–यज्ञ में सोमलता को लाने वाला।

**अतिथि-शाला** स्त्री० (सं) अतिथियों के ठहरने के लिये नियत मकान या भवन, (गेस्ट हाउस)।

**अतिदिष्ट** वि० (सं) १–आरोपित। २–अपनी निश्चित सीमा, अवधि आदि से आगे बढ़ाया हुआ, (एक्सटेंडेड)। ३–धर्म, प्रकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के सदृश)।

**अतिदेश** पुं० (सं) १–विषय विशेष की किसी बात, नियम अथवा धर्म का अन्य विषयों में किया जाने वाला आरोप। २–किसी कार्य अथवा बात की सीमा या अवधि आगे बढ़ाने का काम। (एक्सटेंशन)। ३–कई अलग-अलग तरह की या विरोधी बातों अथवा पदार्थों में कुछ विशेष प्रकार के तत्वों की समानता, (एनालोजी)।

**अतिदेशन** पुं० (सं) अतिदेश करने की क्रिया। अतिदेश करने का भाव।

**अतिपात** पुं० (सं) १–वह जीव-हिंसा जो प्रतिदिन अनजाने में गृहस्थों से होती है। २–अव्यवस्था। ३–बाधा, विघ्न। ४–हानि।

**अति-प्रजनन** पुं० (सं) किसी नगर या देश की जन-संख्या का इतना बढ़ जाना जिसके कारण उनका पूर्णतया निर्वाह न हो सके, (ओवर पापुलेशन)।

**अति-भोग** पुं० (सं) निश्चित अवधि के पश्चात भी या पर्याप्त दिनों से किसी संपत्ति का उपयोग करना। (प्रिस्क्रिप्शन)।

**अतिरंजन** पुं० (सं) अत्युक्ति।

**अतिरिक्त** वि० (सं) १–आवश्यकता से अधिक। (एक्स्ट्रा) २–सिवा। ३–आवश्यकता के अनुसार कुछ और जोड़ा, दिया अथवा लगाया हुआ। (एडिशनल)

**अतिरिक्त-पत्र** पुं० (सं) समाचार पत्रों या मासिक पत्रों आदि के साथ अलग से छाप कर जोड़ा जाने वाला पत्र, क्रोड़पत्र। (सप्लिमेंट)।

**अतिरेक** पुं० (सं) १–अधिकता। २–व्यर्थ की वृद्धि। ३–किसी वस्तु या बात के आवश्यकता से अधिक होने का भाव। (एग्रेवेशन)

**अति-वृष्टि** स्त्री० (सं) अत्यधिक वर्षा।

**अतिव्याप्त** वि० (सं) सर्वव्यापी।

**अतिव्याप्ति** स्त्री० (सं) १–किसी लक्षण अथवा कथन में अन्य अतिरिक्त वस्तु के आजाने को न्याय में अतिव्याप्ति दोष कहते हैं। २–अधिक व्याप्ति।

**अतिशय** वि० (सं) बहुत। पुं० (सं) एक अलंकार।

**अतिशयता** स्त्री० (सं) अधिकता, ज्यादती।

**अतिशयोक्ति** स्त्री० (सं) १–वह अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर अथवा अपनी ओर से नमक मिर्च लगाकर कही हुई बात। (एग्जैजरेशन)।

**अतिसंधान** पुं० (सं) १–अतिक्रमण। २–सही अथवा उचित लक्ष्य से तथा आगे बढ़कर निशाना लगाना (ओवर-हिटिंग)।

**अतिसार** पुं० (सं) पेट का एक रोग जिसमें रक्तमिश्रित आँव के दस्त आते हैं।

**अतिहसित** स्त्री० (सं) अट्टहास।

**अतिहायन** पुं० (सं) १-बुढ़ापा होने के कारण काम-धंधा करने की शक्ति न हो। २-बहुत पुराना।

**अतींद्रिय** वि० (सं) अप्रत्यक्ष, अगोचर।

**अतीत** वि० (सं) १-बीता हुआ, गत। २-पृथक। ३-मृत। क्रि० वि० (सं) परे, दूर। पुं० (हि) १-संन्यासी। २-अतिथि।

**अतीतना** क्रि० (हि) १-बीतना, गुजरना। २-छोड़ना

**अतीथ** पुं० (हि) अतिथि।

**अतीव** वि० (सं) अत्यंत, बहुत।

**अतीस** पुं० (हि) एक पौधा जिसकी जड़ औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

**अतीसार** पुं० (सं) संग्रहणी रोग।

**अतुकांत** वि० (हि) (छंद/कविता) जिसके अन्तिम चरण में तुकांत न हो।

**अतुराई** स्त्री० (हि) १-आतुरता। २-चपलता।

**अतुराना** क्रि० (हि) १-आतुर होना, घबड़ाना। २-शीघ्रता करना।

**अतुल** वि० (सं) १-जो तौला या कूता न जा सके। २-अमित, अपार। ३-अनुपम, बेजोड़।

**अतुलनीय** वि० (सं) १-अपरमित। २-अपार।

**अतुलित** वि० (सं) १-बिना तौला हुआ। २-बे-अंदाज, अपरमित। ३-बेजोड़। ४-असंख्य।

**अतूथ** वि० (सं) अपूर्व, विलक्षण।

**अतूल** वि० (हि) देखो 'अतुल'।

**अतृप्त** वि० (सं) १-असंतुष्ट। २-भूखा।

**अतृप्ति** स्त्री० (सं) चित्त की अशान्ति। असंतोष।

**अतोर** वि० (हि) न टूटने वाला, दृढ़।

**अतोल, अतौल** वि० (हि) १-बिना तौला या अंदाज किया हुआ। २-अतुलित। ३-अनुपम।

**अत्त** स्त्री० देखो 'अति'।

**अत्तार** पुं० (अ) इत्र, तेल या यूनानी दवा बेचने वाला।

**अत्ति** स्त्री० देखो 'अति'।

**अत्थि** स्त्री० (हि) वर्त्तमानता।

**अत्यंत** वि० (सं) बहुत अधिक, बेहद।

**अत्यंतातिशयोक्ति** स्त्री० (सं) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद।

**अत्यंताभाव** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का पूर्णतया अभाव। २-वैशेषिक के मतानुसार पाँच अभावों में से चौथा। ३-बिलकुल कमी।

**अत्यधिक** वि० (सं) बहुत अधिक, बेहद।

**अत्यय** पुं० (सं) १-मृत्यु। २-घटना। ३-अतिक्रमण। ४-नाश।

**अत्याचार** पुं० (सं) १-सदाचार का उलट, अन्याय। २-किसी के साथ बलपूर्वक किया गया कष्टदायक, अनुचित व्यवहार। (टिरैनी)। ३-पाप। ४-पाखंड

**अत्याचारी** पुं० (सं) १-वह जो अपने अनुचित व्यवहार से या बलपूर्वक दूसरों को कष्ट देता हो। जालिम, (टायरेंट) २-पाखंडी।

**अत्याज** वि० (सं) १-न छोड़ने योग्य। २-जो कभी न छोड़ा जा सके।

**अत्याशा** स्त्री० (सं) तीव्र आशा।

**अत्युक्त** वि० (सं) बहुत बढ़ाकर कहा हुआ।

**अत्युक्ति** स्त्री० (सं) १-किसी बात का बढ़ाचढ़ाकर वर्णन करना। २-बहुत बढ़ाचढ़ाकर कही हुई बात। (एग्जेजेरेशन)। ३-एक अर्थालंकार जिसमें सीमा से अधिक किसी का वर्णन किया जाय।

**अत्युत्पादन** पुं० (सं) अधिक फसल या कल-कारखानों में माल की इतनी अधिकता होना कि मंडियों में उसकी पूर्णतया खपत न हो सके। अतिउत्पाद।

**अत्र** क्रि० वि० (सं) यहाँ। पुं० (हि) अस्त्र, हथियार।

**अत्रभवान्** वि० (सं) माननीय श्रीमान।

**अथ** अव्य० १-अब, इस समय। २-अनन्तर। ३-मंगल तथा आरम्भवाची।

**अथऊ** पुं० (हि) सूर्यास्त से पहले किया गया भोजन (जैन)।

**अथक** वि० (हि) न थकने वाला, अश्रांत।

**अथच** अव्य० (हि) फिर, और।

**अथना** क्रि० (हि) (सूर्य आदि का) अस्त होना। डूबना।

**अथमना** पुं० (हि) पश्चिम दिशा।

**अथरा** पुं० (हि) मिट्टी की चौड़ी नांद।

**अथरी** स्त्री० (हि) १-छोटा अथरा। २-दही जमाने की मिट्टी की हँडिया।

**अथर्व** पुं० (सं) १-एक वेद का नाम। २-इस वेद का एक मंत्र।

**अथवना** क्रि० (हि) १-अस्त होना। २-नष्ट होना।

**अथवा** अव्य० (सं) या, वा, किंवा।

**अथाई** स्त्री० (हि) १-बैठने का स्थान। २-पंचायत करने का स्थान। ३-घर के सामने का चबूतरा। ४-सभा, मंडली।

**अथाना** क्रि० (हि) १-अस्त होना। २-थाह लेना। ३-ढूंढना। पुं० (हि) अचार।

**अथावर्त** वि० (हि) १-जिसकी थाह न हो। अगाध। २-अपरमित। ४-गम्भीर, गूढ़। पु० (हि) १-गहराई २-जलाशय। ३-सागर।

**अथाह** वि० (हि) १-जिसकी थाह न हो, अगाध, बहुत गहरा। २-जिसका कोई पार न पा सके, अपार। ३-गूढ़, गम्भीर, कठिन।

**अथिर** वि० (हि) अस्थिर।

**अथोर** वि० (हि) थोड़ा या कम नहीं, अधिक।

**अदंक** पुं० (हिं) आतंक, भय, डर।

**अदंड** वि० (सं) १-जो दंड देने के योग्य न हो। २-जिसपर कर न लगे। पुं० (हिं) मुआफी की भूमि।

**अदंडनीय, अदंड्य** वि० (सं) जो दण्ड पाने योग्य न हो। दण्ड या सजा से मुक्त।

**अदंत** वि० (हिं) १-बिना दाँत का। २-दुधमुँहा।

**अदग, अदग्ग** वि० (हि) १-बेदाग, निष्कलंक। २-पापरहित। ३-अछूता।

**अदत्त** वि० (सं) बिना दिया हुआ।

**अदत्ता** स्त्री० (सं) कुमारी (कन्या)।

**अदद** पुं० (अ) १-संख्या। २-संख्या लिखने का चिह्न या संकेत।

**अदन** पुं० (अ) यहूदी ईसाई तथा मुसलमान मतानुसार स्वर्ग का वह नंदन-कानन जहाँ ईश्वर ने आदम (आदिपुरुष) को बनाया था।

**अदना** वि० (अ) तुच्छ।

**अदब** पुं० (अ) शिष्टाचार।

**अदबदकर, अदबदाकर** क्रि० वि० (हिं) हठ से, टेक करके, अवश्य।

**अदबुद** वि० (हिं) अद्भुत।

**अदभ्र** वि० (सं) १-अधिक, बहुत। २-अपार, अनंत

**अदम्य** वि० (सं) १-जिसका दमन न हो सके। २-प्रबल, अजेय।

**अदय** वि० (सं) निर्दय, दयाहीन।

**अदरक** पुं० (फा) अदरख, आर्द्रक।

**अदरा** पुं० (हि) आर्द्रा नक्षत्र।

**अदराना** क्रि० (हि) १-इतराना। २-फुलाना, घमंडी बनाना।

**अदर्शन** पुं० (सं) १-दर्शन का अभाव, अविद्यमानता २-लोप, विनाश।

**अदल** पुं० (अ) न्याय। वि० (सं) १-बिना पत्ते का २-बिना दल या फौज का।

**अदल-बदल** पुं० (हि) उलट-फेर, परिवर्तन।

**अदवाइन, अदवान** स्त्री०(हि) चारपाई कसने के लिये लगाई गई पैताने की ओर की रस्सी।

**अदहन** पुं० (हि) खौलता हुआ पानी, (दाल, चावल आदि पकाने का)।

**अदांत** वि० (सं) १-इन्द्रियों का दमन न कर सकने वाला, विषयासक्त। २-उद्धत।

**अदा** स्त्री० (अ) हावभाव, नखरा। वि० चुकता, बेबाक

**अदाई** वि० (हि) चालबाज, ढोंगी।

**अदाँया** वि० (हिं) वाम, प्रतिकूल।

**अदाग, अदागी** वि० (हिं) १-दाग या चिह्न रहित। २-निर्दोष। ३-निर्मल।

**अदाता** पुं० (सं) कंजूस, सूम। वि० (सं) जो न दे।

**अदानी** पुं० (हि) कंजूस, कृपण।

**अदाय** (सं) वि० न पाने योग्य। पुं० (सं) पैतृक सम्पत्ति का अंश।

**अदायगी** स्त्री० (फा) ऋण अथवा धन आदि चुकता या बेबाक करने की क्रिया या भाव।

**अदाया** वि० (हि) १-प्रतिकूल, खराब।

**अदालत** स्त्री० (फा) न्यायालय।

**अदालती** वि०(फा) १-अदालत-सम्बन्धी। २-मुकदमेबाज।

**अदावत** स्त्री० (अ) शत्रुता, दुश्मनी।

**अदाह** स्त्री० (हि) अदा, हावभाव।

**अदित** पुं० (हि) १-सूर्य। २-रविवार।

**अदिति** स्त्री० (सं) १-प्रकृति। २-पृथ्वी। ३-कश्यप ऋषि की पत्नी का नाम।

**अदिन** पुं० (सं) १-कुसमय। २-अभाग्य।

**अदिव्य** वि०(सं) १-जो चमत्कारी न हो। लौकिक। २-साधारण। ३-बुरा। पुं० (सं) वह नायक जो देवता न हो बल्कि साधारण मनुष्य हो (साहित्य)।

**अदिष्ट** वि० (सं) १-अनदेखा। २-लुप्त। गायब।

**अदीन** वि० (सं) १-जो दीन न हो। २-उग्र। ३-उदार। ४-धनी।

**अदीह** वि० (हि) अदीर्घ। छोटा।

**अदुतिय, अदूजा** वि० (हि) अद्वितीय।

**अदूरदर्शी** वि० (सं) नासमझ। अनग्रसोची।

**अदृश्य** वि० (सं) १-दीख न पड़ने वाला। २-लुप्त। ३-अगोचर।

**अदृष्ट** वि० (सं) १-अलक्षित। २-अंतर्द्धान। तिरोहित। पुं० (सं) १-प्रारब्ध। २-अनसोची आपत्ति (आग, बाढ़ आदि)।

**अदृष्ट-पूर्व** वि० (सं) १-जो पहिले न देखा गया हो। २-अनोखा।

**अदृष्टवाद** पुं० (सं) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार बिना विवेचना के परलोक आदि की परोक्ष बातों पर शास्त्रों में लिखा होने मात्र से ही विश्वास किया जाये।

**अदेख** वि० (हि) १-अदृश्य। २-अदृष्ट।

**अदेय** वि० (सं) (दान) न देने योग्य।

**अदेव** वि० (सं) १-देवता से संम्बध न रखने वाला। २-जो देवता न हो। पुं० (सं) राक्षस।

**अदेस** पुं० (हि) १-आदेश। २-प्रणाम।

**अदोख** पुं० (हि) १-पापरहित। २-निरपराध।

**अदोखिल** वि० (हिं) निर्दोष। बे-ऐब।

**अदोस** वि० (हि) देखो 'अदोख'।

**अद्ध** वि० (हि) अर्द्ध। आधा।

**अद्धा** पुं० (हि) १-किसी वस्तु का आधा परिमाण। २- पूरी बोतल की आधी नाप।

**अद्धी** स्त्री० (हि) १-आधी दमड़ी। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २-महीन वस्त्र जिसे तन्जेब भी कहते हैं

**अद्भुत** वि० (सं) विलक्षण। विचित्र। अनोखा। पुं०

(सं) अलङ्कार शास्त्रानुसार नवरसों में से एक।

**अद्भुतोपमा** स्त्री० (सं) अर्थालंकार में उपमा का एक भेद।

**अद्य** क्रि० वि० (सं) आज। अब। अभी।

**अद्यतन** वि० (सं) आज के दिन का।

**अद्यापि, अद्यावधि** क्रि०वि० (सं) अभीतक। अब भी।

**अद्रा** स्त्री० (हि) आर्द्रा। एक नक्षत्र का नाम।

**अद्रि** पु० (सं) १-पर्वत। पहाड़। २-पत्थर। ३-सूर्य।

**अद्वैत** वि० (सं) १-एकाकी। अकेला। २-अनुपम। बेजोड़।

**अद्वैतवाद** पु० (सं) वेदांतमत। वह सिद्धांत जिसके अनुसार यह संसार मिथ्या है तथा ब्रह्म ही सत्य नित्य की [illegible] है।

**अधः** क्रि० वि० (सं) नीचे, तले।

**अधःपतन, अधःपात** पु० (सं) १-नीचे को गिरना। २-अवनति। ३-दुर्गति।

**अधःस्वस्तिक** पु० (सं) पैरों के ठीक नीचे माना जाने वाला कल्पित बिन्दु। अधोबिन्दु। (नेडर)।

**अध** क्रि० वि० (हि) नीचे। तले। वि० (हि) आधा।

**अधकचरा** वि० (हि) १-अपरिपक्व। २-अधूरा। अपूर्ण। ३-अदक्ष। अकुशल। ४-अधपिसा। दरदरा।

**अधकच्चा** वि० (हि) आधा कच्चा। अपरिपक्व।

**अधकचार** पु० (हि) पहाड़ के जंगल का डाकुओं [illegible]।

**अधकपारी** स्त्री० (हि) आधासीसी।

**अधकरिया, अधकरी** स्त्री० (हि) दो बार या दो किस्तों में चुकाने की राशि।

**अध-कहा** वि० (हि) आधा कहा हुआ। अस्पष्ट।

**अधखिला** वि० (हि) आधा खिला हुआ। अर्ध विकसित।

**अध-खुला** वि० (हि) आधा खुला हुआ।

**अधगति** स्त्री० (हि) अधोगति।

**अध-घट** वि० (हि) जिसमें पूरा या ठीक अर्थ न निकले।

**अधचरा** वि० (हि) आधा चरा या खाया हुआ।

**अधजर, अधजला** वि० (हि) आधा जला हुआ।

**अधड़ा** वि० (हि) १-बिना आधार का। २-बे सिर-पैर का। ३-असंबद्ध। ऊटपटांग।

**अधन** वि० (हि) धनहीन। निर्धन।

**अधनिया** वि० (हि) दो पैसे या आधा आने वाला।

**अधन्ना** पु० (हि) आध आने का सिक्का।

**अधन्नी** स्त्री० (हि) दो पैसे या आध आने का छोटा चौकोर सिक्का जो निकल या पीतल का होता है।

**अधपई** स्त्री० (हि) आधे पाव या दो छटांक की एक तोल।

**अध-पन्ना** पुं० (हि) चैक, बिल, रसीद आदि का अधकटा टुकड़ा जो देने वाला अपने पास रख लेता है। (काउंटर फॉइल)।

**अध-फर** पु० (हि) १-बीच का भाग। २-अंतरिक्ष। ३-मध्य आकाश। अधर।

**अधबर** पुं० (हि) १-आधा मार्ग। २-बीच का अधड़

**अधबुध** वि० (हि) अर्धशिक्षित।

**अधबैसी** स्त्री० (हि) ढलती जवानी की स्त्री।

**अधबैसू** वि० (हि) अधेड़ या मध्य अवस्था का।

**अधम** वि० (सं) १-नीच। २-पापी।

**अधमई** स्त्री० (हि) नीचता।

**अधमता** स्त्री० (सं) नीचता।

**अधमरा** वि० (हि) आधा मरा हुआ, मृतप्राय।

**अधमर्ण** पुं० (सं) ऋणी। कर्जदार।

**अधमा** स्त्री० (सं) नीच स्वभाव या आचरण वाली।

**अधमाई** स्त्री० (हि) अधमता। नीचता।

**अधमाचार** पु० (सं) बुरा व्यवहार

**अधमाधम** वि० (सं) बुरे से बुरा। महानीच।

**अधमुआ** वि० (हि) अधमरा।

**अधमुख** वि० (हि) अधोमुख। उल्टा।

**अधर** पुं० (सं) ओठ। नीचे का ओंठ। पुं० (हि) आकाश। अंतरिक्ष। वि० (हि) १-चंचल। २-अधम

**अधरज** स्त्री० (सं) ओठों की लाली।

**अधरपान** पुं० (सं) नीचे के ओंठ का चुम्बन।

**अधरबिम्ब** पुं० (सं) बिंबा या कुन्दरू के पके फल के समान लाल ओंठ।

**अधरम** पुं० (हि) अधर्म।

**अधरमधु** पुं० (सं) नीचे के ओंठ का रस।

**अधराधर** पुं० (सं) नीचे का ओंठ।

**अधरामृत** पुं० (सं) नीचे के ओंठ का रस।

**अधरासव** पुं० (सं) ओंठों के चुंबन से आसव के समान मधुरता प्रदान करने वाली मादकता।

**अधर्म** पुं० (सं) धर्मविरुद्ध कार्य, पाप।

**अधर्मी** पुं० (हि) पापी। दुराचारी।

**अधवा** स्त्री० (हि) विधवा।

**अधस्तन** वि० (सं) अधीनस्थ। अधीन रहने वाला।

**अधस्तल** पुं० (सं) १-नीचे का कमरा। २-नीचे की तह। ३-तहखाना।

**अधस्थ** वि०(सं) १-जो किसी के अधीन अथवा नीचे रहकर कार्य करे। (सुबार्डिनेट)। २-किसी नियम, आज्ञा अथवा व्यवस्था के अधीन। (अंडर)।

**अधाधुंध** क्रि० वि० (हि) देखो (अंधाधुन्ध)।

**अधार** पुं० (हि) आधार। सहारा।

**अधारा** वि०(हि) बिना धार वाला (शस्त्र)। अशित।

**अधारी** स्त्री० (हि) १-सहारा। २-यात्रा सम्बन्धी सामग्री रखने का थैला। ३-साधुओं का सहारा लेने का काठ का डंडा विशेष।

**अधार्मिक** वि० (सं) १-जो धर्मानुसार न हो। २-

धर्मरहित। ३-धर्म के विपरीत।

**अधि** उप० (सं) (शब्दों के आगे लगने पर यह अर्थ होते हैं) १-ऊपर। ऊँचा। २-प्रधान। मुख्य। ३-अधिक। ज्यादा। ४-सम्बन्ध में।

**अधिक** *वि०* (सं) १-बहुत। ज्यादा। विशेष। २-अतिरिक्त। फालतू। पुं० (स) काव्य में वह अलंकार जिसमें आधेय का आधार से वर्णन करते हैं।

**अधिक-कोण** पुं० (सं) वह कोण जो समकोण से बड़ा हो (ऑब्टयूज एंगिल)।

**अधिकतम** *वि०*(सं)सबसे अधिक या ज्यादा (मैक्सिमम)।

**अधिकतर** *वि०* (सं) १-दूसरे की अपेक्षा अधिक। २-किसी में का अधिक (अंश)।

**अधिकता** *स्त्री०* (सं) बहुतायत।

**अधिक-मास** पुं० (स) लौंद का महीना, मलमास।

**अधिकर** पुं० (सं) विशेष अवस्थाओं में अथवा अत्यधिक आय वालों पर लगने वाला अतिरिक्त कर विशेष। (सुपरटैक्स)।

**अधिकरण** पुं० (स) १-आधार। सहारा। २-सातवाँ कारक (व्याकरण)। ३-प्रकरण। ४-न्यायालय। ५-विभाग, महकमा।

**अधिकरण-मंडप** पुं०(सं)वह स्थान जहाँ न्यायाधीश अभियोगों की सुनवाई करता है, न्यायालय, (कोर्ट)

**अधिकरण-शुल्क** पुं० (स) वह शुल्क या फीस जो किसी न्यायालय में कोई प्रार्थना उपस्थित करते समय स्टाम्प या अंकपत्र के रूप में देनी पड़ती है। (कोर्ट-फी)।

**अधिकरणिय** पुं० (सं) जिसे कोई काम करने का विशेषाधिकार प्राप्त हो। (अथॉरिटी)।

**अधिकर्णिक** पुं० (सं) न्याय करने वाला। अधिकारी। मुंसिफ। (जज)।

**अधिकर्मकृत** पुं० (सं) काम करने वालों का जमादार

**अधिकर्मी** पुं० (सं) वह अधिकारी जो निर्माण-सम्बन्धी कार्यों में लगे लोगों के कार्य की देखभाल करता है। (ओवरसियर)।

**अधिकांश** पुं० (सं) अधिक अंश या भाग। ज्यादा हिस्सा। *वि०* (सं) बहुत। *क्रि० वि०* (सं) १-विशेषकर, ज्यादातर। २-प्रायः। अक्सर।

**अधिकाई** *स्त्री०*(हिं) १-अधिकता। २-महिमा, बड़ाई।

**अधिकाधिक** *वि०* (सं) अधिक से अधिक।

**अधिकाना** *क्रि०* (हिं) १-अधिक या ज्यादा होना। बढ़ना। २-बढ़ाना।

**अधिकार** पुं० (सं) १-प्रभुत्व, आधिपत्य। २-स्वत्व। हक। ३-सामर्थ्य, शक्ति। ४-योग्यता। ५-प्रकरण-शीर्षक। ६-नाट्यशास्त्रानुसार रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता।

**अधिकार-अभिलेख** पुं० (सं) अधिकार या स्वत्व-सम्बन्धी कागज-पत्र।

**अधिकारक्षेत्र** पुं० (सं) १-जो अधिकार की सीमा के अंतर्गत हो। २-किसी न्यायाधीश आदि के अधिकार या स्वत्व की सीमा अथवा क्षेत्र (जूरिसडिक्शन)।

**अधिकार-त्याग** पुं० (सं) अपना अधिकार या स्वत्व त्याग कर अलग होना। (एब्डिकेशन)।

**अधिकार-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी को कोई कार्य करने का अधिकार या स्वत्व प्राप्त हो

**अधिकार-सीमा** *स्त्री०* (स) देखो 'अधिक्षेत्र'।

**अधिकारिक** पुं० (स) वह जिसके द्वारा किसी काम का अधिकार मिले। अधिकारी। (अथॉरिटी)। *वि०* (स) १-किसी अधिकृत व्यक्ति द्वारा अथवा अधिकार सहित कहा या किया हुआ। २-अधिकारपूर्ण।

**अधिकारिकी** *स्त्री०* (सं) अधिकारीगण। ऑथॉरिटी।

**अधिकारिता** *स्त्री०* (स) आधिपत्य। स्वामित्व।

**अधिकारि-राज्य** पुं० (स) वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था मुख्यतया अधिकारी वर्ग की परम्परा पर आश्रित हो। (ब्यूरोक्रेसी)

**अधिकारी** पुं० (स) १-स्वामी, प्रभु। २-वह जिसे कोई स्वत्व या हक मिला हो। ३-वह जो किसी विशेष विषय में पारंगत हो। ४-कोई विशेष क्षमता या योग्यता रखने वाला व्यक्ति। ५-किसी कार्य या पद पर रह कर कार्य करने वाला, कर्मचारी, अफसर, (आफीसर)। ६-नाटक का पात्र विशेष। *वि०* (स) १-जिसे अधिकार मिला हो। २-जिसे कुछ पाने अथवा करने का अधिकार हो। (एन्टाइटिल्ड)।

**अधिकृत** *वि०* (स) १-जिस पर अधिकार कर लिया गया हो। २-जो किसी के अधिकार अथवा कब्जे में हो। ३-जिसे किसी कार्य के करने का स्वत्व प्रदान किया गया हो। ४-जिसको कोई कार्य संपन्न करने का अधिकार या स्वत्व हो। (ऑथराइज्ड)।

**अधिकृत-गणक** पुं० (स) हिसाब-किताब की जाँच आदि का कार्य भली प्रकार जानने वाला व्यक्ति, जिसे उपयुक्त परीक्षा के पश्चात सरकार से प्रमाण-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड अकाउंटेंट)।

**अधिकौहाँ** *वि०* (हिं) निरन्तर बढ़ते रहने वाला।

**अधिक्रम** पुं० (स) १-आरोहण, २-अतिक्रमण।

**अधिक्रमण** पुं० (स) किसी वरिष्ठ शक्ति स्वत्व आदि को हटा कर या दबा कर उसका स्थान स्वयं लेना।

**अधिक्रांत** *वि०* (स) १-दबाया या हटाया हुआ। २-जिस पर अतिक्रमण हुआ हो।

**अधिकान्ति** *स्त्री०* (स) राज्य या शासन का अपनी शक्ति विशेष या स्वत्व से किसी संस्था, संघ आदि को हटाकर या दबाकर उस काम को अपने जिम्मे

लेना। (सुपरसेशन)।

**अधिक्षेत्र** पुं० (स) किसी के अधिकार अथवा कार्य के अन्तर्गत आने वाला क्षेत्र या सीमा। (ज्युरिस्‌डिक्शन)।

**अधिगणन** पुं० (स) १–अधिक गिनना। २–किसी वस्तु के अधिक दाम लगाना।

**अधिगत** वि० (स) १–प्राप्त। २–विदित, ज्ञात।

**अधिगम** पुं० (स) १–प्राप्ति, पहुँच। २–ज्ञान। ३–किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई के पश्चात न्यायालय द्वारा निकाला गया निष्कर्ष (फाइंडिंग)।

**अधिगमन** पुं० (स) १–अध्ययन। २–किसी वाक्य की पर्यालोचना के आधार पर कोई व्याख्या (रीडिंग)

**अधिग्रहण** पुं०(सं) अधिकार सहित या अधियाचना से धन, वस्तु आदि का लेना। (रिक्विजिशन)।

**अधिग्राहक** पुं०(स) वैध युक्ति या उपाय के द्वारा प्राप्त करने वाला व्यक्ति। (एक्वायर)।

**अधित्यका** स्त्री० (स) पर्वत के ऊपर का समतल भाग या मैदान। (टेबललैंड)।

**अधिदेव** पुं० (सं) इष्टदेव। परमेश्वर।

**अधिदैवत** पुं०(स) १–विधान का पदार्थ। २–विधान-सम्बन्धी पदार्थ। वि० (स) देवता-सम्बन्धी।

**अधिदैविक** वि० (सं) ईश्वर या आत्मा सम्बन्धी।

**अधिनायक** पुं० (स) १–मुखिया या सरदार। २–विशेष परिस्थितियों के निमित्त नियत किया गया सर्वोपरि एवं सर्वाधिकार संपन्न शासक अथवा अधिकारी। (डिक्टेटर)।

**अधिनायक-तंत्र** पुं० (स) वह राज्य जहाँ केवल अधिनायक की ही आज्ञा या आदेश से सब कार्यों का संचालन होता हो।

**अधिनायकी** पुं० (स) अधिनायक का पद अथवा कार्य।

**अधिनिर्णय** पुं० (स) १–निर्णय देने की क्रिया या भाव। २–किसी को न्यायाधीश द्वारा दंड देने या दिवालिया घोषित करने के निमित्त दिया गया निर्णय। (एडज्यूडिकेट)।

**अधिनिर्णयन** पुं० (स) न्यायासन पर बैठकर किसी मामले के सम्बन्ध में निर्णय देना या इस प्रकार दिया गया निर्णय। (एडजुडिकेशन)।

**अधिनिर्णायक** पुं० (स) वह जो किसी अभियोग के सम्बन्ध में निर्णय या फैसला दे।

**अधिनिर्णीत** वि० (स) जिसके सम्बन्ध में अधिनिर्णय दिया हो।

**अधिनियम** पुं० (स) १–संसद या विधान सभा द्वारा प्रचलित वह व्यवस्था या विधान जिसमें अपराध का वर्णन, उनकी परिभाषा तथा न्यायालयों द्वारा की जाने कार्यप्रणाली का वर्णन हो। (एक्ट)। २–किसी विशेष व्यवस्था, प्रबन्ध आदि के निमित्त विशेष आज्ञा या निश्चयानुसार बनाया गया नियम, (रेगुलेशन)। ३–वह नियम विशेष किसी विधायन के अन्तर्गत बना हो, बल्कि उसकी परिभाषा के अन्तर्गत आता हो। (रेगुलेशन)

**अधिनिष्कासन** पुं० (स) विधि-विहित कार्यवाही द्वारा किसी को जमीन, मकान आदि से निष्कासित करना या बाहर निकाल देना। (इविक्शन)।

**अधिपति** पुं० (सं) १–स्वामी, मालिक। २–प्रधान अधिकारी। ३–न्यायालय का प्रधान अधिकारी अथवा विचारक। (प्रिसाइडिंग ऑफीसर)।

**अधिपत्र** पुं० (स) वह पत्र जिसमें किसी को कोई कार्य करने का अधिकार अथवा आदेश दिया हो। (वारन्ट)।

**अधिप्रचार** पुं० (स) वह सङ्घटित प्रयत्न जो किसी सिद्धान्त, मत, विचार आदि के पोषण या प्रसार में किया जाय। (प्रोपैगैंडा)।

**अधिप्रचारक** पुं० (सं) जनसाधारण में जो किसी मत, सिद्धान्त या विचार का सङ्घटित रूप से प्रचार करने वाला व्यक्ति। (प्रोपेगैंडिस्ट)।

**अधिभार** पुं० (स) वह अतिरिक्त या विशेष अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए या किसी विशेष परिस्थिति में अलग से लिया जाता है। (सरचार्ज)

**अधिभौतिक** वि० (स) प्राकृतिक।

**अधिमान** पुं० (स) किसी को औरों की अपेक्षा अधिक अच्छा समझ कर लेना, तरजीह (प्रीफरैंस)

**अधिमानित** वि० (सं) जिसे औरों की अपेक्षा उत्कृष्ट या योग्य समझ कर ग्रहण किया हो। (प्रिफर्ड)।

**अधिमान्य** वि० (सं) जो औरों की अपेक्षा अच्छा या योग्य होने के कारण ग्रहण किया जा सके। (प्रिफरेबुल)।

**अधिमास** पुं० (सं) मलमास।

**अधिमिलन** पुं० (सं) शामिल या सम्मिलित होना। (एक्सेशन)।

**अधिमुद्रण** पुं० (सं) किसी ग्रन्थ या सामयिक पत्र-पत्रिका में मुद्रित लेख या प्रकरण को किसी कार्य के लिये अलग (केवल वही अंश, लेख या प्रकरण को) छापना। (ऑफप्रिंट)।

**अधिमूल्य** पुं० (स) १–परिस्थिति विशेष में साधारण की अपेक्षा लिया गया अधिक मूल्य। २–अधिभार

**अधिया** स्त्री०(हि) १–आधा हिस्सा। २–गाँव की वही रीति जिसके अनुसार खेत की उपज का आधा भाग किसान को तथा आधा जमींदार को जाता है।

**अधियाचन** पुं० (स) किसी विशेष कार्य के निमित्त किसी से कुछ मांगने या कोई कार्य करने के लिये साधिकार कहना। (रिक्वीजीशन)।

**अधियाचना** क्रि० (हि) दो समान भागों में बाँटना।

**अधियार** पुं० (हि) १-किसी संपत्ति में आधी साझेदारी। २-आधे भाग का स्वामी। ३-जमींदार या आसामी जिसका आधा सम्बन्ध तो एक गाँव से तथा आधा दूसरे गाँव से हो।

**अधियारी** स्त्री० (हि) किसी संपत्ति में आधी साझेदारी।

**अधियुक्त** वि० (सं) वेतन या मजदूरी पर किसी कार्य में लगा हुआ। (एम्पलायड)।

**अधियुक्ति** पुं० (सं) वेतन या पारिश्रमिक पर किसी कार्य में लगा हुआ व्यक्ति। (एम्पलाई)।

**अधियोक्ता, अधियोजक** पुं०(स) वह व्यक्ति जो वेतन या पारिश्रमिक देकर लोगों को अपने कार्यालय या कारखाने आदि में काम पर लगाता हो, (एम्पलायर)

**अधियोजन** पुं० (सं) १-किसी को वेतन आदि देकर अपने कार्यालय या कारखाने में काम पर लगाना। २-किसी का वेतन आदि पर कार्यालय या कारखाने में काम पर लगा रहना। (एम्पलायमेंट)।

**अधियोजनालय** पुं० (स) लोगों को कार्य अथवा नौकरी लगाने में सहायता करने वाला कार्यालय नियोजनालय। (एम्पलायमेंट ब्यूरो)।

**अधिरक्षी** पुं० (सं) वह आरक्षी या पुलिस विभाग का कर्मचारी जिसके आधीन कुछ सिपाही रहते हैं। (हैड-कॉन्स्टेबुज)।

**अधिरथ** पुं० (स) १-गाड़ीवान, सारथी। २-बड़ा रथ।

**अधिराज** पुं० (स) महाराजा। सम्राट।

**अधिराज्य** पुं० (सं) साम्राज्य।

**अधिराधिका** स्त्री० (सं) गाड़ी की धुरी।

**अधिरात** पुं० (हि) आधी रात।

**अधिरोप, अधिरोपण** पुं० (सं) किसी पर अपराध का अभियोग अथवा दोष, आरोप आदि लगाया जाना। (चार्ज)।

**अधिरोपित** वि० (सं) १-जिस पर अपराध या दोष या आरोप लगाया गया हो। २-(वह अपराध) जिसका अधिरोपण किया गया हो। (चार्ज्ड)।

**अधिरोह** पुं० (सं) ऊपर का चढ़ाव।

**अधिरोहण** पुं० (सं) ऊपर उठना, चढ़ना।

**अधिरोहिणी** स्त्री० (हि) सीढ़ी, जीना।

**अधिलाभ, अधिलाभांश** पुं० (सं) किसी कारखाने या व्यापारिक संस्था के मजदूरों या हिस्सेदारों को वेतन तथा साधारण लाभांश के अतिरिक्त दिया जाने वाला कुछ अंश। (बोनस)।

**अधिवक्ता** पुं० (सं) वह जो न्यायालय आदि में किसी के मामले की पैरवी करे। (एडवोकेट)।

**अधिवर्ष** पु० (सं) वह वर्ष या साल जिसमें फरवरी मास २८ के स्थान पर २६ दिन का होता है। (लीप-इयर)।

**अधिवास** पु० (सं) १-निवास। २-सुगन्ध। ३-एक देश, प्रदेश या राज्य से आकर किसी अन्य देश, प्रदेश आदि में स्थायी रूप से बस जाना। (डोमासाइल)।

**अधिवासी** पुं० (सं) किसी अन्य राज्य या देश आदि में लम्बी अवधि के निमित्त जा बसने वाला। (डोमिसाइल्ड पर्सन)।

**अधिवेशन** पुं० (सं) जलसा, सभा, सम्मेलन आदि की बैठक। (सैशन)।

**अधिशुल्क** पुं० (सं) वह शुल्क जो किसी विशेष परिस्थिति में साधारण से अधिक लिया जाय। (सुपर-चार्ज)।

**अधिष्ठाता** पुं० (सं) १-अध्यक्ष। २-मुखिया, प्रधान। ३-ईश्वर। ४-किसी कार्य या संस्था की देखभाल करने वाला।

**अधिष्ठान** पुं० (सं) १-रहने का स्थान। २-नगर, जनपद। ३-पड़ाव। ४-आधार। ५ ऐसी वस्तु जिसमें अन्य वस्तु का भान हो। ६-शासन, राजसत्ता। ७-संस्था। ८-किसी संस्था के कार्यकर्ता और अधिकारी वर्ग। (एस्टेब्लिशमेंट)। ९-लाभ के निमित्त, व्यापार अथवा अन्य किसी कार्य में धन लगाना। (इनवेस्टमेंट)।

**अधिष्ठायक** पुं० (सं) १-व्यवस्था या प्रबन्ध करने वाला। २-अधिष्ठाता।

**अधिष्ठित** वि० (सं) १-स्थापित, ठहरा हुआ। २-निर्वाचित, नियुक्त। ३-लगाया हुआ।

**अधिष्ठित-स्वार्थ** पुं० (स) वह स्वार्थ जो कहीं धन खर्च करके या व्यवसाय आदि में लगाकर स्थापित किया गया हो (वेस्टेड इन्टरेस्ट)।

**अधिसंख्य** पुं० (स) नियत संख्या से अधिक। (सुपर-न्यूमरेरि)।

**अधिसूचना** स्त्री० (स) १-किसी से यह कहना कि अमुक कार्य इस प्रकार अथवा इस रूप में होना चाहिए, (इन्स्ट्रक्शन)। २-प्रज्ञापन, अधिकृत सूचना, सरकार द्वारा प्रकाशित अथवा राजकीय गजट में छपी हुई सूचना। (नोटीफिकेशन)।

**अधीक्षक** पुं० (स) वह निरीक्षक या प्रधान कर्मचारी जो किसी विभाग अथवा कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों की निगरानी करता हो। (सुपरिण्टेण्डेण्ट)।

**अधीक्षण** पुं० (स) विभाग या कार्यालय आदि के कर्मचारियों के कामों का निरीक्षण करने का कार्य (सुपरिण्टेण्डेण्स)।

**अधीत** वि० (सं) जो पढ़ा जा चुका हो।

**अधीन** वि० (सं) १-मातहत। २-आश्रित। ३-किसी नियम निर्देश आदि से बंधा हुआ। (सबजेक्ट-टू) ४-वशीभूत, आज्ञाकारी। ५-विवश। ६-अवलम्बित

**अधीन-अधिकारी** पुं० (सं) किसी बड़े या मुख्य [illegible] काम करने वाला अधिकारी, [illegible] अफसर। (सबॉर्डिनेट ऑफिसर)।

**अधीन**[illegible] १–अधीनता। २–[illegible]।

**अधीनता** [illegible] १ अधीन होना। २–अ[illegible] [illegible]।

**अधीन-प**[illegible] (सं) किसी के अधीन। (सबॉर्डिनेट)

**अधीन** [illegible] पुं० (सं) वह न्यायालय जो [illegible] अधीन [illegible] [illegible]।

**अधी**[illegible] १ [illegible] अधीन करने की [illegible]। २–[illegible] अधिकार में [illegible]।

**अधी**[illegible] (सं) १–[illegible], आश्र। २–अधिकार, [illegible]।

**अधीश, अ**[illegible] पुं० (सं) १ [illegible], मालिक। २–राजा।

**अधु**[illegible] (सं) [illegible], समाप्ति।

**अध**[illegible] [illegible] [illegible] स्पष्ट।

**अधू**[illegible] (सं) [illegible]।

**अधे**[illegible] [illegible] का सिक्का।

**अधे**[illegible] [illegible] आधा रुपया, अठन्नी।

**अधो** [illegible] (सं) नीचे [illegible]।

**अधो**[illegible] (सं) [illegible], [illegible]।

**अधोग**[illegible] स्त्री० (सं) १–[illegible], गिराव, उतार। २–[illegible]।

**अधोगमन** पुं० (सं) १ अवनति। २–नीचे जाना।

**अधोगामी** [illegible] (सं) नीचे [illegible] जाने वाला। २–अवनति की ओर जाने [illegible]।

**अधो**[illegible] पुं० (सं) एक प्रकार का [illegible]।

**अधोभाग** स्त्री० (सं) भूमि के [illegible] स्तर के नीचे वाला स्तर। (सब-[illegible])

**अधोमंडल** पुं० (सं) पृथ्वी से साढ़े सात मील तक की ऊंचाई का वायुमंडल।

**अधोमार्ग** पुं० (सं) १–नीचे का मार्ग, सुरंग का का रास्ता। २–गुदा।

**अधोमुख** [illegible] (सं) १–मुँह लटकाये हुए। २–औंधा, उलटा। क्रि० [illegible] (सं) औंधा।

**अधोमग-नाली** स्त्री० (सं+हि) वह नाली जो भूमि के नीचे-नीचे जाती है। (सब-[illegible]-ड्रेन)

**अधोलोक** पुं० (सं) पाताल।

**अधोवस्त्र** पुं० (सं) वह कपड़ा जो कमर से नीचे पहना जाता है।

**अधोवायु** पुं० (सं) अपान वायु, पाद।

**अधोबिंदु** पुं० (सं) आकाश में का वह स्थान जो हमारे पैर के नीचे है।

**अधो-शस्त्र** पुं० ( ) सैनिकों को दिया जाने वाला वह आदेश [illegible] उन्हें बन्दूक आदि शस्त्रों को उल्टा करने को कहा जाता है। (रिवर्स-आर्म)

**अध्यक्ष** पुं० (सं) [illegible]। २–मुखिया। ३–प्रधान ४–अधिष्ठाता। ५–संसद् या विधान सभा का वह निर्वाचित अधिकारी [illegible] प्रधानता में सभा की प्रक्रिया [illegible]। (स्पीकर)।

**अध्यक्ष-पीठ** पुं० [illegible] वह आसन या कुरसी जिस-[illegible] संचालन करता है। ([illegible])।

**अध्यक्षता** [illegible] (सं) १–[illegible] की क्रिया अथवा [illegible]। २–[illegible] स्थान। ३–प्रधानता। ४–[illegible] के निमित्त प्रति-[illegible] आसीन होना।

**अ**[illegible] पुं० (सं) [illegible] स्थापन।

**अ**[illegible] पुं० (सं) [illegible] विषय के अध्ययन के निमित्त दी जाने वाली [illegible]।

**अध्य**[illegible] पुं० (सं) [illegible] आदि पर जताया गया अधिकार, ([illegible])।

**अध्यर्पण** पुं० (सं) किसी वस्तु पर अपना अधिकार प्रकट करना, [illegible]।

**अध्यवसाय** पुं० (सं) १ [illegible]। २–दृढ़ निश्चय [illegible] पर होने वाली एका-ग्रता, [illegible] को पूर्णतया आत्म-[illegible]।

**अध्यवसाय** पुं० (सं) १–[illegible] के साथ किसी काम में लगे रहना। २–उत्साह।

**अध्यात्म** पुं० (सं) [illegible]।

**अध्यात्मवाद** पुं० (सं) आत्मा तथा ब्रह्म को मुख्य मानने का सिद्धांत।

**अध्यात्मा** पुं० (सं) परमात्मा।

**अध्यादेश** पुं० (सं) वह आधिकारिक आदेश जो राज्य के [illegible] द्वारा किसी आकस्मिक या विशेष स्थिति में थोड़े समय के लिये निकाला जाय; जिसे उक्त स्थिति न रहने की अवस्था में वापस ले लिया जाय अथवा आवश्यकता बनी रहने पर संसद या विधान सभा द्वारा अधिनियम के रूप में स्वीकार कर लिया जाय, (आर्डिनेंस)।

**अध्यापक** पुं० (सं) शिक्षक, उस्ताद।

**अध्यापकी** स्त्री० (हि) पढ़ाने या शिक्षा देने का काम

**अध्यापन** पुं० (सं) पढ़ाने का काम।

**अध्यापिका** स्त्री० (सं) पढ़ाने वाली, गुरुआइन।

**अध्याय** पुं० (सं) १–ग्रन्थ का खण्ड। २–सर्ग, परि-च्छेद।

**अध्यारोप** पुं० (सं) १–अपवाद, दोष। २–झूठी कल्पना।

**अध्यास** पुं० (सं) १–मिथ्या ज्ञान। २–भ्रम, धोखा।

**अध्यासन** पुं० (सं) १-बैठना। २-आरोपण।
**अध्यासीन** वि० (सं) (वह जो) किसी वर्ग अथवा समाज में सर्वोच्च स्थान पर आसीन या बैठा हुआ (प्रेसाइडिंग)।
**अध्याहार** पुं० (सं) १-तर्क-वितर्क। २-छानबीन। वाक्य विशेष का ऐसा अर्थ या आशय निकालना जो उसके शब्दों से तो स्पष्ट न होता हो, फिर भी जो आशय साधारणतः हो सकता हो। (इल्लीप्स)
**अध्युढ़ा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह करले।
**अध्येय** वि० (सं) १-अध्ययन करने योग्य। २-जो पढ़ा जाने को हो।
**अध्वर्यु** पुं० (सं) यज्ञ [illegible] यजुर्वेद [illegible] करने वाले।
**अनंग** वि० (सं) [illegible] शरीर या देह का। पुं० (सं) कामदेव।
**अनंगना** क्रि० (हि) सुध बुध खोना, बेसुध होना।
**अनंगारि** पुं०(सं) शिव।
**अनंगी** वि० (सं) अंग या अवयव रहित, देह रहित। पुं० (सं) [illegible]।
**अनंगीकार** [illegible] किसी बात, प्रस्ताव अथवा आज्ञा [illegible]। ([illegible]) [illegible] [illegible] करना। ([illegible]) २-किसी के कथन, आदेश आदि को न मानना। (रिपुडिएट)।
**अनंत** वि० (सं) १-जिसका अन्त न हो, असीम। २-बहुत, अधिक। ३-अविनाशी। पुं०(सं) १-विष्णु। २-शेषनाग। ३-[illegible]। ४-आकाश। ५-भुजा में पहने जाने वाला एक गहना।
**अनंतर** क्रि० वि० (सं) १-पीछे, बाद। २-निरन्तर, लगातार।
**अनंद** पुं० (हि) १-आनन्द। २-एक वर्णवृत्त।
**अनंदना** क्रि० (हि) प्रसन्न या आनन्दित होना।
**अनंदी** पुं० (हि) १-[illegible]। २-एक प्रकार का धान।
**अन** क्रि० वि० बिना, बगैर। वि० (हि) अन्य, दूसरा। (उप०) विपरीत या अभाव सूचित करने वाला (शब्द के पहले लगने पर)।
**अनइस** वि० (हि) अनिष्ट।
**अनक** पुं० (हि) आनक।
**अनकना** क्रि० (हि) १-सुनना। २-छिपकर सुनना।
**अनकरीब** क्रि० वि० (अ) लगभग। प्रायः।
**अनकहा** वि० (हि) बिना कहा हुआ। अकथित।
**अनख** पुं० (हि) १-क्रोध। २-खिन्नता। ३-ईर्ष्या। वि० (हि) बिना नख वाला।
**अनखना** क्रि० (हि) १-क्रोध करना। २-रुष्ट होना।
**अनखा** पुं०(हि) कुदृष्टि से बचाने के लिये लगाई गई बिन्दी।
**अनखाना** क्रि० (हि) १-अनखना। २-अप्रसन्न होना।
**अनखाहट** स्त्री० (हि) अनख।
**अनखी** वि०(हि) १-क्रोधी। २-जो जल्दी रूठ जाय। ३-जिसके नख न हों।
**अनखुला** वि० (हि) बंद।
**अनखौहाँ** वि० (हि) १-कुपित। २-चिड़चिड़ा। ३-क्रोध दिलाने वाला। ४-अनुचित।
**अनगढ़** वि० (हि) १-बिना गढ़ा। २-स्वयंभू। ३-बेडौल ४-अक्खड़।
**अनगन** वि० (हि) अगणित। बहुत।
**अनगना, अनगवना, अनगाना** क्रि० (हि) देर लगाना। [illegible] करना।
**अनगिन, अनगिनत** वि० (हि) अगणित। बेशुमार।
**अनगिना** वि० (हि) १-बिना गिना हुआ। २-बहुत [illegible]।
**अनगूढ़ा** वि० (हि) १-जो सोचा समझा न गया हो। २-[illegible]।
**अनगोरा** वि० (हि) अपरिचित।
**अनघ** वि० (सं) १-पापरहित। २-बेगुनाह। ३-पवित्र। पुं० (सं) पुण्य।
**अनघरी** स्त्री० (हि) कुसमय।
**अनचीता** वि० (हि) बिना बुलाया हुआ। अ-निमंत्रित।
**अनघोर** पुं० (हि) अत्याचार।
**अनचीते** क्रि० वि० (हि) १-चुपचाप। २-अचानक।
**अनचाहा** वि० (हि) अनिच्छित।
**अनचाहत** वि० (हि) न चाहा हुआ।
**अनचिन्हा, अनचीन्हा** वि० (हि) अपरिचित। अज्ञात।
**अनचैन** स्त्री० (हि) व्याकुलता।
**अन-जन्मा** वि० (हि) १-जिसने जन्म न लिया हो। २-जिसका जन्म न हुआ हो।
**अनजान** वि० (हि) १-नासमझ। २-अपरिचित।
**अनजोखा** वि० (हि) बिना तौला हुआ।
**अनट** पुं० (हि) १-अत्याचार। २-उपद्रव।
**अन-डीठ** वि० (हि) बिना देखा, अदृष्ट।
**अनत** वि० (सं) जो झुका हुआ न हो, सीधा। क्रि० वि० अन्यत्र, दूसरी जगह।
**अनति** वि० (हि) कम, थोड़ा। स्त्री० (सं) नम्रता रहित, अहंकार।
**अन-देखा** वि० (हि) बिना देखा हुआ।
**अनद्यतन** वि० (सं) जो आज का न हो।
**अनधिकार** पुं० (सं) १-अधिकार रहित। २-बेबसी, लाचारी। ३-अयोग्यता।
**अनधिकारी** वि० (सं) जिसे अधिकार न हो। अयोग्य।
**अनधिकृत** वि० (सं) अधिकार न दिया हुआ।
**अनधिगत** वि० (सं) बिना समझा-बूझा।
**अनधियुक्त** वि० (सं) १-जो किसी कार्य में लगा

हुआ न हो। २–जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो और खाली हो। बेकार (अन-एम्प्लायड)।

**अनधियुक्ति** स्त्री० (सं) जीवन-निर्वाह के निमित्त काम-धन्धा न होने की अवस्था, बेकारी। (अन-एम्प्लॉयमेंट)।

**अनध्याय** पुं० (सं) १–वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने की मनाही हो। २–छुट्टी का दिन।

**अनना** क्रि० (हि) लाना।

**अननुज्ञापित** वि० (सं) (वह प्रस्ताव, प्रश्न आदि) जिसे सभा में उपस्थित करने की आज्ञा न दी गई हो। (डिसअलाउड)।

**अननुरूप** वि० (हि) १–जो किसी के अनुरूप न हो। २–जो किसी की [illegible] उसके अनुरूप न हो।

**अनन्नास** पुं० (पुर्त) एक [illegible] फल का [illegible], इसके फल मीठे [illegible] हैं।

**अनन्य** वि० (सं) एकनिष्ठ।

**अनन्वय** पुं० (सं) [illegible] अर्थालंकार।

**अन-पत** पुं० (हि) [illegible]।

**अन-पढ़** वि० (हि) अशिक्षित।

**अनपत्य** वि० (सं) निःसन्तान।

**अनपराध** वि० (सं) निर्दोष।

**अनपहृत** वि० (सं) अपहरण न किया हुआ।

**अनपाकर्म** पुं० (सं) कोई प्रतिज्ञा करके उसके अनुसार कार्य न करना।

**अनपायी** वि० (हि) १–अचल। २–निश्चल। ३–कभी नष्ट न होने वाला।

**अन-पारा** पुं० (हि) मोक्ष, छुटकारा।

**अनपेक्ष** वि० (सं) १–निरपेक्ष, पक्षपातरहित।

**अनपेक्षा** स्त्री० (सं) उपेक्षा, लापरवाही।

**अनफाँस** स्त्री० (सं) मोक्ष।

**अनबन** स्त्री० (हि) बिगाड़, खटपट। वि० (हि) १–अनमेल। [illegible]।

**अनबिधा** वि० (हि) बिना छेद किया हुआ।

**अनबूझ** वि० (हि) १–अज्ञानी। २–अनजान।

**अन-बूड़ा** वि० (हि) जो डूबा न हो।

**अनबोल, अनबोलक, अनबोला** वि० (हि) १–मौन। २–गूंगा। ३–जो अपना दुःख न कह सके।

**अनभल** पुं० (हि) बुराई।

**अनभला** वि० (हि) बुरा, खराब।

**अनभवना** क्रि० (हि) अनुभव करना।

**अनभाय** पुं० (हि) आपसी बैर। वि० (हि) अनभावता

**अनभावता** वि० (हि) अ-प्रिय, नापसन्द।

**अनभिज्ञ** वि० (सं) १–अनजान, मूर्ख। २–अपरिचित

**अनभीष्ट** वि० (सं) जिसकी चाह या इच्छा न हो।

**अन-भेदी** वि० (हि) १–भेद न जानने वाला। २–पराया।

**अनभो** पुं० (हि) १–आश्चर्य। २–अनहोनी बात। वि० (हि) १–अलौकिक। २–विलक्षण।

**अनभोरी** स्त्री० (हि) चकमा, भुलावा।

**अनभ्र** वि० (सं) बिना बादल का।

**अनभ्यस्त** वि० (सं) १–जिसका अभ्यास न किया गया हो। २–जिसने अभ्यास न किया हो, अपरिपक्व।

**अनमन, अनमना** वि० (हि) १–अन्यमनस्क, उदास। २–अस्वस्थ।

**अनमापा** वि० (हि) जो मापा न जासके, जिसकी थाह न हो।

**अनमारग** पुं० (सं) कुमार्ग।

**अनमिख** वि० (हि) [illegible] गिराये, अनिमेष।

**अनमिल, अनमिलत** वि० १–बेमेल, असम्बद्ध। २–पृथक, अलग।

**अन-नमी** वि० (हि) १–जो न झुके। २–न दबने वाला

**अन-मीच** क्रि० वि० (हि) अकालमृत्यु।

**अनमोलना** क्रि० (हि) आँख खोलना।

**अन-मेल** वि० (हि) १–विशुद्ध, खालिस। २–बेजोड़, असम्बद्ध।

**अनमोल** वि० (हि) १–मूल्यवान, कीमती। २–अमूल्य। ३–सुन्दर। ४–उत्तम।

**अनम्र** वि० (सं) गर्वित, उद्धत।

**अनय** पुं० (सं) १–अन्याय। २–विपत्ति। ३–अमङ्गल

**अनयास** क्रि० वि० (हि) अनायास।

**अनरंग** वि० (हि) १–दूसरे रङ्ग का। २–दूसरी तरह का।

**अनरथ** पुं० (हि) अनर्थ।

**अनरना** क्रि० (हि) अपमान या अनादर करना।

**अनरस** पुं० (हि) नीरसता, फीकापन।

**अनरसना** क्रि० (हि) १–उदास होना। २–अप्रसन्न होना।

**अनरसा** वि० (हि) १–अनमना। २–रोगी।

**अनराता** वि० (हि) बिना रंगा हुआ, फीका।

**अनरितु** स्त्री० (हि) अनऋतु, बेमौसम।

**अनरीत** स्त्री० (हि) १–कुरीति। २–अनुचित बरताव

**अनरुचि** स्त्री० (हि) अरुचि, घृणा।

**अनरूप** वि० (हि) १–कुरूप। २–असमान।

**अनर्गल** वि० (हि) १–बेरोक, बेधड़क। २–व्यर्थ, अंडबंड। ३–लगातार।

**अनर्घ** वि० (सं) १–बहुमूल्य। २–सस्ता।

**अनर्जित** वि० (सं) बिना कमाया हुआ।

**अनर्थ** पु० (सं) १–विपरीत या उलटा अर्थ। २–बहुत बुरी एवं अनुचित बात। ३–अवैध रीति से प्राप्त धन।

**अनर्थक** वि० (सं) १–निरर्थक। २–व्यर्थ।

**अनर्थकारी** वि० (सं) १–उलटा अर्थ या मतलब

निकालने वाला। २-अनिष्टकारी। ३-नुकसान पहुँचाने वाला।

**अनर्ह** *वि०* (सं) अयोग्य।

**अनर्हता** *स्त्री०* (सं) किसी कार्य अथवा पद के अयोग्य होने का भाव। अयोग्यता। (डिस्क्वालिफिकेशन)।

**अनर्हीकरण** *पुं०* (सं) किसी को किसी कार्य या पद के अयोग्य ठहराना। (डिसक्वालिफाई)।

**अनल** *पुं०* (सं) आग, अग्नि।

**अनलचूर्ण** *पुं०* (सं) बारूद, दारू।

**अनलस** *वि०* (सं) १-निरालस्य, फुर्तीला। २-चैतन्य।

**अनलायक** *वि०* (हि) नालायक।

**अनलेखा, अनलेखे** *वि०* (हि) अनगिनत, बेहिसाब।

**अनल्प** *वि०* (सं) अधिक।

**अनवकाश** *पुं०* (सं) अवकाश या फुरसत का न होना।

**अनवच्छिन्न** *वि०* (सं) १-अखंडित, अटूट। २-संयुक्त, जुड़ा हुआ।

**अनवट** *स्त्री०* (हि) १-चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अंगूठे में पहनती हैं। २-बैलों की आँख पर बाँधे जाने वाला ढक्कन।

**अनवद्य** *वि०* (सं) निर्दोष।

**अनवधान** *पुं०* (सं) असावधानी, गफलत।

**अनवय** *पुं०* (हि) अन्वय, वंश, कुल।

**अनवरत** *क्रि० वि०* (सं) लगातार, निरंतर।

**अनवस्था** *वि०* (सं) १-अव्यवस्था। २-अधीरता, व्याकुलता।

**अनवस्थिति** *स्त्री०* (सं) १-चंचलता। २-अधीरता। ३-अवलम्बहीनता।

**अनवांसना** *क्रि०* (हि) पहली बार काम में लाना, (बरतन)।

**अनवांसा** *पुं०* (हि) १-पूला, गुट्ठा। २-पहली बार काम में लाया हुआ।

**अनवांसी** *स्त्री०* (हि) एक बिस्वे का १/४००वाँ भाग

**अनवाद** *पुं०* (हि) १-अपशब्द। २-व्यर्थ की बकवास

**अनवेक्षा** *स्त्री०* (सं) वह सामान्य अपराध जिस पर विधि के अनुसार ध्यान दिया जा सकता हो। (नॉनकागनिजेंस)।

**अनवेक्षणीय, अनवेक्षित** *वि०* (सं) (वह अपराध) जो ध्यान देने योग्य न हो। (नानकागनिजेबल)।

**अनशन** *पुं०* (सं) अन्नत्याग, निराहार रहना।

**अन-सखरी** *वि०* (हि) जो सखरी या पक्की न हो, (रसोई)।

**अन-सहन** *वि०* (हि) असहनशील।

**अनसाना** *क्रि०* (हि) १-बुरा मानना। २-चिढ़ना। ३-अप्रसन्न करना।

**अनसूया** *स्त्री०* (सं) १-ईर्षा न करना। २-अत्रि मुनि की पत्नी।

**अनस्तित्व** *पुं०* (सं) अस्तित्व का न होना।

**अनहद-नाद** *पुं०* (हि) दोनों कान बन्द करने के पश्चात् ध्यान मग्न होने पर कानों से आने वाली ध्वनि।

**अनहित** *पुं०* (हि) १-अहित, अपकार। २-अशुभ कामना।

**अनहितू** *वि०* (हि) अहितचिंतक।

**अनहोना** *वि०* (हि) न होने वाला, अलौकिक।

**अनहोनी** *वि०* (हि) न होने वाली, अलौकिक। *स्त्री०* (हि) असंभव या अलौकिक घटना।

**अनाकानी** *स्त्री०* (हि) जानबूझकर टालना, आनाकानी।

**अनाकार** *वि०* (सं) १-बिना आकार का। २-निराकार।

**अनाक्रमण** *पुं०* (सं) आक्रमण न करना।

**अनाक्रांत** *वि०* (सं) आक्रमणरहित, रक्षित।

**अनागत** *वि०* (सं) १-अनुपस्थित। २-होनहार। ३-अपरिचित। ४-विलक्षण। ५-अनादि। *क्रि० वि०* (सं) सहसा।

**अनाचरण** *पुं०* (सं) १-अशुद्ध आचरण, कदाचार। २-जो करने का काम हो वह न करना, (ओमिशन)

**अनाचार** *पुं०* (सं) १-कदाचार। २-दुराचार।

**अनाचारी** *वि०* (हि) अनाचार करने वाला।

**अनाज** *पुं०* (हि) अन्न।

**अनाजी** *वि०* (हि) अन्न का बना।

**अनाज्ञाकारी** *वि०* (सं) आज्ञा न मानने वाला।

**अनाज्ञप्त** *वि०* (सं) बिना मनव का, (नानकमिशण्ड)।

**अनात्म** *वि०* (सं) आत्मारहित, जड़।

**अनाड़ी** *वि०* (हि) १-नासमझ, नादान। २-अकुशल, अदक्ष।

**अनाथ** *वि०* (सं) १-बिना मालिक या स्वामी का। २-बे-माँ-बाप का। ३-असहाय। ४-दीन, दुखी।

**अनाथालय, अनाथाश्रम** *पुं०* (सं) अनाथ बच्चों के रहने का स्थान, यतीमखाना।

**अनादर** *पुं०* (सं) निरादर, अवज्ञा। २-तिरस्कार, अपमान। ३-एक अलंकार।

**अनादरण** *पुं०* (सं) (बैंक आदि के खाते में धन की कमी आदि के कारण) रुपया देने से इनकार करना, (डिसॉनर)।

**अनादि** *वि०* (सं) जिसका आदि न हो। जो सदा से हो।

**अनादिष्ट** *वि०* (सं) आज्ञा न दिया हुआ।

**अनादृत** *वि०* (सं) अपमानित, तिरस्कृत।

**अनाना** *क्रि०* (हि) मांगना।

**अनाप-शनाप** *पुं०* (हि) निरर्थक बकवाद।

**अनाम** वि० (सं) बेनाम का, अप्रसिद्ध।
**अनामक** पुं० (सं) अविख्यात, अप्रसिद्ध।
**अनामय** वि० (सं) १-निर्दोष। २-उत्तम।
**अनामिका** स्त्री० (सं) कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।
**अनामिष** वि० (सं) निरामिष, मांसरहित।
**अनायत्त** वि० (सं) १-जो वश में न हो। २-स्वतन्त्र।
**अनायास** क्रि० वि० (सं) १-बिना प्रयास। २-अकस्मात्।
**अनार** पुं० (फा) १-एक वृक्ष तथा उसके फल का नाम, दाड़िम। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।
**अनारदाना** पुं० (फा) खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना।
**अनारी** वि० (हि) १-अनार के रङ्ग का। २-अनाड़ी
**अनार्जव** वि० (सं) १-कुटिलता। २-बेईमान।
**अनार्य** पुं० (सं) १-जो आर्य न हो। २-म्लेच्छ
**अनावरण** पुं० (सं) १-किसी वस्तु पर पड़ा आवरण या पर्दा हटाना। २-कोई ऐसा सार्वजनिक कार्य अथवा समारोह जिसमें किसी महापुरुष की मूर्ति, [illegible] आदि पर से आवरण हटाया जाय (अनवीलिंग)।
**अनावर्तक, अनावर्ती** वि० (सं) जो एक ही बार दिया जाय अथवा किया जाय। जिसका आवर्तन न हो (अनुदान आदि) (नान-रेकरिंग)।
**अनावश्यक** वि० (सं) अप्रयोजनीय, गैरजरूरी।
**अनावासिक** वि० (सं) जो पूरे तौर से बसा हुआ न हो बल्कि अस्थाई रूप से कुछ काल के लिए किसी स्थान में [illegible] या ठहर गया हो। (नान-रेजिडेण्ट)।
**अनावृत** वि० (सं) १-जो ढका न हो। २-जिसके आगे से आवरण हटा दिया गया हो। ३-जिसका अनावरण [illegible] सम्पन्न हुआ हो। (अनवील्ड)
**अनावृष्टि** स्त्री० (सं) वर्षा का अभाव, सूखा पड़ना। (ड्रॉट)।
**अनाश्रमी** वि० (सं) १-चारों आश्रमों में से किसी से सम्बन्ध न रखने वाला। २-पतित, भ्रष्ट।
**अनाश्रय** पुं० (सं) निराश्रय, अवलम्बरहित।
**अनाश्रित** वि० (सं) आश्रयहीन, निरवलंब।
**अनासक्त** वि० (सं) निर्लिप्त, उदासीन।
**अनासक्ति** स्त्री० (सं) १-आसक्ति अथवा अनुराग-रहित। २-उदासीनता।
**अनासीन** वि० (सं) आसन, पद आदि से हटाया हुआ। (अनसीटेड)।
**अनाह** पुं० (सं) अफरा, पेट फूलना, वि० (हि) अनाथ।
**अनाहक** क्रि० वि० (हि) नाहक। व्यर्थ।
**अनाहत** वि० (सं) जिस पर आघात न हुआ हो। पुं० (सं) १-शब्दयोग का अनहद नाद। २-हठयोग के अनुसार छः चक्रों में से एक।
**अनाहार** पुं० (सं) उपवास। भोजन का त्याग। वि० (सं) जिसने कुछ खाया न हो।
**अनाहारी** वि० (हि) उपवास किया हुआ।
**अनाहूत** वि० (सं) बिना बुलाया। अनिमन्त्रित।
**अनिंद** वि० (हि) अनिंद्य।
**अनिंद्य** वि० (सं) १-जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष २-उत्तम।
**अनि** स्त्री० (हि) सेना।
**अनिच्छा** स्त्री० (सं) अरुचि।
**अनिच्छित** वि० (सं) अरुचिकर।
**अनिच्छु, अनिच्छुक** वि० (सं) निराकांक्षी।
**अनित** वि० (हि) अनित्य।
**अनित्य** वि० (सं) १-अस्थायी। २-नश्वर। ३-असत्य।
**अनिद्र** देखो 'उन्निद्र'।
**अनिप** पुं० (हि) सेनापति।
**अनिमा** स्त्री० (हि) अणिमा।
**अनिमादिक** स्त्री० (हि) अणिमा आदि आठों सिद्धियाँ।
**अनिमिष, अनिमेष** क्रि० वि० (सं) १-बिना पलक झपकाये। एकटक। निरंतर। लगातार।
**अनियंत्रित** वि० (सं) १-जिस पर नियंत्रण या प्रतिबंध न हो। २-मनमाना।
**अनियंत्रित राज्य** पुं० (सं) वह तंत्र जिसमें राज्य के समस्त अधिकार एक व्यक्ति के हाथ में हो तथा जिसमें जन-प्रतिनिधियों का कोई नियंत्रण न हो। (अबसोल्यूट मॉनर्की)।
**अ-नियम** पुं० (सं) नियम का अभाव। बेकायदगी।
**अ-नियमित** पुं० (सं) १-नियमरहित। बेकायदा। २-अनिश्चित। ३-जिसमें नियम आदि का भली-भांति परिपालन न हुआ हो। (इरेगुलर)।
**अनियाउ** पुं० (हि) अन्याय।
**अनियारा** वि० (हि) १-नुकीला। २-पैना।
**अनिरुद्ध** वि० (सं) न रोका हुआ, अबाध। पुं० (सं) श्रीकृष्ण के पोते का नाम।
**अनिर्दिष्ट** वि० (सं) १-अनिश्चित, जिसका निर्देश न हुआ हो। २-अनिश्चित।
**अनिर्बंध** वि० (सं) १-बंधनरहित। २-स्वतन्त्र।
**अनिर्वच, अनिर्वचनीय** वि० (सं) जिसका वर्णन न किया जा सके, अ-कथनीय।
**अनिर्वाच्य** वि० (सं) १-जिसका वर्णन न होसके। २-जो चुना न जा सके।
**अनिर्वाप्य** वि० (सं) जिसका शमन न होसके।
**अनिल** पुं० (सं) पवन; हवा।
**अनिलकुमार** पुं० (सं) हनुमान।
**अनिवार** वि० (हि) अनिवार्य।
**अनिवार्य** वि० (सं) १-जो अवश्य हो, अवश्यम्भावी २-अटल। ३-परमावश्यक।

**अनिवार्य-भरती** *स्त्री०* (हि) सेना में सेवा के लिए अनिवार्य अथवा परमावश्यक रूप से भरती कर लिया जाना। (कानसक्रिप्शन)।

**अनिश्चित** *वि०* (स) १-जिसका निश्चय न किया हो। २-सहसा बीच में आजाने वाला। (कंटिंजेंट)

**अनिष्ट** *वि०* (सं) अवांछित। *पुं०* (स) १-अमंगल। २-हानि।

**अनी** *स्त्री०* (हि) १-नोक। २-समूह। ३-सेना। ४-ग्लानि।

**अनीक** *पुं०* (सं) १-सेना। २-समूह। ३-युद्ध। *वि०* (हि) बुरा।

**अनीठ** *वि०* (हि) अनिष्ट।

**अनित, अनीति** *स्त्री०* (स) १-नीति, न्याय आदि का अभाव। २-अन्याय। ३-अत्याचार।

**अनीश** *वि०* (सं) १-ईश्वर रहित। २-अनाथ। ३-सबसे बड़ा।

**अनीश्वरवाद** *पुं०* (सं) ईश्वर को न मानने का मत, नास्तिकता।

**अनीह** *वि०*(स) १-इच्छा रहित, निस्पृह। २-लापरवाह

**अनीहा** *स्त्री०* (स) १-अनिच्छा, निस्पृहता। २-निश्चेष्टता।

**अनु** *उप०* (स) (शब्द के आगे लगने से) १-पीछे। २-सदृश। ३-साथ। ४-प्रत्येक। ५-बारम्बार, आदि अर्थ निकलते हैं।

**अनुकंपा** *स्त्री०* (सं) १-दया, अनुग्रह। २-सहानुभूति

**अनुकरण** *पुं०* (सं) १-नकल। २-पीछे आने वाला

**अनुकलन** *पुं०* (सं) देखो 'अनुकूलन' (३)।

**अनुकल्प** *पुं०* (सं) सामने की वस्तुओं अथवा बातों में से वह कोई वस्तु या बात जो चुनी जाने अथवा ग्राह्य हो। (अल्टरनेटिव)।

**अनुकारक** *वि०* (सं) हूबहू किसी की नकल करने वाला। (इमीटेटर)।

**अनुकूल** *वि०* (सं) १-अनुसार, मुआफिक। २-हितकर। ३-प्रसन्न। *क्रि० वि०* तरफ। *पुं०* (सं) १-विवाहिता से ही प्रेम रखने वाला नायक। २-एक काव्यालङ्कार।

**अनुकूलता** *स्त्री०* (सं) अनुकूल होने का भाव।

**अनुकूलन** *पुं०* (सं) १-अपने को किसी के अनुकूल बनाना। २-सहायता। ३-आवश्यक परिवर्तन कर अनुकूल बनाना। (एडाप्टेशन)।

**अनुकूलना** *क्रि०* (हि) १-अप्रतिकूल होना। २-पक्ष में होना। ३-प्रसन्न होना।

**अनुकूला** *स्त्री०* (सं) एक वर्णवृत्त का नाम।

**अनुकूलीकरण** *पुं०* (सं) देखो 'अनुकूलन' (३)।

**अनुकृत** *वि०* (सं) अनुकरण किया हुआ।

**अनुकृति** *स्त्री०* (सं) १-समान आचरण, नकल। २-एक काव्यालङ्कार। ३-ज्यों की त्यों किसी वस्तु को देखकर बनाई हुई अन्य वस्तु। (इमीटेशन)।

**अनुकृति-काव्य** *पुं०* (सं) किसी प्रसिद्ध कवि की कविता का ऐसा अनुकरण जिसमें शब्दविन्यास तथा विचार-परम्परा इस प्रकार बदल दी जाय कि उसके पढ़ने से हास्यमिश्रित आनन्द की सृष्टि हो। (पेरोडी)।

**अनुक्त** *वि०* (सं) बिना कहा हुआ।

**अनुक्रम** *पुं०* (सं) १-क्रम, सिलसिला। २-क्रमानुसार एक के बाद एक होने का भाव, (सक्सेशन)।

**अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी** *स्त्री०* (सं) १-क्रम। सिलसिला। २-क्रमानुसार दी हुई सूचि। (इंडक्स)।

**अनुक्षण** *क्रि० वि०* (स) १-प्रति क्षण। २-लगातार। निरंतर।

**अनुगंता** *पुं०* (सं) अनुगामी।

**अनुग** *वि०* (सं) अनुयायी। *पुं०* (सं) सेवक।

**अनुगत** *वि०* (स) १-अनुयायी। २-अनुकूल। *पुं०* (स) सेवक।

**अनुगम** *पुं०* (स) अलग-अलग तथ्यों अथवा तत्वों के आधार पर स्थिर किया जाने वाला परिणाम (तर्कशास्त्र)। (इंडक्शन)।

**अनुगमन** *पुं०* (स) १-अनुसरण। २-समान आचरण। ३-विधवा का मृत पति के साथ सती होना।

**अनुगामिता** *स्त्री०* (स) १-अनुगामी होने की क्रिया या भाव। २-अनुगमन।

**अनुगामी** *वि०* (स) १-अनुसरण करने वाला। २-समान आचरण करने वाला। ३-आज्ञाकारी।

**अनुगुण** *वि०* (सं) समान गुण वाला। *पुं०* (सं) एक अर्थालंकार।

**अनुगृहीत** *वि०* (सं) १-जिस पर कृपा की गई हो। २-कृतज्ञ।

**अनुग्रह** *पुं०*(सं) १-कृपा, दया। २-अनिष्ट-निवारण। ३-राज्य या शासन की ओर से दी जाने वाली रियायत। (मरसी)।

**अनुग्रहीत** *वि०* (स) अनुगृहीत।

**अनुग्राहक** *वि०* (स) कृपालु।

**अनुग्राही** *वि०* (हि) कृपालु।

**अनुचय** *पुं०* (सं) १-सार। २-संग्रह। *वि०* (स) १-कोरा। २-अमूर्त।

**अनुचयन** *पुं०* (स) सिद्धान्तीकरण।

**अनुच** *वि०* (हि) अनुच्च, नीचा।

**अनुचर** *पुं०* (स) १-नौकर। २-साथी।

**अनुचित** *वि०* (स) १-नामुनासिब। २-बुरा।

**अनुच्च** *वि०* (स) जो ऊँचा न हो, नीचा।

**अनुच्छेद** *पुं०* (सं) १-किसी अधिनियम, विधान, नियमावली, संविदा आदि का वह अङ्ग विशेष जिसमें एक ही विषय तथा उसके प्रतिबन्धों आदि का निरूपण हो। (आर्टिकल)। २-पुस्तक में लेख

के किसी प्रकरण में वह विशिष्ट विभाग जिसमें किसी एक विषय या अङ्ग का एक साथ विवेचन होता है (पैराग्राफ)।

**अनुज** वि० (सं) जो बाद में पैदा हुआ हो। पुं० (सं) छोटा भाई।

**अनुजा, अनुजात** स्त्री० (सं) छोटी बहन।

**अनुजीवी** वि० (सं) किसी के आश्रय पर जीने वाला पुं० (सं) सेवक, नौकर।

**अनुज्ञप्त** वि० (सं) जिसके लिए स्वीकृति मिल गई हो। (एलाउड)।

**अनुज्ञप्ति** स्त्री० (सं) १-किसी कार्य को करने की अनुमति अथवा स्वीकृति देने की क्रिया या भाव। (सैंक्शन)। २-कोई वस्तु बेचने या खरीदने की अनुमति या स्वीकृति जो नियत शुल्क देने पर राज्य या सरकार से प्राप्त की गई हो। (लाइसंस)।

**अनुज्ञा** स्त्री० (सं) १-आज्ञा। २-अनुमति। ३-बिना आपत्ति किये किसी को कोई कार्य करने देना। (एलाउ)। ४-एक अर्थालङ्कार।

**अनुज्ञात** वि० (सं) जिसके लिए अनुज्ञा या अनुमति मिली हो। (एलाउड)।

**अनुज्ञापक** पुं० (सं) अनुज्ञा या स्वीकृति देने वाला व्यक्ति।

**अनुज्ञा-पत्र** पुं० (सं) १-वह पत्र जिसके द्वारा किसी अधिकारी से कोई कार्य करने की अनुमति प्राप्त हुई हो। (परमिट)। २-वह पत्र जिसके द्वारा किसी को कोई वस्तु बेचने या खरीदने की स्वीकृति आवश्यक शुल्क अदा करने पर मिली हो। (लाइसेंस)।

**अनुज्ञापन** पुं० (सं) अनुज्ञा या अनुमति देने का भाव

**अनुज्ञापित** वि० (सं) देखो 'अनुज्ञप्त'।

**अनुताप** पुं० (सं) १-दाह, तपन। २-दुख। ३-पछतावा।

**अनुतोष** पुं० (सं) १-किसी कार्य से होने वाला सन्तोष। २-किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने के निमित्त दिया जाने वाला धन। (ग्रेटिफिकेशन)।

**अनुतोषण** पुं० (सं) १-किसी को सन्तुष्ट अथवा प्रसन्न करना। २-भेंट आदि देकर किसी को अपने अनुकूल बनाना। (ग्रैटिफिकेशन)।

**अनुत्तर** वि० (सं) १-निरुत्तर, लाजवाब। २-सर्वश्रेष्ठ। ३-मौन।

**अनुत्तरदायित्व** स्त्री० (सं) कर्त्तव्य-पालन तथा उत्तरदायित्व की पूर्णतया उपेक्षा या अभाव। (इर्रेस्पॉसिब्लिटी)।

**अनुत्तरदायी** वि०(सं)जो अपने उत्तरदायित्व का पूर्णतया ध्यान न रखे और उसकी उपेक्षा करे। (इर्रेस्पॉसिबुल)।

**अनुत्तरित** वि० (सं) जिसका उत्तर न दिया गया हो

**अनुत्तीर्ण** वि० (सं) जो परीक्षा में पास न हुआ हो।

**अनुत्साह** पुं०(सं) उत्साह-हीनता, हौसला न होना।

**अनुदत्त** वि० (सं) अनुदान रूप में दिया गया।

**अनुदात्त** वि० (सं) १-छोटा, तुच्छ। २-नीचा (स्वर) ३-लघु (उच्चारण)। पुं० (सं) स्वर के तीन भेदों में से एक।

**अनुदान** पुं० (सं) सहायता के रूप में दिया जाने वाला धन। (ग्रांट)।

**अनुदार** वि० (सं) १-जो उदार न हो, संकीर्ण। २-कृपण।

**अनुदित** वि० (सं) अनुवाद किया हुआ। पुं० (सं) अरुणोदय का समय।

**अनुदिन, अनुदिवस** क्रि० वि० (सं) नित्यप्रति, प्रतिदिन, हर रोज।

**अनुदीपित** वि० (सं) ध्वनि को लक्ष्य करके या पदचिह्नों से पीछा करने या पता लगाने वाला (ट्रेसर)।

**अनुदृष्टि** स्त्री० (सं) बहुत सी वस्तुओं में से प्रत्येक वस्तु को उसके वास्तविक रूप में तथा सब वस्तुओं के अनुपात को दृष्टि में रखते हुए देखने की क्रिया अथवा भाव। (पर्सपेक्टिव)।

**अनुदेश** पुं० (सं) किसी काम को करने के लिए आदेश देना, हिदायत। (इंसट्रक्शन)।

**अनुद्विग्न** वि०(सं) १-शांत चित्त वाला। २-निश्शंक, निर्भय।

**अनुद्वेग** पुं० (सं) भय अथवा व्याकुलता रहित रहने का भाव।

**अनुधर्मक** वि० (सं) धर्म, आकृति, स्वरूप आदि की दृष्टि से किसी के समान या सदृश, अतिदिष्ट। (एनैलोगस)।

**अनुधर्मता** स्त्री० (सं) अनुधर्मक होने की अवस्था या भाव (एनैलोजी)।

**अनुधावन** पुं० (सं) १-अनुसरण। २-अनुकरण।

**अनुनय** पुं० (सं) १-विनय, विनती। २-किसी काम के लिए समझाना-बुझाना। ३-रूठे हुए को मनाना

**अनुनयकर्ता** पुं० (सं) वह जो किसी को अपने किसी कार्य के लिये समझाये। (कैन्वेसर)।

**अनुनासिक** वि० (सं) जिसका उच्चारण मुख और नासिका से हो।

**अनुन्नत** वि० (सं) जो ऊँचा न हो, नीचा।

**अनुपकार** पुं० (सं) १-उपकार या भलाई का अभाव २-अपकार, हानि।

**अनुपद** क्रि० वि० (सं) १-कदम-ब-कदम। २-अनन्तर पुं० (सं) सेवक।

**अनुपम, अनुपमेय** वि० (सं) १-उपमारहित, अनूठा। बहुत अच्छा।

**अनुपयुक्त** वि० (सं) १-जो उपयुक्त अथवा योग्य न हो। २-अयोग्य। ३-कार्य में न लाया हुआ।

**अनुपयोग** पुं० (सं) उपयोग का अभाव, काम में न लाना।

**अनुपयोगिता** स्त्री० (सं) अयोग्यता, निरर्थकता।

**अनुपयोगी** वि० (सं) व्यर्थ का।

**अनुपस्थित** वि० (सं) गैरहाजिर, अविद्यमान।

**अनुपस्थिति** स्त्री० (सं) गैरहाजिरी, अविद्यमानता।

**अनुपात** पुं० (सं) १-त्रैराशिक क्रिया। २-तुलना के विचार से एक वस्तु का अन्य वस्तु से रहने वाला सम्बन्ध। तुलनात्मक स्थिति। (प्रोपोर्शन)।

**अनुपाती** वि० (सं) अनुपात से, तुलनात्मक स्थिति के द्वारा।

**अनुपाती-प्रतिनिधित्व** पुं० (सं) देखो 'आनुपाती-प्रतिनिधित्व'।

**अनुपान** पुं० (सं) औषध के साथ ऊपर से खाई जाने वाली वस्तु, पथ्य।

**अनुपूरक** वि० (सं) १-किसी के साथ लगकर अथवा मिलकर उसकी पूर्ति करने वाला। (कॉम्प्लिमेंटरी)। २-छूट, त्रुटि, क्षति आदि की पूर्ति के निमित्त पीछे से लगाया, मिलाया अथवा बढ़ाया हुआ। (सप्लिमेंटरी)।

**अनुपूरक-अनुदान** पुं० (सं) किसी कार्य में रही छूट, त्रुटि, क्षति आदि को पूरा करने या बढ़ाने के लिए सहायता या अनुदान देना। (सप्लिमेंटरी-ग्रांट)।

**अनुपूरण** पुं० (सं) छूट, कमी आदि की पूर्ति के लिए बाद में कुछ बढ़ाना या मिलाना। (सप्लिमेंट)।

**अनुपूरित** वि० (सं) कमी, त्रुटि आदि की पूर्ति के निमित्त बाद में जोड़ा, मिलाया अथवा बढ़ाया हुआ। (सप्लिमेंटेड)।

**अनुपूर्ति** स्त्री० (सं) १-अनुकरण करने की क्रिया अथवा भाव। २-वह वस्तु जिसके द्वारा छूट, कमी त्रुटि आदि का अनुपूरण किया जाय। (सप्लिमेंट)।

**अनुप्रस्थ** वि० (सं) जो चौड़ाई के बल हो।

**अनुप्रनाण** पुं० (सं) प्राण डालना।

**अनुप्रापण** पुं० (सं) वसूली करने की क्रिया या भाव वसूली, (कलेक्शन)।

**अनुप्राप्त** वि० (सं) वसूल किया हुआ।

**अनुप्राप्ति** स्त्री० (सं) वसूली।

**अनुप्राप्य** वि० (सं) उगाहने योग्य।

**अनुप्रास** पुं० (सं) एक शब्दालंकार, वर्णमैत्री, तुक।

**अनुबंध** पुं० (सं) १-बन्धन। २-किसी विषय की सब बातों का विवेचन। ३-किसी कार्य के करने के निमित्त दो पक्षों में परस्पर होने वाला ठहराव या समझौता। (एग्रिमेंट)। ४-परस्पर किया जाने वाला निश्चय जो भावी कार्य के सम्बन्ध में हो। (एनगेजमेंट)। ५-वस्तुओं, जीवों या अंगों आदि में होने वाला पारस्परिक सम्बन्ध। (को-रिलेशन)।

**अनुबंध-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी अनुबन्ध की शर्तें लिखी हों, इकरारनामा। (एग्रिमेंट)।

**अनुबद्ध** वि० (सं) १-बँधा हुआ। २-जिसके सम्बन्ध में कोई पारस्परिक समझौता हुआ हो। (एग्रीड)।

**अनुबद्ध-करना** क्रि० (हि) अन्त में जोड़ना, साथ में रखना या मिला देना। (टू-एनेक्स)।

**अनुबोधक** पुं० (सं) किसी व्यक्ति विशेष को, स्मरण रखने के लिए दिया जाने वाला पत्र (मेमोरेंडम)।

**अनुबोधन** पुं० (सं) किसी को कोई बात या विषय स्मरण कराने की क्रिया या भाव।

**अनुभक्त** वि० (सं) सब लोगों को उनकी आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया जाय। (रैशण्ड)।

**अनुभक्तक** पुं० (सं) वह प्रणाली जिसमें लोगों को उनकी आवश्यकता को ध्यान में रख निश्चित परिमाण में दिया गया अंश। (रैशन)।

**अनुभव** पुं० (सं) १-प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान। (एक्सपीरिएन्स)।

**अनुभवना** क्रि० (हि) अनुभव करना, समझ लेना।

**अनुभवी** वि० (सं) अनुभव रखने वाला।

**अनुभाजन** पुं० (सं) वह प्रणाली जिसमें लोगों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए किसी वस्तु का समान रूप से निश्चित मात्रा में वितरण किया जाता है। (राशनिङ्ग)।

**अनुभाव** पुं० (सं) १-महिमा। २-अलङ्कार-शास्त्र के अनुसार रस के चार अङ्गों में से एक। ३-किसी वर्ग, वस्तु या व्यक्ति में पाये जाने वाले गुण अथवा लक्षण। (कैरेक्टरिस्टिक्स)।

**अनुभावी** वि० (सं) १-किसी विषय का अनुभव रखने वाला। २-वह गवाह जिसने सब बातें स्वयं देखी और सुनी हों। (आइ-विटनेस)।

**अनुभाव्य** वि० (सं) १-अनुभव के योग्य। २-प्रशंसा के योग्य। ३-(जो किसी में) विशेष रूप से पाया जाने वाला (गुण या लक्षण)।

**अनुभूत** वि० (सं) १-अनुभव से ज्ञात। २-परीक्षित।

**अनुभूति** स्त्री० (सं) १-अनुभव। २-परिज्ञान।

**अनुभूमिका** स्त्री० (सं) बड़े ग्रन्थ या प्रकरण में दी जाने वाली छोटी भूमिका।

**अनुभोग** पुं० (सं) किसी कार्य के बदलने में दी जाने वाली भूमि, माफी।

**अनुभ्राता** पुं० (सं) अनुज।

**अनुमति** स्त्री० (सं) १-आज्ञा। २-किसी काम को करने से पहले बड़ों से आज्ञा के रूप में ली जाने वाली स्वीकृति, अनुज्ञा। (परमीशन)। ३-किसी कार्य के आरम्भ में अथवा समाप्ति पर उसका किसी बड़े या उच्चाधिकारी द्वारा होने वाला अनुमोदन या समर्थन, स्वीकृति। (एस्सेन्ट)।

**अनुमान** पुं० (सं) १-अटकल, अन्दाज। २-मोटा

हिसाब लगाकर कूत या अन्दाज से यह समझना कि यह ऐसा अथवा इतना होगा। (एस्टिमेट) । ३-न्याय प्रमाण के चार भेदों में से एक।

**अनुमानतः** *क्रि० वि०* (सं) अनुमान या अन्दाज से।

**अनुमानना** *क्रि०* (हि) अनुमान करना, अन्दाजा लगाना।

**अनुमानित** *वि०* (सं) १-जो अनुमान या अटकल से सोचा या समझा गया हो। (गेस्ड)। २-जो मोटा हिसाब लगाकर या अन्दाज से ठहराया गया हो (एस्टिमेटेड)।

**अनुमाप** *पुं०* (सं) १-मापने का साधन। २-निश्चित दूरी के लिए मानी हुई इकाई। (स्केल)।

**अनुमित** *वि०* (सं) दे० 'अनुमानित'।

**अनुमिति** *स्त्री०* (सं) अनुमान।

**अनुमेय** *वि०* (सं) अनुमान या अन्दाज के लायक।

**अनुमोदन** *पुं०* (सं) १-प्रसन्नता दिखलाना। २-किसी कार्य, मत या प्रस्ताव को ठीक मानते हुए अपनी सहमति प्रकट करना। (एप्रूवल)।

**अनुमोदित** *वि०* (सं) जिसका किसी ने अनुमोदन किया हो, समर्थनप्राप्त। (एप्रूव्ड)।

**अनुयाचक** *पुं०* (सं) १-माल खरीदने के लिये दूसरों को राजी करने का प्रयत्न करने वाला। (कैन्वेसर)। २-मतदाता के पास जाकर उसे अपने या अपने दल के पक्ष में मतदान करने के लिए तैयार करने वाला। (कैन्वेसर)।

**अनुयाचन** *पुं०* (सं) किसी को समझा-बुझाकर अपने पक्ष में करते हुए उससे कोई कार्य करने के लिए प्रार्थना करना या मत प्राप्त करना। (कैन्वेसिंग)

**अनुयायी** *वि०* (सं) १-अनुगामी। २-अनुकरण करने वाला। *पुं०* (सं) सेवक।

**अनुयोग** *पुं०* (सं) १-किसी बात की सत्यता में सन्देह प्रकट करना। (चैलेंज)। २-जिज्ञासा।

**अनुरंजन** *पुं०* (सं) १-अनुराग, प्रेम। २-दिल बहलाना।

**अनुरक्त** *वि०* (सं) १-आसक्त, प्रेमयुक्त। २-किसी की ओर झुका या लगा हुआ।

**अनुरक्ति** *स्त्री०* (सं) १-आसक्ति, प्रेम। २-अनुरक्त होने की क्रिया या भाव।

**अनुरणन** *पुं०* (सं) किसी वस्तु का बोलना या बजना

**अनुरत** *वि०* (सं) अनुरक्त।

**अनुराग** *पुं०* (सं) प्रेम, आसक्ति।

**अनुरागना** *क्रि०* (हि) प्रेम या प्रीत करना।

**अनुरागी** *वि०* (हि) प्रेमी।

**अनुराध** *पुं०* (सं) प्रार्थना।

**अनुराधना** *क्रि०* (हि) मनाना।

**अनुरूप** *वि०* (सं) १-सदृश। २-योग्य।

**अनुरूपक** *पुं०* (सं) मूर्त्ति, प्रतिमा।

**अनुरूपता** *स्त्री०* (सं) किसी के अनुरूप या सदृश होने की क्रिया या भाव, जैसा कोई हो, ठीक वैसा ही अथवा उसके सदृश होना, (एप्रिमेंट)।

**अनुरूपना** *क्रि०* (हि) किसी के अनुरूप होना या करना

**अनुरोध** *पुं०* (सं) १-बाधा, रुकावट। २-प्रेरण। ३-आग्रह।

**अनुरोधक, अनुरोधी** *पुं०* (सं) वह जो अनुरोध या आग्रह करे।

**अनुलंब** *पुं०* (सं) वह अवस्था जिसमें हाँ या ना का कुछ भी निश्चय न हुआ हो पर अभी होने को हो, (सस्पेंस)।

**अनुलंबखाता** *पुं०* (सं) वह खाता जिसमें किसी की दी गई इस प्रकार की रकम या रकमें अस्थायी रूप से डाल दी जाती है, जिसकी पक्की खतौनी बाद में हिसाब मिलने पर की जाय, उचंत खाता, (सस्पेंस अकाउण्ट)।

**अनुलंबन** *पुं०* (सं) १-किसी कर्मचारी के दोषी होने का संदेह उत्पन्न होने की अवस्था में उसे तब तक के लिये उसके पद से हटा देना जब तक उस सम्बन्ध में यथोचित छानबीन या जाँच न हो ले, मुअत्तल (सस्पेंडेड)। २-कोई नियम, अधिवेशन कार्य आदि कुछ समय के लिये टाल देना, (सस्पेंडेड)।

**अनुलग्न** *पुं०* (सं) किसी के साथ लगा या जुड़ा हुआ, (अटैच्ड, एनक्लोज्ड)।

**अनुलग्नक** *पुं०* (सं) वह पत्र या कागज जो किसी अन्य पत्र के साथ लगा या जुड़ा हो, (एनक्लोजर)

**अनुलाप** *पुं०* (सं) कही हुई बात को दोहराना, (रिपीटीशन)।

**अनुलिखित** *वि०* (सं) जिस पर अनुलेख लिखा हो। (एन्डोर्स्ड)।

**अनुलिपि** *स्त्री०* (सं) १-लेख, चित्र आदि की ज्यों की त्यों प्रतिलिपि, (फैक्सिमिलि) २-किसी लिखी हुई चीज की नकल या प्रतिलिपि, (डिप्लीकेट)।

**अनुलेख** *पुं०* (सं) किसी पत्र पर अपनी स्वीकृति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने पर लेना, (एन्डोर्समेंट)।

**अनुलेखन** *पुं०* (सं) घटना अथवा कार्य आदि का लेखा लिखना।

**अनुलेखांकित** *पुं०* (सं) अनुलेख लिखना, कागजात की पीठ पर स्वीकृति या सहमति लिखना, (एन्डोर्स)

**अनुलेखित** *वि०* (सं) (वह पत्र या लेख) जिस पर अनुलेख लिखा हो, (एन्डोर्स्ड)।

**अनुलेपन** *पुं०* (सं) १-किसी तरल पदार्थ की तह चढ़ाना, लेपन। २-सुगन्धित पदार्थों को देह पर उबटना। ३-लीपना, पोतना।

**अनुलोम** *पुं०* (सं) १-ऊँचे से नीचे का क्रम, उतार।

२-संगीत में स्वरों का उतार, अवरोह।
**अनुल्लंघ्य** वि० (सं) जिसका उलङ्घन न हो।
**अनुवचन** पु'० (सं) १-कहे हुए को उसी प्रकार (जैसे का तैसा) दोहराना। २-प्रकरण, अध्याय। ३-भाग, खंड।
**अनुवर्त्तन** पु'० (सं) १-अनुगमन। २-समान आचरण। ३-किसी नियम का अनेक स्थानों पर लगाना
**अनुवर्ती** वि० (सं) १-अनुयायी। २-बाद में आने वाला या रखा जाने वाला।
**अनुवर्ती-प्रस्ताव** पु'० (सं) बाद में आने वाला या रखा जाने वाला प्रस्ताव या संकल्प।
**अनुवक्ता** वि० (सं) कही हुई बात को दोहराने वाला।
**अनुवाक्** पु'० (सं) १-वेद के अध्याय का एक भाग। २-अध्याय या प्रकरण का एक भाग।
**अनुवाद** पु'० (सं) १-भाषान्तर। उल्था। तर्जुमा। २-फिर से कहना। दोहराना।
**अनुवादक** पु'० (सं) अनुवाद या भाषांतर करने वाला (ट्रांसलेटर)।
**अनुवादित** वि०(सं) अनुवाद या भाषांतर किया हुआ
**अनुवादी** वि० (सं) संगीत में स्वर का एक भेद।
**अनुवाद्य** वि० (सं) १-अनुवाद करने के योग्य। २-जिसका अनुवाद होने को हो।
**अनुविद्ध** वि० (सं) १-गड़ा हुआ। संलग्न। २-फैला-हुआ। ३-अलंकृत। ४-गूंथा हुआ।
**अनुविष्ट** वि० (सं) जो अपनी जगह पर लिखा गया हो। (एण्टर्ड)।
**अनुविष्टि** स्त्री० (सं) यथा-स्थान लिखा जाना। (एण्टरी)।
**अनुवृत्ति** स्त्री० (सं) किसी कर्मचारी की निरंतर निश्चित काल तक सेवा करने के उपलक्ष्य में या उसकी वृद्धावस्था के विचार से उसके वेतन का कुछ अंश भरण-पोषण के हेतु दिया जाना। (पेन्शन)।
**अनुवृत्तिक** वि० (सं) जिसके लिए अनुवृत्ति मिल सकती हो।
**अनुवृत्तिधारी** पु'०(सं) अनुवृत्ति पाने वाला। (पेंशनर)।
**अनुवेश** पु'० (सं) देखो 'अनुविष्टि'।
**अनुशंसा** स्त्री० (सं) सिफारिश। (रिकमेंडेशन)।
**अनुशंसित** वि० (सं) जिसके सम्बन्ध में अनुशंसा या सिफारिश की गई हो। (रिकमेंडेड)।
**अनुशय** पु'० (सं) १-पुराना वैर। २-किसी दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य को रद्द करना। (रिवोकेशन)।
**अनुशयाना** स्त्री० (सं) परकीया-नायका का एक भेद।
**अनुशासक** पु'० (सं) १-देश या राज्य का प्रबन्धक। २-आज्ञा देने वाला। ३-उपदेष्टा।
**अनुशासन** पु'० (सं) १-आज्ञा। २-उपदेश। ३-महाभारत का एक पर्व। ४-राज्य अथवा लोक-प्रबन्ध के शासन पक्ष से सम्बन्ध रखने वाला कार्य। (एडमिनिस्ट्रेशन)। ५-वह विधान किसी संस्था या वर्ग के सब सदस्यों को भली प्रकार से रहने अथवा आचरण करने के लिये बाध्य करे। (डिसिप्लिन)।
**अनुशीलन** पु'० (सं) १-चिन्तन, मनन। २-सतत अभ्यास।
**अनुश्रुत** वि० (सं) जिसे बहुत दिनों से लोग सुनते चले आये हों। (ट्रेडिशनल)।
**अनुश्रुति** स्त्री० (सं) परम्परा से चली आती हुई बात, कथा, उक्ति आदि।
**अनुषंग** पु'० (सं) १-दया। २-सम्बन्ध। ३-प्रसंगानुसार एक वाक्य के आगे अन्य वाक्य लगा देना। २-एक के बाद दूसरी बात स्वमेव होना। (इनसिडेन्स)।
**अनुषंगी** वि० (सं) किसी कार्य विषय या तथ्य के पश्चात् सहायक रूप में होने वाला। (एकसेसरी आफटर दी फैक्ट)।
**अनुषक्ति** स्त्री० (सं) प्रजा, जनता या नागरिक के अपने राजा या राज्य के प्रति निष्ठा और कर्त्तव्य। (एलिजिएन्स)।
**अनुष्टुप** पु'० (सं) ३२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
**अनुष्ठाता** पु'० (सं) अनुक्रम से कार्य करने वाला।
**अनुष्ठान** पु'० (सं) १-किसी कार्य का आरम्भ। २-नियमानुसार कोई कार्य करना। ३-शास्त्र विहित कर्म करना। ४-किसी फल की इच्छा से किसी देवता की पूजा।
**अनुष्ठित** वि० (सं) १-जिसका अनुष्ठान हुआ हो। २-ठाना हुआ।
**अनुसंधयान** पु'० (सं) वह व्यवस्था जिसके अनुसार प्रति तीसरे अथवा पांचवें वर्ष किसी राज्य के महामात्यों का सब वर्ग बदल दिया जाता है (प्राचीन भारतीय राजतन्त्र)।
**अनुसंधान** पु'० (सं) १-अन्वेषण, खोज। २-खोज लगाना। ३-जाँच-पड़ताल।
**अनुसंधानना** क्रि० (हि) १-खोजना, खोज करना। २-सोचना।
**अनुसंधायक** वि० (सं) अनुसन्धान करने वाला।
**अनुसंधि** स्त्री० (सं) १-गुप्त-मन्त्रणा। २-षडयन्त्र।
**अनुसमर्थन** पु'० (सं) (प्रतिनिधियों द्वारा) किये गये समझौते आदि का आगे से समर्थन। (रैटिफिकेशन)।
**अनुसर** देखो "अनुसार"।
**अनुसरण** पु'० (सं) १-पीछे चलना। २-अनुकरण। ३-अनुरूप आचरण।
**अनुसरता** पु'० (हि) अनुगामी।

**अनुसरना** क्रि० (हि) १-पीछे चलना। २-अनुकरण या नकल करना।
**अनुसार** वि० (सं) समान, सदृश। क्रि० वि० (सं) किसी की तरह।
**अनुसारतः** क्रि० वि० (सं) तदनुसार।
**अनुसारता** स्त्री० (सं) अनुसार होने की क्रिया या भाव
**अनुसारना** क्रि० (हि) १-कोई काम पूरा करना। २-अनुसरना।
**अनुसारिता** स्त्री० देखो 'अनुसारता'।
**अनुसारी** वि० (हि) अनुसरण करने वाला।
**अनुसूचित** वि० (सं) जो अनुसूची में हो।
**अनुसूचित-क्षेत्र** पुं० (सं) निर्धारित सीमा या क्षेत्र, वह क्षेत्र जो किसी राज्य के पिछड़े क्षेत्रों में से हो तथा सरकार को उन्नत करने के निमित्त ऐसे ही अन्य क्षेत्रों की सूची में सम्मिलित कर लिया हो। (शेड्यूल्डएरिया)।
**अनुसूचित-जनजाति** स्त्री० (सं) वह जनजाति जो अनुन्नत जातियों की सूची में आती हो जो प्रायः पर्वतीय क्षेत्रों में रहते हैं। (शेड्यूल्ड-ट्राइब)।
**अनुसूचित-जाति** स्त्री० (स) वह जाति जो सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े होने के कारण सरकारी सूची में आती हो तथा जिनके साथ छूआछूत का बरताव किया जाता हो(शड्यूल्ड-कास्ट)
**अनुसूची** स्त्री० (सं) सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना विवरण, नियमावली के रूप में परिशिष्ट के रूप में आती हो। (शड्यूल)।
**अनुस्मरण** पुं० (सं) भूली हुई बात फिर से याद होना या करना। (रिक्लेक्शन)।
**अनुस्मारक** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा स्मरण कराया जाय, (रिमाइंडर)।
**अनुस्वार** पुं० (सं) १-स्वर के पीछे उच्चारित होने वाला एक अनुनासिक वर्ण। २-अनुनासिकता सूचक बिन्दु, मस्ते।
**अनुहरना** क्रि० (हि) देखो 'अनुसरना'।
**अनुहरिया** वि० (हि) समान, सदृश। स्त्री० (हि) आकृति, मुखड़ा।
**अनुहार** वि० (सं) १-समान, सदृश। २-अनुसार, अनुकूल।
**अनुहारना** क्रि० (हि) समान करना।
**अनुहारि** वि० (हि) १-समान, सदृश। २-योग्य। ३-अनुकूल। ४-उपयुक्त।
**अनुहारी** वि०(सं) १-अनुकरण या नकल करने वाला २-किसी के अनुरूप बना हुआ।
**अनूअर** क्रि० वि० (हि) निरंतर।
**अनूजरा** वि० (हि) मैला।
**अनूठा** वि० (हि) १-अपूर्व, अनोखा। २-सुन्दर, बढ़िया।
**अनूढ़ा** स्त्री० (सं) किसी पुरुष से प्रेम रखने वाली अविवाहिता स्त्री।
**अनूतर** वि० (हि) १-निरुत्तर। २-मौन।
**अनूवन** पुं० (सं) अनुवाद करना, तर्जुमा करना।
**अनूदित** वि० (सं) १-वर्णन किया हुआ, कहा हुआ। २-अनुवादित, भाषांतरित।
**अनूप** पुं० (सं) अधिक जल वाला प्रदेश। वि० (हि) १-जिसकी कोई उपमा न हो। बेजोड़। २-सुन्दर
**अनूपम** देखो 'अनुपम'।
**अनूपान** पुं० (हि) देखो 'अनुपान'।
**अनृत** वि० (स) १-मिथ्या, झूठ। २-विपरीत।
**अनेक** पुं० (सं) एक से अधिक, बहुत।
**अनेकाक्षर** वि० (सं) जिसमें कई अक्षर हों।
**अनेकार्थ** वि० (सं) एक से अधिक अर्थों वाला।
**अनेग** वि० (हि) अनेक।
**अनेड़** वि० (हि) १-निकम्मा। २-टेढ़ा। ३-दुष्ट। ४-कुटिल।
**अनेरा** वि० (हि) १-झूठ। २-व्यर्थ। ३-अन्यायी। ४-दुष्ट। ५-बुरा। क्रि० वि० (हि) व्यर्थ, फिजूल।
**अनेस** वि० (हि) अनेक।
**अनै** स्त्री० (हि) १-अनीति। २-उपद्रव। उत्पात।
**अनैक्य** पुं० (स) मतभेद।
**अनैच्छिक** वि० (स) जो अपनी इच्छा के अनुसार न किया गया हो। (इन-वालण्टरी)।
**अनैठ** पुं० (हि) पैंठ न लगाने का दिन।
**अ-नैतिक** वि० (सं) नीति के विरुद्ध।
**अनैतिहासिक** वि० (सं) इतिहास के विरुद्ध।
**अनैस** वि० (हि) अनिष्ट। पुं० (हि) बुराई।
**अनैसर्गिक** वि० (सं) अस्वाभाविक। प्रकृति विरुद्ध।
**अनैसना** क्रि० (हि) १-रूठना। २-बुरा मानना।
**अनैसा** वि० (हि) अप्रिय। बुरा।
**अनैसे** क्रि० वि० (हि) बुरी तरह से।
**अनैहा** पुं० (हि) उपद्रव। बखेड़ा।
**अनोखा** वि० (हि) १-अनूठा। विलक्षण। २-नया। ३-सुन्दर।
**अनोखापन** पुं० (हि) १-अनूठापन। विलक्षणता। २-नवीनता। ३-सुन्दरता।
**अनौचित्य** पुं० (सं) अनुचित होने का भाव।
**अनौट** पुं० (हि) पैर के अँगूठे में पहनने का छल्ला।
**अनौपचारिक** वि० (सं) जिसमें निर्धारित नियमों, रीतियों, उपचारों आदि का अनुपालन न किया गया हो। (इनफार्मल)।
**अन्न** पुं० (सं) १-अनाज। धान्य। २-खाद्य पदार्थ।
**अन्नकूट** पुं० (सं) १-अन्न का ढेर। २-कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होने वाला एक उत्सव।
**अन्नचोर** पुं० (हि) चोर बाजारी की खातिर अन्न छिपाकर रखने वाला व्यक्ति।

**अन्नक्षेत्र** पुं० (सं) १–भूखे भिखारियों को अन्न बाँटने का स्थान। २–अन्न की कमी वाले तथा अन्न की बहुलता वाले प्रदेशों को मिलाकर बनाया गया क्षेत्र।
**अन्न-जल** पुं० (सं) १–दानापानी, जीविका। २–खान-पान। ३–संयोग।
**अन्नदाता** पुं० (सं) पोषक, प्रतिपालक।
**अन्नपूर्णा** स्त्री० (सं) शिव की पत्नी।
**अन्न-प्राशन** पुं० (सं) बच्चों को अन्न चटाने का संस्कार।
**अन्ना** स्त्री० (तु०) धाय, दाई।
**अन्नाद** पुं० (सं) १–ईश्वर। २–विष्णु के सहस्र नामों में से एक। वि० (सं) अन्न खाने वाला।
**अन्य** वि० (सं) दूसरा, और, भिन्न।
**अन्यतम** वि० (सं) सर्वश्रेष्ठ।
**अन्यत्र** क्रि० वि० (हि) दूसरी जगह।
**अन्यथा** वि० (सं) १–विपरीत। २–मिथ्या, झूठ। अव्य० (सं) नहीं तो।
**अन्यथासिद्धि** स्त्री० (सं) न्याय में एक दोष जिसमें वास्तविक बात न दिखलाकर किसी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय।
**अन्यदेशीय** वि० (सं) विदेशी।
**अन्यपुरुष** पुं० (सं) व्याकरण के अनुसार पुरुषवाची सर्वनाम का तीसरा भेद।
**अन्यमनस्क** वि० (सं) उदास, अनमना।
**अन्यसम्भोग-दुःखिता, अन्यसुरति-दुःखिता** स्त्री० (सं) वह नायिका जो अन्य स्त्री में समागम के चिह्न देख-कर तथा यह जानकर दुखी हो कि मेरे पति ने इसके साथ रतिक्रीड़ा की है।
**अन्याय** पुं० (सं) १–न्याय के विरुद्ध आचरण, अनीति २–जुल्म, अत्याचार।
**अन्यायी** वि० (सं) अन्याय करने वाला, जालिम।
**अन्यारा** वि० (हि) १–जो पृथक न हो, मिला हुआ। २–अनोखा। क्रि० वि० (हि) बहुत, अधिक।
**अन्यास** वि० (हि) देखो 'अनायास'।
**अन्योक्ति** स्त्री० (सं) वह कथन जिसका अर्थ कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर भी घट सके।
**अन्योन्य** सर्व० (सं) आपसमें, परस्पर। पुं० (सं) एक अर्थालंकार।
**अन्योन्य-प्रजनन** पुं० (सं) विभिन्न जाति के पशु-पौधों के पारिस्परिक संसर्ग द्वारा उत्पादन करना। (कास-ब्रीडिंग)।
**अन्योन्याश्रय** पुं० (सं) १–एक दूसरे के सहारे पर। सापेक्ष ज्ञान।
**अन्वय** पुं० (सं) १–संयोग मेल। २–परस्पर सम्बन्ध। ३– पद्य के शब्दों को वाक्य रचना के नियमानुसार पहिले कर्ता, फिर कर्म, तदनन्तर क्रिया का रखना। ४–कार्य तथा कारण का सम्बन्ध।
**अन्वित** वि० (सं) १–जिसका अन्वय हुआ हो। २ मिला हुआ।
**अन्वितार्थ** पुं० (सं) १–अन्वय करने पर निकलने वाला अर्थ। २–अन्दर छिपा हुआ अर्थ।
**अन्वीकृत** वि० देखो 'अन्वित'।
**अन्वीक्षण** स्त्री० (सं) १–ध्यान देकर देखना, गौर, विचार। २–खोज, तलाश।
**अन्वीक्षा** स्त्री० (सं) खोज, तलाश।
**अन्वेषक** पुं० (सं) खोज करने वाला, अनुसन्धान करने वाला।
**अन्वेषण** पुं० (सं) १–खोज। २–अनुसंधान।
**अन्वेषणा** स्त्री० (सं) १–खोज। २–अनुसंधान।
**अन्वेषित** वि० (सं) १–खोजा हुआ। २–अनुसंधान किया हुआ।
**अनन्वेषी, अन्वेष्टा** वि० (सं) खोजने वाला, अन्वे-षण करने वाला।
**अन्हवाना** क्रि० (हि) स्नान कराना।
**अन्हाना** क्रि० (हि) स्नान करना।
**अपंग** वि० (हि) १–अंगहीन। २–लूला, लंगड़ा। ३–बेबस, असमर्थ।
**अप** उप० (सं) एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर निषेध, अपकर्ष, त्याग, विरोध, बुराई का भाव प्रकट करता है।
**अपक** पुं० (हि) पानी, जल।
**अपकर्ता** पुं० (सं) १–हानि पहुँचाने वाला। २–बुरा काम करने वाला।
**अपकर्म** पुं० (सं) खोटा काम, कुकर्म, पाप।
**अपकर्ष** पुं० (सं) १–नीचे को खींचना, गिराना। २–निरादर, अपमान। ३–घटाव, उतार, कमी।
**अपकर्षक** वि० (सं) १–अपकर्ष करने वाला। २–निरादर करने वाला।
**अपकर्षण** पुं० (सं) १–नीचे को खींचना। गिराना। २–बेकदरी। निरादर। ३–घटाव, उतार।
**अपकाजी** वि० (हि) आपस्वार्थी। मतलबी।
**अपकारक** पुं० (सं) १–अनिष्ट। अहित। २–अनादर ३–अत्याचार।
**अपकार** वि० (सं) १–अपकार करने वाला। २–विरोधी।
**अपकारिता** स्त्री० (सं) अपकार करने की क्रिया या भाव।
**अपकारी** वि० देखो 'अपकारक'।
**अपकारीचार** वि० (हि) विघ्नकर्त्ता।
**अपकीरति** स्त्री० (हि) अपकीर्त्ति।
**अपकीर्त्ति** स्त्री० (सं) अपयश, बदनामी।
**अपकृत** वि० (सं) १–जिसका अपकार या हानि हो-गई हो। २–बदनाम। ३–जिसका विरोध किया

गया हो।

**अपकृति** स्त्री० (स) अपकार।

**अपकृष्ट** वि० (स) १-गिरा हुआ, पतित, भ्रष्ट। २-नीच। ३-घृणित।

**अपकृष्टता** स्त्री० (स) १-बुराई। २-नीचता।

**अपक्रम** पु० (स) व्यतिक्रम, क्रमभङ्ग।

**अपक्रमण** पुं० (स) किसी सभा या स्थान से रुष्ट अथवा असन्तुष्ट होकर जाना। (वॉक-आउट)।

**अपक्व** वि० (स) १-कच्चा। २-अनभ्यस्त।

**अपखंड** पुं० (स) किसी वस्तु का टूटा हुआ हिस्सा या टुकड़ा। (फ्रेगमेंट)।

**अपगत** वि० (सं) १-भागा हुआ। २-हटा हुआ, गत। ३-नष्ट।

**अपगति** स्त्री० (स) १-बुरी गति। २-अनुचित राह पर जाना। ३-भागना, हटना। ४-नाश।

**अपगम** पु० (स) १-अलग होना। २-भागना।

**अपग्रह** पुं० (स) प्रतिकूल ग्रह।

**अपघन** पुं० (सं) शरीर।

**अपघन** वि० (स) बिना बादल का। मेघविहीन।

**अपघात** पुं० (स) १-हिंसा, हत्या। २-विश्वासघात। ३-आत्महत्या।

**अपच** पुं० (स) अजीर्ण।

**अपचय** पुं० (स) १-कम होना, कमी। २-नाश। ३-खर्च।

**अपचरण** पुं० (स) अपनी सीमा अथवा अधिकार-क्षेत्र से आगे बढ़कर किसी ऐसी सीमा या अधिकार-क्षेत्र में चले जाना जहाँ प्रवेश करना अनुचित हो। (ट्रेसपासिंग)।

**अपचार** पुं० (सं) १-अनुचित व्यवहार। २-अहित। ३-अपयश। ४-वर्जित क्षेत्र में या स्थान में जाना जो अधिकार की दृष्टि से निषिद्ध हो। (ट्रेसपास)।

**अपचारक** पुं० ((स) १-वह जो वर्जित या अनुचित कार्य करे। २-अधिकार विरुद्ध वर्जित स्थान या क्षेत्र में जाने वाला व्यक्ति। (ट्रेसपासर)।

**अपचारी** वि० (हि) १-बुरे आचरण वाला। २-अपचारक।

**अपचाल** पुं० (हि) १-कुचाल। २-खोटाई।

**अपचित** वि० (सं) सम्मानित।

**अपचिति** स्त्री० (स) १-सम्मान। २-विनाश।

**अपची** स्त्री० (सं) गंडमाला नामक रोग विशेष।

**अपच्छी** पुं० (हि) विपक्षी। वि० (हि) बिना पंख का

**अपछरा** स्त्री० (हि) अप्सरा।

**अपजस** पुं० (हि) अपयश, अपकीर्ति।

**अपजात** वि० (स) अपेक्षाकृत कम या हीन गुणों वाला

**अपज्जत** वि० (हि) थोड़ा, कम।

**अपटन** पुं० (हि) उबटन।

**अपटु** वि० (सं) १-जो कार्यकुशल न हो। २-सुस्त।

**अ-पठ** वि० (हि) १-अनपढ़। मूर्ख।

**अपठमान** वि० (हि) १-जो पढ़ा न जासके। २-न पढ़ने योग्य।

**अपडर** पुं० (हि) भय, शंका।

**अपडरना** क्रि० (हि) डरना।

**अपड़ाना** क्रि० (हि) खींचातानी करना।

**अपड़ाव** पुं० (हि) १-झगड़ा। २-खींचातान।

**अपढ़** वि० (हि) अशिक्षित, बिना पढ़ा।

**अपढार** वि० (हि) देखो 'अवढर'।

**अपत** वि० (हि) १-बिना पत्तों का। २-अधम, नीच

**अपतई** स्त्री० (हि) १-निर्लज्जता। २-धृष्टता। ३-पाजीपन। ४-झंझट।

**अपतान** पुं० (हि) बखेड़ा।

**अपताना** क्रि० (हि) १-धृष्टता करना। २-चपलता दिखाना।

**अपति** स्त्री० (हि) १-दुर्गति। २-अपमान। ३-देखो 'अपतई'।

**अपतोस** पुं० (हि) अफसोस।

**अपत्त** स्त्री० (हि) १-उपद्रव। २-धींगाधींगी।

**अपत्य** पुं० (स) सन्तान।

**अ-पथ** पु० (सं) १-कुपथ, कुमार्ग। २-विकट मार्ग।

**अपथ्य** वि० (सं) जो पथ्य न हो। २-अहितकर।

**अपदेला** वि० (हि) १-अभिमानी। २-स्वार्थी।

**अपद्रव्य** पुं० (सं) बुरा धन।

**अपद्वार** पुं० (सं) चोर दरवाजा।

**अपध्वंस** पुं० (सं) १-अधःपतन। २-निरादर। ३-नाश।

**अपध्वंसी** वि० (सं) १-नाश करने वाला। २-अपमान करने वाला। ३-पराजय करने वाला।

**अपन** सर्व० (हि) १-अपना। २-हम।

**अपनपौ** पुं० (हि) १-अपनापन, आत्मीयता। २-सुध। ३-परोपकार। ४-मान, मर्यादा।

**अपनयन** पुं० (सं) १-एक जगह से दूसरी जगह लेजाना। २-खंडन। ३-हटाना।

**अपना** सर्व० (हि) निज का। पुं० (हि) स्वजन, आत्मीय।

**अपनाना** क्रि० (हि) १-अपना बनाना। २-अपने अधिकार या शरण में लेना।

**अपनापन, अपनापा** पुं० (हि) १-आत्मीयता। २-आत्माभिमान।

**अपनाम** पुं० (हि) दुर्नाम, बदनामी।

**अपनायत** स्त्री० (हि) अपनापन, आपसदारी।

**अपनास** पुं० (हि) खुद का किया हुआ अपना नाश।

**अपनीत** वि० (सं) १-दूर किया हुआ। २-एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया हुआ। ३-जिसे कोई भगा ले गया हो।

**अपनेता** पुं० (सं) किसी को भगा ले जाने वाला

व्यक्ति।

**अपन्हव** पुं० (हि) १-मनाही।२-छिपाना।

**अपन्हुति** स्त्री० (हि) देखो 'अपह्नुति'।

**अप-बस** वि० (हि) अपने बस का, स्वतन्त्र।

**अप-बैरग** पुं० (हि) अपवर्ग।

**अप-भोग** पुं० (सं) किसी की सम्पत्ति पर अनुचित रीति से अपने अधिकार में करके उसे काम में लाना। (एम्बेजेलमेंट)।

**अपभ्रंश** पुं० (सं) १-पतन। २-विकृति। ३-शब्द का वह नया रूप जो मूल से बिगड़ कर बना हो स्त्री० (सं) प्राकृत भाषाओं के बाद की भाषा।

**अपभ्रष्ट** वि० (सं) १-पतित। २-विकृत। ३-तत्सम शब्द से निकलकर कुछ बिगड़े हुए रूप में प्रचलित होने वाला।

**अपमान** वि० (सं) १-अनादर, अवज्ञा। २-तिरस्कार

**अपमानजनक** वि० (सं) अपमान के योग्य, निन्दात्मक

**अपमानना** क्रि० (हि) अपमान या अनादर करना।

**अपमान-लेख** पुं० (सं) वह लेख या वक्तव्य जिससे किसी व्यक्ति की बदनामी या अपमान हो। (लाइबेल)।

**अपमान-वचन** पुं० (सं) वह झूठी या गढ़ी हुई बात जो किसी को अपमानित करने के लिए फैलाते हैं। (स्लैंडर)।

**अपमानिक** पुं० (सं) (ऐसी बात या घटना) जिससे किसी का अपमान या निरादर हुआ हो।

**अपमानित** वि० (सं) जिसका अपमान हुआ हो।

**अपमानी** वि० (हि) अपमान करने वाला।

**अपमार्जन** पुं० (सं) मिटा देने अथवा रद्द कर देने की क्रिया। (डिलीशन)।

**अपमार्जित करना** क्रि० (हि) किसी लेख, वाक्य, शब्द आदि का कोई अंश निकाल देना, हटा देना। मिटा देना अथवा रद्द कर देना। (डिलीट)।

**अपमिश्रण** पुं० (सं) मिलावट, हीनमिश्रण।

**अपमृत्यु** स्त्री० (सं) अनहोनी मौत।

**अपयश** पुं० (सं) बदनामी, अपकीर्ति।

**अपयोग** वि० (सं) १-कुसमय। २-असगुन। ३-नियत मात्रा से कम या अधिक औषद्रव्यों का योग

**अपयोजन** पुं० (सं) अनुचित रूप से किसी का धन या सम्पत्ति अपने काम में लाना। (मिसएप्रोप्रिएशन)।

**अपरंच** अव्य० (सं) १-और भी। २-फिर भी। ३-बाद।

**अपरंपार** वि० (हि) १-जिसका कूल किनारा न हो। २-अत्यधिक।

**अपर** वि० (सं) १-पहले का। २-पिछला। ३-दूसरा, अन्य। ४-जितना हो अथवा हुआ हो, उससे और आगे या अधिक।

**अपरक्ति** स्त्री० (सं) किसी के प्रति प्रेम, श्रद्धा या सद्भावना न होना। (डिसएफेक्शन)।

**अपरछन्न** वि० (हि) १-खुला हुआ। २-ढका या छिपा हुआ।

**अपरती** स्त्री० (हि) १-स्वार्थ। २-बेइमानी।

**अपरना** स्त्री० (हि) 'अपर्णा' देखो।

**अपर-न्यायाधीश** पुं० (सं) अतिरिक्त अथवा दूसरा न्यायाधीश। (एडीशनल-जज)।

**अपरबल** वि० (हि) बलवान, बली।

**अपरंपार** वि० (हि) 'अपरम्पार' देखो।

**अ-परस** वि० (हि) १-बिना छुआ हुआ। २-न छूने योग्य। ३-अलगाया हुआ। पुं० (हि) एक चर्म रोग

**अपरांत** पुं० (सं) पश्चिम का देश।

**अपरा** स्त्री० (सं) १-पश्चिम दिशा। २-लौकिक या पदार्थ विद्या। पुं० (सं) दूसरा।

**अपराग** पुं० (सं) १-वैर, द्वेष। २-अरुचि, विराग।

**अपराजित** वि० (सं) जो पराजित न हो। पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव।

**अपराजिता** स्त्री० (सं) १-कोयल। २-दुर्गा। ३-विष्णुक्रान्ता लता। ४-एक वर्णवृत्त।

**अपराध** पुं० (सं) १-वह अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे। २-विधि या विधान के विरुद्ध कोई ऐसा कार्य जिसके कारण कर्त्ता को दण्ड दिया जा सके। ३-बुरा काम। ४-भूलचूक।

**अपराध-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें अपराध करने के प्रेरक कारणों में और निवारक उपायों आदि का विवेचन हो। (क्रिमिनॉलाजी)।

**अपराधशील** वि० (सं) (वह) जो स्वभाव से ही अपराध करने वाला अथवा अपराधों की ओर प्रवृत्त होने वाला हो (क्रिमिनल)।

**अपराधस्वीकरण** पुं० (सं) १-अपना अपराध स्वयम् स्वीकार करने का भाव। २-वह कथन जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया गया हो। (कनफेशन)।

**अपराधिक** वि० (सं) देखो 'आपराधिक'।

**अपराधी** पुं० (सं) दोषी, कसूरवार।

**अपरावर्ती** वि० (हि) १-बिना कार्य किये न लौटने वाला। २-किसी कार्य से पीछे न हटने वाला।

**अपराह्न** पुं० (सं) दो पहर बाद का समय। तीसरा पहर।

**अपरिग्रह** पुं० (सं) १-दान का न लेना। २-शरीर की आवश्यकता से अधिक धन का परित्याग।

**अ-परिचय** वि० (सं) परिचय या जान-पहचान का अभाव।

**अ-परिचित** वि० (सं) १-बिना जान-पहचान का। अज्ञात। २-जो जाना-बूझा न हो।

**अ-परिच्छिन्न** वि० (सं) १-सीमा-रहित। असीम। २-जो अलग न हुआ हो। ३-जिसके विभाग न

हो सकें।

**अ-परिणामी** *वि०* (सं) १–परिणाम रहित। २–जिसका कोई परिणाम न निकले। निष्फल।

**अ-परितोष** *पुं०* (सं) असन्तोष।

**अपरिमित** *वि०* (सं) १–असीम, बेहद। २–असंख्य, अगणित।

**अपरिमेय** *वि०* (सं) १–बे अंदाज। २–अनगिनत।

**अ-परिवर्तनीय** *वि०* (सं) १–न बदलने योग्य। २–जिसमें फेर-बदल न हो।

**अ-परिष्कृत** *वि०* (सं) १–बिना परिष्कार किया हुआ २–मैलाकुचेला, भद्दा।

**अ-परिहार्य** *वि०* (सं) १–जिसका परिहार न हो सके। जो किसी भी प्रकार से दूर न किया जा सके। २–अत्याज्य। ३–न छीनने योग्य।

**अप-रूप** *वि०* (सं) १–कुरूप। भद्दा। २–अपूर्व।

**अपरोक्ष** *अव्य०* (सं) प्रत्यक्ष।

**अपर्णा** *स्त्री०* (सं) १–पार्वती का एक नाम। २–दुर्गा

**अपर्याप्त** *वि०* (सं) जो काफी या यथेष्ट न हो, अपूर्ण

**अप-लक्षण** *पुं०* (सं) १–बुरे लक्षण या चिह्न। २–दुष्ट लक्षण।

**अप-लाप** *पुं०* (सं) बकवाद, मिथ्यावाद।

**अपलेखन** *पुं०* (सं) ऋण अथवा पावने की राशि वसूल होने की आशा न होने की अवस्था में उसे रद्द कर देना, बट्टे खाते डालना, (राइटिंग-आफ)

**अप-लोक** *पुं०* (सं) १–अपकीर्ति, बदनामी। २–अपवाद।

**अपवर्ग** *पुं०* (सं) १–मोक्ष। निर्वाण। २–त्याग। ३–दान।

**अप-वर्जन** *पुं०* (सं) १–छोड़ना, त्यागना। २–मोक्ष। ३–दान।

**अपवर्त्तक** *स्त्री०* (सं) गणित के अनुसार वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्या को भाग देने पर कुछ भी शेष न रहे। जैसे ४ का अंक ८ तथा १२ का अपवर्त्तक है।

**अपवर्त्तन** *पुं०* (सं) १–अपने मूल स्थान की ओर वापस आना। २–राज्य या अधिकारियों द्वारा किसी की धन-सम्पत्ति जब्त होना। (फोरफीचर)।

**अपवर्त्तित** *वि०* (सं) १–पलटाया या लौटाया हुआ। २–जब्त किया हुआ। (फोरफीटेड)।

**अपवर्त्य** *वि०* (सं) १–जिसका अपवर्त्तन होने को हो। २–जिसका अपवर्त्तन करना उचित हो।

**अपवाद** *पुं०* (सं) १–विरोध, प्रतिवाद। २–निन्दा, अपकीर्ति। ३–दोष, पाप। ४–नियम के विपरीत नियम। (एक्सेप्शन)।

**अपवादक** *वि०* (सं) १–निन्दक। २–विरोधी। ३–बाधक।

**अपवादिक** *वि०* (सं) १–अपवाद से सम्बन्ध रखने वाला। २–व्यापक या सामान्य नियम के विरुद्ध पड़ने वाला। (एक्सेप्टिव)। ३–जिसके कारण या जिससे किसी का अपमान हो। (स्लैंडरस)।

**अपवादी** *पुं०* (सं) वह जो दूसरों का अपवाद अथवा निन्दा करे।

**अ-पवित्र** *वि०* (सं) मलिन, गन्दा।

**अ-पवित्रता** *स्त्री०* (सं) मलिनता, गन्दापन।

**अप-व्यय** *पुं०* (सं) १–फजूलखर्ची। बुरे कामों में होने वाला खर्च।

**अप-व्ययी** *वि०* (सं) १–फिजूलखर्च। बुरे कामों में खर्च करने वाला।

**अप-शकुन** *पुं०* (सं) असगुन।

**अप-शब्द** *पुं०* (सं) १–गाली २–दूषित शब्द।

**अप-सगुन** *पुं०* (हि) बुरा सगुन, असगुन।

**अपसना** *क्रि०* (हि) १–खिसकना। २–चल देना।

**अपसर** *वि०* (सं) १–आप ही आप। २–मनमाना।

**अपसरक** *पुं०* (सं) अपना कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व छोड़ कर भागने वाला व्यक्ति, विशेषतः सैनिक-सेवा या पत्नी या सन्तान के पालन-पोषण आदि छोड़कर भागने वाला व्यक्ति।

**अपसरण** *पुं०* (सं) कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व छोड़कर भाग जाना, भागना। (डिजर्शन)।

**अपसर्जन** *पुं०* (सं) १–त्यागना। २–अपने कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व से बचने के लिए किसी को असहाय अवस्था में छोड़ जाना। (एबैन्डन)।

**अपसवना** *क्रि०* (हि) हट जाना, खिसक जाना।

**अपसव्य** *वि०* (सं) १–दाहिना। २–उलटा।

**अपसार** *पुं०* (सं) १–निकास। २–निकल भागना। ३–भाप।

**अपसारण** *पुं०* (सं) किसी स्थान या संस्था से बल-पूर्वक अथवा नियम भङ्ग आदि के कारण हटा दिया जाना। (एक्सपलशन)।

**अपसारी** *वि०* (सं) भिन्न या विपरीत दिशा की ओर जाने, चलने अथवा रहने वाले। (डाइवर्जेंएट)।

**अपसृत** *वि०* (सं) १–जो कहीं से निकालकर विलग किया गया हो। २–वह जो सेवा (विशेषतः सैनिक सेवा) से विमुख हो गया या भाग गया हो। ३–वह जिसने अपनी पत्नी अथवा पति ने असहाय अवस्था में छोड़ दिया हो। (डिजर्टेड)।

**अपसोस** *पुं०* (हि) अफसोस।

**अपसोसना** *क्रि०* (हि) अफसोस करना।

**अप-सौन** *पुं०* (हि) अपशकुन।

**अपसौना** *क्रि०* (हि) पहुँचना, आजाना।

**अप-स्नान** *पुं०* (सं) मृतक-स्नान।

**अपस्फीति** *स्त्री०* (सं) मुद्रा का बाहुल्य अथवा विस्तार घटाकर पूर्व स्थिति पर पहुँचा देना। (डीफ्लेशन)।

**अपस्मार** *पुं०* (सं) मिरगी का रोग।

**अपस्मृति** स्त्री० (सं) १-भुलक्कड़पन। २-अपसारण।
**अपस्वर** पुं० (सं) कर्कश या बेसुरा स्वर।
**अपहत** वि०(सं) १-मारा हुआ। २-हटाया हुआ।
**अपहन** वि० (सं) १-अन्त करने वाला। २-नाश करने वाला।
**अप-हरण** पुं० (सं) १-हर लेना, छीनना। २-चोरी। ३-छिपाव। ४-रुपया ऐंठने अथवा स्वार्थसिद्धि के निमित्त किसी बालक, बालिका या धनी व्यक्ति आदि को बलात् उठाकर ले जाना अथवा गायब कर देना। (किडनैपिंग)।
**अप-हरना** क्रि० (हि) १-छीनना। २-चुराना।
**अपहर्त्ता** पुं० (सं) १-हर लेने वाला। २-चोर। ३-छिपाव।
**अपहार** पुं० (सं) अपहरण।
**अपहारक, अपहारी** पुं० (सं) अपहर्त्ता।
**अपहास** पुं० (सं) १-उपहास। २-अकारण हास्य।
**अपहृत** वि० (सं) चुराया, छीना या लूटा हुआ।
**अपह्नव** पुं०(सं) १-मनाही। २-छिपाना। ३-मिस, बहाना।
**अपह्नुति** स्त्री० (सं) १-छिपाव, दुराव। २-मिस, बहाना। ३-एक अर्थालंकार।
**अपांग** वि० (सं) अंगहीन, अंगभंग। पुं० (सं) १-आँख का कोना। २-कटाक्ष।
**अपांशुका, अपांशुला, अपांसुला** स्त्री० (सं) पतिव्रता स्त्री।
**अपा** पुं० (हि) अभिमान, अहङ्कार।
**अपाउ** पुं० (हि) १-अलगाव। २-पीछे हटना। ३-अनरीति। ४-नाश। वि० (हि) अपाहिज।
**अपाकरण** पुं० (सं) १-अलग करना। २-हटाना। निराकरण। ३-चुकता या बेबाक करना।
**अपाकर्म** पुं० (सं) वह कार्य जिसमें किसी मंडली अथवा समवाय का देना पावना चुका कर उसका सारा व्यापार समेटा अथवा बन्द किया जाता है। (डिक्विडेशन ऑफ कम्पनी)।
**अ-पात्र** पुं० (सं) १-कुपात्र। २-मूर्ख।
**अपादान** पुं०(सं) १-हटाना। २-व्याकरण में पाँचवाँ कारक।
**अपान** पुं० (सं) १-पाँच प्राणों में से एक। २-अधोवायु, पाद। ३-गुदा।
**अपान-वायु** स्त्री० (सं) गुदा की वायु, पाद।
**अपामार्ग** पुं० (सं) चिचड़ा, लटजीरा।
**अपाय** पुं० (सं) १-अलगाव। २-अन्यथाचार। ३-नाश। वि० अपाहिज।
**अपार** वि० (सं) १-असीम। २-अतिशय।
**अपारग** वि० (सं) अयोग्य; नालायक।
**अपाव** पुं० (हि) अन्याय; अन्यथाचार।
**अपावन** वि० (सं) अपवित्र; मलिन।
**अपाश्रय** वि० (सं) आश्रयहीन; बेसहारा।
**अपासन** पुं० (सं) नामंजूरी।
**अपासित** वि० (सं) नामंजूर, अस्वीकृत।
**अपाहज, अपाहिज** वि० (हि) १-अंगहीन। २-काम न करने योग्य। ३-सुस्त।
**अपि** अव्य० (सं) १-भी। २-ही। ३-निश्चय, ठीक।
**अपिच** अव्य० (सं)१-और भी; पुनश्च। २-बल्कि।
**अपितु** वि० (सं) १-किंतु। २-बल्कि।
**अपीच** वि० (हि) सुन्दर।
**अपील** स्त्री० (अं) १-पुनर्विचारार्थ प्रार्थना। २-निवेदन।
**अपु** पुं० (हि) आपस।
**अपुत्र, अपुत्रक** पुं० (सं) निःसन्तान।
**अपुनपौ** पुं० (हि) अपनापन; आत्मीयता।
**अपुब्ब** वि० (हि) अपूर्व, अनूठा।
**अपुष्ट** वि० (सं) १-जिसकी पुष्टि न हुई हो (समाचार आदि)। २-दुर्बल। ३-अपक्व।
**अपूठना** क्रि० (हि) १-तोड़ना, नष्ट करना। २-उलटना।
**अपूठा** वि० (हि) १-कच्चा। २-अनभिज्ञ। ३-अविकसित।
**अ-पूत** पुं० (हि) कपूत। वि० (हि) निःसन्तान। वि० (हि) अ-पवित्र।
**अपूर** वि० (हि) अपूर्ण।
**अपूरना** क्रि० (हि) १-भरना। २-फूँकना, बजाना।
**अपूरब** वि० (हि) अपूर्व, विलक्षण।
**अपूरा** पुं० (हि) भरा हुआ।
**अपूर्ण** वि० (सं) १-अधूरा। २-कम। ३-जो पूरा न हो।
**अपूर्व** वि० (सं) १-अनुपम; उत्तम। २-अनोखा; अद्भुत। ३-पहले न रहा हुआ।
**अपेख** स्त्री० (हि)१-अपेक्षा। २-लालसा।
**अपेक्षा** स्त्री० (सं) १-अभिलाषा, इच्छा। २-भरोसा। ३-आवश्यकता। ४-तुलना। ५-अनुरोध।
**अपेक्षाकृत** क्रि० वि० (सं) तुलना या मुकाबले में।
**अपेक्षित, अपेक्ष्य** वि० (सं) १-जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता न हो। २-इच्छित।
**अपेच्छा** वि० (हि) अपेक्षा।
**अपेय** वि० (सं) न पीने योग्य।
**अपेल** वि० (हि) न टलने वाली।
**अपैठ** वि० (हि) दुर्गम; विकट।
**अपौतिक** वि० (सं) जिसमें अभी विषाक्त कीटाणु उत्पन्न न हुए हों। जिसमें बदबू पैदा न हुई हो।
**अप्रकट, अप्रकटित** वि० (सं) अप्रकाशित, गुप्त।
**अप्रकाशमान, अप्रकाशित** वि० (सं) १-अंधेरा। २-गुप्त। ३-जिसे छापकर प्रचलित न किया गया हो। ४-जो सर्वसाधारण के सामने न आया हो।

**अप्रकृत** वि० (सं) १-अस्वाभाविक। २-जो अपने उचित मान से घटा या बढ़ा न हो। (एब्नार्मल)।
**अ-प्रचलित** वि० (सं) जो प्रचलित न हो, अव्यवहृत
**अ-प्रतिदेय** वि० (सं) जो सर्वदा के लिए स्थायी रूप से दिया गया हो और जिसे लौटाना या चुकाना न पड़े। (परमानेन्ट-एडवाँस)।
**अ-प्रतिदेय-ऋण** पुं०(सं) लौटाया न जाने वाला सहायता के रूप में दिया गया ऋण। (परमानेन्ट-एडवांस)।
**अ-प्रतिबंध** वि० (सं) १-रुकावट का न होना। २-पूर्ण।
**अ-प्रतिभ** वि० (सं) १-चेष्टाहीन, उदास। २-मूर्ख। ३-मतिहीन। ४-प्रतिभाशून्य।
**अ-प्रतिभाव्य** वि० (सं) (ऐसा अपराध) जिसमें जमानत देने को तैयार होने की अवस्था में भी अपराधी के स्थायी रूप से रिहा किये जाने की सम्भावना न हो। (नॉन-बेलेबल)।
**अ-प्रतिम** वि० (सं) अनुपम।
**अ-प्रतिष्ठ** वि० (सं) प्रतिष्ठारहित; तिरस्कृत।
**अ-प्रतिष्ठा** स्त्री० (सं) १-अपकीर्ति। २-अनादर।
**अ-प्रतिहत** वि० (सं) १-[illegible] न हो। २-जिसका [illegible]।
**अ-प्रत्यक्ष** वि० (सं) १-[illegible]।
**अ-प्रत्यक्ष-कर** पुं० (सं) [illegible] जो प्रत्यक्ष न लेकर वस्तुओं [illegible] रूप में उपभोक्ताओं से वसूल की जाए। (इनडाइरेक्ट-टैक्स)।
**अ-प्रत्याशित** वि० (सं) आकस्मिक या अकस्मात होने वाला।
**अप्रयुक्त** वि० (सं) जो प्रयोग में न लाया गया हो, [illegible]।
**अप्रयुक्तत्व** पुं० (सं) काव्य में एक पद-दोष।
**अप्रशिक्षित** वि० (सं) जो प्रशिक्षित न हो। (अन-ट्रेन्ड)।
**अ-प्रसन्न** वि० (सं) १-जो प्रसन्न न हो; नाराज। २-खिन्न।
**अ-प्रसन्नता** स्त्री० (सं) १-नाराजगी। २-खिन्नता।
**अ-प्रसिद्ध** वि० (सं) अविख्यात।
**अ-प्रस्तुत** वि० (सं) जो प्रस्तुत न हो। अनुपस्थित।
**अ-प्रस्तुत प्रशंसा** स्त्री० (सं) एक अर्थालङ्कार।
**अ-प्राकृत** वि० (सं) १-अस्वाभाविक। २-असाधारण।
**अ-प्राकृतिक** वि० (सं) जो प्राकृतिक या नैसर्गिक हो। अनैसर्गिक। (अन-नेचुरल)।
**अ-प्राप्त** वि० (सं) १-अलभ्य, दुर्लभ। २-न मिलने वाला, अलभ्य। ३-अप्रत्यक्ष।
**अ-प्राप्य** वि० (सं) जो मिल न सके, अलभ्य।
**अ-प्रामाणिक** वि० (सं) १-जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो। २-जिस पर विश्वास न किया जा सके।
**अप्रासंगिक** वि० (सं) प्रसङ्ग के अनुकूल। (इर्रैलेवेन्ट)
**अप्रिय** वि० (सं) १-जो प्रिय न हो; अरुचिकर। २-जिसकी इच्छा न हो।
**अप्सरा** स्त्री० (सं) १-देवाङ्गना। २-अनुपम सुन्दर स्त्री, परी। ३-इन्द्र की सभा में नृत्य करने वाली स्त्री
**अप्सरी** स्त्री० (हि) अप्सरा।
**अफताली** पुं० (हि) अगाऊ पहुँचकर राजा लोगों के ठहरने की व्यवस्था करने वाला अधिकारी।
**अफरन** स्त्री० (हि) अफरने की क्रिया या भाव, पेट का फूलना।
**अफरना** क्रि० (हि) १-भरपेट भोजन खाना। २-पेट का फूलना। ३-ऊबना।
**अफरा** पुं० (हि) १-पेट फूलने का रोग। पेट फूलना
**अफराव** पुं० (हि) अफरने की क्रिया, भाव या अवस्था।
**अफलातून** पुं० (अ) १-यूनान के एक दार्शनिक का नाम। २-वह जो अपने को औरों की अपेक्षा बड़ा समझता हो।
**अफवाह** स्त्री० (अ) उड़ती खबर, किंवदन्ती।
**अफसर** पुं० (अ) १-अधिकारी। २-हाकिम। ३-प्रधान, मुखिया।
**अफसोस** पुं० (फा) १-शोक। २-खेद।
**अफीम** पुं० (यू) पोस्त के ढेंढ से निकली हुई गोंद।
**अफीमची** पुं० (अ) अफीम खाने वाला व्यक्ति।
**अफीमी** वि० (हि) अफीम से सम्बन्ध रखने वाली। अफीम की। पुं० (अ) अफीमची।
**अब** क्रि० वि० (हि) इस समय; अभी।
**अबटन** पुं० (हि) उबटन।
**अबधू** वि० (हि) अबोध। पुं० (हि) अवधूत।
**अबध्य** वि० (सं) १-न मारने योग्य। २-जो किसी से न मरे। ३-जिसे शास्त्रों के अनुसार प्राणदान न दिया जा सके।
**अबर** वि० (सं) बलहीन।
**अबरक, अबरख** पुं० (हि) १-भोडर। भोडल। २-एक प्रकार का पत्थर।
**अबरन** वि० (हि) १-अवर्णनीय। २-बिना रंग या जाति का।
**अबरस** पुं० (फा) सफेद से घुलते हुए सब्ज रंग का घोड़ा।
**अबरा** पुं० (फा) १-दोहरे वस्त्र के ऊपर का भाग या पल्ला। उपल्ला। २-उलझन। वि० कमजोर। दुर्बल
**अबरी** स्त्री० (फा) १-वह चिकना कागज जो पुस्तकों की जिल्द पर लगाया जाता है। २-वह पीले रंग का पत्थर जो पच्चीकारी के काम में आता है। ३-एक प्रकार की लाह की रंगामेजी।
**अबरू** स्त्री० (फा) भौंह। भ्रू।
**अ-बल** वि० (सं) निर्बल। [illegible]।

**अबलक, अबलख** *वि०* (हि) कबरा। दो रंगा। पुं० (हि) १-सफेद और काले रंग का घोड़ा। २-कबरा बैल।
**अबलग** *क्रि० वि०* (हि) अबतक।
**अबला** *स्त्री०* (स) स्त्री। औरत।
**अबवाब** पुं० (फा) १-मालगुजारी पर लिया जाने वाला अतिरिक्त कर। २-अधिक-कर।
**अ-बस** *वि०* (हि) देखो 'अ-वश'।
**अबांह** *वि०* (हि) असहाय।
**अ-बाती** *वि०* (हि) १-वायुरहित। २-जिसे हवा न लगती हो। ३-भीतर ही भीतर सुलगने वाला।
**अबादान** *वि०*(हि) १-बसा हुआ। आबाद। २-भरा-हुआ।
**अबाध** *वि०* (स) १-बाधारहित, २-निर्विघ्न, ३-असीम, अपार।
**अबाध-व्यापार** पुं० (सं) अन्य देशों के साथ होने वाला ऐसा व्यापार जिसमें आयात तथा निर्यात सम्बन्धी विशेष बाधायें न हों। (फ्री-ट्रेड)।
**अबाधा** *वि०* (स) १-बाधारहित, २-निर्विघ्न।
**अ-बाधित** *वि०* (सं) १-बेरोक। २-स्वच्छन्द, स्वतंत्र।
**अ-बाध्य** *वि०* (सं) १-जो रोका न जा सके। २-अनिवार्य।
**अबान** *वि०* (हि) निहत्था।
**अबाबील** *स्त्री०* (फा) एक प्रकार की कृष्णवर्ण चिड़िया
**अबार** *स्त्री०* (हि) देर, विलम्ब।
**अबाल** *वि०* (स) १-तरुण। २-जवान।
**अबास** पुं० (हि) आवास, निवास-स्थान।
**अबिनासी** *वि०* (हि) अविनाशी।
**अबिरल** *वि०* (हि) १-अविरल। २-अभिन्न।
**अबीर** पुं० (अ) गुलाल; रंगीन चूर्ण।
**अबीह** *वि०* (हि) निडर।
**अबुझ, अबूझ** *वि०* (हि) १-अबोध। २-अज्ञेय। ३-नासमझ।
**अबून** *वि०* (हि) सन्तानहीन।
**अबे** *अव्य* (हि) (निरादरसूचक सम्बोधन) अरे! हे!
**अ-बेध** *वि०* (हि) अविद्ध, अनबिंधा।
**अबेर** *स्त्री०* (हि) विलम्ब; देर।
**अबै** *वि०* (हि) जो व्यय न हुआ हो।
**अ-बैन** *वि०* (हि) मौन; चुप।
**अबोध** पुं० (सं) अनजान; मूर्ख।
**अ-बोल** *वि०* (हि) १-मौन। २-अनिर्वचनीय। पुं० (हि) बुरी बात, कुबोल।
**अ-बोला** पुं० (हि) दुःख के कारण मौन होना।
**अब्ज** पुं० (सं) १-जल से उत्पन्न होने वाली वस्तु। २-कमल। ३-शङ्ख। ४-चन्द्रमा।
**अब्द** पुं० (स) १-वर्ष; साल। २-नागरमोथा। ३-मेघ; बादल। ४-आकाश।
**अब्दकोश** पुं० (सं) देश, समाज अथवा वर्ग विषयक सब प्रकार की वार्षिक जानकारी देने वाला कोष। (ईयर-बुक)।
**अब्धि** पुं० (सं) १-समुद्र। २-सरोवर। ३-सात की संख्या।
**अब्बा** पुं० (अ) पिता।
**अब्र** पुं० (फा) मेघ, बादल।
**अ-ब्रह्मण्य** पुं० (स) १-वह कर्म जो ब्राह्मण के लिए उचित न हो। २-हिंसा आदि कर्म।
**अभ्रक** पुं० (सं) अबरक, भोडल।
**अभंग** *वि०* (सं) १-अखण्ड, पूर्ण। २-न मिटने वाला ३-जिसका क्रम न टूटे।
**अभंग-पद** पुं० (सं) श्लेष अलङ्कार का एक भेद।
**अ-भक्ष्य** *वि०* (सं) १-न खाने योग्य, अखाद्य। २-जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।
**अभगत** *वि०* (हि) अभक्त, श्रद्धाहीन।
**अभगा** *वि०* (हि) अविभक्त; अखण्ड।
**अ-भद्र** *वि०* (स) १-अशिष्ट; असभ्य। २-अशुभ।
**अभय** *वि०* (स) निर्भय।
**अभय-दान** पुं० (स) रक्षा का वचन देना; शरण-देना।
**अभय-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसे दिखाकर कोई व्यक्ति किसी सङ्कटपूर्ण स्थिति से निरापद पार हो सके। (सेफकान्डक्ट)।
**अभय-पद** पुं० (स) मोक्ष।
**अभय-वचन** पुं० (स) निर्भय रहने के लिए आश्वासन देना, रक्षा का वचन।
**अभर** *वि०* (हि) न उठने योग्य।
**अभरन** पुं० (हि) आभरण। *वि०* (हि) अपमानित।
**अभरम** *वि०* (हि) १-अभ्रान्त। २-निडर। *क्रि० वि०* (हि) निःसन्देह।
**अ-भल** *वि०* (हि) जो भला न हो, बुरा, खराब।
**अभाऊ** पुं० (हि) १-जो भावे न। २-अशोभित।
**अभागा** *वि०* (सं) भाग्यहीन।
**अ-भाग्य** पुं० (स) भाग्यहीनता।
**अभाजन** पुं० (स) कुपात्र।
**अभार** *वि०* (हि) न उठने योग्य, दुर्वह।
**अभाव** पुं० (स) १-न होना। २-कमी, त्रुटि। ३-दुर्भाव।
**अभावक** *वि०* (हि) भाव अथवा सत्ता से रहित। (नेगेटिव)।
**अभावना** *स्त्री०* (स) भावना या विचार का अभाव। *वि०* (हि) जो न भावे, अप्रिय।
**अभास** पुं० (हि) आभास, संकेत, झलक।
**अभि** उप० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व लगकर सामने, बराबर, अच्छी तरह, बुरा, अच्छा आदि का भाव देता है।

**अभिअंतर** क्रि० वि० (हि) अभ्यन्तर, मध्य, बीच।

**अभिकथन** पुं० (स) वह दोषारोप जो कभी प्रमाणित न हुआ हो या जिसके प्रमाणित होने में कुछ सन्देह हो। (एलिगेशन)।

**अभिकरण** पुं० (स) १-किसी की ओर से उसके अभिकर्ता या एजेंट के रूप में कार्य करना। २-अभिकर्ता या एजेंट का कार्य-स्थान। (एजेन्सी)।

**अभिकर्त्ता** पुं० (स) वह जो किसी के प्रतिनिधि की हैसियत से किसी कार्य पर नियुक्त या कमीशन पर माल बेचे। (एजेन्ट)।

**अभिकर्त्ता-पत्र** पुं० (स) वह पत्र जिसके द्वारा कोई अभिकर्ता नियुक्त किया गया हो तथा उसे कोई काम करने का पूर्ण अधिकार दिया गया हो। (पावर-आफ-अटर्नी)।

**अभिकर्तृत्व** पुं० (सं) १ अभिकर्ता होने का भाव। २-देखो 'अभिकरण'।

**अभिकलन** पुं० (सं) देखो 'अनुकलन'।

**अभिक्रान्ति** स्त्री० (स) अपने स्थान से किसी वस्तु का हटा दिया जाना। (डिस्प्लेसमेण्ट)।

**अभिगमन** पुं० (स) १-पास जाना। २-सहवास, सम्भोग।

**अभिगृहीत** वि० (सं) जिसका अभिग्रहण किया गया हो। (एडाप्टेड)।

**अभिग्रहण** पुं० (स) १-दूसरे के पुत्र, नियम आदि को ग्रहण कर लेना। (एडाप्टेशन)। २-अपना कर स्वीकार या अंगीकार करना। (एडाप्टेशन)।

**अभिघात** पुं० (सं) चोट पहुँचाना, प्रहार, मार।

**अभिचर** पुं० (सं) नौकर।

**अभिचार** पुं०(सं)मन्त्र-तन्त्र द्वारा मारण तथा उच्चाटन आदि कार्य, पुरश्चरण।

**अभिजात** वि० (सं) १-कुलीन। २-बुद्धिमान। ३-मान्य, पूज्य। ४-सुन्दर। ५-योग्य।

**अभिजात-तंत्र** वि० (सं) शासन करने की एक प्रणाली जिसमें राज्य करने का सम्पूर्ण प्रबन्ध थोड़े से उच्च कुल के तथा सम्पन्न व्यक्तियों के हाथ में रहता है। (एरिस्टोक्रेसी)।

**अभिजित** वि० (सं) विजयी।

**अभिजिति** स्त्री० (सं) युद्ध आदि में दूसरे पर विजय पाना। (कान्क्वेस्ट)।

**अभिज्ञ** वि० (स) १-जानकार। २-निपुण।

**अभिज्ञा** (स) १-पहले देखी हुई बात उत्पन्न होने वाला संस्कार। २-याद। ...क ज्ञान ...। ४-अस्तित्व स्वीकृति। ...नीशन)।

**अभिज्ञात** वि० (सं) १-पहले से जाना हुआ। जिसका अस्तित्व मान लिया गया हो। २-सरकार ने जिसे मान्यता दी हो। (रिकगनाइज्ड)।

**अभिज्ञाता** स्त्री० (स) परिचय, जानकारी।

**अभिज्ञान** पुं० (सं) १-स्मृति। २-पहचान। ३-किसी को देखकर अथवा पहचानकर बतलाना कि वह अमुक व्यक्ति है। (आइडेन्टिफिकेशन)।

**अभिज्ञापक** पुं० (सं) सूचना देने अथवा बताने वाला, रेडियो पर कार्यक्रम की घोषणा करने वाला (एनाउन्सर)।

**अभिज्ञापन** वि० (स) किसी बात को घोषित करना, बताना या संवाद आदि सुनाना। (एनाउन्समेंट।

**अभिज्ञापित** वि० (स) किसी को देख या पहचानकर प्रमाणित किया हुआ। (आइडेन्टिफाइड)।

**अभित्यक्त** वि० (स) १-जिसे मुक्त कर दिया गया हो २-दंड, अभियोग या अपराध आदि जिसे छोड़ दिया या मुक्त कर दिया गया हो। (रिलीज्ड)।

**अभित्याग** पु० (सं) १-मुक्त करने की क्रिया या भाव २-वह जिसे किसी अभियोग, अपराध या दंड आदि से मुक्त कर दिया गया हो। (रिलीज्ड)।

**अभिदत्त** वि० (सं) किसी वस्तु को उस के नियत स्थान पर पहुँचाया जाना। (डिलीवर्ड)।

**अभिदान** पुं० (सं) १-किसी की वस्तु उसके पास पहुँचना, (डिलीवरी)। २-किसी कार्य के निमित्त विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिया गया धन या चन्दा। (सब्सक्रिप्शन)।

**अभिदिष्ट** वि० (सं) १-प्रसंगवश जिसका उल्लेख, चर्चा अथवा उद्धरण किया गया हो या जिसकी ओर निर्देश अथवा संकेत किया गया हो। (रेफर्ड)। किसी का कहीं भेज कर उसके सम्बन्ध में किसी का मत अथवा आदेश प्राप्त किया गया हो। (रेफर्ड)।

**अभिदेश** पुं० (स) १-किसी पूर्व घटना, उल्लेख आदि की किसी चर्चा जो साक्षी, संकेत प्रमाण आदि के रूप में की गई हो। २-किसी विषय में किसी का मत अथवा आदेश लेने के निमित्त वह विषय अथवा उससे संबन्धित कागज पत्र उसके पास भेजना। (रेफरेंस)।

**अभिदेशना** स्त्री० (स) किसी विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण प्रश्न के सम्बन्ध में यह ज्ञात करना कि मतदाताओं में कितने उसके पक्ष में तथा कितने विपक्ष में हैं। (रेफरेण्डम)।

**अभिदेशिती** पुं० (हि) १-वह जिससे किसी विषय में निर्णायक मत माँगा जाय। २-वह पंच या मध्यस्थ जिसे विवादास्पद विषय का निर्णय करने के लिए कहा जाय। (रेफरी)।

**अभिधा** स्त्री० (सं) शब्द की तीन शक्तियों में से एक

**अभिधान** पुं० (स) १-कथन। २-शब्दकोश। ३-किसी पद का विशेष नाम अथवा संज्ञा। (डेजिग्नेशन)।

**अभिधेय** *वि०* (सं) १-जिसका नाम लेने मात्र से ही बोध हो। २-प्रतिपाद्य। पुं० (सं) नाम।
**अभिनंदन** पुं० (सं) १-आनन्द। २-प्रोत्साहन ३-प्रशंसा। ४-सन्तोष। ५-सविनय प्रार्थना।
**अभिनंदन-पत्र** पुं० (सं) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के आगमन पर दिया जाने वाला आदर-सूचक पत्र। (फेयरवैल-एड्रेस)।
**अभिनंदना** *क्रि०* (हिं) अभिनन्दन करना।
**अभिनंदित** *वि०* (सं) प्रशंसित, वन्दित।
**अभिनय** पुं० (सं) १-हावभाव द्वारा किसी विषय का वास्तविक अनुकरण करके दिखलाना। (एक्टिङ्ग)। नाटक का खेल।
**अभिनव** *वि०* (सं) १-नया, नवीन। २-ताजा।
**अभिनिर्णय** पुं० (सं) किसी दोषी अथवा निर्दोषी होने के सम्बन्ध में दिया गया निर्णायक निर्णय। (वरडिक्ट आफ ज्यूरी)।
**अभिनिर्णायक** पुं० (सं) न्यायाधीश के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में निर्णय देने वाले व्यक्ति। (ज्यूरी)।
**अभिनिर्देश** पुं० (सं) देखो 'अभिदेश'।
**अभिनिविष्ट** *वि०* (सं) १-गड़ा हुआ; धँसा हुआ। २-बैठा हुआ। ३-लीन, लिप्त।
**अभिनिवेश** पुं० (सं) १-गति, प्रवेश। २-मनोयोग ३-दृढ़ संकल्प। ४-मृत्यु के भय से उत्पन्न क्लेश।
**अभिनिषेध** पुं० (सं) राजा, प्रधान शासक अथवा अधिकारी द्वारा किसी विधि, अध्यादेश, सन्धि आदि का रद्द कर दिया जाना। (एब्रोगेशन)।
**अभिनीत** *वि०* (सं) १-पास लाया हुआ। २-सुसज्जित; अलंकृत। ३-अभिनय किया हुआ।
**अभिनेता** पुं० (सं) अभिनय करने वाला, नाटक का पात्र। (एक्टर)।
**अभिनेत्री** *स्त्री०* (सं) अभिनय करने वाली, नाटक की स्त्री-पात्र। (एक्ट्रेस)।
**अभिनै** पुं० (हिं) देखो 'अभिनय'।
**अभिन्न** *वि०* (सं) १-जो भिन्न न हो, अपृथक। २-सम्बद्ध।
**अभिन्नपद** पुं० (सं) श्लेष नाम अलंकार का एक भेद
**अभिन्यस्त** *वि०* (सं) जमा किया हुआ; किसी मद में डाला हुआ। (डिपॉजिटेड)।
**अभिन्यास** पुं० (सं) १-किसी मद में या विभाग में रखना अथवा जमा करना। २-किसी परिकल्पना (प्लैन) के अनुसार गृह, उद्यान आदि का निर्माण विस्तार आदि करना।
**अभिपुष्ट** *वि०* (सं) जिसका अभिपोषण हुआ हो। (रैटिफायड)।
**अभिपुष्टि** *स्त्री०* (सं) १-किसी कथन, बयान, सम्वाद आदि की सत्यता पुनः स्वीकार कर उसे और दृढ़ तथा विश्वसनीय बनाना। (कनफरमेशन)। २-किसी पर किसी की नियुक्ति को स्थायी एवं पक्का बना दिया जाना। (कनफरमेशन)।
**अभिपोषण** पुं० (सं) प्रतिनिधियों के किये हुए कार्य की स्वीकृति प्रदान करके उसे अंगीकार करना या पक्का करना। (रैटिफिकेशन)।
**अभिपोषणीय** *वि०* (सं) जिसका अभिपोषण होने को हो।
**अभिपोषित** *वि०* (सं) जिसका अभिपोषण हुआ हो।
**अभिप्राय** पुं० (सं) १-आशय। २-उद्देश्य। ३-चित्र में सजावट के लिए बनाई जाने वाली काल्पनिक आकृति। ४-साहित्य में रचना का विषय जिस पर उस रचना का ढाँचा बनता है।
**अभिप्रेत** *वि०* (सं) अभिलषित, चाहा हुआ।
**अभिभव** पुं० (सं) १-पराजय। २-अनादर। ३-अनहोनी बात या घटना। ४-किसी को बलात् दबाकर कहीं रोक रखना अथवा कहीं ले जाना, (कॉन्स्ट्रेण्ट)।
**अभिभावक** *वि०*(सं) १-रक्षक, सरपरस्त। २-पराजित करने वाला। ३-स्तंभित कर देने वाला।
**अभिभावित** *वि०* (सं) किसी के नीचे दबा हुआ।
**अभिभावी होना** *क्रि०* (हिं) प्रभावयुक्त या प्रबल होना
**अभिभाषक** पुं० (सं) न्यायालय में किसी के पक्ष का समर्थन करने वाला विधिज्ञ। (एडवोकेट)।
**अभिभाषण** पुं० (सं) १-व्याख्यान, वक्तृता। २-न्यायालय में विधिज्ञ का भाषण।
**अभिभूत** *वि०* (सं) १-पराजित। २-पीड़ित। ३-व्याकुल। ४-वशीभूत।
**अभिमंत्रण** पुं० (सं) १-मंत्र द्वारा संस्कार। २-आवाहन।
**अभिमत** *वि०* (सं) १-वांछित। २-राय के मुताबिक, सम्मत। पुं० (सं) १-सम्मति, राय। २-अभिलषित वस्तु।
**अभिमान** पुं० (सं) अहङ्कार, गर्व, घमण्ड।
**अभिमानी** *वि०* (हिं) अहंकारी, घमण्डी।
**अभिमुख** *क्रि० वि०* (सं) सामने, सम्मुख।
**अभियंता** पुं० (सं) १-मशीन आदि का बनाने या चलाने वाला। (इंजीनियर)। २-राजकीय भवन, पुल, सड़कों आदि की विद्या जानने वाला अधिकारी। (इंजीनियर)।
**अभियंत्रण** पुं० (सं) अभियन्ता का कार्य। (इंजीनियरिङ्ग)।
**अभियाचन** पुं० (सं) सम्मुख होकर की जाने वाली प्रार्थना।
**अभियाचना** *स्त्री०* (सं) दृढ़तापूर्वक अथवा अधिकार-सहित याचना करना; माँग। (डिमांड)।
**अभियान** पुं० (सं) १-युद्धयात्रा। २-हमला, चढ़ाई

**अभियानी** वि० (सं) विजय, लाभ आदि की इच्छा से अभिदान करने वाला।

**अभियुक्त** पुं० (सं) वह जिस पर कोई अभियोग हो। मुलजिम। (एक्यूज्ड)।

**अभियुक्ति** स्त्री० (सं) न्यायालय में किसी व्यक्ति पर अपराध करने का आरोप लगाना, अभियोग। (चार्ज)।

**अभियोक्ता** पुं० (सं) अभियोग-कर्त्ता; फरियादी; वादी।

**अभियोग** पुं० (सं) १-फरियाद। २-अभियुक्ति। ३-किसी तरह की नालिश या मुकद्दमा, मामला। (केस)।

**अभियोगी** पुं० (सं) वादी, मुद्दई।

**अभियोजन** पुं० (सं) किसी पर (विशेषतया पुलिस द्वारा) फौजदारी मामला चलाने का कार्य। (प्रासिक्यूशन)।

**अभियोजनकारी** पुं० (सं) न्यायालय के सम्मुख रखे गये फौजदारी मामले का संचालक। (प्रासिक्यूटर)

**अभियोज्य** वि० (सं) जिस पर इलजाम लगाया जा सके।

**अभिरक्षक** पुं० (सं) १-सुरक्षा की दृष्टि से किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को अपने अधिकार, देख-रेख या संरक्षण में रखने वाला। (कस्टोडियन)। २-किसी की देख-रेख करने वाला। (गार्जियन)।

**अभिरक्षण** पुं० (सं) देखो 'अभिरक्षा'।

**अभिरक्षा** स्त्री० (सं) किसी की सम्पत्ति को या किसी को भागने से रोकने के निमित्त अपनी रक्षा में रखना। (कस्टडी)।

**अभिरना** क्रि० (हि) १-लड़ना, भिड़ना। २-टेकना, सहारा लेना। ३-मिलाना।

**अभिराम** वि० (सं) सुन्दर।

**अभिरुचि** स्त्री० (सं) १-अतिशय रुचि; चाह। २-पसन्द।

**अभिलषित** वि० (सं) इच्छित, वांछित।

**अभिलाख** स्त्री० (हि) अभिलाषा; इच्छा।

**अभिलाखना** क्रि० (हि) इच्छा करना; चाहना।

**अभिलाखा** स्त्री० (हि) अभिलाषा, इच्छा।

**अभिलाखी** वि० (हि) अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

**अभिलाप** पुं० (सं) १-इच्छा; मनोरथ। २-प्रिय से मिलने की चाह।

**अभिलाषा** स्त्री० (सं) इच्छा; आकांक्षा।

**अभिलाषी** वि० (सं) इच्छा करने वाला, आकांक्षी।

**अभिलास** पुं० (हि) इच्छा, मनोरथ।

**अभिलासा** स्त्री० (हि) अभिलाषा, इच्छा।

**अभिलिखित** वि० (सं) नियमित रूप से लिखकर सुरक्षित रखा हुआ। (रिकॉर्डेड)।

**अभिलेख** पुं० (सं) नियमित रूप से लिखी हुई बातें (रेकार्ड)।

**अभिलेख-अधिकरण** पुं० (सं) देखो 'अभिलेख-न्यायालय'।

**अभिलेखन** पुं० (सं) किसी विषय से सम्बन्धित सारी बातें किसी विशेष उद्देश्य से लिखना। (रेकार्डिङ्ग)।

**अभिलेख-न्यायालय** पुं० (सं) राज्य के प्रधान अभिलेख विभाग का वह न्यायालय जिसे लिपि से सम्बन्ध रखने वाली अथवा इसी प्रकार की अन्य भूलें ठीक करने का अधिकार होता है। (कोर्ट-आफ-रिकार्ड)।

**अभिलेखपाल** पुं० (सं) किसी न्यायालय अथवा कार्यालय में अभिलेखों की देखभाल करने वाला अधिकारी। (रेकार्ड-कीपर)।

**अभिलेखालय** पुं० (सं) अभिलेखों को सुरक्षित रूप में रखने का स्थान। (रेकार्ड-रूम)।

**अभिवंदन** पुं० (सं) १-नमस्कार, प्रणाम। २-प्रशंसा स्तुति।

**अभिवक्ता** पुं० (सं) वकील।

**अभिवचन** पुं० (सं) १-प्रतिज्ञा। २-वह बात जो न्यायालय में अभियुक्त या वकील अपने नियोजक की ओर से कहता है। (प्लीडिङ्ग)।

**अभिवादक** वि० (सं) प्रणाम या वन्दना करने वाला

**अभिवादन** पुं० (सं) १-प्रणाम; वन्दना। २-किसी आदरणीय व्यक्ति के प्रति व्यक्त की जाने वाली श्रद्धा या आदर भाव। (होमेज)।

**अभिव्यंजक** वि० (सं) १-प्रकट करने वाला, प्रकाशक

**अभिव्यंजन** पुं० (सं) प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट या सूचित करने का मन का भाव।

**अभिव्यंजित** वि० (सं) जिसका अभिव्यंजन किया गया हो। (एक्सप्रेस्ड)।

**अभिव्यक्त** वि० (सं) प्रकट या जाहिर किया हुआ; प्रकाशित।

**अभिव्यक्ति** स्त्री० (सं) १-अभिव्यक्त करने की क्रिया या भाव। २-उस वस्तु का प्रत्यक्ष होना जो पहले अप्रत्यक्ष हो। ३-कार्य का आविर्भाव।

**अभिशंसन** पुं० (सं) इस बात का निर्णय कि अभियुक्त पर आरोपित दोष प्रमाणित हो गया है और परिणामतः दण्डित किया गया है। (कन्विक्टेड)।

**अभिशंसा** स्त्री० (सं) देखो 'अभिशंसन'।

**अभिशंसित, अभिशस्त** वि० (सं) न्यायालय में जिसका दोषी होना सिद्ध हो गया हो। (कनविक्टेड)।

**अभिशप्त** वि० (सं) १-शाप दिया हुआ; शापित। २-मिथ्या दोषारोप।

**अभिशाप** पुं० (सं) १-शाप। २-मिथ्या दोषारोपण।

**अभिशापित** वि० (सं) अभिशप्त।

**अभिषङ्ग** पुं० (सं) १-पराजय। २-कोसना, निन्दा।

३-मिथ्या दोषारोपण। ४-आलिंगन। ५-शपथ। ६-भूत प्रेत का आवेश। ७-शोक, दुःख। ८-साथ, संग।

**अभिषङ्गी** पुं० (सं) किसी अनुचित या बुरे काम में किसी का साथ देने वाला। (एकमप्लिस)। *वि०* (सं) किसी के साथ लगा रहने वाला।

**अभिषव्** स्त्री० (सं) १-व्यवसायिक वस्तु के उत्पादन अथवा पूर्ति आदि का एकाधिकार प्राप्त करने अथवा किसी अन्य सामान्य सिद्धि के निमित्त स्थापित व्यापारियों की संस्था। (सिन्डिकेट)। २-लेख आदि प्राप्त कर निर्धारित पुरस्कार की शर्तों पर उन्हें एक साथ कई समाचार-पत्रों, साप्ताहिकों या मासिक-पत्रों में प्रकाशित कराने वाली संस्था। (सिन्डिकेट)।

**अभिषिक्त** *वि०* (स) १-जिसका अभिषेक हुआ हो। २-बाधा शान्ति के निमित्त जिस पर मन्त्र पढ़कर दूर्वा तथा कुश से जल छिड़का गया हो। ३-राजपद पर नियुक्त।

**अभिषेक, अभिषेचन** पुं० (सं) १-शान्ति या मङ्गल के निमित्त मन्त्र पढ़कर दूर्वा तथा कुश से जल छिड़कना। २-जलसिंचन, छिड़काव। ३-विधि के अनुसार मन्त्र से जल छिड़क कर राजगद्दी पर बैठना। ४-यज्ञ के पश्चात शान्ति के निमित्त स्नान। ५-वह घड़ा जो शिवलिङ्ग पर टपकने के लिए तिपाई पर रखा रहता है।

**अभिषेचनीय** पुं० (सं) वह विधान जिसमें अभिषेक के पहले राजा पर जल छिड़कर उसे पवित्र किया जाता था (प्राचीन)।

**अभिसंधि** स्त्री० (सं) १-धोखा; प्रतारण। २-कुचक्र, षड्यन्त्र।

**अभिशून्यन** पुं० (स) न्यायालय के नियम आदि को रद्द करना। (एनलिंग)।

**अभिशून्यीकृत** *वि०*(स) जो रद्द या मंसूखकर दिया गया हो। (एनल्ड)।

**अभिसंधिता** स्त्री० (सं) स्वयम् अपने प्रियतम का अनादर कर पछिताने वाली नायिका।

**अभिसंपात** पुं० (सं) १-झगड़ा, बखेड़ा। २-युद्ध।

**अभिसमय** पुं० (स) १-आपसी सम्बन्ध रखने वाले डाक, तार आदि) कतिपय विषयों के सम्बन्ध में किया विभिन्न राज्यों का समझौता। २-युद्धलिप्त देशों के सैनिक अधिकारियों का युद्धस्थगन-सम्बन्धी वह समझौता जो दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों की बातचीत द्वारा तय किया जाय तथा जिसका परिपालन दोनों के लिए पक्की सन्धि के सम्मन ही आवश्यक हो। ३-इस प्रकार का समझौता करने के निमित्त होने वाला उक्त राज्यों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन। ४-कोई प्रथा अथवा परिपाटी जो परम्परागत हो तथा जो अलिखित होते हुए भी सब के लिए मान्य हो।

**अभिसरण** पुं० (सं) १-आगे जाना। २-प्रिय से मिलने के निमित्त जाना।

**अभिसरना** *क्रि०* (हि) १-जाना। २-(नायिका)। प्रियतम से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जाना।

**अभिसाधक** पुं० (सं) देखो 'अभिकर्त्ता'।

**अभिसाधन** पुं० (सं) देखो 'अभिकरण'।

**अभिसामयिक** *वि०*(सं)१-अभिसमय अथवा समझौता सम्बन्धी। २-जो पूर्व परम्परा अथवा परिपाटी के रूप हो। (कनवेंशनल)।

**अभिसार** पुं० (स) १-सहारा। २-नायक का नायिका से, नायिका का नायक से मिलने संकेत-स्थान पर जाना।

**अभिसारिका** स्त्री० (स) वह स्त्री या नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने संकेत-स्थान पर जाये।

**अभिसारिणी** स्त्री० (स) १-नौकरानी। २-अभिसारिका।

**अभिसारी** *वि०* (स) १-साधक। २-प्रिय से मिलने के निमित्त संकेत-स्थल पर जाने वाला (नायक)। ३-एक दूसरे की ओर अथवा किसी एक केन्द्र पर पहुंचकर मिलने की प्रवृत्ति रखने वाले। (कान्वजेंट)

**अभिसूचना** स्त्री० (सं) देखो 'अधिसूचना'।

**अभिसेष** पुं० (हि) देखो 'अभिषेक'।

**अभिस्ताव** पुं० (स) १-किसी के पक्ष में अनुकूल प्रभाव डालने के निमित्त अथवा किसी की प्रशंसा में कुछ कहना या लिखना। (रिकमंडेशन)। २-कोई सलाह अथवा सुभाव देते हुए उसके पक्ष में अपना भाव प्रकट करना। (रिकमेंडेशन)।

**अभिस्रावण** पुं०(स) भभके द्वारा शराब, अर्क आदि चुआना। (डिस्टिलेशन)।

**अभिस्रावणी** स्त्री० (स) अभिस्रावण करने की भट्टी या कारखाना। (डिस्टिलरी)।

**अभिहरण** पुं० (स) ऋण, किराये आदि की वसूली के निमित्त न्यायालय के आदेश से किसी की जायदाद, जमीन आदि जब्त कर देना अथवा नीलाम कर देना। (डिस्ट्रेस)।

**अभिहरण-अधिपत्र** पुं० (स) अभिहरण के निमित्त जारी किया गया अधिपत्र। (वारंट)।

**अभिहस्तांकन** पुं० (सं) १-किसी भूमि, अधिकार आदि का लिखित वैध रूप से हस्तांतरण करना। २-किसी के निमित्त कोई हिस्सा कार्य आदि निर्धारित करना। (असाइनमेंट)।

**अभिहार** पुं० (स) १-युद्ध की घोषणा। २-दंड; सजा।

**अभिहित** *वि०* (स) १-कथित, उल्लिखित। २-नाम आदि से प्रसिद्ध या संबोधित।

**अभी** *क्रि० वि०* (हि) इसी क्षण; इसी समय।

**अभीप्सा** स्त्री० (सं) तीव्र इच्छा या अभिलाषा।
**अभीष्ट** वि० (स) १-चाहा हुआ; वांछित। २-मनोनीत; पसन्द का। ३-अभिप्रेत।
**अभुआना** क्रि० (हि) हाथ पैर पटकना और सिर धुनना या जोर से सिर हिलाना जिससे यह समझा जाय कि भूत आगया है।
**अ-भुक्त** वि० (स) १-जो न खाया गया हो। २-बिना काम में आया हुआ। ३-जो भुनाया न गया हो। (अनकैशड)।
**अभू** क्रि० वि० (हि) अभी; इसी समय।
**अ-भूत** वि० (स) १-वर्तमान। २-जो हुआ न हो। ३-अनोखा, विलक्षण।
**अ-भूतपूर्व** वि० (सं) १-जो पहले न हुआ हो। २-विलक्षण, अपूर्व।
**अभूतोपमा** स्त्री० (स) उपमा के दस भेदों में से एक।
**अ-भेद** पुं० (सं) १-भेद का अभाव, फर्क न पड़ना। २-एक अलंकार। वि० (सं) एकरूप, समान। वि० (हि) अभेद्य।
**अभेद-रूपक** पुं० (सं) रूपक अलंकार का एक भेद।
**अभेद्य** पुं० (सं) हीरा। वि० (सं) १-विभक्त न होने वाला। २-छेदा न जाने वाला।
**अभेय** पुं० (हि) अभिन्नता, एकता।
**अभेर** पुं० (हि) भिड़न्त।
**अभेरना** क्रि० (हि) मिलाना।
**अभेरा** पुं० (हि) युद्ध, लड़ाई।
**अभेव** पुं० (हि) देखो 'अभेद'।
**अभै** पुं० (हि) निर्भय। क्रि० वि० (हि) अभी।
**अभोग** वि० (सं) १-जिसका भोग न किया गया हो। २-अछूता। ३-अ-भोग्य।
**अ-भोगी** वि० (सं) १-भोग न करने वाला। २-विरक्त।
**अ-भोग्य** वि० (सं) भोग न करने योग्य।
**अ-भोज्य** वि० (स) भोजन के अयोग्य।
**अभ्यंग** पुं० (सं) १-लेपन। २-तेल की मालिश।
**अभ्यंतर** पुं० (सं) १-मध्य, बीच। २-हृदय। क्रि० वि० (सं) भीतर, अन्दर।
**अभ्यधीन** वि० (स) १-किसी नियम प्रतिबन्ध आदि के अधीन या उससे बंधा हुआ। (सबजेक्ट टु)। २-अधीन।
**अभ्यर्थन** पुं० (सं) किसी से कुछ मांगना या कोई काम करने के लिए जोर देकर कहना। (डिमांड)। २-किसी से अपना प्राप्यधन, पदार्थ आदि माँगना ३-देखो 'अभ्यर्थना'।
**अभ्यर्थना** स्त्री० (स) १-प्रार्थना, विनय। २-अगवानी ३-देखो 'अभ्यर्थन'।
**अभ्यर्थी** पुं० (सं) किसी परीक्षा अथवा नौकरी के लिए आवेदन-पत्र देने वाला। (कैंडिडेट)।
**अभ्यर्पक** पुं० (स) वह जो किसी को कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार प्रदान करे। (असाइनर)।
**अभ्यर्पण** पुं० (स) किसी वस्तु का स्वामित्व या अधिकार किसी को सौंपने का कार्य। (असाइनमेंट)
**अभ्यर्पित** वि० (सं) जो किसी को सौंप दिया गया हो। (असाइण्ड)।
**अभ्यर्पिती** पुं० (सं) किसी वस्तु का स्वामित्व या अधिकार पाने वाला व्यक्ति। (असाइनी)।
**अभ्यसित** वि० (सं) अभ्यास किया हुआ।
**अभ्यस्त** वि० (स) १-अभ्यास किया हुआ। २-दक्ष, निपुण।
**अभ्यागत** पुं० (स) १-अतिथि; मेहमान। २-सामने आया हुआ।
**अभ्यास** पुं० (सं) १-किसी कार्य को बराबर करना २-पुनरावृत्ति। ३-आदत; स्वभाव।
**अभ्यासी** पुं० (सं) अभ्यास करने वाला; साधक।
**अभ्युक्त** वि० (सं) सामने कहा हुआ; साक्षात रूप से कहा हुआ।
**अभ्युक्ति** स्त्री० (स) किसी व्यवहार या मुकदमे में वादी प्रतिवादी के कथन या वक्तव्य। (स्टेटमेंट)।
**अभ्युत्थान** पुं० (सं) १-उठना। २-किसी का आदर करने के लिए आसन छोड़कर खड़ा हो जाना। ३-उच्च पद या अधिकार प्राप्ति। ४-उठान, आरम्भ
**अभ्युदय** पु० (स) १-सूर्य आदि ग्रहों का उदय। २-उत्पत्ति, प्रादुर्भाव। ३-मनोरथ-सिद्धि। ४-वृद्धि, बढ़ती। ५-नये सिर से होने वाली उन्नति।
**अभ्युपगम** पुं० (स) १-पास गया हुआ। २-स्वीकार ३-नियम। ४-तर्क के अनुसार पहले कोई सिद्ध अथवा असिद्ध बात मानकर तब उसकी सत्यता की जाँच कराना तथा उससे कोई परिणाम निकालना। (डिडक्शन)।
**अभ्रंकष** वि० (सं) गगनचुम्बी। पुं० (सं) वह भवन जो आसपास की इमारतों से बहुत अधिक ऊँचा हो और आकाश को छूता सा जान पड़े। (स्काई-स्क्रेपर)।
**अभ्र** पुं० (सं) १-मेघ, बादल। २-आकाश। ३-स्वर्ण
**अभ्रक** पुं० (सं) खानों से निकलने वाला तहदार धातु जो कांच के समान पारदर्शक होता है। अबरक।
**अभ्रांत** वि० (स) १-भ्रम रहित। २-घबराहट या गलती में पड़ने वाला। ३-प्रमाद रहित।
**अमंगल** वि० (स) अशुभ, अकुशल। पुं० (स) अ-कल्याण, अहित।
**अमंद** वि० (स) १-जो मंद या धीमा न हो। तेज। २-उत्तम; श्रेष्ठ। ३-उद्योगी।
**अमका** वि० (हि) अमुक, ऐसा।

**अमचूर** पुं० (हिं) सूखे हुए कच्चे आम का पिसा हुआ चूर्ण।
**अमत** वि० (सं) १-असम्मत। २-रोग। ३-मृत्यु।
**अमन** पुं० (अ) शांति।
**अमनस्क** वि० (सं) अनमना, उदास।
**अमनियाँ** वि० (हिं) शुद्ध, पवित्र।
**अमनैक** पुं० (हिं) १-सरदार, मुखिया। २-अधिकारी ३-ढीठ।
**अमनैकी** स्त्री० (हिं) स्वेच्छाचार। पुं० (हिं) देखो 'अमनैक'।
**अमर** वि० (सं) १-न मरने वाला, चिरजीवी। २-जिसका कभी अंत नाश या क्षय न हो। (इम्मॉर-टल)। पुं० (सं) १-देवता। २-पारा। ३-अमरकोष
**अमरकोष** पुं० (सं) अमरसिंह का बनाया हुआ एक शब्द कोष।
**अमरख** पुं० (हिं) अमर्ष, क्रोध।
**अमरखी** वि० (हिं) क्रोधी।
**अमरता** स्त्री० (सं) १-न मरने का भाव या अवस्था अनश्वरता। २-देवत्व।
**अमरत्व** पुं० (सं) देखो 'अमरता'।
**अमर-पक्ष** पुं० (सं) पितृ-पक्ष।
**अमर-पख** पुं० (हि) अमरपक्ष, पितृ-पक्ष।
**अमर-पद** पुं० (सं) मुक्ति, मोक्ष।
**अमरपुर** पुं० (स) देवताओं का नगर; स्वर्ग; अमरावती।
**अमरबेल** स्त्री० (हिं) एक पीली लता जिसके जड़ और और पत्ते नहीं होते, आकाश बेल।
**अमरषा** पुं० (हिं) अमर्ष; क्रोध।
**अमरस** पुं० (हिं) अमावट, निचोड़कर सुखाया हुआ आम का रस।
**अमराई** स्त्री० (हिं) आम का बाग।
**अमराव** पुं० (हि) आम का बाग।
**अमरावती** स्त्री० (स) देवताओं की नगरी; इन्द्रपुरी।
**अमरी** स्त्री० हि) देवपत्नी।
**अमरू** पुं० (अ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
**अमरूत, अमरूद** पुं० (हिं) एक वृक्ष और फल का नाम।
**अ-मर्याद** वि० (सं) १-अप्रतिष्ठित। २-सीमा रहित। ३-अव्यवस्थित।
**अमर्ष, अमर्षण** पुं० (सं) १-क्रोध। २-वह दुःख अथवा द्वेष जो विपक्षी या शत्रु का कोई अपकार न कर सकने पर हो।
**अमर्षी** वि० (सं) क्रोधी।
**अमल** वि० (स) १-निर्मल। २-दोष रहित। पुं० (अ) १-नशा। २-कार्य। ३-शासनकाल। ४-व्यवहार
**अमलदारी** स्त्री० (अ+फा) १-शासन। २-राज्यकाल
**अमलपट्टा** पुं० (हि) किसी कारिन्दे या अधिकारी के काम पर नियुक्त करने के लिए दिया जाने वाला दस्तावेज या अधिकार-पत्र।
**अमला** स्त्री० (सं) लक्ष्मी। पुं० (सं) आँवला। पुं० (अ) राजकर्मचारी।
**अमलारा** वि० (हिं) १-नशा करने वाला। २-नशे में चूर।
**अमली** वि० (अ) व्यवहारिक। वि० (हि) नशेबाज।
**अमलोनी** स्त्री० (हि) लोनिया घास, नोनी
**अमहल** पुं० (हि) १-वह जिसके कोई घर द्वार न हो २-साधु।
**अमाँ** अव्य० (हिं) ऐ मियाँ।
**अमांस** वि० (हि) दुबला, मांसहीन।
**अमा** स्त्री० (सं) अमावस्या।
**अमातना** क्रि० (हिं) निमन्त्रण देना।
**अमात्य** पुं० (सं) मन्त्री।
**अ-मान** वि० (सं) १-मान रहित। २-असीम। ३-निराभिमान।
**अमानत** स्त्री० (अ) थाती, धरोहर।
**अमानतनामा** पुं० (अ+फा) वह पत्र जो अमानत रखने के समय उसके प्रमाण स्वरूप लिखा जाता है
**अमाना** क्रि० (हि) १-समाना, अँटना। २-गर्व करना, इतराना।
**अमानी** वि० (सं) अभिमान रहित। स्त्री० (हिं) १-वह सरकारी भूमि जिसका अधिकार जिला कलक्टर के पास होता है। २-वह काम जो ठेके पर न हो। ३-लगान की वसूली जो फसल के विचार से हो। ४-मनमानी व्यवस्था।
**अमानुष** वि० (स) १-जो मनुष्य के वस का न हो। २-मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध।
**अमानुषिक** वि० (सं) देखो 'अमानुषी'।
**अमानुषी** वि० (सं) १-मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध। २-अलौकिक।
**अमाय** वि० (सं) १-मायारहित, निर्लिप्त। २-निष्कपट।
**अमारी** स्त्री० (अ) हाथी का हौदा।
**अमाल** पुं० (अ) शासक।
**अमावट** स्त्री० (हिं) आम के सूखे हुए रस की जमी हुई तह या पर्त।
**अमावड़** पुं० (हि) शक्तिशाली।
**अमावना** क्रि० (हिं) देखो 'अमाना'।
**अमावस** स्त्री० (हि) कृष्ण-पक्ष की अन्तिम तिथि।
**अमावसी, अमावस्या, अमावास्या** स्त्री० (सं) अमावस
**अ-मिट** वि० (हि) १-न मिटने वाला। २-जो न टले अमिट।
**अमित** वि० (सं) १-अपरमित, असीम। २-अत्यधिक
**अमिय** पुं० (हिं) अमृत।
**अमियमूरि** स्त्री० (हिं) संजीवनी-बूटी, अमृत-बूटी।

**अमिरती** स्त्री० (हि) इमरती नामक मिठाई।
**अमिल** वि०(हि) १-न मिलने वाला; अप्राप्य। २-बेमेल। ३-जिसमें मेलजोल न हो।
**अमिलता, अमिलताई** स्त्री० (हि) १-बेमेल रहने की अवस्था या भाव। २-अम्लता।
**अमिली** स्त्री० (हि) देखो 'इमली'।
**अमी** पुं० (हि) अमृत।
**अमी-कर** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**अ-मीत** पुं० (हि) शत्रु।
**अमीन** पुं०(अ) न्यायालय का वह कर्मचारी जो बाहर-बाहर का काम करता हो।
**अमी-निधि** पुं० (हि+सं) चन्द्रमा।
**अमीर** पुं० (अ) १-सरदार। २-धनवान। ३-उदार
**अमुक** वि० (सं) फलाँ; ऐसा-ऐसा; कोई।
**अमुकता** वि० (हि) न मुकने या समाप्त होने वाला, यथेष्ट।
**अमूर्त** वि० (सं) निराकार। पुं० (सं) १-ईश्वर। २-आत्मा। ३-काल। ४-हवा। ५-आकाश।
**अ-मूलक** वि० (सं) १-मूल या जड़ रहित; निर्मूल। २-मिथ्या; असत्य।
**अ-मूल्य** वि० (सं) १-बिना मोल का, मूल्य रहित। २-बहुमूल्य।
**अमृत** पुं० (सं) १-सुधा, पियूष। २-जल। ३-घी। ४-सुस्वादिष्ट वस्तु या पदार्थ।
**अमृत-कुंड** पुं० (सं) अमृत रखने का पात्र।
**अमृत-कर** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**अमृत-धुनि** स्त्री० (हि) देखो 'अमृत-ध्वनि'।
**अमृत-ध्वनि** स्त्री० (सं) एक २४ मात्राओं का तथा ६ चरणों वाला छन्द।
**अमृत-पान** पुं० (सं) हठयोग अथवा वैद्यक के अनुसार उषाकाल में नाक के द्वारा पानी पीकर मुँह से निकालने की क्रिया; उषापान।
**अमृतबान** पुं० (हि) मिट्टी का रोगनी बरतन जिसमें घी, अचार आदि रखते हैं।
**अमृतमूरि** स्त्री० (सं) संजीवनी बूटी।
**अमेजना** क्रि० (हि) मिलना।
**अमेठना** क्रि० (हि) उमेठना।
**अमेय** वि० (सं) १-असीम, अपरिमाण। २-अज्ञेय, समझ में न आने वाला।
**अ-मेल** वि० (हि) १-जिसमें मेल न हो। २-अ-सम्बद्ध
**अमेव** वि० (हि) देखो 'अमेय'।
**अमेंड़** वि० (हि) मर्यादा या बंधन न मानने वाला।
**अमेंठना** क्रि० (हि) उमेठना।
**अमोघ** वि० (सं) निष्फल न जाने वाला, अ-चूक, अ-व्यर्थ।
**अमोरी** स्त्री०(हि) आम का नया निकलता हुआ पौधा
**अमोल** वि० (हि) अ-मूल्य।
**अमोलक** वि० (हि) बहुमूल्य; कीमती।
**अमोला** पुं० (हि) आम का नया निकलता हुआ पौधा
**अमोही** वि० (हि) १-निर्मोही। २-विरक्त।
**अमौआ** वि० (हि) आम के रस के रंग का।
**अम्माँ** स्त्री० (हि) माँ; माता।
**अम्ल** पुं० (सं) १-खटाई। २-तेजाब।
**अम्लता** स्त्री० (सं) खट्टापन।
**अम्ल-पित्त** पुं० (सं) रोग विशेष जिसमें पित्त-दोष के कारण जो भी भोजन किया जाता है खट्टा होजाता है
**अम्लान** वि० (सं) १-जो कुम्हलाया या उदास न हो; अप्रसन्न। २-निर्मल, स्वच्छ।
**अम्हौरी** स्त्री० (हि) गर्मी के दिनों में होने वाली छोटी-छोटी फुन्सी।
**अयं** सर्व० (सं) यह।
**अयथा** वि० (सं) १-मिथ्या। २-अयोग्य।
**अयन** पुं० (सं) १-गति, चाल। २-सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिण की ओर गमन को उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ३-आश्रम। ४-स्थान। ५-घर। ६-काल, समय ७-गाय या भैंस के थन का ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।
**अयनक** पुं० (हि) ऐनक; चश्मा।
**अ-यश** पुं० (सं) १-अपयश; अपकीर्ति। २-निन्दा।
**अयस** पुं० (सं) लोहा।
**अयस्कांत** पुं० (सं) चुम्बक।
**अ-याचक** वि० (सं) १-याचना न करने वाला। २-सन्तुष्ट।
**अ-याचित** वि० (सं) बिना मांगा हुआ।
**अ-याची** पुं० (सं) १-न मांगने वाला। २-सम्पन्न, धनी।
**अयान** पुं० (सं) देखो 'अयाना'।
**अयानप, अयानपन** पुं० (हि) १-अनजानपना। २-भोलापन।
**अयाना** वि० (हि) अज्ञान, बुद्धिहीन।
**अयाल** पुं० (फा) घोड़े या शेर की गर्दन के बाल; केसर।
**अयास** क्रि० वि० (हि) अनायास।
**अ-युक्त** वि० (सं) १-अयोग्य। २-अमिश्रित; अलग। ३-मुसीबत में पड़ा हुआ; आपद्ग्रस्त। ४-अनमना; ५-असम्बद्ध।
**अ-युक्ति** स्त्री० (सं) १-युक्ति का अभाव। २-योग न देना, अप्रवृत्ति।
**अ-योग** पुं० (सं) १-योग का अभाव। २-कुसमय। ३-सङ्कट।
**अ-योग्य** वि० (सं) १-जो योग्य न हो। २-नालायक; निकम्मा। (३) अनुचित।
**अ-योग्यता** स्त्री० (सं) १-अयोग्य होने का भाव। २-

निकम्मापन । ३-अनौचित्य ।
**अयोन** *वि०* देखो 'अलौकिक' ।
**अरंग** पुं० (हिं) सुगन्ध; महक ।
**अरंभ** पुं० (हिं) आरम्भ ।
**अरंभना** *क्रि०* (हिं) १-बोलना । २-आरम्भ करना । ३-आरम्भ होना ।
**अर** *स्त्री०* (हिं) हठ; जिद; अड़ ।
**अरइल** *वि०* (हिं) अड़ियल ।
**अरक** पुं० (अ) १-भभके से खींचा हुआ रस, आसव २-रस । ३-पसीना ।
**अरकन** *क्रि०* (हिं) १-अरर शब्द सहित गिरना । २-टकराना । ३-फटन ।
**अरकना** *क्रि०* (हिं) १-तड़कना । २-टक्कर खाना ।
**अरकनाना** पुं० (अ) पोदीने और सिरके का अर्क ।
**अरकला** पुं० (हिं) १-रोक, २-ठहराव । मर्यादा ।
**अरकाटी** पुं० (हि) विदेशों में कुली, मजदूर, ठेकेदार आदि भेजने वाला ।
**अरकान** पु० (अ) १-राज्य के प्रधान कर्मचारी । २-वैभव ।
**अ-रक्षित** *वि०* (सं) जिसकी रक्षा न की गई हो; जिसकी रक्षा न की जाती हो।
**अरगजा** पुं० (हिं) केशर, चन्दन और कपूर के मिश्रण से बना हुआ सुगन्धित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है।
**अरगजी** *वि०* (हिं) अरगजे के से रंग वाला ।
**अरगट** *वि०* (हिं) १-पृथक । २-निराला, भिन्न ।
**अरगला** पुं० (हिं) अर्गला, ब्योड़ा ।
**अरगाना** *क्रि* (हिं) १-अलग होना । २-मौन होना ।
**अरघ** पुं० (हिं) देखो 'अर्घ' ।
**अरघा** पुं० (हि) १-अर्घ देने का तांबे का पात्र । २-जलहरी ।
**अरघान** *स्त्री०* (हिं) महक; गन्ध ।
**अरचन** पुं० (हि) अर्चन; पूजा ।
**अरचना** *क्रि०* (हि) पूजा करना ।
**अरचित** *वि०* (हि) अर्चित; पूजित ।
**अरज** *स्त्री०* (अ) अर्ज; विनय; प्रार्थना ।
**अरजी** *स्त्री०* (अ) प्रार्थना-पत्र । *वि०* (हि) प्रार्थना करने वाला । प्रार्थी ।
**अरणी** *स्त्री०* (सं) १-एक प्रकार का वृक्ष; गनियारी । २-सूर्य । ३-काठ का यंत्र जिसे कुशा पर रखकर वेदमन्त्रों के उच्चारणसहित घुमाते हैं ।
**अरण्य** पुं० (स) १-वन; जंगल । २-दस प्रकार के संन्यासियों में से एक । ३-रामायण का एक कांड ।
**अरण्यरोदन** पुं० (स) १-ऐसी पुकार जिसका कोई सुननेवाला न हो । २-वह कथन जिसका कोई सुनने वाला न हो
**अ-रत** *वि०* (सं) १-सांसारिक वस्तुओं से अलग रहने वाला; विरत । २-मंद; धीमा ।
**अ-रति** *स्त्री०* (सं) १-विराग; उदासीनता ।
**अरथाना** *क्रि०* (हि) अर्थ या व्याख्या करना ।
**अरथी** पु० (हि) पैदल । *स्त्री०* (सं) वह वस्तु जिसपर रखकर शमशान में मुर्दा ले जाते हैं । *वि०* (हिं) देखो 'अर्थी' ।
**अरदन** *वि०* (सं) दंतरहित; पोपला ।
**अरदना** *क्रि०* (हि) १-रौंदना । २-मारना ।
**अरदली** पुं० (हिं) चपरासी ।
**अरदाना** *क्रि०*(हि) १-कुचलना या रौंदा जाना । २-कुचलने का काम दूसरों से कराना ।
**अरदावा** पुं० (हि) १-दला या कुचला हुआ अन्न । २-भरता ।
**अरदास** *स्त्री०* (हि) १-प्रार्थना । २-विनीत भाव से चढ़ाया गया उपहार ।
**अरधंग** पुं० (हि) 'अर्द्धांग' ।
**अरध** *वि०*(हि) देखो 'अर्ध' । *क्रि० वि०* (हि) अन्दर, भीतर ।
**अरन** पुं० (हि) अरण्य; वन ।
**अरना** पुं० (हि) जंगली भैंसा । *क्रि०* (हि) अड़ना ।
**अरनी** *स्त्री०* (हि) अरणी ।
**अरन्य** पुं० (हि) अरण्य, जंगल ।
**अरपन** पुं० (हि) अर्पण ।
**अरपना** *क्रि०* (हि) अर्पण करना ।
**अरपा** *वि०* (हि) दिया, अर्पित किया ।
**अरब** पुं०(हि) १-सौ करोड़ की संख्या; २-एक प्रकार का घोड़ा । ३-इन्द्र ।
**अरबर** *वि०* (हि) क्रमरहित; असम्बद्ध ।
**अरबरा** *वि०* (हि) १-घबराया हुआ । २-प्रेम-मग्न ।
**अरबराना** *क्रि०*(हि)१-घबराना । २-डाँवाँडोल होना
**अरबरी** *स्त्री०* (हि) घबराहट ।
**अरबी** *वि०* (फा) अरब देश का । पुं० (फा) १-घोड़ा (अरब देश का) । २-ताशा नाम का बाजा ।
**अरबीला** *वि०* (हि) १-आन-बान वाला । २-हठ करने या अड़ करने वाला । ३-बिना सिर पैर का । अंडबंड ।
**अरब्बी** पुं० (फा) ताशा नामक बाजा ।
**अरमान** पुं० (तु) इच्छा; लालसा; चाह ।
**अरर** *अव्य* (हि) व्यग्रता प्रदर्शित करने वाला शब्द ।
**अरराना** *क्रि०* (हि) १-अरराटे का शब्द करते हुए गिर पड़ना । २-टूटने या गिरते समय शब्द करना ३-सहसा गिर पड़ना ।
**अरवा** पुं०(हि) बिना उबले या भूने धान से निकला चावल ।
**अरवाह** *स्त्री०* (हि) लड़ाई; झगड़ा ।
**अरवाही** *वि०* (हि) झगड़ालू; लड़ाका ।
**अरविंद** पुं० (सं) १-कमल । २-सारस । ३-तांबा ।

**अरबी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बना कर खाते हैं। अरुई।
**अ-रस** पुं० (सं) रस या स्वाद का अभाव। पुं० (हिं) आलस। वि० (सं) रसहीन।
**अरसना** क्रि० (हिं) शिथिल पड़ना, मन्द होना।
**अरसना-परसना** क्रि० (हि) मिलाभेंटी करना; आलिङ्गन करना।
**अरस-परस** पुं० (हिं) देखना और छूना।
**अरसा** पुं० (अ) १-समय; वक्त। २-देर, विलम्ब।
**अरसाना** क्रि० (हिं) अलसाना।
**अरसी** स्त्री० (हि) अलसी, तीसी।
**अरसीला, अरसौंहा** वि० (हि) आलस्यपूर्ण।
**अरहत** पुं० (हि) अर्हत, पूजा।
**अरहन** पुं० (हि) तरकारी में पड़ने वाला बेसन या आटा।
**अरहना** क्रि० (हिं) पूजा करना। स्त्री० (हि) आराधना या पूजा।
**अरहर** स्त्री० (हि) एक अन्न जिसकी दाल बनती है
**अरा** स्त्री० (स) गाड़ी के पहियों की वह चौड़ी पटरी जो पहियों की गड़ारी तथा पुट्ठे के मध्य में जड़ी रहती है।
**अराअरी** स्त्री० (हि) होड़; स्पर्धा।
**अराग** वि० (स) रागहीन; विरक्त।
**अराजक** वि० (स) जहाँ राजा न हो। पुं० (सं) १-राज्य अथवा शासन का प्रभुत्व न मानने वाला। २-शासन में अशान्ति तथा अव्यवस्था उत्पन्न करने वाला। (अनार्किस्ट)।
**अराजकता** स्त्री० (स) १-राज्य की शासन व्यवस्था में अशान्ति की अवस्था या भाव। २-किसी स्थान में उत्पन्न की जाने वाली अशान्ति और अव्यवस्था। (अनार्की)।
**अराज-पत्रित** वि० (स) जिसका नाम अथवा पद वृद्धि, स्थानान्तरण आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना राजकीय पत्रों में न छपती हो। (नॉन-गजेटेड)।
**अराड़** पुं० (हि) १-काठ-कबाड़ का ढेर। २-वह स्थान जहाँ जलाने की लकड़ियाँ बिकती हों।
**अराल** पुं० (हि) १-शत्रु। २-देखो 'अराति'।
**अराति** पुं० (स) १-शत्रु। २-काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह तथा मत्सर, यह छः विकार।
**अराधन** पुं० (हि) देखो 'आराधन'।
**अराधना** क्रि० (हि) १-पूजा करना। २-जपना।
**अराधी** वि० (हि) आराधक; पूजक।
**अराना** क्रि० (हि) देखो 'अड़ाना'।
**अराम** पुं० (हि) देखो 'आराम'।
**अरारूट** पुं० (अं) पौधा विशेष जिसका आटा तीखुर के समान काम में आता है।
**अराल** वि० (सं) वक्र, टेढ़ा। पुं० (सं) केश।
**अरावल** पुं० (हि) देखो 'हरावल'।
**अरावा** पुं० (अ) तोप लादने वाली गाड़ी।
**अरिंद** पुं० (हिं) शत्रु।
**अरि** पुं० (सं) १-शत्रु; वैरी। २-चक्र; चक्कर। ३-छः की संख्या। ४-देखो 'अराति'।
**अरिता** स्त्री० (स) शत्रुता।
**अरियाना** क्रि० (हि) अरे कह कर बोलना, अबे-तबे करना।
**अरिष्ट** पुं० (स) १-दुःख। २-आपत्ति। ३-अमङ्गल ४-दुर्भाग्य। ५-असगुन। ६-अनिष्ट ग्रहों का योग ७-औषधियों का धूप में खमीर उठाकर बनाया हुआ मद्य। वि० (सं) बुरा, अशुभ।
**अरिहा** वि० (सं) शत्रु का नाश करने वाला। पुं० (हि) १-शत्रुघ्न (लक्ष्मण के छोटे भाई)। २-अर्हत
**अरी** अव्य० (हि) स्त्रियों के लिए सम्बोधन।
**अरीतिक** वि० (स) अनौपचार, गैर रस्मी।
**अरुंधती** स्त्री० (सं) १-वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २-दक्ष की कन्या। ३-सप्तर्षि तारा-मण्डल के पास उगने वाला एक छोटा तारा।
**अरु** संयो० (हि) और।
**अरुई** स्त्री० (हि) अरबी।
**अरुचि** स्त्री० (स) १-अनिच्छा, घृणा। २-खाने को जी न चाहना।
**अरुचिकर** वि० (सं) अरुचि उत्पन्न करने वाला।
**अरुझना** क्रि० (हि) १-उलझना; फंसना। २-अटकना, अड़ना। ३-लड़ना; भिड़ना।
**अरुझाना** क्रि० (हि) उलझाना।
**अरुझाव** पुं० (हि) उलझाने की क्रिया या भाव।
**अरुझेरा** पुं० (हि) उलझन।
**अरुण** वि० (सं) लाल; रक्तवर्ण। पुं० (स) १-सूर्य २-कुंकुम। ३-सिंदूर। ४-संध्या की लालिमा।
**अरुणता** स्त्री० (स) लालिमा।
**अरुणाई** स्त्री० (हि) अरुणिमा, लालिमा।
**अरुणाभ** वि० (स) लालिमा लिये हुए।
**अरुणिमा** स्त्री० (स) लालिमा; लाली।
**अरुणोदय** पुं० (स) उषाकाल, भोर।
**अरुन** वि० (हि) देखो 'अरुण'।
**अरुनई, अरुनता, अरुनाई** स्त्री० (हि) देखो 'अरुणता'
**अरुनाना** क्रि० (हि) १-लाल होना। २-लाल करना।
**अरुनायी** स्त्री० (हि) अरुणता।
**अरुनारा** वि० (हि) अरुण, लाल।
**अरुनोदय** पुं० (हि) अरुणोदय।
**अरूझना** क्रि० (हि) उलझना।
**अरूढ़** वि० (हि) आरूढ़।
**अरूरना** क्रि० (हि) १-दुखी होना। २-दुखी करना
**अरुलना** क्रि० (हि) छिदना; विदारित होना।

**अरे** *अव्य०* (सं) १-ए; ओ; देख; सुन। २-एक आश्चर्यबोधक अव्यय।
**अरेरे** *अव्य०* (हि) १-अबे, ओबे। २-आश्चर्यबोधक अव्यय।
**अरेहना** *क्रि०* (हि) १-रगड़ना। २-रेहना।
**अरोगना** *क्रि०* (हि) १-आरोग्य होना। २-आरोग्य या स्वस्थ करना।
**अरोच** *स्त्री०* (हि) अरुचि।
**अरोहना** *क्रि०* (हि) सवार होना, चढ़ना।
**अरोही** *वि०* (हि) सवार होने वाला। पुं० (हि) आरोही, सवार।
**अर्क** पुं० (हि) १-सूर्य। २-इन्द्र; विष्णु। ३-ताँबा। ४-आक; मदार। ४-बारह की संख्या। ६-आग। ७-काढ़ा, क्वाथ। पुं० (हि) देखो 'अरक'।
**अर्गल** पुं० (सं) १-अरगल। २-किवाड़। ३-अवरोध
**अर्गला** *स्त्री०* (सं) १-देखो 'अर्गल'। २-कल्लोल। ३-सूर्योदय या सूर्यास्त के समय दिखाई पड़ने वाले बादल।
**अर्घ** पु० (सं) १-मूल्य, दाम। २-पूजा का उपचार ३-देवता को अर्पित करना। ४-किसी वस्तु या पदार्थ की उपयोगिता अथवा महत्व का सूचक तत्व (वैल्यू)।
**अर्घपतन** पुं० (सं) भाव में गिरावट, माल के मूल्य में कमी। (डेप्रिसिएशन)।
**अर्घपात्र, अर्घा** पुं०(स) शंख के आकार का एक ताँबे का पात्र जिससे अर्घ दिया जाता है।
**अर्घ्य** *वि०* (सं) १-पूजनीय। २-बहुमूल्य। ३-पूजा में देने योग्य। ४-भेंट देने योग्य।
**अर्चक** *वि०* (सं) पूजा करने वाला, पूजक।
**अर्चन** पुं० (सं) १-पूजा। २-आदर-सत्कार।
**अर्चना** *स्त्री०* (सं) अर्चन।
**अर्चा** *स्त्री०* (सं) १-पूजा। २-प्रतिमा।
**अर्चित** *वि०* (सं) १-पूजित। २-आदर-सत्कार किया हुआ।
**अर्च्य** *वि०* (सं) १-पूजनीय। २-सत्कार के योग्य।
**अर्ज** *स्त्री०* (अ) प्रार्थना, निवेदन। पुं० (सं) १-उपार्जन, प्राप्ति। २-संग्रह करना।
**अर्जन** पुं० (सं) १-उपार्जन; कमाना; पैदा करना। २-संग्रह।
**अर्जित** *वि०* (सं) १-कमाया हुआ। २-संगृहीत।
**अर्जित-छुट्टी** *स्त्री०* (सं+हि) वह छुट्टी जिसे प्राप्त करने का वह कर्मचारी अधिकारी माना जाता है जिसने निर्धारित या निश्चित समय तक कार्य करने के पश्चात् उसका अर्जन कर लिया हो। (अर्न्ड-लीव)।
**अर्जी** *स्त्री०* (अ) प्रार्थनापत्र।
**अर्जीदावा** *स्त्री०* (अ) दावे की अर्जी।
**अर्जुन** पुं० (सं) १-तीसरे पांडव, पार्थ। २-एक वृक्ष का नाम।
**अर्णव** पुं० (सं) १-सागर; समुद्र। २-सूर्य। ३-चार संख्या। ४-दंडक छंद का एक भेद।
**अर्थ** *वि०* (सं) लोगों के निज अधिकारों एवं उपचारों से सम्बन्धित, पर अपराधिक से भिन्न। (सिविल)। पुं० (सं) १-शब्द का अभिप्राय; मतलब। ३-हेतु, निमित्त। ३-धन-सम्पत्ति; दौलत।
**अर्थक** *वि०* (स) १-अर्थ या धन कमाने वाला। २-आर्थिक। ३-अर्थ या अभिप्राय से सम्बन्ध रखने वाला।
**अर्थ-कर** *वि०* (स) १-जिससे धन उपार्जित किया जाय, लाभकारी। २-उपयोगी।
**अर्थकार्य** पुं० (सं) अर्थ या धन से सम्बन्धित मुकदमा।
**अर्थ-दंड** पुं० (सं) १-अर्थ या धन के रूप में किया हुआ दंड, जुरमाना। (फाइन)। २-क्षति या व्यय के बदले में लिया जाने वाला धन। (कास्टस)।
**अर्थ-न्यायालय** पुं० (सं) अर्थ-सम्बन्धी वादों या मुकदमों पर विचार करने वाला न्यायालय; दीवानी-अदालत। (सिविल-कोर्ट)।
**अर्थ-पिशाच** *वि०* (सं) धन-संग्रह में कर्तव्याकर्तव्य का विचार करने वाला; धनलोलुप।
**अर्थ-प्रकृति** *स्त्री०*(सं) वह चमत्कारपूर्ण बात जो नाटक में कथावस्तु को कार्य की ओर बढ़ाने में सहायक होती है।
**अर्थ-प्रक्रिया** *स्त्री०*(सं) वह प्रक्रिया या कार्य जो अर्थ-न्यायालय द्वारा हो। (सिविल-प्रोसीजर)।
**अर्थ-प्रसर** पुं० (स) वह आज्ञा या सूचना जो अर्थ-न्यायालय द्वारा निकली हो। (सिविल-प्रोसेस)।
**अर्थ-बंध** पुं० (स) १-विशेष अवसर तथा विशेष कार्य के निमित्त होने वाली आर्थिक व्यवस्था। २-आर्थिक गुप्त समझौता जो व्यापारियों, संघों, राष्ट्रों आदि में पारस्परिक हित के विचार से हो। (डील)
**अर्थ-मंत्री** पुं० (सं) वह मंत्री जो किसी राज्य या देश के आर्थिक विषयों की देखभाल करता है तथा जिसके आदेशानुसार अर्थ-विभाग कार्य करता है। (फाईनान्स मिनिस्टर)।
**अर्थ-मूलक** *वि०* (सं) अर्थ या दीवानी विभाग से सम्बन्धित।
**अर्थवक्रोक्ति** *स्त्री०* (सं) एक वक्रोक्ति।
**अर्थवाद** पुं० (सं) १-किसी बात का अर्थ या अभिप्राय बतलाना। २-किसी विधि के करने की उत्तेजना अथवा प्रोत्साहन देने वाला वाक्य। ३-विधान की नियमावली आदि की वे प्रारंभिक बातें जिन से उस विधान अथवा नियमावली का अर्थ या अभिप्राय सूचित होता है। (प्रिएम्बुल)।

**अर्थ-विधि** स्त्री० (सं) जनता के अधिकारों की रक्षा के निमित्त राज्य की ओर से बनाया गया कानून या विधि। (सिविल-लॉ)।

**अर्थ-विवाद, अर्थ-व्यवहार** पुं० (सं) देखो 'अर्थकार्य'

**अर्थविज्ञान** पुं० (सं) १-धन प्राप्ति का ज्ञान। २-तात्पर्य समझने का ज्ञान।

**अर्थ-शास्त्र** पुं० (सं) अर्थनीति विषयक वह शास्त्र जिसमें धनोपार्जन, रक्षण एवं वृद्धि का विधान हो या इन सिद्धांतों की विवेचना हो।

**अर्थ-शास्त्री** पुं० (सं) अर्थशास्त्र का ज्ञाता या विशेषज्ञ। (ईकॉनामिस्ट)।

**अर्थ-श्लेष** पुं० (सं) श्लेष अलंकार के दो भेदों में से एक।

**अर्थ-सचिव** पुं० (सं) अर्थ विभाग का प्रधान अधिकारी जो आर्थिक विषयों में अर्थ-मंत्री को सलाह, सहायता आदि देता है। (फाइनेन्स-सेक्रेटरी)।

**अर्थांतरन्यास** पुं० (सं) १-एक अर्थालंकार। २-न्याय के अनुसार जब वादी ऐसी बात कहे जो वास्तविक विषय से कुछ सम्बन्ध न रखती हो।

**अर्थात्** अव्य० (सं) इस का अर्थ यह है कि। मतलब यह है कि।

**अर्थाधिकरण** पुं० (सं) अर्थ-न्यायालय।

**अर्थाना** क्रि० (हि) अर्थ लगाना।

**अर्थापत्ति** स्त्री० (सं) १-मीमांसा के अनुसार वह प्रमाण जिसमें प्रकट रूप से किसी विषय को प्रकाशित न करके केवल शब्द द्वारा ही विषय की सिद्धि होती है। २-एक अर्थालंकार

**अर्थापन** पुं० (सं) यह बताना कि इसका अमुक अर्थ है। (इन्टर-प्रेटेशन)।

**अर्थालंकार** पुं० (सं) वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव हो।

**अर्थिक** पुं० (सं) १-वह जो मन में कोई अर्थ अथवा कामना रखता हो। (कैंडिडेट)।

**अर्थी** वि० (सं) १-इच्छा रखने वाला। २-प्रयोजन वाला, गर्जी। पुं० (सं) १-याचक। २-वादी। ३-सेवक। ४-धनी। स्त्री० (हि) देखो 'अरथी'।

**अर्थोपचार** पुं० (सं) अर्थविधि या न्यायालय द्वारा प्राप्त होने वाली क्षतिपूर्ति. (सिविल-रेमेडी)।

**अर्थोपमा** स्त्री० (सं) उपमा-अलंकार।

**अर्थ्यक** पुं०(सं) किसी से प्राप्य धन या मूल्यादि का का ब्यौरा देने वाला पत्र। (बिल)।

**अर्थ्य-समाहर्ता** पुं० (सं) अर्थ्यकों में लिखे हुए प्राप्य धन को उगाहने या इकट्ठा करने वाला व्यक्ति। (बिल-कलक्टर)।

**अर्दन** पुं० (सं) १-हिंसा। २-याचना। ३-जाना।

**अर्दना** क्रि० (हि) कष्ट देना।

**अर्दली** पुं० (हि) चपरासी; अरदली।

**अर्ध, अर्द्ध** पुं० (सं) १-आधा। २-जिसमें कुछ अपना और दूसरों का अंश हो। (सेमी)।

**अर्द्ध-चन्द्र** पुं० (सं) १-आधा चाँद जो अष्टमी को होता है। २-मोर पङ्ख पर की आँख, चन्द्रिका। ३-किसी को निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाने की मुद्रा। ४-सानुनासिक का एक चिह्न। ँ।

**अर्द्धजल** पुं० (सं) शव को स्नान कराकर आधा बाहर और आधा जल में रखने की क्रिया या अवस्था।

**अर्द्धनारीश, अर्द्धनारीश्वर** पुं० (सं) शिव पार्वती का संयुक्त रूप।

**अर्द्ध-मागधी** स्त्री० (सं) काशी तथा मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।

**अर्द्ध-सम** वि० (सं) आधे के बराबर। पुं० (सं) एक छन्द, अर्ध-समवृत्त।

**अर्द्ध-समवृत्त** पुं० (सं) वह वृत्त जिसका पहला तीसरा और दूसरा चौथा चरण समान हो। (दोहा, सोरठा आदि)।

**अर्द्धांग** पुं० (सं) १-आधा अङ्ग या भाग। २-लकवा, पक्षाघात (रोग)।

**अर्द्धाङ्गिनी** पुं० (सं) स्त्री, पत्नी।

**अर्द्धाली** स्त्री० (हि) चौपाई की दो पंक्तियाँ।

**अर्द्धासन** पुं० (सं) सम्मानार्थ किसी को अपने साथ आसन पर बैठाना या अर्द्धांश उसे बैठने के निमित्त सादर देना।

**अर्द्धोत्तोलित-ध्वज** पुं० (सं) किसी महापुरुष के देहान्त पर उसके सम्मान में आधी ऊँचाई तक झुकाया हुआ राष्ट्रीय झण्डा। (हाफमास्ट-फ्लैग)।

**अर्द्धोदय** पुं० (सं) माघ मास की अमावस्या, रविवार तथा श्रवण नक्षत्र होने पर पड़ने वाला महापुण्य पर्व।

**अर्पक** वि० (सं) अर्पण करने वाला।

**अर्पण** पुं० (सं) १-प्रदान; देना। २-नजर; भेंट।

**अर्पना** क्रि० (हि) अर्पण करना।

**अर्पित** वि० (सं) अर्पण किया हुआ; दिया हुआ।

**अर्ब-दर्ब** पुं० (हि) धन-दौलत।

**अर्बुद** पुं० (सं) १-दस करोड़ की संख्या। २-मेघ, बादल। ३-दो मास का गर्भ। ४-अरावली पर्वत। ५-एक रोग जिससे शरीर में गाँठ पड़ जाती है।

**अर्भक** वि० (सं) १-छोटा। २-मूर्ख। ३-दुबला।

**अर्यमा** पुं० (सं) १-सूर्य। २-बारह आदित्यों में से एक।

**अर्वाचीन** वि० (सं) १-आधुनिक। २-नया, नवीन

**अर्श** पुं० (सं) एक रोग, बवासीर। वि० (सं) १-पूज्य। २-योग्य, उपयुक्त। पुं० १-ईश्वर। २-इन्द्र।

**अर्हंत** पुं० (सं) १-जिन, देव। २-बुद्ध।

**अहंता** स्त्री० (सं) किसी स्थान अथवा पद के योग्य बनाने वाली विशिष्टता, गुणराशि या योग्यता। (क्वालिफिशन)।
**अर्हन** पुं० (सं) १-पूजन, पूजा। २-जिन, देव।
**अलं** अव्य० देखो 'अलम्'।
**अलंकरण** पुं० (सं) १-अलंकृत करना। २-सजावट
**अलंकार** पुं० (सं) १-आभूषण, गहना। अर्थ तथा शब्द की वह युक्ति जिससे काव्य की शोभा बढ़े। ३-नायिका के हाव-भाव जिनसे सौन्दर्य की वृद्धि होती है।
**अलंकार-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें अलङ्कार (साहित्य) का वर्णन हो।
**अलंकृत** वि० (सं) १-सजाया हुआ, विभूषित। २-काव्यालङ्कार युक्त।
**अलंग** पुं० (हि) दिशा, ओर, तरफ।
**अलंघनीय, अलंघ्य** वि० (सं) १-जो लाँघा न जासके. २-जिसे छोड़ न सकें।
**अलंब** पुं० (हि) देखो 'आलंब'।
**अलंबुष** स्त्री० (सं) १-स्वर्ग की एक अप्सरा। २-लिंग की एक नाड़ी (हठयोग)।
**अलइक-पलवा** पुं० (हि) गप।
**अलक** स्त्री० (सं) १-केश, लट। छल्लेदार बाल।
**अलकतरा** पुं० (अ) पत्थर के कोयले को आग पर पिघलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ।
**अलक-रचना** स्त्री० (सं) बालों की सुन्दर लटें बनाना, बालों को घुँघराले बनाना।
**अलक-लड़ैता, अलक-सलोरा** वि० (हि) दुलारा, लाड़ला।
**अलका** स्त्री० (सं) कुबेरपुरी, यक्षों की नगरी।
**अलकावलि** स्त्री० (सं) १-बालों की लटें, केशराशि। २-घुँघराले बाल।
**अलकेश** पुं० (सं) इन्द्र।
**अलक्त, अलक्तक** पुं० (सं) १-पैरों में लगाने की अलता। २-महावर।
**अलक्षण** पुं० (सं) १-बुरा लक्षण; अशुभ चिह्न। २-चिह्न या संकेत का न होना। ३-ठीक-ठीक गुण धर्म का अनिर्वाचन।
**अलक्षित, अलक्ष्य** वि० (सं) १-अदृश्य; गायब। २-जिसका लक्षण न कहा जा सके।
**अलख** वि० (हि) १-अदृश्य, अप्रत्यक्ष। २-अगोचर
**अलखधारी अलखनामी** पुं० गोरखनाथ के अनुयायी जो अलख-अलख पुकारकर भिक्षा मांगते हैं।
**अलखित** वि० (हि) देखो 'अलक्षित'।
**अलगट** वि० (हि) सबसे अलग, न्यारा।
**अलग** वि० (हि) १-पृथक; जुदा। २-बेलाग। ३-बचाया हुआ, रक्षित।
**अलगनी** स्त्री० (हि) कपड़े लटकाने के निमित्त बाँधी गई आड़ी डोरी या बाँस, डोरा।
**अल-गरजी** वि० (हि) १-स्वार्थी। २-लापरवाह।
**अलगाऊ** वि० (हि) १-अलग रखने वाला। २-अलग रखने का पक्षपाती।
**अलगाना** क्रि० (हि) १-अलग करना, छाँटना। ४-पृथक करना, हटाना।
**अलगाव** पुं० (हि) पृथकता।
**अलगोजा** पुं० (अ) एक प्रकार की बाँसुरी।
**अलता** पुं० (हि) १-वह लाल रङ्ग जिसे स्त्रियाँ अपने पैरों में लगाती हैं। २-महावर।
**अलप** वि० (हि) अल्प।
**अलफा** पुं० (अ) घेरदार बिना बाँह का लम्बा कुरता जिसे साधु पहनते हैं।
**अलबत्ता** अव्य० (अ) १-निस्सन्देह। २-हाँ। ३-परन्तु।
**अलबम** पुं० (फा) चित्र रखने की पुस्तक।
**अलबेला** वि० (हि) १-बाँका, छैलछबीला। २-अनुपम, बेजोड़। ३-बेपरवाह। पुं० नारियल का हुक्का
**अलभ्य** वि० (सं) १-अप्राप्य। २-दुर्लभ। ३-अमूल्य
**अलम्** अव्य० (सं) यथेष्ट, पर्याप्त।
**अलमस्त** वि० (फा) १-मतवाला। २-बेफिक।
**अलमस्ती** स्त्री० (फा) १-मतवालापन। २-लापरवाही
**अलमारी** स्त्री० (पुर्त) एक प्रकार का खानेदार खड़ा संदूक जिसमें किवाड़ लगे होते हैं।
**अललटप्पू** वि० (हि) अटकलपच्चू।
**अललबछेड़ा** पुं० (हि) १-घोड़े का छोटा बच्चा। २-अल्हड़ व्यक्ति।
**अलल-हिसाब** वि० (अ) उचित (धन)।
**अललाना** क्रि० (हि) जोर से चिल्लाना।
**अलवल** पुं० (हि) नखरा; ढकोसला।
**अलवांती** स्त्री० (हि) प्रसूता।
**अलवान** पुं० (अ) ऊनी चादर।
**अलस** वि० (हि) आलसी, सुस्त।
**अलसता** स्त्री० (हि) आलस्य, सुस्ती।
**अलसना** क्रि० (हि) आलस्य युक्त होना।
**अलसाना** क्रि० (हि) आलस्य में पड़ना।
**अलसी** स्त्री० (हि) एक पौदा या उसका बीज, तीसी
**अलसेट, अलसेठ** स्त्री० (हि) १-विलंब, ढिलाई। २-भुलावा, चकमा। ३-बाधा, अड़चन।
**अलसौंहाँ** वि० (हि) १-आलस्य; सुस्त। २-उनींदा।
**अलह** वि० (हि) देखो 'अलभ्य'।
**अलहदगी** स्त्री० (अ) अलग होने की क्रिया या भाव।
**अलहदा** वि० (अ) अलग।
**अलहदी** वि० (हि) अहदी; आलसी।
**अलहन** पुं० (हि) न मिलना, अप्राप्ति। स्त्री० (हि) शामत, कुसमय।
**अलाई** वि० (हि) अलसी। पुं० घोड़े की एक जाति।

**अलात** पुं० (सं) १–कोयला; अंगारा। २–जलती हुई लकड़ी।

**अलातचक्र** पुं० (सं) १–जलती हुई लकड़ी को जल्दी जल्दी आकाश में घुमाने से बन जाने वाला घेरा २–बनेठी।

**अलान** पुं० (हि) १–हाथी को बाँधने का खूँटा या सांकल। २–बेल चढ़ाने के लिए लकड़ी का गाड़ना ३–बेड़ी। ४–बन्धन।

**अलाप** पुं० (हि) देखो 'आलाप'।

**अलापना** क्रि० (हि) १–बोलना। २–विशुद्ध स्वर से गान करना। ३–गाना।

**अलापी** वि० (हि) बोलने वाला।

**अ-लाभ** पुं० (सं) १–हानि। २–लाभरहित।

**अ-लाभकर** वि० (सं) १–जिससे कोई लाभ न होता हो। २–आर्थिक दृष्टि से जिसमें लाभ या बचत न होती हो।

**अ-लाभकर-जोत** स्त्री० (हि) वह जोती बोयी जाने वाली भूमि जिसकी उपज से परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त न हो।

**अलाम** वि० (हि) १–बातें बनाने वाला। २–झूठा।

**अलायक** वि० (हि) अयोग्य; नालायक।

**अलार** पुं० (स) किवाड़। पुं० (हि) १–अलाव। २–कुम्हार का आँवाँ।

**अलाव** पुं० (हि) तापने के निमित्त जलाई गई आग

**अलावा** क्रि० पुं० (अ) सिवाय, अतिरिक्त।

**अलिंग** वि० (सं) १–लिंग रहित, बिना चिह्न का। २–जिसकी कोई पहचान न बताई जा सके। पुं० व्यवहार के अनुसार वह शब्द जो दोनों लिंगों में प्रयुक्त हो सके। यथा-हम,मैं,तुम,वह।

**अलिंजर** पुं० (स) पानी रखने का मिट्टी का छोटा बरतन, झज्झर, घड़ा, सुराही।

**अलिंद** पुं० (सं) घर के बाहरी दरवाजे का चबूतरा पुं० (हि) भौंरा।

**अलि** पुं०(सं) १–भौंरा। २–कोयल, कौवा। ३–बिच्छू ४–वृश्चिकराशि। ५–कुत्ता। ६–मदिरा। स्त्री० (हि) सखी, सहेली।

**अलिक** पुं० (सं) माथा, ललाट।

**अ-लिखित** वि० (सं) जो लिखा न हो।

**अ-लिप्त** वि० (सं) निर्लिप्त।

**अली** स्त्री० (स) १–सखी। २–पंक्ति। पुं० (हि) भौंरा भ्रमर।

**अलीक** वि० (सं) अप्रतिष्ठा।

**अलीजा** वि० (हि) अत्यधिक।

**अलीन** वि०(हि) १–विरत; अलग। २–अनुचित; बेजा

**अलीपित** वि० (हि) अलिप्त।

**अलील** वि० (अ) बीमार।

**अलीह** वि० (स) मिथ्या; असत्य।

**अलुक्** पुं० (सं) व्याकरण में समास का एक भेद।

**अलुझना** क्रि० (हि) देखो 'उलझना'।

**अलुटना** क्रि० (हि) लड़खड़ाना।

**अलूप** वि० (हि) लुप्त, गायब। पुं० (हि) लोप।

**अलूला** पुं० (हि) १–भभूका; लपट। २–बुलबुला।

**अले** अव्य० (हि) अरे।

**अलेख** वि० (हि) १–अलक्ष्य। २–अज्ञेय। ३–जिसका लेख न हो सके।

**अलेखा** वि० (हि) १–अत्यधिक। व्यर्थ। ३–अद्भुत, विचित्र।

**अलेखी** वि० (हि) १–जालिम; अन्यायी। २–गड़बड़ मचाने वाला। ३–अंडबंड कार्य करने वाला।

**अलेल** पुं० (हि) क्रीड़ा, कलोल।

**अलेलह** क्रि० वि० (हि) अत्यधिक।

**अ-लैंगिक** वि० (सं) जिसमें किसी लिंग का चिह्न न हो। (अन-सेक्सुअल)।

**अलोक** वि० (सं) १–अदृश्य। २–एकान्त; निर्जन। पुं० (सं) १–परलोक। ३–निन्दा। ३–कलंक। पुं० (हि) आलोक।

**अलोकना** क्रि० (हि) १–देखना। आलोकित करना। ३–चमकना।

**अलोना** वि० (हि) १–बिना नमक का। २–फीका। ३–जिसमें नमक न खाया जाय।

**अलोप** वि० (हि) देखो 'लोप'।

**अलोपना** क्रि० (हि) १–लुप्त होना। २–लुप्त करना

**अलोल** वि० (सं) अचंचल, अस्थिर।

**अलोही** वि० (हि) १–लाल। २–रक्त या खून से भरा-हुआ।

**अलौकिक** वि० (सं)१–जो इस लोक में दीख न पड़े। लोकोत्तर। २–असाधारण; अपूर्व। ३–अमानवी।

**अलौलिक** वि० (सं) १–जो युवावस्था की उमंग के कारण ठीक प्रकार से आचरण अथवा कार्य न कर सकता हो। २–अल्हड़पन लिये हुए।

**अल्प** वि० (सं) १–कम, थोड़ा। २–क्षुद्र; छोटा। पुं० (सं) साहित्य में एक अलंकार।

**अल्प-कालिक, अल्प-कालीन** वि० (सं) १–थोड़े समय के लिए होने अथवा दिया जाने वाला। २–जो कुछ ही दिनों में हो।

**अल्पकालीन-ऋण** पुं० (सं) थोड़े समय के लिए लिया गया ऋण जो प्रायः ५ से १० वर्ष में लौटा दिया जाता है। (शार्ट-टर्म-लोन)।

**अल्प-जीवी** वि० (सं) अल्पायु।

**अल्पज्ञ** वि० (सं) १–कम समझ। २–तुच्छ बुद्धि का।

**अल्पता** स्त्री० (सं) १–न्यूनता, कमी। २–छोटाई।

**अल्पना** स्त्री० देखो 'साँझी'।

**अल्पप्राण** पुं० (सं) व्याकरण में व्यंजन वर्णों के प्रत्येक वर्ग का पहिला, तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर

और य र ल व ।
**अल्पमत** पुं० (सं) १-थोड़े से लोगों का मत। २-अल्पसंख्यक।
**अल्प-वयस्क** वि० (सं) कम उम्र, कमसिन।
**अल्प-विराम** पुं० (सं) थोड़े विराम का सूचक चिह्न। (कॉमा)।
**अल्पशः** क्रि० वि० (सं) थोड़ा-थोड़ा करके; धीरे-धीरे क्रमशः।
**अल्पसंख्यक** पुं० (सं) वह समाज या जाति जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो। (माइनॉरिटी)।
**अल्पसंख्यकवर्ग** पुं० (सं) कम गिनती वाली जाति, श्रेणी या समाज।
**अल्पसंख्यक-प्रतिनिधित्व** पुं० (सं) कम गिनती वाली जाति या समाज का प्रतिनिधित्व।
**अल्पसूचित** वि० (सं) थोड़े समय की सूचना दिया हुआ। (शार्ट-नोटिस)।
**अल्पसूचित-प्रश्न** पुं० (सं) वह प्रश्न जो विधान सभा या संसद में तुरन्त उत्तर की इच्छा से थोड़े समय की पूर्वसूचना पर पूछा जाय। (शार्टनोटिस-क्वश्चन)।
**अल्पांश** पुं० (सं) १-थोड़ा अंश या भाग। २-किसी समुदाय या समूह का कुछ अथवा आधे से बहुत कम अंश।
**अल्पायु** वि० (सं) कम उम्र का।
**अल्पार्थक** पुं० (सं) किसी वस्तु के छोटे रूप का वाचक शब्द। (डिम्यूनिटिव)।
**अल्पिष्ठ** वि० (सं) बहुत थोड़ा; कम से कम। (मिनिमम)।
**अल्पीकरण** पुं० (सं) अधिकार, प्रतिष्ठा, महत्व, शक्ति आदि घट जाना अथवा उसमें कमी हो जाना। (डिरोगेशन)।
**अल्ल** पुं० (अ) वंश का नाम, उपगोत्र।
**अल्ला** पुं० (फा) ईश्वर।
**अल्हड़** वि० (हि) १-अल्पवयस्क; कमसिन। २-अनुभवहीन। ३-उद्धत। ४-अनाड़ी।
**अल्हड़पन** पुं० (हि) १-अल्पवयस्कता। २-मनमौजीपन। ३-अनाड़ीपन। ४-अक्खड़पन।
**अवंती** स्त्री० (सं) उज्जैन नगर का प्राचीन नाम।
**अव** उप० (सं) एक उपसर्ग जो निश्चय, अनादर हीनता, अवनति, दोष, व्याप्ति आदि का भाव प्रकट करता है। अव्य० (हि) और।
**अवकलन** पु० (सं) १-इकट्ठा करके मिला देना २-देखना, जानना। ३-ग्रहण करना।
**अवकलना** क्रि० (हि) १-ज्ञान होना; समझ पड़ना २-इकट्ठा करना। ३-देखना।
**अवकाश** पु० (सं) १-रिक्तस्थान। २-आकाश। ३-दूरी। ४-अवसर। ५-खाली समय। ६-छुट्टी।
**अवकाश-ग्रहण** पु० (सं) किसी पद या काम से छुट्टी लेना या पृथक हो जाना। (रिटायरमेंट)।
**अवकाश-प्राप्त** वि० (सं) देखो 'अवसर प्राप्त'।
**अवकाश-संख्यान** पु० (सं) कार्यकर्त्ताओं को मिलने वाली छुट्टी से सम्बन्धित हिसाब या लेखा। (लीव-एकाउण्ट)।
**अवकीर्ण** वि० (सं) १-व्याप्त। २-फैलाया हुआ। ३-चूर्ण किया हुआ। ४-नष्ट, ध्वस्त।
**अवकृपा** स्त्री० (सं) नाराजगी।
**अवक्खन** पुं० (हि) देखना।
**अवक्रय** पुं० (सं) १-बदला। २-मूल्य, दाम।
**अवक्रांत** वि० (सं) दबाकर अपने अधिकार में करना
**अवक्रांति** स्त्री० (सं) राज्य, शासन आदि का अपने स्वत्व विशेष के द्वारा किसी संस्था या संघ को हटाकर उसका कार्य भार अपने ऊपर लेना। (सुपरसेशन)।
**अवक्षय** पुं० (सं) सड़ जाने या गल जाने के कारण जीर्ण-क्षीण होना। (डिकेडेन्स)।
**अवगत** वि० (सं) १-जाना हुआ, ज्ञात। २-नीचे आया हुआ।
**अवगतना** क्रि० (हि) सोचना, विचारना।
**अवगति** स्त्री० (सं) १-निश्चयात्मक ज्ञान। २-जानकारी। ३-धारणा, समझ। ४-कुगति; बुरी गति।
**अवगाधना** क्रि० (हि) देखो 'अवगाहना'।
**अवगारना** क्रि० (हि) समझाना।
**अवगाह** पुं० (हि) १-गहरा स्थान। २-संकट का स्थान। ३-कठिनाई। पुं०(सं) १-जल में मलमलकर स्नान। २-भीतर प्रवेश। वि० (हि) अथाह, बहुत गहरा।
**अवगाहन** पुं० (सं) १-पानी में घुस कर स्नान। २-प्रवेश। ३-मथन। ४-खोज। ५-लीन हो कर विचारना।
**अवगाहना** क्रि० (हि) १-घुसकर स्नान करना। २-पैठना। ३-प्रसन्न होना। ४-छान बीन करना। ५-विचलित करना। ६-चलना। ७-समझना। ८-ग्रहण करना।
**अवगुंठन** पुं० (सं) १-ढकना; छिपाना। २-पर्दा, घूंघट। ३-घेरा।
**अवगुंफन** पुं० (सं) गूँथना।
**अवगुण** पुं० (सं) १-दोष, ऐब। २-खोटाई।
**अवग्रह** पुं० (सं) १-बाधा। २-अनावृष्टि। ३-शाप कोसना। ४-अनुग्रह का उलटा।
**अवघट** पुं० (सं) पीसने का यन्त्र, ताँता। वि० १-विकट। २-कठिन।
**अवघात** पुं० (सं) १-चोट। २-हनन।
**अवचट** पुं० (हि) अनजान। क्रि० वि० अकस्मात्।

**अवचय** पुं० (सं) पुष्पादि चयन करना।
**अवचेतन** वि० (सं) जिसे पूरी चेतना न हो।
**अवचेतना** स्त्री० (सं) अर्द्धचेतना।
**अवच्छिन्न** वि० (सं) पृथक् किया हुआ।
**अवच्छेद** पुं० (सं) १-छेदन; अलगाव। २-सीमा। ३-परिच्छेद। ४-छानबीन।
**अवछंग** पुं० (हि) देखो 'उछंग'।
**अवज्ञा** स्त्री० (सं) १-अपमान। २-अवहेलना। ३-पराजय। ४-साहित्य में एक अलंकार।
**अवज्ञात** वि० (सं) १-अनादृत; तिरस्कार। २-पराजित। ३-जिसका उल्लंघन किया गया हो। ४-पराजित।
**अवज्ञान** पुं० (सं) १-अनादर। २-पराजय। ३-आज्ञा का न मानना।
**अवज्ञेय** वि० (सं) १-अपमान के योग्य। २-अनादरणीय।
**अवटना** क्रि० (हि) १-मथना। २-औटाना। ३-घूमना, फिरना।
**अवडेर** पुं० (हि) १-फेर, बखेड़ा।
**अवडेरना** क्रि० (हि) १-झंझट में डालना। २-दिक करना।
**अवडेरा** वि० (हि) १-चक्करदार, पेचीला। २-झंझट-बखेड़े वाला। ३-विकट। ४-बेढंगा।
**अवढर** वि० (हि) अकारण ही प्रसन्न होने वाला।
**अवतंश** पुं० (सं) १-भूषण। २-शिरोभूषण। ३-मुकुट। ४-उत्तम या श्रेष्ठ व्यक्ति। ५-माला। ६-कर्णफूल। ७-दूल्हा। ८-कानों में पहनने की बाली।
**अवतरण** पुं० (सं) १-उतरना। २-पार होना। ३-घटना, कम होना। ४-जन्म लेना। ५-घाट की सीढ़ी। ६-घाट। ७-किसी के कहे हुए शब्दों, सन्देश आदि को उद्धृत करना। (कोटेशन)।
**अवतरण-चिह्न** पुं० (सं) अवतरित अंश के ठीक पहले और अन्त में दिये जाने वाले उलटे विराम-चिह्न।
**अवतरण-छत्र** पुं० (सं) देखो 'छतरी' (पैराशूट)।
**अवतरण-पथ** पुं० (सं) वह लम्बा पथ जिस पर वायुयान ऊपर उठने से पूर्व दौड़ लगाते हैं। (एअरस्ट्रिप)।
**अवतरण-भूमि** स्त्री० (सं) हवाई जहाजों के लिए आकाश से नीचे उतरने का स्थान। (लैंडिङ्ग-ग्राउण्ड)।
**अवतरणिका** स्त्री० (सं) १-प्रस्तावना, भूमिका। २-प्रथा।
**अवतरना** क्रि० (हि) जन्मना; प्रकट होना।
**अवतरित** वि० (सं) १-उतरा हुआ। २-अवतार लिया हुआ।
**अवतार** पुं० (सं) १-प्रादुर्भाव। २-उतरना। ३-शरीर धारण करना। ४-पुराणों के अनुसार देवताओं का मानव-शरीर धारण करना। ५-सृष्टि।
**अवतारण** स्त्री० (सं) १-उतारना। २-इन्द्रियगोचर कराने की क्रिया।
**अवतारी** वि० (हि) १-अवतार ग्रहण करने वाला। २-उतरने वाला। ३-देवांशधारी।
**अवतीर्ण** वि० (सं) १-उतरा हुआ। २-अवतरित। ३-उत्तीर्ण।
**अवदमन** पुं० (सं) विद्रोही को दबाना।
**अवदशा** स्त्री० (सं) दुर्दशा।
**अवदात** वि० (सं) १-सफेद; उजला। २-स्वच्छ; निर्मल; साफ। ३-गौर वर्ण का।
**अवदान** पुं० (सं) १-प्रशस्त कर्म, अच्छा काम। २-खण्डन, तोड़ना। ३-उल्लङ्घन। ४-साफ करना। ५-देखो 'अंशदान'।
**अवदान्य** वि० (सं) १-कृपण। २-शक्तिशाली, पराक्रमी।
**अवदाह** पुं० (सं) शरीर की जलन।
**अवदीर्ण** वि० (सं) १-विदीर्ण, फटा हुआ। २-पिघला हुआ।
**अवद्य** पुं० (सं) १-अधम; पापी। २-त्याज्य; निकृष्ट।
**अवध** पुं० (हि) कोशलदेश। २-अयोध्या नगरी। स्त्री० (सं) अवधि, सीमा।
**अवधाता** पुं० (सं) मालिक की गैर मौजूदगी में मकान आदि की देखभाल करने वाला व्यक्ति। (केअर-टेकर)।
**अवधात्री-सरकार** स्त्री० (सं+हि) वह सरकार जो चुनाव होने के पश्चात् जब तक नई निर्वाचित सरकार कार्य भार ग्रहण न करे तब तक के लिए शासन व्यवस्था की निगरानी करती रहे। (केअर-टेकर-गवर्नमेण्ट)।
**अवधान** पुं० (सं) १-मनोयोग, चित्त का लगाव। २-चौकसी। ३-किसी काम या वस्तु की देखभाल। (केअर) ४-किसी कार्य का अपनी अधीनता में संचालन करना। (चार्ज)।
**अवधायक** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसकी अधीनता में कोई काम या कार्यालय हो।(इन्चार्ज)।
**अवधायक-अधिकारी** पुं०(सं) वह अधिकारी जिसके अधीन कोई काम या कार्यालय हो (इन्चार्ज)।
**अवधायक-सरकार** स्त्री० देखो 'अवधात्री-सरकार'।
**अवधारण** पुं० (सं) १-विचार पूर्वक निर्धारण। २-खूब सोच विचार कर किसी परिणाम पर पहुँचना
**अवधारणा** स्त्री०(सं) मन में किसी धारणा, कल्पना अथवा विचार का उदय होना, बनना या स्थिर होना।
**अवधारना** क्रि० (हि) धारण करना, ग्रहण करना।
**अवधारित** वि० (सं) निश्चित, निर्धारित।
**अवधि** स्त्री० (सं) १-सीमा; हद। २-मियाद। ३-

मनोयोग। अव्य० (सं) तक। पर्यन्त।

**अवधि-बधित** वि० (सं) जिसकी मियाद खतम हो गई हो और इस कारण इसका विचार, प्रयोग अथवा उपयोग न किया जा सकता हो। (टाईम-बार्ड लिमिटेशन)।

**अवधिमान** पुं० (हि) समुद्र।

**अवधी** वि० (हि) अवध-सम्बन्धी, अवध का। स्त्री० (हि) अवध की भाषा या बोली।

**अवधू, अवधूत** पुं० साधु; योगी; संन्यासी।

**अवन** स्त्री० (हि) अवनि; पृथ्वी।

**अवनत** वि० (सं) १-अधोमुख; नीचा; झुका हुआ। २-गिरा हुआ, पतित। ३-कम।

**अवनति** स्त्री० (सं) १-कमी; घटती। २-अधोगति। ३-झुकाव। ४-नम्रता।

**अवना** क्रि० (हि) आना।

**अवनि, अवनी** स्त्री० (सं) भूमि; पृथ्वी।

**अवनिनाथ, अवनीपाल, अवनीश्वर, अवनिप, अवनीप** पुं० (सं) राजा; नृप।

**अवपात** पुं० (सं) १-गिरने का भाव, पतन। २-गड्ढा। ३-नाटक के अंक की इस प्रकार समाप्ति जिसमें लोग डरकर या घबराकर भागने दीखें।

**अवबोध** पुं० (सं) १-ज्ञान; बोध। २-जागना। ३-शिक्षा।

**अवभृथ** पुं० (सं) १-प्रधान यज्ञ के समाप्त होने पर दूसरे यज्ञ का आरम्भ। २-यज्ञ के अन्त में किया जाने वाला स्नान।

**अवभासन** पुं० (सं) १-चमकना। २-बोध। ३-खुलना। ४-प्रकट होना।

**अवमतिथि** स्त्री० (सं) ऐसी तिथि जिसका क्षय होगया हो।

**अवमर्दन** पुं० (सं) १-दुःख देना। २-कुचलना।

**अवमर्ष** पुं० देखो 'विमर्ष'।

**अवमान** पुं० (सं) कोई ऐसा काम या बात करना जिससे किसी का मान अथवा प्रतिष्ठा कम हो, मान-हानि। (कंटेम्प्ट)।

**अवमानना** क्रि० (हि) अपमान करना।

**अवमानित** वि० (सं) १-जिसका अवमान हुआ हो। २-अपमानित।

**अवमूल्यन** पुं० (सं) विनिमय के सिक्कों आदि का मूल्य अथवा दर घटाकर कम करना। (डि-वैलुएशन)।

**अवयव** पुं० (सं) १-अंश; भाग। २-शरीर का कोई भाग, अंग। ३-न्यायशास्त्र के अनुसार तर्कपूर्ण वाक्य का कोई अंश।

**अवयस्क** वि० (सं) नाबालिग।

**अवर** वि० (सं) १-दरजे, कोटि आदि में हीन या नीचा। (इनफीरियर)। २-अधम। वि० (हि) १-दूसरा; अन्य। २-और। अव्य० (हि) और।

**अवरत** वि० (सं) १-विरत। २-स्थिर। ३-अलग। पुं० (हि) देखो 'आवर्त्त'।

**अवर-सचिव** पुं० (सं) वह अधिकारी या सचिव जो दर्जे या पद में उप-सचिव के बाद आता है। (अंडर-सेक्रेटरी)।

**अवर-सेवक** पुं० (सं) वह कर्मचारी जिसकी गणना बड़े सेवकों में न होती हो। (इन्फीरियर-सर्वेंट)।

**अवर-सेवा** स्त्री० (सं) सरकारी या लोक-सेवा का वह अंग जिसमें निम्न कोटि के कर्मचारी होते हैं। (इन्फीरियर सर्विस)।

**अवरागार** पुं० (सं) विधान मंडल या संसद का वह सदन जिसके सदस्य सीधे जनता से चुनकर आते हैं। (लोअर हाउस)।

**अवराधक** वि० (हि) १-पूजा करने वाला। २-दास, सेवक।

**अवराधन** पुं० (हि) उपासना, पूजा।

**अवराधना** क्रि० (हि) पूजा करना।

**अवराधी** पुं० (हि) उपासक, पूजक।

**अवरावर** वि० (सं) बिलकुल छोटा।

**अवरुद्ध** वि० (सं) १-रुका हुआ; रुँधा हुआ। २-चारों तरफ से घेर कर बन्द किया हुआ। ३-छिपा हुआ।

**अवरेखना** क्रि० (हि) १-चित्रित करना। २-अनुमान करना। ३-जानना ४-देखना। ५-जानना।

**अवरेब** पुं० (हि) देखो 'औरेब'।

**अवरेबदार, अवरेबो** वि० (हि) तिरछी काट का।

**अवरोध** पुं० (सं) १-घेरा। २-रुकावट। ३-निरोध।

**अवरोधक** वि० (सं) रोकने वाला।

**अवरोधन** पुं० (सं) १-चारों ओर से घेर कर रोकना २-इस ढंग से घेर कर रोकना कि इधर उधर न हो सके। (इम्पाउंडिंग)।

**अवरोधना** क्रि० (हि) १-रोकना। २-निषेध करना। ३-बाँधना।

**अवरोधित** वि० (सं) घेरा हुआ, रोका हुआ।

**अवरोधी** वि० (हि) रोकने वाला, विरोध करने वाला।

**अवरोप, अवरोपण** पुं० (सं) १-उखाड़ना, उत्पाटन २-किसी आरोप अथवा अभियोग से मुक्त करना या होना। (डिस्चार्ज)।

**अवरोपित** वि० (सं) १-उखाड़ा हुआ। २-किसी आरोप या अभियोग से मुक्त किया हुआ। (डिस्चार्जड)।

**अवरोह, अवरोहण** पुं० (सं) १-उतार, अवतरण। २-गिराव, अधःपतन। ३-अवनति।

**अवरोहना** क्रि० (हि) १-उतरना। २-चढ़ना। ३-चित्रित करना, खींचना। ४-रोकना।

**अवरोही** वि० (हि) ऊपर से नीचे आने वाला। पुं० (सं) उतरता हुआ स्वर।

**अवर्ण** *वि०* (सं) १-बदरङ्ग। २-वर्णधर्म रहित। ३-बिना रङ्ग का।
**अवर्ण्य** *वि०* (सं) जिसका वर्णन न हो सके।
**अवर्त्त** पुं० (सं) आवर्त्त।
**अवर्षण** पुं० (सं) वर्षा का अभाव, अनावृष्टि।
**अवलंघन** पुं० (हि) उल्लङ्घन।
**अवलंघना** *क्रि०* (हि) लाँघना; पार होना।
**अवलंब** पुं० (सं) आश्रय; सहारा; आधार।
**अवलंबन** पुं० (सं) १-सहारा; आश्रय। २-धारण; ग्रहण।
**अवलंबना** *क्रि०* (हि) आश्रय लेना; सहारा लेना।
**अवलंबित** *वि०* (सं) १-सहारा या आश्रय लिया हुआ। २-जो किसी बात पर ही निर्भर हो। (डिपेंडेड)।
**अवलंबी** *वि०* (हि) १-सहारा लेने वाला। २-सहारा देने वाला।
**अवलच्छना** *क्रि०* (हि) देखना।
**अवलिया** पुं० (हि) देखो 'औलिया'।
**अवली** *स्त्री०* (हि) १-पंक्ति; पाँती। २-झुण्ड; समूह। ३-पहले-पहल खेत में से काटा जाने वाला अन्न।
**अवलेखना** *क्रि०* (हि) १-खोदना, खुरचना। २-लकीर खींचना।
**अवलेप** पुं० (सं) लेप, उबटन।
**अवलेपन** पुं० (सं) १-लगाना, पोतना। २-गर्व, घमण्ड, अहङ्कार। ३-लेप। ४-ऐब।
**अवलेह** पुं०(सं) १-लेही के समान जो न अधिक गाढ़ी हो और न अधिक पतली हो, चटनी। २-चाटी जाने वाली औषध।
**अवलोकन** पुं०(सं) १-देखना। २-निरीक्षण, जाँच, पड़ताल।
**अवलोकना** *क्रि०* (हि) १-देखना, जाँचना। २-अनुसन्धान करना।
**अवलोकनि** *स्त्री०* (हि) नेत्र, आँख।
**अवलोकनीय** *वि०* (सं) देखने योग्य, दर्शनीय।
**अवलोकित** *वि०* (सं) देखा हुआ।
**अवलोचना** *क्रि* (हि) दूर करना।
**अववर्त्त** *वि०* (सं) १-आवश्यकता से कम। २-लागत आदि की अपेक्षा, मान, मूल्य आदि के विचार से कम। (डेफिसिट-बजट)। पुं० (सं) मूल्य, मान आदि के विचार से जितना आवश्यक हो उसकी तुलना में होने वाली कमी या घटती। (डेफिसिट)।
**अवश** *वि०* (सं) विवश; लाचार।
**अवशता** *स्त्री०* (सं) बेबसी; लाचारी।
**अवशिष्ट** *वि०* (सं) बचा हुआ; बाकी; शेष।
**अवशिष्टाधिकार** पुं० (सं) बचा हुआ स्वत्व या अधिकार।
**अवशेष** *वि०* (सं) बचा हुआ; बाकी; शेष।

**अवश्यंभावी** *वि०* (सं) १-न टलने वाला; अटल। २-अनिवार्य।
**अवश्य** *क्रि० वि०* (सं) निश्चय करके, निस्सन्देह, जरूर। *वि०* (सं) १-वश में न आने वाला। २-वश से बाहर।
**अवश्यमेव** *क्रि० वि०* (सं) निःसन्देह, जरूर, अवश्य।
**अवसन्न** *वि०* (सं) १-दुःखी। २-विनाशोन्मुख। ३-सुस्त, आलसी।
**अवसन्नता** *स्त्री०* (सं) १-दुःख। २-विनाश। ३-सुस्ती।
**अवसर** पुं० (सं) १-समय, काल। २-अवकाश, फुरसत। ३-संयोग।
**अवसर-ग्रहण** पुं० (सं) देखो 'अवकाश-ग्रहण'।
**अवसर-प्राप्त** *वि०* (सं) नौकरी की अवधि का समय पूरा होने पर काम से हटने वाला। (रिटायर्ड)।
**अवसरवाद** पुं० (सं) प्रत्येक सुअवसर से लाभ उठने की प्रवृत्ति या नीति। (अपॅारच्यूनिज्म)।
**अवसरवादी** *वि०* (सं) जो किसी स्थिर नीति पर दृढ़ न रहकर प्रत्येक उपयुक्त अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाने वाला। (अपॅारच्यूनिस्ट)।
**अवसर्ग** पुं० (सं) १-स्वेच्छाचार; मनमानी। २-स्वतन्त्रता।
**अवसर्पिणी** *स्त्री०* (सं) जैनमतानुसार उतार का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।
**अवसाद** पुं० (सं) १-नाश। २-विशाद। ३-दीनता ४-थकावट।
**अवसादना** *क्रि०* (हि) १-दुखी होना। २-निराश होना। ३-नष्ट करना।
**अवसान** पुं० (सं) १-विराम, ठहराव। २-अन्त, समाप्ति। ३-सीमा। ४-सायङ्काल। ५-मरण। पुं० (हि) १-ज्ञान; चेतना। २-होश, संज्ञा।
**अवसि** *क्रि० वि०* (हि) निश्चय, जरूर।
**अवसित** *वि०* (सं) १-समाप्त। २-बीता हुआ। ३-परिवर्तित।
**अवसेख** *वि०* (हि) देखो 'अवशेष'।
**अवसेचन** पुं० (सं) १-सींचना। पसीजना। ३-रोगी के शरीर से पसीना निकलने की क्रिया।
**अवसेर** *स्त्री०* (हि) १-विलम्ब। २-चिन्ता। ३-दुःख ४-व्यग्रता। ५-प्रिय की प्रतीक्षा में होने वाली विकलता।
**अवसेरना** *क्रि०* (हि) तङ्ग करना, दुःख देना।
**अवस्था** *स्त्री०* (सं) १-दशा; हालत। २-समय; काल आयु, उम्र। ४-दशा, स्थिति।
**अवस्थान** पुं० (सं) १-स्थान। २-ठहराव; टिकाव। ३-स्थिति। ४-उन्नति अथवा विकास क्रम में कुछ समय तक रुकने या ठहरने की श्रेणी या स्थान। (स्टेज)। ५-केन्द्र बिन्दु। (पॅाइण्ट)। ६-वह स्थान जहाँ रेलगाड़ी आकर नियत समय पर ठहरती है।

(स्टेशन)। ७–पुलिस या सेना के रहने का स्थान। (स्टेशन)।
**अवस्थित** *वि०* (सं) १–उपस्थित, विद्यमान। २–ठहरा हुआ।
**अवस्थिति** *स्त्री०* (सं) १–अवस्थान, ठहराव। २–स्थिति।
**अवहार** *पुं०* (सं) कुछ समय तक युद्ध रोकना जिससे कि सन्धि के लिए बातचीत की जा सके। (आरमिस्टिस)।
**अवहित्था** *स्त्री०* (सं) बाहिरी आकार को छिपाना।
**अवहेलना** *स्त्री०* (स) १–अवज्ञा। २–ध्यान न देना, लापरवाही। *क्रि०* (हिं) अवज्ञा करना।
**अवहेला** *स्त्री०* (हिं) देखो 'अवहेलना'।
**अवहेलित** *वि०* (सं) जिसकी अवहेलना हुई हो तिरस्कृत।
**अवाँ** *पुं०* (हिं) देखो 'आँवाँ'।
**अवांग** *वि०* (हिं) नत, झुका हुआ।
**अवांगना** *क्रि०* (हिं) झुकाना।
**अवांछनीय** *वि०* (सं) जिसके होने की इच्छा न की जाय।
**अवांछित** *वि०* (सं) जिसकी इच्छा न की गई हो।
**अवांतर** *वि०* (सं) अन्तर्गत, मध्यवर्ती, बीच का।
**अवांसना** *क्रि०* (हिं) पहली बार काम में लाना।
**अवांसी** *स्त्री०* (हिं) फसल में से पहली बार काटा-हुआ बोझ।
**अवाई** *स्त्री०* (हिं) १–आगमन। २–गहरा जोतना।
**अवाङ्** *वि०* (सं) नत, झुका हुआ।
**अवाङ्मुख** *वि०* (सं) १–जिसका मुख या मुँह नीचे की ओर हो। २–उलटा।
**अ-वाक्** *वि०* (सं) १–मौन। २–चकित।
**अ-वाच्य** *वि०* (सं) १–अकथ्य। न कहने योग्य। २–नीच। *स्त्री०* (सं) गाली।
**अवाज** *स्त्री०* हिं) ध्वनि, शब्द।
**अवाजी** *वि०* (हिं) आवाज करने वाला, चिल्लाने वाला।
**अवावा** *पुं०* (हि) देखो 'वादा'।
**अवाध** *वि०* (स) बाधारहित, अनर्गल।
**अवान** *पुं०* (सं) १–सूखे फल। २–सांस लेने का कार्य
**अवाप्त** *वि०* (सं) १–हाथ आया हुआ, प्राप्त। २–अधिकृत रूप से जिस पर देन लगाया गया हो तथा वह देन उचित प्राप्य के रूप में उगाहा जा सके। (लेवीड)।
**अवाप्ति** *स्त्री०* (सं) १–अधिकृत रूप से कर, शुल्क आदि लेना या उगाहना। २–साधिकार लोगों को बुलाकर सेना के रूप में परिवर्तित करना। (लेवी)।
**अवाप्य** *वि०* (सं) साधिकार कर शुल्कादि के रूप में लेने योग्य, जिससे अधिकार सहित धन या कर आदि लिया जासके। (लेविएबुल)।
**अवाम** *स्त्री०* (फा) जनता।
**अवार** *पु०* (सं) नदी के इस पार का किनारा।
**अवारजा** *पुं०*(फा) १–वह बही जिसमें प्रत्येक आसामी की जोत इत्यादि लिखी रहती है। २–जमा-खर्च बही ३–संक्षिप्त लेखा।
**अवारना** *क्रि०* (हिं) १–मना करना। २–देखो 'बारना'
**अवारा** *पुं०* (हिं) आवारा।
**अवारी** *स्त्री०* (हिं) १–किनारा; सिरा। २–विवर; छेद
**अवास** *पुं०* (हि) निवास-स्थान, घर।
**अ-विकच** *वि०* (सं) १–बिना खिला हुआ। २–असफल।
**अविकट** *वि०* (सं) १–जो भयंकर न हो २–अविशाल
**अ-विकल** *वि०* (सं) १–व्याकुल न रहने वाला, ज्यों का त्यों। २–पूर्ण, पूरा।
**अ-विकल्प** *वि०* (सं) १–जो विकल्प से न हो, निश्चित २–निःसन्देह। ३–जिसमें कुछ हेर-फेर न होसके।
**अ-विकार** *वि०* (सं) १–जिसमें विकार या दोष न हो २–जिसका रूप-रंग न बदले। *पुं०* (सं) विकार का अभाव।
**अ-विकारी** *पुं०* (सं) १–विकारशून्य, निर्विकार। *पुं०* (सं) व्याकरण के अनुसार अव्यय जिसका रूप विकार-रहित रहता है जैसे। प्रायः, अतः इत्यादि।
**अ-विकृत** *वि०* (सं) जो बिगड़ा न हो।
**अ-विगत** *वि०* (सं) अज्ञेय।
**अ-विचल** *वि०* (सं) अचल।
**अ-विचार** *पुं०* (स) १–विचारहीनता। २–अज्ञान। ३–अन्याय।
**अ-विच्छिन्न** *पुं०* (सं) लगातार।
**अ-विच्छेद** *पुं०* (सं) जिसका विच्छेद न हुआ हो, अटूट।
**अ-विज्ञ** *वि०* (सं) अनजान।
**अ-विद्यमान** *वि०* (स) १–अनुपस्थित। २–असत्य।
**अविद्या** *वि०* (सं) १–अज्ञान। २–माया का एक भेद ३–कर्मकांड। ४–सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति।
**अ-विधिक** *वि०* (स) जो विधि अथवा नियम के विरुद्ध हो। (इल्लीगल)।
**अ-विनय** *पुं०* (स) उद्दंडता।
**अ-विनश्वर, अविनाशी** *वि०* (सं) जिसका नाश न हो चिरस्थायी।
**अ-विरत** *वि०* (सं) निरन्तर होता रहने वाला, विराम-शून्य। *क्रि० वि०* (स) १–निरन्तर। २–नित्य, सदा।
**अ-विलम्ब** *क्रि० वि०* (सं) तुरन्त, फौरन।
**अ-विवाहित** *वि०* (सं) कुँआरा।
**अ-विवेक** *पुं०* (सं) १–अविचार। २–अज्ञान। ३–अन्याय।
**अ-विश्रांत** *वि०* (सं) १–न रुकने वाला। २–न थकने

वाला।
**अ-विश्वसनीय** *वि०* (सं) विश्वास करने के योग्य।
**अ-विश्वास** पुं० (सं) १-विश्वास का अभाव, बे एतबारी। २-अनिश्चय।
**अ-विश्वास-प्रस्ताव** पुं० (सं) मन्त्रिमण्डल या किसी संस्था के अध्यक्ष आदि में विश्वास न रहने का प्रस्ताव। (मोशन आफ नॉ कानफिडेन्स)।
**अ-वेक्षण** पुं० (सं) १-देखना। २-देखभाल।
**अ-वेक्षणीय** *वि०* (सं) १-देखने योग्य। २-परीक्षा के योग्य। ३-विधि या कानून के अनुसार जिस (अपराध) पर शासन द्वारा ध्यान दिया जाना आवश्यक हो। (काग्निजेबुल)।
**अवेक्षा** *स्त्री०* (सं) १-देखभाल। २-गौर। ३-पर्यालोचना। ४-किसी न्यायालय अथवा अधिकारी का किसी अपराध या दोष के प्रतिकार की ओर ध्यान दिया जाना। (कग्निजेन्स)।
**अवेज** पुं० (हि) प्रतिकार; बदला।
**अ-वैज्ञानिक** *वि०* (सं) विज्ञान के सिद्धांतों के विपरीत
**अ-वैतनिक** *वि०* (सं) कार्य के बदले में वेतन न पाने वाला। (ऑनरेरी)।
**अ-वैध** *वि०* (सं) विधि या कानून के विरुद्ध। (इल्लीगल)।
**अवैधाचरण** पुं०(सं) विधि अथवा कानून के विरुद्ध किया जाने वाला व्यवहार या आचरण। (इल्लीगल प्रैक्टिस)।
**अ-वैधानिक** *वि०*(सं) जो संविधान के अनुकूल न हो (इल्लीगल)।
**अ-व्यक्त** *वि०* (सं) १-जो स्पष्ट न हो; अप्रत्यक्ष; अगोचर। २-अज्ञात। ३-अनिर्वचनीय ४-जिसमें रूप, गुण आदि न हों। पुं० (सं) १-विष्णु। २-कामदेव। ३-शिव। ४-प्रकृति। ५-ब्रह्म। ६-ईश्वर
**अव्यय** *वि०* (सं) १-अक्षय। २-नित्य। पुं० (सं) १-व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसका सब लिंगों, विभक्तियों तथा वचनों में समान रूप से प्रयोग हो २-विष्णु। ३-शिव। ४-पर-ब्रह्म।
**अव्ययीभाव** पुं० (सं) व्याकरण में समास का एक भेद।
**अ-व्यर्थ** *वि०*(सं)१-जो व्यर्थ न हो, सफल। २-सार्थक ३-अमोघ। निश्चित रूप से असर करने वाला।
**अ-व्यवस्था** *स्त्री०* (सं) १-कर्तव्याकर्तव्य के नियम का उल्लंघन, बेकायदगी। २-शास्त्रों के विरुद्ध व्यवस्था। ३-स्थिति का अभाव। ४-गड़बड़, बदइंतजामी।
**अ-व्यवस्थित** *वि०* (सं) १-जिसमें व्यवस्था न हो। २-अस्थिर। ३-बेठिकाने का।
**अ-व्यवहार्य** *वि०* (सं) १-जो काम के योग्य न हो। २-पतित।
**अ-व्यवहित** *वि०* (सं) व्यवधानरहित, सटा हुआ।
**अ-व्याप्ति** *स्त्री०* (सं) व्याप्ति का अभाव।
**अव्युत्पन्न** *वि०* (सं) अनभिज्ञ।
**अ-शक्त** *वि०* (सं) १-असमर्थ। २-निर्बल।
**अ-शक्ति** *स्त्री०* (सं) १-निर्बलता। २-अयोग्यता। ३-नपुंसकता।
**अ-शक्य** *वि०* (सं) १-असंभव। २-न किया जाने वाला।
**अ-शक्यता** *स्त्री०* (सं) अशक्य होने की अवस्था या भाव।
**अशन** पुं०(सं) १-भोजन, आहार। २-भक्षण, खाना
**अशना** *स्त्री०* (सं) भोजन की इच्छा।
**अ-शरण** *वि०* (सं) निराश्रय, अनाथ।
**अशांत** *वि०* (सं) १-जो शान्त न हो; अस्थिर। २-शान्तिरहित।
**अशान्ति** *स्त्री०* (सं) १-शान्ति का अभाव; अस्थिरता २-क्षोभ। ३-असन्तोष।
**अशिक्षित** *वि०* (सं) १-अनपढ़। २-अनाड़ी।
**अशित** *वि०* (सं) बिना धार का (हथियार)।
**अ-शिष्ट** *वि०* (सं) उजड्ड; अभद्र।
**अ-शिष्टता** *स्त्री०* (सं) उजड्डपन, अभद्रता।
**अशुद्ध** *वि०* (सं) १-अपवित्र। २-गलत। ३-असंस्कृत
**अशुद्धि** *स्त्री०* (सं) १-अपवित्र। २-गलती, भूल।
**अशुभ** *वि०* (सं)१-अमंगल। २-पाप, अपराध।
**अशेष** *वि०* (सं) १-पूरा, समूचा। २-अपार। ३-अनन्त।
**अ-शोक** *वि०* (सं) शोक या दुःख रहित। पुं० (सं) १-एक पेड़। २-पारा।
**अशौच** पुं० (सं) १-अपवित्रता। २-वह अशुद्धि जो परिवार में जनन या मृत्यु होने पर हिन्दुओं में मानी जाती है।
**अश्म** पुं० (सं) १-पहाड़, पर्वत। २-मेघ, बादल। ३-पत्थर।
**अश्मज** पुं०(सं) शिलाजीत। २-सोमयाई। ३-लोहा
**अश्रद्धा** *स्त्री०* (सं) श्रद्धा का न होना।
**अ-श्राव्य** *वि०* (सं) जो किसी को सुनाने लायक न हो। पुं० (सं) स्वागत कथन।
**अश्रु** पुं० (सं) नेत्रजल, आँसू।
**अश्रुकण** पुं० (सं) आँसू की बूंद।
**अश्रु-गैस** *स्त्री०* (सं+अ) वह गैस जिससे आँखों में आँसू आजाते हैं जो अवैध भीड़ को हटाने के काम में आती है। (टियर गैस)।
**अश्रुत** *वि०* (सं) १-जो सुना न गया हो। २-जिसने कुछ देखा सुना न हो।
**अश्रुतपूर्व** *वि०* (सं) १-जो पहले सुना न गया हो। २-विलक्षण।
**अश्रु-पात** पुं० (सं) रोना; रुदन।

**अश्रुमुख** वि० (स) रोनी सूरत वाला।
**अश्लील** वि० (स) १-कुत्सित। २-फूहड़; भद्दा। ३-लज्जाजनक।
**अश्लीलता** स्त्री०(सं) १-फूहड़पन; भद्दापन। २-काव्य का दोष विशेष।
**अश्व** पुं० (सं) घोड़ा।
**अश्वतर** पुं० (सं) १-एक प्रकार का सर्प; नागराज। २-खच्चर।
**अश्वत्थ** पुं० (सं) पीपल।
**अश्वत्थामा** पुं० (सं) महाभारत का एक पात्र जो द्रोणाचार्य का पुत्र था।
**अश्वमेध** पुं० (सं) प्राचीन काल का एक प्रधान यज्ञ
**अश्वशक्ति** स्त्री० (सं) शक्ति का वह मान जितना प्रति सैकेन्ड ५५० पौंड या ६॥ मन भर को एक फुट ऊपर उठाने के निमित्त आवश्यक होता है। (हार्स-पावर)।
**अश्वशाला** स्त्री० (सं) घुड़साल।
**अश्वायुर्वेद** पुं० (सं) आयुर्वेद का पशु चिकित्सा सम्बन्धी अंग।
**अश्वारोही** वि० (सं) घुड़सवार।
**अश्विन** पुं० (सं) एक वैदिक कालीन देवता।
**अश्विनी** स्त्री० (सं) १-घोड़ी। २-सत्ताइस नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र।
**अश्विनीकुमार** पुं० (सं) त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम्नी स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
**अष्ट** वि० (सं) आठ।
**अष्टक** पुं० (सं) १-आठ वस्तुओं का समूह। २-आठ श्लोक या पद्य वाला काव्य अथवा स्तोत्र।
**अष्टकमल** पुं० (सं) हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक माने जाने वाले आठ कमल, मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहत, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र तथा सुरतिमल।
**अष्टकुल** पुं० (सं) पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल, शेष, वासुकि, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक।
**अष्टचक्र** पुं० (सं) देखो 'अष्टकमल'।
**अष्टछाप** पुं० (सं) हिन्दी साहित्य में आठ सर्वोत्तम पुष्टि मार्गी कवियों का वर्ग।
**अष्टदल** पुं०(सं) आठ दल वाला कमल। वि० (सं) १-आठ दल का। २-आठ पहल का।
**अष्टधातु** पुं० (सं) आठ प्रकार की धातु-सोना, चाँदी, ताँबा, रांगा, जसता, सीसा, लोहा और पारा
**अष्टपद, अष्टपाद** पुं० (सं) १-शरभ, शार्दुल। २-मकड़ी। ३-टिड्डी। ३-एक भयानक समुद्री जन्तु विशेष। वि० (सं) जिसके आठ पैर हों।
**अष्टभुज** वि० (सं) आठ भुजाओं वाला। पुं० (सं) आठ भुजाओं वाला क्षेत्र (ज्यामिति)।
**अष्टभुजा, अष्टभुजी** स्त्री० (सं) दुर्गा।
**अष्टम** वि० (सं) आठवाँ।
**अष्टमी** स्त्री० (सं) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि
**अष्टवर्ग** पुं० (सं) १-आठ प्रकार की औषधियों का समाहार। २-ज्योतिष का गोचर विशेष।
**अष्टांग** पुं० (सं) १-आयुर्वेद के आठ विभाग। २-योग की क्रिया के आठ भेद। ३-शरीर के आठ अङ्ग। ४-वह अर्घ जो सूर्य को दिया जाता है। वि० (सं) १-आठ अवयव वाला। २-आठ पहला।
**अष्टांगी** वि० (सं) १-आठ अङ्ग वाला।
**अष्टाध्यायी** स्त्री० (सं) पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय हैं।
**अष्टावक्र** पुं० (सं) १-एक ऋषि का नाम। २-टेढ़े-मेढ़े अंगों वाला मनुष्य।
**असंक** वि० (हि) १-निःशंक। २-निश्चिन्त।
**असंख** वि० (सं) देखो 'असंख्य'।
**असंख्य** वि० (सं) अगणित, बेशुमार।
**असंग** वि० (सं) १-अकेला। २-निर्लिप्त। ३-जुदा, अलग। ४-विरक्त।
**अ-संगत** वि० (सं) १-जो सम्बद्ध न हो, असंबद्ध। २-अलग। ३-अनुचित।
**अ-संगति** स्त्री० (सं) १-असंबद्ध, बेसिलसिलापन। २-अनुपयुक्तता। ३-एक काव्यालङ्कार।
**असंगी** वि० (हि) निराला।
**असंत** वि० (हि) दुष्ट, दुर्जन।
**अ-संतुष्ट** वि० (सं) १-जो सन्तुष्ट न हो। २-अतृप्त। ३-अप्रसन्न।
**अ-संतोष** पुं० (सं) १-सन्तोष का अभाव, अधैर्य। २-अतृप्ति। ३-अप्रसन्नता।
**असंदिग्ध** वि० (सं) जिसमें तनिक भी सन्देह न हो।
**अ-संबंधातिशयोक्ति** स्त्री० (सं) काव्य में अतिशयोक्ति अलङ्कार का एक भेद।
**अ-संबद्ध** वि० (सं) १-सम्बन्ध रहित। २-पृथक। २-बेमेल।
**अ-संभव** वि० (सं) जो सम्भव न हो, अनहोना। पुं० (सं) एक अर्थालंकार।
**अ-संभावना** स्त्री० (सं) सम्भावना का अभाव, अनहोनापन।
**अ-संभाव्य** वि० (सं) जिसकी सम्भावना न हो, अनहोना।
**अस** वि (हि) १-ऐसा, इस प्रकार का। २-तुल्य, समान।
**असकताना** क्रि० (हि) आलस्य में पड़ना, आलस्य अनुभव करना।
**असकत** वि० (हि) शक्तिहीन, दुर्बल।
**असगंध** पुं० (हि) अश्वगन्धा नामक झाड़ी जो दवा

के काम में आती है।

**असगुन** पुं० (हि) अप-शकुन।

**असत्** वि० (सं) १-असत्य; मिथ्या। बुरा। ३-खोटा ४-अस्तित्वविहीन।

**अ-सत्य** वि० (सं) मिथ्या, झूठ।

**असन** पुं० (हि) भोजन, आहार।

**असना** क्रि० (हि) आसना, होना।

**असनान** पुं० (हि) स्नान, नहाना।

**असनायी** स्त्री० (हि) आशनाई; प्रेम; मोहब्बत।

**अ-सफल** वि० (सं) विफल।

**अ-सफलता** स्त्री० (सं) विफलता।

**असबाब** पुं० (अ) सामान।

**असभई** स्त्री० (हि) अशिष्टता; असभ्यता।

**असभ्य** वि० (सं) अशिष्ट; गँवार।

**असभ्यता** स्त्री० (सं) अशिष्टता, गँवारपन।

**असमंजस** स्त्री० (सं) १-दुविधा। २-अड़चन, कठिनाई।

**असमंत** पुं० (हि) चूल्हा।

**असम** वि० (सं) १-अतुल्य; असदृश। २-ताक; विषम ३-ऊँचा-नीचा; ऊबड़-खाबड़। ४-एक काव्यालंकार ५-आसाम राज्य का एक नाम।

**अ-समय** पुं० (सं) कुसमय, विपत्ति का समय।

**असमर्थ** वि० (सं) १-अयोग्य। २-सामर्थ्यहीन। ३-दुर्बल।

**असमर्थता** स्त्री० (सं) १-सामर्थ्य का अभाव। २-अयोग्यता। ३-दुर्बलता।

**असमबाण, असमशर** पुं० (सं) कामदेव।

**असमान** वि० (सं) जो बराबर न हो; अतुल्य। पुं० (हि) आकाश, आसमान।

**असमी** वि० (हि) आसाम (राज्य) सम्बन्धी; आसाम का। पुं० (हि) आसाम राज्य का निवासी। स्त्री० (हि) आसाम राज्य की भाषा।

**असमूचा** वि० (हि) १-अधूरा। २-असम्पूर्ण।

**अ-सम्मत** वि० (सं) १-जो राजी न हो, असहमत। २-जिस पर किसी की राय न हो।

**अ-सयाना** १-भोलापन। २-अनाड़ी; मूर्ख।

**असर** पुं० (अ) प्रभाव।

**असरन** वि० (हि) अनाथ, अशरण।

**असरार** क्रि० वि० (हि) निरन्तर, लगातार।

**असल** वि० (अ) १-सच्चा; खरा। २-श्रेष्ठ। ३-शुद्ध; खालिस। पुं० १-जड़, बुनियाद। २-मूलधन

**असलियत** स्त्री० (अ) १-वास्तविकता। २-जड़, मूल। ३-मूलतत्व, सार।

**असली** वि० (अ) सच्चा; खरा। २-मूल, प्रधान। ३-विशुद्ध।

**असलील** वि०(हि) देखो 'अश्लील'।

**अ-सवर्ण** वि० (सं) विभिन्न वर्ण का। अ-सजातीय

**असवार** पुं० (हि) सवार।

**असवारी** स्त्री० (हि) सवारी।

**असह** वि० (सं) न सहने योग्य, असह्य। पुं० (हि) हृदय।

**असहन** वि० (सं) १-असह्य। २-असहिष्णु।

**अ-सहनीय** वि० (सं) असह्य।

**असहयोग** पुं० (सं) १-सहयोग न देने का भाव। २-मिलकर कार्य न करना। ३-राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा प्रचारित आन्दोलन जो देश में जनता का असन्तोष प्रकट करने के लिए किया गया था।

**असहाय** वि० (सं) निःसहाय, निराश्रय।

**असहिष्णु** वि० (सं) १-असहनशील। २-चिड़चिड़ा।

**असही** वि० (हि) १-असहिष्णु। २-ईर्ष्यालु।

**असह्य** वि० (सं) सहन न करने योग्य।

**असांसद** वि० (सं) संसदीय प्रणाली के विरुद्ध।

**असा** पुं० (अ) डंडा। वि० (हि) ऐसा।

**असाई** पुं० (हि) १-अज्ञानी। २-अशिष्ट।

**असाढ़** पुं० देखो 'अषाढ़'।

**असाढ़ी** वि० (हि) आषाढ़ सम्बन्धी, आषाढ़ का। स्त्री० १-आषाढ़ में बोई जाने वाली फसल, खरीफ २-आषाढ़ी पूर्णिमा।

**असाधा** वि० (हि) असाध्य।

**अ-साधारण** वि० (सं) १-सामान्य अवस्था से घट या बढ़कर। (अन्-कॉमन)। २-साधारण से भिन्न। (एक्सट्रा-आर्डिनरी)।

**असाधारण-राजदूत** पुं० (सं) विशेष अवसर तथा विशेष उद्देश्य से भेजा गया राजदूत। (एम्बैसेडर एक्स्ट्रा-आर्डिनरी)।

**अ-साध्य** वि० (सं) १-कठिन, दुष्कर। २-जिसके रोग मुक्त होने की सम्भावना नहीं हो।

**असामयिक** वि (सं) जो नियत समय से पहले या पीछे हो, असमयोचित।

**असामान्य** वि० (सं) असाधारण, विशेष।

**असामी** पुं० (हि) १-व्यक्ति, प्राणी। २-वह व्यक्ति जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ३-छोटा काश्तकार। ४-देनदार। ५-अपराधी। ६-वह व्यक्ति जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो। स्त्री० नौकरी, जगह।

**असार** वि० (सं) १ सार रहित, निःसार। २-शून्य, खाली। ३-तुच्छ।

**अ-सावधान** वि० (सं) जो सतर्क न हो।

**अ-सावधानता, असावधानी** स्त्री० (सं) बेपरवाही, लापरवाही।

**असावरी** स्त्री० (हि) एक प्रधान रागनी जो प्रातः काल गाई जाती है।

**असित** वि० (सं) १-जो श्वेत न हो; काला। २-दुष्ट। ३-कुटिल।
**असिद्ध** वि० (सं) १-जो सिद्ध न हो, अप्रामाणिक। २-कच्चा। ३-अपूर्ण, अधूरा। ४-व्यर्थ।
**असी** स्त्री० (सं) काशी में गङ्गा से मिलने वाली एक नदी।
**असीम, असीमित** वि० (सं) १-सीमारहित; बेहद। २-अपरिमित; अनन्त। ३-अपार; अगाध।
**असील** वि० (हि) देखो 'असल'।
**असीस** स्त्री० (हि) देखो 'आशिष'।
**असीसना** क्रि० (हि) आशीर्वाद देना।
**असु** पुं० (हि) अश्व; घोड़ा।
**असुग** वि० (हि) शीघ्रगामी। पुं० (हि) १-वायु। २-बाण।
**असुन** पुं० (हि) हृदय, अन्तःकरण।
**असुर** पुं० (सं) १-राक्षस। २-रात। ३-नीच प्रवृत्ति वाला पुरुष। ४-सूर्य। ५-पृथ्वी। ६-मेघ। बादल। ७-राहु। ८-एक प्रकार का प्रमाद रोग।
**असुर-विद्या** स्त्री० (सं) वह विद्या जिसमें विभिन्न देशों की अनुश्रुतियों के असुरों एवं उनके कार्य का विवेचन होता है।
**असुराई** स्त्री० (हि) १-असुर होने का भाव। २-खोटाई। शरारत।
**असुरारि** पुं० (सं) १-विष्णु। २-देवता।
**असुविधा** स्त्री० (सं) १-सुविधा का अभाव। २-कठिनाई। ३-दिक्कत; तकलीफ।
**असूझ** वि० (हि) १-जो दीख न पड़े, अदृश्य। २-जिसे दिखाई न दे, अंधा। ३-मूर्ख। पुं० (हि) अंधकार।
**असूया** स्त्री० (सं) १-दूसरे के गुण में दोष बतलाना। २-एकसंचारी का भाव। (रस)।
**असूर्यपश्या** वि० (सं) १-पर्दे में रहने वाली। २-साध्वी।
**असूल** पुं० (हि) १-देखो 'उसूल'। २-देखो 'वसूल'
**असेग** वि० (हि) असह्य।
**असेस** वि० (हि) १-पूरा। २-सारा।
**अ-सैनिक** वि०(सं) १-नागरिक। २-सभ्य। ३-दीवानी
**असैनिकीकरण** स्त्री० (सं) किसी स्थान अथवा क्षेत्र को सैन्यविहीन करना। (डीमिलिटैरिजेशन)।
**असैला** वि० (हि) १-रीति-नीति के अनुसार काम न करने वाला। २-कुमार्गी। ३-शैली के विरुद्ध। ४-अनुचित।
**असों, असो** क्रि० वि० (हि) इस साल।
**असोक** वि० पुं० (हि) देखो 'अशोक'।
**असोच** वि० (हि)
**असोज** पुं० (हि) आश्विन।
**असोस** वि० (हि) न सूखने वाला।
**असौंध** वि० (हि) दुर्गन्ध, बदबू।
**अस्तंगत** वि० (सं) १-अस्त होने वाला। २-अवनत, हीन।
**अस्त** वि०(सं)१-छिपा हुआ, तिरोहित। २-अदृश्य। ३-नष्ट, ध्वस्त। पुं० (सं) लोप, तिरोधान।
**अस्तबल** पुं० (अ) तबेला।
**अस्तमन** पुं० (सं) अस्त होना।
**अस्तमित** वि० (सं) जो अस्त हो गया हो।
**अस्तर** पुं० (फा) १-नीचे की तह या पल्ला। २-दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३-तह। ४-अन्तरपट। ५-चन्दन का वह तेल जिस पर विभिन्न सुगंधों का आरोप कर के इत्र तैयार किया जाता है। जमीन। ६-नीचे के रंग के ऊपर चढ़ाया जाने वाला रंग।
**अस्त-व्यस्त** वि० (सं) उलटा-पुलटा, छिन्न-भिन्न, तितर-बितर।
**अस्ताचल** पुं० (सं) पश्चिमाचल पर्वत जिसकी ओट में सूर्य छिपता है।
**अस्ति** स्त्री० (सं) १-सत्ता। २-विद्यमानता। जरासन्ध की कन्या का नाम।
**अस्तित्व** पुं० (सं) १-विद्यमानता, होना, मौजूदगी २-सत्ता, भाव।
**अस्तिमंत** पुं० (सं) धनी या सम्पन्न व्यक्ति।
**अस्तु** अव्य० (सं) १-जो हो, चाहे जो हो। २-अच्छा खैर, भला।
**अस्तुति** स्त्री० (सं) निन्दा, बुराई। स्त्री० (हि) देखो 'स्तुति'।
**अस्तेय** पुं० (सं) चोरी न करना।
**अस्त्र** पुं० (सं) १-फेंककर चलाने का हथियार। जैसे-बाण, गोला, गोली आदि। २-वह हथियार जिसके द्वारा कोई वस्तु फेंकी जाय। जैसे-बन्दूक, धनुष, तोप आदि। ३-वह हथियार जिससे शत्रु का वार रोका जाय। जैसे-ढाल। ४-चिकित्सक का चीरफाड़ का औजार। ५-शस्त्र, हथियार।
**अस्त्र-चिकित्सक** पुं० (सं) चीर-फाड़ के द्वारा चिकित्सा करने वाला।
**अस्त्र-चिकित्सा** स्त्री० (सं) वैद्यकशास्त्र का वह भाग जिसमें चीर-फाड़ का विधान है। जर्राही।
**अस्त्र-शाला** स्त्री० (सं) अस्त्र-शस्त्र रखने का स्थान।
**अस्त्रीकरण** पुं० (सं) देश को अस्त्र-शस्त्र से युक्त तथा सज्जित करने का कार्य।
**अस्थल** पुं० (हि) देखो 'स्थल'।
**अस्थाई** वि० (हि) देखो 'स्थायी'।
**अस्थान** पुं० (हि) देखो 'स्थान'।
**अस्थामा** पुं० (हि) देखो 'अश्वत्थामा'।
**अस्थायी** वि० (सं) १-जो स्थायी न हो। २-जो

किसी काम को चलाने के लिए किसी अन्य के स्थान पर थोड़े समय के लिए रखा गया हो। (टेम्पररी)।

**अस्थायी-संधि** स्त्री० (सं) युद्ध समाप्त कर देने के सम्बन्ध में की गई अस्थायी सन्धि। (आरमिसटिस)

**अस्थि** स्त्री० (सं) हड्डी।

**अस्थि-पंजर** पुं० (सं) शरीर की हड्डियों का ढाँचा, ठठरी।

**अस्थि-प्रवाह** पुं० (सं) शवदाह के उपरान्त बची हुई अस्थियाँ किसी पवित्र नदी अथवा जलाशय में डालना।

**अस्थिभंग** पुं० (सं) गिर पड़ने, चोट लगने आदि के कारण हड्डी का टूट जाना। (फ्रैकचर)।

**अस्थिर** वि० (सं) १-चलायमान, डाँवाँडोल, चंचल। २-बेठौर ठिकाने का।

**अस्थिरता** स्त्री० (सं) १-अस्थिर होने का भाव। २-चंचलता, [illegible] रहना।

**अस्थि-संचय** पुं० (सं) अन्त्येष्टि संस्कार के पीछे चिता के ठंडी हो जाने पर जली हुई हड्डियों को एकत्रित करने का कार्य।

**अस्थूल** वि० देखो 'सूक्ष्म'।

**अस्थैर्य** पुं० (सं) अस्थिरता।

**अस्पताल** पुं० (अं) १-चिकित्सालय। २-औषधालय, दवाखाना।

**अस्पृश्य** १-न छूने योग्य। २-अन्त्यज।

**अस्पृश्यता** स्त्री० (सं) अस्पृश्य अथवा अछूत होने की अवस्था या भाव। २-कुछ रूढ़िवादी लोगों की दृष्टि में किसी जाति विशेष के लोगों को न छूने का विचार या भाव। (अन्-टचेबिलिटी)।

**अस्म** पुं० (सं) अश्म, पत्थर।

**अस्मज** वि० (सं) १-पत्थर का बना हुआ। २-पत्थर के रूप में आया हुआ।

**अस्मिता** स्त्री० (सं) १-योगशास्त्र के अनुसार पाँच प्रकार के क्लेशों में से एक। २-अहङ्कार। ३-मोह।

**अस्वस्थ** वि० सं १-रोगी। २-अनमना।

**अस्वाभाविक** वि० (सं) १- जो स्वाभाविक न हो। २-कृत्रिम, बनावटी।

**अस्वामिक** वि० (सं) लावारिस।

**अस्वामिकता** स्त्री० (सं) अस्वामिक या लावारिस होने की अवस्था या भाव, स्वामी न होने की अवस्था या भाव।

**अस्वीकरण** पुं० (सं) अस्वीकार करने की क्रिया या भाव, नामंजूरी। (रिजेक्शन)।

**अस्वीकार** पुं० (सं) इनकार, नामंजूरी। वि० (सं) देखो 'अस्वीकृत'।

**अस्वीकृत** वि० (सं) जो अस्वीकार किया गया हो।

**अहं** सर्व० (सं) मैं। पुं० (सं) अहंकार, अभिमान।

**अहंकार** पुं० (सं) १-अभिमान, घमण्ड। २-अहं का भाव।

**अहंकारी** वि० (सं) घमण्डी।

**अहंता** स्त्री० (सं) अहंकार।

**अह** पुं० (सं) १-विष्णु। २-दिन। ३-सूर्य। ४-दिन का देवता। अव्य० दुःख, आश्चर्य इत्यादि सूचक शब्द।

**अहक** स्त्री० (हि) इच्छा।

**अहकना** क्रि० (हि) इच्छा या लालसा करना।

**अहटाना** क्रि० (हि) १-आहट लगना; पता लगना २-टोह लेना। ३-दुखना।

**अहथिर** वि० (हि) १-स्थिर। २-जिसका कोई ठीक न हो।

**अहद** पुं० (अ) १-प्रतिज्ञा। २-समय, राजत्वकाल। ३-संकल्प, इरादा।

**अहदी** पुं० (अ) १-आलसी। २-अकर्मण्य। ३-अकबर-कालीन एक प्रकार के सिपाही जिनसे विशेष आवश्यकता के समय काम लिया जाता था तथा जो यों ही निठल्ले बैठे रहते थे।

**अहना** क्रि० (हि) होना।

**अहनिसि** क्रि० वि० (हि) देखो 'अहर्निश'।

**अहमक** पुं० (अ) मूर्ख।

**अहमिति** स्त्री० देखो 'अहम्मति'।

**अहमित्व** पुं० देखो 'अहम्मन्यता'।

**अहम्मति** स्त्री० (सं) १-अहंभाव। २-अविद्या।

**अहम्मन्य** वि० (सं) अपने आपको बहुत बड़ा समझने वाला।

**अहम्मन्यता** स्त्री० (सं) स्वयम् को औरों की अपेक्षा बड़ा समझने का भाव।

**अहरन** पुं० (हि) निहाई।

**अहरह** क्रि० वि० (सं) १-प्रतिदिन। २-नित्य। ३-निरंतर।

**अहरा** पुं० (हि) १-कंडे या उपलों का ढेर। २-ठहरने का स्थान।

**अहर्निश** क्रि० वि० (सं) १-रात-दिन। २-सदा, नित्य

**अहलकार** पुं० (फा) १-कर्मचारी। २-कारिंदा।

**अहलना** क्रि० (हि) हिलना, काँपना।

**अहला** वि० (हि) व्यर्थ।

**अहलाद** पुं० (हि) 'अह्लाद'।

**अहवात** पुं० (हि) सोहाग, सौभाग्य।

**अहवान** पुं० (हि) बुलाना।

**अहसान** पुं० (अ) १-उपकार। २-अनुग्रह, कृपा।

**अहस्तक्षेप-नीति** स्त्री० (सं) अर्थ-शास्त्रियों का वह सिद्धांत जिसमें देश के आर्थिक मामलों (व्यापारी आदि) में राज्य को बिलकुल हस्तक्षेप न करना चाहिये। (लैसेज फेयर)।

**अहह** अव्य० (सं) क्लेश, शोक, आश्चर्य प्रकट करने

वाला शब्द।

**अहा** *अव्य०* (हि) प्रसन्नता तथा प्रशंसा प्रकट करने वाला शब्द।

**अहाता** पुं० (अ) १-घेरा, हाता। २-बाड़ा, चारदिवारी।

**अहान** पुं० (हिं) शोर, पुकार।

**अहार** पुं० (हि) देखो 'आहार'।

**अहारना** *क्रि०* (हि) १-खाना। २-चिपकाना। ३-कपड़े में मांडी देना।

**अहरी** *वि०* (हि) देखो 'आहारी'।

**अहाहा** *अव्य०* (हि) हर्षसूचक अव्यय।

**अहिंसक** *वि०* (सं) हिंसा न करने वाला।

**अहिंसा** *स्त्री०* (सं) किसी को दुःख न देना।

**अहि** पुं० (सं) १-साँप। २-राहु। ३-सूर्य ४-पृथ्वी ५-वृत्रासुर।

**अहित** पुं०(सं) १-अपकार; बुराई। २-शत्रु, वैरी।

**अहिनाथ** पुं० (सं) शेषनाग।

**अहिनाह** पुं० (हिं) शेषनाग।

**अहिपति** पुं० (सं) शेषनाग।

**अहिफेन** पुं० (सं) १-साँप की लार। २-अफीम।

**अहिबेल** *स्त्री०* (हि) नागबेलि, पान।

**अहिमेध** पुं० (सं) सर्पयज्ञ।

**अहिलता, अहिवल्ली** *स्त्री०* (सं) नागवल्ली, पान।

**अहिवात** पुं० (हिं) सौभाग्य, सोहाग।

**अहिवातिन** *स्त्री०* (हि) सधवा, सोहागिन स्त्री।

**अहिवाती** *वि०* हिं) सौभाग्यवती।

**अहीर** पुं० (हि) गाय-भैंस पालने वाली तथा दूध बेचने वाली एक जाति, ग्वाला।

**अहुटना** *क्रि* (हिं) हटना, दूर होना।

**अहुटाना** *क्रि०* (हि) हटाना, अलग करना।

**अहुठ** *वि०* (हि) साढ़े तीन।

**अहेर** पुं० (हि) १-आखेट; शिकार। २-वह जन्तु जिसका शिकार किया जाय।

**अहेरी** पुं० (हि) आखेटक, शिकारी।

**अहै** *क्रि०* (हि) है।

**अहो** *अव्य०* (सं) एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी सम्बोधन के समान और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष और विस्मय प्रकट करने के लिए होता है।

**अहोई** *स्त्री०* (हिं) सन्तान की कामना तथा रक्षा के लिए की जाने वाली पूजा जिसे स्त्रियाँ दीवाली से आठ दिन पहले करती हैं।

**अहोनिस** *क्रि० वि०* (हि) अहर्निश।

**र-बहोर** *क्रि० वि०* (हिं) फिर-फिर, बारम्बार।

**ात्र** पुं० (सं) दिनरात।

**ा-बहोरा** पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें वधु सुसराल जाकर उसी दिन अपने पिता के घर लौट आती है, हेरा-फेरी।

**अहोरिन** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार की चिड़िया।

# आ

**आ** हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर, यह 'अ' का दीर्घ रूप है, यह बुलाने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पुं० (सं) महेश्वर। *स्त्री०* (सं) लक्ष्मी। *स्त्री०* (हि) मां, माता।

**आँ** *अव्य०* (हि) १-विस्मय बोधक शब्द। २-बालक के रोने के शब्द का अनुकरण।

**आँक** पुं० (हि) १-अङ्क, निशान। २-संख्या का चिह्न। अदद। ३-अक्षर। ४-दृढ़ निश्चय। ५-गढ़ी हुई बात। ६-अंश, हिस्सा। ७-लकीर। ८-किसी वस्तु पर संकेत रूप में टाँका हुआ उसका मूल्य।

**आँकड़ा** पुं० (हि) १-अङ्क। २-पेच।

**आँकड़े** पुं० (हि) किसी विषय अथवा विभाग की स्थिति सूचित करने वाले अङ्क। (स्टैटिस्टिक्स)।

**आँकन** पुं० (हि) ज्वार का दाना, भुट्टा।

**आँकना** *क्रि०* (हिं) १-चिह्न या निशान लगाना। २-कूतना, अँदाजा करना। ३-अनुमान करना।

**आँकर** *वि०* (हि) १-गहरा। २-बहुत अधिक। ३-महँगा।

**आँकुड़ा** पुं० (हि) देखो 'अंकुड़ा'।

**आँकुस** पुं० (हि) देखो 'अंकुश'।

**आँकू** पुं० (हि) आँकने या अन्दाजा लगाने वाला।

**आँख** *स्त्री०* (हि) १-नेत्र, नयन। २-दृष्टि, नजर। ३-विचार, विवेक। ४-परख; पहचान। ५-कृपादृष्टि। ६-सन्तान। ७-आँख के आकार का छेद या चिह्न।

**आँखड़ी** *स्त्री०* (हि) आँख।

**आँखमिचौली, आँखमीचली, आँखमुचाई, आँखमुंदाई** *स्त्री०* (हि) बालकों का एक खेल जिसमें आँख मूंद कर खेला जाता है।

**आँखी** *स्त्री०* (हि) आँख।

**आँग** पुं० (हि) १-अङ्ग। २ कुच, स्तन।

**आँगन** पुं० (हि) घर के भीतर का सहन या चौक।

**आँगिक** पुं० (हि) १-मनोभाव। २-रस में कायिक अनुभाव। ३-नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक। *वि०* (सं) १-अङ्ग-सम्बन्धी। २-जो किसी के अङ्ग के रूप में हो।

**आँगी** *स्त्री०* (हि) अंगिया, चोली।

**आंगुर, आंगुरी, आंगुल** स्त्री० (हि) देखो 'अंगुल'।
**आंघी** स्त्री० (हि) मैदा छानने की चलनी।
**आंच** स्त्री० (हि) १-गरमी; ताप। २-आग की लपट ३-आग।
**आंचना** क्रि० (हि) जलाना; तापना।
**आंचर, आंचल** पुं० (हि) १-पल्ला; छोर। २-साधुओं का अंचला। ३-साड़ी या ओढ़नी का स्त्रियों की छाती पर रहने वाला भाग।
**आंजन** पुं० (हि) अंजन।
**आंजना** क्रि० (हि) अंजन लगाना।
**आंजू** पुं० (हि) एक प्रकार की कटीली झाड़ी।
**आंट** पुं० (हि) १-हथेली में तर्जनी तथा अंगूठे के मध्य का भाग। २-दाँव, वश। ३-वैर। ४-गिरह, गाँठ। ५-ऐंठन। ६-पूला, गट्ठा।
**आंटना** क्रि० (हि) १-समाना, अँटना। २-पूरा पड़ना। ३-आना, मिलना। ४-पहुँचना।
**आंटी** स्त्री० (हि) १-पूला। २-लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३-सूत का लच्छा। ४-धोती की गिरह, टेंट।
**आंठी** स्त्री० (हि) १-गिरह, गाँठ। २-गुठली। ३-नवोढ़ा के उठते हुए स्तन।
**आंड़ी** स्त्री० (हि) अंटी, गांठ, कंद।
**आंत** स्त्री० (हि) अंतड़ी।
**आंतर** पुं० (हि) अन्तर।
**आंतर** वि० (सं) १-अन्दर या भीतर का। २-किसी क्षेत्र अथवा सीमा के भीतरी भागों से सम्बन्ध रखने वाला। ३-किसी वस्तु के वास्तविक मूल्य, तत्व, महत्व आदि से सम्बन्धित।
**आंतरिक** वि० (सं) १-भीतरी। २-किसी देश के भीतरी भागों से सम्बन्धित। ३-किसी भवन या क्षेत्र के भीतरी भागों से सम्बन्धित, (इन्डोर)। ४-हृदय या मन में होने वाला।
**आंतिक** वि० (सं) अंतिम अथवा समाप्ति स्थान से सम्बन्धित।
**आंतिक-कर** पुं० (सं) यात्रा के समाप्ति स्थान पर लिया जाने वाला कर। (टरमिनल-टैक्स)।
**आंदू** पुं० (हि) १-लोहे का कड़ा बेड़ी। २-हाथी बाँधने की साँकल जो पैर में बाँधी जाती है।
**आंदोलन** पुं० (सं) १-बारम्बार हिलाना, डोलना। २-उथल-पुथल करने वाला प्रयत्न, (एजिटेशन)।
**आंदोलित** वि० (सं) आंदोलन किया हुआ।
**आंध** स्त्री० (हि) १-अँधेरा। २-रतौंधी।
**आंधना** क्रि० (हि) वेग से धावा करना। टूट पड़ना।
**आंधर, आंधरा** वि० (हि) अन्धा।
**आंध्र** पुं० (सं) भारत का एक राज्य या प्रान्त।
**आंधी** स्त्री० (हि) धूलिपूर्ण प्रचण्ड वायु; अंधड़। ... के समान तेज।
**आंब** पुं० (हि) आम।
**आंयबांयशांय** वि० (हि) अनापशनाप।
**आंव** पुं० (हि) एक प्रकार का लसदार चिकना सफेद मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।
**आंवठ** पुं० (हि) किनारा।
**आंवड़ना** क्रि० (हि) ऊपर को उठना।
**आंवड़ा** वि० (हि) गहरा।
**आंवल** पुं० (हि) वह झिल्ली जो गर्भ में बच्चे के लिपटी रहती है, जेरी।
**आंवल-नाल** स्त्री० (हि) देखो 'आँवल'।
**आंवला** पुं० (हि) एक वृक्ष और उसका फल।
**आंवाँ** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।
**आंशिक** वि० (सं) १-अंश सम्बन्धी; अंश-विषयक। २-जो अल्प रूप में हो, थोड़ा।
**आंस** स्त्री० (हि) १-पीड़ा, दर्द। २-डोरी। ३-रेशा।
**आंसला** वि० (हि) १-अश्रुपूर्ण। २-जिसके मन बहुत पीड़ा हो।
**आंसू** पुं० (हि) आँखों से निकलने या बहने वाला जल, अश्रु।
**आंहुड़** पुं० (हि) बरतन।
**आंहां** अव्य० (हि) नहीं।
**आइंदा** क्रि० वि० (फा) आगे, भविष्य में।
**आइ** स्त्री० (हि) १-आयु। २-जीवन।
**आइस, आइसु** पुं० (हि) देखो 'आयसु'।
**आई** स्त्री० (हि) १-आयु। २-मृत्यु। क्रि० वि० आना का भूतकाल स्त्री०।
**आईन** पुं० (फा) १-नियम, विधि। २-संविधान।
**आईना** पुं० (फा) आरसी, दर्पण।
**आउंकार** पुं० (हि) ओंकार।
**आउ** स्त्री० (हि) आयु, उम्र।
**आउज, आउझ** पुं० (हि) डफला; ताशा नामक बाजा।
**आउ-बाउ** पुं० (हि) अंडबंड बात।
**आक** पुं० (हि) मदार, अकवन।
**आकबाक** पुं० (हि) ऊटपटांग बात।
**आकर** पुं० (सं) १-खान, उत्पत्ति स्थान। २-खजाना, भंडार। ३-भेद, किस्म। वि० (सं) १-श्रेष्ठ। २-दक्ष, कुशल।
**आकरखना** क्रि० (हि) आकर्षना, खींचना।
**आकर-भाषा** स्त्री० (सं) मूल प्राचीन भाषा, जिससे आवश्यकता पड़ने पर शब्द लिये जा सकें, जैसे-हिन्दी की आकर भाषा संस्कृत और उर्दू की अरबी फारसी।
**आकरिक** वि० (सं) १-खान खोदने वाला। २-खान-सम्बन्धी।
**आकरोट** पुं० (हि) अखरोट।
**आकर्षक** वि० (सं) आकर्षण करने वाला, खींचने

वाला।

**आकर्षण** पुं० (सं) १-खिंचाव। २-तंत्र शास्त्र के अनुसार वह प्रयोग जिससे दूरस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आजाता है।

**आकर्षण-शक्ति** *स्त्री०* (सं) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जो अन्य पदार्थों को अपनी ओर खेंचती है

**आकर्षन** पुं० (हिं) देखो 'आकर्षण'।

**आकर्षना** *क्रि०* (हिं) खींचना।

**आकर्षित** *वि०* (स) खींचा हुआ।

**आकलन** पुं० (स) १-लेना; ग्रहण। २-संचय; बटोरना। ३-गिनना। ४-अनुसंधान। ५-खाते में जमा करना। (क्रेडिट)।

**आकलन-पक्ष** पुं०(स) खाते का वह पक्ष जिसमें आया हुआ धन जमा होता है। (क्रेडिट साइड)।

**आकलन-पत्रक** पुं०(सं) वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलन पक्ष अथवा यथेष्ट धन जमा होने का सूचक होता है।

**आकली** *स्त्री०* (हिं) आकुलता।

**आकसमात, आकस्मात** *क्रि० वि०* (हिं) देखो 'अकस्मात्'।

**आकस्मिक** *वि०*(सं) १-सहसा होने वाला। २-यों ही किसी समय हो जाने वाला। ३-संयोग वश या घटनावश आपसे आप हो जाने वाला। (एक्सिडेंटल)।

**आकस्मिक-छुट्टी** *स्त्री०*(सं+हिं) यों ही या सहसा किसी कार्य के आ पड़ने पर होने वाली छुट्टी। (केजुअल-लीव)।

**आकस्मिक-निधि** *स्त्री०* (सं) किसी देश या राज्य की विशेष समय के लिए रखी गई सुरक्षित निधि या कोश जो सहसा किसी संकट अथवा कार्य के आ पड़ने पर काम में लाई जाय जैसे-भूकंप, बाढ़, अकाल आदि पर सहायता कार्य पर दी जाय। (कंटिनजेंसी फन्ड)।

**आकस्मिकता** *स्त्री०*(स) सहसा, आप-से-आप अथवा आकस्मिक होने का भाव।

**आकस्मिकतावाद** पुं० (स) दर्शनशास्त्र के अनुसार वह सिद्धांत जिसमें ऐसा माना जाता है कि संसार में जो कुछ होता है वह सब अचानक, अकस्मात् या घटनावश होता है। (एक्सिडेंटलिज्म)।

**आकस्मिकी** *स्त्री०* (सं) सहसा हो जाने वाली घटना या बात। (कैजुएलिटी)।

**आकांक्षा** *स्त्री०*(स) १-इच्छा, अभिलाषा। २-अपेक्षा ३-अनुसंधान; खोज। ४-न्यायानुसार वाक्यार्थ ज्ञान के चार प्रकार के हेतुओं में से एक।

**आकांक्षित** *वि०* (स) १-इच्छित। २-अपेक्षित।

**आकांक्षी** *वि०* (सं) इच्छा करने वाला; इच्छुक।

**आकार** पुं० (सं) १-आकृति, स्वरूप। २-डीलडौल ३-बनावट। ४-चिह्न। ५-चेष्टा। ६-'आ' वर्ण। ७-बुलावा। ८-किसी वस्तु या काम का वह निश्चित या प्रचलित रूप जिसमें साधारणतया होता या पाया जाता हो। (फॉर्म)।

**आकारक** पुं०(सं) साक्षी आदि को बुलाने के अभिप्राय से न्यायालय द्वारा भेजा गया आज्ञा पत्र। (सम्मन)।

**आकारण** पुं० (सं) बुलावा; बुलाने की क्रिया या भाव। (सम्मनिंग)।

**आकार-पत्र** पुं० (सं) प्रार्थना-पत्र आदि के नमूने, जिसमें यह दिखलाया जाता है कि किस स्थान पर कौनसी बात लिखना है। (फार्म)।

**आकारी** *वि०* (स) बुलाने वाला।

**आकाश** पुं० (स) १-नभ; गगन; आसमान। २-शून्य स्थान।

**आकाश-कुसुम** पुं० (सं) अनहोनी बात।

**आकाश-गङ्गा** *स्त्री०* (सं) १-अत्यन्त छोटे-छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर दक्षिण में फैला होता है।

**आकाश-गामी** *वि०* (सं) आकाश में फिरने वाला।

**आकाश-चारी** *वि०* (सं) आकाश-गामी। पुं० (सं) १-सूर्य आदि ग्रह नक्षत्र। २-वायु; पक्षी। ४-देवता

**आकाश-दीप, आकाश-प्रदीप** पुं० ((सं) वह दीपक जो कण्डोल में रखकर ऊँचे बाँस के सिरे पर बांधकर जलाते हैं।

**आकाशबेल** *स्त्री०* (सं+हिं) अमरबेल।

**आकाश-भाषित** पुं० (सं) नाटक में आकाश की ओर देखकर प्रश्नोत्तर करना।

**आकाशयान** पुं०(स) आकाश में उड़ने या चलने वाला यान; हवाई जहाज।

**आकाश-वाणी** *स्त्री०* (सं) १-देववाणी। २-एक प्रसिद्ध विद्युत यन्त्र जिसमें बिना तार के बहुत दूर से कही हुई बातें निर्धारित समय पर सुनाई देती हैं। (रेडियो)।

**आकाशवृत्ति** *स्त्री०* (सं) अनिश्चित आमदनी।

**आकाशी** *स्त्री०* (हिं) धूप आदि में बचाव के लिए तानी जाने वाली चाँदनी।

**आकीर्ण** *वि०* (सं) १-व्याप्त। २-छितराया हुआ। ३-भरा हुआ।

**आकुंचन** पुं० (स) सिकुड़ना।

**आकुंठन** पुं० (सं) १-गुठला या कुंद होना। २-लज्जा, शर्म।

**आकुंठित** *वि०* (सं) १-कुंद। २-लज्जित।

**आकुल** *वि०* (सं) १-व्यग्र। २-विह्वल; कातर। ३-संकुल, व्याप्त।

**आकुलता** *स्त्री०* (सं) व्याकुलता; घबड़ाहट।

**आकुलित** *वि०* (सं) घबड़ाया हुआ।

**आकृत** वि० (स) आकार में आया हुआ।
**आकृति** स्त्री० (सं) १-बनावट; ढाँचा। २-मूर्त्ति; रूप। ३-मुख। ४-मुख का भाव; चेष्टा।
**आकृष्ट** वि० (स) खींचा हुआ।
**आक्रम** पुं० (सं) पराक्रम, शूरता।
**आक्रमण** पुं० (स) १-हमला; चढ़ाई। २-आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना। ३-घेरना; छेंकना। ४-आक्षेप करना; निन्दा करना।
**आक्रमित** वि० (सं) जिस पर आक्रमण किया गया हो।
**आक्रांत** वि० (स) १-जिस पर आक्रमण किया गया हो। २-घिरा हुआ। ३-पराजित। ४-विवश। ५-व्याप्त।
**आक्रामक** वि०(स) आक्रमण करने वाला।
**आक्रीड़** पुं० (स) १-खेलने की जगह। २-केलि-कानन। ३-उपवन; बाग। ४-विहार।
**आक्रीड़न** पुं० (सं) १-खेल। २-विहार।
**आक्रोश** पुं०(सं) कोसना।
**आक्लांत** वि० (सं) मना या भिगा हुआ।
**आक्षिप्त** वि० (सं) १-फेंका हुआ। २-आक्षेप किया हुआ। ३-अपमानित।
**आक्षेप** पुं० (स) १-फेंकना। २-दोष लगाना। ३-ताना। ३-एक प्रकार का वात रोग। ४-किसी के कथन आदि के सम्बन्ध में की जाने वाली आपत्ति (चैलेंज)।
**आक्षेपक** वि० (स) आक्षेप करने वाला; निन्दक।
**आखंडल** पुं० (सं) इन्द्र।
**आखंडलीय** वि० (स) आखंडल या इन्द्र सम्बन्धी, इन्द्र का।
**आखत** पुं० (हि) अक्षत।
**आखन** क्रि० वि० (हि) प्रति क्षण; हर घड़ी।
**आखना** क्रि० (हि) १-कहना। २-चाहना। ३-देखना
**आखर** पुं० (हि) अक्षर।
**आखा** पुं० (हि) मैदा छानने की चलनी। वि० अक्षय
**आखातीज** स्त्री० (हि) अक्षय तृतीया।
**आखिर** वि० (फा) अन्तिम; पिछला। पुं० (फा) १-अन्त। २-परिणाम; फल। क्रि० वि० अन्त में।
**आखिरकार** क्रि०वि० (फा) अन्त में, अन्त को।
**आखिरी** वि० (फा) अन्तिम; पिछला।
**आखीर** वि० देखो 'आखिर'।
**आखु** पुं० (स) १-चूहा। २-चोर। ३-कंजूस।
**आखेट** पुं० (सं) शिकार, मृगया।
**आखेटक** पुं० (सं) शिकारी।
**आखेटी** पुं० (हि) शिकारी।
**आखोर** पुं० (सं) १-पशुओं के खाने से बचा हुआ घास या चारा। २-कूड़ा-करकट।
**आख्या** स्त्री० (स) १-नाम। २-कीर्त्ति। ३-व्याख्या। ४-किसी घटना अथवा कार्य का विवरण। (रिपोर्ट)
**आख्यात** वि० (सं) १-विख्यात; प्रसिद्ध। किसी घटना या कार्य के विवरण रूप में बताया हुआ। (रिपोर्टेड)।
**आख्याता** पुं० (स) व्याख्यानदाता।
**आख्याति** स्त्री० (सं) ख्याति; नामवरी।
**आख्यान** पुं० (सं) १-वर्णन। २-कथा, कहानी। ३-उपन्यास का भेद।
**आख्यानक** पुं० (स) १-वर्णन। २-कथा कहानी।
**आख्यापक** पुं० (स) १-कहने वाला। २-वह जो किसी को किसी प्रकार का विवरण बतलावे या सूचना दे। (रिपोर्टर)।
**आख्यायिका** स्त्री० (सं) १-कथा; कहानी। २-उपन्यास
**आगंतुक** वि० (सं) १-आने वाला। २-जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय।
**आग** स्त्री० (हि) १-अग्नि। २-जलन। ३-प्रेम। ४-कामाग्नि। ५-डाह; ईर्षा। वि० (हि) १-जलता-हुआ, बहुत गरम। २-उष्ण गुण वाली।
**आगण** पुं० (हि) अगहन।
**आगणन** पुं० (सं) पहले से किया गया व्यय या लागत आदि का अनुमान; कूत। (एस्टिमेट)।
**आगत** वि० (सं) १-आया हुआ। २-उपस्थित।
**आगतपतिका** स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका प्रियतम परदेश से लौटा हो।
**आगतस्वागत** पुं० (स) आवभगत; मेहमानदारी।
**आगम** पुं० (स) १-आगमन। २-भविष्यकाल। ३-होनहार; भवितव्यता। ४-समागम। ५-आय। ६-व्याकरण में किसी शब्द साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७-उत्पत्ति। ८-योगशास्त्रानुसार शब्द प्रमाण। ९-वेद। १०-शास्त्र। ११-राज्य की भूमि से होने वाली आय। (रेवेन्यू)। १२-वह अधिकार सूचक-पत्र जिसके आधार पर कोई किसी वस्तु का स्वामी अथवा उत्तराधिकारी होता है। (टाइटल)।
**आगम-जानी** वि० (हि) देखो 'आगम-ज्ञानी'
**आगम-ज्ञानी** वि० (सं) होनहार या भविष्य का जानने वाला।
**आगमन** पुं० (स) १-आमद; आना। २-लाभ।
**आगमवाणी** स्त्री० (सं) भविष्यवाणी।
**आगमशुल्क** पुं० (स) वह महसूल या शुल्क जो बाहरी माल पर शहर में प्रवेश करने पर लिया जाता है। चुङ्गी। (कस्टम)।
**आगमसोची** वि० (हि) अग्रसोची; दूरदर्शी।
**आगर** पुं० (हि) १-खान। २-समूह; ढेर। ३-कोष; निधि। ४-नमक जमाने का गड्ढा। ५-घर। ६-छाजन; छप्पर। वि० १-श्रेष्ठ; उत्तम। २-चतुर;

दस्त। क्रि० वि० बहुत अधिक।
**आगरा** वि० (हि) १-बढ़कर। २-अत्याधिक।
**आगल** पुं० (हि) अर्गल; ब्योड़ा। वि० (हि) अगला।
**आगवन** पुं० (हि) आगमन।
**आगवाह** पुं० (हि) धुवाँ।
**आगा** पुं० (हि) १-अग्रभाग; अगाड़ी। २-मुख; मुँह। ३-कमीज कुरते की काट में आगे का टुकड़ा ४-घर के आगे का हिस्सा। ५-सेना का अग्रभाग। ६-भविष्य। पुं० (तु०) १-मालिक; सरदार। २-काबुली; अफगान।
**आगान** पुं० (हि) १-प्रसङ्ग। २-वृत्तान्त।
**आगापीछा** पुं० (हि) १-दुविधा। २-परिणाम। ३-अगला और पिछला भाग।
**आगामिक** वि० (स) १-आगामी से सम्बन्धित। २-आने वाला।
**आगामी** वि० (सं) भावी; आने वाला।
**आगार** पुं० (स) १-घर। २-खजाना। ३-स्थान।
**आगाह** वि० (फा) चेतावनी।
**आगाही** स्त्री० (फा) पहले से होने वाली जानकारी।
**आगि** स्त्री० (हि) आग।
**आगिल, आगिला** वि० (हि) १-अगला। २-भावी।
**आगी** स्त्री० (हि) आग।
**आगू** पुं० (हि) आगा।
**आगृहीत** वि० (सं) जमा किये हुए धन में से पुनः लिया या निकाला हुआ। (ड्रान)।
**आगृहीता** पुं० (स) वह जो जमा किये हुए धन में से कुछ अंश ले या निकाले। (ड्रॉअर)।
**आगृहीती** पुं० (स) आग्रहण का कार्य। (ड्रॉई)।
**आगे** क्रि० वि० (हि) १-सामने। २-जीवन काल में, जीते जी। ३-भविष्य में। ४-अनंतर। बाद। ५-पूर्व, पहले। ६-गोद में।
**आगो** पुं० (हि) अगवानी।
**आगौ** क्रि० वि० (हि) १-आगे; सामने। २- आगे बढ़कर।
**आगौन** पुं० (हि) आगमन।
**आग्नेय** वि० (स) १-अग्नि सम्बन्धी। २-जलाने वाला। ३-अग्नि से उत्पन्न। पुं० (सं) १-सुवर्ण। २-कार्त्तिकेय नामक अग्नि पुत्र। ३-ज्वालामुखी पर्वत। ४-दक्षिण का एक प्रदेश। ५-अग्निकोण। ६-बारूद, लाह आदि पदार्थ जो अग्नि से भड़क उठते हैं।
**आग्नेयास्त्र** पुं० (सं) आग फेंकने या उगलने वाला अस्त्र।
**आग्रह** पुं० (सं) १-अनुरोध। २-हठ; जिद। ३-तत्परता। ४-बल; जोर।
**आग्रहायण** पुं० (स) अगहन मास; मार्गशीर्ष।
**आग्रही** वि० (सं) हठी; जद्दी।

**आग्राहक** पुं० (स) देखो 'आगृहीता'।
**आघ** पुं० (हि) मूल्य, दाम।
**आघात** पुं० (स) १-धक्का। २-चोट; प्रहार।
**आघात-पत्र** पुं० (स) वह पत्र जिसमें चोटों या आघातों का विवरण अंकित हो। (इंजरी लेटर)।
**आघ्राण** पुं० (सं) १-सूंघना। २-तृप्ति।
**आच** पुं० (हि) हाथ।
**आचमन** पुं० (सं) १-जल पीना। २-धार्मिक पूजाओं में मंत्र पढ़कर जल पीना।
**आचमनी** स्त्री० (हि) आचमन करने का चम्मच।
**आचरज** पुं० (हि) आश्चर्य।
**आचरण** पुं० (सं) १-व्यवहार। २-अनुष्ठान। ३-चालचलन। (काँडक्ट)। ४-सफाई।
**आचरण-पंजी** स्त्री० (सं) कार्य-कर्त्ता के कार्यों, आचरणों अथवा व्यवहारों का समय-समय पर उल्लेख करने वाली पुस्तिका। (कैरेक्टर रोल)।
**आचरण-पुस्तिका** स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें कर्मचारी के आचरण, व्यवहार, कर्तव्यपालन आदि से सम्बन्धित बातें समय-समय पर लिखी जाती हैं (काँडक्टबुक)।
**आचरणीय** वि० (सं) आचरण करने योग्य।
**आचरन** पुं० (हि) आचरण।
**आचरना** क्रि० (हि) आचरण करना।
**आचरित** वि०(सं) कार्यान्वित किया हुआ (कमिटेड)
**आचान, आचानक** क्रि० वि० (हि) अचानक।
**आचार** पुं० (स) १-चाल चलन तथा रहन सहन। २-व्यवहार। ३-चरित्र। ४-अच्छा शील या स्वभाव।
**आचारज** पुं० (हि) आचार्य।
**आचारजी** स्त्री० (हि) आचार्य का कार्य, पुरोहिताई।
**आचारवान्** वि० (स) शुद्ध आचरण वाला।
**आचारविचार** पुं० (सं) रहन सहन; शुद्धचरण।
**आचार-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें मनुष्य के चरित्र, आचरण, कीर्ति तथा सामाजिक व्यवहारों आदि का उल्लेख होता है। (ईथिक्स)।
**आचारहीन** वि० (सं) बदचलन।
**आचारिक** वि० (सं) १-आचार सम्बन्धी। २-किसी समाज, कुल आदि में परंपरागत चला आया हुआ (कस्टमरी)।
**आचारी** वि० (सं) चरित्रवान। पुं० १-आचार्य। २-रामानुजी वैष्णव।
**आचार्य** पुं० (सं) १-उपनयन में गायत्री मंत्र का उपदेश देने वाला। २-गुरु। ३-पुरोहित। ४-अध्यापक। ५-ब्रह्मसूत्र का प्रमुख भाष्यकार। ६-एक उपाधि।
**आचार्या** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो आचार्य का काम करे।

**आचार्याणी** *स्त्री०* (सं) आचार्य की पत्नी।
**आचिंत्य** *वि०* (सं) १-सब प्रकार से चिंता के योग्य। २-अचिंत्य।
**आच्छन्न** *वि०* (सं) १-ढका हुआ। २-छिपा हुआ।
**आच्छादक** *वि०* (सं) ढकने वाला।
**आच्छादन** पुं० (सं) १-ढकना। २-वस्त्र। ३-छाजन
**आच्छादित** *वि०* (सं) ढका हुआ।
**आच्छिप्त** *वि०* (हि) आक्षिप्त।
**आछत** *क्रि० वि०* (हि) रहते हुए।
**आछना** क्रि० (हि) १-होना। २-रहना।
**आछा** *वि०* (हि) अच्छा।
**आछिप्त** *वि०* (हि) आक्षिप्त।
**आछी** *वि०* (हि) अच्छी; भली।
**आछे** *क्रि० वि०* (हि) भली प्रकार से; अच्छी तरह। क्रि० (हि) है।
**आछेप** पुं० (हि) आक्षेप।
**आछो** *वि०* (हि) अच्छा।
**आछोटण** पुं० (हि) आखेट; शिकार।
**आज** पुं० (हि) वर्त्तमान दिन; जो दिन बीत रहा है। ... (हि) १-जो दिन बीत रहा है उसमें २-इन दिनों। ३-अब।
**आजकल** *क्रि० वि०* (हि) इस समय; इन दिनों।
**आजन्म** *क्रि० वि०* (हि) जन्मभर; जिन्दगीभर।
**आजन्मिक** *वि०* (सं) देखो 'जन्मजात'।
**आजमाइश** *स्त्री०* (फा) परीक्षा; जाँच।
**आजमाना** क्रि० (फा) परखना; जांचना।
**आजमूदा** *वि०* (फा) परीक्षित।
**आजा** पुं० (हि) पितामह; दादा।
**आजाद** *वि०* (फा) स्वतन्त्र।
**आजादी** *स्त्री०* (फा) स्वतन्त्रता।
**आजानु** *वि०* (सं) जाँघ तक लम्बा।
**आजानु-बाहु** *वि०* (सं) जिसकी भुजाएँ घुटने तक पहुँचें।
**आजीवन** *क्रि० वि०* (सं) जीवनपर्यंत; जिन्दगीभर
**आजीविका** *स्त्री०* (सं) वृत्ति; रोजगार।
**आजीविका-कर** पुं० (सं) व्यवसाय पर लगने वाला कर या महसूल।
**आज्ञप्त** *वि०* (सं) आज्ञा दिया हुआ।
**आज्ञप्ति** *स्त्री०* (सं) १-दीवानी मुकदमे में किसी के पक्ष में न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय। (डिक्री) २-किसी उच्च अधिकारी का परिषद् आदि का वह आदेश जो किसी व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में हो और जिसका मानना जरूरी हो।
**आज्ञा** *स्त्री०* (सं) १-हुक्म। २-हठयोग के सात चक्रों में से एक।
**आज्ञाकारी** *वि०* (हि) १-आज्ञा मानने वाला। २-सेवक।
**आज्ञापक** *वि०* (सं) आज्ञा देने वाला।
**आज्ञा-पत्र** पुं०(सं) वह पत्र जिसमें कोई आज्ञा लिखी लिखी हो, हुक्मनामा।
**आज्ञापन** पुं० (सं) सूचित करना; जताना।
**आज्ञापित** *वि०* (सं) सूचित किया या जताया हुआ
**आज्ञापालक** *वि०* (सं) आज्ञाकारी।
**आज्ञापालन** पुं० (सं) आज्ञा के अनुसार कार्य करना
**आज्ञा-फलक** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी विषय अथवा व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाली आज्ञा लिखी हो। (आर्डर-शीट)।
**आज्ञा-भंग** पुं० (सं) आज्ञा का न मानना। (डिस-ओबीडिएन्स)।
**आज्ञार्थक** पुं० (सं) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे किसी को कोई कार्य करने का आदेश दिया जाता है। (इम्परेटिव-मूड)।
**आज्य** पुं० (सं) १-हवि। २-घृत।
**आटना** क्रि० (हि) १-ढँकना। २-दबाना।
**आटा** पुं० (हि) किसी अन्न का चूर्ण, पिसान, चून।
**आठे, आठों** *स्त्री०* (हि) अष्टमी तिथि।
**आडंबर** पुं० (सं) १-गम्भीर शब्द। २-तुरही का शब्द ३-हाथी की चिंघाड़। ४-तड़कभड़क। ५-ढोंग। ६-तम्बू। ७-आच्छादन। ८-युद्ध में बजने वाला एक प्रकार का बड़ा ढोल।
**आड़** *स्त्री०* (हि) १-ओट; परदा। २-रक्षा। ३-सहारा ४-रोक। ५-टेक; थूनी। ६-स्त्रियों के माथे पर लगाने की टिकली। ७-माथे पर का आड़ा तिलक। ८-टीका (गहना)। पुं० (हि) डंक।
**आड़ना** *क्रि०* (हि) १-रोकना। २-बाँधना। ३-मना करना। ४-गिरवी रखना।
**आड़बंद** पुं० (हि) फकीरों का लंगोट।
**आड़ा** पुं० (हि) १-धारीदार वस्त्र। २-शहतीर। *वि०* (हि) तिरछा।
**आढ़** पुं० (हि) चार सेर के बराबर का एक तौल। *स्त्री०* (हि) १-ओट। २-अन्तर। ३-नागा। *वि०* (हि) कुशल; दक्ष।
**आढ़क** पुं० (हि) चार सेर का परिमाण।
**आढ़त** *स्त्री०* (हि) १-किसी अन्य व्यापारी का माल बिकाने का व्यापार। २-इस प्रकार के व्यवसाय का स्थान या धन।
**आढ़तिया** पुं० (हि) वह व्यक्ति जो आढ़त का काम करता हो।
**आढ़ती** *वि०* (हि) आढ़त-सम्बन्धी।
**आढ्य** *वि०* (सं) सम्पन्न; युक्त।
**आणक** पुं० (सं) आना; रुपये का सोलहवाँ भाग।
**आणना** *क्रि०*(हि) आनना; लाना।
**आणविक** *वि०* (सं) १-अणु सम्बन्धी। २-अणुशक्ति सम्बन्धी। (एटामिक)।

**आतंक** पुं० (सं) १-रोब, दबदबा। भय। ३-रोग ४-कठोर कार्यवाइयों, अत्याचारों, प्रकोपों आदि के कारण लोगों के मन में होने वाला भय। (टेररिज्म)।

**आतंकयुद्ध** पुं० (सं) प्रचार आदि के द्वारा ऐसा आतङ्क फैलाना जिससे विरोधी पक्ष का नैतिक साहस भङ्ग हो जाय तथा बिना शस्त्रादि काम लाये ही उसे पराजित करने में सरलता हो। (वार-ऑफ-नर्व्ज)।

**आतंकवाद** पुं० (सं) अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए लोगों के मन में भय या आतङ्क उत्पन्न करने का सिद्धान्त। (टेररिज्म)।

**आतंकवादी** वि० (सं) आतङ्कवाद सिद्धान्त को मानने तथा प्रयोग में लाने वाला। (टेररिस्ट)।

**आतताई** पुं० (हि) देखो 'आततायी'।

**आततायी** पुं० (सं) धन सम्पत्ति लूटने, स्त्रियाँ हरण करने, घरों में आग लगाने वाला या ऐसे अन्य दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति, अत्याचारी।

**आतप** पुं० (सं) १-धूप। २-गरमी। ३-सूर्य प्रकाश।

**आतपत्र** पुं० (सं) छाता; छतरी।

**आतप-स्नान** पुं० (सं) सूर्य के प्रकाश में ऐसे बैठना या लेटना जिससे कि सारी देह पर उसका प्रभाव पड़े। (सन्बाथ)।

**आतम** वि० (हि) अपना। पुं० (हि) १-आत्मा। २-ब्रह्म।

**आतमा** स्त्री० (हि) आत्मा।

**आतश** पुं० (फा) आग।

**आतशक** पुं० (फा) उपदंश रोग, गर्मी।

**आतशबाज** पु० (फा) आतशबाजी बनाने वाला।

**आतशबाजी** स्त्री० (फा) १-बारूद निर्मित खिलौने के जलने का दृश्य। २-बारूद, गन्धक आदि के योग से बनाये बत्ती खिलौने जिनसे रङ्गबिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं। अग्नि-क्रीड़ा। (फायर-वर्कस)।

**आतशी-शीशा** पुं० (फा) एक प्रकार का सूरजमुखी शीशा।

**आतस** स्त्री० (हि) आतश।

**आतिथेय** पु० (सं) आतिथ्य करने वाला।

**आतिथ्य** पुं० (सं) मेहमानदारी।

**आतिपात्य** वि० (सं) अतिपात अथवा हिंसा सम्बन्धी।

**आतिपात्य शांति** स्त्री० (सं) नित्य अनजान में होने वाली हिंसा के निवारणार्थ किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।

**आतिश** स्त्री० (फा) आतश।

**आतिश्य** पुं० (सं) आधिक्य, बहुतायत।

**आतुर** वि० (सं) १-व्यग्र। २-अधीर। ३-उद्विग्न। [illegible]

**आतुरता** स्त्री० (सं) १-व्यग्रता। २-शीघ्रता।

**आतुरताई, आतुरतायी, आतुरी** स्त्री० (हि) आतुरता।

**आतृप्त** क्रि० वि० (सं) पूर्णतया तृप्त।

**आत्म** वि० (सं) अपना।

**आत्मक** वि० (सं) मय, युक्त।

**आत्म-कथा** स्त्री० (सं) १-अपने सम्बन्ध में स्वयं की कही हुई बातें। २-आत्मचरित।

**आत्मगत** वि० (सं) अपने में आया या मिला हुआ। पुं० (सं) स्वगत-कथन।

**आत्म-गौरव** पुं० (सं) अपने मान का विशेष ध्यान, आत्म-सम्मान।

**आत्म-घात** पुं० (सं) आत्म-हत्या।

**आत्म-चरित** पुं० (सं) स्वयम् द्वारा लिखा जीवन चरित्र। (ऑटो-बायोग्रफी)।

**आत्मज** पुं० (सं) १-पुत्र। २-कामदेव। ३-रक्त।

**आत्मजा** स्त्री० (सं) पुत्री।

**आत्मजिज्ञासा** स्त्री० (सं) अपने को जानने की अभिलाषा।

**आत्मजिज्ञासु** वि० (सं) अपने को जानने की अभिलाषा रखने वाला।

**आत्मज्ञ** पुं० (सं) सिद्ध, ब्रह्मज्ञ।

**आत्मज्ञान** पुं० (सं) १-आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध में जानकारी। ब्रह्म का साक्षात्कार।

**आत्मज्ञानी** पुं० (सं) आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाला।

**आत्म-त्याग** पुं० (सं) दूसरों की भलाई के लिए अपने स्वार्थ का त्याग।

**आत्मनिवेदन** पुं० (सं) १-अपना सब कुछ देवता को अर्पित कर देना; आत्मसमर्पण। २-नवधा भक्ति में से अन्तिम भक्ति।

**आत्म-प्रधान** वि० (सं) जो मूल तत्व (आत्मा) से सम्बन्ध रखता हो, जो गुण, रूप, कार्य आदि का कारण होता है। (सब्जेक्टिव)।

**आत्म-प्रशंसा** स्त्री० (सं) अपनी बड़ाई आप करना।

**आत्म-बल** पुं० (सं) अपना तथा अपनी आत्मा का बल।

**आत्मबोध** पुं० (सं) आत्मज्ञान।

**आत्म-भू** वि० (सं) १-अपने शरीर से उत्पन्न। २-आप ही आप उत्पन्न। पुं० (सं) १-पुत्र। २-विष्णु कामदेव। ४-ब्राह्मण। ५-शिव।

**आत्म-रक्षण** पुं० (सं) अपना बचाव; अपनी रक्षा।

**आत्म-रक्षा** स्त्री० (सं) अपनी रक्षा।

**आत्म-वंचना** स्त्री० (सं) स्वयं अपने को धोखा देना।

**आत्मा-वाद** पुं० (सं) आध्यात्मवाद।

**आत्म-विज्ञान** पुं० (सं) योगाभ्यास के द्वारा परमात्मा के स्वरूप की जानकारी।

**आत्मविद** पुं० (सं) ब्रह्मज्ञानी।

**आत्मविद्या** स्त्री० (सं) आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध में जानकारी बताने वाली विद्या; ब्रह्म-विद्या; आध्यात्मविद्या।

**आत्म-विस्मृत** वि० (सं) जो अपने को ही भूल गया हो कि मैं कौन या क्या हूँ।

**आत्म-विस्मृति** स्त्री० (सं) अपने को भूल जाना।

**आत्म-शुद्धि** स्त्री० (सं) मन की पवित्रता।

**आत्मश्लाघा** पु० (सं) अपनी प्रशंसा आप करना।

**आत्म-संयम** पु० (सं) इच्छाओं को वश में रखना।

**आत्म-समर्पण** पु० (सं) अपने आपको किसी के हाथ सौंपना। (सरेंडर)।

**आत्म-सम्मान** पु० (सं) अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान।

**आत्मसात्** वि० (सं) सर्व प्रकार से अपने में लीन या अधीन किया हुआ। पु० (सं) पचाना; हड़पना।

**आत्म-हत्या** स्त्री० (सं) आत्म-घात; खुदकुशी।

**आत्मा** स्त्री० (सं) १-अन्तःकरण के व्यापारों का ज्ञान कराने वाली सत्ता; जीवात्मा। २-मन। ३-हृदय।

**आत्माभिमान** पु० (सं) अपने मान या प्रतिष्ठा का खयाल।

**आत्माराम** पु० (सं) १-योगी। २-जीव। ३-तोता।

**आत्म[illegible]** पु० (सं) अपने बल पर सब कार्य करने [illegible]।

**आ[illegible]** (सं) १-आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला। २-[illegible]। ३-मानसिक।

**आत्मीय** वि० (सं) अपना; निज का। पु० (सं) रिश्तेदार।

**आत्मीयता** स्त्री० (सं) अपनापन; मित्रता।

**आत्मोत्सर्ग** पु० (सं) स्वार्थ का परित्याग।

**आत्मोद्धार** पु० (सं) १-मोक्ष। २-छुटकारा।

**आत्मोन्नति** स्त्री० (सं) १-आत्मा की उन्नति। २-अपना [illegible]।

**आत्यंतिक** वि० (सं) अतिशय; अत्यधिक।

**आत्ययिक** वि० (सं) सहसा ऐसे रूप में सामने आने वाला, जिस[illegible] कोई सम्भावना न हो। (एमर्जेन्ट)

**आ[illegible]** वि० (सं) अत्रि गोत्र वाला। पु० (सं) अत्रि के पुत्र।

**आत्रेयी** स्त्री० (सं) एक तपस्विनी का नाम

**आथ** पु० (हि) अर्थ। क्रि० (हि) अस्त होना।

**[illegible]थना** क्रि० (हि) होना।

**[illegible]थि** स्त्री० (हि) १-स्थिरता। २-धन; पूँजी।

**[illegible]थी** स्त्री० (हि) पूँजी, धन।

**आद** वि० (सं) [illegible]ने वाला; खा जाने वाला।

**आदत** स्त्री० (अ) १-स्वभाव। २-अभ्यास।

**[illegible]दम** पु० (अ) १-यहूदियों और मुसलमानों के अनुसार [illegible] आदि प्रजापति। २-आदमी।

**[illegible]दमजाद** पु० (अ) आदमी की सन्तान; मनुष्य।

**आदमियत** स्त्री० (अ) मनुष्यता।

**आदमी** पु० (अ) मनुष्य।

**आदर** पु० (सं) १-सम्मान। २-प्रतिष्ठा।

**आदरणीय** वि० (सं) आदर के योग्य।

**आदरना** क्रि० (हि) आदर करना।

**आदरभाव** पु० (सं) सम्मान, सत्कार।

**आदरस** पु० (हि) आदर्श।

**आदर्श** पु० (सं) १-दर्पण, शीशा। २-व्याख्या। ३-वह जिसके रूप तथा गुण आदि का अनुकरण किया जाय, नमूना, (आइडियल)।

**आदर्शवाद** पु० (सं) वह वाद या मत जिसके अनुसार मनुष्य को सदा अपने सामने आदर्श की सिद्धि के लिये सब कार्य करने चाहिएँ, (आइडियलिज्म)।

**आदर्शवादी** वि० (सं) आदर्शवाद को मानने वाला और उसके अनुसार चलने वाला, (आइडियलिस्ट)

**आदर्श-विज्ञान** पु० (सं) वह विज्ञान जिसमें कल्पना के आधार पर आदर्शों का उल्लेख होता है। (नारमेटिव साइंस)।

**आदर्शित** वि० (सं) दिखलाया हुआ।

**आदर्शीकरण** पु० (सं) किसी वस्तु या काम को आदर्श रूप देना; (आइडियलाइजेशन)।

**आदाता, आदाता** पु० (सं) १-लेने और ग्रहण करने वाला। २-शब्द ग्रहण करने वाला यन्त्र या उपकरण जिसमें कानों में शब्द सुनाई पड़ते हैं। (रिसीवर)। ३-आग्राहक। ४-प्रतिग्राहक।

**आदान** पु० (सं) १-लेना; ग्रहण करना। २-वह जो कर, शुल्क आदि के रूप में लिया जाय।

**आदानप्रदान** पु० (सं) लेना और देना।

**आदाय** वि० (सं) ग्राह्य। पु० (सं) १-ग्रहण करने की क्रिया या भाव। २-अ[illegible] पूर्वक लिया हुआ धन।

**आदि** वि० (सं) १-प्रथम[illegible] २-बिलकुल। पु० (सं) १-मूलकारण। २-[illegible]। अव्य० (सं) वगैरह।

**आदिक** अव्य० (सं) आदि; वगैरह।

**आदि-कवि** पु० (सं) वाल्मीकि ऋषि।

**आदिकारण** पु० (सं) सृष्टि का मूलकारण।

**आदित** पु० (हि) देखो 'आदित्य'।

**आदित्य** पु० (सं) १-अदिति के पुत्र। २-देवता। ३-सूर्य। ४-इन्द्र।

**आदित्यवार** पु० (सं) रविवार।

**आदिदेव** पु० (सं) १-विष्णु। २-शिव। ३-सूर्य।

**आदिनांक** पु० (सं) आधुनिक या आजकल की रुचि उपयोगिता अथवा प्रचलन के अनुसार; ठीक। (अपटुडेट)।

**आदिनाथ** पु० (सं) शिव।

**आदिपुरुष** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-किसी वंश का मूलपुरुष।
**आदिम** वि० (सं) प्रथम; पुराना।
**आदिम जाति** स्त्री० (सं) वह जाति जो किसी देश में सबसे पहले रहती आई हो। (प्रिमिटिव रेस)।
**आदिम निवासी** पु० (सं) आदिवासी।
**आदिमान** पु० (सं) वह आदर या मान जो किसी को औरों की अपेक्षा पहले दिया जाता है। (प्रेरोगेटिव)।
**आदिवासी** पु० (सं) किसी देश अथवा राज्य के मूल निवासी; आदिम निवासी।
**आदिष्ट** वि० (सं) १-जिसे आदेश मिला हो। २-जिसके सम्बन्ध में कोई आदेश दिया गया हो।
**आदी** वि० (अ) अभ्यस्त। स्त्री० अदरक।
**आदृत** वि० (सं) सम्मानित।
**आदेय** वि० (सं) १-लेने योग्य। २-जिस पर कर, शुल्क आदि के रूप में कुछ लिया जा सके। ३-जिसपर कर आदि लगाया गया हो। (लेवीड)। पुं० (सं) वह धन जो हमें औरों से पाना हो अथवा जो हमें अपनी संपत्ति घर, मेज, कुरसी आदि के बेचने से प्राप्त हो सकता हो; परिसंपत्; (असेट्स)
**आदेश** पुं० १-आज्ञा। २-उपदेश। ३-ज्योतिष में ग्रहों का फल। ४-व्याकरण में अक्षर परिवर्त्तन।
**आदेशक** पुं० (सं) १-आज्ञा देने वाला। २-प्रसर।
**आद्यंत** क्रि० वि० (सं) आदि से अन्त तक।
**आद्य** वि० (सं) पहला; आरम्भ का।
**आद्य-शेष** पुं० (सं) हिसाब से पिछले पृष्ठ की बाकी जो नये खाते या नये पृष्ठ पर चली जाय। (ओपनिंग बैलेंस)।
**आद्या** स्त्री० (हि) १-दुर्गा। २-दस महाविद्याओं में से प्रथम।
**आद्याक्षर** पुं० (सं) किसी व्यक्ति के नाम के भिन्न-भिन्न शब्दों या खंडों के आरम्भ के अक्षर जो प्रायः संक्षिप्त हस्ताक्षर आदि के रूप में) लिखे जाते हैं। (इनीशल्स)।
**आद्याक्षरित** वि० (सं) जिस पर पूरे हस्ताक्षर के बजाय नाम के आरम्भ के अक्षर लिख दिये गये हों। (इनीशल्ड)।
**आद्योपांत** क्रि० वि० (सं) आरम्भ से अन्त तक।
**आद्रा** स्त्री० (हि) देखो 'आर्द्रा'।
**आध** वि० (हि) दो समान भागों में से एक, आधा
**आधर्षण** पुं० (सं) न्यायालय द्वारा अभियुक्त को दोषी समझकर अपराधी मानना तथा दंड देना। (कनविक्शन)।
**आधर्षित** वि० (सं) अपराध सिद्ध होने पर न्यायालय द्वारा दंड दिया हुआ। (कन्विक्टेड)।
**आधा** वि० (हि) दो समान भागों में से एक, अर्द्ध।
**आधा-तीहा** वि० (हि) आधे अथवा तिहाई के लगभग कुछ या थोड़ा अंश।
**आधान** पुं० (सं) १-रखना। २-गिरवी रखना।
**आधायक** वि० (सं) लाने वाला।
**आधार** पुं० (सं) १-सहारा। २-व्याकरण में अधिकरण कारक। ३-थाला; वृक्ष का। ४-नींव। ५-आश्रयदाता। ६-पात्र। ७-वह जिसके सहारे कोई वस्तु बनी या ठहरी हो। (ग्राउंड)।
**आधारित** वि० (सं) अवलंबित; आश्रित।
**आधारी** वि० (सं) सहारे पर रखने या रहने वाला। स्त्री० (सं) साधुओं के टेकने की लकड़ी।
**आधासीसी** स्त्री० (हि) आधे सिर का दर्द।
**आधि** स्त्री० (सं) १-मानसिक पीड़ा। २-बन्धक।
**आधिकरणिक** वि०(सं) १-न्यायालय से सम्बन्धित। २-न्यायालय की आज्ञा या आदेश से होने वाला।
**आधिकर्ता** पुं० (सं) ऋण के बदले सब कुछ बन्धक रखने वाला व्यक्ति; परिपणधाता। (पान्‌ब्रर्)।
**आधिकारिक** वि० (सं) अधिकार युक्त; अधिकार-संपन्न। पुं० (सं) १-अधिकारी। २-दृश्य काव्य की कथा वस्तु।
**आधिकारिकी** स्त्री० (सं) लोगों का वह समूह जो किसी अधिकार का प्रयोग करता हो। (ऑथारिटी)
**आधिक्य** पु० (सं) अधिकता।
**आधिदैविक** वि० (सं) १-दैवकृत। २-जो साधारणतया प्राकृतिक या लोकगत न हो, बल्कि उससे बढ़-चढ़ कर हो। (सुपर-नेचुरल)।
**आधिपत्य** पुं० (सं) प्रभुत्व; स्वामित्व।
**आधिभौतिक** वि०(सं) (वह दुःख) शरीरधारियों द्वारा प्राप्त।
**आधि-व्याधि** स्त्री० (सं) शारीरिक और मानसिक विपत्ति।
**आधीन** वि० (हि) देखो 'अधीन'।
**आधुनिक** वि०(सं) आजकल का; अर्वाचीन। (माडर्न)
**आधृत** वि० (सं) १-धारण किया हुआ। २-जो किसी के आधार पर हो।
**आधेय** पुं० (सं) किसी के सहारे पर टिकी हुई वस्तु। वि० (सं) १-ठहराने योग्य। २-रचने योग्य। ३-रहन रखने योग्य।
**आध्यात्मिक** वि० (सं) १-आत्मा-सम्बन्धी। २-ब्रह्म और जीव सम्बन्धी।
**आनंद** पुं० (सं) हर्ष; प्रसन्नता।
**आनंदना** क्रि० (हि) १-प्रसन्न होना। २-प्रसन्न करना।
**आनंद-बधाई** स्त्री० (सं+हि) १-मंगल अवसर। २-मंगल उत्सव।
**आनंद-मंगल** पुं० (सं) वह सुखद बात या शुभ अवसर जिसमें सब मिलकर आनन्द मनाते हों।

**आनंद-मत्ता** स्त्री० (सं) आनन्द सम्मोहिता।
**आनंद-वन** पुं० (सं) काशी नगरी।
**आनंद-सम्मोहिता** स्त्री० (सं) वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनन्द में अत्यधिक निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो।
**आनंदित** वि० (सं) हर्षित; प्रसन्न।
**आनंदी** वि० (सं) प्रसन्न रहने वाला; सुखी।
**आन** स्त्री० (सं) १-मर्यादा। २-शपथ। ३-घोषणा। ४-ढंग, तर्ज। ५-क्षण, लमहा। ६-अकड़। ७-लिहाज। ८-प्रतिज्ञा। ९-आज्ञा। वि० (हि) दूसरा, और।
**आनक** पुं०(सं) १-दुंदभी। २-गरजता हुआ बादल
**आनत** वि० (सं) १-झुका हुआ। २-नम्र।
**आन-तान** स्त्री० (हि) देखो 'आन-बान'।
**आनद्ध** वि० (सं) कसा हुआ, मढ़ा हुआ। पुं० (सं) चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा, ढोल, मृदंग आदि।
**आनन** पुं० (सं) १-मुख। २-मुखड़ा।
**आनन-फानन** क्रि० वि० (अ) तुरन्त, फौरन।
**आनना** क्रि० (हि) लाना।
**आन-बान** स्त्री० (हि) १-तड़कभड़क; ठाटबाट। २-अदा, ठसक।
**आनम्य-संविधान** पुं० (सं) ऐसा संविधान जिसमें देशकाल की आवश्यकता के अनुसार सरलता से परिवर्तन किया जा सके। (फ्लेक्सिबिल-कॉंस्टिट्यूशन)।
**आनयन** पुं० (सं) १-लाना। २-उपनयन संस्कार।
**आनर्त** पुं० (सं) १-द्वारकापुरी या प्रदेश। २-इस देश का निवासी। ३-नृत्यशाला। ४-युद्ध।
**आना** पुं० (हि) १-रुपये का सोलहवाँ भाग। २-किसी चीज का सोलहवाँ हिस्सा। क्रि० (हि) १-बुलाने वाले के पास पहुँचना। २-प्राप्त होना। ३-उपज[illegible]। ४-आमदनी [illegible]। ५-फलफूल लगना।
**आनाकानी** स्त्री० (हि) १-टालमटोल। २-कानाफूसी
**आनि** स्त्री० (हि) आन।
**आनी-जानी** वि० (हि) अस्थिर। स्त्री० (हि) नश्वरता
**आनीत** वि० (सं) ले आया हुआ।
**आनुकूल्य** पुं० (सं) अनुकूल होने का भाव; अनुकूलता।
**आनुतोषिक** पुं० [illegible]) सन्तुष्ट या प्रसन्न करने के निमित्त [illegible] गया धन। (ग्रेचुइटी)।
**आनुपातिक** [illegible] अनुपात की दृष्टि से ठीक (प्रोपोर्शनल)।
**आनुपाति**[illegible] [illegible]) वह चुनाव प्रणाली जिसके [illegible] को उनकी संख्या के अनुपात [illegible] जाने की व्यवस्था की [illegible]। [illegible] (प्रोपोर्शनल रिप्रेजेंटेशन)।
**आनुपूर्व** वि० (सं) क्रमागत।
**आनुपूर्वी** वि० (सं) क्रमानुसार।
**आनुमानिक** वि० (सं) अनुमान से सोचा हुआ, खयाली।
**आनुवंशिक** वि० (सं) जो किसी वंश में होता आया हो और आगे भी होते रहने की सम्भावना हो। (हेरिडिटरी)।
**आनुषंगिक** वि० (सं) १-गौण; अप्रधान। २-प्रासंगिक, आकस्मिक।
**आनुषद** पुं० (सं) किसी विश्वविद्यालय की व्यवस्थापिका या शासिका सभा का सदस्य। (सेनेटर)।
**आप** सर्व० (सं) १-स्वयम्; खुद। २-'तुम' और 'वे' के स्थान पर होने वाला आदरसूचक प्रयोग। पुं० (सं) जल; पानी।
**आपकाज** पुं० (हि) १-अपना काम। २-स्वार्थ।
**आपगा** स्त्री० (सं) नदी।
**आपचारी** स्त्री० (हि) स्वेच्छाचार। वि० (हि) स्वेच्छाचारी।
**आपजात्य** पुं० (सं) गुण आदि की दृष्टि से अपने जनक, उत्पादक अथवा मूल से कम या हीन होना। (डीजेनरेशन)।
**आपत्काल** पुं० (सं) १-दुर्दिन। २-कुसमय।
**आपत्ति** स्त्री० (सं) १-दुःख, क्लेश। २-संकट, आफत ३-कष्ट का समय। ४-जीविका का कष्ट। ५-दोषारोपण। ६-उज्र; एतराज।
**आपत्ति-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी कार्य के सम्बन्ध में अपनी आपत्ति प्रकट की गई हो। (पेटीशन आफ आब्जेक्शन)।
**आपत्य** वि० (सं) सन्तान सम्बन्धी।
**आपद्, आपद, आपदा** स्त्री० १-दुःख। २-विपत्ति। ३-कष्ट का समय।
**आपद्धर्म** पुं० (सं) विपत्तिकाल का धर्म या व्यवसाय जैसे-ब्राह्मण के लिए वाणिज्य।
**आपन** पुं० (हि) अपना स्वरूप या अस्तित्व। क्रि० वि० (हि) अपने आप। सर्व० (हि) अपना।
**आपनपो, आपनपौ** पुं० (हि) आत्मभाव।
**आपना, आपनो** सर्व० (हि) अपना।
**आप-निधि** पुं० (सं) समुद्र।
**आपन्न** वि० (सं) १-विपत्तिग्रस्त। २-प्राप्त।
**आप-बीती** स्त्री० (हि) अपने ऊपर बीतने वाली या गुजरने वाली घटना या बात।
**आपराधिक** वि० (सं) १-अपराध सम्बन्धी। २-अपराधी। ३-अपराधशील।
**आपरूप** वि० (हि) स्वयं; खुद।
**आपस** पुं० (हि) १-सम्बन्ध; नाता; भाई-चारा। २-एक दूसरे का साथ।
**आपसदारी** स्त्री० (हि) भाईचारा; रिश्तेदारी।

**आपसी** वि० (हिं) पारस्परिक।
**आपा** पुं० (हि) १-अस्तित्व। २-अहङ्कार। ३-होश-हवाश।
**आपात** पुं० (सं) १-पतन; गिराव। २-आरम्भ। ३-अन्त। ४-अचानक किसी घटना का घटित होना। ५-अकस्मात् आई हुई संकट की स्थिति। (एमर्जेन्सी)।
**आपाततः** क्रि० वि० (सं) १-अचानक। २-अन्त में।
**आपातिक, आपाती** वि० (सं) सहसा ऐसे रूप में सामने आने वाला, जिसकी कोई सम्भावना न हो। (एमर्जेन्ट)।
**आपाधापी** स्त्री० (हि) १-अपनी-अपनी चिन्ता या फिक्र। २-खींचतान।
**आपु** सर्व० (हि) आप। पुं० (हि) अहङ्कार।
**आपुन** सर्व० (हि) अपना।
**आपुनपो** पुं० (हिं) देखो 'अपुनपौ'।
**आपुनो** सर्व (हि) अपना।
**आपुस** पुं० (हिं) १-आपस। २-आत्मीयता।
**आपूप** पुं० (हि) १-रोटी। २-टिकिया।
**आपूर** वि० (स) पूरा; भरा।
**आपूरना** क्रि० (हि) भरना।
**आपूर्त्ति** स्त्री० (स) देखो 'समायोग'।
**आपेक्षिक** वि० (सं) १-अपेक्षा रखने वाला। २-निर्भर रहने वाला।
**आप्त** वि०(सं)१-प्राप्त। २-दक्ष। ३-विषय को भली-भाँति जानने वाला। ४-प्रामाणिक। पुं० (सं) १-ऋषि। २-शब्दप्रमाण। ३-भाग का लब्ध (गणित)
**आप्तकाम** पुं० (सं) जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो।
**आप्तपुरुष** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो सब बातों का ज्ञाता हो और जिसकी बातें प्रामाणिक मानी जायें
**आप्ति** स्त्री० (सं) प्राप्ति।
**आप्लावन** पुं० (सं) डूबना; भिगोना।
**आप्लावित** वि० (सं)१-डुबाया हुआ; २-भीगा हुआ
**आफत** स्त्री०(अ) १-आपत्ति; विपत्ति। २-कष्ट; दुःख ३-दुर्दिन।
**आफू** स्त्री०(हि) अफीम।
**आबंध** पुं० (स) १-निश्चित बात अथवा समझौता, २-गाँठ। ३-भूमि कर अथवा राजस्व कर निश्चित करने का कार्य (सेटिल्मेंट)।
**आबंध-अधिकारी** पुं०(स) वह सरकारी अफसर जो भूमिकर या राजस्व कर निश्चित करता है (सेटिल्मेट-आफीसर)।
**आबंधन** पुं०(सं) १-भलीभाँति बाँधना; २-देखो 'आबंध'।
**आब** स्त्री० (फा) १-चमक; २-शोभा। पुं० जल।
**आबकार** पुं० (फा) शराब बनाने तथा बेचने वाला कलवार।
**आबकारी** स्त्री० (फा) १-शराब बेचने का स्थान, शराबखाना। २-मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखने वाला सरकारी विभाग।
**आबकारी-शुल्क** पुं० (फा+सं) मादक द्रव्यों के उत्पादन तथा बिक्री पर लगने वाला कर या शुल्क, (एक्साइज ड्यूटी)।
**आबखोरा** पुं० (फा) १-पानी पीने का पात्र; गिलास २-प्याला, कटोरा।
**आबदाना** पुं० (फा) १-अन्न-जल। २-जीविका। ३-रहने का संयोग।
**आबदार** वि० (फा) चमकीला। पुं० (फा) एक प्रकार की पुरानी तोप।
**आबद्ध** वि० (सं) १-बंधा हुआ। २-कैद।
**आबनूस** पुं० (फा) एक वृक्ष का जिसकी लकड़ी काली और भारी होती है।
**आब-पाशी** स्त्री० (फा) सिंचाई।
**आबरवाँ** स्त्री० (फा) एक प्रकार का महीन कपड़ा।
**आबरू** स्त्री० (फा) प्रतिष्ठा। इज्जत।
**आबहवा** स्त्री० (फा) जलवायु।
**आबाद** वि० (फा) १-बसा हुआ। २-उपजाऊ।
**आबादी** स्त्री० (फा) १-बस्ती। २-जन-संख्या। ३-वह भूमि जिस पर खेती होती है।
**आभ** प्रत्य० (सं) आभा से युक्त।
**आभरण** पुं० (सं) १-आभूषण। २-पालन-पोषण।
**आभरित** वि० (सं) अलंकृत।
**आभार** पुं० (सं) १-बोझ; भार। २-गृहस्थी का बोझ या भार। ३-एहसान; उपकार। ४-उत्तरदायित्व जिम्मेदारी।
**आभारक, आभारी** पुं० (सं) वह जो उपकार माने; उपकृत।
**आभास** पुं० (सं) १-झलक। २-संकेत। ३-मिथ्या ज्ञान। ४-निशान।
**आभासवाद** पुं० (सं) वह दार्शनिक मत या वाद जिसके अनुसार ऐसा माना जाता है कि जितनी अमूर्त्त धारणाएँ तथा भावनायें हैं, वह सब नाम मात्र की है, उनकी वास्तविक सत्ता नहीं है।
**आभासीन** वि० (हि) आभास रूप में दीख पड़ने वाला
**आभिजात्य** पुं० (स) कुलीनों के से लक्षण तथा गुण।
**आभीर** पुं० (सं) अहीर, ग्वाला।
**आभुक्ति** (सं) (सं) किसी सुख सुविधा का पहले से प्राप्त लाभ। (ईज़मेंट)।
**आभूषण** पुं० (सं) १-गहना। २-वह वस्तु अथवा बात जिसके द्वारा अन्य वस्तु या बात की शोभा में वृद्धि हो।(ऑर्नामेंट)।
**आभोग** पुं० (सं) १-पूर्ण लक्षण। २-किसी पद्य के बीच कवि के नाम का उल्लेख। ३-सुख आदि का

पूरा अनुभव।

**आभ्यंतर** वि० (सं) १-भीतर का। २-आन्तरिक।

**आभ्यंतर-व्यापार** पुं० (सं) अन्तर्वाणिज्य।

**आमंत्रण** पुं० (सं) निमन्त्रण; न्योता।

**आमंत्रित** वि० (सं) १-बुलाया हुआ। २-निमन्त्रित

**आमंत्री** वि० (सं) आमन्त्रण करने या बुलाने वाला (इनवाइटी)।

**आम** पुं० (हि) १-एक पेड़ जिसके फल खाये और चूसे जाते है। २-इस वृक्ष का फल। ३-देखो 'आंव' वि० (अ) १-साधारण। २-जनता का। ३-विख्यात प्रसिद्ध।

**आमक** पुं० (सं) वह स्थान या श्मशान जहाँ पशु, पक्षियों के भक्षण के लिए शव फेंक दिये जाते है

**आमद** स्त्री० (फा) १-आगमन, आना। २-आय।

**आमदनी** स्त्री० (फा) १-आय। २-देशान्तर से आया हुआ माल; आयात।

**आमन** स्त्री० (हि) १-साल भर में एक ही फसल उत्पन्न करने वाली भूमि। २-जाड़े में होने वाली धान की फसल।

**आमना-सामना** पुं० (हि) १-मुकाबला। २-भेंट।

**आमय** पुं० (सं) रोग।

**आमरख** पुं० (हि) आमर्ष।

**आमरखना** क्रि० (हि) क्रोधित होना।

**आमरण** क्रि० वि० (सं) मृत्युपर्यन्त; मरणकाल तक

**आमर्ष** पुं० (सं) १-क्रोध। २-असहनशीलता।

**आमलक, आमला** पुं० (सं) आँवला।

**आम-वात** पुं० (सं) आँव गिरने और पैर सूज जाने का एक रोग।

**आमशूल** पुं० (सं) आँव के कारण पेट में ऐंठन तथा दर्द होने का रोग।

**आमाशय** पुं० (सं) पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न जाता और पचता है, जठर।

**आमिर** पुं० (हि) देखो 'आमिल'।

**आमिल** पुं० (अ) १-कार्यकर्ता। २-अधिकारी, हाकिम। ३-सयाना; ओझा। पुं० (हि) सूखे आम की खटाई।

**आमिष** पुं० (सं) १-मांस; गोश्त। २-भोग्य वस्तु। ३-लालच।

**आमुख** पुं० (सं) १-प्रस्तावना। २-नाटक का एक अंग।

**आमूल** क्रि० वि० (सं) जड़ तक; बिलकुल; पूर्णरूप से

**आमेजना** क्रि० (फा) मिलाना।

**आमोद** पुं० (सं) १-हर्ष। २-दिल-बहलाव।

**आमोद-प्रमोद** पुं० (सं) १-मन-बहलाव के काम। २-हँसी-खुशी।

**आम्र** पुं० (सं) १-आम का वृक्ष। २-आम नामक फल।

**आय** स्त्री० (सं) आमदनी।

**आयत** वि० (सं) १-लम्बा-चौड़ा, विस्तृत। २-जिसके चारों कोण आपस में बराबर और समकोण हो। पुं० (सं) ज्यामिति के अनुसार वह क्षेत्र जिसकी आमने सामने की चारों भुजाएँ बराबर तथा चारों कोण समकोण हों। (रेक्टैंगिल) स्त्री० (अ) कुरान का वाक्य।

**आयतन** पुं० (सं) १-मकान। २-मन्दिर। ३-ठहरने का स्थान।

**आयति** स्त्री० (सं) १-आयतन; विस्तार। २-वह सीमा जहाँ तक कोई वस्तु अथवा बात पहुँचती या जा सकती हो। (एक्सटेन्ट)।

**आयत्त** वि० (सं) अधीन; मातहत।

**आय-व्यय** पुं० (सं) आमदनी और खर्च।

**आयव्ययक** पुं० (सं) देखो 'आयव्ययिक'।

**आयव्ययन-फलक** पुं० (सं) तलपट; देयादेयफलक।

**आयव्ययिक** पुं० (सं) किसी देश, राज्य, संस्था आदि की साल भर में या किसी निश्चित काल तक होने वाली सम्भावित आय तथा उसी अवधि के सम्भावित व्यय के अनुमान का लेखा। (बजट)।

**आयसु** स्त्री० (हि) आज्ञा; आदेश।

**आया** क्रि० (हि) उपस्थित हुआ। स्त्री० धाय। अव्य० (फा) १-क्या। २-या।

**आयात** वि० (सं) आया हुआ। पुं० (सं) व्यापार के निमित्त बाहर से आया हुआ माल। (इम्पोर्ट)।

**आयातक** पुं० (सं) बाहर से माल मंगाने वाला, वह किसी वस्तु का आयात करे।

**आयाम** पुं० (सं) १-विस्तार; लम्बाई। २-नियमन

**आयास** पुं० (सं) परिश्रम।

**आयु** स्त्री० (सं) वय, उम्र।

**आयुक्त** वि० (सं) नियुक्त। पुं० (सं) १-किसी कार्य विशेष के निमित्त नियुक्त 'आयोग' का सदस्य जिसे विशेष अधिकार दिया गया हो। (कमिश्नर)

**आयुध** पुं० (सं) हथियार।

**आयुध-अधिनियम, आयुध-विधान** पुं० (सं) वह अधिनियम जिसमें जनता द्वारा आयुध रखने तथा उनके प्रयोग से सम्बन्धित नियम होते हैं। (आर्म्स-एक्ट)।

**आयुधागार** पुं० हथियार रखने का स्थान।

**आयुधीय** वि० (सं) आयुधों या शस्त्रों से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० (सं) युद्ध में प्रयुक्त होने वाले अस्त्र-शस्त्र तथा उनके उपकरण। (एम्यूनिशन)।

**आयुर्बल** पुं० (सं) आयु का परिमाण, उम्र।

**आयुर्वेद** पुं० (सं) चिकित्साशास्त्र।

**आयुष्मान्** वि० (सं) चिरञ्जीवी; दीर्घायु।

**आयुष्य** पुं० (सं) आयु; उमर।

**आयोग** पुं० (सं) किसी कार्य विशेष की मर्मांसा करने

के निमित्त नियुक्त किये गये व्यक्तियों का मंडल। (कमीशन)।
**आयोजन** पुं०(सं) १-किसी कार्य में लगना, नियुक्ति २-किसी कार्य के निमित्त पहले से किया जाने वाला प्रबंध। ३-उद्योग। ४- सामग्री।
**आयोजित** *वि०* (सं) आयोजन किया हुआ।
**आरंभ** पुं० (सं) १-किसी कार्य की प्रथम अवस्था का संपादन, शुरू। २-किसी वस्तु का आदि, उत्पत्ति।
**आरंभतः** *क्रि० वि०* (सं) १-बिलकुल शुरू से। २-बिलकुल नये सिरे से।
**आरंभना** *क्रि०* (हि) शुरू होना।
**आरंभिक** *वि०* (सं) १-आरंभ का। २-किसी कार्य को करने से पूर्व, उसकी तैयारी व्यवस्था आदि से सम्बन्धित।
**आर** *स्त्री०* (हि) १-कील जो साँटे में लगी रहती है २-मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा ३-चमड़ा छेदने का सूआ, सुतारी। ४-बिच्छू, भिड़ आदि का डंक ५-हठ; जिद। पुं० (सं) १-सिरा; किनारा। २-'पार' का उल्टा।
**आरक्त** *वि०* (सं) १-लाल। २-लालिमा लिये हुए।
**आरक्षक** पुं० (सं) नगर में व्यवस्था बनाये रखने वाला सरकारी कर्मचारी। दंडधारी। (पुलिस मैन)
**आरक्षक बल** पुं० (सं) देखो 'आरक्षिक बल'।
**आरक्षिक** *वि०* (सं) आरक्षी या पुलिस विभाग से सम्बन्ध रखने वाला; पुलिस का।
**आरक्षिक-क्रिया** *स्त्री०* (सं) वह कार्यवाई जो कुछ परिमित स्वतन्त्रता का भोग करने वाले किसी क्षेत्र में वहाँ की अव्यवस्था, उपद्रव आदि दूर करने के निमित्त किसी वरिष्ठ राज सत्ता के द्वारा की जाती है। (पुलिस एक्शन)।
**आरक्षिक-बल** पुं० (सं) शासन का वह बल जो आरक्षियों तथा उनके अधिकारियों के रूप में होती है (पुलिसफोर्स)।
**आरक्षी** पुं० (सं) १-वह विभाग जिसका कार्य देश में शान्ति व्यवस्था बनाये रखना तथा अपराधियों आदि को पकड़ कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करना होता है। (पुलिस)। २-इस विभाग में काम करने वाला कर्मचारी। ३-इस विभाग के कार्य तथा कर्त्तव्य।
**आरज** *वि०* (हि) आर्य।
**आरजा** पुं० (अ) रोग।
**आरजू** *स्त्री०* (फा) १-अनुनय। २-इच्छा।
**आरण्यक** *वि०* (फा) जङ्गली।
**आरत** *वि०* (हि) आर्त्त।
**आरती** *स्त्री०* (हि) १-किसी मूर्त्ति के ऊपर दीपक घुमाने का कार्य; निराजन। २-वह पात्र जिसमें घी की बत्ती रखकर घुमाई जाती है। ३- वह स्तोत्र या गीत जो ऐसे समय पढ़ा जाता है।
**आरन** पुं० (हि) अरण्य; वन।
**आरपार** पुं० (सं) यह छोर और वह छोर। *क्रि० वि०* (हि) एक सिरे से दूसरे सिरे तक।
**आरबल, आरबला** पुं० (हि) देखो 'आयुर्बल'।
**आरब्ध** *वि०* (सं) आरम्भ या शुरू किया हुआ।
**आरभटी** *स्त्री०* (सं) १-क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा २-नाटक में एक वृत्ति का नाम।
**आरस** पुं० (हि) आलस्य। *स्त्री०* (हि) आरसी।
**आरसी** *स्त्री०* (हि) दर्पण, आइना।
**आरा** पुं० (सं) १-लकड़ी चीरने का औजार। २-लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिये की गडारी तथा पुट्ठी के मध्य जड़ी रहती है।
**आराजी** *स्त्री०* (अ) १-भूमि। २-खेत।
**आराधक** *वि०* (सं) पूजा या उपासना करने वाला।
**आराधन** पुं० (सं) १-पूजा; उपासना। २-प्रसन्न करना।
**आराधना** *स्त्री०* (सं) देखो 'आराधन'।
**आराधनीय** *वि०* (सं) पूज्य; उपास्य।
**आराधित** *वि०* (सं) जिसको आराधना की जाय।
**आराध्य** *वि०* (सं) पूज्य।
**आराम** पुं० (सं) बाग। पुं० (फा) सुख। २-स्वास्थ्य ३-थकावट मिटाना। *वि०* (फा) चङ्गा, स्वस्थ।
**आरामकुरसी** *स्त्री०* (फा+अ) एक प्रकार की लम्बी कुरसी जिस पर सुविधापूर्वक बैठा जा सकता है।
**आरि** *स्त्री०* (हि) हठ; जिद।
**आरी** *स्त्री०* हि) १-दाँतेदार लकड़ी चीरने का छोटा औजार। २-छोटी पैनी कील जो बैलों के हँकने में लगी रहती है। ३-ओर; तरफ। ४-कोर; किनारा
**आरूढ़** *वि०* (सं) १-चढ़ा हुआ; सवार। २-दृढ़; स्थिर। ३-सन्नद्ध।
**आरोग** *वि०* (हि) आरोग्य।
**आरोगना** *क्रि०* (हि) खाना।
**आरोग्य** *वि०* (सं) स्वस्थ; तन्दुरुस्त।
**आरोग्य-लाभ** पुं० (सं) बीमारी से उठने के बाद स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करना। (कॉनवेलेसेन्स)।
**आरोग्य-शाला** *स्त्री०* (सं) स्वास्थ्य लाभ के लिए, विशेषतः यक्ष्मा पीड़ित लोगों के लिए पहाड़ पर बनाया गया निवास स्थान। (सैनटोरियम)।
**आरोग्य-स्नान** पुं० (सं) रोग मुक्ति के बाद किया जाने वाला प्रथम स्नान।
**आरोग्यावकाश** पुं० (सं) वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के निमित्त दी जाती है। (मेडिकल-लीव)।
**आरोधना** *क्रि०* (हि) रोकना।
**आरोप** पुं० (सं) १-स्थापित करना, लगाना। २-

मिथ्या ज्ञान । ३-एक पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर अन्य स्थान पर लगाना । ४-किसी के विषय में यह कहना कि इसने ऐसा कहा है ।

**आरोपक** वि० (सं) आरोप लगाने वाला ।

**आरोपण** पुं० (सं) देखो 'आरोप' ।

**आरोपना** क्रि० (हि) १-लगाना । २-स्थापित करना

**आरोप-पत्र, आरोप-फलक** पुं० (सं) आरोपों की सूची या विवरण का वह पत्र जो न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । (चार्जशीट) ।

**आरोपित** वि० (सं) १-लगाया हुआ; मढ़ा हुआ । २-रोपा हुआ ।

**आरोह** पुं० (सं) ऊपर की ओर चढ़ना; चढ़ाव । २-आक्रमण, चढ़ाई । ३-घोड़े हाथी आदि पर चढ़ना; सवारी । ४-वेदान्त के अनुसार क्रमशः जीवात्मा की ऊर्ध्वगति अथवा उत्तमोत्तम योनियों को प्राप्त होना । ५-विकाश । ६-कारण से कार्य उत्पन्न होना । ७-सङ्गीत में स्वरों का चढ़ाव ।

**आरोहण** पुं० (सं) १-चढ़ना; सवार होना । २-सीढ़ी ।

**आरोही** वि० (सं) चढ़ने वाला । पुं० (सं) सङ्गीत में स्वर साधन । २-सवार ।

**आर्जव** पुं० (सं) १-सीधापन । २-सरलता । ३-ईमानदारी ।

**आर्त्त** वि० (सं) १-पीड़ित । २-दुखित । ३-अस्वस्थ

**आर्त्तनाद** पुं० (सं) दुःख सूचक शब्द; कराह ।

**आर्त्ति** स्त्री० (सं) १-पीड़ा; दुःख । २-दर्द ।

**आर्थ** वि० (सं) १-अर्थ से सम्बन्धित; अर्थ का । २-अर्थ के बल से सिद्ध होने वाला ।

**आर्थिक** वि० (सं) १-अर्थ या धन सम्बन्धी; माली । २-अर्थशास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली । (इकॉनामिक) ।

**आर्थी** स्त्री० (सं) १-अर्थ-सम्भव-व्यंजना । २-एक प्रकार का उपमा अलंकार ।

**आर्थीव्यंजना** स्त्री० (सं) व्यंजना का एक भेद ।

**आर्द्र** वि० (सं) १-तर; गीला । २-सना; लथपथ ।

**आर्द्रता** स्त्री० (सं) गीलापन ।

**आर्द्रा** स्त्री० (सं) १-सत्ताईस नक्षत्रों में से छठा नक्षत्र । २-एक वर्णवृत्त । ३-आषाढ़ का आरम्भ ।

**आर्नव** पुं० (हि) अर्णव; सागर ।

**आर्य** वि० (सं) १-श्रेष्ठ; उत्तम । २-पूज्य; बड़ा । ३-श्रेष्ठकुलोत्पन्न । पुं० (सं) सब से पहिले सभ्यता प्राप्त करने वाली एक जाति ।

**आर्यत्व** पुं० (सं) आर्य होने का भाव ।

**आर्य-पुत्र** पुं० (सं) पति को पुकारने का एक शब्द ।

**आर्यसमाज** पुं० (सं) एक धार्मिक समाज या संघटन जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द थे ।

**आर्य-समाजी** वि० (हि) आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानने या चलाने वाला ।

**आर्या** स्त्री० (सं) १-पार्वती । २-सास । ३-दादी । ४-एक अर्धमात्रिक छन्द ।

**आर्यावर्त्त** पुं० (सं) उत्तरीय भारत ।

**आर्ष** वि० (सं) १-ऋषि-सम्बन्धी । २-ऋषि-प्रणीत । ३-वैदिक ।

**आर्ष-प्रयोग** पुं० (सं) व्याकरण नियम के विरुद्ध वह प्रयोग जो प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है ।

**आर्ष-विवाह** पुं० (सं) विवाह का वह विधान जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेता था ।

**आलंकारिक** वि० (सं) १-अलंकार सम्बन्धी । २-अलंकार युक्त (भाषा) । ३-अलंकार का जानकार । ४-सजावट में बेल-बूटों से युक्त । (फ्लॉरिड) ।

**आलंब** पुं० (सं) १-सहारा । २-शरण ।

**आलंबन** पुं० (सं) १-आश्रय; सहारा । २-रस का एक अंग, जिसके अवलम्ब से रस की उत्पत्ति होती है ।

**आल** पुं० (सं) १-हरताल । २-आँसू । स्त्री० १-पौधा जिसका रंग बनता था । २-इस पौधे से बना रंग स्त्री० (देश) १-प्याज का तरा डण्ठल । २-लौकी स्त्री० (अ) १-बेटी की सन्तति । २-वंश; कुल । पुं० (हि) गीलापन ।

**आलकस** पुं० (हि) आलस्य ।

**आलजाल** वि० (हि) व्यर्थ का; ऊटपटांग ।

**आलथी-पालथी** स्त्री० (हि) बैठने का एक ढंग ।

**आलन** पुं० (हि) १-दीवारों पर लीपने की मिट्टी में मिला हुआ घास-भूसा । २-किसी साग में मिलाया जाने वाला बेसन या आटा ।

**आलपीन** स्त्री० (हि) वह घुंडीदार सूई जिससे कागज नत्थी किये जाते हैं ।

**आलम** पुं० (अ) १-संसार; दुनिया । २-दशा; अवस्था ३-जनसमूह ।

**आलमारी** स्त्री० (अ) देखो 'अलमारी' ।

**आलय** पुं० (सं) १-घर; मकान । २-स्थान ।

**आलबाल** पुं० (सं) वृक्षों के नीचे का थाँवला ।

**आलस** पुं० (हि) आलस्य ।

**आलसी** वि० (हि) सुस्त ।

**आलस्य** पुं० (सं) काम करने में अनुत्साह, सुस्ती ।

**आला** पुं० (हि) ताक; ताख । वि० (अ) श्रेष्ठ । पुं० (अ) हथियार । वि० (हि) आर्द्र; गीला ।

**आलात** पुं० देखो 'अलात' ।

**आलान** पुं० (सं) १-हाथी को बाँधने का खूंटा । २-हाथी को बाँधने की जंजीर । ३-बंधन ।

**आलाप** पुं० (सं) १-संभाषण, बातचीत । २-संगीत में सात स्वरों का राग सहित उच्चारण; तान ।

**आलापना** क्रि० (हि) १-गाना । २-सुर साधना ।

३-बोलना।

**आलापिनी** स्त्री० (सं) बाँसुरी।

**आलापी** वि० (सं) १-बोलने वाला। २-आलाप लगाने वाला। ३-गाने वाला।

**आलिंगन** पुं० (सं) गले से लगाना, भेटना।

**आलिंगना** क्रि० (हि) गले लगाना।

**आलि** स्त्री० (सं) १-सखी; सहेली। २-भ्रमरी। ३-पंक्ति, अवली।

**आलिखित** वि० (सं) १-लिखा हुआ। २-चित्रित।

**आलिम** वि० (अ) विद्वान्।

**आली** स्त्री० (हि) सखी; सहेली। वि० (अ) बड़ा; उच्च श्रेष्ठ।

**आलीशान** वि० (अ) भव्य; शानदार।

**आलझना** क्रि० (हि) उलझना।

**आलू** पुं०(हि) एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बनाकर खाते हैं।

**आलूचा** पुं० (फा) एक वृक्ष या फल।

**आलूबुखारा** पुं० (फा) अलूचे की जाति के एक वृक्ष का फल।

**आलेख** पुं० (सं) १-लिखावट; लिपि। २-रेखाओं का ऐसा अंकन जो प्राकृतिक घटना अथवा लौकिक व्यवहार में समयानुसार होने वाले परिवर्तन उतार-चढ़ाव आदि का सूचक होता है (ग्राफ)।

**आलेखन** पुं० (सं) १-लिखना। २-चित्रादि अंकित करना। (स्केचिंग)।

**आलेख्य** वि० (सं) लिखने योग्य। पुं० (सं) १-चित्र, तसवीर। २-इस प्रकार का अंकन जिसमें रूप रेखाएँ मात्र हों। (स्केच)।

**आलेप** पुं० (सं) लेप; पलस्तर।

**आलेपन** पुं० (सं) लेप करने का काम।

**आलैखिक** वि० (सं) आलेख सम्बन्धी।

**आलोक** पुं० (सं) १-प्रकाश; रोशनी। २-चमक। ३-किसी विषय पर लिखित टिप्पणी अथवा सूचना (नोट)।

**आलोक-चित्रण** पुं० (सं) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा प्रकाश में रहने वाली वस्तु का प्रतिबिंब लेकर चित्र बनाया जाता है।

**आलोकन** पुं० (सं) १-प्रकाश डालना। २-चमकाना ३-दिखलाना।

**आलोक-पत्र** पुं० (सं) किसी विषय को स्पष्ट करने के निमित्त स्मारक के रूप में लिखा गया लेख या पत्र। (मेमोरैण्डम)।

**आलोकित** वि० (सं) १-जिस पर प्रकाश या उजाला पड़ रहा हो। २-चमकता हुआ।

**आलोचक** वि० (सं) १-देखने वाला। २-किसी वस्तु के गुण दोष की विवेचना करने वाला।

**आलोचन** पुं० (सं) १-दर्शन। २-समालोचना। ३-किसी वस्तु के गुणावगुण का विचार।

**आलोचना** स्त्री० (सं) १-किसी वस्तु के सम्बन्ध में गुण दोष का विचार या निरूपण। २-समालोचना ३-आलोचन।

**आलोच्य** वि० (सं) आलोचना करने योग्य।

**आलोड़न** पुं० (सं) १-मथना। २-विचार।

**आलोप** पुं० (सं) १-किसी पद अथवा स्थान आदि को न रहने देना। २-किसी आदेश या निश्चय को रद्द करना (सेट-एसाइड)।

**आल्हा** पुं० (हि) १-३१ मात्राओं का एक वीर छंद। २-महोबे का एक प्रसिद्ध वीर। ३-बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन।

**आवंटन** पुं० (सं) १-भूमि संपत्ति आदि का हिस्सों में वितरण। (एलाटमेंट)। २-किसी के लिए भूमि, मकान आदि का कोई भाग निर्धारित करना। (एलाटमेंट)।

**आवंट्य** पुं० (सं) वह जिसे को भूमि, संपत्ति आदि आवंटन में दी गई हो। (एलाटी)।

**आव** स्त्री० (हिं) आयु। प्रत्य० (हिं) वह प्रत्यय जो क्रियाओं की धातुओं में लग कर उनमें स्थिति, भाव इत्यादि के अर्थ सूचित करता है।

**आवज, आवझा** पुं० (हि) ताशा नामक बाजा।

**आवटना** पुं० (हि) १-उथल पुथल। २-संकल्प-विकल्प क्रि० (हि) खौलना; औटना।

**आवधिक** वि० (सं) अवधि या सीमा सम्बन्धी, अवधि का।

**आवन** पुं० (हि) आना; आगमन।

**आवनि** स्त्री० (हि) आवन; आना।

**आवभगत** पुं० (हि) आदरसत्कार।

**आवरण** पुं० (सं) १-परदा। २-किसी वस्तु पर लपेटा गया वस्त्र; बेठन। ३-दीवार इत्यादि का घेरा। ४-वह वस्त्र जो चलाये गये अस्त्र-शस्त्रों को निष्फल करता है।

**आवरण-पत्र, आवरण-पृष्ठ** पुं० (सं) पुस्तक की जिल्द पर लगा कागज जिस पर पुस्तक का तथा लेखक का नाम अङ्कित होता है। (कवर पेपर)।

**आवरना** क्रि० (हि) १-ढकना। २-घेरना। ३-छिपाना ४-घिरना। ५-छिपना।

**आवरा** वि० (हि) १-पराया; गैर। २-विपरीत। ३-मलिन।

**आवरित** वि० (सं) घूमा या मुड़ा हुआ।

**आवरी** स्त्री० (हि) व्याकुलता।

**आवर्जन** पुं० (सं) छोड़ देना; परित्याग।

**आवर्जित** वि० (सं) त्यागा हुआ।

**आवर्त्त** पुं० (सं) १-जल का भँवर। २-पानी बरसने वाला बादल। ३-राजवर्त्त नामक रत्न।

**आवर्त्तक** क्रि० (सं) १-घूमने या चक्कर खाने वाला।

२–निश्चित समय पर बारम्बार होने वाला। (रेकरिंग)।

**आवर्त्तन** पुं० (सं) १–चक्कर; घुमाव। २–किसी कार्य या बात का बारम्बार होना। (रिपीटीशन)। ३–मथना। ४–घटना; कार्य आदि का पुनः पुनः होना। (टेकरेन्स)।

**आवर्त्ती** वि० (सं) बार-बार होने या दिया जाने वाला (व्यय, अनुदान आदि)। (रेकरिंग)।

**आवली** स्त्री० देखो 'अवली'।

**आवश्यक** वि० (सं) १–जिसे शीघ्र होना चाहिए, जरूरी। २–जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय

**आवश्यकता** स्त्री० (सं) १–जरूरत। २–प्रयोजन।

**आवश्यकीय** वि० (सं) जरूरी।

**आवस** स्त्री० (हि) ओस।

**आवह** वि० (सं) १–लाने वाला। २–उत्पन्न करने वाला। पुं० (सं) वायु के सात स्कंधों में से प्रथम, भू-वायु।

**आवागमन** पुं० (हि) १–आवाजाई, आमदरफ्त। २–बारबार जन्म लेने तथा मरने का बन्धन।

**आवागवन, आवागौन** पुं० (हि) देखो 'आवागमन'

**आवाज** पुं० (फा) १–शब्द, ध्वनि। २–बोली; वाणी

**आवाजाई, आवाजाना, आवाजाही** स्त्री० (हि) बार-बार आनाजाना।

**आवारा** वि० (फा) १–निकम्मा। २–निठल्लू। ३–लुच्चा, बदमाश।

**आवारागर्द** वि० (फा) व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला

**आवारागर्दी** स्त्री० (फा) व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

**आवास** पुं० (सं) १–निवासस्थान। २–घर, मकान। ३–स्थायी रूप से रह जाने का स्थान। (रिजिडेन्स)

**आवासिक** वि० (सं) किसी स्थान पर स्थायी रूप से रहने या बसने वाला। (रेजिडेन्ट)।

**आवाहक** पुं० (सं) आवाहन करने या बुलाने वाला व्यक्ति।

**आवाहन** पुं० (सं) १–किसी को बुलाने का काम। निमन्त्रित करना; बुलाना।

**आवाहना** क्रि० (हि) बुलाना।

**आविर्भाव** पुं० (सं) १–प्रकट होना; सामने आना। २–प्रकट अथवा उत्पन्न होकर सम्मुख आना। (एडवेन्ट)।

**आविर्भावन** पुं० (सं) किसी नयी प्रणाली, यन्त्र आदि का निर्माण करना। (इनवेनशन)।

**आविर्भूत** वि० (सं) १–प्रकाशित; प्रकटित। २–उत्पन्न ३–उपस्थित।

**आविष्करण** पुं० (सं) आविष्कार करने की क्रिया या भाव।

**आविष्कर्त्ता** वि० (सं) आविष्कार करने वाला।

**आविष्कार** पुं० (सं) [illegible] प्रकट होना। २–किसी ऐसी वस्तु का निर्माण करना जिसके बनाने की विधि किसी को न मालूम हो। ईजाद। डिस्कवरी)

**आविष्कारक** वि० (सं) आविष्कार या ईजाद करने वाला।

**आविष्कृत** वि० (सं) १–प्रकाशित; प्रकटित। २–जाना या पता लगाया हुआ। ३–आविष्कार या ईजाद किया हुआ।

**आविष्ट** वि० (सं) किसी प्रकार के आवेश या संचार आदि से युक्त।

**आविस-पत्र** पुं० (सं) उन उद्देश्यों को घोषित करने वाला पत्र जिसके आधार पर कोई राजनैतिक दल चुनाव लड़ता है। (मैनिफेस्टो)।

**आवृत्त** वि० (सं) १–छिपा हुआ; आच्छादित। २–घिरा हुआ।

**आवृत्ति** स्त्री० (सं) १–एक ही काम को बार-बार करना। २–पढ़ना। ३–किसी पुस्तक का प्रथम बार या पुनः ज्यों का त्यों छपना।

**आवृत्तिदीपक** पुं० (सं) दीपक अलंकार का एक भेद

**आवेग** पुं० (सं) १–मन की तरंग। २–मनोविकार, घबराहट। ४–अचानक मन में उत्पन्न होने वाला वह विकार जो मनुष्य को बिना विचारे कुछ कर डालने को प्रवृत्त करता है। (इम्पल्स)।

**आवेदक** वि० (सं) निवेदन करने वाला; प्रार्थी।

**आवेदन** पुं० (सं) १–किसी कार्य के निमित्त की जाने वाली प्रार्थना; निवेदन। २–अपनी दशा का वर्णन करना।

**आवेदन-पत्र** पुं० (सं) प्रार्थना-पत्र, अरजी।

**आवेश** पुं० (सं) १–जोश। २–भूत का बाधा। ३–मृगी रोग। ४–दौरा। ५–मन की प्रेरणा।

**आवेष्टन** पुं० (सं) १–छिपाने या ढाँकने का काम। २–वह वस्तु जिसमें कुछ लपेटा हो।

**आशंका** स्त्री० (सं) १–शक; सन्देह। २–डर, भय। ३–अनिष्ट की सम्भावना, खुटका।

**आशंकित** वि० (सं) सन्देह युक्त। २–भयभीत, डरा-हुआ।

**आशंसा** स्त्री० (सं) १–आशा। २–इच्छा। ३–सन्देह ४–प्रशंसा। ५–आदर-सत्कार।

**आशय** पुं० (सं) १–अभिप्राय; मतलब। २–इच्छा ३–उद्देश्य।

**आशा** स्त्री० (सं) उम्मीद।

**आशातीत** वि० (सं) आशा से अधिक।

**आशा-मुखी** वि० (सं) किसी की ओर आशा की भावना से देखना।

**आशावाद** पुं० (सं) वह वाद या मत, कि हमेशा भली बातों की आशा रखनी चाहिए। (आप्टिमिज्म)।

**आशावादी** वि० (सं) आशावाद पर विश्वास रखने

वाला। (ऑप्टिमिस्ट)।

**आशिक** पुं० (अ) १-आसक्त। २-प्रेमी।

**आशिष** स्त्री० (सं) १-आशीर्वाद; दुआ। २-एक काव्यालंकार।

**आशी** स्त्री० (सं) साँप का विष।

**आशीर्वाद** पुं० (सं) दुआ; मंगलकामना।

**आशीविष** पुं० (सं) साँप; सर्प।

**आशीष** पुं० (सं) देखो 'आशिष'।

**आशु** क्रि० वि० (सं) शीघ्र; तुरंत।

**आशु-कवि** पुं० (सं) तत्क्षण कविता बनाने वाला कवि

**आशुग** वि० (सं) १-शीघ्रगामी। २-जो पाने वाले के पास शीघ्र पहुँच जाने को हो। (एक्सप्रेस)।

**आशुतोष** वि० (सं) शीघ्र संतुष्ट या प्रसन्न होने वाला

**आशु-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जो डाकखाने में पहुँचते ही तुरंत पाने वाले के पास भेज दिया जाय। (एक्सप्रेस लेटर)।

**आशुलिपि** स्त्री० (सं) वह लिपि जिससे सुनी हुई बातें तुरंत लिख ली जाय। (शार्टहैंड)।

**आशुलिपिक** पुं० (सं) देखो 'आशु-लेखक'।

**आशुलिपि-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें संक्षिप्त अक्षरों में लिखने की कला का विवेचन होता है। (स्टेनोग्राफी)।

**आशु-लेखक** पुं० (सं) वह लेखक जो संक्षिप्त अक्षरों में सुनी गई बातें तुरंत लिख लेता है। (स्टेनोग्राफर)।

**आश्चर्य** पुं० (सं) १-अचम्भा; विस्मय। २-रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

**आश्चर्य-चकित** वि० (सं) विस्मित; अचम्भित।

**आश्चर्यमय** वि० (सं) आश्चर्यपूर्ण।

**आश्रम** पुं० (सं) १-ऋषियों का निवासस्थान; तपोवन। २-कुटी। ३-विश्राम स्थल। ४-हिन्दू शास्त्रोक्त जीवन की भिन्न-भिन्न चार अवस्थाएं।

**आश्रय** पुं० (सं) १-आधार; सहारा। २-आधार-वस्तु। ३-शरण। ४-जीवन का आधार। ५-घर।

**आश्रव** पुं० (सं) १-नदी। २-अपराध। ३-जो किसी के बन्धन का हेतु हो।

**आश्रित** वि० (सं) १-भरोसे पर रहने वाला। २-सहारे पर टिका हुआ। ३-सेवक; दास।

**आश्लेषा** पुं० (सं) एक नक्षत्र।

**आश्वस्त** वि० (सं) जिसे आश्वासन या भरोसा मिला हो।

**आश्वासन** पुं० (सं) दिलासा; सान्त्वना।

**आश्विन** पुं० (सं) कुआर का महीना।

**आषाढ़** पुं० (सं) असाढ़।

**आषु** पुं० (हि) आखु; चूहा।

**आसंग** पुं० (सं) १-साथ; सङ्ग। २-सम्बन्ध। ३-आसक्ति।

**आसंजन** पुं० (सं) १-देखो 'आसंग'। २-कुर्की।

**आसंजित** वि० (सं) कुर्क किया हुआ।

**आसंदी** स्त्री० (सं) काठ की छोटी चौकी।

**आस** स्त्री० (सं) १-आशा। २-कामना। ३-आधार, सहारा। क्रि० वि० (हि) १-भरोसे से। २-कारण, वजह से।

**आसकत** स्त्री० (हि) आलस्य।

**आसकती** वि० (हि) आलसी।

**आसक्त** वि० (सं) १-अनुरक्त; लीन। २-मोहित, मुग्ध।

**आसक्ति** स्त्री० (सं) १-अनुरक्ति। २-प्रेम, चाह।

**आसते** क्रि० वि० (हि) १-धीरे-धीरे। २-होते हुए।

**आसतोष** पुं० (हि) आशुतोष।

**आसधा** स्त्री० (हि) अंगीकार।

**आसथान** पुं० (हि) १-बैठने का स्थान। २-सभा।

**आसन** पुं० (सं) १-बैठने की विधि; बैठक। २-वह वस्तु जिस पर बैठा जाय।

**आसना** क्रि० (हि) होना।

**आसन्न** वि० (सं) १-निकट आया हुआ। २-अन्दाजे में लगभग ठीक अथवा वास्तविक के अत्यन्त निकट पहुँचता हुआ। (एप्राक्सिमेट)।

**आसन्न-भूत** पुं० (सं) वह भूतकालिक क्रिया जिसमें वर्तमान की समीपता पाई जाय।

**आस-पास** क्रि० वि० (हि) चारों ओर, इधर उधर।

**आसमान** पुं० (फा) १-आकाश; गगन। २-स्वर्ग।

**आसमानी** वि० (फा) १-आकाश-सम्बन्धी। २-आसमान के रंग का, हलका नीला।

**आसरना** क्रि० (हि) सहारा लेना।

**आसरा** पुं० (हि) १-सहारा। २-भरोसा, आस। ३-आश्रयदाता। ४-सहायक। ५-शरण। ६-प्रत्याशा ७-आशा।

**आसव** पुं० (सं) १-खमीर उठा कर बनाई हुई औषधि। २-अर्क। ३-मदिरा।

**आसा** पुं० (हि) सोने चाँदी का डंडा जिसे चोबदार लेकर चलते हैं। स्त्री० (हि) आशा, उम्मीद।

**आसान** वि० (फा) सरल; सहज।

**आसा-बरदार** पुं० (हि) वह चोबदार जो सोने चाँदी का डंडा लेकर चलता है।

**आसा-बल्लम** पुं० (हि) बल्लमनुमा वह डंडा जिसे सवारी, बरात आदि में साथ लेकर चलते हैं।

**आसाम** पुं० (हि) भारत का एक प्रांत।

**आसामी** = देखो 'असमी' 'असामी'।

**आसार** पुं० (सं) १-चिह्न, लक्षण। २-चौड़ाई। ३-वर्षा। ४-अधिकता।

**आसारव** वि० (सं) वर्षा करने वाला।

**आसावरी** पुं० (हि) प्रातःकाल के समय गाई जाने वाली रागनी।

**आसिक** वि० (हि) आशिक, प्रेमी।

**आसिख, आसिखा** स्त्री० (हि) देखो 'आशिष'।

**आसिरबचन** पु० (स) आशीर्वाद।

**आसीन** वि० (सं) विराजमान; बैठा हुआ।

**आसीस** पुं० (हि) देखो 'आशिष'।

**आसु** पुं० (हि) जीवन शक्ति; प्राण।

**आसुग** देखो 'आशुग'।

**आसुतोष** देखो 'आशुतोष'।

**आसुर** वि० (सं) असुर-सम्बन्धी; पैशाची।

**आसुर-विवाह** पुं० (सं) कन्या के पिता को धन देकर किया गया विवाह।

**आसुरी** वि० (सं) असुर सम्बन्धी, पैशाची।

**आसुरी-माया** स्त्री० (सं) चक्कर में डालने वाली राक्षसं या दुष्टों की चाल।

**आसेर** पु० (हि) किला।

**आसोज** पुं० (हि) क्वार का महीना।

**आसौं** क्रि० वि० (हि) इस साल।

**आस्तरण** पु० (स) १-शय्या। २-बिछौना। ३-दुपट्टा।

**आस्ति** स्त्री० देखो 'अस्ति'।

**आस्तिक** वि० (सं) ईश्वर का अस्तित्व मानने वाला।

**आस्तिकता** स्त्री० (सं) आस्तिक होने का भाव।

**आस्तीन** स्त्री० (फा) पहनने के कपड़े की बाँह।

**आस्था** स्त्री० (सं) १-श्रद्धा। २-सभा; समाज। ३-आलंबन, सहारा।

**आस्थान** पु० (सं) १-बैठने का स्थान। २-सभा, दरबार।

**आस्पद** पु० (सं) १-स्थान; जगह। २-आधार। ३-कार्य। ४-पद। ५-कुल अथवा जाति।

**आस्फालन** पुं०(स) १-आत्मश्लाघा, डींग। २-संघर्ष ३-उछलकूद।

**आस्मान** पुं० देखो 'आसमान'।

**आस्मानी** वि० देखो 'आसमानी'।

**आस्मारक** पुं० (सं) १-वह काम, रचना, भवन आदि जो किसी की याद में बने। (मेमोरियल)। २-पहले कही हुई बातों आदि का स्मरण दिलाने के लिए किसी अधिकारी के पास भेजा पत्रक।

**आस्वाद** पुं० (स) स्वाद; जायका।

**आस्वादन** पु० (सं) स्वाद लेना; चखना।

**आह** स्त्री० (हि) कष्टसूचक श्वास; उसाँस। अव्य० (हि) कष्ट और ग्लानि सूचक शब्द।

**आहट** स्त्री० (हि) १-पैर का खटका। २-सुराग, टोह

**आहत** वि० (सं) घायल; जख्मी।

**आहर** पुं० (हि) १-समय। २-युद्ध, लड़ाई।

**आहरण** पुं० (स) १-छीनना; हर लेना। २-स्थानांतरित करना। ३-लेना; ग्रहण।

**आहा** अव्य० (हि) आश्चर्य और हर्ष सूचक शब्द।

**आहार** पु० (सं) भोजन; खाना।

**आहारविहार** पुं० (स) रहन-सहन।

**आहारविज्ञान, आहार-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें आहार सम्बन्धी विवेचन होता है। (डाइ-टेटिक्स)।

**आहार्य** वि०(सं) १-भोजन के योग्य। २-ग्रहण किया हुआ। पुं० (स) नायक-नायिका का परस्पर वेष बदलना।

**आहिंडन** पुं० (स) इधर-उधर बेकार घूमना, आवारागर्दी। (वेग्रैन्सी)।

**आहि** क्रि० (हि) 'असना' क्रिया का वर्त्तमान-कालिक रूप।

**आहिस्ता** क्रि० वि० (फा) धीरे-धीरे।

**आहुत** पुं० (सं) आतिथ्य-सत्कार। वि० (सं) हवन किया हुआ।

**आहुति** स्त्री० (सं) १-होम; हवन। २-हवन में डालने की सामग्री। ३-वह मात्रा जो एक बार हवन में डाली जाय।

**आहुती** स्त्री०(हि) देखो 'आहुति'।

**आहूत** वि० (स) बुलाया हुआ, निमन्त्रित।

**आहूत-पूँजी** स्त्री० (सं) किसी कारखाने आदि के बिके हुए हिस्सों का वह अंश जो आवश्यकता पड़ने पर संचालकों द्वारा हिस्सेदारों से माँगा जाय।

**आहों** क्रि (हि) 'है' का अवधी रूप।

**आह्निक** वि० (सं) दैनिक; रोजाना। पुं० एक दिन का काम।

**आह्लाद** पुं० (सं) आनन्द; खुशी।

**आह्लादक** वि० (स) आनन्ददायक।

**आह्लादित** वि० (सं) प्रसन्न; खुश।

**आह्वय** पु० (स) नाम।

**आह्वान** पुं० (स) १-बुलाना। २-ललकार। (सम्मन)। ३-यज्ञ में मन्त्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

**आह्वान-पत्र** पुं० (स) वह पत्र जिसमें किसी के लिए न्यायालय के सम्मुख उपस्थित होने की आज्ञा अंकित हो। (समन)।

[शब्दसंख्या—४६३४]

# इ

**इ** हिन्दी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है और प्रयत्न विवृत है

**इंगला** स्त्री० (सं) शरीर में इड़ा नामक एक नाड़ी।

**इंगव** पुं० (हिं) जंगली सूअर का खाँग।
**इंगित** पुं० (सं) संकेत; इशारा।
**इंगुदी** स्त्री० (सं) १-हिंगोट का पेड़। २-मालकँगनी।
**इंगुर** पुं० (हिं) देखो 'ईंगुर'।
**इंगुरौटी, इंगुरौटी** स्त्री० (हिं) इंगुर या सिन्दूर की डिबिया।
**इंच** स्त्री० (अं) एक फुट का बारहवाँ भाग।
**इंचना** क्रि० (हिं) खिंचना।
**इंजन** पुं० (अं) १-भाप की शक्ति से चलने वाला यन्त्र। २-कल।
**इंजीनियर** पुं० (अं) अभियन्ता।
**इंजीनियरिंग** पुं० (अं) अभियन्त्रण।
**इंजीनियरी** स्त्री० (हिं) अभियन्त्रण; इंजीनियर का काम।
**इंडुआ** पुं० (हिं) सिर पर बोझा उठाने के लिए बनी कपड़े की गोल गद्दी; गेंडुरी।
**इंतखाब** पुं० (अ) १-निर्वाचन। २-पसन्द। ३-पटवारी के खाते की नकल।
**इंतजाम** पुं० (अ) प्रबन्ध।
**इंतजार** पुं० (अ) प्रतीक्षा।
**इंदर** पुं० देखो 'इन्द्र'।
**इंदराज** पुं० (फा) लिखा या चढ़ाया जाना।
**इंदव** पुं० (सं) मत्तगयन्द और मालती नामक छन्द
**इंदिरा** स्त्री० (सं) लक्ष्मी।
**इंदीवर** पुं० (सं) १-नीलकमल। २-कमल।
**इंदु** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर। ३-एक की संख्या
**इंदुवदना** स्त्री० (स) एक वर्णवृत्त।
**इंद्र** वि० (सं) १-ऐश्वर्यवान; सम्पन्न। २-श्रेष्ठ। पुं० (स) १-एक वैदिक देवता। २-देवराज। ३-सूर्य ४-राजा। ५-मालिक। ६-जीव। ७-चौदह की संख्या।
**इंद्रगोप** पुं० (सं) बीर-बहूटी।
**इंद्रचाप** पुं० (स) इंद्र-धनुष।
**इंद्रजव** पुं० (सं) कुड़ा; कोरैया नामक बीज।
**इंद्रजाल** पुं० (स) मायाकर्म; जादूगरी।
**इंद्रजित, इंद्रजीत** पुं० (सं) मेघनाद।
**इंद्रजौ** पुं० (हिं) एक पौधा जिसके बीज औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं।
**इंद्रदमन** पुं० (स) १-मेघनाथ। २-बाढ़ के दिनों में नदी (विशेष कर गङ्गाजी) के जल का किसी पीपल या बरगद के वृक्ष तक पहुँचना।
**इंद्र-धनुष** पुं० (सं) वह सात रंगों का अर्धवृत्त जो वर्षा ऋतु में सूर्य के सामने की दिशा में दिखाई देता है।
**इंद्र-धनुषी** वि० (सं) १-इंद्र-धनुष से सम्बन्ध रखने वाला। २-इन्द्र-धनुष के समान सात रंगों वाला।
**इंद्र-नील** पुं० (सं) नीलम।
**इंद्र-प्रस्थ** पुं० (सं) दिल्ली के पास का एक प्रदेश जिसे पाँडवों ने नगर के रूप में बसाया था।
**इंद्रलोक** पुं (सं) स्वर्ग।
**इंद्रवज्रा** स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त का नाम।
**इंद्रवधू** स्त्री० (सं) बीर-बहूटी।
**इंद्राणी** स्त्री० (सं) १-इन्द्र की पत्नी; शची। २-इन्द्रायन।
**इंद्रायन** स्त्री० (सं) एक लता जिसका फल कडुआ होता है।
**इंद्रासन** पुं० (सं) १-इन्द्र का सिंहासन। २-राजसिंहासन। ३-वह स्थान जहाँ सब सुख मिलें।
**इंद्रिय** स्त्री० (सं) १-वह शक्ति जिसके द्वारा बाहरी पदार्थों के भिन्न-भिन्न गुणों का भिन्न-भिन्न रूपों में अनुभव होता है। २-शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है।
**इंद्रिय-निग्रह** पुं० (सं) इन्द्रियों को वश में रखना।
**इंद्रियलोलुप** वि० (सं) जिसे इन्द्रिय सुख भोग की अधिक लालसा हो।
**इंद्रियातीत** वि० (स) जो इन्द्रियों से न जाना जा सकता, अगोचर।
**इंद्रियारामी** वि० (हिं) इन्द्रियलोलुप।
**इंद्रियार्थवाद** पुं० (स) १-इन्द्रियों द्वारा सुख-भोग की लालसा। २-दर्शनशास्त्र का वह सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि हमें सब प्रकार से ज्ञान इन्द्रियों की अनुभूति से मिलते हैं। (सेन्सुअलिज्म)।
**इंद्री** स्त्री० (हिं) देखो 'इन्द्रिय'।
**इंद्री-जुलाब** पुं० (सं) वह औषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आवे।
**इंधन** पुं० (हिं) ईंधन; जलाने की लकड़ी।
**इंसाफ** पुं० (अ) न्याय।
**इकंग** वि० (हिं) एकतरफा।
**इकंत** वि० (हिं) एकान्त। क्रि० वि० (हिं) पूर्णतया, भली-भाँति।
**इक** वि० (हिं) एक।
**इक-आंक** क्रि० वि० (हिं) निश्चय करके।
**इकओर** क्रि० वि० (हि) एक साथ।
**इकटक** वि० (हिं) १-टकटकी लगाया हुआ। २-स्थिर।
**इकट्ठा** वि० (हि) एकत्रित; जमा।
**इकतर** वि० (हि) एकत्र; इकट्ठा।
**इकता, इकताई** स्त्री० (हि) एकता।
**इकतार** वि० (हिं) एक रस; समान। क्रि० वि० (हिं) लगातार।
**इकतारा** पुं० (हि) १-सितार की तरह का एक बाजा जिसमें केवल एक तार होता है।
**इकत्र** क्रि० वि० (हिं) एकत्र।
**इकबारगी** क्रि० वि० (हिं) सहसा।

**इकबाल** पुं० (अ) १-प्रताप। २-भाग्य। ३-धन। ४-स्वीकार।
**इकरार** पुं० (अ) प्रतिज्ञा; वादा।
**इकरारनामा** पुं० (अ) अनुबन्ध-पत्र।
**इकला** वि० (हि) अकेला।
**इकलाई** स्त्री० (हि) १-एक पाट की चादर। २ अकेलापन।
**इकलौता** पुं० (हि) मां बाप का अकेला पुत्र।
**इकल्ला, इकसर** वि० (हि) अकेला।
**इकसूत** वि० (हि) एकत्र; इकट्ठा।
**इकहरा** वि० (हि) एकहरा; एक तह का।
**इकहाई, इकहाऊ** क्रि० वि० (हि) १-तुरन्त। २-सहसा।
**इकाई** स्त्री० (हि) एकांक, एक का मान।
**इकेला** वि० (हि) अकेला; एकाकी।
**इकैठ** वि० (हि) इकट्ठा; एकत्र।
**इकोतर** वि० (हि) देखो 'एकोत्तर'।
**इकोज** स्त्री० (हि) केवल एक बार सन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री।
**इकौंसा** वि० (हि) १-एकांत। २-अकेला।
**इकौना** पुं० (हि) अनुपम। बेजोड़।
**इक्का** पुं० (हि) १-एक मोती वाली कान की बाली। २-एक प्रकार की घोड़ागाड़ी। ३-ताश का पत्ता जिसमें एक चिह्न होता है। वि० (हि) १-अकेला, एकाकी। २-बेजोड़।
**इक्का-दुक्का** वि० (हि) अकेला-दुकेला।
**इक्कीस** वि० (हि) १-बीस और एक। २-श्रेष्ठतर
**इक्षु** पुं० (सं) ईख; गन्ना।
**इक्ष्वाकु** पुं० (सं) एक सूर्यवंशी राजा।
**इखद** वि० (हि) ईषत; थोड़ा, अल्प।
**इखु** पुं० (हि) इक्षु।
**इख्तियार** पुं० (अ) १-अधिकार। २-प्रभुत्व।
**इचकना** क्रि० (हि) क्रोध से दांत किटकिटाना।
**इच्छना** क्रि० (हि) इच्छा करना।
**इच्छा** स्त्री० (सं) अभिलाषा; लालसा; चाह।
**इच्छाचारी** वि० (हि) १-स्वतंत्र प्रवृत्ति। २-अपनी इच्छा के अनुसार जहाँ चाहे वहाँ जाने वाला।
**इच्छा-पत्र** पुं० (सं) वह लेख अथवा पत्र जिसमें वसियत की सब शर्तें लिखी हों; वसियतनामा। (विल)।
**इच्छाभोजन** पुं० (सं) १-रुचि के अनुसार भोजन। २-रुचि के अनुकूल खाद्य पदार्थ।
**इच्छित** वि० (सं) चाहा हुआ; अभिप्रेत।
**इच्छु** पुं० (हि) इक्षु; ईख।
**इच्छुक** वि० (सं) चाहने वाला, अभिलाषी।
**इजमाल** पुं० (अ) १-कुल; समष्टि। २-साझा।
**इजरा, इजराय** पुं० (अ) १-जारी करना। २-व्यवहार में लाना।
**इजलास** पुं० (अ) १-बैठक। २-न्यायालय। ३-अधिवेशन।
**इजहार** पुं० (अ) १-प्रकट करना। २-साक्षी। गवाही
**इजाजत** स्त्री० (अ) १-आज्ञा। २-अनुमति, स्वीकृति
**इजाफा** पुं० (अ) वृद्धि; बढ़ती।
**इजार** स्त्री० (अ) पायजामा।
**इजारदार** वि० (फा) ठेकेदार; अधिकारी।
**इजारबंद** पुं० (फा) नारा; नाड़ा।
**इजारा** पुं० (अ) १-ठेका। २-अधिकार।
**इज्जत** स्त्री० (अ) मान; मर्यादा।
**इठलाना** क्रि० (हि) १-इतराना। २-नखरा करना।
**इठलाई, इठलाहट** स्त्री० (हि) इठलाने का भाव, ठसक।
**इठलहरी** वि० (हि) इठलाने वाला।
**इठाई** स्त्री० (हि) १-रुचि। २-मित्रता।
**इड़ा** स्त्री० (सं) १-पृथ्वी; भूमि। २-गाय। ३-एक नाड़ी। (हठयोग)।
**इत** क्रि० वि० (हि) इधर।
**इतना, इतनी, इतनों** वि० (हि) इस मात्रा का, इस कदर।
**इतबार** पुं० (हि) एतबार; विश्वास।
**इतमाम** पुं० (हि) इंतजाम; प्रबन्ध।
**इतमीनान** पुं० (अ) संतोष।
**इतर** वि० (सं) १-दूसरा; अन्य। २-तुच्छ। ३-साधारण।
**इतराना** क्रि० (हि) १-घमण्ड करना। २-इठलाना
**इतरेतर** क्रि० वि० (सं) परस्पर।
**इतरौंहाँ** वि० (हि) जिसमें इतराने के भाव मालूम पड़ें
**इतस्ततः** क्रि० वि० (सं) इधर-उधर।
**इताअत** स्त्री० (अ) आज्ञापालन।
**इताति** स्त्री० (हि) आज्ञापालन।
**इति** अव्य० (सं) समाप्ति-सूचक शब्द। स्त्री० (सं) समाप्ति।
**इति-कर्तव्यता** स्त्री० (सं) १-परिपाटी। २-कर्त्तव्य।
**इति-वृत्त** १-पुरानी कथा। २-वर्णन। ३-इतिहास
**इतिश्री** स्त्री० (सं) समाप्ति; अन्त।
**इतिहास** पुं० (सं) बीती हुई घटनाओं का तथा उस समय के पुरुषों के काल का क्रमानुसार वर्णन; तवारीख। (हिस्टरी)।
**इतेक** वि० (हि) इतना।
**इतै** अव्य० (हि) इधर।
**इतो, इतौ** वि० (हि) इतना।
**इत्तफाक** पुं० (अ) १-मेल; एकता। २-संयोग।
**इत्तला, इत्तिला** स्त्री० = सूचना।
**इत्थं** क्रि० वि० (सं) ऐसे; यों।
**इत्थंभूत** वि० (सं) ऐसा।

**इत्यादि, इत्यादिक** *अव्य०* (स) इसी प्रकार और, वगैरह।
**इत्र** पुं० (सं) पुष्पों का सार भाग; अतर।
**इत्रदान** पुं० (अ) इत्र रखने का पात्र।
**इधर** *क्रि० वि०* (हि) इस ओर।
**इन** सर्व० (हि) 'इस' का बहुवचन।
**इनकलाब** पुं० (अ) १-क्रान्ति। २-परिवर्त्तन।
**इनकार** पुं० (अ) अस्वीकार।
**इनसान** पुं० (अ) मानव, मनुष्य।
**इनाम** पुं० (अ) पुरस्कार।
**इनामदार** पुं० (अ) बिना लगान भूमि का मालिक
**इनायत** *स्त्री०* (अ) १-अनुग्रह; कृपा। २-एहसान।
**इनारा** पुं० (हि) पक्का कुआँ।
**इनारुन, इनारू** पुं० (हि) इन्द्रायन नामक लता या उसका फल।
**इने-गिने** *वि०* (हि) कतिपय; थोड़े से।
**इन्कार** पुं० (अ) अस्वीकृति।
**इन्सान** पुं० (अ) मनुष्य।
**इफरात** *वि०* (अ) अत्याधिक।
**इबरानी** *स्त्री०* (अ) यहूदी। *स्त्री०* (अ) यहूदी जाति की भाषा। *वि०* (अ) यहूदी सम्बन्धी।
**इबलीस** पुं० (अ) शैतान।
**इबादत** *स्त्री०* (अ) पूजा।
**इबारत** *स्त्री०* (अ) १-लेख। २-लेख-शैली।
**इभ** पुं० (स) हाथी।
**इमदाद** *स्त्री०* (अ) सहायता।
**इमरती** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार की मिठाई जो जलेबी की तरह होती है।
**इमरतीदार** *वि०* (हि) इमरती के समान छोटे गोल घेरों वाली।
**इमली** *स्त्री०* (हि) एक वृक्ष या उसकी लम्बी, खट्टी गूदेदार फली।
**इमाम** पुं० (अ) पुरोहित (मुसलमानों का)।
**इमामदस्ता** पुं० (फा) खरल के समान लोहे या पीतल का खलबट्टा।
**इमाम-बाड़ा** पुं० (अ+हि) वह अहाता जहाँ मुसलमान ताजियों को गाड़ते हैं।
**इमारत** *स्त्री०* (अ) भवन; पक्का बड़ा मकान।
**इमारती** *वि०* (अ) इमारत से सम्बन्धित।
**इमारती-लकड़ी** *वि०* (अ+हि) इमारत बनाने काम में आने वाली लकड़ी।
**इमि** *क्रि० वि०* (हि) ऐसे; इस प्रकार।
**इम्तहान** पुं० (अ) परीक्षा।
**इयत्ता** *स्त्री०* (स) १-सीमा; हद। २-सदस्यों की वह नियत संख्या जो किसी सभा के संचालन के लि आवश्यक हो; कोरम।
**इरखा** *स्त्री०* (हि) देखो 'ईर्ष्या'।
**इरादा** पुं० (अ) विचार, संकल्प।
**इर्द-गिर्द** *क्रि० वि०* (फा) १-चारों तरफ। २-आसपास।
**इर्षना** *स्त्री०* (हि) प्रबल इच्छा।
**इलजाम** पुं० (अ) १-अपराध। २-अभियोग।
**इलहाम** पुं० (अ) देव-वाणी; आकाशवाणी।
**इला** *स्त्री०* (सं) १-पृथ्वी। २-पार्वती। ३-सरस्वती, वाणी। ४-गौ।
**इलाका** पुं० (अ) १-सम्बन्ध; लगाव। २-क्षेत्र।
**इलाज** पुं० (अ) १-दवा। २-चिकित्सा। ३-युक्ति; उपाय।
**इलाम** पुं० (हि) १-सूचना-पत्र। २-आज्ञा।
**इलायची** *स्त्री०* (हि) वृक्ष विशेष जिसके फल के बीज सुगन्धित होते हैं।
**इलाही** पुं० (अ) परमेश्वर; खुदा। *वि०* (अ) दैवी; ईश्वरी।
**इलाही-गज** पुं० (फा+अ) अकबर काल का ४२ अंगुल का गज।
**इलीका** *स्त्री०* (स) कीट; कीड़ा।
**इल्म** पुं० (अ) १-विद्या; २-ज्ञान। ३-हुनर।
**इल्लत** *स्त्री०* (अ) १-रोग। २-झंझट। ३-दोष।
**इव** *अव्य०* (स) समान; सदृश्य।
**इशारा** पुं० (अ) १-संकेत। २-गुप्त प्रेरणा।
**इश्क** पुं० (अ) चाह; प्रेम।
**इश्तहार** पुं० (अ) विज्ञापन।
**इषणा** *स्त्री०* (हि) प्रबल इच्छा।
**इष्ट** *वि०* (सं) १-वांछित। २-अभिप्रेत। ३-पूजित। पुं० (स) १-अग्निहोत्रादि शुभ कर्म। २-कुलदेव। ३-मित्र।
**इष्टदेव** पुं० (स) आराध्यदेव।
**इस** सर्व० (हि) 'यह' शब्द का रूप जो विभक्ति लगने पर हो जाता है।
**इसक** पुं० (हि) इश्क; प्रेम।
**इसपात** पुं० (हि) सख्त लोहा।
**इसबगोल** पुं० (हि) एक प्रकार का पौधा जिसके रेचक गोल बीज औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं।
**इसर** पुं० (हि) ईश्वर।
**इसराज** पुं० (अ) एक प्रकार का बाजा जो सारंगी की तरह होता है।
**इसरी** *वि०* (हि) ईश्वरीय।
**इसारत** *स्त्री०* (हि) इशारा; संकेत।
**इसे** सर्व० (हि) 'यह' का कर्मकारक तथा सम्प्रदानकारक रूप।
**इस्तमरारी** *वि०* (अ) न बदलने वाला, दवामी।
**इस्तमरारी-पट्टा** पुं० देखो 'दवामी-पट्टा'।
**इस्तमरारी-बंदोबस्त** पुं० देखो 'दवामी-बन्दोबस्त'
**इस्तरी** *स्त्री०* (हि) धोबियों या दरजियों का एक

औजार जिससे वह कपड़े की सिकुड़न दूर कर तह जमाते हैं।

**इस्तीफा** पुं० (अ) त्याग-पत्र।

**इस्तेमाल** पुं० (अ) उपयोग।

**इस्पंज** पुं० (अ) सामुद्रिक कीड़ों द्वारा बना हुआ रुई की तरह का मुलायम पिण्ड जो पानी सोखता है

**इस्पात** पुं० (?) एक प्रकार का बढ़िया लोहा जो सख्त होता है।

**इस्लाम** पुं० (अ) मुसलमानी मज़हब या धर्म।

**इह** क्रि० वि० (स) इस जगह; यहां। सर्व० (सं) १-यह। २-'यह' शब्द का वह रूप जो विभक्ति लगने से पहले होता है। पुं० (सं) इह-लोक।

**इह-लीला** स्त्री० (सं) इस लोक की लीला; जीवन।

**इह-लोक** पुं० (सं) यह संसार जिसमें मनुष्य जन्म से मृत्यु-पर्यन्त रहता है।

**इहाँ** क्रि० वि० (हि) यहाँ।

**इहि** सर्व० (हि) इसे।

**इहै** सर्व (हि) यह ही; यही।

[शब्दसंख्या—४८७०]

# ई

**ई** हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वरवर्ण तथा 'इ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण स्थान तालु है। सर्व० यह। अव्य० ही।

**ईंगुर** पुं० (हि) एक लाल खनिज पदार्थ जिसे सौभाग्यवती स्त्रियां अपने माग में भरती हैं। (सिंगरफ)।

**ईंचना** क्रि० (हि) खींचना।

**ईंट, ईंटा** स्त्री० (हि) १-पकाया हुआ मिट्टी का चौकोर टुकड़ा जिसे जोड़कर मकान की दीवार बनाई जाती हैं। २-किसी धातु का चौकोर टुकड़ा

**ईंडुरी** स्त्री० (हि) कपड़े की गोल गद्दी जिसे बोझा उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

**ईंधन** पुं० (हि) जलाने के काम आने वाले पदार्थ, जलावन।

**ईक्षण** पुं० (सं) १-देखना। २-आँख। ३-जाँच। ४-विवेचन।

**ईख** स्त्री० (हि) गन्ना; ऊख।

**ईछन** पुं० (हि) ईक्षण; देखना।

**ईछना** क्रि० (हि) इच्छा करना; चाहना।

**ईछा** स्त्री० (हि) इच्छा।

**ईजाद** पुं० (अ) आविष्कार।

**ईठ** पुं० (हि) मित्र; सखा।

**ईठना** पुं० (हि) इच्छा करना।

**ईठि** स्त्री० (हि) १-मित्रता। २-चेष्टा; प्रयत्न।

**ईठी** स्त्री० (हि) भाला; बरछी।

**ईढ़** स्त्री० (हि) जिद; हठ।

**ईतर** वि० (हि) ढीठ; शोख।

**ईति** स्त्री० (स) १-खेती को हानि पहुँचाने वाले छः उपद्रव जैसे-अनावृष्टि, अति-वृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, पक्षियों की अधिकता या सेना की चढ़ाई २-बाधा। ३-दुःख।

**ईद** स्त्री० (अ) १-खुशी का दिन। २-मुसलमानों का मजहबी त्यौहार।

**ईदगाह** स्त्री० (अ) ईद के दिन सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने का स्थान।

**ईदिया** पुं० (अ) सौगात जो त्यौहारों पर भेजी जाती है।

**ईदी** स्त्री० (अ) ईद का इनाम; त्यौहारी।

**ईदृश** वि० (सं) ऐसा; इस तरह का। क्रि० वि० (सं) इस प्रकार।

**ईप्सा** स्त्री० (सं) १-इच्छा। २-किसी कार्य को करने के लिए मन में होने वाली चाह, उद्देश्य। (इन्टेन्शन)

**ईमन** पुं० (हि) एक रागिनी; एमन।

**ईमान** पुं० (अ) १-विश्वास। २-धर्म। ३-अच्छी नीयत।

**ईमानदार** वि० (अ+फा) १-सच्चा। २-विश्वास-पात्र ३-व्यवहार का सच्चा। सत्य का पक्षपाती।

**ईमानदारी** स्त्री० (अ+फा) सत्यता; सचाई।

**ईरखा** स्त्री० (हि) ईर्ष्या।

**ईरण** वि० (सं) क्षुब्ध या अस्थिर रखने वाला। पुं० (सं) १-वायु। २-उत्तेजना या प्रेरणा। ३-घोषणा

**ईरित** वि० (स) १-प्रेषित। २-कथित।

**ईर्षणा** स्त्री० (हि) ईर्ष्या।

**ईर्षा, ईर्ष्यालु** स्त्री० (सं) दूसरे की बढ़ती न देख सकना डाह।

**ईलु** पुं० (हि) बाण; तीर।

**ईर्ष्यालु** वि० (सं) डाह करने वाला।

**ईश** पुं० (सं) १-स्वामी; मालिक। २-ईश्वर। ३-राजा। ४-शिव। ५-'११' की संख्या।

**ईशन** पुं० (हि) देखो 'ईशान'।

**ईशान** पुं० (सं) १-स्वामी। २-शिव। ३-उत्तर-पूर्व का कोना।

**ईशिता** स्त्री० (स) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक

**ईशित्व** पुं० (स) ईशिता।

**ईश्वर** पुं०(सं) १-परमेश्वर। २-स्वामी। शिव।

**ईश्वरवाद** पुं० (सं) ऐसा विश्वास कि ईश्वर है और वही केवल सारी सृष्टि का रचयिता तथा कर्ता-

धर्त्ता है। (डीइज्म)।
**ईश्वरवादी** वि० (सं) ईश्वरवाद सिद्धांत में विश्वास रखने या मानने वाला। (डीइस्ट)।
**ईश्वरीय** वि० (सं) ईश्वर-सम्बन्धी, ईश्वर का।
**ईष** पुं० (सं) १-आश्विन मास। २-तीसरे मनु के एक पुत्र का नाम। ३-शिव का अनुचर।
**ईषत्** वि० (सं) थोड़ा; कुछ।
**ईषना** स्त्री० (हि) बलवती इच्छा।
**ईस** पुं० (हि) देखो 'ईश'।
**ईसर** पुं० (हि) १-ईश्वर। २-ऐश्वर्य।
**ईसवी** पुं० (फा) ईसा से सम्बन्धित; ईसा का।
**ईसवी-सन्** पुं० (फा) ईसा के जन्मकाल से चला हुआ सन्।
**ईसा** पुं० (अ) ईसाई धर्म के प्रवर्तक; मसीह।
**ईसाई** पुं० (फा) ईसा के धर्म पर चलने वाला। (क्रिश्चियन)।
**ईसान** पुं० (हि) ईशान कोण।
**ईहा** स्त्री० (सं) १-चेष्टा। २-इच्छा। ३-लालसा।
**ईहामृग** पुं० (सं) रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।
**ईहित** वि० (सं) १-अभिलषित। २-चेष्टित।

[शब्दसंख्या--४६३०]

# उ

**उ** हिन्दी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वरवर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। अव्य० वह।
**उँगल, उँगली** स्त्री० (हि) हथेली या पावों के छोरों से जुड़े पाँच अवयव जिनसे चीजें पकड़ी या छूई जाती हैं।
**उँघाई** स्त्री० (हि) ऊँघ; झपकी।
**उंचन** स्त्री० (हि) खाट की वह रस्सी जो पैताने की ओर कसी रहती है; अदवान।
**उंचना** क्रि० (हि) अदवान कसना।
**उंचाना** क्रि० (हि) ऊँचा करना।
**उँचाव, उँचास** पुं० (हि) ऊँचाई।
**उंछ, उंछवृत्ति** स्त्री० (सं) जीवन-निर्वाह के लिए खेत में दाने चुनने का काम।
**उंछशील** वि० (सं) उंछवृत्ति पर जीवन निर्वाह करने वाला।
**उंडेरना, उँडेलना** क्रि० (हि) तरल पदार्थ को किसी अन्य पात्र में डालना; ढालना।
**उंह** अव्य० (हि) १-अस्वीकार, घृणा या लापरवाही का सूचक शब्द। २-कराहने का शब्द।
**उअना** क्रि० (हि) उगना।
**उआना** क्रि० (हि) १-उगाना। २-मारने के लिए हथियार तानना।
**उऋण** वि० (सं) ऋणमुक्त।
**उकचना** क्रि० (हि) १-उखड़ना। २-उखाड़ना। ३-उचकना।
**उकटना** क्रि० (हि) उघटना।
**उकटा** वि० (हि) एहसान जताने वाला। पुं० (हि) किसी के दोष अथवा अपने उपकारों का बारंबार कथन।
**उकठना** क्रि० (हि) सूखकर ऐंठना; सूखना।
**उकठा** वि० (हि) सूखा हुआ।
**उकड़ू** पुं० (हि) घुटने मोड़ कर बैठने का ढंग।
**उकढ़ना** क्रि० (हि) काढ़ना; बाहर निकालना।
**उकत** स्त्री० (हि) उक्ति; कथन।
**उकताना** क्रि० (हि) १-ऊबना। २-जल्दी करना या मचाना।
**उकति** स्त्री० (हि) उक्ति; कथन।
**उकलना** क्रि० (हि) उधड़ना।
**उकलाई** स्त्री० (हि) वमन; कै।
**उकलाना** क्रि० (हि) कै करना।
**उकवथ** पुं० (हि) दाद जैसा एक चर्म रोग। (एग्जिमा)।
**उकसना** क्रि० (हि) १-उभरना। २-अंकुरित होना। ३-उधड़ना।
**उकसाना** क्रि० (हि) १-उभाड़ना। २-ऊपर उठाना। ३-उत्तेजित करना। ४-(बत्ती आदि) ऊपर खिसकाना।
**उकसाव** पुं० (हि) बढ़ावा।
**उकसाहट** स्त्री० (हि) १-उकसाने की क्रिया अथवा भाव। २-उत्तेजना।
**उकसाहों** वि० (हि) उभड़ता हुआ।
**उकाब** पुं० (अ) एक प्रकार का पक्षी; गिद्ध।
**उकासना** क्रि० (हि) १-उभाड़ना। २-ऊपर को उठाना। ३-खोलना।
**उकीरना** क्रि० (हि) खोदकर निकालना; उखाड़ना।
**उकेरना** क्रि० (हि) खोदकर बेलबूटे आदि बनाना। नक्काशी करना।
**उकेरी** स्त्री० (हि) नक्काशी का काम।
**उकेलना** क्रि० (हि) १-उचाड़ना। २-उधेड़ना।
**उक्त** वि० (सं) उपरोक्त; कथित; उल्लिखित।
**उक्ति** स्त्री० (सं) १-कथन। २-अनोखा या चमत्कारपूर्ण वाक्य।
**उक्ती** स्त्री० (हि) देखो 'उक्ति'।
**उखटना** क्रि० (हि) १-लड़खड़ाना। २-कुतरना।
**उखड़ना** क्रि० (हि) १-अपने स्थान से अलग होना।

२-किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना। ३-जोड़ से हट जाना। ४-साज धीमी पड़ना या पिछड़ जाना। ५-टूटना। ६-तितर-बितर होना।

**उखली** स्त्री० (हि) देखो 'ऊखल'।

**उखाड़** पुं० (हि) १-उखाड़ने की क्रिया या भाव। २-उखाड़ने या रद्द करने की युक्ति।

**उखाड़ना** क्रि० (हि) १-छिन्न-भिन्न करना। २-हटाना। ३-जमी हुई वस्तु को स्थान से अलग करना। ४-किसी कार्य में अनुत्साह करना, भड़काना। ५-नष्ट या ध्वस्त करना।

**उखारना** क्रि० (हि) उखाड़ना।

**उखारी** स्त्री० (हि) ऊख का खेत।

**उखेड़** पुं० (हि) उखाड़।

**उखेड़ना, उखेरना** क्रि० (हि) उखाड़ना।

**उखेलना** क्रि० (हि) तस्वीर बनाना।

**उगटना** क्रि० (हि) १-बारंबार कहना। २-ताना मारना।

**उगना** क्रि० (हि) १-उदय होना। २-अंकुरित होना। ३-उपजना।

**उगरना** क्रि० (हि) निकलना; बाहर आना।

**उगलना** क्रि० (हि) १-पेट में गई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना। २-छिपाने की बात को प्रकट कर देना। ३-खाया हुआ माल विवश होकर वापस करना। ४-दबाव या संकट की अवस्था में गुप्त बात बता देना।

**उगवना** क्रि० (हि) १-उगाना। २-उत्पन्न करना।

**उगसाना** क्रि० (हि) उकसाना।

**उगसारना** क्रि० (हि) कहना; वर्णन करना।

**उगाना** क्रि० (हि) उपजाना; पैदा करना। २-प्रकट करना।

**उगार** पुं० (हि) १-थूक; खखार। २-निचुड़कर इकट्ठा हुआ पानी।

**उगारना** क्रि० (हि) १-निकालना। २-सामने लाना।

**उगाल** पुं० (हि) थूक; खखार; पीक।

**उगालदान** पुं० (हि) पीकदान।

**उगाहना** क्रि० (हि) दूसरों से धन लेकर वसूल करना।

**उगाही** स्त्री० (हि) वसूल करने का काम, वसूली।

**उगिलना** क्रि० (हि) उगलना।

**उग्र** वि० (स) प्रचण्ड; उत्कट; तेज। पुं० (स) १-विष्णु। २-सूर्य। ३-केरल देश। ४-एक संकर जाति

**उग्रता** स्त्री० (स) १-प्रचंडता; तेजी। २-एक संचारी भाव जिसमें क्रोध के कारण दया, स्नेह आदि कोमल भावनाएँ बिलकुल दब जाती हैं।

**उघटना** क्रि० (हि) १-उभाड़ना। २-खोलना। ३-ताल देना। ४-बोलना; कहना।

**उघटा** वि० (हि) कृत उपकार को बार-बार कहने वाला पुं० उघटने का काम।

**उघड़ना, उघढ़ना, उघरना** क्रि० (हि) १-खुलना। २-भंडाफोड़ होना। ३-नंगा होना।

**उघरारा** पुं० (हि) खुला हुआ स्थान। वि० (हि) खुला हुआ।

**उघाड़ना** क्रि० (हि) १-खोलना। २-नंगा करना। ३-प्रकट करना। ४-गुप्त बात खोलना।

**उघाड़ा** वि० (हि) आवरणरहित, नंगा।

**उघार** पुं० (हि) उघारने की क्रिया या भाव।

**उघारना** क्रि० (हि) उघाड़ना।

**उघारा** वि० (हि) उघाड़ा।

**उघेलना** क्रि० (हि) उघाड़ना, खोलना।

**उचंत** वि० (हि) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो।

**उचंत-खाता** पुं० (हि) देखो 'अनुलंब-खाता'।

**उचकन** पुं० (हि) किसी वस्तु को ऊँचा करने के लिए नीचे लगाया जाने वाला ईंट का टुकड़ा।

**उचकना** क्रि० (हि) १-ऊँचा होना। २-उछलना। ३-उछल कर लेना।

**उचका** क्रि० वि० (हि) अचानक, सहसा।

**उचकाना** क्रि० (हि) ऊपर उठाना, उठाना।

**उचक्का** पुं० (हि) जो उचककर चीज ले भागे, चाई

**उचटना** क्रि० (हि) १-उखड़ना। २-अलग होना। ३-विरक्त होना।

**उचटाना** क्रि० (हि) १-उचाड़ना। पृथक करना। ३-विरक्त करना।

**उचड़ना** क्रि० (हि) सटी या चिपकी वस्तु का अलग होना।

**उचना** क्रि० (हि) १-ऊपर उठना। २-ऊँचा करना।

**उचनि** स्त्री० (हि) उभाड़; उठान।

**उचरना** क्रि० (हि) १-उच्चारण करना। २-उखाड़ना

**उचित** वि० (हि) देखो 'उचित'।

**उचित** वि० (स) मुनासिब; योग्य; ठीक।

**उचिस्ट** वि० (हि) उच्छिष्ट।

**उचेड़ना, उचेलना** क्रि० (हि) १-उकेलना। २-उचाड़ना।

**उचौहाँ** वि० (हि) ऊँचा उठा हुआ।

**उच्च** वि० (सं) १-उन्नत; ऊँचा। २-श्रेष्ठ, उत्तम।

**उच्चक** वि० (सं) ऊँचाई की दृष्टि से उस निश्चित सीमा तक पहुँचने वाला जिससे आगे बढ़ना निषिद्ध हो। (सीलिंग)।

**उच्चतम** वि० (सं) सबसे ऊँचा।

**उच्चतम-न्यायालय** पुं० (सं) किसी देश का वह प्रधान न्यायालय जिसमें उच्च न्यायालय के निर्णय से सन्तुष्ट न होने पर अपील की जाती है। (सुप्रीम-कोर्ट)।

**उच्चता** स्त्री० (सं) १-ऊँचाई। २-श्रेष्ठता।

**उच्च-न्यायालय** पुं० (सं) किसी राज्य का प्रधान

न्यायालय। (हाईकोर्ट)।

**उच्चरण** पुं० (सं) मुख से शब्द निकलना, बोलना।

**उच्चरना** क्रि० (हि) उच्चारण करना; बोलना।

**उच्चरित** वि० (सं) १-उच्चारण किया हुआ, कहा हुआ। २-जिसका उल्लेख हुआ है।

**उच्चवर्ग** पुं० (सं) समाज का धनिक वर्ग जिसे ऊँचा मानते हैं। (अपर क्लास)।

**उच्च-सदन** पुं० (सं) संसद या विधान मण्डल के अन्तर्गत वह सदन जिसके सदस्य सीधे जनता के प्रतिनिधियों के मत से निर्वाचित होते हैं। (अपर-हाउस)।

**उच्चाकांक्षा** स्त्री० (सं) ऊँची या महत्व की आकांक्षा या इच्छा (एम्बिशन)।

**उच्चाकांक्षी** वि० (सं) उच्चाकांक्षा रखने वाला। (एम्बिशस)।

**उच्चाट** पुं० (हि) १-उखड़ने की क्रिया। २-उदासीनता।

**उच्चाटन** पुं० (सं) १-संयुक्त वस्तु को पृथक करना। २-उखाड़। ३-उदासीनता।

**उच्चायुक्त** पुं० (सं) वह राजदूत जो राष्ट्रमण्डल के किसी एक देश में अपने देश का प्रतिनिधि बनकर रहे। (हाई कमिश्नर)।

**उच्चार** पुं० (सं) कथन; बोलना।

**उच्चारण** पुं० (सं) मुँह से निकलना; बोलना। २-शब्दों तथा वर्णों के बोलने का ढंग। (प्रोनन्सिएशन)।

**उच्चारित** वि० (सं) उच्चारित किया हुआ।

**उच्चैःश्रवा** पुं० (सं) वह सफेद घोड़ा जो समुद्रमथन में निकला था। वि० (सं) बहरा।

**उच्छन्न** वि० (सं) दबा हुआ; लुप्त।

**उच्छरना, उच्छलना** क्रि० (हि) उछलना।

**उच्छलन** पुं० (सं) उछाल।

**उच्छलिध्र** पुं० (हि) कुकुरमुत्ता।

**उच्छव** पुं० (सं) उत्सव।

**उच्छाव** पुं० (हि) १-उत्साह, उमङ्ग। २-धूम-धाम।

**उच्छास** पुं० (हि) उच्छ्वास।

**उच्छाह** पुं० (हि) उत्साह।

**उच्छिन्न** वि० (सं) १-कटा हुआ। २-उखड़ा हुआ। ३-नष्ट, निर्मूल।

**उच्छिष्ट** वि० (सं) १-एक दूसरे के खाने से बचा हुआ जूठा। २-किसी और का बरता हुआ।

**उच्छू** स्त्री० (हि) वह खाँसी जो खाते या पीते समय पानी आदि के रुकने से आने लगती है।

**उच्छृंखल** वि० (सं) १-क्रम-रहित। २-निरंकुश। ३-उद्दंड।

**उच्छेद, उच्छेदन** पुं० (सं) १-उखाड़-पखाड़; खंडन २-नाश; ध्वंस।

**उच्छ्वसित** वि० (सं) १-साँस लेता हुआ। २-विकसित।

**उच्छ्वास** पुं० (सं) १-उसाँस। २-श्वास। ३-ग्रन्थ का विभाग या प्रकरण।

**उछंग** पुं० (हि) १-गोद। २-हृदय; छाती।

**उछकना** क्रि० (हि) १-चौंकना। २-होश में आना। ३-लुप्त होजाना।

**उछरना** क्रि० (हि) उछलना।

**उछलकूद** स्त्री० (हि) १-खेलकूद। २-हलचल।

**उछलना** क्रि० (हि) १-वेग सहित ऊपर उठना। २-कूदना। ३-अत्यधिक प्रसन्न होना। ४-क्रोध से उत्तेजित होना।

**उछाँटना** क्रि० (हि) १-उचाटना। २-छाँटना।

**उछार** पुं० (हि) देखो 'उछाल'।

**उछारना** क्रि० (हि) देखो 'उछालना'।

**उछाल** स्त्री० (हि) १-सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २-ऊपर उठने की हद। ३-ऊँचाई। ४-कै, वमन।

**उछालना** क्रि० (हि) १-ऊपर की ओर उचकाना। २-प्रकट करना।

**उछाव, उछाह** पुं० (हि) उत्साह।

**उछाही** वि० (हि) उत्साही।

**उछिन्न** वि० (हि) उच्छिन्न।

**उछिष्ट** वि० (हि) उच्छिष्ट।

**उछीनना** क्रि० (हि) उच्छिन्न करना; नोचना; उखाड़ना।

**उछीर** पुं० (हि) अवकाश; जगह।

**उछेद** पुं० (हि) उच्छेद।

**उजट** पुं० (हि) झोंपड़ा।

**उजड़ना** क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-उखड़ना। ३-बिखरना।

**उजड़वाना** क्रि० (हि) किसी को उजड़ने में प्रवृत्त करना।

**उजड्ड** वि० (हि) १-निरा गंवार। २-अशिष्ट।

**उजबक** पुं० (तु०) तातारियों की एक जाति। वि० १-उजड्ड। २-मूर्ख।

**उजर** वि० (हि) उजला।

**उजरत** पुं० (अ) १-पारिश्रमिक। २-किराया।

**उजरा** वि० (हि) १-उजला। २-उजड़ा।

**उजराना** क्रि० (हि) उजालना।

**उजलत** स्त्री० (अ) शीघ्रता।

**उजलना** क्रि० (हि) १-उजला करना। २-चमकना।

**उजला** पुं० (हि) १-उज्ज्वल; स्वच्छ। २-सफेद।

**उजवास** पुं० (हि) प्रयत्न।

**उजागर** वि० (हि) १-जगमगाता हुआ, प्रकाशित। २-प्रसिद्ध।

**उजाड़** पुं० (हि) १-उजड़ा या ध्वस्त स्थान। २-निर्जन स्थान। ३-जंगल। वि० नष्ट, बरबाद।

**उजाड़ना** क्रि० (हि) १-ध्वस्त करना। २-उधेड़ना। ३-नष्ट करना।
**उजान** क्रि०वि० (हि) धार से उलटी ओर; बहाव की ओर।
**उजार** क्रि० (हि) १-उजाला। २-उजाड़।
**उजारना** क्रि० (हि) १-उजालना। २-उजाड़ना।
**उजालना** क्रि०(हि) १-चमकाना। २-प्रकाशित करना ३-जलाना।
**उजारा, उजाला** पुं० (हि) प्रकाश। वि० (हि) प्रकाशवान।
**उजाली** स्त्री० (हि) चाँदनी।
**उजास** पुं० (हि) प्रकाश का आभास।
**उजासना** क्रि० (हि) चमकना।
**उजियर** पुं० (हि) उजाला।
**उजियरिया** स्त्री० (हि) चाँदनी।
**उजियार** पुं० (हि) प्रकाश। वि० (हि) प्रकाशमान।
**उजियारना** क्रि० (हि) उजालना।
**उजियारा** पुं० (हि) उजाला।
**उजियारी** स्त्री० (हि) उजाली; चाँदनी।
**उजीर** पुं० (हि) वजीर; मंत्री।
**उजीता** पुं० (हि) प्रकाश। वि० (हि) प्रकाशमान।
**उजेर** पुं० (हि) उजाला।
**उजेरना** क्रि०(हि) उजालना।
**उजेरा, उजेला, उजेरा** पुं० (हि) उजाला। वि० (हि) प्रकाशमान।
**उज्जर, उज्जल** वि० (हि) उज्ज्वल। क्रि० वि० (हि) उजान।
**उज्जीवन** पुं० (सं) १-फिर से होश में आना। २-गई हुई साँस का फिर लौटना।
**उज्यारा** पुं० (हि) उजाला।
**उज्यारी** स्त्री० (हि) उजाली।
**उज्यास** पुं० (हि) उजास।
**उज्र** पुं० (अ) आपत्ति; विरोध; एतराज।
**उज्रदार** वि० (फा) आपत्ति या एतराज करने वाला।
**उज्रदारी** स्त्री० (फा) आपत्ति या एतराज प्रकट करना
**उज्वल** वि० (स) १-कांतिमान्। २-स्वच्छ। ३-बेदाग। ४-सफेद।
**उझकना** क्रि० (हि) १-उचकना। २-उभड़ना। ३-देखने के लिए सिर उठाना। ४-चौंकना।
**उझकुन** पुं० (हि) उचकन।
**उझपना** क्रि० (हि) १-खुलना (आँख)। २-(आँख) खोलना।
**उझल** स्त्री० (हि) १-उलझने की क्रिया या भाव। २-वर्षा।
**उझलना** क्रि०(हि) १-उँड़ेलना। २-उमड़ना।
**उटंग** वि० (हि) पहनने में छोटा (वस्त्र)।
**उटकना** क्रि० (हि) अटकल लगाना।
**उटकनाटक** वि० (हि) ऊबड़खाबड़।
**उटक्कर** क्रि० वि० (हि) अंधाधुंध।
**उटज** पुं० (सं) झोंपड़ी।
**उट्ठा** पुं० (हि) ओटनी।
**उठंगन** पुं० (हि) १-टेक; थूनी। २-पीठ को सहारा देने वाली वस्तु।
**उठंगना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का सहारा लेकर बैठना। २-लेटना।
**उठना** क्रि० (हि) १-ऊँचा होना। २-ऊपर जाना या चढ़ना। ३-उछलना-कूदना। ४-जागना। ५-उदय होना। ६-उत्पन्न होना। ७-तैयार होना। ८-किसी चिह्न या अंक का उभड़ना। ९-खमीर आना या सड़कर उफनना। १०-दुकान, समाज या सभा का बन्द होना। ११-किसी प्रथा का अन्त होना। १२-खर्च होना। १३-भाड़े पर जाना। १४-स्मरण आना। १५-मकान या दीवार का बनना।
**उठल्लू** वि० (हि) १-बे-ठौर-ठिकाने का। २-आवारा
**उठाईगीरा** वि० (हि) १-आँख बचाकर वस्तु चुराने वाला, उचक्का। २-बदमाश।
**उठान** स्त्री० (हि) १-उठने की क्रिया या भाव। २-बढ़ने का ढंग। ३-आरम्भ। ४-खर्च; खपत।
**उठाना** क्रि० (हि) १-ऊँचा करना। २-नीचे से ऊपर ले जाना। ३-कुछ समय तक ऊपर लिए रहना। ४-हटाना। ५-जगाना। ६-उत्पन्न करना। ७-दीवार आदि तैयार करना। ८-प्रथा बन्द करना। ९-व्यय करना। १०-भाड़े या किराये पर देना। ११-हस्तगत करना। १२-अनुभव करना १३-कोई वस्तु लेकर सौगन्ध खाना।
**उठा-पटक** स्त्री० (हि) लड़ाई या झगड़े में परस्पर उठाकर पटकने की क्रिया।
**उठावनी** स्त्री० (हि) १-उठाने का कार्य। २-अग्रिम दिया गया धन। ३-देवता की पूजा के लिए रखा गया अलग धन या अन्न। ४-वह रस्म जो मरने पर की जाती है।
**उठेल** पुं० (हि) १-धक्का, रेला। २-चोट।
**उठेलना** क्रि० (हि) ठेलना।
**उठौआ** वि० (हि) १-जो नियत स्थान पर न रहता हो। २-जो उठाया जाता हो।
**उठौनी** स्त्री० (हि) १-उठाने का काम। २-अग्रिम धन। ३-अग्रिम दक्षिणा। ४-मरने के तीसरे दिन की एक रीति।
**उडंकू** वि० (हि) उड़ने वाला।
**उड़न** स्त्री० (हि) उड़ने की क्रिया।
**उड़न-किला** पुं० (हि) एक प्रकार का वायुयान जो आकार में बड़ा और दृढ़ होता है यह युद्धक्षेत्र में काम आता है। (फ्लाइङ्ग फोर्ट्रेस्)।

**उड़न-खटोला** पुं० (हि) १-उड़ने वाला खटोला। २-विमान।
**उड़न-गड़ी** स्त्री० (हि) देखो 'उड़न-किला'।
**उड़न-छू** वि० (हि) चम्पत; गायब।
**उड़नझाई** स्त्री० (हि) छल; धोखा।
**उड़न-तश्तरी** स्त्री० (हि+फा) तश्तरी या थाल के समान कोई चमकीली वस्तु जो सहसा आकाश में चलती दिखाई देती है। (फ्लाइंग डिश)।
**उड़न-थाल** पुं० (हि) आधुनिक उपकरण विशेष जो बड़े थाल के आकार का होता है और शत्रु के देश पर गोले बरसाता चलता है। (फ्लाइंग-सॉसर)।
**उड़ना** क्रि० (हि) १-हवा में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। २-हवा में ऊपर उठना। ३-हवा में फैलना। ४-फहराना। ५-तेज चलना। ६-कटकर दूर गिरना। ७-पृथक होना। ८-जाता रहना। ९-रंग आदि का फीका पड़ना। १०-डंडे आदि की मार पड़ना। ११-कूद कर पार करना। वि० (हि) उड़ने वाला।
**उड़प** पुं० (हि) १-नृत्य का एक भेद। २-देखो 'उडुप'।
**उड़पति** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**उड़ब** पुं० (हि) एक राग।
**उड़सना** क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-भंग करना।
**उड़ाक** वि० (हि) १-उड़ने वाला। २-उड़ने की क्षमता रखने वाला।
**उड़ाका** वि० (हि) १-उड़ने वाला। २-उड़ने की कला में दक्ष या प्रवीण।
**उड़ाई** स्त्री० (हि) १-उड़ान। २-उड़ाने की उजरत।
**उड़ाऊ** पुं० (हि) १-उड़ने वाला। २-फजूल खर्च करने वाला।
**उड़ाका** वि० (हि) १-जो उड़ता हो। २-वायुयान-चालक।
**उड़ान** स्त्री० (हि) १-उड़ने का कार्य। २-छलांग। ३-लम्बी-चौड़ी हाँकना। ४-कलाई; पहुँचा।
**उड़ाना** क्रि० (हि) १-उड़ने में प्रवृत्त करना। २-हवा में फैलाना। ३-उड़ने वाले प्राणियों को भगाना। ४-चट से अलग करना। ५-हटाना। ६-भोजन करना। ७-खर्च कर देना। ८-भुलवा देना। ९-हज्म करना। १०-मारना। ११-झूठी अपकीर्त्ति फैलाना। १२-किसी विद्या को गुप्त रूप से प्राप्त करना। १३-वेग से भागना।
**उड़ायक** वि० (हि) उड़ाने वाला।
**उड़ास** स्त्री० (हि) निवास-स्थान।
**उड़ासना** क्रि० (हि) १-बिछौना समेटकर चारपाई खड़ी कर देना। २-उजाड़ना। ३-बैठने या सोने में विघ्न डालना।
**उड़िया** पुं० (हि) उड़ीसा राज्य का निवासी। स्त्री (हि) उड़ीसा राज्य की भाषा।
**उड़ियाना** पुं० (हि) २२ मात्राओं का एक छन्द।
**उड़ी** स्त्री० (हि) १-मालखम्भ की एक कसरत। २-कलाबाजी।
**उडु** पुं० (सं) १-तारा; नक्षत्र। २-पक्षी। ३-मल्लाह ४-जल।
**उडुप** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-नाव। ३-बड़ा गरुड़
**उडुपति, उडुराज** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**उड़ेरना, उड़ेलना** क्रि० (हि) १-एक पात्र से दूसरे पात्र में डालना। २-तरल पदार्थ को गिराना।
**उड़ंना** पुं० (हि) जुगनू।
**उड़ंनी** स्त्री० (हि) जुगनू।
**उड़ौहाँ** वि० (हि) उड़ने वाला।
**उडुचर** पुं० (सं) पक्षी; चिड़िया।
**उडुयन** पुं० (सं) उड़ना।
**उडुयन-विभाग** पुं० (सं) वायुयानों की व्यवस्था करने वाला राजकीय विभाग।
**उढ़कना** क्रि०(हि) १-अड़ना। २-सहारा लेना।
**उढ़रना** क्रि० (हि) अपने विवाहित पति को छोड़कर स्त्री का अन्य पुरुष के साथ भाग जाना।
**उढ़री** स्त्री० (हि) रखेल स्त्री।
**उढ़ौनी** स्त्री० (हि) ओढ़नी।
**उतंग** वि० (हि) उत्तुंग।
**उतंत** वि० (हि) देखो 'उत्पन्न'।
**उत** क्रि० वि० हि) उधर।
**उतन** क्रि० वि० (हि) उस ओर।
**उतना** वि० (हि) उस मात्रा का।
**उतपति** स्त्री० (हि) १-उत्पत्ति। २-सृष्टि।
**उतपन्न** वि० (हि) देखो 'उत्पन्न'।
**उतपात** पुं० हि) देखो 'उत्पात'।
**उतपातना** क्रि० (हि) उत्पन्न करना।
**उतपादना** क्रि० (हि) उत्पादन करना।
**उतपानना** क्रि० (हि) उपजाना।
**उतपाना** क्रि० (हि) उत्पन्न करना।
**उतर** पुं० (हि) देखो 'उत्तर'।
**उतरन** स्त्री० (हि) पहन कर उतारे हुए जीर्ण कपड़े।
**उतरना** क्रि०(हि)१-ऊपर से नीचे आना। २-ढलना ३-शरीर के जोड़ या नस का अपने स्थान से हटना। ४-नदी या नाला पार करना। ५-निगल जाना। ६-प्रवेश करना। ७-समाप्त होना। ८-भाव का कम होना। ९-टिकना, डेरा डालना। १०-नकल होना। ११-बच्चों का मर जाना। १२-प्रभाव कम होना। १३-संचारित होना। १४-भभके से खींचना। १५-अवतार लेना। १६-अखाड़े में आना। १७-समुद्र का भाटा। १८-परिपक्व होना। १९-सामने आना। २०-नदी नाले या पुल के उस पार जाना।

**उतरांही** स्त्री० (हि) उत्तर दिशा से आने वाली हवा।

**उतराई** स्त्री० (हि) १-उतरने की क्रिया। २-पार उतरने की उजरत या महसूल। ३-नीचे की ढलती हुई भूमि।

**उतरार्ध** वि० (हि) देखो 'उत्तरार्द्ध'। २-उत्तर दिशा का।

**उतराना** क्रि० (हि) १-तैरना २-उफान लाना। ३-प्रकट होना।

**उतरायल** वि० (हि) उतरा हुआ; जीर्ण।

**उतरारि** वि० (हि) उत्तर दिशा की (वायु)।

**उतरावना** क्रि० (हि) उतारने का कार्य किसी अन्य से कराना।

**उतराहा** क्रि० वि० (हि) उत्तर की ओर।

**उतरिन** वि० (हि) उऋण।

**उतरु** पुं० (हि) उत्तर।

**उतरौंहाँ** क्रि० वि० (हि) उत्तर की ओर।

**उतलाना** क्रि० (हि) उतावला होना।

**उताइल** वि० (हि) उतावला। स्त्री० (हि) उतावली।

**उताइली** स्त्री० (हि) उतावली, शीघ्रता।

**उतायल** वि० (हि) उतावला; शीघ्र, जल्दी।

**उतायली** स्त्री० (हि) शीघ्रता; जल्दी।

**उतार** पुं० (हि) १-उतरने की क्रिया। २-ढाल। ३-घटाव। ४-नदी में पार करने योग्य उथला स्थल। ५-भाव गिरना।

**उतार-चढ़ाव** पुं० (हि) १-उतरने और चढ़ने की स्थिति। २-मान, मूल्य, महत्व आदि में घट-बढ़ की स्थिति। (फ्लक्चुएशन)।

**उतारना** क्रि० (हि) १-ऊँचे स्थान से नीचे लाना। २-दूर करना। ३-तोड़ना। ४-पहनी हुई वस्तु को अलग करना। ५-ठहराना। ६-पार लाना। ७-पीना। ८-ढीला करना। ९-नकल करना। १०-अर्क खींचना। ११-आग पर वस्तुएं पकाकर तैयार करना। १२-अभाव दूर करना।

**उतारा** पुं० (हि) १-डेरा डालना। २-नदी पार होने की क्रिया। ३-पड़ाव। ४-प्रेत बाधा की शान्ति के लिए रोगी के चारों ओर घुमाकर चौराहे आदि पर रखी हुई वस्तु। ५-टोटका उतारने की जगह। ६-उतारे की सामग्री या उतरन।

**उतारू** वि० (हि) तत्पर; उद्यत; सन्नद्ध।

**उताल** वि० (हि) १-फुरतीला। २-उतावला।

**उताला** वि० (हि) उतावला।

**उताली** स्त्री० (हि) १-शीघ्रता। २-फुरती। ३-उतावली। क्रि० वि० (हि) शीघ्रता से।

**उतावला** वि० (हि) जल्दी करने वाला; जल्दबाज।

**उतावली** स्त्री० (हि) शीघ्रता; जल्दी।

**उताहल** क्रि० वि० (हि) शीघ्रता से।

**उताहिल** वि० (हि) उतावला।

**उतिम** वि० (हि) उत्तम।

**उतृण** वि० (हि) उऋण।

**उतै** क्रि० वि० (हि) उधर।

**उतेला** वि० (हि) उतावला।

**उत्कंठ** वि० (स) उत्कंठित। क्रि० वि० (हि) १-ऊपर को गरदन किये हुए। २-उत्कंठापूर्वक।

**उत्कंठा** स्त्री० (स) १-प्रबल इच्छा। २-किसी काम के न होने में विलम्ब न सहकर उसे चटपट करने की इच्छा।

**उत्कंठित** वि० (सं) चाव से भरा हुआ; उत्कंठापूर्ण।

**उत्कंठिता** स्त्री० (सं) वह नायिका जो संकेत स्थान पर न मिलने पर तर्क-वितर्क करे।

**उत्कट** वि० (सं) तीव्र, उग्र।

**उत्कर्ष** पुं० (सं) १-प्रशंसा। २-श्रेष्ठ। ३-समृद्धि। ४-मान, मूल्य, महत्त्व आदि की बढ़ोतरी। (राइज, एप्रिसिएशन)।

**उत्कल** पुं० (सं) उड़ीसा राज्य का प्रदेश।

**उत्कलिका** स्त्री० (सं) १-उत्कंठा। २-फूल की कली। ३-लहर, तरंग।

**उत्कलित** वि० (सं) १-उत्कंठित हुआ। २-खिला हुआ।

**उत्का** स्त्री० (हि) उत्कंठित।

**उत्कीर्ण** वि० (सं) १-लिखा हुआ। २-खुदा हुआ। ३-छिपा हुआ।

**उत्कृष्ट** वि० (सं) श्रेष्ठ; उत्तम।

**उत्कोच** पुं० (सं) घूस; रिश्वत।

**उत्कोचक** वि० (सं) रिश्वतखोर।

**उत्कोचन** पुं० (सं) घूसखोरी।

**उत्क्रांत** वि० (सं) १-ऊपर की ओर जाने वाला। २-जिसका उल्लंघन अथवा अतिक्रमण हुआ हो।

**उत्खनन** पुं० (सं) खोदने का काम; खुदाई।

**उत्तंग** वि० देखो 'उत्तुंग'।

**उत्तंस** वि० देखो 'अवतंस'।

**उत्त** पुं० (हि) १-आश्चर्य। २-सन्देह।

**उत्तप्त** वि० (सं) १-बहुत गरम। २-दुःखी।

**उत्तम** वि० (सं) उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ।

**उत्तमतया** क्रि० वि० (सं) भली-भाँति, अच्छी प्रकार से।

**उत्तमता** स्त्री० (सं) श्रेष्ठता; उत्कृष्टता।

**उत्तमताई** स्त्री० (हि) उत्तमता; श्रेष्ठता।

**उत्तमपद** पुं० (सं) ऊँचा स्थान या पद।

**उत्तमपुरुष** पुं० (सं) व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष का बोध कराता है। जैसे-मैं, हम

**उत्तमर्ण** पुं० (सं) करज देने वाला महाजन; ऋण-दाता। (क्रेडिटर)।

**उत्तम साख-पत्र** पुं० (हि) वह साख पत्र अथवा प्रभूतियाँ जो बिलकुल सुरक्षित समझी जाती हों और जिनके डूबने का कम से कम भय हो। व्यापारी-

वर्ग, व्यवसायिक संस्थाएँ इनमें खुशी से रुपया लगाना पसन्द करते हैं। (गिल्टएज्ड-सिक्यूरिटीज)

**उत्तमांग** पुं० (सं) सिर।

**उत्तमा** स्त्री० (सं) १-किसी विषय की कोई ऊँची परीक्षा। २-उत्तमा-नायिका।

**उत्तमादूती** स्त्री० (सं) नायक या नायिका को मीठी बातों द्वारा समझा-बुझाकर मना लेने वाली दूती।

**उत्तमा-नायिका** स्त्री० (सं) नायक या पति के प्रतिकूल होने पर भी अनुकूल रहने वाली स्वकीया-नायिका।

**उत्तमोत्तम** वि० (सं) सर्वश्रेष्ठ; सबसे अच्छा।

**उत्तर** पुं० (सं) १-दक्षिण के प्रतिकूल दिशा; उदीची २-जवाब। ३-प्रतिकार; बदला। ४-एक काव्यालंकार। वि० १-पिछला। २-ऊपर का। ३-श्रेष्ठ। क्रि० वि० पीछे; बाद।

**उत्तरकांड** पुं० (सं) १-रामायण का एक भाग। २-पुस्तक का शेषांश।

**उत्तरक्रिया** स्त्री०(सं) अन्त्येष्टि।

**उत्तरण** पुं० (सं) १-पार उतरने का कार्य। २-यानों आदि का ऊपर से भूमि पर उतरना। (लैंडिंग)।

**उत्तरदाता** पुं० (सं) वह जिसे किसी काम के बनने बिगड़ने का जवाब देना पड़े, जवाब-देह; जिम्मेदार। (रेस्पांसिबुल)।

**उत्तरदान** पुं० (सं) वह वस्तु या सम्पत्ति जो उत्तराधिकार में मिली हो। (लीगेसी)।

**उत्तरदायित्व** पुं० (सं) जिम्मेवारी; जवाब-देही।

**उत्तरदायी** वि० (सं) जिस पर कोई उत्तरदायित्व हो; जिम्मेदार। (रेस्पॉसिबुल)।

**उत्तरपद** पुं० (सं) किसी समास का अन्तिम पद।

**उत्तरप्रदेश** पुं० (सं) भारत का एक राज्य।

**उत्तर-वेतन** पुं० (सं) वह मासिक या वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति या उसके उत्तराधिकारियों को उसकी पूर्व सेवाओं के पुरस्कार के रूप में नियोक्ता या स्वामी की ओर से दी जाती है। (पेंशन)।

**उत्तराखंड** पुं० (सं) हिमालय पर्वत के आसपास का उत्तरीय भाग।

**उत्तराधिकार** पुं० (सं) १-सम्पत्ति का क्रमिक स्वत्व विरासत। (सक्सेशन)। २-वह अधिकार या स्वत्व जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति या उसके हटने पर उसका स्थान या पद पाता है।

**उत्तराधिकार-शुल्क** पुं० (सं) किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति पर लगाया जाने वाला शुल्क या कर। (सक्सेशन-टैक्स)।

**उत्तराधिकारी** पुं० (सं) १-वारिस। २-वह जो किसी के हट जाने पर उसके पद का अधिकारी हो। (सक्सेसर)।

**उत्तरापथ** पुं० (सं) उत्तराखण्ड।

**उत्तरायण** पुं० (सं) १-सूर्य का उत्तर दिशा में गमन २-छः मास का वह समय जिसमें सूर्य की उत्तरीय गति रहती है।

**उत्तरार्द्ध** पुं० (सं) पीछे का अर्ध भाग।

**उत्तरित** वि० (सं) जिसका उत्तर दिया जा चुका हो। (रिप्लाइड)।

**उत्तरीय** पुं० (सं) उपरना; दुपट्टा। वि० (सं) १-उत्तर दिशा से सम्बन्धित। २-उत्तर दिशा का। ३-ऊपर वाला।

**उत्तरोत्तर** क्रि० वि० (हि) १-एक के बाद एक। २-क्रमशः।

**उत्तरोत्तरता** स्त्री० (सं) उत्तरोत्तर होने की क्रिया या भाव। (सक्सेशन)।

**उत्तान** वि० (सं) मुख ऊपर और पीठ जमीन पर लगाये हुए; चित।

**उत्ताप** पुं० (सं) १-ताप; गरमी। २-वेदना। ३-दुःख। ४-क्षोभ।

**उत्तारण** पुं० (सं) १-पार उतारना। २-एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी वस्तु को पहुँचाना। (ट्रान्सपोर्टेशन)। ३-संकट ग्रस्त का उद्धार करना। (रेस्क्यूइंग)।

**उत्ताल** वि० (सं) बहुत ऊँचा।

**उत्तीर्ण** वि० (सं) १-पार गया हुआ। २-सफल।

**उत्तुंग** वि० (सं) बहुत ऊंचा।

**उत्तू** पुं० (फा) १-बेल-बूटे के निशान डालने का औजार। २-इस औजार से बनने वाला बेल-बूटे का काम। वि० १-नशे में चूर। २-बदहवास।

**उत्तेजक** वि० (सं) १-उकसाने वाला, प्रेरक। २-वेगों को तीव्र करने वाला।

**उत्तेजन** पुं० (सं) उत्तेजना।

**उत्तेजना** स्त्री० (सं) १-प्रेरणा, प्रोत्साहन। २-वेगों को तीव्र करने का काम। ३-ऐसा कोई काम जो मन के भावों को जाग्रत कर किसी कार्य में प्रवृत्त करे। (एक्साइटमेंट)।

**उत्तोलन** पुं० (सं) १-ऊपर को उठाना, तानना। २-तौलना।

**उत्तोलना-यंत्र** पुं० (सं) एक यंत्र विशेष जो भारी सामानों को उठाता है। (क्रेन)।

**उत्थान** स्त्री० (हि) देखो 'उत्थान'।

**उत्थवना** क्रि० (हि) आरंभ करना।

**उत्थान** पुं०(सं) १-ऊँचा होने की स्थिति। २-उन्नति समृद्धि।

**उत्थानक** वि० (सं) उत्थान करने वाला। पुं० (सं) १-किसी की एक दम उच्चपद पर पहुंचने की स्थिति। २-मकान की एक मंजिल से दूसरी मंजिल

पर चढ़ाने या उतारने वाला बिजली का आसन (लिफ्ट)।

**उत्थापन** वि० (सं) १-ऊपर उठाना। २-जगाना।

**उत्थित** वि० (सं) उठा हुआ; उन्नत।

**उत्पत्ति** स्त्री० (सं) १-उद्भव। २-जन्म। ३-उपज। ४-किसी वस्तु में उपयोगिता अथवा उसके स्वरूप में कोई नूतनता आने की क्रिया या भाव। (प्रोडक्शन)।

**उत्पन्न** वि० (सं) १-पैदा। २-जन्म हुआ। ३-अस्तित्व में आया हुआ, उद्भूत।

**उत्पल** पुं० (सं) कमल।

**उत्पाटन** पुं० (सं) उखाड़ना।

**उत्पात** पुं० (सं) १-उपद्रव। २-हलचल। ३-दंगा, ऊधम। ४-शरारत।

**उत्पाती** पुं० (सं) १-उपद्रवी। २-नटखट, शरारती

**उत्पाद** वि० (सं) उत्पाद-शुल्क से सम्बन्ध रखने वाला (एक्साइज)।

**उत्पादक** वि० (सं) उत्पादन करने वाला। २-जिससे कुछ उत्पादन हो। ३-लोगों के व्यवहार निमित्त माल या सामान तैयार करने वाला। (प्रोड्यूसर)।

**उत्पादक-व्यय** पुं० (सं) उत्पादन कार्यों के निमित्त किया जाने वाला व्यय। (प्रॉडक्टिव-एक्सपेंडिचर)

**उत्पादन** पुं० (सं) १-उत्पन्न करना। २-लोगों के उपयोग के लिए माल अथवा सामान तैयार करना। (प्रोडक्शन)।

**उत्पादन-शुल्क** पुं० देश में उत्पादित कतिपय वस्तुओं पर लिया जाने वाला शुल्क या कर। (एक्साइज-ड्यूटी)।

**उत्पाद-निरीक्षक** पुं० (सं) वह राजकीय अधिकारी जो ऐसी उत्पादित वस्तुओं की देखभाल करता है जिनपर उत्पाद शुल्क लगता है। (एक्साइज-इंस्पेक्टर)।

**उत्पाद-शुल्क** पुं० (सं) देखो 'उत्पादन-शुल्क'।

**उत्पीड़क** पुं० (सं) दूसरों को कष्ट या पीड़ा देने वाला

**उत्पीड़न** पुं० (सं) किसी को कष्ट पहुँचाना; सताना।

**उत्पीड़ित** वि० (सं) सताया हुआ।

**उत्प्रवास** पुं० (सं) एक देश को छोड़कर दूसरे देश में जाकर बसना। (एमीग्रेशन)।

**उत्प्रवासी** पुं० (सं) एक देश को छोड़ कर दूसरे देश में जाकर बसने वाला व्यक्ति। (एमीग्रेंट)।

**उत्प्रेक्षक** वि० (सं) उत्प्रेक्षा करने वाला।

**उत्प्रेक्षण** पुं० (सं) १-ऊपर देखना। २-उद्भावन ३-तुलना करना।

**उत्प्रेक्षण-लेख** पुं० (सं) उच्च-न्यायालय का वह आदेश जिसके द्वारा अधीन न्यायालय को (जो उसने किसी मामले पर विचार किया हो) प्रेषित किये जाने वाले कागज पत्र। (सर्शीओरेरी)।

**उत्प्रेक्षा** स्त्री० (सं) १-उद्भावना। २-उपेक्षा। ३-एक अर्थालंकार।

**उत्फुल्ल** वि० (सं) १-विकसित; खिला हुआ। २-प्रसन्न

**उत्संग** पुं० (सं) १-गोद। २-बीच। ३-ऊपर का भाग। वि० (सं) विरक्त।

**उत्स** पुं० (सं) १-फुआरा। २-पानी का सोता।

**उत्सन्न** वि० (सं) उत्सादित।

**उत्सर्ग** पुं० (सं) १-त्यागना; छोड़ना। २-दान। ३-निछावर। ४-अन्त। ५-व्याकरण का कोई साधारण या व्यापक नियम।

**उत्सर्जन** पुं० (सं) १-छोड़ना। २-दान। किसी कर्मचारी को उसके पद से हटाना या अलग करना। (डिस्चार्ज)।

**उत्सर्जित** वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। २-अपने पद हटाया हुआ। ३-किसी के लिए दान रूप में छोड़ा हुआ।

**उत्सव** पुं० (सं) १-समारोह। २-आनन्द मंगल का समय। ३-पर्व, त्योहार।

**उत्सादन** पुं० (सं) १-किसी पद, स्थान आदि का न रहने देना। (एबॉलिशन)। २-किसी आज्ञा अथवा निश्चय को रद्द करना। (सेट-एसाइड)।

**उत्सादित** वि० (सं) १-उन्मूलित (पद या स्थान)। २-जो रद्द कर दिया गया हो (आज्ञा, निश्चय आदि)। (सेट-एसाइड)।

**उत्साह** पुं० (सं) १-उमंग। २-साहस।

**उत्साहना** क्रि० (हि) १-उत्साहित होना। २-उत्साह बढ़ाना।

**उत्साहित** वि० (हि) उत्साही।

**उत्साही** वि० (सं) जिसमें उत्साह या हौसला हो।

**उत्सुक** वि० (सं) १-उत्कंठित। २-चाह से व्याकुल।

**उत्सुकता** स्त्री० (सं) १-व्याकुलता। २-एक संचारी भाव।

**उत्सूत्र** वि० (सं) सूत्र से भिन्न अथवा विपरीत।

**उत्सृष्ट** वि० (सं) छोड़ा हुआ; त्यक्त।

**उथपना** क्रि० (हि) १-उठाना। २-उखाड़ना। ३-जड़ाड़ना। ४-उठना। ५-उलटना। ६-उजड़ना।

**उथरा** वि० (हि) उथला; छिछला।

**उथलना** क्रि० (हि) १-उलट-पुलट होना। २-पानी का छिछला होना।

**उथल-पुथल** स्त्री० (हि) १-क्रम भंग। २-उलटना-पलटना। वि० (हि) अव्यवस्थित।

**उथला** वि० (हि) १-कम गहरा; छिछला। २-कम ऊँचा।

**उथापना** क्रि० (हि) १-ऊपर उठना। २-खड़ा करना। ३-उखाड़ना। ४-देखो 'थापना'।

**उदगल** वि० (हि) १-उद्दंड। २-प्रचण्ड, प्रबल।

**उदंत** पुं० (हि) वृत्तान्त, हाल। वि० (हि) बिना

दाँत का।
**उद्** उप० (सं) यह उपसर्ग शब्दों के आगे लगकर उनमें दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति, प्राधान्यादि विशेषतायें प्रकट करता है।
**उदक** पुं० (स) जल।
**उदकअद्रि** पुं० (हि) हिमालय।
**उदकक्रिया** स्त्री० (सं) तिलाजली।
**उदकना** क्रि० (हि) कूदना; उछलना।
**उदगरना** क्रि० (हि) १-बाहर निकलना। २-प्रकट होना। ३-उभड़ना।
**उदगारना** क्रि० (हि) १-बाहर निकालना। २-भड़कना।
**उदगारी** वि० (हि) १-उगलने वाला। २-बाहर निकलने वाला।
**उदग्ग** वि० (हि) देखो 'उदग्र'।
**उदग्र** वि० (सं) १-ऊँचा। २-बड़ा। ३-उद्दंड। ४-विकट। ५-तेज। ६-प्रचण्ड।
**उदघटना** क्रि० (हि) प्रकट होना।
**उदघाटना** क्रि० (हि) खोलना।
**उदजन** पुं० (स) वह वाष्प जो वर्ण-हीन, गन्ध-रहित और अदृश्य होता है जिसकी गिनती तत्वों में होती है। (हाइड्रोजन)।
**उदजन-बम** पुं० (सं+अं) उदजन के तत्वों से निर्मित एक प्रलयकारी आग्नेय अस्त्र। (हाइड्रोजन-बम)।
**उदथ** पुं० (हि) सूरज।
**उदधि** पुं० (सं) १-समुद्र। २-बादल।
**उदधिराज** पुं० (स) समुद्र।
**उदधि-सुत** पुं० (स) १-चन्द्रमा। २-अमृत। ३-शंख। ४-कमल।
**उदधि-सुता** स्त्री० (सं) १-समुद्र से उत्पन्न वस्तु। २-लक्ष्मी। ३-सीप।
**उदपान** पुं० (हि) १-कमण्डलु। २-कुएं के पास का गड्ढा।
**उदबसे** वि० (हि) १-उजाड़। २-खानाबदोश।
**उदबासना** क्रि० (हि) १-भगा देना। २-उजड़ना।
**उदभट** वि० पुं० देखो 'उद्भट'।
**उदभव** पुं० (हि) देखो 'उद्भव'।
**उदभौत** पुं० (हि) अद्भुत वस्तु या घटना।
**उदमद** वि० (हि) उन्मत्त।
**उदमदना** क्रि० (हि) उन्मत्त होना।
**उदमाद** पुं० (हि) उन्माद।
**उदमादी, उदमान** वि० (हि) उन्मत्त।
**उदमानना** उन्मत्त होना।
**उदय** पुं० (सं) १-निकलना। २-उन्नति। ३-उद्गम। ४-उदयाचल।
**उदयगढ़, उदयगिरि** पुं० देखो 'उदयाचल'।
**उदयना** क्रि० (हि) उदय होना।
**उदयाचल** पुं० (स) पुराण के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य उदय होता है।
**उदर** पुं० (सं) १-पेट। २-मध्य।
**उदरना** क्रि० (हि) १-ओदरना। २-उतरना।
**उदवना** क्रि० (हि) उदय होना।
**उदवाह** स्त्री० (हि) उद्वहा, विवाह।
**उदवेग** पुं० (हि) उद्वेग।
**उदसना** क्रि० (हि) १-उजड़ना। २-उदास होना।
**उदात्त** वि० (सं) १-ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २-कृपालु। ३-उदार। ४-श्रेष्ठ। ५-विशद। ६-समर्थ। पुं० (स) १-वेद के स्वर के उच्चारण का एक ढंग। २-एक काव्यालंकार।
**उदान** पुं० (स) वह प्राणवायु जो कंठ में रहती और जिससे छींक या डकार आती है।
**उदाम** वि० (हि) दे० उद्दाम।
**उदायन** पुं० (हि) उद्यान; बगीचा।
**उदार** वि० (स) १-दानशील। २-श्रेष्ठ। ३-शिष्ट। ४-अनुकूल। ५-जो संकीर्ण हृदय न हो।
**उदारचरित, उदारचेता** वि०(सं) ऊँचे दिल वाला।
**उदारता** स्त्री० (सं) १-दानशीलता। २-उच्च विचार
**उदारना** क्रि० (हि) १-गिराना। २-फाड़ना।
**उदाराशय** वि० (सं) उच्च विचार और अच्छे उद्देश्य वाला, महापुरुष।
**उदास** वि० (स) १-खिन्न, विरक्त। २-निरपेक्ष। ३-दुःखी।
**उदासना** क्रि० (हि) १-उदास होना। २-उजाड़ना। ३-तितर-बितर करना। ४-उदास करना।
**उदासिल** वि० (हि) उदास।
**उदासी** पुं० (सं) त्यागी व्यक्ति। २-नानकपंथी साधुओं का एक भेद। स्त्री० १-खिन्नता। २-दुःख
**उदासीन** वि० (सं) १-विरक्त। २-झगड़े-बखेड़े से अलग। ३-निष्पक्ष।
**उदासीनता** स्त्री० (सं) १-उदासीन होने का भाव। २-विरक्ति। ३-निरपेक्षता। ४-खिन्नता।
**उदाहरण** पुं० (स) दृष्टान्त; मिसाल।
**उदिक** वि० (सं) १-जल से सम्बन्ध रखने वाला। २-नल द्वारा पहुँचने वाले जल से सम्बन्धित। (हाइड्रॉलिक)।
**उदित** वि० (सं) १-जो निकला या उदय हुआ हो। २-प्रकट। ३-स्वच्छ। ४-प्रचलित।
**उदियाना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-उद्विग्न करना।
**उदीची** स्त्री० (स) उत्तर दिशा।
**उदीच्य** वि० (सं) १-उत्तर दिशा का। २-उत्तर का रहने वाला।
**उदीपन** पुं० (हि) उद्दीपन।
**उदीपित** वि० (हि) उद्दीपित।
**उदीयमान** क्रि० (स) १-जो उदित हो रहा हो। २-

उठता हुआ। २-होनहार।

**उदीरण** पुं० (सं) कहना; कथन।

**उदीरणा** स्त्री० (स) प्रेरणा।

**उदुंबर** पु० (स) १-गूलर। २-देहली; ड्योढ़ी। ३-नपुंसक। ४-कोढ़।

**उदेग** पुं० (हि) देखो 'उद्वेग'।

**उदेस** पुं० (हि) देखो 'उद्देश्य'।

**उदै, उदो** पुं० (हि) देखो 'उदय'।

**उदोत** पुं० (हि) प्रकाश। वि० (हि) १-प्रकाशित। २-उत्पन्न।

**उदौ** पुं० (हि) देखो 'उदय'।

**उद्गम** पुं० (सं) १-उदय; आविर्भाव। २-निकास ३-नदी के निकलने का मूल स्थान।

**उद्गार** पुं० (सं) १-उबाल; उफान। २-वमन; कै। ३-थूक, कफ। ४-घोर शब्द। ५-मन के विचार या भाव। ६-मन की दबी हुई बात को अचानक प्रकट करना।

**उद्ग्रहण** पुं० (सं) कर आदि अधिकारपूर्वक वसूल करना, उगाहना। (लेवी)।

**उद्घाटक** वि० (सं) उद्घाटन करने वाला।

**उद्घाटन** पुं० (सं) १-खोलना; उघाड़ना। २-प्रकाशित या प्रकट करना। ३-किसी प्रमुख व्यक्ति का सम्मेलन आदि का कार्य आरम्भ करना।

**उद्घाटित** वि० (सं) १-खोला हुआ। २-आवरण किया हुआ। ३-प्रकाशित।

**उद्घोषणा** स्त्री० (स) सार्वजनिक रूप से दी जाने वाली सूचना। (प्रोक्लेमेशन)।

**उद्घोषित** वि० (स) उद्घोषणा किया हुआ।

**उद्दंड** वि० (सं) जिसे दण्ड का भय न हो; उद्धत; अक्खड़।

**उद्दाम** वि० (स) १-बन्धन रहित। २-उच्छृंखल। ३-स्वतन्त्र। ४-गम्भीर।

**उद्दित** वि० (हि) १-उदित। २-उद्धत। ३-उन्नत।

**उद्दिम** पुं० देखो 'उद्यम'।

**उद्दिष्ट** वि० (सं) १-दिखाया हुआ। २-लक्ष्य, अभिप्रेत। पुं० वह क्रिया जिससे छन्दों के मात्रा प्रमार का भेद जाना जाता है।

**उद्दीपक** वि० (स) उत्तेजित करने वाला।

**उद्दीपन** पुं० (सं) १-उभाड़ना। २-उत्तेजित करने वाले पदार्थ। ३-काव्य में वह विभाग जो रस को उत्तेजित करते हैं।

**उद्दीप्त** वि० (स) १-उत्तेजित। २-उभाड़ा हुआ। ३-जिसका उद्दीपन हुआ हो।

**उद्देग** पुं० (हि) उद्वेग।

**उद्देश** पुं० (सं) १-चाह; अभिलाषा। २-अभिप्राय; मतलब। ३-कारण; हेतु। ४-न्याय में प्रतिज्ञा।

**उद्देश्य** पुं० (स) १-ध्येय। २-अभिप्रेत वस्तु या कार्य, इष्ट। ३-व्याकरण में वह जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाय। ४-मतलब, तात्पर्य।

**उद्दोत** पुं० (हि) प्रकाश। वि० (हि) १-प्रकाशित। २-उदित।

**उद्ध** क्रि० वि० (हि) ऊर्ध्व; ऊपर।

**उद्धत** वि० (सं) १-उग्र; प्रचण्ड। २-अक्खड़। ३-प्रगल्भ।

**उद्धना** क्रि० (हि) १-ऊपर होना। २-उड़ना।

**उद्धरण** पुं० (सं) १-ऊपर उठना। २-मुक्त करना। ३-दुरवस्था से अच्छी में आना। ४-पठित पाठ अभ्यास के निमित्त पुनः पढ़ना। ५-किसी लेख के अंश को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करना। (कोटेशन) ६-किसी लेख आदि का कोई अंश। (एक्सट्रैक्ट)

**उद्धरणी** स्त्री० (हि) १-अभ्यास के लिए पाठ दोहराना। २-उद्धरण।

**उद्धरना** क्रि० (हि) १-उबारना। २-बचना।

**उद्धव** पुं० (सं) १-उत्सव। २-श्रीकृष्ण के एक सखा

**उद्धार** पुं० (स) १-मुक्ति; छुटकारा। २-निस्तार। ३-सुधार। ४-ऋण से मुक्ति। ५-बिना ब्याज का ऋण उधार।

**उद्धारक** वि० (सं) उद्धार करने वाला।

**उद्धारण** पुं० (सं) १- उद्धार करने की क्रिया या भाव २-जानबूझकर वाक्य, पद, शब्द आदि कहीं से निकाल देना। (डिलीशन)।

**उद्धारणिक** पुं० (सं) ऋण लेने वाला। (बॉरोवर)।

**उद्धार-विक्रय** पुं० (स) उधार बेचना।

**उद्धृत** वि० (स) १-उगला हुआ। २-ऊपर उठाया हुआ। ३- किसी दूसरे स्थान से कोई अंश उद्धरण के रूप में ज्यों का त्यों लिया हुआ। (कोटेड)।

**उद्बुद्ध** वि० (सं) १-विकसित। २-प्रबुद्ध। ३-चैतन्य जागा हुआ। ४-ज्ञान प्राप्त किया हुआ।

**उद्बोध** पुं० (सं) अल्पज्ञान।

**उद्बोधक** वि० (सं) १-चेताने वाला। २-जागृत करने करने वाला। प्रकाशित करने वाला। ४-उत्तेजित करने वाला।

**उद्बोधन** पुं० (स) १-जताना। २-सूचित करना। ३-उत्तेजित करना ४-जगाना। ५-चेतावनी देना

**उद्भट** वि० (स) १-प्रबल। २-श्रेष्ठ। ३-बहुत बड़ा

**उद्भव** पुं० (सं) १-जन्म। २-वृद्धि, बढ़ती। ३-किसी पूर्वज के वंश में उत्पन्न होने या किसी मूल से निकलने का तथ्य या भाव। (डिसेन्ट)।

**उद्भाव, उद्भावन** पुं० (सं) किसी नवीन प्रणाली, यंत्रादि का निर्माण करना। (इनवेनशन)।

**उद्भावना** स्त्री० (स) १-कल्पना। २-उत्पत्ति।

**उद्भासन** पुं० (सं) १-चमकना। २-चमकाना।

**उद्भिज** पुं० (सं) १-भूमि को फोड़कर उत्पन्न होने वाले लता, वृक्ष आदि। २-उभरदाँ अक्षर या काम

से विभूषित करना। (मुद्रण आदि में)। (एम्बॉस)।
**उद्भिज्ज, उद्भिद** पुं० (सं) पेड़; पौधे।
**उद्भूत** वि० (सं) उत्पन्न।
**उद्भूति** स्त्री० (सं) १-उत्पत्ति। २-उन्नति।
**उद्भेदन** पु० (सं) १-तोड़ना-फोड़ना। २-फोड़कर निकालना।
**उद्भ्रम** पुं० (स) १-ऊपर की ओर उड़ना। २-विभ्रम ३-मनोद्वेग।
**उद्भ्रान्त** वि० (स) ४-भूला हुआ। २-घूमता हुआ। ३-चकित। ४-उन्मत्त। ५-विकल।
**उद्यत** वि० (सं) १-तैयार; तत्पर। २-प्रस्तुत; मुस्तैद। ३-उठाया हुआ।
**उद्यम** पुं० (स) १-प्रयास; प्रयत्न। २-उद्योग; मेहनत। ३-काम; धन्धा।
**उद्यमी** वि० (सं) प्रयत्नशील; परिश्रमी।
**उद्यान** पुं० (सं) बाग; बगीचा।
**उद्यानकरण, उद्यानकर्म** पु० (सं) बाग-बगीचों में पौधे आदि लगाने और देखभाल करने का काम। (हार्टिकल्चर)।
**उद्यानगोष्ठी** स्त्री० (स) मित्रमण्डली का किसी खुले स्थान, उद्यान आदि में जाकर खान-पान, मनोरंजन आदि का आयोजन करना। (पिकनिक-पार्टी)
**उद्यापन** पु० (सं) किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।
**उद्युक्त** वि० (सं) धन्धे में लगा हुआ।
**उद्योग** पुं० (स) १-प्रयत्न; कोशिश। २-मेहनत। ३-काम-धन्धा।
**उद्योग-धंधे** पु० (सं+हि) व्यवसाय आदि के निमित्त कच्चे माल से लोगों के उपयोग के लिए पक्के माल या सामान तैयार करना। (इंडस्ट्री)।
**उद्योग-पति** पुं० (सं) किसी बड़े उद्योग या कारखाने का मालिक। (इंडस्ट्रिअलिस्ट)।
**उद्योग-समीकरण** पु० (सं) मजदूरों के काम, समय और सामान से सम्बन्ध रखने वाली बरबादी दूर कर उद्योग की स्थिति सुधारना। (रैशनेलिजेशन-ऑफ इंडस्ट्री)।
**उद्योगालय** पुं० (सं) कारखाना।
**उद्योगी** वि० (सं) मेहनती।
**उद्योत** पुं० (सं) १-उजाला। २-चमक।
**उद्रेक** पुं० (सं) १-वृद्धि। २-एक काव्यालंकार।
**उद्वर्त** वि० (सं) १-आवश्यकता से अधिक। २-व्यय की अपेक्षा दिखाई गई अधिक आय। (सरप्लस-बजट)। पुं० (स) मान, मूल्य आदि के विचार से जितनी आय आवश्यक हो उससे अधिक आय। (सरप्लस)।
**उद्वासन** पु० (स) १-भगाना; खदेड़ना। २-मारना।
**उद्वासित** वि०(सं) जिसे अपने घर से मार या उजाड़ कर खदेड़ दिया हो।
**उद्वाह** पु० (स) विवाह।
**उद्विकासित** वि० (स) जो क्रमशः विकसित होगया हो (इवाल्वड)।
**उद्विग्न** वि० (सं) व्यग्र।
**उद्वेग** पुं०(सं) १-जोश। २-घबराहट। ३-आवेश। ४-किसी चिंताजनक घटना के कारण लोगों में होने वाली बेचैनी जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं। (पैनिक)।
**उद्वेजक** पुं० (सं) वह जो उद्विग्न करे।
**उद्वेजन** पु० (सं) उद्विग्न करना।
**उद्वेल** पुं० (सं) १-छलकना। २-भर आने से इधर-उधर बिखरना।
**उद्वेलित** वि० (स) छलकता हुआ।
**उधड़ना** क्रि० (हि) १-खुलना। २-उचड़ना। ३-उजड़ना।
**उधम** पु० (हि) ऊधम।
**उधर** क्रि० वि० (हि) उस ओर।
**उधरना** क्रि० (हि) १-उद्धार होना। उधड़ना।
**उधराणी** स्त्री० (हि) उधार दिया धन वसूल करना। उगाही।
**उधराना** क्रि० (हि) १-हवा से उड़कर बिखर जाना २-नष्ट हो जाना।
**उधार** पु० (हि) १-ऋण; कर्ज। २-चुका देने के विचार से माँगकर लिया हुआ धन। ३-उद्धार।
**उधारक** वि० (हि) उद्धारक।
**उधारना** क्रि० (हि) उद्धार करना।
**उधारिया** वि० (हि) उधार लेने वाला।
**उधारी** वि० (हि) उद्धार करने वाला।
**उधेड़ना** क्रि० (हि) १-सिलाई खोलना। २-परतों को अलग-अलग करना। ३-बिखराना।
**उधेड़-बुन** स्त्री० (हिं) १-सोच विचार। २-युक्ति बाँधना।
**उध्वंस** पुं० (हि) विध्वंस।
**उध्वस्त** वि० (हि) विध्वस्त।
**उनंत** वि० (हिं) झुका हुआ।
**उन** सर्व० (हिं) 'उस' का बहुवचन।
**उनचन** स्त्री० (हि) अदवान।
**उनचना** क्रि० (हि) पैताने की रस्सी या अदवान खींचना।
**उनदा, उनदौंहा** वि० (हिं) उनींदा।
**उनमद** पुं० (हिं) मतवाला।
**उनमना** वि० हि) अनमना।
**उनमाथना** क्रि० (हि) मथ डालना।
**उनमाथी** वि० (हि) मथने वाला।
**उनमाद** पुं० (हि) उन्माद।
**उनमान** पुं० (हि) १-अनुमान। २-परिणाम। ३-

नाप तौल । ४-शक्ति । वि० (हि) तुल्य, समान ।
**उनमानना** क्रि०(हि) अनुमान करना ।
**उनमना** वि (हि) अनमना ।
**उनमूलना** क्रि० (हि) उखाड़ना ।
**उनमेख** पुं० (हि) देखो 'उन्मेष' ।
**उनमेखना** क्रि० (हि) १-आँख का खुलना । २-(फूलों का) खिलना ।
**उनमेद** पुं० (हि) प्रथम वर्षा से उत्पन्न जहरीला फेन, माँजा ।
**उनरना** क्रि० (हि) १-उमड़ना । २-कूदते हुए चलना ।
**उनवना** क्रि० (हि) १-झुकना । २-गिरना । ३-घहराना । ४-ऊपर आना ।
**उनवर** वि० (हि) कम; न्यून ।
**उनवान** पुं० (अ) देखो 'अनुमान' ।
**उनहारि** स्त्री० (हि) समता; बराबरी ।
**उनहार** वि० (हि) अनुसार ।
**उनाना** क्रि०(हि) १-झुकाना । २-लगाना । ३-आज्ञा मानना ।
**उनारना** क्रि० (हि) १-उठाना । २-उकसाना । ३-खसकाना । ४-बढ़ाना ।
**उनींदा** वि० (हि) नींद से भरा हुआ ।
**उनैना** क्रि० (हि) देखो 'उनवना' ।
**उन्नत** वि० (हि) १-ऊंचा । २-आगे बढ़ा हुआ । ३-श्रेष्ठ । ४-विद्या, कला आदि में बढ़ा हुआ ।
**उन्नतांश** पुं० (स) ऊँचाई ।
**उन्नति** स्त्री० (स) १-ऊंचाई । २-बढ़ती । ३-तरक्की । ४-सुधार ।
**उन्नतिशील** वि० (सं) आगे बढ़ने अथवा उसका यत्न करने वाला ।
**उन्नतोदर** पुं० (सं) १-वृत्तखण्ड आदि का उठा हुआ अंश । (कॉन्वेक्स) । २-चाप या वृत्तखंड का ऊपरी तल ।
**उन्नयन** पुं० (सं) १-उन्नति की ओर ले जाना । २-ऊपर कक्षा अथवा पद पर भेजा जाना, (प्रोमोशन)
**उन्नयन-यन्त्र** पुं० (स) देखो 'उत्थानक' ।
**उन्नाब** पुं० (अ) गहरे लाल रंग का बेर जो हकीमी दवाओं में प्रयुक्त होता है ।
**उन्नाबी** वि० (अ) उन्नाब के रंग का ।
**उन्नाय** पुं० (सं) सोच-विचार ।
**उन्नायक** वि० (सं) १-ऊपर उठाने वाला । २-उन्नति करने वाला । ३-परिणाम की ओर ले जाने वाला ।
**उन्निद्र** वि० (स) १-निद्रा रहित । २-विकसित । पुं० (स) नींद न आने का रोग । (इन्सोम्निया) ।
**उन्नीत** वि० (स) १-ऊपर की कक्षा या पद में तरक्की पाया हुआ । २-ऊपर चढ़ाया हुआ ।
**उन्मत्त** वि० (स) १-मतवाला । २-बे-सुध । ३-पागल
**उन्मद** पुं० (सं) १-उन्मत्त । २-उन्माद । ३-पागल ।
**उन्मन** वि० (हि) अन्यमनस्क ।
**उन्मनी** स्त्री० (सं) हठयोग की पाँच मुद्राओं में से एक
**उन्माद** पुं० (स) १-पागलपन । २-एक संचारी भाव
**उन्मादक** वि० (स) उन्मत्त ।
**उन्मादन** पुं० (सं) १-उन्माद उत्पन्न करना । २-कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।
**उन्मादी** वि० (सं) उन्मादग्रस्त; उन्मत्त ।
**उन्मान** पुं० (स) १-नापने या तौलने का कार्य । २-नाप, तौल । ३-किसी का मान मूल्य या महत्व समझना ।
**उन्मीलन** पुं० (स) १-आँख खुलना । २-खिलना ।
**उन्मीलित** वि० (सं) खुला हुआ । २-खिलना । पुं० (सं) एक काव्यालंकार ।
**उन्मुक्त** वि० (स) १-खुला हुआ; बन्धनरहित । २-मुक्त किया हुआ ।
**उन्मुक्त-पोताश्रय** पुं० (सं) वह बन्दरगाह जिस पर किसी ओर से भी आने वाले व्यापारिक माल पर कर या चुंगी नहीं लगती । (फ्री-पोर्ट) ।
**उन्मुक्ति** स्त्री० (हि) १-छुटकारा । २-अभियोग आदि से छुटकारा । (एक्विटल) । ३-नियम के बन्धनों से किसी विशेष कारण से छुटकारा पाना या मुक्त होना । (एक्जेम्पशन) । ४-किसी प्रकार के अभियोग बन्धन आदि से मुक्त किया जाना । (डिस्चार्ज) । ५-कर देने, किसी रोग के आक्रमण या कर्तव्य-पालन आदि से छुटकारा । (इम्यूनिटी) ।
**उन्मूलक** वि० (सं) समूल नष्ट या बरबाद करने वाला
**उन्मूलन** पुं० (स) १-जड़ से उखाड़ना । २-अस्तित्व मिटाना । ३-पूर्णरूप से उठा देना । ४-परिसमाप्ति
**उन्मूलित** वि० (सं) १-जिसका उन्मूलन हुआ हो । २-जिसका अस्तित्व मिटा दिया गया हो ।
**उन्मेष** पुं० (स) १-आँख का खुलना । २-साधारण प्रकाश । ३-विकास; खिलना ।
**उन्मोचन** पुं० (स) १-देखो 'मोचन' । २-कारण विशेष के द्वारा किसी के नियम, बन्धन आदि से मुक्त रखना । (एक्जेम्पशन) । ३-कैद, बन्धन आदि से मुक्त कर देना । (डिस्चार्ज) । ४-ऋण आदि चुका देना ।
**उन्हालागम** पुं० (सं) ग्रीष्मऋतु विशेषतया ज्येष्ठ या असाढ़ ।
**उन्हानि** स्त्री० (हि) समता; बराबरी ।
**उन्हारि** स्त्री० (सं) १-समानता । २-सूरत, आकृति
**उपंग** पुं० (हि) एक तरह का बाजा ।
**उपंत** वि० (हि) उत्पन्न ।
**उप** उप० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लगकर समीपता, सादृश्य, सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मारण तथा उद्योग के अर्थों को प्रकाशित

करता है।

**उप-आयुक्त** पुं० (सं) मुख्य-आयुक्त के अधीन वह अधिकारी जो शान्ति-व्यवस्था रखता और मालगुजारी वसूल करता और मुकदमों का निर्णय देता है। (डिप्टी-कमिश्नर)।

**उप-कक्ष** पुं० (सं) संसद्, विधान-सभा आदि का बाहरी कमरा या बरामदा जहाँ बैठकर सदस्यगण परस्पर बातचीत करते तथा पत्रकारों आदि से मिलते है। (लॉबी)।

**उप-कथन** पुं० (सं) १-किसी की कही हुई बात के जवाब में या अपने कथन की पुष्टि के निमित्त कही जाने वाली बात। २-वह टिप्पणी जो किसी कार्य या घटना के सम्बन्ध में कही या लिखी जाय। (रिमार्क)।

**उपकथा** स्त्री० (सं) छोटी कहानी।

**उपकर** पुं० (सं) कुछ विशेष अवस्थाओं में विशिष्ट पदार्थों पर लगने वाला कर या महसूल। (सेस)।

**उपकरण** पुं० (सं) १-सामग्री। २-राजा के छत्र, चमर आदि चिह्न। ३-साधन। ४-वे चीजें जिनसे कोई वस्तु तैयार की जाती है; औजार। ५-उपस्कर

**उपकरना** क्रि० (हि) उपकार या भलाई करना।

**उपकल्पन** पुं० (सं) किसी कार्य की तैयारी; आयोजन। (प्रिपरेशन)।

**उपकल्पना** स्त्री० (सं) जो बात प्रमाणित की जा सकती हो या जिसके सत्य होने की सम्भावना हो उसकी कल्पना पहले से कर लेना। (हाइपाथेसिस)

**उपकार** वि० (सं) १-नेकी; भलाई। २-लाभ।

**उपकारक** वि० (सं) उपकार करने वाला।

**उपकारी** वि० (सं) १-उपकार करने वाला। २-लाभदायक।

**उपकुल** पुं० (सं) किसी कुल के अन्तर्गत उसका कोई छोटा विभाग। (सब-फैमिली)।

**उपकुलपति** पुं० (सं) विश्वविद्यालय का उपाध्यक्ष। (वाइस-चाँसलर)।

**उपकृत** वि० (सं) १-कृतज्ञ। २-जिसके साथ उपकार किया गया हो

**उपकोशागार** पुं० (सं) किसी कोशागार के अधीन कार्य करने वाला कोई छोटा कोशागार। (सब-ट्रेजरी)।

**उपक्रम** पुं० (सं) १-कार्यारम्भ की प्रारम्भिक अवस्था, अनुष्ठान। २-कार्यारम्भ करने का आयोजन। (प्रिप्रेशन)। ३-भूमिका।

**उपक्रमणिका** स्त्री० (सं) १-प्रस्तावना; २-विषय-सूची

**उपक्षेप** पुं० (सं) १-आक्षेप। २-अभिनय के आरंभ में नाटक। ३-कोई चीज किसी के सामने लेजाकर रखना अथवा देना। (टेन्डर)। ४-कोई कार्य अथवा ठेका पाने की इच्छा से व्यय आदि के विवरणों से युक्त-पत्र देना। (टेंडर)।

**उपखंड** पुं० (सं) विधि-विधानों में किसी धारा या उपधारा के अंश अथवा खंड का कोई भाग। (सब-क्लॉज)।

**उपखान** पुं० (हि) उपाख्यान।

**उप-गत** वि० (सं) १-प्राप्त। २-ज्ञात। ३-स्वीकृत। ४-व्यय, भार आदि के रूप में आया या लगा हुआ। (इन्कर्ड)।

**उप-गति** स्त्री० (सं) १-प्राप्ति। २-स्वीकार। ३-ज्ञान

**उपग्रह** पुं० (सं) १-गिरफ्तारी। २-कारावास। ३-कैदी। ४-किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमने वाला छोटा ग्रह। (सैटेलाइट)।

**उपघात** पुं० (सं) १-नाश करने की क्रिया। २-रोग ३- चोट। ४-अशक्ति।

**उपचना** क्रि० (हि) १-उन्नत होना, बढ़ना। २-उफनना।

**उपचय** पुं० (सं) १-वृद्धि। २-संचय।

**उपचरित** वि०(सं) १-सेवित। २-पूजित। ३-लक्षणों से ज्ञात।

**उपचर्या** स्त्री० (सं) १-सेवा; परिचर्या। २-चिकित्सा, इलाज।

**उपचार** पुं० (सं) १-व्यवहार; प्रयोग। २-इलाज, चिकित्सा। ३-सेवाशुश्रूषा। ४-खुशामद। ५-घूस, रिश्वत। ६-व्याकरण में संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर 'श' या 'स' हो जाता है। ७-पूजन के अंग या विधान। ८-नियम, परिपाटी, व्यवहार आदि का ठीक प्रकार से पूर्णतया होने वाला विहित और आवश्यक पालन। (फॉरमैलिटी)। ९-दिखावे का आचरण या व्यवहार। (फॉरमैलिटी)।

**उपचारक** वि० (सं) १-उपचार करने वाला। २-चिकित्सा या इलाज करने वाला। ३-विधान करने वाला।

**उपचारना** क्रि०(हि) १-प्रयोग में लाना। २-विधान करना।

**उपचारात्** क्रि० वि० (सं) केवल रस्म अदा करने के लिए। (फार्मली)।

**उपचारी** वि० देखो 'उपचारक'।

**उपच्छाया** स्त्री० (सं) मूल छाया के अतिरिक्त इधर-उधर पड़ने वाली उसकी आभा या हलकी झलक। (पेनम्ब्रा)।

**उपज** स्त्री० (हि) १-पैदावार। २-सूझ, नई उक्ति। ३-मनगढ़ंत बात।

**उपजना** क्रि० (हि) १-उत्पन्न या पैदा होना। २-उगना। ३-उपजाना.

**उपजाऊ** वि० (हि) जिसमें अधिक या अच्छी उपज हो, उर्वर। (फर्टाइल)।

**उपजाऊपन** पुं० (हि) भूमि की फसल उत्पन्न करने

की शक्ति, उर्वरता। (प्राडक्टिविटी)।

**उपजात** पुं० (सं) किसी पदार्थ को बनाते समय बीच में आप से आप बन जाने वाला पदार्थ। जैसे गुड़ बनाते समय सीरा। (बाई-प्राडक्ट)।

**उपजाति** स्त्री० (सं) १-गोत्र। २-वे छन्द जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा तथा वंशस्थ और इन्द्रवंशा के योग से बनते हैं।

**उपजाना** क्रि० (हि) पैदा करना।

**उपजीविका** स्त्री० (सं) १-प्रधान जीविका के अतिरिक्त जीवन निर्वाह का और कोई साधन। (ऑक्यूपेशन)। २-जीवन निर्वाह के लिए मिलने वाली अतिरिक्त सहायता या वृत्ति। (एलाउंस)।

**उपजीवी** वि० (हि) १-दूसरे के आश्रय पर निर्वाह करने वाला। २-वेतनभोगी।

**उपज्ञा** स्त्री० (सं) १-वह ज्ञान जो बिना उपदेश के पाता हो। २-कोई नया यन्त्र, पदार्थ या प्रक्रिया ढूंढ निकालना; ईजाद। (इनवेन्शन)।

**उपज्ञाता** पुं० (सं) वह जो कोई नवीन यन्त्र, पदार्थ अथवा प्रक्रिया आविष्कार करता है; आविष्कारक (इनवेन्टर)।

**उपटन** पुं० (हि) १-उबटन। २-निशान।

**उपटना** क्रि० (हि) १-निशान पड़ना। २-उखड़ना।

**उपटाना** क्रि० (हि) १-उबटन लगवाना। २-उखड़वाना।

**उपटारना** क्रि० (हि) १-उठाना। २-हटाना। ३-उच्चाटन करना।

**उपड़ना** क्रि० (हि) उखड़ना।

**उपत्यका** पुं० (सं) पर्वत के पास की भूमि, तराई।

**उपदंश** पुं० (सं) आतशक। (गेग)।

**उपदान** पुं० (सं) वह धन जो किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय। (ग्रेचुइटी)।

**उपदि** क्रि० वि० (हि) १-अपनी इच्छानुसार। २-मनमाने ढंग से।

**उपदिशा** स्त्री० (सं) १-वसियतनामे के अंत में लिखा हुआ परिशिष्ट रूप से कोई संक्षिप्त लेख। (काडिसिल)। २-वसियतनामे का वह अंश जिसमें उक्त लेख होता है। (कॉडिसिल)।

**उपदिशा** स्त्री० (सं) कोण; विदिशा।

**उपदिष्ट** वि० (सं) १-जिसे उपदेश दिया गया हो २-जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो, ज्ञापित।

**उपदेश** पुं० (सं) १-शिक्षा। २-नसीहत।

**उपदेशक**, **उपदेष्टा** पुं० (सं) १-उपदेश देने वाला। २-घूम फिर कर अच्छी बातों का प्रचार करने वाला

**उपदेस** पुं० (सं) देखो 'उपदेश'।

**उपदेसना** क्रि० (हि) उपदेश देना।

**उपद्रव** पुं० (सं) १-उत्पात, हलचल। २-दंगा-फसाद।

**उपद्रवी** वि० (सं) १-उत्पाती। २-नटखट।

**उपद्वीप** पुं० (सं) छोटा टापू, प्रायद्वीप।

**उपधरना** क्रि० (हि) अपनाना।

**उप-धातु** स्त्री० (सं) आठ प्रधान धातुओं के मेल से बनने वाली धातु, जैसे-कांसा।

**उपधारा** स्त्री० (सं) किसी अधिनियम या किसी लेख के अंतर्गत आने वाली धारा का कोई विभाग या अंग। (सब-सेक्शन)।

**उप-नगर** पुं० (सं) १-नगर का बाहरी भाग। २-किसी नगर से सटी हुई कोई बस्ती। (सबर्ब)।

**उप-नदी** स्त्री० (सं) बड़ी नदी में गिरने वाली सहायक नदी।

**उपनना** क्रि० (हि) उत्पन्न होना।

**उपनय** पुं० (सं) १-समीप ले जाना। २-उपनयन-संस्कार। ३-न्यायमत से कोई उदाहरण देकर उसका धर्म या सिद्धान्त अन्यत्र सिद्ध करना। ४-अपने पक्ष का समर्थन में सिद्धान्त आदि का उल्लेख करना। (साइटेशन)।

**उपनयन** पुं० (सं) यज्ञोपवीत संस्कार।

**उपना** क्रि० (हि) उपजना।

**उपनागरिका** स्त्री० (सं) अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद।

**उपनाना** क्रि० (हि) उत्पन्न करना।

**उपनाम** पुं० (सं) १-नाम के अतिरिक्त अन्य नाम २-उपाधि, पदवी।

**उपनायक** पुं० (सं) नाटक में प्रधान नायक का सहकारी।

**उपनायन** पुं० (सं) देखो 'उपनयन'।

**उप-निदेशक** पुं० (सं) निदेशक के अधीन रहकर उसका या उसके समान काम करने वाला व्यक्ति। (डिप्टी-डायरेक्टर)।

**उपनिधि** स्त्री० (सं) अमानत; धरोहर।

**उप-निबंधक** पुं० (सं) निबन्धक के अधीन रहकर उसका या उसके समान कार्य करने वाला व्यक्ति। (सब-रजिस्ट्रार)।

**उप-नियम** पुं० (सं) किसी नियम के अन्तर्गत बना हुआ अन्य छोटा नियम। (सब-रूल)।

**उप-निर्वाचन** पुं० (सं) वह निर्वाचन या चुनाव जो संसद, विधान-मण्डलों, नगरपालिका आदि की अवधि पूर्ण होने से पहले किसी विशेष कारण से उस स्थान अथवा पद के रिक्त हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए किया जाय।

**उपनिविष्ट** वि० (सं) दूसरे स्थान से आकर बसने वाला।

**उपनिवेश** पुं० (सं) १-एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना। २-एक देश के लोगों की दूसरे देश में आबादी। (कॉलोनी)। ३-बाहरी तत्वों, कांटागुओं

आदि का किसी जगह एकत्रित होना। (कॉलोनी)
**उपनिवेशन** पुं० (सं) अन्य देशों में जाकर बस्ती बसाने का कार्य। (कॉलोनिजेशन)।
**उपनिवेशित** वि० (सं) दूसरे स्थान या देश से आकर बसा हुआ।
**उपनिषद्** स्त्री० (सं) किसी के पास बैठना। २-वेद की शिक्षाओं के वह अन्तिम भाग जिनमें आध्यात्म-निरूपण है। ३-गुरु के पास बैठना।
**उपनीत** वि० (सं) १-पास लाया हुआ। २-जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।
**उपनेत** वि० (हि) उत्पन्न।
**उपनेत्र** पुं० (सं) आँखों पर लगाने का चश्मा।
**उपन्यास** पुं० (सं) वाक्य का प्रयोग। २-वह कल्पित बड़ी कहानी जिसमें बहुत से पात्र तथा जीवन के सब अंगों पर प्रकाश डालने वाली विस्तृत घटनाएँ हों। (नॉवेल)।
**उपन्यासकार** पुं० (सं) उपन्यास का लेखक। (नॉवेलिस्ट)।
**उप-पति** पुं० (सं) यार, जार।
**उपपत्ति** स्त्री० (सं) १-किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। २-मेल मिलना; संगति। ३-युक्ति।
**उपपन्न** वि० (सं) १-शरणागत। २-प्राप्त। ३-युक्त ४-अवसर के उपयुक्त।
**उपपादक** वि० (सं) उपपादन करने वाला।
**उपपादन** पुं० (सं) १-काम पूरा करना। २-कोई बात समझाते हुए ठीक सिद्ध करना। (डिमाँस्ट्रेशन)।
**उपपाद्य** वि० (सं) प्रतिपादन या सिद्ध किये जाने योग्य। (थियोरम)।
**उप-पुर** पुं० (सं) देखो 'उपनगर'।
**उप-पुराण** पुं० (सं) अट्ठारह मुख्य पुराणों के अतिरिक्त छोटे पुराण जो संख्या में अट्ठारह हैं।
**उप-बंध** पुं० (सं) १-किसी अधिनियम, विधि आदि के वह खंड अथवा उपखंड जिनमें किसी बात की संभावना आदि को विचार में रखते हुए पहले से कोई प्रबन्ध अथवा गुञ्जाइश रख दी जाय, (प्राविजन)। २-इस प्रकार रखी गई गुञ्जाइश अथवा गुञ्जाइश रखने की क्रिया। (प्राविजन)।
**उपबंधित** वि० (सं) उपबन्ध के अनुसार या उपबन्ध में निर्दिष्ट। (प्रोवाइडेड)।
**उपबरहन** पुं० (हि) सिर के नीचे रखने का तकिया।
**उपभुक्त** वि० (सं) १-व्यवहार में लाया हुआ। २-जूठा, उच्छिष्ट।
**उपभोक्ता** वि० (सं) उपभोग करने वाला। पुं० वह जो वस्तुएँ खरीदकर अपने उपयोग में लाता हो। (कंज्यूमर)।
**उपभोग** पुं० (सं) १-किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या आनन्द लेना। २-बरतना। ३-किसी वस्तु को अपने उपयोग में लाना। (कंजंपशन)।
**उपभोग्य** वि० (सं) उपभोग करने योग्य।
**उपभोग्य-वस्तुएँ** स्त्री० (सं) जनसाधारण के उपयोग या काम आने वाली वस्तुएँ जैसे अन्न, वस्त्र आदि (कंज्यूमर्स-गुड्स)।
**उपमंडल** पुं० (सं) तहसील।
**उप-मन्त्री** पुं० (सं) किसी विभागीय मन्त्री के सहायक रूप में कार्य करने वाला मन्त्री। (डिप्टीमिनिस्टर)
**उप-मर्दन** पुं० (सं) १-बुरी तरह से दबाना अथवा रौंदना। २-उपेक्षा या तिरस्कार करना।
**उपमा** स्त्री० (सं) १-सादृश्य; समानता। २-तुलना, मिलान। ३-एक अर्थालंकार।
**उपमाता** पुं० (सं) उपमा देने वाला।
**उप-माता** स्त्री० (सं) धाय।
**उपमान** पुं० (सं) १-वह जिसके साथ उपमा की जाय। २-न्याय के चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। ३-२३ मात्राओं का एक छन्द।
**उपमाना** क्रि० (हि) उपमा देना।
**उप-मार्ग** पुं० (सं) पास का मार्ग या रास्ता, छोटा रास्ता।
**उपमित** वि० (सं) जिसकी उपमा दी गई हो। पुं० (सं) कर्मधारय के अन्तर्गत एक समास जो दो शब्दों के उपमावाचक शब्दों का लोप करके बनाया जाता है। जैसे-पुरुषसिंह।
**उपमिति** स्त्री० (सं) उपमा या समता से होने वाला ज्ञान।
**उपमेय** वि० (सं) जिसकी उपमा दी जाय, वर्ण्य।
**उपमेयोपमा** स्त्री० (सं) एक उपमा अलंकार।
**उपयना** क्रि० (हि) न रहना; उड़ जाना।
**उपयुक्त** वि० (सं) उचित; मुनासिब।
**उपयोग** पुं० (सं) १-व्यवहार; इस्तेमाल। २-लाभ, फायदा। ३-योग्यता। ४-आवश्यकता।
**उपयोगिता** स्त्री० (सं) १-लाभकारिता। २-अनुकूलता।
**उपयोगिता-वाद** पुं० (सं) वह वाद या मत जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु तथा बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता या लाभकारिता की दृष्टि से किया जाता है तथा उसके नैतिक अंगों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। (यूटिलिटेरियनिज्म)।
**उपयोगितावादी** पुं० (सं) उपयोगितावाद को मानने वाला। (यूटिलिटेरियन)।
**उपयोगी** वि० (सं) लाभदायक। २-काम का। ३-अनुकूल।
**उपयोजन** पुं० (सं) १-अपने काम में लाना। २-(कोई वस्तु या धन) अधिकार में लेना या अपने प्रयोग में लाना; विनियोग। (ऐप्रोप्रिएशन)।

**उपरंजन** पुं० (सं) किसी वस्तु अथवा बात का अन्य वस्तु या बात पर पड़ने वाला ऐसा अनिष्ट प्रभाव जिससे प्रभावित होने वाली वस्तु या बात की उपयोगिता कम होती है। (एफेक्टेशन)।

**उपरंजित, उपरक्त** वि० (सं) जिस पर किसी का कोई प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो। (एफेक्टेड)।

**उपरत** वि० (सं) विरक्त।

**उपरति** स्त्री० (सं) १-विषय से विराग; विरति। २-उदासीनता। ३-मृत्यु।

**उपरत्न** पुं० (सं) घटिया किस्म के रत्न।

**उपरथ्या** स्त्री० (सं) छोटी सड़क। (बाई-रोड)।

**उपरना** पुं० (हि) ऊपर ओढ़ने का दुपट्टा। क्रि० (हि) उखड़ना।

**उपरला** वि० (हि) ऊपर वाला।

**उपरहित** पुं० (हि) पुरोहित।

**उपरहिती** स्त्री० (हि) पुरोहिती।

**उपरांत** क्रि० वि० (सं) अनंतर, बाद; पीछे।

**उपराग** पुं० (सं) १-रंग। २-किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास पड़ना। ३-विषयों में अनुरक्ति। ४-चाँद या सूर्य ग्रहण।

**उपराज** पुं० (सं) राजा का प्रतिनिधि जो किसी अन्य देश में शासक हो।

**उपराज-दूत** पुं० (सं) किसी देश का वह कूटनीतिक प्रतिनिधि जिसे अन्य देश में राजदूत का पद प्राप्त न हुआ हो। (लिगेट)।

**उपराज-दूतावास** पुं० (सं) उपराजदूत के रहने का स्थान। (लिगेशन)।

**उपराजना** क्रि० (हि) १-पैदा करना। २-बनाना। ३-कमाना।

**उपराज-प्रतिनिधि** पुं० (सं) देखो 'उपराज-दूत'।

**उपराजप्रमुख** पुं०(सं) 'ख' भाग के राज्य के वैधानिक शासन का सहायक जो राजप्रमुख की अनुपस्थिति में उसका कार्य भार संभालता है।

**उपराज्यपाल** पुं० (सं) किसी 'ग' श्रेणी के राज्य में मुख्य आयुक्त के स्थान पर राज्यपाल के अधिकारों से युक्त कार्य करने वाला शासक। (लेफ्टीनेंट-गवर्नर)।

**उपराना** क्रि० (हि) १-तल से उठकर ऊपर आना। २-सन्मुख आना। ३-उतराना। ४-उठाना ५-प्रकट करना।

**उपराष्ट्रपति** पुं० (सं) राष्ट्रपति की अनुपस्थिति, बीमारी आदि के समय उसके कार्यों का निर्वाहन करने वाला गणतंत्र का निर्वाचित पदाधिकारी (जो राज्य सभा का पदेन सभापति होता है)। (वाइस प्रेसिडेंट)।

**उपराहना** क्रि० (हि) बड़ाई कराना।

**उपराही** क्रि० वि० (हि) ऊपर। वि० (हि) १-श्रेष्ठ। २-अधिक।

**उप-रूपक** पुं० (सं) नाटक के १८ भेदों में से एक, छोटा नाटक।

**उपरैना** (हि) पुं० दुपट्टा; चादर।

**उपरैनी** स्त्री० (हि) ओढ़नी।

**उपरोक्त** वि० (हि) ऊपर कहा हुआ।

**उपरोध** पुं० (सं) १-रोक; बाधा। २-आच्छादन; ढकना।

**उपरौना** पुं० (हि) उपरना।

**उपर्युक्त** वि० (सं) ऊपर कहा हुआ।

**उपल** पुं० (सं) १-पत्थर। २-ओला। ३-रत्न। ४-बादल।

**उपलक्ष** पुं० देखो 'उपलक्ष्य'।

**उपलक्षण** पुं० (सं) १-बोध कराने वाला चिह्न या संकेत। २-अपनी तरह दूसरी वस्तु को बताने वाला शब्द।

**उपलक्ष्य** पुं० (सं) १-संकेत; चिह्न। २-दृष्टि; उद्देश्य

**उपलब्ध** वि० (सं) १-मिला हुआ; प्राप्त। २-ज्ञात, जाना हुआ।

**उपलब्धि** स्त्री० (सं) १-प्राप्ति। २-समझ। ३-किसी पण्य वस्तु की वह संख्या अथवा परिमाण जो बाजार में मांग की पूर्ति या खरीदने के लिए किसी समय प्राप्य हो। (सप्लाई)। ४-वह लाभ जो किसी पद पर काम करने पर वेतन या परिश्रम के रूप में मिले। (इमाल्यूमेंट)। ५-मिली हुई सफलता। (अचीह्वमेंट)।

**उपला** पुं० (हि) पाथ कर सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोहरा।

**उपल्ला** पुं० (हि) ऊपर की परत या तह।

**उपवन** पुं० (सं) १-बाग, फुलवारी। छोटा जंगल।

**उपवना** क्रि० (हि) १-अदृश्य होना। २-उदय होना

**उप-वाक्य** पुं० (सं) किसी बड़े वाक्य का वह भाग या अंश जिसमें कोई समापिका क्रिया हो। (क्लॉज)।

**उपवास** पुं० (सं) भोजन न करना; फाका।

**उपवासी** वि० (सं) फाका करने वाला।

**उपविधि** स्त्री० (सं) किसी विधि के अन्तर्गत बनाई गई छोटी विधि। (बाई-लॉ)।

**उप-विभाग** पुं० (सं) किसी विभाग के अन्तर्गत छोटा विभाग। (सब-डिवीजन)।

**उप-विष** पुं० (सं) हलका विष।

**उप-विष्ट** वि० (सं) बैठा हुआ।

**उपवीत** पुं० (सं) १-जनेऊ। २-उपनयन।

**उपवीथि** स्त्री० (सं) १-पास की गली। २-छोटी गली। (बाई-स्ट्रीट)।

**उप-वीथिका** स्त्री० (सं) १-किसी प्रमुख मार्ग से मिलने वाला छोटा मार्ग या गली। (बाई-लेन)।

**उप-वेद** पुं० (सं) वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हुई कही जाती हैं।

**उपवेशन** पुं० (सं) १-बैठना। २-स्थित होना। ३-सभा की बैठक होती रहने की स्थिति। (सिटिंग)।

**उपशम, उपशमन** पुं० (सं) १-इन्द्रिय निग्रह। २-निवृत्ति, छुटकारा। ३-क्लेश, विपत्ति आदि के निवारण की युक्ति या उपाय। (रिलीफ)।

**उप-शाला** स्त्री० (सं) १-दालान। २-बैठक।

**उप-शिष्य** वि० (सं) चेले का चेला।

**उपसंक्षेप** पुं० (सं) १-किसी विवरण, हिसाब आदि का संक्षिप्त रूप। (ऐब्स्ट्रैक्ट)। २-किसी बात की मुख्य और सारभूत विशेषताएँ; सारांश। (समरी)

**उप-संपादक** पुं० (सं) १-किसी कार्य के मुख्य कर्ता का सहायक या बदले में काम करने वाला। २-किसी पत्र के सम्पादक का सहायक।

**उपसंहार** पुं० (सं) १-परिहार। २-अन्त। ३-सारांश ४-पुस्तक का वह अन्तिम अध्याय जिसमें सारी पुस्तक का परिणाम संक्षेप में निर्दिष्ट हो।

**उप-सचिव** पुं० (सं) वह विभागीय अधिकारी जो पद, मर्यादा आदि के विचार से संयुक्त-सचिव के बाद आता है। (डिप्टी-सेक्रेटरी)।

**उप-सभापति** पुं० (सं) किसी संस्था के सभापति या प्रधान के नीचे का अधिकारी। (वाइस-प्रेसिडेन्ट)

**उप-समाहर्त्ता** पुं० (सं) समाहर्त्ता के सहायक के रूप में कार्य करने वाला अधिकारी। (डिप्टी-कलक्टर)

**उप-समिति** स्त्री० (सं) किसी बड़ी सभा या समिति द्वारा बनाई हुई छोटी समिति। (सब-कमेटी)।

**उपसर्ग** पुं० (सं) १-वह अव्यय जो शब्द के पहले जोड़ा जाता है और उसके अर्थ में लाता है। २-अपशकुन। ३-दैवी उत्पात। ४-देखो 'उप-जात'।

**उप-सागर** पुं० (सं) खाड़ी।

**उपसाधक** वि० (सं) किसी असंगत कार्य, अपराध या कुकर्म में सहयोग देने या उकसाने वाला। (ऐक्सेसॉरि)।

**उपसाधन** पुं० (सं) किसी असंगत कार्य, अपराध या कुकर्म में सहयोग देना या उकसाना। (ऐक्सेसॉरि)

**उपस्कर** पुं० (सं) १-घर का सामान या सजावट की सामग्री। २-कोई वस्तु बनाने या कोई कार्य करने का छोटा यन्त्र; उपकरण। (अपेरेटस)।

**उपस्करण** पुं० (सं) घर, वास, स्थान आदि सजाने का कार्य (फर्निशिंग)।

**उप-सेवा** स्त्री० (सं) १-सेवा। २-नौकरी।

**उप-सेवी** वि० (सं) १-खिदमतगार। २-नौकर।

**उपस्कार** वि० (सं) घर की सजावट के काम आने वाली (कुरसी, मेज आदि)। (फरनीचर)।

**उपस्कृत** वि० (सं) उपस्कारों द्वारा सजा हुआ (घर या कमरा)। (फरनिश्ड)।

**उपस्थ** पुं० (सं) १-नीचे या मध्य का भाग। २-पेडू ३-लिंग। ४-भग। ५-गोद।

**उपस्थापन** पुं० (सं) १-सामने आना। २-पूजा या उपासना के लिए निकट आना। ३-सभा, समाज। ४-संसद् विधान-सभा आदि के सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित करना। (प्रेजेंटेशन) ५-किसी अधिकारी के सम्मुख उसकी स्वीकृति के लिए रखना। (प्रेजेंटेशन)।

**उपस्थापित** वि० (सं) १-(कोई प्रस्ताव आदि संसद्, विधान-सभा आदि के) विचारार्थ उपस्थित किया हुआ। २-स्वीकृति के लिए रखा हुआ। (प्रेजेंटेड)

**उपस्थित** वि० (सं) १-मौजूद; हाजिर। २-याद; स्मरण।

**उपस्थिति** स्त्री० (सं) विद्यमानता; मौजूदगी।

**उपस्थिति-अधिकारी** पुं० (सं) शिक्षा संस्था का वह अधिकारी जो शिक्षार्थियों की उपस्थिति सम्बन्धी देख भाल करता या उपस्थिति बढ़ाने का प्रयत्न करता हो।

**उपस्थिति-पंजिका** स्त्री० (सं) हाजिरी का रजिस्टर।

**उपस्थिति-पत्र** पुं० (सं) राज्य या राज्यकीय अधिकारी द्वारा किसी को भेजा जाने वाला अधिकृत-पत्र, आकारक। (साइटेशन)।

**उपहत** वि० (सं) १-चोट खाया हुआ। (हर्ट)। २-आपत्ति में पड़ा हुआ। ३-नष्ट किया हुआ। ४-जिस पर किसी प्रकार का अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो।

**उपहसित** पुं० (सं) नाक फुला कर आँखें टेढ़ी करके तथा गर्दन हिलाकर हँसने का ढंग।

**उपहार** पुं० (सं) भेंट; नजर।

**उपहास** पुं० (सं) १-हँसी। २-निंदासूचक हास।

**उपहासास्पद** वि० (सं) १-उपहास के योग्य। २-निन्दनीय।

**उपहासी** स्त्री० (हि) उपहास।

**उपहास्य** वि० (सं) देखो 'उपहासास्पद'।

**उपही** पुं० (हि) अपरिचित; अजनबी।

**उपांग** पुं० (सं) १-अवयव। २-मुख्य वस्तु के पूरक अंग (जैसे-वेदांग उपांग)। ३-तिलक; टीका।

**उपांत** पुं० (सं) १-आखरी हिस्सा। २-आसपास का भाग। ३-हाशिया; (मार्जिन)।

**उपांतस्थ** वि० (सं) हाशिया पर होने, रहने या लिखा जाने वाला; (मार्जिनल)।

**उपांतस्थ साक्षी** पुं० (सं) वह साक्षी जिसने हाशिये पर हस्ताक्षर या अंगूठे का चिह्न किया हो (मार्जिनल-विटनेस)।

**उपाइ, उपाउ** पुं० (हि) देखो 'उपाय'।

**उपाकरण** पुं० (सं) योजना; अनुष्ठान।

**उपाकर्म** पुं० (सं) १-विधि के अनुसार वेदों का अध्ययन। २-यज्ञोपवीत संस्कार।

**उपाख्यान** पुं० (सं) १-प्राचीन वृतांत। २-अन्तर्कथा; वृत्तांत।
**उपाटना, उपाड़ना** क्रि० (हि) उखाड़ना।
**उपाती** स्त्री० (हि) उत्पत्ति।
**उपादान** पुं० (सं) १-प्राप्ति। २-स्वीकार। ३-ज्ञान, बोध। ४-वह कारण जो स्वयम् कार्य का रूप धारण कर ले। ५-किसी की कोई वस्तु लेकर अपने उपयोग में लाना। (एप्रोप्रिएशन)। ६-वह सामग्री जिससे कोई वस्तु बने; (कॉनस्टिचुएण्ट)।
**उपादान लक्षणा** स्त्री० (सं) साहित्य में लक्षणा का एक भेद।
**उपादि** स्त्री० (हि) देखो 'उपाधि'।
**उपादेय** वि० (सं) १-ग्रहण करने योग्य। २-उत्कृष्ट।
**उपाधि** स्त्री० (सं) १-छल; कपट। २-उपद्रव। ४-वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और दिखाई दे। ५-प्रतिष्ठा सूचक पद; खिताब। (टाइटिल)। ६-किसी वस्तु, वर्ग आदि को सूचित करने वाला नाम। (एपेलेशन)।
**उपाधि-धारी** पुं० (सं) खिताब या उपाधि प्राप्त व्यक्ति।
**उपाध्यक्ष** पुं० (सं) १-किसी संस्था के अध्यक्ष का सहायक। २-लोक सभा या विधान सभा के अध्यक्ष के सहायक के रूप में या उसकी अनुपस्थिति में सभा का संचालन करने वाला अधिकारी। (डिप्टी स्पीकर)।
**उपाध्याय** पुं० (सं) १-अध्यापक; शिक्षक। २-वेद वेदांग पढ़ाने वाला।
**उपानह** पुं० (सं) जूता।
**उपाना** क्रि० (हि) १-उपजाना। २-उपाय करना। ३-सोचाना। ४-उपजना। ५-मन में आना।
**उपान्न** पुं० (सं) बुरी कमाई का अन्न।
**उपाय** पुं० (सं) १-युक्ति; तरकीब। २-पास पहुँचना।
**उपायन** पुं० (सं) उपहार; भेंट।
**उपायी** वि० (हि) उपाय करने वाला।
**उपायुक्त** पुं० (सं) किसी जिले या उपप्रान्त की शासन व्यवस्था रखने वाला प्रमुख अधिकारी।
**उपार्जन** पुं० (सं) १-नौकरी। २-देखो 'अधियोजन'।
**उपार्जक** वि० (सं) कमाने वाला।
**उपार्जन** पुं० (सं) १-कमाना। २-वैध उपायों के द्वारा या अधिकार पूर्वक प्राप्त करके अपने अधिकार में लेना। (एक्विजिशन)।
**उपार्जित** वि० (सं) १-कमाया हुआ। २-संग्रहहीन। ३-प्राप्त किया हुआ।
**उपार्पण** पुं० (सं) कारागार या जेल भेजने का परवाना। (कॉमिटमेंट)।
**उपालंभ** पुं० (सं) शिकायत; उलाहना।
**उपालंभन** पुं० (सं) उलाहना देना।
**उपाव** पुं० (हि) उपाय।
**उपाश्रित** वि० (सं) (वह विधि, नियम या आज्ञा) जो किसी अन्य विधि, नियम या आज्ञा पर आश्रित या अवलंबित हो। (सब्जेक्ट टु)।
**उपास** पुं० (हि) उपवास।
**उपासना** स्त्री० (सं) १-पूजा, आराधना। २-पास बैठने की क्रिया या भाव। क्रि०(हि)१-पूजा करना। २-उपवास करना।
**उपासा** पु० (हि) भूखा; निराहार।
**उपासी** वि० (हि) १-उपासक, पूजक। २-उपवास करने वाला।
**उपास्य** वि० (सं) आराध्य; पूज्य।
**उपाहार** पुं० (सं) जलपान; कलेवा; नाश्ता।
**उपाहार-गृह** पुं० (सं) १-वह स्थान जहाँ जलपान का सामान (चाय मिठाई आदि) मिले या जहाँ जलपान किया जा सके। (रिफ्रेशमेंट रूम)।
**उपेंद्र** पुं० (सं) १-इन्द्र का छोटा भाई वामन। २-विष्णु।
**उपेंद्रवज्रा** स्त्री० (सं) ग्यारह वर्णों का एक छंद।
**उपेक्षक** वि० (सं) १-लापरवाह। २-घृणा करने वाला
**उपेक्षणीय** वि० (सं) अपेक्षा के योग्य।
**उपेक्षा** स्त्री० (सं) १-लापरवाही। २-अयोग्य समझ कर ध्यान न देना या सत्कार न करना। (डिसरिगार्ड)।
**उपेक्षित** वि० (सं) जिसकी अपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।
**उपेक्ष्य** वि० (सं) अपेक्षा के योग्य।
**उपेत** वि० (सं) १-बीता हुआ। २-मिला हुआ. प्राप्त। ३-युक्त।
**उपेना** वि० (हि) उघाड़ा; नंगा। क्रि० (हि) लुप्त होना, उड़ना।
**उपोत्पाद, उपोत्पादन** पुं० (सं) वह गौण उत्पादन जो किसी अन्य मुख्य वस्तु का निर्माण करते समय आप से आप तैयार हो जाय, जैसे-गुड़ से शीरा, उपजात। (बाई-प्राडक्ट)।
**उपोद्घात** पुं० (सं) १-भूमिका; प्रस्तावना। २-कोई व्यवस्था अथवा कार्यारम्भ करने से पूर्व उसकी तैयारी के निमित्त किया जाने वाला प्रारंभिक कार्य (प्रिलिमिनरी)।
**उपोष, उपोषण, उपोसथ** पुं० (सं) उपवास; निराहार व्रत।
**उप्पति** पुं० देखो 'उत्पत्ति'।
**उफ** अव्य० (स) अफसोस या आश्चर्यसूचक अव्यय
**उफड़ना** क्रि० (हि) उबलना।

**उफनना** क्रि० (हि) १-उबलना। २-उमड़ना। ३-जोश में आना।
**उफान** पुं० (हि) १-उबाल। २-जोश।
**उफाल** स्त्री० (हि) लम्बा डग।
**उबकना** क्रि० (हि) वमन करना।
**उबकाई** स्त्री० (हि) वमन का उद्गार; मतली आना
**उबट** पुं० (हि) विकट मार्ग। वि० (हि) ऊबड़-खाबड़।
**उबटन** पु० (हि) शरीर पर लगाने का एक प्रकार का लेप।
**उबटना** क्रि० (हि) १-उबटन लगाना। २-पलटना। ३-पलटाना।
**उबना** क्रि०(हि) १-उगना। २-ऊबना। ३-उबहना
**उबरना** क्रि० (हि) १-उद्धार पाना। २-बचना।
**उबरा** वि० (हि) फालतू; बचा हुआ।
**उबलना** क्रि० (हि) १-खौलना। २-उमड़ना।
**उबहना** क्रि० (हि) १-हथियार उठाना। २-(पानी) उलीचना। ३-जोतना। ४-उभारना। ५-खुलना। वि० (हि) नंगे पैर।
**उबांत** स्त्री० (हि) के; वमन।
**उबाई** स्त्री० (हि) ऊब जाने की स्थिति।
**उबाना** वि० (हि) नंगे पैर; बिना जूते का। पुं० (हि) राछ के बाहर का सूत।
**उबार** पुं० (हि) निस्तार; छुटकारा; मोक्ष।
**उबारता** स्त्री० (हि) देखो 'उबार'।
**उबारना** क्रि० (हि) छुड़ाना; उद्धार करना।
**उबाल** पुं० (हि) १-उफान। २-आवेश।
**उबालना** क्रि० (हि) खौलाना।
**उबासी** स्त्री० (हि) जँभाई।
**उबीठना** क्रि० (हि) १-ऊबना। २-घबराना।
**उबीधा** वि०(हि) १-फंसा या धंसा हुआ। २-कंटीला
**उबेना** वि (हि) नंगे पैर का।
**उबेरना** क्रि० (हि) १-उबारना। २-रक्षा करना।
**उबेहना** क्रि० (हि) १-बैठाना; जड़ना। २-पिरोना। ३-उबहना।
**उबौवा** वि० (हि) ऊबा जाने वाला।
**उभटना** क्रि० (हि) १-अभिमान करना। २-उभड़ना
**उभड़ना, उभना** क्रि० (हि) १-ऊपर उठाना। २-उकसना। ३-पैदा होना। ४-जोश में आना। ५-गाय भैंस आदि का मस्त होना। ६-जवानी पर आना। ७-बढ़ जाना। ८-हट जाना।
**उभय** वि० (सं) दोनों।
**उभयतः** क्रि० वि० (सं) दोनों ओर से।
**उभयनिष्ठ** वि० (सं) १-दोनों में निष्ठा रखने वाला। २-दोनों में सम्मिलित होने वाला।
**उभय-लिंग** पुं० (सं) १-वह संज्ञा जिसका प्रयोग दोनों लिंगों में होता हो (व्याकरण)। २-ऐसा जीव जिसमें स्त्री पुरुष दोनों के चिह्न समान रूप से पाये जाते हैं।
**उभय-संकट** पु० (सं) काम करने या न करने, दोनों अवस्थाओं में आने वाले-संकट; धर्म-संकट।
**उभयालंकार** पुं० (स) साहित्य में वह अलंकार जिसमें शब्द और अर्थ दोनों का चमत्कार हो।
**उभरना** क्रि० (हि) उभड़ना।
**उभरौंहा** वि० (हि) उभार पर आया हुआ।
**उभाड़** पुं० (हि) १-उठान। २-वृद्धि। ३-ऊँचाई।
**उभाड़ना** क्रि० (हि) १-उकसाना। २-उत्तेजित करना।
**उभाड़दार** वि० (हि) १-उभड़ा हुआ। २-भड़कीला।
**उभाना** क्रि० (हि) देखो 'अभुआना'।
**उभार** पु० (हि) उभाड़।
**उभिटना** क्रि० (हि) ठिठकना।
**उभै** वि० (हि) उभय; दोनों।
**उमंग** स्त्री० (हि) १-सुखदायक मनोवेग; जोश। २-उभाड़।
**उमंडना** क्रि० (हि) उमड़ना।
**उमकना** क्रि० (हि) १-उखड़ना। २-उमगना।
**उमग** स्त्री० (हि) देखो 'उमंग'।
**उमगन** स्त्री० (हि) हर्ष; खुशी।
**उमगना** क्रि० (हि) १-उमड़ना। २-फूले न समाना
**उमगान** स्त्री० (हि) उभार; उमंग।
**उमगाना** क्रि० (हि) १-उमड़ाना। २-हुलसाना।
**उमचना** क्रि० (हि) १-पैर से कुचलना। २-चौंक पड़ना।
**उमड़** स्त्री० (हि) १-उमड़ने की क्रिया या भाव, बाढ़, चढ़ाव। २-घिराव; छाजन। ३-धावा।
**उमड़ना** क्रि० (हि) १-उभड़ना। २-आच्छादित कर लेना। ३-लबालब भर जाना। ४-बह जाना।
**उमड़ाना** क्रि० (हि) १-उमड़ना। २-उमड़ने का कार्य अन्य से कराना।
**उमड़ाव** पुं० (हि) उमड़ने की क्रिया या भाव।
**उमदना** क्रि० (हि) १-मतवाला होना या करना। २-उमड़ना।
**उमदा** वि० (अ) उत्तम; बढ़िया।
**उमदाना** क्रि० (हि) १-उन्मत्त होना। २-उमंग में आना। वि० (हि) मतवाला।
**उमयना** क्रि० (हि) १-बटोरना। २-अपने ऊपर लेना
**उमर** स्त्री० (अ) १-वय; अवस्था। २-आयु, जीवन-काल।
**उमरा** पुं० (अ) धनी लोग (अमीर का बहुवचन)।
**उमराव** पुं० देखो 'उमरा'।
**उमस** स्त्री० (हि) हवा न चलने पर होने वाली गरमी
**उमहना, उमहाना** क्रि० (हि) उमड़ना।
**उमा** स्त्री० (सं) १-शिव-पत्नी; पार्वती। २-दुर्गा।

३-कीर्ति। ४-कान्ति।
**उमाकना** क्रि० (हि) १-जड़ से उखाड़ना। २-नष्ट करना।
**उमा-कांत** पुं० (सं) शिव।
**उमाखना** क्रि० (हि) १-उखाड़ना। २-उभाड़ना।
**उमाद** पुं० (हि) उन्माद।
**उमाधव, उमापति** पुं० (सं) शिव।
**उमाह** पुं० (हि) उमंग।
**उमाहना** क्रि० (हि) १-उमड़ना। २-उमगाना।
**उमाहल** वि० (हि) उत्साहित।
**उमेठना** क्रि० (हि) मरोड़ना; ऐंठना।
**उमेठवाँ** वि० (हि) मरोड़दार; ऐंठनदार।
**उमेड़ना** क्रि० (हि) उमेठना।
**उमेलना** क्रि० (हि) १-खोलना। २-वर्णन करना।
**उमेह** पुं० (हि) उमंग।
**उमैना** क्रि० (हि) मनमाना आचरण करना।
**उम्दगी** स्त्री० (अ) अच्छापन; खूबी।
**उम्दा** वि० (अ) अच्छा; उत्तम।
**उम्मि** स्त्री० (हि) ऊर्मि, लहर।
**उम्मीद, उम्मेद** स्त्री० (फा) १-आशा। २-भरोसा।
**उम्मेदवार** वि० (फा) १-उम्मेद रखने वाला; आशावान। २-नौकरी के लिए प्रार्थना करने वाला। ३-किसी पद के लिए चुनाव में खड़ा होना।
**उम्मेदवारी** स्त्री० (फा) १-उम्मेदवार होने की क्रिया या भाव। २-आशा; आसरा। ३-किसी स्थान पर नियुक्त होने या चुने जाने की आशा रखने वाला। ४-बिना वेतन या कम वेतन पर उम्मेदवार होकर कार्य करना। ५-गर्भवती का निकट भविष्य में सन्तान होने की आशा।
**उम्र** स्त्री० (अ) वय; आयु।
**उर** पुं० (सं) १-छाती। २-हृदय, मन।
**उरई** स्त्री० (हि) उशीर; खस।
**उरकना** क्रि० (हि) रुकना, ठहरना।
**उरग** पुं० (सं) साँप।
**उरगना** क्रि० (हि) १-स्वीकार करना। २-सहना।
**उरगाय** पुं० (हि) विष्णु।
**उरगारि** पुं० (सं) गरुड़।
**उरगिनी, उरगी** स्त्री० (हि) सर्पिणी, नागिन।
**उरज, उरजात** पुं० (हि) कुच, स्तन।
**उरझना** क्रि० (हि) उलझना।
**उरझाना** क्रि० (हि) उलझाना।
**उरझेर** पुं० (हि) हवा का झोंका।
**उरझेरी** स्त्री० १-व्याकुलता। २-उरझेर।
**उरझौहा** वि० (हि) उलझने वाला।
**उरण** पुं० (सं) १-भेड़ा। २-युरेनस नामक ग्रह।
**उरद** पुं० (हि) एक अन्न जिसकी दाल बनती है; माष।
**उरध** क्रि० वि० (हि) देखो 'ऊर्ध्व'।
**उरधारना** क्रि० (हि) १-उधेड़ना। २-बिखराना।
**उरन** वि० (हि) उरण, भेड़ा।
**उरना** क्रि० (हि) १-उड़ना। २-भागना।
**उरबसी** स्त्री० (हि) उर्वशी नामक अप्सरा।
**उरबी** स्त्री० (हि) दे० 'उर्वी'।
**उरमंडन** पुं० (स) परम प्रिय।
**उरमना** क्रि० (हि) लटकना।
**उरमाना** क्रि० (हि) लटकाना।
**उरमाल** पुं० (हि) रूमाल। स्त्री० गले की वह माला जो छाती तक आती है।
**उरमी** स्त्री० (हि) १-लहर। २-कष्ट।
**उररना** क्रि० (हि) १-बलपूर्वक घुसना। २-उमंग सहित आगे बढ़ना।
**उरविज** पुं० (हि) मंगल ग्रह।
**उरला** वि० (हि) १-इधर का; इस तरफ का। २-पिछला। ३-निराला।
**उरस** वि० (हि) नीरस; फीका। पुं० (हि) १-वक्षस्थल, २-हृदय।
**उरसना** क्रि० (हि) उथल-पुथल करना।
**उरसिज** पुं० (स) स्तन।
**उरहना** पुं० (हि) उलाहना।
**उरा** स्त्री० (हि) उर्वी; पृथ्वी।
**उराउ** पुं० (हि) उत्साह; चाव।
**उराट** क्रि० (हि) उर; छाती।
**[illegible]राना** क्रि० (हि) देखो 'ओराना'।
**उरारा** वि० (हि) चौड़ा; विस्तृत।
**उराव** पुं० (हि) १-उमंग। २-चाव।
**उराहना** क्रि० (हि) उलाहना; उपालंभ।
**उरिण, उरिन** वि० (हि) देखो 'उऋण'।
**उरिष्ठ** पुं० देखो 'पीठा'।
**उरु** वि० (स) विस्तीर्ण; लम्बा-चौड़ा। पुं० (हि) जांघ, जंघा।
**उरुगाय** पुं० (सं) विष्णु।
**उरुगिनी** स्त्री० (हि) सर्पिणी; नागिन।
**उरुजना** क्रि० (हि) उलझना।
**उरुवा** पुं० (हि) उल्लू के सदृश्य एक चिड़िया, उरुआ।
**उरुग** पुं० (हि) उरग; साँप।
**उरूज** पुं० (अ) बढ़ती, वृद्धि।
**उरे** क्रि० वि० (हि) १-इस तरफ। २-परे। ३-अलग ४-दूर।
**उरेखना** क्रि० (हि) १-चित्रांकित करना। २-अवरेखना।
**उरेह** पुं० (हि) १-चित्र। २-चित्रकारी।
**उरेहना** क्रि० (हि) चित्रांकन करना; खींचना।
**उरेंड़** स्त्री० (हि) १-अत्याधिक परिमाण में आजाना

२-प्रवाह, बहाव।
**उरंडना** क्रि० (हि) १-उड़ेलना। २-गिराना।
**उरोज** पु० (सं) कुच; स्तन।
**उर्द** पुं० देखो 'उरंद'।
**उर्दू** स्त्री० (तु) १-छावनी का बाजार। २-फारसी-लिपि में लिखी जाने वाली भाषा जो हिन्दी से मिलती-जुलती है।
**उर्ध** वि० (सं) ऊर्ध्व।
**उर्फ** पुं० (अ) उपनाम।
**उर्मि** स्त्री० (हि) देखो 'ऊर्मि'।
**उर्वर** वि० (सं) १-उपजाऊ। ३-जिससे बहुत सारी बातें या चीजें निकलती या उत्पन्न होती हों।
**उर्वरक** पुं० (सं) एक प्रकार का रासायनिक खाद जिससे भूमि में उर्वरता की वृद्धि होजाती है। (फर्टिलाइजर)।
**उर्वरता** स्त्री० (सं) उपजाऊपन।
**उर्वरा** वि० (सं) उपजाऊ (भूमि)। स्त्री० (सं) उपजाऊ भूमि।
**उर्वशी** स्त्री० (सं) स्वर्गलोक की एक अप्सरा।
**उर्विजा** देखो 'उर्वीजा'।
**उर्वी** स्त्री० (सं) पृथ्वी। वि० स्त्री०=१-विस्तृत। २-सपाट।
**उर्वीजा** स्त्री० (सं) सीता।
**उर्वीधर** पुं० (सं) १-शेषनाग। २-पर्वत।
**उर्स** पुं० (अ) मुसलमानी पीर की निर्वाण तिथि।
**उलंग** वि० (हिं) नङ्गा।
**उलंगना** क्रि० (हिं) देखो 'उलंघना'।
**उलंघन** पु० देखो 'उल्लंघन'।
**उलंघना** क्रि० (हि) १-उल्लंघन करना। २-अवहेलना करना। ३-लाँघना।
**उलका** स्त्री० (हिं) देखो 'उल्का'।
**उलगाट** स्त्री० (हिं) कूद; फाँद।
**उलगना** क्रि० (हि) उछलना।
**उलगाना** क्रि० (हि) कुदाना; फँदाना।
**उलचना** क्रि० (हि) देखो 'उलीचना'।
**उलछना** क्रि० (हि) १-बिखराना। २-उलीचना। ३-उछलना या उछालना।
**उलछारना** क्रि० (हि) उछालना।
**उलझन** स्त्री० (हिं) १-अटकाव। २-गिरह। ३-बाधा ४-समस्या। ५-चिन्ता।
**उलझना** क्रि० (हि) १-फँसना। २-काम में लीन होना ३-झगड़ा करना। ४-परेशानी में पड़ना। ५-प्रेम करना।
**उलझा** पुं० (हि) उलझन।
**उलझाना** क्रि० (हि) १-अटकाना। २-लगाये रखना ३-टेढ़ा करना। ४-फंसना।
**उलझौंहा** वि० (हि) १-अटकाने वाला। २-लुभाने वाला।
**उलट** स्त्री० =उल्लास।
**उलटना** क्रि०(हि) १-पलटना। २-घूमना। ३-उमड़ना ४-कम विरुद्ध होना। ६-नष्ट होना। ७-बेहोश होना। ८-गिरना। ९-चौपायों की पहली बार गर्भ न धारण करना। १०-औंधा करना। ११-औंधा गिरना। १२-पटकना। १३-किसी लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर उठाना। १४-अस्तव्यस्त करना। १५-पूर्व रूप के विरुद्ध रूप में लाना। १६-विवाद करना। १७-उखाड़ डालना। १८-खेत को पुनः जोतना। १९-बेसुध करना। २०-कै-करना। २१-उड़ेलना। २२-नष्ट या बरबाद करना
**उलट-पलट, उलट-पुलट** स्त्री० (हि) १-अदल-बदल २-अव्यवस्था।
**उलटफेर** पु० (हि) १-परिवर्तन। २-जीवन का हेरफेर।
**उलटवांसी** स्त्री० (हि) ऐसी उक्ति जिसमें साधारण नियम व्यवहार आदि के विरुद्ध बात कही गई हो
**उलटा** वि० (हि) १-औंधा। २-विपरीत। ३-क्रम-विरुद्ध। ४-अयुक्त। ५-बाँया, वाम। ६-आगे का पीछे या पीछे का आगे। क्रि० वि० (हि) १-क्रम विरुद्ध से। २-विपरीत अवस्था के अनुसार। पुं० १-एक पकवान। २-सामने के रुख से पीछे का रुख
**उलटाना** क्रि० (हि) देखो 'उलटना'।
**उलटापुलटा** वि० (हि) बिना ठीक ठिकाने का, अंड-बंड।
**उलटीपुलटी** स्त्री० (हि) अदलबदल; फेरफार।
**उलटाव** पुं० (हि) १-पलटाव; फेर। २-झुकाव।
**उलटी** स्त्री० (हि) १-वमन; कै। २-कलाबाजी।
**उलटे** क्रि० वि० (हि) १-विपरीत क्रमानुसार। २-विरुद्ध व्यवस्था या न्याय से।
**उलत्थना** क्रि० (हि) उलटना।
**उलथना** क्रि० (हि) १-उथलपुथल होना। २-उछलना ३-उमड़ना। ४-उलटना-पलटना।
**उलथा** पुं० (हि) १-एक प्रकार का नृत्य। २-कला-बाजी। ३-करवट बदलना। ४-अनुवाद।
**उलदना** क्रि० (हि) १-उड़ेलना; डालना। २-खूब बरसना।
**उलफत** स्त्री० (अ) प्रेम।
**उलमना** क्रि० (हि) लटकना।
**उलरना** क्रि० (हि) १-कूदना। २-नीचे-ऊपर होना। ३-(बादल) घिर आना।
**उललना** क्रि०(हि) १-ढरकना, ढलना। २-उलटना।
**उलसना** क्रि० (हि) १-खुश होना। २-शोभित होना।
**उलहना** क्रि० (हि) १-उभड़ना। २-प्रस्फुटित होना। ३-प्रसन्न होना। पुं० उलाहना।
**उलही** स्त्री० उलाहना।

**उलाँघना** क्रि० (हि) १-लाँघना। २-अवज्ञा करना।
**उला** स्त्री० (हि) भेड़ का बच्चा; मेमना।
**उलाटना** क्रि० (हि) उलटना।
**उलार** वि० (हि) भार के कारण पीछे की ओर झुकी हुई (गाड़ी)।
**उलारना** क्रि० (हि) उछालना।
**उलास** पुं०— उल्लास।
**उलाहना** पुं० (हि) उपालंभ; शिकायत। क्रि० (हि) १-गिला करना। २-दोष देना।
**उलीचना** क्रि०(हि) हाथ या किसी अन्य वस्तु से जल फेंकना।
**उलूक** पुं० (सं) १-एक पक्षी जिसे उल्लू भी कहते हैं। २-कणाद मुनि का एक नाम। ३-इन्द्र। पुं० (हि) आग का लपट, लौ।
**उलूखल** पुं० (हि) १-ओखली। २-खल, खरल।
**उलेटना** क्रि० (हि) उलटना।
**उलेटा** पुं० (हि) उलटा।
**उलेड़ना** क्रि० (हि) उड़ेलना।
**उलेल** स्त्री० (हि) १-उमंग। २-उछल-कूद। ३-पानी की बाढ़। वि० (हि) १-बेपरवाह। २-अल्हड़। ३-बेसमझ।
**उल्का** स्त्री० (सं) १-प्रकाश। २-ज्वाला। ३-दीपक। ४-टूटता तारा।
**उल्कापात** पुं० (सं) तारा टूटना।
**उल्कामुख-प्रेत** पुं० (सं) मुंह से आग फेंकने वाला एक प्रेत।
**उल्था** पुं० (हि) अनुवाद, भाषान्तर, तर्जुमा।
**उल्लंग** वि० (सं) नंगा।
**उल्लंघन** पुं० (हि) १-लाँघना। २-अतिक्रमण। ३-न मानना। विरुद्धाचरण।
**उल्लंघनीय** वि० (सं) उल्लंघन के योग्य।
**उल्लंघित** वि० (सं) लांघा हुआ।
**उल्लंघ्य** वि० (सं) १-जिसका उल्लंघन हो सके। २-जिसे लांघकर पार कर सकें।
**उल्लसन** पुं० (सं) १-खुशी करना। २-रोमांच।
**उल्लसता** स्त्री० (सं) १-आनन्दित। २-रोमांचित।
**उल्लसित** वि० (सं) १-प्रसन्न। २-रोमांचित।
**उल्लाल, उल्लाला** पुं० (हि) एक मात्रिक अर्धसम-छन्द।
**उल्लास** पुं० (सं) १-प्रकाश। २-प्रसन्नता। ३-अध्याय, पर्व। ४-एक काव्यालंकार।
**उल्लासना** क्रि० (हि) प्रकट करना।
**उल्लिखित** वि० (सं) १-जिसका पहले या ऊपर उल्लेख हुआ हो; पूर्वोक्त। २-कहा हुआ, कथित।
**उल्लू** पुं० (हि) १-एक प्रकार का पक्षी जिसे दिन में दिखाई नहीं देता। २-मूर्ख; बेवकूफ।
**उल्लेख** पुं० (सं) १-लिखना; लेख। २-वर्णन। ३-चर्चा। ४-एक काव्यालंकार।
**उल्लेखनीय** वि० (सं) लिखने के योग्य, उल्लेख करने योग्य।
**उल्लेख्य** वि० (सं) उल्लेख किए जाने के योग्य।
**उल्व** पुं० (सं) १-वह झिल्ली जिसमें बच्चा चिपटा होता है। २-गर्भाशय।
**उवना** क्रि० (हि) उगना।
**उवनि** स्त्री० (हि) १-प्रकाश। २-उदय।
**उशीर** पुं० (सं) खस।
**उषः** स्त्री०=उषा।
**उषःकाल** पुं०=उषाकाल; प्रभात।
**उषःपान** पुं० (सं) नाक के द्वारा पानी पीना या पीकर निकालना; अमृत-पान।
**उषा** स्त्री० (सं) १-अरुणोदय की लालिमा। २-तड़का, प्रभात। ३-बाणासुर की कन्या का नाम।
**उषाकाल** पुं० (सं) प्रभात।
**उष्ट्र** पुं० (सं) ऊंट।
**उष्ण** वि० (सं) १-गरम। २-फुरतीला।
**उष्णकटिबंध** पुं० (सं) कर्क और मकर रेखाओं के मध्य पड़ने वाला भूभाग। (ट्रापिक-जोन)।
**उष्णता** स्त्री० (सं) गरमी; ताप।
**उष्णांक** पुं० (सं) ताप की वह मात्रा जो एक ग्राम पानी को एक अंश सेन्टीग्रेड तक गरम बनाने के लिए आवश्यक हो; तापमापक इकाई। (कैलरी)।
**उष्णीष** पुं० (सं) १-पगड़ी, साफा। २-मुकुट।
**उष्म** पुं० (सं) १-गरमी। २-धूप। ३-गरमी का मौसम।
**उष्मज** पुं० (सं) पसीने और मैल से उत्पन्न होनेवाले छोटे-छोटे जीव। जैसे-खटमल, जूं आदि।
**उष्मा** स्त्री० (सं) १-गरमी २-धूप। ३-क्रोध।
**उस** सर्व० (हि) 'वह' का विभक्ति लगने का पूर्वरूप। जैसे उसको।
**उसकन** पुं० (हि) घास पात जिससे बरतन मांजते हैं।
**उसकना, उसकाना, उसकारना** क्रि० (हि) देखो 'उकसाना'।
**उसटना** क्रि० (हि) १-उखड़ना। २-भागना।
**उसटाना** क्रि० (हि) १-उखाड़ना। २-भगाना।
**उसनना** क्रि० (हि) १-पानी डालकर गूंधना। २-पकाना।
**उसनाना** क्रि० (हि) उबलवाना।
**उसनीस** पुं० (हि) देखो 'उष्णीष'।
**उसमा** पुं० (हि) १-(वस्मा) वस्त्र। २-निवासस्थान।
**उसरना** क्रि० (हि) १-हटना; दूर होना। २-बीतना; गुजरना। ३-भूलना। ४-छिन्नभिन्न होना।
**उसांस** पुं० (हि) १-लम्बी सांस। २-कष्ट या रंज में सांस खींचना।
**उसाना** क्रि० (हि) ओसाना।

**उसार** पुं० (हि) विस्तार।
**उसारना** क्रि० (हि) १-उखड़ना। २-हटाना। ३-बनाकर खड़ा करना। ४-बाहर निकालना अथवा सामने लाना।
**उसारा** पुं० (हि) १-दालान। २-छाजन।
**उसालना** क्रि० (हि) १-उखाड़ना। २-हटाना। ३-भगाना।
**उसास** स्त्री० (हि) देखो 'उसाँस'।
**उसासी** स्त्री० (हि) १-दम लेने की फुरसत। २-छुट्टी
**उसिनना** क्रि० (हि) देखो 'उसनना'।
**उसीर** पुं० (हि) उशीर; खस।
**उसीला** पुं० (हि) वसीला।
**उसीस** पु० (हि) १-पगड़ी। २-ताज। ३-तकिया।
**उसूल** पुं० (अ) सिद्धान्त।
**उसेना** क्रि० (हि) उबालना, पकाना।
**उसेस** पुं० हि) तकिया।
**उस्तरा** पुं० (फा) बाल मूंड़ने का औजार।
**उस्ताद** पुं० (फा) १-गुरु; अध्यापक। २-वेश्याओं का संगीत शिक्षक। वि० १-धूर्त; चालाक। २-निपुण, दक्ष।
**उस्तादी** स्त्री० (फा) १-गुरुआई। २-निपुणता। ३-विज्ञता। ४-चालाकी; धूर्तता।
**उस्तानी** स्त्री० (फा) १-गुरु-पत्नी। २-अध्यापिका। ३-धूर्त स्त्री।
**उस्वास** पुं० (हि) देखो 'उसाँस'।
**उहटना** क्रि० (हि) १-उघड़ना। २-हटना।
**उहाँ** क्रि० वि० (हि) वहाँ।
**उहार** पुं० = देखो 'ओहार'।
**उहि** सर्व० (हि) वह।
**उही** सर्व० (हि) वही।
**उहूल** स्त्री० (हि) तरंग; लहर; मौज।
**उहै** सर्व० (हि) वही।

[शब्दसंख्या ६१६३]

# ऊ

**ऊ** हिन्दी वर्णमाला का छठा स्वर वर्ण इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है. यह 'उ' का दीर्घ रूप है, कहीं-कहीं यह अव्यय के रूप में 'भी' और सर्वनाम के रूप में 'वह' का अर्थ देता है।
**ऊँघ** स्त्री० (हि) नींद का दौरा; झपकी लेना; ऊँचाई
**ऊँघन** स्त्री० (हि) ऊँघ; झपकी।
**ऊँघना** क्रि० (हि) झपकी लेना।
**ऊँच** वि० (हि) ऊँचा।
**ऊँचनीच** वि० (हि) भला-बुरा।
**ऊँचा** वि० (हि) १-ऊपर उठा हुआ। २-उन्नत। ३-श्रेष्ठ।
**ऊँचाई** स्त्री० (हि) १-उच्चता। २-गौरव; बड़ाई।
**ऊँचे** वि० (हि) १-ऊपर की ओर। २-जोर से।
**ऊँट** पुं० (हि) एक लम्बी गरदन और लम्बी टाँगों वाला पशु।
**ऊँड़ा** पु० (हि) १-वह पात्र जिसमें रखकर धन गाड़ा जाता है। २-चहबच्चा; तहखाना। वि० गहरा, गम्भीर।
**ऊँदर** पुं० (हि) चूहा।
**ऊँहूँ** अव्य० (हि) १-नाहीं। २-कभी नहीं।
**ऊअना** क्रि० (हि) उगना।
**ऊआबाई** वि० (हि) व्यर्थ
**ऊक** पुं० (हि) १-उल्का। २-लुक। ३-दाह। स्त्री० भूल, गलती।
**ऊकना** क्रि० (हि) १-चूकना। २-भूल जाना। ३-तपाना।
**ऊख** पुं० (हि) गन्ना। वि० (हि) गरम, तपा हुआ।
**ऊखम** पुं० (हि) ऊष्म।
**ऊखल** पुं० (हि) काठ या पत्थर का बरतन जिसमें मूसल से धान आदि कूटते हैं, ओखली।
**ऊखिल** वि० (हि) १-पराया। २-अपरिचित। ३-कृपण।
**ऊखिलताई** स्त्री० (हि) 'ऊखिल' होने का भाव।
**ऊचट** वि० (हि) नीरस।
**ऊज** पुं० (हि) उत्पात; उपद्रव।
**ऊजड़** वि० (हि) उजड़ा हुआ।
**ऊजना** क्रि० (हि) १-पूरा होना। २-भरना।
**ऊजर** वि० (हि) १-उजला। २-उजाड़।
**ऊजरा** वि० (हि) १-उजला। २-उजड़ा हुआ।
**ऊजू** पुं० = वजू।
**ऊटक-नाटक** पुं० (हि) १-निरर्थक। २-टेढ़ामेढ़ा।
**ऊटना** क्रि० (हि) १-उत्साहित होना। २-सोच-विचार करना।
**ऊटपटांग** वि० (हि) १-बे-मेल; टेढ़ामेढ़ा। २-व्यर्थ
**ऊठ** स्त्री० (हि) उमंग।
**ऊड़ना** क्रि० (हि) १-विवाह करना। २-रखेल रखना।
**ऊड़ा** पुं० (हि) १-घाटा; कमी; टोटा। २-नाश, लोप। ३-लक्ष्य। ४-अकाल। ५-मँहगी।
**ऊड़ी** स्त्री० (हि) १-एक चिड़िया जो पानी में डुबकी लगाती है। २-निशाना।
**ऊढ़** वि० (हि) विवाहित।
**ऊढ़ना** क्रि० (हि) सोचविचार करना।
**ऊढ़ा** स्त्री० (स) १-विवाहिता स्त्री। २-एक प्रकार

की पर किया नायिका।

**ऊत** वि० (हि) १-निःसन्तान। २-मूर्ख।

**ऊतर** पुं० (हि) १-उत्तर। २-बहाना।

**ऊतला** वि० (हि) १-चंचल। २-तेज, वेगवान।

**ऊतिम** वि० (हि) उत्तम।

**ऊद** पुं० (अ) १-अगर का वृक्ष या लकड़ी। २-एक प्रकार का बाजा।

**ऊदबिलाव** पुं० (हि) नेवले के समान एक जन्तु जो जल-स्थल दोनों में रहता है।

**ऊदल** पुं० (हि) महोबे के राजा परमाल का मुख्य सरदार।

**ऊदा** वि० (हि) बैंगनी।

**ऊधम** पुं० (हि) उपद्रव, बखेड़ा।

**ऊधमी** वि० (हि) उपद्रवी।

**ऊधव** पुं० देखो 'उद्धव'।

**ऊधस** पुं० (हि) दूध।

**ऊधो** पुं० (हि) श्रीकृष्ण का सखा उद्धव।

**ऊन** वि० (स) १-छोटा। २-कम। पुं० (हि) १-भेड़ या बकरी का रोयाँ। २-छोटी तलवार।

**ऊनता** स्त्री० (स) १-कमी। २-घाटा।

**ऊना** वि० (हि) १-कम; थोड़ा। २-तुच्छ, हीन। पुं० दुःख, रंज। स्त्री० एक प्रकार की पुरानी तलवार।

**ऊनी** वि० (हि) १-ऊन का बना हुआ। २-कम, न्यून। स्त्री० (हि) १-न्यूनता; कमी। २-उदासी।

**ऊप** स्त्री० देखो 'ओप'।

**ऊपजना** क्रि० (हि) उपजना।

**ऊपर** क्रि० वि० (हि) १-ऊँचाई पर। २-आधार पर। ३-ऊँची श्रेणी में। ४-पहले। ५-किनारे पर। ६-सिवा, अतिरिक्त।

**ऊपरी** वि० (हि) १-ऊपर का। २-बाहर का। ३-दिखावटी। ४-बँधे हुए के सिवा।

**ऊब** स्त्री० (हि) १-व्याकुलता; उद्वेग। २-उत्साह।

**ऊबट** वि० (हि) ऊबड़खाबड़। पुं० (हि) १-कठिन मार्ग। २-कुमार्ग।

**ऊबड़-खाबड़** वि० (हि) जो समतल न हो, ऊँचा-नीचा।

**ऊबना** क्रि० (हि) उकताना।

**ऊबर** पुं० (हि) उबरने की क्रिया या भाव। वि० (हि) अवशिष्ट।

**ऊभ** वि० (हि) १-उभरा हुआ। २-ऊँचा। ३-खड़ा हुआ। स्त्री० (हि) १-व्याकुलता। २-उमस। ३-उमंग।

**ऊभट** वि० (हि) देखो 'ऊबट'।

**ऊभना** क्रि० (हि) १-उठना। २-ऊबना।

**ऊभा** वि० (हि) १-खड़ा। २-उठा हुआ।

**ऊमक** स्त्री० (हि) झोंक; वेग।

**ऊमना** क्रि० (हि) उमड़ना; उमगना।

**ऊमर** पुं० (हि) गूलर।

**ऊमस** स्त्री० (हि) देखो 'उमस'।

**ऊरध** वि० (हि) देखो 'ऊर्ध्व'।

**ऊरमि** वि० (हि) ऊर्मि; लहर।

**ऊरस** वि० (हि) १-रसहीन। २-स्वादरहित। पुं० (हि) नीरस या खराब स्वाद वाला पदार्थ।

**ऊरु** पुं० (सं) जानु; जाँघ।

**ऊरुस्तंभ** पुं० (सं) एक वात रोग जिसमें पैर जकड़ जाते है।

**ऊर्ज** वि० (सं) बलवान्। पुं० १-शक्ति। २-एक काव्यालंकार।

**ऊर्जा** स्त्री० (स) १-बल। २-जीवन। ३-श्वास। ४-जीवनी शक्ति।

**ऊर्जस्वित** वि० (सं) चढ़ा हुआ।

**ऊर्जस्वी** वि० (सं) १-बलवान्। २-तेजवान्। ३-प्रतापी।

**ऊर्जित** वि० (स) ऊर्ज।

**ऊर्ण** पुं० (सं) ऊन।

**ऊर्ध्व** क्रि०वि० (सं) ऊपर। वि० १-ऊँचा। २-खड़ा।

**ऊर्ध्वगामी** वि० (स) १-ऊपर जाने वाला। क्रि० मुक्ति।

**ऊर्ध्व-बाहु** पुं० (स) ऊँचे हाथ करके तपस्या करने वाला साधु।

**ऊर्ध्व-मंडल** पुं० (स) वायुमंडल का एक वह भाग जो अधोमंडल से ऊपर और पृथ्वी तल से बीस मील तक का ऊँचाई तक माना जाता है, इस में तापक्रम स्थिर रहता है।

**ऊर्ध्वरेखा** स्त्री० (सं) पैर की वह रेखा जो अंगूठे या उसके पास की अंगुली से आरम्भ होकर एड़ी तक पहुँचती है।

**ऊर्ध्वरेता** पुं० (सं) ब्रह्मचारी।

**ऊर्ध्वलोक** पुं० (सं) १-आकाश। २-स्वर्ग।

**ऊर्ध्वबिंदु** पुं० (सं) १-खस्तिक शीर्ष बिन्दु। २-अनुस्वार। ३-(खड़े हुए किसी व्यक्ति के सिर के) ऊपर का सबसे ऊँचा बिन्दु अथवा स्थान। (जेनिथ)।

**ऊर्ध्वश्वास** पुं० (स) मरते समय का सांस, लम्बी-सांस।

**ऊर्ध** क्रि० वि०, वि० (स) देखो 'ऊर्ध्व'।

**ऊर्धरेत** पुं० ऊर्ध्वरेता, ब्रह्मचारी।

**ऊर्णनाभि** पुं० (सं) मकड़ी।

**ऊर्मि** स्त्री० (सं) १-लहर, तरंग। २-पीड़ा।

**ऊर्मिल** वि० (सं) जिसमें लहरें उठती हों।

**ऊलजलूल** वि० (हि) १-असम्बद्ध, अंडबंड। २-वाहियात।

**ऊलना** क्रि० (हि) १-उछलना। २-खुश होना।

**ऊलरना** क्रि० (हि) देखो 'उलरना'।

**ऊषा** स्त्री० (सं) अरुणोदय या उसकी लालिमा।
**ऊषाकाल** पुं० (सं) प्रातःकाल; सवेरा।
**ऊष्म** पुं० (सं) १-ताप; गर्मी। २-भाप। वि० (सं) गरम।
**ऊष्मवर्ण** पुं० (सं) श, ष, स, और ह यह चार अक्षर
**ऊसर** पुं० (हि) बंजर भूमि जिसमें रेह अधिक होता है।
**ऊह, ऊहा** १-अनुमान। २-तर्क। अव्य० दुःख या आश्चर्यसूचक अव्यय।
**ऊहापोह** पुं० (हि) सोचविचार; तर्कवितर्क।

[शब्दसंख्या-६३०२]

# ऋ

**ऋ** हिन्दी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।
**ऋक्** स्त्री० (सं) १-वेदोक्त ऋचा या मन्त्र। २-देखो 'ऋगवेद'।
**ऋक्ष** पुं० (सं) १-रीछ। २-नक्षत्र, तारा।
**ऋक्षपति** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-जांबवान्।
**ऋग्वेद** पुं० (सं) चारों वेदों में से पहला जो पद्य में है।
**ऋचा** स्त्री० (सं) १-पद्यात्मक वेदमन्त्र। २-स्तोत्र।
**ऋजु** वि० (सं) १-सीधा। २-सरल। ३-चोरी, छल-कपट आदि से अलग; ईमानदार। (ऑनेस्ट)। ४-अनुकूल।
**ऋजुता** स्त्री०(सं)१-सीधापन। २-सरलता। ३-सज्जनता, ईमानदारी।
**ऋण** पुं० (सं) कर्ज; उधार।
**ऋणग्राही** पुं० (सं) वह जिसने ऋण या कर्ज लिया हो।
**ऋण-पक्ष** पुं० (सं) बही आदि में वह विभाग जिसमें किसी को दी हुई रकमों अथवा माल का मूल्य और विवरण अंकित होता है। (क्रेडिट-साइड)।
**ऋण-पत्र** पुं० (सं) १-वह पत्र या कागज जिसके आधार पर कोई किसी से ऋण या कर्ज लेता है। २-वह पत्र जिसके आधार पर जनसाधारण से कोई संस्था ऋण या कर्ज लेती है।
**ऋण-परिशोध-कोष** पुं० (सं) राज्य अथवा किसी संस्था के ऋण परिशोध या अदायगी के विचार से समय-समय पर पृथक रूप से जमा की जाने वाली धनराशि। (सिंकिंग-फण्ड)।
**ऋणपरिमापन** पुं० (सं) पूरा-पूरा ऋण चुका देना या बेबाक कर देना। (लिक्विडेशन-आफ-डेट)।
**ऋण-मुक्ति** स्त्री० (सं) ऋण से छुटकारा पाना। (रीडेंपशन)।
**ऋण-विद्युदणु** पुं० (सं) ऋण विद्युत शक्ति की अविभाज्य इकाई के रूप में वह कण जो परमाणु (एटम) के घन विद्युत् शक्ति के चारों ओर, सूर्य-मण्डल के ग्रहों के समान घूमते हैं।
**ऋण-स्थगन** पुं० (सं) बैंकों आदि से (उच्च-न्यायालय या राज्यकीय आदेश द्वारा) लोगों को पावना अथवा ऋण चुकाना अस्थाई रूप से रोक दिया जाना। (मॉरेटोरियम)।
**ऋणाणु** पुं० (सं) वह अणु जो सर्वदा ऋणात्मक विद्युत से बचा रहता है। (नेगेटिव)।
**ऋणात्मक** वि० (सं) १-ऋण वाले तत्त्व से युक्त। २-ऋण-पक्ष से सम्बन्धित। (नेगेटिव)।
**ऋणी** वि० (सं) १-कर्ज लेने वाला। २-उपकार मानने वाला; उपकृत।
**ऋतु** स्त्री० (सं) १-मौसम। २-रजोदर्शन के पीछे का वह समय जिसमें स्त्रियाँ गर्भ धारण करती हैं।
**ऋतुकाल** पुं० (सं) स्त्रियों के रजोदर्शन के बाद के सोलह दिन।
**ऋतुगमन** पुं० (सं) ऋतुकाल का स्त्री-प्रसङ्ग।
**ऋतुचर्या** स्त्री० (सं) ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।
**ऋतुमती** वि० स्त्री० (सं) १-रजस्वला। २-वह जिसका रजोदर्शन काल समाप्त हो गया हो और जो समागम के योग्य हो।
**ऋतुराज** पुं० (सं) वसन्तकाल।
**ऋतु-स्नान** पुं० (सं) ऋतुदर्शन के चौथे दिन का स्नान।
**ऋत्विज** पुं० (सं) यज्ञ कराने वाला या यज्ञ में जिसका वरण किया जाय।
**ऋद्ध** वि० (सं) सम्पन्न; समृद्ध
**ऋद्धि** स्त्री० (सं) १-बढ़ती; समृद्धि। २-वैद्यक के अनुसार अष्टवर्ग के अन्तर्गत एक औषध।
**ऋद्धि-सिद्धि** स्त्री० (सं) १-समृद्धि और सफलता; सुख-सम्पत्ति। २-इस नाम की गणेशजी की दो दासियाँ।
**ऋषभ** पुं० (सं) १-बैल। २-श्रेष्ठता का सूचक शब्द। ३-संगीत के सात स्वरों में से दूसरा।
**ऋषि** पुं० (सं) १-वेदमन्त्रों का प्रकाशक, मन्त्रद्रष्टा। २-आध्यात्मिक तथा भौतिक तत्त्वों का ज्ञाता।
**ऋषि-ऋण** पुं० (सं) ऋषियों के प्रति कर्तव्य जो वेदों के पठन-पाठन से पूर्ण होता है।
**ऋषि-कल्प** पुं० (सं) ऋषियों के समान पूज्य और बड़ा। [शब्दसंख्या-६३३७]

# ए

**ए** हिन्दी वर्णमाला का सातवाँ अक्षर. इसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है। यह 'अ' और 'इ' के योग से बनाता है।

**एँच-पेंच** पुं० (हि) १-उलझाव। २-टेढ़ी चाल।

**एँचाताना** वि० (हि) तिरछा देखने वाला।

**एँजिन** पुं० देखो 'इंजन'।

**एँड़ाबेंड़ा** वि० (हि) उलटा-सीधा।

**एकंगा** वि० (हि) एक ओर का।

**एकंत** वि० (हि) एकांत।

**एक** वि० (हि) १-इकाइयों में पहली तथा सबसे छोटी संख्या। २-अकेला। ३-अद्वितीय। ४-कोई; किसी। ५-तुल्य; समान।

**एकक** वि० (स) १-जिसमें एक ही हो। २-अकेला।

**एकक-निगम** पुं० (स) एक ही व्यक्ति से सम्बन्धित निगम (संस्था); (सोल-कारपोरेशन)।

**एकक-शारीरक** पुं० (सं) एक ही व्यक्ति से सम्बन्धित शारीरक (संस्था)। (कारपोरेशन-सोल)।

**एक-चक्र** पुं० (सं) १-सूर्य का रथ। २-सूर्य। वि० चक्रवर्त्ती।

**एक-छत्र** वि० (सं) पूर्ण प्रभुत्व संपन्न। (एबसोल्यूट-मॉनर्की)। क्रि० वि० एकाधिपत्य सहित। पुं० (स) वह शासन प्रणाली जिसमें एक ही का पूर्ण प्रभुत्व हो।

**एकज** वि० (हि) एक मात्र, एक ही।

**एकठ** क्रि० वि० (हि) एक स्थान पर; इकट्ठे।

**एकड़** पुं०(हि) भूमि का एक माप जो एक बीघा और बारह बिस्वे के लगभग होती है।

**एकतंत्र** पुं० (सं) वह राज्य प्रणाली जिसमें देश के शासन का संपूर्ण अधिकार एक राजा या अधिनायक को प्राप्त हो। वि० (सं) जिसमें कहीं और किसी का अधिपत्य न हो।

**एकतः** क्रि० वि० (सं) एक पक्ष में।

**एकत** क्रि० वि० (स) एकत्र; इकट्ठा।

**एकतरफा** (फा) १-एक पक्ष का। २-एक तरफ या पार्श्व का। ३-जिसमें पक्षपात किया गया हो।

**एकता** स्त्री०(सं) १-मेल। २-बराबरी। ३-अभिन्नता वि० (फा) अनुपम; अद्वितीय।

**एकताई** स्त्री० (हि) देखो 'एकता'।

**एकतान** वि० (स) १-एकाग्रचित्त; लीन। २-एक ही काम में चित्त लगाये हुए।

**एकतारा** पुं० (हि) सितार के समान एक तार का बाजा।

**एकतारी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का आभूषण जो एक तार का होता है तथा जिसे स्त्रियाँ छाती पर पहनती हैं।

**एकत्र** क्रि० वि० (स) इकट्ठा; एक जगह।

**एकत्रित** वि० (स) इकट्ठा किया हुआ।

**एकत्व** पुं० (सं) १-एकता। २-पूर्ण समानता।

**एकदंत** पुं० (सं) गणेश

**एकदलीय-शासनतंत्र** पुं०(स) सारे देश के निमित्त एक ही दल की शासन-प्रणाली जिसके अंतर्गत नागरिक जीवन ही नहीं बल्कि निजी और व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता है। (टोटलिटैरियनिज़म)।

**एक-देशीय** वि० (सं) १-किसी एक देश, स्थान, विभाग या अंग आदि से सम्बन्धित। २-जो सब जगह न घटे।

**एकनिष्ठ** वि० (स) एक पर निष्ठा रखने वाला।

**एक-पक्षीय** वि० (सं) एक तरफा।

**एक-पत्नी-व्रत** पुं० (सं) एक ही पत्नी रखने वाला व्यक्ति।

**एकबारक, एकबारगी** क्रि० वि० (फा) १-एक ही समय में। २-अचानक। ३-बिलकुल, निपट।

**एकमत** वि० (स) एक राय के।

**एकमात्र** वि० (सं) एक ही; केवल एक।

**एक-मुश्त** वि० (फा) जो एक बार में दिया जाय। पुं० न्यूनाधिक एक बार में चुकाये जाने वाले रुपये। (लम्प-सम)।

**एक-रंग** वि० (हि) १-तुल्य, बराबर। २-कपट रहित। ३-जो सब प्रकार से एकसा हो।

**एक-रदन** पुं० (स) गणेश।

**एकरस** वि० (स) आरम्भ से अंत तक एक जैसा।

**एक-राजतंत्र** पुं० (सं) एक प्रकार की शासन प्रणाली जिसके अनुसार एक राजा कुछ मंत्रियों की सहायता से सारे राज्य का शासन करता हो।

**एकरूप** वि० (सं) १-समान आकृति वाला। २-ज्यों-का त्यों।

**एकरूपता** स्त्री० (स) बनावट, रूप, प्रकार आदि की दृष्टि से किसी अन्य के समान होने की अवस्था या भाव। (युनिफॉर्मिटी)।

**एकल** वि० (हि) १-अकेला। २-अनुपम। बेजोड़। ३-एक से सम्बन्धित।

**एकल-निगम** पुं० देखो 'एकक-निगम'।

**एकलवाद** पुं० (स) देखो 'एकदलीय-शासनतंत्र'

**एकल-संक्रमणीय-मत** पुं० (स) मत या वोट देने का एक ढंग जिसमें मतदाता द्वारा किसी निर्वाचन क्षेत्र से चुने जाने वाले अनेक उम्मेदवारों में से किसी एक को इस शर्त के साथ दिया गया मत कि

यदि निर्धारित संख्या में मत प्राप्त करलेने के कारण उसे इसकी आवश्यकता न रहे, तो वह उसके बाद के अधिमान दिये गये उम्मेदवार के पक्ष में संक्रामित हो जायगा। (सिंगल-ट्रांसफरेबल-वोट)।

**एकला** *वि०* (हि) अकेला।

**एक-लिंग** पुं० (सं) १-शिव का एक मंदिर जो राजस्थान के उदयपुर मंडल में है।

**एकलौता** *वि०* (हि) देखो 'इकलौता'।

**एक-वचन** पुं० (सं) व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध हो।

**एकवर्षी** *वि०* (हि) एक ही वर्ष तक जीवित रह कर नष्ट होजाने वाला। (एन्यूअल)।

**एकवांज** *स्त्री०* (हि) वह स्त्री जिसके एक ही सन्तान हुई हो।

**एकवाक्यता** *स्त्री०* (सं) कुछ लोगों का कथन या मत एक होना।

**एकवेणी** *स्त्री०* (सं) १-वह स्त्री जो अपने सब बालों या लटों की एक ही वेणी या लट गूंथकर रखे। २-विधवा।

**एक-सरा** पुं० (हिं) १-एक ही प्रकार की प्रवृत्ति के वश में रहने वाला। २-जिसके एक ही ओर बेल-बूटे या अन्य कोई काम हुआ हो।

**एक-सदनी** *स्त्री०* (स) एक ही सदन वाली व्यवस्थापिका सभा या विधान सभा। (यूनिकेमरैल)।

**एकसर** *वि०* (हि) एक परत का। *वि०* (फा) पूरा, तमाम

**एकसां** *वि०* (सं) १-समान; समतल।

**एकस्व** पुं० (सं) किसी बनाई या ईजाद की वस्तु से होने वाले आय का एकाधिकार देने वाला सरकारी मुद्रांकित प्रलेख। (पेटेन्ट)।

**एकस्व-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी को एकाधिकार प्राप्त हो। (लेटर्स-पेटेन्ट)।

**एकहत्था** *वि०* (सं) जो एक ही काम में हो।

**एकहरा** *वि०* (हि) १-एक परत का। २-एक लकड़ी का।

**एकांकी** पुं० (सं) १-रूपक के दस भेदों में से एक। २-एक ही अङ्क में समाप्त होने वाला नाटक।

**एकांगी** *वि०* (सं) १-एक अंग वाला। २-एकतरफा। ३-जिद्दी।

**एकांत** *वि०* (सं) १-बिलकुल; नितान्त। २-अलग; पृथक। पु० (स) अकेलापन।

**एकांतर, एकांतरित** *वि०* (सं) एक-छोड़कर-एक।

**एकांतवास** पुं० (सं) एकान्त में रहने या निवास करने वाला।

**एकांतिक** *वि०* (सं) देखो 'एक देशीय'।

**एका** *स्त्री०* (सं) दुर्गा। पुं० (हि) एकता; मेल।

**एकाई** *स्त्री०* (हि) १-एक का मान या भाव। २-वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से दूसरी मात्राओं का मान निश्चित किया जाता है। (यूनिट)। ३-अंकों की गिनती में प्रथम अंक अथवा उसका स्थान।

**एकाएक** *क्रि० वि०* (हि) अचानक; सहसा।

**एकाएकी** *क्रि० वि०* (हि) सहसा; अकस्मात्। *वि०* (हि) अकेला।

**एकाकार** *क्रि० वि०* (हिं) एक होने का भाव। *वि०* (हि) १-समान। २-जो किसी से मिलकर उसी जैसा हो गया हो। ३-कइयों के मेल से जिसने एक रूप अथवा आकार धारण कर लिया हो।

**एकाकी** *वि०* (स) अकेला।

**एकाकीपन** पुं० (हि) अकेलापन।

**एकाक्ष** *वि०* (सं) एक आँख वाला; काना। पुं० (सं) १-कौआ। २-शुक्राचार्य।

**एकाक्षरी** *वि०* (स) जिसमें एक अक्षर हो। २-एक अक्षर से सम्बन्धित।

**एकाग्र** *वि०* (सं) १-एक ओर स्थिर। २-एक ही ओर मन लगा हुआ।

**एकाग्रचित्त** *वि०* (स) एक ही ओर चित्त या मन लगाए हुए।

**एकाग्रता** *स्त्री०* (सं) मन का स्थिर होना।

**एकात्मता** *स्त्री०* (स) १-एकता। २-एक ही आत्मा का भाव। ३-किसी का रूप गुण आदि के विचार से इतना समान होना कि दोनों एक जान पड़ें। (आइडेन्टिटी)।

**एकात्मवाद** पुं० (स) सारे संसार के प्राणियों तथा पदार्थों में एक ही आत्मा व्याप्त है, ऐसा मानने का सिद्धान्त या मत।

**एकात्मा** पुं० (सं) अद्वितीय आत्मा। *वि०* (सं) एक रूप।

**एकादश** *वि०* (सं) ग्यारह।

**एकादशाह** पुं० (स) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन (हिन्दुओं में) होने वाला कृत्य।

**एकादशी** *स्त्री०* (सं) चान्द्रमास के उभय पक्षों की ग्यारहवीं तिथि।

**एकाधिक** *वि०* (सं) एक से अधिक; कई।

**एकाधिकार** पुं० (सं) किसी कार्य, वस्तु, व्यवसाय आदि पर किसी व्यक्ति, समाज, दल आदि का होने वाला एकमात्र अधिकार। (मोनोपोली)।

**एकाधिपत्य** पुं० (स) १-किसी काम या राष्ट्र पर किसी एक व्यक्ति, दल अथवा समाज का होने वाला अधिपत्य। २-एकाधिकार।

**एकार्थ** *वि०* (सं) समान अर्थ वाला।

**एकार्थक** *वि०* (सं) समानार्थक।

**एकावली** *स्त्री०* (सं) १-एक काव्यालंकार। २-एकहरा हार।

**एकाह** *वि०* (सं) एक दिन में समाप्त होने वाला।

**एकीकरण** पुं० (सं) १-दो या दो से अधिक को मिलाकर एक करना। (एमलगमेशन)। २-सबको मिलाकर एक करना। (युनिफिकेशन)।
**एकीभूत** वि० (सं) १-मिला हुआ। २-जो इकट्ठा किया गया हो।
**एकेंद्रिय** पुं० (सं) वह जीव जिसके केवल एक ही इन्द्रिय होती है। जैसे-जोंक आदि।
**एकेश्वरवाद** पुं० (सं) वह मत या सिद्धान्त जिसमें ईश्वर एक है ऐसा विश्वास किया जाता है। (मॉनोथीइज्म)।
**एकोद्दिष्ट, एकोश्राद्ध** पुं० (सं) किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।
**एकौंझा** वि० (हि) अकेला।
**एक्का** वि० (हि) १-अकेला। २-एक से सम्बन्धित। पुं० (हि) १-अकेला घूमने वाला पशु। २-एक प्रकार की दो पहिया घोड़ागाड़ी। ३-वह वीर योद्धा जो अकेला बड़े-बड़े काम कर सकता हो।
**एक्कावान** पुं० (हि) एक्का नामक घोड़ागाड़ी हांकने वाला।
**एक्की** स्त्री० (हि) १-एक बैल से चलने वाली गाड़ी। २-एक बूटी का नाम।
**एजेंट** पुं० (अं) अभीकर्ता।
**एजेंसी** स्त्री० (अं) अभीकरण।
**एड़, एड़ी** स्त्री० (हि) पैर के नीचे का पिछला निकला हुआ भाग।
**एड़ा** वि० (हि) बलवान; बली।
**एण** पुं० (सं) मृग; हिरन।
**एत** वि० (हि) इतना।
**एतद्** सर्व० (सं) यह।
**एतद्-द्वारा** क्रि० वि० (स) इसके द्वारा, इससे।
**एतदर्थ** क्रि० वि० (स) इसके लिये; इस हेतु। वि० (सं) इसी कार्य के लिये बना हुआ। (एडहॉक)।
**एतदर्थ-समिति** स्त्री० (सं) किसी कार्य के निमित्त मनोनीत समिति। (एडहाक कमेटी)।
**एतद्देशीय** वि० (स) इस देश का।
**एतना** वि० (हि) इतना।
**एतबार** पुं० (अ) विश्वास।
**एतराज** पुं० (अ) आपत्ति।
**एतवार** पुं० (हि) रविवार।
**एता** वि० (हि) इतना।
**एतादृश** वि० (सं) ऐसा। क्रि० वि० (सं) ऐसे, इस तरह।
**एतावता** क्रि० वि० (सं) इसलिये।
**एतिक, एती** वि० (हि) इतनी।
**एन** पुं० (हि) मृग; हिरन।
**एमन** वि० (हि) ऐसा। पुं० संपूर्ण जाति का एक राग
**एरंड** पुं० (सं) रेंड; रेंडी।
**एरा** अव्य० (हि) वह प्रत्यय जो प्रायः विशेषणों तथा संज्ञाओं में लगकर निम्न अर्थ देता है —१-अधिकता जैसे-घन से घनेरा। २-कार्य व्यवहार आदि का कर्त्ता, जैसे—साँप से सपेरा।
**एराक** पुं० (अ) अरब के अन्तर्गत एक प्रदेश का नाम, यहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।
**एराकी** वि० (फा) एराक सम्बन्धी। पुं० एराक देश का घोड़ा।
**एलक** पुं० (हि) १-आटा छानने की चलनी। २-मैदा छानने का आखा।
**एलची** पुं० (तु) १-दूत। २-राजदूत।
**एला** स्त्री० (सं) इलायची।
**एली** स्त्री० (हि) इलायची।
**एल्युमिनम** पुं० (अ) एक प्रकार की हलकी धातु।
**एवं** क्रि० वि० (सं) ऐसा ही, इस प्रकार। अव्य० (स) और; तथा।
**एव** अव्य० (स) १-ऐसे ही। २-भी।
**एवज** पुं० (अ) १-प्रतिफल। २-परिवर्त्तन। ३-बदले में काम करने वाला व्यक्ति।
**एवजी** स्त्री० देखो 'एवज'।
**एवमस्तु** अव्य० (सं) ऐसा ही हो।
**एशिया** पुं० (अं) पाँच बड़े महाद्वीपों में से एक।
**एशियाई** वि० (हि) एशिया का; एशिया सम्बन्धी।
**एषण** स्त्री० (स) १-जाना। २-छानबीन। ३-इच्छा ४-खोज। ५-लोहे का बाण।
**एषणा** स्त्री० (सं) १-इच्छा।
**एह** सर्व० (हि) यह।
**एहतमाल** पुं० (अ) रक्षा आदि के निमित्त की जाने वाली सतर्कता।
**एहतमाली** वि० (अ) १-जिसमें सतर्कता हो। २-जिसके सम्बन्ध में दैवी विपत्तियों आदि की शंका बनी रहती हो। (प्रिकेरियस)।
**एहतियात** स्त्री० (अ) १-सतर्कता। २-बचाव। ३-परहेज।
**एहसान** पुं० (अ) कृतज्ञता; उपकार।
**एहसानमंद** वि० (अ) कृतज्ञ।
**एहि** सर्व० (हि) इसको; इसे।
**एहो** अव्य० (हि) हे; अरे; (सम्बोधन शब्द)।

[शब्दसंख्या-६४६३]

# ऐ

**ऐ** हिन्दी वर्णमाला का नवाँ स्वर वर्ण इसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है।

ऐं अव्य० (हिं) एक अव्यय जिसका प्रयोग अनसुनी बात को फिर जताने की इच्छा से किया जाता है। २-एक आश्चर्यसूचक शब्द।
ऐंचना क्रि० (हिं) १-खींचना। २-दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना।
ऐंचाताना वि० (हिं) फिरी हुई आँख वाला, भेंगा।
ऐंचातानी स्त्री० (हिं) खींचातानी।
ऐंछना क्रि० (हिं) १-झाड़ना। २-कंघी करना।
ऐंठ स्त्री० (हिं) १-अकड़; ठसक। २-घमण्ड।
ऐंठन स्त्री० (हिं) १-ऐंठने की क्रिया या भाव। २-मरोड़। ३-तनाव।
ऐंठना क्रि० (हिं) १-मरोड़ना या बल देना। २-दबाव डालकर वसूल करना। ३-धोखा देकर लेना। ४-अकड़ दिखाना। ५-बल खाना।
ऐंड़ स्त्री० (हिं) १-ठसक। २-पानी का भंवर। वि० १-निकम्मा, (धन) जो वसूल न हो सके।
ऐंड़दार वि० (हिं) १-घमण्डी। २-शानदार।
ऐंड़ना क्रि० (हिं) १-ऐंठना; बल खाना। २-अंगड़ाई लेना। ३-इतराना। ४-बल देना।
ऐंड़-बेंड़ वि० (हिं) अंडबंड।
ऐंड़ा वि० (हिं) ऐंठा हुआ; टेढ़ा।
ऐंड़ाना क्रि० (हिं) १-अंगड़ाना। २-इठलाना। ३-अकड़ दिखाना।
ऐंड़ा-बेंड़ा वि० (हिं) १-जो वास्तविक स्थिति में न हो। २-टेढ़ा-तिरछा। ३-अण्ड-बंड।
ऐंद्रजालिक वि० (सं) मायावी; जादूगर।
ऐंद्रिक वि० (सं) इन्द्रियों से सम्बन्धित; इन्द्रियों का।
ऐंद्रियता स्त्री० (स) इन्द्रियों की वासना या सुख-भोग की पूर्त्ति। (सेन्सुअलिटी)।
ऐक पुं० हि) कितना गहरा है, इस बात की थाह।
ऐकमत्य पुं० (स) एकमत होने की स्थिति या भाव, मतैक्य। (यूनैनिमिटी)।
ऐकांतिक वि० (सं) १-एकान्त से सम्बन्ध रखने वाला २-एकतरफा। ३-पूर्ण।
ऐक्य पुं० (सं) एकता; मेल।
ऐगुन पुं० (हि) अवगुण।
ऐच्छिक वि० (सं) १-इच्छा के अनुसार। २-इच्छा या पसन्द से लिया या दिया जाने वाला। ३-जिसका करना या न करना अपनी इच्छा पर हो; वैकल्पिक। (आप्शनल)।
ऐत वि० (हिं) इतना।
ऐतिहासिक वि० (सं) १-इतिहास से सम्बन्धित। २-जो इतिहास में हो। (हिस्टोरिकल)।
ऐतिह्य पुं० (सं) यह प्रमाण कि लोक में बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आये है; परम्परागत।
ऐन पुं० (हिं) देखो 'अयन'। वि० (अ) १-ठीक। २-बिलकुल।
ऐनक स्त्री० (हि) आँख का चश्मा, उपनेत्र।
ऐना पुं० (हि) आइना; दर्पण।
ऐपन पुं० (हि) हल्दी के साथ पिसे हुए चावल का लेप जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।
ऐब पुं० (अ) १-दोष। २-अवगुण, बुराई।
ऐबी वि० (अ) १-बुरा; खोटा। २-दुष्ट। ३-अंग-हीन।
ऐया स्त्री० (हिं) १-बड़ी-बूढ़ी स्त्री। २-दादी। ३-सास।
ऐयार पुं० (अ) १-धूर्त; चालाक। २-भेस बदलकर चमत्कार दिखाने वाला।
ऐयाश वि० (अ) १-अत्यधिक सुख भोग करने वाला। २-विषयी; इन्द्रियलोलुप।
ऐयाशी स्त्री० (अ) १-विषयासक्ति। २-लम्पटता।
ऐरागैरा वि० (हि) १-अपरिचित। २-तुच्छ, हीन।
ऐरापति; ऐरावत पुं० (स) १-बिजली से चमकता हुआ बादल। २-इन्द्र का हाथी। ३-इन्द्रधनुष।
ऐरावती स्त्री० (सं) १-ऐरावत नामक हाथी की हथिनी। २-रावी नदी। ३-बिजली।
ऐल पुं० (सं) १-इला का पुत्र; पुरूरवा। २-बाढ़। ३-अधिकता। ४-कोलाहल।
ऐलान पुं० (अ) १-घोषणा। २-मुनादी।
ऐश पुं० (अ) सुख; चैन; भोग-विलास।
ऐश्वर्य पुं० (सं) १-विभूति; धन-सम्पत्ति। २-प्रभुत्व ३-अणिमा आदि सिद्धियाँ।
ऐश्वर्यवान वि० (सं) वैभवशाली; सम्पन्न।
ऐस वि० (हि) इस प्रकार का; ऐसा।
ऐसन वि० (हि) ऐसा।
ऐसा वि० (हिं) इस प्रकार का।
ऐसे क्रि० वि० (हि) इस तरह।
ऐसो वि० (ब्रज०) ऐसा।
ऐहिक वि० (सं) इस लोक से सम्बन्ध रखने वाला। लौकिक, सांसारिक। (सेक्यूलर)।

[शब्दसंख्या-६५४६]

# ओ

**ओ** हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वरवर्ण. इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और कण्ठ है।

ओ अव्य० (सं) परब्रह्म-सूचक शब्द जो प्रणव मन्त्र कहलाता है।
ओंइछना क्रि० (हिं) वारना; न्योछावर करना।
ओंकना क्रि० (हि) १-हट जाना। २-देखो 'ओकना'

**ओंकार** पुं० (सं) ईश्वर का सूचक शब्द 'ओम्'।
**ओंगना** क्रि० (हि) गाड़ी की धुरी में तेल देना।
**ओंठ** पुं० (हि) ओष्ठ; होंठ।
**ओंड़ा** वि० (हि) गहरा। पुं० (हि) १-गड्ढा। २-सेंध।
**ओंध** पुं० (हि) ऊपर बाँधने की रस्सी।
**ओक** पुं० (सं) १-घर। २-ठिकाना। स्त्री० वमन; कै पुं० (हि) अंजली।
**ओकना** क्रि० (हि) १-कै करना। भैंस के समान चिल्लाना।
**ओकपति** पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।
**ओकाई, ओकारी** स्त्री० (हि) मतली; कै।
**ओखद** स्त्री० (हि) औषध।
**ओखरी, ओखल, ओखली** स्त्री० (हि) पत्थर या काठ का वह पात्र जिसमें धान कूटा जाता है।
**ओखा** पुं० (हि) मिस, बहाना। वि० १-कठिन। २-रूखा। ३-खोटा।
**ओख्यान, ओखान** पुं० देखो 'उपाख्यान'।
**ओग** पुं० (हि) १-कर। २-चन्दा।
**ओगरना** क्रि० (हि) चूना; रसना।
**ओगल** पुं० (हि) परती जमीन।
**ओगारना** क्रि० (हि) साफ करने के विचार से कुएँ का पानी, कीचड़ आदि निकाल डालना।
**ओघ** पुं० (सं) १-समूह। २-घनापन। ३-बहाव। ४-धारा।
**ओछ** स्त्री० (हि) ओछेपन का विचार। वि० (हि) देखो 'ओछा'।
**ओछा** वि० (हि) १-तुच्छ; छिछोरा। २-छिछला। ३-हलका।
**ओछाई** स्त्री० (हि) छिछोरापन, क्षुद्रता।
**ओछापन** पुं० (हि) ओछाई।
**ओज** पुं० (सं) १-बल; प्रताप; तेज। प्रकाश। ३-शुक्र की मात्रा एवं शरीर की कांति, तेज देने वाली धातु। ४-कविता का वह गुण जिससे पढ़ने सुनने वाले के हृदय में उत्साह या जोश का संचार हो।
**ओजना** क्रि० (हि) सहना; झेलना।
**ओजस्विता** स्त्री० (सं) कांति; दीप्ति।
**ओजस्वी** वि० (सं) १-ओज भरा। २-शक्तिशाली। ३-प्रभावशाली। ४-कांतियुक्त।
**ओझ, ओझर** पुं० (हि) १-पेट। २-आंत।
**ओझल** पुं० (हि) ओट; आड़।
**ओझा** पुं० (हि) १-झाड़-फूंक करने वाला। २-ब्राह्मणों की एक उपजाति।
**ओझाई** स्त्री० (हि) १-झाड़ फूंक। २-ओझे का काम।
**ओट** स्त्री० (हि) १-आड़, रोक। २-शरण; सहारा। ३-परदे के लिए बनाई गई दीवार।
**ओटना** क्रि० (हि) १-रुई से बिनौले को अलग करना। २-किसी बात को बार-बार कहना। ३-ओढ़ना, ऊपर लेना।
**ओटनी** स्त्री० (हि) कपास से बिनौले निकालने की चर्खी।
**ओटपाई** स्त्री० (हि) देखो 'ओटपाव'।
**ओटपाव** पुं० (हि) देखो 'औठपाव'।
**ओटा** पुं० (हि) परदे की दीवार।
**ओठंगना** क्रि० (हि) १-सहारा लेना। २-कमर सीधी करना।
**ओठ** पुं० (हि) ओष्ठ; होंठ।
**ओड़** पुं० (हि) एक जाति का नाम।
**ओड़न** पुं० (हि) वह वस्तु जिससे वार रोका जाय, ढाल, फरी।
**ओड़ना** क्रि० (हि) १-आड़ करना। २-(हाथ) पसारना। ३-अपने ऊपर लेना।
**ओड़व** पुं० (सं) राग का एक भेद जिसमें केवल पाँच स्वर लगते हैं।
**ओड़व-षाड़व** पुं० (सं) संगीत में वह राग जो आरोही में ओड़व तथा अवरोही में षाड़व हो।
**ओड़व-संपूर्ण** पुं० (सं) संगीत में वह राग जो आरोही में ओड़व तथा अवरोही में संपूर्ण हो।
**ओड़ा** पुं० (हि) १-देखो 'ओंड़ा'। २-बड़ा टोकरा या उसका मान। ३-कमी; टोटा।
**ओढ़न** स्त्री० (हि) देखो 'ओड़न'।
**ओढ़ना** क्रि० (हि) १-वस्त्र आदि से बदन को ढकना। २-अपने सिर लेना। पुं० (हि) ओढ़ने की चीज, चादर।
**ओढ़नी** स्त्री० (हि) स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र।
**ओढ़र** पुं० (हि) १-छल; धोखा। २-मिस, बहाना।
**ओढ़ौनी** स्त्री० (हि) ओढ़नी; चादर।
**ओत** स्त्री० (हि) १-आराम; चैन। २-लाभ; प्राप्ति। ३-आलस्य। ४-किफायत। ५-न्यूनता। ६-त्रुटि। वि० (सं) बुना हुआ।
**ओतप्रोत** वि० (सं) इस प्रकार मिला हुआ कि उसका अलग करना असंभव सा हो। पुं० तानाबाना।
**ओता** वि० (हि) १-उतना। २-कम। ३-जो उपयुक्त यथेष्ट या समर्थ न हो।
**ओती** वि० (हि) उतनी।
**ओदन** पुं० (सं) पका हुआ चावल; भात।
**ओदर** पुं० (हि) उदर; पेट।
**ओदरना** क्रि० (हि) १-फटना। २-गिर पड़ना। ३-नष्ट होना।
**ओदा** वि० (हि) गीला; तर।
**ओदारना** क्रि० (हि) १-फाड़ना। २-नष्ट करना।
**ओधना** क्रि० (हि) (काम में) लगना।

**ओघा** वि० (हि) १-किसी के साथ संलग्न। २-उलझा हुआ।

**ओनंत** वि० (हि) अवनत; झुका हुआ।

**ओनचन** स्त्री० (हि) अदवान; पैताने की रस्सी।

**ओनचना** क्रि० (हि) १-झुकना। २-घिर आना। ३-उमड़ाना।

**ओनवना** क्रि० (हि) १-झुकना। २-घिर आना। ३-उमड़ाना।

**ओनहना** क्रि० (हि) देखो 'उनवना'।

**ओना** पुं०(हि) पानी निकालने का रास्ता; निकास।

**ओनाना** क्रि० (हि) १-कान लगाकर सुनना। २-प्रवृत्त करना। ३-आदेश का पालन करना।

**ओनामासी** स्त्री० (हि) १-अक्षरारम्भ। २-आरम्भ। ('ॐ नमः सिद्धम्' का बिगड़ा हुआ रूप)।

**ओनाहैं** वि० (हि) उमड़कर फैला हुआ। पुं० (हि) उलटा बहाव।

**ओप** स्त्री० (हि) १-कान्ति, चमक। २-शोभा। ३-जिला। (पॉलिश)।

**ओपची** पुं० (हि) कवचधारी योद्धा, रक्षक योद्धा।

**ओपना** क्रि० हि) चमकाना या चमकना।

**ओपनि** स्त्री० (हि) झलक; चमक।

**ओपनी** स्त्री० (हि) ईंट या पत्थर का टुकड़ा जिससे तलवार आदि माँजी जाय, माँजने की वस्तु।

**ओपित** वि० (हि) १-सुन्दर। २-चमकदार।

**ओपी** वि० (हि) चमकीला।

**ओफ** अव्य० (हि) आश्चर्य या दुःख सूचक शब्द।

**ओबरी** स्त्री० (हि) तङ्ग कोठरी।

**ओम्** पुं० (सं) वेदपाठ के पहले तथा पीछे कहा जाने वाला पवित्र शब्द; ओंकार।

**ओर** स्त्री० (हि) १-दिशा; तरफ। २-पक्ष। पु० (हि) १-सिरा, छोर। आदि; आरम्भ।

**ओरना** क्रि० (हि) समाप्त होना।

**ओरमना** क्रि० (हि) लटकना।

**ओराना** क्रि० (हि) समाप्त होना या करना।

**ओराहना** क्रि० (हि) उलाहना।

**ओरी** स्त्री० (हि) ओलती।

**ओलंबा, ओलंभा** पुं० (हि) उलाहना, गिला।

**ओल** पुं० (सं) जिमीकन्द। वि० (हि) गीला, नम। स्त्री० (हि) १-आड़। २-आश्रय। ३-गोद। ४-किसी बात की जमानत में रोकी या रखी गई वस्तु या आदमी।

**ओलक** पुं० (हि) आड़, ओट।

**ओलगिया** पुं० (हि) परदेशी।

**ओलती** स्त्री० (हि) छप्पर का वह किनारा जहाँ से बरसात का पानी नीचे गिरता है। ओरी।

**ओलना** क्रि० (हि) १-परदा करना। २-रोकना। ३-चुभाना। ४-ओढ़ना, ऊपर लेना।

**ओलमना** क्रि० (हि) १-लटकना। २-सहारा लेना।

**ओलहना** पु० (हि) उलाहना।

**ओला** पुं० (हि) १-जमे हुए जलकणों का गोला कभी-कभी वर्षा के साथ गिरता है। २-मिश्री या खांड का बना हुआ लड्डू। ३-परदा; ओट। वि० (हि) ओले के समान ठण्डा।

**ओलारना** क्रि० (हि) १-लेटना। २-झुकना।

**ओलिक** पुं० (हि) आड़; परदा।

**ओलियाना** क्रि० (हि) १-गोद में भरना। २-गिरा कर ढेर लगाना। ३-घुसाना।

**ओली** स्त्री० (हि) १-गोद। २-अञ्चल, पल्ला। ३-झोली।

**ओवरी** स्त्री० (हि) ओबरी, तङ्ग-कोठरी।

**ओषध, ओषधि, ओषधी** स्त्री० (सं) १-दवा। २-दवा के काम में आने वाली जड़ी-बूटी; वनस्पति।

**ओष्ठ** पुं० (सं) ओंठ; होंठ।

**ओष्ठ्य** वि० (सं) १-ओंठ से सम्बन्धी। २-ओंठ से उच्चरित।

**ओस** स्त्री० (हि) हवा में मिली हुई भाप जो रात्रि के समय सरदी से जमकर जल कणों के रूप में गिरती है, शबनम।

**ओसरी** स्त्री० (हि) पारी, बारी।

**ओसाई** स्त्री० (हि) ओसाने की मजदूरी या काम।

**ओसाना** क्रि० (हि) हवा में उड़ा कर भूसा और अन्न अलग करना, बरसाना।

**ओसार** पुं० (हि) १- फैलाव। २-ओसारा। वि० (हि) चौड़ा।

**ओसारना** क्रि० (हि) देखो 'उसारना'।

**ओसारा** पुं० (हि) सायबान, बरामदा।

**ओह** अव्य० (हि) दुःख या आश्चर्य सूचक शब्द।

**ओहट** स्त्री० (हि) ओट; आड़।

**ओहदा** पुं० (अ) पद; स्थान।

**ओहदेदार** पुं० (अ) पदाधिकारी।

**ओहदेदारी** स्त्री० (अ) पदाधिकार।

**ओहरना** क्रि० (हि) कमी पर होना।

**ओहार** पुं० (हि) पालकी आदि पर परदे या शोभा के निमित्त डाला हुआ कपड़ा।

**ओहो** अव्य० (हि) हर्ष या आश्चर्यसूचक शब्द।

[शब्दसंख्या-६६०५]

# औ

**औ** हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वरवर्ण, इसका उच्चारण स्थान कंठ और ओष्ठ है

**औंगना** क्रि० (हि) बैलगाड़ी के पहिये के धुरे में तेल

देना।
**औंगा** वि० (हि) मौन; गूंगा।
**औंघना** क्रि० (हि) अलसाना; ऊँघना।
**औंघाई** स्त्री० (हि) ऊँघ; झपकी।
**औंघाना** क्रि० (हि) ऊँघना।
**औंजना** क्रि० (हि) १-ऊबना। २-ढालना, उड़ेलना।
**औंटना** क्रि० (हि) उबलना; खौलना।
**औंटाना** क्रि० (हि) उबालना; पकाना।
**औंठ** स्त्री० (हि) उठा हुआ या उमड़ा हुआ किनारा।
**औंड** पुं० (हि) मिट्टी खोदने वाला, बेलदार।
**औंदना** क्रि० (हि) १-उन्मत्त होना। २-अकुलाना।
**औंदाना** क्रि० (हि) घबड़ाना; व्याकुल होना।
**औंधना** क्रि० (हि) उलट जाना या उलटा कर देना।
**औंधा** वि० (हि) १-उलटा। २-नीचा। ३-पट। पुं० (हि) बेसन का एक नमकीन पकवान, चिल्ला।
**औंधाना** क्रि० (हि) १-औंधा करना। २-लटकाना।
**औंनापौना** वि० (हि) थोड़ा-बहुत। पुं० (हि) इधर का उधर करना। व्यर्थ कार्य।
**औंपना** क्रि० (हि) उमस होना।
**औकात** स्त्री० (अ) १-वक्त, समय। २-हैसियत, क्षमता।
**औकास** पुं० (हि) अवकाश।
**औखद** पुं० (हि) औषध।
**औगत** स्त्री० (हि) दुर्दशा। वि० (हि) अवगत।
**औगह** वि० (हि) बहुत गहरा; अथाह।
**औगाहना** क्रि० (हि) देखो 'अवगाहना'।
**औगुन** पुं० (हि) देखो 'अवगुण'।
**औघट** पुं० (हि) देखो 'अवघट'।
**औघड़** पुं०(हि) १-अघोरी। २-मनमौजी। ३-फक्कड़ वि० (हि) अटपट।
**औघर** वि० (हि) १-अटपट। २-अनोखा।
**औघी** स्त्री० (हि) नये घोड़ों का चलना सिखाने का स्थान, जिसमें घोड़ों से चक्कर कट वाते हैं।
**औघूरना** क्रि० (हि) चक्कर काटना या घूमना।
**औचक** स्त्री० (हि) अचानक, सहसा।
**औचट** स्त्री० (हि) संकट। क्रि० वि० (हि) १-अकस्मात। २-भूल से।
**औचित** वि० (हि) निश्चिंत।
**औचित्य** पुं० (सं) उचित होना, उपयुक्तता।
**औज** स्त्री० देखो 'ओज'।
**औजड़** वि० (हि) उजड्ड।
**औजार** पुं० (अ) कोई काम करने का साधन, हथियार। उपकरण।
**औझड़, औझर** क्रि० वि० (हि) निरंतर, लगातार।
**औटन** स्त्री० (हि) १-औटने की क्रिया, ताव। २-आँच, ताप।
**औटना** क्रि० (हि) १-दूध, रस आदि को आँच देकर गाढ़ा करना, उबालना। २-खौलाना। ३-घूमना ४-खौलना। ५-तपना। ६-भटकना।
**औटनी** स्त्री० (हि) हलवाई का चाशनी आदि घोटने का डंडा।
**औटाना** क्रि० (हि) आँच देकर गाढ़ा करना।
**औठपाय** पुं० (हि) शरारत; धूर्तता।
**औढब** वि० (हि) बेढंगा।
**औढर** वि० (हि) थोरे में प्रसन्न होने वाला, मनमौजी।
**औतरना** क्रि० (हि) अवतार लेना।
**औता** वि० (हि) उतना।
**औतार** पुं० (हि) अवतार।
**औत्कंठ्य** पुं० (सं) उत्कंठा।
**औत्कर्ष्य** पुं० (सं) उत्कृष्टता, उत्तमता।
**औत्तापिक** वि० (सं) उत्ताप सम्बन्धी, उत्तापजनित।
**औत्पत्तिक** वि० (सं) उत्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला।
**औत्पातिक** वि० (सं) उत्पात सम्बन्धी।
**औत्सुक्य** पुं० (सं) उत्सुकता।
**औथरा** वि० (हि) उथला, छिछला।
**औदकना** क्रि० (हि) चौंकना।
**औदर** वि० (सं) १-उदर-सम्बन्धी। २-पाचन संबंधी
**औदरिक** वि० (सं) १-उदर-सम्बन्धी। २-उदर के लिए उपयुक्त। ३-बहुत खाने वाला, पेटू।
**औदर्य** वि० (सं) उदर-सम्बन्धी, उदर का।
**औदसा** स्त्री० (हि) दुर्दशा।
**औदार्य** पुं० (सं) उदारता।
**औदुंबर** पुं० (सं) १-गूलर की लकड़ी का बना यज्ञ-पात्र। २-चौदह यमों में से एक। ३-एक प्रकार के मुनि।
**औद्योगिक** वि० (सं) उद्योग-सम्बन्धी। २-माल तैयार करने से सम्बन्ध रखने वाला, कल-कारखानों से सम्बन्ध रखने वाला। (इण्डस्ट्रियल)।
**औद्योगिक-तथ्य** पुं० (सं) उद्योग धन्धों से सम्बन्ध रखने वाली प्रामाणिक बातें या आंकड़े। (इंडस्ट्रियल-डेटा)।
**औद्योगिक-न्यायाधिकरण** पुं० (सं) उद्योग-धन्धों या उद्योगपति और श्रमिकों से सम्बन्धित विवाद-ग्रस्त विषयों पर विचार करके न्याय करने वाला अधिकारी, अधिकारी वर्ग या न्यायालय। (इंडस्ट्रियल-ट्रिब्यूनल)।
**औद्योगिकरण** पुं० (सं) किसी देश या राष्ट्र में उद्योग-धन्धों आदि को बढ़ाने तथा उसमें कल-कारखाने आदि खोलने का कार्य। (इंडस्ट्रियलाइजेशन)।
**औध** पुं० (हि) देखो 'अवध'। स्त्री० (हि) देखो 'अवधि'।
**औधारना** क्रि० (हि) १-देखो 'अवधारना'। २-इधर-उधर हिलाना।

**औधि** *स्त्री०* (हि) अवधि ।
**औन** पुं० (हि) १-पृथ्वी । २-स्थान । ३-घर ।
**औनना** *क्रि०* (हि) लीपना, पोतना अथवा लगाना ।
**औनापौना** *वि०* (हि) थोड़ा बहुत । *क्रि० वि०* (हि) कमती बढ़ती पर ।
**औनि** *स्त्री०* (हि) अवनि ।
**औनिप** पुं० (हि) राजा ।
**औपचारिक** *वि०* (सं) १-उपचार-सम्बन्धी । २-जो केवल कहने-सुनने या दिखाने भर के लिए हो (फॉर्मल) ।
**औपनिवेशिक** *वि०* (सं) उपनिवेश-सम्बन्धी । पुं० (सं) उपनिवेश का रहने वाला या निवासी ।
**औपनिवेशिक-स्वराज्य** पुं० (सं) एक प्रकार का स्वराज्य जो अधीनस्थ उपनिवेशों को प्राप्त है, जैसे आस्ट्रेलिया, कनाडा ।
**औपन्यासिक** *वि०* (सं) १-उपन्यास-सम्बन्धी । २-उपन्यास के ढंग का । ३-अद्भुत । पुं० (सं) २-उपन्यासकार ।
**औपपत्तिक** *वि०* (सं) तर्क अथवा युक्ति द्वारा सिद्ध होने वाला ।
**औपम्य** पुं० (सं) 'उपमा' का गुण या भाव, समता, सादृश्य ।
**औम, औम-तिथि** *स्त्री०* देखो 'अवम तिथि' ।
**और** *अव्यय०* (हि) एक संयोजक शब्द । *वि०* (हि) १-दूसरा, अन्य । २-अधिक ज्यादा ।
**औरत** *स्त्री०* (अ) १-स्त्री; महिला । २-पत्नी ।
**औरस** पुं० (सं) विवाहिता पत्नी से उत्पन्न पुत्र । *वि०* (सं) १-वैध । २-खरा ।
**औरसना** *क्रि०* (हि) रूठना, अनखाना ।
**औरासो** *वि०* (हि) बेढङ्गा ।
**औरेब** पुं० (हि) १-तिरछापन, वक्रगति । २-कपड़े की तिरछी काट । ३-पेंच, उलझन । ४-जटिल या पेचीदा बात ।
**औलंभा** पुं० (हि) उलाहना ।
**औलना** *क्रि०* (हि) १-जलना । २-उमस होना ।
**औला** *प्रत्य०* (हि) शब्दों के अन्त में लगने वाला एक प्रत्यय जो बच्चे या छोटे अथवा प्रारम्भिक रूप का अर्थ देता है, जैसे-बिनौला=बन अथवा कपास का प्रारम्भिक रूप या अवस्था ।
**औलाद** *स्त्री०* (अ) १-सन्तान । २-वंश-परम्परा ।
**औलाबौला, औलामौला** *वि०* (हि) लापरवाह, मौजी
**औलिया** पुं० (अ) सिद्ध पुरुष; पहुँचा हुआ फकीर ।
**औवल** *वि०* (अ) १-प्रथम । २-मुख्य । ३-सर्वोत्तम
**औशि** *क्रि० वि०* (हि) अवश्य ।
**औषध** पुं० (सं) रोग दूर करने वाली वस्तुओं का मिश्रित रूप, दवा । (मेडिसन) ।
**औषधनिर्माण-शास्त्र** पुं० (सं) औषध तैयार करने की विद्या अथवा उसको बताने वाला ग्रन्थ । (फारमाकोपिया) ।
**औषधालय** पुं० (सं) दवाओं के मिलने, बिकने और बनने का स्थान । (डिस्पेंसरी) ।
**औसत** *वि०* (अ) साधारण, माध्यमिक । पुं० (अ) सामान्य ।
**औसतन्** *क्रि० वि०* (अ) परते के अनुसार ।
**औसना** *क्रि०* (हि) १-गरमी पड़ना । २-बासी होना । ३-गरमी से व्याकुल होना । ४-फलों का भूसे आदि में दबकर पकना ।
**औसर** पुं० (हि) अवसर ।
**औसान** पुं० (हि) अवसान । पुं० (अ) होश-हवास, सुधबुध ।
**औसाना** *क्रि०* (हि) फल या अन्य वस्तुओं को भूसे आदि में दबाकर पकाना ।
**औसि** *क्रि० वि०* (हि) अवश्य ।
**औसेर** *स्त्री०* (हि) देखो 'अवसेर' ।
**औहत** *स्त्री०* (हि) १-दुर्गति । २-अपमृत्यु ।
**औहाती** *स्त्री०* (हि) देखो 'अहिवाती' ।

[शब्दसंख्या-६७८४]

# क

**क** हिन्दी वर्णमाला का पहला व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान कंठ है । इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं ।
**क** पुं० (सं) १-जल । २-सुख । ३-मस्तक । ४-आग ५-सेना ।
**कंउधा** पुं० (हि) बिजली की चमक ।
**कंक** पुं० (हि) १-सफेद चील । २-बगुला पक्षी ।
**कंकड़** पुं० (हि) १-पत्थर का टुकड़ा । २-गांजा या सूखा तमाखू का पत्ता ।
**कंकड़ीला** *वि०* (हि) कंकड़ मिला; जिसमें कंकड़ हों ।
**कंकण** पुं० (सं) १-कड़ा; कङ्गन । २-विवाह से पूर्व वर-वधु के हाथ में बांधा जाने वाला धागा ।
**कंकर** पुं० (हि) देखो 'कंकड़' ।
**कंकरीट** *स्त्री०* (अ) १-चूने, कंकड़, बालू मिला गच बनाने का मसाला । २-सड़क पर बिछाई जाने वाली छोटी कंकड़ियाँ ।
**कंकाल** पुं० (सं) अस्थि-पंजर ।
**कंकालिनी** *स्त्री०* (सं) १-दुर्गा । २-कर्कशा स्त्री ।
**कंकोल** पुं० (सं) १-शीतलचीनी का वृक्ष । २-अशोक वृक्ष ।

**कंखना** क्रि० (हि) इच्छा करना।
**कंगन, कंगना** पुं० (हि) १-कलाई में पहनने का एक आभूषण, कंकण। २-लोहे का चक्र जिसे अकाली अपने सिर पर बाँधते हैं।
**कंगनी** स्त्री० (हि) १-छोटा कंगन। २-छत के नीचे का दीवार का उभड़ा हुआ भाग। ३-कार्निस।
**कंगला** वि० (हि) कंगाल, दरिद्र।
**कंगही** स्त्री० (हि) कङ्घी।
**कंगाल** वि० (हि) निर्धन; दरिद्र।
**कंगुरिया** स्त्री० (हि) कानी उँगली; छिगुनी।
**कंगूरा** पुं० (हि) १-चोटी; शिखर। २-बुर्ज।
**कंघा** पुं० (हि) १-बाल संवारने या सुलझाने का उपकरण। २-जुलाहों की बय नामक उपकरण।
**कंघी** स्त्री० (सं) १-छोटा कंघा। २-जुलाहों का एक उपकरण।
**कंचन** पुं० (सं) १-सुवर्ण; सोना। २-धन-दौलत। ३-धतूरा। ४-एक जाति।
**कंचनी** स्त्री० (हि) वेश्या।
**कंचु** पुं० (हि) काँच; शीशा।
**कंचुक** पु० (स) १-जामा; चपकन। २-चोली। ३-कवच। ४-वस्त्र। ५-साँप की केंचुल।
**कंचुकी** स्त्री० (सं) १-चोली; अँगिया। २-अंतःपुर रक्षक।
**कंचुआ** पुं० (हि) चोली; अंगिया।
**कंचुरि, कँचुली** स्त्री० (हि) देखो 'केंचुल'।
**कंज** पुं० (सं) १-कमल। २-ब्रह्मा। ३-अमृत। ४-केश (सिर के)।
**कंजई** वि० (हि) खाकी (रंग का)। पुं० (सं) १-खाकी रङ्ग। २-ऐसे रङ्ग की आँखों वाला घोड़ा।
**कंजड़, कंजर** पुं० (हि) एक जाति का नाम।
**कंजज, कंजन** पुं० (सं) ब्रह्मा।
**कंजा** पुं० (हि) एक प्रकार की कटीली झाड़ी। वि० (हि) १-खाकी रङ्ग का। २-कंजी आँखों वाला।
**कंजाभ** वि० (सं) कमल की सी आभा वाला। पुं० कमल के समान आभा या कांति।
**कंजूस** वि० (हि) कृपण, सूम।
**कंट, कंटक** पु० (सं) १-काँटा। २-सूई की नोक। ३-विघ्न। ४-रोमांच। ५-कवच। ६-ऐसी बात या कार्य जिससे किसी को कष्ट या परेशानी हो। (नुएजेंस)।
**कंटकित** वि० (स) १-काँटेदार। २-पुलकित।
**कंटर** पुं० (अ) शीशे की वह सुराही जिसमें मादक या सुगन्धित द्रव्य रखे जाते हैं। (डिकैंटर)।
**कंटिका** स्त्री० (स) कागज नत्थी करने की सुई, आलपिन, (पिन)।
**कंटिया** स्त्री० (हि) १-छोटी कील। २-मछली फाँसने की अँकुसी। ३-अंकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४-सिर का एक गहना।
**कंटीला** वि० (हि) काँटेदार।
**कंठ** पुं० (सं) १-गला। २-घाँटी। ३-स्वर। ४-देखो 'कंठा'। वि० (सं) जबानी याद।
**कंठच्छेदिस्पर्द्धा** स्त्री० (सं) गला काट देने वाली अत्यन्त गहरी प्रतियोगिता। (कटथोटकॉम्पिटीशन)
**कंठ-तालव्य** वि० (सं) कंठ और तालु से उच्चारण होने वाले (शब्द)।
**कंठ-माला** स्त्री० (स) गले में फुँसियाँ निकलने का रोग।
**कंठ-श्री** स्त्री० (सं) गले की कंठी या माला।
**कंठ-संगीत** पुं० (सं) संगीत जो गले से गाया जाय।
**कंठ-सिरी** स्त्री० (हि) कंठ-श्री।
**कंठस्थ** वि० (सं) १-कंठ में स्थित; कंठ-गत। २-जबानी याद; कंठाग्र।
**कंठा** पुं० (हि) १-तोते के गले की रेखा। २-गले का गहना। ३-कुरते या अंगरखे का वह भाग जो गले पर रहता है।
**कंठाग्र** वि० (स) कंठस्थ; जबानी।
**कंठी** स्त्री० (हि) १-छोटी गुरियों की माला। २-तुलसी की मनियों की माला।
**कंठोष्ठ्य** वि० (सं) कंठ और ओष्ठ से बोला जाने वाला।
**कंठ्य** वि० (सं) १-कण्ठ सम्बन्धी। २-कण्ठ के लिये हितकर या उपयुक्त। ३-कंठ से उच्चारित।
**कंठ्य-वर्ण** पु० (स) वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से हो। (अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग)।
**कंडरा** स्त्री० (सं) रक्तवाहिनी नाड़ी।
**कंडा** पुं० (हि) १-सूखा गोबर जिसे जलाते हैं। २-उपला। ३-सूखा मल, सुद्दा।
**कंडाल** पुं० (हि) १-तुरही। २-पानी रखने का बड़ा बरतन।
**कंडिका** स्त्री० (सं) पुस्तक आदि के किसी प्रकरण के अन्तर्गत वह विशिष्ट विभाग जिसमें किसी एक विषय या उसके किसी अंग का एक साथ विवेचन होता है। (पैराग्राफ)।
**कंडिहार** पुं० (हि) केवट।
**कंडी** स्त्री० (हि) १-छोटा कंडा। २-सूखा मल, सुद्दा।
**कंडोल** स्त्री० (हि) कागज, मिट्टी या अभ्रक की लालटेन।
**कंडु** स्त्री० (सं) खुजली।
**कंडोल** पुं० (स) सड़कों पर रखा वह पात्र जिसमें कूड़ा डालते हैं।
**कंत, कंथ** पुं० (हि) १-पति। २-ईश्वर।
**कंथा** स्त्री० (सं) गुदड़ी।
**कंथी** पुं० (हि) १-गुदड़िया साधु। २-भिखमगा।

**कंद** पुं० (सं) १-बिना रेशे की गूदेदार जड़ । २-बादल । पु० (फा) १-मिसरी । २-एक मिठाई ।
**कंदन** पुं० (सं) नाश; ध्वंस ।
**कंदरा** स्त्री० (सं) गुफा ।
**कंदर्प** पु० (सं) कामदेव ।
**कंदला** पुं० (हि) १-तार खींचने में व्यवहृत चाँदी की छड़, गुल्ली, पासा । २-सोने चाँदी का पतला तार । स्त्री० (हि) कंदरा; गुफा ।
**कंदा** पु० (हि) १-देखो 'कंद' । २-शकरकंद ।
**कंदाकर** पुं० (स) बादलों की घटा ।
**कंदील** पु० (अ) देखो 'कंडील' ।
**कंदुक** पुं० (सं) १-गेंद । २-छोटा गोल तकिया ।
**कंध** पुं० (हि) १-डाली । २-कंधा ।
**कंधनी** स्त्री० (हि) करधनी ।
**कंधर** पुं० (सं) १-बादल । २-गरदन । ३-माथा ।
**कंधार** पुं० (हि) १-मल्लाह । २-पर लगाने वाला । ३-अफगानिस्तान का एक नगर और उसमें संलग्न प्रदेश ।
**कंधारी** वि० (हि) कंधार का । पुं० कंधार का घोड़ा
**कंधेला** पुं० (हि) साड़ी का कंधे पर रहने वाला भाग
**कंप** पुं० (सं) कँपकपी, काँपना । पुं० (हि) कैंप, पड़ाव ।
**कँपकँपी** स्त्री० (हि) काँपना ।
**कंपति** पुं० (सं) समुद्र ।
**कंपन** पुं० (सं) थरथराहट; काँपना ।
**कँपना** पुं० (हि) काँपना ।
**कंपनी** स्त्री० (अ) १-समवाय । २-मंडली ।
**कँपनी** स्त्री० (हि) कँपकँपी ।
**कंपा** पुं० (हि) चिड़ियों को फाँसने की बाँस पतली तीलियाँ ।
**कँपाना** क्रि० (हि) १-हिलना । २-डराना ।
**कंपायमान, कंपित** वि० (स) १-काँपता हुआ । २-भयभीत ।
**कंपू** पुं० (हि) १-छावनी । २-सेना ।
**कंबख्त** वि० (फा) अभागा ।
**कंबर** पु० (हि) देखो 'कंबल' ।
**कंबल** पुं० (स) १-मोटा ऊनी चादर। २-ए बरसाती कीड़ा; कमला ।
**कंबु, कंबुक** पुं० (सं) १-शंख । २-शख की चूड़ी ३-घोंघा ।
**कंबोज** पुं० (सं) अफगानिस्तान का प्राचीन नाम ।
**कंवर** पुं० (हि) कुँवर ।
**कंवल** पुं० (हि) कमल ।
**कँवार** पुं० (हि) देखो 'कुँवर' ।
**कंस** पुं० (सं) १-कांसा । २-प्याला । ३-सुराही ४-झाँझ, मजीरा । ५-मथुरा के राज उग्रसेन का का लड़का ।
**कंसताल** पु० (सं) झाँझ; मजीरा ।
**कइ** अव्य० (हि) क्या ।
**कई** वि० (हि) अनेक; कतिपय ।
**कउवा** पुं० (हि) कौवा ।
**ककड़ी** स्त्री० (हि) एक बेल का लम्बोतरा फल ।
**ककनू** पुं० (हि) ककनुस नामक पक्षी ।
**कका** पुं० (हि) देखो 'काका' ।
**ककुद** पुं० (स) १-बैल का कुबड़; डिल्ला । २-राज-चिह्न ।
**ककुभ** पुं० (सं) १-दिशा । २-अर्जुन वृक्ष ।
**ककुभ-बिलावल** पुं० (सं+हि) एक राग (सङ्गीत) ।
**कक्कड़** पुं० (हि) तंबाखू की सूखी पत्ती जो छोटी चिलम में रखकर पीयी जाती है ।
**कक्का** पुं० (हि) १-केकय देश । २-नगाड़ा । ३-देखो 'काका' ।
**कक्ष** पुं० (स) १-काँख; बगल । २-कांछ; लांग । ३-कछार । ४-सूखी घास । ५-कोठरी । ६-पाप । ७-काँख का फोड़ा । ८-अञ्चल । ९-श्रेणी; दर्जा । १०-तराजू का पल्ला । ११- सेना के आसपास का क्षेत्र या भाग ।
**कक्षा** स्त्री० (सं) १-परिधि; घेरा । २-श्रेणी; दर्जा । ३-ग्रहों का भ्रमण पथ । ४-काँख; बगल । ५-कछौटा ६-घर की दीवार ।
**कखौरी** स्त्री० (हि) १-काँख । २-काँख में होने वाला फोड़ा ।
**कगर** पुं० (हि) ऊँचा किनारा; मेंड़ ।
**कगार** पुं० (हि) १-ऊँचा किनारा । २-नदी का करारा । ३-ऊँचा टीला ।
**कच** पुं० (स) १-बाल । २-फोड़ा या घाव । ३-मेघ ४-झुण्ड । ५-घुसने या धसने का शब्द । ६-कुचले जाने का शब्द ।
**कचक** स्त्री० (हि) दबने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट
**कचकच** स्त्री० (हि) बकझक; वाग्युद्ध ।
**कचकोल** पुं० (सं) नारियल का भिक्षा पात्र, कपाल ।
**कच-दिला** वि० (हि) डरपोक; भीरु ।
**कचनार** पुं० (हि) सुगंधित फूलों का एक वृक्ष ।
**कच-पच** स्त्री० (हि) संकीर्ण स्थान में बहुत से लोगों का भर जाना, गिचपिच ।
**कचपची** स्त्री० (हि) १-कृत्तिका नक्षत्र जिसमें अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र होते हैं । २-चमकीली बिंदी जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं ।
**कचर-कचर** स्त्री० (हि) १-कच्चे फल खाने का शब्द २-कच-कच ।
**कचर-कूट** पुं० (हि) १-खूब पीटना । २-भरपेट भोजन ।
**कचरना** क्रि० (हि) १-कुचलना; रौंदना । २-खूब खाना ।

**कचरा** पुं० (हि) १-कूड़ा-करकट। २-कच्चा खरबूजा अथवा ककड़ी।

**कचरी** स्त्री० (हि) एक लता या उसका फल।

**कचलहू, कचलोहू** पुं० (हि) वह पनछा या पानी जो खुले घाव में से थोड़ा-थोड़ा निकलता है।

**कचहरी** स्त्री० (हि) १-न्यायालय। २-गोष्ठी। ३-कार्यालय। ४-राजसभा; दरबार।

**कचाई** स्त्री० (हि) १-कच्चापन। २-अनुभव-हीनता

**कचाना** क्रि० (हि) १-आगापीछा करना। २-डरना

**कचायँध** स्त्री० (हि) कच्चेपन की गंध।

**कचारना** क्रि० (हि) पटक-पटक कर कपड़ों को धोना

**कचालू** पुं० (हि) १-एक प्रकार को अरुई। २-आलू आदि की एक प्रकार की चाट।

**कचियाना** क्रि० (हि) देखो 'कचाना'।

**कचीची** स्त्री० (हि) १-जबड़ा; डाढ़। २-दाँत पर दाँत बैठ जाने की अवस्था (रोग में)।

**कचुल्ला** पुं० (हि) कटोरा।

**कचूमर** पुं० (हि) १-कुचली हुई चीज। २-कुचल कर बनाया गया अचार।

**कचूर** पुं० (हि) नरचूर नामक पौधा।

**कचोटना** क्रि० (हि) चिकोटी काटना।

**कचोरा** पुं० (हि) कटोरा।

**कचौड़ी, कचौरी** स्त्री० (हि) उरद आदि की पीठी भरकर बनाई हुई पूरी।

**कच्चा** वि० (हि) १-बिना पका; अपक्व। २-जो आँच पर न पका हो। ३-अपरिपुष्ट। ४-जिसके तैयार होने में कसर हो। ५-अप्रामाणिक। ६-अन-अभ्यस्त। ७-नियम रहित। ८-बिना रस का ९-प्रामाणिक तौल या माप में कम। १०-कच्ची मिट्टी का बना। पुं० (हि) १-कच्ची सिलाई। २-ढाँचा। ३-मसौदा।

**कच्चा-चिट्ठा** पुं० (हि) १-किसी की गुप्त या गोपनीय बातें खोलना। २-ज्यों-का-त्यों कहा हुआ वृत्तान्त।

**कच्चापन** पुं० (हि) कचाई।

**कच्चामाल** पुं० (हि) वह मूल वस्तु जिससे कोई चीज बनाई जाय।

**कच्ची** स्त्री० (हि) कच्ची रसोई।

**कच्ची-आय** स्त्री० (हि) वह समूची आमदनी जिसमें से लागत परिव्यय आदि न घटाये गये हों।

**कच्ची-चीनी** स्त्री० (हि) राब में शीरा निकालकर बनाई गई चीनी जो साफ नहीं होती।

**कच्ची-निकासी** स्त्री० (हि) किसी सम्पत्ति से प्राप्त वह समूची आय जिसमें से व्यय आदि न घटाया गया हो। (ग्रॉस-एसेट्स)।

**कच्ची-बही** स्त्री० (हि) वह बही जिसमें कच्चा हिसाब, यादद्दाश्तें आदि लिखी जाती हैं।

**कच्ची-रसोई** स्त्री० (हि) पानी में पका अन्न।

**कच्चू** पुं० (सं) १-अरुई। २-बण्डा।

**कच्चे-बच्चे** पुं० (हि) बहुत छोटे-छोटे बच्चे, बहुत से लड़के बाले।

**कच्छ** पुं० (सं) १-जलप्राय देश। २-जल के पास की भूमि, कछार। ३-गुजरात के पास का एक अन्तरीप। ४-इस देश का घोड़ा। ५-धोती की लांग। ६-एक छप्पय छन्द। पुं० (हि) कछुवा।

**कच्छप** पुं० (सं) १-कछुवा। २-विष्णु के २४ अवतारों में से एक।

**कच्छा** पुं० (हि) १-चौड़े छोर वाली बड़ी नाव जिसमें दो पतवारें लगती हैं। २-कई बड़ी नावों को मिलाकर बनाया गया बेड़ा।

**कच्छी** वि० (सं) कच्छ देश का। पुं० (सं) १-कच्छ देश का निवासी। २-इस देश का घोड़ा। स्त्री० कच्छ देश की भाषा।

**कच्छू** पुं० (हि) कछुआ।

**कछ** पुं० (हि) १-कछुआ। २-विष्णु का कच्छप अवतार।

**कछनी** स्त्री० (हि) १-छोटी धोती। २-घुटने के ऊपर तक की धोती। ३-वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

**कछान, कछाना** पुं० (हि) घुटनों के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

**कछार** पुं० (हि) नदी या समुद्र के किनारे की भूमि

**कछारी** स्त्री० (हि) छोटा कछार। वि० कछार सम्बन्धी, कछार का।

**कछारी-क्षेत्र** पुं० (हि) कछार या भू-भाग या क्षेत्र। (एल्यूवियल एरिया)।

**कछुआ** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध जल-जन्तु, कच्छप।

**कछुक** वि० (हि) कुछ।

**कछुवा** पुं० (हि) कच्छप।

**कछुवे** अव्य० (हि) कुछ भी।

**कछोटा, कछौटा** पुं० (हि) १-देखो 'कछाना' २-देखो 'कछनी'।

**कज** पुं० (फा) १-टेढ़ापन। २-दोष; ऐब।

**कजरा** पुं० (हि) १-काजल। २-काली आँखों वाला बैल। वि० (हि) श्याम; काला।

**कजरारा** वि० (हि) १-काजल लगा हुआ। २-काला

**कजरी** स्त्री० (हि) १-कजली। २-कदली। पुं० एक प्रकार का धान या चावल।

**कजरौटा** पुं० (हि) देखो 'कजलौटा'।

**कजरौटी** स्त्री० (हि) देखो 'कजलौटी'।

**कजलाना** क्रि० (हि) १-काला पड़ना। २-आग का बुझाना। ३-काजल लगाना।

**कजली** स्त्री०(हि) १-कालिख। २-पिसे हुए पारे और

गंधक की बुकनी। ३-रस फूँकने में धातु का वह अंश जो काला पड़ जाता है। ४-काली आँख की गाय। ५-भादों वदी तीज का त्योहार। ६-बरसात में गाया जाने वाला एक गीत।
**कजली-वन** पुं० (हि) देखो 'कदली-वन'।
**कजलौटा** पुं० (हि) काजल की डिबिया।
**कजलौटी** स्त्री० (हि) छोटा कजलौटा।
**कजा** स्त्री० (अ) मौत, मृत्यु।
**कज़ाक** पु० (तु०) डाकू; लुटेरा।
**कजाकी** स्त्री० (हि) १-लुटेरापन। २-छल-कपट।
**कजावा** पुं० (फा) ऊँट की पीठ पर रखी जाने वाली काठी।
**कजिया** पुं०(अ) झगड़ा; टंटा।
**कजी** स्त्री० (फा) १-टेढ़ापन। २-दोष; ऐब।
**कज्जल** पुं० (सं) १-अंजन, काजल। २-सुरमा। ३ कालिख। ४-बादल। ५-चौदह मात्रा का एक छंद
**कज्जाक** पु० (तु०) डाकू, लुटेरा।
**कट** पुं० (सं) १-हाथी की कनपटी या गंडस्थल २-खस, सरकंडा आदि घास या उसकी बनी टट्टी। शव, लाश। ४-श्मशान। पुं० (हि) 'काट' का संक्षिप्तरूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है।
**कटक** पु० (सं) १-सेना; फौज। २-सेना के रहने का स्थान; छावनी; (कैंटूनमेंट)। ३-समूह; झुण्ड ४-पर्वत का मध्य भाग।
**कटकई** स्त्री० (हि) १-सेना। २-फौज या स-दलबल चलने की तैयारी।
**कटकट** स्त्री० (हि) १-दाँतों से बजने का शब्द। २-लड़ाई-झगड़ा।
**कटकटाना** क्रि० (हि) दाँत पीसना। (क्रोध में)।
**कटका** पुं० (हि) बड़ा टुकड़ा; डला; पिण्ड।
**कटकाई** स्त्री० (हि) सेना; फौज।
**कटकीना** पुं० (हि) गहरी चाल; हथकण्डा।
**कटखना** वि० (हि) काट खाने वाला।
**कटघरा** पुं० (हि) १-जङ्गलेदार काठ का घर। २-बड़ा पिंजड़ा जिसमें शेर, चीते आदि हिंसक जन्तु रखे जाते हैं।
**कटत, कटती** स्त्री० (हि) १-खपत; बिक्री। २-मूल्य या वेतन आदि में कमी।
**कटनंस** पुं० (हि) काटने तथा नष्ट करने की क्रिया।
**कटनास** पुं० (हि) नीलकण्ठ नामक पक्षी।
**कटना** पुं० (हि) १-किसी धारदार हथियार से किसी वस्तु के दो टुकड़े होना। २-नष्ट होना। ३-बीतना ४-युद्ध में मरना। ५-समय का बीतना। ६-लिखावट पर लकीर फिरना।
**कटनि** स्त्री० (हि) १-कांट-छांट; काट। २-आसक्ति।
**कटनी** स्त्री० (हि) १-काटने का औजार। २-काटने का काम। ३-फसल की कटाई।
**कटर** पुं० (हि) १-एक प्रकार की नौका। २-वह जो काटे। ३-वह जिससे काटा जाय।
**कटरा** पुं० (हि) १-छोटा चौकोर बाजार। २-भैंस का नर बच्चा।
**कटवाँ** वि० (हि) कटा हुआ।
**कटहरा** पुं० (हि) देखो 'कटघरा'।
**कटहल** पुं० (हि) एक वृक्ष या उसका फल।
**कटहा** वि० (हि) कटखना।
**कटा** पुं० (हि) १-मारकाट। २-वध; हत्या।
**कटाइक** वि० (हि) काटने वाला।
**कटाई** स्त्री० (हि) १-काटने का काम या भाव। २-काटने की मजदूरी।
**कटाऊ** पुं० (हि) देखो 'कटाव'।
**कटाकट, कटाकटी** स्त्री० (हि) १-खटकट का शब्द। २-लड़ाई। ३-वैर, वैमनस्य।
**कटाक्ष** पुं० (सं) १-तिरछी चितवन। २-वह व्यंग जो किसी पर आक्षेप के लिए कहा जाय। (सरकैज़्म)।
**कटाक्षिक** वि० (सं) कटाक्ष से युक्त।
**कटाग्नि** स्त्री० (स) घास-फूस डालकर जलाई हुई आग।
**कटाछ** पुं० (हि) देखो 'कटाक्ष'।
**कटाछनी** स्त्री० (हि) देखो 'कटाकट'।
**कटान** स्त्री० (हि) १-काटने की क्रिया या भाव। २-काटने का ढंग।
**कटाना** क्रि० (हि) १-काटने का कार्य अन्य से कराना। २-दाँतों से नुचवाना।
**कटार, कटारी** स्त्री० (हि) १-एक बालिश्त का दुधारा हथियार। २-एक प्रकार का वन-बिलाव।
**कटाव** पुं० (हि) १-काट-छांट; कतरब्योंत। २-काटकर बनाये हुए बेलबूटे। ३-पानी के वेग से जमीन का काटकर बह जाना। (इरोजन)।
**कटास** पुं० (हि) एक प्रकार का वन-बिलाव।
**कटाह** पुं० (सं) १-कड़ाह। २-भैंस का कटरा। ३-कछुए की खोपड़ी।
**कटि** स्त्री० (स) १-कमर। २-हाथी की कनपटी या गण्डस्थल।
**कटिका** स्त्री० (सं) पतली कमर।
**कटिजेब** स्त्री० (हि) करधनी।
**कटिदेश** स्त्री० (हि) कमर।
**कटिबंध** पुं० (स) १-कमरबन्द। २-भूगोल विद्या में गर्मी सर्दी के विचार से पृथ्वी के पाँच कल्पित भागों में से कोई एक, (ज़ोन)।
**कटिबद्ध** पुं० (सं) १-कमर कसे हुए। २-तैयार; उद्यत।
**कटि-मंडन** पुं० (स) १-कटि या कमर की शोभा

चढ़ाने वाली वस्तु। २-करधनी।

**कटियाना** *क्रि०*(हि) १-कंटकित होना। २-पुलकित होना।

**कटि-सूत्र** पुं० (सं) कमर में पहनने का डोरा; मेखला

**कटीला** *वि०* (हि) १-तीक्ष्ण। २-नुकीला। ३-प्रभावशाली। ४-मोहित करने वाला। ५-काँटेदार।

**कटु** पुं० (सं) १-कड़ुआ। २-अप्रिय।

**कटुआ** *वि०* (हि) कटा हुआ।

**कटुआ-व्याज** पुं० (हि) मिती काटा।

**कटूक्ति** *स्त्री०* (सं) अप्रिय बात; कड़वी बात।

**कटैया** *वि०* (हि) काटने वाला।

**कटोरदान** पुं० (हि) गोल डिब्बे के आकार का एक ढक्कनदार पात्र।

**कटोरा** पुं० (हि) प्याला, बेला।

**कटोरी** *स्त्री०* (हि) १-छोटा कटोरा, प्याली। २-अँगिया का वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं। ३-फूल की ढेंढ़ी।

**कटौती** *स्त्री०* (हि) किसी रकम में से (धर्मादा, दस्तूरी आदि के रूप में) कुछ काट लेना।

**कटौती-प्रस्ताव** पुं० (हि+सं) संसद, विधान-सभा आदि में किसी विभाग के कार्य पर असंतोष प्रकट करने के निमित्त उसके खर्च की मांग में कोई छोटी रकम घटा देने का प्रस्ताव। (कट-मोशन)।

**कट्टर** *वि०* (हि) १-कारखाने वाला। २-दुराग्रही। ३-अंध-विश्वासी।

**कट्टा** पुं० (हि) जबड़ा। *वि०* (हि) १-मोटा-ताजा। २-बलवान।

**कट्ठा** पुं० (हि) पाँच हाथ चार अँगुली की एक नाप।

**कठड़ा** पुं० (हि) १-कटघरा। २-काठ का पात्र, कठौता। ३-काठ का बड़ा संदूक।

**कठ-पुतली** *स्त्री०* (हि) १-डोरे की सहायता से नाचने वाली काठ की गुड़िया। २-वह व्यक्ति जो दूसरों के संकेत पर काम करे।

**कठ-प्रेम** पुं० (हि) प्रिय के विमुख रहने पर भी उसके प्रति बना रहने वाला प्रेम।

**कठ-फोड़वा** पुं० (हि) भूरे रङ्ग और लम्बी चोंच वाली चिड़िया जो अपनी चोंच से काठ में छेदकर देती है।

**कठ-बंधन** पुं० (हि) हाथी के पैर की काठ की बेड़ी।

**कठ-बाप** पुं० (हि) सौतेला पिता।

**कठ-मलिया** पुं० (हि) १-काठ की माला पहनने वाला, वैष्णव। २-झूठा संत।

**कठ-मस्त, कठ-मस्ता** *वि०* (हि) १-मस्त, बेफिक्र, मुस्तंडा।

**कठ-मुल्ला** पुं० (हि) १-कम पढ़ा हुआ। २-कट्टर। ३-अक्षर-पूजक मुल्ला या मौलवी।

**कठला** पुं० (हि) बच्चों के (गले में) पहनने की एक तरह की माला।

**कठवत** *स्त्री०* (हि) कठौत।

**कठारा** पुं० (हि) नदी का किनारा।

**कठिन** *वि०* (स) १-कड़ा, सख्त। २-मुश्किल, दुष्कर, दुःसाध्य।

**कठिनई** *स्त्री०* (हि) कठिनता।

**कठिनता** *स्त्री०* (सं) १-कठोरता, सख्ती। २-मुश्किल ३-निर्दयता। ४-दृढ़ता।

**कठिनाई** *स्त्री०* (हि) कठिनता।

**कठिया** *वि०* (हि) कड़े छिलके वाला।

**कठोर** पुं० (हि) सिंह।

**कठुआना** *क्रि०* (हि) सूखकर काठ के समान कड़ा हो जाना।

**कठुला** पुं० (हि) देखो 'कठला'।

**कठुवाना** *क्रि०* (हि) देखो 'कठुआना'।

**कठूमर** पुं० (हि) जंगली गूलर।

**कठूला** पुं० (हि) देखो 'कठला।

**कठेठ, कटेठा** *वि०* (हि) १-कठोर; सख्त। २-कटु। ३-तगड़ा।

**कठोर** *वि०* (स) १-कठिन; सख्त। २-निर्दय; निष्ठुर

**कठोरता** *स्त्री०* (सं) १-कड़ापन, सख्ती। २-निर्दयता

**कठोरताई** *स्त्री०* (हि) कठोरता।

**कठौत, कठौता** पु० (हि) काठ का छिछला बरतन।

**कड़क** *स्त्री०* (हि) १-बहुत कड़ा तथा डरावना शब्द २-बिजली की चमक के पश्चात होने वाला शब्द। ३-डपट। ४-रुक-रुक कर होने वाला दर्द, कसक।

**कड़कड़ाता** *वि०* (हि) १-जिससे कड़कड़ का शब्द निकले। २-कलफदार। ३-तेज।

**कड़कड़ाना** *क्रि०* (हि) १-कड़कड़ शब्द करना या होना। २-घी, तेल आदि का गरम होकर कड़कड़ शब्द करना या होना।

**कड़कड़ाहट** *स्त्री०* (हि) कड़कड़ की आवाज।

**कड़कना** *क्रि०* (हि) १-बिजली चमकने की आवाज होना; गरजना। २-किसी चीज का तेज आवाज के साथ टूटना या फटना। ३-डाँटते हुए ऊँचे स्वर से बोलना।

**कड़क-नाल** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार की बिजली।

**कड़क-बिजली** *स्त्री०* (हि) १-तोड़ेदार बन्दूक। २-कान का एक गहना। ३-उपचार के निमित्त बिजली दौड़ाने का यन्त्र विशेष।

**कड़का** पुं० (हि) कड़ाके की आवाज।

**कड़खा** पु० (हि) १-लड़ाई में गाया जाने वाला गीत, जो योद्धाओं को उत्साहित करने के लिए गाया जाता है। २-एक मात्रिक छंद।

**कड़खैत** पुं० (हि) कड़खा गाने वाला चारण, भाट।

**कड़वा** *वि०* (हि) देखो 'कड़ुवा'।

**कड़वी** *स्त्री०* (हि) ज्वार का पेड़ जो चारे के काम में

आती है।

**कड़ा** पुं० (हिं) १-चूड़ी की तरह का हाथ या पैर में पहनने का गहना। २-लोहे का बड़ा छल्ला जिसे सिख हाथ में पहनते हैं। ३-लोहे का कुंडा। ४-एक प्रकार का कबूतर। वि० (हिं) १-कठिन; ठोस। २-उग्र, दृढ़। ३-रूखा। ४-कसा हुआ। ५-तगड़ा। ६-जोर का। ७-सहनशील। ८-दुष्कर। तेज।

**कड़ाई** स्त्री० (हिं) कठोरता; सख्ती।

**कड़ाका** पुं० (हिं) १-किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। २-उपवास।

**कड़ाबीन** स्त्री० (हिं) १-चौड़े मुँह की बन्दूक। २-कमर में बाँधने की छोटी बन्दूक।

**कड़ाह, कड़ाहा** पुं० (हिं) लोहे का बड़ा बरतन जिसे आँच पर चढ़ा कर आवश्यक खाद्य वस्तुओं को पकाया जाता है।

**कड़ाही** स्त्री (हिं) छोटा कड़ाहा।

**कड़ियल** वि० (हिं) देखो 'कड़ा'।

**कड़ी** स्त्री० (हिं) १-जंजीर का छल्ला। २-गीत का एक पद।

**कड़ुआ** वि० (हिं) १-स्वाद में तीखा; कटु। २-अक्खड़। ३-अप्रिय।

**कड़ुआ-तेल** पुं० (हिं) सरसों का तेल।

**कड़ुआना** क्रि०(हिं) १-कड़ुआ लगना। २-खीझना ३-उनींदा होने के कारण किरकिरा पड़ने का सा दर्द होना।

**कड़ुआहट** स्त्री० (हिं) कटुता।

**कढ़ना** क्रि० (हिं) १-निकलना। २-उदय होना। ३-अग्रसर होना। ४-अपने प्रेमी के साथ स्त्री का घर छोड़कर भाग जाना। ५-गाढ़ा होना।

**कढ़लाना** क्रि० (हिं) घसीट कर बाहर करना।

**कढ़वाना** क्रि० (हिं) काढ़ने का काम किसी और से कराना।

**कढ़ाई** स्त्री० (हिं) १-निकालने का काम। २-निकालने की मजदूरी। ३-कसीदा निकालने का काम या उजरत। ४-देखो 'कड़ाही'।

**कढ़ाना** क्रि० (हिं) देखो 'कढ़वाना'।

**कढ़ाव** पुं० (हिं) १- कसीदे का काम। २-देखो 'कड़ाह'।

**कढ़ावना, कढ़िराना** क्रि० (हिं) देखो 'कढ़वाना'।

**कढ़िहार** वि० (हिं) १-निकालने वाला। २-उद्धार करने वाला। ३-उधार लेने वाला।

**कढ़ी** स्त्री० (हिं) एक व्यञ्जन को जो बेसन, दही और मसाले के योग से बनता है।

**कढ़ुई** स्त्री० (हिं) मिट्टी का छोटा पुरवा।

**कढ़ैया** वि० (हिं) देखो 'कढ़िहार'।

**कढ़ोरना** क्रि० (हिं) घसीटना।

**कण** पुं० (सं) १-बहुत छोटा टुकड़ा; रवा। २-अन्न का एक दाना। ३-चावल का बारीक टुकड़ा।

**कणाद** पुं० (सं) १-एक मुनि का नाम। २-सोनार

**कणिका, कणी** स्त्री० (सं) अत्यन्त छोटा टुकड़ा।

**कणीकरण** पुं० (सं) कणों अथवा रवों के रूप में परिणित करना या होना। (क्रिस्टैलाइजेशन)।

**कणीसक** स्त्री० (हिं) अन्न की बाल।

**कत** अव्य० (हिं) क्यों।

**कतक** अव्य० १-क्यों; किसलिए। २-कितना।

**कतना** क्रि० (हिं) (सूत आदि) काता जाना।

**कतरन** स्त्री० (हिं) काटने से बचा हुआ छोटा रद्दी टुकड़ा।

**कतरना** क्रि० (हिं) कैंची या अन्य किसी औजार से काटना।

**कतरनी** स्त्री० (हिं) कैंची।

**कतर-ब्योंत** स्त्री० (हिं) १-काट-छांट। २-हिसाब या खर्च में काट-छाँट। ३-सोच-विचार। ४-जोड़तोड़

**कतरा** पुं० (हिं) १-कटा हुआ टुकड़ा; खण्ड। २-गढ़ाई से निकला हुआ पत्थर का छोटा टुकड़ा। पुं० (अ) बूंद।

**कतराना** क्रि० (हिं) १-बचकर निकल जाना। २-कटवाना।

**कतल** पुं० (अ) वध; हत्या।

**कतलाम** पुं० (अ) सर्व-संहार।

**कतली** क्रि० (हिं) चौकोर कटी हुई मिठाई, बर्फी।

**कतवार** पुं० (हिं) १-कूड़ा-करकट। २-कातने वाला व्यक्ति।

**कतहुं, कतहूँ** अव्य० (हिं) कहीं; किसी जगह; किस ओर।

**कताई** क्रि० (हिं) १-कातने का काम। २-कातने की मजदूरी।

**कतान** स्त्री० (फा) १-एक प्रकार का रेशम जिस पर कलाबत्तू बनता है। २-इस रेशम का वस्त्र।

**कताना** क्रि० (हिं) कातने का कार्य अन्य से करवाना

**कतार** स्त्री० (अ) १-पंक्ति; श्रेणी। २-झुण्ड; समूह

**कतारा** पुं० (हिं) एक प्रकार का लाल रंग का मोटा गन्ना।

**कतारी** स्त्री० (हिं) १-कतार। २-एक प्रकार की ईख

**कति, कतिक** वि० (हिं) १-कितने। २-किस कदर। ३-कौन। ४-बहुसंख्यक।

**कतिपय** वि० (हिं) १-कितने ही। २-कुछ, थोड़े से।

**कतीरा** पुं० (हिं) एक वृक्ष का गोंद।

**कतेक** वि० (हिं) देखो 'कतिक'।

**कतेब** स्त्री० (हिं) १-पुस्तक। २-धर्म-ग्रन्थ।

**कत्ती** स्त्री० (हिं) १-छोटी तलवार। २-कटार। ३-सोनारों की कतरनी। ४-एक प्रकार की पगड़ी।

**कत्थई** वि० (हिं) कत्थे के रंग का; खैरा।

**कत्थक** पुं० (हि) एक जाति जो नाचने गाने का काम करती है।
**कत्थक-नृत्य** पुं० (हि+सं) एक प्रकार का नाच जो कत्थक जाति का है।
**कत्था** पुं० (हि) खैर की लकड़ी का सत जो पान के साथ खाया जाता है।
**कत्ल** पुं० (अ) वध; हत्या।
**कत्ल की रात** स्त्री० मुहर्रम की दसवीं रात।
**कथंचित** क्रि० वि० (सं) कदाचित।
**कथ** पुं० (हि) देखो 'कथा'।
**कथक** पुं० (सं) १-कथा बाँचने वाला, पौराणिक २-कत्थक।
**कथकाली** स्त्री० (हि) देखो 'कथाकली'।
**कथक्कड़** पुं० (हि) खूब किस्से कहानी कहने वाला।
**कथन** पुं० (सं) १-कहना। २-उक्ति। ३-किसी के सम्मुख दिया हुआ वक्तव्य; बयान; (स्टेटमेंट)। ४-किसी के सम्बन्ध में दिया गया वह वक्तव्य जो अभी प्रमाणित न हुआ हो। (एलीगेशन)।
**कथना** क्रि० (हि) १-कहना। २-निंदा करना।
**कथनाश्रय** पुं० (सं) कुछ लोगों के अभ्यास के कारण निरर्थक रूप से बार-बार आने वाला कोई पद या शब्द समूह। जैसे—जो है सो; क्या नाम है कि आदि।
**कथनी** स्त्री० (हि) १-कथन; बात। २-बकवाद।
**कथनीय** वि० (अ) १-कहने योग्य। २-निंदनीय, बुरा।
**कथवार्ता** स्त्री० (हि) कथावार्ता।
**कथमपि** क्रि० वि० (सं) कदापि।
**कथरी** स्त्री० (हि) गुदड़ी।
**कथा** स्त्री० (अ) १-वह जो कहा जाय, बात। २-धार्मिक व्याख्यान। ३-समाचार; हाल।
**कथाकाली** स्त्री० (हि) एक प्रकार की नृत्य शैली।
**कथानक** पुं० (सं) १-छोटी कथा। २-कथा वस्तु।
**कथावस्तु** स्त्री० (सं) कथा का मूल रूप; (प्लाट)।
**कथावार्त्ता** स्त्री० (सं) १-अनेक प्रकार के प्रसंग। २-पौराणिक आख्यान।
**कथित** वि० (सं) १-कहा हुआ। २-जिसके सम्बन्ध में कहा तो गया हो; पर प्रमाणित न किया गया हो, (अलेज्ड)।
**कथी** स्त्री० (हि) कथनी।
**कथीर** पुं० (हि) रांगा; (धातु)।
**कथोद्घात** पुं० (सं) १-प्रस्तावना। २-रूपक की प्रस्तावना के पांच भेदों में से दूसरा भेद।
**कथोपकथन** पुं० (सं) बातचीत; संवाद।
**कथ्य** वि० (सं) कथनीय, कहने योग्य।
**कदंब** पुं० (हि) १-एक सदाबहार वृक्ष। २-समूह। ३-ढेर।
**कद** स्त्री० (हि) १-द्वेष। २-हठ। पुं० (अ) ऊँचाई। अव्य० (हि) कब; किस समय।
**कदधव** पुं० (हि) कुमार्ग।
**कदन** पुं० (स) १-विनाश। २-वध, हिंसा। ३-पाप ४-दुःख।
**कदन्न** पुं० (सं) खराब मोटा अन्न।
**कदम** पुं० (हि) १-एक सदाबहार वृक्ष। २-इस वृक्ष के गोल फल। पुं० (अ) १-पैर। २-पदचिह्न। ३-चलने में दोनों पगों के बीच का अन्तर; डग। ४-कार्य विशेष के लिये किया गया यत्न; कोशिश। ५-घोड़े की एक चाल।
**कदर** स्त्री० (अ) १-मात्रा; मिकदार। २-मान, प्रतिष्ठा।
**कदरई** स्त्री० (हि) कायरता।
**कदरदान** वि० (फा) गुणग्राहक।
**कदरमस** स्त्री० (हि) मारपीट, लड़ाई।
**कदराई** स्त्री० (हि) कायरता।
**कदराना** क्रि० (हि) १-कायरता दिखाना। २-डरना ३-कायर बनाना।
**कदर्थ** वि० (सं) कुत्सित; बुरा।
**कदर्थना** स्त्री० (स) १-दुर्दशा। २-निन्दा।
**कदली** स्त्री० (सं) १-केला। २-एक हिरन।
**कदली-वन** पुं० (स) वह स्थान जहाँ पर्याप्त संख्या में केले के पेड़ हों।
**कदा** क्रि० वि० (सं) कब? किस समय?
**कदाकार** वि० (सं) कुरूप; भद्दा।
**कदाच, कदाचन** क्रि० वि० देखो 'कदाचित'।
**कदाचार** पुं० (सं) अनुचित व्यवहार या आचरण। (मिसबिहेवियर)।
**कदाचित्** क्रि० वि० (सं) १-कभी। २-शायद।
**कदापि** क्रि० वि० (सं) कभी; हर्गिज।
**कदी** क्रि० वि० (हि) कभी।
**कदीम, कदीमी** वि० (अ) पुराना; प्राचीन।
**कदुष्ण** वि० (सं) थोड़ा गरम; कुनकुना।
**कदूरत** स्त्री० (अ) मन-मोटाव।
**कदे** क्रि० वि० (हि) कभी।
**कद्दू** पुं० (फा) लौकी; घीया।
**कधी** क्रि० वि० (हि) कभी।
**कन** पुं० (हि) १-कण। २-अन्न का एक दाना। ३-अन्न के दाने का टुकड़ा। ४-प्रसाद। ५-भोख का अन्न। ६-शारीरिक शक्ति। ७-'कान' का समास में व्यवहृत संक्षिप्त रूप।
**कनउड़ा** वि० (हि) कनौड़ा; कृतज्ञ।
**कनक** पुं० (स) १-स्वर्ण; सोना। २-धतूरा। ३-पलाश। ४-गेहूँ। ५-छप्पय छन्द का एक भेद।
**कनक-कूट** पुं० (सं) सुमेरु पर्वत।
**कनक-चंपा** पुं० (स+हि) एक प्रकार का चम्पा का

फूल।
**कन-कटा** वि० (हिं) १-जिसका कान कटा हो; बूचा २-कान काटने वाला।
**कनकना** वि० (हि) १-तनिक से आघात से टूट जाने वाला। २-कन-कनाहट करने वाला (शब्द)। ३-चुनचुनाने वाला। ४-चिड़चिड़ा। ५-अरुचिकर।
**कनकनाना** क्रि० (हि) १-चौकन्ना होना। २-चुन-चुनाना। ३-रोमांचित होना। ४-अरुचिकर लगना
**कनका** पुं० (हि) छोटे कण।
**कनकानी** पुं० (हि) घोड़े की एक जाति।
**कनकूत** स्त्री० (हि) खड़ी फसल के अन्न का अनुमान
**कनकौआ, कनकौवा** पुं० (हि) बड़ी पतङ्ग।
**कन-खजूरा** पुं० (हि) एक कीड़ा जो कभी-कभी कान में घुस जाता है; गोजर।
**कनखा** पुं० (हि) १-कोंपल। २-शाखा; डाली।
**कनखियाना** क्रि० (हि) १-कनखी से देखना। २-आंख से संकेत करना।
**कनखी** स्त्री० (हि) १-आँख की कोर। २-तिरछी निगाह से देखना। ३-दूसरों की निगाह बचाकर देखना। ४-आँख का इशारा; सैन।
**कन-छेदन** पुं० (हि) कान छेदने का संस्कार; कर्ण-वेध संस्कार।
**कनटोप** पुं० (हि) कानों तक ढक लेने वाली एक प्रकार की टोपी।
**कनधार** पुं० (हि) कर्णधार; केवट।
**कनपटी** स्त्री० (हि) कान और आँख के मध्य का स्थान, गण्डस्थल।
**कन-फटा** पुं० (सं) गोरख-पंथी योगी जो दोनों कानों को फड़वाकर इनमें बिल्लौरी मुद्राएँ पहनते हैं
**कन-फुंका** वि० (हि) १-दीक्षा देने वाला। २-जिसका कान फूंका गया हो।
**कन-फुसका** पुं० (हि) १-कान में बात कहने वाला व्यक्ति। २-चुगलखोर।
**कन-बतिया** स्त्री० (हि) कान में कही गई बात।
**कनमनाना** क्रि० (हि) १-कोई आहट पाकर चौकन्ना होना। २-कुलबुलाना।
**कनय** पुं० (हि) कनक; सोना।
**कनयर** पुं० (हि) कनेर।
**कनसरिया** पुं० (हि) सङ्गीत का रसिक।
**कनसुई** स्त्री० (हि) आहट; टोह।
**कनस्तर** पुं० (अं) टीन का चौखूंटा पीपा।
**कनहार** पुं० (हि) मल्लाह; केवट।
**कना** पुं० (हि) १-कण। २-अन्न का दाना।
**कनाउड़ा** वि० देखो 'कनौड़ा'।
**कनागत** पुं० (हि) १-पितृ-पक्ष। २-श्राद्ध।
**कनात** स्त्री० (तु०) मोटे कपड़े की दीवार जिससे कोई स्थान घेरा जाता है।
**कनावड़ा** पुं० (हि) देखो 'कनौड़ा'।
**कनिका** पुं० (हि) किसी वस्त का अत्यधिक छोटा टुकड़ा।
**कनिगर** वि० (हि) आनवाला।
**कनियां** पुं० (हि) बच्चे को कन्धे पर रख कर खिलाना।
**कनियाना** क्रि० (हि) १-कतराना। २-गोद में उठाना।
**कनियार** पुं० (हि) कनक; चम्पा।
**कनिष्ठ** वि० (सं) १-उम्र में सबसे छोटा। २-जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३-बहुत छोटा। ४-देखो 'कनीय'
**कनिहार** पुं० (हि) केवट; मल्लाह।
**कनी** स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-हीरे की कणिका ३-चावल का छोटा टुकड़ा। ४-बर्फ की बूंद।
**कनीय** वि० (सं) पद, मर्यादा, अवस्था आदि में छोटा (जूनियर)।
**कनीयता** स्त्री० (सं) पद, मर्यादा, अवस्था आदि में छोटा होने का भाव या स्थिति। (जूनियरटी)।
**कनीनिका** स्त्री० (सं) आँख की पुतली।
**कनूका** पुं० (हि) दाना, कण।
**कने** क्रि० वि० (हि) १-पास। २-ओर।
**कनेखी** स्त्री० (हि) देखो 'कनखी'।
**कनेठी** स्त्री० (हि) कान उमेठना।
**कनेर** पुं० (हि) एक छोटे आकार का वृक्ष जिससे लाल, पीले और सफेद फूल लगते हैं।
**कनेव** पुं० (हि) चारपाई का टेढ़ापन।
**कनोखी** वि० (हि) देखो 'कनखी'।
**कनौजिआ** पुं० (हि) कन्नौज का रहने वाला।
**कनौड़** स्त्री० (हि) १-कनौड़ या खण्डित होने का भाव। २-कलङ्क। ३-लज्जा। ४-तुच्छता।
**कनौड़ा** वि० (हि) १-काना। २-अपङ्ग। ३-कलङ्कित ४-लज्जित। ५-दबैल। ६-क्षुद्र; हीन। पुं० (सं) मोल लिया हुआ दास।
**कनौती** स्त्री० (हि) १-पशुओं का कान या उसकी नोक २-कान खड़े करने का ढंग। ३-कान की बाली।
**कन्ना** पुं० (हि) १-वह डोरा जो पतङ्ग के बीच में बाँधा जाता है। २-कोर; किनारा। ३-चावल का टुकड़ा।
**कन्नी** स्त्री० (हि) १-पतङ्ग के दोनों ओर के किनारे २-किनारा।
**कन्यका** स्त्री० (सं) १-क्वारी लड़की। २-पुत्री; बेटी।
**कन्या** स्त्री० (सं) १-क्वारी लड़की। २-पुत्री। ३-एक राशि।
**कन्या-कुमारी** स्त्री० (सं) १-एक अन्तरीप जो दक्षिण भारत में है; रासकुमारी।
**कन्या-दान** पुं० (सं) विवाह में वर को कन्या समर्पण करने की रीति।
**कन्हाई** पुं० (हि) श्रीकृष्ण।

**कन्हावर** पुं० (हि) दुपट्टा।
**कन्हैया** पुं० (हि) १-श्रीकृष्ण। २-सुन्दर लड़का। ३-प्रियजन।
**कपट** पुं० (सं) १-छल; धोखा। २-दुराव; छिपाव
**कपट-कन** पुं० (हि) १-वह अन्न जो चिड़ियों को फँसाने के लिए बिखेरा जाता है। २-जाल जो किसी को फँसाने के लिए बिछाया जाय।
**कपटना** क्रि० (हि) १-निकाल कर अलग करना। २-चोरी से कुछ अंश अपने लिए अलग रख लेना।
**कपट-पुरुष** पुं० (हि) खेत में पक्षियों को डराने के लिए बनाया हुआ पुतला।
**कपटा** पुं० (हि) धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा।
**कपटी** वि० (सं) कपट करने वाला।
**कपड़-छन** पुं० (हि) किसी चूर्ण को कपड़े में छानने का काम।
**कपट-द्वार** पुं० (हि) वस्त्रागार।
**कपड़-मिट्टी** स्त्री० (हि) धातु या औषधि फूंकने के लिए सम्पुट पर चारों ओर मिट्टी चिपका कर कपड़ा लपेटने की विधि; कपड़ौटी।
**कपड़ा** पुं० (हि) १-रूई, ऊन, रेशम के तागों से बुना हुआ पट; वस्त्र। २-पहनावा।
**कपड़ौटी** स्त्री० (हि) देखो 'कपड़-मिट्टी'।
**कपरा** पुं० (हि) १-कपड़ा। २-कपाट; कपाल।
**कपरौटी** स्त्री० (हि) देखो 'कपड़-मिट्टी'।
**कपर्द, कपर्दक** पुं० (सं) १-जटा-जूट (शिव का)। कौड़ी।
**कपर्दिका** स्त्री० (सं) कौड़ी।
**कपर्दी** पुं० (सं) शिव।
**कपाट** पुं० (सं) किवाड़।
**कपार** पुं० (हि) देखो 'कपाल'।
**कपाल** पुं० (सं) १-खोपड़ी। २-ललाट। ३-भाग्य। ४-भिक्षापात्र, खप्पर।
**कपालक** वि० (सं) देखो 'कापालिक'।
**कपाल-क्रिया** स्त्री० (सं) १-शवदाह के समय खोपड़ी फोड़ने का कार्य। २-किसी वस्तु को पूर्णतया नष्ट कर देना।
**कपालिका** स्त्री० (सं) रणचण्डी; दुर्गा।
**कपाली** पुं० (सं) १-शिव। २-भैरव। ३-खप्पर लेकर भीख माँगने वाला।
**कपास** स्त्री० (हि) १-रूई का पौधा। २-बिनौलों सहित रूई।
**कपिंजल** पुं०(सं) १-चातक। २-गौरा नामक पक्षी। ३-तीतर। वि० (सं) पीले रंग का।
**कपि** पुं० (सं) १-बन्दर। २-हाथी। ३-सूर्य।
**कपित्थ** पुं० (सं) १-कैथ का पेड़। २-कैथ का फल।
**कपिल** पुं०(सं) १-अग्नि। २-शिव। ३-सूर्य। ४-एक मुनि का नाम। वि० (सं) १-भूरा, मटमैला। २-सफेद। ३-भोलाभाला।
**कपिला** स्त्री० (सं) १-सफेद रंग की गाय। २-सीधी गाय।
**कपिश** वि० (सं) १-मटमैला। २-भूरा मिला पीला या भूरा मिला लाल।
**कपीश** पुं० (सं) वानरों का राजा (सुग्रीव, हनुमान आदि)।
**कपूत** वि० (हि) बहुत ही बुरा। पुं० (हि) बुरा लड़का।
**कपूर** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध सुगंधित धवल द्रव्य।
**कपूर-कचरी** स्त्री० (हि) एक सुगंधित जड़ की लता।
**कपूर-धूर** स्त्री० (हि) पुरानी चाल का बढ़िया कपड़ा
**कपूर-मणि** पुं० (हि) कहरुवा नामक पदार्थ।
**कपूरा** पुं० (हि) १-भेड़, बकरे आदि का अंडकोष २-एक प्रकार धान अथवा चावल।
**कपूरी** वि० (हि) १-कपूर के रंग का। २-हलके पीले रंग का। पुं० (हि) १-हलका पीला रंग। २-एक तरह का पान।
**कपोल** पुं० (सं) १-कबूतर। २-परेवा। ३-चिड़िया
**कपोत-व्रत** पुं०(सं) दूसरों का अत्याचार सहन करना
**कपोती** स्त्री० (सं) १-कबूतरी। २-पेंडुकी। ३-कुमरी
**कपोल** पुं० (सं) गाल।
**कपोल-कल्पना** स्त्री० (सं) मन से गढ़ी हुई बात। बनावटी बात।
**कपोल-कल्पित** वि० (सं) मनगढ़ंत।
**कप्पड़, कप्पर** पुं० (हि) कपड़ा।
**कफ** पुं० (सं) श्लेष्मा, बलगम। पुं० (अ) आस्तीन का अगला भाग जिसमें दोहरी पट्टी होती है और बटन लगे होते हैं।
**कफन** पुं० (अ) मुर्दा लपेटने का वस्त्र।
**कफन-खसोट** वि० (हि) १-कंजूस। २-दूसरों का माल हड़प लेने वाला।
**कफनाना** क्रि० (हि) मुर्दे को कफन में लपेटना।
**कफनी** स्त्री०(हि) १-मुर्दे के गले में डालने का कपड़ा २-बिना सिला वस्त्र जिसे साधु लोग पहनते हैं।
**कबंध** पुं० (सं) १-कंडाल। २-मेघ। ३-पेट। ४-सिरकटा धड़।
**कबंधज** पुं० (सं) सिर कटे धड़ से लड़ने वाले का वंशज।
**कब** क्रि० वि० (हि) १-किसी समय। २-कभी नहीं
**कबड्डी** स्त्री० (हि) बालकों का खेल जो दो दलों में खेला जाता है।
**कबर** स्त्री० देखो 'कब्र'।
**कबरा** वि० (हि) चितकबरा।
**कबरी** स्त्री० (हि) स्त्रियों के सिर की चोटी।
**कबल** अव्य० (अ) पहले, पूर्व।

**कबा** पुं० (अ) घुटनों तक लम्बा और कुछ ढीला पहनाव।
**कबाड़** पुं० (हिं) १-काम में न आने वाली चीज। २-व्यर्थ का काम।
**कबाड़ा** पुं० (हिं) निरर्थक कार्य; झगड़ा; बखेड़ा।
**कबाड़िया, कबाड़ी** पुं० (हिं) १-टूटी-फूटी वस्तुओं को बेचने वाला व्यक्ति। २-झगड़ालू।
**कबाब** पुं० (अ) सींखों में खोंसकर भूना हुआ मांस
**कबाब-चीनी** स्त्री० (हिं) शीतलचीनी।
**कबाबी** वि० (अ) १-कबाब बेचने वाला। २-कबाब खाने वाला, मांसभक्षी।
**कबाय** पुं० (अ) एक प्रकार का ढीला पहनावा।
**कबायली** पुं० (अ) पश्चिमी पाकिस्तान के सीमा-वर्त्ती क्षेत्र में रहने वाले किसी-किसी कबीले का आदमी।
**कबार** पुं० (हिं) १-रोजगार। देखो 'कबाड़'।
**कबारना** क्रि० (हिं) उखाड़ना।
**कबाला** पुं० (अ) वह दस्तावेज जिसके द्वारा किसी मनुष्य की सम्पत्ति दूसरे के अधिकार में आती है।
**कबाहट** स्त्री० (हिं) देखो 'कबाहत'।
**कबाहत** स्त्री० (अ) १-खराबी। २-मुश्किल, अड़चन
**कबिलनवी** स्त्री० (हिं) दिग्दर्शक यन्त्र।
**कबीर** वि० (अ) श्रेष्ठ, बड़ा। पुं० १-एक वैष्णव भक्त जुलाहा कवि। २-होली में गाने जाने वाले गीत।
**कबीर-पंथी** वि० (हिं) कबीर सम्प्रदाय का।
**कबीला** पुं० (अ) १-समूह; झुण्ड। २-परिवार स्त्री० पत्नी।
**कबुलवाना, कबुलाना** क्रि० (हिं) स्वीकार करवाना
**कबूतर** पुं० (हिं) कपोत; परेवा।
**कबूल** पुं० (अ) स्वीकार।
**कबूलना** क्रि० (हिं) स्वीकार करना।
**कबूलियत** स्त्री० (अ) स्वीकार-पत्र।
**कबूली** स्त्री० (अ) चने की दाल की खिचड़ी।
**कब्ज** पुं० (अ) मल का अवरोध।
**कब्जा** पुं० (अ) १-आधिपत्य। २-मूठ; दस्ता। ३-किवाड़ या सन्दूक में पेंच से जड़े जाने वाले चौखूंटे टुकड़े। ४-वश; इख्तियार।
**कब्जियत** स्त्री० (अ) पाखाना साफ न आना; कब्ज
**कब्र** स्त्री० (अ) १-मुरदे गाड़ने का गड्ढा। २-इस गड्ढे के ऊपर बनाया जाने वाला चबूतरा।
**कब्रिस्तान** पुं० (फा) मुरदे दफनाने या गाड़ने का स्थान।
**कभी, कभू** क्रि० वि० (हिं) २-किसी समय। २-कदापि।
**कमंगर** पुं० (हि) १-जोड़ की हड्डी बैठाने वाला २-कमान बनाने वाला। ३-चित्रकार।
**कमंडल** पुं० (हि) धातु या दरियायी नारियल का जल-पात्र।
**कमंद** पुं० देखो 'कबंध'। स्त्री० (फा) १-फन्दा, पाश २-फन्देदार रस्सी।
.... वि० (फा) १-अल्प, थोड़ा। २-बुरा।
**कम-असल** वि० (फा+अ) १-दोगला। २-नीच।
**कमखाब** पुं० (फा) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर सोने चाँदी के तारों का काम होता है।
**कमची** स्त्री० (तु०) पतली लचीली टहनी या छड़ी।
**कमच्छा** स्त्री० देखो 'कामाख्या'।
**कमजोर** वि० (फा) दुर्बल; अशक्त।
**कमजोरी** स्त्री० (फा) दुर्बलता।
**कमठ** पुं० (सं) १-कछुआ। २-कमण्डल। ३-बाँस
**कमठा** पुं० (हि) धनुष; कमान।
**कमठी** पुं० (स) कछुआ। स्त्री० बाँस की कमची, पट्टी।
**कमधुज** पुं० देखो 'कबंधुज'।
**कमना** क्रि० (हि) कम होना, घटना।
**कमनी** वि० देखो 'कमनीय'।
**कमनीय** वि० (स) सुन्दर।
**कमनैत** पुं० (हि) तीरन्दाज।
**कमरंग** स्त्री० (हि) कमरख (फल)।
**कमर** स्त्री० (फा) १-शरीर का मध्य भाग, कटि। २-किसी लम्बी वस्तु के मध्य का पतला भाग।
**कमरख** स्त्री० (हि) एक वृक्ष या उसके खट्टे फल।
**कमरखी** वि० (हि) कमरख के समान उभड़ी हुई फाँक वाली।
**कमर-बंद** पुं० (फा) १-कमर में बाँधने का दुपट्टा। २-पेटी। ३-नाड़ा; इजारबन्द।
**कमर-बल्ला** पुं० (हि) खपरेल के कोरों के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी।
**कमर-बस्ता** वि० (फा) कटिबद्ध; तैयार; सन्नद्ध।
**कमरा** पुं० (हि) १-कोठरी। २-फोटो खींचने का यंत्र।
**कमरी** स्त्री० देखो 'कमली'।
**कमल** पुं० (सं) १-पानी में उत्पन्न होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा या फूल; पद्म। २-जल। ३-मृग। ४-तांबा। ५-बहुओं का मध्यस्थान। ६-गर्भाशय का अग्रभाग, टणा, धरन। ७-एक पित्त रोग। ८-इस फूल के आकार का मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। ९-हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर की कल्पित ग्रन्थियाँ। १०-मोमबत्ती जलाने का काँच का गिलास।
**कमलकंद** पुं० (हि) कमलनाल।
**कमल-ककड़ी** स्त्री० (हि) भसींड।
**कमल-गट्टा** पुं० (हि) कमल का बीज।
**कमल-नयन** वि० (सं) कमल के समान सुन्दर नेत्रों

वाला। पुं० (स) विष्णु।
**कमलनाभ** पुं० (स) विष्णु।
**कमल-नाल** स्त्री० (स) मृणाल।
**कमल-बाई** स्त्री० (हि) कमल नामक रोग।
**कमला** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-धन-संपत्ति। ३-संतरा। पुं० (हि) १-मूडी नामक कीड़ा। २-एक कीड़ा जो अनाज या सड़े फलों में पड़ता है।
**कमलाक्ष** वि० (सं) कमलनयन।
**कमलाक्षी** स्त्री० (स) कमल से सुन्दर नयनों वाली स्त्री, कमलनयनी।
**कमलाकांत, कमलापति** स्त्री० (सं) विष्णु।
**कमलासन** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-पद्मासन (योग)।
**कमलिनी** स्त्री० (सं) १-छोटा कमल। २-वह तालाब जिसमें कमल हों।
**कमली** स्त्री० (हि) छोटा कम्बल।
**कमलेश** पुं० (सं) लक्ष्मी के पति; विष्णु।
**कमलो** पुं० (हि) ऊँट।
**कमवाना** क्रि० (हि) कमाने का काम किसी और से करवाना।
**कमसिन** वि० (फा) अल्पवयस्क; कम उमर।
**कमाई** स्त्री० (हि) १-कमाया हुआ धन; उपार्जित धन। २-कमाने का धंधा, उद्यम।
**कमाऊ** वि० (हि) कमाने वाला।
**कमाच** पुं० (हि) एक तरह का रेशमी कपड़ा।
**कमान** स्त्री० (फा) १-धनुष। २-इन्द्र-धनुष। ३-मेहराब। ४-तोप। ५-बन्दूक।
**कमाना** क्रि०(हिं) १-व्यापार उद्यम से पैसा पैदा करना। २-सुधार कर काम के योग्य बनाना। ३-सेवा सम्बन्धी छोटे-छोटे काम करना। ४-(पाप पुण्य आदि) संचय करना। ५-कम करना, घटाना ६-व्यभिचार द्वारा धन उपार्जित करना।
**कमानी** स्त्री० (हि) १-लोहे आदि की लचीली तीली। २-घड़ी आदि का तारों के चक्कर की शक्ल का पुरजा ३-आँत उतरने की बीमारी में पहने जाने वाली पेटी। ४-सारंगी बजाने का गज। ५-बढ़ई का वह औजार जिससे बरमा फसा कर खींचता है।
**कमाल** पुं० (अ) १-परिपूर्णता। २-निपुणता। ३-अनोखा काम।
**कमासुत** वि० (हि) कमाई करने वाला।
**कमी** स्त्री० (फा) १-न्यूनता। २-हानि।
**कमीज** स्त्री० (अ) एक प्रकार का आधुनिक कुरता।
**कमीना** वि० (फा) नीच; क्षुद्र।
**कमुकंदर** पुं० (हि) धनुष तोड़ने वाले श्रीराम।
**कमेरा** पुं० (हि) काम करने वाला।
**कमेला** पुं० (हि) कसाईखाना; वध स्थान।
**कमोद** पुं० (हि) कुमुद।
**कमोदिन** स्त्री० देखो 'कुमुदिनी'।
**कमोरा** पुं० (हि) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा घड़ा।
**कम्युनिज्म** पुं० (अ) साम्यवाद।
**कम्युनिस्ट** पुं० (अं) साम्यवादी।
**कया** स्त्री० (हि) काया।
**कयाम** पुं० (अ) १-ठहराव; टिकाव। २-ठहरने का स्थान। ३-निश्चय।
**कयामत** पुं० (अ) १-अन्तिम दिन। २-प्रलय।
**कयास** पुं० (अं) अनुमान।
**करंज** पुं० (सं) १-कञ्जा। २-एक छोटा जङ्गली वृक्ष। पुं० (हि) मुरगा।
**करंजुआ** वि० (हि) खाकी (रंग)।
**करंटा** पुं० देखो 'किरण्टा'।
**करंड** पुं० (हि) १-शहद का छत्ता। २-तलवार। ३-करंडव नाम का हंस। पुं० (हि) छुरी हथियार आदि तेज करने का कुरुल पत्थर।
**कर** पुं० (सं) १-हाथ। २-हाथी की सूंड। ३-किरण। ४-ओला। ५-जनता के उपार्जित धन में से राज्य का भाग; महसूल। (टैक्स)। वि० (हिं) (पद के अन्त में लग कर) करने देने अथवा प्राप्त करने वाला। जैसे--सुखकर। प्रत्य० (हि) का।
**करक** स्त्री० (हि) कसक।
**करकच** पुं० (हि) समुद्र के पानी से बना नमक।
**करकट** पुं० (हि) कूड़ा।
**करकना** क्रि० (हि) कड़कना। वि० (हि) देखो 'कर-करा'।
**करकरा** पुं० (हि) एक तरह का सारस। वि० (हिं) १-खुरखुरा। २-करारा। ३-कड़ा। ४-पक्का।
**करकराहट** स्त्री० (हि) १-खुरखुराहट। २-कड़ापन। ३-आँख में किरकिरी पड़ने के समान पीड़ा।
**करका** स्त्री० (स) ओला।
**करका-घन** पुं० (सं) वह मेघ जिससे ओले बर-सते हों।
**करखना** क्रि० (हि) १-खींचना। २-जोश में आना।
**करखा** पुं० (हि) १-उत्तेजना। २-कड़खा। ३-कालिख।
**करखाना** क्रि० (हि) १-काला पड़ना। २-काला करना ३-'करखना' का प्रे० रूप।
**करगत** वि० (स) हस्तगत।
**करगता** पुं० (हि) करधनी।
**करगह** पुं० (हि) करघा।
**करगी** स्त्री० (हि) चीनी बटोरने की खुरचनी।
**करघा** पुं० (हि) १- कपड़ा बुनने का यन्त्र, खड्डी।
**करचंग** पुं० (हि) एक प्रकार का डफ।
**करछी** स्त्री० देखो 'कलछी'।
**करज** पुं० (सं) १-नाखून। २-अँगुली। वि० (सं) 'कर' से उत्पन्न होने वाली।
**करट** पुं० (सं) कौआ।

**करण** पुं० (सं) १-व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है। २-कुछ करना (एक्ट)। ३-किसी कार्य को करने का साधन, हथियार। (इन्स्ट्रूमेंट)। ४-साधन-पत्र। (इन्स्ट्रूमेंट)। पुं० (हि) देखो 'कर्ण'।
**करणिक** पुं० (सं) १-किसी का कोई कार्य करने वाला व्यक्ति, कार्यकर्त्ता। २-वह जो किसी कार्यालय में लिखा-पढ़ी का कार्य करता हो। (क्लर्क)।
**करणीय** वि० (सं) करने लायक।
**करतब** पुं० (हि) १-काम। २-हुनर। ३-करामात।
**करतबी** वि० (हि) १-गुणी। २-पुरुषार्थी। ३-करतब दिखाने वाला।
**करतरी** स्त्री० (हि) कर्त्तरी; कैंची।
**करतल** पुं० (सं) हथेली।
**करतली** स्त्री० (हि) कर्त्तरी; कैंची।
**करता** पुं० देखो 'कर्त्ता'।
**करतार** पुं० (हि) १-ईश्वर। २-देखो 'करताल'।
**करतारी** स्त्री० (हि) १-ईश्वर की लीला। २-देखो 'करताली'।
**कर-ताल** पुं० (सं) १-ताली बजाना। २-एक प्रकार का ताल देने का बाजा। ३-झांझ; मजीरा।
**करताली** स्त्री० (हि) ताली बजाने की क्रिया।
**करतूत** स्त्री० (हि) १-काम। २-कला; हुनर। ३-निन्द्य कर्म।
**करतूति** स्त्री० (हि) देखो 'करतूत'। वि० (हि) करतूत करने वाला।
**करद** स्त्री० (हि) छुरी; चाकू। वि० (सं) कर देने वाला।
**करदा** पुं० (हि) १-बिक्री के अनाज आदि में मिला हुआ कूड़ा-करकट आदि। २-कूड़े-करकट के कारण मूल्य में होने वाली कमी; कटौती।
**करदेय** वि० (स) कर दिये जाने योग्य।
**करधनी** स्त्री० (हि) एक गहना जो कमर में पहना जाता है।
**करन** पुं० (हि) १-करने की क्रिया या भाव। २-करने योग्य कार्य। ३-देखो 'करण'। ४-देखो 'कर्ण'
**करनधार** पुं० (हि) देखो 'कर्णधार'।
**करन-फूल** पु० (हि) कान में पहनने का एक गहना
**करना** क्रि० (हि) १-निबटाना। २-बनाना। ३-पकाना। ४-भाड़े पर सवारी लेना। ५-कोई वस्तु पोतना। पुं० (हि) १-सुदर्शन का पौधा। २-एक बड़ा नीबू। ३-राजगीरों का एक औजार।
**करनाटक** पु० (हि) भारत का एक राज्य।
**करनाटकी** पुं० (हि) १-करनाटक का निवासी। २-कलाबाज नट। ३-बाजीगर।
**करनाल** पुं० (हि) १-एक प्रकार की तोप। २-एक बड़ा ढोल। ३-नरसिंघा, भोंपा। ४-पंजाब का एक जिला।
**करनिका** स्त्री० (हि) कर्णफूल।
**कर-निरधारण** पु० (सं) मूल्य अथवा लाभ आदि की मात्रा के आधार पर निश्चय करना कि खेत, घर आदि के स्वामी पर कितना कर लगाया जाय। (असेसमेंट)।
**करनी** स्त्री० (हि) १-कार्य। २-मृतक-संस्कार।
**करपर** स्त्री० (हि) खोपड़ी। वि० (हि) कंजूस।
**करपरी** स्त्री० (हि) पीठी की बरी या पकौड़ी।
**करपलई** स्त्री० (हि) देखो 'कर-पल्लवी'।
**कर-पल्लवी** स्त्री० (सं) १-उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या। २-हाथ के इशारे से बातचीत।
**कर-पल्लौ** पुं० (हि) देखो 'कर-पल्लवी'।
**कर-पिचकी** स्त्री० (हि) हथेलियों से पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने की मुद्रा या कार्य।
**करबर** वि० (हि) १-चितकबरा। २-रंग-बिरंगा।
**करबरना** क्रि० (हि) १-कुलबुलाना। २-पक्षियों का चहकना।
**करबूस** पुं० (हि) घोड़े की जीन में टँकी हुई पट्टी जिसमें हथियार लटकाते हैं।
**करभ** पुं० (सं) हथेली का पिछला भाग। २-हाथी का बच्चा। ३-ऊँट का बच्चा। ४-कमर।
**करभोरु** वि० (स) १-जिसकी जाँघें हाथी की सूँड़ की तरह हों। २-सुन्दर जाँघों वाली।
**करम** पु० (हि) १-कार्य। २-भाग्य। पुं० (स) कृपा, अनुग्रह।
**करम-कल्ला** पुं० (हि) बन्दगोभी।
**करमचंद** पुं० (हि) भाग्य, प्रारब्ध।
**करमठ** वि० (हि) देखो 'कर्मठ'।
**करमात** पुं० (हि) भाग्य।
**करमाला** स्त्री० (सं) माला के अभाव में उँगलियों के पोरों से जप की गिनती करना।
**करमाली** पु० (सं) सूर्य।
**करमिया, करमी** वि० (हि) १-कर्म करने वाला। २-कर्मनिष्ठ। ३-कर्मकाण्डी।
**कर-मुखा, कर-मुहाँ** वि० (हि) कलमुँहाँ।
**करर** पुं० (हि) १-एक तरह का विषैला कीड़ा। २-रङ्ग के विचार से घोड़े का एक भेद।
**कररना** क्रि० (हि) १-चर्र-चर्र करके टूटना। २-कर्कश आवाज से बोलना।
**कररान** स्त्री० (हि) धनुष की टंकार।
**करल** पुं० (हि) कड़ाही।
**करवट** स्त्री० (हि) बाजू के बल लेटने की मुद्रा, सोना पुं० (हि) १-करवत; आरा। २-प्राचीन काल की वह प्रथा जिसमें लोग विशेष स्थलों पर मुक्ति की आशा से आरों से कट कर मरते थे।

**करवत** पुं० (हि) आरा।
**करवर** स्त्री० (हि) विपत्ति; संकट।
**करवरना** क्रि० (हि) चहकना; कलरव करना।
**करवा** पुं० (हि) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा
**करवानक** पुं० (हि) गौरैया पक्षी।
**करवाना** क्रि० (हि) काम करने में लगाना।
**करवार** स्त्री० (हि) तलवार।
**करवाल** पुं० (हि) १-नाखून। २-तलवार।
**करवीर** पुं० (सं) १-कनेर का पेड़। २-तलवार श्मशान।
**करवैया** वि० (हि) करने वाला।
**करश्मा** पुं० (फा) चमत्कार।
**करष** पुं० (हि) १-तनाव; खिंचाव। २-द्वेष। ३-लड़ाई का जोश।
**करषक** पुं० (हि) कृषक; किसान।
**करषना** क्रि० (हि) १-तानना; खींचना। २-सोखना ३-बुलाना। ४-बटोरना।
**करषा** पुं० (हि) १-कड़खा गीत। २-करष।
**कर-संपुट** पुं० (सं) अंजलि।
**करसना** क्रि० देखो 'करषना'।
**करसाइल** पुं० (हि) काला हिरन।
**करसान** पुं० (हि) किसान।
**करसायल** पुं० (हि) काला हिरन।
**करसी** स्त्री० (हि) सूखे गोबर, उपलों आदि के छोटे टुकड़े।
**करह** पुं० (हि) १-ऊँट। २-पुष्पकलिका।
**करहाट, करहाटक** पुं० (सं) १-कमल की जड़। २-कमल का छाता।
**करांकुल** पुं० (हि) क्रौंच पक्षी।
**करा** स्त्री० (हि) कला।
**कराई** स्त्री० (हि) १-करने का भाव। २-कालापन; श्यामता। ३-उर्द, अरहर आदि की भूसी।
**करात** पुं० (हि) ३॥ ग्रेन के बराबर का एक तोल।
**कराधान** पुं० (सं) कर लगाना (टैक्सेशन)।
**कराना** क्रि० (हि) कार्य में लगाना।
**कराबा** पुं० (अ) शीशे का बड़ा बरतन।
**करामत** स्त्री० (हि) देखो 'करामात'।
**करामात** स्त्री० (अ) चमत्कार, करिश्मा।
**करामाती** वि० (अ) १-जिसमें करामात हो। २-करामात दिखाने वाला।
**करार** पुं० (अ) १-स्थिरता। २-धैर्य; सन्तोष। ३-सुख, चैन। ४-वादा। ५-प्रतिज्ञा।
**करारना** क्रि० (हि) कर्कश स्वर में बोलना।
**करारा** पुं० (हि) १-नदी का ऊंचा किनारा जो जल के काटने से बने। २-टीला। वि० (हि) १-कठोर २-दृढ़ चित्त। ३-तेज। ४-तोड़ने पर कुरकुर शब्द करने वाला। ५-अधिक गहरा या भारी। ६-बहुत कड़ा।
**करारोप** पुं० (सं) देखो 'अवाप्ति'।
**करारोपण** पुं० (सं) १-कर लगाना, (टैक्सेशन) २-कर आदि प्राधिकृत रूप से संग्रह करना, वसूल करना या उगाहना; (लेवी)।
**करारोपवंचन** पुं०(सं) ऐसी चालाकी करना जिससे कर अदा न करना पड़े। (इवेज़न ऑफ टैक्स)।
**करारोप्य** वि० (सं) देखो 'अवाप्ति'।
**कराल** वि० (सं) भयानक; डरावाना।
**कराव, करावा** पुं० (हि) विवाह, सगाई आदि का क्रम, बैठावा।
**कराहना** क्रि० (हि) मुख से दुःखसूचक शब्द निकलना।
**कराहा** पुं० (हि) देखो 'कड़ाहा'।
**कराही** स्त्री० (हि) देखो 'कड़ाही'।
**करिंद** पुं० (हि) १-उत्तम हाथी। २-ऐरावत।
**करि** पुं० (सं) हाथी।
**करिआ** वि० (हि) काला।
**करिखई** स्त्री० (हि) कालापन।
**करिखा** पुं० (हि) कालिख।
**करिनी** स्त्री० (हि) हथिनी।
**करिया** पुं० (हि) १-पतवार। २-केवट; माँझी। वि० (हि) काला।
**करियाई** स्त्री० (हि) कालिख।
**करिल** स्त्री० (हि) कोंपल। वि० (हि) काला।
**करिवदन** पुं० (सं) गणेश।
**करिहाँव** पुं० (हि) कमर।
**करी** वि० (सं) १-करने वाली। २-उत्पन्न करने वाला। स्त्री० (हि) १-हथिनी। २-कली। ३-कड़ी। ४-वध या हत्या करने वाली।
**करीना** पुं० (अ) ढंग; तरीका।
**करीब** क्रि० वि० (अ) १-समीप। २-लगभग।
**करीम** वि० (अ) उदार; दयालु। पुं० (अ) ईश्वर।
**करीर,करील** पुं० (हि) एक प्रकार की कँटीली झाड़ी
**करीश, करीश्वर** पुं० (सं) १-गजेन्द्र। २-बहुत बड़ा हाथी।
**करीष** पुं० (सं) (जंगल में) सूखा गोबर, बनकंडा करसी।
**करीस** पुं० (हि) देखो 'करीश'।
**करुआ** वि० (हि) १-कडुआ। २-अप्रिय। पुं०(हि) करवा, घड़ा।
**करुआई** स्त्री० (हि) कडुआपन।
**करुआना** क्रि० (हि) देखो 'कडुआना'।
**करुखी** स्त्री० (हि) कनखी; तिरछी चितवन।
**करुण** पुं० (सं) १-दया। २-शोक। ३-काव्य के नव रसों में तीसरा। ४-परमेश्वर। वि० (सं) दयार्द्र।
**करुणा** स्त्री० (सं) अनुकंपा; दया।

**करुणानिधान, करुणानिधि** *वि०* (सं) बहुत बड़ा दयालु।

**करुणामय** *वि०* (सं) करुणा से भरा हुआ, अति-दयालु।

**करुणार्द्र** *वि०* (सं) जिसका हृदय करुणा से द्रवित हुआ हो।

**करुना** *स्त्री०* (हि) करुणा।

**करुर** *वि०* (हि) कड़ुवा।

**करुवाई** *स्त्री०* (हि) कटुता; कड़ुवापन।

**करुवार** पुं० (हि) पतवार।

**करुवारि** *स्त्री०* (हि) पतवार।

**करेजा** पुं० (हि) कलेजा।

**करेणु** पुं० (सं) हाथी।

**करेब** *स्त्री०* (हि) क्रेप (अं) नामक कपड़ा।

**करेर** *वि०* (हि) कठोर।

**करेला** पुं० (हि) एक बेल या उसका कड़ुआ फल।

**करेवा** पुं० (हि) विधवा का विवाह, धरेवा।

**करैत** पुं० (हि) काला सर्प।

**करैया** *वि०* (हि) देखो 'कर्त्ता'।

**करैल** *स्त्री०* (हि) काली और चिकनी मिट्टी जो प्रायः तालों से मिलती है।

**करोछना** *क्रि०* (हि) खुरचना।

**करोटी** *स्त्री०* (हि) करवट।

**करोड़** *वि०* (हि) सौ लाख।

**करोड़पति** *वि०* (हि) जो करोड़ रुपये रखता हो।

**करोड़ी** पुं० (हि) मुसलमानी राजत्वकालीन एक राजकीय पद।

**करोड़ों** *वि०* (हि) १-एक से अधिक करोड़। २-बहुत अधिक।

**करोत** पुं० (हि) आरा।

**करोदना** *क्रि०* (हि) कुरेदना।

**करोना** *क्रि०* (हि) १-खुरचना। २-कुरेदना।

**करोर** *वि०* (हि) करोड़।

**करोला** पुं० (हि) गड़ुआ; लोटा।

**करौंछ** *स्त्री०* (हि) कलौंस।

**करौंछना** *क्रि०* (हि) खुरचना।

**करौंछा** *वि०* (हि) काला।

**करौंदा** पुं० (हि) खट्टे फल वाला एक कटीला झाड़

**करौंदिया** *वि०* (हि) करौंदे के रंग का।

**करौट** *स्त्री०* (हि) करवट।

**करौत** पुं० (हि) आरा।

**करौला** १-हँकवा करने वाला। २-शिकार खेलने वाला।

**करौली** *स्त्री०* (हि) सीधी मूठदार छुरी।

**कर्क, कर्कट** पुं० (सं) १-केकड़ा। २-बारह राशियों में चौथी।

**कर्कर** *वि०* (सं) देखो 'कुरण्ड'।

**कर्कश** *वि०* (सं) १-कठोर (स्वर) २-काँटेदार, खुरदरा। ३-तीक्ष्ण, प्रचण्ड।

**कर्कशा** *वि० स्त्री०* (सं) झगड़ालू, लड़ाकी (स्त्री)।

**कर्ज** पुं० (अ) ऋण।

**कर्जदार** *वि०* (फा) ऋणी।
पुं० (ग) देखो 'कर्ज'।

**कर्ण** पुं० (सं) १-कान। २-अविवाहित अवस्था में उत्पन्न कुन्ती का पुत्र। ३-पतवार।

**कर्ण-कटु** *वि०* (सं) कानों को अप्रिय लगने वाला।

**कर्णधार** पुं० (सं) १-माँझी; मल्लाह। २-पतवार। ३-वह जिसकी संरक्षता में कोई कार्य होता हो।

**कर्णफूल** पुं० (हि) कान का एक गहना।

**कर्णभाषक** पुं० (सं) देखो 'अनुयाचक'।

**कर्ण-भूषण** पुं० (सं) कान का गहना।

**कर्णवेध** पुं० (सं) कान छेदने का संस्कार।

**कर्णाटी** *स्त्री०* (सं) १-कर्णाट देश की स्त्री। २-एक राग।

**कर्णिकार** पुं० (सं) कनक-चम्पा।

**कर्तन** पुं० (सं) १-कतरना। २-सूत कातना।

**कर्त्तनी** *स्त्री०* (सं) कैंची।

**कर्त्तरी** *स्त्री०* (सं) १-कैंची। २-कटारी। ३-करताल

**कर्त्तव्य** *वि०* (सं) १-करने लायक। २-जिसे करना जरूरी हो। पुं० (सं) आवश्यक करने लायक काम, फर्ज। (ड्यूटी)।

**कर्त्तव्यता** *स्त्री०* (सं) १-कर्त्तव्य का भाव। २-कर्म-काण्ड कराने की दक्षिणा।

**कर्त्तव्य-परायण** *वि०* (सं) जो कुछ अपना कर्त्तव्य हो उस पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ या स्थिर रहने वाला।

**कर्त्तव्य-पालन** पुं० (सं) जो अपना कर्त्तव्य या फर्ज हो उसे ठीक तरह से निभाना। (परफॉरमेंस-आफ-ड्यूटी)।

**कर्त्ता** *वि०* (सं) १-करने वाला। २-रचने वाला, बनाने वाला। पुं० (सं) १-विधाता, ईश्वर। २-घर का मालिक या सर्वसर्वा जिसकी आज्ञा से घर के सब कार्य होते हों। ३-व्याकरण में क्रिया के करने वाला बोधक-कारक।

**कर्तार** पुं० (हि) ईश्वर; विधाता।

**कर्तृक** *वि०* (सं) किया हुआ। पुं० (सं) कार्य-कर्त्ताओं अथवा कर्मचारी वृन्द। (स्टाफ)।

**कर्तृत्व** पुं० (सं) १-कर्त्ता का भाव। २-कर्त्ता का धर्म।

**कर्तृ-निरीक्षक** पुं० (सं) कार्यालय के कर्मचारियों की देख-भाल करने वाला व्यक्ति। (स्टाफ-इन्स-पेक्टर)।

**कर्तृ-वर्ग** पुं० (सं) देखो 'कर्तृक'।

**कर्तृवाचक** *वि०* (सं) (व्याकरण में) कर्त्ता का बोध कराने वाला।

**कर्तृवाच्य** पुं० (सं) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता की प्रधानता हो।

**कर्दम** पुं० (सं) १-कीचड़। २-पाप।

**कर्पटिक, कर्पटी** वि० (सं) जो चिथड़े लपेटे हो भिखारी।

**कर्पर** पुं० (सं) १-खोपड़ी। २-कपाल। ३-कछुवे की खोपड़ी। ४-एक हथियार।

**कर्पूर** पुं० (सं) कपूर।

**कर्बुर** पुं० (सं) १-स्वर्ण, सोना। २-धतूरा। ३-जल। ४-पाप। ५-राक्षस। वि० (सं) रङ्ग-विरङ्गा; चितकबरा।

**कर्म** पुं० (सं) १-कार्य; काम। २-धार्मिक कृत्य। ३-व्याकरण में वह जिस पर क्रिया का फल पड़े।

**कर्मकर** पुं० (सं) उजरत पर काम करने वाला, मजदूर।

**कर्म-कांड** पुं० (सं) १-धर्म-सम्बन्धी कर्म। २-वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

**कर्म-कांडी** पुं० (सं) यज्ञादि कर्म करने वाला ब्राह्मण पुरोहित।

[illegible]र पुं० (सं) १-मजदूर। २-नौकर; सेवक

**कर्मकार [illegible]-अधिनियम** पुं० (सं) श्रमिकों य [illegible] र्य करते समय लगने वाली चोट [illegible] तरह होने वाले नुकसान के बदले में [illegible] औद्योगिक संस्थाओं से हरजान दिलाने के लिए बनाया गया अधिनियम। (वर्कमैंस-कम्पेनसेशन-ऐक्ट)।

**कर्मक्षेत्र** पुं० (सं) १-कार्य करने का स्थान। २-भारतवर्ष।

**कर्मचारी** पुं० (सं) १-कार्यकर्त्ता। २-जिसके हाथ में कोई काम हो।

**कर्मठ** वि० (सं) १-पूरी निष्ठा के साथ कार्य करने वाला। २-काम करने में चतुर।

**कर्मणा** क्रि० वि० (हि) कर्म से।

**कर्मण्य** वि० (सं) कार्य-कुशल; उद्यमी।

**कर्मधारय** पुं० (सं) तत्पुरुष समास का एक भेद इसमें पहला पद विशेषण होता है।

**कर्मनि[illegible]** वि० (सं) शास्त्रविहित कर्मों में निष्ठा या आस्था रखने वाला तथा उन्हें श्रद्धापूर्वक करने वा[illegible]।

**कर्म[illegible]त्तिवेतन** पुं० (सं) १-काम के बदले में दिया जाने वाला वेतन। २-कार्य की उत्तमता अथवा निकृष्टता के अनुसार दिया जाने वाला वेतन।

**कर्म[illegible]** वि० (सं) [illegible] पदार्थों उनके कार्यों या [illegible] अनुभूतियों आदि से सम्बन्धित (ऑब्जेक्टिव)।

**कर्म-भोग** पुं० (सं) कृत कर्मों का फल।

**कर्म-योग** पुं० (सं) कर्म-मार्ग की साधना।

**कर्म-योगी** पुं० (सं) कर्ममार्ग की साधना करने वाला व्यक्ति।

**कर्म-रेख** स्त्री० (सं) कर्म अथवा भाग्य का लेख।

**कर्म-वाच्य** पुं० (सं) (क्रिया का वह रूप) जिसमें कर्म की प्रधानता हो।

**कर्म-वाद** पुं० (सं) कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है, ऐसा मत।

**कर्म-विपाक** पुं० (सं) पूर्व जन्मों के किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल।

**कर्मवीर** वि० (सं) १-कर्तव्य-पालन, और लोकहित के काम करने वाला वीर। २-विघ्न-बाधाओं से भिड़ते हुए भी कर्तव्यपालन करने वाला; पुरुषार्थी

**कर्मशाला** स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ लोहे लकड़ी आदि का तथा उनसे सम्बन्धित सब कार्य होता है (वर्कशाप)।

**कर्मशील** वि० (सं) उद्योगी, परिश्रमी।

**कर्महीन** वि० (सं) अभागा।

**कर्मिष्ठ** वि० (सं) कर्मनिष्ठ।

**कर्मी** वि० (सं) १-काम करने वाला। २-मजदूर।

**कर्मेन्द्रिय** स्त्री० (सं) वह इन्द्रिय जिससे कोई काम किया जाय (हाथ; पैर आदि)।

**कर्रा** वि० (हि) कड़ा; कठिन।

**कर्राना** क्रि० (हि) कड़ा या सख्त होना।

**कर्ष** पुं० (सं) १-खींचना। २-जोतना। ३-वैद्यक के अनुसार १६ माशे की एक तौल। ४-एक प्रकार का प्राचीन सिक्का। ५-वह भार अथवा दबाव जिसमें अनिष्ट की संभावना हो, (स्ट्रेन)।

**कर्षक** वि० (सं) खींचने वाला। पुं० (सं) किसान।

**कर्षण** पुं० (सं) १-खींचना। २-खरोंचना। ३-जोतना।

**कर्षना** क्रि० (हि) १-खींचना। २-तानना।

**कलंक** पुं० (सं) १-दाग; धब्बा। २-चन्द्रमा में दीख पड़ने वाला धब्बा। ३-कालिख। ४-लांछन। ५-दोष।

**कलंकित** वि० (सं) जिसे कलंक लगा हो, लांछित; बदनाम।

**कलंकी** वि० (सं) लांछित; बदनाम। पुं० १-चंद्रमा। २-कल्कि अवतार।

**कलंदर** पुं० (सं) १-एक तरह के मुसलमान फकीर। २-रीछ और बंदर नचाने वाला व्यक्ति।

**कल** पुं० (सं) अत्यन्त मधुर स्वर। वि० (सं) १-सुन्दर। २-मधुर। ३-'काला' संक्षिप्त रूप। स्त्री० १-आरोग्य। २-सुख; आराम। ३-पार्श्व; बगल। ४-अंग; अवयव। ५-युक्ति; ढग। ६-पेंच; पुर्जा। ७-पेंच तथा पुर्जों से निर्मित वह वस्तु जिससे कोई

काम लिया जाय। क्रि० वि० १-आगामी या आने वाला दिन। २-बीता हुआ दिन।

**कलई** स्त्री० (अ) १-राँगा। २-ताँबे, पीतल के बरतनों पर किया जाने वाला राँगे का मुलम्मा। ३-ऊपरी चमक-दमक। ४-(दिवारों पर सफेदी की जाने वाली) सफेदी।

**कल-कंठ** वि० (स) मधुर स्वर वाला। पुं० (सं) १-कोयल। २-हंस।

**कलक** पुं० (अ) १-दुःख। २-बेचेनी।

**कलकना** क्रि० (हि) १-चिल्लाना। २-चीत्कार करना

**कलकल** पुं० (सं) १-जल-प्रपात आदि का शब्द। २-कोलाहल। स्त्री० वाद-विवाद; झगड़ा।

**कलगा** पुं० (हि) १-एक पौधा। २-देखो 'कलगी'।

**कलगी** स्त्री० (हि) १-मोर अथवा मुर्गे के सिर पर की चोटी। २-पगड़ी; टोपी आदि में लगाया जाने वाला तुर्रा।

**कलछी** स्त्री० (हि) लम्बी डँडी का गोल कटोरी वाला चम्मच।

**कल-जिब्भा** वि० (हि) १-काली जीभ वाला। २-जिसके मुख से निकली अहितकर बातें सच हो जाएँ

**कलत** स्त्री० (हि) पत्नी।

**कलथना** क्रि० (हि) छटपटाना।

**कलत्र** पुं० (सं) पत्नी; स्त्री।

**कलदार** पुं० (हि) १-कल से ढाला गया सिक्का। २-रुपया। वि० कल-पेंच वाला।

**कलधौत** पुं० (सं) १-सोना। २-चाँदी।

**कलन** पुं० (सं) १-पैदा करना। २-धारण करना। ३-आचरण। ४-सम्बन्ध; लगाव। ५-हिसाब लगाना। (कैलकुलेशन)। ६-ग्रहण।

**कलना** स्त्री० (सं) १-ग्रहण करना। २-विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना। ३-गणना। ४-लेन-देन।

**कलप** पुं० (हि) १-कलफ। २-कल्प। ३-खिजाब।

**कलपना** क्रि० (हि) १-बिलखना। २-कल्पना करना ३-कतरना; काटना।

**कलपाना** क्रि० (हि) १-कलपने का कारण होना। २-सताना। ३-रुलाना।

**कलफ** पुं० देखो 'माँडी'।

**कल-बल** पुं० (हि) १-उपाय; युक्ति। २-शोर-गुल।

**कलबूत** पुं० (हि) १-साँचा। २-वह ढाँचा जिस पर मढ़ कर जूता टोपी आदि बनाते हैं।

**कलभ** पुं० (सं) १-हाथी। २-हाथी का बच्चा। ३-ऊँट का बच्चा।

**कलम** स्त्री० (सं) १-लेखनी। २-चित्र भरने की कूँची। ३-चित्र अंकित करने की कोई विशेष परंपरा या शैली जैसे-राजस्थानी कलम। ४-हजामत में कनपटियों के बाल अथवा उनकी काट। ५-काटने अथवा नक्काशी करने का उपकरण। ६-बहीखाते आदि में लिखा जाने वाला पद, (आइटम)। ७-काँच या स्फटिक का लंबोतरा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ८-पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह लगाने के निमित्त रोपी जाती है। ९-किसी वस्तु का जमा हुआ छोटा टुकड़ा।

**कलमल** पुं० (हि) देखो 'कल्मष'।

**कलम-छोड़-हड़ताल** स्त्री० (हि) एक प्रकार की हड़ताल जिसमें कार्यालय के सब कर्मचारी लिखन-कार्य छोड़ कर अपने स्थान पर बैठे रहते हैं। (पेन-डाउन- स्ट्राइक)।

**कलमतराश** पुं० (फा) कलम तराशने या बनाने का चाकू।

**कलम-दान** पुं० (फा) वह संदूकची या पात्र जिसमें कलम और दवात रखते हैं।

**कलमना** क्रि० (हि) कलम करना, काटना।

**कलमलना, कलमलाना** क्रि० (हि) कसमसाना।

**कलमस** पुं० (हि) देखो 'कल्मष'।

**कलमा** पुं० (अ) १-वाक्य। २-वह वाक्य जो इस्लाम धर्म का मूल मंत्र है।

**कलमास** पुं० देखो 'कल्मष'।

**कलमी** वि० (फा) १-लिखा हुआ। २-कलम लगाने से उत्पन्न, जैसे-कलमी आम। ३-रवे के रूप में, जैसे-कलमीशोरा।

**कलमुँहा** वि० (हि) १-काले मुँह वाला। २-कलंकित ३-गाली के लिए प्रयुक्त एक शब्द।

**कलयिता** पुं० (सं) हिसाब लगाने वाला, हिसाबी। (कैलकुलेटर)।

**कल-रव** पुं० (सं) १-मधुर स्वर। २-कोयल।

**कलल** पुं० (सं) गर्भ का आरंभिक रूप जब वह केवल कुछ कोषों का गोला रहता है।

**कलवरिया** स्त्री० (हि) कलवार की दुकान, शराबखाना।

**कलवार** पुं० (हि) एक जाति जिसका कार्य प्रा.. शराब बनाना और बेचना है।

**कलश** पुं० (सं) १-घड़ा। २-मंदिर आदि का शिखर। ३-चोटी; सिरा।

**कलस** पुं० (हि) 'कलश'।

**कलह** पुं० (सं) झगड़ा।

**कलहांतरिता** स्त्री० (स) वह नायिका जो नायक का अपमान करे।

**कलहा, कलहार** वि० (हि) झगड़ालू।

**कलहिनी, कलही** वि० (सं) झगड़ालू; लड़ाका।

**कलाँ** वि० (फा) बड़ा; दीर्घाकार।

**कला** स्त्री० (स) १-अंश। २-चन्द्रमंडल का सोलहवाँ भाग। ३-राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग। ४-काल का एक मान। ५-किसी कार्य को भली-भाँति करने का कौशल; हुनर; (आर्ट)। ६-

गाने-बजाने आदि की विद्या। ७-मनुष्य शरीर के १६ आध्यात्मिक विभाग। ८-नटों की एक कसरत। ६-तेज, विभूति। १०-शोभा। ११-अद्भुत कार्य। १२-कौतुक, खिलवाड़। १३-छल; कपट। १४-ढंग, युक्ति। १५-छंदशास्त्र में मात्रा। १६-सभा अथवा समिति के कार्यों का संक्षिप्त विवरण (मिनट)।

**कलाई** स्त्री०-(हि) पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है; मणिबंध, गट्टा। स्त्री० सूत का लच्छा।

**कलाकंद** पुं० (फा) एक प्रकार की खोये की मिठाई।

**कलाकार** पुं० (स) कलापूर्ण कार्य करने वाला; कलाकुशल। (आर्टिस्ट)।

**कलाकुशल** पुं० (सं) किसी कला में निपुण।

**कलाकृति** स्त्री० (सं) किसी कलाकार द्वारा बनाई गई कलापूर्ण रचना या कृति। आर्टिस्टिक-वर्क)।

**कला-कौतुकालय** पुं० (स) वह कौतुकालय या अजायब-घर जिसमें कलामयी रचनाएं या कृतियाँ हों। (आर्ट-म्यूजियम)।

**कला-कौशल** पुं० (स) १-कला विशेष में निपुणता, हुनर। २-शिल्प।

**कलादा** पुं० देखो 'कलावा'।

**कलादीर्घा** स्त्री० (स) वह दीर्घा या कक्ष जिसमें (लिं ) कलापूर्ण रचनाएं या कृतियाँ हों। (आर्ट-गैलरी)।

**कलाधर** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-शिव। ३-कला का जानकार।

**कलानाथ, कलानिधि** पुं० (स) चन्द्रमा।

**कला-पंजी** स्त्री० (सं) किसी सभा, समिति की बैठकों के विवरण की पुस्तक। (मिनिट-बुक)।

**कलाप** पुं० (सं) १-समूह; झुण्ड। २-मोर की पूँछ ३-तूणीर, तरकश। ४-पेटी; कमरबन्द। ५-व्यापार ६-आभूषण।

**कलापिनी** स्त्री० (सं) रात्रि; रात।

**कलापी** स्त्री० (स) १-मोर। २-कोयल। वि० १-तरकश वाला। २-समूह रूप में रहने वाला।

**कलाबत्तू** पु० (तु०) रेशम के धागे पर लपेटा हुआ सोने या चाँदी का तार।

**कलाबाज** पुं० (हि+फा) नट विद्या दिखाने या कसरत करने वाला।

**कलाम** पुं० (अ) १-वचन; वाक्य। २-बातचीत। ३-कुरान।

**कला-मुख** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**कलार** पुं० देखो 'कलवार'।

**कलाराम** पुं० (सं) वह कलाकार या साहित्यिक जो स्वतन्त्र जीवन-यापन करता हो और साधारण मर्यादाओं का परिपालन न करता हो (भोमियान्)।

**कलाल** पु० देखो 'कलवार'।

**कलावंत** पु० (हि) १-गायक। २-नट। ३-एक मुसलमान जाति जो गाने-बजाने का कार्य करती है

**कलावा** पुं० (हि) १-सूत का लच्छा। २-विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ पर बाँधने का डोरा। ३-हाथी की गरदन।

**कलावान्, कलाविद्** वि० (सं) कला-कुशल।

**कला-शाला** स्त्री० (स) देखो 'कलादीर्घा'।

**कलासी** स्त्री० (हि) काम साधने की तरकीब, चालाकी

**कलाहक** पुं० (सं) एक प्रकार का बाजा।

**कलिंग** पुं० (सं) १-कुलङ्ग नामक पक्षी। २-एक प्राचीन जनपद का नाम।

**कलिंद** पुं० (सं) सूर्य।

**कलिंदजा** स्त्री० (सं) यमुना।

**कलिंदी** स्त्री० देखो 'कालिंदी'।

**कलि** पुं० (सं) १-कलह। २-क्लेश। ३-पाप। ४-युद्ध। ५-कलियुग।

**कलिका** स्त्री० (स) फूल की कली।

**कलिकान** वि० (हि) हैरान; परेशान।

**कलि-काल** पुं० (सं) कलियुग।

**कलित** वि० (स) १-सुन्दर। २-ध्वनित। ३-विभूषित ४-ज्ञात। ५-प्रसिद्ध। ६-प्राप्त। ७-युक्त।

**कलिया** पुं० (अ) पकाया हुआ रसेदार मांस।

**कलियाना** क्रि० (हि) १-कलियों से युक्त होना। २-पक्षियों के नये पंख निकलना।

**कलियुग** पुं० (सं) चौथा युग जिसकी अवस्था ४ लाख ६२ हजार वर्ष कही जाती है।

**कलींद, कलींदा** पुं० (हि) तरबूज।

**कली** स्त्री० (स) १-बिना खिला फूल। २-चूने की कलई। ३-कुरते आदि में लगने वाला तिकोना कपड़ा, हुक्के का नीचे वाला भाग।

**कलीट** वि० (हि) काला-कलूटा।

**कलीत** वि० (हि) देखो 'कलित'।

**कलुख** पुं० (हि) देखो 'कलुष'।

**कलुखाई** स्त्री० (हि) १-दोष। २-अपवित्रता।

**कलुखी** वि० (हि) १-दोषी। २-कलुषयुक्त।

**कलुष** पुं० (सं) १-मलीनता। २-पाप। ३-क्रोध। ४-दूषित भाव। वि० १-मैला। २-निन्दित, बुरा।

**कलुषाई** स्त्री० (हि) अपवित्रता।

**कलुषित** वि० (स) १-दूषित। २-मलिन। ३-काला। ४-दुःखित। ५-क्षुब्ध। ६-असमर्थ। ७-पापी।

**कलूटा** वि० (हि) काले रंग का; काला।

**कलूला** पुं० (हि) कुल्ली।

**कले** क्रि० वि० (हि) १-कल; चैन। २-धीरे। ३-देखो 'कलै'।

**कलेऊ** पुं० (हि) कलेवा।

**कलेजा** पुं० (हि)) १-हृदय; दिल। २-वक्षःस्थल,

छाती। ३-साहस।
कलेजी स्त्री० (हि) कलेजे का मांस।
कलेवर पु० (सं) १-शरीर। २-ढाँचा।
कलेवा पु० (हि) १-जलपान। २-विवाह की एक रीति जिसमें वर को ससुराल में भात खिलाया जाता जाता है।
कलेश पु० (हि) क्लेश।
कलै क्रि० वि० (हि) १-कल अथवा चैन से। २-इच्छानुसार। ३-मनमाना।
कलैया पु० (हि) कलाबाजी।
कलोर स्त्री० (हि) बिना ब्याई गाय।
कलोल पु० (हि) क्रीड़ा; केलि।
कलोलना क्रि० (हि) कलोल करना।
कलौंछ स्त्री० (हि) १-कालिमा। २-कालिख (धुएँ की)
कलौंजी स्त्री० (हि) १-मङ्गरैल। २-मसाला भरकर घी तेल आदि में तली हुई समूची भाजी।
कलौंस स्त्री० (हि) १-धुएँ की कालिख। २-कालापन।
कल्क पु० (सं) १-बुकनी; चूर्ण। २-पीठी। ३-मैल ४-पाप। ५-अवलेह।
कल्कि पु० (सं) पुराणों के अनुसार विष्णु का अवतार जो कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।
कल्प पु० (सं) १-विधि; विधान। २-ब्रह्मा का एक दिन जिसमें १४ मन्वन्तर या ४३२००,००,००० वर्ष होते हैं। ३-वेद के छः अङ्गों में से एक। ४-वैद्यक के अनुसार शरीर अथवा किसी अङ्ग को फिर से नया तथा निरोग करने की युक्ति।
कल्पक पु० (सं) नाई। वि० १-रचने वाला। २-काटने वाला। ३-कल्पना करने वाला।
कल्पतरु पु० (सं) कल्पवृक्ष।
कल्पनक वि० (हि) १-जिसमें पर्याप्त कल्पनाशक्ति हो। २-(वह कार्य) जिसमें कल्पना-शक्ति का विशेष रूप से प्रयोग हुआ हो। (इमैजिनेटिव)।
कल्पना स्त्री० (सं) १-सजावट। २-कोई नवीन बात सोचना, उद्भावना। (इमैजिनेशन)। ३-अनुमान करना। ४-एक वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप
कल्पनीय वि० (सं) जिसकी कल्पना की जा सके।
कल्प-लता स्त्री० (सं) कल्प-वृक्ष।
कल्प-वास पु० (सं) माघ मास में गङ्गा-तट पर रहना
कल्पांत पु० (सं) प्रलय।
कल्पित वि० (सं) १-कल्पना किया हुआ। २-मनगढ़ंत। ३-बनावटी।
कल्पितार्थ पु० (सं) १-केवल तर्क के उद्देश्य से कोई बात कुछ देर के लिए मान लेना। २-ऐसा मान लेना कि यदि कहीं ऐसा हुआ, (तो क्या होगा)।
कल्मश पु० (सं) १-मैल। २-पाप।
कल्यपाल पु० (सं) कलवार।
कल्याण पु० (सं) १-मंगल, भलाई। २-संगीत में एक राग।
कल्लर (पु० (हि) १-रेह। २-नोनी मिट्टी। ३-ऊसर
कल्ला पु० (हि) १-अंकुर। २-नई टहनी। ३-जबड़े के नीचे गले तक का भाग। ४-लालटेन या लम्प का वह सिरा जिसमें बत्ती जलती है।
कल्ले-दराज वि० (फा) वाचाल।
कल्लोल पु० (सं) १-पानी की लहर; तरङ्ग। २-उमङ्ग।
कल्लोलिनी स्त्री० (सं) नदी।
कल्हार पु० (हि) एक पौधा या उसका फूल।
कल्हारना क्रि० (हि) १-भूनना; तलना। २-चिल्लाना।
कवच पु० (सं) १-मोटा छिलका अथवा आवरण जिसमें कोई फल या जीव रहता है। (शेल)। २-युद्ध के समय वीरों द्वारा पहने जाने वाला लोहे की कड़ियों का आवरण। ३-नगाड़ा। ४-तन्त्र के अनुसार मन्त्र विशेष जो शरीर के अंगों की रक्षा के लिए पढ़ते हैं। ५-जंत्र-तंत्र; तावीज। वि० जिसमें किसी उग्र प्रभाव से स्वयं रक्षित रहने अथवा आवृत पदार्थ को रक्षित रखने की क्षमता हो। (प्रूफ)।
कवच-धारी पु० (सं) वह जिसने कवच धारण किया हो।
कवचित वि० (सं) जिसमें किसी उग्र प्रभाव से स्वयं रक्षित रखने की शक्ति अथवा गुण हो। (प्रूफ)।
कवचित-गुल्म पु० (सं) अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित सैन्यदल। (आर्मड-कार)।
कवचित-यान पु० (सं) लड़ाई के काम में आने वाली वह गाड़ी जिस पर तोपों आदि की मार से उसे सुरक्षित रखने के निमित्त लोहे की मोटी चद्दरों से आवृत्त करदी जाती हैं तथा वह स्वयं तोपों, तोपचियों आदि से सुसज्जित होती है। (आर्मड-कार)।
कवची वि० (हि) कवचधारी।
कवर पु० (सं) १-केशपाश। २-गुच्छा। ३-कौर। पु० (अ) १-आवरण-पृष्ठ। २-ढकना।
कवरना क्रि० (हि) सेकना; ज़रा-ज़रा भूनना।
कवरी स्त्री० (सं) चोटी; जूड़ा।
कवर्ग पु० (सं) 'क' से 'ङ' तक के अक्षरों का समूह
कवल पु० (सं) कौर; ग्रास।
कवलित वि० (सं) खाया हुआ।
कवायद पु० (अ) नियमावली। स्त्री० १-व्याकरण। २-सेना अथवा सिपाहियों का युद्ध नियमों का अभ्यास करना।
कवि पु० (सं) कविता रचने वाला; शायर।
कविता स्त्री० (सं) छन्दोबद्ध रसमय रचना।

**कविताई** स्त्री० (हि) कविता।
**कवित्त** पुं० (हि) १-कविता। २-एक वर्णवृत्त।
**कवित्व** पु० (स) कविता का गुण या भाव।
**कविराज** पुं० (सं) १-कविश्रेष्ठ। २-भाट। ३-वैद्यों की एक उपाधि।
**कविलास** पुं० (हि) १-कैलास। २-स्वर्ग।
**कवींदु** पुं० (सं) वाल्मीक।
**कवींद्र** पुं० (सं) कवियों में श्रेष्ठ।
**कश** पुं० (सं) चाबुक। पुं० (फा) १-खिंचाव। २-हुक्के का दम; फूंक।
**कशा** स्त्री० (सं) चाबुक; कोड़ा।
**कशाघात** पुं० (सं) १-चाबुक या कोड़े की मार। २-ऐसी प्रबल प्रेरणा जो किसी कार्य को करने के लिए पूर्णतया विवश करदे।
**कशिश** स्त्री० (फा) आकर्षण।
**कशीदा** पु० (फा) कपड़े पर सूई और धागे से निकाला हुआ काम।
**कश्चित्** वि० (सं) कोई; एक न एक। सर्व० (सं) कोई
**कश्ती** स्त्री० (फा) नौका; नाव।
**कश्मल** पुं० (सं) १-पाप। २-मोह।
**कश्मीर** पु० (सं) भारत के पश्चिमोत्तर कोण में स्थित सुन्दर पहाड़ी प्रदेश।
**कश्मीरक** पुं० (सं) कश्मीरी मुद्रा।
**कश्मीरी** वि० (सं) कश्मीर देश का। स्त्री० कश्मीर की भाषा। पुं० कश्मीर का निवासी।
**कश्मीरीकुंडल** पुं० (स) कश्मीरी मुद्रा।
**कश्मीरी-मुद्रा** स्त्री० (स) कानों में पहनने का स्फटिक का कुण्डल जिसे गोरखपन्थी पहनते हैं।
**कष** पुं० (सं) १-सान। २-कसौटी। ३-परीक्षा।
**कषाय** वि० (सं) १-कसैला। २-सुगन्धित। ३-गेरू के रङ्ग का। पु० (सं) क्रोध; लोभ आदि विकार।
**कष्ट** पुं० (सं) १-पीड़ा; तकलीफ। २-सङ्कट।
**कष्टकर** वि० (स) कष्ट देने वाला।
**कष्ट-कल्पना** स्त्री० (सं) वह बात जिसकी उपपत्ति में बहुत खींच-खाँच करनी पड़े; जो कठिनता से दिमाग में आये।
**कष्टकारक** वि० (सं) कष्ट देने वाला।
**कष्ट-साध्य** वि० (स) कठिनता से होने वाला।
**कस** पुं० (हि) १-कसावट। २-खींचतान। ३-परीक्षा ४-कसौटी। ५-तलवार की लचक। ६-बल। ७-वश काबू। ८-रोक। ९-कसाव का संक्षिप्त रूप। १०-सार, तत्व। ११-अर्क; आसव। क्रि० वि० (हि) १-कैसे। २-कैसा। ३-क्यों।
**कसक** स्त्री० (हि) १-रह-रहकर होने वाली पीड़ा; टीस। --खटक। ६-हौसला।
**कसकना** क्रि० (हि) टीसना; सालना।
**कसकुट** पुं० (हि) तांबे और जस्ते के मिश्रण से बनी एक धातु।
**कसना** पुं० (हि) १-बेठन। २-एक जहरीली मकड़ी क्रि० (हि) १-बन्धन या तनाव कड़ा करना। २-खींचकर बाँधना। ३-पुर्जा का कड़ा बैठाना। ४-जकड़ना। ५-कद्दू आदि का रेतना। ६-सोने को कसौटी पर घिसना। ७-क्लेश देना। ८-कटाक्षभरी उक्ति का लक्ष्य बनना (फबती कसना)। ९-दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना। १०-परखना। ११-बांधना। १२-खूब भर जाना।
**कसनी** स्त्री० (हि) अँगिया; चोली।
**कसब** पुं० (अ) १-परिश्रम। २-पेशा। ३-वेश्यावृत्ति
**कस-बल** पुं० (हि) १-शक्ति। २-साहस।
**कसबा** पुं० (अ) गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती।
**कसबी** स्त्री० (हि) १-वेश्या। २-व्यभिचारिणी स्त्री।
**कसम** स्त्री० (अ) सौगन्ध; शपथ।
**कसमल** पुं० देखो 'कश्मल'।
**कसमसाना** क्रि० (हि) १-भीड़ के कारण आपस में रगड़ खाते हुए हिलना। २-उकता कर हिलना डोलना। ३-घबराना। ४-हिचकना।
**कसमीर** पुं० (हि) कश्मीर।
**कसर** स्त्री० (अ) १-कमी। २-द्वेष।
**कसरत** स्त्री०(अ) १-व्यायाम। २-बहुलता, अधिकता
**कसरती** वि० (हि) १-कसरत करने वाला। २-कसरत से बनाया हुआ (बदन), पुष्ट और बलवान।
**कसहँड़** पुं० (हि) काँसे के बरतन के टुकड़े।
**कसहँड़ा** पुं० (हि) काँसे का एक प्रकार बड़ा बरतन।
**कसाई** पुं०(अ) १-वधिक। २-बूचड़। वि० (अ) निर्दय स्त्री० (हि) १-कसने की क्रिया या भाव। २-कसने का परिश्रमिक या उजरत।
**कसाना** क्रि० (हि) १-कसैला हो जाना। २-कसने का काम दूसरे से कराना।
**कसार** पुं० (हि) पंजीरी।
**कसाला** पुं० (हि) १-कष्ट। २-कठिन परिश्रम।
**कसाव** पु० (हि) कसैलापन।
**कसोटना** क्रि० (हि) देखो 'कसना'।
**कसीदा** पुं० देखो 'कशीदा'।
**कसीस** पुं० (हि) एक लोहजन्य खनिज पदार्थ। स्त्री० कठोरता और निर्दयता का व्यवहार।
**कसीसना** क्रि० (हि) खींचना।
**कसुंभी, कसूमल** क्रि० (हि) १-कुसुम के रंग का। २-कुसुम के रंगों में रंगा हुआ।
**कसूर** पुं० (अ) १-दोष। २-अपराध।
**कसूरवार** वि० (फा) दोषी।
**कसेरा** पु० (हि) काँसे आदि के बरतन बनाने और बेचने वाला।
**कसेरू** पुं० (सं) एक प्रकार के मोथे की जड़ जो

खाई जाती है।
कसैया पुं० (हि) कसने, जकड़ने या परखने वाला
कसैला वि० (हि) कषाय स्वाद वाला।
कसैली स्त्री० (हि) सुपारी।
कसोरा पुं० (हि) १-कटोरा। २-मिट्टी का प्याला।
कसौटी स्त्री० (हि) १-वह काला पत्थर जिस पर घिसकर सोना परखा जाता है। २-परख; जाँच।
कस्तूरी स्त्री० (सं) हिरन की नाभि से निकलने वाला एक प्रसिद्ध सुगंधित पदार्थ जो दवा के काम में आता है।
कस्तूरी-मृग पुं० (सं) वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है, यह ठंडे पर्वतीय भागों में रहता है।
कहँ क्रि० वि० (हि) कहँ। प्रत्य० के लिए।
कहँया क्रि० वि० (हि) कहाँ।
कह वि० (हि) क्या।
कहक स्त्री० (हि) ध्वनि; आवाज।
कहकहा पुं० (अ) अट्टहास।
कहगिल स्त्री० (हि) मिट्टी और भूसे के मिश्रण से बनाया हुआ गारा।
कहत पु० (अ) दुर्भिक्ष।
कहन स्त्री०(हि) १-कथन; उक्ति। २-बात। ३-कहावत।
कहना क्रि० (हि) १-बोलना। २-वर्णन करना।
कहनूत स्त्री० (हि) कहावत।
कहर पुं० (अ) विपत्ति। वि० १-विकट। २-बहुत अधिक।
कहरना क्रि० (हि) कराहना।
कहरवा पुं० (हि) १-एक ताल। २-इस ताल पर गाया जाने वाला दादरा।
कहरी वि० (हि) कहर करने वाला।
कहरुबा पुं० (फा) तृण मणी नामक पदार्थ।
कहल पुं० (देश) १-उमस। २-कष्ट। ३-ताप।
कहलना क्रि० (हि) १-व्याकुल होना। २-टहलना।
कहलाना क्रि० (हि) १-कहने का कार्य दूसरे से कराना। २-सँदेसा भेजना। ३-पुकारा जाना। ४-देखो 'कहलना'।
कहवा पुं० (अ) एक पेड़ का बीज जिसे कूट कर चाय के समान पीते हैं।
कहवाना क्रि० (हि) कहलाना।
कहवैया वि० (हि) कहने वाला।
कहाँ क्रि० वि० (हि) किस जगह?
कहा पुं० (हि) १-कथन; कहना। २-आज्ञा। ३-उपदेश। सर्व० क्या?
कहाउ पुं० (हि) उक्ति; कथन।
कहा-कही स्त्री० (हि) कहा-सुनी।
कहाना क्रि० (हि) कहलाना।
कहानी स्त्री० (हि) १-आख्यायिका, कथा। २-झूठी अथवा मनगढ़ंत बात।
कहार पुं० (हि) एक जाति।
कहाल पुं० (देश) एक तरह का बाजा।
कहावत स्त्री० (हि) १-लोकोक्ति; मसल। २-उक्ति।
कह-सुना पुं० (हि) भूलचूक।
कहा-सुनी स्त्री० (हि) वादविवाद; तकरार।
कहिया क्रि० वि० (हि) कब।
कहीं क्रि० वि० (हि) १-किसी दूसरी जगह। २-नहीं, कभी नहीं। ३-यदि। वि० बहुत अधिक।
कही स्त्री० (हि) कथन।
कहुँ, कहूँ क्रि० वि० (हि) कहीं।
कहुला वि० (हि) काला।
कांइयाँ वि० (हि) चालाक, धूर्त।
कांई क्रि० वि० (हि) क्यों।
कांकर पुं० (हि) कंकड़।
कांकरी स्त्री० (सं) कंकड़ी।
कांक्षा स्त्री० (हि) देखो 'आकांक्षा'।
कांक्षी वि० (हि) चाहने वाला।
कांख स्त्री० (हि) बाहूमूल के नीचे गढ़ा, बगल।
कांखना क्रि० (हि) १-पीड़ा या श्रम की अवस्था में दुःख सूचकशब्द उच्चारण करना। २-मलत्याग के लिए जोर लगाना।
कांखा-सोती स्त्री० (हि) दुपट्टे को दाहिनी बगल के नीचे से लेजाकर बाँए कन्धे पर डालना।
कांखी स्त्री० (हि) सुगन्धित मिट्टी।
कांगड़ा पुं० (देश) १-पंजाब का एक जिला। २-भूरे रंग का एक पक्षी।
कांगड़ी स्त्री० (हि) सरदी से बचने के लिए गले में लटकाने की अंगीठी।
कांगन पुं० (हि) कङ्गन।
कांग्रेस स्त्री० (अ) १-भारत की राष्ट्रीय महासभा। २-वह महासभा जिसमें देश के भिन्न-भिन्न स्थानों के प्रतिनिधि एकत्र होकर राजनैतिक विषयों पर अपना विचार प्रकट करते हैं।
कांग्रेसी वि० (हि) कांग्रेस का; कांग्रेस से सम्बद्ध। पुं० कांग्रेस का अनुयायी।
कांच पुं० (हि) शीशा। स्त्री० गुदा का भीतरी भाग, गुदाचक्र।
कांचन पु० (स) १-सोना, सुवर्ण। २-कचनार। ३-चम्पा। ४-धतूरा।
कांचली स्त्री० (हि) देखो 'केंचुली'।
कांचा वि० (हि) कच्चा।
कांची स्त्री० (स) १-करधनी। २-घुँघची। ३-सप्त० पुरियों में से एक (कांजीवरम्)।
कांचुरी स्त्री० देखो 'केंचुली'।
कांचू स्त्री० (हि) कंचुकी; चोली।

**कांजिक** वि० (सं) सिरके, काँजी आदि से सम्बद्ध, खट्टा। पुं० देखो 'काँजी'।
**काँजी-हौद** पुं० (हि) लावारिस पशुओं को बन्द करने का स्थान।
**काँट** पुं० (हि) काँटा।
**काँटवा** वि० (हि) कँटीला।
**काँटा** पुं० (हि) १-पेड़ पौधों की टहनियों से निकलने वाला कड़ा नुकीला अंकुर, कंटक। २-कील। ३-तराजू। ४-साग। ५-नुकीली फुंसियाँ। ६-कँटिया। ७-नुकीली वस्तु। ८-वह उपकरण जिससे लोग खाना खाते हैं। (फोर्क)। ९-कान का गहना, लौंग।
**काँटी** स्त्री० (हि) १-छोटा काँटा। २-कील। ३-अँकुसी। ४-...।
**काँठा** पुं० (हि) १-गला। २-तट। ३-पार्श्व, बगल ४-ईंधन।
**काँड** पुं० (सं) १-पोर। २-सरकण्डा। ३-वृक्षों का तना। ४-शाखा; डाली। ५-किसी कार्य अथवा विषय का विभाग। ६-घटना।
**काँड़ना** क्रि० (हि) १-कुचलना। २-खूब मारना।
**काँडा** पुं० (हि) १-लकड़ी का लट्ठा। २-सूखा ठूंठ
**काँड़ी** स्त्री० (हि) लकड़ी का पतला लट्ठा।
**कांत** वि० (सं) १-पति। २-चन्द्रमा। ३-कान्तिसार।
**कांता** स्त्री० (सं) १-पत्नी। २-सुन्दर स्त्री।
**कांतार** पुं० (सं) गहन वन।
**कांति** स्त्री० (सं) १-चमक; दीप्ति। २-छवि; शोभा
**कांतिकर** वि० (सं) सौंदर्यवर्द्धक।
**कांतिमान्** वि० (सं) १-कांतिवाला। २-सुन्दर।
**कांतिसार** पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया लोहा।
**कांती** स्त्री० (हि) १-कैंची। २-चाकू। ३-छोटी तलवार।
**काँथरि** स्त्री० (हि) गुदड़ी।
**काँदना** क्रि० (हि) रोना; चिल्लाना।
**काँदला** पुं० (हि) कीचड़। वि० (हि) गँदला, मैला।
**काँदा** पुं० (हि) १-कीचड़। २-मैल।
**काँदो** पुं० (हि) पङ्क; कीचड़।
**कांध** पुं० (हि) कंधा।
**कांधना** क्रि० (हि) १ कंधे पर उठाना। २-मचाना, ठानना। स्वीकार करना।
**काँधर, काँधा** पुं० (हि) कृष्ण।
**काँप** पुं० (हि) १-पतली लचीली तीली। २-करनफूल। ३-हाथी का दाँत। ४-सूअर का खाँग।
**काँपना** क्रि० (हि) भयभीत होना; थर्राना।
**काँबी** स्त्री० (हि) एक कान का गहना।
**काँमर** स्त्री० (हि) काँवर; बहँगी।
**काँव-काँव** स्त्री० (हि) १-कौवे का शब्द। २-व्यर्थ की बकवाद।
**काँवर** स्त्री० (हि) १-मोटे बाँस के दोनों छोरों पर लटकते हुए दो छींके वाली वस्तु; बहँगी। २-ऐसी वस्तु जिसमें गंगाजल रखते हैं।
**काँवरा** पुं० (हि) घबराया हुआ।
**काँवरिया** पुं० (हि) वह जो काँवर लेकर चले।
**काँवरी** क्रि० (हि) काँवर।
**काँवरू** पुं० (हि) कामरूप।
**काँवारथी** पुं० (हि) काँवर लेकर तीर्थ यात्रा करने वाला।
**काँस** पुं० (हि) एक घास का नाम।
**काँसा** पुं० (हि) १-ताँबे तथा जस्ते के मेल से बनी एक धातु। २-भीख माँगने का खप्पर।
**कांस्य** वि० (सं) काँसे का बना हुआ।
**कांस्य-युग** पुं० (सं) पुरातत्व में प्रागैतिहासिक काल का वह विभाग जिसमें हथियार, औजार, बरतन आदि काँसे के बनते थे। यह ताम्रयुग भी कहलाता है। (ब्रॉन्ज एज)।
**का** अव्य० (हि) सम्बन्धकारक अथवा षष्ठी का चिह्न या विभक्ति, जैसे-केशव का घर। सर्व० क्या? किसको?।
**काइयाँ** पुं० (हि) कँइयाँ।
**काई** स्त्री० (हि) १-एक घास। २-मल, मैल।
**काउ** क्रि० वि० (हि) कभी; किसी समय।
**काऊ** क्रि० वि० (हि) कभी। सर्व (हि) १-कोई, कुछ।
**काक** पुं० (सं) कौआ।
**काक-गोलक** पुं० ... कौए की आँख।
**काक-तालीय** वि० (सं) संयोगवश होने वाला।
**काक-तालीय-न्याय** पुं० (सं) किसी घटना का संयोगवश होना।
**काक-पक्ष** पुं० (सं) बालों के पट्टे; जुल्फ।
**काक-पद** पुं० (सं) पंक्ति में छूटे हुए शब्द का स्थान बताने वाला (‸) चिह्न।
**काकरी** स्त्री० (हि) ककड़ी।
**काकरेजा** पुं० (हि) काकरेजी रंग का कपड़ा।
**काकरेजी** पुं० (फा) लाल और काले के मिश्रण से बनने वाला रंग। वि० काकरेज रंग का।
**काकलि, काकली** स्त्री० (सं) मधुर, अस्फुटध्वनि।
**काकलीरव** पुं० (सं) कोयल।
**काक-वंध्या** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके केवल एक बार सन्तान प्रसव हो।
**काका** पुं० (हि) चाचा।
**काका-कौआ** पुं० (हि) चुटिया वाला बड़ा तोता।
**काकिणी** स्त्री० (सं) १-पण की चौथाई जो बीस कौड़ियों के बराबर होता था। २-कौड़ी। ३-घुंघची
**काकु** पुं० (सं) १-व्यंग; ताना। २-वक्रोक्ति अलंकार का एक भेद।
**काकुन** पुं० (हि) कँगनी नामक अन्न।

**काकुल** स्त्री० (फा) जुल्फ।
**काकु-वक्रोक्ति** स्त्री० (सं) वक्रोक्ति अलंकार का एक भेद।
**काकोदर** पु० (सं) साँप।
**काग** पु० (हि) १-कौआ। २-एक प्रकार का वृक्ष। ३-बोतल शीशी आदि की डाट।
**कागज** पु० (फा) १-घास, बाँस आदि सड़ाकर बनाया हुआ लिखने का पत्र। २-अखबार। ३-लिखी हुई चीज, लेखा।
**कागजी** वि० (अ) १-कागज का बना। २-कागज पर लिखित। ३-कागज के समान पतला (छिलका) पु० कागज का व्यवसाय करने वाला।
**कागजी-नीबू** पु० (अ+हि) वह नीबू जिसका छिलका पतला होता है।
**कागद** पु० (सं) कागज।
**कागर** पु० (हि) १-कागज। २-केंचुली। ३-पंख
**कागरी** वि० (हि) तुच्छ।
**कागला** पु० (हि) गले में की घाँटी; कौआ।
**कागा** पु० (हि) कौआ।
**कागा-रोल** पु० (हि) कौओं के समान हल्ला मचाना
**काची** स्त्री० (हि) १-वह हाँड़ी जिसमें दूध रखते हैं २-तिन्नी, सिंघाड़े आदि का बना हलुआ।
**काछ** स्त्री० (हि) १-पेड़ू और जाँघ का जोड़। २-लाँग। ३-नटों का वेश-विन्यास।
**काछन** स्त्री० देखो 'काछनी'।
**काछना** क्रि० (हि) १-धोती की लाँग खोंसना। २-बनाना; सँवारना। ३-हाथ से कोई तरल पदार्थ पोंछना।
**काछनी** स्त्री० (हि) १-घुटनों तक पहनी हुइ धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंस रखी हों। २-एक प्रकार का घाघरा जो मूर्त्तियों आदि को पहनाया जाता है।
**काछा** पु० (हि) १-कछनी। २-देखो 'काछ'।
**काछी** पु० (हि) तरकारी बोने और बेचने वाली एक जाति।
**काछे** क्रि० वि० (हि) निकट, पास।
**काज** पु० (हि) १-काम। २-रोजगार। ३-प्रयोजन ४-कोई शुभ कर्म। पु० (पुर्त्त०) बटन का छेद।
**काजर** पु० (हि) काजल।
**काजरी** स्त्री० (हि) कजरी गाय।
**काजल** पु० (हि) दीपक के धुएँ की कालिख जिसे आँखों में आँजते हैं।
**काजी** पु० (अ) १-शरा के अनुसार न्याय करने वाला (मुसल०)। २-निकाह पढ़ाने वाला मौलवी ३-विचारक।
**काजू** पु० (हि) एक वृक्ष या उसके फल जो मेवों की श्रेणी में आते हैं।
**काजू-भोजू** वि० (हि) अधिक दिनों तक काम में न आ सकने वाला।
**काजे** अव्य० (हि) लिए; वास्ते।
**काट** स्त्री० (हि) १-काटने का काम या ढंग। २-घाव। ३-कपट। ४-कुश्ती में पेंच का तोड़।
**काटना** क्रि० (हि) १-छुरी कैंची आदि से किसी वस्तु के टुकड़े करना। २-कतरना। ३-समय बिताना। ४-घाव करना। ५-पीसना। ६-वध करना। ७-नष्ट करना। ८-मार्ग तय करना। ९-अनुचित प्राप्ति करना। १०-लिखे हुए पर लकीर फेरना। ११-कारावास में समय बिताना। १२-डसना। १३-घरसे आदि से डोर तोड़ना। १४-गणित में एक संख्या से दूसरी संख्या को एसा भाग देना जिससे शेष कुछ न बचे। १५- किसी वस्तु में कुछ अंश निकाल लेना। १६-खण्डन करना। १७-कष्ट कर प्रतीत होना।
**काटर** वि० (हि) १-कड़ा। २-कट्टर। ३-काटने वाला
**काटू** वि० (हि) १-काटने वाला। २-भयानक।
**काठ** पु० (हि) १-लकड़ी। २-ईंधन। ३-लकड़ी की बेड़ी।
**काठा** वि० (हि) मोटे और कड़े छिलके वाला, कठिया
**काठिन्य** पु० (सं) कठिनता।
**काठी** स्त्री० (हि) १-घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखी जाने वाली जीन। २-शरीर की गठन। ३-म्यान ४-ईंधन की लकड़ी।
**काढ़ना** क्रि० (हि) १-निकालना। २-अलग करना ३-उधार लेना। ४-बेल-बूटे आदि बनाना। ५-आवरण हटा कर दिखाना। ६-उबालना या गाढ़ा करना। ७-बनाना या लगाना।
**काढ़ा** पु० (हि) ओषधियों का उबाला हुआ रस, क्वाथ।
**कातना** क्रि० (हि) चर्खे, तकली आदि पर ऊन या रूई से धागा निकालना।
**कातर** वि० (सं) १-व्याकुल, अधीर। २-भयभीत। ३-आर्त्त, दुखित।
**काता** पु० (हि) बुढ़िया के बाल नामक मिठाई।
**कातिब** पु० (अ) १-लिखने वाला। २-लीथो प्रेस के निमित्त कापी लिखने वाला।
**कातिल** वि० (अ) १-घातक। २-हत्यारा। ३-बहुत या विकट।
**काती** स्त्री० (हि) १-कैंची। २-चाकू, छुरी। ३-छोटी तलवार।
**कात्यायनी** स्त्री० (सं) दुर्गा।
**काथ** पु० (हि) १-कत्था। २-गुदड़ी।
**काथरी** स्त्री० (हि) गुदड़ी।
**काथा** पु० (हि) कत्था।
**कादंबरी** स्त्री० (सं) १-कोयल। २-मदिरा। ३-सर-

स्वती।

**कादंबिनी** स्त्री० (सं) मेघमाला।

**कादर** वि० (हि) देखो 'कातर'।

**कान** पुं० (हि) श्रवणेन्द्रिय; कर्ण। २-सुनने की शक्ति ३-कान का गहना। ४-चारपाई का टेढ़ापन। ५-तराजू का पासंग। ६-नाव की पतवार। स्त्री० देखो 'कानि'।

**कानन** पु० (सं) १-जंगल। २-घर।

**काना** वि० (हि) १-एक आँख का, एकाक्ष। २-कीड़े का खाया हुआ (फल आदि)। ३-तिरछा, टेढ़ा।

**काना-गोसी, काना-फूसी, काना-बाती** स्त्री० (हि) कान के पास धीरे-धीरे बातें कहना।

**कानि** पिं० (हि) १-लोक-लाज। २-प्रतिष्ठा, इज्जत। ३-संकोच, लिहाज।

**कानी** वि० (हि) एक आँख की (स्त्री०)।

**कानी-उँगली** स्त्री० (हि) पैर या हाथ की सबसे छोटी तथा अन्तिम उँगली।

**कानी-कौड़ी** स्त्री० (हि) १-फूटी कौड़ी। २-बहुत थोड़ा धन।

**कानीन** पुं० (स) अविवाहिता से उत्पन्न बालक।

**कानून** पुं० (अ) विधि, राजनियम।

**कानून-गो** पुं० (अ+फा) राजस्व विभाग का वह कर्मचारी जिसका काम पटवारियों के कागजात की जाँच करना होता है।

**कानून-दाँ** पुं० (अ+फा) विधिज्ञ, कानून का जानकार।

**कान्यकुब्ज** पुं० (सं) १-कन्नौज के आस-पास का एक प्रान्त (प्राचीन)। २-इस प्रान्त का निवासी। ३-उत्तर प्रदेश की एक ब्राह्मण जाति।

**कान्ह, कान्हर** पुं० (हि) श्रीकृष्ण।

**कापर** पुं० (हि) कपड़ा।

**कापालिक** पुं० (सं) शैव सम्प्रदाय का तान्त्रिक साधु

**कापी** स्त्री० (अं) १-प्रतिलिपि; नकल। २-कोरे कागजों की पुस्तिका।

**कापुरुष** पुं० (सं) कायर।

**काफिया** पुं० (अ) तुक।

**काफिर** पुं० (अ) १-ईश्वर का अस्तित्व न मानने वाला। २-निर्दय।

**काफिला** पुं० (अ) यात्री-दल।

**काफी** वि० (अ) यथेष्ट; पूरा।

**काबर** वि० देखो 'चितकबरा'।

**काबा** पुं० (अ) अरब देश के अन्तर्गत मक्का शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

**काबिज** वि० (अ) १-जिसका अधिकार हो। २-मल को रोकने वाला। पुं० वह जो किसी की भूमि या मकान पर अधिकार किये हो और उसका उपभोग करता हो। (अकुपेन्ट)।

**काबिल** वि० (अ) १-योग्य। २-विद्वान्।

**काबुक** स्त्री० (फा) कबूतरों का दरबा।

**काबुल** पुं० (हि) अफगानिस्तान की राजधानी।

**काबू** पुं० (तु) अधिकार; वश।

**काम** पुं० (स) १-इच्छा, चाह। २-विषय सुख की इच्छा। ३-चतुर्वर्ग में से एक। पुं० (हि) १-कार्य, व्यापार। २-प्रयोजन। ३-सम्बन्ध, सरोकार। ४-कठिन परिश्रम अथवा कौशल का काम। ५-उपभोग, व्यवहार। ६-व्यवसाय। ७-कारीगरी। ८-बेल-बूटे आदि का कार्य।

**काम-काज** पुं० (हि) १-कार्य। २-व्यापार।

**काम-काजी** वि० (हि) काम अथवा उद्योग में लगा रहने वाला।

**कामगार** पुं० १-देखो 'कामदार'। २-देखो 'मजदूर'

**काम-चलाऊ** वि० (हि) जिससे काम निकल सके, अस्थायी।

**कामचोर** वि० (हि) काम से जी चुराने वाला।

**कामज** वि० (स) काम अथवा वासना से उत्पन्न।

**कामतः** क्रि० वि० (स) मन में कोई कामना रख कर।

**कामतरु** पुं० (स) कल्पवृक्ष।

**कामता** पुं० (हि) चित्रकूट।

**कामद** वि० (स) मनोरथ पूर्ण करने वाला।

**काम-दानी** स्त्री० (हि) सलमे सितारे के बेलबूटे।

**कामदार** पुं० (हि) कारिंदा; कर्मचारी। वि० जिस पर सलमें सितारे का काम हो।

**कामदुहा** स्त्री० (हि) कामधेनु।

**कामदेव** पुं० (स) काम का देवता, मदन।

**कामधाम** पुं० (हि) काम-काज।

**कामधुक** स्त्री० (हि) कामधेनु।

**काम-धेनु** स्त्री० (स) स्वर्ग की गाय जो सब कामनाओं की पूर्ति करने वाली मानी जाती है, सुरभी

**कामना** स्त्री० (स) इच्छा; मनोरथ।

**काम-बन** पुं० (सं) वह बन जिसमें शिव ने कामदेव को भस्म किया था।

**काम-बर** वि० (सं) सुन्दर।

**कामयाब** वि० (फा) सफल।

**कामर** स्त्री० (हि) कंबल।

**काम-रिपु** पु० (स) शिव।

**कामरी** स्त्री० (हि) छोटा कंबल।

**कामरूप** पु० (स) १-आसाम राज्य का एक जिला। २-देवता। वि० मनमाना रूप बनाने वाला।

**कामला** पुं० (हि) कमल नामक रोग।

**कामली** स्त्री० (हि) कमली।

**काम-शास्त्र** पुं० (स) कोकशास्त्र; रतिशास्त्र।

**कामांध** वि० (सं) जो काम वासना में अन्धा हो गया हो; कामातुर।

**कामातुर** वि० (स) काम के वेग से व्याकुल।

**कामायिनी** स्त्री० (सं) वैवस्त मनु की स्त्री श्रद्धा का एक नाम।
**कामारि** पुं० (सं) शिव।
**कामित** वि० (सं) इच्छित; अभिलाषित।
**कामिता** स्त्री० (सं) १-'कामी' होने का भाव या अवस्था। २-जीवों में कामवासना उत्पन्न करने वाली शक्ति, वृत्ति या गुण। (सेक्सुएलिटी)।
**कामिनी** स्त्री० (सं) १-कामवेग का अनुभव करने वाली कामनायुक्त स्त्री। २-सुन्दर स्त्री। ३-मदिरा
**कामिल** वि० (अ) १-पूर्ण, पूरा, समूचा। २-योग्य
**कामी** वि० (सं) १-कामुक। २-कामना रखने वाला
**कामुक** वि० (सं) विषयी।
**कामोद्दीपक** वि० (सं) काम या सहवास की इच्छा बढ़ाने वाला।
**कामोन्माद** पुं० (सं) कामवासना की पूर्त्ति न होने वाला एक प्रकार का उन्माद-रोग।
**काम्य** वि० (सं) १-जिसकी कामना की जाय। २-जिससे कामना सिद्ध हो। पुं० (सं) किसी कामना की सिद्धि के निमित्त किया जाने वाला धर्म कार्य
**काय** स्त्री० (सं) शरीर; देह। अव्य० (हि) क्या ?
**कायआ** पुं० (अ) लगाम की डोरी।
**कायथ** पुं० (हि) कायस्थ।
**कायदा** पुं० (अ) १-नियम। २-दस्तूर। ३-रीति। ४-क्रम, व्यवस्था।
**कायफल** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसकी छाल औषध रूप में प्रयुक्त होती है।
**कायम** वि० (अ) १-स्थिर। २-स्थापित। ३-निश्चित
**कायम-मुकाम** वि० (अ) स्थानापन्न।
**कायर** वि० (हि) भीरु; डरपोक।
**कायल** वि० (अ) दूसरे की बात की यथार्थता को स्वीकार करने वाला।
**कायली** स्त्री० (हि) १-मथानी। २-ग्लानि। स्त्री० (अ) कायल होने का भाव।
**कायस्थ** वि० (सं) काया या देह में स्थित। पुं० (सं) १-जीवात्मा। २-ईश्वर। ३-एक जाति का नाम।
**काया** स्त्री० (सं) देह, शरीर।
**काया-कल्प** पुं० (सं) १-शरीर का नया या जवान हो जाना। २-चोला बदल जाना।
**काया-पलट** पुं० (हि) १-क्रान्तिकारी परिवर्त्तन। २-एक शरीर या रूप को दूसरे शरीर या रूप में पलटना।
**कायिक** वि० (सं) १-शरीर सम्बन्धी। २-शरीर से उत्पन्न।
**कायिक-अनुभाव** पुं० (सं) काव्य में रस के अन्तर्गत चित्त का भाव प्रकट करने वाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ।
**कारंड, कारंडव** पुं० (सं) एक प्रकार का हंस या बत्तख।
**कारंधमी** पुं० (सं) कीमियागर।
**कार** पुं० (सं) १-कार्य। २-रचने वाला। ३-एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। ४-एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के साथ लगकर उनका स्वतन्त्र बोध कराता है। पुं० (फा) काम। स्त्री० (अं) मोटर-गाड़ी। वि० (हि) काला।
**कारक** पुं० (सं) संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसमें वाक्य में अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध प्रगट होता है। वि० (सं) १-करने वाला। २-स्थानापन्न।
**कारक-दीपक** पुं० (सं) दीपक अलंकार का एक भेद
**कारकुन** पुं० (फा) प्रबन्ध करने वाला। २-कारिन्दा
**कारखाना** पुं० (फा) अधिक मात्रा में वस्तुएँ तैयार करने का स्थान। (फैक्टरी)।
**कारगर** वि० (फा) १-प्रभावोत्पादक। उपयोगी।
**कार-गुजार** वि० (फा) भली प्रकार से काम करने वाला।
**कारचोब** पुं० (फा) १-लकड़ी का वह चौखटा जिस पर कपड़े को तान कर कसीदे का काम करते हैं। २-जरदोजी का काम।
**कारचोबी** स्त्री० (फा) कसीदे का काम। वि० कसीदे का (काम)।
**कारज** पुं० (हि) कार्य।
**कारटा** पुं० (हि) कौआ।
**कारटून** पुं० (अं) किसी व्यक्ति या सामयिक घटना को हास्यजनक रूप प्रकट करने वाला चित्र, व्यंग-चित्र।
**कारण** पुं० (सं) १-सबब; वजह। २-साधन। ३-वह जिससे प्रकट या उत्पन्न हो। ४-तांत्रिक उपचार। ५-हेतु; निमित्त; प्रयोजन।
**कारणता** स्त्री० (सं) कारण तथा कार्य में रहने वाला सम्बन्ध या उसका स्वरूप। (कॉजेलिटी)।
**कारणमाला** स्त्री० (सं) १-एक अर्थालङ्कार। २-कारण में अथवा हेतुओं की शृंखला।
**कारणिक** वि० (सं) १-कारण सम्बन्धी। २-कारण के रूप में होने वाला। (कॉजल)। पुं० (सं) किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों से सम्बन्धित। (मिनिस्टीरियल)।
**कारणिकता** स्त्री० (सं) देखो 'कारणता'।
**कारणिक-सेवा** स्त्री० (सं) कारणिकों द्वारा की जाने वाली सेवा या कार्यालय का काम। (मिनिस्टीरियल सरविस)।
**कारतूस** पुं० (पुर्त०) बारूद भरी वह नाली जिसे बन्दूक में भर कर चलाते हैं, गोली।

**कारन** पुं० (हिं) कारण। स्त्री० रोने का करुण स्वर।
**कारनामा** पुं० (फा) १-प्रशंसनीय काम। २-कार्यावली, करतूत।
**कारनिस** स्त्री० (हिं) दीवार की कँगनी।
**कारनी** पुं० (हिं) १-प्रेरक। २-भेदक। ३-बुद्धि पलटने वाला।
**कार-परदाज** वि० (हिं) १-कारिंदा। २-कार्यकुशल
**कार-बार** पुं० (फा) १-व्यापार। २-पेशा।
**कारा-बारी** वि० (फा) काम काजी। पुं० (फा) कारकुन।
**कारयिता** वि० (सं) कुछ रचने या बनाने वाला (क्रिएटिव)।
**कार-रवाई** स्त्री० (फा) १-कृत्य। २-कार्य-तत्परता ३-चाल।
**कारसाज** वि० (फा) काम बनाने या सँवारने वाला।
**कारसाजी, कारस्तानी** स्त्री० (फा) १-काम बनाने की योग्यता २-चालबाजी।
**कारा** स्त्री० (सं) १-कैद। २-कारागार। ३-पीड़ा। वि० (हिं) काला।
**कारागार, कारागृह** पु० (स) वन्दीगृह, जेलखाना।
**कारादंड** पुं० (सं) जेल की सजा।
**कारापाल** पुं० (सं) वह अधिकारी जिसके नियंत्रण में जेल का प्रबन्ध रहता है (जेलर)।
**काराधीक्षक** पु० (सं) बन्दी गृहों का प्रधान अधिकारी जिसके नीचे राज्य की समस्त जेलें होती हैं। (सुपरिण्टेंडेंट आफ जेल्स)।
**काराबंदी** पुं० (सं) कैदी।
**कारारुद्ध** वि० (सं) कारागार में बन्द किया हुआ। (इम्प्रिजन्ड)।
**कारारोध** पुं० (सं) कारागार में बन्द होने की क्रिया या अवस्था। (इम्प्रिजनमेंट)।
**कारावास** पु० (सं) कैद।
**कारावासी** पुं० (सं) कैदी, बन्दी।
**कारिंदा** पु० (फा) काम करने वाला, कर्मचारी।
**कारिका** स्त्री० (सं) श्लोकबद्ध व्याख्या।
**कारिख** स्त्री० (हिं) कालिख।
**कारिणी** वि० (स) करने वाली, (शब्दों के अन्त में)।
**कारित** वि० (सं) कराया हुआ।
**कारिता** स्त्री० (स) करने या होने का भाव।
**कारी** वि० (सं) करने या बनाने वाला। स्त्री० (हिं) करने का काम। वि० (फा) घातक।
**कारीगर** पुं० (फा) दस्तकार, शिल्पी वि० (फा) निपुण।
**कारु** पु० (सं) शिल्पकार, कारीगर।
**कारुक** पुं (सं) नाविकों का दल। (क्रू)।
**कारुणिक** वि० (सं) १-जिसको देखकर मन में करुणा उत्पन्न हो। २-कृपालु, दयालु।
**कारुण्य** पुं० (सं) दया; मेहरबानी।
**कारुनिक** वि० (हिं) कारुणिक।
**कारूं** पुं० (अ) हजरतमूसा का धनी भाई।
**कारूती** स्त्री० (अ) एक मलहम।
**कारूनी** स्त्री० (हि) घोड़ों की एक जाति।
**कारूरा** पुं० (अ) मूत्र।
**कारोंछ** स्त्री० (हि) कालिख।
**कारो** वि० (हि) काला।
**कारोबार** पुं० (फा) रोजगार, व्यापार।
**कार्ड** पुं० (अ) १-मोटे कागज का टुकड़ा। २-डाक द्वारा समाचार भेजने का कागज का टुकड़ा। ३-ताश का पत्ता।
**कार्तिक** पुं० (सं) आश्विन के बाद का महीना।
**कार्तिकेय** पुं० (स) शिव-पुत्र, षड़ानन।
**कार्पटिक** पुं० (स) यात्री।
**कार्मण** पुं० (स) मंत्र तंत्र आदि का प्रयोग।
**कार्मण्य** पुं० (सं) कर्मण्यता; कर्मठता।
**कार्मना** पुं० (हि) कार्मण।
**कार्मुक** पुं० (सं) १-धनुष। २-चाप। ३-इंद्र धनुष।
**कार्य** पुं० (स) १-काम २-क्रिया। ३-कारण का विकार या परिणाम। ४-नाटक में पांच प्रकार की अर्थ प्रकृतियों में से एक।
**कार्य-कर्त्ता** पुं० (सं) १-काम करने वाला। २-कर्मचारी।
**कार्यकारिणी** स्त्री० (सं) १-किसी विशिष्ट कार्य अथवा व्यवस्था आदि के निमित्त बनी हुई समिति २-प्रबन्ध-कारिणी।
**कार्यकारी** पुं० (सं) १-विशेष रूप से कोई काम करने वाला। २-किसी पदाधिकारी के छुट्टी जाने की अवस्था में उसके स्थान में कार्य करने वाला। कार्यवाहक। (ऐक्टिंग)।
**कार्य-काल** पुं० (स) १-कार्य करने का अवसर या समय। २-किसी पद पर रहने का काल या समय।
**कार्य-कुशल** वि० (स) किसी विशिष्ट कार्य में होशियार, दक्ष।
**कार्य-क्रम** पु० (सं) १-होने अथवा किये जाने वाले कार्यों का क्रम। २-इस प्रकार क्रम बनाने वाली कार्यों की सूची। (प्रोग्राम)।
**कार्य-क्षमता** स्त्री० (सं) किसी कार्य को भली भाँति करने का ढंग, कौशल या सामर्थ्य। (एफीशिएन्सी)
**कार्य-ग्रहण-काल** पु० (सं) जो किसी संस्था आदि में या किसी पद पर नियुक्त होने के पश्चात् कार्य करने का समय। (ज्वाइनिंग-टाइम)।
**कार्य-दिवस** पुं० (सं) दिन के समय में कोई व्यक्ति जितनी देर कार्य करता रहता है और जितनी गिनती एक पूरे दिन में होती है। (वर्किंग-डे)।
**कार्य-परिषद्** स्त्री० (सं) किसी काम, कारवाई या

आंदोलन संचालन, नियंत्रण आदि करने के निमित्त बनाई गई परिषद्। (काउंसिल ऑफ-एक्शन)।
**कार्य-पालन** पुं० (सं) किसी अधिकारी आदि के बताये हुए कार्य को भली प्रकार से पूर्ण करना, निष्पादन। (एकजिक्यूशन)।
**कार्यपालिका** स्त्री० (सं) किसी राज्य अथवा संस्था के प्रबन्ध, शासन अथवा कार्य साधन से सम्बन्ध रखने वाला। (एकजिक्यूटिव)।
**कार्यपालिका-शक्ति** स्त्री० (स) विधि, आज्ञप्ति, न्यायिक अभिनिर्णय आदि को कार्य में परिणत कराने अथवा पालन कराने की शक्ति या क्षमता। (एग्जीक्यूटिव-पावर)।
**कार्य-प्रणाली** स्त्री० (स) किसी कार्य को करने का ढंग, प्रक्रिया।
**कार्य-भार** पुं० (स) किसी काम या पद का दायित्व। (चार्ज)।
**कार्य-भारी** पुं० (सं) वह जिसने किसी काम या पद से सम्बन्धित कर्त्तव्यपालन का दायित्व अपने ऊपर लिया हो। (इन्चार्ज)।
**कार्य-वाहक** वि०(सं) किसी विभाग से सम्बद्ध विशिष्ट कार्यों से सम्बन्ध रखने वाला। (डीलिंग)।
**कार्यवाही** पुं० (सं) कार्य भार उठाने अथवा करने वाला। स्त्री० कोई कार्य करने की प्रक्रिया। (प्रोसिडिंग्ज)।
**कार्य-विवरण** पुं० (सं) किसी सभा, समिति में होने वाले कार्य का विवरण। (प्रोसीडिंग)।
**कार्य-समिति** स्त्री० (स) कार्यकारिणी।
**कार्य-सूची** स्त्री० (सं) देखो 'कार्यावली'।
**कार्य-स्थगन-प्रस्ताव** पुं० (स) संसद् विधान-सभा आदि में किसी अत्यन्तावश्यक तथा गम्भीर सार्वजनिक महत्व के प्रश्न पर विचारार्थ रखा जाने वाला प्रस्ताव जिसमें कहा जाता है कि दैनिक कार्यक्रम को छोड़कर पहले इसको लिया जाय (ऐडजर्नमेंट-मोशन)।
**कार्य-हेतु** पुं० (सं) वह कारण जो न्यायालय के सम्मुख विचारार्थ रखा जाय। (कॉज-आफ-एक्शन)
**कार्याधिकारी** पुं० (सं) वह अधिकारी जिस पर कोई विशेष काम या प्रबन्ध करने का भार हो (फ़ंक्शनरी)।
**कार्याध्यक्ष** पुं० (सं) सबके ऊपर रहकर किसी काम या उससे सम्बन्धित प्रबन्ध आदि को देखभाल करने वाला।
**कार्यान्वित** वि० (स) १-काम में लगा हुआ। २-प्रत्यक्ष कार्य के रूप में किया हुआ।
**कार्यार्थी** वि० (सं) १-कार्य की सिद्धि करने वाला २-कोई गरज रखने वाला।
**कार्यालय** पुं० (सं) काम करने का स्थान, दफ्तर। (ऑफिस)।
**कार्यावली** स्त्री० (सं) किसी सभा या समिति की बैठक में विचारणीय विषयों की सूची। (ऐजेण्डा)।
**कार्येक्षण** पुं० (सं) काम की निगरानी।
**कार्रवाई** स्त्री० देखो 'कार-रवाई'।
**कार्षापण** पुं० (स) एक प्रकार का प्राचीन भारतीय सिक्का।
**काल** पुं० (सं) १-समय, वक्त। २-अन्त समय, मृत्यु। ३-अवसर, मौका। ४-अकाल, दुर्भिक्ष। ५-शिव का एक नाम। ६-किसी एक समय से दूसरे समय तक की अवधि। (पीरियड)। ७-यमराज। ८-क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि वर्णित बात अथवा कार्य हो चुका है, हो रहा है अथवा होगा। (टेन्स)। क्रि० वि० (हि) कल।
**काल-कूट** पुं० (सं) एक भयानक विष।
**काल-कोठरी** स्त्री० (हि) अंधेरी और छोटी जेलखाने की कोठरी।
**काल-क्रम** पुं० (सं) कार्यों, घटनाओं आदि का वह क्रम जो उनके घटित होने के समय दृष्टि से लगाया जाता है। (क्रोनालॉजी)।
**कालक्षेप** पुं० (सं) १-समय बिताना। २-निर्वाह, गुजर।
**काल-खंड** पुं० (सं) निर्धारित समय की सीमा। (पीरियड)।
**काल-चक्र** पुं० (सं) १-समय का चक्र, जमाने की गर्दिश। २-एक अस्त्र।
**कालज्ञ** पुं० (सं) १-अवसर को पहचानने वाला। २-ज्योतिषी।
**काल-ज्ञान** पुं० (सं) १-स्थिति एवं अवस्था की जानकारी। २-अपनी मृत्यु का पहले से जान लेना।
**काल-दोष** पुं० (सं) कार्यों, वस्तुओं आदि का कालक्रम निश्चित करने में वह दोष जो उन्हें अपने निर्धारित समय से पूर्व अथवा कुछ बाद का मान लेने में होता है। (एनाक्रानिज्म)।
**काल-निशा** स्त्री० (सं) १-दीपावली की रात। २-घोर अंधेरी रात।
**काल-पुरुष** पुं० (स) १-कालरूप ईश्वर। २-काल।
**काल-फल** पुं० (सं) इन्द्रायन।
**कालबंजर** पुं० (हि) पुरानी परती भूमि।
**कालबूत** पुं० (हि) कलबूत।
**कालयापन** पुं० (सं) दिन काटना।
**काल-योग** पुं० (स) नियति; भाग्य।
**कालर** पुं० देखो 'कल्लर'। पुं० (अं) १-कुत्ते के गले का पट्टा। २-कोट, कमीज आदि के गले की पट्टी।

**कालरात, कालराति, कालरात्रि, कालरात्री** स्त्री० देखो 'कालनिशा'।

**काल-लोह, काल-लौह** पुं० (सं) इस्पात।

**काल-विपाक** पुं० (सं) १-किसी बात की अवधि अथवा समय पूरा होजाना। २-होनहार, होनी।

**कालसर्प** पुं० (हि) विषधर सर्प जिसके काटने से तुरन्त मृत्यु होजाय।

**काला** वि० (हि) १-कोयले के रङ्ग का, स्याह। २-बुरा कलङ्कित। ३-प्रचण्ड। पुं० (हि) काला सर्प।

**काला-आजार** पुं० (हि) ज्वर विशेष जिसमें रोगी का शरीर काला पड़ जाता है।

**काला-कलूटा** वि० (हि) बहुत काला।

**कालाग्नि** पुं० (सं) प्रलय की अग्नि।

**काला-चोर** पुं० (सं) १-भारी चोर। २-बहुत बुरा आदमी।

**कालातीत** वि० (सं) १-जिसका समय बीत गया हो विगत। २-निर्धारित समय बीत जाने पर दस्तावेज आदि का विधिक दृष्टि से बेकार होजाना। (टाइम-बार्ड)।

**काला-नमक** पुं० (हिं) काले रंग का नमक जो पाचक होता है, सोंचर।

**काला-नाग** पुं० (हिं) १-काला साँप। २-दुष्ट व्यक्ति

**कालानुक्रम** पुं० (हि) देखो 'काल-क्रम'।

**कालापानी** पुं० (हि) १-बंगाल की खाड़ी का वह भाग जहाँ पानी बहुत काला होता है। २-निकोबार अण्डेमान द्वीप का नाम।

**काला-बाजार** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ निर्धारित मूल्यों से अधिक दर पर आवश्यक वस्तुएँ मिलती हैं, (ब्लैक-मार्केट)।

**काला-बाजारी** वि० (हि) निर्धारित मूल्यों से अधिक दर पर वस्तुएँ बेचने वाला; काला-बाजार से धन कमाने वाला (ब्लैक-मार्केटियर)।

**काला-भुजंग** वि० (हिं) बहुत ही काला।

**कालावधि** स्त्री० (हि) १-एक निर्धारित समय से दूसरे नियत समय तक के मध्य का अंश या काल (पीरियड)। २-कोई कार्य परिपूर्ण करने के लिये निर्धारित समय (टाइम्स लिमिटेड)।

**कालास्त्र** पुं० (सं) वह बाण जिसके प्रहार से प्राणांत निश्चित हो।

**कालिंगड़ा** पुं० (हिं) संपूर्ण जाति का एक राग।

**कालिंदी** स्त्री० (सं) १-यमुना। २-अफीम।

**कालि** क्रि० वि० (हि) कल।

**कालिक** वि० (सं) १-किसी विशेष काल या समय से संबद्ध। २-सामयिक। ३-जिसका समय निश्चित हो। ४-रह-रहकर कुछ निश्चित समय पर होने-वाला (पीरिऑडिक)।

**कालिका** स्त्री० (सं) काली देवी।

**कालिख** पुं० (सं) १-कलौंछ। २-कलंक।

**कालिब** पुं० देखो 'कलबूत'।

**कालिमा** स्त्री० (सं) १-कालापन। २-कालिख। ३-अंधियारा। ४-कलंक।

**काली** स्त्री० (सं) १-चंडी। २-पार्वती। पुं० एक नाग जिसे यमुना में श्रीकृष्ण ने मारा था।

**काली-जबान** स्त्री० (हि+फा) जिस जबान से निकली हुई अशुभ बातें शुभ हो जायें।

**काली-जीरी** स्त्री० (हि) एक पौधा जिसकी फलियाँ औषधि रूप में प्रयुक्त होती हैं।

**काली-दह** पुं० (हि) यमुना में का एक कुण्ड जिसमें काली नाग रहता था यह वृन्दावन में है।

**कालीन** वि० (सं) किसी काल विशेष से सम्बद्ध; कालिक। पुं० (अ) मोटा और रोंयेदार बिछावन; गलीचा।

**काली-मिर्च** स्त्री० (हि) गोल मिर्च जो काले रंग की होती है।

**कालू** वि० (हि) काला।

**कालेज** पुं० (अ) महाविद्यालय।

**कालौंछ** स्त्री० (हि) कलौंछ; कालिख।

**काल्पनिक** वि० (सं) जिसकी कल्पना की गई हो; कल्पित।

**काल्ह, काल्हि** अव्य० (हि) कल।

**काव** सर्व० (हि) कोई।

**कावा** पुं० (फा) घोड़े को वृत्त में चक्कर कटाना।

**काव्य** पुं० (सं) १-कविता। २-कविता की पुस्तक।

**काव्य-लिंग** पुं० (सं) एक अर्थालङ्कार।

**काव्यार्थापत्ति** स्त्री० (सं) साहित्य में एक अलंकार।

**काश** पुं० (सं) १-काँस नामक घास। २-खाँसी (रोग)। अव्य० (फा) अच्छा होता यदि।

**काशमीर** पुं० देखो 'कश्मीर'।

**काशिका** स्त्री० (सं) काशीपुरी।

**काशिकी** स्त्री० (सं) वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि प्रकाश की सहायता से दृष्टि तथा दर्शक यन्त्र किस प्रकार कार्य करते हैं। (आप्टिक्स)।

**काशी** स्त्री० (सं) उत्तर भारत की एक पावन तथा पवित्र नगरी और पुरी; वाराणसी।

**काशी-करवट** पुं० (हि) काशी में एक स्थान जहाँ लोग मोक्ष की कामना के लिए आरे से कटकर मर जाते थे।

**काशीफल** पुं० (हि) कुम्हड़ा।

**काश्त** स्त्री० (फा) खेती।

**काश्तकार** पुं० (फा) कृषक; किसान।

**काश्तकारी** स्त्री० (फा) कृषिकर्म; खेती।

**काश्मीर** पुं० देखो 'कश्मीर'।

**काश्मीरी** वि०, पुं०, स्त्री० देखो 'कश्मीरी'।

काषाय वि० (सं) १-हड़; बहेड़ा आदि कसैली वस्तुओं में रंगा हुआ। २-गेरूआ।
काष्ठ पुं० (सं) १-काठ। २-ईंधन।
काष्ठा स्त्री० (सं) १-सीमा; हद। २-सर्वोच्च शिखर। ३-ओर; तरफ। ४-चन्द्रकला। ५-कला का ३० वाँ भाग।
कास पुं० (सं) खाँसी। पुं० (हि) काँस नामक घास
कासनी स्त्री० (फा) १-दवा के काम में आने वाला एक पौधा। २-इसके फूल का हलका नीला रंग।
कासा पुं० (फा) १-कटोरा। २-भीख माँगने का दरियाई नारियल का खप्पर।
कासार पुं० (सं) तालाब।
कासिब पुं० (अ) १-पत्रवाहक। २- सन्देसा लेजाने वाला, दूत।
काहँ अव्य० (हि) कहँ।
काह क्रि० वि० (हि) क्यों।
काहि सर्व० (हि) १-किसको। २-किससे।
काहिल वि० (अ) सुस्त; आलसी।
काहिली स्त्री० (अ) सुस्ती आलस्य।
काहु सर्व० (हि) देखो 'काहू'।
काहू सर्व० (हि) १-किसी। २-किसको। पुं० (फा) गोभी की तरह का एक पौधा।
काहे क्रि० वि० (हि) क्यों।
किं अव्य० देखो 'किम्'।
किंकर पुं० (सं) १-सेवक। २-राक्षसों की एक जाति
किंकर्त्तव्य-विमूढ़ वि० (सं) हक्का-बक्का, भौचक्का।
किंकिणी स्त्री० (सं) १-क्षुद्रघण्टिका। २-करधनी।
किंकिनी स्त्री० (हि) किंकिणी; करधनी।
किंगरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की छोटी सारंगी।
किंचन पुं० (सं) थोड़ी वस्तु।
किंचित् वि० (सं) कुछ; थोड़ा।
किंजल्क पुं० (सं) १-कमल केशर। २-कमल। वि० (स) कमल के पराग के रंग का।
किंतु अव्य० (सं) १-परन्तु। १-बल्कि; वरन्।
किंपुरुष पुं० (सं) १-किन्नर। २-एक प्राचीन मनुष्य जाति।
किंभूत वि० (सं) १-कैसा। २-अद्भुत। भौंड़ा।
किंवदन्ती स्त्री० (सं) अफवाह।
किंवा अव्य० (सं) या; अथवा।
किंशुक पुं० (सं) पलाश।
कि सर्व० (हि) १-क्या। २-किस तरह अव्य० (हि) १-एक संयोजक शब्द। २-इतने में। ३-या
किचकिच स्त्री० (हि) १-बकवाद। २-झगड़ा।
किचकिचाना क्रि० (हि) १-दाँत पीसना। २-दाँत पर दाँत रखकर दबाना।
किचकिचाहट, किचकिची क्रि० (सं) किचकिचाने का भाव।
किचड़ाना क्रि० (हि) (आँख में) कीचड़ भरना।
किचपिच, किचरपिचर स्त्री० (हि) १-भीड़भाड़। २-गिचपिच।
किछु वि० (हि) कुछ।
किटकिट स्त्री० (हि) किचकिच।
किटकिटाना क्रि० (हि) १-गुस्से से दाँत पीसना। २-खाते समय दाँत के नीचे कङ्कड़ी आना।
किटकिना पुं० (हि) ठेकेदार की ओर से दिया जाने वाला ठेका। २-युक्ति; तरकीब।
किटकिरा पुं० (हि) सोनारों का ठप्पा।
किट्ट, किट्टक पुं० (स) १-धातु की मैल। २-तेल में बैठी हुई मैल।
कित क्रि० वि० (हि) १-कहाँ। २-किधर। ३-ओर
कितक वि०, क्रि० वि० (हि) कितना।
कितना वि० (हि) १-किस मात्रा या गिनती का। २-बहुत अधिक। क्रि० वि० १-किस मात्रा में, कहाँ तक। २-अधिक।
किता पुं० (हि) १-कपड़े की काटछाँट, ब्योंत। २-ढंग, चाल। ३-संख्या।
किताब स्त्री० (अ) १-पुस्तक। २-बही।
किताबी वि० (अ) किताब सम्बन्धी, किताब का।
कितिक वि० (हि) कितना।
कितेक वि० (हि) १-कितना। २-बहुत।
कितेब स्त्री० (हि) किताब; पुस्तक।
कितै अव्य० (हि) कहाँ; किस जगह।
कितो, कितौ क्रि० वि० (हि) १-कहाँ। २-किधर।
कित्ति स्त्री० (हि) कीर्त्ति।
किधर क्रि० वि० (हि) किस ओर।
किधौं अव्य०(हि) १-या; अथवा। २-या तो; न जाने
किन सर्व० (हि) 'किस' शब्द का बहुवचन। क्रि० वि० (हि) १-क्यों न। २-चाहे। ३-क्यों नहीं। पुं० (हि) चिह्न।
किनका पुं० टूटा हुआ दाना; कण।
किनार पुं० (फा) किनारा।
किनारदार पुं० (फा) जिसमें किनारा हो।
किनारा वि० (फा) १-अन्तिम सिरा। २-तट, तीर। ३-पार्श्व, बगल। ४-कपड़े के छोर का भाग जो भिन्न रङ्ग का या बुनावट का होता है।
किनारी स्त्री० (हि) १-पतला गोटा। २-देखो 'किनारा'।
किनारे क्रि० वि० (हि) १-सीमा की ओर। २-तट पर। ३-पृथक।
किन्नर पुं० (सं) १-एक प्रकार के देवता जिनके मुख घोड़े के समान बनाये जाते हैं। २-गाने बजाने वाली एक जाति।
किन्नरी स्त्री० (सं) १-किन्नर जाति की स्त्री। २-एक

तरह का तँबूरा । ३-छोटी सारंगी ।

**किकायत** स्त्री० (अ) मितव्यय ।

**किफायती** वि० (अ) १-कम खर्चीला । २-सस्ता ।

**किबला** पु० (अ) १-वह दिशा जिस ओर मुह करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २-काबा । ३-सम्माननीय व्यक्ति । ४-पिता ।

**किबलानुमा** पु० (फा) दिग्दर्शन यन्त्र ।

**किम्** वि०, सर्व० (स) १-क्या ? २-कौनसा ।

**किम्पि** अव्य० (स) १-कोई । २-कुछ भी ।

**किमाकार** वि० (स) देखो 'किंभूत' ।

**किमि** क्रि० वि० (हि) कैसे ।

**किम्मत** स्त्री० (हि) चातुरी ।

**कियत्** क्रि० वि० (सं) कितना ।

**कियारी** स्त्री० (हि) क्यारी ।

**कियाह** पु० (स) लाल रंग का घोड़ा ।

**किरंटा** पु० (अं) छोटे दरजे का क्रिस्तान ।

**किरकिटी** स्त्री० (हि) किरकिरी ।

**किरकिरा** वि० (हि) कँकरीला ।

**किरकिराना** क्रि० (हि) १-किरकिरी पड़ने के समान पीड़ा होना । २-देखो 'किटकिटाना' ।

**किरकिरी** स्त्री० (हि) १-रेत अथवा किसी वस्तु का छोटा कण । २-अपमान; हेठी ।

**किरकिल** पु० ( ) गिरगिट ।

**किरकी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का गहना ।

**किरच** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की पतली तलवार जिसकी नोंक भोंक दी जाती । २-छोटा नुकीला टुकड़ा ।

**किरचा** पु० (हि) छोटा नुकीला टुकड़ा ।

**किरण** स्त्री० (सं) १-प्रकाश की रेखा; रश्मि । २-बादले की झालर ।

**किरण-केतु** पु० (सं) सूर्य ।

**किरण-चित्र** पु० (सं) किरणों की सहायता से आँखों की पुतलियों पर बनने वाला वह चिह्न जो किसी चमकदार रंगीन पदार्थ पर से सहसा दृष्टि हटाने पर भी कुछ समय तक बना रहता है ।

**किरण-पति, किरण-पाणि, किरणमाली** ० (सं) सूर्य ।

**किरन** स्त्री० (सं) देखो 'किरण' ।

**किरनारा** वि० (हि) किरणों वाला ।

**किरपा** स्त्री० (हि) कृपा ।

**किरपान** पु० (हि) कृपाण ।

**किरवाल** पु० (हि) तलवार ।

**किरमिच** पु० (हि) एक प्रकार का चिकना मोटा कपड़ा ।

**किरमिज** पु० (हि) १-हिरमजी रंग । २-इस रंग का घोड़ा ।

**किरराना** क्रि० (हि) क्रोध से दाँत पीसना ।

**किरावन, किरावार** पु० (हि) कृपाण, तलवार ।

**किरात** पु० (स) १-एक जंगली जाति । २-हिमालय पूर्वी प्रदेश । स्त्री० (हि) देखो 'करात' ।

**किराना** पु० (हि) पंसारी की दुकान से मिलने वाली वस्तुएँ ।

**किरानी** पु० (हि) १-भारतीय तथा यूरोपीय माता-पिता की सन्तान । २-लिपिक ।

**किराया** पु० (अ) भाड़ा ।

**किरायेदार** पु० (फा) किराये पर लेने वाला ।

**किरावल** पु० (हि) वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिए आगे जाती है ।

**किरासन** पु० (हि) मिट्टी का तेल ।

**किरिया** स्त्री० (हि) १-शपथ । २-श्राद्ध आदि कार्य ।

**किरीट** पु० (सं) सिर पर बाँधने का एक आभूषण ।

**किरीरा** स्त्री० (हि) क्रीड़ा ।

**किरोध** पु० (हि) क्रोध ।

**किरोर** पु० (हि) देखो 'करोड़' ।

**किरोलना** क्रि० (हि) खुरचना ।

**किर्च** स्त्री० (हि) देखो 'किर्च' ।

**किल** अव्य० (सं) १-वास्तव में । २-निश्चय ।

**किलक** स्त्री० (हि) किलकारी ।

**किलकना** क्रि० (हि) किलकारी मारना ।

**किलकारना** क्रि० (हि) जोर से आवाज करना ।

**किलकारी** स्त्री० (हि) हर्ष ध्वनि ।

**किलकिंचित** पु० (स) वह हाव-भाव जो नायक के समागम से प्रमुदित होकर स्मितहास, भय, क्रोधादि प्रकट करती है ।

**किलकिल** स्त्री० (हि) झगड़ा, किचकिच ।

**किलकिला** स्त्री० (स) हर्षसूचक ध्वनि, किलकारी । पु० १-एक समुद्र का नाम । २-समुद्र में लहरों का घोर शब्द । ३-एक प्रकार की चिड़िया ।

**किलकिलाना** क्रि० (हि) १-किलकारी मारना । २-चिल्लाना । ३-झगड़ा करना ।

**किलकिलाहट** स्त्री० (हि) किलकारी ।

**किलना** क्रि० (हि) १-कीला जाना । २-वश में किया जाना । ३-गति का रोका जाना ।

**किलनी** स्त्री० (हि) गाय, कुत्तों आदि की देह से चिमटने वाला कीड़ा ।

**किलबिलाना** क्रि० (हि) कुलबुलाना ।

**किललाई** स्त्री० (हि) चिल्लाहट ।

**किललाना** क्रि० (हि) चिल्लाना ।

**किलवाँक** पु० (देश) एक प्रकार का काबुली घोड़ा ।

**किलवाना** क्रि० (हि) १-कील ठुकवाना । २-जादू-टोना करवाना ।

**किलवारी** स्त्री० (हि) नाव की पतवार ।

**किलविष** पु० देखो 'किल्विष' ।

**किलविषी** वि० (हि) १-रोगी । २-पापी । ३-दोषी ।

**किला** पुं० (ग्र) दुर्ग; गढ़; कोट।
**किलात** पुं० (हि) किरात।
**किलाया, किलावा** पु० (हि) १-हाथी के गले का रस्सा जिसमें महावत पैर रखता है। २-हाथी के मस्तक का वह भाग जहाँ महावत बैठता है।
**किलेदार** पुं० (ग्र+फा) किले में रहने वाली सेना का प्रधान अधिकारी, दुर्गरक्षक।
**किलेबंदी** स्त्री० (फा) १-दुर्ग निर्माण। २-सेना की श्रेणियों को मोरचे पर विशेष नियमानुसार खड़ा करना।
**किलोल** पु० देखो 'कलोल'।
**किल्लत** स्त्री० (ग्र) १-कमी। २-तंगी। ३-दुर्लभता।
**किल्ला** पुं० (हि) खूँटा।
**किल्ली** स्त्री० (हि) १-खूँटी; मेख। सिटकनी। ३-कल, पेंच आदि चलाने की मुठिया।
**किल्विष** पुं० (स) १-पाप। २-रोग। ३-दोष।
**किल्विषी** वि० (हि) १-पापी। २-रोगी। ३-दोषी।
**किवाँच** पुं० (हि) देखो 'केवाँच'।
**किवाड़, किवार** पुं० (हि) पट; कपाट।
**किशमिश** पुं० (फा) सुखाया हुआ छोटा अंगूर।
**किशमिशी** वि० (फा) १-जिसमें किशमिश हो। २-किशमिश के रंग का।
**किशल, किशलय** पुं० (सं) नया निकला हुआ कोमल पत्ता।
**किशोर** पुं० (सं) १-ग्यारह से पंद्रह साल की उम्र तक का लड़का। २-पुत्र, बेटा।
**किशोरक** पुं० (सं) बछड़ा; बच्चा।
**किशोरी** स्त्री० (सं) ग्यारह से पंद्रह साल तक की बालिका।
**किश्त** स्त्री० (फा) शह (शतरंज)।
**किश्ती** स्त्री० (फा) १-नौका; नाव। २ एक प्रकार की छिछली थाली। ३-शतरंज का एक मोहरा जिसे हाथी भी कहते हैं।
**किश्तीनुमा** वि० (फा) नाव की शक्ल का।
**किष्किंध** पुं० (सं) मैसूर के निकटवर्ती प्रदेश का प्राचीन नाम।
**किष्किंधा** स्त्री० (स) किष्किंध प्रदेश की एक पर्वत-श्रेणी।
**किस** सर्व० (हि) 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर बनता है, जैसे- किसने, किसको।
**किसन** वि० (हि) कृष्ण।
**किसनई** स्त्री० (हि) खेती।
**किसबत** पुं० (ग्र) नाई के औजार रखने का थैला।
**किसबी** पुं० (हि) श्रमजीवी।
**किसल, किसलय** पुं० देखो 'किशलय'।
**किसान** पुं० (हि) खेतिहर, कृषक।
**किसानी** स्त्री० (हि) कृषिकर्म, खेती।
**किसिम** स्त्री० (हि) देखो 'किस्म'।
**किसी** सर्व०, वि० (हि) 'कोई' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर होता है।
**किसुन** पुं०(हि) कृष्ण।
**किसू** सर्व० (हि) किसी।
**किस्त** स्त्री० (ग्र) १-अंश, भाग। २-ऋण को थोड़ा-थोड़ा करके देने की क्रिया। (इंस्टालमेंट)।
**किस्तबंदी** स्त्री० (फा) किस्त के रूप में रुपया चुकाने का तरीका।
**किस्तवार** क्रि० वि० (फा) १-किस्त के नियमानुसार। २-प्रत्येक किस्त पर।
**किस्ती** वि० (ग्र) किस्त सम्बन्धी, किस्त का। पुं० किस्तों पर ऋण लेने की एक रीति जिसमें रुपये ब्याज सहित अदा किये जाते हैं।
**किस्म** स्त्री० (ग्र) १-प्रकार; भाँति। २-ढंग; तर्ज।
**किस्मत** स्त्री० (ग्र) १-भाग्य; प्रारब्ध। २-प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों। (कमिश्नरी)।
**किस्सा** पुं०(ग्र) १-कहानी। २-वृत्तान्त। ३-झगड़ा-बखेड़ा।
**किहि** सर्व० (हि) १-किसका। २-किसे।
**कींगरी** स्त्री० (हि) किंगरी; बीना।
**की** अव्य० (हि) १-वा; या; फिर। २-क्या?।
**कीक** पुं० (हि) चीत्कार; चीख।
**कीकट** पुं०(सं) १-मगध देश का प्राचीन नाम। २-इस देश का निवासी। ३-घोड़ा।
**कीकना** क्रि० (हि) चिल्लाना; चीत्कार करना।
**कीकर** पुं० (हि) बबूल नामक वृक्ष।
**कीका** पुं० (हि) घोड़ा।
**कीकान** पुं० (देश) १-कोंकण देश। २-इस देश का घोड़ा। ३-घोड़ा।
**कीच, कीचड़** पुं० (हि) १-पानी में मिली धूल या मिट्टी, कर्दम, पंक। २-आँख का मल।
**कीट** पुं० (सं) कीड़ा-मकोड़ा। स्त्री० (हि) जमी हुई मैल।
**कीटपोष** पुं० (सं) रेशमी कीड़ा पालने का कार्य।
**कीट-भृंग** पुं० (सं) एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब दो अथवा कई वस्तुएँ बिलकुल एक रूप हो जाती हैं।
**कीट-भोजी** पुं० (सं) जीवन चलाने के लिए कीड़े-मकोड़े खाकर पेट भरने वाला जीव या जन्तु। (इनसेक्टिवोरस)।
**कीट-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें कीड़े-मकोड़ों की जीवनचर्या आदि का विवेचन होता है। (एन्टामॉलोजी)।
**कीटाणु** पुं० (सं) अति सूक्ष्म कीड़े जो आँख से दिखाई नहीं पड़ते और केवल सूक्ष्म दर्शक यन्त्र

द्वारा ही देखे जा सकते हैं। (जर्म्स)

**कीड़ना** *क्रि०* (हि) क्रीड़ा करना।

**कीड़ा** पुं० (हि) १-उड़ने अथवा रेंगने वाला जन्तु २-साँप।

**कीड़ी** *स्त्री०* (हि) च्यूँटी।

**किवउ, किवहुँ** *अव्य०* (हि) देखो 'किधौं'।

**कीनना** *क्रि०* (हिं) खरीदना।

**कीना** पुं० (फा) द्वेष।

**कीप** *स्त्री०* (हिं) बोतल आदि में तरल पदार्थ डालने की चोंगी।

**कीबो** *क्रि०* (हि) करें; कीजिए।

**कीमत** पुं० (अ) १-मूल्य। २-महत्व।

**कीमती** *वि०* (अ) बहुमूल्य।

**कीमा** पुं० (फा) छोटे-छोटे टुकड़ों का कटा हुआ मांस।

**कीमिया** *स्त्री०* (फा) रासायनिक क्रिया।

**कीर** पुं० (सं) तोता।

**कीरति** *स्त्री०* (हि) देखो 'कीर्त्ति'।

**कीरतिदा** *स्त्री०* (हि) यशोदा।

**कीर्ण** *वि०* (सं) १-बिखरा हुआ। २-छाया हुआ।

**कीर्तन** पुं० (सं) १-यशोगान। २-ईश्वर अथवा उसके अवतारों के सम्बन्ध का भजन, कथा आदि

**कीर्तनियाँ** पुं० (हि) कीर्तन करने वाला।

**कीर्त्ति** *स्त्री०* (सं) १-ख्याति; यश। २-पुण्य। ३-आर्या छन्द का एक भेद।

**कीर्तिदा** *स्त्री०* यशोदा।

**कीर्तिमान, कीर्त्तिवंत, कीर्त्तिवान** *वि०* (सं) यशस्वी।

**कीर्ति-स्तंभ** पुं० (सं) १-स्मारक रूप में बनाया गया स्तम्भ। २-वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्ति स्थायी हो।

**कील** *स्त्री०* (सं) १-लोहे या काठ की मेख। २-नाक का एक आभूषण, लौंग। ३-मुँहासे की मांस की कील। ४-मृतगर्भ।

**कीलक** पुं० (सं) १-कील, खूंटी। २-वह मन्त्र जिसके द्वारा किसी मन्त्र की शक्ति अथवा उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय। *वि०* कीलने वाला।

**कीलकांटा** पुं० (हि) कील; मेख आदि सामग्री। २-किसी कार्य को सम्पन्न करने के निमित्त समस्त आवश्यक और उपयोगी सामग्री।

**कीलन** पुं० (सं) १-बाँधना। २-कीलना।

**कीलना** *क्रि०* (हिं) १-कील लगाना या जड़ना। २-मन्त्र का प्रभाव रोकना या नष्ट करना। ३-कील जड़कर मुँह बन्द करना। ४-साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को डस न सके।

**कीला** पुं० (हिं) खूटा।

**कीलाक्षर** पुं० (सं) कील शब्दों के समान एक प्राचीन लिपि।

**कीलाल** पुं० (सं) १-पानी। २-रक्त। ३-पशु। ४-मधु। *वि०* बन्धन दूर करने वाला।

**कीली** *स्त्री०* (हि) १-खूंटी। २-धुरा। ३-अर्गल।

**कीश** पुं० (सं) बन्दर।

**कीसा** पुं० (फा) १-थैली। २-जेब।

**कुँअर** पुं० (हि) कुँवर।

**कुँआँ** पुं० (हि) कूआँ।

**कुँआरा** *वि०* (हि) अविवाहित।

**कुँई** *स्त्री०* (हि) कुमुदिनी।

**कुंकुम** पुं० (सं) १-केसर। २-रोली।

**कुंचन** पुं० (सं) सिकुड़ना।

**कुंचिका** *स्त्री०* (सं) १-ताली; कुंजी। २-बाँस की कमची या टहनी।

**कुंचित** *वि०* (सं) १-टेढ़ा। २-घूँघर वाले (बाल)।

**कुंची** *स्त्री०* (हिं) कुंजी, ताली।

**कुंज** पुं० (सं) लताच्छादित स्थान या मंडप।

**कुंजक** पुं० (हि) कंचुकी।

**कुंज-गली** *स्त्री०* (हि) १-बगीचों में लताओं से आच्छादित पगडंडी। २-पतली तंग गली।

**कुंजड़ा** पुं० (हि) शाक, तरकारी बेचने वाली एक जाति।

**कुंजर** पुं० (सं) १-हाथी। २-बाल। ३-आठ की संख्या। *वि०* श्रेष्ठ।

**कुंजल** पुं० (हि) देखो 'कुंजर'।

**कुंज-बिहारी** पुं० (स) श्रीकृष्ण।

**कुंजित** *वि०* (सं) कुंजों से युक्त।

**कुंजी** *स्त्री०* (हि) १-चाभी; ताली। २-पुस्तकी टीका

**कुंठित** *वि०* (सं) १-कुंद; गुठला। २-मंद।

**कुंड** पुं० (स) १-छोटा तालाब। २-मिट्टी का गहरा और बड़ा बरतन जिसका चौड़ा मुँह होता है। ३-हवन के लिए खोदा गढ़ा या पात्र। ४-जारज लड़का।

**कुंडल** पुं० (सं) १-कान का गहना। २-कनफटे साधुओं की कान की मुद्रा। ३-गोल घेरा, मंडल। ४-गोलाकार या चक्कर के रूप में लपेटी हुई रस्सी या तार, (कॉयल)। ५-सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर दीख पड़ने वाला मंडल। (हैलो)।

**कुंडलित** *वि०* (सं) गोलाकार या चक्कर के रूप में लपेटा हुआ। (कॉयल्ड)।

**कुंडलिनी** *स्त्री०* (हिं) एक कल्पित अंग जो मूलधार और सुषुम्ना नाड़ी के नीचे माना जाता है। (हठ-योग)।

**कुंडलिया** *स्त्री०* (हि) दोहे और रोला से बनने वाला एक छंद।

**कुंडली** *स्त्री०* (सं) १-कुंडलिनी। २-गेंडुरी। ३-गोलाकार साँप के बैठने की मुद्रा। ४-ज्योतिष में ग्रहों की स्थिति सूचित करने वाला चक्र जिसमें

रह पर होते हैं। (जन्मकाल)।
ा पुं० (हिं) १–बड़ा मटका। २–साँकल अट-ाने का कोंढा।
ी स्त्री० (हिं) १–प्याले की तरह का पत्थर या मिट्टी का बरतन। २–कुंड। ३–साँकल। (किवाड़ ी।
त पुं० (सं) भाला, बरछी।
तल पुं० (सं) १–सिर के बाल। २–बहुरूपिया।
तलवाही पुं० (सं) भाला बरदार।
ती स्त्री० (सं) युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की ाता का नाम। स्त्री० (हिं) बरछी, भाला।
द पुं० (सं) १–एक प्रकार का पौधा जिसके फूल जूही के समान होते हैं। २–कनेर का पेड़। ३–कमल। पुं० (हिं) खराद। वि० (फा) १–कुंठित, ुठला। २–मंद।
दन पुं० (हिं) १–अच्छी जाति का सोना। २–शुद्ध स्वच्छ सोने का पत्तर। वि० १–तपे हुए सोने के समान शुद्ध और निर्मल। २–कांतियुक्त। ३–स्वस्थ, ४–सुन्दर।
दा पुं० (फा) २–लकड़ी का विना चीरा मोटा टुकड़ा २–बंदूक का पिछला मोटा भाग। ३–किवाड़ों का कोंढ़ा। ४–दस्ता; मूठ। ५–काठ की बड़ी मुंगरी। ६–डैना; पंख। ७–खोआ (दूध का)।
ंदी स्त्री० (हिं) १–धुले या रंगे कपड़े को तह करके मोगरी से कूटने और उसकी सिकुड़न दूर करने की क्रिया। २–खूब मारना।
ुंदीगर पुं० (हिं) कुन्दी करने वाला कारीगर।
ुंभ पु० (सं) १–मिट्टी का घड़ा। २–मस्तक। ३–हाथी के मस्तक के दोनों ओर का ऊपरी भाग। ४–एक राशि। ५–प्रति बारहवें वर्ष पड़ने वाला एक पर्व
ुंभक पुं० (सं) प्राणायाम में साँस अंदर लेकर वायु को रोकना।
ुंभकार पुं० (सं) १–कुम्हार। मुर्गा।
ुंभकारी स्त्री०(हि) १–कुम्हार को स्त्री। २–मिट्टी के बरतन खिलौना आदि बनाने का काम (पौटरी)।
ुंभज पुं० (सं) अगस्त्य मुनि। वि० (सं) घड़े से उत्पन्न होने वाला।
ुंभी पुं० (सं) १–हाथी। २–मगर। ३–एक कल्पित राक्षस जो बच्चों को दुःख देता है। ४–कुम्भीपाक। स्त्री० (सं) १–छोटा घड़ा। २–जलकुम्भी।
कुंभीनस पुं०(स) १–सर्प। २–रावण।
कुंभीपाक पुं० (सं) एक नरक का नाम।
कुंभीर पुं० (सं) घड़ियाल।
कुंवर पुं० (हि) १–लड़का। २–पुत्र। ३–राजपुत्र।
कुंवरेटा पुं० (हिं) छोटा लड़का।
कुंवारा वि० (हिं) अ-विवाहित।
कुंहकुंह पुं० (हिं) कुंकुम।
कु उप० (सं) संज्ञा के आगे लगकर यह विशेषण का काम देता है, जिस शब्द के पहले यह लगता है अर्थ में 'नीच' या 'कुत्सित' का भाव आ जाता है। जैसे–पुत्र, कु-पुत्र।
कु-अंक पुं० (सं) १–दूषित अंक। २–दुर्भाग्य।
कुअर-बिलास पुं० (हि) १–एक प्रकार का धान। २–इस धान का चावल।
कुआँ पुं० (हिं) कूप, कूआँ।
कुआर पुं० (हि) आश्विन मास।
कुइयाँ, कुंई स्त्री० (हिं) १–कम घेरे वाला कुआँ। २–कुमुदिनी।
कुकड़ी स्त्री० (हिं) सूत की अंटी।
कुकनुस पुं० (हिं) एक पक्षी।
कुकरा पुं० (हिं) कुत्ता।
कुकरी स्त्री० (हि) १–कुत्ती। २–कुकड़ी।
कु-कर्म पुं० (सं) बुरा काम।
कु-कर्मी वि० (हिं) १–बुरा काम करने वाला। १–पापी
कुकुर-मुत्ता पुं० (हिं) खुमी।
कुकुही स्त्री० (हिं) वन मुर्गी।
कुक्कुट पुं० (स) मुर्गा।
कुक्कुर पुं० (सं) कुत्ता।
कुक्ष पुं० (सं) १–उदर; पेट।
कुक्षि स्त्री० (सं) १–उदर। २–कोख।
कु-खेत पुं० (हिं) कुठांव; बुरा स्थान।
कु-ख्यात वि० (स) बदनाम।
कु-ख्याति स्त्री० (सं) निन्दा; बदनामी।
कु-गति स्त्री० (सं) दुर्दशा।
कु-गहनी स्त्री० (हिं) हठ; जिद।
कुघा स्त्री० (हि) दिशा; ओर; तरफ।
कु-घात पु० (हिं) १–बेमौका। २–छल, कपट।
कुच पुं० (सं) स्तन; छाती।
कुचकुचवा पुं० (हि) उल्लू नामक पक्षी।
कुचकुचाना क्रि० (हिं) १–बार-बार कोंचना। २–थोड़ा कुचलना।
कु-चक्र पुं० (स) दूसरों को हानि पहुँचाने वाला गुप्त प्रयत्न या षड्यन्त्र।
कुचना क्रि० (हि) सिकुड़ना।
कुचलना क्रि० (हिं) १–किसी भारी वस्तु से जोर से दबाना। २–पैरों से रौंदना।
कुचला पु० (हिं) एक वृक्ष या उसके बीज जो औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं।
कुचाग्र पुं० (सं) स्तन का अग्र भाग।
कु-चाल स्त्री० (हिं) बुरा आचरण। २–दुष्टता।
कु-चालक वि० (सं) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत, ताप आदि का संचार सुगमता से न हो (बैड-कन्डक्टर)
कुचाली वि० (हिं) १–बुरे आचरण वाला। २–दुष्ट।
कुचाह स्त्री० (हिं) १–अमंगल बात। २–बुराई।

**कुची** स्त्री० (हिं) कुंजी, ताली।
**कुचील** वि० (हिं) मैला-कुचैला।
**कु-चेष्टा** स्त्री० (सं) १-हानि पहुंचाने का यत्न। २-कु-प्रयत्न।
**कुचैन** स्त्री० (हिं) दुःख। वि० (हिं) बेचैन।
**कुचैला** वि० (हिं) १-मैले कपड़ों वाला। २-मैला।
**कुच्छि** स्त्री० (हिं) कुक्षि। १-पेट। २-कोख।
**कुच्छित** वि० (हिं) कुत्सित।
**कुछ** वि० (हिं) १-जरा, थोड़ा सा। २-गण्यमान्य, प्रतिष्ठित। सर्व० कोई। पुं० १-अच्छी बात। २-काम की चीज।
**कु-जन्त्र** पुं० (हिं) टोटका; टोना।
**कुज** पुं० (सं) मंगल ग्रह।
**कु-जाति** पुं० (सं) १-पतित। २-जाति से निकला हुआ।
**कुजोग** पुं० (हिं) बुरा योग या अवसर।
**कुट** स्त्री० (सं) १-घर। २-कोट। ३-कलश। पुं० (हिं) १-कूट कर बनाया हुआ। २-कालकूट। स्त्री० (हिं) एक झाड़ी जिसकी जड़ औषधि रूप में प्रयुक्त होती है।
**कुटकी** स्त्री० (हिं) उड़ने वाला एक कीड़ा।
**कुटनई, कुटन-पन** पुं० (हिं) १-कुटनी का काम। २-झगड़ा कराने का काम।
**कुटना** पुं० (हिं) १-स्त्रियों को फुसला कर पर-पुरुष से मिलाने वाला। २-लोगों में झगड़ा कराने वाला ३-वह हथियार जिससे कोई वस्तु कूटी जाय। क्रि० (हिं) कूटना।
**कुटनाना** क्रि० (हिं) १-किसी स्त्री को फुसलाकर पर-पुरुष से मिलाना। २-बहकाना।
**कुटनापन, कुटनापा** पुं० (हिं) देखो 'कुटन-पन'।
**कुटनी** स्त्री० (हिं) १-किसी स्त्री को फुसलाकर पर पुरुष से मिलाने वाली, दूती। २-कलह कराने वाली स्त्री
**कुटप** पुं० (सं) १-घर के पास का बगीचा। २-कमल
**कुटवाना** क्रि० (हिं) कूटने में तत्पर करना।
**कुटाई** स्त्री० (हिं) १-कूटने का काम। २-कूटने की मजदूरी।
**कुटिया** स्त्री० (हिं) कुटी; झोंपड़ी।
**कुटिल** वि० (सं) १-टेढ़ा, वक्र। २-छल्लेदार। ३-कपटी।
**कुटिलता** स्त्री० (सं) १-टेढ़ापन। २-कपट।
**कुटिलाई** स्त्री० (हिं) कुटिलता।
**कुटी** स्त्री० (सं) झोंपड़ी।
**कुटी-उद्योग** पुं० (सं) देखो 'कुटीर-उद्योग'।
**कुटीर** पुं० (सं) कुटिया; झोंपड़ी।
**कुटीर-उद्योग, कुटी-शिल्प** पुं० (सं) अपने घर में बैठकर किये जाने वाले उद्योग-धंधे। (काटेज-इंडस्ट्री।
**कुटुंब** पुं० (सं) परिवार, कुनबा।
**कुटुम** पुं० (हिं) कुटुंब, परिवार।
**कु-टेक** स्त्री० (हिं) अनुचित हठ या जिद।
**कु-टेव** स्त्री० (हिं) बुरी आदत।
**कुट्टन** पुं० (सं) १-कूटना। २-पीसना ३-काटना।
**कुट्टनी** स्त्री० (सं) कुटनी।
**कुट्टनीय** वि० (सं) कूटे जाने योग्य।
**कुट्टनीयता** स्त्री० (सं) कूट कर फैलाये जाने के योग्य होने का गुण अथवा विशेषता। (मैलिऐबिलिटी)।
**कुट्टमित** पुं० (सं) समागम काल में स्त्रियों का आनन्द लेते हुए भी मिथ्या दुःख चेष्टा प्रदर्शित करना।
**कुट्टी** स्त्री० (हि) १-छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ चारा। २-कटा या सड़ाया हुआ कागज। ३-मित्रता टूटने का द्योतक शब्द।
**कुठला** पुं०(हि) मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें अन्न रखते हैं।
**कुठाँव** स्त्री० (हि) बुरी ठौर या जगह।
**कुठार** पुं० (सं) १-कुल्हाड़ी। २-फरसा।
**कुठार-पाणि** पुं० (सं) परशुराम।
**कुठाराघात** पुं०(सं) १-कुल्हाड़ी का घाव। २-घातक चोट।
**कुठाली** स्त्री० (हि) सोना चाँदी गलाने की घरिया जो मिट्टी की होती है।
**कुठाहर** पुं० (हि) देखो 'कु ठौर'।
**कुठिला** पुं० (हि) कुठला।
**कु-ठौर** पुं० (हि) १-बुरी जगह। २-बे-मौका।
**कुडबुड़ाना** क्रि० (हिं) मन में कुढ़ना।
**कुड़मल** पुं० (हि) कली।
**कुडव** पुं० (सं) अन्न का एक मान, जो बारह मुट्ठी के बराबर होता है।
**कुड़ा** पुं० (हि) इन्द्रजव के बीज, कोरैया।
**कु-डौल** वि० (हि) बेडौल; भद्दा।
**कु-ढंग** पुं० (हि) बुरी रीत या ढग, कुचाल। वि० १-कुढंगा। २-कुढंगी।
**कु-ढंगा** वि० (हि) १-उजड्ड। २-बे-ढंगा।
**कु-ढंगी** वि० (हि) बुरे चाल-चलन वाला।
**कुढ़, कुढ़न** स्त्री० (हिं) मन ही मन होने वाला दुःख, खीझ।
**कुढ़ना** क्रि० (हि) १-खीझना। २-जलना।
**कु-ढब** वि० (हि) १-बे-ढब। २-कठिन। पुं० बुरी आदत।
**कु-ढर** वि० (हिं) १-जो अच्छी प्रकार से न ढला हो २-भद्दा।
**कु-ढ़ाना** क्रि० (हिं) १-खिझाना। २-चिढ़ाना। ३-जलाना।
**कुणक** पुं० (सं) पशु का नवजात बच्चा।
**कुणप** पुं० (सं) १-शरीर। २-लाश। ३-भाला

**कुतका** पुं० (हि) १-गतका। २-मोटा डंडा।
**कुतना** क्रि० (हि) कूता जाना।
**कुतरना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का कोई अंश दाँतों से काटा जाना। २-बीच ही में से कुछ अंश उड़ा लेना।
**कु-तर्क** पुं० (सं) बुरा तर्क, वितण्डा।
**कु-तर्की** पुं० (हि) बकवादी।
**कुतवार, कुतवाल** पुं० (हि) कोतवाल।
**कुताही** स्त्री० देखो 'कोताही'।
**कुतिया** स्त्री० (हि) कुत्ते की मादा।
**कुतुब** पुं० (अ) ध्रुवतारा।
**कुतुब-नुमा** पुं० (अ) दिग्दर्शक यन्त्र।
**कुतूहल** पुं०(सं) १-किसी वस्तु या व्यक्ति को देखने, उसके सम्बन्ध में कोई बात सुनने की उत्कट इच्छा २-कौतुक, खेलवाड़। ३-आश्चर्य।
**कुत्ता** पुं० (हि) १-भेड़िये की जाति का एक प्रसिद्ध पशु जो पाला जाता है; श्वान। २-किसी यन्त्र का वह पुरजा जो किसी चक्कर को पीछे घूमने से रोकता है। ३-लपटौंआ नामकी घास। ४-बन्दूक का घोड़ा। ५-नीच व्यक्ति। ५-लकड़ी का वह टुकड़ा जो दरवाजे को बन्द करने के लिए लगाते है
**कुत्ती** स्त्री० (हि) कुतिया।
**कुत्र** अव्य० (सं) कहाँ।
**कुत्सा** स्त्री० (स) निन्दा।
**कुत्सित** वि० (स) १-नीच। २-निन्दित। ३-बुरा।
**कुदकना** क्रि० (हि) कूदना।
**कुदरत** स्त्री० (अ) १-प्रकृति; निसर्ग। २-शक्ति; सामर्थ्य। ३-ईश्वरीय शक्ति। ४-रचना।
**कुदरती** वि० (अ) प्राकृतिक।
**कुदरा** पुं० (हि) कुदाल।
**कु-दर्शन** वि० (सं) कुरूप।
**कुदलाना** क्रि० (हि) कूदते हुए चलना।
**कुदाँई** वि० (हि) विश्वासघाती।
**कुदाँव** पुं० (हि) १-कुघात। २-दगा। ३-संकट की स्थिति। ४-दुर्गम स्थान। ५-मर्मस्थल।
**कुदान** पुं० (सं) १-बुरा दान। २-कुपात्र या अयोग्य को दान। स्त्री० (हि) १-कूदने की क्रिया या भाव। २-वह दूरी जो एक बार कूदने से हो। ३-कूदने का स्थान।
**कुदाना** क्रि० (हि) कूदने में प्रवृत्त करना।
**कुदाम** पुं० (हि) खोटा रुपया।
**कुदावँ** पुं० (हि) देखो 'कुदाँव'।
**कुदार** स्त्री० (हि) देखो 'कुदाल'।
**कुदारी** स्त्री० (हि) देखो 'कुदाली'।
**कुदाल** स्त्री० (हि) मिट्टी खोदने का लोहे का एक औजार।
**कुदाली** स्त्री० (हि) छोटी कुदाल।
**कु-दिन** पुं० (सं) बुरे दिन।
**कु-दिष्ट** स्त्री० (हि) बुरी नजर।
**कु-दृष्टि** स्त्री० (सं) पाप-दृष्टि।
**कुदेव** पुं० (सं) राक्षस।
**कुधर** पुं० (हि) १-पर्वत। २-शेषनाग।
**कुनकुना** वि० (हि) गुनगुना।
**कुनना** वि० (हि) १-खरादना। २-छीलना, खुरचना
**कुनबा** पुं० (हि) परिवार।
**कुनबी** पुं० (हि) कुर्मी नामक जाति।
**कुनह** स्त्री० (हि) १-मन में मोटाव। २-पुराना वैर
**कुनाई** स्त्री० (हि) १-(खरादा हुआ) बुरादा। २-खरादने का काम या उजरत।
**कु-नाम** पुं० (स) बदनामी।
**कुनित** वि० (हि) बजता हुआ, क्वणित।
**कुनैन** स्त्री० (हि) सिनकोना नाम वृक्ष की छाल का सत जो शीत ज्वर में दिया जाता है।
**कु-पंथ** पुं० (हि) १-बुरा मार्ग। २-निषिद्ध आचरण। ३-बुरा मत।
**कु-पढ़** वि० (हि) अनपढ़।
**कु-पथ** पुं० (स) १-बुरा मार्ग। २-निषिद्ध आचरण पुं० (हि) कुपथ्य।
**कु-पथ्य** पुं० (सं) बद-परहेजी।
**कुपना** क्रि० (हि) क्रोध करना।
**कु-पाठ** पुं० (स) बुरी सलाह।
**कु-पात्र** वि० (सं) १-अयोग्य। २-नालायक। ३-शास्त्रानुसार जिसे दान देना निषिद्ध हो।
**कु-पार** पुं० (हि) समुद्र।
**कुपित** वि० (स) १-क्रुद्ध। २-अप्रसन्न।
**कुपुटना** क्रि० (हि) देखो 'कपटना'।
**कु-पुत्र** पुं० (स) कपूत।
**कुप्पा** पुं० (हि) घड़े के आकार का चमड़े का बना पात्र।
**कु-प्रबंध** पुं० (हि) बद-इन्तजामी।
**कु-प्रयोग** पुं० (सं) किसी वस्तु, पद या अधिकार का अनुचित प्रयोग। (एब्यूज)।
**कुफर** पुं० १-देखो 'कुफ्र'। २-दे० 'कु-फल'।
**कु-फल** पुं० (स) किसी बात या काम से उत्पन्न बुरा परिणाम या फल।
**कुफ्र** पुं० (अ) १-मुसलमानी धर्म से भिन्न धर्म। २-इसलाम धर्म के विरुद्ध बात।
**कुबंड** पुं० (हि) धनुष। वि० विकृतांग, विकलांग।
**कुब** पुं० (हि) कूबड़।
**कुबजा** स्त्री० देखो 'कुब्जा'।
**कुबड़ा** पुं० (हि) टेढ़ी पीठ वाला आदमी। वि० (हि) जिसकी पीठ टेढ़ी हो।
**कुबड़ी** स्त्री० (हि) १-टेढ़ी पीठ वाली स्त्री। २-वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो। ३-कुब्जा।

**कुबरी** स्त्री० देखो 'कुब्जा'।
**कु-बाक** पुं० (हि) कुवाच्य।
**कु-बानि** स्त्री० (हि) बुरी बान या लत; कुटेव।
**कुबानी** स्त्री० (हि) १-निंदित व्यवसाय। २-अशुभ बात।
**कुबुज** पुं० (हि) दे० 'कुब्जक'।
**कु-बुद्धि** वि० (स) मूर्ख। स्त्री० (सं) १-बुरी बुद्धि। २-मूर्खता। बुरी सलाह।
**कु-बुधि** स्त्री० (हि) कु-बुद्धि।
**कुबेला** स्त्री० (हि) १-बुरा समय। २-अनुपयुक्त समय।
**कु-बोल** पुं० (हि) अशुभ या अनुचित बात।
**कुब्ज** वि० (स) कुबड़ा।
**कुब्जक** पुं० (स) १-कुबड़ा। २-सफेद गुलाब का फूल।
**कुब्जा** स्त्री० (स) १-कुबड़ी स्त्री। २-श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाली एक कुबड़ी दासी।
**कुभाव** पुं० (स) बुरे भाव।
**कुमंडी** स्त्री० (हि) लचीली पतली टहनी।
**कुमंत्रणा** स्त्री० (सं) बुरी सलाह।
**कुमंत्रित** वि० (सं) १-जिसे बुरी सलाह दी गई हो। २-जिसके सम्बन्ध में अनुचित सलाह दी गई हो। (इल-एडवाइज्ड)।
**कुमइत** पुं० (हि) देखो 'कुम्मैत'।
**कुमक** स्त्री० (तु०) १-सहायता। २-सैनिक सहायता
**कुमकुम** पुं०(हि) १-केसर। २-रोली। ३- दे० 'कुमकुमा'।
**कुमकुमा** पुं० (तु०) १-लाख का पोला गोला जिसमें अबीर भर कर होली में परस्पर मारते हैं। २-काँच का बना पोला गोला।
**कुमाच** पुं० (हि) एक तरह का रेशमी कपड़ा।
**कुमार** पुं० (सं) १-पाँच साल तक का बालक। २-युवा अवस्था या उससे कुछ पहले की अवस्था का पुरुष। ३-पुत्र। ४-युवराज। ५-कार्त्तिकेय। ६-मंगल ग्रह। वि० (स) अविवाहित।
**कुमारग** पुं० (हि) दे० 'कुमार्ग'।
**कुमारतंत्र** पुं० (सं) बाल रोग के निदान तथा चिकित्सा सम्बन्धी शास्त्र।
**कुमारभृत्य** पुं० (स) १-प्रसव कराने की विद्या। २-गर्भिणी या नवजात शिशु की परिचर्या।
**कुमारामत्य** पुं० (सं) मंत्री का सहायक।
**कुमारिका, कुमारी** स्त्री० (सं) १-बारह वर्ष तक की कन्या। २-पार्वती। ३-दुर्गा। ४-घी-कुवार। ५-दक्षिण भारत का एक अन्तरीप। वि० अविवाहित लड़की।
**कुमारीपूजन** पुं० (सं) एक तंत्रोक्त पूजा जिसमें कुमारी लड़कियों का पूजन होता है।
**कुमार्ग** पुं० (सं) १-बुरी राह। २-अधर्म।
**कुमार्गी** वि० (स) १-बदचलन। २-अधर्मी।
**कुमीच** वि० (हि) बुरी हालत में मरने वाला।
**कुमुद** पुं० (सं) १-कुईं। २-लाल कमल। ३-चाँदी। ४-विष्णु।
**कुमुदिनी** स्त्री० (सं) श्वेत कमल का पौधा, कुईं।
**कुमेदान** पुं० हि) मुसलमानी राजत्व काल का एक सैनिक पद।
**कुमेरु** पुं० (सं) दक्षिणी ध्रुव।
**कुमेरु-ज्योति** स्त्री० दे० 'मेरुज्योति'।
**कुमोद** पुं० दे० 'कुमुद'।
**कुमोदनी, कुमोदिनी** स्त्री० दे० 'कुमुदनी'।
**कुम्मैत** पुं० (तु०) लाखी रंग का घोड़ा।
**कुम्हड़ा** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध बेल जिसके फल की तरकारी बनती है।
**कुम्हड़ौरी** स्त्री० (हि) कुम्हड़े के टुकड़ों के मेल से बनी बरी।
**कुम्हरा** पुं० (हि) कुम्हार।
**कुम्हलाना** क्रि०(हि) १-मुरझाना। २-सूखने लगना ३-प्रभाहीन होना।
**कुम्हार** पुं० (हि) मिट्टी के बरतन बनाने वाला।
**कुम्ही** स्त्री० (हि) जलकुम्भी।
**कुम्हेरी** स्त्री० (हि) कुम्हार का धन्धा।
**कु-यश** पुं० (सं) बदनामी।
**कुयोधन** पुं० (सं) दुर्योधन।
**कुरंग** पुं० (सं) हिरन। पुं० (हि) १-बुरा ढंग। २-कुम्मैत घोड़ा। वि० (हि) बदरंग।
**कु-रंगी** वि० (हि) कु-ढंगी।
**कुरंड** पुं० (हि) १-एक खनिज पदार्थ। २-एक पौधा
**कुर** पुं० (हि) कुल।
**कुरकी** स्त्री० दे० 'कुर्की'।
**कुरकुट** पुं० (हि) कुक्कुट; मुर्गा।
**कुरकुरा** वि० (हि) खरा और करारा।
**कुरकुरी** स्त्री० (हि) (कान की) पतली हड्डी।
**कुरज** पुं० (हि) एक पक्षी।
**कुरता** पुं० (तु) कमीज के समान एक पहनावा।
**कुरती** स्त्री० (हि) स्त्रियों का एक पहनावा।
**कुरना** क्रि० (हि) १-ढेर लगना या लगाना। २-उलझा दिया जाना।
**कुरबान** पुं० (अ) निछावर।
**कुरबानी** स्त्री० (अ) बलिदान।
**कुरमा** पुं० (हि) कुनबा।
**कुरमी** पुं० दे० 'कुर्मी'।
**कुरर** पुं० (सं) १-टिटहरी। २-क्रौंच पक्षी। ३-एक पक्षी जो गिद्ध की तरह होता है।
**कुररी** स्त्री० (हि) टिटहरी (पक्षी)।
**कुरलना** क्रि० (हि) पक्षियों का कलरव करना।

**कुरला** स्त्री० (हि) क्रीड़ा।
**कुरलाई** स्त्री० (हि) पक्षियों का कलरव, चहक।
**कु-रव** वि० (अ) बुरी बोली बोलने वाला। पुं० अशुभ शब्द।
**कुरवना** क्रि० (हि) ढेर लगाना।
**कुरवारना** क्रि० (हि) १-खोदना। २-खरोचना।
**कुरविंद** पुं० (ह) दे० 'कुरुविंद'।
**कुरसी** स्त्री० (हि) १-पीठ वाली ऊँची चौकी। २-वह ऊँचा चबूतरा जिस पर इमारत बनती है। ३-पीढ़ी
**कुरसीनामा** पुं० (हि) वंशवृक्ष।
**कुराई** स्त्री० (हि) बुरा रास्ता।
**कुरानी** वि० (हि) मुसलमान।
**कुराय** स्त्री० (हि) रास्ते का ऊँच-नीचा स्थान।
**कु-राह** स्त्री० (हि+फा) १-कुमार्ग। २-खोटा आचरण।
**कुराहर** पुं० (हि) कोलाहल।
**कुरिया** स्त्री० (हि) कुटिया।
**कुरियाल** स्त्री० (हि) पक्षियों का आनन्द से बैठकर पंख खुजलाना।
**कुरिल** पुं० (हि) १-चमड़े का व्यवसायी। २-जूता
**कुरिहार** पुं० (हि) कोलाहल।
**कुरी** स्त्री० (हि) १-छोटा टीला। २-खण्ड। ३-वंश ४-घर। ५-ढेर।
**कु-रीति** स्त्री० (स) १-कु-प्रथा। २-बुरी चाल।
**कुरु** पुं० (स) १- वैदिक कालीन आर्यों का एक कुल २-एक प्रदेश का नाम। ३-एक राजा जिसके वंशज कौरव थे।
**कुरुआ** पुं० (हि) दस छटाँक के बराबर का एक मान।
**कुरुई** स्त्री० (हि) बाँस या मूँज की छोटी डलिया।
**कुरुक्षेत्र** पुं० (सं) दिल्ली से ६० मील दूर एक स्थान जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था।
**कुरुखेत** पुं० (हि) कुरुक्षेत्र।
**कुरुम** पुं० (हि) कूर्म, कछुआ।
**कुरुविंद** पुं० (सं) १-माणिक नामक रत्न। २-दर्पण
**कुरूप** वि० (सं) १-बदसूरत। २-बेडौल।
**कुरेदना** क्रि० (हि) १-खुरचना। २-खोदना। ३-ढेर को इधर-उधर करना।
**कुरेर** स्त्री० (हि) कुलेल।
**कुरेलना** क्रि० (हि) कुरेदना।
**कुरैना** क्रि० (हि) ढेर लगाना।
**कुरैया** स्त्री० (हि) एक जंगली वृक्ष जिसके बीजों को इन्द्र-जौ कहते हैं।
**कुरौना** क्रि० (हि) ढेर लगाना।
**कुर्क** वि० (तु) जब्त।
**कुर्क-अमीन** (तु+फा) जायदाद कुर्क करने वाला सरकारी कर्मचारी।
**कुर्की** स्त्री० (तु) देन, अर्थ-दण्ड आदि की वसूली के लिए माल या जायदाद का जब्त किया जाना आसंजन।
**कुर्मी** पुं० (हि) १-तरकारी बोने और बेचने वाली एक जाति। २-गृहस्थ।
**कुर्री** स्त्री० (देश०) १-पटरा। २-कुरकुरी हड्डी। ३-गोल टिकिया।
**कुलंग** पुं० (फा) १-एक मटमैले रंग का पक्षी। २-मुर्गा।
**कुल** पुं० (सं) १-वंश; खानदान। २-जाति। ३-समूह। ४-घर। ५-वाम-मार्ग। वि० (अ) सब, सारा समस्त।
**कुलक** पुं० (सं) एक ही प्रकार की एक दूसरे से सम्बद्ध वस्तुओं का समूह। (सेट)।
**कुलकना** क्रि० (हि) प्रसन्न होकर उछलना।
**कुल-कलङ्क** पुं० (सं) कुल में दाग लगाने वाला; कुल की कीर्ति में धब्बा लगाने वाला।
**कुल-कानि** स्त्री० (स) कुल की मर्यादा।
**कुलकुलाना** क्रि० (हि) कुलकुल शब्द होना।
**कु-लक्षण** पुं० (सं) १-बुरा लक्षण। २-बद-चलनी।
**कुल-गारी** स्त्री० (हि) बदनामी की बात। पुं० कुलांगार
**कु-लच्छन** पुं० (हि) कु-लक्षण।
**कुलज** वि० (सं) कुल में उत्पन्न।
**कुलट** वि०, पु० (सं) १-व्यभिचारी। २-औरस के अलावा और तरह का पुत्र।
**कुलतंत्र** पुं० (सं) १-वह शासन प्रणाली जिसमें किसी कुल विशेष के नायक ही राज्य के शासन का सब कार्य करते थे (प्राचीन)। २-वह राज्य जिसमें थोड़े लोगों का शासन हो। (एरिस्टोक्रेसी)।
**कुल-तारन** वि० (हि) कुल की कीर्ति बढ़ाने वाला।
**कुल-तिलक** पुं० (सं) दे० 'कुल-भूषण'।
**कुलथी** स्त्री० (हि) एक तरह का मोटा अन्न।
**कुल-देवता** पुं० (स) वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परम्परा से चली आई हो।
**कुल-धर्म** पुं० (स) कुल की रीति।
**कुल-पति** पुं०(स) १-घर का मालिक। २-विद्यार्थियों का भरण, पोषण तथा शिक्षा देने वाला अध्यापक। ३-दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा देने वाला ऋषि। ४-विश्वविद्यालय या विद्यापीठ का मुख्य अधिष्ठाता। (चांसलर)।
**कुल-पूज्य** वि० (सं) जिस का मान किसी वंश में परंपरा से होता चला आया हो।
**कुलफ** पुं० (अ) ताला।
**कुलफा** पुं० (हि) एक तरह का साग।
**कुलफी** स्त्री० (हि) १-टीन का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर जमाते हैं। २-इस तरह जमा हुआ दूध या शरबत। ३-पेंच।
**कुलबुलाना** क्रि० (हि) १-छोटे-छोटे जीवों का सर-

कना। २-धीरे-धीरे हिलना-डोलना। ३-चञ्चल होना।

**कुलबुली** स्त्री० (हि) १-कुलबुलाने की क्रिया या भाव। २-मन में होने वाली किसी बात की आतुरता।

**कुल-बोरन** वि० (हि) कुल को डुबाने वाला।

**कुल-भूषण** पुं० (सं) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति।

**कुल-राज्य** पुं० (सं) दे० 'कुल-तन्त्र'।

**कुलवंत** वि० (सं) कुलीन।

**कुलवट** स्त्री० (हि) वंश की परम्परागत मर्यादा।

**कुलवधू** स्त्री० (सं) भले घर की स्त्री।

**कुलह** स्त्री० (हि) १-टोपी। २-शिकारी पक्षियों की आँख ढकने की टोपी।

**कुलहा** पुं० (हि) देखो 'कुलह'।

**कुलहिरी** स्त्री० दे० 'कुलही'।

**कुलही** स्त्री० (हि) १-बच्चों के ओढ़ने की टोपी। २-कन-टोप।

**कुलांगार** पुं० (सं) कुल को कलंकित करने वाला।

**कुलांच** स्त्री० (हि) छलांग; चौकड़ी।

**कुलांचना** क्रि० (हि) चौकड़ी भरना।

**कुलांट** स्त्री० (हि) चौकड़ी; छलांग।

**कुलाचार** पुं० (सं) किसी वंश में बहुत समय से होता आने वाला आचार या रीति-व्यवहार।

**कुलाधि** स्त्री० (हि) पाप।

**कुलाबा** पुं० (फा) १-किवाड़ का चौखटे में जकड़ने का कांटा। २-मोरी।

**कुलाल** पुं० (सं) कुम्हार।

**कुलाह** पुं० (सं) काले पैरों वाला भूरे रंग का घोड़ा स्त्री० (फा) वह टोपी जिसके ऊपर पगड़ी बांधी जाती है।

**कुलाहल** पुं० (हि) कोलाहल।

**कुलिंक** पुं० (सं) पक्षी; चिड़िया।

**कुलि** वि० (हि) दे० 'कुल'।

**कुलिक** पुं० (सं) १-दस्तकार; कारीगर। २-कुलीन पुरुष। ३-कुल का प्रधान पुरुष।

**कुलिश** पुं० (सं) १-हीरा। २-वज्र। ३-कुठार।

**कुलिस** पुं० (हि) कुलिश।

**कुली** पुं० (तु) बोझ ढोने वाला मजदूर।

**कुलीन** वि० (सं) खानदानी।

**कुलीन-तंत्र** पुं० (सं) १-देखो 'कुल-तन्त्र'। २-उच्च-कुल के लोगों द्वारा शासन चलाने की पद्धति। (आलिगॅर्की)।

**कुलेल** स्त्री० (हि) क्रीड़ा; कलोल।

**कुल्या** स्त्री० (सं) १-यातायात या सिंचाई के लिए किसी नदी या जलाशय में से निकाला गया जल-मार्ग; नहर। (कैनाल)। २-नाली।

**कुल्ल** वि० (हि) कुल; सब।

**कुल्ला** पुं० (हि) १-मुख साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकना; गरारा। २-जल्फ। ३-कुलाह ४-काली धारी वाला घोड़ा।

**कुल्ली** स्त्री० (हि) कुल्ला।

**कुल्हड़** पुं० (हि) पुरवा; चुक्कड़।

**कुल्हाड़ा** पुं० (हि) लकड़ी काटने का औजार।

**कुल्हाड़ी** स्त्री० (हि) छोटा कुल्हाड़ा।

**कुल्हिया** स्त्री० (हि) छोटा कुल्हड़।

**कुवंटन** पुं० (सं) अनुपयुक्त ढंग से किया गया वितरण। (माल-डिस्ट्रीब्यूशन)।

**कुवलय** पुं० (सं) १-नील-कमल। २-भू-मण्डल। नीली कोई।

**कुवलयापीड़** पुं० (सं) कंस का हाथी।

**कु-वाच्य** पुं० (सं) गाली।

**कु-विचार** पुं० (सं) बुरा विचार।

**कुवेर** पुं० (सं) इन्द्र के भंडारी।

**कु-व्यवहार** पुं० (सं) १-अनुचित व्यवहार। २-दे० कु-प्रयोग।

**कुश** पुं० (सं) १-काँस की जैसी घास। २-जल। ३-श्रीराम के एक पुत्र का नाम। ४-हल की फाल।

**कुशल** वि० (सं) १-प्रवीण। २-श्रेष्ठ। ३-पुण्यशील। ४-क्षेम, मंगल।

**कुशल-क्षेम** पुं० (हि) राजी-खुशी।

**कुशलता** स्त्री० (सं) १-चतुरता। २-प्रवीणता।

**कुशलाई, कुशलात** स्त्री० (हि) दे० 'कुशलता'।

**कुशा** स्त्री० (हि) कुश (घास)।

**कुशाग्र** वि० (सं) कुश की नोक-समान तीव्र, तीखा, तेज।

**कुशादा** वि० (फा) १-चारों ओर से खुला हुआ। २-लम्बा-चौड़ा।

**कुशासन** पुं० (सं) १-कुश (घास) का बना हुआ आसन। २-बुरा शासन।

**कुशीलव** पुं० (सं) १-कवि। २-नट।

**कुशेशय** पुं० (सं) कमल।

**कुश्ता** पुं० (फा) (धातुओं की) भस्म।

**कुश्ती** स्त्री० (फा) मल्लयुद्ध।

**कुष्ठ** पुं० (सं) कोढ़ (रोग)।

**कुष्ठालय** पुं० (सं) कोढ़ियों के उपचार या देख-रेख के लिए बनाया गया निवास-स्थान। (लेपर-एसाइलम)

**कुष्ठी** वि० (सं) कोढ़ी।

**कुष्मांड** पुं० (सं) कुम्हड़ा।

**कु-संग** पुं० (हि) बुरों का साथ।

**कु-संगति** स्त्री० (सं) कु-संग।

**कु-संस्कार** पुं० (सं) बुरा-संस्कार।

**कु-सगुन** पुं० (हि) असगुन।

**कु-समय** पुं० (सं) १-बुरा समय। २-अनुपयुक्त अवसर। ३-निर्धारित समय से आगे या पीछे का

समय।
**कुसल** वि० (हि) दे० 'कुशल'।
**कुसलई** स्त्री० (हि) कुशलता।
**कुसलक्षेम** पु० (हि) कुशल-क्षेम।
**कुसलाई, कुसलात** स्त्री० (हि) १-कुशलता। २-राजी-खुशी।
**कुसली** वि० (हि) कुशल। स्त्री० (हि) १-आम की गुठली। २-एक पकवान।
**कु-साइत** स्त्री० (हि) १-बुरी साइत, खराब मुहूर्त। २-बेमौका।
**कुसियारी** स्त्री० (हि) कोसा नामक रेशम।
**कुसी** पुं० (हि) हल की फाल।
**कुसुंभ** पु० (सं) १-कुसुम (पौधा)। २-केसर।
**कुसुंभा** पुं० (हि) १-कुसुम का रंग। २-एक मादक द्रव्य।
**कुसुंभी** वि० (हि) कुसुम के फूल का रंग, लाल।
**कुसुम** पु० (स) १-पुष्प। २-ऐसा गद्य जिसमें छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया गया हो। ३-(स्त्रियों का) रज। पु० (हि) पीले फूलों वाला एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है, बरें।
**कुसुम-चाप, कुसुमधन्वा, कुसुमबाण, कुसुम-शर** पु० (स) कामदेव।
**कुसुम-रेणु** पुं० (स) पराग।
**कुसुमांजली** स्त्री० (सं) फूलों से भरी अँजुली।
**कुसुमाकर** पुं० (स) १-बसन्त। २-बगीचा।
**कुसुमागम** पुं० (स) बसन्त।
**कुसुमायुध** पुं० (सं) कामदेव।
**कुसुमित** वि० (स) फूला हुआ; पुष्पित।
**कु-सूल** पु० (हि) कु प्रबन्ध।
**कुसेस, कुसेय** पु० (हि) कमल।
**कुहक** पु० (सं) १-धोखा। २-धूर्त्त। ३-मुरगे की बाँग। ४-जादूगर। स्त्री० (हि) १-कुहुकने की क्रिया या भाव। २-कोयल का मधुर शब्द।
**कुहकना** क्रि० (हि) कोयल, मोर आदि का मधुर स्वर में बोलना, पीकना।
**कुहकिनी** स्त्री० (हि) कोयल।
**कुहकुह** पुं० (हि) केसर; कुंकुम।
**कुहकुहाना** क्रि० (हि) कुहकना।
**कुहना** क्रि० (हि) आक्रमण करना, मारना।
**कुहर** पु० (सं) १-छेद। २-गले का छेद।
**कुहराम** पुं० (हि) १-रोना-पीटना। २-हलचल।
**कुहाना** क्रि० (हि) रूठना।
**कुहारा** पुं० (हि) कुल्हाड़ा।
**कुहासा, कुहिर, कुहरा** पु० (हि) कोहरा।
**कुही** स्त्री० (हि) एक तरह की शिकारी चिड़िया। पु० घोड़े की एक जाति। वि० क्रोधी।
**कुहुँचा** पु०(हि) पहुँचा, कलाई।
**कुहुक** पुं० (हि) पक्षियों का मधुर शब्द।
**कुहुकना** क्रि० (हि) कुहकना।
**कुहुक-बान** पु० (हि) एक तरह का बाण जिसके चलाने से शब्द होता है।
**कुहुकिनी** स्त्री० (हि) कोयल।
**कुहू** स्त्री० (हि) दे० 'कुहू'।
**कुहू** स्त्री० (स) १-अमावस की रात। २-मोर या कोयल की कूक (बोली)।
**कुहेलिका** स्त्री० (सं) कोहासा, कोहरा।
**कुहौ** स्त्री० (हि) कुहू।
**कूँच** स्त्री० (हि) १-कूँचा जिससे जुलाहे सूत साफ करते हैं। २-पैर की मोटी नस। ३-लोहार की बड़ी संडासी।
**कूँचना** क्रि० (हि) कुचलना।
**कूँचा** पु० (हि) झाड़ू।
**कूँची** स्त्री० (हि) १-छोटा झाड़ू। २-झाड़ू की तरह का कुछ मूँज का गुच्छा जिससे दीवारें पोतते हैं। ३-चित्रकार का रंग भरने का कलम।
**कूँज** स्त्री० (हि) क्रौंच पक्षी, करांकुल।
**कूँजी** स्त्री० (हि) कुंजी; ताली।
**कूँड़** पुं० (हि) १-लोहे की टोपी। २-पानी निकालने का डोल।
**कूँड़ा** पुं० (हि) १-काठ या मिट्टी का चौड़ा बरतन २-गमला, रोशनी करने का शीशे की हाँड़ी।
**कूँड़ी** स्त्री० (हि) १-पत्थर की प्याली। २-छोटी नाँद
**कूँदना** क्रि० (हि) दे० 'कूदना'।
**कूआँ** पुं० (हि) भूमि में खोदा हुआ गहरा गढ़ा जिसमें से पानी निकालते हैं, कुआँ।
**कूईं** स्त्री० (हि) जल में उगने वाला पौधा जो चाँदनी रात में खिलता है, कुमुदिनी।
**कूक** स्त्री० (हि) १-कोयल या मोर की बोली। २-घड़ी, बाजे आदि की चाबी देना।
**कूकना** क्रि० (हि) १-मोर कोयल आदि का बोलना। २-घड़ी या बाजे में चाबी देना।
**कूकर** पुं० (हि) कुत्ता।
**कूकरमुत्ता** पुं० दे० 'कुकुरमुत्ता'।
**कूख** स्त्री० (हि) दे० 'कोख'।
**कूच** पुं० (तु) प्रस्थान; रवानगी।
**कूचा** पुं० (हि) क्रौंच पक्षी। पु० (फा) १-छोटा रास्ता। २-दे० 'कूँचा'
**कूज** स्त्री० (हि) ध्वनि। पुं० (हि) सफेद गुलाब।
**कूजन** पुं० (स) १-पक्षी का कलरव। २-पहियों की गड़गड़ाहट।
**कूजना** क्रि० (हि) कोमल और मधुर ध्वनि करना।
**कूजा** पुं० (हि) १-मिट्टी का कुल्हड़ या पुरवा। २-वह मिस्री जो मिट्टी के पुरवे में जमाई जाय। ३-सफेद गुलाब।

**कूजित** *वि०* (सं) १-ध्वनित। २-गूँजा हुआ। ३-पक्षियों के मधुर स्वर युक्त।

**कूट** पुं० (सं) १-पर्वत की ऊँची चोटी। २-पशु का सींग। ३-राशि, ढेर। ४-छल। ५-गुप्त रहस्य। ६-वह पद जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट हो। ७-हास्य या व्यंग जिसका अर्थ गूढ़ हो। *वि०* (सं) १-झूठा। २-धोखेबाज। ३-धर्मभ्रष्ट। ४-नकली, जाली, कृत्रिम बनावटी। (काउंटरफीट)।

**कूटकरण** पुं० (सं) जाली या खोटा सिक्का बनाना।

**कूटटंक** पुं० (सं) वह सिक्का जो धातु बनावट आदि में सरकारी सिक्कों के अनुरूप न हो, जाली या खोटा सिक्का। (काउंटरफीट-क्वायन)।

**कूट-टंकक** पुं० (सं) वह जो जाली या खोटा सिक्का बनाता हो।(क्वायनर)।

**कूटन** स्त्री० (हि) १-कूटने की क्रिया या भाव। २-दे० 'कुटनी'।

**कूटना** *क्रि०* (हि) १-किसी वस्तु को बारबार आघात पहुँचाना, ठोंकना। २-मारना, पीटना।

**कूट-नीति** स्त्री० (सं) व्यक्तियों या देशों के आपसी व्यवहार दांव-पेंच की नीति या चाल (डिप्लोमेसी)

**कूट-नीतिज्ञ** पुं० (सं) कूट-नीति में प्रवीण। (डिप्लोमेट)।

**कूट-मुद्रा** स्त्री० (सं) देखो 'कूट-टंक'।

**कूट-मुद्राकारी** पुं० (सं) वह जो जाली सिक्के बनाता या ढालता हो। (काउन्टरफीटर)।

**कूट-युद्ध** पुं० (सं) १-ऐसी लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय। २-नकली लड़ाई।

**कूट-योजना** स्त्री० (सं) षड्यन्त्र।

**कूट-लिपि** स्त्री० (सं) जाली दस्तावेज।

**कूट-लेख** पुं० (सं) १-समझ में न आने वाली लिखावट। २-झूठा या जाली दस्तावेज।

**कूट-लेखक** पुं० (सं) जाली दस्तावेज लिखने वाला

**कूट-साक्षी** पुं० (सं) झूठा गवाह। स्त्री० (सं) झूठी गवाही।

**कूटस्थ** *वि०* (सं) १-चोटी पर, सबसे ऊपर। २-अटल ३-अविनाशी। ४-गुप्त।

**कूटाक्ष** पुं० (सं) बनावटी पासा।

**कूटू** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल के बीजों का आटा पीस कर व्रत के दिन व्यवहार होता है।

**कूड़ा** पुं० (हि) १-जमीन पर पड़ी हुई धूल और टूटे-फूटे पदार्थ जिन्हें झाड़ू से बुहारते हैं, कतवार। २-व्यर्थ और निकम्मी चीज।

**कूड़ा-कोठ** पुं० (हि) वह जगह या बरतन जिसमें कूड़ा डाला जाता है। (डस्ट-बिन)।

**कूड़ा-खाना** पुं० (हि) कूड़ा फेंकने का स्थान, घूर।

**कूढ़** *वि०* (हि) ना-समझ, मूर्ख।

**कूढ़-मग़ज** *वि०* (हि) मन्द-बुद्धि।

**कूत** पुं० (हि) तखमीना, अनुमान।

**कूतना** *क्रि०* (हि) अनुमान करना, अन्दाज लगाना

**कूद** स्त्री० (हि) कूदने की क्रिया या भाव।

**कूदना** *क्रि०* (हि) १-उछलना, फाँदना। २-अचानक बीच में आपड़ना। ३-जान-बूझ कर ऊपर से नीचे को गिरना। ४-लाँघना।

**कूनना** *क्रि०* (हि) कुनना।

**कूप** पुं० (सं) १-कूआँ। २-छेद। ३-गहरा गड्ढा पुं० (हि) देखो 'कुप्पा'।

**कूपक** पुं० (सं) छोटा कूआँ।

**कूप-मंडूक** पुं० (सं) १-कुएँ का मेंढक। २-बाहरी जगत का कुछ भी ज्ञान न रखने वाला व्यक्ति। ३-कम जानकारी रखने वाला व्यक्ति।

**कूबड़, कूबर** पुं० (हि) १-पीठ का टेढ़ापन। २-किसी वस्तु का उभाड़दार टेढ़ापन।

**कूबरी** स्त्री० (हि) दे० 'कुब्जा'।

**कूर** *वि०*(हि) १-निर्दय। २-भयावना। ३-दुष्ट। ४-निकम्मा। ५-मूर्ख।

**कूरम** पुं० (हि) कूर्म, कछुआ।

**कूरा** पुं० (हि) १-ढेर, राशि। २-भाग, अंश। ३-कूड़ा।

**कूरी** स्त्री० (हि) छोटा टीला।

**कूर्म** पुं० (सं) १-कच्छप, कछुआ। २-विष्णु का दूसरा अवतार।

**कूल** पुं० (सं) १-तट, किनारा। २-नहर। ३-तालाब। ४-सेना का पिछला भाग।

**कूल्दू** पुं० दे० 'कूटू'।

**कूल्हा** पुं० (हि) कमर या पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

**कूवत** स्त्री० (अ) शक्ति, बल।

**कूवा** पुं० (हि) कूआँ, कूप।

**कूष्मांड** पुं० (सं) १-कुम्हड़ा। २-पेठा।

**कूह** स्त्री० (हि) १-हाथी की चिंघाड़। २-चिल्लाहट

**कूहा** पुं० (हि) दे० 'कुहरा'।

**कृत** *वि०* (सं) १-किया हुआ, संपादित। २-रचित, बनाया हुआ। ३-पूरा किया हुआ (काम)।

**कृतकारज** *वि०* (हि) दे० 'कृत-कार्य'।

**कृत-कार्य** *वि०* (सं) सफल मनोरथ, कृतार्थ।

**कृतघ्न** *वि०* (सं) अहसान फरामोश, अ-कृतज्ञ।

**कृतघ्नता** स्त्री० (सं) अहसान फरामोशी, अ-कृतज्ञता।

**कृतघ्नताई** स्त्री० (हि) कृतघ्नता।

**कृतघ्नी** *वि०* (हि) दे० 'कृतघ्न'।

**कृतज्ञ** *वि०* (सं) किये हुए उपकार को मानने वाला, अहसानमंद।

**कृतज्ञता** स्त्री० (सं) अहसानमंदी।

**कृत-निश्चय** *वि०* (सं) दृढ़ निश्चय किया हुआ।

**कृत-युग** पुं० (सं) सतयुग।

**कृतविद्य** पुं० (सं) पंडित।
**कृतांत** पुं० (सं) १-यम। २-मृत्यु। ३-पाप। ४-देवता।
**कृतार्थ** वि० (सं) १-जो अपना काम बन जाने के कारण प्रसन्न और संतुष्ट हो; कृत-कृत्य। २-किसी की कृपा या उपकार से संतुष्ट।
**कृति** स्त्री० (सं) १-किया हुआ कार्य; काम। २-चित्र, ग्रंथ, वास्तु आदि के रूप में बनाई हुई वस्तु। ३-कोई अच्छा काम। ४-जादू।
**कृति-स्वाम्य** पुं० (सं) किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की किसी कृति की प्रतियां छापने अथवा प्रस्तुत करने का वह अधिकार या स्वत्व जो उसके रचयिता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। (कॉपी राइट)।
**कृती** पुं० (सं) १-निपुण। २-साधु। ३-पुण्यात्मा।
**कृत्ति** स्त्री० (सं) १-मृगचर्म। २-चमड़ा। ३-भोज-पत्र, कृत्तिका नक्षत्र।
**कृत्तिका** स्त्री० (सं) १-सत्ताईस नक्षत्रों में तीसरा। २-छकड़ा, गाड़ी।
**कृत्तिवास, कृत्तिवासा** पुं० (सं) महादेव।
**कृत्य** पुं० (सं) १-कार्य; काम। २-वेद विहित कार्य। ३-वह काम जो किसी पद पर रहने वाले अधिकारी के कर्त्तव्य के अन्तर्गत हो; (फंक्शन)। ४-विशेष रूप से कोई होने वाला बड़ा या महत्वपूर्ण कार्य। (फंक्शन)।
**कृत्यवाह** पुं० (सं) किसी पद पर रहकर उसके समस्त कार्य चलाने वाला। (फंक्शनरी)।
**कृत्या** स्त्री० (सं) १-कार्य सिद्ध करने वाली राक्षसी। २-अभिचार। ३-कर्कशा स्त्री।
**कृत्रिम** वि० (सं) बनावटी; नकली।
**कृत्रिम-गर्भरोपण** पुं० (सं) कृत्रिम रूप से गर्भाधान कराना। (आर्टिफिशियल-इनसेमिनेशन)।
**कृदंत** पुं० (सं) वह शब्द जो धातु में 'कृत' प्रत्यय लगने से बने।
**कृपण** वि० (सं) १-कंजूस। २-नीच।
**कृपणता** स्त्री० (सं) १-कंजूसी। २-क्षुद्रता।
**कृपनाई** स्त्री० (हि) दे० 'कृपणता'।
**कृपया** क्रि० वि० (सं) कृपा करके।
**कृपा** स्त्री० (सं) अनुग्रह; दया; मेहरबानी।
**कृपाकर** वि० (सं) दयालु।
**कृपाण** पुं० (सं) १-तलवार। २-कटार।
**कृपा-पात्र** पुं० (सं) १-वह जो कृपा के योग्य हो। २-वह जिस पर कृपा हो।
**कृपायतन** पुं० (सं) अत्यन्त कृपालु।
**कृपाल** वि० (हि) देखो 'कृपालु'।
**कृपालता** स्त्री० (सं) मेहरबानी।
**कृपालु** वि० (सं) कृपा करने वाला, दयालु।
**कृपावान्** वि० (सं) दया करने वाला।
**कृपासिंधु** पुं० (सं) दया का सागर।
**कृपिण** वि० (हि) कृपण, कंजूस।
**कृपिनाई** स्त्री० (हि) कृपणता।
**कृमि** पुं० (सं) १-छोटा कीड़ा। २-किरमिजी कीड़ा। ३-लाह, लाख।
**कृमि-कोश** पुं० (सं) रेशम के कीड़ों का घर, कोया।
**कृमिज** वि० (सं) कीड़ों से उत्पन्न होने वाला। पुं० (सं) रेशम।
**कृमि-रोग** पुं० (सं) एक रोग जिसमें आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं।
**कृमि-विज्ञान** पुं० (सं) दे० 'कीट-विज्ञान'।
**कृश** वि० (सं) १-दुबला, पतला। २-अल्प। ३-छोटा
**कृशता** स्त्री० (सं) १-दुबलापन। २-अल्पता, सूक्ष्मता
**कृशताई** स्त्री० (हि) दे० 'कृशता'।
**कृशान** पुं० (हि) कृशानु, अग्नि।
**कृशानु** पुं० (सं) अग्नि।
**कृशित** वि० (सं) दे० 'कृश'।
**कृषक** पुं० (सं) १-वह जो खेती का काम करे, किसान। २-हल की फाल।
**कृषि** स्त्री० (सं) खेतों में अन्न उपजाने का काम। खेती। (एग्रिकलचर)।
**कृषिक** वि० (सं) खेती-बारी से सम्बन्ध रखने वाला (एग्रिकलचरल)।
**कृषि-यंत्र** पुं० (सं) एक प्रकार का इंजन जो बैल के स्थान पर हल में लगता है। (ट्रैक्टर)।
**कृषित** वि० (सं) जोता-बोया हुआ (खेत)। (कल्टि-वेटेड)।
**कृषि-मंत्रालय** पुं० (सं) कृषि मन्त्री से सम्बन्धित वह कार्यालय जिसमें खेतीबारी की उन्नति विषयक योजनाएँ तैयार की जाती हैं।
**कृषि-मन्त्री** पुं० (सं) किसी देश या राज्य के कृषि-विभाग का मन्त्री जो संसद या विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होता है। (एग्रिकलचर-मिनिस्टर)।
**कृषि-वर्ष** पुं० (सं) कृषि सम्बन्धी कार्यों और फसल के विचार से निर्धारित वर्ष। (एग्रिकलचर-ईयर)।
**कृषि-विज्ञान** पुं० (सं) वह ज्ञान या विज्ञान जिसमें कृषि सम्बन्धी सब तत्वों का विवेचन होता है।
**कृषि-विभाग** पुं० (सं) वह विभाग जिसकी देख-रेख में कृषि के विकास की योजनायें बनती हैं तथा कृषि से सम्बन्धित सब बातों की खोज की जाती है। (एग्रिकलचर-डिपार्टमेंट)।
**कृषि-सचिव** पुं० (सं) कृषि-विभाग का वह प्रधान अधिकारी जो कृषि सम्बन्धी विकास योजनाओं को तैयार करता है और उन्हें कार्य रूप में परिणित करवाता है। (एग्रीकलचर-सेक्रेटरी)।
**कृष्टि** स्त्री० (हि) दे० 'कर्षण'।

**कृष्ण** *वि०* (सं) १-श्याम; काला। २-नीला। ३-बुरा। पुं० (सं) १-वासुदेव के पुत्र जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। २-अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्। ३-वेदव्यास। ४-अर्जुन। ५-अँधेरा का पक्ष।
**कृष्णचन्द्र** पुं० (सं) दे० 'कृष्ण'।
**कृष्ण-पक्ष** पुं० (सं) अँधेरा पक्ष।
**कृष्ण-सूची** स्त्री० (सं) बुरा या निन्दनीय कार्य करने के कारण बदनाम लोगों के नामों की सूची जिनमें व्यवहार करना या सम्पर्क रखना निषिद्ध हो। (ब्लैक-लिस्ट)।
**कृष्ण-सूचीयन** पुं० (सं) बुरे या निन्दनीय कार्य करने वाले बदनाम लोगों के नामों की सूची तैयार करना (ब्लैक-लिस्ट)।
**कृष्णा** स्त्री० (सं) १-द्रौपदी। २-दक्षिण भारत में एक नदी का नाम। ३-काली दाख। ४-काली (देवी)
**कृष्णाचल** पुं० (सं) नीलगिरि पर्वत।
**कृष्णाभिसारिका** स्त्री० (सं) वह अभिसारिका जो अँधेरी रात में अपने प्रियतम के पास जाती है
**कृष्णाष्टमी** स्त्री० (सं) भादों के कृष्णपक्ष की अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
**कृष्णिमा** पुं० (सं) कालापन।
**कृष्य** *वि०* (सं) खेती के योग्य (जमीन)। (???)
**कृष्यकरण** पुं० (सं) परती या ऊसर भूमि को खेती के योग्य बनाना। (???)।
**कृसानु** पुं० (हि) कृशानु।
**केंचुआ** पुं० (हि) १-एक बरसाती कीड़ा जो एक बित्ता लम्बा होता है। २-इस तरह का एक कीड़ा जो पेट में मल के साथ निकलता है।
**केंचुली** स्त्री० (हि) साँप का अपने आप गिर जाने वाली खाल।
**केंद्र** पुं० (सं) १-किसी परिधि के बीच का बिन्दु, नाभि। २-बीच; मध्य। ३-वह मुख्य स्थान जहाँ से चारों ओर के कार्यों का सञ्चालन होता है। (सेण्टर)।
**केंद्रित** *वि०* (सं) एक ही केन्द्र में इकट्ठा किया हुआ। (सेंट्लाइज्ड)।
**केंद्रिय** *वि०* (सं) १-केन्द्र से सम्बन्ध रखने वाला। २-किसी देश या राज्य केन्द्र स्थान अथवा राजधानी से सम्बद्ध। (सेण्ट्रल)।
**केंद्रिय-शासन** पुं० (सं) दे० 'केन्द्रीय-सरकार'।
**केंद्रीय-सरकार** स्त्री० (सं+फा) दे० 'केन्द्रीय-सरकार'
**केंद्री** *वि०* (सं) केन्द्र में रहने वाला।
**केंद्रीकरण** पुं० (सं) वस्तुओं, शक्तियों, अधिकारों आदि को किसी एक केन्द्र में लाकर इकट्ठा करना। (सेण्ट्रलाइज़ेशन)।
**केंद्रीकृत, केंद्रीभूत** *वि०* (सं) दे० 'केंद्रित'।
**केंद्रीय** *वि०* (सं) दे० 'केंद्रिय'।
**केंद्रीय-गुप्तवार्त्ता-विभाग** पुं० (सं) केन्द्र में स्थित गुप्तचर या खुफिया विभाग। (सेण्ट्रल-इंटेलीजेंस-ब्यूरो)।
**केंद्रीय-शासन** पुं० (सं) देखो 'केंद्रीय-सरकार'।
**केंद्रीय सरकार** स्त्री० (सं+फा) किसी देश या राष्ट्र की वह सर्वप्रधान शासन सत्ता जिसका प्रमुख सचिवालय उसकी राजधानी में होता है जहाँ से सारे देश की व्यवस्था या शासन चलता है। (सेण्ट्रल गवर्नमेंट)।
**के** प्रत्य० (हि) सम्बन्ध सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप, जैसे-केशव के घोड़े।
**केउ** सर्व० (हि) कोई।
**केउर** पुं० (हि) देखो 'केयूर'।
**केकड़ा** पुं० (हि) जल में रहने वाला एक जंतु।
**केकय** पुं० (सं) १-एक प्राचीन जनपद जो अब काश्मीर में है। २-इस देश का राजा या निवासी। ३-राजा दशरथ के ससुर का नाम।
**केकयी** स्त्री० (सं) १-भरत की माता। २-केकय देश की स्त्री।
**केकर** सर्व० (हि) किसका।
**केकी** पुं० (सं) मोर; मयूर।
**केचित्** सर्व० (सं) कोई-कोई।
**केत** पुं० (सं) १-भवन; घर। २-स्थान। ३-ध्वजा। पुं० (हि) केतकी; केवड़ा।
**केतक** पुं० (सं) केवड़ा। *वि०* (हि) १-कितने। २-बहुत। ३-बहुत कुछ।
**केतकर, केतकी** स्त्री० देखो 'केवड़ा'।
**केतन** पुं० (सं) १-निमंत्रण, आह्वान। २-ध्वज। ४-चिह्न। ४-घर; भवन। ५-स्थान।
**केता** *वि०* (हि) कितना।
**केतार** पुं० (देश) एक प्रकार की ईख।
**केतिक** *वि०* (हि) कितना।
**केतो** *वि०* (हि) कितनी।
**केतु** पुं० (सं) १-ज्ञान। २-दीप्ति, चमक। ३-ध्वजा पताका। ४-निशान; चिह्न। ५-नव ग्रहों में से एक ६-पुच्छलतारा।
**केतो** *वि०* (हि) कितना।
**केदार** पुं० (सं) १-क्यारी। २-थाँवला। ३-एक मेघ-राग। ४-हिमालय में एक पर्वत।
**केन** पुं० (सं) एक उपनिषद जिसका आरंभ 'केन' शब्द से होता है।
**केनना** क्रि० (हि) दे० 'कीनना'।
**केना** पुं० (हि) १-खरीद। २-सौदा। ३-देखो 'पोई'
**केम** पुं० (हि) कदम्ब।
**केयूर** पुं० (सं) अंगद; भुजबंद (गहना)।
**केर** प्रत्य० (हि) का। क्रि० वि० (हि) की तरह, के

समान।
**केरा** पुं० (हिं) केला।
**केराना** पुं० (हिं) किराना।
**केराव** पुं० (हिं) मटर।
**केरि** प्रत्य० (हिं) दे० 'केरी'। स्त्री० (हिं) दे० 'केलि'।
**केरी** प्रत्य० (हिं) की। स्त्री० (देश) अँबिया।
**केरोसिन** पुं० (अ) मिट्टी का तेल।
**केल** स्त्री० (हिं) केलि।
**केला** पुं० (हिं) एक वृक्ष या उसका लम्बा, गूदेदार फल।
**केलि** स्त्री० (सं) १-खेल; क्रीड़ा। २-रति; मैथुन। ३-हँसीठट्ठा। स्त्री० (हिं) १-केला का पेड़। २-केला का फल।
**केलि-कला** स्त्री० (सं) स्त्री-प्रसंग।
**केव** वि० (हिं) कोई।
**केवट** पुं० (हिं) मल्लाह।
**केवटी-दाल** स्त्री० (हिं) एक से अधिक मिली हुई दाल
**केवड़ा** पुं० (हिं) १-सफेद केतकी का पौधा। २-इस पौधे का काँटेदार सुगंधित फूल। ३-इस फूल का अर्क।
**केवल** वि०(सं) १-केवल; एक मात्र। २-शुद्ध; पवित्र ३-उत्तम। ४-जिसमें अन्य किसी वस्तु या बात का मेल न हो। (एब्सोल्यूट)। पुं० (हिं) भ्रांतिशून्य और विशुद्ध ज्ञान।
**केवल-ज्ञानी** पुं० (सं) विशुद्ध ज्ञान प्राप्त साधु।
**केवली** पुं० (हिं) केवल-ज्ञानी।
**केवाँच** स्त्री० (हिं) दे० 'कौंछ'।
**केवा** पुं० (हिं) १-केवड़ा। २-कमल। ३-टालमटोल बहाना।
**केश** पु० (सं) १-सिर के बाल। २-सूर्य। ३-किरण ४-विष्णु। ५-विश्व।
**केश-पाश** पुं० (सं) बालों की लट।
**केशर** पुं० (सं) दे० 'केसर'।
**केशरी** पुं० (सं) दे० 'केसरी'।
**केशव** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-विष्णु। ३-परमेश्वर।
**केशव-वसन** पुं० (सं) पीताम्बर।
**केश-विन्यास** पुं० (सं) बालों को गूंथ, संवार या सजाकर जूड़ा बाँधना।
**केशी** पुं० (सं) १-एक असुर। २-घोड़ा। वि० १-प्रकाश वाला। २-अच्छे केशों वाला।
**केसर** पुं० (सं) १-वह बाल के समान सींकें जो फूल में होती हैं। २-ठण्डे देश में होने वाला एक पौधा जिसकी सींकें उत्कृष्ट सुगन्ध वाली होती हैं, जाफरान। ३-जानवरों की गरदन के बाल। ४-नागकेसर।
**केसरिया** वि० (हिं) १-केसर के समान (पीले) रंग का। २-केसर मिला या पड़ा हुआ।
**केसरिया-बाना** पुं० (हिं) केसरिया रंग के कपड़े जो राजपूत लड़ाई के समय पहनते थे।
**केसरिया-भात** पुं० (हिं) केसर डा[illegible] हुए मीठे चावल।
**केसरी** पुं० (सं) १-सिंह। २-घोड़ा। ३-नागकेसर ४-हनुमान के पिता का नाम।
**केसारी** स्त्री० (हिं) खेसारी।
**केसू** पुं० (हिं) टेसू।
**केहरी** पुं० (हिं) दे० 'केसरी'।
**केहा** पुं० (हिं) १-मोर। २-दे० 'खेहा'।
**केहि** वि० (हिं) किसे, किसको।
**केहूँ** क्रि० वि० (हिं) किस प्रकार।
**केहू** सर्व० (हिं) कोई।
**कैं** अव्य० (हिं) १-दे० 'के'। २-दे० '[illegible]'।
**कैंचा** वि० (हिं) भेंगा; एंचाताना। पुं० (हिं) बड़ी कैंची।
**कैंची** स्त्री० (तु) १-एक उपकरण जिससे बाल, कपड़े आदि काटे जाते हैं। २-वे दो सीधी तीलियाँ जो कैंची के समान एक दूसरे पर तिरछी [illegible]।
**कैंडा** पुं० (हिं) १-एक यन्त्र जिससे किसी [illegible] का नकशा ठीक किया जाता है। २-मान, पैमाना। ३-काम करने का ढंग; ढब।
**कै** वि० (हिं) १-कितना। २-कई। [illegible] अव्य० (हिं) या; वा; अथवा। स्त्री० (हिं) वमन, उलटी।
**कैकस** पुं० (सं) राक्षस।
**कैकेयी** स्त्री० (हिं) १-राजा दशरथ की पत्नी। २-केकय देश अथवा गोत्र में उत्पन्न।
**कैटभ** पुं० (सं) एक दैत्य।
**कैटभारि** पुं० (सं) विष्णु।
**कैतव** पुं० (सं) १-धोखा। २-जूआ। ३-वैदूर्य-मणि। वि० (सं) १-छली। २-धूर्त। ३-मक्कार।
**कैतवापह्नुति** स्त्री० (सं) अपह्नुति अलंकार का एक भेद।
**कैतुक** वि० (सं) १-केतु सम्बन्धी। २-केतु से युक्त
**कैतून** स्त्री० (अ) एक प्रकार का बारीक गोटा जो वस्त्र के किनारे पर लगाया जाता है।
**कैथ** पु० (हिं) कसैले और खट्टे फलों वाला एक कंटीला वृक्ष।
**कैथिन** स्त्री० (हिं) कायस्थ स्त्री।
**कैथी** स्त्री० (हिं) बिहार में प्रचलित एक लिपि जिसमें शीर्ष रेखा नहीं होती।
**कैद** स्त्री० (अ) १-बन्धन। २-कारावास। ३-किसी काम या बात में लगाई जाने वाली शर्त या प्रतिबन्ध।
**कैवक** स्त्री० (अ) एक प्रकार की पट्टी जिसमें किसी विषय से सम्बन्धित कागज पत्र रखे जाते हैं।

**क़ैद-खाना** पुं० (फा) वन्दीगृह; जेलखाना।
**क़ैद-तनहाई** स्त्री० (अ+फा) कालकोठरी की सजा।
**क़ैदी** पुं० (अ) वन्दी; बंधुआ।
**कैधूं** अव्य० (हि) कदाचित्; हो सकता है कि।
**कैधौं** अव्य० (हि) अथवा; या।
**कैफ** पुं० (अ) नशा; मद।
**कैफियत** स्त्री० (अ) १-विवरण। २-समाचार। ३-कोई विलक्षण अथवा मुखद घटना।
**कैफी** वि० (अ) १-मतवाला। २-नशेबाज।
**कैयर** स्त्री० (देश) तीर का फल।
**कैवार** स्त्री० अव्य (हि) १-कितनी बार। २-कई बार।
**कैम** पुं० (हि) एक प्रकार का कदम का वृक्ष।
**कैर** पुं० (देश) करील (पौधा)।
**कैरट** पुं० (अं) १-चार जौ के बराबर की तौल जो सोना चाँदी और रत्न तौलने के काम आती है। २-सोने की वस्तु में विशुद्धता का मान (सोना २४ कैरट का माना जाता है यदि कोई वस्तु १४ कैरट की कही जाय तो उसमें १० हिस्से का मिश्रण होगा
**कैरव** पुं० (सं) १-कुमुद। २-सफेद कमल। ३-शत्रु
**कैरवाली** स्त्री० (सं) कैरवों का समूह।
**कैरा** पुं० (हि) १-भूरा। २-वह सफेदी जिसमें ललाई हो। वि०१-कैरे रंग का। २-भूरी आँखों वाला कंजा।
**कैलास** पुं० (सं) हिमालय की एक चोटी का नाम।
**कैलास-नाथ, कैलास-पति** पुं० (स) शिव।
**कैलास-वास** पुं० (स) मरण, मृत्यु।
**कैलासी** वि० (हि) कैलास का रहने वाला।
**कैलेंडर** पुं० (अं) दिन-पत्र।
**कैवट** पुं० (हि) केवट; मल्लाह।
**कैवल्य** पुं० (सं) १-शुद्धता। २-निर्लिप्तता। ३-मुक्ति।
**कैवाड़** पुं० (हि) किवाड़।
**कैशिक** वि० (सं) १-बड़े-बड़े केशों वाला। २-केशों का सा पतला; बारीक। (शिखरी)।
**कैशिकी** स्त्री० (सं) नाटक की चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य, गीत, वाद्य तथा भोग-विलासों का वर्णन रहता है।
**कैसर** पुं० (अ) सम्राट्।
**कैसा** वि० (हि) १-किस तरह का। २-किसी तरह का नहीं। ३-सदृश्य, समान, जैसा।
**कैसे** क्रि० वि० (हि) १-किस तरह से। २-क्यों; किसलिए।
**कैसो** वि० (हि) कैसा।
**कैहूँ** अव्य० वि० (हि) किस तरह; किस प्रकार।
**कोई** स्त्री० (हि) कुमुदनी।
**कोंकण** पुं० (हि) दक्षिण भारत का एक प्रदेश।
**कोंचना** क्रि० (हि) नुकीली वस्तु चुभाना, गड़ाना।
**कोंचा** पुं० (हि) १-क्रौंच पक्षी। २-चिड़िया फँसाने का बहेलियों का लम्बा छड़ जिसके सिरे पर लासा लगाते हैं।
**कोंछ** स्त्री० (हि) स्त्रियों की ओढ़नी के आँचल का छोर।
**कोंछना** क्रि० (हि) १-साड़ी के अगले भाग को चुनकर साड़ी के नीचे खोंसना। २-आँचल में कोई वस्तु बाँध कर कमर में खोंसना।
**कोंढ़ा** पुं० (हि) धातु या किसी वस्तु को अटकाने का छल्ला या कड़ा।
**कोंथना** क्रि० (हि) दे० 'कूथना'।
**कोंप, कोंपल** स्त्री० (हि) कोंपल।
**कोंपना** क्रि० (हि) कोंपल निकलना।
**कोंपर** पुं० (हि) छोटा कच्चा या डाल का पका आम।
**कोंपल** स्त्री० (हि) नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला।
**कोंवर** वि० (हि) कोमल।
**कोंहड़ा** पुं० (हि) कुम्हड़ा।
**कोंहड़ौरी** स्त्री० (हि) दे० 'कुम्हड़ौरी'।
**कोंहरा** पुं० (देश) तेल में छौंक कर नमक, मिर्च लगे ... चने।
**कोंहार** पुं० (हि) कुम्हार।
**को** ... (हि) कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति। सर्व० कौन।
**कोआँ** स्त्री० (हि) ...।
**कोआ** पुं० (हि) दे० 'कोया'।
**कोइँ, कोइला** पुं० (हि) ... फल।
**कोइरी** पुं० (हि) ...; काछी। स्त्री० दे० 'कुइरी'।
**कोइलिया** स्त्री० (हि) १-कोयल द्वारा ... आम। २-आम की गुठली।
**कोई** सर्व० (हि) १-न जाने कौन सा। २-बहुतों में से चाहे जो। ... क्रि० वि० (हि) लगभग। ...
... कोय का कोया।
... प्रकार का रंग।
**कोउ, कोऊ** सर्व० (हि) कोई।
**कोक** पुं० (सं) १-चक्रवाक। चकवा। २-मेंढक।
**कोकई** वि० (हि) ... नीला रंग।
**कोकनद** पुं० (सं) लाल कमल।
**कोक-शास्त्र** पुं० (सं) कोक नामक पंडित का बनाया हुआ काम-शास्त्र।
**कोका** पुं० (अ) दक्षिण अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ चाय या कहवे के समान उत्तेजक होती हैं स्त्री० (तु) धाय की सन्तान। पुं० (हि) एक प्रकार का कबूतर। स्त्री० नीली कुमुदिनी।
**कोकाबेली** स्त्री० (हि) नीली कुमुदिनी।

**कोकाह** पुं० (हि) सफेद घोड़ा।
**कोकिल, कोकिला** स्त्री० (सं) कोयल।
**कोकी** स्त्री० (स) चकवे की मादा।
**कोकेन** स्त्री० (अ) एक मादक पदार्थ जिसके लगाने से शरीर सुन्न होजाता है।
**कोको** स्त्री० (देश) बच्चों को बहकाने का एक शब्द।
**कोख** स्त्री० (हि) १-पेट के दोनों पसलियों के नीचे का भाग। २-उदर; पेट। ३-गर्भाशय।
**कोगी** पुं० (देश) लोमड़ी की तरह का एक जानवर
**कोच** पुं० (अ) १-एक प्रकार की चार पहियों वाली घोड़ा गाड़ी। २-गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।
**कोचकी** पुं० (?) लाली लिये भूरा रंग।
**कोचना** क्रि० (हि) कोई नुकीली चीज चुभोना। पुं० (हि) नुकीले काँटों वाला एक उपकरण जिससे अचार मुरब्बे आदि के लिए फल कोंचे जाते हैं।
**कोच-बकस** पुं० (अं) घोड़ा गाड़ी में हाँकने वाले के बैठने का स्थान।
**कोचवान** पुं० (हि) घोड़ा-गाड़ी हाँकने वाला व्यक्ति
**कोचा** पुं० (हि) १-नोकदार हथियार का घाव जो पार न हुआ हो। २-व्यंग; ताना।
**कोजागार** पुं० (सं) शरद्पूर्णिमा।
**कोट** पुं० (स) १-दुर्ग। किला। २-प्राचीर। ३-महल। पुं० (हि) समूह। यूथ। पुं० (अं) अंग्रेजी ढंग का एक पहनावा जो कमीज के ऊपर पहना जाता है।
**कोटपाल** पुं० (सं) दुर्ग-रक्षक। किलेदार।
**कोटर** पुं० (स) १-पेड़ की खोड़र। २-किले के आसपास का जंगल।
**कोटा** पुं० (अ) किसी के निमित्त निश्चित किया हुआ भाग जो उसे दिया गया या लिया जाय। यथांश।
**कोटि** स्त्री० (स) १-धनुष का सिरा। करोड़। ३-किसी वाद-विवाद का पूर्व पक्ष। ४-उत्कृष्टता, उत्तमता। ५-समूह। ६-तलवार की धार। ७-एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की वह श्रेणी या विभाग जो क्रमिक उत्तमता अथवा श्रेष्ठता की दृष्टि से किया गया हो; वर्ग; श्रेणी। (ग्रेड)।
**कोटिक** वि० (हि) १-करोड़। २-अनगिनत।
**कोटि-क्रम** पुं० (सं) कोई विषय प्रतिपादित करने का क्रम।
**कोटि-च्युत** वि० (स) अपनी कोटि, श्रेणी या पद से नीचे की कोटि, श्रेणी या पद पर भेज दिया गया हो। (डि-ग्रेडेड)।
**कोटि-च्युति** स्त्री० (सं) अपनी कोटि, श्रेणी या पद से नीचे की कोटि, श्रेणी या पद में भेजा जाना। (डिग्रेडेशन)।
**कोटि-परीक्षा** स्त्री० (सं) ऊँची कोटि में लिए जाने के लिए ली जाने वाली कर्मचारियों की विभागीय परीक्षा। (ग्रेड-इग्जामीनेशन)।
**कोटि-बंध** पुं० (स) अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों या कार्यकर्त्ताओं को उनके महत्व अथवा वेतन के अनुसार पृथक-पृथक कोटियों में स्थान देना (ग्रेडेशन)।
**कोटि-बद्ध** वि० (स) १-किसी खास कोटि में रक्खा हुआ। २-जो छोटी बड़ी कोटियों में बँटा हो। (ग्रेडेड)।
**कोटिशः** क्रि० वि० (हि) अनेक प्रकार से। वि० (हि) बहुत अधिक।
**कोटू** पुं० दे० 'कूटू'।
**कोठ** वि० (हि) १-खट्टा होने के कारण न चबाया जा सकने वाला (पदार्थ)। २-(दाँत) जिनसे खट्टी वस्तुएं न चब सकें। पुं० (हि) बाँसों की कोठी।
**कोठरी** स्त्री० (हि) छोटा कमरा।
**कोठा** पुं० (हि) १-बड़ा कोठा। २-भण्डार। ३-अटारी ४-गर्भाशय। ५-खाना। घर।
**कोठार** पुं० (हि) भण्डार।
**कोठारी** पुं० (हि) भंडार का प्रबन्धकर्ता अधिकारी। भंडारी।
**कोठी** स्त्री० (हि) १-बड़ा तथा पक्का मकान। २-लेन-देन की बड़ी दुकान। ३-अनाज रखने का कुठला। ४-पुल, कुएँ आदि का खम्भा। ५-एक स्थान पर मंडलाकार उगे हुए बाँसों का समूह।
**कोठीवाल** पुं० (हि) बड़ा व्यापारी। साहूकार।
**कोठीवाली** स्त्री० (हि) १-कोठी चलाने का काम। २-मुंड़िया लिपि।
**कोड़ना** क्रि० (हि) खेत गोड़ना।
**कोड़ा** पुं० (हि) १-चाबुक। सांटा। २-उत्तेजक या मर्मस्पर्शी बात। ३-चेतावनी।
**कोड़ाई** स्त्री० (हि) खेत गोड़ने का काम या खेत गोड़ने की मजदूरी।
**कोड़ी** स्त्री० (हि) बीस का समूह। बीसी।
**कोढ़** पुं० (हि) एक चर्मरक्त रोग। कुष्ठ।
**कोढ़ी** पुं० (हि) कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति।
**कोण** पुं० (सं) १-कोना। २-दो दिशाओं के बीच की दिशा।
**कोणमापक-यंत्र** पुं० (सं) बहुत दूर की चीजों पर तोप का निशाना साधने या बाँधने और उसे ठीक कोण पर दागने का सहायक यन्त्र।
**कोणार्क** पुं० (सं) एक स्थान जो जगन्नाथपुरी के पास है।
**कोत** स्त्री० (हि) कूवत।
**कोतल** पुं० (फा) १-सजा-सजाया बिना सवार का

घोड़ा। २–राजा की सवारी का घोड़ा।
**कोतवाल** पु० (हि) १–पुलिस का एक अधिकारी। २–बिरादरी या साधुओं की पंगति में निमन्त्रण देने वाला व्यक्ति।
**कोतवाली** स्त्री० (हि) १–कोतवाल का पद। २–कोतवाल का कार्यालय। ३–नगर का केन्द्रीय थाना।
**कोता** वि० (हि) दे० 'कोताह'।
**कोताह** वि० (फा) १–छोटा। २–कम। थोड़ा।
**कोताही** स्त्री० (फा) कमी। त्रुटि।
**कोथि** स्त्री० (हि) दे० 'कोद'।
**कोदंड** पुं० (सं) धनुष। कमान।
**कोद** स्त्री० (हि) १–दिशा। २–ओर। तरफ। ३–कोना।
**कोदों** पुं० (हि) एक प्रकार का मोटा अन्न।
**कोध** स्त्री० दे० 'कोद'।
**कोना** पुं० (हि) १–अन्तराल। २–वह स्थान जहाँ दो सिरे मिलते हों। ३–एकान्त स्थान।
**कोनिया** स्त्री० (हि) १–दिवार आदि के कोने में लगाने की पटिया। २–चित्र या मूर्ति के चारों ओर का अलंकरण।
**कोप** पुं० (सं) क्रोध।
**कोपन** वि० (हि) दे० 'कोपी'।
**कोपना** क्रि० (हि) क्रोध करना।
**कोप-भवन** पु० (स) वह स्थान जहाँ रूठा हुआ जाकर बैठ जाय।
**कोपर** पुं० (हि) १–डाल का पका आम। टपका। २–एक बड़े आकार की थाली या परात।
**कोपी** वि० (स) क्रोधी।
**कोपीन** पुं० दे० 'कौपीन'।
**कोमल** वि० (सं) १–नरम, मुलायम। २–सुकुमार। नाजुक। ३–कच्चा। अपरिपक्व। ४–सुन्दर, मनोहर। ५–संगीत में साधारण से कुछ नीचे का (स्वर)
**कोमलता** स्त्री० (स) १–मुलायमत, नरमी, मृदुलता। २–मधुरता। ३–नजाकत।
**कोमलताई** स्त्री० (हि) कोमलता।
**कोमला** स्त्री० (स) १–वह वृत्ति अथवा अक्षर योजना जिसमें कोमल पद हों। २–खजूर।
**कोमलाई** स्त्री० (हि) कोमलता।
**कोय** सर्व० (हि) कोई।
**कोयर** पुं० (हि) हरा चारा।
**कोयल** स्त्री० (हि) काले रंग की एक चिड़िया जो अपनी मधुर स्वर के कारण प्रसिद्ध है। कोकिल।
**कोयला** पुं० (हि) १–जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ टुकड़ा। २–इस रंग का एक खनिज पदार्थ जो जलाने के काम में आता है।
**कोया** पुं० (हि) १–आंख का डेला। २–आँख का कोना। ३–रेशम के कीड़े का कोश अथवा घर। ४–पके कटहल का बीज कोष। ५–महुए का पका फल। ६–टसर का कीड़ा।
**कोर** स्त्री० (हि) १–सिरा, किनारा। २–कोना। ३–वैर, द्वेष। ४–दोष, खराबी। ५–हथियार की धार। ६–क्रोड़, गोद।
**कोरक** पुं० (सं) १–कली। २–फूल के बाहर का हरा भाग। ३–मृणाल।
**कोर-कसर** स्त्री० (हि) १–दोष और त्रुटि। २–कमी-बेशी।
**कोरना** क्रि०(हि) १–लकड़ी आदि में किनारा निकालना। २–गढ़-छीलकर ठीक करना। ३–खरोंचना।
**कोरमा** पुं० (तु) भूना हुआ मसालेदार मांस।
**कोरवा** पु० (हि) गोद।
**कोरहन** पुं० (?) (१) एक प्रकार का धान। २–इस धान का चावल।
**कोरा** वि० (हि) १–नया। २–सादा। ३–बिना धोया हुआ। ४–रहित। विहीन। ५–बेरंग। ६–मूर्ख। अपढ़। ७–धनहीन। क्रि० (हि) केवल। सिर्फ पुं० (हि) १–कोना। २–बिना किनारी की रेशमी धोती। ३–गोद। क्रोड़।
**कोरि** वि० (हि) दे० 'कोटि'।
**कोरिक** वि० (हि) कई करोड़। करोड़। २–बहुत अधिक।
**कोरिया** पुं० (हि) छोटी जाति।
**कोरी** पुं० (हि) दे० 'कोली'।
**कोरैया** पुं० (हि) इन्द्रजाल।
**कोरों** पुं० (?) छाजन में लगाई जाने वाली लम्बी लकड़ी। कोंडी।
**कोल** पुं० (सं) १–शूकर। २–गोद। ३–बेर (फल)। ४–काली मिर्च। ५–एक जंगली जाति का नाम।
**कोलना** क्रि० (हि) १–बेचैन होना। २–काम के योग्य न रहना।
**कोलाहल** पुं० (सं) हल्ला। शोरगुल।
**कोली** स्त्री० (हि) १–गोद। २–एक जाति का नाम।
**कोल्हू** पुं० (हि) तेल या रस निकालने की चरखी।
**कोविद** वि० (स) विद्वान। पण्डित। पुं० दे० 'कोविदार'।
**कोविदार** पुं० (स) कचनार।
**कोश** पु० (सं) १–अंडा। २–अंडकोश। ३–डिब्बा। गोलक। ४–फूल की कली। ५–आवरण। गिलाफ। ६–वेदान्त के अनुसार पांच संपुट जो मनुष्य के शरीर में होते हैं। ७–संचित धन। ८–रेशम का कोया। ९–कोषाणु। १०–अकारादि क्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों। अभिधान। (डिक्शनरी)।
**कोशाकार** पुं० (सं) १–तलवार की म्यान बनाने वाला। २–रेशम का कीड़ा। ३–शब्दों का अका–

रादि क्रम से संग्रह करके उनका अर्थ बताने वाला (लेक्सिकोग्राफर)।
**कोश कीट** पुं० (सं) रेशम का कीड़ा।
**कोश-कीट-पालन** पुं० (सं) रेशम के कीड़े पालने का काम या उद्योग। (सेरीकल्चर)।
**कोशज** पुं० (सं) १-रेशम। २-मोती।
**कोशपाल** पुं० (सं) संचित धन का संरक्षक या अधिकारी।
**कोशल** पुं० (सं) १-सरयू नदी के दोनों ओर का प्रदेश। २-अयोध्यानगरी।
**कोशागार** पुं० (सं) खजाना।
**कोशिश** स्त्री० (फा) प्रयत्न। चेष्टा।
**कोष** पुं० (सं) १-दे० 'कोश'। २-खजाना। ३-कोषाणु।
**कोष-संग्राहक** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ राजकीय संचित धन संग्रह करके रखा जाता है। खजाना। (ट्रेजरी)।
**कोषाणु** पुं० (सं) अत्यन्त सूक्ष्म कणों या कोषों के रूप में वह मूल तत्व जिससे जीव-जन्तुओं के शरीर तथा खनिज पदार्थ बनते हैं। (सेल)।
**कोषाध्यक्ष** पुं० (सं) १-आय-व्यय का हिसाब या रोकड़ रखने वाला। रोकड़िया। वह जिसके पास संचित धन रहता है। खजांची। (ट्रेज़रर)।
**कोष्ठ** पुं०(सं) १-घर का भीतरी भाग। २-कोठा। ३-शरीर के भीतर का आमाशय, मूत्राशय, पित्ताशय जैसा कोई अंग। ४-पेट। ५-कोष। खजाना। ६-चहारदिवारी। प्राकार। ७-कोष्ठक। ८-कागज-पत्र अलग-अलग रखने की एक प्रकार की अलमारी जिसमें कबूतर के दरबे के समान बहुत से छोटे-छोटे खाने बने होते हैं। (पिजन-होल)।
**कोष्ठक** पुं० (सं) १-खाना। कोठा। लकीरों आदि से घिरा स्थान। २-कई खाने या घरों वाला चक्र। सारिणी। ३-लिखने में अंकों शब्दों आदि को घेरने में व्यवहृत चिह्नों का जोड़। (ब्रैकेट) जैसे [ ], ( )।
**कोष्ठ-बद्धता** पुं० (सं) दस्त न होना। कब्ज।
**कोष्ठिका** स्त्री०(सं) जहाजों पर यात्रियों के लिए रहने खाने या सोने के छोटे छोटे कमरे। (केबिन)।
**कोस** पुं० (हि) १-दो मील की बराबरी की दूरी का नाप। २-तलवार की म्यान। ३-चारों ओर से ढकने वाला आवरण। ४-दे० 'कोष'।
**कोसना** क्रि० (हि) शाप के रूप में गालियाँ देना। बुरा भला कहना।
**कोसा** पुं० (हि) १-एक प्रकार का मोटा रेशम। २-मिट्टी का कसोरा।
**कोसा-काटी** स्त्री० (हि) शाप मिश्रित गाली।
**कोहँडौरी** स्त्री० (हि) कोहड़े और उर्द की बरी।
**कोह** पुं० (फा) पर्वत। पुं० (हि) क्रोध।
**कोहनी** स्त्री० (हि) बाँह के नीचे की गाँठ।
**कोहनूर** पुं० (फा) जगद्विख्यात तथा इतिहास प्रसिद्ध भारत का एक बहुत बड़ा हीरा।
**कोहबर** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल देवता स्थापित करते हैं।
**कोहरा** पुं० (हि) वे सूक्ष्म कण जो वातावरण में जम जाते हैं। कुहासा।
**कोहार** पुं० (हि) कुम्हार।
**कोहान** पुं० (फा) ऊंट की पीठ पर का कूबड़।
**कोहाना** क्रि० (हि) १-रूठना। २-क्रोध करना।
**कोही** वि० (हि) १-क्रोधी। २-पहाड़ी।
**कौं** अव्य० (हि) को।
**कौंकिर** स्त्री०(हि) १-हीरे की कनी। काँच की किरच।
**कौंच** स्त्री० (हि) एक बेल या उसकी फली।
**कौंची** स्त्री० (हि) बाँस की पतली टहनी।
**कौंछ** स्त्री० (हि) दे० 'कौंच'।
**कौंतेय** पुं० (सं) युधिष्ठिर आदि कुन्ती के पुत्र।
**कौंध** स्त्री० (हि) बिजली की चमक।
**कौंधना** क्रि० (हि) बिजली चमकना।
**कौंप** स्त्री० (हि) कोंपल।
**कौंहर** पुं० (हि) इन्द्रायन का फल।
**कौ** अव्य० (हि) को।
**कौआ** पुं० (हि) १-एक काला पक्षी जिसका स्वर कर्कश होता है। काक। २-धूर्त व्यक्ति। काइयाँ। ३-छाजन की लकड़ी जिसे बँड़ेरी के सहारे के लिए लगाते हैं। ४-गले के भीतर का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। घाँटी। ५-एक प्रकार की मछली।
**कौआना** क्रि० (हि) १-भौंचका होना। २-स्वप्न में अण्ड-बण्ड बकना।
**कौआर** पुं० (हि) कौओं का शब्द।
**कौटिल्य** पुं० (सं) १-कुटिलता। २-कपट। ३-चाणक्य का एक नाम।
**कौटुंबिक** वि० (सं) १-कुटुम्ब-सम्बन्धी। २-गृहस्थ
**कौड़ा** पुं० (हि) १-बड़ी कौड़ी। २-अलाव।
**कौड़ियाला** वि० (हि) कौड़ी के रंग का। पुं० (हि) १-एक प्रकार का विषैला सर्प। २-छोटे फूलों वाला पौधा। ३-कौड़िल्ला पक्षी।
**कौड़िल्ला** पुं० (हि) एक प्रकार की चिड़िया जो मछली को पकड़कर खाती है। किलकिला।
**कौड़ी** स्त्री० (हि) १-घोंघे की जाति का एक कीड़ा जो अस्थिकोश में रहता है। २-धन। द्रव्य। ३-आँख का ढेला। ४-छोटी हड्डी जो छाती के नीचे होती है। ५-कटार की नोक। ६-वह कर जो सम्राट अपने अधीन राजाओं से लेता था।
**कौणिक** वि० (हि) जिसमें नोक और कोण हो। नुकीला।

**कौतिक, कौतिग** पुं० दे० 'कौतुक'।
**कौतुक** पुं० (सं) १-कुतूहल। २-आश्चर्य। ३-विनोद ४-आनन्द। प्रसन्नता। ५-खेल-तमाशा। ६-क्रीड़ा खेल।
**कौतुकिया, कौतुकी** वि० (हि) १-कौतुक करने वाला २-विवाह सम्बन्ध कराने वाला (नाऊ, पुरोहित आदि)।
**कौतूहल** पुं० दे० 'कुतूहल'।
**कौतुक** पुं० (हि) १-कुतूहल। २-कौतुक।
**कौथ** स्त्री० (हि) १-कौन तिथि ? २-क्या सम्बन्ध ?
**कौथा** वि० (हि) गिनती में कौन सा।
**कौन** सर्व० (हि) एक प्रश्नवाचक सर्वनाम। वि० (हि) किस तरह का।
**कौपीन** पुं० (स) संन्यासियों के पहनने की लंगोटी।
**कौम** स्त्री० (अ) जाति।
**कौमार** पुं० (सं) १-कुमार अवस्था। २-जन्म से १६ वर्ष तक की अवस्था। ३-कुमार।
**कौमारभृत्य** (सं) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ जिसमें बालकों के लालन-पालन तथा चिकित्सा सम्बन्धी वर्णन है।
**कौमार्य** पुं० (स) कुमार होने का भाव या अवस्था।
**कौमी** वि० (अ) १-कौम से सम्बन्ध रखने वाला। जातीय। २-राष्ट्रीय।
**कौमुदी** स्त्री० (सं) १-ज्योत्स्ना। चाँदनी। २-कार्तिक की पूर्णिमा।
**कौमोदकी** स्त्री० (सं) विष्णु की गदा।
**कौर** पुं० (हि) ग्रास। निवाला। स्त्री० (हि) कुमारी का अपभ्रंश शब्द।
**कौरव** पुं० (सं) राजा कुरु की सन्तान। वि० (स) कुरु सम्बन्धी।
**कौरा** पुं० (हि) १-गोद। कोल। २-कौल।
**कौरी** स्त्री० (हि) १-कौरा। २-कचरी।
**कौल** पुं० (सं) १-उत्तम कुल का। २-वाम मार्ग। पुं० (हि) १-कमल। १-कटोरा।
**कौला** पुं० (हि) १-सूअर। २-नारंगी या सन्तरा।
**कौवाली** स्त्री० (अ) १-आध्यात्मिक गाना जो पीरों की कब्रों और सूफियों की मजलिसों में गाया जाता है। २-इस धुन में गाई जाने वाली गजल।
**कौशल** पुं० (स) १-कुशलता। निपुणता। २-कोशल देश का निवासी।
**कौशल-बाध** पुं० (सं) कार्यालयों की अथवा राजकोष सेवा में उन्नति के मार्ग में वह बन्धन जो अपना कार्य निपुणता के साथ करने पर दूर होता है। (एफीशिएन्सी-बार)।
**कौशल्या** स्त्री० (सं) श्रीराम की माता का नाम।
**कौशिक** पुं० (सं) १-इन्द्र। २-कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३-विश्वामित्र।
**कौशिकी** स्त्री० (सं) १-चंडिका। २-एक रागिनी।
**कौषिक** वि० (स) १-रेशमी। २-रेशम सा चिकना और मुलायम।
**कौसिला** स्त्री० (हि) कौशिल्या।
**कौस्तुभ** पुं० (सं) समुद्र मंथन से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते थे।
**कौहा** पुं० (हि) १-कौआ। २-छाजन की बड़ेरी।
**क्या** सर्व० (हि) एक प्रश्न वाचक शब्द जो अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा प्रकट करता है। कौन सी वस्तु या बात। वि० (हि) १-कितना। २-अपूर्व। विलक्षण। ३-अत्यधिक। क्रि० वि० (हि) क्यों? किसलिए?।
**क्यारी** स्त्री० (हि) १-खेतों के छोटे-छोटे खाने। २-इस ही तरह के खाने जिनमें समुद्र का पानी भरकर नमक बनाते हैं।
**क्यों** क्रि० वि० (हि) १-किसलिए। किस वास्ते। २-किस प्रकार।
**क्योड़ा** पुं० (हि) केवड़ा।
**क्योला** पुं० (हि) कमला नामक नारंगी।
**क्रंदन** पुं० (सं) रोना। विलाप।
**क्रतु** पुं० (स) १-निश्चय। संकल्प। २-इच्छा। ३-विवेक। ४-यज्ञ।
**क्रन** पुं० (हि) कर्ण। कान।
**क्रम** पुं० (स) १-डग भरना। २-सिलसिला। तरतीब। ३-उचितरूप से कार्य करने का ढंग। ४-वेदपाठ की प्रणाली। ५-एक काव्यालंकार। ६-दे० 'कर्म'।
**क्रम-चय** पुं० (सं) वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध समूहों अथवा वर्गों के क्रम या विन्यास में संगत एवं संभव परिवर्त्तन करना। (परम्यूटेशन)।
**क्रम-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जो जैसे आवश्यक समझे जाते हैं वैसे या जिस क्रम से वह आते हैं उस क्रम से रखना। (ऑडर पेपर)।
**क्रम-परिवर्त्तन** पुं० (सं) क्रम में आगे से पीछे अथवा पीछे से आगे होना। विपर्यय। (ट्रांसपोजीशन)।
**क्रमशः** क्रि० वि० १-सिलसिलेवार। २-धीरे-धीरे।
**क्रम-संख्या** स्त्री० (स) दे० 'क्रमांक'।
**क्रमांक** पुं० (सं) क्रमानुसार लिखी जाने वाली संख्या (सीरियल-नम्बर)।
**क्रमागत** वि० (सं) १-जो क्रमानुसार आया या बना हो। २-परम्परागत। ३-धारावाहिक।
**क्रमात्, क्रमानुसार** क्रि० वि० (सं) १-सिलसिलेवार २-धीरे-धीरे। ३-जिस क्रम से पहले कुछ बातें कही गई हों, उसी क्रम से आगे भी। (रिस्पेक्टि-

)वली)।
**क्रमिक** वि० (स) १-क्रमयुक्त। २-परम्परागत। ३-क्रमानुसार होने वाला (ग्रेजुएटेड)।
**क्रमेलक** पुं० (सं) ऊँट।
**क्रय** पुं० (स) मोल लेना। खरीदना।
**क्रयपंजी** स्त्री० (स) वह वही जिसमें प्रतिदिन का हिसाब लिखा होता है। (परचेज-जर्नल)।
**क्रयप्रपंजी** स्त्री० (स) वह खाता जिसमें समय-समय पर खरीदी हुई अलग-अलग वस्तुओं का हिसाब प्रत्येक का अलग अलग प०जी से उतार कर लिखा जाता है। (परचेज-लेजर)।
**क्रय-मूल्य** पुं० (सं) जितने का खरीदा गया हो उतना या जितने की लागत आई हो उतना मूल्य या कीमत।(कॉस्ट-प्राइस)।
**क्रय-शक्ति** स्त्री० (स) किसी राष्ट्र अथवा समाज का वह आर्थिक बल या सामर्थ्य जिससे वह जीवन-निर्वाह के निमित्त आवश्यक वस्तुएं खरीदता है। (परचेजिंग पावर)।
**क्रयी** पुं० (सं) मोल लेने वाला।
**क्रय्य** वि० (सं) १-बेचने के लिए रखा हुआ। २-जो खरीदा जाने को हो।
**क्रव्य** पु० (सं) मास।
**क्रांत** वि० (स) १-दबा या ढका हुआ। २-दबाया या दबोचा हुआ। ३-अपनी सीमा मर्यादा आदि से आगे बढ़ा हुआ।
**क्रांति** स्त्री० (स) १-गति। चाल। २-सूर्य का भ्रमण-मार्ग। ३-वह बहुत भारी परिवर्तन अथवा उलट-फेर जिससे किसी स्थिति का स्वरूप बिलकुल बदल कर कुछ का कुछ हो जाय। (रिवोल्यूशन)।
**क्रांतिकारी** वि० (सं) किसी तरह की क्रान्ति या बहुत बड़ा उलट-फेर चाहने वाला। (रिवोल्यूशनरी)।
**क्रांति-मंडल** पुं० (सं) सूर्य का मण्डल।
**क्रांतिवादी** पुं० (सं) क्रान्ति का पक्षपाती। (रिवोल्यूशनिष्ट)।
**क्रांतिवृत्त** पुं० (सं) दे० 'क्रांति-मंडल'।
**क्रियमाण** वि० (सं) १-जो किया जारहा हो। २-जो कार्य रूप में चल रहा हो। ३-जो सक्रिय रूप में अपना कार्य कर रहा हो। (आपरेटिव)।
**क्रिया** स्त्री० (सं) १-किसी कार्य का होना या किया जाना। कर्म। (एक्शन)। २-प्रयत्न। ३-हिलना। डोलना। ४-कार्य का अनुष्ठान। काम का आरम्भ ५-नित्य कर्म। ६-मृतक कर्म। ७-व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी काम का होना या करना पाया जाय।
**क्रिया-चतुर** पु० (सं) शृंगार रस में नायक का एक भेद।
**क्रियात्मक** वि० (सं) १-क्रियायुक्त। २-क्रिया-सम्बन्धी ३-व्यवहारिक।
**क्रियार्थक-संज्ञा** स्त्री० (सं) क्रिया का अर्थ देने वाली संज्ञा।
**क्रिया-विशेषण** पुं० (स) व्याकरण में वह शब्द जो क्रिया की विशेषता बतलाये।
**क्रिस्तान** पुं० (हि) ईसाई।
**क्रीट** पु० दे० 'किरीट'।
**क्रीडक** वि० (सं) खेलने या क्रीड़ा करने वाला। खिलाड़ी। (प्लेयर)।
**क्रीड़न** पु० (सं) १-क्रीड़ा करना। खेलना। २-क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद।
**क्रीड़नक** पुं० (स) १-खिलौना। २-खेलवाड़।
**क्रीड़ना** क्रि० (हि) खेलना। क्रीड़ा करना।
**क्रीड़ांगन** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ खेल खेले जाते हों। खेलने का स्थान। (प्ले-ग्राउण्ड)।
**क्रीड़ा** स्त्री० (स) खेल-कूद। आमोद-प्रमोद।
**क्रीड़ा-कानन** पुं० (स) खेल-कूद के उपयोग में आने वाला बगीचा।
**क्रीड़ा-गृह** पुं० (स) अवकाश के समय इकट्ठा होने का स्थान या घर। (क्लब)।
**क्रीड़ा-स्थल** पुं० (स) १-वह स्थान जहाँ किसी ने कोई क्रीड़ा की हो। २-दे० 'क्रीड़ांगन'।
**क्रीत** वि० (स) खरीदा या मोल लिया हुआ। पुं० (सं) १-मोल लेकर बनाया हुआ पुत्र। २-मोल लिया हुआ दास। गुलाम।
**क्रीत-दास** पुं० (स) मोल लिया या खरीदा हुआ दास। (बॉड-मैन)।
**क्रुद्ध** वि० (सं) क्रोध से भरा हुआ।
**क्रूर** वि० (स) १-दूसरे को दुःख पहुँचाकर सन्तुष्ट होने वाला। २-निर्दय। निष्ठुर। ३-कठिन। ४-तीक्ष्ण।
**क्रूरता** स्त्री० (स) १-निष्ठुरता। २-दुष्टता।
**क्रास** पुं० (सं) ईसाइयों का धर्म-चिह्न।
**क्रेता** पुं० (स) खरीदने वाला। खरीदार। (परचेजर)।
**क्रोड़** पुं० (सं) १-आलिङ्गन के समय दोनों बाहुओं के बीच का भाग। २-गोद। अँकवार।
**क्रोड़-पत्र** पुं० (स) १-पुस्तकादि लिखने में छूटे हुए अंश की पूर्ति के निमित्त अलग से लिखकर रखा हुआ चिह्न सहित पत्र। २-समाचार पत्र के साथ अलग से छापकर वितरित लेख या विज्ञापन। (सप्लिमेंट)।
**क्रोध** पुं० (स) कोप। रोष। गुस्सा।
**क्रोधवंत** वि० (हि) क्रुद्ध। कुपित।
**क्रोधित** वि० (सं) कुपित। क्रुद्ध।
**क्रोधी** वि० (सं) गुस्सावर।
**क्रोश** पुं० (स) १-जोर से चिल्लाना। पुकारना। २-रोना। ३-कोस।

**क्रोशक** पु० (सं) वह जो जोर से पुकार कर ढिंढोरा पीटे। (क्राइअर)।

**क्रोश-विक्रय** पु० (सं) बिक्री की वह रीति जिसमें सबसे अधिक दाम की बोली बोलने वाले के हाथ माल बेचा जाता है। नीलाम। (ऑक्शन)।

**क्रोश-विक्रयण** पु० (सं) नीलाम के द्वारा माल बेचना। (ऑक्शनीर)।

**क्रोश-विक्रेता** पु० (सं) नीलाम करने वाला व्यक्ति

**क्रोशाधिदेय** पु० (सं) मीलों के हिसाब से मिलने वाला यात्रा-भत्ता। (माइलेज)।

**क्रोशिया** पु० (हि) वह सलाई जिसके द्वारा केवल हाथों से गंजी, मोजे, रूमाल आदि बुनते हैं।

**क्रौंच** पु० (सं) १-एक प्रकार का बगला। करांकुल। २-हिमालय की एक चोटी का नाम। ३-पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ४-अस्त्र विशेष।

**क्लांत** वि०(सं) १-थका हुआ। श्रान्त। २-मुरझाया हुआ। ३-हतोत्साह।

**क्लांति** स्त्री० (सं) थकावट।

**क्लिष्ट** वि० (सं) १-दुःखी। २-कठिन। मुशकिल। ३-बेमेल। ४-जिसका अर्थ कठिनता से निकले।

**क्लिष्टता** स्त्री० (सं) कठिनता।

**क्लिष्टत्व** पु० (सं) १-कठिनता। २-अलंकार शास्त्र के अनुसार काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनाई हो।

**क्लीव** वि०,पु० (सं) १-नपुंसक। नामर्द। २-डरपोक।

**क्लीवता** स्त्री० (सं) नामर्दी। नपुंसकता।

**क्लेद** पु० (सं) १-गीलापन। आर्द्रता। २-पसीना।

**क्लेश** पु०(सं) १-दुःख। कष्ट। २-व्यथा। ३-झगड़ा

**क्लोम** पु० (सं) फेफड़ा।

**क्वचित्** क्रि० वि० (सं) कभी कोई। बहुत कम।

**क्वण** पु० (सं) १-वीणा की झंकार। २-घुघरू का शब्द।

**क्वणित** वि० (सं) १-शब्द करता हुआ। २-गुंजार करता हुआ। ३-बजता हुआ।

**क्वाँरा** पु० वि० (हि) अविवाहित। कुआँरा।

**क्वाथ** पु० (सं) काढ़ा। जोशांदा।

**क्वान** पु० (हि) दे० 'क्वण'।

**क्वारपन** पु० (हि) कुआँरा रहने का भाव। कुमारता

**क्वारा** पु०, वि० (हि) अविवाहित। कुआँरा।

**क्वासि** पद (सं) कहाँ हो।

**क्वैला** पु० दे० 'कोयला'।

**क्ष** 'क' और 'ष' के मेल से बना एक संयुक्त अक्षर।

**क्षंतव्य** वि० दे० 'क्षम्य'।

**क्षण** पु० (सं) १-समय का सबसे छोटा मान। पल का चौथाई भाग। २-काल। ३-अवसर।

**क्षणदा** स्त्री० (सं) रात।

**क्षण-भंगुर** वि० (सं) क्षण भर में नष्ट होने वाला। २-अनित्य।

**क्षणिक** वि० (सं) १-क्षण भर ठहरने वाला। २-क्षण-भंगुर।

**क्षणेक** क्रि० वि० (हि) क्षण भर। थोड़ी देर।

**क्षत** वि० (सं) जिसे आघात पहुँचा हो। घायल। पु० (सं) जख्म।

**क्षतज** वि० (सं) क्षत से उत्पन्न। पु० (सं) रक्त। रुधिर।

**क्षत-योनि** वि० (सं) (स्त्री) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

**क्षत-विक्षत** वि० (सं) लहू-लुहान।

**क्षति** स्त्री० (सं) १-हानि। २-क्षय। नाश। ३-किसी काम में होने वाला घाटा या हानि। (डैमेज)।

**क्षति-पूर्ति** स्त्री० (सं) १-हानि पूरी करने का काम। २-किसी काम में होने वाले घाटे के बदले में दिया जाने वाला धन। (डैमेजेज)।

**क्षति-पूर्ति-विधेयक** पु० (सं) वह बिल या विधेयक जो किसी प्रकार की क्षति-हानि या नुकसान के लिए हो।

**क्षत्र** पु० (सं) १-बल। २-राष्ट्र। ३-धन। ४-शरीर। ५-जल। ६-क्षत्रिय।

**क्षत्रधर्म** पु० (सं) क्षत्रियों का अवश्य पालनीय धर्म।

**क्षत्रप** पु०(सं) भारत के शक राजाओं की एक उपाधि

**क्षत्रपति** पु० (सं) राजा।

**क्षत्रिय** पु०(सं) १-हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरा। २-इस वर्ण का पुरुष। ३-राजा।

**क्षपणक** वि० (सं) निर्लज्ज। पु० (सं) १-नंगा रहने वाला जैन साधु। २-बौद्ध भिक्षु।

**क्षपा** स्त्री० (सं) रात। रात्रि।

**क्षपाकर, क्षपा-नाथ, क्षपा-पति** पु० (सं) चंद्रमा।

**क्षम** वि० (सं) योग्य। समर्थ। पु० (सं) शक्ति। बल

**क्षमता** स्त्री० (सं) १-शक्ति। सामर्थ्य। २-कोई काम करने या कुछ धारण करने की योग्यता या शक्ति। (कैपेसिटी)।

**क्षमना** क्रि० (हि) क्षमा करना।

**क्षमनीय** वि० (हि) क्षमा करने योग्य।

**क्षमवाना** क्रि० (हि) क्षमा कराना।

**क्षमा** स्त्री० (सं) १-माफी। २-सहन। शक्ति। ३-पृथ्वी। ४-दुर्गा।

**क्षमाई** स्त्री० (हि) क्षमा करना।

**क्षमाना** क्रि० (हि) क्षमा करना।

**क्षमापन** पु० (हि) क्षमा का भाव। माफी।

**क्षमावान्, क्षमाशील** वि० (सं) १-क्षमा करने वाला २-शान्त प्रकृति।

**क्षमी** वि० (सं) १-क्षमाशील। २-शान्त प्रकृति। ३-समर्थ। स्त्री० जिसमें क्षमता हो। सामर्थ्य।

**क्षम्य** वि० (सं) जो क्षमा किया जा सके।

**क्षय** पुं० (सं) १-धीरे-धीरे घटना। ह्रास। २-नाश। ३-क्षयी नामक रोग। ४-अन्त। समाप्ति

**क्षयकर** वि० (सं) पदार्थों आदि को धीरे-धीरे खाजाने वाला।

**क्षय-पक्ष** पुं० (सं) कृष्ण-पक्ष।

**क्षय-मास** पुं० (सं) मलमास।

**क्षयिष्णु** वि० (सं) जिसका क्षय हो सकता हो।

**क्षयी** वि० (सं) १-क्षीण होने वाला। २-जिसे क्षय रोग हो। पुं० (सं) चन्द्रमा। स्त्री० (सं) तपेदिक। यक्ष्मा।

**क्षर** वि० (सं) नष्ट होने वाला। पुं० (सं) १-जल। २-मेघ। ३-जीवात्मा। ४-शरीर। ५-अज्ञान।

**क्षरण** पुं० १-स्राव होना। रसना। २-क्षीण होना

**क्षात्र** वि० (सं) क्षत्रिय सम्बन्धी।

**क्षाम** वि० (सं) १-क्षीण। २-कृश।

**क्षार** पुं० (सं) १-खार। २-शोरा। ३-सोहागा। ४-भस्म। राख।

**क्षारोद** पुं० (सं) वह जिनमें क्षार का अंश। (अलकलॉयड)।

**क्षालन** पुं० (सं) धोना।

**क्षिति** स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-जगह। ३-क्षय।

**क्षितिज** पुं० (सं) मंगल ग्रह। २-वृक्ष। ३-वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं (होराइजन)। वि० दे० 'भूमिज'।

**क्षिप्त** वि० (सं) १-फेंका हुआ। २-त्यागा हुआ। ३-तिरस्कार। ४-पतित। ५-उचटा हुआ (मन)।

**क्षिप्र** क्रि० वि० (सं) १-शीघ्र। २-तुरन्त। तत्काल। वि० (सं) १-तेज। २-चञ्चल।

**क्षीण** वि० (सं) १-दुबला-पतला। २-सूक्ष्म। ३-जो कम होगया हो।

**क्षीणक** वि० (सं) क्षीण करने वाला।

**क्षीणक-रोग** पुं० (सं) एक रोग जिसमें शरीर दिन-दिन क्षीण होता चला जाता है। (वेस्टिंग-डिजीज)

**क्षीणता** स्त्री० (सं) १-निर्बलता। दुबलापन। २-सूक्ष्मता।

**क्षीर** पुं० (सं) १-दूध। २-तरल पदार्थ। ३-जल। ४-खीर। ५-पेड़ों का रस या दूध।

**क्षीरधि** पुं० (सं) समुद्र।

**क्षीर-सागर, क्षीरोद** पुं० (सं) पुराणानुसार एक समुद्र जो दूध का माना जाता है।

**क्षीरोद-तनय** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**क्षीरोद-तनया** स्त्री० (सं) लक्ष्मी।

**क्षीव** वि० (सं) १-उत्तेजित। २-मतवाला।

**क्षुण्ण** वि० (सं) १-अभ्यस्त। २-दलित। ३-चूर्ण किया हुआ। ४-खण्डित।

**क्षुद्र** वि० (सं) १-कृपण। २-नीच। ३-दरिद्र। ४-छोटा। थोड़ा।

**क्षुद्र-घंटिका** स्त्री० (सं) १-एक प्रकार की करधनी जिसमें छोटी-छोटी घण्टियाँ होती हैं। २-घुँघरूदार करधनी। ३-घुँघरू।

**क्षुद्र-प्रकृति** वि० (सं) ओछे स्वभाव का। नीच प्रकृति का।

**क्षुद्र-बुद्धि** वि० (सं) १-ओछे विचार का। २-मूर्ख।

**क्षुद्राशय** वि० (सं) नीच स्वभाव का।

**क्षुधा** स्त्री० (सं) भूख।

**क्षुधातुर, क्षुधावंत, क्षुधावान्, क्षुधित** वि० (सं) भूखा।

**क्षुप** स्त्री० (सं) पौधा। झाड़ी।

**क्षुब्ध, क्षुभित** वि० (सं) १-जिसे क्षोभ हुआ हो। २-व्याकुल। ३-चपल। ४-भयभीत। ५-कुपित।

**क्षुर** पुं० (सं) १-उस्तरा। २-छुरा। ३-पशु का खुर।

**क्षुरकर्म** पुं० (सं) हजामत।

**क्षुरधान** पुं० (सं) नाई की किसबत।

**क्षुरप्र** पुं० (सं) खुरपा।

**क्षुरी** पुं० (सं) नाई। हज्जाम।

**क्षेत्र** पुं० (सं) १-खेत। २-भूमि का टुकड़ा। ३-सीमा या रेखाओं से घिरा स्थान। ४-प्रदेश। ५-तीर्थ-स्थान। ६-स्थान।

**क्षेत्र-गणित** पुं० (सं) गणित की वह शाखा जिसमें क्षेत्रों को नापने और उनके क्षेत्रफल निकलने की विधि होती है।

**क्षेत्रज** वि० (सं) क्षेत्र में उत्पन्न। पुं० (सं) वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की स्त्री से दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ हो। जारज।

**क्षेत्रज्ञ** पुं० (सं) १-जीवात्मा। २-परमात्मा। ३-किसान।

**क्षेत्रपति** पुं० (सं) भूमि जोतने-बोने का अधिकार रखने वाला भू-स्वामी। (लैण्ड-होल्डर)।

**क्षेत्रपाल** पुं० (सं) १-खेत का रखवाला। २-भूमियाँ

**क्षेत्र-फल** पुं० (सं) वर्गफल। रकबा।

**क्षेत्र-मिति** स्त्री० (सं) गणित की वह शाखा जिसके अन्तर्गत रेखाओं की लम्बाई, धरातल का क्षेत्रफल तथा ठोस पदार्थों का घनफल निकालने के नियमों का विवेचन होता है। (मेन्सुरेशन)।

**क्षेत्र-व्यवहार** पुं० (सं) कर्ण तथा लम्ब के परिणाम या फलों की सहायता से क्षेत्र परिणाम का निर्णय, यह रेखागणित और परिमिति के तत्वों से ज्ञात होता है

**क्षेत्र-संन्यास** पुं० (सं) संन्यास का एक भेद जिसमें इस बात की प्रतिज्ञा ली जाती है कि हम निर्धारित क्षेत्र या भू-भाग में ही रहेंगे इसके बाहर नहीं जायेंगे।

**क्षेत्राधिकार** पुं० (सं) किसी विशेष क्षेत्र के या विशेष प्रकार के मुकदमे सुनने का अधिकार। अधिकार-सीमा। (ज्युरिस्डिक्शन)।

**क्षेत्रापखंडन** पुं० (सं) दाय भाग आदि के कारण खेतों का छोटे-छोटे टुकड़ों में बट जाना। (फ्रैगमेंटेशन ऑफ होल्डिंग्ज)।

**क्षेत्रिक** वि० (सं) १-क्षेत्र सम्बन्धी। २-खेत या कृषि से सम्बद्ध। (एग्रेरियन)।

**क्षेत्री** पुं० (सं) १-खेत का मालिक। २-नियोग करने वाली स्त्री का विवाहित पति। ३-स्वामी।

**क्षेप** पुं० (सं) १-फेंकना। २-ठोकर। ३-गिराना। ४-बिताना।

**क्षेपक** वि० (सं) १-फेंकने वाला। २-बाद में मिलाया हुआ। पुं०(सं) ग्रंथ आदि में पीछे से मिलाया हुआ अंश जो उसके मूलकर्ता की रचना न हो।

**क्षेपण** पुं० (सं) दे० 'क्षेप'।

**क्षेमंकरी** स्त्री० (सं) १-एक तरह की चील। २-एक देवी का नाम।

**क्षेम** पुं० (सं) १-सुरक्षा। २-सुख। ३-मुक्ति। ४-कुशल-मंगल।

**क्षैतिज** वि० (सं) जो क्षितिज से समान्तर पर हो (हॉरिजन्टल)।

**क्षोणि** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**क्षोणिप** पुं० (सं) राजा।

**क्षोभ** पुं० (सं) १-क्षुब्ध होने का भाव। २-हलचल। ३-व्याकुलता। ४-भय। ५-शोक। ६-क्रोध।

**क्षोभित** वि० दे० 'क्षुब्ध'।

**क्षोभी** वि० (सं) १-उद्वेगशील। २-व्याकुल। ३-चंचलता।

**क्षौम** पुं० (सं) १-सन आदि के रेशों से बना कपड़ा। २-कपड़ा। वस्त्र।

**क्षौर,** क्षौरकर्म पुं० (सं) हजामत।

**क्षौर-मंदिर,** क्षौरालय पुं० (सं) नाई की दुकान जहाँ बाल बनाये जाते हैं। (बार्बर्स-सैलून)।

**क्षौरिक** पुं० (सं) नापित। नाई।

**क्ष्मा** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**क्ष्मापाल,** क्ष्मापति पुं० (सं) राजा।

**क्ष्वेला** स्त्री० (सं) क्रीड़ा। खेल।

[शब्दसंख्या-८८३२]

# ख

**ख** हिन्दी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अन्तर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

**खं** पुं० (सं) १-शून्य स्थान। २-छिद्र। ३-आकाश। ४-स्वर्ग। ५-बिन्दु।

**खंक** वि० (हि) दुर्बल।

**खंख** वि० (हि) १-खाली। रिक्त। २-उजाड़। ३-निर्जन।

**खंखड़** पुं० (देश) बड़ा छेद। वि० बहुत छेदों वाला। [illegible]।

**खंग** पुं० (सं) १-तलवार। २-गैंडा।

**खंगर** वि० (हि) [illegible]।

**खंगालना** क्रि० (हि) १-हलका या कम धोना (कपड़ा या बरतन आदि)। २-सब कुछ चुरा ले जाना।

**खंगी** स्त्री० (हि) कमी।

**खंगैल** वि० (हि) खाँगों वाला।

**खँचना** क्रि० (हि) निशान पड़ना।

**खँचाना** क्रि० (हि) १-खिंचना। २-खींचना।

**खँचिया** स्त्री० (हि) दे० 'खाँची'।

**खंज** पुं० (सं) १-एक रोग। २-लंगड़ा। पंगु। ३-खंजन (पक्षी)।

**खंजन** पुं० (सं) १-एक पक्षी। ममोला। २-[illegible]।

**खंजर** पुं० (अ) कटार।

**खँजरी** स्त्री० (हि) १-छोटी डफली। २-धारीदार कपड़ा।

**खंड** पुं० (सं) १-भाग। २-टुकड़ा। ३-खाँड। ४-पृथ्वी के नौ विभाग। ५-कुछ विशेष [illegible] किया हुआ विभाग। [illegible] में किसी भाग [illegible] स्वतन्त्र अंश। [illegible]। वि० (सं) १-खंडित। २-[illegible]।

**खंडक** वि० (सं) १-[illegible] करने वाला। २-किसी [illegible] वाला।

**खंडकाव्य** पुं० (सं) [illegible] काव्य जिसमें संपूर्ण [illegible]।

**खंडन** पुं० (सं) १-तोड़ने-फोड़ने या काट-छाँट का काम। २-[illegible] गलत ठहराना। [illegible]। ३-अपने ऊपर [illegible] आदि के सम्बन्ध में [illegible] है। (रेपयूटेशन)।

**खँडना** पुं० (हि) दे० '[illegible]'।

**खंडना** क्रि० (हि) १-तोड़ना। २-[illegible] काटना।

**खंडनी** स्त्री० (हि) मालगुजारी की किस्त।

**खंडनीय** वि० (सं) १-तोड़ने-फोड़ने योग्य। २-खंडन करने योग्य।

**खंड-पाल** पुं० (सं) हलवाई।

**खंड-पूरी** पुं० (हि) मीठी-पूरी।

**खंड-प्रलय** पुं० (सं) एक चतुर्युगी बीत जाने पर होने

वाली प्रलय । ९ ।

**खंड-बरा** पुं० (हिं) १-मीठा बड़ा । २-खँडौरा । ओला ।

**खँडरना** क्रि० (हिं) दे० 'खंडना' ।

**खँडरा** पुं० (सं) एक प्रकार का बेसन का चौकोर बड़ा

**खँडरिच** पुं० (हिं) खंजन पक्षी ।

**खंड-वर्षा** स्त्री० (सं) किसी नगर या स्थान के कुछ भागों में होने और कुछ में न होने वाली वर्षा ।

**खँडवानी** स्त्री० (हिं) १-शरबत । २-जलपान में बरातियों को शरबत भेजने की रस्म ।

**खँडविला** पुं० (हिं) एक तरह का धान या चावल ।

**खंड-वृष्टि** स्त्री० (सं) खण्ड-वर्षा ।

**खँडसारी** स्त्री० (हिं) १-एक प्रकार की खांड । २-खांड का धंधा ।

**खँडसाल** स्त्री० (हिं) खांड या शक्कर का कारखाना ।

**खँडहर** पुं०(हिं) टूटे-फूटे मकान का अवशिष्ट भाग ।

**खंडिका** स्त्री० (सं) किस्त ।

**खंडित** वि० (सं) १-टूटा हुआ । २-अपूर्ण ।

**खंडिता** स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका पति या नायक रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सवेरे उसके पास आवे ।

**खंडी** स्त्री० (हिं) राज-कर ।

**खंडौरा** पुं० (हिं) मिसरी का लड्डू । ओला ।

**खंता** पुं० (हिं) १-कुदाल । फावड़ा ।

**खंती** स्त्री० (हिं) १-कुदाल । २-एक जाति का नाम ।

**खंदक** पुं० (अ) खाई ।

**खंदा** वि० (हिं) खोदने वाला ।

**खँधना** क्रि० (हिं) खोदना ।

**खँधवाना** क्रि० (हिं) खाली कराना ।

**खंधा** पुं० (हिं) किस्त ।

**खंधार** पुं० (हिं) १-छावनी । २-खेमा । ३-सामंत ।

**खंभ, खंभा** पुं० (हिं) १-स्तम्भ । आश्रय । ३-आधार

**खँभार** पुं० (हिं) १-भय । आशंका । २-घबराहट । ३-चिंता । ४-शोक ।

**खँभावती** स्त्री० (हिं) एक रागनी ।

**खँभिया** स्त्री० (हिं) छोटा खंभा ।

**ख** पुं० (सं) १-गर्त । गड्ढा । २-खाली स्थान । ३-स्वर्ग । ४-बिंदु । ५-शून्य ।

**खई** स्त्री० (हिं) १-क्षय । २-युद्ध । ३-झगड़ा ।

**खक्खा** पुं० (हिं) १-अट्टहास । २-अनुभवी व्यक्ति । ३-बड़ा हाथी ।

**खखार** पुं० (हिं) गाढ़ा कफ ।

**खखारना** क्रि० (हिं) १-कफ बाहर निकालना । २-जोर से खाँसना ।

**खखेटना** क्रि० (हिं) १-दबाना । २-भगाना । ३-घायल करना ।

**खखेड़ा** पुं० (हिं) १-झगड़ा । २-घाव । ३-शंका ।

४-छेद ।

**खग** पुं० (सं) १-पक्षी । २-गंधर्व । ३-बाण । तीर । सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारे आदि ।

**खगना** क्रि० (हिं) १-धँसना । २-चित्त में बैठना । ३-लीन होना । ४-अंकित होना । ५-रुकना । ६-कसना या कसा जाना । ७-घटना । ८-क्षीण होना

**खगनाथ** पुं० (सं) १-सूर्य । २-गरुड़ ।

**खगेश** पुं० (सं) १-आकाश मंडल । २-खगोल विद्या

**खगोल** पुं० (सं) १-आकाश-मण्डल । २-खगोल-विद्या ।

**खगोल-विद्या** स्त्री० (सं) आकाश-मण्डल अर्थात ग्रह आदि की बातों का ज्ञान कराने वाली विद्या । ज्योतिष ।

**खग्ग** पुं० (हिं) तलवार ।

**खग्रास** पुं० (सं) पूरा ग्रहण ।

**खचन** पुं० (सं) १-अंकित करना । २-बाँधना । जोड़ना ।

**खचना** क्रि० (हिं) १-जड़ा जाना । २-अंकित होना ३-अटकना । फँसना । ४-जड़ना । ५-अंकित करना ।

**खचरा** वि० (हिं) १-वर्णसंकर । २-दुष्ट ।

**खचाखच** क्रि० वि० (हिं) खूब भरा हुआ । ठसाठस ।

**खचित** वि० (हिं) खींचा हुआ । चित्रित ।

**खचेरना** क्रि० (हिं) दबाकर वश में करना ।

**खच्चर** पुं० (देश) गधे तथा घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु ।

**खज** वि० (हिं) खाने योग्य । खाद्य ।

**खजमज** वि० (हिं) थोड़ा अस्वस्थ ।

**खजमजाना** क्रि० (हिं) कुछ अस्वस्थ प्रतीत होना ।

**खजला** पुं० (हिं) खाजा ।

**खजहजा** पुं० (हिं) खाने योग्य उत्तम फल ।

**खजानची** पुं० (फा) १-कोषाध्यक्ष । २-आय-व्यय और रोकड़ का हिसाब रखने वाला ।

**खजाना** पुं० (अ) १-कोश । २-वह स्थान जहाँ पर आय का रुपया जमा होता है और व्यय के लिए धन निकलता है । (ट्रेजरी) । ३-संचित करने का स्थान । ४-राजस्व । कर ।

**खजीना** पुं० दे० 'खजाना' ।

**खजूर** स्त्री० (हिं) १-ताड़ की जाति का एक वृक्ष या उसका फल । २-एक तरह की मिठाई ।

**खजूरी** वि० (हिं) १-खजूर सम्बन्धी । २-तीन लड़ों में गूँथा हुआ ।

**खट** पुं० (हिं) टूटने, टकराने या ठोकने-पीटने का शब्द ।

**खटक** स्त्री० (हिं) १-खटकने की क्रिया या भाव । २-खटका । ३-आशंका ।

**खटकना** क्रि० (हिं) १-खट-खट शब्द होना । २-

रह-रह कर दुखना या हलकी पीड़ा होना। ३-खलना। ४-परस्पर झगड़ा होना। ५-अनिष्ट की आशंका होना।

**खटका** पुं० (हि) १-खट-खट शब्द। २-डर। भय। ३-चिन्ता। ४-कोई पेंच जिसके दबाने से 'खट-खट' शब्द होता हो। ५-किवाड़ की सिटकनी। ६-पक्षियों को उड़ाने के लिए पेड़ में लटकाया हुआ फटे बांस का टुकड़ा। ७-संगीत में स्वर के उच्चारण का उतार-चढ़ाव।

**खटकाना** क्रि० (हि) १-खट-खट शब्द उत्पन्न करना। २-शंका उत्पन्न करना।

**खटकीड़ा, खटकीरा** पुं० (हि) खटमल।

**खट-खट** स्त्री० (हि) १-ठोकने-पीटने का शब्द। २-झंझट। ३-लड़ाई-झगड़ा।

**खटखटाना** क्रि० (हि) खटखट शब्द करना।

**खटखटिया** स्त्री० (हि) खूंटी के स्थान पर रस्सी लगा खड़ाऊँ।

**खटना** क्रि० (हि) १-धन कमाना। २-काम में लगना। ३-परिश्रम करना।

**खटपट** स्त्री० (हि) झगड़ा। अनबन।

**खटपटिया** वि० (हि) झगड़ालू।

**खटमल** पुं० (हि) खाट में पड़ने वाला एक कीड़ा।

**खट-मीठा** वि० (हि) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

**खटराग** पुं० (हि) १-झगड़ा। २-झंझट का काम

**खटाई** स्त्री० (हि) १-खट्टापन। २-खट्टी वस्तु।

**खटाना** क्रि० (हि) १-खट्टा होना। २-निर्वाह होना ३-ठहरना। ४-जाँच में पूरा उतरना। ५-परिश्रम करना। ६-आर्थिक लाभ कराना।

**खटास** स्त्री० (हि) खट्टापन। पुं० (हि) गन्धबिलाव।

**खटिक** पुं० (हि) एक जाति।

**खटिका** स्त्री० (सं) खड़िया मिट्टी।

**खटिया** स्त्री० (हि) छोटी खटिया।

**खटोला** पुं० (हि) छोटी खाट।

**खट्टा** वि० (हि) तुर्श। अम्ल। पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा नीबू जो बहुत खट्टा होता है। गलगल।

**खड़ंजा** पुं० (हि) ईंटों का फर्श पर बिछाना।

**खड़खड़ाना** क्रि० (हि) खड़खड़ शब्द होना या करना।

**खड़खड़िया** स्त्री० (हि) १-पालकी। २-सामान ढोने की घोड़ागाड़ी।

**खड़ग** पुं० (हि) खड्ग।

**खड़गी** वि० (हि) तलवारधारी। पुं० (हि) गैंडा।

**खड़बड़ाना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-क्रम टूटना। ३-उलट पुलट कर खड़-खड़ शब्द करना। ४-घबरा देना। ५-उलट-फेर करना।

**खड़बंडल** वि० (हि) १-उलट-पुलट। २-नष्ट-भ्रष्ट। पुं० (हि) अव्यवस्था।

**खड़ा** वि० (हि) १-सीधा ऊपर की ओर उठा हुआ। २-सीधी टांगों के आधार पर शरीर ऊँचा किये हुए। ठहरा हुआ। दण्डायमान। ३-स्थिर। ४-प्रस्तुत। ५-बना हुआ। निर्मित। ६-समूचा। ७-बिना कटा हुआ।

**खड़ाऊँ** स्त्री० (हि) पादुका।

**खड़िया** स्त्री० (हि) एक तरह की सफेद मिट्टी।

**खड़ी-फसल** स्त्री० (हि) खेत में पकी हुई फसल जो काटी न गई हो। (स्टैंडिंग-क्रॉप)।

**खड़ी-बोली** स्त्री० (हि) आधुनिक हिन्दी का वह पूर्व रूप जिसमें संस्कृत के शब्द मिलाकर वर्तमान हिन्दी भाषा तथा फारसी-अरबी मिलाकर उर्दू जबान बनाई गई है। ठेठ हिन्दी।

**खड्ग** पुं० (स) १-एक तरह की तलवार। खाँडा। २-गैंडा।

**खड्गदान** पुं० (सं) लड़ाई में तलवार चलाना।

**खड्ड** पुं० (हि) गड्ढा।

**खत** पुं० (अ) १-पत्र। २-रेखा। ३-ललाट के ऊपरी बाल। पुं० (हि) १-क्षत। घाव। २-खाता।

**खतना** क्रि० (हि) खाते में चढ़ाना। पुं० (अ) सुन्नत। मुसलमानी।

**खतम** वि० (अ) समाप्त।

**खतमा** पुं० (हि) १-अन्तिमा। २-दे० 'ख़ुतबा'।

**खतरा** पुं० (अ) १-भय। २-आशंका।

**खतरेटा** पुं० (हि) खत्री।

**खता** स्त्री० (अ) १-अपराध। २-धोखा ३-भूल।

**खताई** स्त्री० (हि) नानखताई।

**खतावार** वि० (अ+फा) दोषी। अपराधी।

**खति** स्त्री० (हि) क्षति। हानि।

**खतियाना** क्रि० (हि) रोकड़ से खाते में विषय क्रम से हिसाब लिखना।

**खतियौनी, खतौनी** स्त्री० (हि) १-खाता। २-खतियाने का काम।

**खत्ता** पुं० (हि) १-गड्ढा। २-अन्न रखने की जगह

**खत्म** वि० (अ) समाप्त।

**खत्री** पुं० (हि) एक जाति।

**खद** वि० दे० 'खास'।

**खदबदाना** क्रि० (हि) उबलने समय का शब्द।

**खदान** स्त्री० दे० 'खान'।

**खदेड़ना, खदेरना** क्रि० (हि) डरा-धमकाकर भागना

**खद्दड़, खद्दर** पुं० (हि) हाथ-कता हाथ-बुना कपड़ा। खादी।

**खद्योत** पुं० (स) जुगनू।

**खन** पुं० (हि) १-क्षण। ... २-समय। ३-४-खण्ड। मंजिल। ५-... आवाज।

**खनक** पुं० (सं) भूमि खोदने वाला। पुं० (हि) धातु खण्डों के टकराने या बजने का शब्द।

**खनकना** क्रि० (हि) खन-खन शब्द होना।

**खनना** क्रि० (हिं) खोदना।
**खनि** स्त्री० (सं) खान।
**खनिज** वि० (सं) खान में से खोद कर निकाला हुआ। (मिनरल)।
**खनिज-पदार्थ** पुं० (सं) खान में से निकलने वाले पदार्थ या चीजें। (मिनरल्स)।
**खनिज-विज्ञान** पुं० (सं) वह ज्ञान या विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से वस्तुएँ निकालने तथा खनिज पदार्थों आदि का उल्लेख होता है। (मिनरॉलॉजी)।
**खनिज-संपत्** पुं० (सं) सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि पदार्थ रूपी संपत्ति जो खान से खोद कर निकाली गई हो।
**खनि-वसति** स्त्री० (सं) लोहे कोयले आदि की किसी खान के पास बसे हुए लोगों की बस्ती। (माइनिंग सेटिलमेंट)।
**खनोना** क्रि० (हि) खनना। खोदना।
**खपची** स्त्री० (हिं) बाँस की पतली फट्टी या तीली।
**खपड़ा** पुं० (हिं) १-मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो घर की छाजन पर रखने के काम आता है। २-गेहूँ में लगने वाला एक कीड़ा।
**खपत** स्त्री० (हि) १-खपने की क्रिया या भाव। २-माल की बिक्री। ३-समाई।
**खपना** क्रि० (हि) १-काम में आना। २-गुजारा होना। ३-नष्ट होना। ४-अथक परिश्रम करना।
**खपर** पुं० (हि) खप्पर।
**खपरा** पुं० (हि) खपड़ा।
**खपरैल** स्त्री० (हिं) खपड़े की छाजन।
**खपाना** क्रि० (हिं) १-काम में लाना या लगना। २-नष्ट करना। ३-समाप्त करना। ४-तङ्ग करना।
**खपुआ** वि० (हिं) डरपोक।
**ख-पुष्प** पुं० (सं) आकाश-कुसुम।
**खप्पड़, खप्पर** पुं० (हि) १-तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। २-भिक्षापात्र। ३-खोपड़ी।
**खफा** वि० (अ) १-अप्रसन्न। २-क्रुद्ध।
**खफीफ** वि०(अ) १-थोड़ा। कम। २-हलका। लघु। ३-तुच्छ। ४-लज्जित।
**खबर** स्त्री० (अ) १-समाचार। २-ज्ञान। ३-सूचना। ४-सुधि। होश।
**खबरदार** वि० (फा) सावधान।
**खबरदारी** स्त्री० (फा) सावधानी।
**खबरि, खबरिया** स्त्री० (हि) दे० 'खबर'।
**खबीस** पु० (अ) दुष्ट तथा भयंकर व्यक्ति।
**खब्त** पु० (अ) झक। सनक।
**खभरना** क्रि० (हि) १-मिलना। २-उथल-पुथल मचाना। ३-मिश्रित करना।
**खभार** पुं० (हि) मानसिक कष्ट।
**ख-मंडल** पुं० (सं) आकाश मंडल।
**खम** पुं० (फा) टेढ़ापन। वि० (फा) टेढ़ा।
**खमीर** पुं० (अ) गुंधे हुए आटे का सड़ाव।
**खमीरा** वि० (अ) खमीर उठा कर बनाया हुआ अथवा खमीर मिलाकर बनाया हुआ।
**खय** स्त्री० (हिं) दे० 'क्षय'।
**खयना** क्रि० (हिं) क्षीण होना या करना।
**खया** पुं० दे० 'खवा'।
**खयानत** स्त्री० (अ) रखी हुई अमानत में से कुछ दबा लेना।
**खयाल** पुं० (अ) १-ध्यान। २-स्मृति। याद। ३-मत। विचार। ४-दे० 'ख्याल'।
**खर** पुं० (सं) १-गधा। २-खच्चर। ३-तिनका। वि० (सं) १-सख्त। तेज। ३-अशुभ।
**खरक** पुं० (हि) १-चौपायों का बाड़ा। २-चारागाह स्त्री० (हि) खटक।
**खरका** पुं० (हि) १-तिनका। २-'खरक'।
**खर-खौकी** स्त्री०(हि) आग।
**खरग** पुं० दे० 'खड्ग'।
**खरगोश** पुं० (फा) शशक। खरहा।
**खरच** पुं० दे० 'खर्च'।
**खरचना** क्रि० (हि) १-व्यय करना। २-व्यवहार में लाना। बरतना।
**खरचा** पुं० (हि) दे० 'खर्चा'।
**खरतल** वि० (हि) १-स्पष्टवादी। २-शुद्ध हृदय वाला ३-किसी तरह का संकोच न करने वाला। ४-उग्र। प्रचण्ड।
**खर-दिमाग** वि० (फा+अ) वज्रमूर्ख।
**खरदुक** पुं० (हि) एक तरह का पहनावा।
**खर-दूषण** पुं० (सं) १-खर और दूषण नामक रावण के भाई। २-सूर्य।
**खर-धार** वि० (सं) तेज धार वाला।
**खरब** पुं० (हि) सौ अरब की संख्या।
**खरबूजा** पुं० (हि) ककड़ी की जाति की बेल में लगने वाला एक गोल फल।
**खरभर** पुं० (हि) १-रौला। शोर। २-हलचल।
**खरभरना, खरभराना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-क्षुब्ध होना।
**खरमंडल** वि० (हि) दे० 'खड़मंडल'।
**खर-मस्ती** स्त्री० (फा) हँसी मखौल में किया गया पाजीपन।
**खर-मास** पुं० (सं) पूस और चैत्र मास जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं।
**खर-मिटाव** पुं० (हि) जलपान। कलेवा।
**खरल** पुं० (हि) औषधियाँ घोटने की पत्थर की कूंडी।
**खरवाँस** पुं० (हि) खरमास।

**खरसा** पुं० (हि) एक तरह का पकवान।
**खरसान** स्त्री० (हि) एक तरह की सान जिससे हथि-तेज किये जाते हैं।
**खरहरना** क्रि० (हि) १-झाड़ देना। २-घोड़े का शरीर रगड़ना।
**खरहरा** पुं० (हि) १-अरहर के डण्ठलों का बना झाड़। झँखरा। २-दाँतीदार बुरुश जिससे घोड़े के रोएँ साफ करते हैं।
**खरहरी** स्त्री० (हि) एक तरह का मेवा।
**खरहा** पुं० (हि) चूहे की जाति का पर उससे बड़ा एक जन्तु। खरगोश।
**खरा** वि० (हि) १-विशुद्ध। खालिस। २-सच्चा। ३-छल-कपट रहित। ४-स्पष्ट-भाषी। ५-व्यवहार में सच्चा। ६-नकद। ७-खूब सिका हुआ। करारा।
**खराई** स्त्री० (हि) १-खरापन। २-कलेवा न करने के कारण तबियत खराब होना।
**खराद** स्त्री० (फा) १-एक यन्त्र जिस पर चढ़ाकर काठ या धातु की वस्तुएं सुडौल और चिकनी बनाई जाती हैं। २-खरादने की क्रिया या भाव।
**खरादना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और चिकना बनाना। २-कांट-छांट कर सुडौल बनाना।
**खरादी** पुं० (हि) खरादने का काम करने वाला।
**खरापन** पुं० (हि) १-खरा होने का भाव। २-सच्चाई। ३-उत्तमता।
**खराब** वि० (अ) १-बुरा। निकृष्ट। २-पतित।
**खरायँध** स्त्री० (हि) मूत्र या खार के समान दुर्गन्ध।
**खरारि, खरारी** पुं० (सं) १-श्रीरामचन्द्र। २-विष्णु। ३-कृष्णचन्द्र। ४-२२ मात्राओं के एक छन्द का नाम।
**खराश** स्त्री० (फा) खरोंच।
**खरिक** पुं० (देश) १-खरीफ की फसल के बाद बोया जाने वाला अन्न। २-गौओं के बैठने का स्थान।
**खरिया** स्त्री० (हि) १-घास, भूसा आदि बांधने की जाली। २-झोली। ३-कंडे की राख। ४-खड़िया मिट्टी।
**खरियान** पुं० (हि) खलियान।
**खरियाना** क्रि० (हि) १-थैले या झोली में भरना। २-झोली में से उलटना।
**खरिहान** पुं० (हि) खलिहान।
**खरी** स्त्री० (हि) १-खली। २-खड़िया मिट्टी।
**खरी-खोटी** स्त्री० (हि) कटु बातें।
**खरीता** पुं० (अ) १-जेब। खीसा। २-थैली। ३-वह बड़ा लिफाफा जिसमें राजकीय आदेश-पत्र भेजे जाते हैं।
**खरीद** स्त्री० (फा) १-मोल लेने की क्रिया। क्रय। २-मोल लिया हुआ पदार्थ।
**खरीददार** पुं० (फा) १-ग्राहक। २-चाहने वाला।
**खरीदना** क्रि० (हि) मोल लेना। क्रय करना।
**खरीदार** पुं० दे० 'खरीददार'।
**खरीफ** स्त्री० (अ) वह फसल जो असाढ़ से अगहन तक में काटी जाती है।
**खरेई** क्रि० वि० (हि) सचमुच।
**खरोंच, खरोट** स्त्री० (हि) छिल जाने का चिह्न। खराश।
**खरोंचना, खरोटना** क्रि० (हि) नाखून से घाव करना।
**खरोष्ट्री** स्त्री० (सं) एक प्राचीन लिपि।
**खरौंट** पुं० (हि) खरोंच।
**खरौंटना** क्रि० (हि) छीलना। खुरचना।
**खरौंहा** वि० (हि) नमकीन।
**खर्ग** पुं० (हि) खड्ग।
**खर्च** पुं० (अ) १-किसी काम में होने वाला व्यय। व्यय। २-वह धन जो किसी कार्य में लगाया जाय।
**खर्चीला** वि० (हि) बहुत अधिक खर्च करने वाला।
**खर्पर** पुं० (हि) खप्पर।
**खर्रा** पुं० (हि) १-लेख या विवरण लिखने का लम्बा कागज। २-एक रोग।
**खर्राटा** पुं० (हि) निद्रा की अवस्था में नाक से निकलने वाला शब्द।
**खर्व** वि० (सं) १-जो अपूर्ण हो। २-छोटा। लघु। ३-वामन। बौना। ४-नाटा। पुं० (सं) खरब।
**खर्वीकरन** पुं० (सं) छोटा करना। कम करने की क्रिया या भाव।
**खल** वि० (सं) १-क्रूर। २-दुष्ट। ३-नीच। पुं० (सं) खरल।
**खलई** स्त्री० (हि) खलता। दुष्टता।
**खलक** पुं० (अ) १-प्राणी-मात्र। जीवधारी। २-संसार
**खलकत** स्त्री० (अ) १-सृष्टि। २-भीड़।
**खलड़ी** स्त्री० (हि) १-खाल। २-खाल।
**खलता** स्त्री० (सं) १-दुष्टता। २-क्रूरता। ३-नीचता
**खलना** क्रि० (हि) बुरा लगना।
**खलबल** स्त्री० (हि) १-हलचल। २-शोर। हल्ला। ३-कुलबुलाहट।
**खलबलाना** क्रि० (हि) १-खलबली मचाना। २-खलबल शब्द करना। ३-हिलना-डोलना। ४-विचलित होना।
**खलबली** स्त्री० (हि) १-हलचल। २-घबराहट।
**खलल** पुं० (अ) विघ्न। बाधा
**खलाइत** स्त्री० (हि) धौंकनी।
**खलाई** स्त्री० (हि) खलता। दुष्टता।
**खलाना** क्रि० (हि) १-खाली करना। करना। ३-पिचकाना। ४-मृत पशु की खाल उतारना।
**खलार** पुं० (हि) निचाई की भूमि।

**खलास** वि० (अ) १-मुक्त। २-समाप्त। ३-च्युत। गिरा हुआ।

**खलासी** पुं० (फा) जहाज पर काम करने वाला मजदूर। स्त्री० (हि) मुक्ति। छुटकारा।

**खलित** वि० (हि) १-चञ्चल। २-गिरा हुआ। पतित

**खलियान** पुं० (हि) १-वह स्थान जहाँ फसल काट कर रखते हैं। २-राशि। ढेर।

**खलियाना** क्रि० (हि) १-खाली करना। २-खाल उतारना।

**खलिहान** पुं० दे० 'खलियान'।

**खली** स्त्री० (हि) तेलहन से तेल निकल जाने पर बची हुई सीठी।

**खलीज** पुं० (अ) खाड़ी।

**खलीता** पुं० दे० 'खरीता'।

**खलीफा** पुं० (अ) १-अधिकारी। २-बूढ़ा व्यक्ति। ३-दरजी। ४-नाई। ५-खुर्राट।

**खलु** क्रि० वि० (सं) निश्चय ही। अव्य० मत। नहीं।

**खल्लड़** पुं० (हि) १-खाल की बनी मशक या थैला। २-चमड़ा। ३-खरल।

**खल्वाट** पुं० (सं) सिर के बाल झड़ जाने का रोग। वि० गंजा।

**खवा** पुं० (हि) कंधा।

**खवाना** क्रि० (हि) भोजन कराना। खिलाना।

**खवास** पुं० (अ) राजा और रईसों का खास नौकर या खिदमतगार।

**खवासी** स्त्री० (हि) खवास का काम या पद।

**खवैया** पुं० (हि) खाने वाला।

**खस** पुं०(स) १-वर्तमान गढ़वाल प्रदेश का प्राचीन नाम। २-एक जाति जो इस प्रदेश में रहती थी। स्त्री० (फा) गाडर नामक घास की सुगंधित जड़ जिसके परदे गर्मियों में कमरे ठंडे करने के लिए पर्दे और टट्टियाँ बनाते हैं।

**खसकना** क्रि० (हि) सरकना।

**खसकाना** क्रि० (हि) १-सरकाना। २-गुप्त रूप से कोई चीज हटाना।

**खसखस** पुं० (हि) पोस्त का दाना।

**खस-खाना** पुं० (फा) वह घर या कमरा जिसमें खस के परदे या टट्टियाँ लगी हों।

**खसना** क्रि० (हि) १-खिसकना। २-गिरना।

**खसम** पुं० (अ) १-पति। २-स्वामी।

**खसरा** पुं० (अ) पटवारी का कच्चा चिट्ठा। पुं०(हि) एक तरह की खुजली।

**खसाना** क्रि० (हि) नीचे गिरना।

**खसिया** वि० (हि) १-बधिया। २-नपुंसक।

**खसी** पुं० (अ) बकरा।

**खसीस** वि० (अ) कृपण। कंजूस।

**खसोट** स्त्री० (हि) १-बुरी तरह से नोचना। २-बलपूर्वक लेने की क्रिया।

**खसोटना** क्रि० (हि) १-नोचना। २-छीनना।

**खसोटी** स्त्री० दे० 'खसोट'।

**खस्ता** वि० (फा) भुरभुरा।

**ख-स्वस्तिक** पुं० (स) शीर्ष बिन्दु। (जेनिथ)।

**खस्सी** वि० (अ) जिसके अंडकोश निकाल लिये गये हों। बधिया। पुं० (अ) बकरा।

**खाँ** पुं० दे० 'खान'।

**खाँख** स्त्री० (हि) छिद्र। सुराख।

**खाँखर** वि० (हि) दे० 'खँखार'।

**खाँग** पुं० (हि) १-काँटा। २-पक्षियों के पैर में निकलने वाला काँटा। ३-गैंडे के मुँह पर का सींग। ४-जंगली सूअर का मुँह के बाहर निकला हुआ दाँत। स्त्री० (हि) कमी। त्रुटि।

**खाँगना** क्रि० (हि) कमी करना। कसर रखना।

**खाँच** स्त्री० (हि) १-संधि। जोड़। २-चिह्न। निशान ३-दे० 'खाँचा'।

**खाँचना** क्रि० (हि) १-अंकित करना। २-खींचना। ३-जल्दी-जल्दी लिखना।

**खाँचा** पुं० (हि) बड़ा टोकरा।

**खाँड** स्त्री० (हि) शक्कर।

**खाँडना** क्रि० (हि) १-चबाना। २-दे० 'खंडना'।

**खाँडर** पुं० (हि) १-एक छोटा टुकड़ा। २-कतला (पकवान का)।

**खाँडा** पुं० (हि) १-खड्ग। २-भाग। टुकड़ा।

**खाँधना** क्रि० (हि) खाना।

**खाँभ** पुं० (हि) स्तम्भ। खम्भा।

**खाँवाँ** पुं० (हि) १-मिट्टी की चारदीवारी। २-चौड़ी खाई।

**खाँसना** क्रि० (हि) गले में अटके हुए कफ या कोई चीज निकालने या केवल शब्द करने के लिए वायु को झटके के साथ कण्ठ से बाहर निकालना।

**खाँसी** स्त्री० (हि) १-खाँसने का रोग। २-खाँसने की क्रिया या शब्द।

**खाई** स्त्री० (हि) किले या परकोटे के चारों ओर रक्षार्थ खोदी हुई नहर। खंदक।

**खाऊ** वि० (हि) १-बहुत खाने वाला। २-किसी का धन या अंश हड़पने वाला।

**खाक** स्त्री० (फा) १-मिट्टी। २-धूल।

**खाकसार** वि० (फा) १-धूल में मिला हुआ। २-तुच्छ। अकिंचन।

**खाका** पुं० (फा) १-नकशे या चित्र आदि का डौल ढांचा। २-कच्चा चिट्ठा। ३-मसौदा। मसौदा।

**खाकी** वि० (फा) १-भूरा। २-बिना सींची (जमीन)

**खाख** स्त्री० (हि) खाक।

**खाखरा** पुं० (हि) एक तरह का बाजा।

**खागना** क्रि० (हि) सटना या सटाना।

**खाज** स्त्री० (हि) खुजली ।

**खाजा** पुं०(हि) १-खाद्य पदार्थ । २-एक तरह की मिठाई ।

**खाजी** स्त्री० दे० 'खाजा ।

**खाट** स्त्री०(हि) चारपाई ।

**खाटा** वि० (हि) १-खट्टा । २-खोटा ।

**खाड़** पुं० (हि) गर्त । गड्ढा ।

**खाड़ी** स्त्री० (हि) समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो । उपनगर ।

**खात** पुं० (सं) १-खोदना । २-तालाब । ३-कूआँ । ४-गड्ढा । ५-वह गड्ढा जहाँ खाद के लिए कूड़ा-करकट डाला जाता है ।

**खातमा** पुं० (फा) अन्त ।

**खाता** पुं० (हि) १-वह बही जिसमें प्रत्येक ग्राहक, आसामी आदि का अलग-अलग हिसाब लिखा जाय । (एकाउण्ट) । २-बहीखाता । ३-मद । विभाग । ४-अन्न रखने का खत्ता ।

**खाता-बही** स्त्री० (हि) वह बही जिसमें लोगों या मदों के अलग-अलग खाते अथवा हिसाब रहते हैं । (लेजर) ।

**खातिर** स्त्री० (अ) सम्मान । आदर । अव्य० (अ) लिए । वास्ते ।

**खातिर-जमा** स्त्री० (अ) सन्तोष ।

**खातिरदारी** स्त्री० (फा) आव-भगत ।

**खातिरी** स्त्री० (फा) १-आव-भगत । २-सन्तोष ।

**खाती** स्त्री० (हि) १-गड्ढा । २-खन्ती । पुं० (हि) बढ़ई ।

**खातेदार** पुं० (हि) वह आसामी अथवा खेतिहर जिसके नाम पर जोतने-बोने की जमीन हो । (टेन्योर-होल्डर) ।

**खाद** स्त्री० (हि) भूमि की उपज बढ़ाने के लिए डाली जाने वाली सड़ी-गली वस्तुएँ । पाँस । वि० (हि) खाने योग्य । खाद्य ।

**खादक** वि० (सं) खाने वाला ।

**खादन** पुं० (सं) भोजन । खाना ।

**खादित** वि० (सं) खाया हुआ ।

**खादी** स्त्री० (हि) हाथ कता हाथ बुना कपड़ा । खद्दड़

**खाद्य** वि० (सं) खाने के योग्य । पुं० (सं) भोजन ।

**खाद्यान्न** पु० (स) खाने के काम में आने वाले अन्न । (फूड-ग्रेन्स) ।

**खाध** पुं० (हि) खाद्य । भोजन ।

**खाधु** पु० (हि) भोजन ।

**खाधुक, खाधू** वि० (हि) बहुत खाने वाला ।

**खान** पुं० (हि) १-भोजन । २-खाद्य-सामग्री । ३-भोजन करने का ढंग । स्त्री० (स) १-खान । खदान २-वह स्थान जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती हो । पुं० (तु) १-सरदार । २-पठानों की एक उपाधि ।

**खानदान** पुं० (फा) कुल । वंश ।

**खानदानी** वि० (फा) १-ऊँचे कुल का । २-पैतृक ।

**खान-पान** पुं० (सं) १-खाना और पीना । २-खाने पीने का ढंग । ३-साथ बैठकर खाने पीने का संबन्ध या व्यवहार । ४-अन्न-पानी ।

**खानसामाँ** पुं० (फा) रसोइया ।

**खाना** पुं० (फा) १-घर, मकान । २-जगह, स्थान । ४-कोष्ठक । ४-भोजन । क्रि० (हि) १-भोजन करना । २-भक्षण करना । ३-डसना । ४-कष्ट देना । ५-हड़प जाना । ६-उड़ा देना । ७-घूंस लेना । ८-सहना ।

**खाना-तलाशी** स्त्री० (फा) घर की तलाशी ।

**खाना-पुरी** स्त्री० (फा) किसी नक्शे, सारिणी आदि के खानों को भरना ।

**खाना-बदोश** वि० (फा) जिसका कोई घर या ठौर ठिकाना न हो ।

**खानि** स्त्री० (हि) १-खान । २-ओर । तरफ । ३-प्रकार । तरह ।

**खानिक** वि० (हि) खनिज ।

**खाम** पुं० (हि) १-लिफाफा । २-सधि । जोड़ । वि० (हि) क्षीण । वि० (फा) १-कच्चा । २-अनुभवहीन ।

**खामख्वाह** क्रि० वि० (फा) व्यर्थ ।

**खामना** क्रि० (हि) १-चिट्ठी को लिफाफे में बन्द करना । २-बरतन का गीली मिट्टी से मुँह बन्द करना ।

**खामी** स्त्री० (फा) १-कच्चापन । २-कमी । त्रुटि । ३-नौसिखियापन ।

**खामोश** वि० (फा) मौन । चुप ।

**खामोशी** स्त्री० (फा) चुप्पी । मौन ।

**खार** पुं० (हि) १-रेह । २-नोन । ३-सज्जी । ४-राख । ५-क्षार । ६-बरसाती नाला । ७-काँटा । ८-डाह । जलन । पुं० (फा) गहरा पानी [illegible] ।

**खारना** क्रि० (हि) कपड़ा या अन्य वस्तु खारे घोल में डाल कर धोना ।

**खारा** पुं० (हि) १-नमक के स्वाद का । २-अप्रिय । ३-टोकरा । ४-एक तरह का धारीदार कपड़ा । ५-घास बाँधने का जाला । ६-एक तरह की सरकंडे की चौकी ।

**खारिक** पुं० (हि) छोहारा ।

**खारिज** वि० (अ) १-बहिष्कृत । २-अलग । भिन्न । ३-(वह अभियोग) जिसकी सुनवाई से इनकार कर दिया गया हो । (डिस्मिस्ड) ।

**खारी** स्त्री० (हि) एक तरह का नमक । वि० जिसमें खार हो ।

**खाल** [illegible] ।
३-मृत शरीर । ४-नीची भूमि । ५-[illegible] स्थान ।

६-बरसाती नाला। ७-ताल के पास की पशुओं के चरने की जगह।

**खालसा** *वि०* (हि) १-जो एक व्य० के अधिकार में हो। २-सरकारी। पुं० सिक्ख संप्रदाय।

**खाला** *स्त्री०* (अ) मौसी। *वि०* (हि) नीचा। निम्न।

**खालिस** *वि०* (अ) विशुद्ध।

**खाली** *वि०* (अ) १-रिक्त। रीता। २-निठल्ला। बेकाम। ३-व्यर्थ। *क्रि० वि०* केवल। सिर्फ।

**खाविंद** पुं० (फा) १-पति। २-मालिक।

**खास** *वि०* (अ) १-विशेष। मुख्य। प्रधान। २-निज का। आत्मीय। ३-स्वयं। ४-विशुद्ध। ठेठ। *स्त्री०* (हि) मोटे कपड़े की थैली।

**खासकर** *क्रि० वि०* (फा) विशेषतः। प्रधानतः।

**खासा** पुं० (अ) १-राजा का भोजन। २-राजा की सवारी का घोड़ा अथवा हाथी। ३-एक तरह का सूती कपड़ा। *वि०* पुं० (देश) १-बढ़िया। २-सुडौल ३-पूरा।

**खासियत** *स्त्री०* (अ) १-स्वभाव। प्रकृति। २-विशेषता। ३-गुण।

**खिंग** पुं० (हिं) सफेद रंग का घोड़ा।

**खिंचना** *क्रि०* (हिं) १-आकर्षित होना। २-तनना। ३-घसिटना। ४-खपना। ५-भभके से बनना। ६-अङ्कित करना। ७-मंहगा पड़ना।

**खिंचवाना** *क्रि०* (हि) खींचने का काम कराना।

**खिंचाई** *स्त्री०* (हि) १-खींचने की क्रिया या भाव। २-खींचने की मजदूरी।

**खिंचाव** पुं० (हिं) खींचने का भाव।

**खिंड़ाना** *क्रि०* (हिं) बिखराना।

**खिखिंद** पुं० (हि) १-किष्किन्धा पर्वत। २-बीहड़ भूमि।

**खिचड़वार** पुं० (हि) मकरसंक्रान्ति।

**खिचड़ी** *स्त्री०* (हिं) १-दाल चावल का मेल या इससे बना पकवान। २-विवाह की एक प्रथा। ३-एक से अधिक मिले हुए पदार्थ। ४-मकर संक्रान्ति। *वि०* १-मिलाजुला। २-गड़बड़।

**खिजना** *क्रि०* (हिं) खिजलाना।

**खिजमत** *स्त्री०* (हि) खिदमत।

**खिजलाना** *क्रि०* (हि) झुँझलाना। चिढ़ना।

**खिझना** *क्रि०* (हि) खीजना।

**खिझाना, खिझावना** *क्रि०* (हि) चिढ़ाना। तंग करना।

**खिझुवर** *वि०* (हि) चिढ़ने वाला।

**खिड़की** *स्त्री०* (हि) किसी मकान में हवा और प्रकाश आने के लिए बना हुआ छोटा दरवाजा। दरीचा। झरोखा।

**खिताब** पुं० (अ) पदवी। उपाधि।

**खित्ता** पुं० (अ) प्रांत। देश।

**खिदमत** *स्त्री०* (फा) सेवा। टहल।

**खिदमतगार** पुं० (फा) सेवक। टहलुआ।

**खिन** ) क्षण। लमहा।

**खिन्न** *वि०* (सं) १-उदासीन। अप्रसन्न। ३-असहाय।

**खिपना** *क्रि०* (हि) १-खपना। २-मिलजुल जाना।

**खियाना** *क्रि०* (हि) १-घिस जाना। २-खिलाना।

**खियाल** पुं० (हि) क्रीड़ा। खेल।

**खिरकी** *स्त्री०* (हि) खिड़की।

**खिरना** *क्रि०* (हि) बादलों का हटना।

**खिराज** पुं० (अ) कर। राजस्व।

**खिरिरना** *क्रि०* (हि) १-अनाज छानना। २-खुरचना।

**खिरौरी** *स्त्री०* (हि) कत्थे की टिकिया।

**खिलअत** *स्त्री०* (अ) वह सम्मानसूचक वस्त्र जो किसी राजा या बड़े द्वारा भेंट किये जायें।

**खिलकत** *स्त्री०* (अ) १-सृष्टि। २-भीड़।

**खिलखिलाना** *क्रि०* (हि) जोर से हँसना।

**खिलत** *स्त्री०* (हि) खेलने की क्रिया या भाव। *स्त्री०* दे० 'खिलअत'।

**खिलना** *क्रि०* (हि) १-विकसित होना। २-प्रसन्न होना। ३-शोभित होना। ४-दरार पड़ना।

**खिलवत** *स्त्री०* (अ) एकान्त स्थान।

**खिलवाड़** पुं० (हि) १-खेल। २-मन-बहलाव। ३-तुच्छ या साधारणतया किया हुआ कोई काम।

**खिलाई** *स्त्री०* (हि) १-खाने की क्रिया, भाव या नेग। बच्चा खिलाने वाली दाई।

**खिलाड़ी** पुं० (हि) १-खेलने वाला। २-किसी खेल विशेष में कुशल। ३-कुश्ती, गतका आदि में प्रवीण। बाजीगर।

**खिलाना** *क्रि०* (हिं) १-खेल में लगाना। २-भोजन कराना। ३-फुलाना।

**खिलाव** *वि०* दे० 'खिलाफ'।

**खिलाफ** *वि०* (फा) विरुद्ध। प्रतिकूल। *क्रि० वि०* तुलना या मुकाबले में।

**खिलौना** पुं० (हि) खेलने की वस्तु।

**खिल्लना** *क्रि०* (हिं) १-खेलना। २-आगे बढ़ना।

**खिल्ली** *स्त्री०* (हि) १-दिल्लगी। २-पान का बीड़ा।

**खिवना** *क्रि०* (हि) चमकना।

**खिसकना** *क्रि०* (हिं) सरकना।

**खिसाना, खिसियाना** *क्रि०* (हि) १-लजाना। २-खफा होना। नाराज होना।

**खिसी** *स्त्री०* (हि) १-लज्जा। २-ढिठाई। ३-धृष्टता।

**खिसौहाँ** *वि०* (हि) लज्जित। संकुचित।

**खींच** *स्त्री०* (हि) आकर्षण, खिंचाव।

**खींच-तान** *स्त्री०* (हि) १-किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए दो में एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचा-खींची। २-शब्द अथवा वाक्य का जबरदस्ती

भिन्न अर्थ करना।

**खींचना** क्रि० (हि) १-अपनी ओर बलपूर्वक लाना। घसीटना। २-कोश आदि में से अस्त्र बाहर निकालना। ३-सोखना। ४-भभके से शराब, अर्क आदि बनाना। ५-किसी चीज का गुण या प्रभाव निकाल लेना। ६-रेखाओं से आकार या रूप बनाना।

**खींचा-तानी** स्त्री० (हि) दे० 'खींच-तान'।

**खीज** स्त्री० (हि) खीजने का भाव या खिजाने वाली बात।

**खीजना** क्रि० (हि) झुंझलाना। क्रुद्ध होना।

**खीझ** स्त्री० (हि) दे० 'खीज'।

**खीझना** क्रि० (हि) दे० 'खीजना'।

**खीन** वि० (हि) क्षीण।

**खीर,** खीरि स्त्री० (हि) १-दूध। २-दूध में पके चावल

**खील** स्त्री० (हि) भुना हुआ धान।

**खीवन** स्त्री० (हि) मतवालापन।

**खीवर** पुं० (हि) वीर। बहादुर।

**खीस** वि० (हि) नष्ट। बरबाद। पुं० (हि) १-अप्रसन्नता। २-क्रोध। ३-लज्जा। ४-ओंठ से बाहर निकले दाँत। ५-नाश। हानि। ६-ब्याने के पीछे गाय या भैंस का दूध। पेवस।

**खीसना** क्रि० (हि) नष्ट करना।

**खीसा** पुं० (हि) १-जेब। २-थैला।

**खुंदाना** क्रि० (हि) घोड़े को कुदाना।

**खुंभी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का गहना।

**खुआर** वि० (हि) दे० 'ख्वार'।

**खुआरी** स्त्री० (हि) दे० 'ख्वारी'।

**खुक्ख** वि० (हि) १-जिसके पास कुछ भी न हो। २-खाली। रीता।

**खुखड़ी** स्त्री० (हि) १-तकुए पर का लिपटा सूत। २-गोलाकार...।

**खुखला** वि० (हि) खोखला।

**खुखुड़ी** स्त्री० दे० 'खुखड़ी'।

**खुगीर** पुं० (फा) १-घोड़े की जीन के नीचे लगने का ऊनी कपड़ा। नमदा। २-चारजामा। जीन।

**खुचर** स्त्री० (हि) व्यर्थ का दोषारोपण।

**खुजलाना** क्रि० (हि) १-खुजली मिटाने के लिए नाखूनों से अंग रगड़ना। सहलाना। २-किसी अंग में खुजली मालूम होना।

**खुजाई** स्त्री० (हि) खोज। तलाश।

**खुजाना** क्रि० (हि) खुजलाना।

**खुटक** स्त्री० (हि) आशंका।

**खुटकना** क्रि० (हि) ऊपर से तोड़ना। नोचना।

**खुटका** पुं० दे० 'खटका'।

**खुट-चाल** स्त्री० (हि) १-दुष्टता। २-बुरा चाल चलन।

**खुटना** क्रि० (हि) १-खुलना। २-कम होना। ३-समाप्त होना।

**खुटपन** पुं० (हि) खोटापन।

**खुटला** पुं० (देश) एक तरह का कान का गहना।

**खुटाना** क्रि० (हि) समाप्त होना।

**खुट्टी** स्त्री० (हि) रेवड़ी (मिठाई)।

**खुड्डी** स्त्री०(हि) १-पाखाने के पायदान। २-पाखाना फिरने का गड्ढा।

**खुतकना** क्रि० (हि) समाप्त होना।

**खुतबा** पुं० (अ) १-प्रशंसा। २-सामयिक राजा की प्रशंसा।

**खुत्थ** पुं० (हि) पेड़ काट लेने पर जड़ का ऊपरी भाग। ठूठ।

**खुत्थी, खुथी** स्त्री० (हि) १-ज्वार या अरहर का वह भाग जो फसल काट लेने पर भी भूमि पर लगा रहता है। २-धामानत। ३-रुपये रखने की थैली। ४-संपत्ति।

**खुद** अव्य० (फा) स्वयं। आप।

**खुदकाश्त** स्त्री०(फा) जमींदार द्वारा स्वयं जोती जाने वाली भूमि।

**खुदकुशी** स्त्री० (फा) आत्महत्या।

**खुदगरज** वि० (फा) स्वार्थी।

**खुदना** क्रि० (हि) खुद जाना।

**खुदमुख्तार** वि० (फा) किसी का दबाव न मानने वाला। स्वतंत्र।

**खुदरा** पुं० (हि) १-छोटी और मामूली चीज। २-फुटकर वस्तुएं। ३-फुटकर में बेची जाने वाली चीजें वि० (हि) १-छोटे टुकड़ों या अंशों में। २-थोड़ा-थोड़ा करके।

**खुदवाना** क्रि० (हि) खोदने का काम कराना।

**खुदा** पुं० (फा) ईश्वर।

**खुदाई** वि० (फा) ईश्वरीय। स्त्री० (फा) १-ईश्वरता। सृष्टि। स्त्री० (हि) १-खोदने की क्रिया या भाव। २-खोदने की मजदूरी। ३-जमीन की मिट्टी निकालकर उसमें गड्ढे आदि करने का कार्य।

**खुदाई खिदमतगार** पुं०(फा) राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल जो सामाजिक और राजनैतिक कार्य करता है। (यह दल पश्चिमी पाकिस्तान में है)।

**खुदावंद** पुं० (फा) १-परमेश्वर। २-अन्नदाता। ३-महाशय।

**खुदी** स्त्री० (फा) १-अहंभाव। अहंकार। २-अभिमान।

**खुद्दी** स्त्री० (हि) चावल, दाल आदि के छोटे-छोटे टुकड़े।

**खुनस** स्त्री० (हि) क्रोध। गुस्सा।

**खुफिया** वि० (फा) गुप्त।

**खुफिया पुलिस** स्त्री०(हि) सरकारी भेदिया। जासूस

**खुभना** क्रि० (हि) चुभना।

**खुभराना** क्रि० (हि) १-उपद्रव के लिए घूमना। इतराए फिरना।
**खुभाना** क्रि० (हि) धँसाना।
**खुभिया, खुभी** स्त्री० (हि) कान का कर्णफूल।
**खुमान** वि० (हि) आयुष्मान्। बड़ी आयु वाला।
**खुमार, खुमारी** स्त्री० (अ) १-नशा। मद। २-नशे का उतार। ३-जागने से होने वाली थकावट।
**खुमी** स्त्री० (हि) एक उद्भिज्जवर्ग जिसके अंतर्गत ढिंगरी, गुच्छी, कुकुरमुत्ता आदि वनस्पतियाँ आती हैं।
**खुरंड** पुं० (हि) घाव के ऊपर सूखी पपड़ी।
**खुर** पुं० (हि) सींग वाले चौपायों के पैर की फटी-हुई कड़ी टाप।
**खुरक** स्त्री० (हि) खुजली।
**खुरकना** क्रि० (हि) खुजलाना।
**खुरखुरा** वि० (हि) खुरदरा।
**खुरचन** स्त्री० (हि) १-खुरचकर निकाली हुई वस्तु। २-दूध के पात्र में से खुरचकर निकाला हुआ अंश।
**खुरचना** क्रि० (हि) किसी जमी हुई वस्तु को छील-कर अलग करना।
**खुर-चाल** स्त्री० (हि) शरारत। पाजीपन।
**खुरजी** स्त्री० (फा) घोड़े, बैल आदि पर लादने का थैला।
**खुरदरा** वि० (हि) जो चिकना न हो।
**खुरपा** पुं० (हि) घास छीलने का उपकरण।
**खुरमा** पुं० (अ) १-छोहारा। २-एक तरह की मिठाई
**खुराक** स्त्री० (फा) १-भोजन। २-(औषध की) मात्रा
**खुराकी** स्त्री० (फा) भोजन-व्यय। वि० अधिक खाने वाला।
**खुराफात** स्त्री० (अ) १-बेहूदा बातें। बकवास। २-झगड़ा। उपद्रव।
**खुरायल** पुं० (हि) वह खेत जो बोने को तैयार हो।
**खुरासान** पुं० (फा) फारस का एक नगर तथा उसके आस-पास के स्थान।
**खुरी** स्त्री० (हि) पशुओं का खुर।
**खुरुक** स्त्री० (हि) आशंका।
**खुर्राट** वि० (देश) १-बूढ़ा। २-अनुभवी। ३-चालाक।
**खुलना** क्रि० (हि) १-आवरण का हटना। २-प्रकट होना। ३-बन्धन छूटना। ४-शोभित होना। ५-स्थापित होना। ६-आरम्भ होना। ६-सवारी आदि का रवाना होना। ७-प्रचलित होना। चलना। जैसे-नहर खुलना।
**खुलवाना** क्रि० (हि) खोलने का काम दूसरे से कराना।
**खुला** वि० (हि) १-जो बँधा न हो। जो ढका न हो। २-जिसमें कोई रुकावट न हो। ३-स्पष्ट। प्रकट।
**खुलासगी** स्त्री० (अ) १-खुलासा होने का भाव। २-खुलासा होने की अवस्था।
**खुलासा** पुं० (अ) सारांश। वि० (हि) १-खुला हुआ २-स्पष्ट। ३-अवरोध रहित।
**खुलित** वि० (हि) खुला हुआ।
**खुलेआम, खुल्लम-खुल्ला** क्रि० वि० (हि) सब के सामने।
**खुश** वि० (फा) १-प्रसन्न। २-अच्छा।
**खुश-किस्मत** वि० (फा) भाग्यवान्।
**खुश-खबरी** स्त्री० (फा) शुभ-समाचार।
**खुशबू** स्त्री० (फा) सुगन्ध।
**खुशामद** स्त्री० (फा) खुश करने की बात। चापलूसी।
**खुशामदी** वि० (फा) चापलूस।
**खुशाल** वि० (फा) सब तरह से सुखी। सम्पन्न। २-सब प्रकार से पूर्ण। पूरित।
**खुशी** स्त्री० (फा) प्रसन्नता।
**खुशक** वि० (सं) १-शुष्क। सूखा। २-रूखा। ३-(ऐसा वेतन) जिसके साथ भोजन न हो।
**खुशकी** स्त्री० (फा) १-शुष्कता। २-नीरसता। ४-स्थल या भूमि।
**खुसाल** वि० दे० 'खुशाल'।
**खुसिया** पुं० (अ) अण्डकोश।
**खुस्याल** वि० दे० 'खुशाल'।
**खुही** स्त्री० (हि) घोघी। खोही।
**खूँट** पुं० (हि) १-छोर। सिरा। २-कोना। ३-ओर। तरफ। ४-भाग। हिस्सा। स्त्री० (हि) १-कान की मैल। २-कान का एक गहना। ३-वह त्रुटि जिसकी पूर्त्ति करना आवश्यक हो।
**खूँटना** क्रि०(हि) पत्ते, फूल आदि का तोड़ना।
**खूँटा** पुं० (हि) १-बड़ा मेख जिससे रस्सी के द्वारा पशु बाँधते हैं। १-भूमि पर गड़ी खड़ी लकड़ी।
**खूँटी** स्त्री० (हि) १-छोटा खूँटा। २-पौधे की वह सूखी डण्ठल जो भूमि पर खड़ी हो। ३-हजामत के बाद मूंड़ने से बचे बालों के अंकुर। ४-सीमा। हद
**खूँद** स्त्री० (हि) १-खूँदने का भाव। २-घोड़ों का बारबार भूमि पर पैर पटकना।
**खूँदना** क्रि० (हि) १-पैर उठाकर जल्दी जल्दी पैर पटकना। २-पैरों से रोंदना। ३-कूदना। कुचलना
**खूटना** क्रि० (हि) छेड़ना। खुटना।
**खूटा** वि० (हि) १-जिसमें किसी तरह की कमी हो २-खोटा।
**खूद, खूदड़, खूदर** पुं० (हि) १-मैल। तलछट। २-सीठी।
**खून** पुं० (फा) १-रक्त। लहू। २-वध। हत्या।
**खून-खराबी** स्त्री० (हि) मारकाट।
**खूनी** वि० (फा) १-घातक। हत्यारा। २-अत्याचारी

३-खून सम्बन्धी।
**खूब** वि० (फा) १-उत्तम। २-बहुत।
**खूबसूरत** वि० (फा) सुन्दर।
**खूबसूरती** स्त्री० (फा) सुन्दरता।
**खूबानी** स्त्री० (फा) एक तरह का मेवा जिसे जर्दालु भी कहते हैं।
**खूबी** स्त्री० (फा) १-अच्छापन। २-गुण। विशेषता
**खूसट** पुं० (हि) उल्लू पक्षी।
**खेचर** पुं० (सं) आकाश में चलने या उड़ने वाला।
**खेचरी** स्त्री० (सं) हठयोग की एक मुद्रा।
**खेटक** पुं० (हि) शिकार।
**खेटकी** पुं० (सं) ज्योतिषी। भड्डर। पुं० १-वधिक २-शिकारी।
**खेड़ा** पुं० (हि) १-छोटा गाँव। २-छोटा और कच्चा घर।
**खेड़ी** स्त्री० (देश) १-एक प्रकार का इसपात। २-आँवल।
**खेत** पुं० (हि) १-वह भूमि जिसमें अन्न उपजाने के लिए जोतते बोते हैं। २-खेत में खड़ी फसल। ३-समरभूमि। ४-समतल भूमि। ५-किसी वस्तु या पशु के उत्पन्न होने का स्थान।
**खेतबँट** स्त्री० (हि) हर एक खेत के टुकड़े-टुकड़े करके बाँटने का एक ढंग।
**खेतिहर** पुं० (हि) खेती करने वाला। किसान।
**खेती** स्त्री० (हि) १-खेत में अन्न उपजाने का काम कृषि। २-खेत में उगी फसल।
**खेतीबारी** स्त्री० (हि) कृषि। किसानी।
**खेती-भूमि** स्त्री० (हि) वह जमीन जिस पर खेती होती हो या हो सकती हो। (कल्चरल-लैंड)।
**खेद** पुं० (सं) १-दुःख। रंज। २-ग्लानि। शिथिलता।
**खेदना** क्रि० (हि) खदेड़ना।
**खेदा** पुं० (हि) १-हाँका या हल्ला मचाकर वन्य-पशु को खदेड़ कर उपयुक्त स्थान पर लाने का कार्य २-शिकार। आखेट।
**खेना** क्रि० (हि) १-नाव को डाँडों से चलाना। २-समय काटना।
**खेप** स्त्री० (हि) १-एक बार लादा जा सकने वाला बोझ। २-बोझ ढोने वाले व्यक्ति, गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।
**खेपड़ी** स्त्री० (हि) नौका खेने की डाँड।
**खेपना** क्रि० (हि) समय बिताना।
**खेम** पुं० दे० 'क्षेम'।
**खेमटा** पुं० (देश) १-बारह मात्राओं का एक ताल २-इस ताल पर गाया जाने वाला गाना।
**खेमा** पुं० (अ) तंबू। डेरा।
**खेय** पुं० दे० 'खेवा'।
**खेरा** पुं० (हि) दे० 'खेड़ा'।
**खेरोरा** पुं० (हि) खँडौरा। ओला।
**खेल** पुं० (हि) १-व्यायाम या मन-बहलाव अथवा केवल चित्त के उल्लास से किया जाने वाला कार्य या चेष्टा। क्रीड़ा। २-बहुत तुच्छ काम। ३-तमाशा, अभिनय, स्वाँग, करतब आदि। ४-अद्भुत या विचित्र लीला।
**खेलक** पुं० (हि) खिलाड़ी।
**खेलना** क्रि० (हि) १-मन-बहलाव करना। २-अभिनय करना। किसी वस्तु के संयोग से कोई काम करना।
**खेल-भूमि** स्त्री० (हि) खेलने की जगह या स्थान। (प्ले-ग्राउंड)।
**खेलवाड़** पुं० (हि) दे० 'खिलवाड़'।
**खेलवाड़ी** वि०(हि) १-बहुत खेलने वाला। २-विनोदशील।
**खेला** पुं० (हि) १-खेल। २-लट्टू।
**खेलाड़ी** वि० (हि) १-खिलाड़ी। २-खेलवाड़ी।
**खेलाना** क्रि० (हि) १-खेल में प्रवृत्त करना। २-खेल में शामिल करना। बहलाना।
**खेलार** पु० (हि) खिलाड़ी।
**खेलौना** पुं० (हि) खिलौना।
**खेवक** पुं० (हि) केवट। माँझी।
**खेवट** पुं० (हि) १-पटवारी का कागज। २-मल्लाह। माँझी।
**खेवड़ा** पु० (हि) बौद्ध भिक्षु।
**खेवनहार: खेवनहारा** पुं० (हि) १-खेने वाला। २-पार लगाने वाला।
**खेवना** क्रि० (हि) दे० 'खेना'।
**खेवरना** क्रि० (हि) १-चंदन का टीका लगाना। २-मुँह को केसर, चंदन आदि से चित्रित करना।
**खेवरिया** पुं० (हि) खेने वाला।
**खेवा** पुं० (हि) १-नाव खेने की मजदूरी। २-नाव की खेप। ३-बोझ से लदी नाव। ४-धार्मिक मत। ५-बार। दफा।
**खेस** पुं० (हि) एक प्रकार की मोटे सूत की चादर।
**खेसारी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की मटर। लतरी।
**खेह, खेहर** स्त्री० (हि) राख। धूल।
**खेहा** पुं० (?)बटेर जैसी एक चिड़िया।
**खेंचना** क्रि० (हि) खींचना।
**खैना** क्रि०(हि) खयना। क्षीण होना।
**खैनी** स्त्री० (हि) तमाकू या सुरती का पत्ता जिसे मलकर चूने से खाते हैं।
**खैर** पुं० (हि) १-बबूल की जाति का एक वृक्ष विशेष २-इस वृक्ष की लकड़ी का सत। कत्था। स्त्री० (फा) कुशल। क्षेम। अव्य १-कुछ चिंता नहीं। २-अस्तु। अच्छा।

**खैर-आफियत** स्त्री० (फा+प) राजी खुशी।
**खैरख्वाह** वि० (फा) शुभचिंतक।
**खैर-भैर** पु० (हि) १-हो-हल्ला। २-हलचल।
**खैरा** वि० (हि) खैर या कत्थे के रंग का। कत्थई।
**खैरात** पु'० (प) दान। पुण्य।
**खैराती** वि० (फा) धर्मार्थ संचालित।
**खैरियत** स्त्री० (फा) १-कुशलक्षेम। २-भलाई।
**खैलर** पु'० (हि) मथानी।
**खैला** पु'० (हि) मथानी।
**खोंखा, खोंखी** स्त्री० (हि) कास। खाँसी।
**खोंगाह** पु० (फा) पीलापन लिये सफेद रंग वाला घोड़ा।
**खोंच** स्त्री० (हि) १-खरोंच। २-काँटे आदि में अटककर कपड़े का फट जाना। ३-झोली।
**खोंचा** पु'० (हि) बहेलियों का वह लम्बा बाँस जिसमें चिड़िया फँसाते हैं।
**खोंची** स्त्री० (हि) १-भिक्षा। भीख। २-मकान या जमीन का वह लम्बा, पतला निकला हुआ टुकड़ा जो किसी ओर को निकला हो।
**खोंटना** क्रि० (हि) किसी वस्तु का ऊपर का भाग तोड़ना।
**खोंडर** पु'० (हि) कोटर।
**खोंडा** वि० (हि) जिसका कोई अंग भंग हो। विकलांग।
**खोंतल, खोंता** पु'० (हि) घोंसला।
**खोंप, खोंपन** स्त्री० (हि) १-चीर। दरार। २-खोंच। ३-कोंपल।
**खोंपना** क्रि० (हि) धँसाना। चुभाना।
**खोंपा** पु'० (हि) १-हलकी वह लकड़ी जिसमें फाल लगता हैं। २-छप्पर का कोना। ३-भूसा रखने का स्थान जो छप्पर से ढका रहता है। ४-गोलाकार बंधी हुई वेणी।
**खोंसना** क्रि० (हि) अटकाना। फंसाना।
**खोआ** पु'० (हि) खोया। मावा।
**खोई** स्त्री० (हि) १-ऊख का रस निकले टुकड़े। २-भुने हुए चावल या धान की खील। लाई। ३-कम्बल की घोघी।
**खोखला** वि० (हि) पोला।
**खोखा** पु'० (हि) १-वह कागज जिस पर हुंडी लिखी गई हो। २-बालक। लड़का।
**खोगीर** पु'० दे० 'खुगीर'।
**खोज** स्त्री० (हि) १-अनुसन्धान। तलाश। २-चिह्न। ३-पदचिह्न। ४-गाड़ी के पहिये के निशान।
**खोजक** वि० (हि) खोजने वाला।
**खोजना** क्रि० (हि) तलाश करना। ढूंढना।
**खोजा** पु'० (हि) वह नपुंसक जो मुसलमानी अन्तःपुर में रक्षक का कार्य करता है। २-सेवक। नौकर। ३-सरदार। ४-एक तिजारत-पेशा मुसलमान जाति।
**खोजी, खोजू** वि० पु'० (हि) खोजने वाला। अन्वेषक।
**खोट** स्त्री० (हि) १-दोष। ऐब। २-किसी उत्तम द्रव्य में निकृष्ट द्रव्य का मिश्रण।
**खोटता** स्त्री० (हि) दे० 'खोटाई'।
**खोटा** वि० (हि) जो खरा न हो। जिसमें खोट हो।
**खोटाई** स्त्री० (हि) १-बुराई। २-दुष्टता। ३-छल। कपट। ४-दोष। ऐब।
**खोटाना** क्रि० (हि) दे० 'खुटाना'।
**खोटापन** पु'० (हि) खोटाई।
**खोड़** स्त्री० (हि) भूत-प्रेत की बाधा। ऊपरी फेर।
**खोद** पु'० (फा) योद्धाओं का लड़ाई में पहनने का लोहे का टोप। शिरत्राण।
**खोदना** क्रि० (हि) गड्ढा करना। २-नक्काशी करना। ३-छेड़-छाड़ करना। ४-उकसाना। ५-गड़ाना।
**खोदवाना** क्रि० (हि) खोदने का काम दूसरे से कराना
**खोदाई** स्त्री० (हि) दे० 'खुदाई'।
**खोना** क्रि० (हि) १-गंवाना। २-बिगाड़ना। ३-भूल से कोई वस्तु कहीं पर छोड़ देना। पु'० (हि) दे० 'दोना'।
**खोन्चा** पु'० (हि) बड़ा थाल जिसमें फेरी वाले मिठाइयाँ आदि रखकर बेचते हैं।
**खोपड़ा** पु० (हि) १-खोपड़ी। २-सिर। ३-नारियल का गोला। ४-नारियल।
**खोपड़ी** स्त्री० (हि) १-सिर की हड्डी। कपाल। २-सिर। ३-गोलाकार और बहुत कड़ा ऊपरी आवरण।
**खोपन** स्त्री० (हि) छप्पर का कोना।
**खोपा** पु'० (हि) १-छाजन का कोना। २-जूड़ा बंधी हुई वेणी। ३-स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकूनी बनावट। ४-गिरी का गोला।
**खोभन** क्रि० (हि) दे० 'खुभाना'।
**खोभरा** पु'० (हि) १-गड़ने वाली चीज, खूँटी आदि। २-कूड़ा-करकट।
**खोभार** पु'० (हि) कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।
**खोम** पु'० (हि) समूह। झुंड।
**खोया** पु'० (हि) १-उबाल कर गाढ़ा किया हुआ दूध। मावा। २-ईंट पाथने का गारा।
**खोर** स्त्री० (हि) १-सॅकरी गली। २-पशुओं को चारा खिलाने की नाँद। ३-स्नान। नहान। वि० (हि) १-खराब। बुरा। २-निकम्मा। बेकाम। वि० (फा) शब्दों के अन्त में लगने वाला एक विशेषण जो प्रत्यय के रूप में लगकर अर्थ देता है—१-खाने वाला। जैसे—आदमखोर। २-लेकर अपने व्यवहार में लाने वाला। जैसे—रिश्वतखोर। ३-प्रभावित। जैसे—मैलखोर।

**खोरना** *क्रि०* (हि) स्नान करना।
**खोरा** *पुं०* (हि) कटोरा। *वि०* (हि) खोंड़ा।
**खोरि** *स्त्री०* (हि) १-सकरी गली। २-ऐब। दोष। ३-बुराई।
**खोरिया** *स्त्री०* (हि) १-छोटी कटोरी। २-छोटे चमकीले बुन्दे।
**खोरी** *स्त्री०* (हि) कटोरी।
**खोल** *पुं०* (हि) १-आवरण। गिलाफ। २-मोटी चादर। ३ केंचुली। ४-म्यान।
**खोलना** *क्रि०* (हि) १-आवरण हटाना। २-रहस्योद्घाटन करना। ३-छेद करना। ४-जारी करना। ५-व्यापार अथवा दैनिक कार्य आरंभ करना।
**खोलरी, खोली** *स्त्री०* (हि) खोल। आवरण। गिलाफ
**खोव** *पुं०* (हि) १-खोने या गँवाने की क्रिया या भाव। २-हानि। क्षति।
**खोसना** *क्रि०* (हि) छीनना।
**खोह** *स्त्री०* (हि) कन्दरा। गुफा।
**खोही** *स्त्री०* (हि) १-पत्तों की छतरी। २-घोघी।
**खौं** *स्त्री०* (हि) १-अनाज रखने का गड्ढा। खाती २-गड्ढा।
**खौखोरना** *क्रि०* (हि) खिजलाना।
**खौट** *स्त्री०* (हि) १-खोंटने की क्रिया या भाव। २-खरोंट।
**खौफ** *पुं०* (अ) भय। दहशत।
**खौर** *पुं०* (हि) १-चन्दन का आड़ा धनुपाकार तिलक २-मस्तक पर धारण करने का स्त्रियों का एक गहना
**खौरहा** *वि०* (हि) १-गंजा। २-जिसे खौरा नामक रोग हुआ हो।
**खौरा** *पुं०* (हि) एक प्रकार की खुजली जिसमें पशुओं के बाल झड़ जाते हैं। *वि०* जिसके बाल झड़ने का रोग हुआ हो।
**खौरी** *स्त्री०* (हि) दे० 'खोरि'।
**खौलना** *क्रि०* (हि) उबलना।
**ख्यात** *वि०* (सं) प्रसिद्ध। *स्त्री०* वह कविता जिसमें योद्धाओं का यशोगान हो।
**ख्याति** *स्त्री०* (सं) १-प्रसिद्धि। शोहरत। २-यश। कीर्त्ति।
**ख्याल** *पुं०* (हि) १-खेल। २-दिल्लगी। २-दे० 'खयाल'।
**ख्याली** *वि०* (हि) दे० 'खयाली'।
**ख्रिष्टान** *पुं०* (हि) ईसाई।
**ख्रिष्टीय** *वि०* (हि) ईसवी।
**ख्रिष्ट** *पुं०* (हि) ईसा।
**ख्वाजा** *पुं०* (फा) १-मालिक। २-सरदार। ३-ऊँचे दरजे का मुसलमान फकीर। ४-अन्तःपुर का नपुंसक नौकर।
**ख्वाजासरा** *पुं०* दे० 'ख्वाजा (४)'।
**ख्वाना** *क्रि०* (हि) खिलाना।
**ख्वार** *वि०* (फा) १-नष्ट। खराब। २-बरबाद। ३-अनादृत। तिरस्कृत।
**ख्वारी** *स्त्री०* (फा) १-खराबी। २-दुर्दशा।
**ख्वास्तगोर** *पुं०* (फा) चाहने वाला।
**ख्वाह** *अव्य* (फा) या। अथवा।
**ख्वाहमख्वाह** *क्रि० वि०* (फा) १-जबरदस्ती। २-अवश्य।
**ख्वाहिश** *स्त्री०* (फा) इच्छा।
**ख्वाहिशमंद** *वि०* (फा) इच्छुक।
**ख्वैना** *क्रि०* (हि) खोना।

[शब्दसंख्या-१०५८२]

# ग

**ग** हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।
**गंग** *स्त्री०* (हि) गङ्गा नदी।
**गंगन** *पुं०* (हि) गगन। आकाश।
**गंगन-मंडल** *पुं०* (हि) गगन-मंडल।
**गंग-बरार** *पुं०* (हि) गंगा या अन्य किसी नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि।
**गंग-भोज** *पुं०* (हि) गंगाजी की यात्रा के उपरान्त जाति के लोगों को दिया जाने वाला भोज।
**गंग-शिकस्त** *पुं०* (हि) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर लेगई हो।
**गंगा** *स्त्री०* (स) भारत की एक प्रसिद्ध नदी जो हिमालय से निकलकर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। भागीरथी। मन्दाकिनी।
**गंगा-गति** *स्त्री०* (सं) मृत्यु।
**गंगा-जमनी** *वि०* (हि) १-मिला-जुला। २-दो धातुओं के मेल से बना हुआ।
**गंगा-जल** *पुं०* (सं) १-गंगा का पानी। २-एक कपड़े का नाम।
**गंगाजली** *स्त्री०* (हि) गंगाजल भरने की शीशी या सुराही।
**गंगाधर** *पुं०* (स) शिव।
**गंगापुत्र** *पुं०* (स) १-भीष्म। २-एक तरह के ब्राह्मण।
**गंगायात्रा** *स्त्री०* (सं) १-रोगी को गंगा तट पर इस उद्देश्य से ले जाना कि उसकी वहीं मृत्यु हो। २-मृत्यु। मौत।
**गंगाल** *पुं०* (हिं) पानी रखने का बड़ा बरतन।

कण्डाल।
**गंगालाभ** पुं० (सं) मृत्यु।
**गंगावतरण** पुं० (सं) गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।
**गंगासागर** पुं० (हि) १-वह स्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र से मिलती है। २-टोंटीदार लोटा।
**गंगेऊ** पुं० दे० 'गांगेय'।
**गंगोझ** पुं० (हि) १-गंगाजल। २-गंग-भोज।
**गंगोदक** पुं० (स) गंगाजल।
**गंगोटी** स्त्री० (हि) गंगा तट की मिट्टी।
**गंज** पुं० (हि) १-सिर के बाल झड़ जाने का रोग। पुं० (फा) १-कोष। खजाना। २-ढेर। ३-समूह। झुण्ड। ४-हाट। बाजार। ५-अनाज की मण्डी।
**गंजन** पुं० (सं) १-तिरस्कार। २-पीड़ा। कष्ट। ३-नाश। वि० मारने या नष्ट करने वाला।
**गंजना** क्रि० (हि) १-निरादर करना। २-चूर-चूर करना। ३-नष्ट करना। ४-पूर्णतया परास्त करना।
**गंजा** पुं० (हि) गंज नामक रोग। वि० जिसके सिर के बाल झड़ गये हों।
**गंजाना** क्रि० (हि) ढेर लगवाना।
**गंजी** स्त्री० (हि) १-ढेर। समूह। २-शकरकन्द। ३-बनियान। पुं० (हि) गँजेड़ी।
**गंजीफा** पुं० (फा) १-एक खेल का नाम। २-ताश।
**गंजेड़ी** वि० (हि) गाँजा पीने वाला।
**गँठजोड़ा, गँठबंधन** पुं० (हि) १-विवाह की एक रीति। २-दो वस्तुओं या व्यक्तियों का बना रहने वाला आपसी सम्बन्ध।
**गंड** पुं० (सं) १-गाल। २-कनपटी। ३-गले में पहनने का गण्डा। ४-गोलाकार लकीर या चिह्न। ५-गाँठ। ६-गिल्टी। ७-फोड़ा। ८-चिह्न। निशान
**गंडक, गंडकी** स्त्री० (सं) एक नदी का नाम।
**गंडदार** पुं० (हि) १-महावत। २-दे० 'गड़दार'।
**गंडमाला** स्त्री० (हि) कंठमाला नामक रोग।
**गंडल** पुं० (हि) गण्डस्थल। कनपटी।
**गंडस्थल** पुं० (स) कनपटी।
**गंडा** पुं० (हि) १-गाँठ। २-गिनने में चार की संख्या का समूह। ३-आड़ी धारी। ४-भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए किसी धागे में मन्त्र पढ़कर गाँठ लगाने का कार्य। ५-तोते चिड़िया आदि के गले की रंगदार धारी। कंठी।
**गंडासा** पुं० (हि) चारा काटने का हथियार।
**गंडूष** पुं० (सं) पानी का कुल्ला।
**गंडेरी** स्त्री० (हि) ईख के छोटे छोटे टुकड़े।
**गंदगी** स्त्री० (फा) १-मलिनता। २-अपवित्रता। ३-मल। विष्ठा।
**गंदना** पुं० (हि) एक कन्द जो लहसुन या प्याज की तरह का होता है।
**गंदला, गंदा** वि० (फा) १-मैला। २-अशुद्ध। ३-घृणित।
**गंदुमी** वि० (फा) गेहुँआ।
**गंध** स्त्री० (स) १-महक। बास। २-सुगन्ध। ३-शरीर में लगाने का सुगन्धित द्रव्य। ४-लेश। अणुमात्र। ५-गंधक।
**गंधक** स्त्री० (स) एक जलने वाला खनिज पदार्थ जो पीले रंग का होता है।
**गंधकी** वि० (हि) गंधक के से रंग का। हलका पीला
**गंध-द्रव्य** पुं० (सं) वह वस्तु जिससे सुगन्ध निकलती हो।
**गंधन** पुं० (?) सोना।
**गंधबंधु** पुं० (सं) आम का वृक्ष या फल।
**गंध-बिलाव** पुं० दे० 'मुश्क-बिलाव'।
**गंधमार्जार** पुं० (सं) मुश्कबिलाव।
**गंधर्व** पुं० (स) १-देवताओं का एक वर्ग जो गाने में प्रवीण है। २-प्रेतात्मा। ३-एक जाति जिसकी कन्याएँ नाचती गाती हैं।
**गंधर्व-नगर** पुं० (स) १-काल्पनिक नगर। २-मिथ्या ज्ञान। ३-चन्द्रमा के किनारे का मंडल।
**गंधवह** पुं० (सं) १-वायु। २-चन्दन। वि० सुगन्धित।
**गंधवाह** पुं० (सं) वायु। हवा।
**गंधसफेदा** पुं० (हि) सफेदा नामक वृक्ष।
**गंधसार** पुं० (सं) चन्दन।
**गंधा** वि०, स्त्री० (सं) जिसमें गन्ध हो।
**गंधाना** क्रि० (हि) १-गन्ध देना। २-दुर्गन्ध करना।
**गंधा-बिराजा** पुं० (हि) चीड़ के पेड़ का गोंद।
**गंधार** पुं० दे० 'गांधार'।
**गंधी** पुं० (सं) १-इत्रफरोश। अत्तार। २-एक घास। ३-एक तरह का कीड़ा।
**गंधीला** वि० (हि) बदबूदार।
**गंभीर** वि० (स) १-बहुत गहरा। २-घना। ३-जटिल। ४-जिसका सहज में निराकरण, उपचार, प्रतिकार अथवा शमन न हो सके। विकट। (सीरियस)। ५-शान्त। धीर।
**गँवँ** स्त्री० (हि) १-घात। २-प्रयोजन। ३-अवसर।
**गँवई** स्त्री० (हि) गाँव।
**गँवई** वि० (हि) गाँव का। पुं० १-देहाती। २-गँवार।
**गँवर-मसला** पुं० (हि) देहातियों में प्रचलित कहावत
**गँवाना** क्रि० (हि) खोना।
**गँवार** वि० (हि) १-ग्रामीण। २-असभ्य। ३-मूर्ख।
**गंवारता** स्त्री० (हि) गंवारपन।
**गँवारी** स्त्री० (हि) १-गँवारपन। २-मूर्खता। ३-गँवार स्त्री। वि० (हि) १-गाँव का। २-गँवारों के समान। ३-भद्दा।

**गंवारू** वि० (हि) दे० 'गँवारी'।
**गंवेला** वि० (हि) दे० 'गँवार'।
**गंस** पुं० (हि) १-द्वेष। २-ताना। स्त्री० (हि) तीर की नोक।
**गंसना** क्रि० (हि) १-जकड़ना। २-बुनावट में सूत को पास-पास सटाना या होना। ३-फँस जाना।
**गंसीला** वि० (हि) तीर की तरह नोकदार।
**गँह** क्रि० (हि) ग्रहण करना।
**ग** पु० (सं) १-गीत। २-गन्धर्व। ३-गुरुमात्रा। ४-गणेश। वि० (सं) १-गाने वाला। २-जाने वाला।
**गइंद** पुं० (हि) दे० 'गयंद'।
**गइनाही** स्त्री० (हि) जानकारी।
**गइयर** स्त्री० (हि) नीलगाय।
**गई करना** क्रि० (हि) आनाकानी करना।
**गई बहोर** वि० (हि) खोई हुई वस्तु को पुनः देने या बिगड़ी बात को बनाने वाला।
**गउमुख** पु०, वि० (हि) दे० 'गो-मुख'।
**गऊ** स्त्री० (हि) गाय। गौ।
**गगन** पुं० (सं) १-आकाश। २-एक छप्पय छन्द।
**गगन कुसुम** पुं० (सं) आकाशकुसुम।
**गगन-गढ़** पुं० (हि) बहुत ऊंचा महल अथवा इमारत।
**गगनचर, गगनचारी** पुं० (सं) १-पक्षी। २-ग्रह। नक्षत्र।
**गगन-चुंबी** वि० (हि) बहुत ऊँचा।
**गगन-धूल** स्त्री० (हि) १-एक तरह का कुकुरमुत्ता। २-केतकी नामक फूल की धूल।
**गगन-भेड़** स्त्री० (हि) कुंज नामक पक्षी।
**गगन-भेदी** वि० (सं) १-(वह शब्द) जो आकाश को गुँजाता सा जान पड़े। २-बहुत ऊँचा।
**गगन-मंडल** पुं० (सं) १-आकाशमंडल। २-ब्रह्मांड।
**गगन-घटी** पुं० (हि) सूर्य।
**गगन-वाटिका** स्त्री० (सं) असम्भव बात।
**गगनस्पर्शी** वि० (स) इतना ऊँचा कि आकाश को चूमता या स्पर्श करता सा जान पड़े। बहुत ऊँचा।
**गगरा** पुं० (हि) धातु या मिट्टी का बड़ा घड़ा। कलसा
**गगरिया, गगरी** स्त्री० (हि) छोटा घड़ा। कलसी।
**गच** पुं० (हि) १-नरम वस्तु में पैनी या कड़ी वस्तु के घुसने का शब्द। २-चूने सुरखी के मेल से बना मसाला। ३-पक्का फर्श।
**गचकारी** स्त्री० (हि) चूने या गच का काम।
**गचना** क्रि० (हि) १-ठूँस के भरना। २-दे० 'गाँसना'
**गच्छना** क्रि० (हि) १-चलना या चलाना। २-अपने जिम्मे लेना।
**गजंद** पु० (हि) दे० 'गयंद'।
**गज** पुं० (सं) १-हाथी। २-आठ की संख्या।
**गज** पुं० (फा) १-तीन फुट का एक माप। २-लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बन्दूक भरी जाती है। ३-सारंगी बजाने की कमान। ४-एक तरह का तीर।
**गजक** स्त्री० (फा) १-वह खाद्य पदार्थ जो शराब पीने के समय खाया जाता है। २-जलपान। ३-तिल-पपड़ी।
**गज-गति** स्त्री० (सं) हाथी के समान मन्द और मस्त चाल।
**गजगती** स्त्री० (हि) गज-गज के हिसाब से नापकर की जाने वाली बिक्री।
**गजगमन** पु० (सं) हाथी के समान मन्द गति।
**गजगा** पुं० (हि) एक तरह का गहना जिसे हाथियों को पहनाया जाता है।
**गज-गामिनी** वि० (सं) हाथी की सी मन्द, गौरव-भरी चाल।
**गजगाह** पुं० (हि) १-हाथी की झूल। २-पाखर। झूल
**गजगौन** पुं० (हि) दे० 'गजगमन'।
**गजगौनी** वि० (हि) दे० 'गज-गामिनी'।
**गज-गौहर** पुं० (हि) गजमोती।
**गजट** पुं० (अ) वार्तायन।
**गज-दंत** पु० (सं) १-हाथी का दाँत। २-गणेश। ३-दीवार में गड़ी खूँटी। ४-दाँत पर निकला हुआ दाँत।
**गज-दान** पुं० (सं) १-हाथी का मद। २-हाथी का दान।
**गजधर** पुं० (हि) १-राज। मेमार। २-मकान का नक्शा बनाने वाला व्यक्ति।
**गजनवी** क्रि० (फा) गजनी नगर का रहने वाला
**गजना** क्रि० (हि) दे० 'गाजना'।
**गजनाल** स्त्री० (सं) भारी तोप जिसे हाथी खींचते थे।
**गजनी** पुं० (फा) अफगानिस्तान का एक नगर।
**गजपति** पु० (सं) १-बहुत बड़ा हाथी। २-वह व्यक्ति जिसके पास बहुत सारे हाथी हों। ३-विजयनगर के राजाओं की उपाधि।
**गजब** पुं० (अ) १-रोष। कोप। २-आपत्ति। ३-अन्याय। ४-विचित्र बात।
**गजबाँक, गजबाग** पुं० (हि) हाथी का अंकुश।
**गज-मणि** पुं० (स) गजमुक्त।
**गजमुक्ता** स्त्री० (सं) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक से निकलता है।
**गज-मुख** पुं० (सं) गणेश।
**गजमोती** पुं० (हि) दे० 'गजमुक्ता'।
**गजर** पुं० (हि) १-पहर-पहर पर घन्टा बजने का शब्द। २-भोर का घन्टा। ३-चार, आठ, बारह बजने पर उतनी ही बार जल्द-जल्द बजने वाला शब्द। ४-जगाने की घन्टी।
**गजर-दम** क्रि० वि० (हि) बहुत सवेरे।

**गजरा** पुं० (हि) १-फूलों की घनी गुथी हुई माला। २-कलाई पर बाँधने का एक गहना।
**गजराज** पुं० (स) बड़ा हाथी।
**गजल** स्त्री० (फा) फारसी और उर्दू में शृंगार रस की कविता।
**गजवदन** पुं० (सं) गणेश।
**गजवान** पुं० (हि) महावत।
**गजशाला** पुं० (सं) फीलखाना।
**गजा** पुं० (हि) नगाड़ा पीटने का डंडा।
**गजाधर** पुं० दे० 'गदाधर'।
**गजानन** पुं० (सं) गणेश।
**गजारि** पुं० (सं) सिंह।
**गजी** स्त्री० (फा) एक तरह का मोटा कपड़ा। गाढ़ा। स्त्री० (सं) हथिनी।
**गजेंद्र** पुं० (सं) १-ऐरावत। २-बड़ा हाथी।
**गज्ज** स्त्री० (हि) गरज। गर्जन।
**गज्जना** क्रि० (हि) गरजना।
**गज्यूह** पुं० (हि) हाथियों का झुंड।
**गझिन** वि० (हि) १-सघन। घना। २-ठस बुना हुआ।
**गट** पुं० (हि) १-गले के नीचे कोई वस्तु उतरने का शब्द। २-समूह। राशि। ३-दल। झुंड।
**गटई** स्त्री० (हि) गला। गरदन।
**गटकना** क्रि० (हि) १-निगलना। हड़पना।
**गटकीला** वि० (हि) निगलने वाला।
**गटगट** स्त्री० (हि) निगलते समय गले में होने वाला शब्द।
**गटना** क्रि०(हि) युक्त या संबद्ध होना या करना।
**गटपट** स्त्री० (हि) १-घनिष्ठता। २-सहवास।
**गटर-माला** स्त्री० (हि) बड़े-बड़े दानों वाली माला।
**गटा** पुं० (हि) गट्टा। कलाई।
**गटी** स्त्री० (हि) गाँठ।
**गट्टा** पुं० (हि) १-कलाई। २-टखना। ३-एक तरह मिठाई।
**गट्ठर, गट्ठा** पुं० (हि) बड़ी गठरी।
**गठकटा** वि० (हि) १-गिरहकट। २-धोखा या बेईमानी से रुपया ठगने वाला।
**गठन** स्त्री० (हि) बनावट।
**गठना** क्रि० (हि) जुड़ना। सटना। २-कोई कुचक्र होना। ३-अनुकूल होना। सधना। ४-विधिवत बनना या होना। ५-बहुत मेल मिलाप होना।
**गठ-बंधन** पुं० (हि) विवाह की एक रसम जिसमें वर और वधु के वस्त्र के सिरे को मिलाकर बाँध देते हैं
**गठरी** स्त्री० (हि) १-कपड़े में बंधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। २-माल। धन। रकम।
**गठवाना** क्रि० (हि) १-गठाना। २-सिलवाना। ३-जोड़ लगवाना।
**गठा** पुं० (हि) गट्ठा।
**गठित** वि० (हि) गठा हुआ।
**गठिबंध** पुं० (हि) दे० 'गठबंधन'।
**गठिया** स्त्री० (हि) १-बोझ लादने का थैला। २-बड़ी गठरी। ३-जोड़ों में सूजन और पीड़ा होने का एक रोग।
**गठियाना** क्रि० (हि) १-गाँठ लगाना। २-गाँठ में बाँधना।
**गठीला** वि० (हि) १-जिसमें बहुत सी गाँठें हों। २-गठा हुआ। कसा हुआ। ३-दृढ़। मजबूत।
**गठौत** स्त्री० (हि) १-मित्रता। २-गुप्त बात।
**गडंग** पुं० (हि) १-घमंड। २-आत्मश्लाघा।
**गड** पुं० (हि) दे० 'गड्ड'।
**गड़कना** क्रि० (हि) १-डूबना। २-गरजना।
**गड़गड़ा** पुं० (हि) बड़ा हुक्का।
**गड़गड़ाना** क्रि० (हि) गड़गड़ शब्द करना या होना
**गड़गड़ाहट** स्त्री० (हि) गड़-गड़ होने का शब्द या भाव।
**गड़दार** पुं० (हि) १-मस्त हाथी के साथ भाला लेकर चलने वाला नौकर।
**गड़ना** क्रि० (हि) १-चुभना। धँसना। २-खुट-खुट लगना। ३-दफन होना। ४-दुखना।
**गड़पना** क्रि० (हि) १-निगलना। २-किसी वस्तु पर अनुचित अधिकार करना।
**गड़प्पा** पुं० (हि) १-गड्ढा। २-धोखा खाने का स्थान।
**गड़बड़, गड़बड़-झाला, गड़बड़-घोटाला** वि० (हि) १-ऊँचा-नीचा। २-अव्यवस्थित। ३-बुरा। पुं० (हि) अ-व्यवस्था।
**गड़बड़ाना** क्रि० (हि) १-भ्रम में पड़ना या डालना। २-अव्यवस्थित होना या करना। ३-खराबी करना
**गड़बड़ी** स्त्री० (हि) दे० 'गड़बड़'।
**गड़रिया** पुं० (हि) भेड़ बकरी पालने का काम करने वाली एक जाति।
**गड़हा** पुं० (हि) दे० 'गड्ढा'।
**गड़ा** पुं० (हि) १-राशि। ढेर। २-गड्ढा।
**गड़ाना** क्रि० (हि) चुभाना।
**गड़ायत** वि० (हि) चुभने वाला।
**गड़ारी** स्त्री० (हि) १-वृत। घेरा। २-आड़ी लकीर। ३-गोल चरखी घिरनी। ४-आड़ी धारियों वाला।
**गडुआ** पुं० (हि) लोटा (पात्र)।
**गडुई** स्त्री० (हि) छोटा लोटा।
**गडूर** पुं० (हि) कुबड़ा आदमी।
**गड़रिया** पुं० (हि) गड़रिया।
**गड़ोना** क्रि० (हि) चुभाना। पुं० एक तरह का पान।
**गड्ड** पुं० (हि) १-एक पर एक रखी हुई वस्तुओं का समूह। २-खत्ता। गड्ढा। ३-गड्ढा।

**गड्बड्, गड्मड्** पुं० (हि) बेमेल की मिलावट। वि० मिलाजुला।
**गड्डर** स्त्री० (सं) भेड़।
**गड्डा** पुं० (हि) १-किसी वस्तु की बड़ी गड्डी। २-आतिशबाजी में चरखियों में लगने वाला पटाका। ३-बैलगाड़ी। ठेला। ४-दे० 'गड्ढा'।
**गड्डरिक** वि० (सं) भेड़ सम्बन्धी। भेड़ का।
**गड्डरी** पुं० (हि) गड़रिया।
**गड्डी** स्त्री० (हि) 'गड्ड'
**गड्ढा** पुं० (हि) १-जमीन में गहरा स्थान। गड्हा २-थोड़े घेरे की गहराई।
**गढ़त** वि० (हि) गढ़ा हुआ। कल्पित।
**गढ़** पुं० (हि) १-किला। दुर्ग। २-खाई।
**गढ़त, गढ़न** स्त्री० (हि) १-गढ़ने की क्रिया या भाव। २-बनावट।
**गढ़ना** क्रि० (हि) १-काट-छाँट कर बनाना। २-सुडौल करना ३-कपोल-कल्पना करना। ४-ठोकना पीटना।
**गढ़पति, गढ़वई, गढ़वै** पुं० (हि) किलेदार। २-राजा। सरदार।
**गढ़ाई** स्त्री० (हि) १-गढ़ने का काम या भाव। २-गढ़ने की मजदूरी।
**गढ़ाना** क्रि० (हि) गढ़ने का कार्य कराना।
**गढ़िया** वि० (हि) गढ़ने वाला।
**गढ़ी** स्त्री० (हि) छोटा किला।
**गढ़ेश** पुं० (हि) गढ़ का मालिक।
**गढ़ैया** वि० (हि) गढ़ने का काम करने वाला।
**गढ़ोई** पुं० (हि) गढ़पति।
**गण** पुं० (सं) १-समूह। गिरोह। २-वर्ग। श्रेणी। जाति। ३-समान उद्देश्य वाले लोगों का समूह या संघ। ४-अनुचर अथवा अनुयायी वर्ग। ५-जीवों, वस्तुओं आदि का वह बड़ा विभाग जिसमें और भी उप-विभाग हों। (जिनस)। ६-दूत। ७-सेवक। छन्द शास्त्र के अनुसार तीन वर्णों का समूह।
**गणक** पुं० (सं) १-गणना करने वाला। २-ज्योतिषी ३-लेखा या हिसाब रखने अथवा लिखने वाला। लेखा रखने में चतुर व्यक्ति। (अकाउन्टेंन्ट)।
**गण-तंत्र** पुं० (स) वह शासन प्रणाली जिसमें द्वारा जनता ही अपने विधान निर्माण करने वाले प्रतिनिधि तथा प्रधान शासक चुनती है। (रिपब्लिक)
**गणतंत्री** वि० (स) १-गणतन्त्र सम्बन्धी। २-गण-तन्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार। ३-गणतन्त्र का समर्थक। (रिपब्लिकन)।
**गणदेवता** पुं० (स) समूहचारी देवता।
**गणन** पुं० (सं) १-गिनना। २-गिनती।
**गणना** स्त्री० (स) १-गिनती करना। गिनना। २-गिनती। ३-किसी देश अथवा स्थान के निवासियों या होने वाले पदार्थों आदि की पूरी गिनती। (सेन्सस)। ४-गिनकर या हिसाब फैलाकर यह देखना कि कुल कितना हुआ है। (कैलकुलेशन, कम्प्यूटेशन)। ५-हिसाब आय-व्यय का विवरण। (अकाउन्ट)।
**गणनाध्यक्ष** पुं० (सं) वह जो गणना या लेखा रखने में चतुर हो। (अकाउन्टेंट)।
**गणनानुदान** पुं० (स) लेखा विषयक मत। हिसाब-किताब पर मत। (वोट-आन-अकाउन्ट)।
**गणना-परीक्षा** स्त्री० (सं) आय-व्यय की जाँच-पड़ताल का कार्य। लेखेक्षण। (ऑडिट)।
**गणनायक, गणपति** पुं० (सं) गणेश।
**गण-पूर्ति** स्त्री० (स) किसी सभा अथवा परिषद् के सदस्यों की वह कम से कम संख्या जो कार्य संचालन के निमित्त आवश्यक हो। (कोरम)।
**गण-राज्य** पुं० (सं) गण-तन्त्र।
**गणाधिप, गणाध्यक्ष** पुं० (सं) १-शिव। २-गणेश
**गणिका** स्त्री० (सं) १-वेश्या। २-सामान्य नायिका
**गणित** पुं० (स) १-वह शास्त्र जिसमें संख्या, परिमाण आदि निश्चित करने के उपायों का विचार होता है। २-हिसाब।
**गणितज्ञ** वि० (सं) १-गणित शास्त्र का ज्ञाता। हिसाबी। २-ज्योतिषी।
**गणेश** पुं० (स) एक प्रधान हिन्दू देवता जिनका सिर हाथी का और शरीर मनुष्य का मानते हैं।
**गण्य** वि० (सं) १-गिनने के लायक। २-प्रतिष्ठित।
**गण्य-मान्य** वि० (स) प्रतिष्ठित।
**गतंड** पुं० (हि) नपुंसक।
**गत** वि० (सं) १-बीता हुआ। २-हीन। रहित। ३-मरा हुआ। स्त्री० (हि) दशा। अवस्था।
**गतका** पुं० (हि) १-लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चपड़े का खोल चढ़ा रहता है। २-गतके से खेला जाने वाला खेल।
**गतांक** वि० (सं) गया-बीता। पुं० (स) समाचार-पत्र का पिछला अंक।
**गतागत** वि० (सं) गया और आया हुआ। पुं० गमनागमन।
**गतानुगतिक** वि० (सं) १-आँख मूंद कर दूसरों के पीछे चलने वाला। अन्धानुयायी। २-अनुकरण करने वाला।
**गति** स्त्री० (स) १-चाल। गमन। २-हरकत। ३-मनुष्य। ४-अवस्था। दशा। ५-प्रयत्न की हद। ६-सहारा। ७-माया। लीला। ८-रीति। ढंग। ९-मृतक का क्रिया कर्म। १०-वेष। ११-प्रवेश। पैठ।
**गतिरोध** पुं० (सं) किसी बात-चीत आदि में ऐसी जटिल स्थिति या बाधा का उत्पन्न होजाना कि

आगे बढ़ने आदि की सम्भावना ही न जान पड़े जिच। (डेडलॉक)।
**गति-विज्ञान** पुं० (सं) विज्ञान का वह विभाग जिसमें द्रव्यादि की गति और शक्ति सम्बन्धी सिद्धान्तों का निर्धारण किया जाता है। (डायनेमिक्स)।
**गति-विद्या** स्त्री० (स) दे० 'गति-विज्ञान'।
**गति-विधि** स्त्री० (स) १-चेष्टा। २-दशा। रंग-ढंग।
**गति-शास्त्र** पुं० (सं) गति-विज्ञान।
**गति-शील** वि० (सं) १-जिसमें गति हो। चलने-फिरने वाला। २-आगे की ओर बढ़ने वाला। उन्नतिशील। ३-जो खुद चल कर दूसरे को भी चलाता हो। (डायनामिक)।
**गतिहीन** वि० (सं) १-असहाय। परित्यक्त। २-गतिरहित।
**गत्तालखाता** पुं० (हि) बट्टाखाता।
**गत्थ** पुं० दे० 'गथ'।
**गत्यावरोध** पुं० (सं) झगड़े आदि की बातचीत में बाधा उपस्थित होना। (डेडलॉक)।
**गथ** पुं० (हि) १-पूंजी। २-माल। ३-झुण्ड।
**गथना** क्रि० (हि) १-आपस में गूंथना। २-बात मिलाना। ३-घुसना। ४-मिल कर एक होना।
**गद** पुं० (सं) १-रोग। २-विष। ३-रोग का उपचार ४-गुलगुली वस्तु के आघात लगने से होने वाला शब्द।
**गदका** पुं० (हि) दे० 'गतका'।
**गदकारा** वि० (हि) गुदगुदा।
**गदना** क्रि० (हि) कहना।
**गदबदा** वि० (हि) भरे हुए अंगों वाला।
**गदर** पुं० (अ) १-खलबली। हलचल। २-विद्रोह। बगावत।
**गदराना** क्रि० (हि) १-(फल आदि का) पकने पर होना। २-जवानी में अंगों का भरना। ३-आँख आने को होना।
**गदला** वि० (हि) मिट्टी या कीचड़ मिला (पानी)। मैला।
**गदहपचीसी** स्त्री० (हि) सोलह से पच्चीस साल तक की अवस्था जिसमें मनुष्य की बुद्धि कम अनुभव के कारण अपरिपक्व रहती है।
**गदहा** पुं० (हि) गधा (पशु)।
**गदा** स्त्री० (सं) १-एक प्राचीन अस्त्र का नाम। २-कसरत के सामानों में से एक। पुं० (फा) १-फकीर २-दरिद्र।
**गदाई** वि० (हि) १-तुच्छ। २-वाहियात। रद्दी।
**गदाधर** पुं० (स) विष्णु।
**गदेला** पुं० (हि) मोटा गद्दा।
**गद्गद** वि० (सं) १-हर्ष, प्रेम आदि के अतिरेक से जिसका गला भर आया हो। अत्याधिक प्रसन्न।
**गद्द** पुं० (हि) १-किसी गरिष्ट वस्तु के खाने के कारण पेट का भारीपन। २-गुदगुदे स्थान पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द।
**गद्दा** पुं० (हि) मोटा और गुदगुदा बिछौना।
**गद्दार** वि० (अ) देशद्रोही।
**गद्दारी** स्त्री० (अ) देशद्रोह।
**गद्दी** स्त्री० (हि) १-छोटा गद्दा। २-किसी व्यवसायी के बैठने का स्थान। ३-साधु संन्यासियों का अखाड़ा। ४-घोड़ा, ऊँट आदि की जीन। ५-प्रतिष्ठित पद। ६-राज्य-सिंहासन। ७-राज्याभिषेक। पुं० (हि) गड़रिया।
**गद्दी-नशीन** वि० (हि+फा) १-राज्य-सिंहासनारूढ़। २-उत्तराधिकारी।
**गद्दी-नशीनी** स्त्री० (हि+फा) राज्याभिषेक।
**गद्य** पुं० (स) वह रचना जो छन्दोबद्ध न हो।
**गद्यात्मक** वि० (सं) गद्य में लिखा या रचा हुआ।
**गधा, गधेरा** पुं० (हि) १-घोड़े की जाति का एक प्रसिद्ध चौपाया। खर। २-मूर्ख।
**गन** क्रि० (हि) दे० 'गण'। स्त्री० (अं) बन्दूक
**गनक** पुं० (हि) ज्योतिषी।
**गनगनाना** क्रि० (हि) १-जाड़े से (शरीर में) कंपकंपी होना। २-(शरीर का) रोमांचित होना।
**गनगौर** स्त्री० (हि) चैत्र शुक्ला तृतीया, इस दिन गणेश और गौरी पूजन होता है।
**गनती** स्त्री० (हि) गिनती।
**गनना** क्रि० (हि) गिनना।
**गननायक, गनप, गनपति, गनराय** पुं० (हि) गणेश
**गनबो** क्रि० (हि) गिना जायेगा।
**गनाना** क्रि० (हि) गिना जाना।
**गनाल** स्त्री० (हि) एक प्रकार की तोप (प्राचीन)।
**गनिका** स्त्री० (हि) दे० 'गणिका'।
**गनी** वि० (अ) धनी। स्त्री० (हि) गिनती।
**गनीम** पुं० (अ) १-शत्रु। २-लुटेरा।
**गनीमत** स्त्री० (अ) १-सन्तोष की बात। २-लूट का या मुफ्त का माल।
**गन्ना** पुं० (हि) ईख।
**गप** स्त्री० (हि) १-झूठी बात। २-झूठी खबर। ३-झूठी बड़ाई। ४-बकवास। पुं० (हि) १-निगलने या गपकने की क्रिया। २-किसी नरम चीज में घुसने का शब्द।
**गपकना** क्रि० (हि) चटपट निगलना।
**गपड़चौथ** पुं० (हि) व्यर्थ की बातचीत।
**गपना** क्रि० (हि) गप मारना।
**गपिहा** वि० (हि) गप हाँकने वाला।
**गपोड़, गपोड़ा** पुं० (हि) झूठी बात।
**गप्प** स्त्री० (हि) दे० 'गप'।
**गप्पी** वि० (हि) १-गप हांकने वाला। २-झूठा।

**गप्फा** पुं० (हिं) १-बहुत बड़ा ग्रास। २-लाभ।
**गफ** वि० (फा) घना। ठस। गाढ़ा।
**गफलत** स्त्री० (फा) १-असावधानी। २-मोह। ३-भूल।
**गफिलाई** स्त्री० (हिं) दे० 'गफलत'।
**गबन** पुं० (अ) पराया धन अनुचित रूप से हजम करना।
**गबरा** वि० (हिं) दे० 'गब्बर'।
**गबरू** वि० (हिं) १-ऐसा नौजवान जिसके रेख भी न आई हो। २-भोला-भाला। पुं० पति।
**गब्ब** पुं० (हिं) गर्व। अभिमान।
**गब्बर** वि० (हिं) १-घमण्डी। २-मट्ठर। ३-कीमती ४-धनी।
**गब्बी** वि० (हिं) अभिमानी।
**गभरू** वि०, पुं० दे० 'गबरू'।
**गभस्ति** पुं० (सं) १-किरण। २-सूर्य। ३-हाथ। स्त्री० अग्नि की स्त्री का नाम।
**गभस्तिमान्** पुं० (सं) १-सूर्य। २-एक द्वीप का नाम। ३-एक पाताल का नाम।
**गभीर, गभुआर, गभुवार** वि० (हिं) १-गर्भ का (बालक)। २-जिसका मुण्डन न हुआ हो। ३-नादान।
**गम** स्त्री० (हिं) पहुंच। प्रवेश। पुं० (अ) १-दुःख। २-शोक। ३-चिन्ता।
**गमक** पुं० (सं) १-जाने वाला। २-बोधक। सूचक। स्त्री० १-संगीत में एक श्रुति से दूसरी श्रुति में जाने की एक रीति। २-तबले की गम्भीर आवाज। ३-सुगन्ध। ४-गन्ध।
**गमकना** क्रि० (हिं) महकना।
**गमकीला** वि० (हिं) सुगन्धित।
**गमखोर** वि० (फा) सहिष्णु। सहनशील।
**गमन** पुं० (सं) १-प्रस्थान। जाना। २-सम्भोग।
**गमनना** क्रि० (हिं) जाना।
**गमना** क्रि० (हिं) १-जाना। २-गलना। ३-चिन्ता करना। ४-रंज करना। ५-ध्यान देना।
**गमनागमन** पुं० (सं) १-जाना और आना। २-यातायात।
**गमला** पुं० (हिं) १-वह पात्र जिसमें पौधे लगाते हैं। २-पाखाना फिरने का बरतन।
**गमागम** पुं० (सं) दे० 'गमनागमन'।
**गमाना** क्रि० (हिं) गँवाना। खोना।
**गमार** वि० (हिं) गँवार। ग्रामीण।
**गमी** स्त्री० (अ) १-शोक। मृत्यु।
**गम्मत** स्त्री० (मराठी) १-विनोद। २-मौज।
**गम्य** वि० (सं) १-जाने योग्य। २-प्राप्य। ३-भोग्य। ४-साध्य। ५-संभोग करने लायक।
**गयंद** पुं० (हिं) गजेन्द्र। बड़ा हाथी।
**गय** पुं० (हिं) हाथी।
**गयण, गयन** पुं० (हिं) गगन। आकाश।
**गयनाल** स्त्री० (हिं) गजनाल।
**गयल** स्त्री० (हिं) गैल।
**गया** पुं० (सं) बिहार का एक पुण्य स्थान जहाँ हिन्दू पिंडदान करते हैं। क्रि० (हिं) 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप।
**गर** पुं० (सं) रोग। पुं० (हिं) गला। प्रत्य० (फा) बनाने वाला। जैसे कारीगर। अव्य० अगर।
**गरक** वि० (अ) १-निमग्न। २-नष्ट।
**गरकाब** वि० (अ) १-डूबा हुआ। अन्तरस्थ। २-जलमग्न।
**गरकी** स्त्री० (हिं) १-डूबना। २-अतिवृष्टि।
**गरगज** पुं० १-किले का बुर्ज। २-वह ऊँचा स्थान जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है। ३-फाँसी की टिकटी। वि० विशाल।
**गरगाब** वि० (हिं) दे० 'गरकाब'।
**गरज** स्त्री० (अ) १-प्रयोजन। २-जरूरत। ३-इच्छा अव्य० १-निदान। २-अस्तु। खैर। स्त्री० (हिं) बहुत गम्भीर शब्द।
**गरजन** स्त्री० (हिं) गरजने की क्रिया या भाव। कड़क
**गरजना** क्रि० (हिं) १-गम्भीर तथा घोर शब्द करना २-तड़कना। वि० गरजन करने वाला।
**गरज-मंद** वि० (फा) १-जरूरत वाला। २-इच्छुक।
**गरजी** वि० दे० 'गरज-मंद'।
**गरजू** वि० (हिं) १-गरजमन्द। २-गरजने वाला।
**गरट्ट** पुं० (हिं) झुंड।
**गरट्टना** क्रि० (हिं) झुंड बनाकर चलना।
**गरद** स्त्री० दे० 'गर्द'।
**गरदन** स्त्री० (फा) १-सिर को धड़ से जोड़ने वाला अंग। ग्रीवा। गला। बरतनों आदि में मुँह के नीचे का हिस्सा।
**गरदनियाँ** स्त्री० (हिं) गरदन पकड़ कर बाहर निकालना।
**गरदनी** स्त्री० (हिं) १-कुरता आदि का गला। गरेबान २-हँसुली। ३-घोड़े के ओढ़ने का कपड़ा। ४-कारनिस।
**गरदा** पुं० (फा) मिट्टी। धूल।
**गरदान** वि० (फा) घूम फिर कर एक ही स्थान पर आने वाला। पुं० १-शब्दों का रूप साधन। २-घूम फिर कर अपने ही स्थान पर आने वाला कबूतर। ३-फेर। चक्कर।
**गरदानना** क्रि० (हिं) १-शब्दों का रूप साधन। २-बार-बार कहना। ३-किसी को कुछ समझना या मानना।
**गरना** क्रि० (हिं) १-गलना। २-गड़ना। ३-निचुड़ना।

**गरनाल** स्त्री० (हिं) चौड़े मुँह वाली तोप। घननाल
**गरब** पुं० (हिं) १-गर्व। २-हाथी का मद।
**गरबई** स्त्री० (हिं) गर्व। घमंड।
**गरबगहेला** वि० (हिं) घमंडी।
**गरबाना** क्रि० (हिं) घमंड में आना।
**गरबित** वि० (हि) दे० 'गर्वित'।
**गरबीला** वि० (हि) घमंडी।
**गरभ** पुं० (हिं) १-गर्भ। २-गर्व।
**गरभदान** पुं० (हि) गर्भाधान।
**गरभाना** क्रि० (हि) १-गर्भवती होना। २-धान गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।
**गरभी** वि० (हिं) गर्वी। घमंडी।
**गरम** वि० (फा) १-तप्त। २-क्रुद्ध। ३-तीव्र। ४-गरमी पैदा करने वाला। ५-उत्साहपूर्ण। ६-उग्र
**गरम कपड़ा** पुं० (हिं) ऊनी वस्त्र।
**गरम-मसाला** पुं० (हि) भोजन में काम आने वाला मसाला जिसमें लौंग, इलायची, जीरा, काली मिर्च आदि होती हैं।
**गरमाई** स्त्री० (हि) १-गरमी। २-गरमाहट।
**गरमागरम** वि० (हि) १-बहुत गरम। २-ताजा।
**गरमागरमी** स्त्री० (हि) १-सन्नद्धता। २-कहा सुनी।
**गरमाना** क्रि० (हि) १-गरम होना या करना। २-मस्ताना। ३-आवेश में आना। ४-लगातार परिश्रम से तेजी पर आना।
**गरमाहट** स्त्री० (हि) गरमी। उष्णता।
**गरमी** स्त्री० (फा) १-उष्णता। २-जलन। ३-उग्रता। ४-क्रोध। ५-उमंग। ६-ग्रीष्म काल। ७-एक रोग। आतशक।
**गरर, गररा** पुं० दे० 'गर्रा'।
**गरराना** क्रि० (हिं) गरजना।
**गरल** पुं० (सं) विष।
**गरलधर** पुं० (स) १-शिव। २-सांप।
**गरवा** वि० (हि) १-भारी। वजनी। २-महान। पुं० (हि) गला।
**गरसना** क्रि० (हि) दे० 'ग्रसना'।
**गरह** पुं० (हिं) दे० 'ग्रह'।
**गरहन** पुं० (हिं) दे० 'ग्रहण'।
**गराँव** पुं० (हि) चौपायों के गले में बाँधने की रस्सी।
**गरा** पुं० (हि) गला।
**गराज** स्त्री० (हिं) गंभीर आवाज। २-मोटर खड़ी करने का स्थान कोठरी। (गैरेज)।
**गराड़ी** स्त्री०(हिं) १-घिरनी। चरखी। २-गाड़ीवाना।
**गराना** क्रि० (हिं) १-गलाना। २-निचोड़ना।
**गरानि, गरानी** स्त्री० (हिं) ग्लानी।
**गरारा** वि० (हि) १-घमंडी। उद्धत। २-मस्ती से इधर उधर घूमता हुआ। ३-प्रबल। प्रचंड। पुं०(अ) १-कुल्ला। २-दवा, जो कुल्ला करने के पानी में मिलाई जाय। पुं० (हि) १-एक प्रकार का ढीली मोहरी का पाजामा जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं। २-बड़ा थैला।
**गरावना** क्रि० (हि) गलाना।
**गरास** पुं० (हि) ग्रास।
**गरासना** क्रि० (हि) ग्रासना।
**गरिमा** स्त्री० (सं) १-गुरुत्व। भारीपन। २-गौरव। महत्व। ३-घमण्ड। ४-आत्मश्लाघा। शेखी। ५-आठ सिद्धियों में से एक।
**गरियाना** क्रि० (हि) गालियाँ देना।
**गरियार** वि० (हि) धीमी चाल से चलने वाला (चौपाया)।
**गरियारा** पुं० (हि) गलियारा।
**गरिष्ठ** वि० (स) १-बहुत भारी। २-शीघ्र न पचने वाला (भोजन)।
**गरी** स्त्री० (हि) १-नारियल के फल के भीतर का गूदा। २-बीज के भीतर का कोमल भाग।
**गरीब** वि० (अ) १-नम्र। २-दीन। हीन। ३-निर्धन
**गरीब-निवाज** वि० (फा) दयालु।
**गरीब-परवर** वि० (फा) दीन प्रतिपालक।
**गरीबी** स्त्री० (अ) १-दीनता। नम्रता। (२) निर्धनता। कंगाली।
**गरीयस** वि० (सं) १-बड़ा भारी। गुरु। २-महान्।
**गरु** वि० (सं) १-भारी। वजनी। २-गौरवशाली। ३-शान्त। धीर।
**गरुआ** वि० (हि) दे० 'गरु'। पुं० (हि) गडुआ।
**गरुआना** क्रि० (हि) भारी होना, करना या बनाना।
**गरुड़** पुं० (सं) विष्णु का वाहन एक पक्षी। पक्षीराज
**गरुड़ध्वज** पुं० (सं) विष्णु।
**गरुड़सिंह** पुं० (स) जिसका अग्रभाग गरुड़ के समान और पिछला सिंह के समान हो (कल्पित)।
**गरुता** स्त्री० (हि) १-गुरुता। २-बड़ाई।
**गरुवा** वि० (हि) दे० 'गुरु'।
**गरुवाई** स्त्री० (हि) गुरुता।
**गरू** वि० (हिं) गुरु। भारी।
**गरूर** पुं० (अ) अभिमान।
**गरूरत, गरूरता** स्त्री० दे० 'गरूर'।
**गरूरी** वि० (अ) अभिमानी। स्त्री० अभिमान।
**गरेठा** वि० (हि) टेढ़ा।
**गरेबान** पुं० (फा) १-कुरते की सिलाई का वह भाग जो गले पर पड़ता है। २-गले की पट्टी।
**गरेरना** क्रि० (हि) घेरना।
**गरेरा** पुं० (हि) घेरा। वि० चक्करदार।
**गरोह** पुं० (फा) झुण्ड। समूह।
**गर्ज** स्त्री० दे० 'गरज'।
**गर्जक** वि० (स) गरजने वाला। जोर से बोलने वाला। पुं० (सं) यन्त्र विशेष जिससे कही हुई कोई

द्वारा उच्च स्वर से और दूर तक सुनाई देती है (लाउडस्पीकर)।
गर्जन पुं० (सं) गरजना। गम्भीर ध्वनि।
गर्जना क्रि० (हिं) गरजना। स्त्री० (हिं) गर्जन।
गर्त पुं० (सं) १-गड्ढा। २-दरार।
गर्द स्त्री० (फा) धूल। राख।
गर्दखोर, गर्दखोरा वि० (फा) धूल आदि पड़ने से जल्दी मैला न होने वाला। पुं० द्वार के सामने पैर पोंछने का टाट।
गर्द-गुबार पुं० (फा) धूल मिट्टी।
गर्दन स्त्री० दे० 'गरदन'।
गर्दभ पुं० (सं) गधा।
गर्दिश स्त्री० (फा) १-चक्कर। २-विपत्ति।
गर्भ पुं० (सं) १-पेट के भीतर का बच्चा। २-पेट। गर्भाशय।
गर्भ-केसर पुं० (सं) फूल में के बाल के समान पतले सूत जो गर्भ नाल के भीतर होते हैं।
गर्भगृह पुं० (सं) १-मकान के बीच की कोठरी। २-घर का आँगन। ३-मन्दिर के मध्य भाग में स्थित वह प्रधान कोठरी जिसमें मुख्य मूर्ति रखी जाती है
गर्भनाल स्त्री०(सं) फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर केसर होता है।
गर्भ-पात पुं० (सं) गर्भ का अपरिपक्व अवस्था में गिरजाना।
गर्भवती वि० स्त्री० (सं) गर्भिणी।
गर्भ-विज्ञान पुं०(सं) वह विज्ञान जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि गर्भ में कलल किस प्रकार बनता है, उसमें जीवन किस तरह उत्पन्न होता है, एवं उसकी वृद्धि किस तरह होती है। (एम्ब्रायोलोजी)।
गर्भस्थ वि० (सं) जो गर्भ में हो।
गर्भस्राव पुं०(सं) चार मास से कम का गर्भ गिरना।
गर्भांक पुं० (सं) नाटक के एक अंक का भाग जिसमें केवल एक दृश्य होता है।
गर्भागार पुं० (सं) गर्भ-गृह।
गर्भाधान पुं० (सं) १-गर्भ की स्थिति। २-सोलह संस्कारों में से प्रथम।
गर्भाशय पुं० (सं) स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।
गर्भिणी स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भवती।
गर्भित वि०(सं) १-किसी के भीतर भरा या पड़ा हुआ २-गर्भयुक्त।
गर्भीला वि० (हिं) जिसमें से आभा निकलती हो (रत्न)।
गर्रा वि० (देश) लाख के रंग का। लाही। पुं० १-लाख के रंग का घोड़ा। २-लाखी रंग का कबूतर।
गर्व पुं० (सं) १-घमंड। २-एक संचारी भाव।
गर्वाना क्रि० (हिं) गर्व या घमंड करना।
गर्विणी वि० स्त्री० (सं) घमंड करने वाली।
गर्वित वि० (स) अभिमानी।
गर्विता स्त्री० (स) वह नायिका जिसे अपने रूप गुण आदि का घमंड हो।
गर्विष्ठ वि० (सं) घमंडी।
गर्वीला वि० (हिं) घमंडी।
गर्हण पुं० (सं) निंदा।
गर्हित वि० (सं) निन्दित। बुरा।
गल पुं० (सं) गला। कंठ।
गल-कंबल पुं० (सं) गाय के गले के नीचे की झालर
गलका पुं०(हिं) १-उँगलियों के अगले भाग में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा। २-एक तरह का चाबुक
गज-गंज पुं० (हिं) शोरगुल। हल्ला।
गलगल स्त्री० (देश) १-एक चिड़िया जो मैना जैसी होती है। २-एक तरह का बड़ा नीबू।
गलगला वि० (हिं) भीगा हुआ।
गलगलाना क्रि० (हिं) गीला होना।
गल-गुथना वि० (हिं) जिसका शरीर भरा हुआ तथा गाल फूले हुए हों।
गलग्रह पुं० (सं) १-मछली का काँटा। २-गले का एक रोग।
गलछट स्त्री० (हिं) १-जल जंतुओं का वह अवयव जिसके द्वारा वह पानी के भीतर साँस लेते हैं। २-गाल का चमड़ा।
गल-जंदड़ा पुं० (हिं) १-कभी पीछा न छोड़ने वाला व्यक्ति। २-वह पट्टी या रूमाल जो हाथ की चोट या घाव पर सहारा देने के लिए बांधी जाती है।
गल-झंप पुं० (हि) लोहे की जंजीर जो हाथी के गले में डाली जाती है।
गलतंस पुं० (हिं) १-ऐसा मनुष्य जो कोई सन्तान न छोड़कर मरा हो। २-निःसन्तान व्यक्ति की सम्पति।
गलत वि० (म) १-अशुद्ध। २-असत्य।
गल-तकिया स्त्री० (हिं) गाल के नीचे रखने का छोटा गोल और कोमल तकिया।
गलतफहमी स्त्री० (फा) भ्रममूलक बात।
गलतान वि० (फा) लड़खड़ाता हुआ। पुं० एक तरह का रेशमी कपड़ा।
गलती स्त्री० (अ) १-भूल-चूक। २-अशुद्धि।
गल-थना पुं० (हि) बकरियों की गरदन के दोनों ओर लटकने वाली थैलियाँ।
गलन पुं० (सं) १-गिरना। २-गलना।
गलना क्रि० (हिं) १-किसी वस्तु का घनत्व कम होना। २-बहुत जीर्ण होना। ३-बदन सूखना। ४-शरीर का दुबला होना। ५-अधिक ठण्ड से

हाथ पैर ठिठुरना। ६- बे काम होना।
गलफड़ा पुं० (हिं) गलछट।
गलफाँसी स्त्री० (हिं) गले की फाँसी। २-कष्टदायक बात।
गलबल पुं० (हिं) कोलाहल। गड़बड़ी।
गलबहियाँ, गलबाँही स्त्री० (हिं) गले में बाहें डालना। आलिंगन। गले लगाना।
गलमँदरी स्त्री० (हिं) शिव पूजन के समय गाल बजाना।
गल-गुच्छा, गल-मुच्छा पुं० (हिं) दोनों गालों पर मूँछ के साथ बढ़ाये हुए बाल।
गलमुद्रा स्त्री० (हिं) गलमँदरी।
गलवाना क्रि० (हिं) गलाने का काम दूसरे से कराना
गलशुंडी स्त्री० (सं) १-जीभ की जड़ के पास गले में होने वाला एक रोग जिसमें मांस का टुकड़ा निकल आता है। २-जीभी। कौआ।
गलसुई स्त्री० (हिं) गलत किया।
गलस्तन पुं० (हिं) गलथना।
गलही स्त्री० (हिं) नाव का अगला उठा हुआ भाग।
गला पुं० (हिं) १-देह का वह भाग जो सिर को धड़ से जोड़ता है। कंठ। गरदन। २-गले के भीतर की वह नाली जिससे शब्द निकलता और भोजन अन्दर जाता है। ३-कंठ का स्वर। ४-पात्र के मुख के नीचे का भाग।
गलाना क्रि० (हिं) १-पिघलाना। २-सड़ाना। ३-क्षीण करना। ४-खर्च करना।
गलानि स्त्री० दे० 'ग्लानि'।
गलित वि० (सं) १-गला हुआ। २-गिरा हुआ। ३-परिपक्व। ४-चूआ हुआ।
गलित-कुष्ट पुं० (सं) एक प्रकार का कोढ़ जिसमें अंग गलगल कर गिरने लगते हैं।
गलित-यौवना स्त्री० (सं) वह स्त्री जिस की जवानी ढल गई हो।
गलियारा पुं० (हिं) १-गली के समान तंग या छोटा रास्ता। २-किसी राज्य अथवा देश में से होकर जाने वाला वह पतला रास्ता या मार्ग जिस पर आने जाने आदि का विशिष्ट एवं एकांत अधिकार किसी अन्य राज्य अथवा देश को प्राप्त हो। (कारिडोर)।
गली स्त्री० (हिं) घरों की दो पंक्तियों के मध्य का पतला एवं संकीर्ण मार्ग। कूचा।
गलीचा पुं० (फा) कालीन।
गलीज वि० (अ) १-मैला। गन्दा। २-अपवित्र। पुं० १-मल। २-कूड़ा-करकट।
गलीत वि० (हिं) मैलाकुचैला।
गलीम पुं० (हिं) गनीम।
गलेबाज पुं० (हिं) १-बहुत बढ़-चढ़कर बातें करने वाला व्यक्ति। २-वह जो गला फाड़कर गाये।
गलेबाजी स्त्री० (हिं) १-डींग। २-गाते समय तानें आदि लेना।
गलौ पुं० (हिं) ग्लौ। चन्द्रमा।
गल्प स्त्री० (सं) १-गप्प। २-छोटी-कहानी।
गल्यका स्त्री० (?) एक नदी का प्राचीन नाम।
गल्यारा पुं० (हिं) गलियारा।
गल्ला पुं० (फा) पशुओं का झुंड। पुं० (अ) १-अन्न। २-(रुपया रखने की) गोलक।
गल्हाना क्रि० (हिं) बात करना।
गवन पुं० (हिं) १-जाना। २-चाल। ३-गौना।
गवनचार पुं० (हिं) वधू का प्रथम बार वर के घर जाना। गौना।
गवनना क्रि० (हिं) जाना।
गवना पुं० (हिं) १-जाना। २-गौना।
गवय पुं० (सं) १-नीलगाय। २-एक छन्द का नाम
गवर्नर पुं० (अ) राज्यपाल।
गवर्नर-जनरल पुं० (अ) किसी देश का (विशेषतः औपनिवेशिक देश का) सबसे बड़ा अधिकारी।
गवाक्ष पुं० (सं) झरोखा।
गवाख, गवाछ पुं० (हिं) गवाक्ष। झरोखा।
गवाँना क्रि० (हिं) खोना।
गवाना क्रि० (हिं) १-किसी को गाने में प्रवृत्त करना २-गँवाना। खोना।
गवारा वि० (अ) १-मनोनुकूल। २-सह्य।
गवास स्त्री० (हिं) गाने की इच्छा। पुं० (हिं) कसाई
गवाह पुं० (फा) साक्षी।
गवाही स्त्री० (फा) साक्ष्य। साक्षी।
गवीश पुं० (हिं) १-गोस्वामी। २-विष्णु। ३-साँड
गवेजा पुं० (हिं) वार्तालाप।
गवेला वि० (हिं) गँवार।
गवेषक वि० (सं) गवेषणा कार्य में लगा हुआ।
गवेषक-छात्र पुं० (सं) वह छात्र जो गवेषणा या खोज के काम में लगा हो। (रिसर्च-स्कालर)।
गवेषणा स्त्री० (सं) १-खोज। अन्वेषण। २-किसी विषय का विशेष परिश्रम तथा सावधानी के साथ अनुशीलन करके उसके सम्बन्ध में नई बातों या तथ्यों का पता लगाना। (रिसर्च)।
गवेषणा-शाला स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ किसी विषय का अन्वेषण या छानबीन की जाती है। (रिसर्च-इन्स्टीट्यूट)।
गवेषी वि० (सं) खोज करने वाला।
गवेसना क्रि० (हिं) ढूँढना। स्त्री० (हिं) गवेषणा।
गवेसी वि० दे० 'गवेषी'।
गवैया वि० (हिं) गायक।
गव्य वि० (सं) गाय से उत्पन्न या प्राप्त। पुं० १-गायों का झुंड। २-पंचगव्य।

**गशा** पुं० (अ) मूर्छा।

**गश्त** पुं० (फा) १-घूमना। भ्रमण। २-पहरा।

**गश्ती** वि० (फा) १-घूमने वाला। २-चलता फिरता हुआ। ३-कुछ विशेष प्रकार के लोगों के पास पहुंचने वाला। वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।

**गस** स्त्री० (हि) दे० गाँस।

**गसना** क्रि० (हि) ग्रसना।

**गसीला** वि० (हि) १-जकड़ा हुआ। गुथा हुआ। २-जिसके सूत की बनावट खूब मिली हो (कपड़ा)।

**गस्सा** पुं० (हि) ग्रास। कौर।

**गह** स्त्री० (हि) १-ग्रहण करने या पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २-हथियार की मूठ। दस्ता।

**गहकना** क्रि० (हि) १-ललकना। २-उमंग में आना

**गहगडु** वि० (हि) गहरा (नशा)।

**गहगह, गहगहा** वि० (हि) १-प्रफुल्लित। प्रसन्न। २-धूमधाम वाला (बाजा)।

**गहगहना** क्रि० (हि) १-आनन्द से फूलना। २-फसल या पौधों का लहलहाना।

**गहगहे** क्रि० वि० (हि) १-धूम-धाम से। २-बड़ी प्रसन्नता से।

**गहडोरना** क्रि० (हि) पानी को हिलाकर गन्दला करना।

**गहन** वि० (सं) १-गम्भीर। २-गहरा। २-घना। दुर्गम। ३-कठिन। दुरूह। ४-निबिड़। पुं० (सं) १-गहराई। थाह। २-दुर्गम स्थान। ३-जंगल में का गुप्त स्थान। ४-दुःख। ५-जल। पुं० (हि) १-ग्रहण। २-कलंक। ३-कष्ट। ४-बन्धन। स्त्री० (हि) १-पकड़। २-हठ। जिद।

**गहना** पुं० (हि) १-आभूषण। २-रेहन। बन्धक। क्रि० (हि) पकड़ना।

**गहनि** स्त्री० (हि) १-पकड़। २-हठ। जिद।

**गहनु** पुं०, स्त्री० (हि) दे० 'गहन'।

**गहबर** वि० (हि) १-दुर्गम। विषम। २-व्याकुल ३-अश्रुपूर्ण (नयन)। ४-शोकविह्वल।

**गहबरन** स्त्री० (हि) व्याकुलता।

**गहबरना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-जी भर आना

**गहभरना** क्रि० (हि) भली-भांति भरना।

**गहमह** स्त्री० (हि) चहल-पहल। रौनक।

**गहर** स्त्री० (हि) १-देर। विलम्ब। २-गहराई। वि० (हि) १-दुर्गम। २-गूढ़। वि० (हि) गहरा।

**गहरना** क्रि० (हि) १-देर लगाना। २-झगड़ना। ३-कुढ़ना।

**गहरा** वि० (हि) १-जिसकी (पानी) थाह बहुत नीचे हो। गम्भीर। २-जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३-बहुत। अधिक। ४-जड़। कठिन। ५-गाढ़ा।

**गहराई** स्त्री० (हि) गहरा होने का भाव या माप गहरापन।

**गहराना** क्रि० (हि) १-गहरा होना या करना। २-गहरना।

**गहराव** पुं० (हि) गहराई।

**गहरु** स्त्री० (हि) विलम्ब। देर।

**गहरे** क्रि० वि० (हि) अच्छी तरह।

**गहवाना** क्रि० (हि) पकड़ने का काम अन्य से कराना।

**गहवारा** पुं० (हि) १-झूला। २-पालना।

**गहाई** स्त्री० (हि) पकड़। गहन।

**गहागडु** वि० (हि) दे० 'गहगडु'।

**गहाना** क्रि० (हि) पकड़ाना।

**गहिर, गहिरो** वि० (हि) गम्भीर। गहरा।

**गहिला** वि० (हि) दे० 'गहेला'।

**गहेलरा** वि० (हि) १-पागल। २-मूर्ख।

**गहेला** वि० (हि) [स्त्री० गहेली] १-हठी। २-घमंडी। ३-पागल। ४-मूर्ख।

**गहैया** वि०(हि) १-पकड़ने वाला। २-स्वीकार करने-वाला।

**गह्वर** पुं० (सं) १-अंधेरी जगह। २-विवर। बिल। ३-विषम स्थान। ४-गुफा। ५-कुंज। ६-जंगल। वि० १-दुर्गम। २-विषम। ३-गुप्त।

**गांग** वि० (सं) गंगा सम्बन्धी।

**गांगेय** पुं० (सं) १-भीष्म। २-कार्त्तिकेय। वि० १-गंगा सम्बन्धी। २-गंगा से उत्पन्न।

**गांज** पुं० (फा) राशि। ढेर।

**गाँठ** स्त्री० (हि) १-गिरह। २-अंग का जोड़। ३-बाँस आदि की पोर। ४-जड़ की गुत्थी।

**गाँठ-गोभी** स्त्री० (हि) बन्दगोभी।

**गाँठना** क्रि० (हि) १-गाँठ लगाना। २-मरम्मत करना। ३-क्रमबद्ध करना। जोड़ना। ४-पक्ष में करना। ५- वश में करना।

**गाँठी** स्त्री० (हि) गाँठ।

**गांडर** स्त्री० (हि) १-मूज के समान एक लम्बी घास २-दे० 'गाडर'।

**गांडीव** पुं० (सं) अर्जुन के धनुष का नाम।

**गांती** स्त्री० दे० 'गाती'।

**गांथना** क्रि० (हि) गूंथना।

**गांधर्व** वि० (सं) गंधर्व सम्बन्धी।

**गांधर्व-विवाह** पुं० (सं) वह विवाह जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से अनुरागपूर्वक मिल-कर पति-पत्नीवत् रहते हैं।

**गांधर्ववेद** पुं० (सं) १-सामवेद का उपवेद। २-गानविद्या। ३-सङ्गीत-शास्त्र।

**गांधार** पुं० (सं) १-सिन्धु नदी के पश्चिम का देश २-इस देश का निवासी। ३-संगीत के सात स्वरों में तीसरा। ४-सम्पूर्ण जाति का एक राग।

**गांधारी** स्त्री० (सं) १-गांधार देश की स्त्री या राज०

कन्या। २-धृतराष्ट्र की स्त्री। ३-मेघराज की पाँचवी रागिनी। ४-तन्त्रमतानुसार एक नाड़ी।
**गांधी** स्त्री० (सं) १-एक हरे रंग का छोटा कीड़ा। २-एक घास। ३-गुजराती वैश्यों की एक जाति। ४-भारत देश के राष्ट्रपिता।
**गांधीटोपी** स्त्री० (हिं) किश्तीनुमा लम्बोतरी खादी की टोपी जिसे महात्मा गान्धी ने भी पहना था।
**गांभीर्य** पुं० (सं) गम्भीरता।
**गांव** पुं० (हिं) खेड़ा। ग्राम।
**गांव-पंचायत** स्त्री० (हिं) गाँव के प्रतिनिधियों की सभा जो गाँव के छोटे मोटे झगड़ों का निपटारा करती है तथा गाँव की स्वास्थ्य और सफाई की व्यवस्था करती है।
**गांवर** वि० दे० 'गवाँर'।
**गांव-सभा** स्त्री० (हिं) स्थानिक कार्यों की व्यवस्था करने वाली गाँव के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा
**गांस** स्त्री० (हिं) १-ईर्षा। २-रहस्य। ३-गाँठ। ४-रुकावट। ५-निगरानी। ६-कपट। ७-हथियार की नोक। ८-शासन। ९-संकट।
**गांसना** क्रि० (हिं) १-गूँथना। २-कसना। ३-छेदना सालना। ४-पकड़ में करना।
**गांसी** स्त्री० (हिं) १-तीर या बर्छी की नोक। २-हथियार की नोक। ३-गाँठ। ४-कपट। ५-मनोमालिन्य
**गाइ, गाई** स्त्री० (हिं) गौ, गाय।
**गाकरी** स्त्री० (हिं) १-बाटी। २-रोटी।
**गागर,गागरी** स्त्री० (हिं) घड़ा। गगरी।
**गाच** स्त्री० (हिं) १-एक प्रकार का झीनी बुनावट का कपड़ा। २-फुलवर नामक रंगीन बूटीदार वस्त्र।
**गाछ** पुं० (हिं) वृक्ष।
**गाज** स्त्री० (हिं) १-गर्जन। बिजली की कड़क। ३-बिजली। पुं० फेन। झाग।
**गाजना** क्रि० (हिं) १-गरजना। २-प्रसन्न होना।
**गाजर** स्त्री० (हिं) एक मीठे कंद का पौधा।
**गाजाबाजा** पुं० (हिं) वाद्यवृंद।
**गाजी** पुं० (अ) १-मुसलमानी धर्म के अनुसार वह जो धर्म के लिए युद्ध करे। २-वीर बहादुर।
**गाटा** पुं० (हिं) छोटा खेत।
**गाड़** स्त्री० (हिं) १-गड्ढा। २-अन्न रखने का गड्ढा। ३-खेत की मेंड़।
**गाड़ना** क्रि० (हिं) १-गड्ढा खोदकर उसमें कोई वस्तु रखकर मिट्टी से ढकना। दफनाना। २-लम्बी वस्तु का सिरा किसी गड्ढे में जमाकर उसे खड़ा करना। ३-धंसाना। ४-छिपाना।
**गाड़र** स्त्री० (हिं) भेड़।
**गाड़ा** पुं० (हिं) १-छकड़ा। बैलगाड़ी। २-वह गड्ढा जिसमें छिपकर शत्रु, ठग आदि की खोज करते थे
**गाड़ी** स्त्री० (हिं) सामान या आदमियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने वाला यान।
**गाड़ीखाना** पुं० (हिं) गाड़ियाँ खड़ी करने का स्थान
**गाड़ीवान** पुं० (हिं) १-कोचवान। २-गाड़ी चलाने वाला।
**गाढ़** वि० (स) १-दृढ़। २-अधिक। ३-घना। ४-विकट।
**गाढ़ता** स्त्री० (स) कठिनता। दुरुहता।
**गाढ़ा** वि० (हिं) १-मोटा। घना। २-कठिन। विकट। पुं० (हिं) १-एक प्रकार का मोटा कपड़ा। २-मस्त हाथी।
**गाढ़े** क्रि० वि० (हिं) १-दृढ़ता से। २-अच्छी तरह।
**गात** पुं० (हिं) १-शरीर। देह। २-स्तन।
**गाता** वि० (हिं) गवैया। पुं० (हिं) गत्ता।
**गाती** स्त्री० (हिं) १-शरीर में लपेटने का एक वस्त्र। २-कनपटी बाँधकर चादर ओढ़ने का एक ढंग।
**गात्र** पुं० (सं) अंग। शरीर।
**गाथ** पुं० (हिं) १-यश। २-प्रशंसा।
**गाथना** क्रि० (हिं) १-अच्छी तरह पकड़ना। २-जकड़ना।
**गाथा** स्त्री० (सं) १-प्रशंसा। २-कथा। ३-प्राकृत भाषा का एक छन्द।
**गाद** स्त्री० (हिं) १-तलछट। २-तेल की कीट।
**गादर** वि० (हिं) १-कायर। २-शिथिल।
**गादा** पुं० (हिं) अपरिपक्व फसल।
**गादी** स्त्री० (हिं) १-एक पकवान। २-गद्दी।
**गादुर** पुं० (हिं) चमगादड़।
**गाध** पुं० (सं) १-स्थान। २-थाह। ३-कूल। ४-लोभ। वि० (हिं) १-छिछला। २-थोड़ा। स्वल्प।
**गाधा** स्त्री० (सं) १-गायत्री स्वरूपा महादेवी। २-बहुत अधिक कष्ट।
**गाधी** स्त्री० (हिं) गद्दी।
**गान** पुं० (सं) १-गाना। २-गीत।
**गाना** क्रि० (हिं) १-लय के साथ अलापना। २-बखान करना। ३-मधुर ध्वनि करना। पुं० १-गाने की क्रिया। २-गीत।
**गाफिल** वि० (अ) १-बे-सुध। २-बेपरवाह।
**गाभ** पुं० (हिं) १-पशुओं का गर्भ। २-किसी वस्तु का मध्य भाग। ३-दे० 'गाभा'।
**गाभा** पुं० (हिं) १-नया कोमल पत्ता। कल्ला। २-केले आदि के डण्ठल का भीतरी भाग जो नरम होता है। ३-कच्चा अन्न। ४-खड़ी खेती।
**गाभिन, गाभिनी** [स्त्री० प्र०] गर्भिणी (पशुओं के लिए)।
**गाम** पुं० (हिं) ग्राम। गाँव।
**गामा** पुं० (हिं) ग्रामीण।
**गामी** वि० (सं) १-चलने वाला। २-सम्भोग करने वाला।

**गाय** स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध चौपाया जिसके सींग होते हैं। गो। २-बहुत सीधा-साधा मनुष्य।
**गायक** पुं० (स) गाने वाला। गवैया।
**गायकी** स्त्री० (हि) १-गाने वाली स्त्री। २-संगीत-विद्या। ३-संगीत-शास्त्र के नियमानुसार ठीक प्रकार से गान। ४-गानविद्या का पूर्णज्ञान।
**गायगोठ** स्त्री० (हि) गोशाला।
**गायत्री** स्त्री० (स) १-एक वैदिक मंत्र जो हिन्दू धर्म में सबसे पावन समझा जाता है। २-दुर्गा। ३-गंगा।
**गायन** पुं० (सं) १-गवैया। २-गाना। गीत।
**गायब** वि० (प्र) लुप्त। अन्तर्द्धान।
**गायित्री** स्त्री० दे० 'गायत्री'।
**गार** पुं० (प्र) १-गहरा गड्ढा। २-गुफा। स्त्री० (हि) गाली।
**गारत** वि० (प) नष्ट। बरबाद।
**गारद** स्त्री० (प्रं गार्ड) १-रक्षा के निमित्त नियुक्त किया हुआ सिपाहियों का दल। २-पहरा। चौकी।
**गारना** क्रि० (हि) १-निचोड़ना। २-पानी के साथ घिसना। ३-निकालना। ४-त्यागना। ५-गलाना ६-नष्ट या बरबाद करना।
**गारा** पुं० (हि) १-ईंटों की जोड़ाई के लिए बना हुआ मसाला। २-एक राग। ३-मछलियों का चारा। वि० (हि) १-गीला। २-खिन्न और उदासीन।
**गारी** स्त्री० (हि) गाली।
**गारु** वि० (हिं) गुरु। भारी।
**गारुड़** पुं० (सं) १-विष उतारने का एक मंत्र। २-सुवर्ण। सोना।
**गारुड़ी** पुं० (हि) मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला।
**गारो, गारौ** पुं० (हि) १-गौरव। २-अहंकार।
**गार्हपत्याग्नि** स्त्री० (सं) छः प्रकार की अग्नियों में प्रथम।
**गार्हस्थ्य** पुं० (सं) १-गृहस्थाश्रम। २-गृहस्थों के पाँच प्रधान कर्तव्य कर्म।
**गार्हस्थ्य-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें भोजन बनाना, कपड़े सीना, बच्चों का पालना आदि धन्धों का विवेचन होता है। (डोमेस्टिक-साइंस)।
**गाल** पुं० (हि) १-गण्ड। कपोल। २-बकवाद करने की लत। ३-मध्य। बीच। ४-ग्रास। कौर। स्त्री० (हि) १-लांछन। २-गाली।
**गाल-गूल** पुं० (हि) व्यर्थ की बातें। गपशप।
**गालन** पुं० (सं) १-गालने की क्रिया या भाव। २-किसी वस्तु को इस प्रकार छाना जाय कि उसकी गाद या मैल तो रह जाय और तरल पदार्थ छन जाय। (फिल्टरेशन)।

**गाला** पुं० (हिं) १-धुनी हुई रूई का गोला। पूनी। २-ग्रास। ३-उद्दंडतापूर्ण बात।
**गालिम** वि० (ग्र) जिसने किसी को [illegible] हो।
**गाली** स्त्री० (हि) १-दुर्वचन। २-[illegible]
**गाली-गलौज, गाली-गुफ्ता** स्त्री० [illegible] में गाली देना।
**गालू** वि० (हि) बकवादी।
**गाल्हना** क्रि० (हि) बात करना।
**गाव** पुं० (हि) गाय।
**गाव-तकिया** पुं० (फा) मसनद।
**गावदी** वि० (हि) १-कूड़मगज। २-[illegible]
**गावदुम** वि० (फा) जो ऊपर से गाय [illegible] के समान पतला होता आया हो।
**गासिया** पुं० (हि) [illegible]।
**गाहक** पुं० (स) अवगाहन [illegible] (हि) १-खरीदार। २-प्रेमी।
**गाहकताई** स्त्री० (हि) [illegible]।
**गाहकी** स्त्री० (हि) १-[illegible]।
**गाहन** पुं० (सं) [illegible] करना।
**गाहना** क्रि० (हि) १-[illegible] २-धान आदि [illegible]।
**गाहा** स्त्री० (हि) १-[illegible]।
**गाही** स्त्री० (हि) पाँच-पाँच (वस्तुओं) [illegible] का मान।
**गिजना** क्रि० (हि) किसी वस्तु (विशे[illegible]) का उलट-पलट [illegible]।
**गिजाई** स्त्री० (हि) १-[illegible] जने की क्रिया या भाव।
**गिडुरी** स्त्री० (हि) दे० '[illegible]'।
**गिदौड़ा, गिदौरा** पुं० (हि) [illegible] रोटी।
**गिग्रान** पुं० (हि) [illegible]।
**गिउ** पुं० (हि) गला। [illegible]
**गिचपिच, गिचपिचि** [illegible] हुआ। अस्पष्ट।
**गिजगिजा** वि० (हि) [illegible] जो खाने में [illegible] देने वाला।
**गिजा** स्त्री० (ग्र) भोजन। खुराक।
**गिटकरी** स्त्री० (हि) [illegible]
**गिटपिट** स्त्री० (हि) [illegible]।
**गिट्टक** स्त्री० (हि) १-[illegible] पर रखा जाता है। गिट्टी। २-[illegible]
**गिट्टा** पुं० (हि) चिलम की गिट्टक।
**गिट्टी** स्त्री० (हि) १-पत्थर का [illegible]। २-चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना क्रि० (हि) विनीत प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट स्त्री० (हि) गिड़गिड़ाने की क्रिया या भाव

गिद्ध पुं० (हि) एक मांसभक्षी पक्षी।

गिद्धराज पुं० (हि) जटायु।

गिधना क्रि० (हि) हिलना-मिलना।

गिनती स्त्री० (हि) १-गिनने की क्रिया या भाव। गणना। २-संख्या। ३-उपस्थिति की जाँच। हाजिरी ४-एक से सौ तक की अङ्कमाला।

गिनना क्रि० (हि) १-गिनती करना। २-हिसाब लगाना। ३-कुछ महत्व का समझना।

गिनवाना, गिनाना क्रि० (हि) गिनने का काम कराना

गिन्नी स्त्री० (अ) सोने की एक मुद्रा (सिक्का)।

गिय पुं० (हि) गला।

गियाह पुं० (हि) एक प्रकार का घोड़ा।

गिरंदा पुं० (हि) १-पकड़ने अथवा रखने वाला। २-फंदे में फसने वाला।

गिर पुं० (हि) १-पर्वत। २-दस प्रकार के साधुओं में से एक।

गिरगिट, गिरगिटान पुं० (हि) छिपकली की जाति का [illegible] की सहायता से अपने शरीर के अनेक रंग बदल लेता है।

गि[illegible] पुं० ([illegible]) ईसाइयों का प्रार्थना मंदिर।

गि[illegible] ([illegible]) दे० [illegible]र्द'।

गि[illegible] [illegible]। २-तकिया। ३-काठ की [illegible] दूसरों को अपने चंगुल में फसाता हो।

गिरदान पुं० दे० 'गिरगिट'।

गिरदावर पुं० दे० 'गिर्दावर।

गिर[illegible], गिरधारन, गिरधारी पुं० दे० 'गिरिधर'।

गिरना क्रि० (हि) १-एकाएक ऊपर से नीचे आना। २-भूमि पर पड़ जाना। ३-घटती पर होना। ४-बुरा [illegible] होना। ५-[illegible] जलाशय में मिलना। ६-[illegible] या मूल्य आदि का कम होना। ७-दुबला होना। ८-किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग [illegible] से नीचे जाता हुआ माना जाता है।

गिरनार पुं० (हि) गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक [illegible] जहाँ जैनियों का एक तीर्थ स्थान है।

गिरफ्त स्त्री० (फा) १-पकड़। २-दोष या भूल खोजने का एक ढंग।

गिरफ्तार वि० (फा) १-ग्रस्त। २-कैद किया हुआ।

गिरफ्तारी स्त्री० (फा) गिरफ्तार होने या पकड़े जाने की क्रिया या भाव।

गिरबान पुं० दे० १-'गरेबान'। २-दे० 'गर्दन'।

गिरमिट पुं० [अं-गिमलेट] बड़ा बरमा। पुं० [अं-एग्रीमेंट] एकरारनामा।

गिरवान पुं० दे० 'गीर्वाण'।

गिरवाना क्रि० (हि) गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी वि० (फा) रेहन। बन्धक।

गिरवीदार पुं० (फा) गिरवी या बन्धक रखने वाला व्यक्ति।

गिरह स्त्री० (फा) १-गाँठ। २-जेब। ३-दो पोरों के जुड़ने का स्थान। गाँठ। ४-गज का सोलहवाँ भाग। ५-कलाबाजी।

गिरह-कट वि० (हि) जेब या गाँठ का माल काट लेने वाला।

गिरहदार वि० (फा) गाँठ वाला।

गिरह-बाज पुं० (फा) एक तरह का कबूतर जो उड़ते-उड़ते कलाबाजी खाता है।

गिरही पुं० (हि) गृहस्थ।

गिरा वि० (हि) १-मँहगा। २-बहुमूल्य। ३-भारी। ४-अप्रिय।

गिरांव पुं० (हि) दे० 'गेराँव'।

गिरा स्त्री० (म) १-वाणी। २-बोलने की शक्ति। ३-जीभ। ४-सरस्वती।

गिराना क्रि० (हि) १-पृथ्वी पर डाल देना। २-पतन करना। ३-घटाना। ४-जल का बहाव ढाल की ओर करना। ५-लड़ाई में मार देना।

गिरानी स्त्री० (फा) १-मंहगापन। २-अकाल। ३-अभाव। ४-पेट का भारीपन।

गिरापति, गिरापितु पुं०=ब्रह्मा।

गिरावट स्त्री० (हि) गिरने की क्रिया, भाव अथवा ढंग।

गिरास पुं० (हि) दे० 'ग्रास'।

गिरासना क्रि० (हि) दे० 'ग्रासना'।

गिराह पुं० (हि) ग्राह। मगर।

गिरि पुं० (सं) १-पर्वत। पहाड़। २-तान्त्रिक संन्यासियों का एक भेद। ३-परिव्राजकों की एक उपाधि

गिरिजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-गंगा।

गिरिजा-पति पुं० (सं) शिव।

गिरिधर, गिरिधरन, गिरिधारण, गिरिधारन, गिरिधारी पुं०=पर्वत को उठाने वाले, श्रीकृष्ण।

गिरिनाथ पुं० (स) १-हिमालय पर्वत। २-गोवर्धन-पर्वत।

गिरि-पथ पुं० (सं) १-दो पर्वतों के मध्य का संकीर्ण मार्ग। दर्रा। २-पहाड़ी मार्ग।

गिरिराज पुं० (म) १-बड़ा पर्वत। २-हिमालय। ३-गोवर्धन पर्वत। ४-सुमेरु पर्वत।

गिरिव्रज पुं० (सं) मगध देश के एक प्राचीन नगर का नाम।

गिरि-संकट पुं० (सं) दो पर्वतों के मध्य का संकीर्ण मार्ग। दर्रा।

गिरि-सुत पुं० (सं) मैनाक नामक पर्वत।

गिरि-सुता स्त्री० (सं) पार्वती।

गिरींद्र पुं० (सं) १-शिव। २-हिमालय। ३-बड़ा

पर्वत।
गिरी स्त्री० (हि) १-किसी बीज के भीतर का गूदा। २-दे० गिरि। ३-दे० 'गीरी'।
गिरीश पुं० (सं) १-शिव। २-हिमालय पर्वत। ३-सुमेरु पर्वत। ४-कैलाश पर्वत। ५-गोवर्धन पर्वत। ६-बड़ा पहाड़।
गिरैया वि० (हि) गिराने वाला। स्त्री० दे० 'गेराँव'
गिरौं वि० (फा) रेहन। बन्धक।
गिर्द अव्य० (फा) १-आस-पास। २-चारों ओर।
गिर्दावर पुं० (फा) १-घूमने वाला। २-घूम-घूमकर काम की जाँच करने वाला।
गिल स्त्री० (फा) १-मिट्टी। २-गारा।
गिलकारी स्त्री० (फा) गारा लगाने का कार्य।
गिलगिटी पुं० (देश) एक जाति का घोड़ा।
गिलट पुं० (अं गिल्ट) १-किसी धातु पर सोना या चाँदी चढ़ाने का काम। २-चाँदी के समान सफेद, हल्की तथा कम मूल्य की धातु।
गिलटी स्त्री० (हि) १-पेट की गोल छोटी गाँठ जो शरीर के भीतर सन्धि स्थान पर होती है। २-एक रोग जिसमें गाँठें फूल जाती हैं।
गिलन पुं० (सं) निगलना।
गिलना क्रि० (हि) १-निगलना। २-मन में रखना।
गिलम स्त्री० (फा) १-ऊनी कालीन। २-मोटा गद्दा।
गिलगिल स्त्री० (हि) एक तरह का कपड़ा।
गिलहरी स्त्री० (हि) एक चपल जन्तु जिसकी पीठ पर सफेद और काली धारियाँ और पूंछ रोयेंदार होती है।
गिला पुं० (फा) १-उलाहना। २-शिकायत।
गिलान स्त्री० (हि) ग्लानि।
गिलाफ पुं० (अ) १-लिहाफ। २-लिहाफ आदि का खोल। ३-म्यान।
गिलावा पुं० (फा) गीली मिट्टी। गारा।
गिलास पुं० (अं ग्लास) एक गोल लम्बोतरा बरतन जो पानी पीने के काम आता है।
गिलिम स्त्री० दे० 'गिलम'।
गिली स्त्री० (हि) गुल्ली।
गिलेफ पुं० (अ) गिलाफ।
गिलौरी स्त्री० (देश) पान का बीड़ा।
गिल्लौरदान पुं० (हि) पान रखने का डिब्बा।
गिल्टी स्त्री० दे० 'गिलटी'।
गिल्यान स्त्री० (हि) ग्लानि।
गींजना क्रि० (हि) नरम या नाजुक वस्तु को मसल-कर खराब कर देना।
गीउ स्त्री० दे० 'गीव'।
गीत पुं० (सं) वह जो गाया जाय। गाना (लिरिक)
गीतकार पुं० (स) गाने के लिए गीत बनाने वाला कवि। (लिरिक-पोयट)।
गीता स्त्री० (सं) १-वह उपदेशात्मक ज्ञान जो किसी बड़े से इच्छा करने पर प्राप्त हो। २-भगवद्गीता ३-कथा। वृत्तान्त।
गीति स्त्री० (सं) १-गान। गीत। २-आर्या छन्द का एक भेद।
गीतिका स्त्री० (स) १-२६ मात्रा का एक छन्द। २-गीत।
गीतिकाव्य पुं० (सं) वह काव्य जो प्रधानतः गाने के निमित्त बना हो। (लिरिकल-पोयम्)।
गीति-नाट्य पुं०(सं) वह नाटक जिसमें पद्य की प्रधानता हो।
गीति-रूपक पुं० (सं) वह रूपक जिसमें गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रहता है।
गीदड़, गीदर पुं० (हि) शृगाल। सियार। वि० कायर
गीध पुं० (हि) गिद्ध (पक्षी)।
गीधना क्रि० (हि) परचना।
गीर वि० (फा) शब्दों के अन्त में लगने वाला एक प्रत्यय जो धारण या ग्रहण करने वाले अर्थ देता है
गीरी स्त्री० (फा) ग्रहण करने की क्रिया या भाव।
गीर्वाण पुं० (सं) देवता। सुर।
गीला वि० (हि) भीगा हुआ। तर।
गीलापन पुं० (हि) नमी। तरी।
गीव, गीवा स्त्री० (हि) ग्रीवा।
गुंग, गुंगा पुं० (हि) गूंगा।
गुंची स्त्री० घुँघची।
गुंज स्त्री० (हि) १-भौंरों की गुंजार। कोमल मधुर ध्वनि।
गुंजना क्रि० (हि) १-भौंरों की गुंजार करना। २-कोमल मधुर ध्वनि निकालना।
गुंजरना क्रि० (हि) १-गुंजना। २-गरजना।
गुंजा स्त्री० (स) घुँघची।
गुंजाइश स्त्री० (फा) १-अवकाश। समाई। २-सुभीता
गुंजान वि० (फा) घना। सघन।
गुंजायमान वि० (स) गूंजता हुआ।
गुंजार पुं० (हि) भौंरों की भनभनाहट।
गुंजारित, गुंजित वि० भौंरों के गुंजार से युक्त
गुंठा वि० (हि) १-नाटा कद का। २-छोटे आकार का
गुंडई स्त्री० (हि) गुण्डापन।
गुंडली स्त्री० (हि) १-फेटा। कुण्डली। २-गेंडुरी।
गुंडा वि० (हि) १-कुमार्गी। बदमाश। २-छैलचिकनिया।
गुंडापन पुं० (हि) अकारण लोगों से लड़ने भगड़ने या मारपीट करने का काम। बदमाशी।
गुंथना क्रि० (हि) १-उलझना। २-मोटे टाँकों से सिलाई करना।
गूंथना क्रि० (हि) १-गूंथा जाना। २-दे० 'गुंथना'
गुंथवाना क्रि० (हि) गूंथने का काम कराना।

गुँथाई स्त्री० (हिं) गूंथने या मांड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
गुँथावट स्त्री० (हिं) गूंथने का भाव अथवा ढंग।
गुंफ पुं० (फा) १-उलझन। २-गुच्छा। ३-गलमुच्छा।
गुंफन पुं० (सं) गूंथना।
गुंबज, गुंबद पुं० = गोल और उभरी हुई छत।
गुंभी स्त्री० (हिं) अंकुर। गाभ।
गुग्गुल पुं० (सं) गूगल।
गुच्छ, गुच्छक पुं० (सं) १-गुच्छा। २-वह पौधा जिसमें केवल पत्तियां या पतली टहनियाँ फैलें। झाड़। ३-मोर की पूँछ।
गुच्छा पुं० (हिं) १-एक में लगे या बँधे पत्ते या फूलों का समुदाय। २-एक में लगी या बँधी हुई छोटी वस्तुओं का समूह। ३-फुंदना।
गुच्छी स्त्री० (हिं) १-करंज। कंजा। २-एक तरह की खुम्भी जिसकी तरकारी बनती है।
गुजर पुं० (फा) १-निकास। गति। २-पैठ। प्रवेश ३-निर्वाह।
गुजरना क्रि० (हिं) १-(समय) बीतना। २-किसी जगह से होकर आना या जाना। ३-निर्वाह होना निभना।
गुजरबसर, गुजरान पुं० (फा) निर्वाह।
गुजराना क्रि० (हिं) गुजारना।
गुजरिया स्त्री० (हिं) गूजरी।
गुजरी स्त्री० (हिं) १-कलाई में पहनने की एक तरह की पहुँची। २-कनकटी भेड़। ३-गूजरी।
गुजरेटा पुं (हिं) १-गूजर का लड़का। २-गूजर।
गुजारना क्रि० (हिं) १-बिताना। २-सामने रखना।
गुजारा पुं० (अ) निर्वाह।
गुजारिश स्त्री० (फा) निवेदन।
गुजारी स्त्री० (हिं) एक तरह का गले का हार।
गुज्झ वि० (हिं) गुह्य।
गुज्झना क्रि० (हिं) छिपना।
गुझरोट, गुझरौट पुं०(हिं) १-सिकुड़ना। सिलवट। २-स्त्रियों की नाभी के आसपास का भाग।
गुझाना क्रि० (हिं) छिपाना।
गुझिया स्त्री०(हिं) १-एक तरह का पकवान। पिराक। २-खोए की एक मिठाई।
गुझोट पुं० दे० 'गुझरोट'।
गुटकना क्रि० (हिं) १-निगलना। २-खाजाना।
गुटका पुं०(हिं) १-छोटे आकार की पुस्तक। २-लट्टू ३ दे० 'गुटिका'। ४-एक मिठाई।
गुटकाना क्रि० (हिं) धीरे-धीरे तबले को बजाना।
गुटरगूँ स्त्री० (हिं) कबूतर की बोली।
गुटिका स्त्री० (सं) १-गोली। २-वह सिद्ध गोली जिसके मुख में रखने से मनुष्य दिखाई नहीं देते।
गुट्ट पुं० (हिं) १-समूह। २-दल।
गुट्ठल वि० (हिं) १-गुठली वाला (फल)। २-जड़। मूर्ख। ३-गुठली के आकार का। पुं० १-गुलथी। २-गिलटी।
गुट्ठी स्त्री० (हिं) मोटी गाँठ।
गुठला पुं० (हिं) १-बड़ी गुठली। २-बड़ी गुठली के समान कोई गोल कड़ी वस्तु। ३-एक गहना जो अँगूठे में पहना जाता है। वि० कुंठित। भेथरा।
गुठली स्त्री० (हिं) किसी फल का बड़ा और कड़ा बीज
गुठाना क्रि० (हिं) १-गुठली सा हो जाना। २-निकम्मा हो जाना।
गुड़ंबा पुं० (हिं) चीनी में पकाया हुआ कच्चे आम का गूदा।
गुड़ पुं० (सं) ऊख, खजूर आदि के रस को पकाकर बनाई हुई भेली।
गुड़गुड़ पुं० (हिं) बन्द जल में नली [illegible] द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द।
गुड़गुड़ाना क्रि० (हिं) १-गुड़गुड़ शब्द होना या करना। २-हुक्का पीना।
गुड़गुड़ाहट स्त्री० (हिं) गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।
गुड़गुड़ी स्त्री० (हिं) १-फरशी। २-गुड़[illegible]।
गुड़धानी स्त्री० (हिं) १-गुड़ और भा[illegible] मेल से बना लड्डू। २-गुड़ और धनियाँ के [illegible] से बना पदार्थ।
गुड़ना स्त्री० (हिं) गुणना।
गुड़रू पुं० (हिं) एक पक्षी।
गुड़हल पुं० (हिं) अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।
गुड़ाकू पुं० (हिं) गुड़ के मेल से बना [illegible]।
गुड़ाकेश पुं० (सं) १-शिव। २-अर्जुन।
गुड़िया स्त्री० (हिं) लड़कियों के खेलने की कपड़े की पुतली।
गुड़िला पुं० (हिं) आदमी की तरह का [illegible]। २-गुड्डा।
गुड़ी स्त्री० (हिं) गुड्डी।
गुडूची स्त्री० (सं) गिलोय।
गुड्डा पुं० (हिं) १-कपड़े का पुरुष आ[illegible] पुतला २-बड़ी पतंग।
गुड्डी स्त्री० (हिं) १-पतंग। कनकौआ। [illegible]टने की हड्डी। ३-एक तरह का छोटा हुक्का।
गुढ़ पुं० (हिं) छिपकर रहने की जगह।
गुढ़ना क्रि० (हिं) १-छिपना। २-गूढ़ [illegible] समझना।
गुढ़ा स्त्री० (हिं) छिपने का गुप्त स्थान।
गुढ़ासी पुं० (हिं) १-गुप्तचर। २-दूत [illegible]जन से लड़ाई झगड़ा कराने वाला।
गुढ़ी स्त्री० (हिं) गाँठ। गुत्थी।
गुण पुं० (सं) १-धर्म। २-हुनर। ३-[illegible]। ४-निपुणता। ५-प्रकृति। ६-धनुष की डोरी। ७-

प्रकृति के सत्व, रज और तम यह तीन भाव। ८-असर। तासीर। ९-तीन की संख्या। १०-विशेषता।

**गुणक** पुं० (सं) वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करते हैं।

**गुण-कथन** पुं० (सं) १-किसी के गुण बताना। २-प्रिय के गुणों से सम्बद्ध प्रशंसात्मक चर्चा जो पूर्व राग की दस दशाओं में से एक मानी जाती है (साहित्य)।

**गुणकर, गुणकारक** वि० (सं) लाभदायक।

**गुणकरी** स्त्री० (सं) दिन के प्रथम पहर में गाई जाने वाली ओड़व-षाड़व जाति की एक रागनी।

**गुणकारी** वि० (सं) लाभदायक।

**गुणगौरी** स्त्री० (सं) १-पतिव्रता। २-सुहागिन। ३-स्त्रियों का एक व्रत।

**गुणग्राम** पुं० (सं) गुणों का समूह। गुण की खान।

**गुणग्राहक** पुं० (सं) गुणों अथवा गुणियों का आदर करने वाला व्यक्ति।

**गुणग्राही** वि० (सं) कदरदान।

**गुणज्ञ** वि० (सं) १-गुण का पारखी। गुणी।

**गुण-दोष** पुं० (सं) किसी वस्तु के भले और बुरे दोनों पक्ष। (मेरिट्स)।

**गुणन** पुं० (सं) १-गुणा करना। २-गिनना। ३-अनुमान करना। ४-रटना। ५-मनन करना।

**गुणन-फल** पुं० (सं) वह संख्या जो दो अङ्कों का का गुणा करने से निकले।

**गुणना** क्रि० (हिं) १-गुणा करना। २-गुनना।

**गुणवंत** वि० (हिं) गुणवाला। गुणी।

**गुण-वाचक** वि० (सं) १-वह जो गुणों को प्रकट करे। २-व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

**गुणवान** वि० (सं) गुणी। गुणवाला।

**गुणशील** वि० (सं) सच्चरित्र।

**गुणसागर** वि० (सं) गुणों से भरा। गुण का समुद्र।

**गुणांक** पुं० (सं) वह अङ्क जिससे गुणा करना हो।

**गुणा** पुं० (हि) गणित में जोड़ की एक संक्षिप्त क्रिया जिसके द्वारा कोई संख्या एक बार में ही कई गुनी करली जाती है। जरब।

**गुणाकार** वि० (सं) जिसमें बहुत से गुण हों।

**गुणाढ्य** वि० (सं) बहुत से गुणों वाला।

**गुणातीत** पु० (सं) परमेश्वर।

**गुणानुवाद** पुं० (सं) प्रशंसा।

**गुणावली** स्त्री० (सं) गुणा करने की प्रणाली। ढंग।

**गुणित** वि० (सं) गुणा किया हुआ।

**गुणी** वि० (सं) गुणवाला।

**गुणीभूतव्यंग** पुं० (सं) वह काव्य जिसमें व्यंगार्थ से कम या समान हो, अधिक न हो।

**गुण्य** पुं० (सं) १-वह अङ्क जिसको गुणा करना हो। २-गुणवान्।

**गुण्यांक** पुं० (सं) वह अङ्क जो गुणा किया जाय।

**गुत्थम-गुत्था** पुं० (हि) १-उलझाव। २-हाथापाँही।

**गुत्थी** स्त्री० (हि) १-उलझन। गाँठ।

**गुथना** क्रि० (हि) १-कई वस्तुएँ एक में उलझना। २-लड़ने के लिए किसी से लिपट जाना।

**गुथवाँ** वि० (हि) गूँथकर बनाया गया।

**गुथवाना** क्रि० (हि) गूँथने का कार्य कराना।

**गुद** स्त्री० (सं) गुदा।

**गुदकारा** वि० (हि) १-गूदेदार। २-गुदगुदा।

**गुदगुदा** वि० (हि) १-गूदेदार। २-मुलायम।

**गुदगुदाना** क्रि० (हि) १-हँसाने के निमित्त काँख, तलवे, पेट आदि मांसल स्थानों पर उँगली आदि फेरना। २-विनोद के लिए छेड़ना। ३-उत्सुकता उत्पन्न करना।

**गुदगुदाहट, गुदगुदी** स्त्री० (हि) १-अंग स्पर्श के कारण पैदा हुई सुरसुराहट। २-उत्कंठा। ३-उमंग।

**गुदड़िया** पुं० (हि) १-गुदड़ी लपेटने वाला। २-चीथड़े बेचने वाला।

**गुदड़ी** स्त्री० (हि) फटे, पुराने वस्त्र का बना बिछौना या ओढ़ना।

**गुदड़ी-बाजार** पुं० (हि) पुरानी चीजों की बिक्री का बाजार।

**गुदना** पुं० दे० 'गोदना'।

**गुदर** स्त्री० (हि) १-गुजर। २-निवेदन। ३-निवेदन करने के लिए उपस्थित होना।

**गुदरना** क्रि० (हि) १-गुजरना। २-निवेदन करना। ३-उपस्थित करना।

**गुदराना** क्रि० (हि) १-उपस्थित करना। २-निवेदन करना।

**गुदरैन** स्त्री० (हि) १-पढ़ा हुआ पाठ सुनाना। २-परीक्षा।

**गुदा** स्त्री० (सं) विष्ठा निकलने का मार्ग।

**गुदाना** क्रि० (हि) गोदने का काम कराना।

**गुदार** वि० (हि) गूदेदार।

**गुदारना** क्रि० (हि) १-[illegible] करना। २-[illegible] में उपस्थित करना। ३-गुजारना।

**गुदारा** पुं० (हि) १-नाव से नदी पार होने की क्रिया २-गुजारा।

**गुदेंद्रिय** स्त्री० (सं) मलद्वार।

**गुद्दी** स्त्री० (हि) १-बीज का गूदा। गिरी। २-सिर का पिछला भाग।

**गुन** पुं० (हि) गुण।

**गुनगुना** वि० (हि) थोड़ा गरम। कुनकुना।

**गुनगुनाना** क्रि० (हि) १-नाक से बोलना। २-गुन-गुन शब्द करना। ३-अस्पष्ट स्वर में गाना।

**गुनना** क्रि० (हि) १-गुणा करना। २-गिनना। ३-रटना। ४-सोचना। ५-समझना।
**गुनरखा** पु० (हि) दे० 'गोनरखा'।
**गुनवंत, गुनवान** वि० (हि) गुणवान। गुणी।
**गुनहगार** वि० (फा) १-पापी। २-दोषी।
**गुना** पु० (हि) १-संख्यावाचक शब्दों के अन्त में लगकर विशेष्य शब्द की संख्या अथवा मात्रा में उतनी बार का अर्थ सूचित करता है। २-गुणा। (गणित)।
**गुनावन** स्त्री० (हि) मन में कुछ सोचना। विचार।
**गुनाह** पु० (फा) १-पाप। २-दोष।
**गुनाही** पुं० (हि) अपराधी।
**गुनिया** वि० (हि) गुणी।
**गुनियाला** वि० दे० 'गुनिया'।
**गुनी, गुनीला** वि० पुं० (हि) गुणी।
**गुपचुप** क्रि० वि० (हि) चुपचाप। पुं० एक प्रकार की मिठाई।
**गुपाल** पुं० (हि) गोपाल।
**गुप्त** वि० (सं) १-छिपा हुआ। २-गूढ़। ३-रक्षित। पुं० वैश्यों की उपाधि।
**गुप्तचर** पुं० (सं) भेदिया। जासूस।
**गुप्तदान** पुं० (सं) वह दान जिसे दाता के अतिरिक्त कोई न जानता हो।
**गुप्तमार** स्त्री० (हि) १-भीतरी मार। छिपकर किया हुआ अनिष्ट।
**गुप्ता** स्त्री० (सं) १-प्रेम-सम्बन्ध छिपाने वाली नायिका। २-रखेली।
**गुप्ती** स्त्री० (हि) वह छड़ी जिसमें किरच या पतली तलवार छिपी हो।
**गुफा** स्त्री० (हि) कन्दरा। गुहा।
**गुबरैला** पु० (हि) गोबर का कीड़ा।
**गुबार** पुं० (अ) १-धूल। गर्द। २-मन में संचित क्रोध, दुःख या द्वेष।
**गुबिंद** पुं० (हि) गोविन्द।
**गुब्बारा** पुं० (हि) कागज, रबर आदि की थैली जिसमें धुआं या हवा भरकर आकाश में उड़ाते हैं।
**गुम** वि० (फा) १-गुप्त। २-अप्रसिद्ध। ३-खोया-हुआ।
**गुमटा** पुं० (देश) सिर पर चोट लगने के कारण होने वाली सूजन।
**गुमटी** स्त्री० (हि) १-मकान में सबसे ऊपर उठी हुई कमरे या सीढ़ी की छत। २-चौकीदार के रहने का गोलाकार घर। ३-सिर पर चोट लगने के कारण से बढ़ने वाली सूजन।
**गुमना** क्रि० (हि) खो जाना।
**गुमनाम** वि० (फा) १-अज्ञात। २-अप्रसिद्ध।
**गुमर** पुं० (हि) १-घमण्ड। २-मन का गुबार। ३-कानाफूसी।
**गुमराह** वि० (फा) १-कुपथगामी। २-रास्ता भूला-हुआ।
**गुमान** पु० (फा) १-कल्पना। २-घमण्ड।
**गुमाना** क्रि० (हि) खोना। गँवाना।
**गुमानी** वि० (हि) अहङ्कारी।
**गुमाश्ता** पुं० (फा) कर्मकार। मालिक की ओर से काम करने वाला।
**गुमुज, गुम्मट** पुं० (हि) गुम्बद।
**गुरंब** पुं० (हि) दे० 'गुडंबा'।
**गुर** पुं० (हि) १-मूल-युक्ति। २-गुरु। ३-गोन-रखा।
**गुरगा** पुं० (हि) १-जासूस। २-चेला। ३-नौकर।
**गुरगाबी** पुं० (फा) मुण्डा जूता।
**गुरचना** क्रि० (हि) १-सिकुड़न पड़ना। २-उलझना।
**गुरची** (हि) १-सिकुड़न। २-उलझन।
**गुरचों** स्त्री० (हि) कानाफूसी।
**गुरज** पुं० (हि) १-गुम्बज। २-एक तरह की गदा।
**गुरझ, गुरझन** स्त्री० (हि) १-उलझन। २-गाँठ।
**गुरझना** क्रि० (हि) उलझना।
**गुरझाना** क्रि० (हि) उलझाना।
**गुरदा** पु० (फा) १-रीढ़ वाले प्राणियों के भीतर का अंग जो कलेजे के पास होता है, यह मूत्र को बाहर निकालता है। २-साहस। ३-एक प्रकार की छोटी तोप।
**गुर-मुख** वि० (हि) गुरु से मन्त्र की दीक्षा लिया हुआ।
**गुर-मुखी** स्त्री० (हि) एक लिपि जो पंजाब में प्रचलित है।
**गुरम्मर** पुं० (हि) १-मीठे आम का वृक्ष। २-गुडंबा।
**गुरबी** वि० (हि) घमण्डी।
**गुरसी** स्त्री० (हि) गोरसी।
**गुराई** स्त्री० (हि) गोरापन।
**गुराब** पुं० (देश) १-तोप लादने की गाड़ी। २-एक मस्तूल वाली बड़ी नाव।
**गुरिद** पुं० (हि) गदा (अस्त्र)।
**गुरिया** स्त्री० (हि) १-माला का मनका। ३-चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। २-मछली के मांस का टुकड़ा।
**गुरीरा** वि० (हि) १-गुड़ का मीठा। २-उत्तम।
**गुरु** वि० (सं) १-बड़े आकार का। २-भारी। ३-देर से पचने वाला (भोजन)। पुं० (स) १-विद्या अथवा कला सिखाने वाला उस्ताद। २-बृहस्पति। ३-बृहस्पति नामक ग्रह। ४-किसी मन्त्र का उपदेष्टा ५-दो मात्राओं वाला दीर्घाक्षर।
**गुरुआई** स्त्री० (हि) १-गुरु का काम, पद या धन। २-धूर्तता। चालाकी।

**गुरुआनी** स्त्री० (हिं) १-गुरु की पत्नी । २-शिक्षिका ।
**गुरुकुल** पुं० (सं) १-गुरु का निवास-स्थान जहाँ रह कर शिष्य विद्याध्ययन करते हैं । २-गुरु का कुल ३-प्राचीन पद्धति पर स्थापित विद्यापीठ ।
**गुरुगम** वि० (सं) १-गुरु या शिक्षक से प्राप्त होने वाला । २-गुरु या शिक्षक से बतलाया हुआ ।
**गुरुच** स्त्री० (हिं) गिलोय ।
**गुरुज** पुं० (हिं) दे० 'गुर्ज' ।
**गुरुजन** पुं० (सं) माता, पिता, गुरु आदि पूज्य पुरुष
**गुरुडम** पुं० (हिं) गुरु बनने का दावा ।
**गुरुता** स्त्री० (सं) १-भारीपन । २-महत्व । बड़प्पन । ३-गुरु का कर्त्तव्य ।
**गुरुताई** स्त्री० (हिं) गुरुता ।
**गुरुत्व** पुं० (सं) १-भारीपन । २-महत्व । ३-गुरु का कार्य ।
**गुरुत्वाकर्षण** पुं० (सं) वह आकर्षण जिससे भारी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं ।
**गुरुदक्षिणा** स्त्री० (सं) वह भेंट जो अध्ययन समाप्त होने पर गुरु को दी जाती है ।
**गुरुदेव** पुं० (सं) देवतुल्य गुरु ।
**गुरुद्वारा** पुं० (हिं) गुरु के पास रहने का स्थान । २-सिक्खों का मन्दिर या धर्म स्थान ।
**गुरुबिनी** स्त्री० (हिं) गर्भिणी । गर्भवती ।
**गुरु-भाई** पुं० (हिं) एक ही गुरु के शिष्य ।
**गुरु-मंत्र** पुं० (सं) शिष्य बनाते समय गुरु द्वारा दिया जाने वाला मन्त्र ।
**गुरु-मुख** वि० (हिं) जिसने गुरु से मन्त्र या दीक्षा ली हो ।
**गुरु-मुखी** स्त्री० (हिं) पंजाब की एक लिपि ।
**गुरुवार** पुं० (हिं) बृहस्पतिवार ।
**गुरू** पुं० (हिं) १-अध्यापक । २-धूर्त्त ।
**गुरूघंटाल** वि० (हिं) १-अत्यन्त चतुर । २-धूर्त्त ।
**गुरेरना** क्रि० (हिं) आँख फाड़कर देखना । घूरना ।
**गुरेरा** पुं० (हिं) १-घूरने की क्रिया या भाव । २-गुलेला । ३-साक्षात्कार ।
**गुर्ज** पुं० (फा) १-गदा । २-डण्डा । सोटा ।
**गुर्जर** पुं० (सं) गूजर ।
**गुर्राना** क्रि० (हिं) १-डराने के लिए कुत्ते बिल्ली आदि का गम्भीर शब्द करना । २-क्रोध या अभिमान के कारण भारी तथा कर्कश स्वर में बोलना
**गुर्राहट** स्त्री० (हिं) गुर्राने की क्रिया या भाव ।
**गुर्विणी** वि० (सं) गर्भवती ।
**गुर्वी** स्त्री० (सं) गुरुपत्नी । वि० १-गर्भवती । २-बड़ी भारी ।
**गुल** पुं० (फा) १-फूल । २-गुलाब का फूल । ३-तम्बाकू का जला हुआ भाग । ४-दीये की बत्ती का जला हुआ अंश । ५-दाग । छाप । ६-वह गड्ढा जो हँसते समय गालों में पड़ता है । ७-शोर । हल्ला ८-सुन्दर स्त्री । नायिका ।
**गुलकंद** पुं० (फा) चाशनी में मिले गुलाब के फूलों की औषधि ।
**गुलकारी** स्त्री० (फा) बेल-बूटे का काम ।
**गुल-गपाड़ा** पुं० (हिं) शोरगुल ।
**गुलगुला** वि० (हिं) गुदगुदा । पुं० एक मीठा पकवान ।
**गुलगुलाना** क्रि० (हिं) किसी गूदेदार वस्तु को हाथ में लेकर मुलायम करना ।
**गुलगुली** स्त्री० (हिं) गुदगुदी ।
**गुलगोथना** वि० (हिं) गलगुथना ।
**गुलचना** क्रि० (हिं) गुलचा मारना ।
**गुलचा** पुं० (हिं) प्रेम पूर्वक धीरे से गालों पर किया हुआ आघात ।
**गुलचाना, गुलचियाना** क्रि० (हिं) गुलचा मारना ।
**गुलछर्रा** पुं० (हिं) स्वच्छंदता पूर्वक तथा अनुचित ढंग से किया जाने वाला भोग विलास ।
**गुलजार** पुं० (फा) वाटिका । वि० १-हराभरा । २-आनन्द एवं शोभा युक्त । ३-भली भाँति बसा हुआ और रौनक वाला ।
**गुलझरी** स्त्री० (हिं) १-उलझन । २-सिकुड़न ।
**गुलथी** स्त्री० (हिं) १-तरल पदार्थ के गाढ़ा होने पर बनने वाली गुठली । २-मांस के जमने से बनी गाँठ ।
**गुलदस्ता** पुं० (फा) फूलों का गुच्छा ।
**गुलदाउदी** स्त्री० (फा) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसमें गुच्छेदार फूल आते हैं ।
**गुलदान** पुं० (फा) गुलदस्ता रखने का पात्र ।
**गुलदार** वि० (फा) फूलदार ।
**गुलदुपहरिया** स्त्री० (फा) सफेद सुगन्धित फूल वाला एक पौधा ।
**गुलनार** पुं० (फा) १-अनार का फूल । २-इस फूल का सा गहरा लाल रंग ।
**गुलबकावली** स्त्री० (फा) हल्दी की तरह का पौधा जिसमें सफेद फूल लगाते हैं ।
**गुलबदन** पुं० (फा) एक रेशमी कपड़ा ।
**गुलमेंहदी** स्त्री० (हिं) एक फूल वाला पौधा ।
**गुलमेख** स्त्री० (फा) गोल सिरे की कील ।
**गुललाला** पुं०(हिं) गुल्लाला ।
**गुलशन** पुं० (फा) वाटिका ।
**गुलशब्बो** स्त्री० (फा) रजनी गंधा नामक पौधा या फूल ।
**गुलाब** पुं० (फा) १-एक प्रसिद्ध कंटीला पौधा जिसमें हलके लाल रंग के सुगन्धित फूल आते हैं । २-गुलाब जल ।
**गुलाब-जल** पुं० (हिं) गुलाब के फूलों का भुभाबा

हुआ अर्क।
गुलाब-जामुन पुं० (हिं) १-एक मिठाई। २-वृक्ष विशेष जिसका फल चपटा और स्वादिष्ट होता है।
गुलाब-पाश पुं०(हिं) गुलाब जल छिड़कने का पात्र।
गुलार-बाड़ी स्त्री० (हि) उत्सव विशेष जिसमें शोभा के निमित्त गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।
गुलाबी वि० (फा) १-गुलाब के रंग का। २-गुलाब सम्बन्धी। ३-हलका।
गुलाम पुं० (अ) १-खरीदा हुआ दास। २-नौकर।
गुलामी स्त्री० (अ) १-दासता। २-सेवा। ३-पराधीनता।
गुलाल पुं० (फा) वह लाल चूर्ण जिसे होली के दिनों में हिन्दू लोग उत्साह पूर्वक परस्पर मुख पर लगाते हैं।
गुलाला पुं० (हिं) एक पौधा।
गुलाली स्त्री०(हि) एक तरह का गहरा लाल रंग जो चित्र बनाने के काम में आता है।
गुलिस्ताँ पुं० (फा) बाग। वाटिका।
गुलू पुं० (देश) वृक्ष विशेष जिसके गोंद को 'कतीरा' कहते हैं।
गुलूबंद पुं० (फा) १-लम्बी ऊनी पट्टी जिसे सिर या गले में लपेटते है। २-गले में पहनने का गहना।
गुलेनार पुं० दे० गुलनार।
गुलेल स्त्री० (फा) वह कमान जिससे चिड़ियों और बन्दरों को मारने के लिए मिट्टी की गोली चलाई जाती है।
गुलेला पुं० (फा) १-मिट्टी की गोली जो गुलेल में चलाई जाती है। २-गुलेल।
गुल्फ पुं० (सं) एड़ी के ऊपर की गाँठ।
गुल्म पुं० (सं) १-ऐसा पौधा जो एक से कई तनों के रूप से निकले। २-सेना का एक समुदाय जिसमें ६ हाथी, ६ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते हैं। ४-गाँठ के आकार की नस की सूजन।
गुल्लक स्त्री० हि) गोलक।
गुल्ला पुं० (हि) १-गुलेला। २-शोर। हल्ला।
गुल्लाला पुं० (फा) लाल फूल का एक पौधा।
गुल्ली स्त्री० (हिं) १-गुठली। २-महुए की गुठली। ३-नुकीले सिरों वाला काठ का टुकड़ा जिससे लड़के खेलते है।
गुल्ली-डंडा पुं० (हि) डंडे और गुल्ली का खेल।
गुवा पुं० (हि) गुवाक। सुपारी।
गुवाक पुं० (सं) सुपारी।
गुवार पुं० (हि) ग्वाला।
गुविंद पुं० (हि) गोविन्द।
गुष्टि स्त्री० (हि) गोष्ठी।
गुसल पुं० (अ) स्नान।
गुसाँई पुं० (हिं) गोसांई। गोस्वामी।
गुसा पुं० (हि) गुस्सा। क्रोध।
गुस्ताख वि० (फा) धृष्ट। अशिष्ट।
गुस्ताखी स्त्री० (फा) धृष्टता। उद्दंडता।
गुस्ल पुं० (अ) स्नान।
गुस्लखाना पुं० (अ+फा) स्नानागार।
गुस्सा पुं० (अ) क्रोध। कोप।
गुस्सैल वि० (अ) क्रोधी।
गुह पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-घोड़ा। ३-विष्णु। ४-गुफा। ५-राम का एक मित्र। ६-हृदय। पुं० (हि) मल। विष्ठा।
गुहना क्रि० (हि) गूंथना।
गुहराना क्रि० (हि) पुकारना।
गुहवाना क्रि० (हि) गूंथने का काम दूसरे से कराना
गुहांजनी स्त्री० (हि) पलक पर होने वाली फुंसी। बिलनी।
गुहा स्त्री० (स) गुफा। कन्दरा।
गुहाई स्त्री० (हि) गूंथने की क्रिया, भाव, मजदूरी या ढंग।
गुहार स्त्री० (हि) रक्षा के लिए पुकार।
गुहारना क्रि० (हिं) रक्षा के निमित्त पुकार करना।
गुहेरा पुं० (हि) १-गोह नाम का एक जन्तु। २-पटवा।
गुहेरी स्त्री० दे० 'गुहांजनी'।
गुह्य वि० (स) १-गुप्त। २-गोपनीय। जिसका अभिप्राय सहज प्रकट न हो। गूढ़।
गूँगा वि० (फा) जो बोल न सके। मूक।
गूँगी पुं० (हि) १-पैर की उंगली का बिछिया (गहना)। २-दो मुँह का साँप। वि० स्त्री० (हि) जिसमें बोलने की शक्ति न हो।
गूँज स्त्री० (हि) १-गुंजार। २-प्रतिध्वनि। ३-लट्टू में की कील। ४-नाथ का पतला तार। ५-कान की बालियों में दूर तक लपेटा हुआ छोटा पतला तार।
गूँजना क्रि० (हि) १-गुंजारना। २-प्रतिध्वनि से व्याप्त होना।
गूँथना क्रि० (हि) १-गूँधना। २-पिरोना।
गूँधना क्रि० (हि) १-माँड़ना। २-पिरोना।
गू पुं० (हि) मल। विष्ठा।
गूजर पुं० (हि) एक जाति का नाम। ग्वाला।
गूजरी स्त्री० (हि) १-गूजर जाति की स्त्री। २-एक गहना।
गूढ़ पुं० (सं) १-छिपा हुआ। २-जिसमें कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो। ३-जिसका मतलब समझना कठिन हो।
गूढ़-गेह १-तहखाना। २-मन्त्रणागृह। ३-यज्ञशाला
गूढ़चर पुं० (सं) गुप्तचर। जासूस।
गूढ़-पत्र पुं० (सं) १-निर्वाचन में (रंगीन) कागज

के पुरुषों की सहायता से दिया जाने वाला मत। २-इस प्रकार मत देने का ढंग या प्रणाली। (बैलट)।
**गूढ़-लेख** पुं० (सं) वह प्रणाली जिसके द्वारा किसी ऐसी लिपि में लिखित सन्देश भेजे जाते हैं। जिसे प्राप्तकर्ता ही जानता हो। (साइफर)।
**गूढ़ पुरुष, गूढ़ाशय** पुं० (सं) गुप्तचर। जासूस।
**गूढ़-संहिता** स्त्री० (सं) गूढ़ लेख सम्बन्धी नियमों, संकेतों आदि का संग्रह। (साइफर कोड)।
**गूढ़ोक्ति** स्त्री० (सं) १-गूढ़ बात। २-किसी को सुनाकर किसी और से कोई गुप्त बात कहना।
**गूढ़ोत्तर** पुं० (सं) उत्तर अलङ्कार का एक भेद।
**गूथना** क्रि० (हि) १-कई वस्तुओं को एक लड़ी में पिरोना। २-गूँधना।
**गूदड़, गूदर** पुं० (हि) फटा पुराना वस्त्र। चिथड़ा।
**गूदा** पुं० (हि) १-फल के नीचे का सार भाग। २-(खोपड़ी का) भेजा। ३-मींगी। गिरी।
**गून** स्त्री० (हि) नाव खींचने की रस्सी।
**गूमड़ा** पुं० (हि) आघात से होने वाली माथे की सूजन।
**गूलर** पुं० (हि) १-एक वृक्ष जिसके फल में छोटे-छोटे कीड़े होते हैं। २-इस वृक्ष का फल। उदुम्बर
**गूल** पुं० (हि) वृक्ष विशेष।
**गूह** पुं० (हि) विष्ठा। मैला।
**गृह** पुं० (सं) घर।
**गृहगोधा** स्त्री० (सं) छिपकली।
**गृहपति** पुं० (सं) १-घर का मालिक। २-अग्नि।
**गृहपशु** पुं० (सं) १-पालतू जानवर। २-कुत्ता।
**गृह-मंत्री** पुं० (सं) किसी देश या राज्य का वह मन्त्री जो देश या राज्य के भीतरी बातों की व्यवस्था करता है। (होम-मिनिस्टर)।
**गृहयुद्ध** पुं० (सं) १-घरेलू झगड़ा। २-देश के भीतर या देशवासियों की आपसी लड़ाई। (सिविल वार)
**गृहरक्षक** पुं० (सं) १-राज्य की ओर स्थापित एक अर्ध सैनिक संगठन जो (भारत में) स्थानिक शान्ति तथा सुरक्षा की दृष्टि से संगठित किया गया है। २-२-इस संगठन का कोई सैनिक। या अधिकारी। (होमगार्ड)।
**गृहलक्ष्मी** स्त्री० (सं) घर की लक्ष्मी। सच्चरित्रा स्त्री
**गृहसंन्यास** पुं० (सं) घर में रह कर सब काम करने और घर से बाहर न निकलने का व्रत जिसकी गणना संन्यास में होती है।
**गृहसचिव** पुं० (सं) गृहमन्त्रालय का सबसे बड़ा विभागीय अधिकारी। (होम-सैक्रेटरी)।
**गृहस्त** पुं० (हि) दे० 'गृहस्थ'।
**गृहस्थ** पुं० (सं) १-ब्रह्मचर्य के बाद विवाह आदि करके घर में रहने वाला। २-घरबार या बाल-बच्चों वाला। ३-किसान।
**गृहस्थाश्रम** पुं० (सं) चार आश्रमों में से दूसरा जिसमें ब्रह्मचर्य का परित्याग करके घर-बार सँभालते हैं।
**गृहस्थी** स्त्री० (सं) १-घर की व्यवस्था। २-लड़के-बाले। ३-घर का सामान। ४-खेती-बारी।
**गृहस्वामी** पुं० (सं) घर का मालिक।
**गृहिणी** स्त्री० (सं) १-घर की मालकिन। २-पत्नी।
**गृही** पुं० (सं) १-गृहस्थ। २-यात्री।
**गृहीत** वि० (सं) १-जिसे ग्रहण कर लिया गया हो। स्वीकृत। २-लिया पकड़ा अथवा रखा हुआ।
**गृह्य** वि० (सं) घर सम्बन्धी। घर का।
**गृह्य-सूत्र** पुं० (सं) विवाह आदि संस्कारों की वैदिक पद्धति।
**गेंडुआ** स्त्री० (हि) १-गोल तकिया। २-गेंद।
**गेंडुरी** स्त्री० (हि) १-ईंडुआ। २-कुण्डली। गोलचक्कर।
**गेंद** पुं० (हि) कपड़े, रबर, चमड़े आदि का खिलौना कन्दुक।
**गेंद-तड़ी** स्त्री० (हि) एक दूसरे को गेंद मारने का खेल।
**गेंद-बल्ला** पुं० (हि) १-गेंद और उसको मारने की लकड़ी। २-इनसे खेला जाने वाला एक खेल।
**गेंदा** पुं० (हि) एक पौधा या उसका पीला गेंद-सा फूल।
**गेंदिया** स्त्री०(हि) हार के नीचे लटकने वाले फूल पत्तों का गुच्छा जिसमें गेंदे के एक दो फूल होते हैं।
**गेंदुआ** पुं० (हि) १-गेंद। २-गोल तकिया।
**गेंदुक** पुं० (हि) गेंद।
**गेड़ना** क्रि० (हि) १-लकीर से घेरना। २-परिक्रमा करना। ३-खेत के चारों ओर मेड़ बनाना। ४-रहट चलाना।
**गेय** वि० (सं) गाये जाने के योग्य।
**गेर** पुं० (हि) गला।
**गेरना** (हि) गिराना।
**गेराँव** पुं० (हि) पशुओं के गले में लपेटने का बंधन। पगहा।
**गेरुआ** वि०(हि) १-गेरू के रंग का जोगिया। २-गेरू के रंग में रंगा हुआ। भगवा।
**गेरू** स्त्री०(हि) एक तरह की लाल कड़ी मिट्टी। गैरिक
**गेह** पुं० (सं) घर।
**गेहनी** स्त्री० (हि) गृहिणी।
**गेही** पुं०(हि) गृहस्थ।
**गेहुँअन** पुं० (हि) गेहूँ के रंग का एक विषैला साँप।
**गेहुँआँ** वि० (हि) गेहूँ के रंग का।
**गेहूँ** पुं० (हि) एक अन्न जिसकी रोटी बनती है। गोधूम।

गैड़, गैड़ा पुं० (हिं) भैंसे की तरह का एक जंगली पशु जिसकी खाल कड़ी होती है।
गैत स्त्री० (हिं) १-गोठ। २-बहारदिवारी।
गैन पुं० (हिं) १-गगन। आकाश। २-गैल। मार्ग ३-गमन।
गैना पुं० (हिं) नाटा बैल।
गैनी वि० (हिं) गमन करने वाली। चलने वाली।
गैब पुं० (अ) परोक्ष।
गैबर पुं० (हिं) १-एक चिड़िया। २-बड़ा हाथी।
गैबी वि० (अ) १-गुप्त। २-अपरिचित। ३-अप्रत्यक्ष शक्ति के ओर का।
गैयर पुं० (हिं) हाथी। स्त्री० (हिं) नील गाय। वि० सुशील।
गैया स्त्री० (हिं) गाय। गौ।
गैर वि० (अ) १-अन्य। दूसरा। २-पराया। स्त्री० (हिं) अंधेर।
गैर-जिम्मेवार वि० (अ+फा) अपना उत्तरदायित्व न समझने वाला।
गैरत स्त्री० (अ) लज्जा।
गैर-दखीलकार पुं० (अ+फा) वह खेतिहर जिसे दखीलकारी का स्वत्व प्राप्त न हो।
गैर-मनकूला वि० (अ) अचल। स्थावर।
गैर-मामूली वि० (अ) असाधारण।
गैर-मुनासिब वि० (अ) अनुचित।
गैर-मुमकिन वि० (अ) असंभव।
गैर-रस्मी वि० (अ) अनौपचारिक।
गैर-वाजिब वि० (अ) अनुचित।
गैर-सरकारी वि० (अ+फा) १-जिसके लिएसरकार या राज्य उत्तरदायी न हो। २-जो सरकारी न हो।
गैरहाजिर वि० (अ) अनुपस्थित।
गैरहाजिरी स्त्री० (अ) अनुपस्थिति।
गैरिक पुं० (सं) १-गेरू। २-सोना। वि० गेरू के रंग का।
गैल स्त्री० (हिं) रास्ता।
गोंजिया स्त्री० (हिं) गोभी नामक घास।
गोंठ स्त्री० (हिं) धोती की लपेट जो कमर पर रहती है
गोंठना क्रि०(हिं) १-किसी हथियार की नोक या धार कुंठित करना। २-गुझिया की कोर मोड़ना। ३-चारों ओर से घेरना।
गोंड पुं० (हिं) १-मध्य प्रदेश की एक जन-जाति २-एक जाति जो अन्न भूनने का काम करती है
गोंडरा पुं० (हिं) १-चरसे का मँडरा। २-गोल आकार की कोई चीज। मँडरा। ३-गोल घेरा।
गोंद पुं० (हिं) पेड़ के तनों से निकलने वाली एक लसदार वस्तु। निर्यास।
गोंददानी स्त्री० (हिं) भिगोया हुआ गोंद रखने का पात्र।
गोंदपंजीरी स्त्री० (हिं) प्रसूता स्त्री को दी जाने वाली गोंद मिली पँजीरी।
गोंदरी स्त्री० (हिं) १-पानी में उगने वाली एक घास २-इस घास की बनी चटाई।
गोंदी स्त्री० (हिं) हिंगोट।
गो स्त्री० (सं) १-गाय। २-किरण। ३-वाणी। ४-दिशा। ५-सरस्वती। ६-दृष्टि। ७-बिजली। ८-जिह्वा। ९-इन्द्रिय। १०-वृष राशि। ११-किसी धातु की बनी गाय की मूर्त्ति। १२-बकरी, भैंस आदि दूध देने वाले चौपाये। १३-माता। पुं० (सं) १-बैल। २-नन्दी। ३-घोड़ा। ४-सूर्य। ५-चन्द्रमा ६-तीर। बाण। ७-गवैया। अव्य० (फा) यद्यपि। प्रत्य० (फा) कहने वाला। जैसे—कानूनगो।
गोइँठा पुं० (हिं) उपला।
गोइँडा पुं० (हिं) १-गाँव की सीमा। सीमा। २-गाँव के आसपास का क्षेत्र।
गोइंदा पुं० (फा) गुप्तचर।
गोइ पुं० (हिं) गेंद।
गोइन पुं० (हिं) एक तरह का हिरन।
गोइयाँ पुं० (हिं) साथी। सहचर। स्त्री० सखी। सहेली।
गोई स्त्री० (हिं) १-हल, गाड़ी आदि में जुतने वाली बैलों की जोड़ी। २-सखी। सहेली।
गोऊ वि० (हिं) छिपाने वाला।
गोकर्ण पुं० (सं) १-मालाबार में स्थित शैवों का एक तीर्थ। २-इस स्थान पर स्थापित शिव मूर्त्ति। वि० गाय के समान लम्बे कान वाला।
गोकुल पुं० (सं) १-गायों का झुंड। २-गौशाला। ३-मथुरा के पूर्व दक्षिण का एक गाँव जिसे अब महावन कहते हैं।
गोखरू पुं० (हिं) १-एक छोटा कंटीला पौधा या फल २-धातु के वह गोल कन्टीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के निमित्त उनके रास्ते में बिछाये जाते हैं। ३-कपड़ों पर लगाने का एक साज ४-हाथ का एक आभूषण।
गोखा पुं० (हिं) १-झरोखा। २-गाय या बैल का कच्चा चमड़ा।
गो-ग्रास पुं० (सं) पके हुए अन्न में से गाय के लिए रखा हुआ अंश।
गोघातक, गोघाती पुं० (सं) कसाई।
गोचर पुं० (सं) १-वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके। २-चरागाह।
गोचर-भूमि स्त्री० (सं) गायों को चराने के लिए छोड़ी गई भूमि। (पास्चर लैंड)।
गोज पुं० (फा) अपान वायु। पाद।
गोजई स्त्री० (हिं) एक में मिला हुआ गेहूँ और जौ।
गोजर पुं० (हिं) कनखजूरा।

**गोजी** स्त्री० (हि) बड़ी लाठी।
**गोझनवट** स्त्री० (देश) १-साड़ी का पल्ला। २-फुबनी।
**गोझा** पुं० (हि) १-गुझिया (पकवान)। २-जेब। ३-एक कंटीली घास। ४-जोंक।
**गोट** स्त्री० (हि) १-मगजी। २-किनारा। ३-मंडली ४-गोष्ठी। ५-चौपड़ की गोटी।
**गोटा-पट्टा** पुं० (हि) गोटा और पट्टा नामक जरी के साज जो कपड़ों में एक साथ टाँके जाते हैं।
**गोटी** स्त्री० (हि) १-कंकड़ का टुकड़ा। २-चौपड़ का मुहरा। ३-गोटियों का खेल। ४-लाभ का योग।
**गोठ** स्त्री० (हि) १-गोशाला। २-गोष्ठी। ३-श्राद्ध ४-सैर।
**गोठड़ी, गोठरी** स्त्री० (हि) गोष्ठी।
**गोड़** पुं० (हि) पैर।
**गोड़इत** पुं० (हि) गाँव का चौकीदार।
**गोड़ना** क्रि० (हि) मिट्टी खोद कर उलटना। कोड़ना
**गोड़ा** पुं० (हि) १-पलंग आदि का पाया। २-घोड़िया।
**गोड़ाई** स्त्री० (हि) गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी
**गोड़ाना** क्रि० (हि) गोड़ने का काम दूसरे से कराना
**गोड़ापाई** स्त्री० (हि) बारबार आना जाना।
**गोड़ारी** स्त्री० (हि) १-पैताना। २-जूता।
**गोत** पुं० (हि) १-कुल। वंश। २-समूह। दल।
**गोतना** क्रि० (हि) १-गोता देना। डुबाना। २-नीचे की ओर झुकना या झुकाना। ३-नींद से झटके आना।
**गोतम** पुं० (सं) १-एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि। २-एक मंत्रकार ऋषि।
**गोतमी** स्त्री० (सं) अहिल्या।
**गोता** पुं० (हि) जल में डुबकी।
**गोताखोर** पुं० (फा) १-डुबकी लगाकर जल में चीजें ढूँढकर लाने वाला। २-डुबकनी नाव।
**गोतिया, गोती** वि० (हि) (स्त्री० गोतिन) अपने गोत्र का। गोती।
**गोतीत** वि० (सं) इन्द्रियातीत।
**गोत्र** पुं० (सं) १-सन्तान। २-नाम। ३-राजा का छत्र। ४-दल। ५-वंश। ६-भाई। ७-कुल या वंश की संज्ञा जो उसके मूल पुरुष के अनुसार होती है।
**गोत्र-सुता** स्त्री० (सं) पार्वती।
**गोत्रोच्चार** पुं० (सं) विवाह के अवसर पर वर, वधु के वंश गोत्र आदि का दिया जाने वाला परिचय।
**गोद** पुं० (हि) १-उत्संग। क्रोड़। २-अञ्चल।
**गोद-नशीन** (हि) दत्तक।
**गोदनहारी** स्त्री० (हि) गोदना गोदने वाली स्त्री।
**गोदना** क्रि० (हि) १-चुभाना। २-उकसाना। ३-ताना देना। पुं० १-तिल के आकार का वह नीला चिह्न या फूल पत्ते जो त्वचा पर सूइयों से चुभाकर बनाये जाते हैं। २-खेत गोड़ने का औजार।
**गो-दान** पुं० (सं) १-ब्राह्मण को गाय दान देने की क्रिया। २-मुण्डन-संस्कार।
**गोदाम** पुं० (हि) माल रखने का स्थान।
**गोदी** स्त्री० (हि) १-बड़ी नदी या समुद्र में घेरा हुआ वह स्थान जहाँ जहाज मरम्मत के लिए रखे जाते हैं। २-गोद।
**गो-धन** पुं० (सं) १-गायों का समूह या झुण्ड। २-गौ-रूपी सम्पत्ति। ३-एक प्रकार का चौड़े फल वाला तीर। ४-गोवर्धन पर्वत।
**गोधना** पुं० (हि) भैया दूज के दिन का एक कृत्य जिसमें गोबर का आदमी बनाया जाता है।
**गोधूम** पुं० (सं) गेहूं।
**गोधूलि, गोधूली** स्त्री० (सं) सन्ध्या का समय।
**गोन** स्त्री० (हि) १-बैलों की पीठ पर लादने का दोहरा बोरा। २-मस्तूल में बाँधने की रस्सी।
**गोनरखा** पुं० (हि) १-नाव का मस्तूल जिसमें गोन बाँधकर खींचते हैं। गोन बाँधकर खींचने वाला मजदूर।
**गोना** क्रि० (हि) छिपाना।
**गोप** पुं० (सं) १-गौ-रक्षक। २-ग्वाला। ३-गोशाला का प्रबन्धक। ४-गाँव का मुखिया। ५-राजा।
**गो-पति** पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-श्रीकृष्ण ४-सूर्य। ५-राजा। ६-साँड़। ७-ग्वाला।
**गोपन** पुं० (सं) १-छिपाव। दुराव। २-लुकाना। छिपाना। ३-रक्षा। ४-व्याकुलता।
**गोपना** क्रि० (हि) छिपाना।
**गोपनीय** वि० (सं) छिपाने योग्य।
**गोपांगना** स्त्री० (सं) गोपी।
**गोपाल** पुं० (सं) १-ग्वाला। २-श्रीकृष्ण। ३-गौ को पालने वाला।
**गोपिका, गोपी** स्त्री०(सं) १-गोप की स्त्री। २-ग्वालिन
**गोपीचंदन** पुं० (सं) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं।
**गोपीता** स्त्री० (हि) गोपी।
**गोपीनाथ** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**गोपुर** पुं० (सं) १-नगर का मुख्य द्वार। २-किले का फाटक। ३-फाटक। ४-स्वर्ग।
**गोपेंद्र** पुं०(सं) श्रीकृष्ण।
**गोप्ता** वि० (हि) रक्षक।
**गोप्य** वि० (सं) गुप्त रखने योग्य। गोपनीय। (सीक्रेट)।
**गोफन, गोफना** पुं० (हि) ढेलवाँस। फन्नी।
**गोबर** पुं० (हि) गाय भैंस का मल।
**गोबर-गणेश** वि० (हि) १-बदसूरत। २-मूर्ख।

**गोबरी** स्त्री० (हि) गोबर की लिपाई।
**गोभा** स्त्री० (हि) लहर। पुं० गाभा।
**गोभी** स्त्री० (हि) १-एक घास। गोंजिया। २-शाक के प्रयोग में आने वाला एक फूल या पत्तों की गाँठ
**गोमय** पुं० (सं) गोबर।
**गो-मर** पुं० (हि) गौ-घातक।
**गो-मांस** पु० (स) गाय का गोश्त।
**गो-मांस-भक्षण** पुं० (सं) हठयोग की एक क्रिया। सुरभि-भक्षण।
**गोमाय** पुं० (सं) गीदड़।
**गो-मुख** पुं० (सं) १-गाय का मुँह। २-गाय के मुँह की तरह का एक शंख। ३-एक प्राचीन तीर्थ। वि० गाय के मुँह की तरह कुछ नीचे लटकता हुआ।
**गो-मुखी** स्त्री० (स) गो-मुख के आकार की एक थैली जिसमें माला रखकर फेरते हैं।
**गो-मूत्रिका** स्त्री० (स) १-एक प्रकार का चित्र काव्य। २-चित्रण आदि में लहरियेदार बेल।
**गोमेद, गोमेदक** पुं० (सं) एक मणि जो नौ-रत्नों में गिनी जाती है।
**गोमेध** पुं० (सं) अश्वमेध की तरह का एक यज्ञ।
**गोय** पुं० (हि) गेंद।
**गोया** क्रि० वि० (फा) मानों। जैसे।
**गोर** स्त्री० (फा) कब्र। वि० (हि) गोरा (रंग)।
**गोरख-धंधा** पु० (हि) १-अनेक तारों की कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह जिन्हें विशेष युक्ति से परस्पर जोड़कर अलगा देते हैं। २-कोई उलझन की बात या काम।
**गोरखनाथ** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध हठयोगी अवधूत जो एक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक थे।
**गोरख-पंथ** पुं० (हि) गुरु गोरखनाथ का चलाया हुआ एक सम्प्रदाय।
**गोरख-पंथी** पुं० (हि) गोरखनाथ का अनुयायी साधु
**गोरखा** पुं० (हि) १-नेपाल में एक प्रदेश का नाम। २-इस प्रदेश का रहने वाला आदमी।
**गो-रज** पुं० (स) वह धूल जो गाय के खुरों से उड़ती है।
**गोरटा** वि० (हि) गोरे रंग का।
**गोरमदाइन** स्त्री० (?) इन्द्रधनुप।
**गो-रस** पुं० (सं) १-दूध। २-दही। ३-तक्र। छाछ। ४-इन्द्रियों का सुख।
**गोरसी** स्त्री० (हि) वह अँगीठी जिस पर दूध गरम करते हैं।
**गोरा** पुं० (हि) १-साफ और सफेद रंग। २-इस रंग वाला आदमी। ३-योरोपियन। फिरंगी।
**गोराई** (स्त्री० (हि) १-गोरापन। २-सुन्दरता।
**गोरा-पत्थर** पुं० (हि) घीया पत्थर।
**गोरिला** पुं० (अ) एक प्रकार का वनमानुस।
**गोरिल्ला** पु० दे० 'गोरिला'।
**गोरी** स्त्री० (हि) सुन्दर और गौर-वर्ण वाली स्त्री।
**गोरू** पुं० (हि) सींग वाला पशु।
**गोरू-चोर** पुं० (हि) पशुओं की चोरी करने वाला। (एबैक्टर)।
**गोरोचन** पु० (स) गाय के पित्त में से निकलने वाला एक प्रकार का पीला द्रव्य।
**गोलंदाज** पुं० (फा) तोपची।
**गोलंदाजी** स्त्री० (फा) तोप में भरकर गोले दागने का काम।
**गोलंबर** पुं० (हि) १-गुम्बद। २-गुम्बद की तरह का अर्ध-गोलाकार पदार्थ या रचना। ३-गोलाई। ४-कलवृन्त।
**गोल** वि० (सं) १-वृत्त या चक्र की तरह का। २-गेंद की तरह का। पुं० (सं) १-वृत्त। २-वटक। गोला। पु० (अ) झुण्ड।
**गोलक** पुं० (सं) १-गोलोक। २-गोल पिण्ड। ३-विधवा स्त्री का जारज पुत्र। ४-आँख की पुतली या ढेला। ५-मिट्टी का बड़ा कुन्दा। ६-गुम्बद। स्त्री० (हि) १-वह सन्दूक या डिब्बा जिसमें धन संग्रह किया जाय। गल्ला। गुल्लक। २-वह कोष जिसमें किसी विशेष कार्य के निमित्त निर्धारित स्थानों से धनादि लाकर संचित किया जाय। (पूल)
**गोलगप्पा** पु० (हि) एक छोटी और करारी फुलकी।
**गोलमाल** पुं० (हि) गड़बड़।
**गोल-मिर्च** स्त्री० (हि) काली मिर्च।
**गोल-मेज** स्त्री० (हि) वह मण्डलाकार मेज जिसके चारों ओर कुछ प्रतिनिधिगण बैठकर पूर्ण समानता के आधार पर कुछ बातचीत करें।
**गोल-यंत्र** पुं० (स) वह यंत्र जिसके द्वारा ग्रह, नक्षत्र आदि की गति जानी जाती है।
**गोलयोग** पुं० (सं) १-ज्योतिष में एक बुरा योग। २-गोलमाल।
**गोला** पुं० (हि) १-वृत्त या पिंड के समान कोई गोल वस्तु। २-लोहे का वह गोल पिंड जो तोप के द्वारा शत्रुओं पर फेंका जाता है। ३-वायु-गोला नामक एक रोग। ४-जंगली कबूतर। ५-गरी का गोला। ६-वह बाजार जहाँ अनाज और किराने की थोक दुकानें हों। ७-दास। ८-नौकर।
**गोलाई** स्त्री० (हि) गोल होने का भाव।
**गोलाकार, गोलाकृति** वि०(स) जिसका आकार गोल हो।
**गोला-बारूद** पुं०(हि) युद्ध कार्य में काम आने वाले अस्त्र-शस्त्र आदि।
**गोलार्द्ध** पुं०(सं) पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचों बीच काटने से बनता है। (हेमिस्फियर)।

**गोली** स्त्री० (हि) १-छोटा वर्तुलाकार पिंड। वटिका २-औषध की बटी। ३-लड़कों के खेलने का मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड। ४-बन्दूक में भर कर छोड़ने का छोटा गोल पिंड।

**गो-लोक** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण का निवास स्थान जिसे सब लोकों से ऊपर मानते हैं। २-स्वर्ग। ३-ब्रज-भूमि।

**गोलौवा** पुं० (हि) टोकरा।

**गो-वध** पुं० गाय की हत्या।

**गोवना** क्रि० (हि) दे० 'गोना'।

**गोवर्द्धन** पुं० (सं) १-ब्रज प्रदेश का एक पर्वत। २-गो-वंश की वृद्धि।

**गोविंद** पुं० (हि) गोपेंद्र। श्रीकृष्ण।

**गोश** पुं० (फा) कान।

**गोश-पेच** पुं० (फा) एक कान का गहना।

**गोशवारा** पुं० (फा) १-कान का कुंडल। २-सीप में निकलने वाला बड़ा मोती जो एक ही हो। ३-तुर्रा। कलगी। ४-जोड़। योग। ५-आय व्यय के संक्षिप्त वर्णन का लेखा।

**गोशा** पुं० (फा) १-कोना। अन्तराल। २-एकान्त स्थान। ३-ओर। दिशा। ४-कमान का सिरा।

**गो-शाला** पुं० (सं) १-गायों के रहने का स्थान। २-वह स्थान जहाँ दुधारू पशुओं को रख कर उनका दूध, मक्खन आदि बिक्री के लिए भेजा जाता है (डेयरी)।

**गोश्त** पुं० (फा) मांस।

**गोष्ठ** पुं० (सं) १-गो-शाला। २-सलाह। परामर्श। ३-दल।

**गोष्ठी** स्त्री० (सं) १-सभा। मण्डली। २-बात-चीत। ३-परामर्श। सलाह।

**गोष्ठी-गृह** पुं० (सं) सार्वजनिक विषयों पर विचार करने अथवा आमोद के निमित्त सङ्गठित की हुई कुछ लोगों की समिति। (क्लब)।

**गोस** पुं० दे० 'गोश'।

**गोसाईं** पुं० (हि) १-गौओं का स्वामी। २-ईश्वर। ३-सन्यासियों का एक भेद। ४-विरक्त साधु। ५-मालिक। प्रभु। वि० श्रेष्ठ बड़ा।

**गोसैयाँ** पुं० (हि) गोसाईं।

**गो-स्वामी** पुं० (सं) १-जितेन्द्रिय। २-वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशज जो उनकी गद्दी के अधिकारी होते हैं।

**गोह** स्त्री० (हि) एक जन्तु जो छिपकली से मिलता-जुलता होता है।

**गोहन** पुं० (हि) १-साथी। सहचर। २-सङ्ग। साथ

**गोहरा** पुं० (हि) सुखाया हुआ गोबर।

**गोहराना** क्रि० (हि) पुकारना।

**गोहार** स्त्री० (हि) १-पुकार। दुहाई। २-सहायता के लिए चिल्लाना। ३-शोर।

**गोही** स्त्री० (हि) १-छिपाव। २-गुप्त वार्त्ता।

**गोहूँ** पुं० (हि) गेहूँ।

**गौं** स्त्री० (हि) १-सुयोग। २-प्रयोजन। मतलब। ३-गरज। ४-ढंग। तर्ज। ५-तरह। प्रकार। ६-पक्ष।

**गौंस** स्त्री० (हि) दे० 'गौं'।

**गौ** स्त्री० (सं) गाय।

**गौख** पुं० (हि) १-छोटी खिड़की। २-बरामदा। ३-आला। ताक।

**गौखा** पुं० (हि) १-गवाक्ष। २-झरोखा। ३-गाय का चमड़ा।

**गौगा** पुं० (अ) १-शोर। २-अफवाह।

**गौ-चरी** स्त्री० (हि) गाय चराने का कर।

**गौड़** पुं० (सं) १-बङ्ग देश का एक प्राचीन विभाग जो भुवनेश्वरी सीमा तक था। २-ब्राह्मणों का एक वर्ग। ३-सम्पूर्ण जाति का एक राग।

**गौड़-नट** पुं० (हि) एक सङ्कर राग जो गौड़ और नट के योग से बना है।

**गौड़-मल्लार** पुं० (हि) गौड़ और मल्लार के योग से बना एक सङ्कर राग।

**गौड़-सारंग** पुं० (हि) गौड़ और सारङ्ग के योग से बना एक सङ्कर राग।

**गौड़ी** स्त्री० (सं) १-गुड़ की शराब। २-काव्य में एक रीति अथवा वृत्ति जिसे परुषा भी कहते हैं। ३-सम्पूर्ण जाति की एक रागनी।

**गौण** वि० (सं) १-जो प्रधान न हो। २-सामान्य।

**गौणी-लक्षण** स्त्री० (सं) अस्सी प्रकार की लक्षणाओं में से एक।

**गौतम** पुं० (सं) १-गोतम ऋषि के वंशज। २-न्याय-शास्त्र के प्रणेता एक ऋषि। ३-बुद्धदेव।

**गौतमी** स्त्री० (सं) १-अहल्या। २-गोदावरी नदी। दुर्गा।

**गौन** पुं० (हि) १-गमन। २-गाउन।

**गौनहाई** वि० (हि) जिसका गौना अभी न हुआ हो।

**गौनहार** स्त्री० (हि) १-वधू के साथ उसकी ससुराल जाने वाली स्त्री २-गाने बजाने वाली स्त्री

**गौनहारिन, गौनहारी** स्त्री० (हि) सदा गाने का पेशा करने वाली स्त्री।

**गौना** पुं० (हि) द्विरागमन।

**गौनि** स्त्री० (हि) गौन।

**गौमुखी** स्त्री० (हि) दे० 'गोमुखी'।

**गौरंड** पुं० (हि) गोरों का देश। विलायत।

**गौर** वि० (सं) १-गोरा। २-सफेद। पुं० (सं) १-लाल रङ्ग। २-पीला रंग। ३-चन्द्रमा। ४-सोना। ५-केसर। पुं० (अ) १-गौर। २-चिन्तन। ३-ध्यान

**गौर-मदाइन** पुं० (हि) इन्द्रधनुष।

**गौरव** पुं० (हि) १-बड़प्पन। बड़ाई। २-सम्मान।

आदर। ३-गुरु होने का भाव।

**गौरवान्वित, गौरवित** *वि०* (सं) १-गौरव या महिमामय। २-सम्मानित।

**गौरा** पुं० (हि) १-गौरेया नामक पक्षी। २-गोरोचन

**गौरिया** *स्त्री०* (हि) १-एक काले रंग का जल-पक्षी। २-मिट्टी का बना छोटा हुक्का।

**गौरी** *स्त्री०* (सं) १-पार्वती। २-गोरे रंग की स्त्री। ३-आठ साल की कन्या। ४-तुलसी। ५-सफेद गाय। ६-चमेली।

**गौरीशंकर** पुं० (सं) १-महादेव। २-हिमालय की एक बहुत ऊँची चोटी का नाम।

**गौरैया** *स्त्री०* (हि) १-एक काले रंग का जल-पक्षी। २-चटक पक्षी।

**गौहर** पुं० (फा) मोती।

**ग्याति** *स्त्री०* (हि) जाति।

**ग्यान** पुं० (हि) ज्ञान।

**ग्यारस** *स्त्री०* (हि) एकादशी।

**ग्रंथ** पुं० (सं) १-पुस्तक। २-गाँठ लगाना।

**ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार** पुं० (सं) पुस्तक लिखने वाला।

**ग्रंथ-चुंबन** पुं० (सं) पुस्तक का उड़ती नजर से पाठ।

**ग्रंथन** पुं० (सं) १-जोड़ना। २-गूंथना। ३-गाँठ लगाना। ४-गोंद से चिपकाना।

**ग्रंथना** *क्रि०* (हि) दे० 'ग्रंथन'।

**ग्रंथ-साहब** पुं० (पं) सिक्खों की धर्म पुस्तक जिसमें सब गुरुओं के उपदेश संग्रहीत हैं।

**ग्रंथागार** पुं० (सं) पुस्तकालय।

**ग्रंथि** *स्त्री०* (सं) १-गाँठ। २-बन्धन। ३-माया जाल

**ग्रंथित** *वि०* (सं) १-गूंथा हुआ। २-जोड़ा हुआ। ३-गाँठ दिया हुआ।

**ग्रंथि-बन्धन** पुं० (सं) गँठबन्धन।

**ग्रंथिल** *वि०* (सं) गाँठदार।

**ग्रंथी** पुं० (हि) १-ग्रंथ साहब को बाँचने वाला। २-वह जिसने ग्रंथ साहब का पाठ किया हो।

**ग्रथित** *वि०* (सं) ग्रन्थित।

**ग्रब्ब** पुं० (हि) गर्व। घमंड।

**ग्रसन** पुं० (सं) १-निगलना। २-पकड़ना। ३-ग्रहण

**ग्रसना** *क्रि०* (हि) १-बुरी तरह पकड़ना। २-सताना

**ग्रसित** *वि०* दे० 'ग्रस्त'।

**ग्रस्त** *वि०* (सं) १-पकड़ा हुआ। २-पीड़ित। ३-खाया हुआ।

**ग्रस्तास्त** पुं० (सं) ग्रहण के समय सूर्य या चन्द्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

**ग्रस्तोदय** पुं० (सं) सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण लगे रहने की अवस्था में उदय होना।

**ग्रह** पुं० (सं) १-नौ प्रसिद्ध तारे जो सूर्य के चारों घूमते हैं। २-नौ की संख्या। ३-लेना। ४-सूर्य या चन्द्र ग्रहण। ५-अनुग्रह। कृपा। *वि०* बुरी तरह पकड़ने अथवा तंग करने वाला। भारीपन।

**ग्रहण** पुं० (सं) १-सूर्य या चन्द्र का पूरे या किसी अंश में पृथ्वीवासियों को न दिखाई देना। २-पकड़ना। ३-स्वीकार।

**ग्रह-दशा** पुं० (सं) १-ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी व्यक्ति की अच्छी या बुरी अवस्था। २-गोचर ग्रहों की स्थिति। ३-अभाग्य।

**ग्रहवेध** पुं० (सं) ग्रहों की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना।

**ग्रहीत** *वि०* (हि) गृहीत।

**ग्रांडील** *वि०* (हि) बड़े डील-डौल वाला।

**ग्राम** पुं० (सं) १-गाँव। २-बस्ती। ३-समूह। ४-शिव। ५-सप्तक (संगीत)।

**ग्रामणी** पुं० (सं) १-गाँव का मालिक। २-प्रधान। मुखिया।

**ग्राम-देवता** पुं० (सं) १-किसी गाँव में पूजा जाने वाला देवता। २-गाँव की रक्षा करने वाला देवता।

**ग्रामपंचायात, ग्रामपरिषद** *स्त्री०* (सं) गाँव के चुने हुए प्रतिनिधियों की पचायत या परिषद् जो गाँव की सफाई की व्यवस्था और गाँव के लोगों के आपसी झगड़ों का निपटारा करती है। (विलेज पचायत)।

**ग्राम-सुधार** पुं० (सं) ग्राम के संपूर्ण जीवन को सुधारने का काम।

**ग्राम-सेवक** पुं० (सं) भारतीय राष्ट्रीय विस्तार खण्डों में कार्य करने वाला वह कर्मचारी जो ग्रामवासियों की सेवा और ग्राम जीवन के सुधार का काम करता है। (विलेज-लेवल-वर्कर)।

**ग्रामी** *वि०* (हि) १-ग्राम्य। २-ग्रामीण।

**ग्रामीण** *वि०* (हि) १-ग्राम सम्बन्धी। ग्राम का २-गाँव का रहने वाला। देहाती।

**ग्रामोन्नति** *स्त्री०* (सं) ग्राम के सम्पूर्ण जीवन को सुधारने का काम।

**ग्राम्य** *वि०* (सं) १-गाँव से सम्बन्ध रखने वाला। (रूरल) २-ग्रामीण। देहाती। ३-प्रकृत। अश्लील। अशिष्ट।

**ग्राव** पुं० (सं) १-पत्थर। २-ओला। ३-पहाड़।

**ग्रास** पुं० (सं) १-कौर। निवाला। २-पकड़ना। ३-ग्रहण। उपराग।

**ग्रासना** *क्रि०* (हि) ग्रसना।

**ग्रासित** *वि०* दे० 'ग्रस्त'।

**ग्राह** पुं० (सं) १-मगर। घड़ियाल। २-ग्रहण। उपराग। ३-ग्रहण करना। लेना।

**ग्राहक** पुं० (सं) १-खरीदार। २-ग्रहण करने वाला ३-लेने का इच्छुक।

**ग्राहक-यंत्र** पुं० (सं) तार, टेलीफोन आदि का वह

भाग जिसकी सहायता से बाहरी या दूरस्थ सन्देश ग्रहण किया जाता है। (रिसीवर)।

**ग्राहना** क्रि० (हि) ग्रहण करना। लेना।

**ग्राही** वि० (सं) १-स्वीकार करने वाला। २-कब्ज करने वाला।

**ग्राह्य** वि० (सं) १-लेने योग्य। २-स्वीकार करने योग्य। ३-जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। (ऐडमिसिबल)।

**ग्रिह** पुं० (हि) गृह। घर।

**ग्रीवा** स्त्री० (सं) गरदन।

**ग्रीषम, ग्रीष्म** स्त्री० (सं) १-गरमी का मौसम। २-गरमी। उष्णता।

**ग्रीष्म-काल** पुं० (सं) गरमी के दिन।

**ग्रीष्मावकाश** पुं० (सं) गरम प्रदेशों में गरमी के दिनों में होने वाली छुट्टी। (समर-वेकेशन)

**ग्रेह** पुं० (हि) गेह।

**ग्रेही** पुं० (हि) गृहस्थ।

**ग्रैष्म, ग्रैष्मिक** वि० (सं) ग्रीष्म सम्बन्धी।

**ग्लानि** स्त्री० (सं) १-थकावट। शिथिलता। २-अपने किसी कार्य पर उत्पन्न खेद या पश्चात्ताप।

**ग्वार** स्त्री० (हि) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। पुं० (हि) ग्वाल।

**ग्वार-पाठा** पुं० (हि) घीकुआँर।

**ग्वारी** स्त्री० (हि) ग्वालिन।

**ग्वाल** पुं० (सं) [स्त्री० ग्वालिन] अहीर।

**ग्वाल-गीत** पुं० (सं) गाय, भैंस, बकरियाँ आदि चराते समय ग्वालों द्वारा गाये जाने वाले गीत। (पैस्टोरल-पोइट्री)।

**ग्वाल-बाल** पुं० (सं) ग्वालों के लड़के-बाले जो श्रीकृष्ण के सखा थे।

**ग्वाला** पुं० (हि) दूध बेचने वाली एक जाति।

**ग्वालिन** स्त्री० (हि) १-ग्वाले की स्त्री। २-ग्वार की फली।

**ग्वैंठना** क्रि० (हि) १-ऐंठना। २-मरोड़ना। ३-दे० 'गोंठना'।

**ग्वैंठा** पुं० (हि) उपला।

**ग्वैंड़** स्त्री० (हि) सीमा।

**ग्वैंड़ा** पुं० (हि) दे० 'गोइंड़ा'।

**ग्वैंड़े** क्रि० (हि) निकट। पास।

[शब्दसंख्या-१२१५४]

# घ

**घ** हिन्दी वर्णमाला में क-वर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान कंठ या जिह्वा मूल है

**घँघोना, घँघोरना, घँघोलना** क्रि० (हि) १-हिला कर घोलना। २-पानी को हिला कर मैला करना।

**घंट** पुं० (हि) १-वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल पर बाँधा जाता है। २-घंटा।

**घंटा** पुं०(सं) १-धातु का एक बाजा जो केवल ध्वनि उत्पन्न करता है। घड़ियाल। २-घड़ियाल द्वारा दी जाने वाली समय की सूचना। ३-साठ मिनट का समय।

**घंटाघर** पुं०(हि) वह मीनार जिसमें बड़ी घड़ी लगी होती है। (क्लॉक-टावर)।

**घंटिका** स्त्री० (सं) १-छोटा घण्टा। २-घुँघरू। ३-कमर में पहनने की करधनी। ४-क्षुद्रघंटिका।

**घंटी** स्त्री० (हि) १-पीतल या फूल की छोटी लुटिया। २-छोटा घण्टा। ३-घण्टी बजने का शब्द। ४-घुँघरू। ५-गले का कौआ।

**घई** स्त्री० (हि) १-पानी का चक्कर या भँवर। २-थूनी टेक। वि० बहुत गहरा। अथाह।

**घघरा** पुं० (हि) घाघरा। लहँगा।

**घट** पुं०(सं) १-घड़ा। २-हृदय। ३-शरीर। वि०(हि) कम थोड़ा।

**घटक** पुं०(सं) १-मध्यस्थ। २-दलाल। ३-काम पूरा करने वाला व्यक्ति। ४-दो पक्षों में बात चीत करने वाला व्यक्ति। ५-विवाह सम्बन्ध ठीक कराने वाला।

**घटका** पुं० (हि) दम निकलने की अवस्था में कफ का रुकना।

**घटकार** पुं० (सं) कुम्हार।

**घटघाट** वि०(हि) दूसरे की अपेक्षा कुछ कम। घटकर

**घटती** स्त्री० (हि) १-कमी। न्यूनता। २-हीनता।

**घटन** पुं० (सं) १-घड़ा जाना। २-उपस्थित होना। ३-कई तत्वों का मिलकर एक वस्तु का रूप धारण करना। (कम्पोजीशन)।

**घटना** क्रि० (हि) १-होना। २-ठीक बैठना। ३-ठीक उतरना। ४-कम होना। स्त्री० (सं) अकस्मात किसी विलक्षण या विकट बात का होना। वाकिया (एक्सिडेण्ट)।

**घटना-चक्र** पुं० (सं) १-घटनाओं का सिलसिला। २-आकस्मिक विपत्ति या गर्दिश।

**घटना-स्थल** स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ कोई घटना घटित हुई हो। (प्लेस-ऑफ-आकरेन्स)।

**घट-बढ़** स्त्री० (हि) १-कमी-बेशी। न्यूनाधिकता। २-परिवर्त्तन।

**घटभव, घटयोनि** पुं० (सं) अगस्त्य मुनि।

**घटवाई** स्त्री० (हि) घाट से पार उतारने की उजरत या कर। पुं० १-घाट का कर लेने वाला। २-रोकने वाला।

**घट-वादन** पुं० (सं) गाना गाते समय या वाद्यवृन्द

के साथ घड़े को साज के समान बजाना।
**घटवाना** *क्रि०* (हि) घटाने का काम कराना।
**घटवार, घटवाल** पुं० (हि) १-घाट का महसूल लेने वाला। २-मांझी। ३-घाटिया ब्राह्मण। ४-घाट का देवता।
**घटवाही** *स्त्री०* दे० 'घट्टकर'।
**घटवैया** *वि०* (हि) घटाने या बढ़ाने वाला।
**घट-स्थापन** पुं० (सं) १-पूजन में किसी देवता के आवाहन करने के लिये घट की स्थापना। २-नवरात्र का पहला दिन।
**घटा** *स्त्री०* (सं) १-मेघमाला। २-समूह।
**घटाई** *स्त्री०* (हि) १-हीनता। २-अप्रतिष्ठा।
**घटाकाश** पुं० (सं) घड़े के भीतर का खाली स्थान।
**घटाटोप** पुं० (सं) १-घनघोर घटा। २-गाड़ी या पालकी को ढकने का परदा। ३-बादलों के समान चारों ओर से घेर लेने वाला दल।
**घटाना** *क्रि०* (हि) १-कम करना। २-बाकी निकालना। ३-प्रतिष्ठा कम करना।
**घटाव** पुं० (हि) १-घटने या कम होने का भाव। न्यूनता। २-अवनति। ३-नदी के पानी का उतार
**घटावना** *क्रि०* (हि) घटाना।
**घटिका** पुं० (सं) १-२४ मिनट का समय। २-समय बताने वाला यन्त्र। घड़ी। ३-गगरी।
**घटिका-यंत्र** पुं० (सं) समय बताने वाला यन्त्र। घड़ी। (वाच)।
**घटित** *वि०* (सं) १-घटना के रूप में घटा हुआ। २-रचा हुआ। निर्मित। ३-अर्थ आदि के विचार से पूरा उतरा हुआ।
**घटिताई** *स्त्री०* (हि) कमी। न्यूनता।
**घटिया** *वि०* (हि) १-अपेक्षाकृत खराब या कम मोल का। २-तुच्छ।
**घटी** *स्त्री०* दे० 'घटिका' १, २। *स्त्री०* (हि) १-कमी। २-हानि। ३-मूल्य अथवा महत्व में होने वाली कमी। (डेप्रिसिएशन)।
**घटी-यंत्र** पुं० (सं) समय-सूचक यन्त्र। घड़ी।
**घटका** पुं० (हि) घटोत्कच।
**घटोत्कच** पुं० (सं) हिडम्बा राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।
**घटोर** पुं० (हि) मेढ़ा।
**घट्ट** पुं० (सं) घाट।
**घट्टकर** पुं० (स) घाट पर लिया जाने वाला कर।
**घट्टा** पुं० (हि) १-घाटा। २-छेद। दरार। ३-किसी वस्तु की रगड़ से शरीर पर उमड़ जाने वाला चिह्न।
**घड़घड़ाना** *क्रि०* (हि) घड़-घड़ शब्द करना।
**घड़घड़ाहट** *स्त्री०* (हि) १-घड़घड़ाने का भाव। २-बादल गरजने का शब्द।।
**घड़त** *स्त्री०* (हि) दे० 'गढ़त'।
**घड़नई** *स्त्री०* (हि) बाँस में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिसके द्वारा छोटी-छोटी नदियाँ पार की जाती हैं।
**घड़ा** पुं० (हि) गगरा।
**घड़ाना** *क्रि०* (हि) गढ़ाना।
**घड़िया** *स्त्री०* (हि) घरिया।
**घड़ियाल** पुं० (हि) १-घण्टा। २-ग्राह नामक जल-जन्तु।
**घड़ियाली** पुं० (हि) घण्टा बजाने वाला।
**घड़िला** पुं० (हि) छोटा घड़ा।
**घड़ी** *स्त्री०* (हि) १-समय-सूचक यन्त्र। २-२४ मिनट का समय। ३-समय। ४-अवसर। ५-कपड़ों आदि की तह।
**घड़ीदिया, घड़ीदीया** पुं० (हि) वह घड़ा और दीया जो मृतक के घर में रखा जाता है।
**घड़ीसाज** पुं० (हि) घड़ी की सफाई और मरम्मत करने वाला।
**घड़ोला** पुं० (हि) छोटा घड़ा।
**घड़ौंची** *स्त्री०* (हि) घड़ा रखने की तिपाई।
**घण** पुं० दे० 'घन'।
**घतिया** *वि०* (हि) घात करने वाला।
**घतियाना** *क्रि०* (हि) १-घात में लगना। २-छिपाना
**घन** *वि०* (सं) १-घना। २-ठोस। ३-प्रचुर। ४-दृढ़ पुं० (सं) १-मेघ। २-लुहार का बड़ा हथौड़ा। ३-३-समूह। ४-कपूर। ५-किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से उपलब्ध गुणनफल। (क्यूब)। ६-लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का विस्तार। ७-ताल देने का एक बाजा। ८-वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई और ऊँचाई समान हो।
**घनक** *स्त्री०* (हि) गरज। गड़गड़ाहट।
**घनकना** *क्रि०* (हि) गरजना।
**घनकारा** *वि०* (हि) गरजने वाला।
**घनकोदंड** पुं० (सं) इन्द्र धनुष।
**घनगरज** *स्त्री०* (हि) १-बादल के गरजने का शब्द। २-एक तोप। ३-खुशी।
**घनघनाना** *क्रि०* (हि) १-घण्टे की सी आवाज होना २-घनघन शब्द करना।
**घनघोर** पुं० (हि) १-भीषण ध्वनि। २-बादल की गरज। *वि०* (हि) १-बहुत घना। २-भयावना।
**घनचक्कर** पुं० (हि) १-चञ्चल बुद्धि वाला। २-मूर्ख मूर्ख। ३-एक तरह की आतिशबाजी। ४-आवारा
**घनता** *स्त्री०* (सं) १-घनापन। २-ठोसपन। ३-लम्बाई चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल।
**घन-बान** पुं० (हि) एक प्रकार का बाण जिसके चलाने से बादल छा जाते हैं।

**घन-बेला** पुं० (हि) एक तरह का बेला।
**घन-बेली** स्त्री० दे० 'घनबेला'।
**घन-मूल** पुं० (सं) गणित में किसी घन (राशि) का मूल अङ्क।
**घन-वर्धन** पुं० (सं) धातुओं आदि को पीट कर बढ़ाना।
**घनवाह** पुं० (सं) इन्द्र।
**घनश्याम** पुं० (सं) १-काला बादल। २-श्रीकृष्ण वि० (हि) जल भरे बादल जैसा काला।
**घनसागर, घनसार** पुं० (सं) कपूर।
**घना** वि० (हि) १-सघन। २-पास-पास बसा हुआ ३-घनिष्ट। ४-बहुत अधिक।
**घनाक्षरी** पुं० (सं) दण्डक या मनहर छन्द जिसे साधारण लोग कवित्त कहते हैं।
**घनात्मक** वि० (सं) जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई बराबर हो।
**घनाली** स्त्री० (हि) मेघमाला।
**घनिष्ठ** वि० (सं) १-घना। २-पास का। ३-निकट सम्बन्धी।
**घने** वि० (हि) बहुत। अनेक।
**घनेरा** वि० (हि) अतिशय। बहुत अधिक।
**घनो** वि० (हि) घना।
**घपला** पुं० (हि) गड़बड़। गोलमाल।
**घपले-बाजी** स्त्री० (हि) घपला या गड़बड़ करना।
**घबराना** क्रि० (हि) १-व्याकुल होना या करना। २-सकपकाना। उतावली में होना। ३-ऊबना। ४-भौंचक्का करना। ५-हड़बड़ी डालना। ६-हैरान करना।
**घबराहट** स्त्री० (हि) १-व्याकुलता। २-हड़बड़ी। ३-किंकर्त्तव्यविमूढ़ता।
**घमका** पुं० (हि) घूंसा। मुक्का।
**घमंड** पुं० (हि) १-गर्व। अभिमान। २-भरोसा। आसरा।
**घमंडी** वि० (हि) अभिमानी।
**घमकना** पुं० (हि) १-गरजना। २-घूंसा मारना।
**घमका** पुं० (हि) ऊमस। घमसा।
**घमघ**[illegible] । वह समय जब झिलमिलाती धूप निकली
**घमघ**[illegible] (हि) १-लगातार घूंसे मारना। २-घम[illegible] होना।
**घमड़** [illegible] 'घुमड़'।
**घमड़** [illegible] घुमड़ना। २-मजाना।
**घमर** [illegible] नगाड़े आदि का गम्भीर शब्द।
**घमस**, [illegible] स्त्री० (हि) धूप की गरमी। ऊमस।
**घमस**[illegible] (हि) भयङ्कर युद्ध। वि० प्रचण्ड। भयङ्कर।
**घमाका** पुं० (हि) १-गदा या घूंसे का शब्द। २-भारी आघात का शब्द।
**घमाघम** स्त्री० (हि) १-'घमाघम' की आवाज। २-२-घमाका। क्रि० वि० (हि) घमघम के साथ।
**घमाना** क्रि० (हि) धूप में बैठना।
**घमासान** पुं० दे० 'घमसान'।
**घमाह** पुं० (हि) धूप न सह सकने वाला बैल।
**घमोई, घमोय** स्त्री० (हि) भँडभाँड नामक पौधा।
**घर** पुं० (हि) १-मनुष्यों के रहने का स्थान। आवास। मकान। २-जन्मभूमि। ३-वंश। ४-कोठरी। ५-रेखाओं से घिरा खाना या कोठा। ६-आवरण। डिब्बा। ७-मूलकारण। जैसे—रोग का घर खाँसी।
**घरऊ** वि० (हि) घराऊ।
**घर-गृहस्थ** पुं० (हि) वह जिसके परिवार के लोग हों।
**घर-गृहस्थी** स्त्री० (हि) १-घर का काम काज। २-घर और उसमें की सब सामग्री।
**घरघराना** क्रि० (हि) 'घर्र-घर्र' शब्द' करना। पुं० (हि) कुल। परिवार।
**घर-घालक, घर-घालन** वि०(हि) घर बिगाड़ने वाला
**घर-घेरा** पुं० (हि) घर-गृहस्थी।
**घर-जँवाई** पुं० (हि) वह दामाद जिसे ससुराल वाले अपने पास रखलें।
**घर-जाया** पुं० (हि) घर का दास। गुलाम।
**घरणि** स्त्री० (हि) गृहिणी।
**घर-दारी** स्त्री० (हि) घर गृहस्थी के सब काम-धन्धे।
**घर-दासी** स्त्री० (हि) गृहिणी।
**घरद्वार** पुं० (हि) १-निवास स्थान। २-गृहस्थी।
**घरनाल** स्त्री० (हि) एक प्रकार की प्राचीन समय की तोप।
**घरनी** स्त्री० (हि) गृहिणी। घरवाली।
**घरपत्ति** वि० (हि) प्रत्येक घर के पीछे लिया जाने वाला।
**घरफोरा** पुं० (हि) घर में कलह कराने वाला।
**घरबसा** पुं० (हि) (स्त्री० घरबसी) १-पति। २-उपपति।
**घरबार** पुं० दे० 'घरद्वार'।
**घर-बारी** पुं० (हि) बाल बच्चों वाला। गृहस्थ।
**घरमकर** पुं० (हि) सूर्य।
**घरमना** क्रि० (हि) बहना।
**घरवा** पुं० (हि) १-छोटा घर। घरौंदा।
**घरवात** स्त्री० (हि) १-घर का सामान। २-गृहस्थी।
**घरवाला** पुं० (हि) (स्त्री० घरवाली) १-पति। १-घर का मालिक।
**घरसा** पुं० (हि) रगड़। घिस्सा।
**घरहाई** स्त्री० (हि) १-परिवार में विरोध कराने वाली स्त्री। २-अपकीर्ति फैलाने वाली स्त्री।

**घरहाया** पु० (हि) परिवार में फूट डालने वाला व्यक्ति।
**घरा** पु० (हि) घड़ा।
**घराऊ** वि० (हि) १-घर का। गृहस्थी सम्बन्धी। २-निज का। आपस का।
**घराती** पु० (हि) विवाह में कन्या पक्ष के लोग।
**घराना** पुं० (हि) खानदान। वंश।
**घरिआर** पु० (हि) घड़ियाल।
**घरियक** क्रि० वि० (हि) घड़ी भार।
**घरिया** पुं० (हि) घड़िया। २-मिट्टी का प्याला। ३-सोना, चाँदी गलाने का पात्र।
**घरियाना** क्रि० (हि) कपड़े की तह लगाना।
**घरियार** पु० (हि) घड़ियाल।
**घरी** स्त्री० (हि) १-तह। परत। २-२४ मिनट का काल-मान। घड़ी।
**घरीक** क्रि० वि० (हि) घड़ीभर। थोड़ी देर।
**घरू, घरेलू** वि० (हि) १-पालतू। २-घर का। ३-घर में होने वाला। ४-अन्दरूनी।
**घरैया** वि० (हि) घरेलू। पुं० परिवार का आदमी।
**घरियक** क्रि० (हि) घड़ी भर।
**घरौंदा, घरौंधा** पु० (हि) बच्चों द्वारा बनाया मिट्टी का घर।
**घर्म** पु० (स) धूप। घाम।
**घर्मांशु** पुं० (सं) सूर्य।
**घर्रा** पु० (हि) १-गले की घरघराहट। २-एक तरह का अंजन। ३-(जेल में) कोल्हू पेरने या चरसा खींचने का कठिन काम।
**घर्राटा** पुं० (हि) खर्राटा।
**घर्षण** पुं० (सं) रगड़। घिस्सा।
**घर्षित** वि० (सं) १-रगड़ा हुआ। २-रगड़ खाया हुआ।
**घलना** क्रि० (हि) १-फेंका जाना। २-मारा जाना। ३-नष्ट होना।
**घलाघल, घलाघली** स्त्री० (हि) मारपीट।
**घलुआ, घलुवा** पुं० (हि) उचित तोल से ऊपर दी गई वस्तु।
**घवद** स्त्री० (हि) फलों का गुच्छा। घौद।
**घवरि** स्त्री० (हि) फलों या पत्तियों का गुच्छा।
**घस-खुदा, घस-खोदा** पुं० (हि) १-घसियारा। २-अनाड़ी।
**घसना** क्रि० (हि) घिसना।
**घसिटना** क्रि० (हि) घसीटा जाना।
**घसियारा** पु० (हि) (स्त्री० घसियारिन, घसियारी) घांस छील कर बेचने वाला।
**घसीट** स्त्री० (हि) १-घसीटने की क्रिया या भाव। २-जल्दी लिखने का काम। ३-जल्दी में लिखा हुआ लेख।
**घसीटना** क्रि० (हि) १-रगड़ खाते हुए खींचना। २-जल्दी से लिखकर चलता करना। ३-जबरदस्ती शामिल करना।
**घहनना, घहरना** क्रि० (हि) गरजने का सा गम्भीर शब्द करना।
**घहराना** क्रि० (हि) १-गरजना। चिंघाड़ना। २-घहरना।
**घहरारा** पु० (हि) घोर शब्द। गरज।
**घहरारी** स्त्री० (हि) घोर शब्द। गरज।
**घाँ** स्त्री० (हि) १-दिशा। २-ओर। तरफ।
**घांघरा** पु० (हि) लहँगा।
**घांटी** स्त्री० (हि) १-गले के भीतर की घन्टी। कौआ। २-गला। क्रि० वि० अपेक्षाकृत कम।
**घांह, घा** स्त्री० (हि) ओर। तरफ।
**घाइ** पुं० दे० 'घांव'।
**घाइल** वि० (हि) घायल।
**घाई** स्त्री०(हि) १-ओर। तरफ। २-संधि। जोड़। ३-बार। दफा। ४-पानी का भंवर।
**घाई** स्त्री० (हि) १-दो उंगलियों के बीच की जगह। अंटी। २-पेड़ी और डाल के बीच का कोना। ३-चोट। आघात। धोखा।
**घाऊ** पु० (हि) घाव।
**घाऊघप** वि० (हि) गुप्त रूप से किसी का माल हड़प कर जाने वाला।
**घागही** स्त्री० (देश) पटसन। सन।
**घाघ** पुं० (हि) १-अत्यंत चतुर व्यक्ति। २-भारी चालाक। ३-एक प्रसिद्ध अनुभवी और चतुर व्यक्ति जिसकी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं।
**घाघरा** पु० (हि) १-लहँगा। २-एक प्रकार का कबूतर। स्त्री० सरजू नदी का एक नाम।
**घाघस** स्त्री० (देश) एक तरह की मुर्गी।
**घाट** पु० (हि) १-नदी, जलाशय आदि के किनारे स्नानादि के लिए बना स्थान। २-तंग पहाड़ी मार्ग ३-पहाड़। ४-ओर। तरफ। ५-तलवार की धार। ६-धोखा। वि० १-कम। २-घटिया।
**घाटना** क्रि० (हि) घटना।
**घाटपाल, घाटवाल** पुं० (हि) घाटिया। गंगापुत्र।
**घाटा** पुं० (हि) १-नुकसान। २-घटी।
**घाटारोह** पु० (हि) घाट से जाने न देना। घाट रोकना।
**घाटि** वि० (हि) कम। न्यून।
**घाटिया** पु० (हि) घाट पर दान लेने वाला ब्राह्मण।
**घाटी** स्त्री० (हि) दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।
**घात** पुं० (स) १-प्रहार। २-वध। ३-अहित। ४-(गणित में) गुणनफल। स्त्री० १-किसी कार्य को सिद्ध करने का उपयुक्त स्थान या अवसर। २-

आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए उपयुक्त अवसर की खोज। ताक। ३-छल। ४-रंगढंग।
**घातक** पु०(सं) १-हत्यारा। २-हिंसक। ३-शत्रु। *वि०* १-घात करने वाला। २-हानिकर।
**घातिनी** *स्त्री०* (सं) वध करने वाली। हत्यारी।
**घातिया** *वि०* दे० 'घाती'।
**घाती** *वि०* (हि) १-नाश करने वाला। अपनी गौं साधकर रहने वाला। ३-धोखेबाज।
**घान** पु० (हि) १-उतनी वस्तु या अंश जितना एक बार कोल्हू में डाल कर पेरा या चक्की में पीसा जाय २-उतनी वस्तु जितनी एक बार बनाई या पकाई जाय। ३-प्रहार। चोट।
**घाना** *क्रि०* (हि) मारना।
**घानी** *स्त्री०* दे० 'घान'।
**घाम** *स्त्री०* (हि) १-सूर्य ताप। धूप। २-कष्ट।
**घामड़** *वि०* (हि) १-घाम से व्याकुल। (चौपाया)। २-मूर्ख। ३-आलसी।
**घामरी** *स्त्री०* (हि) १-बेचैनी। २-प्रेम विह्वलता।
**घाय** पु० (हि) घाव। जख्म।
**घायक** *वि०* (हि) घातक।
**घायल** *वि०* (हि) आहत। जख्मी।
**घाल** पु० (हि) घलुआ।
**घालक** पु० (हि) [*स्त्री०* घालिका] १-मारने वाला। २-नाश करने वाला।
**घालकता** *स्त्री०* (हि) मारने या नाश करने का कार्य।
**घालना** *क्रि०* (हि) १-डालना। २-फेंकना। ३-कर डालना। ४-बिगाड़ना। ५- मार डालना।
**घालमेल**, घालामेला पु० (हि) १-गड्ड-मड्ड। २-मेल-जोल।
**घाव** पु० (हि) १-चोट। क्षत। जख्म। २-आघात।
**घाव-पत्ता** पु० (हि) एक बेल या उसका पत्ता।
**घावरिया** पु० (हि) घाव का इलाज करने वाला। जर्राह।
**घास** *स्त्री०* (सं) भूमि पर उगने वाला तृण जिसे पशु चरते है। तृण।
**घासलेट** पु० (हि) १-मिट्टी का तेल। २-अग्राह्य पदार्थ।
**घासलेटी** *वि०* (हि) १-अश्लील। २-तुच्छ।
**घाह** *स्त्री०* (हि) १-घाई। २-ओर। तरफ।
**घिउ** पु० (हि) घी।
**घिग्घी** *स्त्री०* (हि) १-लगातार रोने से सांस में होने वाली रुकावट।
**घिघियाना** *क्रि०* (हि) १-गिड़गिड़ाना। २-भय के कारण रुकते रुकते बोलना।
**घिचपिच** *स्त्री०* (हि) थोड़े स्थान में अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह। *वि०* (हि) अस्पष्ट।
**घिन** *स्त्री०* (हि) घृणा।
**घिनाना** *क्रि०* (हि) घृणा करना।
**घिनौना** *वि०* (हि) घृणा उत्पन्न करने वाला। घृणित
**घिन्नी** *स्त्री०* (हि) १-घिरनी। २-गिन्नी।
**घिय** पु० (हि) घी।
**घिया** *स्त्री०* (हि) कद्दू। लौकी।
**घियाकश** पु० (हि+(फा)) कद्दूकश।
**घियातराई**, घियातोरई, घियातोरी *स्त्री०* (हि) १-एक बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है। २-इस बेल का फल।
**घिरत** पु० (हि) घृत। घी।
**घिरना** *क्रि०* (हि) १-घेरे में आना। २-चारों ओर से छाना।
**घिरनी** *स्त्री०* (हि) १-चरखी। २-चक्कर। फेरा।
**घिराई** *स्त्री०* (हि) १-घेरने की क्रिया या भाव। २-पशुओं के चराने का काम या मजदूरी।
**घिराना** *क्रि०* (हि) १-घेरने का काम किसी से कराना। २-चरने चौपायों को इकट्ठा करना।
**घिरायँद** पु० (हि) मूत्र की बदबू।
**घिराव** पु० (हि) १-घेरने की क्रिया या भाव। २-घेरा।
**घिरित** पु० (हि) घृत। घी।
**घिर्राना** *क्रि०* (हि) १-घसीटना। २-गिड़गिड़ाना।
**घिसघिस** *स्त्री०* (हि) १-ढिलाई। २-गड़बड़ी। ३-निरर्थक विलम्ब।
**घिसना** *क्रि०* (हि) रगड़ना या रगड़ खाकर कम होना।
**घिसपिस** *स्त्री०* (हि) १-घिसघिस। २-मेल-जोल।
**घिसवाना** *क्रि०* (हि) रगड़वाना।
**घिसाई** *स्त्री०* (हि) घिसने का काम भाव या मजदूरी
**घिस्सा** पु० (हि) १-रगड़। २-धक्का। ३-पहलवानों का रद्दा।
**घी** पु० (हि) दूध का सार। घृत।
**घी-कुआर** पु० (हि) ग्वारपाठा।
**घीन** पु० (हि) घृणित। *स्त्री०* घृणा।
**घीया** दे० 'घिया'।
**घीया-कश** पु० (हि+फा) कद्दूकश।
**घीया-तोरी** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार की तोरी जिसकी तरकारी बनती है।
**घीया-पत्थर** पु० (हि) शीघ्र घिस जाने वाला एक मुलायम पत्थर। गोरा पत्थर।
**घीव** पु० (हि) घी। घृत।
**घुँगची**, घुँघची *स्त्री०* (हि) एक बेल जिसके बीज लाल होते हैं। गुंजा।
**घुँगनी** *स्त्री०* (हि) भिगोकर तला हुआ अन्न।
**घुँघराला** *वि०* (हि) [*स्त्री०* घुँघराली] बल खाया हुआ छल्लेदार बाल।

**घुंघरू** पुं० (हि) १-धातु की बनी पोली गुरिया जो हिलने पर बजती है। २-ऐसी गुरियों की लड़ी।
**घुंघरूदार** वि० (हि) जिसमें घुँघरू लगे हों।
**घुंघुवारा** वि० (हि) घुंघराला।
**घुंडी** वि० (हि) १-कपड़े का मटर के आकार का गोल बटन। २-गोल गाँठ। ३-पहनने के सिरों की गोल गाँठ।
**घुंडीदार** वि० (हि) जिसमें घुण्डी लगी हो।
**घुइयाँ** स्त्री० (हि) अरबी। अरुई।
**घुइरना** क्रि० (हि) घूरना।
**घुइस** स्त्री० (हि) घूस।
**घुकआ, घुकवा** पुं० (हि) सकरे मुँह की डलिया।
**घुग्घी** स्त्री० (हि) १-वर्षा आदि से बचने के लिए विशेष प्रकार से लपेटा हुआ कम्बल। २-इस प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र।
**घुघू, घुघुआ** पु० (हि) उल्लू नामक पक्षी।
**घुघुआना** क्रि० (हि) १-उल्लू का बोलना। २-उल्लू की तरह बोलना। ३-बिल्ली की तरह गुर्राना।
**घुटकना** क्रि० (हि) १-घूँट-घूँट कर पीजाना। २-निगल जाना।
**घुटना** पुं० (हि) टाँग के बीच का जोड़। क्रि० (हि) १-साँस रुकना। २-घिस कर चिकना होना। ३-घनिष्ठता होना। ४-पिस कर बारीक होना। ५-गाँठ या बन्धन का दृढ़ होना।
**घुटन्ना** पुं० (हि) घुटनों तक का पायजामा।
**घुटरू** पुं० (हि) घुटना।
**घुटवाना** क्रि० (हि) १-घोटने का काम कराना। २-बाल मुँड़ाना।
**घुटाई** स्त्री० (हि) १-घोटने की क्रिया या भाव। २-घोटने की मजदूरी।
**घुटाना** क्रि० (हि) १-घोटने का काम कराना। २-उस्तरे से हजामत बनवाना।
**घुटुरुअन** क्रि० वि० (हि) घुटनों के बल।
**घुट्टी** स्त्री० (हि) छोटे बच्चों के पाचन की एक दवा।
**घुड़कना** क्रि० (हि) डाँटना।
**घुड़की** स्त्री० (हि) १-घुड़कने की क्रिया। २-डांट।
**घुड़-चढ़ा** पुं० (हि) घुड़सवार।
**घुड़चढ़ी** स्त्री० (हि) १-विवाह की एक रीति जिसमें बर घोड़े पर चढ़ कर कन्या के घर जाता है। २-घुड़नाल। ३-निम्न कोटि की वेश्या।
**घुड़-दौड़** स्त्री०(हि) हार जीत के विचार से की जाने वाली घोड़ों की दौड़।
**घुड़नाल** स्त्री० (हि) घोड़े पर लादने की एक तोप।
**घुड़-बहल** स्त्री० (हि) वह रथ जिसे घोड़े खींचते हैं
**घुड़ला** पुं० (हि) छोटा घोड़ा।
**घुड़-सवार** पु० (हि) अश्वारोही।
**घुड़-सवारी** स्त्री० (हि) घोड़े पर सवार होने का भाव।
**घुड़साल** स्त्री० (हि) अस्तबल।
**घुण** पुं० (स) घन
**घुणाक्षर** वि० (सं) बिना उद्योग के ही प्राप्त।
**घुणाक्षर-न्याय** पु० (सं) १-घुन के कारण केवल संयोग वश बने हुए अक्षरों का दृष्टांत। २-अनजाने में ही कोई काम बन जाना।
**घुन** पु० (हि) अन्न, लकड़ी आदि में लगने वाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
**घुनना** क्रि० (हि) १-घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २-किसी दोष के कारण किसी वस्तु का भीतर क्षीण होना।
**घुनाक्षर-न्याय** पुं० दे० 'घुणाक्षर-न्याय'।
**घुन्ना** वि० (हि) [स्त्री० घुन्नी] अपने मनोभावों को अपने में ही रखने वाला। चुप्पा।
**घुप** वि० (हि) निविड़ (अंधेरा)।
**घुमंडना** क्रि० (हि) घमड़ना।
**घुमक्कड़** वि० (हि) बहुत घूमने वाला।
**घुमटा** पुं० (हि) सिर घूमना।
**घुमड़** स्त्री० (हि) बरसने वाले बादलों की घेर घार।
**घुमड़ना** क्रि० (हि) बादलों का छा जाना।
**घुमड़ी, घुमरी** स्त्री० (हि) सिर का चक्कर।
**घुमाना** क्रि० (हि) १-चक्कर देना। २-सैर कराना। ३-मोड़ना। ४-प्रवृत्त करना।
**घुमाव** पुं० (हि) फेर। चक्कर। मोड़।
**घुरघुराना** क्रि० (हि) कंठ से घुर-घुर शब्द निकलना
**घुरना** क्रि० (हि) १-घुलना। २-शब्द होना या करना ३-घूमना। ४-(आँख) झपकना।
**घुर-बिनिया** स्त्री० (हि) घूरे या कूड़े में से दाने चुनना।
**घुरमना** क्रि० (हि) घूमना।
**घुरला** स्त्री० (हि) पगडंडी।
**घुराना** क्रि० (हि) १-घुलाना। १-घुमाना।
**घुर्मित** वि० (हि) घूमता हुआ।
**घुलना** क्रि० (हि) १-किसी द्रव पदार्थ में भलीभाँति मिल जाना। २-पिघलना। ३-पक कर पिलपिला होना। ४-रोग, चिंता आदि में दुबला होना।
**घुलवाना** क्रि० (हि) १-गलवाना। २-हल कराना।
**घुलाना** क्रि० (हि) १-गलाना। २-शरीर को दुबला करना। ३-यत्रणा देना। पका कर पिलपिला करना
**घुलावट** स्त्री० (हि) घुलने की क्रिया।
**घुसड़ना, घुसना** क्रि० (हि) १-भीतर जाना। २-धँसना। ३-बिना अधिकार कहीं पहुँचना। ४-बात की तह तक पहुँचना।
**घुसपैठ** स्त्री० (हि) पहुंच। प्रवेश।
**घुसाना** क्रि० (हि) १-भीतर घुसेड़ना। २-धँसाना।
**घुसेड़ना** क्रि० (हि) घुसाना।

**घूँघट** पु० (हि) १-साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जिसे लज्जाशील स्त्रियाँ अपने मुख पर डाले रहती हैं। २-ओट। परदा। ३-सेना का सहसा दाहिने बाएँ घूम पड़ना।
**घूंघटना** क्रि० (हि) पीना।
**घूंघर** पु० (हि) १-बालों में पड़े हुए मोड़ या छल्ले। २-घूँघट।
**घूँट** पु० (हि) उतना द्रव जो एक बार गले के नीचे उतारा जाय।
**घूँटना** क्रि० (हि) पीना।
**घूँटा** पु० (हि) घुटना।
**घूँटी** स्त्री० (हि) घुट्टी।
**घूँसा** पु० (हि) १-मुक्का। २-मुट्ठी का प्रहार।
**घूआ** पु० (देश) १-काँस, मूँज आदि के फूल। २-वह रेशा जो कपास सेमल आदि के फूलों में से निकलता है।
**घूक, घूघू** पु० (सं) [स्त्री० घूकी] उल्लू पक्षी।
**घूम-घुमारा** वि० (हि) १-घूमता हुआ। २-आलस्य-पूर्ण मद भरे नयन।
**घूमना** क्रि० (हि) १-टहलना। २-चक्कर खाना। ३-सैर-सपाटा करना। ४-यात्रा करना।
**घूमरा** वि० (हि) १-घूमने वाला। २-मस्त।
**घूर** पु० (हि) १-कूड़े-करकट का ढेर। २-कूड़ा डालने का स्थान।
**घूरना** क्रि० (हि) आँखें फाड़-फाड़कर देखना।
**घूरा** पु० (हि) १-घूर। २-घूँसा। क्रि० (हि) घूमना
**घूस** स्त्री० (देश) चूहे की आकृति का बड़ा जन्तु। स्त्री० (हि) रिश्वत। उत्कोच।
**घूसखोर** वि० (हि) घूस का धन लेने वाला।
**घूसपच्चड़, घूसपच्चैर** स्त्री० (हि) रिश्वत। उत्कोच।
**घृणा** स्त्री० (सं) घिन। नफरत।
**घृणित** वि० (सं) घृणा करने योग्य।
**घृत** पु० (सं) घी।
**घेंट** पु० (हि) गला।
**घेंड़ी** स्त्री० (हि) घी की हाँडी या बरतन।
**घेघा** पु० (देश) १-गले की भोजन की नली। २-एक रोग जिसमें गला सूज जाता है।
**घेर** पु० (हि) १-मण्डल। घेरा। २-परिधि।
**घेरवार** पु० (हि) १-चारों ओर घेरना। २-विस्तार ३-अनुरोध।
**घेरना** क्रि० (हि) १-चारों ओर से रोकना। २-बाँधना ३-किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ४-अनुरोध करना।
**घेरा** पु० (हि) १-परिधि। २-परिधि का मान। ३-अहाता। ४-सेना का किसी दुर्ग आदि को घेरना
**घेवर** पु० (हि) एक मिठाई।
**घैया** स्त्री० (हि) १-मुंह लगा कर पीने पर गाय के थन से निकलने वाली दूध की धार। २-दुहे हुए दूध से मक्खन उठाना। ३-ओर। तरफ।
**घैर, घैरु, घैरो** पु० (देश) १-बदनामी। २-चुगली।
**घैला** पु० (हि) मिट्टी का घड़ा।
**घैहा** वि० (हि) घायल।
**घोंघा** पु० (देश) एक पानी का कीड़ा जिसका ऊपरी भाग कड़ा होता है। शंबूक। वि० (हि) १-सारहीन २-निरा मूर्ख।
**घोंघा-बसंत** वि० (हि) परम मूर्ख।
**घोंघी** स्त्री० (हि) १-घुग्घी। २-पत्तों का बना छाता ३-काड़ी।
**घोंचुआ** पु० (हि) घोंसला।
**घोंटना** क्रि० (हि) १-पीना। २-पीसना। रगड़ना।
**घोंटू** वि० (हि) घोंटने वाला। असह्य।
**घोंपना** क्रि० (हि) १-धँसना। चुभाना। २-बुरी तरह सीना।
**घोंसला** पु० (हि) पक्षी का घर। नीड़।
**घोंसुआ** पु० (हि) घोंसला। नीड़।
**घोखना** क्रि० (हि) बार-बार दोहराना।
**घोघी** स्त्री० (हि) घुग्घी।
**घोट, घोटक** पु० (सं) घोड़ा।
**घोटना** क्रि० (हि) १-रगड़ना। २-पीसना। ३-अभ्यास करना। ४-(गला) दबाना। पु० घोटने का औजार।
**घोटवाना** क्रि० (हि) १-रगड़वाना। २-पिसवाना। ३-पालिश कराना। ४-(कपड़े की) कुन्दी कराना। ५-सिर या दाढ़ी को मुँड़वा डालना।
**घोटा** पु० (हि) १-घोटने की वस्तु या औजार। २-भांग घोटने का सोटा।
**घोटाई** स्त्री० (हि) घोटने का काम भाव या उजरत।
**घोटाला** पु० (देश) घपला। गड़बड़।
**घोटू** पु० (हि) १-घोटने वाला। २-पैर का घुटना।
**घोड़साल** स्त्री० (हि) घुड़साल। अस्तबल।
**घोड़ा** पु० (हि) [स्त्री० घोड़ी] १-एक प्रसिद्ध पशु जो गाड़ी खींचता है। अश्व। २-बन्दूक छोड़ने का खटका। ३-शतरंज का एक मोहरा। ४-दीवार से निकला पत्थर जो ऊपरी भार संभालता है। टोड़ा।
**घोड़ा-गाड़ी** स्त्री० (हि) घोड़े से चलने वाली गाड़ी।
**घोड़ानस** स्त्री० (हि) एड़ी के पीछे की मोटी नस। पैं। कूच।
**घोड़िया** स्त्री० (हि) १-छोटी घोड़ी। २-दीवार में लगाई हुई खूँटी। ३-छोटा टोड़ा।
**घोड़ी** स्त्री० (हि) १-घोड़े की मादा। २-विवाह की एक रीति। ३-विवाह में वर पक्ष की ओर से गाये जाने वाले गीत। ४-जुलाहों का एक औजार।
**घोर** वि० (सं) १-विकराल। २-सघन। ३-दुर्गम। ४-अत्यधिक। ५-भयानक और गम्भीर।

**घोरना** *क्रि०* (हिं) १–घोलना। २–गरजना।
**घोरमारी** *स्त्री०* (हिं) महामारी।
**घोरा** पुं० (हिं) घोड़ा।
**घोरिला** पुं० (हिं) काठ या मिट्टी का घोड़ा जिससे बच्चे खेलते हैं।
**घोल** पुं० (हिं) १–वह पानी जिसमें कोई चीज हल की गई हो। २–मठा। छाछ।
**घोलना** *क्रि०* (हिं) पानी आदि द्रव पदार्थ में कोई वस्तु मिलाना। हल करना।
**घोष** पुं० (सं) १–अहीरों का गाँव। २–आवाज। शब्द। नाद। ३–अहीर। ४–चिल्लाहट। ५–गर्जन गरज। ६–नारा।
**घोषक** *वि०* (सं) घोषणा करने वाला। पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसका काम घोषणा करने का हो। (अना-उंसर)।
**घोषणा** *स्त्री०*(सं) १–सूचना। २–सार्वजनिक तौर पर निकाली हुई सरकारी आज्ञा। (प्रोक्लेमेशन)। ३–मुनादी। ४–कोई बात सब की जानकारी के निमित्त सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना। विज्ञापन। (एनाउंसमेंट)।
**घोषणा-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें सर्व साधारण के सूचनार्थ सरकारी आज्ञा लिखी हो।
**घोषित** *वि०* (सं) सार्वजनिक रूप से घोषणा किया हुआ।
**घोसी** पुं० (हिं) दूध बेचने वाला। ग्वाला। अहीर।
**घौद, घौर** पुं० (हिं) फलों का गुच्छा।
**घ्राण** पुं० (सं) १–नाक। २–(नाक से) सूंघने की शक्ति। ३–गंध। सुगंध।
**घ्राणेंद्रिय** *स्त्री०* (सं) नाक।
**घ्रायक** *वि०* (सं) गंध लेने वाला। सूंघने वाला।

[शब्दसंख्या—१२५८६]

# ङ

**ङ** हिन्दी वर्णमाला तथा क-वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन वर्ण इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और नासिका है।

# च

**च** हिन्दी वर्णमाला छठा व्यञ्जन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

**चंक** *वि०* (हिं) समूचा। सारा।
**चंक्रमण** पुं० (सं) घूमना। टहलना।
**चंग** *स्त्री०* (फा) डफ जैसा एक बाजा। *स्त्री०* (हिं) पतङ्ग। *वि०* (सं) १–कुशल। दक्ष। २–स्वस्थ। ३–सुन्दर।
**चंगना** *क्रि०* (हिं) १–कसना। २–खींचना।
**चंगा** *वि०* (हिं) (स्त्री० चङ्गी) १–स्वस्थ। २–सुन्दर ३–शुद्ध। ४–बच्चों का एक खेल।
**चंगु, चंगुल** पुं० (हिं) १–पञ्जा। २–बकोटा।
**चंगेर, चंगेरी, चंगेली** *स्त्री०* (हिं) १–छोटी टोकरी। डलिया। २–मशक। ३–छोटे बच्चे का झूला या पालना।
**चंच** पुं० (हिं) चंचु। चोंच।
**चंचरी** *स्त्री०* (सं) १–भ्रमरी। भौंरी। २–एक वर्णवृत्त ३–एक मात्रिक छन्द। ४–एक गीत जो होली में गाते हैं।
**चंचरीक** पुं० (सं) भौंरा।
**चंचल** *वि०* (सं) (स्त्री० चंचला) १–अस्थिर। २–अव्यवस्थित। ३–उद्विग्न। ४–नटखट। ५–चुल- पुं० (हिं) घोड़ा।
**चंचलता** *स्त्री०* (हिं) १–अस्थिरता। २–नटखटी।
**चंचलताई** *स्त्री०* (हि) दे० 'चंचलता'।
**चंचला** *स्त्री०* (स) १–लक्ष्मी। २–बिजली।
**चंचलाई, चंचलाहट** *स्त्री०* (हि) चञ्चलता।
**चंचली** *स्त्री०* (सं) एक वर्णवृत्त।
**चंचु** पुं० (सं) १–एक साग। २–हिरन। *स्त्री०* (सं) पक्षियों की चोंच।
**चँचोरना** *क्रि०* (हिं) दाँतों से दबाकर चूसना।
**चंट** *वि०*(हि) १–चालाक। २–धूर्त्त।
**चंड** *वि०* (सं) (स्त्री० चडा) १–तीक्ष्ण। तेज। २–उग्र ३–बलवान। ४–कठिन। ५–क्रोधी। ६–उद्धत। पु० (स) १–एक दैत्य का नाम। २–ताप। गरमी।
**चंडकर, चंडांशु** पुं० (सं) सूर्य।
**चँड़ाई** *स्त्री०* (हि) १–शीघ्रता। २–प्रबलता। ३–ऊधम ४–अत्याचार।
**चंडाल** पुं० (सं) (स्त्री० चंडालिनि, चंडालिनी) चांडाल। डोम।
**चंडालिका** *स्त्री०*(सं) १–एक तरह की वीणा। २–दुर्गा
**चंडावल** पुं० (हि) १–सेना का पिछला भाग। २–वीर सैनिक। ३–संतरी।
**चंडिका, चंडी** *स्त्री०* (सं) १–दुर्गा। २–दुष्ट और कर्कशा स्त्री।
**चंडू** पुं० (हि) अफीम का किवाम जो तम्बाकू की तरह नशा करने के लिए पीया जाता है।
**चंडू-खाना** पुं० (हि) चंडू पीने का स्थान।
**चंडूबाज** पुं० (हि) चंडू पीने वाला व्यक्ति।
**चंडूल** पु० (हिं) १–एक चिड़िया जो खाकी रंग की

होती है। २-मूर्ख।

**चंडोल** पुं० (हि) १-एक तरह की पालकी। २-एक तरह का मिट्टी का खिलौना।

**चंद** पुं० (हि) चन्द्र। चांद। वि० (फा) १-कुछ। थोड़े से। २-कोई एक।

**चंदक** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-चाँदनी। ३-माथे पर पहनने का एक चन्द्राकार गहना। ४-गहनों में चन्द्रमा या पान के आकार की बनावट।

**चंदचूड़** पुं० (हि) चन्द्रचूड़।

**चंदन** पुं० (सं) १-एक सुगन्धित वृक्ष। श्रीखण्ड। संदल। २-इस वृक्ष की लकड़ी जिसे घिसकर लेप करते हैं। ३-छप्पय छन्द का एक भेद।

**चंदनगिरि** पुं० (सं) मलयाचल पर्वत।

**चंदनहार** पुं० (हि) एक गले का आभूषण।

**चंदमा** पुं० (हि) चन्द्रमा।

**चंदनी** स्त्री० (हि) चांदनी। वि० (हि) १-चन्दन सम्बन्धी। २-चन्दन का बना। ३-चन्दन के रंग का। पुं० (हि) एक तरह का रंग जो लाली लिये भूरा होता है।

**चंदनौता** पुं० (हि) एक तरह का लँहगा।

**चंदराना** क्रि० (हि) १-मनकना। २-जानबूझकर अनजान बनना। ३-फुठलाना। ४-बहकाना।

**चंदला** वि० (हि) गंजा। खल्वाट।

**चंदवा** पुं० (हि) १-कपड़े फूलों आदि का छोटा मंडप। २-गोल चकती। ३-मोर पंख की चन्द्रिका। ४-एक तरह की मछली।

**चंदसिरी** स्त्री० (हि) हाथी के मस्तक पर का गहना।

**चंदा** पु० (हि) १-चन्द्रमा। २-गोल चद्दर का टुकड़ा। पुं० (फा) १-कई व्यक्तियों से थोड़ा-थोड़ा उगहाया हुआ धन। २-किसी पत्र-पत्रिका आदि का वार्षिक मूल्य। ३-किसी संस्था के सदस्यों से नियमित समय पर मिलने वाला अनुदान।

**चंदामामा**, चंदामामू पुं० (हि) चाँद (बच्चों के लिए)

**चंदावल** पुं० (हि) चंडावल।

**चंदिका**, चंदिनी स्त्री० (हि) चाँदनी। चन्द्रिका।

**चंदेल** पु० (स) एक जाति का नाम।

**चँदोश्रा**, चँदोवा, चँदोया पुं० दे० 'चँदवा'।

**चंद्र** पु० (सं) १-चंद्रमा। २-कपूर। ३-एक की संख्या ४-मोर पंख का चंद्राकार चिह्न। ५-जल। ६-सोना ७-सानुनासिक के ऊपर लगाई जाने वाली बिंदी। ८-मृगशिरा नक्षत्र।

**चंद्रक** पु० (सं) १-चंद्रमा। २-चाँदनी। ३-मोर पंख की चद्रिका। ४-नाखून।

**चंद्रकला** स्त्री० (सं) १-चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश। २-चांदनी। चंद्रकिरण। ३-माथे का एक गहना। ४-एक मिठाई।

**चंद्रकांत** पु० (सं) १-एक मणि। २-चंदन। ३-कुमुद ४-एक राग।

**चंद्रकांता** स्त्री० (सं) १-चंद्रमा की पत्नी। २-रात्री। रात। ३-पंद्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

**चंद्रग्रहण** पुं० (सं) १-पृथ्वी की छाया से चंद्रमंडल का छिपजाना। २-पौराणिक मतानुसार राहु द्वारा चंद्रमा-ग्रसन।

**चंद्रचूड़** पुं० (सं) शिव।

**चंद्रधनु** पुं० (सं) चाँदनी रात में दिखाई देने वाला इंद्रधनुष।

**चंद्रधर** पुं० (सं) शिव।

**चंद्रपाषाण** पुं० (सं) चंद्रकांतमणि।

**चंद्रप्रभा** पुं० (सं) चाँदनी।

**चंद्र-वधूटी** स्त्री० (हि) बीरबहूटी।

**चंद्रबाण** पुं० (सं) एक बाण जिसका फल चंद्राकार होता है।

**चंद्रबिंदु** पु० (सं) सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाया जाने वाला अर्ध चंद्राकार चिह्न सहित बिंदु।

**चंद्रबिंब** पुं० (सं) चंद्रमंडल।

**चंद्रभाल** पुं० (सं) शिव।

**चंद्र-मंडल** पुं० (सं) चंद्रबिंब।

**चंद्र-मणि** स्त्री० (सं) चंद्रकांतमणि।

**चंद्रमा** पु०(सं) रात में प्रकाश देने वाला एक उपग्रह इंदु। विधु। शशि।

**चंद्र-मुखी** वि०(सं)चंद्रमा के समान सुन्दर मुख वाली

**चंद्रमौलि** पुं० (सं) शिव।

**चंद्र-रेखा**, चंद्र-लेखा स्त्री० (सं) १-चन्द्रमा की किरण २-द्वितीया का चन्द्रमा। ३-एक वर्ण-वृत्त।

**चंद्र-लोक** पु० (सं) चन्द्रमा का लोक।

**चंद्रवंश** पुं० (सं) क्षत्रियों के दो प्रधान या आदि वंशों में से एक।

**चंद्रवदन** पुं०(सं) चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाला

**चंद्रवार** पुं० (सं) सोमवार।

**चंद्रविंदु** पुं० (सं) दे० 'चंद्रबिंदु'।

**चंद्र-शाला**, चंद्रशालिका स्त्री० (सं) १-चाँदनी। २-ऐसा कमरा जिसमें चांद की चाँदनी पूर्ण रूप से आती हो।

**चंद्रशेखर** पुं० (सं) शिव।

**चंद्रहार** पुं० (सं) १-एक तरह का कण्ठहार। २-एक तरह की आतिशबाजी।

**चंद्रहास** पुं० (सं) १-चाँदनी। २-तलवार।

**चंद्रांकित** पु० (सं) शिव।

**चंद्रा** क्रि० (सं) मृत्यु के समय आँखों की अवस्था जिसमें टकटकी बंध जाती है।

**चंद्रातप** पुं० (सं) १-चाँदनी। २-चँदवा।

**चंद्रार्क** पुं० (सं) एक मिश्रित धातु जो चाँदी और तांबे या सोने के मेल से बनती है।

**चंद्रिका** स्त्री० (सं) १-चाँदनी। २-मोर पंख का

अर्ध-चन्द्राकार चिह्न। २-माथे का एक गहना। बेंदी
**चंद्रोदय** पुं० (सं) १-चन्द्रमा का निकलना। २-वैद्यक में एक रस।
**चंपई** वि० (हिं) चम्पा के फूल के रंग का। पीला।
**चंपक** पुं०(सं) १-चम्पा का पेड़ या फूल। २-चम्पा-केला।
**चंपत** वि० (देश) गायब।
**चंपना** क्रि० (हिं) १-दबना। २-लज्जित होना। ३-उपकार से दबना।
**चंपा** पुं० (हिं) १-एक वृक्ष जिसमें हलके पीले रंग के सुगन्धित फूल आते हैं। २-अंग देश की राजधानी। ३-एक प्रकार का बढ़िया केला। ४-एक प्रकार का घोड़ा।
**चंपाकली** स्त्री० (हिं) गले में पहनने का एक गहना।
**चंपारण्य** पुं० (सं) प्राचीन काल का एक वन जिसे आजकल चम्पारन कहते हैं।
**चंपारन** पुं० (हिं) बिहार राज्य का एक जिला जिसमें विश्ववंद्य महात्मा गांधी ने सत्याग्रह किया था।
**चंपी** स्त्री० दे० 'मुक्की'।
**चंपू** पुं० (सं) गद्य-पद्यमय काव्य।
**चंबल** पुं० (हिं) १-एक नदी जो विन्ध्याचल पर्वत से निकल कर यमुना में मिलती है। २-पानी की बाढ़।
**चंवर** पुं० (हिं) १-सुरगाय की पूंछ का गुच्छा जिसे मूठ में डालकर देव-मूर्तियों या राजाओं पर डुलाते हैं। ३-कलगी। ४-झालर।
**चंवरदार** पुं० (हिं) चँवर डोलाने वाला सेवक।
**च** पुं० (सं) १-कछुआ। २-चन्द्रमा। ३-दुर्जन। ४-चोर।
**चइन** पुं० (हिं) चैन।
**चउक** पुं० (हिं) चौक।
**चउतरा** पुं० (हिं) चबूतरा।
**चउपाई** स्त्री० (हिं) चौपाई।
**चउर** पुं० (हिं) चँवर।
**चउरिंदी** वि० (हिं) चार इन्द्रियों वाला।
**चउहट्ट** पुं० (हिं) चौहट्टा। चबूतरा।
**चउहा** वि० (हिं) चारों तरह का। क्रि० वि० (हिं) १-चारों प्रकार से। २-चहुँधा।
**चक** पुं० (हिं) १-चकवा (पक्षी)। २-चक्र नामक अस्त्र। ३-पहिया। ४-जमीन का बड़ा टुकड़ा। ५-छोटा गाँव। ६-अधिकार। ७-सोने का एक गहना। वि० (हिं) भरपूर। अधिक। ज्यादा। वि० (सं) चकित।
**चकई** स्त्री० (हिं) १-मादा चकवा। २-घिरनी की तरह का एक गोल खिलौना।
**चकचकाना** क्रि० (हिं) १-किसी द्रव पदार्थ का रस बहकर बाहर निकलना। २-भीग जाना।
**चकचाना** क्रि० (हिं) चौंधियाना।
**चकचाल** पुं० (हिं) चक्कर। फेरा।
**चकचाव** पुं० (हिं) चकाचौंध।
**चकचून** वि० (हिं) चूरा किया हुआ।
**चकचूरना** क्रि० (हिं) चकनाचूर करना।
**चकचोह** स्त्री० (हिं) हँसी-ठट्ठा।
**चकचौंध** स्त्री० (हिं) चकाचौंध।
**चकचौंधना** क्रि० (हिं) १-चकाचौंध होना। २-चकाचौंध उत्पन्न करना।
**चकचौंह** स्त्री० (हिं) चकाचौंध।
**चकचौंहना** क्रि० (हिं) आशा भरी दृष्टि से देखना।
**चकचौंहाँ** वि० (देश) १-चकाचौंध करने वाला। २-सुन्दर।
**चकडोर** स्त्री० (हिं) १-चकई और उसकी डोर। २-जुलाहे के करघे की नचनी में लगी हुई डोरी।
**चकती** स्त्री० (हिं) किसी फटी हुई चीज की मरम्मत करने के लिए उसी नाप का जोड़ा हुआ टुकड़ा। थिगली।
**चकत्ता** पुं० (हिं) १-दाग। धब्बा। २-त्वचा के ऊपर पड़ी हुई चपटी सूजन।
**चकना** क्रि० (हिं) १-चकित होना। २-चौंकना।
**चकनाचूर** वि० (हिं) १-जो बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो गया हो। २-बहुत थका हुआ।
**चक-पक** वि० (हिं) चकित।
**चकपकाना** क्रि० (हिं) १-भौंचक्का होना। २-चौंकना
**चकफेरी** स्त्री० (हिं) परिक्रमा।
**चकबंट** स्त्री० (हिं) खेतों की चकों में बटाई।
**चक-बंदी** स्त्री० (हिं) १-खेत की भूमि को चकों में बाँटना। २-कई खेतों को मिलाकर एक चक बनाना। (कॉन्सोलीडेशन)।
**चकबक** वि० (हिं) चकित। स्तम्भित।
**चकमक** पुं० (तु) एक तरह का पत्थर जिसपर चोट मारने से आग निकलती है।
**चकमा** पुं० (हिं) १-धोखा। भुलावा। २-हानि।
**चकर** पुं० (हिं) १-चकवा (पक्षी)। २-चक्कर।
**चकरा** वि० (हिं) (स्त्री० चकरी) चौड़ा। विस्तृत। पुं० १-चक्कर। २-चकला।
**चकराना** क्रि० (हिं) १-चक्कर खाना। २-भ्रांत होना ३-चकित होना या करना।
**चकरी** स्त्री० (हिं) १-चक्की। २-चकई।
**चकलई** स्त्री० (हिं) चौड़ाई।
**चकला** पुं० (हिं) १-रोटी बेलने का काठ या पत्थर का गोल पाटा। २-चक्की। ३-इलाका। ४-दुश्चरित्र स्त्रियों का अड्डा। वि० चौड़ा।
**चकलेदार** पुं० (हिं) किसी भूमिखण्ड या चकले का कर संग्रह करने वाला।
**चकल्लस** स्त्री० (हिं) १-मित्र-मंडली का हास-परिहास

२-झंझट। बखेड़ा।

**चकबँड** पुं० (हि) १-कुम्हार का चाक के पास हाथ भिगोने के लिए रक्खा हुआ पात्र। २-एक बरसाती कीड़ा।

**चकवा** पुं० (हि) १-एक पक्षी। सुरखाब। २-लड़कों का एक खिलौना।

**चकवाना** क्रि० (हि) चकपकाना।

**चकवार** पुं० (हि) कछुआ।

**चकवाह** पुं० (हि) चकवा।

**चकवै** पुं० (हि) १-चक्रवर्त्ती राजा। २-चकोर।

**चकहा** पुं० (हि) पहिया।

**चका** पुं० (हि) १-चकवा पक्षी। २-पहिया।

**चकाचक** वि० (हि) १-चटकीला। २-मजेदार। ३-तरबतर। क्रि० वि० बहुत। भरपूर। स्त्री० तलवार आदि के लगातार आघात का शब्द।

**चकाचौंध** स्त्री० (हि) प्रकाश या चमक के कारण दृष्टि का स्थिर न रह सकना। तिलमिली।

**चकाना** क्रि० (हि) चकित होना।

**चकाबू** पुं० (हि) १-चक्रव्यूह। २-भूलभुलैयाँ।

**चकासना** क्रि० (हि) चमकना।

**चकित** वि० (स) १-विस्मित। घबराया हुआ। ३-सशंकित।

**चकिताई** स्त्री० (हि) आश्चर्य।

**चकुला** पुं० (देश) चिड़िया का बच्चा।

**चकृत** वि० (हि) चकित।

**चकेंड़ी** स्त्री० (हि) कुम्हार की वह हाँडी जिसमें बरतन बनाते समय पानी रखता है।

**चकेवा** पुं० (हि) चकवा।

**चकवै** वि० (हि) चक्रवर्त्ती राजा।

**चकैया** स्त्री० (हि) चकई। वि० चकई या चाक के समान गोल।

**चकोटना** क्रि० (हि) चुटकी काटना।

**चकोतरा** पुं० (हि) एक तरह का नींबू।

**चकोर, चकोरक** पुं० (सं) तीतर की तरह का एक पक्षी।

**चकौंध** स्त्री० (हि) चकाचौंध।

**चक्क** पुं० (हि) १-चकवा। २-कुम्हार का चाक। ३-दिशा। ४-दे० 'चक्र'। वि० (हि) १-अत्याधिक २-बहुत बढ़िया।

**चक्कर** पुं० (हि) १-पहिये के समान गोल वस्तु। २-चाक। चक्र। घेरा। ३-वृत्ताकार मार्ग। ४-फेरा। ५-पहिये के समान अक्ष पर घूमना। ६-हैरानी। ७-बखेड़ा। ८-सिर घूमना।

**चक्कवई** वि० (हि) चक्रवर्त्ती।

**चक्का** पुं० (हि) १-पहिया। २-पहिये के समान कोई गोल वस्तु। ३-ठोस बड़ा टुकड़ा। ३-ईंट या पत्थरों के नापने के लिए लगाया गया ढेर।

**चक्की** स्त्री० (हि) आटा पीसने का यन्त्र। जाँता।

**चक्कीरहा** पुं० (हि) चक्की के पाट को टाँकी से कूट-कर खुरदरी करने वाला कारीगर।

**चक्खी** स्त्री० (हि) १-चखाने का भाव। २-खाने की चटपटी वस्तु।

**चक्र** पुं० (सं) १-पहिया। २-कुम्हार का चाक। ३-चक्की। जाँता। ४-तेल पेलने का कोल्हू। ४-पहिये जैसी गोल वस्तु। ५-घेरा। चक्कर। ६-पहिये के आकार का एक अस्त्र। ७-योग के अनुसार शरीर की विशिष्ट ग्रन्थियाँ। ८-पानी का भँवर। ९-संख्या के विचारानुसार बन्दूक से गोली चलाने की क्रिया। (राउंड)। १०-उतना समय जितने समय में कुछ विशिष्ट घटनायें किसी क्रम से होती हैं और उतने ही समय उनकी पुनरावृत्ति होती है। (साइकिल) ११-[illegible] द्वारा [illegible]पूर्ण [illegible] राजकीय पदक। जैसे--वीर-चक्र, [illegible] (व्हील)।

**चक्र-क्रम** पुं० (सं) चक्र [illegible] वाली पुनरावृत्ति या क्रम। ([illegible])।

**चक्रधर, चक्रधारी** पुं० [illegible] विष्णु। [illegible]।

**चक्रपाणि** पुं० ([illegible])

**चक्रपानि** पुं० (हि) चक्र[illegible]।

**चक्र-पूजा** स्त्री०(सं) [illegible] की एक प्रकार की पूजा।

**चक्रबंध** पुं०(स) [illegible] अथवा चक्र [illegible]।

**चक्रबंधु, चक्रबान्धव** [illegible]

**चक्र-मुद्रण** पुं०(स) [illegible] से प्रतियाँ [illegible]

**चक्रलेखन,** [illegible] के कागज की [illegible] बहुत सारी प्रतियाँ [illegible])।

**चक्रवर्ती** वि० ([illegible]) [illegible] से दूसरे समुद्र [illegible]।

**चक्रवाक** पुं० (स) [illegible]

**चक्रवात** पुं० ([illegible])

**चक्र-वृद्धि** स्त्री० (सं) [illegible]

**चक्रव्यूह** पुं० (सं) [illegible] युद्ध में किसी व्यक्ति या पक्ष [illegible] वाली एक प्रकार की [illegible]

**चक्रांक** पुं० (स) चक्र का [illegible] लोग अपने शरीर पर [illegible]

**चक्रानुक्रम** वि० (सं) चक्र [illegible] से या एक के बाद दूसरे समु[illegible] (इन-रोटेशन)।

**चक्रित** वि० (हि) चकित।

**चक्री** पुं० (हि) १-(चक्र धारण करने वाला)।

विष्णु । २-चकवा । ३-चक्रवर्ती राजा ।

**चक्रीय** वि०(सं)१-चक्र से सम्बद्ध । २-चक्र के समान अथवा बार-बार होने वाला । (साइक्लिक) ।

**चक्षु** पु० (सं) आँख । नेत्र ।

**चक्षुरिन्द्रीय** स्त्री० (सं) आँख । नेत्र ।

**चख** पु० (हि) चक्षु । नेत्र ।

**चखचख** स्त्री० (हि) कलह ।

**चखचौंध** स्त्री० (हि) चकाचौंध ।

**चखना** क्रि० (हि) स्वाद लेना ।

**चखु** पु० (हि) चक्षु ।

**चखौड़ा** पु० (हि) नजर से बचाने के लिए लगाया हुआ काला टीका । डिठौना ।

**चगड़** वि० (देश) चतुर । चालाक ।

**चगताई** पु० (तु) तुर्कों का एक वंश ।

**चगर** पु० (देश) एक चिड़िया ।

**चचा** पु० (हि) चाचा । पिता का भाई ।

**चचिया** वि० (हि) चाचा के समान सम्बन्ध रखने वाला ।

**चचेरा** वि० (हि) १-चाचा से उत्पन्न । २-चाचा-सम्बन्धी ।

**चचोड़ना** क्रि० (हि) दाँत से नोंचकर । खाना ।

**चट** क्रि० वि० (हि) तुरंत । फौरन । पु० (हि) धब्बा । वि० चाट-पोंछकर खाया हुआ ।

**चटक** पु०(सं) [स्त्री० चटका] गौरैया । चिड़ा । स्त्री० १-चमक-दमक । २-शोभा । तेजी । फुरती । वि० (हि) १-चटकीला । २-फुर्तीला । ३-चटपटा ।

**चटकदार** वि० (हि) चटकीला ।

**चटकना** क्रि० (हि) चिटकना । पु० (हि) तमाचा ।

**चटकनी** स्त्री० (हि) सिटकनी ।

**चटक-मटक** स्त्री० (हि) १-बनाव-सिंगार । २-नाज । नखरा ।

**चटकाई** स्त्री० (हि) चटकीलापन ।

**चटकाना** क्रि० (हि) १-तोड़ना । २-उँगलियों पर [illegible] । ३-[illegible] शब्द करना । ४-अलग करना । ५-चिढ़ाना ।

**चटकारा** वि० (हि) १-चटकीला । २-चटपटा ।

**चटकारी** स्त्री० (हि) चिड़ियों का समूह ।

**चटकीला** वि० (हि) (स्त्री० चटकीली) १-चमकदार । भड़कीला (रंग) । २-चरपरा ।

**चटकीलापन** पु० (हि) १-चमक-दमक । आभा । २-चरपरापन ।

**चटकोरा** पु० (देश) एक तरह का खिलौना ।

**चटखना** क्रि०, पु० दे० 'चटकना' ।

**चटखनी** स्त्री० (हि) चटकनी ।

**चटचट** पु० (हि) चटकने का शब्द । क्रि० वि० शीघ्रता से ।

**चटचटाना** क्रि० (हि) चट-चट या चटकने का शब्द करना ।

**चट-चेटक** पु० (हि) जादू । इन्द्रजाल ।

**चटनी** स्त्री० (हि) चाटने की चीज । अवलेह ।

**चटपट** क्रि० वि० (हि) तुरन्त । शीघ्र ।

**चटपटा** वि० (हि) (स्त्री० चटपटी) मिर्च, मसालेदार और खाने में मजेदार ।

**चटपटाना** क्रि० (हि) छटपटाना ।

**चटपटी** स्त्री० (हि) १-शीघ्रता । २-व्यग्रता । ३-काठ का चप्पल ।

**चटवाना** क्रि० (हि) १-चाटने में प्रवृत्त करना । २-छुरी, तलवार आदि पर सान चढ़वाना ।

**चटशाला, चटसार, चटसाल** स्त्री० (हि) पाठशाला ।

**चटाई** स्त्री० (हि) १-चाटने की क्रिया या भाव । २-तृण, सींक, ताड़ के पत्ते आदि का बना बिछावन ।

**चटाक** पु० (हि) लकड़ी के टूटने उंगली के चटकने या चपत आदि पड़ने का शब्द ।

**चटाना** क्रि० (हि) १-दे० 'चटवाना' । २-रिश्वत देना ।

**चटापटी** स्त्री० (हि) १-शीघ्रता । जल्दी । २-किसी संक्रामक रोग के कारण बहुत से लोगों की शीघ्रता से मृत्यु ।

**चटावन** पु० (हि) प्रथम बार बच्चे को अन्न चटाने का संस्कार । अन्नप्राशन ।

**चटिक** क्रि० वि० (हि) चटपट । तत्क्षण ।

**चटियल** वि० (देश) वृक्षशून्य मैदान ।

**चटिया** पु० (हि) चेला । शिष्य ।

**चटी** स्त्री० (हि) १-चटशाल । पाठशाला । २-चट्टी ।

**चटुक, चटुल** वि० (सं) १-चञ्चल । २-सुन्दर । ३-मधुर भाषी ।

**चटुला** स्त्री० (सं) १-बिजली । २-एक प्रकार का केशविन्यास ।

**चटोरपन** पु० (हि) स्वाद-लोलुपता ।

**चटोरा** वि० (हि) स्वाद-लोलुप ।

**चट्ट** वि० (हि) समाप्त । गायब । क्रि० वि० दे० 'चट' ।

**चट्टा** पु० (देश) १-वृक्ष शून्य मैदान । २-ददोरा । चकत्ता ।

**चट्टान** स्त्री० (हि) शिला-खण्ड ।

**चट्टाबट्टा** पु० (हि) १-एक तरह का काठ का खिलौना । २-बाजीगर के झोले में के वह गोले आदि जिन्हें निकाल कर तमाशे आदि में दिखाते हैं ।

**चट्टी** स्त्री० (हि) १-टिकान । पड़ाव । २-खुली एड़ी की जूती । (स्लीपर) ।

**चट्टू** वि० (हि) चटोरा । पु० (हि) पत्थर का बड़ा खरल ।

**चड्ढी** स्त्री० (हि) १-लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का दूसरे की पीठ पर चलता है । २-पीठ पर चढ़ाने भाव ।

**चढ़त, चढ़न** स्त्री० (हि) १-चढ़ने की क्रिया या भाव देवता पर चढ़ाई वस्तु अथवा धन।
**चढ़ना** क्रि० (हि) १-नीचे से ऊपर की ओर जाना। २-ऊपर उठना। ३-उन्नति करना। ४-चढ़ाई करना ५-स्वर का ऊँचा होना। ६-किसी देवता को भेंट होना। ७-सवार होना। ८-कर्ज होना। ९-बुरा असर होना। १०-अङ्कित होना। ११-पकाने के लिए चूल्हे पर रखा जाना। १२-लेप होना। १३-वर्ष मास आदि का आरम्भ होना।
**चढ़वाना** क्रि० (हि) चढ़ने अथवा चढ़ाने का काम अन्य से कराना।
**चढ़ाई** स्त्री० (हि) १-चढ़ने की क्रिया। २-ऊँचाई की ओर जाने वाली भूमि। ३-आक्रमण। धावा।
**चढ़ा-उतरी, चढ़ा-ऊपरी, चढ़ा-चढ़ी** स्त्री० (हि) होड़ा प्रतियोगिता।
**चढ़ाना** क्रि० (हि) १-नीचे से ऊपर की ओर लेजाना २-चढ़ने में प्रवृत्त करना। ३-उन्नति कराना। ४-चढ़ाई कराना। ५-संगीत में स्वर ऊँचा करना। ६-देवता को अर्पण करना। ७-एकदम पी जाना। ८-सवार कराना। ९-दर्ज करना। १०-पकने के लिए आँच में रखना।
**चढ़ाव** पुं० (हि) १-चढ़ाई। २-वृद्धि। ३-देवता की भेंट।
**चढ़ावा** पु० (हि) १-विवाह के अवसर पर वर की ओर से वधू को दिये जाने वाले गहने। २-पुजापा ३-उत्साह। बढ़ावा।
**चढ़ैत** पुं० (हि) सवार होने वाला। चढ़ने वाला।
**चढ़ैता** पुं० (हि) सवार।
**चढ़ैया** वि० (हि) चढ़ने वाला।
**चणक** पुं० (सं) चना।
**चणकात्मज** पुं० (सं) चाणक्य।
**चतर** पुं० (हि) छत्र।
**चतुःसीमा** स्त्री० (सं) किसी भवन या क्षेत्र आदि के चारों ओर की सीमा या हद। चौहद्दी। (एब्बटल)
**चतुरंग** पुं० (सं) १-सेना के चार अंग हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। २-शतरंज का खेल। ३-चतुरंगणी सेना। ४-एक प्रकार का हलका गाना।
**चतुरंगिणी** स्त्री० (सं) वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल, यह चार अंग हों।
**चतुरंगिनी** स्त्री० (हि) दे० 'चतुरंगिणी'।
**चतुर** वि० (सं) [स्त्री० चतुरा] १-बुद्धिमान्। २-व्यवहार-कुशल। ३-निपुण। दक्ष। ४-धूर्त। ५-चालाक।
**चतुरई** स्त्री० (हि) चतुराई।
**चतुरा** वि० (हि) चतुर। पुं० एक प्रकार का नायक (साहित्य)।
**चतुराई** स्त्री० (हि) १-चतुरता। चालाकी।
**चतुरात्मा** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-विष्णु।
**चतुरानना** पुं० (सं) चार मुख वाला, ब्रह्मा।
**चतुर्थ** वि० (सं) चौथा।
**चतुर्थक** पुं० (सं) हर चौथे दिन चढ़ने वाला बुखार।
**चतुर्थांश** पुं० (सं) चौथाई।
**चतुर्थाश्रम** पुं० (सं) संन्यास।
**चतुर्थी** स्त्री० (सं) १-किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ २-विवाह के चौथे दिन होने वाला विशिष्ट कर्म।
**चतुर्दशी** स्त्री० (सं) चौदस।
**चतुर्दिक** पुं० (सं) चारों दिशायें। क्रि० वि० (सं) चारों ओर।
**चतुर्भुज** वि० (सं) [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओं वाला। पुं० (सं) १-विष्णु। २-चार भुजाओं वाला क्षेत्र।
**चतुर्भुजी** वि० दे० 'चतुर्भुज'।
**चतुर्मास** पु० (सं) चातुर्मास।
**चतुर्मुख** पु० (सं) ब्रह्मा। क्रि० वि० चारों ओर।
**चतुर्युगी** स्त्री० (सं) चारों युगों का समूह अथवा समय
**चतुर्वर्ग** पुं०(सं) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष यह चार पदार्थ।
**चतुर्वर्ण** पुं० (सं) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण।
**चतुर्वेदी** पु०(सं) १-चारों वेदों का ज्ञाता। २-ब्राह्मणों की एक जाति।
**चतुष्कल** वि० (सं) चार मात्राओं वाला।
**चतुष्कोण** वि० (सं) चार कोनों वाला। पुं० (सं) चार भुजाओं वाला क्षेत्र। (क्वाड्रैंगिल)।
**चतुष्टय** पुं०(सं) १-चार की संख्या। २-चार वस्तुओं का समूह।
**चतुष्पथ** पुं० (सं) चौराहा।
**चतुष्पद** वि०(सं) चार पैरों वाला। पुं० (सं) चौपाया
**चतुष्पदी** स्त्री० (सं) १-चार पदों वाली कविता या छन्द। २-चौपाई (छन्द)।
**चत्वर** वि० (सं) १-चौरस्ता। २-चबूतरा। ३-चोकोर स्थान।
**चदरा** पुं० (हि) चादर।
**चद्दर** स्त्री० (हि) १-किसी धातु का पत्तर। २-चादर ३-तेज बहाव में नदी के ऊपरी तल की समतल अवस्था।
**चनक** पुं० (हि) चणक। चना।
**चनकट** पुं० (हि) थप्पड़।
**चनकना** क्रि० (हि) चटकना।
**चनन** पु० (हि) चन्दन। सन्दल।
**चना** पु० (हि) एक अन्न। चणक।
**चपकन** स्त्री० (हि) एक प्रकार का अंगरखा।
**चपकना** क्रि० (हि) चिपकना।
**चपकुलिश** स्त्री० (तु) १-झंझट। अड़चन। २-भीड़-

भाड़। असमंजस।
**चपटना** क्रि० (हिं) चिपकना।
**चपटी** वि० दे० 'चपटी'।
**चपटी-नत्थी** स्त्री० (हि) गत्ते की वह दफ्ती जिसपर कागज की नत्थियाँ रखकर बाँधी जाती हैं। (फ्लैट-फाइल)
**चपड़ा** पुं० (हिं) १-साफ की हुई लाख। २-एक कीड़ा।
**चपत** स्त्री० (हि) १-तमाचा। २-(आर्थिक) नुकसान
**चपना** क्रि० (हिं) १-कुचल जाना। दबना। २-झेंपना। ३-चौपट होना।
**चपनी** स्त्री० (हिं) १-छोटी छिछली कटोरी। २-दरियाई नारियल का कमण्डल। ३-हाँडी का ढकन। ४-घुटने की हड्डी।
**चपरगट्टू** पुं० (हिं) १-अभागा। २-गुत्थम-गुत्था।
**चपरना** क्रि० (हि) १-चुपड़ना। २-परस्पर मिलाना। ३-जल्दी मचाना। ४-खिसक जाना।
**चपरास** स्त्री० (हि) चौकीदार, अरदली आदि की वह पेटी जिस पर बिल्ला लगा रहता है।
**चपरासी** पुं० (हिं) १-चपरास धारण करने वाला नौकर। २-कार्यालय के कागज-पत्र लाने ले जाने वाला नौकर।
**चपरि** क्रि० वि० (हिं) चपलता से। फुरती से।
**चपल** वि० (सं) १-स्थिर न रहने वाला। चंचल। २-उतावला। जल्दबाज। ३-चालाक।
**चपलता** स्त्री० (स) १-चंचलता। २-अस्थिरता। ३-जल्दबाजी।
**चपला** वि० स्त्री० (सं) चंचल। स्त्री० (सं) १-बिजली। २-लक्ष्मी। ३-जीभ। ४-दुश्चरित्रा स्त्री।
**चपलाई** स्त्री० (हि) चपलता।
**चपलाना** क्रि० (हि) १-चलना। २-हिलना-डोलना। ३-चलाना। हिलाना।
**चपली** स्त्री० (हि) चप्पल।
**चपाक** क्रि० वि० (हिं) १-अचानक। २-चटपट।
**चपाती** स्त्री० (हि) पतली रोटी। फुलका।
**चपाना** क्रि० (हि) १-किसी को चपने में प्रवृत्त करना। २-लज्जित करना।
**चपेट** स्त्री० (हिं) १-तमाचा। चपत। २-धक्का। ३-झोंका। ४-संकट।
**चपेटना** क्रि० (हि) १-दबोचना। २-बलपूर्वक भगाना। ३-फटकार बताना।
**चपेटा** पुं० दे० 'चपेट'।
**चपेड़** स्त्री० (हिं) चपत। तमाचा।
**चपेरना** क्रि० (हि) चाँपना। दबाना।
**चप्पड़** पुं० दे० 'चिप्पड़'।
**[illegible]** पुं० (हिं) पट्टियाँ लगा चपटी एड़ी का जूता।
**चप्पा** पुं० (हिं) १-छोटा भाग। २-चौड़ा टुकड़ा। ३-छोटा भूमिखण्ड।
**चप्पी** स्त्री० (हि) १-हाथ पैर दबाने की सेवा। २-दे० 'चिप्पी'।
**चप्पू** पुं० (हि) नाव का वह डाँड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।
**चबक** स्त्री० (देश) रह रह कर उठने वाला दर्द। चिलक।
**चबकना** क्रि० (हि) टीसना। पीड़ा उठना।
**चबाई** पुं० (हि) चबाई।
**चबाना** क्रि० (हिं) १-दाँतों से कुचलकर खाना। २-दाँतों से काटना।
**चबाव, चबावन** पुं० (हि) दे० 'चबाव'।
**चबूतरा** पुं० (हिं) चौतरा।
**चबेना** पुं० (हि) १-चबाकर खाने की चीज। २-भुना हुआ अन्न। चर्वण।
**चबेनी** स्त्री० (हिं) चबेना।
**चभना** क्रि० (हिं) १-चबाकर खाया जाना। २-दबना या पिसना।
**चभाना** क्रि० (हि) खिलाना। भोजन कराना।
**चभोकना, चभोरना** क्रि० (हि) १-डुबोना। २-भिगोना।
**चमक, चमकताई** स्त्री० (हि) १-प्रकाश। २-आभा। कान्ति। ३-चिलक। चमक। ४-चमकने की क्रिया या भाव। चौंक।
**चमक-दमक** स्त्री० (हिं) १-तड़क-भड़क। २-आभा।
**चमकदार** वि० (हिं) चमकीला।
**चमकना** क्रि० (हि) १-प्रकाशित होना। जगमगाना। २-कीर्त्ति लाभ करना। ३-तरक्की पर होना। ४-चौंकना। ५-स्त्रियों की तरह मटकना। ६-झटका लगने से सहसा कहीं दर्द होना।
**चमकाना** क्रि० (हि) १-चमकीला करना। २-उजलाना। ३-चौंकाना। ४-उँगलियाँ आदि मटकाना।
**चमकारा** वि० (हि) चमकीला।
**चमकारी** स्त्री० (हि) चमक।
**चमकी** स्त्री० (हि) कारचोबी में लगाने के सितारे।
**चमकीला** वि० (हि) चमकने वाला। चमकदार।
**चमकौअल, चमकौवल** पु० (हि) स्त्रियों के समान चमकने का भाव।
**चमगादड़** पुं० (हि) एक उड़ने वाला जन्तु, जिसकी आकृति चूहे के समान होती है।
**चमचम** स्त्री० (देश) एक छेने की मिठाई। क्रि० वि० दे० 'चमाचम'।
**चमचमाना** क्रि० (हि) चमकना या चमकाना।
**चमचा** पुं० दे० 'चम्मच'।
**चमड़ा** पुं० (हि) १-खाल। त्वचा। २-छाल। ऊपरी आवरण।
**चमड़ी** स्त्री० (हि) 'चमड़ा' का स्त्री०।

**चमत्कार** पुं० (सं) १-आश्चर्य। विस्मय। २-करामात। ३-विचित्रता।
**चमत्कारक, चमत्कारी** वि०=जिसमें कोई चमत्कार हो।
**चमत्कृत** वि० (सं) विस्मित। चकित।
**चमत्कृति** स्त्री० (सं) चमत्कार।
**चमन** पुं० (फा) १-फुलवारी। छोटा बगीचा। २-रौनक की जगह।
**चमर** पुं०(सं) [स्त्री० चमरी] १-सुरागाय। २-चँवर
**चमरख** स्त्री० (हि) १-चमड़े की चकती जिसमें होकर चर्खे का तकला घूमता है।
**चमरा** पुं० (हि) १-चमार। २-चमड़ा।
**चमरी** स्त्री० (हि) १-सुरागाय। २-चँवर।
**चमरौट** पुं० (हि) चमारों को उनके काम के एवज में दिया जाने वाला उपज का भाग या अंश।
**चमरौधा** पुं० (हि) चमड़े से सिला भद्दा जूता।
**चमाऊ** पुं० (हि) चँवर।
**चमाचम** वि० (हि) खूब चमकता हुआ।
**चमार** पुं० (हि) [स्त्री० चमारी] एक जाति। चर्मकार
**चमारी** स्त्री० (हि) १-चमार जाति की स्त्री। २-चमार का कार्य।
**चमू** स्त्री० (सं) १-सेना। २-सेना का एक भाग जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।
**चमूचर** पुं० (सं) १-सैनिक। २-सिपाही।
**चमूनाथ, चमूनायक, चमूपति** पुं० (सं) सेना-नायक
**चमेलिया** पुं० (हि) चमेली के फूल के रंग का।
**चमेली** स्त्री० (हि) एक लता जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।
**चमोटा** पुं० (हि) चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं।
**चमोटी** स्त्री० (हि) १-चाबुक। २-पतली छड़ी। ३-चमोटा।
**चमौवा** पुं० (हि) चमरौधा जूता।
**चम्मच** पुं० (हि) वह पात्र जिससे भोजन परसते हैं चमचा।
**चय** पुं० (सं) १-समूह। २-टीला। ३-किला। ४-चहारदीवारी। ५-चबूतरा।
**चयन** पुं० (सं) १-संचय। संग्रह। २-चुनने का कार्य। ३-यज्ञ के निमित्त अग्नि का एक संस्कार।
**चयनक** पुं० (सं) विशेष कार्य को करने के लिए नियुक्त व्यक्तियों का समूह। (पैनल)।
**चयनिका** स्त्री० (सं) चुनी हुई कविता, कहानियों आदि का संग्रह।
**चयनीय** वि० (सं) चयन किये जाने लायक। चेष्टा।
**चयित** वि० (सं) जिसका चयन हुआ हो।
**चर** पुं० (सं) १-स्वराष्ट्र या पराराष्ट्र की गुप्त बातों का पता लगाने के लिए नियुक्त व्यक्ति। गुप्तचर भेदिया। २-किसी कार्य विशेष के निमित्त भेजा हुआ आदमी। दूत। ३-नदी तट की भूमि। ४-नदियों के बीच का टापू। रेता। वि० (सं) १-चलने वाला। २-चल। जङ्गम। पुं० (हि) कागज या कपड़े के फटने का शब्द।
**चरई** स्त्री० (हि) १-पशुओं के जल पीने का हौज। २-चरनी।
**चरक** पुं० (सं) १-दूत। २-पथिक। ३-भिक्षुक। ४-श्वेतकुष्ठ। ५-आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य या उनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थ।
**चरकटा** पुं० (हि) १-चारा काटने वाला व्यक्ति। २-तुच्छ व्यक्ति।
**चरकना** क्रि० (हि) तड़कना।
**चरका** पुं० (हि) १-हलका घाव। २-हानि। ३-धोखा।
**चरख** पुं० (फा) १-घूमने वाला गोल चक्र। २-खराद। ३-ढेलावाँस। ४-तोप ढोने वाली गाड़ी ५-एक शिकारी चिड़िया। ६-लकड़बग्घा।
**चरखा** पुं० (हि) १-हाथ से सूत कातने का एक यन्त्र। २-कुएँ से पानी निकालने का एक यन्त्र। ३-सूत लपेटने की चरखी। ४-खड़खड़िया (गाड़ी) ५-झंझट का काम।
**चरखी** स्त्री० (हि) १-पहिये के समान घूमने वाली कोई वस्तु। २-छोटा चरखा। ३-कपास ओटने का यन्त्र। ४-कुएँ से पानी खींचने की गडारी। ५-चक्कर खाने वाली एक आतिशबाजी।
**चरखुला** पुं० (हि) सूत कातने का चरखा।
**चरग** पुं० (हि) १-एक तरह की शिकारी चिड़िया १-लकड़बग्घा।
**चरचना** क्रि० (हि) १-शरीर में चन्दन आदि का लेप करना। २-पोतना। ३-भाँपना। ४-पूजा करना।
**चरचराना** क्रि० (हि) १-'चरचर' शब्द के साथ टूटना या जलना। २-शरीर के अंङ्ग का तनाव या रगड़ से दर्द करना। चर्राना।
**चरचा** स्त्री० दे० 'चर्चा'।
**चरचारी** पुं० (हि) १-चर्चा करने वाला। २-निन्दक
**चरज** पुं० (हि) चरख नामक पक्षी।
**चरजना** क्रि० (हि) १-बहकाना। २-अन्दाज लगाना
**चरण** पुं० (सं) १-पैर। पग। २-पद्य, छन्द आदि का एक पद। ३-चौथाई भाग। ४-आचरण। ५-सूर्य आदि की किरण। ६-जाना। ७-खाना।
**चरणचिह्न** पुं० (सं) १-पैरों के तलुए की रेखा। २-पैर का निशान।
**चरण-दासी** स्त्री० (सं) १-पत्नी। २-जूती।
**चरण-पादुका** स्त्री० (सं) १-खड़ाऊं। २-पत्थर आदि पर बना पैर का निशान।

**चरणपीठ** पुं० (सं) खड़ाऊँ।
**चरण-सेवा** स्त्री० (सं) १-पैर दबाना। २-सुश्रूषा।
**चरणामृत, चरणोदक** पुं० (सं) १-पूज्य व्यक्ति के पैरों की धोवन। २-दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण जिसमें किसी देव मूर्ति को स्नान कराया गया हो या उसके चरण धोये गये हों
**चरत** पुं० (हिं) उपवास के दिन अन्न खाना। स्त्री० (हिं) एक पक्षी।
**चरन** पुं० (हिं) चरण।
**चरनदासी** स्त्री० (हिं) जूती।
**चरनपीठ** पुं० (सं) खड़ाऊँ।
**चरना** क्रि० (हिं) १-पशुओं का घास आदि खाना। २-घूमना। फिरना। ३-आचरण करना।
**चरनि** स्त्री० (हिं) चाल। गति।
**चरनी** स्त्री० (हिं) १-चरागाह। २-वह नांद जिसमें पशुओं को चारा खिलाया जाता है।
**चरपट** वि० (हिं) १-उचक्का। २-धूर्त। पुं० १-चपत। २-एक प्रकार का छंद।
**चरपरा** वि० (हिं) [स्त्री० चरपरी] तीखे स्वाद वाला। झालदार।
**चरपराहट** स्त्री० (हिं) स्वाद का तीखापन।
**चरफराना** क्रि० (हिं) तड़फड़ाना।
**चरबा** पुं० (फा) १-खाक। २-प्रतिलिपि।
**चरबी** स्त्री० (हिं) वह चिकना पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में पाया जाता है। मेद। वसा।
**चरम** वि० (सं) १-अन्तिम। २-पराकाष्ठा का। ३-सबसे आगे।
**चरमपंथ** पुं० (सं) राजनैतिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि सब प्रकार के दोष तुरंत और चाहे जैसे हों उनका निराकरण होना चाहिए। (एक्स्ट्रीमिज्म, रैडिकलिज्म)।
**चरम-पंथी** वि० (सं) चरम पंथ सिद्धांत का अनुयायी या पक्षपाती। (रैडिकल, एक्स्ट्रीमिस्ट)।
**चरम-पत्र** पुं० (सं) वसियतनामा।
**चरमप्रत्यय** पुं० (सं) विभक्ति।
**चरमर** पुं० (हिं) दबने से उत्पन्न शब्द।
**चरमराना** क्रि० (हिं) चरमर शब्द होना या करना।
**चरमवती** स्त्री० (हिं) चंचल नदी।
**चरमावस्था** स्त्री० (सं) चरम या अन्तिम अवस्था।
**चरमोत्पादन** पुं० (सं) अधिक से अधिक मात्रा में किया गया उत्पादन। (पीक प्रोडक्शन)।
**चरवाई** स्त्री० (हिं) १-चराने का काम या भाव। २-चराने की उजरत।
**चरवाना** क्रि० (हिं) चराने का काम कराना।
**चरवारा, चरवाहा** पुं०(हिं) गाय, भैंस, आदि चराने वाला।
**चरवाही** स्त्री० दे० 'चरवाई'।
**चरवैया** वि० (हिं) १-चरने वाला। चराने वाला।
**चरस** पुं०(हिं) १-वह चमड़े का थैला जिससे सिंचाई करते हैं। २-भूमि की एक नाप। गांजे के वृक्ष का गोंद जिसे नशेबाज पीते हैं।
**चरसा** पुं० (हिं) १-गाय, भैंस आदि का चमड़ा। २-चमड़े का बना बड़ा थैला। ३-भूमि का एक परिमाण। ३-चरस।
**चरसिया, चरसी** पुं०(हिं) चरस का नाश करने वाला
**चराई** स्त्री० (हिं) १-चरने का काम। २-चराने का काम। ३-चराने की उजरत।
**चरागाह** पुं० (फा) पशुओं के चरने की भूमि। चरनी
**चराचर** वि० (सं) स्थावर और जंगल। जड़ और चेतन। पुं० जगत। संसार।
**चराना** क्रि०(हिं)१-चौपायों को चरने के लिए छोड़ना २-बहकाना।
**चराबर** स्त्री० (हिं) बकवास।
**चरिंदा** पुं० (फा) चरने वाला जीव।
**चरित** पुं०(सं) १-आचरण। २-कार्य। ३-जीवनी।
**चरित-कार, चरितलेखक** पुं० (सं) जीवन चरित का लेखक।
**चरित-नायक** पुं० (सं) किसी कथा या कहानी का प्रधानपात्र।
**चरितार्थ** वि० (सं) १-कृतार्थ। २-सार्थक।
**चरितावली** स्त्री०(सं)वह पुस्तक जिसमें बहुत से लोगों की जीवन कथाएँ हों।
**चरित्तर** पुं० (हिं) १-बुरा चरित्र। २-छलपूर्ण आचरण। ३-नखरेबाजी।
**चरित्र** पुं०(सं) १-स्वभाव। २-जीवन में किये जाने वाले काम या आचरण। ३-इस प्रकार किये गये कामों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता आदि का सूचक होती है। ४-करनी। करतूत। ५-दे० 'चरित'।
**चरित्र-गठन** पुं० (सं) शील अथवा सदाचार-वृति का का निर्माण।
**चरित्र-दोष** पुं० (सं) आचरण या चाल-चलन की खराबी।
**चरित्र-नायक** पुं० (सं) चरितनायक।
**चरित्र-पंजी** स्त्री० (सं) आचरण पंजी।
**चरित्रवान्** वि० (हिं) सदाचारी।
**चरित्रहीन** वि० (सं) खराब आचरण वाला। दुश्चरित्र।
**चरी** स्त्री० (हिं) १-चरागाह। २-हरी ज्वार का चारा कड़बी। ३-दूती। ४-दासी।
**चरु** पुं० (सं) १-हविष्यान्न। २-वह बरतन जिसमें हविष्यान्न पकाया जाय। ३-यज्ञ।
**चरुआ** पुं० (हिं) १-चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र। २-वह पात्र जिसमें प्रसूता के लिए पानी गरम

किया जाय।
चरखला पुं० (हिं) सूत कातने का चरखा।
चरु पुं० दे० 'चरु'।
चरेरा वि० (हिं) [स्त्री० चरेरी] १-कड़ा और खुरदुरा २-रूखा।
चरेरू पुं० (हिं) १-चिड़िया पक्षी। २-चरने वाला प्राणी।
चरैया पुं० (हिं) १-चरने वाला। २-चराने वाला।
चर्चक पुं० (सं) चर्चा करने वाला।
चर्चन पुं० (सं) १-चर्चा। २-लेपन। पोतना।
चर्चरिका स्त्री० (सं) नाटक में दो अंकों के मध्य के समय में गाया जाने वाला गायन। इस बीच में पात्र तैयार होते हैं और दर्शकों का मनोरंजन होता है।
चर्चरी स्त्री० (सं) १-करतल ध्वनि। २-होली का हुल्लड़। ३-आमोद-प्रमोद। ४-एक वर्णवृत्त।
चर्चा स्त्री० (सं) १-जिक्र। वर्णन। २-वार्त्तालाप। ३-अफवाह। ४-लेपन। पोतना।
चर्चित वि० (सं) १-लगाया गया। पोता हुआ। २-जिसकी चर्चा की गई हो।
चर्पट पुं० (सं) चपत। तमाचा।
चर्म पुं० (सं) १-चमड़ा। २-ढाल।
चर्मकार पुं० (सं) चमड़े का काम करने वाला। चमार।
चर्मचक्षु पुं० (सं) १-सामान्य दृष्टि का मनुष्य। २-नेत्र। नयन।
चर्मण्वती स्त्री० (सं) चम्बलनदी।
चर्मदंड पुं० (सं) चमड़े का चाबुक।
चर्म-दृष्टि स्त्री० (सं) आँख की दृष्टि।
चर्म-पादुका स्त्री० (सं) जूती।
चर्म-प्रसाधक पुं० (सं) वह कारीगर जो पशु पक्षियों की खाल में भूसा भरकर सजाने के लिए तैयार करता है। (टेक्सिडरमिस्ट)।
चर्ममय वि० (सं) जिसमें सब चमड़ा ही हो। (ऑल-लेदर)।
चर्म-वाद्य पुं० (सं) १-ढोल। २-नगाड़ा।
चर्म-शोधन पुं० (सं) चमड़े को कमाना। चमड़े को विशेष घोलों में डालकर सिझाना या अन्य प्रक्रिया द्वारा मुलायम बनाना। (टैनिंग)।
चर्म-शोधनालय पुं० (सं) चमड़ा कमाने का स्थान। वह स्थान या कारखाना जहाँ विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़े को सिझाकर मुलायम बनाया जाता है। (टैनरी)।
चर्म-सार पुं० (सं) खाए हुए पदार्थों से बनने वाला रस जो चमड़े के भीतर रहता है।
चर्मोदय पुं० (सं) एक प्रकार का लसीला पदार्थ जो जो मस्म या चमड़े से निकलता है। (लिम्फ)।
चर्या स्त्री० (सं) १-कार्य। २-आचरण। ३-रहन-सहन। ४-प्रतिदिन का कार्यक्रम। ५-जीविका। ६-सेवा। ६-चलना।
चर्राना क्रि० (हिं) १-लकड़ी का टूटते समय 'चर-चर' शब्द करना। २-शरीर में हलकी पीड़ा होना ३-चमड़े का रूखा होने के कारण फड़फड़ाना। ४-तीव्र अभिलाषा होना।
चर्री स्त्री० (हिं) लगने वाली बात।
चर्वण पुं० (सं) १-चबाना। २-चबाई जाने वाली वस्तु। ३-चबेना।
चर्वित वि० (सं) चबाया हुआ।
चर्वित-चर्वण पुं० (सं) १-चबाये हुए को चबाना। २-कही हुई बात को फिर से कहना।
चल वि० (सं) १-अस्थिर। चंचल। चलायमान। २-चलता हुआ। ३-जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता हो। जंगम। (मूवेबल)। पुं० (सं) १-पारा। २-शिव। ३-विष्णु।
चलक पुं० (सं) माल। असबाब।
चल-छविचित्र पुं० (सं) चलते-फिरते चित्र दिखाने वाला यन्त्र जिसमें तसवीरदार फिल्म एक अत्यन्त प्रकाशमान लालटेन के सामने दौड़ाई जाती हैं और आकार-वृद्धि-समर्थ ताल के द्वारा चित्रों का प्रतिबिम्ब परदे पर पड़ता है और ऐसा प्रतीत होता है मानो वे गति कर रही हों। (सीनेमेटोग्राफ)।
चल-चित्र पुं० (सं) वे चित्र जो परदे पर जीवित प्राणियों के समान कार्य करते दिखाये जाते हैं। (सिनेमा)।
चल-चित्रण पुं० (सं) चल-चित्र बनाने की सम्पूर्ण क्रिया। (सिनेमेटोग्राफी)।
चल-चित्रपट पुं० (सं) किसी कथानक या दृश्यों का चल-चित्रण पद्धति द्वारा तैयार किया गया पट। (सिनेमेटोग्राफ-फिल्म)।
चल-चित्रालय पुं० (सं) नाट्यशाला के समान वह घर या भवन जिसमें चलचित्र प्रकाशित किये जाते हैं। (सिनेमा-हाउस)।
चल-रूपचित्र पुं० (सं) चलती-फिरती तसवीरें दिखाने वाला यंत्र। (सिनेमेटोग्राफ)।
चलचूक स्त्री० (हिं) धोखा। छल। कपट।
चलता वि० (हिं) [स्त्री० चलती] १-गतियुक्त। २-प्रचलित। ३-चालू। जारी। ४-काम चलाने या करने योग्य। ५-व्यवहार में निपुण। चालाक। पुं० (देश) १-एक बड़ा वृक्ष। २-कवच।
चलता-खाता पुं० (हिं) बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन देन बराबर जारी रहे। (करेंट-अकाउंट)।
चलता-गाना पुं० (हिं) सरल संगीत।
चलती स्त्री० (हिं) अधिकार अथवा प्रभुत्व चलना।

**चलतू** वि०(हि) १-दे० 'चलता'। २-कोई जोती जाने वाली (भूमि)। आबाद।

**चलदल** पुं० (सं) पीपल।

**चलद्रव्य** पु० (सं) माल। असबाब। (गुड्स)।

**चलन** पुं० (हि) १-चलने का भाव। चाल। २-प्रथा ३-प्रचलन। प्रचार।

**चलन-कलन** पुं० (सं) ज्योतिष का एक गणित जिसके द्वारा दिन मान का घटना-बढ़ना जाना जाता है

**चलन-समीकरण** पुं० (सं) गणित की एक विशेष क्रिया जिसके द्वारा ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि निकाली जाती है।

**चलनसार** वि० (हि) १-व्यवहार में प्रचलित। २-टिकाऊ।

**चलना** क्रि०(हि)१-जाना। गमन करना। २-हिलना डोलना। ३-प्रयुक्त होना। ४-प्रचलित होना। ५-तीर, गोली आदि का छूटना। ६-बोल बाला होना ७-अधिकार या वश में होना। ८-उपयोग में आना ९-निभना। १०- आरंभ होना। छिड़ना। ११-पढ़ा जाना। पुं० (हि) १-बड़ी चलनी या छलनी २-हलवाई का बड़ा छन्ना।

**चलनी** स्त्री० (हि) आटा छानने की छलनी।

**चल-पत्र** पुं० (सं) १-पीपल। २-कागज के रूप में प्रचलित वह धन जो सिक्के की जगह काम आता है। (करेंसी-नोट)।

**चलवंत** पुं० (हि) पैदल सिपाही।

**चलवाना** क्रि० (हि) चलाने का काम कराना।

**चलविचल** वि० (हि) १-अस्तव्यस्त। २-अस्थिर। पुं० व्यतिक्रम।

**चलवैया** पुं० (हि) चलने या चलाने वाला।

**चलसम्पति** स्त्री० (सं) वह सम्पत्ति जो एक स्थान से उठा कर दूसरी जगह लेजाई जा सके। (मूवेबल प्रापर्टी)।

**चलाऊ** वि० (हि) अधिक दिन चलने वाला। टिकाऊ

**चलाक** वि० (हि) चालाक।

**चलाका** स्त्री० (हि) बिजली।

**चलाचल** वि० (सं) १-चल और अचल दोनों। २-चञ्चल। स्त्री० (हि) १-चलाचली। २-चाल। गति।

**चलाचली** स्त्री० (हि) १-चलते समय की व्यग्रता। घबराहट। २-प्रस्थान। मरने का समय निकट होना।

**चलान** स्त्री० (हि) १-माल या सामान का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाने का कार्य। २-अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करना। ३-बाहर से आया हुआ माल। ४-भेजे या जमा किये हुए माल की सूची। रवन्ना।

**चलाना** क्रि० (हि) १-चलने में लगाना। २-गति देना। ३-अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना। ४-व्यवहार या आचरण करना। ५-काम आदि की ऐसी व्यवस्था करना कि वह भलीभांति बढ़ता रहे। (कनडक्ट)।

**चलानी** वि० (हि) चलान सम्बन्धी। चलान का। स्त्री० माल बाहर भेजने का व्यवसाय।

**चलायमान** वि० (सं) १-चलता हुआ। २-चञ्चल। ३-विचलित।

**चलार्थ** पुं० (सं) वह सिक्का या मुद्रा जिसका व्यवहार नित्य होता रहता हो, जो एक आदमी के हाथ से दूसरे के हाथ में जाता हो। (करेंसी)।

**चलार्थ-पत्र** पुं० (सं) दे० 'चल-पत्र'।

**चलावना** क्रि० (हि) दे० 'चलाना'।

**चलावा** पुं० (हि) १-रीति। रस्म। २-द्विरागमन। गौना।

**चलित** वि० (सं) १-चलायमान। २-प्रचलित।

**चलित्र** पुं० (सं) रेलगाड़ी खींच कर लेजाने वाला इंजन। (लोकोमोटिव)।

**चलीसा** पुं० (हि) चालीसा।

**चलैया** पुं० (हि) चलने वाला।

**चलौआ** पुं० (हि) चाला।

**चवन्नी** स्त्री० (हि) चार आने का सिक्का।

**चवपैया** पुं० (हि) चौपाया।

**चवा** स्त्री० (हि) चारों ओर से बहने वाली हवा।

**चवाई** पुं० (हि) (स्त्री० चवाइन) १-निन्दक। २-झूठा। ३-चुगलखोर।

**चवाव** पुं० (हि) १-अफवाह। २-बदनामी। ३-निन्दा।

**चवैया** स्त्री० दे० 'चवाव'।

**चश्म** स्त्री० (फा) नेत्र। आँख।

**चश्मदीद** वि० (फा) १-आँखों से देखा हुआ। २-प्रत्यक्षदर्शी। (गवाह)।

**चश्मा** पुं० (फा) १-ऐनक। २-सोता। स्रोत।

**चष** पुं० (हि) आँख।

**चषक** पुं० (सं) १-मद्य पीने का पात्र। २-शहद। ३-एक तरह की शराब।

**चष-चोल** पुं० (हि) आँख का पलक।

**चसका** पुं० (हि) १-शौक। २-लत। व्यसन।

**चसना** क्रि० (हि) १-चिपकना। २- मरना। ३-खिंच या दबकर (कपड़े का) फट जाना।

**चसम** स्त्री० दे० 'चश्म'।

**चसमा** पुं० दे० 'चश्मा'।

**चस्पाँ** वि० (फा) चिपकाया हुआ।

**चस्म** स्त्री० दे० 'चश्म'।

**चह** पुं० (हि) १-नाव पर चढ़ने के लिए बनाया हुआ मचान। २-अस्थायी पुल। स्त्री० गड्ढा। गर्त

**चहक** स्त्री० (हि) पक्षियों का कलरव। चहचहा।

**चहकना** *क्रि०* १–पक्षियों का मधुर शब्द करना। २–उमङ्ग में या प्रसन्न होकर अधिक बोलना। ३–चमकना।
**चहका** पुं० (हि) १–जलती हुई लकड़ी। २–बनेठी। ३–चहला।
**चहकार** *स्त्री०* (हि) चहक।
**चहकारना** *क्रि०* (हि) चहकना।
**चहचहा** पुं० (हि) १–चहक। २–हँसी। *वि०* १–उल्लास युक्त। आनन्द उत्पन्न करने वाला। २–सुन्दर।
**चहचहाना** *क्रि०* (हि) चहकना।
**चहटा** पुं० (हि) पंक। कीचड़।
**चहता** पुं० (हि) (*स्त्री०* चहती) चहेता। प्यारा।
**चहनना** *क्रि०* (हि) चहलना। रौंदना।
**चहना** *क्रि०* (हि) चाहना।
**चहनि** *स्त्री०* (हि) १–चाह। २–दृष्टि।
**चहबच्चा** पुं० (हि) १–पानी जमा करने का हौद। २–धन छिपाकर रखने का छोटा तहखाना।
**चहर** *स्त्री०* (हि) १–चहल। २–बढ़िया।
**चहरना** *क्रि०*(हि) आनन्दित होना।
**चहल** *स्त्री०* (हि) १–आनन्दोत्सव। २–चहल-पहल। ३–चिड़ियों का कलरव। ४–कीचड़।
**चहलकदमी** *स्त्री०* (फा) धीरे-धीरे टहलना, घूमना या चलना।
**चहल-पहल** *स्त्री०* (हि) १–किसी जगह अधिक आदमियों के इकट्ठे होने या आने जाने से वायुमंडल में पैदा हुई सजीवता। २–रौनक।
**चहला** पुं० (हि) पंक। कीचड़।
**चहलुम** पुं० दे० 'चेहलुम'।
**चहवारा** *वि०* (हि) चहचहाने वाला (पक्षी)।
**चहा** पुं० (हि) बगले जैसा एक पक्षी। चाहा।
**चहार-दिवारी** *स्त्री०* (फा) चारों ओर की दीवार।
**चहारम** *वि०* (फा) चौथाई। चतुर्थांश।
**चहीचहा** पुं० (हि) एक दूसरे को देखना।
**चहुँ** *वि०* (हि) चारों।
**चहुँकना** *क्रि०* (हि) चौंकना।
**चहूँ** *वि०* दे० 'चहुँ'।
**चहुँधा** *क्रि० वि०* (हि) चारों ओर।
**चहुटना** *क्रि०* (हि) सटना। मिलाना। लगाना।
**चहेटना** *क्रि०* (हि) १–निचोड़ना। २–खदेड़ना।
**चहेता** *वि०* (हि) (*स्त्री०* चहेती) प्यारा। प्रिय।
**चहोरना** *क्रि०* (हि) १–पौधा रोपना। २–सहेजना। ३–कोई काम अच्छी तरह करना।
**चाँई** पुं० (देश) १–ठग। धूर्त।
**चाँक** पुं० (हि) खलियान के अन्न के ढेर के चारों ओर लगाया जाने वाला चिह्न।
**चाँकना** *क्रि०* (हि) १–खलियान में अनाज के ढेर पर चिह्न लगाना। २–सीमा बाँधने के लिए चिह्नित करना। हद बाँधना। ३–पहचानने के लिए किसी प्रकार का चिह्न लगाना।
**चाँका** पुं० दे० 'चाँक'।
**चाँगला** *वि०* (हि) (*स्त्री०* चाँगली) १–अच्छा। बढ़िया। २–हृष्ट। पुष्ट। ३–स्वस्थ। ४–धूर्त। चालक।
**चाँचर, चाँचरी** *स्त्री०* (हि) १–एक राग जो बसंत में गाया जाता है। २–हल्ला-गुल्ला। ३–होली में होने वाले खेल तमाशे।
**चाँचल्य** पुं० (सं) चंचलता। चपलता।
**चाँचिया** पुं० (हि) १–लूटपाट करने वाली एक जाति २–डाकू।
**चाँचियागोरी** *स्त्री०* (हि) लुटेरापन।
**चाँचु** पुं० (हि) चंचु। चोंच।
**चाँटा** *स्त्री०* (हि) १–थप्पड़। २–च्यूँटा।
**चाँटी** *स्त्री०* (हि) १–चींटी। २–तबले पर तर्जनी उँगली का आघात पड़ने का शब्द।
**चाँड़** *वि०* (हि) १–प्रबल। २–उद्धत। ३–श्रेष्ठ। ४–प्रचंड। *स्त्री०* (हि) १–टेंक। थूनी। २–अत्यंत आवश्यकता। ३–प्रबल इच्छा।
**चाँड़ना** *क्रि०* (हि) १–खोदकर गिराना। २–उखाड़ना। ३–उजाड़ना।
**चांडाल** पुं० (सं) [*स्त्री०* चांडाली, चांडालिन] १–डोम। श्वपच। २–पतित मनुष्य। (गाली)।
**चाँड़िला** *वि०* दे० 'चाँड़'।
**चाँद** पुं० (हि) १–चन्द्रमा। २–[illegible]। ३–निशाने का [illegible]।
**चाँद-तारा** *स्त्री०* (हि) १–एक प्रकार की बूटीदार मलमल। २–एक प्रकार की पतंग।
**चाँदना** पुं० (हि) १–[illegible]। उजाला। २–चाँदनी।
**चाँदनी** *स्त्री०* (हि) १–चाँद [illegible]। कौमुदी। २–[illegible]।
**चाँद-बाला** पुं० (हि) [illegible]।
**चाँदमारी** *स्त्री०* (हि) [illegible] का अभ्यास।
**चाँदा** पुं० (हि) १–[illegible] छोटे छोटे चिह्नों वाला [illegible] निशाना लगाते हैं। २–[illegible] की एक प्रकार की [illegible] जिससे भूमिति के लिए कोण आदि [illegible] (प्रोटैक्टर)।
**चाँदी** *स्त्री०* (हि) १–रजत। रौप्य। २–आर्थिक लाभ ३–खोपड़ी का मध्य भाग। चाँद।
**चांद्र, चांद्रमस** *वि०* (सं) १–चन्द्रमा सम्बन्धी। २–जो चन्द्रमा के विचार से हो।
**चांद्र-मास** पुं० (सं) उतना समय जितना चन्द्रमा

को पृथ्वी की परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का महीना।
**चांद्रायण** पु० (स) १–महीने भर का एक व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं। २–एक मात्रिक छन्द।
**चांप** पु० (हि) १–दे० 'चाप'। २–चम्पा का फूल। स्त्री० (हि) १–दबाव। २–पैर की आहट।
**चांपना** क्रि० (हि) दबाना। मीड़ना।
**चांयचांय, चाँवचाँव** स्त्री० (हि) व्यर्थ की बक-बक।
**चा** स्त्री० (हि) चाय।
**चाइ, चाउ** पुं० (हि) चाव।
**चाउर** पु० (हि) चावल।
**चाए** क्रि० वि० (हि) चाव से। चाह से।
**चाक** पुं० (हि) १–पहिया। २–कुम्हार का बर्त्तन बनाने का गोल पत्थर। ३–पानी खींचने की चरखी रोपने के समय पेड़ की जड़ में लगा हुआ गोलाकार मिट्टी का पिण्ड। पुं० (फा) दरार। चीर। वि० (तु) १–दृढ़। २–हृष्ट-पुष्ट। पुं० (अ) खड़िया मिट्टी
**चाकचक** वि० (हि) मजबूत। २–दृढ़।
**चाक-चक्य** स्त्री० (सं) १–चमक-दमक। २–शोभा।
**चाकना** क्रि० (हि) १–हद बनाना। २–अनाज की राशि पर मिट्टी या गोबर से छापा लगाना। ३–पहिचान के लिए चिह्न बनाना।
**चाकर** पुं० (फा) [स्त्री० चाकरानी] नौकर। सेवक।
**चाकरी** स्त्री० (फा) १–सेवा। २–नौकरी।
**चाकलेट** पुं० (अ) एक तरह की मिठाई।
**चाकसू** पु० (हि) बनकुलथी।
**चाका** पुं० (हि) चक्का। पहिया।
**चाकी** स्त्री० (हि) १–चक्की। २–बिजली।
**चाकू** पुं० (तु) छुरी।
**चाक्षुष** वि० (स) १–चक्षु सम्बन्धी। २–दिखाई देने वाला दृश्य। न्याय में प्रत्यक्ष प्रमाण का एक भेद।
**चाख** पुं० (हि) नीलकण्ठ नामक पक्षी।
**चाखना** क्रि० (हि) चखना।
**चाखुर** स्त्री० (देश) १–निराकर निकाली हुई खेत की घास। २–गिलहरी।
**चाचर, चाचरि** स्त्री० (हि) १–होली का एक गीत। २–होली का स्वांग। ३–हल्ला-गुल्ला।
**चाचरी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की मुद्रा (योग)।
**चाचा** पुं० (हि) [स्त्री० चाची] पिता का छोटा भ्राता। काका।
**चाट** स्त्री० (हि) १–इच्छा। २–व्यसन। ३–लालसा। ४–चटपटी वस्तु।
**चाटक** पुं० (हि) जादू। इन्द्रजाल।
**चाटना** क्रि० (हि) १–जीभ से चखना। २–पोंछकर खा लेना। ३–किसी वस्तु पर प्यार से जीभ फेरना ४–कागज कपड़े आदि का कीड़ों द्वारा खाया जाना
**चाटी** पुं० (हि) चेला। शिष्य।
**चाटुकार** पुं० (सं) खुशामदी। चापलूस।
**चाटुकारी** स्त्री० (हि) चापलूसी। खुशामद।
**चाड़** स्त्री० दे० 'चाँड़'।
**चाढ़ा** वि० (हि) [स्त्री० चाढ़ी] प्यारा। प्रिय।
**चाणक्य** पुं० (सं) एक नीतिज्ञ जो सम्राट चन्द्रगुप्त का मन्त्री था। कौटिल्य।
**चाणूर** पुं० (सं) कंस का एक योद्धा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
**चातक** पुं० (सं) [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।
**चातुरंग** वि० (सं) (वह देश अथवा राज्य) जिसके चारों ओर प्राकृतिक सीमाएँ हों।
**चातुर** वि० (हि) चतुर।
**चातुरी** स्त्री० (हि) १–चतुरता। २–चालाकी। ३–धूर्तता।
**चातुर्मासिक** वि० (सं) चार महीने में होने वाला (यज्ञ या कर्म)।
**चातुर्मास्य** पुं० (सं) चौमासा। (असाढ़ शुक्ला द्वादशी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी तक का समय)।
**चातुर्य** पुं० (स) चतुरता।
**चातुर्वर्ण्य** पुं० (सं) चारों वर्ण।
**चात्रिक, चात्रिग** पुं० (हि) चातक।
**चादर** स्त्री० (फा) १–ओढ़ने और बिछाने का बड़ा कपड़ा। २–धातु का चौखूंटा पत्तर। ३–दुपट्टा। ४–पहाड़ या चट्टान से गिरने वाली बड़ी धार। ५–पवित्र स्थान पर चढ़ाये जाने वाले फूल। ६–(दे०) चद्दर।
**चान** पु० (हि) चंद्रमा।
**चानक** क्रि० वि० (हि) अचानक। सहसा।
**चानन** पुं० (हि) चंदन।
**चाना** क्रि० (हि) चाव या उमंग में आना।
**चाप** पुं० (सं) १–कमान। धनुष। २–गणित में आधा वृत्त क्षेत्र। ३–वृत्त की परिधि का कोई भाग ४–धनुराशि। स्त्री० (हि) १–दबाव। २–पैर की आहट।
**चापकर्ण** पुं० (सं) वह सरल रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक होती है। जीवा। (कॉर्ड)।
**चापट** स्त्री० (हि) आटे का चोकर। वि० १–चौपट। २–चिपटा।
**चापड़** वि० (हि) १–चिपटा। २–समतल।
**चापना** क्रि० (हि) दबाना। मीड़ना।
**चापर** वि० (हि) चापड़।
**चापल** पुं० (सं) चपलता। वि० चपल।
**चापलता** स्त्री० (हि) चंचलता।
**चापलूस** वि० (फा) खुशामदी।
**चापलूसी** स्त्री० (फा) खुशामद। झूठी प्रशंसा।

**चापल्य** पु० (सं) चपलता ।

**चाब** स्त्री० (हि) डाद । चौघड़ ।

**चाबना** क्रि० (हि) १-दाँतों से कुचल कर खाना। चबाना। । २-खाना । खूब भोजन करना ।

**चाबी** स्त्री० (हि) ताली । कुंजी ।

**चाबुक** पुं० (फा) १-कोड़ा । सांटा । २-तीव्र प्रेरणा

**चाबुकसवार** पु० (स) घोड़े को चाल सिखाने वाला।

**चाभ** स्त्री० दे० 'चाब' ।

**चाभना** क्रि० (हि) खाना ।

**चाभी** स्त्री० (हिं) चाबी । कुंजी ।

**चाम** पुं० (हि) चमड़ा । खाल ।

**चामड़ी** स्त्री० दे० 'चमड़ी' ।

**चामर** पुं० (सं) १-चँवर । २-मोरछल । ३-एक वर्णवृत्त ।

**चामर-ग्राही** पुं० (सं) चँवर हिलाने वाला ।

**चामिल** स्त्री० (हि) चम्बलनदी ।

**चामीगर** पुं० (सं) १-स्वर्ण । सोना । २-धतूरा ।

**चामुंडा** स्त्री० (सं) एक देवी का नाम । भैरवी ।

**चाय** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का पौधा तथा उसकी पत्ती । २-इस पौधे की पत्तियों को उबालकर बनाया हुआ पेय । पु० चाव ।

**चायक** पुं० (हि) चाहने वाला प्रेमी । पुं० (सं) चयन करने या चुनने वाला ।

**चायना** पुं० (हि) प्रेम । अनुराग ।

**चार** वि० (हि) दो गुना । पुं० (सं) १-गति । चाल २-बन्धन । कारागार । ३-गुप्तचर । ४-सेवक । ५-रसम । रीति । ६-ढब । ढंग ।

**चार-आइना** पु० (फा) एक तरह का बख्तर जिसमें लोहे की चार पेटियाँ होती हैं।

**चारकर्म** पुं० (सं) गुप्तचर का कार्य । जासूसी । (एस्पॉयनेज) ।

**चारखाना** पुं० (फा) वह वस्त्र जिसमें रंगीन धारियों के चौखूटे खाने बने हों।

**चारजामा** पुं० (फा) घोड़ी की जीन ।

**चारण** पुं० (स) १-कीर्तिगायक । भाट । २-राजस्थान की एक जाति ।

**चार-दिन** पु० (हि) थोड़े दिन । अल्पकाल ।

**चार-दिवारी** स्त्री० (फा) प्राचीर । परकोटा ।

**चारन** पुं० (हि) चारण ।

**चारना** क्रि० (हि) चराना ।

**चारपाई** स्त्री० (हि) खाट ।

**चारपाया** पुं० (हि) चौपाया । पशु ।

**चारबाग** पुं० (फा) १-चौकोर बाग । २-वह शाल या रूमाल जो रंगों के द्वारा चार भागों में विभक्त हो ।

**चारयारी** स्त्री० (हिं) १-चार मित्रों की गोष्ठी या मण्डली । २-सुन्नी मुसलमानों का एक वर्ग ।

**चारवा** पुं० (हि) चौपाया । पशु ।

**चारा** पुं० (हि) १-पशुओं का भोजन । २-मछली मारने के लिए बंसी में लगा कीड़ा । पुं० (फा) उपाय । तदबीर ।

**चाराजोई** स्त्री० (फा) फरियाद ।

**चारि** वि० दे० 'चार' ।

**चारिणी** स्त्री० (हि) चारण जाति की स्त्री । वि० 'चारी' का स्त्री० ।

**चारित** १-जो चलाया गया हो । २-भबके से खींचा या उतारा हुआ ।

**चारित्र** पुं० (सं) १-कुल की रीति । २-चाल-चलन ३-व्यवहार ।

**चारित्रिक** वि० (स) १-चरित्र सम्बन्धी । २-अच्छे चाल-चलन वाला ।

**चारित्रिकता** स्त्री० (सं) १-सदाचार । २-चरित्र-चित्रण की कला या कौशल ।

**चारी** वि० (सं) (स्त्री० चारिणी) १-चलने वाला । २-आचरण करने वाला । पुं० (हि) १-पैदल सिपाही । २-संचारी भाव ।

**चारु** वि० (सं) सुन्दर । मनोहर । पु० (हि) चार ।

**चारुहासिनी** वि० स्त्री० (सं) मनोहर मुस्कान वाली ।

**चारुहासी** वि० (सं) (स्त्री० चारुहासिनी) मधुर मुस्कान वाला ।

**चार्वाक** पुं० (सं) १-एक विख्यात नास्तिक तार्किक । २-इसका चलाया हुआ मत या दर्शन ।

**चाल** स्त्री० (हि) १-चलने की क्रिया । गति । २-चलने का ढंग । ३-आचरण । चलन । ४-युक्ति । तरकीब ५-छल धूर्त्तता । ६-आहट । ७-शतरंज, ताश आदि में पत्ता या मोहरा रखने का काम ।

**चालक** वि० (सं) चलाने वाला ।

**चाल-चलन** पुं० (हि) आचरण । व्यवहार ।

**चाल-ढाल** स्त्री० (हि) १-चाल-चलन । २-रंगढंग ।

**चालन** पुं० (सं) चलाना । पुं० (हि) छानने से निकली भूसी या चोकर । स्त्री० चलनी ।

**चालनहार** वि० (हि) १-चलाने वाला । २-चलने वाला ।

**चालना** क्रि० १-छानना । २-हिलाना । ३-(बहू) विदा कराके अपने घर लाना । ४-चलाना ।

**चालबाज** वि० (हि) धूर्त्त । छली ।

**चालबाजी** स्त्री० (हि) धूर्त्तता । चालाकी ।

**चाला** पुं० (हि) १-कूँच । प्रस्थान । २-दुलहन का पहली बार ससुराल आना । गौना । ३-यात्रा का महूर्त्त ।

**चालाक** वि० (फा) १-चतुर । २-धूर्त्त ।

**चालाकी** स्त्री० (फा) १-चतुराई । २-धूर्त्तता । ३-दक्षता ।

**चालान** पु० दे० 'चालन' ।

**चालित** वि० (सं) चलाया हुआ।
**चालिया** वि० (हि) चालबाज।
**चाली** वि० (हि) १-चालबाज़। २-चंचल। ३-नटखट।
**चालीस** पुं० (हि) चालीस पद्यों का संग्रह।
**चालुक्य** पु० (सं) दक्षिण भारत का एक राजवंश।
**चालू** वि० (हि) प्रचलित।
**चाल्ह** स्त्री० (देश) चेल्हवा नामक मछली।
**चाव** पुं०(हि) १-इच्छा। २-शौक। ३-वासना। ४-अनुराग। ५-उत्साह।
**चावड़ी** स्त्री० (देश) पथिकों के उतरने का स्थान। पड़ाव।
**चावना** क्रि०(हि) चाहना।
**चावल** पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध अन्न। तंदुल। २-भात। ३-एक रत्ती की तौल।
**चाशनी** स्त्री०(फा) १-खाँड का पका हुआ शर्बत। २-चसका। मजा। ३-सोने का वह नमूना जो मिलान के लिए सुनार सोना देने वाले ग्राहक से लेकर अपने पास रखता है।
**चाष** पुं० (सं) १-नीलकंठ नामक पक्षी। २-चाहा पक्षी।
**चासनी** स्त्री० (हि) खाँड का पका शर्बत।
**चासा** पुं० (देश) १-हलवाहा। खेतिहर।
**चाह** स्त्री०(हि)१-इच्छा। अभिलाषा। २-प्रेम। प्रीति ३-आदर। ४-माँग। आवश्यकता। ५-खबर। समाचार। ६-आहट। टोह। ७-रहस्य।
**चाहक** पुं० (हि) १-चाहने वाला। २-प्रेमी।
**चाहत** स्त्री० (हि) चाह। प्रेम।
**चाहना** क्रि० (हि) १-इच्छा करना। २-प्रेम करना। ३-माँगना। ४-देखना। ५-ढूंढना। स्त्री० दे० 'चाह'।
**चाहा** पुं० (हि) एक जल पक्षी जो बगले जैसा होता है।
**चाहि** अव्य० अपेक्षाकृत।
**चाहिए** अव्य०(हि)१-उचित है। २-आवश्यकता है।
**चाही** वि० स्त्री० (हि) १-चाहेती। प्यारी। २-कुएं से सींची जाने वाली (भूमि)।
**चाहे** अव्य० (हि) १-यदि इच्छा हो। २-यदि उचित हो। ३-अथवा। या।
**चिआँ** पु० (हि) इमली का बीज।
**चिउंटी** स्त्री० (हि) च्यूँटी। पिपीलिका।
**चिगना** पु० (देश) छोटा बच्चा।
**चिगारी** स्त्री० (हि) चिनगारी।
**चिगुड़ना, चिगुरना** क्रि० (हि) सिकुड़ना।
**चिगुला** पु० (देश) १-बच्चा। २-पक्षी का बच्चा।
**चिघाड़** स्त्री० (हि) हाथी की बोली।
**चिघाड़ना** क्रि०(हि) १-चीखना। चिल्लाना २-हाथी का चिल्लाना।
**चिचिनी** स्त्री० (हि) १-इमली का पेड़। २-इमली का फल।
**चिज, चिजा** पु० (हि) [स्त्री० चिजी] लड़का। पुत्र।
**चिजी** स्त्री० (हि) कन्या। लड़की।
**चिड** पु० (सं) नृत्य का एक ढंग।
**चित** स्त्री० (हि) चिन्ता।
**चितक** वि० (सं) १-चिंतन करने वाला। २-सोचने वाला।
**चितन** पुं० (सं) १-ध्यान। २-विचार। विवेचना।
**चितना** क्रि० (हि) १-चिंतन करना। २-सोचना। स्त्री० (हि) १-ध्यान। स्मरण। २-चिंता। सोच।
**चितनीय** वि० (सं) १-चिन्ता करने के योग्य। २-सोचने विचारने योग्य।
**चितवन** पु० (हि) चिंतन।
**चिता** स्त्री० (हि) १-चिंतन। २-सोच। फिक्र। ३-ध्यान।
**चिताकुल, चितातुर** वि० (सं) चिंता से व्याकुल या उद्विग्न।
**चितामणि** पुं०(सं) १-सब मनोरथ पूर्ण करने वाला रत्न। २-ब्रह्मा। ३-ईश्वर। ४-सरस्वती का एक मंत्र।
**चितामनि** पुं० दे० 'चिंतामणि'।
**चिंतित** वि० (सं) [स्त्री० चिंतिता] जिसे चिन्ता हो।
**चिंत्य** वि० (सं) चिन्तनीय।
**चिदी** स्त्री० (देश) बहुत छोटा टुकड़ा।
**चिधरना** क्रि० (हि) चीथना।
**चिपाजी** पुं० (सं) एक तरह का बनमानुस।
**चि०** हिन्दी में चिरंजीव का संक्षिप्त रूप।
**चिउड़ा** पुं० (हि) हरे धान को कूटकर बनाया हुआ चिपटा चावल।
**चिक** स्त्री० (तु) बांस की तीलियों का परदा। चिलमन।
**चिकट** वि० (हि) दे० 'चीकट'।
**चिकटना** क्रि० (हि) जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।
**चिकटा** वि० दे० 'चीकट'।
**चिकन** पुं० (फा) एक तरह का सूती कपड़ा जिसपर सूई से बेल-बूटे बने होते हैं।
**चिकना** वि० (हि) १-जो खुरदरा न हो। २-स्निग्ध। ३-खुशामदी। ४-प्रेमी। पु० तेल, घी आदि स्निग्ध पदार्थ।
**चिकनाई** स्त्री० (हि) चिकनाहट। स्निग्धता।
**चिकनाना** क्रि० (हि) १-चिकना करना। २-स्निग्ध करना। ३-सँवारना। ४-चिकना या स्निग्ध होना।
**चिकनापन** पु० (हि) चिकनाहट।
**चिकनावट, चिकनाहट** स्त्री० (हि) चिकना होने का

भाव। चिकनाई।
**चिकनिया** *वि०* (हि) छैला।
**चिकनी-मिट्टी** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार की लसीली मिट्टी।
**चिकनी-सुपारी** *स्त्री०* (हि) उबाली हुई चिपटी सुपारी
**चिकर** पु० (हि) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
**चिकरना** *क्रि०* (हि) चिंघाड़ना।
**चिकवा** पु० (हि) १-बकरकसाब। कसाई। २-चिक ३-एक तरह का रेशमी कपड़ा।
**चिकार** पुं० (हि) चिंघाड़।
**चिकारना** *क्रि०* (हि) १-जोर से बोलना। गरजना। २-हाथी का चिंघाड़ना।
**चिकारा** पु० (हि) [*स्त्री०* चिकारी] १-सारंगी जैसा एक बाजा। २-हिरन की जाति का एक पशु।
**चिकारी** *स्त्री०* (हि) चीत्कार।
**चिकित्सक** पुं० (स) इलाज करने वाला। वैद्य।
**चिकित्सन** *वि०* (सं) चिकित्सा या चिकित्सक से सम्बद्ध। (मेडिकल)।
**चिकित्सन-प्रमाणक** पु० (सं) अस्वस्थता आदि का चिकित्सक द्वारा दिया गया प्रमाण-पत्र। (मेडिकल-सार्टिफिकेट)।
**चिकित्सन-वैचारिक-विज्ञान** पु० (सं) चिकित्सा सम्बन्धी मूल सिद्धान्तों या तत्वों का विवेचन न करने वाला। शास्त्र या विज्ञान। (मेडिकल-ज्यूरिस-प्रूडेन्स)।
**चिकित्सा** *स्त्री०* (सं) १-रोग निवारण के उपाय। इलाज। २-औषधोपचार।
**चिकित्सा-अधिकारी** पुं० (स) राजकीय विभाग या नगरपालिका आदि में लोगों की चिकित्सा की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (मेडिकल-ऑफीसर)।
**चिकित्सालय** पुं० (सं) रोगियों की चिकित्सा का स्थान। अस्पताल।
**चिकित्सावकाश** पु० (सं) किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के निमित्त मिलने वाली छुट्टी।
**चिकित्साशास्त्र** पुं० (सं) चिकित्सा के सब अंगों का विवेचन करने वाला शास्त्र। आयुर्वेद।
**चिकित्सित** *वि०* (सं) जिसकी चिकित्सा की गई हो।
**चिकित्स्य** *वि०* (स) चिकित्सा के योग्य। साध्य।
**चिकुटी** *स्त्री०* (हि) चिकोटी। चुटकी।
**चिकुर** पु० (स) १-सिर के बाल। केश। २-पर्वत। ३-रेंगने वाले जन्तु। ४-गिलहरी। ६-छछूँदर।
**चिकोटी** *स्त्री०* दे० 'चुटकी'।
**चिक्क-चाक** *वि०* (हि) चमकीला।
**चिक्कट** *वि०* दे० 'चीकट'। पु० जमा हुआ मैल।
**चिक्कण** *वि०* (सं) चिकना।
**चिक्कणी** *स्त्री०* (सं) चिकनी सुपारी।
**चिक्करना** *क्रि०* (हि) चिंघाड़ना।
**चिक्कार** पुं० (हि) चिंघाड़।
**चिखना** पु० (हि) शराब पीते समय खाई जाने वाली चाट।
**चिखाई** *स्त्री०* (हि) १-चीखने की क्रिया या भाव। २-चखने की क्रिया या भाव। ३-चीखने या चखने की उजरत।
**चिखुरन** *स्त्री०* (हि) वह घास जो खेत को साफ करने के लिए निकाली जाती है।
**चिखुरना** *क्रि०* (देश) जोते हुए खेत में से घास निकाल कर बाहर करना।
**चिखुरा** पुं० (हि) (*स्त्री०* चिखुरी) गिलहरी।
**चिचड़ा** पु० (हि) लटजीरा नामक पौधा। अपामार्ग
**चिचड़ी** *स्त्री०* (हि) किलनी।
**चिचान** पुं० (हि) बाज नामक पक्षी।
**चिचाना** *क्रि०* (हि) चिल्लाना।
**चिचोड़ना** *क्रि०* (हि) चचोड़ना।
**चिजारा** पुं० (हि) राज। मेमार।
**चिट** *स्त्री०* (हि) १-कागज का छोटा टुकड़ा। पुरजा २-कपड़े की धज्जी।
**चिटकना** *क्रि०* (हि) १-रूक्षता या गरमी के कारण ऊपरी तल का तड़कना। २-जगह-जगह से फटना ३-गठीली लकड़ी का जलने समय 'चिट-चिट' शब्द उत्पन्न करना। ४-चिढ़ना। ५-कली का फूट-कर खिलना।
**चिटक** *वि०* (हि) चीकट। *स्त्री०* (हि) चीकटने की क्रिया या भाव
**चिटका** पुं० (हि) चिता।
**चिटकाना** *क्रि०* (हि) १-तड़काना। २-चिढ़ाना। ३-'चिट-चिट' शब्द उत्पन्न करना।
**चिट-नवीस** पुं० (हि) लेखक। मुहर्रिर।
**चिटनीस** पुं० दे० 'चिट-नवीस'।
**चिटुकी** *स्त्री०* (हि) चुटकी।
**चिट्टा** *वि०* (हि) [*स्त्री०* चिट्टी] सफेद। पुं० झूठा बढ़ावा।
**चिट्ठा** पुं० (हि) १-आय-व्यय का हिसाब। लेखा। २-सालभर की हानि लाभ का पत्रक। ३-सिलसिलेवार सूची या विवरण। ४-मजदूरी या वेतन में बाँटा जाने वाला धन।
**चिट्ठी** *स्त्री०* (हि) १-खत। पत्र। २-पुरजा। रुक्का।
**चिट्ठी-पत्री** *स्त्री०* (हि) पत्र व्यवहार।
**चिट्ठीरसाँ** पुं० (हि) चिट्ठी बाँटने वाला। डाकिया।
**चिड़चिड़ा** *वि०* (हि) जो जरासी बात पर चिढ़ जाय।
**चिड़चिड़ाना** *क्रि०* (हि) १-चिढ़ना। झुँझलाना। २-चिटकना।
**चिड़चिड़ापन** पु० (हि) तुनकमिजाजी।
**चिड़वा** पु० (हि) चिउड़ा।
**चिड़ा** पु० (हि) गौरवा। चटक।

**चिड़िया** स्त्री० (हि) परों से उड़ने वाला दो पैर का पक्षी। पंछी। पखेरू।
**चिड़िया-खाना, चिड़िया-घर** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ नाना प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिए रखे जाते हैं।
**चिड़िहार** पुं० (हि) चिड़ीमार। बहेलिया।
**चिड़ीमार** पु० (हि) चिड़िया पकड़ने वाला। बहेलिया।
**चिड़ौला** पुं० (हि) चिड़िया का छोटा बच्चा।
**चिढ़** स्त्री० १-चिढ़ने का भाव। खीझ। २-नाराजगी ३-नफरत।
**चिढ़कना** क्रि० (हि) चिढ़ना।
**चिढ़ना** क्रि० (हि) १-नाराज होना। २-द्वेष रखना।
**चिढ़वाना** क्रि० (हि) दूसरे से चिढ़ाने का काम कराना।
**चिढ़ाना** क्रि० (हि) १-नाराज करना। २-किसी के खिजाने के लिए मुँह बनाना। ३-उपहास करना।
**चित्** स्त्री० (सं) चैतन्य। ज्ञान।
**चित** वि० (सं) चुनकर इकट्ठा किया हुआ। पुं० (हि) १-चित्त। मन। २-चितवन। वि० (हि) मुँह के बल पड़ा हुआ। क्रि० वि० (हि) पीठ के बल।
**चितउन** स्त्री० (हि) चितवन।
**चितउर** पुं० (हि) चितौड़।
**चितकबरा** वि० (हि) (स्त्री० चितकबरी) दूसरे-दूसरे रंग के धब्बों वाला। चितला।
**चितकूट** पु० (हि) चित्रकूट।
**चितगुप्ति** पुं० (हि) चित्रगुप्त।
**चित-चोर** पुं० (हि) चित्त को चुराने वाला। मन-भावना। प्रिय। मनोहर।
**चितभंग** पुं० (हि) १-जी न लगना। उचाट। २-मतिभ्रम।
**चितरना** क्रि० (हि) चित्रित करना। चित्र बनाना।
**चितरवा, चितरोरव** पुं० (हि) एक लाल रङ्ग की चिड़िया।
**चितला** वि० (हि) चितकबरा। कबरा।
**चितवन** स्त्री० (हि) किसी की ओर देखने का ढंग। दृष्टि।
**चितवना** क्रि० (हि) देखना।
**चितवनि** स्त्री० (हि) चितवन। दृष्टि।
**चितसार, चितसारी** स्त्री० (हि) चित्र-शाला।
**चिता** स्त्री० (सं) १-चुनी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है। २-श्मशान।
**चिताना** क्रि० (हि) १-सचेत करना। २-याद दिलाना ३-आत्मबोध कराना। ४-आग सुलगाना। ५-चित्रित होना या करना।
**चितारना** क्रि० (हि) १-चित्रित करना। २-ध्यान में लाना।
**चितावन, चितावनी** स्त्री० (हि) चेतावनी।
**चिति** स्त्री० (सं) १-चिता। २-समूह। ३-चयन। ४-चैतन्य। ५-चितशक्ति। ६-दुर्गा।
**चितेरा** पुं० (हि) (स्त्री० चितेरन, चितेरी) चित्रकार। वि० चित्रित।
**चितैना** क्रि० (हि) देखना।
**चितौन** स्त्री० (हि) चितवन।
**चितौना** क्रि० (हि) देखना।
**चितौनी** स्त्री० (हि) चितवन।
**चित्कार** पुं० (हि) चीत्कार।
**चित्त** पुं० (सं) अन्तःकरण। मन। दिल।
**चित्तज, चित्तजन्मा** पुं०(सं) कामदेव।
**चित्त-निवृत्ति** स्त्री० (सं) १-सुख। २-संतोष।
**चित्त-भंग** पुं० (सं) चित्त की चंचलता जिससे मन एकाग्र नहीं होता।
**चित्तभू** पुं० (सं) कामदेव।
**चित्तभूमि** स्त्री० (सं) चित्त की (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त एकाग्र और निरुद्ध) अवस्थाएँ।
**चित्तर** पुं० (हि) चित्र।
**चित्तरसारी** स्त्री० (हि) चित्रशाला।
**चित्त-विकृति** स्त्री० (सं) मानसिक सदोषता।
**चित्तविक्षेप** पुं०(सं) चित-भंग। चित्त की अस्थिरता।
**चित-विभ्रंश, चित्त-विभ्रम** पुं० (हि) १-भ्रांति। २-उन्माद।
**चित्त-वृत्ति** स्त्री० (सं) चित्त की अवस्था या गति।
**चित्त-वृत्ति-निरोध** पुं० (सं) चित्त को बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुख करना।
**चित्त-विश्लेषण** पुं० (सं) चित्त की अवस्था का पता लगाना।
**चित्त-विश्लेषण-विज्ञान** पुं० (सं) मनोविज्ञान।
**चित्ताकर्षक** वि० (सं) मन को खींचने या लुभाने वाला।
**चित्ती** स्त्री० (हि) १-छोटा धब्बा। २-जूआ खेलने की एक प्रकार की चिपटी कौड़ी।
**चित्तौड़, चित्तौर** पुं० (हि) उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी।
**चित्र** पुं० (सं) १-रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति। तसवीर। २-प्रतिकृति (फोटो)। ३-मस्तक पर चन्दन आदि का चिह्न। ४-सजीव और विस्तृत विवरण। ५-अलंकार का भेद। ६-काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग की दक प्रधानता नहीं रहती। ७-आकाश। वि० १-अद्भुत २-रंग-बिरंगा।
**चित्रक** पुं० (सं) १-तिलक। २-चित्रकार। ३-चीता ४-चीता नामक औषध।
**चित्रकला** स्त्री० (सं) चित्र बनाने की विद्या।
**चित्रकार** पुं० (सं) चित्र बनाने वाला। चितेरा।
**चित्रकारी** स्त्री० (हि) चित्रकार का काम।

**चित्रकाव्य** पुं० (सं) एक प्रकार का काव्य जिसके अक्षरों को क्रम विशेष से लिखने से कोई चित्र बन जाता है।
**चित्रकूट** पुं० (सं) बांदा जिले का एक पर्वत जिसपर बनवास काल में राम सीता कई वर्ष रहे।
**चित्रगुप्त** पुं० (सं) प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखने वाला एक यम।
**चित्रजल्प** पुं० (सं) वह अभिप्रायगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठ कर एक दूसरे के प्रति कहते हैं।
**चित्रण** पुं० (सं) चित्र या तस्वीर बनाना।
**चित्रतल** पुं० (सं) वह तल (सतह) जिस पर चित्र अंकित हो।
**चित्रना** क्रि० (हि) चित्र बनाना।
**चित्रपट** पुं० (सं) (स्त्री० चित्रपटी) १-वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर चित्र बनाये जाते हैं। चित्राधार। २-सिनेमा की फिल्म।
**चित्र-पुत्री** स्त्री० (सं) पुतली।
**चित्र-फलक** पुं० (सं) काठ, हाथी दाँत आदि की पटिया जिस पर चित्र अंकित किया जाय।
**चित्रमय** वि० (सं) सचित्र।
**चित्रल** वि० (सं) चितकबरा।
**चित्र-लिखित** वि०(हि) १-चित्रित। २-गतिहीन। ३-मूक।
**चित्र-लिपि** स्त्री० (सं) वह लिपि जिसमें अक्षरों के स्थान पर सांकेतिक चित्र काम में लाये जायँ।
**चित्रलेखक, चित्रवंत** पुं०= चित्रकार।
**चित्रलेखा** स्त्री०(सं) १-एक वर्ण वृत्त। २-चित्र बनाने की कूँची। ३-बाणासुर की कन्या।
**चित्र-वर्धक** पुं० (सं) छोटी प्रतिकृतियां (फोटो) से बड़े चित्र तैयार करने का यंत्र। (एनलारजर)।
**चित्र-विचित्र** वि० (सं) १-रंग-बिरंगा। २-बेलबूटेदार। ३-अनेक प्रकार का।
**चित्र-विद्या** स्त्री० (सं) चित्रकला।
**चित्र-शाला** स्त्री० (सं) १-वह भवन या मंडप जिसमें (चित्र कला का प्रदर्शन करने के लिए) बहुत सारे चित्र लगाकर रक्खे गये हों। (पिक्चर-गैलरी)। २-वह स्थान जहाँ चित्र बनाये जायँ। (स्टूडियो)। ३-रङ्गशाला। ४-चित्रों से सजा हुआ घर।
**चित्रसभा** स्त्री० (सं) चित्रशाला।
**चित्र-सामग्री** स्त्री० (सं) चित्र बनाने में काम आने वाली सामग्री।
**चित्रसारना** क्रि० (हि) १-चित्रित करना। २-रङ्ग भरना। ३-बेल बूटे बनाना।
**चित्रसारी** स्त्री० (हि) १-चित्रशाला। २-रङ्गमहल। ३-चित्रकारी।
**चित्रस्थल** वि० (सं) १-चित्र में बनाया हुआ। २-चित्रित वस्तु के समान निस्तब्ध या निश्चल।
**चित्रांगद** पुं० (सं) १-गंधर्व का नाम। २-राजा शान्तनु के एक पुत्र।
**चित्रा** स्त्री० (सं) १-सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। २-ककड़ी या खीरा।
**चित्राधार** पुं० (सं) १-चित्र-पट। २-चित्र सुरक्षित रखने की किताब। (एलबम)।
**चित्रालंकार** स्त्री० (हि) एक अलंकार।
**चित्रालय** पुं०(सं) दे० 'चित्रशाला' (१)।
**चित्रिणी** स्त्री० (सं) कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक।
**चित्रित** वि० (सं) १-चित्र में खींचा हुआ। २-जिसपर चित्र बना हो। ३-वर्णित। ४-अंकित।
**चित्रोक्ति** स्त्री० (सं) अलंकृत भाषा में कही हुई बात
**चित्रोत्तर** पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर हो या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो।
**चिथड़ा** पुं० (हि) फटा-पुराना कपड़ा।
**चिथड़िया** वि० (हि) चिथड़े वाला। गुदड़िया।
**चिथाड़ना** क्रि० (हि) १-चीरना। फाड़ना। २-अपमानित करना।
**चिद** पुं० (हि) चैतन्य। जीवधारी।
**चिदाकाश** पुं० (सं) १-चैतन्य। २-आकाश। ३-परमात्मा।
**चिदात्मा, चिदानंद** पुं०(सं) ब्रह्म।
**चिदाभास** पुं० (सं) १-चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिम्ब जो मनुष्य के अन्तःकरण पर पड़ता है। २-जीवात्मा। ३-ज्ञान। ४-ज्ञान का प्रकाश।
**चिद्रूप** पुं० (सं) ज्ञानमय परमात्मा। ईश्वर।
**चिद्विलास** पुं० (सं) चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया।
**चिन** पुं० (देश) एक सदाबहार वृक्ष।
**चिनक** पुं० (हि) जलन-युक्त पीड़ा।
**चिनग** पुं० (हि) मूत्र नाली की जलन और पीड़ा। जलन।
**चिनगटा** पुं० (हि) चिथड़ा।
**चिनगना** क्रि० (हि) १-टीसना। २-जलन होना। ३-चिल्लाना।
**चिनगारी** स्त्री० (हि) आग का छोटा कण या टुकड़ा
**चिनकी** स्त्री० (हि) १-चिनगारी। २-नटखट लड़का
**चिनचिनाना** क्रि० (हि) चीखना। चिल्लाना।
**चिनना** क्रि० (हि) चुनना।
**चिनाना** क्रि० (हि) चुनवाना। जोड़ाई कराना।
**चिनिया** वि० (हि) १-चीनी का बना। २-चीनी के रंग का। सफेद। ३-छोटा। ४-चीन सम्बन्धी।
**चिनिया-केला** पुं० (हि) एक तरह का छोटा केला।
**चिनिया-बादाम** पुं० (हि) मूंगफली।
**चिनिया-बेगम** स्त्री० (हि) अफीम।

**चिनौटिया** वि० (हिं) १-चुनट पड़ा हुआ। २-चुना हुआ।
**चिन्मय** वि० (सं) ज्ञानमय। पुं० (सं) ईश्वर।
**चिन्ह** पु० दे० 'चिह्न'।
**चिन्हवाना** क्रि० (हि) पहचान कराना।
**चिन्हाना** क्रि० (हि) पहचनवाना। परिचित कराना
**चिन्हानी** स्त्री० (हि) १-निशानी। २-स्मारक। ३-रेखा लकीर।
**चिन्हार** वि० (हिं) परिचित।
**चिन्हारी** स्त्री० (हि) परिचय।
**चिपकना** क्रि० (हि) १-दो वस्तुओं का आपस में जुड़ना या सटना। २-चिपटना।
**चिपकाना** क्रि० (हिं) १-चस्पाँ करना। चिपटाना। २-लिपटाना।
**चिपचिप** पुं० (हिं) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शब्द।
**चिपचिपा** वि० (हिं) चिपकने वाला। लसदार।
**चिपचिपाना** क्रि० (हिं) लसदार जान पड़ना।
**चिपचिपाहट** स्त्री० (हि) लसीलापन।
**चिपटना** क्रि० (हि) चिमटना। चिपटना।
**चिपटा** वि० (हि) (स्त्री० चिपटी) जिसकी सतह उठी हुई न हो।
**चिपटाना** क्रि० (हिं) १-चिपकाना। २-लिपटाना। आलिंगन करना।
**चिपड़ा, चिपड़ाहा** वि० (हिं) जिसकी आँख में कीचड़ हो।
**चिपड़ी, चिपरी** स्त्री० (हि) गोबर का उपला।
**चिप्पक** वि० (हि) छिछला। पुं० एक तरह का पक्षी।
**चिप्पड़** पुं० (हि) १-छोटा चिपटा टुकड़ा। २-सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छाल।
**चिप्पा** पुं० (हि) पैबन्द। जोड़।
**चिप्पिका** स्त्री० (सं) एक तरह की चिड़िया।
**चिप्पी** स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-उपली। गोहँटी। ३-वह बटखरा जिससे सीधा तोला जाता है।
**चिबावला** पुं० (हि) लड़कपन।
**चिबिल्ला** वि० (हि) चिलबिला। नटखट।
**चिबुक** पुं० (सं) ओठ के नीचे का भाग। ठोड़ी।
**चिमगादड़** पुं० दे० 'चमगादड़'।
**चिमचिमा** पुं० (हि) तेल का मैल।
**चिमटना** क्रि० (हि) १-चिपकना। सटना। २-आलिंगन करना। लिपटना। ३-गुथना। ४-पीछा न छोड़ना।
**चिमटा** पुं० (हि) [स्त्री० चिमटी] एक धातु की पट्टी को मोड़कर बनाया हुआ औजार जिससे जलते अंगारे आदि उठाये जाते है।
**चिमटाना** क्रि० (हिं) १-चिपटाना। चिपकाना। २-लिपटाना।
**चिमटी** स्त्री० (हि) छोटा चिमटा।
**चिमड़ा** वि० (हि) चीमड़। कड़ा।
**चिमड़ी** स्त्री० (हि) शुष्क। कड़ी।
**चिमनी** स्त्री० (अं) १-लैम्प या लालटेन का शीशा। २-किसी मकान के ऊपर का वह छेद जिससे धुंआ बाहर निकलता है।
**चिमिकना** क्रि० (हि) चमकना।
**चिमोटी** स्त्री० (हि) १-चमोटी। २-चिमटी।
**चिरंजीव, चिरंजीवी** वि०=दीर्घायु हो (आशीर्वाद का शब्द)।
**चिरंटी** वि० (सं) युवती।
**चिरंतन** वि० (सं) १-पुरातन। पुराना। २-हमेशा बना रहने वाला। शाश्वत।
**चिर** वि० (सं) दीर्घ (काल) बहुत (समय)। क्रि० वि० (हि) बहुत दिनों तक।
**चिरई** स्त्री० (हि) चिड़िया।
**चिरकना** क्रि० (हि) थोड़ा सा पर पतला मल निकलना।
**चिरकाल** पुं० (सं) दीर्घकाल।
**चिरकालिक, चिरकालीन** वि० (सं) बहुत दिनों का। पुराना।
**चिरकुट** पुं० (हि) चिथड़ा।
**चिरगा** पुं० (हि) एक तरह का घोड़ा।
**चिरचिटा** पुं० (देश) चिचड़ा। अपामार्ग। एक तरह की घास।
**चिरचिरा** वि० (हिं) चिड़चिड़ा। पुं० (हिं) चिचड़ा।
**चिर-जीवक** पुं० (सं) १-दीर्घजीवी। २-एक वृक्ष।
**चिर-जीवन** पु० (सं) सदा बना रहने वाला जीवन। अमर-जीवन।
**चिरजीवी** वि० (स) १-दीर्घायु। २-अमर।
**चिरता** पुं० (हि) चिलता (कवच)।
**चिरना** क्रि० (हि) १-सीध में कटना। २-लकीर के रूप में घाव होना।
**चिर-निद्रा** स्त्री० (सं) मृत्यु। मौत।
**चिर-परिचित** वि० (सं) १-जिससे पहले से परिचय हो। २-जाना-बूझा।
**चिरम, चिरमिटी, चिरमी** स्त्री० (देश) घुँघची। गुंजा।
**चिरवाई** स्त्री० (हिं) १-चिरवाने का काम उजरत। २-पानी बरसने के बाद खेत की पहली जुताई।
**चिरवाना** क्रि० (हि) चीरने का काम कराना।
**चिर-स्थायी** वि० (हिं) बहुत दिनों तक बना रहने वाला।
**चिर-स्मरणीय** वि० (सं) १-बहुत दिनों तक याद रखने योग्य। २-पूजनीय।
**चिरहुँटा** पुं० (हि) बहेलिया।

**चिर-समाधि** स्त्री० (स) मृत्यु।
**चिराई** स्त्री० (हि) चिराने का काम या मजदूरी।
**चिराक, चिराग** पुं०=दीपक। दीया।
**चिरागदान** पुं० (फा) दीयट।
**चिरातन** वि० (हि) पुरातन। पुराना।
**चिराना** क्रि०(हि)१-चीरने का काम दूसरे से कराना। २-चिरना। वि० (हि) १-पुराना। २-जीर्ण।
**चिरायंध** स्त्री० (हि) चमड़े या मास के जलने से होने वाली बदबू।
**चिरायता** पु० (हि) एक पौधा जो दवा के काम में आता है।
**चिरायु** वि० (हि) दीर्घायु।
**चिरारी** स्त्री० (हि) चिरौंजी।
**चिरिया** स्त्री० (हि) १-चिड़िया। २-वर्षा का नक्षत्र।
**चिरिहार** पुं० (हि) चिड़ीमार।
**चिरी** स्त्री० (हि) चिड़िया।
**चिरैया** वि० (हि) चीरने वाला। स्त्री० (हि) चिड़िया
**चिरौंजी** स्त्री०(हि) पायल नामक वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी।
**चिरौरी** स्त्री० (हि) अनुनय-विनय। खुशामद।
**चिर्री** स्त्री० (हि) वज्र। बिजली।
**चिलक** स्त्री० (हि) १-आभा। कांति। २-टीस। चमक
**चिलकई** स्त्री० (हि) चमक।
**चिलकना** क्रि० (हि) १-चमचमाना। २-टीसना।
**चिलकाई** स्त्री० (हि) १-चमक। २-उतार-चढ़ाव। ३-उत्तेजना।
**चिलकाना** क्रि० (हि) चमकाना।
**चिलकी** वि० (हि) बहुत चमकता हुआ।
**चिलगोजा** पुं० (फा) एक तरह का मेवा।
**चिलचिल** पु० (हि) अभ्रक। भोड़ल।
**चिलचिलाना** क्रि० (हि) शोर मचाना।
**चिलड़ा** पु० (देश) एक नमकीन पकवान।
**चिलता** पुं० (हि) एक तरह का कवच।
**चिलबिल** पुं० (हि) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।
**चिलबिला, चिलबिल्ला** वि० (हि) [स्त्री० चिलबिली, चिलबिल्ली]। चपल। चंचल।
**चिलम** वि० (फा) मिट्टी का वह बरतन जिसमें हुक्का रखकर तम्बाकू पीते हैं।
**चिलमची** स्त्री० (तु०) हाथ धोने का देग के आकार का पात्र।
**चिलमन, चिलवन** स्त्री० (फा) बाँस की तीलियों का परदा। चिक।
**चिलमबरदार** पुं० (फा) चिलम भरने वाला नौकर।
**चिलमबरदारी** स्त्री० (फा) चिलम भरने का काम।
**चिलवाँस** पुं० (हि) चिड़िया फँसाने का फंदा।
**चिलहुला** वि० (हि) पंकिल। कीचड़भरा।
**चिलहोरना** क्रि० (हि) खोंसना। ठोकराना।
**चिलिक, चिलिम** स्त्री० (हि) चिलक। दर्द।
**चिल्लड़** पुं० (हि) जूँ की तरह का एक सफेद कीड़ा।
**चिल्ल-पों** स्त्री० (हि) चिल्लाहट।
**चिल्ला** पुं० (फा) १-चालीस दिन का समय। २-चालीस दिन का मुसलमानी व्रत। ३-प्रत्यंचा।
**चिल्लाना** क्रि० (हि) हल्ला करना।
**चिल्लाहट** स्त्री० (हि) १-चिल्लाने का भाव। २-हल्ला
**चिल्लिका** स्त्री०(हि) १-दोनों भौंहों के मध्य का स्थान २-झिल्ली। झींगुर। धूम।
**चिल्ली** स्त्री०(स)१-झिल्ली नामक कीड़ा। २-बिजली
**चिल्ही** स्त्री० (हि) चील (पक्षी)।
**चिव** स्त्री० (सं) चिबुक। ठोढ़ी।
**चिविट** पु० (सं) चिउड़ा। चिड़वा।
**चिहुंकना** क्रि० (हि) चिकना।
**चिहुंटना** क्रि० (हि) १-चुटकी काटना। २-चिमटना। लिपटना।
**चिहुंटी** स्त्री० (हि) चुटकी।
**चिहुर** पु० (सं) चिकुर। केश। बाल।
**चिह्न** पु० (स) १-निशान। २-पताका। ३-दाग। धब्बा।
**चिह्नित** वि० (सं) चिह्न किया हुआ।
**चीं-चपड़** स्त्री० (हि) विरोध में कुछ कहना।
**चींटवा, चींटा** पुं० (हि) चिउँटा। च्यूँटा।
**चींटी** स्त्री० (हि) चिउँटी।
**चीतना** क्रि० (हि) १-चित्रना। २-चिंतन करना।
**चींथना** क्रि० (हि) नोचकर फाड़ना।
**चीक** स्त्री० (हि) १-चिल्लाहट। २-चीत्कार। पुं० (हि) १-कसाई। २-कीचड़।
**चीकट** पुं० (हि) १-तेल का मैल। २-एक प्रकार का कपड़ा। वि० (हि) बहुत मैला।
**चीकड़** पुं० (हि) कीचड़।
**चीकन** वि० (हि) चिकना।
**चीकना** क्रि० (हि) १-जोर से चिल्लाना। २-जोर से बोलना।
**चीकर** पुं० (देश) कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान।
**चीकू** पु० (देश) एक गूदेदार मीठा फल।
**चीख** स्त्री० (हि) चीत्कार। चिल्लाहट।
**चीखना** क्रि० (हि) चिल्लाना। २-चखना।
**चीखर, चीखल** पुं० (हि) कीचड़।
**चीखुर** पुं० (हि) (स्त्री० चीखुरी) गिलहरी।
**चीज** स्त्री० (फा) १-वस्तु। पदार्थ। द्रव्य। २-गीत। ३-अलंकार। गहना। ४-अद्भुत या महत्व की वस्तु या बात।
**चीठ** स्त्री० (हि) मैल। मैला।
**चीठा** पुं० (हि) चिट्ठा।
**चीठी** स्त्री० (हि) चिट्ठी।
**चीढ़** पुं० (हि) एक वृक्ष का नाम।

**चीड़ा** पुं० (हिं) काँच की गुरिया या मनका।
**चीढ़** पुं० (हिं) एक वृक्ष। चीढ़।
**चीत** पुं० (हिं) १-चित्त। मन। २-चित्रा नक्षत्र। स्त्री० (हिं) चेतना।
**चीतना** क्रि० (हिं) १-मन में सोचना या विचारना २-चेतना।
**चीतर** पुं० (हिं) १-चीतल। २-चित्र।
**चीता** पुं० (हिं) १-एक हिंसक पशु जिसकी खाल पर काली और पीली धारियाँ होती हैं। २-औषध के प्रयोग में आने वाला एक वृक्ष। वि० सोचा हुआ।
**चीतावती** स्त्री० (हिं) १-यादगार। २-स्मारक चिह्न। निशानी।
**चीत्कार** पुं० (सं) चीख। चिल्लाहट।
**चीथड़ा** पुं० (हिं) चिथड़ा।
**चीथना** क्रि० (हिं) फाड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना।
**चीथरा** पुं० (हिं) चिथड़ा।
**चीन** पुं० (सं) १-एशिया का एक प्रसिद्ध देश। २-झंडी। पताका। ३-एक तरह का रेशमी कपड़ा।
**चीन की दीवार** स्त्री० (हिं) १-चीन देश की डेढ़ हजार मील लम्बी दीवार जिसका निर्माण दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था और जो विश्व की सात आश्चर्य जनक वस्तुओं में गिनी जाती है। २-बहुत बड़ी बाधा या अड़चन।
**चीनना** क्रि० (हिं) चीन्हना। पहचानना।
**चीनांशुक** पुं० (सं) १-चीन देश में बनाने या चीन से आने वाला रेशमी वस्त्र। २-रेशमी कपड़ा।
**चीना** वि०(हिं) चीनदेश का। पुं० एक तरह का कपूर
**चीना-बादाम** पुं० (हिं) मूँगफली।
**चीनिया** वि० (हिं) चीन का। चीन सम्बन्धी।
**चीनी** स्त्री० (हिं) १-दानेदार शक्कर। २-चीन देश की भाषा। पुं० चीन देश का निवासी। वि० चीन देश का।
**चीनी-चंपा** पुं० (देश) एक प्रकार का उत्तम केला।
**चीनी-मिट्टी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिससे बरतन बनाये जाते हैं।
**चीन्हना** क्रि० (हिं) पहचानना।
**चीन्हा** पुं० (हिं) १-चिह्न। २-परिचय।
**चीप** पुं० (हिं) १-चिप्पड़। २-चेप।
**चीपड़** पुं० (हिं) आँख का कीचड़।
**चीफ जस्टिस** पुं०(ग्रं)उच्च न्यायालय का न्यायाधीश
**चीमड़, चीमर** वि० (हिं) जो खींचने या मोड़ने से न टूटे। चिमड़ा।
**चीयाँ** पुं० (हिं) इमली का बीज।
**चीर** स्त्री०(हिं)१-चीरने का काम या भाव। २-चीरने से बनी दरार। पुं० (सं) १-वस्त्र। २-पेड़ की छाल ३-चिथड़ा। ४-भिक्षुओं का पहनावा।
**चीरक** पुं०(सं) १-लेख्य। २-मुट्ठे जैसा लपेटा हुआ लम्बा कागज।
**चीर-घर** पुं० (हिं) वह स्थान जहाँ दुर्घटना में मृत-व्यक्तियों के शव को चीर फाड़कर उनकी मृत्यु का कारण ज्ञात किया जाता है। (मॉर्टुअरी)।
**चीरचरम** पुं० (हिं) बाघंबर। मृगछाला।
**चीरना** क्रि० (हिं) १-फाड़ना। २-विदीर्ण करना।
**चीर-फाड़** स्त्री० (हिं) १-चीरने फाड़ने का काम। २-अस्त्र-चिकित्सा। शल्यक्रिया।
**चीरवासा** पुं० (हिं) १-शिव। २-यक्ष।
**चीरा** पुं० (हिं) १-चीरने का घाव। २-लहरियादार कपड़ा। ३-गाँव की सीमा पर गड़ा पत्थर।
**चीरिका** स्त्री० (सं) झिल्ली। झींगुर।
**चीरी** स्त्री० (हिं) १-चिड़िया। २-चिट्ठी। पत्र।
**चीर्ण** वि० (सं) चिरा हुआ। फटा हुआ।
**चील** स्त्री० (हिं) बाज की जाति की एक चिड़िया।
**चील-झपट्टा** पुं० (हिं) १-किसी वस्तु को चील के समान झपट्टा मार कर छीन लेना। २-बच्चों का एक खेल।
**चीलड़, चीलर** पुं० दे० 'चिल्लड़'।
**चीलिका** स्त्री० (सं) झींगुर। झिल्ली।
**चीलू** पुं० (सं) एक पहाड़ी मेवा जो आड़ू के समान होता है।
**चील्ह** स्त्री० (हिं) चील नामक पक्षी।
**चील्ही** स्त्री० (देश) एक प्रकार का मंत्रोपचार। टोटका
**चीवर** पुं० (सं) साधु, संन्यासियों के पहनने का वस्त्र
**चीस** स्त्री० (हिं) टीस।
**चीह** स्त्री० (हिं) चीत्कार। चिल्लाहट।
**चुँगना** क्रि० (हिं) चुगना।
**चुंगल** पुं० (हिं) दे० 'चगुल'।
**चुंगी** स्त्री० (हिं) १-चुङ्गल या चुटकी भर वस्तु। २-वह महसूल जो बाहरी माल पर शहर में प्रवेश करने पर लिया जाता है।
**चुंगी-घर** पुं० (हिं) नगर के बाहर बनी वह चौकी जहाँ पर बाहर से आने वाले माल पर कर लिया जाता है।
**चुँघाना** क्रि० (हिं) चुसाना।
**चुंडा** पुं० (हिं) १-सिर के बाल। २-चोटी। पुं० (सं) कूँआ।
**चुंडित** वि० (हिं) चुटिया या चुन्दी वाला।
**चुंडी** स्त्री० (हिं) चुन्दी। चुटिया।
**चुँदरी** स्त्री० (हिं) चुनरी।
**चुंदी** स्त्री० (हिं) शिखा। चोटी। चुटिया।
**चुंधलाना** क्रि० (हिं) चौंधियाना।
**चुंधा** वि० (हिं) [स्त्री० चुंधी] १-क्षीण दृष्टि वाला। २-छोटी आँखों वाला।
**चुंधियाना** क्रि० (हिं) चौंधना। चौंधियाना।
**चुंबक** पुं० (सं) १-चुम्बन करने वाला। २-मन्थों

को इधर-उधर उलटने वाला। ३-वह धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।

**चुंबकत्व** पुं० (सं) १-चुम्बक का गुण। २-आकर्षण शक्ति।

**चुंबकीय** वि० (सं) १-जिसमें चुम्बक का गुण हो। २-चुम्बक सम्बन्धी।

**चुंबन** पुं० (सं) १-चूमना। २-चुम्मा। बोसा। ३-स्पर्श।

**चुंबना** क्रि० (हि) चूमना।

**चुंबित** वि० (सं) १-चूमा हुआ। २-जो किसी से छुआ हो। स्पृश्य।

**चुंबी** वि० (हि) १-चूमने वाला। २-छूने वाला।

**चुभना** क्रि० (हि) चुभना।

**चुग्रना** क्रि० (हि) चूना। रिसना।

**चुग्राई** स्त्री० (हि) चूने या चुआने का काम, भाव या उजरत।

**चुग्राना** क्रि० (हि) १-टपकाना। २-भभके से अर्क खींचना। ३-चुपड़ना। पु० १-पानी का गड्ढा। २-नहर या खाई।

**चुग्राव** पुं० (हि) चुआने का काम या भाव।

**चुकंदर** (फा) गाजर जैसा एक कन्द।

**चुक** पुं० (हि) चूक।

**चुकचुकाना** क्रि० (हि) १-पसीजना। २-किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर आना।

**चुकटा, चुकटी** स्त्री० (हि) चुटकी।

**चुकता, चुकती** वि० (हि) बेबाक। निःशेष। अदा।

**चुकना** क्रि० (हि) १-समाप्त होना। २-अदा या बेबाक होना। ३-निपटना। ४-चूकना। ५-लक्ष्य पर न पहुंचना।

**चुकरैंड** पु० (देश) दो मुँहा साँप।

**चुकवाना** क्रि० (हि) चुकता या बेबाक कराना।

**चुकाई** स्त्री० (हि) चुकता होने का भाव।

**चुकाना** क्रि० (हि) १-अदा करना। २-निपटाना।

**चुकाव** पु० (हि) चुकने या चुकाये जाने का भाव।

**चुकौता** पु० (हि) ऋण का परिशोध। निपटाना।

**चुक्कड़** पुं० (हि) कुल्हड़। पुरवा।

**चुक्का** पु० (हि) चूक। भूल।

**चुक्की** स्त्री० (हि) धोखा। धूर्तता।

**चुक्र** पुं० (सं) १-एक तरह की खटाई। २-एक साग

**चुक्षा** स्त्री० (सं) हिंसा।

**चुखाना** क्रि० (हि) दुहते समय बछड़े को दूध पिलाना। चोखाना।

**चुगत** स्त्री० (हि) चुगने का भाव।

**चुगद** पु० (फा) १-उल्लू (पक्षी)। २-मूर्ख।

**चुगना** क्रि० (हि) चोंच से दाना बीनकर खाना।

**चुगल, चुगलखोर** पु० (फा) वह जो पीठ पीछे शिकायत करे।

**चुगलखोरी** स्त्री० (फा) चुगली करने का काम।

**चुगलाना** क्रि० (हि) चुभलाना।

**चुगली** स्त्री० (फा) पीठ पीछे की शिकायत।

**चुगा** पुं० (हि) १-चिड़ियों का चारा। २-चोगा।

**चुगाई** स्त्री० (हि) चुगने या चुगाने की क्रिया।

**चुगाना** क्रि० (हि) चिड़ियों को दाना खिलाना।

**चुगुल** पुं० (हि) चुगलखोर।

**चुग्गा** पुं० (हि) दे० 'चुगा'।

**चुग्घी** स्त्री० (हि) चखने के लिए थोड़ी सी वस्तु। चाट

**चुचकारना** क्रि० (हि) पुचकारना।

**चुचकारी** स्त्री० (हि) चुचकारने या पुचकारने की क्रिया।

**चुचाना** क्रि० (हि) चूना। टपकाना।

**चुचुआना** क्रि० (हि) चूना। टपकना।

**चुचुक** पुं० (सं) कुच या स्तन का अग्र भाग। कुचाग्र

**चुटक** पुं० (हि) कोड़ा। चाबुक। स्त्री० चुटकी।

**चुटकना** क्रि० (हि) १-चाबुक मारना। २-चुटकी से तोड़ना। ३-साँप का काटना।

**चुटकला** पुं० (हि) दे० 'चुटकुला'।

**चुटका** पुं० (हि) १-बड़ी चुटकी। २-चुटकी भर आटा।

**चुटकारी** स्त्री० (हि) चुटकी बजाना या बजाने से उत्पन्न शब्द।

**चुटकी** स्त्री० (फा) १-अँगूठे या उँगली से पकड़ना। या दबाना। २-चुटकी बजने का शब्द। ३-थोड़ा अन्न या आटा। ४-एक गहना। ५-पेंचकस।

**चुटकुला, चुटकला** पुं० (हि) १-छोटी विनोदपूर्ण बात। २-दवा का गुणकारी नुसखा। लटका।

**चुटफुट** स्त्री० (हि) फुटकर वस्तु।

**चुटला** पुं० (हि) १-एक प्रकार का गहना। २-वेणी वि० दे० 'चुटीला'।

**चुटाना** क्रि० (हि) चोट खाना।

**चुटिया** स्त्री० (हि) चोटी। शिखा।

**चुटीलना** क्रि० (हि) चोट पहुँचाना।

**चुटीला** वि० (हि) १-चोट खाया हुआ। २-चोटी का सिरे का। पुं० छोटी चोटी या शिखा।

**चुटैल** वि० (हि) १-जिसे चोट लगी हो। २-चोट करने वाला।

**चुट्टा** पुं० (हि) सिर की गुथी हुई चोटी या वेणी।

**चुड़िया** स्त्री० (हि) चूड़ी।

**चुड़िहारा** पुं० (हि) (स्त्री० चुड़िहारिन) चूड़ी बनाने या बेचने वाला।

**चुड़ैल** स्त्री० (हि) १-डायन। प्रेतनी। २-कुरूपा स्त्री। ३-क्रूर स्त्री। दुष्टा।

**चुन** पुं० (हि) चून। आटा।

**चुनचुना** क्रि० (हि) १-जिसके छूने या खाने से चुनचनाहट उत्पन्न हो। पुं० बच्चों के पेट से मल के

साथ निकलने वाले कीड़े।

**चुनचुनाना** क्रि० (हि) कुछ जलन लिये हुए चुभने की सी पीड़ा होना।

**चुनचुनाहट** स्त्री० (हि) शरीर पर कुछ जलन लिये चुभने के समान पीड़ा।

**चुनचुनी** स्त्री० (हि) १-खुजलाहट। २-चुनचुना (कीड़ा)।

**चुनट, चुनत, चुनन** स्त्री० (हि) सिलवट। शिकन।

**चुनना** क्रि० (हि) १-छाँट-छाँटकर अलग करना। २-बीनना। ३-सजाना। ४-कपड़े में शिकन डालना निर्वाचित करना।

**चुनरी** स्त्री० (हि) १-बुंदकीदार रंगीन वस्त्र। २-चुन्नी नामक रत्न।

**चुनवट** स्त्री० (हि) चुनट। सिलवट।

**चुनवा** पुं० (हि) १-लड़का। २-शिष्य। वि० बढ़िया

**चुनवाना** क्रि० (हि) चुनने का काम कराना।

**चुनाई** स्त्री० (हि) १-चुनने की क्रिया या भाव। २-दीवार की जोड़ाई का ढंग। ३-चुनने की मजदूरी

**चुनाना** क्रि० (हि) चुनवाना।

**चुनाव** पुं० (हि) १-चुनने या चुने जाने की क्रिया या भाव। २-बहुतों में से किसी काम के लिए किसी व्यक्ति को चुनना। निर्वाचन। (इलेक्शन)। ३-वह जिसे किसी काम के लिए चुना जाय। (सलेक्शन)।

**चुनावट** स्त्री० (हि) चुनट। तह। परत।

**चुनिंदा** वि० (हि) १-चुना हुआ। निर्वाचित। २-बढ़िया।

**चुनी** स्त्री० (हि) चुन्नी।

**चुनौटिया** वि० (हि) चिनौटिया।

**चुनौटी** स्त्री० (हि) पान का चूना रखने की डिबिया।

**चुनौती** स्त्री० (हि) १-उत्तेजना। बढ़ावा। प्रतिद्वंद्वी को दी जाने वाली ललकार।

**चुन्न** पुं० (हि) चून। आटा।

**चुन्नट, चुन्नत** स्त्री० दे० 'चुनट'।

**चुन्ना** पुं० (हि) चून।

**चुन्नी** स्त्री० (हि) १-बहुत छोटा नग। रत्नकण। २-अन्न या लकड़ी का चूरा। ३-चमकी। सितारा। ४-ओढ़नी।

**चुप** वि० (हि) १-खामोश। मौन।

**चुपका** वि० (हि) [स्त्री० चुपकी] मौन।

**चुपकाना** क्रि० (हि) चुप कराना।

**चुपकी** स्त्री० (हि) खामोशी। चुप्पी।

**चुपचाप** क्रि० वि० (हि) १-मौन रहकर। २-गुप्त रूप से। बिना विरोध में कुछ बोले।

**चुपड़ना** क्रि० (हि) १-गीली वस्तु से पोतना। २-दोष छिपाना। ३-चापलूसी करना।

**चुपना** क्रि० (हि) चुप होना।

**चुपरना** क्रि० (हि) चुपड़ना।

**चुपाना** क्रि० (हि) १-चुप होना। २-चुप कराना।

**चुप्पा** वि० (हि) [स्त्री० चुप्पी] प्रायः चुप रहने तथा कम बोलने वाला।

**चुप्पी** स्त्री० (हि) मौन।

**चुबलना** क्रि० (हि) धीरे-धीरे स्वाद लेना।

**चुभकना** क्रि०(हि) पानी में रह-रह कर गोता खाना।

**चुभकी** स्त्री० (हि) गोता। डुबकी।

**चुभना** क्रि०(हि) १-गड़ना। धँसना। २-मन में पीड़ा उत्पन्न करना। ३-मन में बैठना।

**चुभलाना** क्रि० (हि) मुख में किसी वस्तु को रखकर धीरे-धीरे आस्वादन करना। चुबलाना।

**चुभाना, चुभोना** क्रि० (हि) धँसाना। गड़ाना।

**चुमकार** स्त्री० (हि) चूमने जैसा प्यार का शब्द। पुचकार।

**चुमकारना** क्रि० (हि) पुचकारना। दुलारना।

**चुमकारी** स्त्री० (हि) चुमकार। पुचकार।

**चुम्मक** पुं० (हि) चुंबक।

**चुम्मा** पुं० (हि) चुंबन।

**चुर** पुं० (देश) जङ्गली पशुओं के रहने का स्थान। वि० (हि) बहुत अधिक। प्रचुर।

**चुरकट** क्रि० (हि) १-चोरकट। २-घबराया हुआ।

**चुरकना** क्रि० (हि) १-चहकना (व्यंग)। २-चटकना टूटना।

**चुरकी** स्त्री० (हि) शिखा। चुटिया।

**चुरकुट, चुरकुस** वि० (हि) चकनाचूर। चूरचूर।

**चुरगना** क्रि० (हि) दे० 'चुरकना'।

**चुरचुरा** वि० (हि) जरासे दबाव के कारण 'चुरचुर' शब्द करके टूट जाने वाला।

**चुरचुराना** क्रि० (हि) चुरचुर शब्द होना या करना

**चुरना** क्रि० (हि) १-सीझना। २-गुप्त मंत्रणा होना

**चुरमुर** पुं० (हि) खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।

**चुरमुरा** वि० (हि) चुरचुरा।

**चुरमुराना** क्रि० १-चुरचुर शब्द सहित टूटना या तोड़ना। २-खरी चीज चबाना।

**चुरवाना** क्रि० १-पकाने का काम कराना। २-चोरवाना।

**चुरस** स्त्री० (हि) चुनट।

**चुरा** पुं० (हि) १-चूरा। बुरादा। २-चूड़ा।

**चुराई** स्त्री० (हि) १-चुराने की क्रिया। २-पकाने का काम।

**चुराना** क्रि० (हि) १-दूसरे की वस्तु को उसके स्वामी के परोक्ष अथवा अनजान में वापस न करने के अभिप्राय से ले लेना। अपहरण करना। २-छिपाना। ३-देने या करने में कसर रखना। ४-पकाना।

चुरिहारा पुं० (हि) चुड़ीहारा।
चुरी स्त्री० (हि) चूड़ी।
चुरु पुं० (हि) चुल्लू।
चुरगना क्रि० (हि) बड़बड़ाना। बकना।
[illegible] पुं० (पं) तम्बाकू के पत्ते को लपेट कर बनाई हुई बत्ती जिसे जलाकर धूम्रपान करते हैं। सिगार
चुरू पुं० (हि) चुल्लू।
चुल स्त्री० (हि) १-किसी अंग के मले या सहलाये जाने की प्रबल इच्छा। २-किसी कार्य को करने की तीव्र आकांक्षा।
चुलचुल पुं० (हि) चंचलता। चपलता।
चुलचुलाना क्रि० (हि) १-खुजलाहट होना। २-चुलबुलाना।
चुलचुलाहट, चुलचुली स्त्री० दे० 'चुल'।
चुलबुल स्त्री० (हि) चपलता।
चुलबुला वि० (हि) [स्त्री० चुलबुली] १-चंचल। २-नटखट।
चुलबुलाना क्रि० (हि) चंचल होना।
चुलबुलापन पुं० (हि) चञ्चलता।
चुलबुलाहट स्त्री० (हि) चञ्चलता। चपलता।
चुलबुलिया वि० (हि) चञ्चल।
चुलाना क्रि० (हि) चुवाना। टपकाना।
चुलाव पुं०(हि) १-चुलाने का भाव। २-बिना मांस का पुलाव।
चुलियाला पुं० (हि) एक मात्रिक छन्द।
चुल्ला पुं० (हि) १-काँच का छोटा छल्ला। २-चूल्हा वि० चुलबुला।
चुल्ली वि० (हि) नटखट। स्त्री० १-चूल्हा। चिता।
चुल्लू पुं० (हि) जल लेने या पीने के लिए की हुई गहरी हथेली। अंजुली।
चुल्हौना पुं० (हि) चूल्हा।
चुवना क्रि०(हि) चूना। रिसना।
चुवा पुं० (देश) हड्डी की नली में का गूदा। पुं० (हि) पशु। चौपाया।
चुवाना क्रि० (हि) चुआना। टपकाना।
चुसकी स्त्री० (हि) १-सुड़क कर पीने की क्रिया। २-घूँट। ३-प्याला (मदिरा का)।
चुसना क्रि० (हि) १-ओंठ से खिंचकर पीया जाना। २-निगल जाना। ३-सारहीन होना। ४-धन-रहित होना।
चुसनी स्त्री० (हि) १-बच्चा के चूसने का खिलौना। २-दूध पिलाने की शीशी।
चुसवाना, चुसाना क्रि० (हि) चूसने में प्रवृत्त करना
चुसौअल, चुसौवल स्त्री० (हि) बार-बार या अधिक चूसने की क्रिया या भाव।
चुस्त वि० (फा) १-कसा हुआ। तंग। २-फुरतीला। ३-दृढ़। मजबूत।
चुस्ती स्त्री० (फा) १-फुरती। २-तेजी। २-कसावट। तंगी। ३-दृढ़ता।
चुस्सी स्त्री० (हि) किसी फल का रस।
चुहँटी स्त्री० (हि) चुटकी।
चुहचुहा वि० (हि) [स्त्री० चुहचुही] १-रसीला। २-मनोहर। चटकीला।
चुहचुहाता वि० (हि) १-सरस। रसीला। २-चटकीला
चुहचुहाना क्रि० (हि) १-रसना। २-चिड़ियों बोलना।
चुहचुही स्त्री० (हि) एक तरह की काली चिड़िया। फूल-सुँघनी।
चुहंट स्त्री० (हि) १-चुहटने या चिमटने की क्रिया या भाव। २-कसक। पीड़ा।
चुहंटना क्रि० (हि) चिमटना।
चुहड़ा पुं० (देश) भंगी। महतर।
चुहना क्रि० (हि) चूसना।
चुहल स्त्री० (हि) हँसी। ठठोली।
चुहिया स्त्री० (हि) १-चूहे की मादा। २-छोटा चूहा।
चुहिल वि० (हि) रमणीक (स्थान)।
चुहुँटना क्रि० (हि) १-चिमटना। २-चिकोटी काटना ३-तंग करना।
चुहुँटनी स्त्री० (देश०) घुँघची।
चुहुकना क्रि० (हि) चूसना।
चुहुल वि० दे० 'चुहल'।
चूँ स्त्री० (हि) १-एक छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २-बहुत धीमा शब्द।
चूँकि क्रि० वि० (फा) क्योंकि। अतः। इसलिए।
चूँचूँ पुं० (हि) चिड़ियों की बोली।
चूँदर स्त्री० (हि) चूनरी।
चूक स्त्री० (हि) १-भूल। त्रुटि। २-भ्रम। ३-कसूर। पुं० (सं) १-एक खट्टा पदार्थ। २-एक तरह की खटाई का सत।
चूकना क्रि० (हि) १-भूल करना। २-सुअवसर खो-देना।
चूका पुं० (हि) एक तरह का खट्टा साग।
चूखना क्रि० (हि) चूसना।
चूची स्त्री० (हि) कुच। स्तन।
चूचुक स्त्री० (सं) कुचाग्र।
चूजा पुं० (फा) मुरगी का बच्चा।
चूड़, चूड़क पुं० (सं) १-छोटा कुँआ। २-मोर के सिर के ऊपर की चोटी। ३-घुंघची। ५-शिखा। ६-बांह में पहनने का एक गहना। ७-मस्तक।
चूड़ांत वि० (सं) चरम सीमा का। क्रि० वि० बहुत अधिक। पुं० पराकाष्ठा।
चूड़ा पुं० (हि) १-कंकण। कड़ा। २-हाथ में पहनने की चूड़ियाँ। ३-दे० 'चूहड़ा'। ४-दे० 'चिउड़ा'। स्त्री० (सं) १-शिखा। चोटी। २-मोर की कलगी।

३-घुंघची। ४-चूड़ाकरण संस्कार।
**चूड़ाकरण, चूड़ाकर्म** पुं० (सं) बच्चों का मुंडन संस्कार।
**चूड़ा-पाश** पुं० (सं) १-स्त्रियों के सिर के बालों का जूड़ा। २-प्राचीन काल की स्त्रियों का एक तरह का केशविन्यास।
**चूड़ाभरण** पुं० (हि) १-प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास। २-सिर का एक गहना।
**चूड़ा-मणि** पुं० (सं) १-शीशफूल नामक सिर का गहना। २-सर्वोत्कृष्ट। श्रेष्ठ। ३-प्रधान। मुखिया। ४-घुंघची। गुंजा।
**चूड़ी** स्त्री० (हि) १-स्त्रियों का कलाई पर पहनने का एक मंगलाकार गहना। २-छल्ला। ३-कोई वृत्ताकार वस्तु। ४-ग्रामोफोन बाजे का तवा जिससे गाना सुनते हैं।
**चूड़ीवार** वि० (हि) जिसमें चूड़ी या छल्ले पड़े हों।
**चूतड़** पुं० (हि) नितम्ब।
**चून** पुं० (हि) १-आटा। पिसान। २-चूर्ण। चूरा।
**चूनर, चूनरी** स्त्री० (हि) छोटी-छोटी बुंदकियों वाला रङ्गीन वस्त्र।
**चूना** पुं० (हि) कङ्कड़, पत्थर आदि को फूंक कर बनाया जाने वाला पदार्थ जिससे मकान पोता जाता है। क्रि० (हि) १-टपकना। २-किसी वस्तु का ऊपर से नीचे गिरना। ३-द्रव पदार्थ बूंद-बूंद कर रिसना।
**चूनी** स्त्री० (हि) दे० 'चुन्नी'।
**चूनेदानी** स्त्री० (हि) पान का चूना रखने की डिबिया चुनौटी।
**चूमना** क्रि० (हि) चुम्मा लेना। बोसा लेना।
**चूमा** पुं० (हि) चुम्मा। चुम्बन।
**चूर** पुं० (हि) दे० 'चूर्ण'। वि० १-शिथिल। थका-हुआ। २-तन्मय। ३-मदमस्त।
**चूरन** पुं० (हि) चूर्ण।
**चूरना** क्रि० (हि) १-चूर करना। टुकड़े करना। २-तोड़ना।
**चूरमा** पुं० (हि) एक पकवान जो रोटी, बाटी या पूरी को कूट कर उसमें चीनी मिला कर बनाते हैं।
**चूरमूर** पुं० (देश) जौ या गेहूँ के कटजाने पर खेत में रह जाने वाली खूंटियाँ।
**चूरा** पुं० (हि) १-चूर्ण। बुरादा। २-चूड़ा। ३-चिउड़ा।
**चूरामणि, चूरामनि** स्त्री० दे० 'चूड़ामणि'।
**चूर्ण** पुं० (सं) १-चूरा। बुकनी। २-पाचक औषधियों का बारीक सफूफ। चूरन। वि० १-चूर। २-टूटाफूटा।
**चूर्णक** पुं० (सं) १-सत्तू। २-धान। ३-समास-हीन शब्दमय गद्य।
**चूर्णकुंतल** पुं० (सं) अलक। जुल्फ। लट।
**चूर्णिका** स्त्री० (स) १-सत्तू। २-गद्य का एक भेद। ३-कठिन पदों की व्याख्या बताने वाली पुस्तक।
**चूर्णित** वि० (सं) चूर्ण किया हुआ।
**चूर्णी** स्त्री० (हि) १-भाष्य, व्याख्या, टीका आदि जिनसे कठिन बातें सहज में समझी जा सकें। २-दे० 'चूर्ण'।
**चूल** पुं० (सं) १-शिखा। २-बाल। स्त्री० (देश) किसी छेद में बैठाने के लिए उसी नाप का बना हुआ लकड़ी का सिरा।
**चूलक** पुं० (स) १-नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना। २-हाथी के कान का मैल। ३-हाथी की कनपटी का ऊपरी भाग।
**चूलिका** स्त्री० (सं) दे० 'चूलक'।
**चूल्हा** पुं० (हि) भोजन पकाने की भट्टी।
**चूषण** पुं० (सं) चूसना।
**चूष्य** वि० (सं) चूसने के योग्य।
**चूसना** क्रि० (हि) १-किसी को धीरे-धीरे सुरक कर पीना। २-किसी वस्तु का सार भाग ले लेना। ३-रस खींच लेना। ४-अनुचित रूप से किसी से धीरे-धीरे रुपया वसूल करना।
**चूसनी** स्त्री० (हि) चूसने वाली वस्तु।
**चूहड़, चूहड़ा** पुं० (हि) [स्त्री० चूहड़ी] भंगी। मेहतर
**चूहा** पुं० (हि) [स्त्री० चुहिया] मूसा। मूषक।
**चूहादंती** स्त्री० (हि) एक प्रकार की पहुँची जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं।
**चूहादान** पुं० (हि) [स्त्री० चूहेदानी] चूहों को फंसाने का पिंजड़ा।
**चेंगड़ा** पुं० (हि) [स्त्री० चेंगड़ी] बालक। बच्चा।
**चेंचें** स्त्री० (हि) १-चिड़ियों की बोली। २-बक-बक। बकवाद।
**चेंटुआ** पुं० (हि) चिड़िया का बच्चा।
**चेंपें** स्त्री० (हि) चिल्लाहट।
**चेंफ** पुं० (देश) ऊख का छिलका।
**चेक** पुं० (अं) १-बैंक से रुपया निकालने का कागज जिस पर रुपया जमा करने वालों को अपना हस्ताक्षर करना पड़ता है। २-चारखाना।
**चेचक** स्त्री० (फा) शीतला रोग।
**चेचकरु** पुं० (फा) वह जिसके मुख पर शीतला के दाग हों।
**चेजा** पुं० (हि) छेद। सुराख।
**चेट** पुं० (सं) [स्त्री० चेटी, चेटिका] १-दास। २-पति। ३-कुटना। ४-भाँड।
**चेटक** पुं० (सं) [स्त्री० चेटकी] १-सेवक। दास। २-चटक-मटक। ३-दूत। ४-जादू। माया। वि० दे० कनौड़ा।

**चेटकनी** स्त्री० (हि) चेटी। दासी।
**चेटका** स्त्री० (हि) १-चिता। २-श्मशान।
**चेटकी** पुं० (सं) १-जादूगर। २-कौतुकी। स्त्री० १-दासी। २-नायिका विशेष।
**चेटिया** पु० (हि) १-शिष्य। चेला। २-दास।
**चेटी** स्त्री० (सं) दासी।
**चेटुआ, चेटुवा** पुं० (हि) चिड़िया का बच्चा।
**चेत्** अव्य० (सं) १-कदाचित्। २-यदि।
**चेत** पुं० (हि) १-चेतना। होश। २-ज्ञान। बोध ३-सावधानी। ४-सुध। स्मृति।
**चेतक** वि० (सं) १-चेताने वाला। २-चेतना उत्पन्न करने वाला। पुं० किसी सभा या समिति के सदस्यों को सचेत या स्मरण कराने वाला वह अधिकारी कि अमुक कार्य में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (व्हिप)। पु० (हि) १-राणा प्रताप के घोड़े का नाम। २-चेतन। चैतन्य।
**चेतकी** स्त्री० (सं) १-हरीतकी। २-चमेली का पौधा ३-एक रागिनी का नाम।
**चेतता** स्त्री० (हि) चेतना।
**चेतन** वि० (स) जिसमें चेतना हो। पुं० १-आत्मा। २-प्राणी। ३-परमेश्वर।
**चेतनता** स्त्री० (सं) चैतन्य। सज्ञानता। ज्ञान होना।
**चेतना** स्त्री० (सं) १-बुद्धि। २-मनोवृत्ति। ३-ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। क्रि० (हि) १-ध्यान देना। २-सावधान होना। ३-होश में आना।
**चेतवनि** स्त्री० (हि) १-चेतावनी। २-चितवन।
**चेता** वि० (सं) १-जिसे चेतना हो। जिसे ज्ञान हो। २-दृढ़ चित्त वाला।
**चेताना** क्रि० (हि) १-सावधान करना। २-याद कराना। ३-उपदेश करना। ४-(आग) सुलगाना
**चेतावनी** स्त्री० (हि) १-सतर्क होने की सूचना। २-शिक्षा। उपदेश।
**चेतिका** स्त्री० (हि) चिता।
**चेतौनी** स्त्री० (हि) चेतावनी।
**चेदि** पुं० (सं) १-भारत का एक प्राचीन प्रदेश। २-इस देश का राजा या निवासी।
**चेदिराज** पुं० (सं) शिशुपाल।
**चेना** पु० (हि) १-एक अन्न। २-एक साग। ३-चीनी कपूर।
**चेप** पुं० (हि) १-चिप-चिपा या लसदार कोई रस। २-चिड़ियों के फंसाने का लासा। ३-चाव। उत्साह
**चेपदार** वि० (हि) चिपचिपा।
**चेपना** क्रि० (हि) चिपकाना।
**चेय** वि० (सं) चयन या संग्रह करने योग्य।
**चेर, चेरा** पुं० (हि) (स्त्री० चेरी) १-सेवक। २-चेला।
**चेराई** स्त्री० (हि) १-दासत्व। २-नौकरी। ३-चेला होने की अवस्था या भाव।
**चेरी** स्त्री० (हि) १-चेली। शिष्या। २-सेविका। दासी।
**चेल** पुं० (सं) वस्त्र। कपड़ा।
**चेलकाई** स्त्री० (हि) १-शिष्यता। २-चेलकाई।
**चेलहाई** स्त्री० (हि) १-चेलों का समूह। २-शिष्यता।
**चेला** पुं० (हि) (स्त्री० चेलिन, चेली) १-शिष्य। २-शागिर्द।
**चेलिकाई** स्त्री० दे० 'चेलहाई'।
**चेल्हवा, चेल्हा** स्त्री० (?) एक छोटी मछली।
**चेष्टा** स्त्री० (सं) १-शरीर के अङ्गों की गति। २-अङ्गों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रगट हो ३-उद्योग। प्रयत्न। ४-काम। कार्य। ५-श्रम। परिश्रम। ६-इच्छा। कामना।
**चेहरई** स्त्री० (हि) चित्र या मूर्ति में चेहरे की रंगत।
**चेहरा** पु० (फा) १-मुखड़ा। वदन। २-मुख पर पहनने की कोई मुखाकृति। ३-किसी वस्तु का अग्रभाग। आगा।
**चेहलुम** पु० (फा) मुहर्रम से चालीसवें दिन होने वाली एक रसम।
**चैंटी** स्त्री० (हि) चींटी। पिपीलिका।
**चैंप** पुं० (हि) चेप।
**चै** पुं० (हि) चयन। समूह।
**चैकित्सक** वि० (सं) चिकित्सा से सम्बन्धित।
**चैत** पु० (हि) फागुन के बाद का महीना। चैत्र।
**चैतन्य** पुं० (स) १-जीवात्मा। २-ज्ञान। चेतन। ३-ब्रह्म। ४-परमेश्वर। ५-प्रकृति। ६-सचेत। ७-एक वैष्णव महात्मा जो बंगाल में हुए थे।
**चैती** स्त्री० (हि) १-चैत्र मास में काटी जाने वाली फसल। रबी। २-चैत्र में गाया जाने वाला गीत। वि० चैत-सम्बन्धी। चैत का।
**चैत्त** वि० (सं) चित्त सम्बन्धी। चित्त का।
**चैत्य** पुं० (सं) १-मकान। घर। २-मन्दिर। देवालय ३-यज्ञशाला। ४-किसी देवी देवता का चबूतरा। ५-बुद्ध की मूर्ति। ६-बौद्धमठ। विहार। ७-चिता ८-अश्वत्थ का पेड़।
**चैत्र** पुं० (स) १-चैत का महीना। २-बौद्ध भिक्षु। ३-यज्ञभूमि। देवालय।
**चैत्री** स्त्री० (स) चैत्र की पूर्णिमा।
**चैन** पुं० (हि) सुख। आराम।
**चैपला** पु० (?) एक तरह की चिड़िया।
**चैयाँ** स्त्री० (हि) बाँह।
**चैल** पुं० (हि) कपड़ा। वस्त्र।
**चैला** पुं० (हि) (स्त्री० चैली) चीरी हुई जलाने की लकड़ी।
**चोंक** स्त्री० (देश) चूमने पर दांत लगने का चिह्न।
**चोंगा** पुं० (स्त्री० चोंगी) बाँस, टीन आदि की बनी नाली जिसका उपयोग कागज लपेट कर रखने के

लिए किया जाता है।

चोंचना क्रि० (हि) चुगना।

चोंच स्त्री० (हि) १-पक्षी के मुख का अग्र भाग। २-मुँह (व्यंग)।

चोंटना क्रि० (हि) नोचना।

चोंड़ा पुं० (हि) १-स्त्रियों के सिर के बाल। २-सिर

चोंड़ा पुं० (हि) छोटा कच्चा कुआँ।

चोंथ पुं० (हि) एक बार में गिरने वाला (गाय या भैंस का) गोबर।

चोंथना क्रि० (हि) नोचना। खसोटना।

चोंधर, चोंधरा वि० (हि) १-बहुत छोटी आँख वाला। २-मूर्ख।

चोंप पुं० (हि) १-उत्साह। इच्छा। २-दाँत का सोने का खोल।

चोंहका पुं० (हि) दूध दुहने से पहले बछड़े को चुसाया जाने वाला थोड़ा सा दूध।

चोआ पुं० (हि) १-एक सुगन्धित द्रव पदार्थ। २-बाँट के अभाव में रखा जाने वाला कंकड़ या पत्थर माठ।

चोई स्त्री० (हि) १-धोई हुई दाल का छिलका। २-पककर गिरा हुआ फल।

चोकर पुं० (हि) भूसी। असार।

चोका पुं० (हि) १-चूसने की क्रिया। २-स्तन। छाती।

चोख स्त्री० (हि) १-तेजी। २-वेग। फुरती। ३-तीव्रता। वि० दे० 'चोखा'। पुं० नेत्र। आँख।

चोखना क्रि० (हि) चूसकर पीना।

चोखनी स्त्री० (हि) चूसकर पीने की क्रिया।

चोखा वि० (हि) १-शुद्ध। २-उत्तम। ३-पैना। पुं० आलू या बैंगन का भरता।

चोखाई स्त्री० (हि) १-चोखापन। शुद्धता। २-चुसाई।

चोगा पुं० (तु) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा। पुं० (हि) चारा (चिड़ियों का)

चोगान पुं० दे० 'चौगान'।

चोचला पुं० (हि) १-हावभाव। २-नाज। नखरा।

चोज पुं० १-दूसरे को हँसाने वाली चमत्कारपूर्ण मनोविनोद करने वाली उक्ति। २-व्यंगपूर्ण उपहास।

चोट स्त्री० (हि) १-आघात। प्रहार। २-घाव। जख्म ३-वार। आक्रमण। ४-मानसिक व्यथा। ५-किसी को हानि पहुँचाने के निमित्त चली जाने वाली चाल ६-विश्वासघात। धोखा। ७-बार। मरतबा।

चोटइल वि० (हि) १-चोट करने वाला। घायल।

चोटहा वि० (हि) [स्त्री० चोटही] जिस पर चोट का निशान हो।

पुं०(हि) राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ।

चोटार वि० (हि) चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना क्रि० (हि) चोट करना।

चोटिया स्त्री० (हि) चोटी।

चोटियाना क्रि० (हि) १-चोट मारना। घायल करना २-चोटी पकड़ना। वश में करना।

चोटी स्त्री० (हि) १-खोपड़ी के मध्य के वह थोड़े से बाल जिन्हें लोग धार्मिक (या अपने संप्रदाय का) चिह्न समझते हैं। शिखा। चुंदी। २-स्त्रियों के सिर के गुथे हुए बाल। ३-सिर के बाल बाँधने का डोरा ४-जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५-पक्षियों के सिर की कलगी। ६-ऊपरी भाग। शिखर।

चोटी-पोटी स्त्री० (हि) १-चिकनी चुपड़ी बात। २-झूठी या बनावटी बात।

चोट्टा पुं० (हि) [स्त्री० चोट्टी] चोर।

चोड़ पुं० दे० 'चोल'।

चोढ़ पुं० (हि) उत्साह। उमंग।

चोप पुं०(हि) १-इच्छा। २-शौक। चाव। ३-उत्साह उमंग। ४-चेप। स्त्री० दे० 'चोब'।

चोपना क्रि० (हि) मोहित होना। रीझना।

चोपी वि० (हि) १-इच्छुक। २-उत्साही।

चोब पुं० (फा) १-तम्बू या शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २-नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३-सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४-छड़ी। सोंटा।

चोबकारी स्त्री० (फा) कलाबत्तू का काम।

चोबदार पुं० (फा) १-आसाबरदार। द्वारपाल।

चोबदारी स्त्री० (फा) चोबदार का काम या पद।

चोबा पुं० (हि) १-दे० 'चोब'। २-भात।

चोर पुं० (हि) १-चोरी करने वाला। तस्कर। मन में दुर्भाव आना। ३-घाव का अंदर ही अंदर बढ़ने वाला विकार। ४-संधि। दराज। ५-खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। वि० आंतरिक भावों को छिपाने वाला।

चोरकट पुं० (हि) उचक्का।

चोरटा पुं० (हि) चोट्टा। चोर।

चोरदरवाजा पुं० (हि) गुप्त द्वार।

चोरना क्रि० (हि) चोरी करना। चुराना।

चोरपेट पुं० (हि) ऐसा पेट जिसमें गर्भ का जल्दी पता न चले।

चोरबत्ती स्त्री० (हि) बैटरी से जलने वाला छोटा लैंप। (टार्च)।

चोर-बाजार पुं० (हि) क्रय-विक्रय का वह स्थान या बाजार जिसमें चोरी से वस्तुएँ बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदी और बेची जाती है। वह स्थान जहाँ वस्तुएँ नियंत्रित मूल्य से अधिक पर बेची जाती हैं। (ब्लैक-मार्केट)।

**चोर-बाजारी** स्त्री० (हि) १-चोरों से कोई वस्तु बहुत अधिक या कम मूल्य पर खरीदना या बेचना। २-नियन्त्रित मूल्य से अधिक पर बेचना।

**चोरमहल** पुं० (हि) प्रेमिका को छिपा कर रखने का महल।

**चोर-मिहीचनी** स्त्री० (हि) आँखमिचोली का खेल।

**चोराचोरी** क्रि० वि० (हि) चुपके-चुपके। छिपे-छिपे

**चोरी** स्त्री० (हि) १-छिपकर किसी की वस्तु लेना। अपहरण। २-कोई बात या माल छिपाकर रखना

**चोरौंधा** वि० (हि) घर के लोगों से चोरी से बचाकर रखा हुआ रुपया।

**चोल** पुं० (सं) १-अँगिया। २-ढीला कुरता। ३-कवच। ४-दक्षिण-भारत का एक प्राचीन देश या उसका निवासी।

**चोल-खंड** पुं० (हि) साड़ियों के साथ का या अलग से बनाया चोली या कुरती का टुकड़ा (कपड़ा)। (ब्लाउज-पीस)।

**चोलना, चोला** पुं० (हि) १-लम्बा लबादा। २-नवजात शिशु को पहले-पहल वस्त्र पहनाने का संस्कार। ३-शरीर। देह

**चोली** स्त्री० (हि) अँगिया। कांचली।

**चोवा** पुं० (हि) चोआ। अगंजा। एक सुगन्धित द्रव्य

**चोष** पु० (सं) एक रोग।

**चोषक** वि० (सं) चूसने वाला। शोषण करने वाला

**चोषण** पुं० (सं) चूसना।

**चोष्य** वि० (सं) जो चूसा जाता अथवा चूसे जाने को हो।

**चोहट** पुं० (हि) चौहट्टा बाजार।

**चौंक** स्त्री० (हि) झिझक। चिहुक। चौंकने की क्रिया या भाव।

**चौंकना** क्रि० (हि) १-सहसा भय आदि से काँप उठना। २-चौकन्ना होना। ३-चकित या भौचक्का होना। ३-शंकित होना।

**चौंकाना** क्रि० (हि) १-चौंकने के लिए प्रेरित करना। २-सतर्क करना। ३-भड़काना।

**चौंड़ा** पुं० दे० 'चोंड़ा'।

**चौंतरा** पुं० (हि) चबूतरा।

**चौंध** स्त्री० (हि) चमक।

**चौंधना** क्रि० (हि) ऐसा चमकना कि चकाचौंध उत्पन्न हो।

**चौंधियाना** क्रि० (हि) १-बहुत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना। २-कम दिखाई देना।

**चौंधी** स्त्री० दे० 'चौंध'।

**चौंबक** वि० (स) १-चुम्बक सम्बन्धी। २-चुम्बक शक्ति वाला।

**चौंर** पुं० (हि) चँवर।

**चौंराना** क्रि० (हि) १-चँवर डुलाना। २-झाड़ू देना

**चौंरी** स्त्री० (हि) १-चँवर। २-वेणी बाँधने की डोरी। चोटी। ३-सफेद पूंछ वाली गाय।

**चौंह** पुं० (हि) गलफड़ा।

**चौ** वि० (हि) चार (संख्या-केवल यौगिक शब्दों में)

**चौअर** वि० दे० 'चौहरा'।

**चौआ** पुं० (हि) १-चार अंगुल का माप। २-ताश का चार बूटियों वाला पत्ता। २-चौपाया।

**चौआई** स्त्री० (हि) १-चारों ओर से बहने वाली हवा। २-अफवाह।

**चौआना** क्रि० (हि) चकपकाना। २-चौकन्ना होना।

**चौक** पुं० (हि) १-चौकोर भूमि। २-आँगन। सहन ३-चौखूँटा चबूतरा। ४-मंगल पूजन के अवसर पर बनाया गया चौकोर क्षेत्र। ५-चौहट्टा। ६-चौसर खेलने की बिसात। ७-चौराहा। ८-सामने के चार दाँतों का समूह।

**चौकठ** पुं० (हि) चौखट।

**चौकठा** पुं० (हि) चौखटा।

**चौकड़ी** स्त्री० (हि) १-हिरन की दौड़। छलांग। २-चार आदमियों का गुट। मंडली। ३-एक तरह का गहना। ४-चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५-पालथी। ६-चार घोड़ों वाली गाड़ी। ७-एक तरह की बुनावट।

**चौकन्ना** वि० (हि) १-सावधान। २-चौंका हुआ। आशंकित।

**चौकल** पुं० (हि) चार मात्राओं का समूह।

**चौकस** वि० (हि) १-सचेत। सावधान। २-ठीक।

**चौकसाई, चौकसी** स्त्री० (हि) १-सावधानी। खबरदारी। २-रखवाली।

**चौका** पुं० (हि) १-पत्थर का चौकोर टुकड़ा। २-रोटी बेलने का चकला। ३-अगले चार दाँतों की पंक्ति। ४-सीसफूल। ५-रसोई का स्थान (हिन्दु)। ६-धरती पर मिट्टी या गोबर का लेप। ७-एक ही तरह की चार चीजों का समूह।

**चौका-बरतन** पुं० (हि) रसोई बन जाने के बाद बरतन माँज कर चौका लगाने का काम या भाव।

**चौकी** स्त्री० (हि) १-चार पायों वाला चौकोर आसन २-मन्दिर में मण्डप का प्रवेश द्वार। ३-पड़ाव। ४-वह स्थान जहाँ आसपास के लोगों की सुरक्षा के लिए थोड़े से सिपाही रहते हैं। ५-चुंगी घर। ६-पहरा। ७-भेंट, जो देवता या पीर आदि पर चढ़ाई जाय। ८-गले में पहिनने का एक गहना।

**चौकी-घर** पुं० (हि) (पहरा देते समय) चौकीदार के लिए वर्षा और धूप से बचने का स्थान या छोटा घर। (स्टैंड-पोस्ट)।

**चौकीदार** पुं० (हि) १-पहरेदार। २-रखवाली करने

वाला। गोंड़ैत।

**चौकीदारी** स्त्री० (हिं) १-पहरा देने का काम। रख-वाली। २-चौकीदार की उजरत।

**चौकोन, चौकोना** वि० (हि) चार कोनों वाला। चौखूंटा।

**चौकोर** वि० (हि) जिसके चारों कोने या पार्श्व समान हों।(स्क्वेयर)।

**चौखंडा** पुं० (हि) १-चार खण्ड या मजिल वाला मकान। २-जिसके चार भाग हों। ३-चौमञ्जिले मकान का ऊपरी भाग। ४-चार आँगन वाला मकान।

**चौखट** स्त्री० (हि) १-लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जड़े रहते हैं। २-देहली। चौकठ

**चौखटा** पुं० (हिं) चार लकड़ी का चौकोर ढाँचा। (फ्रेम)।

**चौखना** पुं० (हिं) चार खण्ड या मंजिल वाला।

**चौखानि** स्त्री० (हिं) अण्डज, पिण्डज, स्वेदज और उद्भिज यह चार प्रकार के जीव।

**चौखूंटा** वि० (हिं) चौकोना।

**चौगड़ा** पुं० (हि) दे० 'चौघड़ा'। २-दे० 'चौगोड़ा'

**चौगड्डा** पुं० (हि) चार वस्तुओं का समूह।

**चौगान** पुं० (फा)१-मैदान। २-गेंद बल्ले का खेल ३-किसी प्रकार की प्रतियोगिता। ४-नगाड़ा पीटने की लकड़ी।

**चौगिर्द** क्रि० वि० (हिं) चारों ओर।

**चौगुना** वि० (हि) [स्त्री० चौगुनी] चार बार। चार गुना।

**चौगून** क्रि० (हि) १-चौगुना होने की अवस्था या भाव। २-आरम्भ की गति से चौगुनी गति में गाया जाने वाला गाना।

**चौगोड़ा** वि० (हिं) चार पैर वाला। पुं० (हिं) खर-गोश।

**चौगोड़िया** स्त्री० दे० 'चौघड़िया'।

**चौगोशिया** वि० (फा) १-चार कोनों वाला। स्त्री० एक तरह की टोपी। पुं० तुरकी घोड़ा।

**चौघड़** पुं० (हि) दाढ़ का चौड़ा और चिपटा दाँत।

**चौघड़ा** पुं० (हि) १-पान, इलायची आदि रखने का चार खानों वाला डिब्बा। २-मसाला आदि रखने का चार खानों वाला बरतन। ३-पत्ते में बंधे हुए चार बीड़े पान। ४-दे० 'चौडोल'।

**चौघड़िया** स्त्री० (हि) चार पायों वाली ऊँची चौकी।

**चौघड़ी** स्त्री० (हिं) वह जिसमें चार तह हों।

**चौघर** पुं० (हिं) घोड़े की सरपट चाल।

**चौघोड़ी** स्त्री० (हिं) वह गाड़ी जिसमें चार घोड़े जुतें

**चौचंद** पुं० (हिं) १-बदनामी की चर्चा। निन्दा। २-शोर। हल्ला।

**चौचंदहाई** वि० स्त्री० (हि) बदनामी करने वाली

**चौजुगी** स्त्री० (हि) चार युगों का काल।

**चौड़ा** वि० (हि) [स्त्री० चौड़ी] १-लम्बाई से भिन्न दिशा में। २-विस्तृत।

**चौड़ाई, चौड़ान** स्त्री० (हि) फैलाव। अर्ज। विस्तार

**चौड़ाना** क्रि० (हिं) चौड़ा करना। फैलाना।

**चौड़े** क्रि० वि० (हिं) सबके सामने। खुले आम।

**चौडोल** पुं० (हि) १-एक तरह का बाजा। २-एक प्रकार की पालकी। चण्डोल। ३-चौपालिया।

**चौतनियाँ, चौतनी** स्त्री० (हि) चार बुन्दों वाली बच्चों की टोपी।

**चौतरा** पुं० (हि) १-चबूतरा। २-सितार की तरह का चार तार वाला एक बाजा।

**चौतहा** वि० (हि) [स्त्री० चौतहाँ] चार तह वाला।

**चौतही** स्त्री० (हि) चार तह करके बिछाने की मोटी चाँदनी।

**चौतारा** पुं० (हि) चार तारों वाला एक बाजा।

**चौताल** पुं० (हि) १-मृदङ्ग का एक ताल विशेष। २-होली में गाया जाने वाला एक गीत।

**चौताला** वि० (हि) चार ताल वाला।

**चौतुका** पुं० (हि) वह छन्द जिसमें चारों पदों की तुक मिलती हों। वि० जिसमें चार तुक हों।

**चौथ** स्त्री० (हि) १-प्रतिपदा की चौथी तिथि। २-चतुर्थांश। ३-आमदनी का चौथा भाग जो मराठे कर के रूप में लेते थे। वि० चौथा।

**चौथपन** पुं० (हि) मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।

**चौथा** वि० (हि) [स्त्री० चौथी] तीसरे के बाद का।

**चौथाई** पुं० (हि) चतुर्थांश। चौथा भाग।

**चौथि** स्त्री० दे० 'चौथ'।

**चौथिआई** पुं० (हि) चौथाई।

**चौथिया** पुं० (हि) चौथे दिन आने वाला ज्वर।

**चौथी** स्त्री० (हि) १-विवाह के चौथे दिन की एक रस्म जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २-जमींदार को मिलने वाला फसल का चौथाई अंश।

**चौथैया** पुं० (हि) चौथाई। चतुर्थांश।

**चौदंता** वि० (हि) १-चार दाँत वाला। २-अल्हड़।

**चौदंती** स्त्री० (हि) १-उद्दण्डता। २-धृष्टता।

**चौदस** स्त्री० (हि) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चतुर्दशी।

**चौदाँत** पुं० (हि) दो हाथियों की लड़ाई।

**चौधराई** स्त्री० (हि) चौधरी का काम या पद।

**चौधरात, चौधराना** संज्ञा (हि) १-चौधरी का काम या पद। २-चौधरी को उसके काम के बदले में मिलने वाला धन।

**चौधराहट** स्त्री० दे० 'चौधराई'।

**चौधरी** पुं० (हि) किसी जाति या समाज का मुखिया

**चौधारी** स्त्री० (हि) चारखाना।
**चौपई** स्त्री० (हि) पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द जिसके अन्त में गुरु लघु होते हैं।
**चौपखा** पुं० (हि) चहारदीवारी।
**चौपग** पुं० (हि) चौपाया।
**चौपट** क्रि० वि० (हि) चारों ओर से (खुला)। वि० नष्ट। भ्रष्ट। बरबाद।
**चौपटहा, चौपटा** पुं० (हि) चौपट करने वाला
**चौपड़** स्त्री० (हि) चौसर।
**चौपत** पुं० (हि) १-वह पत्थर जिसमें लगी हुई कील पर कुम्हार का चाक टिका रहता है। २-कपड़े की तह।
**चौपताना** क्रि० (हि) कपड़े की तह लगाना।
**चौपतिया** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का साग। २-एक तरह की घास। ३-चार पन्नों की पोथी। ४-कशीदे की चार पत्तियों वाली बूटी।
**चौपथ** पुं० (हि) चौराहा।
**चौपद** पुं० (हि) चौपाया।
**चौपदा** पुं० (हि) १-चार चरणों वाला छन्द विशेष २-चौपाया।
**चौपर** स्त्री० (हि) चौपड़। चौसर।
**चौ-पहरा** वि० (हि) (स्त्री० चौपहरी) १-चार पहरों से सम्बद्ध। २-दिन के चार पहरों में, प्रत्येक पर होने वाला।
**चौ-पहल** वि० (हि) चार पहल वाला। वर्गात्मक।
**चौ-पहिया** वि० (हि) जिसके चार पहिये हों। स्त्री० चार पहियों वाली गाड़ी।
**चौपा** पुं० (हि) चौपाया।
**चौपाई** स्त्री० (हि) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।
**चौपाड़** पुं० (हि) चौपाल।
**चौपाया** पुं० (हि) चार पैरों वाला (गाय, भैंस, बैल आदि) पशु।
**चौपार, चौपाल** स्त्री० (हि) १-चारों ओर से खुली हुई बैठक जिसमें गाँव के लोग पञ्चायत करते हैं। २-एक प्रकार की पालकी।
**चौपेजी** वि० (हि) चार पेजों या पृष्ठों वाली (पुस्तक)
**चौपैया** पुं० (हि) चार चरण वाला एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८ और १२ के विश्राम से ३० मात्राएँ होती हैं।
**चौफेर** क्रि० वि० चारों तरफ।
**चौबंदी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की छोटी चुस्त मिरजई। २-राजस्व। कर।
**चौबंसा** पुं० (हि) एक वर्णवृत्त।
**चौबगला** पुं० (हि) कुरता, फतुही इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग।
**चौबच्चा** पुं० दे० 'चहबच्चा'।
**चौबरसी** स्त्री० (हि) १-किसी घटना के चौथे बरस होने वाला उत्सव या क्रिया। २-मरने से चौथे बरस किया जाने वाला श्राद्ध।
**चौबाई** स्त्री० (हि) चारों ओर से बहने वाली हवा।
**चौबाछा** पुं० (हि) मुगलों के राजत्व काल में लिया जाने वाला कर विशेष जो घर के प्रत्येक प्राणी पर लगता था।
**चौबार, चौबारा** पुं० (हि) १-छत के ऊपर का कमरा २-खुली हुई बैठक। क्रि० वि० चौथीबार।
**चौबे** पुं० (हि) (स्त्री० चौबाइन) ब्राह्मणों की एक उपजाति। चतुर्वेदी।
**चौबोला** पुं० (हि) एक मात्रिक छन्द।
**चौभड़** पुं० दे० 'चौघड़'।
**चौ-मंजिला** वि० (हि) (स्त्री० चौ-मंजिली) चार खण्ड या मञ्जिल वाला (मकान)।
**चौमसिया** वि० (हि) वर्षा ऋतु के चार मासों में होने वाला। स्त्री० चार माशे का बटखरा।
**चौमार्ग** पुं० (हि) चौराहा।
**चौमास, चौमासा** पुं० (हि) १-वर्षा के चार महीने चतुर्मास। २-खरीफ की फसल उगने का समय। ३-वर्षा ऋतु सम्बन्धी गीत या कविता।
**चौमुखा** वि० (हि) (स्त्री० चौमुखी) चार मुहों वाला क्रि० वि० चारों ओर।
**चौमुहानी** स्त्री० (हि) चौराहा। चौरस्ता।
**चौमेखा** पुं० (हि) प्राचीन काल में दिया जाने वाला एक कठोर दण्ड जिसमें अपराधी को लिटा कर चार मेखें ठोक दी जाती थी।
**चौरंग** पुं० (हि) तलवार चलाने का एक हाथ। वि० खंग या तलवार के आघात से खंड-खंड।
**चौरंगा** वि० (हि) चार रंग वाला।
**चौर** पुं० (सं) १-चोर। तस्कर। २-एक गंध द्रव्य।
**चौरस** वि०(हि) १-समतल। जो ऊँचा नीचा न हो २-चौपहल।
**चौरसाई** स्त्री०(हि) चौरस या समतल करने की क्रिया भाव या मजदूरी।
**चौरसाना** क्रि० (हि) चौरस या समतल करना।
**चौरस्ता** पुं० (हि) चौराहा।
**चौरा** पुं० (हि) [स्त्री० चौरी] १-वेदी। चबूतरा। २-वह चबूतरा जो किसी देवी, देवता, सती, मृत महात्मा आदि के स्थान पर हो। ३-चौपाल। ४-चौबारा।
**चौराई** स्त्री० (हि) १-चौलाई नामक साग। २-एक प्रकार की चिड़िया।
**चौरासी** पुं० (हि) १-अस्सी और चार की संख्या। २-जीवों की चौरासी लक्ष योनियाँ। ३-वे घुंघरू जो नाचते समय पैरों में बाँधते हैं।
**चौराहा** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ चार रास्ते मिलें

या दो सड़कें एक दूसरे को काटें। चौमुहानी।
**चौरंगी** वि० दे० 'चउरिंदी'।
**चौरी** स्त्री०(हिं) १-छोटा कबूतरा। २-वेदी। ३-चँवर
**चौरैठा** पुं० (हि) पिसा हुआ चावल।
**चौर्य** पुं० (सं) चोरी।
**चौर्य-वृत्ति** स्त्री० (स) चोरी की आदत।
**चौर्योन्माद** पु० (सं) चुरा लेने अथवा छिपाकर रखने की खोटी आदत। (क्लेप्टोमेनिया)।
**चौल-कर्म** पुं० (सं) चूड़ाकर्म। मुण्डन।
**चौ-लड़ा** वि० (हि) चार लड़ियों वाला।
**चौलाई** स्त्री० (हिं) एक साग।
**चौलावा** पुं० (हि) ऐसा कुआँ जिसमें एक साथ चार गोट चल सकें।
**चौवर** वि० दे० 'चौहरा'।
**चौवा** पुं० दे० 'चौआ'।
**चौसर** स्त्री० (हिं) १-एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़ २-इस खेल की बिसात। ३-चार लड़वाला हार।
**चौहट, चौहट्ट, चौहट्टा** पुं० (हिं) १-वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दूकानें हों। चौक। २-चौमुहानी
**चौहद्दा** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमाएँ मिलती हों।
**चौहद्दी** स्त्री० (हिं) किसी स्थान या मकान आदि की चारों सीमाएँ।
**चौहरा** वि०(हि) १-चार परत वाला। २-चौगुना।
**चौहान** पुं० (हिं) क्षत्रियों की एक शाखा।
**चौहैं** क्रि० वि० (हिं) चारों ओर। चारों तरफ।
**च्यवन** पुं० (स) १-चूने, टपकने या क्षरण की क्रिया या भाव। (लीकेज)। २-एक ऋषि का नाम।
**च्यवनप्राश** पुं० (स) आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध अवलेह
**च्युत** वि० (सं) १-गिरा या झाड़ा हुआ। २-भ्रष्ट। ३-विमुख।
**च्युत-संस्कारता, च्युतसंस्कृति** स्त्री० (सं) काव्य का व्याकरण सम्बन्धी दोष।
**च्युति** स्त्री० (सं) १-पतन। झड़ना। उपयुक्त स्थान से हटना। ३-विमुखता। ४-भूल। चूक।
**च्यूँटा** पुं० (हि) चींटा। एक कीड़ा।
**च्यूँटी** स्त्री० (हि) चींटी। कीड़ी।
**च्यूड़ा** पुं० (हि) चिउड़ा।
**च्यौना** पुं० (हि) घरिया।

[शब्दसंख्या—१४३१४]

# छ

**छ** हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन, इसका उच्चारण तालु से होता है।

**छंग** पुं० (हि) गोद।
**छंगा** वि० (हि) छः उँगुलियों वाला।
**छँगुनिया, छँगुलिया, छँगुगा** स्त्री० (हि) पंजे की सब से छोटी उँगली। कनिष्ठिका।
**छंछला** स्त्री० (हिं) 'छनछन' का शब्द (नूपुरों का शब्द)।
**छंछाल** पुं० (हि) हाथी।
**छँछोरी** स्त्री० (हि) छाछ से बनाया जाने वाला एक पकवान।
**छँटना** क्रि० (हि) १-अलग होना। छिन्न होना। २-बिछुड़ना। ३-समूह से अलग होना। ४-चुना जाना। ५-साफ होना। मैल निकालना। ६-क्षीण होना।
**छँटनी** स्त्री० (हि) १-छँटाई। २-(नौकरी से) हटाने या अलग करने के लिये छांटने का काम। (रिट्रेंच-मेंट)।
**छँटवाना** क्रि० (हिं) १-किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना। २-चुनवाना। ३-छिलवाना।
**छँटाई** स्त्री० (हि) १-छांटने का काम। २-चुनने की क्रिया। ३-साफ करने का काम। ४-छांटने की मजदूरी।
**छँटाना** क्रि० (हि) छँटवाना।
**छँटुआ** वि० (हिं) १-छाँटकर या चुनकर निकाला हुआ। २-छाँटने के बाद बचा हुआ।
**छँटैल** वि० (हिं) १-छाँटा या चुना हुआ। २-धूर्त। चालाक।
**छँटौनी** स्त्री० (हिं) १-छँटाई। २-छँटनी।
**छँड़ना** क्रि० (हिं) १-त्यागना। २-अन्न कूटना। छाँटना। ३-कै करना।
**छँड़ाना** क्रि० (हि) १-छुड़ाना। २-छीन लेना।
**छँडुआ** वि० (हि) जो छोड़ दिया गया हो। त्यागा हुआ। छूटा।
**छंद** पुं० (हि) १-अक्षरों की गणना के अनुसार वेदों के वाक्यों का भेद। २-वेद। ३-पद्य। ४-पद्य बन्ध। ५-छन्दशास्त्र। ६-अभिलाषा। ७-स्वेच्छा-चार। ८-बन्धन। ९-संघात। समूह। १०-छल। ११-युक्ति। चाल। १२-रंग-ढंग। १३-मनलय। अभिप्राय। १४-एकांत। १५-विष। १६-ढकन। १७-पत्ती। १-चूड़ियों के बीच में पहना जाने वाला एक आभूषण।
**छंदक** पुं० (स) १-छल। २-गुप्त-मतपत्र। शलाका। (बेलट)।
**छंदक-दान** पुं० (स) निर्वाचन के सम्बन्ध में मत देने की क्रिया या भाव। मतदान।
**छंदकपत्र** पुं० (सं) मतपत्र। (वोट)।
**छंदक-पेटिका** स्त्री० (सं) वह सन्दूक जिसमें मतपत्र डाले जाते हैं। (बैलट बॉक्स)।

क्रि० (हि) उलझना। बँधना।
**छंदबंद** पु० (हि) छलबल। कपट।
**छंदशास्त्र** पु० (स) वह शास्त्र जिसमें छन्दों के लक्षण आदि का विवेचन हो। (प्रोसोडी)।
**छंदोगति** स्त्री० (सं) छन्द में शब्दों आदि की वह योजना जिससे उसके पढ़ने में एक विशेष प्रकार की गति या लय का अनुभव हो।
**छंदोबद्ध** वि० (स) जो छन्द या पद्य के रूप में हो पद्यात्मक।
**छंदोभग** पु० (सं) दोषपूर्ण छंद रचना।
**छः** वि० (हि) गिनती में पाँच से एक अधिक।
**छ** पु० (सं) १-काटना। २-ढाँकना। ३-घर। ४-खंड। टुकड़ा। वि० (सं) १-साफ। २-चंचल।
**छई** स्त्री० (हि) क्षयरोग।
**छकड़ा** पु० (हि) बैलगाड़ी। वि० जिसके अंजर-पंजर ढीले हों।
**छकड़ी** स्त्री० (हि) १-छः का समूह। २-वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हैं।
**छकना** क्रि० (हि) १-अघाना। तृप्त होना। २-नशे में चूर होना। ३-चकराना।
**छकाई** स्त्री० (हि) तृप्ति। सन्तोष।
**छकाछक** वि० (हि) १-तृप्त। सन्तुष्ट। २ अघाया। ३-नशे में चूर।
**छकाना** क्रि० (हि) १-खिला-पिलाकर तृप्त करना। २-मद्य आदि से उन्मत्त करना। ३-अचम्भे में डालना।
**छकौला** वि० (हि) १-छका हुआ। तृप्त। २-मस्त। मत्त।
**छकौहाँ** वि० (हि) १-अघाया हुआ। तृप्त। २-छकाने या तृप्त करने वाला।
**छक्करा** पु० (हि) छल-कपट।
**छक्का** पु० (हि) १-छः का समूह। २-छः अवयवों वाली वस्तु। ३-जुए का वह दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। ४-छः बूटियों वाला ताश। ५-होश-हवास। सुध।
**छगड़ा** पु०(हि) [स्त्री० छगड़ी] बकरा।
**छगन** पु० (हि) छोटा बच्चा। (प्यार का शब्द)।
**छगन-मगन** पु० (हि) छोटे-छोटे प्यारे बच्चे।
**छगुनी** स्त्री० (हि) छंगुली। कनिष्ठिका।
**छगोड़ा** वि० (हि) [स्त्री० छगोड़ी] जिसके छः पैर हों। पु० मकड़ा।
**छछिया** स्त्री० (हि) छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र
**छछूंदर** पु० (हि) १-चूहे की जाति का एक जन्तु। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।
**छछौरी** स्त्री० दे० 'छंछौरी'।
**छजना** क्रि० (हि) १-शोभा देना। सजना। २-ठीक जँचना।
**छज्जा** पु० (हि) १-छत का दीवार के बाहर निकला हुआ भाग। बारजा। २-दीवार के बाहर निकली हुई पत्थर की पट्टी। ३-ओलती। ओरी।
**छटंकी** स्त्री० (हि) छटाँक भर तौल का बटखरा। वि० (हि) छोटा और हलका।
**छटकना** क्रि० (हि) १-भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग सहित दूर जाना। २-दूर या अलग रहना। ३-बन्धन से निकल जाना। ४-कूदना।
**छटकाना** क्रि० (हि) १-छुड़ाना। २-झटका देकर बन्धन से छुड़ाना। ३-बलपूर्वक अलग करना।
**छटपटाना** क्रि० (हि) १-तड़फड़ाना। २-बेचैन होना
**छटपटी** स्त्री० (हि) १-बेचैनी। २-आकुलता।
**छटाँक** स्त्री० (हि) सेर का सोलहवें भाग की एक तौल
**छटा** स्त्री० (हि) १-कान्ति। प्रभा। २-प्रकाश। झलक ३-शोभा। वि० दे० 'छठा'।
**छटुआ** वि० (हि) छँटुआ।
**छट्ठी** स्त्री० (हि) छठी।
**छठ** स्त्री० (हि) प्रतिपक्ष की छठी तिथि।
**छठा** वि० (हि) गिनती ६ के स्थान आने वाला।
**छठी** स्त्री० (हि) जन्म से छठे दिन का संस्कार।
**छड़** स्त्री० (हि) धातु या लकड़ी आदि का पतला टुकड़ा।
**छड़ना** क्रि० (हि) अन्न को ओखली में कूटकर साफ करना।
**छड़ा** पु० (हि) १-पैर में पहनने का एक गहना। २-मोतियों की लड़ी। ३-हाथ का पंजा।
**छड़िया** वि० [स्त्री० छड़ी] अकेला। पु० (हि) द्वारपाल
**छड़ियाना** क्रि० (हि) छड़ी मारना।
**छड़ी** स्त्री० (हि) १-पतली लकड़ी। २-हाथ में लेकर चलने की पतली लकड़ी। ३-झण्डी जिसे मुसलमान, पीरों पर चढ़ाते हैं। वि० अकेली।
**छड़ीबरदार** पु० (हि) चोबदार।
**छड़ीला** पु० दे० 'छरीला'।
**छत** स्त्री० (हि) १-घर की छाजन। पाटन। २-ऊपर का ढका भाग। पु० क्षत। घाव। क्रि० वि० (हि) जिसका अस्तित्व हो।
**छतगीर, छतगीरी** स्त्री० (हि) ऊपर तानी हुई चाँदनी
**छतना** पु० (हि) बड़े पत्तों का छाता।
**छतनार** वि० (हि) [स्त्री० छतनारी] छाते के समान फैला हुआ। छायादार (वृक्ष)।
**छतराना** क्रि० (हि) छत्रक अथवा खुमी के रूप में उत्पन्न होकर फैलाना या बढ़ाना। (फंगेट)।
**छतरी** स्त्री० (हि) १-छाता। २-कबूतरों के बैठने का बाँस की फट्टियों का टट्टर। ३-खुमी। ४-कुकुरमुत्ता ५-एक बड़े आकार का छाता, जिसके सहारे सैनिक वायुयान से भूमि पर उतरते हैं। (पैराशूट)।
**छतरी-फौज** स्त्री० हि) छतरियों के सहारे वायुयान

से उतरने वाली सेना।

तिया स्त्री० (हि) छाती।

तियाना क्रि० (हि) छाती से लगाना।

तिवन पुं० (हि) वृक्ष विशेष जिसके कुछ अंग दवा के काम आते हैं।

छतीला वि० (हि) [स्त्री० छतीली] १-चालाक। २-धूर्त।

छतौना क्रि० (हि) छाता।

छत्त स्त्री० (हि) छत।

छत्तर पुं० (हि) १-छत्र। २-सत्र।

छत्ता पुं० (हि) छाता। छतरी। २-मधुमक्खियों का घर। ३-छाते के समान दूर तक फैली हुई वस्तु। ४-रास्ते के ऊपर की छत या पटाव। ५-कमल का बीजकोश।

छत्ती स्त्री० (हि) चमड़े या रबर की वह मशक जिसमें हवा भरकर नदी पार करते हैं।

छत्तीसा वि० (हि) [स्त्री० छत्तीसी] धूर्त।

छत्तेदार वि० (हि) १-छत्ते वाला। २-मधुमक्खियों के छत्ते के आकार का।

छत्र पुं० (सं) १-छाता। छतरी। २-राजचिह्न के रूप में राजाओं के ऊपर लगने वाला छाता।

छत्रक पुं० (स) १-कुकुरमुत्ता। २-छाता। ३-तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४-मन्दिर। ५-मण्डप। ६-शहद की मक्खियों का छत्ता। ७-मिश्री का कूजा।

छत्रकायमान वि० (सं) छत्रक या कुकुरमुत्ता के रूप में होने या फैलाने वाला। (फंगेटिङ्ग)।

छत्रच्छाया, छत्रछाँह, छत्रछाया स्त्री० १-छत्र की छाया। २-आश्रय।

छत्रधनी पुं० (हि) छत्रधारी।

छत्रधर, छत्रधार पुं० (सं) १-छत्र धारण करने वाला व्यक्ति। २-राजाओं के ऊपर छत्र लगाने वाला सेवक।

छत्रधारी वि० (हि) छत्र धारण करने वाला।

छत्रपति पुं० (सं) राजा।

छत्रपन पुं० (हि) क्षत्रियत्व।

छत्रबंध पुं० (सं) एक चित्रकाव्य।

छत्रबंधु पुं० (सं) एक तरह का क्षत्रियों का कुल।

छत्रभंग पुं० (सं) १-राजा का नाश। २-अराजकता ३-ज्योतिष का एक योग जिसमें राजा का नाश होता है।

छत्राक पुं० (सं) १-खुमी। २-जलबबूल।

छत्री वि०(हि) जो छतरी लगाये हो। छत्रयुक्त। पुं० दे० 'क्षत्रिय'।

छद, छदन पुं० (सं) १-आवरण। २-चिड़िया का पंख। ३-पत्ता।

छदम पुं० दे० 'छद्म'।

छदाम पुं० (हि) रुपये का २५६ वाँ भाग।

छद्म पुं०(स) १-छिपाव। गोपन। २-व्याज। बहाना ३-कपट। धोखा।

छद्म-नाम पुं० (सं) लेखक का बनावटी नाम। उप-नाम। (स्यूडौनिम)।

छद्म-युद्ध पुं० (सं) नकली या केवल अभ्यास के लिए किया गया युद्ध। दिखाऊ युद्ध। (शैम-फाइट)।

छद्म-वेश, छद्म-वेष पुं०(सं) बदला हुआ कृत्रिम भेष

छद्मावरण पुं० (सं) शत्रु पक्ष को भ्रम में डालने के लिए विमानों, तोपों आदि को वृक्षों की पत्तियों या धूम पटल आदि से ढक देना। छलावरण। (कैमू-फ्लेज)।

छद्मी वि० (सं) १-छद्मवेशधारी। २-कपटी।

छन पुं० (हि) क्षण।

छनक स्त्री०(हि) १-झनकार। २-जलती वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। ३-भड़क। पुं० एक क्षण।

छनकना क्रि०(हि)१-'छन-छन' शब्द करना। २-दे० 'छनछनाना'। ३-भड़कना।

छनकमनक स्त्री० (हि) १-गहनों की झनकार। २-सजधज। ३-ठसक। ४-नखरा। चोचला।

छनकाना क्रि० (हि) १-'छन-छन' शब्द करना। २-भड़काना। ३-ग्रलकाना।

छनछनाना क्रि० (हि) १-'छन-छन' शब्द होना या करना। २-झनकार होना।

छनि-छबि स्त्री० (हि) क्षणप्रभा। बिजली।

छनदा स्त्री० (हि) १-रात। २-बिजली।

छनना क्रि० (हि) १-छोटे-छोटे छिद्रों से होकर निकलना। २-छाना जाना। ३-मादक पदार्थ का सेवन किया जाना। पुं० (हि) छानने का साधन। छनने की वस्तु।

छनुभंगु वि० दे० 'क्षणभंगुर'।

छनिक वि० दे० 'क्षणिक'।

छन्न पुं०(हि) १-किसी तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। २-झनकार।

छन्ना पुं० (हि) छानने का साधन।

छन्ना-पत्र पुं० (हि) मसिशोष-पत्र के समान एक पत्र जिसमें से छनकर साफ द्रव पदार्थ बाहर आजाता है। (फिल्टर पेपर)।

छन्य पुं०(सं) छन्न-पत्र से छन कर बाहर आया हुआ द्रव पदार्थ। (फिल्ट्रेट)।

छप स्त्री०(हि) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द

छपक पुं० (हि) तलवार आदि से कटने का शब्द।

छपकना क्रि० (हि) १-पतली कमची से किसी को मारना। २-तलवार से किसी वस्तु को काट डालना

छपका पुं० (हि) १-सिर का एक गहना। २-पतली कमची। ३-पानी की छींट। ४-कबूतर फंसाने का जाल।

**छपछपाना** क्रि० (हिं) 'छप-छप' शब्द होना या करना
**छपटना** क्रि०(हिं) १-चिपकना। २-आलिंगित करना
**छपटाना** क्रि० (हि) १-चिपकाना। २-आलिंगन करना।
**छपद** पुं० (हि) भौंरा।
**छपन** वि० (हिं) गुप्त। गायब। पुं० विनाश। संहार
**छपना** क्रि० (हिं) १-छापा जाना। २-चिह्नित या अंकित होना। ३-मुद्रित होना। ४-दे० 'छिपना'।
**छपर-खट, छपर-खाट** स्त्री० (हि) वह पलङ्ग जिसमें मसहरी लग सके।
**छपरा** पुं० (हिं) १-पत्तों से मढ़ा हुआ पान रखने का टोकरा। २-दे० 'छप्पर'।
**छपरी** स्त्री० (हिं) झोंपड़ी।
**छपवाई** स्त्री० (हि) छपाई।
**छपवाना** क्रि० (हिं) छपाना।
**छपा** स्त्री० (हि) १-क्षपा। रात। २-हल्दी।
**छपाई** स्त्री० (हि) १-छापने का काम। मुद्रण। २-छापने का ढंग। ३-छापने की मजदूरी।
**छपाकर** पुं० (हि) क्षपाकर। चन्द्रमा। २-कपूर।
**छपाका** पुं० (हिं) १-पानी में किसी वस्तु के तेजी से गिरने का शब्द। २-वेग से फैंका हुआ पानी का छींटा।
**छपाना** क्रि० (हिं) १-छापने का काम कराना। २-चिह्नित कराना। ३-मुद्रित कराना। ४-छिपाना। ५-छिपना।
**छपानाथ** पुं० (हिं) क्षपानाथ।
**छपाव** पुं० (हिं) छिपाव।
**छप्पय** पुं० (हि) छः चरणों का एक मात्रिक छन्द।
**छप्पर** पुं० (हिं) घर के ऊपर का छाजन। छान।
**छप्परबंद** पुं० (हि) छप्पर छाने वाला।
**छब** स्त्री० (हिं) छवि।
**छब-तखत** स्त्री० (हि) शरीर की सुन्दर बनावट।
**छबि** स्त्री० (हि) छवि।
**छबिकारी** वि० (हि) सौन्दर्यवर्धक।
**छबिधर, छबिमान** वि० (हि) छबीला। सुन्दर।
**छबीला** क्रि० (हिं) (स्त्री० छबीली) सुन्दर। सजीला।
**छब्बीसी** स्त्री० (हिं) छब्बीस वस्तुओं का समूह।
**छम** स्त्री० (हिं) १-घुङ्घरू का शब्द। २-पानी बरसने का शब्द। पुं० (हिं) क्षम।
**छमक** स्त्री० (हिं) छमकने की क्रिया या भाव। ठसक।
**छमकना** क्रि० (हि) १-घुंघुरुओं या गहनों की झनकार होना। २-चमकना। ३-सुन्दर वस्त्राभूषण पहन कर (स्त्रियों का) इधर-उधर इठलाते हुए फिरना।
**छमछम** स्त्री० (हि) १-नूपुर, पायल, घुँघरू आदि का बजने का शब्द। २-मेह बरसने का शब्द।
**छमछमाना** क्रि० (हि) १-छम-छम शब्द करना। २-'छम-छम' शब्द करते हुए चलना।
**छमता** स्त्री० (हि) क्षमता।
**छमना** क्रि० (हिं) क्षमा करना।
**छमा, छमाई** स्त्री० (हिं) क्षमा।
**छमाछम** क्रि० वि० (हिं) निरन्तर 'छम-छम' शब्द सहित।
**छमावान** वि० (हिं) सहनशील। क्षमावान।
**छमासी** स्त्री० (हिं) १- मृत्यु के छः महीने बाद होने वाला श्राद्ध। २-छः माशे का बाट।
**छमिच्छा** स्त्री०(हिं) १-समस्या। २-संकेत। इशारा।
**छमी** वि० (हि) क्षमी।
**छमख** पुं० (हि) षडानन। कार्त्तिकेय।
**छय** पुं० (हिं) क्षय। नाश।
**छयना** क्रि० (हिं) २-क्षीण होना। छीजना। २-छाना।
**छयल** वि० (हिं) छाला।
**छर** पुं० (हि) १-छल। २-क्षर। वि० (हिं) भारी।
**छरकना** क्रि० (हि) १-छिटकना या छिटकाना। २-छलकना।
**छरछंद** पुं० (हिं) छलछन्द।
**छरछंदी** वि० (हि) धूर्त्त। कपटी।
**छरछराना** क्रि० (हि) १-घाव पर नमक आदि लगने से जलन होना। २-कणों का वेग से किसी वस्तु पर गिरना।
**छरद** स्त्री० (हिं) वमन। कै।
**छरना** क्रि० (हिं) १-चूना। बहना। २-छलना। मोहित करना। ३-अनाज आदि छाँटा या फटका जाना।
**छरबर** पुं० (हिं) छलबल।
**छरभार** पुं० (हि) १-कार्यभार। २-झंझट। बखेड़ा
**छरहरा** वि० (हि) (स्त्री० छरहरी) १-इकहरे बदन का दुबला-पतला और हलका। २-तेज। फुर्तीला।
**छरा** पुं० (हिं) १-छड़ा। २-लड़ी। लर। ३-रस्सी। ४-नारा। इजारबन्द।
**छरिंदा** वि० (हि) छरींदा।
**छरिया** पुं० (हि) चोबदार।
**छरी** स्त्री० (हिं) १-छड़ी। २-छली। ३-अप्सरा।
**छरीदा** वि० (हि) १-अकेला। एकाकी। २-जिसके पास बोझ या सामान न हो (यात्री)।
**छरीदार** पुं० (हिं) छड़ीदार। चोबदार।
**छरीला** पुं० (हिं) एक सुगन्धित वनस्पति जिसका व्यवहार मसालों में होता है।
**छरुभार** पुं० दे० 'छरभार'।
**छरोरा** पुं० (हि) खरोंच।
**छर्रा** पुं० (सं) १-छोटी कंकड़ी। कण। २-बन्दूक की गोली।
**छलंक, छलंग** स्त्री० दे० 'छलाँग'।

छल पुं० (सं) १-धोखा। २-मिस। बहाना। ३-कपट। ४-धूर्त्तता। ५-युद्ध नियमों के विरुद्ध शत्रु पर प्रहार। वि० छलपूर्वक बना हुआ।
छलक, छलकन स्त्री० (हि) छलकने की क्रिया या भाव। २-भरे होने के कारण बाहर उमड़ पड़ना।
छलकना क्रि० (हि) १-बरतन हिलने से किसी तरल पदार्थ का उछलकर बाहर निकलना। २-भरे होने के कारण उमड़ना।
छलकपट पुं० (सं) धोखेबाजी।
छलकाना क्रि० (हि) किसी भरे हुए पात्र के द्रव पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना।
छलछंद पुं० (हि) कपट का व्यवहार। धूर्त्तता।
छलछंदी वि० (हि) छलकपट करने वाला। कपटी।
छलछिद्र पुं० (सं) कपट-व्यवहार। धोखेबाजी।
छलछिद्री पुं० (हि) छली। धोखेबाज।
छलन पुं० (सं) छलने का काम।
छलना क्रि० (हि) १-धोखा देना। २-मोहित करना। स्त्री० (सं) छल। धोखा।
छलनी स्त्री० (हि) आटा छानने का पात्र। चलनी।
छल-बल पुं० (सं) काम साधने के लिए किया जाने वाला कपटपूर्ण व्यवहार तथा बल प्रयोग।
छलबल स्त्री० (हि) १-चटकमटक। २-छवि।
छलमलना क्रि० (हि) छलकना।
छलमलाना क्रि० (हि) १-छलकाना। २-छलकना।
छलयोजन पुं० (सं) चतुराई से बनावटी रूप दे देना। ऐसी चाल चलना जिससे कोई वस्तु मनोनुकूल रूप ग्रहण करले। (मैनिपुलेशन)।
छलहाया वि० (हि) [स्त्री० छलहाई] छली। कपटी।
छलांग स्त्री० (हि) उछाल। कुदान। चौकड़ी।
छलांगना क्रि० (हि) फलांग मारना।
छला पुं० (हि) छल्ला।
छलाई स्त्री० (हि) छल।
छलाना क्रि० (हि) धोखे में डलवाना। प्रतारित करना।
छलावरण पुं० (हि) दे० 'छद्मावरण'।
छलावा पुं० (हि) १-भूतप्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २-अगियाबैताल। ३-जादू।
छलित वि० (सं) छला हुआ। ठगा हुआ।
छलिया, छली वि० (हि) कपटी। धोखेबाज।
छल्ला पुं० (हि) १-मुँदरी। २-वलय। कड़ा।
छल्ली स्त्री० (सं) १-छाली। २-लता। ३-अनाज की बोरियों का क्रमानुसार लगा हुआ ढेर।
छल्लेदार वि० (हि) १-जिसमें छल्ले लगे हों। २-जिसमें मंडलाकार चिह्न हों।
छवना पुं० (हि) [स्त्री० छवनी] १-बच्चा। २-सूअर का बच्चा।
छवा पुं० (हि) पशु का बच्चा।
छवाई स्त्री० (हि) १-छाने का काम। २-छाने की मजदूरी।
छवि स्त्री० (सं) १-शोभा। सौंदर्य। २-कांति। चमक। स्त्री० (हि) प्रतिकृति। चित्र। (फोटो)।
छविगृह पुं० (सं) १-चलचित्रालय। २-घर का वह कमरा जिसमें जाकर स्त्रियाँ अपने वस्त्राभूषण पहनती हैं।
छवि-लोक पुं० (सं) वह स्थान या वातावरण जिसमें चल-चित्र तैयार होते हैं।
छवि-संग्रह पुं० (सं) चित्र, फोटो आदि सुरक्षित रखने की किताब या खोली। (एलबम)।
छवी पुं० (हि) चाकू के आकार की एक छोटी कृपाण जिसे सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।
छवैया वि० (हि) (छप्पर) छाने वाला।
छह वि० (हि) छः (संख्या)।
छहरना क्रि० (हि) बिखरना। छितरना।
छहराना क्रि० (हि) बिखरना या बिखराना।
छहरीला वि० (हि) बिखरने वाला।
छहियाँ, छाँ, छाँउँ स्त्री० (हि) छाँह।
छाँक पुं० (हि) टुकड़ा।
छाँगना क्रि० (हि) काटना। छाँटना।
छाँगुर पुं० (हि) छः उंगलियों वाला।
छाँछ स्त्री० (हि) छाछ।
छाँट स्त्री० (हि) १-छाँटने की क्रिया या ढंग। २-छाँटकर अलग की हुई वस्तु। ३-वमन। कै।
छाँट-छिड़का पुं० (हि) साधारण वर्षा। बूंदाबांदी।
छाँटना क्रि० (हि) १-काटकर अलग करना। २-किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३-अनाज में से कन या भूसी अलग करना। ४-चुनना या पृथक करना। ५-दूर करना। हटाना। ६-साफ करना। ७-अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। छोटा या संक्षिप्त करना।
छाँटा पुं० (हि) १-छाँटने की क्रिया या भाव। २-किसी को छल से अलग करना।
छाँड़ना क्रि० (हि) १-छोड़ना। २-कै करना। ३-सूप से अनाज फटकना।
छाँद स्त्री० (हि) पशुओं के पैर बाँधने की छोटी रस्सी। नोई। पगहा। जाल।
छाँदना क्रि० (हि) १-बाँधना। २-पशु के पिछले पैर सटाकर बाँधना।
छाँदा पुं० (हि) १-वह भोजन जो ज्योनार आदि में से अपने घर लाया जाय। परोसा। २-भाग। हिस्सा।
छांदोग्य पुं० (सं) एक उपनिषद्।
छाँधना क्रि० (हि) छाँटना।
छाँव स्त्री० (हि) छाँह।

**छौंवड़ा** पुं० (हिं) [स्त्री० छौंवड़ी, छौंड़ी] १-पशु का छोटा बच्चा। छौना। २-बालक।

**छाँह** स्त्री० (हिं) १-जहाँ धूप न हो। छाया। २-ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३-रक्षा का स्थान। शरण। ४-परछाँई। ५-प्रतिबिम्ब। ६-भूत-प्रेत का प्रभाव।

**छाँहगीर** पुं० (हिं) १-छँदोआ। २-राजछत्र।

**छाँही** स्त्री० (हिं) छाँह।

**छाई** स्त्री० (हिं) १-राख। २-खाद।

**छाउँ** स्त्री० (हिं) छाँह।

**छाक** स्त्री० (हिं) १-तृप्ति। इच्छा-पूर्ति। २-दोपहर का भोजन। ३-नशा। मद। ४-माठ।

**छाकना** क्रि० (हिं) दे० 'छकना'।

**छाग** पुं० (सं) [स्त्री० छागी] बकरा।

**छागर** पुं० (हिं) छागल। बकरा।

**छागल** पुं० (सं) १-बकरा। २-बकरे की खाल की बनी वस्तु। स्त्री० (सं) बकरे के खाल की मशक। स्त्री० (हिं) पैर का एक गहना।

**छाछ** स्त्री० (हिं) वह मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया हो। मट्ठा।

**छाछठ** वि० (हिं) छासठ, (६६)।

**छाछरी** स्त्री० (हिं) मछली।

**छाज** पुं० (हिं) १-अनाज फटकने का उपकरण। सूप। २-छाजन। छप्पर। ३-छज्जा। ४-शोभा। ५-मार्ग।

**छाजन** पुं० (हिं) १-आच्छादन। वस्त्र। २-छप्पर। ३-छाने का काम या ढंग। छवाई। ४-एक चर्म।

**छाजना** क्रि० (हिं) छजना।

**छाजा** पुं० (हिं) १-छाज। २-छज्जा।

**छात** स्त्री० (हिं) छत। पुं० छत्र।

**छाता** पुं० (हिं) [स्त्री० छतरी] १-वर्षा, धूप से बचाव के लिए बनाया हुआ एक प्रसिद्ध आच्छादन। २-मंडप। ३-कबूतरों के बैठने का अड्डा। ४-छतरी। (पैराशूट)। ५-ताल में पानी पर छाये हुए फूल पत्तों का समूह।

**छाती** स्त्री०(हिं) १-सीना। वृक्षःस्थल। २-स्तन। कुच ३-हिम्मत। साहस।

**छात्र** पुं० (सं) [स्त्री० छात्रा] १-विद्यार्थी। शिक्षार्थी। २-शिष्य।

**छात्र-नायक** पुं०(सं)कक्षा या श्रेणी का प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्तव्य कक्षा में अनुशासन की रक्षा करना आदि होता है। (मॉनिटर)।

**छात्र-वृत्ति** स्त्री० (सं) विद्या अर्जन करने के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता। (स्कॉलरशिप)।

**छात्राभिरक्षक** पुं० (सं) छात्रों पर छात्रावास में निगरानी रखने वाला शिक्षा-अधिकारी। (वार्डन)

**छात्रालय, छात्रावास** पुं० (सं) विद्यार्थियों के सामूहिक रूप से रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)।

**छात्रावासीय-विश्वविद्यालय** पुं० (सं) वह विश्वविद्यालय जिसके विद्यार्थी प्रायः निकटवर्ती छात्रालयों में विश्वविद्यालय के वातावरण में ही रहते हों (रेजिडेंशल-युनिवर्सिटी)।

**छादक** वि० (सं) १-आच्छादित करने वाला। २-कपड़े आदि देने वाला।

**छादन** पुं० (सं) १-छाने या ढकने का कार्य। २-आवरण। आच्छादन। ३-छिपाव। ४-कपड़ा।

**छादित** वि० (सं) ढका या छाया हुआ। आच्छादित

**छादी** वि० (सं) [स्त्री० छादिनी] आच्छादन करने वाला।

**छाद्मिक** वि० (सं) १-पाखंडी। मक्कार। २-बहुरूपिया ३-वह जिसने भेस बदला हो।

**छान** स्त्री०(हिं)१-छप्पर। २-छनने की क्रिया या भाव

**छानना** क्रि० (हिं) १-आटा, चूरन आदि को कपड़े या चलनी में से निकालना। २-नशा पीना। ३-खोजबीन करना। ४-छादन।

**छानबीन** स्त्री० (हिं) १-पूरी जाँच-पड़ताल। गहरी खोज। १-पूर्ण विवेचना।

**छाना** क्रि० (हिं) १-आच्छादित करना। २-छाया करने के निमित्त कोई वस्तु ऊपर तानना या फैलाना। ३-फैलना। ४-डेरा डालना। टिकना।

**छानी** स्त्री० (हिं) छप्पर।

**छाने** क्रि० वि० (हिं) चुपके। चोरी से। छिपकर।

**छाप** स्त्री० (हिं) १-मुहर का चिह्न। २-किसी उभरे या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न। ३-धार्मिक चिह्न जिसे वैष्णव अपने अंगों पर अंकित कराते हैं। ४-ठप्पेदार अंगूठी। ५-कवियों का उपनाम। ६-अंगूठे का का चिह्न। ७-मुद्रण। छपाई। ८-गाँठ का चिह्न विशेष।

**छापना** क्रि० (हिं) १-निशान डालना। १-अंकित करना। ३-छापे की कल से मुद्रित करना।

**छापा** पुं० (हिं) १-साँचा। ठप्पा। २-मुहर। मुद्रा। ३-ठप्पे या मुहर का चिह्न या अक्षर। ४-पंजे का निशान। ५-अचानक आक्रमण। धावा।

**छापाखाना** पुं० (हिं) वह स्थान जहाँ छपाई का काम होता है। मुद्रणालय। (प्रिंटिंग प्रेस)।

**छापामार** पुं० (हिं) अचानक धावा मारने वाला। (सैनिक या हवाई जहाज)।

**छाबड़ी** स्त्री० (देश). वह वस्तु जिसमें खाने-पीने की वस्तुएं रखकर बेची जाती हैं। खोनचा।

**छाम** वि० दे० 'क्षाम'।

**छामोदरी** वि० (हिं) छोटे पेट वाला।

**छाय** स्त्री० (हिं) छाया।

**छायल** पुं० (हि) स्त्रियों की एक प्रकार की कुरती।

**छायांक** पुं० (सं) चन्द्रमा।

छाया स्त्री० (सं) १-धूपरहित स्थान। छाँह। २-प्रतिकृति। अनुहार। ३-अनुकरण। ४-नकल। कांति। दीप्ति। ५-अंधकार। ६-परछाँई। प्रतिबिंब। ७-शरण। रक्षा। ८-आर्या छंद का एक भेद।
छायाकृति पुं० (सं) एक-एक शब्द का भाषान्तर न होने पर भाव लेकर की गई रचना। भावानुवाद
छायाकाव्य पुं० (सं) किसी काव्य के आधार पर रचा हुआ काव्य।
छाया-गणित पुं० (सं) गणित की एक क्रिया जिसमें शंकु की छाया के सहारे ग्रहों की गतिविधि का का हिसाब लगाया जाता है।
छाया-ग्राह पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-दर्पण।
छाया-ग्राही वि० (सं) (स्त्री० छायाग्राहिणी) छाया के द्वारा किसी को ग्रहण करने या पकड़ने वाला।
छाया-चित्र पुं० (सं) कैमरे के द्वारा उतारा हुआ चित्र। (फोटोग्राफ)।
छाया-चित्रकार पुं० (सं) कैमरे की सहायता से प्रतिकृति या छाया-चित्र उतारने वाला व्यक्ति।-(फोटोग्राफर)।
छाया-चित्रण पुं० (सं) कैमरे के द्वारा प्रतिकृति या छाया-चित्र उतारने की क्रिया या विद्या। (फोटोग्राफी)।
छाया-दान पुं० (सं) घी या तेल से भरे कटोरे में अपनी परछाई देख कर इसमें कुछ दक्षिणा डाल कर दान देने की विधि।
छायानट पुं० (सं) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
छायानुवाद पुं० (सं) भावानुवाद।
छाया-पथ पुं० (सं) आकाशगङ्गा।
छाया-परिषद् स्त्री० (सं) किसी परिषद् या समिति में से ही कुछ सदस्यों की बनाई हुई समिति जो विवादास्पद विषयों पर सर्वसम्मत हल या समाधान खोजती है। (इसमें मत-भेद रखने वाले सदस्य नहीं लिये जाते)।
छायापाती पुं० (सं) सूर्य।
छायापात्र पुं० (सं) घी या तेल से भरा वह छोटा पात्र जिसमें अपनी परछाई देखकर दान देते हैं।
छायापुरुष पुं० (सं) हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति, जो आकाश की ओर बहुत देर तक स्थिर दृष्टि रखने से दिखाई देती है।
छायाभ वि० (सं) १-छायादार। २-जिस पर छाया पड़ी हो।
छायामय वि० (सं) छायायुक्त। छायादार।
छायामित्र पुं० (सं) छतरी।
छाया-यंत्र पुं० (सं) छाया के द्वारा समय का ज्ञान कराने वाला यन्त्र। धूपघड़ी।
छाया-लोक पुं० (सं) १-स्वप्नलोक। २-अदृश्य जगत।
छायावाद पुं० (सं) वह सिद्धान्त जिसमें अव्यक्त या अज्ञात को लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव प्रकट करते हैं। अज्ञात के प्रति जिज्ञासा प्रगट करने वाला सिद्धान्त।
छायावादी वि० (सं) छायावाद सिद्धान्त को मानने वाला या उसके अनुसार कविता करने वाला।
छार पुं० (हि) १-क्षार। राख। भस्म। २-नमक। ३-खारी पदार्थ। ४-धूल। रेणु।
छारना क्रि० (हि) १-जलाना। भस्म करना। २-चौपट या नष्ट करना।
छाल स्त्री० (हि) १-पेड़ की त्वचा। वल्कल। २-एक मिठाई।
छालक वि० (हि) [स्त्री० छालिका] धोकर साफ करने वाला।
छालटी स्त्री० (हि) छाल या सन का बना वस्त्र।
छालना क्रि० (हि) १-चालना। छानना। २-छेद करना।
छाला पुं० (हि) १-छाल या चमड़ा। २-फफोला।
छालित वि० (हि) धोया हुआ।
छालिया, छाली स्त्री० (हि) सुपारी।
छालो पुं० (हि) बकरा।
छावँ स्त्री० (हि) छाँह। छाया।
छावना क्रि० (हि) छाना।
छावनी स्त्री० (हि) १-डेरा। पड़ाव। २-छाने का पाटने का काम। ३-सेना के ठहरने का स्थान।
छावरा पुं० (हि) छौना।
छावा पुं० (हि) १-पुत्र। बेटा। २-बच्चा।
छाहु स्त्री० (हि) छाछ। तक्र।
छिउँका पुं० (हि) (स्त्री० छिउँकी) साधारण चिउँटे से छोटा, पतला और भूरे रङ्ग का चींटा।
छिउँकी स्त्री० (हि) १-एक तरह की चींटी। २-छोटा उड़ने वाला कीड़ा। ३-लोहे का एक औजार। ४-चिकोटी।
छिकाना क्रि० (हि) छींक लाना।
छिगुनी, छिगुनियाँ, छिगुली स्त्री० (हि) हाथ की सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।
छिछ स्त्री० (हि) छींटा।
छि अव्य०(हि) घृणा तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द
छिउल पुं० (हि) पलाश। ढाक।
छिकना क्रि० (हि) १-घिरना। २-काटा या मिटाया जाना।
छिकनी स्त्री० (हि) एक प्रकार की घास। नकछिकनी।
छिगुनी, छिगुली स्त्री० (हि) सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।
छिच्छ स्त्री० (हि) छींटा।
छिछकारना क्रि० (हि) छिड़कना।
छिछड़ा पुं० (हि) छीछड़ा।

**छिछयाना** क्रि० (हि) १-मारे-मारे फिरना। २-निन्दा करना।
**छिछला, छिछिल** वि० (हि) कम गहरा। उथला।
**छिछोरपन** पुं० (हि) छिछोरा होने का भाव। ओछापन।
**छिछोरा** वि० (हि) ओछा। क्षुद्र।
**छिजना** क्रि० (हि) छीजना। घटना।
**छिटकना** क्रि० (हि) १-चारों ओर फैलना। बिखरना। २-उजाला छाना।
**छिटकाना** क्रि० (हि) चारों ओर फैलाना। बिखराना।
**छिटकी** स्त्री० (हि) छींटा।
**छिड़कना** क्रि० (हि) १-पानी आदि के छींटे डालना २-न्योछावर करना।
**छिड़कवाना** क्रि० (हि) छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
**छिड़का** पुं० (हि) छिड़काव।
**छिड़काई** स्त्री० (हि) १-छिड़काने का काम या भाव। २-छिड़काने की मजदूरी।
**छिड़काव** स्त्री० (हि) पानी छिड़काने की क्रिया या भाव।
**छिड़ना** क्रि० (हि) आरम्भ होना।
**छिण** पुं० (हि) क्षण।
**छितनी** स्त्री० (हि) बांस की बनी छिछली टोकरी।
**छितरना** क्रि० (हि) बिखरना। फैलाना।
**छितरबितर** वि० (हि) दे० 'तितर-बितर'।
**छितराना** क्रि० (हि) १-बिखराना। २-फैलाना। ३-दूर-दूर करना। ४-तितर-बितर करना।
**छितराव** पुं० (हि) छितराने या बखेरने का भाव।
**छिति** स्त्री० (हि) १-भूमि। पृथ्वी। २-एक का अंक
**छितिकंत** पुं० (हि) क्षितिकन्त। राजा।
**छितिज** पुं० (हि) क्षितिज।
**छितिपाल** वि० (हि) राजा।
**छितिरुह** पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
**छितीस** पुं० (हि) क्षितीश। राजा।
**छिदना** क्रि० (हि) १-छेददार होना। २-घायल होना ३-सहारे के लिए पकड़ लेना।
**छिदवाना** क्रि० (हि) छेदने का कार्य अन्य से कराना
**छिदाना** क्रि० (हि) छेदने का काम दूसरे से कराना
**छिद्र** पुं० (सं) १-छेद। २-सूराख। ३-विवर। बिल ३-दोष। ऐब। ४-अवकाश।
**छिद्रदर्शी** वि० (सं) पराया दोष देखने वाला।
**छिद्रात्मा** पुं० (सं) खल। दुष्ट।
**छिद्रान्वेषण** पुं० (सं) दूसरे के दोष ढूँढ़ना।
**छिद्रान्वेषी** वि० (सं) [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] पराये दोष देखने वाला।
**छिद्रित** वि० (सं) १-जिसमें छेद हो। २-दूषित।
**छिन** पुं० (हि) क्षण।
**छिनक** क्रि० वि० (हि) क्षणभर। तनिक।
**छिनकना** क्रि० (हि) जोर से सांस निकालकर नाक साफ करना।
**छिनछवि** स्त्री० (हि) बिजली।
**छिनदा** स्त्री० (हि) क्षणदा। रात।
**छिनना** क्रि० (हि) १-छीन लिया जाना। हरण होना २-(छेनी या टाँकी के) आघात से कटना। ३-कुटना।
**छिनभंग** वि० (हि) क्षणभंगुर।
**छिनरा** वि० (हि) छिनाल।
**छिनवाना, छिनाना** क्रि० (हि) छेदने का काम दूसरे से कराना।
**छिनार, छिनाल** वि० (हि) स्त्री० = १-कुलटा। २-व्यभिचारिणी।
**छिनाला** पुं० (हि) व्यभिचार। बदकारी।
**छिनौछबि** स्त्री० (हि) छिनछबि। बिजली।
**छिन्न** वि० (सं) कटा हुआ। खंडित।
**छिन्न-भिन्न** वि० (सं) १-नष्टभ्रष्ट। २-तितरबितर। ३-कटा हुआ।
**छिन्नमस्ता** स्त्री० (सं) एक देवी।
**छिपकली** स्त्री० (हि) गृहगोधिका। बिस्तुइया।
**छिपना** क्रि० (हि) आड़ में होना। दिखाई न देना।
**छिपाना** क्रि० (हि) १-आँख से ओझल करना। २-प्रकट न करना।
**छिपा-रुस्तम** पुं० (हि) १-वह व्यक्ति जो गुणों से पूर्ण हो पर विख्यात न हो। २-गुप्त गुंडा।
**छिपाव** पुं० (हि) भेद को छिपाने का भाव।
**छिप्र** क्रि० वि० दे० 'क्षिप्र'।
**छिमा** स्त्री० (हि) दे० 'क्षमा'।
**छिया** स्त्री० (हि) १-घृणित वस्तु। २-मल। मैला।
**छियाज** पुं० (हि) कडुआ ब्याज।
**छिरकना** क्रि० (हि) छिड़कना।
**छिरकाना** क्रि० (हि) छिड़काना।
**छिरना** क्रि० (हि) छिलना।
**छिरहा** वि० (हि) हठी। जिद्दी।
**छिरियाना** क्रि० (हि) १-छिड़काना। २-छिटकना।
**छिलक** पुं० (हि) तिलक नामक पौधा।
**छिलकना** क्रि० (हि) छिड़कना।
**छिलका** पुं० (हि) १-फल आदि का आवरण। २-ऊपरी परत।
**छिलछिला** वि० (हि) छिछला।
**छिलन** स्त्री० (हि) १-छिलने की क्रिया या भाव। २-खरोंच।
**छिलना** क्रि० (हि) चमड़े या छिलके का कटकर अलग होजाना या छिलकर अलग हो जाना।
**छिलवाई** स्त्री० (हि) छिलवाने की क्रिया या मजदूरी।
**छिलवाना** क्रि० (हि) छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिल्लड़ पुं० (हिं) छिलका।
छिवना क्रि० (हिं) छूना।
छिहरना क्रि० (हिं) छितराना।
छिहानी स्त्री० (हिं) श्मशान।
छींक स्त्री० (हिं) वेगसहित नाक तथा मुँह से एकाएक निकलने वाला वायु का झोंका।
छींकना क्रि० (हिं) छींक निकलना।
छींका पुं० दे० 'छीका'।
छींट स्त्री० (हिं) १-जलकण। सीकर। २-रंगीन बेल बूटे का छपा हुआ कपड़ा।
छींटना क्रि० (हिं) छितराना।
छींटा पुं० (हिं) १-जलकण। सीकर। २-हलकी वर्षा बौछार। ३-बून्द जैसा चिह्न या दाग। ४-व्यंगपूर्ण उक्ति। ५-चंडू की एक मात्रा।
छींबी स्त्री० (हिं) १-मटर की फली। २-गाय का स्तन।
छी अव्य० (स) घृणासूचक शब्द।
छीअना क्रि० (हिं) छूना।
छीका पुं० (हिं) १-वस्तुओं को रखने का वह गोल जाल जो रस्सियों का बना होता है और छत से लटका रहता है। २-जालीदार खिड़की या झरोखा ३-बैलों के मुँह पर बाँधा जाने वाला जाल। ४-रस्सियों का बना झूलने वाला पुल। झूला।
छीछड़ा पुं० (हिं) मांस का बे-काम लच्छा।
छीछालेदर स्त्री० (हिं) दुर्दशा।
छीज, छीजन स्त्री० (हिं) कमी। घाटा।
छीजना क्रि० (हिं) कम होना।
छीड़ स्त्री० (हिं) आदमियों की कमी। भीड़ का उलटा
छीतना क्रि० (हिं) १-डङ्क मारना। २-कूटना।
छीति स्त्री० (हिं) १-हानि। २-बुराई।
छीतीछान वि० (हिं) तितर-बितर।
छीदा वि० (हिं) १-जिसकी बुनावट घनी न हो। २-जो घना न हो।
छीन वि० (हिं) क्षीण।
छीनता स्त्री० (हिं) क्षीणता।
छीनना क्रि० (हिं) १-कूटना। २-बलपूर्वक लेना। ३-रेहना।
छीना-खसोटी, छीना-छीनी, छीना-झपटी स्त्री० (हिं) किसी वस्तु को छीनकर लेने की क्रिया या भाव।
छीप वि०(हिं) शीघ्र। स्त्री० १-सीप। २-छाप।
छीपना क्रि० (हिं) मछली को फँसाकर जल के बाहर फेंकना।
छीपा पुं० (हिं) [स्त्री० छीपी] १-थाली। २-कपड़े पर बेल-बूटा छापने वाला।
छीपी पुं० (हिं) [स्त्री० छीपिन] छींट छापने वाला।
छीर पुं० (हिं) १-क्षीर। २-कपड़े की लम्बाई वाले सिरे का किनारा।
छीरज पुं० (हिं) दधि। दही।
छीरधि पुं० (हिं) क्षीर सागर।
छीरप पुं० (हिं) दूध पीता बच्चा।
छीरफेन पुं० (हिं) दूध की मलाई।
छीरसागर पुं० (हिं) दूध का सागर।
छीलना क्रि० (हिं) १-छिलका या छाल उतारना। २-खुरच कर अलग करना।
छीलर पुं० (हिं) छिछला गड्ढा। तलैया।
छीव पुं० (हिं) क्षीव। उन्मत्त।
छीवना क्रि० (हिं) छूना।
छुंगुनी स्त्री० (हिं) छँगुली।
छुंगुली स्त्री० (हिं) एक तरह की घुङ्घरूदार अँगूठी
छुआना क्रि० (हिं) छुलाना।
छुगनूं पुं० (हिं) घुँघरू।
छुच्छा वि० (हिं) छूँछा।
छुच्छी स्त्री० (हिं) पतली नली।
छुच्छ वि० (हिं) मूर्ख और तुच्छ।
छुछ-मछली स्त्री० (हिं) मेंढक का वह प्रारम्भिक रूप जो लम्बे कीड़े अथवा मछली की तरह का होता है।
छुछहँड़ स्त्री० (हिं) वह हाँड़ी जिसमें कुछ भी न हो।
छुट अव्य० (हिं) अतिरिक्त। सिवाय।
छुटकाना क्रि० (हिं) १-छोड़ना। २-छुड़ाना। छुटकारा देना।
छुटकारा पुं० (हिं) १-मुक्ति। २-निस्तार। ३-किसी कार्यभार से मुक्ति।
छुटना क्रि० (हिं) छूटना।
छुटपन पुं० (हिं) १-छोटाई। लघुता। २-बचपन
छुटभैया पुं० (हिं) जो छोटे आदमियों में गिना जाता हो, बड़ों में नहीं।
छुट्टा वि० (हिं) [स्त्री० छुट्टी] १-जो बँधा न हो। खुला और अलग। २-एकाकी। ३-स्वतन्त्र। ४-फुटकर
छुट्टी स्त्री० (हिं) १-मुक्ति। २-अवकाश। ३-तातील ४-चलने या जाने की अनुमति।
छुड़वाना क्रि० (हिं) छोड़ने के निमित्त प्रेरित या उद्यत करना।
छुड़ाई स्त्री० (हिं) १-छोड़ने की क्रिया। २-छोड़ने के बदले में दिया जाने वाला धन।
छुड़ाना क्रि० (हिं) १-बंधन या उलझन से मुक्त कराना। २-दूसरे के अधिकार से अलग करना। बरखास्त करना। ४-किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना।
छुड़ैया वि० (हिं) छुड़ाने वाला। स्त्री० दे० 'छुड़ाई'
छुड़ौती स्त्री०(हिं) १-बंधन से मुक्त कराने के निमित्त दिया जाने वाला धन। २-देनदार या आसामी से पावना छोड़ देने की क्रिया। ३-ऋण शेष जो छोड़ दिया जाय। छूट।
छुत स्त्री० (हिं) क्षुधा। भूख।

**छुतहा** *वि०* (हि) १-संक्रामक। २-छूत वाला। ३-अछूत।
**छुतिहा** *वि०* (हि) १-छूतवाला। २-अस्पृश्य।
**छुद्र** *वि०* दे० 'क्षुद्र'।
**छुद्रघंटिका, छुद्र-घट, छुद्रावलि** संज्ञा = क्षुद्रघंटिका।
**छुधा** *स्त्री०* (हि) क्षुधा। भूख।
**छुधित** *वि०* (हि) भूखा।
**छुप** पु० (हि) क्षुप।
**छुपना** *क्रि०* (हि) छिपना।
**छुपाना** *क्रि०* (हि) छिपाना।
**छुभित** *वि०* (हि) क्षुब्ध।
**छुभिरना** *क्रि०* (हि) क्षुब्ध होना।
**छुरधार** *स्त्री०* (हि) छुरे की धार।
**छुरहँड़ी** *स्त्री०* (हि) किसवत।
**छुरा** पुं० (हि) [*स्त्री०* छुरी] १-बड़ी छुरी। २-उस्तरा
**छुरित** पुं० (सं) लास्य नृत्य का एक भेद जिसमें नृत्य करने वाले नायक-नायिका दोनों रस पूर्ण हो परस्पर प्रेम-प्रदर्शनपूर्वक चुम्बनादि करते हुए नृत्य करते हैं। २-बिजली की चमक।
**छुरी** *स्त्री०* (हि) १-लोहे का तेज धार वाला हथियार २-चाकू।
**छुरीधार** *स्त्री०*(हि) छुरे के आकार का एक हाथी दाँत का औजार।
**छुलछुलाना** *क्रि०* (हि) थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।
**छुलाना** *क्रि०* (हि) स्पर्श कराना।
**छुवना** *क्रि०* (हि) छूना।
**छुवाना** *क्रि०* (हि) छुलाना।
**छुहना** *क्रि०* (हि) १-छू जाना। २-छुआ जाना।
**छुहारा** पुं० (हि) १-एक तरह का खजूर। २-खजूर की तरह का एक पेड़ और उसका फल। खुरमा। ३-पिण्डखजूर।
**छुही** *स्त्री०* (हि) खड़िया मिट्टी।
**छुछा** *वि०* दे० 'छूछा'।
**छू** पु० (हि) मन्त्र पढ़कर फूंक मारने का शब्द।
**छूआछूत** *स्त्री०* (हि) अछूत या अस्पृश्य को न छूने अथवा उससे बचने का विचार या प्रथा।
**छूईमूई** *स्त्री०* (हि) लजालू नामक पौधा।
**छूचक** पुं० (हि) अशौच। सूतक।
**छूछ** *वि०* (हि) मूर्ख।
**छूछा** *वि०* (हि) [*स्त्री०* छूछी] १-खाली। २-निःसार ३-निर्धन।
**छूट** *स्त्री०* (हि) १-छूटने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २-अवकाश। ३-अपवाद। ४-बाकी रुपया छोड़ देना। ५-किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ६-स्वतन्त्रता। ७-तलाक। ८-गाली-गलौज
**छूटना** *क्रि०* (हि) १-अलग होना। २-मुक्त होना। ३-रवाना होना। ४-साफ होना। ५-भूल से रह जाना। ६-बिछुड़ना। ७-किसी नियम या परम्परा का भङ्ग होना। ८-वेग के साथ निकलना।
**छूटा** *स्त्री०* (हि) एक तरह की बरछी।
**छूत** *स्त्री०* (हि) १-छूने का भाव। संसर्ग। २-रोग संचारक वस्तु का स्पर्श। ३-अपवित्र वस्तु को छूने का दोष। ४-अशुद्धता।
**छूतछात** *स्त्री०* (हि) छूआछूत का विचार या भाव।
**छूना** *क्रि०* (हि) १-स्पर्श होना या करना। २-हाथ लगाना। ३-पोतना। ४-दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना।
**छेकन** *स्त्री०* (हि) १-छेंकने की क्रिया या भाव। २-मकान आदि की रूपरेखा निश्चित करना।
**छेंकना** *क्रि०* (हि) १-स्थान घेरना। २-जाने से रोकना। ३-लकीरों से घेरना। ४-काटना। मिटाना।
**छेक** पुं० (सं) छेद।
**छेकानुप्रास** पुं० (सं) शब्दालंकार के अन्तर्गत एक अनुप्रास।
**छेकापह्नुति** *स्त्री०* (सं) अपह्नुति अलंकार का एक भेद
**छेकोक्ति** *स्त्री०* (हि) १-वह उक्ति जिससे दूसरे अर्थ की भी ध्वनि निकलती हो। २-साहित्य में एक अलंकार।
**छेड़** *स्त्री०* (हि) १-छेड़ने की क्रिया या भाव। २-किसी को चिढ़ाने वाली बात। चुटकी। ३-रगड़ा। झगड़ा। ४-कार्यारम्भ।
**छेड़खानी, छेड़छाड़** *स्त्री०* (हि) किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव।
**छेड़ना** *क्रि०* (हि) १-चिढ़ाना। २-तंग करना। ३-चुटकी लेना। ४-कोई काम या बात आरम्भ करना ५-बजाने के लिए बाजे में हाथ लगाना।
**छेड़वाना** *क्रि०* (हि) छेड़ने का काम दूसरे से कराना
**छेड़ी** *स्त्री०* (बुंदेली) छोटी और तंग गली।
**छेति** *स्त्री०* (हि) बाधा।
**छेत्र** पुं० दे० 'क्षेत्र'।
**छेद** पुं० (सं) १-छेदन। काटना। २-विनाश। पुं० (हि) १-छिद्र। सुराख। २-बिल। विवर। ३-दोष।
**छेदक** *वि०* (सं) १-छेदने वाला। २-काट कर अलग करने वाला।
**छेदन** पुं० (सं) १-छेदने या काटने का काम। २-ध्वंस। नाश। ३-काटने या छेदने का अस्त्र।
**छेदनहार** *वि०* (हि) १-छेदने वाला। २-नष्ट करने या मिटाने वाला।
**छेदना** *क्रि०* (हि) १-छेद करना। २-घाव करना। ३-काटना।
**छेवा** पुं० (हि) घुन नामक कीड़ा।
**छेद्य** *वि०* (सं) छेदे जाने योग्य।
**छेना** पु० (हि) फटे हुए दूध का खोया। पनीर। *क्रि०*

(हि) कुल्हाड़ी आदि से काटना।
छेनी स्त्री० (हि) टाँकी।
छेम पुं० (हि) क्षेम। कुशल।
छेमकरी स्त्री० (हि) क्षेमकरी। सफेद चील।
छेर स्त्री० (हि) छेरी। बकरी।
छेरना क्रि० (हि) बार-बार पतली टट्टी आना।
छेरवा पुं० (हि) छोकरा। लड़का।
छेरा पुं० (हि) बच्चा। बालक।
छेरी स्त्री० (हि) बकरी।
छेव पुं० (हि) १-घाव। २-नाश। ३-कपटपूर्ण व्यवहार। ४-जोखिम।
छेवना क्रि० (हि) १-काटना। २-चिह्न लगाना। ३-फेंकना। ४-डालना। ५-झेलना। सहना।
छेवर, छेवरा पुं० (हि) १-छाल। २-छिलका। ३-त्वचा।
छेवा पुं० (हि) १-छीलने या काटने का काम। २-छीलने या काटने से बना चिह्न। घाव। ३-वेग से बहने वाला जल। तीव्र।
छेह पुं० (हि) १-दे० 'छेव'। २-नृत्य का एक भेद। स्त्री० (हि) १-छाया। २-मिट्टी। राख। वि०(हि) १-खंडित। २-न्यून। कम।
छेहर स्त्री० (हि) छाया। साया।
छेहरा पुं० (हि) दे० 'छेद'।
छै वि० (हि) छः (६)। पुं० (हि) क्षय।
छैना पुं० (हि) झाँझ नामक बाजा। क्रि० (हि) १-छीजना। नष्ट होना। ३-क्षीण करना। ४-नष्ट करना।
छैया पुं० (हि) बच्चा।
छैल पुं० (हि) १-छैला। २-हठ।
छैलचिकनिया, छैलछबीला पुं० (हि) दे० 'छैला'।
छैलना क्रि० (हि) किसी वस्तु को लेने के लिए हठ करना। (लड़कों का)।
छैला पुं० (हि) वह जो खूब बनाठना हो। सजीला।
छैलाना क्रि० (हि) दे० 'छैलना'।
छोंड़ा पुं० (हि) मथानी।
छोआ पुं० दे० 'खोई'।
छोई स्त्री० (हि) १-ईख की पत्तियाँ। २-निस्सार वस्तु
छोकड़ा, छोकरा पुं० (हि) [स्त्री० छोकड़ी, छोकरी] लड़का। बालक।
छोटा वि० (हि) [स्त्री० छोटी] १-ऊँचाई, लम्बाई या उम्र में कम। २-पद या प्रतिष्ठा में घटकर या कम। ३-तुच्छ। हीन। ४-ओछा।
छोटाई स्त्री० (हि) १-छोटापन। २-नीचता। क्षुद्रता
छोटापन पुं० (हि) १-लघुता। २-लड़कपन।
छोटी इलायची स्त्री० (हि) सफेद गुजराती इलायची
छोटी हाजिरी स्त्री० (हि) भारत में रहने वाले अंग्रेजों का प्रातःकाल का भोजन।
छोड़ अव्य० (हि) अतिरिक्त। सिवा।
छोड़ना क्रि० (हि) १-बन्धन से मुक्त करना। २-चिपकी हुई वस्तु को पृथक करना। ३-अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। ४-ग्रहण न करना। ५-अपराध क्षमा करना। ६-किसी स्थान से हटाना या प्रस्थान करना। ७-पीछा करने के निमित्त किसी को लगाना। ८-वेग सहित बाहर निकलना। ९-पद, कार्य अथवा कर्तव्य से अलग होना। १०-रोग या व्याधि का किसी के शरीर से हट जाना। ११-बचा कर रखना। १२-अभियोग आदि से मुक्त करना। १३-किसी कार्य को भूलवश न करना।
छोनिप पुं० दे० 'क्षोणिप'।
छोनी स्त्री० (हि) दे० 'क्षोणी'।
छोप स्त्री० (हि) १-छोपने की क्रिया या भाव। २-छोपकर चढ़ाई गई तह।
छोपना क्रि० (हि) १-थोपना। २-दबोचना। ३-ढकना।
छोभन पुं० (हि) क्षोभ।
छोभना क्रि० (हि) क्षुब्ध होना या करना।
छोभित वि० (हि) क्षोभित।
छोम वि० (हि) १-चिकना। २-कोमल।
छोर पुं० (हि) १-सिरा। किनारा। २-अन्तिम सीमा। ३-नोक।
छोरना क्रि० (हि) १-खोलना। २-छीनना।
छोरा पुं० (हि) [स्त्री० छोरी] छोकरा। लड़का।
छोराछोरी स्त्री० (हि) छीन-झपटी।
छोलदारी स्त्री० (हि) छोटा खेमा या तम्बू।
छोलना क्रि० (हि) १-छीलना। २-खुरचना। पुं० [स्त्री० छोलनी] सिकलीगर का औजार।
छोला पुं० (हि) १-छीलने वाला व्यक्ति। २-चना।
छोह पुं० (हि) १-प्रेम। स्नेह। २-दया। अनुग्रह।
छोहगर वि० (हि) प्रेमी।
छोहना क्रि० (हि) १-क्षुब्ध होना। २-दया करना।
छोहरा पुं० (हि) [स्त्री० छोहरी] लड़का। बालक।
छोहाना क्रि० (हि) १-प्रेम दिखाना। २-अनुग्रह करना।
छोहिनी स्त्री० (हि) अक्षौहिणी।
छोही वि० (हि) स्नेही। अनुरागी।
छौंक स्त्री० (हि) बघार। तड़का।
छौंकना क्रि० (हि) १-बघारना। तड़का देना। २-वार करने के लिए झपटना।
छौंड़ा पुं० (हि) १-छोकरा। २-अन्न रखने का खत्ता
छौना पुं० (हि) [स्त्री० छौनी] १-पशु-शावक। २-बच्चा। बालक
छौर पुं० (हि) क्षौर। [शब्दसंख्या—१४९६०]
छौलदारी स्त्री० (हि) छोटा तम्बू।

# ज

**ज** हिंदी वर्णमाला का आठवाँ व्यंजन जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। इसका उच्चारण स्थान तालु है।

**जंग** स्त्री० (फा) युद्ध। लड़ाई। पुं० लोहे का मुरचा

**जंगम** वि० (हि) १-चलने फिरने वाला। चर। २-जो एक जगह से दूसरी जगह लाया या लेजाया जा सके। चल। (मूवेबुल)।

**जंगल** पुं० (सं) वन। अरण्य।

**जंगल-बाड़ी** स्त्री० (हि) एक तरह की मलमल।

**जंगला** पुं० (हि) १-वह खिड़की या दरवाजा जिसमें लोहे के छड़ लगे हों। २-छड़ लगी हुई चौखट।

**जंगली** वि० (हि) १-जङ्गल में होने या मिलने वाला २-बिना लगाये आप से आप उगने वाला (पौधा) ३-जङ्गल में रहने वाला। ४-घरेलू या पालतू न हो।

**जंगा** पुं० (हि) घुङ्गरू का दाना।

**जंगार** पुं० (फा) तूतिया।

**जंगारी** वि० (फा) नीले रङ्ग का। नीला।

**जंगाल** पुं० दे० 'जंगार'।

**जंगी** वि० (फा) १-लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाला २-सैनिक। सेना सम्बन्धी। ३-बहुत बड़ा।

**जंगी-कानून** पुं० दे० 'फौजी-कानून'।

**जंगी-जहाज** पुं० (हि) युद्धपोत।

**जंगी-लाट** पुं० (हि) प्रधान सेनापति।

**जंघा** स्त्री० (सं) जाँघ। रान।

**जंचना** क्रि० (हि) १-जाँचा जाना। २-जाँच में पूरा उतरना। ३-जाँच पड़ना।

**जंजर, जंजल** वि० (हि) जर्जर। पुराना और कमजोर

**जंजार, जंजाल** पुं० (हि) १-झंझट। बखेड़ा। २-उलझन। ३-पानी का भँवर। ४-एक तरह की तोप ५-मछलियाँ पकड़ने का बहुत बड़ा जाल।

**जंजीर** स्त्री० (फा) १-कड़ियों की लड़ी। साँकल। २-बेड़ी। ३-किवाड़ की कुण्डी। सिकड़ी।

**जंजीरा** पुं० (हि) जंजीर के समान सिलाई। वि० (हि) जिसमें जंजीर या सिकड़ी लगी हो।

**जंजीरी** स्त्री० (हि) १-गले में पहनने की सिकड़ी। २-एक गहना जो हथेली के पिछले भाग में पहना जाता है। नेवर।

**जंड़** पुं० (देश) एक जंगली वृक्ष, जिसकी फलियों का अचार बनता है।

**जंतर** पुं० (हि) १-यन्त्र। कल। औजार। २-तांत्रिक यन्त्र। ताबीज। कठुला। ३-बीणा।

**जंतर-मंतर** पुं० (हि) १-जादू। टोना। २-वेधशाला

**जंतरी** स्त्री० (हि) १-छोटा जंता जिसमें सोनार तार बढ़ाते हैं। २-पत्रा। पंचांग। ३-जादूगर। ४-बाजा बजाने वाला।

**जंतसर** पुं० (हि) चक्की पीसते समय गाया जाने वाला गीत।

**जंतसार** स्त्री० (हि) जाँता या चक्की गाड़ने का स्थान।

**जंता** पुं० (हि) [स्त्री० जंती, जंतरी] १-यन्त्र। २-सोनार और तार कशों का एक औजार। वि० यन्त्रणा देने वाला।

**जंताना** क्रि० (हि) जांते या चक्की में पिस जाना।

**जंती** स्त्री० (हि) १-छोटा जंता। २-जननी। माता।

**जंतु** पुं० (सं) १-जन्म लेने वाला। २-जीव। प्राणी ३-पशु। जानवर।

**जंतुघ्न, जंतु-नाशक** वि० (हि) कीड़ों का नाश करने वाला।

**जंतु-विज्ञान** पुं० (सं) जन्तुओं या प्राणियों की उत्पत्ति, विकास, स्वरूप और विभागों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान या शास्त्र। (जूलॉजी)

**जंतंत** पुं० (हि) जाँता या चक्की पीसने वाला।

**जंत्र** पुं० (हि) यन्त्र।

**जंत्रना** स्त्री० (हि) यन्त्रणा। क्रि० (हि) ताला लगाना

**जंत्र-मंत्र** पुं० दे० 'जंतर-मंतर'।

**जंत्रित** वि०(हि) १-यन्त्रित। २-बन्द। बँधा। २-अधीन।

**जंत्री** स्त्री० दे० 'जंतरी'। पुं० (हि) बाजा बजाने वाला।

**जंद** पुं० (फा) १-पारसियों का धर्मग्रंथ। २-वह भाषा जिसमें यह धर्मग्रन्थ है।

**जंदरा** पुं० (हि) १-यन्त्र। कल। २-जाँता। ३-ताला

**जंपना** क्रि० (हि) बोलना।

**जंपर** पुं० (अं) एक तरह का जनाना कुरता।

**जंबीर, जंबीर-नीबू** पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा नीबू।

**जंबु** पुं० (सं) जामुन नामक फल।

**जंबुक** पुं० (सं) १-बड़ा जामुन। २-गीदड़।

**जंबुखंड, जंबुद्वीप, जंबुध्वज** पुं० (सं) पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक।

**जंबुर** पुं० (दे) 'जंबूरा'।

**जंबू** पुं० (सं) जामुन फल।

**जंबूर** पुं० दे० 'जंबूरा'।

**जंबूरची** पुं० (फा) तोपची।

**जंबूरा** पुं० (फा) १-वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाती है। २-एक प्रकार की छोटी तोप ३-भँवर-कली। ४-एक प्रकार की बड़ी चिमटी।

**जंबूरी** स्त्री० (फा) एक तरह का जालीदार कपड़ा।

जंभ पुं० (सं) १-दाढ़। २-जबड़ा। ३-जँभाई। ४-एक दैत्य का नाम। ५-जँभीरी नीबू।
जंभन पुं० (सं) १-भोजन करना। भक्षण। २-रति संभोग। ३-जँभाई।
जंभा, जँभाई स्त्री० = आलस्य या निद्रा के कारण मुख खुलने की स्वाभाविक क्रिया। उबासी।
जँभाना क्रि० (हि) जंभाई लेना।
जंबुक पुं० (हि) जंबुक।
जँवाई पुं० (हि) दामाद।
जँहड़ना क्रि० दे० 'जहँड़ना'।
ज पुं० (सं) १-मृत्युञ्जय। २-जन्म। ३-पिता। ४-विष्णु। ५-शिव। ६-मुक्ति। ७-छन्द शास्त्रानुसार एक गण। (ISI)। वि० १-वेगवान। तेज। २-जीतने वाला। प्रत्य० किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक होता है।
जई स्त्री० (हि) १-जौ की तरह का एक अन्न। २-जौ का छोटा अंकुर। ३-अंकुर। अंखुआ। ४-वह फूल जिसमें कली के रूप में फल का मूल रूप भी हो। वि० दे० 'जयी'।
जऊ अव्य० दे० 'यद्यपि'।
जकंद स्त्री० (फा) छलाँग।
जकंदना क्रि० (हि) १-उछलना। कूदना। २-टूट पड़ना।
जक पुं० (हि) १-धनरक्षक यक्ष। २-कंजूस आदमी स्त्री० १-जिद। हठ। २-धुन। रट। स्त्री० (फा) १-पराजय। २-हानि। ३-पराभव।
जकड़ स्त्री० (हि) जकड़ने का भाव। कस कर बाँधना।
जकड़ना क्रि० (हि) १-कस कर बाँधना। २-तनाव सूजन आदि के कारण अङ्गों का हिल-डुल न सकना।
जकड़बंद (हि) चारों ओर से अच्छी प्रकार कस कर बँधा हुआ।
जकना क्रि० (हि) १-भौचक्का होना। २-व्यर्थ बकना।
जकाजक पुं० (हि) भयानक लड़ाई। क्रि० वि० खूब जोरों से।
जकात स्त्री० (अ) १-दान। खैरात। २-कर। महसूल।
जकित वि० (हि) चकित।
जक्की स्त्री० (देश) बुलबुल की एक जाति।
जक्त पुं० (हि) जगत।
जक्ष पुं० (हि) यक्ष।
जखड़ी वि० (हि) १-धूर्त्त। २-दूसरों का माल हड़पने वाला।
जखनी स्त्री० (हि) यक्षिणी।
जखम स्त्री० (फा) १-फोड़ा। घाव। २-चोट।
जखमी वि० (फा) घायल।
जखीरा पुं० (अ) १-कोष। २-ढेर। ३-पौधे, बीज आदि की बिक्री का स्थान।
जग पुं० (हि) १-संसार। जगत। १-दुनिया के लोग ३-यज्ञ। वि० जागा हुआ। जागृत।
जगच्चक्षु पुं० (सं) सूर्य।
जगजगा वि० (हि) चमकीला।
जगजोनि पुं० (हि) ब्रह्मा।
जगड्वाल पुं० (सं) व्यर्थ का आडम्बर।
जगण पुं० (स) पिङ्गल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु तथा आदि और अन्त के अक्षर लघु होते हैं।
जगझंप पुं० (सं) युद्ध में बजाने का एक तरह का ढोल।
जगत् पुं० (सं) १-संसार। विश्व। २-वायु। ३-शिव। ४-जङ्गम।
जगत स्त्री० (हि) कुएँ के ऊपर का चबूतरा। पुं० विश्व। संसार।
जगतसेठ पुं० (हि) संसार में बड़ा माना जाने वाला सेठ।
जगती स्त्री० (सं) १-संसार। भुवन। २-पृथ्वी। ३-पृथ्वी का ऊपरी तल जिस पर हम रहते हैं।
जगती-तल पुं० (सं) पृथ्वी। भूमि।
जगदंत पुं० (हि) १-वह जो जगत का नाश करता है। २-यमराज। ३-शिव।
जगदंबा, जगदंबिका स्त्री० (सं) १-जगत की माता। २-दुर्गा।
जगदात्मा पुं० (सं) ईश्वर।
जगदादि पुं० (सं) १-ब्रह्मा। परमेश्वर।
जगदाधार, जगदीश, जगदीश्वर पुं० (सं) ईश्वर।
जगद्गुरु पुं० (सं) १-परमेश्वर। २-पूज्य और मान्य व्यक्ति।
जगद्धाता पुं० (सं) [स्त्री० जगद्धात्री] १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-महेश।
जगद्धात्री स्त्री० (सं) दुर्गा।
जगद्योनि पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-ईश्वर। ४-पृथ्वी।
जगद्वंद्य वि० (हि) संसार में पूज्य या श्रेष्ठ। विश्ववंद्य।
जगना क्रि० (हि) १-नींद त्याग कर उठना। २-सचेत होना। ३-देवी देवता या भूतप्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना। ४-उत्तेजित होना। ५-(आग का) जलना। ६-जगमगाना।
जगन्नाथ पुं० (सं) १-ईश्वर। २-उड़ीसा राज्य के पुरी नामक स्थान पर विष्णु की एक मूर्ति का नाम।
जगन्नियंता, जगन्निवास पुं० (सं) ईश्वर।
जगन्मय पुं० (सं) विष्णु।
जगबंद वि० दे० 'जगद्वंद्य'।
जगमग, जगमगा वि० (हि) १-प्रकाशित। २-चम-

कीला।
**जगमगाना** क्रि० (हि) चमकना। दमकना।
**जगमगाहट** स्त्री० (हि) चमक।
**जगद्माता** स्त्री० (सं) १-संसार की माता। २-दुर्गा। ३-लक्ष्मी। ४-सरस्वती।
**जग-मोहन** पुं० (सं) देव मन्दिरों में गर्भगृह के सामने का स्थान।
**जगमोहिनी** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-महामाया।
**जगरनाथ** पुं० (हि) जगन्नाथ।
**जगरमगर** वि० (हि) जगमग।
**जगरा** स्त्री० (हि) खजूर की खाँड।
**जगवाना** क्रि० (हि) जगवाने का काम दूसरे से कराना।
**जगसूर** पुं० (हि) राजा।
**जगह** पुं० (हि) १-स्थान। २-अवसर। ३-पद। ओहदा।
**जगहर** स्त्री० (हि) जागरण।
**जगात** पुं० (हि) जकात।
**जगाती** पुं० (हि) कर उगाहने वाला अधिकारी। वि० जिस पर जकात या कर लगता या लग सकता हो।
**जगाना** क्रि० (हि) १-सोने से उठाना। २-सचेत करना। ३-आग को तेज करना। ४-यन्त्र-मन्त्र का साधन करना।
**जगार** स्त्री० (हि) जागरण।
**जगीत** स्त्री० (हि) जगत्।
**जगौंहा** वि० (हि) उनींदा।
**जगौंहाँ** वि० (हि) जगाने की प्रवृत्ति रखने वाला। वि० (सं) जगमगाता हुआ।
**जग्य** पुं० (हि) यज्ञ।
**जघन** पुं० (सं) १-पेड़ू। २-नितम्ब। चूतड़।
**जघन-चपला** स्त्री० (सं) १-कामुक स्त्री। २-कुलटा। ३-आर्या छन्द के सोलह भेदों में से एक।
**जघन्य** वि० (सं) १-बहुत बुरा या निन्दनीय। खराब। २-अन्तिम। चरम। ३-क्षुद्र। नीच।
**जचना** क्रि० (हि) दे० 'जँचना'।
**जचा** स्त्री० (फा) प्रसूता स्त्री।
**जच्चाखाना** पुं० (फा) प्रसवगृह। सौरी।
**जच्छ** पुं० (हि) यक्ष।
**जज** पुं० (सं) १-निर्णायक। २-न्यायाधीश।
**जजन** पुं० (हि) यजन।
**जजमान** पुं० दे० 'यजमान'।
**जजाती** पुं० दे० 'ययाति'।
**जजिया** पुं० (सं) १-एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य के समय में दूसरे धर्म वालों पर लगता था। २-दण्ड।
**जजी** स्त्री० (हि) १-जज की कचहरी। २-जज का काम या पद।
**जजीरा** पुं० (फा) टापू। द्वीप।
**जज्ञ** पुं० (हि) यज्ञ।
**जज्ञ-उपवीत** पुं० (हि) यज्ञोपवीत।
**जज्ञागिनी** स्त्री० (हि) यज्ञ की अग्नि जो शुभ समझी जाती है।
**जज्ञेय** पुं० (हि) यज्ञेश।
**जटना** क्रि० (हि) १-उगना। २-जड़ना।
**जटल** स्त्री० (हि) गप्प।
**जटा** स्त्री० (सं) १-लट के रूप में गुथे हुए सिर के बड़े बाल। २-वृक्ष के पतले सूत। झकरा। ३-जूट। पटसन।
**जटाजूट** पुं० (सं) १-जटा का समूह। २-शिव की जटा।
**जटाधर** पुं० (सं) शिव।
**जटाधारी** पुं० (सं) शिव। वि० जिसके जटा हो।
**जटाना** क्रि०(हि) ठगा जाना।
**जटामासी** स्त्री० (हि) एक वनस्पति की सुगंधित जड़।
**जटायु** पुं० (सं) १-रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २-गुग्गुल।
**जटाव** पुं० (हि) १-ठगे जाने की क्रिया या भाव। २-कुम्हौटी।
**जटित** वि० (सं) जड़ा हुआ।
**जटिल** वि० (हि) १-जटाधारी। २-दुरूह। दुर्बोध। ३-क्रूर। हिंसक।
**जटिलता** स्त्री० (सं) १-पेचीदगी। उलझन। २-कठिनाई।
**जट्टा** पुं० (हि) जाट। (जाति)।
**जठर** पुं० (सं) १-पेट का भीतरी भाग। पेट। २-एक देश का नाम। ३-उदर का एक रोग। वि० १-वृद्ध २-कठिन।
**जठर-अग्निनी** स्त्री० दे० 'जठराग्नि'।
**जठराग्नि** स्त्री० (सं) पेट की वह अग्नि या गरमी जिससे अन्न पचता है।
**जठरानल** पुं० (सं) जठराग्नि।
**जठेरा** वि० (हि) [स्त्री० जठेरी] जेठा। बड़ा।
**जड़** वि० (सं) १-चेतना रहित। २-मूर्ख। ३-सर्दी से ठिठुरा या अकड़ा हुआ। ३-निश्चेष्ट। पुं० (हि) १-वृक्ष का वह भाग जो भूमि में रहता है। २-नींव। बुनियाद। ३-कारण। ४-आधार। आश्रय।
**जड़कना** क्रि० (हि) स्तब्ध हो जाना।
**जड़ता** स्त्री० (सं) १-अचेतनता। २-मूर्खता। ३-जड़ होने का भाव। ४-एक संचारी भाव।
**जड़ताई** स्त्री० दे० 'जड़ता'।
**जड़त्व** पुं० (सं) दे० 'जड़ता'।
**जड़ना** क्रि० (हि) १-एक वस्तु को दूसरी में बैठाना। २-मारना। ३-ठोंकना। ४-चुगली खाना।

जड़-भरत पुं० (सं) अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।
जड़वाना क्रि० (हि) १-जड़ने का काम कराना। २-कील आदि गड़वाना।
जड़हन पुं० (देश) शालिधान।
जड़ाई स्त्री० (हि) १-जड़ने का काम। २-जड़ने की मजदूरी।
जड़ाऊ वि० (हि) जिस पर नगीने या रत्न जड़े हों
जड़ान स्त्री० (हि) जड़ने की क्रिया या भाव।
जड़ाना क्रि० (हि) जड़वाना।
जड़ित वि० (हि) १-जड़ा हुआ। जड़ाऊ।
जड़िमा स्त्री० (सं) जड़ता।
जड़िया पुं० (हि) नग जड़ने का काम करने वाला।
जड़ी स्त्री० (हि) वनौषधि। बूटी।
जड़ीकृत परिसंपद् स्त्री० (सं) वह परिसंपद् जिसके बेचने या हस्तांतरण की मनाही करदी गई हो। (फ्रोजन एसेट्स)।
जड़ीबूटी स्त्री० (हि) वनौषधि।
जड़ीभूत वि० (सं) निःस्पंद। सुन्न।
जड़ीला वि० (हि) जड़वाला।
जड़ैया पुं० (हि) जड़िया। स्त्री० (हि) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर। जूड़ी।
जत वि० (हि) जितना।
जतन पुं० (हि) यत्न।
जतनी वि० (हि) १-यत्न या प्रयत्न करने वाला। २-चतुर।
जतलाना क्रि० (हि) जताना।
जताना क्रि० (हि) १-बताना। अवगत कराना। २-आगाह करना।
जति पुं० (हि) यति।
जतु पुं० (सं) १-गोंद। २-लाख। ३-शिलाजीत।
जतुका पुं० (सं) चमगादड़।
जतुगृह पुं० (सं) १-झोंपड़ी। २-लाक्षागृह, जिसे पाँडवों को मार डालने के लिए बनवाया था।
जतेक क्रि० वि० (हि) जितना।
जत्त पुं० (हि) १-जगत। २-यति।
जत्था पुं० (हि) झुंड। यूथ। स्त्री० पूँजी। धन।
जत्थाबन्दी स्त्री० (हि) दलबन्दी।
जत्थेदार पुं० (हि) दलनायक।
जथारथ वि० (हि) यथार्थ।
जदपि क्रि० वि० (हि) यद्यपि।
जदवार स्त्री० (अ) निर्विषी (औषध)।
जदु पुं० (हि) यदु।
जदुकुल पुं० (हि) यदुकुल।
जदुनाथ, जदुपति, जदुपाल पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
जदुपुर पुं० (हि) यदुपुर। मथुरा।
जदुबंसी पुं० (हि) यदुवंशी।
जदुराज पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
जदुराम पुं० (हि) बलराम।
जदुराय, जदुवर, जदुवीर पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
जद्द वि० (हि) १-अधिक। २-प्रबल।
जद्दपि क्रि० वि० (हि) यद्यपि।
जद्द-बद्द स्त्री० (हि) अनुचित बात।
जद्दी वि० (अ) पुरखों के समय का। वि० बहुत बड़ा अथवा भारी।
जन पुं० (सं) १-लोक। लोग। २-प्रजा। ३-अनुयायी ४-समूह। ५-सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।
जन-अभिशंसक पुं० (सं) सरकार की ओर से चलाया गया अभियोग। (पब्लिक-प्रोसीक्युटर)।
जन-आंदोलन पुं० (स) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए जनता या सर्वसाधारण की ओर से चलाया गया आन्दोलन। (मास-मूवमेंट)।
जनक पुं०(सं) १-जन्मदाता। २-पिता। ३-सीताजी के पिता का नाम।
जनकजा, जनकनंदनी स्त्री० (सं) सीता।
जन-कल्याण-केंद्र पुं० (सं) जनता की उन्नति और भलाई के लिए चलाया जाने वाला केन्द्र। (वैलफेयर-सेन्टर)।
जनकांगजा स्त्री० (सं) सीताजी।
जनकौर पुं० (हि) १-जनकपुर। २-राजा जनक के परिवार के लोग।
जनखा वि० (फा) १-हीजड़ा। २-स्त्रियों के समान हाव-भाव करने वाला।
जनगणना स्त्री० (सं) किसी स्थान या देश के निवासियों की होने वाली गणना या गिनती। (सेंसस)
जन-जागरण पुं० (हि) सर्वसाधारण में अपने हिताहित और अधिकार का ज्ञान होना।
जन-जाति स्त्री० (सं) जंगलों और पर्वतीय स्थानों आदि में रहने वाले वह लोग जो शिक्षा, सभ्यता आदि में निकटवर्ती लोगों से पिछड़े हुए हों और जो मुखियों के आदेशों के अनुसार चलने वाले हों (ट्राइब)।
जन-जाति-क्षेत्र पुं० (सं) वह स्थान जहाँ जनजातीय लोग रहते हैं। (ट्राइबल-एरिया)।
जन-जाति-परिषद् स्त्री० (सं) जनजाति के चुने हुए अथवा नियुक्त किये हुए सदस्यों की सभा या परिषद्। (ट्राइबल-काउँसिल)।
जनतंत्र पुं० (स) वह शासन प्रणाली जिसमें प्रजा या जनता ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है। (डेमोक्रेसी)।
जनतंत्रवाद पुं० (सं) जनतन्त्र या प्रजातन्त्री सिद्धान्त प्रजातन्त्रवाद। (डेमोक्रेटिज्म)।
जनतंत्रवादी वि० (सं) १-जनतन्त्र या लोकतन्त्र-

सम्बन्धी। २–जनतन्त्र सिद्धान्त के अनुसार। ३–जनतन्त्र का पक्षपाती। (डेमोक्रेट)।

**जनतंत्रात्मक** वि० दे० 'जनतंत्रवादी'।

**जनतंत्री** पुं० (स) वह जो जनतन्त्री सिद्धान्त का पोषक हो। वि० (सं) दे० 'जनतंत्रवादी'।

**जनतंत्रीकरण** पुं० (स) १–जनतन्त्री राज्य होने का भाव। २–जनतन्त्री सिद्धान्तों के अनुसार राज्य।

**जनतांत्रिक** वि० (स) जनतन्त्रवादी।

**जनता** स्त्री० (सं) १–जन का भाव। २–जन-समूह। ३–सर्वसाधारण। किसी देश या स्थान के सब निवासी। (पब्लिक)।

**जनता-जनार्दन** पुं० (स) जनता रूपी जनार्दन या भगवान।

**जनन** पुं० (स) १–उत्पत्ति। २–जन्म। ३–आविर्भाव ४–वंश। कुल। ५–पिता।

**जननगति** स्त्री० (स) आबादी के प्रति सहस्र व्यक्तियों के पीछे होने वाले बच्चों के जन्म की गति। (बर्थ-रेट)।

**जनना** क्रि० (हिं) १–जन्म देना। उत्पन्न करना। २–ब्याना।

**जननाशौच** पुं० (स) जन्म होने पर अशुचि।

**जननि** स्त्री० (हि) जननी।

**जन-निर्देश** पुं० (सं) संसद् में पुरस्थापित किसी महत्व के विवादग्रस्त विषय को सर्वसाधारण के सम्मुख मतदान द्वारा निर्णय करने के निमित्त रखना। (रिफरेंडम)।

**जननेंद्रिय** स्त्री० (सं) १–भग। योनि। २–शिश्न।

**जनपद** पुं० (सं) बस्ती। आबादी।

**जनपदी** वि० (हि) जनपद सम्बन्धी। जनपद का।

**जन-प्रवाद** पुं० (सं) अफवाह।

**जनप्रिय** वि० (सं) लोकप्रिय।

**जनबल** स्त्री० (सं) सेना के रूप में प्राप्य व्यक्ति। जो किसी राष्ट्र का बल सूचित करते हैं। (मैन पावर)।

**जनम** पुं० (हि) १–जन्म। २–सारा जीवन काल। जिंदगी।

**जनम-घुट्टी, जनमघूँटी** स्त्री० (हि) जन्म के समय से लेकर दो वर्ष तक के बच्चे को पिलाई जाने वाली औषध।

**जनमत** पुं० (सं) जनसाधारण की राय। लोकमत।

**जनमधरती** स्त्री० (हि) जन्मभूमि।

**जनमना** क्रि० (हि) जन्म लेना।

**जनमनोभाव** पुं० (सं) सर्वसाधारण के मन में उत्पन्न होने वाला भाव या प्रकृति (मास मेण्टेलेटी)।

**जनमसंघाती** पुं० (हि) १–जिसका साथ जन्म से हो २–वह जिसका साथ जन्म भर रहे।

**जनमाना** क्रि० (हि) प्रसव कराना।

**जनयात्रा** स्त्री० (सं) जलूस।

**जनयिता** पुं० (हि) [स्त्री० जनयित्री] पिता।

**जनयित्री** स्त्री० (सं) माता।

**जन-रंजन** वि० (सं) सर्वसाधारण को सुख या आनन्द देने वाला।

**जन-रक्षा-अधिनियम** पुं० (सं) वह अधिनियम जो सर्वसाधारण की सुरक्षा की दृष्टि से बनाया गया हो (पब्लिकसेफ्टी-एक्ट)।

**जनरव** पुं० (सं) १–अफवाह। २–बदनामी। ३–कोलाहल।

**जनलोक** पुं०(सं) सात लोकों में से एक लोक (पुराण)

**जनवाई** स्त्री० (हि) जनाई।

**जनवाद** पुं० (सं) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जनता अपने लिए अपना राज्य अपने मत या वोटों से बनाती है। (डेमोक्रेसी)।

**जनवादिक** वि० (स) जनवाद सम्बन्धी। जनवाद का डेमोक्रेटिक।

**जनवादी** पुं० (सं) जनवाद सिद्धांत का पक्षपाती।

**जनवाना** क्रि० (हि) १–प्रसव कराना। २–किसी दूसरे के द्वारा सूचित करवाना।

**जनवास** पुं०(हि) १–सर्वसाधारण के ठहरने का स्थान २–बरातियों के ठहरने का स्थान।

**जनवासा** पुं० (हि) बरातियों के ठहरने का स्थान।

**जन-वास्तु-विभाग** पुं० (सं) वह राजकीय विभाग जिसके अधीन सार्वजनिक निर्माण कार्य होता है। (पब्लिक-वर्क्स-डिपार्टमेंट)।

**जनश्रुत** वि० (सं) विख्यात। [illegible]।

**जनश्रुति** स्त्री० (स) अफवाह। [illegible]।

**जन-संकट** पुं०(सं) किसी राष्ट्र या राज्य पर महामारी, अकाल, बाढ़ आदि का संकट जो सार्वजनिक होता है।

**जनसंख्या** स्त्री० (स) किसी [illegible] संख्या या गिनती। [illegible]।

**जनसंज्ञप्ति** स्त्री० (स) [illegible] परिपत्र द्वारा सर्वसाधारण को सूचना [illegible] भाव (पब्लिक नोटिफिकेशन)।

**जनसंपर्काधिकारी** पुं० (स) सरकार का जनता से सम्बन्ध बनाये रखने वाला अधिकारी। (पब्लिक रिलेशन आफीसर)।

**जन-संभरण-विभाग** पुं० (हि) सरकार [illegible] की ओर से संचालित वह विभाग [illegible] जनता के दैनिक उपयोग में आने वाली [illegible] वस्तुओं का निश्चय और वितरण [illegible] किया जाता है। (डिपार्टमेंट-आफ-सिविल सप्लाइज)।

**जनसेवक** पुं०(सं) १–सार्वजनिक कार्यकर्ता। २–राज-कर्मचारी। सरकारी नौकर।

**जन-सेवा** स्त्री० (सं) १–ऐसा काम जो सर्वसाधारण के हित के लिए हो। २–सरकारी नौकरी।

**जन-सेवा-आयोग, जन-सेवा-समितक** पुं० (सं) लोक-सेवा आयोग। (पब्लिक सर्विस कमीशन)।
**जन-स्थान** पुं० (सं) १-मनुष्यों का निवास-स्थान। २-दण्डकारण्य का एक पुराना प्रदेश।
**जन-स्वास्थ्य-संचालक** पुं० (सं) स्वास्थ्य विभाग का वह अधिकारी जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए उचित निर्देश आदि देता रहता है। (डायरेक्टर आफ-पब्लिक-हैल्थ)।
**जनहरण** पुं० (सं) एक दण्डक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३० लघु और एक गुरु होता है।
**जन-हितैषी-राज्य** पुं० (सं) ऐसा राज्य जहाँ जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख-सुविधा आदि की विशेष व्यवस्था हो तथा जीविका दिलाने एवं असमर्थता-वृत्ति आदि का आयोजन हो। (वेलफेयर-स्टेट)।
**जनांतिक** पुं० (सं) दो व्यक्तियों में परस्पर वह सांकेतिक वार्तालाप जिसे दूसरे उपस्थित लोग न समझ सकें।
**जना** पुं० (हि) [स्त्री० जनी] मनुष्य। आदमी। वि० उत्पन्न किया हुआ। पुं० जन्म। उत्पत्ति।
**जनाई** स्त्री० (हि) १-बच्चा जनाने वाली स्त्री।
**जनाउ** पुं० (हि) दे० 'जनाव'।
**जनाचार** पुं० (सं) देश या समाज की प्रचलित रीति लोकाचार।
**जनाजा** पुं० (अ) १-मृतक शरीर। २-अरथी।
**जनानखाना** पुं० (फा) घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं। अन्तःपुर।
**जनाना** वि० (फा) [स्त्री० जनानी] १-स्त्रियों का। स्त्री सम्बन्धी। २-स्त्रियों का सा। क्रि० (हि) १-प्रसव कराना। २-जताना। पुं० (फा) १-हीजड़ा। २-नामर्द। ३-पत्नी।
**जनाब** पुं० (अ) महाशय। महोदय।
**जनार्दन** पुं० (सं) विष्णु।
**जनाव** पुं० (हि) जानकारी या परिचय प्राप्त करना।
**जनावरी** स्त्री० दे० 'गुनावरी'।
**जनावर** पुं० (हि) जानवर।
**जनाश्रय** पुं० (सं) १-धर्मशाला। २-सराय। ३-घर।
**जनि** स्त्री० (सं) १-नारी। स्त्री। २-माता। ३-पुत्र-वधू। ४-जन्म। ५-जन्मभूमि। ६-पत्नी। ७-एक गन्धद्रव्य। अव्य० न। नहीं। मत।
**जनित** वि० (सं) [स्त्री० जनिता] १-जन्मा हुआ। उत्पन्न। २-उत्पन्न किया हुआ।
**जनिता** स्त्री० (सं) माता।
**जनित्र** पुं० (सं) जन्मस्थान। जन्मभूमि।
**जनित्री** स्त्री० (सं) माता। माँ।
**जनिय** पुं० (सं) जन्मस्थान।
**जनिया** स्त्री० (हि) प्रियतमा। प्रिया।
**जनी** स्त्री० (हि) १-दासी। २-स्त्री। ३-माता। ४-कन्या। ५-एक गन्धद्रव्य। वि० उत्पन्न या पैदा की हुई।
**जनु** क्रि० वि० (हि) मानो (उत्प्रेक्षावाचक)।
**जनुक** अव्य० (हि) मानो। जानो। (उपमावाचक)।
**जनून** पुं० (अ) उन्माद। पागलपन।
**जनूनी** पुं० (अ) पागल।
**जनेंद्र** पुं० (सं) राजा।
**जनेऊ** पुं० (हि) १-यज्ञोपवीत। २-यज्ञोपवीत संस्कार।
**जनेत** स्त्री० (हि) बरात।
**जनेता** पुं० (हि) पिता।
**जनेव** पुं० (हि) जनेऊ।
**जनेवा** पुं० (हि) १-जनेऊ के समान पड़ी हुई धारी या लकीर। २-तलवार का वह वार जो कंधे पर पड़ कर तिरछे बल पर कमर तक काट डाले।
**जनेश** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-राजा।
**जनेस** पुं० (हि) १-ईश्वर। २-राजा।
**जनैया** वि० (हि) जानकार।
**जनोपयोगी सेवा** स्त्री० (सं) वह सेवा कार्य या व्यवस्था जो सर्व साधारण के लिए विशेष उपयोगी या आवश्यक हो। (पब्लिक-यूटिलिटी-सर्विस)।
**जनौं** क्रि० वि० (हि) मानो। गोया।
**जन्नत** स्त्री० (अ) स्वर्ग।
**जन्म** पुं० (सं) १-उत्पत्ति। पैदाइश। २-आविर्भाव ३-जीवन। जिन्दगी। ४-आयु। जीवनकाल।
**जन्म-कुंडली** स्त्री० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिसमें किसी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है।
**जन्मग्रहण** पुं० (सं) जन्म लेना। उत्पत्ति।
**जन्मज** वि० (सं) जन्मजात। जन्मसिद्ध।
**जन्मज-रोग** पुं० (हि) पैतृक रोग।
**जन्मजात** वि० (सं) जन्म से ही प्राप्त (अधिकार आदि)।
**जन्म-तिथि** स्त्री० (सं) जन्म दिन।
**जन्मदिन** पुं० (हि) जन्म का दिन। वर्षगाँठ।
**जन्मना** क्रि० (हि) १-जन्म लेना। २-अस्तित्व में आना।
**जन्मपंजी** स्त्री० (सं) स्थानिक निकायों की वह पंजी जिसमें किसी क्षेत्र में जन्मने वाले शिशुओं का जन्म समय, पिता का नाम, पता आदि बातें लिखी जाती हैं। (बर्थ रजिस्टर)।
**जन्म-पत्री** स्त्री० (सं) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा तथा अन्तर्दशा आदि दिये हों।
**जन्म-प्रमाणक** पुं० (सं) वह प्रमाणपत्र जिससे यह प्रमाणित हो कि अमुक व्यक्ति की जन्मतिथि यह है। (बर्थ-सारटिफिकेट)।
**जन्मभूमि** स्त्री० (सं) वह स्थान अथवा देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मसिद्ध वि० (सं) जिसकी सिद्धि जन्म से हो। जन्म से ही प्राप्त।
जन्मस्थान पुं० (सं) १-जन्मभूमि। २-स्वदेश।
जन्मांतर पुं० (सं) दूसरा जन्म।
जन्मा पुं० (सं) वह जिसका जन्म हुआ हो। वि० उत्पन्न।
जन्माना क्रि० (हि) उत्पन्न करना। जन्म देना।
जन्माष्टमी स्त्री० (सं) भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म आधी रात के समय हुआ था।
जन्मेजय पुं० (सं) १-विष्णु। २-कुरु वंश के राजा परीक्षित का नाम। ३-एक नाग का नाम।
जन्मोत्सव पुं० (हि) किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव। वर्षगाँठ।
जन्य पुं०(सं) [स्त्री० जन्या] १-साधारण मनुष्य। २-अफवाह। ३-राष्ट्र। ४-पुत्र। ५-दामाद। ६-पिता। ७-जन्म। वि० १-जन सम्बन्धी। २-किसी जाति, देश या राष्ट्र से सम्बन्ध रखने वाला। ३-राष्ट्रीय। जातीय। ४-जो उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत।
जन्या स्त्री० (सं) १-माता की सखी। २-वधू की सखी ३-वधू। बहू।
जन्हु पुं० दे० 'जह्नु'।
जप पुं० (सं) १-किसी मंत्र नाम या वाक्य का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण। २-जपने वाला।
जपतप पुं० (सं) पूजापाठ।
जपन पुं० (सं) जपने का काम। जप।
जपना क्रि०(हि)१-जप करना। २-खाजाना। ले लेना
जपनी स्त्री० (हि) १-माला। २-गोमुखी।
जप-माला स्त्री० (सं) जप करने की माला।
जपा स्त्री० (सं) जवा। अड़हुल। पुं० जप करने वाला व्यक्ति।
जपाना क्रि० (हि) जप कराना।
जपिया, जपी वि० (हि) जप करने वाला।
जप्त वि० दे० 'जब्त'।
जफील स्त्री० (प) १-सीटी का शब्द। २-वह जिससे सीटी बजाई जाय।
जफीलना क्रि० (हि) सीटी बजाना।
जब क्रि० वि० (हि) जिस समय। जिस वक्त।
जबड़ा पुं० (हि) मुँह के ऊपर नीचे की वह हड्डियाँ जिनमें दाँत उगे होते हैं।
जबर वि० (प) १-बलवान। बली। २-पक्का। दृढ़।
जबरई स्त्री० (हि) जबरदस्ती।
जबरजंग वि० (फा) १-बहुत बड़ा या बलवान। २-उच्च। श्रेष्ठ।
जबरदस्त वि० (फा) १-बलवान। २-दृढ़। मजबूत।
जबरदस्ती स्त्री० (फा) १-बल प्रयोग। २-अत्याचार। जुल्म। क्रि० वि० (हि) बलपूर्वक।
जबरन् क्रि० वि० (अ) बलपूर्वक। जबरदस्ती।
जबरा वि० (हि) जबरदस्त। बलवान। घोड़े की तरह का एक पशु।
जबह पुं० (अ) गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। हिंसा।
जबहा पुं० (हि) जीवट। साहस।
जबाँ स्त्री० दे० 'जबान'।
जबान स्त्री० (फा) १-जीभ। जिह्वा। २-बात। बोल। ३-प्रतिज्ञा। ४-भाषा।
जबानदराज वि० (फा) धृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करने वाला।
जबान-बंदी स्त्री० (फा) १-लिखा जाने वाला इजहार २-मौन। चुप्पी। ३-चुप रहने या न बोलने की आज्ञा।
जबानी वि०(हि) १-मौखिक। २-जो कहा तो गया हो पर लिखित न हो।
जब्त वि० (अ) १-राज्य द्वारा किया हुआ कब्जा। २-अपनाया हुआ।
जब्ती स्त्री० (अ) जब्त होने की क्रिया।
जब्र पुं० (अ) कठोर व्यवहार। ज्यादती।
जब्रन क्रि० वि० (अ) बलात्।
जभी क्रि० वि० (हि) १-ज्यों ही। २-जिस समय ही।
जम पुं० (हि) यम।
जमई वि० (हि) जो जमा हो। नकदी।
जमक पुं० (हि) यमक।
जम-कात, जमकातर पुं०(हि) पानी का भँवर। स्त्री० (हि) १-यम का खाँडा। २-खाँडा।
जमकाना क्रि० (हि) चमकाना।
जमघंट पुं० (हि) यमघंट।
जमघट पुं० (हि) भीड़। जमावड़ा।
जमडाढ़ स्त्री० (हि) कटारी जैसा एक हथियार।
जमदग्नि पुं० (सं) एक प्राचीन ऋषि जो परशुराम के पिता थे।
जमदीया पुं० (हि) यमदीपक जो कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को यम के नाम पर घर के बाहर रख देते हैं।
जमदूत पुं० (हि) मृत्यु के दूत। यमदूत।
जमधर पुं० (हि) जमडाढ़ नामक कटार।
जमन पुं० दे० 'यवन'।
जमना क्रि० (हि) १-तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। २-दृढ़तापूर्वक बैठना। ३-स्थिर होना ४-एकत्र होना। ५-पूरा-पूरा अभ्यास होना। ६-कोई काम उत्तमता से होना। ७-किसी व्यवस्था अथवा कार्य का अच्छी प्रकार चलने योग्य हो जाना ८-उपजना।
जमनिका स्त्री० (हि) १-यवनिका। परदा। २-काई। ३-मैल।
जमनौता पुं० (हि) जमानत के बदले में दी जाने वाली रकम।

**जमराज** पु॰ (हि) यमराज।

**जमवट** स्त्री॰ (हि) कुएँ की नीव में रखी जाने वाली पहिये के तरह की लकड़ी।

**जमवार** पु॰ (हि) यम का द्वार या न्यायसभा।

**जमा** वि॰ (अ) १-एकत्र। इकट्ठा। २-सब मिलाकर। ३-खाते के आयपक्ष में लिखित (धन)। ४-स्त्री॰ १-मूलधन। पूँजी। २-रुपया-पैसा। ३-भूमिकर। जोड़।

**जमाई** पु॰ (हि) दामाद। स्त्री॰ १-जमने या जमाने की क्रिया या भाव। २-जमने या जमाने की मजदूरी।

**जमाखर्च** पु॰ (फा) १-आय और व्यय।

**जमाजथा** स्त्री॰ (हि) धन-संपत्ति। नगदी और माल।

**जमात** स्त्री॰ (हि) १-मनुष्यों का समूह। २-कक्षा। श्रेणी।

**जमादार** पु॰ (फा) सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।

**जमानत** स्त्री॰ (अ) किसी व्यक्ति की जिम्मेवारी जो न्यायालय में कुछ रुपये जमा कराकर या कागज पर लिख कर ली जाती है। जामिनी।

**जमानतदार** पु॰ (अ) जमानत लेने वाला।

**जमानतनामा** पु॰ (अ+फा) वह कागज जो किसी की जमानत लेने समय लिखा जाता है।

**जमानती** वि॰ (अ) जमानत सम्बन्धी। जमानत का पु॰ दे॰ 'जामिन'।

**जमाना** पु॰ (फा) १-समय। काल। युग। २-बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३-प्रताप या सौभाग्य का समय। ४-दुनिया। संसार।

**जमाना-साज** वि॰ (फा) अपना मतलब गाँठने के लिए दूसरों को प्रसन्न करने वाला।

**जमा-बंदी** स्त्री॰ (फा) पटवारी का एक कागज जिसमें आसामियों के नाम की रकमें लिखी रहती हैं।

**जमा-मार** वि॰ (हि) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेने वाला।

**जमाल** पु॰ (अ) सौन्दर्य।

**जमालगोटा** पु॰ (हि) एक पौधा जिसके बीज अत्यन्त रेचक होते हैं।

**जमाव** पु॰ (हि) २-जमने या जमाने का भाव। २-इकट्ठा होना। भीड़। ३-समूह। समुदाय।

**जमावट** स्त्री॰ (हि) जमने की क्रिया या भाव।

**जमावटी** वि॰ दे॰ 'जमौआ'।

**जमावड़ा** पु॰ (हि) बहुत से लोगों की भीड़। जमघट

**जमीकंद** पु॰ (सं) कन्द विशेष। सूरन।

**जमींदार** पु॰ (फा) वह जो जमीन का स्वामी हो और किसानों को लगान पर जोतने-बोने लिए के खेत देता हो।

**जमींदारी** स्त्री॰ (फा) १-जमींदार की जमीन। २-जमींदार का पद। ३-जमीन का लगान वसूल करने की एक व्यवस्था, जिसके अनुसार जमीन का मालिक सरकार को जमीन का निश्चित लगान दे और दूसरों को वही जमीन खेती के लिए देकर अधिक वसूल करता था। (स्वाधीन भारत में इस प्रथा का अन्त हो गया)।

**जमी** स्त्री॰ (हि) यमी।

**जमींदोज** वि॰ (हि) १-तोड़-फोड़कर जमीन के बराबर किया हुआ। २-जमीन के भीतर का। जैसे--जमींदोज नालियाँ।

**जमीन** स्त्री॰ (फा) १-पृथ्वी। २-भूमि। धरती। ३-सम्पत्ति। ४-सतह। ५-भूमिका। आयोजन।

**जमीमा** पु॰ दे॰ 'क्रोड़पत्र'।

**जमुआ** पु॰ (हि) जामुन (फल या पेड़)।

**जमुआर** पु॰ (हि) जामुन का वन।

**जमुकना** क्रि॰ (हि) सटना। पास-पास होना।

**जमुना** स्त्री॰ (हि) यमुना।

**जमुहाना** क्रि॰ (हि) जँभाना।

**जमूरक** पु॰ (हि) एक तरह की छोटी तोप।

**जमोग** पु॰ (हि) १-स्वीकार करने या कराने की क्रिया। २-समर्थन। ३-देहाती लेन-देन की एक रीति।

**जमोगना** क्रि॰ (हि) १-आय-व्यय की जाँच करना। २-दूसरे को भार सौंपना। सहेजना। ३-तसदीक करना। ४-बात की जाँच करना।

**जमौआ** वि॰ (हि) जमाकर बनाया हुआ।

**जम्हाई** स्त्री॰ दे॰ 'जँभाई'।

**जम्हाना** क्रि॰ (हि) जँभाना।

**जयंत** वि॰ (सं) [स्त्री॰ जयंती] १-विजयी। २-बहुरूपिया।

**जयंती** स्त्री॰ (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-ध्वजा। ४-किसी महापुरुष की जन्मतिथि पर होने वाला उत्सव। ५-जैंत नामक वृक्ष। ६-बैजन्ती का पौधा ७-ज्योतिष का एक योग। ८-जई।

**जय** स्त्री॰ (सं) जीत। विजय। पु॰ १-विष्णु के एक द्वारपाल का नाम। २-महाभारत का पूर्व नाम।

**जयजयकार** पु॰ (सं) किसी की जय मनाने का शब्द

**जय-जयवंती** स्त्री॰ (हि) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

**जयजीव** पु॰ (हि) एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है=जय हो और जीवो।

**जयति** अव्य॰ (सं) जय हो।

**जयद्रथ** पु॰ (सं) दुर्योधन के बहनोई का नाम (महाभारत)।

**जयना** क्रि॰ (हि) जीतना।

**जयपत्र** पु॰ (सं) १-वह पत्र जो पराजित व्यक्ति अपनी पराजय के प्रमाणस्वरूप लिखकर देता है।

विजय-पत्र। २-वह पत्र जो किसी के किसी विवाद में विजय होने पर लिखा जाता है। डिगरी।
**जयफर** पुं० (हिं) जायफल।
**जयमार, जयमाल, जयमाला** स्त्री० (हिं) १-विजयी को पहनाई जाने वाली माला। २-कन्या द्वारा वर के गले में डाली जाने वाली माला।
**जयश्री** स्त्री० (सं) १-विजय। २-एक रागिनी।
**जयस्तंभ** पुं० (सं) विजय का स्मारक स्तम्भ।
**जया** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-हरी दूब। ४-पताका। ध्वजा। वि० (स) जय दिलाने वाली।
**जयी** वि० (हिं) विजयी।
**जय्य** वि० (सं) जिसे जीता जा सके।
**जर** पुं० (सं) बुढ़ापा। पुं० (हिं) ज्वर। पुं० (फा) १-स्वर्ण। सोना। २-धन। दौलत।
**जरई** स्त्री० (हिं) १-धान के बीज जिसमें अंकुर फूटे हों। २-दे० 'जई'।
**जरकंबर** पुं० (हिं) जरी के काम का दुशाला।
**जरकटी** स्त्री० (देश) एक शिकारी चिड़िया।
**जरकस, जरकसी** वि० (फा) जिस पर सोने के तार लगे हों।
**जरखरीद** वि० (फा) मूल्य चुका कर खरीदा हुआ।
**जर-छार** वि० (हिं) १-भस्मीभूत। २-नष्ट।
**जरठ** पुं० (सं) १-कठिन। कर्कश। २-जीर्ण। पुराना। ३-वृद्ध। बुड्ढा।
**जरत्** वि० (सं) [स्त्री० जरती] १-वृद्ध। २-प्राचीन।
**जरतार** पुं० (फा) सोने, चाँदी आदि का तार। जरी
**जरतुश्त** पुं० दे० 'जरदुश्त'।
**जरद** वि० (फा) जर्द। पीला।
**जरदा** पुं० (फा) १-पान में खाने की तम्बाकू। २-एक भोज्य पदार्थ जो चावलों से बनता है। ३-पीले रंग का घोड़ा।
**जरदालू** पुं० (फा) खुबानी नामक मेवा।
**जरदी** स्त्री० (फा) १-पीलापन। २-अण्डे के अन्दर का पीला गूदा।
**जरदुश्त** पुं० (फा) पारसी धर्मप्रवर्तक एक आचार्य।
**जरदोज** पुं० (फा) जरदोजी का काम करने वाला।
**जरदोजी** स्त्री० (फा) वह काम जो कपड़े पर सलमे-सितारे आदि से किया जाता है।
**जरन** स्त्री० (हिं) जलन।
**जरना** क्रि० (हिं) १-जलना। २-जड़ना।
**जरनि** स्त्री० दे० 'जलन'।
**जरब** स्त्री० (म) १-आघात। २-गुणा। (गणित)।
**जरबफ्त** पुं० (फा) रेशमी वस्त्र जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।
**जरबाफ** पुं० (फा) जरदोज।
**जरबाफी** वि० (फा) जरबाफ के काम का। स्त्री० जरदोजी।
**जरबीला** वि० (हिं) भड़कीला और सुन्दर।
**जरमन** पुं० (मं) १-जरमनी देश का निवासी। २-जरमनी देश की भाषा। वि० (मं) जरमनी देश की भाषा।
**जरमन-सिलवर** पुं० (मं) एक सफेद और चमकीली धातु जो जस्ते, ताँबे और निकल को मिलाकर बनती है।
**जरमनी** पुं० (मं) मध्य यूरोप का एक देश।
**जरमुआ** वि० (हि) [स्त्री० जरमुई] जलने वाला। ईर्षा करने वाला।
**जरर** पुं० (म) १-हानि। क्षति। २-आघात। चोट।
**जरल** स्त्री० दे० 'जलन'।
**जरवारा** वि० (हिं) धनी। संपन्न।
**जरा** स्त्री० (सं) बुढ़ापा। वि० (म) थोड़ा। कम।
**जराऊ** वि० (हि) जड़ाऊ।
**जराग्रस्त** वि० (सं) वृद्ध।
**जराना** क्रि० (हिं) जलाना।
**जरायम** पुं० जुर्म का बहुवचन।
**जरायम-पेशा** पुं० १-डाका डालकर व अपराध कर-करके जीवन निर्वाह करने वाला। २-इस पेशे पर जीवन निर्वाह करने वाली जाति।
**जरायु** पुं० (सं) १-गर्भ की वह झिल्ली जिसमें बँधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है। आँवल। उल्व। २-गर्भाशय।
**जरायुज** पुं० (सं) गर्भ से उत्पन्न प्राणी। पिंडज।
**जराव** पुं० (हि) १-जड़ाव। २-जड़ाव। वि० जड़ाऊ
**जरासंध** पुं० (सं) मगध देश का एक राजा।
**जरित** वि० (हि) जटित।
**जरिमा** स्त्री० (सं) वृद्धावस्था।
**जरिया** पुं०(अ)१-सम्बन्ध। लगाव। २-हेतु। कारण ३-साधन। वि० (हि) जो जला या जलाया गया हो पुं० दे० 'जड़िया।
**जरी** स्त्री० (फा) १-सुनहले तारों से बना कपड़ा। करचोबी। २-सोने का तार आदि का काम। वि० (हि) वृद्ध। बुड्ढा।
**जरीब** स्त्री० (फा) १-भूमि नापने की २० गज लम्बी जञ्जीर। २-लाठी। छड़ी।
**जरीबाना, जरीमाना** पुं० दे० 'जुरमाना'।
**जरूर** क्रि० वि० (म) अवश्य। निःसंदेह।
**जरूरत** स्त्री० (म) आवश्यकता। प्रयोजन।
**जरूरी** वि० (फा) १-जिसके बिना काम न चले। २-आवश्यक।
**जरौट** वि० (हि) जड़ाऊ।
**जर्जर, जर्जरित** वि० (सं) १-जीर्ण। २-टूटा फूटा। ३-वृद्ध।
**जर्द** वि० (फा) पीला।
**जर्दा** पुं० दे० 'जरदा'।

जर्दी स्त्री० (फा) पीलापन ।
जर्रा पुं० (अ) १-अणु । २-बहुत छोटा खंड या टुकड़ा ।
जर्राह पुं० (अ) शल्य चिकित्सक ।
जलंधर पुं० (सं) १-एक पौराणिक असुर । २-एक प्राचीन ऋषि । ३-योग का एक बंध । पुं० (हि) जलोधर ।
जल पुं० (सं) १-पानी । २-उशीर । खस । ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र । ४-(ज्योतिष) जन्मकुण्डली में चौथा स्थान ।
जल-अलि पुं० (सं) १-पानी का भँवर । २-जल भौंरा
जलकर पुं० (सं) १-जलाशयों में होने वाले पदार्थ । २-ऐसे पदार्थों पर लगने वाला कर ।
जलकल स्त्री० (हि) १-पानी का नल । २-आग बुझाने का दमकला ।
जलकल विभाग पुं० (सं) नगरपालिका का वह विभाग जो नगर के सब भागों में नल अथवा कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करता है । (वाटर वर्कस) ।
जलकवच वि० (सं) जल में भीगे रहने अथवा उसके प्रभाव में न आने वाला (पदार्थ) । (वाटर प्रूफ) ।
जलकुंभी स्त्री० (सं) जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति ।
जलकुकुही स्त्री० (हि) एक प्रकार का पौधा जो जल में होता है ।
जलक्रीड़ा स्त्री० (सं) जलाशय में किये जाने वाले खेल या क्रीड़ा ।
जलखई स्त्री० (हि) जलपान ।
जलखावा पुं० (हि) जलपान ।
जलघड़ी स्त्री० (हि) समय का ज्ञान कराने वाला एक प्राचीन यंत्र ।
जलघुमर पुं० (हि) पानी का भँवर ।
जलचर पुं० (सं) [स्त्री० जलचरी] जल में रहने वाले जीवजन्तु ।
जलचादर पुं० (हि) प्रपात ।
जलचारी पुं० दे० 'जलचर' ।
जलचिकित्सा स्त्री० (सं) चिकित्सा की एक प्रणाली जिसमें जल की भाप, स्नान आदि द्वारा चिकित्सा या इलाज किया जाता है । (हाइड्रोपैथी) ।
जलजंतु पुं० (सं) जलचर ।
जलज वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला । पुं० (सं) १-कमल । २-शङ्ख । ३-मछली । ४-सेवार । ५-जलजन्तु । ६-मोती ।
जलजन पुं० (सं) एक गन्धहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस जिससे पानी का निर्माण होता है । उदजन । (हाइड्रोजन) ।
जलजला पुं० (फा) भूकम्प ।
जलजात वि० (सं) जलज । पुं० (सं) कमल ।
जल-जान पुं० (हि) जलयान ।
जल-जाल पुं० (सं) समुद्र ।
जलजालिनी स्त्री० (सं) एक तरह की मोतियों की माला
जलडमरूमध्य पुं० (सं) दो बड़े समुद्रों को मिलाने वाला समुद्र का पतला भाग । (स्ट्रेट) ।
जलतरंग पुं० (सं) एक प्रकार का बाजा जो जल की भरी कटोरियों पर आघात करके बजाया जाता है ।
जलतरोई, जलतोरी स्त्री० (हि) मछली ।
जलत्रास पुं० (सं) जल से लगने वाला भय जो कुत्ते के काटने पर विष का असर होने की अवस्था में होता है ।
जलथंभ पुं० (हि) १-मन्त्रों द्वारा जल को रोकने या बाँधने की क्रिया । २-दे० 'जलस्तम्भ' ।
जलद वि० (सं) जल देने वाला । पुं० (सं) १-मेघ । बादल । २-मोथा । ३-कपूर ।
जलदस्यु पुं० (सं) समुद्री डाकू । (पाइरेट) ।
जलदागम पुं० (सं) १-वर्षाकाल का आगमन । २-आकाश में बादलों का घिरना ।
जलधर पुं० (सं) १-मेघ । बादल । २-समुद्र ।
जलधर-माला स्त्री० (सं) १-बादलों की पंक्ति । २-एक वर्णवृत्त ।
जलधरी स्त्री० (सं) जलहरी ।
जल-धारक वि० (सं) जल धारण करने वाला । पुं० (सं) बादल ।
जलधि पुं० (सं) समुद्र ।
जलन स्त्री० (हि) १-जलने की पीड़ा या दाह । २-ईर्ष्या के कारण होने वाला मानसिक कष्ट ।
जलना क्रि० (हि) १-दग्ध होना । २-अग्नि के कारण भाप या कोयला होना । ३-झुलसना । ४-ईर्ष्या के कारण मन में कुढ़ना ।
जलनाथ पुं० (सं) १-इन्द्र । २-वरुण । ३-समुद्र ।
जल-निकास-योजना स्त्री० (हि) नगर के गन्दे पानी को निकालने के लिए नालियों आदि की योजना । (ड्रेनेज-स्कीम) ।
जलनिधि पुं० (सं) समुद्र ।
जलनिर्गम पुं० (सं) पानी का निकास ।
जलपक वि० दे० 'जल्पक' ।
जलपक्षी पुं० (सं) जल के आस-पास रहने वाले पक्षी ।
जलपति पुं० (सं) १-वरुण । २-समुद्र । ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।
जलपथ पुं० (सं) १-जल बहने का मार्ग । २-नदी । ३-नहर ।
जलपना क्रि० (हि) १-लम्बी-चौड़ी बातें करना । २-बकवाद करना ।
जलपान पुं० (सं) पूरे भोजन से पहले किया जाने

वाला और थोड़ा भोजन। कलेवा।
**जलपान-गृह** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ जलपान (मिठाई, चाय आदि) का सामान मिले या जहाँ बैठकर जलपान किया जा सके। (रेस्तराँ)।
**जलपाना** क्रि० (हि) किसी को बोलने या जलपने में प्रवृत्त करना।
**जल-पोत** पुं० (सं) पानी में चलने वाला बड़ा जहाज
**जलप्रणाली** स्त्री० (सं) दो समुद्रों के मध्य में पड़ने वाला लम्बा सा जलमार्ग जो जलडमरूमध्य से अधिक चौड़ा होता है। (वाटर-चैनल)।
**जलप्रपा** पु० (सं) प्याऊ। सबील।
**जलप्रपात** पुं० (सं) १-किसी नदी आदि के स्रोत का ऊपर से नीचे गिरना। २-वह स्थान जहाँ किसी ऊँचे पहाड़ से जलस्रोत नीचे गिरता हो।
**जलप्रलय** पुं०(सं) संपूर्ण-सृष्टि का जलमग्न होजाना।
**जलप्रवाह** पुं०(सं) १-पानी का बहाव। २-कोई वस्तु नदी में डालकर बहाना।
**जल-प्रस्फोट** पुं०(सं) वह प्रस्फोट या बम जो पनडुब्बी आदि को डुबाने के उद्देश्य से पानी में गिराया जाय। (डेप्थचार्ज)।
**जलप्रांगण** पुं० (सं) किसी देश की सीमा का वह भाग जिस पर उस देश का अधिकार होता है। (टेरिटोरियल वाटर्स)।
**जलप्राय** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ जल का आधिक्य हो।
**जलप्लावन** पुं०(सं) १-पानी की बाढ़। २-दे० 'जल-प्रलय'।
**जलप्लावित** वि० (सं) पानी में डूबा हुआ। जलमग्न
**जलबम** पुं० दे० 'जल-प्रस्फोट'।
**जलभंवरा, जलभौंरा** पुं० (हि) एक प्रकार का काला कीड़ा जो पानी पर बड़ी शीघ्रता से दौड़ता है।
**जलमय** वि०(सं) १-जल से परिपूर्ण। २-जल के जैसा
**जलमापक** पुं० (सं) द्रवों का घनत्व नापने का यंत्र। (हाइड्रोमीटर)।
**जलमापन-यंत्र** पुं० (सं) जल को नापने का यंत्र।
**जल-मानुष** पुं० (सं) [स्त्री० जल-मानुषी] एक कल्पित जल-जन्तु जिसकी नाभी के ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के समान होता है।
**जल-मार्ग** पुं०(सं) नदियों आदि के रूप में बना जल-मार्ग। जलपथ। (वाटर-वेज)।
**जल-यंत्र** पु० (स) १-फुहारा। २-जलघड़ी। ३-कुएँ आदि से पानी निकालने का यंत्र। (वाटर-पंप)। ४-एक विद्युत यंत्र जिसके द्वारा समुद्र में एक जहाज को दूसरे जहाज के आने का पता चल जाता है। (हाइड्रोफोन)।
**जल-यंत्र-गृह, जल-यंत्र-मन्दिर** पुं०(सं) १-वह मकान जिसमें या जिसके आस-पास फुहारे हों। २-वह जिसके चारों ओर पानी हो।
**जल-यात्रा** स्त्री० (सं) १-जलमार्ग से नाव आदि के द्वारा यात्रा। २-तीर्थ जल लाने के लिए यजमान की सविधि यात्रा।
**जलयान** पुं० (सं) १-जल में चलने वाला यान या सवारी। २-जहाज। ३-नाव।
**जलराशि** पुं० (सं) समुद्र।
**जलरुह** पुं० (सं) कमल।
**जलवाना** क्रि० (हि) जलाने का काम दूसरे से कराना
**जलवायु** स्त्री० (सं) किसी स्थान की वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्राणियों आदि के विकास एवं स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। हवा पानी। (क्लाइमेट)
**जलविद्युत** स्त्री० (सं) जल शक्ति से यंत्रों की सहायता से तैयार की गई बिजली। (हाईड्रो-इलेक्ट्रिसिटी)।
**जल-विमान** पुं० (सं) वह विमान या वायुयान जो जल और नभ दोनों में समान रूप से विचरण करता है। (हाइड्रोप्लेन)।
**जल-विश्लेषण** पुं० (सं) कुछ लवणों का पानी में घुलने पर अम्ल तथा क्षार के रूप में विच्छेदन। (हाईड्रोलिसिस)।
**जलविश्लेषक** पुं०(सं) कुछ लवणों का पानी में घुलने पर अम्ल तथा क्षार के रूप में विच्छेदन करने वाला (हाइड्रोलिटिक)।
**जलविहार** पुं० (सं) १-नदी तालाब आदि में नाव पर घूम कर सैर करना। २-दे० 'जल-क्रीड़ा'।
**जलव्याघ्र** पुं० (सं) शील मछली का एक बड़ा क्रूर मांसाहारी जल जन्तु।
**जलसिकता** स्त्री० (सं) सिलिका का एक गाढ़ा और चिकना रूप। (हाइड्रोजन)।
**जलशायी** पुं० (सं) विष्णु।
**जलसंत्रास** पुं० (सं) दे० 'जलातंक'।
**जल-समाधि** स्त्री० (सं) १-जल में डूब कर प्राण-त्यागना। २-किसी वस्तु का जल में डूब कर नष्ट होना।
**जलसा** पुं० (अ) १-समारोह। २-बैठक।
**जलसाई** पुं० (हि) श्मशान।
**जलसिंह** पुं० (सं) [स्त्री० जलसिंही] एक प्रकार का हिंसक जलजन्तु।
**जलसेना** पुं० (सं) नौसेना।
**जल-सेनापति** पुं० (सं) नौसेनाध्यक्ष।
**जलस्तंभ** पुं० (सं) एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तम्भ का रूप धारण कर लेता है।
**जलस्तंभन** पुं० (सं) मन्त्र बल से जल की गति रोकना। पानी बाँधना।
**जलहर** वि० (हि) पानी से भरा हुआ। पुं० जलाशय

**जलहरण** पुं० एक वर्णवृत्त या दण्डक छन्द।
**जलहरी** स्त्री० (हिं) १-अर्घा जिसमें शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है। २-शिवलिंग के ऊपर पानी टपकाने वाला घड़ा।
**जलहल** वि० (हिं) जलमय। पुं० जलाशय।
**जलहस्ती** पुं० (सं) एक बड़ा जन्तु जिसकी चरबी की मोमबत्तियाँ बनाई जाती हैं।
**जलहार** पुं० (सं) पानी भरने वाला। पनिहारा।
**जलांक** पुं० (सं) कागज की बनावट में जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रकार से बनाया हुआ चिह्न जो कागज को प्रकाश में देखने से मालूम पड़ता है। (वाटरमार्क)।
**जलांकन** पुं० (सं) जल की सहायता से प्रक्रिया विशेष की सहायता से उसमें जलाङ्क या कुछ अक्षर, चिह्न आदि बनाना। (वाटर-मार्किङ्ग)।
**जलांकित** वि० (सं) जलाङ्क बनाया हुआ (कागज)। (वाटर मार्केड)।
**जलाऊ** वि० (हिं) जो जलाया जा सके।
**जलाक** स्त्री० (हिं) जलाने वाली हवा। लू।
**जलाजल** वि० दे० 'झलाझल'।
**जलातंक** पुं० दे० 'जल-संत्रास'।
**जलातन** स्त्री० (हिं) अत्यधिक कष्ट देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव। वि० (हिं) संतप्त।
**जलाद** पुं० (हिं) जल्लाद।
**जलाधिप** पुं० (सं) वरुण देवता।
**जलाना** क्रि० (हिं) १-प्रज्वलित करना। २-झुलसाना ३-ईर्ष्या उत्पन्न करना।
**जलापा** पुं० (हिं) ईर्ष्या की जलन। द्वेष। दाह।
**जलाभ्यंतर-वाहिनी-नौका** स्त्री० (सं) एक तरह का युद्धपोत जो पानी की सतह के नीचे डुबकी लगाकर भी अपना काम जारी रख सके और जो टारपीडो, गोलों, तोपों आदि से सज्जित हो। पनडुब्बी। (सबमेरीन)।
**जलार्णव** पुं० (सं) वर्षाकाल। बरसात।
**जलाल** पुं० (अ) १-तेज। प्रकाश। २-आतङ्क।
**जलाव** पुं० (हिं) १-जलाने की क्रिया या भाव। २-जलने के कारण कम होने वाला अंश।
**जलावतन** वि० (अ) [स्त्री० जलावतनी] देश निकाले का दण्ड पाया हुआ। निर्वासित।
**जलावतरण** पुं० (सं) १-जल में उतरना। २-नवीन जलपोत का तैयार होने के उपरान्त सर्वप्रथम जल अथवा समुद्र में उतरना या पहुँचना।
**जलावन** पुं० (हिं) १-ईंधन। २-किसी वस्तु का जलने वाला अंश।
**जलावर्त** पुं० (सं) १-पानी का भंवर। २-एक प्रकार का मेघ।
**जलाशय** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो।
**जलाहल** वि० (हिं) जलमय।
**जलीय** वि० (सं) १-जल सम्बन्धी। जल का। २-जल या पानी में होने वाला। ३-जिसमें पानी का कुछ अंश हो।
**जलीय-क्षेत्र** पुं० (सं) किसी देश के किनारे के आसपास का समुद्र जिस पर उसकी सत्ता हो। (टेरीटोरियल-वाटर्स)।
**जलीय-रंग** पुं० (सं) पानी मिलाकर तैयार किया गया रङ्ग। (वाटर-कलर)।
**जलूस** पुं० (अ) जनयात्रा। शोभायात्रा।
**जलूसी** वि० (अ) १-जलूस सम्बन्धी। २-(सन् या संवत्) जिसका आरम्भ किसी राजा या बादशाह के सिंहासन पर बैठने के दिन या वर्ष से हुआ हो
**जलेंद्र** पुं० (सं) १-वरुण देवता। २-महासागर।
**जलेबी** स्त्री० (हिं) १-एक प्रकार की घेर दार मिठाई २-गोल घेरा। कुण्डली।
**जलोढ़-भूमि** स्त्री० (सं) बाढ़ आदि के द्वारा बहाकर लाई हुई भूमि। (एल्यूवियल-साइल)।
**जलोत्तोलन-यंत्र** पुं० (सं) पानी को नीचे से ऊपर खींचने वाला यंत्र। (वाटरपम्प)।
**जलोदर** पुं० (सं) एक रोग जिसमें नाभी के पास पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होता है जिससे पेट फूल जाता है।
**जलोद्वहन-यंत्र** पुं० दे० 'जलोत्तोलन-यंत्र'।
**जलोत्सारण-योजना** स्त्री० (सं) दे० 'जल-निकास-योजना'।
**जलौका** स्त्री० (सं) जोंक।
**जल्द** क्रि० वि० (अ) १-शीघ्र। २-अविलंब।
**जल्दबाज** वि० (फा) हर काम में जल्दी मचाने वाला
**जल्दबाजी** स्त्री० (फा) किसी काम में आवश्यकता से अधिक जल्दी करना।
**जल्दी** स्त्री० (अ) शीघ्रता। क्रि० वि० (अ) १-शीघ्र। २-तेजी से।
**जल्प** पुं० (सं) १-कथन। कहना। बकवाद। प्रलाप
**जल्पक** वि० (सं) बकवादी। वाचाल।
**जल्पना** क्रि० (हिं) १-व्यर्थ बकवाद करना। २-डींग मारना।
**जल्पित** वि० (सं) १-मिथ्या। २-कथित। कहा हुआ
**जल्ला** पुं० (हिं) १-ताल। २-झील। ३-हौज।
**जल्लाद** पुं० (हिं) १-प्राण दंड पाये हुए व्यक्ति के प्राण लेने वाला व्यक्ति। वधिक। क्रूर व्यक्ति।
**जव** पुं० १-दे० 'जौ'। २-दे० 'जवा'। पुं०(सं) १-तेजी। २-जल्दी।
**जवन** पुं० दे० 'यवन'। सर्व० दे० 'जो'।
**जवनिका** स्त्री० दे० 'यवनिका'।
**जवाँ** वि० दे० 'जवान'।
**जवा** स्त्री० दे० 'जपा'। पुं० (हिं) लहसुन का दाना।

**जवाई** स्त्री० (हि) १-जाने की क्रिया। गमन। २-जाने का भाव। ३-जाने के बदले दिया जाने वाला धन।

**जवाखार** पुं० (हि) जौ के क्षार से बनने वाला एक प्रकार का नमक।

**जवाड़ी** स्त्री० (हि) गेहूँ में इक्के-दुक्के जौ के दाने।

**जवान** वि० (फा) युवावस्था। यौवन।

**जवाब** पुं० (अ) १-उत्तर। २-बदला। ३-मुकाबले की चीज। ४-नौकरी से हटाने की आज्ञा।

**जवाबतलब** वि० (फा) जिसके सम्बन्ध में समाधान-कारक उत्तर मांगा गया हो।

**जवाबदार** वि० (फा) उत्तरदाता। जवाबदेह।

**जवाबदावा** पुं० (अ) वह उत्तर जो प्रतिवादी के निवेदन पत्र के उत्तर में लिखकर अदालत में देता है

**जवाबदेह** वि० (फा) उत्तरदाता। जिम्मेदार।

**जवाबी** वि० (फा) १-जवाब सम्बन्धी। २-जिसका जवाब देना हो। ३-जो किसी के जवाब में हो।

**जवार** पुं० (अ) १-पड़ोस। २-आस-पास का प्रदेश स्त्री० (हि) ज्वार। जुआर (अन्न)। पु० दे० 'जवाल'।

**जवारी** स्त्री० (हि) १-जौ, छुहारे, मोती आदि को गूँथी हुई माला। २-सींग, हाथी दाँत आदि का वह टुकड़ा जिस पर सितार, बीन आदि के तार टिके रहते हैं।

**जवाल** पुं० (हि) १-अवनति। २-पतन। ३-झंझट।

**जवास, जवासा** पुं० (हि) एक तरह का कँटीला पौधा।

**जवाहर** पुं० (अ) १-रत्न। मणि। २-दे० 'जवाहर-लाल'।

**जवाहरलाल** पुं० विश्वविख्यात राजनैतिक नेता जो संसार में शान्ति के अग्रदूत, और पंचशील सिद्धान्त के सृष्टा हैं। भारत देश के प्रधान मन्त्री हैं। इनका जन्म १४ नवम्बर १८८९ में हुआ।

**जवाहरात** पुं० (अ) जवाहर का बहुवचन।

**जवाहरी** पुं० दे० 'जौहरी'।

**जवाहिर** पुं० दे० 'जवाहर'।

**जवैया** वि० (हि) जाने वाला।

**जशन** पुं० (फा) १-उत्सव। जलसा। २-आनन्द। हर्ष।

**जस** क्रि० वि० (हि) जैसा। पुं० यश।

**जसुमति, जसोदा, जसोवै** स्त्री० (हि) श्रीकृष्ण की माता यशोदा।

**जस्तई** वि० (हि) जस्ते के रङ्ग का। खाकी।

**जस्ता** पु० (हि) १-एक धातु। २-कपड़े की बुनावट का झीनापन।

**जहँ** क्रि० वि० (हि) जहाँ।

**जहँड़ना, जहँड़ाना** क्रि० (हि) १-घाटा उठाना। २-धोखे में आना।

**जहकना** क्रि० (हि) कुढ़ना। चिढ़ना।

**जहतिया** पुं० (हि) कर या लगान वसूल करने वाला।

**जहत्** पुं० (सं) परित्याग। छोड़ना।

**जहत्स्वार्था** स्त्री० (सं) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को छोड़कर अभिप्रेत अर्थ को प्रकट करता है।

**जहद-जहल्लक्षणा** स्त्री० (सं) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें वक्ताओं के शब्दों के कई अर्थों में से केवल एक अर्थ या भाव ग्रहण किया जाता है।

**जहदना** क्रि० (हि) १-थक जाना। २-कीचड़ होना।

**जहदा** पुं० (हि) १-दलदल। २-कीचड़।

**जहद्दम** पुं० (हि) जहन्नुम। नरक।

**जहना** क्रि० (हि) १-त्यागना। २-नष्ट करना।

**जहन्नुम** पुं० (अ) नरक। दोजख।

**जहमत** स्त्री० (अ) १-आपत्ति। २-झंझट।

**जहर** स्त्री० (अ) १-विष। गरल। २-अप्रिय बात। वि० १-घातक। २-बहुत हानि पहुचाने वाला

**जहरबाद** पुं० (फा) एक प्रकार का जहरीला फोड़ा।

**जहर-मोहरा** पु० (फा) एक प्रकार का काला पत्थर जिसमें साँप के काटे का विष खैंच लेने की शक्ति होती है।

**जहरी, जहरीला** वि० (हि) विषाक्त। जिसमें जहर हो।

**जहाँ** क्रि० वि० (हि) जिस स्थान पर। जिस जगह। पु० (फा) जहान। संसार (समास में व्यवहृत)।

**जहाँगीर** वि० (फा) विश्व-विजयी।

**जहाँगीरी** स्त्री० (फा) १-हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २-एक प्रकार की लाख की चूड़ी।

**जहाँ-पनाह** पुं० (फा) संसार का रक्षक।

**जहाज** पुं० (अ) समुद्र में भाप के द्वारा चलने वाली नाव। जलपोत।

**जहाजी** वि० (अ) जहाज से सम्बन्ध रखने वाला।

**जहाजी-कौआ** पुं० (हि) १-वह कौआ जो जहाज पर रहता और उड़कर फिर जहाज पर आता हो। २-भारी धूर्त। चालाक।

**जहाजी-सुपारी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की विदेशी सुपारी जो कुछ बड़ी और चपटी होती है।

**जहाद** वि० (अ० जिहाद) इसलाम धर्म के प्रचार व रक्षा के उद्देश्य से किया गया युद्ध।

**जहादी** वि० (हि) जहाद से सम्बद्ध। जहाद का। पुं० जहाद करने वाला व्यक्ति।

**जहान** पु० (फा) संसार।

**जहालत** स्त्री० (अ) अज्ञान। मूर्खता।

**जहिया** क्रि० वि० (हि) जब। जिस समय।

**जहो** अव्य० (हि) १-जहाँ हो। २-ज्योंही।

**जहूर** पु० (अ) प्रकाश।

**जहूरा** पु० (अ) १-दिखावा। दृश्य। २-ठाट

लड़का।

**जहेज** पुं० (अ) दहेज।

**जह्नु** पुं० (सं) १-विष्णु। २-एक राज ऋषि का नाम जिन्होंने गंगा को पीकर कान से निकाला था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

**जह्नु-कन्या, जह्नु-तनया, जह्नु-नंदिनी** स्त्री०(सं) गंगा

**जाँ** वि० (हि) उचित। स्त्री० जान। प्राण।

**जाँगड़ा** पुं० (देश) यशोगान करने वाला भाट।

**जाँगर** पुं० (हि) १-शरीर का बल। बूता। २-देह।

**जाँगरा** पुं० दे० 'जाँगड़ा'।

**जांगल** पुं० (सं) वह प्रदेश जहाँ वर्षा कम होती हो। ऊसर प्रदेश।

**जांगलिक** वि० (सं) साँप पकड़ने तथा विष दूर करने वाला व्यक्ति।

**जाँगलू** वि० (हि) गंवार। अनाड़ी।

**जाँघ** स्त्री० (हि) कमर और घुटने के बीच का अंग।

**जाँघिया** पुं० (हि) घुटनों तक पहनने का एक पहनावा। कच्छा।

**जाँघिल** पुं०(हि) पिछले पैर से लंगड़ाता हुआ चलने वाला बैल। वि० ऐसी चाल चलने वाला (पशु)

**जाँच** स्त्री०(हि) १-परीक्षा। परख। २-गवेषणा। खोज

**जाँचक** पुं० (हि) १-दे० 'याचक'। २-जाँच करने वाला।

**जाँचकता** स्त्री० दे० 'याचकता'।

**जाँच-घर** पुं० (हि) प्रयोगशाला का कार्यालय या दफतर (एनकवारी- ऑफिस)।

**जाँचना** क्रि० (हि) १-परखना। परीक्षा करना। २-माँगना।

**जाँजरा** वि० (हि) दे० 'जाजरी'।

**जाँझ** स्त्री० (हि) तेज हवा के साथ आने वाली वर्षा

**जाँत** पुं० दे० 'जाता'।

**जांतव** वि० (सं) १-जीव-जन्तुओं सम्बन्धी। २-जीव-जन्तुओं से उत्पन्न या प्राप्त।

**जाँता** पुं० (हि) आटा पीसने की बड़ी चक्की।

**जाँ-पनाह** पुं० दे० 'जहाँपनाह'।

**जांब** पुं० (सं) जामुन। जंबुफल।

**जांबव** पुं० (सं) १-जामुन का वृक्ष या फल। २-जामुन का सिरका या शराब।

**जांबवती** स्त्री० (सं) जाम्बवान् की कन्या जिसका विवाह श्रीकृष्ण से हुआ था।

**जाँ-बाज** वि० (फा) प्राणों की बाजी लगाने वाला।

**जांबवान** पुं० (सं) सुग्रीव के एक मन्त्री का नाम जिसने राम की ओर से रावण से युद्ध किया था।

**जांबुवत, जांबुवान** पुं० दे० 'जाम्बवान'।

**जाँवत** अव्य० दे० 'जावत'।

**जाँवर** पुं० (हि) जाना। प्रस्थान।

**जा** स्त्री०(सं) १-माँ। माता। २-देवरानी। वि० [स्त्री० प्र०] उत्पन्न। सर्व० (हि) जो जिस। वि० (फा) उचित। मुनासिब।

**जाइ** वि० (हि) १-व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २-उचित।

**जाई** स्त्री० (हि) पुत्री। बेटी।

**जाउनि** स्त्री० दे० 'जामुन'।

**जाउर** स्त्री० (हि) खीर। दूध-भात।

**जाक** पुं० (हि) यक्ष। स्त्री० जकने की क्रिया या भाव

**जाकड़** पुं० (हि) १-इस शर्त पर माल लाना कि यदि पसंद न होगा तो लौटा दिया जायगा। २-इस प्रकार लाया हुआ माल।

**जाकेट** स्त्री० [(अं०) जैकेट] फतुही की तरह का एक प्रकार का अंगरेजी पहनावा। सदरी।

**जाखिनी** स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

**जाग** पुं० (हि) यज्ञ। स्त्री० १-जागने की क्रिया, भाव या अवस्था। २-जागरण। ३-जगह। स्थान।

**जागता** वि० (हि) १-अपनी शक्ति का परिचय देने वाला। २-प्रकाशमान्।

**जागतिक** वि० (सं) जगत सम्बन्धी। सांसारिक।

**जागती-कला, जागती-ज्योती** स्त्री०(हि) १-किसी देवी या देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार। २-चिराग। दीपक

**जागना** क्रि० (हि) १-सोकर उठना। २-जाग्रत अवस्था में होना। ३-सजग होना। ४-चमक उठना। उदित होना। ५- समृद्ध होना। ६-प्रसिद्ध होना। ७-प्रज्वलित होना। जलना।

**जागर** पुं०(सं) १-जागने की क्रिया। जागरण। जाग २-मन, बुद्धि, अहंकार आदि अंतःकरण की वृत्तियों के जागृत होने का भाव या अवस्था। कवच।

**जागरण** पुं० (सं) १-निद्रा का अभाव। जागना। २-किसी उत्सव या पर्व आदि पर सारी रात जागना। ३-किसी वर्ग अथवा जाति का गिरी हुई अवस्था से निकल कर उन्नत होने का यत्न करना। (अवेकिंग)।

**जागरित** वि० (सं) जागता हुआ।

**जागरूक** पुं० (सं) १-वह जो जाग्रत अवस्था में हो। चैतन्य।

**जागरूप** वि० (हि) जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

**जागर्त्ति** स्त्री० (सं) १-जागरण। २-चेतनता।

**जागा** स्त्री० दे० 'जगह'। पुं० दे० 'जागरण' (२)।

**जागी** पुं० (हि) भाट। चारण।

**जागीर** स्त्री० (फा) राज्य की ओर से प्राप्त भूमि या प्रदेश।

**जागीरदार** पुं० (फा) जागीर प्राप्त व्यक्ति। जागीर का मालिक।

**जागीरी** स्त्री० (फा) १-जागीरदार होने का भाव। २-अमीर। रईस।

**जागृत** वि० दे० 'जागृत'।

**जाग्रत** वि० (सं) १-जो जाग रहा हो। २- सजग।

सावधान। पु० वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान होता रहता है।
**जागति** स्त्री० (स) जाग्रत होने का भाव। जागरण।
**जाचक** पु० (हि) याचक।
**जाचकता** स्त्री० (सं) १-मांगने की क्रिया या भाव। २-भिखमंगी।
**जाचन** पुं० (हि) १-याचना। २-याचक।
**जाचना** क्रि० (हि) मांगना। स्त्री० यातना।
**जाजम** स्त्री० दे० 'जाजिम'।
**जाजरा** वि० जीर्ण। जर्जर।
**जाजरी** पुं० (देश) चिड़ीमार।
**जाजिम** स्त्री० (तु०) दरी के ऊपर बिछाने की चादर।
**जाज्वल्य,जाज्वल्यमान** वि०(स) १-प्रज्वलित। दीप्तिमान। २-तेजस्वी।
**जाट** पु० (हि) भारत देश की एक प्रसिद्ध जाति।
**जाटव** पुं० (?) चमारों की एक जाति।
**जाटू** स्त्री० (हि) हरियाना की बोली।
**जाट** पु० (हि) १-वह लट्ठा जो कोल्हू की कूण्डी के बीच में लगा रहता है। २-तालाब के बीच में गड़ा हुआ ऊँचा मोटा लट्ठा।
**जाठर** पु० (सं) १-उदर। पेट। २-जठराग्नि। ३-भूख। वि० (सं) १-जठर से सम्बन्ध रखने वाली ३-जठर से उत्पन्न।
**जाड़** पुं० (हि) दे० 'जाड़ा'। स्त्री० दे० 'दाढ़'। वि० (हि) बहुत अधिक।
**जाड़ा** पुं० (हि) १-शीतकाल। २-शीत। सरदी।
**जाड्य** वि० (सं) जड़ता।
**जात** पुं० (सं) २-जन्म। २-पुत्र। ३-जीव। प्राणी ४-वह पुत्र जिसमें अपनी मां के से गुण हों। वि० (स) २-जन्मा हुआ। २-व्यक्त। प्रकट। ३-प्रशस्त स्त्री० (प) शरीर। स्त्री० (हि) जाति।
**जातक** पुं० (सं) १-बच्चा। २-महात्मा बुद्ध के पूर्व-जन्म की कथाएं। ३-फलित ज्योतिष का एक भेद
**जात-कर्म** पुं० (सं) पुत्र जन्म के अवसर पर किया जाने वाला एक संस्कार।
**जातक्रिया** स्त्री० (स) जातकर्म।
**जातना, जातनाई** स्त्री० (हि) यातना।
**जातपांत** स्त्री० (हि) बिरादरी।
**जातरूप** पु० (स) स्वर्ण। सोना।
**जाता** स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री। वि० उत्पन्न पुं० (हि) आटा पीसने की चक्की। जाँता।
**जाति** स्त्री० (स) १-हिन्दुओं में मानव समाज का वह विभाग जो सर्वप्रथम कर्मानुसार किया गया था, पर अब जन्मानुसार माना जाता है। (कास्ट) २-मानव समाज का वह विभाग जो निवास-स्थान या देश परम्परा की दृष्टि से किया गया हो। (रेस) ३-गुण, धर्म, आकृति आदि की दृष्टि से पदार्थों या जीव-जन्तुओं में हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। (जेनस)। ४-वर्ण। ५-कुल। ६-गोत्र। ७-जन्म। ८-सामान्य।
**जातिच्युत** वि० (सं) जाति से निकाला हुआ।
**जातित्व** पुं० (सं) जाति का भाव। जातीयता।
**जाति-धर्म** पुं० (सं) १-जाति या वर्ण का धर्म। २-जातियों का अलग-अलग कर्त्तव्य।
**जाति-पाँति** स्त्री० (हि) बिरादरी।
**जाति-वध** पुं० (सं) किसी जाति के लोगों का वह वध जो प्रायः राजनीतिक कारणों या जाति-गत द्वेष के कारण होता है।
**जाति-वैर** पुं० (सं) स्वाभाविक शत्रुता। सहज वैर।
**जाति-संघ** पुं०(स) राजनीति के अनुसार वह राष्ट्र-विधान जिसमें किसी जाति के प्रमुख लोगों के द्वारा शासन होता है।
**जातिस्वभाव** पुं० (सं) वह अलङ्कार जिसमें आकृति तथा गुण का वर्णन किया जाता है।
**जाती** स्त्री० (सं) १-चमेली। २-मालती। स्त्री० (हिं) दे० 'जाति' पुं० (हि) हाथी। वि० (अ) १-व्यक्तिगत। २-अपना। निज का।
**जातीय** वि० (सं) १-जाति सम्बन्धी। २-सारी जाति या राष्ट्र सम्बन्धी।
**जातीयता** स्त्री० (सं) १-जाति होने का भाव। कौमियत। २-अपनी जाति का अभिमान। राष्ट्रीयता।
**जातुधान** पुं० (सं) राक्षस।
**जातुधानी** वि० दे० 'राक्षसी'।
**जात्य** वि० (स) १-कुलीन। २-श्रेष्ठ। ३-सुन्दर।
**जात्यत्रिभुज** पुं० (स) एक समकोण वाला त्रिभुज।
**जात्यारोह** पु० (स) खगोल के अक्षांश की गिनती में वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से ली जाती है।
**जात्रा** स्त्री० (हि) यात्रा।
**जाथका** स्त्री० (हि) राशि। ढेर।
**जाद** वि० (फा) किसी से उत्पन्न। जात। (यौगिक के अन्त में)।
**जादव** पुं० (हि) यादव।
**जादव-पति, जादवराय** पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
**जादसपति, जादसपती** पुं० (हि) वरुण।
**जादा** वि० दे० 'ज्यादा'।
**जादू** पुं० (फा) १-ऐसा आश्चर्य जनक कृत्य जिसका रहस्य लोगों की समझ में न आवे। इन्द्रजाल। २-टोना। टोटका। ३-दूसरे को मोहित करने वाली शक्ति। मोहिनी-शक्ति।
**जादूगर** पुं० (फा) [स्त्री० जादूगरनी] जादू जानने या करने वाला।
**जादूगरी** स्त्री० (फा) जादू करने की क्रिया या काम।
**जादो** पुं० (हि) यादव।

**जादौराय** पु० (हि) श्रीकृष्ण।

**जान** स्त्री० (हि) १-ज्ञान। जानकारी। परिचय। २-ख्याल। अनुमान। ३-यान। वि० (हि) १-सुजान चतुर। २-ज्ञानवान। स्त्री० (फा) १-प्राण। जीवन २-बल। शक्ति। सामर्थ्य। ३-सार। तत्व। ४-शोभा बढ़ाने वाली वस्तु।

**जानकार** वि० (हि) १-जानने वाला। २-विज्ञ। चतुर।

**जानकारी** स्त्री० (हि) १-परिचय। २-विज्ञता।

**जानकी** स्त्री० (सं) राजा जनक की पुत्री। सीता।

**जानकी-जानि, जानकी-जीवन, जानकीनाथ, जानकी-रमण, जानकी-रवन** पु० (सं) श्रीरामचन्द्र

**जानदार** वि० (फा) १-जिसमें जान हो। सजीव। २-प्रबल।

**जाननहार** वि० (हि) जानने वाला।

**जानना** क्रि० (हि) १-ज्ञान प्राप्त करना। पहचानना २-सूचना पाना। खबर रखना। ३-अनुमान करना।

**जानपद** वि० (सं) १-जनपद से सम्बद्ध। २-सारे देश से सम्बद्ध पर, सैनिक या धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न। (सिविल)। पु० १-जनपद का निवासी। २-देश।

**जान-पना** पु० (हि) १-जानकारी। २-चतुराई।

**जान-पनी** स्त्री० दे० 'जान-पना'।

**जानबख्शी** स्त्री० (फा) अभयदान।

**जान-बीमा** पु० (फा+अ) वह बीमा जो मरने के बाद उसके उत्तराधिकारी को मिले। (लाइफ-इन्श्योरेंस)

**जान-मनि** पु० (हि) ज्ञानियों में श्रेष्ठ।

**जा-नमाज** पु०(फा) नमाज पढ़ने का आसन या दरी

**जान-राज्य** पु० (सं) ऐसा राज्य जिसमें एक ही जाति के मनुष्य रहते हों।

**जानराय** पु० दे० 'जान-मनि'।

**जानवर** पु० (फा) १-प्राणी। २-पशु। वि० मूर्ख।

**जा-नशीन** पु० (फा) उत्तराधिकारी।

**जानहार** वि० (हि) १-जानने वाला। २-मारने वाला। ३-जाने वाला।

**जानहु** अव्य० (हि) मानों। जैसे।

**जाना** क्रि० (हि) १-गमन करना। २-प्रस्थान करना। हटना। ३-अलग होना। ४-हाथ या अधिकार से निकलना। ५-खोजाना। ६-बीतना। गुजरना। ७-बहना। जारी होना। ८-उत्पन्न करना।

**जानि** स्त्री० (सं) स्त्री। भार्या। वि० (हि) जानने वाला। जानकार।

**जानिब** स्त्री० (अ) तरफ। ओर।

**जानी** वि० (फा) १-जान से सम्बन्ध रखने वाला। २-जान का। स्त्री० (हि) प्राणप्यारी।

**जानु** पु० (सं) घुटना। जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग। पु० (हि) जाँघ। रान।

**जानु-पाणि** क्रि० वि० (सं) घुटनों और हाथों के बल (चलना)।

**जानुपानि** क्रि० वि० (हि) दे० 'जानुपाणि'।

**जानो** अव्य० (हि) मानो। जैसे।

**जाप** पु० दे० 'जप'।

**जापक** वि० (सं) जप करने वाला।

**जापा** पु० (हि) सूतिकागृह।

**जापी** पु० (सं) जप करने वाला।

**जाफ** पु० (अ) १-मूर्छा। बेहोशी। २-थकावट।

**जाफत** स्त्री० (अ) भोज। दावत।

**जाफरान** पु० (अ) केसर। कुंकुम।

**जाफरी** स्त्री० (हि) १-बरामदे आदि के आगे लगाने की फट्टियों की टट्टी या ओट। २-एक तरह का गेंदा नामक फूल।

**जाबड़ा** पु० (हि) जबड़ा।

**जाबर** वि० (हि) वृद्ध।

**जाबाल** पु० (सं) एक मुनी का नाम।

**जाब्ता** पु० (अ) १-नियम। कायदा। २-व्यवस्था। कानून।

**जाब्ता-दीवानी** स्त्री० (अ+फा) सर्वसाधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला कानून या व्यवस्था।

**जाब्ता-फौजदारी** स्त्री० (अ) दण्डनीय अपराध से सम्बन्ध रखने वाला कानून।

**जाम** पु० (फा) १-प्याला। २-प्याले के आकार का पु० (हि) याम। पहर। प्रहर। वि० (हि) १-अधिक दबाव आदि के कारण रुका हुआ। २-जिसमें चलने के लिए अवकाश न हो। ३-मल आदि के कारण अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा, ठहरा या रुका हुआ।

**जामगी** पु० (?) बन्दूक या तोप का पलीता।

**जामदग्न्य** पु० (सं) जन्मदग्नि के पुत्र। परशुराम।

**जामदानी** स्त्री० (फा) एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।

**जामन** पु० (हि) १-दूध को जमाने के लिए प्रयोग में आने वाला थोड़ी मात्रा में दही या अन्य खट्टा पदार्थ। २-दे० 'जामुन'।

**जामना** क्रि० (हि) जमना।

**जामनी** वि० (हि) यामिनी। रात।

**जामा** पु० (फा) १-पोशाक। पहरावा। २-एक प्रकार का पहनावा।

**जामाता, जामातु** पु० (हि) कन्या का पति। दामाद

**जामा-मसजिद** स्त्री० (अ) नगर की बड़ी और मुख्य मसजिद जिसमें मुसलमान शुक्रवार को सामूहिक रूप से नमाज पढ़ते हैं।

**जामि** स्त्री० (सं) १-बहिन। २-लड़की। ३-पुत्रवधू। ४-अपने सम्बन्ध या गोत्र की स्त्री।
**जामिक** पुं० (हि) पहरेदार।
**जामिन, जामिनदार** पुं० (अ) जमानत करने वाला। प्रतिभू।
**जामिनी** स्त्री०(हि) यामिनी। रात। स्त्री०(फा) जमानत
**जामी** स्त्री० (हि) जमीन।
**जामुन** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल बैंगनी रंग के होते हैं।
**जामुनी** वि० (हि) जामुन के रंग का।
**जामेय** पुं० (सं) भानजा।
**जामेवार** पुं० (हि) १-एक तरह का दुशाला जिसमें सब जगह बेलबूटे कढ़े होते हैं। इस तरह की छींट जो दुशाले के समान दीख पड़े।
**जाय** अव्य० (फा) वृथा। बेफायदा। वि० (फा) उचित
**जायका** पुं० (अ) स्वाद।
**जायकेदार** वि० (फा) स्वादिष्ट।
**जायज** वि० (अ) उचित।
**जायजा** पुं० (अ) १-जाँच-पड़ताल। २-हाजिरी। गिनती।
**जायद** वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
**जायदाद** स्त्री० (फा) भूमि या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो।
**जायपत्री** स्त्री० दे० 'जावित्री'।
**जायफल** पु० (हि) औषध तथा मसाले के काम में आने वाला एक सुगंधित फल।
**जायस** पुं० रायबरेली जिले का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ कई सूफी फकीर हुए हैं।
**जायसवाल** पुं०(हि) १-जायस नामक स्थान का रहने वाला। २-कुरमियों, कलवारों की उपजाति।
**जायसी** वि०(हि) राय बरेली जिले के जायस नगर का रहने वाला।
**जाया** स्त्री० (सं) पत्नी। पुं० (हि) [स्त्री० जाई] १-वह जो प्रसव द्वारा उत्पन्न किया हो। २-पुत्र। वि०(फा) नष्ट। खराब।
**जार** पुं०(सं) १-पराई स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति। २-उपपति। यार। वि० मारने वाला
**जारकर्म** पुं० (सं) व्यभिचार।
**जारज** पुं० (सं) जार से उत्पन्न सन्तान।
**जारज-योग** पुं० (सं) बालक के जन्म काल में पड़ने वाला एक योग जिसके द्वारा उत्पन्न बालक को जारज सिद्ध किया जाता है।
**जारण** पु० (सं) जलाना।
**जारन** स्त्री० (हि) १-जलाने की क्रिया या भाव। २ जलाने की लकड़ी। ईंधन।
**जारना** क्रि० (हि) जलाना।
**जारिणी** स्त्री० (स) दुश्चरित्रा स्त्री।
**जारी** वि० (अ) १-प्रवाहित। प्रचलित। स्त्री०(हि) पर स्त्री-गमन। छिनाला।
**जालंधर** पुं० (सं) १-एक प्राचीन ऋषि। २-एक दैत्य
**जालंधरी-विद्या** स्त्री (सं) जादू। इन्द्रजाल।
**जाल** पुं० (सं) १-एक में बुने अथवा गुथे हुए बहुत से डोरों का समूह। २-चिड़िया, मछली आदि फँसाने के लिए तार सूत आदि का बना हुआ पट। ३-किसी को वश में करने या फँसाने का षड्यंत्र। ४-समूह। ५-एक तरह की तोप। ६-गवाक्ष। ७-क्षार। ८-मकड़ी का जाला। ९-अहंकार। पुं० (हि) फरेब। धोखा।
**जालक** पुं० (सं) १-जाल। २-कली। ३-समूह। ४-गवाक्ष। झरोखा। ५-एक आभूषण। ६-केला। ७-घोंसला। ८-अभिमान।
**जालदार** वि० (हि) जिसमें जाल के समान छोटे-छोटे छेद हों।
**जालना** क्रि० (हि) जलाना।
**जलरंध्र** पुं० (सं) गवाक्ष। छोटी खिड़की।
**जालसाज** पुं० (अ) वह जो दूसरों को धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करे। धोखेबाज।
**जालसाजी** स्त्री० (फा) दगाबाजी।
**जाला** पुं० (हि) १-मकड़ी का जाल। २-आँख का एक रोग। ३-घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। ४-पानी रखने का एक बरतन।
**जालिक** पु० (स) १-जाल बुनने वाला। २-धीवर। ३-मकड़ी। ४-मदारी।
**जालिका** स्त्री० (सं) १-पाश। फन्दा। २-जाली। ३-मकड़ी। ४-समूह।
**जालिम** वि० (अ) जुल्म करने वाला। अत्याचारी।
**जालिमा** वि० (हि) जालिम। अत्याचारी।
**जालिया** वि० (हि) जालसाज। फरेबी।
**जाली** स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु में बने छोटे-छोटे छेदों का समूह। २-एक प्रकार का कपड़ा जिसमें छोटे-छोटे छेद बने होते हैं। ३-कच्चे आम के अन्दर का तन्तु। वि० (अ) नकली। बनावटी।
**जाली-मत** पुं० (हि) सही आदमी या मतदाता के स्थान पर नकली या बनावटी व्यक्ति द्वारा दिया जाने वाला मत या वोट।
**जाल्य** पुं० (स) शिव। महादेव।
**जावक** पुं० (हि) महावर।
**जावत** अव्य० दे० 'यावत्'।
**जावन** पुं० दे० 'जामन'।
**जावित्री** स्त्री० (हि) जायफल के ऊपर का सुगन्धित छिलका।
**जाषिनी** स्त्री० (हि) यक्षिणी।
**जासु** वि० (हि) जिसका।

**जासूस** पुं० (अ) गुप्तचर। भेदिया।

**जासूसी** स्त्री० (हि) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाने का काम।

**जाहर** वि० दे० 'जाहिर'।

**जाहिर** वि० (अ) १-प्रकट। २-विदित।

**जाहिरा** क्रि० वि० (अ) प्रकट रूप में।

**जाहिरी** वि० (अ) प्रकट।

**जाहिल** वि० (अ) १-मूर्ख। २-अशिक्षित।

**जाही** स्त्री० (हि) चमेली की जाति का एक सुगन्धित पौधा या फूल।

**जाह्नवी** स्त्री० (सं) गंगा नदी।

**जिंद** पुं० (अ) भूत। प्रेत। स्त्री० दे० जिन्दगी।

**जिंदगानी** स्त्री० (फा) जीवन। जिन्दगी।

**जिंदगी** स्त्री० (फा) १-जीवन। २-जीवनकाल। आयु।

**जिंदा** वि० (फा) जीवित।

**जिंदादिल** वि० (फा) विनोदप्रिय।

**जिंवाना** क्रि० (हि) जिमाना।

**जिंस** स्त्री० (फा) १-प्रकार। किस्म। २-चीज। वस्तु ३-सामग्री। सामान। ४-अनाज। गल्ला।

**जिंसवार** पुं० (फा) पटवारियों का वह कागज जिसमें वह अपने इलाके के प्रत्येक खेत में बोये हुए अन्न का नाम लिखता है।

**जिअरा** पुं० (हि) जियरा।

**जिआना** क्रि० (हि) जिलाना।

**जिउ** पुं० (हि) जीव।

**जिउका** स्त्री० (हि) जीविका।

**जिउकिया** पुं० (हि) १-जीविका के लिए कोई कार्य करने वाला। रोजगारी। २-वे पहाड़ी लोग जो जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।

**जिउतिया** स्त्री० (हि) जिताष्टमी। पुत्रवती स्त्रियों का एक व्रत।

**जिक्र** पुं० (अ) चर्चा।

**जिगर** पुं० (फा) १-कलेजा। २-चित्त। मन। ३-साहस। ४-पुत्र (स्नेह में)।

**जिगरा** पुं० (हि) साहस। हिम्मत।

**जिगरी** वि० (फा) १-दिली। भीतरी। २-अभिन्न हृदय।

**जिगीषा** स्त्री० (सं) १-विजय प्राप्त करने की कामना। २-उद्यम। उद्योग।

**जिगीषु** वि० (सं) विजय प्राप्त करने की कामना रखने वाला।

**जिच, जिच्च** स्त्री० (?) बेबसी। मजबूरी। २-शतरंज के खेल में वह अवस्था या स्थिति जब किसी पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो। ३-पारस्परिक विवाद में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बातों पर अड़े रहें और समझौते की सूरत नजर न आये। (डेडलाक)। वि० विवश। मजबूर।

**जिजिया** स्त्री० (हि) बहिन। पुं० (फा) जजिया।

**जिज्ञासन** पुं० (सं) जानने की इच्छा से पूछना।

**जिज्ञासा** स्त्री०(सं) १-जानने की इच्छा। २-पूछताछ।

**जिज्ञासु** वि० (सं) जानने की इच्छा रखने वाला।

**जिठाई** स्त्री० (हि) जेठापन। बड़ापन।

**जिठानी** स्त्री० (हि) जेठानी।

**जित्** वि० (सं) जीतने वाला।

**जित** क्रि० वि० (हि) जिधर। जिस ओर।

**जितना** वि० (हि) [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा या परिमाण का। क्रि० वि० जिस मात्रा में जिस परिमाण में क्रि० (हि) जीतना।

**जितवना** क्रि०(हि) जताना। प्रकट करना।

**जितवाना** क्रि० (हि) जीतने में समर्थ करना। जीतने देना।

**जितवार, जितवैया** वि० (हि) विजयी। जीतने वाला।

**जितात्मा** वि० (सं) जितेंद्रिय।

**जिताना** क्रि० (हि) जीतने में सहायता देना।

**जितामित्र** पुं० (सं) १-विष्णु। २-विजयी।

**जिताहार** पुं० (सं) जिसने आहार या भोजन पर विजय प्राप्त करली हो।

**जिताष्टमी** स्त्री० (सं) हिन्दुओं का एक वृत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन करती हैं।

**जिति** स्त्री० (सं) जीत। विजय।

**जितेंद्रिय, जितेंद्री** वि० (सं) १-जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो। २-शांत। ३-तीर्थङ्कर।

**जिते** वि० (हि) जितने (संख्यासूचक)।

**जितै** क्रि० वि० (हि) जिधर। जिस ओर।

**जितैया** वि० (हि) जितने वाला।

**जितो** क्रि० वि० जितना। परिमाणसूचक।

**जित्तना** क्रि० (हि) जीतना।

**जित्वर** वि० (सं) विजयी।

**जित्वरी** स्त्री० (सं) काशीपुरी का एक प्राचीन नाम।

**जिद** स्त्री० (अ) हठ। दुराग्रह।

**जिद्दी** वि० (फा) हठी। दुराग्रही।

**जिधर** क्रि० वि० (हि) जिस ओर। जहाँ।

**जिन** पुं० (सं) १-विष्णु। २-सूर्य। ३-बुद्ध। ४-जैनों के तीर्थङ्कर। वि० सर्व० (हि) 'जिस' का बहुवचन। पुं० (अ) (मुसलमान) भूत।

**जिना** पुं० (अ) व्यभिचार।

**जिनि** अव्य० (हि) मत। नहीं।

**जिनिस** स्त्री० दे० 'जिन्स'।

**जिन्स** स्त्री० (फा) १-प्रकार। तरह। २-वस्तु। चीज ३-सामग्री। सामान। ४-गेहूँ, चावल आदि अन्न।

**जिन्सवार** पुं० (फा) पटवारियों का वह कागज

जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं
**जिन्सी** वि० (फा) १-जिन्स सम्बन्धी। जिन्स का। गेहूँ, चावल आदि अन्नों के रूप में होने वाला। (इनकाइन्ड)।
**जिन्सी-लगान** पुं० (फा+हि) गेहूँ, चावल आदि अन्नों के रूप में लिया जाने वाला लगान। (रेंट-इन काइंड)।
**जिन्ह** सर्व० (हि) दे० 'जिन'।
**जिबह** पुं० दे० 'जबह'।
**जिभ्भा, जिम्या** स्त्री० दे० 'जिह्वा'।
**जिमाना** क्रि० (हि) भोजन कराना। खिलाना।
**जिमि** क्रि० वि० जैसे। यथा।
**जिमींदार** पुं० दे० 'जमींदार'।
**जिमी** स्त्री० (हि) जमीन। पृथ्वी।
**जिमीकंद** पुं० दे० 'सूरन'।
**जिम्मा** पुं० (अ) १-भार ग्रहण। २-सुपुर्दगी। संरक्षा। देख-रेख।
**जिम्मादार, जिम्मावार** पुं० दे० 'जिम्मेदार'।
**जिम्मावारी** स्त्री० (फा) १-उत्तरदायित्व। २-संरक्षा
**जिम्मेदार, जिम्मेवार** पुं० (फा) उत्तरदायी। जवाबदेह।
**जिम्मी** पुं० (अ) इसलामी राज्य में गैर-मुसलिम प्रजा।
**जिय** पुं० (हि) मन। चित्त।
**जियन** पुं० (हि) जीवन।
**जियन-बधा** पुं० (हि) हत्यारा।
**जियरा** पुं० (हि) जीव।
**जियाजंतु** पुं० (हि) जीव-जन्तु।
**जियान** पुं० (अ) १-घाटा। टोटा। २-हानि।
**जियाना** क्रि० (हि) जिलाना।
**जियाफत** स्त्री० (अ) १-आतिथ्य। २-भोज। दावत
**जियारत** स्त्री० (अ) १-दर्शन। २-तीर्थदर्शन।
**जियारी** स्त्री० (?) १-जीवन। २-जीविका। ३-जीवट।
**जिरगा** पुं० (फा) १-झुण्ड। गिरोह। २-मण्डली। दल। ३-पठानों आदि में कई दलों के लोगों की सभा।
**जिरह** स्त्री० (अ) हुज्जत। २-ऐसी पूछताछ जो सत्यता की जाँच के लिए की जाये। स्त्री० (फा) कवच। बख्तर।
**जिरही** वि० (हि) कवचधारी।
**जिराअत** स्त्री० (अ) खेती।
**जिराफ** पुं० (अ) एक अफ्रीकी पशु जिसकी गरदन लम्बी होती है।
**जिराफा** पुं० दे० 'जुराफा'।
**जिला** स्त्री० (अ) १-चमक-दमक। २-माँजकर अथवा रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का काम। पुं० (अ) १-प्रदेश। प्रान्त। २-किसी प्रान्त का वह भाग जो एक कलक्टर के प्रबन्ध में हो। ३-किसी इलाके का विभाग या अंश।
**जिला-गण** पुं० (अ+स) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा। (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)।
**जिला-जज** पुं० (अ+अ) वह न्यायाधीश जिसे जिले-भर की दीवानी और फौजदारी मुकद्दमों की अपीलें सुनने का अधिकार होता है। (डिस्ट्रिक्ट-जज)।
**जिलाट** पुं० (स) प्राचीन काल का एक बाजा।
**जिलादार** पुं० (फा) १-जमींदार की ओर से नियुक्त अफसर जो लगान वसूल करता है। २-किसी हलके में काम करने वाला छोटा अफसर।
**जिलाधीश** पुं० (अ+स) जिला मजिस्ट्रेट।
**जिलाना** क्रि० (हि) १-जीवित करना। २-मरने से बचाना। ३-पालना। पोसना।
**जिला-निधि** स्त्री० (अ+सं) जिले में सफाई, शिक्षा आदि कार्यों के लिए कर आदि के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन। (डिस्ट्रिक्ट-फण्ड)।
**जिला-न्यायालय** पुं० (अ+सं) जिले भर के लोगों के झगड़ों का निपटारा करने वाली अदालत। (डिस्ट्रिक्ट-कोर्ट)।
**जिला-परिषद** स्त्री० (अ+सं) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा। (डिस्ट्रिक्ट-काउंसिल)।
**जिला-बोर्ड** पुं० (अ+अं) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह संस्था जिसके जिम्मे जिलेभर के ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्माण आदि की व्यवस्था करती है। (डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड)।
**जिला-मंडली** स्त्री० दे० 'जिला-गण'।
**जिला-मजिस्ट्रेट** पुं० (अ+अं) जिले का सबसे बड़ा अधिकारी। (कलक्टर)।
**जिलासाज** पुं० (फा) सिकलीगर।
**जिलाह** पुं० (हि) अत्याचारी।
**जिलेदार** पुं० दे० 'जिलादार'।
**जिल्द** स्त्री० (अ) १-खाल। चमड़ा। २-ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३-किताब की रक्षा के निमित्त चढ़ाई हुई दफ्ती। ४-पुस्तक की एक प्रति। ५-पुस्तक का एक भाग। खण्ड।
**जिल्दबंद** पुं० (फा) पुस्तकों की जिल्द बाँधने वाला
**जिल्दबंदी** स्त्री० (फा) जिल्द बाँधने का काम।
**जिल्दसाज** पुं० दे० 'जिल्दबंद'।
**जिल्दसाजी** स्त्री० (फा) जिल्दबंदी।
**जिल्लत** स्त्री० (अ) १-अपमान। २-दुर्दशा।
**जिव** पुं० (हि) जीव।
**जिवन** पुं० (हि) जीवन।
**जिवाना** क्रि० (हि) १-जिलाना। २-जिमाना।
**जिवारा** वि० दे० 'ज्यादा'।
**जिष्णु** वि० (स) सदा जीतने वाला। पुं० १-इन्द्र।

२-सूर्य। ३-अर्जुन। ४-विष्णु। ५-कृष्ण।
**जिस** *वि०* (हिं) विभक्ति युक्त 'जो' का एक रूप। सर्व० 'जो' का वह रूप, जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
**जिस्ता** पु० १-दे० 'जस्ता'। २-दे० 'दस्ता' (कागज का)।
**जिस्म** पु० (फा) शरीर। देह।
**जिह** *स्त्री०* (हिं) धनुष की डोरी। चिल्ला।
**जिहाद** पुं० (अ) १-मजहबी लड़ाई। २-वह युद्ध जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालों से अपने धर्म के प्रचार के निमित्त करते हैं।
**जिह्म** *वि०* (सं) १-दुष्ट। कपटी। २-वक्र। टेढ़ा। ३-अप्रसन्न। खिन्न। ४-मन्द।
**जिह्वा** *स्त्री०* (सं) जीभ।
**जिह्वाग्र** पुं० (सं) जीभ की नोक।
**जिह्वामूल** पुं० (सं) जीभ की जड़ या पिछला स्थान
**जिह्वामूलीय** *वि०* (सं) (वह वर्ण) जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो। २-जिह्वा के मूल स्थान से सम्बद्ध
**जींगन** पु० (हि) जुगनू।
**जी** पुं० (हि) १-मन। दिल। २-साहस। जीवट। ३-संकल्प। विचार। *अव्य०* १-नामों के पीछे लगने वाला आदरसूचक शब्द। २-किसी के कुछ पूछने पर आदरसूचक प्रत्युत्तर।
**जीअ** पुं० (हि) १-दे० 'जी'। २-दे० 'जीव'।
**जीअन** पुं० (हि) जीवन।
**जीगन** पुं० (हि) जुगनू।
**जीजना** *क्रि०* (हिं) जीवित रहना। जीना।
**जीजा** पुं० (हि) [*स्त्री०* जीजी] बड़ी बहिन का पति।
**जीजी** *स्त्री०* (हि) बड़ी बहिन।
**जीत** *स्त्री०* (हि) १-विजय। फतह। २-किसी ऐसे काम में सफलता, जिसमें दो या अधिक प्रतिद्वन्द्वी हों।
**जीतना** *क्रि०* (हिं) १-विजय प्राप्त करना। २-प्रतियोगिता में सफलता मिलना।
**जीता** *वि०* (हिं) १-प्राणधारी। चेतन। २-जीवित ३-तौल, नाप आदि में परिमाण से कुछ बढ़ा हुआ
**जीन** *स्त्री०* (फा) १-घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी काठी। २-एक तरह का कपड़ा। *वि०* (हि) जीर्ण।
**जीन-पोश** पुं० (फा) जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा
**जीन-सवारी** *स्त्री०* (फा) घोड़े पर जीन रखकर सवार होने का काम।
**जीन-साज** *वि०* (फा) जीन बनाने वाला।
**जीना** *क्रि०* (हिं) १-जीवित रहना। २-प्रसन्न होन *वि०* (हि) १-जीर्ण। २-झीना। पु० (फा) सीढ़ी।
**जीभ** *स्त्री०* (हिं) १-मुख के भीतर का वह मांस पिण्ड जिसके द्वारा रसों का आस्वादन और शब्दों का उच्चारण होत है। रसना। जिह्वा। २-कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का टुकड़ा। निब। ३-जीभ के आकार की कोई वस्तु।
**जीभा** पुं० (हि) १-जीभ के आकार की कोई वस्तु। २-चौपायों का एक रोग।
**जीभी** *स्त्री०* (हि) १-धातु की धनुषाकार पतली पत्तर जिससे जीभ साफ करते हैं। २-कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का टुकड़ा। निब। ३-छोटी जीभ।
**जीमना** *क्रि०* (हि) भोजन करना।
**जीमूत** पुं० (सं) १-पर्वत। २-बादल। ३-इन्द्र। ४-सूर्य।
**जीमूत-मुक्ता** *स्त्री०* (सं) मेघ से उत्पन्न मोती।
**जीमूत-वाहन** पुं० (सं) इन्द्र।
**जीमतवाही** पुं० (हि) धूम। धुवाँ।
**जीय** पुं० (हि) जीव। जी।
**जीयट** पुं० (हि) जीवट।
**जीयति** *स्त्री०* (हि) जीवन। जिन्दगी।
**जीयदान** पुं० (हि) जीवनदान। प्राणदान।
**जीर** पु०(हि) कवच। *वि०* जीर्ण। पुराना। पु० (सं) १-जीरा। २-फूलों का केसर। ३-तलवार। *वि०* जल्दी चलने वाला।
**जीरण** पुं० (स) जीरा *वि०* (हि) जीर्ण।
**जीरना** *क्रि०* (हि) १-जीर्ण या पुराना होना। २-मुरझाना। ३-फटना।
**जीरा** पुं० (हि) १-एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं। २-इस प्रकार की कोई छोटी महीन, लम्बी वस्तु। ३-फूलों का केसर।
**जीरी** पुं० (हि) अगहन में पकने वाला एक प्रकार का धान।
**जीर्ण** *वि०* (सं) १-बुढ़ापे से दुर्बल और क्षीण। २-टूटा-फूटा और पुराना। ३-बहुत पुराना। ४-पचा हुआ। हजम।
**जीर्ण-ज्वर** पुं० (स) पुराना बुखार।
**जीर्णता** *स्त्री०* (सं) १-बुढ़ापा। २-पुरानापन।
**जीर्णा** *वि०* (स) बूढ़ा। बुढ़िया *स्त्री०*(सं) काली जीरी
**जीर्णोद्धार** पुं० (सं) फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार।
**जील** *स्त्री०* (हि) १-धीमा या मध्यम स्वर। २-सारंगी आदि का तार। ३-तबले के साथ का बाजा।
**जीला** *वि०* (हि) [*स्त्री०* जीली] १-झीना। पतला। २-महीन।
**जीवंत** *वि०* दे० 'जीविता'।
**जीवंती** *स्त्री०* (सं) १-एक लता। २-शमी। ३-गुडूची
**जीव** पुं० (सं) १-प्राणियों का चेतन तत्व। आत्मा। प्राण। जान। ३-जीवधारी। प्राणी।
**जीवक** पुं० (सं) १-जीव। प्राणी। २-सपेरा। ३-

एक प्रकार का पौधा।
**जीव-जंतु** पुं०(सं) पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि
**जीवट** पुं० (हि) साहस। हिम्मत।
**जीवड़ा** पुं० (हि) प्राणी।
**जीवत** वि० (हि) जीविका। जिन्दा।
**जीवद** पुं० (सं) १-जीवनदाता। २-वैद्य। ३-शत्रु
**जीवदया** स्त्री० (सं) प्राणियों पर उनके जीवन रक्षा के विचार से की जाने वाली दया।
**जीवन-दान** पुं०(सं) १-प्राणदान। मरने से बचाना
**जीव-धन** पुं० (सं) १-पशुओं या जीवों के रूप में संपत्ति। २-जीवनधन।
**जीव-धातु** स्त्री० (सं) एक प्रकार का पारदर्शक, वर्णहीन, सजीव जीवाणु जो पशु या वनस्पति जीवन का आधार है। (प्रोटोप्लाज्म)।
**जीवधारी** पुं० (सं) प्राणी। जानवर।
**जीवन** पुं० (सं) १-जीवित रहने की अवस्था। २-जीवित रहने का भाव। प्राणधारण। ३-जीवित रखने वाली वस्तु। ४-परम प्रिय। ५-जीविका। ६-पानी। ७-वायु। ८-ईश्वर। ९-पुत्र। १०-मज्जा ११-मक्खन। १२-गंगा। १३-प्राणाधार।
**जीवन-काल** पुं० (सं) जन्म और मृत्यु के बीच का समय। (लाइफ-टाइम)।
**जीवन-क्रिया** स्त्री० (सं) जीवन की प्रवृत्ति। जीवन क्रम।
**जीवन-चरित, जीवन-चरित्र** पुं०(सं) १-सारे जीवन में किये हुए कार्यों का विवरण या वृतांत। (बायोग्राफी)। २-वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन भर का वृतांत हो।
**जीवन-धन** पुं०(सं)१-जीवन में सब से अधिक प्रिय २-प्राणाधार। प्राणप्रिय।
**जीवन-नौका** स्त्री० (हि) बड़े जहाजों या जलपोतों पर रहने वाली छोटा नाव जो जहाज डूबने की अवस्था में लोग उस पर सवार हो कर प्राण रक्षा करते हैं। (लाइफ-बोट)।
**जीवन-प्रमाणक** पुं० (सं) यह सिद्ध करने वाला प्रमाण-पत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था या इस समय जीवित है (लाइफ-सार्टिफिकेट)।
**जीवन-बूटी** स्त्री० (हि) मरे हुए को जिलाने वाली बूटी संजीवनी।
**जीवनमूरि** स्त्री० (हि) १-संजीवन बूटी। २-प्राणप्रिया
**जीवन-यापन** पुं० (सं) जीवननिर्वाह।
**जीवन-यापन-व्यय** पुं० (सं) भोजन, वस्त्र, और निवास सम्बन्धी वह व्यय जो जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक होता है। (कॉस्ट ऑफ लिविंग)।
**जीवन-रक्षक-नौका** स्त्री० (दे) 'जीवन-नौका'।
**जीवन-वृत्त, जीवन-वृत्तांत** पुं० (सं) जीवनचरित।
**जीवन-वृत्ति** स्त्री० (सं) १-जीविका। रोजी। २-जीवन निर्वाह के निमित्त मिलने या दी जाने वाली वृत्ति। (लिविंग-अलाउंस)।
**जीवन-संग्राम, जीवन-संघर्ष** पुं० (सं) प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर या प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अस्तित्व बनाये रखने के निमित्त किया जाने वाला घोर प्रयत्न। (स्ट्रगल-फॉर एक्जिस्टेन्स)।
**जीवन-हेतु** पुं० (सं) रोजी। जीविका।
**जीवना** क्रि० (हि) जीना।
**जीवनाघात** पुं० (सं) विष।
**जीवनी** स्त्री० (हि) १-जीवन-चरित। २-जीवन। जिन्दगी। वि० १-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली। २-जीवन देने वाली।
**जीवनोपाय** पुं० (सं) जीविका।
**जीवन्मुक्त** वि० (सं) जो जीवन काल में आत्मज्ञान होने के कारण, सांसारिक बन्धन से छूट गया हो।
**जीवन्मुक्ति** स्त्री० (सं) जीवन्मुक्त होने की अवस्था या भाव।
**जीवन्मृत** वि० (सं) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।
**जीव-बन्धु** पुं० (सं) गुलदुपहरिया। बन्धूक।
**जीव-मन्दिर** पुं० (सं) शरीर। देह।
**जीवयोनि** स्त्री० (सं) जानवर।
**जीवरा** पुं० (हि) जीव-प्राण।
**जीवरि** स्त्री० (हि) प्राणधारण की शक्ति। जीवन।
**जीवरी** पुं० (हि) जीवन।
**जीवलोक** पुं०(सं) भूलोक। पृथ्वीतल।
**जीव-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है।
**जीव-हत्या, जीव-हिंसा** स्त्री०(सं) प्राणियों का वध। हत्या।
**जीवांतक** पुं० (सं) १-जीवों की हत्या करने वाला। २-व्याध। बहेलिया।
**जीवा** पुं० (सं) १-धनुष की डोरी। २-जीविका। ३-जीवन।
**जीवाजून** पुं० (हि) जीव-जन्तु।
**जीवाणु** पुं० (सं) १-विकार से उत्पन्न होने वाले अति सूक्ष्म एक कोषीय शाकाणु जिनमें से कितने ही तो रोगों की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं और कुछ शरीर के लिए लाभप्रद होते हैं। (बैक्टीरिया)। २-जीवयुक्त अणु या अणु के समान छोटे जीव जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। (जर्म)। ३-सेन्द्रिय जीवों का वह मूल और अतिसूक्ष्म रूप जो विकसित होकर एक नये जीव का रूप धारण करता है।

**जीवात्मा** पुं० (सं) जीव। आत्मा। प्राण।
**जीवाधार** पुं० (सं) जीवन का आधार। हृदय।
**जीवावशेष** पुं० (सं) भूमि खुदाई में निकलने वाले प्राचीन काल के जीव-जन्तुओं के अवशिष्ट रूप। (फसिल)।
**जीवाश्म** पुं० दे० 'जीवावशेष'।
**जीविका** स्त्री० (सं) रोजी। वृत्ति।
**जीवित** वि० (सं) जीता हुआ। जिन्दा।
**जीवितेश** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-प्रियतम।
**जीह, जीहा** स्त्री० (हि) जीभ। जिह्वा।
**जुंबिश** स्त्री० (फा) हिलना-डोलना। गति।
**जु** वि० दे० 'जो'। क्रि० वि० दे० 'जो'। स्त्री० दे० 'जू'।
**जुआ** पुं० (हि) १-बाजी लगाकर खेला जाने वाला खेल। द्युत। २-छलकपट। ३-चक्की की मूठ। ४-वह लकड़ी जो बैल के कन्धे पर रखी जाती है।
**जुआठा** पुं० (हि) लकड़ी का वह ढाँचा, जो बैलों के कन्धों पर रखा जाता है।
**जुआर** पुं० दे० 'ज्वार'।
**जुआरी** पुं० (हि) जुआ खेलने वाला।
**जुआल** स्त्री० (हि) ज्वाला। पुं० दे० 'जवाल'।
**जुई** पुं० (हि) करछी के आकार का हवन करने का एक पात्र।
**जुकाम** पुं० (अ) सरदी से होने वाला एक रोग, जिसमें नाक तथा मुख से कफ निकलता है।
**जुक्ति** स्त्री० दे० 'युक्ति'।
**जुग** पुं० (हि) १-युग। २-युग्म। जोड़ा। ३-चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में इकट्ठा होना। ४-पुश्त। पीढ़ी।
**जुगजुगाना** क्रि० (हि) १-टिमटिमाना। २-उभरना
**जुगजुगी** स्त्री० (हि) १-एक गहना जो गले में पहना जाता है। २-शकरखोरा नामक एक चिड़िया।
**जुगत** स्त्री० (हि) युक्ति। उपाय।
**जुगति** स्त्री० (हि) युक्ति। तरकीब।
**जुगती** पुं० (हि) १-अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने वाला व्यक्ति। २-चतुर। चालाक।
**जुगनी** स्त्री० (हि) जुगनूँ।
**जुगनूँ** पुं० (हि) १-खद्योत। पट-बीजना। २-पान के आकार का एक गहना।
**जुगम** वि० (हि) युग्म। जोड़ा।
**जुगराफिया** पुं० (अ) भूगोलविद्या।
**जुगल** वि० दे० 'युगल'।
**जुगवना** क्रि० (हि) १-सञ्चित करना। २-यत्नपूर्वक सुरक्षित रखना।
**जुगावरी** वि० (हि) बहुत पुराना।
**जुगाना** क्रि० दे० 'जुगवना'।
**जुगार** स्त्री० (हि) जुगाली।
**जुगालना** क्रि० (हि) सींग वाले चौपायों का जुगाली करना।
**जुगाली** स्त्री० (हि) सींग वाले पशुओं द्वारा निगले चारे को थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाना पागुर।
**जुगुत** स्त्री० दे० 'जुगत'।
**जुगुप्सक** वि० (सं) निन्दक।
**जुगुप्सा** स्त्री० (सं) १-निन्दा। बुराई। २-घृणा। ३-अश्रद्धा।
**जुज** पुं० (फा) १-अंश। अंग। २-कागज के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह।
**जुजबंदी** स्त्री० (फा) किताब की सिलाई जिसमें आठ-आठ पन्ने सीए जाते हैं।
**जुजीठल** पुं० (हि) युधिष्ठिर।
**जुज्झ** स्त्री० (हि) युद्ध। लड़ाई।
**जुझवाना** क्रि० (हि) १-लड़ने को प्रोत्साहित करना। २-लड़ाकर मरवा देना।
**जुझाऊ** वि०(हि) १-युद्ध सम्बन्धी। २-दे० 'जुझार'
**जुझार** पुं० (हि) १-लड़ाका। २-वीर। ३-युद्ध।
**जुट** स्त्री० (हि) १-दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। २-थोक। लाट। ३-गुट। दल। ४-बल और कद में समान दो मनुष्य। ५-जोड़ का साथी या वस्तु।
**जुटक** पुं० (सं) सिर के उलझे हुए बाल।
**जुटना** क्रि० (हि) १-जुड़ना। २-गुथना। चिपटना। ३-सम्भोग करना। ४-एकत्र होना। ५-काम में सम्मिलित होना। ६-मिलना।
**जुटला** वि० (हि) [स्त्री० जुटली] लम्बे बालों की जटा रखने वाला।
**जुटाना** क्रि० (हि) १-दो या अधिक वस्तुओं को दृढ़तापूर्वक जोड़ना। २-सटाना। भिड़ाना। ३-इकट्ठा करना।
**जुटाव** पुं० (हि) जुटने की क्रिया या भाव। जमावड़ा।
**जुठारना** क्रि० (हि) जूठा या उच्छिष्ट करना।
**जुठिहारा** पुं०(हि) [स्त्री० जुठिहारी] जूठा या उच्छिष्ट खाने वाला।
**जुड़ना** क्रि० (हि) १-सम्बद्ध होना। २-इकट्ठा होना ३-किसी काम में सहयोग देने को उपस्थित होना। ४-उपलब्ध होना। ५-जुतना।
**जुड़पित्ती** स्त्री० (हि) शीत और पित्त से उत्पन्न एक प्रकार की खुजली।
**जुड़वाँ** वि० (हि) जुड़े हुए। यमल। (शिशु)।
**जुड़वाई** स्त्री० दे० 'जोड़वाई'।
**जुड़वाना** क्रि० (हि) १-शीतल करना। २-शान्त करना। ३-दे० 'जोड़वाना'।
**जुड़ाई** स्त्री० (हि) दे० 'जोड़ाई'।
**जुड़ाना** क्रि० (हि) १-ठण्डा होना या करना। २-

शान्त होना। ३-तृप्त करना।
**जुड़ावना** क्रि० (हि) दे० 'जुड़ाना'।
**जुत** वि० (हि) युक्त। युत।
**जुतना** क्रि० (हि) १-किसी काम में पूरी ताकत के साथ लगना। २-जोता जाना (खेत)। ३-बैल घोड़े आदि का गाड़ी या हल आदि में लगना।
**जुतवाना** क्रि० (हि) दूसरे से जोतने का काम कराना।
**जुताई** स्त्री० दे० 'जोताई'।
**जुताना** क्रि० (हि) दे० 'जोताना'।
**जुतियाना** क्रि० (हि) १-जूतों से मारना। २-अपमानित करना।
**जुत्थ** पुं० (हि) यूथ।
**जुदा** वि० (फा) १-पृथक्। अलग। २-भिन्न।
**जुदाई** स्त्री० (फा) वियोग।
**जुदायगी** स्त्री० दे० 'जुदाई'।
**जुदेन** वि० (हि) जुदा।
**जुद्ध** पु० (हि) युद्ध।
**जुनब्बा** स्त्री० (हि) एक तरह की तलवार।
**जुन्हाई** स्त्री० (हि) १-चन्द्रिका। चाँदनी। २-चन्द्रमा
**जुन्हार** स्त्री० (हि) दे० 'जोंधरी'।
**जुन्हैया** स्त्री० (हि) १-चाँद। २-चाँदनी।
**जुपना** क्रि० (हि) जलना। (दीपक का)।
**जुबराज** पुं० (हि) युवराज।
**जुबली** स्त्री० (प्र) जयन्ती।
**जुबाद** पु० (प्र) एक प्रकार का तरल गन्ध द्रव्य।
**जुबान** स्त्री० दे० 'जबान'।
**जुमकना** क्रि० (हि) किसी स्थान पर दृढ़तापूर्वक खड़े रहना। डटना।
**जुमला** वि० (फा) सब। कुल। पुं० पूरा वाक्य।
**जुमा** पुं० (प्र) शुक्रवार।
**जुमामसजिद** स्त्री० (प्र) वह मसजिद जहाँ मुसलमान लोग जुमे के दिन नमाज पढ़ते है।
**जुमिल** पुं० (?) एक तरह का घोड़ा।
**जुमुकना** क्रि० (हि) १-पास आजाना। २-जुड़ना।
**जुमेरात** स्त्री० (प्र) वृहस्पतिवार।
**जुम्मा** पु० १-दे० 'जुमा'। २-दे० 'जिम्मा'।
**जुर** पु० (हि) ज्वर।
**जुरअत** स्त्री० (फा) साहस।
**जुरझना** क्रि० (हि) झुलसना।
**जुरझुरी** स्त्री० (हि) १-ज्वरांश। हरारत। २-शीतकंप
**जुरना** क्रि० (हि) जुड़ना।
**जुरमाना** क्रि० (फा) अर्थदंड।
**जुरवाना** क्रि० (हि) जुरमाना।
**जुरा** स्त्री० (हि) जरा। बुढ़ापा।
**जुराना** क्रि० (हि) जुड़ाना।
**जुराफा** पुं० (प्र) एक अफरीकी जंगली पशु जिसकी टांगें और गरदन ऊँट के समान और सिर हिरन की तरह होता है।
**जुरी** स्त्री० (हि) हलका ज्वर।
**जुरूर** वि० क्रि० वि० दे० 'जरूर'।
**जुर्म** पुं० (प्र) अपराध।
**जुर्माना** पुं० दे० 'जुरमाना'।
**जुर्रा** पुं० (फा) नरबाज जो पक्षियों का शिकार करता है।
**जुर्राफा** पुं० दे० 'जुराफा'।
**जुर्राब** स्त्री० (तु०) मोजा।
**जुल** पुं० (ग्रं) धोखा। झांसा।
**जुलकरन** पुं० (प्र) प्राचीन काल की एक उपाधि जो प्रथम बार सिकन्दर महान के नाम के साथ लगाई गई तथा बाद में बादशाहों के नाम के पीछे लगाई जाती थी।
**जुलकरनैन** पुं०(प्र) सिकन्दर महान के नाम के साथ लगने वाली एक उपाधि।
**जुलना** क्रि० (हि) १-मिलना। सम्मिलित होना। २-मिलना। भेंट करना।
**जुलम** पुं० (हि) जुल्म। अन्याय। अत्याचार।
**जुलहा** पु० दे० 'जुलाहा'।
**जुलाई** स्त्री० (प्र) अंग्रेजी वर्ष का सातवां महीना जो ३१ दिन का होता है।
**जुलाब** पुं० (फा) १-रेचन। दस्त। २-रेचक औषध
**जुलाहा** पुं० (हि) (स्त्री जुलाहिन)। कपड़े बुनने वाला। तन्तुवाय।
**जुलुफ** स्त्री० (दे) 'जुल्फ'।
**जुलुम** पुं० (दे) 'जुल्म'।
**जुलूस** पुं० (दे) 'जलूस'।
**जुल्फ** स्त्री० (फा) सिर के लम्बे बाल। पट्टा। कुल्ला।
**जुल्फी** स्त्री० (फा) जुल्फ। पट्टा।
**जुल्म** पुं० (प्र) अत्याचार।
**जुल्मी** वि० (प्र) अत्याचारी। अन्यायी।
**जुल्लाब** पुं० (दे) 'जुलाब'।
**जुव, जुवक** पुं० (हि) युवक।
**जुवती** स्त्री० (हि) युवती।
**जुवा** पुं० (हि) १-युवा। २-जूआ।
**जुवार** स्त्री० (दे) 'ज्वार'।
**जुहाना** क्रि० (हि) १-सञ्चित करना। २-इमारत के काम में पत्थर आदि यथा स्थान बैठाना। ३-चित्र को प्रभावशाली बनाने के निमित्त आकृतियों को यथा स्थान बैठाना। संयोजन।
**जुहार** स्त्री० (हि) नमस्कार। प्रणाम।
**जुहारना** क्रि० (हि) १-नमस्कार करना। २-सहायता मांगना। ३-एहसान लेना।
**जुहावना** क्रि० (दे) 'जुहाना'।
**जुहू** स्त्री० (दे) 'जुही'।
**जुहोता** पु० (हि) यज्ञ में आहुति डालने वाला।

**जूँ** स्त्री० (हि) एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो सिर के बालों में पाया जाता है।
**जूँठ** वि० (दे) 'जूठा'।
**जूँठन** स्त्री० (दे) 'जूठन'।
**जू** अव्य० (हि) (एक आदरसूचक शब्द) जी। वि० जो क्रि० वि० ज्यों (जैसे)।
**जूआ** पुं० (हि) १-गाड़ी के आगे जड़ी वह लकड़ी जो बैलों के कंधों पर रहती है। २-जुआठा। ३-चक्की फिराने की मूठ। ४-हारजीत का खेल। द्यूत जुआ।
**जूआ-घर** पुं० (हि) द्यूतशाला। जूआ खेलने का स्थान।
**जूआ-चोर** पुं० (हि) भारी धूर्त्त और ठग।
**जूआ-चोरी** स्त्री० (हि) किसी का धन हड़पने के लिए की जाने वाली धूर्त्तता या छल।
**जूजू** पुं० (हि) एक कल्पित जीव जिससे बच्चों के मन में भय उत्पन्न करते हैं। हौआ।
**जूझ** स्त्री० (हि) लड़ाई।
**जूझना** क्रि० (हि) १-लड़ना। २-लड़कर मरना।
**जूट** पुं० (सं) १-जटा की गाँठ। जूड़ा। २-जटा। लट। ३-शिव की जटा। ४-पटसन।
**जूठ** पुं० दे० 'जूठन'। वि० दे० 'जूठा'।
**जूठन** स्त्री० (हि) १-खाये हुए भोजन का शेष। उच्छिष्ट भोजन। २-एक दो बार पहले काम में लाया जा चुका पदार्थ। भुक्त पदार्थ।
**जूठा** वि० (हि) [स्त्री० जूठी] किसी के खाने से बचा हुआ (भोजन) उच्छिष्ट। २-जिसका पहले किसी ने उपभोग कर लिया हो। भुक्त। ३-जिसका स्पर्श मुख या किसी जूठे पदार्थ से हुआ हो। पुं० (हि) जूठन। उच्छिष्ट भोजन।
**जूड़** वि० (हि) ठण्डा। शीतल। पुं० दे० 'जूड़ा'।
**जूड़ा** पुं० (हि) १-सिर के बालों को लपेट कर बनाई हुई गाँठ या ग्रन्थि। २-चोटी। कलगी। ३-मूँज आदि का पूला। ४-पगड़ी का पिछला भाग। ५-घास की बनी गेंडुरी जिस पर घड़ा रखा जाता है
**जूड़ी** स्त्री० (हि) जाड़ा देकर चढ़ने वाला बुखार।
**जूत** पुं० (हि) जूता।
**जूता** पुं० (हि) पैर में पहनने का उपकरण जो पैर के ढाँचे की तरह होता है। पादत्राण। उपानह।
**जूताखोर** वि० (हि) १-जूते खाने वाला। २-निर्लज्ज
**जूती** स्त्री० (हि) १-जूता। २-स्त्रियों का जूता।
**जूतीपैजार** स्त्री० (हि) १-जूतों की मारपीट। २-लड़ाई झगड़ा।
**जूथ** पुं० (हि) यूथ।
**जूथका, जूथिका** स्त्री० (हि) जूही का पौधा अथवा फूल।
**जून** पुं० (हि) १-समय। काल। २-तृण। घास।
**जूप** पुं० (हि) १-जूआ। द्यूत। २-दे० 'यूप'।
**जूमना** क्रि० (हि) एकत्र होना। जुटना।
**जूर** पुं० (हि) जोड़। संचय।
**जूरना** क्रि० (हि) १-जोड़ना। २-एक पर एक रख कर गड्डी लगाना।
**जूरा** पुं० दे० 'जूड़ा'।
**जूरी** स्त्री० (हि) १-घास या पत्तों का पूला। जुट्टी। २-एक प्रकार का पकवान। ३-सूरन आदि के नये कल्ले। पुं० (अं) वह नागरिक परामर्शदाता जो न्यायालय में जज के साथ बैठकर अभियोगों के फैसलों के निर्णय में सहायता करते हैं।
**जूष** पुं० (सं) १-शोरबा। झोल। २-पकाई हुई दाल का पानी।
**जूस** पुं० (हि) १-पकी हुई दाल अथवा उबली हुई वस्तु का रस। २-सम संख्या। युग्म संख्या।
**जूसी** स्त्री० (हि) खाँड का पसेव। चोटा।
**जूह** पुं० दे० 'यूथ'।
**जूहर** पुं० दे० 'जौहर'।
**जूही** स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल चमेली से मिलते हैं। २-एक तरह की आतिशबाजी।
**जृंभ** पुं० (सं) [स्त्री० जृंभा] १-जँभाई। २-आलस्य
**जृंभक** वि० (सं) जम्हाई लेने वाला। पुं० (सं) निद्रा लाने वाला एक अस्त्र।
**जृंभा, जृंभिका** स्त्री० (सं) १-जँभाई। २-आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता। ३-एक शक्ति का नाम।
**जेउ** क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।
**जेंगना** पुं० (हि) जुगनू।
**जेना** क्रि० दे० 'जेंवना'।
**जेवन** पुं० (हि) १-खाना। २-भोजन करना। ३-खाद्य पदार्थ। ३-ज्योंनार।
**जेवना** क्रि० (हि) भोजन कराना।
**जे** सर्व० (हि) 'जो' का बहुवचन।
**जेइ, जेउ, जेऊ** सर्व० १-दे० 'जो'। २-जिसने।
**जेट** पुं० (हि) १-समूह। राशि। २-बरतनों का समूह जिसमें वे एक दूसरे के ऊपर रखे हों। ३-रोटियों की तह।
**जेटी** स्त्री० (अं) वह स्थान जहाँ जहाज पर माल चढ़ता या उतरता है।
**जेठ** पुं० (हि) १-वैशाख और आषाढ़ के बीच का महीना। ज्येष्ठ। २-[स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई। भसुर। वि० अग्रज। बड़ा।
**जेठवा** वि० (हि) १-ज्येष्ठ या जेठ मास में होने वाला २-दे० 'जेठा'। पुं० एक प्रकार की कपास जो जेठ के महीने में होती है।
**जेठरा** वि० (हि) दे० 'जेठा'।
**जेठा** वि० (हि) [स्त्री० जेठी] १-बड़ा। अग्रज। २-सबसे उत्तम।

**जेठाई** स्त्री० (हि) बड़ाई । जेठापन ।
**जेठानी** स्त्री० (हि) पति के बड़े भाई की पत्नी ।
**जेठी** वि० (हि) जेठ सम्बन्धी । जेठ का । स्त्री० (हि) जेठ में पकने या फूटने वाली कपास ।
**जेठी-मधु** स्त्री० (हि) मुलेठी ।
**जेठौत, जेठौता** पु० (हि) [स्त्री० जेठौती] जेठ का लड़का ।
**जेतव्य** वि० (सं) जो जीता न जा सके । जेय ।
**जेता** पुं० (हि) जीतने वाला । विजयी । वि० [स्त्री० जेती] जितना ।
**जेतार** पुं० १-दे० 'जेता' । २-जीतने वाला ।
**जेतिक, जेते, जेतो** क्रि० वि० (हि) जितना ।
**जेना** क्रि० (हि) जीमना । भोजन करना ।
**जेन्य** वि०(सं)१-उच्च कुलोत्पन्न । २-असली । सच्चा
**जेब** पुं०(फा) खीसा । खरीता । स्त्री० शोभा । सौन्दर्य
**जेबकट, जेबकतरा** पु० (हि) जेब काट कर रुपया पैसा निकालने वाला व्यक्ति ।
**जेबखर्च** पुं० (फा) निज के खर्च के लिए धन ।
**जेबघड़ी** स्त्री० (हि) जेब में रखने की घड़ी ।
**जेबी** वि० (फा) १-जेब में रखने योग्य । २-बहुत छोटा ।
**जेमन** पुं० (हि) भोजन करना ।
**जेय** वि० (सं) जीतने योग्य ।
**जेर** स्त्री० (हि) वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है । आँवल । वि० (फा) १-परास्त । पराजित २-जो बहुत दिक किया जाए ।
**जेरबार** वि० (फा) १-जो किसी विपत्ति के कारण अत्यन्त दुखी हो । २-जिसकी बहुत हानि हुई हो ।
**जेरबारी** स्त्री० (फा) १-तङ्गी । २-परेशानी ।
**जेरी** स्त्री०(हि) १-जेर । आँवल । २-वह लाठी जिसे चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ आदि हटाने या दबाने के लिए अपने पास रखते हैं ।
**जेल** पुं० (अ) कारागार । बन्दीगृह । पुं० (हि) जंजाल । परेशानी ।
**जेलखाना** पुं० (फा) कारागार ।
**जेलर** पु० (अं) जेल का अधिकारी ।
**जेलाटिन** पुं० (अं) सरेस की तरह का एक पदार्थ ।
**जेवड़ा** पुं० (हि) [स्त्री० जेवड़ी] रस्सा । डोर ।
**जेवना** क्रि० (हि) जीवना । जीमना । भोजन करना
**जेवनार** स्त्री० (हि) १-दे० 'ज्योनार' । २-रसोई । भोजन ।
**जेवर** पु० (फा) आभूषण । गहना ।
**जेवरी** स्त्री० (हि) रस्सी ।
**जेष्ठ** पुं० (हि) १-जेठ मास । २-जेठ । वि० अग्रज । बड़ा ।
**जेह** स्त्री० (हि) धनुष का चिल्ला ।
**जेहन** पु० (अ) बुद्धि । धारणशक्ति ।
**जेहर** स्त्री० (हि) पाजेब (गहना) ।
**जेहरि** स्त्री० (हि) आँवल (खेड़ी) ।
**जेहल** स्त्री० (हि) हठ । जिद । पुं० (हि) जेल । कारागार ।
**जेहली** वि० (हि) हठी । जिद्दी ।
**जेहाद** पुं० दे० 'जहाद' ।
**जेहि** सर्व० (हि) १-जिसे । जिसको । २-जिसमें ।
**जै** स्त्री० (हि) जय । वि० (हि) जितने । जिस संख्या में ।
**जैकार** स्त्री० (हि) जयकार ।
**जै-जंकार** स्त्री० (हि) जय-जयकार ।
**जैजैवंती** स्त्री० (हि) एक रागिनी ।
**जैत** स्त्री० (हि) विजय । जीत ।
**जैतपत्र** पुं० (हि) जयपत्र ।
**जैतवार** पुं० (हि) विजयी । विजेता ।
**जैतश्री** स्त्री० (हि) एक रागिनी ।
**जैतून** पुं० (अ) एक सदाबहार वृक्ष जिसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं ।
**जैन** पुं० (सं) १-भारत का एक धर्म-सम्प्रदाय । २-जैनी ।
**जैनी** पुं० (हि) जैनमतावलम्बी ।
**जैनु** पुं० (हि) आहार । भोजन ।
**जै-पत्र** पु० (हि) जय-पत्र ।
**जैबो** क्रि० (हि) जाना ।
**जैमाल** स्त्री० दे० 'जयमाला' ।
**जैमिनी** पुं० (सं) पूर्व मीमांसा के प्रवर्त्तक एक ऋषि
**जैव** वि० (सं) १-जीव या जीवन से सम्बन्ध रखने वाली । २-जीवों अथवा उनके शारीरिक अंगों से सम्बन्ध रखने वाला । ३-जिसमें जीवनदायिनी शक्ति तथा शारीरिक अवयव या इन्द्रियां हों । (ऑर्गेनिक) ।
**जैस** वि० (हि) जैसा ।
**जैसा** वि० (हि) [स्त्री० जैसी] १-जिस प्रकार का । २-जितना । ३-समान । तुल्य । क्रि० वि० जितना । जिस परिमाण अथवा मात्रा में ।
**जैसी** वि० (हि) 'जैसा' का स्त्रीलिङ्ग ।
**जैसे** क्रि० वि० (हि) जिस प्रकार । जिस तरह ।
**जैसो** वि० दे० 'जैसा' । क्रि० वि० दे० 'जैसा' ।
**जों** क्रि० वि० (हि) जैसे । जिस भाँति ।
**जोंक** स्त्री० (हि) १-पानी में रहने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है । २-वह व्यक्ति जो अपना मतलब गाँठने के लिए पीछे पड़ जाये ।
**जोंकी** स्त्री० (हि) १-लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को परस्पर जोड़ता है । २-दे० 'जोंक' ।
**जोंधरी** स्त्री० (हि) १-छोटी ज्वार । २-बाजरा ।
**जोधैया** स्त्री० (हि) ज्योत्स्ना । चाँदनी ।

**जो** सर्व० (हि) एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम जिससे कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है। अव्य० यदि। अगर।
**जोअना** क्रि० (हि) दे० 'जोवना'।
**जोइ** स्त्री० (हि) जोरू। पत्नी। सर्व० 'जो'।
**जोइनि** स्त्री० (हि) १-योनि। २-आकर। खान।
**जोइसी** पुं० (हि) ज्योतिषी।
**जोउ** सर्व० (हि) जो
**जोख** स्त्री० (हि) तौल।
**जोखना** क्रि० (हि) तौलना। वजन करना।
**जोखा** पुं० (हि) लेखा। हिसाब।
**जोखिउ** स्त्री० (हि) जोखिम।
**जोखिता** स्त्री० (हि) योषिता।
**जोखिम** स्त्री० (हि) १-भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशङ्का। २-वह पदार्थ अथवा काम जिससे भारी विपत्ति आ सकती है।
**जोखुआ, जोखुवा** पुं० (हि) तौलने वाला।
**जोखों** स्त्री० (हि) जोखिम।
**जोगंधर** पुं० (हि) एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था। योगन्धर।
**जोग** पुं० दे० 'योग'। वि० दे० 'योग्य'।
**जोगड़ा** पुं० (हि) बना हुआ योगी। पाखण्डी।
**जोगता** स्त्री० (हि) योग्यता।
**जोगन** स्त्री० (हि) जोगिन।
**जोगनिया** स्त्री० (हि) जोगिन। साधुनी।
**जोगमाया** स्त्री० (हि) दे० 'योगमाया'।
**जोगवना** क्रि० (हि) १-हिफाजत से रखना। २-सञ्चित करना। ३-आदर करना। ४-जाने देना। ५-[illegible] करना।
**जोगवाट** पुं० दे० 'जोगौटा'।
**जोग-[illegible]** पुं० (हि) तपस्या।
**जोग[illegible]** [illegible] (हि) योग से उत्पन्न आग।
**जोगिंद** पुं० (हि) १-योगीराज। २-महादेव।
**जोगिन** स्त्री० (हि) १-जोगी स्त्री या जोगी की स्त्री २-पिशाचिनी। ३-एक रणदेवी।
**जोगिनी** स्त्री० (हि) १-योगिनी। २-जोगिन।
**जोगिया** वि० (हि) १-जोग का। २-जोगी का। ३-गेरू के रङ्ग का। भगवा।
**जोगी** पुं० (हि) [स्त्री० जोगिन] १-योगी। २-एक प्रकार के भिक्षुक, जो सारङ्गी पर गाते हैं।
**जोगीड़ा** पुं० (हि) १-एक चलता गाना जो वसन्त-ऋतु में गाया जाता है। २-इस प्रकार का गाना गाने वालों का समाज।
**जोगीश्वर, जोगेश्वर** पुं० दे० 'योगेश्वर'।
**जोगौटा** पुं० (हि) जोगी की वह चादर जो योग साधन के समय सिर से पैर तक ओढ़ते हैं।
**जोग्य** वि० (हि) योग्य।
**जोजन** पुं० (हि) योजन।
**जोट** पुं० (हि) १-जोड़। जोड़ी। २-साथी। संघाती
**जोटा** पुं० (हि) १-जोड़ा। युग। २-गौन। खुरजी
**जोटिंग** पुं० (सं) शिव।
**जोटी** स्त्री० दे० 'जोड़ी'।
**जोड़** पुं० (हि) १-जोड़ने की क्रिया। २-कई संख्याओं को जोड़ने से आने वाली संख्या। योग-फल। ३-वह स्थान जहाँ दो वस्तुएँ या दो टुकड़े जुड़ें। सन्धि स्थान। ४-वह टुकड़ा जो किसी वस्तु में जोड़ा जाय। ५-एक ही प्रकार की अथवा साथ-साथ उपयोग में आने वाली दो वस्तुएँ। जोड़ा। ६-बराबरी। समानता। ७-शरीर के दो अवयवों का सन्धि-स्थान। ८-वह जो किसी की बराबरी का हो। ९-पूरी पोशाक। १०-दाव-पेंच। ११-दे० 'जोड़ा'।
**जोड़ती** स्त्री० (हि) कई संख्याओं का जोड़। योग।
**जोड़-तोड़** पुं० (हि) १-(किसी काम के लिए की जाने वाली) विशेष युक्ति या उपाय। तरकीब। २-दाँव-पेंच। छल-कपट।
**जोड़न** स्त्री० (हि) जावन। जामन।
**जोड़ना** क्रि० (हि) १-दो वस्तुओं को सीकर, मिला-कर, चिपका कर या अन्य उपाय द्वारा एक करना। २-टूटे हुए पदार्थों के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३-वस्तुएँ अथवा सामग्री, क्रम से लगाना या रखना। ४-संचित करना। ५-संख्याओं का योगफल निकालना। जोड़ लगाना। ६-वाक्यों अथवा पदों की योजना करना। ७-(दीपक या आग) जलाना।
**जोड़ला, जोड़वाँ** वि० (हि) जुड़वाँ। यमज।
**जोड़वाई** स्त्री० (हि) जोड़वाने की क्रिया या भाव।
**जोड़वाना** क्रि० (हि) जोड़ने का काम दूसरे से कराना
**जोड़ा** पुं० (हि) १-एक प्रकार के दो पदार्थ। २-एक साथ पहने जाने वाले दो कपड़े। ३-एक आकार की वस्तु। ४-स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म। ५-पैरों के जूते। ६-वह जो बराबर का हो।
**जोड़ाई** स्त्री० (हि) १-जोड़ने का काम या भाव। २-जोड़ने की उजरत।
**जोड़ी** स्त्री० (हि) १-जोड़ा। २-घोड़ों या बैलों का युग्म। ३-एक साथ पहनने के सब कपड़े। ४-मञ्जीरा (बाजा)।
**जोड़ीदार** वि० (हि) १-बराबरी का। २-जोड़ का।
**जड़ीवाल** पुं० (हि) गायक दल के साथ मंजीरा बजाने वाला।
**जोडू** स्त्री० (हि) जोरू।
**जोत** स्त्री० (हि) १-आसामी को जोतने के लिए दी

गई भूमि । २-जोते जाने वाले पशुओं के गले की रस्सी जिसका एक छोर पशु के गले में बंधा रहता है और दूसरा उस वस्तु से बंधा होता है जिससे पशु जोता जाता है। ३-तराजू के पलड़े में बंधी हुई रस्सी । ४-दे० 'ज्योति' ।

**जोतदार** पुं० (हि) काश्तकार ।

**जोतना** क्रि० (हि) १-गाड़ी आदि को चलाने के लिए उसके आगे घोड़े, बैल आदि पशु बांधना २-किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना ३-खेत में हल चलाना ।

**जोता** पुं०(हि) १-जुआठे में बंधी हुई रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २-बहुत बड़ी शहतीर । ३-खेत जोतने वाला ।

**जोताई** स्त्री० (हि) जोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी

**जोतिहा** पुं० (हि) खेत जोतने वाला आसामी ।

**जोति** स्त्री० (हि) १-घी का दीपक जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। २-दे० 'ज्योति' ३-जोतने-बोने योग्य भूमि ।

**जोतिक** क्रि० वि० (हि) जैसा ।

**जोतिखी** पुं० दे० 'ज्योतिषी' ।

**जोतिलिंग** पुं० दे० 'ज्योतिर्लिंग' ।

**जोतिष** पुं० (हि) ज्योतिष ।

**जोतिषी** पुं० (हि) ज्योतिषी ।

**जोतिस** पुं० (हि) ज्योतिष ।

**जोतिसी** पुं० (हि) ज्योतिषी ।

**जोती** स्त्री० (हि) जोतने लायक भूमि ।

**जोत्सना, जोत्स्ना** स्त्री० (हि) ज्योत्सना ।

**जोध, जोधा** पुं० (हि) योद्धा ।

**जोन** स्त्री० (हि) योनि ।

**जोना** क्रि० (हि) १-ताकना । देखना । २-प्रतीक्षा करना । ३-तलाश करना ।

**जोनि** स्त्री० (हि) योनि ।

**जोन्ह, जोन्हाई, जोन्हैया, जोन्हि** स्त्री० (हि) चाँदनी

**जोप** पुं० (हि) भूप ।

**जो-पै** अव्य० (हि) १-यदि । अगर । यद्यपि । अगरचे

**जोफ** पुं० (अ) कमजोरी । निर्बलता ।

**जोबन** पुं० (हि) १-जवानी । यौवन । २-यौवन-जनित सुन्दरता । ३-स्तन । छाती । ४-शोभा । बहार ।

**जोबना** क्रि० (हि) जोवना । देखना ।

**जोम** पुं० (अ) १-गर्व । घमण्ड । २-धारणा । खयाल

**जोय** स्त्री० (हि) १-पत्नी । २-स्त्री । सर्व० १-जो । २-जिस ।

**जोयना** क्रि० (हि) १-जलाना । २-जोवना । देखना

**जोयसी** पुं० (हि) ज्योतिषी ।

**जोर** पुं० (फा) १-बल । शक्ति । २-प्रबलता । तेजी ३-उन्नति । ४-वश । अधिकार । ५-वेग । ६-भरोसा । ७-व्यायाम । वि० (हि) जोड़ ।

**जोरदार** वि० (फा) जोर वाला । बलवान ।

**जोरन** पुं० (हि) जोड़न । जामन ।

**जोरना** क्रि० (हि) १-जोड़ना । २-जोतना ।

**जोर-शोर** पुं० (फा) बहुत अधिक जोर पर ।

**जोरा** पुं० (हि) जोड़ा ।

**जोराजोरी** स्त्री० (हि) जबरदस्ती । बलपूर्वक ।

**जोरावर** वि० (फा) बलवान ।

**जोरी** स्त्री० (हि) १-जोड़ी । २-जबरदस्ती ।

**जोरू** स्त्री० (हि) पत्नी ।

**जोलहा** पुं० (हि) जुलाहा ।

**जोलाहल** स्त्री० (हि) ज्वाला ।

**जोली** स्त्री० (हि) बराबरी ।

**जोवना** क्रि० (हि) जोहना । प्रतीक्षा करना ।

**जोश** पुं० (फा) १-उबाल । उफान । २-मनोवेग । ३-आवेश । ४-उत्साह ।

**जोशन** पुं० (फा) १-बाँह पर पहनने का एक गहना । २-कवच ।

**जोशाँदा** पुं० (फा) काढ़ा । क्वाथ ।

**जोशी** पुं० दे० 'जोषी' ।

**जोशीला** वि० (हि) [स्त्री० जोशीली] आवेशपूर्ण । ओजपूर्ण ।

**जोष** स्त्री० (हि) १-जोख । २-स्त्री ।

**जोषा, जोषित, जोषिता** स्त्री० (सं) स्त्री । नारी ।

**जोषी** पुं० (हि) १-गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों की एक उपजाति । २-ज्योतिषी ।

**जोस** पुं० (हि) जोश । जोख ।

**जोह** स्त्री० (हि) १-खोज । २-प्रतीक्षा । ३-कृपा-दृष्टि ।

**जोहड़** पुं० (देश) कच्चा तालाब ।

**जोहन** स्त्री० (हि) १-देखने की क्रिया । २-खोज । ३-प्रतीक्षा ।

**जोहना** क्रि० (हि) १-देखना । २-खोजना । ३-प्रतीक्षा करना ।

**जोहर** पुं० (देश) कच्चा तालाब ।

**जोहार** स्त्री० (हि) जुहार । अभिवादन । पुं० (हि) जौहर ।

**जोहारना** क्रि० (हि) अभिवादन करना ।

**जौं** अव्य० (हि) यदि । जो । क्रि० वि० दे० 'ज्यों' ।

**जौरा-भौरा** पुं० (हि) खजाना रखने का तहखाना ।

**जौरे** क्रि० वि० (हि) निकट । पास ।

**जौ** पुं० (हि) १-गेहूं की तरह का एक अन्न । यव । २-छः राई (खरदल) के बराबर का तौल । अव्य० यदि । अगर । क्रि० वि० जब ।

**जौक, जौख** पुं० (हि) १-समूह । झुण्ड । २-सेना ।

**ज़ौजा** स्त्री० (फा) पत्नी । भार्या ।

**जौतुग** पुं० दे० 'यौतुक' ।

**जौधिक** पुं० (सं) तलवार के बत्तीस हाथों में एक ।

**जौन** सर्व० दे० 'जो'। पु० दे० 'यवन'।
**जौन्ह** स्त्री० (हि) जुन्हाई। चाँदनी।
**जौ-पै** अव्य० (हि) यदि।
**जौबति** स्त्री० (हि) युवती।
**जौबन** पु० (हि) यौवन।
**जौम** पु० दे० 'जोम'।
**जौर** पु० (फा) अत्याचार।
**जौरा** पु० (हि) वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाई-बारी को काम की मजदूरी के रूप में देते हैं।
**जौशन** पु० (फा) जोशन। गहना।
**जौहर** पु० (अ) १-रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २-सार वस्तु। तत्व। ३-हथियार का ओप। ४-उत्तमता। खूबी। पु० (हि) १-राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा, जिसके अनुसार शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर राजपूत स्त्रियाँ चिता में जल जाती थीं। २-इस कार्य के लिए बनाई गई चिता। ३-आत्महत्या
**जौहरी** पु० (फा) १-रत्न परखने वाला। २-रत्न-व्यवसायी। ३-गुण दोष पहचानने वाला। गुण-ग्राहक।
**ज्ञ** = 'ज' और 'ञ' के योग से बना संयुक्त अक्षर। पु० (सं) १-ज्ञानबोध। २-ज्ञानी। ३-मंगलगृह।
**ज्ञपित, ज्ञप्त** वि० (सं) जाना हुआ।
**ज्ञप्ति** स्त्री० (सं) १-जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २-वह बातें जो बताई जाय। (इनफॉर-मेशन)। ३-जानकारी। ४-बुद्धि।
**ज्ञा** स्त्री० (सं) ज्ञान। जानकारी।
**ज्ञात** वि० (सं) विदित। जाना हुआ।
**ज्ञात-यौवना** स्त्री० (सं) वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।
**ज्ञातव्य** वि० (सं) १-जानने योग्य। ज्ञेय। २-बोध-गम्य।
**ज्ञाता** वि० (सं) [स्त्री० ज्ञात्री] जानकार।
**ज्ञाति** पु० (हि) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती।
**ज्ञातृत्व** पु० (सं) जानकारी।
**ज्ञान** पु० (सं) १-जानना। बोध। यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्वज्ञान।
**ज्ञान-कांड** पु० (सं) वेद का एक कांड जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है।
**ज्ञान-गम्य, ज्ञान-गोचर** वि० (सं) जो जाना जा सके। ज्ञेय।
**ज्ञानता** स्त्री० (सं) ज्ञान होने की अवस्था या भाव।
**ज्ञानतः** क्रि० वि० (सं) जानबूझकर।
**ज्ञान-पिपासा** स्त्री० (सं) ज्ञान प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा।
**ज्ञानमय** वि० (सं) १-ज्ञान से परिपूर्ण। २-ज्ञानरूप ३-चिन्मय।
**ज्ञान-यज्ञ** पु० (सं) ज्ञानद्वारा अपनी आत्मा को आहुति के रूप में अर्पित करके ईश्वर या ब्रह्म में मिलाना।
**ज्ञान-योग** पु० (सं) शुद्ध ज्ञान के द्वारा मोक्ष का साधन।
**ज्ञानवान्** वि० (सं) ज्ञानी।
**ज्ञानवृद्ध** पु० (सं) वह जो ज्ञान में बड़ा या पूज्य हो
**ज्ञानाकर** पु० (सं) बुद्ध।
**ज्ञानापन्न** वि० (सं) ज्ञानी।
**ज्ञानासन** पु० (सं) योग का एक आसन जिसके द्वारा योगाभ्यास में शीघ्र सिद्धि होती है।
**ज्ञानी** वि० (सं) १-जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। जानकार। २-आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।
**ज्ञानेंद्रिय** स्त्री० (सं) वे पाँच इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। यथा-नाक, कान, आँख, जीभ और स्पर्शेन्द्रिय।
**ज्ञानोदय** पु० (सं) ज्ञान का उदय या उत्पत्ति।
**ज्ञाप** वि० (सं) वह पत्र जिस पर स्मृति के निमित्त अथवा सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। (मे-मो)।
**ज्ञापक** वि० (सं) १-जताने वाला। सूचक। २-स्मृति-पत्र या ज्ञापन भेजने वाला (व्यक्ति)।
**ज्ञापन** पु० (सं) १-जताने या बताने का काम। २-वह पत्र, पुस्तकादि जिसमें याद दिलाने के लिए आवश्यक बातें संक्षेप में लिख दी गयी हों। ३-घटनाओं का वह संक्षिप्त अभिलेख जो बाद में प्रयोग के लिए हो। स्मारक। (मेमोरेंडम-उपरोक्त २, ३ के लिए)।
**ज्ञापनीय** वि० (सं) जो बतलाने के योग्य हो।
**ज्ञापयिता** वि० (सं) ज्ञापक।
**ज्ञापित** वि० (सं) १-जताया हुआ। सूचित। २-प्रकाशित।
**ज्ञास** स्त्री० (हि) ग्यारस। एकादशी तिथि।
**ज्ञेय** वि० (सं) १-जानने योग्य। २-जो जाना जा सके।
**ज्ञेयता** स्त्री० (सं) बोध।
**ज्या** स्त्री० (सं) १-धनुष की डोरी। २-चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा। ३-पृथ्वी। ४-माता।
**ज्यादती** स्त्री० (फा) १-अधिकता। २-अत्याचार।
**ज्यादा** वि० (फा) १-अधिक।
**ज्यान** पु० (हि) १-हानि। २-घाटा।
**ज्याना** क्रि० (हि) जिलाना।
**ज्यामिति** स्त्री० (सं) रेखागणित। (ज्यामेट्री)।
**ज्यामितिक** वि० (सं) ज्यामिति सम्बन्धी। ज्यामिति का।
**ज्यारना** क्रि० (हि) जिलाना।

**ज्यारा** *वि०* (हि) [स्त्री० ज्यारी] जीवन देने वाला। जिलाने वाला।

**ज्यावना** *क्रि०* (हि) जिलाना।

**ज्यूँ** *अव्य०* दे० 'ज्यों'।

**ज्येष्ठ** *वि०* (सं) (स्त्री० ज्येष्ठा) १-बड़ा। २-वृद्ध। ३-वय, पद, मर्यादा आदि में बड़ा। (सीनियर)। पु० १-जेठ का महीना। २-परमेश्वर।

**ज्येष्ठक** पुं० (सं) किसी नगर का शासक या अधिकारी। कुलिक। (ऑल्डर-मैन)।

**ज्येष्ठता** स्त्री० (सं) १-ज्येष्ठ का भाव। २-पद, मर्यादा वय आदि में बड़ा होने की अवस्था या भाव। (सीनीयॉरटी)।

**ज्येष्ठांश** पु० (सं) बपौती में बड़ा भाग पाने का हक।

**ज्येष्ठा** *स्त्री०* (सं) १-अठारहवाँ नक्षत्र। २-बड़ी बहन ३-वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३-छिपकली। ४-मध्यमा उँगली ५-गंगा। *वि०* बड़ी।

**ज्यों** *क्रि० वि०* (हि) जिस प्रकार। जैसे।

**ज्योति** *स्त्री०* (सं) १-प्रकाश। उजाला। २-लपट। लौ। ३-अग्नि। ४-सूर्य। ५-नक्षत्र। ६-दृष्टि। ७-परमात्मा।

**ज्योतिक** पुं० दे० 'ज्योतिषी'।

**ज्योतित** *वि०* (हि) चमकता हुआ। द्युतिमान्।

**ज्योतिमान** *वि०* दे० 'ज्योतिर्मय'।

**ज्योतिरिंग, ज्योतिरिंगण** पुं० (सं) जुगनू।

**ज्योतिर्मय** *वि०* (सं) [स्त्री० ज्योतिर्मयी] जगमगाता हुआ। प्रकाशमय।

**ज्योतिर्मान** *वि०* दे० 'ज्योतिर्मय'।

**ज्योतिर्लिंग** पु० (सं) १-शिव। २-शिव के प्रधान लिंग जो बाहर हैं।

**ज्योतिर्लोक** पुं० (सं) १-ध्रुवलोक। २-परमेश्वर।

**ज्योतिर्विद** पुं० (सं) ज्योतिषी।

**ज्योतिर्विद्या** *स्त्री०* (सं) ज्योतिष।

**ज्योतिष** पु० (सं) १-वह विद्या या शास्त्र जिसके द्वारा आकाश स्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। (एस्ट्रॉनोमी)। ग्रह, नक्षत्रों आदि का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र। (एस्ट्रोलॉजी)।

**ज्योतिषिक** *वि०* (सं) ज्योतिष सम्बन्धी।

**ज्योतिष्क** पु० (सं) ग्रह, नक्षत्र, तारागण आदि आकाश में रहने वाले पिण्ड।

**ज्योतिष्मान** *वि०* (सं) प्रकाशमान। पुं० (सं) सूर्य।

**ज्योत्सनी** *स्त्री०* दे० 'ज्योत्स्ना'।

**ज्योत्स्ना** *स्त्री०* (सं) १-चांदनी। २-चाँदनी रात।

**ज्योनार** *स्त्री०* (हि) १-भोज। दावत। २-पका हुआ भोजन। रसोई।

**ज्योरी** *स्त्री०* (हि) रस्सी।

**ज्योहत, ज्योहर** पुं० (हि) १-आत्महत्या। २-जौहर।

**ज्यौ** पुं० (हि) १-जीव। २-जी। मन।

**ज्यौतिष** *वि०* (सं) ज्योतिष सम्बन्धी।

**ज्यौतिषिक** पुं० (सं) ज्योतिषी।

**ज्यौनार** *स्त्री०* दे० 'ज्योनार'।

**ज्वर** पुं० (सं) बुखार।

**ज्वरा** *स्त्री०* (सं) ज्वर। *स्त्री०* (सं) मृत्यु।

**ज्वरित** *वि०* (सं) जिसे ज्वर चढ़ा हो।

**ज्वर्रा** पुं० दे० 'जुर्रा'।

**ज्वलंत** *वि०* (सं) १-चमकता हुआ। २-अत्यन्त स्पष्ट

**ज्वलन** पुं० (सं) १-जलने की क्रिया या [illegible]। २-जलन। दाह। ३-अग्नि। आग। ४-लपट।

**ज्वलन-शील** *वि०* (सं) १-जो सरलतापूर्वक, थोड़े में ही जल उठे या भड़क उठे। २-ज्वलनीय। ज्वल्य।

**ज्वलित** *वि०* (सं) १-जलता हुआ। २-चमकता हुआ। ३-उज्वल।

**ज्वल्य** *वि०* (सं) जल उठने या भभक उठने योग्य। (कम्बस्टिब्लि)।

**ज्वान** पु० (हि) जवान।

**ज्वानी** *स्त्री०* (हि) जवानी।

**ज्वाब** पुं० (हि) जवाब।

**ज्वार** *स्त्री०* (हि) १-खरीफ की फसल [illegible] मोटा अन्न। २-समुद्र के जल की तरङ्ग का चढ़ाव।

**ज्वार-भाटा** पुं० (हि) समुद्र के जल की तरङ्ग का चढ़ाव उतार जो चन्द्रमा के आकर्षण से होता है।

**ज्वारी** पुं० (हि) जुआरी।

**ज्वाल** पुं० (सं) १-अग्निशिखा। [illegible]। २-ज्वाला।

**ज्वालक** *वि०* (सं) जलाने वाला। पु० [illegible] दीपक का वह भाग [illegible] के नीचे रहता है तथा [illegible] नीचे के तेल वाले भाग [illegible]। (बर्नर)।

**ज्वाला** *स्त्री०* (सं) १-आग की लपट। अग्निशिखा। २-गरमी। ताप। [illegible]।

**ज्वालामुखी** *स्त्री०* (सं) १-[illegible] ज्वाला निकलती हो। २-कांगड़ा जिले में एक तीर्थ स्थान। ३-लावा।

**ज्वालामुखी पर्वत** पुं० (सं) [illegible] के गर्त में से [illegible] पदार्थ बराबर [illegible] निकला करते हैं।

[शब्दसंख्या--१६३६६]

# झ (झ)

**झ** हिन्दी वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है।
**झंकना** क्रि० दे० 'झीखना'।
**झंकाड़** पुं० दे० 'झंखाड़'।
**झंकार** स्त्री० दे० 'झनकार'।
**झंकिया** स्त्री० (हि) १-जाली। २-झरोखा।
**झंकृत** वि० (सं) झनकार करता हुआ। झंकारयुक्त।
**झंकृति** स्त्री० (सं) झनकार।
**झँकोरना** क्रि० (हि) झकोरना।
**झँकोरा** पुं० (हि) झकोरा।
**झँकोलना** क्रि० (हि) झकोरना।
**झँकोला** पुं० (हि) झकोरा।
**झंखना** क्रि० (हि) खीजना। झीकना।
**झंखाड़** पुं० (हि) १-घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा। २-वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गये हों। व्यर्थ की और रद्दी चीजों का ढेर।
**झँगा** पुं० दे० 'झगा'।
**झगुला** पुं० (हि) [स्त्री० झगुली] दे० 'झगा'।
**झगुली** स्त्री० दे० 'झगा'।
**झगूला** पुं० (हि) झगा।
**झंझ** स्त्री० (हि) १-झाँझ। १-झंझा।
**झंझट** पुं० (हि) झगड़ा। झमेला।
**झंझर** स्त्री० (हि) झज्झर। पानी की सुराई।
**झँझरा** पुं० (हि) [स्त्री० झंझरी] जालीदार ढकना जिसमें छोटे-छोटे छेद हों।
**झंझरी** स्त्री०(हि) १-जाली। २-झरोखा। ३-छलनी। ४-आग उठाने या रखने का झरना।
**झंझा** वि०(सं) तेज। प्रबल। स्त्री०(सं) १-तेज आँधी अँधड़। २-वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी आये।
**झंझानिल** पुं० दे० 'झंझावात'।
**झंझार** पुं० (हि) वह आग की लपट जिसमें धुआँ और चिनगारियों के साथ कुछ अव्यक्त शब्द भी निकले।
**झंझावात** पुं० (सं) वर्षा के साथ बहने वाली तेज-हवा।
**झंझी** स्त्री०(देश) १-फूटी कौड़ी। २-दलाली का धन
**झंझोड़ना** क्रि० (हि) १-झकझोरना। २-झटका देना
**झंडा** पुं० (हि) [स्त्री० झंडी] ध्वजा। पताका। निशान।
**झंडाभिवादन** पुं० (हि) किसी संस्था या राज्य की ओर से उनके अपने झण्डे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए वन्दना करने की रस्म।
**झंडा-दिवस** पुं० (हि) किसी संस्था या राज्य की ओर से झण्डे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए निर्धारित किया हुआ दिन। (फ्लेग-डे)।
**झंडी** स्त्री० (हि) छोटा झण्डा।
**झंडूला** वि० (हि) १-जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। २-जिसका मुण्डन संस्कार न हुआ हो। ३-घनी पत्तियों वाला।
**झंडोत्तोलन** पुं० (हि) झण्डा फहराने या लहराने की क्रिया या रस्म।
**झंप** पुं० (सं) उछाल। फलाँग। पुं० (देश) घोड़ों के गले का गहना।
**झँपकना** क्रि० (हि) झपकना। ऊँघना।
**झँपना** क्रि० (हि) १-आड़ में होना। छिपना। २-उछलना-कूदना। ३-टूट पड़ना। ४-लज्जित होना। झेंपना। ५-एकदम से जा पहुंचना।
**झँपरिया, झँपरी** स्त्री० (हि) पालकी को ढकने की खोली। ओहर।
**झंपान** पु० (हि) पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली। झप्पान।
**झंपित** वि० (हि) ढका हुआ।
**झंपिया** स्त्री० (हि) छोटा झाँपा। पिटारा।
**झँपोला** पुं० (हि) [स्त्री० झँपोली] टोकरी।
**झँव** पुं० (हि) गुच्छा।
**झँवकार, झँवकारा** वि० (हि) स्याह। श्यामवर्ण।
**झँवन** स्त्री० (हि) १-झँवाने की क्रिया। २-वह अंश जो किसी वस्तु के झँवाने अथवा किंचित जल जाने के कारण कम हो जाय।
**झँवराना** क्रि० (हि) १-काला पड़ना। २-मुरझाना।
**झँवा** पु० दे० 'झाँवा'।
**झँवाना** क्रि० (हि) १-कुछ काला पड़ना। २-मुरझाना। ३-अग्नि का मन्द होजाना। ४-घट जाना ५-झाँवे से रगड़ा जाना। ६-झाँवे के रंग का कर देना। ७-आग ठण्डी करना। ८-घटना। ९-कुम्हला देना। १०-झाँवे से रगड़ना।
**झँवेला** वि० (हि) [स्त्री० झँवेली] झाँवे से (पैर आदि) रगड़ा हुआ।
**झँसना** क्रि० (हि) १-सिर आदि में धीरे धीरे तेल मलना। २-किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।
**झ** पुं० (सं) १-झंझावात। २-अंधड़। तेज हवा के साथ वृष्टि। ४-झनझन का शब्द। ५-बृहस्पति। ६-दैत्यराज।
**झई, झई** स्त्री० (हि) झाँई।
**झक** स्त्री० (हि) १-सनक। खब्त। २-दे० 'झख'। वि० चमकीला। ३-उज्जवल।
पुं० दे० 'झषकेतु'।

**झकझक** स्त्री० (हि) १-कहासुनी। व्यर्थ की हुज्जत २-तकरार।

**झकझका** वि० (हि) चमकीला।

**झकझकाहट** स्त्री० (हि) चमक।

**झकझेलना** क्रि० दे० 'झकझोरना'।

**झकझोर** स्त्री० (हि) १-झूलने या बारम्बार हिलने या डोलने की क्रिया या भाव। २-झटका।

**झकझोरना** क्रि० (हि) पकड़कर जोर से हिलाना। झटका देना।

**झकझोरा** पु० (हि) झटका। धक्का।

**झकड़** पु० दे० 'झक्कड़'।

**झकना** क्रि० (हि) १-बकवाद करना। २-बड़बड़ाना ३-झगड़ना।

**झकर** पु० दे० 'झक्कड़'।

**झका** वि० (हि) चमकीला। साफ।

**झकाझक** वि० (हि) साफ और चमकता हुआ। चमकीला।

**झकुराना** क्रि० (हि) १-झूमने में प्रवृत्त करना।

**झकोर** पु० (हि) हवा का झोंका। झोंका।

**झकोरना** क्रि० (हि) झोंका मारना। हिलाना। कँपाना।

**झकोरा** पु० (हि) हवा का झोंका।

**झकोल** पु० दे० 'झकोर'।

**झक्क** वि० (अ) साफ और चमकीला। स्त्री० दे० 'झक'।

**झक्कड़** पु० (हि) अंधड़। तेज आँधी। वि० दे० 'झक्की'।

**झक्का** पु० (हि) १-तेज हवा का झोंका। २-आँधी

**झक्की** वि० (हि) सनकी।

**झखना** क्रि० दे० 'झींखना'।

**झख** स्त्री० (हि) झींखने की क्रिया या भाव।

**झखना** क्रि० (हि) झींखना।

**झखिया** स्त्री० (हि) मछली।

**झखी** स्त्री० (हि) मछली।

**झगड़ना** क्रि० (हि) लड़ना। कलह करना।

**झगड़ा** पु० (हि) लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

**झगड़ालू** वि० (हि) कलहप्रिय। लड़ाका।

**झगड़ी** वि० (हि) अपने अधिकार या नेग के लिए झगड़ने वाला।

**झगड़ू** वि० (हि) झगड़ालू। लड़ाका।

**झगर** पु० (हि) १-एक चिड़िया। २-झगड़ा। तकरार

**झगरना** क्रि० (हि) झगड़ना।

**झगरा** पु० (हि) झगड़ा।

**झगराऊ** वि० (हि) झगड़ालू।

**झगरी** वि० स्त्री० (हि) झगड़ालू।

**झगरू** वि० (हि) झगड़ालू।

**झगला, झगा** पु० (हि) छोटे बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।

**झगुला, झगुलिया, झगुली** स्त्री० (हि) झगा।

**झज्झर** पु० (हि) मिट्टी की सुराई।

**झज्झी** स्त्री० दे० 'झंझी'।

**झझक, झझकन** स्त्री० (हि) १-झिझकने की क्रिया या भाव। २-झुंझलाहट। ३-अप्रिय गंध। ४-सनक।

**झझकना** क्रि० (हि) १-ठिठकना। २-झुंझलाना। ३-चौंक पड़ना।

**झझकाना** क्रि० (हि) १-भड़काना। २-चौंका देना।

**झझकारना** क्रि० (हि) १-डाँटना। २-दुरदुराना। सतमना।

**झट** क्रि० वि० (हि) तुरन्त। तत्काल।

**झटकना** क्रि० (हि) १-झटका देना। २-जोर से हिलाना। ३-[illegible] लेना। ऐंठना। ४-रोग या दुःख के कारण [illegible] होना।

**झटका** पु० (हि) १-झोंके के साथ दिया हुआ धक्का २-एक ही प्रहार में [illegible] मारने का एक ढङ्ग। ३-विपत्ति रोग, शोक आदि का आघात।

**झटकारना** क्रि० (हि) झटकना।

**झटपट** अव्य० (हि) तुरन्त। शीघ्र।

**झटाका** क्रि० वि० (हि) जल्दी से। चटपट। पु० दे० 'झटाका'।

**झटास** स्त्री० (अ) वर्षा की [illegible]।

**झटिका** स्त्री० (सं) [illegible]। २-भुईं आंवला।

**झटिति** क्रि० वि० (सं) १-तुरन्त। झट। २-बिना समझे-बूझे।

**झट्** क्रि० वि० (हि) झट। तुरन्त।

**झड़** स्त्री० दे० '[illegible]'।

**झड़कना** क्रि० (हि) [illegible]।

**झड़क्का** पु० दे० '[illegible]'।

**झड़झड़ाना** क्रि० (हि) झिड़कना। २-झँझोड़ना।

**झड़न** स्त्री० (हि) १-झड़ने की क्रिया। २-झड़ी हुई वस्तु।

**झड़ना** क्रि० (हि) १-गिरना। २-टपकना। ३-साफ किया जाना।

**झड़प** स्त्री० (हि) १-दो प्राणियों की सामान्य मुठभेड़। लड़ाई। २-क्रोध। ३-आवेश। ४-आग की लपट।

**झड़पना** क्रि० (हि) १-आक्रमण करना। वेग से किसी पर टूट पड़ना। २-लड़ना। झगड़ना। ३-बलपूर्वक किसी से कुछ छीन लेना।

**झड़पाझड़पी** स्त्री० (हि) हाथापाई।

**झड़पान** स्त्री० (हि) झड़प।

**झड़पाना** क्रि० (हि) दो प्राणियों को लड़ाना।

**झड़बेर** पु० (हि) झड़बेरी पर लगने वाला फल। जंगली बेर।

**झड़बेरी** स्त्री० (हिं) एक झाड़ी जिस पर झड़बेर लगते हैं।

**झड़वाना** क्रि० (हिं) झाड़ने का काम दूसरे से कराना

**झड़ाक, झड़ाका** पुं० (हि) झड़प। क्रि० वि० (हिं) चटपट। झट से।

**झड़ाझड़** क्रि० वि०(हिं) १-लगातार। २-जल्दी-जल्दी

**झड़ी** स्त्री० (हिं) १-हलकी किन्तु लगातार वर्षा। २-लगातार झड़ना। ३-निरंतर बहुत सी बातें कहते जाना या चीजें रखते, देते या निकालते जाना। ४-ताले के भीतर का खटका।

**झणत्कार** पुं० (सं) झनकार।

**झन** स्त्री० (हि) झनकार की ध्वनि।

**झनक** स्त्री० (हिं) झन-झन शब्द।

**झनकना** क्रि० (हि) १-झनकार का शब्द होना। २-क्रोध आदि से हाथ पैर पटकना। ३-दे० 'खीजना।

**झनकमनक** स्त्री० (हिं) आभूषणों आदि से उत्पन्न मंद-मंद झनकार।

**झनकवात** स्त्री० (हिं) घोड़ों का एक रोग।

**झनकार** स्त्री० (हि) १-झन-झन का शब्द। २-झींगुरों आदि के बोलने से होने वाली ध्वनि।

**झनकारना** क्रि० (हि) झन-झन शब्द होना या करना

**झनझनाना** क्रि० (हिं) झन-झन का शब्द होना या करना।

**झनझनाहट** स्त्री० (हिं) १-झंकार। २-झुनी-झुनी।

**झनस** पुं० (?) एक तरह का बाजा।

**झनाझन** स्त्री० (हिं) झन-झन शब्द। क्रि० वि० (हि) झन-झन शब्द सहित।

**झनियां** वि० दे० 'झीना'।

**झन्नाटा** पुं० (हि) १-सहसा झन-झन शब्द होना। २-किसी वस्तु के तीव्र गति के साथ चलने के कारण होने वाला शब्द। क्रि० वि०(हि) १-झन-झन शब्द सहित। २-बहुत तेजी से।

**झन्नाहट** स्त्री० (हि) झनझनाहट।

**झप** क्रि० वि० (हि) तुरन्त। जल्दी से।

**झपक** स्त्री० (हि)१-पलक गिरने भर का समय। २-पलक का गिरना। ३-हलकी नींद। ४-लज्जा।

**झपकना** क्रि० (हि) १-पलक का गिरना। २-झपकी लेना। ३-झपटना। ४-झेंपना।

**झपकाना** क्रि० (हि) पलक गिराना।

**झपकी** स्त्री० (हि) १-हलकी या थोड़ी देर की नींद। २-आँख झपकने की क्रिया। ३-धोखा। चकमा।

**झपकोहां** वि० (हि) [स्त्री० झपकोहीं]। १-नींद से झपकने वाली (आँखें)। २-नशे में चूर।

**झपट** स्त्री० (हि) १-झपटने की क्रिया या भाव। २-वेग से आगे बढ़ना।

**झपटना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को लेने, पकड़ने या किसी पर प्रहार करने के लिए वेग से उसकी ओर बढ़ना। टूटना। लपकना। २-झपट कर छीन लेना।

**झपटान** स्त्री० (हि) झपट।

**झपटाना** क्रि०(हि) किसी को झपटाने में प्रवृत्त करना

**झपटानी** पुं०(हि) एक तरह का लड़ाकू हवाई जहाज जो झपटकर शत्रु की सेना अथवा प्रदेश पर आक्रमण करता है।

**झपट्टा** स्त्री० दे० 'झपट'।

**झपड़ियाना** क्रि० (हि) झाँपड़ों की मार मारना।

**झपताल** पुं० (हि) संगीत में पाँच मात्राओं का एक ताल।

**झपना** क्रि० (हि) १-पलकों का गिरना या मुंदना। २-आँखें झपकना। ३-झुकना। ४-झेंपना।

**झपनी** स्त्री० (हि) झाँपे का ढकना।

**झपलैया** स्त्री० दे० 'झपोला'।

**झपस** स्त्री० (हि) गुंजान होने की अवस्था। पेड़ पौधों के घने होने की अवस्था या भाव।

**झपसट** पुं० (हि) छल। धोखेबाजी।

**झपसना** क्रि० (हि) लता या बहुत से पेड़ पौधों का एक जगह उगकर फैलना।

**झपाका** क्रि० वि० (हिं) जल्दी से। तुरन्त। पुं० शीघ्रता।

**झपाझपी** स्त्री० (हिं) हड़बड़ी। शीघ्रता।

**झपाट** क्रि० वि० (हि) झटपट।

**झपाटा** पुं० (हिं) १-चपेट। २-झपट्टा।

**झपाना** क्रि० (हि) १-आँखें मूँदना। २-झुकाना।

**झपास** स्त्री० (हि) १-छोटी-छोटी बूँदें। २-ठगाई। धूर्तता। पुं० धूर्त। ठग।

**झपासिया** वि० (हि) धोखेबाज।

**झपित** वि० (हि) १-झपा या मुँदा हुआ। २-उनींदा। ३-लज्जित।

**झपेट** स्त्री० (हि) झपट।

**झपेटना** क्रि० (हि) आक्रमण करके दबा लेना।

**झपेटा** पुं० (हि) १-आक्रमण। चपेट। २-भूत-प्रेत आदि की बाधा। ३-हवा का झोंका।

**झपोला** पुं० दे० 'झँपोला'।

**झप्पड़, झप्पर** पुं० (हि) थप्पड़।

**झप्पान** पुं० दे० 'झंपान'।

**झबझबी** स्त्री० (हि) एक तरह का कान का गहना।

**झबरा, झबरीला, झबरैला** वि० (हि) [स्त्री० झबरी] बहुत लम्बे और बिखरे हुए बालों वाला।

**झबा** पुं० (हि) झब्बा।

**झबार, झबारि** स्त्री० (हि) १-जंजाल। झंझट २-झगड़ा।

**झबिया** स्त्री० (हि) १-छोटा झब्बा। २-बाजूबन्द आदि में लटकने वाली कटोरी।

**झबूकना** क्रि० (हि) चौंकना।

**झब्बा** पुं० (हि) गुच्छा। फुन्दना।

**झमक** *स्त्री०* (हि) १–चमक। २–झमझम शब्द। ३–नखरे या ठसक की चाल।
**झमकड़ा** पुं० (हि) झमक।
**झमकना** *क्रि०* (हि) १–रह-रहकर चमकना। २–झमझम शब्द या झनकार होना। ३–लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना।
**झमकाना** *क्रि०* (हि) १–चमकाना। २–गहने, हथियार आदि बजाना या चमकाना।
**झमकारा** *वि०* (हि) झमझम करके बरसने वाला (बादल)।
**झमकीला** *वि०* (हि) १–चमकीला। २–चचल।
**झम-झम** *स्त्री०* (हि) १–घुंघरुओं आदि के बजने का शब्द। छम-छम। २–पानी बरसने का शब्द। *क्रि० वि०* (हि) १–झम-झम शब्द सहित। २–चमक-दमक के साथ।
**झमझमाना** *क्रि०* (हि) झमझम शब्द होना या करना। चमकना या चमकाना।
**झमना** *क्रि०* (हि) १–झुकना। २–दबना।
**झमरना** *क्रि०* (हि) इकट्ठा होना।
**झमा** पुं० दे० 'झाँवाँ'।
**झमाका** पुं० (हि) १–वर्षा की झड़ी। २–झम-झम का शब्द। ३–ठसक। नखरा।
**झमाझम** *क्रि० वि०* (हि) १–चमक के साथ। २–झम-झम शब्द सहित। ३–लगातार।
**झमाट** पुं० (हि) झुरमुट।
**झमाना** *क्रि०* (हि) १–छाना। घेरना। २–दे० 'झवाना'।
**झमूरा** पुं० (हि) १–घने बालों वाला पशु। २–ढीले-ढाले कपड़े पहनने वाला बालक। ३–कोई प्यारा बच्चा।
**झमेला** पुं० (हि) १–झंझट। बखेड़ा। २–भीड़-भाड़
**झमेलिया** *वि०* (हि) झगड़ालू। झमेला करने वाला
**झर** *स्त्री०* (हि) १–झड़ी या जल-प्रवाह का शब्द। २–ज्वाला। ३–ताले का कुत्ता। ४–झुण्ड। पुं०(सं) झरना। सोता।
**झरक** *स्त्री०* (हि) झलक।
**झरकना** *क्रि०* (हि) १–झलकना। २–झिड़कना।
**झरझर** *स्त्री०* (हि) जल के बहने या बरसने अथवा हवा के चलने का शब्द।
**झरझराना** *क्रि०* (हि) १–झर-झर शब्द सहित गिरना २–दे० झड़झड़ाना।
**झरन** *स्त्री०* (हि) १–झरने की क्रिया। २–वह जो कुछ झर कर निकला हो।
**झरना** पुं० (हि) १–निर्झर। २–अनाज छानने की एक तरह की छलनी। ३–लम्बी डाँडी वाली छेद-दार चिपटी करछी। *क्रि०* (हि) १–जल की धारा का पर्वत आदि से नीचे गिरना। २–झड़ना। ३-बजना या बजाना। *वि०* (स्त्री० झरनी) झड़ने वाला।
**झरनि** *स्त्री०* दे० 'झरन'।
**झरनी** *स्त्री०* (हि) छोटा झरना। *वि०* जिससे कुछ झड़े।
**झरप** *स्त्री०* (हि) १–झोंका। २–वेग। तेजी। ३–चिलमन। चिक। ४–दे० 'झड़प'।
**झरपना** *क्रि०* (हि) १–बौछार मारना। २–दे० 'झड़पना'।
**झरपेटा** पुं० (हि) झपेटा।
**झरबेर** पुं० (हि) जङ्गली बेर।
**झरबेरी** *स्त्री०* दे० 'झड़बेरी'।
**झरवाना** *क्रि०* (हि) १–दूसरे को झारने में प्रवृत्त करना। २–दे० 'झड़वाना'।
**झरसना** *क्रि०* (हि) १–झुलसना। २–कुम्हलाना।
**झरहरना** *क्रि०* (हि) झर-झर शब्द करना।
**झरहरा** *वि०* दे० 'झँझरा'।
**झरहराना** *क्रि०* (हि) झरझराना।
**झरा** पुं० (देश) एक तरह का धान।
**झराझर** *क्रि० वि०* (हि) १–झर-झर शब्द सहित। २–लगातार। ३–वेग सहित।
**झरि** *स्त्री०* दे० 'झड़ी'। *अव्य०* (?) १–बिलकुल। २–सब। कुल।
**झरिफ** *स्त्री०* (हि) चिक। परदा।
**झरी** *स्त्री०* (हि) १–पानी का झरना। २–गद्दी पर बैठने वाले दूकानदारों से किराये के रूप में लिया जाने वाला धन। ३–दे० 'झड़ी'।
**झरोखा** पुं० (हि) छोटी खिड़की। गवाक्ष।
**झर्प** *स्त्री०* (हि) झड़प।
**झल** पुं० (हि) १–दाह। जलन। २–उत्कट। इच्छा। ३–क्रोध।
**झलक** *स्त्री०* (हि) १–चमक। आभा। २–आकृति का आभास। प्रतिबिम्ब।
**झलकना** *क्रि०* (हि) १–चमकना। २–आभास होना
**झलकनि** *स्त्री०* (हि) झलक।
**झलका** पुं० (हि) छाला। फफोला।
**झलकाना** *क्रि०* (हि) १–चमकाना। २–कुछ आभास देना। दिखलाना।
**झलकार** पुं० (हि) १–जलन। २–झलक। ३–आभा
**झलकी** *स्त्री०* (हि) झलक।
**झलझल** *स्त्री०* (हि) चमक। *क्रि० वि०* (हि) चमकता हुआ।
**झलझलाना** *क्रि०* (हि) १–चमकना। २–चमचमाना
**झलझलाहट** *स्त्री०* (हि) चमक। दमक।
**झलना** *क्रि०* (हि) १–हवा करने के लिए कोई वस्तु हिलाना। २–इधर-उधर हिलना। ३–झेलना।
**झलमल** पुं० (हि) १–अंधेरे में थोड़ा प्रकाश २–

चमक-दमक। क्रि० वि० चमकता हुआ।
**झलमला** वि० (हि) झलकता हुआ। चमकीला।
**झलमलाना** क्रि० (हि) १-रह-रह कर चमकना। २-प्रकाश का हिलना-डोलना। ३-प्रकाश को हिलाना-डुलाना।
**झलरा** पुं० (हि) झालर।
**झलराना** क्रि० (हि) फैलकर छाना। बढ़ना।
**झलवाना** क्रि० (हि) १-झलने का काम दूसरे से करवाना। २-झालने का काम दूसरे से करवाना।
**झलहाया** वि० (हि) (स्त्री० झलहाई) ईर्ष्या करने करने वाला।
**झला** पुं० (हि) १-हलकी वर्षा। २-झलार। ३-पंखा ४-समूह। स्त्री० आतप। धूप।
**झलाऊ** वि० (हि) झोलदार।
**झलाझल** वि० (हि) चमकता हुआ। पुं० एक तरह का चमकीला कपड़ा।
**झलाबोर** पुं० (हि) साड़ी या दुपट्टे का चौड़ा [illegible] बना होता है। वि० (हि) चमकता हुआ। चमकीला।
**झला**[illegible] [illegible] चमक। वि० चमकीला।
**झल्ल**[illegible] [illegible]।
**झल्ल**[illegible] [illegible] हाँगा।
**झल्लरी** [illegible] १-[illegible] का बाजा। २-झाँझ [illegible] बाजा।
**झल्ला** पुं० (दे०) [स्त्री० झल्ली] १-बड़ा टोकरा। २-[illegible]। ३-[illegible]। ४-पागल। मूर्ख।
**झल्लाना** क्रि० (हि) [illegible]झलाना।
**झलि**[illegible] (सं) १-ज्योति। प्रकाश। २-चमक। ३-सूर्य की किरणों का तेज या प्रकाश।
**झल्ली** स्त्री० (हि) [illegible]। वि० दे० 'झल्ला'।
**झवर** पुं० (हि) झगड़ा।
**झष** पुं० (सं) १-मछली। २-मगर। स्त्री० दे० 'झख'
**झषकेतन**, [illegible]केतु, **झषध्वज** पुं० (सं) कामदेव।
**झषनिकेत** पुं० (सं) जलाशय।
**झषराज** पुं० (सं) मगर।
**झषांक** पुं० (सं) कामदेव।
**झहनना** क्रि० (हि) १-सन्नाटे में आना। २-रोमांच होना। ३-झनझन शब्द होना।
**झहनाना** क्रि० (हि) १-झनकार करना। २-बजाना।
**झहरना** क्रि० (हि) १-झरझर शब्द करना। २-शिथिल पड़ना। ३-झल्लाना। ४-हिलना।
**झहराना** क्रि० (हि) १-(पत्तों आदि का) शिथिल हो कर गिर पड़ना। ३-झल्लाना। ३-तिरस्कृत होना। ४-झकझोरना।
**झाँई** स्त्री० (हि) १-प्रतिबिम्ब। परछाई। झलक। २-अंधकार। ३-धोखा। ४-रक्त विकार से शरीर पर पड़ने वाले काले धब्बे। ५-किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग।
**झाँक** स्त्री० (हि) झाँकने की क्रिया या भाव।
**झाँकना** क्रि० (हि) आड़ या बगल से छिपकर कुछ देखना। २-इधर उधर झुककर कुछ देखना।
**झाँकनी** स्त्री० (हि) झाँकी।
**झाँकर** पुं० दे० 'झंखाड़'।
**झाँका** पुं० (हि) १-जालीदार खाँचा। २-झरोखा।
**झाँकी** स्त्री० (हि) १-अवलोकन। दर्शन। २-दृश्य। ३-झरोखा।
**झाँख** पुं० (देश) एक तरह का बड़ा जंगली हिरन। स्त्री० (हि) तेल आदि में उठने वाली तीव्र गन्ध।
**झाँखना** क्रि० (हि) १-झींखना। २-झाँकना।
**झाँखर** पुं० (हि) झंखाड़।
**झाँगला** पुं० (हि) ढीला ढाला कुरता।
**झाँगा** पुं० (हि) झगा।
**झाँझ** स्त्री० (हि) १-मंजीरे के समान वर्तुलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो पूजन के समय बजाया जाता है। २-क्रोध। ३-शरारत। ४-सूखा कुआँ या तालाव। ५-दे० 'झाँझन'।
**झाँझट** स्त्री० (हि) झगड़ा। कलह।
**झाँझड़ी** स्त्री० (हि) १-दे० 'झाँझ'। २-दे० 'झाँझन'
**झाँझन** स्त्री० (हि) पैंजनी। पायल।
**झाँझर** स्त्री० (हि) १-पायल। झाँझन। २-छलनी। वि० १-पुराना। जर्जर। २-खेवनहार।
**झाँझरि** स्त्री० (हि) झाँझर।
**झाँझरी** स्त्री० (हि) १-झाँझ नामक बाजा २-झाँझर (गहना)।
**झाँझिया** पुं० (हि) झाँझ बजाने वाला।
**झाँझी** स्त्री० (हि) १-वह छेददार छोटी हाँडी जिसमें जलता दीपक रखकर दशहरे के दिनों में लड़कियाँ घर-घर गीत गाती घूमती हैं।
**झाँप** पुं० (हि) १-झपकी। २-पर्दा। चिक। ३-किसी वस्तु को ढाँपने की वस्तु। ४-कान का एक गहना।
**झाँपड़** पुं० (हि) थप्पड़।
**झाँपना** क्रि० (हि) १-ढकना। २-झेपना।
**झाँपी** स्त्री० (हि) १-टोकरी। बाँस की पिटारी। ३-झपकी।
**झाँपो** स्त्री० (देश) छिनाल स्त्री।
**झाँवझाँव** स्त्री०(हि) १-बक-बक। २-हुज्जत।
**झाँवना** क्रि० (हि) झाँवे से रगड़कर धोना।
**झाँवर** वि०(हि) १-झाँवे के रंग का। कुछ-कुछ काला २-कुम्हलाया हुआ। ३-धीमा। स्त्री० (हि) दलदर (भूमि)।
**झाँवरा, झाँवला** वि० दे० 'झाँवर'।
**झाँवली** स्त्री० (हि) १-झलक। २-आँख की कनखी ३-झाईं।
**झाँवाँ** पुं० (हि) जली हुई ईंट का टुकड़ा जिससे

रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

**झाँसना** क्रि० (हि) १-झाँसा देना। ठगना। २-बहकाना।

**झाँसा** पुं० (हि) धोखा। जुल।

**झाँसा-पट्टी** स्त्री० (हि) दम पट्टी।

**झाँसिया, झाँसू** वि० (हि) झाँसा देने वाला।

**झा** पुं० (हि) मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि।

**झाऊ** पुं० (हि) एक तरह का छोटा झाड़ जो रेतीले मैदानों में होता है।

**झाग** पुं० (हि) फेन। गाज।

**झागड़** पुं० (हि) झगड़ा।

**झागना** क्रि० (हि) झाग उत्पन्न होना या करना।

**झाड़** पुं० (हि) १-कँटीला सघन पेड़। २-एक प्रकार की आतिशबाजी। ३-झाड़ के आकार का फानूस जो छत आदि में लटकाया जाता है। ४-गुच्छा। ५-झटका। स्त्री० १-झाड़ने की क्रिया। २-डाँट-डपट। मंत्रोपचार।

**झाड़खंड** पुं० (हि) जंगल।

**झाड़-झंखाड़** पुं० (हि) १-काँटेदार झाड़ियों का समूह। २-बेकार की चीजें। ३-बीहड़ वन।

**झाड़दार** वि० (हि) १-सघन। २-कँटीला। ३-एक तरह का कसीदा।

**झाड़न** स्त्री० (हि) १-बुहारन। कूड़ा। २-वह कपड़े का टुकड़ा जिससे झाड़कर कोई चीज साफ की जाय।

**झाड़ना** क्रि० (हि) १-झाड़ू देना। बुहारना। २-धूल, गर्द आदि साफ करना। ३-फटकारना। ४-अपनी योग्यता प्रदर्शित करने के लिए गढ़-गढ़कर बातें करना। ५-झटकारना। ६-मन्त्र पढ़कर फूँकना ७-कड़ी करना। ८-(वृक्ष से फल आदि) नीचे गिराना। ९-(चिड़ियाँ का पंख) छोड़ना।

**झाड़-फानूस** पुं० (हि+फा) वह शीशे का बना झाड़ जो शोभा और प्रकाश के लिए छत में टाँगे जाते हैं।

**झाड़-फूँक** स्त्री० (हि) मन्त्रोपचार।

**झाड़बुहार** स्त्री० (हि) झाड़ने या बुहारने की क्रिया। सफाई।

**झाड़ा** पुं० (हि) १-मन्त्रोपचार। २-तलाशी। ३-विष्ठा। ४-शौच जाने का स्थान या इच्छा।

**झाड़ी** स्त्री० (हि) १-छोटा झाड़। २-छोटे-छोटे पेड़ों का समूह।

**झाड़ीदार** वि० (हि) १-झाड़ी के समान घना और छितराया हुआ। २-कँटीला।

**झाड़ू** स्त्री० (हि) १-बुहारने का उपकरण। बुहारी। सोहनी। २-पुच्छलतारा।

**झापड़** पुं० (हि) तमाचा। थप्पड़।

**झाबदार** वि० (?) भरापूरा। परिपूर्ण।

**झाबर** पुं० (हि) १-दलदली भूमि। २-झाबा। टोकरा।

**झाबा** पुं० (हि) १-टोकरा। २-दे० 'झब्बा'।

**झाम** पुं० (देश) १-गुच्छा। झब्बा। २-डाँट-फटकार। ३-धोखा। छल।

**झामर** पुं० (हि) एक पैर में पहनने का गहना।

**झामरा** वि० (हि) मलिन। मैला।

**झामा** पुं० (हि) दे० 'झावा'।

**झामी** पुं० (हि) चालबाज। धूर्त।

**झायँ-झायँ** स्त्री० (हि) १-सुनसान जगह में हवा के चलने का शब्द। २-हुज्जत। ३-बकवाद।

**झार** स्त्री० दे० 'झाल'। पुं० १-समूह। झुण्ड। २-प्रयत्न। वि० (हि) १-केवल। एकमात्र। २-कुल। सब।

**झारखंड** पुं० (हि) १-वह पर्वत माला जो वैद्यनाथ से पुरी तक चली गई है। २-जंगल।

**झारना** क्रि० दे० 'झाड़ना'।

**झारा** पुं० (हि) १-झरना। सूप। २-छनी हुई पतली भाँग। ३-तलाशी।

**झारि** स्त्री० दे० 'झार'।

**झारी** स्त्री० (हि) १-पानी रखने का एक प्रकार का टोंटीदार बरतन। २-वह पानी जिसमें अमचूर, जीरा, नमक आदि घुला हो। ३-दे० 'झाड़ी'।

**झारू** पुं० (हि) झाड़ू।

**झाल** पुं० (हि) झाँक नामक बाजा। स्त्री० (हि) १-चरपराहट। २-तरङ्ग। लहर। ३-वर्षा की झड़ी। ४-ज्वाला। ताप। ५-डाह। ईर्ष्या। ६-अन्धकार।

**झालना** क्रि० (हि) १-धातु की बनी वस्तु को टाँके से जोड़ना। २-किसी वस्तु को ठंडा करने के लिए बरफ या शोरे में रखना।

**झालर** स्त्री० (हि) १-शोभा के लिए लगाया गया किनारा। २-जालीदार किनारा। ३-झाँझ। ४-एक पकवान। पूजा के समय बजाया जाने वाला घड़ियाल।

**झालरदार** वि० (हि) जिसमें झालर लगी हो।

**झालरना** क्रि० (हि) १-झालर के रूप में हिलना या फैलना। २-शाखाओं, पत्तियों आदि से (वृक्ष का) युक्त या सम्पन्न होना।

**झाला** पुं० (देश) १-राजपूतों की एक जाति। २-मकड़ी का जाला। ३-एक तरह का कान का गहना। ४-एक तरह की कलात्मक झंकार (सितार)।

**झालि** स्त्री० (हि) १-पानी की झड़ी। २-झाल।

**झावँ-झावँ** स्त्री० (हि) हुज्जत। तकरार।

**झिंग** स्त्री० (हि) तोरी। तरोई।

**झिंगवा** स्त्री० (हि) झींगा नामक मछली।

**झिंगुली** स्त्री० (हि) छोटे बच्चों को पहनाने का कुरता।

**झिझिया** स्त्री० (हि) झाँझी नामक हँड़िया।
**झिझ्झा** पुं० (हि) जोरशोर की लड़ाई।
**झिगड़ना, झिगरना** क्रि० (हि) झगड़ना।
**झिझक** स्त्री० (हि) १-हिचक। १-लज्जाजनित संकोच
**झिझकना** क्रि० (हि) १-भय या लाज के कारण कोई बात कहने या करने में संकोच करना। ठिठकना। २-भड़कना।
**झिझकारना** क्रि० (हि) १-दुतकारना। २-झिड़कना
**झिड़कना** क्रि० (हि) डाँटना। फटकारना।
**झिड़की** स्त्री० (हि) झिड़कने का भाव। डाँट। फटकार।
**झिन** वि० दे० 'झीना'।
**झिनवा** पुं० (देश) महीन चावल का धान।
**झिपना** क्रि० (हि) झेंपना।
**झिपाना** क्रि० (हि) झेंपाना। लज्जित करना।
**झिमिटना** क्रि० (हि) १-इकट्ठा होना। २-(लोगों की) भीड़ होना।
**झिनझिनी** स्त्री० (हि) किसी अङ्ग की नस दब जाने से एक प्रकार की झनझनी होना।
**झिर** स्त्री० (हि) झिरी।
**झिरकना** क्रि० (हि) झिड़कना।
**झिरझिरा** वि० (हि) झीना।
**झिरना** क्रि० (हि) झरना।
**झिरहर** वि० (हि) झीना। सूराखदार।
**झिरी** स्त्री० (हि) १-वह छोटा छेद जिसमें कोई वस्तु निकलती या टपकती रहे। २-सन्धि। झरी। ३-पाला। तुषार। ४-पानी का छोटा सोता।
**झिलँगा** पुं० (हि) ऐसी खटिया जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
**झिलना** क्रि० (हि) १-बलपूर्वक भीतर घुसना या धँसना। २-तृप्त होना। ३-तल्लीन होना। ४-(कष्ट आदि) झेला जाना। सहाजाना। पुं० झींगुर
**झिलम** स्त्री० (हि) युद्ध के समय पहने जाने वाली लोहे की टोपी। खोद।
**झिलमिल** स्त्री० (हि) १-हिलता हुआ प्रकाश। २-रह-रह कर प्रकाश के घटने-बढ़ने का क्रम। ३-एक तरह का महीन कपड़ा। वि० झिलमिलाता हुआ।
**झिलमिला** वि० (हि) १-चमकता हुआ। २-अस्पष्ट। ३-जो गाढ़ा न हो।
**झिलमिलाना** क्रि०(हि)१-प्रकाश का हिलना। २-रह-रह कर चमकना।
**झिलमिलाहट** स्त्री० (हि) झिलमिलाने की क्रिया या भाव।
**झिलमिली** स्त्री० (हि) १-आड़ी फट्टियों का ढाँचा जो खिड़कियों आदि में प्रकाश या वायु आने के लिए जड़ा रहता है। २-चिक। चिलमन।
**झिलवाना, झिलाना** क्रि० (हि) झेलने का काम दूसरे से कराना।
**झिल्लड़** वि० (हि) झीनी बुनावट का।
**झिल्ला** वि० १-दे० झिल्लड़। २-झीना।
**झिल्लिका** स्त्री० (सं) झिल्ली। झींगुर।
**झिल्ली** स्त्री० (हि) १-झींगुर। २-ऐसी पतली तह जिसके नीचे की वस्तु दिखाई पड़े। पतली चमड़ी की तह।
**झींकना** क्रि० (हि) झींखना। पछताना।
**झींका** पुं० (हि) उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने को डाला जाय।
**झींख** स्त्री० (हि) झींखने की क्रिया या भाव। कुढ़न।
**झींखना** क्रि० (हि) कुढ़ना। खीझना। २-दुखड़ा रोना।
**झींगा** पुं० (हि) १-एक तरह की मछली। २-एक तरह का धान।
**झींगुर** पुं० (हि) तेज आवाज वाला एक प्रकार का कीड़ा।
**झींपना** क्रि० (हि) झेंपना।
**झींवर** पुं० दे० 'धीवर'।
**झींसी** स्त्री० (हि) छोटी-छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार
**झीखना** क्रि० दे० 'झींखना'।
**झीका** वि० (हि) मंद। धीमा।
**झीठ** वि० (हि) झूठ। मिथ्या।
**झीड़ना** क्रि० (हि) घुसना। धँसना।
**झीना** वि० (हि) १-बहुत बारीक या पतला। ३-दूर-दूर बुना हुआ। झाँझर।
**झीनासारी** पुं०(?) एक तरह का चावल।
**झीमना** क्रि० (हि) १-ऊँघना। २-झूमना।
**झीमर** पुं० दे० 'धीवर'।
**झील** स्त्री० (हि) १-बहुत बड़ा प्राकृतिक सरोवर। २-बहुत बड़ा तालाब।
**झीलम** पुं० दे० 'झिलम'।
**झीलर** पुं० (हि) छोटी झील।
**झीली** स्त्री० दे० 'झिल्ली'।
**झीवर** पुं० (हि) धीवर। मल्लाह।
**झुँगना** पुं० (हि) जुगनू।
**झुँझना** पुं० (हि) झुनझुना। (खिलौना)।
**झुँझलाना** क्रि० (हि) खिझलाना। चिड़चिड़ाना।
**झुँझलाहट** स्त्री० (हि) झुँझलाने का भाव। चिढ़।
**झुंड** पुं० (हि) समूह। गरोह।
**झुकना** क्रि० (हि) १-ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटक आना। नवना। २-किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना। लचना। ३-प्रवृत्त होना। ४-नम्र होना। ६-लज्जा से अवनत होना। ७-अभिवादन करना। ८-क्रुद्ध होना। ९-मरना।
**झुकमुक** पुं० दे० 'झुटपुटा'।
**झुकरना** क्रि० (हि) १-झोंका जाना। २-झुँझलाना।

झुकराना क्रि० (हिं) झोंका खाना।
झुकवाना क्रि० (हिं) झुकने का काम दूसरे से कराना।
झुकाई स्त्री० (हिं) झुकने की क्रिया या भाव। झुकाने की उजरत।
झुकाना क्रि० (हिं) १-नवाना। २-किसी पदार्थ को किसी ओर घुमाना। ३-प्रवृत करना। ४-विनीत बनाना। ५-नीचा दिखाना।
झुकामुखी स्त्री० दे० 'झुटपटा'।
झुकार पुं० (हिं) (हवा का) झोंका।
झुकाव पुं० (हिं) १-झुकने की क्रिया या भाव। २-ढाल। ३-प्रवृत्ति। ४-चाह।
झुकावट स्त्री० दे० 'झुकाव'।
झुगिया, झुग्गी स्त्री० (हिं) झोंपड़ी।
झुटपुटा पुं० (हिं) ऐसा समय जब कुछ अँधेरा और कुछ उजाला हो।
झुटुंग वि० (हिं) झोंटे वाला। जटाधारी। पुं० भूत-प्रेत।
झुठकाना, झुठलाना क्रि० (हिं) १-झूठा बनाना। २-झूठा कहकर धोखा देना।
झुठवाना क्रि० (हिं) झूठा बनाना।
झुठाई स्त्री० (हिं) असत्यता।
झुठाना क्रि० (हिं) झुठलाना।
झुनक स्त्री० (हिं) नुपुर का शब्द।
झुनकना क्रि० (हिं) झुन-झुन बजना।
झुनकारा वि० (हिं) झीना।
झुनझुन पुं० (हिं) नुपुर, पैजनी आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना पुं० (हिं) बच्चों का एक खिलोना जिसे हिलाने से झुन-झुन शब्द होता है।
झुनझुनाना क्रि० (हिं) झुनझुन शब्द होना या करना।
झुनझुनियाँ स्त्री० (हिं) १-झुनझुन शब्द करने वाला गहना। २-झाँझर या पायल नामक गहना। ३-हथकड़ी, बेड़ी आदि।
झुनझुनी स्त्री० (हिं) हाथ-पैर आदि के एक ही अवस्था में देर तक रहने अथवा दबने से पैदा होने वाली सनसनाहट।
झुपरी स्त्री० (हिं) झोंपड़ी।
झुब्बा पुं० (हिं) झब्बा।
झुमझुमी स्त्री० (हिं) कान में पहनने का एक गहना।
झुमका पुं० (हिं) कान का एक गहना। कर्णफूल।
झुमाना क्रि० (हिं) किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।
झुमिरना क्रि० (हिं) झूमना।
झुरझुरी स्त्री० (हिं) कँपकँपी।
झुरना क्रि० (हिं) १-सूखना। २-दुःख या चिन्ता से क्षीण होना। घुलना।
झुरमुट पुं० (हिं) १-आस-पास उगे कई झाड़ या झुप। २-बहुत से लोगों का समूह। गिरोह। ३-कपड़े से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया
झुरसना क्रि० (हिं) झुलसना।
झुरसाना क्रि० (हिं) झुलसाना।
झुरहुरी स्त्री० (हिं) झुरझुरी। कँप-कँपी
झुराना क्रि० (हिं) सूखना या सुखाना।
झुरावन पुं० (हिं) सूखने के कारण कम होने वाला अंश।
झुर्री स्त्री० (हिं) त्वचा को सिकुड़न। शिकन।
झुलका पुं० (हिं) झुनझुना।
झुलना पुं० (हिं) १-झूला। २-ढीला कुरता।
झुलनी स्त्री० (हिं) १-मोतियों का वह गुच्छा जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं। नथुनी। २-झूमर।
झुलझुली स्त्री० (हिं) काम का एक गहना।
झुलमुला वि०(हिं) [स्त्री० झुलमुली] झिलमिला।
झुलमुलाना क्रि० (हिं) १-सिर में चक्कर आने जैसा होना। २-झिलमिलाना।
झुलमुली स्त्री० (हिं) १-झुमका। २-झालर। ३-झिलमिली।
झुलसर स्त्री० (हिं) २-झुलसने की क्रिया या भाव। २-शरीर को झुलसाने वाली गरमी।
झुलसना क्रि० (हिं) १-थोड़ा जल जाना। झौंसना। २-मुरझा जाना। भुनना। ३-अधजला कर देना
झुलसवाना, झुलसाना क्रि० (हिं) झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलाना, झुलावना क्रि० (हिं) १-झूले को हिलाना। २-किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। ३-अटकाये रखना। आजकल करते रहना।
झुलौआ, झुलौवा पुं० दे० 'झूला'।
झुल्ला पुं० (देश) एक तरह का कुरता।
झुहिरना क्रि० (हिं) लदना। लादा जाना।
झूँक पुं० दे० 'झोंका' (हवा का)। स्त्री० दे० 'झोंक'
झूँका पुं० दे० 'झोंका'।
झूँखना क्रि० (हिं) झीखना।
झूँझल स्त्री० (हिं) झुंझलाहट।
झूँसना क्रि० (हिं) १-ठगना। २-झुलसना।
झूक पुं० दे० 'झोंका'।
झूकटी स्त्री० (देश) १-झाड़ी। २-छोटा पेड़।
झूकना क्रि० (हिं) १-झोंकना। २-किसी वस्तु में पड़ना।
झूझना क्रि० (फा) जूझना। युद्ध करना।
झूठ पुं० (हिं) असत्य। मिथ्या।
झूठमूठ क्रि० वि० (हिं) बिना किसी वास्तविक आधार के। योंही। व्यर्थ।
झूठा वि० (हिं) १-मिथ्या। असत्य। २-झूठ बोलने वाला। ३-नकली। बनावटी। ४-बिगड़ जाने के कारण ठीक काम न करने वाला (पुरजा अथवा अङ्ग आदि)। ४-दे० 'जूठा'।

**झूठों** क्रि० वि० (हि) १-झूठमूठ । २-योंही । व्यर्थ

**झूना** वि० दे० 'झीना' ।

**झूम** स्त्री० (हि) १-झूमने की क्रिया या भाव । २-ऊँघ। झपकी ।

**झूमक** पु० (हि) १-एक प्रकार का देहाती गीत झूमर । २-इस गीत के साथ होने वाला नृत्य । ३-गुच्छा । ४-मोतियों का गुच्छा । ५-झुमका (कान का गहना) ।

**झूमक-साड़ी** स्त्री० (हि) झालरदार साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों ।

**झूमका** पु० १-दे० 'झुमका' । २-दे० 'झूमक' ।

**झूमड़** पु० दे० 'झूमर' ।

**झूमड़झामड़** पु० (हि) झूठा प्रपञ्च । ढकोसला ।

**झूमना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का बारबार इधर-उधर हिलना या झोंके खाना । २-लहराना । ३-मस्ती या मद में झूलना ।

**झूमर** पु० (हि) १-एक प्रकार का सिर पर पहनने का गहना । २-झूमक नामक गीत और नाच । ३-एक प्रकार का काठ का खिलौना । ४-एक जैसी कई वस्तुओं का एक स्थान पर एकत्र होना । ५-एक प्रकार का नाच ।

**झूर** वि० (हि) १-सूखा । भुरभुरा । २-खाली । ३-व्यर्थ । ४-दे० 'झूठा' । स्त्री० (हि) १-जलन । डाह २-परिताप । दुःख ।

**झूरना** क्रि० (हि) १-सूखना । २-मुरझाना ।

**झूरा** वि० (हि) (स्त्री० झूरी) १-सूखा । २-नीरस । फीका । पु० १-वर्षा का अभाव । २-सूखी जमीन

**झूरें** क्रि० वि० (हि) १-यों ही झूठमूठ । २-व्यर्थ । वि० १-व्यर्थ । २-सूखा । ३-खाली ।

**झूल** स्त्री० (हि) १-चौपायों की पीठ पर शोभा के लिए डालने का चौकोर वस्त्र । २-ढीला ढाला वस्त्र । ३-झूला ।

**झूलन** पु० (हि) वर्षाऋतु का एक उत्सव । हिंडोला ।

**झूलना** क्रि० (हि) १-लटक कर आगे पीछे होना । २-झूले पर बैठ कर पेंग लेना । ३-किसी काम के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना । वि० झूलने वाला । पु० १-एक छन्द । २-झूला । हिंडोला ।

**झूलर, झूलरि** स्त्री०(हि) झूलने वाली कोई छोटी वस्तु जैसे— गुच्छा, झुमका आदि ।

**झूला** पु०(हि) १-झूलने का साधन । हिंडोला । २-पलना । ३-स्त्रियों की कुरती । ४-झोंका । झटका ।

**झेंपना** क्रि० (हि) लजाना । शर्मिन्दा होना ।

**झेंपू** वि० (हि) झेंपने वाला । लज्जाशील ।

**झेपना** क्रि० (हि) झेंपना । लजाना ।

**झेपू** वि० (हि) लज्जाशील ।

**झेर** स्त्री० (हि) १-विलम्ब । देर । २-झंझट । बखेड़ा

**झेरना** क्रि० (हि) १-झेलना । सहना । छेड़ना । ३-तैरने आदि में हाथ पैर से पानी हटाना । ४-हलका झटका या झोंका खाना ।

**झेरा** पु० दे० 'झेर' ।

**झेल** स्त्री० (हि) १-झेलने की क्रिया या भाव । २-हिलोर । २-धक्का । ३-विलम्ब । देर ।

**झेलना** क्रि० (हि) १-सहना । बरदाश्त करना । २-ठेलना । ३-तैरने में पानी को हाथ पैर से हिलाना । ४-मानना ।

**झेलनी** स्त्री० (हि) वह चाँदी या सोने की जंजीर जो कान के गहनों का बोझ सँभालने के लिए बालों में अटकाते हैं ।

**झेला-झेली** स्त्री० (हि) १-खींचतान । २-संसार में जीवों का आवागमन ।

**झेलिक-झेला** पु० दे० 'झेला-झेली' ।

**झोंक** स्त्री०(हि) १-झुकाव । प्रवृत्ति । २-बोझ । भार ३-वेग । तेजी । ४-किसी काम को धूमधाम से उठाना । ५-ठाट । सजावट । ६-आघात । ७-पानी की हिलोर । ८-दे० 'झोंका' ।

**झोंकदार** वि० (हि) झुका हुआ ।

**झोंकना** क्रि० (हि) १-कोई वस्तु जलाने के लिए आग में फेंकना । २-बलपूर्वक आगे की ओर या संकट की स्थिति में ढकेलना । ३-किसी कार्य में अंधा-धुंध खर्च करना ।

**झोंका** पु०(हि)१-झटका । धक्का । २-पानी का हिलोरा ३-इधर से उधर हिलने या झुकने की क्रिया । ४-वायु का प्रवाह । झकोरा ।

**झोंकाई** स्त्री०(हि) १-झोंकने की क्रिया या भाव । २-झोंकने की मजदूरी ।

**झोंकिया** पु० (हि) वह जो झोंकने का काम करता हो

**झोंकी** स्त्री०(हि) १-उत्तरदायित्व । जवाबदेही । २-जोखिम ।

**झोंझ** पु० (देश) १-घोंसला । २-कुछ पक्षियों के गले के नीचे लटकता हुआ मांस । ३-कोलाहल । हल्ला ।

**झोंझल** पु० (हि) झुंझलाहट ।

**झोंट** पु० (हि) १-झाड़ी । २-आड़ । झुरमुट । ३-समूह । ३- दे० 'झोंटा' ।

**झोंटा** पु० (हि) [स्त्री० झोंटी] १-सिर के बड़े-बड़े बालों का समूह ।

**झोंटा-झोंटी** स्त्री० (हि) दो स्त्रियों का परस्पर बाल खसोटते हुए लड़ना ।

**झोंटी** स्त्री० दे० 'झोंटा' ।

**झोंपड़, झोंपड़ा** पु०(हि) [स्त्री० झोंपड़ी] कच्ची मिट्टी की दीवार बनाकर घासफूस से छाया हुआ घर । कुटिया । पर्णशाला ।

**झोंपड़ी** स्त्री० (हि) छोटा झोंपड़ा । कुटिया ।

**झौपा** पुं० (हि) झब्बा। गुच्छा।
**झोंटिंग** पुं० (हि) झोंटे वाला। जटाधारी।
**झोरना** क्रि० (हि) १-जोर से हिलाना। झकझोरना २-झटका देकर तोड़ना। ३- इकट्ठा करना।
**झोरा** पुं० (हि) [स्त्री० झोरि, झोरी] झोला।
**झोरि** स्त्री० (हि) झोली।
**झोरी** स्त्री० (हि) १-झोली। २-एक तरह की रोटी।
**झोल** पुं० (हि) १-तरकारी आदि का रसा। शोरबा २-चावल का माँड़। पीच। ३-धातु पर का मुलम्मा ४-झंझट, बखेड़ा या धोखे की बात। ५-कपड़े का वह अंश जो ढीला होने से आगे लटक जाय ६-आँचल। पल्ला। ७-परदा। ८-आड़। ९-भूल गलती। १०-वह झिल्ली या थैला जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे आवेष्टित रहते हैं। ११-गर्भ। १२-राख। भस्म। १३-दाह। जलन। वि० (हि) १-ढीला २-निकम्मा।
**झोलझाल** वि० (हि) ढीलाढाला। पुं० ढीलाढालापन
**झोलदार** वि० (हि) १-जिसमें रसा हो। रसेदार। २-जिस पर मुलम्मा किया गया हो। ३-जिसमें झोल पड़ता हो। ढीला।
**झोलना** क्रि० (हि) १-जलाना। २-भुनी करना।
**झोला** पुं० (हि) (स्त्री० झोली) १-कपड़े की बड़ी थैली। थैला। २-ढीला ढाला गिलाफ। खोली। ३-साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ३-एक वात-रोग। ४-झोंका। ५-इशारा।
**झोली** स्त्री० (हि) १-छोटा झोला। २-घास बाँधने का जाल। ३-मोट। चरसा। ४-खलिहान में अन्न ओसाने का कपड़ा। ५-कुश्ती का एक पेंच। ६-राख। भस्म।
**झौंब** पुं० (हि) पेट। उदर।
**झौंर** पुं० (हि) १-झुण्ड। समूह। २-फल पत्तियों या छोटे छोटे फलों का गुच्छा। ३-एक प्रकार का आभूषण। झब्बा। ४-पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। कुञ्ज।
**झौंरना** क्रि० (हि) १-गूँजना। गुञ्जार करना। २-झौरना।
**झौंरा** पुं० (?) झुण्ड। दल।
**झौंराना** क्रि० (हि) १-झूमना। २-काला पड़ जाना ३-कुम्हलाना। ४-इधर उधर हिलना या झूलना
**झौंसना** क्रि० (हि) झुलसना।
**झौआ** पुं०(हि) खँचिया।
**झौनी** स्त्री० (देश) टोकरी।
**झौर** पुं० (हि) १-झंझट। विवाद। २-डाँट। फटकार।
**झौरना** क्रि० (हि) झपटकर दबोच लेना।
**झौरा** पुं० (हि) विवाद। हुज्जत।
**झौरे** क्रि० वि० (हि) १-निकट। पास। २-संग। साथ।
**झौलना** क्रि० (हि) जलाना।
**झौवा** पुं० (हि) खँचिया।
**झौहाना** क्रि० (हि) १-गुर्राना। २-गुस्से में आकर बोलना।

# ञ

**ञ** हिन्दी का आला दसवाँ व्यञ्जन जो च वर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है।

[illegible]

# ट

**ट** हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।
**टंक** पुं० (सं) १-चार माशे का एक तौल। २-सिक्का ३-पत्थर काटने या गढ़ने की टाँकी। छेनी। ४-कुल्हाड़ी। ५-सुहागा। पुं० (सं० टैंक) १-तालाब। २-पानी का हौज या खजाना। ३-एक तरह की लोहे की बनी गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है।
**टंकक** पुं० (सं) १-रुपया। चाँदी का सिक्का। २-टंकण-यन्त्र पर काम करने वाला। (टाइपिस्ट)।
**टंकक-शाला** स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं। टकसालघर। (मिण्ट)। २-वह स्थान जहाँ टंकण यन्त्र पर टंकण-यन्त्र चलाना सीखते हों।
**टंकण** पुं० (सं) १-सुहागा। २-धातु की वस्तु में टाँका अथवा जोड़ लगाना। ३-ताँबे, चाँदी आदि धातु खण्डों पर यन्त्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का कार्य। (कॉइनेज) ४-टङ्कण यन्त्र की सहायता से कागज पर कुछ लिखने, मुद्रित करने या अक्षर अंकित करने का कार्य। (टाइप-राइटिङ्ग)।
**टंकण-यंत्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा पत्र आदि छापे की कल के समान लिखे, मुद्रित या अंकित किये जाते हैं।
**टंकन** पुं० दे० 'टंकण'।
**टंकना** क्रि० (हि) १-टाँका जाना। सिलना। २-लिखा जाना। ३-सिल, चक्की आदि का खुरदरा

किया जाना।
**टंकमार** स्त्री० (हि) टैंकों पर मढ़ी इस्पात की मोटी चादरों को तोड़ने वाली एक प्रकार की तोप।
**टँकवाना** क्रि० वि० (हि) टँकाना।
**टंक-विज्ञान** पुं० (सं) विभिन्न देशों की प्राचीन मुद्राओं या सिक्कों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की विद्या।
**टंक-शाला** स्त्री० (सं) टकसाल।
**टंका** पुं० (हि) १-एक तोले की तौल। २-ताँबे का एक पुराना सिक्का।
**टँकाई** स्त्री० (हि) १-टाँकने की क्रिया या भाव। २-टाँकने की मजदूरी।
**टंकाना** क्रि० (हि) सिक्के की जाँच करना।
**टँकाना** क्रि० (हि) १-टाँकों से सिलवाना या जुड़वाना। २-सिलाकर लगवाना। ३-सिल आदि को खुरदरा करवाना। कुटाना।
**टंकार** स्त्री० (सं) १-धनुष की डोरी खींचने से उत्पन्न ध्वनि। २-वह टन-टन का शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली आदि का आघात करने से होता है। ३-झनकार।
**टंकारना** क्रि० (हि) धनुष की डोरी तानकर शब्द उत्पन्न करना।
**टंकिका** स्त्री० (सं) टाँकी। छेनी।
**टंकी** स्त्री० (हि) पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुण्ड या बड़ा बरतन। चौबच्चा। टाँका।
**टँकुआ** वि० (हि) [स्त्री० टँकुई] जिस पर कोई अन्य वस्तु टाँक कर लगाई गई हो।
**टंकोर** पुं० दे० 'टंकार'।
**टंकोरना** क्रि० (हि) टंकारना।
**टंकोरी, टंकौरी** स्त्री० (हि) छोटा काँटा या तराजू।
**टँगड़ी** स्त्री० (हि) टाँग। पैर।
**टँगना** क्रि० (हि) १-लटकना। २-फाँसी पर चढ़ना। पुं० अलगनी।
**टँगा** पुं० (हि) मूँज।
**टँगाना** क्रि०(हि) १-टाँगने का काम दूसरे से कराना २-दे० 'टंगना'।
**टँगारी** स्त्री० (हि) कुल्हाड़ी।
**टंच** वि० (हि) १-कंजूस। २-निष्ठुर। ३-धूर्त्त। ४-तैयार। मुस्तैद।
**टंट-घंट** पुं० (हि) १-घड़ी-घण्टा आदि बजाकर पूजा करने का झूठा ढोंग। २-रद्दी सामान।
**टंटा** पुं० (हि) १-व्यर्थ की झंझट। २-उत्पात। ३-झगड़ा।
**टँडिया** स्त्री० (हि) बाँह पर पहनने का एक गहना।
**टंडैल** पुं० (हि) मजदूरों का मेठ या सरदार।
**ट** पुं० (सं) १-नारियल का खोपड़ा। २-वामन। ३-शब्द। ४-चौथाई भाग।
**टई** स्त्री० (हि) १-टट्टी। २-टहल।
**टक** स्त्री० (हि) १-बिना पलक गिराये एक ही ओर देखना। २-स्थिर दृष्टि।
**टकटका** पुं० (हि) [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि। टकटकी। वि० (हि) एक जगह स्थिर (दृष्टि)।
**टकटकाना** क्रि० (हि) १-एकटक देखना। २-'टकटक' शब्द करना।
**टकटकी** स्त्री० (हि) निर्निमेष दृष्टि। स्थिर दृष्टि।
**टकटोना** क्रि० (हि) १-टटोलना। २-ढूँढना। खोजना।
**टकटोरना** क्रि० (हि) १-टकटकी लगाकर देखना।
**टकटोलना** क्रि० (हि) स्पर्श से पता लगाना या जाँचना।
**टकटोहन** पुं० (हि) टटोल कर देखने का काम।
**टकराना** क्रि० (हि) १-जोर से भिड़ना। टक्करें खाना। २-मारे मारे फिरना। ३-एक वस्तु का दूसरी पर जोर से मारना।
**टकसार** स्त्री० दे० 'टकसाल'। वि० दे० 'टकसाली'।
**टकसाल** स्त्री० (हि) १-वह स्थान जहाँ सिक्के बनाये या ढाले जाते हैं। २-असली और निर्दोष वस्तु।
**टकसाली** वि० (हि) १-टकसाल सम्बन्धी। टकसाल का। २-खरा। चोखा। ३-सर्वसम्मत। ४-प्रामाणिक। परीक्षित।
**टकसाली-बात** स्त्री० (हि) ठीक और पक्की बात।
**टकसाली-बोली** स्त्री० (हि) शिष्ट भाषा।
**टकहाई** वि० (हि) [स्त्री० प्र०] टके-टके में व्यभिचार कराने वाली।
**टका** पुं० (हि) १-चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २-दो पैसे का एक सिक्का। अधन्ना। ३-धन।
**टकाई** वि० (हि) [स्त्री० प्र०] टकहाई। स्त्री० टकासी।
**टकातोप** स्त्री० (देश) एक प्रकार की तोप जो जहाजों पर रहती है।
**टकासी** स्त्री० (हि) १-टके रुपये का व्याज। २-प्रति व्यक्ति टके के हिसाब से लिया गया कर।
**टकाही** वि० दे० 'टकहाई'। स्त्री० दे० 'टकासी'।
**टकी** स्त्री० दे० 'टकटकी'।
**टकुआ** पुं० (हि) १-चरखे का तकला। २-वह तार जो छोटी तराजू में बाँधा जाता है।
**टकुली** स्त्री० (हि) १-पत्थर काटने की टाँकी। २-नक्काशी करने की छेनी।
**टकैती** वि० (हि) रुपये पैसे वाला। धनी।
**टकोर** पुं० (हि) १-हलकी चोट। आघात। २-डंके का शब्द। ३-धनुष की टंकार। ४-दवा की गरम पोटली द्वारा किया जाने वाला सेंक। ५-चरपराहट ६-दाँतों का गुठला होने का भाव।
**टकोरना** क्रि० (हि) १-ठोकर लगना। २-चोट

लगना। ३–टकोर अथवा सेंक करना।

**टकोरा** पुं० (हिं) १–छोटा आम। अंबिया। २–नौबत की आवाज। ३–एक प्रकार का छपा मोटा कपड़ा।

**टकोरी** स्त्री० (हिं) हलकी चोट या आघात। ठेस।

**टकौरी** स्त्री० (हिं) चाँदी, सोना तौलने की छोटी तराजू।

**टक्कर** स्त्री० (हिं) १–धक्का। ठोकर। २–मुकाबला। मुठभेड़। ३–घाटा। हानि।

**टखना** पुं० (हिं) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

**टगण** पुं० (सं) छः मात्राओं का एक गण।

**टघरना** क्रि० (हि) पिघलना।

**टचटच** क्रि० वि०(हि) चिनगारियों से उत्पन्न शब्द। धायँधायँ।

**टटका** वि० (हिं) [स्त्री० टटकी] १–ताजा। २–कोरा। नया।

**टटकाई** स्त्री० (हि) ताजगी।

**टटल-बटल** वि० (हि) बे सिरपैर का। ऊटपटाँग।

**टटावली** स्त्री० (हिं) टिटहरी नामक चिड़िया।

**टटिया** स्त्री० (हिं) बाँस आदि की टट्टी।

**टटीबा** पुं० (हि) घिरनी। चक्कर।

**टटुआ** पुं० (हिं) [स्त्री० टटुई] टट्टू।

**टटोरना** क्रि० (हिं) टटोलना।

**टटोल** स्त्री० (हि) टटोलने की क्रिया या भाव। तलाश।

**टटोलना** क्रि०(हि) १–मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २–ढूंढ़ने के लिए इधर उधर हाथ फैलाना। ३–बोलचाल से ही किसी के मन के भाव जानना। थाह लेना। ४–परखना।

**टटोहना** क्रि० (हि) टटोलना।

**टट्टर** पुं० (हिं) बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला।

**टट्टी** स्त्री० (हि) १–बाँस आदि की फट्टियों का बना छोटा टट्टर। २–चिक। चिलमन। ३–पतली दीवार। ४–पाखाना। ५–बाँस की फट्टियों की वह दीवार या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती है।

**टट्टू** पुं० (हि) छोटे आकार का घोड़ा।

**टड़िया** स्त्री० (हिं) बांह में पहनने का एक गहना।

**टन** स्त्री०(हिं) घण्टा बजने का शब्द। पुं० धातु आदि पर आघात से उत्पन्न शब्द। वि० दे० 'टन्न' पुं० (अ) लगभग अट्ठाईस मन का एक तौल।

**टनकना** क्रि० (हि) १–टनटन बजना। १–धूप लगने आदि के कारण सिर में दर्द होना। रह-रह कर पीड़ा होना।

**टनटन** स्त्री० (हिं) घण्टा बजाने का शब्द।

**टनटनाना** क्रि० (हि) १–घण्टा बजना। २–टन-टन बजना। ३–धातु पर आघात।

करना।

**टनमन** पुं० (हि) जादूटोना। वि० दे० 'टनमना'।

**टनमना** वि० (हि) स्वस्थ। चंगा।

**टनाटन** स्त्री० (हि) लगातार होने वाला टन-टन शब्द क्रि० वि० (हि) 'टन-टन' शब्द सहित।

**टन्न** वि० (हि) नशे आदि में चूर।

**टप** स्त्री० (हि) १–बूँद के टपकने का शब्द। २–किसी वस्तु पर से गिर पड़ने का शब्द। पुं० (हि) १–ताँगे टम-टम आदि पर लगा कपड़े आदि का छाजन। २–पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। ३–कानका एक गहना।

**टपक** स्त्री० (हि) १–टपकने की क्रिया या भाव। २–बूंद-बूंद करके गिरने का शब्द।

**टपकना** क्रि० (हि) १–बूंद-बूंद करके गिरना। २–पके हुए फल का अपने-आप गिरना। ३–किसी भाव का आभासित होना। झलकना। ४–मुग्ध होना। ५–टाँग मारना। चिलकना।

**टपका** पुं० (हि) १–बूंद-बूंद गिरने का भाव। २–टपकी हुई वस्तु। ३–पककर अपने-आप गिरा हुआ फल। ४–रह-रहकर उठने वाला दर्द। टीस।

**टपका-टपकी** स्त्री० (हि) १–वर्षा की हलकी झड़ी। बूँदा-बाँदी। २–फलों का लगातार गिरना। वि० भूला-भटका।

**टपकाना** क्रि० (हि) १–बूँद-बूँद गिराना। २–भबके से अर्क खींचना। चुआना।

**टपकाव** पुं० (हि) १–टपकने की क्रिया या भाव। २–टपकने की अवस्था।

**टपना** क्रि० (हि) १–बिना कुछ खाये-पीये पड़ा रहना २–व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। ३–लाँघना। कूदना।

**टपरना** क्रि० (हि) टाँकी के आघात से पत्थर की सतह खुरदरी करना।

**टपरा** पुं०(हि) [स्त्री० टपरी] १–झोंपड़ा। २–छप्पर।

**टपरी** स्त्री० (हि) झोंपड़ी।

**टपाटप** क्रि० वि० (हि) १–टपटप की आवाज के साथ। २–लगातार। ३–शीघ्रता से। ४–एक-एक करके।

**टपाना** क्रि० (हि) १–बिना खिलाये-पिलाये पड़ा रहने देना। २–व्यर्थ आसरे में रखना। ३–फँदाना। कुदवाना।

**टप्पर** पुं० (हिं) छप्पर। छाजन।

**टप्पा** पुं० (हिं) १–दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि। २–उछाल। फलाँग। ३–उतनी दूरी जितनी कोई फैंकी हुई वस्तु पार करे। ४–भूमि का छोटा भाग। ५–अन्तर। फरक। ६–दूर-दूर की सिलाई। ७–पाल पर वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा।

जहाँ पालकी के कहार बदले जाते हैं। १०-नियत दूरी। ११-उछल-उछल कर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकान। १२-एक प्रकार का पजाबी गाना।
**टप्पैत** वि० (हि) १-टप्पा नामक गान से सम्बद्ध। २-टप्पा गाने वाला।
**टब** पुं० (अं०) १-पानी रखने का बड़ा बरतन। २-एक तरह का लम्प।
**टब्बर** पुं० (हि) कुटुम्ब। परिवार।
**टमक** स्त्री० (हि) १-पीड़ा। वेदना टीस। २-पानी में गिरने का शब्द।
**टमकना** क्रि० (हि) टीस होना।
**टमकी** स्त्री० (हि) डुग्गी। डुगडुगिया।
**टमटम** स्त्री० (अं० टेंडेम) ऊँचे पहियों की एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।
**टमटी** स्त्री० (देश) एक प्रकार का बरतन।
**टमाटर** पुं० (अ० टोमैटो) एक फल जिसकी तरकारी बनती है।
**टर** स्त्री० (हि) १-कर्कश शब्द। २-मेंढक की बोली। ३-ऐंठ। अकड़। ४-हठ। जिद। ५-तुच्छ बात। ६-ईद के दूसरे दिन का मेला।
**टरकना** क्रि० (हि) टलना।
**टरकाना** क्रि० (हि) टालना।
**टरकी** पुं० (तु०) एक तरह का मुरगा जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है।
**टरकुल** वि० (हि) घटिया। रद्दी।
**टरटराना** क्रि० (हि) १-बकबक करना। २-ढिठाई से बोलना।
**टरना** क्रि० (हि) टलना।
**टरनि** स्त्री० (हि) टलने की अवस्था या भाव।
**टर्रा** वि० (हि) १-ऐंठकर बात करने वाला। २-धृष्ट
**टर्राना** क्रि० (हि) ऐंठकर बात करना।
**टर्रापन** पुं० (हि) बात करने की कठोरता।
**टलना** क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-अनुपस्थित होना। ३-दूर होना। ४-अन्यथा होना। ५-उल्लंघित होना या पूरा न किया जाना। ६-समय बीतना। ७-(किसी काम के लिए) निश्चित समय से अपने आगे का समय नियत करना।
**टलाटली** स्त्री० (हि) टालमटोल। बहानेबाजी।
**टल्ला** पुं० (हि) धक्का। आघात।
**टल्लो** स्त्री० (?) छोटी टहनी।
**टवर्ग** पुं० (सं) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पाँच वर्णों का समूह।
**टवाई** स्त्री० (हि) व्यर्थ घूमना। आवारगी।
**टस** स्त्री० (हि) १-भारी वस्तु के सरकने का शब्द। २-कपड़े आदि के फटने का शब्द।
**टसक** स्त्री० (हि) कसक। टीस।
**टसकना** क्रि० (हि) १-खिसकना। सरकना। २-टीस मारना। ३-बात मानने को उद्यत होना। प्रभावित होना।
**टसकाना** क्रि० (हि) खिसकाना। हिलाना।
**टसर** पुं० (हि) एक तरह का घटिया मोटा रेशम।
**टसुआ** पुं० (हि) आँसू। अश्रु।
**टहक** स्त्री० (हि) रह-रह कर उठने वाली पीड़ा। चसक।
**टहकना** क्रि० (हि) १-रह-रहकर दर्द करना। चसकना। २-पिघलना।
**टहकाना** क्रि० (हि) आँच में पिघलाना।
**टहना** पुं० (हि) (स्त्री० टहनी) वृक्ष की शाखा या डाल।
**टहनी** स्त्री० (हि) वृक्ष की पतली शाखा। डाली।
**टहरना** क्रि० (हि) टहलना।
**टहल** स्त्री० (हि) १-सेवा-सुश्रूषा। २-चाकरी।
**टहलना** क्रि० (हि) १-मन्दगति से भ्रमण करना। २-व्यायाम या मनबहलाव की दृष्टि से इधर-उधर घूमना। ३-मर जाना।
**टहलनी** स्त्री० (हि) टहल करने वाली। दासी।
**टहलाना** क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलना। घुमाना २-सैर कराना।
**टहलुआ** पुं० (हि) (स्त्री० टहलुई, टहलनी) टहल करने वाला। सेवक। खिदमतगार।
**टहलुई** स्त्री० दे० 'टहलनी'।
**टहलुवा** पुं० दे० 'टहलुआ'।
**टहलू** पुं० (हि) सेवक। चाकर।
**टहो** स्त्री० (हि) मतलब निकालने की घात। युक्ति। जोड़तोड़।
**टहुआटारी** स्त्री० (देश) चुगलखोरी।
**टहोका** पुं० (हि) हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।
**टाँक** स्त्री०(हि) १-चार माशे की एक तौल। २-कूत। आँक। ३-लिखावट। ४-कलम की नोक। ५-एक तरह की सिलाई।
**टाँकना** क्रि०(हि) १-सिलाई करके जोड़ना। सीना। २-बही पर चढ़ाना। सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदरा करना। रेहना। ४-रेती के दाँतों को तेज या नुकीला करना।
**टाँका** पुं० (हि) १-वह वस्तु जिससे दो वस्तुएँ जोड़ी या टाँकी जायें। २-धातु जोड़ने का मसाला। ३-सीवन। सिलाई। ४-थिगली। पैबन्द। ५-[स्त्री० टाँकी] पानी रखने का बड़ा बरतन।
**टाँकी** स्त्री० (हि) पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी।
**टाँग** स्त्री० (हि) पैर। जाँघ से एड़ी तक का भाग।
**टाँगन** पुं० (हि) छोटा घोड़ा। टट्टू।
**टाँगना** क्रि०(हि) १-लटकाना। २-फाँसी पर चढ़ाना
**टाँगा** पुं० (हि) १-एक प्रकार की दुपहिया घोड़ा-

गाड़ी। २–बड़ी कुल्हाड़ी।

**टाँगी** स्त्री० (हि) कुल्हाड़ी।

**टाँच** स्त्री०(हि)१–दूसरे का काम बिगाड़ने वाली बात भाँजी। २–टाँका। ३–सिलाई। ४–पैबन्द। ५–काट-छाँट।

**टाँचना** क्रि० (हि) १–टाँकना। सीना। २–काटना तराशना।

**टाँट, टाँटर** स्त्री० (हि) खोपड़ी। कपाल।

**टाँठ** वि० (हि) १–कमार। [illegible]। कठोर। २–बली।

**टाँड़** स्त्री० (हि) १–लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। परछत्ती। २–वह मचान जिस पर से खेत की रखवाली करते हैं मचान। ३–बाहु में [illegible] एक गहना। पुं०१–ढेर। [illegible]। २–[illegible]। ३–[illegible] की पंक्ति।

**टाँडी** स्त्री० (हि) [illegible]।

**टाँयटाँय** स्त्री० (हि) १–[illegible] शब्द। २–बक-बक।

**टाँस** स्त्री० (हि) [illegible] की सिकुड़न।

**टाँसना** [illegible] १–[illegible]। २–दे० टाँकना।

**टाइटिल** पुं० (अं) १–[illegible]। २–उपाधि। ३–शीर्षनाम। ४–[illegible]।

**टाइप** पुं० (अं) [illegible] अक्षर जिनसे छपाई [illegible]।

**टाइप-राइटर** पुं० (अं) [illegible] यंत्र जिसमें कागज रखकर [illegible] हैं।

**टाइफाइड** [illegible]।

**टाइम** पुं० (अं) [illegible]।

**टाइम-टेबुल** [illegible]।

**टाइमपीस** [illegible] की घड़ी।

**टाइल** पुं० (अं) [illegible] जिससे फर्श बनता है।

**टाई** स्त्री० (अं) [illegible] कपड़े की पट्टी जो शोभा [illegible]। २–[illegible] आदि [illegible]।

**टाउन** पुं० (अं) [illegible]।

**टाउन-हाल** [illegible] नगरों में नगर-पालिका [illegible] वाला सार्वजनिक भवन जिसमें [illegible]।

**टाट** पुं० (हि) [illegible] मोटा कपड़ा। २–मोटा कपड़ा। ३–[illegible]। ४–बिरादरी।

**टाटक** वि० [illegible]।

**टाटर** पुं० (हि) [illegible]। २–खोपड़ी। कपाल।

**टाटिका** [illegible]।

**टाटी** स्त्री० (हि) [illegible]।

**टाठ** पुं० (हि) [स्त्री० टाठी] १–बड़ी थाली। थाल। २–बटुआ या कटोरे [illegible] बरतन।

**टाठा** वि० (हि) [स्त्री० टाठी] १–बलवान तथा हृष्ट-पुष्ट। २–जो सूखकर कड़ा हो गया हो। कठोर।

**टाठी** स्त्री० (हि) थाली।

**टाड़** स्त्री० (देश) भुजा पर पहनने का एक गहना।

**टान** स्त्री० (हि) १–तनाव। खिंचाव। २–खींचने की क्रिया। ३–सितार बजाने का एक ढंग। पुं० मचान

**टानना** क्रि० (हि) १–तानना। २–खींचना। ३–छापना।

**टाप** स्त्री० (हि) १–घोड़े के पैर का वह भाग जो भूमि पर पड़ता है। सुम। खुर। २–घोड़े के पैरों का जमीन पर पड़ने का शब्द। ३–दे० 'टापा'।

**टापना** क्रि० (हि) घोड़ों का पैर पटकना। २–किसी वस्तु के लिए हैरान होना। ३–बिना दाना, पानी के समय बिताना। ४–पछताना। ५–उछलना। कूदना। ६–दे० 'टपना'।

**टापर** पुं० (हि) १–ओढ़ने का मोटा कपड़ा। चादर। २–दे० टापा।

**टापा** पुं० (हि) १–लम्बा चौड़ा मैदान। २–उजाड़ मैदान। ३–[illegible]। टोकरा। ४–उछाल।

**टापू** पुं० (हि) वह भूखंड जो चारों ओर पानी से घिरा हो द्वीप।

**टाबर** पुं० (हि) बच्चा। बालक।

**टामक** पुं० (हि) [illegible]। डिमडिमि।

**टामन** पुं० (हि) टोटका। तंत्रविधि।

**टारन** पुं० (हि) १–सरकाने की वस्तु। २–कोल्हू में पड़ा [illegible] लकड़ी का डंडा।

**टारना** क्रि० (हि) टालना।

**टारपीडो, टारपेडो** पुं० (अं) पानी के भीतर स्वतः चलने वाला एक लंबी [illegible] विध्वंसक जो दूसरे जहाज से टकराते ही फट जाता है। और टकराने वाले जहाज में छेद कर देता है।

**टाल** स्त्री० (हि) १–[illegible] ढेर। [illegible]। २–लकड़ी, भूसे आदि की दुकान। ३–टालने की क्रिया या भाव पुं० कुटना।

**टालटूल** स्त्री० दे० 'टालमटूल'।

**टालमटूल** स्त्री० (हि) बहाना।

**टाला** वि० (हि) [स्त्री० टाली] [illegible]। अर्द्ध।

**टाली** स्त्री० (देश) १–गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घण्टी। २–[illegible] गाय। ३–एक प्रकार का बाजा। ४–[illegible]। थैली।

**टाहली** पुं० (हि) सेवक। टहलुआ।

**टिंचर** पुं० (अं) एक तरल औषध जो स्पिरिट के योग से बनती है।

**टिंड, टिंडा** पुं० (हि) ककड़ी की जाति की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है।

**टिकट** पुं० (अं) १–कागज, गत्ते आदि का छोटा टुकड़ा जो किसी कार्य विशेष का अधिकार पाने के लिए मूल्य से मिलती है। २–चिप्पी। ३–कर। महसूल।

**टिकटिक** *स्त्री०* (हि) १-घड़ी से उत्पन्न शब्द। २-घोड़ा हाँकने के लिए मुख से किया जाने वाला शब्द
**टिकटिकी** *स्त्री०*(हि)१-ऊँची तिपाई। २-दे० 'टिकटी'
**टिकठी** *स्त्री०* (हि) तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँध-कर बेंत या कोड़े लगाये जाते हैं। २-ऊँची तिपाई जिस पर अपराधी को खड़ा करके गले में फाँसी का फन्दा लगाया जाता है। ३-तिपाई। ४-अरथी
**टिकड़ा** पुं० (हि) [*स्त्री०* टिकड़ी] १-चिपटा और गोल टुकड़ा। २-आँच पर सेकी हुई रोटी। बाटी
**टिकना** *क्रि०* (हि) १-ठहरना। २-कुछ दिनों तक काम देना। ३-स्थित रहना। ४-तल में जमना।
**टिकरी** *स्त्री०* (हि) १-टिकिया। २-एक तरह का नमकीन पकवान। ३-एक सिर का गहना।
**टिकली** *स्त्री०* (हि) १-छोटी टिकिया। वह बिन्दी जिसे स्त्रियाँ माथे पर चिपकाती हैं। ३-छोटा टीका।
**टिकस** पुं०(अं० टैक्स) १-कर। महसूल। २-टिकट।
**टिकसार** *वि०* दे० 'टिकाऊ'।
**टिकाऊ** *वि०* (हि) कुछ दिनों तक काम देने वाला। पायेदार।
**टिकान** *स्त्री०*(हि) १-टिकने का स्थान। पड़ाव। चट्टी २-टिकने की क्रिया या भाव।
**टिकाना** *क्रि०* (हि) १-रहने के लिए स्थान देना। १-ठहराना। ३-सहारा देना।
**टिकाव** पुं० (हि) १-स्थिति। ठहराव। २-स्थिरता।
**टिकिया** *स्त्री०*(हि) १-चिपटा और गोल छोटा टुकड़ा ४-तम्बाकू पीने के लिए कोयले से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा। ३-माथे पर लगी हुई बिन्दी
**टिकुरा** पुं० १-दे० टीला। २-दे० 'टिकड़ा'।
**टिकुली** *स्त्री०* (हि) टिकली।
**टिकैत** पुं०(हि) १-उत्तराधिकारी राजकुमार। युवराज। २-अधिष्ठाता। ३-सरदार।
**टिकोरा** पुं०(हि) कच्चा और छोटा आम। अंबिया।
**टिक्कड़** पुं० (हि) १-बड़ी टिकिया। २-मोटी रोटी।
**टिक्का** पुं० दे० 'टीका'।
**टिक्की** *स्त्री०* (हि) १-टिकिया। २-बाटी। ३-माथे पर की बिन्दी। ४-पैबन्द। ५-प्रदेश।
**टिखटी** *स्त्री०* दे० 'टिकठी'।
**टिघलना** *क्रि०* (हि) पिघलना।
**टिचन** *वि०* (हि) १-तैयार। प्रस्तुत। २-उद्यत। ३-ठीक। दुरुस्त।
**टिटकारना** *क्रि०* (हि) टिक-टिक कह कर हाँकना।
**टिटिम्बा** पुं० (हि) १-फजूल का बखेड़ा। २-ढकोसला। आडम्बर।
**टिटिह, टिटिहा** पुं० (हि) टिटिहरी नामक चिड़िया का नर।
**टिटिहरी** *स्त्री०* (हि) एक तरह की चिड़िया। कुररी।
**टिट्टिभ** पुं० (स) [*स्त्री०* टिट्टिभी] १-टिटिहरी। २-२-टिड्डी।
**टिड्डा** पुं० (हि) एक तरह का छोटा परदार कीड़ा। पतिंगा।
**टिड्डी** *स्त्री०*(हि) दल बाँध कर उड़ने वाला एक कीड़ा
**टिड्डीदल** पुं० (हि) बहुत बड़ा दल या समूह।
**टिढ-बिड़ंगा** *वि०* (हि) टेढ़ामेढ़ा।
**टिपका** पुं० (हि) टपका। बूंद।
**टिपवाना** *क्रि०* (हि) १-दबवाना। २-प्रहार करना। ३-लिखवाना।
**टिपाई** *स्त्री०* (हि) १-टिपाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २-चित्रकला में रेखाङ्कित प्रारम्भिक रूप। ३-दबाव। ४-दस्तावेज। ५-सूचना के रूप में लिखित कोई बात। (नोट)।
**टिपारा** पुं० (हि) मुकट जैसी तिकोनी टोपी।
**टिप्पणी** *स्त्री०* (सं) १-वह छोटा लेख जिसके द्वारा गूढ़ वाक्य आदि का विस्तृत अर्थ बताया जाय। २-समाचार आदि में प्रकाशित घटना आदि का संक्षिप्त विवरण या उसके सम्बन्ध में संपादक का विचार। (नोट)। ३-किसी व्यक्ति, विषय अथवा कार्य के सम्बन्ध में किया जाने वाला विचार। (रिमार्क)। ४-स्मरण रखने के निमित्त संक्षिप्त रूप में लिखी गई बात। (नोट)।
**टिप्पन** पुं० (सं) १-टीका। व्याख्या। २-जन्मपत्री।
**टिप्पनी** *स्त्री०* (सं) संक्षिप्त टीका।
**टिप्पस** *स्त्री०* (देश) अभिप्राय साधने की युक्ति।
**टिप्पी** *स्त्री०* (हि) १-उँगली से बनाई छोटी बूंद। २-ताश की बूटी।
**टिब्बरी** *स्त्री०* (हि) १-छोटा टीला। पहाड़ की चोटी।
**टिमटिमाना** *क्रि०* (हि) १-(दीपक का) मंद-मंद जलना। २-झिलमिलाना। ३-मरने के निकट होना
**टिमाक** *स्त्री०* (हि) नाज-नखरा। टीमटाम।
**टिमिला** पुं० (हि) लड़का।
**टिर** *स्त्री०* दे० 'टर'।
**टिर्राफिस** *स्त्री०* (हि) बात न मानने की ढिठाई। चीं-चपड़।
**टिर्राना** *क्रि०* (हि) टर्राना।
**टिल्ला** पुं० (हि) १-धक्का। चोट। २-दे० 'टीला'।
**टिल्लेनवीस** *स्त्री०* (हि) १-निठल्लापन। २-बहाना। ३-कुटनापन।
**टिसुआ** पुं० (हि) अश्रु। आँसू।
**टिहरा** पुं० (हि) छोटा गाँव।
**टिहरी** *स्त्री०* (हि) छोटी बस्ती।
**टिहुकना** *क्रि०* (हि) चौंकना। ठिठकना।
**टिहुनी** *स्त्री०* (हि) १-घुटना। २-कोहनी।
**टिहूक** *स्त्री०* (हि) चौंकने की क्रिया या भाव।
**टींडसी** *स्त्री०* (हि) एक फल जिसकी तरकारी बनती है

**टीड़ी** *स्त्री०* (हि) टिड्डी।
**टीक** *स्त्री०* (हि) गले या सिर का एक आभूषण।
**टीकना** *क्रि०* (हि) टीका या निशान लगाना।
**टीका** पुं० (हि) १-तिलक। २-विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्षवालों का वर के मस्तक पर तिलक लगा कर विवाह निश्चित करना। तिलक। ३-श्रेष्ठ पुरुष। ४-राजतिलक। ५-राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज। ६-किसी रोग को रोकने के लिए उस रोग का चेप अथवा रस सूई के द्वारा प्रविष्ट करने की क्रिया। ७- माथे का एक गहना। ८-दाग। ९-घोड़े के माथे के बीच का वह भाग जहाँ भंवरी होती है। १०-वह भेंट जो आसामी राजा को देता है। *स्त्री०* (सं) व्याख्या।
**टीकाकार** पुं० (सं) किसी ग्रन्थ की व्याख्या करने वाला।
**टीका-टिप्पणी** स्त्री० (सं) कोई प्रसङ्ग छिड़ने अथवा बात सामने आने पर उसके गुण दोष आदि के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करना।
**टीकी** स्त्री० (हि) १-टिकुली। २-टिकिया।
**टीड़ी** स्त्री० (हि) टिड्डी।
**टीन** पुं० (अं) १-रांगे की चढ़ी लोहे की चादर। ऐसी चादर का बना डिब्बा या बरतन।
**टीप** पुं० (हि) १-दाब। दबाव। २-हलके-हलके ठोकने का काम या भाव। ३-गच कूटने का काम। गाने में खींची हुई लम्बी तान। ५-धनुष की टङ्कार। ६-स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। ७-दस्तावेज। ८-जन्मपत्री।
**टीपटाप** स्त्री० (हि) १-बनावटी या दिखावटी सज-धज। २-आडम्बर।
**टीपन** स्त्री० (हि) १-जन्मपत्री। २-गांठ।
**टीपना** क्रि० (हि) १-दबाना। चांपना। २-धीरे-धीरे ठोंकना। ३-लिख लेना। ४-बिन्दी लगाना। ५-ऊँचे स्वर से गाना। ६-लिखाना। ७-टाँकना। स्त्री० जन्मपत्री।
**टीबा** पुं० (हि) टीला।
**टीमटाम** स्त्री० (हि) बनाव-सिङ्गार। तड़क-भड़क।
**टीला** पुं० (हि) १-मिट्टी, पत्थर आदि का उभरा हुआ भूभाग। २-मिट्टी या बालू का ढेर। धुस। ३-छोटी पहाड़ी।
**टीस** *स्त्री०* (देश) रह-रहकर दर्द उठने वाला दर्द। चसक।
**टीसना** *क्रि०* (हि) रह-रहकर दर्द उठना।
**टुंटा** *वि०* (हि) जिसका हाथ कटा हो।
**टुंडा** *वि०* (हि) [स्त्री० टुंडी] १-ठूंठा। २-लूला। लुंजा। ३-जिसका कोई अंग खण्डित हो।
**टुंडियाना** क्रि० (हि) मुश्क कसना।
**टुंडी** *स्त्री०* (हि) १-नाभि। २-भुजा। *वि०* लूली।
**टुइयाँ** *स्त्री०* (देश) तोता। *वि०* (हि) नाटा। बौना।
**टुक** *वि०* (हि) थोड़ा। तनिक। जरा।
**टुकड़गदा** पुं० (हि) भिखारी। मंगता।
**टुकड़गदाई** पुं०(हि) भिखमंगा। *वि०* १-तुच्छ। २-दरिद्र। ३-टुकड़ा माँगने का काम।
**टुकड़-तोड़** पुं० (हि) दूसरे का दिया खाकर निर्वाह करने वाला व्यक्ति।
**टुकड़ा** पुं० (हि) [स्त्री० टुकड़ी] १-कटा हुआ अंश। छिन्न अंश। २-चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३-रोटी का तोड़ा हुआ अंश। ग्रास। कौर।
**टुकड़ी** *स्त्री०* (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-दल। जत्था। ३-सेना का छोटा विभाग। ४-समुदाय। मण्डली। ५-पशु पक्षियों का दल। गोल। झुण्ड। ६-स्त्रियों का लहंगा।
**टुक्क** पुं० (हि) १-टुकड़ा। २-चतुर्थांश।
**टुच्चा** *वि०* (हि) १-लुच्चा। ओछा। २-कमीना। दुष्ट।
**टुट-पुंजिया** *वि०* (हि) जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
**टुटरूँ** पुं० (हि) छोटी पेंडुकी।
**टुटरूँटूँ** *स्त्री०* (हि) पेंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द। *वि०* (हि) १-अकेला। २-दुबला-पतला।
**टुनगा** पुं० (हि) [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
**टुनहाया** पुं० (हि) [स्त्री० टुनहाई] दे० 'टोनहा'।
**टुभकना** *क्रि०* (हि) १-हलका डङ्क मारना। २-आहिस्ता से कोई चुभता या व्यंगपूर्ण बात कहना।
**टुलकना** *क्रि०* (हि) टुलकना।
**टूँक** पुं० (हि) टूक। टुकड़ा।
**टूँगना** *क्रि०* (हि) थोड़ा थोड़ा काट कर खाना।
**टूँड** पुं० (हि) [स्त्री० टूँडी] १-कीड़ों के मुंह के आगे निकली हुई दो पतली नलियां जिन्हें धंसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २-जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के सिरे पर निकला हुआ नुकीला भाग। ३-सांग।
**टूअर** *वि०* (हि) बिना मां का (बच्चा)।
**टूक** पुं० (हि) टुकड़ा। खण्ड।
**टूकर** पुं० दे० 'टुकड़ा'।
**टूका** पुं० (हि) १-टुकड़ा। खण्ड। २-रोटी का चौथाई हिस्सा। ३-भिक्षा।
**टूट** *क्रि०* (हि) टूटा हुआ। खण्डित। स्त्री० १-टूटकर अलग हुआ अंश। खण्ड। २-टूटने का भाव। ३-भूल से छूटा हुआ वह शब्द अथवा वाक्य जो पुस्तक के किनारे पर पीछे से लिखा जाता है।
**टूटना** *क्रि०* (हि) १-टुकड़े-टुकड़े होना। २-किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३-सिलसिला बन्द हो

जाना। ४-किसी वस्तु पर सहसा झपटना। ५-एकबारगी बहुत सा आपड़ना। ६-अचानक धावा करना। ७-अकस्मात् प्राप्त होना। ८-पृथक होना ९-सम्बन्ध छूटना। १०-चलता न रहना। ११-युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में आना। १२-शरीर में ऐंठन या तनाव के लिए पीड़ा होना। १३-टोटा या घाटा होना। १४-पूरे वसूल न होना। १५-फल उतरना।

**टूटा** *वि०* हिं) [*स्त्री०* टूटी] १-टुकड़े किया हुआ। २-दुबला। ३-निर्धन।

**टूठना** *क्रि०* (हि) सन्तुष्ट होना या करना।

**टूठनि** *स्त्री०* (हि) सन्तोष।

**टूना** पुं० (हि) टोना।

**टूम** *स्त्री०* (हि) आभूषण। गहना।

**टूल** *स्त्री०* (अं० स्टूल) छोटी तिपाई जो बैठने या छोटी मोटी चीजें रखने के काम में आती है।

**टूसा** पुं० (हि) १-सूत। २-पाकर का फूल। ३-टुकड़ा

**टूसी** *स्त्री०* (हि) बिना खिला हुआ फूल। कली।

**टें** *स्त्री०* (हि) तोते की बोली।

**टेंट** *स्त्री०* (हि) १-कमर में लिपटी हुई धोती की ऐंठन जिसमें कभी-कभी रुपया-पैसा भी रखते हैं। २-कपास की ढोंढ़। ३-करील का फल। ४-पशुओं का एक प्रकार का घाव।

**टेंटर** पुं० (हि) विकार के कारण आँख में उभरा हुआ मांस।

**टेंटी** *स्त्री०* (हि) करील का फल। *वि०* १-झगड़ालू। २-चिड़-चिड़ा।

**टेंटुवा** पुं० (हि) १-गला। घेंगड़ा।

**टेंटें** *स्त्री०* (हि) १-व्यर्थ की बात। बकवाद। २-तोते की बोली।

**टेक** *स्त्री०* (हि) १-चाँड़। [illegible]। २-सहारा। अवलम्ब ३-बैठने का स्थान। ४-ऊँचा टीला। ५-हठ। जिद। ६-बान। आदत। ७-गीत का पहला पद। स्थायी।

**टेकड़ी** *स्त्री०* (हि) टीला।

**टेकन** पुं० (हि) (*स्त्री०* टेकनी) टेक। सहार। थूनी।

**टेकना** *क्रि०* (हि) १-सहारे के लिए की गई वस्तु पर भार रखना। २-सहारा लेना। ३-सहारे के लिए थामना या पकड़ना। ४-हाथ का सहारा लेना। ५-हठ करना।

**टेकर, टेकरा** *स्त्री०* (हि) (*स्त्री०* टेकरी) १-टीला। २-छोटी पहाड़ी।

**टेकला** *स्त्री०* (हि) रट। धुन।

**टेकान** *स्त्री०* (हि) १-टेक। चाँड़। २-आड़। ३-वह ऊँचा स्थान जहाँ बोझ रखने वाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं।

**टेकाना** *क्रि०* (हि) १-उठाकर लेजाने में सहारा देने के लिए थामना। २-उठने-बैठने में सहारा देना।

**टेकानी** *स्त्री०* (हि) पहिये को रोकने की लोहे की कील

**टेकी** पुं० (हि) १-दृढ़-प्रतिज्ञ। २-हठी। जिद्दी।

**टेकुआ** पुं० (हि) चरखे का तकला।

**टेकुरी** *स्त्री०* (हि) तकली।

**टेटका** पुं० (हि) कान का एक गहना।

**टेढ़** *स्त्री०* (हि) टेढ़ापन। वक्रता। *वि०* टेढ़।

**टेढ़-बिड़ङ्गा** *वि०* (हि) टेढ़ामेढ़ा।

**टेढ़ा** *वि०* (हि) (*स्त्री०* टेढ़ी) १-जो सीधा न हो। वक्र कुटिल। २-तिरछा। ३-कठिन। ४-उद्धत। उजड्ड

**टेढ़ाई** *स्त्री०* (हि) टेढ़ापन।

**टेढ़ापन** पु० (हि) टेढ़ा होने का भाव। वक्रता।

**टेढ़ामेढ़ा** *वि०* (हि) १-कुटिल। वक्र। २-मुश्किल। कठिन।

**टेढ़े** *क्रि० वि०* (हि) घुमाव-फिराव के साथ। तिरछे.

**टेना** *क्रि०* (देश) १-हथियार से तेज करना। २-मूँछ के बालों को उमेठकर खड़ा करना।

**टेनी** *स्त्री०* (देश) छोटी उँगली।

**टेबुल** पुं० (अं) १-मेज। २-सारिणी।

**टेम** *स्त्री०* (हि) दीपशिखा। लौ।

**टेर** *स्त्री०* (हि) १-गाने में ऊँचा स्वर। तान। २-बुलाने का ऊँचा स्वर। पुकार। गुहार।

**टेरना** *क्रि०*(हि) १-ऊँचे स्वर से गाना। २-पुकारना

**टेरी** *स्त्री०* (हि) शाखा। टहनी।

**टेलिग्राफ** पुं० (अं) वह यंत्र जिसके द्वारा सांकेतिक ध्वनि से दूर देश में समाचार भेजा जाता है।

**टेलिग्राम** पुं० (अं) तार द्वारा भेजी हुई खबर।

**टेलिप्रिंटर** पुं० (अं) यन्त्र विशेष जिसमें तार द्वारा आए हुए समाचार स्वयं टंकण-यन्त्र द्वारा मुद्रित हो जाते हैं। दूर-मुद्रक।

**टेलिफोन** पुं० (अं) वह यन्त्र जिसके द्वारा स्थान से कही हुई बात दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ती है। दूर-भाष।

**टेलिविजन** पुं० (अं) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूरस्थ पदार्थों अथवा व्यक्तियों के रूप या प्रतिबिंब दिखाई देता है। दूरप्रतिभास।

**टेलिस्कोप** पुं० (अं) एक तरह की दूरबीन जिससे दूर की चीजें बड़े आकार की दिखाई देती हैं।

**टेव** *स्त्री०* (हि) आदत। बान।

**टेवना** *क्रि०* दे० 'टेना'।

**टेवा** पुं० (हि) जन्मकुण्डली।

**टेवैया** *वि०* (हि) १-टेने वाला। हथियार पर धार लगाने वाला।

**टेसुआ, टेसू** पुं० (हि) १-पलाश का फूल। २-मनुष्य की आकृति का एक खिलौना जिसे लड़के शारदीय नवरात्र के दिनों में लेकर गाते फिरते हैं। ३-इस उत्सव में गाया जाने वाला गीत।

**टैंक** पुं० (अं) १-पानी का हौज। २-छोटा तालाव। ३-युद्ध कार्य में काम आने वाली मोटरकार जैसी गाड़ी जिसपर तोपें लगी रहती हैं।
**टैंटी** वि०, स्त्री० पुं० दे० 'टेंटी'।
**टैक्स** पुं०(अं) कर। महसूल।
**टैक्सी** स्त्री० (अं) किराये पर चलने वाली मोटरकार।
**टोंच** स्त्री० (हि) १-सिलाई। २-सिलाई का टाँका।
**टोंचना** क्रि० (हि) १-सीना। २-चुभाना।
**टोंट** स्त्री० (हि) चोंच।
**टोंटा** पुं० (हि) [स्त्री० टोंटी] १-जलपात्र में लगी हुई टोंटी। २-कारतूस।
**टोंटी** स्त्री० (हि) १-जल-पात्र विशेष जिसमें टोंटी लगी हो। २-नाली। मोरी। ३-पशुओं का थूथन।
**टोक** स्त्री० (हि) १-टेकने की क्रिया या भाव। २-किसी के टोकने से नजर का होने वाला अनिष्ट परिणाम। ३-उक्त प्रकार से कही हुई कोई ऐसी बात जो किसी कार्य में बाधक होने अथवा नजर लगने की समझी जाती है।
**टोकन** पुं० (अं) धातु या गत्ते का संकेतसूचक टुकड़ा जिसे दिखा कर किसी को कोई वस्तु पाने अथवा कार्य करने का अधिकार प्राप्त होता है।
**टोकना** क्रि० (हि) १-चलते समय यात्रा के विषय में पूछताछ करना। २-किसी बात की याद दिलाना। ३-अशुद्धि पर बोल उठना। ४-एतराज करना। पुं० [स्त्री० टोकनी] १-टोकरा। झाबा। २-एक तरह का हंडा (बरतन)।
**टोकरा** पुं० (हि) [स्त्री० टोकरी] बड़ी टोकरी। खांचा झाबा।
**टोकरी** स्त्री० (हि) छोटा टोकरा। झपोली।
**टोट** स्त्री० (हि) १-कमी। त्रुटि। २-अभाव।
**टोटक-हाया** पुं० (हि) [स्त्री० टोटकहाई] जादू-टोना करने वाला।
**टोटका** पुं० (हि) कोई दैवी बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिए कार्य। टोना।
**टोटा** पुं० (हि) १-खंड। टुकड़ा। २-घाटा। हानि। ३-कमी। त्रुटि। ३-अभाव।
**टोड** पुं० (हि) उदर। पेट।
**टोडिक** पुं० (हि) पेटू।
**टोडिस** वि० (?) उपद्रवी। नट-खट।
**टोडी** पुं० (अं) नीच और तुच्छ प्रकृति का व्यक्ति। स्त्री० (हि) एक रागिनी।
**टोनहा** वि० (हि) [स्त्री० टोनही] जादू का टोना करने वाला।
**टोनहाई** स्त्री० (हि) १-जादू-टोना करने की वृत्ति या भाव। २-जादू-टोना करने वाली स्त्री।
**टोनहाया** पुं० (हि) [स्त्री० टोनहाई] जादू-टोना करने वाला व्यक्ति।
**टोना** पुं० (हि) १-मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग। जादू। २-विवाह में गाया जाने वाला एक गीत। क्रि० (हि) उँगलियों से दबाकर मालूम करना। टटोलना।
**टोप** पुं० (हि) १-बड़ी टोपी। २-लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। ३-खोद। कूंड। ४-खोल। गिलाफ। ५-बूंद। कतरा।
**टोपरी** स्त्री० (हि) टोकरी।
**टोपा** पुं० (हि) १-बड़ी टोपी। २-टोकरा। ३-टाँका।
**टोपी** स्त्री० (हि) १-सिर का पहनावा। २-ताज। ३-टोपी के आकार की गोल और गहरी वस्तु। ४-शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाने की थैली।
**टोभ** पुं० (हि) टाँका।
**टोर** स्त्री० (देश) कटारी। (हथियार)।
**टोरना** क्रि० (हि) तोड़ना।
**टोल** स्त्री० (हि) १-मण्डली। समूह। २-पाठशाला। पुं० सम्पूर्ण जाति का एक राग। पुं०(अं) मार्ग-कर
**टोला** पुं० (हि) छोटी बस्ती। मुहल्ला।
**टोली** स्त्री० (हि) १-छोटा मुहल्ला। २-समूह। झुण्ड ३-पत्थर की चौकोर पटिया या सिल।
**टोवना** क्रि० (हि) टोना। टटोलना।
**टोह** स्त्री० (हि) १-खोज। टटोल। २-खबर। देख-भाल।
**टोहक-विमान** पुं० (हि) वह विमान या वायुयान जो शत्रु की गति-विधियों का पता लगाने, सैनिक आवश्यकता अथवा पुल आदि बनाने के विचार से आसपास के भूक्षेत्र का पर्यवेक्षण करने का कार्य करता हो। (रिकानसेंस-प्लेन)।
**टोहना** क्रि० (हि) १-खोजना। तलाश करना। २-छूना।
**टोहाटाई** स्त्री० (हि) १-खोज। छान-बीन। २-देख-भाल।
**टोहिया** वि० (हि) १-टोह लगाने वाला। २-जासूस
**टोहियाना** क्रि० (हि) टोहना।
**टौंस** स्त्री० (हि) तमसा नदी।
**टौनहाल** पुं० दे० 'टाउनहाल'।
**टौरना** क्रि० (हि) १-परखना। २-पता लगाना।
**ट्रंक** पुं० (अं) लोहे की सफरी सन्दूक।
**ट्रंककाल** पुं० (अं) टेलीफोन द्वारा एक नगर से दूसरे नगर में बातचीत का काम।
**ट्रस्ट** पुं० (अं) न्यास।
**ट्रस्टी** पुं० (अं) न्यासी।
**ट्राम** स्त्री० (अं) बड़े-बड़े नगरों में बिजली की सहायता से सड़कों पर बिछी लाइनों पर चलने वाली गाड़ी।
**ट्रामगाड़ी** स्त्री० दे० 'ट्राम'।
**ट्रेडमार्क** पुं० (अं) बने हुए माल पर लगाये जाने का चिह्न।

**ट्रेन** स्त्री० (अं) रेलगाड़ी।

[शब्दसंख्या—१७७००]

# ठ

**ठ** हिन्दी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का दूसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

**ठंठ** वि० (हि) ठूँठा। सूखा (पेड़)।

**ठंठार** स्त्री० (हि) खाली। रीता।

**ठंड** स्त्री० (हि) शीत। सरदी।

**ठंडई** स्त्री० (हि) दे० 'ठंडाई'।

**ठंडा-युद्ध** पुं० (हि) भीतर ही भीतर की जाने वाली ऐसी कार्यवाही जो प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का रूप न धारण करने पर भी युद्ध के मुख्य उद्देश्य सफल या सिद्ध करती हो। शीतयुद्ध। (कोल्ड-वार)।

**ठंढक** स्त्री० (हि) १-शीत। जाड़ा। २-तरी। ३-सन्तोष। तृप्ति। ४-उपद्रव की शान्ति।

**ठंढा** वि० (हि) १-शीतल। सर्द। २-बुझा हुआ। ३-शान्त। ४-नामर्द। ५-धीर। गम्भीर। ६-सुस्त ७-चुपचाप रहने वाला। ८-मृत। मरा हुआ।

**ठंढाई** स्त्री० (हि) १-शरीर की गरमी शान्त करने के लिए मसालों द्वारा तैयार किया गया पेय। २-भांग

**ठंढी** स्त्री० दे० 'ठंडा'।

**ठ** पुं०(सं) १-शिव। २-महाध्वनि। ३-चन्द्र-मण्डल ५-शून्य। ६-गोचर।

**ठई** स्त्री० (?) स्थिति।

**ठउर** पुं० (हि) ठौर। जगह।

**ठक** पुं० (हि) ठोंकने का शब्द। वि० भौचक्का।

**ठकठक** स्त्री० (हि) ठोंकने का शब्द।

**ठकठकाना** क्रि० (हि) १-खटखटाना। २-ठोंकना-पीटना। ३-विरोध करना।।

**ठकठकिया** वि० (हि) झगड़ालू।

**ठकठकेला** पुं० (हि) १-धक्का-धक्की। २-झगड़ा-टंटा

**ठकठोआ, ठकठौवा** स्त्री० (हि) १-करताल। २-करताल बजाकर भीख माँगना। ३-छोटी नाव।

**ठकमुरी** स्त्री० दे० 'ठगमूरी'।

**ठकुरई** स्त्री० दे० 'ठकुराई'।

**ठकुर-सुहाती** स्त्री० (हि) खुशामद।

**ठकुराइत** स्त्री० दे० 'ठकुरायत'।

**ठकुराइन** स्त्री० (हि) ठकुरानी।

**ठकुराइस** स्त्री० दे० 'ठकुराई'।

**ठकुराई** स्त्री० (हि) १-प्रभुत्व। स्वामित्व। २-शासनाधीन प्रदेश। राज्य। ३-उच्चता। बड़प्पन।

**ठकुरानी** स्त्री० (हि) ठाकुर की स्त्री। जमींदार की स्त्री। २-रानी। ३-मालकिन। ४-क्षत्राणी।

**ठकुराय** पुं० (हि) क्षत्रियों का एक भेद।

**ठकुरायत** स्त्री० (हि) १-आधिपत्य। प्रभुत्व। २-वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो।

**ठकोरी** स्त्री० (हि) सहारा लेने की लकड़ी। वैरागिन

**ठक्कर** स्त्री० दे० 'टक्कर'।

**ठग** पुं० (हि) (स्त्री० ठगनी, ठगिन) १-धोखा देकर लोगों का धन हरने वाला व्यक्ति। २ धूर्त। छली

**ठगई** स्त्री० (हि) १-ठगने का काम। २-छल। धोखा

**ठगण** पुं० (सं) पिङ्गल में पाँच मात्राओं का एक गण।

**ठगना** क्रि० (हि) १-धोखा देकर माल लूटना। छल करना। ३-सौदा बेचने में बेईमानी करना। ३-धोखा खाना। ५-चक्कर में आना।

**ठगनी** स्त्री० (हि) १-ठग की स्त्री या ठगने वाली स्त्री। २-कुटनी।

**ठगपना** पुं० (हि) १-ठगने का काम या भाव। २-छल। धूर्तता।

**ठगमूरी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की नशीली जड़ी-बूटी जिससे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटते हैं।

**ठगमोदक** पुं० दे० 'ठगलाडू'।

**ठगयारीमूरि** स्त्री० दे० 'ठगमूरी'।

**ठगलाडू** पुं० (हि) नशीले लड्डू जिसे खिलाकर ठग पथिकों को बेहोश करते थे।

**ठगवाइ** पुं० दे० 'ठग'।

**ठगवाना** क्रि० (हि) दूसरे से धोखा कराना।

**ठगविद्या** स्त्री० (हि) धोखा देने का हुनर। धूर्तता

**ठगहाई, ठगहारो, ठगाई** स्त्री० (हि) ठगपना।

**ठगाठगी** स्त्री० (हि) धोखेबाजी। वंचकता।

**ठगाना** क्रि० (हि) ठगा जाना।

**ठगाही** स्त्री० (हि) ठगी।

**ठगिन, ठगिनी** स्त्री० (हि) १-धोखा देकर लूटने वाली स्त्री। २-ठग की स्त्री। ३-चालबाज़ स्त्री।

**ठगिया** पुं० दे० 'ठग'।

**ठगी** स्त्री० (हि) १-ठग का काम। २-ठगने का भाव ३-धोखेबाजी।

**ठगोरी, ठगौरी** स्त्री० (हि) ठगों की माया जिससे सुध-बुध भुला देते हैं। मोहिनी। वि० ठगने वाली

**ठट** पुं० (हि) १-बहुत सी वस्तुओं का समूह। २-झुण्ड। पंक्ति।

**ठटकारी** स्त्री० (हि) वह टट्टी जिसकी ओट में शिकार किया जाता है।

**ठटकीला** वि० (हि) तड़क-भड़क वाला।

**ठटना** क्रि० (हि) १-ठहराना। निश्चित करना। २-सजाना। ३-(राग) छेड़ना। ४-अड़ना। ५-

सजना।
**ठटनि** स्त्री० (हि) बनाव। रचना।
**ठटरी** स्त्री० (हि) १-शरीर का ढाँचा। २-ढाँचा। ३-अरथी।
**ठट्ठ** पुं० दे० 'ठाट'।
**ठट्ट** पुं० दे० 'ठट'।
**ठट्ठी** स्त्री० दे० 'ठठरी'।
**ठट्ठई** स्त्री० (हि) हँसी। परिहास।
**ठट्ठर** पुं० दे० 'ठठरी'।
**ठट्ठा** पुं० (हि) परिहास।
**ठठई** स्त्री० दे० 'ठट्ठई'।
**ठठकना** क्रि० (हि) १-ठिठकना। २-स्तम्भित होजाना
**ठठकोला** वि० (हि) भड़कदार। ठाठदार।
**ठठना** क्रि० (हि) १-ठहराना। निश्चित करना। २-सजाना। ३-अड़ना। डट जाना। ४-सुसज्जित होना।
**ठठनि** स्त्री० (हि) १-रचना। बनावट। २-ठाट। सजावट।
**ठठरी** स्त्री० दे० 'ठटरी'।
**ठठाना** क्रि० (हि) १-मारना। पीटना। २-जोर से हँसना।
**ठठेर-मंजरिका** स्त्री० (हि) ठठेरे की बिल्ली।
**ठठेरा** पुं० (हि) (स्त्री० ठठिरिन, ठठेरिन, ठठेरी) धातु के बरतन बनाने वाला। कसेरा।
**ठठेरी** स्त्री० (हि) १-ठठेरे की स्त्री। २-ठठेरा जाति की स्त्री। ३-ठठेरे का नाम।
**ठठोल** पुं० (हि) [स्त्री० ठठोलिनी] १-विनोदप्रिय। मसखरा। २-हँसी। ठठोली।
**ठठोली** स्त्री० (हि) मजाक। परिहास।
**ठड़ा, ठढ़ा** वि० (हि) खड़ा।
**ठढ़ियाना** क्रि० (हि) खड़ा करना।
**ठन** स्त्री० (हि) धातुखंड पर आघात का शब्द।
**ठनक** स्त्री० (हि) १-तबला, मृदंग आदि की ध्वनि। २-टीस। चसक।
**ठनकना** क्रि० (हि) १-ठन-ठन शब्द होना। २-टीस मारना।
**ठनका** पुं० (हि) १-धातु पर आघात पड़ने या बजने का शब्द। २-आघात। ठोकर। ३-हलकी पीड़ा होना।
**ठनकाना** क्रि०(हि) आघात करके शब्द उत्पन्न करना
**ठनकार** पुं० (हि) ठन-ठन शब्द।
**ठन-गन** स्त्री० (हि) मङ्गल अवसरों पर नेगियों या पुरस्कार पाने वालों का अधिक पाने के लिए हठ।
**ठनठन-गोपाल** पुं०(हि) १-निःसार वस्तु। २-निर्धन मनुष्य।
**ठनठनाना** क्रि० (हि) ठन-ठन शब्द उत्पन्न करना या बजना।
**ठनना** क्रि० (हि) (किसी कार्य का) तत्परता या दृढ़ संकल्प सहित आरम्भ करना। छिड़ना। २-मन में स्थिर होना। ३-जमना। लगना। ४-उद्यत होना।
**ठनाक, ठनाका** पुं० (हि) ठनकार।
**ठनाठन** क्रि० वि० (हि) ठन-ठन शब्द सहित।
**ठप** वि० (हि) बन्द या रुका हुआ।
**ठप्का** पुं० (हि) धक्का। ठेस। ठोकर।
**ठपना** क्रि० (हि) १-ठप्पा लगाना। २-संयुक्त करना। ३-मन में दृढ़ होना।
**ठप्पा** पुं० (हि) १-साँचा या छापा जो चिह्न विशेष लगाने के काम आता है। २-साँचे से उभड़ी हुई छाप।
**ठमक** स्त्री०(हि) १-चलते-चलते रुक जाने का भाव। रुकावट। २-चलने में ठसक।
**ठमकना** क्रि० (हि) चलते-चलते ठहर जाना। ठिठकना। २-अंग मरोड़ते या मटकते हुए लचक के साथ चलना।
**ठमकाना, ठमकारना** क्रि०(हि) चलते-चलते रोकना। ठहराना।
**ठयऊ** पुं० (हि) ठौर। स्थान।
**ठयना** क्रि० (हि) १-ठानना। २-पूरी तरह से करना। ३-निश्चित करना। ४-स्थापित करना। ५-नियोजित करना। लगाना। ६-दृढ़ संकल्प सहित आरंभ करना। ७-मन में दृढ़ होना। ८-ठहरना। जमना। ९-प्रयुक्त होना।
**ठरगजी** स्त्री० (हि) बहुत की नजद।
**ठरना** क्रि० (हि) १-शीत में ठिठुरना। २-बहुत अधिक ठण्ड पड़ना।
**ठराना** क्रि० (हि) १-ठहराना। २-ठरना।
**ठरुआ** वि० (हि) जिसे पाला मार गया हो (फसल)।
**ठर्रा** पुं० (हि) १-मोटा सूत। २-बड़ी अधपकी ईंट ३-एक तरह की सस्ती शराब।
**ठलाना** क्रि० (हि) १-निकराना। २-निकलवाना।
**ठवन** स्त्री० (हि) १-अंग संचालन का ढङ्ग। २-बैठने या खड़े होने का ढंग। (पोज)।
**ठवना** क्रि० दे० 'ठयना'।
**ठवनि** स्त्री० दे० 'ठवन'।
**ठवर** पुं० दे० 'ठौर'।
**ठस** वि० (हि) १-ठोस। कड़ा। २-जो भीतर से पोला या खाली न हो। ३-घनी या गफ बुनावट (कपड़ा) ४-दृढ़। मजबूत। ५-भारी। वजनी। ६-सुस्त। ७-(रुपया) जिसमें झनकार ठीक न हो। ८-सम्पन्न। ९-कृपण। कंजूस। १०-हठी। जिद्दी।
**ठसक** स्त्री० (हि) १-अभिमानपूर्ण भाव। नखरा। २-दर्प। शान।
**ठसकदार** वि०(हि) १-घमण्डी। २-तड़क-भड़क वाला
**ठसकना** क्रि० (हि) पटकना। ठूठना।

**ठसका** पुं० (हिं) १-सूखी खांसी। २-धक्का। ठोकर
**ठसाठस** क्रि० वि० (हि) ठूंस ठूंसकर भरा हुआ।
**ठस्सा** पुं० (देश) १-ठसक। २-घमण्ड। अहङ्कार ३-शान। ठाटबाट।
**ठहक** स्त्री० (हि) नगाड़े का शब्द।
**ठहना** क्रि० (हि) १-घोड़े का हिनहिनाना। २-घण्टे का बजना। ३-बनाना। संवारना।
**ठहर** पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-लीपा हुआ रसोई का स्थान। चौका।
**ठहरना** क्रि० (हि) १-रुकना। थमना। २-टिकना। डेरा डालना। ३-स्थिर रहना। ४-नीचे न गिरना ५-नष्ट न होना। ६-कुछ दिन काम देने लायक रहना। ७-घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। ८-धीरज रखना। ९-प्रतीक्षा करना। १०-निश्चित होना।
**ठहराई** स्त्री० (हि) १-ठहराने की क्रिया या मजदूरी २-कब्जा।
**ठहराऊ** वि० (हि) १-ठहराने वाला। २-टिकाऊ। मजबूत।
**ठहराना** क्रि०(हि) १-चलने से रोकना। २-टिकाना ३-अड़ना। ४-स्थिर रखना। ५-किसी होते हुए काम को रोकना। ६-निश्चित या तै करना।
**ठहराव** पुं० (हि) १-ठहराने की क्रिया या भाव। २-गति का अभाव। स्थिरता। ३-कोई बात निश्चित होने का भाव। समझौता। (एग्रिमेंट)।
**ठहरौनी** स्त्री० (हि) विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का निश्चय या करार।
**ठहाका** पुं० (हि) अट्टहास। कह-कहा।
**ठहियाँ** स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
**ठाँ** स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान। पुं० (हि) बन्दूक की आवाज।
**ठाँई** स्त्री० (हि) स्थान। जगह। वि० पास। समीप। अव्य० किसी की ओर। प्रति।
**ठाँउ** स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान। वि० समीप। पास।
**ठाँयँ** पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-समीप। पास ३-बन्दूक छूटने का शब्द।
**ठाँयँठाँयँ** स्त्री० (हि) १-बन्दूक छूटने का शब्द। २-वाक्ययुद्ध।
**ठाँव** स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
**ठाँसना** क्रि० (हि) दबाकर प्रविष्ट करना। २-कसकर घुसेड़ना। ३-रोकना। मना करना। ४-ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।
**ठाह, ठाऊँ** पुं० (हि) ठाँव। जगह।
**ठाकुर** पुं० (हि) [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १-देवता। देवमूर्त्ति। २-ईश्वर। भगवान। ३-पूज्य-व्यक्ति। ४-किसी प्रदेश का नायक या अधिपति। ५-सरदार। ५-जमींदार। ६-क्षत्रियों की उपाधि। ७-स्वामी। मालिक। ८-नाइयों की उपाधि।
**ठाकुर-द्वारा** पुं० (हि) मंदिर। देवालय।
**ठाकुर-बाड़ी** स्त्री० (हि) देवस्थान। मंदिर।
**ठाकुर-सेवा** स्त्री० (हि) १-देवता का पूजन। २-किसी मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति।
**ठाकुरी** स्त्री० (हि) १-स्वामित्व। आधिपत्य। २-शासन। ३-दे० 'ठकुराई'।
**ठाट** पुं० (हि) १-फूँस और घास का बना ढाँचा जो आड़ करने या छाने के काम आता है। २-ढाँचा। पंजर। ३-रचना। बनावट। ४-तड़क-भड़क। ५-मजा। आराम। ६-ढङ्ग। शैली। ७-आयोजन। समारम्भ। अनुष्ठान। ८-माल। सामान ९-उपाय। युक्ति। १०-सितार का तार। ११-[स्त्री० ठाटी] समूह। भुण्ड। १२-अधिकता। बहुतायत।
**ठाटना** क्रि० (हि) १-बनाना। रचना। २-अनुष्ठान करना। ३-सयोजित करना। ४-सवार। सजाना।
**ठाटबाट** पुं० (हि) १-सजधज। २-तड़क-भड़क।
**ठाटर** पुं०(हि) १-टट्टर। टट्टी। २-ठठरी। पंजर। ३-ढाँचा। ४-कबूतर आदि बैठने की छतरी। ५-सजावट। सिङ्गार।
**ठाटी** स्त्री० (हि) ठट्ट। समूह।
**ठाठ** पुं० दे० 'ठाट'।
**ठाठना** क्रि० (हि) १-निर्मित करना। बनाना। २-अनुष्ठान करना। ३-सजाना। ४-वेष बनाना।
**ठाठबाट** पुं० दे० 'ठाटबाट'।
**ठाठर** पुं० दे० 'ठाटर'।
**ठाढ़ा** वि० (हि) [स्त्री० ठढ़ी] १-खड़ा। २-पूरा। समूचा।
**ठाढ़ेश्वरी** पुं० (हि) खड़े तपस्या करने वाले साधु।
**ठादर** पुं० (देश) झगड़ा। लड़ाई।
**ठान** स्त्री० (हि) १-अनुष्ठान। समारम्भ। २-छेड़ा हुआ काम। ३-दृढ़ निश्चय। ४-चेष्टा। अन्दाज।
**ठानना** क्रि० (हि) १-करने का दृढ़-निश्चय करना। २-तत्परता के साथ कार्य आरम्भ करना। ३-पक्का करना।
**ठाना** क्रि० (हि) १-ठानना। २-मन में ठहराना। ३-स्थापित करना।
**ठाम** स्त्री० (हि) १-स्थान। जगह। २-मुद्रा। अन्दाज
**ठायँ** स्त्री० (हि) ठाँव। स्थान।
**ठार** पुं० (हि) १-कड़ा जाड़ा। २-हिम। पाला।
**ठाल** स्त्री० (हि) १-काम-धन्धे का अभाव। बे-रोजगारी। २-अवकाश। फुरसत। वि० खाली। निठल्ला
**ठाली** वि० (हि) १-निठल्ला। २-खाली। रिक्त।
**ठावना** क्रि० दे० 'ठाना'।
**ठाह** स्त्री० (हि) १-ठहने की क्रिया या भाव। १-विलम्बित (सङ्गीत)। २-दृढ़निश्चय।

**ठाहना** क्रि० (हि) मन में दृढ़ निश्चय करना।
**ठाहर** पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। डेरा।
**ठाहरना** क्रि० (हि) ठहरना।
**ठाहरु** पुं० दे० 'ठाहर'।
**ठाहरूपक** पुं० (हि) सात मात्राओं का एक मृदङ्ग का ताल।
**ठिगना** वि० (हि) छोटे कद का। नाटा।
**ठिक** वि० (हि) दे० 'ठीक'। स्त्री० (हि) स्थिरता।
**ठिक-ठान** पुं० (हि) ठौर-ठिकाना।
**ठिक-ठैन, ठिक-ठैना** पुं० (हि) १-ठाटबाट। शोभा। प्रबन्ध।
**ठिकना** क्रि० (हि) १-ठिठकना। ठहरना। रुकना।
**ठिकरा** पुं० दे० 'ठीकरा'।
**ठिकरौर** पुं० (हि) वह भूमि जहाँ बहुत से खपड़े, ठीकरे आदि पड़े हों।
**ठिकाई** स्त्री० (हि) ठीक होने की अवस्था या भाव।
**ठिकाना** क्रि० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। ३-जीविका का स्थान। ४-यथार्थ की सम्भावना। प्रमाण। ५-आयोजन। ६-पारावार। क्रि० ठहरना।
**ठिकानेदार** पुं० (हि) वह व्यक्ति जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।
**ठिठक** स्त्री० (हि) स्तंभित होना।
**ठिठकना** क्रि० (हि) १-चलते-चलते एकाएक रुक जाना। २-स्तब्ध होना।
**ठिठरना, ठिठुरना** क्रि० (हि) सर्दी से ऐंठना या सिकुड़ना।
**ठिनकना** क्रि० (हि) १-छोटे बच्चों का ठहर-ठहर कर रोना। २-रोने का बहाना करना।
**ठिया** पुं० (हि) १-गाँव की सीमा का चिह्न। हद का पत्थर। २-चाँड़। थूनी। ३-दे० 'ठीहा'।
**ठिर** स्त्री० (हि) अधिक सरदी या शीत।
**ठिरना** क्रि० (हि) १-सर्दी से ठिठुरना। २-अत्यन्त ठंड पड़ना।
**ठिलना** क्रि० (हि) १-ठेला या ढकेला जाना। २-बलपूर्वक बढ़ना। ३-पैठना।
**ठिलाठिल** क्रि० वि० (हि) एक दूसरे पर धक्का देते हुए।
**ठिलिया** स्त्री० (हि) छोटा घड़ा। गगरी।
**ठिलुआ** वि० (हि) निठल्ला। बेकाम।
**ठिल्ला** पुं० (हि) [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] मिट्टी का घड़ा।
**ठिहार** वि० (हि) विश्वास करने योग्य।
**ठिहारी** स्त्री० (हि) निश्चय। ठहराव। वि० १-पक्की। स्थायी। २-न टूटने वाली।
**ठीक** वि० (हि) १-जैसा हो वैसा। यथार्थ। २-उचित। उपयुक्त। ३-शुद्ध। सही। ४-जो अच्छी दशा में हो। अच्छा। ५-जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६-सीधे रास्ते पर आया हुआ। ७-स्थिर। पक्का। क्रि० वि० (हि) जैसा चाहिये वैसा। उचित रीति से। पुं० १-स्थिर और असंदिग्ध बात। २-पक्का आयोजन। स्थिर प्रबन्ध ३-जोड़। योग।
**ठीक-ठाक** पुं० (हि) १-निश्चित प्रबन्ध। आयोजन २-जीविका का प्रबन्ध। ३-ठौर-ठिकाना। ४-निश्चय। वि० अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार। काम-लायक।
**ठीकरा** पुं० (हि) [स्त्री० ठीकरी] १-मिट्टी के बरतन का टूटा-फूटा टुकड़ा। २-बहुत पुराना बरतन। ३-भिक्षा-पात्र।
**ठीकरी** स्त्री० (हि) १-छोटा ठीकरा। २-चिलम पर रखने का मिट्टी का तवा।
**ठीका** पुं० (हि) १-कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम निर्धारित समय में पूरा करने का जिम्मा लेना। (कॉन्ट्रैक्ट)। २-कुछ समय के लिए किसी वस्तु को इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा। पट्टा।
**ठीका-पत्र** पुं० (हि) वह लेख्य जिसमें किसी ठीके से सम्बद्ध ऐसी शर्तें लिखी हों जिनका पालन दोनों ओर (पक्षों) के लिए आवश्यक हो। सम्विदापत्र। (कॉन्ट्रैक्ट डीड)।
**ठीकेदार** पुं० (हि) [स्त्री० ठीकेदारिन]। ठीका लेने वाला व्यक्ति। (कॉन्ट्रैक्टर)।
**ठीकेदारी** स्त्री० (हि) ठीकेदार का काम।
**ठीसना, ठीसना** क्रि० (हि) [illegible] करना।
**ठीलना** क्रि० दे० 'ठेलना'।
**ठीवन** पुं० (सं) थूक। [illegible]।
**ठीहँ** स्त्री० (हि) घोड़े के हिनहिनाने का शब्द।
**ठीहा** पुं० (हि) १-भूमि में गड़ा लकड़ी का गड़ा हुआ कुन्दा जिस पर रख कर लोहार, बढ़ई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २-दूकानदार के बैठने का स्थान। ३-हद। सीमा।
**ठुंठ** पुं० दे० 'ठूंठ'।
**ठुकना** क्रि० (हि) १-ठोका जाना। पिटना। आघात पाकर धंसना। गड़ना। ३-मार खाना। ४-कुश्ती आदि में हारना। ५-हानि होना। ६-काठ में ठोका जाना। ७-दाखिल होना।
**ठुकराना** क्रि० (हि) १-ठोकर या लात मारना। २-पैर से मार कर किनारे करना।
**ठुकवाना** क्रि० (हि) १-ठोकने का काम अन्य से कराना। २-गड़वाना। धंसवाना।
**ठुड्डी** स्त्री० (हि) १-चिबुक। ठोड़ी। २-भूना हुआ

दाना जो फूटकर खिलाना हो।
**ठुनकना** क्रि० (हिं) १-बच्चों के समान रोना। २-उँगली से ठोंक लगाना।
**ठुनकाना** क्रि० (हिं) उँगली से हलकी चोट पहुँचाना
**ठुमक** वि० (हिं) १-बच्चों के समान कुछ-कुछ उछल-कूद या ठिठक लिये हुए (चाल)। २-ठसक भरी (चाल)।
**ठुमकना** क्रि० (हिं) १-बच्चों का उमंग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २-नाचने में पैर पटकते हुए चलना। (जिससे घुंघरू बजें)।
**ठुमका** वि० स्त्री० [ठुमकी] दे० 'ठिगना'।
**ठुमकारना** क्रि० (हि) पतंग की डोर में झटका देना
**ठुमकी** स्त्री० (देश) १-हाथ या उंगली से खींचकर दिया हुआ झटका (पतंग)। २-ठिठक। रुकावट। ३-छोटी खरी पूरी।
**ठुमरी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार का चलता गाना।
**ठुरियाना** क्रि० (हि) सर्दी से ठिठुर जाना।
**ठुर्री** स्त्री० (हिं) भूनने पर न खिलने वाला दाना।
**ठुसकना** क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे रोना। २-'ठुस' शब्द सहित पादना। ३-दूसरों की बात में टोकना।
**ठुसकी** स्त्री० (हि) १-शब्द रहित पाद। ३-धीरे-धीरे रोना।
**ठुसना** क्रि० (हि) कसकर भरा जाना।
**ठुसाना** क्रि० (हि) १-कसकर भरवाना। २-खूब पेट-भर खिलाना।
**ठूंग** स्त्री० (हिं) १-चोंच। ठोर। २-चोंच से मारने या प्रहार करने की क्रिया।
**ठूँठ** पुं० (हि) वह पेड़ जिसकी डाल-पत्तियाँ टूट या कट गई हों। सूखा पेड़। २-कटा हुआ हाथ। ३-एक तरह का कीड़ा।
**ठूँठा** वि० (हि) १-टहनियों और पत्तियों रहित (पेड़)। २-बिना हाथ का।
**ठूंठिया** वि० (हि) १-लूला-लंगड़ा। २-नपुंसक।
**ठूंसना** क्रि० (हि) १-कसकर भरना। बलपूर्वक घुसाना। ३-खूब पेट भरकर खाना।
**ठेंगना** वि० (हि) स्त्री० ठेंगनी] ठिगना। नाटा।
**ठेंगा** पुं० (हिं) अँगूठा।
**ठेंठी** स्त्री० (देश) १-कान की मैल। २-शीशी बोतल आदि की डाट। काग।
**ठेक** स्त्री० (हि) १-टेक। चाँड। २-बल देकर टिकाने की वस्तु। सहारा। ३-तला। पेंदा। ४-घोड़ों की एक प्रकार की चाल। ५-छड़ी या लाठी की सामी।
**ठेकना** क्रि० (हि) १-सहारा लेना। टेकना। २-ठहरना या टिकना।
**ठेका** पुं० (हिं) १-सहारे की वस्तु। ठेक। २-ठहरने का स्थान। बैठक। ३-ढोल या तबला बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाता है। ४-तबले के साथ बजाया जाने वाला बाँयाँ। ५-धक्का ठोकर। ६-दे० 'ठीका'।
**ठेकाई** स्त्री० (हि) कपड़े के किनारे की छपाई।
**ठेकाना** क्रि० (हि) १-स्थान। २-ठहरने की जगह। ३-निवास-स्थान।
**ठेकेदार** पुं० दे० 'ठीकेदारी'।
**ठेकेदारी** स्त्री० दे० 'ठीकेदारी'।
**ठेगड़ी** पुं० (देश) कुत्ता।
**ठेगना** क्रि० (हि) १-टेकना। सहारा लेना। २-रोकना मना करना।
**ठेघना** क्रि० (हि) १-ठहराना। रोकना। २-ठहरना। रुकना।
**ठेघा** पुं० (हि) थूनी। स्तम्भ।
**ठेछना** क्रि० (हि) १-ठगना। २-छिकना।
**ठेठ** वि० (देश) १-निपट। निरा। २-शुद्ध। निर्मल। ३-खालिस। ४-जिसमें किसी तरह की बनावट न हो। ५-शुरू। आरम्भ। स्त्री० सीधी-सादी बोली।
**ठेठर** पुं० दे० 'थियेटर'।
**ठेपी** स्त्री० (देश) डाट। काग।
**ठेल** स्त्री० (हि) ठेलने की क्रिया या भाव।
**ठेल-ठाल** स्त्री० दे० 'ठेल'।
**ठेलना** क्रि० (हिं) ढकेलना।
**ठेलम-ठेल** स्त्री० (हि) एक दूसरे को ठेलने की क्रिया या भाव (बहुत से लोगों का)। क्रि० वि० कसमकस के साथ। एक दूसरे को ठेलते हुए।
**ठेला** पु० (हि) १-ठेलने की क्रिया या भाव। २-आघात। टक्कर। ३-ठेलकर चलाने की गाड़ी या बैलों द्वारा ठेली जाने वाली गाड़ी। ४-भीड़भाड़।
**ठेलाठेल, ठेलाठेली** स्त्री० (हिं) धक्कम-धक्का। रेला-पेल।
**ठेस** स्त्री० (हि) १-साधारण धक्के की चोट। २-आघात। चोट।
**ठेसना** क्रि० (हिं) १-सहारा लेना। २-ठूंसना। दबाकर भरना।
**ठैन, ठैयाँ** स्त्री० (हि) स्थान। जगह।
**ठैरना** क्रि० (हि) ठहरना।
**ठैलपैल** स्त्री० (हिं) धक्कमधक्का। रेलपेल।
**ठोंक** स्त्री० (हि) १-ठोंकने की क्रिया या भाव। २-आघात। प्रहार। ३-वह औजार जिससे दरी बुनने वाले सूत को ठोंककर ठस करते हैं।
**ठोंकना** क्रि० (हि) १-पीटना। २-मारना-पीटना। ३-धँसाना या गड़ाना। ४-(नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना। ५-बेड़ियों से जकड़ना। ६-थप-थपाना। ७-हाथ से मारकर बजाना। ८-कसकर लगाना। जड़ना। ९-खटखटाना।
**ठोंकपीट** स्त्री० (हि) ठोंकने, पीटने अथवा मारने की क्रिया या भाव।

ठोंक स्त्री० (हि) १-चोंच। २-चोंच की मार। ३-उँगली को मोड़कर मारी हुई ठोकर।
ठोंकना क्रि० (हि) १-चोंच मारना। २-उँगली को मोड़कर मारना।
ठोंगा पुं० (देश) कागज का बना हुआ एक तरह का दोना या पत्र।
ठो अव्य० (हि) संख्यावाचक शब्दों के साथ लगने वाला एक शब्द। अदद।
ठोकना क्रि० (हि) ठोंकना।
ठोकर पुं० (हि) १-वह चोट या आघात जो किसी अंग विशेषतः पैर में किसी कड़ी वस्तु के जोर से टकराने से लगे। २-रास्ते में पड़ा हुआ उभरा पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता है। ३-पैर या जूते के पंजे से किया जाने वाला आघात। ४-कड़ा आघात। धक्का। ५-जूते का अगला भाग।
ठोट वि० (हि) जड़। मूर्ख। गावदी।
ठोठरा वि० (हि) [स्त्री० ठोठरी] भीतर से खाली। पोला।
ठोड़ी, ठोढ़ी स्त्री०(हि) होठों के नीचे का गोलाई लिया हुआ भाग।
ठोर पुं० (देश) एक प्रकार की मिठाई। पुं० (हि) चोंच। २-कीड़े मकोड़े का वह अङ्ग जिससे वे काटते हैं।
ठोली स्त्री० दे० 'ठठोली'। स्त्री० (देश) रखेल स्त्री।
ठोस वि० (हि) जो भीतर से पोला या खाली न हो। ठस।
ठौसा पुं० (देश) अँगूठा। ठेंगा।
ठोहना क्रि० (हि) खोजना। पता लगाना।
ठौनि स्त्री० दे० 'ठवनि'।
ठौर पुं० (हि) १-स्थान। जगह। अवसर। मौका। २-उपयुक्त स्थान।
ठौर-ठिकाना पुं०(हि) १-पता-ठिकाना। २-रहने का स्थान। ३-बात में दृढ़ता या निश्चय।

[शब्दसंख्या—१७६६०]

# ड

ड हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का तीसरा वर्ण इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप और दो उच्चारण हैं। प्रथम 'डगण' का 'ड' और दूसरा 'लड़का' का 'ड़'।
डंक पुं० (हि) वह विषैला कांटा जो भिड़ मधुमक्खी के पीछे रहता है, जिसे धंसाकर जीवों के शरीर में जहर पहुँचाते हैं। २-कलम की जीभ (निब)। ३-दे० 'डंका'।
डंकना क्रि० (हि) गरजना।
डंका पुं० (हि) एक तरह का बड़ा नगाड़ा।
डंका-निशान पुं० (हि) वह डंका और झण्डा जो राजाओं की सवारी के आगे चलता है।
डंकिनी स्त्री० दे० 'डाकिनी'।
डंकिनी-बन्दोबस्त पुं० दे० 'दवामी-बन्दोबस्त'।
डंख पुं० दे० 'डंक'।
डंगर पु० (देश) पशु। चौपाया।
डँगरी स्त्री० (हि) १-लम्बी ककड़ी। २-एक प्रकार की चुड़ैल।
डँगवारा पुं० (हि) हल, बैल आदि की वह सहायता जिसे किसान लोग आपस में एक दूसरे को देते हैं
डँगू-ज्वर पुं०[अं० डेंगू] ज्वर विशेष जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।
डंटैया वि० (हि) घुड़कने वाला। डांटने वाला।
डँठल पुं० (हि) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।
डँठी स्त्री० (हि) १-डंठल। २-किसी वस्तु में लगा हुआ कोई लम्बा अंश।
डंड पुं० (हि) १-सोटा। डंडा। २-बाँह। हाथ-पैर के पंजों के सहारे पेट के बल की जाने वाली कसरत ४-सजा। जुरमाना। ५-घाटा। ६-समय का परिमाण जो २४ मिनट का होता है।
डंडक पुं० दे० 'दंडक'।
डंडना क्रि० (हि) दंड देना।
डंडपेल पुं० (हि) अधिक डंड लगाने वाला पहलवान
डंडवत पुं० दे० 'दंडवत्'।
डंडवा पुं० (हि) कमर। कटि।
डंडवारा पुं० (हि) [स्त्री० डंडवारी] १-खुली हुई नीची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिए बनाई जाती है। २-दक्षिण की वायु।
डँडवी पुं० (देश) दण्ड का जुरमाना देने वाला।
डँड़हरा स्त्री० (देश) एक प्रकार की मछली। पुं० (स्त्री० डँड़हरी) रोक के लिए लगाया हुआ लकड़ी का लम्बा डण्डा।
डंडा पुं० (हि) १-लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा। २-मोटी और बड़ी छड़ी। सोटा। ३-चारदीवारी। डाँड।
डंडाकरन पुं० (हि) दण्डक वन।
डंडा-डोली स्त्री० (हि) लड़कों का एक खेल।
डंडा-बेड़ी स्त्री० (हि) एक प्रकार की बेड़ी जो अपराधी के पैरों में डाली जाती है।
डंडाल पुं० (हि) नगारा। दुन्दुभी।
डँड़िया स्त्री० (हि) १-ऐसी साड़ी जिसमें धारियों के रूप में गोटे टंगे हों। २-गेहूँ के पौधे की लम्बी सींक जिसमें बाल लगी हो। पुं० महसूल उगाहने

वाला।
**डँड़ियाना** क्रि० (हिं) दो कपड़ों को लम्बाई की ओर से सीना।
**डंडी** स्त्री० (हिं) १-छोटी, सीधी और पतली छड़ी २-किसी वस्तु का वह लम्बा पतला भाग, जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। मुठिया। हत्था। ३-तराजू की लकड़ी। जिसमें पलड़े बँधे जाते हैं। डाँडी। ४-लम्बा डण्ठल जिसमें फल-फूल लगा होता है। नाल ५-आरसी नामक गहने का वह छल्ला जो उँगली में पड़ा रहता है। ६-झप्पान नामक एक पहाड़ी सवारी। ७-दण्ड धारण करने वाला संन्यासी। दण्डी। वि० चुगलखोर।
**डँडोरना** क्रि० (हिं) ढूँढ़ना। खोजना।
**डंकना** क्रि० (हिं) जोर से चिल्लाना या रोना।
**डंबर** पुं० (सं) १-आडम्बर। ढकोसला। २-विस्तार ३-एक तरह का चँदवा।
**डँवरुआ** पुं० (हिं) गठिया नामक वात रोग।
**डँवाडोल** वि० (हिं) १-अस्थिर। डगमगाता हुआ। २-बेचैन।
**डंस** पुं० (हिं) १-एक तरह का मच्छर। डाँस। २-दे० 'दंश'।
**ड** पुं० (हिं) १-शब्द। २-एक प्रकार का नगाड़ा। ३-बड़वाग्नि।
**डक** पुं० (हिं) १-एक प्रकार का पतला सफेद टाट। २-एक तरह का मोटा कपड़ा। (अं० डेक) जहाज़ की ऊपरी छत।
**डकइत** पुं० दे० 'डकैत'।
**डकरना** क्रि० (हिं) १-डकार लेना। २-खाकर तृप्त होना।
**डकराना** क्रि० (हिं) बैल या भैंस का बोलना।
**डकवाहा** पुं० (हिं) डाकिया।
**डकार** स्त्री० (हिं) १-मुख से निकला हुआ वायु का उद्गार। २-बाघ, सिंह आदि की गरज।
**डकारना** क्रि० (हिं) १-डकार लेना। पेट की वायु को मुख से निकालना। २-किसी का माल लेना। हजम करना। ३-बाघ, सिंह आदि का दहाड़ना।
**डकैत** पुं० (हिं) डाका डालने वाला। डाकू। लुटेरा
**डकैती** स्त्री० (हिं) डाका मारने का काम। डाका।
**डक्क** पुं० (हिं) वीणा। बीन।
**डग** पुं० (हिं) १-एक जगह से पैर उठा कर दूसरी जगह रखना। कदम। २-चलने में उतनी दूरी जितनी कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर पड़ता है।
**डगक** पुं० (हिं) एक या दो डग या कदम।
**डगडगाना** क्रि० (हिं) हिलना।
**डगडोलना** क्रि० (हिं) डगमगाना। हिलना।
**डगडोर** वि० (हिं) डँवाडोल। चलायमान।
**डगण** पुं० (सं) पिङ्गल में चार मात्राओं का एक गण
**डगना** क्रि० (हिं) १-हिलना। २-भूल करना। चूकना।
**डगमग** वि० (हिं) १-लड़खड़ाता हुआ। २-विचलित।
**डगमगाना** क्रि० (हिं) १-इधर-उधर हिलना। डोलना २-विचलित होना। ३-डोलाना। ४-विचलित करना।
**डगर** स्त्री० (हिं) मार्ग। रास्ता।
**डगरना** क्रि० (हिं) चलना।
**डगरा** पुं०(देश) मार्ग। रास्ता। पुं० (हिं) छाबड़ा। छिछला डला।
**डगराना** क्रि० (हिं) १-रास्ते पर लेजाना। चलाना ३-हाँकना।
**डगरिया** स्त्री० (हिं) मार्ग।
**डगा** पुं० (हिं) डुग्गी आदि बजाने की लकड़ी।
**डगाना** क्रि० दे० 'डिगाना'।
**डग्गर** पुं० (हिं) १-कुत्ते या भेड़िये के समान एक हिंसक पशु। २-लम्बी टाँगों वाला दुबला घोड़ा।
**डटना** क्रि० (हिं) १-जमकर खड़ा होना। अड़ना। २-भिड़ना। लग जाना। ३-ताकना। देखना।
**डटाना** क्रि० (हिं) १-सटाना। भिड़ाना। २-जोर से भिड़ाना। ३-खड़ा करना। जमाना।
**डट्टा** पुं० (हिं) १-हुक्के का नेचा। २-काग। डाट। ३-बड़ी मेख। ४-छींट छापने का ठप्पा।
**डडकना** क्रि०(हिं) १-ज़ोर से शब्द करना। २-बजना
**डडा** पुं० (?) एक गहना जो बाँह पर पहना जाता है
**डड़ियार** वि० (हिं) १-बड़ी डाढ़ी रखने वाला। २-साहसी।
**डढ़ना** क्रि० (हिं) जलना। सुलगना।
**डढ़ार, डढ़ारा** वि० (हिं) १-जिसके डाढ़ हों। २-डाढ़ी वाला।
**डढ़ियल** वि० (हिं) जिसके बड़ी डाढ़ी हो।
**डढ़ना** क्रि० (हिं) जलाना।
**डढ़ियोरा** वि० (हिं) डाढ़ी वाला।
**डपट** स्त्री० (हिं) १-डाँट। झिड़की। २-घोड़े की सरपट चाल।
**डपटना** क्रि० (हिं) १-डाँटना। २-तेज़ दौड़ाना।
**डपेट** स्त्री० दे० 'डपट'।
**डपेटना** क्रि० दे० 'डपटना'।
**डपोरशंख, डपोरसंख** पुं० (हिं) १-जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न। डींग मारने वाला। २-जड़ मनुष्य।
**डफ** पुं० (हिं) १-चमड़ा मढ़ा एक प्रकार का बाजा। डफला। २-चंग बाजा जिसे बजाकर लावनी गाते हैं। चंग।
**डफला** पुं० (सं) [स्त्री० डफली] डफ नामक बाजा।

**डफली** स्त्री० (हि) छोटा डफ (बाजा)।
**डफार** स्त्री०(हि) जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिंघाड़।
**डफारना** क्रि० (हि) जोर से रोना या चिल्लाना।
**डफालची, डफाली** पुं० (हि) डफला बजाने वाला।
**डफोरना** क्रि० (हि) चिल्लाना। ललकारना। गरजना।
**डब** स्त्री० (हि) १-जेब। थैला (छोटा)। २-कुप्पा बनाने का चमड़ा। ३-धोती का कमर पर पड़ने वाला वह भाग जिसमें रुपये-पैसे खोंसकर रखते हैं।
**डबकना** क्रि० (हि) पीड़ा करना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डबकौंहा** वि० (हि) [स्त्री० डबकौंही] आँखों में आँसू भरा हुआ।
**डबडबाना** क्रि० (हि) (आँखें) अश्रुपूर्ण होना।
**डबरा** पुं० (हि) [स्त्री० डबरी] १-छिछला गड्ढा। २-जोतने से खेत का छूटा हुआ कोना। ३-वह नीची भूमि का भाग जिसमें पानी लगता हो तथा जिसमें अगहन के कई खेत हों।
**डबरी** स्त्री० (हि) छोटा गड्ढा या ताल।
**डबल** वि० (अं) १-दोहरा। २-मोटा। पुं० (हि) पुरानी चाल का पैसा।
**डबल-रोटी** स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।
**डबा** पुं० (हि) डिब्बा। डब्बा।
**डबिया, डबी** स्त्री० (हि) छोटा डिब्बा। डिब्बी।
**डबोना** क्रि० (हि) १-डुबाना। गोता देना। २-नष्ट या चौपट करना।
**डब्बा** पुं० (हि) [स्त्री० डब्बी, डिबिया] १-ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। सम्पुट। २-रेलगाड़ी का एक भाग।
**डब्बू** पुं० (हि) खाने की चीजें (दाल आदि) परोसने का एक प्रकार का कटोरा।
**डभकना** क्रि० (हि) १-पानी में डूबना। चुभकी लेना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डभका** पुं० (हि) १-कुएँ से ताजा निकाला हुआ पानी। २-भुना हुआ मटर या चना जो फूटा न हो। घुँघनी।
**डभकाना** क्रि० (हि) डुबोना। चुभकी दिलाना।
**डभकौंहा** वि० दे० 'डबकौंहा'।
**डमरू** पुं० (स) १-चमड़ा मढ़ा छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है। २-एक प्रकार का दण्डकवृत्त।
**डमरूमध्य** पुं० (हि) भूमि का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूखण्डों को मिलाता है।
**डमरू-यंत्र** पुं० (स) एक यन्त्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर, नौसादर आदि उड़ाये जाते हैं।
**डयन** पुं० (सं) १-उड़ने की क्रिया। उड़ान। २-पंख।
**डर** पुं० (हि) १-अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव। भय। खौफ। २-आशंका।
**डरना** क्रि० (हि) १-भयभीत होना। २-आशंका करना।
**डरपना** क्रि०(हि) डरना। भयभीत होना।
**डरपाना** क्रि० (हि) डराना। भयभीत करना।
**डरपोक** वि० (हि) बहुत डरने वाला। भीरु। कायर
**डरपोकना** वि० दे० 'डरपोक'।
**डरवाना** क्रि० (हि) १-डराना। २-डलवाना।
**डरा** पुं० (हि) [स्त्री० डरी] डला।
**डराडरी** स्त्री० (हि) डर। भय।
**डराना** क्रि० (हि) डर दिखाना।
**डरावना** वि० (हि) [स्त्री० डरावनी] जिसको देखने से डर लगे। भयानक। क्रि० (हि) डराना।
**डरावा** पुं० (हि) १-डराने के लिए कही हुई बात। २-वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए बंधी रहती है। खटखटा। धड़का।
**डरालु** वि० (हि) डरपोक।
**डरिया** स्त्री० (हि) डार। डाल।
**डरीला** वि० (हि) डाल या शाखा वाला। टहनीदार
**डरैला,डरेला** वि० (हि) डरावना।
**डल** पुं० (हि) १-खंड। टुकड़ा। २-झील। ३-काश्मीर का एक झील।
**डलना** क्रि० (हि) डाला जाना। पड़ना।
**डलवाना** क्रि० (हि) डालने का काम कराना।
**डला** पुं० (हि) [स्त्री० डली] १-टुकड़ा। खंड। २-(स्त्री० डलिया) बड़ी डलिया। टोकरा।
**डलिया** स्त्री० (हि) १-छोटा डला। टोकरी। २-एक तरह की तश्तरी।
**डली** स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-कटी हुई सुपारी। ३-दे० 'डलिया'।
**डवा** पुं० (हि) थैला।
**डसन** स्त्री० (हि) १-डसने की क्रिया या भाव। २-डसने या काटने का ढंग।
**डसना** क्रि० (हि) १-विषैले कीड़े का दाँत से काटना २-डंक मारना।
**डसाना** क्रि० (हि) दाँत से कटवाना।
**डहकना** क्रि० (हि) १-छलना। २-ललचाकर न देना ३-बिलखना। ४-दहाड़ मारना। ५-छितराना। फैलाना।
**डहकाना** क्रि० (हि) १-खोना। गँवाना। २-धोखे में आना। ३-ललचाकर देना। ४-ठगना।
**डहडहा** वि० (हि) [स्त्री० डहडही] १-हरा-भरा। ताजा। प्रसन्न। प्रफुल्लित।
**डहडहाट** स्त्री० (हि) १-हरापन। ताजगी। २-प्रफु-

ल्लता।

**डहडहाना** क्रि० (हि) १-पेड़-पौधों का हरा-भरा होना २-प्रफुल्लित होना।

**डहडहाव** पुं० (हि) हरा-भरा होने का भाव। प्रफुल्लता।

**डहन** पुं०(हि) १-पर। पङ्ख। २-डैना। स्त्री० जलन सन्ताप।

**डहना** क्रि० (हि) १-जलना। भस्म होना। २-द्वेष करना। ३-जलाना। ४-सन्तप्त करना।

**डहर** स्त्री० (हि) १-डगर। पथ। २-आकाशगंगा

**डहरना** क्रि० (हि) चलना। घूमना।

**डहराना** क्रि० (हि) चलाना। घुमाना।

**डहरिया, डहरी** स्त्री० (हि) वह मिट्टी का बरतन जिसमें अनाज रखते हैं। कुठिला।

**डहार** पुं० (हि) कष्ट देने वाला। तंग करने वाला।

**डाँ** स्त्री० (हि) डाइन। डाकिन। पुं० सितार की गत का एक बोल।

**डाँक** स्त्री० (हि) १-ताँबे या चाँदी का महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है। २-वमन। कै। ३-दे० 'डाक'। पुं० दे० 'डंका'।

**डाँकना** क्रि० (हि) १-लाँघना। फाँदना। २-वमन करना।

**डाँग** पुं० (हि) १-घना जंगल। २-बड़ा डंडा। लाठी ३-डंका। ४-फलाँग।

**डाँगर** पुं० (देश) १-चौपाया। ढोर। २-मुद्रा-पशु। वि० (हि) १-दुबला-पतला। २-मूर्ख।

**डाँट** स्त्री० (हि) १-डाँटने या भिड़कने की क्रिया या भाव। २-डपट। ३-दबाव।

**डाँट-डपट** स्त्री० (हि) (आवेश में) डाँटकर की जाने वाली बात।

**डाँटना** क्रि० (हि) घुड़कना। डपटना।

**डाँट-फटकार** स्त्री० (हि) डाँट-डपट।

**डाँड़** पुं० (हि) १-डंडा। २-गदका। ३-चप्पू। नाव खेने का बल्ला। ४-सीधी लकीर। ५-ऊँची मेंड़। ६-छोटा टीला। ७-सीमा। हद। ८-अर्थदण्ड। जुरमाना। ९-नुकसाल। १०-पीठ की हड्डी। रीढ़। २-पेट के नीचे का वह भाग जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

**डाँड़ना** क्रि०(हि)१-अर्थ दण्ड देना। जुरमाना करना २-डाँड़ या हरजाना लेना। ३-दण्ड देना। ४-डाँटना।

**डाँड़ा** पुं० (हि) १-छड़। डंडा। २-गतका। ३-नाव खेने का डाँड़। ४-हद। सीमा।

**डाँड़ामेड़ा** पुं० (हि) १-आपस की अति समीपता या लगाव। २-झगड़ा। अनबन। ३-दो सीमाओं के बीच की मेंड़।

**डाँड़ी** स्त्री०(हि)१-लम्बी पतली लकड़ी। २-लम्बहत्था या दस्ता। ३-तराजू की डँडी। ४-टहनी। ५-नाल डंठल। ६-डाँड़ खेने वाला आदमी। ७-सीधी लकीर। ८-लीक। मर्यादा। ९-चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०-पालकी। ११-झप्पान नामक पहाड़ी सवारी। १२-हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है।

**डाँदरी** स्त्री० (हि) भूनी हुई मटर की फली।

**डाँवरा** पुं० (हि) [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

**डाँवरी** स्त्री० (हि) लड़की। बेटी।

**डाँवरू** पुं० (हि) बाघ का बच्चा।

**डाँवाडोल** वि० (हि) चंचल। विचलित।

**डाँस** पुं० (हि) १-बड़ा मच्छर। २-कुकरौंछी।

**डाँसर** पुं० (देश) इमली का बीज। चिआँ।

**डा** पुं० (हि) सितार की गति का एक बोल।

**डाइन** स्त्री० (हि) १-भुतनी। चुड़ैल। २-जादू करने वाली स्त्री। ३-डरावनी स्त्री।

**डाइरेक्टरी** स्त्री० (अं) वह पुस्तक जिसमें किसी देश या नगर के प्रधान व्यक्तियों की सूची अकारादिक्रम से छपी हो।

**डाक** पुं० (हि) १-सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान बदले जाते हैं। २-सरकार की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था के अनुसार भेजे जाने वाले कागज-पत्र। स्त्री० वमन। कै।

**डाकखाना** पुं० (हि) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ वितरित की जाती हैं। डाकघर। (पोस्ट-आफिस)।

**डाक-गाड़ी** स्त्री० (हि) वह रेलगाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

**डाकघर** पुं० (हि) डाकखाना।

**डाक-चौकी** स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ सवारी के लिए घोड़े आदि बदले जाते हैं।

**डाकना** क्रि०(हि) १-वमन या कै करना। २-फाँदना लाँघना।

**डाकबँगला** पुं० (हि) वह बंगला या मकान जो सरकार की ओर से परदेशियों या राज्य के अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

**डाक-महसूल** पुं० (हि) डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

**डाकर** पुं० (देश) १-तालाबों की सूखी मिट्टी। नदी के किनारे की वह भूमि जिस पर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है। रौसली।

**डाकव्यय** पुं० (हि) डाक का खर्च। डाक-महसूल।

**डफली** स्त्री० (हिं) छोटा डफ (बाजा)।
**डफार** स्त्री०(हिं) जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिंघाड़।
**डफारना** क्रि० (हिं) जोर से रोना या चिल्लाना।
**डफालची, डफाली** पुं० (हिं) डफला बजाने वाला।
**डफोरना** क्रि० (हिं) चिल्लाना। ललकारना। गरजना।
**डब** स्त्री० (हिं) १-जेब। थैला (छोटा)। २-कुप्पा बनाने का चमड़ा। ३-धोती का कमर पर पड़ने वाला वह भाग जिसमें रुपये-पैसे खोंसकर रखते हैं।
**डबकना** क्रि० (हिं) पीड़ा करना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डबकौंहाँ** वि० (हिं) [स्त्री० डबकौंही] आँखों में आँसू भरा हुआ।
**डबडबाना** क्रि० (हिं) (आँखें) अश्रुपूर्ण होना।
**डबरा** पुं० (हिं) [स्त्री० डबरी] १-छिछला गड्ढा। २-जोतने से खेत का छूटा हुआ कोना। ३-वह नीची भूमि का भाग जिसमें पानी लगता हो तथा जिसमें आस-पास के कई खेत हों।
**डबरी** स्त्री० (हिं) छोटा गड्ढा या ताल।
**डबल** वि० (अं) १-दोहरा। २-मोटा। पुं० (हिं) पुरानी चाल का पैसा।
**डबल-रोटी** स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।
**डबा** पुं० (हिं) डिब्बा। डब्बा।
**डबिया, डब्बी** स्त्री० (हिं) छोटा डिब्बा। डिब्बी।
**डबोना** क्रि० (हिं) १-डुबाना। गोता देना। २-नष्ट या बरबाद करना।
**डब्बा** पुं० (हिं) [स्त्री० डब्बी, डिबिया] १-ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। सम्पुट। २-रेलगाड़ी का एक भाग।
**डब्बू** पुं० (हिं) खाने की चीजें (दाल आदि) परोसने का एक प्रकार का कटोरा।
**डभकना** क्रि० (हिं) १-पानी में डूबना। डुबकी लेना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डभका** पुं० (हिं) १-कुएँ से ताजा निकाला हुआ पानी। २-भुना हुआ मटर या चना जो फूटा न हो। घोंगा।
**डभकाना** क्रि० (हिं) डुबोना। डुबकी दिलाना।
**डभकौंहाँ** वि० दे० 'डबकौंहाँ'।
**डमरू** पुं० (हिं) १-चमड़ा मढ़ा छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है। २-एक प्रकार का दण्डकवृत्त।
**डमरूमध्य** पुं० (हिं) भूमि का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूखण्डों को मिलाता है।
**डमरू-यंत्र** पुं० (न) एक यन्त्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर, नौसादर आदि उड़ाये जाते हैं।
**डयन** पुं० (सं) १-उड़ने की क्रिया। उड़ान। २-पंख।
**डर** पुं० (हिं) १-अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव। भय। खौफ। २-आशंका।
**डरना** क्रि० (हिं) १-भयभीत होना। २-आशंका करना।
**डरपना** क्रि०(हिं) डरना। भयभीत होना।
**डरपाना** क्रि० (हिं) डराना। भयभीत करना।
**डरपोक** वि० (हिं) बहुत डरने वाला। भीरु। कायर
**डरपोकना** वि० दे० 'डरपोक'।
**डरवाना** क्रि० (हिं) १-डराना। २-डलवाना।
**डरा** पुं० (हिं) [स्त्री० डरी] डला।
**डराडरी** स्त्री० (हिं) डर। भय।
**डराना** क्रि० (हिं) डर दिखाना।
**डरावना** वि० (हिं) [स्त्री० डरावनी] जिसको देखने से डर लगे। भयानक। क्रि० (हिं) डराना।
**डरावा** पुं० (हिं) १-डराने के लिए कही हुई बात। २-वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए बंधी रहती है। खटखटा। धड़का।
**डराहुक** वि० (हिं) डरपोक।
**डरिया** स्त्री० (हिं) डार। डाल।
**डरीला** वि० (हिं) डाल या शाखा वाला। टहनीदार
**डरेला, डरैला** वि० (हिं) डरावना।
**डल** पुं० (हिं) १-खंड। टुकड़ा। २-झील। ३-काश्मीर का एक झील।
**डलना** क्रि० (हिं) डाला जाना। पड़ना।
**डलवाना** क्रि० (हिं) डालने का काम कराना।
**डला** पुं० (हिं) [स्त्री० डली] १-टुकड़ा। खंड। २-(स्त्री० डलिया) बड़ी डलिया। टोकरा।
**डलिया** स्त्री० (हिं) १-छोटा डला। टोकरी। २-एक तरह का तश्तरी।
**डली** स्त्री० (हिं) १-छोटा टुकड़ा। २-कटी हुई सुपारी। ३-दे० 'डलिया'।
**डवा** पुं० (हिं) थैला।
**डसन** स्त्री० (हिं) १-डसने की क्रिया या भाव। २-डसने या काटने का ढंग।
**डसना** क्रि० (हिं) १-विषैले कीड़े का दाँत से काटना २-डंक मारना।
**डसाना** क्रि० (हिं) दाँत से कटवाना।
**डहकना** क्रि० (हिं) १-छलना। २-ललचाकर न देना ३-बिलखना। ४-दहाड़ मारना। ५-छितराना। फैलाना।
**डहकाना** क्रि० (हिं) १-खोना। गँवाना। २-धोखे में आना। ३-ललचाकर देना। ४-ठगना।
**डहडहा** वि० (हिं) [स्त्री० डहडही] १-हरा-भरा। ताजा। प्रसन्न। प्रफुल्लित।
**डहडहाट** स्त्री० (हिं) १-हरापन। ताजगी। २-प्रफु-

ल्लता।

**डहडहाना** क्रि० (हिं) १-पेड़-पौधों का हरा-भरा होना। २-प्रफुल्लित होना।

**डहडहाव** पुं० (हिं) हरा-भरा होने का भाव। प्रफुल्लता।

**डहन** पुं०(हिं) १-पर। पङ्ख। २-डैना। स्त्री० जलन सन्ताप।

**डहना** क्रि० (हिं) १-जलना। भस्म होना। २-द्वेष करना। ३-जलाना। ४-सन्तप्त करना।

**डहर** स्त्री० (हिं) १-डगर। पथ। २-आकाशगंगा

**डहरना** क्रि० (हिं) चलना। घूमना।

**डहराना** क्रि० (हिं) चलाना। घुमाना।

**डहरिया, डहरी** स्त्री० (हिं) वह मिट्टी का बरतन जिसमें अनाज रखते हैं। कुठिला।

**डहार** पुं० (हिं) कष्ट देने वाला। तंग करने वाला।

**डां** स्त्री० (हिं) डाइन। डाकिन। पुं० सितार की गत का एक बोल।

**डांक** स्त्री० (हिं) १-ताँबे या चाँदी का महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है। २-वमन। कै। ३-दे० 'डाक'। पुं० दे० 'डंका'।

**डांकना** क्रि० (हिं) १-लाँघना। फाँदना। २-वमन करना।

**डांग** पुं० (हिं) १-घना जंगल। २-बड़ा डंडा। लाठी ३-डंका। ४-फलाँग।

**डांगर** पुं० (देश) १-चौपाया। ढोर। २-मुद्रा-पशु। वि० (हि) १-दुबला-पतला। २-मूर्ख।

**डांट** स्त्री० (हिं) १-डाँटने या झिड़कने की क्रिया या भाव। २-डपट। ३-दबाव।

**डांट-डपट** स्त्री० (हिं) (आवेश में) डाँटकर की जाने वाली बात।

**डांटना** क्रि० (हिं) घुड़कना। डपटना।

**डांट-फटकार** स्त्री० (हिं) डाँट-डपट।

**डांड़** पुं० (हिं) १-डंडा। २-गदका। ३-चप्पू। नाव खेने का बल्ला। ४-सीधी लकीर। ५-ऊँची मेंड़। ६-छोटा टीला। ७-सीमा। हद। ८-अर्थदण्ड। जुरमाना। ९-नुकसान। १०-पीठ की हड्डी। रीढ़। २-पेट के नीचे का वह भाग जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

**डांड़ना** क्रि०(हिं)१-अर्थ दण्ड देना। जुरमाना करना २-डाँड़ या हरजाना लेना। ३-दण्ड देना। ४-डाँटना।

**डांड़ा** पुं० (हिं) १-छड़। डंडा। २-गतका। ३-नाव खेने का डाँड़। ४-हद। सीमा।

**डांड़ामेड़ा** पुं० (हिं) १-आपस की अति समीपता या लगाव। २-झगड़ा। अनबन। ३-दो सीमाओं के बीच की मेंड़।

**डांड़ी** स्त्री०(हिं)१-लम्बी पतली लकड़ी। २-लम्बहत्था या दस्ता। ३-तराजू की डँडी। ४-टहनी। ५-नाल डंठल। ६-डाँड़ खेने वाला आदमी। ७-सीधी लकीर। ८-लीक। मर्यादा। ९-चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०-पालकी। ११-झप्पान नामक पहाड़ी सवारी। १२-हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है।

**डांढ़री** स्त्री० (हि) भूनी हुई मटर की फली।

**डांवरा** पुं० (हि) [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

**डांवरी** स्त्री० (हि) लड़की। बेटी।

**डांवरू** पुं० (हि) बाघ का बच्चा।

**डांवाडोल** वि० (हि) चंचल। विचलित।

**डांस** पुं० (हि) १-बड़ा मच्छर। २-कुकरौंछी।

**डांसर** पुं० (देश) इमली का बीज। चिआँ।

**डा** पुं० (हि) सितार की गति का एक बोल।

**डाइन** स्त्री० (हि) १-भुतनी। चुड़ैल। २-जादू करने वाली स्त्री। ३-डरावनी स्त्री।

**डाइरेक्टरी** स्त्री० (अं) वह पुस्तक जिसमें किसी देश या नगर के प्रधान व्यक्तियों की सूची अकारादि-क्रम से छपी हो।

**डाक** पुं० (हि) १-सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान बदले जाते हैं। २-सरकार की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था के अनुसार भेजे जाने वाले कागज-पत्र। स्त्री० वमन। कै।

**डाकखाना** पुं० (हि) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ वितरित की जाती हैं। डाकघर। (पोस्ट-आफिस)।

**डाक-गाड़ी** स्त्री० (हि) वह रेलगाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

**डाकघर** पुं० (हि) डाकखाना।

**डाक-चौकी** स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ सवारी के लिए घोड़े आदि बदले जाते हैं।

**डाकना** क्रि०(हि) १-वमन या कै करना। २-फाँदना लाँघना।

**डाकबँगला** पुं० (हि) वह बंगला या मकान जो सरकार की ओर से परदेशियों या राज्य के अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

**डाक-महसूल** पुं० (हिं) डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

**डाकर** पुं० (देश) १-तालाबों की सूखी मिट्टी। नदी के किनारे की वह भूमि जिस पर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है। रौसली।

**डाकव्यय** पुं० (हिं) डाक का खर्च। डाक-महसूल।

**डफली** स्त्री० (हि) छोटा डफ (बाजा)।
**डफार** स्त्री०(हि) जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिंघाड़।
**डफारना** क्रि० (हि) जोर से रोना या चिल्लाना।
**डफालची, डफाली** पुं० (हि) डफला बजाने वाला।
**डफोरना** क्रि० (हि) चिल्लाना। ललकारना। गरजना।
**डब** स्त्री० (हि) १-जेब। थैला (छोटा)। २-कुप्पा बनाने का चमड़ा। ३-धोती का कमर पर पड़ने वाला वह भाग जिसमें रुपये-पैसे खोंसकर रखते हैं।
**डबकना** क्रि० (हि) पीड़ा करना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डबकौंहा** वि० (हि) [स्त्री० डबकौंही] आँखों में आँसू भरा हुआ।
**डबडबाना** क्रि० (हि) (आँखें) अश्रुपूर्ण होना।
**डबरा** पुं० (हि) [स्त्री० डबरी] १-छिछला गड्ढा। २-जोतने से खेत का छूटा हुआ कोना। ३-वह नीची भूमि या भाग जिसमें पानी लगता हो तथा जिसमें जड़हन के कई खेत हों।
**डबरी** स्त्री० (हि) छोटा गड्ढा या ताल।
**डबल** वि० (अं) १-दोहरा। २-मोटा। पुं० (हि) पुरानी चाल का पैसा।
**डबल-रोटी** स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।
**डबा** पुं० (हि) डिब्बा। डब्बा।
**डबिया, डबी** स्त्री० (हि) छोटा डिब्बा। डिब्बी।
**डबोना** क्रि० (हि) १-डुबोना। गोता देना। २-नष्ट या बरबाद करना।
**डब्बा** पुं० (हि) [स्त्री० डब्बी, डिबिया] १-ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। डिब्बा। २-रेलगाड़ी का एक भाग।
**डब्बू** पुं० (हि) खाने की चीजें (दाल आदि) परोसने का एक प्रकार का कटोरा।
**डभकना** क्रि० अ० (हि) १-पानी में डूबना। डुबकी लेना। २-आँखों में आँसू भर आना।
**डभका** पुं० (हि) १-कुएं से ताजा निकाला हुआ पानी। २-भुना हुआ मटर या चना जो फूटा न हो। कोरा।
**डभकाना** क्रि० (हि) डुबोना। डुबकी दिलाना।
**डभकौंहा** वि० दे० 'डबकौंहा'।
**डमरू** पुं० (सं) १-चमड़ा मढ़ा छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है। २-एक प्रकार का दण्डकवृत्त।
**डमरूमध्य** पुं० (हि) भूमि का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूखण्डों को मिलाता है।
**डमरू-यंत्र** पुं० (सं) एक यन्त्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर, नौसादर आदि उड़ाये जाते हैं।

**डयन** पुं० (सं) १-उड़ने की क्रिया। उड़ान। २-पंख।
**डर** पुं० (हि) १-अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव। भय। खौफ। २-आशंका।
**डरना** क्रि० (हि) १-भयभीत होना। २-आशंका करना।
**डरपना** क्रि०(हि) डरना। भयभीत होना।
**डरपाना** क्रि० (हि) डराना। भयभीत करना।
**डरपोक** वि० (हि) बहुत डरने वाला। भीरु। कायर
**डरपोकना** वि० दे० 'डरपोक'।
**डरवाना** क्रि० (हि) १-डराना। २-डलवाना।
**डरा** पुं० (हि) [स्त्री० डरी] डला।
**डराडरी** स्त्री० (हि) डर। भय।
**डराना** क्रि० (हि) डर दिखाना।
**डरावना** वि० (हि) [स्त्री० डरावनी] जिसको देखने से डर लगे। भयानक। क्रि० (हि) डराना।
**डरावा** पुं० (हि) १-डराने के लिए कही हुई बात। २-वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए बंधी रहती है। खटखटा। धड़का।
**डराहुक** वि० (हि) डरपोक।
**डरिया** स्त्री० (हि) डार। डाल।
**डरीला** वि० (हि) डाल या शाखा वाला। टहनीदार
**डरेला,डरैला** वि० (हि) डरावना।
**डल** पुं० (हि) १-खंड। टुकड़ा। २-झील। ३-काश्मीर की एक झील।
**डलना** क्रि० (हि) डाला जाना। पड़ना।
**डलवाना** क्रि० (हि) डालने का काम कराना।
**डला** पुं० (हि) [स्त्री० डली] १-टुकड़ा। खंड। २-(स्त्री० डलिया) बड़ी डलिया। टोकरा।
**डलिया** स्त्री० (हि) १-छोटा डला। टोकरी। २-एक तरह की तश्तरी।
**डली** स्त्री० (हि) १-छोटा टुकड़ा। २-कटी हुई सुपारी। ३-दे० 'डलिया'।
**डवा** पुं० (हि) थैला।
**डसन** स्त्री० (हि) १-डसने की क्रिया या भाव। २-डसने या काटने का ढंग।
**डसना** क्रि० (हि) १-विषैले कीड़े का दाँत से काटना २-डंक मारना।
**डसाना** क्रि० (हि) दाँत से कटवाना।
**डहकना** क्रि० (हि) १-छलना। २-ललचाकर न देना ३-बिलखना। ४-दहाड़ मारना। ५-छितराना। फैलाना।
**डहकाना** क्रि० (हि) १-खोना। गँवाना। २-धोखे में आना। ३-ललचाकर देना। ४-ठगना।
**डहडहा** वि० (हि) [स्त्री० डहडही] १-हरा-भरा। ताजा। प्रसन्न। प्रफुल्लित।
**डहडहाट** स्त्री० (हि) १-हरापन। ताजगी। २-प्रफु-

ल्लता।

**डहडहाना** क्रि० (हि) १-पेड़-पौधों का हरा-भरा होना। २-प्रफुल्लित होना।

**डहडहाव** पुं० (हि) हरा-भरा होने का भाव। प्रफुल्लता।

**डहन** पुं०(हि) १-पर। पङ्ख। २-डैना। स्त्री० जलन। सन्ताप।

**डहना** क्रि० (हि) १-जलना। भस्म होना। २-द्वेष करना। ३-जलाना। ४-सन्तप्त करना।

**डहर** स्त्री० (हि) १-डगर। पथ। २-आकाशगंगा।

**डहरना** क्रि० (हि) चलना। घूमना।

**डहराना** क्रि० (हि) चलाना। घुमाना।

**डहरिया, डहरी** स्त्री० (हि) वह मिट्टी का बरतन जिसमें अनाज रखते हैं। कुठिला।

**डहार** पुं० (हि) कष्ट देने वाला। तंग करने वाला।

**डाँ** स्त्री० (हि) डाइन। डाकिन। पुं० सितार की गत का एक बोल।

**डाँक** स्त्री० (हि) १-ताँबे या चाँदी का महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है। २-वमन। कै। ३-दे० 'डाक'। पुं० दे० 'डंका'।

**डाँकना** क्रि० (हि) १-लाँघना। फाँदना। २-वमन करना।

**डाँग** पुं० (हि) १-घना जंगल। २-बड़ा डंडा। लाठी ३-डंका। ४-फलाँग।

**डाँगर** पुं० (देश) १-चौपाया। ढोर। २-मुद्रा-पशु। वि० (हि) १-दुबला-पतला। २-मूर्ख।

**डाँट** स्त्री० (हि) १-डाँटने या झिड़कने की क्रिया या भाव। २-डपट। ३-दबाव।

**डाँट-डपट** स्त्री० (हि) (आवेश में) डाँटकर की जाने वाली बात।

**डाँटना** क्रि० (हि) घुड़कना। डपटना।

**डाँट-फटकार** स्त्री० (हि) डाँट-डपट।

**डाँड़** पुं० (हि) १-डंडा। २-गदका। ३-चप्पू। नाव खेने का बल्ला। ४-सीधी लकीर। ५-ऊँची मेंड़। ६-छोटा टीला। ७-सीमा। हद। ८-अर्थदण्ड। जुरमाना। ९-नुकसान। १०-पीठ की हड्डी। रीढ़। ११-पेट के नीचे का वह भाग जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

**डाँड़ना** क्रि०(हि)१-अर्थ दण्ड देना। जुरमाना करना २-डाँड़ या हरजाना लेना। ३-दण्ड देना। ४-डाँटना।

**डाँड़ा** पुं० (हि) १-छड़। डंडा। २-गतका। ३-नाव खेने का डाँड़। ४-हद। सीमा।

**डाँड़ामेड़ा** पुं० (हि) १-आपस की अति समीपता या लगाव। २-झगड़ा। अनबन। ३-दो सीमाओं के बीच की मेंड़।

**डाँड़ी** स्त्री०(हि)१-लम्बी पतली लकड़ी। २-लम्बा हत्था या दस्ता। ३-तराजू की डंडी। ४-टहनी। ५-नाल डंठल। ६-डाँड़ खेने वाला आदमी। ७-सीधी लकीर। ८-लीक। मर्यादा। ९-चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०-पालकी। ११-झप्पान नामक पहाड़ी सवारी। १२-हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है।

**डाँदरी** स्त्री० (हि) भूनी हुई मटर की फली।

**डाँवरा** पुं० (हि) [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

**डाँवरी** स्त्री० (हि) लड़की। बेटी।

**डाँवरू** पुं० (हि) बाघ का बच्चा।

**डाँवाडोल** वि० (हि) चंचल। विचलित।

**डाँस** पुं० (हि) १-बड़ा मच्छर। २-कुकरौंछी।

**डाँसर** पुं० (देश) इमली का बीज। चिआँ।

**डा** पुं० (हि) सितार की गति का एक बोल।

**डाइन** स्त्री० (हि) १-भुतनी। चुड़ैल। २-जादू करने वाली स्त्री। ३-डरावनी स्त्री।

**डाइरेक्टरी** स्त्री० (अं) वह पुस्तक जिसमें किसी देश या नगर के प्रधान व्यक्तियों की सूची अकारादि-क्रम से छपी हो।

**डाक** पुं० (हि) १-सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान बदले जाते हैं। २-सरकार की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था के अनुसार भेजे जाने वाले कागज-पत्र। स्त्री० वमन। कै।

**डाकखाना** पुं० (हि) वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ वितरित की जाती हैं। डाकघर। (पोस्ट-आफिस)।

**डाक-गाड़ी** स्त्री० (हि) वह रेलगाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

**डाकघर** पुं० (हि) डाकखाना।

**डाक-चौकी** स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ सवारी के लिए घोड़े आदि बदले जाते हैं।

**डाकना** क्रि०(हि) १-वमन या कै करना। २-फाँदना लाँघना।

**डाकबँगला** पुं० (हि) वह बंगला या मकान जो सरकार की ओर से परदेशियों या राज्य के अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

**डाक-महसूल** पुं० (हि) डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

**डाकर** पुं० (देश) १-तालाबों की सूखी मिट्टी। नदी के किनारे की वह भूमि जिस पर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है। रौसली।

**डाकव्यय** पुं० (हि) डाक का खर्च। डाक-महसूल।

**डाका** पुं० (हि) धन लूटने के लिए निमित्त दल बांधकर किया जाने वाला धावा।
**डाकाजनी** स्त्री० (हि) डाका मारने का काम।
**डाकिन** स्त्री० दे० 'डाकिनी'।
**डाकिनी** स्त्री० (सं) डायन। चुड़ैल।
**डाकिया** पुं० (हि) डाक लेजाने वाला। (पोस्टमैन)।
**डाकी** स्त्री० (हि) वमन। कै। पुं० बहुत खाने वाला व्यक्ति। पेटू। वि० रायल। प्रचंड।
**डाकीय-आदेश** पुं० (हि) पत्रालयिक-आदेश। (पोस्टल-ऑर्डर)।
**डाकीय-प्रमाणपत्र** पुं० (हि) पत्रालयीय-प्रमाणपत्र। (पोस्टल-सार्टीफिकेट)।
**डाकू** पुं० (हि) डाका डालने वाला। लुटेरा।
**डाकेट** पुं० (अं) किसी पत्र आदि का सारांश। चिट्ठी का खुलासा।
**डाकोर** पुं० (हि) ठाकुर। विष्णु भगवान।
**डाक्टर** पुं० (अं) १-किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान। २-अंग्रेजी ढङ्ग का चिकित्सक। ३-एक प्रकार की उपाधि जो बहुत बड़े विद्वानों को कोई उच्च परीक्षा पास करने पर या योंही उनके सम्मानार्थ प्रदान की जाती है।
**डाक्टरी** स्त्री० (हि) १-पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र। २-डाक्टर का काम, पद, भाव अथवा उपाधि।
**डाख** पुं० (हि) ढाक। पलाश।
**डाखिपो** पुं० (हि) भूखा सिंह।
**डाग** स्त्री० (?) वह डण्डा जिससे डुग्गी, ढोल आदि बजाते हैं।
**डागा** पुं० (हि) नगारा बजाने का डण्डा। चोब।
**डागुर** पुं० (देश) जाटों की एक उपजाति।
**डाचा** पुं० दे० 'मुँह'।
**डाट** स्त्री० (हि) १-बोझ सँभालने के लिए नीचे लगाई जाने वाली वस्तु। टेक। २-छेद बन्द करने की वस्तु। ३-बोतल, शीशी आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु। काग। डट्टा। ४-मेहराब को रोके रखने के लिए ईंटों की जुड़ाई। पुं० दे० 'डांट'।
**डाटना** क्रि० (हि) १-एक वस्तु को दूसरी पर कसकर बैठाना। २-टेक या चाँड़ लगाना। ३-छेद या मुँह बन्द करना। ४-कसकर या ठूँसकर भरना। खूब पेट भर खाना। ६-ठाट से वस्त्राभूषण आदि पहनना। ७-डाँटना।
**डाढ़** स्त्री० (हि) १-चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़। २-वट आदि वृक्षों की जटा।
**डाढ़ना** क्रि० (हि) जलाना। भस्म करना।
**डाढ़ा** स्त्री० (हि) १-दावानल। २-आग। ३-ताप। दाह।
**डाढ़ी** स्त्री० (हि) १-ठोढ़ी। चिबुक। २-चिबुक और गण्डस्थल पर के बाल। दाढ़ी।
**डाबर** पुं० (हि) १-नीची जमीन। २-गड्ढी। पोखरी ३-चिलमची। ४-कच्चा नारियल।
**डाभ** पुं० (हि) १-कुश जाति की घास। २-कुश। ३-कच्चा नारियल। ४-आम की मंजरी।
**डामर** पुं० (सं) १-शिव प्रणीत माना जाने वाला एक तन्त्र। २-हलचल। ३-आडम्बर। ४-चमत्कार पुं० (देश) १-साल वृक्ष का गोंद। राल। २-राल बनाने वाली मक्खी।
**डामल** स्त्री० (हि) १-उमर कैद। २-देश-निकाले का दण्ड।
**डामाडोल** वि० दे० 'डाँवाडोल'।
**डायन** स्त्री० दे० 'डाइन'।
**डायरी** स्त्री० (अं) दिनचर्या लिखने की पुस्तक। दैनिकी।
**डायल** पुं० (अं) घड़ी या टेलीफोन के सामने का गोल भाग जिसके ऊपर अङ्क बने होते हैं।
**डार** स्त्री० (हि) १-डाल। शाखा। २-एक प्रकार की खूंटी जो फानूस जलाने के लिए दीवार में लगाई जाती है। ३-डलिया। चंगेर। डाली।
**डारना** क्रि० (हि) डालना।
**डारा** पुं० (हि) वह लकड़ी या रस्सी जिस पर कपड़े लटकाते हैं।
**डारी** स्त्री० दे० 'डाल'।
**डाल** स्त्री० (हि) शाख। डाली। २-फानूस जलाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३-तलवार का फल। ४-डलिया। ५-वे गहने और कपड़े जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधु को दिये जाते हैं।
**डालना** क्रि० (हि) १-नीचे गिराना। छोड़ना। २-एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। ३-मिलाना। ४-प्रविष्ट करना। घुसाना। ५-फैलाना। बिछाना। ६-पहनना। ७-गर्भ गिराना (चौपायों के लिए)। ८-कै करना। ९-(किसी स्त्री को) पत्नी बनाकर रखना। १०-बिछाना।
**डालर** पुं० (अं) अमेरिकन देश का सिक्का।
**डाला** पुं० हि) बड़ी चंगेर। डला।
**डाली** स्त्री० (हि) १-डलिया। २-फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। ३-दे० 'डाल'।
**डाव** पु० (हि) १-दाँव। बाजी। २-अवसर। मौका
**डावरा** पुं० (हि) [स्त्री० डावरी] पुत्र। बेटा।
**डावरी** स्त्री० (हि) पुत्री। बेटी।
**डासन** क्रि० (हि) १-बिछाना। २-डसना। पुं० दे० 'बिछौना'।
**डाह** स्त्री० (हि) ईर्ष्या। जलन।
**डाहना** क्रि० (हि) १-किसी के मन में डाह उत्पन्न करना। २-जलाना। ३-कष्ट पहुँचाना।

**डाही** वि० (हिं) डाह या ईर्ष्या करने वाला।
**डिंगर** पुं० (सं) १-मोटा आदमी। २-दुष्ट। पाजी ३-दास।
**डिंगल** वि० (हिं) नीच। बुरा। स्त्री० राजस्थानी चारणों या भाटों की काव्य भाषा।
**डिंडम** पुं० (सं) १-एक तरह का ढोल (प्राचीन)। २-डुग्गी। डुगडुगी।
**डिंडी** पुं० (सं) दीवारों आदि पर भद्दे चित्र बनाने वाला चितेरा।
**डिंब, डिंबाणु** पुं० (सं) १-हलचल। प्रकार। २-दंगा। लड़ाई। ३-अंडा। ४-फेफड़ा। ५-प्लीहा। ६-[illegible] जीव जंतुओं में स्त्री जाति का [illegible] जो पुरुष जाति के वीर्य के के [illegible] ही स्वतः बढ़कर नये जीव का [illegible] है। (श्रोवम)।
**डिंबाशय** पुं० (सं) [illegible] गर्भाशय की वे दो ग्रंथियाँ [illegible] परिपक्व होते हैं। (ओव्हरी)
**डिंभ** पुं० (सं) १-[illegible]। २-जड़ मनुष्य। पुं० (हिं) १-[illegible]। २-घमंड।
**डिंभिया** [illegible] १-पाखंडी। २-घमंडी।
**डिक्री** [illegible] आज्ञा। २-न्यायालय की वह [illegible] द्वारा लड़ने वाले पक्षों में से किसी [illegible] संपत्ति का अधिकार दिया जाय।
**डिगना** क्रि० (हिं) १-हिलना। टलना। २-किसी बात पर स्थिर न रहना।
**डिगरी** स्त्री० (अं) १-विश्वविद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण [illegible] की पदवी। २-अंश। कला। स्त्री० 'डिक्री'।
**डिगरीदार** वि० (हिं) वह जिसके पक्ष में अदालत का [illegible] वाला फैसला हुआ हो।
**डिगमिगाना** क्रि० (हिं) डगमगाना।
**डिगाना** क्रि० (हिं) १-हटाना। २-खसकाना। ३-[illegible]।
**डिग्गी** [illegible] पोखर। तालाब।
**डिठार, डिठियार** वि० (हिं) (स्त्री० डिठियारी) आँख वाला। [illegible] सुझाई दे।
**डिठौना, डिठौरा** पुं० (हिं) काजल का टीका जिसे स्त्रियाँ दीठ न लगने के लिए बच्चों के सिर पर लगाती हैं।
**डिड़कार** स्त्री० (हिं) डिड़कारने की क्रिया या भाव।
**डिडकारना** क्रि० (हिं) बछड़े का गाय के लिए चिल्लाना।
**डिढ़** वि० (हिं) दृढ़। मजबूत।
**डिढ़कारी** स्त्री० (हिं) ढाड़ मारकर रोना।
**डिढ़ाना** क्रि० (हिं) १-दृढ़ करना। २-मन में पक्का निश्चय करना।
**डिढ़या** स्त्री० (देश) अत्यधिक लालच। लालसा।
**डिबिया** स्त्री० (हिं) छोटा डिब्बा।
**डिब्बा** पुं० दे० 'डब्बा'।
**डिब्बी** स्त्री० (हिं) छोटा डिब्बा। डिबिया।
**डिभगना** क्रि० (देश) १-मोहना। २-छलना।
**डिम** पुं० (सं) वह नाटक या दृश्यकाव्य जिसमें माया, इन्द्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश विशेष रूप से होता है।
**डिमडिमी** स्त्री० (हिं) डुग्गी। डुगडुगिया।
**डिमाई** स्त्री० (अं) बाईस इञ्च लम्बे और अट्ठारह इंच चौड़े कागज की एक नाप।
**डिल्ला** पुं० (हिं) बैल के कन्धे पर उठा हुआ कूबड़ कूजा।
**डींग** स्त्री० (हिं) लम्बी चौड़ी बात। शेखी।
**डीकरी** स्त्री० (हिं) कन्या। बेटी।
**डीठ** स्त्री० (हिं) दृष्टि। नजर। २-देखने की शक्ति ३-ज्ञान। सूझ।
**डीठना** क्रि० (हिं) दिखाई देना।
**डीठबंध** पुं० (हिं) १-नजरबन्दी। इन्द्रजाल। २-जादूगर।
**डीठि** स्त्री० दे० 'डीठ'।
**डीठिमूठि** स्त्री० (हिं) नजर। टोना। जादू।
**डील** पुं० (हिं) १-शरीर का विस्तार। कद। २-देह। शरीर। ३-प्राणी। व्यक्ति।
**डीली** स्त्री० (हिं) दिल्ली नगर।
**डीह** पुं० (हिं) १-छोटा गाँव। २-उजड़े हुए गाँव का टीला। ३-ग्रामदेवता।
**डुंग** पुं० (हिं) १-ढेर। अटाला। २-टीला।
**डुंगवा** पुं० दे० 'डुंग'।
**डुंड** पुं० (हिं) पेड़ की सूखी हुई शाखा। ठूंठ।
**डुक, डुक्का** पुं० (हिं) घूँसा। मुक्का।
**डुकियाना** क्रि० (हिं) घूँसों से मारना।
**डुगडुगी** स्त्री० (हिं) डुग्गी (बाजा)।
**डुग्गी** क्रि० (हिं) चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा
**डुपट्टा** पुं० दे० 'दुपट्टा'।
**डुबकनी** स्त्री० (हिं) पानी के भीतर चलने वाली नाव। पनडुब्बी। (सब-मेरिन)।
**डुबकी** स्त्री०(हिं) १-जल में डूबने की क्रिया या भाव। गोता। २-पीठी की बनी हुई बिना तली बरी। ३-एक तरह की बटेर।
**डुबवाना** क्रि० (हिं) डुबाने का काम कराना।
**डुबाना** क्रि० (हिं) १-गोता देना। २-चौपट या नष्ट करना।
**डुबाव** पुं० (हिं) पानी में डूबने भर की गहराई।
**डुबोना** क्रि० दे० 'डबोना'।
**डुब्बा** पुं० दे० 'पनडुब्बा'।
**डुब्बी** स्त्री० दे० १-'डुबकी'। २-दे० 'डुबकनी'।

**ढुभकौरी** स्त्री० (हि) पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।
**ढुलना** क्रि० दे० 'डोलना'।
**ढुलाना** क्रि० (हि) १-हिलाना। चलायमान करना। २-हटाना। भगाना। ३-चलाना। फिराना।
**ढूंगर** पुं० (हि) १-पहाड़ी। २-टीला। ३-बस्ती। आबादी।
**ढूंगा** पुं० (हि) १-चम्मच। २-डोंगा। ३-रस्से का गोल लच्छा।
**ढूंज** स्त्री० (देश) आँधी।
**ढूंडा** वि० (हि) जिसका एक सींग टूट गया हो। (बैल)
**डूबना** क्रि० (हि) १-पानी या किसी द्रव पदार्थ में समाना। गोता खाना। २-सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३-ऋण दिया हुआ या व्यापार में लगा हुआ धन घटना या नष्ट होना। ४-चौपट या नष्ट होना। ५-चिन्तन में मग्न होना। ६-लीन होना।
**डेड़सी** स्त्री० (हि) ककड़ी के समान एक तरकारी।
**डेग** पुं० १-दे० 'देग'। २-दे० 'डग'।
**डेगची** स्त्री० 'देगची'।
**डेड़हा** पुं० (हि) पानी का साँप जो विषरहित होता है
**डेढ़** वि० (हि) एक और आधा।
**डेढ़ा** वि० (हि) डेढ़ गुना। डेवढ़ा। पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़ गुनी संख्या बताई जाती है।
**डेबरी** स्त्री० (हि) टीन या शीशे आदि का बना दीपक
**डेमरेज** पुं० (अ) बन्दरगाह या रेल के गोदाम में निश्चित अवधि के बाद पड़े रहने वाला माल का अतिरिक्त किराया जो माल छुड़ाने वाले को देना पड़ता है।
**डेरा** पुं० (हि) १-टिकान। ठहराव। २-खेमा। तम्बू। ३-ठहरने का स्थान। छावनी। ४-नाच-गाने वालों का दल या मण्डली। ५-ठहरने या रहने के लिए फैलाया हुआ सामान। ६-घर। मकान। वि० (स्त्री० डेरी) बायां। सव्य।
**डेराना** क्रि० १-दे० 'डराना'। २-दे० 'डरना'।
**डेल** पुं० (हि) १-झावा। बड़ी डलिया। २-वह झावा जिसमें बहेलिया चिड़ियाँ बन्द करके रखते हैं।
**डेलटा** पुं० (अं) नदियों के मुहाने या सङ्गम स्थान पर उनके द्वारा लाये हुए कीचड़ और बालू के जमने के कारण बनी हुई वह भूमि जो धारा के कई शाखाओं में विभक्त होने के कारण तिकोनी होती है।
**डेला** पुं० (हि) १-आँख का कोया। डला। २-ढेला रोड़ा।
**डेलो** स्त्री० (हि) डलिया। बाँस की बनी झाँपी।
**डेवढ़** वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० १-क्रम। सिलसिला। २-विकट परिस्थिति में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था। (एडजस्टमेंट)।
**डेवढ़ना** क्रि० (हि) १-आँच पर रोटी का फूलना। २-कपड़े को मोड़ना या तह लगाना।
**डेवढ़ा** वि० (हि) डेढ़ गुना। पुं० वह पहाड़ा जिसमें क्रम से प्रत्येक अंक की डेढ़ गुनी संख्या बढ़ा दी जाती है।
**डेवढ़ी** स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।
**डेस्क** पुं० (अं) लिखने का ढालुवाँ मेज।
**डेहरी** स्त्री० (हि) अन्न रखने के लिए कच्ची मिट्टी का ऊँचा बरतन।
**डैन** पुं० (हि) डैना। पक्ष। बाजू।
**डैना** पुं० (हि) चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह पक्ष।
**डैश** पुं० (अं) विरामसूचक आड़ी लकीर।
**डोंगर** पुं० (हि) [स्त्री० डोंगरी] १-पहाड़ी। टीला।
**डोंगा** पुं० (हि) [स्त्री० डोंगी] १-बिना पाल की नाव २-नाव।
**डोंगी** स्त्री० (हि) छोटी नाव।
**डोंड़ा** पुं० (हि) १-बड़ी इलायची। टोंटा। करतूस।
**डोंड़ी** स्त्री० (हि) १-पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २-टोंटी। ३-डोंगी। ४-दे० 'डौंड़ी'।
**डोआ** पुं० (हि) काठ का चम्मच।
**डोई** स्त्री० (हि) एक तरह की काठ की कलछी जिससे दूध आदि चलाते हैं।
**डोकरा** पुं० (हि) [स्त्री० डोकरी] १-बूढ़ा आदमी। २-(वृद्ध) पिता।
**डोका** पुं०(हि) [स्त्री० डोकी] काठ का छोटा कटोरा।
**डोकी** स्त्री० (हि) काठ की कटोरी।
**डोड़ा** पुं० (हि) १-कपास, सेमल आदि का बीज। २-पोस्त की फली।
**डोब, डोबा** पुं० (हि) गोता। डुबकी।
**डोबना** क्रि० (हि) गोता देना। डुबना।
**डोभ** पुं० (हि) सिलाई का टाँका।
**डोम** पुं० (हि) [स्त्री० डोमनी, डोमिनी] १-एक जाति विशेष। २-ढाढ़ी। मिरासी।
**डोम-कौआ** पुं० (हि) काला और बड़े आकार का कौआ।
**डोमनी, डोमिन** स्त्री० (हि) १-डोम पत्नी। २-डोम जाति की स्त्री।
**डोर** स्त्री०(सं) पतला तागा। डोरा। धागा। २-सहारा
**डोरना** क्रि०(हि) किसी की डोर या सहारे पर चलना
**डोरा** पुं० (हि) १-मोटा सूत या तागा। धागा। २-धारी। लकीर। ३-आँख की वह पतली लाल नसें जो नशे अथवा यौवन की उमंग में दिखाई देती हैं। ४-तलवार की धार। ५-तपे हुए घी की धारा। ६-प्रेम का बन्धन। स्नेह का सूत्र। ७-काजल या

सुरमे की रेखा। ८-नाचने में ग्रीवा संचालन का भाव।

**डोरिआना** क्रि०(हि) १-डोरा बाँध कर लेजाना। २-प्रेम जाल में बाँधने का प्रयत्न करना।

**डोरिया** पुं० (हि) लम्बी धारी वाला कपड़ा।

**डोरियाना** क्रि० (हि) गले में रस्सी बाँध कर पशुओं को ले जाना।

**डोरिहार** पुं० (हि) [स्त्री० डोरिहारिनी] पटवा।

**डोरी** स्त्री० (हि) १-रस्सी। २-पाश। बन्धन। ३-डंडीदार कटोरा।

**डोरे** क्रि० वि० (हि) संग-संग। साथ-साथ।

**डोल** पुं० (हि) १-लोहे का गोल बरतन जिससे कुएँ से पानी आदि निकालते हैं। २-झूला। हिंडोला। ३-पालकी। ४-हलचल। वि० (हि) चंचल।

**डोलची** स्त्री० (हि) छोटा डोल।

**डोलना** क्रि० (हि) १-हिलना। चलायमान होना। चलना। फिरना। टहलना। ३-हटना। चला जाना ४-(चित्त) विचलित होना।

**डोला** पुं० (हि) [स्त्री० डोली] १-बन्द पालकी जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं। २-झूले का झोंका। पेंग।

**डोलाना** क्रि० (हि) डोलने में प्रवृत्त करना। चलाना।

**डोली** स्त्री० (हि) एक तरह की सवारी जिसे कहार कन्धों पर उठा कर चलते हैं।

**डोली-डंडा** पुं० (हि) लड़कों का एक खेल।

**डौंडी** स्त्री० (हि) घोषणा। मुनादी।

**डौर** पुं० दे० 'डौल'।

**डौल** पुं० (हि) १-ढाँचा। २-बनावट का ढंग। ३-तरह। प्रकार। ४-युक्ति। उपाय। ५-रंग-ढंग। लक्षण।

**डौलना** क्रि० (हि) गढ़ना। दुरुस्त करना।

**डौलियाना** क्रि० (हि) १-ढंग पर लाना। २-गढ़ कर दुरुस्त करना।

**ड्योढ़ा** वि०(हि) डेढ़ गुना। पुं० दे० 'डेवढ़ा'।

**ड्योढ़ी** स्त्री० (हि) १-द्वार के पास की भूमि। चौखट २-मकान में घुसने का स्थान।

**ड्योढ़ीदार, ड्योढ़ीवान** पुं० (हि) ड्योढ़ी पर रहने वाला सिपाही। द्वारपाल। दरबान।

[शब्दसंख्या—१८३६४]

# ढ

**ढ** हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप होते हैं प्रथम—ढगण का ढ और दूसरा 'चढ़ना' का 'ढ़'।

**ढँकना** क्रि० (हि) ढकना।

**ढंख** पुं० (हि) ढाक। पलाश।

**ढंग** पुं० (हि) १-क्रिया। प्रणाली। शैली। रीति। पद्धति। ढब। २-प्रकार। भांति। तरह। ३-रचना। बनावट। गढ़न। ४-युक्ति। उपाय। ५-आचरण। व्यवहार। ६-धोखा देने की युक्ति। ७-लक्षण। आसार। ८-स्थिति। अवस्था।

**ढंगलाना** क्रि० (हि) लुढ़काना।

**ढंगी** वि० (हि) १-चालबाज। २-चतुर। चालाक। ढोंगी।

**ढँढोर** पुं० (हि) आग की लपट। लौ।

**ढँढोरची** पुं० (हि) मुनादी करने वाला व्यक्ति।

**ढँढोरना** क्रि० (हि) टटोलकर ढूँढ़ना।

**ढँढोरा** पुं० (हि) घोषणा। मुनादी।

**ढँढोरिया** पुं० (हि) ढँढोरा पीटने वाला।

**ढँपना** क्रि० (हि) ढकना।

**ढ** पुं० (सं) १-बड़ा ढोल। २-कुत्ता। ३-कुत्ते की पूँछ। ४-साँप।

**ढकना** पुं० (हि) ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० १-छिपना या छिपाना। २-आच्छादित होना या करना।

**ढकनियाँ, ढकनी** स्त्री० (हि) ढक्कन।

**ढका** पुं० (हि) तीन सेर के बराबर की एक तौल या बाट।

**ढाँकल** स्त्री० (हि) चढ़ाई। आक्रमण। धावा।

**ढकेलना** क्रि० (हि) १-ठेलकर आगे की ओर गिराना २-धक्के से हटाना या सरकाना।

**ढकोरना** क्रि० (हि) एकबारगी पीना। बड़े-बड़े घूँट पीना।

**ढकोसला** पुं०(हि) १-प्रयोजन सिद्धि के लिए बनाया हुआ झूठा रूप। आडम्बर। पाखंड।

**ढक्कन** पुं० (हि) ढकना। ढाँकने की वस्तु।

**ढक्का** पुं० (सं) बड़ा ढोल।

**ढखनी** स्त्री० (हि) ढक्कन। ढकना।

**ढगण** पुं० (सं) पिंगल में एकमात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

**ढचर** पुं० (हि) १-किसी वस्तु को बनाने या ठीक करने का सामान। ढांचा। २-झूठा ठाटबाट। आडम्बर।

**ढट्ठी** स्त्री० (हि) डाढ़ी बाँधने की पट्टी।

**ढड्ढा** वि० (देश) आवश्यकता से अधिक विस्तार वाला और बेढंगा।

**ढड्ढो** स्त्री० (हि) बुड्ढी स्त्री। (व्यंग)।

**ढनमना** क्रि० (हि) १-लुढ़कना। २-चक्कर खाकर गिरना।

**ढनमनाना** क्रि० (हि) लुढ़कना।

पुं० (हि) ढफ। (बाजा)।
। पुं० (हिं) ढक्कन। ढकना। क्रि० ढका होना।
। पुं० [स्त्री० ढपली] दे० 'डफला'।
**ढपोरसंख** पुं० दे० 'डपोरशंख'।
**ढफ** पुं० दे० 'डफ (बाजा)'।
**ढब** पुं० (हिं) १-ढंग। रीति। २-प्रकार। भाँति। तरह। ३-रचना। बनावट। ४-उपाय। तदबीर। ५-प्रकृति। आदत।
**ढबरा** वि० (हिं) मटमैला। गंदला (पानी)।
**ढबीला** वि० (हिं) ढब वाला। ढबका।
**ढबुआ** पुं० (देश) १-खेतों के मचान के ऊपर का छप्पर। २-पैसा।
**ढमकना** क्रि० (हिं) ढम-ढम शब्द सहित बजना।
**ढमकाना** क्रि० (हिं) ढम-ढम शब्द सहित बजाना।
**ढमना** क्रि० (हिं) मकान या दीवार आदि का गिरना
**ढरक** स्त्री० (हिं) १-ढरकने की क्रिया या भाव। २-दयालुता। ३-दे० 'ढरनि'।
**ढरकना** क्रि० (हिं) १-ढलना। गिरकर बहना। २-नीचे की ओर जाना।
**ढरका** पुं०(हिं) चौपायों को दवा पिलाने की नोकीली नली।
**ढरकाना** क्रि० (हिं) ढलकाना। गिराकर बहाना।
**ढरकी** स्त्री० (हिं) बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक औजार।
**ढरकीला** वि० (हिं) ढलकाने वाला
**ढरकौंहा** वि० (हिं) ढरकने या ढलने वाला।
**ढरना** क्रि० (हिं) ढलना।
**ढरनि** स्त्री० (हिं) १-ढलने या गिरने की क्रिया या भाव। २-हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३-चित्त-प्रवृति। झुकाव। ४-दयालुता।
**ढरहरना** क्रि० (हिं) १-सरकना। खसकना। २-ढलना। ३-पूर्णतया भरजाना।
**ढरहरा** वि० (हिं) (स्त्री० ढरहरी) ढालुवाँ।
**ढराना** क्रि० (हिं) १-दे० 'ढलाना'। २-दे० 'ढरकाना'।
**ढरारा** वि० (हिं) (स्त्री० ढरारी) १-गिर कर बह जाने वाला। २-लुढ़कने वाला। ३-चलायमान होने वाला।
**ढरियाना** क्रि० (हिं) १-गिराना, बहाना या ढालना २-आँसू बहाना।
**ढर्रा** पुं० (हिं) १-ढङ्ग। तरीका। २-पद्धति।
**ढलकना** क्रि० (हिं) १-तरल पदार्थ का नीचे गिर-जाना। ढलना। २-लुढ़कना।
**ढलका** पुं० (हि) आँख से निरन्तर पानी बहने का का एक रोग।
**ढलकाना** क्रि० (हिं) ढलकने में प्रवृत्त करना। लुढ़काना।
**ढलनशीलता** स्त्री० (हिं) गलाकर ढाले जाने की शक्ति अथवा गुण। (प्लैस्टिसिटी)।
**ढलना** क्रि० (हि) १-तरल पदार्थ का गिर कर नीचे की ओर बहना। ढरकना। २-गुजरना। बीत जाना। ३-उतार पर होना। ४-उड़ेला जाना। ५-किसी ओर प्रवृत होना। ६-रीझना। ७-साँचे में ढाला जाना।
**ढलवाँ** वि० (हिं) १-साँचे में ढालकर बनाया हुआ। २-ढाल या उतार वाला।
**ढलवाना** क्रि० (हिं) ढालने का काम कराना।
**ढलाई** स्त्री० (हिं) १-ढालने का काम या भाव। २-ढालने की मजदूरी।
**ढलाना** क्रि० (हि) दे० 'ढलवाना'।
**ढलाव** क्रि० (हि) १-ढालने या ढाले जाने का भाव या ढङ्ग। २-ढाल। उतार।
**ढलुवाँ** वि० (हि) ढला हुआ।
**ढलैत** वि० (हिं) ढाल बाँधने वाला। (सिपाही)।
**ढवरी** स्त्री० (हिं) लौ। लगन। धुन।
**ढहना** क्रि० (हि) १-मकान या दीवार का गिरना। २-नष्ट होना।
**ढहरना** क्रि० (हि) ढलना।
**ढहराना** क्रि० (हि) १-लुढ़काना। २-गिराकर अलग करना।
**ढहरी** स्त्री० (हि) १-देहलीज। २-मटकी।
**ढहवाना** क्रि० (हि) ढहाने का काम अन्य से कराना।
**ढहाना** क्रि० (हि) गिराना (मकान या दीवार)। ध्वस्त करना।
**ढाँकना** क्रि० (हि) ढकना।
पुं० दे० 'टाक'।
**ढाँचा** पुं० (हि) १-किसी वस्तु को बनाने से पूर्व उसके अङ्गों को जोड़कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप। ठाठ। डौल। २-इस प्रकार जोड़े हुए खण्ड की उसके बीच में कोई वस्तु [illegible] अथवा लगाई जा सके। (फ्रेम)। ३-पञ्जर। ठठरी। ४-गढ़न। बनावट। ५-प्रकार। भाँति। तरह।
**ढाँढा** पुं० (पश्तो) छोटा कुआँ।
**ढाँपना** क्रि० (हि) ढकना। ढाँकना।
**ढाँस** स्त्री० (हि) सूखी खाँसी खाँसने का शब्द।
**ढाँसना** क्रि० (हि) सूखी खाँसी खाँसना।
**ढाँसी** स्त्री० (हि) सूखी खाँसी।
**ढाई** वि० (हि) दो और आधा।
**ढाक** पुं० (हि) १-पलाश का पेड़। २-ढोल
**ढाकन** पुं० दे० 'ढक्कन'।
**ढाड़** स्त्री० (हि) १-चिग्घाड़। २-चिल्लाहट।
**ढाड़ना** क्रि० दे० 'डढ़ना'।
**ढाढ़** स्त्री० दे० 'ढाड़'।
**ढाढ़स** पुं० (हि) १-धैर्य। दिलासा। सान्त्वना। २-

दृढ़ता ।

**ढाढ़ी** पुं० (देश) [स्त्री० ढाढिन] मंगल अवसरों पर बधाई के गीत गाने वाली एक जाति ।

**ढाना** क्रि० (हिं) १-दीवार मकान आदि गिराना । २-ध्वस्त करना ।

**ढाबर** वि० (हिं) गदला (पानी) ।

**ढाबा** पुं० (हिं) १-रोटी की दुकान । २-वह टोकरा जिसके नीचे मुर्गियाँ आदि बन्द रहती हैं । ३-जाल । ४-ओलती ।

**ढामक** पुं० (हिं) नगाड़े, ढोल आदि के पीटने से उत्पन्न शब्द ।

**ढार** पुं० (हिं) १-ढाल । उतार । २-मार्ग । पथ । ३-ढाँचा । ४-रचना । बनावट । स्त्री० १-कान का एक तरह का गहना । २-पछेली नामक गहना ।

**ढारना** क्रि० (हिं) ढालना ।

**ढारस** पुं० (हिं) ढाढ़स ।

**ढाल** स्त्री० (हिं) १-वह जगह जो बराबर नीचे होती चली गई हो । उतार । २-ढंग । तरीका । स्त्री० (सं) थाली की तरह का एक अस्त्र जिसे तलवार आदि का वार रोकने का काम लिया जाता है ।

**ढालना** वि० (हिं) १-तरल पदार्थ या पानी नीचे गिराना । उड़ेलना । २-मद्यपान करना । ३-कोई वस्तु बनाने के लिए उसकी सामग्री साँचे में डालना

**ढालवाँ** वि० (हिं) [स्त्री० ढालवीं] जो बराबर नीचा होता गया हो । ढालू ।

**ढालुआँ, ढालू** वि० दे० 'ढालवाँ' ।

**ढास** पुं० (हिं) डाकू । लुटेरा ।

**ढासना** पुं० (हिं) १-सहारा । टेक । २-तकिया ।

**ढाहना** क्रि० (हिं) दीवार या मकान गिराना । ढाना

**ढाहा** पुं० (हिं) नदी का ऊँचा किनारा ।

**ढिंढोरना** क्रि० (हिं) १-विलोड़ना । मथना । २-खोजना । तलाश करना ।

**ढिंढोरा** पुं० (हिं) १-वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है । डुग्गी । डुग-डुगिया २-ढोल बजाकर सर्वसाधारण को दी जाने वाली सूचना । घोषणा ।

**ढिग** क्रि० वि० (हिं) पास । निकट । स्त्री० (हिं) १-निकटता । सामीप्य । २-तट । किनारा ।

**ढिठई** स्त्री० (हिं) ढिठाई । धृष्टता ।

**ढिठाई** स्त्री० (हिं) १-धृष्टता । २-अनुचित साहस ।

**ढिपुनी** स्त्री० (हिं) चूचुक ।

**ढिबरी** स्त्री० (हिं) मिट्टी के तेल से दीपक के समान जलने वाली डिबिया ।

**ढिमका** सर्व (हिं) [स्त्री० ढिमकी] अमुक । फलाँ ।

**ढिमरिया** [स्त्री० (हिं) पानी भरने वाली । कहारिन ।

**ढिलाई** स्त्री० (हिं) १-ढीला होने का भाव । शिथिलता । सुस्ती ।

**ढिलाना** क्रि० (हिं) १-ढीला कराना । २-बन्धन से छुड़ाना । ३-ढीला करना । ४-बन्धन से मुक्त करना ।

**ढिसरना** क्रि० (हिं) १-फिसल पड़ना । २-प्रवृत्त होना । ३-झुकना ।

**ढींगर** पुं० (हिं) १-हट्टा-कट्टा आदमी । २-पति । ३-उपपति । जार ।

**ढींढ, ढींढा** पुं० (हिं) १-निकला हुआ बड़ा पेट । २-गर्भ । हमल ।

**ढींच** स्त्री० (हिं) कूबड़ ।

**ढीट** स्त्री० (हिं) रेखा । लकीर ।

**ढीठ** वि० (हिं) १-धृष्ट । बे-अदब । २-संकोचरहित । ३-निडर । निर्भय । ४-चपल ।

**ढीठक** वि० (हिं) ढीठ ।

**ढीठता** स्त्री० (हिं) १-धृष्टता । २-अनुचित । साहस ।

**ढीठो, ढीठ्यो** पुं० (हिं) ढिठाई । धृष्टता ।

**ढीम** पुं० (हिं) १-पत्थर का बड़ा टुकड़ा । २-मिट्टी की पिंडी ।

**ढीमड़ो** पुं० (देश) कूप । कुआँ । (डिंगल) ।

**ढीमर** पुं० (हिं) धीवर ।

**ढीमा** पुं० दे० 'ढीम' ।

**ढील** स्त्री० (हिं) १-अनुचित विलम्ब । २-बन्धन को ढीला करने का भाव । ३-शिथिलता । सुस्ती । ४-बालों का कीड़ा । जूँ । वि० दे० 'ढीला' ।

**ढीलना** क्रि० (हिं) १-ढीला करना । २-बन्धनमुक्त करना । ३-पतला करने के लिए पानी आदि डालना डोरी आदि को बढ़ाना या डालना ।

**ढीला** वि० (हिं) १-जो कसा या तना न हो । २-जो दृढ़ता से बंधा, जकड़ा या लगा न हो । ३-जो बहुत गाढ़ा न हो । गीला । ४-धीमा । मन्द । ५-सुस्त । ६ शान्त । नरम । ६-नपुंसक ।

**ढीलापन** पुं० (हिं) शिथिलता ।

**ढीह** पुं० (हिं) ऊँचा टीला । डूह ।

**ढुंढ** पुं० (हिं) उचक्का । ठग ।

**ढुंढ़वाना** क्रि० (हिं) खोजवाना । तलाश करना ।

**ढुंढिराज** पुं० (स) गणेश ।

**ढुंढी** स्त्री० (देश) १-बाँह । २-मुसुक । ३-नाभि ।

**ढुकना** क्रि०(हिं) १-घुसना । २-टूट पड़ना । ३-छिपकर कोई बात सुनना । ४-किसी के पास पहुँचना ।

**ढुकाना** क्रि० (हिं) ढुकने में प्रवृत्त करना ।

**ढुकास** स्त्री० (हिं) पानी की अधिक इच्छा । अधिक प्यास ।

**ढुक्का** पुं० (देश) घूँसा । मुक्का ।

**ढुटौना** पुं० (हिं) ढोटा । लड़का ।

**ढुरकना** क्रि० (हिं) १-लुढ़कना । २-सरकना । ३-फिसलना । ४-झुकना ।

**ढुरन** स्त्री० (हिं) ढुरने की क्रिया या भाव ।

**ढुरना** क्रि० (हि) १-गिरकर बहना। ढलना। २-इधर-उधर डोलना। ३-लहराना। ४-फिसलपड़ना ५-झुकना। प्रवृत होना। ६-प्रसन्न होना।
**ढुरहुरी** स्त्री० (हि) १-लुढ़कने की क्रिया या भाव। २-पगडण्डी। पतला रास्ता। ३-नथ से लगी सोने की गोल दानों की पंक्ति।
**ढुराना, ढुरावना** क्रि० (हि) १-ढरकाना। २-लुढ़काना। ३-गिराना।
**ढुरकना** क्रि० दे० 'ढुलकना'।
**ढुर्री** स्त्री० (हि) पगडण्डी।
**ढुलकना** क्रि० (हि) निरन्तर ऊपर-नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढ़कना।
**ढुलकाना** क्रि० (हि) लुढ़काना।
**ढुलना** क्रि० (हि) १-गिरकर बहना। ढरकना। २-लुढ़कना। झुकना। प्रवृत्त होना। ४-कृपालु होना ५-इधर से उधर डोलना। ६-लहराना।
**ढुलमुल** वि० (हि) अस्थिर।
**ढुलवाई** स्त्री० (हि) १-ढोने का काम या मजदूरी। २-ढुलाने की क्रिया या मजदूरी।
**ढुलवाना** क्रि० (हि) १-ढोने का काम कराना। २-ढुलाने का काम कराना।
**ढुलाई** स्त्री० दे० 'ढुलवाई'।
**ढुलाना** क्रि० (हि) १-गिराकर बहाना। २-गिराना। ३-लुढ़काना। ४-प्रवृत्त करना। झुकाना। ५-कृपालु करना। ६-इधर-उधर घुमाना। ७-चलाना-फिराना। ८-घोलना। ९-ढोने का काम कराना।
**ढुकना** क्रि० (हि) ढुकना।
**ढूँढ़** स्त्री० (हि) खोज। तलाश।
**ढूँढ़ना** क्रि० (हि) खोजना। तलाश करना।
**ढूकना** क्रि० (हि) ढुकना।
**ढूका** पुं० (हि) किसी की दृष्टि से बचकर कहीं खड़े होने की अवस्था या भाव।
**ढूह, ढूहा** पुं० (हि) १-ढेर। अटाला। २-टीला।
**ढेंक** स्त्री० (हि) लम्बी चोंच और गरदन वाली एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है।
**ढेंकली** स्त्री० (हि) १-एक यन्त्र जिसके द्वारा सिंचाई के लिए पानी निकाला जाता है। २-धान कूटने का एक यन्त्र। ढेंकी। ३-अर्क निकालने का एक यन्त्र
**ढेंका** पुं० (हि) १-कोल्हू में लगा हुआ बाँस। २-बड़ी ढेंकी।
**ढेंकी** स्त्री० दे० 'ढेंकली'।
**ढेंढ** पुं० (हि) १-कौआ। २-एक जाति। ३-मूर्ख।
**ढेंढर** पुं० दे० 'टेंटर'।
**ढेंढा** पुं० दे० 'ढेंढ'।
**ढेंढ़ी** स्त्री० दे० 'डांडा'।
**ढेंप** स्त्री० (देश) १-टहनी से लगा फल या पत्ते के छोर का भाग। २-कुच का अग्र भाग।
**ढेउआ** पुं० (देश) १-पैसा। २-धन।
**ढेपनी** स्त्री० दे० 'ढेंप'।
**ढेबरी** स्त्री० दे० 'ढिबरी'
**ढेबुआ** पुं० (हि) १-पैसा। धन।
**ढेबुक** पुं० (हि) पैसा।
**ढेमनी** स्त्री० (हि) रखेली। सुरैतिन।
**ढेर** पुं० (हि) राशि। अटाला। वि० बहुत। अधिक।
**ढेरा** पुं० (देश) चकई नामक खिलौना।
**ढेरी** स्त्री० (हि) ढेर। राशि।
**ढेलवाँस** पुं० (हि) ढेला फेंकने की रस्सी का फंदा। गोफन।
**ढेला** पुं० (हि) मिट्टी पत्थर आदि का टुकड़ा। २-एक तरह का धान।
**ढेला-चौथ** स्त्री० (हि) भादों सुदी चौथ।
**ढेवा** पुं० (हि) १-खेप। २-गीली मिट्टी का ढेर जो कच्ची दीवार बनाते समय उस पर डाला जाता है।
**ढैया** पुं० (हि) १-ढाई सेर का बाट। २-ढाई गुने का पहाड़ा।
**ढोंका** पुं० (देश) १-पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा २-कोल्हू का बाँस।
**ढोंग** पुं० (हि) ढकोसला। पाखंड।
**ढोंगबाज, ढोंगी** वि० (हि) ढोंग करने वाला। पाखंडी
**ढोंढ़** पुं० (हि) १-कपास, पोस्त आदि का डोडा। २-कली।
**ढोंढ़ी** स्त्री० (हि) १-नाभि। २-दे० 'ढोंढ़'।
**ढोआई** स्त्री० दे० 'ढुलाई'।
**ढोटा** पुं० (हि) [स्त्री० ढोटी] १-पुत्र। बेटा। बालक।
**ढोटौना** पुं० दे० 'ढोटा'।
**ढोठा** पुं० (हि) [स्त्री० ढोठी] दे० 'ढोटा'।
**ढोना** क्रि० (हि) १-बोझा लाद कर ले जाना। २-उठा ले जाना।
**ढोर** पुं० (हि) चौपाया। पशु। स्त्री० १-दे० 'ढुरन' २-अदा। छटा।
**ढोरना** क्रि० (हि) १-ढलना। ढरकाना। २-लुढ़काना। ३-हिलाना।
**ढोल** पुं० (सं) १-चमड़े से मढ़ा लंबोतरा बाजा जो दोनों हाथों से बजाया जाता है। २-कान के भीतर का परदा।
**ढोलक** स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
**ढोलकिया** पुं० (हि) ढोलक बजाने वाला। स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
**ढोलकी** स्त्री० (हि) छोटा ढोल।
**ढोलन** पुं० (हि) १-पति। २-वर। दूल्हा।
**ढोलना** पुं०(हि) १-ढोलक के आकार का छोटा जन्तर। २-सड़क के कङ्कर दाबने का बड़ा बेलन। ३-पालना। ४-पलङ्ग। क्रि० (हि) १-ढालना। ढरकाना। २-डुलाना।

**ढोलनी** स्त्री० (हिं) छोटा पालना।

**ढोला** पुं० (हिं) १-एक तरह का कीड़ा जो सड़े हुए फलों में होता है। २-हद का निशान। ३-गोल महराब बनाने की डाट। ४-पति। प्रियतम। ५-एक प्रकार का गीत। ६-मूर्ख व्यक्ति। ७-पिण्ड शरीर।

**ढोलिनी** स्त्री० (हिं) ढोल बजाने वाली।

**ढोलिया** पुं० दे० 'ढोलकिया'।

**ढोली** स्त्री० (हिं) १-दो सौ पानों की एक गड्डी। २-परिहास। हँसी।

**ढोव** पुं० (हिं) मांगलिक अवसर पर राजा आदि को भेंट की जाने वाली वस्तु।

**ढोवा** पुं० (हिं) १-ढोये जाने की क्रिया। ढुलाई २-दूसरों का माल अनुचित रूप से उठा लेजाना लूट। ३-दे० 'ढोव'।

**ढोवाई** स्त्री० दे० 'ढुलाई'।

**ढोहना** क्रि० (हि) १-ढोना। २-ढूँढ़ना।

**ढौंचा** पुं० (हिं) एक पहाड़ा जिसमें क्रम से अङ्कों की साढ़े चार गुनी संख्या पढ़ी जाती है।

**ढौंसना** क्रि० (हि) १-धूम-धाम मचाना। २-हर्षध्वनि करना।

**ढौर** पुं० (सं) ढंग।

**ढौरना** स्त्री० (देश) इधर-उधर घुमाना।

**ढौरी** स्त्री० (देश) रट। धुन। स्त्री० (हि) ढंग। तरीका

# ण (ण)

**ण** हिन्दी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन और टवर्ग का अन्तिम अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

**ण** पुं० (सं) १-भूषण। २-निर्णय। ३-ज्ञान। ४-पिङ्गल के एक गण का नाम।

**णगण** पुं० (सं) दो मात्राओं का एक गण।

[शब्दसंख्या—१८५६३]

**त** हिन्दी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है।

**तंग** वि० (फा) १-विस्तार में कम। संकीर्ण। २-चुस्त। ३-कसा हुआ। ४-दिक। परेशान। पुं० घोड़े के जीन कसने की पेटी। कसन।

**तंगी** स्त्री० (फा) १-तंग होने का भाव। २-सँकरापन। संकीर्णता। ३-परेशानी। ४-गरीबी।

**तंजेब** स्त्री० (फा) एक तरह की महीन और बढ़िया मलमल।

**तंडुल** पुं० (सं) चावल।

**तंत** पुं० (हि) १-दे० 'तंतु'। २-दे० 'तत्व'। ३-दे० 'तंत्र'। स्त्री० आतुरता। वि० जो तौल में ठीक हो।

**तंतमंत** पुं० (हिं) तन्त्र-मन्त्र।

**तंतरी** पुं०(हिं) १-तार वाला बाजा। २-तार वाला बाजा बजाने वाला।

**तंतु** पुं० (हिं) १-सूत। धागा। डोरा। २-सन्तान। ३-विस्तार। फैलाव। ४-ताँत।

**तंतुवाय** पुं० (सं) १-कपड़े बुनने वाला। २-मकड़ी

**तंत्र** पुं० (सं) १-तन्तु। तांत। २-सूत। ३-जुलाहा। ४-कपड़ा बुनने का सामान। ५-कुटुम्ब का भरण-पोषण। ६-निश्चित सिद्धान्त। ७-झाड़ने फूँकने का मन्त्र या सिद्धान्त। ८-अधीनता। ९-पद या कार्य करने का स्थान। १०-हिन्दुओं का उपासना सम्बन्धी एक शास्त्र जिसके सिद्धान्त गुप्त रखे जाते हैं। ११-राज्य या किसी अन्य कार्य का प्रबन्ध

**तंत्रकार** पुं० (सं) बाजा बजाने वाला।

**तंत्रण** पुं०(सं) शासन अथवा प्रबन्ध आदि का कार्य

**तंत्र-संस्था** पुं० (सं) राज्य का शासन अथवा प्रबन्ध करने वाली संस्था। (गवर्नमेण्ट)।

**तंत्री** स्त्री० (सं) १-सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २-वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। ३-शरीर की नस। ४-रस्सी। वि० १-जिसमें तार लगे हों। २-तन्त्र से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० १-बृहस्पति। २-वह जो बाजा बजाता हो।

**तंदरा** स्त्री० दे० 'तंद्रा'।

**तंदुरुस्त** वि० (फा) निरोग। स्वस्थ।

**तंदुरुस्ती** स्त्री० (फा) १-निरोगता। २-स्वास्थ्य।

**तंदुल** पुं० (हि) १-चावल। २-आठ सरसों के बराबर एक तौल जिससे हीरे तौले जाते थे।

**तंदूर** पुं० (फा) मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्टी जिसमें रोटियाँ पकाई जाती हैं।

**तंदूरी** पुं० (देश) एक तरह का रेशम। वि० (हिं) १-तन्दूर पर बना या पका। २-तन्दूर सम्बन्धी।

**तंदेही** स्त्री० (हि) १-परिश्रम। मेहनत। २-प्रयत्न। कोशिश। ३-ताकीद। ४-चेतावनी।

**तंद्रा** स्त्री० (सं) १-ऊँघ। ऊँघाई। २-हलकी बेहोशी

**तंद्रालस** पुं० (हि) तन्द्रा या ऊँघ के कारण होने वाला आलस्य।

**तंद्राल, तंद्रिल** वि० (सं) जिसे तन्द्रा या ऊँघ आती हो।
**तंबाकू** पुं० दे० 'तमाखू'।
**तंबिका** स्त्री० (सं) गौ। गाय।
**तंबिया** पुं० (हि) १-तांबे का छोटा बरतन। २-तांबे का छोटा तसला।
**तंबियाना** क्रि० (हि) १-ताँबे के रंग का होना। २-तांबे के पात्र में किसी पदार्थ को रखने के कारण इसमें ताँबे का स्वाद या गन्ध आ जाना।
**तंबीह** स्त्री(अ) १-शिक्षा। नसीहत। २-दण्ड। सजा
**तंबू** पुं० (हि) खेमा। शामियाना।
**तंबूर** पुं० (फा) एक तरह का ढोल।
**तंबूरची** पुं० (फा) तम्बूरा बजाने वाला।
**तंबूरा** पुं० (हि) सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।
**तंबूल** पुं० दे० 'तांबूल'।
**तंबोल** पुं० (हि) १-दे० 'तांबूल'। २-एक प्रकार का पेड़। ३-ब्याह के समय वर को दिया जाने वाला टीका।
**तंबोलिन** स्त्री० (हि) पान बेचने वाली स्त्री। तमोलिन
**तंबोली** पुं० (हि) [स्त्री० तंबोलिन] पान बेचने वाला
**तंभ, तंभन** पुं० (हि) शृङ्गार रस में स्तम्भ नामक भाव।
**तँवार** पुं० (हि) १-ताप। गर्मी। २-मूर्च्छा।
**तः** प्रत्य० (सं) एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लग कर यह अर्थ देता है — (क) रूप या आकार से, जैसे--साधारणतः। (ख) के अनुसार, जैसे—नियमतः।
**त** पुं० (सं) १-नौका। २-पुण्य। ३-चोर। ४-झूठ ५-पूँछ। ६-गोद। ७-म्लेच्छ। ८-गर्भ। ९-शठ। १०-रत्न। ११-अमृत। १२-बुद्ध। क्रि० वि० (हि) तो।
**तअज्जुब** पुं० (अ) आश्चर्य।
**तअल्लुक** पुं० (अ) सम्बन्ध।
**तअल्लुकेदार** पुं० (अ० तअल्लुकःदार) तअल्लुके का मालिक।
**तअस्सुब** पुं० (अ) पक्षपात। तरफदारी।
**तइसा** वि० दे० 'तैसा'।
**तईं** प्रत्य० (हि) से। अव्य० वास्ते। लिए।
**तई** स्त्री० (हि) छोटा तवा।
**तउ** अव्य० (हि) १-तब। २-त्यों।
**तऊ** अव्य (हि) तथापि। तिस पर भी। तो भी
**तक** अव्य० (हि) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। पर्यंत स्त्री० (हि) १-तराजू। २-तराजू का पल्ला। ३-दे 'टक'।
**तकखमा** पुं० (हि) तखमीना। अन्दाज। कूत।
**तकदीर** स्त्री० (अ) भाग्य। प्रारब्ध।
**तकदीरवर** वि० (अ) भाग्यवान्।
**तकदीरी** वि० (अ) भाग्य सम्बन्धी।
**तकना** क्रि० (हि) १-देखना। २-ताक में रहना। ३-आश्रय लेना।
**तकब्बर** पुं० [अ० तकब्बुर]। अभिमान।
**तकमा** पुं० १-दे० 'तमगा'। २-दे० 'तुकमा'।
**तकरार** स्त्री० (अ) १-हुज्जत। विवाद। २-लड़ाई झगड़ा। ३-कविता में किसी वर्णन को दोहराना।
**तकरीर** स्त्री० (अ) १-बातचीत। २-भाषण।
**तकला** पुं० (हि) [स्त्री० तकली] १-चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर कता हुआ सूत लपेटते हैं। टेकुआ। २-एक औजार जिससे रस्सी बटते हैं।
**तकली** स्त्री० (हि) छोटा तकला। टेकुरी।
**तकलीफ** स्त्री० (अ) १-कष्ट। क्लेश। २-विपत्ति। मुसीबत।
**तकल्लुफ** पुं० (अ) (दिखावटी)। शिष्टाचार।
**तकवाना** क्रि० (हि) दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना।
**तकसा** स्त्री० (?) १-नाश। २-दुर्दशा।
**तकसीम** स्त्री० (अ) १-बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २-भाग (गणित)।
**तकसीर** स्त्री०(अ) १-दोष। अपराध। २-भूल। चूक।
**तकाजा** पुं० (अ) १-ऐसी वस्तु माँगना जिसके प्राप्त करने का अधिकार हो। २-ऐसा काम करने के लिए किसी से कहना। ३-किसी प्रकार की उत्तेजना अथवा प्रेरणा।
**तकाना** क्रि० (हि) किसी को ताकने में प्रवृत्त करना दिखाना।
**तकाव** पुं० (हि) ताकने की क्रिया या भाव।
**तकावी** स्त्री० (अ) वह ऋण जो बीज, बैल आदि खरीदने के लिए किसानों को सरकार की ओर से दिया जाता है।
**तकिया** पुं० (फा) १-रूई आदि का भरा वह थैला जो सोने के समय सिर के नीचे रखते हैं। २-रोक या सहारे के लिए प्रयुक्त होने वाली पत्थर की पटिया। ३-विश्राम करने का स्थान। ४-आश्रय। सहारा। ५-मुसलमान फकीर या पीर का निवास-स्थान जो प्रायः कब्रिस्तान के पास होता है।
**तकिया-कलाम** पुं० दे० 'सखुन-तकिया'।
**तकुआ** पुं० (हि) तकला।
**तक्कर** वि० दे० 'तगड़ा'।
**तक्र** पुं० (सं) छाछ। मट्ठा।
**तक्रसार** पुं० (सं) मक्खन।
**तक्षक** पुं० (सं) १-राजा परीक्षित को काटने वाला एक नाग। २-भारत की एक प्राचीन अनार्य जाति ३-सर्प। ४-बढ़ई। ५-सूत्रधार। वि० छेदने वाला। छेदक।

**तक्षण** पुं० (सं) १–लकड़ी को रेद कर साफ करने का काम। २–बढ़ई। ३–पत्थर, लकड़ी आदि खोद-कर बेल-बूटे बनाने का काम।
**तक्षणी** स्त्री० (सं) बढ़इयों का लकड़ी साफ करने का रन्दा।
**तक्षशिला** स्त्री० (सं) भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम जो रावलपिण्डी (पाकिस्तान प्रदेश के अन्तर्गत) के पास था।
**तखमीना** पुं० (फा) अनुमान। अटकल।
**तखल्लुस** पुं० (फा) उपनाम।
**तख्त** पुं० (फा) १–राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २–तख्तों की बनी बड़ी चौकी।
**तख्त-गाह** पुं० (फा) राजधानी।
**तख्त-ताऊस** पुं० (फा+अ) छः करोड़ रुपये की लागत से बना एक प्रसिद्ध राजसिंहासन।
**तख्तनशीन** वि० (फा) सिंहासनारूढ़।
**तख्तपोश, तख्तपोस** पुं० (फा) तख्त पर बिछाने की चादर।
**तख्तबंदी** स्त्री० (फा) तख्तों की बनी हुई दीवार।
**तख्ता** पुं० (फा) १–लकड़ी का कम चौड़ा और लम्बा पल्ला। २–लकड़ी की बड़ी चौकी। ३–कागज का ताव। ४–अरथी।
**तख्ती** स्त्री० (फा) १–छोटा तख्ता। २–लिखने की पट्टी। पटिया।
**तगड़ा** वि० (हि) (स्त्री० तगड़ी) १–बलवान। २–खूब हृष्टपुष्ट।
**तगण** पुं० (सं) पिङ्गल के अनुसार वह गण जिसमें पहले दो गुरु और (ऽऽ।)अन्तिम लघु होता है।
**तगदमा** पुं० (अ) अनुमान। तख्तमीना।
**तगना** क्रि० (हि) सीना। सिलाई करना।
**तगनी** स्त्री० (हि) तागने की क्रिया या भाव। तगाई।
**तगमा** पुं० दे० 'तमगा'।
**तगर** पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है।
**तगा** पुं० (हि) तागा।
**तगाई** स्त्री०(हि) तागने का काम या उजरत। सिलाई
**तगादा** पुं० दे० 'तकाजा'।
**तगाना** क्रि० (हि) तगाने का काम कराना। सिलवाना
**तगार, तगारी** स्त्री० (हि) १–ऊखली गाड़ने का गड्ढा। २–चूना या गारा ढोने का तसला। ३–वह स्थान जहाँ चूना या गारा बनाया जाय।
**तगीर** पुं० (अ० तगय्युर) परिवर्त्तन।
**तग्य** पुं० दे० 'तज्ञ'।
**तचना** क्रि० (हि) १–तपना। अत्यन्त तृप्त होना। २–दुःखी होना।
**तचा** स्त्री० दे० 'त्वचा'।
**तचाना** क्रि० (हि) १–तृप्त करना। २–गरम करना ३–दुःखी करना।
**तचित** वि० (हि) १–तपा हुआ। तृप्त। २–दुःखी।
**तच्छक** पुं० दे० 'तक्षक'।
**तच्छिन** क्रि० वि० (हि) तत्क्षण।
**तज** पुं० (हि) १–दारचीनी जाति का एक सदाबहार वृक्ष जिसके पत्ते 'तेजपात' कहलाते हैं। २–इस वृक्ष की सुगन्धित छाल या लकड़ी।
**तजन** पुं० (हि) १–त्याग। २–कोड़ा। चाबुक।
**तजना** क्रि० (हि) त्यागना।
**तजरबा** पुं० (अ) १–अनुभव। २–प्रयोग।
**तजरबाकार** वि० (अ) अनुभवी।
**तजवीज** स्त्री० (अ) १–सम्मति। राय। २–निर्णय। ३–प्रबन्ध। बन्दोबस्त।
**तजवीजसानी** स्त्री० (अ) किसी निर्णय का उसी अदालत में फिर से विचार किया जाना।
**तज्जनित, तज्जन्य** वि० (सं) उससे उत्पन्न।
**तज्जातीय** वि० (सं) उस जाति का।
**तज्ञ** वि० (सं) १–जानकार। २–तत्वज्ञ।
**तटंक** पुं० (हि) कर्णफूल नामक कान का गहना।
**तट** पुं० (स) १–प्रदेश। २–क्षेत्र। ३–किनारा। कूल। क्रि० वि० निकट। पास।
**तटनी** स्त्री० (हि) नदी।
**तट-पाल** पुं० (सं) समुद्र के तटवर्त्ती प्रदेश या बन्दरगाह क्षेत्र का रक्षक। (कोस्ट्-गार्ड)।
**तट-पाल-पोतक** पुं० (स) समुद्र के तटवर्त्ती प्रदेश का रक्षक जंगी जहाज या युद्धपोत। (कोस्ट-गार्ड-मॉनिटर)।
**तटरक्षा** पुं० (सं) तटवर्त्ती प्रदेश या बन्दरगाह की रक्षा। (कोस्ट-डिफेंस)।
**तटरक्षा-वाहिनी** स्त्री० (सं) तटवर्त्ती प्रदेश की रक्षा करने वाली सेना। (कोस्टल-कमांड)।
**तटवर्त्ती** वि० (सं) किनारे का। तट के पास वाला। (कोस्टल)।
**तटस्थ** वि० (सं) १–तट या किनारे रहने वाला। २–पास रहने वाला। ३–परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला। निरपेक्ष। उदासीन। (न्यूट्रल)
**तटस्थ-उदतीर्थ** पुं० (सं) वह बन्दरगाह जो किसी भी राष्ट्र से कोई अपेक्षा अथवा कामना न रखे। निरपेक्ष बन्दरगाह। (न्यूट्रल-पोर्ट)।
**तटस्थता** स्त्री० (सं) तटस्थ या निरपेक्ष रहने का भाव। निरपेक्षता। उदासीनता। (न्यूट्रलटी)।
**तटस्थ-राज्य** पुं०(सं) तटस्थ या निरपेक्ष रहने वाला राज्य या देश। (न्यूट्रल-स्टेट)।
**तटस्थीकरण** पुं० (सं) १–किसी देश अथवा स्थान को तटस्थ घोषित करने या बना देने की क्रिया। २–किसी वस्तु का कोई गुण हटाकर उस गुण का फल अथवा प्रभाव नष्ट करने की क्रिया या भाव।

(म्युचुआइजेशन)।

**तटिनी** स्त्री० (सं) नदी।

**तटिनी-पति** पुं० (सं) समुद्र।

**तटी** स्त्री० (सं) नदी।

**तड** अव्य० (हिं) वहाँ। उस जगह।

**तड़** पुं० (हिं) १-एक ही जाति के अलग-अलग विभाग। २-स्थल। ३-थप्पड़ मारने से उत्पन्न शब्द। ४-लाभ या आयोजन।

**तड़क** स्त्री० (हिं) १-तड़कने की क्रिया या भाव। २-तड़कने के कारण पड़ने वाला चिह्न। ३-आचार, चटनी आदि चटपटे पदार्थ। चाट। ४-वह लकड़ी जो दीवार से बड़ेर तक लगाई जाती है।

**तड़कना** क्रि० (हिं) १-तड़ शब्द सहित टूटना या फटना। २-किसी वस्तु का सूख कर फट जाना। ३-जोर का शब्द करना। ४-बिगड़ना। झुंझलाना ५-तड़पना। ६-तड़का देना। छौंकना।

**तड़क-भड़क** स्त्री० (हिं) चमकदमक।

**तड़का** पुं० (हिं) १-प्रातःकाल सवेरा। २-छौंक। बघार।

**तड़काना** क्रि० (हिं) १-किसी (सूखी) वस्तु को 'तड़' शब्द सहित तोड़ना। २-जोर का शब्द उत्पन्न करना ३-फाड़ना। ४-खिजाना।

**तड़कीला** वि० (हिं) १-चमकीला। २-तड़कने वाला

**तड़ाक** क्रि० वि० (हिं) शीघ्र। झटपट।

**तड़तड़ाना** क्रि० (हिं) १-तड़-तड़ शब्द होना। २-तड़-तड़ शब्द उत्पन्न करना।

**तड़तड़ाहट** स्त्री० (हिं) तड़तड़ाने की क्रिया या भाव।

**तड़प** स्त्री० (हिं) १-तड़पने की क्रिया या भाव। २-चमक। आभा।

**तड़पना** क्रि० (हिं) १-छटपटाना। तलमलाना। २-गरजना। घोर शब्द करना।

**तड़पवाना** क्रि० (हिं) किसी को तड़पाने में प्रवृत करना

**तड़पाना** क्रि० (हिं) १-शारीरिक या मानसिक वेदना पहुँचाकर व्याकुल करना। २-किसी को गरजने के लिए बाध्य करना।

**तड़फड़ाना** क्रि० (हिं) १-छटपटाना। तलमलाना। २-तड़पाना।

**तड़फना** क्रि० दे० 'तड़पटा'।

**तड़बन्दी** स्त्री० (हिं) दलबन्दी।

**तड़ाक** स्त्री० (हिं) तड़ाके का शब्द। क्रि० वि० १-तड़ या तड़ाक शब्द सहित। २-जल्दी से। तुरन्त।

**तड़ाक-पड़ाक, तड़ाक-फड़ाक** क्रि० वि० (हिं) चट-पट फौरन।

**तड़ाका** पुं० (हिं) 'तड़' शब्द। क्रि०वि० तुरन्त। चट-पट।

**तड़ाग** स्त्री० (सं) सरोवर। तालाब।

**तड़ागना** क्रि० (हिं) १-डींग मारना। २-उछल कूद करना।

**तड़ातड़** क्रि० वि० (हिं) तड़-तड़ शब्द सहित।

**तड़ाना** क्रि० (हिं) ताड़ने में प्रवृत करना। झेंपाना।

**तड़ावा** स्त्री० (हिं) १-ऊपरी तड़कभड़क। २-धोखा।

**तड़ित** स्त्री० (सं) विद्युत। बिजली।

**तड़ित-पति** पुं० (सं) बादल। मेघ।

**तड़ित-प्रभा** स्त्री० (सं) बिजली की चमक।

**तड़िद्दाम** पुं० (हिं) कौंधने वाली बिजली की रेखा।

**तड़िपाना** क्रि० दे० 'तड़पाना'।

**तड़ी** स्त्री० (हिं) १-चपत। २-छल। धोखा। ३-धौंस

**तड़ीत** स्त्री० (हिं) तड़ित। बिजली।

**तत्** पुं० (सं) १-परमात्मा। २-वायु हवा। सर्व० उस।

**तत** पुं० (सं) १-वायु। २-विस्तार। ३-पिता। ४-पुत्र। ५-वह बाजा जिसमें तार लगे हों। वि० (हिं) तपा हुआ। गरम। पुं० दे० 'तत्व'।

**ततकार** पुं० (हिं) नृत्य या नाच का बोल।

**ततखन** क्रि० वि० (हिं) तत्क्षण।

**तततार्थेई** स्त्री० (हिं) नाच के बोल।

**ततवाउ** पुं० दे० 'तन्तुवाय'।

**ततबीर** स्त्री० 'तदबीर'।

**ततसार** स्त्री० (हिं) तापने की जगह।

**तताई** स्त्री० (हिं) तप्त होने की क्रिया या भाव।

**ततु** पुं० दे० 'तत्व'।

**ततुवाऊ** पुं० दे० 'तन्तुवाय'।

**ततैया** स्त्री० (हिं) १-बर्रे। भिड़। ३-जवा मिर्च। वि० १-तेज। फुरतीला। २-चतुर। चालाक।

**ततोधिक** वि० (सं) उनसे बढ़कर।

**तत्काल** क्रि० वि० (सं) तुरन्त। फौरन।

**तत्कालिक** वि० दे० 'तात्कालिक'।

**तत्कालीन** क्रि० वि० (सं) उसी समय का।

**तत्क्षण** क्रि० वि० (सं) तुरन्त उसी समय।

**तत्त** पुं० दे० 'तत्व'।

**तत्ता** वि० (हिं) गरम। उष्ण।

**तत्ताथेई** स्त्री० (हिं) नाचते समय पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द।

**तत्तोथंबो** पुं० (हिं) १-दम-दिलासा। बहलावा। २-बीचबचाव।

**तत्त्व** पुं० (सं) १-वास्तविकता। यथार्थता। २-जगत का मूल कारण। ३-पंचभूत। ४-परमात्मा। ५-सार वस्तु। सारांश।

**तत्त्वज्ञ** पुं० (सं) १-ब्रह्मज्ञानी। २-दार्शनिक।

**तत्त्वज्ञान** पुं० (सं) ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के सम्बन्ध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्मज्ञान।

**तत्त्वज्ञानी** पुं० दे० 'तत्त्वज्ञ'।

**तत्त्वतः** क्रि० वि० (सं) १-महत्वपूर्ण गुण या तत्व के विचार से। (सब्स्टेन्शली)। २-यथार्थ रूप में।

वास्तव में।
**तत्त्वदर्शी** पुं० दे० 'तत्त्वज्ञ'।
**तत्त्वदृष्टि** स्त्री० (सं) तत्त्वज्ञान प्राप्त करने वाली दृष्टि
**तत्त्वनिष्ठ** वि० (सं) सिद्धांत का पक्का।
**तत्त्वमसी** पद(सं) 'तू वही अर्थात् ब्रह्म है' (वेदांत)।
**तत्त्वविद** पुं० (सं) १-तत्त्वज्ञ। २-परमेश्वर।
**तत्त्वविद्या** स्त्री० (सं) दर्शनशास्त्र। अध्यात्मविद्या।
**तत्त्ववेत्ता** पुं० (सं) तत्त्वज्ञ।
**तत्त्व-शास्त्र** पुं० (सं) दर्शनशास्त्र।
**तत्त्वावधान** पुं० (सं) देखरेख।
**तत्त्वावधानक** पुं० (सं) देखरेख करने वाला व्यक्ति
**तत्पर** वि० (सं) १-उन्नत। सन्नद्ध। मुस्तैद। दक्ष। निपुण। ३-चतुर। होशियार।
**तत्परता** स्त्री०(सं) १-सन्नद्धता। मुस्तैदी। २-दक्षता निपुणता। होशियारी।
**तत्पुरुष** पुं० (सं) १-ईश्वर। परमेश्वर। २-एक कल्प का नाम। ३-व्याकरण में एक समास।
**तत्र** क्रि० वि० (सं) वहाँ। उस स्थान पर।
**तत्रक** पुं० (देश) एक वृक्ष विशेष।
**तत्र-भगवान** पुं० (सं) परम पूज्य (धार्मिक गुरु के लिए)। (हिज होलीनैस)।
**तत्र-भवती** स्त्री०(हिं) पूज्यनीया। माननीय महारानी (हर-हाईनैस)।
**तत्र-भवान** पुं० (सं) माननीय महाराज। हिज-हाई-नैस)।
**तत्र-महती** स्त्री० (हिं) राज्यराजेश्वरी। (सम्राट्पत्नी (हर-मैजेस्टी)।
**तत्र-महान्** पुं० (सं) राज्यराजेश्वर। हिज-मैजेस्टी)।
**तत्र-श्रीमान्** पुं० (सं) महामहिम। (हिज-एक्सलैंसी)
**तत्सम्बन्धी** वि०(सं) उससे सम्बन्ध रखने वाला।
**तत्सम** पुं० (सं) संस्कृत का वह शब्द जिसका प्रयोग भाषा में उसकी शुद्धि में या ज्यों का त्यों हो।
**तत्सामयिक** वि० (सं) उस समय का।
**तत्स्थानीय** वि० (सं) मेल मिलाने या मेल खाने वाला। तद्नुरूप। (कारेस्पांडिंग)।
**तत्स्वरूप** वि० (सं) उसके समान।
**तथा** अव्य० (सं) १-और। व। २-ऐसे ही।
**तथाकथित, तथाकथ्य** वि० (सं) जो कहा जाय पर उसके सम्बन्ध में कोई प्रमाण न हो। कहा जाने वाला।
**तथागत** पुं० (सं) गौतम बुद्ध।
**तथापि** अव्य० (सं) तो भी। तिस पर भी।
**तथास्तु** अव्य० (सं) ऐसा ही हो। एवमस्तु।
**तथैव** अव्य० (सं) उसी प्रकार।
वि० (सं) तथाकथित।
**तथ्य** पुं० (सं) १-सचाई। यथार्थता। २-कोई ऐसी बात जो किसी विशेष अवस्था में वस्तुतः हुई हो। ३-वह अनुभूति जो किसी विशेष अवस्था में हुई हो।
**तथ्यक** वि० (सं) तथ्य सम्बन्धी।
**तथ्यक-साध्या** स्त्री० (सं) वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से सम्बन्ध रखने वाली साध्या। (इश्यू-आफ-फैक्टस)।
**तदंतर** क्रि० वि० (सं) उसके उपरान्त।
**तद्** वि० (सं) वह। क्रि० वि० तब।
**तदनुकूल** वि० (सं) उसके अनुकूल या अनुसार।
**तदनुरूप** वि० (सं) १-उसी के समान। उसी के रूप का। २-मेल मिलाने या मेल खाने वाला। (कार-स्पोंडिङ्ग)।
**तदनुसार** क्रि० वि०, वि० (सं) जो हो अथवा हुआ हो उसके अनुसार।
**तदपि** अव्य० (सं) १-वह भी। २-तो भी। तथापि
**तदबीर** स्त्री० (अ) युक्ति। उपाय। यत्न।
**तदर्थ** अव्य० (सं) १-उसके लिए। २-उस या किसी विशेष काम के लिए। (एडहाक)।
**तदर्थ-समिति** स्त्री० (सं) किसी विशेष काम के लिए बनी हुई समिति जो कार्य सम्पादन के पश्चात स्वतः विघटित होजाती है। (एडहाक-कमिटी)।
**तदर्थीय** वि० (सं) (कोई शब्द या पद) जो किसी दूसरी भाषा के शब्द का अर्थ सूचित करने के लिए उसके अनुकरण पर बना हो।
**तदा** अव्य० (सं) उस समय। तब।
**तदाकार** वि० (सं) उसके आकार का। उसकी तरह का।
**तदारुक** पुं० (अ) १-अभियुक्त या खोई हुई वस्तु की खोज। २-दुर्घटना की जाँच। ३-दुर्घटना रोकने के निमित्त पहले से किया जाने वाला प्रबन्ध या उपाय।
**तदीय** वि० (सं) उसका।
**तदुपरांत** क्रि० वि० (सं) उसके पीछे। उसके बाद।
**तदुपरि** क्रि० वि० (सं) उसके ऊपर।
**तदेक** वि० (सं) उसके समान।
**तदेकात्मा** वि० (सं) उसके जैसा।
**तद्गुण** पुं० (सं) एक अर्थालङ्कार।
**तद्देशीय** वि० (सं) उस देश का।
**तद्धित** पुं० (सं) १-व्याकरण में वह प्रत्यय जिसे संज्ञा के अन्त में लगाकर भाव-वाचक संज्ञाएँ या विशेषण बनाते हैं। जैसे—मित्रता का 'ता'। २-वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगा कर बनाया जाय।
**तद्भव** पुं० (सं) भाषा में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप कुछ विकृत अथवा परिवर्तित होगया हो।
**तद्यपि** अव्य० (सं) तथापि। तिस पर भी।
**तद्रूप** वि० (सं) किसी के रूप के समान। सदृश। पुं० रूपक अलङ्कार का एक भेद।

तद्वत् वि० (सं) वैसा। उसके समान। अव्य० उसी प्रकार।
तन पुं० (हि) शरीर। देह। क्रि० वि० तरफ। ओर। वि० तनिक।
तनक वि० दे० 'तनिक'।
तनकना क्रि० दे० 'तिनकना'।
तनकीह स्त्री० (अ) १-जाँच। तहकीकात। २-किसी मुकदमे की वह मूल बातें जिनका विचार और फैसला करना बाकी हो।
तनखाह स्त्री० (फा) वेतन। तलब।
तनख्वाह स्त्री० (फा) वेतन। तलब।
तनगना क्रि० दे० 'तिनकना'।
तनज पुं० (अ) १-ताना। मजाक।
तनजेब स्त्री० (फा) महीन चिकनी मलमल।
तनज्जुल वि० (अ) अवनत।
तनज्जुली स्त्री० (फा) अवनति।
तनतना क्रि० (हि) १-रोबदाब। २-क्रोध।
तनतनाना क्रि० (हि) १-दब-दबा दिखलाना। २-क्रोध करना।
तनत्राण पुं० दे० 'तनुत्राण'।
तनना क्रि० (हि) १-खिचाव आदि के कारण अपने पूरे विस्तार पर पहुंचाना। २-ताना जाना। ३-अकड़ कर सीधा खड़ा होना। ४-अभिमान पूर्वक रुष्ट होना।
तनपात पुं० दे० 'तनुपात'।
तनमय वि० दे० 'तन्मय'।
तनमात्र स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।
तनय पुं० (सं) पुत्र। बेटा।
तनया स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री।
तनरुह पुं० दे० 'तनूरुह'।
तनवाना क्रि० (हि) दूसरे को तानने में प्रवृत्त करना तानना।
तनसुख पुं० (हि) एक तरह का बढ़िया फूलदार कपड़ा
तनहा वि० (फा) एकाकी। अकेला।
तनहाई स्त्री० (फा) १-अकेलापन। २-एकान्त स्थान
तना पुं० (फा) वृक्ष का नीचे वाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होती। क्रि० वि० (हि) ओर। तरफ।
तनाई स्त्री० (हि) तानने का काम, भाव या मजदूरी
तनाऊ पुं० दे० 'तनाव'।
तनाकु क्रि० वि० दे० 'तनिक'।
तनाजा पुं० (अ) १-झगड़ा। २-वैर।
तनाना क्रि० दे० 'तनवाना'।
तनाब स्त्री० (अ) १-खेमे की रस्सी। २-बाजीगरों का रस्सा।
तनाय, तनाव पुं० (हि) १-तानने की क्रिया या भाव। २-वह रस्सी जिस पर धोबी कपड़े सुखाते हैं। ३-रस्सी।

तनि, तनिक क्रि० वि० (हि) जरा। टुक। वि० १-थोड़ा। अल्प। २-छोटा।
तनिमा स्त्री० (सं) १-शरीर का दुबलापन। कृशता। २-सुकुमारता।
तनियाँ, तनिया स्त्री० (हि) १-लंगोट। २-कछनी। जाँघिया। ३-चोली।
तनी स्त्री० (हि) १-डोरी के समान बटा हुआ कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है। बन्द। बन्धन। २-दे० 'तनिया' क्रि० वि० दे० 'तनिक' वि० दे० 'तनु'।
तनु वि० (सं) १-दुबला-पतला। कृश। २-थोड़ा। अल्प। कम। ३-कोमल। ४-सुन्दर। (अव्य०) ओर तरफ। स्त्री० १-शरीर। देह। २-चमड़ा। खाल। ३-स्त्री। औरत। ४-केंचुली। ५-जन्मकुण्डली में लग्न स्थान।
तनुक वि० दे० 'तनिक'। क्रि० वि० दे० 'तनिक'। पुं० दे० 'तनु'।
तनुज पुं० (सं) १-पुत्र। बेटा। २-जन्मकुण्डली में लगन मे पाँचवाँ स्थान।
तनुजा स्त्री० (सं) पुत्री। बेटी।
तनुता स्त्री० (सं) १-लघुता। छोटाई। २-दुर्बलता।
तनुत्व पुं० (सं) दे० 'तनुता'।
तनुत्राण पुं० (सं) १-वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो। २-कवच। बख्तर।
तनुधारी वि० (सं) शरीरधारी। देहधारी।
तनुमध्यमा वि० स्त्री० (सं) पतली कमर वाली।
तनुमध्या स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
तनुरस पुं० (सं) पसीना।
तनू पुं० (सं) १-बेटा। २-शरीर। ३-प्रजापति।
तनूज पुं० (सं) पुत्र। बेटा।
तनूजा स्त्री० (सं) बेटी। पुत्री।
तनूरुह पुं० (सं) १-रोम। रोआँ। २-पुत्र। बेटा।
तने अव्य० (हि) की ओर। की तरफ।
तनेना वि० (हि) [स्त्री० तनेनी] १-तानने वाला। २-टेढ़ा। तिरछा। ३-क्रुद्ध। नाराज।
तनै पुं० (हि) दे० 'तनय'।
तनैना पुं० दे० 'तनेना'।
तनैया स्त्री० (हि) बेटी। वि० तानने वाला।
तनोआ पुं० (हि) ऊपर ताना जाने वाला कपड़ा। चँदोआ।
तनोज पुं० (हि) १-रोम। रोआँ। २-पुत्र। बेटा।
तनोरुह पुं० दे० 'तनूरुह'।
तन्ना पुं० (हि) ताने का सूत।
तन्नी स्त्री० (हि) वह रस्सी जिससे तराजू का पलड़ा बंधा होता है।
तन्मनस्क वि० (सं) तन्मय। तल्लीन।
तन्मय वि० (सं) दत्तचित्त। तल्लीन।

**तन्मात्र** पुं०(सं) सांख्य के मतानुसार पंचभूत अर्थात् शब्द, रूप, रस और गन्ध का सूक्ष्म मिश्रित रूप।
**तन्मात्रा** स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।
**तन्यक** वि० [सं० तन्य] १-खींचने पर लम्बा हो जाने वाला। २-(वह धातु) जिसका तार खींचा जा सके।
**तन्यता** स्त्री० (सं) १-ठोस वस्तुओं का तार के रूप में खींचे जा सकने का गुण। (डक्टिलिटी)। २-वस्तुओं का खिंचने और फिर वैसे ही सुकड़ने का गुण। (एलास्टिसिटी)।
**तन्वंग** वि० (हि) [स्त्री० तन्वंगी] दुबले-पतले अंगों वाला।
**तन्वी** वि० स्त्री० (सं) दुबली या कोमल अंगों वाली स्त्री० १-पतली सुकुमार स्त्री। २-एक वर्णवृत्त।
**तप** पुं० (सं) १-शरीर को कष्ट देने वाले वह धार्मिक व्रत और नियम आदि कृत्य जो चित्त को भोग विलास से हटाने के लिए किये जाएँ। तपस्या। २-शरीर अथवा इन्द्रिय को वश में रखना। ३-नियम ४-ताप। गरमी। ५-ग्रीष्म ऋतु। ६-ज्वर। बुखार
**तपकना** क्रि० (हि) १-धड़कना। उछलना। २-टपकना।
**तपन** पुं० (सं) १-तपने की क्रिया या भाव। जलन। तप। २-सूर्य। ३-सूर्यकांतमणि। ४-गरमी। ५-धूप। ६-नायक-वियोग में नायका द्वारा किये जाने वाले हावभाव। स्त्री० (हि) ताप। गरमी।
**तपना** क्रि० (हि) १-अधिक या तेज गरमी के कारण खूब गरमी होना। २-प्रभुत्व या अधिकार दिखाना ३-बुरे कामों में बहुत अधिक खर्च करना। ४-तपस्या करना।
**तपनि** पुं०, स्त्री० दे० 'तपन'।
**तपरितु** स्त्री० (हि) गरमी की ऋतु या मौसम।
**तपशील** पुं० (हि) तपस्वी। तपस्या करने वाला।
**तपश्चरण** पुं० (सं) तप। तपस्या।
**तपश्चर्या** स्त्री० (सं) तप। तपस्या।
**तपस** पुं० दे० 'तपस्या'।
**तपसा** स्त्री० (हि) १-तप। तपस्या। २-तापती नदी।
**तपसी** पुं० (हि) तपस्वी।
**तपसील** पुं० (हि) तपस्वी। स्त्री० दे० 'तफसील'।
**तपस्या** स्त्री० (सं) दे० 'तप'।
**तपस्विता** स्त्री० (सं) तपस्वी होने की अवस्था या भाव
**तपस्विनी** स्त्री० (सं) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की स्त्री। ३-पतिव्रता। सती स्त्री। ४-पति मरजाने के उपरांत केवल अपनी सन्तान के पालन के निमित्त सती न होने वाली स्त्री।
**तपस्वी** पुं० (सं) [स्त्री० तपस्विनी] १-तपस्या करने वाला। २-दीन। ३-दया करने योग्य।
**तपा** पुं० (हि) तपस्वी। वि० जो तपस्या में मग्न हो।
**तपाक** पुं० (फा) १-प्रेम। २-उत्साह।
**तपाकर** पुं० (सं) १-सूर्य। २-बहुत बड़ा तपस्वी।
**तपाना** क्रि० (हि) १-गरम करना। २-दुःख देना।
**तपावंत** पुं० (हि) तपस्वी।
**तपाव** पुं० (हि) तप्त। गरमाहट।
**तपित** वि० (सं) तपा हुआ। गरम।
**तपिया** पुं० दे० 'तपस्वी।
**तपिश** स्त्री० (फा) तपन। गरमी।
**तपी** पुं० (हि) तपस्वी।
**तपेदिक** पुं० (फा) राजयक्ष्मा नामक रोग।
**तपेला** पुं० (हि) १-एक तरह का पानी गरम करने का बरतन। २-भट्टी।
**तपोधन** पुं० (सं) १-ऋषि, मुनि, जिनका तपस्या ही धन है। २-तपस्वी।
**तपोधर्म, तपोनिधि, तपोनिष्ठ** पुं० (सं) तपस्वी।
**तपोबन** पुं० दे० 'तपोवन'।
**तपोबल** पुं० (सं) तप का प्रभाव या शक्ति।
**तपोभूमि** स्त्री० (सं) तप करने का स्थान।
**तपोमय** वि० (सं) १-तप वाला। तपस्या करने वाला। पुं० परमेश्वर।
**तपोमूर्त्ति** पुं० (सं) १-तपस्वी। २-परमेश्वर।
**तपोलोक** पुं० (सं) ऊपर के सात लोकों में छठा लोक
**तपोवन** पुं० (सं) वह वन जो तपस्वियों के रहने अथवा तपस्या करने के योग्य हो।
**तपोवृद्ध** वि० (सं) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
**तपोव्रत** पुं० (सं) तपस्या सम्बन्धी व्रत।
**तपौनी** स्त्री० (हि) ठगों की रस्म जो लूट के माल में से कुछ अंश देवी को अर्पित करते हैं।
**तप्त** वि० (सं) १-तपा या तपाया हुआ। गरम। उष्ण २-जिसमें गरमी, आवेश या उग्रता हो। (हीटेड)। ३-दुःखित।
**तप्तकुण्ड** पुं० (सं) गर्म पानी का सोता या कुंड (प्राकृतिक)।
**तप्तमुद्रा** स्त्री०(सं) शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपाकर वैष्णव लोग अपने शरीर पर दागते हैं।
**तप्प** पुं० दे० 'तप'।
**तप्य** वि० (सं) जो तपने अथवा तापने योग्य हो। पुं० शिव।
**तफरीक** स्त्री० (अ) १-जुदाई। २-घटाना (गणित)। ३-फरक। अन्तर। ४-बटवारा।
**तफरीह** स्त्री० (अ) १-प्रसन्नता। २-दिलबहलाव। ३-हवाखोरी। ४-ताजगी।
**तफरीहन्** अव्य० (अ) १-मन बहलाव के रूप में। २-हँसी से।
**तफसील** स्त्री० (अ) १-अलग करना। ब्योरा।
**तब** अव्य० (हि) १-उस समय। इस कारण।

**तबक** पुं० (अ) १-लोक। तल। २-परत। तह। ३-सोने, चाँदी आदि धातुओं के पत्तरों को पीट कर कागज के समान बनाया हुआ पतला वरक। चौड़ी और छिछली थाली।
**तबकगर** पुं० (अ+फा) सोने, चाँदी आदि को पीट कर पतला वरक बनाने वाला व्यक्ति। तबकिया
**तबका** पुं० (अ) भूमि का वह खण्ड या विभाग। २-लोक। तल। ३-आदमियों का समूह।
**तबकिया** पुं० दे० 'तबकगर'। वि० जिसमें परत हों
**तबदील** वि०(अ) १-परिवर्तित। २-एक पद या स्थान से दूसरे पद या स्थान पर जाना।
**तबर** पुं० (फा) कुल्हाड़ी।
**तबल** पुं० (अ) १-बड़ा ढोल। २-नगाड़ा।
**तबलची** पुं० (हि) तबला बजाने वाला।
**तबला** पुं० (हि) ताल देने का एक चमड़ा मढ़ा प्रसिद्ध बाजा।
**तबलिया** पुं० दे० 'तबलची'।
**तबलीग** स्त्री० (अ) १-धर्म प्रचार। २-एक धर्म से दूसरे धर्म में जाना।
**तबादला** पुं० (अ) १-परिवर्त्तन। २-अन्तरण।
**तबाशीर** पुं० (हि) तवक्षीर। बंशलोचन।
**तबाह** वि० (फा) नष्ट। बरबाद।
**तबाही** स्त्री० (फा) नाश। बरबादी।
**तबीअत** स्त्री० (अ) १-चित्त। मन। जी। २-बुद्धि समझ। ज्ञान।
**तबीअतदार** वि० (अ+फा) १-समझदार। २-भावुक
**तबीब** पुं० (अ) चिकित्सक।
**तबीयत** स्त्री० दे० 'तबीअत'।
**तबेला** पुं० (अ० तबेल) अस्तबल।
**तब्बर** पुं० १-दे० 'तबर'। २-दे० 'टाबर'।
**तभी** अव्य (हि) १-उसी समय। २-इसी कारण।
**तमंचा** पुं० (फा) १-पिस्तौल। २-वह लम्बा खड़ा पत्थर जो दरवाजे के बगल में लगाया जाता है।
**तम** पुं० (सं) १-अन्धकार। अँधेरा। २-पाप। ३-राहु। ४-क्रोध। ५-अज्ञान। ६-कालिख। ७-नरक। ८-मोह। ९-दे० 'तमोगुण'। प्रत्य० एक प्रत्यय जो किसी विशेषण के अन्त में लगने से 'सबसे बढ़कर' का अर्थ बताता है। जैसे-श्रेष्ठतम।
**तमक** स्त्री० (हि) १-आवेश। उद्वेग। तेजी। तीव्रता ३-क्रोध।
**तमकना** क्रि० (हि) १-आवेश में आना। २-रुष्ट होना। ३-क्रोध का आधिक्य दिखलाना।
**तमकाना** क्रि० (हि) १-किसी को तमकने में प्रवृत्त करना। २-क्रोध के आवेश में (हाथ आदि) उठाना।
**तमका** पुं० (हि) आवेश। जोश।
**तमगा** पुं० (तु०) पदक।
**तमचर** पुं० (हि) १-निशाचर। २-उल्लू।
**तमचुर, तमचूर, तमचोर** पुं० (हि) कुक्कुट। मुरगा
**तमच्छन्न** वि० दे० 'तमाच्छन्न'।
**तमतमाना** क्रि० (हि) क्रोध या धूप से चेहरे का लाल हो जाना।
**तमन्ना** स्त्री० (अ) इच्छा। कामना।
**तमयी** स्त्री० (सं) रात।
**तमस** पुं० (सं) १-अन्धकार। २-पाप।
**तमसा** स्त्री० (सं) टौंस नामक नदी।
**तमस्विनी** स्त्री० (सं) अँधेरी रात।
**तमस्वी** वि० (सं) अन्धकारपूर्ण।
**तमस्सुक** पुं० (अ) दस्तावेज। ऋणपत्र।
**तमहाया** वि० (हि) १-अँधेरा। २-तमोगुण से युक्त
**तमा** [पुं० सं० तमस्] राहु। स्त्री० रात्रि। रात। स्त्री० (हि) लोभ। लालच।
**तमाई** स्त्री० (हि) अन्धकार। अँधेरा।
**तमाकू** पुं०[पुर्त० टुबैको] १-तमाखू। २-सुरती।
**तमाखू** पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक प्रकार से हलके नशे के लिए प्रयोग में आते हैं। सुरती। २-इन पत्तों से बना एक विशेष पदार्थ जिसे चिलम में भरकर धूम्रपान करते है।
**तमाचा** पुं० (फा) हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार। थप्पड़।
**तमाच्छन्न, तमाच्छादित** वि०(सं) अन्धकार से घिरा या भरा हुआ।
**तमादी** स्त्री० (अ) १-अवधि बीत जाना। २-मियाद खतम हो जाना। ३-उस अवधि का समाप्त हो जाना जिसमें कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती हो
**तमाम** वि० (अ) १-सम्पूर्ण। पूरा। २-समाप्त। खतम।
**तमारि** पुं० (हि) सूर्य। वि० अन्धकार दूर करने वाला। स्त्री० १-दे० 'तँवार'। २-दे० 'तमादी'।
**तमाल** पुं० (सं) १-सदाबहार वृक्ष। २-एक तरह की तलवार। ३-तेजपत्ता। ४-तमाखू।
**तमाशबीन** पुं० (अ+फा) १-तमाशा देखने वाला। २-ऐयाश।
**तमाशा** पुं० (फा) १-मनोरञ्जक दृश्य। २-विलक्षण कार्य।
**तमाशाई** पुं० (अ) तमाशा देखने वाला।
**तमासा** पुं० दे० 'तमाशा'।
**तमिस्र** पुं० (सं) १-अँधेरा। २-क्रोध। वि० (स्त्री० तमिस्रा) अन्धकारपूर्ण।
**तमिस्रा** स्त्री० (सं) अँधेरी रात।
**तमी** स्त्री० (सं) रात। पुं० १-निशाचर। २-राक्षस।
**तमीचर** पुं० (सं) १-निशाचर। राक्षस।
**तमीज** स्त्री० (अ) १-भले और बुरे की परख करने की शक्ति। विवेक। २-पहचान। ३-ज्ञान। ४-

अदब।
**तमीनाथ, तमीपति, तमीश** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**तमु** पुं० दे० 'तम'।
**तमोगुण** पुं० (सं) प्रकृति के तीन गुणों में से अन्तिम
**तमोगुणी** वि० (सं) अधम या निकृष्ट वृत्ति वाला।
**तमोघ्न** पुं० (सं) १-अज्ञान या अन्धकार को हरने वाला। २-सूर्य। ३-चन्द्रमा। ४-विष्णु। ५-शिव वि० जिससे अँधेरा दूर हो।
**तमोज्योति, तमोभिद्, तमोमणि** पुं० (स) जुगनू।
**तमोमय** वि० (सं) १-तमोगुण से भरा हुआ। २-अन्धकार से परिपूर्ण। ३-अज्ञानी। ४-क्रोधी
**तमोर** पुं० (हि) तांबुल। पान।
**तमोरी** पुं० दे० 'तमोली'।
**तमोल** पुं०(हि) पान का बीड़ा।
**तमोली** पुं० (हि) (स्त्री० तमोलिन) सादे पान या बीड़े लगे पान बेचने वाला। पनवाड़ी।
**तमोहर** पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-ज्ञान। वि० अज्ञान या अन्धकार को दूर करने वाला।
**तय** वि० (अ) १-पूरा किया हुआ। समाप्त। २-निश्चित ठहराया हुआ। ३-निर्णीत। निबटाया हुआ।
**तयना** क्रि० (हि) १-तपना बहुत गरम होना। २-दुखी होना। सन्तप्त होना।
**तयार** वि० दे० 'तैयार'।
**तयारी** स्त्री० दे० 'तैयारी'।
**तरंग** स्त्री० (सं) १-पानी की हिलोर। लहर। २-प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारण के द्वारा उत्पन्न होने वाली किसी वस्तु की लहर। (वेव)। ३-सङ्गीत के स्वरों का उतार-चढ़ाव। स्वरलहरी। ४-चित्त की उमङ्ग। ५-घोड़े की फलाँग। ६-सोने के तारों को उमेड़ कर बनाई हुई हाथ की चूड़ी।
**तरंग-दैर्घ्य** पुं० (सं) आकाश में प्रसारित भिन्न-भिन्न विद्युत-चुम्बकीय लहरों का विस्तार या लम्बाई (वेवलैंग्थ)।
**तरंगवती** स्त्री० (सं) नदी।
**तरंगायित** वि० (सं) १-तरङ्गयुक्त। जिसमें तरङ्गें उठती हों। २-तरङ्गों के समान। लहरदार।
**तरंगिणी** स्त्री० (सं) नदी। वि० जिसमें तरंगें हों।
**तरंगिणी-नाथ** पुं० (सं) समुद्र।
**तरंगित** वि० (सं) १-जिसमें तरंगें उठ रही हों। २-ऊपर-नीचे उठता हुआ।
**तरंगी** वि० (सं) (स्त्री० तरङ्गिणी) १-जिसमें लहरें या तरंगें हों। २-मनमौजी।
**तर** वि० (फा) १-गीला। २-शीतल। ३-हरा। ४-धनवान। क्रि० वि० तले। नीचे। प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो गुणाधिक्य प्रकट करने के लिए लगाया जाता है जैसे—स्थूलतर।
**तरई** स्त्री० (हि) तारा। नक्षत्र।
**तरक** पुं० (हि) १-सोच-विचार। उधेड़बुन। २-उक्ति। तर्क। ३-अड़चन। बाधा। ४-व्यतिक्रम। स्त्री० १-दे० 'तड़क'। २-पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरम्भ का शब्द सूचित करने के लिए लिखा जाने वाला शब्द
**तरकना** क्रि० (हि) १-तड़कना। २-तर्क करना। ३-मन में सोच-विचार करना।
**तरकश** पुं० (फा) तूणीर। तीर रखने का चोंगा।
**तरकश-बंद** पुं० (फा) तरकश रखने वाला व्यक्ति।
**तरकस** पुं० दे० 'तरकश'।
**तरकसी** स्त्री० (हि) छोटा तरकश।
**तरका** पुं०[अ० तर्कः] उत्तराधिकारी को मिलने वाली सम्पत्ति।
**तरकारी** स्त्री० (फा) १-भाजी। सब्जी। २-खाने के लिए पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाक।
**तरकी** स्त्री० (हि) कान का एक तरह का गहना।
**तरकीब** स्त्री० (अ) १-मिलावट। २-उपाय। ३-ढङ्ग। तरीका।
**तरकुला** पुं० (हि) तरकी नामक कान का गहना।
**तरकुली** स्त्री० (हि) तरकी नामक कान का गहना।
**तरक्की** स्त्री० (अ) १-वृद्धि। बढ़ती। २-उन्नति।
**तरखा** पुं० (हि) १-नदी या जल का तेज बहाव। २-तृष्णा।
**तरखान** पुं० (हि) बढ़ई।
**तरछत** क्रि० वि० (हि) नीचे की ओर।
**तरछाना** क्रि० (हि) १-तिरछी निगाह से देखना। २-आँख से इशारा करना।
**तरज** पुं० दे० 'तर्ज'।
**तरजन** पुं० दे० 'तर्जन'।
**तरजना** क्रि० (हि) डाँटना। डपटना।
**तरजनी** स्त्री० (हि) १-अँगूठे के पास वाली उँगली। २-भय। डर।
**तरजीला** वि० (हि) १-क्रोधपूर्ण। गुस्सैल। २-उग्र।
**तरजीह** स्त्री० (अ) १-प्रधानता। २-किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अच्छा समझना।
**तरजुई** स्त्री० (हि) छोटी तराजू।
**तरजुमा** पुं० (अ) भाषान्तर। अनुवाद।
**तरजौंहाँ** वि० दे० 'तरजीला'।
**तरण** पुं० (सं) १-नदी आदि पार करने की क्रिया। तरना। २-तैरना। ३-पार जाना।
**तरणि** पुं० (सं) १-नाव। नौका। २-सूर्य। ३-किरण।
**तरणिजा** स्त्री० (स) १-यमुना। २-एक वर्णवृत्त।
**तरणि-तनूजा** स्त्री० (सं) यमुना नदी।

**तरणी** स्त्री० (स) नौका। नाव।
**तरतराना** क्रि० (हि) १-तड़-तड़ाना। तोड़ने के समान शब्द करना। २-घी आदि में बिलकुल तर करना।
**तरतीब** स्त्री० (अ) वस्तुओं का ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
**तरदीद** स्त्री० (अ) १-रद्द करना। खण्डन। २-प्रत्युत्तर।
**तरद्दुद** पुं० (अ) १-चिन्ता। सोच। २-अन्देशा। खटका।
**तरन** पुं० दे० 'तरण'। २-दे० 'तरौना'। ३-नाव ४-बेड़ा। ५-उद्धार। निस्तार।
**तरन-तारन** पुं० (हि) १-उद्धार। निस्तार। २-भव-सागर से पार करने वाला। (ईश्वर)।
**तरना** क्रि० (हि) १-तैरना। २-नाव में या तैरकर पार करना। ३-तलना। ४-मुक्त होना (भव-सागर से)।
**तरनि** स्त्री० (हि) १-तरणी। २-तलना। पुं० सूर्य।
**तरनिजा** स्त्री० (हि) तरणिजा। यमुना।
**तरनी** स्त्री० (हि) १-नाव। नौका। २-दे० 'तन्नी'। पुं० सूर्य।
**तरन्नि** स्त्री० (हि) तरणि।
**तरप** स्त्री० (हि) तड़प।
**तरपट** पुं० (?) भेद। अन्तर। फरक।
**तरपना** क्रि० (हि) १-तड़पाना। २-तर्पण करना।
**तर-पर** क्रि० वि० (हि) १-नीचे-ऊपर। २-एक के पीछे दूसरा।
**तरपरिया** वि० (हि) १-नीचे-ऊपर का। २-क्रम में पहले और पीछे का।
**तरपीला** वि० (हि) चमकदार। भड़कीला।
**तरफ** स्त्री० (अ) १-ओर। २-बगल। ३-पक्ष।
**तरफदार** वि० (अ+फा) समर्थक। हिमायती।
**तरफदारी** स्त्री० (अ+फा) पक्षपात।
**तरफराना** क्रि०(हि) तड़फड़ाना।
**तर-बतर** वि० (फा) भीगा हुआ। आर्द्र।
**तरबूज** पुं० (फा) कुम्हड़े की तरह का एक गोल फल।
**तरबूजा** पुं० (?) ताजा फल।
**तरबूजिया** वि० (हि) तरबूज के छिलके के रंग का। गहरा हरा।
**तरबोना** क्रि० (हि) तर करना। भिगोना।
**तरभर** स्त्री० (हि) १-तड़ातड़ का शब्द। २-खलबली
**तरमीम** स्त्री० (अ) संशोधन। हेरफेर।
**तरराना** क्रि० (हि) ऐंठना। मरोड़ना।
**तरल** वि० (सं) १-चंचल। २-बहने वाला। द्रव। ३-क्षणभंगुर। ४-चमकीला। ५-कोमल।
**तरलाई** स्त्री० (हि) तरलता। द्रवत्व।
**तरलायित** वि० (सं) काँपता हुआ। हिलता हुआ।
**तरलित** वि० (सं) १-अस्थिर। २-प्रवाहशील।
**तरवन** पुं० (हि) एक प्रकार का कान का गहना।
**तरवर** पुं० दे० 'तरुवर'।
**तरवरिया** वि० (हि) तलवार चलाने वाला।
**तरवरिहा** वि० (हि) तरवरिया।
**तरवार** स्त्री० (हि) तलवार। पुं० तरुवर।
**तरवारि** स्त्री० (सं) तलवार।
**तरस** पुं० (हि) दया। रहम।
**तरसना** क्रि० (हि) १-किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना। २-तराशना। काटना।
**तरसाना** क्रि० (हि) १-अभाव का दुःख देना। २-व्यर्थ ललचाना।
**तरसौंहाँ** वि० (हि) तरसने वाला।
**तरह** स्त्री० (अ) १-प्रकार। भाँति। २-ढंग। ३-बना-वट। ४-स्थिति।
**तरहदार** वि० (फा) १-सजीला। २-शौकीन।
**तरहर, तरहरि, तरहुँड़** क्रि० वि० (हि) नीचे। तले
**तरहेल** वि० (हि) १-पराजित। २-वशीभूत।
**तराई** स्त्री० (हि) १-पहाड़ के नीचे का वह मैदान जहाँ तरी रहती है। २-तारा।
**तराजू** पुं० (फा) १-तोलने का उपकरण। तुला। २-दे० 'काँटा'।
**तराटक** पुं० दे० 'त्राटिका'।
**तराना** पुं० (फा) १-एक तरह का चलता गाना। २-गीत। गान। क्रि० (हि) १-तैरने में प्रवृत्त करना। १-उद्धार करना।
**तराप** स्त्री० (हि) बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द
**तरापा** पुं० (हि) हाहाकार। कुहराम।
**तराबोर** वि० (फा) पूर्णतया भीगा हुआ। तरबतर।
**तराभर** स्त्री० (हि) १-जल्दी-जल्दी में काम करना। २-धूम। ३-'तड़ातड़' की आवाज।
**तरायला** वि० (हि) तरल। २-चपल। चंचल।
**तरारा** पुं०(हि) १-उछाल। छलाँग। लगातार गिरने वाली जल की धार।
**तरावट** स्त्री० (हि) १-गीलापन। नमी। २-शीतलता ठंडक। ३-शरीर की गरमी शांत करने वाली चीजें ४-स्निग्ध भोजन।
**तराश** स्त्री० (फा) १-तराशने या काटने का ढंग या भाव। २-बनावट।
**तराशना** क्रि० (फा) काटना। कतरना।
**तरास** पुं० दे० 'त्रास'।
**तरासना** क्रि० (हि) १-त्रस्त करना। २-तराशना।
**तराहीं** क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
**तरि** स्त्री० (सं) १-नौका। २-कपड़े का किनारा। दामन।
**तरिका** स्त्री० (हि) बिजली। तड़ित। स्त्री० १-नाव। २-कान का एक गहना।

**तरिणी** स्त्री० (सं) तरणी
**तरिता** स्त्री० दे० 'तड़िता'
**तरिया** पुं० (हि) तैरने वाला।
**तरियाना** क्रि० (हि) १-नीचे कर देना। २-ढाँकना। ३-तह में जमना। ४-तर या गीला करना।
**तरिवन** पुं० (हि) १-तरकी नामक कान का गहना। २-कर्णफूल।
**तरिवर** पुं० दे० 'तरुवर'।
**तरिहँत** क्रि० वि० (हि) नीचे। तले।
**तरी** स्त्री० (सं) १-नाव। नौका। २-गदा। ३-धुआँ धूम। स्त्री० (हि) १-कछार। २-तराई। ३-तरवन स्त्री० (फा० तर) १-आर्द्रता। नमी। २-शीतलता। ठण्डक।
**तरीका** पुं० (अ) १-रीति। ढङ्ग। २-व्यवहार। चाल ३-युक्ति। उपाय।
**तरीनि** स्त्री० (हि) तराई। तलहटी।
**तरु** वि० (सं) वृक्ष। पेड़।
**तरुण** वि० (सं) (स्त्री० तरुणी) १-सोलह वर्ष से ऊपर की उमर वाला। युवा। जवान। २-नया। नवीन
**तरुणाई** स्त्री० (हि) युवावस्था। जवानी।
**तरुणाना** क्रि० (हि) तरुण होना। युवावस्था में प्रवेश करना।
**तरुणिमा** स्त्री० (स) यौवन। जवानी।
**तरुणी** स्त्री० (सं) युवती। जवान स्त्री।
**तरुन** पुं० दे० 'तरुण'।
**तरुनई, तरुनाई** स्त्री० (हि) तरुणाई। युवावस्था।
**तरुनापा** पुं० (हि) युवावस्था।
**तरुनि** स्त्री० दे० 'तरुणी'।
**तरुबाँही** स्त्री० (हि) शाखा। डाल।
**तरु-रोपण** पुं० (सं) १-वृक्ष लगाने का काम। २-वृक्ष लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करने की कला सिखाने वाली विद्या। (आरबोरी कलचर)।
**तरुवर** पुं० (सं) श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष।
**तरेदा** पुं० (हि) १-पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा २-पानी पर तैरने वाली वस्तु जिसकी सहायता से पार हो सके।
**तरे** क्रि० वि० (हि) तले। नीचे।
**तरेटी** स्त्री० (हि) तलहटी। तराई।
**तरेरना** क्रि० (हि) क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से देखना। आँख के इशारे से डाँट बताना।
**तरेरा** पुं० (हि) १-क्रोधपूर्ण दृष्टि। २-लगातार डाली जाने वाली पानी की धार। ३-जल की लहरों का आघात। थपेड़ा।
**तरैया** स्त्री० (हि) तारा। नक्षत्र। वि० १-तरने वाला २-तारने वाला।
**तरोई** स्त्री० (हि) तुरई नामक एक तरकारी।
**तरोबर, तरोवर** पुं० दे० 'तरुवर'।
**तरौंछ** स्त्री० दे० 'तलछट'।
**तरौटा** पुं० (हि) आटा पीसने की चक्की के नीचे वाला पाट या पल्ला।
**तरौंस** पुं० (हि) तट। तीर। किनारा।
**तरौना** पुं० (हि) तरकी नामक कान में पहनने का गहना।
**तर्क** पुं० (सं) १-हेतुपूर्ण युक्ति। दलील। २-चमत्कार पूर्ण युक्ति। ३-व्यंग। ताना। पुं० (अ) छोड़ना। त्याग।
**तर्कक** पुं० (सं) १-तर्क करने वाला। २-याचक। मङ्गिता।
**तर्कण** पुं० (सं) तर्क या बहस करना।
**तर्कणा** स्त्री० (सं) १-विवेचना। विचार। २-युक्ति दलील।
**तर्कना** स्त्री० दे० 'तर्कणा'। क्रि० (हि) तर्क या बहस करना।
**तर्क-वितर्क** पुं० (सं) १-इस प्रकार सोचना कि यह होगा या नहीं। ऊहापोह। विवेचना। २-वाद-विवाद।
**तर्क-विद्या** स्त्री० (सं) १-वह विद्या जिसमें विवेचना करने के नियम आदि निरूपित हों। २-न्याय-शास्त्र
**तर्कश** पुं० (फा) तीर रखने का चोंगा। तूणीर।
**तर्क-शास्त्र** पुं० (सं) १-वह शास्त्र जिसमें तर्क के नियम, सिद्धान्त आदि निरूपित हों। २-न्याय-शास्त्र।
**तर्क-संगत** वि० (सं) १-जो तर्क के सिद्धान्तों के अनुसार ठीक हो। (लॉजिकल)। २-जो युक्ति या बुद्धि के अनुसार ठीक मालूम दे। (रीजनेबुल)।
**तर्क-सिद्ध** क्रि० (सं) जो तर्क की दृष्टि से बिलकुल ठीक हो।
**तर्कसी** स्त्री० दे० 'तरकसी'।
**तर्काभास** पुं० (सं) ऐसा तर्क जो वस्तुतः ठीक न हो या यों ही देखने पर ठीक जान पड़े।
**तर्की** पुं० (सं) [स्त्री० तर्किनी] तर्क करने वाला। मीमांसक।
**तर्क्य** वि० (सं) जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय। चिन्तनीय।
**तर्ज** पुं० (अ) १-रीति। शैली। ढंग। २-बनावट।
**तर्जन** पुं० (हि) १-भय प्रदर्शन। धमकाना। २-क्रोध। ३-तिरस्कार। फटकार।
**तर्जना** क्रि० (हि) १-धमकाना। २-डाँटना। डपटना
**तर्जनी** स्त्री० [सं० तर्ज्जनी] अंगूठे के पास की उँगली
**तर्जनी-मुद्रा** स्त्री० (सं) तन्त्र के अनुसार एक मुद्रा।
**तर्जुमा** पुं० (अ) भाषान्तर। उल्था। अनुवाद।
**तर्पण** पुं०(सं) १-तृप्त करने की क्रिया। २-हिन्दुओं में होने वाले कर्मकाण्ड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके

नाम से जल दिया जाता है।

**तर्पित** *वि०* (सं) तृप्त या सन्तुष्ट किया हुआ।

**तरबौना** पुं० दे० 'तरौना'।

**तर्ष** पुं० दे० तृष्णा।

**तल** पुं०(सं) १-नीचे का भाग। पेंदा। २-वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। ३-जलाशय के नीचे की भूमि। ४-पैर का तलवा। ५-हथेली। ६-किसी वस्तु का ऊपर या बाहरी फैलाव। ७-सात पातालों में से प्रथम।

**तलक** *अव्य०* (हि) तक। पर्यन्त।

**तल-कर** पुं० (सं) वह कर जो तालाब में होने वाली वस्तुओं पर लगता है।

**तल-गृह** पुं० (सं) तहखाना।

**तल-घर** पुं० (हि) जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। तहखाना।

**तल-छट** *स्त्री०* (हि) पानी या किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। गाद। तलौंछ।

**तलतल** *क्रि० वि०* दे० 'तिल-तिल'।

**तलना** *क्रि०* (हि) कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

**तलप** पुं० दे० 'तल्प'।

**तल-पट** पुं०(सं) आय और व्यय का संक्षिप्त विवरण बताने वाला पट या फलक। तुला-पत्र। (बैलेंस-शीट)।

**तल-पद** पुं० (सं) १-असल चीज। मूल। जड़। २-मूलधन। पूँजी।

**तल-प्रहार** पुं० (सं) थप्पड़। तमाचा।

**तलफ** *वि०* (अ) नष्ट। बरबाद।

**तलफना** *क्रि०* दे० 'तड़पना'।

**तलब** *स्त्री०* (अ) १-इच्छा। चाह। २-खोज। तलाश ३-आवश्यकता। ४-बुलावा। ५-वेतन।

**तलबगार** *वि०* (अ) माँगने या चाहने वाला।

**तलबाना** पुं० (फा) वह खर्चा जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जाता है।

**तलबी** *स्त्री०* (अ) १-माँग। २-बुलाहट।

**तलबेली** *स्त्री०* (हि) अत्यधिक उत्कंठा। छटपटी।

**तलमलाना** *क्रि०* दे० 'तिलमिलाना'।

**तलवा** पुं० (हि) पैर के नीचे का भाग जो खड़े होने पर जमीन पर टिकता है। पाद-तल।

**तलवार** *स्त्री०* (हि) धारदार लम्बा हथियार जिसके आघात से चीजें काटी जाती हैं। खंग। असि।

**तलवारिया** पुं० (हि) तलवार चलाने में दक्ष।

**तलवारी** *वि०* (हि) तलवार सम्बन्धी। तलवार का।

**तलवाही-पोत** *स्त्री०* (सं) समुद्र की सतह या तल पर चलने वाला पोत या जहाज। (सरफेस क्राफ्ट)।

**तलहटी** *स्त्री०* (हि) पहाड़ के नीचे की भूमि।

**तला** पुं० (हि) १-नीचे का भाग। पेंदा। २-जूते के नीचे का चमड़ा।

**तलाई** *स्त्री०* (हि) छोटा ताल। तलैया।

**तलाक** पुं० (अ) विधि के अनुसार पति-पत्नी का सम्बन्ध-त्याग।

**तलाची** *स्त्री०* (सं) चटाई।

**तलातल** पुं० (सं) सात पातालों में से एक।

**तलाबेली, तलामली** *स्त्री०* दे० 'तलबेली'।

**तलाव** पुं० (हि) ताल। तालाब।

**तलाश** *स्त्री०* (तु०) १-खोज। २-आवश्यकता। चाह

**तलाशना** *क्रि०* (हि) खोजना। ढूंढ़ना।

**तलाशी** *स्त्री०* (फा) छिपाई हुई वस्तु के लिए खोज।

**तलिच्छक** पुं० (सं) पलंगपोश।

**तलित** *वि०* (सं) तला हुआ।

**तली** *स्त्री०*(हि)१-पेंदी। तलछट। २-हाथ की हथेली। ३-तलवार।

**तलीय** *वि०* (सं) १-तल या पेंदे से सम्बन्ध रखने वाला। २-ऊपर वाले अंश निकाल लेने, हटा देने या बाँट देने के पश्चात् नीचे बच रहने वाला। (रेसीडुअरी)।

**तलीय-अधिकार** पुं० (सं) वह स्वत्व या अधिकार जो प्रांतीय शासनों को बाँट देने के उपरांत सुरक्षा, कार्य संचालन के सुभीते आदि की दृष्टि से केंद्रीय-शासन अपने हाथ में रखता है। (रेसीडुअरी-पावर)।

**तलुआ** पुं० दे० 'तलवा'।

**तले** *क्रि० वि०* (हि) ऊपर का उलटा। नीचे।

**तलेटी** *स्त्री०* (हि) १-पेंदी। २-तलहटी।

**तलैया** *स्त्री०* (हि) छोटा ताल।

**तलौंछ** *स्त्री०* (हि) नीचे जमी हुई मैल। तलछट।

**तल्ख** *वि०* (फा) १-कड़ुवा। २-स्वाद में बुरा।

**तल्प** पुं० (सं) १-शय्या। सेज। २-अटारी। अट्टालिका।

**तल्पक** पुं० (सं) बिछौना करने वाला या शैय्या सजाने वाला नौकर।

**तल्पकीट** पुं० (सं) खटमल।

**तल्ला** पुं० (हि) १-जूते के नीचे का चमड़ा। २-मंजिल। ३-कपड़े के नीचे का अस्तर। भितल्ला। निकटता।

**तल्लीन** *वि०* (सं) किसी विषय या काम में लीन। निमग्न। तन्मय।

**तल्लीनता** *स्त्री०* (सं) तन्मयता। एकाग्रता।

**तव** *सर्व०* (सं) तुम्हारा।

**तवक्षीर** पुं० (सं) १-तवाखीर। तीखुर। २-वंशलोचन।

**तवज्जह** *स्त्री०* (अ) १-ध्यान। २-कृपादृष्टि।

**तवन** *स्त्री०*(हि) १-तपे हुए होने की अवस्था या भाव २-ताप। गरमी। ३-अग्नि।

**तबना** क्रि० (हि) १-तपना। गरम होना। २-ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३-गुस्से से लाल होना। कुढ़ना।
**तवर्ग** पुं० (सं) , थ, द, ध, और न, यह पाँच अक्षर।
**तवा** पुं० (हि) १-लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं। २-चिलम में तमाखू पर रखने का मिट्टी का गोल टुकड़ा।
**तवाई** स्त्री० (हि) १-ताप। गरमी। २-गरम हवा। लू।
**तवाखीर** पुं० (हि) वंशलोचन।
**तवाजा** स्त्री० (अ) १-आदर। आवभगत। २-मेहमानदारी।
**तवाना** क्रि० (हि) गरम करना। वि० (फा) मोटा-ताजा।
**तवायफ** स्त्री० (अ) वेश्या। रंडी।
**तवारा** पुं० (हि) जलन। दाह।
**तवारीख** स्त्री० (अ) इतिहास।
**तवारीखी** वि० (अ) ऐतिहासिक।
**तवालत** स्त्री० (अ) १-लम्बाई। २-अधिकता। ३-झंझट।
**तवी** स्त्री० (हि) १-छोटा तवा। २-दे० 'तई'।
**तवेला** पुं० दे० 'तबेला'।
**तशरीफ** स्त्री० (अ) १-इज्जत। महत्त्व। २-सम्मानित व्यक्तित्व।
**तश्त** पुं० (फा) १-परात (बरतन)। २-पाखाने का गमला।
**तश्तरी** स्त्री० (फा) थाली जैसा बरतन। रिकाबी।
**तष्ट** वि० (सं) १-छिला हुआ। २-कटा या दला हुआ ३-पीस कर दो दालों में किया हुआ। ४-पीटा हुआ
**तष्टा** पुं० (सं) १-छीलने वाला। विश्वकर्मा। पुं० (हि) [स्त्री० तष्टी] तांबे की छोटी तश्तरी।
**तस** वि० (हि) तैसा। वैसा।
**तसदीक** स्त्री० (अ) १-सचाई। २-प्रमाणों द्वारा पुष्टि ३-साक्ष्य। गवाही।
**तसबीह** स्त्री०(हि) १-सिर का दर्द। २-दुःख। क्लेश
**तसबी, तसबीह** स्त्री० (हि) जप-माला। सुमिरनी।
**तसमा** पुं०(फा) चमड़े या कपड़े का फीता जो बाँधने के काम आता है।
**तसला** पुं० (देश) [स्त्री० तसली] एक तरह का बड़ा और गहरा बरतन।
**तसलीम** स्त्री० (अ) १-प्रणाम। सलाम। २-किसी बात की स्वीकृति। मान्यता।
**तसल्ली** स्त्री० (अ) १-आश्वासन। सांत्वना। २-धैर्य। धीरज।
**तसवीर** स्त्री० (अ) चित्र।
**तसी** स्त्री० (देश) तीन बार जोता हुआ खेत।
**तसू** पुं० (हि) एक तरह की माप जो १। इञ्च की होती है।
**तस्कर** पुं० (सं) चोर।
**तस्करता** स्त्री० (सं) चोरी।
**तस्करी** स्त्री० (हि) १-चोरी। २-चोर स्त्री। ३-चोर की पत्नी।
**तस्मात्** अव्य० (सं) इसलिए।
**तस्य** सर्व० (सं) उसका।
**तसू** पुं० (हि) लम्बाई का नाप जो १। इञ्च का होता है।
**तहँ** क्रि० वि० (हि) उस स्थान पर। वहाँ।
**तहँई** क्रि० वि० (हि) उसी जगह। वहीं।
**तहँवा** क्रि० वि० (हि) वहाँ।
**तह** स्त्री० (फा) १-परत। २-तल। पेंदा। ३-तल। थाह। ४-वरक। झिल्ली।
**तहकीक** स्त्री० (अ) यथार्थता। सत्य। -सचाई की जाँच। खोज। ३-जिज्ञासा।
**तहकीकात** स्त्री० (अ) किसी घटना की जाँच। अनुसन्धान।
**तहखाना** पुं०(फा) जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। तलगृह।
**तहजीब** स्त्री० (अ) सभ्यता। शिष्टाचार।
**तहदरज** वि० (फा) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।
**तहना** क्रि० (हि) १-तपना। २-बहुत क्रोध करना।
**तहबाजारी** स्त्री (फा) वह महसूल जो बाजार के चौक या पटरी पर सौदा बेचने वालों से लिया जाता है।
**तहमत** पुं० (फा) कमर में लपेट कर पहना जाने वाला एक तरह का कपड़ा।
**तहरी** स्त्री० (देश) १-पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २-मटर की खिचड़ी।
**तहरीर** स्त्री० (अ) १-लेख। लिखावट। २-लेख-शैली। ३-लिखी हुई बात। ४-लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५-लिखने की उजरत। लिखाई।
**तहरीरी** वि० (फा) लिखा हुआ। लिखत।
**तहलका** पुं० (अ) १-मौत। मृत्यु। २-नाश। ३-धूम। हलचल।
**तहवील** स्त्री० (अ) १-सुपुर्दगी। २-अमानत। ३-किसी मद की आय का रुपया जो किसी के पास जमा हो। ४-खजाना।
**तहवीलदार** पुं० (अ) खजानची।
**तहस-नहस** वि० (देश) पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।
**तहसील** स्त्री० (अ) १-लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया या भाव। वसूली। उगाही। २-वह कार्यालय जहाँ जमींदार सरकारी मालगुजारी जमा कराते हैं।
**तहसीलदार** पुं० (अ+फा) १-कर वसूल करने वाला २-वह अधिकारी जो जमींदारों से सरकारी माल-

गुजारी वसूल करता है और माल के छोटे-छोटे मुकद्दमों का फैसला करता है।

**तहसीलदारी** पुं० (हि) १-तहसीलदार का काम। २-तहसीलदार का पद।

**तहसीलना** क्रि०(हि) मालगुजारी आदि वसूल कराना।

**तहाँ** क्रि० वि० (हि) वहाँ। उस स्थान पर।

**तहाना** क्रि० (हि) तह करना।

**तहिया** क्रि० वि० (हि) तब। उस समय।

**तहियाना** क्रि० (हि) तह लगाकर लपेटना।

**तहियो** अव्य (हि) तथापि। तोभी।

**तहीं** क्रि० वि० (हि) वहीं। उस जगह।

**ताँई** क्रि० वि० (हि) १-तक। २-के लिए। वास्ते। पास।

**ताँकना** क्रि० (हि) ताकना।

**ताँगा** पुं० (हि) एक तरह का घोड़ागाड़ी। टांगा।

**ताँगी** स्त्री० (हि) किसी वस्तु को कसकर बाँधने वाली डोरी। [illegible]।

[illegible] पुं० [illegible] ) [illegible] [illegible]। २-पुरुषों का नृत्य ([illegible] कहते हैं)। ३-वह नाच जिसमें [illegible] [illegible] हो।

**ताँत** स्त्री० (हि) १-चमड़े या पशुओं के नस से बनी हुई डोरी। २-[illegible]। ३-सारंगी आदि का तार। ४-जुलाहों का एक उपकरण। ५-सूत। डोरी।

**ताँता** पुं० (हि) १-[illegible] पंक्ति। २-कतार।

**ताँतिया** वि० (हि) ताँत जैसा दुबला-पतला।

**ताँती** स्त्री० दे० 'ताँता'। पुं० (हि) जुलाहा।

**ताँत्रिक** वि० (सं) तन्त्र सम्बन्धी। तन्त्र का। पुं० [स्त्री० ताँत्रिकी] तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता और प्रयोग-कर्ता।

**ताँबा** पुं० (हि) एक लाल रंग की धातु।

**ताँबूल** पुं० (सं) १-पान। २-पान का बीड़ा।

**ताँबूलिक** पुं० (सं) तमोली।

**ताँयर** पुं० (हि) ताप।

**ताँवरना** क्रि० (हि) १-गरम होना। २-क्रोध आदि के आवेश में आना।

**ताँवरा** पुं० (हि) १-गलन। ताप। २-जूड़ी। बुखार ३-सिर का चक्कर। ४-मूर्छा।

**ताँसना** क्रि० (हि) १-डाँटना। २-धमकाना। ३-सताना।

**ता** प्रत्य० (सं) एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अन्त में लगता है। अव्य०(फा) तक। पर्यन्त। वि० (हि) १-उस। २-उसे।

**ताईं** अव्य० (हि) १-तक। पर्यन्त। २-निकट। पास ३-(किसी के) प्रति। को। ४-लिए। वास्ते।

**ताउ** पुं० दे० 'ताव'।

**ताऊ** पुं० (हि) बाप का बड़ा भाई। ताया।

**ताऊन** पुं० (अ) एक संक्रामक रोग जिसमें गिलटी निकलती और बुखार आता है। प्लेग।

**ताऊस** पुं० (अ) १-मोर। मयूर। २-सितार की तरह का एक बाजा जिस पर मोर की शक्ल बनी होती है

**ताक** स्त्री० (हि) १-अवलोकन। २-टकटकी। ३-घात अवसर की प्रतीक्षा। पुं० [अ० ताक] आला (दीवार में का)। वि० १-दो सम भागों विभक्त न होने वाला। २-अनुपम। बेजोड़।

**ताक-झाँक** स्त्री० (हि) १-कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झाँकने की क्रिया। २-छिपकर देखने की क्रिया। ३-निरीक्षण। देखभाल। ४-खोज। अन्वेषण।

**ताकत** स्त्री० (अ) १-जोर। बल। शक्ति। २-सामर्थ्य।

**ताकतवर** वि० (फा) १-बलवान। २-शक्तिवान।

**ताकना** क्रि० (हि) १-देखना। २-मन में सोचना। ३-ताड़ना। समझाना। ४-पहले से देखकर स्थिर करना। ५-अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना।

**ताकरी** स्त्री० (हि) गुण्डे या लुण्डे अक्षरों वाली लिपि

**ताका** वि० (हि) भैंगा।

**ताकि** अव्य० (फा) जिसमें। इसलिए कि।

**ताकीद** स्त्री०(अ) किसी काम के लिए बार-बार चेताने का काम।

**ताख** पुं० (हि) ताक। आला।

**ताखड़ा** वि० (हि) तगड़ा।

**ताखा** पुं० (हि) १-ताक। आला। गर्दे पर लपेटा हुआ कपड़े का थान।

**ताग** स्त्री० (हि) तागने की क्रिया। पुं० दे० 'तागा'।

**तागड़ी** स्त्री० (हि) करधनी।

**तागना** क्रि० (हि) दूर-दूर पर मोटी सिलाई करना।

**तागा** पुं० (हि) १-सूत। धागा। २-प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाने वाला कर।

**ताछन** पुं० (हि) १-शत्रु के दाव से बचने और उस पर प्रत्याक्रमण करने के लिए बगल से होते हुए आगे बढ़ना। कावा। २-घोड़े का कावा काटना।

**ताछना** क्रि० (हि) आक्रमण के लिए बगल से होकर बढ़ना।

**ताज** पुं० (फा) १-राज-मुकुट। २-कलगी। ३-दीवार की कँगनी या छज्जा। ४-मकान के सिरे पर शोभा के लिए बनी हुई बुर्जी। ५-आगरे का ताजमहल।

**ताजक** पुं० (फा) १-एक ईरानी जाति। २-ज्योतिष का ग्रंथ विशेष।

**ताजगी** स्त्री०(फा)१-हरापन। ताजापन। २-प्रफुल्लता स्वस्थता।

**ताजदार** वि० (फा) ताज की तरह का। पुं० बादशाह

**ताजन, ताजना** पुं० (हि) कोड़ा। चाबुक।

**ताज-पोशी** स्त्री० (फा) राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

**ताजमहल** पुं० (अ) आगरे का प्रसिद्ध मकबरा
**ताजा** वि० (फा) [स्त्री० ताजी] १-सर्वथा नवीन। २-हरा भरा। ३-(वह फल फूल आदि) जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो। ४-स्वस्थ और प्रसन्न। ५-बिलकुल नया।
**ताजिया** पुं० (अ) मकबरे के आकार का कमचियों का रङ्ग-बिरंगे कागज आदि चिपका कर बनाया हुआ मंडप जिसे मुहर्रम में शिया लोग दस दिन तक रख कर गाड़ते हैं।
**ताजियाना** पुं० (फा) चाबुक। कोड़ा।
**ताजी** वि० (फा) अरब देश का। अरब देश सम्बन्धी पुं० १-अरब का घोड़ा। २-शिकारी कुत्ता। स्त्री० अरब देश की भाषा।
**ताजीम** स्त्री० (अ) सम्मान-प्रदर्शन।
**ताजीर** स्त्री० (अ) दंड। जुर्माना।
**ताजीरात** पुं० (अ) दण्ड सम्बन्धी कानूनों का संग्रह
**ताजीरात-हिन्द** पुं० (अ) भारतीय दण्ड विधान।
**ताजीरी** वि० (अ) दण्ड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ।
**ताजीरी-कर** पुं० (अ+सं) किसी स्थान पर दण्ड रूप में पुलिस नियत होने पर उसका खर्चा निकालने के लिए लगाया हुआ कर।
**ताजीरी-पुलिस** स्त्री० (अ+अ) उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्र में रखे हुए पुलिस के दस्ते जिनका खर्चा वहां के लोगों से दण्डस्वरूप लिया जाता है।
**ताज्जुब** पुं० (अ) आश्चर्य।
**ताटंक** पुं० (सं) कान का तरकी नामक गहना।
**ताटस्थ्य** पुं० (सं) तटस्थ या निरपेक्ष होने का भाव। समीपता।
**ताड़** पुं० (हि) १-एक सीधा और लम्बा वृक्ष जिसकी चोटी पर पत्ते होते हैं। २-ताड़न। प्रहार।
**ताड़का** स्त्री० (सं) एक राक्षसी जिसका संहार श्रीरामचन्द्र ने किया था।
**ताड़न** पुं० (सं) १-मार। आघात। २-डाँट-डपट। ३-दण्ड। शासन। ४-अनुशासन।
**ताड़ना** स्त्री० (हि) १-मारने-पीटने की क्रिया। मार आघात। २-डाँटडपट। क्रि० (हि) १-भाँपना। २-जान या समझ लेना। ३- मारना। ४-सजादेना ५-कष्ट देना। ६-दुर्वचन कहना।
**ताड़नीय** वि० (सं) दण्डनीय।
**ताड़ित** वि० (सं) १-जिस पर मार पड़ी हो। २-जिसे दण्ड दिया गया हो।
**ताड़ी** स्त्री० (हि) ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ रस जो खट्टा होने की अवस्था में नशीला हो जाता है
**तात** पुं० (सं) १-पिता। बाप। २-पूज्य व्यक्ति। गुरु ३-एक प्यार का सम्बोधन। वि० (हि) तपा हुआ। गरम।
**तातपर्य** पुं० (हि) तात्पर्य।
**तात** वि० (हि) [स्त्री० ताती] तपा हुआ। गरम।
**तातार्थेई** स्त्री० (हि) नाच में एक प्रकार का बोल।
**तातार** पुं० (फा) मध्य एशिया का एक देश।
**तातारी** वि० (फा) तातार देश का। तातार देश सम्बन्धी। पुं० तातार देश का निवासी।
**ताती** स्त्री० (हि) दूध।
**तातील** स्त्री० (अ) छुट्टी का दिन।
**तात्कालिक** वि० (सं) १-तत्काल का। २-उसी समय का। (इमिजिएट)।
**तात्पर्य** पुं० (सं) १-आशय। अभिप्राय। मंशा। २-तत्परता। ३-किसी के सम्बन्ध में मनमें रहने वाला आन्तरिक भाव। हेतु।
**तात्पर्य-वृत्ति** स्त्री० (सं) पूरे वाक्य का अर्थ बताने वृत्ति। (साहित्य)।
**तात्पर्यार्थ** पुं० (सं) वाक्यार्थो से भिन्न अर्थ जो वाक्य विशेष में वक्ता का अभिप्राय समझा जाय।
**तात्त्विक** वि० (सं) १-तत्व-सम्बन्धी। तत्वज्ञान युक्त। २-यथार्थ। वास्तविक।
**तात्त्विक-विज्ञान** पुं० (सं) विज्ञान की दो शाखाओं में से एक जिसमें कार्यो और कारणों के पारस्परिक सम्बन्ध बताने वाले तथा कार्यों का यथार्थ स्वरूप या तत्वों का विवेचन करने वाले विज्ञान आते हैं (पॉजिटिव-साइन्स)।
**ताथेई** स्त्री० दे० 'तातार्थेई'।
**तादर्थ्य** पुं० (सं) १-उद्देश्य की एकरूपता। २-अर्थो की समानता। ३-उद्देश्य।
**तादात्म्य** पुं० (सं) १-दो वस्तुओं के परस्पर अभिन्न होने का भाव। अभिन्नता। २-देख समझ कर यह प्रमाणित करना कि यह वही है। पहचानना। (आईडेंटिफिकेशन)।
**तादाद** स्त्री० (अ) संख्या। गिनती।
**तादृश** वि० (सं) उसके समान। वैसा।
**ताधा** स्त्री० दे० 'तातार्थेई'।
**तान** स्त्री० (हि) १-सङ्गीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार। २-तानने की क्रिया या भाव। खिंचाव।
**तानता** स्त्री० (सं) वह गुण अथवा शक्ति जिसके द्वारा वस्तुएं अथवा उनके अङ्ग आपस में दृढ़तापूर्वक जुड़े रहते हैं। (टेनैसिटी)।
**तानना** क्रि० (हि) १-फैलाने के लिए खींचना। २-ऊपर फैलाकर बाँधना। ३-मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना। ४-जेलखाने भेजना।
**तानपूरा** पुं० (हि) सितार की तरह का एक बाजा। तम्बूरा।
**तानबान** पुं० (हि) तानाबाना।
**ताना** पुं० (हि) १-कपड़े की बुनावट में लम्बाई के बल के सूत। २-दरी या कालीन बुनने का करघा।

क्रि० (हि) १-ताव देना। गरम करना। २-पिघलाना। ३-तपाकर परीक्षा करना। ४-जाँचना। ५-मूँदना। पुं० (अ०) व्यंगपूर्ण चुटीली बात।

**ताना-पाई, ताना-पाही** स्त्री० (हि) व्यर्थ बार-बार आना-जाना।

**ताना-बाना** पुं० (हि) कपड़े की बुनावट में लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

**तानारीरी** स्त्री० (हि) नौसिखिये का गाना। साधारण गाना।

**तानाशाह** पुं० (फा) अपने अधिकारों का मनमाना प्रयोग करने वाला। अनियन्त्रित-शासक।

**तानाशाही** स्त्री० (फा) १-अधिकारों का मनमाना उपयोग। स्वेच्छाचारिता। २-वह राज्य व्यवस्था जिसमें सारे अधिकार एक ही व्यक्ति के अधिकार में हों।

**तानी** स्त्री० (हि) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लम्बाई के बल हो।

**ताप** पुं० (सं) १-अग्नि, विद्युत आदि से उत्पन्न वह शक्ति जिससे वस्तुएं गरम हो जाती हैं तथा अधिक गरम होने पर पिघलने या वाष्प के रूप में परिणित होने लगती हैं। ऊष्णता। गरमी। (हीट) २-ज्वर। ३-दुःख। ४-आँच। लपट।

**तापक** वि० (सं) १-ताप उत्पन्न करने वाला। कष्ट पहुँचाने वाला। पुं० विद्युत-शक्ति से चलने वाला एक प्रकार का यन्त्र जिससे कमरे आदि में गरमी पहुँचाते हैं।

**तापक्रम** पुं० (सं) शरीर या वायुमण्डल की ऊष्णता का उतार-चढ़ाव। (टेंपरेचर)।

**ताप-क्रम-यंत्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी स्थान के घटने-बढ़ने वाले ताप-क्रम का पता चलता है। (थैरामीटर)।

**ताप-चालक** पुं० (सं) वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो। जैसे-धातु

**ताप-चालकता** स्त्री० (सं) पदार्थों का वह गुण जिसमें ताप एक छोर से दूसरे छोर तक जाता है।

**ताप-तरंग** स्त्री० (सं) गरमी की वह लपट या हवा की लहर जो एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवाहित होती जान पड़े। (हीट-वेव)।

**ताप-तिल्ली** स्त्री० (हि) तिल्ली बढ़ने और सूजने का रोग।

**तापती** स्त्री० (सं) १-सूर्य की कन्या। २-सतपुड़ा पहाड़ से निकलने वाली एक पवित्र नदी।

**ताप-त्रय** पुं० (सं) तीन प्रकार के ताप या दुःख-आध्यात्मिक, अधिदैविक और अधिभौतिक।

**तापद** वि० (सं) कष्टकारक।

**तापन** पुं० (सं) १-ताप देने वाला। २-सूर्य। ३-कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४-शत्रु को पीड़ा पहुचाने की एक विधि (तन्त्र)।

**तापना** क्रि० (हि) १-आग की आँच से अपने को गरम करना। २-तपाना। ३-फूँकना। ४-उड़ाना

**ताप-नियंत्रण** पुं० (सं) कमरे आदि के भीतर की हवा को कृत्रिम रूप से समशीतोष्ण बनाये रखने की क्रिया। (एयरकंडीशनिंग)।

**ताप-नियंत्रित** वि० (सं) जिसके भीतर का तापमान कृत्रिम उपायों से सम-स्थिति में रखा गया हो।

**तापमान** पु० (सं) वस्तु, शरीर आदि की वह गरमी अथवा सरदी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है।

**तापमान-यंत्र, तापमापक-यंत्र** पुं० (सं) एक यन्त्र जिसके द्वारा ज्वर के समय शरीर का ताप नापकर देखा जा सकता है। (थरमामीटर)।

**ताप-विकिरण** पुं० (सं) ताप की लहरों का किसी एक स्थान से चारों दिशाओं में प्रसारित किया जाना। (रेडियेशन)।

**तापस** पुं० (सं) [स्त्री० तापसी] तपस्वी।

**तापसी** स्त्री० (सं) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की पत्नी।

**तापहर** वि० (सं) तापनाशक। ज्वर को दूर करने वाला।

**तापित** वि० (सं) १-जो तपाया गया हो। २-दुखित। पीड़ित।

**तापी** वि० (सं) ताप देने वाला।

**तापता** पुं० (फा) धूप-छाँह नामक रेशमी कपड़ा।

**ताब** स्त्री० (फा) १-ताप। २-चमक। ३-सामर्थ्य।

**ताबड़तोड़** क्रि० वि० (हि) लगातार। बराबर।

**ताबूत** पुं० (अ) वह सन्दूक जिसमें मुरदा रखकर गाड़ा जाता है।

**ताबे** वि० (अ) १-वशीभूत। अधीन। २-आज्ञाकारी

**ताबेदार** वि० (अ+फा) १-आज्ञाकारी। २-सेवक।

**ताबेदारी** स्त्री० (फा) १-नौकरी। २-सेवा। टहल।

**ताम** पु० (सं) १-दोष। विकार। २-बेचैनी। ३-दुःख। ४-इच्छा। ५-थकावट। वि० १-डरावना। २-व्याकुल। पुं० (हि) १-क्रोध। २-अंधेरा।

**तामजान, तामजाम** पुं० (हि) एक तरह की छोटी पालकी।

**तामड़ा** वि० (हि) ताँबे के रंग का।

**तामरस** पुं० (सं) १-कमल। २-सोना। ३-ताँबा। ४-धतूरा।

**तामलेट, तामलोट** पुं० [अं० टंबलर] टीन का बना गिलास।

**तामस** वि० (सं) [स्त्री० तामसी] तमोगुण वाला। तमोगुण युक्त। पुं० १-साँप। २-दुष्ट। ३-क्रोध। ४-अपकार। ५-अज्ञान।

**तामसी** वि० स्त्री० (सं) तमोगुण वाली।

**तामिल** स्त्री० (देश) १-दक्षिण भारत की एक जाति का नाम। २-इस जाति के लोगों की भाषा।
**तामिस्र** पुं० (सं) १-क्रोध। २-द्वेष। ३-अविद्या। ४-अन्धकारमय एक नरक विशेष।
**तामीर** स्त्री० (अ) भवन निर्माण का काम।
**तामील, तामीली** स्त्री० (अ) १-आज्ञा का पालन। २-सूचना आदि का अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना।
**तामोर, तामोल** पुं० (हि) तांबूल (पान)।
**ताम्र** पुं० (सं) १-तांबा। २-एक प्रकार का कोढ़।
**ताम्रचूड़** पुं० (सं) मुर्गा।
**ताम्र-पट्ट, ताम्र-पत्र** पुं० (सं) १-दानपत्र खुदवाने का ताँबे का पत्तर। २-ताँबे की चद्दर।
**ताम्रपर्णी** स्त्री० (सं) १-दक्षिण भारत की एक नदी। २-बावली। ३-तालाब।
**ताम्र-युग** पुं० (सं) इतिहास का वह प्रारम्भिक काल जब लोग ताँबे के औजार, पात्र आदि उपयोग में लाते थे। (ब्रांजएज)।
**ताम्रलिप्त** पुं० (सं) बङ्गाल का तामलूक नामक भूखण्ड।
**ताम्र-लेख** पुं० दे० 'ताम्र-पत्र'।
**तायँ** क्रि० वि० (हि) से। तक।
**ताय** पुं० दे० 'ताप'। सर्व० दे० 'ताहि'।
**तायना** क्रि० (हि) तपाना।
**तायनि** स्त्री० (हि) १-तपन। जलन। २-पीड़ा।
**तायफा** स्त्री० (फा) १-वेश्या। २-वेश्या और उसके समाजियों की मण्डली।
**ताया** पुं० (हि) [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई। वि० तपाया हुआ। तपाकर पिघलाया हुआ।
**तार** पुं० (सं) १-रूपा। चाँदी। २-तपा धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। ३-धातु-कार वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता ... आया हुआ समाचार। (टेलिग्राम)। सूत। तागा ६-अखण्ड परम्परा। क्रम। ७-कार्य सिद्ध का रोग युक्ति। ८-संगीत में एक सप्तक। ९-अट्ठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। वि० निर्मल। स्वच्छ। पुं० (हि) १-करताल (बाजा)। २-तल। सतह। ३-तालाब। तरकी नामक कान का गहना। ५-तारा। ६-ताल। ७-डर। भय। ८-ताड़ना। अव्य० लेशमात्र। नाम को भी।
**तारक** पुं० (सं) १-तारा। नक्षत्र। २-आँख। ३-आँख की पुतली। ४-भवसागर से पार करने वाला ५-कर्णधार। ६-वह जो पार उतरे। ७-एक वर्ण-वृत्त। ८-राम का षडक्षर मन्त्र जिसे गुरु शिष्य के कान में कहता है। (ओं रामायनमः)। ९-छपाई में तारे के समान चिह्न। (*)। (स्टार,एस्टरिस्क)।
**तारक-चिह्न** पुं० (सं) तारे का चिह्न या निशान जो पादटिप्पणी अथवा अभिनिर्देश के निमित्त या महत्व प्रदर्शित करने के लिए छापा या लिपि में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—(*) चिह्न। (एस्टरिस्क)।
**तारका** स्त्री०(सं)१-नक्षत्र। तारा। २-आँख की पुतली ३-बृहस्पति की स्त्री। ४-चलचित्रों में अभिनय करने वाली स्त्री। (स्टार)। ५-'तारक चिह्न'।
**तारकासुर** पुं० (सं) एक असुर का नाम।
**तारकित** वि० (सं) नक्षत्रों या तारों से भरा हुआ।
**तारकेश** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**तारकेश्वर** पुं० (सं) शिव।
**तारकोल** पुं० दे० 'अलकतरा'।
**तारख** पुं० (हि) गरुड़।
**तारखी** पुं० (हि) घोड़ा।
**तार-घर** पुं० (हि) वह सरकारी जगह जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते है।
**तार-घाट** पुं० (हि) व्यवस्था। आयोजन।
**तारण** पुं० (सं) १-पार उतारने की क्रिया। २-उद्धार निस्तार। ३-तारने वाला। उद्धार करने वाला। ४-विष्णु। ५-साठ संवत्सरों में से एक।
**तारणि** स्त्री० (सं) नाव। नौका।
**तारतम्य** पुं० (सं) १-एक दूसरे से कमी-बेशी का हिसाब। न्यूनाधिक। २-तरतीब। ३-गुण, परि-माण आदि का परस्पर मिलान।
**तारतार** वि० (हि) जिसकी धज्जियाँ अलग-अलग हो गई हों।
**तारतोड़** पुं० (हि) कारचोबी का काम।
**तारन** पुं० दे० 'तारण'।
**तारना** क्रि० (हि) १-पार लगाना। २-डूबते हुए को बचाना। ३-सांसारिक क्लेशों से मुक्त करना।
**तारपीन** पुं० (हि) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।
**तारबर्की** पुं० (उर्दू) बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।
**तारल्य** पुं० (सं) १-तरल या प्रवाहशील होने का गुण। द्रवत्व। २-चंचलता। ३-कामुकता।
**तार-हीन** वि० (हि) १-बिना तार के। २-तार-हीन प्रणाली से आने वाला (समाचार)। पुं० बिना तार के या विद्युत की सहायता से समाचार भेजने की प्रणाली या प्रक्रिया। (वायरलैस)।
**तारांकित** वि० (स) (वह वाक्य, शब्द या प्रश्न) जिसके साथ तारे का चिह्न दिया गया हो। (स्टार्ड) क्वश्चन।
**तारांकित-प्रश्न** पुं० (सं) संसद् या विधान सभा आदि के सदन में प्रश्नोत्तर-काल में मौखिक उत्तर

पाने के विचार से पूछा गया प्रश्न। (स्टार्ड क्वश्चन)।
**तारा** पुं० (सं) १-नक्षत्र। सितारा। २-आँख की पुतली। ३-भाग्य। ४-ताला। स्त्री० (सं) १-दस महाविद्याओं में से एक। २-बृहस्पति की स्त्री। ३-बाली की पत्नी का नाम।
**ताराधिप, ताराधीश, तारानाथ, तारापति** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-शिव। ३-बृहस्पति। ४-बाली (बन्दर)।
**तारा-पथ** पुं० (सं) आकाश।
**तारा-मंडल** पुं० (सं) तारों या नक्षत्रों का समूह।
**तारावली** स्त्री० (सं) तारों की पंक्ति। तारों का समूह
**तारिका** स्त्री० (सं) १-नाड़ी। २-आँख की पुतली ३-चलचित्रों में अभिनय करने वाली स्त्री (स्टार)
**तारिणी** वि० स्त्री० (सं) तारने वाला। स्त्री० तारा देव
**तारित** वि० (सं) १-पार किया हुआ। २-जिसका उद्धार किया गया हो।
**तारी** स्त्री० (हि) १-करतल ध्वनि। २-ताली। ३-कुञ्जी। ४-समाधि। ५-ध्यान। ६-टकटकी। ७-ताड़ी।
**तारीक** वि० (फा) १-काला। २-धुँधला।
**तारीख** स्त्री० (फा) १-तिथि। दिन। दिवस। २-दिनांक। ३-निश्चित तिथि। ४-वह तिथि जिसमें कोई निश्चित घटना हुई हो।
**तारीफ** स्त्री०(अ) १-परिचय। २-परिभाषा। ३-विवरण। वर्णन। ४-प्रशंसा। ५-विशेषता। मुख्य गुण
**तारु** पुं० दे० 'तालु'।
**तारुण्य** पुं० (सं) जवानी। यौवन।
**तारुण्यागम** पुं० (सं) उस अवस्था का आगमन जिसमें स्त्री या पुरुष में सन्तानोत्पत्ति की क्षमता होती है। यौवनारम्भ। (प्यूबर्टी)।
**तारू** पुं० दे० 'तालु'।
**तारेश** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**तार्किक** पुं० (सं) १-तर्कशास्त्र का जानने वाला। २-तत्ववेत्ता। दार्शनिक।
**ताल** पुं०(सं) १-करतल। हथेली। २-करतल ध्वनि। ताली। ३-नृत्य या संगीत में समय और गति का परिमाण। ४-भुजा या जाँघ ठोकने से उत्पन्न शब्द। ५-चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। ६-मंजीरा या झाँझ नामक बाजा। ७-ताड़ का पेड़ या फल। ८-ताला। ९-पिंगल में ढगण का दूसरा भेद। पुं० (हि) तालाब।
**तालक** पुं० दे० 'तअल्लुक'।
**तालकूटा** पुं० (हि) झाँझ बजाकर भजन गाने वाला
**ताल-पत्र** पुं० (सं) ताड़ वृक्ष का पत्ता जिसपर प्राचीनकाल में ग्रन्थ लिखे जाते थे।
**ताल-बेताल** पुं (हि) दो यक्ष जिन्हें राजा विक्रमादित्य ने वश में कर लिया था।
**तालमखाना** पुं० (हि) १-एक छोटा कँटीदार वृक्ष। २-दे० 'मखाना'।
**तालमेल** पुं० (हि) १-ताल और स्वर का मिलान। २-ठीक-ठीक संयोग। ३-उपयुक्त अवसर।
**तालरंग** पुं० (सं) एक तरह का बाजा।
**तालरस** पुं० (सं) ताड़ी।
**तालव्य** वि० (सं) तालू सम्बन्धी। पुं० तालू से उच्चारण किया जाने वाला वर्ण। जैसे—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श।
**ताल-संपुटक** पुं० (सं) ताड़ के पत्तों का दौना।
**ताला** पुं०(हि) १-कुंजी से खुलने और जुड़ने वाला यन्त्र जो किवाड़ सन्दूक आदि बन्द करने के लिए कुण्डी में लगाया जाता है। २-लोहे का वह तवा जो योद्धा लोग युद्ध के समय छाती पर पहनते थे।
**ताला-बंदी** स्त्री० (हि) हड़ताल आदि में गतिरोध उत्पन्न हो जाने की अवस्था में मालिक का कारखाने पर ताला लगाना। (लॉक-आउट)।
**तालाब** पुं० (हि) जलाशय। पोखरा। सरोवर।
**तालाबेलिया, तालबेली** स्त्री० (हि) तलबेली। व्याकुलता।
**तालिका** स्त्री० (सं) १-ताली। कुंजी। २-नीचे-ऊपर लिखी हुई वस्तुओं का क्रम। सूची। फहरिस्त (लिस्ट)। ३-चपत। तमाचा। ४-व्यक्तियों की नामावली। (रोल)।
**तालिम** स्त्री० (हि) बिस्तर। बिछौना।
**ताली** स्त्री० (हि) १-छोटा ताल। तलैया। २-करतल ध्वनि। स्त्री० (सं) १-कुंजी। चाबी। २-तीरा। ताड़ी।
**तालीम** स्त्री० (अ) शिक्षा।
**तालीश-पत्र** पुं० (सं) १-तमाल या तेज पत्ते की जाति का एक वृक्ष। २-एक पौधा जो उत्तरी भारत, बंगाल और समुद्र के तटवर्ती प्रदेश में होता है।
**तालु** पुं० (सं) तालू।
**तालुका** पुं० दे० 'ताल्लुका'।
**तालू** पुं० (हि) १-मुख की भीतर की ऊपरी छत या भाग। २-खोपड़ी के नीचे का भाग।
**ताल्लुक** पुं० (अ० तअल्लुक) सम्बन्ध। वास्ता।
**ताल्लुका** पुं० (अ० तअल्लुका) बहुत से गाँवों का समूह।
**ताल्लुकेदार** पुं०(अ+फा) किसी ताल्लुके या मालिक
**ताव** पुं० (हि) १-तपाने या पकाने के लिए पहुँचाई जाने वाली गरमी। ताप। २-अधिकार मिश्रित क्रोध का आवेश। ३-शेखी या ऐंठ की झोंक। ४-ऐसी उत्कंठा जिसमें उतावलापन हो। पुं० (देश) कागज का तख्ता। (शीट)।

**तावत्** क्रि० वि० (सं) १-उतनी देर तक। तब तक। २-उतनी दूर तक। वहाँ तक।
**तावना** क्रि० (हि) १-तपाना। गरम करना। २-जलाना। ३-दुःख पहुँचाना।
**तावर** पुं० दे० 'ताँवर'।
**तावरा** पुं० १-दे० 'तावरी'। २-दे० 'ताँवरा'।
**तावरी** स्त्री० (हि) १-ताप। गरमी। २-घाम। धूप। ३-ज्वर। बुखार। ४-गरमी से आया हुआ चक्कर।
**तावरो** पुं० (हि) १-धूप। घाम। २-ताप। गरमी।
**तावान** पुं० (फा) क्षति-पूर्ति के रूप में दिया जाने वाला धन।
**तावीज** पुं० (हि) १-यन्त्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट में रखकर पहना जाय। २-धातु का चौकोर, गोल या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।
**ताश** पुं० (अ) १-एक तरह का जरदोजी का कपड़ा। २-खेलने के काम का मोटे कागज का चौकोर टुकड़ा जिसपर बूटियाँ या तस्वीर होती हैं। ३-वह छोटी दफ्ती जिस पर कपड़े सीने का तागा लपेटा रहता है।
**ताशा** पुं० (अ) चमड़ा मढ़ा एक तरह का बाजा।
**तास** पुं० दे० 'ताश'।
**तासीर** स्त्री० (अ) १-प्रभाव। असर। २-किसी वस्तु की गुणसूचक प्रकृति।
**तासु** सर्व० (हि) उसका।
**तासों** सर्व० (हि) उससे।
**तास्कर्य** पुं० (सं) चोरी।
**ताहम** अ० (फा) तथापि। तोभी।
**ताहि** सर्व० (हि) उसको। उसे।
**ताहीं** अव्य० दे० 'ताईं' 'तईं'।
**ताहूँ** क्रि० वि० (हि) तो भी। तिस पर भी।
**ति, तिआ** स्त्री० दे० 'तिया'।
**तिआह** पुं० (हि) १-तीसरा विवाह। २-वह व्यक्ति जिसका तीसरा विवाह होने को हो या हुआ हो।
**तिउरा** पुं० (देश) खेसारी नामक कदन्न।
**तिउरी** स्त्री० (हि) तेवर। त्योरी।
**तिउहार** पुं० दे० 'त्योहार'।
**तिकड़म** पुं० (हि) गहरी और युक्तियुक्त बात।
**तिकड़मी** स्त्री० (हि) चालबाजी से अपना काम साधने वाला। धूर्त।
**तिकड़ी** स्त्री० (हि) १-वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों। २-चारपाई की वह बुनावट जिसमें एक साथ तीन रस्सियाँ हों।
**तिकार** पुं० (हि) खेत की तीसरी जुताई।
**तिकोन** वि० दे० 'तिकोना'।
**तिकोना** वि० (हि) [स्त्री० तिकोनी] जिसमें तीन कोने हों। पुं० १-समोसा। २-तिकोनी नक्काशी बनाने की छेनी।
**तिकोनिया** वि० (हि) तीन कोनों वाला।
**तिक्का** पुं० (हि) मांस की बोटी।
**तिक्की** स्त्री० (हि) १-तीन बूटियों वाला ताश का पत्ता। २-गंजीफे का वह पत्ता जिसपर तीन बूटियाँ हों।
**तिक्ख** वि० (हि) १-तीखा। चोखा। २-तेज। चालाक।
**तिक्त** वि० (सं) तीता। कड़ुवा।
**तिक्ष** वि० (हि) १-तीक्ष्ण। तेज। २-चोखा। पैना।
**तिक्षता** स्त्री० (हि) तीक्ष्णता। तेजी।
**तिखटी** स्त्री० दे० 'टिकठी'।
**तिखरा** वि० (हि) तीन बार का जोता हुआ (खेत)।
**तिखारना** क्रि० (हि) ताकीद करना।
**तिखाई** स्त्री० (हि) तीक्ष्णता। तीखापन।
**तिखूँटा** वि० दे० 'तिकोना'।
**तिग** पुं० दे० 'जिक'।
**तिगना** क्रि० (हि) देखना (दलाल)।
**तिगुना** वि० (हि) [स्त्री० तिगुनी] तीन गुना। जितना हो उससे दो बार और अधिक हो।
**तिच्छ, तिच्छन** वि० (हि) तीक्ष्ण। तेज। तीखा।
**तिजरा** पुं० (हि) तीसरे दिन आने वाला बुखार।
**तिजहरिया, तिजहरी** स्त्री० (हि) दिन का तीसरा पहर। अपराह्न।
**तिजारत** स्त्री० (अ) व्यापार। वाणिज्य।
**तिजारी** स्त्री० (हि) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
**तिजिल** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-राक्षस।
**तिजोरी** स्त्री० (हि) रुपये,गहने आदि रखने की लोहे की मजबूत अलमारी या सन्दूक।
**तिड़** पुं० (डिंगल) पत्र।
**तिड़ी** स्त्री० (हि) तिक्की (ताश की)।
**तिड़ी-बिड़ी** वि० (हि) तितर-बितर।
**तित** क्रि० वि० (हि) १-वहाँ। २-उधर।
**तितना** क्रि० (हि) उतना। उसके बराबर।
**तितर-बितर** वि०(हि) १-इधर उधर फैला या बिखरा हुआ। २-अस्तव्यस्त।
**तितली** स्त्री० (हि) १-रङ्ग बिरंगे पंखों वाला सुन्दर कीड़ा जो फूलों पर मंडराता है। २-एक तरह की घास ३-आधुनिक वेशभूषा से सुसज्जित स्त्री (बाजारू)।
**तितलौआ** पुं० (हि) कड़वा कद्दू।
**तितलौकी** स्त्री० (हि) कड़वा कद्दू।
**तितारा** पुं० (हि) तीन तारों वाला बाजा।
**तितिंबा** पुं० (हि) १-ढकोसला। २-परिशिष्ट।
**तितिक्ष** वि० (सं) सहिष्णु। सहनशील।
**तितिक्षा** स्त्री० (स) १-सहिष्णुता। २-क्षमा। शान्ति ३-दे० 'मर्षण'।
**तिते** वि० (हि) उतने।

**तितेक** वि० (हि) उतना।
**तितै** क्रि० वि० (हि) १-वहाँ। वहीं। २-उधर।
**तितो** वि० (हि) उतना।
**तिथ** पु० (सं) १-अग्नि। आग। २-कामदेव। ३-काल। ४-वर्षाकाल।
**तिथि** स्त्री० (सं) १-मिती। तारीख। दिनांक। २-पंद्रह की संख्या।
**तिथिक्षय** पुं०(सं) किसी तिथि की गिनती में न आना
**तिथि-पत्र** पुं० (सं) पंचांग। पत्रा।
**तिथिवृद्धि** स्त्री० (सं) जो तिथि दो सूर्योदय तक चले
**तिथि-संक्रामी** वि० (सं) निर्धारित तिथि का संक्रमण करने वाला (न्यायालय में उपस्थित न होने या किस्त न चुकाने वाला)। (डिफाल्टर)।
**तिथित** वि० (सं) जिस (पत्र) पर तिथि या तारीख लिखी हो। दिनांकित। (डेटेड)।
**तिदरा** पुं० (हि) [स्त्री० तिदरी] १-तीन दर वाला दालान। २-ऐसा कमरा जिसमें तीन द्वार हों। वि० तीन दर या द्वार वाला।
**तिधर** क्रि० वि० (हि) उधर। उस ओर।
**तिन** सर्व० (हि) 'जिस' शब्द का बहुवचन। पुं० तिनका। तृण।
**तिनउर** पुं० (हि) तिनकों का ढेर।
**तिनकना** क्रि० (हि) चिड़चिड़ाना। झल्लाना।
**तिनका** पुं० (हि) तृण। सूखी घास का टुकड़ा।
**तिनका-तोड़, तिनका-तोर** पुं० (हि) आपसी सम्बन्ध का इस तरह टूटना कि फिर न जुड़ सके।
**तिनगना** क्रि० (हि) तिनका। झल्लाना।
**तिनगरी** स्त्री० (हि) एक पकवान।
**तिन-पहला** वि० (हि) तीन पहलों वाला।
**तिनुका, तिनूका** पु० (हि) तृण। तिनका।
**तिन्नी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का जंगली धान।
**तिन्ह** सर्व० (हि) तिन।
**तिपति** स्त्री० दे० 'तृप्ति'।
**तिपाई** स्त्री० (हि) तीन पायों की छोटी और ऊँची चौकी।
**तिबाई** स्त्री० (देश) आटा माड़ने का बड़ा और छिछला बरतन।
**तिबारा** वि० (हि) तीसरी बार। पु० [स्त्री० तिबारी] तीन द्वार वाला घर।
**तिबासी** वि० (हि) तीन दिन का बासी (खाना)।
**तिब्बर** वि० (हि) तीसरी बार। तिबारा।
**ति-मंजिला** वि० (हि) [स्त्री० ति-मंजली] तीन खण्डों या मंजिलों वाला मकान।
**तिमिंगिल** पुं०(सं) समुद्र में रहने वाला एक विशालकाय जन्तु। (ह्वेल)।
**तिमि** अव्य० (हि) उस प्रकार। वैसे। स्त्री० (सं) तिमिंगिल नामक जल-जन्तु।
**तिमिर** पुं० (सं) १-अन्धकार। अंधेरा। २-आँखों से धुँधला दिखाई देना।
**तिमिरनुद, तिमिरभिद्, तिमिररिपु, तिमिरहर** पुं० (सं) सूर्य।
**तिमिरांत** पुं० (सं) १-तिमिर का अन्त। उजाला। प्रभात।
**तिमिरारी** स्त्री० (हि) अन्धकार। अँधेरा।
**तिय** स्त्री० (सं) १-स्त्री। २-पत्नी।
**तिया** स्त्री० (हि) १-तिक्की (ताश)। २-स्त्री।
**तियाग** पुं० (हि) त्याग।
**तिरंगा** वि० (हि) तीन रङ्गों वाला। पु० १-राष्ट्रीय ध्वज। २-भारतीय कांग्रेस दल का झण्डा।
**तिरंगा-झंडा** पुं० (हि) १-तीन रङ्गों वाला झण्डा। २-भारत देश की राष्ट्र पताका। ३-भारतीय कांग्रेस दल का झण्डा।
**तिर** वि० (हि) 'त्रि' का बिगड़ा हुआ रूप जो समास में व्यवहृत होता है।
**तिरक** पु० (हि) रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ दोनों कूल्हों की हड्डियाँ मिलती है। २-दोनों टाँगों के ऊपर वाले जोड़ का स्थान। ३-हाथी के शरीर का पिछला भाग जहाँ से दुम निकलती है।
**तिरकना** क्रि० (हि) १-तिड़कना। २-बाल सफेद होना।
**तिरखा** स्त्री० (हि) तृषा।
**तिरखित** वि० (हि) तृषित।
**तिरखूँटा** वि० (हि) तिकोना।
**तिरगुन** पुं०, वि० दे० 'त्रिगुण'।
**तिरछई** स्त्री० (हि) तिरछापन।
**तिरछा** वि० (हि) [स्त्री० तिरछी] १-जो सीधा न हो २-टेढ़ा। वक्र। ३-अस्तर के काम का एक तरह का रेशमी वस्त्र।
**तिरछाई** स्त्री० (हि) तिरछापन।
**तिरछाना** क्रि० (हि) तिरछा होना।
**तिरछापन** पुं० (हि) तिरछा होने का भाव।
**तिरछौहाँ** वि० (हि) [स्त्री० तिरछौंही] जो कुछ तिरछापन लिए हुए हो।
**तिरछौंहे** क्रि० वि० (हि) तिरछापन लिए हुए।
**तिरतिराना** क्रि० (हि) बूँद-बूँद करके टपकना।
**तिरना** क्रि० (हि) १-पानी की सतह पर रहना। २-पानी पर तैरना। ३-भवसागर से पार होना।
**तिरनी** स्त्री० (हि) १-घाँघरा बाँधने की डोरी। नीवी २-घाघरा या धोती का नाभि के नीचे लटकता हुआ भाग।
**तिरप** स्त्री० (हि) नृत्य में एक ताल।
**तिरपट** वि० (देश) १-तिरछा। टेढ़ा। २-कठिन। विकट।
**तिरपाई** स्त्री० (हि) तीन पायों वाली ऊँची चौकी।

**तिरपाल** पुं० (हि) १-रोगन फेरा हुआ एक प्रकार का टाट जिससे वर्षा या धूप से बचाव होता है। २-छाजन के नीचे लगाया जाने वाला सरकण्डे का मुट्ठा।

**तिरपित** वि० (हि) तृप्त।

**तिरफला** पु० दे० 'त्रिफला'।

**तिरबेनी** स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

**तिरमिरा** पुं० (हि) १-दुर्बलता के कारण होने वाला आँखों का एक रोग जिससे कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है। २-तीक्ष्ण प्रकाश या तेज रोशनी में नजर न ठहरना। चकाचौंध। ३-चिकनाई के छींट जो पानी दूध आदि द्रव पदार्थ के ऊपर तैरते दिखाई देते है।

**तिरमिराना** क्रि० (हि) प्रकाश या चमक से आँखों का चौंधियाना।

**तिरमुहानी** स्त्री० (हि) वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

**तिरलोक** पुं० दे० 'त्रिलोक'।

**तिर विक्रम** पुं० दे० 'त्रिविक्रम'।

**तिरवाहाँ** पुं० (हि) नदी का किनारा।

**तिरस्कार** पुं० (सं) १-अपमान। २-भर्त्सना। ३-अनादर या उपेक्षा-पूर्वक त्याग। ४-साहित्य में अलङ्कार।

**तिरस्कृत** वि० (सं) [स्त्री० तिरस्कृता] जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत।

**तिरस्क्रिया** स्त्री० (सं) १-तिरस्कार। अनादर। २-आच्छादन। ३-वस्त्र। पहरावा।

**तिरहुत** पुं० (हि) मुजफ्फरपुर और दरभङ्गा के आसपास के प्रदेश का पुराना नाम। मिथिला प्रदेश।

**तिराना** क्रि० (हि) १-पानी के ऊपर तैराना। २-पार करना। ३-उबारना। उद्धार करना।

**तिराहा** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ से तीन ओर को तीन रास्ते गये हों।

**तिराहो** क्रि० वि० (हि) नीचे।

**तिरिन** पु० (हि) तृण। तिनका।

**तिरियक** पु० दे- 'तिर्यक'।

**तिरिया** स्त्री० (हि) स्त्री। औरत।

**तिरीछा** वि० दे० 'तिरछा'।

**तिरेंदा** पु० (हि) १-समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो सङ्केत के लिए छिछले पानी या चट्टान पर रखा रहता है। २-मछली मारने की बन्सी के काँटे के कुछ ऊपर बँधी हुई एक लकड़ी, जिसके डूबने से मछली फँसने का पता चलता है।

**तिरोधान, तिरोभाव** पुं० (सं) १-अन्तर्द्धान। २-छिपाव।

**तिरोहित** वि० (सं) १-छिपा हुआ। अन्तर्द्धान। २-छिपाव।

**तिरौंछा** वि० (हि) तिरछा।

**तिरौंदा** पुं० (हि) दे० 'तिरेंदा'।

**तिर्पित** वि० दे० 'तृप्त'।

**तिर्यक्** वि० (स) तिरछा। टेढ़ा।

**तिर्यक्ता** स्त्री० (सं) तिरछापन। टेढ़ापन।

**तिर्यग्गति** स्त्री० (स) १-तिरछी या टेढ़ी चाल। २-पशु योनि में जन्म लेना।

**तिर्यग्योनि** स्त्री० (सं) पशु-पक्षी आदि जीव तथा उनकी जीवन दशा।

**तिर्यग्रेखा** स्त्री० (सं) वह रेखा जो दो या दो से अधिक रेखाओं को काटती है। (ट्रांसवर्सल)।

**तिलंगा** पुं० (हि) अंग्रेजी सेना के भारतीय सिपाही (जो भारत स्वतन्त्र होने से पहले होता था)।

**तिलंगाना** पुं० (हि) तैलङ्ग देश।

**तिलंगी** वि० (हि) तिलङ्गाने का निवासी। तैलङ्ग। स्त्री० (हि) एक तरह की पतङ्ग।

**तिल** पुं० (सं) १-एक तरह का धान्य जिसे पेर कर तेल निकाला जाता है। २-शरीर पर काले रङ्ग का छोटा दाग। ३-काली बिन्दी के आकार का गोदना। ४-आँख की पुतली के बीच की बिन्दी।

**तिलक** पुं० (सं) १-चन्दन, केसर आदि से मस्तक बाहु आदि पर अङ्कित किया जाने वाला साम्प्रदायिक चिह्न। टीका। २-राज्याभिषेक। ३-स्त्रियों के माथे का एक गहना। टीका। ४-विवाह सम्बन्धी स्थिर करने की रीति। ५-किसी ग्रन्थ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका। ६-सङ्गीत में ध्रुवक का एक भेद। ७-एक तरह का पौधा। वि० १-उत्तम। श्रेष्ठ। २-शोभा, कीर्ति आदि बढ़ाने वाला। पुं० (हि) १-एक तरह का ढीला-ढाला जनाना कुरता। २-खिलअत। पुं० लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक जिनका जन्म १८६६ में हुआ और मृत्यु सन् १६२० में हुई

**तिलक-कामोद** पुं० (सं) सङ्गीत में एक राग।

**तिलकना** क्रि० (हि) फिसलना।

**तिलकमुद्रा** स्त्री० (सं) चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि की छाप।

**तिलकहार** पुं० (हि) वह व्यक्ति जो कन्या की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिए लेजाते हैं।

**तिलका** पुं० (सं) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। २-कण्ठ में पहनने का एक आभूषण।

**तिलकालक** पुं० (सं) १-शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। २-सुश्रुत के अनुसार एक व्याधि।

**तिल-कुट** पुं० (हि) तिल को कूट कर चीनी मिलाकर बनाई हुई एक तरह की मिठाई।

**तिलकोड़ा** पुं० (हि) जङ्गली कुम्हड़ा (इसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं)।

**तिलचटा** पुं० (हि) १-एक तरह का झींगुर। २-बड़ा

चपड़ा।

**तिलचावली** स्री० (हि) तिल और चावल की खिचड़ी

**तिल-चावला** वि० (हि) काला और सफेद मिला हुआ।

**तिल-चावली** स्री० (हि) तिल और चावल की खिचड़ी

**तिलछना** क्रि० (हि) बेचैन रहना।

**तिलठी** स्री० (हि) तिल का पौधा या डण्ठल।

**तिलड़ी** स्री० (हि) तीन लड़ों वाली माला।

**तिलपट्टी, तिलपपड़ी** स्री० (हि) खांड या गुड़ से पगे पगे हुए तिलों की पपड़ी।

**तिलभर** क्रि० वि० (हि) थोड़ा सा भी। रञ्च-मात्र।

**तिलमिल** स्री० (हि) तिलमिलाहट। चकाचौंध।

**तिलमिलाना** क्रि० (हि) कष्ट या पीड़ा से बेचैन होना।

**तिलमिलाहट** स्री० (हि) चकाचौंध।

**तिलवट** पुं० (हि) तिलपट्टी।

**तिलवा** पुं० (हि) तिल का लड्डू।

**तिलस्म** पुं० दे० 'तिलिस्म'।

**तिलहन** पुं० (हि) फसल के रूप में बोये जाने वाले तेल के पौधे।

**तिलांजलि** स्री० (स) १-किसी के मरने पर अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम पर छोड़ना सर्वदा के लिए परित्याग का संकल्प।

**तिला** पुं० (अ) नपुंसकता नष्ट करने वाला एक तेल

**तिलाक** पुं० दे० 'तलाक'।

**तिलान्न** पुं० (स) तिल की खिचड़ी।

**तिलाम** पुं० (हि) गुलाम का गुलाम। दासानुदास।

**तिलिस्म** पुं० (अ) १-जादू। चमत्कार। करामात।

**तिलिस्मी** वि० (अ) १-जिसमें तिलिस्म के चमत्कारों का वर्णन हो। २-तिलिस्म सम्बन्धी।

**तिलेदानी** स्री० (हि) वह थैली जिसमें सिलाई की सुई के धागे रखे जाते हैं।

**तिलोत्तमा** स्री० (सं) एक परम रूपवती अप्सरा। (पुराण)।

**तिलोदक** पुं० (स) तिलाञ्जलि।

**तिलोना** वि० दे० 'तेलोना'।

**तिलौंछना** क्रि० (हि) तेल से चिकनाना।

**तिलौंछा** वि० (हि) तेल के मेल, स्वाद, गन्ध या रङ्गत वाला।

**तिलौरी** स्री० (हिं) तिल मिलाकर बनाई हुई बरी।

**तिल्ला** पुं० (हिं) १-कलाबत्तू आदि का काम। २-पगड़ी दुपट्टे या साड़ी आदि का व अञ्चल जिस पर कलाबत्तू का काम हो।

**तिल्लाना** पुं० (हिं) पानी के ऊपर ठहराना। तराना

**तिल्ली** स्री० (हिं) १-पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव जो मांस की पोली गुठली के आकार का होता है। प्लीहा। २-तिल। ३-एक रोग जिसमें प्लीहा में सूजन होजाती है

**तिल्लेदार** वि० (हिं) बदले या कलाबत्तू के अञ्चल वाला (कपड़ा)।

**तिवई** स्री० (हिं) स्त्री।

**तिवान** पुं० (?) चिन्ता। फिक्र।

**तिवाड़ी, तिवारी** स्री० (हिं) त्रिपाठी। (ब्राह्मण)।

**तिशना** पुं० (फा) ताना। स्री० (हिं) तृष्णा।

**तिष्ट** वि० (हिं) बनाया हुआ। रचित।

**तिष्टना** क्रि० (हि) बनाना। रचना।

**तिष्ठना** क्रि० (हि) १-टिकना। ठहरना। २-बैठाना।

**तिष्षन** वि० (हि) तीक्ष्ण।

**तिस** सर्व० (हि) 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।

**तिसखुट, तिसखुर** स्री० (हि) तीसी के पौधों के छोटे छोटे डण्ठल जो फसल काटने के उपरान्त खड़े रहते हैं।

**तिसपर** क्रि० वि० (हि) १-उसके बाद। २-ऐसी स्थिति में। ३-तथापि। इतना होने पर भी।

**तिसना** स्री० (हि) तृष्णा।

**तिसरा** वि० (हि) तीसरा। दो के बाद का।

**तिसराय** क्रि० वि० (हि) तीसरी बार।

**तिसरायत** स्री० (हि) तीसरा होने का भाव।

**तिसरैत** पुं० (हि) १-झगड़ा करने वाले से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २-तीसरे हिस्से का मालिक।

**तिसाना** क्रि० (हि) प्यासा होना।

**तिसार** पुं० दे० 'अतिसार'।

**तिसूती** स्री० (हि) तीन सूत के डोरे का बना कपड़ा वि० तीन सूत वाला।

**तिहरा** वि० दे० 'तेहरा'।

**तिहराना** क्रि० (हि) तीसरी बार किसी बात या काम को करना।

**तिहरी** वि० (हि) तीन परत की। तेहरी। स्री० १-तीन लड़ वाली माला। २-दही जमाने का मिट्टी का छोटा पात्र।

**तिहवार** पुं० (हि) त्योहार।

**तिहवारी** स्री० (हि) त्योहारी।

**तिहाई** स्री० (हि) १-तृतीयांश। तीसरा भाग। २-खेत की उपज। फसल। ३-संगीत में सम पर का और उसके ठीक पहले वाले दो ताल या उनके खण्ड।

**तिहाउ** पुं० (हि) १-क्रोध। २-बिगाड़।

**तिहायत** पुं० दे० 'तिसरैत'।

**तिहार, तिहारा, तिहारो** सर्व० (हि) [स्री० तिहारी] तुम्हारा।

**तिहाव** पुं० (हि) १-क्रोध। कोप। २-बिगाड़।

**तिहिं** सर्व० दे० 'तेहि'।

**तिहूँ** वि० (हि) तीनों।

**ती** स्री० (हिं) १-स्त्री। औरत। २-पत्नी।

**तीक्षण, तीक्षन** वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

**तीक्ष्ण** *वि०* (सं) १-तेज नोक वाला। २-तेज। तीव्र प्रखर। ३-उग्र। प्रचंड। ४-तेज या तीखे स्वाद वाला। ५-सुनने में अप्रिय। कर्णकटु। ६-जो सहन न हो सके।

**तीक्ष्णता** *स्त्री०* (सं) तीक्ष्ण होने का भाव। तेजी तीव्रता।

**तीक्ष्ण-दृष्टि** *वि०* (सं) जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर पड़ती हो। सूक्ष्म दृष्टि।

**तीक्ष्ण-धार** *वि०*(सं) जिसकी धार बहुत तेज हो। पुं० खंग। तलवार।

**तीक्ष्ण-बुद्धि** *वि०* (सं) कुशाग्र बुद्धि वाला।

**तीक्ष्णांशु** पुं० (सं) सूर्य।

**तीख, तीखन, तीखा** *वि०* (हि) तीक्ष्ण।

**तीखुर, तीखुल** पुं० (हि) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है।

**तीछन, तीछा** *वि०* (हि) तीक्ष्ण।

**तीज** *स्त्री०* (हि) १-प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। २-भादों सुदी तीज। ३-श्रावण सुदी तीज को होने वाला कन्याओं का एक त्योहार।

**तीजा** पुं० (हि) मुसलमानों का मृत्यु के तीसरे दिन का कृत्य विशेष। *वि०* [*स्त्री०* तीजी] तीसरा। तृतीय

**तीजिया** *स्त्री०*(हि) श्रावण शुक्ला-तृतीया का त्योहार।

**तीजै** *वि०* (हि) तीसरा। तृतीय।

**तीत** *वि०* दे० 'तीता'।

**तीतर** पुं० (हि) एक पक्षी जिसे लोग लड़ाने के लिए पालते हैं।

**तीता** *वि०* (हि) १-तीखे और चरपरे स्वाद वाला। तिक्त। २-कड़ुवा। कटु। ३-नम। गीला।

**तीतुर** पुं० दे० तीतर।

**तीतुरी** *स्त्री०* दे० 'तितली'।

**तीतुल** पुं० दे० 'तीतर'।

**तीन** *वि०* (हि) दो और एक। पुं० तीन की संख्या।

**तीनि** *वि०* (हि) तीन।

**तीमार** पुं० (फा) सेवा-शुश्रूषा। हिफाजत।

**तीमारदार** पुं० (फा) रोगी की सेवा करने वाला।

**तीमारदारी** *स्त्री०* (फा) रोगी की सेवा।

**तीय, तीया** *स्त्री०* (हि) स्त्री। औरत।

**तीरंदाज** पुं० (फा) तीर चलाने वाला।

**तीरंदाजी** *स्त्री०* (फा) तीर चलाने की विद्या या क्रिया

**तीर** पुं० (सं) १-नदी का किनारा। कूल। तट। २-स्थान। जगह। *क्रि० वि०* पास। निकट। पुं० (फा) बाण। शर।

**तीरथ** पुं० दे० 'तीर्थ'।

**तीरवर्ती** *वि०* (सं) १-तट पर रहने वाला। २-किनारे पर रहने वाला। पड़ोसी।

**तीरस्थ** पुं० (सं) नदी के तीर पर पहुँचा हुआ या मरणासन्न व्यक्ति। *वि०* तीर या किनारे पर रहने वाला।

**तीरा** पुं० दे० 'तीर'।

**तीर्थंकर** पुं० (सं) जैनियों के उपास्य देव।

**तीर्थ** पुं० (सं) १-वह पवित्र स्थान जहाँ धर्मभाव से श्रद्धा सहित लोग यात्रा, पूजा या स्नान के लिए जाते हैं। २-कोई पवित्र स्थान। ३-शास्त्र। ४-यज्ञ। ५-सन्यासियों की एक उपाधि। ६-गुरु। ७-हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। *वि०* मोक्ष देने वाला।

**तीर्थक** *वि०* (सं) १-तीर्थों की यात्रा करने वाला। २-तीर्थों पर धार्मिक कृत्य कराने वाला (पंडा)।

**तीर्थंकर** पुं० (सं) १-विष्णु। २-जिन।

**तीर्थ-पति** पुं० (सं) तीर्थराज। प्रयाग।

**तीर्थ-पुरोहित** पुं० (सं) तीर्थ का पंडा।

**तीर्थ-यात्रा** *स्त्री०* (सं) पवित्र या धार्मिक स्थानों में दर्शन स्नानादि के निमित्त जाना। तीर्थाटन।

**तीर्थराज** पुं० (सं) प्रयाग।

**तीर्थाटन** पुं० (सं) तीर्थ यात्रा।

**तीर्थिक** पुं० (सं) १-पंडा। २-तीर्थङ्कर।

**तीर्थोदक** पुं० (सं) तीर्थ का जल।

**तीली** *स्त्री०* (हि) १-सींक। बड़ा तिनका। २-धातु का पतला पर कड़ा तार। ३-रेशम लपेटने की पतली गड़ारी। ४-सूत साफ करने की जुलाहे की कूँची।

**तीलीकारी** *स्त्री०* (हि) कपड़े की करघे पर डाली हुई फूल पत्तियों वाली बुनावट।

**तीव, तीवई** *स्त्री०* (हि) औरत।

**तीवन** पुं० (हि) १-पकवान। २-रसेदार तरकारी।

**तीवर** पुं० (सं) १-समुद्र। २-व्याघ। शिकारी। ३-मछुआ।

**तीव्र** *वि०* (सं) १-अतिशय। अत्यंत। २-तीक्ष्ण। तेज। ३-बहुत गरम। ४-नितांत। बेहद। ५-कटु कड़वा। तीखा। ६-असह्य। ७-प्रचंड। ८-वेग-युक्त। ९-कुछ ऊँचा स्वर।

**तीव्रता** *स्त्री०* (सं) तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।

**तीसर** *वि०* (हि) तीसरा। *स्त्री०* खेत की तीसरी जुताई

**तीसरा** *वि०*(हि) १-गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला। २-जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ।

**तीसरा-पहर** पुं० (हि) दोपहर के बाद का समय। अपराह्न।

**तीसी** *स्त्री०* (हि) अलसी नामक तिलहन।

**तुंग** *वि०* (सं) १-उन्नत। ऊँचा। २-उग्र। प्रचण्ड। ३-प्रधान। मुख्य। पुं० पर्वत। पहाड़।

**तुंगारण्य** पुं०(सं) बेतवा तट के पास का वन प्रदेश

**तुंगारन्न** पुं० दे० 'तुंगारण्य'।

**तुंड** पुं०(सं) १-मुख। २-चोंच। ३-थूथन। ४-तल०

धार आदि हथियार की नोक। ५-शिव। महादेव
**तुंडि** स्त्री० (सं) १-मुँह। २-चोंच ३-नाभि।
**तुंडी** वि० (सं) १-मुख वाला। २-चोंच। वाला। स्त्री० नाभि। पु० गणेश।
**तुंद** पुं० (सं) पेट। उदर। वि० (फा) तेज। प्रचंड। विकट।
**तुंदिल** वि० (सं) तोंद वाला।
**तुंदेल, तुंदेला** वि० (हि) बड़े पेट वाला।
**तुंदर** पुं० दे० 'तूँबुरू'।
**तुंबा** पुं० दे० 'तूँबा'।
**तुंबुरु** पुं० (सं) १-धनिया। २-धनिये के आकार का एक पौधा।
**तुम** सर्व० (हि) १-दे० 'तुव'। २-दे० 'तव'।
**तुअना** क्रि०(हि) १-चूना। टपकना। २-गिर पड़ना। गर्भपात होना।
**तुअर** पुं० (हि) तूअर। अरहर।
**तुक** स्त्री०(हि) १-किसी पद या गीत का कोई खण्ड। कड़ी। २-पद्य के चरण का अन्तिम अक्षर। ३-कविता के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल। काफिया। ४-दो बातों या कामों का पारस्परिक सामंजस्य। ५-किसी बात की उपयोगिता से गति।
**तुकबंदी** स्त्री० (हि) १-केवल तुक मिलकर बनाई कविता जिसमें काव्य के गुण न हों। २-भद्दी कविता
**तुकमा** पुं० (फा० तुक्मः) वह फन्दा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुण्डी फँसाई जाती है।
**तुकांत** पुं० (हि) अन्त्यानुप्रास। काफिया।
**तुका** पुं० दे० 'तुक्का'।
**तुकार** स्त्री० (हि) 'तू' 'तू' करके बोलना जो अशिष्ट माना जाता है।
**तुकारना** क्रि० (हि) तू-तू करके सम्बोधन करना।
**तुक्कड़** पुं० (हि) वह जो तुकबन्दी करता हो।
**तुक्कल** स्त्री० (फा० तुकः) बड़ी पतङ्ग।
**तुक्का** पुं० (फा० तुकः) १-वह तीर जिसमें गांसी या फल के स्थान पर घुण्डी बनी होती है। २-छोटी पहाड़ी। ३-सीधी खड़ी वस्तु।
**तुख** पुं० (सं) १-भूसी। छिलका। २-अंडे के ऊपर का छिलका।
**तुखार** पुं० (सं) १-हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक देश। २-इस देश का निवासी। ३-इस देश का घोड़ा। पुं० दे० 'तुषार'।
**तुख्म** पुं० (अ) बीज।
**तुच, तुचा** स्त्री० दे० 'त्वचा'।
**तुचार** वि० (हि) पैना।
**तुच्छ** वि० (सं) १-हीन। २-ओछा। नीच। ३-अल्प। ४-खोखला।
**तुच्छातितुच्छ** वि०(सं) छोटे से छोटा। अत्यन्त तुच्छ
**तुच्छार्थक** वि० (सं) तुच्छतासूचक अर्थ देने वाला।
**तुजुक** पुं० (तु०) १-शान। २-नियम। कायदा। ३-प्रथा। दस्तूर। ४-अभिनन्दन।
**तुझ** सर्व० (हि) 'तू' का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त अन्य विभक्तियाँ लगने से पूर्व प्राप्त होता है।
**तुझे** सर्व० (हि) 'तू' का कर्म और सम्प्रदान रूप। तुझको।
**तुट** वि० (हि) बहुत थोड़ा।
**तुट्ठना** क्रि० (हि) १-तुष्ट या प्रसन्न करना। २-प्रसन्न होना।
**तुड़वाना** क्रि० (हि) तोड़ने में प्रवृत्त करना।
**तुड़ाना** क्रि० (हि) १-तुड़वाना। २-सम्बन्ध न रखना। अलग करना। ३-बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना।
**तुतरा** वि० दे० 'तुतला'।
**तुतराना** क्रि० दे० 'तुतलाना'।
**तुतरौहाँ** वि० (हि) तोतला।
**तुतला** वि० दे० 'तोतला'।
**तुतलाना** क्रि० (हि) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर या अस्पष्ट उच्चारण करना। साफ न बोलना।
**तुत्थ** पुं० (सं) तूतिया।
**तुन** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फूलों से बसन्ती रङ्ग निकलता है।
**तुनक** वि० (फा) १-दुर्बल। कमजोर। २-कोमल।
**तुनक-मिजाज** वि० (फा) चिड़चिड़ा।
**तुनक-मिजाजी** स्त्री० (फा) चिड़चिड़ापन।
**तुनीर** पुं० दे० 'तूणीर'।
**तुनुक** वि० दे० 'तुनक'।
**तुपक** स्त्री० [तु० तोप] १-छोटी तोप। २-बन्दूक।
**तुपकची** पुं० (तु) तुपक चलाने वाला। गोलन्दाज।
**तुपकिया** स्त्री०(हि) छोटी तुपक। पुं० बन्दूक चलाने वाला।
**तुफंग** स्त्री० (फा) १-हवाई बन्दूक। २-एक तरह की लम्बी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूंक के जोर से चलाते हैं।
**तुफान** पु० दे० 'तूफान'।
**तुभना** क्रि० (हि) स्तब्ध रहना। ठक रह जाना।
**तुम** सर्व० (हि) 'तू' शब्द का बहुवचन रूप जिसका प्रयोग उस पुरुष के लिए होता है जिसे सम्बोधित करके कुछ कहा जाता है।
**तुमड़ी** स्त्री० (हि) १-छोटा तूँबा। तुंबी। २-सूखे कद्दू का बनाया हुआ बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। ३-सूखे कद्दू का बनाया हुआ साधुओं का जलपात्र।
**तुमरा** सर्व० दे० 'तुम्हारा'।
**तुमरी** स्त्री० दे० 'तुमड़ी'। सर्व० (हि) तुम्हारी।

**तुमरो** सर्व० दे० 'तुम्हारा'।
**तुमुर** वि० पुं० दे० 'तुमुल'।
**तुमुल** वि० (सं) १-जिसमें शोर-गुल हो। २-कई प्रकार की ध्वनियों के मेल से उत्पन्न (ध्वनि) ३-भयंकर। ४-घबड़ाया हुआ। पुं० घोर युद्ध घमासान लड़ाई।
**तुम्ह** सर्व० दे० 'तुम'।
**तुम्हरा** सर्व० (हिं) [स्त्री० तुम्हरी] तुम्हारा।
**तुम्हारा** सर्व० (हिं) 'तुम' शब्द का सम्बन्धकारक रूप।
**तुम्हें** सर्व० (हिं) 'तुम' का विभक्तियुक्त रूप, जो उसे कर्म और सम्प्रदान में प्राप्त होता है। तुमको
**तुरंग, तुरगम** पुं० (सं) १-घोड़ा। २-चित्त। ३-सात की संख्या।
**तुरंग-मुख** पुं० (सं) किन्नर।
**तुरंग-शाला** स्त्री० (सं) अस्तबल।
**तुरंग-स्थान** पुं०(सं) घुड़साल। अस्तबल।
**तुरंज** पुं० (फा) १-चकोतरा नीबू। २-बिजौरा नीबू
**तुरंजबीन** स्त्री० (फा) नीबू के रस का शर्बत।
**तुरंत** क्रि० वि० (हिं) १-जल्दी से। चटपट। २-तत्काल।
**तुर** क्रि० वि० (हिं) जल्दी से। शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।
**तुरई** स्त्री० (हिं) एक बेल जिसके लम्बोतरे फलों की तरकारी बनाई जाती है। तोरी।
**तुरकटा, तुरकड़ा** पुं० (फा० तुर्क) मुसलमान (उपेक्षासूचक)।
**तुरकाना** पुं० (फा० तुर्क) [स्त्री० तुरकानी] १-तुरकिस्तान। २-तुर्कों का मोहल्ला या बस्ती। ३-मुसलमान। वि० तुर्कों का सा।
**तुरकिन** स्त्री० (फा० तुर्क) १-तुर्क स्त्री। २-मुसलमान स्त्री।
**तुरकी** वि० (फा) तुर्क देश का। स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा।
**तुरग** पुं० (सं) घोड़ा।
**तुरत** अव्य० (हिं) तुरन्त। चटपट।
**तुरपन** स्त्री०(हिं) १-तुरपने की क्रिया। २-एक प्रकार की सिलाई।
**तुरपना** क्रि० (हिं) सिलाई करना।
**तुरमती** स्त्री० (हिं) एक तरह की शिकारी चिड़िया।
**तुरय** पुं० (हिं) [स्त्री० तुरी] घोड़ा।
**तुरस** वि० दे० 'तुर्श'।
**तुरसि** स्त्री० (हिं) १-वेग। तेजी। २-जल्दबाजी। ३-फुरती।
**तुरसी** स्त्री० दे० 'तुर्शी'।
**तुरसीला** वि० (फा० तुर्शी) १-तीखा। तीक्ष्ण। २-मधुर। ३-मनोहर।
**तुरही** स्त्री० (हिं) एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।
**तुरा** स्त्री० दे० 'त्वरा'।
**तुराइ** क्रि० वि० (हिं) आतुरता के साथ।
**तुराई** स्त्री० (हिं) १-गद्दा। २-दुलाई। ३-शीघ्रता। जल्दी।
**तुराट** पुं० (हिं) घोड़ा।
**तुराना** क्रि० (हिं) १-आतुर होना। घबराना। २-तुड़ाना।
**तुराय** क्रि० वि० (हिं) आतुरता के साथ।
**तुरावती** वि० स्त्री० (हिं) वेगवती। तीव्रगति से चलने अथवा बहने वाली।
**तुरावान** वि० (हिं) वेगयुक्त। वेग वाला।
**तुरित** वि० दे० 'त्वरित'। क्रि० वि० दे० 'तुरंत'।
**तुरिया** वि० स्त्री० दे० 'तुरीय'।
**तुरी** स्त्री०(सं) १-जुलाहों का तोड़िया नामक औजार २-जुलाहों की कूँची। वि० (सं) वेग वाली। वेग-युक्त। स्त्री० (हिं) १-घोड़ी। २-तुही नामक बाजा ३-फूलों का गुच्छा। ४-मोती की लड़ों का झब्बा। पुं० (हिं) १-घोड़ा। २-अश्वारोही।
**तुरीय** वि० (सं) चौथा। चतुर्थ। स्त्री० १-वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चरित होती है। २-प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम। पुं० निर्गुण ब्रह्म।
**तुरीय-यन्त्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।
**तुरुक** पुं० [स्त्री० तुरुकिन, तुरुकी] तुर्क।
**तुरुप** पुं० (हिं) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रङ्ग प्रधान माना जाता है। (ट्रम्प)।
**तुरुष्क** पुं० (सं) तुर्किस्तान का रहने वाला मनुष्य। २-तुर्किस्तान देश। ३-इस देश का घोड़ा।
**तुर्क** पुं० (फा) १-तुर्किस्तान का निवासी। २-मुसलमान। ३-टर्की या रूम का रहने वाला।
**तुर्कमान** पुं० (फा) १-तुर्क जाति का मनुष्य। २-तुर्की घोड़ा।
**तुर्की** वि० [फा० तर्क०] तुर्किस्तान का। स्त्री० १-तुर्किस्तान की भाषा। २-तुर्किस्तान का घोड़ा। ३-तुर्कों जैसा अक्खड़पन या अभिमान।
**तुर्की-टोपी** स्त्री० (हि) झब्बा लगी ऊँची गोल टोपी।
**तुर्रा** पुं० (अ) १-घुंघराले बालों की लट। काकुल। २-कलँगी। ३-टोपी में का फुँदना। ४-पक्षियों के सिरों पर निकला परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ५-कोड़ा। चाबुक। ६-जटाधारी। वि० (फा) अनोखा। अद्भुत।
**तुर्श** वि० (फा) १-खट्टा। २-रूखा। ३-क्रुद्ध।
**तुर्शाना** क्रि० (हि) खट्टा हो जाना।
**तुर्शी** स्त्री० (फा) १-खटाई। खट्टापन। रुष्टता।
**तुल** वि० दे० 'तुल्य'।

**तुलना** क्रि० (हिं) १-तराजू पर तोला जाना। २-तौल या मान में बराबर उतरना। ३-किसी आधार पर ठहरना। ४-नियमित होना। बँधना। ५-गाड़ी के पहिये का ओंगा जाना। ६-उद्यत होना। स्त्री० (सं) १-दो या अधिक वस्तुओं के गुण-दोष का विचार। मिलना। २-तारतम्य। ३-सादृश्य। समता। ४-उपमा।

**तुलनात्मक** वि०(सं) जिसमें किसी से तुलना की जाय

**तुलवाई** स्त्री० (हि) तौलने का काम या मजदूरी।

**तुलवाना** क्रि० (हि) १-वजन कराना। २-गाड़ी के पहिये में तेल दिलाना।

**तुलसिका** स्त्री० दे० 'तुलसी'।

**तुलसी** स्त्री० (सं) एक पौधा जिसे पवित्र माना जाता है।

**तुलसीदल** पुं० (सं) तुलसी के पौधे का पत्ता।

**तुलसीदास** पुं० (सं) उत्तर-भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि जिन्होंने रामचरितमानस बनाया था।

**तुलसी-पत्र** पुं० (सं) तुलसीदल।

**तुलसीवन** पुं० (सं) वृन्दावन।

**तुला** स्त्री० (सं) १-तुलना। मिलान। २-तराजू। काँटा। ३-मान। तौल। ४-बारह राशियों में से सातवीं राशि।

**तुलाई** स्त्री० (हि) १-तौलने का काम या भाव। २-तौलने की मजदूरी। ३-तूलने या ओंघने (गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देने) का काम या मजदूरी ३-दुलाई।

**तुला-दंड** पुं० (सं) तराजू की डण्डी।

**तुलादान** पुं० (सं) दान विशेष जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है

**तुलाधार** पुं० (सं) १-तुला राशि। २-बनिया। वणिक्। ३-तराजू की डोरी। ४-काशी के एक वणिक का नाम। ५-काशी निवासी एक व्याध।

**तुलाना** क्रि० (हि) १-आ पहुँचना। समीप होना। २-पूरा उतरना। ३-नष्ट होना। ४-बराबर होना। ५-तुलवाना।

**तुला-पत्र** पुं० (सं) दे० 'तलपट'।

**तुला-परीक्षा** स्त्री० (सं) अभियुक्तों की वह परीक्षा जिसमें उन्हें बार-बार तौलते थे और दोनों बार तौल समान न होने की अवस्था में निर्दोष मानते थे

**तुलामान** पुं० (सं) तौलकर किया जाने वाला मान। बाँट।

**तुलायंत्र** पुं० (सं) तराजू।

**तुल्य** वि० (सं) १-समान। बराबर। २-सदृश।

**तुल्यता** स्त्री० (सं) १-समता। २-सादृश्य।

**तुल्य-योगिता** स्त्री० (सं) साहित्य में एक अलङ्कार।

**तुल्ययोगी** वि० (सं) समान सम्बन्ध रखने वाला।

**तुव** सर्व० दे० 'तव'।

**तुवर** वि० (सं) १-कसैला। २-बिना दाढ़ी मूँछ का। पुं० १-कषाय रस। २-अरहर।

**तुष** पुं० (सं) १-अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी। २-अण्डे के ऊपर का छिलका।

**तुषानल** पुं० (सं) १-भूसी की आग। २-भूसी या घास-फूस में जल-मरने की क्रिया जो प्रायश्चित्त रूप में की जाती है।

**तुषार** पुं० (सं) १-हवा में मिली भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है। पाला। २-हिम। बरफ। ३-हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४-इस देश में बसने वाली जाति।

**तुषार-कण** पुं० (सं) हिम-कण।

**तुषारकर, तुषार-किरण, तुषार-मूर्त्ति, तुषार-रश्मि** पुं० (सं) हिमकर। चन्द्रमा।

**तुषार-रेखा** स्त्री०(सं) पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमी रहती है तथा नीचे के भाग का बरफ ग्रीष्मकाल में गल जाता है। (स्नो-लाइन)।

**तुष्ट** वि० (सं) १-तृप्त। २-राजी। प्रसन्न।

**तुष्टता** स्त्री० (सं) सन्तोष। प्रसन्नता।

**तुष्टना** क्रि० (हि) प्रसन्न होना।

**तुष्टि** स्त्री० (सं) १-सन्तोष। तृप्ति। २-प्रसन्नता।

**तुष्टिकरण** पुं० (सं) किसी क्रुद्ध या झगड़ालू व्यक्ति को अधिक रियायत देकर अनुनय विनय द्वारा सन्तुष्ट करना। मनुहार। (अपीजमेंट)।

**तुष्टिकरण-नीति** स्त्री० (सं) एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य को खुश करने की नीति।

**तुस** पुं० (सं) तुष।

**तुसार** पुं० (सं) तुषार।

**तुसी** स्त्री० (हि) तुष। भूसी। सर्व०, वि० (पंजाबी) आप।

**तुहमत** स्त्री० दे० 'तोहमत'।

**तुहि** सर्व० (हि) तुझको।

**तुहिन** पुं० (सं) १-पाला। कुहरा। तुषार। २-हिम। बरफ। ३-चाँदनी। ४-शीतलता।

**तुहिनकण** पुं०(सं) हिमकण। बरफ का छोटा टुकड़ा

**तुहिन-कर, तुहिन-किरण, तुहिन-दीधित, तुहिन-द्युति, तुहिनरश्मि** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**तुहिन-गिरि, तुहिन-शैल** पुं० (सं) हिमालय।

**तुहिनांशु, तुहिनाश्रु** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर

**तुहिनाचल, तुहिनाद्रि** पुं० (सं) हिमालय पर्वत।

**तुहें** सर्व० (हि) तुम्हें।

**तू** सर्व० (हि) तू।

**तूँबड़ा, तूँबा** पुं० (हि) [स्त्री० तूँबड़ी, तूँबी] १-कडुवा गोल कद्दू। २-कद्दू का खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे साधु लोग साथ रखते हैं। कमंडल।

**तू** सर्व(हिं) मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम (अशिष्ट)
**तूअर** पुं० (हिं) अरहर का पौधा, दाने या बीज।
**तूख** पुं० (हि) तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।
**तूखना** क्रि० (हि) प्रसन्न होना या करना।
**तूटना** क्रि० (हि) टूटना।
**तूठना** क्रि० (हिं) १-तुष्ट होना। अघाना। २-प्रसन्न होना।
**तूण** पुं० (सं) १-तीर रखने का चोंगा। तरकश। २-निषंग। ३-एक वृत्त विशेष।
**तूणीर** पुं० (सं) तीर रखने का चोंगा। निषङ्ग।
**तूतिया** पुं० (हि) नीलाथोथा।
**तूती** स्त्री० (फा) १-एक छोटे आकार का तोता। २-एक तरह की छोटी चिड़िया। ३-एक प्रकार का छोटा बाजा।
**तूदा** पुं०(फा) १-राशि। ढेर। २-सीमा का चिह्न। हदबन्दी। ३-मिट्टी का वह टीला जिसपर निशाना लगाना सीखते हैं।
**तून** पुं० (हि) १-तुन नामक पेड़। २-तूल नामक लाल कपड़ा।
**तूनीर** पुं० (हि) तूणीर। निषङ्ग।
**तूफान** पुं० (अ) १-भीषण आँधी तथा वर्षा का एक साथ होना। २-आँधी। ३-आपत्ति। आफत ४-हल्ला-गुल्ला। ५-झगड़ा। बखेड़ा। दङ्गा। ६-दोषारोपण।
**तूफानी** वि० (फा) १-तूफान की तरह का। २-उपद्रवी। ३-उग्र। प्रचण्ड। ४-झूठी तोहमत लगाने वाला।
**तूमड़ा** पुं० (हिं) [स्त्री० तूमड़ी] तूँबा।
**तूमड़ी** स्त्री०(हि) १-तूँबी। २-तूँबी का बना बाजा। सपेरे की बीन।
**तूमना** क्रि० (हिं) १-तूनना। रुई धुनना। रुई में से बिनौला निकालना। ३-धज्जी करना। ४-हाथ से मसलना। ५-रहस्य खोलना।
**तूमरी** स्त्री० (हिं) तूँबी।
**तूमार** पुं० (हिं) बात का व्यर्थ विस्तार।
**तूर** पुं० (हि) १-नगाड़ा। २-तुरही।
**तूरज** पुं० (हि) तुरही। दुंदुभि।
**तूरण, तूरन** क्रि० वि० (हि) तूर्ण।
**तूरान** पुं० (फा) मध्य एशिया महाद्वीप का फारस के उत्तर का सारा भाग।
**तूरानी** वि० (फा) तूरान देश का। पुं० तूरान देश का निवासी।
**तूर्ण** क्रि० वि० (सं) शीघ्र। तुरन्त।
**तूर्णक** पुं० (सं) एक तरह का चावल।
**तूर्य** पुं० (स) तुरही नामक बाजा।
**तूल** पुं० (सं) १-आकाश। २-शहतूत। ३-कपास, सेमल आदि के डोडों के अन्दर का घूआ। ४-रुई। पुं० (हि) १-चटकीले लाल रङ्ग का सूती कपड़ा। २-गहरा लाल रङ्ग। वि० तुल्य। समान। पुं० (अ) विस्तार। लम्बाई।
**तूलता** स्त्री० (हि) सादृश्य।
**तूलना** क्रि० (हि) पहिये की धुरी में चिकनाई डालना
**तूलमतूल** अव्य० (हि) आमने-सामने।
**तूला** स्त्री० (सं) १-कपास। २-दीपक की बत्ती।
**तूलि** स्त्री० (स) १-तकिया। २-तूलिका।
**तूलिका** स्त्री० (सं) चित्र अंकित करने या रङ्ग भरने की कलम या कूँची।
**तूष्णी** वि० (हि) मौन। स्त्री० (हि) खामोशी।
**तूष्णीक** वि० (सं) मौन साधने वाला।
**तूष्णीभूत** वि० (स) मौन।
**तूस** पुं०(हि) १-भूसा। २-एक उत्तम प्रकार का ऊन जो पहाड़ी बकरी के शरीर पर होता है। ३-इस ऊन की बनी चादर।
**तूसदान** पुं० (हि) कारतूस।
**तूसना** क्रि० (हि) सन्तुष्ट तृप्त अथवा प्रसन्न होना या करना।
**तृखा** स्त्री० दे० 'तृषा'।
**तृजग** वि० दे० 'तिर्यक'।
**तृण** पुं० (सं) १-तिनका। २-घास।
**तृण-कुटी** स्त्री० (सं) झोंपड़ी।
**तृण-कुटीर, तृण-कुटीरक** पुं० (सं) फूँस की झोंपड़ी
**तृणमय** वि० (सं) घास का बना।
**तृण-मणि** पुं० (स) कपूर मणि। कहरुवा।
**तृतीय** वि० (स) तीसरा।
**तृतीयांश** पुं० (सं) तीसरा भाग।
**तृतीया** स्त्री० (सं) १-प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तीज। २-व्याकरण में करण कारक।
**तृन** पुं० (हि) तृण। तिनका।
**तृपति** स्त्री० दे० 'तृप्ति'।
**तृपित** वि० दे० 'तृप्त'।
**तृप्त** वि० (सं) १-जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। सन्तुष्ट। २-प्रसन्न। खुश।
**तृप्ति** स्त्री० (सं) १-इच्छा पूर्ण होने से प्राप्त शांति और आनन्द। सन्तोष। २-प्रसन्नता। खुशी।
**तृषा** स्त्री० (सं) १-प्यास। २-इच्छा। अभिलाषा। ३-लोभ। लालच।
**तृषावंत, तृषावान्** वि० (सं) प्यासा।
**तृषित** वि० (सं) १-प्यासा। २-अभिलाषी। इच्छुक
**तृष्ण** वि० (सं) १-प्यासा। २-किसी तरह की इच्छा या कामना रखने वाला।
**तृष्णा** स्त्री० (सं) १-प्यास। २-अप्राप्त वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा। ३-लोभ।
**तृस्ना** स्त्री० दे० 'तृष्णा'।
**तें** प्रत्य० (हि) से।
**तेंदुआ** पुं० (देश०) चीते की जाति का एक हिंसक

पशु।
तेंदू पुं० (हि) वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी आबनूस कहलाती है।
ते अव्य० (हि) से। सर्व० (स) वे। वे लोग।
तेइ सर्व० (हि) उसे। वे ही।
तेऊ सर्व० (हि) वे भी।
तेखना क्रि० (हि) रुष्ट या नाराज होना।
तेग स्त्री० (प्र) तलवार।
तेगा पुं० [प्र० तेग] तलवार। खड्ग।
तेज पुं०(सं) १-दीप्ति। चमक। २-पराक्रम। वीर्य। ४-सार भाग। तत्व। ५-ताप। गरमी। ६-तेजी। प्रखरता। ७-प्रताप। रोबदाब। ८-अग्नि। वि० (फा) १-तीक्ष्ण या पैनी धार वाला। २-चलने में शीघ्रगामी। ३-फुरतीला। ४-तीक्ष्ण। तीता। ५-महँगा। ६-तुरन्त अधिक प्रभाव दिखाने वाला। ७-प्रखर या तीव्र बुद्धि वाला। ८-बहुत अधिक चपल या चंचल।
तेजना क्रि० (हि) तजना। छोड़ना।
तेजपत्ता, तेजपत्र, तेजपात पुं० (हि) दारचीनी की जाति का एक वृक्ष या उसका पत्ता जो मसाले में काम आता है।
तेजमान, तेजवंत वि० (हि) तेजवान।
तेजवान् वि० (स) १-जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २-वीर्यवान। ३-बलशाली।
तेजस् पु० दे० 'तेज'।
तेजसी वि० दे० 'तेजस्वी'।
तेजस्वी वि० (सं) १-तेज वाला। २-प्रतापी। ३-शक्तिशाली। ४-प्रभावशाली।
तेजाब पुं० (फा) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल जिसमें अन्य वस्तुओं को गलाने की शक्ति रहती है। (एसिड)।
तेजाबी वि० (फा) तेजाब सम्बन्धी।
तेजाबी-सोना पु०[फा०+हि०] तेजाब से साफ किया हुआ सोना।
तेजायतन पुं० (हि) परम तेजस्वी।
तेजी स्त्री० (फा) १-तेज होने का भाव। २-तीव्रता। ३-उग्रता। प्रचण्डता। ४-शीघ्रता। ५-महँगी।
तेजोम्बेष पुं० (सं) एक वैज्ञानिक यन्त्र जिसकी सहायता से यह जाना जाता है कि आकाश, जल या स्थल पर किसी दिशा में और कितनी दूरी पर शत्रु के जलयान या सैनिक महत्व के संगठन हैं तथा उन पर अचूक प्रहार किया जा सकता है या नहीं।
तेजोमय वि० (सं) १-तेज से पूर्ण। २-जिसके शरीर में तेज फूटता हो। ज्योतिर्मय।
तेजोमूर्त्ति पुं० (सं) सूर्य। वि० जिसमें अधिक तेज हो।
तेजोहत वि० (सं) जिसका तेज नष्ट होगया हो।
तेड़ाना क्रि० (हि) बुलाना।
तेता, तेतिक, तेतो वि० (हि) [स्त्री० तेती] उतना। उसी परिमाण का।
तेपि पद० दे० 'तेऊ'।
तेरस स्त्री० दे० 'त्रियोदशी'।
तेरह वि० (हि) दस और तीन। पुं० दस और तीन के योग से बनने वाली संख्या।
तेरहीं स्त्री० (हि) मरने की तिथि से तेरहवीं तिथि जिसमें पिण्ड-दान और ब्राह्मण-भोजन कराकर घर के लोग शुद्ध होते हैं।
तेरा सर्व० (हि) (स्त्री० तेरी) मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम जो 'तू' का सम्बन्धकारक रूप है।
तेरुस पुं० दे० 'त्योरस'। स्त्री० (हि) तेरस। त्रियोदशी
तेरे अव्य० (हि) से।
तेरो सर्व० (हि) तेरा।
तेल पुं० (हि) १-वह तरल स्निग्ध-पदार्थ जो बीजों और वनस्पतियों से निकलता है। २-विवाह की एक रीति। ३-औषध रूप में प्रयुक्त होने वाली पिघलाई हुई चर्बी।
तेलगू स्त्री० (हि) तैलङ्ग देश की भाषा।
तेलहन पुं० (हि) वे बीज जिनसे तेल निकलता है।
तेलहा वि० (हि) (स्त्री० तेलही) १-तेल से सम्बद्ध। २-तेल का। तेल में बना हुआ। ३-जिसमें तेल हो
तेलिया वि० (हि) १-तेल जैसा चिकना। २-तेल के रङ्ग जैसा। पुं० १-काला रङ्ग। २-इस रङ्ग का घोड़ा। ३-एक विष।
तेलिया-पखान पुं० (हि) एक प्रकार का काला और चिकना पत्थर।
तेलिया-मसान पुं० (हि) भारी कञ्जूस आदमी।
तेलिया-मैना स्त्री० (हि) एक तरह की मैना।
तेलिया-सुहागा पुं० (हि) एक तरह का सुहागा।
तेली पुं० (हि) (स्त्री० तेलिन) तेल पेरने और बेचने का धन्धा करने वाली एक जाति।
तेलौना वि० (हि) १-तेल से युक्त। स्निग्ध। जिसमें सुगन्धित तेल लगा हो।
तेवन पुं० (हि) १-घर के आगे का बगीचा। नजरबाग। २-आमोद-प्रमोद का स्थान या बन। ३-क्रीड़ा।
तेवर पुं० (हि) १-कुपित दृष्टि। २-देखने का ढङ्ग। ३-भौंह। भृकुटी। ४-स्त्रियों के तीनों (साड़ी, चोली और ओढ़नी) कपड़े।
तेवरी स्त्री० दे० 'त्योरी'।
तेवहार पुं० दे० 'त्योहार'।
तेवान पुं० (हि) सोच। चिन्ता।
तेवाना क्रि० (हि) सोच या चिन्ता में पड़ना।
तेह पु० (हि) १-क्रोध। रोस। २-घमण्ड। ३-तेजी ४-तीखापन।

**तेहरा** वि० (हि) १-तीन परत या तह वाला। २-जिसकी तीन प्रतियाँ एक साथ हों। ३-तीसरी बार किया हुआ।

**तेहराना** क्रि० (हि) १-तीन परतों या तहों का बनाना। २-तीसरी बार करना। ३-तीसरी दफा पढ़ना।

**तेहवार** पुं० दे० 'त्योहार'।

**तेहा** पुं० दे० 'तेह'।

**तेहि** सर्व० (हि) उसको। उसे।

**तेही** वि० (हि) १-क्रोधी। २-अभिमानी। घमण्डी ३-उग्र स्वभाव वाला।

**तैं** सर्व० (हि) तू। प्रत्य० से।

**तै** वि० दे० 'तय'। अव्य० (हि) १-उतना। २-से।

**तैना** क्रि० (हि) १-तपना। १-तपाना। ३-दुखी होना।

**तैनात** वि० (अ० तअय्युन) नियुक्त। मुकर्रर।

**तैयार** वि० (अ) १-दुरुस्त। ठीक। लैस। २-उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३-उपस्थिति। मौजूद। ४-हृष्ट-पुष्ट

**तैयारी** स्त्री० (हि) १-तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २-तत्परता। मुस्तैदी। ३-शरीर की पुष्टता ४-प्रबन्ध आदि के सम्बन्ध में धूम-धाम। ५-सजावट।

**तैयो** क्रि० वि० (हि) तो भी। तिस पर भी। फिर भी

**तैरना** क्रि० (हि) १-पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २-तरना। पैरना।

**तैराई** स्त्री० (हि) १-तैरने की क्रिया या भाव। २-तैरने या तैराने के बदले में मिलने वाला धन।

**तैराक** पुं० (हि) वह व्यक्ति जो तैरने में प्रवीण हो। वि० अच्छी तरह तैरना जानने वाला।

**तैराकी** स्त्री० (हि) १-तैरने की क्रिया या भाव। तैराई २-तैरने की कलाओं का प्रदर्शन तथा जल-क्रीड़ाओं की प्रतियोगिता।

**तैराना** क्रि० (हि) दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २-घुसाना। धँसाना।

**तैलंग** पुं० (हि) दक्षिण भारत का एक देश जहाँ तेलगू भाषा बोली जाती है।

**तैलंगाना** पुं० (हि) तैलङ्ग देश।

**तैलंगी** पुं० (हि) तैलङ्ग देश का निवासी। स्त्री० तैलङ्ग देश की भाषा। वि० तैलङ्ग देश सम्बन्धी।

**तैल** पुं० (सं) तिलहन को पेरकर निकाला हुआ द्रव्य तेल।

**तैल-चित्र** पुं० (सं) तेल मिश्रित रङ्गों द्वारा बनाया गया चित्र। (आइल-पेंटिंग)।

**तैल-पोत** पुं० (सं) खनिज तेल ढोने वाला पोत या जहाज। (आइल-टैंकर)।

**तैल-वाहक-पोत** पुं० (सं) वह तेल-पोत या जहाज जो बड़ी मात्रा में खनिज तेल अपनी टङ्की में भर कर ले जाता है।

**तैश** पुं० (अ) आवेश-युक्त क्रोध। गुस्सा।

**तैस, तैसा** वि० (हि) उसी प्रकार का। वैसा।

**तैसे** क्रि० वि० (हि) उस प्रकार से। वैसे।

**तों** क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

**तोंअर** पु० दे० 'तोमर'।

**तोंद** स्त्री० (हि) पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग।

**तोंदल** वि० (हि) जिसका पेट आगे की ओर निकला हो। तोंद वाला।

**तोंदी** स्त्री० (हि) नाभी। ढोढ़ी।

**तोंदीला, तोंदैल** वि० (हि) तोंदल। तोंदवाला।

**तोंर** पु० दे० 'तोमर'।

**तोंहका** सर्व० (हि) तुम्हें।

**तो** अव्य० (हि) १-एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्द या बात को जोर देने के लिए या कभी-कभी यों ही होता है। २-उस दशा में। तब। सर्व० १-तुझ (ब्रज)। २-तेरा। क्रि० (हि) था (क्वचित)।

**तोइ** पुं० (हि) तोय। जल। पानी।

**तोई** स्त्री० (देश) मगजी। गोट।

**तोख** पुं० (हि) तोष। सन्तोष।

**तोखना** क्रि० (हि) सन्तुष्ट या प्रसन्न करना।

**तोखार** पुं० दे० 'तुखार'।

**तोट** पुं० (हि) १-टूटने की क्रिया या भाव। २-कमी। त्रुटि। ३-टोटा। घाटा। ४-दोष।

**तोटक** पुं० (सं) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं। २-शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम।

**तोटना** क्रि० (हि) टूटना।

**तोड़** पुं० (हि) १-तोड़ने की क्रिया या भाव। २-नदी आदि के जल का तेज बहाव। ३-किले की दीवार का वह भाग जो गोले की मार आदि से टूट गया हो। ४-कुश्ती का वह पेंच जिससे कोई दूसरा पेंच रद्द हो। ५-किसी प्रभाव आदि को नष्ट करने वाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। ६-दही का पानी। ७-बार। दफा।

**तोड़क** वि० (हि) तोड़ने वाला।

**तोड़जोड़** पुं० (हि) १-दाँव-पेंच। चाल। युक्ति। २-अपना मतलब गाँठने के निमित्त किसी को मिलाने और किसी को अलग करने का कार्य।

**तोड़ना** क्रि० (हि) १-आघात या झटके से किसी वस्तु के टुकड़े करना। २-किसी वस्तु का कोई अंग खण्डित, भग्न या बेकाम करना। ३-खेत में प्रथम बार हल चलाना। ४-सेंध लगाना। ५-बल, प्रभाव, महत्व, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना। ६-किसी संस्था या कार-बार आदि को सदा के लिए बन्द कर देना। ७-किसी नियम को रद्द करना। ८-किसी आज्ञा का उल्लंघन करना। ९-सम्बन्ध अथवा नाते को आगे के लिए न निभाना। १०-बात पर कायम न रहना। ११-दूर करना। १२-

फुसला लेना।
**तोड़-फोड़** पुं० (हिं) १-किसी वस्तु को नष्ट करने की क्रिया या भाव। २-जान-बूझकर राष्ट्रीय सम्पत्ति या कल-कारखानों को क्षति पहुँचाना। ध्वंसन। (सैबोटेज)।
**तोड़र** पुं० (हिं) १-तोड़ा। २-पैर का एक गहना।
**तोड़वाना** क्रि० (हि) दे० 'तुड़वाना'।
**तोड़ा** पुं०(हि) १-सोने या चाँदी की चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथों या पैरों में पहनी जाती है। २-रुपया रखने की टाट की थैली। ३-नदी का किनारा। तट। ४-नदी के संगम पर बना हुआ वह मैदान जो बालू मिट्टी जमा होने के कारण बन जाता है। ४-कमी। घाटा। ५-रस्सी का टुकड़ा। ६-नाच का एक भाग। ७-हरिस (हल का) ८-फजीता।
**तोड़ाई** स्त्री० दे० 'तुड़ाई'।
**तोड़ाना** क्रि० दे० 'तुड़ाना'।
**तोण** पुं० (हिं) निषङ्ग। तरकश।
**तोत** पुं० (हि) ढेर। समूह।
**तोतई** वि० (हि) तोते के से रङ्ग का। धानी।
**तोतक** पुं० (हि) पपीहा।
**तोतर, तोतरा** वि० (हि) तोतला।
**तोतराना** क्रि० (हिं) तुतलाना।
**तोतला** वि० (हिं) १-तुतलाकर बोलने वाला। २-तुतलाने का सा।
**तोतलाना** क्रि० (हिं) तुतलाना।
**तोता** पुं० (हिं) शुक नामक पक्षी। सूआ।
**तोता-चश्म** पुं० (फा) १-बेवफा। २-बे-मुरव्वत।
**तोता-चश्मी** स्त्री० (फा) १-बे-वफाई। २-बे-मुरव्वती
**तोता-परी** पुं० (हि) एक प्रकार का आम।
**तोती** स्त्री० (हिं) १-तोता पक्षी की मादा। २-उपपत्नी।
**तोद** पु० (सं) १-व्यथा। पीड़ा। २-हाँकना।
**तोदन** पुं० (सं) १-चाबुक। कोड़ा। २-व्यथा। पीड़ा
**तोप** स्त्री० (तु) एक प्रकार का बड़ा आग्नेय अस्त्र जो युद्ध में प्रहार करने के काम आता है।
**तोप-खाना** पुं० (तु+फा) १-वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं। २-युद्ध के निमित्त सुसज्जित तोपों का समूह।
**तोपची** पुं० (हि) तोप चलाने वाला। तोप चलाने पर नियुक्त व्यक्ति।
**तोपना** क्रि० (हि) ढाँकना। छिपाना।
**तोपवाही-नौका** स्त्री० (हि) एक या एक से अधिक तोप वाला छोटा जहाज। (गन-बोट)।
**तोप-विद्या** स्त्री० (हिं) बड़ी-बड़ी तोपों के निर्माण और प्रबन्ध आदि का कार्य। (गनेरी)।
**तोप-सैनिक** पुं० (हि) तोप चलाने पर नियुक्त सैनिक। तोपची। (आर्टिलरी-मैन)।
**तोपा** पुं० (देश) एक टाँके भर की सिलाई।
**तोफा** वि० (हि) १-तोहफा। २-बढ़िया।
**तोबड़ा** पुं० (फा) चमड़े या टाट का वह थैला जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाने के लिए उसके मुख पर बाँधते हैं।
**तोबा** पुं० (अ० तौबः) भविष्य में अनुचित कार्य करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।
**तोम** पुं० (हि) समूह। ढेर।
**तोमड़ी** स्त्री० (हि) तूँबड़ी।
**तोमर** पुं० (सं) १-भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २-एक देश का नाम। ३-उस देश का निवासी। ४-राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश। ५-बारह मात्राओं का एक छन्द।
**तोमरी** स्त्री० (हिं) तूँबड़ी।
**तोय** पु० (स) १-जल। पानी। २-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।
**तोयधर, तोयधार** पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथा।
**तोयधि, तोयनिधि** पुं० (सं) सागर। समुद्र।
**तोय-यंत्र** पुं० (सं) १-जलघड़ी। २-फौवारा।
**तोर** पुं० दे० 'तोड़'। वि० दे० 'तेरा'।
**तोरई** स्त्री० (हिं) तुरई।
**तोरण** पुं० (स) १-किसी घर या नगर का बाहरी फाटक। २-सजावट के लिए लटकाई जाने वाली मालाएँ, पत्तियाँ आदि। वन्दनवार।
**तोरन** पु० दे० 'तोरण'।
**तोरना** क्रि० (हि) तोड़ना।
**तोरा** सर्व० दे० 'तेरा'।
**तोराई** अव्य० (हि) १-वेग पूर्वक। २-तेजी से। शीघ्रतापूर्वक।
**तोराना** क्रि० (हि) तोड़ाना। तुड़ाना।
**तोरावन्** वि० (हि) [स्त्री० तोरावनी] वेगवान्। तेज।
**तोरी** स्त्री० (हि) १-तुरई। २-काले रङ्ग की सरसों।
**तोल** स्त्री० (हि) तौल। वि० दे० 'तुल्य'।
**तोलन** पुं०(सं) १-तौलने की क्रिया। २-ऊपर उठाना
**तोलना** क्रि० (हि) १-तौलना। २-पहिये की धुरी में तेल देना। ३-धनुष आदि संभालना। ४-उठाना।
**तोला** पुं० (हि) १-बारह माशे की तौल। २-इस तौल का बाट।
**तोशक** स्त्री० (तु) बिछाने का रूई भरा गद्दा।
**तोशदान** पुं० (फा० तोशःदान) १-मार्ग के लिए जलपान अथवा दूसरी आवश्यक वस्तुएँ रखने का पात्र आदि। २-कारतूस रखने की चमड़े की थैली।
**तोशा** पुं० (फा० तोशः) १-पाथेय। २-साधारण खाने-पीने की वस्तु।
**तोशाखाना** पु० (फा) वह स्थान जहाँ अमीरों के

वस्त्राभूषण आदि रक्खे रहते हैं
**तोष** पुं० (सं) १-तुष्टि। सन्तोष। तृप्ति। २-प्रसन्नता। आनन्द।
**तोषक** वि० (सं) सन्तुष्ट करने वाला।
**तोषण** पुं० (सं) १-सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव २-तृप्ति। सन्तोष। वि० सन्तुष्ट या प्रसन्न करने वाला।
**तोषणिक** पुं० (सं) किसी को तुष्ट करने के लिए दिया जाने वाला धन। वि० तोष सम्बन्धी।
**तोषन** पुं० वि० दे० 'तोषण'।
**तोषना** क्रि० (हि) सन्तुष्ट होना या करना।
**तोषार** पुं० (हि) घोड़ा (तुखार देश का)।
**तोस** पुं० दे० 'तोष'।
**तोसा** पुं० दे० 'तोशा'।
**तोसागार** पुं० दे० 'तोशाखाना'।
**तोहफा** पुं० (अ) उपहार। सौगात। वि० बढ़िया।
**तोहमत** स्त्री० (अ) असत्य आरोप। झूठा कलंक।
**तोहमती** वि० (अ) मिथ्या आरोप करने वाला।
**तोहार** सर्व० (हि) तुम्हारा।
**तोहि, तोहीं** सर्व० (हि) तुझे। तुम्हें।
**तौंकन** स्त्री० दे० 'तौंस'।
**तौंकना** क्रि० दे० 'तौंसना'।
**तौंस** स्त्री० (हि) १-ताप। गरमी। २-ऊमस।
**तौंसना** क्रि० (हि) १-गरमी से झुलसना। २-ऊमस होना।
**तौ** क्रि० वि० दे० 'तो'। क्रि० (हि) था। वि० तेरा। तुम्हारा। अव्य० हाँ। ठीक है।
**तौक** पुं० (अ) १-गले में पहनने का एक गहना। २-अपराधी या पागल के गले में पहनाने की पटरी या मँडरा। ३-पक्षियों के गले का प्राकृतिक चिन्ह। हँसुली।
**तौकी** स्त्री० (हि) गले में पहनने का गहना।
**तौन** सर्व० (हि) वह। सो।
**तौनी** स्त्री० (हि) छोटा तवा। तई। तवी।
**तौबा** स्त्री० दे० 'तोबा'।
**तौर** पुं० (अ) १-ढंग। तरीका। २-प्रकार। भाँति। तरह। ३- चाल-चलन।
**तौरि** स्त्री० (हि) घुमटा। चक्कर।
**तौरेत** स्त्री० (इब्रा०) यहूदियों का धर्मग्रन्थ।
**तौल** स्त्री० (हि) तौलने की क्रिया। २-माप। जोख। वजन। ३-परख।
**तौलना** क्रि० (हि) १-वजन करना। २-निशाना लगाने के लिए हाथ ठीक करना। साधना। २-३-मिलान करना। ४-गाड़ी के पहिये में तेल देना। औंगना।
**तौलवाना** क्रि० (हि) तौलने का काम अन्य से कराना।
**तौला** पुं० (हि) अनाज तौलने वाला। बया।
**तौलाई** स्त्री० (हि) तौलने की क्रिया, भाव या उजरत।
**तौलाना** क्रि० (हि) तौलवाना।
**तौलिया** पुं० (हि) शरीर पोंछने का विशेष प्रकार का अँगोछा।
**तौसना** क्रि० (हि) १-दे० 'तौंसना'। ताप या गरमी पहुँचा कर बेचैन करना।
**तौहीन** स्त्री० (अ) अनादर। अपमान।
**तौहीनी** स्त्री० दे० 'तौहीन'।
**त्यक्त** वि० (सं) त्यागा या छोड़ा हुआ।
**त्यजन** पुं० (सं) छोड़ने या त्यागने की क्रिया।
**त्याग** पुं० (सं) १-उत्सर्ग। दान। २-कोई बात, काम या संबन्ध छोड़ने की क्रिया। ३-विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।
**त्यागना** क्रि० (हि) तजना। छोड़ना।
**त्याग-पत्र** पुं० (सं) इस्तीफा।
**त्याग-शील** वि० (सं) उदार। त्यागी।
**त्यागी** वि० (हि) स्वार्थ अथवा सांसारिक सुखों को को छोड़ने वाला। विरक्त।
**त्याजन** क्रि० (हि) त्यागना। छोड़ना।
**त्याज्य** वि० (सं) छोड़ने या त्यागने योग्य।
**त्यार** वि० दे० 'तैयार'।
**त्यूँ** क्रि० वि० दे० 'त्यों'।
**त्यों** क्रि० वि० (हि) १-उस प्रकार। २-उसी समय। पुं० ओर। तरफ।
**त्योनार** पुं० (हि) ढंग। तरीका।
**त्योर** पुं० दे० 'त्योरी'।
**त्योरस** पुं० (हि) १-पिछला तीसरा वर्ष। २-आने वाला तीसरा वर्ष।
**त्योराना** क्रि० (हि) सिर में चक्कर आना।
**त्योरी** स्त्री० (हि) १-माथे का बल या सिलवट। २-निगाह। दृष्टि।
**त्योरुस** पुं० (हि) बीता हुआ या आने वाला तीसरा वर्ष।
**त्योहार** पुं० (हि) धार्मिक अथवा जातीय उत्सव मनाने का दिन। पर्व-दिन।
**त्योहारी** स्त्री०(हि) त्योहार के दिन छोटों या आश्रितों को दिया जाने वाला धन।
**त्यौं** क्रि० वि० दे० 'त्यों'। स्त्री० (हि) ओर। तरफ।
**त्यौनार** पुं० (हि) ढंग। तर्ज।
**त्यौनारा** वि० (हि) अच्छे रंग ढंग वाला। बढ़िया।
**त्यौर** पुं० दे० 'त्योरी'।
**त्यौराना** क्रि० (हि) सिर में चक्कर आना।
**त्यौरी** स्त्री० दे० 'त्योरी'।
**त्यौरुस** पुं० दे० 'त्योरुस'।
**त्यौहार** पुं० दे० 'त्योहार'।

त्रंबाल पुं (हि) नगाड़ा। धौंसा।
त्र 'त' और 'र' के योग से बना एक संयुक्त अक्षर जो कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' का अर्थ देता है।
त्रय वि० (सं) १-तीन। २-तीसरा।
त्रय-ताप पुं० (सं) तीन प्रकार के ताप या कष्ट।
त्रयोदशी स्त्री० (सं) तेरस।
त्रसन पुं० (सं) १-भय। २-चिन्ता। ३-व्याकुलता।
त्रसना क्रि० (हि) १-भय से काँप उठना। २-कष्ट पाना। ३-डराना। ४-कष्ट देना।
त्रसरेणु स्त्री०(सं) वह चमकता सूक्ष्म कण जो छेद में से आती हुई धूप में दिखाई देता है। सूक्ष्मकण।
त्रसरेनि स्त्री० (हि) त्रसरेणु।
त्रसाना क्रि० (हि) डराना। भय दिखाना।
त्रसित वि० दे० 'त्रस्त'।
त्रस्त वि० (सं) १-भयभीत। २-पीड़ित। ३-व्याकुल
त्रहक्कना क्रि० (हि) बजना।
त्राटक पुं० (सं) हठयोग में किसी बिंदु पर दृष्टि जमाने की क्रिया।
त्राटिका स्त्री० दे० 'त्राटक'।
त्राण पुं० (सं) १-रक्षा। बचाव। २-रक्षा का साधन। ३-कवच।
त्राता, त्रातार पुं० (हि) रक्षक।
त्रास पुं० (सं) १-भय। डर। २-कष्ट। तकलीफ।
त्रासक पुं० (सं) १-डराने वाला। २-कष्ट देने वाला। ३-निवारक।
त्रासना क्रि० (हि) १-डराना। भय दिखाना। २-कष्ट देना।
त्रासमान वि० (हि) भयभीत।
त्रासा स्त्री० (हि) १-भय। २-आशंका।
त्रासित वि० (हि) त्रस्त।
त्राहि अव्य० (सं) बचाओ। रक्षा करो।
त्रिंबक पुं० दे० 'त्र्यंबक'।
त्रि वि० (सं) तीन।
त्रिक पुं० (सं) १-तीन वस्तुओं का समूह। २-रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३-कमर।
त्रिकटु, त्रिकटुक पुं० (सं) सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीन कटु वस्तुओं का समूह।
त्रिकाल पुं० (सं) १-भूत, वर्त्तमान और भविष्य। २-प्रातः मध्याह्न और सायं।
त्रिकालज्ञ, त्रिकाल-दर्शक, त्रिकालदर्शी पुं० (सं) तीनों काल की बातें जानने वाला। सर्वज्ञ।
त्रिकुटी स्त्री० (सं) दोनों भौंहों के मध्य का स्थान।
त्रिकूट पुं० (सं) १-तीन चोटियों वाला पहाड़। २-वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३-योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र। ४-सेंधा नमक।
त्रिकोण पुं० (सं) १-वह क्षेत्र जिसके तीन कोन हों। त्रिभुज। २-तीन कोनों वाली कोई वस्तु।
त्रिकोण-मिति स्त्री० (सं) त्रिकोण मापने की विद्या (गणित)।
त्रिखा स्त्री० दे० 'तृषा'।
त्रिगर्त्त पुं० (सं) उत्तर भारत के प्रदेश का नाम जिसमें आजकल जालंधर और कांगड़ा आदि नगर हैं।
त्रिगुण पुं०(सं) सत्व, रज और तम, इन तीन गुणों का समूह। वि० तीन गुना। तिगुना।
त्रिगुणातीत पुं० (सं) परमेश्वर। वि० जो सत्वादि तीन गुणों से परे हो।
त्रिगुणात्मक वि० (सं) सत्व, रज और तम-इन तीन गुणों से युक्त।
त्रिगुणित वि० (सं) तिगुना किया हुआ।
त्रि-चक्र-यान पुं० (सं) तीन पहियों वाली गाड़ी जो पैडल मारने से चलती है। (ट्राइसिकिल)।
त्रिचक्षु पुं० (सं) शिव।
त्रिजग पुं० (हि) १-त्रिशंकु। २-त्रिलोक।
त्रिजगती, त्रिजगत पुं० (सं) तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिजामा स्त्री० दे० 'त्रियामा'।
त्रिजीवा, त्रिज्या स्त्री० (सं) वृत्त के केन्द्र से परिधि तक की रेखा। (रेडिअस)।
त्रिण पुं० (हि) तृण। तिनका।
त्रिताप पुं० (सं) दैहिक, दैविक और भौतिक यह तीन ताप या कष्ट।
त्रिदेव पुं० (सं) तीन देवता। (ब्रह्मा, विष्णु और महादेव)।
त्रिदोष पुं० (सं) तीन दोष (वात, पित्त और कफ)
त्रिदोषज वि० (सं) तीनों दोषों से उत्पन्न। पुं० सन्निपात।
त्रिदोषना क्रि० (हि) १-तीनों दोषों के कोप में पड़ना २-काम, क्रोध और लोभ के फन्दों में पड़ना।
त्रिधा क्रि० वि० (सं) तीन प्रकार से। वि० तीन प्रकार का।
त्रिन पुं० (हि) तृण। तिनका।
त्रिनयन पुं० (सं) शिव।
त्रिनयना स्त्री० (सं) दुर्गा।
त्रि-पथ पुं० (सं) कर्म, ज्ञान और उपासना, इन तीनों मार्गों का समूह।
त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी स्त्री० (सं) गङ्गा।
त्रिपद पुं० (सं) १-तिपाई। २-त्रिभुज। ३-तीन पद या चरण वाला।
त्रिपदस्तम्भ पुं० (सं) एक प्रकार की तिपाई जिस पर रख कर वस्तुएँ गर्म की जाती हैं। (ट्राइपॉड)।

**त्रिपदी** स्त्री० (सं) १-गायत्री। २-तिपाई। ३-हंसपदी

**त्रिपाठी** पुं० (सं) १-तीनों वेदों को जानने वाला। त्रिवेदी। तिवारी। ब्राह्मणों की एक उपजाति।

**त्रिपाद** पुं० (सं) १-उदर। २-परमेश्वर।

**त्रिपिटक** पुं० (सं) भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह

**त्रिपिताना** क्रि० (हि) तृप्त होना या करना।

**त्रिपुंड** पुं० (सं) तीन आड़ी रेखाओं का तिलक।

**त्रिपुरारि** पुं० (सं) शिव।

**त्रिपोलिया** पुं० (हि) सिंहद्वार।

**त्रिफला** स्त्री० (सं) हड़, बहेड़ा और आँवले का मेल।

**त्रिबली** स्त्री० (सं) पेट पर पड़ने वाले तीन बल, जिसकी गणना स्त्री के सौन्दर्य में होती है।

**त्रिबिक्रम** पुं० (सं) वामन का विराट रूप।

**त्रिबेनी** स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

**त्रिभंग** वि० (सं) तीन जगह से झुका या मुड़ा हुआ पुं० खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें गरदन, कमर और दाहिने पाँव में बल पड़ता है। (श्रीकृष्ण के वंशी बजाने का वर्णन् इसी रूप में मिलता है)।

**त्रिभंगी** वि० (सं) जो खड़े होने में तीन जगह से बल खाये हुए हो।

**त्रिभुज** पुं० (सं) वह समक्षेत्र जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो (ट्राइएङ्गिल)।

**त्रिभुजलंब** पुं० (स) त्रिभुज के शीर्ष से खींची जाने वाली वह रेखा जो आधार पर लम्ब बनाती हुई जाये। (आल्टीट्यूड)।

**त्रिभुवन** पुं० (सं) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल यह तीनों लोक।

**त्रिमात** वि० दे० 'त्रिमात्र'।

**त्रिमात्र, त्रिमात्रिक** वि० (सं) जिसमें तीन मात्राएँ हों प्लुत।

**त्रिमास** पुं० (सं) १-तीन मास का समय। २-वर्ष की तीन-तीन मासों के चार विभागों में से कोई एक।

**त्रिमुहानी** स्त्री० दे० 'तिमुहानी'।

**त्रिमूर्त्ति** पुं० (सं) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता।

**त्रिय, त्रिया** स्त्री० (सं) स्त्री। नारी।

**त्रियना** क्रि० (हि) १-तैरना। २-तैर कर पार होना।

**त्रियान** पुं० (स) महायान, हीनयान और मध्यमयान ये बौद्धों के प्रधान यान या भेद।

**त्रियामा** स्त्री० (सं) १-रात्रि। २-यमुना नदी। ३-हल्दी।

**त्रिलोक** पुं० (सं) स्वर्ग, मृत्य और पाताल यह तीनों लोक।

**त्रिलोक-नाथ, त्रिलोक-पति** पुं० (सं) तीनों लोकों का स्वामी। ईश्वर।

**त्रिलोकी** स्त्री० दे० 'त्रिलोक'।

**त्रिलोकी-नाथ** पुं० दे० 'त्रिलोक-नाथ'।

**त्रिलोचन** पुं० (सं) शिव।

**त्रिलोचना** स्त्री० (सं) दुर्गा।

**त्रिवर्ग** पुं० (स) १-धर्म, अर्थ और काम। २-त्रिफला ३-त्रिकुटा। ४-ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यह तीन जातियाँ।

**त्रिवर्षात्मक** वि० (सं) त्रैवार्षिक। तीन साल का।

**त्रिवली** स्त्री० दे० 'त्रिबेली'।

**त्रिवाचा** स्त्री० (सं) कोई बात जोर देने के लिए तीन बार कहने की क्रिया।

**त्रिविक्रम** पुं० (सं) १-वामन अवतार। २-विष्णु।

**त्रिविधि** वि० (स) तीन प्रकार का। क्रि० वि० तीन प्रकार से।

**त्रिविधि-बहिष्कार** पुं० (सं) तीन प्रकार से अथवा तीन वस्तुओं का बहिष्कार। (ट्रिपिल बॉयकॉट)।

**त्रिवेणी** स्त्री० (स) १-तीन नदियों का संगम। १-गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थान जो प्रयाग में है। ३-इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना, इन तीनों नाड़ियों का संगम स्थान (हठयोग)।

**त्रिवेद** पुं० (सं) ऋक, यजुः और साम, ये तीनों वेद।

**त्रिवेदी** पुं० (सं) १-त्रिवेद का जानने वाला। २-ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।

**त्रिवेनी** स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

**त्रिशंकु** पुं० (सं) एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे। और देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रुक गये।

**त्रिशाल** पुं० (सं) वह मकान जिसमें तीन कमरे हों।

**त्रिशूल** पुं० (सं) तीन फलों वाला एक अस्त्र विशेष

**त्रिषित** वि० दे० 'तृषित'।

**त्रिसंध्य** पुं० (सं) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

**त्रिसंध्या** स्त्री० (सं) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों सन्धिकाल।

**त्रिसना** पुं० (हि) तृष्णा।

**त्रिसित** वि० दे० 'तृषित'।

**त्रुटि** स्त्री० (सं) १-कमी। न्यूनता। २-भूल। चूक।

**त्रुटित** वि० (सं) १-टूटा हुआ। खण्डित। २-आहत। घायल। ३-त्रुटिपूर्ण।

**त्रुटी** स्त्री० दे० 'त्रुटि'।

**त्रेता** पुं० (स) चार युगों में से दूसरा।

**त्रेतायुग** पुं० (सं) चार युगों में से दूसरा जो १२९६००० वर्ष का था।

**त्रै** वि० (हिं) तीन।

**त्रैकालिक** पुं० (सं) तीनों कालों में अथवा सदा होने वाला।

**त्रैकोणिक** वि० (सं) १-तीन कोणों वाला। २-तिप-

हला।

**त्रैगुण्य** पुं० (सं) सत्त्व, रज और तम, इन तीन गुणों का धर्म या भाव।

**त्रैमासिक** वि० (सं) प्रति तीसरे मास होने वाला।

**त्रैराशिक** पुं० (सं) गणित की वह क्रिया जिसके द्वारा तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाते हैं।

**त्रैलोक्य** पुं० दे० 'त्रिलोक'।

**त्रैवार्षिक** वि० (सं) १-हर तीसरे वर्ष होने वाला। २-तीन वर्ष सम्बन्धी।

**त्रोटक** पुं० (सं) १-एक शृङ्गार प्रधान नाटक जिसमें ५, ७, ८, या ९ अङ्क होते हैं। २-एक राग। ३-एक छन्द।

**त्रोण** पुं० (सं) तरकश।

**त्रोन** पुं० दे० 'त्रोण'।

**त्र्यंबक** पुं० (सं) शिव।

**त्वक्** पुं० (सं) १-छाल। २-खाल। चर्म। ३-पाँच ज्ञानेन्द्रियों में से एक।

**त्वग्जल** पुं० (सं) पसीना।

**त्वचकना** क्रि० (हि) १-पचकना। भीतर की ओर धसकना। २-पुराना पड़ना। ३-बुढ़ापे से शरीर का चमड़ा झूलना।

**त्वचा** स्त्री० (सं) १-चर्म। चमड़ा। २-छाल। ३-साँप की केंचुली।

**त्वदीय** वि० (सं) तुम्हारा।

**त्वरा** स्त्री० (सं) शीघ्रता। जल्दी।

**त्वरा-लिपि** स्त्री० (सं) शीघ्रलिपि। (शार्ट-हैंड)।

**त्वरावान्** वि० (सं) १-शीघ्रता करने वाला। जल्दबाज। २-द्रुतगामी। तेज।

**त्वरित** वि० (सं) तीव्र गति वाला। तेज। क्रि० वि० शीघ्रता से।

**त्वष्टा** पुं० (सं) विश्वकर्मा।

**त्विष** स्त्री० (सं) १-शोभा। छवि। २-वाक्य। ३-व्यवसाय। ४-जिगीषा।

**त्वेष** पुं० (सं) १-उत्साह। उमंग। २-आवेश।

[शब्दसंख्या—२०४५३]

# थ

**थ** हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और तवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।

**थंडिल** पुं० [सं० स्थंडिल] यज्ञ की वेदी।

**थंब, थंभ** पुं० (हि) स्तंभ। खंभा।

**थंभन** पुं० (हि) १-एक तांत्रिक प्रयोग। २-स्तंभन। रुकावट।

**थंभना** क्रि० (हि) १-सँभालना। २-ठहरना। रुकना।

**थंभा** पुं० (हि) स्तम्भ। खम्भा।

**थंभित** वि० (हि) १-रुका या टिका हुआ। २-स्तब्ध।

**थ** पुं० (सं) १-पर्वत। २-रक्षक। ३-खतरे का चिह्न ४-रोग विशेष।

**थकन** स्त्री० दे० 'थकान'।

**थकना** क्रि० (हि) १-अधिक परिश्रम से हार जाना। क्लांत होना। २-ऊबजाना। ३-बुढ़ापे से अशक्त हो जाना। ४-ढीला होना। ५-मोहित या मुग्ध होना।

**थकाथक** क्रि० वि० (हि) १-थक-थक शब्द सहित। २-निरन्तर। लगातार।

**थकान** स्त्री० (हि) थकने का भाव। थकावट। श्रांति।

**थकाना** क्रि० (हि) श्रांत या शिथिल करना।

**थका-माँदा** वि० (हि) परिश्रम करते-करते अशक्त। श्रांत।

**थकावट, थकाहट** स्त्री० (हि) शिथिलता। थकाना।

**थकित** वि० (हि) १-थका हुआ। श्रांत। २-मोहित। मुग्ध।

**थकौंहाँ** वि० (हि) [स्त्री० थकौंहीं] थकामाँदा। शिथिल

**थक्कर** पुं० (हि) १-किसी वस्तु का जमा हुआ पिंड। थक्का। २-समूह। झुण्ड।

**थक्का** पुं० (हि) [स्त्री० थक्की, थकिया] १-जमी हुई गाढ़ी वस्तु की मोटी तह या दल। २-गली हुई धातु का जमा हुआ कतरा।

**थगित** वि० (हि) १-ठहरा या रुका हुआ। २-शिथिल ढीला। मंद। धीमा।

**थड़ा** पुं० (हि) [स्त्री० थड़ी] १-बैठने का स्थान। बैठक। २-दुकान की गद्दी।

**थणसुत** पुं० (हि) शिवपुत्र। गणेश या कार्त्तिकेय।

**थति** स्त्री० १-दे० 'थाती'। २-समूह। झुण्ड।

**थत्ती** स्त्री० (हि) राशि। ढेर।

**थन** पुं० (हि) चौपायों के स्तन।

**थनु** पुं० (हि) स्थाणु।

**थनुसुत** पुं० दे० 'थणुसुत'।

**थनेला** पुं० (हि) [स्त्री० थनेली] स्त्रियों के स्तन पर होने वाला फोड़ा।

**थनैत** पुं० (हि) १-गाँव का मुखिया। २-वह व्यक्ति जो जमीदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करे।

**थपक** स्त्री० दे० 'थपकी'।

**थपकना** क्रि० (हि) १-शरीर पर धीरे-धीरे हाथ से ठोंकना। २-धीरे-धीरे ठोंकना। ३-पुचकारना।

**थपका** पुं० (हि) १-थक्का। २-थपकी।

**थपकाना** क्रि० (हि) १-थपकना। २-थपकने में प्रवृत्त करना।
**थपकी** स्त्री० (हि) हथेली का हलका आघात।
**थपड़ी** स्त्री० (हि) ताली। करतल ध्वनि।
**थपथपी** स्त्री० (हि) थपकी।
**थपन** पु० (हि) स्थापित करने की क्रिया। स्थापन।
**थपनहार** पु० (हि) प्रतिष्ठापक।
**थपना** क्रि० (हि) १-स्थापित होना। जमना। २-स्थापित करना। जमाना।
**थपाना** क्रि० (हि) स्थापित कराना।
**थपेड़ना** क्रि० (हि) १-चपत जमाना। २-आघात करना।
**थपेड़ा** पु० (हि) १-चपत। चपेटा। २-धक्का। टक्कर
**थपोड़ी, थपोरी** स्त्री० (हि) करतल ध्वनि। ताली।
**थप्पड़** पुं० (हि) तमाचा। झापड़।
**थप्पन** वि० (हि) स्थगित करने वाला।
**थम** पु० (हि) १-स्तंभ। २-केले की पेड़ी।
**थमकारी** वि० (हि) रोकने वाला। थामने वाला।
**थमना** क्रि० (हि) १-रुकना। २-प्रतीक्षा करना। ३-ठहरा रहना। ४-धैर्य रखना।
**थर** स्त्री०(हि) तह। परत। पुं० १-स्थल। २-बाघ की माँद। ३-राजस्थान के उत्तरीय भाग का एक रेगिस्तान।
**थरकना** क्रि० (हि) डर से काँपना। थर्राना।
**थरकाना** क्रि० (हि) भय से काँपना।
**थरकौहाँ** वि० (हि) काँपता या हिलता हुआ।
**थरथर** स्त्री० (हि) भय से काँपने का भाव या मुद्रा। क्रि० वि० डर से काँपते हुए।
**थरथराना** क्रि० (हि) १-भय से काँपना। २-काँपना। हिलना। ३-थरथराने में प्रवृत्त करना।
**थरथराहट** स्त्री० (हि) कँपकँपी।
**थरथरी** स्त्री० (हि) भय या शीत के कारण होने वाली कँपकँपी।
**थरसना** क्रि० (हि) त्रस्त होना। कष्ट भोगना।
**थरसल** वि० (हि) स्तब्ध। हक्का-बक्का।
**थरहर** स्त्री० (हि) थरथरी।
**थरहराना** क्रि० (हि) थरथराना।
**थरहरी** स्त्री० (हि) थरथरी।
**थरहाई** स्त्री० (हि) निहोरा। बराई।
**थरि** स्त्री० (हि) बाघ, सिंह आदि की माँद।
**थरिया** स्त्री० (हि) थाली।
**थरी** स्त्री० (हि) १-गुफा। २-बाघ या सिंह की माँद
**थरु** पु० (हि) स्थल। जगह।
**थर्राना** क्रि० (हि) १-डर के मारे काँपना। २-दहलना।
**थल** पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-जल से रहित भूमि। ३-स्थल-मार्ग। ४-दे० 'थरी'।
**थलकना** क्रि० (हि) १-झोल होने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २-मोटाई के कारण शरीर के माँस का हिलना।
**थलचर** पु० (हि) पृथ्वी पर रहने वाले जीव।
**थलज** पुं० (हि) १-स्थल पर उत्पन्न वस्तु। २-गुलाब
**थलथल** वि० (हि) मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।
**थलथलाना** क्रि० (हि) मोटाई के कारण शरीर के माँस का हिलना।
**थलपति** पुं० (हि) राजा। भूपति।
**थलपद्म** पुं० (हि) गुलाब।
**थलबेड़ा** पुं० (हि) नाव या जहाज के ठहरने का स्थान।
**थलरुह** वि० (हि) पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले वृक्ष आदि।
**थलिया** स्त्री० (हि) थाली।
**थली** स्त्री० (हि) १-स्थान। जगह। २-थल के नीचे का तल। ३-ठहरने अथवा बैठने का स्थान। बैठक ४-बालू का मैदान। टीला।
**थवई** पुं० (हि) राज। राजगीर। मेमार।
**थसर** वि० (हि) शिथिल।
**थसरना** क्रि० (हि) शिथिल होना।
**थहना** क्रि० (हि) थाह लेना।
**थहरन** स्त्री० (हि) थरथरी।
**थहरना** क्रि० (हि) १-भय या कमजोरी के कारण काँपना। २-थर्राना।
**थहराना** क्रि० (हि) १-भय से काँपना। २-हिलना।
**थहाना** क्रि० (हि) थाह लेना। गहराई का पता लगाना।
**थांग** पुं० (हि) १-चोरों या डाकुओं का छुप कर रहने का स्थान। २-खोज। तलाश।
**थांगी** पुं० (हि) १-चोरों का मुखिया। २-चोरी का माल लेने या अपने पास रखने वाला। ३-चोरों का पता निकालने वाला। भेदिया।
**थाँभ** पुं० (हि) खम्भा।
**थाँभना** क्रि० (हि) थामना। पकड़ना।
**थाँवला** पुं० (हि) थाला।
**था** क्रि० (हि) होना क्रिया का भूतकालिक रूप।
**थाई** वि० (हि) स्थायी।
**थाकना** क्रि० (हि) थकना।
**थाट** पुं० (हि) ठट्ठ। समूह।
**थात** वि० (हि) बैठा या ठहरा हुआ। स्थित।
**थाति** स्त्री० (हि) १-स्थायित्व। स्थिरता। २-ठहरने या स्थित रहने की क्रिया। ३-थाती।
**थाती** स्त्री० (हि) १-सञ्चित धन। २-धरोहर। अमानत। ३-कठिन समय के लिए बचा कर रखा हुआ धन।

**थान** पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। ३-किसी देवी अथवा देवता का स्थान। ४-चौपायों को बाँधने का स्थान। ५-कपड़े गोटे आदि का निश्चित लम्बाई का टुकड़ा। ६-संख्या। अदद।
**थाना** पुं० (हि) १-टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २-पुलिस की चौकी। ३-बाँस की कोठी।
**थानु** पुं० (हि) शिव।
**थानुसुत** पुं (हि) गणेशजी।
**थानेदार** पुं० (हि) पुलिस थाने का प्रधान अधिकारी
**थानैत** पुं०(हि) १-किसी चौकी या अड्डे का स्वामी २-ग्राम देवता।
**थाप** स्त्री०(हि) १-तबले आदि पर हथेली का आघात २-थप्पड़। ३-निशान। ४-स्थिति। ५-प्रतिष्ठा। धाक। ६-मान। कदर। ७-पंचायत। ८-शपथ। सौगन्ध।
**थापन** पुं० (हि) स्थापित करने की क्रिया या भाव।
**थापना** क्रि० (हि) १-स्थापित करना। २-गीली वस्तु को हाथ या साँचे में पीटकर बनाना। स्त्री० १-स्थापन। २-नवरात्र में दुर्गा पूजा के लिए घट स्थापना।
**थापड़, थापर** पुं० दे० 'थप्पड़'।
**थापा** पुं० (हि) १-हाथ का छापा। २-पूजा का चन्दा ३-चिह्न डालने का छापा। ४-साँचा। ५-राशि।
**थापी** स्त्री० (हि) गच पीटने की चपटी मुँगरी।
**थाम** पुं० (हि) १-स्तम्भ। खम्भा। २-मस्तूल। स्त्री० १-थामने या पकड़ने की क्रिया। २-अवरोध।
**थामना** क्रि० (हि) १-रोकना। २-ग्रहण करना। ३-गिरने न देना। ४-ग्रहण करना। ५-सँभालना ६-कार्यभार अपने ऊपर लेना।
**थायी** वि० (हि) स्थायी।
**थायीभाव** पुं० (हि) स्थायी-भाव।
**थार** पुं० (हि) थाल।
**थारा** सर्व० [स्त्री० थारी] तुम्हारा।
**थारी** स्त्री० (हि) थाली।
**थाल** पुं० (हि) बड़ी थाली।
**थाला** पुं० (हि) थावँला। आल-बाल।
**थालिका** स्त्री० (हि) थाला।
**थाली** स्त्री० (हि) भोजन का छिछला बरतन।
**थावर** वि० (हि) १-स्थावर। २-शनिवार।
**थावस** स्त्री० (हि) स्थिरता।
**थाह** स्त्री० (हि) १-गहराई का अन्त या हद। २-गहराई का पता। ३-अन्त। पार। ४-कम गहरा जिसकी थाह मिल सके।
**थाहना** क्रि० (हि) गहराई का पता लगाना।
**थाहर** पुं० (हि) थर। माँद।
**थाहरा** वि० (हि) कम गहरा। छिछला।
**थियेटर** पुं० (अं) १-रंग-मंच। २-नाटक।
**थिगली** स्त्री० (हि) पैबन्द।
**थित** वि० (हि) स्थित।
**थिति** स्त्री० (हि) स्थिति।
**थिति-भाव** पुं० (हि) स्थायी भाव।
**थिर** वि० (हि) स्थिर।
**थिरक** स्त्री० (हि) नाच में पैरों की चंचल गति।
**थिरकना** क्रि० (हि) नृत्य में अंग संचालन भाव।
**थिरकौंहाँ** वि० (हि) १-थिरकने वाला। स्थिर।
**थिरजीह** पुं० (हि) मछली।
**थिरता, थिरताई** स्त्री० (हि) १-स्थिरता। २-शान्ति। ३-स्थायित्व।
**थिरथानी** वि० (हि) एक जगह स्थिर रहने वाला।
**थिरना** क्रि० (हि) १-द्रव पदार्थ का हिलना बन्द होना। २-निथरना। ३-घुली वस्तु का तले में बैठना।
**थिरा** स्त्री० (हि) पृथ्वी।
**थिराना** क्रि० (हि) १-निथारना। २-स्थिर करना। ३-जल को स्थिर होने देना। ४-थिरना।
**थी** क्रि० (हि) 'है' के भूतकाल का स्त्रीलिङ्ग रूप।
**थीता** पुं० (हि) १-स्थिरता। शान्ति। २-चैन।
**थीती** स्त्री० दे० 'थीता'।
**थीर, थीरा** वि० (हि) स्थिर।
**थुकाना** क्रि० (हि) १-थूकने में प्रवृत्त करना। २-उगलवाना। ३-निन्दा कराना।
**थुक्का-फजीहत** स्त्री० (हि+अ) धिक्कार और तिरस्कार।
**थुड़ी** स्त्री० (हि) धिक्कार। लानत।
**थुथकार** पुं० (हि) थूकने की क्रिया या शब्द।
**थुथकारना** क्रि० (हि) १-थू-थू करना। २-किसी वस्तु पर बारबार थूकना। ३-घोर घृणा प्रकट करना।
**थुनी, थुन्नी** स्त्री० (हि) थूनी। खम्भा।
**थुरहथा** वि० (हि) [स्त्री० थुरहथी] १-छोटे हाथ वाला। २-जिसकी हथेली में कम वस्तु आ सके।
**थुलमा** पुं० (हि) एक प्रकार का कम्बल।
**थू** अव्य० (हि) १-घृणा सूचक शब्द। छिः। २-थूकने का शब्द।
**थूक** पुं० (हि) लसीला मुख से निकलने वाला पदार्थ
**थूकना** क्रि० (हि) १-मुख से थूक निकालना। २-उगलना। ३-धिक्कारना।
**थूथन, थूथना** पुं० (हि) लम्बा निकला हुआ मुँह।
**थून** पुं० (हि) १-स्तम्भ। खम्भा। २-चाँड़। टेक।
**थूनी** स्त्री० (हि) चाँड़। टेक।
**थूरना** क्रि० (हि) १-कूटना। २-मारना। पीटना। ३-कसकर भरना। ३-ठूँस-ठूँस कर खाना।
**थूल** वि० (हि) स्थूल।
**थूला** वि० (हि) मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट।

**थूवा** पुं० (हि) दूह। टीला।
**थूहड़, थहर** पुं० (हि) विषैले दूध का छोटा कँटील पेड़। सेहुड़।
**थेईथेई** स्त्री० (हि) थिरक-थिरक कर नाचने की मुद्र और ताल।
**थेगली** स्त्री० (हि) थिगली।
**थेथर** वि० (देश) १-बहुत थका हुआ। २-परेशान
**थैला** पु० (हि) [स्त्री० थैली] कपड़े, टाट आदि को सी कर बनाया हुआ बड़ा बटुआ।
**थैली** स्त्री० (हि) १-छोटा थैला। २-इस तरह का रुपये रखने का थैला।
**थोक** पुं० (हि) १-ढेर। राशि। २-समूह। ३-इकट्ठे बेचने की वस्तु। ४-इकट्ठी वस्तु।
**थोड़ा** वि० (हि) [स्त्री० थोड़ी] न्यून। अल्प। कम।
**थोथरा** वि० (हि) निःसार। बेकाम।
**थोथा** वि० (हि) १-निःसार। २-खोखला। ३-निकम्मा। ४-भोथरा।
**थोपड़ी, थोपी** स्त्री० (हि) चपत।
**थोपना** क्रि०(हि) १-गीली वस्तु की मोटी तह जमाना २-एकत्रित करना। ३-मत्थे मढ़ना। ४-आक्रमण आदि से रक्षा करना। ५-दे० 'छोपना'। ६-दे० 'थापना'।
**थोबड़ा** पुं० (हि) १-थूथन। २-तोबड़ा।
**थोर, थोरा** वि० (हि) थोड़ा। पुं० थूहर।
**थोरिक** वि० (हि) थोड़ा सा। तनिक सा।
**थोरी** स्त्री० (हि) १-हीन। २-थोड़ी।
**थौंद** स्त्री० (हि) तोंद।
**थ्यावस** स्त्री० (हि) १-स्थिरता। २-धैर्य।

[शब्दसंख्या—२०७४६]

# द

**द** हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यञ्जन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दन्त है।
**दंग** वि० (फा) चकित। स्तब्ध। पुं० भय। २-दङ्गा।
**दंगई** वि० (हि) १-उपद्रवी। २-उग्र।
**दंगल** पु० (फा) १-कुश्ती आदि की प्रतिद्वन्द्विता। २-अखाड़ा। ३-जमावड़ा। समूह। ४-मोटा गद्दा वि० बहुत बड़ा।
**दंगली** वि० (फा) १-दङ्गल सम्बन्धी। २-बहुत बड़ा।
**दंगा** पुं० (हि) उपद्रव। झगड़ा-फसाद।
**दंगाई** पुं० (हि) दङ्गा करने वाला।
**दंड** पुं० (सं) १-डण्डा। २-डण्डे जैसी कोई वस्तु। ३-एक प्रकार की कसरत। ४-दण्डवत्। ५-सजा। ६-अर्थ-दण्ड। जुरमाना। ७-शमन। दमन। ८-साठ पल का काल या समय। घड़ी।
**दंडक** पुं० (सं) १-डण्डा। २-शासक। ३-२६ से अधिक संख्या वाले वर्णों के छन्द।
**दंड-कर** पुं० (सं) दण्डात्मक-कर। (प्यूनिटिव-टैक्स)
**दंडक-वन, दंडकारण्य** पुं० (सं) विन्ध्य पर्वत से गोदावरी के तट का फैला हुआ वन।
**दंड-धर** पुं० (सं) १-यमराज। २-शासक। ३-संन्यासी। ४-चोबदार। ५-दे० 'दंडनायक'।
**दंडधर-गण** पुं० (सं) पुलिस के सिपाहियों का समूह। (कॉन्स्टेबुलरी)।
**दंडना** पुं० (हि) दण्ड देना।
**दंड-नायक** पुं० (सं) १-सेनापति। २-न्यायाधीश।
**दंड-निगड़** स्त्री० (सं) डण्डा-बेड़ी।
**दंड-नीति** स्त्री० (सं) दण्ड के द्वारा शासन में रखने की नीति।
**दंडनीय** वि० (सं) [स्त्री० दण्डनीया] दण्ड देने योग्य
**दंड-न्यायालय** पुं०(सं) फौजदारी अदालत। (क्रिमिनल-कोर्ट)।
**दंडपाणि** पुं० (सं) १-यमराज। २-भैरव की एक मूर्त्ति का नाम।
**दंडपाल, दंडपालक** पुं० (सं) १-दण्ड-नायक। २-दरबान।
**दंड-प्रणाम** पुं० (सं) साष्टांग प्रणाम।
**दंडमान** वि० दे० 'दंडनीय'।
**दंड-यंत्र** पुं० (सं) यन्त्र विशेष जिसमें अपराधी के अङ्गों को जकड़ कर सजा दीजाती है। (मशीनरी-आफ पनिशमेंट)।
**दंडवत्** पुं० (सं) १-साष्टांग-प्रणाम। २-प्रणाम।
**दंड-विज्ञान** पु० (सं) अपराध के अनुसार दण्ड देने और कारागार की व्यवस्था सम्बन्धी विद्या। (पैनालॉजी)।
**दंड-विधान** पु० (सं) दण्ड की व्यवस्था, जुर्म और सजा का कानून।
**दंड-विधि** स्त्री० दे० 'दंडविधान'।
**दंडविधि-संग्रह** पुं० (सं) अपराधिक दण्डों से सम्बन्ध रखने वाले कानूनों का संग्रह। (क्रिमिनल-प्रोसीज्योर कोड)।
**दंडसंग्रह** पु० (सं) अपराधों के दण्ड से सम्बद्ध नियमों का संग्रह। (पेनल-कोड)।
**दंड-संहिता** स्त्री० दे० 'दंडविधान'।
**दंडाकरन** पुं० दे० 'दंडकारण्य'।
**दंडात्मक** वि० (सं) १-दण्ड से सम्बद्ध। २-दण्ड देने के विचार से लगाया या बैठाया गया (प्यूनिटिव)।

**दंडात्मक-कर** पुं० (सं) दण्ड स्वरूप लगाया गया कर। (प्लूनिटिव-टैक्स)।
**दंडादेश** पुं० (सं) न्यायाधीश द्वारा अपराधी को दण्ड देने का आदेश या निर्णय। (सेंटेंस)।
**दंडादेशित** वि० (सं) जिसे किसी अपराध के कारण न्यायालय ने दण्ड का आदेश दिया हो। (सेंटेंस्ड)
**दंडाधिकारी** पुं० (सं) वह राजकीय अधिकारी जिसे फौजदारी के मुकदमे सुनने और शासन-प्रबन्ध का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)।
**दंडाप्रमान** पुं० (सं) खड़ा
**दंडित** वि० (सं) (स्त्री० दण्डिता) जिसे दण्ड मिला हो।
**दंडी** पुं० (सं) १-दण्ड धारण करने वाला व्यक्ति। संन्यासी। २-यमराज। ३-राजा। ४-द्वारपाल। ५-शिव।
**दंडोपबंध** पुं० (सं) किसी अधिनियम अथवा अन्तर-राष्ट्रीय समझौते या सन्धि से सम्बद्ध वह उपबन्ध कि उसका पालन न करने की अवस्था में उल्लंघन करने वाले को क्या दण्ड मिलेगा। (सैंक्शन)
**दंड्य** वि० दे० 'दंडनीय'।
**दंड्य-षड्यंत्र** पुं० (सं) ऐसा षड्यन्त्र जो देश की विधि व्यवस्था के अनुसार दंड के योग्य हो। (क्रिमनल-कांस्पिरेसी)।
**दंत** पुं० (सं) १-दाँत। २-बत्तीस की संख्या।
**दंतकथा** स्त्री० (सं) किंवदन्ती। जनश्रुति।
**दंतकार** पुं० (सं) दाँतों की चिकित्सा करने वाला। (डेन्टिस्ट)।
**दंत-धावन** पुं० (सं) दँतून।
**दंतबीज, दंतबीजक, दंतवीज** पुं० (सं) अनार।
**दंतमूलीय** वि० (सं) दाँतों के मूल से उच्चारण किया जाने वाला।
**दंतार** वि० (हि) बड़े दाँतों वाला। पुं० हाथी।
**दंति** पुं० (हि) हाथी।
**दंतिया** स्त्री० (हि) छोटा दाँत।
**दंती** वि० (सं) दाँतों वाला।
**दंती-चक्र** पुं० (सं) किसी यन्त्र या साइकिल आदि का दाँतों वाला पहिया। (गिअर)।
**दँतुरिया** स्त्री० (हि) बच्चों के छोटे-छोटे दाँत।
**दँतुला** वि० (हि) (स्त्री० दँतुली) बड़े और आगे निकले हुए दाँतों वाला।
**दंतोद्भेद** पुं० (सं) दाँतों का निकलना।
**दंतोद्भेद काल** पुं० (सं) बच्चों के दाँत निकलने का समय। (टीथिंग-पीरियड)।
**दंतोष्ठ्य** वि० (सं) दाँत और होठों से उच्चरित। (वर्ण)।
**दंत्य** वि० (सं) (वर्ण) जिसका उच्चारण दन्त हो।
**दंद** पुं० (हि) झगड़ा। उपद्रव। स्त्री० गरमी।
**दंदन** वि० (हि) [स्त्री० दंदनी] दमन करने वाला।
**दंदाना** क्रि० (हि) गरमाना। पुं० (फा) आरा कंघी आदि का दाँत।
**दंदी** वि० (हि) झगड़ालू। उपद्रवी।
**दंपति, दंपती** पुं० (सं) पति-पत्नी का जोड़ा।
**दंपा** स्त्री० (हि) बिजली।
**दंभ** पुं० (सं) १-पाखंड। २-अभिमान।
**दंभान** पुं० (हि) १-पाखंड। घमंड।
**दंभी** वि० (सं) [स्त्री० दंभिनी] १-दंभ करने वाला। २-पाखंडी। ३-घमंडी।
**दँवरी** स्त्री० (हि) फसल की बालों को रौंदकर दाने निकालने का काम।
**दँवारि** स्त्री० (हि) दावानल।
**दंश** पुं० (सं) १-दाँत से काटने या डंक मारने की क्रिया। २-दाँत से काटने या डंक मारने से होने वाला घाव। ३-डाँस। ४-दाँत।
**दंशक** पुं० (सं) १-काटने वाला। २-डंक मारने वाला
**दंशन** पुं० (सं) काटने या डंक मारने की क्रिया।
**दंशना** क्रि० (हि) दाँत से काटना या डंक मारना।
**दंष्ट्र** स्त्री० (सं) दाढ़। चौभर।
**दंस** पुं० दे० 'दंश'।
**द** वि० (सं) (समास में) देने या उत्पन्न करने वाला।
**दइत** पुं० (हि) दैत्य।
**दइमारा** वि० (हि) दईमारा। हतभाग्य।
**दई** पुं० (हि) दैव। भाग्य।
**दईमारा** वि० (हि) दैव का मारा। हतभाग्य।
**दए** क्रि० (हि) दिये।
**दकन** पुं० (हि) दक्खिन। दक्षिण भारत।
**दकनी** वि० (हि) दक्षिण भारत का। पुं० दक्षिण भारत का निवासी। स्त्री० दक्षिण भारत की भाषा।
**दकियानूस** पुं० (अ) १-एक रोमन सम्राट। २-पुरानी विचारधारा का रूढ़िवादी व्यक्ति।
**दकियानूसी** वि० (अ) १-पुराना। २-पुराण पंथी।
**दक्खिन** पुं० (हि) १-उत्तर के सामने की दिशा। २-दक्षिण प्रदेश।
**दक्खिनी** वि० (हि) १-दक्षिण का। २-दक्षिण दिशा में स्थित। ३-दक्षिण देश का।
**दक्ष** वि० (हि) १-कुशल। निपुण। २-चतुर। ३-दाहिना। पुं० एक प्रजापति का नाम।
**दक्ष-कन्या** स्त्री० (सं) १-दक्ष प्रजापति की कन्या। २-सती। ३-दुर्गा।
**दक्षता-अर्गल** पुं० (सं) प्रगुणता अर्गल। (एफिशिएंसी बार)।
**दक्षिण** वि० (सं) १-दाहिना। २-अनुकूल। ३-निपुण ४-चतुर। पुं० १-उत्तर के सामने की दिशा। २-सब नायिकाओं पर समान भाव से प्रेम करने वाला नायक। ३-प्रदक्षिणा।

**दक्षिण-मार्ग** पुं० (सं) १-वाम मार्ग। २-एक तंत्रोक्त आचार। ३-वैधानिक और शांत उपायों द्वारा विकास चाहने का मार्ग जो उग्र विचारों का विरोधी हो (आधुनिक राजनीति)। (राइटविंग)।
**दक्षिणा** स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा। २-दान के रूप में दिया हुआ धन जो ब्राह्मणों आदि को दिया जाय।
**दक्षिणापथ** पुं० (सं) भारत का दक्षिणी भाग।
**दक्षिणायन** पुं०(सं) १-सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २-वह छः मास, जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता है।
**दक्षिणावर्त** वि०(सं) जिसका घुमाव दक्षिण की ओर हो। पुं० एक शंख विशेष जिसका घुमाव दक्षिण की ओर होता है।
**दक्षिणी** पुं० (सं) दक्षिणी देश का निवासी। वि० दक्षिण देश का।
**दक्षिन** पुं० दे० 'दक्षिण'।
**दक्षिनी** वि० दे० 'दक्षिणी'।
**दखमा** पुं० (?) वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुर्दे रखते हैं।
**दखल** पु० (अ) १-अधिकार। हस्तक्षेप। २-प्रवेश। पहुँच।
**दखल-दिहानी** स्त्री० (अ+फा) अदालत से किसी को किसी संपत्ति पर दखल या अधिकार दिलाने का कार्य।
**दखिन** पुं० दे० 'दक्षिण'।
**दखील** वि० (अ) जिसके अधिकार में हो।
**दखीलकार** पुं० (अ+फा) वह आसामी जिसने खेत लेकर बारह वर्ष तक अपने अधिकार में रखा हो।
**दखीलकारी** स्त्री० (फा) १-दखीलकार का काम, भाव या पद। २-वह भूमि जिस पर दखीलकार का अधिकार हो।
**दगड़** पुं० (?) बड़ा ढोल।
**दगदगा** पु० (अ) १-भय। २-संदेह।
**दगदगी** स्त्री० दे० 'दगदगा'।
**दगध** पुं० दे० 'दाह'। वि० दे० 'दग्ध'।
**दगधना** क्रि० (हि) १-जलना। २-जलाना। ३-दुःख देना।
**दगना** क्रि० (हि) १-(बन्दूक आदि का) छूटना। चलना। २-जलना। ३-दागा जाना। ४-प्रसिद्ध होना। ५-दे० 'दागना'।
**दगर, दगरा** पुं० (हि) १-देर। विलंब। २-डगर। रास्ता।
**दगल, दगला** पुं० (?) १-रूई भरा अँगरखा। २-लबादा।
**दगवाना** क्रि० (हि) दागने का काम दूसरे से कराना।
**दगहा** वि० (हि) १-दागवाला। २-मृतक संस्कार किया हुआ। ३-दग्ध किया हुआ। ४-दागा या चिह्न किया हुआ।
**दगा** स्त्री० (अ) छलकपट।
**दगादार, दगाबाज** वि० (फा) धोखेबाज।
**दगैल** वि० (हि) १-दागदार। २-बुरे काम में कारागार का दण्ड भोगा हुआ।
**दग्ध** वि० (सं) १-जला या जलाया हुआ। २-पीड़ित
**दग्धाक्षर** पुं० (सं) छन्दशास्त्र के अनुसार झ, ह, र, भ और ष जिनका छन्द के आरम्भ में आना अशुभ समझा जाता है।
**दग्धित** वि० दे० 'दग्ध'।
**दचक** स्त्री० (हि) दचकने की क्रिया या भाव।
**दचकना** क्रि० (हि) १-धक्का या ठोकर खाना या लगना। २-झटका खाना। ३-दबजाना। ४-दबाना।
**दचका** पुं० दे० 'दचक'।
**दच्छ** पुं० दे० 'दक्ष'।
**दच्छकुमारी, दच्छसुता** स्त्री० दे० 'दक्षकन्या'।
**दच्छना** स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।
**दच्छिन** वि० (हि) दक्षिण।
**दच्छिना** स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।
**दच्छिनायन** वि० दे० 'दक्षिणायन'।
**दझना** क्रि० (हि) दग्ध होना। जलना।
**दढ़ना** क्रि० (हि) जलना।
**दढ़ियल** वि० (हि) दाढ़ी वाला।
**दतना** क्रि० (हि) मग्न होना।
**दतवन, दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन** स्त्री० (हि) १-दातुन। २-दाँत और मुँह साफ करने की क्रिया।
**दत्त** पुं० (सं) १-दत्तात्रेय। २-दत्तक पुत्र। ३-दान वि० १-दिया हुआ। २-दान किया हुआ। ३-सुरक्षित।
**दत्तक** पु० (सं) गोद लिया हुआ पुत्र।
**दत्तकग्रहण** पुं० (सं) दत्तक पुत्र लेने की क्रिया या विधान। (एडॉप्शन)।
**दत्तक-ग्राही** वि० (सं) दत्तक लेने वाला। (एडॉप्टिव)।
**दत्तचित्त** वि० (सं) जिसका किसी कार्य में खूब जी लगा हो।
**दत्त-विधान** पुं० (सं) गोद लेना। (एडॉप्शन)।
**दत्ता** पुं० दे० 'दत्तात्रेय'।
**दत्तात्रेय** पुं० (सं) एक प्राचीन ऋषि जो अवतार माने जाते हैं।
**ददा** पु० दे० 'दादा'।
**ददिऔरा, ददियाल, ददिहाल** पुं० (हि) दादा का कुल या घर।
**ददोड़ा, ददोरा** पुं० (हि) मच्छर आदि के काटने से होने वाला चकत्ता।
**दद्रु, दद्रू** पुं० (सं) दाद का रोग।

**दध** पुं० (हि) दधि। दही।
**दधना** क्रि० (हि) १-जलना। २-दाधना।
**दधसार** पुं० दे० 'दधिसार'।
**दधि** पुं० (सं) १-जमाया हुआ दूध। दही २-कपड़ा। पुं० (हि) समुद्र। सागर।
**दधि-कांदो** पुं०(हि) जन्माष्टमी के समय होने वाला एक उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला दही परस्पर फेंकते हैं।
**दधिज, दधिजात, दधिसार** पुं० (सं) मक्खन।
**दधिसुत** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**दनदनाना** क्रि० (हि) १-दन-दन शब्द सहित। २-खुशी मनाना।
**दनादन** क्रि० वि० (हि) १-दन-दन शब्द सहित। लगातार।
**दनुज** पुं० (सं) दानव। असुर।
**दनुजराय** पुं० (हि) हिरण्यकशिपु।
**दनू** स्त्री० (हि) कश्यप ऋषि की एक पत्नी।
**दपट** स्त्री० (हि) १-डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। २-घुड़की।
**दपटना** क्रि० (हि) डाँटना। घुड़कना।
**दपु** पुं० (हि) दर्प। अहङ्कार।
**दफन** पुं० (अ) गाड़ने का काम।
**दफनाना** क्रि० (हि) जमीन में गाड़ना।
**दफा** पुं० (अ) १-बार। २-धारा। ३-दूर हटाना। ४-तिरस्कृत।
**दफतर** पुं० (अ) १-कार्यालय। २-सविस्तार वर्णन। चिट्ठा।
**दफतरी** पुं० (अ) जिल्दबन्दी करने वाला।
**दफ्ती, दफ्तीन** स्त्री० (फा) पतला गत्ता। कुट।
**दबंग** वि० (हि) १-प्रभावशाली। २-उद्दण्ड।
**दब** वि०(हि) किसी की अपेक्षा कम या घटिया। पुं० दबाव।
**दबकगर** पुं० (फा० तबकगर) धातु को पीट कर बढ़ाने वाला।
**दबकना** क्रि० (हि) १-भय, संकोच आदि के कारण छिपना। २-छिपना। ३-धातु के पत्तर को पीटकर बढ़ाना। ४-डाँटना। घुड़कना।
**दबकाना** क्रि० (हि) छिपाना।
**दबकिया** पुं० दे० 'दबकगर'।
**दबदबा** पुं० (अ) आतङ्क। रोब-दाब।
**दबना** क्रि० (हि) १-भारी बोझ के नीचे आना या होना। २-दाब में आना। ३-ऊपरी तल का कुछ नीचे हो जाना। ४-किसी के दबाव में पड़कर उसके इच्छानुसार कार्य करने के लिए विवश होना ५-किसी के सामने हलका ठहरना। ६-किसी बात का जहाँ के तहाँ रहना। ७-अपनी वस्तु या प्राप्य धन का किसी अन्य के अधिकार में चला जाना। ८-बातचीत अथवा झगड़े में धीमा या मन्द पड़ना ९-झेंपना।
**दबाना** क्रि० (हि) १-भार या दबाव के नीचे लाना २-किसी वस्तु पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचना ३-पीछे हटाना। ४-जमीन के नीचे गाड़ना या दफन करना। ५-किसी व्यक्ति पर इतना प्रभाव डालना कि जिससे वह कुछ कह न सके। ६-अपने गुणों अथवा महत्व के कारण दूसरे को मंद या मात कर देना। ७-किसी बात को उठने या फैलने न देना। ८-उभड़ने से रोकना। ९-किसी दूसरे की वस्तु पर अनुचित दबाव डालना।
**दबाव** पुं० (हि) दाबने की क्रिया या भाव। चाँप।
**दबीज** वि० (फा) १-मोटा और गफ। २-ठस और मजबूत।
**दबैल** वि० (हि) १-जिसपर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २-दब्बू।
**दबोचना** क्रि० (हि) १-किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। २-छिपाना।
**दबोरना** क्रि० (हि) १-बलपूर्वक पीछे हटा देना। २-दबाना।
**दब्बू** वि० (हि) जो बहुत दबता या डरता हो।
**दमंकना** क्रि० (हि) चमकना।
**दम** पुं० (सं) १-सजा। दंड। २-इन्द्रियों को वश में रखना। पुं० (फा) १-साँस। २-नशा करने के लिए मांस के साथ धुँआ खींचने की क्रिया। ३-पल (समय)। ४-प्राण। जी। ५-व्यक्तित्व। ६-धोखा। ७-किसी बरतन में कोई वस्तु रखकर और उसका मुंह बन्द करके उसे आग पर पकाना। ८-एक तरह का पुराना हथियार।
**दमक** स्त्री० (हि) चमक।
**दमकना** क्रि० (हि) चमकना।
**दम-कल** स्त्री० (हि) १-वह यन्त्र जिसकी सहायता से कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से ऊपर या और किसी ओर से झोंक से फेंका जाता है। (पम्प)। २-आग बुझाने के लिए पानी फेंकने का यन्त्र। (पम्प) ३-कुएँ से पानी खींचने का यन्त्र। ४-दे० 'दमकला'।
**दमकला** स्त्री० (हि) १-एक तरह का बड़ा पात्र जिस में लगी हुई पिचकारी से जनसमूह पर गुलाब जल या रंग छिड़कते हैं। २-जहाज में वह यन्त्र जिस की सहायता से पाल खड़ा करते हैं। ३-दे० 'दमकल'। ४-दे० 'दम-चूल्हा'।
**दमखम** पुं० (फा) १-दृढ़ता। २-प्राण। ३-तलवार की धार और उसका झुकाव। ४-मूर्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न।
**दम-चूल्हा** पुं० (देश०) लोहे का एक प्रकार का चूल्हा जिसमें कोयला जलता है।

दम-झाँसा पुं० (हिं) झूठी सांत्वना।
दमड़ी स्त्री० (हिं) एक पैसे का आठवाँ हिस्सा।
दमदमा पुं० (फा) १-मोरचा। धुस। २-नक्कारे की की आवाज। ३-तोपों की गड़गड़ाहट। ४-शोहरत
दमदार वि० (फा) १-दृढ़। २-जिसमें जीवन शक्ति हो। ३-तेज।
दमदिलासा पुं० (हिं) १-कोरी आशा। २-फुसलावा।
दमन पुं० (सं) १-दबाने अथवा बलपूर्वक शांत करने का काम। २-निग्रह। ३-दंड।
दमनशील वि० (सं) स्वभाव से दमन करने वाला।
दमना क्रि० (हि) १-दमन करना। २-साँस फूलना। पुं० दौना नामक पौधा।
दमनी स्त्री० (हि) संकोच। लज्जा।
दमनीय वि० (सं) दमन करने योग्य।
दम-पट्टी स्त्री० (हि) दम-झाँसा।
दम-बाज वि० (फा) १-फुसलाने वाला। २-गाँजे का दम लगाने वाला।
दम-बुत्ता पुं० (हि) दमदिलासा।
दमयंती स्त्री० (स) राजा नल की पत्नी का नाम।
दमरी स्त्री० दे० 'दमड़ी'।
दमशील वि० (सं) १-इन्द्रियों को वश में रखने वाला। २-दमनशील।
दमा पुं० (फा) एक प्रसिद्ध श्वासरोग।
दमाद पुं० (हि) जामाता। जँवाई।
दमानक स्त्री० (हि) तोपों की बाढ़।
दमामा पुं० (फा) नगाड़ा। डंका।
दमारि स्त्री० (हि) दावानल। दावाग्नि।
दमावती स्त्री० (हि) दमयंती।
दमैया वि० (हि) दमन करने वाला।
दमोदर पुं० दे० 'दामोदर'।
दयंत पुं० (हि) दैत्य।
दयनीय वि० (सं) दया करने योग्य।
दया स्त्री० (सं) १-करुणा। रहम। अनुकम्पा। २-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम।
दयाकर वि० (सं) दयालु।
दया-दृष्टि स्त्री० (सं) दया या अनुग्रह की दृष्टि।
दयानत स्त्री० (अ) सत्य-निष्ठा।
दयानतदार वि० (अ+फा) ईमानदार। सच्चा।
दयाना क्रि० (हि) दयालु होना।
दयानिधान, दयानिधि पुं० (सं) १-बहुत दयालु पुरुष। २-ईश्वर।
दयापर वि० (हिं) दयालु।
दयामय वि० (सं) अत्यन्त कृपालु। पुं० परमेश्वर।
दयार पुं० (हिं) देवदार नामक वृक्ष। वि० दयालु।
दयार्द्र वि० (सं) दयालु।
दयाल वि० (हिं) दयालु।
दयालु वि० (सं) बहुत दया करने वाला।
दयावंत वि० (हिं) दयालु।
दयावना वि० (सं) दया के योग्य। क्रि० (हिं) दया करना।
दयावान् वि० (सं) [स्त्री० दयावती] दयालु।
दयाशील वि० (स) जो स्वभाव से दयालु हो।
दया-सागर पुं० (सं) दयानिधि।
दयिता स्त्री० (सं) १-पत्नी। २-स्त्री। औरत।
दयो क्रि० (हि) दिया।
दर पुं० (स) १-शंख। २-गड्ढा। ३-गुफा। ४-विदारण। पुं० (हि) १-दल। २-डर। पुं० (फा) १-द्वार। २-मकान का भीतरी भाग। ३-मंजिल। खण्ड। ४-राजद्वार। स्त्री० १-भाव। निर्ख। (रेट) २-प्रतिष्ठा। ३-ईख।
दरअसल अव्य० (फा) वास्तव में।
दरना, दरकन स्त्री० (हिं) १-दरकने की क्रिया या भाव। २-सन्धि। दरज। पुं० (सं) डरपोक।
दरकना क्रि० (हि) चिरना।
दरका पुं० (हि) १-दरार। २-ऐसी चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।
दरकार स्त्री० (फा) आवश्यकता।
दरकारी वि० (फा) १-आवश्यक। २-अपेक्षित।
दरकिनार क्रि० वि० (फा) बिलकुल अलग। दूर।
दरखत पुं० दे० 'दरख्त'।
दरखास्त स्त्री० (फा) १-निवेदन। २-प्रार्थना-पत्र
दरखास्ती वि० (फा) दरखास्त से सम्बद्ध।
दरखास्ती-कागज पुं० (फा) न्यायालय से मिलने वाला प्रार्थना लिखने का कागज विशेष।
दरख्त पुं० (फा) वृक्ष। पेड़।
दरगह पुं०(हि) १-दरगाह। २-पीछे पड़ने की क्रिया या भाव (तङ्ग करने के लिए)।
दरगाह स्त्री०(फा) १-चौखट। २-दरबार। ३-मजार
दरज स्त्री० दे० 'दरार'।
दरजन पुं० (अं० डजन) गिनती में बारह का समूह
दरजा पुं० (फा) १-श्रेणी। वर्ग। २-पद। ओहदा
दरजी पुं० (फा) [स्त्री० दरजिन] १-कपड़ा सीने वाला। २-पक्षी विशेष।
दरण पुं० (सं) १-दलने या पिसने की क्रिया। २-ध्वंस।
दरद पुं०(फा) १-पीड़ा। २-करुणा। दया। पुं०(सं) १-काश्मीर के पश्चिम का एक प्राचीन प्रदेश। २-एक प्राचीन म्लेच्छ जाति जो उक्त प्रदेश में रहती थी।
दर-दर क्रि० वि० (फा) द्वार-द्वार। प्रति गृह।
दरदीला वि० (हिं) १-दरदवन्त। २-मन में दर्द करने वाला।
दरदंत, दरबंद वि० (हि) १-कृपालु। २-दुःखी।

दरन वि० पुं० दे० 'दलन'।
दरना क्रि० (हिं) १-दलना। २-नष्ट करना। ३-शरीर में लगाना।
दरप पुं० दे० 'दर्प'।
दरपक पुं० (हिं) कामदेव।
दरपन पुं० (हिं) दर्पण।
दरपना क्रि० (हिं) १-क्रोध करना। २-घमंड करना।
दरबंदी स्त्री० (फा) १-अलग-अलग दर या विभाग बनाना। वस्तुओं के भाव या दर निश्चित करना।
दरब पुं० (हिं) धन। दौलत।
दरबर स्त्री० (हिं) आतुरता। उतावली।
दरबा पुं० (फा) कबूतरों आदि के रहने के लिए काठ का खानेदार सन्दूक।
दरबान पुं० (फा) द्वारपाल।
दरबार पुं० (फा) राजसभा।
दरबारदारी स्त्री० (फा) किसी के यहाँ बार-बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबार-विलासी पुं० दे० 'दरबान'।
दरबारी पुं० (फा) दरबार में बैठने वाला व्यक्ति। वि० १-दरबार का। २-दरबार के योग्य।
दरबी स्त्री० (हिं) कलछी।
दरभ पुं० १-दे० 'दर्भ'। २-बन्दर।
दर-माहा पुं० (फा) मासिक वेतन।
दरमियान पुं० (फा) मध्य। बीच। क्रि० वि० बीच में मध्य में।
दरमियानी वि० (फा) बीच का।
दररना क्रि० (हिं) दरेरना।
दरराना क्रि० (हिं) वेग सहित आना।
दर-लोहा पुं० (हिं) हथियार।
दरवाजा पुं० (फा) १-द्वार। २-किवाड़।
दरवी स्त्री० (हिं) १-कलछी। २-सांप का फन।
दरवेश पुं० (फा) १-फकीर। २-भिखारी।
दरशन पुं० दे० 'दर्शन'।
दरशनी स्त्री० (हिं) दर्पण।
दरशनी-हुण्डी स्त्री० दे० 'दर्शनी-हुंडी'।
दरशाना क्रि० (हिं) १-दिखलाना। २-बतलाना। ३-समझाना। ४-देख पड़ना।
दरस पुं० (हिं) १-दर्शन। २-भेंट। ३-शोभा।
दरसन पुं० (हिं) दर्शन।
दरसना क्रि० (हिं) १-देखना। २-दिखाई पड़ना।
दरसनिया पुं० (हिं) शीतला की शांति की पूजा औ उपचार करने वाला व्यक्ति।
दरसनी स्त्री० (हिं) १-दर्पण। २-दर्शन।
दरसनीय वि० (हिं) १-देखने लायक। २-मनोहर।
दरसनी-हुण्डी स्त्री० दे० 'दर्शनी-हुंडी'।
दरसाना क्रि० (हिं) १-दिखाना। २-दृष्टिगत होना।
दरांती स्त्री० (हिं) हँसिया।
दराज वि० (फा) १-दरार। २-मेज में लगा हुआ खाना। ३-लम्बा। दीर्घ। ४-अत्यधिक।
दरार स्त्री० (हिं) सन्धि। दरज।
दरारना क्रि० (हिं) फटना। विदीर्ण होना।
दरारा पुं० (हिं) दरेरा। धक्का। रगड़ा।
दरिंद, दरिंदा पुं० (फा) हिंस्र जन्तु।
दरिद्र वि० (सं) निर्धन। कंगाल।
दरिद्रता स्त्री० (सं) निर्धनता।
दरिद्र-नारायण पुं० (सं) गरीबों और दीन दुखियों के रूप में रहने वाला भगवान्।
दरिद्रावसति स्त्री० (सं) गरीब लोगों की गंदी बस्ती। (स्लम)।
दरिद्री वि० दे० 'दरिद्र'।
दरिया पुं० (फा) १-नदी। २-समुद्र।
दरियाई वि० (फा) १-नदी या समुद्र सम्बन्धी। २-नदी के पास या किनारे का। स्त्री० एक तरह का रेशमी कपड़ा।
दरियाई-घोड़ा पुं० (हिं) अफ्रीका की नदियों के किनारे पाया जाने वाला एक तरह का जानवर।
दरियाई-नारियल पुं० (हिं) एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसका कमंडल बनता है।
दरियादिल वि० (फा) [स्त्री० दरियादिली] उदार।
दरियाफ्त वि० (फा) मालूम। ज्ञात।
दरियाबरार पुं० (फा) नदी की धार हट जाने से निकली भूमि।
दरियाबुर्द पुं० (फा) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर बहादे।
दरियाव पुं० दे० 'दरिया'।
दरिया-शिकस्त पुं०(फा) वह भूमि जिसे कोई नदी काट कर लेगई हो।
दरी स्त्री० (सं) १-गुफा। २-वह नीचा पहाड़ी स्थान जहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो। स्त्री० (हिं) मोटे सूतों का बिछावन।
दरीखाना पुं० (हिं) अनेक दरवाजों वाली बैठक।
दरीचा पुं० (फा) [स्त्री० दरीची] खिड़की।
दरीबा पुं० (हिं) पानों का बाजार।
दरेर स्त्री० (हिं) १-दरेरा। २-दबाव। ३-पानी का बहाव। ४-किसी तरह का प्रवाह या वेग।
दरेरना क्रि० (हिं) १-रगड़ना। पीसना। २-रगड़ते हुए धक्का देना।
दरेरा पुं० (हिं) १-रगड़ा। धक्का। २-बहाव का जोर
दरेस स्त्री० (हिं) १-एक तरह का कपड़ा। २-पोशाक। वि० बना हुआ। तैयार।
दरेसी स्त्री०(हिं) ऊबड़खाबड़ भूमि को समतल करना
दरैया स्त्री० (हिं) १-दलने वाला। २-घातक।
दरोग पुं० (अ) असत्य। झूठ।
दरोग-हलफी स्त्री० (अ) झूठा हलफ।

**दरोगा** पुं० दे० 'दारोगा'।
**दर्ज** स्त्री० दे० 'दरज'। वि० (फा) १-लिखा हुआ। २-उल्लिखित।
**दर्जन** वि० (हिं) बारह। पुं० (हिं) बारह वस्तुओं का समाहार।
**दर्जा** पुं० (अ) दरजा।
**दर्जी** पुं० दे० 'दरजी'।
**दर्द** पुं० (फा) १-व्यथा। २-दुःख। करुणा।
**दर्दनाक** वि० (फा) करुणाजनक।
**दर्दमंद, दर्दी** वि० (फा) १-पीड़ित। २-दयावान्।
**दर्दुर** पुं० (सं) मेंढक।
**दर्प** पुं० (सं) १-घमंड। गर्व। २-मान। ३-उद्दंडता। ४-आतङ्क।
**दर्पण** पुं० (सं) आइना। आरसी।
**दर्पित, दर्पी** वि० (सं) अहङ्कारी। घमण्डी।
**दर्ब** पुं० (हिं) द्रव्य।
**दर्बी** स्त्री० दे० 'दरवी'।
**दर्भ** पुं० (सं) कुश। डाभ।
**दर्याव** पुं० (हिं) दरिया।
**दर्रा** पुं० (फा) घाटी।
**दर्श** पुं० (सं) १-दर्शन। २-अमावस्या तिथि। ३-अमावस्या के दिन होने वाला यज्ञ विशेष।
**दर्शक** पुं० (सं) देखने वाला। द्रष्टा।
**दर्शन** पुं० (सं) १-देखना। साक्षात्कार। २-भेंट। ३-वह शास्त्र जिसमें तत्व ज्ञान हो। ४-दिखाई देने वाला आकार या रूप। ५-किसी देवता, देव-मूर्त्ति अथवा बड़े में होने वाला साक्षात्कार।
**दर्शन-प्रतिभू** पुं० (सं) हाजिर-जामिन।
**दर्शन-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत के नियामक धर्म और जीवन के अन्तिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता होता है। (फिलॉसफी)।
**दर्शनीय** वि० (सं) १-देखने योग्य। २-सुन्दर।
**दर्शनीहुंडी** स्त्री० (हिं) वह हुण्डी जिसे देखते ही उसमें लिखित धन का भुगतान करना पड़े।
**दर्शाना** क्रि० (हिं) दरसाना।
**दर्शित** वि० (सं) १-दिखाया हुआ। २-प्रकटित ३-प्रमाणित। ४-प्रकट। पुं० प्रमाणस्वरूप न्यायालय में उपस्थित किये जाने वाले पत्र, लेख्य य अन्य वस्तुएँ।
**दर्शी** वि० (सं) देखने वाला।
**दल** पुं० (सं) १-किसी वस्तु के दो सम-खंडों में से एक। २-पौधे का पत्ता। ३-फूल की पंखुड़ी। ४-समूह। झुंड। ५-किसी एक कार्य की सिद्धि के लिए बना हुआ लोगों का गुट। (पार्टी)। ६-सेना ७-परत की तरह फैली हुई किसी लम्बी चीज़ की मोटाई। ८-पकवान विशेष बनाने के काम आने वाला भुना हुआ मैदा।
**दलक, दलकन** स्त्री० (हिं) १-दलकने की क्रिया या भाव। २-थर्राहट। ३-टीस। चसक।
**दलकना** क्रि० (हिं) १-फटना। चिरना। २-काँपना ३-चौंकना। ४-विकल होना। ५-डराना।
**दलदल** स्त्री० (हिं) १-कीचड़। पङ्क। २-वह जमीन जिस पर चलने से पैर धँस जाता हो।
**दलदार** वि० (हिं) मोटे दल या परत वाला।
**दलन** पुं० (सं) १-दलने की क्रिया या भाव। २-पीस कर टुकड़े करने की क्रिया। ३-विनाश। वि० संहार करने वाला।
**दलना** क्रि० (हिं) १-पीस कर छोटे-छोटे टुकड़े करना। २-कुचलना। ३-मसलना। ४-ध्वस्त करना ५-तोड़ना।
**दल-नेता** पुं० (सं) १-संसद् या विधान सभाओं में दल विशेष का नेता। (लीडर)। २-खिलाड़ी के दो दलों में से किसी एक का नेता। (कैप्टिन)। ३-सेना की टुकड़ी का नायक।
**दलपति** पुं० (सं) १-मुखिया। २-सेना-पति।
**दलबंदी** स्त्री० (हिं) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने पक्ष के लोगों का पृथक दल बनाना।
**दलबल** पुं० (सं) १-लाव-लश्कर। फौज। २-साथ रहने वाले गिरोह।
**दलबादल** पुं० (हिं) १-भारी सेना। २-बहुत बड़ा शामियाना।
**दलमलना** क्रि० (हिं) १-मसल डालना। २-रौंदना। ३-मार डालना।
**दलमलाना** क्रि० (हिं) १-मलना। २-कुचलना। ३-नष्ट करना। ४-किसी को दलमलने के लिए प्रवृत्त करना।
**दलवाल** पुं० (हिं) १-दल-पति। २-सेनानी।
**दलवैया** पुं० (हिं) दलने वाला।
**दलहन** पुं० (हिं) वह अन्न जिसकी दाल बनती है।
**दलाई** स्त्री० (हिं) १-दलने की क्रिया या भाव। २-दलने की उजरत।
**दलाधिनायकता** स्त्री० (सं) किसी दल या गुट की सरदारी या अधिनायिकी। (पार्टी-डिक्टेटरशिप)।
**दलान** पुं० दे० 'दालान'।
**दलाल** पुं० (अ) १-कुछ पारिश्रमिक लेकर सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देने वाला व्यक्ति। २-मध्यस्थ। ३-कुटना। ४-जाटों की एक जाति।
**दलाली** स्त्री० (हिं) १-दलाल का कार्य। २-इस कार्य की उजरत।
**दलित** वि० (सं) [स्त्री० दलिता] १-मसला, कुचला या रौंदा हुआ। २-नष्ट किया हुआ।
**दलित-वर्ग** पुं० (सं) अनुसूचक जातियों का एक वर्ग या समूह। (डिप्रेस्ड-क्लास)।

**दलिद्र** पुं० (हिं) दरिद्र।
**दलिया** पुं० (हिं) दरदरा पिसा अन्न।
**दली** वि० (हिं) १-दल-वाला। २-पत्तों वाला
**दलीय** वि० (सं) दल या गुट्ट सम्बन्धी।
**दलील** स्त्री० (अ) १-युक्ति। तर्क। २-बहस।
**दलेल** स्त्री० (हिं) सिपाहियों की वह कवायद जो सजा के तौर पर हो।
**दलैया** वि० (हि) १-दलने वाला। २-नाश करने वाला।
**दवँगरा** पुं० (हिं) वर्षाऋतु की पहली झड़ी।
**दव** पुं० (सं) १-वन। २-दावानल।
**दवन** पुं० (हि) नाश।
**दवना** पुं० दे० 'दौना' क्रि० (हिं) जलाना।
**दवनी** स्त्री० (हि) दँवरी।
**दवरि** स्त्री० दे० 'दाँवरी'।
**दवरिया** स्त्री० (हि) दावानल।
**दवा** स्त्री० (फा) १-औषध। २-चिकित्सा। ३-शमन का उपाय। ४-रास्ते पर लाने का उपाय।
**दवाई** स्त्री० (हि) दवा।
**दवाईखाना**, दवाखाना पुं० =औषधालय।
**दवागि**, दवागिन, दवागी स्त्री० (हि) दावाग्नि। दावानल।
**दवाग्नि** स्त्री० (सं) वन में आप से आप लगने वाली आग। दावानल।
**दवात** स्त्री० (अ) स्याही रखने का छोटा पात्र। मसि-पात्र।
**दवान** पुं० (हि) एक तरह का हथियार।
**दवानल** पुं० (सं) दवाग्नि।
**दवामी** वि० (अ) स्थायी।
**दवामी** काश्तकार पुं० (अ०+फा) वह काश्तकार जिसे जमींदार से हमेशा के लिए काश्त करने का हक मिल गया हो। (परमानेन्ट-टेन्योर होल्डर)।
**दवामी पट्टा** पुं० (हि) इस्तमरारी पट्टा। (परमानेन्ट-लीज)।
**दवामी बन्दोबस्त** पुं० (अ०+फा) जमीन का वह प्रबन्ध जिसमें मालगुजारी सदा के लिए स्थिर कर दी जाय। (परमानेन्ट सेटलमेन्ट)।
**दवार, दवारि** स्त्री० (हि) १-दवाग्नि। २-संताप।
**दशकंठ** पुं० (सं) दशानन। रावण।
**दशकंठजहा**, दशकंठजित, **दशकंठारि** पुं०=राम।
**दशकंधर** पुं० (सं) रावण।
**दशक** पुं० (स) १-दस का समाहार। २-दशाब्द। दस वर्षों का समूह। (डिकेड)।
**दशगात**, दश-गात्र पुं० १-शरीर के मुख्य दस अंग २-मृत्यु से दस दिनों तक होने वाला पिंडदान आदि।
**दशन** पुं० (सं) १-दाँत। २-कवच।
**दशना** स्त्री० (सं) दाँतों वाली।
**दशनाम** पुं० (सं) दस प्रकार के संन्यासी यथा—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।
**दशनामी** पुं० (हि) शंकराचार्य के दस शिष्यों द्वारा चला एक संन्यासियों का संप्रदाय विशेष। वि० दशनाम सम्बन्धी।
**दशनावरण** पुं० (सं) होंठ।
**दशनावली** स्त्री० (हिं) दाँतों की पंक्ति।
**दशभुज** पुं० (सं) वह आकृति जिसमें दस भुजाएँ हों। (डेकेगॉन)।
**दशम** वि० (सं) दसवाँ।
**दशम अवस्था** स्त्री० (सं) मृत्यु।
**दशमलव** पुं० (सं) गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश या उसका कोई घात होता है।
**दशमांश** पुं० (सं) दसवाँ भाग।
**दशमिक** वि० (सं) दसवें से सम्बन्ध रखने वाला। (डेसिमल)।
**दशमिक-प्रणाली** स्त्री० (सं) वह नवीन प्रणाली जिसमें हर मान अपने से निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग तथा निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है। (डेसिमल सिस्टम)।
**दशमी** स्त्री० (सं) चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दसवीं तिथि।
**दशमुख** पुं० (सं) रावण।
**दशरथ** पुं० (सं) अयोध्या के राजा और श्री राम के पिता।
**दशशीश** पुं० (सं) रावण।
**दशहरा** पुं० (सं) १-गङ्गा दशहरा। २-विजया-दशमी।
**दशांग** पुं० (सं) दस सुगंधित द्रव्यों के मेल से बना धूप जो पूजा के काम में आता है।
**दशा** स्त्री० (सं) १-अवस्था। २-फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग काल। ३-साहित्य में रस के अन्तर्गत विरह की दशा।
**दशानन** पुं० (सं) रावण।
**दशाब्द** पुं० (सं) दस वर्षों का समय। दशक। (डिकेड)।
**दशार्ण** पुं० (सं) १-बिन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण का एक प्राचीन देश। २-उक्त देश का निवासी।
**दशाह** पुं० (हि) १-दस दिनों का समाहार। २-मृत्यु के बाद आने वाला दसवाँ दिन।
**दशिका** स्त्री० (सं) कपड़े के थान का छोर या सिरा।
**दशी** स्त्री० (सं) दशाब्द। दशक।
**दष्ट** वि० (सं) १-कटा हुआ। २-काटा हुआ।
**दस** वि० (हि) गिनती में नौ के बाद का।
**दसखत** पुं० (हि) दस्तखत। हस्ताक्षर।

**दस-गात** पुं० दे० 'दशगात्र'।
**दस-धा** क्रि० वि० (हिं) दसों दिशाओं में। सब ओर स्त्री० दस तरह की भक्ति।
**दसन** पुं० (हिं) दशन।
**दसना** क्रि० (हिं) १-बिछाना या बिछाया जाना (बिछौना)। पुं० बिछौना। बिस्तर।
**दसबदन, दसमाथ** पुं० (हिं) रावण।
**दसमी** स्त्री० (हिं) दशमी।
**दसमौलि** पुं० (हिं) रावण।
**दसवां** पुं० (हिं) दशम। पुं० किसी मृत्यु के दसवें दिन होने वाला कृत्य।
**दस-स्यंदन** पुं० (स) दशरथ जो अयोध्या के राजा थे
**दसा** स्त्री० (हि) दशा।
**दसाना** क्रि० (हि) बिछाना।
**दसौंधी** पुं० (हिं) चारणों की एक जाति। भाट
**दस्तंदाजी** स्त्री० (फा) हस्तक्षेप।
**दस्त** पुं० (फा) १-हाथ। २-विरेचन।
**दस्तक** स्त्री० (फा) १-खटखटाना। २-बुलाने के लिए हाथ से दरवाजा खटखटाने की क्रिया। ३-मालगुजारी वसूल करने अथवा माल ले जाने का परवाना। ४-कर। महसूल।
**दस्तकार** पुं० (फा) कारीगर। शिल्पी।
**दस्तकारी** स्त्री० (फा) शिल्प।
**दस्तखत** पुं० (फा) हस्ताक्षर।
**दस्तबरदार** वि० (फा) किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व छोड़ देने वाला।
**दस्तबरदारी** स्त्री० (फा) १-त्याग। २-त्याग-पत्र।
**दस्तरखान** पुं०(फा) चौकी पर बिछाई हुई वह चादर जिस पर थाली रखकर मुसलमान लोग भोजन करते हैं।
**दस्ता** पुं० (फा) १-मूठ। बेंट। २-सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ३-कागज के २४ या २५ तावों की गड्डी।
**दस्ताना** पुं० (फा) १-हाथ की अंगुलियां या हथेली में पहनने का मौजा। २-एक तरह की सीधी तलवार।
**दस्तावर** वि० (फा) विरेचक।
**दस्तावेज** स्त्री० (फा) लेन-देन की लिखा-पढ़ी का कागज। तमस्सुक।
**दस्ती** वि० (फा) हाथ का। स्त्री० १-मशाल। २-छोटी मूठ। ३-छोटा कलमदान।
**दस्तूर** पुं० (फा) १-रीति। २-नियम। ३-पारसियों का पुरोहित।
**दस्तूरी** स्त्री० (फा) वह धन जो सौदा खरीदने पर दुकानदार की ओर से पुरस्कार के रूप में मिले।
**दस्यु** पुं० (सं) १-डाकू। लुटेरा। २-असुर। ३-म्लेच्छ। ४-दास।
**दस्युज** पुं० (सं) [स्त्री० दस्युजा] १-दस्यु की सन्तान २-नीच। कमीना।
**दस्युवृत्ति** स्त्री० (सं) डाकू पेशा। लुटेरापन।
**दस्सी** स्त्री० (हि) थान का छोर।
**दह** पुं० (हिं) १-नदी का गहरा स्थान। हौज। स्त्री० ज्वाला। लपट। वि० दस।
**दहकना** क्रि० (हिं) १-धधकना। २-तपना। ३-संतप्त होना।
**दहकाना** क्रि० (हिं) १-धधकाना। २-भड़काना।
**दहन** पुं० (सं) १-दाह। २-आग।
**दहना** क्रि० (हि) १-जलना या जलाना। २-क्रोध से सतप्त होना या करना। ३-भड़काना। ४-धँसना। वि० दे० 'दाहिना'।
**दहनि** स्त्री० (हि) जलने की क्रिया। जलन।
**दहपट** वि०(हि) १-ध्वस्त। २-रौंदा या कुचला हुआ
**दहपटना, दहपट्टना** क्रि० (हिं) १-ढाना। ध्वस्त करना। २-रौंदना।
**दहर** पुं० दे० 'दह'।
**दहरना** क्रि० (हि) १-दहलना। २-दहलाना।
**दहरौरा** पुं० (हिं) [स्त्री० दहरौरी] १-दही-बड़ा। २-एक तरह का गुलगुला।
**दहल** स्त्री० (हि) डर से काँप उठना।
**दहलना** क्रि० (हि) डर से स्तम्भित होकर रुक जाना
**दहला** पुं० (फा) दस बूटियों वाला ताश का पत्ता।
**दहलाना** क्रि० (हिं) भयभीत करना।
**दहलीज** स्त्री० (फा) चौखट के नीचे की लकड़ी जो जमीन से सटी रहती है। देहली।
**दहवाट** वि० (हि) छिन्न-भिन्न।
**दहशत** स्त्री० (फा) भय। खौफ।
**दहाई** स्त्री० (फा) १-दस का मान या भाव। २-अंकों की गिनती करते समय दाहिनी ओर से दूसरा स्थान।
**दहाड़** स्त्री० (हिं) १-गरज। २-आर्त्तनाद।
**दहाड़ना** क्रि० (हि) १-गरजना। २-जोर से डराने वाली आवाज में बोलना। ३-चिल्ला-चिल्लाकर रोना।
**दहाना** पुं० (फा) १-चौड़ा मुँह। २-वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३-मोरी।
**दहिना** वि० (हिं) [स्त्री० दहिनी] अपसव्य। दाहिना
**दही** पुं० (हिं) खटाई के योग से जमाया हुआ दूध।
**दहुँ** वि० (हिं) दसों।
**दहु** वि० (हिं) १-अथवा। २-कदाचित्।
**दहेंड़ी** स्त्री० (हि) दही रखने की हाँड़ी।
**दहेज** पुं० (हिं) वह धन, वस्त्र, गहने आदि जो विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर को मिलते हैं, दायजा।

**दहेला** वि० (हि) [स्त्री० दहेली] १-जला हुआ। २ संतप्त। ३-गीला।
**दह्य** वि० (सं) जलने के योग्य। (कम्बसचिबुल)।
**दह्यमान** वि० (सं) जलता हुआ।
**दहा** पुं० (हि) दद्दी।
**दां** पुं० (हि) दफा। बार। पुं० (फा) ज्ञाता। जानकार।
**दांकना** क्रि० (हि) गरजना। दहाड़ना।
**दांग** पुं० (हि) १-नगाड़ा। २-टीला।
**दांज** स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।
**दांड़ना** क्रि० (हि) दण्ड देना।
**दांत** पुं० (हि) १-मुंह में चबाने के लिए निकली हुई हड्डियाँ। दशन। २-दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दाँता।
**दांत** वि० (सं) १-दबाया हुआ। २-संयमी।
**दांता** पुं० (हि) दांत के जैसा कोई उभरा हुआ भाग।
**दांता-किटकिट, दाता-किलकिल** स्त्री० (हि) १-रोज-रोज की तकरार और कहासुनी। २-गाली-गलौज।
**दांति** स्त्री० (सं) १-इन्द्रियनिग्रह। २-विनयशीलता।
**दांती** स्त्री० (हि) १-हंसिया। दराती। २-दन्तावलि। ३-छोटा दांत। ४-दर्रा।
**दांना** क्रि० (हि) फसल के डण्ठलों में से दाने अलग करना।
**दांपत्य** वि० (सं) पति-पत्नी सम्बन्धी। पुं० पति-पत्नी का सम्बन्ध।
**दांभिक** वि० (सं) १-पाखण्डी। २-अहङ्कारी।
**दांव** पुं०(हि) १-बार। दफा। २-पारी। ३-मौका। उपयुक्त अवसर। ४-पेंच। चाल। ५-स्थान। ६-पासे या कौड़ियों का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। ७-वह धन जो ऐसे समय खिलाड़ी लगाकर रखते हैं।
**दांवरी** स्त्री० (हि) रस्सी। डोरी।
**दा** सर्व० (पंजाबी) का।
**दाइ** पुं० दे० 'दाय'।
**दाइज, दइजा** पुं० (हि) दायजा। दहेज।
**दाईं** वि० स्त्री० (हि) दाहिनी। स्त्री० (हि) बार। दफा।
**दाई** स्त्री०(हि) १-उपमाता। धाय। २-बच्चा जनाने वाली स्त्री। ३-दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने वाली। ४-दासी। मजदूरनी। वि० (हि) दायी।
**दाउं** पुं० दे० 'दाँव'।
**दाउ** स्त्री० (हि) १-दावानल। २-दाँव (बाजी)।
**दाऊ** पुं० (हि) १-बड़ा भाई। २-श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम। बलदेव।
**दाऊदखानी** पुं० (हि) चावल या धान विशेष।
**दाक्षायण** वि० (सं) दक्ष सम्बन्धी।
**दाक्षायणी** स्त्री० (सं) १-दक्ष की कन्या। सती। २-दुर्गा।
**दाक्षिणात्य** वि० (सं) दक्षिण का। पुं० १-दक्षिण-भारत। २-इस देश का निवासी।
**दाक्षिण्य** पुं० (सं) १-अनुकूलता। २-निपुणता। ३-उदारता। ४-सरलता। वि० १-दक्षिण का। २-दक्षिण सम्बन्धी।
**दाख, दाखि** स्त्री०(हि) १-अंगूर। २-मुनक्का। ३-किशमिश।
**दाखिल** वि० (फा) १-प्रविष्ट। २-शामिल।
**दाखिल-खारिज** पुं० (फा) सरकारी कागज पर से किसी सम्पत्ति के अधिकारी के नाम काटकर उसके उत्तराधिकारी या किसी अन्य अधिकारी का नाम लिखा जाना।
**दाखिल-दफ्तर** वि० (फा) बिना विचार के दफ्तर में डालकर रखा हुआ (कागज)।
**दाखिला** पुं० (फा) प्रवेश।
**दाग** पुं० (हि) १-दाह। २-मृतक का दाह-कर्म। ३-जले होने का चिह्न। पुं० (फा) १-धब्बा। २-चिह्न। ३-दोष।
**दागदार** वि० (फा) दाग या धब्बे वाला।
**दागना** क्रि० (हि) १-जलाना। २-तोप बन्दूक आदि का छोड़ना। ३-अंकित करना। ४-तपाये हुए धातु आदि की मुद्रा से किसी के शरीर पर चिह्न विशेष अंकित करना।
**दाग-बेल** स्त्री० (हि) फावड़े से खोदकर लगाया हुआ निशान।
**दागर** वि० (हि) नाशक।
**दागी** वि० (हि) १-दाग या धब्बे वाला। २-कलंकित। ३-लांछित। ४-जेल की सजा पाया हुआ।
**दाघ** पुं० (सं) ताप। दाह।
**दाजन** स्त्री० (हि) १-जलन। २-पीड़ा।
**दाजना** क्रि०(हि) १-जलना या जलाना। २-संतप्त होना या करना। ३-ईर्षा करना।
**दाझन** स्त्री० दे० 'दाजन'।
**दाझना** क्रि० दे० 'दाजना'।
**दाट** स्त्री० दे० 'डाट'।
**दाटक** वि० (हि) १-पक्का। दृढ़। २-मजबूत। ३-बलवान।
**दाटना** क्रि० (हि) १-जान पड़ना। २-डाँटना।
**दाड़िम** पुं० (सं) अनार का वृक्ष या फल।
**दाढ़** स्त्री० (हि) जबड़े के भीतर के मोटे और चौड़े दाँत। चौभर।
**दाढ़ना** क्रि० (हि) १-जलना। २-संतप्त करना।
**दाढ़ा** पुं० (हि) १-दाढ़। २-दावानल। ३-आग। ४-लम्बी दाढ़ी।
**दाढ़िका** स्त्री० (सं) १-दाढ़ी। २-दाँत।

दाढ़ी स्त्री० (हिं) १-ठुड्डी के ऊपर के बाल। डाढ़ी।
दाढ़ीजार पुं० (हिं) एक गाली जो स्त्रियाँ पुरुषों को देती हैं।
दात पुं० (हिं) १-दान। २-दाता। स्त्री० शुभ अवसर पर प्रसन्न होकर दान रूप में दिया गया पदार्थ वि० १-विभक्त। २-मार्जित।
दातव्य वि० (सं) १-देने योग्य। २-दान से चलने वाला। ३-लौटाया जाने वाला। ४-जहाँ दान-स्वरूप कोई वस्तु दी जाती है।
दातव्य-चिकित्सालय पुं० (सं) वह औषधालय जहाँ बिना मूल्य दिये दवा मिलती हो। (फ्री-डिस्पेंसरी)
दाता पुं० (सं) १-दानशील। २-देने वाला।
दातार पुं० (हि) दाता।
दाती स्त्री० (हि) देने वाली।
दातुन स्त्री० (हि) दतौन। दतुअन।
दातुरी स्त्री० (हि) दातृत्व।
दातून स्त्री० (हि) दातौन।
दातृत्व पुं० (सं) दानशीलता।
दात्र पुं० (सं) हँसिया। दराँती।
दात्री स्त्री० (हि) १-देने वाली। २-दराँती।
दाद पुं० (हिं) एक चर्म रोग।
दादनी स्त्री० (फा) १-दातव्य। देन। २-अग्रिम।
दादरा पुं० (हि) एक तरह का चलता गाना।
दादस स्त्री० (हिं) सास की सास।
दादा पुं० (हि) [स्त्री० दादी] १-पिता का पिता। २-बड़ा भाई।
दादि स्त्री० (फा) १-न्याय। २-दाद।
दादी स्त्री० (हि) पिता की माता।
दादुर पुं० (हि) मेंढक।
दादू पुं० (हि) १-एक पंथ-प्रवर्तक साधु। २-दादा शब्द का संबोधनकारक रूप।
दादूपंथी पुं० (हि) दादू मत को मानने वाला।
दादूदयाल पुं० दे० 'दादू (१)'।
दाध स्त्री० (हि) जलन। दाह।
दाधना क्रि० (हि) जलाना।
दान पुं० (सं) १-देने का कार्य। देना। २-खैरात ३-वह वस्तु जो किसी को सदा के लिए दी जाय ४-हाथी का मद। ५-राजनीति में धन संपत्ति आदि देकर शत्रु अथवा विरोधी को दबाने तथा अपना कार्य साधने की नीति।
दानपत्र पुं० (सं) वह लेख अथवा पत्र जिसमें किसी वस्तु के दान रूप में दिये जाने का उल्लेख हो।
दानपात्र पुं० (सं) दान पाने के उपयुक्त व्यक्ति।
दान-प्रतिष्ठा स्त्री० (सं) दक्षिणा।
दान-लेख पुं० (सं) वह लेख जिसमें किसी किये हुए दान का उल्लेख हो।
दानव पुं० (सं) [स्त्री० दानवी] असुर। राक्षस।
दानवारि पुं० (हिं) १-विष्णु। २-देवता। ३-इन्द्र ४-हाथी का मद।
दानवी स्त्री० (सं) दानव की स्त्री। राक्षसी। वि० दानव का।
दानवीर पुं० (सं) बहुत बड़ा दानी।
दानशील, दानशूर वि० (सं) स्वभाव से दानी।
दाना वि० (फा) बुद्धिमान। पुं० (हिं) १-अन्न कण २-भोजन। ३-छोटा बीज जो गुच्छे, बाल या फली में लगा हो। ४-छोटा फल या बीज। ५-कोई छोटी गोल वस्तु। ६-संख्या का सूचक शब्द अदद। ७-कोई छोटा गोल उभार। ८-शरीर में उभड़ा छोटा गुल्म।
दानाई स्त्री० (फा) बुद्धिमत्ता।
दानादेश पुं० (सं) वह पत्र अथवा आदेश जिसके द्वारा किसी को कुछ दिया जाय। (पेमेंट आर्डर)।
दानाध्यक्ष पुं० (सं) दान का धन बाँटने वाला कर्मचारी।
दानापानी पुं० (हिं) १-खानपान। अन्नजल। २-जीविका। ३-रहने का संयोग।
दानि वि० पुं० दे० 'दानी'।
दानी वि० (हिं) [स्त्री० दाननी] दान करने वाला। उदार। पुं० (हिं) कर उगाहने वाला। स्त्री०(हिं) एक शब्द जो शब्दों के अन्त में लगकर पात्र का अर्थ देता है।
दानेदार वि० (फा) जिसमें दाना हो।
दानौ पुं० दे० 'दानव'।
दाप पुं० (हिं) १-अभिमान। २-शक्ति। ३-उत्साह ४-दबदबा। ५-क्रोध। ६-जलन।
दापना क्रि० (हिं) १-दबाना। २-रोकना।
दाब पुं० (हि) १-दबने या दबाने की क्रिया या भाव। दबाव। २-शासन। ३-नियन्त्रण। ४-प्रभुत्व। रोब।
दाबना क्रि० (हिं) १-दबाना। २-गाड़ना। ३-परास्त करना। ४-नष्टभ्रष्ट करना।
दाबा पुं० (हि) कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी को जमीन में दाबना या गाड़ना।
दाभ पुं० (हिं) कुश। डाभ।
दाम पुं० (सं) १-रस्सी। २-माला। हार। समूह। पुं० (फा) जाल। पाश। फंदा। पुं० (हिं) १-एक प्राचीन सिक्का। २-मूल्य। ३-रुपया। पैसा। स्त्री० (हिं) दामिनी।
दामन पुं० (फा) पल्ला। २-आँचल। ३-पहाड़ों के नीचे की भूमि।
दामर, दामरि, दामरी स्त्री० (हिं) रस्सी। रज्जु।
दामा स्त्री० (हिं) १-दावानल। २-एक काले रंग की चिड़िया।
दामाद पुं० (हिं) जामाता। जँवाई।

**दामिन, दामिनि, दामिनी** *स्त्री०* (सं) १-बिजली। विद्युत्। २-बेंदी। बिंदिया।
**दामी** *वि०* (हिं) कीमती।
**दामोदर** पुं० (सं) १-कृष्ण। २-नारायण।
**दायँ** पु० दे० 'दाँव'। *स्त्री०* दे० 'दाँज'।
**दाय** पुं० (सं) १-देने योग्य धन। दातव्य। २-दान, दहेज आदि के रूप में दिया जाने वाला धन। ३-वह पैतृक धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। पुं० (हि) १-दाव। २-दाँव। ३-दायित्व जिम्मेदारी। ४-उत्तरदायित्व।
**दायक** पु० (सं) [*स्त्री०* दायिका] दाता। देने वाला
**दायकर** पुं० (सं) उत्तराधिकार में प्राप्त धन पर लगने वाला कर। रिक्थकर। (इनहेरिटेंस-टैक्स)।
**दायज, दायजा** पुं० (हि) दहेज।
**दायभाग** पुं० (सं) १-पैतृक धन का विभाग। २-बाप दादे या सम्बन्धी की संपत्ति का पुत्रों या सम्बन्धियों में बाँटे जाने की व्यवस्था।
**दायमुलहब्स** पुं० (अ) आजन्म कारावास की सजा। कालापानी।
**दायमी** *वि०* (अ) १-सदा रहने वाला। २-स्थायी।
**दायर** *वि०* (फा) १-चलने वाला। २-जो निर्णय के लिए न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया गया हो।
**दायरा** पुं० (अ) १-गोल घेरा। वृत्त। ३-कार्य या अधिकार का क्षेत्र।
**दायाँ** *वि०* (हिं) दाहिनी।
**दाया** *स्त्री०* (हिं) दया। *स्त्री०* (फा) दाई। धाय।
**दायद** पुं० (सं) [*स्त्री०* दायदा] वह जो दाय भाग के नियमों के अनुसार किसी की संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो।
**दायादा, दायादी** *स्त्री०* (सं) १-कन्या। २-दाय की अधिकारिणी।
**दायाधिकार** पुं० (सं) वह अधिकार जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी संपत्ति या उसके हटने पर उसका पद अथवा स्थान पाता है। (सक्सेशन)।
**दायाधिकार-राज्य** पुं० (सं) वह राज्य जिसके राजा के मरने, किन्हीं कारणों से हटाये जाने अथवा पद त्याग करने पर उसके उत्तराधिकारी को राज्य मिले (सक्सेशन-स्टेट)।
**दायाधिकार-विधान** पुं० (सं) वह विधान अथवा कानून जिसके द्वारा किसी को अधिकार दिलाए जायें। (लॉ ऑफ सक्सेशन)।
**दायाधिकार-व्यवस्था** पुं० दे० 'दायाधिकार-विधान'
**दायाधिकारी** पुं० (सं) वह जो किसी के हट जाने अथवा न रहने पर उसके पद या स्थान का अधिकारी हो। (सक्सेसर)।
**दायाधिकारी होना** *क्रि०* (हिं) किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का अधिकारी होना। (सक्सीड)
**दायाप्रवर्तन** पुं० (सं) उत्तराधिकारी में प्राप्त जायदाद की जब्ती।
**दायित्व** पुं० (सं) १-जिम्मेदारी। २-दायी होने का भाव।
**दायी** *वि०* (सं) [*स्त्री०* दायिनी] १-दायक। देने वाला २-जिस पर किसी तरह का दायित्व या भार हो। (लायबुल)।
**दायें** *क्रि० वि०* (हि) दाहिनी ओर।
**दार** *स्त्री०* (सं) पत्नी। पुं० (हि) दारु। प्रत्य० (फा) रखने वाला। (यौगिक के अन्त में) *स्त्री०* (फा) १-सूली। २-फाँसी। *स्त्री०* (हि) दाल।
**दारचीनी** *स्त्री०* (हि) एक वृक्ष जिसकी सुगन्धित छाल दवा और मसाले के काम में आती है।
**दारण** पुं० (सं) १-चीरफाड़। २-चीरने-फाड़ने के औजार। ३-फोड़ा आदि चीरने का काम।
**दारना** *क्रि०* (हि) १-फाड़ना। २-नष्ट करना। ३-मार डालना।
**दार-परिग्रह** पुं० (सं) विवाह।
**दारमदार** (फा) १-आश्रय। २-कार्य का भार।
**दारा** *स्त्री०* (हि) पत्नी।
**दारि** *स्त्री०* (स) विदारण। छेदन। *स्त्री०* (हि) दाल
**दारिउँ** पुं० (हि) दाड़िम।
**दारिका** *स्त्री०* (सं) १-पुत्री। २-बालिका।
**दारिद, दारिद्र** पुं० दे० 'दरिद्र्य'।
**दारिद्र्य** पुं० (सं) निर्धनता। गरीबी।
**दारिम** पुं० दे० 'दाड़िम'
**दारी** *स्त्री०* (हि) १-दासी। २-कुलटा स्त्री।
**दारी-जार** पुं० (हि) दासी का पति या पुत्र। (गाली)
**दारु** पुं०(सं) १-काठ। काष्ठ। २-देवदारु। ३-बढ़ई। ४-पीतल। ५-कारीगर।
**दारुक** पुं० (सं) सारथी।
**दारुन** *वि०* दे० 'दारुण'।
**दारुजोषित्** *स्त्री०* (हि) दारुयोषित्। कठपुतली।
**दारुनटी, दारुनारी, दारुपुत्रिका, दारुपुत्री, दारुयोष, दारुयोषित, दारुयोषिता** *स्त्री०* (सं) कठपुतली।
**दारुहलदी** *स्त्री०* (हि) एक सदाबहार झाड़ जिसकी जड़ और डण्ठल दवा के काम में आते हैं।
**दारू** *स्त्री०* (फा) दवा। औषध। पुं० १-मद्य। २-बारूद।
**दारों** पुं० (हिं) दाड़िम।
**दारो** पुं० (हि) अनार का दाना या बीज।
**दारोगा** पुं० (फा) १-हिफाजत करने वाला। २-निगरानी करने वाला। ३-थानेदार।
**दार्यों** पुं० (हि) १-अनार। २-अनार का दाना।
**दार्शनिक** पुं० (सं) दर्शन-शास्त्र का ज्ञाता। *वि०* दर्शन-शास्त्र सम्बन्धी।

**दाल** स्त्री० (हि) १-दली हुई अरहर, मूँग आदि। २-पकायी हुई दाल। ३-खुरण्ड।
**दालचीनी** स्त्री० दे० 'दारचीनी'।
**दालना** क्रि० (हि) दलना।
**दालमोठ** स्त्री० (हि) १-घी, तेल आदि में नमक मिर्च के साथ तली हुई दाल।
**दालान** पुं० (फा) बरामदा। ओसारा।
**दालिद** पुं० (हि) दरिद्रता।
**दालिम** पुं० (हि) दाड़िम।
**दावँ** पु० दे० 'दाँव'।
**दाव** पुं० (सं) १-वन। २-वन की आग। ३-आग। ४-जलन। पुं० (हि) १-बड़े डण्ठल आदि काटने का एक तरह का औजार। २-दाँव।
**दावत** स्त्री० [अ० दअवत] १-भोज का निमन्त्रण। २-बुलावा।
**दावन** पुं० (हि) १-दमन। २-संहार। ३-हँसिया। ४-दामन। वि० नाश करने वाला।
**दावना** क्रि० (हि) १-दमन करना। २-नष्ट करना। दँना।
**दावनी** स्त्री० (हि) स्त्रियों का एक शिरोभूषण। वि० नष्ट करने वाली।
**दावरी** स्त्री० (हि) दाँवरी।
**दावा** पुं० (अ) १-किसी वस्तु पर अपना हक जतलाना। २-स्वत्व। हक़। ३-मुकदमा। ४-अभियोग ५-अधिकार। ६-दृढ़ता। ७-दृढ़तापूर्वक कथन। स्त्री० (हि) दावाग्नि। दावानल।
**दावाग्नि** स्त्री० (सं) वन की आग। दावानल।
**दावात** स्त्री० दे० 'दवात'।
**दावानल** पुं० (सं) वन में वृक्षों की परस्पर रगड़ से आप से आप उत्पन्न होने वाली आग।
**दावेदार** पुं० (अ+फा) अपना हक जताने वाला।
**दाशमिक** वि० (सं) १-दशम सम्बन्धी। २-जिसका सम्बन्ध प्रत्येक दस या उसके घात से हो। ३-दशमलव के अनुसार दस या उसके घात से सम्बद्ध
**दाशरथि** पुं० (सं) श्रीराम आदि दशरथ के पुत्र।
**दास** पुं० (सं) [स्त्री० दासी] १-गुलाम। २-नौकर। सेवक। ३-दूसरे के अधीन या वश में रहने वाला ४-शूद्रों की एक उपाधि। पुं० दे० 'डासन'।
**दासता** स्त्री० (सं) गुलामी। परतन्त्रता।
**दासन** पुं० दे० 'डासन'।
**दासपन** पुं० (हि) दासता। गुलामी।
**दासा** पुं० (हि) १-दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता। २-द्वार या दीवार की कुरसी के ऊपर लगाई हुई लकड़ी या पत्थर।
**दासानुदास** पुं० (सं) १-दासों का दास। २-विनम्र सेवक।
**दासिका, दासी** स्त्री० (सं) सेवा करने वाली स्त्री। टहलनी।
**दासेय** पुं० (सं) १-दासी पुत्र। २-दास।
**दास्तान** स्त्री० (फा) १-कहानी। २-वृतांत। ३-विवरण।
**दास्य** पु० (सं) १-दासता। २-भक्ति के नौ भेदों में से एक।
**दाह** पुं० (सं) १-मुर्दा जलाना। २-जलन। ताप। ३-एक रोग जिससे शरीर में जलन होती है। ४-शोक। ५-डाह। ईर्ष्या।
**दाहक** वि० (सं) १-जलाने वाला। २-जलन पैदा करने वाला।
**दाहकर्म** पुं० (सं) शव-संस्कार। अन्त्येष्टि-क्रिया।
**दाहन** पुं० (सं) जलाना।
**दाहना** क्रि० (हि) १-जलाना। २-दुःख पहुँचाना। वि० दे० 'दाहिना'।
**दाहिन** वि० (हि) १-दाहिना। २-अनुकूल।
**दाहिना** वि० (हि) [स्त्री० दाहिनी] १-बायाँ का उलटा। २-दाहिने हाथ की ओर। ३-अनुकूल।
**दाहिनावर्त्त** वि० दे० 'दक्षिणावर्त्त'।
**दाहिने** क्रि० वि० (हि) दाहिनी ओर।
**दाही** वि० दे० 'दाहक'।
**दिअना** पुं० (हि) दीया। दीपक।
**दिअरी, दिअली** स्त्री० (हि) छोटा दीया या दीपक।
**दिआ** पुं० (हि) दीया। दीपक।
**दिउला** पुं०(हि) [स्त्री० दिउली] छोटा दीपक।
**दिक्** स्त्री० (सं) दिशा। ओर।
**दिक** वि० (अ) १-पीड़ित। २-हैरान। ३-अस्वस्थ। पुं० (हि) तपेदिक।
**दिक्कत** स्त्री० (अ) १-परेशानी। २-तकलीफ। ३-कठिनता।
**दिक्करी** पुं० दे० 'दिग्गज'।
**दिक्पाल** पुं० (सं) दसों दिशाओं के रक्षक देवता।
**दिक्शूल** पुं० (सं) कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं की यात्रा का निषेध।
**दिक्साधन** पुं० (सं) दिशाओं का ज्ञान प्राप्त करने की विधि या उपाय।
**दिखना** क्रि० (हि) दिखाई देना।
**दिखराना, दिखरावना** क्रि० (हि) दिखलाना।
**दिखरावनी** स्त्री० (हि) १-दिखाने का काम या भाव २-मुँह देखने का नेग।
**दिखलाई** स्त्री० (हि) दिखलाने का काम या उजरत।
**दिखलाना** क्रि० (हि) १-दूसरे को देखने में लगाना। २-प्रदर्शित करना।
**दिखलावा** पुं० (हि) दिखावा।
**दिखवैया** पुं० (हि) १-दिखलाने वाला। २-देखने वाला।
**दिखहार** पुं० (हि) देखने वाला।

**दिखाई** स्त्री० (हिं) १-दिखाने की क्रिया या भाव। २-दिखाने की उजरत। ३-देखने की क्रिया या भाव। ४-देखने के बदले में दिया जाने वाला धन
**दिखाऊ** वि० (हिं) १-देखने या दिखाने योग्य। २-जो केवल देखने भर के लिए हो।
**दिखाना** क्रि० (हिं) दिखलाना।
**दिखाव** पुं० (हिं) १-देखने की क्रिया या भाव। २-दृश्य।
**दिखावट** स्त्री० (हिं) १-दिखाने का भाव या तर्ज। २-बाह्य आडम्बर।
**दिखावटी** वि० (हिं) १-जो केवल देखने भर को हो पर काम न आ सके। दिखौआ। २-ऊपरी।
**दिखावा** पुं० (हिं) आडम्बर। ऊपरी तड़कभड़क।
**दिखैया** पुं० (हिं) १-देखने वाला। २-दिखाने वाला।
**दिखौआ, दिखौवा** वि० (हिं) दिखावटी।
**दिग्** स्त्री० दे० 'दिक्'।
**दिगंगना** स्त्री० (सं) दिशारूपिणी स्त्री।
**दिगंत** पुं० (सं) दिशा का अन्त। छोर। क्षितिज। पुं० (हिं) आँख का कोना।
**दिगंतर** पुं०(सं) दो दिशाओं के बीचकी दिशा। कोण
**दिगंबर** पुं० (सं) १-शिव। २-नंगा रहने वाला। जैन। ३-दिशाओं का वस्त्र। ४-अंधेरा।
**दिगंश** पुं० (सं) क्षितिज वृत्त का तीन सौ साठवाँ भाग या अंश।
**दिगांगना** स्त्री० (सं) दिशा रूपी अंगना या स्त्री।
**दिगदंति** पुं० (हिं) दिग्गज।
**दिगीश, दिगीश्वर** पुं० (सं) दिक्पति। दिक्पाल।
**दिक्कन्या** स्त्री० (सं) दिशारूपी कन्या या लड़की।
**दिग्गज** पुं० (सं) पुराणानुसार आठों दिशाओं के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते हैं और उसकी रक्षा करते हैं। वि० (सं) बहुत बड़ा या भारी।
**दिग्गयंद** पुं० (हिं) दिग्गज।
**दिग्घ** वि० (हिं) दीर्घ।
**दिग्दंत** पुं० (हिं) दिग्गज।
**दिग्दर्शक** पुं० (सं) १-दिशाओं का ज्ञान कराने वाला २-जानकारी कराने वाला।
**दिग्दर्शक-यंत्र** पुं० (सं) घड़ी जैसा वह यन्त्र जिसके द्वारा दिशा का पता चलता है। कुतुबनुमा।
**दिग्दर्शन** पुं० (सं) १-सामान्य परिचय या ज्ञान। २-दिशा का ज्ञान कराना।
**दिग्दाह** पुं० (सं) एक अशुभ दैवी घटना जिसमें समय दिशाएँ लाल हो जाती और जलती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।
**दिग्देवता, दिग्पति, दिग्पाल** पुं० (सं) दिशाओं के रक्षक देवता। दिक्पाल।
**दिग्भ्रम** पुं० (सं) दिशाओं के सम्बन्ध में भ्रम होना दिशा भूल जाना।
**दिग्मंडल** पुं० (सं) सब दिशाओं का समूह।
**दिग्वधू** स्त्री० (सं) दिशारूपी वधू या सुहागिन स्त्री।
**दिग्वसन, दिग्वस्त्र, दिग्वासा** पुं० (सं) दिगंबर।
**दिग्विजय** स्त्री० (सं) १-देश-देशांतरों को जीतना। २-अपने गुणों के द्वारा आसपास के देशों में अपना महत्व स्थापित करना।
**दिग्विजयी** वि० (सं) दिग्विजय करने वाला।
**दिग्विभावित** वि० (सं) जिसकी ख्याति सभी दिशाओं में फैली हो।
**दिग्शूल** पुं० दे० 'दिक्शूल'।
**दिच्छा** स्त्री० (हिं) दीक्षा।
**दिच्छित, दिछित** वि० दे० 'दीक्षित'।
**दिज** पुं० (हिं) द्विज।
**दिजराज** पुं० (हिं) द्विजराज।
**दिजोत्तम** पुं० (हिं) द्विजोत्तम।
**दिठवन** स्त्री० दे० 'देवोत्थान' (एकादशी)।
**दिठादिठी** स्त्री० (हिं) देखादेखी। साक्षात्कार।
**दिठाना** क्रि० (हिं) बुरी दृष्टि या नजर लगना अथवा लगाना।
**दिठियार** वि० (हिं) १-जिसे दिखाई देता हो। २-समझदार। ३-जो दिखाई देता हो।
**दिठौना** पुं० (हिं) बच्चों के माथे या गाल आदि पर नजर से बचाने के लिए लगाई हुई काली बिंदी।
**दिढ़** वि० (हिं) दृढ़।
**दिढ़ता, दिढ़ाई** स्त्री० (हिं) दृढ़ता।
**दिढ़ाना** क्रि० (हिं) १-दृढ़ या मजबूत करना। २-निश्चित या पक्का करना। ३-दृढ़ या पक्का होना।
**दिढ़ाव** पुं० (हिं) दृढ़ता।
**दिति** स्त्री० (हिं) अदिति।
**दितिज, दितितनय, दितिपुत्र, दितिसुत** पुं० (सं) असुर। दैत्य।
**दित्सा** स्त्री० (सं) १-देने अथवा दान की इच्छा। २-वसियत।
**दित्सा-क्रोड़** पुं० (सं) १-स्पष्टीकरण के लिए दित्सा-पत्र के अन्त में परिशिष्ट रूप में लिखी टिप्पणी। २-दित्सा-पत्र का वह अंश जिसमें उक्त टिप्पणी होती है। (कोडिसिल)।
**दित्सा-पत्र** पुं० (सं) वसियतनामा (विल)।
**दित्सा-प्रस्ताव** पुं० (सं) किसी को किसी प्रकार की सहायता देने को उद्यत होना, जिसे स्वीकार करना या न करना उसकी इच्छा पर निर्भर हो। (ऑफर)
**दिदार** पुं० दे० 'दीदार'।
**दिन** पुं० (सं) १-सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २-आठ पहर या चौबीस घण्टे का समय। ३-समय। काल। ४-निश्चित या उचित समय।

४-वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो। अव्य० १-नित्य-प्रति। २-सदा। निरन्तर।
**दिनग्रर, दिनकंत, दिनकर, दिनकार** पुं०=सूर्य।
**दिन-चर्य्या** स्त्री० (सं) सारे दिन किया जाने वाला काम-धन्धा।
**दिनदानी** पुं० (हि) बड़ा दानी।
**दिनदीप, दिननाथ, दिननायक, दिननाह** पुं०=सूर्य
**दिन-पंजी** स्त्री० (सं) दैनन्दिनी। (डायरी)।
**दिन-पत्र** पुं० (सं) तिथियों को बताने वाला पत्र। (कलेंडर)।
**दिनपति, दिनपाल, दिनबंधु, दिनमणि, दिनमनि** पुं० (सं) सूर्य।
**दिनमान** पुं० (सं) १-सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मान। २-सूर्य।
**दिनराइ, दिनराउ** पुं० (हि) सूर्य।
**दिनरात, दिनरैन** अव्य० (हि) सदैव। सर्वदा।
**दिन-विकृति-विवरण** पुं० (सं) मौसम का विवरण। (वैदर-रिपोर्ट)।
**दिनांक** पुं० (सं) तारीख। तिथि। (डेट)।
**दिनांकित** वि० (सं) तिथित। (डेटेड)।
**दिनांत** पुं० (सं) संध्या। शाम।
**दिनांध** वि० (सं) दिवांध। पुं० उल्लू नामक पक्षी।
**दिनाई** स्त्री० (हि) १-वह विषैली वस्तु जिसके खाने से तुरन्त मृत्यु होजाय। २-मृत्यु का दिन लाने वाली वस्तु या बात। स्त्री० (हि) दाद का रोग।
**दिनागम** पुं० (सं) प्रातःकाल। सवेरा।
**दिनातीत** वि० (सं) आधुनिक रुचि, प्रचलन आदि के विचार से पिछड़ा हुआ। (आउट आफ डेट)।
**दिनाप्त** वि० (सं) आदिनांक। (अपटुडेट)।
**दिनार** पुं० दे० 'दीनार'।
**दिनार्द्ध** पुं० (सं) मध्याह्न।
**दिनिका** स्त्री० (सं) एक दिन की मजदूरी।
**दिनिग्रा, दिनियर** पुं० (हि) दिनकर। सूर्य।
**दिनी** वि० (हि) बहुत दिनों का। प्राचीन।
**दिनी, दिनेश, दिनेस** पुं०=सूर्य।
**दिनौंधी** स्त्री० (हि) एक रोग जिसमें दिन के समय कम दिखाई देता है।
**दिपति** स्त्री० (हि) दीप्ति।
**दिपना** क्रि० (हि) चमकना।
**दिपाना** क्रि० (हि) १-चमकना। २-चमकाना।
**दिब** पुं० (हि) दिव्य।
**दिमाक** पुं० दे० 'दिमाग'।
**दिमाग** पुं० (अ) १-सिर के अन्दर का गूदा या भेजा। २-समझ। बुद्धि। ३-घमण्ड।
**दिमाग-चट** वि० (हि) बहुत बकबक करके दूसरों का सिर खाने वाला। बकवादी।
**दिमागदार** वि० (अ+फा) १-बुद्धिमान। २-घमण्डी
**दिमागी** वि०(अ) १-दिमाग से सम्बन्धित। २-दिमागदार।
**दिमात** वि०, पुं० (हि) १-दो माताओं वाला। २-दो मात्राओं वाला।
**दिमान** पुं० (हि) दीवान।
**दिमाना** वि० (हि) दीवाना।
**दियट** स्त्री० (हि) दीअट। दीवट।
**दियना, दियरा, दियला, दिया** पुं० (हि) दीवा। दीपक।
**दियाबत्ती** स्त्री० (हि) (सन्ध्या समय) दीपक जलाने का काम।
**दियारा** पुं० (हि) १-कछार। २-प्रदेश। ३-लुक।
**दियासलाई** स्त्री० (हि) सिर पर गन्धक लगी तीली जिसे रगड़कर आग जलाते हैं।
**दिरद** पुं० दे० 'द्विरद'।
**दिरमान** पुं० (हि) १-औषध। २-चिकित्सा।
**दिरमानी** पुं०(हि) चिकित्सक। स्त्री० चिकित्साशास्त्र।
**दिरानी** स्त्री० (हि) देवरानी।
**दिरिस** पुं० (हि) दृश्य।
**दिल** पुं० (फा) १-हृदय। कलेजा। २-मन। चित्त। जी। ३-साहस। ४-प्रवृत्ति। इच्छा।
**दिलगरी, दिलगीरी** स्त्री०=दुखी।
**दिल-चला** वि० (हि) मनचला।
**दिलचस्प** वि० (फा) मनोरंजक।
**दिलचस्पी** स्त्री० (फा) १-चित्त को आकर्षित करने वाला गुण या बात। २-किसी वस्तु में गहरा अनुराग।
**दिल-जमई** स्त्री० (फा+अ) इतमीनान। तसल्ली।
**दिल-जला** वि० (हि) जिसे मानसिक कष्ट पहुँचा हो।
**दिल-जोई** स्त्री० (हि) किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।
**दिलदार** वि० (फा) १-उदार। २-रसिक। ३-प्रेमी। ४-प्रिय।
**दिलबर** वि० (फा) प्यारा। प्रिय।
**दिलवाना** क्रि० (हि) दिलाना।
**दिलवैया** पुं० (हि) दिलाने वाला।
**दिलहा** पुं० दे० 'दिल्ला' (किवाड़ का)।
**दिलाना** क्रि० (हि) देने का काम अन्य से कराना।
**दिलावर** वि० (फा) [स्त्री० दिलावरी] साहसी।
**दिलासा** पुं० (हि) सांत्वना। आश्वासन।
**दिली** वि० (फा) १-हार्दिक। २-बहुत घनिष्ट।
**दिलेर** वि० (फा) साहसी।
**दिलेरी** स्त्री० (फा) १-हिम्मत। २-बहादुरी।
**दिल्लगी** स्त्री० (हि) मजाक। परिहास।
**दिल्लगी-बाज** पुं० (हि) ठठोल। मसखरा।
**दिल्ला** पुं० (देश) किवाड़ के पल्ले में वे चौकोर टुकड़े जो शोभा के लिए लगाये जाते हैं।

**दिवंगत** वि० (सं) [स्त्री० दिवंगता] १-मरा हुआ। २-जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।
**दिव** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-आकाश। ३-दिन।
**दिवदाह** पुं०(सं) आकाश का जलना (प्रबल आन्दोलन अथवा क्रान्ति)।
**दिवस** पुं० (सं) दिन। रोज।
**दिवस्पति** पुं० (सं) सूर्य।
**दिवांध** वि० (सं) जिसे दिन में दिखाई न दे। पुं० १-उल्लू। २-दिन में दिखाई न देने का रोग।
**दिवा** पुं० (सं) दिन। दिवस। पुं० (हि) दीपक। दीया।
**दिवाकर** पुं० (सं) सूर्य।
**दिवान** पु० दे० 'दीवान'।
**दिवाना** पुं० दे० 'दीवाना'। क्रि० (हि) दिलाना।
**दिवाभिसारिका** स्त्री० (सं) दिन में अभिसार करने वाली नायका।
**दिवार** स्त्री० (हि) दीवार।
**दिवारी** स्त्री० (हि) दीवाली।
**दिवाल** स्त्री० (हि) दीवाल। वि० देने वाला।
**दिवाला** पुं० (हि) १-पूँजी न रहने की अवस्था में ऋण चुकाने में असमर्थता। २-किसी वस्तु का सर्वथा अभाव हो जाना।
**दिवालिया** वि० (हि) जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ न बचा हो।
**दिवाली** स्त्री० दे० 'दीवाली'।
**दिवा-स्वप्न** पुं० (सं) १-दिन में निद्रा लेना। २-हवाई किले बनाना।
**दिवैया** वि० (हि) देने वाला।
**दिव्य** वि० (सं) १-स्वर्गीय। २-अलौकिक। ३-प्रकाशमान। ४-स्वच्छ। पुं० १-तीन प्रकार के नायकों में श्रेष्ठ। २-एक प्रकार की परीक्षा जिसमें प्राचीन काल में अपराधी की सदोषता या निर्दोषता का निर्णय करते थे। ३-शपथ।
**दिव्य-चक्षु**, दिव्य-दृष्टि स्त्री०(सं) १-ज्ञान चक्षु। २-सुन्दर आँखों वाला। ३-बहुत दूर के या छिपे हुए पदार्थों या बातों को देखने या समझने वाला। (क्लेयरवायंस)।
**दिव्य-पुरुष** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसके स्वर्गीय होने की कल्पना की गई हो
**दिव्यांगना** स्त्री० (सं) १-अप्सरा। २-देववधू।
**दिव्या** स्त्री० (सं) १-तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहने वाली या अलौकिक हो। २-ब्राह्मी जड़ी।
**दिव्यास्त्र** पुं० (सं) मन्त्रों द्वारा चलने वाला हथियार
**दिश** स्त्री० (सं) दिशा।
**दिशा** स्त्री० (सं) १-ओर। तरफ। २-क्षितिज-वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से एक। ३-दस की संख्या।
**दिशा-भ्रम** पुं० दे० 'दिग्भ्रम'।
**दिशाशूल** पुं० दे० 'दिक्शूल'।
**दिशि** स्त्री० दे० 'दिशा'।
**दिश्य** वि० (सं) दिशा सम्बन्धी। वि० (हि) निर्दिष्ट।
**दिष्ट** वि० (सं) १-निश्चित। निर्दिष्ट। २-दिखलाया या बतलाया हुआ।
**दिष्टबंधक** पु० दे० 'दृष्टबंधक'।
**दिष्टि** स्त्री० दे० 'दृष्टि'।
**दिसंतर** पु० (हि) देशान्तर। विदेश। अव्य० बहुत दूर तक।
**दिस** स्त्री० दे० 'दिशा'।
**दिसट** स्त्री० (हि) दृष्टि। नजर।
**दिसना** क्रि० (हि) दिखना।
**दिसा** स्त्री० (हि) दिशा।
**दिसाहार** पुं० (हि) दिग्दाह।
**दिसावर** पुं० (हि) परदेस। विदेश।
**दिसावरी** वि० (हि) विदेशी (माल)।
**दिसासूल** पुं० (हि) दिक्शूल।
**दिसि** स्त्री० (हि) दिशा।
**दिसिट** स्त्री० दे० 'दृष्टि'।
**दिसिदुरद** पुं० (हि) दिग्गज।
**दिसिनायक**, दिसिप, दिसिराज पु० (हि) दिक्पाल।
**दिसैया** पुं० (हि) १-देखने वाला। २-दिखाने वाला।
**दिस्टि** स्त्री० (हि) दृष्टि।
**दिस्टिबंध** पुं० (हि) दृष्टिबंध।
**दिस्ता** पुं० (हि) दस्ता।
**दिहंदा** वि० (फा) देने वाला।
**दिहकानियत** स्त्री० (हि) देहातीपन।
**दिहरा** पुं० (हि) देवस्थान।
**दिहल** क्रि० (हि) दिया।
**दिहली** स्त्री० (हि) देहलीज।
**दिहा**, दिहाड़ा पु० (हि) सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय। दिन।
**दिहाड़ी** स्त्री० (हि) १-दिन। २-दिन भर की मजदूरी
**दिहात** स्त्री० (हि) देहात।
**दिहाती** वि० (हि) देहाती।
**दिहातीपन** पुं० (हि) देहातीपन।
**दीअट** स्त्री० (हि) दीयट।
**दीआ** पुं० (हि) दीया।
**दीक्षक** पुं० (सं) १-दीक्षा देने वाला। गुरु। २-शिक्षक।
**दीक्षण** पुं० (सं) दीक्षा देने की क्रिया।
**दीक्षांत** पु० (सं) १-वह यज्ञ जो किसी यज्ञ की त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिए हो। २-किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के अध्ययन की सफल समाप्ति।

**दीक्षांत-भाषण** पुं० (सं) विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि या प्रमाण पत्र आदि देने के समय किसी विद्वान् या आदरणीय नेता द्वारा दिया जाने वाला भाषण। (कॉन्वोकेशन-एड्रस)।
**दीक्षा** स्त्री० (सं) १-यजन। २-गुरुमंत्र।
**दीक्षा-गुरु** पुं० (सं) मंत्र देने वाला गुरु।
**दीक्षित** वि० (सं) १-जिसने संकल्प करके यज्ञ किया हो। २-जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो। पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।
**दीखना** क्रि० (हिं) दिखाई देना।
**दीघी** स्त्री० (हिं) दीर्घिका। तालाब।
**दीच्छा** स्त्री० (हिं) दीक्षा।
**दीठ** स्त्री० (हिं) १-दृष्टि। २-कुप्रभाव उत्पन्न करने वाली निगाह।
**दीठबंदी** स्त्री० (हिं) नजर बाँधने की क्रिया।
**दीठवंत** वि० (हिं) १-दृष्टियुक्त। २-समझदार।
**दीठना** क्रि० (हिं) देखना।
**दीठि** स्त्री० (हिं) दीठ।
**दीत** पुं० (हिं) सूर्य।
**दीता** क्रि० (हिं) दिया।
**दीदा** पुं० (हिं) १-दृष्टि। २-आँख।
**दीदार** पुं० (फा) दर्शन।
**दीदी** पुं० (हिं) बड़ी बहन।
**दीधिति** स्त्री० (सं) सूर्य या चन्द्रमा की किरण। २-उँगली।
**दीन** वि० (सं) [स्त्री० दीना] १-दरिद्र। २-दुखी। ३-संतप्त। ४-विनीत। पुं० (ग्र) मत। मजहब। पंथ
**दीनता** स्त्री० (सं) १-गरीबी। २-नम्रता।
**दीनताई** स्त्री० (हिं) दीन होने की क्रिया या भाव।
**दीनदयालु** वि० (सं) दीनों पर दया करने वाला।
**दीनदुनिया** स्त्री० (हिं) यह लोक तथा परलोक।
**दीनबंधु** पुं० (सं) १-दीनों का सहायक। २-ईश्वर।
**दीनानाथ** पुं० (हिं) १-दीन दुखियों का रक्षक या नाथ। २-ईश्वर।
**दीनार** पुं० (सं) १-सोने का गहना। २-एक तरह का सोने का प्राचीन सिक्का।
**दीप** पुं० (सं) दीया। चिराग। पुं० (हिं) द्वीप।
**दीपक** पुं० (सं) १-दीया। २-एक अर्थालंकार। ३-संगीत के छः रागों में से दूसरा। वि०[स्त्री० दीपिका] १-प्रकाश करने वाला २-पाचन शक्ति बढ़ाने वाला वाला। ३-उत्तेजक।
**दीपकर, दीपज्वालक** पुं० (सं) दीपक जलाने वाला
**दीपत, दीपति** स्त्री० (हिं) १-चमक। २-शोभा। ३-प्रताप।
**दीप-दान** पुं० (सं) १-देवता के सामने दीप जलाना। २-मरते हुए व्यक्ति से आटे के जलते हुए दीये का दान या संकल्प करना।
**दीपन** पुं० (सं) १-दीप्त या प्रज्वलित करना। २-भूख तेज करना। ३-उत्तेजन। वि० १-पाचन-शक्ति बढ़ाने वाला। २-उत्तेजना उत्पन्न करने वाला।
**दीपना** क्रि० (हिं) चमकना या चमकाना।
**दीप-माल; दीप-मालिका** स्त्री० (सं) दीवाली।
**दीप-शिखा** स्त्री० (सं) दीये की लौ।
**दीप-स्तंभ** पुं० (सं) १-दीपाधार। दीवट। २-प्रकाश-स्तम्भ। (लाइट-हाउस)।
**दीपा** वि० (हिं) १-मद्धिम। फीका। २-मन्दा।
**दीपाधार** पुं० (सं) दीयट।
**दीपाराधन** पुं० (सं) आरती उतारना।
**दीपालि, दीपाली; दीपावलि, दीपावली** स्त्री० (सं) दीवाली।
**दीपिका** स्त्री० (सं) १-छोटा दीपक। २-एक रागिनी। ३-किसी ग्रन्थ का अर्थ स्पष्ट करने वाली पुस्तक। वि० उजाला करने वाली।
**दीपित** वि० (सं) १-दीप्त। २-उत्तेजित।
**दीपोत्सव** पुं० (सं) दीवाली।
**दीप्त** वि० (सं) १-प्रज्वलित। २-चमकीला।
**दीप्ति** स्त्री० (सं) १-प्रकाश। २-कान्ति। ३-ज्ञान का प्रकाश।
**दीप्तिमान्** वि० (सं) [स्त्री० दीप्तिमती] १-चमकता हुआ। २-कान्तियुक्त।
**दीप्ति-प्रसारण, दीप्तिविकीरण** पुं० (सं) चारों ओर प्रकाश की किरणें फैलाना। (रेडियेशन)।
**दीबो** पुं० (हिं) देने की क्रिया या भाव।
**दीमक** स्त्री० (फा) च्यूँटी जैसा एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी कागज आदि को नष्ट कर देता है। वल्मीक
**दीयट** स्त्री० (हिं) दीपक रखने का लकड़ी या पीतल का आधार। चिरागदान।
**दीया** पुं० (हिं) १-दीपक। चिराग। २-मिट्टी का छोटा वह पात्र जिसमें बत्ती जलाते हैं।
**दीयासलाई** स्त्री० दे० 'दियासलाई'।
**दीरघ** वि० दे० 'दीर्घ'।
**दीर्घ** वि० (सं) १-लम्बा। २-बड़ा। विशाल। पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा।
**दीर्घ-काय** वि० (सं) बड़े डीलडौल वाला।
**दीर्घ-जीवी** वि० (सं) चिरजीवी।
**दीर्घ-सूत्र** पुं० (सं) बहुत दिनों तक चलने वाला यज्ञ।
**दीर्घ-सूत्रता** स्त्री० (सं) १-प्रत्येक काम में देर करने का स्वभाव। २-सार्वजनिक कार्यों के सम्बन्ध में राज्य-कीय कर्मचारियों द्वारा अत्यधिक औपचारिकता के कारण किया जाने वाला विलम्ब। (रेड-टेपिज्म)।
**दीर्घ-सूत्री** वि० (सं) प्रत्येक कार्य में देर लगाने वाला
**दीर्घा** स्त्री० (सं) १-आने जाने के लिए कोई लम्बा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। २-भवन में

दर्शकों के बैठने का स्थान। (गैलरी)।
**दीर्घायु** वि० (सं) दीर्घजीवी। लम्बी उमर वाला।
**दीर्घावकाश** पुं० (सं) विद्यालयों में अथवा न्यायालयों के दो सत्रों के मध्य की लम्बी छुट्टी या अवकाश। (वैकेशन)।
**दीर्घिका** स्त्री० (सं) छोटा तालाब।
**दीर्ण** वि० (सं) १-फटा हुआ। २-टूटा हुआ।
**दीवट** स्त्री० (हि) दीयट। चिरागदान।
**दीवा** पुं० दे० 'दीया'।
**दीवान** पुं० (अ) १-राजसभा। २-राज्य का मंत्री ३-वह पुस्तक जिसमें गजलें संग्रहीत हों।
**दीवान-आम** पुं० (अ) राजा या बादशाह का वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण प्रवेश पा सकें।
**दीवानखाना** पुं० (फा) बैठक।
**दीवानखास** पुं० (फा०+अ०) खास दरबार।
**दीवाना** वि० (फा) [स्त्री० दीवानी] पागल।
**दीवानी** स्त्री० (फा) १-दीवान का पद। २-वह न्यायालय, जो संपत्ति आदि सम्बन्धी स्वत्वों का निर्णय करे।
**दीवानी-अदालत, दीवानी-कचहरी, दीवानी-न्यायालय** पुं० —वह न्यायालय जो सम्पत्ति आदि के मामलों का निर्णय करता है।
**दीवार** स्त्री० (फा) १-दीवाल। भीत। २-किसी वस्तु का ऊपर उठा हुआ घेरा।
**दीवारगीर** पुं० (फा) दीया आदि रखने का वह आधार जो दीवार में लगाया जाता है।
**दीवाल** स्त्री० (फा) मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना हुआ परदा या घेरा।
**दीवाली** स्त्री०(हि) एक प्रसिद्ध उत्सव जो कार्त्तिक की अमावस्या को होता है, इस दिन रात को दीप जलाये जाते हैं और लक्ष्मीपूजन किया जाता है।
**दीवी** स्त्री० (हि) दीवट।
**दीसना** क्रि० (हि) दिखाई पड़ना।
**दीह** वि० (हि) १-लम्बा और बड़ा। २-बहुत ऊंचा। पुं० चहारदीवारी।
**दुंद** पुं०(हि) १-द्वंद्व। २-उपद्रव। ३-झगड़ा-बखेड़ा
**दुंदुभ** पुं० (सं) नगाड़ा। पुं० (हि) जन्म-मरण आदि का कष्ट या क्लेश।
**दुंदुभि** स्त्री० (सं) धौंसा। नगाड़ा।
**दुंदुभी** स्त्री० (हि) नगाड़ा।
**दुंदुह** पुं० (हि) पानी का साँप। डिंडिम।
**दुंबा** पुं० [सं० दुम्बक] बहुत मोटी और भारी दुम वाला मेढ़ा।
**दुःकुंत** पुं० (हि) दुष्यन्त।
**दुःख** पुं० (सं) कष्ट। क्लेश। तकलीफ।
**दुःखकर** वि० (सं) दुःखद। कष्टप्रद।
**दुःखद, दुःखदायक, दुःखदायी, दुःखप्रद** वि० (सं) [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख पहुँचाने वाला। कष्टप्रद
**दुःखमय** वि० (सं) दुःखों से भरा हुआ। दुःखपूर्ण।
**दुःखवाद** पुं० (सं) निराशावाद।
**दुःखांत** वि० (सं) जिसका अन्त दुःखमय हो। पुं० १-वह नाटक जिसकी समाप्ति दुखमयी घटना से हो। २-दुःख का अन्त या नाश।
**दुःखार्त** वि० (सं) दुखी।
**दुःखित** वि० (सं) दुखी।
**दुःखी** वि० (सं) जिसे दुःख हो।
**दुःशासन** पुं० (सं) दुर्योधन का छोटा भाई। वि० जिस पर शासन करना कठिन हो।
**दुःशील** वि० (सं) दुष्ट स्वभाव वाला। उद्धत।
**दुःसह** वि० (सं) असह्य।
**दुःसाध्य** वि० (सं) १-जिसका साधन कठिन हो। २-जिसका करना कठिन हो। ३-असाध्य।
**दुःसाहस** पुं० (सं) १-दुष्कर या असंभव काम को करने के लिए किया जाने वाला साहस। २-अनुचित साहस। ३-धृष्टता।
**दुःस्वभाव** वि० (सं) दुष्ट स्वभाव का। पुं० बुरा स्वभाव।
**दु** वि० (हि) 'दो' शब्द का संक्षिप्त रूप। उप० दे० 'दुर'।
**दुअन** पुं० दे० 'दुवन'।
**दुअन्नी** स्त्री०(हि) दो आने वाला सिक्का।
**दुअरवा** पुं० (हि) द्वार।
**दुअरिया** स्त्री० (हि) छोटा द्वार।
**दुआ** स्त्री० (अ) १-विनती। प्रार्थना। २-आशीर्वाद।
**दुआदस** वि० (हि) द्वादश।
**दुआब, दुआबा** पुं० (हि) दो नदियों के बीच का भू-भाग।
**दुआर, दुआरा** पुं० (हि) द्वार।
**दुआरी** स्त्री० (हि) छोटा द्वार।
**दुआल** स्त्री० (हि) दुवाल।
**दुआह** पुं० (हि) दूसरा विवाह।
**दुइ** वि० (हि) दो (संख्या)।
**दुइज** स्त्री०(हि) दूज। पुं० (हि) दूज का चन्द्रमा।
**दुई** स्त्री० (हि) १-अपने को दूसरों से अलग समझना २-द्वैत।
**दुऊ, दुओ** वि० (हि) दोनों।
**दुकड़ा** पुं० (हि) (स्त्री० दुकड़ी) १-जोड़ा। २-छदाम
**दुकड़ी** स्त्री० (हि) १-दो रुपया। २-धोतियों आदि का जोड़ा।
**दुकना** क्रि० (देश) छिपना।
**दुकान** स्त्री० (फा) १-सौदा बेचने का स्थान। २-बहुत सी वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रख देना
**दुकानदार** पुं० (फा) १-दुकान का मालिक। २-जीविका के लिए ढोंग रचने वाला।

दुकानदारी स्त्री० (फा) १-दुकान पर माल बेचने का काम। २-ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम।
दुकाल पुं० (हि) अन्नकष्ट का समय। अकाल।
दुकूल पुं० (सं) १-वस्त्र। २-साड़ी।
दुकूलिनी स्त्री० (हि) नदी
दुकेला पुं० (हि) (स्त्री० दुकेली) जिसके साथ कोई एक और साथी हो।
दुक्कड़ पुं० (हि) १-तबले जैसा एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २-एक में बंधी हुई दो नावों का जोड़ा।
दुक्का वि० (हि) (स्त्री० दुक्की) जो एक साथ दो हों
दुक्की स्त्री० (हि) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।
दुख पुं० दे० 'दुःख'।
दुखड़ा पुं० (हि) १-दुखों का वर्णन। २-विपत्ति।
दुखदाई, दुखदानि वि० (हि) दुःखद।
दुखदुंद पुं० (हि) दुःख और आपत्ति।
दुखना क्रि० (हि) पीड़ा होना।
दुखरा पुं० (हि) दुखड़ा।
दुखहाया वि० (हि) दुःखित।
दुखार, दुखारी वि० (हि) दुःखी।
दुखित, दुखिया वि० (हि) दुःखित।
दुखी वि० (हि) १-दुःख में पड़ा हुआ। २-खिन्न। ३-रोगी।
दुखोला वि० (हि) दुःख अनुभव करने वाला।
दुखौंहा वि० (हि) (स्त्री० दुखौंही) दुःख देने वाला।
दुखौंही वि० (हि) दुःख देने वाली।
दुग वि० (हि) दो।
दुगई स्त्री० (?) दालान।
दुगदा वि० (हि) दुर्गम।
दुगदुगी स्त्री० (हि) धुकधुकी।
दुगना वि० (हि) दूना।
दुगम वि० (हि) दुर्गम।
दुगाड़ा पुं० (हि) दो नाली बन्दूक।
दुगुण, दुगुन, दुगुना वि० (हि) द्विगुण। दूना।
दुग्ग पुं० (हि) दुर्ग।
दुग्ध पुं० (सं) दूध।
दुघड़िया वि० (हि) १-दो घड़ी का। २-दो घड़ी के हिसाब से निकाला हुआ।
दुघड़िया मुहूर्त पुं० (हि) दो-दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त्त।
दुघरी वि० (हि) दुघड़िया।
दुचंद वि० (हि) दूना। दुगना।
दुचित वि० (हि) १-जिसका मन किसी बात पर जमता न हो। २-अनमना। चिन्ताग्रस्त।
दुचितई, दुचिताई स्त्री० (हि) १-द्विविधा। २-खटका
दुचित्ता वि० (हि) दुचित।
दुज पुं० (हि) द्विज।
दुजड़ स्त्री० (देश) [स्त्री० दुजड़ी] तलवार।
दुजन्मा पुं० (हि) द्विजन्मा।
दुजपति पुं० (हि) द्विजपति।
दुजराज पुं० (हि) द्विजराज।
दुजाति पुं० (हि) द्विजाति।
दुजानू क्रि० वि० (फा) दोनों घुटनों के बल।
दुजायगी स्त्री० (हि) अपने को दूसरे से अलग समझना। दुई।
दुजीह पुं० (हि) द्विजिह्व।
दुटूक वि० (हि) जिसके दो टुकड़े कर दिये गये हों।
दुत अव्य० (हि) १-उपेक्षापूर्वक दूर हटाने के लिए प्रयुक्त शब्द। २-बच्चों के लिए प्यार का शब्द।
दुतकारना क्रि० (हि) १-'दुत-दुत' शब्द कहकर किसी को अपने पास से हटाना। २-धिक्कारना।
दुताबी स्त्री० (हि) एक प्रकार की तलवार।
दुति स्त्री० (हि) द्युति। चमक।
दुतिमान वि० (हि) द्युतिमान। चमकदार।
दुतिय स्त्री० (हि) द्वितीय।
दुतिया स्त्री० (हि) द्वितीया। दूज।
दुतिवंत वि० (हि) १-चमकीला। २-सुन्दर।
दुतीय वि० (हि) द्वितीय।
दुतीया स्त्री० (हि) द्वितीया। दूज।
दुदलाना क्रि० (हि) दुतकारना।
दुदिला वि० (हि) १-दुचित्ता। चिन्तित।
दुद्धी स्त्री० (हि) १-खड़िया मिट्टी। २-एक घास।
दुधमुहाँ, दुधमुख वि० (हि) १-दूध के दाँत वाला। २-दूध पीता।
दुधार वि० (हि) १-दूध देने वाली। २-जिसमें दूध हो।
दुधारा वि० (हि) दो धार वाला। पुं० एक तरह का चौड़ा खाँडा।
दुधारी, दुधारू वि० दे० 'दुधार'।
दुधिया वि० (हि) १-दूध मिला। २-जिसमें दूध हो। ३-दूध के रंग का। स्त्री० (हि) खड़िया मिट्टी।
दुधैल वि० (हि) दुधार।
दुनना क्रि० (हि) १-कुचलना। २-नष्ट करना।
दुनरना, दुनरवना क्रि० (हि) १-लचककर दोहरा सा हो जाना। २-लचक कर दोहरा सा करना।
दुनाली वि० (हि) दो नालियों वाली (बन्दूक)।
दुनियाँ स्त्री० (अ) १-संसार। जगत। २-इस जगत के लोग।
दुनियाँदार पुं० (फा) १-गृहस्थ। २-व्यवहार कुशल ३-युक्ति से अपना कार्य साधने वाला व्यक्ति।
दुनियाई वि० (हि) सांसारिक।
दुनी स्त्री० (हि) संसार। दुनिया।
दुपटा पुं० (हि) दुपट्टा। वि० दो फुट का।
दुपटी स्त्री० (हि) चादर। दुपट्टा।

**दुपट्टा** पुं० (हि) १-ओढ़ने को चादर। २-कन्धे पर रखने का कपड़ा।

**दुपट्टी** स्त्री० (हि) चादर। दुपट्टा।

**दुपद** वि०, पुं० दे० 'द्विपद'।

**दुपहर** स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न।

**दुपहरिया** स्त्री० (हि) १-मध्याह्न। दोपहर। २-एक छोटा फूल वाला पौधा।

**दुपहरी** स्त्री० (हि) दोपहर। मध्याह्न।

**दुपी** पुं० (हि) हाथी।

**दु-फसली** वि० (हि) रबी और खरीफ दोनों फसलों में होने वाली।

**दुबकना** क्रि० दे० 'दबकना'।

**दुबधा** स्त्री० (हि) १-मन का निश्चय अथवा अस्थिरता का भाव। २-संशय। सन्देह। ३-असमञ्जस ४-चिन्ता।

**दुबरा** वि० (हि) [स्त्री० दुबरी] दुबला।

**दुबराना** क्रि० (हि) दुबला होना।

**दुबला** वि० (हि) [स्त्री० दुबली] १-कृश। २-अशक्त कमजोर।

**दुबारा** क्रि० वि० (हि) दोबारा।

**दुबाह** पुं० (हि) दो तलवारें दोनों हाथों में लेकर चलाने का भाव।

**दुबाहना** क्रि० (हि) दोनों हाथों से तलवार चलाना।

**दुबिधा** स्त्री० (हि) दुबधा।

**दुभाषिया, दुभाषी** पुं० (हि) दो भाषाओं में बातचीत करने वालों का अभिप्राय समझाने वाला व्यक्ति।

**दुमंजिला** वि० (फा) [स्त्री० दो मञ्जिली] दो खण्ड वाला (मकान)।

**दुम** स्त्री० (फा) १-पूँछ। २-पूँछ जैसी कोई वस्तु या पीछे लगा कोई व्यक्ति। ३-किसी कार्य का अन्तिम तथा सूक्ष्म अंश।

**दुमची** स्त्री० (फा) १-घोड़े के साज का वह चमड़े का तस्मा जो उसकी दुम के नीचे दबा रहता है। २-दोनों नितम्बों के बीच की हड्डी।

**दुमदार** वि० (फा) १-पूँछ वाला। २-जिसके पीछे पूँछ जैसी कोई वस्तु लगी हो।

**दुमन, दुमना** वि० (हि) दुचित्ता।

**दुमाता** स्त्री० (हि) विमाता। सौतेली माँ।

**दुमाहा** वि० (हि) प्रति दो मास में होने वाला।

**दुमुँहा** वि० (हि) दो मुँह वाला।

**दुरंग** पुं० (हि) किला। वि० दे० 'दुरंगा'।

**दुरंगा** वि० (हि) [स्त्री० दुरङ्गी] १-जिसमें दो रङ्ग हों २-दो प्रकार का। ३-दोहरी चाल चलने वाला।

**दुरंगी** स्त्री० (हि) कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में होजाना।

**दुरंत** वि० (सं) १-बहुत भारी। २-दुस्तर। कठिन। ३-घोर। भीषण। ४-जिसका परिणाम बुरा हो। ५-दुष्ट।

**दुरंतर** वि० (हि) कठिन। दुर्गम।

**दुरंधा** वि० (हि) १-जिसमें दो छेद हों। २-आरपार छेद वाला।

**दुर्** उप (सं) एक उपसर्ग, जिससे निषेध या दूषण-सूचक अर्थ निकलते हैं।

**दुर** पुं० (फा) १-नथ का मोती। २-कान की छोटी वाली। अव्य० (हि) दूर हो। (तिरस्कारपूर्वक)।

**दुरजन** पुं० (हि) दुर्जन।

**दुरथल** पुं० (हि) बुरी जगह।

**दुरद** पुं० (हि) द्विरद। हाथी।

**दुरदाम** वि० (हि) कठिन। कष्टसाध्य।

**दुरदाल** पुं० (हि) द्विरद। हाथी।

**दुरदुराना** क्रि० (हि) तिरस्कारपूर्वक दूर करना।

**दुरदृष्ट** पुं० (सं) १-दुर्भाग्य। २-अभागा। ३-पाप।

**दुरधिगम** वि० (स) १-दुर्लभ। २-दुर्जेय। ३-जो समझ से बाहर हो। दुर्बोध।

**दुरध्व** वि० (सं) जिस (मार्ग) पर चलना कठिन हो पुं० विकट या बीहड़ मार्ग।

**दुरना** क्रि० (हि) १-छिपना। २-आँखों के आगे से दूर होना।

**दुरपदी** स्त्री० (हि) द्रौपदी।

**दुरभिसंधि** स्त्री० (सं) बुरी नीयत से गुट बनाकर किया हुआ विचार।

**दुरभियोजन** पुं० (सं) हानि पहुँचाने के विचार से की जाने वाली गुप्त कारवाई (प्लॉट)।

**दुरभेव** पुं० (हि) १-बुरा भाव। २-मनमुटाव।

**दुरमति** स्त्री० वि० (हि) दुर्मति।

**दुरमुट** पुं० (हि) सड़क के कंकर पीटने का औजार।

**दुरलभ** वि० (हि) दुर्लभ।

**दुरवस्था** स्त्री० (सं) १-बुरी अवस्था या दशा। २-दुःख, कष्ट आदि की दशा।

**दुराग्रह** पुं० (सं) १-अनुचित हठ। २-अपने मत के ठीक सिद्ध न होने की अवस्था में उसपर डटे रहना

**दुराचरण** पुं० (सं) बुरा चालचलन।

**दुराचार** पुं० (सं) दुष्ट आचारण।

**दुराचारी** वि० (सं) [स्त्री० दुराचारिणी] दुष्ट आचरण वाला।

**दुराज** पुं० (हि) १-बुरा राज्य या शासन। २-एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। ३-वह स्थान जिस पर दो राजाओं का राज्य हो।

**दुराजी** वि० (हि) जिसमें दो राजा हों। पुं० दे० 'दुराज'।

**दुरात्मा** वि० (सं) नीचाशय।

**दुरादुरी** स्त्री० (हि) छिपाव। गोपन।

**दुराना** क्रि० (हि) १-दूर होना या करना। २-छिपना।

या छिपाना। २-(आँख, हाथ आदि अंगों को) नचाना। मटकाना।

दुराप वि० (सं) कठिनता से मिलने वाला

दुराराध्य वि० (सं) १-जिसको पूजना या सन्तुष्ट करना कठिन हो। २-असङ्गत।

दुराव पु०(हिं) १-छिपाव। भेदभाव। २-छल-कपट

दुराशय पुं० (सं) दुष्ट आशय। बुरी नीयत। वि० नीच। खोटा।

दुराशा स्त्री० (सं) झूठी आशा।

दुरासा स्त्री० (हिं) दुराशा।

दुरित पु० (सं) पाप। वि० [स्त्री० दुरिता] पापी।

दुरियाना क्रि० (हिं) १-दूर करना। २-दुरदुराना।

दुरुखा वि० (हिं) दो रुख वाला।

दुरुत्साहन पुं० (सं) किसी को बुरे काम के लिए उकसाना।

दुरुत्साहित वि०(सं) बुरे काम के लिए उकसाया हुआ

दुरुपयोग पुं० (सं) किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना।

दुरुपयोजन पुं० (सं) दुरुपयोग करना। (मिसऐप्रोप्रिएशन)।

दुरुस्त वि०(फा) १-ठीक। २-उचित। ३-यथार्थ। ४-जिसमें कोई त्रुटि न हो।

दुरुस्ती स्त्री० (फा) १-सुधार। २-संशोधन।

दुरूह वि० (सं) कठिन।

दुरूहता स्त्री० (सं) कठिनता।

दुर्गंध स्त्री० (सं) बदबू।

दुर्ग वि० सं) जिसमें पहुँचना कठिन हो। पुं० कोट। किला।

दुर्गत, दुर्गति स्त्री० (सं) दुर्दशा।

दुर्गपति, दुर्गपाल पुं० (सं) किलेदार।

दुर्गम वि० (सं) १-औघट। २-दुर्ज्ञेय। ३-विकट। कठिन।

दुर्गा स्त्री० (सं) १-आदि शक्ति। देवी। २-नौ वर्ष की कन्या।

दुर्गोत्सव पुं० (सं) नवरात्र में होने वाला दुर्गापूजा का उत्सव।

दुर्घट वि० (सं) कष्टसाध्य। जिसका होना कठिन हो।

दुर्घटना स्त्री० (सं) अशुभ तथा बुरी घटना। वारदात (एक्सीडेन्ट)।

दुर्घात पुं० (सं) १-बुरी तरह से किया जाने वाला घात। धोखे-बाजी।

दुर्जन पुं० (सं) खल। खोटा आदमी।

दुर्जय, दुर्जेय वि० (सं) जो शीघ्रता से जीता न जा सके।

दुर्ज्ञेय वि० (सं) जो कठिनता से जाना जा सके। दुर्बोध।

दुर्दम, दुर्दमनीय, दुर्दम्य वि० (सं) जिसका दमन करना या दबाना कठिन हो।

दुर्दर वि० दे० 'दुर्द्धर'।

दुर्दशा स्त्री० (सं) दुरवस्था। दुर्गति।

दुर्दान्त वि० (सं) जिसे दबाना बहुत कठिन हो।

दुर्दिन, दुर्दिवस पुं० (सं) १-बुरे दिन। २-मेघाच्छन्न दिन। ३-दुःख और कष्ट के दिन।

दुर्दैव पुं० (हि) दुर्भाग्य। बदकिस्मती।

दुर्धर्ष वि० (सं) जिसे वश में करना कठिन हो। उग्र। प्रबल।

दुर्द्धर वि (सं) जिसे पकड़ना कठिन हो। प्रबल।

दुर्नाम पुं० (हि) १-बदनामी। २-गाली।

दुर्निवार, दुर्निवार्य वि० (सं) १-जो सहसा न रोका जा सके। २-जिसका होना प्रायः निश्चित हो।

दुर्नीति स्त्री० (सं) १-बुरी नीति। २-बुरा आचरण। ३-अन्याय।

दुर्बल वि० (सं) १-शक्ति-हीन। कमजोर। २-क्षीण-काय। ३-कृश।

दुर्बलता स्त्री० (सं) १-कमजोरी। २-दुबलापन।

दुर्बुद्धि वि० (सं) १-दुष्ट बुद्धि वाला। २-मूर्ख।

दुर्बोध वि० (सं) जो जल्दी समझ में न आये। गूढ़।

दुर्भाग्य पुं० (हि) बदकिस्मती। वि० भाग्यहीन।

दुर्भाव पुं० (सं) १-बुरा भाव। २-भीतरी द्वेष।

दुर्भावना स्त्री० (सं) १-बुरी भावना। २-आशङ्का। कुविचार।

दुर्भाषा स्त्री० (सं) गाली-गलौज।

दुर्भिक्ष पुं० (सं) अकाल।

दुर्भिच्छ पुं० (हिं) दुर्भिक्ष। अकाल।

दुर्भेद, दुर्भेद्य वि० (सं) १-जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २-जिसे जल्दी पार न कर सकें।

दुर्मति वि० (सं) १-मन्द बुद्धि। २-मूर्ख। ३-दुष्ट। स्त्री० कुमति।

दुर्मद वि० (सं) १-अभिमानी। २-मदमत्त।

दुर्मर वि० (सं) १-जिसका मरना कठिन हो। २-उदार विचारों का घोर विरोध करने वाला। (डाईहार्ड)।

दुर्रा पुं० (फा० दुर्रः) चाबुक।

दुर्लंघ्य वि० (सं) जिसे लांघना या पार करना कठिन हो।

दुर्लक्ष्य वि० (सं) १-जो कठिनता से दिखाई पड़े। २-जिसका निशाना लगाना कठिन हो। ३-बुरी नीयत।

दुर्लभ वि० (सं) १-जिसे पाना सहज न हो। २-अनोखा। ३-प्रिय।

दुर्लभ-मुद्रा स्त्री० (सं) किसी देश विशेष की मुद्रा जिसके माल की मांग होनेपर भी व्यापार तुला उनके पक्ष में न होने के कारण उक्त मुद्रा पर्याप्त संख्या में प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करें।

(हार्ड-करेंसी)।
दुर्लभ-मुद्रा-क्षेत्र पुं० (सं) वह देश या देशों का क्षेत्र जिनकी मुद्रा सहज प्राप्त न हो सके। (हार्ड-करेंसी एरिया)।
दुर्ललित वि० (सं) १-जिसका रंग ढंग अच्छा न हो। २-बुरा।
दुर्लेख्य पुं० (सं) विधिक विचार से अप्रामाणिक या नियम विरुद्ध माना जाने वाला लेख। (इन-वैलिड-डीड)।
दुर्वचन पुं० (सं) गाली।
दुर्वह वि० (सं) जिसे वहन करना बहुत कठिन हो।
दुर्वाद पुं० (सं) १-गाली। २-बदनामी।
दुर्विनीत वि० (सं) उद्दंड। अशिष्ट।
दुर्विपाक पुं० (सं) १-अशुभ और दुःखदायी घटना २-बुरा परिणाम या फल।
दुर्वृत्त वि० (सं) दुराचारी।
दुर्वृत्त-फलक पुं० (सं) दुश्चरित्र व्यक्ति के कार-नामों का लेखा। (हिस्ट्री-शीट)।
दुर्वृत्त-सूची स्त्री० (सं) कुख्यात लोगों की सूची। (ब्लैक-लिस्ट)।
दुर्व्यवस्था स्त्री० (सं) कुप्रबन्ध।
दुर्व्यवहार पुं० (सं) १-बुरा बर्ताव। २-दुष्ट आचरण
दुर्व्यसन पुं० (सं) बुरा व्यसन। लत।
दुलकना क्रि० (हिं) १-बारबार बतलाना। २-कहकर मुकरना।
दुलकी स्त्री० (हिं) घोड़े की एक चाल।
दुलखना क्रि० दे० 'दुलकना'।
दुलड़ी स्त्री० (हिं) दो लड़ वाली माला या हार।
दुलत्ती स्त्री० (हिं) चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।
दुलदुल पुं० (अ) वह खच्चरी जिसे अस्कन्दरिया (मिस्र) के हाकिम ने मोहम्मदसाहब को भेंट की थी
दुलना क्रि० (हि) डोलना।
दुलभ वि० (हिं) दुर्लभ।
दुलरा वि० (हिं) दुलारा।
दुलराना क्रि० (हिं) १-बच्चों को बहलाकर प्यार करना। २-दुलारे बच्चों का सा व्यवहार या आचरण करना।
दुलरी स्त्री० (हिं) दुलड़ी।
दुलहन स्त्री० (हिं) नव-वधू।
दुलहा पुं० (हिं) १-वर। २-पति।
दुलही स्त्री० (हि) दुलहन।
दुलहेटा पुं० (हि) १-दुलारा बेटा। २-दुलहा।
दुलाई स्त्री० (हि) हलकी रूईदार रजाई।
दुलाना क्रि० (हि) डुलाना।
दुलार पुं० (हि) बच्चों को प्रसन्न करने की स्नेहपूर्ण चेष्टा। लाड़।
दुलारना क्रि० (हिं) लाड़ करना।
दुलारा वि० (हिं) (स्त्री० दुलारी) लाड़ला।
दुलारी वि० (हिं) लाड़ली। स्त्री० एक रोग।
दुलीचा, दुलैचा पुं० (हिं) गलीचा। कालीन।
दुलोही स्त्री० (हिं) दो टुकड़ों के जोड़ से बनने वाली एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ वि० (हिं) दुर्लभ।
दुव वि० (हिं) दो।
दुवन पुं० (हिं) १-दुर्जन। २-राक्षस। वि० बुरा। खराब।
दुवाज पुं० (हिं) एक तरह का घोड़ा।
दुवादस वि० (हिं) द्वादश।
दुवादस-बानी वि० (हिं) बारह बानी का। खरा।
दुवार पुं० (हि) द्वार।
दुवारिका स्त्री० (हिं) द्वारका।
दुवाल स्त्री० (फा) १-चमड़े का तस्मा। २-रिकाब में लगाने का तस्मा।
दुविद पुं० (हिं) द्विविद।
दुवो वि० (हि) दोनों।
दुशवार वि० (फा) १-कठिन। २-दुःसह।
दुशाला पुं० (हिं) दोहरी ऊनी चादर।
दुश्चक्र पुं० (सं) १-षड्यन्त्र। २-वह चक्र या क्षेत्र जिसके दोष बराबर बढ़ते चलें तथा जिससे छुट-कारा पाना कठिन हो। (विशस-सर्किल)।
दुश्चरित्र वि० (सं) [स्त्री० दुश्चरित्रा] बदचलन।
दुश्चिंता स्त्री० (सं) भारी फिक्र।
दुश्मन पुं० (फा) शत्रु।
दुश्मनी स्त्री० (फा) शत्रुता।
दुष्कर वि० (सं) दुःसाध्य।
दुष्कर्म पुं० (स) अनुचित कार्य।
दुष्कीर्ति स्त्री० (सं) अपयश।
दुष्ट वि० (सं) [स्त्री० दुष्टा] खल। दुर्जन।
दुष्टात्मा वि० (सं) मन में मैल रखने वाला। दुराशय
दुष्पार वि० (सं) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-जिसका पार या थाह पाना कठिन हो।
दुष्प्रयोग पुं० (सं) दुरुपयोग।
दुष्प्रवृत्ति स्त्री० (सं) दूषित प्रवृत्ति वाला व्यक्ति।
दुष्प्राप्य वि० (सं) सुगमता से न मिलने वाला।
दुष्प्रेक्ष वि० (सं) १-सुगमता से न दिखाई देने वाला। २-भीषण। भयंकर।
दुष्यंत पुं० (सं) एक पुरु वंशी राजा का नाम।
दुसराना क्रि० (हिं) दुहराना।
दुसरिहा वि० (हिं) १-साथी। संगी। २-प्रतिद्वन्द्वी।
दुसह वि० (हिं) असह्य।
दुसाध पुं० (हि) एक जाति का नाम।
दुसार, दुसाल पुं० (हि) आर-पार किया हुआ छेद। क्रि० वि० इस पार से उस पार तक। वि० कष्टदायक

**दुसाला** पुं० (हिं) दुशाला।
**दुसूती** स्त्री०(हिं) दोहरे सूत का बना कपड़ा या चादर
**दुसेजा** पुं० (हिं) बड़ी खाट। पलङ्ग।
**दुस्कर** वि० (हिं) दुष्कर।
**दुस्तम** वि० (हिं) दुस्तर।
**दुस्तर** वि० (सं) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-विकट।
**दुस्तर्क्य** वि० (सं) १-जिसके सम्बन्ध में तर्क करना। कठिन हो। २-जिसे तर्क द्वारा सिद्ध करना कठिन हो।
**दुस्सह** वि० (हिं) दुःसह।
**दुस्सेवा** स्त्री०(सं) हानि या अपकार करने वाला कार्य
**दुहता** पुं० (हिं) [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती
**दुहत्थड़** क्रि० वि० (हिं) दोनों हाथों से (मारना)। पुं० दो हाथों से किया जाने वाला प्रहार।
**दुहना** क्रि० (हिं) १-चौपाये के स्तन से दूध निचोड़-कर निकालना। २-सत्व या सार खैंचना। ३-खूब धन वसूल करना।
**दुहनी** स्त्री० (हिं) वह पात्र जिसमें दूध दुहा जाता है
**दुहरा** वि० (हिं) दोहरा।
**दुहाई** स्त्री० (हिं) १-घोषणा। पुकार। २-किसी को अपनी सहायता या रक्षा के लिए चिल्लाकर बुलाना ३-शपथ। ४-दूध दोहने का काम या मजदूरी।
**दुहाग** पुं० (हिं) १-दुर्भाग्य। २-वैधव्य।
**दुहागिन** स्त्री०(हिं) विधवा।
**दुहागिल** वि० (हिं) १-अभागा। २-अनाथ। ३-सूना। खाली।
**दुहाना** क्रि० (हिं) दूध निकलवाना।
**दुहावनी** स्त्री० (हिं) दूध दुहने की मजदूरी।
**दुहिता** स्त्री० (हिं) बेटी।
**दुहुँधा** क्रि० वि० (हिं) दोनों ओर से।
**दुहूँ** वि० (हिं) दोनों।
**दुहेल** पुं० (हिं) दुःख।
**दुहेला** वि० (हिं) [स्त्री० दुहेली] १-कष्टकर। २-कठिन ३-दुःखी। ४-दुःखपूर्ण। पुं० दुःख देने वाला काम
**दुहैया** वि० (हिं) दूध दुहने वाला। स्त्री० दे० 'दुहाई'
**दुहोतरा** वि० (हिं) दो अधिक।
**दूँद** पुं० दे० 'दुंद'।
**दूँदना** क्रि० (हिं) १-उपद्रव या ऊधम करना। २-घोर शब्द करना।
**दूँदर** वि० (हिं) शक्तिशाली।
**दूँदि** स्त्री० दे० 'दुंद'।
**दू** वि० (हिं) दो (संख्या)।
**दूआ** पुं० (हिं) १-दुक्की (ताश)। २-दुई। ३-दो से सम्बद्ध दाँव। वि० दूसरा।
**दूइज** स्त्री० (हिं) दूज।
**दूक** वि० (हिं) दो-एक। कुछ।
**दूकान** पुं० दे० 'दुकान'।
**दूख** पुं० (हिं) दुःख।
**दूखना** क्रि० (हिं) १-दोष लगाना। २-दुखना। ३-नष्ट होना।
**दूखित** वि० (हिं) १-दूषित। २-दुःखित।
**दूगन** वि० (हिं) दुगना।
**दूज** स्त्री० (हिं) प्रति पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया।
**दूजा** वि० (हिं) दूसरा।
**दूत** पुं० (सं) १-किसी कार्य या सन्देशा पहुँचाने वाला व्यक्ति। २-इधर-उधर की बातें लगाकर झगड़ा करने वाला व्यक्ति।
**दूत-कर्म** पुं० (सं) दूत का कार्य।
**दूतता** स्त्री० (सं) दूत का कार्य या भाव।
**दूतत्व** पुं० (सं) दूतता।
**दूतपन** पुं० (हिं) दूतता।
**दूतमंडल** पुं० (सं) किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।
**दूतर** वि० (हिं) दुस्तर। कठिन।
**दूताधिष्ठान, दूतायन, दूतावास** पुं० (सं) किसी देश के राजदूत का निवासस्थान और उसका कार्यालय
**दूति, दूतिका, दूती** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का समाचार पहुंचाती है। कुटनी।
**दूदुह** पुं० (हिं) दुन्दुभ।
**दूध** पुं० (सं) १-पय। दुग्ध। क्षीर। गोरस। २-अनाज के हरे बीजों का रस।
**दूधचढ़ी** वि० (हिं) जिसके स्तनों में दूध पहले से चढ़ गया हो।
**दूधपिलाई** स्त्री० (हिं) १-दूध पिलाने वाली। दाई। २-विवाह में माता पिता की ओर से वर को दूध पिलाने की एक रस्म। ३-दूध पिलाने का नेग।
**दूधपूत** पुं० (हिं) जन-धन।
**दूधभाई** पुं० (हिं) (स्त्री० दूध-बहन) एक ही स्त्री के स्तन का दूध पीने वाले अलग-अलग माता-पिता की सन्तान।
**दूधमुँहा, दूधमुख** वि० (हिं) १-दूध पीने वाला (बच्चा) २-जिसके दूध के दाँत भी न टूटे हों। अल्पवयस्क।
**दूधाभाती** स्त्री० (हिं) विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू दोनों अपने-अपने हाथ से एक दूसरे को भात खिलाते हैं।
**दूधिया** वि० (हिं) १-दूध मिला या दूध से बना। २-दूध के रङ्ग का। सफेद। पुं० १-एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर। २-खड़िया मिट्टी। ३-दुद्धि नामक एक घास।
**दून** स्त्री० (हिं) १-दुगने का भाव। २-गाने की गति अपेक्षाकृत दुगनी तेज हो जाना। (सङ्गीत)
**दूनर** वि० (हिं) लचकदार दोहरा हो जाने वाला।
**दूना** वि० (हिं) दुगुना।

**दूनी** *वि०* (हिं) दूना का स्त्रीलिङ्ग। *स्त्री०* दुनिया।
**दूनौ** *वि०* (हिं) दोनों।
**दूब** *स्त्री०* (हिं) एक घास।
**दू-बदू** *क्रि० वि०* (हिं) आमने-सामने। मुक़ाबले में
**दूबर, दूबरा, दूबला** *वि०* (हिं) (*स्त्री०* दूबरी) दुबला
**दूबा** *स्त्री०* (हिं) दूब नामक घास।
**दूभर** *वि०* (हिं) कठिन। दुःसाध्य।
**दूमना** *क्रि०* (हिं) हिलाना। कँपाना।
**दूमुहाँ** *वि०* (हिं) दो मुख वाला।
**दूरंदेश** *वि०* (फा) दूर की सोचने वाला।
**दूर** *क्रि० वि०* (सं) १-विस्तार, काल, सम्बन्ध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। २-फासले पर।
**दूरगामी** *वि०* (सं) दूर तक जाने वाला।
**दूरता** *स्त्री०* (सं) दूरी। फासला।
**दूरत्व** पुं० (सं) दूर होने का भाव। दूरी।
**दूरदर्शक** *वि०* (सं) दूर तक देखने वाला। पुं० पण्डित
**दूरदर्शक-यंत्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर देश स्थित पदार्थों अथवा व्यक्तियों के रूप या प्रतिबिम्ब का प्रतिभान हो। (टेलीवीजन)।
**दूरदर्शिता** *स्त्री०* (सं) १-दूर तक की बात सोचने का गुण या शक्ति। २-दूरदर्शी होने का भाव। दूरंदेशी
**दूरदर्शी** *वि०* (सं) अग्रसोची। दूरंदेश।
**दूर-पूर्व** पुं० (सं) एशिया के पूर्वी भाग के प्रदेश, जिसमें चीन, जापान, कोरिया आदि देश आते हैं (फार-ईस्ट)।
**दूर-प्रतिभास** पुं० (सं) दूर दर्शक-यन्त्र।
**दूर-प्रभावी** *वि०* (सं) जिसका प्रभाव दूर तक पड़े। (फार-रीचिङ्ग)।
**दूर-प्रहारी-तोप** *स्त्री०* (हिं) दूर तक मार करने वाली तोप। (लांगरेज-गन)।
**दूर-प्रेषक** पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
**दूर-प्रेषण** पुं० (सं) दूर-विक्षेपण।
**दूरबा** *स्त्री०* (हिं) दूब नामक घास।
**दूरबीन** *स्त्री०* (फा) वह यन्त्र जिसके द्वारा दूर की वस्तुएँ बहुत पास और स्पष्ट और बड़ी दिखाई देती हैं।
**दूरभाष-मिलान-केन्द्र** पुं० (सं) किसी नगर का दूरभाष कार्यालय जहाँ स्थानीय लोगों का परस्पर या बाहर के व्यक्तियों के साथ दूरभाष यन्त्र द्वारा बातचीत करने के निमित्त दोनों ओर के यन्त्रों में सम्बन्ध स्थापित करने की व्यवस्था होती है। (टेलीफोन एक्सचेञ्ज)।
**दूरमार-तोप** *स्त्री०* दे० 'दूर-प्रहरी-तोप'।
**दूरमुद्र, दूरमुद्रक** पुं०(सं) वह यन्त्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयम् टंकित (टाइप) हो जाते हैं। (टेलीप्रिंटर)।
**दूरवर्ती** *वि०* (सं) दूर का। जो दूर हो।
**दूर-विक्षेपक** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा एक स्थान पर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदि विद्युत तरंगों या प्रकाश लहरी आदि की सहायता से दूर-दूर तक फैलाता है।
**दूर-विक्षेपण** पुं० (सं) दूर विक्षेपक यन्त्र की सहायता से एक स्थान पर उत्पन्न ध्वनि आदि को प्रसारित करने या पहुँचाने की क्रिया। (ट्रांसमिशन)।
**दूर-विक्षेपण-केंद्र** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ से दूर विक्षेपक यन्त्र द्वारा कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। (ट्रांसमीटिंग-स्टेशन)।
**दूर-विक्षेपण-यंत्र** पुं० (सं) दूर-विक्षेपक।
**दूरवीक्षण, दूरवीक्षण-यंत्र** पुं०(सं) १-दूरबीन। २-टेलीविजन।
**दूरस्थ, दूरस्थित** *वि०* (सं) दूर का। दूर पर स्थित।
**दूरागत** *वि०* (सं) दूर से आया हुआ।
**दूरि** *क्रि० वि०* (हिं) दूर।
**दूरी** *स्त्री०* (हिं) अन्तर। फासला।
**दूरीकरण** पुं० (सं) दूर करना।
**दूरीप्रदर्शक, दूरी-मापक-यंत्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसकी सहायता से लक्ष्य या निशाने की दूरी का का अनुमान किया जाता है। (रेंज-फाइंडर)।
**दूर्वा** *स्त्री०* (सं) दूब नामक घास।
**दूर्वा-क्षेत्र** पुं० (सं) घर या बंगले आदि के आगे वह खुला भाग जिसमें घास आदि लगी हो। (लॉन)।
**दूलन** पुं० दे० 'दोलन'।
**दूलह** पुं० दे० 'दूल्हा'।
**दूलित** *वि०* दे० 'दोलित'।
**दूल्हा** पुं० (हिं) १-वर। २-पति।
**दूषक** *वि०* (सं) १-दूसरों पर दोष लगाने तथा उनकी निंदा करने वाला। २-दोष उत्पन्न करने वाला। (पदार्थ)।
**दूषण** पुं० (सं) १-दोष। ऐब। २-दोष या ऐब लगाना।
**दूषन** पुं० (हिं) दूषण।
**दूषना** *क्रि०* (हिं) दोष लगाना।
**दूषित** *वि०* (सं) १-जिसमें दोष हो। २-बुरा। खराब
**दूसना** *क्रि०* (हिं) दोष लगाना।
**दूसर, दूसरा** *वि०* (हिं) १-द्वितीय। २-अपर। अन्य।
**दूहना** *क्रि०* (हिं) दुहना।
**दूहनी** *स्त्री०* (हिं) दोहनी।
**दूहा** पु० (हिं) दोहा।
**दृक्** पुं० (सं) १-आँख। दृष्टि। २-देखना।
**दृक्क्षेप** पुं० (सं) दृष्टिपात।
**दृक्पथ** पुं० (सं) दृष्टिपथ।
**दृगंचल** पुं० (सं) १-पलक। २-चितवन।
**दृगंबु** पुं० (सं) आँसू।
**दृग** पु० (हिं) दृक्। आँख। दृष्टि।

**दृगमिचाव** पुं० (हिं) आँखमिचौनी।
**दृगोचर** वि० (सं) दृष्टिगोचर।
**दृढ़** वि० (सं) १-प्रगाढ़। २-पुष्ट। ३-ठोस। ४-बलवान। ५-हृष्टपुष्ट। ६-स्थायी। ७-निश्चित।
**दृढ़चेता** वि० (हिं) पक्के विचारों वाला।
**दृढ़ता** स्त्री० (सं) दृढ़ होने का भाव। मजबूती।
**दृढ़प्रतिज्ञा** वि० (हिं) अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहने वाला।
**दृढ़ाई** स्त्री० (हिं) दृढ़ता।
**दृढ़ाना** क्रि० (हिं) दृढ़ या पक्का होना या करना।
**दृढ़ायन** पुं० (सं) १-दृढ़ करना। २-पहले कही बात' काम, नियुक्ति आदि को पक्का करना। (कनफर्मेशन)।
**दृढ़ाव** पुं० (हिं) दृढ़ता।
**दृप्त** वि० (सं) १-गर्वित। २-तेजोयुक्त। ३-उग्र। ४-प्रज्वलित।
**दृप्ति** स्त्री० (सं) १-चमक। २-तेजस्विता। ३-प्रकाश ४-गर्व। ५-उग्रता।
**दृश्य** पुं० (सं) १-नजारा। २-तमाशा। ३-वह काव्य जो अभिनय के द्वारा दिखाया जाय। (नाटक)।
**दृश्य-काव्य** पुं० (सं) वह काव्य जो नाट्यशाला में अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय।
**दृश्य-जगत** पुं० (सं) संसार का वास्तविक रूप जो हमको दिखाई देता है। (फिनामेनल-वर्ल्ड)।
**दृश्यमान** वि० (सं) दिखाई देने वाला।
**दृश्याधार** पुं० (सं) १-वह जो किसी दृश्य का आधार हो। २-वह जिसमें कुछ देखा जाय।
**दृश्याभास** पुं० (सं) किसी दृश्य या चित्र का प्रतिबिम्ब अथवा आभास जो आँखें मूँद लेने पर सम्मुख विद्यमान सा प्रतीत होता है। (स्पेक्ट्रम)।
**दृश्यालेख्य** पुं० (सं) किसी घटना आदि के स्थान का रेखा चित्र। (साइट-प्लान)।
**दृष्ट** वि० (सं) १-देखा हुआ। २-जाना हुआ। ३-प्रत्यक्ष।
**दृष्टकूट** पुं० (सं) १-पहेली। २-वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से नहीं, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से निकलता हो।
**दृष्टबंधक** पुं० (हिं) रेहन का वह ढङ्ग जिसमें साहूकार को रहन रखी वस्तु के भोग अधिकार न हो।
**दृष्टमान** वि० (हिं) प्रकट। व्यक्त।
**दृष्टवाद** पुं०(सं) प्रत्यक्ष को मानने वाला सिद्धान्त।
**दृष्टव्य** वि० (सं) देखने योग्य।
**दृष्टसार** वि० (सं) जिसका बल देखा गया हो।
**दृष्टांत** पुं० (सं) १-उदाहरण। मिसाल। २-एक अर्थालङ्कार।
**दृष्टार्थ** पुं० (सं) १-वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो २-वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता है।
**दृष्टि** स्त्री० (सं) १-आँख की ज्योति। २-नजर। निगाह। ३-देखने में प्रवृत्त नेत्र।
**दृष्टिकूट** पुं० दे० 'दृष्ट-कूट'।
**दृष्टि-कोण** पुं० (सं) देखने, सोचने, विचारने का पहलू।
**दृष्टि-क्रम** पुं० (सं) चित्रित वस्तुओं में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर तथा ठीक मान में दिखाई देती है। (पर्सपेक्टिव)।
**दृष्टिगत** वि० (सं) जो दिखाई पड़ता हो।
**दृष्टिगोचर** वि० (सं) जो देखने में आवे।
**दृष्टि-परंपरा** स्त्री० (सं) दृष्टि-क्रम।
**दृष्टि-पात** पुं० (सं) देखना।
**दृष्टिबंध** पुं० (सं) नजरबन्दी।
**दृष्टि-बंधक** पुं० (हिं) बन्धक रखने का वह ढङ्ग जिसमें रुपये देने वाले को केवल सूद मिलता है, सम्पत्ति की आमदनी अथवा देख-रेख से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। (सिम्पल-मॉर्टगेज)।
**दृष्टिभ्रम** पुं० (सं) किसी ऐसी चीज का आभास होना जिसका वस्तुतः कोई बाह्य अस्तित्व न हो। भ्रान्ति। (हेलूसिनेशन)।
**दृष्टि-मांद्य** पुं० (सं) आँखों से कम दिखाई देना।
**दृष्टिवंत** वि० (हिं) १-बुद्धिमान्। २-दृष्टि वाला।
**दे** स्त्री० (हिं) स्त्रियों के लिए आदर-सूचक शब्द। देवी का संक्षिप्त रूप।
**देई** स्त्री० (हि) देवी।
**देउर** पुं० (हि) देवर।
**देउरानी** स्त्री० (हि) देवरानी।
**देख** स्त्री० (हिं) अवलोकन।
**देखन** स्त्री० (हि) १-देखने की क्रिया या भाव। २-देखने का ढङ्ग।
**देखनहारा** वि० [स्त्री० देखनहारी] देखने वाला।
**देखना** क्रि० (हिं) १-अवलोकन करना। २-निरीक्षण करना। ३-खोजना। ४-आजमाना। ५-निगरानी रखना। ६-समझना। ७-अनुभव करना ८-पढ़ना। ९-भोगना।
**देखभाल** स्त्री० (हिं) १-जाँच-पड़ताल। २-देख-रेख। निगरानी।
**देखराना, देखरावना** क्रि० (हिं) दिखलाना।
**देखरेख** स्त्री० (हिं) १-देखभाल। २-निरीक्षण।
**देखाऊ** वि० (हिं) १-जो केवल देखने के लिए हो। २-बनावटी।
**देखादेखी** स्त्री० (हिं) साक्षात्कार। क्रि० वि० अन्य को करते देखकर उसी के अनुकरण पर कोई कार्य करना।

**देखाना, देखावना** क्रि० (हि) दिखाना।

**देखिबी** क्रि० (हि) देखना है।

**देखौआ** वि० (हि) १-दिखावटी। २-बनावटी।

**देग** पुं० (फा) चौड़े मुँह और चौड़े पेट वाला एक तरह का बड़ा बरतन।

**देगचा** पुं० (फा० देगचः) [स्त्री० देगची] छोटा देग।

**देदिप्यमान** वि० (सं) चमकता हुआ।

**देन** स्त्री० (हि) १-देने की क्रिया या भाव। २-प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। ३-वह धन जो देने को हो। बाकी रकम। (लायबिलिटी)।

**देनदार** पुं०(हि) १-ऋणी। २-वह जिसके जिम्मे कुछ देना बाकी हो। (लायबुल)।

**देनलेन** पुं० (हि) कुछ लेने देने का व्यवहार।

**देनहार, देनहारा** वि० (हि) देने वाला।

**देना** क्रि० (हि) १-दान करना। २-सौंपना। ३-भोगना। ४-रखना, लगाना या डालना। ५-प्रहार करना। ६-किसी प्रकार पूरा करना। पुं० कर्ज।

**देमान** पुं० (हि) दीवान।

**देय** वि० (हि) १-जो दिया जा सके। २-दातव्य। ३-वह वस्तु जो किसी दूसरे को दी जा सकती हो (अलीनिएबुल)।

**देयक** पुं० (सं) वह पत्र जिससे बैंक से उसमें लिखित रुपया मिलता है। (चैक)।

**देयादेय-फलक** पुं० (सं) देना-पावना का संक्षिप्त लेखा। चिट्ठा। (बैलैंस-शीट)।

**देयादेश** पुं०(सं) धन देने का आदेश। (पे-आर्डर, पेमेंट आर्डर)।

**देयासी** वि० (हि) [स्त्री० देयासिन, देयासिनि] झाड़-फूँक करने वाला। ओझा।

**देर** स्त्री० (फा) १-विलम्ब। २-समय।

**देरानी** स्त्री० (हि) देवरानी।

**देरी** स्त्री० (हि) देर।

**देव** पुं० (सं) [स्त्री० देवी] १-देवता। सुर। २-पूज्य व्यक्ति। ३-बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द या सम्बोधन। ४-ब्राह्मणों की एक उपाधि। पुं० (फा) दैत्य।

**देवऋण** पुं० (सं) देवताओं के ऋण से मुक्त होने के लिए किये जाने वाले यज्ञादि धार्मिक कृत्य।

**देवऋषि** पुं० (सं) नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता समझे या माने जाते हैं।

**देव-कन्या** स्त्री० (सं) देवता की पुत्री।

**देवकपास** स्त्री० (हि) एक तरह की कपास। नरमा।

**देवकर्म, देवकार्य** पुं० (सं) देवताओं की तुष्टि के लिए किये जाने वाले हवन, पूजन आदि धार्मिक

**देवकी** स्त्री० (सं) श्रीकृष्ण की माता का नाम।

**देवकीनंदन** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**देवगज** पुं० (सं) ऐरावत नामक हाथी।

**देवगांधार** पुं० (हि) संपूर्ण जाति का एक राग।

**देवगुरु** पुं० (सं) बृहस्पति।

**देवगृह** पुं० (सं) मन्दिर।

**देवठान** पुं० दे० 'देवोत्थान'।

**देवता** पुं० (सं) सुर।

**देवत्व** पुं० (सं) देवता होने का भाव।

**देवदार** पुं० (हि) वृक्ष विशेष जिसमें अलकतरा और तारपीन जैसा तेल निकलता है।

**देवदासी** स्त्री० (सं) १-देवालय की नृत्तकी। २-वेश्या

**देवदूत** पुं० (सं) पैगम्बर।

**देवधरा** पुं० (हि) देवालय। मन्दिर।

**देवधुनि** स्त्री० (सं) गंगानदी।

**देवनागरी** स्त्री०(सं) वह लिपि जिसमें संस्कृत, मराठी, हिन्दी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

**देवपथ** पुं० (सं) आकाश।

**देवपुर** पुं० (सं) [स्त्री० देवपुरी] अमरावती।

**देववधू** स्त्री० (सं) १-देवांगना। २-अप्सरा।

**देवभाषा** स्त्री० (सं) संस्कृतभाषा।

**देवभू-देवभूमि** स्त्री० (सं) स्वर्ग।

**देवमंदिर** पुं० (सं) देवालय।

**देवयज्ञ** पुं०(सं) वह हवन जो गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञों में एक है।

**देवयानी** स्त्री० (सं) शुक्राचार्य की कन्या का नाम।

**देवयोनि** स्त्री० (सं) देवताओं की कोटि गिने जाने वाले विद्याधर, अप्सरा आदि जो दस उपदेव माने जाते हैं।

**देवर** पुं० (सं) [स्त्री० देवरानी] १-पति का छोटा भाई। २-पति का भाई।

**देवरा** पुं० (सं) १-छोटा देवता। २-देवालय।

**देवराज** पुं० (सं) इन्द्र।

**देवरानी** स्त्री० (हि) देवर की स्त्री।

**देवराय** पुं० (हि) देवराज। इन्द्र।

**देवर्षि** पुं० (सं) दे० 'देव-ऋषि'।

**देवल** पुं० (हि) १-देवालय। मन्दिर। २-एक तरह का धान या चावल।

**देव-लोक** पुं० (सं) स्वर्ग।

**देववधू** स्त्री० (सं) १-देवी। २-अप्सरा।

**देववाणी** स्त्री० (सं) १-संस्कृत भाषा। २-आकाशवाणी।

**देवसभा** स्त्री० (सं) १-देवताओं की सभा या समाज राज-सभा।

**देवस्थान** पुं० (सं) मन्दिर।

**देवांगना** स्त्री० (सं) १-अप्सरा। २-देवता की स्त्री।

**देवाधिदेव** पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव।

**देवान** पुं० (हि) १-दीवान। २-राजदरबार।
**देवानांप्रिय** पुं० (सं) १-देवताओं का प्रिय। २-राजा अशोक की एक उपाधि। ३-बकरा।
**देवाना** वि० (हि) दीवाना।
**देवानीक** पुं० (सं) देवताओं की सेना।
**देवायतन** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-मन्दिर।
**देवाराधन, देवार्चन** पुं० (सं) देवता का पूजन।
**देवार्पण** पुं० (सं) देवता के निमित्त किसी वस्तु का उत्सर्ग।
**देवाल** पुं० (हि) १-देने वाला। २-बेचने वाला।
**देवालय** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-देवमन्दिर।
**देवी** स्त्री० (सं) १-देवता की पत्नी। २-पटरानी ३-सदाचारिणी और सुशील स्त्री। ४-स्त्रियों के नाम के आगे लगने वाली एक आदर-सूचक उपाधि।
**देवेन्द्र** पुं० (सं) देवराज। इन्द्र।
**देवैया** वि० (हि) देने वाला।
**देवोत्तर** पुं० (सं) देवता का समर्पित धन या सम्पत्ति
**देवोत्थान** पुं० (सं) कार्त्तिक शुक्ला एकादशी को शेषनाग की शय्या पर सोकर उठना जो एक पर्व माना जाता है।
**देश** पुं० (सं) १-जनपद। २-स्थान। ३-राष्ट्र।
**देशज** वि० (सं) देश में उत्पन्न। पुं० वह शब्द जो किसी भाषा से न निकला हो बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से उत्पन्न हो गया हो।
**देश-द्रोह** पुं० (सं) १-देश को हानि पहुँचाने की वृत्ति। २-देश से द्रोह या वैर करने का भाव।
**देश-द्रोही** वि० (सं) देश से द्रोह करने या हानि पहुँचाने वाला।
**देश-धर्म** पुं०(हि) १-किसी देश में प्रचलित आचार-विचार। २-देश के अनुरूप धर्म।
**देश-निकाला** पुं० (हि) देश से निकाले जाने का दंड। निर्वासन।
**देशभक्त** पुं० (सं) देश का हित-चिंतन करने वाला व्यक्ति।
**देश-भक्ति** स्त्री० (सं) देशप्रेम।
**देश-भाषा** स्त्री० (सं) प्रादेशिक भाषा।
**देश-रक्षक-सेना** स्त्री० (सं) जानपद सैन्य। (मिलीशिया)।
**देशांतर** पुं० (सं) १-विदेश। २-उत्तर और दक्षिण ध्रुव को मिलाने वाली रेखा से पूर्व या पश्चिम की की दूरी (भूगोल)।
**देशांतर-गमन** पुं० (सं) बीच के देश या समुद्र आदि लाँघकर दूसरे देश में चले जाना। (ट्रांसमाइग्रेशन)।
**देशाचार** पुं० (सं) किसी देश में प्रचलित रीति-रिवाज।
**देशाटन** पुं०(सं) दूर-दूर के देशों में भ्रमण।
**देशी** वि० (हि) १-देश का। २-स्वदेश संबन्धी। ३-स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ।
**देशीय** वि० (सं) देशी।
**देशीराज्य** पुं० (सं) परतंत्र भारत में राजाओं की रियासतें।
**देसंतर** पुं० (हि) देशांतर।
**देस** पुं० (हि) देश।
**देसवाल** वि० (हि) अपने देश का।
**देसवार** पुं० (हि) विदेश। परदेश।
**देसावरी** वि० (हि) दूसरे देश से आया हुआ। विदेशी।
**देसी** वि० (हि) देशी।
**देह** स्त्री० (सं) १-शरीर। २-शरीर का कोई अंग।
**देहज** पुं० (सं) (स्त्री० देहजा) पुत्र।
**देहत्याग** पुं० (सं) देहावसान। मृत्यु।
**देहधारण** पुं० (सं) १-जन्म। २-जीवन रक्षा।
**देहधारी** पुं० (सं) (स्त्री० देहधारिणी) शरीर धारण करने वाला। शरीरी।
**देहपात** पुं० (सं) मृत्यु। देहांत।
**देहरा** पुं० (हि) १-देवालय। २-मानव शरीर। ३-देहरादून नगर।
**देहरी** स्त्री० (हि) देहली (घर की)।
**देहली** स्त्री० (सं) १-दरवाजे में चौखट के नीचे की वह लकड़ी या पत्थर जिसे लाँघने हुए लोग भीतर घुसते हैं। दहलीज। २-भारत देश की राजधानी।
**देहली-दीपक** पुं० (सं) १-देहली पर रखा दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है।
**देहली-दीपक-न्याय** पुं० (सं) देहली पर रखे दीपक के समान दोनों ओर लगने वाली बात।
**देहवंत, देहवान** वि० = शरीर वाला।
**देहांत** पुं० (सं) मृत्यु। मरण।
**देहांतर** पुं० (सं) दूसरा शरीर।
**देहांतर-प्रवेश** पुं० (सं) (आत्मा का) एक देह त्याग कर अन्य देह धारण करना। (ट्रांसमाइग्रेशन)।
**देहांतर-प्राप्ति** स्त्री० (सं) देहांतर-प्रवेश।
**देहात** पुं० (हि) गाँव।
**देहाती** पुं० (हि) ग्रामीण। ग्रामवासी। वि० १-देहात का। २-गँवार।
**देहातीपन** पुं० (हि) देहाती या ग्रामीण होने का भाव।
**देहात्मवाद** पुं० (सं) शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत।
**देहाध्यास** पुं० (सं) देह धर्म को ही आत्मा समझने का भ्रम।

**देहावरण** पुं० (सं) १-जिरह। २-वस्त्र।
**देहावसान** पुं० (सं) देहांत। मृत्यु।
**देहियां, देही** स्त्री० (हि) शरीर। पुं० देहधारी जीव।
**दै** अव्य० (हि) से।
**दैग्र** पुं० (हि) दैव।
**दैग्रा** स्त्री० (हि) दैया।
**दैउ** पुं० (हि) दैव।
**दैत्य** पुं० (सं) १-असुर। राक्षस। २-अत्यन्त बलशाली एवं भीमकाय।
**दैत्यारि** पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-देवता।
**दैनंदिन** वि० (हि) प्रतिदिन होने वाला। नित्य का।
**दैनंदिनी** स्त्री० (सं) दिनभर के कार्य लिखने की पुस्तिका। (डायरी)।
**दैन** वि० (हि) दायक।
**दैनदिन** क्रि० वि० (सं) १-प्रतिदिन। २-दिनोदिन। वि० नित्य का।
**दैनिक** वि० (सं) १-प्रतिदिन का। २-प्रतिदिन होने या निकलने वाला। ३-दिन-सम्बन्धी।
**दैनिक-पंजी** स्त्री० (सं) १-दैनन्दिनी। डायरी। २-रोजनामचा।
**दैनिक-पत्र** पुं० (सं) प्रतिदिन निकलने वाला समाचार-पत्र।
**दैनिकी** स्त्री० (सं) १-प्रतिदिन होने वाली घटनाओं का विवरण। (डेली-रिपोर्ट)। २-दैनन्दिनी। (डायरी)।
**दैन्य** पुं० (सं) १-दीनता। २-कातरता। ३-एक संचारी भाव।
**दैयत** पुं० (हि) दैत्य।
**दैया** पुं० (हि) दैव। ईश्वर। स्त्री० माता।
**दैव** वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता या ईश्वर का किया हुआ। पुं० १-प्रारब्ध। भाग्य। २-होनहार। ३-ईश्वर। ४-आकाश।
**दैवकृत** वि० (सं) ईश्वर का किया हुआ।
**दैवगति** स्त्री० (सं) १-ईश्वरीय प्रेरणा। २-भाग्य।
**दैवज्ञ** पुं० (सं) ज्योतिषी।
**दैवत** वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता या ईश्वर का किया हुआ।
**दैवयोग** पुं० (सं) संयोग। इत्तिफाक।
**दैववश, दैववशात्** क्रि० वि० (सं) अकस्मात्।
**दैववाणी** स्त्री० (सं) १-आकाशवाणी। २-संस्कृत।
**दैववाद** पुं० (सं) १-नियतिवाद। २-'सब कुछ भाग्य के अनुसार होता है' इस प्रकार मानने वाला सिद्धान्त।
**दैववादी** वि० (सं) १-दैव को ही प्रधान करता मानने वाला। २-भाग्य के भरोसे रहने वाला।
**दैव-विवाह** पुं० (सं) आठ प्रकार के विवाह में से वह जिसमें यज्ञ करने वाला पुरोहित का अपनी कन्या देता है।
**दैवहीन** वि० (सं) भाग्यहीन।
**दैवागत** वि० (सं) आकस्मिक।
**दैवात्** क्रि० वि० (सं) दैवयोग से। अकस्मात्।
**दैविक** वि० (सं) १-देवता सम्बन्धी। २-देवता के लिए किया हुआ। ३-देवकृत्य।
**दैशिक** वि० (सं) १-देश सम्बन्धी। २-देश-जनित।
**दैहिक** वि० (सं) १-देह सम्बन्धी। २-देह से उत्पन्न
**दोंकना** क्रि० (देश) गुर्राना।
**दोंच** स्त्री० (हि) १-असमंजस। २-कष्ट। ३-दबाये जाने का भाव।
**दोंचन** स्त्री० (हि) दोंचना।
**दोंचना** क्रि० (हि) १-दबाव में डालना। २-दबाव डालकर पिटाई करना।
**दो** वि० (हि) एक और एक। '२'।
**दो-अमली** स्त्री० (हि) द्वैध शासन।
**दोआब, दोआबा** पुं० (फा) आपस में मिलने वाली दो नदियों के बीच की भूमि या प्रदेश।
**दोउ, दोऊ** वि० (हि) दोनों।
**दोख** पुं० (हि) दोष।
**दोखना** क्रि० (हि) दोष लगाना।
**दोखिल** वि० (हि) १-दोषी। २-दूषित।
**दोखी** पुं० (हि) दोषी।
**दोगला** वि० [फा० दोगलः] [स्त्री० दोगली] वर्णसङ्कर।
**दोगा** पुं० (देश) १-दो परत मोटे कपड़े का लिहाफ। २-पानी में घोला हुआ चूना जिसमें मकान की दीवारों पर कलई या सफेदी की जाती है।
**दोगाना** पुं० (हि) दो व्यक्तियों द्वारा गाया जाने वाला गाना, जिसमें गाने का कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा और कुछ ... द्वारा क्रमानुसार गाया जाता है। (डुएट)।
**दोगुना** वि० (हि) दुगना।
**दोघड़िया, दोघड़िया महूर्त** पुं० (हि) बहुत जल्दी होने की अवस्था में तुरन्त निकाला जाने वाला मुहूर्त।
**दोच** स्त्री० दे० 'दोंच'।
**दोचन** स्त्री० दे० 'दोंचना'।
**दोंचना** क्रि० दे० 'दोंचना'।
**दोचंद** वि० (हि) दुगना।
**दोचित्ता** वि० (हि) [स्त्री० दो चित्ती] जिसका ध्यान इधर-उधर लगा हो।
**दोज** स्त्री० (हि) द्वितीय। दूज।
**दोजख** पुं० (फा) नरक।
**दोजखी** पुं० (फा) पापी। नारकी।
**दोजग** पुं० (हि) दोजख। नरक।
**दोटूक** वि० (हि) खरा। साफ-साफ।

**दोतरफा** *क्रि० वि०* (फा) दोनों ओर से। *वि०* १-दोनों ओर होने वाला। २-दोनों ओर लगने वाला।
**दो-तला, दो-तल्ला** *वि०* (सं) १-दो तल्लों वाला। २-दो मञ्जिला।
**दोतारा** पुं० (हिं) एक तरह का बाजा।
**दोधक** पुं० (सं) बन्धु नामक छन्द का एक नाम।
**दोधारा** *वि०* (हि) जिसमें दोनों तरफ धार हों।
**दोन** पुं० (हि) १-तराई। दून। २-दोआबा।
**दो-नली** *वि०* (हिं) (वह बन्दूक) जिसमें दो नालें हों।
**दोना** पु० (हिं) [*स्त्री०* दोनिया, दोनी] कटोरे जैसा पत्तों का बना पात्र।
**दोनों** *वि०* (हिं) ऐसे दो जिनमें से कोई छोड़ा न जाय। उभय।
**दोपहर** पुं० (हि) मध्याह्न काल।
**दोपहरिया** *स्त्री०* (हि) दोपहर। मध्याह्न। *वि०* (हि) दोपहर का। दोपहर से सम्बन्ध रखने वाला।
**दोपहरी** *स्त्री०* (हिं) दोपहर। मध्याह्न।
**दोपीठा** *वि०* (हिं) १-दो-रुखा। २-दोनों ओर लिखा या छपा कागज।
**दो-फसली** *वि०* (हिं) जिसमें दो फसलें पैदा की जायें
**दोबल** पुं० (हि) दोष। लाञ्छन।
**दोबा** पुं० (हिं) दो स्थितियों के मध्य की अवस्था। दुविधा।
**दोबारा** *क्रि० वि०* (फा) दूसरी बार। एक बार और।
**दोमंजिला** *वि०* (हिं) दो खण्ड या तल्लों वाला।
**दोमुँहा** *वि०* (हिं) जिसके दो मुँह हों।
**दो-मुँहा-साँप** पुं० (हि) १-एक प्रकार का साँप जो छः मास तक एक मुँह की ओर से और छः मास तक दूसरे मुँह की ओर से चलता है। २-वह व्यक्ति जो दो प्रकार बातें करे। कपटी मनुष्य।
**दोय** *वि०* (हि) १-दोनों। २-दो।
**दोयम** *वि०* (फा) दूसरे दर्जे या श्रेणी का।
**दो-रंगा** *वि०* (हिं) [*स्त्री०* दो रङ्गी] १-दो रङ्गों वाला। २-दुरङ्गा।
**दोर** पुं० (हि) द्वार। दरवाजा। *स्त्री०* दौड़।
**दोरदंड** *वि०* (हि) दुर्दण्ड।
**दो-रसा** *वि०* (हि) दो तरह के रस या स्वाद वाला।
**दोराहा** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।
**दोरी** *स्त्री०* (हि) डोरी। रस्सी।
**दो-रुखा** *वि०* (फा) (*स्त्री०* दो-रुखी) १-जिसके दोनों ओर एक जैसे रङ्ग या बेल-बूटे हों। २-जिसके एक तरफ एक रङ्ग और दूसरी ओर दूसरा रङ्ग हो। ३-कभी एक तरह का कभी दूसरी तरह का। (व्यवहार आदि में)।
**दोल** पुं० (सं) १-झूला। २-डोली।
**दोलत्ती** *स्त्री०* (हि) दुलत्ती।
**दोलन** पुं० (सं) झूलना।
**दोला** *स्त्री०* (सं) १-झूला। २-डोली।
**दोलायमान** *वि०* (सं) झूलता हुआ।
**दोलायित, दोलित** *वि०* (सं) [*स्त्री०* दोलिता] १-झूलता हुआ। २-अस्थिर।
**दोष** पुं० (सं) १-अवगुण। खराबी। २-अपराध। ३-पाप। ४-शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके बिगड़ने या कुपित होने से व्याधि उत्पन्न होती है। ५-अपूर्णता। त्रुटि। ६-योग। पुं० (हिं) द्वेष।
**दोषन** पुं० (हि) दोष।
**दोषना** *क्रि०* (हि) १-दोष लगाना। २-अपराध लगाना।
**दोषकर, दोषकारी, दोषकृत** *वि०* (सं) अनिष्ट करने वाला।
**दोष-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिस पर अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा होता है।
**दोष-प्रमाणित** *वि०* (सं) जिसका अपराध न्यायालय द्वारा प्रमाणित हो गया हो। (कॉनविक्टेड)।
**दोषमार्जन** पुं०(सं) दोष या अपराध से मुक्त करने का भाव। (एक्सकल्पेट)।
**दोष-मार्जन-पत्र** पुं० (स) वह पत्र या कागज जिस-पर किसी अपराधी के दोषों से मुक्त करने का विवरण लिखा होता है। (एक्सकल्पेशन-लैटर)।
**दोष-वेचक** पु० (स) पत्र, पुस्तक, फिल्म आदि में से आपत्तिजनक अंश निकाल देने का काम या भाव। (सेंसर)।
**दोष-वेचन** पुं० (सं) पत्र, पुस्तक, फिल्म आदि में निरीक्षण के बाद आपत्तिजनक अंश निकालना। (सेंसर-शिप)।
**दोष-सिद्ध** *वि०* (सं) दोष-प्रमाणित।
**दोष-सिद्धि** *स्त्री०* (सं) अपराधी का दोष प्रमाणित हो जाना। (कॉनविक्शन)।
**दोषा** *स्त्री०* (सं) रात्री।
**दोषाकर** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**दोषारोपण** पु० (सं) दोष लगाना।
**दोषित** *वि०* (हि) दोषयुक्त।
**दोषिन** *स्त्री०* (हि) १-अपराधिनी। २-पाप करने वाली स्त्री।
**दोषिल** *वि०* (हि) दूषित।
**दोषी** पुं० (सं) १-जिसमें दोष हो। २-अपराधी। ३-पापी। अभियुक्त।
**दोस** पुं० (हि) दोष।
**दोसदारी** *स्त्री०* (हि) दोस्ती। मित्रता।
**दोसा** *स्त्री०* (हि) १-रात्री। २-भुजा।
**दोस्त** पुं० (फा) मित्र।

**दोस्ताना** पुं० (फा) १-मित्रता। २-मित्रता का व्यवहार। वि० मित्रता का।
**दोस्ती** स्त्री० (फा) मित्रता।
**दोह** पुं० (हि) द्रोह।
**दोहग** पुं० (हि) दुर्भाग्य।
**दोहता** पुं० (हि) [स्त्री० दोहती] नाती।
**दोहत्थड़** स्त्री० (हि) दोनों हाथों से मारा जाने वाला प्रहार।
**दोहद** स्त्री० (सं) १-गर्भवती स्त्री की इच्छा। २-गर्भावस्था। ३-गर्भ। ४-गर्भ का चिह्न।
**दोहद-लक्षण** पुं० (सं) गर्भ के लक्षण।
**दोहदवती** स्त्री० (सं) गर्भवती।
**दोहन** पुं० (सं) १-दुहना। २-दोहनी।
**दोहना** क्रि० (हि) १-दोष निकालना। २-तुच्छ ठहराना। ३-दुहना।
**दोहनी** स्त्री० (सं) १-दूध दुहने का पात्र। २-दूध निकालने की क्रिया।
**दोहर** स्त्री० (हि) दो परतों वाली चादर।
**दोहरना** क्रि० (हि) १-दोहराना। २-दुहरा करना।
**दोहरा** वि० (हि) [स्त्री० दोहरी] १-दो तह या परत वाली। २-दुगना। पुं० दोहा।
**दोहराई** स्त्री० (हि) १-दोहराने की क्रिया या भाव। २-दोहराने की मजदूरी।
**दोहराना** क्रि० (हि) १-पुनरावृत्ति करना। २-किसी कृतकार्य को जाँचने के विचार से पुनः देखना। ३-कपड़े कागज आदि की तहें करना।
**दोहा** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध मात्रिक छंद।
**दोहाई** स्त्री० (हि) दुहाई।
**दोहाग, दोहाग** पुं० (हि) दुर्भाग्य।
**दोहित** पुं० (हि) दौहित्र। नाती।
**दोहिला** वि० (हि) [स्त्री० दोहिली] कठिन।
**दोही** स्त्री० (हि) दुहाई।
**दौं** अव्य० (हि) १-या। अथवा। २-दे० 'औं'।
**दौकना** क्रि० (हि) दमकना।
**दौंचना** क्रि० (हि) दोंचना।
**दौंरी** स्त्री० (हि) दँवरी। दाँय।
**दौ** स्त्री० (हि) १-आग। २-दावानल। ३-सन्ताप। ४-जलन।
**दौड़** स्त्री० (हि) १-दौड़ने या भागने की क्रिया या भाव। २-धावा। ३-प्रयत्न में इधर उधर फिरने की क्रिया। ४-दौड़ने की प्रतियोगिता। ५-प्रयत्न में इधर-उधर फिरने की क्रिया। ६-पहुँच। ७-विस्तार। ८-अपराधियों को पकड़ने के लिए सिपाहियों का तीव्र गति से जाना।
**दौड़धूप** स्त्री० (हि) १-वह प्रयत्न या उद्योग जिसमें इधर-उधर दौड़ना पड़े। २-जोरदार प्रयत्न।
**दौड़ना** क्रि० (हि) १-भागना। द्रुतगति से जाना। २-उद्योग करना।
**दौड़हा** पुं० (हि) हरकारा।
**दौड़ादौड़** क्रि० वि० (हि) बिना रुके हुए। दौड़ते हुए।
**दौड़ान** स्त्री० (हि) १-दौड़। २-दौड़ने का क्रम।
**दौड़ाना** क्रि० (हि) किसी को दौड़ने में प्रवृत्त करना
**दौतिक** वि० (सं) कूटनीतिक। (डिप्लोमेटिक)।
**दौतिक-प्रत्यावेदन** पुं० (सं) कूटनीतिक प्रतिनिधित्व (डिप्लोमेटिक-रिप्रेजेंटेशन)।
**दौतिक-संवाददाता** पुं० (सं) राजनैतिक संवाददाता
**दौतिक-समवाय** पुं० (सं) अन्तर्राज्यनैतिक संस्था। (डिप्लोमेटिक-बॉडी)।
**दौतिक-सेवा** स्त्री० (सं) अन्तर्राज्यनैतिक सेवा। (डिप्लोमेटिक सर्विस)।
**दौत्य** पुं० (सं) १-दूत का काम। २-दूत का। दूत-सम्बन्धी।
**दौन** पुं० (हि) दमन।
**दौना** पुं० (हि) १-एक पौधा। २-दे० 'दोना'। क्रि० दमन करना।
**दौनागिरि, दौनाचल** पुं० दे० 'द्रोणाचल'।
**दौर** पुं० (अ) १-चक्कर। भ्रमण। फेरा। २-उन्नति या वैभव के दिन। ३-बारी। ४-दे० 'दौरा'।
**दौरना** क्रि० (हि) दौड़ना।
**दौरा** पुं० (अ) १-चक्कर। भ्रमण। २-इधर-उधर आना जाना। ३-निरीक्षण आदि के लिए अधिकारी का अपने क्षेत्र में घूमना। ४-समय-समय पर होने या उभरने वाले रोग का आक्रमण। पुं० (हि) टोकरा।
**दौराजज** पुं० (हि) सत्र-न्यायालय का प्रमुख विचारपति।
**दौरात्म्य** पुं० (सं) दुरात्मा होने का भाव या काम।
**दौरादौर** क्रि० वि० (हि) १-लगातार। २-तेजी से।
**दौरादौरी** स्त्री० (हि) दौड़ादौड़ी।
**दौरान** पुं० (फा) १-दौरा। चक्र। २-दो घटनाओं के मध्य का समय। ३-भाग्य। ४-हेरफेर।
**दौराना** क्रि० (हि) दौड़ाना।
**दौरी** स्त्री० (हि) छोटी टोकरी।
**दौर्गन्ध्य** वि० (सं) बदबू।
**दौर्जन्य** पुं० (सं) दुर्जनता।
**दौर्बल्य** पुं० (सं) दुर्बलता।
**दौर्भाग्य** पुं० (सं) दुर्भाग्य।
**दौर्मनस्य** पुं० (सं) मन का खोटापन।
**दौर्हार्द** पुं० (सं) शत्रुता।
**दौलत** स्त्री० (अ) धन। संपत्ति।
**दौलतखाना** पुं० (फा) घर। निवासस्थान।
**दौलतमंद** वि० (सं) धनवान।
**दौलति** स्त्री० (हि) दौलत। धन। सम्पत्ति।
**दौवारिक** पुं० (सं) [स्त्री० दौवारिकी] द्वारपाल।

**दौष्यिक** पुं० (सं) कपड़ा बेचने वाला। बजाज।
**दौहित्र** पुं०(सं) [स्त्री० दौहित्री] पुत्री का पुत्र। नाती
**द्याना, द्यावना** क्रि० (हि) दिलाना।
**द्यु** पुं० (स) १-दिन। २-आकाश। ३-स्वर्ग। ४-अग्नि। ५-सूर्यलोक।
**द्युति** स्त्री० (सं) १-चमक। २-शोभा।
**द्युतिमान** वि० (स) [स्त्री० द्युतिमती] चमकीला।
**द्युलोक** पुं० (सं) स्वर्गलोक।
**द्यूत** पुं० (सं) जूआ।
**द्यूतकार, द्यूतकारक** पुं० (स) १-जूआ खिलाने वाला। २-जुआरी।
**द्यूतक्रीड़ा** स्त्री० (सं) जुए का खेल।
**द्यूतवृत्ति** स्त्री० (सं) जूआ खेलने की लत।
**द्योतक** पुं० (सं) १-प्रकाशक। २-सूचक।
**द्योतन** पुं० (सं) १-प्रकाश। २-प्रकाशन। ३-प्रकाशक। ४-सूचित करना।
**द्योस** पुं० (हि) दिवस। दिन।
**द्योहरा** पुं० (हि) देवालय।
**द्यौ** पुं०(सं) १-स्वर्ग। २-आकाश।
**द्यौस** पुं० (हि) दिवस। दिन।
**द्रग** पुं० (हि) दृग। नेत्र।
**द्रव** वि० (सं) १-तरल। २-गीला। ३-गला या पिघला हुआ।
**द्रवण** पुं० (सं) १-पिघलना। २-बहना। ३-रिसना ४-दयार्द्र होना।
**द्रवण-शील** वि० (सं) पिघलने वाला।
**द्रवणांक** पुं० (सं) ताप की वह सीमा जिस पर ठोस वस्तुएं पिघलने लगती हैं। (मेल्टिंग पॉइंट)।
**द्रवना** क्रि०(हि) १-पिघलना। २-पसीजना। ३-तरल होना।
**द्रविड़** पुं० (सं) १-दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो उड़ीसा के दक्षिण पूर्वीय सागर के किनारे रामेश्वर तक है। २-इस प्रदेश का रहने वाला। ३-ब्राह्मणों का एक वर्ग।
**द्रवित, द्रवीभूत** वि० (सं) १-पिघला हुआ। २-जो द्रव होगया हो। ३-दयार्द्र। पसीजा हुआ।
**द्रव्य** पुं० (सं) १-वस्तु। पदार्थ। २-सामग्री। सामान। उपादान। ३-धन। दौलत।
**द्रव्यवाचक** वि० (सं) जिससे द्रव्य का बोध हो।
**द्रव्यमय** वि० (सं) १-किसी द्रव्य का बना हुआ। २-धन-संपत्ति से परिपूर्ण।
**द्रष्टव्य** वि० (सं) १-दर्शनीय। २-विचारणीय। ३-जो दिखाया जाने को हो। ४-नयनाभिराम।
**द्रष्टा** पुं० (सं) आत्मा।
**द्राक्ष-शर्करा** स्त्री० (सं) दे० 'द्राक्षा-शर्करा'।
**द्राक्षा** स्त्री० (सं) १-दाख। अंगूर। २-मुनक्का।
**द्राक्षा-शर्करा** स्त्री०(सं) दाख या अंगूर के रस की बनी चीनी। (ग्लुकोज)।
**द्राव** पुं० (सं) १-गमन। २-गलने या पिघलने की क्रिया।
**द्रावक** वि० (सं) [स्त्री० द्राविका] १-तरल बनाने वाला। २-गलाने या पिघलाने वाला। ३-दया या करुणा उत्पन्न करने वाला।
**द्रावण** पुं० (सं) १-गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव। २-वह पारदर्शी या समरूप जो पानी मद्यसार आदि में किसी स्थूल या अन्य द्रव पदार्थ के घुलमिल जाने से बनता है। (सॉल्यूशन)। ३-मिश्रण। घोल।
**द्राविड़** वि० (सं) [स्त्री० द्राविड़ी] १-द्रविड़ सम्बन्धी २-द्रविड़ देश का।
**द्राविड़-प्राणायाम** पुं० (स) सरल और सीधे ढंग से किये जाने वाले काम को टेढ़ा बनाकर करना।
**द्राविड़ी** वि० (सं) द्रविड़ सम्बन्धी।
**द्रुत** वि०(सं) १-शीघ्रगामी। तेज। २-द्रवीभूत। पुं० १-सङ्गीत में ताल की मात्रा का आधा। २-संगीत में मध्यम से कुछ तेज लय।
**द्रुत-गति** वि० (सं) तीव्र गति वाला।
**द्रुतगामी** वि० (सं) तेज चलने वाला।
**द्रुतविलंबित** पुं० (सं) एक वर्णवृत्त।
**द्रुतं** क्रि० वि० (हि) शीघ्रता से।
**द्रुम** पुं० (सं) वृक्ष।
**द्रोण** पुं० (सं) १-कठवत। २-सोलह सेर की एक प्राचीन तौल। ३-बड़ी नाव। ४-पत्तों का दौना। ५-दे० 'द्रोणाचार्य'।
**द्रोणगिरि** पुं० (सं०) द्रोणाचल।
**द्रोणाचार्य** पुं० (स) कौरवों और पाण्डवों को अस्त्र-विद्या की शिक्षा देने वाले गुरु।
**द्रोणाचल** पुं० (सं) वह पर्वत जिस पर हनुमानजी को संजीवनीबूटी लाने के लिए भेजा गया था।
**द्रोणि, द्रोणी** स्त्री० (स) १-डोंगी। नाव। २-छोटा दौना। ३-काठ का थाल। कठवत। ४-दो पहाड़ों के मध्य की भूमि। दून। ५-दरी।
**द्रोन** पुं० (हि) द्रोण।
**द्रोह** पुं० (सं) वैर। द्वेष।
**द्रोही** वि० (स) [स्त्री० द्रोहिणी] १-द्रोह करने वाला। २-विद्रोह करने वाला।
**द्रौपदी** स्त्री० (सं) राजा द्रुपद की कन्या। पांचाली।
**द्वंद** पुं० (सं) १-युग्म। जोड़ा। २-प्रतिद्वन्द्वी। ३-द्वन्द्वयुद्ध। ४-झगड़ा। कलह। ५-उलझन। ६-कष्ट ७-उपद्रव। ८-गुप्त बात। ९-भय। १०-दुविधा।
**द्वंदर** वि० (हि) झगड़ा करने वाला।
**द्वंद्व** पुं० (स) १-दे० द्वन्द्व। २-एक प्रकार का समास
**द्वंद्व-युद्ध** पुं० (सं) कुश्ती।
**द्वय** वि० (सं) दो।

**द्वयता** *स्त्री०* (सं) १-दो का भाव। द्वैत। २-भेदभाव।
**द्वात** *स्त्री०* (हि) दावत।
**द्वादश** *वि०* (सं) १-बारह। २-बारहवाँ।
**द्वादशबानी** *वि०* (हि) बारहबानी।
**द्वादशाह** *पुं०*(सं) १-बारहवें दिन होने वाला श्राद्ध २-बारह दिनों का समुदाय।
**द्वादशी** *स्त्री०* (सं) प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि।
**द्वादस-बानी** *वि०* दे० 'बारहबानी'।
**द्वापर** *पुं०* (सं) चार युगों में से तीसरा युग।
**द्वार** *पुं०* (सं) १-मुख। २-दरवाजा। ३-उपाय। साधन। ४-इन्द्रियों के मार्ग या छेद, जैसे, नाक, आँख, कान आदि।
**द्वारका** *स्त्री०* (सं) गुजरात काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी जो हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ-स्थान है।
**द्वारकाधीश, द्वारकानाथ** *पुं०* (सं) १-श्रीकृष्ण। २-द्वारका के मन्दिर में स्थित उनकी मूर्त्ति।
**द्वाराचार** *पुं०* (सं) द्वारपूजा।
**द्वारपटी** *स्त्री०* (सं) दरवाजे का परदा।
**द्वारपाल** *पुं०* (सं) दरबार।
**द्वारपूजा** *स्त्री०* (सं) विवाह की एक रस्म।
**द्वारा** *पुं०* (हि) द्वार। दरवाजा। *अव्य०* जरिये से। साधन से।
**द्वारावती** *स्त्री०* (सं) द्वारकापुरी।
**द्वारी** *स्त्री०* (हि) छोटा द्वार। *पुं०* द्वारपाल।
**द्वि** *वि०* (सं) दो।
**द्विक** *वि०* (सं) जिसमें दो हों।
**द्विकर्मक** *वि०* (सं) (वह क्रिया) जिसके दो कर्म हों
**द्विकल** *पुं०* (सं) दो मात्राओं का समूह (छन्दशास्त्र)
**द्विगु** *पुं०* (सं) वह कर्मधारय समास जिसका पहला पद संख्यावाचक होता है।
**द्विगुण** *वि०* (सं) दुगना।
**द्विगुणित** *वि०* (सं) १-दो से गुणा किया हुआ। २-दूना।
**द्विगूढ़** *पुं०*(सं) रस और भावयुक्त वह गीत जिसके पद सम और सुन्दर हों। (नाट्यशास्त्र)।
**द्वि-घर** *वि०* (सं) दोहरा।
**द्विज** *वि०* (सं) जिसका जन्म दो बार हुआ हो। *पुं०* १-हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के लोग। २-ब्राह्मण। ३-चन्द्रमा। ४-दाँत (दूसरी बार निकले हुए)। ५-अंडज प्राणी। जैसे—साँप, चिड़िया आदि।
**द्विजन्मा** *वि०, पुं०* (सं) द्विज।
**द्विजपति, द्विजराज** *पुं०* (सं) १-ब्राह्मण। २-चन्द्रमा
**द्विजाति** *पुं०* 'द्विज'।
**द्विजेंद्र, द्विजेश** *पुं०* (सं) १-ब्राह्मण। २-चन्द्रमा।
**द्विजोत्तम** *पुं०* (सं) ब्राह्मण।
**द्वितक** *पुं०* (सं) १-रसीद। भरपाई। २-प्रतिलिपि जो पुनः दी जाय। (डुप्लिकेट)।
**द्वितीय** *वि०* (सं) [*स्त्री०* द्वितीया] दूसरा।
**द्वितीयक** *वि०* (सं) पहले से बाद का। दूसरे स्थान का। (सैकेण्डरी)।
**द्वितीया** *स्त्री०* (सं) दूज (तिथि)। *वि०* (स्त्री) दूसरी।
**द्वित्व** *पुं०* (सं) दोहरापन।
**द्विदल** *वि०*(सं) १-दो दलों वाला। २-दो पत्तों वाला। *पुं०* वह अन्न जिसमें दो दल हों। जैसे—चना, मटर आदि।
**द्विधा** *क्रि० वि०* (सं) १-दो तरह से। २-दो भागों में
**द्वि-धातुता** *स्त्री०* (सं) सोना और चाँदी, दोनों ही धातुओं की मुद्रा का समान-विधि-ग्राह्यमुद्रा के रूप में प्रचलन। (बाइमेटलिज्म)।
**द्विधातुत्व** *पुं०* (सं) द्विधातुता।
**द्विधात्वीय-प्रणाली** *स्त्री०* (सं) सोना या चाँदी दोनों धातुओं के सिक्कों की निश्चित अनुपात के साथ, विधि ग्राह्य मुद्रा मानने की प्रणाली। (बाइमेट-लिक-सिस्टम)।
**द्विपक्षी** *वि०* (सं) दो पक्षों या पार्श्वों से सम्बन्धित। (बाईलेटरल)।
**द्विपक्षीय-प्रसंविदा** *स्त्री०*(सं) वह करार या समझौता जो दो पक्षों के मध्य हो। (बाइ-लेटरल-कांट्रैक्ट)।
**द्विपथ** *पुं०* (सं) दोराहा।
**द्विपद** *वि०* (सं) १-दो पैरों वाला। २-जिसमें दो पद या शब्द हों। *पुं०* मनुष्य।
**द्विपार्श्विक** *वि०* (सं) १-दोरुखा। २-द्विपक्षी।
**द्विबाहु** *वि०* (सं) दो बाहों वाला।
**द्विभाषी** *वि०* (सं) दो भाषाओं वाला। *पुं०* १-दुभाषिया। २-वह (प्रदेश या राज्य) जिसमें दो भाषा बोली जाती हों। (बाइलिंगुअल)।
**द्विभाषी-राज्य** *पुं०* (सं) वह राज्य जिसके निवासी दो भाषा बोलते हों। (बाइ-लिंगुअल-स्टेट)।
**द्विरद** *वि०* (सं) [*स्त्री०* द्विरदा] दो दाँतों वाला। *पुं०* हाथी।
**द्विरसन** *पुं०*(सं) [*स्त्री०* द्विरसना] सर्प। साँप। *वि०* दो जीभों वाला। २-कभी एक और कभी दूसरी बात कहने वाला।
**द्विरागमन** *पुं०* (सं) गौना।
**द्विरुक्त** *वि०* (सं) १-दो बार कहा हुआ। २-दो प्रकार से कहा हुआ। ३-अनावश्यक।
**द्विरुक्ति** *वि०* (सं) पहले कही हुई बात को फिर से कहना।
**द्विरेफ** *पुं०* (सं) भ्रमर। भौंरा।
**द्विवचन** *पुं०* (सं) व्याकरण में दो का बोध कराने वाला वचन।
**द्विविध** *वि०* (सं) दो प्रकार का। *क्रि० वि०* दो प्रकार

से।

**द्विविधा** स्त्री० (हि) दुबधा।

**द्विवेदी** पुं० (सं) ब्राह्मणों की एक उपजाति जो दूबे भी कहलाते हैं।

**द्विष्ट** वि० (सं) द्वेषपूर्ण।

**द्विसदानात्मक** वि०(सं) दो सदनों या सभाओं वाला (विधान-मण्डल)। (बाइकेमरल)।

**द्विसदस्य-निर्वाची-क्षेत्र** पुं० (सं) वह निर्वाचन क्षेत्र जिससे दो सदस्य चुने जायें। (डबल-मेम्बर कान्स्टिट्युएंसी)।

**द्वींद्रिय** पुं० (स) वह जन्तु जिसके दो ही इन्द्रियाँ हों।

**द्वीप** पुं० (सं) १-चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल भाग। टापू। २-पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग।

**द्वीप-पुंज** पुं० (सं) छोटे-छोटे द्वीपों का समूह जो समुद्र में पास-पास हों। (आर्कीपैलेगो)।

**द्वीपांतरण** पुं० (सं) भारी अपराध करने वाले बन्दी को समुद्र पार किसी अन्य द्वीप में भेज देना। (ट्रांसपोर्टेशन)।

**द्वेष** पुं० (सं) १-चिढ़। २-शत्रुता। वैर।

**द्वेषी** वि० (सं) [स्त्री० द्वेषणी] १-द्वेष करने वाला। २-वैरी। विरोधी।

**द्वेष्टा** वि० दे० 'द्वेषी'।

**द्वै** वि० (हि) १-दो। २-दोनों।

**द्वैक** वि० (हि) दो-एक।

**द्वैज** स्त्री० (हि) दूज (तिथि)।

**द्वैत** पुं० (स) १-दो का भाव। युगल। २-अपने और पराये का भाव। भेद। अन्तर। ३-दुविधा। भ्रम। ४-अज्ञान।

**द्वैतवाद** पुं० (सं) १-एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। २-वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

**द्वैतवादी** वि० (सं) [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद सिद्धान्त को मानने वाला।

**द्वैत्रिज्य** पुं० (सं) दो त्रिज्याओं और उनके बीच पड़ने वाले चाप से घिरी आकृति। (सेक्टर आफ ए सर्किल)।

**द्वैध** पुं० (सं) १-विरोधी। २-दो प्रकार होने का भाव ३-राजनीति में दुरङ्गी नीति चलने का गुण। ४-सन्देह।

**द्वैध-शासनप्रणाली** स्त्री० (सं) वह शासन-पद्धति जिसमें सत्ता दो वर्गों में विभक्त हो। दोहरा शासन

**द्वैधीकरण** पुं० (सं) दो भागों में विभक्त करना।

**द्वैपायन** पुं० (सं) वेद व्यास का एक नाम।

**द्वैमातुर** पुं० (सं) गणेश।

**द्वै-राज्य** पुं० (सं) वह शासनप्रणाली जिससे किसी छोटे और दुर्बल देश पर दो बड़े शक्तिशाली राज्य मिलकर शासन करते और उसे अपने सम्मिलित नियन्त्रण में रखते हैं। (कॉन्डोमीनियम)।

**द्वैवार्षिक** वि० (स) प्रति दो वर्ष पर होने या आने वाला। (बाईनियल)।

**द्वौ** वि० (हि) १-दोनों। २-द्व।

[शब्दसंख्या--२२८२१]

# ध

**ध** हिंदी वर्णमाला का १९वाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंतमूल है।

**धंका** पुं० (हि) १-धक्का। २-चोट।

**धंगा** पुं० (हि) खाँसी।

**धंधक** पुं० (हि) जजाल। झंझट।

**धंधक-धेरी, धंधक-धोरी** पुं० (हि) हर घड़ी काम में लगा रहने वाला। बहुधंधी।

**धंधका** पुं० (देश) [स्त्री० धंधकी] एक प्रकार का ढोल।

**धंधरक** पुं० (हि) संसार के काम धन्धों का झंझट।

**धंधरक-धोरी** पुं० (हि) हर घड़ी काम में लगा रहने वाला।

**धंधला** पुं० (हि) १-छल-कपट। २-ढोंग। ३-बहाना

**धंधलाना** क्रि० (हि) १-छलछंद करना। २-ढोंग रचना।

**धंधा** पुं० (हि) १-काम-काज। २-व्यवसाय।

**धंधार** स्त्री० (हि) आग की लपट।

**धंधारी** स्त्री० (हि) गोरखधंधा।

**धंधोर** स्त्री० (हि) १-ज्वाला। २-होली।

**धंधना** क्रि० (हि) धौंकना।

**धँसना** क्रि० (हि) १-भीतर घुसना। गड़ना। २-पैठना। प्रवेश करना। ३-नीचे की ओर दबना या बैठ जाना। ४-उतरना। ५-नीचे खिसकना। ६-नष्ट होना।

**धँसनि** स्त्री० (हि) धँसने की क्रिया या ढंग।

**धँसान** स्त्री० (हि) १-धँसने की क्रिया, भाव या ढंग २-वह स्थान जिसपर कोई चीज धँसे।

**धँसाना** क्रि० (हि) १-गड़ाना। चुभाना। २-पैठाना प्रवेश कराना। ३-तल या सतह को दबाकर नीचे

को ओर बढ़ना।
**धंसाव** पु० (हि) १-धँसने की क्रिया २-दलदल।
**धउरहर** पु० (हि) धरोहर।
-- स्त्री० (हि) १-भय आदि के कारण हृदय गति तीव्र होने का भाव या शब्द। २-उमंग। उल्लास क्रि० वि० अचानक। सहसा।
**धकधकना** क्रि० (हि) १-भय या घबराहट के कारण कलेजे का जल्दी से धड़कना। २-धधकना। ३-चमकना।
**धकधकाना** क्रि० (हि) १- दे० 'धकधकना'। २-दहकना। सुलगना।
**धकधकाहट** स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-आशंका।
**धकधकी** स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-धुकपुकी। ३-खटका। ४-अंदेशा।
**धकना** क्रि० (हि) दहकना।
**धकपक** स्त्री० (हि) १-धड़कन। २-आशंका।
**धकपकाना** क्रि० (हि) १-भय खाना। २-आतंकित होना।
**धकपेल** स्त्री० (हि) धक्कमधक्का। रेलपेल।
**धका** पु० (हि) धक्का।
**धकाधूम** स्त्री० (हि) रेलपेल। चढ़ा-ऊपरी।
**धकापेल** स्त्री० (हि) धक्कमधक्का। रेलपेल।
**धकाना** क्रि० (हि) जलाना। दहकाना।
**धकारा** पु० (हि) १-धकधकी। २-खटका। अंदेशा।
**धकियाना, धकेलना** क्रि० (हि) धक्का देना।
**धकैत** वि० (हि) धक्का देने वाला।
**धक्कमधक्का** पु० (हि) १-भीड़ में रेलपेल। ठेलाठेली २-ऐसी भाड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।
**धक्का** पुं० (हि) १-किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ वेगपूर्ण स्पर्श। टक्कर। २-झोंका। ३-कशमकश। बहुत भीड़। ४-धकेलने की क्रिया या भाव। ५-हानि, दुःख, शोक आदि का आघात।
**धक्काड़** वि० (हि) जिसकी खूब धाक जमी हो।
**धक्कामुक्की** स्त्री० (हि) परस्पर धकेलना और मुक्के मारना।
**धखधगाना** क्रि० (हि) धकधकाना।
**धगड़, धगड़ा** पुं० (हि) उपपति। जार
**धगा** पु० (हि) धागा।
**धचका** पु० (हि) धक्का। झोंका।
**धचना** क्रि० दे० थिर रहना।
**धज** स्त्री० (हि) १-बनाव। सजावट। २-सुन्दर ढंग ३-ठसक। ४-रूप रंग।
**धजा** स्त्री० (हि) ध्वजा।
**धजी** स्त्री० (हि) धज्जी।
**धजीला** वि० (हि) [स्त्री० धजीली] सजीला। सुन्दर।
**धज्जी** स्त्री० (हि) १-कागज, कपड़े, चमड़े आदि की पतली और लम्बी पट्टी। २-लोहे की चद्दर आदि की लम्बी पट्टी।
**धड़ंग** वि० (हि) नङ्गा।
**धड़** पु० (हि) १-शरीर का भुजा रहित मध्य भाग। २-पेड़ का तना। स्त्री० सहसा गिरने का गम्भीर शब्द।
**धड़क** स्त्री० (हि) १-हृदय का स्पन्दन। २-दिल की धड़कन। तड़प। ३-भय, आशंका आदि के कारण दिल की बढ़ी हुई धड़कन। ३-आशंका। अन्देशा
**धड़कन** स्त्री० (हि) हृदय का स्पन्दन।
**धड़कना** क्रि० (हि) १-दिल का धक-धक करना। २-धड़-धड़ शब्द होना।
**धड़का** पुं०(हि) १-दिल की धड़कन। २-दिल धड़कने का शब्द। ३-खटका। अन्देशा। ३-चिड़ियों को डराने का पुतला। धोखा।
**धड़काना** क्रि० (हि) १-दिल में धड़क पैदा करना। २-जी दहलाना। ३-धड़धड़ शब्द उत्पन्न करना।
**धड़की** स्त्री० (हि) १-कलेजा धड़कने का रोग। २-
**धड़धड़ाना** क्रि० (हि) भारी वस्तु गिरने का सा शब्द होना।
**धड़ल्ला** पुं० (हि) १-धड़-धड़ शब्द। २-गहरी भीड़ ३-भीड़-भाड़ और धूम-धाम।
**धड़हर** पु० (देश) लुकाट का पेड़ या फल।
**धड़ा** पुं० (हि) १-बाट। २-पाँच सेर की तौल। ३-तुला। तराजू।
**धड़ाका** पुं० (हि) धमाका।
**धड़ा-बंदी** स्त्री० (हि) १-धड़ा करना या बाँधना। २-दलबन्दी करना।
**धड़ाम** पु० (हि) ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।
**धड़ी** स्त्री० (हि) १-चार सेर की एक तौल। २-वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है। ३-पाँचसौ रुपये की रकम।
**धणी** वि०, पुं० दे० 'धनी'।
**धत्** अव्य० (हि) १-दुतकारने का शब्द। २-तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।
**धतकारना** क्रि०(हि) १-दुतकारना। २-धिक्कारना।
**धता** वि० (हि) दूर भगाया हुआ।
**धतूरा** पु० (हि) एक तरह का पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।
**धधकना** क्रि० (हि) १-दहकना। २-भड़कना।
**धधाना** क्रि० (हि) धधकना।
**धनंजय** वि० (स) धन को जीतने वाला। पुं० १-अर्जुन का एक नाम। २-विष्णु। ३-एक तरह की वायु जिससे शरीर का पोषण होता है।
**धनंतर** पु० (हि) धन्वंतरी।
**धन** पुं० (सं) १-द्रव्य। दौलत। २-सम्पत्ति। आश-

दाद । ३-अत्यन्त प्रिय व्यक्ति । ४-गणित में जोड़ का (+) चिह्न । ५-मूल । पूँजी । *वि०* १-महत्व की दृष्टि जो श्रेष्ठ, मान्य या ग्राह्य हो । २-हिसाब-किताब, लेखे आदि में जो किसी के यहाँ से आया और उसके नाम से जमा हो । *स्त्री०* (हि) १-युवती स्त्री या वधू । २-नायिका या प्रेमिका । *वि०* (हि) धन्य ।

**धनकुबेर** पुं० (सं) अत्यन्त धनी ।

**धनतर** पुं० (हि) धन्वंतरि ।

**धनतेरस** *स्त्री०* (हि) कार्त्तिक कृष्णा त्रयोदशी ।

**धनद** *वि०* (सं) १-धन देने वाला । २-उदार । पुं० कुबेर ।

**धनधान्य** पुं० (सं) धन और अन्न जो सम्पन्नता या समृद्धि के सूचक माने जाते हैं ।

**धनधाम** पुं० (सं) घरबार और रुपया-पैसा ।

**धनधारी** पुं० (हि) १-कुबेर । २-बहुत बड़ा अमीर

**धनपक्ष** पुं० (सं) १-बहीखाते में वह पक्ष जिसमें आमद की रकम जमा की जाती है । (क्रेडिट-साइड) । २-वह पक्ष जिसमें पूँजी लाभ या उपयोगी बातों का उल्लेख हो ।

**धनपति** पुं० (सं) १-कुबेर । २-धनी ।

**धनपत्र** पुं० (सं) हिसाब लिखने का बहीखाता । २-कागज का सिक्का । (करेंसी-नोट) ।

**धन-पिशाच** पुं० (सं) अर्थ-पिशाच ।

**धनप्रेषणादेश** पुं० (सं) मनीआर्डर ।

**धनमद** पुं० (सं) धन का गर्व ।

**धनराशि** *स्त्री०* (सं) १-धन का ढेर या अत्याधिक धन । २-देय धन । रकम । (अमाउण्ट, सम) ।

**धनवत** *वि०* (हि) धनवान् । धनी ।

**धनवान्** *वि०* (सं) [*स्त्री०* धनवती] धनी । अमीर ।

**धन-विद्युदणु** पुं० (सं) धन-विद्युत् शक्ति की वह इकाई जिसे परमाणु का मध्य बिन्दु मानते हैं तथा जिसके चारों तरह ऋण विद्युदणु चक्कर लगाते है । (प्रोटॉन) ।

**धन-विधेयक** पुं० (सं) वित्त-विधेयक । (मनी-बिल) ।

**धन-संपत्ति** *स्त्री०* (सं) दौलत । (वैल्थ) ।

**धन-हीन** *वि०* (सं) निर्धन । गरीब ।

**धनांक** पुं० (सं) लेन-देन में किसी राशि विशेष को सूचित करने वाला शब्द । रकम । (अमाउण्ट) ।

**धना** *स्त्री०* (हि) पत्नी । वधू । पुं० दे० 'धनिया' ।

**धनाढ्य** *वि०* (सं) धनवान् । धनी ।

**धनाणु** पुं०(सं) वह अणु जो सदा धनात्मक विद्युत् से अवशिष्ट रहता है । (पॉजिटिव) ।

**धनात्मक** *वि०* (सं) १-धन वाले तत्व से युक्त । २-धन पक्ष सम्बन्धी । (पॉजिटिव) ।

**धनादेश** पुं० (सं) १-वह परची जिसके द्वारा बैंक से रुपया मिलता है । (चैक) । २-डाक द्वारा भेजे जाने वाले धन का सूचक-पत्र । (मनिआर्डर) ।

**धनासी** *स्त्री०* (हि) १-पत्नी । २-प्रेमिका ।

**धनि** *स्त्री०* (हि) १-युवती । २-वधू । *वि०* धन्य ।

**धनिक** *वि०* (सं) १-धनी । २-पति ।

**धनिक-तंत्र** पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जिसमें धनिकों की प्रधानता हो । (प्लुटार्की) ।

**धनिक-लोकतंत्र** पुं० (सं) वह लोक-तंत्री शासन-व्यवस्था जिसमें शासनसत्ता प्रायः धनवानों के प्रतिनिधियों के हाथ में हो । (प्लुटोक्रैटिक-डिमोक्रेसी)

**धनिया** पुं० (सं) १-एक छोटा पौधा जिसके दाने मसाले के काम में आते हैं । २-एक तरह का धान या उसका चावल । *स्त्री०* (हि) १-युवती स्त्री । २-वधू ।

**धनी** *वि०* (सं) १-धनवान । दौलतमंद । २-स्वामी । मालिक । ३-रक्षक । *स्त्री०* (सं) १-युवती । २-वधू ।

**धनु** पुं० (सं) १-धनुष । २-बारह राशियों में से एक

**धनुआ** पुं० (हि) १-धनुष । २-रूई धुनने का औजार

**धनुक** पुं० (हि) १-धनुष । २-इन्द्रधनुष ।

**धनुकार** पुं० (हि) धनुर्धर ।

**धनुर्धर, धनुर्धारी** पुं० (सं) १-धनुष धारण करने वाला व्यक्ति । २-धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति ।

**धनुर्वात** पुं० (सं) एक वातरोग ।

**धनुर्विद्या** *स्त्री०* (सं) धनुष चलाने की विद्या । तीरन्दाजी ।

**धनुर्वेद** पुं० (सं) यजुर्वेद का उपवेद ।

**धनुष** पुं० (सं) १-चाप । कमान । २-चार हाथ की एक माप ।

**धनुष-टंकार** *स्त्री०* (सं) धनुष पर बाण खींचने से उत्पन्न 'टन' शब्द । पुं० एक वात रोग ।

**धनुष-यज्ञ** पुं० (सं) एक यज्ञ जिसे सीता के लिए वर चुनने के वास्ते जनक ने किया था ।

**धनुस** पुं० (हि) धनुष । चाप ।

**धनुहाई** *स्त्री०* (हि) धनुष की लड़ाई ।

**धनुहिया, धनुही** *स्त्री०* (हि) लड़कों के खेलने का धनुष ।

**धनेश, धनेश्वर** पुं० (सं) १-कुबेर । खजांची । ३-विष्णु ।

**धनैषणा** *स्त्री०* (सं) धन की इच्छा ।

**धनैषी** *वि०* (सं) धन चाहने वाला ।

**धनोष्मा** *स्त्री०* (सं) धन की गरमी ।

**धन्न** *वि०* (हि) धन्य ।

**धन्ना** पुं० (हि) धरन । *वि०* धन वाला ।

**धन्नासेठ** पुं० (सं) बहुत धनी व्यक्ति ।

**धन्य** *वि०* (सं) (*स्त्री०* धन्या) १-कृतार्थ । २-प्रशंसनीय । ३-भाग्यशाली । ४-पुण्यात्मा ।

**धन्यवाद** पुं० (सं) १-साधुवाद । शाबाशी । २-कृतज्ञता-सूचक शब्द । शुक्रिया ।

धन्या स्त्री० (सं) १-पत्नी। २-धाय।
धन्वंतरि पुं० (सं) देवताओं के वैद्य, जो आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।
धन्व, धन्वा पुं० (सं) धनुष।
धन्वाकार वि० (सं) धनुष के समान गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।
धन्वी वि० (सं) १-धनुष धारण करने वाला। २-निपुण। चतुर।
धपना क्रि० (हि) १-झपटना। २-मारना। पीटना।
धप्पड़, धप्पा पुं० (हि) थप्पड़।
धब्बा पुं० (हि) १-दाग। २-कलंक। लांछन।
धमंकना क्रि० (हि) नष्ट करना।
धम स्त्री०(हि) भारी वस्तु के गिरने का शब्द। धमाका
धमक स्त्री० (हि) १-भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात आदि से उत्पन्न ध्वनि। ३-आघात।
धमकना क्रि० (हि) १-'धम' शब्द सहित गिरना। २-जोर से मारना। ३-(सिर में) दर्द करना।
धमकाना क्रि० (हि) १-डराना। २-डाँटना।
धमकी स्त्री० (हि) १-दण्ड देने, हानि पहुँचाने आदि का भय दिखाना। २-घुड़की।
धम-गजर पुं० (देश) उपद्रव।
धमधमाना क्रि० (हि) धम-धम शब्द करना।
धमधूसर वि० (हि) स्थूल और बेडौल आदमी।
धमना क्रि० (हि) १-धौंकना। २-हवा भरना।
धमनि, धमनी स्त्री० (सं) नाड़ी। शिरा।
धमसा पुं० (हि) धौंसा।
धमाका पुं० (हि) १-भारी वस्तु के गिरने का शब्द २-बन्दूक, तोप आदि के छूटने का शब्द। ३-एक तरह की तोप।
धमाचौकड़ी स्त्री० (हि) १-उछलकूद। २-उपद्रव।
धमाना क्रि० (हि) धौंकना।
धमाधम क्रि० (हि) निरन्तर 'धम-धम' शब्द सहित।
धमार पुं० (हि) एक तरह का गीत। स्त्री० १-उपद्रव २-उछलकूद। ३-कलाबाजी।
धमारिया पुं० (हि) १-कलाबाज। २-होली की धमार गाने वाला।
धम्मिल पुं० (सं) लपेटकर बाँधे हुए बाल। जूड़ा।
धयना क्रि० (हि) दौड़ना।
धरंता वि० (हि) धारण करने वाला।
धर वि० (सं) धारण करने वाला। रक्षक। पुं० १-पर्वत। २-कच्छप। ३-शरीर। स्त्री० १-पकड़ने की क्रिया या भाव। २-पृथ्वी।
धरक पुं० (हि) धड़का।
धरकार पुं० (हि) एक जाति।
धरण स्त्री०(हि) धरणि। पृथ्वी।
धरणि स्त्री० (सं) पृथ्वी।
धरणिज, धरणि-पुत्र, धरणि-सुत पुं० (सं) १-मङ्गल ग्रह। २-नरकासुर।
धरणिधर पुं० (सं) १-शेषनाग। २-पर्वत। ३-विष्णु ३-पृथ्वी को उठाये रखने वाला कच्छप।
धरणी स्त्री० (सं) पृथ्वी।
धरणीधर पुं० (सं) शेषनाग।
धरता पुं० (हि) १-ऋण। २-ऋणी। ३-किसी काम का भाग लेने वाला। वि० धारण करने वाला।
धरती स्त्री० (हि) १-पृथ्वी। जमीन। २-संसार।
धरधर पुं० दे० 'धराधर'।
धरधरा पुं० (हि) धड़कन।
धरधराना क्रि० (हि) धड़धड़ाना।
धरन स्त्री० (हि) १-धरने की क्रिया, भाव या ढङ्ग। २-गर्भाशय को दृढ़ता से पकड़े रहने वाली नस। ३-हठ। ४-गर्भाशय। ५-धरती। जमीन। पुं० भरना।
धरनहार वि० (हि) १-पकड़ने वाला। २-धारण करने वाला।
धरना क्रि० (हि) १-पकड़ना। थामना। २-ग्रहण करना। ३-स्थापित करना। ४-पहनना। ५-आरोपित करना। ६-आश्रय लेना। ७-किसी स्त्री को रखेली के समान रखना। ८-गिरवी रखना। पुं० माँग पूरी न होने की अवस्था में किसी के यहाँ अड़कर बैठना।
धरनि स्त्री० (हि) धरणि।
धरनी स्त्री० (हि) १-धरणी। २-शहतीर। ३-टेक।
धरनेत पुं० (हि) धरना देने वाला।
धर-पकड़ स्त्री० (हि) गिरफतारी।
धरम पुं० (हि) धर्म।
धरमसार स्त्री० (हि) १-धर्मशाला। २-सदावर्त।
धरमाई स्त्री० (हि) धार्मिकता।
धरमी वि० (हि) १-धार्मिक। २-किसी धर्म अथवा मत का अनुयायी।
धरषना, धरसना क्रि० (हि) १-डर जाना। २-सहम जाना। ३-दब जाना। ४-अपमानित करना।
धरसनी स्त्री० दे० 'धर्षणी'।
धरहर पुं० (हि) १-धरपकड़। २-बीच-बचाव। ३-धैर्य। ४-बचाव। रक्षा।
धरहरना क्रि०(हि) १-धड़धड़ाना। २-धड़कना।
धरहरा पुं० (हि) १-मीनार। २-जल-स्तम्भ।
धरा स्त्री० (फा) १-पृथ्वी। २-संसार।
धराऊ वि० (हि) जो सुरक्षित रखा रहे और विशेष अवसरों पर काम में लाया जाय।
धराक, धराका पुं० (हि) धड़ाक। धड़ाका।
धरातल पुं० (सं) १-पृथ्वी। २-तल। सतह। ३-क्षेत्रफल।
धराधर पुं० (सं) १-शेषनाग। २-पर्वत। ३-विष्णु

**धराधरन** पुं० दे० 'धराधर'।
**धराधिप, धराधिपति, धराधीश** पुं०(सं) नृप। राजा
**धराना** क्रि० (हि) १-पकड़ाना। २-ठहराना।
**धराशायी** वि०(सं) [स्त्री० धराशायिनी] जमीन पर लेटा हुआ।
**धराहर** पुं० (हि) धरहरा। मीनार।
**धरित्री** स्त्री० (सं) पृथ्वी।
**धरी** स्त्री०(हि) १-चार सेर की एक तौल। २-रखेल स्त्री। ३-कान में पहनने का एक गहना। ४-नदी की धारा। ५-पानी की धार। ६-वर्षा की झड़ी।
**धरेचा** पुं० दे० 'धरेला'।
**धरेजा** पुं० (हि) किसी स्त्री को रखेली बनाकर रखना। रखेली।
**धरेल** स्त्री० (हि) रखेली।
**धरेला** पुं० (हि) वह पति जिसे कोई स्त्री बिना विवाह के ही ग्रहण करे।
**धरेली** स्त्री० (हि) रखेली। उपपत्नी।
**धरेवा** पुं० (हि) एक तरह का विवाह। करेवा।
**धरेश** पुं० (सं) राजा।
**धरेस** पुं० (हि) धरेश। राजा।
**धरैया** पुं० (हि) पृथ्वी को धारण करने वाले शेष-नाग कच्छप आदि।
**धरोड़, धरोहर** स्त्री० (हि) अमानत। थाती।
**धर्त्ता** पुं० (सं) १-धारण करने वाला। २-अपने ऊपर भार लेने वाला।
**धर्म** पुं० (सं) १-मूल गुण। स्वभाव। २-गुणवृत्ति ३-कर्त्तव्य। फर्ज। ४-मजहब। पन्थ। मत। ४-नीति। न्याय-व्यवस्था। ५-ईमान। ५-अलंकार-शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उप-मान में समान रूप से हो।
**धर्म-गंडिका** स्त्री०(सं) यज्ञ में बलि चढ़ाए जाने वाले पशु को टाँगने का खूँटा।
**धर्मकर्म** पुं० (सं) वह कृत्य जिसका करना किसी धर्म-ग्रन्थ में आवश्यक बताया गया हो।
**धर्मक्षेत्र** पुं० (सं) १-कुरुक्षेत्र। २-भारत भूमि जो धर्मोपार्जन की कर्मभूमि मानी गई है।
**धर्म-ग्रंथ** पुं० (सं) १-वह पुस्तक जिसमें आचार-व्यवहार और उपासना आदि के सम्बन्ध में शिक्षा हो। २-धर्म विशेष का आधारभूत ग्रन्थ।
**धर्म-घड़ी** स्त्री० (हि) ऐसे स्थान पर टँगी हुई घड़ी जिसे सब लोग देख सकें।
**धर्म-चक्र** पुं० (सं) १-बौद्धधर्म का चिह्न। २-बुद्ध-धर्म की शिक्षा, जिसका आरम्भ सारनाथ (काशी) से हुआ था।
**धर्म-चर्य्या** स्त्री० (सं) धर्म का पालन या आचरण।
**धर्मचारी** वि० (सं) [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म के अनु-सार आचरण करने वाला।
**धर्म-चिंतन** पुं०(सं) [स्त्री० धर्मचिंता] धार्मिक विषयों का मनन।
**धर्म-च्युत** वि० (सं) धर्म से पतित।
**धर्मज्ञ** वि० (सं) धर्म का मर्म समझने वाला। पुं० बुद्धदेव।
**धर्मणा** क्रि० वि० (सं) धर्म के अनुसार।
**धर्म-तंत्र** पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था या प्रणाली जिसमें राज्य का कार्य ईश्वर या धर्म के नाम पर पुरोहितों या धर्माध्यक्षों द्वारा चलाया जाता है। (थियोक्रैसी)।
**धर्मतः** अव्य० दे० 'धर्मणा'।
**धर्मध्वज, धर्मध्वजी** पुं० (सं) पाखण्डी।
**धर्म-निरपेक्ष-राज्य** पुं० (सं) वह राज्य जिसकी नीति धर्म के सम्बन्ध में तटस्थ रहने की हो। (सेक्यूलर-स्टेट)।
**धर्म-निष्ठ** वि० (सं) धर्मपरायण। धार्मिक।
**धर्मनिष्ठा** स्त्री० (सं) धर्म में आस्था या विश्वास।
**धर्मपत्नी** स्त्री० (सं) विवाहिता स्त्री।
**धर्मपरायण** वि० (सं) धर्म में निष्ठा रखने वाला।
**धर्म-पिता** पुं० (सं) पितृ-तुल्य वह व्यक्ति जो किसी का धार्मिक भाव से पिता बन गया हो।
**धर्म-पुत्र** पुं० (सं) [स्त्री० धर्म-पुत्री] धर्म के अनुसार बनाया हुआ पुत्र।
**धर्म-पुस्तक** स्त्री० (सं) धर्मग्रन्थ।
**धर्मप्राण** वि० (सं) धर्म को प्राणों से भी प्रिय सम-झने वाला व्यक्ति।
**धर्मबुद्धि** स्त्री० (सं) धर्म-अधर्म का विवेक करने वाली बुद्धि।
**धर्मभीरु** वि० (सं) अधर्म से डरने वाला।
**धर्मयुद्ध** पुं० (सं) १-वह युद्ध जिसमें किसी तरह का अन्याय अथवा नियम भङ्ग हो। २-धर्म के निमित्त अथवा किसी अच्छे उद्देश्य से किया जाने वाला युद्ध।
**धर्मराइ** पुं० (हि) धर्मराज।
**धर्मराज** पुं० (सं) १-युधिष्ठिर। २-यमराज। ३-न्यायाधीश। ४-धर्म-पालक राजा।
**धर्मराय** पुं० (हि) धर्मराज।
**धर्मलिपि** स्त्री० (सं) १-वह लिपि जिसमें धर्म विशेष का प्रमुख ग्रन्थ लिखा गया हो। २-स्तम्भों पर खुदे हुए सम्राट अशोक के प्रज्ञापन।
**धर्मलुप्त-उपमा, धर्मलुप्तोपमा** स्त्री० (सं) उपमा अल-ङ्कार का वह भेद जिसमें समान धर्म का कथन हो
**धर्मवीर** पुं० (सं) १-वह जो धर्म-विषयक कार्य करने में साहसी हो। २-रस निर्णय ग्रन्थ के अनुसार वीररस के अन्तर्गत चार प्रकार के वीरों में से एक।
**धर्मशाला** स्त्री० (सं) यात्रियों के टिकने के लिए धर्मार्थ बनाया हुआ मकान।

पुं० (सं) १-वह ग्रन्थ जिसमें समाज के शासन के लिए नीति तथा सदाचार सम्बन्धी नियम लिखे हों। २-किसी धर्म विशेष की निजी विधि। (परसनल-लॉ)।
**धर्मशास्त्री** पुं० (सं) धर्मशास्त्र का ज्ञाता पण्डित।
**धर्मशील** वि० (सं) धार्मिक।
**धर्म-संकट** पुं० (सं) ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्ष संकट का अनुभव करें। उभय संकट। (डिलेम्मा)।
**धर्म-सभा** वि० (सं) न्यायालय।
**धर्मसारी** स्त्री० (हि) धर्मशाला।
**धर्मस्व** पुं० (स) किसी मंदिर का खर्च चलाने या किसी धार्मिक कृत्य आदि के निर्वाहार्थ की जाने वाली व्यवस्था के निमित्त दी जाने वाली संपत्ति (एंडाउमेंट्स)।
**धर्मांतर** वि० (सं) अन्य धर्म।
**धर्मांध** वि० (सं) धर्म में अंध श्रद्धा रखने वाला।
**धर्माचरण** पु० (सं) धार्मिक या पुण्य कार्य करना।
**धर्माचार्य** पुं० (सं) धार्मिक शिक्षा देने वाला गुरु।
**धर्मात्मा** वि० (स) धर्म करने वाला। धर्मनिष्ठ।
**धर्मादा** पु० (हि) धर्मार्थ निकाला हुआ धन।
**धर्माधिकरण** पु० (सं) १-न्यायालय। २-न्यायाधीश
**धर्माधिकरणिक, धर्माधिकारी** पुं० (स) न्यायाधीश
**धर्माधिकृत, धर्माध्यक्ष** पुं० (सं) न्यायाधीश।
**धर्मार्थ** क्रि० वि० (सं) धर्म या परोपकार के लिए।
**धर्मावतार** पुं० (सं) परम धर्मात्मा व्यक्ति।
**धर्मासन** पुं० (सं) न्यायाधीश के बैठने का आसन या स्थान।
**धर्मिणी** स्त्री० (सं) पत्नी।
**धर्मिष्ठ** वि० (सं) अत्यन्त धार्मिक। पुण्यात्मा।
**धर्मी** वि० (सं) [स्त्री० धर्मिणी] १-धर्म करने वाला। २-धर्म विशेष से युक्त। ३-धर्म का अनुयायी। पुं० धार्मिक व्यक्ति।
**धर्मोन्मत्त** वि० (सं) धर्मांध।
**धर्मोन्माद** पुं० (सं) १-एक प्रकार का उन्माद रोग। २-धर्मांध होकर कार्य करना।
**धर्मोपदेश** पुं० (स) धर्म का उपदेश। धर्म की शिक्षा
**धर्मोपदेशक** पुं० (सं) धर्म विषयक उपदेश देने वाला व्यक्ति।
**धर्षक** पु० (सं) १-ढिठाई करने वाला। २-अपमान करने वाला। व्यभिचारी। ४-नट। अभिनेता।
**धर्षण** पुं० (सं) १-अनादर। २-दवांचना। ३-आक्रमण। ४-दमन करना।
**धर्षणी** स्त्री० (सं) कुलटा।
**धव** पु० (सं) १-एक जंगली वृक्ष जो औषध रूप में प्रयुक्त होता है।
**धवनी** स्त्री० (हि) धौंकनी। भाथी।
**धवर** वि० (हि) धवल। सफेद।
**धवरा** वि० (हि) [स्त्री० धवरी] धवल।
**धवरी** स्त्री० (हि) सफेद रंग की गाय।
**धवल** वि० (सं) १-श्वेत। उजला। सफेद। २-निर्मल ३-सुन्दर।
**धवलगिरि** पुं० (सं) हिमालय की एक चोटी।
**धवलपक्ष** पुं० (सं) १-शुक्लपक्ष। २-हंस।
**धवलना** क्रि० (हि) उज्ज्वल करना।
**धवलश्री** पुं० (सं) एक रागिनी।
**धवला** वि० (सं) सफेद। उजले रंग की। स्त्री० सफेद रंग की गाय।
**धवलाई** स्त्री० (हि) सफेदी।
**धवलागिरि** पुं० (हि) हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।
**धवलित** वि० (सं) १-सफेद। २-उज्ज्वल।
**धवलिमा** स्त्री० (सं) १-सफेदी। २-उज्ज्वलता।
**धवली** स्त्री० (सं) सफेद गाय।
**धवाना** क्रि० (हि) १-दौड़ना। २-शब्द होना। ३-ध्वनित होना।
**धस** पुं० (हि) १-डुबकी। गोता। २-जल आदि में पैठना।
**धसक** स्त्री० (हि) १-सूखी खाँसी। २-धसकने की क्रिया या भाव। ३-डर। भय। ४-ईर्ष्या।
**धसकना** क्रि० (हि) १-नीचे की ओर बैठना। २-डाह करना।
**धसना** क्रि० (हि) ध्वस्त होना। नष्ट होना। २-दे० 'धँसना'। ३-मिटाना। नष्ट करना।
**धसमसना** क्रि० (हि) धँसना।
**धसमसाना** क्रि० (हि) धँसना। २-धँसाना।
**धसान** स्त्री० दे० 'धँसान'।
**धांधना** क्रि० (हि) १-बन्द करना। २-बहुत अधिक खा लेना।
**धांधल, धांधली** स्त्री० (हि) १-शरारत। उत्पात। २-फरेब। धोखा। ३-बहुत अधिक जल्दी। ४-जबरदस्ती अपनी गलत बात आगे रखना।
**धांस** स्त्री० (हि) सूखी तम्बाकू अथवा मिर्च आदि की तेज गंध जिससे खाँसी और छींक आने लगती है।
**धांसना** क्रि० (हि) पशुओं का खाँसना।
**धांसी** स्त्री० (हि) घोड़े की खाँसी।
**धा** प्रत्य० (सं) तरह। भाँति। पुं० (हि) १-संगीत में धैवत स्वर का संकेत या सूक्ष्म रूप। ध। २-मृदंग, तबले आदि का एक बोल।
**धाइ, धाई** स्त्री० (हि) धाय।
**धाऊ** पुं० (हि) हरकारा।
**धाक** स्त्री० (हि) १-दबदबा। आतंक। २-ख्याति। पुं० ढाक। पलाश।
**धाकड़** पुं० (हि) १-जिसकी बहुत अधिक धाक बंधी

हो। २-विशेष शक्ति वाला।

**धाकना** *क्रि०* (हि) १-धाक जमाना। २-आतंकित होना।

**धाकरा** पुं० दे० 'धाकड़ा'।

**धागा** पुं० (हि) डोरा। तागा।

**धाड़** *स्त्री०* (हि) १-चिल्लाकर रोने का शब्द। २-दहाड़। ३-दाढ़। ४-डाकुओं का धावा।

**धातविक, धातवीय** *वि०* (सं) १-धातु से बना। २-धातु सम्बन्धी।

**धाता** पुं० (हि) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-महादेव। ४-विधाता। *वि०* १-पालक। २-रक्षक। ३-धारक।

**धातु** *स्त्री०* (सं) १-वह अपारदर्शक चमकीला खनिज विशुद्ध द्रव्य जिससे बरतन, तार, गहने, शस्त्र आदि बनाये जाते हैं। २-शरीर को बनाये रखने वाले भीतरी तत्व या पदार्थ।

**धातुपुष्ट** *वि०*(सं)वीर्य को गाढ़ा करने वाली (औषध)

**धातुमल** पुं० (सं) धातुओं को गलाने पर निकलने वाला मैल। (स्लैग)।

**धातुवर्द्धक** *वि०*(सं) धातुपुष्ट।

**धातु-विज्ञान** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें धातु तैयार करने उन्हें परिष्कृत या शुद्ध करने आदि की विवेचना होती है। (मेटलर्जी)।

**धात्र** *वि०* दे० 'धाता'।

**धात्री** *स्त्री०* (सं) १-माता। २-धाय। ३-गंगा। ४-गाय। ५-पृथ्वी। ६-गायत्रीस्वरूपणी भगवती।

**धात्रिका** *स्त्री०* (सं) दाई। (नर्स)।

**धात्री-विद्या** *स्त्री०* (सं) प्रसव कराने की विद्या।

**धात्वर्थ** पुं० (सं) धातु से निकलने वाला अर्थ।

**धात्विक-मूल्य** पुं० (सं) किसी सिक्के का उसकी धातु के बाजार भाव के विचार से मूल्य। (इंट्रिंजिक-वैल्यू)।

**धान** पुं० (हि) १-शालि जिसमें से चावल निकालता है। २-अन्न। ३-किसी का दिया हुआ भोजन

**धानक** पुं० दे० 'धानुक'।

**धान-पान** *वि०* (हि) १-दुबला-पतला। २-कोमल।

**धाना** *क्रि०* (हि) १-दौड़ना। २-दौड़-धूप करना। ३-ध्यान।

**धानी** *स्त्री०* (सं) १-वह जिससे कोई वस्तु रक्खी जाय। २-स्थान। *वि०* हलके हरे रङ्ग का। *स्त्री०*(हि) १-हलका हरा रङ्ग। २-भुना हुआ जौ या गेहूँ। ३-धान्य।

**धानुक** पुं० (हि) १-धनुधर। २-धनिया। ३-एक जाति।

**धान्य** पुं० (सं) १-एक तौल। २-अल्प मात्रा। ३-धनिया। ४-धान। ५-एक प्राचीन अस्त्र।

**धाप** पुं० (हि) १-आधा कोस की दूरी। २-लम्बा-चौड़ा मैदान। *स्त्री०* तृप्ति। सन्तोष।

**धापना** *क्रि०* (हि) १-अघाना। २-तृप्त करना। ३-दौड़ना।

**धाबा** पुं० (देश) १-मकान की समतल छत। २-ऐसी छत वाला मकान। ३-अटारी। ४-वह स्थान जहाँ कच्ची या पक्की रसोई बिकती है।

**धा-भाई** पुं० (हि) दूधभाई।

**धाम** पुं० (सं) १-गृह। मकान। २-किसी वस्तु के रहने का स्थान। ३-शरीर। ४-शोभा। ५-पवित्र तीर्थ।

**धामश्री** *स्त्री०* (सं) एक प्रकार की रागिनी।

**धामिन** *स्त्री०* (हि) एक तरह का साँप।

**धायँ** *स्त्री०* (हि) १-तोप, बन्दूक आदि छूटने का शब्द। २-किसी पदार्थ के जोर से गिरने का शब्द

**धायना** *क्रि०* (हि) दौड़ना।

**धार** पुं० (सं) १-जोर की वर्षा। २-ऋण। *स्त्री०* (हि) १-जल आदि के बहने या गिरने का क्रम। २-पानी का सोता। ३-किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा या किनारा। ५-तलवार। ६-सिरा। किनारा। ७-सेना। ८-समूह। ९-रेखा। १०-दिशा। ११-पर्वत की कोई छोटी श्रेणी। १२-दे० 'धाड़'। *वि०* (सं) गहरा। गम्भीर।

**धारक** *वि०* (सं) १-धारण करने वाला। २-रोकने वाला। ३-ऋण लेने वाला। पुं० कलश। घड़ा।

**धारण** पुं० (सं) १-थामना। २-पहनना। ३-सेवन करना। ४-अंगीकार करना। ५-ऋण लेना।

**धारणा** *स्त्री०* (सं) १-धारण करने की क्रिया या भाव २-पक्का विचार। समझ। ३-याद। स्मृति। ४-योग के आठ अंगों में से एक।

**धारणावधि** *स्त्री०* (सं) वह समय या अवधि जिसमें कोई पद, सम्पत्ति आदि धारण की जाय अथवा उसका उपभोग किया जाय। (टेन्यूर)।

**धारणाशक्ति** *स्त्री०* (सं) मस्तिष्क में ग्रहण करने की शक्ति।

**धारणिक** पुं० (सं) १-ऋणी। २-वह व्यक्ति जिसके पास अथवा वह कोठी जहाँ धन जमा किया जाय

**धारणीय** *वि०* (सं) धारण करने योग्य।

**धारना** *क्रि०* (हि) १-धारण करना। २-मन में निश्चय करना। ३-रखना। ४-ऋण लेना।

**धारा** *स्त्री०* (सं) १-प्रवाह। २-किसी दिशा में किसी वस्तु या तत्व का निरन्तर प्रवाहित होना। ३-निरंतर चलते रहने वाला क्रम। ४-किसी विधेयक या अधिनियम का स्वतन्त्र अंश अथवा भाग। दफा। (सेक्शन)।

**धाराधार** पुं० (सं) बादल।

**धारानिपात, धारापात** पुं० (सं) १-जलधारा का गिरना। २-भारी वर्षा।

**धाराप्रवाह** *वि०* (सं) अविराम गति से बहने या

चलने वाला।
धारायंत्र पुं० (सं) १-फव्वारा। २-पिचकारी।
धारावाहिक, धारावाही वि० (सं) १-अबाध गति से बढ़ने या चलने वाला। २-निरन्तर कुछ समय तक क्रमानुसार चलने वाला।
धारासभा स्त्री० (सं) व्यवस्थापिका सभा।
धारि स्त्री० दे० 'धार'।
धारिणी स्त्री० (सं) धरणी। पृथ्वी। वि० धारण करने वाली।
धारी वि०(सं) [स्त्री० धारिणी] १-धारण करने वाला २-पहनने वाला। स्त्री० (हि) १-सेना। २-समूह। ३-रेखा।
धारोष्ण वि० (सं) तुरन्त का दुहा हुआ (दूध)।
धार्तराष्ट्र पुं० (सं) धृतराष्ट्र के वंशज।
धार्मिक वि० (सं) १-धर्मशील। २-धर्म सम्बन्धी।
धार्मिकता स्त्री० (सं) धार्मिक होने का भाव।
धार्य वि०(सं) ग्राह्य। धारण करने के योग्य।
धार्मत्व पुं० (सं) १-धार्य का भाव। २-देन।
धावक पुं० (सं) हरकारा।
धावन पुं० (सं) १-दौड़ना। २-हमला करना। ३-धोना। ४-शुद्ध करना। ५-हरकारा। ६-वह जिससे कोई वस्तु धोई या साफ की जाय।
धावन-मार्ग पुं० (सं) अवतरण-पथ। (रन-वे)।
धावन-स्थली स्त्री० (सं) क्रिकिट के डण्डों के मध्य का स्थान जिसके मध्य दौड़कर रन बनाते हैं। (पिच)
धावना क्रि० (हि) तेजी से चलना। दौड़ना।
धावनि स्त्री० (हि) धावा। चढ़ाई।
धावरा वि० (हि) धवल। सफेद।
धावरी स्त्री० (हि) सफेद रङ्ग की गाय। धवरी।
धावल्य पुं० (सं) सफेदी। श्वेतता।
धावा पुं० (हि) १-आक्रमण। चढ़ाई। २-दौड़।
धावित वि० (सं) १-दौड़ता हुआ। २-दौड़ा हुआ। ३-मार्जित।
धाह स्त्री० (हि) १-चिल्लाकर रोना। धाड़। २-आग की गरमी।
धाही स्त्री० (हि) १-धाय। २-छाया। ३-आग की गरमी।
धिंग स्त्री० (हि) धींगा-धींगी। उपद्रव। शरारत।
धिंगाई स्त्री० (हि) १-ऊधम। २-कुटिलता।
धिग्रान पुं० (हि) ध्यान।
धिग्राना क्रि० (हि) ध्याना।
धिक्,धिक स्त्री० (हि) धिक्कार।
धिकना क्रि० (हि) दहकना। तपना।
धिकाना क्रि० (हि) तपाना।
धिक्कार स्त्री० (सं) लानत। फटकार।
धिक्कारना क्रि० (हि) लानत-मलामत करना। फटकारना।
धिग स्त्री० (हि) धिक्। धिक्कार।
धिठाई (हि) (हि) धृष्टता।
धिन वि० (हि) धन्य।
धिय, धिया स्त्री० (हि) १-पुत्री। २-बालिका।
धिरन, धिरयना, धिरवना क्रि० (हि) १-धमकी देना २-डाँटना।
धिराना क्रि० (हि) १-धमकाना। २-धीमा या मन्द होना। ३-धैर्य्य रखना।
धींग, धींगड़ा, धींगरा पुं० (हि) [स्त्री० धींगड़ी, धींगरी] १-हट्टाकट्टा। मजबूत। २-लुच्चा। ३-पापी। वि० दुष्ट। खल।
धींगासींगी, धींगामुश्ती स्त्री० (हि) शरारत। दुष्टता।
धींद्रिय स्त्री० (सं) ज्ञानेन्द्रिय।
धींवर पुं० (हि) धीवर। मल्लाह।
धी स्त्री० (सं) १-बुद्धि। २-मन। ३-समझ। स्त्री० (हि) बेटी। लड़की।
धीम्रा स्त्री० (हि) बेटी। लड़की।
धीजना क्रि० (हि) १-धैर्य धरना। २-सन्तुष्ट होना। ३-विश्वास करना।
धीठ वि० (हि) ढीठ।
धीमर पुं० (हि) धीवर।
धीमा वि० (हि) [स्त्री० धीमी] १-धीरे चलने वाला। २-मन्द (स्वर)।
धीमान पुं०(सं) [स्त्री० धीमती] बुद्धिमान। समझदार
धीय, धीया स्त्री०(हि) १-बेटी। २-बालिका। लड़की
धीर वि० (सं) १-जो शीघ्र विचलित न हो। दृढ़। २-गम्भीर। ३-उत्साही। ४-नम्र। पुं० १-धीरज। २-सन्तोष।
धीरक, धीरज पुं० (हि) धैर्य।
धीरजमान पुं० (हि) धैर्यवान्।
धीरता स्त्री० (सं) १-चित्त की स्थिरता। २-स्थिरता ३-सन्तोष।
धीरना क्रि० (हि) धीरज धराना।
धीर-प्रशांत पुं० (सं) वह नायक जो अनेक गुणों से युक्त उत्तम वर्ण का हो (साहित्य)।
धीर-ललित पुं० (सं) वह नायक जो सदा खूब बना-ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।
धीर-शांत पुं० (सं) धीर-प्रशान्त।
धीरा स्त्री० (सं) ताने से अपना क्रोध प्रकट करने वाली नायिका (साहित्य)। वि० (हि) मन्द। धीमा
धीरामीरा स्त्री० (सं) साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक में पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध प्रकट कर दे।
धीरे क्रि० वि० (हि) १-मन्द गति से। २-धीमे स्वर से। ३-चुपके से।
धीरोदात्त पुं० (सं) १-आत्मश्लाघा से रहित, क्षमा-

शील, धीर, विनम्र और दृढ़व्रत नायक।
धीरोद्धत पु० (सं) वह नायक जो बहुत साहसी और वीर हो और सदा अपने ही गुणों का बखान करे।
धीवर पु० (सं) [स्त्री० धीवरी] मछुआ। मल्लाह।
धुँआँ पुं० दे० 'धुआँ'।
धुँआरा वि० (हि) धूमिल।
धुँगार स्त्री० (हि) बघार। छौंक।
धुँगारना क्रि० (हि) बघारना। छौंकना।
धुँज वि० (हि) १-धुँधला। २-मन्द ज्योति वाला।
धुंद स्त्री० (हि) धुंध।
धुंध स्त्री० (हि) १-आकाश में बहुत अधिक धूल या भाप के छा जाने के कारण होने वाला अँधेरा। २-आँख का एक रोग जिसमें चीजें धुंधली दिखाई देती है।
धुंधकार पुं० (हि) १-अंधकार। २-गर्जन।
धुंधर, धुँधरि स्त्री० (सं) १-धूल, धुएँ आदि के कारण होने वाला अंधकार। २-गर्द। ३-अंधेरा।
धुंधला वि० (हि) १-कुछ कुछ अँधेरा। २-धुएँ के रंग का। ३-अस्पष्ट।
धुंधलाई स्त्री० (हि) धुंधलापन।
धुंधलापन पुं० (हि) धुँधला होने का भाव।
धुंधली स्त्री० (हि) १-अँधेरा। २-नजर की कमजोरी
धुंधाना क्रि० (हि) १-धूँआँ देना। २-धूआँ देते हुए जलना। ३-धुँधला होना। ४-किसी वस्तु में धूआँ लगाना।
धुंधार वि० (हि) १-धूमिल। २-धुआँधार।
धुंधि स्त्री० (हि) धुंध।
धुंधियारा वि० (हि) धुंधला।
धुंधी स्त्री० (हि) १-आँधी। २-अँधेरा। ३-आँधी के समय आकाश में उड़ने वाली धूल।
धुंधुआना क्रि० (हि) धुँधाना।
धुंधुरि स्त्री० (हि) धुएँ, धूल आदि के कारण छाया हुआ अंधकार।
धुंधुरित वि० (हि) १-धूमिल। २-दृष्टिहीन।
धुंधुरी स्त्री० (हि) १-धुँध। २-धुँधलापन। ३-धुन्ध नामक आँख का रोग।
धुंधुवाना क्रि० (हि) १-धुआँ देना। २-धुआँ देकर जलना।
धुँधुरी स्त्री० (हि) गर्द गुब्बार से उत्पन्न होने वाला अँधेरा। धुन्ध।
धुअ पुं० (हि) ध्रुव।
धुआँ पुं० (हि) धुआँ।
धुआँकश पुं० (हि+फा) १-भाप की शक्ति से चलने वाली नाव या जहाज। (स्टीमर)। २-धुआँ निकलने के लिए छत में बनाया हुआ छेद। चिमनी।
धुआँधार वि० (हि) १-बड़े जोर का। २-धुएँ से भरा। ३-काला। क्रि० वि० (हि) बहुत अधिक या बहुत जोर से।
धुआँना क्रि० (हि) धुआँ लगने से दूध, पकवान आदि का स्वाद और गंध बिगड़ जाना।
धुआँयँध स्त्री० (हि) धुएँ की सी गन्ध।
धुआँरा पुं० (हि) धुआँ निकलने की चिमनी।
धुआँस स्त्री० (हि) उरद का आटा।
धुआँसा पुं० (हि) वह कालिख जो आग लगने के कारण छत में जम जाती है। वि० धुआँ लगने से बिगड़ा हुआ स्वाद या गन्ध।
धुआ पुं० (?) शव। लाश।
धुकड़पुकड़ पुं० (हि) १-भय आदि के कारण होने वाली चित्त की व्याकुलता। घबराहट। २-असमंजस।
धुकधुकी स्त्री० (हि) १-पेट और छाती के बीच का भाग जो गहरा होता है। २-कलेजा। हृदय। ३-कलेजे की धड़कन या कंप। ४-भय। ५-एक गहना जुगनू।
धुकना क्रि० (हि) १-झुकना। २-गिर पड़ना। ३-झपटना। ४-धनी देना।
धुकरना क्रि० (हि) शब्द करना।
धुकार, धुकारी, धुक्कन स्त्री० (हि) १-नगाड़े का शब्द। २-किसी तरह की भारी आवाज।
धुक्कना क्रि० दे० 'धुकना'।
धुक्करना क्रि० (हि) शब्द करना।
धुक्कारना क्रि० (हि) १-गिराना। २-नवना। ३-धुआँ से ताप पहुँचाना। ४-काँपना। डरना।
धुज पुं० (हि) ध्वज।
धुजा स्त्री० (हि) ध्वजा।
धुजानी, धुजिनी स्त्री० (हि) सेना। फौज।
धुड़ंगा वि० (हि) [स्त्री० धुड़ङ्गी] १-नङ्गा। २-जिस-पर धूल पड़ी हो।
धुतकार स्त्री० (हि) दुतकार।
धुतकारना क्रि० (हि) दुतकारना।
धुताई स्त्री० (हि) धूर्त्तता।
धुतारा वि० (हि) धूर्त्त।
धुधुकार स्त्री० (हि) १-'धू-धू' का शब्द। २-भयानक आवाज।
धुधुकारी, धुधकी स्त्री० दे० 'धुधुकार'।
धुन स्त्री० (हि) १-लगन। २-मन की तरङ्ग। मौज। ३-चसका। ४-चिन्ता। ५-गाने की तर्ज। ६-ध्वनि
धुनकना क्रि० (हि) धुनना।
धुनकी स्त्री० (हि) १-धनुष के आकार का औजार जिससे रूई धुनते हैं। २-छोटा धनुष।
धुनना क्रि० (हि) १-धुनकी से रूई साफ करना। २-खूब मारना-पीटना। ३-दूसरे की बात बिना

सुने अपनी बात बराबर कहते जाना। ४-कोई काम लगातार करते जाना। ५-बहुतायत होना। ६-चारों ओर से घिर जाना। छाना।
धुनवाना क्रि० (हि) दूसरे को धुनने में प्रवृत्त करना।
धुनि स्त्री० (सं) नदी। स्त्री० (हि) ध्वनि।
धुनियाँ पुं० (हि) रूई धुनने वाला। स्त्री० धुनकी।
धुनी स्त्री० (सं) नदी। स्त्री० (हि) धूनी। २-ध्वनि वि० (हि) जिसे किसी बात की धुन हो।
धुपधुप वि० (हि) १-साफ। स्वच्छ। २-उज्ज्वल।
धुपना क्रि० (हि) धुलना।
धुपेली स्त्री० (हि) गरमी में पसीने से निकलने वाली फुंसी।
धुप्पस स्त्री० (हि) किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जाने वाला कार्य। धौंस।
धुमिला वि० (हि) धूमिल।
धुमिलाना क्रि० (हि) धूमिल होना।
धुमैला वि० (हि) धुएँ के रङ्ग का।
धुरंधर वि० (सं) १-जो सबमें बहुत बड़ा भारी या बली हो। २-भार उठाने वाला। ३-श्रेष्ठ। प्रधान।
धुर पुं० (हि) १-रथ या गाड़ी का धुरा। अक्ष। २-उच्च स्थान। ३-आरम्भ। ४-भार। बोझ। ५-जूआ, जो बैलों के कन्धे पर रखा जाता है। वि० (हि) १-दृढ़। २-सीधे। ३-बहुत दूर।
धुरजटी पुं० दे० 'धूर्जटी'।
धुरना क्रि० (हि) १-मारना। २-बजाना।
धुरपद पुं० दे० 'ध्रुपद'।
धुरवा पुं० (हि) बादल।
धुरा पुं० (हि) [स्त्री० धुरी] लोहे का वह डण्डा जिसके दोनों सिरों पर गाड़ी आदि के पहिए लगे रहते हैं। अक्ष।
धुरी स्त्री० (हि) छोटा धुरा।
धुरी-देश, धुरीराष्ट्र पुं० (हि) द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जरमनी, इटली और जापान इन तीन राष्ट्रों का गुट। (एक्सिस-कन्ट्रीज)।
धुरीण वि० (सं) १-बोझ सभालने वाला। २-मुख्य प्रधान। ३-धुरन्धर।
धुरीन वि० दे० 'धुरीण'।
धुरेटना क्रि० (हि) धूल लगाना।
धुर्रा पुं० (हि) धूल।
धुलना क्रि० (हि) १-धोया जाना। २-पानी पड़ने से कट कर बह जाना।
धुलवाना वि० (हि) धोने का काम दूसरे से कराना।
धुलाई स्त्री० (हि) धोने का काम भाव या मजदूरी।
धुलेंडी स्त्री० (हि) होली के दूसरे दिन का त्यौहार जो अबीर और रङ्ग से खेला जाता है।
धुव पुं० (हि) ध्रुव।
धुवाँ पुं० (हि) धूआँ।
धुवाँस स्त्री० (हि) उरद का पिसान।
धुस्स पुं० (हि) १-टीला। २-नदी का बाँध।
धुस्सा पुं० (हि) मोटे ऊन की लोई।
धूंध स्त्री० (सं) धुन्ध।
धूंधर, धूँधुर वि० (हि) धुँधला। धुन्ध।
धूंसना क्रि० (हि) घोर शब्द करना।
धू पुं० (हि) ध्रुव। ध्रुवतारा।
धूआँ पुं० (हि) १-आगे से निकलने वाली काली भाप। धूम। २-भारी समूह।
धूआँकश पुं० (हि) अग्निबोट। (स्टीमर)।
धूआँधार वि०, क्रि० वि० दे० 'धूआँधार'।
धूई स्त्री० (हि) धूनी।
धूकना क्रि० (हि) झुकना।
धूजट पुं० (हि) धूर्जटि।
धूजना क्रि० (हि) १-काँपना। २-हिलना।
धूत वि० (हि) १-धूर्त। २-दगाबाज। वि० (स) १-हिलता या काँपता हुआ। २-छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३-चारों ओर से रुका या घिरा हुआ।
धूतना क्रि० (हि) १-धूर्तता करना। २-छलना।
धूताई स्त्री० (हि) धूर्तता।
धूतुक, धूतू पुं० (हि) १-तुरही। २-धूधू शब्द करने वाला बाजा।
धूधू पुं० (हि) आग दहकने या जलने का शब्द।
धूनना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना। २-धुनना।
धूनी स्त्री० (हि) १-आग में डाले गये गुग्गुल आदि का धुआँ। २-साधुओं के तापने की आग।
धूप पुं० (स) १-सुगन्धित धूप। २-सुगन्ध के लिए गन्ध द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। ३-एक सुगन्धित द्रव्य। स्त्री० १-आतप। घाम। सूर्य प्रकाश।
धूप-घड़ी स्त्री० (हि) सूर्य के प्रकाश में समय बताने वाली घड़ी।
धूप-छाँह स्त्री० (हि) एक प्रकार का कपड़ा।
धूपदान पुं० (हि) [स्त्री० धूपदानी] वह पात्र जिसमें गंध द्रव्य रख कर जलाये जाते हैं।
धूपना क्रि० (हि) १-धूप देना। २-सुगन्धित धुएं से बसाना। ३-दौड़ना।
धूपबत्ती स्त्री० (हि) धूप आदि गन्ध द्रव्यों से बनी बत्ती जिसे जलाने से सुगन्धित धुआँ निकलता है
धूपायित, धूपित वि० (स) १-सुगन्धित धूएँ से बसा हुआ। २-चलने आदि से थका हुआ।
धूम पुं० (सं) १-धूआँ। २-अपच से उठने वाली डकार। स्त्री०(हि) १-तैयारी के साथ किये जानेवाले किसी बड़े काम या उत्सव का हल्ला-गुल्ला। २-हल-चल। ३-ऊधम। ४-समारोह। ५-प्रसिद्धि।
धूमकेतु पुं० (सं) १-अग्नि। २-पुच्छलतारा।

**धूमधड़क्का** पुं० (हि) धूम-धाम। चहल-पहल।
**धूमधाम** स्त्री० (हि) समारोह। धूमधड़क्का।
**धूम-धामी** वि० (हि) १-जिसमें धूमधड़क्का हो। २-उपद्रवी।
**धूम-ध्वज** पुं० (सं) अग्नि।
**धूमपट** पुं० (सं) धूमावरण। (स्मोक-स्क्रीन)।
**धूम-पान** पुं० (सं) बीड़ी आदि का धुआँ पीना।
**धूमपोत** पुं० (सं) धूआँकश।
**धूमयान** पुं० (सं) रेलगाड़ी।
**धूमयोनि** पुं० (सं) बादल।
**धूमर, धूमरा** वि० (हि) [स्त्री० धूमरी] धूमिल।
**धूमाभ** वि० (सं) धूएँ के रङ्ग का।
**धूमायमान** वि० (सं) धूएँ से परिपूर्ण।
**धूमावरण** पुं० (सं) धूएँ के बादल, जिनसे सैनिक गतिविधि छिपाते हैं। (स्मोक स्क्रीन)।
**धूमिल** वि० (हि) १-धूएँ के रङ्ग का। २-धुँधला।
**धूम्र** वि० (सं) धूएँ के रङ्ग का। पुं० धूआँ। धूम।
**धूम्र-पट** पुं० (सं) धूमपट।
**धूम्र-पान** पुं० (सं) धूमपान।
**धूम्रीकरण** पुं०(सं) (रोग के कीटाणुओं या हवा की गन्दगी दूर करने के लिए) सुगन्धित धूप या संक्रमणनाशक गैस आदि प्रसारित करना। (फ्यूमिगेशन)।
**धूर** स्त्री० (हि) धूल। पुं० एक बिस्वे का बीसवाँ भाग।
**धूरजटी** पुं० दे० 'धूर्जटि'।
**धूरत** वि० दे० 'धूर्त्त'।
**धूरधुरेटा** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो वि० धूल में लिपटा हुआ।
**धूरा** पुं० (हि) १-धूल। २-चूर्ण।
**धूरि** स्त्री० (हि) धूल।
**धूर्जटि** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**धूर्त** वि० (सं) १-छली। २-वंचक। ३-चालबाजी से काम साधने वाला।
**धूल** स्त्री० (हि) १-रेणु। रज। गर्द। २-धूल के समान साधारण वस्तु।
**धूल-धूसरित** वि० (सं) धूल लगने से जो भूरे रङ्ग का हो गया हो।
**धूलि** स्त्री० (सं) धूल। गर्द।
**धूलि-चित्र** पुं० (सं) चूर्ण रंगों के जमीन पर भुरककर बनाये हुए चित्र।
**धूसर, धूसरित** वि० (सं) १-मटमैला। २-धूल भरा
**धूसला** वि० (हि) धूसर।
**धृक, धृग** पुं० (हि) धिक्। धिक्कार।
**धृत** वि० (सं) [स्त्री० धृता] १-पकड़ा हुआ। २-धारण किया हुआ। ३-ग्रहण किया हुआ। ४-स्थिर किया हुआ।
**धृति** स्त्री० (सं) १-धैर्य। धीरज। २-धारण। ३-मन की दृढ़ता। ४-ठहराव।
**धृती** वि० धैर्यवान्।
**धृष्ट** वि० (सं) (स्त्री० धृष्टा) १-निर्लज्ज। २-उद्धत। पुं० ढीठ नायक (साहित्य)।
**धेनु** स्त्री० (सं) १-थोड़े दिन की ब्याई हुई गाय। २-गाय।
**धेनुमुख** पुं० (सं) नरसिंहा नामक बाजा।
**धेयना** क्रि० (हि) ध्यान करना।
**धेरी** स्त्री० (हि) पुत्री।
**धेला** पुं० (हि) आधा पैसा। अधेला।
**धेली** स्त्री० (हि) अठन्नी।
**धैना** स्त्री० (हि) १-धन्धा। २-आदत।
**धैर्य** पुं० (सं) १-धीरज। २-मन्न। ३-निर्विकार।
**धैवत** पुं० (सं) सङ्गीत के सात स्वरों में से छठा।
**धोंकना** क्रि० (हि) १-काँपना। २-दे० 'धौंकना'।
**धोंधा** वि० (हि) १-मूर्ख। २-बेडौल। पुं० बे-डौल, भद्दा या टेढ़ा-मेढ़ा पिण्ड।
**धोंधाबसंत** पुं० (हि) निरा गँवार।
**धो** पुं० (हि) धोने की क्रिया।
**धोई** स्त्री० (हि) धोकर, छिलका अलग की हुई दाल।
**धोका** पुं० दे० 'धोखा'।
**धोखा** पुं० (हि) १-भुलावा। छल। २-भ्रान्ति। ३-भ्रम उत्पन्न करने वाली बात या वस्तु। ४-अज्ञान से होने वाली भूल। ५-अनिष्ट की सम्भावना। ६-बिजूखा। ७-खटखटा। ८-एक पकवान।
**धोखेबाज** वि० (हि) कपटी।
**धोटा** पुं० दे० 'ढोटा'।
**धोती** स्त्री० (हि) १-कमर पर पहनने का एक वस्त्र। २-दे० 'धौति'।
**धोना** क्रि० (हि) १-मैल दूर करना। २-पानी से साफ करना। ३-मिटाना।
**धोप** स्त्री० (हि) तलवार।
**धोपना** क्रि० (हि) मार-पीट करना।
**धोब** पुं० (हि) धुलाई।
**धोबी** पुं० (हि) [स्त्री० धोबिन, धोबिन] गैले कपड़े धोने का काम करने वाला। रजक।
**धोम** पुं० (हि) धूम। धूआँ।
**धोरी** पुं० (हि) १-धुरे को उठाने वाला। २-रक्षक ३-बैल। ४-मुखिया। ५-श्रेष्ठ पुरुष।
**धोरे** क्रि० वि० (हि) पास। समीप।
**धोवत** पुं० (हि) धोबी।
**धोवती** स्त्री० (हि) धोती।
**धोवन** स्त्री० (हि) १-धोने की क्रिया या भाव। २-वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।
**धोवना** क्रि० (हि) धोना।
**धोवा** पुं० (हि) १-धोवन। २-पानी।

**धोवाना** क्रि० (हिं) धुलना या धुलाना।
**धौं** अव्य० (हिं) १-न जाने क्या। २-अथवा। ३-भला। तो। ४-विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के निमित्त आने वाला शब्द
**धौंकना** क्रि० (हिं) १-आग दहकाने के लिए हवा देना। २-ऊपर डालना। ३-दण्ड आदि देना या लगाना।
**धौंकनी** स्त्री० (हिं) १-आग दहकाने की लोहे या बाँस की नली। २-भाथी।
**धौंकी** स्त्री० (हिं) १-धौंकनी। २-भाथी।
**धौंज** स्त्री० (हिं) १-दौड़-धूप। २-घबराहट।
**धौंजना** क्रि० (हिं) १-दौड़-धूप करना। २-कुचलना।
**धौंताल** वि० (हिं) १-जिसे असाधारण धुन हो। २-फुरतीला। ३-चालाक। ४-साहसी। ५-हेकड़। ६-शरारती।
**धौंस** स्त्री० (हिं) १-धमकी। २-रोब। ३-झाँसापट्टी।
**धौंसना** क्रि० (हिं) १-दबाना। २-धमकी देना। ३-मारना-पीटना।
**धौंसपट्टी** स्त्री० (हिं) भुलावा। दम-दिलासा।
**धौंसर** वि० (हिं) धूसर। पुं० किसी वस्तु के ऊपर पड़ी हुई धूल।
**धौंसा** पुं० (हिं) १-बड़ा नगाड़ा। २-सामर्थ्य।
**धौंसिया** पुं०(हिं) १-धौंसा बजाने वाला। २-धोखेबाज। ३-धौंस जमाने वाला।
**धौ-कांदव** पुं० (हिं) धान विशेष या उसका चावल।
**धौत** वि० (सं) १-धोया हुआ। २-उजला। पुं० चाँदी। रूपा।
**धौति, धौती** स्त्री० (सं) १-शुद्धि। २-हठयोग की एक क्रिया। ३-इस क्रिया में काम आने वाली पट्टी
**धौर** वि० (हिं) धवल। श्वेत।
**धौरहर, धौरहा** पुं० दे० 'धरहरा'।
**धौरा** वि० (हिं) [स्त्री० धौरी] श्वेत। उजला। पुं० १-सफेद बैल। २-एक पक्षी।
**धौराहर** पुं० दे० 'धरहरा'।
**धौरिय** पुं० (हिं) बैल।
**धौरी** स्त्री० (हिं) १-धवल रंग की गाय। कपिला। २-एक चिड़िया।
**धौरे** क्रि० वि० (हिं) निकट। पास।
**धौल** स्त्री० (हिं) १-हाथ के पंजे का भारी आघात। २-हानि। वि० (हिं) उजला। सफेद।
**धौलहर, धौलहरा** पुं० दे० 'धरहरा'।
**धौला** वि० (हिं) [स्त्री० धौली, धौलता, धौलाई] सफेद। उजला।
**धौलागिरि** पुं० दे० 'धवलगिरि'।
**ध्यात** वि० (सं) विचारा हुआ। चिन्तित।
**ध्यातव्य** वि० (सं) ध्येय।
**ध्याता** वि० (सं) [स्त्री० ध्यात्री] ध्यान करने वाला।
**ध्यान** पुं० (सं) १-किसी के स्वरूप का चिंतन। २-विषय विशेष में चित्त की एकाग्रता। ३-विचार। ख्याल। ४-समझ। ५-स्मृति। याद। ६-चित्त की ग्रहण वृत्ति। ७-योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अङ्ग।
**ध्यानना, ध्याना** क्रि० (हिं) ध्यान करना।
**ध्यानावस्थित** वि० (सं) ध्यान में लगा हुआ।
**ध्यानी** वि० (हिं) १-ध्यानयुक्त। २-ध्यान करने वाला। समाधि लगाने वाला।
**ध्येय** वि० (सं) १-ध्यान करने योग्य। २-जिसका ध्यान किया जाय। ३-उद्देश्य। लक्ष्य।
**ध्रुपद** पुं० (हिं) एक तरह का पक्का गाना।
**ध्रुपदिया** पुं० (हिं) ध्रुपद गाने वाला।
**ध्रुव** वि०(सं) १-स्थिर। अचल। २-निश्चित। पक्का पुं० १-आकाश। २-शंकु। कील। पर्वत। ३-ध्रुपद ४-एक प्रसिद्ध बाल तपस्वी। ५-ध्रुवतारा।
**ध्रुवता** स्त्री० (सं) १-ध्रुव होने का भाव। २-दृढ़ता। ३-निश्चय।
**ध्रुवताई** स्त्री० (हिं) ध्रुवता।
**ध्रुवतारा** पुं० (सं) उत्तर दिशा में एक स्थान पर स्थित रहने वाला तारा।
**ध्रुव-दर्शक** पुं० (सं) १-सप्तर्षि मंडल। २-कुतुबनुमा
**ध्रुवपद** पुं० (सं) ध्रुपद।
**ध्रुव-लोक** पुं० (सं) पुराणानुसार भक्त ध्रुव के रहने का स्थान।
**ध्रुवीय** वि०(सं) १-ध्रुव सम्बन्धी। २-ध्रुव प्रदेश का
**ध्वंस** पुं० (सं) १-विनाश। नाश। २-मकान आदि का ढहना।
**ध्वंसक** वि० (सं) १-नाश करने वाला। २-ढहाने वाला।
**ध्वंसन** पुं० (सं) १-विनाश। २-तोड़-फोड़।
**ध्वंसावशेष** पुं० (सं) १-खंडहर। २-किसी वस्तु के टूट-फूट जाने पर बचे हुए टुकड़े।
**ध्वंसी** वि० (हिं) (स्त्री० ध्वंसिनी) ध्वंसक।
**ध्वज** पुं० (सं) १-चिह्न। २-झण्डा। पताका।
**ध्वज-पोत** पुं० (सं) बेड़े में नौसेनापति का जहाज जिस पर उसका झण्डा फहराता है।
**ध्वज-यष्टि** स्त्री० (सं) झण्डे का डण्डा।
**ध्वज-विस्फरण** पुं०(सं) ध्वज को सिकुड़ी हुई स्थिति में निकालकर खोलना।
**ध्वज-स्तंभ** पुं० (सं) वह स्तंभ जिस पर झण्डा फहरता है। (फ्लैग स्टाफ)।
**ध्वजा** स्त्री० (सं) पताका।
**ध्वजारोपण** पुं० (सं) झण्डा लगाना।
**ध्वजारोहण** पुं० (सं) फहराने के लिए झण्डा चढ़ाना।
**ध्वजी** वि० (सं) १-ध्वज वाला। २-जिसका कोई विशेष चिह्न हो।

**ध्वजोत्तोलन** पुं० (सं) झण्डा ऊपर चढ़ाकर फहराना।

**ध्वनि** स्त्री० (सं) १-शब्द। आवाज। २-आवाज की की गूंज। ३-वह कथन जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ का अधिक चमत्कार होता है। ४-झलकता हुआ अर्थ।

**ध्वनि-काव्य** पुं० (सं) उत्तम प्रकार का काव्य।

**ध्वनि-क्षेपक** वि० (सं) ध्वनि को चारों ओर फैलाने वाला।

**ध्वनि-क्षेपक-यंत्र** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसकी सहायता से किसी एक स्थान पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि विद्युत शक्ति से चारों ओर बहुत दूर-दूर तक पहुँचाई या फैलाई जाती है। (माइक्रोफोन)।

**ध्वनि-क्षेपण** पुं० (सं) वैद्युत-यन्त्र की सहायता से ध्वनि को चारों ओर दूर तक फैलाना।

**ध्वनित** वि० (सं) १-जो ध्वनि के रूप में व्यक्त हुआ हो। २-जिसकी ध्वनि हुई हो। ३-शब्दित।

**ध्वनि-तरंग** स्त्री० (सं) ध्वनि होने पर उठने वाली वह तरंग जो हवा में चारों ओर फैलकर कानों तक पहुँचती है जिससे उस ध्वनि का भान होता है। (साउण्डवेव)।

**ध्वनिवर्द्धक** पुं० (सं) ध्वनिविस्तारक। (लाउडस्पीकर)।

**ध्वनिविक्षेपक** पुं० (सं) दूर-विक्षेपक। (ट्रांसमीटर)।

**ध्वनिविक्षेपण** पुं० (सं) दूर-विक्षेपण। (ट्रांसमीशन)

**ध्वनि-विज्ञान** पुं० (सं) बोलते समय मनुष्य के गले से किस तरह ध्वनि निकलती है और उसे किस तरह बोला या लिखा जाता है ऐसा विवेचन करने वाला विज्ञान। (फोनेटिक्स)।

**ध्वनि-विस्तारक** पुं० (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा ध्वनि की तीव्रता बढ़ती है। (लाउडस्पीकर)।

**ध्वनि-संग्राहक, ध्वन्यभिलेखक** पुं० (सं) वह यन्त्र या साधन जिससे ध्वनि का संग्रहण अथवा अभिलेखन होता है। (साउण्ड-रिकार्डर)।

**ध्वन्यात्मक** वि० (सं) १-ध्वनियुक्त। २-जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो।

**ध्वन्यार्थ** पुं० (सं) वह अर्थ जिसका बोध व्यञ्जना शक्ति से होता है।

**ध्वन्यालेखन** पुं० (सं) चित्र-पट में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा ध्वनि अङ्कित की जाती है और चित्र-पट दिखाने के समय चित्र के अनुरूप सुनाई पड़ती है।

**ध्वस्त** पुं० (सं) १-ढहा हुआ। २-नष्ट। ३-पतित। ४-गलित।

**ध्वांत** पुं० (सं) अन्धकार। अँधेरा।

**ध्वांतचर** पुं० (सं) राक्षस।

**ध्वांतधाम** पुं० (सं) नरक।

[शब्दसंख्या—२३५४३]

**न** हिन्दी वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।

**नंग** पुं० (हि) १-वस्त्रहीनता। नङ्गापन। २-स्त्री या पुरुष के गुप्ताङ्ग। वि० १-बदमाश और बेहया। २-व्यर्थ में आगे से सिर फुड़व्वल करने वाला।

**नंग-धड़ंग** वि० (हि) दिगम्बर। विवस्त्र।

**नंगा** वि० (हि) १-जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। २-जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३-निर्लज्ज। ४-पाजी।

**नंगाझोरी, नंगाझोली** स्त्री० (हि) पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

**नंगा-नाच** पुं० (हि) निरंकुश होकर निर्लज्जतापूर्वक अनुचित कार्य करना।

**नंगा-बुच्चा, नंगा-बूचा** पुं० (हि) कङ्गाल। अकिंचन

**नंगा-लुच्चा** वि० (हि) नीच और दुष्ट। बदमाश।

**नंगियाना, नंग्याना** क्रि० (हि) १-नंगा करना। २-सब कुछ छीन लेना।

**नंचना** क्रि० (हि) नाचना।

**नंद** पुं० (सं) १-आनन्द। हर्ष। २-परमेश्वर। ३-श्रीकृष्ण के पालक पिता। ४-पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ५-एक तरह का मृदङ्ग। ६-एक राग।

**नंदकिशोर, नंदकुँवर, नंदकुमार, नंदनंदन** पुं० = कृष्ण

**नंदनंदिनी** स्त्री० (सं) योगमाया।

**नंदन** पुं० (सं) १-राजा इन्द्र का उद्यान। २-विष्णु ३-पुत्र। ४-मेघ। वि० आनन्द देने वाला।

**नंदन-कानन, नंदन-वन** पुं० (सं) स्वर्ग में इन्द्र का उद्यान।

**नंदना** स्त्री० (सं) पुत्री। क्रि० (हि) १-आनन्दित होना। २-प्रसन्न करना।

**नंदनी** स्त्री० दे० 'नंदिनी'।

**नंदरानी** स्त्री० (हि) यशोदा।

**नंदलाल** पुं० (हि) कृष्ण।

**नंदा** स्त्री० (सं) १-आनन्द। २-दुर्गा का एक विग्रह ३-ननद। वि० आनन्द देने वाली। २-शुभ।

**नंदादेवी** स्त्री० (सं) हिमालय की एक चोटी का नाम।

**नंदि** पुं० (सं) १-आनन्द। २-परमेश्वर। ३-नंदी

**नंदिकेश, नंदिकेश्वर** पुं० (सं) नंदी (शिव का वाहन)।

**नंदित** वि० (सं) आनन्दित। क्रि० (हि) बजता हुआ।

नंदिन स्त्री० (हि) पुत्री।
नंदिनी स्त्री० (सं) १-पुत्री। २-दुर्गा। ३-गंगा। ४-ननद। ५-वसिष्ठ की कामधेनु।
नंदी पुं० (हि) १-शिव के गण विशेष। २-शिव का वाहन, बैल। ३-शिव के नाम पर दाग कर उत्सर्ग किया हुआ बैल। ४-वह बैल जिसके शरीर पर गाँठें हों। ५-विष्णु। वि० प्रसन्न।
नंदीगण पुं० (हि) १-शिव का वाहन, बैल। २-छोड़ा हुआ बैल। साँड।
नंदीपति पुं० (सं) शिव।
नंदीमुख पुं० दे० 'नांदीमुख'।
नंदीश, नंदीश्वर पुं० (स) १-शिव। २-शिव का एक गण।
नंदेऊ, नंदोई पुं० (हि) ननद का पति।
नंबर पुं० (अ) १-संख्या। २-अङ्क। वि० अदद।
नंबरदार पुं० (हि) १-मालगुजारी वसूल करने वाला व्यक्ति। २-मुखिया।
नंबरवार क्रि० वि० (हि) क्रमानुसार।
नंबरी वि० (हि) १-नंबर वाला। २-कुख्यात।
नंबरी-गज पुं० (हि) ३६ इंच का कपड़ा नापने का गज।
नंबरी-चोर पुं० (हि) कुख्यात चोर जिसका उल्लेख पुलिस के अभिलेखों में मिलता है।
नंबरी-तह स्त्री० (हि) गज गज पर छाप लगाकर बनाई हुई तह।
नंबरी-नोट पुं०(हि) सौ या सौ से अधिक मूल्य का नोट।
नंबरी-सेर पुं० (हि) ८० रुपयों के बराबर की तौल का सेर।
नंस वि० (हि) नष्ट।
नई वि० (हि) नीतिज्ञ। स्त्री० १-नदी। २-नया का स्त्रीलिंग रूप।
नउंजी स्त्री० (हि) लीची।
नउ वि० (हि) १-नव। २-नौ।
नउआ पुं० (हि) नाई।
नउका स्त्री० (हि) नौका।
नउज अव्य० (हि) नौज।
नउत वि० (हि) नत।
नउल वि० (हि) नवल।
नउलि वि० (हि) १-नया। २-ताजा।
नओढ़ स्त्री० (हि) नवोढ़ा।
नक स्त्री० (हि) (समस्त शब्दों में प्रयुक्त होने वाला) नाक का संक्षिप्त रूप।
नक-कटा वि० (हि) [स्त्री० नक-कटी] १-जिसकी नाक कट गई हो। २-निर्लज्ज। ३-जिसकी बहुत दुर्दशा हुई हो। ४-जिसके कारण अप्रतिष्ठा हुई हो।
नकघिसनी स्त्री० (हि) १-भूमि पर नाक घिसने की क्रिया। २-अत्यधिक दीनता प्रकट करना।
नक-चढ़ा वि० (हि) [नकचढ़ी] १-चिड़चिड़ा। २-घृणा करने वाला।
नकछिकनी स्त्री० (हि) एक घास।
नकटा वि० (हि) [स्त्री० नकटी] १-दे० 'नक-कटा'। २-एक गीत जिसे स्त्रियाँ मङ्गल अवसरों पर गाती हैं।
नकद वि०, पु० दे० 'नगद'।
नकदी स्त्री० (हि) नगद।
नकना क्रि० (हि) १-लाँघना। २-दागना। ३-हैरान होना। ४-दे० 'नाकना'।
नकब स्त्री० (अ) सेंध।
नकबजनी स्त्री० (अ) सेंध लगाना।
नक-बानी स्त्री० (हि) नाक में दम। परेशानी।
नक-बेसर स्त्री० (हि) छोटी नथ।
नक-मोती पुं० (हि) नाक में पहनने का मोती।
नकल स्त्री०(अ) १-अनुकृति। २-अनुकरण। ३-प्रतिलिपि। कापी। ४-अभिनय। ५-चुटकुला। ६-अद्भुत और हास्यजनक आकृति।
नकलची पुं० (अ) नकल करने वाला।
नकल-नवीस पुं० (अ) लेखों आदि की नकल करने वाला कर्मचारी।
नकल-बही स्त्री० (हि) वह बही जिस पर चिट्ठियों, हुण्डियों आदि की नकल होती है।
नकली वि० (अ) १-नकल करके बनाया हुआ। २-बनावटी।
नकवानी स्त्री० (हि) नाक में दम।
नकशा पुं० दे० 'नक्शा'।
नकशा-नवीस पुं० दे० 'नक्शानवीस'।
नकसीर पुं० (हि) गरमी के दिनों में नाक से आप-से-आप रक्त बहने का रोग।
नका पुं० दे० 'निकाह'।
नकाना क्रि० (हि) नाक में दम करना या होना।
नकाब स्त्री० (अ) १-चेहरा छिपाने के लिए मुख पर डाला हुआ कपड़ा। २-स्त्रियों के मुख पर का घूँघट
नकार पुं० (सं) १-न या नहीं का बोध कराने वाला शब्द। २-अस्वीकृति। ३-'न' अक्षर।
नकारना क्रि० (हि) १-अस्वीकृत करना। २-'नहीं' कहना या करना।
नकारा वि० (हि) निकम्मा।
नकारात्मक वि० (स) १-इनकार किया हुआ। २-जिसमें 'हाँ' का अभाव हो।
नकाशना क्रि० (हि) नक्काशी करना।
नकाशी स्त्री० दे० 'नक्काशी'।
नकियाना क्रि० (हि) १-नाक से बोलना। २-नाक में दम आना।
नकीब पुं० (अ) १-चारण। २-कड़खैत।

**नकुड़ा, नकुरा** पुं० (हि) १-नाक। २-नथना।
**नकुल** पुं०(सं) १-नेवला नामक जन्तु। २-पांडुराज के चौथे पुत्र का नाम।
**नकेल** स्त्री० (हि) ऊँट, बैल आदि के नाक में बंधी हुई रस्सी।
**नक्कना** क्रि० (हि) लांघना।
**नक्का** पुं० (हि) १-सूई का वह छेद जिसमें डोरा पिरोया जाता है। २-ताश का एका। ३-कौड़ी।
**नक्कारखाना** पुं० (फा) नौबतखाना।
**नक्कारची** पुं० (फा) नक्कारा या नगाड़ा बजाने वाला।
**नक्कारा** पुं० (अ) १-नगाड़ा। २-डुगडुगी।
**नक्काल** पुं०(अ) १-नकल करने वाला। २-भाँड। ३-बहुरूपिया।
**नक्काश** पुं० (अ) नक्काशी करने वाला। २-चित्रकार।
**नक्काशी** स्त्री० (अ) बेल-बूटे खोदने या चित्र बनाने का कार्य।
**नक्की** वि० (देश) १-दृढ़। २-ठीक। ३-निश्चित। स्त्री० गाने का एक ढङ्ग।
**नक्की-मूठ** स्त्री० (हि) कौड़ियों से खेला जाने वाला एक तरह का जूआ।
**नक्कू** वि० (हि) १-बड़ी नाक वाला। २-बदमाश। ३-सबसे अलग और उलटा काम करने वाला।
**नक्द** पुं० (अ) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो।
**नक्दी** स्त्री० (अ) रोकड़।
**नक्दी-चिट्ठा** पुं० (हि) रोकड़बही।
**नक्र** पुं०(सं) १-नाक नाम का जल-जन्तु। २-मगर
**नक्श** वि० (अ) १-अंकित। २-चित्रित। ३-लिखित पुं० १-चित्र। २-खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटे आदि का काम। ३-मुहर। ४-तावीज
**नक्शा** पुं० (अ) १-रेखा-चित्र। २-आकृति। ३-चाल-ढाल। ४-अवस्था। ५-दशा। ६-साँचा। ७-पृथ्वी के किसी भाग या खगोल का चित्र। मान-चित्र। २-भवन आदि का रेखा-चित्र।
**नक्शा-नवीस** पुं० (अ+फा) नक्शा बनाने वाला व्यक्ति।
**नक्शाबंद** पुं०(अ) साड़ियों आदि की छपाई के बेल-बूटों के ठप्पों के नक्शे बनाने वाला व्यक्ति।
**नक्शी** वि० (अ) जिस पर बेल-बूटे बने हों।
**नक्षत्र** पुं० (सं) १-तारा। २-तारों के अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस समूह।
**नक्षत्र-दान** पुं० (सं) एक तरह का दान।
**नक्षत्र-नाथ** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**नक्षत्र-पथ** पुं० (सं) नक्षत्रों के चलाने का मार्ग।
**नक्षत्र-पति, नक्षत्र-राज** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**नक्षत्र-लोक** पुं० (सं) १-वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित हैं। २-आकाश।
**नक्षत्र-विद्या** स्त्री० (सं) ज्योतिषविद्या।
**नक्षत्री** पुं० (सं) चन्द्रमा। वि० भाग्यशाली।
**नख** पुं० (सं) १-नाखून। २-एक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य। स्त्री० (फा) १-पतंग उड़ाने की डोर। २-बटा हुआ रेशमी धागा।
**नख-क्षत** पुं० (सं) नाखून का निशान।
**नखच्छत, नखछोलिया** पुं० (हि) नखक्षत।
**नखत, नखतर** पुं० (हि) नक्षत्र।
**नखतराज, नखतराय, नखतेस** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**नखत्र** पुं० (हि) नक्षत्र।
**नखना** क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-पार करना या किया जाना।
**नखबान** पुं० (हि) नाखून।
**नखरा** पुं० (फा) १-नाज। चोचला। २-बनावटी चेष्टा। ३-बनावटी इनकार।
**नखरा-तिल्ला** पुं० (हि) नाज। नखरा।
**नखरीला** वि० (हि) नखरा करने वाला।
**नखरेख** स्त्री० (हि) नखक्षत।
**नखरेबाज** वि० (फा) बहुत नखरा करने वाला।
**नखरौट, नखरौटा** पुं० (हि) नखक्षत।
**नखलेखक** पुं० (सं) नाखून रंगने वाला।
**नखशिख** पुं० (सं) १-पैर के नाखून से लेकर सिर तक के सब अंग। २-शरीर के सब अंगों का वर्णन्
**नखांक** पुं० (सं) १-नख नामक गन्ध-द्रव्य। २-नाखून गड़ने या चुभने का चिह्न।
**नखायुध** पुं० (सं) १-शेर। २-चीता। ३-कुत्ता।
**नखास** पुं० (अ) १-वह बाजार जहाँ पशु बिकते हों, विशेषतः घोड़े। २-बाजार।
**नखियाना** क्रि० (हि) नाखून गड़ाना।
**नखी** पुं०(हि) नखायुध। स्त्री०(सं) नख (गन्धद्रव्य)
**नखेन** पुं० (हि) निषेध।
**नखोटना** क्रि० (हि) नाखून से खरोंचना या नोचना
**नग** पुं० (सं) १-पर्वत। २-वृक्ष। ३-सात की संख्या ४-सूर्य। ५-सर्प। वि० अचल। स्थिर। पुं० (हि) १-नगीना। २-संख्या। अदद।
**नगज** पुं० (सं) हाथी। वि० पर्वत से उत्पन्न।
**नगण** पुं० (सं) तीन लघु अक्षरों वाला गण (पिंगल)
**नगण्य** वि० (सं) इतना कम या गया बीता जिसकी गिनती तक न की जा सके। तुच्छ।
**नगद** पुं० (हि) नक्द। वि० बढ़िया।
**नगदी** क्रि० वि० (हि) नक्दी। वि० नगद। बढ़िया
**नगन** वि० (हि) नग्न।
**नगधर, नगधरन** पुं०= कृष्ण।
**नगपति** पुं० (सं) १-हिमालय। २-चन्द्रमा। ३-शिव ४-सुमेरु।
**नगफनी** स्त्री० (हि) नागफनी।

**नगमा** पुं० (फा) १-सङ्गीत। २-राग।
**नगर** पुं० (सं) गाँव और कस्बे से बड़ी मनुष्यों की बस्ती। शहर।
**नगर-आयोजन** पुं० (सं) नगर के लिए वह योजना जिसमें सब नागरिक सुविधा होना आवश्यक है। जैसे— चौड़ी सड़कें, नालियाँ, उद्यान, खेल के मैदान, पाठशाला, विद्यालय, चिकित्सालय आदि
**नगरकीर्त्तन** पुं० (सं) नगर के मुहल्लों में घूमघूम कर होने वाला धर्मप्रचार।
**नगर-क्षेत्र** पुं० (सं) किसी नगरपालिका के अधिकार में आने वाला क्षेत्र।
**नगरजन** पुं० (सं) नागरिक।
**नगरनायिका, नगरनारि** स्त्री० (सं) वेश्या।
**नगर-ट्रामवे** स्त्री० दे० 'नगर-रथ्यायान'।
**नगरद्वार** पुं० (सं) शहरपनाह का फाटक।
**नगर-निगम** पुं० (सं) राज्य के किसी बड़े नगर की नागरिक सुविधायें पहुँचाने वाली संस्था। (कारपोरेशन)।
**नगरनिगमाध्यक्ष** पुं० (सं) नगर निगम का अध्यक्ष या प्रधान। (मेयर)।
**नगरपति** पुं० (सं) नगर का अध्यक्ष।
**नगरपार्षद** पुं०(सं) नगरपालिका का सदस्य। (मेम्बर म्यूनिसिपल कमेटी)।
**नगरपाल** पुं० (सं) १-किसी नगर की नगर-पालिका का प्रशासक। (म्यूनिसिपल-कमिशनर)।
**नगरपालिका** स्त्री० (सं) जन-निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह संस्था जो नगर में सफाई, रोशनी, सड़कों और जल आदि की व्यवस्था करती है। (म्यूनिसिपल कमेटी)।
**नगरपाली** स्त्री० (सं) नागरिक सुख सुविधा पहुँचाने वाली संस्था। (म्यूनिसिपल कौंसल)।
**नगरपिता** पुं० (सं) नगर-पालिका का सदस्य जिसका कर्त्तव्य नागरिकों की पितृ तुल्य सेवा करना होता है। (सिटी फादर)।
**नगरप्रदक्षिणा** स्त्री० (सं) जलूस के रूप में मूर्त्ति आदि का नगर के चारों ओर ले जाना।
**नगर-बाह्य** पुं० (सं) नगर से बाहर होने का भाव। (आउट-स्टेशन)।
**नगरभवन** पुं० (सं) नगर-पालिका की ओर से बना सार्वजनिक भवन। (टाउन हाल)।
**नगर-बोर्ड** पुं० (हि) नागरिकों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह परिषद् जो नगर-पालिका के सब कार्यों की व्यवस्था करती है। (म्यूनिसिपल-बोर्ड)।
**नगर-भाग** पुं० (सं) नगरपालिका के प्रशासन की दृष्टि से विभाजित किया हुआ नगर का एक भाग (वार्ड)।
**नगररथ्यायान** स्त्री० (सं) बड़े-बड़े नगरों में सड़कों पर बिछी लाइनों पर विद्युत शक्ति से चलने वाली गाड़ी। (ट्राम-वे)।
**नगर-वृद्ध** पुं० (सं) नगर निगम में नगर-निगमाध्यक्ष से छोटा पदाधिकारी। (एल्डरमैन)।
**नगर-शुल्क** स्त्री० (सं) चुङ्गी।
**नगराई** स्त्री० (हि) १-नागरिकता। २-चतुराई।
**नगराज** पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
**नगराधिप, नगराधिपति** पुं० (सं) १-पुलिस का मुख्य अधिकारी। २-किसी कस्बे का शासक।
**नगराधीक्षक** पुं० (सं) वह अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा तथा व्यवस्था करना होता है। (सिटी सुपरिन्टेंडेंट)।
**नगराध्यक्ष** पुं० (सं) किसी नगर की नगर-पालिका का अध्यक्ष।
**नगरी** स्त्री० (सं) छोटा नगर। पुं० नागरिक। वि० नागर।
**नगरी-क्षेत्र** पुं० (सं) किसी कस्बे और उसके आसपास का स्थान जो स्थानिक संस्था के अधीन हो। (टाउन एरिया)।
**नगरीय** वि० (सं) १-नगर सम्बन्धी। २-नगर का रहने वाला।
**नगरेतर-क्षेत्र** पुं० (सं) किसी केन्द्रस्थ नगर के आसपास के स्थान। (मोफसिल)।
**नगरोपांत** पुं० (सं) उपनगर।
**नगला** पुं० (हि) छोटी बस्ती।
**नगवास** पुं० (हि) नाग-पाश।
**नगवासी** स्त्री० (हि) नाग-पाश।
**नगवाहन** पुं० (सं) शिव।
**नगस्वरूपणी** स्त्री० (सं) एक वर्ण वृत्त।
**नगाड़ा** पुं० (हि) धौंसा। डङ्का।
**नगाधिप, नगाधिपति, नगाधिराज** पुं० (सं) १-हिमालय। २-सुमेरु पर्वत।
**नगारा** पुं० (हि) नगाड़ा।
**नगारि** पुं० (सं) इन्द्र।
**नगिचाना** क्रि० (हि) पास आना।
**नगी** पुं० (हि) १-रत्न। २-छोटा रत्न। ३-पार्वती। ४-पहाड़िन।
**नगीच** क्रि० वि० (हि) नजदीक।
**नगीना** पुं० (फा) १-पत्थर आदि का वह रङ्गीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण, अँगूठी आदि में जड़ा जाता है।
**नगेंद्र, नगेश** पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
**नगेसरि** पुं० (हि) नागकेसर।
**नग्न** वि० (सं) १-जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। नङ्गा। २-आवरण रहित। ३-गुनसान।
**नग्नतावाद, नग्नवाद** पुं० (सं) एक आधुनिक पश्चिमी सिद्धान्त जिसमें कहा जाता है कि निरोग

रहने के लिए कुछ समय के लिए प्रतिदिन विवस्त्र रहना चाहिए। (न्यूडिज्म)।
नग्नवादी पुं० (सं) नग्नवाद सिद्धान्त का समर्थक।
नग्ना पुं० (सं) दस वर्ष से कम आयु की बालिका।
नग्मा पुं० दे० 'नगमा'।
नग्र पुं० दे० 'नगर'।
नघना क्रि० (हि) लाँघना।
नघाना क्रि० (हि) पार कराना।
नचना क्रि०(हि) १-नाचना। २-इधर-उधर भटकना। वि० [स्त्री० नचनी] नचाने या हिलाने वाला।
नचनि स्त्री० (हि) नाच।
नचनियाँ पुं० (हि) नर्त्तक।
नचवैया पुं०(हि) १-नाचने वाला। २-नचाने वाला
नचाना क्रि० (हि) १-नाचने में प्रवृत्त करना। २-हैरान करना। ३-किसी से तरह-तरह के काम कराना। ४-चक्कर देना। ५-इधर-उधर दौड़ाना।
नचीला वि० (हि) चंचल।
नचैया पुं० (हि) नचवैया।
नचौहा वि० (हि) चंचल।
नछत्र पुं० (हि) नक्षत्र।
नछत्री वि० (हि) नक्षत्री।
नजदीक वि० (फा) पास।
नजदीकी वि० (फा) पास का। पुं० निकट का सम्बन्धी।
नजर स्त्री० (ग्र) १-दृष्टि। २-कृपादृष्टि। ३-निगरानी। ४-ध्यान। ५-परख। ६-दृष्टि का बुरा प्रभाव ७-उपहार। भेंट।
नजरना क्रि० (हि) १-देखना। २-नजर लगाना।
नजरबंद वि० (हि) १-जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ-जा न सके। २-जिसे नजरबन्दी का दण्ड दिया गया हो। पुं० जादू का खेल।
नजरबंदी स्त्री० (हि) १-सरकार की ओर से दिया गया वह दण्ड जिसमें दण्डित व्यक्ति किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है। २-नजरबन्द होने की दशा। ३-जादूगरी।
नजर-बाग पुं० (ग्र) महलों के सामने या चारों ओर का बाग।
नजरसानी स्त्री० (ग्र) जाँचने के विचार से किसी देखी हुई वस्तु को फिर से देखना।
नजरहाया वि० (हि) [स्त्री० नजरहाई] नजर लगाने वाला।
नजरा वि० (हि) जो किसी वस्तु को देखते ही अच्छे-बुरे या सस्ते-मँहगे की पहचान कर ले।
नजराना क्रि० (हि) १-भेंट में देना। २-नजर लगाना।
नजराना पुं० (ग्र) उपहार। क्रि०(हि) नजर लगाना या लग जाना।
नजरि स्त्री० (हि) नजर।
नजला पुं० (ग्र) जुकाम।
नजाकत स्त्री० (फा) सुकुमारता।
नजात स्त्री० (ग्र) मुक्ति।
नजामत स्त्री० (ग्र) १-नाजिम का पद। २-नाजिम का महकमा या विभाग। ३-प्रबन्ध।
नजारा, नज्जारा पुं० (ग्र) १-दृश्य। २-नजर। ३-देखना।
नजिकाना क्रि० (हि) नजदीक या पास आना।
नजीक क्रि० वि० (हि) नजदीक।
नजीर स्त्री० (ग्र) १-दृष्टान्त। २-किसी एक निर्णय को अन्य अभियोग में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करना
नजूम पुं० (ग्र) ज्योतिष।
नजूल पुं० (ग्र) सरकारी जमीन।
नट पुं० (स) [स्त्री० नटी] १-अभिनेता। २-एक जाति।
नटई स्त्री० (हि) १-गला। २-गले की घंटी।
नटखट वि० (हि) १-उपद्रवी। २-धूर्त्त। ३-चचल।
नटन पुं० (सं) १-नृत्य। २-अभिनय करना।
नटना क्रि० (हि) १-नाट्य करना। २-नाचना। ३-इनकार करना। ४-नष्ट होना या करना।
नटनागर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
नटनारायण पुं० (सं) एक राग का नाम।
नटनि स्त्री० (हि) १-नृत्य। ६-इनकार।
नटनी स्त्री० (हि) १-नट की स्त्री। २-नट जाति की स्त्री।
नटराज पुं० (सं) महादेव।
नटवना क्रि०(हि) १-अभिनय करना। २-नृत्य करना करना।
नटवर पुं० (सं) १-नटकला में प्रवीण व्यक्ति। २-श्रीकृष्ण। वि० चतुर।
नटवा पुं० (हि) [स्त्री० नटिया] १-छोटे कद या कम उमर का बैल। २-नट।
नटसार, नटसारा स्त्री० (हि) नाट्यशाला।
नटसारी स्त्री० (हि) बाजीगरी।
नटसाल स्त्री० (?) १-काँटे का वह भाग, जो टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २-कसक।
नटिन, नटिनी स्त्री० (हि) १-नट की पत्नी। २-नट जाति की स्त्री।
नटी स्त्री० (सं) १-नट जाति की स्त्री। २-नर्त्तकी। ३-अभिनेत्री।
नटेश, नटेश्वर पुं० (सं) शिव।
नटैया स्त्री० (हि) १-गला। २-गरदन।
नट्या स्त्री० (सं) १-एक रागिनी। २-अभिनय करने वाले नटों का समुदाय।
नठना क्रि० (हि) नष्ट होना या करना।

**नढ़ना** क्रि०(हि) १-गूँथना। २-कसना। ३-बाँधना।
**नत** वि० (सं) १-झुका हुआ। २-विनीत। ३-प्रणाम करता हुआ। ४-उदास। क्रि० वि० दे० 'नतु'।
**नतन** पुं० (सं) झुकाव।
**नत-पाल** वि० (सं) शरणागत प्रतिपालक।
**नतमस्तक** वि० (सं) जिसका सिर झुका हुआ हो।
**नतमाथ** वि० (हि) १-नतमस्तक। २-विनीत।
**नतर, नतरक, नतरु, नतरुक** क्रि० वि० (हि) नहीं तो।
**नतांग** वि० (सं) १-बदन झुकाये हुए। २-प्रणाम करने वाला।
**नतांगी** स्त्री० (सं) नारी। स्त्री।
**नतांश** पुं० (सं) वह वृत्त जिसका केन्द्र भू-केन्द्र पर होता है। और जो विषुवत रेखा पर लम्बा हो। इस वृत्त का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है।
**नति** स्त्री० (सं) १-झुकाव। २-नमस्कार। ३-विनय ४-नम्रता। ५-प्रणाम करने के लिए शरीर झुकाना ६-ज्योतिष में एक प्रकार की गुणा।
**नतीजा** पुं० (फा) १-परिणाम। २-परीक्षा-फल।
**नतु** क्रि० वि० (हि) नहीं तो।
**नतुवा** अव्य० (सं) नहीं तो क्या ?
**नतैत** पुं० (हि) नातेदार।
**नतैती** स्त्री० (हि) रिश्तेदारी।
**नतोदर** वि० (सं) जिसका ऊपरी भाग चारों ओर से झुका हुआ हो। (कॉन्केव)।
**नत्थी** स्त्री० (हि) १-कई कागजों को एक में गूँथना। २-एक में गुँथे हुए कागज आदि के टुकड़े। ३-मिसल।
**नत्वर्थक** वि०(सं) १-जिसमें किसी बात का अस्तित्व न माना गया हो। २-जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव अमान्य किया गया हो। (नेगेटिव)।
**नथ** स्त्री० (हि) नाक में पहनने का एक गहना।
**नथना** क्रि० (हि) १-नत्थी होना। २-छेदा जाना। पुं० नाक का अग्रभाग जिसमें दोनों छेद होते हैं।
**नथनी** स्त्री० (हि) १-छोटी नथ। २-बैल आदि के नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी। ३-नथ की तरह की कोई चीज। ४-तलवार की मूठ के ऊपर का छल्ला।
**नथिया** स्त्री० (हि) नथ।
**नथुना** पुं० (हि) नथना।
**नथुनी** स्त्री० (हि) छोटी नथ।
**नद** पुं० (सं) बड़ी नदी।
**नदन** पुं० (सं) १-शब्द करना। २-बोलना।
**नदना** क्रि० (हि) १-पशुओं की आवाज करना। २-रँभाना। ३-बजना। ४-गरजना।
**नदर** वि० (सं) १-नदी के पास वाला (देश)। २-निडर। ३-निर्भय।
**नदवान** पुं० (?) क्षत्रियों की एक शाखा।
**नदान** वि० (हि) नादान।
**नदारद** वि० (फा) गायब।
**नदित** वि० (सं) १-नाद या शब्द करता हुआ। २-बजता हुआ।
**नदिया** स्त्री० (हि) नदी।
**नदी** स्त्री० (सं) किसी बड़े पर्वत, झील या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से बहकर समुद्र या अन्य नदी में गिरने वाली जल की बड़ी धारा। दरिया। सरिता। २-किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।
**नदी-कूल** पुं० (सं) नदी का तट।
**नदी-घाटी-योजना** स्त्री० (सं) उपर्युक्त स्थानों पर बांधों के निर्माण करने तथा नहरों द्वारा सिंचाई करने की व्यवस्था सम्बन्धी योजना (रिवर-वैली-स्कीम)।
**नदीधर** पुं० (सं) शिव।
**नदीपति** पुं० (सं) समुद्र। २-वरुण।
**नदी-प्रवाह-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें नदी के प्रवाह या जल आदि के प्रवाह के नियन्त्रण सम्बन्धी उल्लेख हो।
**नदीमुख** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ समुद्र में नदी गिरती हो।
**नदीश** पुं० (सं) समुद्र। २-वरुण।
**नदीशनंदिनी** स्त्री० (सं) लक्ष्मी।
**नद्द** पुं० (सं) १-नद। २-नाद।
**नद्दना** क्रि० दे० 'नदना'।
**नद्युत्सृष्ट** पुं० (सं) वह भूमि जो नदी के हट जाने के कारण निकल आई हो।
**नधना** क्रि० (हि) १-जुतना। २-जुड़ना। ३-किसी काम का आरम्भ होना।
**ननंद** स्त्री० (सं) पति की बहन। ननद।
**ननकारना** क्रि० (हि) अस्वीकार करना।
**ननद, ननदी** स्त्री० पति की बहन।
**ननदोई** स्त्री० (हि) स्त्री के लिए पति का बहनोई।
**ननसार** पुं० (हि) ननिहाल।
**ननिआउर** पुं० (हि) ननिहाल।
**ननियाउर** पुं० (हि) ननिहाल।
**ननिया-ससुर** पुं० (हि) पत्नी का नाना।
**ननिया-सास** स्त्री० (हि) स्त्री या पति की नानी।
**ननिहाल** पुं० (हि) नाना का घर।
**नन्ना** पुं० (हि) नाना। वि० नन्हा।
**नन्यौरा** पुं० (हि) ननिहाल।
**नन्हा** वि० (हि) [स्त्री० नन्ही] छोटा।
**नन्हाई** स्त्री० (हि) १-छोटापन। २-अप्रतिष्ठा।
**नन्हिया** स्त्री० (हि) एक प्रकार का धान।
**नन्हैया** वि० (हि) नन्हा।

नपत, नपाई स्त्री० (हि) नापने की क्रिया, भाव या उजरत।
नपना क्रि० (हि) नापा जाना। पुं० [स्त्री० नपनी] नापने का पात्र।
नपाक वि० (हि) नापाक। अपवित्र।
नपाकी स्त्री० (हि) अपवित्रता।
नपाना क्रि० (हि) नापने का कार्य अन्य से कराना।
नपुंस पुं० (सं) हिजड़ा।
नपुंसक पुं० (सं) हिजड़ा। नामर्द। वि० कायर।
नपुंसकता स्त्री० (सं) १-हीजड़ापन। २-नामर्दी।
नपुंसकत्व पुं० (सं) हीजड़ापन।
नपुंसीकरण पुं० (सं) नपुंसक बनाना।
नपुआ पुं० (हि) नापने का पात्र।
नपुत्री वि० दे० 'निपुत्री'।
नफर पुं० (फा) १-सेवक। २-व्यक्ति।
नफरत स्त्री० (अ) घृणा।
नफरी स्त्री० (अ) १-मजदूर के पूरे एक दिन की मजदूरी। २-मजदूर का एक दिन का काम। ३-मजदूरी का दिन।
नफा पुं० (अ) लाभ।
नफासत स्त्री० (अ) नफीस होने का भाव या अवस्था उम्दापन।
नफीरी स्त्री० (फा) तुरही नामक बाजा।
नफीस वि० (अ) १-बढ़िया। २-स्वच्छ। ३-सुन्दर।
नबी पुं० (अ) पैगम्बर।
नबेड़ना, नबेरना क्रि० (हि) १-निपटाना। २-चुनना
नबेड़ा पुं० (हि) निपटारा।
नबेला वि० दे० 'नवेला'।
नब्ज स्त्री० (अ) नाड़ी।
नभ पुं० (सं) १-आकाश। २-बादल। ३-जल। ४-वर्षा।
नभग पुं० (सं) पक्षी।
नभगनाथ पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-गरुड़।
नभगामी पुं० (सं) १-पक्षी। २-बादल। ३-तारा। ४-सूर्य। ५-चन्द्रमा। ६-देवता। वि० आकाश में उड़ने वाला।
नभगेश पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-गरुड़।
नभचर पुं० (सं) १-पक्षी। २-बादल। वि० नभगामी
नभधुज पुं० (हि) मेघ।
नभश्चर पुं० (सं) १-पक्षी। २-बादल। ३-हवा। वि० नभगामी।
नभवार पुं० (हिं) शिव। महादेव।
नभ-सेना स्त्री० (सं) वायुयानों द्वारा बम गिराकर लड़ाई करने वाली फौज।
नभस्थल पुं० (सं) आकाश।
नभोगति स्त्री० (सं) उड़ना।
नभोधूम, नभोध्वज पुं० (सं) बादल।
नभोमंडल पुं० (सं) मण्डलाकार आकाश।
नभोमणि पुं० (सं) सूर्य।
नभोवाणि स्त्री० (सं) रेडियो।
नभोवीथी स्त्री० (सं) छाया-पथ।
नम पुं० (फा) सीला। आर्द्र।
नमक पुं० (फा) १-लवण। २-लावण्य।
नमकख्वार वि० (फा) नमक खाने वाला।
नमकदान पुं०(हि) [स्त्री० नमकदानी] पिसे हुए नमक का रखने का पात्र।
नमकसार पुं० (फा) नमक निकालने या बनाने का स्थान।
नमक-हराम पुं० (फा+अ) कृतघ्न।
नमक-हरामी स्त्री० (फा+अ) कृतघ्न।
नमक-हलाल पुं० (फा+अ) स्वामिनिष्ठ।
नमक-हलाली स्त्री० (फा+अ) स्वामिनिष्ठा।
नमकीन वि० (फा) १-जिसमें नमक पड़ा हो। २-जिसमें नमक जैसा स्वाद हो। ३-सलोना। पुं० नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।
नमदा पुं०(फा) जमाया हुआ ऊनी कम्बल या कपड़ा
नमन पुं० (सं) १-झुकने की क्रिया या भाव। २-नमस्कार। ३-झुकाव।
नमना क्रि० (हिं) १-झुकना। २-प्रणाम करना।
नमनि स्त्री० (सं) १-दे० 'नमन'। २-नम्रता।
नमनीय वि०(सं) १-नमस्कार करने योग्य। पूजनीय। २-जो झुक सके या झुकाया जा सके।
नमनीयता स्त्री० (सं) लचीलापन।
नमश स्त्री० (फा) दूध का जमा हुआ फेन जिसे जाड़े के दिनों में बेचते हैं।
नमसकारना क्रि० (हि) नमस्कार करना।
नमस्कार पुं० (सं) झुक कर सादर अभिवादन करना।
नमस्क्रिया स्त्री० (सं) नमस्कार।
नमस्ते पुं० (सं) (एक वाक्य जिसका अर्थ है) आपको नमस्कार है।
नमाज स्त्री० (फा) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना।
नमाजगाह स्त्री० (फा) मसजिद में वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाती है।
नमाजी पुं० (फा) १-नमाज पढ़ने वाला। २-वह वस्त्र जिस पर नमाज पढ़ी जाती है।
नमाना क्रि० (हि) १-झुकाना। २-झुका या दबाकर अधीन करना।
नमामि पद (सं) मैं नमस्कार करता हूँ।
नमित वि० (सं) झुका हुआ।
नमिस स्त्री० दे० 'नमिश'।
नमि स्त्री० (फा) गीलापन। वि० (हि) झुकने वाला।
नमूदार वि० (फा) प्रकट।
नमूना पुं० (फा) १-बानगी। २-ढाँचा। ३-वह जिसके द्वारा उसके समान दूसरी वस्तुओं के

स्वरूप तथा गुण आदि का ज्ञान हो जाय। ३-उदाहरण। ४-आदर्श।
**नम्य** वि० (सं) जो झुक सके।
**नम्यता** स्त्री० (सं) मोड़े जाने या झुकाये जाने पर उसी अवस्था में रहने का गुण। (प्लायेबिलिटी)।
**नम्र** वि० (सं) १-नत। २-विनीत। ३-वक्र।
**नम्रता** स्त्री० (सं) नम्र होने का भाव।
**नय** पुं० (सं) १-नीति। २-नम्रता। स्त्री० (हिं) नदी।
**नयकारी** पुं० (हिं) नाचने वाला।
**नयन** पुं० (सं) १-आँख। २-लेजाना।
**नयन-गोचर** वि० (स) दृष्टिगोचर।
**नयनच्छद** पुं० (सं) आँख की पलक।
**नयन-जल** पुं० (सं) आँसू।
**नयन-पट** पुं० (सं) पलक।
**नयन-पथ** पुं० (सं) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके आँख के आगे या सामने का स्थान।
**नयन-वारि, नयन-सलिल** पु० (सं) आंसू।
**नयना** क्रि० (हि) १-झुकना। २-नम्र होना। पुं० आंख।
**नय-नागर** वि० (सं) नीति-निपुण।
**नयनाभिराम** वि० (सं) देखने में सुन्दर।
**नयनी** स्त्री० (सं) आँख की पुतली। वि० आँखों वाली
**नयनूं** पुं० (हिं) १-मक्खन। २-एक तरह की मलमल जो बूटीदार होती है।
**नयनोत्सव** पुं० (स) १-दीपक। २-कोई भी मनोहर वस्तु।
**नयनोपांत** पुं० (सं) आँख का किनारा या कोर।
**नयर** पुं० (हिं) नगर।
**नयवाद** पुं० (सं) दर्शनशास्त्र के अनुसार वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आत्मा एक भी है और अनेक भी।
**नयविद, नयविशारद** पु० (सं) राजनीति का ज्ञाता।
**नयशील** वि० (सं) १-विनयी। २-नीतिज्ञ।
**नया** वि० (हि) १-नवीन। २-ताजा। ३-आधुनिक ४-अनुभवहीन। ५-नौसिखुआ।
**नयापन** पुं० (हिं) नवीनता।
**नर** पु० (सं) १-पुरुष। आदमी। २-विष्णु। ३-शिव। ४-सेवक। ५-कपूर। वि० जो पुरुष जाति का हो। पुं० दे० 'नरकट'।
**नर** स्त्री० (हि) १-गेहूँ के बाल का डंठल। २-एक घास।
**नरकंत** पुं० (हिं) नृप।
**नरक** पुं० (सं) १-वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा को अपने किये हुए पाप का फल भोगना पड़ता है। दोजख। २-बहुत अधिक ही गन्दा स्थान। ३-वह स्थान जहां बहुत पीड़ा हो। ४-नरकासुर।
**नरक-गामी** वि० (सं) नरक में जाने वाला।
**नर-कचूर** पु० दे० 'कचूर'।
**नरकट** पुं० (हि) बेंत की तरह का एक पौधा।
**नरकल, नरकस** पु० (हि) नरकट।
**नरकांतक, नरकारि** पुं० (सं) कृष्ण।
**नरकासुर** पुं० (सं) एक असुर का नाम।
**नरकुल** पुं० (हि) नरकट।
**नरकेशरी, नरकेसरी, नरकेहरी** पुं० = १-नृसिंह नामक विष्णु का अवतार। २-सिंह के समान पराक्रमी मनुष्य।
**नरगा** पुं० (तु० नर्ग) १-पशुओं के शिकार के लिए डाला हुआ आदमियों का घेरा। २-भीड़भाड़। ३-विपत्ति।
**नरगिस** स्त्री० (फा) सफेद रङ्ग के गोल फूलों वाला एक पौधा।
**नरजना** क्रि० (हि) १-नाराज होना। २-नापना या तौलना।
**नरजी** पु०(हि) तौलने वाला व्यक्ति। बया।
**नरतक** पुं० (हि) नर्तक।
**नरतात** पुं० (हि) राजा।
**नरद** स्त्री० (हि) १-चौसर खेलने की गोटी। २-ध्वनि
**नरदमा, नरदवाँ, नरदा** पु०(हि) नाबदान। पनाला
**नरदेव** पु० (हि) राजा।
**नरनाथ, नरनायक** पु० (सं) राजा।
**नरनारायण** पुं० (सं) १-नर और नारायण जो अर्जुन और कृष्ण के रूप में अवतरित हुए। २-श्रीकृष्ण का एक नाम। ३-मनुष्य और भगवान।
**नरनारि, नरनारी** स्त्री० (सं) १-द्रौपदी। २-पुरुष और स्त्री।
**नरनाह** पुं० (हि) राजा।
**नर-नाहर** पु० (हि) नरकेशरी।
**नरपति** पुं० (सं) राजा।
**नरपद** पुं० (सं) १-नगर। २-देश।
**नरपशु** पु० (स) १-नृसिंह। २-मनुष्य होने पर भी पशुओं के से आचरण करने वाला।
**नरपाल** पुं० (सं) राजा।
**नरपिशाच** पुं० (सं) १-पिशाच के समान क्रूर स्वभाव वाला मनुष्य। २-बहुत दुष्ट और नीच व्यक्ति।
**नरपुंगव** पुं० (सं) मनुष्यों में श्रेष्ठ।
**नरबलि** पुं० (सं) देवता की पूजा के निमित्त की जाने वाली मनुष्य की हत्या।
**नरभक्षी** पुं० (सं) मनुष्यों को खाने वाला।
**नरम** वि० (फा) १-कोमल। २-लचीला। ३-मन्द। ४-धीमा। ५-आलसी। ६-शीघ्र पचने वाला। ७-जिसमें पौरुष का अभाव हो।

**नरमट** स्त्री० (हि) मुलायम मिट्टी वाली जमीन।
**नरमा** स्त्री० (हि) १-एक तरह की कपास। २-सेमर की रूई। ३-कान के नीचे का भाग। लोल। पुं० एक तरह का रङ्गीन कपड़ा।
**नरमाई** क्रि० (हि) १-कोमलता। २-नम्रता।
**नरमाना** क्रि०(हि) १-नरम या मुलायम होना अथवा करना। २-नम्र होना। ३-शान्त करना।
**नरमाहट, नरमी** स्त्री० (हि) १-कोमलता। २-नम्रता
**नरमेध** पुं० (सं) प्राचीनकाल में एक प्रकार का यज्ञ।
**नरयंत्र** पुं० (सं) एक प्रकार का शंकुयन्त्र जो धूप में समय बताने के काम आता था। धूपघड़ी।
**नरयान, नररथ** पुं० (सं) १-एक तरह की हलकी गाड़ी जिसमें मनुष्य जुतकर दौड़ता है। रिक्शा। २-पालकी। ३-हाथठेला।
**नरलोक** पुं० (सं) संसार।
**नरवध** पुं० (सं) किसी कारण से या जान-बूझकर किसी मनुष्य को मार डालना। (मर्डर)।
**नर-वाहन** पुं० (सं) १-पालकी। २-रिक्शा।
**नरसल** पुं० (हि) नरकट।
**नरसिंगा** पुं० (हि) नरसिंघा नामक बाजा।
**नरसिंह** पुं० दे० 'नृसिंह'।
**नरसिंघा** पुं० (हि) तुरही जैसा एक बाजा जिसे फूँक कर बजाते हैं।
**नरसिंह** पुं० दे० 'नृसिंह'।
**नरसों** पुं० (हि) बीता हुआ या आने वाला चौथा दिन।
**नरहत्या** पुं० (सं) साधारण चोट से होने वाली मानव-मृत्यु। (होमी-साइड)।
**नरहरि** पुं० (सं) नृसिंह, जो दस में से चौथे अवतार माने जाते हैं।
**नरहरी** पुं० (स) एक मात्रिक छन्द।
**नरांतक** पुं० (सं) रावण के एक पुत्र का नाम।
**नराच** पुं० (हि) तीर। बाण। पुं० (सं) एक वर्ण-वृत्त जिसे नागराज और पंचचामर भी कहते हैं।
**नराज** वि० दे० 'नाराज'।
**नराजना** क्रि० (हि) नाराज होना या करना।
**नराट** पुं० (हि) राजा।
**नराधम** पुं० (सं) नीच व्यक्ति।
**नराधिप, नराधिपति** पुं० (सं) राजा।
**नरायण, नरायन** पुं० दे० 'नारायण'।
**नरिंद** पुं० (हि) राजा।
**नरिअर** पुं० (हि) नारियल।
**नरिअरी** स्त्री० (हि) नारियल की खोपड़ी का आधा भाग।
**नरियर** पुं० (हि) १-नारियल। २-नरिया।
**नरिया** स्त्री० (हि) अर्धवृत्ताकार खपड़ा।
**नरियाना** क्रि० (हि) जोर से चिल्लाना।
**नरी** स्त्री० (फा) १-बकरी या बकरे का कमाया हुआ चमड़ा जो लाल रङ्ग का होता है। २-करघे की सूत लपेटने की नली। स्त्री०.(हि) १-स्त्री। २-नली।
**नरु** पुं० (हि) नर।
**नरुवा** पुं० (हि) [स्त्री० नरुई] अनाज के पौधों की पोली डंडी।
**नरेंद्र** पुं० (सं) राजा।
**नरेंद्र-मंडल** पुं० (सं) अंगरेजों के शासन काल में बनी भारतीय नरेशों की संस्था। (चेम्बर ऑफ प्रिंसेस)।
**नरेली** स्त्री० (हि) नारियल की खोपड़ी या उसका बना हुक्का।
**नरेश, नरेश्वर** पुं० (सं) राजा।
**नरेस** पुं० (हि) राजा।
**नरोत्तम** पुं० (सं) १-श्रेष्ठ मनुष्य। २-श्रीकृष्ण।
**नर्त्तक** पुं० (सं) [स्त्री० नर्त्तकी] १-नाचने वाला। २-अभिनेता। ३-शिव।
**नर्त्तकी** स्त्री० (स) १-नाचने वाली स्त्री। २-वेश्या।
**नर्त्तन** पुं० (सं) १-नृत्य। २-नृत्य करना।
**नर्त्तन-गृह** पुं० (सं) नाचघर।
**नर्त्तनशाला** स्त्री० (सं) नाचघर।
**नर्त्तनप्रिय** पुं० (सं) १-शिव। २-मोर। वि० जिसे नृत्य प्रिय हो।
**नर्त्तना** क्रि० (हि) नाचना।
**नर्त्तित** वि० (सं) नाचता हुआ।
**नर्द** क्रि० (सं) गरजने वाला। स्त्री० (फा) चौसर की गोटी।
**नर्दन** स्त्री० (स) गरज।
**नर्म** पुं० (सं) १-परिहास। २-साहित्य में नायक को हँसाने वाला सखा। वि० (हि) नरम।
**नर्म-गर्म** वि० (फा) १-सस्ता-मँहगा। २-बुरा-भला।
**नर्मद** पुं० (सं) मसखरा। २-भाँड़। वि० सुख देने वाला।
**नर्म-दिल** वि० (फा) कोमल हृदय।
**नर्मदेश्वर** पुं० (सं) स्फटिक का शिवलिंग जो नर्मदा नदी में निकलता है।
**नर्मसचिव, नर्मसुहृद** पुं० (स) वह मनुष्य जो राजा के पास हँसाने के लिए रहे। विदूषक।
**नर्मी** स्त्री० (फा) नर्म होने का भाव।
**नल** पुं० (स) १-नरकट। २-कलम। ३-निषध देश का राजा जिसका विवाह दमयन्ती से हुआ। ४-श्रीराम की सेना का एक बन्दर। पुं० (हि) १-पोली लम्बी गोल वस्तु। २-धातु, काठ, मिट्टी आदि का बना हुआ पोला गोल खण्ड जो लम्बा होता। ३-पेडू की एक नाड़ी। ४-मनुष्य।
**नलकार** पुं० (सं) वह कारीगर जो बेंत से पलंग चौकी आदि बुनता है।

**नलकूप** पुं० (हि) खेतों में पानी देने के लिए जमीन में गहराई तक पहुँचाया हुआ नल। (टयूब-वैल)।
**नलनी** स्त्री० दे० 'नलिनी'।
**नलिन** पुं० (सं) १-कमल। २-जल। ३-सारस। ४-नीली कुमुदिनी।
**नलिनी** स्त्री० (सं) १-कमलिनी। २-वह प्रदेश जहाँ कमल बहुत हों। ३-नदी।
**नलिया** पुं० दे० 'बहेलिया'।
**नली** स्त्री० (हि) १-एक छोटा या पतला नल। २-नल की तरह की हड्डी जिसमें मज्जा भरी रहती है। ३-पैर की हड्डी। ४-बन्दूक का अगला भाग जिसमें से होकर गोली निकलती है। ५-जुलाहों की नाल।
**नलुआ** पुं० (हि) १-पशुओं को होने वाला एक रोग २-छोटा नल।
**नल्लिका** स्त्री० (सं) वह छोटी नली जिसके द्वारा एक पात्र से दूसरे पात्र में तरल पदार्थ डाला या गिराया जाता है। (पिपेट)।
**नव** वि० (सं) नया। नूतन।
**नवक** पुं० (सं) एक जैसी नौ वस्तुओं का समूह। वि० नया। २-अनोखा।
**नव-कलेवर** पुं० (सं) जगन्नाथपुरी में रथयात्रा के समय पुरानी मूर्त्ति के स्थान पर नई मूर्त्ति स्थापित करने के अवसर पर होने वाला उत्सव।
**नवका** स्त्री० (हि) नौका।
**नवकारिका, नवकालिका** स्त्री० (सं) १-नवयौवना। २-वह युवती जो प्रथम बार रजस्वला हुई हो।
**नवकुमारी** पुं० (सं) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ।
**नवखंड** पुं० (सं) पृथ्वी के नौखण्ड या विभाग।
**नवग्रह** पुं० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।
**नवछावरि** स्त्री० (हि) न्योछावर।
**नवजात** वि० (सं) जो अभी पैदा हुआ हो।
**नवतन** वि० (हि) नवीन।
**नवदुर्गा** स्त्री० (सं) नौरात्र में पूजी जाने वाली नौ-दुर्गाएँ।
**नवद्वार** पुं०(सं) शरीर के नाक, कान आदि नौ द्वार
**नवधा** अव्य० (सं) १-नौ प्रकार से। २-नौ भागों या खण्डों में।
**नवधा-भक्ति** स्त्री० (सं) नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।
**नवन** पुं० (हि) नमन।
**नवना** क्रि० (हि) १-झुकना। २-नम्र होना।
**नवनि** स्त्री० (हि) १-नवने या झुकने की क्रिया या भाव। २-नम्रता।
**नवनिधि** स्त्री० (सं) १-कुबेर का खजाना। २-नौ प्रकार की निधियाँ—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द और नील।
**नवनी** स्त्री० (सं) ताजा मक्खन।
**नवनीत** पुं० (सं) मक्खन।
**नवनीतक** पुं० (सं) १-घृत। २-मक्खन।
**नव-प्रसूत** वि० (सं) नव-जात।
**नव-प्रसूता** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके अभी बच्चा हुआ हो।
**नव-भुज** पुं० (सं) रेखागणित में वह क्षेत्र जिसमें नौ भुजाएँ हों। (नौमेगन)।
**नवम** वि० (हि) गिनती नौ के स्थान पर आने वाला
**नवमल्लिका** स्त्री० (सं) चमेली।
**नवमांश** पुं० (सं) नवाँ भाग।
**नवमालिका** स्त्री० (सं) १-एक वर्णवृत्त। २-एक तरह की चमेली।
**नवमालिन** स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
**नवमी** स्त्री० (हि) किसी पक्ष की नवीं तिथि।
**नव-युग** पुं० (सं) ऐसा समय जिसमें पुरानी बातें प्रायः समाप्त होकर नवीन बातें प्रचलित हो रही हों
**नवयुवक** पुं० (सं) [स्त्री० नवयुवती] तरुण।
**नव-यौवन** पुं० (सं) चढ़ती जवानी।
**नव-यौवना** स्त्री० (सं) युवती। चढ़ती जवानी वाली स्त्री।
**नवरंग** क्रि०(हि) १-सुन्दर। २-नये ढङ्ग का। नवेला
**नवरत्न** पुं० (सं) १-मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २-गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३-नौ मसालों से युक्त चटनी।
**नवरस** पुं० (सं) काव्य के नौ रस-शृङ्गार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शान्त।
**नवरात्र** पुं० (सं) १-प्राचीन काल का एक यज्ञ, जो नौ दिन में समाप्त होता था। २-चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें लोग नव-दुर्गा का व्रत, घट स्थापन और पूजन आदि करते हैं।
**नवल** वि० (सं) [स्त्री० नवला] १-नया। २-सुन्दर। ३-नवयुवक। ४-शुद्ध।
**नवल-किशोर** पुं० (सं) श्रीकृष्णचन्द्र।
**नवल-वधू** स्त्री० (सं) मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक।
**नवला** स्त्री० (सं) नवयुवती स्त्री।
**नववर, नववरि** स्त्री० (हि) न्योछावर।
**नव-वर्ष** पुं० (सं) नया साल।
**नवशिक्षित** पुं० (सं) १-नौ-सिखुआ। २-जिसने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की हो।

**नव-सत** पुं० (हि) सोलह शृङ्गार (नव और सात)।
**नवसर** वि० (हि) नयी उम्र का। पुं० नौ लड़ों का हार।
**नव-ससि** पुं० (सं) दूज का चाँद। नया चाँद।
**नव-सात** पुं० (हि) सोलह शृङ्गार।
**नवा** वि० (हि) नया।
**नवाई** वि० (हि) नया। स्त्री० नम्रता।
**नवागत** वि० (सं) नया-नया आया हुआ।
**नवाज** वि० (फा) कृपालु।
**नवाजना** क्रि० (हि) कृपा करना।
**नवाजिश** स्त्री० (फा) कृपा।
**नवाड़ा** पुं० (देश) १-एक तरह की छोटी नाव। २-धारा के बीच में नाव ले जाकर चक्कर देने की जलक्रीड़ा। नावर।
**नवाना** क्रि० (हि) १-झुकाना। नम्र करना।
**नवान्न** पुं० (सं) घर में आया हुआ नया अन्न।
**नवाब** पुं० [अ० नव्वाब] १-मुसलमानों के शासन काल में किसी बड़े प्रदेश या सूबे के शासन के लिए नियुक्त राज्याधिकारी। २-मुसलमान रईसों की एक उपाधि। वि० १-बड़े ठाठबाट से रहने वाला। २-अपव्ययी।
**नवाबी** स्त्री० (हि) १-नवाब का पद या काम। २-नवाबों का शासन काल। ३-नवाबों के समान अमीरी।
**नवाभ्युत्थान** पुं० (सं) १-पुनः फिर से होने वाला उत्थान। २-कलाकौशल और विद्याओं का आधुनिक ढंग पर होने वाला उत्थान। (रिनैजेन्स)।
**नवाह** वि० (सं) नौ दिन में समाप्त किया जाने वाला।
**नवीकरण** पुं० (सं) १-फिर से नया कर देना (रिनोवेशन)। २-जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो, उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना। (रिन्यूअल)।
**नवीन** वि० (सं) १-नया। २-अपूर्व। ३-जो पहले पहल या मूल रूप में बना हो। (ओरिजनल)
**नवीनतम** वि० (सं) जो अभी बना, निकला, प्रस्तुत या विदित हुआ हो। (लेटेस्ट)।
**नवीनता** स्त्री० (सं) नवीन या नया होने का भाव नूतनता।
**नवीनभाव** पुं० (सं) नवीन या नया होने का भाव
**नवीनीकरण** पुं० (सं) नवीन या नई विचारधारा के अनुसार करने की क्रिया।
**नवीस** पुं० (फा) लिखने वाला।
**नवीसी** स्त्री० (फा) लिखाई।
**नवेद** स्त्री० (हि) निमन्त्रण।
**नवेला** वि० (हि) [स्त्री० नवेली] १-नया। २-युवक
**नवोढ़ा** स्त्री० (सं) १-वधू। २-युवती स्त्री। ३-लज्जा तथा भय के कारण नायक के पास आने में संकोच करने वाली नायिका।
**नवोत्थान** पुं० (सं) नवाभ्युत्थान।
**नवोत्थित** वि० (सं) जिसका अभी उत्थान हुआ हो।
**नवोदक** पुं० (सं) १-प्रथम वर्षा का पानी। २-खोदते समय धरती में से पहले पहल निकलने वाला पानी।
**नवोदित** वि० (सं) १-जो अभी हाल में उत्पन्न हुआ हो। २-जो अभी अस्तित्व में आया हो।
**नवोद्भाव, नवोद्भावन** पुं० (सं) उद्भावन। (इनवेंशन)।
**नव्य** वि० (सं) नया।
**नशना** क्रि० (हि) नष्ट होना।
**नशा** पुं० (अ) १-वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग आदि पीने से होती है। २-मादक द्रव्य। ३-धन विद्या, प्रभुत्व (अधिकार) आदि का घमंड।
**नशाखोर** पुं० (फा) किसी तरह के नशे का सेवन करने वाला।
**नशाना** क्रि० (हि) १-नष्ट होना या करना। २-खोजना।
**नशावन** वि० (हि) नाशक।
**नशीन** वि० (फा) बैठने वाला।
**नशीनी** स्त्री० (फा) बैठने की क्रिया या भाव।
**नशीला** वि० (फा) १-मादक। २-जिस पर नशे का प्रभाव हो।
**नशेड़ी** वि० (हि) नशा करने वाला।
**नशेबाज** पुं० (फा) नशाखोर।
**नशोहर** वि० (हि) नाशक।
**नश्तर** पुं० (फा) फोड़े चीरने का एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू।
**नश्वर** वि० (सं) नष्ट हो जाने वाला।
**नश्वरता** स्त्री० (सं) नश्वर होने का भाव।
**नष** पुं० (हि) नख।
**नषत** पुं० (हि) नक्षत्र।
**नष-शिष** पुं० (हि) नखशिख।
**नष्ट** वि० (सं) १-जिसका नाश हो गया हो। २-जो दिखाई न दे। ३-अधम। ४-निष्फल। ५-मृत। ६-छन्दशास्त्र में मात्रिक छन्दों या वर्ण प्रस्तार में यह जानने की प्रक्रिया कि उनके किसी अथवा कौन से भेद का क्या रूप है।
**नष्ट-चेतन, नष्टचेष्ट** वि० (सं) मूर्च्छित।
**नष्ट-निधि** पुं० (सं) दिवालिया।
**नष्ट-प्रभा** वि० (सं) तेजरहित। कांतिहीन।
**नष्टभ्रष्ट** वि० (सं) बरबाद। चौपट।
**नष्टा** स्त्री० (सं) १-वेश्या। २-व्यभिचारिणी।
**नसक** वि० (हि) निःशङ्क।
**नस** स्त्री० (हि) स्नायु। नाड़ी।

नसकटा पुं० (हि) नपुंसक।
नसतरंग पुं० (हि) शहनाई जैसा एक बाजा।
नसना क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-भागना।
नसल स्त्री० (अ) वंश।
नसवार स्त्री० (हि) सुँघनी।
नसा स्त्री० (स) नाक।
नसाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-दे० 'नसना'।
नसावन वि० (हि) १-भगाने वाला। २-नष्ट करने वाला।
नसी वि० (हि) नाक वाला।
नसीत स्त्री० (हि) नसीहत।
नसीब पु० (अ) भाग्य।
नसीब-जला वि० (अ+हि) अभागा।
नसीबवर वि० (अ) भाग्यशाली।
नसीबा पुं० (हि) नसीब। भाग्य।
नसीहत स्त्री० (अ) १-सीख। २-उपदेश। ३-अच्छी राय।
नसेनी स्त्री० (हि) सीढ़ी।
नस्तित वि० (स) नत्थी किया हुआ। (फाइल्ड)।
नस्तित-पत्रसमूह पुं० (सं) किसी तार या स्थान पर नत्थी कर रखे गये पत्र आदि। (फाइल)।
नस्तिपंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें नत्थी करके पत्र आदि रखते हैं।
नस्तिपत्री स्त्री० (सं) वह दोहरा मोटा कागज जिसमें नत्थी करके महत्वपूर्ण कागज पत्र रखे जाते हैं। (फाइल)।
नस्ती स्त्री० दे० 'नत्थी'।
नस्य पुं० (सं) सुँघनी।
नस्याधार पुं० (सं) नासदानी।
नस्ल स्त्री० (अ) १-कुल। २-जाति।
नस्वर वि० (हि) नश्वर।
नहँ, नह पु० (हि) नख।
नहछू पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते और मेंहदी आदि लगाई जाती है।
नहन पुं० (देश) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी।
नहना क्रि० (हि) काम में तत्पर करना। जोतना।
नहनि स्त्री० (हि) नहन।
नहनी स्त्री० (हि) नख काटने का औजार।
नहर स्त्री० (फा) सिंचाई या यातायात के विचार से किसी नदी या जलाशय से निकाला गया जलमार्ग
नहरनी स्त्री० (हि) नाखून काटने का औजार।
नहरी स्त्री० (फा) नहर के पानी से सींची जाने वाली भूमि। वि० नहर सम्बन्धी।
नहरुआ, नहरुवा, नहरू पुं०(देश) एक रोग जिसमें घाव में से सूत जैसा लम्बा कीड़ा निकलता है।
नहला पुं० (हि) नौ बूटियों वाला ताश का पत्ता।
नहलाई स्त्री० (हि) १-नहलाने की क्रिया या भाव। २-नहलाने का नेग या मजदूरी।
नहलाना, नहवाना क्रि० (हि) किसी को स्नान में प्रवृत्त करना।
नहान पुं० (हि) १-स्नान। २-स्नान का पर्व।
नहाना क्रि० (हि) १-स्नान करना। २-किसी तरल पदार्थ से शरीर का तर होना।
नहानी स्त्री० (हि) १-रजस्वला स्त्री। २-स्त्री का रजस्वला होना।
नहार वि०(फा) सवेरे से बिना खाया-पीया। बासी-मुँह।
नहारी स्त्री० (फा) १-जलपान। कलेवा। २-शोरबे-दार सालन (मुसलमान)।
नहारू पु० (हि) सिंह।
नहिं, नहिन अव्य० (हि) नहीं।
नहिअन पुं० (हि) पैर की छोटी उँगली में पहनने का एक प्रकार का गहना जो बिछिया की तरह का होता है।
नहिक वि०(हि) १-न मांगने वाला। २-किसी वस्तु, तत्व या बात से रहित। ३-अवरोधक। ४-जिसमें मूल में छाया की जगह आकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। पुं० १-नकारात्मक बात। २-सकारात्मक पक्ष का खंडन या विरोध। ४-छाया-चित्र में उलटा प्रतिबिम्ब जिससे सीधी प्रतिकृतियां बनती है।
नहीं अव्य० (हि) एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृत सूचित करने के लिए होता है।
नहूसत स्त्री० (अ) मनहूसी।
नाँ अव्य० (हि) नहीं।
नाउँ पुं० (हि) नाम।
नाउँगाउँ पुं० (हि) नाम और पता।
नांगा वि० (हि) नङ्गा। पुं० नागा साधु। स्त्री० लुच्ची
नांघना क्रि० (हि) लाँघना।
नांट स्त्री० (हि) इनकार।
नाँटना क्रि० (हि) इनकार करना।
नांठना क्रि० (हि) नष्ट होना।
नांद स्त्री० (हि) चौड़े मुँह का मिट्टी का घड़ा बरतन।
नांदना क्रि० (हि) १-शब्द करना। २-छींकना। ३-प्रसन्न होना।
नांदी स्त्री० (सं) १-अभ्युदय। २-मङ्गलाचरण।
नांदीघोष पुं० (सं) भेरी आदि का घोष।
नांदीमुख, नांदीश्राद्ध पुं० (सं) १-एक प्रकार का श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है। २-वे पूर्वज, जिनका श्राद्ध किया जाय या जिनके लिए तर्पण किया जाय।
नांयँ पुं० (हि) नाम। अव्य० नहीं।
नांवँ पु० (हि) नाम।

नांह पुं० (हि) स्वामी। नाथ। अव्य० नहीं।
ना अव्य० (सं) नहीं।
नाइं पु० (हि) नाम।
नाइक पु० (हि) नायक।
नाइन स्त्री० (हि) १-नाई की पत्नी। २-नाई जाति की स्त्री।
नाइब पुं० (हि) नायब।
नाईं स्त्री० (हि) की भाँति। की तरह।
नाई पु० (हि) हज्जाम।
नाउँ पु० (हि) नाम।
नाउ स्त्री० (हि) नाव।
नाउन स्त्री० (हि) नाइन।
नाऊ पु० (हि) नाई।
नाक स्त्री० (हि) १-नासिका। २-रेंट। ३-प्रतिष्ठा या शाभा की वस्तु। ४-प्रतिष्ठा। पुं० (हि) १-एक जल-जन्तु। २-नाका। पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-आकाश ३-इन्द्र।
नाकड़ा पुं० (हि) नाक का एक रोग।
नाकना क्रि० (हि) १-लाँघना। २-मात करना।
नाकपति पुं० (सं) इन्द्र।
नाका पुं० (हि) १-मुहाना। २-वह प्रमुख स्थान जहाँ से किसी बस्ती में जाने के मार्ग का आरम्भ होता होता है। ३-किसी नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेश स्थल। ४-चौकी। ५-सुई का छेद।
नाकाबंदी स्त्री० (हि) १-किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट। २-फाटक आदि का छेका जाना।
नाकुल पुं० (हि) नकुल। नेवला।
नाकेदार पु० (हि) १-नाके या फाटक पर रहने वाला पहरेदार या सिपाही। २-वह अधिकारी या कर्मचारी जो आने-जाने के प्रधान-प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिए नियुक्त हो।
नाकेबंदी स्त्री० (हि) नाकाबन्दी।
नाकेश, नाकेश्वर पु० (सं) इन्द्र।
नाक्षत्र, नाक्षत्रिक वि० (सं) नक्षत्र सम्बन्धी।
नाखना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-फेंकना। ३-डालना। ४-चलाना। ५-रखना। ६-लाँघना।
ना-खुश वि० (फा) नाराज। अप्रसन्न।
नाखून पुं० (फा) उँगलियों के सिरों पर चिपटा और आड़ा आवरण। नख।
नाखून-तराश पुं० (फा) नाखून काटने का औजार।
नाखूना पु० (फा) आँख का एक रोग जिसमें सफेद झिल्ली पड़ जाती है।
नाग पुं० (सं) [स्त्री० नागिन] १-साँप। २-मनुष्याकृति पातालवासी सर्प जिनकी गणना देवयोनि में होती है। ३-हिमालय की एक प्राचीन जाति। ४-हाथी। ५-राँगा। ६-सीसा नामक धातु। ७-पान। ८-बादल। ९-आठ की संख्या। १०-ज्योतिष के करणों में से तीसरे करण का नाम।
नाग-कन्या स्त्री०(सं) नाग जाति की कन्या, जो बहुत सुन्दर मानी गई है।
नागकेसर पु० (हि) वृक्ष विशेष जिसके फूल औषध, मसाले, रङ्ग आदि के काम आते हैं।
नाग-झाग पुं० (हि) अफीम।
नागदंत, नागदंतक पुं० (सं) १-हाथी दाँत। २-दीवार में गड़ी हुई खूँटी।
नागधर पुं० (सं) शिव।
नागनग पुं० (सं) गजमुक्ता।
नागना क्रि० (हि) नागा करना।
नागपंचमी स्त्री० (सं) श्रावण शुक्ला पंचमी।
नागपति पुं० (सं) १-वासुकी। २-ऐरावत।
नागपर्णी स्त्री० (सं) पान।
नागपाश पुं० (सं) १-ऐन्द्रिजालिक फन्दा जो युद्ध-काल में शत्रुओं को फँसाने के लिए व्यवहृत किया जाता था। २-वरुण के अस्त्र या फन्दे का नाम। ३-वह कठिन संकट जिससे सहज छुटकारा न हो। ४-शत्रुओं को बांधने का एक प्राचीन अस्त्र।
नागफनी स्त्री० (हि) थूहर की जाति का एक पौधा जिसके काँटेदार पत्ते होते हैं।
नागफांस पुं० (हि) नागपाश।
नागबंध पुं० (सं) साँप के समान लिपटाकर बाँधने का एक ढङ्ग।
नागबल पुं० (सं) भीम। वि० हाथी के समान बल वाला।
नागबेल स्त्री० (हि) पान।
नागयज्ञ पुं०(सं) एक यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों का पूर्ण विनाश किया था (महाभारत)।
नागर वि० (सं) १-नगर सम्बन्धी। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाला। ३-चतुर। पुं० [स्त्री० नागरि, नागरी] १-नगर का निवासी। २-भला आदमी।
नागरता स्त्री० (सं) १-नागरिकता। २-सभ्यता। ३-चतुराई।
नागरनट पु० दे० 'नट-नागर'।
नागर-मोथा पु० (हि) एक तरह की घास।
नागरयुद्ध पु०(सं) किसी देश के लोगों में होने वाली आपसी लड़ाई। गृहयुद्ध। (सिविल-वार)।
नागर-विवाह पुं० (सं) नागरिक की हैसियत से विवाह, जो धार्मिक बन्धनों से रहित होता है (सिविल-मैरेज)।
नागराज पुं० (सं) १-शेषनाग। २-ऐरावत।
नागरिक वि० (सं) १-नगर सम्बन्धी। २-नगर में रहने वाला।

**नागरिक-उड्डयन-विभाग** पुं० (सं) नागरिकों की हवाई यात्रा आदि की देख-रेख करने वाला विभाग (सिविल-ऐवियेशन-डिपार्टमेंट)।
**नागरिकता** स्त्री० (सं) नगर के या नागरिक अधिकारों में युक्त होने की अवस्था। (सिटीजनशिप)
**नागरिकताधिगम** पुं० (सं) नागरिक अधिकारों में वृद्धि करने की अवस्था।
**नागरिकतापहार** पुं० (सं) नागरिक या सार्वजनिक अधिकारों की क्षति। (लॉस-आफ-सिटीजन-शिप)।
**नागरिकतावाप्ति** पुं० (सं) नागरिकताधिगम।
**नागरिकत्व** पुं० (सं) नागरिकता।
**नागरिकत्व-प्रदान** पुं० (सं) नागरिक प्रदान करने या देने की क्रिया, भाव या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
**नागरिक-शास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति समाज तथा देश के हित के विचार से, संस्कृति, परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक उत्तम और सद्‌जीवन व्यतीत करने का विचार होता है। (सिविक्स)।
**नागरिकाधिकार** पुं० (सं) नागरिकता। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाले सार्वजनिक-स्वत्व या अधिकार। (सिविल-राइटस)।
**नागरिकाधिकार-विषय** पुं० (सं) नागरिक अधिकार का प्रश्न। (सिविल राइटस केस)।
**नागरिकापादन** पुं० (सं) नागरिक अधिकार देने की क्रिया या अवस्था। (डिनाईजेशन)।
**नागरिकीकरण** पुं० (सं) १-नागरिक या देशीय बनाने की क्रिया। २-राष्ट्रीयकरण। (नेशनलाईजेशन)।
**नागरी** स्त्री० (सं) १-नगर की रहने वाली स्त्री। २-भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत और हिन्दी लिखी जाती है। ३-चतुर स्त्री।
**नागलोक** पुं० (सं) पाताल।
**नागवल्लरी, नागवल्ली** स्त्री० (सं) पान।
**नागवार** वि० (फा) १-असह्य। २-अप्रिय।
**नागा** पुं० (हि) १-नग्न। २-नंगे रहने वाले साधु ३-दसनामी गुसाइयों की एक शाखा। ४-वैरागियों की एक शाखा। ५-एक जंगली जाति जो आसाम की पहाड़ियों में रहती है। ६-अन्तर। बीज। ७-अनुपस्थिति।
**नागारि** पुं० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-नेवला।
**नागार्जुन** पुं० (सं) एक बौद्ध महात्मा।
**नागाशन** पुं० (सं) १-गरुड़। २-मयूर। ३-सिंह।
**नागिन** स्त्री० (हि) १-साँप की मादा। सर्पिणी। २-रोयें की वह लम्बी भौंरी जो पीठ या गरदन पर होती है। ३-इस तरह की भौंरी वाली स्त्री।
**नागेन्द्र** पुं० (सं) १-शेष, वासुकी आदिनाग। २-सर्पों का राजा। ३-गजेंद्र।
**नागेसर** पुं० (हि) नागकेसर।
**नागौर** पुं० (हि) राजस्थान का एक नगर।
**नागौरी** वि०(हि)१-नागौर का। २-नागौर का अच्छी नस्ल की (गाय या बैल)। स्त्री० एक तरह की खस्ता पूरी।
**नाघना** क्रि० (हि) लाँघना।
**नाच** पुं० (हि) १-नाचने की क्रिया या भाव। २-नाचने का उत्सव।
**नाचकूद** स्त्री० (हि) १-उछलकूद। २-नाच-तमाशा।
**नाचघर** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ नाच होता हो। नृत्यशाला।
**नाचना** क्रि० (हि) १-नृत्य करना। २-प्रसन्नतापूर्वक उछलना-कूदना। ३-चक्कर लगाना। ४-दौड़ना धूपना। ५-काँपना। ६-क्रोध में आकर उछलना-कूदना।
**नाच-महल** पुं० (हि) नाचघर।
**नाचरंग** पुं० (हि) आमोदप्रमोद।
**नाचीज** वि० (फा) १-तुच्छ। २-निकम्मा।
**नाज** पुं० (फा० नाज़) १-नखरा। २-घमंड। पुं० (हि) अन्न। अनाज।
**नाजनी** स्त्री० (फा) सुन्दर स्त्री।
**नाजबारदारी** स्त्री० (फा) नाज-नखरे सहना।
**नाजायज** वि० (अ) १-अवैध। २-अनुचित।
**नाजिम** पुं० (अ) १-मुसलमानों के शासनकाल में किसी देश का प्रबन्धकर्ता। २-आजकल किसी न्यायालय सम्बन्धी किसी कार्यालय का प्रबन्धकर्ता वि० प्रबन्धकर्ता।
**नाजिर** पुं० (अ) १-निरीक्षक। २-कचहरी के लिपि का अधिकारी। ३-वेश्याओं का दलाल।
**नाजी** पुं० [जर० नात्सी] १-जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसका नेता हिटलर था। २-इस दल का सदस्य।
**नाजीवाद** पुं० (हि) जर्मनी का राष्ट्रीय साम्यवादी दल जिसकी यह घोषणा है कि जर्मनी इस देश को पवित्र आर्य सन्तति के लिए है और देश के प्रत्येक व्यक्ति की निजी संपत्ति देश के हित के लिए समर्पण है। (नाजीइज्म)।
**नाजुक** वि० (फा) १-कोमल। २-पतला। सूक्ष्म। ४-गूढ़। ५-तनिक से आघात से टूट-फूट जाने वाला ५-जोखिम का।
**नाजुक-खयाल** वि० (फा) अच्छे विचारों वाला।
**नाजुक-दिमाग** वि० (फा) १-चिड़चिड़ा। २-घमंडी
**नाजुक-बदन** वि० (फा) कोमल और सुकुमार शरीर का।
**नाजुक-मिजाज** वि० (फा) १-तुनक-मिजाज। २-घमंडी।

**नाजो, नाजौ** स्त्री० (हि) १-लाड़ली। दुलारी। २-प्रियतमा। ४-कोमलांगी।

**नाट** पु० (सं) १-नृत्य। २-नकल। स्वांग। ३-एक राग। पु० (हि) काँटे या अस्त्र के फल की वह फाँस जो शरीर में टूट-टूट कर रह जाती है और दर्द करती है।

**नाटक** पु० (सं) १-रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन २-अभिनय-ग्रन्थ। दृश्यकाव्य।

**नाटककार** पु० (सं) किसी दृश्यकाव्य या नाटक का लिखने वाला।

**नाटकशाला** स्त्री० (फा) वह स्थान जहाँ नाटक होता है।

**नाटकावतार** पु० (सं) किसी नाटक के अभिनय के बीच अन्य नाटक का अभिनय। अन्तर्नाटक।

**नाटकिया, नाटकी** पु० (हि) १-नाटक या अभिनय करने वाला व्यक्ति। २-नाटक करके जीविका चलाने वाला।

**नाटकीय** वि० (सं) १-नाटक सम्बन्धी। २-नाटक अथवा नटों जैसा।

**नाटना** क्रि० (हि) १-कह कर मुकर जाना। २-अस्वीकार करना।

**नाटा** वि० (हि) [स्त्री० नाटी] कम ऊँचा।

**नाटिका** स्त्री० (सं) चार अङ्कों वाला दृश्य-काव्य।

**नाट्य** पु० (सं) १-अभिनय। २-अभिनय कला। ३-नृत्य। ४-नृत्यकला। ५-अभिनेता की वेशभूषा।

**नाट्यकार** पु० (सं) १-नाटक करने वाला नट। २-नाटककार।

**नाट्यमंदिर** पु० (सं) नाट्यशाला।

**नाट्यरासक** पु० (सं) एक प्रकार का दृश्य-काव्य या उपरूपक जिसमें केवल एक अङ्क होता है। एकांकी नाटक।

**नाट्यशाला** स्त्री० (सं) अभिनय करने का स्थान या घर

**नाट्यशास्त्र** पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें अभिनय आदि का विवेचन हो।

**नाट्यागार** पु० (सं) नाट्यशाला।

**नाट्याचार्य** पु० (सं) नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने वाला।

**नाट्योचित** वि० (सं) अभिनय करने योग्य।

**नाठ** पु० (हि) १-नाश। २-अभाव।

**नाठना** क्रि० (हि) नष्ट होना या करना।

**नाठा** वि० (हि) नष्ट।

**नाड़** स्त्री० (हि) गर्दन। ग्रीवा।

**नाड़ा** पु० (हि) १-इजारबन्द। नीवी। २-मौली। ३-मलवाली आँत।

**नाड़ी** स्त्री० (हि) १-शरीर में की रक्तवाहिनी नलियाँ २-नब्ज। ३-काल का एक मान। ४-हठ-योग में अनुभूति और श्वास-प्रश्वास सम्बन्धी नालियाँ। ५-हंडी।

**नाड़ीचक्र** पु० (सं) हठयोग के मतानुसार नाभि-देश में स्थित मुर्गी के अण्डे के आकार का चक्र विशेष।

**नाड़ीपरीक्षा** स्त्री० (सं) नब्ज देखना।

**नाड़ीमंडल** पु० (सं) विषवत् रेखा।

**नाड़ीयंत्र** पु० (सं) शल्य चिकित्सा में एक चीर-फाड़ का औजार जो शरीर की नाड़ियों अथवा स्रोतों में घुसी हुई वस्तु को बाहर निकालने के काम में आता था।

**नाड़ीव्रण** पु० (सं) नासूर।

**नाड़ीसंस्थान** पु० (सं) नाड़ियों का जाल।

**नात** स्त्री० (अ० नअत) १-प्रशंसा। २-स्तुति-गीत। पु० (हि) १-नाता। ३-सम्बन्ध। २-नातेदार।

**नातर, नातरु** अव्य० (हि) नहीं तो। अन्यथा।

**नाता** पु० (हि) सम्बन्ध। रिश्ता।

**नातिन, नातिनी** स्त्री० (हि) लड़की की लड़की।

**नाती** पु० (हि) [स्त्री० नातिनी, नातिन] लड़की का लड़का। दोहता।

**नाते** क्रि० वि० १-सम्बन्ध से। २-वास्ते। लिए।

**नातेदार** वि० (हि) सम्बन्धी। रिश्तेदार।

**नात्सी** पु० (ज) नाजी।

**नाथ** स्त्री० (हि) १-नाथने की क्रिया या भाव। २-नकेल। ३-(नाक की) नथ। पु० (सं) १-प्रभु। २-स्वामी। ३-पति। ४-गोरखपन्थी साधुओं की एक उपाधि।

**नाथना** क्रि० (हि) १-बैल आदि की नाक छेदकर रस्सी डालना। २-किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या धागा डालना। ३-नत्थी करना। ४-लड़ी के रूप में जोड़ना।

**नाथद्वारा** पु० (हि) राजस्थान राज्य के उदयपुर प्रदेश के अंतर्गत वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

**नाद** पु० (सं) १-शब्द। २-संगीत। ३-वर्णों के उच्चारण में एक तरह का बाह्य प्रयत्न। ४-अव्यक्त शब्द।

**नादना** क्रि० (हि) १-बजना या बजाना। २-गरजना।

**नादली** स्त्री० (हि) हौलदिली।

**नादान** वि० (फा) १-नासमझ। २-मूर्ख।

**नादारी** स्त्री० (फा) गरीबी।

**नादित** वि० (सं) जिसमें नाद या शब्द उत्पन्न हो रहा हो।

**नादिम** वि० (फा) लज्जित।

**नादिया** पु० (हि) १-नन्दी। २-वह बैल जिसका प्रदर्शन करके जोगी भीख मांगते हैं।

**नादिर** वि० (फा) अद्भुत।

**नादिरशाही** स्त्री० (फा) १-मनमाने आदेश प्रचलित

करना। २-भारी अंधेर या अत्याचार। ३-निरंकुश शासन। वि० बहुत कठोर। अत्यन्त उग्र।
नादिहंद स्त्री० (फा) न देने वाला।
नादी वि० (हि) [स्त्री० नादिनी] १-शब्द करने वाला। २-बजाने वाला।
नादौट स्त्री० (हि) एक तरह की तलवार।
नाध स्त्री० (हि) १-नाधने की क्रिया या भाव। २-किसी बड़े काम का आयोजन और आरंभ।
नाधना क्रि० (हि) १-जोतना। २-लगाना। ३-गूँथना। ४-ठानना। ५-नाथना।
नान स्त्री० (फा) १-रोटी। २-तंदूर में पकाई जाने वाली एक तरह की मोटी खमीरी रोटी।
नानक पुं० सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा।
नानकपंथी, नानकशाही पुं० (हि) गुरु नानक के मत का अनुयायी।
नान-खताई स्त्री० (फा) टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।
नान-बाई पुं० (फा) रोटियाँ पका कर बेचने वाला।
नानस स्त्री० (हि) सास की माता।
नानसरा पुं० (हि) सास का पिता।
नाना वि० (स) १-अनेक प्रकार के। २-अनेक। बहुत। पुं० (हि) [स्त्री० नानी] माता का पिता। मातामह। क्रि० १-नम्र करना। २-नीचा करना। ३-डालना। ४-घुसाना। पुं० (अ) पुदीना।
नानात्मवादी पुं० (सं) सांख्यदर्शन का वह सिद्धांत जो आत्मा को अनेक मानता है।
नानिहाल पुं० (हि) नाना-नानी का घर।
नाती स्त्री० (देश) माता की माता। मातामही।
ना-नुकर पुं० (हि) इनकार।
ना-नुसारी वि० (हि) अनुसरण करने वाला।
नान्ह वि० (हि) १-नन्हा। छोटा। २-नीच ३-महीन।
नान्हरिया वि० (हि) छोटा। नन्हा।
नान्हा वि० (हि) नन्हा। पुं० छोटा बच्चा।
नाप स्त्री० (हि) १-परिमाण। माप। २-नापने का काम। ३-मानदंड।
नापजोख, नापतौल स्त्री० (हि) १-नापने तथा तौलने की क्रिया। २-नापकर या तौलकर निर्धारित की गयी मात्रा या परिमाण।
नापना क्रि० (हि) १-मापना। २-किसी स्थान या वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई निश्चित करना।
नापसंद वि० (फा) १-जो पसंद न हो। २-अप्रिय।
नापाक वि० (फा) १-अशुद्ध। २-मैलाकुचैला।
नापित पुं० (सं) बाल बनाने वाला। नाई।
नापित-शाला, नापितशालिका स्त्री० (स) वह स्थान जहाँ नाई से बाल बनवाये या छटवाये जाते हैं। क्षौरालय। (सैलून)।
नापैद वि० (हि) १-जो पैदा न हुआ हो। २-अप्राप्य ३-दुर्लभ। ४-क्लिष्ट।
नाफा पुं० (फा) कस्तूरी की थैली जो मृग की नाभी में होती है।
ना-फरमां वि० (हि) बड़ों की बात न मानने वाला। बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन करने वाला।
नाबदान पुं० (फा) गन्दे पानी की नाली।
नाबदानी वि० (फा) १-नाबदान सम्बन्धी या नाबदान का। २-नाबदान जैसा गन्दा, त्याज्य और अस्पृश्य।
नाबदानी-पत्र पुं० (फा+सं) वह समाचारपत्र जिसमें दूषित, अशिष्ट और अश्लील विचार हों और लोगों पर कीचड़ उछाला जाता हो। (गटर-प्रेस)।
ना-बालिग वि० (अ+फा) अ-वयस्क।
नाबूद वि० (फा) नष्ट। ध्वस्त।
नाभ स्त्री० (हि) नाभि।
नाभि स्त्री० (हि) १-पहिए का मध्य भाग। नाह। २-ढोंढी। धुन्नी। ३-कस्तूरी। ४-चक्रमध्य में वह भाग जिसमें सब ओर दूसरे भाग, अंग या वस्तुएँ आकर एकत्रित होती अथवा मिलती हैं। न्यू-कलिअस)।
ना-मंजूर वि० (फा) अस्वीकृत। अमान्य।
नाम पुं० (हि) १-किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराने वाला शब्द। संज्ञा। आख्या। (नेम)। २-ख्याति। यश। कीर्ति। ३-बहीखाते में का वह विभाग जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा जाता है।
नामक वि० (सं) नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करने वाला।
नामकरण पुं० (स) नाम रखने का काम या संस्कार
नाम-कीर्तन पुं० (सं) भगवान के नाम का जप या भजन।
नाम-कोष पुं० (सं) नामवाचक संज्ञाओं का उल्लेख करने वाला कोष।
नामचढ़ाई स्त्री० (हि) दाखिल-खारिज। (म्यूटेशन)।
नामजद वि० (फा) १-नामांकित। २-प्रसिद्ध।
नामजदगी स्त्री० (फा) किसी चुनाव या काम आदि के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।
नामतः क्रि०वि० (सं) नाम अथवा नाम के उल्लेख से
नामदार वि० (फा) प्रसिद्ध। नामी।
नामदेव पुं० (सं) १-एक गुजराती प्रसिद्ध भक्त। २-एक महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कवि।
नामधन पुं० (सं) एक सङ्कर राग। (सङ्गीत)।
नामधराई स्त्री० (हि) बदनामी।
नामधातु स्त्री० (सं) व्याकरण में वह नाम या संज्ञा जो कुछ क्रियाओं में धातु का काम देती है।
नाम-धाम पुं० (हि) नाम और पता।

**नामधारक** *वि०* (सं) नाममात्र का।
**नामधारी** *वि०* (हिं) नाम धारण करने वाला। नामक पु० सिक्ख साम्प्रदाय की एक शाखा।
**नामधेय** पुं० (स) १-नामकरण। २-नाम। *वि०* नाम का।
**नामनाभिक** पुं० (सं) परमेश्वर।
**नामनिर्देश** पुं० (सं) नाम लेकर बतलाना।
**नाम-निर्देशन-पत्र** पुं० (स) चुनाव में उम्मीदवार की हैसियत से भरा जाने वाला पत्र। (नॉमिनेशन-पेपर)।
**नाम-निवेश** पुं० (सं) किसी का नाम किसी कार्य विशेष के लिए नामावली या वही में लिखा जाना एनरोलमेंट)।
**नाम-निशान** पुं० (फा) चिह्न।
**नाम-पट्ट** पुं० (सं) वह पट्ट या तख्ता जिस पर किसी व्यक्ति, दुकान या संस्था आदि का नाम लिखा जाता है। (साइनबोर्ड)।
**नाम-पत्र** पुं० (सं) कागज का वह टुकड़ा जो किसी शीशी, बोतल या डिब्बे पर चिपका होता है जिससे यह जाना जाता है कि उस डिब्बे मे क्या है? (लेबल)।
**नामपत्रित** *वि०* (सं) जिस पर नाम पत्र लगा हो।
**नामबद्ध** *वि०* (सं) नाम लिखा हुआ।
**नामबोला** पु० (हि) नाम जपने वाला।
**नाममात्र** *वि०* (हिं) केवल नाम के लिए।
**नाम-माला** *स्त्री०* (सं) १-नामों की तालिका। २-एक प्रकार का कोष।
**नाम-मुद्रा** *स्त्री०* (सं) १-अंगूठी पर खोदा हुआ नाम २-नाम खुदी या लिखी हुई मुहर।
**नामयज्ञ** पुं० (सं) नाम या धूम-धाम के लिए किया जाने वाला यज्ञ।
**नाम-राशि** पुं० (सं) एक ही नाम के दो व्यक्ति।
**नामरासी** पुं० (हिं) नामराशि।
**नामर्द** *वि०* (फा) १-नपुंसक। २-डरपोक।
**नामर्दी** *स्त्री०* (फा) १-नामर्द होने की अवस्था या भाव। २-नपुंसक होने का रोग। ३-कायरता।
**नाम-लिखाई** *स्त्री०* (हि) १-किसी तालिका या पंजी में नाम लिखाना। (एनरोलमेंट)। २-इस प्रकार नाम लिखाने के लिए लिया या दिया जाने वाला धन।
**नाम-लेखन** पुं० (सं) किसी तालिका, पर्जी आदि में नाम लिखना।
**नाम-लेखन-शुल्क** पुं० (सं) वह धन या शुल्क जो नाम लिखने, भरती करने सदस्य बनाने में दिया जाय। (एनरोलमेंट-फी)।
**नामलेवा** पुं० (हि) १-नाम लेने वाला। २-उत्तराधिकारी।

**नामवर** *वि०* (फा) प्रसिद्ध।
**नामवाचक** *वि०*(सं) नाम बताने वाला। पुं० व्यक्तिवाचक संज्ञा।
**नामशेष** *वि०* (सं) १-जिसका केवल नाम रह गया हो। २-नष्ट। ३-मृत।
**नामसत्य** पुं० (सं) गुण रहित होने पर भी गुणद्योतक नाम का कथन।
**नामहँसाई** *स्त्री०* (हि) बदनामी।
**नामांक** पुं० (सं) नामावली में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक। (रोल-नम्बर)।
**नामांकन** पुं० (स) किसी काम में या किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना। (नॉमिनेशन)।
**नामांकन-पत्र** पुं० (सं) किसी चुनाव में उम्मीदवार की हैसियत से दिया जाने वाला आवेदन-पत्र। (नॉमिनेशन-पत्र)।
**नामांकित** *वि०* (सं) १-जिस पर नाम लिखा या खुदा हो। २-नामजद। (नॉमिनेटेड)। ३-प्रसिद्ध
**नामांकिती** पुं० (हिं) चुनाव, पद, कार्य आदि के लिए नामांकित किया गया व्यक्ति। (नॉमिनी)।
**नामांतर** पुं०(सं) एक ही व्यक्ति या वस्तु का दूसरा नाम। पर्याय।
**नामांतरण** पुं० (सं) दाखिल-खारिज। (म्यूटेशन)।
**नामांतरण-करणिक** पुं०(सं) दाखिल-खारिज करने वाला लिपिक या कर्मचारी। (म्यूटेशन-क्लर्क)।
**ना-माकूल** *वि०* (फा+अ) १-अयोग्य। २-अनुचित।
**ना-मालूम** *वि०* ((फा) अज्ञात।
**नामावली** *स्त्री०* (सं) १-नामों की सूची या तालिका २-रामनामी कपड़ी।
**नामिक** *वि०* (सं) नाममात्र का। (नॉमिनल)।
**नामी** *वि०* (हि) १-नाम वाला। २-प्रसिद्ध।
**नामीगिरामी** *वि०* (हि) प्रसिद्ध।
**ना-मुनासिब** *वि०* (फा) अनुचित।
**ना-मुमकिन** *वि०* (फा+अ) असम्भव।
**नामूसी** *स्त्री०* (अ) निन्दा।
**नमोल्लेख** पुं० (सं) अ-संसदीय कार्य अथवा कदाचरण के विचार से अध्यक्ष द्वारा सदन में सदस्य के नाम का उल्लेख किया जाना।
**नाम्ना** *वि०* (सं) [*स्त्री०* नाम्नी] नाम वाला।
**नाम्य** *वि०* (सं) १-झुकाने योग्य। २-लचीला।
**नाय** पुं० (हि) नाम। स्त्री० (हि) नाव।
**नायक** पुं० (सं) [*स्त्री०* नायिका] १-नेता। अगुआ २-स्वामी। ३-सरदार। ४-किसी काव्य या नाटक आदि का प्रमुख पात्र। ५-संगीतज्ञ। ६-एक वर्णवृत्त।
**नायक-पोत** पुं० (सं) नौ-सेनापति की पताका फहराने वाला तथा नेतृत्व करने वाला जल-जहाज

जो जहाजी बेड़े को समादिष्ट करता है। (फ्लैग-शिप।

नायका स्त्री० (हि) १–नायिका। २–वह वृद्धा स्त्री जो किसी वेश्या को अपने पास रख कर उससे पेशा कमवाती हो ३–कुटनी। दूती।
नायकी स्त्री० (सं) एक राग का नाम।
नायकी-कान्हड़ा पुं० (?) एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।
नायकी-मल्लार पुं० (हि) संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं।
नायड़ू स्त्री० (?) कोचीन के उत्तर भाग में रहने वाली एक जाति।
नायन स्त्री० (हि) १–नाई या नापित की पत्नी। २–नाई जाति की स्त्री। ३–संपन्न या राज-घरानों में महिलाओं की वेणी गूंथने वाली स्त्री।
नायब वि० (फा) १–स्थानापन्न। २–सहायक। पुं० १–सहायक। २–मुनीम। मुख्तार।
नायाब पुं० (फा) १–दुष्प्राप्य। २–बहुत बढ़िया।
नायिका स्त्री० (सं) १–रूप-गुण सम्पन्न स्त्री। २–वह स्त्री जिसका चरित किसी काव्य में मुख्य रूप से वर्णित हो।
नायिकाधिप पुं० (सं) राजा।
नारंगी स्त्री० (हि) नीबू की जाति का एक पेड़ का फल। वि० पीलापन लिये कुछ लाल रङ्ग का।
नार स्त्री० (हि) १–नाड़। गरदन। २–जुलाहों की ढरकी। नाल। ३–नारी। पुं० १–आँवल नाल। २–नाल। नाड़ा। ३–जूआ जोड़ने की रस्सी। ४–नर-समूह।
नारकी वि० (हि) १–नरक-भोगी। २–नरक में जाने योग्य।
नारकीय वि० (सं) १–नरक सम्बन्धी। २–नरक-भोगी जैसा। ३–अति निकृष्ट।
नारद पुं० (सं) एक प्रसिद्ध देवर्षि।
नारना क्रि० (हि) ताड़ना। भाँपना।
नारा पुं० [अ० नअरा] अपनी माँग, शिकायत आदि की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार बार बुलन्द की जाने वाली आवाज। (स्लोगन)। पुं० (हि) १–नाड़ा। इजारबन्द। २–नाला।
नाराइन पुं० (हि) नारायण। विष्णु।
नाराच पुं० (सं) १–लोहे का बाण। २–एक वर्णवृत्त
नाराज वि० (फा) अप्रसन्न। रुष्ट।
नाराजगी स्त्री० (फा) अप्रसन्नता।
नाराजी स्त्री० (फा) नाराजगी। अप्रसन्नता। वि० जो राजी न हो।
नारायण पुं० (सं) १–विष्णु। २–परमात्मा।
नारायणी स्त्री० (सं) १–दुर्गा। २–लक्ष्मी। गङ्गा। ४–श्रीकृष्ण की सेना का नाम। वि० नारायण सम्बन्धी।
नारि स्त्री० दे० नारी। स्त्री०(हि) १–समूह। २–अंबार आगार।
नारिकेर, नारिकेल पुं० (सं) नारियल।
नारिदा, नारिदान पुं० (हि) नाबदान।
नारियल पुं०(हि) १–खजूर की जाति का एक वृक्ष या उसका गोल फल। २–इस गोल फल का बना हुक्का
नारी स्त्री० (सं) स्त्री। स्त्री० (हि) १–नाड़ी २–नाली। ३–हरिस में जूआ बाँधने की रस्सी या तस्मा।
नारीत्व पुं० (सं) नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्री-धर्म।
नारीधर्म पुं० (सं) १–स्त्रियों का धर्म। २–रजोदर्शन
नारू पुं० (देश) १–जूँ। २–नहरुआ नामक रोग।
नालंद, नालंदा पुं० बिहार राज्य के अन्तर्गत एक प्राचीन स्थान जो बड़ा विश्वविद्यालय था।
नालंब वि० (हि) निरवलंब। असहाय।
नाल स्त्री०(सं) १–कलम आदि की डंडी। २–पौधे का डंठल। ३–जौ, गेहूँ आदि की लम्बी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४–नली। नाल। ५–सुनारों की फूँकनी। ६–बन्दूक की नाल। ७–कमलों के भीतर से निकलने वाला रेशा। ८– रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भाशय से मिलती है तथा दूसरे गर्भस्थ बच्चे की नाभि से। स्त्री० (अ) १–घोड़ों की टाप और जूतों की एड़ी में लगने वाला अर्ध चन्द्राकार लोहा। २–पत्थर का वह भारी कुण्डलाकार टुकड़ा जिसे कसरत करनेवाले उठाते हैं। ३–लकड़ी का वह चक्कर जो कूएँ की नींव में रखा जाता है। ४–वह धन जो जूए के अड्डे का मालिक जीतने वाले से अपने अंश रूप में लेता है।
नालकी स्त्री० (हि) एक तरह की खुली पालकी।
नालत, नालति स्त्री० (हि) लानत। धिक्कार।
नालबंद पुं० (हि) घोड़े की टाप या जूते की एड़ी में नाल जड़ने वाला आदमी।
नाला पुं० (हि) [स्त्री० नाली] १–वह प्रणाली अथवा जलमार्ग जिसमें वर्षा का पानी बहता है। २–गंदे जल के बहने का मार्ग। ३–नाड़ा।
ना-लायक वि० (फा०+अ) अयोग्य।
ना-लायकी स्त्री० (फा०+अ) अयोग्यता।
नालिश स्त्री० (फा) फरियाद। अभियोग।
नाली स्त्री० (हि) १–छोटा नाला। २–गंदा पानी बहने की मोरी। (ड्रेन)। ३–गहरी लकीर। ४–पतला नल। नली।
नावँ पुं० (हि) नाम।
नाव स्त्री० (हि) नौका। किश्ती। पोत।
नावक पुं० (फा) एक तरह का छोटा बाण। पुं०(हि) केवट। मांझी।
नावघाट पुं० (हि) नावों के ठहरने का स्थान।

नवाध्यक्ष पुं० (हि) नौसेना का वह अधिकारी जिसके अधीन जहाजी बेड़ा होता है। नौ-सेना-पति। (एडमिरल)।
नावना क्रि० (हि) १-झुकना। २-घुसाना।
नावर, नावरि स्त्री० (हि) १-नाव। नौका। २-नाव का जल के बीच में ले जाकर चक्कर देने की क्रिया।
नावाँ पुं० (हि) रकम।
ना-वाकिफ वि० (फा+अ) अनभिज्ञ।
नावाधिकरण पुं० (सं) किसी राज्य की सामुद्रिक शक्ति और नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग अथवा प्रधान कार्यालय। (ऐडमिरैल्टी)
नाविक पुं० (सं) १-मल्लाह। माँझी। केवट। २-पोतारोही। ३-जल में यात्रा करने वाला।
नाविक-विद्या स्त्री० (सं) जलपोत चलाने की विद्या या हुनर।
नावी स्त्री० (सं) नौका, जलयान आदि पर चलने वाले यान।
नावेल पुं० (अं) उपन्यास।
नावोपजीवी पुं० (सं) जलपोत इत्यादि चला कर अपनी जीविका चलाने वाला व्यक्ति।
नाव्य वि० (सं) १-नाव से जाने योग्य। २-प्रशंसनीय। ३-(नदी या कोई जल-आशय) जिसमें नाव इत्यादि चल सकें। (नेविगेबल)। पुं० नवीनता। नयापन।
नाव्युदक पुं० (सं) नाव में इकट्ठा हुआ पानी।
नाव्य-जलमार्ग पुं० (सं) जलपोत अथवा नौका द्वारा यात्रा करने योग्य नदियां, नहरें इत्यादि। (नेविगेबल वाटरवेज)।
नाश पुं० (सं) १-बरबादी। अस्तित्व न रह जाना। ध्वंस। २-गायब होना। अदृश्यता। ३-दुर्भाग्य। विपत्ति। ४-त्याग। ५-भाग जाना। पलायन।
नाशक वि० (सं) १-बरबाद करने वाला। २-मारने वाला। ३-दूर करने या हटाने वाला।
नाशकारी वि० (हि) नाशक। नाश करने वाला।
नाशन पुं० (सं) १-नाश। २-मृत्यु। ३-स्थानान्तरकरण। दूर या अलग करना। वि० नाश करने वाला।
नाशना क्रि० (हि) दे० 'नासना'।
नाशपाती स्त्री० (तु०) एक प्रकार का गोल और मीठा सेब के आकार का प्रसिद्ध फल। (पीयर)।
नाशमय, नाशवान वि० (सं) नश्वर। नाश को प्राप्त होने वाला।
नाशयित्री वि० (सं) नाश करने वाली।
नाशित वि० (सं) नष्ट किया हुआ।
नाशी वि० (सं) १-नाशक। २-नाश होने वाला। नश्वर।
नाश्ता पुं० (फा) कलेवा। जलपान।
नाश्य वि० (सं) नाश के योग्य।
नास स्त्री० (हि) वह औषधि जो नाक से सूँघी जाय सुँघनी।
नासदान पुं० (हि) सुँघनी रखने की डिबिया।
नासना क्रि० (हि) १-बरबाद करना। २-वध करना
नासपाल पुं० (फा) कच्चे अनार का छिलका जिसमें से रंग निकाला जाता है।
नासपाली वि० (फा) कच्चे अनार के छिलके के रंग का।
ना-समझ वि०(हि) जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि।
ना-समझी स्त्री० (हि) बेवकूफी। मूर्खता।
नासांतिक वि० (सं) नाम तक।
नासा स्त्री० (सं) १-नाक। नासिका। २-नथना। नाक का छिद्र।
नासाग्र पुं० (सं) नाक की नोंक। नाक का अगला भाग।
नासा-छिद्र पुं० (सं) नाक का छेद।
नासा-परिस्राव पुं० (सं) नाक का सर्दी से बहना।
नासा-पाक पुं० (सं) नाक पक जाने की बीमारी।
नासापुट पुं० (सं) नाक का नथना।
नासावेध पुं० (सं) नाक का वह छिद्र जिसमें नथ या कील पहनी जाती है।
नासायोनि पुं० (सं) वह नपुंसक जिसे घ्राण करने पर उद्दीपन न हो। सौगंधिक नपुंसक।
नासारंध्र पुं० (सं) नाक का छिद्र।
नासाल पुं० (सं) कायफल।
नासावंश पुं० (सं) नाक की हड्डी। नाकबांसा।
नासाशोष पुं० (सं) एक प्रकार का रोग जिसमें नाक का कफ सूख जाता है।
नासासंवेदन पुं० (सं) चिचड़ी। चिटचिटाकांड बेल।
नासिकंधम वि० (सं) नकियाकर बोलने वाला।
नासिकंधय वि० (सं) नाक में से होकर पीना।
नासिक स्त्री० (सं) १-बम्बई राज्य के अन्तर्गत एक तीर्थ स्थान। २-दे० 'नासिका'।
नासिका स्त्री० (सं) नाक। घ्राणेन्द्रिय। वि० (सं) प्रधान। श्रेष्ठ।
नासिका-मल पुं० (सं) श्लेष्मा जो नाक से निकलता है।
नासिक्य वि० (सं) नासिका से उत्पन्न। पुं०(सं) १-नासिका। २-अश्विनीकुमार। ३-नासिक।
नासी वि० (हि) दे० 'नाशी'।
नासीर पुं० (सं) १-किसी शत्रु से आमने-सामने लड़ने की क्रिया। २-सेना का अग्र भाग। वि०(सं) अग्रेसर। सबसे आगे जाने वाला।
नासीरिका स्त्री० (सं) सबसे आगे जाने वाली सेना
नासूर पुं० (अ) गहरा और छोटा घाव जिससे बरा-

पर मवाद निकलता रहता है । नाड़ीव्रण । (कैन्सर
नास्ति अव्य० (सं) अविद्यमानता । नहीं ।
नास्तिक पुं० (सं) ईश्वर, वेद और परलोक को न मानने वाला । देवनिन्दक । (एथीस्ट) ।
नास्तिकता पुं० (सं) ईश्वर और परलोक आदि में अविश्वास का सिद्धान्त । (एथीइज्म) ।
नास्तिकदर्शन पुं० (सं) नास्तिकों का दर्शन-शास्त्र ।
नास्तिक्य पुं० (सं) नास्तिकता ।
नास्तिनद पुं० (स) आम का पेड़ । आम्रवृक्ष ।
नास्तिमंत वि० (हि) निर्धन । गरीब । अकिंचन निःस्व । (हैव-नॉट) ।
नास्तिवाद पुं० (सं) नास्तिकों का तर्क । यह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता ।
नास्य वि० (सं) नासिका सम्बन्धी । नाक से उत्पन्न ' पु० (स) नकेल ।
नाह पुं० (हि) १-स्वामी । नाथ । २-स्त्री का पति ३-पहिये का छेद । ४-बन्धन । फन्दा ।
नाहक क्रि० वि० (फा, अ) निष्प्रयोजन । व्यर्थ । वृथा
नाहर पुं० (हि) १-शेर । सिंह । २-नारू या नहरुवा नामक एक रोग ।
नाहिंनै अव्य० (हि) कभी नहीं । नहीं (है) ।
नाहीं अव्य० (हि) कदापि नहीं ।
नाहुष पुं० (सं) ययाति राजा की उपाधि । २-नहुष-राज के पुत्र ।
निडिका स्त्री० (सं) मटर ।
निन क्रि० वि० (हि) दे० 'नित्य' ।
निव वि० (हि) दे० 'निंद्य' ।
निंदक पुं० (स) निन्दा करने वाला ।
निंदन पुं० (सं) निन्दा करने का कार्य ।
निंदना क्रि० (हि) निन्दा करना ।
निंदनीय वि० (सं) १-निन्दा करने योग्य । २-बुरा । खराब । गर्ह्य ।
निंदरिया स्त्री० (हि) निद्रा । नींद ।
निंदा स्त्री० (सं) किसी की कल्पित या वास्तविक बुराई या दोष बतलाना । २-बदनामी । अपकीर्ति ।
निंदाई स्त्री० (हि) दे० 'निराई' ।
निंदाना क्रि० (हि) दे० 'निराना' ।
निंदाप्रस्ताव पुं० (सं) शासन-सम्बन्धी किसी कार्य अथवा नीति के प्रति असन्तोष प्रकट करने तथा उसकी निन्दा करने के उद्देश्य से राज्य के प्रधान-मन्त्री या किसी सभा के अध्यक्ष के विरुद्ध लाया जाने वाला प्रस्ताव । प्रतिनिन्दन मत । (वोट आफ सेंशर) ।
निंदासा वि० (हि) जिसे नींद आ रही हो । उनींदा ।
निंदास्तुति स्त्री० (सं) निन्दा के बहाने स्तुति । व्याज-स्तुति ।
निंदित वि० (सं) १-जिसकी निन्दा की गई हो । २-दूषित । बुरा ।
निंदिया स्त्री० (हि) नींद । निद्रा । ऊँघ ।
निंद्य वि० (सं) निन्दनीय । निन्दा करने योग्य ।
निंब पुं० (सं) नीम का वृक्ष ।
निंबरिया स्त्री० (हि) केवल नीम के पेड़ों का कुञ्ज ।
निंबू, निंबुक पुं० (सं) कागजी नींबू ।
निः अव्य० (स) एक उपसर्ग दे० 'नि' 'निस्' ।
निःकासित वि० (सं) बहिष्कृत ।
निःक्षिप्त वि० (सं) फेंका हुआ । प्रक्षिप्त ।
निःक्षेप पुं (सं) १-रहने । २-अर्पण ।
निःशंक वि० (सं) निर्भय । निडर ।
निःशब्द वि० (स) १-जिसमें और जहाँ शब्द न हो । २-जो शब्द न करे ।
निःशलाक वि० (सं) एकान्त । निर्जन । सुनसान ।
निःशल्या वि० (सं) प्रतिबन्धरहित । निष्कण्टक ।
निःशुल्क वि० (सं) १-जिस पर फीस न ली जाय । २-जिससे शुल्क न लिया जाय । (फ्री ऑफ चार्ज-टैक्स) ।
निःशरण वि० (सं) अरक्षित ।
निःशेष वि० (सं) १-जिसमें कुछ भी शेष न हो । २-समाप्त । पूरा ।
निःशोध्य वि० (सं) शोधा या साफ किया हुआ ।
निःश्रयणी स्त्री० (सं) बाँस या काठ की सीढ़ी ।
निःश्रेयस पुं० (सं) १-मोक्ष । २-कल्याण । ३-भक्ति ४-विज्ञान ।
निःश्वसन पुं० (सं) सांस बाहर निकालना ।
निःश्वास पुं० (सं) १-नाक से सांस बाहर निकालना । २-नाक से निकली हुई वायु ।
निःसंधि वि० (सं) १-जिसमें कहीं छेद इत्यादि न हो । २-दृढ़ ।
निःषम अव्य० (सं) १-निन्दा । २-शोक । चिन्ता ।
निःसंकल्प वि० (सं) इच्छारहित ।
निःसंकोच क्रि० वि० (सं) बेधड़क । बिना किसी संकोच के ।
निःसंग वि० (सं) १-जो मेल या सम्पर्क न रखता हो । २-निर्लिप्त । किसी से लगाव न रखने वाला ३-अकेला । जिसके साथ दूसरा कोई और न हो ।
निःसंज्ञ वि० (स) बेहोश । संज्ञाहीन ।
निःसंतान वि० (सं) जिसके कोई बाल-बच्चा न हो ।
निःसंदेह वि० (सं) सन्देहरहित । जिसमें कोई सन्देह न हो । अव्य० (सं) १-बिना किसी सन्देह के । २-जिसमें कोई सन्देह नहीं । बेशक । ठीक है ।
निःसंधि वि०(सं) जिसमें कहीं दरार या छिद्र न हो । सन्धिरहित । मजबूत । दृढ़ ।
निसंपात वि० (सं) जहां अथवा जिसमें आना-जाना न हो । गमनागमन शून्य । २-रात ।

निःसंशय वि० (सं) शंकारहित। सन्देहरहित।
निःसत्व वि० (सं) जिसमें कुछ भी सार न हो। निःसार।
निःसरण पु० (सं) [वि० निःसृत] १-निकलना। २-निकास। निकलने का मार्ग। ३-कठिनाई से निकलने का उपाय। ४-निर्वाण। ५-मरण।
निःसार वि० (सं) दे० 'निःसत्व'।
निःसारण पु० (सं) १-निकलना। २-निकलने का मार्ग। निकास।
निःसारा पु० (सं) केले का पेड़।
निःसारित वि० (सं) बाहर निकला हुआ।
निःसीम वि० (सं) १-जिसकी कोई हद या सीमा न हो। २-बहुत अधिक। बहुत बड़ा।
निःसृत वि० (सं) निकला हुआ।
निःस्नेह स्त्री० (सं) अलसी। तीसी। वि० (सं) अनुराग रहित।
निःस्नेहा वि० (सं) १-प्रेमरहित। २-रसहीन। ३-जिसमें चिकनाहट न हो।
निःस्पंद वि० (सं) स्पन्दनरहित। निश्चल।
निःस्पृह वि० (सं) १-जिसे कोई आकांक्षा न हो। २-जिसे कुछ पाने की इच्छा न हो। निर्लोभ।
निस्यंदन वि० (सं) जो रथ रहित हो। विरथ।
निःसृव पु० (सं) निकास। बचत। अवशेष।
निःस्राव पु० (सं) १-निकाल। २-व्यय। खर्च।
निःस्व पु० (सं) धनहीन। जिसके पास कुछ भी न हो। दरिद्र।
निःस्वन वि० (सं) निःशब्द। पु०(सं) शब्द। ध्वनि
निःस्वार्थ वि० (सं) १-जो अपने स्वार्थ या लाभ का ध्यान न रखता हो। २-(काम या बात) जो अपने लाभ के लिये न हो।
नि अव्य० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगा कर निम्नार्थों में प्रयुक्त होता है १-समूह या समुदाय जैसे—निकाय, निकर। २-नीचपन जैसे-निपात। ३-आधिक्य जैसे—निकाम। ४-आज्ञा आदेश जैसे—निर्देश। ५-सामीप्य जैसे—निकट। ६-आश्रय जैसे—निलय। ७-अन्तर्भाव जैसे—निपोत। ८-नित्यता जैसे—निवेश। ९-दर्शन जैसे—निदर्शक इत्यादि। पु० (सं) संगीत में निषादस्वर का संकेत।
निअर अव्य० (हि) [सं० निकट] पास। निकट। वि (हि) तुल्य। समान।
निअराना क्रि०(हि) समीप पहुंचना। निकट आना।
निआऊ पु० दे० 'न्याय'।
निआन पु० दे० अन्त। निदान। परिणाम। अव्य० अन्त में। आखीर।
निआमत स्त्री० (अ) बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ
निआर्थी वि० (हि) निर्धनता। गरीबी

निऊ अव्य० दे० 'निज'।
निकंटक वि० (हि) दे० 'निष्कंटक'।
निकंदन पु० (सं) १-नाश। विनाश। २-वध।
निकंदना क्रि० (सं) बरबाद करना। नष्ट करना।
निकंद-रोग पु० (सं) एक योनि सम्बन्धी रोग।
निकट वि० (सं) १-समीप का। पास का। २-संबन्ध जिसमें विशेष अन्तर न हो। क्रि० वि० नजदीक समीप। पास।
निकटता स्त्री० (सं) समीपता।
निकटपना पु० (हि) निकटता।
निकट-पूर्व पु० (सं) योरप वालों की दृष्टि के अनुसार एशिया महाद्वीप का पश्चिमी भाग। (नीयर-ईस्ट)
निकटवर्ती वि० (सं) समीपस्थ। नजदीक का। पास वाला।
निकटसबंधी वि० (सं) नजदीकी रिश्तेदार।
निकटस्थ वि० (सं) १-पास का। २-सम्बन्ध के विचार से पास का। (नियरेस्ट)।
निकम्मा वि० (हि) जो काम धन्धा न करता हो। निरर्थक।
निकर पु० (सं) १-समूह। २-राशि। ढेर। ३-कोष निधि। (अ) जांघिया। एक प्रकार का अंग्रेजी पहनावा। (हाफ पैन्ट)।
निकरना क्रि० दे० 'निकलना'।
निकर्तन पु० (सं) काट कर नीचे गिराना।
निकर्मा वि० (हि) जो काम-धन्धा न करता हो। आलसी।
निकर्षण वि० (सं) १-मैदान जो नगर के निकट हो। २-घर के पास खुली जगह। ३-पड़ोस। ४-अनजुती भूमि का टुकड़ा।
निकलंक वि० (हि) दोष-रहित। बेदाग। निर्दोष।
निकलंकी पु० (हि) विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।
निकल स्त्री० (अ) चांदी के रङ्ग की एक चमकीली धातु जिसके सिक्के आदि बनते हैं।
निकलना क्रि० अ (हि) १-भीतर से बाहर आना। निर्गत होना। २-सटी हुई वस्तु का अलग होना। ३-एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। पास होना ४-गमन करना। उदय होना। उत्पन्न होना। प्रकट होना। ५-निश्चित होना। उद्भावित होना। ६-प्राप्त होना। सिद्ध होना। हल होना। ७-ईजाद करना। ८-प्रचलित होना। प्रवर्तित होना। प्रकाशित होना। ९-शरीर से उत्पन्न होना। (किसी को फंसाकर) अलग हो जाना। अपने को बचा जाना। १०-कह कर मुकरना। ११-बिकना। खपना। १२-हिसाब होने पर धन किसी के जिम्मे ठहराना। १३-दूर होना या मिट जाना। १४-व्यतीत होना। १५-घोड़े, बैल आदि का गाड़ी लेकर चलना आदि

खिलना। १६–किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १७–अपने उद्गम स्थान से प्रादुर्भूत होना।

**निकलवाना** *क्रि०* (हि) निकालने का काम दूसरे से करवाना।

**निकष** पुं० (सं) १–कसौटी। २–कसौटी पर सोने की रेखा। ३–हथियारों पर सान रखने का पत्थर।

**निकषण** पुं० (सं) घिसने या सान पर चढ़ाने का काम।

**निकषा** *स्त्री०* (सं) १–विश्रवा की पत्नी जिसके गर्भ से रावण उत्पन्न हुआ था। २–रात्रि। ३–पिशाचिनि।

**निकषात्मज** पुं० (सं) राक्षस।

**निकषोपल** पुं० (सं) १–सान का पत्थर। २–कसौटी

**निकस** पुं० (सं) दे० 'निकष'।

**निकसना** *क्रि०* (अ) (हि) दे० 'निकलना'।

**निकाई** पुं०(हि) दे० 'निकाय'। *स्त्री०*(हि) १–अच्छापन। भलाई। २–सुन्दरता। खूबसूरती।

**निकाज** *वि०* (हि) बेकाज। निकम्मा। रद्दी। *क्रि०वि०* बेफायदा। व्यर्थ।

**निकाना** *क्रि०* (हि) देखो 'निराना'।

**निकाम** *वि०* (हि) १–निकम्मा। २–बुरा। खराब। *क्रि० वि०* (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। *वि०*(सं) प्रचुर बहुत अधिक। पुं० (सं) अभिलाषा। कामना। *अव्य०* (सं) १–इच्छानुसार। अत्यधिक।

**निकाय** पुं० (सं) १–समूह। झुण्ड। २–ढेर। राशि। ३–समाज। संस्था। ४–आवास-स्थान। ५–कुछ लोगों का समूह जो मिलकर नगर इत्यादि की स्वच्छता आदि सम्बन्धी बातों की देख भाल करता है। (बॉडी)।

**निकाय-समाजवाद** पुं० (सं) एक प्रकार का संघ-समाजवाद जिसका सिद्धान्त था कि श्रम-संघों के निकाय बनाये जाएँ और उनको कारखानों आदि का नियन्त्रण सौंप दिया जाय पर राज्य के अन्य विभागों का नियन्त्रण संसद के आधीन रहे। (गिल्ड-सोशलिज्म)।

**निकार** पुं०(सं)१–अनाज फटकना। २–ऊपर उठाना। ३–वध। ४–तिरस्कार। ५–द्वेष। विरोध। पुं० (हि) १–निष्कासन। २–निकलने का द्वार। ३–ईख का रस पकाने का कड़ाहा।

**निकारण** पुं० (सं) वध। हत्या।

**निकारना** *क्रि०* (हि) दे० 'निकालना'।

**निकाल** पुं० (हि) १–निकास। २–कुश्ती का एक पेंच ३–कुश्ती में एक पेंच का काट या तोड़।

**निकालना** क्रि० (सं) (हि) १–अन्दर से बाहर लाना या करना। २–दूसरी वस्तुओं में मिली वस्तु को अलग करना। ३–गाजे-बाजे के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना। ४–किसी को आगे बढ़ा ले जाना। ५–पैदा करना। शरीर पर उत्पन्न करना। ६–शिक्षा समाप्त करके अलग करना। ७–स्थिर करना। सोचना। निश्चित करना। ८–उपस्थित करना। ९–स्पष्ट या व्यक्त करना। सबके सम्मुख लाना। १०–आरम्भ करना। छोड़ना। ११–नौकरी से हटाना। घटाना। कम करना। छुड़ाना १२–बेचना। दूर हटाना। १३–सिद्ध करना। फलीभूत करना। १४–निर्वाह करना। १५–हल करना। निर्णय करना। १६–(नदी आदि को) बहाना या आरम्भ करना। १७–आविष्कृत करना। १८–रकम जिम्मे ठहराना। १९–ढूंढ़कर सामने रखना। २०–किसी व्यक्ति या पशु को शिक्षा देकर आगे निकालना। २१–गमन करना। २२–सूई के कपड़े पर बेल बूटे काढ़ना। २३–निभाना। बिताना। (इश्यू)।

**निकाला** पुं० (हि) १–किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड। निर्वासन। २–निकालने की क्रिया।

**निकाश** पुं० (सं) १–आकृति। समानता। २–आकाश ३–पड़ोस। ४–क्षितिज।

**निकाष** पुं० (सं) खरोंच। रगड़।

**निकास** पुं० (सं) दे० 'निकाश'। पुं० (हि) १–निकलने का भाव या क्रिया। २–निकलने का स्थान या मार्ग। ३–सामने की खुली जगह। सहन। ४–उद्गम मूलस्रोत। ५–निर्वाह का उपाय। ६–आमदनी आय।

**निकासना** *क्रि०* (हि) दे० 'निकालना'।

**निकास-पत्र** पुं०(हि) जमा खर्च और बचत के हिसाब की पञ्जी।

**निकासी** *स्त्री०*(हि) १–निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। (इश्यू)। २–यात्रा के निमित्त प्रस्थान। ३–वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकाल कर बाहर भेजी जा सके (ट्रान्जिट-पास)। ४–लाभ। बिक्री के माल का बाहर जाना। लदाई। ५–माल की खपत। रवाना। चुङ्गी ६–आय। आमदनी।

**निकाह** पुं० (अ) मुसलमानी पद्धति के अनुसार होने वाला विवाह।

**निकाह-नामा** पुं० (फ) वह दस्तावेज जिस पर निकाह की शर्तें लिखी जाती हैं।

**निकाही** *वि०* (अ) १–मुसलमानी विवाह-पद्धति के अनुसार विवाह करके लाई हुई। २–जिसने स्वेच्छा से विवाह कर लिया हो।

**निकियाना** *क्रि०*(दे)१–नोच कर धज्जी-धज्जी अलग करना। २–चमड़े पर लगे बाल इत्यादि नोच कर अलग करना।

**निकिल्बिष** पुं० (सं) पाप का अभाव।

**निकिष्ट** *वि०* (हि) दे० 'निकृष्ट'।

**निकुंचित** *वि०* (सं) संकुचित। झुका हुआ।

**निकुंज** पुं० (सं) घनी लताओं से या वृक्षों से घिरा हुआ स्थान। लताकुञ्ज।

**निकुंभ** पुं० (सं) १-शिव के एक अनुचर का नाम। २-कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का मंत्री था ३-दंतीवृक्ष। ४-जमालगोटा।

**निकुरंब** पुं० (सं) समूह। झुण्ड। गिरोह।

**निकृंतन** पुं० (सं) १-छेदन। खंडन। २-काटने का औजार।

**निकृंतनी** *वि०* (सं) काटने वाली। स्त्री० छुरी। तलवार।

**निकृत** *वि०* (सं) १-अपमानित। २-प्रवंचित। ३-दुःखी। ४-बहिष्कृत।

**निकृति** *स्त्री०* (सं) १-अपमान। २-नीचता। ३-कपट

**निकृत्त** *वि०* (सं) १-जड़ से काटा हुआ।

**निकृष्ट** *वि०* (सं) नीच। अधम। तुच्छ।

**निकृष्टत्व** पुं० (सं) नीचता। बुराई। निकृष्टता।

**निकेत** पुं० (सं) मकान। घर। आवास। भवन। चिह्न।

**निकेतन** पुं० (सं) घर। वास-स्थान। प्याज।

**निकौनी** *स्त्री०* (हि) १-निराई। २-निराने की मजदूरी।

**निक्का** *वि०* (हि) छोटा। नन्हा।

**निक्की** *वि०* (हि) छोटी। नन्ही।

**निक्रमण** पुं० (सं) जगह। स्थान।

**निक्रीड़** पुं० (सं) १-कौतुक। क्रीड़ा। २-सामभेद।

**निक्षण** पुं० (सं) चुम्बन।

**निक्षा** *स्त्री०* (सं) लीख। जूँ का अण्डा।

**निक्षिप्त** *वि०* (सं) १-फेंका हुआ। २-त्यक्त। ३-भेजा हुआ। (कन्साइन्ड)। ४-धरोहर रखा हुआ। जमा कराया हुआ। (डिपोजिटेड)।

**निक्षिप्तक** पुं०(सं)१-वह धन जो कोष में जमा किया जाय। २-वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय।(कंसाइन्मेंट)

**निक्षिप्ति** *स्त्री०* (सं) दे० 'निक्षेप'।

**निक्षिप्ती** पुं० (हि) वह जिसके नाम कोई वस्तु (विशेषतः पोस्ट, पारसल इत्यादि) भेजी गई हो। (कन्साइनी)।

**निक्षुभा** *स्त्री०* (सं) १-ब्राह्मणी। २-सूर्य की एक पत्नी

**निक्षेप** पुं० (सं) १-फेंकने, चलाने, डालने आदि की क्रिया या भाव। २-भेजने की क्रिया या भाव ३-वह वस्तु जो कहीं भेजी जानी हो। ४-वह राशि जो कहीं जमा की जाय। (डिपोजिट)। ५-धरोहर

**निक्षेपक** पुं० (सं) १-कहीं बाहर माल भेजने वाला व्यक्ति। (कन्साइनर)। २-वह जो बैंक आदि में रुपया जमा करे। (डिपाजिटर)।

**निक्षेपकरण** पुं० (सं) दे० 'न्यास-पत्र'।

**निक्षेपण** पुं० (सं) १-फेंकना। २-छोड़ना। चलाना ३-धरोहर रखना।

**निक्षेप-निधि** *स्त्री०*(सं) ऋणपरिशोध कोष। (सिंकिंग-फंड) कर्ज-अदाई-कोश।

**निक्षेप-निर्णय** पुं० (सं) सिक्के को उछाल कर उसके नीचे गिरने की स्थिति से कोई निश्चय करना। (टॉस)।

**निक्षेपी** *वि०* (हि) १-फेंकने वाला। धरोहर रखने वाला। (डिपाजिटर)।

**निक्षेप्ता** पुं० (सं) दे० 'निक्षेपक'।

**निक्षेप्य** *वि०* (सं) फेंकने योग्य। छोड़ने योग्य।

**निखंग** पुं० (हि) दे० 'निषंग'।

**निखंगी** *वि०* (हि) दे० 'निषंगी'।

**निखंड** *वि०* (हि) ठीक मध्य या बीच का। ठीक।

**निखट्टू** *वि०* (हि) जमकर कोई काम न करने वाला निकम्मा। आलसी।

**निखनन** पुं० (सं) १-खोदना। गाड़ना। २-मिट्टी।

**निखरना** *क्रि०* (हि) १-मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना। २-रंग का खुलना या साफ होना।

**निखरवाना** *क्रि०* (हि) साफ करवाना। धुलवाना।

**निखरी** *स्त्री०* (हि) घी में तलकर बनाई हुई रसोई। सखरी का उल्टा।

**निखर्व** *वि०* (सं) १-दस हजार करोड़। २-बौना। वामन। नाटा।

**निखवख** *वि०* (हि) सब। पूरा। *क्रि० वि०* बिलकुल पूरा।

**निखात** *वि०* (सं) १-खोदा हुआ। २-खोद कर जमाया हुआ। ३-खोद कर गाड़ा हुआ।

**निखात-निधि** *स्त्री०* (सं) वह खजाना जो जमीन को खोद कर निकाला गया हो। भूनिधि। (ट्रेजर ट्रोव)

**निखाद** पुं० (हि) दे० 'निषाद'।

**निखार** पुं० (हि) स्वच्छता। निर्मलता।

**निखारना** *क्रि०* (हि) साफ करना। पवित्र करना। पापरहित करना।

**निखालिस** *वि०* (हि) विशुद्ध। जिसमें कोई मिलावट न हो।

**निखिद्ध** *वि०*(हि) दे० 'निषिद्ध'।

**निखिल** *वि०* (सं) सारा। सम्पूर्ण। तमाम।

**निखुटना** *क्रि०* (हि) खतम होना। समाप्त होना।

**निखेध** *वि०* (हि) दे० 'निषेध'।

**निखेधना** *क्रि०* (हि) मना करना।

**निखोट** *वि०* (हि) १-खोटाई या दोष रहित। २-साफ या खुला हुआ। *क्रि० वि०* बिना संकोच के। बेधड़क।

**निखोटना** *क्रि०* (हि) नाखून से नोचना। उचाड़ना।

**निखोड़ा** *वि०* (दे०) कठोर चित्त वाला। निर्दय।

**निखोरना** *क्रि०* (हि) दे० 'निखोटना'।

**निगंद** पुं० (हि) एक रक्त-शोधक बूटी।

**निगंदना** *क्रि०* (हि) रुई से भरे कपड़े में मोटी और

लम्बी सिलाई करना ।
**निगंध** वि० (हि) गन्ध-रहित ।
**निगंधक** पुं० (सं) सोना । सुवर्ण ।
**निगड** स्त्री० (सं) १-हथकड़ी । २-बेड़ी । जंजीर ।
**निगडन** पु० (सं) बेड़ी या जञ्जीर से बाँधने का काम ।
**निगडित** वि० (सं) बेड़ी पड़ा हुआ । जञ्जीर से बांधा हुआ ।
**निगण** पुं० (सं) होम से निकलने वाला काला धूँआ
**निगद** पुं० (सं) १-स्तुति-पाठ । २-भाषण । कथन ।
**निगदन** पुं० (सं) भाषण । सम्वाद । व्याख्यान ।
**निगदित** वि० (सं) कहा हुआ । कथित । उक्त ।
**निगम** पुं० (सं) १-वेद । वेद का कोई अवतरण । २-मार्ग । पथ । बाजार । ३-वणिक्-पथ । ४-मेला पैठ । बनजारा । फेरी वाला सौदागर । ५-निश्चय न्याय । ६-कायस्थों का एक भेद । ७-वह संस्था जिसे कानून के द्वारा एक व्यक्ति की तरह काम करने के लिए बनाया गया हो । (कारपोरेशन) । ८-व्यवसाय । व्यापार ।
**निगम-कर** पुं० (सं) व्यापारिक या औद्योगिक संस्थाओं या निगमों पर लगाया गया महसूल या कर । (कार्पोरेशन-टैक्स) ।
**निगमन** स्त्री० (सं) न्याय में वह कथन जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उसके फिर से उल्लेख के रूप में होता है । सिद्ध की हुई बात का अन्तिम कथन । २-वेद का अवतरण । ३-अन्दर आना । ४-किसी संस्था को निगम का सा रूप देने की क्रिया (इनकॉरपोरेशन) ।
**निगमनात्मक** वि० (सं) अलग करने वाला । वियोजक ।
**निगम-निकाय** पुं० (हि) मिलकर कार्य करने का सुसङ्गठित रूप से बना कुछ लोगों का समूह । (बॉडी-कॉर्पोरेट) ।
**निगम-निवासी** पुं० (सं) विष्णु । नारायण ।
**निगमनीय** वि० (सं) निष्कर्ष योग्य ।
**निगमबोध** पु० (सं) दिल्ली के पास जमुना के किनारे एक पवित्र स्थान ।
**निगमागम** पुं० (सं) वेद-शास्त्र ।
**निगमित** वि० (सं) (संस्था) जिसे निगमरूप में परिणत कर दिया गया हो । (इनकॉरपोरेटेड) ।
**निगमीकरण** पुं० (सं) किसी संस्था को निगमरूप में परिणत करना । (इनकॉरपोरेशन) ।
**निगमीकृत** वि० (सं) निगमित ।
**निगर** पुं० (सं) १-निगलने या भक्षण करने की क्रिया । भोजन । २-होम का धूँआ । वि० (हि) सारे । सब । पु० (हि) दे० 'निकर' ।
**निगरण** पु० (सं) भोजन । गला । होम का धूँआ ।
**निगरना** क्रि० (हि) निगलना ।
**निगरां** पुं० (फा) निगरानी करने वाला । निरीक्षक । रक्षक ।
**निगरा** वि० (हि) खालिस । (ईख का रस) जिसे जल मिलाकर पतला न किया गया हो ।
**निगरानी** स्त्री० (फा) देखरेख । निरीक्षण ।
**निगरु** वि० (हि) हलका ।
**निगलना** क्रि० (हि) १-मुँह में रखकर पेट में नीचे उतारना । लीलना । २-दूसरे का धन मार बैठना
**निगह** स्त्री० (फा) निगाह । दृष्टि ।
**निगहबान** पुं० (फा) रक्षक ।
**निगहबानी** स्त्री० (फा) चौकसी । देख-रेख ।
**निगार** पु० (सं) निगलने की क्रिया । पु० (फा) १-चित्र । बेल-बूटा । नकाशी । २-एक फारसी राग का नाम ।
**निगाल** पुं० (सं) १-निगलना । २-घोड़े की गरदन पुं० (दे०) एक प्रकार का बाँस ।
**निगाली** स्त्री० (हि) १-बाँस की नली । २-हुक्के की नली जिससे धूँआ खींचते हैं ।
**निगाह** स्त्री० (फा) १-नजर । दृष्टि । २-चितवन । ३-कृपादृष्टि । ४-परख । पहचान ।
**निगभि** वि० (हि) अत्यन्त गोपनीय । बहुत प्यारी ।
**निगीर्ण** वि० (सं) जिसका अन्तर्भाव होगया हो । निगला हुआ ।
**निगु** पुं० (सं) १-मन । अन्तःकरण । २-मूल । भ्रम
**निगुण, निगुन, निगुना** वि० (देश) दे० 'निर्गुण' ।
**निगुनी** वि० (हि) गुणरहित ।
**निगुरा** वि० (हि) अदीक्षित । जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो ।
**निगूढ़** वि० (सं) छिपा हुआ । अत्यन्त गुप्त ।
**निगूढ़ार्थ** वि० (सं) जिसका अर्थ छिपा न हो ।
**निगृहीत** वि०(सं) १-घेरा हुआ । २-जिस पर आक्रमण किया गया हो । पीड़ित । पराजित ।
**निगृह्य** वि० (सं) दण्ड देने योग्य ।
**निगोड़ा** वि० (हि) १-निराश्रय । २-अभागा । ३-दुष्ट कमीना ।
**निगोंव** वि० (हि) बीच में छिपा हुआ ।
**निग्रंथन** पुं० (सं) वध । हत्या ।
**निग्रह** पुं० (सं) १-अवरोध । रोक । २-वश में लाना गिरफ्तार करना । ३-पराजय । नाश । ४-रोग को रोक थाम । ५-(न्याय में) तर्क-सम्बन्धी दोष विशेष ६-दण्ड । (कन्ट्रोल) ।
**निग्रहण** पुं० (सं) १-रोक थाम । २-दण्ड देने का कार्य । ३-पराजय । हार ।
**निग्रहना** क्रि० (हि) १-रोकना । २-दण्ड देना । ३-पकड़ना ।
**निग्रही** वि० (हि) १-रोकने वाला । २-दमन करने

वाला। ३-दण्ड देने वाला।
निग्राहक वि० (सं) गिरफ्तार करने वाला।
निग्राह्य वि० (सं) ग्रहण करने योग्य।
निघंटु पुं० (सं) वैदिक शब्दों का संग्रह। शब्द संग्रह मात्र।
निघ वि०(सं) समान लम्बाई-चौड़ाई वाला। पुं०(सं) पाप। गेंद।
निघटना क्रि० (हिं) दे० 'घटना'।
निघरघट वि० (हिं) १-जिसका कहीं ठौर ठिकाना न हो। २-निर्लज्ज। ३-उद्दंड।
निघरा वि० (हिं) १-बिना घर-घाट का। २-नीच। कमीना।
निघर्ष पुं० (सं) रगड़। मथन।
निघर्षण पुं० (सं) रगड़ना। घिसना।
निघात पु (सं) प्रहार। घात।
निघाती वि० (सं) मारने वाला। प्रहार करने वाला।
निघ्न वि० (सं) १-आधीन। आज्ञाकारी। नम्र। ३-अवलंबित।
निचमन पुं० (सं) थोड़ा-थोड़ा पीना।
निचय पुं० (सं) १-ढेर। समुदाय। २-संचय। ३-किसी विशेष कार्य के लिए संचित धन। (फंड)।
निचल वि० (हिं) दे० 'निश्चल'।
निचला वि० (हिं) १-नीचे वाला। २-अचल। ३-स्थिर। शान्त। (इन्फीरियर)।
निचाई स्त्री० (हिं) १-नीचापन। २-नीचे की ओर विस्तार या दूरी। ३-नीचता। ओछापन।
निचान स्त्री०(हिं) १-निचाई। २-ढाल। ३-नीचापन
निचिंत वि० (हिं) चिन्तारहित। बेफ़िक्र।
निचिकी स्त्री० (सं) अच्छी गाय।
निचिर पुं० (सं) अत्यन्त प्राचीन काल।
निचुकण पुं० (सं) गरज। गड़गड़ाहट।
निचुड़ना क्रि० (हिं) १-दबाने से रस निकलना। गिरना। २-सारहीन होना। ३-दुबला होना।
निचुल पु० (सं) १-बेंत। २-ऊपर से ओढ़ने का कपड़ा।
निचेता वि० (सं) प्राप्त वस्तु का संचय करने वाला
निचेय वि० (सं) संग्रह करने योग्य।
निचै पु० (हिं) दे० 'निचय'।
निचोड़ पुं० (हिं) १-वह अंश जो निचोड़ने से निकले। २-सार। ३-कथन का सारांश। खुलासा मुख्य तात्पर्य।
निचोड़ना क्रि० (हिं) १-रस वाली वस्तु को दबाकर पानी या रस निकालना। २-सार निकालना। ३-धन हरण लेना।
निचोना क्रि० (हिं) निचोड़ना।
निचोर पुं० (देश) दे० 'निचोड़'।
निचोरना क्रि० (देश) निचोड़ना।
निचोल पुं० (सं) १-आच्छादन वस्त्र। २-स्त्रियों की ओढ़नी।
निचोलक पुं० (सं) चोली। कंचुक। कवच।
निचोवना क्रि० (हिं) दे० 'निचोड़ना'।
निचौहाँ वि० (हिं) नीचे की ओर झुका हुआ।
निचौहैं क्रि० वि० (हिं) नीचे की ओर।
निच्छवि स्त्री० (सं) तीरयुक्त देश। तिरहुत।
निछक्का पुं० (हिं) एकान्त या निर्जन स्थान।
निछत्र वि० (हिं) १-छत्रहीन। २-राज-चिह्न रहित।
निछनियाँ क्रि० वि० (हिं) दे० 'निछान'।
निछद्म पुं० (हिं) एकान्त स्थान जहाँ कोई पराया न हो। २-अवकाश का समय।
निछल वि० (हिं) छलहीन। छलरहित।
निछान वि०(हिं) बिना मिलावट का। विशुद्ध। क्रि० वि० (हिं) बिलकुल। एक दम।
निछावर स्त्री० (हिं) १-मंगल कामना के लिए किसी वस्तु को सिर पर से घुमा कर दान करने का टोटका वारफेर। २-नेग। उत्सर्ग। इनाम।
निछावरि स्त्री० (हिं) दे० 'निछावर'।
निछोह वि० (हिं) १-जिसमें प्रेम न हो। २-निर्दय।
निछोही वि० (हिं) दे० 'निछोह'।
निज वि०(सं)१-अपना। स्वकीय। २-प्रधान। पक्का खास। अव्य० निश्चय। ठीक। प्रधानतः।
निजकाना क्रि० (हिं) निकट पहुँचना। समीप आना।
निजकारी स्त्री० (हिं) बटाई की फसल।
निजत्व पुं० (सं) अपनापन। मौलिकता।
निजन वि० (सं) निर्जन। सुनसान।
निजवर्त्ती वि० (सं) आश्रय में रहने वाला।
निजस्व पुं० (सं) अपनापन।
निज-सचिव पुं० (सं) किसी राज्यपाल अथवा राज्य मन्त्री आदि के साथ रहकर उसका पत्र व्यवहार करने वाला सचिव। (प्राइवेट सेक्रेटरी)।
निजाम पुं० (अ) १-व्यवस्था। बन्दोबस्त। २-हैदराबाद के नवाब की उपाधि।
निजी वि०(हिं) १-अपना। २-व्यक्तिगत। (प्राइवेट)।
निजी-सहायक पुं० (सं) किसी नेता या बड़े आदमी के साथ रहकर सहायता देने वाला। (पर्सनल-असिस्टेन्ट)।
निजु अव्य० (?) दे० 'निज'।
निजोर वि० (हिं) निर्बल। कमजोर।
निझरना क्रि० (हिं) १-अच्छी तरह झड़ जाना। २-वस्तु से रहित हो जाना। ३-सफाई देना। ४-सार-हीन हो जाना।
निझोल पु० (हिं) हाथी का एक नाम।
निठि क्रि० वि० (हिं) दे० 'नीठि'।
निठल्ला वि० (हिं) जिसके पास कोई काम न हो। खाली। बेकार। निकम्मा।

लू वि० (हि) दे० 'निठल्ला'।
निठाला पुं० (हि) १-खाली समय। २-जीविका का अभाव।
निठुर वि० (हि) दे० 'निष्ठुर'।
निठुरई स्त्री० (हि) निर्दयता। निष्ठुरता।
निठुरता स्त्री० (हि) निर्दयता।
निठौर पुं० (हि) बुरी जगह। बुरी दशा।
निडर वि० (हि) १-निर्भय। निःशङ्क। २-साहसी। ३-ढीठ।
निडीन पुं० (सं) पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना या झपट्टा।
निडे क्रि० वि० (हि) समीप। निकट। पास।
निढाल वि० (हि) थकामांदा। शिथिल। पस्त।
निढिल वि० (हि) जो ढीला न हो। कसा हुआ। सख्त।
निएय वि० (सं) लापता। गायब।
नितंत क्रि० वि० (हि) दे० 'नितांत'।
नितंत्र-अनुज्ञा स्त्री० (सं) (रेडियो) बेतार का यन्त्र रखने की अनुमति। (वायरलैस लाइसेंस)।
नितंब पुं० (सं) १-स्त्रियों की कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़। २-नदी या पर्वत का ढलुवां किनारा। ३-कन्धा। ४-खड़ी चट्टान।
नितंब-बिंब पुं० (सं) गोलाकार नितम्ब।
नितंबिनी स्त्री० (सं) बड़े और सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री। सुन्दर स्त्री।
नित अव्य० (सं) प्रति-दिन। सदा। नित्य।
नितनित अव्य० (सं) प्रतिदिन। कभी पुराना न पड़ने वाला। अनुदिन।
नितराम् अव्य० (सं) हमेशा। सदा। सर्वदा।
नितल पुं० (सं) सात पातालों में से एक।
नितांत अव्य० (सं) बहुत अधिक। एक दम। परम
निति अव्य० (सं) दे० 'नित'।
नित्य वि० (सं) जिसका कभी नाश न हो। शाश्वत। अविनाशी। अव्य० (सं) हर रोज। सर्वदा।
नित्यकर्म पुं० (सं) दे० 'नित्यकृत'।
नित्यकृत पुं० (सं) दैनिक विहित कर्म जैसे सन्ध्या, स्नान आदि।
नित्यगीत पुं० (सं) हवा। वायु।
नित्यता पुं० (सं) नित्य होने का भाव। अनश्वरता।
नित्यत्व पुं० (सं) दे० 'नित्यता'।
नित्यनर्त्त पुं० (सं) महादेव। शिव।
नित्य-नियम पुं० (सं) प्रति-दिन का बँधा हुआ काम।
नित्यप्रति अव्य० (सं) प्रति-दिन। हर-रोज।
नित्यमय वि० (सं) अनन्त।
नित्ययुक्त वि० (सं) सदा काम में लगा रहने वाला पुं० (सं) परमात्मा।
नित्यशः अव्य० (सं) सदैव। प्रतिदिन। सर्वदा।
नित्यानंद पुं० (सं) जो सदैव आनन्द से रहे।
नित्यानुबद्ध वि० (सं) रक्षा करने वाला।
निथंभ पुं० (हि) खम्भा। स्तम्भ।
निथरना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी का स्थिर होना जिससे उसमें मट्टी या मैल नीचे बैठ जाय। पानी छन जाना।
निथार पुं० (हि) घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने से अलग हुआ स्वच्छ पानी।
निथारना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी को स्थिर करना जिससे मैल इत्यादि नीचे बैठ जाय।
निंद पुं० (सं) विष। जहर। वि० (सं) निन्दा करने वाला।
निदई वि० (हि) दे० 'निर्दयी'।
निदद्रु पुं० (सं) मनुष्य। मानव।
निदरना क्रि० (हि) १-निरादर करना। २-तिरस्कार करना। ३-मात करना। दबाना। तुच्छ ठहराना।
निदर्शक वि० (सं) १-देखने वाला। जानने वाला। निर्देश करने वाला।
निदर्शन पुं० (सं) १-प्रदर्शन। २-दृष्टान्त। उदाहरण (इलस्ट्रेशन)।
निदर्शना स्त्री० (सं) एक अर्थालङ्कार जिसमें दो बातों में भिन्नता होते हुए भी उपमा देकर उनके सम्बन्ध की कल्पना की जाय।
निदलन पुं० (हि) दे० 'निर्दलन'।
निदहना क्रि० (हि) जलाना।
निदाघ पुं० (सं) १-ताप। गरमी। धूप। २-ग्रीष्म-ऋतु। ३-पसीना।
निदाघकर पुं० (सं) सूर्य। सूरज।
निदान पुं० (सं) १-कारण। आदि कारण। २-रोग निर्णय। रोग की पहचान। (डायगनोसिस)। ३-रोग पहचानने की विद्या या शास्त्र। (ईटियॉलोजी) अन्त। अवसान। अव्य० (सं) अन्त में। इसलिए। आखिर। गयागुजरा। तुच्छ।
निदारुण वि० (सं) १-कठिन। भयानक। २-निर्दय कठोर।
निदाह पुं० (हि) दे० 'निदाघ'।
निदिग्ध वि० (सं) लेप किया हुआ। जमा किया हुआ
निदिग्धा स्त्री० (सं) छोटी इलायची।
निदिध्यासन पुं० (सं) बार-बार स्मरण करना।
निदेश पुं० (सं) १-आज्ञा। शासन। २-किसी कार्य को करने की विधि बतलाना। (डायरेक्शन)। ३-किसी आज्ञा, निश्चय या नियम के साथ लगाई हुई गई कोई शर्त। (प्रॉवीजन)।
निदेशक पुं० (सं) १-आज्ञा देने वाला। निदेश देने वाला। २-चल-चित्रों में कहानी, पात्रों की वेशभूषा तथा संवाद आदि निर्धारित करने वाला। निर्देशक (डायरेक्टर)।
निदेशिका स्त्री० (सं) किसी प्रदेश, नगर आदि के

व्यापारियों या प्रमुख नागरिकों का नाम आदि का ब्योरा देने वाली पुस्तिका। (डायरेक्टरी)।

**निदेशी** वि० (सं) आज्ञा देने वाला।

**निदेस** पुं० (हि) दे० 'निदेश'।

**निदोष** वि० (हि) दे० 'निर्दोष'।

**निद्धि** स्त्री० (हि) दे० 'निधि'।

**निद्र** पुं० (सं) एक उपसंहारक अस्त्र।

**निद्रा** स्त्री०(सं) प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी चेतना वृत्तियां बीच में कुछ समय के लिए निश्चेष्ट हो जाती है, आँखें बन्द हो जाती है और उनके शरीर को विश्राम मिलता है।

**निद्राकर** वि० (सं) सुलाने वाला। निद्राकारक।

**निद्राकर्षण** पुं० (सं) निद्राशीलता। निद्रा का आकर्षण।

**निद्राकृष्ट** वि० (सं) जिसको नींद आगई हो।

**निद्रागार** पुं० (सं) सोने का कमरा।

**निद्रान्वित** वि० (सं) सोया हुआ।

**निद्राचार, निद्रा-भ्रमण** पुं० (सं) नींद में चलना फिरना या अन्य कार्य करना। (सोमनैंबुलिज्म)।

**निद्रा-भंग** पुं० (सं) जागरण। नींद टूटना।

**निद्रायमान** वि० (सं) जो नींद में हो। सोता हुआ।

**निद्रालु** वि० (सं) निद्राशील। सोने वाला। स्त्री० १-बैंगन। २-बबरी। बन-तुलसी। नली नामक गन्ध-द्रव्य।

**निद्रित** वि० (सं) सुप्त। सोया हुआ।

**निधड़क** क्रि० वि० (हि) १-बे-रोके। बिना रुकावट के २-बिना संकोच के। ३-निशंक। बेखटके।

**निधन** पुं० (सं) १-नाश। २-फलित ज्योतिष में लग्न से आठवाँ स्थान। ३-कुल। कुटम्ब। ४-मौत मृत्यु। (प्रमुख आदरणीय व्यक्तियों के लिए)। (डिमाइज)। वि० (सं) धनहीन। दरिद्र।

**निधनकारी** वि० (सं) घातक। नाशक।

**निधनक्रिया** स्त्री०(सं) अन्त्येष्टि क्रिया।

**निधनी** वि० (सं) दरिद्र। गरीब।

**निधमन** पुं० (सं) नीम का पेड़।

**निधान** पुं० (सं) १-आधार। आश्रय। २-निधि। कोष। ३-जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो-जैसे-कृपानिधान।

**निधि** स्त्री० (सं) १-गाड़ा हुआ खजाना। २-कुबेर के नौ प्रकार के रत्न। ४-नौ की संख्या-सूचक शब्द ४-किसी विशेष कार्य के लिए अलग जमा किया हुआ धन। (एन्डाउमेंट)। ५-किसी संस्था आदि के लिए इकट्ठा किया हुआ धन। (फण्ड)। ६-अनेक गुणों से भूषित व्यक्ति। ७-विन्दु-पथ। (कोलन)। ८-समुद्र। ९-घर। आगार। विष्णु।

**निधिनाथ** पुं० (सं) निधियों का स्वामी। कुबेर।

**निधिप** पुं० (सं) कुबेर।

**निधिपति** पुं० (सं) धनेश्वर। कुबेर।

**निधिपाल** पुं० (स) १-कुबेर। २-वह जिसको देख-रेख के लिए सम्पत्ति धन आदि सौंपी गई हो। (कस्टोडियन)।

**निधीश्वर** पुं० (स) कुबेर।

**निधुवन** पुं० (सं) १-मैथुन। २-हंसी ठट्ठा। ३-कम्प

**निधेय** वि० (सं) स्थापनीय। रखने योग्य।

**निनक्षु** वि० (सं) मरने का अभिलाषी।

**निनद** पुं० (सं) शब्द। आवाज। घरघराहट।

**निनरा** वि० (हि) दे० 'न्यारा'।

**निनाद** पुं० (सं) १-शब्द। नाद। जोर की आवाज

**निनादना** क्रि० (हि) शब्द करना।

**निनादी** वि० (हि) शब्द करने वाला।

**निनान** पुं०(हि) १-अन्त। लक्षण। क्रि० वि० आखिर अन्त में। वि० १-घोर। परले सिरे का। २-बुरा। निकृष्ट।

**निनाया** पुं० दे० खटमल।

**निनार, निनारा** वि० (हि) १-अलग। भिन्न। न्यारा २-दूर। हटा हुआ।

**निनवाँ** पुं० दे० मुंह के अन्दर निकलने वाले लाल रक्त के दाने।

**निनावीं** स्त्री० (हि) १-बिना नाम की अशुभ वस्तु। २-चुड़ैल। भूतनी।

**निनौना** क्रि० (हि) झुकाना। नवाना।

**निनौरा** पुं० (हि) ननिहाल।

**निनानवे** वि० (हि) नब्बे और नौ। सौ में एक कम।

**निन्यारा** वि० (हि) दे० 'न्यारा'।

**निपंग** वि० (हि) जिसके हाथ पैर काम न देते हों या टूटे हुए हों। अपाहिज। निकम्मा।

**निप** पुं० (सं) कलसा। कलश।

**निपजना** क्रि० (हि) १-उगना। उत्पन्न होना। २-पकना। ३-तैयार होना।

**निपजी** स्त्री० (हि) १-उपज। २-लाभ। मुनाफा।

**निपट** अव्य० (हि) १-विशुद्ध। निरा। एक मात्र। २-सरासर। नितांत।

**निपटना** क्रि० (हि) १-निवृत्त होना। समाप्त होना। २-निर्णित होना। ३-शौच आदि क्रिया से निवृत्त होना।

**निपटारा** पुं० (हि) दे० 'निबटारा'।

**निपटेरा** पुं० (हि) दे० 'निबटेरा'।

**निपठ** पुं० (सं) पढ़ना। पाठ करना।

**निपतन** पुं० (सं) नीचे गिरना। अधःपतन। गिराव

**निपतित** वि० (स) गिरा हुआ। पतित।

**निपत्या** स्त्री० (सं) बंजर भूमि। रणक्षेत्र।

**निपत्र** वि० (हि) पत्रहीन। ठूंठा।

**निपरन** पुं० (सं) प्रेम का अभाव।

**निपांगुर** वि० (हि) अपाहिज। पंगु।

**निपात** पुं० (सं) १-पतन। २-अधःपतन। ३-विनाश मृत्यु। ४-व्याकरण के सूत्र के अनुसार वह शब्द जिसके बनने के नियम का पता न हो। वि० (हिं) बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)।
**निपातन** पुं० (सं) १-गिरने का कार्य। २-नाश। ३-वध।
**निपातना** क्रि० (हिं) नीचे गिराना। नष्ट करना। वध करना।
**निपातित** वि० (सं) जो गिरा दिया गया हो।
**निपाती** वि० (हिं) १-बिना पत्ते का। २-घातक। ३-गिरा हुआ। पुं० (हिं) शिव।
**निपाव** पुं० (सं) नीचा प्रदेश।
**निपान** पुं० (सं) १-पीने की क्रिया। २-तालाव। ३-कूप। ४-दूध दूहने का पात्र। ५-कूप के समीप का हौद जिसमें पशु पानी पीते हैं।
**निपीड़क** वि० (सं) १-अत्याधिक दुःखदायक या पीड़ा देने वाला। २-दबाने या मलने वाला। ३-पेरने वाला। निचोड़ने वाला।
**निपीड़न** पुं० (सं) १-पीड़ित करना। २-मलना या दबाना। ३-पेरना। ४-घायल करने की क्रिया।
**निपीड़ना** क्रि० (हि) १-दबाना। मलना। २-कष्ट पहुँचाना।
**निपीड़ित** वि० (सं) १-दबाया हुआ। २-अत्याधिक पीड़ित। ३-निचोड़ा हुआ।
**निपीत** वि० (सं) जिसका पान किया गया हो। शोषित।
**निपुण** वि० (सं) १-दक्ष। प्रवीण। २-योग्य। ३-अनुभवी। ४-दयालु। ५-सम्पूर्ण।
**निपुणता** स्त्री० (सं) कुशलता। दक्षता।
**निपुणाई** स्त्री० (हिं) दे० 'निपुणता'।
**निपुत्री** वि० (हिं) निःसन्तान। निपूता।
**निपुन** वि० (हिं) दे० 'निपुण'।
**निपुनई** स्त्री० (हि) दे० 'निपुणता'।
**निपुनाई** स्त्री० (हि) दे० 'निपुणता'।
**निपूत** वि० (हिं) पुत्रहीन।
**निपूता** वि० (हि) पुत्रहीन। निःसन्तान (गाली)।
**निपोड़ना** क्रि० (हि) दांत खोलना या उघारना।
**निफल** वि० (सं) दे० 'निष्फल'।
**निफाक** पुं० (अ) विरोध। फूट। अनबन।
**निफालन** पुं० (सं) दृष्टि।
**निफेन** पुं० (सं) अफीम।
**निबंध** पुं० (सं) १-अच्छी तरह बाँधने का भाव या क्रिया। २-किसी विषय का सविस्तार विवेचन। (एस्से)। ३-एक प्रकार का एक छोटा लेख। ४-रोकथाम। ५-सहारा। अधीनता। ६-आधार। उद्देश। ७-स्थापना। ८-वाक्य रचना। टीका। ९-नीम का पेड़। १०-पेशाब रुक आने का रोग। ११-वह वस्तु जिसे देने का वायदा किया गया हो।
**निबंधक** पुं० (सं) दे० 'पंजीयक'। (रजिस्ट्रार)।
**निबंधन** पुं० (सं) १-बांधना। बन्धन। २-बन्धेज। नियम। ३-आश्रय। ४-लेखों आदि का प्रमाणिक सिद्ध करने के लिए राजकीय पंजी में चढ़ाया जाना। (रजिस्ट्रेशन)। ५-नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्त्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। (टर्म)।
**निबंधित** वि० (सं) जिसका निबन्धन किया गया हो (रजिस्टर्ड)।
**निब** स्त्री० (अ) लोहे या पीतल की बनी चोंच जो कलम में ऊपर से खोंची जाती है।
**निबकौरी** स्त्री० (हि) नीम का फल। निबौली।
**निबटना** क्रि० (हि) १-निवृत होना। २-समाप्त होना। भुगतना। ३-तै होना।
**निबटाना** क्रि० (हि) १-निबटेरा। २-झगड़े का फैसला। ३-निर्णय।
**निबटारा** पुं० (हिं) १-झगड़े का फैसला। २-पूरा होना। (सैटलमेंट)। (डिस्पोजल)।
**निबटेरा** पुं० (हि) १-निबटने की क्रिया। छुट्टी। २-झगड़े का फैसला। निर्णय।
**निबड़ना** क्रि० (हि) दे० 'निबटना'।
**निबड़ा** पुं० (हिं) एक प्रकार का बड़ा घड़ा।
**निबद्ध** वि० (सं) १-बँधा हुआ। गुँथा हुआ। २-अवरुद्ध। ३-जड़ा हुआ। सम्बद्ध। ४-पञ्जीबद्ध। (रजिस्टर्ड)। पुं० (सं) ठीक ताल, लय, रस आदि में नियमानुसार गाया हुआ गीत।
**निबर** वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
**निबरना** क्रि० (हि) १-बँधी हुई वस्तु का अलग होना। छूटना। २-उद्धार पाना। मुक्त होना। ३-अवकाश पाना। ४-निबटना। ५-उलझन दूर होना। सुलझना। ६-न रह जाना।
**निबर्हण** वि० (सं) नाशक। पुं० (सं) नाश। वध। हत्या।
**निबल** वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
**निबलाई** स्त्री० (हि) दुर्बलता। निर्बलता।
**निबह** पुं० (हि) दे० 'निर्वह'।
**निबहना** क्रि० (हि) १-छुटकारा पाना। २-गुजारा होना। ३-वैसा ही बना रहना। नष्ट न होना। ४-बराबर होते रहना। ५-पालन करना। निभाना।
**निबहुर** पुं० (हि) जहाँ से कोई लौटकर वापिस न आ सके। यमद्वार।
**निबहुरा** वि० (हि) जो फिर वापिस न आये।
**निबाह** पुं० (हि) १-निर्वाह। गुजारा। २-परम्परा आदि का पालन करना। ३-पालन।
**निबाहक** वि० (हि) निभाने वाला।

निबाहना क्रि० (हि) १-निर्वाह करना। निभाना। २-पालन करना। ३-निरन्तर साधना करना।
निबिड़ वि० (हि) दे० 'निविड़'। वि० (सं) गहरा। कठिन।
निबुआ पुं० (हि) दे० 'नीबू'।
निबुकना क्रि० (हि) १-छुटकारा पाना। बन्धन से मुक्त होना। २-बन्धन का ढीला होना।
निबेड़ना क्रि० (हि) १-उन्मुक्त करना। २-मिली हुई वस्तुओं को अलग-अलग करना। छांटना। ३-सुलझाना। ४-निर्णय करना। ५-दूर करना। ६-समाप्त करना।
निबेड़ा पुं० (हि) १-छुटकारा। मुक्ति। २-निबटारा ३-निर्णय। ४-पूर्ति। ५-भुगतान।
निबेरना क्रि० (हि) दे० 'निबेड़ना'।
निबेरा पुं० (हि) दे० 'निबेड़ा'।
निबेहना क्रि० (हि) दे० 'निबेरना'।
निबोधन पुं० (सं) समझाने या समझने का भाव या क्रिया।
निबौरी स्त्री० (हि) नीम का फल।
निभ पुं० (सं) प्रकाश। चमक। प्रभा। ब्याज। छल और कपट चन्दा की चाँदनी। वि० (सं) समान। तुल्य। तेज चमक वाला।
निभना क्रि० (हि) दे० 'निबहना'।
निभरम वि० (हि) भ्रमरहित। जिसमें कोई शङ्का न हो। क्रि० वि० (हि) निःशङ्क। बे-धड़क।
निभरमा वि० (हि) जिसका विश्वास उठ गया हो। जिसकी पोल खुल गई हो।
निभरोसी वि० (हि) १-जिसका भरोसा न हो। हताश। २-निराश्रय।
निभाउ पुं० (हि) दे० 'निबाह'। वि० (हि) भावहीन
निभागा वि० (हि) अभागा।
निभाना क्रि० (हि) १-किसी परम्परा को रक्षित रखना २-चलाना। भुगताना।
निभालन पुं० (सं) दर्शन। देखना। पहचानना।
निभूयप पुं० (सं) विष्णु। नारायण।
निभृत वि० (सं) १-रखा हुआ। धृत। २-परिपूर्ण। ३-गुप्त। ४-शान्त। ५-विनीत। ६-दृढ़ संकल्प का। ७-एकान्त। ८-(सूर्य या चन्द्रमा) अस्त होने के निकट। ९-आवृत।
निभ्रान्त वि० (हि) दे० 'निभ्राँत'।
निमंत्रण पुं० (सं) किसी अवसर या कार्य के लिए आने के लिए आदर सहित बुलाना। बुलावा।
निमंत्रण-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को भोज आदि में सम्मिलित होने के लिए बुलाया जाता है। (इन्वीटेशन कार्ड)।
निमंत्रना क्रि० (हि) बुलावा भेजना।
निमंत्रित वि० (सं) जिसे निमन्त्रण दिया गया हो।
निम पुं० (सं) शलाका।
निमक पुं० (हि) दे० 'नमक'।
निमकी स्त्री० (हि) नीबू का अचार। मैदे की नमकीन टिकिया।
निमकौड़ी स्त्री० (हि) (हि) निबौली।
निमगारना क्रि० (हि) उत्पन्न करना।
निमग्न वि० (सं) लिप्त। मग्न। तन्मय।
निमज्जक पुं० (सं) समुद्र या अन्य जलाशयों में डुबकी लगाने वाला गोताखोर।
निमज्जन पुं०(सं) १-गोता लगाना। डुबकी लगाना २-लीन होना। ३-अवगाहन।
निमज्जना क्रि० (हि) गोता लगाना। डुबकी लगाना
निमज्जित वि० (सं) डूबा हुआ।
निमटना क्रि० (हि) दे० 'निबटना'।
निमत्ता वि० (हि) जो उन्मत्त न हो। शान्त।
निमन्यु वि० (स) क्रोध रहित।
निमय पुं० (सं) अदला-बदली।
निमर्म वि० (सं) जिसमें मर्म न हो।
निमाज वि० (फा) दे० 'नवाज'।
निमान पुं० (सं) मूल्य। भाव। पुं० (हि) गड्ढा। जलाशय।
निमाना वि० (हि) [स्त्री० निमानी] १-नीचे की ओर झुका हुआ। ढलुवाँ। नम्र।
निमि पुं० (सं) १-आंख मीचना। निमेष। २-दत्तात्रेय के पुत्र जो एक ऋषि थे। ३-इक्ष्वाकु वंश के राजा। ४-नीम।
निमिख पुं० (हि) दे० 'निमेष'।
निमित्त पुं० (सं) १-कारण। हेतु। २-जो केवल नाम मात्र के लिए सामने आया हो पर असली कर्त्ता न हो। ३-शकुन। ४-उद्देश्य। लक्ष्य।
निमित्तक वि० (सं) किसी कारण से होने वाला। पुं० (सं) चुम्बक।
निमित्त-हेतु पुं० (सं) वह कारण जिसके कर्तव्य से कोई वस्तु बने (न्याय)।
निमित्तावृत्ति स्त्री०(सं) किसी विशेष कारण पर निर्भर
निमिषित वि० (सं) पलक मारता हुआ।
निमिष पुं० (सं) १-पलक मारना। आंख मीचना। २-पल। क्षण। ३-पलक पर होने वाला एक रोग।
निमिषांतर पुं० (सं) क्षण भर का अन्तर।
निमीलन पुं० (सं) १-पलक मारना। २-झपकना। ३-सिकोड़ना। ४-पल। क्षण। ५-सर्वग्रास ग्रहण
निमीला स्त्री० (सं) १-आंख की झपकी। छल। २-ब्याज।
निमीलित वि० (सं) १-बन्द। ढका हुआ। २-मृत।
निमुहाँ वि० (हि) कम बोलने वाला। जिसमें बोलने का साहस न हो।
निमूंद वि० (हि) बन्द किया हुआ।

। पुं० (हिं) दे० 'निमेष' ।
**निमेट** पुं० (हिं) अमिट । न मिटने वाला ।
**निमेष** पुं० (सं) १-पलक झपकना । २-पल । क्षण । ३-आँखों के फड़कने का एक प्रकार का रोग ।
**निमेषक** पुं० (सं) १-पलक । २-जुगनू ।
**निमोना** पुं० (हिं) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को पीस कर बनाई हुई स्वादिष्ट दाल ।
**निमौनी** स्त्री० (हिं) फसल की पहले-पहल कटाई का दिन ।
**निम्न** वि० (सं) नीचा । गहरा । नीचे । (फोलोइङ्ग) । (लोअर) ।
**निम्नग** पुं० (सं) नीचे जाने वाला ।
**निम्नगा** स्त्री० (सं) नदी ।
**निम्न-मध्य-वर्ग** पुं० (सं) निम्नश्रेणी के ऊपर और मध्यम श्रेणी के रहन-सहन के स्तर से गिरा हुआ परिश्रम-भोगी वर्ग । (लोअर मिडिल क्लास) ।
**निम्न-लिखित** वि० (सं) नीचे लिखा हुआ । (फोलोइंग) ।
**निम्न-वर्ग** वि० (सं) समाज का वह वर्ग जो बहुत गरीब होता है और मजदूरी करके अपनी जीविका चलाता है । (लोअर क्लास) ।
**निम्न-सदन** पुं० (सं) अवरागार । (लोअर हाउस)
**निम्नोक्त** वि० (सं) नीचे कहा हुआ ।
**निम्नांकित** वि० (सं) नीचे लिखा हुआ ।
**निम्नोन्नत** वि० (सं) ऊबड़-खाबड़ । ऊँचा-नीचा । विषम ।
**निम्लोच** पुं० (सं) सूर्यास्त ।
**नियंता** पुं० (सं) १-नियम बनाने वाला । २-नियन्त्रक । ३-शासक । ४-संचालक ।
**नियंत्रक** पुं० (सं) १-व्यवस्था करने वाला । शासक २-कार्य चलाने वाला ।
**नियंत्रक-महालेखा-परीक्षक** पुं० (सं) आय-व्यय के लेखे का परीक्षण करने वाला । बड़ा पदाधिकारी जो साधारण परीक्षकों पर नियन्त्रण रखता है । (कोम्पट्रालर एण्ड ऑडिटर जनरल) ।
**नियंत्रण** पुं० (सं) १-नियम या किसी बन्धन में रखना । २- अपनी देख रेख में काम चलाना । ३-व्यवस्थित करना । (कन्ट्रोल) ।
**नियंत्रित** वि० (सं) १-नियम-बद्ध । नियन्त्रण में रखा हुआ । (कन्ट्रोल्ड) ।
**निय** वि० (हिं) निज ।
**नियत** स्त्री० (सं) १-नियम प्रथा आदि के अनुसार किया हुआ । २-ठहराया हुआ । ३-आज्ञा द्वारा स्थिर किया हुआ । नियुक्त । पुं० (सं) शिव । महादेव ।
**नियतकालिक-पलीता** पुं० (सं) निर्धारित समय के बाद जल उठने वाला पलीता । (टाइम-फ्यूज) ।
**नियत-कालिक प्रस्फोट** पुं० (सं) दे० 'सावधिक प्रस्फोट' । (टाइम-बम) ।
**नियत तिथि** स्त्री० (सं) वह तिथि जो काम पूरा करके देने के लिए नियत हो । (ड्यू-डेट) ।
**नियतन** पुं० (सं) किसी को कोई मकान आदि देने का कार्य । (अलाटमेंट) ।
**नियतन-आदेश** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी मकान इत्यादि के नियत किये जाने का अधिकार दिया गया हो । (अलाटमैन्ट-लैटर) ।
**नियत-भागी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसको सरकार द्वारा कोई मकान आदि दिया गया हो । (अलौटी)
**नियतांश** पुं० (सं) समूची-राशि का एक अंश जो किसी को देने के लिए निर्धारित किया गया हो ।
**नियतात्मा** वि० (सं) अपने आप को वश में रखने वाला । संयमी ।
**नियताप्ति** स्त्री० (सं) नाटक में अनेक उपायों को छोड़ कर केवल एक ही उपाय से फल-प्राप्ति का निश्चय ।
**नियति** स्त्री० (सं) १-नियत होने की क्रिया या भाव २-होनी । अदृश्य । भाग्य । ३-निश्चित पद्धति या व्यवस्था । ४-आत्मसंयम ।
**नियति-वाद** पुं० (सं) भाग्यवाद । वह सिद्धान्त कि जो कुछ होता है वह पहले से ही ईश्वर द्वारा नियत रहता है ।
**नियम** पुं० (सं) धर्म, विधि आदि के द्वारा निश्चित व्यवहार या आचरण के निश्चित सिद्धांत । विधान के अनुसार नियन्त्रण । कायदा । (रूल) । २-वह निश्चित आधार जिनके अनुसार किसी संस्था का काम चलाया जाता है । ३-परम्परा । दस्तूर । ४-योग के आठ अंशों में से एक । ५-कवियों की वर्णन करने की एक पद्धति । ६-शर्त । ७-विष्णु । ८-लक्षण । परिभाषा ।
**नियमतः** क्रि० (सं) नियम या कानून के अनुसार ।
**नियमन** पुं० (सं) १-नियमबद्ध रखने का कार्य । अनुशासन । २-शासन । दमन । ३-निग्रह । (रेगुलेटिंग) ।
**नियमनिष्ठा** स्त्री० (सं) नियम के अनुसार कार्य करने की श्रद्धा ।
**नियम-पत्र** पुं० (सं) शर्तनामा । प्रतिज्ञा-पत्र । (डीड-ऑफ एग्रीमेन्ट) ।
**नियमबद्ध** वि० (सं) नियमों के अनुकूल ।
**नियमबद्ध-विक्रय** पुं० (सं) नियमानुसार बिकी करना । (कोन्ट्रैक्ट ऑफ सेल) ।
**नियमवती** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका मासिक स्राव ठीक तरह से होता हो ।
**नियम-स्थिति** स्त्री० (सं) संन्यास । तपस्या ।
**नियमापत्ति** स्त्री० (सं) किसी सभा-समिति में किसी

परम्परा या माने हुए नियमों के विरुद्ध कार्यप्रणाली की कोई बात होने पर की गई आपत्ति। (पॉइन्ट ऑफ ऑर्डर)।
**नियमावली** स्त्री० (सं) किसी संस्था का कार्यप्रणाली या उसके संचालन आदि के बारे में बनाए हुए नियम।
**नियमित** वि० (सं) नियमबद्ध। निश्चित। नियमानुसार।
**नियमित-चमू** स्त्री० (सं) वह व्यवस्थित सैन्यदल। जो स्थायीरूप से किसी राज्य के लिए बनी हो। (रेगुलर-ट्रूप्स)।
**नियमित-सेना** स्त्री० (सं) हर समय तैयार रहने वाली सेना। (रेगुलर-आर्मी)।
**नियमी** वि० (सं) नियम का पालन करने वाला।
**नियम्य** वि० (सं) १-नियमित करने योग्य। २-शासित होने योग्य।
**नियर** अव्य० (हि) पास। निकट। समीप।
**नियराई** स्त्री० (हि) निकटता। सामीप्य।
**नियराना** क्रि० (हि) निकट आना या पहुंचना।
**नियरे** अव्य० (हि) दे० 'नियर'।
**नियाज** स्त्री० (फा) १-इच्छा। २-भेंट। ३-दीनता ४-मृतक के लिये गरीबों को बाँटा जाने वाला भोजन (मुसल०)। चढ़ावा। प्रसाद।
**नियातन** पुं० (सं) विनाश करने का कार्य।
**नियान** पुं० (सं) गौशाला। पु० (हि) परिणाम अन्त। अव्य० (हि) दे० 'निदान'।
**नियाम** पुं० (हि) नियम। कायदा।
**नियामक** पुं० (सं) १-नियम बनाने वाला। २ विधान या व्यवस्था करने वाला। ३-नाशक। दूर करने वाला। ४-माँझी। ५-सारथी। (रेगुलेटर)
**नियामक-गण** पुं० (सं) रसायनिक पारे को मारने वाली औषधियों का एक समूह।
**नियामत** स्त्री० (फ) दे० 'नेमत'।
**नियार** पु० (हि) सुनारों या जौहरी की दुकान का कूड़ा-करकट।
**नियारना** क्रि० (हि) दूर करना। अलग करना।
**नियारा** वि० (हि) अलग। जुदा।
**नियारिया** पुं० (हि) १-मिश्रित वस्तुओं को अलग करने वाला। २-नियार में से छांट कर माल निकालने वाला। ३-चतुर व्यक्ति।
**नियारे** अव्य० (हि) दे० 'न्यारे'।
**नियाव** पुं० (हि) दे० 'न्याय'।
**नियुक्त** वि० (हि) १-नियोजित। किसी काम पर लगाया हुआ। (एपॉइन्टेड)। २-आदिष्ट। आज्ञाप्त जिसे आज्ञा दी गई हो। ३-नियोग करने वाला। जिससे नियोग कराया जाय। ४-संलग्न। लगा हुआ। ५-अधिष्ठापित। अभिकृत। ६-प्रेरित।
**नियुक्तक** पुं० (सं) किसी संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाला व्यक्ति। (एटार्नी)।
**नियुक्तक-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी की ओर किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लिये साधिकार नियुक्त किया गया हो। (पावर ऑफ एटार्नी)।
**नियुक्तक-पद** पुं० (सं) किसी की ओर से उसके नियुक्तक के रूप में प्राप्त स्थान। (एटार्नीशिप)।
**नियुक्तक-शक्ति** स्त्री० (सं) किसी की ओर कोई काम करने के लिए दिया गया अधिकार। (पावर-ऑफ-एटार्नी)।
**नियुक्ति** स्त्री० (सं) १-नियुक्त होने की क्रिया या भाव। २-काम पर नियोजित की अवस्था। तैनाती (एपॉइन्टमैण्ट)।
**नियुक्ति-कर्त्ता** पुं० (सं) किसी काम पर किसी को नियोजित करने वाला व्यक्ति। (एपॉइण्टर)।
**नियुक्ति-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिससे किसी को काम पर नियुक्त करने की सूचना दी जाती है। (एपॉइण्टमैण्ट-लैटर)।
**नियुक्ति-विभाग** पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जिसका काम सरकारी विभाग की नौकरी के लिए पदाधिकारी आदि को नियुक्त करना होता है (एपॉइण्टमैण्ट डिपार्टमैण्ट)।
**नियोक्ता** पुं० (सं) १-नियोग करने वाला। २-लोगों को कारखाने आदि में काम के लिए वेतन देकर काम पर लगाने वाला। ३-नियुक्त करने वाला। (एम्पलायर)।
**नियोग** पुं० (सं) १-काम में लगाना। २-प्रेरणा। प्रवर्तन। ३-आर्यों में किसी स्त्री के पति द्वारा सन्तान न होने पर किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा सन्तान उत्पन्न करवाने की प्रथा। ४-राज्याज्ञा से किसी कार्य विशेषतः सैनिक कार्य के लिये होने वाली नियुक्ति। (कमीशन) ५-आज्ञा। ६-निश्चय।
**नियोगस्थ** वि० (सं) १-जिसका नियोग हुआ हो। २-जो सरकार की आज्ञा से किसी कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (कमीशन्ड)।
**नियोगार्थ** पुं० (सं) नियुक्त करने का उद्देश्य।
**नियोगी** पुं० (सं) १-वह व्यक्ति जिसका नियोग हुआ हो। २-जो सरकार द्वारा किसी विशेष कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (कमीशन-होल्डर)
**नियोजक** पुं० (सं) नियुक्त-कर्त्ता। नियोक्ता। (एम्प्लॉयर)।
**नियोजक-उत्तरदायिता** स्त्री० (सं) मालिक का दायित्व (एम्पलायर-लायबिलिटी)।
**नियोजक-दातव्य** पुं० (सं) मालिक द्वारा किसी को कोई कर्जा देने का दायित्व। (एम्पलायर-लाय-

लिमिटी)।
**नियोजन** पुं० (सं) १-किसी काम पर नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २-सेवा-योजना। मजदूरी देकर किसी काम पर लगाना। (एम्पलॉयमैण्ट)। ३-किसी व्यक्ति को किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त करना। (कमीशन)।
**नियोजन-केन्द्र** पुं० (सं) बेकार व्यक्तियों को नौकरी दिलवाने का सरकारी कार्यालय। (एम्पलॉयमैण्ट-एक्सचेंज)।
**नियोजनालय** पुं० (सं) बेकारों को काम दिलाने का दफ्तर। काम-दिलाऊ दफ्तर। (एम्पलायमैन्ट-ब्यूरो)
**नियोज्य** वि० (सं) जो नियुक्त करने योग्य हो। पुं० (सं) अधिकारी। अफसर।
**नियोजित** वि० (सं) नियुक्त किया हुआ। व्यापृत। (एम्पलॉयड)। पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे किसी कार्यालय या कारखाने में वेतन देकर रखा गया हो (एम्पलाई)।
**निर्** अव्य० (सं) बाहर। दूर। बिना। रहित।
**निरंक-धनादेश** पुं० (सं) वह धनादेश (चैक) जिस पर रुपये की संख्या न लिखी गई हो। (ब्लैंकचैक)
**निरंकार** पुं० (सं) दे० 'निराकार'।
**निरंकुश** वि० (सं) जिसके लिए कोई रुकावट न हो या जो कोई अंकुश न माने। स्वेच्छाचारी।
**निरंग** वि० (सं) १-अङ्ग-रहित। खाली। बदरङ्ग।
**निरंग-रूपक** पुं० (सं) रूपक अलङ्कार का भेद जिसमें उपमानों के सब अङ्गों की चर्चा न आये।
**निरंजन** वि० (सं) अञ्जन-रहित। जिसमें काजल न हो। २-निर्दोष।
**निरंजना** स्त्री० (सं) १-पूर्णिमा। दुर्गा का नाम।
**निरंजनी** पुं० (सं) साधुओं के अनेक सम्प्रदायों में से एक।
**निरंतर** वि० (सं) १-जिसमें फासला या अन्तर न पड़े। अन्तरहित। अविछिन्न। २-घना। निबिड़ ३-स्थायी। अविचल। ४-जिसमें भेद न हो। ५-अन्तर्धान न हो। क्रि० वि० (सं) लगातार। सदा। बराबर।
**निरंतराभ्यास** पुं० (सं) लगातार किया जाने वाला अभ्यास।
**निरंबर** वि० (सं) दिगम्बर। नङ्गा।
**निरंश** वि० (सं) १-जिसे उसका भाग न मिला हो। २-बिना अक्षांश का। पुं० (सं) संक्रान्ति।
**निरकार** वि० (हि) दे० 'निराकार'।
**निरक्ष** वि० (सं) जो पृथ्वी के बीच के भाग में हो। बिना पासे का।
**निरक्षदेश** पुं० (सं) भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण के वह देश जहाँ रात-दिन बराबर होते हैं।
**निरक्षन** पुं० (सं) दे० 'निरीक्षण'।
**निरक्षर** वि० (सं) अनपढ़।
**निरख** स्त्री० (हि) भाव। दर।
**निरखना** क्रि० (हि) देखना। ताकना। अवलोकन करना।
**निरग** पुं० (हि) दे० 'नृग'।
**निरगुन** वि० (हि) दे० 'निर्गुण'।
**निरगुनिया** वि० (हि) मूर्ख। निरगुन पन्थ का अनुयायी।
**निरगुनी** वि० (हि) गुणरहित। अनाड़ी।
**निरग्नि** वि०(सं) ब्राह्मण जो अग्निहोत्र न करता हो
**निरच्छ** वि० (हि) अक्षरहित। अन्धा।
**निरजर** वि० (हि) जो कभी पुराना न हो।
**निरजिन** पुं० (सं) जिसके चमड़ा न हो।
**निरजोस** पुं० (सं) १-निचोड़। सार। २-निर्णय।
**निरझर** पुं० (हि) दे० 'निर्झर'।
**निरझरनी** स्त्री० (हि) दे० 'निर्झरिणी'।
**निरझरी** स्त्री० (हि) दे० 'निर्झरी'।
**निरत** वि० (सं) लीन। काम में लगा हुआ।
**निरतना** क्रि० (हि) नाचना। नृत्य करना।
**निरति** स्त्री० (सं) अत्यन्त रति। अधिक प्रीति।
**निरतिशय** वि० (सं) परम। सबसे बढ़कर। पुं० (सं) परमेश्वर।
**निरत्यय** वि० (सं) खतरे से सुरक्षित। दोष-शून्य। निस्वार्थी।
**निरदई** वि० (हि) दे० 'निर्दय'।
**निरदोषी** वि० (हि) दे० 'निर्दोषी'।
**निरधार** पुं० (हि) निश्चय करना। निर्धारण। वि० (हि) बिना आधार का। अव्य० (हि) अनिश्चय-पूर्वक।
**निरधारना** क्रि० (हि) तय करना। निश्चय करना।
**निरध्व** वि० (सं) गुमराह। जो मार्ग भूल गया हो।
**निरनउ** पुं० (हि) दे० 'निर्णय'।
**निरनुनासिक** वि० (सं) जिसका उच्चारण नाक से न हो।
**निरनुमोदन करना** क्रि० (हि) किसी प्रस्ताव नीति आदि का समर्थन न करना। (टु डिसऐप्रूव)।
**निरनै** पुं० (हि) दे० 'निर्णय'।
**निरन्न** वि० (सं) निराहार। जो अन्न न खाए हुए हो।
**निरप** वि० (सं) जलहीन पुं० (हि) दे० 'नृप'।
**निरपना** वि० (हि) जो आत्मीय न हो। बिराना। गैर।
**निरपराध** वि० (सं) निर्दोष। अपराध-रहित। बेकसूर क्रि० वि० (सं) बिना अपराध के।
**निरपराधी** वि० (हि) दे० 'निरपराध'।
**निरपवाद** वि० (सं) अपवाद-रहित। निर्दोष।
**निरपेक्ष** वि० (सं) १-जिसे किसी की कामना न हो। २-जो किसी भी पक्ष में न हो। ३-जो किसी पर

आश्रित न हो। विरक्त। उदासीन।
**निरपेक्षा** स्त्री० (सं) उदासीनता। उपेक्षा।
**निरपेक्षित** वि० (सं) जिसकी अपेक्षा या चाह न की गई हो।
**निरपेक्षी** वि०(सं) उदासीन। अपेक्षा करने वाला।
**निरफल** वि० (सं) दे० 'निष्फल'।
**निरबंध** वि० (स) बिना किसी बन्धन का।
**निरबंसी** वि० (हि) सन्तानरहित।
**निरबर्त्ती** वि० (हि) त्यागी। विरागी।
**निरबल** वि० (हि) दे० 'निर्बल'।
**निरबहना** क्रि० (हि) निर्वाह होना।
**निरबान** पु० (हि) दे० 'निर्वाण'।
**निरबाहना** क्रि० (हि) दे० 'निबाहना'।
**निरबिसी** स्त्री० (हि) दे० 'निर्विषी'।
**निरबेरा** पु० (हि) दे० 'निबेरा'।
**निरभय** वि० (हि) दे० 'निर्भय'।
**निरभर** वि० (हि) दे० 'निर्भर'।
**निरभिमान** वि० (सं) गर्व रहित। जिसे अभिमान न हो।
**निरभिलाष** वि० (सं) निरीह। जिसे किसी वस्तु की अभिलाषा न हो।
**निरभ्र** वि० (सं) मेघ रहित।
**निरमना** क्रि० (हि) बनाना। निर्माण करना।
**निरमल** वि० (हि) दे० 'निर्मल'।
**निरमली** स्त्री० (हि) दे० 'निर्मली'।
**निरमान** पु० (हि) दे० 'निर्माण'।
**निरमायल** पु०(हि) दे० 'निर्माल्य'।
**निरमित्र** वि० (सं) शत्रु रहित। पु० (सं) नकुल के एक पुत्र का नाम।
**निरमूल** वि० (हि) दे० 'निर्मूल'।
**निरमूलना** क्रि० (हि) नष्ट करना। उन्मूलन करना।
**निरमोल** वि० (हि) दे० 'अनमोल'।
**निरमोलिक** वि० (हि) बहुमूल्य। अनमोल।
**निरमोही** वि० (हि) दे० 'निर्मोही'।
**निरय** पु० (सं) नरक। दोजख।
**निरयण** पु० (सं) एक प्रकार की ज्योतिष की गणना।
**निरर्गल** वि०(सं) १-बिना चटखनी का। २-बे रोक-टोक।
**निरर्थ** वि० (सं) दे० 'निरर्थक'।
**निरर्थक** वि० (सं) व्यर्थ। हानिकर। निष्प्रयोजन। न्याय में एक निग्रह स्थान।
**निरर्थक किया हुआ** वि० (हि) मन्सूख किया हुआ। (धनल्ड)।
**निरवकाश** वि० (स) जिसमें अवकाश या गुंजायश न हो।
**निरवच्छिन्न** वि० (सं) निरन्तर। जिसका क्रम न टूटा हो।
**निरवद्य** वि० (सं) विशुद्ध। उत्कृष्ट। दोषरहित।
**निरवधि** वि० (सं) निःसीम। जिसकी कोई सीमा न हो।
**निरवयव** वि० (सं) निराकार। अंगरहित। जिसमें हिस्से न हों।
**निरवलंब** वि० (सं) बिना सहारे का। आधार रहित।
**निरवशेष** वि० (सं) समचा। पूर्ण। समाप्त।
**निरवसाद** वि० (स) अवसाद रहित। जिसे चिन्ता न हो।
**निरवाना** क्रि० (हि) निराने का कार्य करना।
**निरवारना** क्रि० (हि) १-बाधा डालने वाली वस्तु को हटाना। २-मुक्त करना। छुड़ाना। २-छोड़ना त्यागना। ३-बंधन खोलना। ४-सुलझाना। फैसला करना। अलग करना।
**निरवाह** पु० (हि) दे० 'निर्वाह'।
**निरवाहना** क्रि० (हि) दे० 'निबाहना'।
**निरवेद** पु० (हि) दे० 'निर्वेद'।
**निरशन** वि० (सं) जिसने भोजन न किया हो। जिसे भोजन से परहेज हो। पु० (सं) लंघन। उपवास।
**निरसंक** वि० (हि) दे० 'निःशंक'।
**निरस** वि० (सं) १-रसहीन। २-बे स्वाद। फीका। ३-निस्तत्व। ४-रूखासूखा। ५-विरक्त।
**निरसन** पु० (सं) १-पहली आज्ञा या निश्चय को रद्द करना। (कन्सलेशन, रिवोकेशन)। २-दूर हटना ३-निराकरण। ४-परिहार। नाश। ५-वध। ६-बाहर करना। निकाल देना। (डिस्चार्ज)। ७-किसी कानून को अधिकारपूर्वक रद्द कर देना। (रिपील)।
**निरसनाधार** पु० (सं) वह आधार जिस पर (वायुयान आदि को) उतारा न जा सके। स्थापन न करने का आधार। (ग्राउन्ड ऑफ सेटिंग एसाइड)।
**निरस्त** वि० (सं) १-जो रद्द कर दिया गया हो। (रिवोक्ड, कैन्सल्ड)। २-निकाला हुआ। त्याग किया हुआ। ३-वर्जित। ४-उगला हुआ। ५-शीघ्र उच्चारित।
**निरस्त्र** वि० (सं) निहत्था। अस्त्रहीन।
**निरस्त्रीकरण** पु० (सं) १-शस्त्रास्त्रों आदि की संख्या कम करना। २-अस्त्र छीन लेना। (डिसआर्मामेन्ट)
**निरस्त्रीकरण सम्मेलन** पु० (सं) शत्रु को पराजित करने के बाद किया गया वह सम्मेलन जिसमें उस देश को निरस्त्र करने के सम्बन्ध में विचार-विनमय किया जाय। (डिसआर्मामेन्ट कॉन्फरेंस)।
**निरस्त्रीकृत** वि० (स) जिसके शस्त्रास्त्र छीन लिये गये हों। (डिसआर्म्ड)।
**निरस्थि** वि० (स) जिसमें हड्डी न हो। जिसमें से हड्डी निकाल ली गई हो। पु० (सं) बिन हड्डी का मांस।
**निरस्यमान** वि० (सं) अलग किया हुआ।

**निरहंकार** वि० (सं) अभिमानरहित। घमंडरहित।
**निरहंकृत** वि० (सं) अहंकारशून्य।
**निरहंकृति** स्त्री० (सं) निरहंकार। निरभिमान।
**निरहंक्रिय** वि० (सं) जिसका अभिमान नष्ट हुआ हो।
**निरहम्** वि० (सं) अहंकार रहित।
**निरहेतु** वि० (हि) दे० 'निर्हेतु'।
**निरहेल** वि० (हिं) जिसकी कदर न हो।
**निरा** वि० (हि) १-विशुद्ध। खालिस। २-एक मात्र। केवल। ३-निपट। एक दम। बिलकुल।
**निराई** स्त्री० (हिं) १-निराने का कार्य। २-निराने की मजदूरी। (वीडिंग)।
**निराकरण** पुं० (सं) १-पृथक् करने या छांटने की क्रिया। २-निवारण। ३-सोच विचार कर ठीक निर्णय करना। ४-दूर हटाना। मिटाना। रद्द करना ५-किसी युक्ति का खण्डन करना। (एब्रोगेशन)।
**निराकांक्ष** वि० (सं) इच्छा-रहित। कामनाशून्य निरपेक्ष।
**निराकार** वि० (सं) १-बिना आकार का। कुरूप। भद्दा। २-विनम्र। लज्जालु। पुं० (सं) परमात्मा। आकाश।
**निराकुल** वि०(सं) १-आकुल या क्षुब्ध न होने वाला। २-अनुद्विग्न। ३-बहुत घबराया हुआ।
**निराकृत** वि० (सं) १-रद्द की हुई। दूर की हुई। २-खण्डन की हुई।
**निराकृति** वि० (सं) आकृति रहित।
**निराक्रिया** स्त्री० (सं) प्रतिबन्ध।
**निराक्रोश** वि० (सं) जिसे दोषी न ठहराया गया हो।
**निराखर** वि० (हि) १-बिना अक्षर का। मौन। २-अपढ़। जिसे अक्षर-बोध न हो। मूर्ख।
**निराग** वि० (सं) निरपराध। निष्पाप।
**निरागस्** वि० (सं) दोषरहित।
**निराग्रह** वि० (सं) आग्रह-रहित।
**निराचार** वि० (हि) आचारहीन।
**निराजी** स्त्री० (हि) जुलाहों के करघों में लगने वाली एक लकड़ी।
**निराट** वि० (हिं) निरा। अकेला। निपट। एक मात्र अव्य० (हि) बिलकुल।
**निराटा** वि० (हि) अनोखा। निराला।
**निराडंबर** वि०(सं)१-आडम्बर रहित। जिसके ठाठ-बाट न हों। २-ढोलों से रहित।
**निरातपा** स्त्री० (सं) रात। रजनी।
**निरात्मक** वि० (सं) आत्माशून्य।
**निरादर** पुं० (सं) अपमान। आदर रहित।
**निराधार** वि० (सं) १-बे बुनियाद। मिथ्या। २-निराश्रय। असहाय।
**निराधि** वि० (सं) नीरोग। चिन्ता रहित।
**निरानन्द** वि० (सं) आनन्द रहित। पुं० (सं) दुःख। आनन्द का अभाव।
**निराना** क्रि० (हि) फसल के पौधों के आसपास उगी हुई अनावश्यक घास आदि को खोद कर हटाना।
**निरापद** वि० (सं) १-निर्विघ्न। २-जिस पर कोई आपत्ति न हो। ३-सुरक्षित।
**निरापुन** वि० (हि) पराया। बेगाना। जो अपना न हो।
**निरामय** वि० (सं) १-स्वस्थ। रोग रहित। २-दोष शून्य। शुद्ध। निष्कलंक। ३-सम्पूर्ण। ४-अभ्रांत। पुं० (सं) १-जंगली बकरा। २-सूअर।
**निरामाल** पुं० (सं) कैथ का पेड़।
**निरामिष** वि० (सं) १-मांस रहित (भोजन)। २-जो मांस न खाता हो। (वेजिटेरियन)।
**निरामिषभोजी** वि० (सं) जो मांस न खाता हो। (वेजिटेरियन)।
**निराय** वि०(सं) जिससे कुछ भी लाभ या आय न हो
**निरायास** वि० (सं) चेष्टारहित।
**निरायुध** वि० (सं) निरस्त्र। बिना हथियार के।
**निरार** वि० (हि) पृथक। अलग।
**निरारा** वि० (हि) दे० 'निरार'।
**निरालंब** वि० (सं) दे० 'निरवलम्ब'।
**निराला** पुं० (सं) एकान्त स्थान। वि० (सं) १-निर्जन। एकान्त। २-विलक्षण। अनूठा। अनोखा
**निरावना** क्रि० (हि) दे० 'निराना'।
**निरावर्ष** वि० (सं) वर्षा से निवारित।
**निरावरण** वि० (सं) बिना आवरण का खुला हुआ।
**निरावृत** वि० (सं) बिना ढका हुआ।
**निराश** वि० (सं) हताश। हतोत्साह। नाउम्मीद।
**निराशा** स्त्री० (सं) नाउम्मीदी। आशा का अभाव।
**निराशावाद** पुं० (सं) १-यह सिद्धान्त कि संसार केवल बुराइयों से ही परिपूर्ण है। २-केवल संसार की बुरी अवस्था को ही देखना। (पेस्सीइज्म)।
**निराशावादी** वि०(सं) आशा या सफलता में विश्वास न रखने वाला। (पेस्सीमिस्ट)।
**निराशिष** वि० (सं) आशीर्वादशून्य।
**निराशी** वि० (हि) हताश। उदासीन। विरक्त।
**निराश्रय** वि० (सं) १-आश्रयरहित। आधारहीन। असहाय। २-निर्लिप्त।
**निरास** वि० (हिं) दे० 'निराश'। पुं०(हिं) निराकरण खण्डन। दूर करना।
**निरासा** पुं० (हि) दे० 'निराशा'।
**निरासी** वि० (हिं) हताश। विरक्त। उदास।
**निराहार** वि० (सं) १-आहार रहित। जिसने कुछ भी न खाया या पीया हो। २-जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो (व्रत)।
**निरिंग** वि० (सं) निश्चय। अचल।
**निरिंगिणी** स्त्री० (सं) चिक। पर्दा। चिलमिली।

**निरिंद्रिय** वि० (सं) १–इन्द्रिय रहित। (इनॉर्गेनिक)। २–जिसका कोई इन्द्रिय काम न करती हो।
**निरिच्छ** वि० (सं) इच्छा रहित। निरीह।
**निरिच्छन** पु० (सं) दे० 'निरीक्षण'।
**निरिच्छना** क्रि० (सं) देखना। निरीक्षण करना।
**निरी** वि० (हि) दे० 'निरा'।
**निरीक्षक** पु० (सं) १–अच्छी प्रकार देखने वाला। २–निरीक्षण करने वाला। (विजीटर, इन्सपेक्टर)। ३–परीक्षा भवन में परीक्षार्थियों की देख-रेख करने वाला। (इन्विजिलेटर)।
**निरीक्षण** पु०(सं) १–गौर करके देखना। मुआइना करना। (इन्सपेक्शन)। २–देखने का ढंग। चितवन नेत्र।
**निरीक्षणाधिकारी** पु० (सं) निरीक्षण के सम्बन्ध में पूर्ण अधिकार प्राप्त अधिकारी।
**निरीक्षणपुस्त** स्त्री० (सं) वह पञ्जी जिसमें निरीक्षक अपने विचार लिखता है। (विजीटर्स बुक)।
**निरीक्षणशुल्क** पु० (सं) निरीक्षण करने की फीस। (इन्सपेक्शन फी)।
**निरीक्ष्यमाण** वि० (सं) जिसको देखते हों। जिसका निरीक्षण किया गया हो।
**निरीक्षा** स्त्री० (सं) देखना। दर्शन।
**निरीक्षित** वि० (सं) देखा हुआ। जांच किया हुआ। देखाभाला हुआ।
**निरीश** वि० (सं) १–बिना स्वामी का। २–नास्तिक। पु० (सं) हलका फल।
**निरीश्वर** वि० (सं) ईश्वर से रहित।
**निरीश्वरवाद** पु०(सं) ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करने वाला सिद्धान्त।
**निरीश्वरवादी** पु० (सं) ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले सिद्धान्त का अनुयायी।
**निरीह** वि० (सं) १–जो क्रियाशील न हो। विरक्त। उदासीन। २–निर्दोष। बेचारा। ३–शान्ति-प्रिय। तटस्थ।
**निरीहता** स्त्री० (सं) निरीह होने का भाव।
**निरीहा** स्त्री० (सं) चेष्टाहीनता। चाह का न होना।
**निरुआर** पु० (हि) दे० 'निरुवार'।
**निरुआरना** क्रि० (हि) दे० 'निरवारना'।
**निरुक्त** वि० (सं) १–निश्चित रूप से कहा गया। निश्चित किया हुआ। २–नियोग कराने वाला। पु०(सं) १–छः वेदांगों में एक। २–यास्क मुनि द्वारा रचित एक ग्रन्थ जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या की गई है। ३–व्याकरण की वह शाखा जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति और उसके रूपों के विकास आदि का विवेचन होता है। (एटिमोलॉजी)।
**निरुक्तकार** पु० (सं) निरुक्त ग्रन्थ के रचयिता यास्क मुनि।
**निरुक्ति** स्त्री० (सं) किसी वाक्य या पद की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का विवेचन हो। एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का प्रचलित अर्थ छोड़ कर युक्तिपूर्वक कोई मनमाना अर्थ किया जाय।
**निरुच्छ्वास** वि० (सं) जहाँ बहुत से लोग न आ सकें (स्थान)। संकीर्ण। जहाँ खड़े होने की जगह न हो।
**निरुज** वि० (हि) दे० 'नीरुज'।
**निरुत्तर** वि० (सं) १–जिसका कोई उत्तर न हो। लाजवाब। २–जो उत्तर न दे पाये। जो लाजवाब हो जाय।
**निरुत्सव** वि० (सं) बिना उत्सवों का। धूमधामरहित
**निरुत्साह** वि० (सं) उत्साह हीन। पु० (सं) उत्साह का अभाव।
**निरुत्सुक** वि० (सं) जो उत्सुक न हो।
**निरुदक** वि० (सं) जलहीन। बिना जल का।
**निरुदन** पु० (सं) रसायनिक तत्वों या वनस्पतियों में से जल या उसका अंश निकालना या सुखाना। (डी-हाइड्रेशन)।
**निरुदित** वि० (सं) जिसमें रसायनिक तत्वों आदि का अंश या जल सुखाया या निकाला गया हो।
**निरुद्देश्य** वि० (सं) बिना किसी उद्देश्य के।
**निरुद्ध** वि० (सं) बँधा हुआ। रुका हुआ। प्रतिबद्ध पु० (सं) योग की पांच प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक।
**निरुद्यम** वि० (सं) उद्योगरहित। बेकार। निकम्मा।
**निरुद्योग** वि० (सं) दे० 'निरुद्यम'।
**निरुद्विग्न** वि० (सं) निश्चिन्त।
**निरुद्वेग** वि० (सं) उद्वेग रहित। शान्त।
**निरुपजीव्याभूमि** स्त्री० (सं) वह भूमि जिसमें गुजारे लायक अन्न न हो।
**निरुपद्रव** वि०(सं) १–जिसमें कोई उपद्रव न हो। २–जो उपद्रव न करता हो। मंगलकारी।
**निरुपधि** वि० (सं) पवित्र। विशुद्ध। निश्छल।
**निरुपभोग** वि० (सं) जिसका कोई उपभोग न हो।
**निरुपम** वि० (सं) उपमा रहित। बेजोड़। जिसकी कोई उपमा न हो। अतुलनीय।
**निरुपयोग** वि० (सं) जो उपयोग या काम में न आवे व्यर्थ का।
**निरुपयोगी** वि० (सं) निरर्थक। बेकार।
**निरुपाधि** वि० (सं) दे० 'निरुपधि'।
**निरुपाय** वि० (सं) जो कोई उपाय न कर सके। जिसका कोई भी उपाय न हो सके।
**निरुपेक्ष** वि० (सं) उपेक्षारहित। जिसमें उपेक्षा न हो
**निरुवना** क्रि० (हि) सुलझना। कठिनता दूर होना।
**निरुवार** पु० (हि) १–छुटकारा। बचाव। २–सुल-

फाना । ते करने का काम । ३-निर्णय ।

**निरुवारना** *क्रि०* (हि) दे० 'निरवारना'।

**निरुष्मन्** *वि०* (सं) जो गरम न हो।

**निरूढ़** *वि०* (सं) १-उत्पन्न । २-प्रसिद्ध । विख्यात । ३-अविवाहित । पुं० (सं) एक प्रकार का पशुयान

**निरूढ़लक्षणा** *स्त्री०* (सं) लक्षणा का वह भेद जिसमें शब्द का नया माना हुआ अर्थ चल पड़ा हो।

**निरूढ़ा** *स्त्री०* (सं) दे० 'निरूढ़लक्षणा'। *वि०* (सं) कुंआरी । अविवाहिता ।

**निरूढ़ि** *स्त्री०* (सं) प्रसिद्ध ।

**निरूप** *वि०* (सं) १-रूपरहित । निराकार । कुरूप । बदशक्ल । पुं० (सं) वायु । देवता । आकाश ।

**निरूपक** *वि०* (सं) निरूपण करने वाला ।

**निरूपण** पुं० (सं) १-प्रकाश । २-निदर्शन । अन्वेषण। ३-सोच-समझकर किया हुआ निर्णय ।

**निरूपना** *क्रि०* (हि) निर्णय करना । निश्चित करना ठहरना ।

**निरूपित** *वि०* (सं) जिसकी विस्तृत विवेचना हो चुकी हो ।

**निरूष्मन्** *वि०* (सं) जो ठण्डा हो । शीतल ।

**निरूहण** पुं० (सं) स्थिरता । निश्चल ।

**निरेक** *वि०* (सं) परिपूर्ण । पूरा ।

**निरेखना** *क्रि०* (हि) निरखना । देखना ।

**निरै** पुं० (हि) नरक । निरय ।

**निरोग** *वि०* (हि) रोगरहित । स्वस्थ ।

**निरोगी** पु० (हि) वह व्यक्ति जिसे कोई रोग न हो

**निरोध** पुं० (सं) १-अवरोध । रुकावट । घेरा । २-नाश । ३-चित्त की वह अवस्था जिसमें निर्बीज समाधि प्राप्त होता है और सभी वृत्तियाँ लय हो जाती हैं । ४-किसी सदिग्ध व्यक्ति को इसलिए रोक रखना कि वह अनिष्ट न कर पाए। रुकावट । (डिटेन्शन, कस्टडी, रिस्ट्रिक्शन) ।

**निरोधक** वि० (सं) रोकने वाला । जो रोकता हो ।

**निरोधन** पुं० (सं) दे० 'निरोध' । १-रोक । रुकावट । २-पारे का छठा संस्कार (वैद्यक) ।

**निरोध-परिणाम** पुं० (सं) चित्त-वृत्ति की वह अवस्था जो व्युत्थान और निरोध के मध्य होती है ।

**निरोध-शिविर** पुं० (सं) नजर-बंदी शिविर । शंकास्पद या विरोधी समझे जाने वाले व्यक्तियों को सहस्रों की संख्या में एक ही स्थान पर नजरबन्द या कैदियों में रखने का स्थान (जैसे हिटलर ने जर्मनी में सन् १९३९ के महायुद्ध में खोल रखे थे) । (कन्सन्ट्रेशन कैम्प) ।

**निरोधा** *स्त्री०* (सं) वह व्यवस्था, जो किसी ऐसे स्थान से, जहा कोई संक्रामक रोग फैल रहा हो, आने वाले लोगों (या जहाजों) को कुछ समय तक अलग रख कर की जाती है जिससे रोग फैल न पाये । (क्वारेंटीन) । वह स्थान जहां ऐसे लोगों को अलग रखा जाता है ।

**निरोधाज्ञा** *स्त्री०*(सं) किसी अन्यायपूर्ण होते हुए कार्य को रोकने के लिये न्यायालय द्वारा दी गई आज्ञा । (इनजंकशन) ।

**निरोधी** वि० (सं) रुकावट करने वाला । निरोध करने वाला ।

**निर्ख** पुं० (फा) भाव । दर ।

**निर्ख-दरोगा** पुं० (फा) मुसलमानी शासन-काल में बाजार के भाव या दर की देखरेख करने के लिये नियुक्त दरोगा ।

**निर्ख-नामा** पु० (फा) मुसलमानों के शासन-काल की वह पंजी जिसमें प्रत्येक वस्तु की दर या भाव लिखे जाते हैं ।

**निर्खबंदी** *स्त्री०* (फा) किसी वस्तु का भाव निश्चित करने की क्रिया ।

**निर्गन्ध** वि० (सं) गंधरहित । जिसमें कोई गंध न हो।

**निर्गन्धन** पु० (सं) मारण ।

**निर्गंध-पुष्पी** *स्त्री०*(सं) सेम्हर का पेड़ ।

**निर्ग** पुं० (सं) देश ।

**निर्गत** वि० (सं( निकला हुआ । बाहर आया हुआ ।

**निर्गम** पुं० (सं) १-निकासी । बाहर निकलने की क्रिया या भाव । २-वह मार्ग जिसके द्वारा कोई वस्तु बाहर निकलती हो । निकास । मार्ग । द्वार । ३-आज्ञा आदि निकलना या प्रकाशित होना । ४-किसी वस्तु विशेषतः धन का किसी देश से अधिक मात्रा में बाहर निकलना । (ड्रेन) ।

**निर्गमन** पुं० (सं) १-निकलना । निकलने का कार्य । २-निःसरण । द्वार ।

**निर्गमना** *क्रि०* (हि) निकलना ।

**निर्गमितपूंजी** *स्त्री०* (सं) वह पूंजी जो किसी मील या कारखाने का काम बढ़ाने तथा आवश्यकता पूरी करने के लिए बाहर निकाली गई हो । (इश्यूड कैपिटल) ।

**निर्गवाक्ष** *वि०* (सं) जिसमें झरोखा या खिड़की न हो।

**निर्गुण** पुं० (सं) सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे । परमात्मा । *वि०*(सं) १-जो तीन गुणों से परे हो। २-जिसमें कोई गुण न हो। ३-जिसमें कोई डोरी न हो (धनुष) । ४-बिना नाम का ।

**निर्गुणिया** *वि०* (हि) निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने वाला ।

**निर्गुणी** *वि०* (हि) जिसमें कोई गुण न हो । मूर्ख ।

**निर्गृह** *वि०* (स) जिसके घर-द्वार न हो ।

**निर्ग्रंथ** *वि०* (सं) १-मूर्ख । बेवकूफ । २-साधु । विरक्त । वस्त्रहीन । ३-निर्धन । असहाय । पु० (स) १-बौद्ध-क्षपणक । दिगम्बर जैनी ।

**निर्ग्रंथक** *वि०* (सं) वस्त्ररहित । नंगा । दिगम्बर ।

**निर्घंट** पुं० (सं) शब्द या ग्रन्थ-सूची। फहरिस्त।
**निर्घट** पुं० (सं) वह बाजार या हाट जिस पर कोई राजकर न लगता हो। सबके लिए खुला बाजार।
**निर्घात** पुं० (सं) वायु के तेज झोंकों से उत्पन्न शब्द २-बिजली की कड़क। तूफान। ३-ध्वंश। नाश। ४-भूकम्प। ५-प्रहार।
**निर्घुरिणी** स्त्री० (सं) पानी का सोता।
**निर्घृण** वि० (सं) १-जिसे घृणा न हो। २-जिसे बुरे कामों से लज्जा या घृणा न हो। ३-निष्ठुर। संगदिल। ४-निर्लज्ज।
**निर्छल** वि० (हि) निश्छल। कपटरहित।
**निर्जन** वि० (सं) जहाँ कोई भी न हो। सुनसान। एकान्त। पुं० (सं) लाभ, ब्याज आदि के रूप में प्राप्त धन।
**निर्जनता** स्त्री०(स) एकान्तता। सूनापन। जनहीनता
**निर्जनीकरण** पुं० (सं) किसी बसे हुए स्थान को युद्ध आदि के कारण वहाँ बसे हुए लोगों को हटा देना किसी स्थान की आबादी हटा देना। (डीपॉपुलेशन)।
**निर्जर** वि० (स) जो कभी वृद्ध न हो। पुं०(सं) देवता अमृत।
**निर्जरा** स्त्री० (स) १-गिलोय। जैनमतानुसार संचित कर्मो का उपवास या तप द्वारा क्षय करना।
**निर्जल** वि० (सं) १-जल रहित। २-जिसमें जल पीने का निशान न हो। पुं० (सं) वह स्थान जो जलरहित हो।
**निर्जलाएकादशी** स्त्री० (सं) जेठ सुदी एकादशी जिस दिन हिन्दू लोग व्रत रखते है और पानी तक नहीं पीते।
**निर्जलीकरण** पुं०(सं) रसायनिक प्रक्रिया द्वारा वनस्पतियों आदि का जल निकाल कर सुखा देना। (डीहाइड्रेशन)।
**निर्जित** वि० (सं) जिसे जीत लिया गया हो।
**निर्जीव** वि० (सं) १-जीव रहित। बेजान। २-अशक्त उत्साहहीन।
**निर्ज्वर** वि० (स) जिसको ज्वर न हो।
**निर्झर** पुं० (सं) १-पानी का झरना। सोता। चश्मा २-सूर्य का एक घोड़ा।
**निर्झरिणी** स्त्री० (सं) नदी। सोता। झरना।
**निर्झरी** स्त्री० (सं) झरना। पानी का सोता। पुं०(स) पर्वत। पहाड़।
**निर्णय** पुं० (सं) १-औचित्य तथा अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक को उचित ठहराना। निश्चय। २-किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना। ३-फैसला। निबटारा (जजमेंट)।
**निर्णयन** पुं० (सं) निपटारा या फैसला करना।
**निर्णयोच्चार** पुं० (सं) निर्णय या फैसला सुनाना। (टु डिलीवर जजमेंट)।
**निर्णायक** पुं० (सं) निर्णय या फैसला करने वाला।
**निर्णायक-मत** पुं० (सं) किसी सभा, संस्था आदि में सभापति का वह मत (वोट) जो वह उस समय देता है जब जो किसी विषय पर, उपस्थित सदस्यों के मत दान के समय, मत बराबर होने पर फैसला न होता हो। (कास्टिंग वोट)।
**निर्णीत** वि० (सं) जिसका फैसला हो चुका हो।
**निर्णेता** पुं० (सं) निर्णायक। साक्षी।
**निर्त** पुं० (सं) नृत्य।
**निर्तक** पुं० (हि) नर्तक। भांड। नट।
**निर्तना** क्रि० (हि) नाचना।
**निर्दंत** वि० (सं) जिसके दाँत न हों।
**निर्दंभ** वि० (सं) जिसे अभिमान न हो।
**निर्दई** वि० (हि) दे० 'निर्दय'।
**निर्दय** वि० (सं) दयारहित। बेरहम। निष्ठुर।
**निर्दयता** पुं० (स) निष्ठुरता।
**निर्दर** स्त्री० (स) कन्दरा। गुफा।
**निर्दल** वि० (सं) १-जिसमें दल या पत्र न हो। २-जिसका कोई दल या जत्था न हो। ३-जो किसी दल में शामिल न हो। तटस्थ।
**निर्दलन** पुं० (सं) विदारण। भंग करना।
**निर्दहना** क्रि० (हि) जला देना।
**निर्दिग्ध** वि० (स) पुष्ट। मोटा-ताजा।
**निर्दिष्ट** वि० (सं) १-नियम किया हुआ। बताया हुआ। ठहराया हुआ। २-किसी को दिया या सौंपा हुआ। ३-निर्णीत। (एसाइन्ड)।
**निर्दिष्टि** स्त्री० (सं) १-किसी के लिये कोई वस्तु या उसका भाग निर्दिष्ट करने का काम। निर्धारण। २-वह वस्तु जिसे निर्दिष्ट किया गया हो। (एलोकेशन, एलाटमेंट, स्पेसिफिक)।
**निर्दूषण** वि० (हि) दे० 'निर्दोष'।
**निर्देश** पुं० (सं) १-किसी कार्य का आकार या विधि बतलाना। (डाइरेक्शन) २-आज्ञा। हुक्म। आदेश ३-उल्लेख। कथन। (रेफरेन्स)। ४-कोई वस्तु किसी को काम के लिए सौंपना। (एसाइन्मेंट)। ५-घृताम्न।
**निर्देशक** पुं० (सं) दे० 'निदेशक' (डाइरेक्टर)। वि० (सं) जो निर्देश करता हो।
**निर्देशन** पुं० (सं) निर्देश करने की क्रिया या भाव। अन्य स्थान पर आई हुई बात का उल्लेख। (रेफरेन्स)।
**निर्देशिका** स्त्री०(सं) दे० 'निदेशिका'। (डाइरेक्टरी)
**निर्देष्टा** पुं० (सं) निर्देश करने वाला।
**निर्द्वन्द्व** वि० (सं) सुखी।
**निर्दोष** वि० (सं) १-जिसमें कोई दोष न हो। बे-ऐब

२-निरपराध । निष्कलंक ।
**निर्दोषता** स्त्री० (सं) दोष विहीनता । ...लंकता ।
**निर्दोषी** वि० (सं) दे० निर्दोष ।
**निर्द्वंद** वि० (सं) जिसका विरोध करने वाला कोई न हो ।
**निर्धंधा** वि० (हि) जिसके हाथ में काम न हो । बेरोजगार ।
**निर्धन** वि० (सं) धनहीन । गरीब । दरिद्र । कंगाल ।
**निर्धनता** स्त्री० (सं) दरिद्रता । गरीबी । कंगाली ।
**निर्धातु** वि० (सं) वीर्यहीन । जिसका वीर्य क्षीण हो गया हो ।
**निर्धार** पु'० (सं) दे० 'निर्धारण' ।
**निर्धारक** पु'० (सं) वह जो किसी बात का निर्धारण करने वाला हो ।
**निर्धारण** पु'० (सं) १-ठहराना या निश्चित करना । २-न्याय में समान पदार्थों में से गुण आदि की समानता के विचार से पृथक् का वर्गीकरण । ३-यह निश्चित करना कि किसी का मूल्य या महत्व क्या है और उस पर क्या कर लगाना चाहिए । (एसेस्मेंट) ।
**निर्धारणीय** वि० (सं) कर लगाने योग्य । (एसेस्यबल)
**निर्धारना** क्रि० (हि) निश्चित करना । ठहराना ।
**निर्धारित** वि० (सं) निश्चित किया हुआ ।
**निर्धारिती** पु'०(हि) वह जिसके विषय में यह निश्चय किया जाय कि उससे कितना कर लिया जाय । (ऐसेसी) । करदाता ।
**निर्धूत** वि० (सं) १-धोया हुआ । २-खंडित । ३-जिसका त्याग कर दिया गया हो ।
**निर्धूम** वि० (सं) जहाँ धूँआ न हो । धूमरहित ।
**निर्धूम-विस्फोट** पु० (सं) एक प्रकार का विस्फोटक जिसमें धूँआ नहीं होता । 'कर्डाइट' ।
**निर्धौत** वि० (हि) साफ किया हुआ । धुला हुआ ।
**निर्नर** वि० (सं) जिसको मनुष्यों ने त्याग दिया हो । नर-रहित ।
**निर्निमेष** क्रि० वि० (सं) एकटक । बिना पलक गिराये । वि० (सं) जो पलक न गिरावे या जिसमें पलक न गिरे ।
**निर्पक्ष** वि० (हि) दे० 'निष्पक्ष' ।
**निर्फल** वि० (हि) दे० 'निष्फल' ।
**निर्बंध** पु'० (सं) अड़चन । रुकावट । हठ । आग्रह । (रेस्ट्रिकशन) । वि० (सं) बन्धन-रहित ।
**निर्बंधन** पु'० (सं) दे० 'निर्बंध' । २-शर्तें लगाकर किसी व्यक्ति आदि को नियन्त्रित रखना । (रेस्ट्रिकशन) ।
**निर्बंधित** वि० (सं) जिसमें बाधा डाली गई हो । (रेस्ट्रिक्टेड) ।
**निर्बर्हण** पु'० (सं) दे० 'निर्वहण' ।
**निर्बल** वि० (सं) कमजोर । बलहीन ।
**निर्बलता** स्त्री० (सं) कमजोरी । बलहीनता ।
**निर्बहना** क्रि० (हि) १-अलग होना । २-पार होना ३-निभना ।
**निर्बाध** वि० (सं) १-बाधारहित । २-निरुपद्रव । ३-निर्जन ।
**निर्बाधित** वि० (सं) बाधारहित ।
**निर्बुद्धि** वि० (सं) मूर्ख । बेवकूफ, बुद्धिहीन ।
**निर्बोध** वि० (सं) अनजान । जिसे अच्छे बुरे का बोध न हो । अज्ञान ।
**निर्भय** वि० (सं) निडर । निरापद् ।
**निर्भयता** स्त्री० (सं) निडरपन । निडर होने की अवस्था या भाव ।
**निर्भर** वि० (सं) १-पूर्ण । भरा हुआ । २-बहुत अधिक । तीव्र । गाढ़ । ३-अवलम्बित ।
**निर्भीक** वि० (सं) दे० 'निर्भय' ।
**निर्भुज** वि० (सं) जिसका एक छोर मुड़ा हुआ हो ।
**निर्भेद्य** वि० (सं) विभेद करने योग्य ।
**निर्भ्रम** वि० (सं) जिसमें कोई सन्देह न हो । भ्रम-रहित । अव्य० (सं) बे-धड़क । बे-खटके । बिना सङ्कोच के ।
**निर्भ्रान्त** वि० (सं) दे० 'निर्भ्रम' ।
**निर्मक्षिक** वि० (सं) मक्खियों तक से रहित । एकाकी एकान्त ।
**निर्मज्ज** वि० (सं) मज्जारहित ।
**निर्मद** वि० (सं) जो नशे में न हो ।
**निर्मना** क्रि० (सं) उत्पन्न करना । बनाना ।
**निर्मन्यु** वि० (सं) सांसारिक सम्बन्धों से मुक्त । निस्वार्थी । क्रोधरहित ।
**निर्मल** वि० (सं) १-जिसमें कोई दोष या मल न हो । शुद्ध । पवित्र । २-साफ । स्वच्छ । पु'० (सं) अभ्रक निर्मली ।
**निर्मलता** स्त्री० (स) सफाई । स्वच्छता । शुद्धता । पवित्रता ।
**निर्मला** पु'० (हि) एक नानकपन्थी सम्प्रदाय या इस सम्प्रदाय का कोई व्यक्ति ।
**निर्मली** स्त्री० (सं) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल गदला पानी साफ करने तथा औषधि के रूप में काम में लाया जाता है ।
**निर्मशक** वि० (स) मच्छर-रहित ।
**निर्मा** स्त्री० (सं) १-दाम । मूल्य । २-परिमाण ।
**निर्माण** पु० (सं) १-किसी वस्तु को बनाना । रचना बनाने का काम । रूप । संसार । (फोर्मेशन) । २-वह वस्तु जो बन कर तैयार हुई हो । (मेन्यूफैक्चर) भवन । मापन ।
**निर्माण-विद्या** स्त्री० (सं) वास्तु-विद्या । मकान, पुल

आदि बनाने की विद्या। (इञ्जीनियरिङ्ग)।

**निर्माणी** स्त्री० (सं) वह कारखाना या निर्माण-शाला जिसमें मशीनों या यन्त्रों की सहायता से कपड़ा आदि तैयार किया जाता है। (मिल)। (फैक्टरी)।

**निर्माणी-अधिनियम** पुं० (सं) कारखाने या मिल सम्बन्धी कानून या विधि। (फैक्टरी-ऐक्ट)।

**निर्माता** पुं० (सं) निर्माण करने वाला। बनाने वाला (मैन्यूफेक्चरर, प्रोड्यूसर)।

**निर्मात्रिक** वि० (सं) बिना मात्रा का। जिसमें मात्रा न हो।

**निर्मान** वि० (हिं) १-अपार। अत्यधिक। २-अभिमान-रहित।

**निर्माना** क्रि० (हिं) रचना। बनाना। उत्पन्न करना।

**निर्मायल** पुं० (हिं) दे० 'निर्माल्य'।

**निर्मार्जन** पुं० (सं) साफ करना। धोना।

**निर्माल्य** स्त्री० (सं) किसी देवता पर चढ़ाया हुआ पदार्थ। देवार्पित वस्तु।

**निर्मित** वि० (सं) बनाया हुआ। रचित। (मेन्युफैक्चर्ड)।

**निर्मिति** स्त्री० (सं) दे० 'निर्माण'।

**निर्मुक्त** वि० (सं) १-जो मुक्त हो गया हो। २-बन्धन-रहित। पुं० (सं) अभी हाल ही में केंचुली छोड़ा हुआ सर्प।

**निर्मुक्ति** स्त्री० (सं) १-छुटकारा। मुक्ति। २-अपराधियों या राजनैतिक कैदियों को क्षमा करके छोड़ देना। (ऐम्नेस्टी)। ३-मोक्ष।

**निर्मूल** वि० (सं) १-बिना मूल या जड़ का। २-जड़-सहित उखाड़ा हुआ। ३-निराधार। ४-जो मूल-सहित नष्ट होगया हो।

**निर्मुंड** पुं० (सं) १-सूर्य। २-गुण्डा। ३-पैंठ या बाजार।

**निर्मूलन** पुं० (सं) निर्मूल करना या होना। विनाश।

**निर्मेघ** वि० (सं) बिना बादलों का। मेघरहित।

**निर्मेध** पुं० (सं) बुद्धिहीन। मूर्ख।

**निर्मोक** पुं० (सं) १-सर्प की केंचुली। २-शरीर की ऊपरी खाल। कवच। ३-आकाश। ४-सावर्णि मुनि के एक पुत्र।

**निर्मोक्ता** वि० (सं) मुक्त करने वाला।

**निर्मोक्ष** पुं० (सं) १-पूर्ण मोक्ष। २-त्याग।

**निर्मोल** वि० (हिं) दे० 'अनमोल'।

**निर्मोह** वि० (सं) १-मोह या ममता रहित। २-निष्ठुर। बेदर्द। पुं० (सं) रैवत मनु का एक पुत्र।

**निर्मोहिनी** वि० (हिं) निर्दय। कठोर हृदय।

**निर्मोहिया** वि० (हिं) दे० 'निर्मोहिनी'।

**निर्मोही** वि० (हिं) दे० 'निर्मोह'।

**निर्यन्त्रण** वि० (सं) १-जो वश में न रह सके। उद्दंड।

**निर्याण** पुं० (सं) १-बाहर निकलना। २-यात्रा। प्रस्थान (विशेषतः सेना का)। ३-अदृश्य होना। ४-मृत्यु। ५-पशुओं के पैर में बाँधने की रस्सी। ६-हाथी की आँख का बाहरी कोना।

**निर्यात** वि० (सं) निकाला हुआ। निर्गत। पुं० (सं) १-बाहर भेजना या जाना। २-देश से बाहर भेजा जाने वाला माल। (एक्सपोर्ट)।

**निर्यातक** वि० (सं) निर्यात करने वाला। पुं० (सं) देश से बाहर बिक्री के लिये माल भेजने वाला व्यापारी या व्यक्ति। (एक्सपोर्टर)।

**निर्यातकर** पुं० (सं) देश से बाहर भेजे जाने वाले माल पर लगाया गया कर। (एक्सपोर्ट ड्यूटी)।

**निर्यातन** पुं० (सं) १-प्रतिशोध। बदला चुकाना। प्रतिकार। २-मार डालना। किसी का ऋण चुकाना।

**निर्यातशुल्क** पुं० (सं) दे० 'निर्यातकर'।

**निर्याता** पुं० (स) किसान। कृषक। बाहर माल भेजने वाला।

**निर्याति** स्त्री० (सं) रवानगी। कूच। प्रस्थान।

**निर्याम** पु० (सं) नाविक। मल्लाह।

**निर्यास** पुं० (सं) १-वृक्षों या पौधों में से निकलने वाला रस। गोंद। राल। २-कोई गाढ़ी तरल वस्तु काढ़ा। क्वाथ। सार। ३-झरना या बहना।

**निर्योग** पुं० (सं) सजावट। अलंकार।

**निर्योग्यता** स्त्री० (सं) असमर्थता। अयोग्यता। (डिसएबिलिटी)।

**निर्लज्ज** वि० (सं) बेशर्म। बेहया। जिसे लज्जा न हो।

**निर्लिंग** वि० (सं) जिसमें कोई निश्चित चिह्न न हो।

**निर्लिप्त** वि० (सं) जो राग द्वेष आदि किसी विषय में आसक्त न हो।

**निर्लेखन** पुं० (सं) १-किसी वस्तु पर जमे हुए मैल को खुरचना। २-खुरचने का औजार।

**निर्लेप** वि० (सं) दे० 'निर्लिप्त'।

**निर्लोभ** वि० (सं) जिसे लालच न हो। सन्तोषी।

**निर्वंश** वि० (सं) जिसके वंश को आगे चलाने वाला कोई न हो। जिसका वंश नष्ट हो गया हो।

**निर्वक्तव्य** वि०(सं) दे० 'निर्वचनीय'।

**निर्वचन** पुं० (सं) १-किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना या बताना। (इन्टरप्रीटेशन)। २-निरुक्ति। उच्चारण। ३-उक्ति। कहावत। वि० (सं) मौन। चुप। निर्दोष।

**निर्वचनीय** वि० (सं) १-जो समझाई जा सके। २-जिसका निर्वचन हो सके।

**निर्वसन** वि० (सं) नग्न। वस्त्रहीन।

**निर्वसीयत** स्त्री० (हिं) जिसने वसीयत न लिखा हो। इच्छापत्रहीन। (इन्टैस्टेट)।

**निर्वसीयता** स्त्री० (हिं) इच्छापत्रहीनत्व। (इन्टैस्टेसी)

**निर्वसु** वि० (सं) दरिद्र। गरीब।

**निर्वहण** पुं० (सं) १-निर्वाह। निबाहना। गुजर। २-समाप्ति।
**निर्वहण-संधि** स्त्री० (सं) नाटक में प्रयुक्त होने वाली पांच सन्धियों में से एक।
**निर्वाक्** वि० (सं) चुप। मौन।
**निर्वाक्य** वि० (सं) गूंगा। जो बोल न सकता हो।
**निर्वाचक** पुं० (सं) जो निर्वाचन करे या चुने। चुनने वाला। जिसे मताधिकार प्राप्त हो। (इलेक्टर)।
**निर्वाचक-गण** पुं०(सं) निर्वाचकों का वर्ग या समूह निर्वाचन वर्ग। (इलक्टोरेट, इलेक्टोरल कॉलेज)
**निर्वाचक-नामावली** स्त्री०(सं) वह सूची जिसमें निर्वाचकों के नाम पते आदि लिखे रहते हैं। (इलेक्टोरल रोल)।
**निर्वाचक-मंडल** पुं० (सं) मतदाताओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों का वह समूह जो फिर लोक-सभा आदि में निर्दिष्ट संख्यक सदस्यों का अप्रत्यक्ष निर्वाचन करती है। (इलेक्टोरल कॉलिज, इलेक्टोरल-डिस्ट्रिक्ट)।
**निर्वाचक-मतपत्र** पुं० (सं) निर्वाचकों द्वारा किसी के पक्ष में डालने का शलाकापत्र। (इलेक्टोरल बैलेट)।
**निर्वाचक-वर्ग** पुं० (सं) दे० 'निर्वाचन-गण'।
**निर्वाचक-संघ** पुं० (सं) निर्वाचक-गण। (इलेक्टोरेट)
**निर्वाचक-समूह** पुं०(सं) दे० 'निर्वाचक-गण'। (इलेक्टोरेट)।
**निर्वाचक-सूची** स्त्री० (सं) दे० 'निर्वाचक-नामावली' (इलेक्टोरल रोल)।
**निर्वाचन** पुं०(सं) शलाका-पत्र या वोट द्वारा चुनाव। वरण। (इलेक्शन)।
**निर्वाचन-अधिकरण** पु० (सं) वह अधिकरण या न्यायालय जिसमें निर्वाचन से सम्बन्धित झगड़ों या मामलों का निर्णय होता है। (इलेक्शन-ट्रिब्यूनल)।
**निर्वाचन-अधिकार** पुं० (सं) निर्वाचन मताधिकार। निर्वाचन अधिकारी को दिये गए निर्वाचन व्यवस्था सम्बन्धी अधिकार। निर्वाचन सम्बन्धी स्वत्व। (इलेक्टोरल राइट)।
**निर्वाचन-अधिकारिक** पुं० (सं) मतदान की देखरेख करने वाला पदाधिकारी। (पोलिंग ऑफीसर)।
**निर्वाचन-अधिकारी** पु० (सं) चुनाव अधिकारी। किसी निर्वाचन केन्द्र में मतदान आदि की व्यवस्था तथा मतों की गणना करवाने के बाद चुनाव का परिणाम प्रकट करने के लिए नियुक्त अधिकारी। (रिटर्निंग ऑफीसर)।
**निर्वाचन-अधिष्ठान** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ मतदाता मतदान करते हैं। (पोलिंग-स्टेशन)।
**निर्वाचन-अभियान** पुं० (सं) चुनाव में मतदाताओं को अपने पक्ष के उम्मीदवार को मत देने का अभियान। (इलेक्शन कम्पेन)।
**निर्वाचन-आयुक्त** पुं० (सं) राज्याज्ञा से चुनाव सम्बन्धी मामलों के लिए अधिकारी नियुक्त करने वाला मुख्य पदाधिकारी। (इलेक्शन कमिश्नर)।
**निर्वाचन-केन्द्राध्यक्ष** पुं० (सं) निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव की निगरानी करने वाला अधिकारी। (प्रिजाइडिंग ऑफीसर)।
**निर्वाचन-क्षेत्र** पुं० (सं) वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। (इलेक्टोरल कोन्स्टीट्यूएन्सी)।
**निर्वाचन-घटक** पुं०(सं) चुनाव लड़ने वाले की ओर से प्रतिनिधि रूप में नियुक्त व्यक्ति। (पोलिंग-एजेन्ट)
**निर्वाचन-मताधिकार** पुं० (सं) अपने मत या वोट का स्वतंत्रता पूर्वक बिना किसी दबाव के चुनाव करने का अधिकार। (इलेक्टोरल फ्रैंचाइज़)।
**निर्वाचन-विभाग** पुं० (सं) वह विभाग जिसकी देखरेख में समस्त चुनाव का कार्य हो। (इलेक्टोरल-डिवीज़न)।
**निर्वाचित** वि० (सं) जिसका मतदान द्वारा चुनाव किया गया हो। (इलेक्टेड)।
**निर्वाचित-शासन** पुं० (सं) प्रजासत्तात्मक राज्य-शासन। (इलेक्टेड-गवर्नमेंट)।
**निर्वाच्य** वि० (सं) जो कहने योग्य न हो। निर्दोष।
**निर्वाण** वि० (सं) १-अस्त। बुझा हुआ (दीपक)। २-शान्त। ३-मृत। निश्चल। शून्यता को प्राप्त। मुक्त। पुं० (सं) १-ठण्डा होना। बुझना। २-डूबना। अस्त। ३-शान्ति। ४-मुक्ति। मोक्ष।
**निर्वात** वि० (सं) १-जहाँ हवा का झोंका न लगे। वायुरहित। २-जो चञ्चल न हो। स्थिर।
**निर्वार्य** वि० (सं) जिसका निवारण न हो सके।
**निर्वाह** पुं० (सं) १-निबाह। किसी परम्परा का चलता रहना। २-किसी कार्य को पूरा करना। निष्पादन। ३-समाप्ति। ४-पालन (प्रतिज्ञा आदि)। पूरा करना।
**निर्वाहक** वि० (सं) १-निर्वाह करने वाला। निभाने वाला। २-किसी आज्ञा का पालन करने वाला। (एक्जीक्यूटर)।
**निर्वाहण** पुं० (सं) १-निभाना। पूरा करना। २-कोई ऐसी वस्तु देश में आना जिसके आयात पर प्रतिबन्ध लगा हो।
**निर्वाहना** क्रि० (हि) निर्वाह करना।
**निर्वाह-भृति** स्त्री० (सं) मजदूरी या वेतन जिस पर मजदूर या उसका परिवार सुख से निर्वाह कर सके। (लिविंग वेज)।
**निर्वाह-व्यय** पु० (सं) भोजन, वस्त्रादि जीवन निर्वाह

की वस्तुओं पर खर्च होने वाला व्यय। (कॉस्ट आफ मेण्टेनेन्स)।
**निर्विकल्प** वि० (सं) १-जिसमें परिवर्तन या भेद न हो। (एब्सोल्यूट)। २-स्थिर। निश्चित। पुं० (सं) वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय में भेद नहीं रह जाता और दोनों एक हो जाते हैं।
**निर्विकल्पक** व० (सं) दे० 'निर्विकल्प'।
**निर्विकल्प-समाधि** स्त्री० (सं) वह समाधि जिसमें ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता।
**निर्विकार** वि० (सं) विकार-रहित। उदासीन। पुं० (सं) परब्रह्म।
**निर्विकास** वि० (सं) अविकसित। जो खिला न हो।
**निर्विघ्न** वि० (सं) जिसमें बाधा या विघ्न न हो। अव्य० (सं) बिना बाधा के।
**निर्विचार** वि० (सं) बिना विचार का। विचार-रहित पुं० (सं) समाधि का एक योग।
**निर्विण्ण** वि० (सं) विरक्त। नम्र। निश्चित। ज्ञात खिन्न।
**निर्विद्य** वि० (सं) विद्याहीन। जो पढ़ा लिखा न हो
**निर्विभाग** वि० (सं) जिसके पास कोई विभाग या महकमा न हो। (विदाउट पोर्टफोलियो)।
**निर्विभाग-मंत्री** पुं० (सं) मन्त्री या सचिव जिसके आधीन कोई विभाग नहीं होता। (मिनिस्टर विदाउट पोर्टफोलियो)।
**निर्विवाद** वि० (सं) जिसमें कोई झगड़े की बात न हो
**निर्विवेक** वि० (सं) विवेकशून्य।
**निर्विशेष** वि० (सं) जो किसी से भेद-भाव न करे। समान। तुल्य। पुं० (सं) परमात्मा। परब्रह्म।
**निर्विषी** स्त्री० (सं) एक प्रकार की विष-नाशक घास। अविषा।
**निर्वीज** वि० (सं) १-जिसमें बीज न हो। २-अकारण ३-नपुंसक।
**निर्वीज समाधि** स्त्री० (सं) समाधि की वह अवस्था जब चित्त का निरोध करते-करते उसका अवलम्बन भी विलीन होजाता है और मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है। (योग)।
**निर्वीजा** स्त्री० (सं) किशमिश। (मेवा)।
**निर्वीरा** वि० (सं) जिसके पति या पुत्र न हो।
**निर्वीर्य** वि० (सं) बल-रहित। अशक्त। नपुंसक। वीर्यहीन
**निर्वृत** वि० (सं) खुश। प्रसन्न।
**निर्वृति** स्त्री० (सं) १-मृत्यु। २-मोक्ष। ३-शान्ति। आनन्द।
**निर्वृत्त** वि० (सं) जो पूरा होगया हो।
**निर्वृत्ति** स्त्री० (सं) मोक्ष। निष्पत्ति।
**निर्वेग** वि० (सं) शान्त। स्थिर। गति या वेगरहित।
**निर्वेतन** वि० (सं) अवैतनिक। जो वेतन न लेता हो। अव्य० (सं) बिना तनखा या वेतन लिए।
**निर्वेद** पुं० (सं) १-स्वयं का अपमान। वैराग्य। २-खेद। दुःख। वि० (सं) नास्तिक।
**निर्वेष्टन** वि० (सं) बिना ढकने का। वेष्टन-रहित। पुं० (सं) जुलाहों की सूत लपेटने की ढरकी या नली
**निर्वैर** वि० (सं) द्वेष-रहित। जिसमें वैर न हो।
**निर्व्याज** वि० (सं) १-ईमानदार। सच्चा। २-छल-शून्य। ३-बाधारहित।
**निर्व्याधि** वि० (सं) रोग-व्याधि से मुक्त।
**निर्व्रण** वि०(सं) बिना घाव का। घावरहित।
**निर्हरण** पुं० (सं) १-शव को जलाने के लिये ले जाना। २-नाश करना। ३-जलाना।
**निर्हारक** पुं० (सं) वह जो शव को जलाने के लिये ले जाता है।
**निर्हेतु** वि० (सं) जिसका कोई कारण न हो।
**निलंब-खाता** पुं० (सं) वह खाता जिसमें दी गई रकम अस्थाई रूप से डाल दी जाती है और हिसाब प्राप्त होने पर ठीक खाते में डाल दी जाती है। उचित खाता। (सस्पेंस अकाउण्ट)।
**निलंबन** पुं० (सं) १-किसी कर्मचारी के कोई अपराध करने पर उसे तब तक पद से हटा देना जब तक उसके अपराध की छानबीन समाप्त न हो जाय। २-अधिवेशन कार्य आदि को कुछ समय के लिये उठा रखना। ३-अनुलम्बन। (सस्पेंशन)।
**निलंबित** वि०(सं) १-वह (कर्मचारी) जिसे कोई अपराध करने पर उसके अन्तिम निर्णय होने तक पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल। २-कुछ समय के लिये रोका हुआ। (सस्पेंड)।
**निलज** वि० (हि) दे० 'निर्लज्ज'।
**निलजता** स्त्री० (हि) निर्लज्जता। बेशर्मी।
**निलजी** वि०, स्त्री० (हि) बेशर्म।
**निलज्ज** वि० (हि) दे० 'निर्लज्ज'।
**निलय** पुं० (सं) १-घर। मकान। २-मांद। घोंसला। ३-सब नष्ट होजाना। लोप।
**निलयन** पुं० (सं) १-आवास-स्थान। घर। २-किसी जगह बस जाना। ३-उतरना। बाहर जाना।
**निलहा** वि० (हि) नील वाला। नील का व्यापार करने वाला।
**निलाम** पुं० (हि) दे० 'नीलाम'।
**निलीन** वि० (सं) १-अत्यधिक लीन। २-पिघला हुआ ३-नष्ट।
**निवना** क्रि० (हि) झुकना। नवना।
**निवर्तक** वि० (स) १-वापिस लाने वाला। २-हटा देने वाला। पकड़ने वाला। ३-लौटाकर लाने वाला।
**निवर्तन** पुं० (सं) वापसी। २-लौटाना। ३-विरक्त। ४-पश्चात्ताप।
**निवर्ती** वि० (सं) १-जो पीछे की ओर हट आया हो।

२-जो भाग आया हो।

**निवर्हण** पुं०(सं) पार होना। पालन होना। निभना।

**निवसना** क्रि० (हि) रहना। आवास करना।

**निवह** पुं० (सं) १-समूह। समुदाय। २-फलित ज्योतिष में सात पवनों में से एक।

**निवाई** वि० (हि) नया। नवीन। अनोखा।

**निवाज** वि० (फा) कृपा या अनुग्रह करने वाला।

**निवाजना** क्रि० (हि) कृपा करना।

**निवाजिश** स्त्री० हि) कृपा। दया।

**निवाड़** स्त्री० (हि) दे० 'निवार'।

**निवाड़ा** पुं० (दे०) १-छोटी नाव। २-नाव में बैठकर करने की एक जलक्रीड़ा।

**निवाड़ी** स्त्री० (दे०) एक प्रकार जूही की जाति का फूल या उसका पौधा।

**निवान** पुं० (हि) नीची भूमि जहां कीचड़ या पानी भरा रहता है। जलाशय। तालाब।

**निवाना** क्रि० (हि) झुकाना। नीचे की ओर करना।

**निवाप** पुं० (सं) १-बीज। दाना। २-दान। भेंट। पितरों के उद्देश्य से किसी वस्तु का दान।

**निवार** स्त्री० (हि) मोटे सूत की बनी हुई पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। २-कुएँ की नींव में बैठाने की लकड़ी जिस पर चिनाई की जाती है। जाखन। जमवट। पुं० (सं) १-रोक। बचाव। निषेधकरण। २-तिन्नी का धान। ३-एक प्रकार की मोटी मूली।

**निवारक** वि०(सं) १-रोकने वाला। २-दूर करने वाला।

**निवारक-निरोध अधिनियम** पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके अनुसार किसी समाज विरोधी कार्य करने वाले व्यक्ति का निरोध किया जा सके। (प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट)।

**निवारण** पुं० (सं) १-रोकने की क्रिया। २-हटाना। दूर करना। ३-निवृत्ति।

**निवारन** पुं० (हि) दे० 'निवारण'।

**निवारना** क्रि० (हि) १-रोकना। २-हटाना। ३-दूर करना।

**निवारी** स्त्री० (हि) दे० 'निवाड़ी'।

**निवाला** पुं० (फा) कौर। ग्रास। लुकमा।

**निवास** पुं० (सं) १-रहना। रिहाइश। २-रहने का स्थान। घर। मकान। ३-वस्त्र। कपड़ा।

**निवासन** पुं० (सं) गृह। घर। कुछ समय तक के लिये ठहराना।

**निवासी** स्त्री० (सं) रहने वाला। बसने वाला। वासी।

**निविड़** वि० (सं) १-घना। घोर। २-गहरा। ३-चपटी या टेढ़ी नाक वाला।

**निविष्ट** वि० (सं) १-एकाग्र। २-लपेटा हुआ। ३-स्थापित ४-बंधा हुआ। घुसा हुआ। ५-बही लिखा या दर्ज किया हुआ। (एन्टर्ड)।

**निविष्टि** स्त्री० (सं) १-बही खाते में दर्ज करने का काम। २-इस प्रकार चढ़ाई हुई रकम। ३-प्रवेश। (एन्ट्री)।

**निवीत** पुं० (सं) चादर। ओढ़ने का कपड़ा।

**निवृत** वि० (सं) घेरा हुआ। लपेटा हुआ।

**निवृत्त** वि० (सं) १-छूटा हुआ। जो अलग हो गया हो। विरक्त। ३-जो छुट्टी पा गया हो। खाली। ४-जिसने काम से अवकाश ग्रहण कर लिया हो। (रिटायर्ड)।

**निवृत्तात्मा** वि० (सं) विषयों से विरत।

**निवृत्ति** स्त्री० (सं) १-छुटकारा। मुक्ति। मोक्ष। २-सेवा से अवकाश ग्रहण करना। (रिटायरमेंट)।

**निवृत्ति-पूर्व छुट्टी** स्त्री० (हि) सेवा से अवकाश ग्रहण करने से ठीक पहले ली हुई छुट्टी। (लीव बिफोर रिटायरमेंट)।

**निवृत्ति-वेतन** स्त्री० (सं) सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद दिया जाने वाला वेतन। (पेन्शन)।

**निवेद** पुं० (हि) दे० 'नैवेद्य'।

**निवेदक** पुं० (सं) निवेदन करने वाला।

**निवेदन** पुं० (सं) १-नम्रतापूर्वक कुछ कहना। प्रार्थना। विनती। २-समर्पण।

**निवेदना** क्रि० (हि) १-प्रार्थना करना। २-नैवेद्य चढ़ाना। ३-अर्पित या भेंट करना।

**निवेदित** वि०(सं) अर्पित किया हुआ। निवेदन किया हुआ।

**निवेरना** क्रि० (हि) १-फैसला करना। समाप्त करना २-छांटना। ३-दूर करना। हटाना।

**निवेरा** वि० (हि) १-चुना हुआ। २-नया। नवीन। अनोखा।

**निवेश** पुं० (सं) १-डेरा। खेमा। सेना का पड़ाव २-प्रवेश। ३-विवाह। ४-स्थापन। ५-किसी विधि या अधिनियम में पड़ने वाली कठिनाई को दूर करने के लिये निकला हुआ मार्ग या शर्त। (प्रोवीज़न)।

**निवेशन** पुं० (सं) १-प्रवेश। द्वार। २-डेरा। पड़ाव ३-विवाह। ४-घर। डेरा। ५-नगर। ६-घोंसला।

**निवेष्ट** पुं० (सं) ढकने या लपेटने का कपड़ा या चादर।

**निवेष्टन** पुं० (सं) ढकना। चादर।

**निश्** स्त्री० (सं) १-रात्री। रात। २-हल्दी।

**निशचर** पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।

**निशमन** पुं० (सं) देखना। सुनना।

**निशांत** पुं० (सं) रात का अन्त। तड़का। प्रभात।

**निशांध** वि० (सं) जिसको रात में न सूझे। रतौंधी रोग से पीड़ित।

निशा स्त्री० (सं) रात । रजनी । हल्दी ।
निशाकर पुं० (सं) १-चन्द्रमा । शशि । २-मुर्गा । ३-महादेव ।
निशाखातिर स्त्री० (हि) तसल्ली । दिलजमई ।
निशाख्या स्त्री० (सं) हल्दी ।
निशागृह पुं० (सं) सोने का कमरा । शयनागार ।
निशाचर पुं० (सं) १-राक्षस । २-शृगाल । उल्लू । सर्प । ३-भूत-प्रेत । ४-चोर ।
निशाचर-पति पुं० (सं) १-महादेव । २-रावण ।
निशाचर-मुख पुं० (सं) संध्याकाल ।
निशाचरी स्त्री० (सं) १-राक्षसी । २-अभिसारिका । नायका । वेश्या । ३-कुलटा । व्यभिचारिणी ।
निशाचर्म पुं० (सं) अंधेरा । अंधकार ।
निशाचारी पुं० (सं) दे० 'निशाचर' ।
निशाजल पुं० (सं) ओस । कुहरा । पाला ।
निशाट पुं० (सं) १-उल्लू । २-निशाचर ।
निशाटन पुं० (सं) १-रात के समय भ्रमण । २-उल्लू ।
निशात वि० (सं) तेज किया हुआ । चमकाया हुआ ।
निशाद वि० (सं) केवल रात को ही खाने वाला ।
निशादि पुं० (सं) संध्याकाल ।
निशावर्शी पुं० (सं) उल्लू ।
निशाधीश पुं० (सं) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।
निशान पुं० (फा) १-ऐसा चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय । २-लक्ष्य जिस पर कोई अस्त्र चलाया जाय । ३-हस्ताक्षर के स्थान पर अशिक्षित लोगों द्वारा लगाया गया चिह्न । ४-पता । ठिकाना । ५-शरीर पर बना हुआ कोई चिह्न । ६-यादगार । ७-वह चिह्न या जो किसी विशेष कार्य या पहचान के लिये नियत किया जाय । ८-समुद्र या पहाड़ पर मार्ग-दर्शन के लिये बना हुआ स्थान । ९-ध्वजा । झण्डा ।
निशानकोना पुं० (हिं) उत्तर और पूर्व का कोण ।
निशानची पुं० (फा) वह व्यक्ति जो किसी राजा के दल या सेना के आगे झण्डा लेकर चलता हो । निशान-बरदार ।
निशानदेही स्त्री० (फा) आसामी को सम्मन आदि तालीम करवाने तथा उसका पता बताने का काम ।
निशानपट्टी स्त्री० (फा) चेहरे की बनावट आदि का वर्णन । हुलिया ।
निशान-बरदार पुं० (फा) दे० 'निशानची' ।
निशाना पुं० (फा) १-जिस पर अस्त्र आदि का वार किया जाय । लक्ष्य । २-किसी को लक्ष्य बना कर उस पर वार करना । ३-वह जिसे लक्ष्य बना कर बात कही जाय ।
निशानाथ पुं० (सं) चन्द्रमा ।
निशानी स्त्री० (फा) १-यादगार । स्मृति चिह्न । २-निशान । पहचान ।
निशापति पुं० (सं) चन्द्रमा ।
निशापुत्र पुं० (सं) नक्षत्र आदि आकाशीय पिंड ।
निशामणि पुं० (सं) चन्द्रमा ।
निशारोध पुं० (सं) संकट काल में सूर्यास्त या निर्धारित समय तक नगरवासियों पर घर से बाहर निकलने पर प्रतिबन्ध जिसको तोड़ने पर दण्ड दिया जाता है । (कर्फ्यू) ।
निशारोधादेश पुं० (सं) सूर्यास्त के बाद नियत समय तक बाहर न निकलने की सरकारी आज्ञा । (कर्फ्यू-आॅर्डर) ।
निशावन पुं० (सं) सन का पौधा ।
निशावसान पुं० (सं) प्रातःकाल । रात्रि का अवसान ।
निशावेदी पुं० (सं) कुक्कट । मुर्गा ।
निशास्ता पुं० (फा) गेहूँ का जमाया हुआ गूदा । कलफ । मांडी ।
निशाहस पुं० (सं) कुमोदनी ।
निशाह्वा स्त्री० (सं) हल्दी ।
निशि स्त्री० (सं) रात । रजनी । हल्दी ।
निशिकर पुं० (सं) चन्द्रमा । शशि ।
निशिचर पुं० (सं) दे० 'निशाचर' ।
निशिचर-राज पुं० (सं) राक्षसों का राजा । विभीषण ।
निशित वि० (सं) तेज । तीखा । सान पर चढ़ा हुआ पुं० (सं) लोहा ।
निशिता स्त्री० (सं) रात्रि । रात ।
निशिदिन क्रि० वि० (सं) रात-दिन । सदा । हमेशा ।
निशिनाथ पुं० (सं) दे० 'निशानाथ' ।
निशिनायक पुं० (सं) दे० 'निशानाथ' ।
निशिपति पुं० (सं) दे० 'निशापति' ।
निशिपाल पुं० (सं) १-चन्द्रमा । २-एक छन्द ।
निशिपालक पुं० (सं) १-प्रहरी । द्वारपाल । रात को पहरा देने वाला । २-एक प्रकार का छन्द ।
निशिवासर क्रि० वि० (सं) रात-दिन । सर्वदा । हमेशा ।
निशीथ पुं० (सं) रात । आधी रात ।
निशीथिनी स्त्री० (सं) रात्रि । रात ।
निशीथिनीश पुं० (सं) चन्द्रमा ।
निशुंभ पुं० (सं) १-हत्या । वध । २-हिंसा । ३-झुकाने की क्रिया । ४-एक असुर का नाम जिसे दुर्गादेवी ने मारा था ।
निशुंभन पुं० (सं) वध । मार डालना ।
निशुंभमथनी स्त्री० (सं) भगवती । दुर्गा ।
निशुंभमर्दिनी स्त्री० (सं) दुर्गा । भगवती ।
निश्भृत्य वि० (सं) लाया हुआ ।
निशेश पुं० (सं) चन्द्रमा ।
निशांत पुं० (सं) बगुला । बक ।
निशोत्सर्ग पुं० (सं) प्रभात । सवेरा ।
निष्कुला वि० (सं) अपने कुल से बहिष्कृत (स्त्री) ।
निश्चंद्र वि० (सं) १-चन्द्रमा रहित । २-जिसमें

न हो।

**निश्चक्षु** वि० (सं) अन्धा। नेत्रहीन।

**निश्चय** पु० (सं) १-भ्रम या संशय रहित ज्ञान। २-विश्वास। यकीन। ३-दृढ़ संकल्प। ४-निर्णय। जाँच फैसला। ५-एक अर्थालङ्कार जिसमें यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

**निश्चयात्मक** वि० (सं) असंदिग्ध। पक्का। ठीक। पूर्णतया। निश्चित।

**निश्चल** वि० (सं) स्थिर। अटल। अचल। जो अपने स्थान से न हिले।

**निश्चला** स्त्री० (सं) पृथ्वी। शालपर्णी।

**निश्चायक** पु० (सं) निश्चयकर्ता। निर्णायक।

**निश्चिंत** वि० (सं) चिन्तारहित। बेफिक्र।

**निश्चिंतई** स्त्री० (हि) बेफिक्री। चिन्तारहित होने का भाव।

**निश्चित** वि० (सं) १-निर्णीत। जिसका निर्णय हो चुका हो। २-अपरिवर्तनशील। दृढ़। पक्का। ३-जिसके मिथ्या होने की सम्भावना न हो। (डेफिनिट)। ४-जो विधि अनुसार पक्का कर दिया गया हो। (फिक्स्ड)।

**निश्चेतन** वि० (सं) १-बेसुध। बदहवास। २-जड़।

**निश्चेष्ट** वि० (सं) अचेत। मूर्छित। जड़।

**निश्चै** पु० (हि) दे० 'निश्चय'।

**निश्छंद** वि० (सं) जिसने वेद आदि का अध्ययन न किया हो।

**निश्छल** वि० (सं) कपट-रहित। सच्चा। सीधा।

**निश्छेद** पु० (सं) गणित में वह राशि जिसका किसी गुणक द्वारा भाग न दिया जा सके। अविभाज्य।

**निश्रम** पु० (सं) अध्यवसाय।

**निश्वास** पु० (सं) लंबी सांस। नाक या मुँह से बाहर आने वाला श्वास।

**निश्शंक** वि० (सं) दे० 'निःशंक'।

**निश्शील** वि० (सं) बुरे स्वभाव वाला। शील रहित

**निश्शेष** वि० (सं) दे० 'निःशेष'।

**निषंग** पु० (सं) तरकश। तलवार। खड्ग।

**निषंगी** वि० (सं) जिसके पास तरकश या तलवार हो। पु० (सं) धनुर्धर। तलवारधारी।

**निषण्ण** वि० (सं) १-बैठा हुआ। २-प्रस्थानित। ३-उदास। पीड़ित।

**निषक्त** पु० (सं) पिता। बाप। जनक।

**निषद्वन** पु० (सं) घर। मकान।

**निषध** पु० (सं) १-निषाद स्वर (संगीत)। २-एक देश विशेष जहाँ राजा नल राज करते थे। ३-निषध देश का राजा। ४-राजा रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के पौत्र का नाम। ५-महाराज जनमेजय के पुत्र का नाम।

पु० (सं) १-आर्यों के भारत में आने से पहले की एक अनार्य जाति। २-एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख रामायण आदि में मिलता है। ३-(संगीत में) सरगम का सबसे ऊँचा स्वर 'नि'।

**निषादी** पु० (सं) महावत।

**निषिक्त** पु० (सं) वीर्य से उत्पन्न-गर्भ। वि० (सं) अन्दर पहुंचाया हुआ।

**निषिद्ध** वि० (सं) १-वर्जित। मना किया हुआ। २-दूषित। खराब।

**निषिद्धि** स्त्री० (सं) मनाही। निषेध।

**निषेक** पु० (सं) १-सींचना। डुबोना। टपकना। २-भबके से अरक निकालने की क्रिया। ३-गर्भाधान। (इम्प्रेग्नेशन)।

**निषेचन** पु० (सं) सींचना। डुबोना।

**निषेध** पु० (सं) १-वर्जन। मनाही। रोक। न करने का आदेश। २-रुकावट। बाधा। ३-अभाव। (नेगेशन)।

**निषेधक** वि० (सं) निषेध करने वाला। मना करने वाला। (प्रोहिबीटरी)।

**निषेधन** पु० (सं) मनाही। वर्जन।

**निषेध-पत्र** पु० (सं) वह लिखित आदेश जिसके द्वारा किसी बात की मनाही की गई हो। (प्रोहिबीशन आर्डर)।

**निषेधाज्ञा** स्त्री० (सं) दे० 'निरोधाज्ञा'।

**निषेधाधिकार** पु० (सं) दे० 'प्रतिषेधाधिकार'। (वीटो)।

**निषेवण** पु० (सं) १-सेवा। पूजा। २-अभ्यास। अभिनय। ३-अनुराग। ४-परिचय। उपयोग।

**निषेवित** वि० (सं) जिसकी सेवा की गई हो। पूजित अनुष्ठित।

**निष्कंटक** वि० (सं) जिसमें किसी प्रकार की बाधा या झंझट न हो। निर्विघ्न।

**निष्कंप** वि० (सं) कम्पन-रहित। अचल।

**निष्क** पु० (सं) १-वैदिक-काल का एक सोने का सिक्का। २-एक प्राचीन तौल जो ४ माशे के बराबर होती थी। ३-सोना। स्वर्ण। ४-स्वर्ण का आभूषण

**निष्कपट** वि० (सं) छल रहित। सीधा। सरल।

**निष्कर** पु० (सं) वह भूमि जिसका कर न देना पड़ता हो।

**निष्करुण** वि० (सं) निष्ठुर। बेरहम। निर्दय।

**निष्कर्म** वि० (सं) जो कर्मों में लिप्त न हो।

**निष्कर्मा** वि० (सं) दे० 'निष्कर्म'।

**निष्कर्ष** पु० (सं) १-खुलासा। सारांश। सार। तत्व। २-विवेचन के बाद में परिणाम निकालना। निःसारण।

**निष्कलंक** वि० (सं) कलंक रहित। निर्दोष। बे-ऐब। बे-दाग।

**निष्काम** वि० (सं) १-कामना या सब प्रकार की

इच्छाओं से रहित। २-वह काम जो बिना किसी कामना के किया जाय।
**निष्काम-कर्म** पुं० (सं) फल की इच्छा न रख कर किया जाने वाला कर्म।
**निष्कामी** वि० (सं) दे० 'निष्काम'।
**निष्कारण** वि० (सं) बिना कारण का। व्यर्थ। अव्य (स) अकारण। व्यर्थ।
**निष्कारण-बंधु** पुं० (सं) बिना स्वार्थ के बन्धुता रखने वाला बन्धु।
**निष्कारण-वैरी** पुं० (सं) जो बिना किसी कारण के वैर-भाव रखे।
**निष्काश** पुं० (सं) १-निकालना। २-किसी भवन आदि का बाहर निकला हुआ भाग। बरामदा।
**निष्कास** पुं० (हिं) दे० 'निष्काश'।
**निष्कासन** पुं० (सं) १-बाहर करना। निकालना। २-किसी को दण्ड देकर या उसके रूप में किसी क्षेत्र आदि से बाहर भेजना।
**निष्कासित** वि० (सं) १-बाहर निकला हुआ। २-भर्त्सना किया हुआ।
**निष्किंचन** वि० (सं) धनहीन। दरिद्र।
**निष्किल्बिष** वि० (सं) पाप रहित।
**निष्कीटन** पुं० (सं) किसी वस्तु को रसायनिक प्रक्रिया द्वारा कीटाणुओं से रहित करना। (स्टेरिलाइजेशन)
**निष्कीटित** वि० (सं) किसी प्रक्रिया से जिसके कीटाणु नष्ट कर दिये गए हों। वंध्योकृत। (स्टेरिलाइज्ड)।
**निष्कुटि** स्त्री० (सं) बड़ी इलायची।
**निष्कुल** वि० (स) जिसके कुल का पता न हो।
**निष्कुलीन** वि० (सं) नीचे कुल का।
**निष्कृत** वि० (स) मुक्त। हटाया हुआ। निकाला हुआ उपेक्षित।
**निष्कृति** स्त्री० (सं) १-निस्तार। छुटकारा। २-निरोगता प्राप्ति। ३-बचाव। ४-असावधानी। ५-गुण्डापन। बदमाशी। ६-प्रायश्चित।
**निष्कृति-धन** पुं० (सं) किसी को छुटकारा पाने के लिये दबाव डाल कर वसूल किया हुआ धन। (रैनसम)।
**निष्कृप** वि० (स) तीक्ष्ण धार वाला। निष्ठुर। निर्दय
**निष्क्रम** वि० (सं) बिना सिलसिले का या क्रम का। पुं० (सं) १-बाहर निकालना। २-निष्क्रमण की रीति। ३-जातिच्युति।
**निष्क्रमण** पुं० (सं) दे० 'निष्क्रम'।
**निष्क्रम-पत्र** पुं० (सं) पारपत्र। (पासपोर्ट)।
**निष्क्रम-मार्ग** पुं० (सं) बाहर निकलने का मार्ग।
**निष्क्रय** पुं० (स) १-वेतन। भाड़ा। मजदूरी। २-विनिमय। ३-किसी पदार्थ के बदले में दिया जाने वाला धन। (कम्पन्सेशन)। ४-बिक्री।
**निष्क्रयण** पुं० (सं) मुक्ति के लिये दिया जाने वाला धन।
**निष्क्रांत** वि०(सं) मुक्त। निकला या निकाला हुआ। निर्गत।
**निष्क्रांतों की संपत्ति** स्त्री० (हिं) अपनी जान-माल के सङ्कट से बचने के लिये बाहर गये हुए लोगों की छोड़ी हुई सम्पत्ति। (इवेक्यूई प्रॉपरटी)।
**निष्क्रिय** वि० (सं) सब प्रकार की क्रिया या चेष्टा से रहित। निश्चेष्ट। (इनएक्टिव)।
**निष्क्रियता** स्त्री० (सं) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था। (इनएक्टिविटी)।
**निष्क्रिय-प्रतिरोध** पुं० (सं) किसी अनुचित आज्ञा का वह विरोध जिसमें दण्ड की परवाह नहीं जाती (पैसिवरेसिस्टैंस)। (सिविल-डिसओबीडियन्स)।
**निष्क्रीत** वि० (सं) १-जिसके लिए निष्क्रय दिया गया हो। (कम्पन्सेटेड)। २-(ऋण का) जिसका विमोचन हुआ हो। (रिडीम्ड)।
**निष्ठ** वि० (सं) १-ठहरा हुआ। स्थित। २-तत्पर। ३-किसी के प्रति श्रद्धा-भाव रखने वाला। (लॉयल)।
**निष्ठा** स्त्री० (सं) १-आधार। एकाग्रता। २-तत्परता ३-निश्चय। विश्वास। ४-इति। समाप्ति। ५-नाश। क्लेश। सन्ताप। ६-बड़ों के प्रति अनुराग। (फेथ, लॉयलटी)। ७-राज्य के प्रति प्रजा का श्रद्धा-भाव। (एलीजियन्स)।
**निष्ठान** पुं० (सं) मसाला। चटनी।
**निष्ठावान** वि० (सं) जिसमें श्रद्धा हो।
**निष्ठीव** पुं० (सं) १-खखार। थूक। २-कफ बाहर निकालने की दवा।
**निष्ठीवन** पुं० (सं) दे० 'निष्ठीव'।
**निष्ठुर** वि० (सं) कठिन। निर्दय। क्रूर। निर्लज्ज। उग्र।
**निष्ठ्यूत** वि० (सं) बाहर निकला हुआ। थूका हुआ वक। उगला हुआ।
**निष्ण** वि० (सं) १-निपुण। पटु। २-विशेषज्ञ। पारंगत। पण्डित। (एक्सपर्ट)।
**निष्णात** वि० (सं) दे० 'निष्ण'।
**निष्पंक** वि० (सं) जिसमें पङ्क न हो। स्वच्छ। साफ।
**निष्पंद** वि० (सं) कम्पन-रहित। गतिहीन। स्थिर।
**निष्पक्ष** वि० (स) पक्षपात-रहित। तटस्थ। (इम्पार्शल)
**निष्पक्षता** पुं० (स) निष्पक्ष होने की अवस्था या भाव (इम्पार्शेलिटी)।
**निष्पत्ति** स्त्री० (सं) १-समाप्ति। अन्त। २-निश्चय। ३-निर्वाह। ४-परिपाक।
**निष्पत्र** वि० (सं) बिना पत्तों का। पत्र-हीन।
**निष्पन्न** वि० (सं) जो पूरा या समाप्त हो चुका हो। जो आज्ञा और नियम के अनुसार पूरा किया जा चुका हो। (एक्जिक्यूटेड)।
**निष्पादक** पुं० (सं) नियमानुसार किसी वसीयत

आदि में किसी बाधा को पूरा करने वाला व्यक्ति (एक्जीक्यूटर)।
**निष्पादन** पुं० (सं) तामील। निष्पन्न करने का भाव या दशा। (एक्जीक्यूशन)।
**निष्पादित** वि० (सं) दे० 'निष्पन्न'।
**निष्पाप** वि० (सं) जो पापों से दूर रहे। पापरहित।
**निष्पुत्र** वि० (सं) पुत्रहीन।
**निष्प्रभाव** वि० (सं) जिसका कोई प्रभाव न रह गया हो। अप्रभावशाली।
**निष्प्रभ** वि० (सं) प्रभारहित। जिसमें चमक न हो।
**निष्प्रयोजन** वि० (सं) बिना किसी प्रयोजन या मतलब का। व्यर्थ। अव्यय (स) बिना किसी मतलब के वृथा।
**निष्प्रेही** वि० (हि) दे० 'निस्पृह'।
**निष्फल** वि० (सं) १-जिसका कोई फल या परिणाम न हो। व्यर्थ। (एबॉर्टिव)। २-अण्डकोषरहित।
**निष्फला** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका रजोधर्म होना बन्द होगया हो।
**निस्** अव्यय (सं) यह शब्द निषेध, निश्चय आदि के अर्थों में प्रयोग होता है।
**निसंक** वि० (हि) दे० 'निःशंक'।
**निसंग** वि० (हि) दे० 'निःसंग'।
**निसंठ** वि० (हि) गरीब। निर्धन।
**निसंस** वि० (हि) दे० 'नृशंस'।
**निसंस** वि० (सं) दे० 'निसासा'।
**निसंसना** क्रि० (हि) हांफना।
**निस** स्त्री० (हि) दे० 'निशा'।
**निसक** वि० (हि) अशक्त। दुर्बल।
**निसकर** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**निसचय** पुं० (हि) दे० 'निश्चय'।
**निसत** वि० (हि) असत्य। मिथ्या।
**निसतरना** क्रि० (हि) छुटकारा पाना। निस्तार पाना।
**निसतार** पुं० (हि) दे० 'निस्तार'।
**निसतारना** क्रि० (हि) मुक्त करना। छुटकारा दिलाना।
**निसद्योस** क्रि० (हि) रात-दिन। नित्य। सदा।
**निसबत** स्त्री० (अ) १-सम्बन्ध। लगाव। २-मंगनी। ३-तुलना। अपेक्षा। अव्यय (अ०) संबन्ध में।
**निसयाना** वि० (हि) जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।
**निसर** वि० (सं) खूब चलने वाला।
**निसरना** स्त्री० (हि) बाहर होना। निकलना।
**निसराना** क्रि० (हि) निकलवाना। निकालना।
**निसरावन** पुं० (हि) ब्राह्मण को दिया जाने वाला सीधा (कच्चा अन्न)।
**निसर्ग** पुं० (सं) १-स्वभाव। प्रकृति। २-दान। ३-आकृति। रूप। ४-सृष्टि।
**निसर्गज** वि० (सं) स्वाभाविक। जन्म से।
**निसर्गत** वि० (स) स्वभाव से।
**निसर्गसिद्ध** वि०(सं) स्वाभाविक। जन्म से।
**निसवादिल** वि० (हि) स्वादहीन। जिसमें कोई स्वाद न हो। फीका।
**निस-बासर** क्रि० वि० (हि) दे० 'निसद्योस'।
**निसस** वि० (हि) श्वासरहित। अचेत।
**निसहाय** वि० (हि) दे० 'निस्सहाय'।
**निसांक** वि० (हि) निर्भय। बेखटके।
**निसांस** पुं० (हि) ठंडी सांस। लम्बी सांस। वि० (हि) मृतप्राय। बेदम।
**निसांसा** पुं० (हि) निस्वास। बेदम। मृतप्राय।
**निसा** स्त्री० (हि) तृप्ति। सन्तोष। पुं० (हि) दे० 'नशा'।
**निसाकर** पुं० (हि) दे० 'निशाकर'।
**निसाचर** पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।
**निसाद** पुं० (हि) भंगी। मेहतर।
**निसान** पुं० (हि) १-दे० 'निशान'। २-नगाड़ा।
**निसानन** पुं० (हि) संध्या। प्रदोष।
**निसाना** पुं० (सं) दे० 'निशाना'।
**निसानाथ** पुं० (हि) दे० 'निशानाथ'।
**निसानी** स्त्री० (हि) दे० 'निशानी'।
**निसाफ** पुं० (हि) न्याय। इन्साफ।
**निसार** पुं० (अ) १-निछावर। २-मुगल-कालीन सिक्का जो चार आने के बराबर होता था। पुं० (सं) समूह। समुदाय। वि० (हि) दे० 'निस्सार'।
**निसारना** क्रि० (हि) बाहर करना। निकालना।
**निसास** पुं० (हि) दे० 'निश्वास'।
**निसासी** वि० (हि) दे० 'निसाँसा'।
**निसि** स्त्री० (हि) रात।
**निसिकर** पुं० (हि) दे० 'निशिकर'।
**निसिचर** पुं० (हि) दे० 'निशाचर'।
**निसिचारी** पुं० (हि) निशाचर। राक्षस।
**निसिदिन** क्रि० वि० (हि) रात दिन। आठों पहर। सर्वदा। हमेशा।
**निसिनाथ** पुं० (हि) दे० 'निशानाथ'।
**निसिमनि** पुं० (हि) निशामणि। चांद। चन्द्रमा।
**निसिमुख** पुं० (हि) दे० 'निशामुख'।
**निसियर** पुं० (हि) दे० 'निशाकर'।
**निसि-बासर** क्रि० वि० (हि) रातदिन। सर्वदा। नित्य
**निसोठा** वि० (हि) दे० 'निःसार'।
**निसोठी** वि० (हि) निःसार। निरस। जिसमें कुछ तत्व न हो।
**निसीथ** पुं० (हि) दे० 'निशीथ'।
**निसुंभ** पुं० (हि) दे० 'निशुंभ'।
**निसु** स्त्री० (हि) दे० 'निशा'।
**निसुका** वि० (हि) निर्धन। गरीब। बेचारा।
**निसूदक** वि० (सं) हिंसक। वध करने वाला।
**निसूदन** पुं० (सं) हिंसा करना। वध करना।

**निसल** वि० (हि) दे० 'निःसल'।
**निसृष्ट** वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। निकाला हुआ। २-दियाहुआ। प्रदत्त। ३-बीच में पड़ा हुआ। मध्यस्थ
**निसृष्टात** पुं० (सं) १-तीन प्रकार के दूतों में से एक। २-वह दूत जो दोनों पक्षों के अभिप्राय को समझ कर सब प्रश्नों का स्वयं ही उत्तर देता है और कार्य सिद्ध कर लेता है। ३-व्यापार या धन सम्पत्ति की निगरानी करने के लिये नियुक्त व्यक्ति। ४-अपने मालिक के कार्य को तत्परता से करने वाला व्यक्ति।
**निसृष्टात दूतिका** स्त्री०(सं) वह दूती जो नायक और नायका की बात समझ कर अपनी बुद्धि से कार्य के मनोरथ को पूरा करे।
**निसेनी** स्त्री० (सं) सीढ़ी। जीना। सोपान।
**निसेष** वि० (हि) दे० 'निःशेष'।
**निसेस** पुं० (हि) चांद। चन्द्रमा।
**निसैनी** स्त्री० (हि) दे० 'निसेनी'।
**निसोग** वि० (हि) चिन्ता या शोकरहित।
**निसोच** वि० (हि) निश्चिन्त। बेफिक्र।
**निसोत** वि० (हि) जिसमें मिलावट न हो। शुद्ध।
**निसोधु** वि० (हि) सुध। खबर। सन्देसा। सम्वाद।
**निस्केवल** वि० (हि) शुद्ध खालिस (बोलचाल)।
**निस्तंद्र** वि० (सं) निरालस्य। जागृत। जिसे नींद न आई हो।
**निस्तत्त्व** वि० (सं) निस्सार। जिसमें कोई सार न हो।
**निस्तब्ध** वि० (सं) जड़वत। निश्चेष्ट। जड़वत्। अत्यधिक स्तब्ध।
**निस्तर** पुं० (सं) दे० 'निस्तार'।
**निस्तरण** पुं० (स) १-उद्धार होना। पार होना। २-सामने आये हुए कार्य को नियमित रूप से पूरा करना। (डिसपोज़ल)।
**निस्तरना** क्रि० (हि) छुटकारा पाना। निस्तार पाना
**निस्तल** वि० (स) १-जिसका तल न हो। बहुत गहरा। २-वृत्ताकार। ३-नीचा।
**निस्तार** पुं० (हि) १-छुटकारा। उद्धार। २-काम पूरा करके छुट्टी पाना। ३-दोषमोचन।
**निस्तारक** पु० (सं) निस्तार करने वाला। उद्धारक।
**निस्तारण** पुं० (सं) मुक्त करना। पार करना। छुड़ाना। जीतना। काम पूरा करना। (डिस्पोज़ल)
**निस्तारन** वि० (हि) छुड़ाना। उद्धार करना।
**निस्तारा** पुं० (हि) दे० 'निस्तार'।
**निस्तीर्ण** वि० (सं) १-जो पार कर चुका हो। २-जिसका निस्तार हो चुका हो। मुक्त।
**निस्तुष** वि० (सं) जिसमें भूसी तुष न हो। निर्मल।
**निस्तेज** वि० (सं) जिसमें तेज न हो। अप्रभ। मलिन।
**निस्तैल** वि० (सं) बिना तेल का। जिसमें तेल न हो
**निस्पंद** वि० (सं) स्थिर। निश्चल। जो हिलता न हो। स्तब्ध।
**निस्पृह** वि० (सं) निर्लोभ। जिसमें कोई लोभ या वासना न हो।
**निस्प्रेही** वि०(हि) दे० 'निस्पृह'।
**निस्फ** वि० (प्र) आधा। दो बराबर भागों में से एक
**निस्बत** स्त्री० (दे०) 'निसबत'।
**निस्यंद** पु० (सं) रिसना। चूना। परिणाम।
**निस्यंदी** वि० (सं) चूने वाला। बहने वाला।
**निस्रव** पुं० (सं) १-चावल का माड़। बहना। चूना।
**निस्वन** पु० (सं) शब्द। ध्वनि।
**निस्सकोच** वि० (सं) संकोच रहित। क्रि० वि० बिना किसी संकोच के।
**निस्संग** वि० (सं) १-बिना साथी का। संग रहित। २-वासनाओं से दूर। ३-एकान्त। अकेला। निष्काम।
**निस्संतान** वि० (स) जिसके कोई संतान न हो। संगति-रहित। अव्यय (सं) बिना किसी संदेह के। अवश्य। बेशक।
**निस्सत्त्व** वि० (स) असार। दुर्बल। तुच्छ। सत्त्व-रहित।
**निस्सरण** पु० (सं) निकलने का रास्ता। निकलना। (डिस्चार्ज)।
**निस्सहाय** वि०(सं) असहाय। जिसका कोई मददगार न हो।
**निस्सार** वि० (सं) १-सार रहित। जिसमें कोई सार या काम की बात न हो। निस्तत्व।
**निस्सारण** पुं० (सं) १-निकलने का भाव या क्रिया २-शरीर या वनस्पतियों की गांठों में से कोई तरल अंश बाहर निकलना जो प्रत्यंगों को ठीक रखने के लिये आवश्यक होते है। ३-इस प्रकार रिसने वाला पदार्थ। (सीक्रिशन) (डिस्चार्ज)।
**निस्सारित** वि० (सं) निकाला हुआ। बेदखल किया हुआ।
**निस्सीम** वि० (स) १-जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। (एब्सोल्यूट)। २-बेहद। अपार।
**निस्स्नेह** वि० (सं) जिसे प्रेम या स्नेह न हो।
**निस्स्व** वि० (सं) गरीब। धनहीन। दरिद्र।
**निस्स्वक** वि० (सं) दे० 'निस्स्व'।
**निस्स्वादु** वि० (सं) बिना स्वाद का। अस्वादिष्ट। स्वादरहित।
**निस्स्वार्थ** वि० (सं) जिसे या जिसमे अपने हित का कोई विचार न हो। स्वार्थरहित।
**निहंग** वि० (हि) १-अकेला। एकाकी। २-स्त्री आदि से सम्बन्ध न रखने वाला (साधु)। ३-निर्लज्ज। नंगा। बेशर्म। पुं० (हि) १-अकेला रहने वाला साधु। २-सिक्खों का एक संप्रदाय।

निहंगम वि० (हि) दे० 'निहंग'।
निहंग-लाडला वि० (हि) जो माता पिता के अधिक दुलार के कारण बिगड़ गया हो।
निहंता वि० (हि) १-मारने वाला। २-विनाशक। नाश करने वाला।
निहकर्मा वि० (हि) दे० 'निष्कर्मा'।
निहकलंक वि० (हि) दे० 'निष्कलंक'।
निहकाम वि० (हि) दे० 'निष्काम'।
निहकामी वि० (हि) दे० 'निष्कामी'।
निहचक पुं० (हि) पहिए के आकार का काठ का चक्कर जो कुएँ की नीव में लगाया जाता है। निवार। चाखिम।
निहचय पुं० (हि) दे० निश्चय'।
निहचल वि० (हि) दे० 'निश्चल'।
निहचिंत वि० (हि) दे० 'निश्चिंत'।
निहत वि० (सं) १-नष्ट। मारा हुआ। २-फेंका हुआ।
निहतार्थ पुं० (सं) किसी दो अर्थ वाले शब्द को उसके अप्रचलित अर्थ में प्रयुक्त करना।
निहत्था वि० (हि) १-जिसके हाथ न हो। २-जिसके हाथ में कोई अस्त्र न हो।
निहनन पुं० (हि) वध। हत्या।
निहनना क्रि० (हि) वध करना। मार डालना।
निहपाप वि० (हि) दे० 'निष्पाप'।
निहफल वि० (हि) दे० 'निष्फल'।
निहाई स्त्री० (हि) पक्के लोहे का टुकड़ा जिस पर रख कर धातु को पीटा जाता है।
निहाउ पुं० (हि) दे० 'निहाई'।
निहानी स्त्री० (हि) बारीक खुदाई का काम करने की एक प्रकार की रुखानी।
निहाय पुं० (हि) दे० 'निहाई'।
निहायत अव्य० (फा) अत्यन्त। अधिक। बहुत।
निहार पुं० (सं) कुहरा। ओस। हिम। वि० (हि) निहाल। तबाह।
निहार-जल पुं० (सं) ओस।
निहारना क्रि० (हि) ध्यानपूर्वक देखना। ताकना।
निहारिका स्त्री० (सं) दे० 'नीहारिका'।
निहाल वि० (फा) हर प्रकार से। जिसके सब कार्य पूर्ण हो चुके हों।
निहाली स्त्री० (फा) गद्दा। रजाई। तोशक।
निहिचय पुं० (हि) दे० 'निश्चय'।
निहिचित वि० (हि) दे०'निश्चित'।
निहित वि० (सं) १-स्थापित। २-कहीं रखा या छिपा हुआ। (वेस्टेड)।
निहित-स्वार्थ पुं० (सं) व्यापार या भूमि आदि में रुपया लगा कर प्राप्त किया हुआ स्वार्थ। (वेस्टेड इन्टरेस्ट)।
निहुकना क्रि० (हि) झुकना।
निहुड़ना क्रि० (हि) दे० 'निहुरना।
निहुरना क्रि० (हि) नवना। झुकना।
निहुराई स्त्री० (हि) दे० 'निठुराई'।
निहुराना क्रि० (हि) झुकाना। नवाना।
निहोर पुं० (हि) दे० 'निहोरा'।
निहोरना क्रि० (हि) प्रार्थना। विनय। उपकार। कृपा
निहोरे (अ) (हि) वास्ते। कारण से।
नींद स्त्री० (हि) निद्रा।
नींदड़ी स्त्री० (हि) दे० 'नींद'।
नींदना क्रि० (हि) नींद लेना। सोना। निराना।
नींदर स्त्री० (हि) नींद। निद्रा।
नींदरी स्त्री० (हि) नींद।
नींब स्त्री० (हि) नीम।
नींव स्त्री० (हि) दे० 'नीवँ'।
नीअर अव्य० (हि) निकट।
नीक वि० (हि) अच्छा। सुन्दर। भला। पुं० (हि) भलाई। अच्छाई।
नीका वि० (हि) दे० 'नीक'।
नीके अव्य० (हि) भलीभांति। सकुशल।
नीगने वि० (हि) बेशुमार। अगणित।
नीग्रो पुं० (अ) हबशी।
नीच वि० (सं) १-जाति, कर्म, गुण आदि या किसी दूसरी बात में घट कर। तुच्छ। अधम। २-बुरा। निकृष्ट।
नीच-ऊँच वि० (हि) १-अच्छा-बुरा। २-हानि-लाभ ३-सुख-दुख।
नीचग वि० (सं) नीचे जाने वाला। ओछा। खोटा
नीचगा स्त्री० (स) १-नदी। २-नीचगामिनी स्त्री।
नीच-गामी वि० (हि) दे० 'नीचग'।
नीचट वि० (हि) पक्का। दृढ़।
नीचता स्त्री० (सं)१-नीच होने का भाव। २-अधमता। खोटाई। कमीनापन।
नीचत्व पुं० (स) दे० 'नीचता'।
नीचा वि० (हि) १-जिसके आस-पास का तल ऊँचा हो। जो गहराई पर हो। २-ऊँचाई में सामान्य से की अपेक्षा कम। ३-नत। झुका हुआ। ४-धीमा। मंदा। ५- जो गुण, जाति, पद आदि में घटकर हो ६-छोटा। ओछा। बुरा।
नीचाशय वि० (सं) अधिक चाहने वाला।
नीचाशय वि० (सं) तुच्छ विचार का। ओछा। क्षुद्र।
नीचू वि० (हि) जो टपकता न हो। क्रि० वि० (हि) दे० 'नीचे'।
नीचे क्रि० वि० (हि) निम्नतल की ओर। अधोभाग में। ऊपर का उल्टा। अव्यवस्थित।
नीचे-ऊपर (प) (हि) अव्यवस्थित। अस्त-व्यस्त।
नीजन वि० (हि) दे० 'निर्जन'। पुं० (हि) एकान्त। स्थान।

**नीझर** पु० (हि) दे० 'निर्झर'।

**नीठ** (पं) (हि) दे० 'नीठि'। वि०(हि) दे० 'नीठा'।

**नीठा** वि० (हि) अप्रिय। अरुचिकर। जो अच्छा न लगे।

**नीठि** स्त्री० (हि) अरुचि। अनिच्छा। अव्य० (हि) किसी तरह। कठिनाई से।

**नीठो** वि० (हि) १-बुरा। अनिष्टकारी। २-अप्रिय। अरुचिकर।

**नीड़** पुं० (सं) १-चिड़ियों का घोंसला। २-ठहरने या बैठने का स्थान। ३-रथ में बैठने का मुख्य स्थान।

**नीड़क** पुं० (सं) पक्षी।

**नीड़ज** पु० (सं) पक्षी। चिड़िया।

**नीड़ोद्भव** पक्षी। खग।

**नीत** वि० (सं) १-लाया हुआ। पहुंचाया हुआ। २-प्राप्त। स्थापित। ३-ग्रहण किया हुआ।

**नीति** स्त्री० (सं) १-लेजाने या लेचलने का भाव या क्रिया। २-आचार-पद्धति। ३-समाज की भलाई के लिये निश्चित आचार-व्यवहार। नय। (एथिक्स) ४-किसी कार्य को ठीक प्रकार से करने का ढङ्ग। (पॉलिसी)। ५-व्यवहार का वह ढङ्ग जिससे अपनी भलाई हो पर दूसरों को कष्ट न हो।

**नीति-कुशल** वि० (सं) दे० 'नीतिज्ञ'।

**नीति-घोषणा** स्त्री० (सं) लोक-घोषणा। किसी दल या राज्य के प्रधान शासक की अपनी नीति आदि के सम्बन्ध में की गई घोषणा। (मैनीफेस्टो)।

**नीतिज्ञ** वि० (सं) नीति जानने वाला।

**नीतिदोष** पुं० (सं) नीति सम्बन्धी भूल या त्रुटि।

**नीतिनिष्ण** वि० (सं) राजनीति का जानने वाला।

**नीतिबीज** पु० (सं) षड्यन्त्र का उद्गम स्थान।

**नीतिभ्रष्टता** स्त्री० (सं) नैतिकपन।

**नीतिमान्** वि० (सं) १-सदाचारी। २-नीतिपरायण।

**नीतिवादी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो सब कार्य नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार करता हो।

**नीतिविज्ञान** पु० (सं) दे० 'नीति-शास्त्र'।

**नीतिविद** वि० (सं) दे० 'नीतिज्ञ'।

**नीतिविद्या** स्त्री० (सं) राजनीति-शास्त्र। (पॉलिटिक्स) नीति से सम्बन्ध रखने वाली विद्या।

**नीतिशास्त्र** पु० (सं) १-वह शास्त्र जिसमें व्यवहार या आचार सम्बन्धी नियमों का निरूपण किया गया हो। (एथिक्स)। २-वह शास्त्र जिसमें समाज के हित के लिये आचार-व्यवहार तथा शासन या देश प्रबन्ध का विधान हो।

**नीदना** क्रि० (हि) बुराई या निन्दा करना।

**नीधना** वि० (हि) दरिद्र। निर्धन। गरीब।

**नीध्र** पु० (सं) १-घर या छप्पर की ओलती। २-जङ्गल। वन। ३-चन्द्रमा। ४-रेवती नक्षत्र। ५-पहिये का व्यास।

**नीप** पुं० (सं) १-पर्वत की तलहटी। २-कदम्ब वृक्ष। ३-बन्धूक वृक्ष।

**नीपजना** क्रि० (हि) बढ़ना। उन्नति करना। उपजना।

**नीपना** क्रि० (हि) लीपना।

**नीबर** वि० (हि) दे० 'निर्बल'।

**नीबी** स्त्री० (हि) दे० 'नीवी'।

**नीबू** पुं० (हि) एक प्रकार का मध्य आकार का गोल खट्टे रस का फल।

**नीबू-निचोड़** वि० (हि) थोड़ा सा सम्बन्ध जोड़ कर अत्यधिक लाभ उठाने वाला। पुं० (हि) नीबू को दबा कर उसका रस निचोड़ने का यन्त्र।

**नीम** पु० (हि) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके सब अङ्ग कड़वे होते हैं। वि० (फा) आधा। अर्द्ध।

**नीमचा** पुं० (फा) छोटी तलवार। खाँड़ा।

**नीमजाँ** वि० (फा) अधमरा।

**नीमटर** वि० (हि) अधकचरा।

**नीमन** वि० (हि) अच्छा। निरोग। सुन्दर। अच्छा

**नीमवर** पुं० (फा) कुश्ती का एक पेच।

**नीमस्तीम** स्त्री० (फा) आधी बांह की कुरती या फतूरी

**नीमा** पुं० (फा) जामे के नीचे पहनने की आधी बांह की बनियान या सदरी।

**नीमास्तीन** स्त्री० (फा) आधी बाँह की कुरती या फतूही

**नीयत** स्त्री० (अ) आशय। मंशा। इच्छा।

**नीर** पु० (सं) १-जल। पानी। २-रस। फफोले आदि से निकलने वाला चेप। ३-नीम के पेड़ का रस।

**नीरज** पुं० (सं) १-मोती। २-कमल। जल में उत्पन्न कोई वस्तु। ३-ऊदबिलाव। वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला।

**नीरत** वि० (सं) अति लीन।

**नीरद** पुं० (सं) बादल। मेघ। वि० (सं) बिना दांत का।

**नीरना** क्रि० (हि) बखेरना। छिटकना।

**नीरव** वि० (सं) निःशब्द। मौन चुप।

**नीरस** वि० (सं) जिसमें रस न हो। सूखा। रसहीन।

**नीरसन** वि० (सं) बिना कमरबन्द का।

**नीराजन** पुं० (सं) १-किसी देवता आदि की आरती। आरती। २-एक धार्मिक एवं सैनिक कृत्य जो राजा लोग शत्रु पर चढ़ाई करने से पहले आश्विन मास में हथियारों की सफाई करते थे।

**नीराजना** स्त्री० (सं) दे० 'निराजन'। क्रि० (हि) १-आरती उतारना। दीपक दिखाना। २-हथियारों को चमकाना। मांजना।

**नीराक्षिका भूमि** स्त्री० (सं) दो देशों की सीमा के पास वह भूमि जिस पर किसी का भी अधिकार न हो। (नोमैन्स लैंड)।

**नीरोग** पु० (सं) आरोग्य। स्वास्थ्य। कुष्टौषधि। वि० (सं) चालाक। होशियार।

नीरे क्रि० वि० (हि) निकट। पास में। नियरे।
नीरोग वि० (सं) स्वस्थ। रोगरहित।
नीरोह पु० (सं) अंकुरित होना।
नील वि० (सं) आसमान के रंग का। नीले रंग का पुं० (सं) १-नीला रंग। २-एक पौधा जिससे नीला रंग निकलता है। ३-इस पौधे से निकलने वाला रंग। ४-शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले या काले रंग का चिह्न। ५-लांछन। कलंक। ६-राम की सेना का एक वानर। ७-नव निधियों में से एक। ८-एक यम का नाम। ९-एक पर्वत। १०-नीलम। ११-सौ-खरब की एक संख्या।
नीलकंठ वि० (सं) जिसका कंठ नीला हो। पु० (स) १-मोर। २-एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीले होते हैं और जिसके विजयादशमी को दर्शन करते हैं। चापपक्षी। ३-महादेव।
नीलकंठक पुं० (सं) चातक पक्षी। पपीहा।
नील कमल पुं० (सं) नीले रंग का कमल।
नीलकांत पुं० (सं) नीलम। एक पहाड़ी पक्षी।
नीलगाय स्त्री० (हि) एक जंगली जानवर जिसकी आकृति गाय जैसी होती है।
नीलगिरि पुं० (सं) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।
नीलग्रीव पुं० (स) महादेव। शिव।
नीलतरु पुं० (हि) ताड़वृक्ष। नारियल।
नीलपत्र पुं० (सं) नीलकमल।
नीलपद्म पुं० (सं) नीलकमल।
नीलपिंगला स्त्री० (सं) नीलगाय।
नीलपुष्पी स्त्री० (सं) १-नीली कोयल। २-अलसी।
नीलपृष्ठ पुं० (सं) आग। अग्नि।
नीलभ पुं० (सं) १-बादल। चन्द्रमा। २-मधुमक्खी
नीलम पुं० (फा) नील-मणि। नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न।
नीलमंडल पुं० (फा) फालसा।
नीलमणि पु० (सं) नीलम।
नीलरत्न पुं० (सं) नीलम।
नील-वसन पुं० (सं) १-नीला कपड़ा। २-शनिग्रह। वि० (सं) नीला या काला वस्त्र धारण करने वाला।
नीलवासा वि० (स) दे० 'नील वसन'।
नीलांजन पुं० (सं) १-नीला सुरमा। २-नीला-थोथा। तूतिया।
नीलांबर पुं० (स) नीला वस्त्र। बलदेव। वि० (स) नीले वस्त्र पहनने वाला।
नीलांबुज पुं० (सं) नील कमल।
नीला वि० (हि) नीले रंग का। आकाश के रंग का।
नीलाचल पुं० (स) नीलगिरि।
नीलाथोथा पुं० (हि) तूतिया।
नीलाम पु० (हि) बोली बोलकर माल बेचने का ढंग। (ऑक्शन)। (सेल)।
नीलामघर पुं० (हि) वह स्थान जहां पर वस्तुएं नीलाम होती है।
नीलामी वि० (हि) नीलाम में मोल लिया हुआ।
नीलाश्मज पुं० (सं) नीलाथोथा।
नीलाश्मन् पु० (स) नीलम।
नीलि पुं० (सं) एक प्रकार का जल जंतु।
नीलिका स्त्री० (स) १-एक नेत्र रोग। २-चोट के कारण पड़ा नीला दाग। नील। ३-नील का पौधा।
नीलिनी स्त्री० (सं) नील का पेड़।
नीलिमा स्त्री० (हि) नीलापन।
नीली वि० (हि) नीले रंग की। आसमानी।
नीलू स्त्री० (हि) एक प्रकार की घास।
नीलोत्पल पुं० (सं) नील कमल।
नीलोत्पली पुं० (सं) १-शिव का एक अंश। २-बौद्ध महात्मा मंजुश्री का नाम।
नीलोद पु० (सं) वह नदी या समुद्र जिसका पानी नीला हो।
नीलोफर पु० (फा) नील कमल।
नीवँ स्त्री० (हि) १-मकान आदि बनाने के समय उसका वह मूल भाग जो नली की तरह भूमि में खोद कर और उसमें चिनाई करके, उसकी दीवारों को दृढ़ बनाने के लिए बनाया जाता है। २-आधार। जड़। मूल। ३-किसी वस्तु या कार्य का आरम्भ का भाग।
नीवर पुं० (स) १-व्यवसाय। २-साधु। ३-व्यव-सायी। ४-जल। कीचड़।
नीवार पु० (सं) तिन्नीधान।
नीवि स्त्री० (सं) दे० 'नीवी'।
नीवीँ स्त्री० (हि) नींव।
नीवी स्त्री० (स) १-कमर में लपेटी हुई धोती की गांठ २-सूत की डोरी जिससे स्त्रियां धोती की गांठ बांधती है। नारा। इजारबन्द। ३-पूंजी। बार-दाना। ४-दांव। ५-धोती।
नीव्र पुं० (सं) १-पहिये का घेरा। २-चन्द्रमा। ३-रेवती-नक्षत्र।
नीशार पुं० (सं) १-कंबल। गर्म कपड़ा। २-हवा से बचाव के लिए लगाया हुआ परदा। कनात। ३-मसहरी।
नीस पुं० (दे) सफेद धतूरा।
नीसक वि० (हि) निर्बल। कमजोर। असमर्थ।
नीसान पुं० (हि) दे० 'निशान'।
नीसू पुं० (हि) गंडासे से चारा काटने का काठ का कुन्दा जो भूमि में गड़ा होता है। नीसुआ।
नीहार पुं० (सं) कुहरा। पाला। हिम।
नीहार-जल पुं० (सं) ओस।
नीहार-स्फोट पुं० (सं) बरफ का बड़ा टुकड़ा।

**नीहारिका** स्त्री० (सं) आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।
**नु** अव्य० (स) सदेह या अनिश्चितता सूचक अव्यय जो संभावना तथा अवश्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पुं० (सं) अनुस्वार।
**नुकता** पु० (अ) १-बिन्दु। २-फबती। लगती हुई उक्ति। ३-दोष। ४-घोड़े के माथे पर बांधने का पट्टा। तिलहारी।
**नुकता-चीं** वि० (अ) ऐब या दोष ढूंढने या निकालने वाला। छिद्रान्वेषी।
**नुकता-चीनी** स्त्री० (अ) छिद्रान्वेषण।
**नुकती** स्त्री० (फा) बेसन की बनी छोटी छोटी मीठी बुन्दियां। एक प्रकार की मिठाई।
**नुकना** क्रि० (अ) लुकना। छिपना।
**नुकरा** पुं० (अ) १-चान्दी। २-घोड़े का श्वेत रङ्ग। वि० (अ) सफेद रङ्ग का (घोड़ा)।
**नुकरी** स्त्री० (देश०) जलाशयों के पास रहने वाली सफेद पर वाली एक चिड़िया।
**नुकसान** पु० (अ) १-कमी। घाटा। २-हानि। ३-बिगाड़। दोष।
**नुकाना** क्रि० (अ) छिपाना।
**नुकीला** वि० (हि) १-नोकदार। २-बांका। तिरछा। मजीला।
**नुकीली** वि० (हि) दे० 'नुकीला'।
**नुक्कड़** पुं० (हिं) गली, मकान या मार्ग पर आगे निकला हुआ कोना। २-कोना। ३-पतला सिरा।
**नुक्का** पुं० (हि) नोका।
**नुक्स** पुं० (अ) १-दोष। ऐब। बुराई। २-कसर।
**नुचना** क्रि० (हि) नाखून आदि से छिलना। खरोंचा जाना।
**नुचवाना** क्रि० (हि) नोचने में प्रवृत्त करना। नोचने देना।
**नुत** वि० (सं) प्रशंसित। वंदित। स्तुत।
**नुति** स्त्री० (सं) वंदना। स्तुति।
**नुत्त** वि० (सं) १-चलाया हुआ। २-प्रेरित।
**नुत्फा** पुं० (अ) १-वीर्य। शुक्र। २-औलाद। संतति
**नुनखरा** वि० (हिं) नमकीन। स्वाद में नमक की तरह खारा।
**नुनखारा** वि० (हिं) दे० 'नुनखरा'।
**नुनना** क्रि० (हि) खेत काटना। लुनना।
**नुनाई** स्त्री० (हिं) लावण्य। सलोनापन। सुन्दरता।
**नुनेरा** पुं० (हिं) नोनी मट्टी आदि से नमक निकालने या इसका रोजगार करने वाला। लोनिया।
**नुमा** वि० (फा) दिखाने वाला। प्रगट करने वाला। सदृश।
**नुमाइन्दगी** स्त्री० (फा) प्रतिनिधित्व।
**नुमाइन्दा** पु० (फा) प्रतिनिधि।
**नुमाइश** स्त्री० (फा) १-प्रदर्शन। दिखावा। २-सजधज। तड़कभड़क। ३-वह मेला जहां अनूठी वस्तुएँ प्रदर्शनार्थ अनेक स्थानों से आती है।
**नुमाइशगाह** स्त्री० (फा) प्रदर्शनी।
**नुमाइशी** वि० (फा) जो केवल दिखावट के लिये हो २-जिसमें केवल ऊपरी तड़कभड़क हो और भीतरी कुछ सार न हो। ३-सुन्दर।
**नुसखा** पुं० (अ) वह कागज की पर्ची जिस पर रोगी के लिए औषध और उसकी सेवन विधि लिखी होती है। व्यय का योग। नकल। कापी।
**नुहरना** क्रि० (हि) दे० 'निहुरना'।
**नूत** वि०(सं) १-नूतन। नया। २-अनूठा। अनोखा
**नूतन** वि० (सं) १-नवीन। नया। २-हाल का। ताजा।
**नूतनता** स्त्री० (स) नवीनता। नयापन। नूतन होने का भाव।
**नूतनत्व** पु० (सं) दे० 'नूतनता'।
**नूतनीकरण** पु० (स) नवीकरण। (रिनोवेशन)।
**नूद** पुं० (सं) शहतूत।
**नून** पु० (?) १-आल। २-एक प्रकार की लता। पुं० (हिं) नमक। वि० (हि) दे० 'न्यून'।
**नूनताई** स्त्री० (हि) दे० 'न्यूनता'।
**नूनतेल** पुं० (हि) गृहस्थी की सामग्री।
**नूपुर** पुं० (सं) पैंजनी। घुंघरू। पैरों में पहनने का एक गहना।
**नूर** पुं० (अ) १-ज्योति। आभा। २-कांति। शोभा। श्री। ३-ईश्वर का एक नाम। (सूफी)।
**नूरचश्म** पुं० (अ) प्रिय पुत्र।
**नूरबाफ** पुं० (फा) जुलाहा।
**नूरा** पुं० (?) एक ही अखाड़े के पहलवानों में लड़ी जाने वाली कुश्ती। (पहलवानों की बोली)। वि० (?) नूरवाला। तेजस्वी।
**नूह** पुं० (अ) शामी या इबरानी (यहूदी, ईसाई, मुसलमान आदि) मतानुसार एक पैगम्बर।
**नृ** पु० (स) १-मनुष्य। आदमी। २-शतरंज की गोट ३-मनुष्य जाति।
**नृ-कपाल** पुं० (सं) मनुष्य की खोपड़ी।
**नृ-कुक्कुर** पुं० (सं) कुत्ते के समान व्यवहार करने वाला मनुष्य।
**नृ-केशरी** पु० (सं) १-नृसिंह अवतार। २-सिंह के समान पराक्रमी पुरुष।
**नृग** पुं० (सं) महाभारत के अनुसार एक राजा जो, एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट की योनि को प्राप्त हुए थे।
**नृघ्न** वि० (सं) नर-घातक।
**नृजग्ध** वि० (सं) नर-भक्षक।
**नृ-जल** पुं० (सं) मनुष्य का मूत्र।

नृ-जाति स्त्री० (सं) मनुष्य जाति।
नृतक पुं० (सं) दे० 'नर्त्तक'।
नृति स्त्री० (सं) नाच। नृत्य। नर्तन।
नृतू पुं० (सं) नर्तक। नरहिंसक।
नृत्त पु० (सं) १-भाव-भङ्गिमा के साथ नाचना। २-सुसंस्कृत अभिनय। ३-अंगविक्षेप।
नृत्य पुं० (सं) संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ पांव हिलाकर किया गया नाच इसके दो भेद है १-तांडव और २-लास्य।
नृत्यकी स्त्री० (हिं) नर्तकी। नाचने वाली।
नृत्यप्रिय पुं० (सं) १-महादेव। शिव। २-मोर।
नृत्यशाला स्त्री० (सं) नाचघर। (डान्सिंग हाउस)।
नृत्य-स्थान पु० (सं) नाचने का स्थान।
नृदेव पुं० (सं) १-राजा। २-ब्राह्मण।
नृप पुं० (सं) राजा। नरपति।
नृपकंद पु० (सं) लाल प्याज।
नृपगृह पु० (सं) राज-प्रासाद। महल।
नृपतरु पुं० (सं) खिरनी का पेड़।
नृपति पुं० (सं) १-महाराजा। २-कुबेर।
नृपत्नी स्त्री० (स) मनुष्यों का पालन करने वाली स्त्री
नृपद्रुम पुं०(सं) १-अमलतास। २-खिरनी का पेड़।
नृपद्रोही पुं० (सं) परशुराम।
नृपनीति स्त्री० (सं) राजनीति।
नृपप्रिय पुं० (सं) १-लाल प्याज। २-सरकंडा। ३-आम का पेड़। ४-पहाड़ी तोता।
नृपप्रियफला स्त्री०(सं) बैंगन।
नृपप्रिया स्त्री० (स) १-केतकी। २-पिंडखजूर।
नृपवल्लभ पु० (सं) राजाम्रवृक्ष।
नृपवल्लभा स्त्री० (स) केतकी।
नृपसभा पु० (सं) नरेन्द्र मण्डल। राजाओं की सभा
नृपसुता स्त्री० (स) १-राजकन्या। २-छछूंदर।
नृपांश पुं० (सं) राज-कर जो उपज का छठा या आठवां भाग होता है।
नृपात्मज पुं० (सं) राजकुमार।
नृपात्मजा स्त्री० (स) १-राजकुमारी। २-कडुवा घीया
नृपामय पुं० (सं) क्षय रोग।
नृपाल पु० (सं) राजा। वि० (सं) मनुष्यों का पालन करने वाला।
नृपासन पुं० (सं) राजसिंहासन। तख्त।
नृपोचित वि० (सं) जो राजाओं के योग्य हो। पु० (सं) १-काला बड़ा उड़द। २-लोबिया।
नृयज्ञ पुं० (सं) नरमेध यज्ञ।
नृलोक पुं० (स) मृत्युलोक। नरलोक।
नृशंस वि० (सं) १-क्रूर। निर्दय। २-अत्याचारी। जालिम।
नृशंसता स्त्री० (स) निर्दयता। क्रूरता।
ने प्रत्यय (हि) सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।
नेअमत स्त्री० (अ) दे० 'नेमत'।
नेई स्त्री० (हि) दे० 'नीव'।
नेउछावरि स्त्री० (हि) दे० 'न्योछावर'।
नेउतना क्रि० (हि) दे० 'नेवतना'।
नेउतहरि पु० (हि) निमंत्रित मेहमान या आदमी।
नेउता पुं० (हि) दे० 'न्योता'।
नेउला पुं० (हि) दे० 'नेवला'।
नेक अव्यय (फ) किंचित। कुछ। जरा-सा। वि० (फ) १-अच्छा। भला। उत्तम। २-सज्जन। शिष्ट।
नेक-अञ्जाम वि० (फ) जिसका नतीजा अच्छा हो।
नेक-अन्देश वि० (फ) भला चाहने वाला। हितैषी।
नेक-चलन वि० (फ) सदाचारी।
नेक-चलनी स्त्री० (फ) सदाचार। भलमनसाहत।
नेक-नाम वि० (फ) यशस्वी।
नेक-नामी स्त्री० (फ) सुयश। सुख्याति। नामवरी।
नेक-नीयत वि० (फ) अच्छी नीयत वाला। उत्तम विचार रखने वाला।
नेक-नीयती स्त्री० (फ) ईमानदारी। भलमनसाहत।
नेकर स्त्री० (अं) एक प्रकार का अंग्रेजी पहनावे का जांघिया जैसा वस्त्र जिसकी बगलों में जेबें होती हैं। (हाफ पैंट)।
नेकरी स्त्री (?) समुद्र की लहर का थपेड़ा जिससे जहाज आगे की ओर बढ़ता है।
नेकी स्त्री० (फ) १-उपकार। भलाई। २-सज्जनता। उत्तम व्यवहार।
नेकु अव्यय (हि) थोड़ा। जरा। तनिक। वि० (हि) थोड़ा। तनिक। किंचित।
नेग पुं (हि) १-विवाहादि के शुभावसरों पर संबन्धियों तथा आश्रितों को कुछ धन आदि देने की प्रथा या रीति। २-इस रस्म में दिया जाने वाला द्रव्य इत्यादि।
नेगचार पुं (हि) दे० 'नेग'।
नेगटी पुं० (हि) नेग की प्रथा या रीति का पालन करने वाला।
नेगी पुं० (हि) १-नेग पाने या लेने का अधिकारी नेग पाने वाला। २-प्रबंधक।
नेछावर स्त्री० (हि) दे० 'निछावर'।
नेजक पुं० (सं) धोबी। रजक।
नेजा पुं० (फा) १-भाला। २-निशान।
नेजाबरदार पुं०(फा) भाला या राजाओं का निशान आगे लेकर चलने वाला।
नेजाल पुं० (हि) भाला। बरछी।
नेटा पुं० (हि) नाक से निकलने वाला मल या कफ
नेठना क्रि० (हि) दे० 'नाठना'।
नेड़े क्रि० वि० (हि) निकट। पास।
नेत पुं०(हि) १-निर्धारण। किसी बात पर स्थिर होना

२-निश्चय। संकल्प। ३-व्यवस्था। स्त्री० (हि) दे० 'नेती'। स्त्री० (देश०) एक प्रकार का आभूषण।
**नेतक** स्त्री० (देश०) चूनर। चुन्दरी।
**नेतली** स्त्री० (हि) एक प्रकार की पतली डोरी।
**नेता** पुं० (हि) १-किसी क्षेत्र में लोगों को आगे चलाने का रास्ता दिखाने वाला। अगुआ। नायक (लीडर)। २-प्रभु। स्वामी। प्रधान। मुखिया।
**नेतागीरी** स्त्री० (हि) नेता का काम या पद। (लीडर शिप)।
**नेति** पु० (सं) १-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ 'इति या अन्त नहीं है' होता है। और जिसका उपयोग ईश्वर की महिमा के वर्णन के सम्बन्ध में होता है। २-हठयोग का एक भेद।
**नेती** स्त्री० (हि) मथानी की रस्सी जिससे दूध बिलोया जाता है।
**नेती-धोती** स्त्री० (हि) हठयोग की एक क्रिया जिसमें मुंह के रास्ते कपड़ा डालकर आतें साफ की जाती हैं।
**नेतृ** पुं० (सं) दे० 'नेता'।
**नेतृत्व** पुं० (सं) दे० 'नेतागीरी'।
**नेत्र** पु० (सं) १-आंख। २-(ज्यो०) दो की संख्या का सूचक शब्द। ३-मथानी की रस्सी।
**नेत्र-कनीनिका** स्त्री० (सं) आंख की पुतली।
**नेत्र-कोष** पुं० (सं) १-आंख का गोलक। २-फूल की कली।
**नेत्रच्छद** पु० (सं) पलक।
**नेत्रजल** पुं० (सं) आँसू।
**नेत्रपर्यन्त** पुं० (सं) आँख का कोना।
**नेत्रपाक** पुं० (सं) आँख का रोग।
**नेत्रपिंड** पुं० (सं) १-नेत्र-गोलक। २-बिल्ली।
**नेत्रबंध** पुं० (सं) आँखमिचौनी। का खेल।
**नेत्रभाव** पुं० (सं) केवल नेत्रों की चेष्टा से नृत्य आदि में सुख दुःख आदि का भाव प्रदर्शित करने की कला।
**नेत्रमल** पुं० (सं) आंख की कीचड़।
**नेत्रमार्ग** पुं० (सं) नेत्र-गोलक से मस्तिष्क तक गया सूत्र जिससे अन्तःकरण में दृष्टि ज्ञान होता है।
**नेत्ररंजन** पुं० (सं) काजल। सुर्मा।
**नेत्ररोग** पुं० (सं) आँखों में होने वाले ७६ प्रकार के रोग।
**नेत्रवस्त्र** पुं० (सं) घूँघट विशेष।
**नेत्रवारि** पुं० (सं) आंसू।
**नेत्रविंदु** पु० (सं) आंखों में डालने वाली दवा की बूँद।
**नेत्र-विज्ञान** पु० (सं) दृष्टि और प्रकाश के नियमों तथा सिद्धान्तों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान। (ऑप्टिक्स)।
**नेत्रस्तंभ** पुं० (सं) आँख का पथरा जाना।
**नेत्रांजन** पुं० (सं) आँखों का सुरमा।
**नेत्रांत** पुं० (सं) आँख के कोने और कान के नीचे का भाग। कनपटी।
**नेत्रांबु** पुं० (सं) आँसू।
**नेत्रांभस्** पुं० (सं) आँसू।
**नेत्रामय** पुं० (सं) आँख का एक रोग।
**नेत्री** स्त्री० (सं) १-लोगों का पथ प्रदर्शन करने वाली अग्रगामिनी। २-नदी। ३-नाड़ी। ४-लक्ष्मीदेवी
**नेत्रोपम** पुं० (सं) बादाम।
**नेत्र्य** वि० (सं) १-आँखों के लिये लाभकारी। २-आँखों से सम्बन्धित।
**नेत्र्यगण** पुं० (सं) रसौत, त्रिफला, लोध, ग्वारपाठा, वनकुलथी आदि नेत्रों के लिये उपयोगी वस्तुएं।
**नेदिष्ट** वि० (सं) १-पास का। २-निपुण।
**नेदिष्ठ** वि० (सं) निकटतम। अत्यन्त निकट।
**नेदीयस्** वि० (सं) निकटतर।
**नेनुआ** पुं० (हि) घियातोरई नामक तरकारी।
**नेनुवा** पुं० (हि) दे० 'नेनुआ'।
**नेपथ्य** पुं० (सं) अभिनय आदि में रङ्ग मंच के परदे के पीछे का वह स्थान जहाँ नाटक के पात्र अपना वेष बनाते हैं। २-शृङ्गार। ३-पर्दे के पीछे का स्थान।
**नेपुर** पुं० (हि) दे० 'नूपुर'।
**नेफा** पुं० (फा) पायजामे लहंगे आदि का वह स्थान जिसमें नाड़ा या डोरा डाला जाता है।
**नेब** पुं० (हि) सहायक। मन्त्री। दीवान। सहायता देने वाला।
**नेबुआ** पुं० (हि) दे० 'नीबू'।
**नेबू** पु० (हि) दे० 'नीबू'।
**नेम** पु० (सं) १-काल। समय। २-अवधि। ३-टुकड़ा। ४-दीवार। ५-छल। ६-आधा। ७-अन्य। ८-सायंकाल। ९-मूल। जड़। १०-नृत्य। पुं० (हि) १-नियम। बंधी हुई क्रम से होने वाली बात। २-रीति। रिवाज। ३-धार्मिक क्रियाओं का पालन।
**नेमत** स्त्री० (अ) दे० 'न्यामत'।
**नेमधरम** पुं० (हि) पूजा पाठ आदि धार्मिक कृत्य।
**नेमि** स्त्री० (सं) १-पहिये का चक्र या घेरा। चक्र-परिधि। २-कुएं की जगत। कूएं के चारों ओर का ऊंचा स्थान। जमवट। ३-किनारे का हिस्सा। ४-चरखी। पु० (सं) १-नेमिनाथ तीर्थङ्कर। २-भागवत के अनुसार एक दैत्य का नाम।
**नेमि-घोष** पुं० (सं) पहिये को 'घरघर' की आवाज।
**नेमि-ध्वनि** स्त्री० (सं) दे० 'नेमि-घोष'।
**नेमी** वि० (हि) १-नियम का पालन करने वाला। २-नियमितरूप से पूजा पाठ करने वाले, व्रत आदि धार्मिक कृत्य करने वाला। स्त्री० (हि) दे०

'नेमि'।
**नेमी-धरमी** *वि०* (हि) नेम-धर्म से रहने वाला।
**नेयार्थता** *स्त्री०* (सं) काव्यदोष का एक भेद।
**नेरा** *अव्यय* (हि) पास। निकट।
**नेरे** *अव्यय* (हि) समीप। निकट।
**नेरें** *अव्यय* (हि) दे० 'नेरे'।
**नेव** *पुं०* (हि) दे० 'नेब'। *स्त्री०* (हि) दे० 'नीवँ'।
**नेवग** *पुं०* (हि) नेग।
**नेवगी** *पुं०* (हि) नेगी।
**नेवछावर** *स्त्री०* (हि) दे० 'निछावर'।
**नेवज** *पुं०* (हि) देवता को अर्पित करने की कोई वस्तु। भोग। नैवेद्य।
**नेवजा** *पुं०* (फा) चिलगोजा।
**नेवत** *पुं०* (हि) दे० 'न्योता'।
**नेवतना** *क्रि०* (हि) न्योता। भोजन। निमन्त्रण देना।
**नेवतहरी** *पुं०* (हि) दे० 'न्योतहरी'।
**नेवता** *पुं०* (हि) दे० 'न्योता'।
**नेवतारी** *पुं०* (हि) दे० 'न्योतहरी'।
**नेवना** *क्रि०* (हि) झुकना। नवना।
**नेवर** *पुं०*(हि) पैर में पहनने की पाजेब जिसमें बजने वाले घुंघरू लगे होते हैं। नूपुर। *स्त्री०* (हि) पैर की रगड़ या टाप की रगड़ से घोड़े के पैर में होने वाला घाव। *वि०* (हि) बुरा। खराब। थोड़ा।
**नेवरना** *क्रि०* (हि) १-दूर होना। समाप्त होना। २ निवारण होना।
**नेवला** *पुं०* (हि) एक पिंडज जन्तु जो भूरे रङ्ग का होता है और सांप को मार डालता है।
**नेवाज** *वि०* (हि) दे० 'निवाज'।
**नेवाजना** *क्रि०* (हि) दे० 'निवाजना'।
**नेवाड़ा** *पुं०* (हि) दे० 'निवाड़'।
**नेवाड़ी** *स्त्री०* (हि) दे० 'नेवारी'।
**नेवाना** *क्रि०* (हि) झुकाना।
**नेवार** *पुं०* (देश०) नैपाल की एक आदि वासी जाति का नाम। *स्त्री०, पुं०* (हि) दे० 'निवार'।
**नेवारना** *क्रि०* (हि) दे० 'निवारना'।
**नेवारी** *स्त्री०* (हि) चमेली या जूही की जाति का एक श्वेत फूल वाला पौधा जो बरसात में अधिक फूलता है।
**नेष्टु** *पुं०* (सं) मिट्टी का ढेला।
**नेसुक** *वि०* (हि) तनक। थोड़ा सा। *क्रि० वि०* (हि) थोड़ा। जरा।
**नेस्त** *वि०* (फा) जो न हो। जिसका कोई अन्त न हो।
**नेस्त-नाबूद** *वि०* (फा) जड़ मूल से नष्ट।
**नेह** *पुं०* (हि) १-स्नेह। प्रीति। प्रेम। २ चिकना घी या तेल।
**नेही** *वि०* (हि) १-स्नेही। प्रेम करने वाला। प्रेमी।
**नैःश्रेयस** *वि०* (स) कल्याणकारक। मोक्ष देने वाला।
**नैःस्व** *वि०* (सं) निर्धनता। गरीबी।
**नै** *स्त्री०* (हि) १-देखो 'नय'। २-नदी। *स्त्री०* (फा) १-हुक्के की बांस की नली। २-बांसुरी।
**नैऋत** *वि०*(हि) निऋति सम्बन्धी। *पुं०* (हि)पश्चिम दक्षिण का कोण। २-निशाचर। ३-मूल नक्षत्र।
**नैक** *वि०* (हि) दे० 'नेक'।
**नैकचर** *वि०* (स) जो अकेले न चल कर झुण्ड बना कर चलते हों जैसे सूअर, हिरन आदि।
**नैकट्य** *पुं०* (सं) निकट होने का भाव। निकटता।
**नैकध** *अव्य०* (स) अनेक बार।
**नैगम** *वि०* (सं) १-निगम सम्बन्धी। २-जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो। *पुं०* (स) १-वेद का टीकाकार। २-उपनिषद। ३-उपाय। ४-विवेकपूर्ण आचरण। ५-नागरिक। सौदागार।
**नैगमिक** *वि०*(सं) वेदों से सम्बन्धित। वेदों से निकला हुआ।
**नैचा** *पुं०* (फा) हुक्के की दोहरी नली जिसके एक किनारे पर चिलम रखी जाती है और दूसरी ओर से मुंह में लेकर धूंआ खींचा जाता है।
**नैचाबंद** *पुं०*(फा) नैचा बनाने वाला।
**नैचिक** *पुं०* (सं) गाय बैल आदि का सिर या माथा
**नैचिकी** *स्त्री०* (सं) एक प्रकार की अच्छी गाय।
**नैचो** *स्त्री०* (हि) कूंए के पास की वह ढालू राह या भूमि जिस पर बैल चरसा खींचते समय चलते हैं। रपट। पैंड़ी।
**नैतिक** *वि०*(स) नीति सम्बन्धी। नीतियुक्त। (मॉरल)
**नैतिक-परित्याग** *पुं०* (सं) नीतियुक्त परित्याग। (मॉरल अबन्डेनमेन्ट)।
**नैत्यक** *वि०* (सं) १-प्रतिदिन करने का। सदैव अनुष्ठेय। २-अनिवार्य।
**नैत्यिक** *वि०* (सं) दे० 'नैत्यक'।
**नैत्रिक** *वि०* (स) नेत्र सम्बन्धी।
**नैदाघ** *वि०* (सं) गरमी का। ग्रीष्मऋतु सम्बन्धी।
**नैदाघिक** *वि०* (सं) दे० 'नैदाघ'।
**नैदानिक** *पुं०* (सं) निदान-शास्त्र विशारद। *वि०*(सं) रोगों का निदान जानने वाला।
**नैन** *पुं०* (हि) १-नयन। नेत्र। २-मक्खन। नवनीति।
**नैनसुख** *पुं०* (हि) एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा
**नैना** *पुं०* (हि) नयन। *क्रि०* (हि) झुकना। नयना।
**नैनू** *पुं०* (हि) १-एक प्रकार का बेलबूटेदार सूती कपड़ा। २-मक्खन।
**नैपुण** *पुं०* (सं) निपुणता।
**नैपुण्य** *पुं०* (सं) निपुणता। चातुर्य। पटुता। दक्षता
**नैभृत्य** *पुं०* (सं) १-लाज। संकोच। २-रहस्य।
**नैमंत्रण** *पुं०* (स) भोज। दावत।
**नैमय** *पुं०* (सं) व्यवसायी। व्यापारी।

**नैमत्तिक** *वि०* (सं) १-जो किसी कारण विशेष वश में किया जाय। जो किसी कारण या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो। २-कभी-कभी होने वाला। असाधारण। पुं० (सं) १-कारण। २-कभी-कभी होने वाला शास्त्रोक्त कर्म। ३-ज्योतिष।
**नैमिषी** *वि०*(सं) एक क्षण या निमिष में होने वाला।
**नैयमिक** *वि०* (सं) नियमानुसार। नियमित।
**नैया** *स्त्री०* (हि) नाव। नौका। किश्ती।
**नैयायिक** पुं० (सं) न्यायवेत्ता। न्यायशास्त्र का जानने (लॉजीशियन)।
**नैरंतर्य** पुं० (सं) निरन्तर का भाव। अविच्छेद।
**नैर** पुं० (हि) देश। शहर। जनपद।
**नैरपेक्ष्य** पुं० (सं) निरपेक्षता। तटस्थता। उदासीनता।
**नैरर्थ्य** पुं० (सं) निरर्थकता।
**नैराश्य** पुं० (सं) आशा का भाव। ना उम्मीद। निराश होने का भाव।
**नैराश्यवाद** पुं० (सं) प्रत्येक वस्तु को नैराश्यपूर्ण दृष्टि से देखने का सिद्धान्त। (पैसिमिज्म)।
**नैरुक्त** *वि०* (सं) निरुक्त सम्बन्धी। पुं० (सं) निरुक्त सम्बन्धी ग्रन्थ। निरुक्त जानने या अध्ययन करने वाला।
**नैरुक्तिक** पुं० (सं) दे० 'नैरुक्त'।
**नैरुज्य** पुं० (सं) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।
**नैऋत** *वि०* (सं) नैऋति-सम्बन्धी। पुं० (सं) पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी। २-राक्षस।
**नैर्गंध्य** पुं० (सं) गंधहीनता।
**नैर्गुण्य** पुं० (सं) १-गुणों का अभाव। कलाकौशल आदि का अभाव। २-निगुणशून्यता।
**नैर्घृण्य** पुं० (सं) निष्ठुरता। क्रूरता।
**नैर्मल्य** पुं० (सं) निर्मलता।
**नैर्लज्ज** पुं० (सं) निर्लज्जता।
**नैविड्य** पुं० (सं) निविड़ता।
**नैवेद्य** पुं० (सं) भोग। देवता पर चढ़ाने का भोज-पदार्थ।
**नैश** *वि०* (सं) १-रात-सम्बन्धी। २-रात में दिखाई देनेवाला। निशा का।
**नैशिक** *वि०* (सं) दे० 'नैश'।
**नैश्चल्य** पुं० (सं) अचलता। अटलता।
**नैश्चित्य** पुं० (सं) १-निश्चय। दृढ़ विचार। २ निश्चित कृत्य या रस्म।
**नैश्श्रेयस** *वि०* (सं) दे० 'निःश्रेयस'।
**नैष्ठिक** *वि०* (सं) १-निष्ठायुक्त। निष्ठावान्। २-ब्रह्मचारी। ३-अन्तिम। ४-निर्णीत। पक्का। ५ दृढ़। निर्दिष्ट। पुं० (सं) वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिये ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।
**नैष्ठुर्य** पुं० (सं) निठुराई। क्रूरता।
**नैष्ठ्य** पुं० (सं) दृढ़ता। स्थिरता।

**नैष्फल** पुं० (सं) निष्फलता।
**नैसर्गिक** *वि०* (सं) स्वाभाविक। परंपरागत। (नेचुरल)
**नैसा** *वि०* (हि) खराब। बुरा।
**नैसिक** *वि०* (हि) थोड़ा। तनिक।
**नैसुक** *वि०* (हि) थोड़ा। नैसिक।
**नैहर** पुं० (हि) स्त्री के पिता का घर। पीहर। मायका
**नो** *अव्यय* (सं) न। नहीं।
**नोइनी** *स्त्री०* (हि) दूध दुहते समय गाय के पैर में बांधने वाली रस्सी। बंधी।
**नोई** *स्त्री०* (हि) दे० 'नोइनी'।
**नोक** *स्त्री०* (फा) १-बहुत पतला सिरा। सूक्ष्म अग्र-भाग। २-आगे की ओर निकला हुआ कोन या सिरा।
**नोकझोंक** *स्त्री०* (हि) १-बनाव। शृंगार। २-तेज। आतंक। ३-व्यंग। ताना। ४-दबी हुई प्रतिद्वन्द्विता
**नोकदार** *वि०* (फा) १-नुकीला। पैना। २-दिल में असर करने वाला। ३-तड़कभड़क वाला।
**नोकना** *क्रि०* (?) ललचाना।
**नोकाझोंकी** *स्त्री०* (हि) १-छेड़छाड़। २-ताना। ३-विवाद।
**नोकीला** *वि०* (हि) दे०'नुकीला'।
**नोखा** *वि०* (हि) विचित्र। अद्भुत। विलक्षण।
**नोच** *स्त्री०* (हि) १-नोचने की क्रिया या भाव। २-कई ओर से बहुत से आदमियों का झपटना। लूट। ३-चारों ओर की मांग।
**नोचखसोट** *स्त्री०* (हि) छीनाझपटी। बलपूर्वक छीन लेना। लूट।
**नोचना** *क्रि०* (हि) लगी हुई वस्तु को खींच या झपट कर अलग करदेना। उखाड़ना। २-किसी वस्तु में दांत नख या पंजा धंसाकर उसका अंश खींच लेना। खरोंचना। ३-बार-बार तंग करके लेना।
**नोचानाची** *स्त्री०* (हि) दे० 'नोचखसोट'।
**नोचू** पुं० (हि) १-छीनाझपटी करने वाला। नोचने वाला। २-तंग करके लेने वाला। ३-तकाजों के मारे नाक में दम करने वाला।
**नोट** पुं० (अं) १-ध्यान रखने के लिये लिखने या टांकने का काम। २-पत्र। चिट्ठी। टिप्पणी। ३-राज्य की ओर से चलाया हुआ वह कागज जिस पर राज्य चिह्न और रुपयों की संख्या छपी रहती है और जो उतने सिक्के के रूप में चलता है।
**नोटपेपर** पुं० (अं) पत्र लिखने का कागज।
**नोटबुक** *स्त्री०* (अं) स्मरणार्थ लिखने की पुस्तिका। छोटी किताब।
**नोटिस** *स्त्री०* (अं) १-विज्ञप्ति। २-सूचना। ३-इश्तहार। विज्ञापन।
**नोन** पुं० (हि) नमक।
**नोनचा** पुं० (हि) १-नमकीन अचार। २ नमक मे

हुई आम की फाकों की खटाई । ३-लोनी जमीन ।
**नोनछी** स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी ।
**नोनहरा** पुं० (?) पैसा ।
**नोनहरामी** वि० (हि) नमकहराम ।
**नोना** पुं० (हि) १-नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों या नमी वाली जमीन पर मिलता है । २-लोनी मिट्टी । ३-शरीफा । सीताफल । वि० (हि) १-खारा । २-सलोना । लावण्यमय । सुन्दर ।
**नोना-चमारी** स्त्री०(हि) कामरूप की एक प्रसिद्ध जादूगरनी ।
**नोनिया** पुं० (हि) एक जाति विशेष जो लोनी मिट्टी से नमक निकालने का कार्य करती है । स्त्री० (हि) लोनिया । एक भाजी ।
**नोनी** स्त्री० (हि) लोनी मिट्टी । लोनिया । वि० (हि) सुन्दर । अच्छी ।
**नोर** वि० (हि) नया । नवीन ।
**नोल** वि० (हि) दे० 'नवल' । पुं० (हि) दे० 'नेवला' स्त्री० (देश०) चिड़िया की चोंच ।
**नोवना** क्रि० (हि) दुहते समय गाय के रस्सी से पैर बांधना ।
**नोहर** वि० (हि) १-आलस्य । जल्दी न मिलने वाला २-अनोखा ।
**नौ** स्त्री० (हि) १-पोत । जहाज । नौका । २-एक नक्षत्र का नाम । वि०(हि) १-आठ और एक । ९ । २-नया । नव ।
**नौआबाद** वि० (फा) हाल का बसा हुआ ।
**नौआबादी** स्त्री० (फा) उपनिवेश । (कोलोनी) ।
**नौकड़ा** पुं० (हि) तीन कौड़ियाँ लेकर तीन व्यक्तियों द्वारा खेले जाने वाला एक प्रकार का जूआ ।
**नौकर** पुं० (फा) १-काम धन्धे या टहल के लिए वेतन पर रखा हुआ आदमी । भृत्य । चाकर । २-वैतनिक कर्मचारी । (एम्प्लोई) ।
**नौकरशाही** स्त्री० (फा) वह शासन-पद्धति जिसमें सब अधिकारी बड़े-बड़े राज्य कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं । (ब्यूरोक्रेसी) ।
**नौकराना** पुं० (हि) नौकरों को मिलने वाला वेतन, दस्तूरी आदि ।
**नौकरानी** स्त्री० (फा) दासी । भृत्या । चाकरानी ।
**नौकरी** स्त्री (फा) १-नौकर का पेशा । २-वह पद जिसके लिए कोई वेतन मिलता हो । (एम्प्लॉयमेंट)
**नौकरी-पेशा** पुं० (फा) नौकरी से जीविका चलाने वाला । वेतनभोगी ।
**नौकर्ण** पुं० (सं) डांड । कन्धार ।
**नौकर्णधार** पुं० (सं) मल्लाह । मांझी । खेवे वाला ।
**नौकर्म** पुं० (सं) नाव चलाने का काम । मांझी का पेशा ।
**नौका** स्त्री० (सं) नाव । पोत । जहाज ।
**नौकागम्य** वि० (सं) पोत या नाव ले जाने योग्य । नाव्य । (नेविगेबल) ।
**नौकाघाट** वि० (सं) नाव या पोत से उतरने का स्थान । (फेरी) ।
**नौकादंड** पुं० (सं) नाव का डांड़ ।
**नौकाधिकरण** पुं० (सं) दे० 'नावधिकरण' । (एड-मिरल्टी) ।
**नौक्रम** पुं० (सं) नाव का बना हुआ पुल ।
**नौगमन** पुं० (सं) नदी समुद्र आदि के मार्ग से यात्रा करना । जलयात्रा । 'नेविगेशन' ।
**नौगर** स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही' ।
**नौगिरिही** स्त्री० (हि) दे० 'नौग्रही' ।
**नौग्रही** स्त्री० (हि) हाथ में पहनने का एक गहना ।
**नौघाट** पुं० (सं) दे 'नौकाघाट' । (फेरी) ।
**नौचर** वि० (सं) नाव पर चढ़ कर घूमने वाला ।
**नौ-चालक** पुं० (सं) नाव या जलपोत चलाने वाला (नेवीगेटर) ।
**नौछावर** स्त्री० (हि) दे० 'निछावर' ।
**नौज** अव्य० (हि) १-ऐसा न हो । ईश्वर न करे । (अनिच्छासूचक) । २-न हो । न सही । (बे परवाहीसूचक) ।
**नौजवान** वि० (फा) नवयुवक ।
**नौजवानी** स्त्री० (फा) चढ़ती युवावस्था ।
**नौजा** पुं० (फा) १-बादाम । २-चिलगोजा ।
**नौजी** स्त्री० लीची ।
**नौजीविक** पुं० (सं) मांझी ।
**नौटंकी** स्त्री० दे० ब्रज में होने वाला एक प्रकार का नाटक जिसमें अभिनय गाकर किया जाता है और नगाड़े का प्रयोग होता है ।
**नौतन** वि०(हि) दे० 'नूतन' ।
**नौतम** वि० (हि) १-एकदम नया । २-ताजा । पुं० (हि) विनय । नम्रता ।
**नौतरण** पुं० (सं) दे 'नौपरिवहन' । (नेविगेशन)
**नौतरणीय** वि० (सं) दे० 'नौकागम्य' । (नेवीगेबल)
**नौता** पुं० (हि) दे० 'न्यौता' ।
**नौतार्य** वि० (सं) जो नाव से पार किया जाय ।
**नौदंड** पुं० (सं) नाव चलाने का डण्डा ।
**नौदसी** स्त्री० (हि) रुपया उधार लेने की एक रीति जिसमें उधार लेने वाले को नौ रुपये के एक साल बाद दस रुपये देने पड़ते हैं ।
**नौध** पुं० (हि) नया पौधा ।
**नौधा** वि० (हि) नौ प्रकार की भक्ति ।
**नौनगा** पुं० (हि) नौ नग जड़ा हुआ बाजू पर पहनने का एक आभूषण ।
**नौना** क्रि० (हि) झुकना । नवना ।
**नौ-निरीक्षक** पुं० (सं) जल पोत की देखरेख करने वाला । (मैरीन सुपरवाइजर) ।

**नौ-नेता** पुं० (सं) वह जो जलपोत की पतवार पकड़े रहे। नाविक।
**नौ-परिवहन** पुं० (सं) समुद्री जलपोत आदि चलाना। (नेवीगेशन)।
**नौपरिवहन-विषयक** वि० (सं) समुद्र यात्रा, नाविक आदि से जिसका सम्बन्ध हो। (नॉटिकल)।
**नौ-प्रभार** पुं० (सं) १-जहाज पर लादे जा सकने वाला भार। २-जहाज का अपना भार या उस जलराशि का भार जितना जो जल में सन्तरण किये जाने पर उसके द्वारा हटाया जाय। (टनेज)।
**नौबत** स्त्री० (फा) १-बारी। पारी। २-दशा। ३-संयोग। ४-मंगलसूचक शहनाई जो देवालय या विवाह आदि में बजाते हैं।
**नौबतखाना** पुं०(फा) फाटक के ऊपरी भाग का स्थान जहाँ बैठकर शहनाई बजाई जाती है।
**नौबत-नवाज** पुं० (फा) नक्कारची।
**नौबती** पुं०(फा) १-नक्कारची। नौबत बजाने वाला २-प्रहरी। ३-खेमा। ४-बिना सवार सजा हुआ घोड़ा।
**नौबतीदार** पुं० (फा) खेमे का प्रहरी।
**नौबरार** पुं० (फा) १-नदी के सरक जाने से निकली हुई भूमि। २-वह भूमि जिस पर पहली बार कर लगा हो।
**नौ-बल** पुं० (स) जहाजी बेड़ा। जल सेना। (नेवी)
**नौ-बलाध्यक्ष** पुं० (सं) जल सेना या नौ-बल का प्रधान सेनापति या अधिकारी। (एडमिरल)।
**नौबाला** स्त्री०(फा) वह लड़की जो हाल ही में बालिग हुई हो।
**नौ-भार** पुं० (सं) जहाज पर लादा हुआ माल। (कार्गो)।
**नौमासा** पुं० (हि) १-गर्भ का नवां महीना। २-गर्भ के नवें मास होने या करने वाली एक रस्म।
**नौमि** क्रि० (सं) एक वाक्य जिसका अर्थ है—'मैं नमस्कार करता हूँ'।
**नौमी** स्त्री० (हि) दे० 'नवमी'।
**नौ-मुस्लिम** वि० (फा, अ) जो अभी हाल ही में मुसलमान हुआ हो।
**नौ-यान** पुं० (सं) जलयान। पोत। जहाज।
**नौयान-करणिक** पुं० (सं) वह लिपिक जो किसी जहाज पर जहाजी मामलों के पत्र व्यवहार का हिसाब या अन्य हिसाब रखता है। (नेविगेशन क्लर्क)।
**नौरङ्ग** पुं० (हि) १-एक प्रकार की चिड़िया। २-औरङ्गजेब शब्द का विकृत रूप।
**नौरतन** पुं० (हि) दे० 'नवरत्न'। नौरंगा। स्त्री०(हि) नौ मसालों से तैयार की गई एक प्रकार की चटनी
**नौरस** वि० (हि) १-ताजे रस वाला। २-पका हुआ। ३-ताजा। ४-नवयुवक।
**नौरातर** पुं० (हि) दे० 'नवरात्र'।
**नौरोज** पुं० (फा) पारसियों के वर्ष का पहला दिन।
**नौल** वि० (हि) दे० 'नवल'। पुं० (हि) जहाज पर माल लादने का भाड़ा।
**नौलखा** वि० (हि) नौ लाख का। बहुमूल्य। जड़ाऊ।
**नौवाहक** पुं० (सं) १-नाव या पोत चलाने वाला। २-जहाज का बड़ा अफसर। (कैप्टेन)।
**नौवाहनिक** स्त्री० (स) किसी देश या राज्य की नौ-सेना या नाविक-विभाग के अधिकारियों का वर्ग। (ऐडमिरेल्टी)।
**नौवाहनिक-क्षेत्र** पुं० (सं) सामुद्रिक न्यायालय का अधिकार क्षेत्र। (ऐडमिरेल्टी ज्यूरिस्डिक्शन)।
**नौवाहनिक-न्यायालय** पुं० (सं) सामुद्रिक नाविक-विभाग के कर्मचारियों के मामलों का निबटारा करने वाला न्यायालय। (एडमिरेल्टी कोर्ट)।
**नौवाहनी-अध्यक्ष** पुं० (स) नौ-सेना का प्रधान अधिकारी। (एडमिरल)।
**नौवाहनी-पर्षद** स्त्री० (सं) जल सेना का संचालन करने वाली परिषद्। (बोर्ड ऑफ एडमिरेल्टी)।
**नौ-विज्ञान** पुं० (सं) जहाजों, नाविकों तथा नौका-नयन-सम्बन्धी विज्ञान। (नॉटिकल साइंस)।
**नौशक्ति** स्त्री० (सं) राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। (नेवल फोर्स)।
**नौशा** पुं० (फा) वर। दूल्हा।
**नौशी** स्त्री० (फा) नववधू। दुलहिन।
**नौसत** स्त्री० (हि) सोलह शृङ्गार।
**नौसरा** पुं० (हि) नौ लड़ी माला, हार या गजरा।
**नौसरिया** वि० (हि) बालग्राज। धूर्त।
**नौसादर** पुं० (हि) एक तीक्ष्ण क्षार जो सींग, खुर, बाल आदि के भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है।
**नौसाधन** पुं० (सं) जल सेना। नौसेना। जहाजी बेड़ा।
**नौसिख** वि० (हि) दे० 'नौसिखिया'।
**नौसिखिया** वि० (हि) जिसने काम अभी अभी सीखा हो। नवशिक्षित।
**नौ-सेना** स्त्री० (सं) जल सेना। जहाजी बेड़ा। (नेवी)
**नौ-सेनाध्यक्ष** पुं० (सं) नौ सेना का वह अधिकारी या अध्यक्ष जिसके आदेश से सब काम होते हैं। (नेवल कमाण्डर)।
**नौ-सेना-संघ** पुं० (सं) नावी सैनिकों का सघटित समाज। (नेवी-लीग)।
**नौसैनिक** वि० (सं) नौ-सेना सम्बन्धी। (नेवल)।
**नौ-सैनिक-अड्डा** पुं० (हि) नौ सेना की कार्यवाही आरम्भ करने का अड्डा। (नेवल-बेस)।
**नौसैनिक-कार्रवाई** स्त्री० (हि) नौ सैनिकों द्वारा की

जाने वाली कार्यवाही। (नेवल-एक्शन)।
**नौसेनिक-शक्ति** स्त्री० (हि) जल सेना। (नेवल-पावर)
**न्यंक** पुं० (स) रंज का एक अंक।
**न्यक्** अव्य० (सं) एक अव्यय जो तिरस्कार, अपमान आदि का अर्थवाची है।
**न्यग्रोध** पुं० (सं) १-बटवृक्ष। २-बाहु। ३-महादेव। ४-शमी वृक्ष।
**न्यसन** पुं०(सं) १-न्यास। धरोहर। २-सौंपना। देना
**न्यस्त** वि० (सं) १-नीचे फेंका हुआ या धरा हुआ। २-स्थापित किया हुआ। ३-धरोहर रखा हुआ। हस्तान्तरित किया हुआ। ४-त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।
**न्यस्त-शस्त्र** वि०(स) १-जिसने अपने हथियार डाल दिये हों। २-निःशस्त्र। ३-जो हानिकारक न हो।
**न्याउ** पुं० (हि) दे० 'न्याय'।
**न्याति** स्त्री० (स) जाति।
**न्याद** पुं० (स) भोजन। आहार।
**न्यामत** स्त्री० (प) बहुमूल्य या लभ्य पदार्थ।
**न्याय** पुं० (सं) १-नियम के अनुकूल बात। वाजिब बात। २-किसी व्यवहार या मुकदमे में दोषी या निर्दोष आदि का विचारपूर्वक निर्धारण। फैसला। निर्णय। दो पक्षों के बीच का निर्णय (जस्टिस)। ३-छःदर्शनों में से एक जिसके प्रवर्त्तक गौतमऋषि थे। ४-वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक में दृष्टान्त के रूप में होता है। ५-समवय तर्क जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन यह पांच अवयव होते हैं। वि० (स) ठीक। उचित।
**न्यायकर्त्ता** पुं० (सं) न्याय करने वाला अधिकारी। निर्णायक।
**न्याय-निर्णयन** पुं० (सं) फैसला करना। (एड-ज्यूडिकेशन)।
**न्यायज्ञ** पुं० (सं) न्याय-शास्त्र का ज्ञाता। (ज्यूरिस्ट)
**न्यायतः** क्रि० वि० (सं) १-न्याय के अनुसार। २-धर्म और नीति के अनुसार। ठीक-ठीक।
**न्यायपत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिस पर न्याय-कर्त्ता अपना निर्णय लिखता है। (डिक्री)।
**न्यायपथ** पुं०(सं)१-आचरण का न्यायसम्मत मार्ग। उचित रीति। २-मीमांसा शास्त्र।
**न्यायपर** वि० (सं) न्याय के अनुसार आचरण करने वाला।
**न्यायपरता** स्त्री० (सं) न्यायी होने का भाव। न्याय-शीलता।
**न्याय-परायण** वि० (सं) दे० 'न्यायपरता'।
**न्यायपालिका** स्त्री० (स) देश का न्याय-विभाग या न्याय व्यवस्था। (ज्यूडिशियरी)।
**न्यायपीठ** पुं० (सं) छोटी अदालत। वह न्यायालय जिसमें साधारण अभियोगों का निर्णय किया जाता है। (बैंच)।
**न्याय-प्रिय** वि० (सं) न्यायशील।
**न्यायमत** पुं० (सं) न्यायालय का मत या विचार।
**न्याय-मूर्त्ति** पुं० (सं) किसी प्रदेश के सर्वोच्च या मुख्य न्यायालय के विचारक की उपाधि। (जस्टिस)।
**न्यायलिपिक** पुं० (सं) अदालती मुन्शी। (ज्यूडिशि-यल-क्लर्क)।
**न्यायवर्ती** वि०(सं) सदाचारी। न्याय पर चलने वाला।
**न्यायवादी** वि० (स) ठीक और न्यायोचित बात कहने वाला।
**न्याय-विद्या-विशारद** पुं० (सं) न्याय-शास्त्र में प्रवीण व्यक्ति।
**न्याय-विभाग** पुं० (सं) न्याय व्यवस्था सम्बन्धी महकमा जो न्याय-मंत्री के आधीन होता है। (ज्यूडिशियल-डिपार्टमेंट)।
**न्याय-विभ्रंश** पुं० (सं) न्याय का ठीक मार्ग से भ्रष्ट हो जाना। (मिसकैरिज ऑफ जस्टिस)।
**न्याय-शास्त्र** पुं० (सं) न्याय सम्बन्धी शास्त्र। (ज्यूरि-सप्रूडेंस)।
**न्याय-शील** वि० (सं) दे० 'न्यायपर'।
**न्यायशुल्क** पुं० (सं) वह शुल्क जो न्यायालय में प्रार्थना-पत्र के साथ देना पड़ता है। (कोर्ट-फी)।
**न्यायसंगत** वि० (सं) न्याय की दृष्टि से उचित।
**न्याय-सभा** स्त्री० (स) कचहरी। अदालत। (कोर्ट)।
**न्यायसभ्य** पुं० (सं) उस वर्ग का सदस्य जो न्यायाधीश के साथ बैठकर किसी को दोषी या निर्दोष ठहराने के लिये अपना निर्णय या मत देता है। (ज्यूरीमैन)।
**न्यायसभ्यासन** पुं० (सं) न्यायसभ्य के बैठने का स्थान। (ज्यूरी बॉक्स)।
**न्यायसमिति** स्त्री० (स) न्याय से सम्बन्ध रखने वाली समिति। (ज्यूडिशियल कमेटी)।
**न्यायाधिकरण** पुं० (सं) किसी विवादग्रस्त विषय पर विचार करके अपना निर्णय करने वाला अधि-कारी अथवा न्यायालय। (ट्रिब्यूनल)।
**न्यायाधिपति** पुं० (सं) किसी प्रदेश के प्रधान या सर्वोच्च न्यायालय का विचारक। (जस्टिस)।
**न्यायाधीश** पुं०(सं) न्याय विभाग का वह उच्च अधि-कारी जो मुकदमों का निर्णय करता है। (जज)।
**न्यायालय** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ सरकार की ओर से विवादों या मुकदमों का न्याय होता है। कचहरी अदालत। (कोर्ट)।
**न्यायालय-अपमान** पुं० (सं) न्यायालय की मान-हानि (कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट)।
**न्यायालय उपस्थितिपत्र** पुं० (सं) न्यायालय में उप-स्थित होने पर दिया गया प्रमाण-पत्र। (एपीयरेन्स-

**न्यायालयेतर** वि० (सं) न्यायालय से असम्बन्धित। (नोन-ज्यूडिशियल)।
**न्यायिक** वि० (सं) न्याय-सम्बन्धी। (फोरेंजिक)।
**न्यायिक-कार्यरीति** स्त्री० (सं) दे० 'न्यायिक कार्य-वाही'।
**न्यायिक-कार्यवाही** स्त्री० (सं) न्याय सम्बन्धी कार्य-विधि। (ज्यूडिशियल-प्रोसीडिंग्स)।
**न्यायिक-जांच** पुं० (हिं) अदालती जांच पड़ताल। ज्यूडिशियल-इंक्वारी)।
**न्यायिक-निर्णय** पु० (सं) न्यायासन पर बैठकर किसी विवाद पर दिया गया निर्णय। (एडज्यूडिकेशन)।
**न्यायिक प्राधिकारी** पुं० (स) न्याय-विभाग का प्राधिकारी। (ज्यूडिशियल अथॉरिटी)।
**न्यायिक-मुद्रांक** पुं० (सं) वह मुद्रांक या अंक पत्र जो न्यायालय में पेश किये जाने वाले प्रार्थना पत्र पर लगते हैं। (ज्यूडिशियल-स्टाम्प)।
**न्यायिक-विधि** स्त्री० (सं) न्यायसङ्गत कार्यवाही।
**न्यायी** पुं० (सं) न्याय पर चलने वाला।
**न्यायोचित** वि० (सं) न्यायसङ्गत।
**न्याय्य** वि०(सं) १-न्याय की दृष्टि से उचित। २-ठीक उपयुक्त।
**न्यार** वि० (हिं) दे० 'न्यारा'। पुं० (देश०) चारा। चौपायों का आहार। पुं० (हिं) पसही धान।
**न्यारा** वि० (हिं) १-अलग। दूर। जुदा। २-अन्य। ३-निराला। अनोखा।
**न्यारिया** पुं० (हिं) सुनारों या जौहरियों की दूकान का कूड़ा करकट (नियार) को धोकर सोना चांदी निकालने वाला।
**न्यारे** क्रि० वि० (हि) दूर। अलग। पृथक।
**न्याव** पुं०(हिं) १-नियम। आचरण-पद्धति। २-उचित पक्ष। ३-विवेक। इन्साफ। ४-विवाद का निपटारा।
**न्यास** पुं० (सं) १-स्थापन करना। रखना। २-धरोहर। थाती। ३-संन्यास। ४-किसी विशेष कार्य के लिए किसी को सौंपी हुई सम्पत्ति या धन। (ट्रस्ट)
**न्यासधारी** पुं० (सं) न्यास-धन की देखरेख करने वाला। (ट्रस्टी)।
**न्यासपत्र** पुं० (सं) वह दस्तावेज जिसपर किसी कार्य विशेष के लिए सौंपी हुई सम्पत्ति-सम्बन्धी बातों का विवरण होता है। (ट्रस्टीशिप डीड)।
**न्यासप्रन्यास** पुं० (सं) किसी की सौंपी हुई थाती की देखरेख करने वाली समिति। (ट्रस्ट)।
**न्यासभंग** पुं० (सं) किसी सौंपी हुई थाती का दुरुपयोग (ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)।
**न्यास-सम्पत्ति** स्त्री० (सं) वह धन या सम्पत्ति जो किसी कार्य विशेष के लिए निकाली या सौंपी गई हो। (ट्रस्ट प्रॉपर्टी)।
**न्यासिन्** वि० (सं) त्यागी। सन्यासी।
**न्यून** वि०(सं) १-कम। अल्प। २-हलका। घटकर। ३-नीच।
**न्यूनकोण** पुं० (सं) वह कोण जो समकोण से छोटा हो। (ऐक्यूट-एंगल)।
**न्यून-कोण त्रिभुज** पुं० (सं) वह त्रिभुज जिसके सब कोण समकोण से छोटे हों। (ऐक्यूट-एंगल-ट्राइ-एंगल)।
**न्यूनतर** वि० (सं) प्रचलित परिमाण से कम।
**न्यूनता** स्त्री० (स) कमी। हीनता।
**न्यूनताबोधक** वि० (सं) उससे छोटा होने का बोध कराने वाला शब्द। अल्पार्थक। (डिम्यूनिटिव)।
**न्यूनधी** वि० (सं) मूर्ख।
**न्यूनन** वि० (सं) संक्षेप। घटा देना। कम कर देना। (एब्रिजमेंट)।
**न्यूनांग** वि० (सं) जिसका कोई सा भी अंग विकृत न हो।
**न्यूनाधिक** वि० (सं) असम। कम-बढ़ती।
**न्यूनीकरण** पुं० (सं) घटा देना। कम कर देना। (अबेटमेंट)।
**न्यूनोन्नत क्षेत्र** पुं० (सं) वह क्षेत्र जिसकी खनिज द्रव्य आदि की दृष्टि से बहुत कम उन्नति हुई हो। (अंडर डेवेलप्ड एरिया)।
**न्योछावर** स्त्री० (हिं) दे० 'निछावर'।
**न्योजी** स्त्री० (हि) १-लीची। २-चिलगोजा।
**न्योतना** क्रि० (हिं) किसी को अपने यहां बुलाने का निमन्त्रण देना।
**न्योतनी** स्त्री० (हिं) विवाह आदि अवसरों पर होने वाला खाना-पीना।
**न्योतहरी** वि० (हि) निमन्त्रित व्यक्ति।
**न्योता** पुं० (हिं) १-मंगल कार्य आदि में लोगों को सम्मलित होने के लिये अपने यहां बुलाना। बुलावा। २-निमन्त्रण आने पर दिया जाने वाला धन। ३-ब्राह्मण को भोजन के लिये बुलाना।
**न्योरा** पुं० (हि) १-'नेवला'। २-बड़े दाने का घुंघरू।
**न्योला** पुं० (हिं) दे० 'नेवला'।
**न्योली** स्त्री० (हिं) हठयोग में पेट के मलों को साफ करने की क्रिया।
**न्हैनी** स्त्री० (हिं) दे० 'नोई'।
**न्हान** पुं० (हिं) स्नान।
**न्हाना** क्रि० (हिं) दे० 'नहाना'।

[शब्दसंख्या—२७४२०]

# प

**प** देवनागरी वर्णमाला का २१वां व्यञ्जन वर्ण जिसका उच्चारण ओठ से होता है।

**पंक** पुं० (सं) कीच। कीचड़।

**पंककर्पट** पुं० (सं) नदी की बाढ़ से बहकर आई हुई मिट्टी।

**पंककीर** पुं० (सं) टिटहरी नामक पक्षी।

**पंकक्रीड़** पुं० (सं) सूअर। वि० (सं) कीचड़ में खेलने वाला।

**पंकक्रीड़नक** पुं० (सं) सुअर।

**पंकग्राह** पुं० (सं) मगर। घड़ियाल।

**पंकछिद** पुं० (सं) रीठे का वृक्ष।

**पंकज** वि० (सं) कीचड़ में उत्पन्न होने वाला। पुं० (सं) कमल।

**पंकजन्मा** पुं० (सं) १-कमल। २-सारस पक्षी। ३-ब्रह्मा।

**पंकजराग** पुं० (सं) पद्मराग मणि।

**पंकजात** पुं० (सं) कमल।

**पंकजासन** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**पंकजिनी** स्त्री० (सं) १-कमलाकर। २-कमल का पौधा। ३-कमोदनी का दल। ४-कमलपूर्ण जगह।

**पंकदिग्ध** वि० (सं) कीचड़ में सना हुआ।

**पंकभाक्** वि० (सं) कीचड़ में डूबा हुआ।

**पंकरुह** पुं० (सं) कमल। सारस।

**पंकवास** पुं० (सं) केकड़ा।

**पंकिल** वि० (सं) १-जिसमें कीचड़ हो। २-गंदला। मैला।

**पंकिलता** स्त्री० (सं) गन्दगी। कलुष।

**पंक्ति** स्त्री० (सं) १-विशेषतः सजातिय सजीव वस्तुओं या व्यक्तियों का क्रमबद्ध एक दूसरे के पीछे खड़े होने से बना हुआ समूह। श्रेणी। कतार। २-रेखा। लकीर। ३-दस की संख्या। ४-पतंग।

**पंक्तिकृत** वि० (सं) श्रेणीबद्ध।

**पंक्तिच्युत** वि० (सं) १-किसी दोष के कारण जाति-बहिष्कृत। २-जो अपनी कोटि से नीचे हटा दिया गया हो। (डिमोटेड)।

**पंक्तिपावन** पुं० (सं) वह ब्राह्मण जिसे यज्ञादि में बुलाकर भोजन कराना श्रेष्ठ माना गया हो। ऐसा ब्राह्मण जो पंक्ति को पवित्र करता है। (मनु स्मृति)।

**पंक्तिबद्ध** वि० (सं) श्रेणीबद्ध।

**पंक्तिबीज** पुं० (हि) बबूल। उरगा।

**पंख** पुं० (हि) डैना। पर।

**पंखड़ी** स्त्री० (हि) पुष्पदल। फूलों का वह रंगीन पटल जिसके खिलने से फूल का रूप बनता है।

**पंखा** पुं० (हि) वह उपकरण जिसके हिलाने से हवा लगती है।

**पंखाकुली** पुं० (हि) पंखा खींचने वाला कुली या नौकर।

**पंखापोश** पुं० (हि) पंखे के ऊपर चढ़ाने का गिलाफ।

**पंखिया** स्त्री० (हि) १-भूसा या भूसे के महीन टुकड़े।

**पंखी** पुं० (हि) १-पक्षी। २-एक प्रकार का ऊनी कपड़ा। ३-पङ्खड़ी। स्त्री० (हि) छोटा पङ्ख।

**पंखुड़ा** पुं० (हि) दे० 'पखुरा'।

**पंखुड़ी** स्त्री० (हि) फूल का दल। पँखड़ी।

**पंखुरा** पुं० (हि) दे० 'पखुरा'।

**पंखेरू** पुं० (हि) दे० 'पखेरू'।

**पंग** वि० (हि) लंगड़ा। बेकाम। स्तब्ध।

**पंगत** स्त्री० (हि) १-पांत। कतार। २-भोज में भोजन करने वालों की पंक्ति। ३-सभा। ४-भोज।

**पंगति** स्त्री० (हि) दे० 'पंगत'।

**पंगा** वि० (हि) दे० 'पंगु'।

**पंगु** वि० (सं) जो पैर से चलने में असमर्थ हो। लंगड़ा। लूला। गतिहीन।

**पंगुता** स्त्री० (सं) लंगड़ापन।

**पंगुल** वि० (सं) दे० 'पंगु'।

**पंगो** स्त्री०(हि) वह मिट्टी जो नदी बरसात बीत जाने पर डालती है।

**पंच** पुं० (सं) १-पांच की संख्या। २-पांच या अधिक मनुष्यों का समूह। ३-सर्वसाधारण। जनता। ४-पंचायत का सदस्य। (आर्बीट्रेटर)। ५-न्याय करने वाला समाज। ६-जूरी का सदस्य।

**पंचक** पुं० (सं) १-पांच का समूह। पांच सैकड़े का ब्याज। २-शकुन शास्त्र। ३-पांच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं। (फलित ज्यो०)।

**पंचकन्या** स्त्री०(सं) पुराणानुसार पांच स्त्रियां-अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, और मन्दोदरी जो विवाहित होने पर भी कन्या रहीं।

**पंचकर्म** पुं०(सं) चिकित्सा की पांच क्रियाएँ—वमन, विरेचन, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासन।

**पंचकल्याण** पुं० (सं) लाल या काले रंग का घोड़ा जिसके पैर या सिर सफेद हों।

**पंचकवल** पुं० (सं) भोजन करने से पहले पांच ग्रास जो कुत्ते, पतित, कौए आदि के लिये निकाल देने चाहियें।

**पंचकाम** पुं०(सं)कामदेव के पांच नाम-काम, मन्मथ, कंदर्प. मकरध्वज और मीनकेतु।

**पंचकोण** पुं० (सं) पांच भुजाओं वाला क्षेत्र। वि० (सं) जिसमें पांच कोने हों।

**पंचकोसी** स्त्री० (हि) काशी की परिक्रमा।
**पंचकोशी** स्त्री० (सं) १-पांच कोस के घेरे में बसी काशी नगरी। २-पांच कोस का फासला।
**पंचगंगा** स्त्री०(सं)१-गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा, धूतपापा इन पांच नदियों का समूह। २-काशी का एक प्रसिद्ध घाट।
**पंचगव्य** पुं० (सं) गाय से उत्पन्न पांच पवित्र पदार्थ दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर।
**पंचगुण** वि० (सं) पांच गुना। पुं० (सं) पृथ्वी के पांच गुण-शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध।
**पंचगुणी** स्त्री० (सं) जमीन। भूमि।
**पंचगौड़** पुं० (सं) ब्राह्मणों के पांच प्रकार के वर्ग सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथुल तथा उत्कल।
**पंचतत्त्व** पुं० (सं) १-पंचभूत। पांच तत्वों का समूह—पृथ्वी, जल, वायु, तेज तथा प्रकाश।
**पंचतपा** पुं० (सं) पंचाग्नि तापने वाला। तपस्वी। चारों ओर अग्नि जला कर धूप में तप करने वाला
**पंचता** स्त्री० (सं) १-पांच का भाव। २-शरीर को घटित करने वाले पांच भूतों का अलग अलग अवस्थान। मौत। मृत्यु।
**पंचतरु** पुं० (सं) स्वर्ग के पांच पवित्र वृक्ष—कल्प पारिजात, मदार, संतान और हरिचंदन।
**पंचत्व** पुं० (सं) १-पांच का भाव। २-मृत्यु। मौत
**पंचतिक्त** पुं० (सं) पांच कड़वी औषधियां—सोंठ, कुट, चिरायता, गुरुच, भटकटैया।
**पंचतोलिया** पुं० (हि) पांच तोले का बाट।
**पंचथु** पुं० (सं) कोयल।
**पंचदश** वि० (सं) पन्द्रह।
**पंचदशी** स्त्री० (सं) १-पूर्णिमासी। अमावस्या।
**पंचदेव** पुं० (सं) पांच देवता—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश तथा देवी।
**पंचद्रविड़** पुं० (सं) दक्षिण भारत के पांच प्रकार के ब्राह्मण—महराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर तथा द्रविड़।
**पंचधा** अव्य० (सं) पांच प्रकार।
**पंचनख** पुं० (सं) वह पशु जिसके पांच नख होते हैं जैसे—बन्दर।
**पंचनद** पुं० (सं) पंजाब, जहाँ पांच नदियाँ बहती हैं सतलुज (शतद्रू), व्यास (विपाशा), रावी (इरावती) चिनाब (चन्द्रभागा) तथा जेहलम (वितस्था)।
**पंचनाथ** पुं० (सं) बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, जगन्नाथ रङ्गनाथ तथा श्रीनाथ।
**पंचनामा** पुं० (हि) १-वह कागज जो वादी तथा प्रतिवादी किसी विवाद को निपटाने के लिए पंच चुनते समय लिखते हैं। २-वह कागज जिसपर पंच-निर्णय या फैसला लिखा हो।
**पंचनिर्णय** पुं० (सं) १-पंच का किया हुआ फैसला २-किसी विवाद के लिये नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय (आर्बीटेशन)।
**पंचन्यायाधिकरण** पुं० (सं) वह न्यायालय जिसमें विवादों का निर्णय पंचों द्वारा किया जाय। (आर्बी-ट्रल-ट्रिब्यूनल)।
**पंचपल्लव** पुं०(सं) पांच वृक्षों के पत्ते—आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) तथा बेल जो पूजा में काम आते हैं।
**पंचपात्र** पुं० (सं) १-गिलास के आकार का बड़े मुंह का बरतन जो पूजा में जल रखने के काम आता है। २-वह श्राद्ध जिसमें पांच पात्रों को रख कर भोग लगाया जाता है।
**पंचपाद** वि० (सं) पांच पैर वाला। पुं० (सं) संवत्सर
**पंचपिता** पुं० (हि) दे० 'पंचपितृ'।
**पंचपितृ** पुं० (सं) पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता तथा भय से रक्षा करने वाला।
**पंचपित्त** पुं० (सं) वैद्यक शास्त्रानुसार वाराह, छाग, महिष, मत्स्य तथा यह पांच प्रकार के पित्त।
**पंचपुष्प** पुं० (सं) पांच प्रकार के पुष्प—चम्पा, आम, शमी, कमल तथा कनेर।
**पंचप्राण** पुं० (सं) शरीरस्थ पांच प्राणवायु—प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान।
**पंचबाण** पुं० (सं) कामदेव के पांच प्रकार के बाण—सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण तथा तापन।
**पंचबाहु** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**पंचभद्र** पुं० (सं) १-वह घोड़ा जिसके शरीर में पांच स्थान पर फूल के चिह्न हों। पंचकल्याण घोड़ा। वि० (सं)१-पांचों गुणों वाला। २-पांच मसालों की चटनी
**पंचभर्त्तारी** स्त्री० (हि) द्रोपदी।
**पंचभुज** पुं० (सं) पांच भुजा वाली आकृति। पांच कोण वाला।
**पंचभूत** पुं० (सं) पांच प्रधान तत्व जिनसे संसार की सृष्टि हुई—आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी
**पंचम** वि० (सं) १-पांचवां। २-सुन्दर। ३-दक्ष। पुं० (सं) १-सात स्वरों में पांचवा स्वर (संगीत) जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना जाता है। २-एक राग।
**पंचमकार** पुं० (सं) मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।
**पंचमहापातक** पुं० (सं) मनुस्मृति के अनुसार पांच महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्री-गमन तथा इन पातकों को करने वाले का संसर्ग।
**पंचमहायज्ञ** पुं० (सं) स्मृतियों के अनुसार गृहस्थ के लिए पांच आवश्यक कृत्य—अध्यापन का ब्रह्मयज्ञ, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, हवन या देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव या भूत-यज्ञ और अतिथिपूजन या नृयज्ञ।
**पंचमहाव्याधि** पुं० (सं) अर्श, यक्ष्मा कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद यह पांच बड़े रोग।

**पंचमांगी** पुं० (सं) दूसरे देश से गुप्त सम्बन्ध रखकर स्वदेश की गुप्त सूचनायें देकर हानि पहुंचाने वाला। देशद्रोही। भेदिया। (फिफ्थ कालमिस्ट)।
**पंचमी** स्त्री० (सं) १-शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाचवीं तिथि। २-द्रौपदी। ३-रागिनी। ४-अपादान कारक
**पंचमुख** पुं० (सं) १-सिंह। २-शिव। ३-पांच नोक का बाण।
**पंचमेल** वि० (हि) १-जिसमें पांच प्रकार की वस्तुएँ मिली हों। २-जिसमें सब प्रकार की वस्तुएँ हों। ३-साधारण।
**पंचरङ्ग** वि० (हि) १-पांच रङ्ग का। २-अनेक रङ्गों का। रङ्गबिरङ्गा।
**पंचरङ्गा** वि० (हि) दे० 'पंचरङ्ग'।
**पंचरत्न** पुं० (सं) पांच प्रकार के रत्न--नीलम, हीरा, पद्मराग मणि, मोती तथा मूंगा।
**पंचराशिक** पुं० (सं) गणित की एक क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों द्वारा पांचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
**पंचल** पुं० (सं) शकरकन्द।
**पंचलड़ा** वि० (हि) पांच लड़ों वाला (हार)।
**पंचलड़ी** स्त्री० (हि) पांच लड़ों वाली माला।
**पंचलरी** स्त्री० (हि) दे० 'पंचलड़ी'।
**पंचलवण** पुं०(सं) पांच प्रकार के नमक-कांच, सेंधा, सामुद्र, विट् और सौवर्चल।
**पंचलोह** पुं० (सं) १-पांच धातु—सोना, चांदी, तांबा, पीतल तथा राँगा। २-इन धातुओं से बनी धातु।
**पंचवक्त्र** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**पंचवक्त्रा** स्त्री० (सं) दुर्गा।
**पंचवट** पुं० (सं) यज्ञोपवीत। जनेऊ।
**पंचवांसा** पुं० (हि) एक रस्म जो गर्भ रहने से पांच महीने में की जाती है।
**पंचबाण** पुं० (सं) दे० 'पंचबाण'
**पंचवृक्ष** पुं० (सं) दे० 'पंचतरु'।
**पंचविंश** वि० (सं) पचीसवां।
**पंचविध** वि० (सं) पांच प्रकार का। पांचगुना।
**पंचशब्द** पुं० (सं) १-तन्त्री, ताल, झांझ, नगारा और तुरही यह पांच मंगलसूचक बाजे। २-पांच प्रकार की ध्वनि—वेदध्वनि, वंदीध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और निशानध्वनि।
**पंचशर** पुं० (सं) १-कामदेव के पांच बाण। २-कामदेव।
**पंचशिला** स्त्री०(सं) बौद्ध धर्म के आचरण के पांच मूल सिद्धान्त— अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि। पंचशील का गलत रूप जो आजकल प्रचलित है।
**पंचशील** पुं० (सं) भारत सरकार की विदेश नीति के पांच मूल सिद्धान्त—१-एक दूसरे की प्रादेशिक या भौगोलिक अखण्डता एवं सार्वभौमत्व का सम्मान। २-किसी के हित पर किसी भी दृष्टि से आक्रमण न करना। ३-आर्थिक, राजनैतिक या सैद्धान्तिक किन्हीं भी कारणों से एक दूसरे से घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना। ४-सबके प्रति समानता और परस्पर लाभ की भावना। ५-शान्ति की प्रधानता तथा सह-अस्तित्व।
**पंचांग** पुं० (सं) १-पांच अंग या पांच अंगों वाली वस्तु। २-वृक्ष के पांच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल। ३-ज्योतिष के अनुसार वह पुस्तिका जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार लिखे होते हैं। पत्रा। ३-प्रणाम करने का वह ढंग जिसमें घुटने, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेक कर आँखें देवता की ओर करके मुँह से प्रणाम कहते हैं। ४-राजनीति में सहाय, साधन, उपाय, देश-कालभेद और विपद्-प्रतिकार। ५-पंचभद्र घोड़ा। ६-कछुआ। वि० (सं) पांच अंगों वाला।
**पंचांग-शुद्धि** स्त्री० (सं) वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण की शुद्धता।
**पंचागी** स्त्री० (सं) हाथी की कमर में बांधने का रस्सा
**पंचाक्षर** वि० (स) जिसमें पांच अक्षर हों। पुं० (सं) शिव का एक मन्त्र जिसमें पांच अक्षर होते हैं— 'ॐ नमः शिवाय'।
**पंचाग्नि** स्त्री० (सं) १-अन्वाहार्य, पचन, गार्हपत्य, आह्वानीय और आवसध्य नाम की पांच अग्नियां २-ग्रीष्म ऋतु में धूप में बैठकर और चारों ओर अग्नि जला कर किया जाने वाला एक तप। ३-चीता, चिचड़ी, भिलावाँ, गन्धक और मदार नामक पांच औषधियां जो बहुत गरम होती है।
**पंचाट** पुं० (हि) निर्णय करना या देना। परिनिर्णय (अवार्ड)।
**पंचात्मा** स्त्री० (सं) पञ्चप्राण।
**पंचात्मक** वि० (सं) पांच तत्वों वाला। (शरीर)।
**पंचानन** वि० (स) पञ्चमुखी। जिसके पांच मुख हों। पुं० (सं) १-शिव। २-सिंह। ३-संगीत में स्वर-साधन की एक प्रणाली।
**पंचानवे** वि० (सं) नब्बे और पांच। सौ में पाच कम ६५।
**पंचामृत** पुं० (सं) १-दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिला कर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जाने वाला पदार्थ जिसे पवित्र मान कर श्रद्धा-सहित पान किया जाता है। २-वैद्यक में पांच गुणकारी औषधियां-गिलोय, गोखरू, मुसली, गोरखमुण्डी और शतावरी।
**पंचाम्ल** पुं० (सं) पांच अम्ल या खट्टे पदार्थ— बेर, अनार, बिषाम्लि, अम्लवेद और बिजौरा नीबू।

**पंचायत** स्त्री० (हि) १-किसी विवाद या झगड़े का निबटारा करने के लिए चुने हुए लोगों की सभा। पंचों की सभा। २-पंचों द्वारा किसी विवाद के सम्बन्ध में किया गया विचार या निर्णय। (आर्बीट्रेशन)। ३-बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर इधर उधर की गपशप (व्यंग)। ४-पंचों का वाद-विवाद।

**पंचायतन** पुं० (सं) किसी देवता और उसके साथ चार देवताओं की मूर्ति का समूह।

**पंचायतबोर्ड** पुं० (हि) गांव के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो आपस के सब प्रकार के झगड़े निबटाती है और गांव की सफाई, पक्के मार्ग तथा अन्य विकास कार्य या योजनाओं को कार्यान्वित करती है।

**पंचायती** वि० (हि) १-पञ्चायत का। पञ्चायत का किया हुआ। २-पञ्चायत सम्बन्धी। ३-जनता का जनता द्वारा संचालित। सर्वसाधारण का।

**पंचायती-राज्य** पुं० (हि) जनता के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य। गणतन्त्र।

**पंचायुध** पुं० (सं) विष्णु।

**पंचाल** पुं० (सं) १-एक प्राचीन देश का नाम जो हिमालय और गंगा के दोनों ओर स्थित था। २-पंचाल देश का निवासी। ३-पंचाल देश का राजा। ४-शिव। महादेव। ५-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण (SSI) होता है।

**पंचालिका** स्त्री० (स) गुड़िया। पुतली।

**पंचाली** स्त्री० (सं) १-द्रौपदी। २-बच्चों के खेलने की गुड़िया। ३-शतरंज की बिसात। ४-एक गीत का नाम।

**पंचावयव** पुं० (सं) न्याय के पांच अवयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

**पंचाशत** वि० (सं) पचास।

**पंचाशिका** स्त्री० (सं) पचास श्लोक या कविता वाली पुस्तक।

**पंचाशीत** वि० (सं) पचासीवां।

**पंचास्य** वि० (सं) पांच मुँह वाला। पुं० (सं) १-शिव २-सिंह। (पञ्चानन)।

**पंचाह** पुं० (सं) १-पांच दिन में होने वाला एक यज्ञ २-पांच दिन का समूह।

**पंचेन्द्रिय** स्त्री० (सं) पांच ज्ञानेन्द्रियां जिनसे प्राणियों को बाह्य जगत का ज्ञान होता है।

**पंचेशु** पुं० (सं) कामदेव।

**पंचोपचार** पुं०(सं) गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य-यह पांच पूजन के साधन। इन द्रव्यों से किया गया पूजन।

**पंचोषण** पुं० (सं) पांच औषधि विशेष—पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, मिर्च और चित्रक।

**पंछा** पुं० (हि) प्राणियों के शरीर या पेड़ पौधों के अंग से चोट लगने या छिलने पर निकलने वाला स्राव २-छाले, फफोले आदि में भरा हुआ पानी।

**पंछाला** पुं० (हि) फफोला। फफोले का पानी।

**पंछी** पुं० (हि) पक्षी। चिड़िया। उड़ने वाला पखेरू।

**पंज** पुं० (फा) पाँच।

**पंजर** पुं० (सं) १-शरीर की हड्डियों का ढांचा। कंकाल। ठटरी। २-पसली। ३-शरीर। देह। ४-पिंजड़ा।

**पंजरक** पुं० (सं) १-बेंत या बांस का बुना हुआ बड़ा टोकरा। झाबा। २-पिंजरा।

**पंजरना** क्रि० (हि) दे० 'पजरना'।

**पंजरी** स्त्री० (हि) अर्थी। टिकठी।

**पंजरोजा** वि० (फा) पांच दिनों का। अस्थाई। जो टिकाऊ न हो।

**पंजहजारी** पुं० (फा) पांच हजार सैनिकों का नायक

**पंजा** पुं० (हि) १-हाथ या पैर की पांचो उँगलियों का समूह। २-पांच का समूह। ३-उँगलियां और हथेलियों का संपुट। ४-जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियां रहती हैं। ५-पांच उँगलियों के आकार का अथवा वह सादा दो पल्लों वाला उपकरण जिससे कागज दबा कर रखा जाता है। ६-पांच बूटियों वाला ताश का पत्ता। ७-पंजा लड़ाने की प्रतियोगिता या क्रिया।

**पंजाब** पुं० (फा) भारत का वह प्रदेश जहां सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और जेहलम-यह पांच नदियां बहती हैं, भारत विभाजन के पश्चात अब इसके दो भाग हो गये हैं।

**पंजाबी** वि० (फा) पंजाब का। पंजाब सम्बन्धी। पुं० (फा) पंजाब का निवासी। स्त्री० (फा) पंजाब की भाषा।

**पंजि** स्त्री०(सं) दे० 'पंजी'।

**पंजिका** स्त्री० (सं) १-पंचांग। २-टीका। व्याख्या। ३-हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। ४-यमराज की वह लेखा बही जिसमें मनुष्यों के शुभ और अशुभ कार्यों का लेखा किया जाता है।

**पंजी** स्त्री० (सं) १-पंचांग। पत्रा। २-बही। लेखा। हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तका। ३-भूमि, गृह आदि के हस्तांतरण आदि का विवरण लिखने की पुस्तिका। (रजिस्टर)।

**पंजीकार** पुं०(सं) किसी कार्यालय में पंजी पर हिसाब चढ़ाने या विवरण लिखने वाला। लेखक। (रजिस्ट्रार)।

**पंजीकारक** पुं० (सं) दे० 'पंजीकार'।

**पंजीबंधन** वि० (सं) लेखों आदि का प्रमाणिक सिद्ध होने के लिये किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना। (रजिस्ट्रेशन)।

**पंजीबद्ध** वि० (सं) जो पंजी, या रजिस्टर में चढ़ा दिया गया हो। निबद्ध। (रजिस्टर्ड)।
**पंजीबद्धधारी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास सम्पत्ति आदि के कागज (दस्तावेज) पंजीबद्ध हों (रजिस्टर्ड होल्डर)।
**पंजीबद्ध-प्राप्य-स्वीकृति** स्त्री०(सं) पंजीयत पत्र के साथ लगा हुआ वह कागज जो भेजने वाले को प्राप्त-कर्ता के हस्ताक्षर होने के बाद डाकखाना वापिस भेज देता है। (रजिस्टर्ड ए० डी०)।
**पंजीयक** पुं० (सं) १-पंजीकार। २-किसी इच्छापत्र लेख आदि को प्रामाणिक प्रतिलिपि सरकारी पंजी में सुरक्षित रखने वाला अधिकारी। ३-किसी विश्वविद्यालय; उच्च न्यायालय, सहयोग समिति आदि का वह अधिकारी जो अपने कार्यालय के सब महत्त्वपूर्ण कागज, लेख या दस्तावेज सुरक्षित-रूप से रखने की व्यवस्था करता है। (रजिस्ट्रार)।
**पंजीयन** पुं० (सं) १-मकान, भूमि आदि की बिक्री का विवरण या किसी पारसल, पत्र, चिट्ठी, रुपये आदि सुरक्षित रूप में भेजे जाने के लिये प्राप्तकर्त्ता का नाम पता आदि पंजी में चढ़ाकर अभिलेख के रूप में रखा जाना। २-अभ्यर्थियों आदि का नाम पता सूची में दर्ज कर लिया जाना। (रजिस्ट्रेशन, रजिस्ट्री)।
**पंजीयनवेष्टन** पुं० (सं) रजिस्टरी करवाया हुआ लिफाफा। (रजिस्टर्ड एन्वेलप)।
**पंजीयनशुल्क** पुं० (सं) पंजीबद्ध करवाने की फीस (रजिस्ट्रेशन-फी)।
**पंजीयित** वि० (सं) पंजीबद्ध। पंजी में दर्ज करवाया हुआ। (रजिस्टर्ड)।
**पंजीयित-अभिभोक्ता** पुं (सं) वह व्यक्ति जिसका किसी जमीन या मकान पर रहने का अधिकार सरकार द्वारा मान लिया गया हो और उसे इस बात का प्रमाण पत्र दे दिया गया हो। (रजिस्टर्ड-अकूपेन्ट)।
**पंजीयित-कार्यालय** पुं० (सं) वह कार्यालय जिसका पञ्जीयन हो चुका हो। (रजिस्टर्ड ऑफिस)।
**पंजीयित-क्रमांक** पुं० (सं) सरकारी पञ्जी का क्रमांक जिस पर किसी मकान आदि की बिक्री या अन्य दस्तावेज पञ्जी या नाम सूची में दर्ज किये गये हों। (रजिस्टर्ड नम्बर)।
**पंजीयित-डाक** स्त्री० (हिं) दे० 'पंजीयित-पत्र'। (रजिस्टर्ड पोस्ट)। (रजिस्टर्ड मेल)।
**पंजीयित-पत्र** पु (सं) वह चिट्ठी जिसे डाकखाने में पंजीबद्ध करा दिया गया हो और जिसको प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचाने में डाक विभाग जुम्मेदार हो। (रजिस्टर्ड लैटर)।
**पंजीयित-पूंजी** स्त्री० (सं) सरकारी कार्यालय में पंजीयित पूंजी। (रजिस्टर्ड केपीटल)।
**पंजीयित-पोटली** स्त्री० (हि) वह पोटली या बण्डल जिसे डाकखाने में पञ्जीबद्ध कराकर भेजा गया हो (रजिस्टर्ड-पासंल)।
**पंजीयित-भेषज-वृत्तिक** पुं०(हि) वह वैद्य या डाक्टर जिसका नाम राज्य नामसूची में पञ्जीबद्ध हो। (रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टीशनर)।
**पंजीयित-प्रतिभूति** स्त्री० (सं) वह रकम जो जमानत के रूप में दी गई हो और पंजीबद्ध हो (रजिस्टर्ड सिक्युरिटी)।
**पंजीयित-स्कन्ध** पुं० (सं) वह माल या स्कन्ध जिसको पञ्जीबद्ध करवा लिया गया हो अथवा जो पञ्जी में दर्ज हो। (रजिस्टर्ड स्टॉक)।
**पंजीयित-समिति** स्त्री० (सं) वह समिति जिसे राज्य पञ्जीकार के कार्यालय में दर्ज करवा लिया गया हो (रजिस्टर्ड सोसाइटी)।
**पंजीरी** स्त्री० (हि) धनिया, चीनी, सोंठ आदि मिला कर घी में भूना हुआ एक चूर्ण।
**पंजेरा** पुं० (हि) बरतनों को भालने का कार्य करने वाला कारीगर।
**पंड** पुं० (सं) १-नपुंसक। २-हिजड़ा। ३-जिसमें फल न लगते हों।
**पंडक** पुं० (सं) दे० 'पंड'।
**पंडग** पुं० (सं) नपुंसक। खोजा।
**पंडल** वि० (हि) पांडुवर्ण का। पीला।
**पंडवा** पुं० (?) भैंस का बच्चा।
**पंडा** पुं० (हिं) १-किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी। घाटिया। पुजारी। २-रसोइया। रोटी बनाने वाला ब्राह्मण। ३-गंगा पुत्र। स्त्री० (स) १-विवेका-त्मक बुद्धि। विवेक। ज्ञान। शास्त्रज्ञान।
**पंडाइन** स्त्री० (हि) पांडे की स्त्री।
**पंडाल** पुं० (?) वह बड़ा मण्डप जो किसी सभा के अधिवेशन के लिये बनाया या लगाया जाता है।
**पंडित** वि० (सं) १-विद्वान। बुद्धिमान। २-निपुण। चतुर। ३-संस्कृत भाषा का विद्वान। ४-जिसे किसी विषय का पूरा ज्ञान प्राप्त हो। पुं० (सं) १-शास्त्रज्ञ। २-ब्राह्मण।
**पंडितजातीय** वि० (सं) कुछ-कुछ चतुर।
**पंडितमंडल** पुं० (सं) विद्वानों का समुदाय।
**पंडितमानिक** पुं० (सं) अपने को पण्डित मानने वाला व्यक्ति।
**पंडितम्मन्य** वि० (सं) पंडित्याभिमानी। मूर्ख।
**पंडिता** स्त्री० (सं) विदुषी। बुद्धिमती।
**पंडिताइन** स्त्री० (हि) १-पंडित की पत्नी। २-ब्राह्मणी
**पंडिताई** स्त्री०(हि) १-पांडित्य। विद्वत्ता। २-पंडितों का व्यवसाय या काम।
**पंडिताऊ** वि० (हिं) पंडितों की तरह। पंडितों का ढंग

**पंछितानी** स्त्री० (हिं) दे० 'पंछिताइन'।
**पंडु** वि०(सं) १-पीलापन लिये हुए। मटमैला। २-सफेद 'श्वेत'। ३-पीला।
**पंडुक** पुं० (हिं) कबूतर की जाति का एक पक्षी जो ललाई लिये हुए भूरे रंग का होता है। पेंडकी। फाख्ता।
**पंडुकी** स्त्री० (हिं) मादा पंडुक।
**पंडोह** पुं० (हिं) परनाला। पनाला। आबदान।
**पंडूर** पुं० (हिं) जलसर्प।
**पंतोजना** क्रि० (हिं) रूई ओटना।
**पंतोजी** स्त्री० (हिं) धुनकी। रूई धुनने का साधन।
**पंत्यारी** स्त्री० (हिं) पंक्ति। कतार।
**पंथ** पुं० (हिं) १-मार्ग। रास्ता। २-रीति। आचार-व्यवहार का ढंग। ३-धर्ममार्ग। मत। सम्प्रदाय।
**पंथकी** पुं० (हिं) पथिक। राही। मुसाफिर।
**पंथान** पुं० (हिं) मार्ग। रास्ता।
**पंथिक** पुं० (हिं) दे० 'पंथी'।
**पंथिक-दल** पुं० (हिं) सिख सम्प्रदाय के अनुयायियों का एक सामाजिक दल। (पन्थिक-पार्टी)।
**पंथी** पुं० (हिं) १-पथिक। राही। बटोही। २-किसी पन्थ का अनुयायी।
**पंद** स्त्री० (फा) शिक्षा। उपदेश।
**पंदरह** वि० (हिं) दस और पांच।
**पंदरहवाँ** वि० (हिं) चौदह के बाद आने वाला।
**पंधलाना** क्रि० (देश) फुसलाना। बहलाना।
**पंप** पुं० (अं) १-वह नल जिसके द्वारा या हवा एक ओर से दूसरी ओर पहुँचाई जाती हैं। २-एक प्रकार का जूता।
**पंपा** स्त्री० (सं) १-दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी २-इस नदी के किनारे बसा हुआ नगर। ३-इस नगर के पास का एक तालाब। (रामायण)।
**पंपाल** वि० (हिं) पापी।
**पँवर** स्त्री० (हिं) सामान। ड्योढ़ी।
**पंवरना** क्रि० (हिं) १-तैरना। पानी में तैरना। २-थाह लेना। पता लगाना।
**पंवरि** स्त्री० (हिं) १-प्रवेश का द्वार। २-वह मकान जिसमें से होकर किसी मकान में प्रवेश करें ड्योढ़ी।
**पंवरिया** पुं० (हिं) १-द्वारपाल। दरबान। चौकीदार २-शुभ अवसर पर ड्योढ़ी पर बैठ कर गाने वाल याचक।
**पंवरी** पुं० (हिं) पदत्राण। खड़ाऊँ।
**पंवाड़ा** पुं० (हिं) १-व्यर्थ की विस्तारपूर्वक कही हुई बात। २-एक प्रकार का देहाती गीत। ३-बात का बतंगड़। बढ़ा कर कही गई बात।
**पंवार** पुं० (हिं) राजपूतों की एक जाति।
**पंवारना** क्रि० (हिं) हटाना। दूर करना। फेंकना।
**पंवारी** स्त्री० (देश) लोहे में छेद करने का एक औजार
**पंसरहट्टा** पुं० (हिं) वह बाजार जहाँ पंसारियों की दुकानें हों।
**पंसारी** पुं० (हिं) हल्दी, मिर्च आदि साधारण उपयोग में आने वाले मसाले या औषधियाँ बेचने वाला बनिया या दुकानदार।
**पंसासार** पुं० (हिं) पासे का खेल।
**पंसियाना** क्रि० (हि) पासे से मारना।
**पँसुरी** स्त्री० (हिं) दे० 'पसली'।
**पँसुली** स्त्री० (हिं) दे० 'पसली'।
**प** वि० (सं) १-पीने वाला जैसे—पादप। २-रक्षक व शासक। अभिभावक जैसे—नृप, क्षितिप, गोप। पुं० (सं) १-वायु। २-पत्र। पत्ता। ३-अण्डा।
**पइग** पुं० (हिं) दे० 'पंग'।
**पइठ** पुं० (हिं) दे० 'पैठ'।
**पइठना** क्रि० (हि) पैठना।
**पउँरि** स्त्री० (हिं) ड्योढ़ी।
**पउनार** स्त्री० (हिं) कमलदण्ड। पद्मनाल।
**पउनी** स्त्री० (हिं) दे० 'पौनी'।
**पउला** पुं० (हि) एक प्रकार की भद्दी खड़ाऊँ जिसमें उंगली फैलाने के स्थान रस्सी लगी रहती है।
**पकड़** स्त्री० (हि) १-पकड़ने की क्रिया। ग्रहण। २-पकड़ने का ढङ्ग। ३-द्वन्द युद्ध में एक दूसरे को पकड़। ४-हाथापाई। भिड़न्त। ५-समझ। भूल आदि ढूंढ निकालने की क्रिया या भाव।
**पकड़धकड़** स्त्री० (हि) दे० 'धरपकड़'।
**पकड़ना** क्रि० (हिं) १-थामना। धरना। गहना। २-काबू में लाना। गिरफ्तार करना। ३-गति या व्यापार न करने देना। अवरुद्ध करना। स्थिर करना। ४-ढूँढ निकालना। पता लगाना। ५-टोकना। ६-किसी बात में आगे बढ़े हुए के बराबर पहुँच जाना। ७-अपने स्वभाव के अन्तर्गत करना। ८-आक्रान्त करना। घेरना। ९-समझना।
**पकड़वाना** क्रि० (हिं) ग्रहण कराना। पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
**पकड़ाई** स्त्री० (हि) १-पकड़ने की क्रिया। २-पकड़ने की मजदूरी।
**पकड़ाना** क्रि० (हिं) किसी के हाथ में देना या रखना
**पकाना** क्रि० (हि) १-फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना। कच्चा न रह जाना। २-गरमी या आँच खाकर गलना या तैयार होना। रंधना। सीझना। ३-फोड़े या घाव में मवाद पड़ना। ४-चौसर में गोटियों का सब घरों को पार करके अपने घर में आ जाना। ५-कीमत ठहराना। मामला तै करना।
**पकरना** क्रि० (हि) दे० 'पकड़ना'।

**पकवान** पुं० (हिं) घी में तल कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

**पकवाना** क्रि० (हिं) १-पकाने का काम दूसरे से कराना। २-आंच पर तैयार करना।

**पकाई** स्त्री० (हि) १-पकाने का भाव या क्रिया। २-पकाने की मजदूरी।

**पकाना** क्रि० (हि) १-फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २-आग पर रख कर गलाना या तैयार करना। ३-फोड़े आदि को उपचार आदि से ऐसी दशा को पहुंचाना कि उसमें मवाद पड़ जाय। ४-पक्का करना।

**पकार** पुं० (सं) 'प' अक्षर।

**पकारान्त** वि० (सं) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो।

**पकाव** पुं० (हि) १-पकने का भाव। २-पीब। मवाद

**पकावन** पुं० (हि) दे० 'पकवान'।

**पकोड़ा** पुं० (हि) घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी या बट्टी। बड़ी।

**पकोड़ी** स्त्री० (हि) छोटे आकार का पकोड़ा।

**पक्करस** पुं० (सं) मदिरा। शराब।

**पक्कवारि** पुं० (सं) कांजी।

**पक्का** वि० (हि) १-जो कच्चा न हो। फल या अन्न जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो। २-जो आग पर पकाया गया हो। जिसमें कोई कमी न हो ३-जो प्रौढ़ता को पहुँच गया हो। ४-जिसमें संस्कार या संशोधन की क्रिया पूर्ण हो गई हो। तैयार। साफ-जैसे चीनी। ५-अनुभवी। जो आंच पर दृढ़ हो गया हो। ६-दृढ़। मजबूत। ७-निश्चित ८-प्रामाणिक। ९-जो अभ्यस्त व्यक्ति के द्वारा बना हो। १०-जिसमें छीजन आदि निकल चुकी हो। ११-जिसमें अच्छी तरह जांच कर हिसाब दर्ज किया गया हो।

**पक्का-गाना** पुं० (हिं) शास्त्रीय-सङ्गीत।

**पक्का-चिट्ठा** पुं० (हिं) आय-व्यय का ठीक जांचा हुआ चिट्ठा। (बैलेंस शीट)।

**पक्कीनिकासी** स्त्री० (हिं) कुल आय में से होने वाली बचत। (नेट एसेट्स)।

**पक्खर** स्त्री०(हि) दे० 'पाखर'। वि० (हिं) दृढ़। पक्का। तीक्ष्ण। तेज।

**पक्व** वि० (सं) १-पका हुआ। २-पक्का। ३-परिपुष्ट

**पक्वकृत** पुं० (सं) १-पकाने वाले। २-फोड़े आदि को पकाने वाला। नीम।

**पक्वकेश** पुं० (सं) पके हुए सफेद बाल।

**पक्वता** स्त्री० (सं) पक्कापन। पक्व होने का भाव।

**पक्वातिसार** पुं० (सं) एक प्रकार का अतिसार जो आमातिसार का उलटा होता है।

**पक्वाधान** पुं० (सं) पेट के भीतर का वह स्थान जहां अन्न जाता है और पचता है।

**पक्वान्न** पुं० (सं) १-पका हुआ अन्न। २-पकवान

**पक्वाशय** पुं० (सं) दे० 'पक्वाधान'।

**पक्ष** पुं० (सं) १-किसी स्थान या वस्तु के दोनों ओर जो अगले और पिछले से भिन्न हों। २-किसी विषय के दो अधिक परस्पर विरोधी तत्वों, सिद्धान्तों या दलों में से कोई एक। ३-झगड़ा या विवाद करने वाले दलों में से एक। (पार्टी)। ४-किसी ओर से लड़ने वाली सेना का दल। सेना। बल। ५-सहायक। साथी। ६-तीर के पिछले भाग में लगा हुआ पर। शरपक्ष। ७-पंद्रह दिन का पखवारा ८-किसी दल का अनुयायी। ९-प्रत्युत्तर। १०-दीवार। मकान। घर। ११-पड़ोस। १२-शुद्धता। १३-हाथ में पहनने का कड़ा। १४-दो की संख्या-वाचक शब्द। १५-चांद्र मास के दो भागों में से एक। १६-(न्या०) वह वस्तु जिसकी स्थिति संदिग्ध हो। १७-शरीर का अर्धभाग। १८-पक्षी। १९-चूल्हे का मुँह। २०-पंख। २१-दरवाजे का पल्ला या किवाड़। २२-सेना का पार्श्व।

**पक्षक** पुं० (सं) वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों जो मिलाकर किसी कार्य को करने में लगे हुए हों। दल (पार्टी)।

**पक्षगम** वि० (सं) उड़ने वाला। पुं० (सं) पक्षी। चिड़िया।

**पक्षग्रहण** पुं० (सं) किसी भी पक्ष का हो जाना।

**पक्षघात** पुं० (सं) वह रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं। लकवा।

**पक्षघ्न** वि० (सं) पक्षनाशक।

**पक्षज** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**पक्षता** स्त्री० (सं) १-तरफदारी। २-किसी एक पक्ष में हो जाना। ३-किसी का एक अंग बन जाना।

**पक्षद्वार** पुं० (सं) १-अप्रधान द्वार। २-खिड़की का का दरवाजा। ३-चोर दरवाजा।

**पक्षधर** पुं० (सं) दे० 'पक्षपाती'।

**पक्षपात** पुं० (सं) १-औचित्य तथा न्यायसंगत विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होने वाली प्रवृति, सहानुभूति या उस पक्ष का समर्थन। २-पर या डैनों का झड़ना।

**पक्षपातिता** स्त्री० (सं) १-पक्षपात। तरफदारी। २-मदद। सहायता।

**पक्षपाती** वि० (सं) तरफदार। जो किसी पक्ष का समर्थन करे।

**पक्षपाली** पुं० (सं) खिड़की।

**पक्षरूप** पुं० (सं) महादेव। शिव।

**पक्षव्यापी** वि० (सं) समूचे तर्क को ग्रहण करने वाला

**पक्षहर** पुं० (सं) पक्षी।

**पक्षांत** पुं० (सं) १—कृष्ण या शुक्लपक्ष का पन्द्रहवां दिन। पूर्णिमा। अमावस्या।

**पक्षांतर** *वि०* (सं) दूसरी तरफ। दूसरा पक्ष।
**पक्षाघात** पुं० (सं) १-लकवा। फालिज। अद्धांग रोग। २-मुक्ति का खण्डन।
**पक्षिणी** *स्त्री०* (स) चिड़िया। मादा पक्षी। पूर्णिमा।
**पक्षराज** पुं० (सं) गरुड़।
**पक्षी** पुं० (सं) १-चिड़िया। शिव। बाण। तरफदार *वि०* (स) पक्ष सम्बन्धी। पक्ष का। तरफदार।
**पक्षींद्र** पुं० (स) गरुड़।
**पक्षीस्वामी** पुं०(सं) गरुड़।
**पक्षीय** *वि०* (सं) किसी दल या पक्ष से सम्बन्ध रखने वाली।
**पक्षीशावक** पुं० (सं) पक्षी का बच्चा।
**पक्षीश्वर** पुं० (सं) गरुड़।
**पक्ष्म** पुं० (स) १-आँख की बिरौनी। २-केसर।
**पक्ष्मकोप** पुं० (स) बिरौनी के आँख में गले जाने से उत्पन्न एक रोग।
**पक्ष्मप्रकोप** पुं० (स) आँख की पलकों का एक रोग।
**पक्ष्मल** *वि०* (स) सुन्दर बिरौनी वाला। बालों वाला।
**पखंड** पुं० (हि) दे० 'पाखण्ड'।
**पखंडी** *वि०* (हि) दे० 'पाखण्डी'।
**पख** *स्त्री०* (हि) १-ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। अड़ंगा। २-झगड़ा-बखेड़ा। ३-दोष। त्रुटि।
**पखड़ी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पंखड़ी'।
**पखपान** पुं० (हि) पांव का एक गहना।
**पखरना** *क्रि०* (हि) धोना। पखारना।
**पखरवाना** *क्रि०* (हि) धोने में प्रवृत्त करना।
**पखराना** *क्रि०* (हि) धुलवाना।
**पखरैत** पुं० (हि) वह घोड़ा, बैल या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।
**पखवाड़ा** पुं० (हि) अर्धमास। पन्द्रह दिन का समय
**पखा** पुं० (हि) दाढ़ी।
**पखाउज** पुं० (हि) दे० 'पखावज'।
**पखान** पुं०(हि) दे० 'पाषाण'।
**पखाना** पुं० (हि) १-कहावत। मसल। २-दे० 'पाखाना'।
**पखारना** *क्रि०* (हि) धोकर साफ करना। पानी से धोना।
**पखाल** *स्त्री०* (हि) १-पानी भरने की चमड़े की मशक। २-धौंकनी।
**पखाली** पुं० (हि) भिस्ती। मशक में पानी भरने वाला।
**पखावज** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार का बाजा जो मृदंग से छोटा होता है।
**पखावजी** *वि०* (हि) पखावज बजाने वाला।
**पखिया** पुं० (हि) झगड़ालू। बखेड़ा करने वाला।
**पखी** पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।
**पखीरी** पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।
**पखुड़ी, पखौरी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पंखड़ी'।
**पखुरा** पुं० (हि) दे० 'पखुवा'।
**पखुवा** पुं० (हि) बांह का वह भाग जो बगल में पड़ता है। बगल। पार्श्व।
**पखेरू** *वि०* (हि) पक्षी।
**पखौआ** पुं० (हि) पंख। पर।
**पखौटा** पुं० (हि) १-पंख। पर। २-मछली का पर।
**पखौरा** पुं० (हि) कंधे पर की हड्डी।
**पग** पुं० (हि) १-पैर। पांव। २-डग। चलने के लिए पैर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखना।
**पगडंडी** *स्त्री०* (हि) जंगल या मैदान का वह मार्ग जो लोगों के चलने से बन जाते हैं।
**पगड़ी** *स्त्री०* (हि) १-सिर पर बांधने का लम्बा कपड़ा साफा। उष्णीष। २-वह धन जो मकान किराये पर देते समय मकान मालिक अनुचित रूप में किराये के अतिरिक्त लेता है। नजराना।
**पगतरी** *स्त्री०* (हि) जूती।
**पगदासी** *स्त्री०* (हि) खड़ाऊं। जूता।
**पगना** *क्रि०* (हि) ३-रस या शरबत में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट जाय और अन्दर प्रवेश कर जाय। सनना। २-अत्यधिक अनुरक्त होना। किसी के प्रेम में डूबना।
**पगनियां** *स्त्री०* (हि) जूती।
**पगरा** पुं० (हि) १-पग। कदम। डग। २-यात्रा करने का समय। सवेरा। तड़का।
**पगरी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पगड़ी'।
**पगला** *वि०* (हि) मूर्ख। पागल। नासमझ।
**पगहा** पुं० (हि) पशु बांधने की रस्सी। पघा।
**पगिआना** *क्रि०* (हि) दे० 'पगाना'।
**पगिया** *स्त्री०* (हि) दे० 'पगड़ी'।
**पगियाना** *क्रि०* (हि) दे० 'पगाना'।
**पगुराना** *क्रि०* (हि) १-पागुर या जुगाली करना। २-डकार जाना। हजम कर जाना।
**पघा** पुं० (सं) गाय, भैंस के गले में बांधने वाली मोटी रस्सी।
**पच** *वि०* (हि) पांच का एक रूपान्तर।
**पचकना** *क्रि०* (हि) दे० 'पिचकना'।
**पचकल्यान** पुं० (हि) दे० 'पंचकल्याण'।
**पचखना** *वि०* (हि) पांच मंजिलों वाला। पांच खण्डों वाला। *क्रि०* (हि) दे० 'पचकना'।
**पचखा** पुं० (हि) दे० 'पंचक'।
**पचगुना** *वि०* (हि) पांच बार अधिक। पांच गुना।
**पचग्रह** पुं० (हि) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि का समूह।
**पचड़ा** पुं० (हि) १-झंझट। बखेड़ा। प्रपंच। २-एक गीत जो ओझा लोग देवी को मानने के लिए गाते हैं। ३-लावनी या खयाल के ढंग का एक गीत

जिसमें पांच-पांच चरणों के टुकड़े होते हैं।

**पचत** पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। इन्द्र।

**पचतुरा** पुं० (हिं) एक प्रकार का बाजा।

**पचन** पुं०(सं) १-पचाने की क्रिया या भाव। २-पकने की क्रिया या भाव। ३-अग्नि। ३-पकाने वाला।

**पचना** क्रि० (हिं) १-खाई हुई वस्तु का हजम हो जाना। २-क्षय होना। ३-पराया माल अपना कर लेना। ४-अनुचित रूप से प्राप्त धन या पदार्थ को काम में लाना। ५-अत्यधिक परिश्रम के कारण मस्तिष्क आदि का सूखना या क्षीण होना। ५-खपना।

**पचनाग्नि** पुं० (स) पेट की आग या गरमी जिससे खाया हुआ पचता है। जठराग्नि।

**पचनिका** स्त्री० (स) कड़ाही।

**पचपच** पुं० (सं) शिवजी की उपाधि। स्त्री० (हिं) १-कीचड़। २-पच-पच होने का शब्द।

**पचपचा** वि० (हि) अधपका भोजन जो पूर्ण रूप से पका न हो।

**पचपचाना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक गीला होना। २-कीचड़ होना।

**पचपन** वि० (हि) पचास और पांच। ५५।

**पचमान** वि० (सं) पकाने वाला।

**पचमेल** वि० (हि) जिसमें कई प्रकार के पदार्थ हों।

**पचरंग** पुं० (हि) चौक पूरने की सामग्री जिसमें मेंहदी, अबीर, बुक्का, हल्दी और सुरवाली के बीज होते हैं। वि० (हि) दे० 'पचरंग'।

**पचरंगा** वि० (हि) १-पांच रंग का। २-पांच रंग से बना या पांच रंग के सूत से बूना हुआ (कपड़ा)। ३-जिसमें बहुत से रंग हों। पुं० (हि) मंगल अवसरों पर पूजा के लिये निमित्त पांच रंगों से पूजे जाने वाले खाने।

**पचरा** पुं० (हि) दे० 'पचड़ा'।

**पचलड़ी** स्त्री० (हि) पांच लड़ी वाली माला या आभूषण।

**पचलोना** पुं० (हिं) वह जिसमें पांच प्रकार के नमक मिले हुए हों।

**पचहत्तर** वि० (हि) सत्तर और पांच। ७५।

**पचहरा** वि० (हि) १-जिसमें पांच तह हों। पांच बार लपेटा हुआ। २-पांच बार किया हुआ।

**पचाना** क्रि० (हि) १-हजम करना। २-क्षीण या नष्ट करना। ३-पराया माल हजम करना। ४-परिश्रम करवा कर या कष्ट देकर किसी का शरीर या मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ५-एक पदार्थ को स्वयं में लीन या आत्मसात करना।

**पचारना** क्रि० (हि) लड़ने के लिये ललकारना।

**पचाव** पुं० (हि) पचने की क्रिया या भाव।

**पचास** वि० (हि) चालीस और दस।

**पचासा** पुं० (हिं) एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।

**पचासी** वि० (हिं) अस्सी और पांच।

**पचासों** वि० (हिं) १-कई पचास। २-पचास से अधिक। ३-बहुत सारे।

**पचि** पुं० (सं) १-अग्नि। २-रसोई बनाने की प्रक्रिया।

**पचित** वि० (हि) १-पचा हुआ। २-जड़ा हुआ।

**पची** स्त्री० (हि) दे० 'पच्ची'।

**पचीस** वि० हि) बीस और पांच।

**पचीसी** स्त्री०(हि) १-एक प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह। २-किसी की आयु के आरम्भ के पच्चीस वर्ष। ३-एक प्रकार का चौसर का खेल। ४-चौसर खेलने की बिसात।

**पचूका** पुं० (हि) पिचकारी।

**पचेलुक** वि० (हि) रसोइया। पाचक।

**पचोतर** वि० (हि) पांच से अधिक या ऊपर (किसी संख्या में)।

**पचोतरसौ** पुं० (हि) एक सौ-पाँच।

**पचौनी** स्त्री० (हिं) पाचन। पाचक। मेदा। अमाशय।

**पचौर** पुं० (हि) दे० 'पचौली'।

**पचौली** पुं० (हि) गांव का मुखिया। पञ्च। सरदार स्त्री० (देश) एक पौधा जिसकी पत्तियों से तेल निकाला जाता है।

**पचौवर** वि० (हि) पचहरा। पाँच तह किया हुआ।

**पच्चड़** पुं० (हि) दे० 'पच्चर'।

**पच्चर** पुं० (हि) लकड़ी की वह गुल्ली जो चीजों को कसने के लिये ठोंकी जाती है।

**पच्ची** स्त्री० (हि) १-पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २-एक प्रकार का जड़ाव जिसमें जड़ी जाने वाली वस्तु भली प्रकार जम कर बैठ जाती है।

**पच्चीकार** पुं० (हि) पच्ची करने वाला।

**पच्चीकारी** स्त्री० (हि) १-पच्ची करने का भाव या क्रिया। २-पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

**पच्छ** पुं० (हि) दे० 'पक्ष'।

**पच्छघात** पुं० (हि) दे० 'पक्षघात'।

**पच्छताई** स्त्री० (हिं) दे० 'पक्षपात'।

**पच्छि** पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।

**पच्छिम** पु० (हि) दे० 'पश्चिम'।

**पच्छी** पुं० (हि) दे० 'पक्षी'।

**पछरी** स्त्री० (देश) तलवार।

**पछड़ना** क्रि० (हि) १-लड़ने में पछाड़ा जाना। २-दे० 'पिछड़ना'।

**पछताना** क्रि० (हि) पश्चाताप करना। अपने द्वारा किये किसी अनुचित कार्य से पीछे दुःखी होना।

**पछतानि** स्त्री० (हि) पछताने का भाव। पछतावा। पश्चाताप

**पछताव** पुं० (हि) दे० 'पछतावा'।
**पछतावना** क्रि० (हि) दे० 'पछताना'।
**पछतावा** पुं० (हि) पश्चात्ताप। अनुताप।
**पछना** क्रि० (हि) पाछा जाना। पुं० (हि) पाछने का औजार।
**पछमन** क्रि० (हि) पीछे।
**पछरना** क्रि० (हि) लौटना। पछाड़ना।
**पछरा** पुं० (हि) दे० 'पछाड़'।
**पछलगा** पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
**पछलत** पुं० (हि) पिछली टांगों द्वारा प्रहार।
**पछलागा** पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
**पछवाँ** वि० (हि) पश्चिम का। स्त्री० (हि) पश्चिम की ओर से बहने वाली हवा।
**पछाँह** पुं० (हि) पश्चिम में पड़ने वाला देश। पश्चिम की ओर का देश।
**पछाँहिया** वि० (हि) पश्चिम का। पश्चिम का प्रदेश
**पछाँही** वि० (हि) पश्चिम का।
**पछाड़** स्त्री० (हि) बहुत शोक आदि के कारण खड़े-खड़े गिर कर बेहोश होजाना। मूर्छित होकर गिरना। पुं० (सं) कुश्ती का एक दांव।
**पछाड़ना** क्रि० (हि) १-कुश्ती में विपक्षी को गिराना या चित करना। २-प्रतियोगियों को हटाना। ३-धोते समय कपड़े बारम्बार पटकना।
**पछाड़ी** स्त्री० (हि) दे० 'पिछाड़ी'।
**पछानना** क्रि० (हि) दे० 'पहचानना'।
**पछाया** पुं० (हि) किसी वस्तु का पिछला भाग। पिछाड़ी।
**पछारना** क्रि० (हि) १-कपड़े को पानी से धोकर साफ करना। धोना। २-पछाड़ना।
**पछावर** स्त्री० (देश) १-एक प्रकार का शर्बत। २-छाछ का बना हुआ एक पेय पदार्थ।
**पछावरि** स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
**पछाहँ** पुं० (हि) दे० 'पछाँह'।
**पछाहीं** स्त्री० (हि) दे० 'पछाँही'।
**पछिआना** क्रि० (हि) १-पीछे हो लेना। पीछे-पीछे चलना। पीछा करना।
**पछिआवर** स्त्री० दे० 'पछावर'।
**पछिऊँ** पुं० (देश) दे० 'पश्चिम'।
**पछिताना** क्रि० (हि) दे० 'पछताना'।
**पछितानि** स्त्री० (हि) दे० 'पछतावा'।
**पछियाउर** स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
**पछिलगा** पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
**पछिलना** क्रि० (हि) दे० 'पिछड़ना'।
**पछिला** वि० (हि) दे० 'पिछला'।
**पछियाँ** वि० (हि) पश्चिम की ओर से आने वाली (वायु)। स्त्री० (हि) पश्चिम की हवा।
**पछीत** स्त्री० (हि) १-मकान के पीछे की ओर का भाग २-घर के पीछे की ओर की दीवार।
**पछुवाँ** वि० (हि) दे० 'पछियाँ'।
**पछेड़ा** पुं० (हि) पीछा।
**पछेलना** क्रि० (हि) पीछे डालना। पीछे हटाना। आगे बढ़ जाना।
**पछेला** पुं० (हि) हाथ में पीछे की ओर पहनने का कड़ा।
**पछेली** स्त्री० (हि) एक प्रकार का स्त्रियों के पहनने का कड़ा।
**पछोड़न** स्त्री० (हि) अनाज आदि का बचा कूड़ा जिसे सूप में रख कर फटका देने पर निकलता है।
**पछोड़ना** क्रि० (हि) फटकना। अनाज को सूप में रख कर फटकना।
**पछोरन** स्त्री० (हि) दे० 'पछोड़न'।
**पछोरना** क्रि० (हि) दे० 'पछोड़ना'।
**पछ्यावर** स्त्री० (देश) दे० 'पछावर'।
**पजर** पुं० (हि) टपकने या चूने की क्रिया।
**पजरना** क्रि० (हि) जलना। सुलगना। दहकना।
**पजामा** पुं० (हि) दे० 'पायजामा'।
**पजारना** क्रि० (हि) जलाना। दहकाना।
**पजावा** पुं० (हि) ईंट या पत्थर के बरतनों का भट्ठा। आवाँ।
**पजोख** पुं० (देश०) परख। जांच। आजमाइश।
**पजोखा** पुं० (देश०) किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों का शोक प्रकट करना। मातम-पुरसी।
**पजोड़ा** पुं० (हि) दुष्ट। पाजी।
**पज्झ** पुं० (हि) शूद्र।
**पज्झटिका** पुं० (हि) १-एक मात्रिक छन्द जिसमें जगण का निषेध होता है। २-छोटी घण्टी।
**पटंबर** पुं० (हि) रेशमी कपड़ा।
**पट** पुं० (सं) १-कपड़ा। वस्त्र। २-कपड़े का टुकड़ा। ३-पर्दा। महीन कपड़ा। ४-धातु या लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर चित्र बनाये जाते हैं। ५-वह चित्र जो बद्रीनाथ, जगन्नाथ आदि मन्दिरों से यात्रियों को मिलता है। ६-कोई अच्छी प्रकार बनी वस्तु। ७-छत। छप्पर। ८-नाव या बहेली पर सरकण्डे का बना हुआ छप्पर। ९-कपास। १०-रङ्गशाला का पर्दा। पुं० (हि) १-दरवाजे के किवाड़। २-पालकी के सरकाने से खुलने वाले किवाड़। ३-सिंहासन। ४-चौरस और चिपटी भूमि। वि० (हि) चित उलटा। औंधा।
**पटइन** स्त्री० (हि) १-पटवा जाति की स्त्री। २-गहना गूँथने वाली स्त्री।
**पटक** पुं० (सं) १-तंबू। खेमा। शिविर। २-आधा गांव।
**पटकन** स्त्री० (हि) १-पटकने की क्रिया या भाव। २-तमाचा। ३-छड़ी। छोटा डंडा।
**पटकना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु को ऊँचे स्थान

से नीचे जोर से गिराना। २-किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को नीचे गिराना। दे-मारना। ३-कुश्ती में प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर गिराना।

**पटकनिया** स्त्री० (हि) पटकने की क्रिया या भाव। पछाड़।

**पटकनी** स्त्री० (हि) दे० 'पटकनिया'।

**पटका** पुं० (हि) कमर में बांधने का रूमाल या दुपट्टा। कमरबंद।

**पटकान** स्त्री० (हि) दे० 'पटकनिया'।

**पटकर्म** पु०(सं) बुनाई का काम। बुनाई।

**पटकार** पुं० (स) १-जुलाहा। चित्रकार।

**पटकुटी** स्त्री० (हि) छोलदारी। खेमा।

**पट-चित्र** पु० (स) वह कपड़े पर बना चित्र जिसे लपेटा जा सके।

**पटझोल** पु० (हि) आंचल।

**पटतर** पु० (हि) १-समता। बराबरी। २-उपमा। वि० (हि) समतल। चौरस। बराबर।

**पटतरना** क्रि०(हि) १-असमतल भूमि को समतल करना। २-भाला आदि शस्त्रों को चलने के लिये हाथ में लेना।

**पटतक** पुं० (सं) चोर।

**पटधारी** वि० (स) जो कपड़ा पहने हुए हो। पुं० (सं) तोशे खान का अधिकारी।

**पटन** पुं० (हि) दे० 'पट्टन'।

**पटना** क्रि० (हि) १-गड्ढे आदि का भरकर बराबर सतह हो जाना। २-किसी वस्तु का अत्यधिक मात्रा में एक स्थान पर एकत्रित होना। ३-मकान या छत पर कच्ची छत बनवाना। ४-घर की दूसरी मञ्जिल बनना या बनवाना। ५-एक ही स्वभाव का होना जिससे मित्रता निभ सके। मन मिलना। ६-बिक्री आदि में मोल का तै हो जाना। ७-ऋण का भुगतान हो जाना। पु० (हि) वर्तमान बिहार प्रदेश की राजधानी जो बौद्धकाल में पाटलिपुत्र के नाम से प्रसिद्ध थी।

**पटनिया** वि० (हि) पटना नगर की बनी हुई (वस्तु)। पटना नगर से सम्बन्धित।

**पटनी** स्त्री० (हि) १-वह कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा हो। २-वह भूमि जो किसी को इस्तमरारी पट्टे द्वारा मिली हो। ३-भूमि (खेत) आदि देने की वह प्रणाली जिसमें लगान देने तथा किसान के अधिकार सदा के लिये निश्चित कर दिये गये हों। ४-किसी वस्तु को टांगने के लिये दो खूटियों पर रखी हुई पटरी।

**पटपट** स्त्री० (हि) हल्की वस्तु के गिरने का शब्द।

**पटपटाना** क्रि० (हि) १-भूख, प्यास या गरमी के कारण अत्यधिक कष्ट उठाना। २-किसी वस्तु के गिरने से पट-पट शब्द होना।

**पटपर** वि० (हि) चौरस। समतल। हमवार। पुं० (हि) १-नदी के आसपास की वह भूमि जो वर्षा-ऋतु में पानी में डूब जाती है। २-ऐसा जंगल जहां पेड़, घास आदि न हों। उजाड़ स्थान।

**पट-परिवर्तन** पुं० (सं) रंगमंच का पर्दा बदलना।

**पटबंधक** पुं० (हि) रेहन का वह तरीका जिसमें रेहन रखी हुई वस्तु के लाभ से सूद सहित मूलधन अदा हो जाने पर रेहनदार उस वस्तु को वापिस दे देना है।

**पटबीजना** पु० (हि) जुगनू। खद्योत।

**पटमण्डप** पुं० (सं) तम्बू। खेमा।

**पटरा** पुं० (हि) १-काठ का लम्बा और चौरस पतला चीरा हुआ तख्ता या टुकड़ा। २-धोबी का पाट। ३-हेंगा। पाटा।

**पटरानी** स्त्री० (हि) राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जो उसके साथ सिंहासन पर बैठती हो।

**पटरी** स्त्री० (हि) १-काठ का लम्बा और पतला तख्ता। २-लिखने की तख्ती। ३-सड़क के दोनों ओर पैदल चलने वालों के लिये बनाया गया ऊँचा भाग। ४-नहर के दोनों किनारों पर के रास्ते। ५-बाग में क्यारियों के आसपास छोड़ी जगह जिस पर घास लगी होती है। रविश। ६-सुनहरे या रुपहले तारों का फीता जो धोती या लहंगे में टांका जाता है। ७-नक्काशी की हुई एक प्रकार की हाथ में पहनने की चूड़ी। ८-लोहे के समानान्तर छड़ जिन पर रेलगाड़ी के पहिये दौड़ते हैं। ९-अंतर। तावीज।

**पटल** पुं० (स) १-छत। छप्पर। २-पर्दा। घूंघट। आवरण। ३-मोतियाबिंद नामक एक आंख का रोग। ४-लकड़ी आदि का पटरा। ५-पुस्तक का अंश विशेष। परिच्छेद। ६-माथे का टीका। ७-ढेर। समूह। ८-टोकरी। ९-मेज, टेबुल। (टेबल)।

**पटलक** पुं० (सं) १-आवरण। घूंघट। पर्दा। २-टोकरा। समूह। राशि। ढेर।

**पटलता** स्त्री० (हि) अधिकता।

**पटली** स्त्री० (हि) छप्पर। छत। छान।

**पटवा** पुं० (हि) १-रेशम या सूत में गहने गूंथने वाला। पटहरा। २-पटसन।

**पटवाना** क्रि० (हि) १-पाटने का काम किसी दूसरे से कराना। २-आच्छादित करना। छत डलवाना। ३-गड्ढों में मट्टी आदि डलवाना। पूरा करा देना। ४-सिंचवाना। ५-ऋण आदि चुकवा देना। ६-(पीड़ा या दर्द) दूर करना। मिटाना।

**पटवाप** पुं० (सं) खेमा। तम्बू।

**पटवारगिरी** स्त्री० (हि) पटवारी का काम या पद।

**पटवारी** पुं० (हि) वह सरकारी कर्मचारी जो गांव की जमीन तथा मालगुजारी आदि का लेखा रखता

है। लेखपाल। स्त्री० (हिं) रानियों को वस्त्राभूषण पहनाने वाली दासी।

**पटवास** पुं० (हिं) १-तम्बू। खेमा। २-स्त्रियों का लहँगा।

**पटसन** पुं० (हिं) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट इत्यादि बनाये जाते हैं। पटसन के रेशे। (जूट)।

**पटह** पुं० (सं) १-नगाड़ा। डंका। २-मृदंग। तबला

**पटह-घोषक** पुं० (सं) डुग्गी पीटने वाला।

**पटहार** पुं० (हिं) पटवा। एक जाति जो सूत या रेशम में गहने गूँथते हैं।

**पटहारिन** स्त्री० (हिं) पटहार पत्नी। पटहार जाति की स्त्री।

**पटा** पुं० (हिं) लोहे की वह छड़ी या पट्टी जिससे लोग तलवार का वार या उससे बचाव करना सीखते हैं। पुं० (देश०) १-अधिकार पत्र। सनद। २-लेनदेन। सौदा। ३-धारी। चौड़ी लकीर। ४-लगाम की मुहरी। ५-पीढ़ा। पटरा। चटाई।

**पटाई** स्त्री० (हिं) १-पटाने की क्रिया या भाव। २-सिंचाई। आबपाशी। ३-सिंचाई की मजदूरी। ४-पटाने की मजदूरी।

**पटाक** पुं० (हिं) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द पुं० (सं) चिड़िया। पक्षी।

**पटाका** पुं० (हिं) १-पटाक या पट शब्द। २-एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें पटाक का शब्द निकलता है। ३-थप्पड़। तमाचा। ४-पटाके की ध्वनि। स्त्री० (हिं) उभरती अवस्था की अपेक्षाकृत अधिक सजी-धजी युवती या स्त्री (बाजारू)।

**पटाक्षेप** पुं० (सं) नाटक का अंक समाप्त होने पर मुख्य परदा गिरना।

**पटाख** पुं० (हिं) दे० 'पटाक'।

**पटाखा** पुं० (हिं) दे० 'पटाका'।

**पटाना** क्रि० (हिं) १-पाटने का काम कराना। २-पटाई करके चौरस बनाना। ३-सींचना। ४-ऋण चुका देना। ५-मूल्य तै कर लेना। ६-शांत हो कर बैठना।

**पटापट** क्रि० वि० (हिं) निरन्तर पट-पट शब्द करते हुए। स्त्री० (हिं) निरन्तर पट-पट शब्द की आवृत्ति

**पटापटी** स्त्री० (हिं) १-वह वस्तु जिस पर अनेक रङ्गों के बेलबूटे कढ़े हों। २-वह वस्तु जो अनेक रङ्गों में रंगी हुई हो।

**पटार** स्त्री० (हिं) १-पिटारा। मंजूषा। पेटी। २-पिंजड़ा। ३-रेशम की रस्सी। ४-कनखजूरा।

**पटालुका** स्त्री० (सं) जौंक। जलौका।

**पटाव** पुं० (हिं) १-पाटने की भाव या क्रिया। २-पटा हुआ चौरस स्थान। ३-दीवार के आधार पर बनाया हुआ स्थान। ४-मरेठा। लकड़ी का मोटी सिल्ली जिसे दरवाजे की चौखट के ऊपर रख कर दीवार उठाते हैं।

**पटिया** स्त्री० (हिं) १-पत्थर का लम्बोतरा या चौकोर चौरस टुकड़ा। चौरस शिलाखण्ड। २-खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। ३-हेंगा। पाटा। ४-टाट की एक पट्टी। ५-लिखने की तख्ती। ६-सकरा तथा लम्बा खेत।

**पटी** स्त्री० (सं) १-रङ्गशाला का पर्दा। २-वस्त्र। ३-कनात। मोटा कपड़ा। ४-रङ्गीन वस्त्र।

**पटीर** पुं० (सं) १-एक प्रकार का चन्दन। २-कत्था। ३-मूली। ४-वटवृक्ष। वि० (सं) १-सुन्दर। रूपवान ३-ऊँचा। लम्बा।

**पटीलना** क्रि० (हिं) किसी को उल्टी बातें करके अपने अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २-अर्जित करना ३-छलना। ठगना। ४-मारना-पीटना। ५-परास्त करना।

**पटु** वि० (सं) १-चतुर। निपुण। दक्ष। २-चालाक। ३-चरपरा। प्रचंड। उग्र। ५-निष्ठुर। धूर्त। ६-स्वस्थ। ७-क्रियाशील। ८-सुन्दर। मनोहर।

**पटुता** स्त्री० (सं) कुशलता। दक्षता। चतुराई।

**पटुत्व** पुं० (हिं) पटुता।

**पटुली** स्त्री० (हिं) १-झूले पर रखने की काठ की पटरी २-चौकी।

**पटुवा** पुं० (हिं) १-पटसन। (जूट)। २-करमू। पुं० (देश०) तोता। शुक।

**पटूका** पुं० (हिं) दे० 'पटका'।

**पटेरा** पुं० (हिं) दे० 'पटेला'। दे० 'पटैला'।

**पटेल** पुं०(हिं) गांव का मुखिया या नम्बरदार (विशेषतः राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र में)। (हैडमैन)।

**पटेलना** क्रि० (हिं) दे० 'पटीलना'।

**पटेला** पुं० (हिं) १-ऐसी नाव जिसका बीच का भाग पटा हुआ हो। २-एक प्रकार की घास जिसकी चटाइयां बनाते हैं। पटेरा। ३-सिल। पटिया। ४-कुश्ती का एक पेंच।

**पटेली** स्त्री० (हिं) छोटा पटेला। छोटी नाव।

**पटैत** पुं० (हिं) पटेबाज। पटा खेलने वाला।

**पटैला** पुं० (हिं) १-अर्गला। २-पटेला। ३-ब्योंड़ा।

**पटोर** पुं० (हिं) कोई रेशमी वस्त्र।

**पटोरी** स्त्री०(हिं) १-रेशमी साड़ी। २-रेशमी किनारी की धोती।

**पटोल** पुं० (सं) १-प्राचीन काल में गुजरात में बनने वाला एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २-परवल की लता।

**पटोलक** पुं० (सं) घोंघा। सीप।

**पट्ट** पुं० (सं) १-तख्ती। पटरी। २-धातु की चपटी पट्टी जिस पर राजाज्ञा या दान आदि की सनद

खोदी जाती थी। ३-करधनी। मुकुट। ४-धज्जी। ५-रेशमी। महीन या रंगीन वस्त्र। ६-पगड़ी साफा। ७-चक्की का पाट। ८-नगर। कस्बा। ९-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। १०-भूमि के स्वामी की ओर से आसामी को दिया गया भूमि जोतने आदि का अधिकार-पत्र। पट्टा। (लीज)। ११-चौराहा। १२-राजसिंहासन। १३-पटसन। १४-ढाल। १५-लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिस पर नाम आदि लिखे जाते है। (बोर्ड)। *वि०* (हि) मुख्य। प्रधान।

**पट्टक** १-धातु की चपटी पट्टी जिस पर राजाज्ञा आदि की सनद खोदी जाय। २-घाव आदि पर बांधने की पट्टी। कमरबन्द। ४- तख्ती। ५-चित्रपट।

**पट्टकीट** पुं० (सं) रेशम का कीड़ा।

**पट्ट-कीट-पालन** पुं० (सं) रेशम के कीड़ों को पालना (सेरिकल्चर)।

**पट्टदेवी** *स्त्री०* (सं) पटरानी।

**पट्टन** पुं० (सं) नगर। शहर।

**पट्टमहिषी** *स्त्री०* (स) पटरानी।

**पट्टराज्ञी** *स्त्री०* (स) पटरानी।

**पट्टला** *स्त्री०* (सं) जिला। मण्डल। (डिस्ट्रिक्ट)।

**पट्ट-विलेख** पुं० (सं) वह दस्तावेज या विलेख जिसमें किसी को भूमि-सम्बन्धी दिये अधिकारों की शर्तें आदि दर्ज होती है। (लीज डीड)।

**पट्टशाक** पुं० (सं) पटुवा।

**पट्टांशुक** पुं० (सं) रेशमी कपड़ा।

**पट्टा** पुं० (सं) किसी अचल सम्पत्ति या भूमि के उपयोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी (जमींदार) की ओर से आसामी को दिया जाता है। (लीज)। २-चमड़े या कपड़े की पट्टी जो कुत्ते या बिल्ली के गले में बांधी जाती है। ३-पीढ़ी। ४-चपरास। ५-पेटी। कमरबन्द। ६-पीछे या दाहिने बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए लम्बे बाल।

**पट्टा-इस्तमरारी** पुं० (हि) हमेशा के लिये किया गया पट्टा। (टेन्योर इन परपेच्युटी)।

**पट्टाधारी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास किसी अचल संपत्ति या भूमि का अधिकार-पत्र हो। पट्टेदार। (लीज-होल्डर)।

**पट्टा-समर्पण-पत्र** पुं० (सं) वह दस्तावेज जिसमें पट्टे में लिखित भूमि या संपत्ति को वापस देने की रसीद होती है। (सरेन्डर ऑफ लीज)।

**पट्टार्ही** *स्त्री०* (सं) पटरानी।

**पट्टिका** *स्त्री०* (सं) १-पटिया। छोटी तख्ती। (प्लेट) २-कपड़े की छोटी पट्टी। ३-रेशम का फीता।

**पट्टिका-लोध्र** पुं० (स) पठानी लोध।

**पट्टिकार** *वि०* (सं) जुलाहा। रेशमी वस्त्र बनाने वाला।

**पट्टिश** पुं० (सं) एक प्रकार का दुधारा शस्त्र जो अत्यन्त पैनी नोक वाला होता है।

**पट्टी** *स्त्री०*(हि) १-लिखने की तख्ती। पाटा। पटिया २-सबक। पाठ। ३-उपदेश। शिक्षा। ४-बुरी नीयत से दी जाने वाली सलाह या शिक्षा (व्या०) ५-घाव पर बांधने की कपड़े की धज्जी। ६-धातु कागज या लकड़ी आदि का लम्बा और पतला टुकड़ा। ७-पत्थर का पतला, चिपटा तथा लम्बा टुकड़ा। ८-लम्बी बल्ली जो छत आदि के ठाठ में लगाई जाती है। ९-कपड़े की किनारी या कोर। १०-तिल, दाल आदि को चाशनी में पगाकर बनाई जाने वाली एक मिठाई। ११-वह तख्ता जो नाव के बीचोंबीच होता है। १२-किसी की संपत्ति या उससे होने वाली आय का अंश। १३-पंक्ति। पांत। १४-किसी जमींदारी का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो। १५-जमींदार द्वारा अपनी आसामियों पर अतिरिक्त कर जो किसी कार्यविशेष के निमित्त लगाया गया हो।

**पट्टीदार** पुं० (हि) १-वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २-वह व्यक्ति जिसकी राय की उपेक्षा न की जा सकती हो। बराबर का अधिकारी।

**पट्टीदारी** *स्त्री०* (हि) १-किसी वस्तु का अनेक की संपत्ति होना। २-पट्टीदार होने का भाव। ३-कई पट्टेदारों की मिलीजुली संपत्ति। (टेन्योर इन सेवरेल्टी)।

**पट्टू** पुं० (हि) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

**पट्टेदार** पुं० (हि) जिसके पास किसी अचल भूमि या संपत्ति का पट्टा या अधिकार-पत्र हो। (लीसी)

**पट्टेपछाड़** पुं० (हि) कुश्ती का एक पेंच।

**पट्टेत** पुं० (हि) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-सफेद कण्ठे वाला लाल, काला या नीला कबूतर।

**पठमान** *वि०* (हि) पढ़ने योग्य।

**पट्ठा** पुं० (हि) १-जवान। तरुण। २-वह मनुष्य या पशु आदि का बच्चा जिस पर पूर्ण यौवन आ चुका हो। नवयुवक। ३-कुश्तीबाज। ४-मांस पेशियों को आपस में जोड़ने वाले तन्तु। स्नायु। ५-एक प्रकार का मोटा गोटा।

**पट्ठापछाड़** *वि०* (हि) इतनी बलवती (स्त्री) जो पुरुष को पटक लगा दे। हृष्ट-पुष्ट और बलवती (स्त्री)।

**पठी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पठिया'।

**पठन** पुं० (सं) पढ़ने की क्रिया। पढ़ना। (रीडिंग)

**पठनशील** *वि०* (सं) जो बहुत पढ़ता हो।

**पठनीय** *वि०* (सं) पढ़ने योग्य।

**पठनेटा** पुं० (हि) पठान का लड़का।

**पठवाना** *क्रि०* (हि) दूसरे को भेजने में प्रवृत्त करना

पठान पुं० (हिं) अफगानिस्तान और पाकिस्तान के पश्चिमी सीमा प्रदेश में बसने वाली एक मुसलमान योद्धा जाति।
पठाना क्रि० (हिं) भेजना।
पठानिन स्त्री० (हिं) पठान जाति की स्त्री।
पठानी स्त्री० (हिं) १-पठान जाति की स्त्री। २-पठान का स्वभाव। वि० (हिं) पठान-सम्बन्धी।
पठार पुं० (हिं) चौरस और ऊँची जमीन जो दूर तक फैली हुई हो। (प्लेटो)।
पठावनि स्त्री० (हिं) दे० 'पठावनी'।
पठावनी स्त्री० (हिं) १-किसी को कोई संदेश पहुँचाने या कोई वस्तु पहुंचाने के लिये भेजना। २-भेजने या पहुँचाने की मजदूरी।
पठित वि० (सं) पढ़ा हुआ। दोहराया हुआ।
पठिया स्त्री० (हिं) यौवन प्राप्त स्त्री। जवान और तगड़ी स्त्री।
पठौना क्रि० (हिं) भेजना।
पठौनी स्त्री० (हिं) दे० 'पटावनी'।
पाठ्यमान वि० (सं) जो पढ़ा जाता हो।
पड़छती स्त्री० (हिं) पानी की बौछार से बचने के लिये कच्ची दीवार पर लगाई जाने वाली टट्टी।
पड़ता पुं० (हिं) १-किसी वस्तु की खरीद के दाम। लागत। २-दर। शरह। ३-लगान की दर। ४-सामान्य दर। औसत। बचत।
पड़ताल स्त्री० (हिं) १-जांच। निरीक्षण। (चेकिंग)। २-कानूनगो या पटवारी द्वारा की गई एक विशेष जांच जिससे भूमि और उपज के पूरे ब्योरे की सूची तैयार की जाती है।
पड़तालना क्रि० (हिं) छानबीन करना। जांच करना।
पड़ती स्त्री० (हिं) दे० 'परती'।
पड़ना क्रि० (हिं) १-किसी ऊँचे स्थान से गिरना। गिरना। पतित होना। २-दुःख कष्ट आदि ऊपर आना। ३-फैलाया जाना। ४-हस्तक्षेप करना। ५-ठहरना। टिकना। आराम करना। ६-बीमार होना। ७-मिलना। ८-पड़ता खाना। ९-उत्पन्न होना। स्थित होना। १०-बदल कर होना। ११-संयोगवश होना।
पड़पड़ाना क्रि० (हिं) पड़पड़ शब्द होना। चरपराना।
पड़पड़ाहट स्त्री० (हिं) पड़पड़ाने की क्रिया या भाव।
पड़वा स्त्री० (हिं) प्रतिपदा। प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।
पड़वी स्त्री० (हिं) वैशाख या ज्येष्ठ में बोई जाने वाली ईख।
पड़ा पुं० (हिं) भैंस का बच्चा।
पड़ाव पुं० (हिं) १-पैदल यात्रा में बीच में कुछ समय के लिये ठहरना। २-ऐसे यात्रियों के ठहरने का स्थान।
पड़िया स्त्री० (हिं) भैंस का मादा बच्चा।
पड़ोरा पुं० (हिं) परवल।
पड़ोस पुं० (हिं) किसी स्थान के आसपास का स्थान किसी के घर के पास के घर। प्रतिवेश। (विसिनिटी)।
पड़ोसी, पड़ौसी पुं० (हिं) पड़ोस में रहने वाला।
पढ़ंत स्त्री० (हिं) १-पढ़ने की क्रिया या भाव। २-जादू। मंत्र।
पढ़ंता पुं० (हिं) पढ़ने वाला।
पढ़त स्त्री० (हिं) दे० 'वाचन'। (रीडिंग)।
पढ़ना क्रि० (हिं) पुस्तक लेख आदि इस प्रकार देखना कि उनका ज्ञान हो जाय। २-अध्ययन करना। ३-लेख आदि का उच्चारण करना। ४-धीमे स्वर में कहना। ५-रटना। ६-जादू करना।
पढ़वाना क्रि० (हिं) किसी दूसरे को पढ़ने में प्रवृत करना।
पढ़वैया पुं० (हिं) पढ़ने वाला। शिक्षार्थी।
पढ़ाई स्त्री० (हिं) १-अध्ययन। विद्याभ्यास। पठन। २-पढ़ने के बदले दिया जाने वाला धन। ३-अध्यापन। ४-अध्यापन शैली।
पढ़ाना पुं० (हिं) १-शिक्षा देना। अध्यापन करना। २-कोई हुनर या कला सिखाना। ३-समझाना। सिखाना।
पढ़ैया पुं० (हिं) पढ़ने वाला। पाठक।
पण पुं० (सं) १-पाँसों से खेलना या दाँव लगाना यूत। जूआ (बेट)। २-दांव पर रखी हुई वस्तु। ३-ठेके या लेख्य आदि की शर्तें। (टर्म, कंडीशन)। ४-एक प्राचीन सिक्का। ५-धन-दौलत। संपत्ति। ६-करार। ७-व्यवसाय। ८-बिक्री। ९-मकान। १०-सेना की चढ़ाई का खर्च।
पणक्रिया स्त्री० (सं) शर्त बदने की क्रिया। पणन। (बेटिंग)।
पणता स्त्री० (सं) मूल्य। कीमत।
पणत्व पुं० (सं) पणता। मूल्य।
पणदंड पुं० (सं) अर्थदंड। वह दण्ड जो सिक्के के रूप में दिया जाय। (फाइन)।
पणन पुं० (सं) १-खरीदने या बेचने की क्रिया या भाव। २-बाजी या शर्त लगाना। ३-व्यापार में व्यवहार करने की क्रिया।
पणनीय वि० (सं) जिसे खरीदा या बेचा जा सके।
पणव पुं० (सं) १-छोटा नगाड़ा। ढोल। २-चौपाई आदि में काम आने वाला एक वर्णवृत्त।
पणवानक पुं० (सं) नगाड़ा।
पणस पुं० (सं) क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा।
पणांगना स्त्री० (सं) वेश्या। रंडी।
पणायन पुं० (सं) लेनदेन। (ट्रान्जेक्शन)।
पणासी वि० (हिं) विनाशक।

**पणि** पु० (सं) बाजार । मंडी । हाट ।
**पणित** वि०(हि) १-प्रशंसित । २-खरीदा या बेचाहुआ ३-दांव पर लगा हुआ । पुं० (सं) १-दांव । होड़ । जूआ । बाजी ।
**पणितृ** पुं० (सं) सौदागर । व्यवसायी ।
**पण्य** वि० (सं) १-खरीदने या बेचने योग्य । २-प्रशंसा के योग्य । पु० (स) १-सौदा । माल । व्यापार । (कोमोडिटी) । २-बाजार । हाट । ३-दुकान ।
**पण्य-चिह्न** पु० (स) वह चिह्न जो व्यापारी अपने यहां बनी वस्तु के प्रचार तथा उसके पार्थक्य या विशिष्टता सूचित करने के लिये लगाता है। (मर्केन्डाइज-मार्क्स) ।
**पण्य-भूमि** स्त्री० (सं) माल जमा करने का स्थान । गोदाम ।
**पण्य-द्रव्य** पुं० (सं) बेचने के लिये बनाये गये पदार्थ (मर्केन्डाइज) ।
**पण्य-पति** पुं० (सं) बहुत बड़ा व्यापारी । पूंजीपति
**पण्य-पत्तन** पुं० (सं) मंडी । बाजार । (मार्केट) ।
**पण्यवाहन-नौका** स्त्री० (सं) माल ले जाने या ढोने वाली नाव । (कार्गो-बोट) ।
**पण्यविलासिनी** स्त्री० (सं) वेश्या ।
**पण्यवीथी, पण्यवीथिका** स्त्री० (सं) बाजार । हाट ।
**पण्यशाला** स्त्री० (सं) बाजार । हाट । दुकान ।
**पण्यांगना** स्त्री० (सं) वेश्या ।
**पण्याजीवक** पुं० (सं) व्यापारी । व्यवसायी ।
**पतंग** पुं०(सं) १-पक्षी । २-सूर्य । ३-शलभ । परवाना भुनगा । ४-गेंद । कंदुक । ५-नौका । ६-शोला । चिंगारी । ७-शरीर । पुं० (हि) हवा में उड़ने वाला कागज का बना खिलौना जो धागे के सहारे आकाश में उड़ाया जाता है । गुड्डी । कनकौवा ।
**पतंगछुरी** स्त्री० (हि) १-पीठ पीछे बुराई करने वाला । चुगलखोर । पिशुन ।
**पतंगबाज** पुं० (हि) वह जिसे पतंग उड़ाने का शौक या व्यसन हो ।
**पतंगबाजी** स्त्री० (हि) पतंग उड़ाने का हुनर ।
**पतंगम** पु० (सं) पक्षी । पतंगा । शलभ ।
**पतंगा** पु० (हि) १-उड़ने वाला कोई कीड़ा-मकोड़ा २-फतिंगा । ३-चिंगारी । अग्निकण । ४-दीये का गुल या फूल ।
**पतगेन्द्र** पुं० (सं) गरुड़ ।
**पतंचिका** स्त्री०(स) धनुष की डोरी । कमान की तांत । चिल्ला ।
**पत** पु० (हि) १-पति । खाविंद । २-स्वामी । मालिक प्रभु । स्त्री० (हि) १-लज्जा । आबरू । २-प्रतिष्ठा । इज्जत । ३-साख । ऐतबार । (क्रेडिट) ।
**पतई** स्त्री० (हि) पत्र । पत्ती ।
**पतझड़** स्त्री० (हि) १-वह ऋतु जिसमें पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं । शिशिर ऋतु । २-अवनति काल । कंगाली का समय ।
**पतत्** वि० (सं) उड़ने वाला । उतारने वाला । गिरने वाला । पु० (सं) पक्षी ।
**पतत्प्रकर्ष** पुं० (सं) एक प्रकार का काव्य दोष जिसमें अलकार का निर्वाह न हो सके ।
**पतन** पुं० (सं) १-गिरना । २-नीचे जाने का भाव या क्रिया । ३-अधोगति । अवनति । ४-मृत्यु । नाश ५-पाप । ६-जातिच्युत । ७-उड़ान । ८-किले आदि शत्रु के सैनिकों के आधीन हो जाना । वि० (सं) गिरने वाला । उड़ने वाला ।
**पतनशील** वि० (सं) जिसका पतन निश्चित हो । गिरने वाला ।
**पतनारा** पुं० (हि) परनाला । मोरी ।
**पतनीय** वि० (सं) जिसका पतन संभव हो । जाति-भ्रष्ट होने वाला । गिरने वाला । पुं० (सं) वह पाप जिसके कारण जातिच्युत होना पड़े ।
**पतनोन्मुख** वि० (सं) १-जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो २-जिसका पतन समीप हो ।
**पतर** वि० (हि) १-पतला । कृष । २-पर्ण । पत्ता । ३-पत्तल ।
**पतरा** पुं० (हि) पतला । झीना । दुर्बल ।
**पतराई** स्त्री० (हि) पतलापन । सूक्ष्मता ।
**पतरी** स्त्री० (हि) पत्तल ।
**पतरौल** पुं० (हि) गश्त लगाने वाला व्यक्ति या सिपाही । (पैट्रोल) ।
**पतला** वि० (हि) १-जो मोटा न हो । २-झीना । हलका । अधिक तरल । अशक्त । हीन । निर्बल ।
**पतलापन** पुं० (हि) पतला होने का भाव ।
**पतलून** पुं० (हि) एक अंग्रेजी ढंग का पहनावा । (पैंटेलून) ।
**पतवर** क्रि० वि० (हि) पंक्तिवार । क्रम से ।
**पतवार** स्त्री० (हि) नाव या पोत के पिछले भाग में लगी हुई एक तिकोनी लकड़ी जिसमें नौका इधर-उधर घुमाई जाती है । कर्ण । कन्हर ।
**पतवारी** स्त्री० (हि) १-ईख का खेत । २-पतवार ।
**पतस्वाहा** पुं० (स) अग्नि ।
**पता** पुं० (हि) १-पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह । (एड्रेस) । २-खोज । अनुसन्धान । ३-जानकारी । ४-गूढ़त्व । रहस्य ।
**पताई** स्त्री० (हि) मड़ी हुई पत्तियां का ढेर ।
**पताका** स्त्री० (स) १-झंडा । ध्वजा । २-वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया जाता है । ३-कागज या कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जो ध्यान आकृष्ट करने के लिये लगाया जाता है । प्रतीक । (फ्लैग) । ४-नाटक का एक विशिष्ट स्थल । ५-

तीर चलाने में उंगलियों की एक विशेष स्थिति।
**पताकादंड** पुं० (सं) पताका या झंडे का डंडा। (फ्लैग स्टाफ)।
**पताका शीर्षक** पुं०(सं) समाचार-पत्र में मुख्य पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में दिया गया शीर्षक। (बैनर हैडलाइन)।
**पताका-स्थानक** पुं० (सं) नाटक का वह स्थल जहां किसी सोचे हुए विषय की जगह कोई दूसरा विषय आरंभ हो जाय।
**पताकिक** पु० (सं) झंडाबरदार। झंडा ले जाने वाला। (फ्लैगमैन)।
**पताकित** वि० (स) जिस पर पताका लगी हो। (फ्लैग्ड)।
**पताकिनी** स्त्री० (सं) सेना।
**पताकी** वि०(सं) झंडा उठाकर ले जानेवाला व्यक्ति स्त्री० (सं) झंडा। झंडाबरदार।
**पतार** पुं० (हि) १-दे० 'पाताल'। २-सघन वन। जंगल।
**पताल** पुं० (हि) दे० 'पाताल'।
**पतालदंती** पुं०(हि) वह हाथी जिसके दांत नीचे झुके हों।
**पतावर** पुं० (हि) पेड़ के सूखे हुए पत्ते।
**पतिंग** पुं० (हि) दे० 'पतंगा'।
**पतिंबरा** वि० (सं) १-जो अपना वर स्वयं चुने। स्वयम्वरा। २-काला जीरा।
**पति** पुं० (सं) १-स्वामी। मालिक। २-मर्यादा। प्रतिष्ठा। साख। ३-मूल। ४-स्त्री की नजर में उसका विवाहित पुरुष। दूल्हा। शौहर।
**पतिआना** क्रि० (हि) दे० 'पतियाना'।
**पतिआर** पुं० (हि) विश्वास। साख। एतबार।
**पतिकामा** स्त्री० (सं) पति की कामना करने वाली स्त्री
**पतिघातिनी** स्त्री० (सं) १-वह स्त्री जिसने अपने पति की हत्या की हो। २-ज्योतिष के अनुसार वैधव्य योग वाली स्त्री।
**पतिघ्नी** स्त्री० (सं) दे० 'पतिघातिनी'।
**पतित** वि० (सं) १-नीचे गिरा हुआ। २-आचार, नीति या धर्म से नीचे गिरा हुआ। ३-महापापी। ४-जातिच्युत। अधम। नीच।
**पतितउधारन** वि० (हि) पतितों का उद्धार करने वाला पुं० (हि) ईश्वर।
**पतितता** स्त्री०(सं) अपवित्रता। अधमता। नीचता।
**पतितपावन** वि० (सं) पतित को पवित्र करने वाला। पुं० (सं) ईश्वर।
**पतित्व** पुं०(सं) स्वामित्व। प्रभुत्व। पाणिग्राहकता।
**पतित्वन** पुं० (सं) यौवन। जवानी।
**पतिदेवता** स्त्री० (सं) पति को देवता मानने वाली स्त्री
**पतिधर्म** पुं० (सं) पत्नी का अपने पति के प्रति कर्तव्य
**पतिनी** स्त्री० (हि) दे० 'पत्नी'।
**पतिप्राणा** स्त्री० (स) पति-परायण स्त्री।
**पतिया** स्त्री० (हि) चिट्ठी। पत्री।
**पतियाना** क्रि० (हि) सच मानना। विश्वास करना।
**पतियार** वि०(हि) विश्वासनीय। विश्वास करने योग्य
**पतियारा** पु० (हि) विश्वास। एतबार।
**पतिरिप्** वि० (सं) पति से द्वेष करने वाली (स्त्री)।
**पतिलोक** पुं० (सं) पतिव्रता स्त्री को मिलने वाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।
**पतिवंती** वि० (सं) सधवा। पतिवती।
**पतिव्रत** पु० (स) पत्नी की अपने पति पर प्रीति और भक्ति।
**पतिव्रता** स्त्री० (सं) सती। साध्वी। जो अपने पति में अनन्य अनुराग रखती है। और उसकी सेवा करती है।
**पतिवर्त** पुं० (सं) दे० 'पतिव्रत'।
**पतिवर्त्ता** स्त्री० (स) 'पतिव्रता'।
**पतिसेवा** स्त्री० (सं) पतिभक्ति।
**पतीजना** क्रि० (हि) विश्वास करना। पतियाना।
**पतीर** स्त्री० (हि) पंक्ति। कतार। पांति।
**पतीला** पुं० (हि) तांबे या पीतल की बड़ी बटलोई।
**पतीली** स्त्री० (हि) छोटी बटलोई।
**पतुकी** स्त्री० (हि) हाँडी।
**पतुरिया** स्त्री० (हि) वेश्या। कुलटा। छिनाल।
**पतूख** स्त्री० (हि) दे० 'पतोखी'।
**पतोखद** स्त्री०(हि) औषध जिसमें वृक्ष, पौधे, तृण या फूल पत्ते आदि हों। जड़ी बूटी की दवा।
**पतोखदी** स्त्री० (हि) दे० 'पतोखद'।
**पतोखा** पुं० (हि) १-दोना। पत्ते का बना पात्र। २-घोंघी। पत्तों से बनी छतरी।
**पतोखी** स्त्री० (हि) छोटा दोना।
**पतोह** स्त्री० (हि) पुत्रवधू।
**पतोहू** स्त्री० (हि) पतोह।
**पतौआ** पुं० (हि) पत्ता। पर्ण।
**पत्तन** पुं० (सं) १-नगर। शहर। कस्बा। (टाउन)। ३-मृदंग। ४-समुद्र के किनारे जहाज ठहराने का स्थान। (पोर्ट)। बन्दरगाह।
**पत्तन-अधिसमय** पु० (सं) पत्तन पर नियत समय के बाद में काम करने का भत्ता। (पोर्ट ओवरटाइम)।
**पत्तन-आयुध** पुं० (सं) पत्तन या बन्दरगाह में काम आने वाले शस्त्र। (पोर्ट आर्म्ज)।
**पत्तन-आरक्षक** पुं० (सं) बन्दरगाह की रक्षा करने वाली पुलिस। (पोर्ट पुलिस)।
**पत्तन-क्षेत्र** पुं० (सं) किसी पत्तन या कस्बे के आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी सफाई, रोशनी आदि की व्यवस्था वहां के कुछ निर्वाचित लोगों द्वारा की जाती है। (टाउन एरिया)। किसी बन्दरगाह

के आस-पास का क्षेत्र जो सेना की देख रेख में रहता है। (पोर्ट एरिया)।
पत्तन-न्यास पुं० (सं) बन्दरगाह की व्यवस्था के लिए बनाया गया कुछ निर्वाचित सदस्यों का निगम (पोर्ट ट्रस्ट)।
पत्तन-न्यासआयुक्त पुं० (सं) पत्तन न्यास का सबसे बड़ा अधिकारी। (पोर्ट ट्रस्ट कमीश्नर)।
पत्तन-न्यासप्रभार पुं० (सं) बन्दरगाह पर माल उतारने या रखने का कर। (पोर्ट ट्रस्ट चार्जेज़)।
पत्तन-न्याससंयान पुं० (सं) पत्तन न्यास क्षेत्र में चलने वाली रेलें। (पोर्ट ट्रस्ट रेलवे)।
पत्तन-निरोधा पुं० (सं) बन्दरगाह में संक्रामक रोग ग्रस्त होने पर यात्रा की रुकावट। (पोर्ट क्वारेंटाइन
पत्तन-प्रशासनाधिकारी पुं० (सं) बन्दरगाह पर प्रशासन करने वाला उच्च पदाधिकारी।(पोर्ट एड-मिनिस्ट्रेटिव ऑफीसर)।
पत्तन मन्त्रणा समिति स्त्री० (सं) पत्तन की व्यवस्था में सलाह देने वाली समिति। (पोर्ट एडवाइजरी कमेटी)।
पत्तर पुं० (हि) १-धातु को पीट कर पतला किया हुआ चिपटा और लम्बोतरा टुकड़ा। २-दे० 'पत्तल
पत्तल स्त्री० (हि) १-पत्तों को सींक से जोड़ कर बनाया हुआ पात्र जिसमें खाने के लिये वस्तु रखी जाती है। पत्तल पर परोसी हुई खाद्य सामग्री या भोजन।
पत्ता पुं० (हि) १-पर्ण। वृक्षों या पौधों में होने वाले हरे रङ्ग के अवयव। २-कान में पहनने का आभूषण ३-मोटे कागज का खंड। ताश का पत्ता।
पत्ति पुं० (सं) १-पैदल सिपाही। २-पैदल चलने वाला। ३-शूरवीर। स्त्री० (सं) १-सेना का सबसे छोटा दस्ता। २-पाद। चरण।
पत्तिक वि० (सं) पैदल चलने वाला। पुं० (सं) १-सेना का एक बड़ा दस्ता। २-उक्त दस्ते का अधि-कारी।
पत्तिकाय पुं० (सं) पैदल सैनिकों की सेना।
पत्तिपाल पुं० (सं) पांच छः सिपाहियों का नायक।
पत्तिव्यूह पुं० (सं) वह व्यूह जिसमें आगे कवचधारी सिपाही हों और पीछे धनुर्धर।
पत्तिसंहति स्त्री० (सं) पैदल सेना।
पत्ती स्त्री० (हि) १-छोटा पत्ता। २-साझा। हिस्सा। ३-फूल की पंखड़ी। ४-दल। ५-पत्ती के आकार की कोई वस्तु।
पत्तीदार पुं० (हि) भागीदार। साझीदार। हिस्सेदार वि० (हि) जिसमें पत्ती के आकार का टुकड़ा जुड़ा हो।
पत्तूर पुं० (सं) [illegible]। पतंग की लकड़ी।
पत्थ पुं० (हि) दे० 'पथ्य'।
पत्थर पुं० (हि) १-पृथ्वी के स्तर में का कठोर खंड शिला खंड। प्रस्तर। २-सड़क के किनारे लगा हुआ वह शिलाखंड जिस पर मील के संख्यासूचक शब्द अंकित होते हैं। (माइल स्टोन)। ३-ओला। ४-पत्थर के समान कठोर। ५-रत्न। पन्ना। हीरा। ६-बिलकुल नहीं। (तुच्छता सूचित करने वाला शब्द)
पत्थरकला स्त्री०(हि) एक प्रकार की प्राचीन तोड़ेदार बन्दूक।
पत्थरचटा पुं० (हि) १-एक प्रकार की घास। २-पत्थर चाटने वाला सर्प।
पत्थरपानी पुं० (हि) आंधी-पानी।
पत्थरफूल पुं० (हि) छरीला। शैलाख्य।
पत्थरफोड़ पुं० (हि) १-हुदहुद पक्षी। २-एक प्रकार का पौधा जो दीवार फोड़कर निकल आता है।
पत्थरफोड़ा पुं० (हि) संगतराश।
पत्थरबाज पुं० (हि) जो पत्थर फेंक कर किसी को मारता हो। जिसे पत्थर फेंकने का अभ्यास हो।
पत्थरबाजी स्त्री० (हि) पत्थर फेंकने की क्रिया। पत्थर-फिकाई।
पत्यल पुं० (हि) दे० 'पत्थर'।
पत्नी स्त्री० (सं) विधिपूर्वक विवाहित स्त्री। भार्या। वधू। सहधर्मिणी। दारा। पाणिगृहीता।
पत्नीत्व पुं० (सं) पत्नी का भाव या धर्म।
पत्नीव्रत पुं० (सं) अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प।
पत्य पुं० (सं) पति होने का भाव।
पत्याना क्रि० (हि) दे० 'पतियाना'।
पत्यारा पुं० (हि) दे० 'पतियारा।
पत्यारी स्त्री० (हि) पंक्ति। पांत। कतार।
पत्र पुं० (सं) १-किसी वृक्ष का पत्ता। पर्ण। पल। २-लिखा हुआ कागज। ३-वह ताम्रपट या कागज जिस पर किसी विशेष व्यवहार के प्रमाणस्वरूप कुछ लिखा गया हो। ४-कोई पट्टा या दस्तावेज। ५-चिट्ठी। खत। पुस्तक या लेख का पन्ना। ६-समाचार-पत्र। ७-पर। पंख। ८-तेज पत्ता।
पत्रक पुं० (सं) १-पत्ता। २-तेजपात। ३-पत्रावली। ४-वह पत्र जिस पर स्मृति के लिये सूचना आदि कोई बात लिखी हो। (मेमो नोट)।
पत्रकर्तक पुं० (सं) वह यंत्र जिससे कागज काटे जाते हैं। (कटिंग-प्रेस)।
पत्रकार पुं० (सं) १-समाचार-पत्र का संपादक या लेखक। (जर्नेलिस्ट, एडीटर)।
पत्रकारिता स्त्री० (सं) पत्रकार का पेशा या व्यवसाय। जर्नेलिज्म)।
पत्रचलार्थ पुं० (सं) छपे हुए कागज़ या नोटों के रूप में चलने वाली मुद्रा। कागजी मुद्रा। (पेपर करेन्सी)।

पत्रजात पु० (सं) किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाले पत्रों आदि का समूह। (पेपर्स), (फाइल)।
पत्रद्रुम पु० (सं) ताड़ का पेड़।
पत्रनाडिका स्त्री० (सं) पत्ते की नस।
पत्रपंजी स्त्री० (स) वह पंजी जिसमें आये हुए पत्रों का विवरण रहता है। (लैटर-बुक)।
पत्रपाल पु० (सं) १-लंबा छुरा। २-डाकखाने का प्रधान अधिकारी। (पोस्टमास्टर)।
पत्रपुट पुं० (सं) पत्ते का दोना।
पत्रपुष्प पुं० (सं) १-लाल तुलसी। २-सामान्य या तुच्छ उपहार।
पत्र-पुस्तक स्त्री० (सं) पत्रपंजी। (लैटर-बुक)।
पत्रपेटी स्त्री० (हि) वह पेटी जिसमें डाक द्वारा बाहर जाने वाले पत्र छोड़े जाते हैं। (लैटर बॉक्स)।
पत्रबंध पुं०(सं) फलों और पत्तों की सजावट।
पत्रभंग पुं० (सं) वे चित्र या रेखा जो स्त्रियां सौंदर्य-वृद्धि के लिये चन्दन, कस्तूरी आदि तथा सुनहले पत्तरों से भाल, कपोल आदि बनाती हैं।
पत्ररंजन पुं० (सं) प्राचीन काल में ग्रन्थों के पृष्ठों की सजावट।
पत्ररचना स्त्री० (सं) पत्रभंग।
पत्ररेखा स्त्री० (स) पत्रभंग।
पत्रलेखा स्त्री० (सं) पत्रभंग। सप्टी।
पत्रवल्लरी स्त्री० (सं) पत्रभंग।
पत्रवारक पुं० (सं) धातु या लकड़ी का वह टुकड़ा जो कागज को उड़ने से बचाने के लिये दाब रूप में रखा जाता है। (पेपर वेट)।
पत्रवाह पुं० (सं) दे० 'पत्रवाहक'।
पत्रवाहक पुं० (सं) १-पत्र ले जाने वाला। २-डाकिया। (पीयन)। ३-पक्षी। चिड़िया। ४-तीर।
पत्रवाहक-पंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें पत्रवाहक द्वारा वितरित करने वाले पत्र चढ़ाए जाते हैं और जिस पर वह हस्ताक्षर लेता है। (पियन-बुक)।
पत्र-विशेषक पुं० (सं) १-तिलक। २-पत्रभंग।
पत्रवितरक पुं० (सं) डाकिया। बाहर से आए पत्रों को बांटने वाला। (पोस्टमैन)।
पत्रवियोजक पुं० (सं) वह पत्रालय का कर्मचारी जो पत्रों को छांटता है। (सोर्टर)।
पत्रव्यवहार पुं० (सं) १-वह सम्बन्ध जिसमें किसी को पत्र लिखे जाते हैं। खतोकितावत। चिट्ठी पत्री। २-इस प्रकार भेजे हुए और आये हुए उनके उत्तर (कोरस्पोन्डेन्स)।
पत्रश्रेणी स्त्री०(सं) १-मूसाकानी। २-पत्तों की पंक्ति
पत्रश्रेष्ठ पुं० (सं) बेल का पत्ता।
पत्र-सूचना-विभाग पुं० (हि) समाचार पत्रों को सूचना देने वाला सरकारी विभाग। (प्रेस इन्फरमेशन ब्यूरो)।

पुं० (सं) पत्र-व्यवहार। (कोरेस्पोन्डेंस)।
पत्रालय पुं० (सं) वह कार्यालय जहाँ चिट्ठी, पारसल आदि बाहर भेजने के लिए उपयुक्त व्यक्तियों तक पहुंचाने की व्यवस्था हो। डाकघर। (पोस्ट ऑफिस)।
पत्रालयिक-आदेश पुं० (स) डाकखाने द्वारा रुपये लेकर जारी किया गया एक धनादेश जो और किसी के नाम पर हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। (पोस्टल ऑर्डर)।
पत्रालयित वि०(सं) दूसरी जगह भेजने के लिये पत्र-पेटिका में छोड़ा हुआ। (पोस्टेड)।
पत्रालयीय-प्रमाणपत्र पु० (सं) किसी दूसरी जगह पत्र आदि भेजने के लिये डाकखाने में दिया गया इसका प्रमाण पत्र जिसे डाकखाने का कर्मचारी देता है। (पोस्टल सर्टिफिकेट)।
पत्रालाप पु० (सं) चिट्ठी पत्री द्वारा किसी बात के समझौते का रूप निश्चित करने का कार्य। (नैगोशियेशन)।
पत्रावलि स्त्री (सं) १-सिंदूर। २-पत्र रचना। ३-पत्रभंग। ४-पत्रों की पंक्ति।
पत्रावली स्त्री० (सं) १-पत्रों की पंक्ति। २-पीपल के कोमल पत्तों और शहद का सम्मिश्रण।
पत्राहार पुं० (सं) केवल पत्ते खाकर निर्वाह करना
पत्रिका स्त्री० (सं) १-चिट्ठी। खत। २-कोई छोटा लेख। ३-नियत समय पर प्रकाशित होने वाला मासिक या पाक्षिक पत्र। (जरनल)।
पत्री स्त्री० (सं) १-चिट्ठी। खत। २-दोना। ३-छोटा लेख। ४-पंखदार। ५-रथवाला। पुं० (सं) १-बाण। २-पक्षी। ३-बाज पक्षी। ४-वृक्ष। ५-पहाड़।
पथ पुं०(सं) १-मार्ग। रास्ता। २-आचरण, व्यवहार आदि की रीति। पुं० (हिं) रोग के लिये हलका आहार। पथ्य।
पथक पुं० (सं) १-राह जानने वाला या बताने वाला। २-प्रदेश। प्रांत।
पथकर पुं०(सं) वह कर जो किसी सड़क या पुल पर से माल ले जाने आदि पर लिया जाता है। (टौल)
पथगामी पुं० (सं) पथिक। राहगीर।
पथचारी पु० (सं) पथगामी।
पथदर्शक पुं० (सं) रास्ता दिखाने वाला। रहनुमा।
पथदर्शक-योजना स्त्री० (सं) किसी योजना का [illegible] अनुरूप। (पाइलट-स्कीम)।
पथप्रदर्शक पुं० (स) दे० 'पथदर्शक'। (गाइड)।
पथप्रदर्शन पुं०(सं) कोई काम करने का ढंग बतलाना (गाइडेंस)।
पथराना क्रि०(हिं) पत्थर के समान कड़ा हो जाना। कठोर होना। जड़ हो जाना।
पथरी स्त्री० (हि) १-कटोरे के आकार का पत्थर का बना पात्र। २-एक रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर

के छोटे-छोटे टुकड़े उत्पन्न हो जाते है। ३-चकमक पत्थर। ४-उस्तरा आदि तेज करने की सिल्ली। ५-पक्षियों के पेट का वह भाग जहाँ अनाज आदि के कड़े दाने पचते हैं।

**पथरीला** वि० (हि) पत्थर से युक्त।

**पथरौटा** पुं० (हि) पत्थर का बना कटोरे जैसा पात्र

**पथरौटी** स्त्री० (हि) पत्थर की कूंडी।

**पथ-शुल्क** पुं० (सं) पथकर। (टोल)।

**पथ-शुल्क-गृह** पुं० (सं) वह स्थान जहा पर पथ-कर दिया जाता है। (टोल-हाउस)।

**पथ-शुल्क-द्वार** पुं० (सं) वह द्वार जहां पथ-कर देना अनिवार्य होता है। (टोल-गेट)।

**पथिक** पुं० (सं) राह चलने वाला। मुसाफिर। राहगीर। यात्री।

**पथिका** स्त्री० (सं) मुनक्का।

**पथिकार** पुं० (सं) रास्ता बनाने वाला।

**पथिकाश्रय** पुं० (सं) पथिकों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय।

**पथी** पुं० (सं) पथिक। यात्री।

**पथीय** वि० (सं) पथ सम्बन्धी।

**पथेरा** पुं० (हि) ईंट पाथने वाला कुम्हार।

**पथौरा** पुं० (हि) वह स्थान जहां उपले पाथे जाते हैं

**पथ्य** पुं० (सं) १-जल्दी पचने वाला हल्का भोजन जो रोगी को दिया जाता है। २-उपयुक्त आहार। -नमक। ४-कल्याण।

**पथ्यापथ्य** पुं० (सं) रोगी के लिये हितकारी और अहितकारी द्रव्य।

**पद** पुं० (सं) १-काम। व्यवसाय। २-त्राण। रक्षा। ३-योग्यता के अनुसार किसी कर्मचारी का नियत स्थान। ओहदा। (पोस्ट, रैंक)। ४-पैर। पांव। ५-निशान। ६-वस्तु। ७-शब्द। ८-श्लोकपाद। ९-उपाधि। १०-निर्वाण। मोक्ष। ११-ईश्वर भक्ति सम्बन्धी गीत। १२-विभक्ति। १३-प्रत्यय-युक्त शब्द।

**पदकंज** पुं० (सं) कमल के समान चरण।

**पदक** पुं० (सं) १-बालकों को रक्षार्थ पहनाने का एक गहना जिस पर किसी देवता के पद चिह्न अंकित होते हैं। २-पूजन आदि के लिये बनाये गये किसी देवता के पदचिह्न। ३-वेदों का पाठ करने में प्रवीण व्यक्ति। ४-सोने या चांदी का बना गोल टुकड़ा जो उपहार के रूप में किसी विशेष कार्य करने पर प्रमाण रूप में प्रदान किया जाता है। तमगा (मैडल)।

**पदकमल** पुं० (सं) चरणकमल।

**पदकारणात्** (सं) दे० 'पदेन'। (एक्स ऑफिशियो

**पदकारणात् उपपंजीयक** पुं० (सं) पदेन उपपंजीयक (एक्स ऑफिशियो सब-रजिस्ट्रार)।

पुं० (सं) चलना। गमन।

पुं० (सं) पैदल सिपाही। प्यादा।

**पदचर** पुं० (सं) पदग।

**पदचारी** वि० (सं) पैदल चलने वाला।

**पदचिह्न** पुं० (सं) पैरों का निशान।

**पदच्छेद** पुं० (सं) संधि तथा समासयुक्त किसी वाक्य के पदों को व्याकरण के नियमानुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

**पदच्युत** वि० (सं) जिसको अपने पद या दर्जे से हटा दिया गया हो। (डिसमिस्ड)।

**पदच्युति** स्त्री० (सं) पद या स्थान से हटाने की क्रिया (डिसमिसल)।

**पदज** पुं० (सं) पैर की उंगलियां। शूद्र। वि० (सं) जो पैरों से उत्पन्न हो।

**पदतल** पुं० (सं) पैर का तलवा।

**पदत्याग** पुं० (सं) अपना पद या अधिकार छोड़ना। ओहदे से पृथक होजाना। (एब्डिकेशन)।

**पदत्राण** पुं० (सं) जूता। खड़ाऊं।

**पददलित** वि० (सं) पैरों से रौंदा हुआ।

**पददारिका** स्त्री० (सं) पैर की बिवाई।

**पद-धारण-सुरक्षा** स्त्री० (सं) किसी पद पर काम करते रहने की सुरक्षा। (सिक्यूरिटी ऑफ टेन्योर)

**पदन्यास** पुं० (सं) १-पैर रखना। चलना। २-पद रखने का ढंग। ३-गोखरू।

**पदपंकज** पुं० (सं) पद कमल।

**पदपद्म** पुं० (सं) चरण कमल।

**पदपद्धति** स्त्री० (सं) पैर का चिह्न।

**पदपाठ** पुं० (सं) वेद मंत्रों का वह क्रम जिसमें वह मूल रूप में अलग-अलग रखे गये हैं।

**पदपूरण** पुं० (सं) किसी पद को पूरा करना।

**पदबाधा** स्त्री० (सं) गेंद को यष्टियों की ओर टांग लगा कर बढ़ने से रोक देना (क्रिकेट में किसी बल्लेबाज द्वारा)। (लेग बिफोर विकेट)।

**पदभ्रंश** पुं० (सं) पदच्युति।

**पदम** पुं० (सं) एक पेड़। दे० 'पद्म'।

**पदमकाठ** पुं० (सं) पद्मकाष्ठ।

**पदमाकर** पुं० (सं) 'पद्माकर'।

**पदमुक्त** वि० (सं) अपना पद छोड़ कर दूसरी जगह जाने वाला। (आउट गोइंग)।

**पदमूल** पुं० (सं) १-तलवा। २-शरण। ३-आश्रय।

**पदमैत्री** स्त्री० (हि) किसी पद में एक ही अक्षर सुन्दरता के लिये बारंबार आना। अनुप्रास। वर्णमैत्री।

**पदमोचन** पुं० (सं) किसी पद या कर्तव्य से छुटकारा पा जाना। (रिलीफ)।

**पदयोजना** पुं० (सं) पदों के लिये पदों को जोड़ना।

**पदरिपु** पुं० (सं) कंटक। कांटा।

पदविग्रह पुं० (सं) दे० 'पदच्छेद'।
पदविच्छेद पुं० (सं) दे० 'पदच्छेद'।
पदवी स्त्री०(स) १-रास्ता। मार्ग। २-पद्धति। तरीका परिपाटी। ३-प्रतिष्ठासूचक पद जो सरकार या कोई संस्था की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। खिताब। ४-आदेश।
पदवृत्ति स्त्री० (सं) दो शब्दों की संधि।
पदव्याख्या स्त्री० (सं) वाक्य में आये शब्दों की व्याख्या करना। (पार्सिंग)।
पद-शिक्षार्थी स्त्री० (सं) १-नौकरी की आशा से बिना मजदूरी या तनख्वा के काम करने वाला। उम्मेदवार। २-किसी अनुभवी व्यवसायी कलाकार आदि की देखरेख में काम सीखने वाला। (एप्रेंटिस)।
पदसमूह पुं० (सं) कविता का चरण।
पद-सूचक-चिह्न पुं० (सं) राजा या किसी विशेष अधिकारी आदि के पद की पहचान कराने वाला चिह्न। (इनसिग्निया)।
पदांत पुं० (सं) पद का शेष। पद का अन्त।
पदांतर पुं० (सं) १-स्थानान्तर। २-दूसरा पद। ३-एक पग का अन्तर।
पदांभोज पुं० (सं) दे० 'पदकंज'।
पदाघात पुं० (सं) लात।
पदाति पुं० (सं) ०-पैदल चलने वाला। प्यादा। पैदल सिपाही। २-नौकर। सेवक।
पदातिक पुं० (सं) दे० 'पदाति'।
पदातिका स्त्री० (सं) पैदल सेना।
पदाती पुं० (सं) पैदल सैनिक।
पदाधिकारी पुं० (सं) जो किसी पद पर आसीन या नियुक्त हो। ओहदेदार। (ऑफीसर)।
पदाना क्रि० (हि) बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।
पदानुग पुं० (सं) वह जो किसी का अनुगमन करता हो। अनुयायी।
पदाब्ज पुं० (सं) दे० 'पदकंज'।
पदार पुं० (सं) पैरों की धूल।
पदारथ पुं० (हि) दे० 'पदार्थ'।
पदारविंद पुं० (सं) दे० 'पदकंज'।
पदार्घ्य पुं० (सं) वह जल जो किसी अतिथि के पैर धोने के लिये दिया जाय।
पदार्थ पुं० (सं) १-पद का अर्थ या विषय। २-वह जिसका कुछ नाम हो तथा जिसका ज्ञान प्राप्त हो सके। ३-पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ४-वस्तु। चीज। ५-ऐसी वस्तु जो स्थान घेरती है जिसका कुछ ज्ञान हो सके। (मैटर)।
पदार्थ-विज्ञान पुं०(सं) भौतिक शास्त्र। (फिजिक्स)।
पदार्थ-विद्या स्त्री० (सं) वह विद्या जिसमें पदार्थों का वर्णन हो।
पदार्पण पुं०(सं) किसी स्थान में पैर रखने की क्रिया
पदावधि स्त्री० (स) किसी पद के ऊपर काम करते रहने की क्रिया। (टेन्योर)।
पदावनत वि० (सं) १-जो पैरों पर झुका हुआ हो। जो प्रणाम कर रहा हो। २-विनीत।
पदावली स्त्री० (सं) १-वाक्यों की श्रेणी। २-भजनों का संग्रह।
पदावास पुं० (स) किसी पदाधिकारी का सरकारी निवास-स्थान (ओफीशियल रेजीडेन्स)।
पदास स्त्री० (हि) पदाने का भाव।
पदासन पुं० (सं) पैर रखने की काठ की चौकी।
पदासा वि० (हि) जिसे पादने की इच्छा हो।
पदासीन वि० (सं) किसी विशेष पद पर आसीन।
पदाहत वि० (सं) लतियाया हुआ।
पदिक वि० (सं) पैदल। पुं० (सं) पैदल सेना। पुं० (हि) १-गले में पहनने वाला गहना। २-हीरा। रत्न। ३-दे० 'पदक'।
पदिकहार पुं० (हि) रत्नों का बनाया हुआ हार। मणिमाला।
पदी पुं० (हि) पैदल। प्यादा।
पदु पुं० (हि) दे० 'पद'।
पदुम पुं० (हि) १-घोड़े का एक चिह्न। दे० 'पद्म'।
पदुमिनी स्त्री० (हि) दे० 'पद्मनी'।
पदेक पुं० (सं) बाजपक्षी।
पदेन क्रि० वि० (सं) किसी पद के या किसी पद पर आरूढ़ होने के अधिकार से। (एक्स ऑफीशियो)।
पदोड़ा पुं० (हि) १-बहुत पादने वाला। २-कायर।
पदोदक पुं०(सं) वह जल जिससे पैर धोये गए हों। चरणामृत।
पदोन्नति स्त्री० (सं) किसी पदाधिकारी की पद में होने वाली उन्नति। (प्रोमोशन)।
पद्धटिका स्त्री० (सं) एक मात्रिक छन्द।
पद्धति स्त्री० (स) १-राह। पथ। मार्ग। २-रीति। रस्म।
पद्म पुं० (सं) १-कमल का पौधा। २-एक भाग्य वाचक चिह्न जो पैर पर होता है। ३-किसी स्तम्भ के सातवें भाग का नाम। (वास्तु-विद्या)। ४-कुबेर की निधियों में से एक। ५-शरीर पर का सफेद दाग। ६-सीसा। ७-एक नाग का नाम। ८-एक पुराण का नाम। ९-गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०००००००००००००००)। १०-एक आसन।
पद्मकंद पुं० (सं) कमल की जड़।
पद्मक पुं० (सं) १-पद्म का पेड़। २-कमलव्यूह। ३-सफेद कोढ़।
पद्मकाष्ठ पुं० (सं) पदम वृक्ष। पद्माख।
पद्मकोष पुं० (सं) १-कमल का संपुट। २-एक

प्रकार की कर मुद्रा।

**पद्मज** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**पद्मनाभि** स्त्री० (सं) विष्णु।

**पद्मनाल** पुं० (सं) मृणाल।

**पद्मनिधि** स्त्री० (सं) कुबेर की नौ निधियों में से एक

**पद्मनिमीलन** पुं०(सं) कमल का संपुटित होना।

**पद्मनेत्र** पुं० (सं) १-एक प्रकार का पक्षी। २-बौद्धों के अनुसार एक बुद्ध का नाम जिसका अवतार अभी होना है।

**पद्मपत्र** पुं० (सं) पुष्करमूल।

**पद्मपाणि** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-बुद्ध की एक विशेष मूर्ति। ३-सूर्य का नामान्तर।

**पद्मपुष्प** पुं० (सं) कनेर का पेड़। एक प्रकार का पक्षी।

**पद्मबंध** पुं०(सं) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें अक्षरों को कमलाकार रूप में लिखते हैं।

**पद्मबन्धु** पुं० (सं) १-सूर्य। २-भ्रमर।

**पद्मबीज** पुं० (सं) कमल के बीज।

**पद्मभव** पुं० (सं) कमल से उत्पन्न ब्रह्मा।

**पद्मभास** पुं० (सं) विष्णु।

**पद्मभू** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**पद्मयोनि** पुं० (सं) कमल से उत्पन्न ब्रह्मा का एक नाम।

**पद्मरज** पुं० (सं) कमलकेशर।

**पद्मराग** पुं० (सं) रत्न। लाल। मणि।

**पद्मरेखा** स्त्री० (सं) हथेली की कमलाकार रेखा जो केवल भाग्यवान के ही होती है (फलित ज्यो०)।

**पद्मलांछन** पुं० (सं) ब्रह्मा। कुबेर। सूर्य।

**पद्मलांछना** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी का नाम। २-सरस्वती का एक नाम।

**पद्मवासा** स्त्री० (सं) लक्ष्मी।

**पद्मव्यूह** पुं०(सं) १-एक प्रकार की समाधि। २-कमल के आकार का सेना का व्यूह।

**पद्मसंभव** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**पद्मा** स्त्री०(सं) १-विष्णु भगवान की पत्नी। लक्ष्मी २-लौंग। ३-बंगाल में गंगा की पूर्वी शाखा का नाम। ४-भादों सुदी एकादशी तिथि। ५-गेंदे का पौधा। ६-मनसादेवी का एक नाम।

**पद्माकर** पुं० (सं) १-एक बड़ा तालाब जिसमें कमल खिलते हैं। २-जलपूर्ण सरोवर। ३-कमल समूह।

**पद्माक्ष** पुं० (सं) १-विष्णु। २-कमलगट्टा। ३-कमल के समान नेत्र वाला।

**पद्माख** पुं० (सं) पद्म का पेड़।

**पद्मालया** स्त्री० (सं) लक्ष्मी। लौंग।

**पद्मावती** स्त्री० (सं) १-पटना का एक प्राचीन नाम २-एक प्राचीन नदी। ३-मनसा देवी। ४-उज्ज-यिनी का एक पुरातन नाम। ५-एक सुरांगना।

**पद्मासन** पुं० (सं) १-पद्म के आकार का धातु निर्मित आसन। २-योग-साधन का एक आसन जिसमें बांयी जांघ पर दांई जांघ रखी जाती है। तथा छाती पर अंगूठा रख कर नासिका का अग्र-भाग देखा जाता है। ३-ब्रह्मा। ४-शिव। ५-सूर्य

**पद्मिनी** स्त्री० (सं) १-कमलिनी। कमल का छोटा पौधा। २-कमलनाल। ३-हथिनी। ४-वह तालाब जहां कमल बहुतायत से हों। ५-(कोकशास्त्र) स्त्रियों की चार जातियों में सर्वोत्तम जाति।

**पद्मिनीकांत** पुं० (सं) सूर्य।

**पद्मिनीवल्लभ** पुं० (सं) सूर्य।

**पद्मेशय** पुं० (सं) विष्णु।

**पद्मोद्भव** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**पद्मोद्भवा** स्त्री० (सं) मनसा देवी।

**पद्य** वि० (सं) १-पद या पैर सम्बन्धी। २-जिसमें कविता के चरण हों। ३-शब्द सम्बन्धी। ४-आस्तिक पुं० (सं) १-वह छन्द जिसके चार चरण होते हैं। २-कविता। ३-शूद्र। ४-शठता।

**पद्यमय** वि० (सं) पद्यरूप।

**पद्या** स्त्री० (सं) १-रास्ते पर चलने की पटरी। २-पगडंडी।

**पद्यात्मक** वि० (सं) छन्दोबद्ध। पद्यरूप।

**पधरना** क्रि० (हि) किसी पूज्य या बड़े आदमी का आना।

**पधारना** क्रि० (हि) १-सादर बैठाना। २-स्थापित करना।

**पनंग** पुं० (हि) सर्प। सांप।

**पन** पुं० (हि) १-प्रतिज्ञा। संकल्प। -अवस्था। आयु के चार भागों में से एक। प्रत्य० (हि) भाव-वाचक संज्ञा बनाने तथा गुणवाचक संज्ञा में लगने वाला एक प्रत्यय जैसे—लड़कपन।

**पनकटा** पुं० (हि) खेत में इधर-उधर सिंचाई के लिये पानी लाने वाला व्यक्ति।

**पनकपड़ा** पुं० (हि) पानी में भिगोया हुआ कपड़ा जो शरीर के कहीं कट जाने पर बांधा जाता है।

**पनग** पुं० (हि) दे० 'पन्नग'।

**पनगनि** स्त्री० (हि) सर्पिणी। पन्नगी।

**पनघट** पुं० (हि) पानी भरने का घाट।

**पनच** स्त्री० (हि) धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।

**पनचक्की** स्त्री० (हि) पानी के बहाव की शक्ति से चलने वाली चक्की।

**पनचोरा** पुं० (हि) छोटे मुंह और चौड़ी पेंदी वाला बरतन।

**पनडब्बा** पुं० (हि) पान रखने का डब्बा। पानदान।

**पनडुब्बा** पुं० (हि) १-पानी में गोता लगाकर तल की चीजें निकालने वाला। गोताखोर। २-एक

पक्षी जो पानी में गोता लगा कर मछलियां पकड़ता है। मुरगाबी।

पनडुब्बी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की नाव जो पानी में डूब कर चलती है। (सब-मेरिन)। २-एक प्रकार का पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियां पकड़ता है।

पनपना क्रि०(हि) १-नये पौधे का पत्ते युक्त या हरा-भरा होना। पल्लवित होना। २-नये सिरे से समर्थ या सशक्त होना।

पनपाना क्रि० (हि) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।

पनडब्बा पुं० (हि) लगे हुए पान के बीड़े रखने का डिब्बा।

पनबिछिया स्त्री० (हि) डंक मारने वाला एक पहाड़ी का कीड़ा।

पनबिजली-शक्ति स्त्री० (हि) जलशक्ति से उत्पन्न की जाने वाली बिजली की शक्ति। (हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर)।

पनभता पुं० (हि) पानी में उबाले हुए साधारण चावल।

पनभरा पुं० (हि) पानी भरने वाला। पनहार।

पनरवा पुं० (हि) दे० 'पनरवा'।

पनव पुं० (हि) दे० 'पनाह'।

पनवाड़ी स्त्री० (हि) पान का खेत। बरेजा। पुं० (हि) पान बेचने वाला। तमोली।

पनवारा पुं० (हि) १-पत्तों की बनी पत्तल जिस पर रख कर लोग भोजन करते हैं। २-पत्तल भर भोजन ३-एक प्रकार का सर्प।

पनस पुं० (सं) १-कटहल का वृक्ष या फल। २-कांटा

पनसाला स्त्री० (हि) वह स्थान जहां पथिकों को पानी पिलाया जाता है। पनसाल।

पनसुइया स्त्री० (हि) केवल दो डांड से चलने वाली छोटी नाव।

पनसेरी स्त्री० (हि) दे० 'पंसेरी'।

पनह स्त्री० (हि) दे० 'पनाह'।

पनहड़ा पुं० (हि) तम्बोली का हाथ धोने का पानी रखने का बरतन।

पनहरा पुं० (हि) दूसरों के यहां पानी भरने वाला नौकर।

पनहा पुं० (हि) १-कपड़े या दीवार की चौड़ाई। २ तात्पर्य। मर्म। भेद। ३-चोरी का पता लगाने वाला।

पनहारा पुं० (हि) दे० 'पनहरा'।

पनहारिन स्त्री० (हि) पानी भरने वाली।

पनहिया स्त्री० (हि) दे० 'पनही'।

पनही स्त्री० (हि) जूता।

पना पुं० (हि) एक प्रकार का शर्बत जो आम या इमली से बनाया जाता है। पन्ना।

पनाती पुं० (हि) पोता या नाती का पुत्र। कन्या का पुत्र अथवा नाती।

पनार पुं० (हि) दे० 'पनारा'।

पनारा पुं० (हि) दे० 'पनाला'।

पनारी स्त्री० (सं) १-मोरी। नाली। २-[illegible]। [illegible] ३-एक भोज्य वस्तु।

पनालना क्रि० (हि) पोषण करना। परवरिश करना।

पनाह स्त्री० (फा) शत्रु, संकट या कष्ट से रक्षा पाने का भाव। बचाव। त्राण। २-रक्षा का ठिकाना। शरण। आड़।

पनि पुं० (हि) पानी का बिगड़ा हुआ रूप।

पनिगर वि०(हि) दे० 'पानीदार'।

पनिघट पुं० (हि) दे० 'पनघट'।

पनिच पुं० (हि) दे० 'पनच'।

पनिया वि० (हि) पानी का। पानी से उत्पन्न। पुं० (हि) पानी।

पनियासोत वि० (हि) बहुत गहरा। अथाह।

पनियाना क्रि० (हि) पानी से गीला करना। पानी से तरबतर करना।

पनिहा वि० (हि) जल में रहने वाला। पानी संबन्धी पुं० (हि) दे० 'पनहा'।

पनिहार पुं० (हि) पानी भरने वाला। पनहारा।

पनिहारी स्त्री० (हि) पानी भरने वाली स्त्री।

पनी पुं० (हि) प्रण करने वाला। प्रतिज्ञा करने वाला।

पनीर पुं० (फा) १-फाड़ कर जमाया हुआ दूध। २ पानी निकाला हुआ दही।

पनीला वि० (हि) जिसमें पानी भरा हो।

पनुआं पुं० (हि) गुड़ पकाने की कड़ाई के धोवन का शर्बत। पुं० (हि) फीका।

पनोटी स्त्री० (हि) पान रखने की बांस की पिटारी।

पन्न वि० (सं) १-गिरा या पड़ा हुआ। २-गत। नष्ट। पुं० (सं) रेंगना। सरक-सरक कर चलना।

पन्नई वि० (हि) पन्ने के रंग का। हरा।

पन्नग पुं० (सं) १-सर्प। २-पद्माख। एक बूटी का नाम। पुं० (हि) पन्ना। मरकत।

पन्नगकेसर पुं० (सं) नागकेसर।

पन्नगनाशन पुं० (सं) गरुड़।

पन्नगपति पुं० (सं) शेषनाग।

पन्नगारि पुं० (सं) गरुड़।

पन्नगाशन पुं० (सं) गरुड़।

पन्नगी स्त्री० (सं) १-नागिन। सर्पिणी। २-एक बूटी

पन्ना पुं० (हि) १-हरे रंग अथवा फिरोजी रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। जमुर्रद। मरकत। २-पुस्तक आदि का पृष्ठ। वरक। ३-देसी जूते के ऊपरी भाग का नाम जिसे पान भी कहते हैं। ४-आम आदि का पना।

पन्नी पुं० (हि) १-रांगे या पीतल का कागज के

समान पतला पत्तर। २-चमड़ा या कागज जिस पर सुनहला लेप किया गया हो। ३-एक प्रकार का भोज्य पदार्थ। स्त्री० (देश) १-आलू की आध सेर की तौल। २-छप्पर बनाने के काम आने वाली एक लम्बी घास।

**पन्नीसाज** पुं० (हि) पन्नी बनाने का काम करने वाला।

**पन्नीसाजी** स्त्री० (हि) पन्नी बनाने का काम।

**पन्य** वि० (सं) प्रशंसा करने योग्य।

**पपड़ा** पुं० (हि) १-लकड़ी का करकर या सूखा हुआ छिलका। चिप्पड़। २-रोटी का छिलका।

**पपड़िया** वि० (हि) पपड़ीदार। पपड़ी वाला।

**पपड़िया कत्था** पुं० (हि) सफेद कत्था जो खाने में स्वाद का होता है।

**पपड़ियाना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु की ऊपरी परत का सूख कर सिकुड़ जाना। २-बिलकुल सूख जाना

**पपड़ी** स्त्री०(हि) १-सूखकर जगह-जगह चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत। २-मवाद सूख जाने पर घाव के ऊपर जमी हुई परत। खुरंड। ३-छोटा पापड़। ४-सोहन पपड़ी नामक मिठाई।

**पपड़ीला** वि० (हि) जिसमें पपड़ी हो। पपड़ीदार।

**पपनी** स्त्री० (देश०) पलक के ऊपर के बाल। बिरौनी

**पपहा** पुं० (देश०) १-धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा। २-जौ, गेहूँ आदि का घुन।

**पपि** पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।

**पपिहा** पुं० (हि) दे० 'पपीहा'।

**पपोता** पुं० (हि) एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते एरंड के समान होते हैं और इसके फल खाने में स्वादिष्ट होते हैं।

**पपोलि** स्त्री० (हि). च्यूंटी। पिपीलिका।

**पपीहरा** पुं० (हि) दे० 'पपीहा'।

**पपीहा** पुं० (देश) १-एक प्रकार का पक्षी जो वर्षा और वसंत ऋतु में आम के पेड़ पर बैठ कर सुरीली आवाज में बोलता है। चातक। मेघ जीवन। सारंग। तोकक। २-सितार के छः तारों में से एक जो लोहे का होता है। ३-दे० 'पपैया'।

**पपैया** पुं० (हि) १-आम के नये पौधे गुठली को घिस कर बनाई हुई सीटी। २-सीटी। ३-आम का नया पौधा।

**पपोटा** पुं० (हि) १-आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा २-आँख के ऊपर की पलक। दृगंचल।

**पपोरना** क्रि० (हि) १-बिना दांत का मुंह चलाना। २-बाहों को ऐंठ कर उनकी पुष्टता को देखना।

**पबन** क्रि० (हि) पाना।

**पबलिक** स्त्री० (अ) सर्वसाधारण। आम जनता। वि० सार्वजनिक।

**पबारना** क्रि० (देश०) फेंकना।

**पबि** पुं० (सं) दे० 'पवि'।

**पब्बय** पुं० (हि) १-पहाड़। पत्थर। पुं० (देश०) एक चिड़िया का नाम।

**पब्बि** पुं० (हि) दे० 'पवि'।

**पमाना** क्रि० (?) डींग हांकना।

**पमार** पुं० (हि) १-अग्नि कुलोत्पन्न क्षत्रियों की एक शाखा। प्रमार। पवार। २-चकवंड। चकौंड़ा।

**पयःपान** पुं० (सं) दुग्धपान। दूध पानी।

**पयःपालिनी** स्त्री० (सं) खस। उशीर।

**पय** पुं० (सं) १-दूध। २-जल। पानी। ३-अन्न।

**पयद** पुं० (हि) दे० 'पयोद'।

**पयधि** पुं० (हि) दे० 'पयोधि'।

**पयोनिधि** पुं० (हि) दे० 'पयोनिधि'।

**पयस्य** वि० (सं) १-दूध वाला या दूध का बना हुआ २-पनीला। पुं० (सं) १-दूध से बनने वाली वस्तु २-बिल्ला।

**पयस्विनी** स्त्री० (सं) १-दूध देने वाली गाय। २-बकरी। ३-नदी।

**पयहारी** पुं० (हि) वह साधु या तपस्वी जो केवल दूध के सहारे रहता हो।

**पयादा** वि० (हि) पैदल। प्यादा। पुं० दे० 'प्यादा'।

**पयान** पुं०(हि) गमन। यात्रा। रवानगी।

**पयाम** पुं० (फा) संदेश। पैगाम।

**पयार** पुं० (हि) दे० 'पयाल'।

**पयाल** पुं० (हि) धान आदि के दाने झड़े हुए सूखे डंठल। पुराल।

**पयोघन** पुं० (सं) ओला।

**पयोज** पुं० (सं) कमल।

**पयोजन्मा** पुं० (सं) १-बादल। मेघ। २-मोथा।

**पयोद** पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथी। मस्तक

**पयोदन** पुं० (हि) दूधभात।

**पयोधर** पुं० (सं) १-स्तन। २-बादल। ३-पर्वत। पहाड़। ४-नारियल। ५-कसेरू। ६-तालाब। ७-कोई दुग्ध वृक्ष। ८-दोहा छन्द का ग्यारहवां भेद। ९-समुद्र। १०-गाय का अयन। ११-मोथा।

**पयोधारा** स्त्री० (सं) जल की धारा।

**पयोधि** पुं० (सं) समुद्र।

**पयोधिक** पुं० (सं) समुद्रफेन।

**पयोनिधि** स्त्री० (सं) समुद्र।

**पयोमुक** पुं० (सं) बादल। मेघ। मोथा।

**पयोमुख** वि (सं) दुधमुहां बच्चा। दूधपीता।

**पयोमुच** पुं० (सं) बादल। मोथा।

**परंच** अव्य० (सं) १-और भी २-तो भी। परन्तु। लेकिन।

**परंजन** पुं० (सं) १-तेल पेरने का कोल्हू। २-फेन। ३-इन्द्र की तलवार।

**परंजय** पुं०(सं) १-शत्रु को जीतने वाला। २-वरुण

**परंतप** वि० (सं) १-शत्रु या वैरियों को दुःख देने वाला। २-जितेन्द्रिय।

**परंतु** अव्य० (सं) किसी वाक्य के साथ उससे कुछ अन्यथा स्थिति सूचित करने वाला एक शब्द। पर तो भी। किन्तु। लेकिन।

**परंतुक** पुं० (हि) किसी अधिनियम, धारा आदि के साथ लगी कोई शर्त या उसमें कोई बड़ी कठिनाई से निकलने का रास्ता। (प्रॉविज़ो)।

**परंद** पुं० (फा) दे० 'परिंदा'।

**परंदा** पुं० (फा) दे० 'परिंदा'।

**परंपद** पुं० (सं) मोक्ष। बैकुण्ठ।

**परंपरया** अव्य० (सं) परंपरा के अनुसार।

**परंपरा** स्त्री० (सं) १-अविच्छिन्न क्रम। अनुक्रम। न टूटने वाला सिलसिला। २-संतति। औलाद। ३-वह विचार, रिवाज या रीति जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चली आ रही हो। (ट्रेडीशन) ४-किसी कार्य या पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।

**परंपराक** पुं० (सं) यज्ञ के लिये पशुओं का वध।

**परंपरागत** वि० (सं) जो सदा से होता आया हो। क्रमागत।

**परंपरित** वि० (स) परंपरा पर अवलंबित।

**परंपरितरूपक** पुं० (सं) एक प्रकार का रूपक जिसमें एक का आरोप किसी दूसरे के आरोप का कारण होता है।

**परंपरीण** वि० (सं) १-पैतृक। २-खानदानी।

**पर** वि०(सं) १-दूसरा। अन्य। गैर। और। परलोक २-पराया। दूसरे का। ३-अतिरिक्त। भिन्न। जुदा अलावा। ४-बाद का। पीछे का। ५-दूर। अलग। जो सीमा से बाहर हो। तटस्थ। ६-श्रेष्ठ। ७-लीन तत्पर। प्रवृत्त। प्रत्यय (हि) सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। उप० (हि) एक उपसर्ग जो सम्बन्ध बताने वाले शब्दों के पहले लगकर उसके ठीक पहले या ठीक बाद वाली पीढ़ी का सूचक होता है जैसे—परदादा। पुं० (सं) १-शत्रु। दुश्मन। वैरी। २-ब्रह्मा। ३-शिव। ४-मोक्ष। ५-न्याय में दो भेदों में से एक। अव्य० (हि) १-पीछे। पश्चात। २-किंतु परन्तु। लेकिन। तो भी। पुं० (फा) पक्षी का पंख। पक्ष।

**परई** स्त्री० (हि) दीये के आकार का मिट्टी का बर्तन।

**परक** प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'पीछे या अन्त में लगा हुआ' का अर्थ सूचित करता है।

**परकटा** वि० (हि) जिसके पर कटे हुए हों।

**परकना** क्रि०(हि) १-हिलना। मिलना। २-अभ्यास पड़ना। चसका लगना।

**परकसना** क्रि० (हि) १-प्रकाशित होना। २-प्रकट होना।

**परकाज** पुं० (हि) दूसरे का कार्य।

**परकाजी** वि०(हि) परोपकारी। दूसरे का कार्य साधने वाला।

**परकार** पुं० (फा) वृत्त या गोलाई बनाने नापने आदि का दो भुजाओं का एक आला। (डिवाइडर्स)

**परकाल** पुं० (हि) दे० 'परकार'।

**परकाला** पुं० (हि) १-सीढ़ी। जीना। २-देहली। चौखट। ३-खण्ड। टुकड़ा। ४-अग्निकण। चिनगारी।

**परकास** पुं० (हि) दे० 'प्रकाश'।

**परकासना** क्रि० (हि) १-प्रकाशित करना। २-प्रकट करना।

**परकिति** स्त्री० (हि) दे० 'प्रकृति'।

**परकीय** वि० (स) १-पराया। दूसरे का। २-अपरिचित।

**परकीया** स्त्री० (सं) १-अपने पति को छोड़ कर परपुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री। २-नायका के दो भेदों में से एक।

**परकीरति** स्त्री० (हि) दे० 'प्रकृति'।

**परकृति** स्त्री० (सं) १-दूसरे का किया हुआ काम या कृति। २-दूसरे की कृति का वर्णन।

**परक्रामण** पुं० (सं) पूरे अधिकार से युक्त होकर दूसरे को हस्तांतरित करने की क्रिया। (नेगोशियेशन)।

**परक्राम्य** वि० (सं) जिसे अधिकारों समेत हस्तांतरित किया जा सके (चेक पत्र आदि)। (नेगोशियेबल)।

**परक्राम्य संलेख** पुं० (सं) साधिकार हस्तांतरित किये जाने वाला संलेख। (नेगोशियेबल इन्स्ट्रूमेंट)।

**परकोटा** पुं० (हि) गढ़ आदि की रक्षा के लिए उठाई गई दीवार। पानी रोकने का बांध।

**परख** स्त्री० (हि) १-परीक्षा। गुण दोषों की ठीक जांच (टेस्ट)। २-गुण दोषों का ठीक-ठीक पता लगाने वाली नजर या दृष्टि। पहचान।

**परखनली** स्त्री० (हि) दे० 'परीक्षण नालिका'। (टेस्ट ट्यूब)।

**परखचा** पुं० (हि) टुकड़ा। खंड।

**परखना** क्रि० (हि) १-जांच या परीक्षा करना। २ प्रतीक्षा करना।

**परखवाना** क्रि० (हि) दे० 'परखाना'।

**परखवैया** पुं० (हि) परखने वाला। जांचने वाला।

**परखाई** स्त्री० (हि) परखने का काम या मजदूरी।

**परखाना** क्रि० (हि) परखने का काम दूसरे से कराना। जंचवाना।

**परखी** स्त्री० (हि) लोहे का पतला छोटा नया उपकरण जो बन्द बोरे में से गेहूँ चावल आ

नमूने के तौर से निकलने के काम आता है। पुं० (हि) दे० 'पारसी'।
**परग** पुं० (हि) पग। डग। कदम।
**परगट** वि० (हि) स्पष्ट। प्रकट।
**परगटना** क्रि० (हि) १-खुलना। प्रगट होना। २-प्रकट करना। जाहिर करना।
**परगत** वि० (सं) पर प्राप्त। अपर गति।
**परगन** पुं० (हि) दे० 'परगना'।
**परगना** पुं० (हि) भूमि का वह भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गांव हों। (सब-डिवीजन)।
**परगनादार** पुं० (हि) परगने का अधिकारी। (सब-डिवीजन-ऑफीसर)।
**परगनी** स्त्री० (हि) सुनारों का एक औज़ार जिसमें चांदी या सोने की गुल्लियां ढाली जाती हैं।
**परगसना** क्रि० (हि) प्रकट होना। प्रकाशित होना।
**परगाछा** पुं० (हि) गैर देशों में होने वाले पौधे जो दूसरे पेड़ों पर उगते हैं। बंदाक।
**परगाछी** स्त्री० (हि) अमरबेल।
**परगाढ़** वि० (हि) दे० 'प्रगाढ़'।
**परगास** पुं० (हि) दे० 'प्रकाश'।
**परगासना** क्रि० (हि) प्रकाशित करना या होना।
**परग्रंथि** पुं० (सं) जोड़। गांठ।
**परघट** वि० (हि) दे० 'प्रगट'।
**परचंड** वि० (हि) दे० 'प्रचंड'।
**परचई** स्त्री० (हि) दे० 'परिचय'।
**परचक्र** पुं० (सं) १-शत्रु, सैन्य। २-वैरी-राज्य। विदेशी राजा।
**परचत** स्त्री० (हि) जान-पहचान। जानकारी।
**परचना** क्रि० (हि) १-किसी के पास रहकर धीरे-धीरे उससे हिलना-मिलना। घुल-मिल जाना। घनिष्ठता प्राप्त करना। २-चसका लगना।
**परचा** पुं० (फा) १-कागज का टुकड़ा। चिट। २-रुक्का। चिट्ठी। ३-परीक्षा का प्रश्न-पत्र। पुं० (हि) १-परिचय। २-प्रमाण। ३-परख। जांच।
**परचाना** क्रि० (हि) १-हिलना-मिलना। २-आकर्षित करना। ३-चसका लगाना।
**परचार** पुं० (हि) दे० 'प्रचार'।
**परचारना** क्रि० (हि) दे० 'प्रचारना'।
**परचित्तपर्यायज्ञान** पुं० (सं) अपने मन में दूसरे का भाव जान लेना। (बौद्ध)।
**परचून** पुं० (हि) १-किसी भी वस्तु की फुटकर दुकान। २-आटा, दाल, मसाले आदि बनिये के यहां बिकने वाला फुटकर सामान।
**परचूनिया** पुं० (हि) दे० 'परचूनी'।
**परचूनी** पुं० (हि) १-परचून या फुटकर बेचने वाला आटा, दाल आदि फुटकर सामान बेचने वाला। स्त्री० (हि) परचून का काम या भाव।
**परचे** पुं० (हि) दे० 'परिचित'।
**परचै** पुं० (हि) दे० 'परिचित'।
**परच्छंद** वि० (सं) पराधीन। आधीन।
**परच्छंदानुवर्ती** वि० (सं) जो किसी अन्य की इच्छानुसार काम करे। पराधीन।
**परच्छिद्र** पुं० (सं) दूसरे का दोष।
**परछंद** पुं० (सं) दूसरों की इच्छा या अभिलाषा।
**परछत्ती** पुं० (हि) सामान रखने के लिये कोठरी या कमरे के भीतर दीवार से सटा कर लगाई हुई पाटन। २-हल्का छप्पर जो दीवार पर रख दिया जाता है।
**परछन** स्त्री० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें बारात आने पर कन्या पक्ष की स्त्रियां वर की आरती उतारती हैं।
**परछना** क्रि० (हि) बरात आने पर वर की आरती उतारना।
**परछा** पुं० (हि) १-कोल्हू के बैल की आँखों पर बांधने का कपड़ा। २-जुलाहों की सूत लपेटने की नली। ३-भीड़ का छंटाव। ४-समाप्ति। निबटारा। पुं० (देश०) १-बड़ी बटलोई। पतीली। २-कढ़ाई।
**परछाईं** स्त्री० (हि) १-छाया। प्रकाश के सामने आने से दूसरी ओर किसी की आकृति का अनुरूप। २-प्रतिबिंब। पानी दर्पण आदि पर पड़ा किसी वस्तु का अनुरूप। आभास।
**परछालना** क्रि० (हि) धोना।
**परछिद्र** पुं० (सं) दूसरे की निर्बलता या दोष।
**परजंक** पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
**परज** स्त्री० (हि) एक प्रकार की रागिनी जो रात को गाई जाती है। वि० (सं) १-उत्पन्न। २-परजात। ३-दूसरे से उत्पन्न। पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
**परजन** पुं० (हि) दे० 'परिजन'।
**परजन्य** पुं० (हि) दे० 'परिजन्य'।
**परजरना** क्रि० (हि) १-जलना। दहकना। २-क्रुद्ध होना। कुढ़ना। ३-ईर्ष्या द्वेष से संतप्त होना।
**परजवट** पुं० (हि) दे० 'परजौट'।
**परजा** स्त्री० (हि) १-प्रजा। रैयत। २-आश्रित जन। ३-जमींदार की जमीन पर बसने वाले किसान। असामी।
**परजात** वि० (सं) १-दूसरे से उत्पन्न। २-आजीविका के लिये दूसरे पर निर्भर रहने वाला। पुं० (सं) १-कोयल। २-दूसरी जाति का आदमी। ३-नौकर।
**परजाता** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध पीली डंडी वाला छोटा फूल। हारसिंगार। इस फूल का पौधा।
**परजाति** स्त्री० (सं) दूसरी जाति।
**परजाय** पुं० (हि) दे० 'पर्याय'।
**परजित** वि० (सं) १-शत्रु से हारा हुआ। २-दूसरे

द्वारा पाला पोसा हुआ ।
**परजीवी** पुं० (सं) १-पराश्रित व्यक्ति । २-वह पौधा जो दूसरे पेड़ों, पौधों या जीवों पर रहकर उनका रक्त चूसते हैं जैसे अमरबेल, पिस्सू आदि। (पैरासाइट)।
**परजोट** पुं० (हि) मकान बनाने वाली जमीन पर लगने वाला सालाना कर या किराया ।
**परज्वलना** क्रि० (हि) प्रज्वलित करना या होना।
**परणना** क्रि० (हि) विवाह करना ।
**परतंचा** स्त्री० (हि) दे० 'प्रत्यंचा' ।
**परतंत्र** वि० (सं) दूसरे के सहारे रहने वाला । पराश्रित । पराधीन । परवश ।
**परतंत्रता** स्त्री० (सं) पराधीनता । परवशता ।
**परतः** अव्य० (हि) १-दूसरे से । २-पश्चात । पीछे । ३-आगे । परे ।
**परतःप्रमाण** पुं० (सं) जो स्वतः प्रमाण न हो।
**परत** स्त्री०(हि) १-सतह । स्तर । तह । २-कपड़े आदि को लपेटने पर बनने वाला उसका हर भाग या मोड़ । तह।
**परतच्छ** वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।
**परतर** वि० (सं) बाद का । पीछे का ।
**परतरता** स्त्री०(स) बाद या पीछे रहने का भाव।
**परतल** पुं० (हि) लद्दू घोड़े की पीठ पर रखने वाला बोरा या गून ।
**परतला** पुं० (हि) कंधे से कमर तक तिरछी पहनी जाने वाली चमड़े या कपड़े की चौड़ी गोलाकार पट्टी जिसमें तलवार आदि लटकाई जाती है।
**परता** स्त्री० (सं) श्रेष्ठता । पुं०(हि) दे० 'पड़ता'।
**परताप** पुं० (हि) दे० 'प्रताप' ।
**परतापन** पुं० (सं) वह जो दूसरों को कष्ट देता हो।
**परताल** स्त्री० (हि) दे० 'पड़ताल' ।
**परतिज्ञा** स्त्री० (हि) दे० 'प्रतिज्ञा'।
**परती** स्त्री० (हि) १-वह भूमि या खेत जो बिना बोने छोड़ दी गई हो । २-वह चादर जिससे हवा करके भूसा उड़ाया जाता है ।
**परतीत** स्त्री० (हि) दे० 'प्रतीत'।
**परतेजना** क्रि० (हि) छोड़ना या परित्याग करना ।
**परतोली** स्त्री० (हि) गली ।
**परत्र** क्रि० वि० (सं) १-और जगह । २-परलोक में। भविष्य में।
**परत्रभीरु** वि० (सं) जो परलोक से भयभीत हो। धार्मिक ।
**परत्व** पुं० (सं) १-पूर्व या पहले होने का भाव। २-भेद । पहचान । ३-दूरी । ४-परिणाम । ५-शत्रुता ६-समय या स्थान की पूर्वता ।
**परथन** पुं०(हि) दे० 'पलोथन'।
**परद** पुं० (हि) दे० 'परदा'।
**परदच्छिना** स्त्री० (हि) दे० 'प्रदक्षिणा'।
**परदनी** स्त्री० (हि) १-धोती। २-दान दक्षिणा।
**परदा** पुं० (फा) १-आड़ करने के लिये कोई लटकाया हुआ कपड़ा या चिक । २-व्यवधान । रोक करने वाली कोई वस्तु । ३-आड़ । ओट । ४-छिपाव । ५-लोगों की दृष्टि के सामने न होने की अवस्था । ५-स्त्रियों का घर में रहने का नियम । ६-दीवार जो ओट करने के लिये बनाई जाय। ७-तल । परत। तह । ८-झिल्ली या चमड़ा जो व्यवधान के रूप में हो जैसे कान का परदा । ६-हारमोनियम आदि का वह भाग जहां से स्वर निकलता है। १०-नाव को पतवार । (कर्टेन)।
**परदाज** पुं० (फा) १-सजाना। २-चित्र आदि के चारों ओर बेल बूटे बनाना ।
**परदाजी** स्त्री० (फा) परदाजने का भाव या किया।
**परदादा** पुं० (हि) दादा का बाप । पड़दादा । प्रपितामह ।
**परदादार** वि० (फा) परदा करने वाला । छिपाने वाला ।
**परदादारी** स्त्री० (फा) १-परदा करने की क्रिया । २-भेद छिपाना । ३-दोष छिपाना ।
**परदानशीन** वि० (फा) परदे में रहने वाली।
**परदापोश** वि० (फा) ऐब या दोष छिपाने वाला।
**परदापोशी** स्त्री० (फा) दोष छिपाना ।
**परदार** स्त्री० (स) दूसरे की स्त्री। (डि०) लक्ष्मी। पृथ्वी ।
**परदारगामी** वि० (स) दूसरे की स्त्री के साथ संभोग करने वाला ।
**परदारी** पुं० (सं) व्यभिचारी । लम्पट।
**परदेवता** पुं० (सं) १-परमात्मा । २-इष्ट देवता।
**परदेश** पुं० (स) विदेश । अपने देश से भिन्न दूसरा देश।
**परदेशी** वि० (सं) विदेशी । अपने देश से भिन्न देश का ।
**परदोस** पुं०(हि) दे० 'प्रदोष'।
**परद्रोही** वि० (सं) दूसरों से घृणा करने वाला।
**परद्वेषी** वि० (सं) वैरी । द्वेषी ।
**परधन** पुं० (सं) दूसरे का धन । दूसरे की संपत्ति।
**परधर्म** पुं० (सं) १-दूसरे का धर्म। २-दूसरे का कर्त्तव्य । दूसरी जाति का कर्त्तव्य।
**परधान** वि० (हि) दे० 'प्रधान'।
**परधानी** स्त्री० (हि) धोती । दान दक्षिणा ।
**परधाम** स्त्री० (स) १-वैकुण्ठधाम । परलोक । २-ईश्वर
**परन** पुं० (?) मृदंग आदि वाद्य यन्त्रों को बजाते समय मुख्य बोलों के बीच में बजाये जाने वाले बोलों का खंड । पुं० (हि) १-प्रतिज्ञा । टेक । २-दे० पर्ण ।

**परनकुटी** स्त्री० (हि) झोंपड़ी।
**परनगृह** पुं०(हि) परनकुटी।
**परनना** क्रि० (हि) विवाह करना।
**परनपुरी** स्त्री० (हि) पत्तों का बना हुआ दोना।
**परना** क्रि० (हि) दे० 'पड़ना'। पुं० (देश०) तौलिया गमछा। (पंजाबी)।
**परनाना** पुं० (हि) नाना का पिता।
**परनानी** पुं० (हि) नाना की माता।
**परनाम** पुं० (हि) दे० 'प्रणाम'।
**परनाला** पुं० (हि) पनाला। नाबदानी। मोरी।
**परनाली** स्त्री० (हि) १-छोटा पनाला। २-अच्छे घोड़ों की पीठ का पुट्ठों और कंधों की अपेक्षा नीचापन जो उसकी तेजी प्रकट करता है।
**परनि** स्त्री० (हि) पड़ी हुई बान। टेव। आदत।
**परनी** स्त्री० (हि) दे० 'पत्नी'।
**परनौत** स्त्री० (हि) प्रणाम। नमस्कार।
**परपंच** पुं० (हि) दे० 'प्रपंच'।
**परपंचक** वि० (हि) १-बखेड़िया। फसादी। २-धूर्त
**परपंची** वि० (हि) दे० 'परपंचक'।
**परपक्ष** पुं० (सं) शत्रु का पक्ष या दल।
**परपक्षग्राही** वि० (हि) अपने दल या उसके सिद्धान्तों को छोड़ कर दूसरे दल या सिद्धान्त ग्रहण कर लेने वाला। (टर्नकोट)।
**परपट** पुं० (हि) समतल भूमि। चौरस मैदान।
**परपटी** स्त्री० (हि) दे० 'पर्पटी'।
**परपद** पुं० (सं) दे० 'परमपद'।
**परपरा** वि० (हि) धर-धर शब्द करके टूटने वाला।
**परपराना** क्रि० (देश०) मिर्च आदि का शरीर या जीभ को तीखा मालूम पड़ना। तीक्ष्ण लगना।
**परपराहट** पुं० (हि) परपराने का भाव।
**परपाजा** पुं० (हि) दादा का पिता। प्रपितामह।
**परपार** पुं० (सं) दूसरी ओर का तट।
**परपिंड** पुं० (सं) दूसरे का दिया हुआ भोजन।
**परपीड़क** पुं० (सं) १-पीड़ा या दुःख समझने वाला २-दूसरे को कष्ट या दुःख देने वाला।
**परपुरंजय** पुं० (सं) शूर। विजयी।
**परपुरुष** पुं० (सं) १-अपरिचित। अजनबी। गैर। २-परब्रह्म। विष्णु। ३-पति के अतिरिक्त दूसरा पुरुष।
**परपुष्ट** पुं० (सं) कोयल। कोकिल। वि० (सं) किसी दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ।
**परपुष्टा** स्त्री० (सं) १-कोयल। २-वेश्या। रण्डी।
**परपूठा** वि० (हि) पक्का।
**परपूर्वा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो अपने पहले पति को छोड़ कर दूसरा पति करे।
**परपैंठ** स्त्री० (हि) हुण्डी की तीसरी नकल या प्रतिलिपि।
**परपोता** पुं०(हि)पोते का लड़का। पुत्र के पुत्र का पुत्र
**परपौत्र** पुं० (सं) पोते के बेटे का बेटा। प्रपौत्र का पुत्र।
**परप्रेष्य** पुं० (सं) नौकर। चाकर।
**परफुल्ल** वि० (हि) दे० 'प्रफुल्ल'।
**परबंध** पुं० (हि) दे० 'प्रबन्ध'।
**परब** पुं० (हि) दे० 'पर्व'। स्त्री० (हि) किसी रत्न आदि का छोटा टुकड़ा।
**परबत** पुं० (हि) दे० 'पर्वत'।
**परबत्ता** पुं० (हि) पहाड़ी सुग्गा या तोता।
**परबल** वि० (हि) दे० 'प्रबल'।
**परबस** वि० (हि) परतन्त्र। पराधीन।
**परबसताई** स्त्री० (हि) पराधीनता। परतन्त्रता।
**परबाल** पुं० (हि) १-आँख की बिरौनी। कष्ट देने वाला बाल। २-दे० 'प्रवाल'।
**परबी** स्त्री० (हि) पर्व का दिन। पुण्य का दिन।
**परबीन** वि० (हि) दे० 'प्रवीण'।
**परबेस** पुं० (हि) दे० 'प्रवेश'।
**परबोध** पुं० (हि) दे० 'प्रबोध'।
**परबोधना** क्रि० (हि) १-जगाना। २-ज्ञानोपदेश करना। ३-दिलासा देना।
**परब्रह्म** पुं० (सं) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है।
**परभव** पुं० (सं) जन्मान्तर। दूसरा जन्म।
**परभा** स्त्री० (हि) दे० 'प्रभा'।
**परभाई** पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।
**परभाग** पुं० (सं) १-दूसरे का भाग। २-पश्चिम भाग। ३-दूसरे का भाग या हिस्सा। ४-सर्वोत्तमता। ५-सौभाग्य।
**परभाग्योपजीवी** वि० (सं) दूसरे की कमाई पर जीने वाला।
**परभात** पुं० (हि) दे० 'प्रभात'।
**परभाती** स्त्री० (हि) दे० 'प्रभाती'।
**परभाव** पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।
**परभुक्त** वि० (सं) अन्य द्वारा उपयुक्त या व्यवहृत किया हुआ।
**परभुक्ता** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके साथ पहले कोई दूसरा समागम कर चुका हो।
**परभृत्** पुं० (सं) काक। कौवा।
**परभृत** स्त्री० (सं) कोयल। कोकिल। वि०(सं) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ।
**परम** वि० (सं) १-जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो। (एब्सोल्यूट)। २-उत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ। ३-मुख्य। प्रधान। ४-आद्य। आदिम।
**परम-अधिकार** स्त्री० (सं) विशिष्ट अधिकार। (एब्सोल्यूट राइट)।
**परम-अधिपुरुष** पुं० (सं) १-किसी विश्वविद्यालय

के अध्यक्ष के लिये बोली जाने वाली उपाधि। २–किसी मन्दिर आदि के प्रधान को सम्मानित करने की उपाधि। (लार्ड-रेक्टर)।
परम-आज्ञा स्त्री० (सं) वह आज्ञा जो अंतिम हो और उसमें कोई परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट ऑर्डर)।
परम-एकाधिकार स्त्री० (सं) किसी व्यवसाय, कार्य या क्रय विक्रय का अकेला या स्वतंत्र अधिकार। (एब्सोल्यूट मोनोपोली)।
परमक वि० (सं) सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
परमगति स्त्री० (सं) उत्तम गति। मोक्ष। मुक्ति।
परमजा स्त्री० (सं) प्रकृति।
परमज्या पुं० (सं) इन्द्र।
परमट पुं० (देश०) संगीत में एक ताल। पुं० (हि) किसी विशेष वस्तु या कार्य प्राप्त करने के लिये वाला आज्ञापत्र। (परमिट)।
परमटा पुं० (हि) दे० 'पनैला'।
परमता स्त्री० (सं) १–सर्वोच्चता। २–सर्वोच्च लक्ष्य
परमतत्व पुं० (हि) १–मूल तत्व जिससे सारे विश्व की सृष्टि का विकास हुआ। २–ब्रह्म। ३–ईश्वर।
परमधाम पुं० (हि) वैकुण्ठ। स्वर्ग।
परमपद पुं० (सं) सर्वोत्तम पद। मुक्ति। मोक्ष।
परमपिता पुं० (सं) परमात्मा।
परमपुरुष पुं० (सं) परमात्मा। विष्णु।
परमप्रकृति पुं० (हि) अफीम।
परमप्रख्य वि० (सं) प्रसिद्ध। प्रख्यात।
परम-प्रधान न्यायाधीश पुं० (सं) संघ न्यायालय के प्रधान विचारपति की उपाधि। (लार्ड चीफ-जिस्टस)
परमब्रह्म पुं०(सं) ईश्वर। परब्रह्म।
परमभट्टारक पुं० (सं) १–महाराजाधिराज। एक छत्र राजाओं की उपाधि। २–किसी श्रद्धेय व्यक्ति या रक्षक के सम्मान में बोली जाने वाली एक उपाधि (लार्ड-प्रोटेक्टर)।
परमभट्टारिका स्त्री० (हि) पटरानियों की एक सम्मान-सूचक प्राचीन उपाधि।
परममहत् वि० (सं) सबसे बड़ा और व्यापक।
परम-माननीय वि० (सं) परम सम्माननीय। अत्यधिक आदर और सम्मान के योग्य। (ऑनरेबल मोस्ट)।
परम-रस पुं० (सं) पानी मिला हुआ मट्ठा।
परमल पुं० (हि) ज्वार या गेहूँ का भुना हुआ दाना
परम-वंशागत-अधिकार पुं० (सं) किसी भूमि या मकान में कब्जा रहने का कानूनी अधिकार। (एब्सोल्यूट अकुपेंसी राइट)।
परम-वंशागत भाटकी स्त्री० (सं) अबाधित आभोग भाटकी। बहुत दिनों किरायेदार रहने के कारण प्राप्त किरायेदार बने रहने का अधिकार। (एब्सोल्यूट अकुपेंसी टेनेन्ट)।
परम-विवेक पुं०(सं) किसी विचाराधीन विवाद या किसी अन्य बात का फैसला करने का अधिकार। (एब्सोल्यूट डिसक्रीशन)।
परमवीरचक्र पुं० (सं) भारतीय गणतन्त्र में युद्ध में असाधारण वीरता प्रदर्शित करने पर भारत सेना के किसी वीर को दिया जाने वाला प्रथम श्रेणी का उपहार या उपाधि।
परमश्रेष्ठ वि० (सं) राजमन्त्रियों तथा सम्मानित राजदूतों के सम्मान में बोला जाने वाला शब्द। (हिज एक्सीलेंस)।
परमस्वामी पुं० (सं) वह जिसका कोई और दूसरा स्वामी न हो। (एब्सोल्यूट ओनर)।
परमस्वामित्व पुं० (सं) केवल स्वतः स्वामी होने का अधिकार। (एब्सोल्यूट ओनरशिप)।
परमसत्ता स्त्री० (सं) वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो तथा उसके ऊपर कोई अन्य सत्ता न हो। (एब्सोल्यूट-पावर)।
परमसत्ताधारी पुं० (सं) वह जिसे सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हों। (सॉवरेन)।
परमहंस पुं० (सं) वह संन्यासी जो ज्ञान की परम अवस्था को प्राप्त कर चुका हो। परमात्मा।
परमांगना स्त्री० (हि) अच्छी स्त्री।
परमा स्त्री० (सं) शोभा। छवि। सुन्दरता। पुं० (हि) प्रमेह रोग।
परमाटा पुं० (देश०) संगीत में एक ताल। पुं० (हि) दे० 'परमटा'।
परमाक्षर पुं० (सं) ओंकार।
परमाणु पुं० (सं) १–पृथ्वी, जल, वायु तथा इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसका और विभाग नहीं हो सकता। अत्यन्त सूक्ष्म अणु। २–किसी तत्व का वह छोटे से छोटा भाग जिसके विभाग न हो सकते हों। (एटम)।
परमाणु-बम पुं० (हि) यूरेनियम या थोरियम से बना महाविनाशकारी विस्फोटक जिसके फटने पर कई मीलों के घेरे में कुछ नहीं बचता। इसका आविष्कार श्री आईंसटीन ने द्वितीय महायुद्ध में किया और इसका प्रयोग पहले पहल अमरीका ने जापान के हिरोशिमा नामक स्थान पर किया। (एटम-बोम्ब)।
परमाणुवाद पुं० (सं) १–यह वैज्ञानिक सिद्धान्त कि संसार के सब पदार्थ तथा तत्व परमाणुओं के घनीभूत होने से बने हैं और परमाणुओं से ही जगत की सृष्टि हुई। २–अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुओं से शक्ति उत्पन्न करने का सिद्धांत। (एटोमिज्म)।
परमाणुवादी पुं० (सं) १–परमाणुओं से सृष्टि की उत्पत्ति मानने वाला। २–परमाणु की अपरमित शक्ति और उसके निर्माण और विनाश की शक्ति

में विश्वास करने वाला। (एटॉमिस्ट)।
**परमात्मा** पुं० (सं) ईश्वर। परब्रह्म। परमेश्वर।
**परमादेश** पुं० (सं) वह आदेश या आज्ञा जो सर्वोपरि हो तथा जिसकी कोई काट या परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट ऑर्डर)।
**परमाद्वैत** पुं० (सं) १-परमेश्वर या परब्रह्म। २-जीव और ब्रह्म में अभेद की कल्पना करने वाला वेदान्त का एक सिद्धान्त।
**परमानंद** पुं० (सं) १-बहुत बड़ा सुख। २-ब्रह्म के अनुभव का सुख। ३-ब्रह्मानन्द।
**परमान** पुं० (हि) १-प्रमाण। सबूत। २-सत्य या यथार्थ बात। ३-सीमा। अवधि। हद।
**परमानना** क्रि० (हि) १-प्रमाण मानना। २-स्वीकारना। सकारना।
**परमायु** पुं० (सं) मनुष्य के जन्मकाल की सीमा जो सौ वर्ष तक की मानी गई है।
**परमारुष** पुं० (सं) विजयसाल का पेड़।
**परमार** पुं० (हि) राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा। पँवार।
**परमारथ** पुं० (हि) दे० 'परमार्थ'।
**परमार्थ** पुं० (सं) १-सर्वोत्कृष्ट सत्य। सत्य आत्मज्ञान। २-जीव और ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान। ३-उत्तम भाग। ४-उत्तम प्रकार की संपत्ति। ५-परोपकार।
**परमार्थता** स्त्री० (सं) सत्यता। यथार्थता।
**परमार्थवादी** पुं० (सं) ज्ञानी। वेदांती। तत्त्वज्ञ।
**परमार्थविद्** वि० (सं) परमार्थवेत्ता।
**परमार्थी** वि० (हि) १-तत्त्व जिज्ञासु। यथार्थ तत्त्व को खोजने वाला। २-मोक्ष चाहने वाला। ३-परोपकारी।
**परमावश्यक-सेवाएँ** स्त्री०(हि) सर्वसाधारण के पानी, बिजली, सफाई आदि की व्यवस्था करने का कार्य या सेवाएँ। (एसेंशियल सर्विसेज)।
**परमाह** पुं०(सं) शुभ दिन। अच्छा दिवस।
**परमिट** पुं० (अ) कोई विशेष वस्तु या कार्य प्राप्त करने के लिये मिलने वाला आज्ञापत्र।
**परमिति** स्त्री०(हि) चरम सीमा। अन्तिम मर्यादा या हद।
**परमुख** वि० (हि) १-विमुख। पीछे फिरा हुआ। २-प्रतिकूल। आचरण करने वाला।
**परमृत्यु** पुं० (सं) काक। कौवा।
**परमेश** पुं० (सं) १-संसार का परिचालक सगुण ब्रह्म २-विष्णु। शिव।
**परमेश्वर** पुं० (सं) दे० 'परमेश'।
**परमेश्वरी** स्त्री० (सं) दुर्गा या देवी का नाम।
**परमेष्ट** वि० (सं) जो परम इष्ट या प्रिय हो।
**परमेष्ठ** पुं० (सं) चतुर्मुख ब्रह्मा। प्रजापति।
**परमेष्ठिनी** स्त्री० (सं) १-देवी। श्री। वाग्देवी। २-ब्राह्मी जड़ी।
**परमेष्ठी** पुं० (सं) १-ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २-विष्णु। शिव। ३-गरुड़।
**परमेसर** पुं० (हि) परमेश्वर।
**परमेसुर** पुं० (हि) परमेश्वर।
**परमोद** पुं० (हि) दे० 'प्रमोद'।
**परमोदना** क्रि० (हि) दे० 'परबोधना'।
**परयंक** पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
**परराज्य-निष्कासन** पुं० (हि) किसी विदेशी को अपने देश से निकालना या जिस देश का वह निवासी हो उसे सौंपना। (एक्सट्रेडीशन)।
**परराज्य-निष्कासन-अधिकारी** पुं० (सं) किसी राज्य का वह अधिकारी जो परराज्य निष्कासन का समर्पण कार्य करता हो (एक्सट्रेडीशन आफीसर)
**परराष्ट्र** पुं० (सं) अपने देश से भिन्न देश या राष्ट्र (फॉरेन नेशन)।
**परराष्ट्र-मंत्री** पुं० (सं) राजनैतिक क्षेत्र में अन्य बाहरी राष्ट्रों या देशों से सम्बन्ध रखने वाला मन्त्री विदेश मन्त्री। (फॉरेन्-मिनिस्टर)।
**परराष्ट्र-विभाग** पुं० (हि) वह राजकीय विभाग जो दूसरे देशों या राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध रखता है। विदेश-विभाग। (एक्सटर्नल अफेयर्स डिपार्टमेंट)।
**परराष्ट्रीय** वि०(सं)विदेशी। अपने राष्ट्र से भिन्न राष्ट्र से सम्बन्धित। (फॉरेन)।
**परलउ** पुं० (हि) दे० 'प्रलय'।
**परलय** स्त्री० (हि) दे० 'प्रलय'।
**परला** वि० (हि) उस ओर का। दूसरी तरफ का।
**परलै** स्त्री० (हि) दे० 'प्रलय'।
**परलोक** पुं० (सं) दूसरा लोक। वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है।
**परलोकगत** वि०(सं) मृत। मरा हुआ।
**परलोकगमन** पुं० (सं) मृत्यु।
**परलोकगामी** वि० (सं) मृत। मरा हुआ।
**परलोकप्राप्ति** पुं० (सं) मरण। मृत्यु।
**परवत्** वि० (सं) परवश। पराधीन।
**परवर** पुं० (हि) १-परवल। २-दे० 'प्रवर'। पुं०(?) आँख का एक रोग।
**परवरदिगार** पुं० (फा) पालन करने वाला। ईश्वर
**परवरिश** स्त्री० (फा) पालन-पोषण।
**परवल** पुं० (हि) १-एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है। २-चिचड़ा।
**परवश** वि० (सं) जो दूसरे के वश में हो। पराधीन। पराश्रित।
**परवश्य** वि० (सं) दे० 'परवश'।
**परवशता** स्त्री० (सं) पराधीनता।

**परवस्ती** स्त्री० (हि) पालन-पोषण। परवरिश।
**परवा** पुं० (हि) मिट्टी का बना कटोरे की आकृति का बरतन। कोसा। स्त्री० (हि) पड़वा पक्ष की पहली तिथि। स्त्री० (फा) १–चिन्ता। खटका। आशंका। २–भरोसा। आसरा। स्त्री० (देश०) एक प्रकार की घास।
**परवाई** स्त्री० (हि) दे० 'परवाह'।
**परवाज** स्त्री० (फा) उड़ान।
**परवाद** पुं० (सं) १–अफवाह। किंवदंती। २–आपत्ति। वादविवाद।
**परवादी** पुं० (स) वाद विवाद करने वाला। मुद्दई।
**परवान** पुं०(हि) १–प्रमाण। सबूत। २–सत्य या यथार्थ बात। ३–हद। सीमा।
**परवानगी** स्त्री० (फा) आज्ञा। अनुमति।
**परवानना** क्रि० (हि) दे० 'परमानना'। ठीक समझना
**परवाना** पुं० (फा) १–आज्ञा पत्र। २–पतंगा। ३–चूना आदि नापने का एक बड़ा माप या पात्र।
**परवाना-गिरफ्तारी** पुं० (फा) बन्दी बनाने का सरकारी आज्ञापत्र।
**परवाना-तलाशी** पुं० (फा) अच्छी तरह तलाशी लेने का आज्ञापत्र।
**परवाना नवीस** पुं० (फा) परवाना लिखने वाला कर्मचारी। वह लिपिक जो परवाना लिखता हो।
**परवाना-राहदारी** पुं० (फा) दूसरे देश जाने का सरकारी स्वीकृति पत्र। (पासपोर्ट)।
**परवाया** पुं० (हि) चारपाई के पायों के नीचे रखने वाली वस्तु।
**परवाल** पुं० (हि) दे० 'प्रवाल'।
**परवास** पुं० (हि) दे० 'परवा'।
**परवी** स्त्री० (हि) दे० 'पर्वी'।
**परवीन** वि० (हि) दे० 'प्रवीण'।
**परवेश** पुं० (हि) चन्द्रमा के चारों ओर हलकी बदली के बीच दिखाई देने वाला घेरा। मंडल। चांद की अथाई का कुण्डल।
**परवेश** पुं० (हि) दे० 'प्रवेश'।
**परश** पुं० (सं) स्पर्श मणि। पारस पत्थर। पुं० (हि) छूना। स्पर्श।
**परशु** पुं० (सं) एक प्रकार का अस्त्र जिसके एक डंडे के सिरे पर अर्धचन्द्राकार फल लगा होता है। फरसा।
**परशुधर** पुं० (सं) परशु धारण करने वाला। परशुराम।
**परशु-पलाश** पुं० (सं) फरसे का फल।
**परशु-मुद्रा** स्त्री० (हि) उंगलियों की नृत्य में प्रयोग की जाने वाली एक मुद्रा।
**परशुराम** पुं० (सं) जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया। यह ईश्वर के छठे अवतार माने जाते हैं।
**परसुदन** पुं० (स) एक नरक जिसमें फरसे के फल जैसे पत्ते वाले पेड़ होते हैं।
**परसंग** पुं० (सं) दे० 'प्रसंग'।
**परसंगत** वि० (सं) १–दूसरे के साथ रहने वाला। २–दूसरे से लड़ने वाला।
**परसंज्ञक** पुं० (स) जीव। आत्मा। रूह।
**परसंसा** स्त्री० (हि) दे० 'प्रशंसा'।
**परस** पुं० (हि) १–छूना। स्पर्श। २–पारस पत्थर। स्पर्शमणि।
**परसन** पुं० (हि) छूना। छूने का भाव। वि० (हि) प्रसन्न। खुश। आनन्दित।
**परसना** क्रि० (हि) १–छूना। स्पर्श करना। २–छुवाना। ३–किसी के सामने भोज्य पदार्थ रखना। परोसना।
**परसन्न** वि० (हि) दे० 'प्रसन्न'।
**परस-पखान** पुं० (हि) पारस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है।
**परसा** पुं० (हि) १–फरसा। परशु। कुठार। २–उतना पात्र में रखा हुआ भोजन जितना एक मनुष्य के खाने पर पर्याप्त हो।
**परसाद** पुं० (हि) दे० 'प्रसाद'।
**परसादी** क्रि० (हि) दे० 'प्रसाद'।
**परसाना** क्रि० (हि) १–स्पर्श करना। २–भोजन सामने रखना।
**परसाल** अव्य० (हि) १–गत वर्ष। पिछले साल। २–आगामी वर्ष। अगले साल।
**परसिद्ध** वि० (हि) दे० 'प्रसिद्ध'।
**परसु** पुं० (हि) दे० 'परशु'।
**परसूत** वि० (हि) दे० 'प्रसूत'।
**परसेद** पुं० (हि) दे० 'प्रस्वेद'।
**परसेवा** स्त्री० (सं) दूसरे की नौकरी करना। दूसरे की सेवा।
**परसों** अव्य० (हि) १–बीती हुई कल से पहला दिन २–आने वाले कल के बाद वाला दिन।
**परसोतम** पुं० (हि) दे० 'पुरुषोत्तम'।
**परसौंहा** वि० (हि) छूने वाला। स्पर्श करने वाला।
**परस्त्री** स्त्री० (स) दूसरे की पत्नी या भार्या।
**परस्त्रीगमन** पुं० (सं) पराई स्त्री के साथ संभोग।
**परस्पर** क्रि० वि० (स) आपस में। एक दूसरे के साथ।
**परस्परानुमति** स्त्री० (सं) एक दूसरे की सलाह।
**परस्परोपमा** स्त्री० (स) एक अर्थालंकार जिसमें उपमा की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।
**परस्व** पुं० (सं) पराया धन। दूसरे की संपत्ति। पुं० (सं) कुठार। कुल्हाड़ी।

परस्व-हरण पुं० (सं) दूसरे का धन हर लेने का कार्य।
परहरना क्रि०(हि) छोड़ना। त्यागना।
परहार पुं०(हि) दे० 'प्रहार'।
परहित वि० (सं) १-शुभचिन्तक। परोपकारी। २-दूसरे के लिये लाभकारी।
परहेज पुं० (फा) १-खाने पीने आदि का संयम २-दोष, पापों या बुराइयों से अलग रहना।
परहेजगार पुं० (फा) १-परहेज करने वाला। संयमी २-दोषों से दूर रहने वाला।
परहेलना क्रि० (हि) अनादर या तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।
परांग पुं० (सं) श्रेष्ठ अंग। दूसरे का अंग।
परांगद पुं० (सं) शिव। महादेव।
परांगभक्षी वि० (सं) दे० 'परोपजीवी'।
परांगव पुं० (सं) समुद्र।
परांचा पुं० (हि) तख्त। पटरी। बेंडा।
परांज पुं० (सं) १-कोल्हू। तेल निकालने का यन्त्र। २-फेन। ३-छुरी का फल।
परांठा पुं० (हि) वह रोटी या चपाती जो घी लगा कर तवे पर सेंकी जाती है। परौठा।
परांत पुं० (सं) मृत्यु।
परांतक पुं० (सं) सर्वनाशक। महादेव।
परांतकाल पुं० (सं) मृत्यु का समय।
परा स्त्री० (सं) १-चार प्रकार की वाणियों में से पहली जो नाद स्वरूप मानी जाती है। २-परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या। ब्रह्म विद्या। ३-गंगा। ४-एक प्रकार का सामगान। वि० (सं) श्रेष्ठ जो सबसे परे हो। प्रत्य० (सं) एक अव्यय जो दूर, पीछे, एक ओर, अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे पराजय। पुं० (हि) रेशम खोलने वालों का एक औजार। पंक्ति। कतार।
पराई वि० (हि) दूसरे की।
पराक पुं० (सं) १-मनुस्मृति के अनुसार प्रायश्चित-स्वरूप किया जाने वाला व्रत। २-बलिदान देने की तलवार। ३-एक क्षुद्र जन्तु। वि० (सं) छोटा।
पराकाष्ठा स्त्री० (सं) १-चरम सीमा। हद। अन्त। २-गायत्री का एक भेद। ब्रह्मा की आधी आयु।
पराकोटि स्त्री० (सं) दे० 'पराकाष्ठा'।
पराक्रम पुं० (सं) १-बल। शक्ति। २-पुरुषार्थ। उद्योग। पौरुष।
पराक्रमी वि० (हि) १-बलवान। बलिष्ठ। २-वीर बहादुर। उद्योगी। उद्यमी।
पराक्रमज्ञ पुं० (सं) शत्रु के बल को जानने वाला।
पराग पुं० (सं) १-वह रज जो फूलों के बीच लम्बे केसरों पर जमी रहती है। पुष्प रज। २-धूल। रज ३-नहाने के बाद शरीर पर लगाने का सुगन्धित चूर्ण। ४-चन्दन। ५-चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। ६-उपराग। ७-कपूर की धूल या चूर्ण। ८-विख्यात ९-स्वच्छन्द गति। मनमौजीपन।
परागकेसर पुं०(सं) फूलों के मध्य के पतले और लम्बे सूत जिन पर पराग लगा रहता है।
परागति स्त्री० (सं) गायत्री।
परागना क्रि० (हि) अनुरक्त होना।
परागम पुं० (सं) शत्रु का आगमन।
पराङ्मुख वि० (सं) १-विमुख। २-उदासीन। ३-विरुद्ध।
पराङ-मुखता स्त्री० (सं) प्रतिकूल। विमुखता।
पराच् वि०(सं)१-उलटा चलने वाला। २-अद्धगामी
पराचित वि० (सं) दूसरे से पाला पोसा हुआ।
पराजय स्त्री० (सं) हार। हारजाने की क्रिया या भाव
पराजित वि० (सं) परास्त। पराभूत। हारा हुआ।
पराण पुं० (सं) दे० 'प्राण'।
पराणत्ति स्त्री० (सं) भगा देने की क्रिया।
परातंस वि० (सं) धक्का देकर हटाया हुआ।
परात स्त्री० (हि) बड़ा थाल। थाली के आकार का बड़ा बरतन।
परातर वि० (सं) बहुत दूर।
परात्मा पुं० (सं) १-परमात्मा। २-दूसरे की आत्मा
परादन पुं० (सं) फारस देश का घोड़ा।
पराधीन वि०(सं) परवश। जो दूसरे के आधीन हो।
पराधीनता स्त्री० (सं) परतंत्रता। दूसरे की अधीनता
परान पुं० (हि) दे० 'प्राण'।
पराना क्रि० (हि) भागना।
परान्न पुं० (सं) पराया अन्न। दूसरे का दिया भोजन।
परान्नभोजी वि० (सं) दूसरे का या पराया अन्न खाने वाला।
परापर पुं० (सं) १-फासला। २-पर और अपर।
पराभव पुं० (सं) १-पराजय। २-तिरस्कार। ३-विनाश। ४-दूसरे को दबा कर आधीन रखना। (सबजुगेशन)।
पराभिध पुं० (सं) केशर। कुंकुम।
पराभूत वि० (सं) १-पराजित। हारा हुआ। २-नष्ट तिरस्कृत।
पराभूति स्त्री० (दे०) 'पराभव'।
परामर्श पुं० (सं) १-पकड़ना। खींचना। विवेचना। ३-निर्णय। ४-अनुमान। ५-स्मृति। याद। ६-युक्ति। सलाह। मंत्रणा। (कन्सल्टेशन)।
परामर्श-कक्ष पुं०(सं) दे० 'परामर्शालय'। (कन्सल्टिंग रूम)।
परामर्शदाता पुं० (सं) परामर्श या सलाह देने वाला सलाहकार। (एडवाइजर)।
परामर्शदात्री वि० (सं) सलाह देने वाली। (एडवाइ-

बदी)।

**परामर्शदात्री समिति** स्त्री० (सं) किसी कार्य या विषयादि के निमित्त परामर्श देने के लिए बनाई गई समिति। (एडवाइज़री कमिटी)।

**परामर्शालय** पुं० (सं) वह स्थान या कमरा जिसमें बैठकर किसी विशेष विषय में सलाह दी जाती हो। (कन्सल्टिंग रूम)।

**परामर्शन** पुं०(सं) १-खींचना। २-स्मरण। चिंतन। सलाह करना। मशवरा करना।

**परामर्शी** वि० (सं) परामर्श या सलाह देने वाला।

**परामृष्ट** वि० (सं) १-स्पर्श किया हुआ। पकड़ा हुआ २-बुरी तरह व्यवहृत किया हुआ। निर्णय किया हुआ। ३-सहा हुआ। ४-संबन्ध किया हुआ। ५-रोगाक्रांत। ६-जिसको परामर्श दिया गया हो।

**परायण** वि० (सं) १-क्रिया हुआ। गत। २-निरत। लीन। लगा हुआ। पुं० (सं) १-भाग कर शरण लेने का स्थान। विष्णु।

**परायणता** स्त्री० (सं) तत्परता।

**परायत्त** वि० (सं) परवश। पराधीन।

**पराया** पुं० (हि) १-दूसरे का। और का। २-दूसरा। जो आत्मीय न हो। गैर।

**पराग्र** पुं० (हि) ब्रह्मा।

**परारे** पुं० (हि) दूसरे का। पराया

**परारब्ध** स्त्री० (हि) दे० 'प्रारब्ध'।

**परालब्ध** स्त्री० (हि) दे० 'प्रारब्ध'।

**परार्थ** पुं० (सं) १-दूसरे का कार्य। २-परोपकार। (सं) जो दूसरे के लिये हो।

**परार्थवाद** पुं० (सं) दूसरों की सेवा में जीवन बिता देने का सिद्धांत। (…)।

**पराव** वि० (हि) दूसरे का। पराया।

**परावत** पुं० (सं) फालसा।

**परावन** पुं० (हि) बहुत से लोगों का भागना। भगदड़। पलायन।

**परावर** वि० (सं) १-सर्वश्रेष्ठ। २-अगला-पिछला। निकट और दूर का।

**परावर्त** पुं०(सं) १-प्रत्यावर्त्तन। लौटाने या पलटने का भाव। २-अदल-बदल। विनिमय। लेन देन ३-फिर से पानी पीने की क्रिया। पुनः प्राप्ति। सजा का बदल जाना।

**परावर्तक** पुं०(सं) हस्तांतर कर्ता। किसी सम्पत्ति, दस्तावेज, स्वत्व आदि को दूसरे को देने या लौटाने वाला। (ट्रांसफरर)।

**परावर्तन** पुं० (सं) १-पलटना। लौटना। २-उलट कर फिर ज्यों का त्यों होना। (रिवर्शन)। ३-संपत्ति आदि का हस्तांतरित करना। (ट्रांसफर)।

**परावर्तनवाद** पुं० (सं) आकस्मिक क्रांति द्वारा साम्यवाद की स्थापना का सिद्धान्त। (रिवर्शनिज्म)

**परावर्त्त व्यवहार** पुं० (सं) दुबारा विचार करने की प्रार्थना। (अपील)।

**परावर्त्तनीय** वि० (सं) (सम्पत्ति आदि) प्रत्यावर्त्तन करने योग्य। लौटाने योग्य। (ट्रांसफरेबल)।

**परावर्त्तित** वि० (सं) लौटाया हुआ। पलटाया हुआ।

**परावर्त्ती** वि० (सं) १-लौट कर अपने स्थान पर आने वाला। २-फिर ज्यों का त्यों होने वाला।

**परावृत्त** वि० (सं) १-पलटाया या पलटा हुआ। २-फेरा हुआ। ३-लौटा कर दिया हुआ।

**परावृत्ति** स्त्री० (सं) १-पलटने का भाव। पलटाव। २-मुकद्दमे का फिर से फैसला या विचार।

**परावेदी** स्त्री० (सं) कटाई।

**पराव्याध** पुं० (सं) उतना फासला जहां फैंका हुआ पत्थर जाकर गिरे।

**पराशरी** पुं० (सं) भिखारी। भिक्षुक।

**पराश्रय** पुं० (सं) १-दूसरे का सहारा। पराया भरोसा २-पराधीनता।

**पराश्रित** वि० (सं) १-जिसे दूसरे का आसरा न हो। पराधीन।

**परास** पुं० (सं) दे० 'पलाश'।

**परासन** पुं० (सं) वध। हत्या।

**परासु** वि० (सं) प्राणरहित। मृत। मरा हुआ।

**परास्त** वि० (सं) १-पराजित। हारा हुआ। २-ध्वस्त विजित। ३-प्रभावहीन। दबा हुआ।

**पराह** पुं० (सं) दूसरा दिन।

**पराहत** वि० (सं) १-आक्रांत। ध्वस्त। २-दूर किया हुआ। ३-निराकृत। खंडित। ४-जोता हुआ।

**पराह्न** पुं० (सं) दोपहर के बाद का समय। तीसरा समय।

**परिंदा** पुं० (फा) पक्षी। चिड़िया।

**परि** उप० (सं) एक उपसर्ग जिसके अन्य शब्दों में जोड़ने से निम्न अर्थों की उपलब्धि होती है :—१-सर्वतोभाव। अच्छी तरह। जैसे—परिपूर्ण। २-अतिशय। जैसे—परिवर्द्धन। ३-पूर्णता जैसे परित्याग। ४-दोषाख्यान। जैसे—परिहास। परिवाद ५-नियम। क्रम। जैसे —परिच्छेद। ६-चारों ओर जैसे—परिक्रमण। परिधि।

**परिकंप** पुं० (सं) भयंकर कपकपी। अत्यधिक भय।

**परिक** स्त्री० (देश०) खोटी चांदी।

**परिकथा** स्त्री० (सं) एक कहानी के अन्तर्गत उसी के सम्बन्ध में दूसरी कहानी।

**परिकर** पुं० (सं) १-अनुगत। सहचर। २-समूह। संग्रह। भीड़। ३-आरम्भ। शुरूआत। ४-कमरबन्द पटुका। ५-पलंग। ६-निर्णय। फैसला। ७-एक अर्थालंकार।

**परिकरमा** स्त्री० (हि) दे० 'परिक्रमा'।

**परिकरांकुर** पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें किसी

शब्द का प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।
परिकर्तन पुं० (सं) १-गोलाकार काटना। शूल।
परिकर्तिका स्त्री० (सं) काटने की सी पीड़ा।
परिकर्म पुं० (सं) देह में केसर आदि का उबटन। मलना। शरीर-संस्कार।
परिकर्मा पुं० (सं) परिचारक। सेवक। नौकर।
परिकर्मी पुं० (सं) दे० 'परिकर्मा'।
परिकर्ष पुं० (सं) खींचने की क्रिया।
परिकर्षण पुं० (सं) १-खींचकर निकालने की क्रिया २-खींच कर दूसरे स्थान ले जाने की क्रिया।
परिकलक पुं० (सं) १-हिसाब लगाने अथवा लेखा ठीक करने वाला व्यक्ति। २-एक यन्त्र जिसके द्वारा बड़े-बड़े हिसाब थोड़े समय में सरलतापूर्वक लग जाते हैं। (कैलक्यूलेटर)।
परिकलन पुं० (सं) हिसाब लगाने या गिनने का कार्य। गणना करना। (कैलक्यूलेशन)।
परिकलित वि० (सं) जिसका हिसाब किताब ठीक लग चुका हो (कैलक्यूलेटेड)।
परिकल्कन पुं० (सं) धोखेबाजी। प्रवंचना।
परिकल्प पुं० (सं) १-स्थिर। निश्चय। २-निर्देश। ३-रचना। बनावट।
परिकल्पक पुं० (सं) किसी वस्तु का कलापूर्ण रेखा-चित्र बनाने वाला (डिज़ाइनर)।
परिकल्पन पुं०(सं)१-मनन। चिंतन। रचना। आवि-ष्कार। २-सम्पन्न कारण। बटवारा। विभाजीकरण।
परिकल्पना स्त्री० (सं) १-जिस बात की अत्यधिक संभावना हो प्रथम ही मान लेना या उसकी कल्पना करना। २-केवल तर्क हेतु कोई बात मान लेना। ३-कोई ऐसी बात मान लेना जो प्रमाणित न हुई हो। (हाइपो-थेसिस)। ४-कुछ विशिष्ट आधारों पर किसी बात को ठीक मान लेना। (प्रिज़म्पशन)
परिकल्पित वि०(सं) १-कल्पना किया हुआ। विचारा हुआ। २-मनगढ़न्त। ३-निश्चित ठहराया हुआ। ४-मन में सोच कर बनाया हुआ। रचित। (डिज़ा-इन्ड)।
परिकांक्षित पुं० (सं) भक्त। साधु। सन्यासी।
परिकीर्ण वि० (सं) १-फैला हुआ। २-घिरा हुआ। परिपूर्ण।
परिकृश वि० (सं) अति दुर्बल। बड़ा कमजोर।
परिकेश पु० (सं) बाल का अगला भाग।
परिक्रम पुं० (सं) १-टहलना। २-क्रम। सिलसिला ३-प्रविष्ट होने वाला। ४-चारों ओर घूमना। ५-किसी कार्य या निरीक्षण के लिये जगह-जगह जाना। घूमना। दौरा। (टूर)।
परिक्रमण पुं० (सं) दे० 'परिक्रम'।
परिक्रमसह पुं० (सं) बकरा।
परिक्रमा स्त्री० (सं) १-चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २-किसी मन्दिर आदि के चारों ओर घूमने का मार्ग।
परिक्रय पुं० (सं) १-मजदूरी। भाड़ा। २-क्रय। खरीद। मोल।
परिक्रियण पुं० (सं) १-मजदूरी। २-मजदूरी पर काम में लगना। ३-विनिमय। अदला बदली। ४-रुपये देकर की गई संधि।
परिक्रिया स्त्री० (सं) १-खाई से घेरने की क्रिया। २-एक प्रकार का यज्ञ।
परिक्लांत वि० (सं) थका हुआ। परिश्रांत।
परिक्लिष्ट वि० (सं) १-अति क्लिष्ट। २-अरित्रण।
परिक्लेद पुं० (सं) तरी। नमी। सील।
परिक्लेश पुं० (सं) अत्यन्त कष्ट या दुःख। कड़ाई।
परिक्वणन पुं० (सं) मेघ। बादल।
परिक्षत वि० (सं) नष्टभ्रष्ट।
परिक्षय पुं० (सं) १-नाश। बरबादी। हानि। २-समाप्त होने की क्रिया।
परिक्षव पु० (सं) छींक।
परिक्षा स्त्री० (सं) कीचड़। स्त्री० (हि) दे० 'परीक्षा'।
परिक्षालन पुं० (सं) धोने या साफ करने की क्रिया।
परिक्षीब वि० (सं) नशे में बिलकुल चूर।
परिक्षेप पुं० (सं) १-इधर उधर भ्रमण करना। टहलना। २-घेरने की सीमा। ३-फैलाना।
परिक्षेपक वि० (सं) घूमने वाला। फेरा लगाने वाला
परिक्षेत्र पुं० (सं) दे० 'परिनगर'।
परिक्षेपिक वि० (सं) दे० 'परिनागर'।
परिखन वि० (हि) रक्षक। रखवाली करने वाला।
परिखना क्रि० (हि) १-बाट जोहना। २-परीक्षा करना। जांचना।
परिखा स्त्री० (हि) किसी नगर या गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई खाई या नहर।
परिखात पुं० (सं) १-खाई। खंदक। २-खुदाई। ३-पहिये से बनी हुई लकीर।
परिखान स्त्री० (सं) गाड़ी के पहिये से बनी लीक या लकीर।
परिखिन्न वि० (सं) पीड़ित। उदास हुआ। परेशान
परिख्यात वि० (सं) विख्यात। प्रसिद्ध।
परिख्याति स्त्री० (सं) कीर्ति। प्रसिद्धि। मामवरी।
परिगत पुं० (सं) घर। गृह।
परिगणन पुं० (सं) भली भांति गिनना। गणना करना। शुमार करना।
परिगणना स्त्री० (सं) परिगणन। (शेड्यूल)।
परिगणित वि० (सं) १-गिना हुआ। २-जिसका उल्लेख किसी अनुसूची आदि में हो चुका हो। (शेड्यूल्ड)।
परिगणित जाति स्त्री० (सं) दे० 'अनुसूचित जाति'। (शेड्यूल्ड-कास्ट)।

**परिगणित-जातीय-संघ** पुं० (सं) परिगणित जातियों का संघ। (शेड्यूल्ड-कास्ट-फेडरेशन)।
**परिगण्य** वि० (सं) गिनने योग्य।
**परिगत** वि० (सं) १-गत। बीता हुआ। २-मृत। मरा हुआ। ३-विस्मृत। ४-ज्ञात। जाना हुआ। ५-प्राप्त। ६-घेरा हुआ। (सरकमस्क्राइब्ड)।
**परिगत-वृत्त** पुं० (सं) वह वृत्त जो त्रिभुज के तीनों कोनों में से होकर गया हो। (सरकमस्क्राइब्ड सर्कल)
**परिगदित** वि० (सं) कहा हुआ।
**परिगम** पुं० (सं) दे० 'परिगमन'।
**परिगमन** पु० (सं) १-प्राप्त करना। २-घेरना। ३-जानना।
**परिगह** पुं० (हि) साथी-संगी या आश्रित जन कुटुम्बी।
**परिगहन** पुं० (सं) घोर अंधकार।
**परिगहना** क्रि० (हि) ग्रहण करना। स्वीकार करना।
**परिगीत** वि० (सं) जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया हो।
**परिगीति** स्त्री० (सं) एक छंद का नाम।
**परिगुंठित** वि० (सं) छिपाया हुआ। ढका हुआ।
**परिगृहीत** वि०(सं) १-स्वीकृत। मंजूर किया हुआ। २-मिला हुआ।
**परिगृहीता** पु० (सं) १-गोद लेने वाला व्यक्ति। २-पति। ३-सहायक।
**परिगृह्या** स्त्री० (सं) विवाहिता स्त्री।
**परिग्रह** पुं० (सं) १-ग्रहण कर लेना। दान लेना। २-पाना। ३-सादर कोई वस्तु लेना। अंगीकार। ४-विवाह। स्त्री को अंगीकार करना। ५-पत्नी। ६-परिजन। परिवार। ७-सेना का पिछला भाग। ८-जड़। ९-सूर्य ग्रहण। १०-शपथ। ११-अनुग्रह। १२-विष्णु। १३-दंड। १४-शाप। १५-धन आदि का संग्रह।
**परिग्रहण** पुं० (सं) १-पूर्णरूप से ग्रहण करना। २-कपड़े पहनना।
**परिगृहीतृ** पुं० (सं) पति।
**परिग्राह्य** वि० (सं) ग्रहण करने योग्य।
**परिघ** पु० (सं)१-गंडासा। २-अर्गला। दरवाजा बन्द करने का ब्योंड़ा। ३-मुदगर। ४-कलस। घड़ा। ५-घर। ६-फाटक। गोपुर। ७-शूल। भाला। ८-तीर। ९-पर्वत। १०-वज्र। ११-बाधा। प्रतिबन्ध। १२-वे बादल जो उदयास्त के समय सूर्य के सम्मुख आ जाते हैं। १३-घोड़ा।
**परिघात** पु० (सं) १-हत्या। हनन। २-वह अस्त्र जिससे किसी की हत्या की जा सकती हो।
**परिघोष** पुं० (सं) १-शोर। होहल्ला। २-अनुचित कथन। ३-मेघगर्जन।
**परिचना** क्रि० (हि) दे० 'परचना'।
**परिचय** पुं० (सं) १-जानकारी। अभिज्ञता। अवगति। २-प्रमाण। लक्षण। पहचान। ३-जान-पहचान। ४-किसी व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से जान पहचान कराते समय नाम पता आदि बताना। (इन्ट्रोडक्शन)। ५-एकत्र करना। ६-अभ्यास।
**परिचय-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो। (लैटर ऑफ इन्ट्रोडक्शन)।
**परिचर** पु० (सं) १-नौकर। सेवक। २-रोगी की सेवा करने वाला। ३-वह सैनिक जो रथ की शत्रु के प्रहार से रक्षा करने के निमित्त बैठाया जाता है। ४-दण्ड-नायक। ५-सेनापति। ६-अंग-रक्षक। (अटेण्डेन्ट)।
**परिचरजा** स्त्री० (हि) दे० 'परिचर्या'।
**परिचरण** पुं० (सं) दे० 'परिचर्या'।
**परिचरणीय** वि० (सं) परिचर्या या टहल करने योग्य
**परिचरल** स्त्री० (हि) प्रलय। कयामत।
**परिचरी** स्त्री० (सं) दासी। सेविका। लौंडी।
**परिचर्या** स्त्री० (सं) १-सेवा। टहल। सुश्रूषा। २-रोगी की सेवा।
**परिचायक** पुं० (सं) परिचय कराने वाला। २-सूचित करने वाला। ३-जताने वाला (तथ्य या वस्तु)। (इन्ट्रोडक्टरी)।
**परिचार** पुं० (सं) १-सेवा। टहल। २-वह स्थान जो घूमने या टहलने के लिये निर्दिष्ट हो।
**परिचारक** पुं० (सं) १-सेवक। नौकर। चाकर। २-रोगी की सेवा करने वाला। (अटेण्डेन्ट)।
**परिचारण** पुं० (सं) १-टहल या खिदमत करना। २-सहवास करना। ३-सूचनाओं आदि का सदस्यों अथवा अन्य लोगों में वितरित करना या घुमाना। (सरक्यूलेशन)।
**परिचारण-दल** पुं० (सं) युद्ध या आपत्ति काल में आहतों का उपचार करने वाला सरकारी दल। आहतोपचारी-दल। (एम्ब्यूलेंस कोर)।
**परिचारना** क्रि० (हि) खिदमत करना। सेवा करना।
**परिचारिका** स्त्री० (सं) दासी। सेविका।
**परिचारित** वि० (सं) १-घुमाया गया। वितरित। (सरकुलेटेड)।
**परिचारित करना**=परिपत्रित करना। किसी प्रस्ताव, पत्र, विधेयक आदि का सदस्यों में राय जानने के लिये वितरित करना। (टु सरकुलेट)।
**परिचारी** वि० (हि) १-टहलने वाला। भ्रमण करने वाला। २-नौकर। सेवक।
**परिचालक** पुं० (सं) १-चलने या चलाने के लिए प्रेरित करने वाला। १-ट्राम, बस आदि में यात्रियों की देख भाल करने वाला कर्मचारी। (कंडक्टर)। वि० (सं) विद्युत कणों या ताप को एक स्थान से

दूसरे स्थान तक पहुंचाने वाला। (उपकरण)।
**परिचालकता** स्त्री० (सं) १-परिचालन करने की क्रिया २-ताप या विद्युत कणों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की क्षमता। (कन्डक्टिविटी)
**परिचालन** पुं० (सं) १-चलाना। चलाने के लिये प्रेरित करना। २-कार्यक्रम के चलते रहने की व्यवस्था करना। ३-गति देना। हिलाना। ४-विद्युत कणों या गर्मी के फैलने की वह रीति जिसमें विद्युत या गर्मी एक कण से दूसरे कण के मिलाती है पर स्वयं कण नहीं चलते। (कंडक्शन)।
**परिचालित** वि० (सं) १-चलाया हुआ। २-निर्वाह किया हुआ। व्यवस्थित। ३-हिलाया हुआ। ४-जिसका परिचालन किया गया हो।
**परिचित** वि० (सं) १-जिसका परिचय हो चुका हो। २-अभिज्ञ। ३-संचित।
**परिचिति** स्त्री० (सं) १-परिचय। २-ज्ञान। अभिज्ञता
**परिचुंबन** पुं० (सं) भरपूर प्रेम सहित चुंबन करना।
**परिचेय** वि० (सं) १-परिचय करने योग्य। २-संचय करने योग्य।
**परिचो** पुं० (हि) परिचय। ज्ञान।
**परिच्छद** पुं० (सं) वस्त्र। पोशाक। पहनावा।
**परिच्छद्** स्त्री० (हि) १-राजा आदि के साथ रहने वाला अनुचर। २-अनुयायी। ३-असबाब। सामान
**परिच्छद** पुं० (सं) १-ऊपर के ढकने का कपड़ा। आच्छादन। २-पहनने के पूरे कपड़े जो किसी विशेष दल या वर्ग के लिये निर्धारित होते हैं। (यूनीफॉर्म)। ३-माल-असबाब (बरतन आदि) ४-यात्रोपयोगी सामान।
**परिच्छन्न** वि० (सं) १-ढका हुआ। २-कपड़ा पहने हुए। छाया हुआ। ४-घिरा हुआ। ५-छिपा हुआ
**परिच्छा** स्त्री० (देश०) दे० 'परीक्षा'।
**परिच्छित्ति** पुं० (सं) १-अलगाव। बँटवारा। २-लक्षण। ३-पहचान। फैसला। ४-सीमा। अवधि ५-अध्याय। प्रकरण।
**परिच्छिन्न** वि० (सं) १-परिमित। सीमित। २-विभक्त। ३-भली भांति परिभाषा दिया हुआ। निश्चित किया हुआ।
**परिच्छेद** पुं० (सं) १-काटकर विभक्त करना। विभाजन (डिमारकेशन)। २-ग्रन्थ या पुस्तक का वह विभाग जिसमें प्रधान विषय पर स्वतंत्र विवेचन होता है। ग्रन्थ का कोई स्वतंत्र विभाग। प्रकरण। अध्याय। २-सीमा। हद। अवधि। ३-निर्णय। ५-विभाग। बँटवारा।
**परिच्युति** स्त्री० (सं) गिरना। स्खलन। पतन। भ्रंश
**परिछत्र** पुं० (सं) वह छतरी जिसकी सहायता से विमान से कूदते हैं। हवाई छतरी। (पैराशूट)।
**परिछंक** पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
**परिछटन** पुं० (हि) दे० 'पर्यटन'।
**परिजन** पुं० (सं) १-आश्रित लोग। २-परिवार ३-साथ रहने वाले लोग। ४-सेवक।
**परिजन-नाशक बम** स्त्री० (हि) जनजान में फटने वाला गोला या बम। जन-नाशक-बम। (एन्टी-पर्सनल-बॉम्ब)।
**परिजन्मा** पुं० (हि) १-चन्द्रमा। २-अग्नि।
**परिजल्पित** पुं० (सं) ऐसा व्यंगपूर्ण गूढ़ कथन जिससे अपनी श्रेष्ठता तथा निपुणता प्रकट हो और स्वामी को निष्ठुरता, परिवंचना आदि दुर्गुण प्रकट हो।
**परिजा** स्त्री० (सं) १-आदि भूमि। २-उद्गम। ३-निकास।
**परिजात** वि० (सं) जन्मा। जन्मा हुआ।
**परिजीवन** पुं० (सं) १-साधारणतः नियत काल से अधिक चलने वाला जीवन। २-उत्तर जीवन। (सर्वाइवल)।
**परिजीवित** वि० (सं) उत्तर जीवित। (सर्वाइव्ड)।
**परिजीवी** वि० (सं) दे० 'परिजीवित'।
**परिज्ञप्ति** स्त्री० (सं) १-जान पहचान। २-बात-चीत कथोपकथन।
**परिज्ञात** वि० (सं) १-विशेष रूप से जाना हुआ। २-निश्चित रूप से जाना हुआ।
**परिज्ञाता** पुं०(हि) ज्ञानी। बुद्धिमान।
**परिज्ञान** पुं० (सं) १-पूर्णज्ञान। २-वह ज्ञान जिस पर पूरा भरोसा हो। ३-सूक्ष्म ज्ञान। भेद या अन्तर का ज्ञान। पहचान।
**परिणत** वि० (सं) १-एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ। रूपांतरित। २-पकाया हुआ। ३-प्रौढ़। पक्का। पुष्ट। ४-ढलता हुआ। समाप्त।
**परिणति** स्त्री० (सं) १-नवन। झुकाव। अवनति। २-पक्वता। पुष्टि। ३-रूपांतरित। बदलना। परिणयन। ४-पकना। ५-पूर्णता। ६-परिणाम। ७ अन्त। ८-वृद्धावस्था।
**परिणद्ध** वि० (सं) १-चारों ओर से ढका हुआ। २-विस्तीर्ण। लम्बा-चौड़ा। ३-बांध या जकड़ा हुआ।
**परिणय** पुं० (सं) विवाह। शादी।
**परिणयन** पुं० (सं) विवाह करने की क्रिया। ब्याहना।
**परिणाम** पुं० (सं) १-बदलने का भाव या क्रिया। रूपांतर-प्राप्ति। २-स्वभाविक रीति से रूप परिवर्तन विकृति। ३-किसी कार्य के अन्त में उसके फल-स्वरूप होने वाली बात। नतीजा। फल। (रिजल्ट) ४-किसी कार्य का क्रियात्मक रूप से पड़ने वाला असर। (एफेक्ट)। ५-किसी कार्य के फलस्वरूप होने वाला प्रभाव। (कंसिक्वेंस)। ६-बहुत सी बातें सुनकर उनका निकाला हुआ निष्कर्ष। (कन-क्लूजन)। ७-पकने या पचने का भाव। ८-एक

अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना कहा जाय।
परिणाम-दर्शी वि० (सं) जिसे काम करने से पहले उसका नतीजा ज्ञात हो जाय। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी। सोच-समझकर काम करने वाला।
परिणामस्वरूप वि० (सं) जो किसी कार्य के फलस्वरूप हुआ हो। (इनकॉसिक्वेंस)।
परिणाम-शूल पु० (सं) भोजन के पचने समय पाचन क्रिया में कुछ विकार होने के कारण पेट में उठने वाला दर्द या शूल। बायगोले का दर्द।
परिणामी वि० (सं) १-जो बराबर बदलता रहा। २-जो परिवर्तन स्वीकार करे। बदलने वाला। ३-जो किसी परिणामस्वरूप सामने आए। (रिजल्टेंट)
परिणाय पु० (सं) १-शतरंज की गोट की चाल। २-सब ओर चलना। ३-विवाह।
परिणायक पु० (सं) १-नेता। २-सेनापति। ३-स्वामी। पति।
परिणीत वि० (सं) १-विवाहित। ब्याहा हुआ। २-पूर्ण।
परिणीता स्त्री० (सं) विवाहिता स्त्री।
परिणेया वि० (सं) १-विवाह करने योग्य (स्त्री)। २-पति या भार्या बनने के उपयुक्त।
परितः अव्य० (सं) १-सब ओर। चारों ओर। २-संपूर्ण रूप से। सर्वतोभाव से।
परितच्छ वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'। अव्य०(हि) आँखों के सामने। देखते-देखते।
परितप्त वि० (सं) १-अत्यन्त गर्म। तपा हुआ। २-दुखित। संतप्त।
परितप्ति स्त्री० (सं) १-जलन। तपन। २-दुःख। क्लेश। पीड़ा। दर्द।
परितर्कण पु० (सं) किसी विषय पर विचार करना (डिलबरेशन)।
परितर्पण पु० (सं) भलीभांति तृप्ति। सन्तोष। प्रसन्नता।
परिताप पु० (सं) १-अत्यन्त जलन। आंच। गरमी २-दुःख। क्लेश। दर्द। ३-संताप। रंज। ४-पछतावा। ५-भय। डर। ६-कंप। कंपकंपी।
परितापी वि० (हि) १-दुखित। व्यथित। २-सताने या पीड़ा देने वाला। पुं० (सं) उत्पीड़क। सताने वाला।
परितुष्ट वि० (सं) १-अच्छी तरह से संतुष्ट। २-प्रसन्न। खुश। आल्हादित।
परितुष्टि स्त्री० (सं) संतुष्टता। प्रसन्नता। खुशी।
परितृप्त वि० (सं) संतुष्ट। तृप्त।
परितृप्ति स्त्री० (सं) संतुष्टि। तृप्ति। अघाना।
परितोष पुं० (सं) १-संतोष। तृप्ति। (सेटिस्फेक्शन) २-प्रसन्नता। खुशी।
परितोषक पुं० (सं) सन्तुष्ट या तृप्त करने वाला। प्रसन्न करने वाला।
परितोषण पुं० (सं) १-पूरी तरह से सन्तुष्ट करना या होना। २-वह धन जो किसी को सन्तुष्ट करने के लिये दिया जाय। (ग्रेटिफिकेशन)।
परितोस पुं० (हि) दे० 'परितोष'।
परित्यक्त वि०(सं) त्यागा, छोड़ा, अथवा अलग किया हुआ। (अबन्डेन्ड)।
परित्यक्ता वि० (सं) त्यागी या छोड़ी हुई। पुं० (सं) छोड़ने वाला।
परित्यजन पुं० (सं) परित्याग की क्रिया। छोड़ना। निकालना। (अबैन्डेनमेंट)।
परित्याग पुं० (सं) १-छोड़ देना। २-अपना अधिकार सदा के लिये छोड़ देना। ३-किसी से सदा के लिये सम्बन्ध तोड़ देना। (रिलिंक्विशमेंट)।
परित्यागना क्रि० (हि) छोड़ देना। त्यागना।
परित्यागी वि० (सं) त्याग करने वाला। छोड़ने वाला। पुं० (सं) वह जिसने संपत्ति आदि किसी वस्तु का त्याग कर दिया हो।
परित्याज्य वि० (सं) पूर्णरूप से छोड़ने योग्य।
परित्रस्त वि० (सं) डरा हुआ। भयभीत।
परित्राण पुं०(सं) १-किसी की रक्षा करना। विशेषतः जब कोई उसे मार डालने को उद्यत हो। (प्रोटेक्शन, सेफगार्डस)। २-शरीर के बाल। रोंगटे।
परित्रात वि० (सं) जिसकी रक्षा की गई हो।
परित्राता पुं० (सं) रक्षा करने वाला। (प्रोटेक्टर)।
परिदत्त पूंजी स्त्री० (सं) किसी सीमित समवाय की प्रार्थित पूंजी जो हिस्सेदारों ने अदा करदी हो। (पेड-अप केपिटल)।
परिदर्शन पुं० (सं) १-भलीभांति देखना। २-दर्शन। अवलोकन। ३-न्यायालय में मुकदमे की होने वाली सुनवाई। (ट्रायल)।
परिदान पुं० (सं) लौटा देना। फेर देना।
परिदेव पुं० (सं) विलाप। रोना-धोना।
परिदेवक पुं० (सं) विलाप करने वाला।
परिदेवन पुं० (सं) विलाप करना। कलपना।
परिदेवना स्त्री० (सं) हानि पहुंचाये जाने के विरोध में की गई शिकायत या अभ्यावेदन। (कंप्लेंट)।
परिदेवित स्त्री० (सं) १-विलाप। २-उलाहना।
परिध पुं० (हि) दे० 'परिधि'।
परिधन पुं० (हि) कमर और जांघों पर पहनने का कपड़ा, धोती आदि।
परिधान पुं० (सं) १-वह जिससे शरीर को ढका या लपेटा जाय। वस्त्र। कपड़ा। पोशाक। २-धोती आदि कमर के नीचे पहनने के वस्त्र। ३-कपड़े पहनना।
परिधान-गृह पुं० (सं) कपड़े या पोशाक पहनने का

कमरा जिसमें प्रायः शृंगार मेज रखी रहती है (रोबिंग रूम)।

**परिधानीय** वि० (सं) १–पहनने योग्य। धारण करने योग्य। २–जो पहना जाय।

**परिधायक** पुं० (सं) १–ढांपने या लपेटने वाला। २–घेरा। बाड़ा। चहारदीवारी।

**परिधारण** पुं० (सं) १–उठाना। धारण करना। २–बचा रखना। रक्षा करना।

**परिधावन** पुं० (सं) १–पहनने या धारण करने की प्रेरणा करना। पहनवाना। २–दौड़ना। किसी के पीछे-पीछे या चारों ओर दौड़ना।

**परिधावी** वि० (सं) दौड़ने वाला। पुं० (हि) एक संवत्सर।

**परिधि** पुं० (सं) १–रेखागणित के अनुसार वह रेखा जो वृत्त के चारों ओर खींची जाती है। (सरकम्फ़ेंस)। २–सूर्य, चन्द्रमा आदि के चारों ओर का प्रभामंडल। ३–वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर बने। वृत्त। (सर्कल)। ४–परिधेय। वस्त्र। कपड़ा। ५–क्षितिज। ६–परिक्रमा करने का नियत मार्ग।

**परिधिक** वि० (सं) परिधि का। जिसका कार्यक्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो।

**परिधिक-निरीक्षक** पुं० (सं) वह निरीक्षक या राज्य अधिकारी जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो। (सर्कल-इन्सपेक्टर)।

**परिधिस्थ** पुं० (सं) १–परिचारक। सेवक। २–किसी राजा या राज्यपाल आदि का अंगरक्षक। (एड-डि-कांग)।

**परिनगर** पुं० (सं) किसी नगर के आसपास की बस्तियां जो प्रथक् होने पर भी उस नगर के अंग के रूप में मानी जाती हैं। (सबर्ब)।

**परिनय** पुं० (हि) दे० 'परिणय'।

**परिनागर** वि० (स) परिनगर संबन्धी। (सबर्बन)।

**परिनाम** पुं० (हि) दे० 'परिणाम'।

**परिनिर्णय** पुं० (सं) आखिरी या अन्तिम फैसला। पंचाट। पंचों का फैसला। (अवार्ड)।

**परिन्यास** पुं० (सं) १–काव्य में वह स्थल जहां कोई विशेष स्थल पूरा हो। २–नाटक में प्रधान कथा की मूलभूत घटना की सूचना का संकेत द्वारा किया जाना।

**परिपंच** पुं० (हि) दे० 'प्रपंच'।

**परिपंथ** पुं०(सं) वह जो रस्ता रोके हुए हो।

**परिपंथक** पुं० (सं) शत्रु।

**परिपक्व** वि० (सं) १–खूब पका या पचा हुआ। २–पूर्ण विकसित। प्रौढ़। पुख्ता। ३–अनुभवी। बहुदर्शी। ४–निपुण। प्रवीण। (मेच्योर्ड)।

**परिपक्वता** स्त्री० (सं) परिपक्व होने की क्रिया या भाव। (मेच्योरिटी)।

**परिपण** पुं० (सं) मूलधन। पूंजी। (केपिटल)।

**परिपणग्राही** पुं० (सं) वह जिसके पास बन्धक रखा जाता है। (पॉनी)।

**परिपणधाता** पुं० (सं) चीज बन्धक रखने वाला। (पॉनर)।

**परिपत्र** पुं० (सं) वह पत्र या गश्ती चिट्ठी जो किसी निश्चित बात या सुझाव के लिये सम्बद्ध लोगों के पास भेजी गई हो या घुमाई गई हो। (सरक्यूलर)।

**परिपाक** पुं० (सं) १–अच्छी प्रकार पकाने का भाव या क्रिया। २–पाचन-शक्ति। ३–परिपूर्णता। ४–फल परिणाम। ५–चातुर्य। निपुणता। दक्षता।

**परिपाक-तिथि** स्त्री० (सं) किसी बीमा पॉलिसी या हुंडी में निर्धारित अवधि समाप्त होने की तिथि। (डेट ऑफ मेच्योरिटी)।

**परिपाटी** स्त्री० (सं) १–क्रम। सिलसिला। २–रीति। प्रणाली। शैली। ढंग। ३–पद्धति। नियम।

**परिपार्श्व** पुं० (सं) पार्श्व। बगल।

**परिपार** पुं० (हि) मर्यादा।

**परिपालन** पुं० (सं) १–रक्षा करना। बचाना। २–रक्षा। बचाव। ३–पालन पोषण करना। ४–कार्यान्वित करना। ५–प्रबन्ध करना। (इम्प्लीमेंटेशन)।

**परिपालनीय** वि० (सं) १–रक्षा के योग्य। २–प्रतिबन्धनीय। (इम्प्लीमेंटेबल)।

**परिपिष्टक** पुं० (सं) सीसा।

**परिपीड़न** पुं०(सं) १–अत्यन्त पीड़ा पहुंचाना या देना। २–दबाना। ३–अनिष्ट करना।

**परिपीड़ित** वि० (सं) अति पीड़ित।

**परिपुष्ट** वि० (सं) जिसका अच्छी तरह पोषण हुआ हो। २–खूब हृष्टपुष्ट।

**परिपूजित** वि० (सं) भलीभांति या तरह से पूजित।

**परिपूत** वि० (सं) अति पवित्र। पुं० (सं) भूसी से अलगाया हुआ अन्न।

**परिपूरक** पुं० (सं) १–परिपूर्ण कर देने वाला। २–समृद्धिकर्ता। ३–सम्पूर्ण।

**परिपूर्ण** वि० (सं) १–भलीभांति भरा हुआ। २–पूर्ण तृप्त। ३–समाप्त किया हुआ।

**परिपृच्छक** पुं० (सं) पूछने वाला। जिज्ञासा करने वाला।

**परिपृच्छा** स्त्री० (सं) १–प्रश्न। सवाल। २–किसी बात के लिए पूछताछ करना। परिप्रश्न। (इन्क्वायरी)।

**परिपृच्छा-गृह** पुं० (सं) किसी संस्था या सरकारी कार्यालय का पूछताछ करने का स्थान। (इन्क्वायरी ऑफिस)।

**परिप्रश्न** पुं० (सं) १-प्रश्न। सवाल। २-परिपृच्छा (इन्क्वाइरी)।
**परिप्रश्नक** पुं० (सं) दे० 'परिपृच्छा-गृह'।
**परिप्लव** वि० (सं) १-हिलता हुआ। काँपता हुआ। २-उतरता हुआ। ३-अस्थिर। चंचल। पुं० (सं) १-बूढ़ा। बाढ़। २-नौका। नाव। जहाज। ३-गीला। भीगा।
**परिप्लावित** वि० (सं) दे० 'परिप्लुत'।
**परिप्लुत** वि० (सं) १-डूबा हुआ। २-भीगा हुआ। तर। अभिभूत।
**परिप्लुता** स्त्री० (सं) १-मदिरा। शराब। २-वह योनि जिसमें रजःस्राव के समय पीड़ा हो।
**परिप्लुष्ट** वि० (सं) जला हुआ। झुलसा हुआ।
**परिबृंहण** पुं० (सं) १-समृद्धि। सम्पन्नता। २-किसी ग्रन्थ के अंगस्वरूप अन्य ग्रन्थ। पूरक ग्रंथ।
**परिबोध** पुं० (सं) ज्ञान।
**परिबोधन** पुं० (सं) १-दण्ड की धमकी देकर कोई विशेष कार्य करने से रोकना। २-चेतावनी।
**परिभंग** पुं० (सं) टुकड़े-टुकड़े होकर टूटना।
**परिभक्ष** वि० (सं) दूसरों का माल खाने वाला।
**परिभव** पुं० (सं) अनादर। तिरस्कार। हतक।
**परिभवन** पुं० (सं) तिरस्कार या अनादर करने वाला
**परिभावना** स्त्री० (सं) १-चिन्ता। सोच। २-साहित्य में वह पद जिससे अधिक उत्सुकता उत्पन्न होती है।
**परिभाव्य धन** पुं० (सं) जमानत आदि के रूप में रखा हुआ धन। (कौशन मनी)।
**परिभाषा** स्त्री० (सं) १-किसी शब्द या पद का अर्थ या भाव प्रकट करने वाला स्पष्ट कथन। व्याख्या। (डेफिनेशन)। २-वह शब्द जो शास्त्र तथा विज्ञान में किसी एक कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो। (टेक्निकल टर्म)। ३-किसी वाक्य या शब्द की व्याख्या या स्पष्टीकरण। ४-निंदा। परिवाद। बदनामी। ५-स्पष्ट कथन।
**परिभाषित** वि० (सं) जिसकी परिभाषा या व्याख्या की गई हो। (डिफाइन्ड)।
**परिभूत** वि० (सं) १-पराजित। हराया हुआ। २-अपमानित।
**परिभूति** स्त्री० (सं) १-निरादर। अपमान। २-अवज्ञा।
**परिभेद** पुं० (सं) तलवार, तीर आदि का घाव।
**परिभोग** पुं० (सं) १-भोग। उपभोग। २-मैथुन। स्त्री-प्रसंग। ३-अनाधिकार किसी वस्तु को काम में लाना।
**परिभ्रंश** पुं० (सं) १-छुटकारा। २-गिराव। पतन। स्खलन। च्युति।
**परिभ्रमण** पुं० (सं) १-पर्यटन। भ्रमण। २-घूमना। (पहिये आदि का) चक्कर खाना। (रोटेशन)। ३-घेरा। व्यास। परिधि।
**परिभ्रष्ट** वि०(सं) १-गिरा हुआ। २-पतित। निकाला हुआ। ३-अधःपतित।
**परिभ्रामण** पुं०(सं) चक्कर देना। इधर उधर घुमाना
**परिमन्यु** वि० (सं) क्रोध से भरा हुआ।
**परिमर्द** पुं० (सं) १-रगड़ना। पीसना। २-कुचलना ३-नाश। ४-दबाना।
**परिमर्ष** पुं० (सं) १-डाह। ईर्ष्या। २-रोष। क्रोध।
**परिमल** पुं० (सं) १-सुवास। सुगन्ध। २-सुगन्धित वस्तु। ३-सहवास। मैथुन। ४-पंडितों का समुदाय।
**परिमाण** पुं० (सं) १-वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २-नाप या तौल। मात्रा। (क्वान्टिटी)।
**परिमान** पुं० (तद) दे० 'परिमाण'।
**परिमाप** पुं० (सं) १-नापने की क्रिया या भाव। २-वह पदार्थ जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय। मानदण्ड।
**परिमार्ग** पुं० (सं) १-तलाश। खोज। अनुसंधान। २-स्पर्श। संसर्ग।
**परिमार्जक** पुं० (सं) धोने या मांजने वाला।
**परिमार्जन** पुं० (सं) १-धोने या मांजने का काम। २-दोष या त्रुटियाँ काटके ठीक करना।
**परिमार्जित** वि०(सं) धोया हुआ। साफ किया हुआ। परिष्कृत।
**परिमित** वि० (सं) १-न अधिक न कम। २-जिसकी सीमा, संख्या या विस्तार निश्चित हो। सीमित। (लिमिटेड)। ३-नपा तुला हुआ। ४-उचित मात्रा या परिमाण में। ४-थोड़ा। कम। अव्य० (सं) पर्यंत।
**परिमिताहार** वि० (सं) कम भोजन करने वाला। अल्पाहारी।
**परिमिति** स्त्री० (सं) १-नाप तौल। मात्रा। २-ऋजुभुज (परिमीटर)। ३-क्षेत्र की भुजाओं का लम्बाई का योग या जोड़। (रेक्टीलीनियल)। ४-मान। मर्यादा। ५-सीमित होने का भाव। (लिमिटेशन)
**परिमेय** वि० (सं) १-नापने तौलने योग्य। २-जिसे नापना या तौलना हो।
**परिमोष** पुं० (सं) चोरी। डाकाजनी। लूट।
**परिमोषक** पुं० (सं) चोर।
**परिमोहन** पुं० (सं) १-किसी को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेना। २-परिलोभन। (एंटाइसमेंट)।
**परियंक** पुं० (हि) दे० 'पर्यंक'।
**परियंत** अव्य० (हि) दे० 'पर्यंत'।
**परियस्त** वि० (सं) चारों ओर से घिरा हुआ।
**परियात्र** पुं० (सं) दक्षिण भारत की एक प्राचीन

जाति जो अछूत समझी जाती है।

**परियारण** पुं० (सं) घुमाई-फिराई। पर्यटन।

**परियान** पुं० (सं) अपने देश को छोड़कर किसी दूसरे देश में बस जाना। (एमीग्रेशन)।

**परियुद्धक** पुं० (सं) वह राष्ट्र जो युद्ध में किसी एक पक्ष की ओर से लड़ रहा हो। (बेलीग्रेन्ट)।

**परियोजना** स्त्री० (सं) सोच विचार कर आगे की स्थिति का अनुमान लगाकर बनाई गई योजना या परिकल्पना। (प्रोजेक्ट)।

**परिरंभ** पुं० (सं) आलिंगन करना। गले मिलना।

**परिरंभना** क्रि० (हि) आलिंगन करना।

**परिरक्षक** पुं० (सं) १-अभिभावक। रक्षा करने वाला। २-किसी संग्रहालय की देख-रेख करने वाला अधिकारी। (क्यूरेटर)। ३-सेना का अग्रदल जो चारों ओर आगे बढ़ कर रक्षा करने का काम करता है। (पेट्रोल)।

**परिरक्षण** पुं० (सं) १-सब तरह से रक्षा करना। २-अच्छी तरह संभाल कर रखना। (प्रिज़र्वेशन)।

**परिरक्षा** स्त्री० (सं) परिरक्षण। छुटकारा। निस्तार।

**परिरक्षित** वि० (सं) पूर्ण रूप से रक्षित।

**परिरक्षी** पुं० (सं) १-रक्षा या बचाव करने वाला। २-चारों ओर घूम-घूमकर रक्षा करने वाला। (पेट्रोल)।

**परिरूप** पुं० (सं) १-किसी होने वाले कार्य के संबन्ध में पहले से की जाने वाली कल्पना या रूपरेखा। २-कपड़े पर बेलबूटे आदि काढ़ने का नया ढंग। ३-किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक सुन्दर ढंग। (डिज़ाइन)।

**परिरूपक** पुं० (सं) वह जो किसी वस्तु का परिरूप बनाता हो। (डिज़ाइनर)।

**परिरोध** पुं० (सं) १-रुकावट। अवरोध। २-कैद।

**परिलंघन** पुं० (सं) कूद। छलांग। (जाइअेशन)

**परिलघु** वि० (सं) १-अत्यन्त छोटा। बहुत हल्का। २-पचने में सुलभ।

**परिलब्धि** पुं० (सं) १-अधिक लाभ। २-वेतन के अतिरिक्त दिया गया भत्ता। (परक्विज़िट)।

**परिलाभ** पुं० (सं) किसी पद पर काम करने के कारण वेतन या पुरस्कार आदि के रूप में मिलने वाला लाभ। (इमॉल्यूमेंट)।

**परिलेख** पुं० (सं) १-चित्र का खाका या ढांचा। रेखा चित्र। २-चित्र। तसवीर। ३-चित्र बनाने की कूंची। ४-उल्लेख। वर्णन। ५-बड़े अधिकारियों के पास भेजा जाने वाला विवरण। (रिटर्न)।

**परिलेखना** क्रि० (हि) समझना। मानना। खयाल करना।

**परिलोभन** पुं० (सं) १-ललचाना। बहकाना। २-झूठी आशा उत्पन्न करके बहकाना। (एंटाइसमेंट)

**परिवर्जन** पुं० (सं) १-छोड़ना। त्याग करना। २-रोकना। ३-हत्या करना।

**परिवर्जित** वि० (सं) त्यागा हुआ। परित्यक्त।

**परिवर्तक** पुं० (सं) १-घूमने वाला। फिरने वाला। २-बदलने वाला। ३-परिवर्तन योग्य। युग का अन्त करने वाला।

**परिवर्तन** पुं० (सं) १-घुमाव। फेर। २-अदला-बदली। विनिमय। ३-रूपांतर। तबदीली।

**परिवर्तनीय** वि०(सं) बदले जाने योग्य।

**परिवर्तित** वि० (सं) १-बदला हुआ। रूपांतरित। २-जो बदले में मिला हुआ हो।

**परिवर्ती** वि० (सं) १-परिवर्तनशील। २-घूमने वाला। ३-किसी वस्तु को बदलने वाला।

**परिवर्त्य** वि० (सं) जिसे अन्य रूप में परिवर्तित किया जा सके। (कॉनवर्टीबल)।

**परिवर्धन** पुं० (सं) संख्या, गुण,तथ्य आदि में विशेष वृद्धि। परिवृद्धि। (एडीशन)। २-आकार आदि में वृद्धि। (एन्लॉर्जमेंट)।

**परिवर्धित** वि० (सं) १-जिसमें वृद्धि हुई हो। २-जिसमें कुछ और जोड़ दिया गया हो।

**परिवहन** पुं० (सं) १-किसी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर उठाकर ले जाना। (कैरिज)। २-कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे पर ले जाना। (ट्रांसपोर्ट) ३-समुद्री या हवाई जहाज चलाना। (नेवीगेशन)

**परिवहन-बाधा** स्त्री० (सं) रेल के डिब्बों इत्यादि की कमी के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान माल ले जाने में पड़ने वाली बाधा। (बॉटलनेक)।

**परिवहन-व्यवस्थापक** पुं० (सं) रेल यातायात की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (ट्रैफिक-मैनेजर)

**परिवा** स्त्री० (हि) पक्ष की पहली तिथि।

**परिवाद** पुं० (सं) १-निंदा। अपवाद। शिकायत। (कम्पलेंट)। २-लोहे के तारों का छल्ला जिससे वीणा बजाई जाती है।

**परिवादक** पुं० (सं) १-परिवाद करने वाला। मुद्दई। २-वीणा बजाने वाला। वि० (सं) १-निंदक। २-शिकायत करने वाला।

**परिवादिनी** स्त्री० (सं) १-सात तार वाली वीणा। २-निंदा करने वाली।

**परिवादी** वि० (सं) निंदा करने वाला।

**परिवाप** पुं० (सं) १-मंडल। २-बुआई। ३-जलाशय ४-सामान। ५-अनुचर वर्ग।

**परिवार** पुं० (सं) १-आवरण। २-म्यान। ३-किसी राजा या रईस को साथ लेकर चलने वाले लोग। परिषद्। ४-घर के लोग। कुटुम्ब। ५-वंश। कुल। जाति। बालबच्चे।

**परिवारी** पुं० (सं) परिवार में रहने वाला। कुटुम्बी

**परिवास** पुं० (सं) १-ठहरना। टिकाव। २-घर।

गृह। ३–मुलम्ब।
**परिवासन** पुं० (स) खंड। टुकड़ा।
**परिवाह** पुं० (सं) १–ऐसा जल प्रवाह जिसके कारण पानी–नदी, तालाब आदि में बांध के ऊपर बहने लगे। २–नहर। जलमार्ग। (ऐस्केप-फॉर-सरप्लस-वाटर)।
**परिवृत्त** वि० (सं) ढका या छिपाया हुआ। आवृत। पुं०(सं) दे० 'परिगतवृत्त'। (सरकम्स्क्राइब्ड सर्कल)
**परिवृत्ति** स्त्री० (सं) १–घुमाव। चक्कर। घेरा। विनिमय। ३–किसी के किये काम को देख कर उसे दोहराना। ४–बदलना। (कनवर्शन)। पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु देकर दूसरी के लेने का कथन होता है।
**परिवृद्धि** स्त्री० (सं) सब प्रकार से वृद्धि। उपज। बढ़ती।
**परिवेदन** पुं० (सं) १–बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह होना। २–पूर्ण ज्ञान। ३–लाभ। ४–विद्यमानता। ५–वादविवाद। बहस। ६–विचरण।
**परिवेश** पुं० (सं) १–घेरा। परिधि। २–परोसना या परसना। ३–सूर्य या चांद का घेरा। ४–परकोटा कोट। किले की दीवार।
**परिवेष** पुं०(सं) दे० 'परिवेश'।
**परिवेष्टन** पुं० (सं) १–चारों ओर से घेरना। २–छिपाने या लपेटने की वस्तु। ३–परिधि। घेरा।
**परिवेष्टा** पुं० (सं) परसने वाला।
**परिव्यक्त** वि० (सं) अत्यधिक स्पष्ट।
**परिव्यय** पुं० (सं) १–किसी वस्तु को तैयार करने या बनाने में लगने वाला व्यय। (कॉस्ट)। २–मूल्य। शुल्क। पारिश्रमिक। ३–भाड़े आदि के रूप में लिया जाने वाला व्यय। (चार्ज)।
**परिव्ययनीय** वि० (सं) जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया जा सके। (चार्जेबल)।
**परिव्रज्या** स्त्री० (सं) १–जगह-जगह घूमना। भ्रमण २–तपस्या। ३–भिक्षुक की तरह जीवन बिताना।
**परिव्राज** पुं० (सं) १–भ्रमण करने वाला सन्यासी। २–यती। परमहंस।
**परिव्राजक** पुं० (सं) दे० 'परिव्राज'।
**परिशयन** पुं० (सं) कुछ जीव जन्तुओं या पशुओं की वह निष्क्रिय अवस्था जिसमें जाड़े के दिनों में वे बिना कुछ खाये पीये एक स्थान पर चुपचाप पड़े रहते हैं। (हाइबरनेशन)।
**परिशिष्ट** वि० (सं) छूटा हुआ। बचा हुआ। पुं० (सं) १–किसी पुस्तक या लेख का वह अन्तिम भाग जिसमें उपयोगी बातें रहती है जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों (एपेन्डिक्स)। अनुसूची (शेड्यूल)।
**परिशीलन** पुं०(सं) १–मननपूर्वक किया जाने वाला अध्ययन। २–स्पर्श करना या छू जाना।
**परिशुद्ध** वि० (सं) १–अच्छी तरह से साफ किया हुआ। २–बिलकुल ठीक। (एक्यूरेट)।
**परिशुद्धता** स्त्री० (सं) यथार्थ। बिलकुल ठीक। (एक्यूरेसी)।
**परिशुद्धि** स्त्री० (सं) १–पूर्ण रूप से शुद्ध। २–छुटकारा। रिहाई।
**परिशुष्क** वि० (स) १–अच्छी प्रकार से सूखा हुआ। २–कुम्हलाया हुआ। रसहीन। पुं० (सं) एक प्रकार का तला हुआ मांस।
**परिशोध** पुं० (सं) १–पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई। २–ऋण की बे-बाकी। चुकता।
**परिशोधन** पुं० (सं) १–पूर्णतया साफ या शुद्ध करना। २–ऋण चुकाना। (रिपेमेन्ट)। ३–भुगतान करना (डिसचार्ज)। ३–संशोधन।
**परिशोष** पुं० (सं) पूर्णतया सुखाने या भूनने की क्रिया।
**परिश्रम** पुं० (सं) ऐसा काम जिसके करने से थकावट आ जाय। श्रम। मेहनत। आयास (लेबर)। २–थकावट।
**परिश्रमी** वि० (सं) मेहनती। उद्यमी। बहुत परिश्रम करने वाला।
**परिश्रय** पुं० (सं) १–सभा। परिषद्। २–रक्षा-स्थान
**परिश्रांत** वि० (सं) बहुत थका हुआ।
**परिश्रांति** पुं० (सं) थकावट। क्लान्ति।
**परिश्रुत** वि० (सं) जिसके विषय में काफी सुना जा चुका हो। प्रख्यात। प्रसिद्ध।
**परिश्लेष** पुं० (सं) गले मिलना। आलिंगन।
**परिषद्** स्त्री० (सं) १–प्राचीन काल के ब्राह्मणों की सभा जिसे राजा समय-समय पर किसी विशेष विषय पर सलाह के लिये बुलाता था। २–सभा। ३–निर्वाचित या नियुक्त सदस्यों की सभा। (कांउन्सिल)।
**परिषद** पुं० (सं) १–दे० 'परिषद्'। २–सदस्य। सभासद्।
**परिषेक** पुं० (सं) १–सिंचाई। छिड़काव। २–नम या तर करना। ३–स्नान।
**परिष्करण** पुं० (सं) १–स्वच्छ या शुद्ध करना। २–त्रुटियां या दोष निकाल कर ठीक करना। संशोधन (मॉडिफिकेशन)।
**परिष्कार** पुं० (सं) १–संस्कार। शुद्धि। स्वच्छता। २–आभूषण। गहना। ३–श्रृंगार। ४–शोभा। ५–संयम (बौद्ध दर्शन)। ६–घर का उपयोगी सामान
**परिष्कारक** पुं० (सं) पालिश करने वाला। (पॉलिशर)।
**परिष्कृत** वि० (सं) १–साफ किया हुआ। २–धोया

या मांजा हुआ । ३-संस्कारों से शुद्ध किया हुआ । ४-सजाया हुआ । शृङ्गारित ।

**परिष्क्रिया** स्त्री० (सं) १-शोधन । शुद्ध करना । २-सजावट । शृङ्गार ।

**परिष्यंद** पुं० (सं) १-जल की धारा । प्रवाह । २-नदी । ३-द्वीप । टापू ।

**परिसंख्या** स्त्री० (सं) १-गणना । गिनती । २-एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात के व्यंग को हटाने के लिये कही जाती है और वह बात प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है ।

**परिसंख्यात** वि० (सं) १-गिना हुआ । गणना किया हुआ । २-[illegible] में बताया हुआ ।

**परिसंख्यान** पुं० (सं) गणना । २-ठीक अनुमान । ३-आनुसूची । ([illegible]) ।

**परिसंघ** वि० (सं) राष्ट्रों, राज्यों आदि का ऐसा संघठन जो एक दूसरे की सहायता के लिये कुछ विशिष्ट कार्यों के लिये होता है । (कॉनफिडरेशन) ।

**परिसंपद्** स्त्री० (सं) १-भू-संपत्ति और धन-दौलत । (एस्टेट) । २-वह संपत्ति या धन जिससे कोई ऋण चुकाया जा सके । (असेट्स) ।

**परिसम्म** पुं० (हि) समासद । सदस्य ।

**परिसमंत** पुं० (सं) किसी वृत्त की चारों ओर की सीमा ।

**परिसमापक** पुं० (सं) किसी व्यापारी या व्यापारिक संस्था का लेनदेन चलाकर उसका कारबार समाप्त करने वाला अधिकारी । (लिक्विडेटर) ।

**परिसमापन** पुं० (सं) किसी व्यापारिक संस्था या व्यापारी का लेन-देन समाप्त कर उसे अदा कर देने का कार्य । ([illegible]) ।

**परिसमाप्ति** [illegible] । समाप्ति । २-किसी चलते हुए [illegible] । ([illegible]) ।

**परिसर** पुं० (सं) [illegible] आसपास की भूमि । किसी [illegible] मैदान । २-नाड़ी या शिरा [illegible] । वि० (सं) मिला, [illegible] या जुड़ा हुआ ।

**परिसरण** पुं० (सं) १-[illegible] । इधर उधर घूमना या टहलना । २-हार । [illegible] ।

**परिसहायक** पुं० (सं) [illegible] वह अपराधी जो [illegible] । ([illegible]) ।

**परिसीमन** पुं० (सं) किसी प्रदेश, स्थान आदि की सीमा निर्धारित करना । हद बांधना । (डिलिमिटेशन) ।

**परिसीमा** स्त्री० (सं) १-चारों ओर की सीमा या हद । २-सीमा ठहराना या निश्चित करना । ३-किसी मामले की चरम सीमा या हद । (एक्स्ट्रीम) ।

**परिस्तरण** पुं० (सं) १-चारों ओर फैलाना । २-आवरण । आच्छादन ।

**परिस्तान** पुं० (फा) १-परियों का देश या स्थान । २-सुसज्जित सुन्दर नवयुवतियों का समूह ।

**परिस्थिति** स्त्री० (सं) किसी घटना आदि की आस-पास की वास्तविक अवस्था । (सरकमस्टेंसेस) ।

**परिस्पर्द्धा** स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिस्पर्द्धा' ।

**परिस्फुट** वि० (सं) १-बिलकुल साफ । स्पष्टगोचर । २-सुविकसित । खिला हुआ ।

**परिस्फुरण** पुं० (सं) १-कंप । थरथराहट । [illegible]

**परिस्यंद** पुं० (सं) १-टपकना । चूना । रिसना । २-प्रवाह । धारा ।

**परिस्राव** पुं० (सं) १-प्रवाह । बहाव । २-एक प्रकार का रोग जिसमें मल के साथ पित्त और कफ निकलता है ।

**परिस्रावण** पुं० (सं) वह पात्र जिसमें से पानी छानकर साफ करते हैं ।

**परिस्रावी** वि० (सं) चूने वाला । टपकने या रिसने वाला । पुं० (सं) एक प्रकार का भगंदर रोग ।

**परिस्रुत** वि० (सं) जिसमें कुछ टपक गया हो । स्त्री० (सं) मदिरा ।

**परिहँस** पुं० (हि) डाह । ईर्ष्या । [illegible]

**परिहरण** पुं० (सं) १-बलपूर्वक लेना । २-[illegible] । ३-निवारण ।

**परिहरणीय** वि० (सं) १-बलपूर्वक छीन [illegible] । २-[illegible] योग्य । ३-उपचार करने योग्य ।

**परिहरना** क्रि० (हि) त्यागना । छोड़ना ।

**परिहस** पुं० (हि) १-दे० 'परिहास' । २-[illegible] ।

**परिहस्त** पुं० (सं) हाथ का [illegible] ।

**परिहार** क्रि० (हि) प्रहार करना ।

**परिहार** पुं० (सं) १-[illegible] । छोड़ना । ([illegible]) । २-दोष आदि का निवारण । ३-अकाल या [illegible] होने के कारण लगान में दी जाने वाली [illegible] में दी गई छूट । (रेमीशन) । ६-लड़ाई में जीता हुआ धन (लूट) । ७-खंडन । ८-[illegible] । ९-[illegible] के अन्तर्गत माना जाने वाला एक राजवंश का नाम ।

**परिहारना** क्रि० (हि) १-त्यागना । छोड़ना । २-दूर करना । हटाना ।

**परिहार्य** वि० (सं) जिसका परिहार किया जा सके । त्याज्य । जिससे बचा जा सके ।

**परिहास** पुं० (सं) १-हँसी । मजाक । दिल्लगी । २-खेल । क्रीड़ा ।

**परी** स्त्री० (फा) १-प्राचीन फारसी कथाओं की वह कल्पित सुन्दर स्त्रियाँ जिनके कंधे पर पर लगे होते थे । २-परम सुन्दरी स्त्री ।

**परीक्षक** पुं० (सं) इम्तिहान लेने या करने वाला ।

(एक्जामिनर)।

**परीक्षण** पुं० (सं) १-जांच या परखने की किया। २-राजा के मन्त्री, चर आदि के दोषों की जांच करना। (ट्रायल)।

**परीक्षण-काल** पुं० (सं) किसी कर्मचारी को अस्थाई रूप में यह देखने के लिये रखने का समय कि वह काम के योग्य है या नहीं। (प्रोबेशन)।

**परीक्षण-नलिका** स्त्री० (हि) परीक्षण के काम आने वाली कांच की नलिका। (टेस्ट ट्यूब)।

**परीक्षणक** वि० (सं) १-परीक्षण-विषयक। २-परीक्षा का। ३-अस्थाई रूप से परीक्षण के लिये रखा गया (कर्मचारी)। (प्रोबेशनरी)।

**परीक्षना** क्रि० (हि) परीक्षा लेना।

**परीक्षा** स्त्री०(सं)१-किसी की योग्यता, गुण, सामर्थ्य आदि जानने के लिये भलीभांति जांचने या परखने की क्रिया। इम्तिहान। (एक्जामिनेशन)। २-किसी वस्तु के दोष या गुणों की जानकारी के लिये किया गया प्रयोग। (एक्सपेरीमेंट)। ३-वह प्रयोग जिसमें प्राचीन न्यायालयों में अभियुक्त या साक्षी के झूठे या सच्चे होने का पता लगाया जाता था। निरीक्षण मुआयना। जांच-पड़ताल।

**परीक्षा-काल** पुं० (सं) परीक्षा का समय।

**परीक्षा-भवन** पुं० (सं) वह कमरा या भवन जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा देते समय बैठते हैं। (एक्जामिनेशन हॉल)।

**परीक्षार्थी** पुं०(सं) परीक्षा देने वाला। (एक्जामिनी)

**परीक्षालय** पुं० (सं) दे० 'परीक्षा-भवन'।

**परीक्षा-शुल्क** पुं० (सं) परीक्षा के लिये लिया जाने वाला द्रव्य या फीस। (एग्ज़ामिनेशन-फी)।

**परीक्षित** वि० (सं) जिसकी जांच या परीक्षा हो चुकी हो। पुं० (सं) १-अर्जुन के पौत्र तथा अभिमन्यु के पुत्र का नाम। २-वह आदमी जो परीक्षा में बैठा हो। (एक्जामिनी)।

**परीक्ष्यमाण** वि० (सं) (कर्मचारी) जिसकी नियुक्ति अभी पक्की न हो और वह परीक्षण काल में हो। (प्रोबेशनर)।

**परीखना** क्रि० (हि) परखना। जांचना। परीक्षा लेना।

**परीखाना** पुं० (फा) परियों या हसीनों के रहने का स्थान।

**परीच्छत** वि० (हि) दे० 'परीक्षित'। अव्य० (हि) अवश्य ही।

**परीछत** पुं० (हि) दे० 'परीक्षित'।

**परीछना** क्रि० (हि) परीक्षा लेना।

**परीछा** स्त्री० (हि) दे० 'परीक्षा'।

**परीछित** वि० (हि) दे० 'परीक्षित'।

**परीजाद** वि० (फा) बहुत सुन्दर। अत्यन्त रूपवान।

**परीत** पुं० (सं) दे० 'प्रेत'।

**परीरंभ** पुं० (सं) दे० 'परिरंभ'।

**परीर** पुं० (सं) फल।

**परीशान** वि० (फा) हैरान। परेशान।

**परीसना** क्रि० (हि) स्पर्श करना। छूना।

**परीसार** पुं० (हि) इधर उधर घूमना।

**परीहार** पुं० (सं) अनादर। अवज्ञा।

**परीहास** पुं० (सं) दे० 'परिहास'।

**परु** पुं० (सं) १-गांठ। जोड़। २-अंग। ३-समुद्र। ४-स्वर्ग। ५-पर्वत। अव्य०(हि) अगला या पिछला साल।

**परुई** स्त्री० (देश०) भड़भूजे का अन्न भूनने का पात्र

**परुख** वि० (हि) दे० 'परुष'।

**परुखाई** स्त्री० (हि) कठोरता। कड़ाई।

**परुद्वार** पुं० (सं) घोड़ा।

**परुष** वि० (सं) १-कठोर। कर्कश। २-अप्रिय। ३-निष्ठुर। ४-उग्र। ५-आलसी। ६-मैला-कुचैला। पुं० (सं) १-फालसा। २-तीर। ३-सरकंडा।

**परुषता** स्त्री० (सं) १-कर्कशता। कठोरता। २-निर्दयता।

**परुषत्व** पुं० (सं) परुषता।

**परुषवचन** पुं० (सं) कुवाच्य या सख्त कलामी।

**परुषाक्षर** पुं० (सं) कर्कश वचन। बुरी लगने वाली बात।

**परुषावृत्ति** स्त्री० (सं) काव्य की तीन वृत्तियों में से एक जिसमें ट, ठ, ड आदि कठोर वर्णों की योजना होती है।

**परुषोक्ति** स्त्री० (सं) निष्ठुर वचन। कुवाच्य। कठोर वचन।

**परूसना** क्रि० (हि) दे० 'परसना'।

**परे** अव्य० (हि) १-दूर। उधर। उस तरफ। २-अतीत बाहर। अलग। ३-ऊपर। ऊँचे। ४-बाद। पीछे।

**परेई** स्त्री० (हि) १-फाखता। २-मादा कबूतर।

**परेखना** क्रि०(हि) १-जांचना। परखना। २-प्रतीक्षा करना।

**परेखा** पुं० (हि) १-जांच। परीक्षा। २-विश्वास। ३-पछतावा। खेद।

**परेग** स्त्री० (हि) छोटी कील।

**परेत** वि० (हि) मृत। मरा हुआ। पुं० (हि) दे० 'प्रेत'।

**परेतभर्ता** पुं० (हि) यमराज।

**परेतभूमि** स्त्री० (हि) श्मशान।

**परेता** पुं० (हि) १-सूत लपेटने का जुलाहों का एक औजार। २-वह बेलन या चर्खी जिस पर पतंग की डोर लपेटी जाती है।

**परेर** पुं०(हि) आकाश। आसमान।

**परेवा** पुं० (हि) १-फाखता। २-कबूतर। ३-पत्र-वाहक। (तेज चलने वाला)।

**परेश** पुं० (सं) ईश्वर । ब्रह्मा ।
**परेशान** वि० (फा) १-उद्विग्न । २-हैरान । व्याकुल ।
**परेशानी** स्त्री० (फा) १-उद्विग्नता । २-हैरानी । व्याकुलता ।
**परेषक** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो कोई सामान रेल आदि से किसी दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्ति के पास भेजे । (कॉनसाइनर) ।
**परेषणी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसके पास रेल द्वारा कोई माल या सामान भेजा गया हो । (कॉनसाइनी)
**परेषित** वि० (सं) (वह सामान) जो रेल द्वारा किसी व्यक्ति के पास दूसरे स्थान पर भेजा गया हो । (कॉनसाइन्ड) ।
**परेस** पुं० (हिं) दे० 'परेश' ।
**परों** अव्य० (हिं) परसों ।
**परोक्षबोध** पुं० (सं) न्यायालय में ऊटपटांग बक देने का अपराध ।
**परोक्ष** वि० (सं) १-दृष्टि से बाहर । अनुपस्थित । २-गुप्त । अनजान । ३-अप्रत्यक्ष । (इनडायरेक्ट) । पुं० (सं) १-परम ज्ञानी । २-अभाव । अनुपस्थिति
**परोक्ष-कर** पुं० (सं) स्वयं प्रत्यक्ष रूप में न देकर उपभोक्ता द्वारा दिया जाने वाला कर । (इनडाइरेक्ट टैक्स) ।
**परोक्ष-निर्वाचन** पुं० (सं) निर्वाचन-मंडलों या नगरपालिकाओं आदि द्वारा किया जाने वाला निर्वाचन जिसमें जनता का सीधा मतदान नहीं होता । (इनडाइरेक्ट-इलेक्शन) ।
**परोक्ष-भोग** पुं० (सं) वस्तु के स्वामी की अनुपस्थिति में उसकी वस्तु का उपभोग ।
**परोक्ष-मतदान** पुं० (सं) मतदाता की अनुपस्थिति में किसी और के द्वारा उसके मत का डाला जाना । (एब्सेंट-वोटिंग) ।
**परोक्ष-लाभवृत्ति** स्त्री० (सं) क्रियाक्षेत्र से दूर रह कर आय प्राप्त करने की पद्धति ।
**परोक्ष-वृत्ति** वि०(सं) अज्ञातवास करने वाला । स्त्री० (सं) अज्ञात जीवन ।
**परोजन** पुं० (हिं) गृहस्थी से संबन्धित कोई ऐसा कार्य जिसमें परिजनों की उपस्थिति आवश्यक हो
**परोना** क्रि० (हिं) दे० 'पिरोना' ।
**परोपकारक** पुं० (सं) वह कार्य जिससे दूसरे की भलाई हो ।
**परोपकार** पुं० (सं) दूसरों की भलाई करने वाला ।
**परोपकारी** पुं०(सं) दे० 'परोपकारक' ।
**परोपजीवी** वि० (सं) दूसरों पर आश्रित रह कर जीवित रहने वाला । पुं० (सं) वह छोटे कीड़े या जन्तु जो किसी अन्य पेड़ या शरीर के रक्त या रस को चूसकर जीवित रहते हैं । (पैरेसाइट) ।
**परोपदेश** पुं० (सं) दूसरों को उपदेश देना ।
**परोरा** पुं० (हिं) परवल ।
**परोस** पुं० (हिं) पड़ोस ।
**परोसना** क्रि० (हिं) थाली या पत्तल में खाने के लिये भोजन रखना ।
**परोसा** पुं० (हिं) थाली या पत्तल में लगा हुआ एक आदमी के खाने भर भोजन ।
**परोसी** पुं० (हिं) दे० 'पड़ोसी' ।
**परोहन** पुं०(हिं) जिस पर चढ़ कर यात्रा की जाय या उस पर कोई चीज लादी जाय । पशु ।
**परौं** अव्य० (हिं) दे० 'परसों' ।
**परौठा** पुं० (हिं) दे० 'परांठा' ।
**पर्कट** स्त्री० (दे०) एक प्रकार का बगला ।
**पर्चा** पुं० (हिं) दे० 'परचा' ।
**पर्चाना** क्रि० (हिं) दे० 'परचाना' ।
**पर्जंक** पुं० (हिं) दे० 'पर्यंक' ।
**पर्जन्य** पुं० (सं) १-मेघ । बादल । जो गर्जन करे । २-इन्द्र । विष्णु ।
**पर्ण** पुं० (सं) १-पत्ता । पान । बाण में लगे पंख । २-डैना । बाजू । ३-पलाश का पेड़ । ४-पुस्तक का पन्ना । ५-किसी विशेष विषय का पत्रव्यवहार रखने के लिये बनाई गई परत । (फाइल) ।
**पर्णक** पुं० (सं) कागज का छपा हुआ टुकड़ा जो प्रायः मुफ्त बांटा जाता है । (लीफलेट) ।
**पर्णकार** पुं० (सं) तमोली । पनवाड़ी । पान बेचने वाला ।
**पर्णकुटिका, पर्णकुटी** स्त्री० (सं) वह झोंपड़ी जो पत्तों से बनाई गई हो ।
**पर्णभोजनी** स्त्री० (सं) बकरी ।
**पर्णशय्या** स्त्री० (सं) पत्तों का बिछौना ।
**पर्णशाला** स्त्री० (सं) पर्णकुटी ।
**पर्णिका** स्त्री० (सं) १-खाद्य पदार्थों या अन्य वस्तुओं के सीमित वितरण की व्यवस्था में वह पुर्जी जिस पर जितनी मात्रा में पदार्थ मिलना उतना ही मिलता है । (कूपन) । २-(धनादेशपत्र) मनी-आर्डर फार्म का निचला भाग जिस पर संदेश लिखा जाता है ।
**पर्द** पुं० (सं) १-केश समूह । घने बाल । २-पाद । अपानवायु ।
**पर्दनी** स्त्री० (हिं) धोती ।
**पर्दा** पुं० (हिं) दे० 'परदा' ।
**पर्पटी** स्त्री० (सं) १-पपड़ी । २-गोपीचन्दन । ३-पानड़ी ।
**पर्परीक** पुं० (सं) १-सूर्य । २-अग्नि । ३-तालाब ।
**पर्ब** पुं० (हिं) दे० 'पर्व' ।
**पर्यंत** पुं० (हिं) दे० 'पर्यंत' ।
**पर्यंक** पुं० (सं) १-पलंग । खाट । २-योगासन विशेष वीरासन । ३-पालथी ।
**पर्यंत** अव्य० (सं) तक । लौं । पुं० (सं) १-परिधि व्यास । २-सीमा । ३-पार्श्व । बगल । ४-अवसान ।

स्वातमा।

पर्यंतभूमि स्त्री० (सं) पड़ोस का नगर, कस्बा या स्थान

पर्यटक पुं० (सं) भ्रमण करने वाला। (टूरिस्ट)।

पर्यटन पुं० (सं) भ्रमण। इधर उधर घूमना।

पर्यवलोकन पुं० (सं) सम्पूर्ण कार्य को सरसरी तौर से आदि से अन्त तक समझने या जांचने का कार्य (सर्वे)।

पर्यवसान पुं० (सं) १-समाप्ति। अन्त। निश्चय। ३-समावेश।

पर्यवेक्षक पुं० (सं) १-देखभाल या निगरानी करने वाला (सुपरवाइजर)। २-किसी बात, काम या व्यवहार आदि को ध्यान से देखने वाला। (ओबजर्वर)।

पर्यवेक्षण पुं० (सं) १-भलीभांति देखना। निरीक्षण (इन्सपेक्शन)। २-किसी कार्य की निगरानी। (सुपरविजन)। ३-किसी विशेष कार्य को ध्यान से देखते रहना। (ओबजर्वेशन)।

पर्यसन पुं० (सं) १-फेंकना। निक्षेप। २-हटाना। दूर करना। स्थगित करना।

पर्यस्तापह्नुति स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु के गुण छिपा करके उस गुण को किसी दूसरे में आरोपित किया जाता है।

पर्याप्त वि० (सं) १-आवश्यकतानुसार। यथेष्ट। काफी २-प्राप्त। ३-समर्थ। ४-परिमित। ५-सशक्त। पुं० (सं) १-तृप्त। संतुष्ट। २-प्रचुरता। ३-शक्ति। ४-सामर्थ्य। ५-योग्यता।

पर्याय पुं० (सं) १-समानार्थक शब्द। २-क्रम। सिलसिला। ३-प्रकार। ढंग। ४-अवसर। ५-निर्माण। ६-एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रित करने का वर्णन हो।

पर्यायवाची वि० (सं) समानार्थक।

पर्यायसेवा स्त्री० (हिं) क्रम से या बारी बारी से सेवा करना।

पर्यायोक्ति स्त्री० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूप से न कह कर घुमाव फिराव से कही गई हो।

पर्यालोचन पुं० (सं) छानबीन या समीक्षण के लिये किसी बात को रखना। वि० (सं) विचार-पूर्वक सावधानी से किया हुआ। (डेलीब्रेट)।

पर्यालोचना पुं० (सं) किस बात या वस्तु की पूरी-पूरी जांच।

पर्यावर्तन पुं० (सं) १-लौटकर आना। २-वापिस आना।

पर्युत्थान पुं० (सं) अच्छी तरह से उठना। खड़ा होना।

पर्युपासक पुं० (सं) सेवक। दास। सेवा करने वाला

पर्युपासन पुं० (सं) १-सेवा। २-पूजा। अर्चन।

पर्युप्ति स्त्री० (सं) बीज बोने का कार्य।

पर्येषण पुं० (सं) १-तर्क द्वारा अनुसन्धान। खोज। २-सम्मान प्रदर्शन। पूजा।

पर्येष्टि स्त्री० (सं) खोज। तलाश।

पर्व पुं० (सं) १-गांठ। ग्रन्थि। जोड़। अंग। २-भाग। विभाग। ३-पुस्तक का भाग। ४-जीना। सीढ़ी। ५-अवधि। ६-पूर्णिमा। अमावस्या। सं-क्रान्ति। ७-चन्द्र या सूर्य ग्रहण। ८-पुण्यकाल। उत्सव। ९-अवसर।

पर्वक पुं० (सं) घुटना।

पर्वण पुं० (सं) पूरा करने का भाव या क्रिया।

पर्वणी स्त्री० (सं) १-पूर्णिमा। २-उत्सव।

पर्वत पुं० (सं) १-पहाड़। २-पहाड़ के सदृश किसी वस्तु का लगा ढेर। ३-सात की संख्या। ४-वृक्ष। ५-एक प्रकार का सन्यासी सम्प्रदाय।

पर्वतजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-नदी।

पर्वतनंदिनी स्त्री० (सं) पार्वती।

पर्वतपति पुं० (सं) हिमालय।

पर्वतमाला स्त्री०(सं) पर्वतों की शृङ्खला। (रैंज)।

पर्वतराज पुं० (सं) हिमालय।

पर्वतस्थ वि० (सं) १-पर्वत पर स्थित। २-पहाड़ी।

पर्वतात्मज पुं० (सं) मैनाक पर्वत का एक नाम।

पर्वतात्मजा स्त्री० (सं) दुर्गा। पार्वती।

पर्वताधारा स्त्री० (सं) पृथ्वी।

पर्वतारि पुं० (सं) इन्द्र।

पर्वताशय पुं० (सं) मेघ। बादल।

पर्वतीय वि० (सं) १-पर्वत संबन्धी। पहाड़ी। २-पहाड़ पर रहने या उत्पन्न होने वाला।

पर्वतेश्वर पुं० (सं) हिमालय। पर्वतराज।

पर्वतोद्भव पुं० (सं) १-पारा। पारद। २-शिंगरफ। हिंगुल। वि० (सं) पर्वत पर उत्पन्न।

पर्वतोद्भूत पुं० (सं) अबरक।

पर्वधि पुं० (सं) चन्द्रमा।

पर्वरिश स्त्री० (फा) पालन-पोषण।

पर्वरुह पुं० (सं) अनार का पेड़।

पर्शनीय वि० (हि) छूने या स्पर्श करने योग्य।

पर्शु पुं० (सं) १-कुल्हाड़ी। २-हथियार। फरसा।

पर्शुका स्त्री० (सं) पसली।

पर्शुपाणि पुं० (सं) गणेश। परशुराम।

पर्ष वि० (सं) कठोर। निष्ठुर।

पर्षद् स्त्री० (सं) दे० 'परिषद्'।

पर्षद्वल पुं० (सं) परिषद् का सदस्य।

पलंका स्त्री० (हि) बहुत दूर का स्थान। पुं० (हि) पलंग।

पलंग पुं० (हि) बड़ी, मजबूत और बुनावट आदि में अच्छी चारपाई। पर्यङ्क।

पलंगड़ी स्त्री० (हि) छोटा पलंग।

**पलंगतोड़** वि० (हि) निठल्ला। सुस्त। आलसी।
**पलंगपोश** पुं० (हि) पलंग पर बिछाने की चादर।
**पल** पुं०(स) १–समय का वह विभाग जो २४ सैकिंड के बराबर होता है। २–चार कर्ष की एक प्राचीन तौल। ३–तराजू। तुला। ४–पयाल। ५–पलक। दृगंचल।
**पलक** स्त्री० (हि) १–आँख के ऊपर का पर्दा। २–पल क्षण। लहमा।
**पलका** पु० (हि) पलंग। खाट।
**पलकी** स्त्री० (हि) छोटी खाट।
**पलगंड** पुं० (सं) मिट्टी का पलास्तर करने वाला। राज। लेपक।
**पलटन** स्त्री० (अ) १–सेना। फौज। २–सैनिकों का दल। (प्लेटून)।
**पलटना** क्रि० (हि) १–किसी वस्तु के ऊपरी भाग का नीचे या नीचे के भाग का ऊपर हो जाना। उलट जाना। २–अवस्था या दशा बदलना। ३–इच्छित दशा को प्राप्त होना। ४–मुड़ना। ५–लौटना। फेरना। वापिस होना।
**पलटनिया** पुं० (हि) सेना में काम करने वाला सिपाही।
**पलटा** पुं० (हि) १–परिवर्तन। २–बदला। प्रतिफल। ३–माँझी के बैठने की नाव में पटड़ा। ४–सङ्गीत में गाते समय ऊँचे स्वर से खूबसूरती से नीचे स्वर में आना। ५–कुश्ती का एक पेच। ६–लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी।
**पलटाना** क्रि० (हि) १–लौटाना। वापिस करना। २–बदलना।
**पलटाव** पुं० (हि) पलटे या उलटे जाने की क्रिया या भाव।
**पलटे** क्रि० वि० (हि) बदले में। प्रतिफल-स्वरूप।
**पलड़ा, पलरा** पुं० (हि) १–तराजू का पल्ला। २–विरोधियों में से कोई पक्ष।
**पलथी** स्त्री० (हि) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ तथा बाएँ पैर का दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठा जाता है।
**पलना** क्रि०(हि) १–पाला पोसा जाना। २–खा-पीकर हृष्टपुष्ट होना। पुं० (हि) दे० 'पालना'।
**पलनाना** क्रि० (हि) घोड़े पर जीन आदि कसकर चलने के लिये तैयार करना।
**पलप्रिय** वि० (सं) मांस खाने वाला। पुं० (सं) १–वन-काक। कौआ। २–राक्षस।
**पलल** वि० (सं) पिलपिला। पुं० (सं) १–तिल और गुड़ के मेल से बनाया हुआ तिलकुट। २–तिल का चूरा। ३–कीचड़। ४–मांस। ५–राक्षस।
**पललज्वर** पुं० (सं) पित्तज्वर।
**पललप्रिय** पुं० (स) १–राक्षस। २–कौआ। वि० (सं) मांसाहारी।
**पलवा** पुं० (हि) १–अंजली। चुल्लू। २–ऊख का नीरस भाग। अगौरा। ३–एक प्रकार की घास।
**पलवाना** क्रि० (हि) किसी के द्वारा पालन पोषण कराना।
**पलस्तर** पुं० (हि) १–मिट्टी, चूने, कंकर आदि का दीवार पर लेप। २–रोगी के शरीर पर औषध का लेप। (प्लास्टर)।
**पलहना** क्रि० (हि) पल्लवित होना। लहलहाना।
**पलहा** पुं० (हि) कोंपल। कोमल नया पत्ता।
**पलांडु** पु० (सं) प्याज।
**पला** पु० (हि) १–तेल की बड़ी पली। २–तराजू का पलड़ा। ३–आँचल। पल्ला। ४–पल। निमिष।
**पलाद** पुं० (सं) राक्षस।
**पलादन** पुं० (सं) दे० 'पलाद'।
**पलान** पुं० (हि) पशुओं की पीठ पर चढ़ने या बोझ लादने के लिए कसी जाने वाली गद्दी। जीन।
**पलानना** क्रि० (हि) १–घोड़े आदि पर पलान बाँधना या कसना। २–चढ़ाई करने की तैयारी करना।
**पलाना** क्रि० (हि) पलायन करना। भागना। भगाना।
**पलानि** स्त्री० (हि) जान।
**पलानी** स्त्री० (हि) १–स्त्रियों के पंजे के ऊपर पहनने का एक आभूषण। २–छप्पर। ३–जीन।
**पलायक** पुं० (सं) भगोड़ा। उत्तरदायित्व त्याग कर या दण्ड के भय से भागने वाला। भगोड़ा। पलायी। (एब्सकोंडर)।
**पलायन** पुं० (सं) १–भागने की क्रिया या भाव। २–फरार। (एब्सकोंड)।
**पलायमान** वि० (सं) पलायन करता हुआ।
**पलायित** वि० (सं) भागा हुआ।
**पलायी** स्त्री० (सं) दे० 'पलायक'।
**पलाल** पुं० (सं) भूसा। पुआल।
**पलालदोहद** पुं० (सं) आम्रवृक्ष।
**पलाश** पुं० (सं) १–पलास। ढाक। टेसू। २–राक्षस ३–पत्ता। ४–शासन। ५–परिभाषण। ६–एक पक्षी ७–मगध देश। वि०(सं) १–हरा। २–मांसाहारी। ३–निर्दय।
**पलाशक** पुं० (सं) १–ढाक। पलास। २–कचूर। ३–लाख।
**पलाशाख्य** पुं० (सं) नाड़ी। हींग।
**पलास** पुं० (हि) १–एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लाल फूल लगते हैं। ढाक। टेसू। २–गिद्ध की भाँति का एक मांसाहारी पक्षी। ३–जम्बूरे जैसा एक औजार।
**पलिका** पु० (हि) देश 'पलका'।
**पलित** वि० (सं) १–वृद्ध। बुड्ढा। २–पका हुआ या सफेद (बाल)। पुं० (सं) १–सफेद बाल। २–बुढ़ापे

...ली
के कारण बाल सफेद होना। ३-सूजन। ४-कीचड़।
५-मिर्च। ६-गरमी। ताप।
...ली क्रि० (हि) तेल, घी आदि निकालने की कलछी
पलीता पु० (हि) १-कोई मन्त्र लिखकर जलाने के लिये बत्ती की तरह लपेटा हुआ कागज। २-बंदूक या तोप की रंजक में आग लगाने की बत्ती। (फलीता)।
पलीद वि० (फा) १-अपवित्र। गन्दा। २-नीच। दुष्ट। पु० (हि) भूतप्रेत।
पलुहना क्रि० (हि) हराभरा होना। पल्लवित होना।
पलचना क्रि० (हि) देना।
पलेट स्त्री० (हि) लम्बी पट्टी या पटरी। (प्लेट)।
पलेड़ना क्रि० (हि) धक्का देना। धकेलना।
पलेथन पु० (हि) १-रोटी बनाते समय गीले आटे के पेड़े के लगाया जाने वाला सूखा आटा।
पलोटना क्रि० (हि) पैर दबाना। सेवा करना। २-तड़फड़ाना।
पलोथन पु० (हि) दे० 'पलेथन'।
पलोसना क्रि० (हि) पैर दबाना। सेवा करना।
पलोसना क्रि० (हि) १-धोना। २-मीठी-मीठी बातें करके फुसलाना।
पल्लव पु० (स) १-कोंपल। नये निकले हुए कोमल पत्ते। २-कड़ा। कंकण। बाजूबंद। ३-चपलता। ४-बल। विस्तार। ५-नृत्य में एक प्रकार की स्थिति ६-दक्षिण का एक राजवंश।
पल्लवग्राही वि० (सं) किसी विषय का पूरा ज्ञान न रखने वाला।
पल्लवना क्रि० (हि) १-पल्लवित होना। २-पनपना।
पल्लवाद पु० (सं) हरिण। हिरन।
पल्लवित वि० (सं) १-नये-नये पत्तों वाला। २-हरा-भरा। ३-विस्तृत। ४-लाख के रंग में रंगा हुआ। ५-जिसके रोंगटे खड़े हों।
पल्लवी पु० (सं) वृक्ष। पेड़। वि० (सं) नये पत्तों से युक्त।
पल्ला पु० (हि) १-किसी कपड़े का छोर या सिरा। दामन। आंचल। २-दुपल्ली टोपी का एक भाग। ३-अनाज बांधने की चादर। ४-किवाड़। पटल। ५-बोरा। तराजू का पलड़ा। ६-तीन मन का बोझ। ७-पास। अधिकार में। ८-दूरी। तरफ। ९-कैंची के दो भागों में से एक।
पल्लि स्त्री० (स) १-छोटा गांव। २-झोंपड़ी। ३-मकान। ४-नगर व कस्बा। ५-कुटी। ६-छिपकली
पल्लिका स्त्री० (सं) १-छोटा गांव। २-टोला। ३-छिपकली।
पल्ली स्त्री० (सं) दे० 'पल्लि'।
पल्लेदार पु०(हि) १-वह मनुष्य जो अनाज का बोझा या बोरी ढोता है। २-अनाज तौलने का काम करने वाला। बया।
पल्लेदारी स्त्री० (हि) पल्लेदार का काम।
पल्लौ पु० (हि) अनाज बांधने की चादर।
पल्वल पु० (सं) छोटा तालाब।
पवँरि स्त्री० (हि) ड्योढ़ी।
पव पु० (सं) १-पवन। हवा। २-गोबर। ३-अनाज को फटकना।
पवन पु० (सं) १-हवा। वायु। २-प्राणवायु। ३-श्वास। सांस। ४-जल। ५-कुम्हार का आंवा। ६-अनाज की भूसी से अलगाना। ७-विष्णु। वि० (हि) दे० 'पावन'।
पवन-अस्त्र पु० (सं) वह अस्त्र जिसके चलने से बड़े वेग की वायु चलने लगती है।
पवनकुमार पु० (स) हनुमान।
पवनचक्की स्त्री० (सं) वायुवेग से चलने वाली चर्खी (विंड मिल)।
पवनचक्र पु० (सं) चक्र खाती हुई हवा। बवंडर।
पवनज पु० (सं) १-हनुमान। २-भीम (पाण्डव)।
पवनतनय पु० (सं) दे० 'पवनज'।
पवननंद पु० (सं) दे० 'पवनज'।
पवननंदन पु० (सं) दे० 'पवनज'।
पवनपति पु० (सं) वायु देवता।
पवनपुत्र पु० (सं) दे० 'पवनज'।
पवनपूत पु० (सं) दे० 'पवनज'।
पवन-बाण पु० (स) दे० 'पवन-अस्त्र'।
पवन-वाहन पु० (स) अग्नि।
पवन-सुत पु० (सं) १-हनुमान। २-भीमसेन।
पवना पु० (देश०) झरना।
पवनात्मज पु० (स) दे० 'पवन-सुत'।
पवनाश पु० (सं) सांप।
पवनाशी पु० (हि) सांप। वि० (हि) जो हवा खाकर रहता हो।
पवनी स्त्री० (सं) झाड़ू। स्त्री० (हि) दे० 'पौनी'।
पवमान पु० (सं) १-पवन। २-चन्द्रमा। ३-गार्हपत्य अग्नि विशेष। वि० (सं) पवित्र करने वाला।
पवर वि० (हि) प्रवर। स्त्री० (हि) ड्योढ़ी।
पवरिया पु० (हि) दे० 'पौरिया'।
पवरी स्त्री० (हि) दे० 'पौरी'।
पवर्ग पु०(सं) वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प से म तक अक्षर होते हैं।
पवाँरना क्रि० (हि) १-गिराना। फेंकना। २-खेत में बीज बोना।
पवाँरी स्त्री० (हि) लोहारों का लोहे में छेद करने का एक औज़ार।
पवाना क्रि० (हि) भोजन करना या खिलाना।
पवार पु० (हि) परमार।
पवि पु० (सं) १-वज्र। २-बिजली। ३-वाक्य।

मार्ग। राह।

**पविधर** पुं० (सं) इन्द्र।

**पवितार्इ** स्त्री० (हिं) पवित्रता। सफाई।

**पवित्तर** वि० (हिं) दे० 'पवित्र'।

**पवित्र** वि० (सं) १-शुद्ध। निर्मल। २-पापरहित। पुं०(स) १-चलनी आदि साफ करने के साधन। २-कुश। ३-यज्ञोपवीत। जनेऊ। ४-तांबा। ५-कुश की बनी पवित्री जिसे यज्ञ आदि करते समय अनामिका में पहनते हैं।

**पवित्रक** पुं० (स) १-सूत का बना हुआ जाल। २-कुश। ३-पीपल। ४-जनेऊ।

**पवित्रता** स्त्री० (सं) स्वच्छता। पावनता।

**पवित्रधान्य** पुं० (सं) जौ। जव। यव।

**पवित्र-पाणि** वि० (सं) जिसके हाथ में कुश हो।

**पवित्रा** स्त्री० (सं) १-तुलसी। २-हलदी। ३-पीपल। ४-रेशम की बनी माला।

**पवित्रात्मा** वि० (सं) शुद्ध अन्तःकरण वाला।

**पवित्रारोपण, पवित्रारोहण** पुं० (स) सावन सुदी बारस को होने वाला एक उत्सव जिसमें भगवान कृष्ण की मूर्ति को जनेऊ पहनाया जाता है।

**पवित्रित** वि० (सं) निर्मल या शुद्ध किया हुआ।

**पवित्री** स्त्री० (सं) कर्मकांड के समय अनामिका में पहनने का कुश का बना छल्ला।

**पवित्रीकरण** पुं० (सं) किसी अशुद्ध वस्तु को पवित्र करना। शुद्धि।

**पविधर** पुं० (सं) इन्द्र (जो वज्र धारण करते हैं)।

**पवीर** पुं० (सं) १-हल का फाल। २-शस्त्र। हथियार। ३-वज्र।

**पव्य** पुं० (सं) यज्ञपात्र।

**पशम** पुं० (हि) १-बढ़िया और मुलायम जिसके दुशाले आदि बनते हैं। २-उपस्थ पर के बाल। ३-अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

**पशमीना** पुं० (फा) पशम या पशम का बना कपड़ा।

**पशव्य** वि० (सं) १-पशु के योग्य। २-पशु जैसा।

**पशु** पुं० (सं) १-चार पैरों से चलने वाला जानवर। मवेशी। चौपाया। (एनीमल)। २-जीवमात्र। ३-बलिपशु। ४-यज्ञकुण्ड। ५-मूर्ख। विवेकहीन व्यक्ति।

**पशु-अवरोध** पुं० (स) कांजी-हाउस। वह स्थान जहां कृषि को हानि पहुंचाने वाले आवारा पशु बन्द किये जाते हैं। (कैटल पाउण्ड)।

**पशुकर्म** पुं० (सं) यज्ञादि में पशुओं का बलिदान।

**पशुकाम** वि० (सं) गाय भैंस आदि का अभिलाषी।

**पशुक्रिया** स्त्री० (सं) १-पशु बलिदान की क्रिया। २-संभोग। मैथुन।

**पशु-चर** पुं० (सं) १-पशुओं का चारा, घास आदि २-पशुओं के चरने की भूमि। (पाश्चर)।

**पशुचर-भूमि** स्त्री० (सं) गोचर भूमि।

**पशुचर्या** स्त्री० (सं) १-पशु की तरह विवेकहीन आचरण। २-स्वेच्छाचार। ३-मैथुन।

**पशुचिकित्सक** पुं० (सं) पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य। (वेटेरिनरी डॉक्टर)।

**पशुचिकित्सालय** पुं० (सं) वह स्थान जहां पशुओं का इलाज होता है। (वेटेरिनेरी-हॉस्पिटल)।

**पशुजीवी** वि० (सं) पशु का मांस खाकर जीने वाला।

**पशुता** स्त्री० (सं) पशु का भाव। मूर्खता।

**पशुधन** पुं० (स) मनुष्य-परिवार के साथ रहने वाले पशु गाय भैंस आदि। (लाइवस्टॉक)।

**पशुनाथ** पुं० (सं) शिव।

**पशुनिरोधगृह** पुं० (सं) दे० 'पशु-अवरोध'। (कैटल पाउण्ड)।

**पशुनिरोधिका** स्त्री० (सं) दे० 'पशु-अवरोध'।

**पशुपति** पुं० (सं) १-शिव। २-पशु पालने का व्यवसाय करने वाला।

**पशुपल्लव** पुं० (सं) केवटीमोथा।

**पशुपालक** पुं० (सं) १-पशु पालने वाला। २-वह जो आजीविका के लिये पशु पालता हो।

**पशुपाश** पुं० (सं) पशुरूपी जीव का बन्धन।

**पशुविहारकानन** पुं० (सं) वह कानन या बाग जहां विभिन्न प्रकार के पशु या पक्षी प्रदर्शन आदि के लिये रखे जाते हों। (चिड़िया घर)। (जू)।

**पशुप्रक्षेत्र** पुं० (सं) गाय भैंस आदि पशुओं को पालने के लिए रखने का स्थान। (लाइवस्टॉक फार्म)।

**पशुमैथुन** पुं० (सं) १-नर या मादा पशुओं का परस्पर संभोग। २-मनुष्य का मादा पशुओं के साथ संभोग (बेस्टियेलिटी)।

**पशुयाग** पुं० (सं) पशुबलि यज्ञ।

**पशुराज** पुं० (स) सिंह।

**पशुवत्** वि० (स) पशु के समान।

**पश्चात्** अव्य० (सं) पीछे-पीछे से। तदुपरांत। बाद। फिर। अनन्तर।

**पश्चातकर्म** पुं० (सं) वैद्यक के अनुसार वह कर्म जो रोग समाप्ति पर शरीर को पूर्व प्रकृत अवस्था में लाने के लिये किया जाता है।

**पश्चातकृत** वि०(सं) जिसे पीछे छोड़ दिया गया हो।

**पश्चात्ताप** पुं० (स) किसी अनुचित काम से मन में उत्पन्न होने वाली ग्लानि। अनुताप। पछतावा।

**पश्चात्तापी** वि० (सं) पछताने वाला।

**पश्चादुक्त** वि० (स) १-जो बाद में कहा गया हो। २-जिसका प्रयोग किसी अन्य शब्द के बाद में किया गया हो। (लैटर)।

**पश्चाद्बाहुबद्ध** वि० (सं) जिसकी मुश्कें पीछे की तरफ को बांध दी गई हों।

**पश्चाद्भाग** पुं० (सं) पिछवाड़ा। पीछे का हिस्सा।
**पश्चाद्वर्ती** वि० (सं) १-पीछा या अनुसरण करने वाला। २-पीछे रहने वाला।
**पश्चार्द्ध** पुं० (सं) १-(शरीर का) पिछला भाग। २-(समय या स्थान संबन्धी) अन्तिम। ३-रात्रि का अन्तिम आधा भाग। वि० (सं) शेषार्ध।
**पश्चिम** पुं० (सं) पूर्व दिशा के सामने वाली दिशा जिस ओर सूर्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम। (वैस्ट)।
**पश्चिमक्रिया** स्त्री० (सं) अंत्येष्टि क्रिया।
**पश्चिम-घाट** पुं० (हि) दे० 'पश्चिमी घाट'।
**पश्चिमरात्र** पुं० (सं) रात्रि का अन्तिम या शेष भाग
**पश्चिमवाहिनी** वि० (सं) पश्चिम दिशा की ओर बहने वाली नदी।
**पश्चिमा** स्त्री० (सं) दे० 'पश्चिम'।
**पश्चिमाचल** पुं० (सं) वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य छिपता है। अस्ताचल।
**पश्चिमार्द्ध** पुं० (सं) पीछे वाला आधा भाग।
**पश्चिमी** क्रि० (हि) १-पश्चिम की ओर का। २-पश्चिम की ओर के देश का रहने वाला। ३-पश्चिम संबन्धी।
**पश्चिमीकरण** पुं० (सं) आचार-व्यवहार तथा वेश-भूषा में पाश्चात्य देशों का अनुकरण करना। (वैस्टर्नाइज़ेशन)।
**पश्चिमीघाट** पुं० (सं) बंबई राज्य के पश्चिम की ओर की एक पर्वतमाला।
**पश्चिमोत्तर** पुं० (सं) उत्तर और पश्चिम के बीच का कोना। वायुकोण।
**पश्त** पुं० (फा) खंभा।
**पश्ता** पुं० (फा) तट। किनारा।
**पश्तो** पुं० (हि) पाकिस्तान की पश्चिमोत्तर सीमा से अफगानिस्तान तक बोली जाने वाली भाषा।
**पश्म** पुं० (फा) दे० 'पशम'।
**पश्मीना** पुं० (फा) दे० 'पशमीना'।
**पश्यंती** स्त्री० (सं) १-नाद की वह अवस्था जब कि वह मूलाधार से उठ कर हृदय में आता है। २-वेश्या।
**पश्यतोहर** पुं० (सं) आँखों के सामने देखते-देखते चीज चुराने वाला—जैसे सुनार।
**पष** पुं० (हि) १-पंख। डैना। २-ओर। तरफ।
**पषाण** पुं० (हि) दे० 'पाषाण'।
**पषारना** क्रि० (हि) धोना।
**पसंग** पुं० (हि) दे० 'प्रसंग'।
**पसंगा** पुं० (हि) दे० 'पासंग'। वि० (हि) बहुत कम या थोड़े परिमाण का।
**पसंघा** पुं० (हि) दे० 'पासंग'।
**पसंती** स्त्री० (हि) दे० 'पश्यंती'।
**पसंद** वि० (फा) रुचि के अनुकूल। मन को भला लगने वाला। स्त्री० (फा) अभिरुचि।
**पसंदीदा** वि० (फा) जो पसंद हो।
**पस** अव्य० (फा) अतः। इस कारण।
**पसई** स्त्री० (देश०) पहाड़ी राई।
**पसोपेश** पुं० (फा) टालमटोल। बहाना। आगा-पीछा।
**पसनी** स्त्री० (हि) अन्नप्राशन संस्कार जिसमें बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।
**पसर** पुं० (हि) १-गहरी की हुई हथेली। आधी अंजली। २-विस्तार। पुं० (देश०) १-आक्रमण। धावा। २-पशुओं को रात के समय चराने का काम
**पसरना** क्रि०(हि) १-फैलना। २-इस प्रकार पैर फैला कर सोना कि दूसरा कोई और सो या बैठ न सके।
**पसरहट्टा** पुं० (हि) वह बाजार जहां पंसारियों की दूकानें हों।
**पसराना** क्रि० (हि) पसारने का काम दूसरे से कराना।
**पसरौंहा** वि० (हि) पसरने या फैलने वाला।
**पसली** स्त्री० (हि) मनुष्यों या पशुओं के छाती में की आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।
**पसवा** पुं० (देश०) हलका गुलाबी रंग।
**पसा** पुं० (हि) अंजली।
**पसाउ** पुं० (हि) कृपा। अनुग्रह।
**पसाना** क्रि० (हि) १-चावल पक जाने के बाद उसमें का मांड या बचा हुआ पानी निकालना। २-प्रसन्न होना।
**पसार** पुं० (हि) १-पसारने की क्रिया या भाव। २-लम्बाई-चौड़ाई। ३-दालान।
**पसारना** क्रि० (हि) फैलाना।
**पसारा** पुं० (हि) १-प्रसार। फैलाव। २-विस्तार।
**पसाव** पुं० (हि) पसाने के बाद निकला हुआ पदार्थ। मांड।
**पसावन** पुं० (हि) १-पकाई या उबली हुई वस्तु में का निकाला हुआ पानी। मांड।
**पसाहनि** पुं० (हि) अंगराग।
**पसित** वि० (हि) बँधा हुआ।
**पसीजना** क्रि० (हि) १-किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रस-रसकर बहना। २-पसीने से तर होना। चित्त में दया उत्पन्न होना
**पसीना** पुं० (हि) परिश्रम या गरमी के कारण शरीर से निकलने वाला पानी। स्वेद। श्रमवारि। (पर्सपिरेशन)।
**पसु** पुं० (हि) दे० 'पशु'।
**पसुरी** स्त्री० (हि) दे० 'पसली'।
**पसेउ** पुं० (हि) पसीना। स्वेद।
**पसेरी** स्त्री० (हि) पंसेरी। पांच सेर का एक तौल।
**पसेव** पुं० (हि) १-पसीजने से निकलने वाला पदार्थ।

२-पसीना । प्रस्वेद । ३-सुलगाने पर अफीम से निकलने वाला तरल पदार्थ ।

पस्त वि० (फा) १-हिम्मत हारा हुआ । थका हुआ । शिथिल ।

पस्तकद वि० (फा) नाटा । छोटे कद वाला ।

पस्तकिस्मत वि० (फा) भाग्यहीन ।

पस्तहिम्मत वि० (फा) कायर । डरपोक । हारा हुआ ।

पहँ अव्य० (हि) १-निकट । पास । समीप । २-से ।

पह स्त्री० (हि) दे० 'पौ' ।

पहचनवाना क्रि० (हि) पहचानने का काम कराना ।

पहचान स्त्री०(हि) १-किसी गुण, मूल्य, योग्यता आदि जानने की क्रिया । परख । २-चिह्न । ३-किसी को देख कर यह बतलाना कि यह वही है । (आइडेंटि-फिकेशन) । ४-परिचय ।

पहचानना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु की आकृति, रङ्ग-रूप आदि से परिचित होना । २-अन्तर सम-झना या करना । (डिस्टिंग्विश) । ३-किसी वस्तु का गुण या दोष जानना ।

पहटना क्रि० (हि) खदेड़ना । भगाने या पकड़ने के लिये किसी के पीछे दौड़ना । क्रि० (देश०) हथि-यार की धार तेज करना ।

पहन पु० (हि) पाषाण । पत्थर । पु० (फा) वात्स-ल्यता के कारण बच्चे के लिए मां की छाती में भर आने वाला दूध ।

पहनना क्रि० (हि) शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण करना ।

पहनवाना क्रि० (हि) पहनने का काम किसी दूसरे से करवाना ।

पहनाई स्त्री० (हि) १-पहनने की क्रिया या भाव । २-पहनाने की मजदूरी ।

पहनाना क्रि० (हि) दूसरे को वस्त्राभूषण आदि धारण कराना ।

पहनावा पु० (हि) १-पहनने के मुख्य कपड़े । पोशाक परिधान । २-सिर से पैर तक पहनने के सब वस्त्र । ३-किसी स्थान या समाज में पहने जाने वाले वस्त्र । ४-पहनने का ढंग या रीति ।

पहपट पु० (देश०) १-स्त्रियों का एक गीत विशेष । २-हल्ला । कोलाहल । ३-कानाफूसी या शोर मचा-कर की जाने वाली बदनामी । ४-धोखा । छल ।

पहपटबाज वि० (देश०) १-हल्ला या शोरगुल करने वाला । फसादी । झगड़ालू । २-ठग । धोखेबाज ।

पहर पु० (हि) रात और दिन का आठवां भाग । तीन घंटे का समय ।

पहरना क्रि० (हि) पहनना ।

पहरा पु० (हि) १-रक्षा या निगाहबानी करने का प्रबन्ध । चौकी । २-रखवाली । ३-पहरेदारों के दल के बदलने का समय । ४-एक बार में नियुक्त पहरेदार । गारद । रक्षकदल । ५-चौकीदार आदि का फेरा । ६-किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी स्थान से न हटने देने के लिये किसी आदमी को निग-रानी के लिये बैठाना । ७-हिरासत । हवालात । ८-युग । समय । ९-किसी के आने का शुभ या अशुभ प्रभाव ।

पहराइत पु० (हि) पहरा देने वाला ।

पहरादूत पु० (हि) दे० 'पहरेदार' ।

पहराना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना' ।

पहरावनी स्त्री० (हि) सिर से पैर तक के पहनने के कपड़े या पोशाक जो किसी को खुश होने पर दान में दी जाती है । खिलअत ।

पहरावा पु० (हि) दे० 'पहनावा' ।

पहरी पु० (हि) पहरे पर नियुक्त व्यक्ति । पहरेदार । चौकीदार ।

पहरुआ पु० (हि) पहरेदार ।

पहरू पु० (हि) पहरा देने वाला । सन्तरी ।

पहरेदार पु० (हि) दे० 'पहरी' ।

पहल पु०(हि) १-किसी घन पदार्थ के सिरों या कोनों के बीच का समभूमि । २-पहलू । बगल । ३-जमी हुई रुई या ऊन की तह । ४-परत । तह । ५-किसी ऐसे कार्य का आरम्भ जिसके प्रतिकार में कुछ किए जाने की सम्भावना हो किसी कार्य का अपनी ओर से आरम्भ । (इनीशियेटिव) ।

पहलदार वि० (हि) जिसके चारों ओर बैठी हुई सतह हों ।

पहलवान पु० (फा) १-दांव पेंच सहित कुश्ती लड़ने वाला बली पुरुष । मल्ल । २-हृष्टपुष्ट व्यक्ति ।

पहलवानी स्त्री० (फा) १-कुश्ती लड़ने का कार्य । २-कुश्ती लड़ने का पेशा । मल्लवृत्ति ।

पहलवी स्त्री० (फा) ईरान की एक प्राचीन भाषा ।

पहला वि० (हि) १-क्रमानुसार आरम्भ का । प्रथम । २-रूई की जमी हुई परत । पहल । पक्ष । (एस्पेक्ट)

पहलू पु० (फा) १-बगल और कमर के बीच का भाग जहां पसलियां होती हैं । पार्श्व । २-किसी वस्तु का बायां भाग । पार्श्व भाग । ३-गुण-अवगुणादि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न अंग । पक्ष । (एस्पेक्ट) । ४-पड़ोस । ५-संकेत । ६-करवट बल । दिशा । ७-पहल । ८-गूढ़ आशय । व्यंग्यार्थ ।

पहले अव्य० (हि) १-सर्व प्रथम । आदि या आरम्भ में । २-क्रम से प्रथम । ३-स्थिति में सबसे आगे । ४-बीते समय में ।

पहलेपहल अव्य० (हि) सबसे पहले । सर्व प्रथम ।

पहलौठा वि० (हि) किसी स्त्री का पहला (लड़का) ।

पहलौंठी स्त्री० (हि) सबसे पहले जनने की क्रिया । पहले-पहल का बच्चा जनना ।

पहलोठा वि० (हि) दे० 'पहलौंठा' ।

पहलौठी स्त्री० (हि) दे० 'पहलौंठी'।
पहाड़ पुं० (हि) १-भूमितल से बहुत ऊंचा पथरीला प्राकृतिक भाग। पर्वत। २-किसी वस्तु का भारी ढेर। ३-पहाड़ के सदृश्य ऊंची राशि का ढेर।
पहाड़ा पुं० (हि) किसी अंक की एक से लेकर दस तक की गुणनफलों की क्रमागत सूची जिसे बच्चे याद कर लेते हैं।
पहाड़िया वि० (हि) दे० 'पहाड़ी'।
पहाड़ी वि० (हि) १-पहाड़ पर रहने वाला। पहाड़ का। २-जिसमें पहाड़ हो। स्त्री० (हि) १-छोटा और कम ऊंचा पहाड़। २-एक धुन जिसे पहाड़ी लोग गाते हैं। एक राग।
पहार पुं० (हि) दे० 'पहाड़'।
पहारू पुं० (हि) पहरेदार।
पहिचान स्त्री० (हि) दे० 'पहचान'।
पहित स्त्री० (हि) पकी हुई दाल।
पहिली स्त्री० (हि) दे० 'पहिला'।
पहिनना क्रि० (हि) दे० 'पहनना'।
पहिनाना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना'।
पहिनावा पुं० (हि) दे० 'पहनावा'।
पहियां अव्य० (हि) १-निकट। पास। २-से।
पहिया पुं० (हि) १-गाड़ी या कल में लगा हुआ वह चक्कर जिसके धुरी पर घूमने के कारण गाड़ी या कल चलती है। चक्र। चक्का।
पहिरना क्रि० (हि) दे० 'पहनना'।
पहिराना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना'।
पहिरावना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना'।
पहिरावनि स्त्री० (हि) दे० 'पहनावा'।
पहिल वि० (हि) दे० 'पहला'। अव्य० (हि) दे० 'पहले'।
पहिला वि० (हि) १-दे० 'पहला'। २-पहले पहल ब्याई हुई।
पहिले अव्य० (हि) दे० 'पहले'।
पहिलो वि० (हि) दे० 'पहला'।
पहिलौठा वि० (हि) दे० 'पहलौंठा'।
पहिलौठी स्त्री० (हि) दे० 'पहलौंठी'।
पहेति स्त्री० (हि) दाल।
पहुँच स्त्री० (हि) १-किसी स्थान तक स्वयं को ले जाने की क्रिया या शक्ति। २-किसी स्थान तक निरन्तर विस्तार। ३-प्रवेश। समीप तक गति (ऐक्सेस)। ४-प्राप्ति सूचना। रसीद। ५-मर्म या आशय समझने की शक्ति। दौड़। ६-जानकारी का विस्तार। परिचय।
पहुँचना क्रि० (हि) १-किसी स्थान से चलकर दूसरे स्थान में उपस्थित होना। २-कहीं तक विस्तृत होना। ३-एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ४-घुसना। प्रविष्ट होना। ५-ताड़ना। मर्म समझ लेना। ६-भेजी हुई वस्तु प्राप्त होना। ७-अनुभव में आना। ८-किसी विषय में किसी के बराबर होना।
पहुँचा पुं० (हि) कुहनी के नीचे का भाग। कलाई।
पहुँचाना क्रि० (हि) १-किसी निर्दिष्ट स्थान तक ले जाना या उपस्थित करना। २-किसी के साथ कहीं इसलिए जाना कि मार्ग में कोई विपत्ति न आये ३-घुसाना। प्रविष्ट करना। ४-कोई वस्तु किसी के पास ले जाना। बराबरी में लाना।
पहुँची स्त्री०(हि) १-कलाई पर पहनने का एक गहना २-राखी के दिन बाहु में बांधने का डोरा। ३-युद्ध में कलाई पर पहने जाने वाला एक आवरण।
पहुँनई स्त्री० (हि) दे० 'पहुनाई'।
पहुना पुं० (हि) दे० 'पाहुना'।
पहुनाई स्त्री० (हि) १-अतिथि के रूप में कहीं जाना। पाहुना होना। २-अतिथि सत्कार।
पहुप पुं०(हि) दे० 'पुष्प'।
पहुम, पहुमि, पहुमी स्त्री० (हि) पृथ्वी।
पहुला स्त्री० (हि) कुमुदिनी। कोई का फूल।
पहेरी स्त्री० (हि) दे० 'पहेली'।
पहेली स्त्री० (हि) १-किसी विषय या वस्तु का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उस वस्तु या विषय का नाम बताने के लिए सोचना पड़े। बुझौवल। २-समस्या। घुमाव फिराव की बात। (पजल)।
पह्लव पुं० (सं) १-प्राचीन फारसी या ईरानी। २-पारस देश का प्राचीन नाम।
पह्लवी स्त्री० (सं) प्राचीन तथा आधुनिक पारसी के बीच के समय की फारस की भाषा।
पाँ पुं० (हि) पैर। पाँव।
पाँई पुं० (हि) पाँव। पैर।
पाँइता पुं० (हि) दे० 'पाँयता'।
पाँउ पुं० (हि) पाँव। पैर।
पाँक पुं० (हि) कीचड़। पंक।
पाँक्त वि० (सं) पंक्ति का। पंक्ति संबन्धी।
पाँख पुं०(हि) पक्षी का पैर या डैना। पंख।
पाँखड़ा पुं० (हि) पर या डैना। पंख।
पाँखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'पंखड़ी'।
पाँखी स्त्री० (हि) १-चिड़िया। पक्षी। २-फतिंगा। पतङ्गा।
पाँखुरी स्त्री० (हि) दे० 'पंखड़ी'।
पाँग पुं० (हि) नदी के पीछे हट जाने से निकली हुई भूमि। खादर। गंगबरार।
पाँगल पुं० (हि) ऊँट।
पाँगा पुं० (देश) समुद्र के जल से निकला हुआ नमक
पाँगानोन पुं० (हि) समुद्री नमक।
पाँगुर वि० (हि) लंगड़ा। पंगु। पुं० (हि) लंगड़ा।
पांगुल्य पुं० (सं) लंगड़ापन।

**पाँच** वि० (हि) चार और एक। पु० (हि) १-पाँच की संख्या। ५। २-बहुत से लोग। ३-जाति बिरादरी के मुखिया लोग।

**पांचजन्य** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के शंख का नाम। २-विष्णु के शंख का नाम। ३-अग्नि।

**पांचनद** वि० (सं) पंजाब का। पंजाबी। पुं० (सं) पंजाब का निवासी। पञ्चनद।

**पांचभौतिक** पुं० (सं) पांच भूतों या तत्वों से बना हुआ शरीर।

**पांचयज्ञिक** वि० (सं) पंचयज्ञ सम्बन्धी। पुं० (सं) पांच महायज्ञों में से एक।

**पांचर** पुं० (हि) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के टुकड़े।

**पांचवर्षिक** वि० (सं) पांच वर्ष का।

**पांचालिका** स्त्री० (सं) कपड़े की बनी गुड़िया।

**पाँचवाँ** वि० (हि) चार के बाद वाला।

**पांचा** पुं० (हि) घास, भूसा आदि हटाने या समेटने का किसानों का एक औज़ार।

**पांचाल** पु० (सं) १-भारत के पश्चिमोत्तर का एक देश। २-नाई, धोबी, चमार, जुलाहे और बढ़ई इन पांचों का समुदाय। वि० (सं) पंचाल देश का रहने वाला।

**पांचालिका** स्त्री० (सं) दे० 'पञ्चालिका'।

**पांचाली** स्त्री० (सं) १-कपड़े की बनी गुड़िया या पुतली। २-साहित्य में वाक्य रचना की वह शैली जिसमें विकट पदावलियाँ होती हैं। ३-द्रौपदी।

**पाँचें** स्त्री० (हि) पंचमी। किसी पक्ष की पांचवीं तिथि।

**पाँजना** क्रि० (हि) धातु के टुकड़ों को टांका लगाकर जोड़ना। झालना। टांका लगाना।

**पाँजर** पुं० (हि) शरीर में बगल तथा कमर के मध्य का भाग। २-पसली। ३-पार्श्व। बगल।

**पाँजी** स्त्री० (हि) नदी का इतना कम पानी हो जाना कि उसे पैदल पार किया जा सके।

**पाँजे** वि० (हि) दे० 'पाँजी'।

**पांडर** पुं० (सं) १-सफेद रङ्ग का कोई पदार्थ। २-कुन्द का फूल या वृक्ष। ३-गेरू।

**पाँडरा** पु० (देश०) एक प्रकार की ईख।

**पांडव** पु० (सं) १-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव — पांडु के पुत्र। २-पंजाब के एक प्राचीन प्रदेश का नाम।

**पांडवश्रेष्ठ** पुं० (सं) युधिष्ठिर।

**पांडित्य** पु० (सं) १-पंडित होने का भाव। २-विद्वता पंडिताई।

**पांडु** पु० (सं) १-कुछ लाली लिए पीला रङ्ग। २-सफेद हाथी। ३-श्वेत रङ्ग। ४-एक प्रकार का रोग जिससे शरीर पीला पड़ जाता है। पीलिया। ५-परवल। ६-प्राचीन काल के एक राजा का नाम जिनके युधिष्ठिर आदि पांच पुत्र थे।

**पांडु-फल** पु० (सं) परवल।

**पांडु-मृत्तिका** स्त्री० (सं) खड़िया। श्वेत या पीले रङ्ग की मिट्टी। रामरज।

**पांडुर** वि० (सं) १-पीला। जर्द। २-सफेद। पुं० (सं) १-पीला रङ्ग। २-श्वेत रङ्ग। ३-सफेद ज्वर। ४-कबूतर। ५-सफेद खड़िया। ६-सफेद कोढ़।

**पांडुरोग** पु० (सं) पीलिया।

**पांडुलिपि** स्त्री० (सं) १-हाथ से लिखी गई पुस्तक या ग्रन्थ। (मैन्युस्क्रिप्ट)। २-लेखादि का वह प्रारंभिक रूप जिसे घटाया या बढ़ाया जा सके। (ड्राफ्ट)।

**पांडुलेख** पुं० (सं) दे० 'पांडुलिपि'।

**पांडुलेखक** पुं० (सं) लेख्य आदि की पांडुलिपि तैयार करने वाला। (ड्राफ्ट्समैन)।

**पांडुलेख्य** पुं० (सं) मसविदा। पांडुलिपि लिखने का काम। (ड्राफ्टिंग)।

**पांडे** पुं० (हि) १-ब्राह्मणों की एक शाखा का नाम। २-पंडित। विद्वान। ३-शिक्षक। ४-रसोई आदि बनाने वाला।

**पांड्य** पुं० (सं) १-पांडु देश का निवासी। २-एक प्राचीन देश।

**पांत** स्त्री० (हि) पंगत। कतार। पंक्ति।

**पांति** स्त्री० (हि) १-कतार। पंक्ति। २-पंगत। एक साथ बैठकर भोजन करने वाले।

**पांथ** वि० (सं) १-पथिक। २-वियोगी।

**पांथ-निवास** पुं० (सं) सराय। चट्टी।

**पांथशाला** पुं० (सं) सराय। चट्टी।

**पाँय** पुं० (हि) पैर। कदम। चरण।

**पाँयचा** पुं० (हि) दे० 'पायँचा'।

**पाँयता** पु० (हि) दे० 'पायँता'।

**पाँव** पु० (हि) पाद। पैर।

**पाँवचप्पी** स्त्री० (हि) पैर दबाना।

**पाँव-पाँव** अव्य० (हि) पैदल।

**पाँवड़ा** पुं० (हि) वह कपड़ा जो किसी आदरणीय अतिथि के पाँव रख कर चलने के लिये बिछाया गया हो।

**पाँवड़ी** स्त्री० (हि) १-जूता। खड़ाऊँ। २-गोटा आदि बनाने का एक आला।

**पाँवर** वि० (हि) पामर। अधम। नीच।

**पाँवरी** स्त्री० (हि) १-दे० 'पाँवड़ी'। २-सोपान। ३-पैर रखने का स्थान। ४-जूता। ५-पौरी। ड्योढ़ी। ६-बैठक। दालान।

**पांसु** स्त्री० (सं) १-रज। धूलि। २-बालु। ३-गोबर की खाद। ४-भू-संपत्ति।

**पांसु-का** स्त्री० (सं) केवड़े का पौधा।

**पांसुल** वि० (सं) लम्पट। पर-स्त्रीगामी। व्यभिचारी।

**पांसुला** स्त्री० (सं) १-कुलटा। छिनाल। २-रजस्वला।

स्त्री । २–भूमि । ४–केतकी ।

पांस स्त्री० (हिं) १–राख, गोबर और गली सड़ी वस्तुएं जो खेत को उपजाऊ बनाने के लिए डाली जाती है । २–शराब निकला हुआ महुआ । ३–खमीर ।

पांसना क्रि० (हिं) खेत में खाद डालना ।

पांसा पु० (हिं) दे० 'पासा' ।

पांसी स्त्री० (हिं) सूत आदि से बना हुआ जाल जो घास भूसा आदि बांधने के काम आता है ।

पांसु स्त्री० (हिं) पसली ।

पांहीं अव्य० (हिं) निकट । पास । नजदीक ।

पा पु० (फा) पैर । पांव । कदम । जड़ ।

पाअंदाज पु० (फा) नारियल या मूंज आदि की बनी चटाई जो पैर पोंछने के काम आती है ।

पाइ पु० (हिं) पाद । पैर । पांव ।

पाइक पु० (हिं) दे० 'पायक' ।

पाइका पु० (यू) नाप के अनुसार मुद्रण का टाइप जो चौड़ाई में एक इंच का छठे भाग के बराबर होता है ।

पाइट पु० (हिं) दीवार आदि चुनने के लिये खड़ी की जाने वाली मचान ।

पाइतरी स्त्री० (हिं) पलंग या चारपाई का पैताना ।

पाइप पु० (अं) १–नल । नली । २–पानी का नल । ३–बांसुरी की तरह का एक वाद्ययन्त्र । ४–हुक्के की नली ।

पाइमाल वि० (हिं) दे० 'पामाल' ।

पाइरा पु० (हिं) घोड़े की जीन में लगी हुई रकाब ।

पाइल स्त्री० (हिं) दे० 'पायल' ।

पाई स्त्री० (हिं) १–एक छोटा सिक्का जो एक पैसे में तीन होते हैं । २–किसी अंक की इकाई का चौथा भाग प्रकट करने वाली खड़ी रेखा जैसे—१–सवा-चार (४।) । ४–लेख में पूर्ण विराम की रेखा । ५–चक्कर घूमना । ६–धान का घुन । ७–दीर्घ आकार सूचक मात्रा । ८–सूत माँजने का अड्डा । ९–छापे में घिसे हुए बेकार टाइप ।

पाउँ पु० (हिं) पैर । पांव ।

पाउंड पु० (अं) १–सोने का एक अंग्रेजी सिक्का जो बीस शिलिंग का होता है । २–एक अंग्रेजी तौल जो लगभग आधा सेर के बराबर होता है ।

पाउ पु० (हिं) चतुर्थांश । पाव ।

पाउडर पु०(अं) १–चूर्ण । बुकनी । २–सुन्दरता बढ़ाने के लिये तथा अच्छा रङ्ग निखारने के लिए मुख आदि पर लगाया जाने वाला सिलखड़ी का सुगन्ध मिश्रित चूरा ।

पाक पु० (सं) भोजन पकाने की क्रिया । २–पकाने की क्रिया । ३–पकवान । ४–श्राद्ध में पिंड दान के निमित्त पकाई हुई खीर आदि । ५–फल आदि का पकना । ६–फोड़े आदि का पकना । ७–वृद्धावस्था के कारण बालों का सफेद होना । वि० (फा) १–पवित्र । साफ सुथरा । २–खालिस । ३–परहेजगार ।

पाकक्रिया स्त्री० (सं) पकाने का काम ।

पाकज पु० (सं) काला नमक ।

पाकट स्त्री० (अं) जेब । थैली । खीसा ।

पाकद्विष् पु० (सं) इन्द्र का एक नाम ।

पाकदामन वि० (फा) विशुद्ध चरित्र वाली स्त्री ।

पाकना क्रि०(हिं) पकाना ।

पाकपंडित पु० (सं) वह जो खाना या रसोई बनाने में सिद्धहस्त हो ।

पाकपात्र पु० (सं) रसोई के बरतन ।

पाकपुटी स्त्री० (हिं) कुम्हार का आंवा ।

पाकफल पु० (सं) करौंदा ।

पाकबाज वि० (फा) नेकनियत । सच्चा । निष्पाप ।

पाकयज्ञ पु० (सं) पंचमहायज्ञ में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ अन्य चार यज्ञ ।

पाकर पु० (हिं) एक प्रकार का बड़ का पेड़ ।

पाकरिपु पु० (सं) इन्द्र ।

पाकरी स्त्री० (हिं) दे० 'पाकर' ।

पाकल वि० (हिं) पका हुआ ।

पाकशाला स्त्री० (सं) रसोई-घर ।

पाकशासन पु० (सं) इन्द्र का नाम ।

पाकशासनि पु० (सं) १–इन्द्र का पुत्र जयन्त । २–अर्जुन । ३–बालि ।

पाकशुल्का स्त्री० (सं) खड़िया मिट्टी ।

पाकस्थली स्त्री० (सं) उदर में पक्वाशय जहां आहार पचता है ।

पाकस्थान पु० (सं) रसोई-घर ।

पाकसाफ वि० (फा) निर्मल । साफ-सुथरा । निष्पाप ।

पाकहंता पु० (हिं) इन्द्र का एक नाम ।

पाका पु० (हिं) फोड़ा । वि० (हिं) दे० 'पक्का' ।

पाकागार पु० (सं) रसोई-घर ।

पाकातिसार पु० (सं) अतिसार रोग का एक भेद ।

पाकाभिमुख वि० (सं) जो पकने वाला हो । विकासोन्मुख ।

पाकारि पु०(सं) १–इन्द्र । २–सफेद कचनार ।

पाकिस्तान पु० (फा) भारत के कुछ प्रदेशों को अलग करके बनाया हुआ एक मुसलमानी राज्य ।

पाकिस्तानी १–पाकिस्तान संबन्धी । २–पाकिस्तान का पु० (फा)पाकिस्तान का निवासी ।

पाकी स्त्री० (फा) पवित्रता । शुद्धता ।

पाकीजा वि० (फा) १–पाक । पवित्र । शुद्ध । २–सुन्दर । निर्दोष ।

पाकेट पु०(अं) जेब । खीसा ।

पाकेटमार पु० (हिं) गिरहकट । (वि० पॉकेट) ।

पाकेटमारी स्त्री० (हिं) पाकेटमार का पेशा ।

**पाक्षपातिक** *वि०* (सं) १-फूट डालने वाला। २-पक्षपात करने वाला।

**पाक्षायण** *वि०* (सं) पक्ष संबन्धी। जो पक्ष में एक बार किया जाय।

**पाक्षिक** *वि०* (सं) १-तरफदार। पक्षपाती। २-पक्ष या पखवाड़े से संबन्धित। (फोर्ट नाइटली)। पुं० (सं) पक्षियों को मारने वाला। व्याध। बहेलिया।

**पाखंड** पु० (सं) १-ढोंग। आडम्बर। २-वेद विरुद्ध आचरण। ३-छल। धोका। ४-धूर्तता। चालाकी।

**पाखंडफंडी** *वि०* (सं) १-वेद विरुद्ध आचरण करने वाला। २-ठग। धूर्त।

**पाखंडी** *वि०* (सं) दे० 'पाखंड'।

**पाख** पुं० (हि) १-महीने का आधा। पखवाड़ा। २-कच्चे मकानों की दीवारों का वह तिकोना चौड़ा भाग जिस पर लट्ठे रखे रहते हैं। ३-पंख। पर।

**पाखर** *स्री०* (हि) १-लड़ाई के समय हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली लोहे की भूल। २-राल चढ़ाया हुआ टाट या उसकी पोशाक।

**पाखा** पुं० (हि) १-कोना। छोर। २-कच्चे घर का पाख।

**पाखान** पुं० (हि) पाषाण। पत्थर।

**पाखाना** पु० (फा) १-मल त्याग के निमित्त बनाया हुआ विशेष प्रकार का कमरा या संडास। २-मल।

**पाग** *स्री०* (हि) पगड़ी। पुं० (हि) १-शीरा जिसमें डुबोकर मिठाइयां रखी जाती हैं। २-चाशनी या शीरे में बनाई हुई मिठाई।

**पागना** *क्रि०* (हि) १-शीरे या चाशनी में डुबोना। २-तन्मय होना।

**पागल** *वि०* (सं) १-जिसका विवेक नष्ट होगया हो। विक्षिप्त। सिड़ी। २-आपे से बाहर। नासमझ (ल्यूनेटिक)।

**पागलखाना** पुं० (हि) वह स्थान जहां चिकित्सा के लिये पागल रखे जाते हैं। (ल्यूनेटिक एसाइलम)।

**पागलपन** पुं० (हि) १-उन्माद। विक्षिप्तता। २-मूर्खता। बेवकूफी।

**पागलिनी** *स्री०* (हि) पगली।

**पागुर** पुं० (हि) दे० 'जुगाली'।

**पाचक** *वि०* (सं) पचाने अथवा पकाने वाला। (स्टिमुलेंट)। पुं० (सं) १-वह क्षारयुक्त औषधि जो पाचनशक्ति बढ़ाने के लिये खाई जाती है। २-रसोइया। ३-पाचक पित्त में की अग्नि।

**पाचन** पुं० (सं) १-पचाने अथवा पकाने की क्रिया। २-अजीर्ण को नाश करने वाली औषधि। ३-खाये हुए पदार्थ का उदर में शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्तन। ४-अग्नि। ५-खट्टा रस। *वि०* (सं) पचाने वाला।

**[पाच]नशक्ति** *स्री०* (सं) १-भोजन पचाने की शक्ति। हाजमा। २-आमाशय में रहने वाले पित्त या अग्नि की शक्ति।

**पाचना** *क्रि०* (हि) भलीभांति पकाना। पकाना।

**पाचनी** *स्री०* (सं) हड़।

**पाच्य** *वि०* (सं) जो पचाया या पकाया जा सके।

**पाछ** *स्री०* (हि) १-पोस्त के डोडे पर लगा हुआ चीरा २-किसी वृक्ष पर लगाया हुआ हल्का आघात। ३-रक्त या रस निकालने के लिये जंतु अथवा पौधे के शरीर पर मारा हुआ हल्का आघात। पुं० (हि) पिछला भाग या अंश। अव्य० (हि) पीछे।

**पाछना** *क्रि०* (हि) रक्त या रस निकालने के लिये शरीर या पौधे पर छुरी आदि से हल्का आघात करना।

**पाछल** *वि०* 'पिछला'।

**पाछा** पुं० (हि) पीछा।

**पाछिल** *वि०* (हि) दे० 'पिछला'।

**पाछी** अव्य० (हि) पाछे की ओर। पीछे।

**पाछू** अव्य० (हि) दे० 'पाछी'।

**पाछे** अव्य० (हि) दे० 'पीछे'।

**पाज** पुं० (हि) पांजर। पार्श्व।

**पाजामा** पुं० (फा) एक पहनावा जिसमें कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है।

**पाजी** पुं० (हि) १-पैदल सैनिक। प्यादा। २-रक्षक। चौकीदार। *वि०* (हि) दुष्ट। लुच्चा। शरारती।

**पाजीपन** पुं० (हि) दुष्टता। नीचता। कमीनापन।

**पाजेब** *स्री०* (फा) नूपुर। पैर में पहनने का घुंघरूदार चांदी का गहना।

**पाटंबर** पु० (सं) रेशमी वस्त्र।

**पाट** पुं० (हि) १-रेशम। २-रेशम का कीड़ा। ३-बटा हुआ रेशम। ४-पटसन का रेशम। ५-राजगद्दी। ६-चौड़ाव। फैलाव। ७-चिपटा शहतीर जिस पर कोल्हू के बैल चलाने वाला बैठता है। ८-तख्ता। पीढ़ा। ९-पटिया या शिला। १०-चक्की के दो भागों में से एक। ११-बैलों की आंखों का एक रोग। १२-लकड़ी का वह शहतीर जिस पर खड़े होकर कुएँ से पानी निकालते हैं।

**पाटक** पु० (सं) १-विभाजित करने वाला। २-नदी तट। किनारा। ३-घाट की पैड़ियां। ४-मूलधन या पूंजी का घाटा।

**पाटच** पुं० (सं) कपास।

**पाटन** *स्री०* (हि) १-पटाव। पाटने की क्रिया या भाव २-पाट कर बनी हुई (छत)। ३-मकान के पहले खंड के ऊपर के खंड। ४-सर्वविष उतारने का एक मंत्र। पुं० (सं) चीरने, फाड़ने, तोड़ने तथा नष्ट करने की क्रिया।

**पाटना** *क्रि०* (हि) १-किसी नीचे धरातल को पाट कर बराबर करना। २-ढेर लगाना। ३-छत बनाना

४–तृप्त करना। सींचना।

**पाटमहिषी** स्त्री० (हि) पटरानी।

**पाटरानी** स्त्री० (हि) पटरानी।

जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। सबक। ४–पुस्तक का एक अंश। परिच्छेद। अध्याय। ५–शब्दों अथवा वाक्यों का क्रम। (रीडिंग)।

**पाठक** पुं० (सं) जो पढ़े। पढ़ने वाला। छात्र। शिष्य २–शिक्षक। गुरु। ३–कथावाचक। ४–ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम।

**पाठच्छेद** पुं० (सं) पाठ्य पुस्तक के बीच में होने वाला विराम। यति।

**पाठदोष** पुं० (सं) पढ़ने की वह शैली जो निंदित या वर्जित समझी जाती है।

**पाठन** पुं० (सं) पढ़ाने की क्रिया या भाव। अध्यापन कर्म।

**पाठनशैली** स्त्री० (सं) पढ़ाने का धर्म।

**पाठनिश्चय** पुं० (सं) किसी पुस्तक के किसी अंश पर मनन करके उसके अर्थादि का निश्चय करना।

**पाठपद्धति** स्त्री० (सं) पढ़ने की रीति या ढंग।

**पाठभू** स्त्री० (सं) वह स्थान जहां वेदादि का पाठ किया जाता है।

**पाठभेद** पुं० (सं) दे० 'पाठांतर'।

**पाठमंजरी** स्त्री० (सं) मैना या सारिका पक्षी।

**पाठशाला** स्त्री० (सं) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। विद्यालय। मदरसा। (स्कूल)।

**पाठशालिनी** स्त्री० (सं) मैना। सारिका।

**पाठांतर** पुं० (सं) पाठ भेद। एक ही पाठ में किसी विशेष स्थल पर पुस्तकों की विभिन्न प्रतियों में भिन्न क्रम या वाक्य होना।

**पाठा** पुं० (हि) १–हृष्ट-पुष्ट। मोटा। तगड़ा। २–जवान बकरा या भैंसा।

**पाठार्थी** वि०(सं) पढ़ने वाला।

**पाठावली** स्त्री० (सं) पाठों का समूह। पाठों की पुस्तक (रीडर)।

**पाठिका** स्त्री० (सं) १–पढ़नेवाली। २–पढ़ाने वाली।

**पाठित** वि० (सं) पढ़ाया या सिखाया हुआ।

**पाठी** पुं० (हि) १–पाठक। पाठ करने वाला। २–चीता चित्रक वृक्ष।

**पाठीन** पुं० (सं) १–गूगल का पेड़। २–एक प्रकार की मछली। ३–पुराणों की कथा सुनानेवाला।

**पाठ्य** वि० (सं) पठनीय। जो पढ़ाया जा सके।

**पाठ्यक्रम** पुं०(सं) पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने वाली पुस्तिका। (कोर्स, सिलेबस, केरिक्यूलम)।

**पाठ्यपुस्तक** स्त्री० (सं) पाठशालाओं में विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जाने वाली पुस्तक। (टेक्स्ट बुक)।

**पाड़** पुं० (हि) १–साड़ी धोती आदि का किनारा। २–मचान। पाइट। ३–कूएँ के मुख पर रखने की जाली। ४–फांसी का तख्ता। ५–पुश्ता। बांध।

**पाड़ई** स्त्री० (हि) पाटल नामक वृक्ष।

**पाड़ा** पुं० (हि) १–मोहल्ला। टोला। पुरवा। २–भैंस का नर बच्चा।

**पाड़िनी** स्त्री० (हि) हांडी। मिट्टी का बर्तन।

**पाढ़** पुं० (हि) १–पाटा। २–वह मचान जिस पर बैठ कर किसान रखवाली करता है। ३–कूएँ के मुंह पर रखी हुई लकड़ी। ४–वह ढांचा जिस पर कारीगर बैठ कर काम करते हैं।

**पाढ़त** स्त्री० (हि) जो कुछ पढ़ा जाय या जिसका पाठ किया जाय। जादू मंत्र।

**पाढर** पुं० (हि) पाटल या पढार का वृक्ष।

**पाढ़ा** पुं० (देश०) एक मृग विशेष जिसके शरीर पर सफेद चित्तियां होती हैं।

**पाणि** पुं० (सं) हाथ।

**पाणिक** पुं० (सं) १–जो खरीदा जा सके। सौदा।

२-हाथ।
पाणिकर्ण पुं० (सं) शिव। महादेव।
पाणिगृहीती वि० (सं) धर्मानुसार विवाहिता।
पाणिग्रह पुं० (स) विवाह। शादी।
पाणिग्रहण पुं० (सं) शादी। विवाह।
पाणिग्राहक पुं० (सं) पति।
पाणिघ पुं० (सं) १-ढोल बजाने वाला। २-कारीगर शिल्पी। ३-हाथ से बजाये जाने वाले ढोल, मृदंग आदि वाद्ययन्त्र।
पाणिघात पुं० (स) हाथ का प्रहार। घूँसा। चपत। थप्पड़।
पाणिघ्न पुं० (सं) १-शिल्पी। २-ताली बजाने वाला ३-उंगलिया चटकाना।
पाणिज पुं० (सं) १-उंगली। २-हाथ की उंगलियों के नाखून। ३-नख।
पाणितल पुं० (सं) १-हथेली। २-वैद्यक में दो तोले का एक परिमाण।
पाणिनि पुं० (सं) संस्कृत भाषा के प्रख्यात तथा प्राचीन व्याकरण-रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
पाणिपल्लव पुं० (स) उंगलियाँ।
पाणिपात्र पुं० (स) हाथ में लेकर या चुल्लू से पानी पीने वाला। अंजली से पात्र का काम लेने वाला।
पाणिपीड़न पुं०(सं) १-पाणिग्रहण। २-क्रोध अथवा पश्चाताप के कारण हाथों को परस्पर मलना।
पाणिपुट पुं० (सं) चुल्लू।
पाणिबंध पुं० (सं) विवाह। शादी।
पाणिभुक् पुं० (सं) गूलर का पेड़।
पाणिभुज पुं० (सं) दे० 'पाणिभुक्'।
पाणिमुक्त पुं० (सं) हाथ से फेंका हुआ ढेला या कोई अस्त्र।
पाणिमुख वि० (सं) पितर। वि० (सं) हाथ से खाने वाला।
पाणिमूल पुं० (सं) कलाई।
पाणिरुह पुं० (सं) उंगली। नख। नाखून।
पात पुं० (सं) १-गिरने या गिराने का भाव या क्रिया। २-नाश। ध्वंस। ३-पतन। ४-टूट कर गिरने की क्रिया या भाव। ५-राहु का नाम। ६-अशुभ स्थिति। ७-अभिभावक। पुं० (हि) १-पत्र। पत्ता। २-कान का गहना।
पातक पुं० (स) पाप। गुनाह।
पातकी वि० (सं) पापी। अधर्मी। कुकर्मी।
पातन पुं० (सं) १-झुकना। २-गिराने की क्रिया।
पातनीय पुं० (स) गिराने या तिरस्कार करने योग्य
पातर स्त्री० (सं) १-पत्तल। २-वेश्या। ३-तितली। वि० (स) पतला। सूक्ष्म।
पातरि स्त्री० (हि) पत्तल।
पातल स्त्री० (हि) दे० 'पातर'।
पातव्य वि० (सं) १-पीने योग्य। २-रक्षा करने योग्य
पातशाह पुं० (हि) बादशाह।
पात: वि० (हि) १-रक्षक। २-पीने वाला। पुं० (हि) पत्र। पत्ता।
पाताक्षत पुं० (हि) पत्र और अक्षत। पूजा की साधारण सामग्री। तुच्छ भेंट।
पातावा पुं० (फा) १-मोजा। २-पद के आकार का चमड़े का टुकड़ा जो जूते में डाला जाता है।
पातार पुं० (हि) दे० 'पाताल'।
पाताल पुं० (सं) १-नीचे के सप्त लोकों में से सबसे नीचे का लोक। २-अधोलोक। नागलोक। ३-सुराख। विवर। बिल। ४-लग्न के लग्न से चौथा स्थान। ५-पारा आदि शोधने का यन्त्र। ६-छंद-शास्त्र में वह चक्र जिससे मात्रिक छंद की संख्या गुरु, लघु, कला आदि का ज्ञान होता है।
पातालगंगा स्त्री० (सं) पाताल लोक में बहने वाली गंगा।
पातालयंत्र पुं० (सं) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें औषधियां, पारा आदि पिघलाये जाते हैं।
पातालवासी पुं० (सं) १-नाग। २-दैत्य। राक्षस।
पाति स्त्री० (हि) १-पत्ती। पर्ण। २-पत्र। चिट्ठी।
पातिग पुं० (स) पातक।
पातित वि०(सं) १-फेंका या गिराया हुआ। २-नीचा दिखाया हुआ। ३-नीचा किया हुआ (पदादि में)।
पातिव्रत पुं० (सं) पतिव्रता होने का भाव।
पातिव्रत्य पुं० (सं) दे० 'पातिव्रत'।
पाती स्त्री० (हि) १-पत्री। चिट्ठी। २-पत्ती। वृक्ष के के पत्ते। ३-लज्जा। प्रतिष्ठा।
पातुर स्त्री० (हि) वेश्या। रंडी।
पातुरनी स्त्री०(हि) वेश्या।
पात्र पुं० (सं) पापियों का उद्धार करने वाला।
पात्र पुं० (सं) १-वह वस्तु जिसमें कुछ रखा जाय। बरतन। आधार। २-वह व्यक्ति जो किसी वस्तु को प्राप्त करने का अधिकारी हो। ३-नदी के तटों के बीच का स्थान पाट। ४-अभिनेता। (एक्टर)। ५-आमात्य। राज्यसचिव। ६-पत्र। पत्ता। ७-स्रुवा आदि यज्ञ के उपकरण। वि० (सं) जो किसी कार्य या पद के उपयुक्त होने के कारण नियुक्त किया जा सकता हो। (एलिजिबल)।
पात्रक पुं० (सं) १-भिक्षापात्र। २-थाली। हाँडी आदि बरतन।
पात्रता स्त्री० (सं) पात्र होने का भाव। योग्यता। अधिकार।
पात्रत्व पुं० (सं) दे० 'पात्रता'।
पात्रिक पुं०(सं) प्याला। तश्तरी आदि पात्र। वि०(सं) योग्य। उचित।
पात्री स्त्री० (सं) १-छोटा बरतन। २-अभिनेत्री।

नहीं। (एक्ट्रीम)।

**पाथ्य** वि० (सं) जिसके साथ एक ही थाली में भोजन किया जा सके। सहभोजी।

**पाथ** पुं० (सं) १-जल। २-पवन। ३-भोजन। ४-सूर्य। ५-आकाश। पुं० (हि) मार्ग। रास्ता।

**पाथना** क्रि० (हि) १-गढ़ना। ठोक पीट कर सुडौल बनाना। २-सांचे में दबा कर टिकिया आदि बनाना। ३-किसी को पीटना या मारना।

**पाथनाथ** पुं० (सं) समुद्र।

**पाथनिधि** पुं० (सं) समुद्र।

**पाथर** पुं० (हि) दे० 'पत्थर'।

**पाथस्पति** पुं० (सं) वरुण।

**पाथा** पुं० (हि) १-जल। २-अन्त। ३-आकाश।

**पाथि** पुं० (हि) १-आँख। २-समुद्र। ३-खुरंड। घाव पर की पपड़ी। ४-एक प्रकार का शरबत।

**पाथेय** पुं० (सं) १-रास्ते में काम आने वाला खाद्य पदार्थ या कलेवा। २-सफर या राह खर्च। ३-कन्या राशि।

**पाथोज** पुं० (सं) कमल।

**पाथोद** पुं० (सं) मेघ। बादल।

**पाथोधर** पुं० (सं) मेघ। बादल।

**पाथोधि** पुं० (सं) समुद्र। सागर।

**पाथोन** पुं० (हि) कन्याराशि।

**पाथोनिधि** पुं० (सं) सागर। समुद्र।

**पाथ्य** वि० (सं) १-आकाश में रहने वाला। २-हवा में रहने वाला। ३-हृदय में बसने वाला।

**पाद** पुं० (सं) १-पैर। चरण। पाँव। २-चौथाई। ३-पुस्तक का प्रकरण। ४-तल। ५-बड़े पर्वत के पास का छोटा पर्वत। ६-रश्मि। किरण। ७-गमन। ८-शिव। ९-वृक्ष की जड़। १०-मन्त्र या पद का चौथा भाग। पुं० (हि) अपान वायु।

**पादक** वि० (सं) १-चलने वाला। २-चौथाई। ३-छोटा पैर।

**पादक्षेप** पुं० (सं) १-चरणन्यास। पैर रखना।

**पादग्रंथि** स्त्री० (सं) घुटना। गुल्फ।

**पादग्रहण** पुं० (सं) पैर छूकर प्रणाम करना।

**पादचत्वर** पुं० (सं) १-बकरा। २-बालू। ओला। ४-पीपल का वृक्ष।

**पादचारी** पुं० (सं) पैदल चलने वाला। पैदल। प्यादा।

**पादज** पुं० (सं) शूद्र। वि० (सं) जो पैरों से उत्पन्न हो।

**पादजल** पुं० (सं) १-चरणोदक। पैरों की धोवन। २-मठा।

**पाद-टिप्पणी** स्त्री० (सं) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ या लेख के नीचे लिखी जाती है। (फुट-नोट)।

**पाद-टीका** स्त्री० (सं) दे० 'पाद-टिप्पणी'।

**पाद-तल** पुं० (सं) पैर का तलवा।

**पादत्र** पुं० (सं) दे० 'पादत्राण'।

**पादत्राण** पुं० (सं) जूता। खड़ाऊँ। वि० (सं) पद-रक्षक। जो पैर की रक्षा करे।

**पाददलित** वि० (सं) पददलित। पैर से कुचला हुआ

**पाददारिका** स्त्री० (सं) बिवाई। पैर की एड़ी के आस-पास फट जाने का रोग।

**पाददाह** पुं० (सं) १-तलवों का जलना। २-एक पित्त से उत्पन्न होने वाला रोग जिससे तलवों में जलन होती है।

**पादधावन** पुं० (सं) पैर धोने की क्रिया। वह बालू या रेत आदि जिससे पैर धोकर साफ किये जाते हैं

**पादनख** पुं० (सं) पैर की उँगलियों के नख।

**पादना** क्रि० (हि) अपान वायु का त्याग करना।

**पादनालिका** स्त्री० (सं) पैर में पहनने का गहना।

**पादन्यास** पुं० (सं) दे० 'पादक्षेप'।

**पादनिकेत** पुं० (सं) पैर रखने की छोटी चौकी।

**पादपंकज** पुं० (सं) कमल के समान चरण।

**पादप** पुं० (सं) १-वृक्ष। पेड़। २-पीढ़ा।

**पादप-शास्त्र** पुं० (सं) उन लाखों वर्ष प्राचीन पेड़ों आदि का अध्ययन जो अब पत्थर आदि के रूप में बदल गये हैं। (पोलियो-बोटैनी)।

**पाद-पथ** पुं० (सं) पगडंडी।

**पादपद्धति** स्त्री० (सं) पगडंडी।

**पादपीठ** पुं० (सं) पैर रखने का पीढ़ा। पैर का आसन। पादपीठिका।

**पादपूरण** पुं० (सं) १-किसी श्लोक के किसी चरण को लेकर पूरा श्लोक या छंद बना देना। २-वह शब्द या अक्षर जो किसी पद की पूर्ति के निमित्त रखा जाय।

**पादप्रक्षालन** पुं० (सं) पैर धोना।

**पादप्रहार** पुं० (सं) पैर की ठोकर या लात।

**पादबंधन** पुं० (सं) १-पशुओं के पैर बांधना। २-कोई वस्तु जिससे पैर बांधे जायें।

**पादभुज** पुं० (सं) शिव। महादेव।

**पादमुद्रा** स्त्री० (सं) पैर के चिह्न या निशान।

**पादमूल** स्त्री० (सं) १-एड़ी या टखना। २-पैर का तलवा। ३-पर्वत की तलहटी। ४-किसी व्यक्ति के विषय में नम्रतासूचक कथन।

**पादरक्षक** पुं० (सं) जूता। खड़ाऊं।

**पादरज** स्त्री० (सं) पैर की धूल।

**पादरज्जु** स्त्री० (सं) वह सांकल या रस्सा जिससे हाथी के पैर बांधे जाते हैं।

**पादरी** पुं० (हि) ईसाइयों का पुरोहित जो उनको उपासना आदि कराता है।

**पादरोह** पुं० (सं) बटवृक्ष।

**पादरोहण** पुं० (सं) बटवृक्ष ।
**पादवंदन** पुं० (सं) पैर छूकर प्रणाम करना ।
**पादविर्क** पु० (स) पथिक ।
**पादविन्यास** पुं० (सं) पैर रखने का ढंग ।
**पादशाखा** स्त्री० (सं) पैर की उँगलियां ।
**पादशाह** पुं० (फा) बादशाह ।
**पादशाही** स्त्री० (फा) बादशाही ।
**पादशाहजादा** पुं० (फा) राजकुमार ।
**पादशोथ** पुं० (सं) पैर की सूजन ।
**पादशोच** पु० (सं) पैर धोना ।
**पादसेवन** १-पैर छूकर प्रतिष्ठा करना । २-सेवा ।
**पादसेवा** स्त्री० (सं) १-चरणसेवा । २-सेवा ।
**पादस्वेदन** पुं० (सं) पैर में पसीना आना ।
**पादहत** वि० (सं) लतियाया हुआ ।
**पादहीन** वि० (सं) १-जिसके चरण न हों । २-तीन चरण वाली (कविता) ।
**पादांक** पु० (सं) पैर का चिह्न या निशान ।
**पादांगद** पुं० (स) नूपुर ।
**पादांगुलि** स्त्री० (सं) पैर की उंगली ।
**पादांगुष्ठ** पुं० (सं) पैर का अंगूठा ।
**पादांत** पु० (सं) १-पैर का अगला भाग । २-पद या श्लोक का अन्तिम भाग ।
**पादांबु** पुं० (सं) मठा जिसमें एक चौथाई जल मिला हो ।
**पादाक्रांत** वि० (सं) १-पददलित । २-पराजित ।
**पादाघात** पुं० (सं) १-ठोकर । लात ।
**पादात** पुं० (सं) पैदल सिपाही ।
**पादाति** पुं० (सं) पैदल सिपाही ।
**पादातिक** पुं० (सं) दे० 'पादाति' ।
**पादारक** पु०(सं) नाव के यात्रियों के बैठने की पटरी
**पादारघ** पुं० (हि) दे० 'पाद्यार्घ' ।
**पादारविंद** पुं० (सं) चरणकमल ।
**पादावर्त्त** पुं० (स) कुएं से जल निकालने का रहट ।
**पादाहत** वि० (सं) जिस पैर से आघात किया गया हो
**पादी** पुं० (हि) पैर से चलने वाले जन्तु । वि० (हि) जो एक चौथाई का भागीदार हो ।
**पादुका** स्त्री० (सं) १-खड़ाऊं । २-जूता ।
**पादुकाकार** पुं० (सं) बढ़ई । मोची । खड़ाऊं या जूता बनाने वाला ।
**पादू** स्त्री० (स) खड़ाऊँ । जूता ।
**पादोदक** पु० (सं) चरणामृत । वह जल जिससे किसी पूज्य व्यक्ति के पैर धोये गये हों ।
**पादोदर** पुं० (स) सांप ।
**पाद्य** पु० (सं) पैर धोने का जल या वह जल जिससे पैर धोये हों । वि० (सं) पैर संबन्धी । पैर का ।
**पाद्यार्घ** पुं० (सं) १-हाथ पैर धुलाने का जल । २-पूजा सामिग्री । ३-भेंट या पूजा में दिया जाने वाला धन ।
**पाधा** पुं० (हि) १-आचार्य । उपाध्याय । २-पंडित ।
**पान** पु० (सं) १-घूंट-घूंट करके किसी द्रव-पदार्थ को गले के नीचे उतारना । पीना । २-पेय द्रव्य । ४-३-मद्यपान । ४-मद्य । मदिरा । ५-पीने का पात्र । ६-पानी । ७-शस्त्रों को गरम करके द्रव पदार्थ में डुबोने से आई हुई सान या चमक । ८-नहर । ९-चुम्बन । १०-निःश्वास । पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते पर कत्था चूना लगाकर खाया जाता है । ताम्बूल । २-लड़ी । ३-पान के आकार की चौकी जो हार में लटकी रहती है । ४-ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक जिस पर लाल रङ्ग की बूटियां बनी रहती हैं । ५-हाथ । पाणि ।
**पानक** पुं० (सं) १-पेय पदार्थ । शर्बत । २-पना । पकाये हुए आम के रस में नमक, मिर्च आदि मिला कर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ ।
**पानगोष्ठिका** स्त्री० (सं) १-शराबियों की मंडली । २-मदिरालय । ३-मद्यपान करने के लिए एकत्रित शराबियों की मंडली ।
**पानगोष्ठी** स्त्री० (सं) दे० 'पानगोष्ठिका' ।
**पानदान** पुं० (हि) वह डिब्बा जिसमें पान, कत्था, चूना, सुपारी आदि सामग्री रखी जाती है । पन-डब्बा ।
**पानदोष** पुं० (सं) मद्यपान का व्यसन या लत ।
**पानप** पुं० (सं) शराबी । पियक्कड़ ।
**पानपत्ता** पुं० (हि) १-लगा हुआ पान । तुच्छ भेंट ।
**पानपात्र** पुं० (सं) मद्यपान का पात्र ।
**पानफूल** पुं० (हि) १-कोमल वस्तु । २-तुच्छ भेंट ।
**पानबीड़ा** पुं० (हि) सगाई पक्की करते समय पान के बीड़ा देने की रस्म ।
**पानभूमि** स्त्री० (सं) वह स्थान जहां शराबी मदिरा पान करते हैं । मदिरालय ।
**पानमंडली** पुं० (स) मदिरा पान करने वालों की गोष्ठी ।
**पानमत्त** वि० (सं) नशे में चूर ।
**पानमद** पुं० (सं) मदिरा का नशा ।
**पानरा** पुं० (हि) दे० 'पनारा' ।
**पानवणिज** पु० (सं) कलवार । शराब बेचने वाला ।
**पानविभ्रम** पुं० (सं) १-नशा । २-अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न एक रोग ।
**पानस** पु० (स) कटहल से बनाई जाने वाली एक प्रकार की प्राचीन शराब । वि० (सं) कटहल से सम्बन्धित ।
**पानसुपारी** स्त्री० (हि) वह समारोह जिसमें आगत व्यक्तियों का पान सुपारी से सम्मान किया जाता है
**पानही** स्त्री० (हि) जूता ।
**पाना** क्रि० (हि) १-प्राप्त करना । हासिल करना ।

२-अच्छा या बुरा फल भोगना। ३-खोई हुई या दी हुई वस्तु फिर से हाथ में आना। ४-देख लेना जान लेना। ५-अनुभव करना। भोगना। ६-भोजन करना। ७-समर्थ होना। ८-ज्ञान प्राप्त करना।

**पानागार** पुं० (सं) मदिरालय। जहां बहुत से लोग बैठकर मद्यपान करते हों।

**पानि** पुं० (हि) १-हाथ। पाणि। २-जल। पानी।

**पानिक** पुं० (सं) कलवार। मदिरा बेचने वाला।

**पानिग्रहण** पुं० (हि) दे० 'पाणिग्रहण'।

**पानिप** पुं० (हि) १-चमक। कांति। २-पानी। जल

**पानिल** पुं० (सं) शराब पीने का बरतन।

**पानी** पुं० (हि) १-नदी, कूप, वर्षा आदि से प्राप्त होने वाला वह प्रसिद्ध यौगिक द्रव-पदार्थ जो नहाने, खाने, खेत आदि सींचने के काम आता है और सृष्टि के लिये अनिवार्य होता है (यह दो भाग उद्-जन और एक भाग अम्लजन गैसों से बनता है)। जल। नीर। २-जीव, आँख, घाव आदि से रसने वाला तरल पदार्थ। ३-वर्षा। वृष्टि। ३-कोई वस्तु जो जल के समान पतली हो। ४-वह द्रव पदार्थ जो किसी वस्तु को निचोड़ने से प्राप्त हो। ५-तलवार आदि शस्त्रों के फल की वह रङ्गत जिससे उनकी उत्कृष्टता प्रकट हो। आब। ६-चमक। कांति ७-वर्ष। साल। ८-मुलम्मा। ९-मान। लज्जा। प्रतिष्ठा। १० वीर्य। ११-पुंसत्व। स्वाभिमान। १२-पानी के समान ठंडा पदार्थ। १३-पानी के समान स्वादहीन पदार्थ। १४-बार। दफा। १५-अवसर। १६-जलवायु। १७-परिस्थिति। सामाजिक दशा।

**पानीतराश** पुं० (फा) नाव या जहाज की पेंदी की वह लकड़ी जो पानी को चीरती है।

**पानीदार** वि० (हि) १-आबदार। चमकदार। २-प्रतिष्ठित। इज्जत वाला। ३-साहसी।

**पानीदेवा** वि० (हि) १-पिंडदान करने वाला। २-पुत्र।

**पानीफल** पुं० (हि) सिंघाड़ा।

**पानीय** पुं० (सं) १-जल। २-पेय पदार्थ। वि० (सं) १-पीने योग्य। २-रक्षा करने योग्य।

**पानीयशाला** स्त्री० (सं) प्याऊ। पौसरा।

**पानूस** पुं० (हि) फानूस।

**पानौरा** पुं० (हि) पान के पत्ते की बनी पकौड़ी।

**पान्यो** पुं० (हि) पानी।

**पाप** पुं० (सं) १-इस लोक में बुरा माना जाने वाला तथा परलोक में अशुभ फलदायक कर्म। पातक। गुनाह। २-अपराध। जुर्म। ३-वध। हत्या। ४-बदनीयत। ५-बुराई। अहित। ६-जंजाल। वि०(हि) पापी। नीच। अशुभ।

**पापक** पुं० (सं) पाप। वि० (सं) पापयुक्त।

**पापकर** वि० (सं) दे० 'पापकारक'।

**पापकर्म** पुं० (सं) अनुचित काम। बुरा काम।

**पापकारक** वि० (सं) पापी। पाप करने वाला।

**पापकर्मी** वि० (हि) पापी। पाप करने वाला।

**पापक्षय** पुं० (सं) १-पापों का नाश। २-तीर्थ। वह स्थान जहां पापों का नाश हो।

**पापघ्न** पुं० (सं) तिल। वि० (सं) पाप नाश करने वाला। जिसके पाप नष्ट हों।

**पापघ्नी** स्त्री० (सं) तुलसी।

**पापचर** वि० (सं) पापी। पाप कमाने वाला।

**पापचारी** वि० (सं) पापी।

**पापचेता** वि० (हि) जिसके मन में सदा पाप बसता है। दुष्ट-चित्त।

**पापड़** पुं० (हि) वह मसालेदार चपाती जो उड़द या मूंग की पिट्ठी से बनती है। वि० (हि) १-कागज का सा पतला। २-सूखा। शुष्क।

**पापड़ाखार** पुं० (हि) केले के पेड़ का खार।

**पापत्व** पुं० (सं) पाप का भाव।

**पापदृष्टि** वि० (सं) बुरी निगाह वाला।

**पापधी** वि० (सं) पापमति। निंदित अथवा दुष्ट बुद्धि वाला।

**पापनाम** वि० (सं) बदनाम।

**पापनाशक** वि० (सं) पापों का नाश करने वाला।

**पापनाशन** पुं० (सं) १-वह कर्म जिससे पाप का नाश हो। २-विष्णु। ३-पाप नाश का भाव या क्रिया।

**पापफल** वि० (सं) पाप का फल। अशुभ फल देने वाला।

**पापबुद्धि** वि० (सं) पापमति। दुष्टमति।

**पापमोचन** पुं० (सं) पाप को दूर करने की क्रिया या भाव।

**पापमोचनी** स्त्री० (सं) चैत्र कृष्णपक्ष की एकादशी।

**पापशील** वि० (सं) पाप कर्मों को करने की प्रवृत्ति रखने वाला।

**पापहर** वि० (सं) पाप का नाशक। पापहारक। पुं० (सं) एक नदी का नाम।

**पापा** पुं० (हि) बच्चों का पिता को सम्बोधन करने का एक शब्द।

**पापाचार** पुं० (सं) दुराचार। पाप का आचरण।

**पापात्मा** वि०(सं) जिसकी आत्मा सदा पाप में लिप्त रहे। पापी। दुष्टात्मा।

**पापिष्ठ** वि० (सं) बहुत बड़ा पापी।

**पापी** वि० (हि) १-पातकी। पाप करने वाला। २-क्रूर। निर्दय। परपीड़क।

**पापोश** पुं० (फा) जूता।

**पाबंद** वि० (फा) १-बद्ध। बँधा हुआ। २-नियम

आदि का पालन करने वाला या उससे आबद्ध। पुं० (फा) १-घोड़े की पिछाड़ी। २-नौकर। दास।
पाबंदी स्त्री० (फा) १-पाबन्द होने का भाव। २-नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण। ३-लाचारी। मजबूरी।
पाभ स्त्री० (दे०) १-गोटे किनारी के छोर की डोरी। २-रस्सी। डोरी। ३-एक चर्मरोग।
पामघ्न पुं० (स) गंधक।
पामघ्नी स्त्री० (स) कुटकी।
पामड़ा वि० (सं) दे० 'पावँड़ा'।
पामर वि० (स) १-दुष्ट। कमीना। २-पापी। अधम। नीचकुलोत्पन्न। ३-मूर्ख।
पामारि पुं० (सं) गंधक।
पामरी स्त्री० (हि) दुपट्टा।
पामाल वि० (फा) १-पददलित। २-तबाह। बरबाद।
पामाली स्त्री० (फा) तबाही। बरबादी। नाश।
पामोज पुं० (हि) एक प्रकार का कबूतर जिसके पंजे तक परों से ढके रहते हैं।
पायँ पुं० (हि) पांव। पैर।
पायँजेहरि स्त्री० (हि) पाजेब।
पायँत स्त्री० (हि) पायँता।
पायँता पुं० (हि) चारपाई या बिछौने का वह सिरा जिस ओर पांव रहते हैं।
पायअंदाज पुं० (फा) दे० 'पा-अंदाज'।
पाय पुं० (हि) पांव। पैर।
पायक वि० (स) १-पीने वाला। पुं० (हि) १-पैदल सिपाही। २-दूत। अनुचर। सेवक।
पायकार पुं० (फा) बनाने वालों से माल खरीद कर दुकानदारों को बेचने वाला।
पायखाना पुं० (फा) दे० 'पाखाना'।
पायजामा पुं० (फा) दे० 'पाजामा'।
पायजेब स्त्री० (फा) दे० 'पाजेब'।
पायजेहरि स्त्री० (हि) दे० 'पाजेब'।
पायड़ा पुं० (हि) दे० 'पावड़ा'।
पायतख्त पुं० (फा) राजधानी।
पायतान पुं० (फा) पैताना। पायँता।
पायताब पुं० (फा) मोजा। जुर्राब।
पायदान पुं० (फा) सवारी गाड़ी में बाहर की ओर लगाया हुआ तख्ता जिस पर पैर रख कर उसमें [illegible]
पायदार वि० (फा) मजबूत। दृढ़। टिकाऊ।
पायदारी स्त्री० (फा) दृढ़ता। मजबूती। टिकाऊपन।
पायपोश पुं० (फा) पापोश। जूता।
पायबंद वि० (फा) दे० 'पाबंद'।
पायबंदी स्त्री०(फा) दे० 'पाबंदी'।
पायमाल वि० (फा) दे० 'पामाल'।
पायरा पुं० (हि) घोड़े की रकाब। पुं० (देश०) एक प्रकार का कबूतर।
पायल स्त्री०(हि) १-पाजेब। नूपुर। २-बांस की सीढ़ी ३-तेज चलने वाली हथिनी। ४-जन्म के समय पहले पैर बाहर निकालने वाला बच्चा।
पायस स्त्री० (सं) १-दूध में चावल डाल कर रंधाया हुआ पदार्थ। खीर। २-देवदार वृक्ष से निकला हुआ गोंद। वि० (सं) दूध या जल का बना हुआ।
पायसा पुं० (हि) पड़ौस।
पाया पुं० (फा) १-कुर्सी, चौकी, मेज, पलंग आदि में नीचे लगे हुए छोटे खम्बे जिनके सहारे इनका ढांचा खड़ा रहता है। २-खम्भा। स्तम्भ। पद। ओहदा। ४-जीना। सीढ़ी। ५-घोड़े के पैर का एक रोग।
पायिक पुं० (सं) १-पैदल सिपाही। २-दूत। चर।
पायी वि० (सं) पानकारी। पीने वाला।
पायु पुं० (सं) मलद्वार।
पारगत वि० (सं) दे० 'पारगत'।
पारंपरीण वि० (सं) परम्परा से चला आया हुआ।
पारंपरीय वि० (सं) परंपरागत।
पार पुं० (सं) १-नदी या समुद्र का सामने वाला दूसरा तट। सीमा। २-किसी वस्तु के आगे या सामने की ओर। ३-अन्त। सिरा। छोर। ४-किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण। अव्य० (स) दूर। परे।
पारई स्त्री० (हि) बड़ा कसोरा या कटोरा।
पारक वि० (सं) १-पालन करने वाला। २-पार करने वाला। ३-उद्धार करने वाला।
पारख स्त्री० (हि) दे० 'परख'। पुं० (हि) दे० 'पारखी'
पारखद पुं० (हि) दे० 'पार्षद'।
पारखी पुं० (हि) परख या पहचान करने वाला। परीक्षक। परखने वाला।
पारग वि० (सं) १-पार जाने वाला। २-अन्त तक पहुंचने वाला। ३-प्रकांड विद्वान।
पारगत वि० (सं) १-जिसने पार किया हो। २-पूरा जानकार। समर्थ। जिसने किसी विषय को आदि से अन्त तक पूरा किया हो।
पारगामी वि० (स) दूसरे या परले पार गया हुआ।
पारचा पुं० (फा) १-टुकड़ा। धज्जी। २-कपड़ा। वस्त्र। ३-पोशाक।
पारज पुं० (स) सोना। स्वर्ण।
पारजात पुं० (हि) दे० 'पारिजात'।
पारजायिक पुं० (सं) लम्पट पुरुष। व्यभिचारी।
पारण पुं० (सं) १-पार करने या उतारने की क्रिया या भाव। २-उत्तीर्ण होना। (पासिंग)। ३-रुकावट के स्थान को पार करके आगे बढ़ना। ४-समाप्ति। ५-धार्मिक ग्रन्थ का नियमित रूप से पाठ। ६-व्रत के बाद का पहला भोजन।

**पारणक** वि० (सं) पारण करने वाला। पुं० (सं) १–वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो। २–वह अनुमति पत्र जिसको दिखा कर इधर उधर कोई आ-जा सके जैसे सिनेमा में पारण-पत्र। (पास)।
**पारणपत्र** पुं० (सं) दे० 'पारणक'।
**पारणा** स्त्री० (सं) व्रत के बाद का पहला भोजन।
**पारणीय** वि० (सं) पूरा करने योग्य।
**पारतंत्र्य** वि० (सं) पराधीनता।
**पारत्रिक** वि० (सं) १–परलोक का। पारलौकिक। २–मृत्यु के पश्चात उत्तम गति प्रदाता।
**पारथ** पुं० (हि) दे० 'पार्थ'।
**पारथिव** पुं० (हि) दे० 'पार्थिव'।
**पारद** पुं० (सं) १–पारा। २–एक प्राचीन म्लेच्छ जाति का नाम।
**पारदर्शक** वि० (सं) जिसके सामने और बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे सके। (ट्रांसपेरेंट)।
**पारदर्शीकरण** स्त्री० (सं) दे० 'क्ष-किरण'। (एक्सरे)
**पारदर्शिता** स्त्री० (सं) पदार्थों के आरपार दिखाई देने का गुण। (ट्रांसपेरेंसी)।
**पारदर्शी** वि० (सं) १–दूर तक की बात देखने वाला। दूरदर्शी। २–दूर तक देखने वाला।
**पारदारिक** पुं० (सं) व्यभिचारी। पर-स्त्री से मैथुन करने वाला।
**पारदेशिक** वि० (सं) दूसरे देश का। पर देश का। पुं० (सं) पारदेशी। यात्री।
**पारधि** पुं० (हि) दे० 'पारधी'।
**पारधिपति** पुं० (हि) कामदेव। धनुर्धरों में श्रेष्ठ।
**पारधी** पुं० (हि) १–व्याध। बहेलिया। शिकारी। २–हत्यारा। बधिक। स्त्री० (हि) ओट। आड़।
**पारन** पुं० (हि) दे० 'पारण'।
**पारना** क्रि० (हि) १–गिराना। डालना। २–लिटाना जमीन पर लम्बा डालना। ३–कुश्ती में पछाड़ना। ४–रखना। ५–शामिल करना। मिलाना। ६–पहनना। ७–सांचे आदि में ढालना। ८–करने में समर्थ होना।
**पारनेता** पुं० (सं) पार ले जाने वाला। किसी विषय पर पूरा ज्ञान रखने वाला।
**पारपत्र** पुं० (सं) यात्रियों को जहाज या वायुयान द्वारा विदेश जाने के लिए दिया गया अनुज्ञा-पत्र। (पासपोर्ट)।
**पारबती** स्त्री० (हि) दे० 'पार्वती'।
**पारमार्थिक** वि० (सं) १–धर्मार्थ। २–जिससे परमार्थ सिद्ध हो। ३–वास्तविक। यथार्थ में विद्यमान
**पारमार्थ्य** पुं० (सं) परम सत्य।
**पारप्रेषण** पुं० (सं) बिना तार द्वारा समाचार आदि भेजना। (ट्रांसमिट)।
**पारमिक** वि० (सं) श्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट।
**पारमित** वि० (सं) १–आरपार गया हुआ। पल्ले-पार गया हुआ।
**पारमिता** स्त्री० (सं) पूर्णता, उत्कृष्टता—दान, शील, शांति आदि।
**पारलौकिक** वि० (सं) १–परलोक संबन्धी। २–परलोक में शुभ फल देने वाला।
**पारवत** पुं० (सं) कपोत। कबूतर।
**पारवश्य** पुं० (सं) पराधीनता। परवशता। परतन्त्रता
**पारशव** पुं० (सं) १–पर स्त्री से उत्पन्न पुत्र। २–एक वर्णसंकर जाति। ३–लोहा। ४–दोगला। हरामी। वि० (सं) लोहे का बना हुआ।
**पारषद** पुं० (हि) दे० 'पार्षद'।
**पारस** पुं० (हि) १–एक कल्पित पत्थर जिसके लोहा छुआने से सोना बन जाता है। स्पर्शमणि। २–अत्यधिक लाभदायक वस्तु। ३–परसा हुआ भोजन ४–पत्तल जिसमें भोजन परोसा हुआ हो। ५–ईरान देश।
**पारसव** वि० (हि) दे० 'पारशव'।
**पारसी** वि० (स) पारस देश संबन्धी। पुं० (हि) १–एक अग्निपूजक जाति। २–फारस देश की भाषा।
**पारसीक** पुं० (सं) १–फारस देश। २–फारस देश का घोड़ा। फारस देश का निवासी।
**पारस्परिक** वि० (सं) आपस का। एक दूसरे का। परस्पर होने वाला। (म्युचुअल, रेसीप्रोकल)।
**पारस्परिक संविदा** स्त्री० (सं) आपसी व्यवहार के लिये बनाई हुई परंपरा। (कोवेनेन्टस)।
**पारस्पर्य** पुं० (सं) एक दूसरे का व्यवहार में खयाल रखना तथा अनेक सुविधा देने का सिद्धांत। (रेसीप्रोसिटी)।
**पारस्य** पुं० (सं) पारस देश। ईरान देश।
**पारा** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध श्वेत रंग की चमकदार तरल धातु। (मरकरी)। २–टुकड़ा। ३–मिट्टी का बड़ा कसोरा। ४–छोटी दीवार।
**पारापत** पुं० (सं) कपोत। कबूतर।
**पारापार** पुं० (स) १–दोनों किनारे या तट। समुद्र
**पारायण** पुं० (सं) १–पूरा करने का कार्य। समाप्ति। २–किसी धार्मिक ग्रंथ का नियमित रूप से आरम्भ से अंत तक का पाठ।
**पारायणिक** पुं० (सं) १–नित्य नियमित रूप से धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला। छात्र।
**पारायणी** स्त्री० (सं) १–मनन। चिंतन। २–सरस्वती
**पारारुत** पुं० (स) चट्टान। शिला।
**पारावत** पुं० (स) १–कपोत। कबूतर। २–बन्दर। ३–पर्वत। ४–पण्डुक।
**पारावार** पुं० (सं) दे० 'पारापार'।

**पाराशर** पुं० (सं) १-पाराशर पुत्र व्यास जी का नाम २-पाराशर का वंशज ।
**पाराशरी** पुं० (सं) संन्यासी ।
**पारि** स्त्री० (हि) १-हद । सीमा । २-तरफ । ओर । ३-जलाशय का तट । पुं० (सं) मद्यपान पात्र । प्याला ।
**पारिकुत** पुं० (सं) नौकर । भृत्य ।
**पारिख** वि० (सं) पारखी संबन्धी । पारखी का । स्त्री० (हि) दे० 'परख' ।
**पारिगर्भिक** पुं० (सं) कबूतर ।
**पारिग्रामिक** वि० (सं) गांव के चारों ओर का ।
**पारिजात** पुं० (सं) १-समुद्रमंथन के समय निकाले गये पाच देव वृक्षों में से एक । हारसिंगार । २-कचनार । ३-एक मुनि का नाम ।
**पारिजातक** पुं० (स) १-हारसिंगार । २-इन्द्र के उपवन का एक देववृक्ष ।
**पारिणामिक** वि० (सं) किसी के उपरांत तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाला । (कौंसीक्वेंशल) ।
**पारिणाय्य** वि० (सं) विवाह में प्राप्त (धन) ।
**पारित** वि० (सं) १-सभा, विधान सभा आदि में विधिपूर्वक स्वीकृत (कोई प्रस्ताव या विधेयक) । (पास्ड) । २-जो पास होगया हो ।
**पारितोषिक** पुं० (सं) किसी के कार्य से प्रसन्न होने पर उसे दिया जाने वाला धन । इनाम । (प्राइज, रिवार्ड) । वि० (सं) आनन्दकर । प्रीतिकर ।
**पारितोषिक प्रतिज्ञापत्र** पुं० (सं) इनाम में दिया हुआ प्रतिज्ञा पत्र । (प्राइज बॉड) ।
**पारिपंथिक** पुं० (सं) डाकू । लुटेरा ।
**पारिपार्श्वक** पुं० (सं) १-सदा साथ रहने वाला अनुचर । सेवक । २-परिषद् । ३-नाटक में स्थापक का अनुचर ।
**पारिप्लव** पुं० (सं) १-नौका । नाव । २-एक प्रकार का जल पक्षी । वि० (सं) १-चंचल । चपल । २-तैरने वाला । ३-उद्विग्न ।
**पारिभाव्य** पुं० (सं) परिभू या जामिन होने का भाव
**पारिभाव्य-धन** पुं० (सं) जमानत या प्रतिभूति के रूप में कोई शर्त आदि पूरी कराने के लिये लिया हुआ धन या राशि । (कॉशन मनी) ।
**पारिभाषिक** वि० (सं) १-जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय । २-(शब्द) जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय । (टैक्निकल) ।
**पारिभाषिक शब्दावली** स्त्री० (सं) विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली या शब्दों की सूची । (ग्लॉसरी ऑफ टैक्निकल वर्ड्ज) ।
**पारियानिक** पुं० (सं) गाड़ी । बग्घी ।
**पारिवारिक व्यवस्थापन** पुं० (सं) परिवार की व्यवस्था । (फेमिली अरेंजमेंट) ।
**पारिश्रमिक** पुं० (सं) किसी को परिश्रम करने के फलस्वरूप दिया जाने वाला धन । (रिम्यूनरेशन) ।
**पारिषद** वि०(सं) परिषद्-संबन्धी । पुं० (सं) १-परिषद् में बैठने वाला । सभासद । पंच । २-अनुयायी । वर्ग । गण । (काउंसिलर) ।
**पारी** स्त्री० (सं) १-हाथी के पैर का रस्सा । २-पानी का घड़ा । ३-पीने का पात्र । प्याला । स्त्री० (हि) १-बारी । २-गुड़ आदि का जमाया हुआ ढोंका ।
**पारीक्षित** पुं० (स) १-राजा परीक्षित का पुत्र या वंशज । २-जन्मेजय ।
**पारीरण** पुं० (सं) कछुवा ।
**पारु** पुं० (सं) १-सूर्य । २-अग्नि ।
**पारुष्य** पुं० (सं) १-कठोरता । रूखापन । २-वचन की कठोरता । गाली । दुर्वचन ।
**पारेषण** पुं० (सं) बिना तार के सूचना आदि भेजने का कार्य । (ट्रांसमिशन) ।
**पारोक्ष** वि०(सं) परोक्ष सम्बन्धी ।
**पार्क** पुं० (अं) उद्यान । बगीचा ।
**पार्घट** पुं० (सं) धूल या राख ।
**पार्टी** स्त्री० (अं) १-दल । मंडली । २-वह समारोह जिसमें निमंत्रित लोगों को जलपान या भोजन कराया जाता है ।
**पार्ण** वि० (सं) पत्ता-संबन्धी ।
**पार्थ** पुं० (सं) १-राजा । पृथ्वीपति । २-युधिष्ठिर, भीम, और अर्जुन का नाम जो विशेषतया अर्जुन के लिये ही प्रयुक्त होता था ।
**पार्थ सारथि** पुं० (स) कृष्ण ।
**पार्थक्य** पुं० (सं) १-पृथक होने की क्रिया या भाव । २-वियोग ।
**पार्थव** पुं० (सं) १-बड़प्पन । बड़ाई । २-स्थूलता । ३-चौड़ाई ।
**पार्थिव** वि० (सं) १-पृथ्वी या मिट्टी का । २-पृथ्वी-सम्बन्धी । ३-पृथ्वी पर शासन करने वाली । ४-राजसी । शाही । पुं० (सं) १-मिट्टी का शिवलिंग । २-मिट्टी का बरतन । ३-पृथ्वी पर रहने वाला । ४-राज ।
**पार्थिव-कन्या** स्त्री० (सं) राजकुमारी ।
**पार्थिव-दूरबीन** स्त्री० (हि) पृथ्वी पर रखी हुई दूर की वस्तुएं तारे आदि को देखने की दूरबीन । (टेरेस्ट्रियल टेलिस्कोप) ।
**पार्थिवी** स्त्री० (सं) लक्ष्मी । सीता । पार्वती ।
**पार्पर** पुं० (सं) यम ।
**पार्लमेंट** स्त्री० (अं) राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली निर्वाचित विधान सभा । संसद (विशेषतः इंगलैंड की विधान सभा) । (हाउस ऑफ कॉमन्स)
**पार्वण** वि० (सं) जो किसी पर्व के समय किया जाय

जैसे श्राद्ध।

**पार्वत** वि० (सं) १-पर्वत सम्बन्धी। २-पर्वत पर रहने वाला। ३-पर्वत का।

**पार्वती** स्त्री० (सं) १-हिमालय की पुत्री तथा शिव की पत्नी। उमा। गिरिजा। भवानी। २-गोपी-चन्दन।

**पार्वतीनंदन** पुं० (सं) गणेश। कार्तिकेय।

**पार्वतीय** वि० (सं) पहाड़ का। पहाड़ी।

**पार्शुका** स्त्री० (सं) पसली।

**पार्श्व** पुं० (सं) १-शरीर के बगलों के नीचे का भाग अग्रभाग। कक्षक। २-पसली। ३-अगल-बगल की जगह। ४-कुटिल उपाय। वि० (स) पास का। निकट।

**पार्श्वक** पुं० (सं) कुटिल उपायों से धन कमाने वाला या उन्नति करने वाला।

**पार्श्वग** पुं० (सं) अर्दली। सहचर नौकर। वि० (सं) साथ रहने वाला।

**पार्श्वगत** वि० (सं) शरणागत।

**पार्श्वटिप्पण** पुं० (हि) पुस्तक, लेखादि के पृष्ठ पर एक किनारे पर लिखे गये विचार या याद रखने वाली बातें। (मार्जिनल नोट)।

**पार्श्वनाथ** पुं० (सं) जैनों के तीसवें तीर्थङ्कर

**पार्श्वनायक** पुं० (हि) वायु सेना की दो या इससे अधिक दस्तों की बनी टुकड़ी का नायक। (विंग-कमाण्डर)।

**पार्श्व-परिवर्तन** पुं० (सं) करवट बदलना।

**पार्श्वप्रसारण** पुं० (हि) नये अनुच्छेद की पहली पंक्ति के पूर्व का हाशिया टाइप बैठाते समय बढ़ा देना। (इनडेंट)।

**पार्श्वभित्ति** स्त्री० (सं) किनारे की दीवार। (साइड-वॉल)।

**पार्श्वरक्षक सेना** स्त्री०(सं) पार्श्व की रक्षा करने वाली सेना। (फ्लेंकगार्ड)।

**पार्श्ववर्ती** पुं० (सं) पास रहने वाला। मुसाहिब।

**पार्श्वशीर्षक** पुं० (हि) किसी लेख या पुस्तक के अध्याय का वह शीर्षक जो छपाई में बीच में न देकर बगल की ओर छापा जाय। (मार्जिनल-हेडिंग)।

**पार्श्वशूल** पुं० (सं) पसली का दर्द। (प्लूरिसी)।

**पार्श्वस्थ** वि० (सं) पास खड़ा रहने वाला। पुं० (सं) सहचर। साथी।

**पार्श्वास्थि** पुं० (सं) पसली की हड्डी।

**पार्श्विक** वि० (सं) १-बगल वाला। २-पार्श्व सम्बन्धी पुं० (सं) १-पक्षपाती। २-साथी।

**पार्षती** स्त्री० (सं) द्रौपदी।

**पार्षद** पुं० (सं) १-पास रहने वाला। २-सेवक। ३-सभासद।

**पार्ष्णि** स्त्री० (सं) १-एड़ी। २-सेना का पिछला भाग ३-पृष्ठ। ४-लात। ठोक। ५-छिनाल स्त्री।

**पार्ष्णिघात** पुं० (सं) ठोकर। लात। पादप्रहार।

**पार्सल** पुं० (अ) १-पाटली। पुलिंदा। बंधी हुई गठरी। २-डाक से भेजने वाला थैला या पुलिंदा।

**पालंक** पुं० (सं) १-पालक का साग। २-बाज पक्षी ३-एक प्रकार का रत्न।

**पालंग** पु० (हि) दे० 'पलंग'।

**पाल** पुं० (सं) १-रक्षक। रखवाला। २-ग्वाला। गड़रिया। ३-प्रधान अधिकारी। राजा। पुं० (हि) १-वह कपड़ा जो मस्तूल के सहारे ताना जाता है और जिसमें हवा भरने के कारण नाव चलती है। २-तंबू। शामियाना। ३-पालकी, गाड़ी आदि ढकने का पर्दा। ४-बङ्गाल का एक प्रसिद्ध राजा। स्त्री०(हि) १-फलों को कृत्रिमरूप से पकाने की विधि २-वह स्थान जहां फलों को पकाने के लिये पत्ते आदि बिछाये जाते हैं। ३-बांध। किनारा। ऊँचा कगार।

**पालउ** पु० (हि) पत्ता। पल्लव।

**पालक** पुं० (हि) एक प्रकार का हरा साग। पुं० (सं) १-रक्षक। पालन-कर्त्ता। २-शासक। राजा। ३-साईस। पोष्य पिता।

**पालकी** स्त्री० (हि) १-पीनस। एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं। २-पालक का शाक।

**पालट** पुं० (हि) दत्तक पुत्र।

**पालड़ा** पुं० (हि) दे० 'पलड़ा'।

**पालती** स्त्री० (हि) जोड़ के तख्ते।

**पालतू** वि० (हि) पाला हुआ।

**पालथी** स्त्री० (हि) दे० 'पलथी'।

**पालन** पुं० (सं) १-भरण-पोषण। परवरिश। (मेंटे-नेंस)। २-अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय की रक्षा। (एबाइडेंस)। ३-हाल ही की ब्याई हुई गाय का दूध। ४-किसी निर्देश, आज्ञा आदि के अनुसार कार्य करना। (कंपलायेंस, डिसचार्ज)। ५-जीव, जन्तुओं आदि को रखकर उनसे होने वाली उपज बढ़ाना। (कलचर)।

**पालना** क्रि० (हि) १-भरण-पोषण करना। २-जीव जन्तु आदि को आहार दे कर अपने यहां रखना। ३-भंग न करना। पुं० (हि) एक प्रकार का बच्चों को झुलाने का हिंडोला।

**पालनीय** वि० (सं) पालन करने योग्य।

**पालयिता** वि० (हि) पालन करने वाला।

**पालव** पुं० (हि) १-पल्लव। पत्ता। २-कोमल पत्ता।

**पाला** पुं० (हि) १-वायु में मिले जलकण जो ठंडक के कारण सफेद तह के रूप में धरती पर जम जाते हैं। हिम। २-ठंड से जमा हुआ पानी। बरफ ३-ठंड। सर्दी। ४-अवसर। संबन्ध। ५-कबड्डी के

खेल में दो दलों के बीच की रेखा। ६–अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। ७–अखाड़ा।
**पालागन** स्त्री० (हि) नमस्कार। प्रणाम। दंडवत्।
**पालि** स्त्री० (सं) १–कान का अग्रभाग। २–नोक किनारा। ३–सीमा। ४–पंक्ति।
**पालिका** स्त्री० (सं) पालन करने वाली।
**पालित** वि० (सं) रक्षित। पाला पोसा हुआ। २–जो कहा गया किया।
**पालिनी** वि० (सं) पालन करने वाली।
**पालिश** स्त्री० (अं) चिकनाई और चमक लाने वाला मसाला या रोगन।
**पाली** वि० (हि) पालने या रक्षा करने वाला। स्त्री० (हि) १–तीतर बटेर लड़ाने का स्थान। २–बरतन का ढक्कन। ३–बारी। पारी। क्रिकेट के खेल में एक पक्ष के खेलने के बाद दुबारा उसी पक्ष का खेलना (इनींग्स)। ४–कारखाने आदि का वह निर्धारित समय जिसमें एक मजदूर-दल काम करता है। (शिफ्ट)। ५–एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्म ग्रन्थ लिखे हुए हैं।
**पालू** वि० (हि) पालतू। पाला हुआ।
**पाले** अव्य० (हि) चंगुल में। वश में।
**पावँ** पु० (हि) दे० 'पाँव'।
**पावँड़ा** पुं० (हि) दे० 'पाँवड़ा'।
**पावँड़ी** स्त्री० (हि) दे० 'पाँवड़ी'।
**पावँर** वि० (हि) दे० 'पाँवर'।
**पावँरी** स्त्री० (हि) दे० 'पाँवरी'।
**पाव** पुं० (हि) १–चौथाई भाग या अंश। २–चार छटाँक का एक तौल।
**पावक** पुं० (सं) १–अग्नि। आग। २–सदाचार। ३–तेज। कांति। ४–सूर्य। वि० (सं) शुद्ध या पवित्र करने वाला।
**पावदान** पुं० (हि) दे० 'पायदान'।
**पावती** स्त्री० (हि) किसी वस्तु या रुपये का प्राप्ति-सूचक पत्र। रसीद। (रिसीप्ट)।
**पावती-पत्र** पुं० (हि) रसीद। (एकनॉलिजमेंट)।
**पावन** वि० (सं) १–पवित्र या शुद्ध करने वाला। २–पवित्र। ३–शुद्ध। ४–हवा पीकर रहने वाला। पुं० (सं) १–तप। जल। ३–गोबर। ४–रुद्राक्ष। ५–माथे का तिलक। ६–चन्दन। ७–विष्णु।
**पावना** पुं० (हि) वह रुपया जो दूसरे से प्राप्त करना हो। प्राप्यधन। क्रि० (हि) १–प्राप्त करना। पाना। २–ज्ञान प्राप्त करना। जानना। ३–भोजन प्राप्त करना।
**पावमान** पु० (सं) पवनसुत हनुमान।
**पावनी** स्त्री० (सं) १–तुलसी। २–गङ्गा। ३–हड़।
**पावर** पुं० (अं) १–शक्ति। अधिकार। २–वह शक्ति जिससे यन्त्र आदि चलाये जाते हैं। विद्युत-शक्ति
**पावर-लूम** पु० (अं) विद्युत या यन्त्र शक्ति से चलने वाला करघा।
**पावर-स्टेशन** पुं० (अं) बिजली घर। वह स्थान जहां वितरण के लिये बिजली बनाई जाती है।
**पावर-हाउस** पुं० (अं) दे० 'पावर-स्टेशन'।
**पावरोटी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की मोटी और फूली हुई खमीरी रोटी। डबल रोटी।
**पावस** स्त्री० (हि) बरसात। वर्षाऋतु।
**पावा** पुं० (हि) १–दे० 'पाया'। २–वैशाली के पास का एक प्राचीन ग्राम जहां महात्मा बुद्ध कुछ दिन ठहरे थे।
**पाश** पुं० (सं) १–रस्सी तार आदि का बना फन्दा जिसमें जीव या प्राणी बँध जाता है। बन्धनजाल २–पशु, पक्षियों को पकड़ने का जाल। ३–बन्धन।
**पाशजाल** पुं० (सं) संसार रूपी जाल।
**पाशव** वि० (सं) पशु से सम्बन्धित। पशु से उत्पन्न। पशुओं का सा।
**पाशवता** स्त्री० (सं) पशु होने का भाव।
**पाशविक** वि० (सं) दे० 'पाशव'।
**पाशा** पुं० (तु०) तुर्क देश के सरदारों की एक उपाधि।
**पाशिक** पुं० (सं) चिड़ीमार। व्याध।
**पाशुपत** पुं० (सं) १–पशुपति या शिव का उपासक। शैव। २–शिवोक्त तंत्रशास्त्र। वि० (सं) शिव या पशुपति सम्बन्धी। पशुपति का।
**पाशुपतास्त्र** पुं० (सं) शिव का एक प्रचंड अस्त्र जिसे अर्जुन ने कठोर तपस्या करके प्राप्त किया था।
**पाश्चात्य** वि० (सं) १–पीछे का। पिछला। २–पश्चिम दिशा का। पश्चिमी। (वेस्टर्न)। ३–पश्चिम का रहने वाला पश्चिमी योरप के महादेश। (योरप) से सम्बन्ध रखने वाला। (ऑक्सिडेन्टल)।
**पाषंड** वि० पुं० (सं) दे० 'पाखंड'।
**पाषंडक** पुं० (सं) वेदों के विरुद्ध आचरण करने वाला।
**पाषंडकी** पुं० (सं) धार्मिकता का आडम्बर फैलाने वाला।
**पाषंडी** वि० (सं) धूर्त। पाखंडी।
**पाषर** स्त्री० (हि) दे० 'पाखर'।
**पाषाण** पुं० (सं) १–पत्थर। प्रस्तर। २–शिला। ३–गंधक।
**पाषाणगर्दभ** पुं० (सं) दाढ़ सूजने का रोग।
**पाषाणदारक** पुं० (सं) संगतराश की छेनी या टांकी
**पाषाणभेद** पुं० (सं) एक पौधा जिसकी पत्तियां बहुत सुन्दर होती हैं। पथरचट।
**पाषाणयुग** पुं० (सं) दे० 'प्रस्तरयुग'। (स्टोनएज)।
**पाषाणहृदय** वि० (सं) पत्थर के समान कठोर हृदय वाला। नृशंस। क्रूर। निष्ठुर।

**पाषाणी** स्त्री० (स) पत्थर का बटखरा। बाट। वि० (स्त्री) पत्थर के समान कठोर हृदय वाली।
**पाषान** पु० (हि) दे० 'पाषाण'।
**पासंग** पु० (फा) तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ। पसंघा। पलड़ों का अन्तर।
**पास** स्त्री०(हि)१-बगल। ओर। तरफ। २-निकटता। सामीप्य। ३-अधिकार। कब्जा। अव्य० (हि) १-निकट। समीप। २-अधिकार में। ३-किसी से। किसी के प्रति। वि० (अं) १-पार किया हुआ। २-उत्तीर्ण। ३-स्वीकृत। ४-प्रचलित। पु० (अं) १-कहीं बे रोकटोक आने जाने के लिए दिया हुआ अधिकार पत्र। पारण-पत्र। २-रेल द्वारा बे-रोकटोक यात्रा करने के लिए दिया गया अधिकार पत्र पु० (देश०) १-भेड़ों आदि के बाल उतारने की कैंची का दस्ता। २-आँवे के ऊपर उपले जमाने का कार्य।
**पासना** क्रि० (हि) थनों में दूध आना।
**पासनी** स्त्री० (हि) बच्चों को पहले पहल अन्न देने की रस्म।
**पासपोर्ट** पु० (अं) विदेश यात्रा के लिए सरकार द्वारा दिया गया अधिकार-पत्र। पार-पत्र।
**पासबुक** स्त्री० (अ) १-बैंक से मिलने वाली वह पुस्तक जिसमें हिसाब लिखा होता है निक्षेपक पुस्तिका। २-ग्राहक की वह पुस्तिका जिसमें दुकानदार द्वारा दिये हुए माल का हिसाब लिखा होता है। ग्राहक-पुस्तिका।
**पासा** पु० (हि) १-काठ या हाथी दांत का बना हुआ चौपहला टुकड़ा जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिससे चौसर खेली जाती है। २-चौसर का खेल। ३-पीतल या कांसे के चौखूँटे लम्बे ठप्पे की गुल्ली जैसे सोने के पासे।
**पासासार** पु० (हि) १-पासे की गोटी। २-पासे का खेल।
**पासि** पु० (हि) बन्धन। फन्दा।
**पासिक** पु० (हि) फन्दा। जाल। बन्धन।
**पासिका** स्त्री० (हि) फन्दा। जाल। बन्धन।
**पासी** पु० (हि) १-चिड़ीमार। बहेलिया। २-एक जाति विशेष जिसके लोग सूअर पालने तथा ताड़ी निकालने का काम करते हैं।
**पासुरी** स्त्री० (हि) पसली।
**पासुली** स्त्री० (हि) पसली।
**पाहँ** अव्य० (हि) १-पास। निकट। २-किसी से। पास जाकर सम्बोधन करके।
**पाहल** पु० (सं) शहतूत का वृक्ष।
**पाहन** पु० (हि) पत्थर। प्रस्तर।
**पाहरू** पु० (हि) पहरेदार। पहरा देने वाला।
**पाहिं** अव्य० (हि) १-पास। निकट। २-किसी से।
**पाहि** क्रियापद (स) बचाओ। रक्षा करो।
**पाहीं** अव्य० (हि) दे० 'पाहिं'।
**पाही** स्त्री० (हि) जिस खेत का किसान दूसरे गांव में रहता हो।
**पाहीकाश्त** पु० (हि) दूसरे गांव में खेती करने वाला किसान या आसामी।
**पाहीखेती** स्त्री० (हि) वह खेती जो किसी दूसरे गांव में हो।
**पाहुँच** स्त्री० (हि) दे० 'पहुँच'।
**पाहुना** पु० (हि) १-अतिथि। अभ्यागत। २-दामाद। जामाता।
**पाहुनी** स्त्री० (हि) १-अभ्यागत स्त्री। २-रखेल स्त्री। उपपत्नी। ३-अतिथि-सत्कार।
**पाहू** पु० (हि) व्यक्ति। शख्स।
**पिंग** पु० (स) १-भैंसा। २-चूहा। ३-हरताल। वि० (सं) १-पीला या पीलापन लिये हुए। भूरा रंग। २-तामड़ा। दीपशिखा के रंग का। ३-भूरापन लिये हुए लाल रंग का।
**पिंगल** वि० (सं) १-भूरापन लिये लाल। २-पीला। ३-सुंघनी के रंग का। पु०(सं) १-पीतल। २-हरताल ३-बन्दर। ४-उल्लू पक्षी। ५-पपीहा।
**पिंगलस्फटिक** पु० (सं) गोमेद।
**पिंगला** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। ३-शीशम का पेड़। ४-राजनीति। ५-एक वेश्या का नाम जो अपनी धर्मनिष्ठा के लिये प्रसिद्ध थी।
**पिंगलाक्ष** पु०(सं) शिव।
**पिंगेश** पु० (सं) अग्निदेव।
**पिंजट** पु० (सं) आंख की कीचड़।
**पिंजड़ा** पु० (हि) दे० 'पिंजरा'।
**पिंजन** पु० (सं) धुनकी। रुई धुनने की क्रिया।
**पिंजर** वि० (सं) १-पीला। २-भूरापन लिये लाल रंग का। पु० (सं) १-शरीर के अन्दर की हड्डियों का ढांचा या ठठरी। २-पिंजरा। ३-स्वर्ण। ४-हरताल
**पिंजरा** पु० (हि) १-लोहे, बांस आदि की तीलियों का बना झाबा जिसमें बन्द करके पक्षी पाले जाते हैं। २-संकरा कमरा या स्थान।
**पिंजरापोल** पु० (हि) गोशाला। पशुशाला।
**पिंजरिया** स्त्री० (सं) ललाई लिये हुए भूरा रंग।
**पिंजल** वि० (सं) १-भयभीत। बहुत घबड़ाया हुआ। २-जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो। पु० (सं) १-हरताल। २-कुश की पत्ती। ३-जलबेंत।
**पिंजिल** पु० (सं) रुई की बत्ती।
**पिंजूष** पु० (स) कान का मैल।
**पिंड** पु० (सं) १-ठोस गोला। गोल पदार्थ। २-ढेला। लुगदा। ३-पके हुए चावल या खीर। ४-

श्राद्ध आदि में अर्पित किया जाने वाला पायस। ५-भोजन। ६-जीविका। ७-काया। शरीर। (लम्प)
**पिंडखर्जूर** *स्त्री०* (सं) १-पिंडखजूर। २-एक विशेष प्रकार की खजूर जिसका फल मीठा होता है।
**पिंडज** *पुं०* (सं) गर्भ से शरीर अथवा पिंड के रूप में निकलने वाला जीव। जरायुज।
**पिंडदान** *पुं०* (सं) पितरों को पिंड देने का कार्य।
**पिंडभृति** *स्त्री०* (सं) आजीविका का उपाय। निर्वाह।
**पिंडमूल** *पुं०* (सं) १-शलजम। गाजर।
**पिंडराशि** *स्त्री०* (सं) एक ही बार अदा कर दी जाने वाली राशि। (लम्पसम)।
**पिंडरी** *स्त्री०* (सं) दे० 'पिंडली'।
**पिंडली** *स्त्री०* (हि) घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।
**पिंडवाही** *स्त्री०*(हि) एक प्रकार का कपड़ा।
**पिंडस** *पुं०* (सं) भिक्षाटन पर निर्वाह करने वाला।
**पिंडा** *पुं०*(हि) १-ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २-श्राद्ध में पितरों को मधु, तिल आदि मिलाकर खीर का लोंदा। ३-शरीर। देह।
**पिंडाकार** *वि०* (सं) गोल।
**पिंडारी** *पुं०* (देश०) दक्षिण भारत की एक मुसलमान जाति जो लूटमार का पेशा करती थी।
**पिंडाश** *पुं०* (सं) भिक्षुक। भिक्षा मांगने वाला। भिखारी।
**पिंडाशी** *स्त्री०* (सं) दे० 'पिंडाश'।
**पिंडि** *स्त्री०* (सं) दे० 'पिंडी'।
**पिंडिका** *स्त्री०* (सं) १-मांस की गोलाकार सूजन। गिल्टी। २-पिंडली। ३-छोटा पिंड। छोटा गोल-मटोल टुकड़ा। ४-पहिये के मध्य का वह गोल भाग जिसमें धुरी पहनाई जाती है। ५-शिवलिंग। ६-इमली।
**पिंडित** *वि०* (सं) १-पिंड के रूप में बनाया हुआ। २-गुणा किया हुआ। ३-गणित। ४-कांसा। ५-मिश्रित।
**पिंडितार्थ** *पुं०* (सं) सारांश। भावार्थ।
**पिंडी** *स्त्री०* (सं) १-छोटा गोल पिंडा या गोला। २-चक्रनाभि। ३-टांग की पिंडली। ४-घीया। लौकी। ५-घर। मकान। ६-वेदी। ७-सूत, रस्सी आदि से कस कर लपेटा हुआ गोला। ८-भिक्षुक। ९-पिंडदान करने वाला। *वि०* (सं) १-पिंडा प्राप्त करने वाला। २-शरीरधारी।
**पिंडीकरण** *पुं०* (सं) पिंडाकार बनाना।
**पिंडुरी** *पुं०* (हि) दे० 'पिंडली'।
**पिंडूक** *पुं०* (हि) उल्लू। पंडुक।
**पिग्र** *वि०* (हि) दे० 'प्रिय'। *पुं०* (हि) दे० 'पिय'।
**पिग्रर** *वि०* (हि) पीला।
**पिग्रवा** *वि०* (हि) दे० 'प्यारा'। *पुं०* (हि) स्वामी। पति।
**पिग्रराई** *स्त्री०* (हि) पीलापन।
**पिग्ररी** *स्त्री०* (हि) १-पीले रङ्ग में रङ्गी हुई पीली धोती २-पीलिया रोग। *वि०* (हि) पीली।
**पिउ** *पुं०* (हि) पति।
**पिउनी** *स्त्री०* (हि) पूनी।
**पिक** *पुं०* (सं) कोयल। कोकिल।
**पिकदेव** *पुं०* (सं) आम का पेड़।
**पिकबंधु** *पुं०* (सं) आम का पेड़।
**पिकबांधव** *पुं०* (सं) वसन्त ऋतु।
**पिकांग** *पुं०* (सं) चातक पक्षी।
**पिक्क** *पुं०* (सं) हाथी का बच्चा
**पिघरना** *क्रि०* (हि) दे० 'पिघलना'।
**पिघलना** *क्रि०* (हि) १-गरमी से किसी ठोस वस्तु का गल कर पानी हो जाना। द्रवीभूत होना। २-चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।
**पिघलाना** *क्रि०* (हि) १-किसी वस्तु को गरम करके द्रवीभूत करना। २-किसी के मन में दया उत्पन्न करना।
**पिचकना** *क्रि०* (हि) किसी उभरे या उठे तल का दब जाना।
**पिचकाना** *क्रि०* (हि) उभरे या फूले हुए तल को भीतर की ओर दबाना।
**पिचकारी** *स्त्री०* (हि) एक उपकरण जिससे कोई द्रव पदार्थ धार या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है।
**पिचकी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पिचकारी'।
**पिचपिचा** *वि०* (हि) चिपचिपा।
**पिचपिचाना** *क्रि०* (हि) घाव आदि में से थोड़ा-थोड़ा मवाद या पानी रसना या निकलना।
**पिचपिचाहट** *स्त्री०* (हि) पिचपिचा या गीला होने का भाव।
**पिचलना** *क्रि०* (हि) दे० 'कुचलना'।
**पिचास** *पुं०* (हि) दे० 'पिशाच'।
**पिचुक्का** *पुं०* (हि) १-पिचकारी। २-गोल गप्पा।
**पिचूका** *पुं०* (हि) दे० 'पिचुक्का'।
**पिचोतरसो** *पुं०* (हि) पहाड़े में एक सौ पांच की संख्या के लिए कहा जाने वाला शब्द।
**पिच्छ** *पुं०* (सं) १-बालदार पूंछ। २-मोर की पूंछ। ३-मोचरस।
**पिच्छल** *पुं०* (सं) १-आकाश बेल। शीशम। *वि०*(सं) १-चिकना। रपटने वाला। २-पिछला।
**पिच्छिल** *वि०* (सं) १-चिकना। २-रिपटने वाला। ३-पूंछ वाला।
**पिछ** *पुं०* (हि) समास में पीछा का लघुरूप।
**पिछड़ना** *क्रि०*(हि) १-साथ से छूटकर पीछे रह जाना २-प्रतियोगिता में पीछे रह जाना।
**पिछलगा** *पुं०* (हि) १-पीछे-पीछे फिरने वाला। २-

अनुगामी। अनुयायी। ३-सेवक। नौकर।
**पिछलगी** स्त्री० (हि) अनुयायी। अनुगमन करना।
**पिछलग्गू** पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
**पिछलग्गू** पुं० (हि) दे० 'पिछलगा'।
**पिछलत्ती** स्त्री० (हि) घोड़ों आदि का पीछे की ओर लात मारना।
**पिछलना** क्रि० (हि) पीछे की ओर मुड़ना या हटना
**पिछला** वि० (हि) १-पीछे की ओर का। २-जो क्रम में सबसे पीछे पड़ता हो। ३-अन्त की ओर का। ४-बीता हुआ। गत। ४-अन्त की ओर का।
**पिछवाई** स्त्री० (हि) पीछे की ओर लटकाया जाने वाला परदा।
**पिछवाड़ा** पुं० (हि) १-घर या मकान का पिछला भाग। घर के पीछे की जमीन।
**पिछवारा** पुं० (हि) दे० 'पिछवाड़ा'।
**पिछाड़ी** स्त्री० (हि) १-पिछला भाग। २-वह रस्सी जिसमें घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं। ३-क्रम में सबसे अन्त वाला व्यक्ति।
**पिछान** स्त्री० (हि) दे० 'पहचान'।
**पिछानना** क्रि० (हि) दे० 'पहचानना'।
**पिछारी** स्त्री० (हि) दे० 'पिछाड़ी'।
**पिछेलना** क्रि० (हि) पीछे धकेलना। पीछे कर देना।
**पिछौंहें** अव्य० (हि) पीछे की ओर।
**पिछौरा** पुं० (हि) पुरुषों के ओढ़ने की चादर।
**पिछौरी** स्त्री० (हि) १-स्त्रियों की ओढ़नी। २-ओढ़ने का वस्त्र।
**पिटंत** स्त्री० (हि) पीटने की क्रिया या भाव। मारपीट
**पिटक** पुं०(सं) १-पेटी। टोकरी। २-फुंसी। मुँहासा ३-किसी ग्रंथ का एक भाग।
**पिटका** स्त्री० (सं) १-पिटारी। २-फुन्सी।
**पिटना** क्रि० (हि) १-मार खाना। पीटा जाना। २-बजना। पु० (हि) छत आदि को पीटने का औजार थापी।
**पिटवाना** क्रि० (हि) १-पीटने का काम दूसरे से करवाना। २-बजवाना। ३-कुटवाना।
**पिटाई** स्त्री० (हि) १-पीटने का काम। २-पीटने की मजदूरी। ३-मारने या पीटने का पुरस्कार।
**पिटारा** पुं० (हि) बांस, बेत आदि का बना डिब्बे के आकार का बना हुआ पात्र।
**पिटारी** स्त्री० (हि) १-छोटा पिटारा। २-पानदान।
**पिटूस** स्त्री० (हि) दुःख या शोक मे छाती पीटना।
**पिट्टू** वि० (हि) मार खाने का अभ्यस्त। जिस पर अक्सर बोझ पड़े।
**पिट्ठी** स्त्री० (हि) दे० 'पीठी'।
**पिट्ठू** पुं० (हि) १-गुप्त रूप से सहायता करने वाला २-सहायक। हिमायती। खुशामदी। ३-एक साथ मिलकर खेल खेलने वाला। ४-कुछ विशिष्ट खेलों में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसके बदले में वह अपनी बारी समाप्त करके फिर खेलता है।
**पिठर** पुं० (हि) भाष्प बनाने की भट्टी। (बायलर)।
**पिठी** स्त्री० (हि) उड़द या मूंग को भिगोकर पीसी हुई दाल।
**पिठौरी** पुं० स्त्री० पिट्ठी की बनी बरी या पकौड़ी।
**पिड़क** पुं० (सं) फुंसी। छोटा फोड़ा।
**पिड़का** स्त्री० (सं) फुड़िया। फुंसी।
**पिड़किया** स्त्री० (हि) गुंजिया।
**पितंबर** पुं० (हि) दे० 'पीतांबर'।
**पितपापड़ा** पुं० (हि) एक क्षुप विशेष जो औषधि बनाने के काम आता है।
**पितर** पुं० (हि) मृत पूर्वज।
**पितरपति** पुं० (हि) यमराज।
**पितराइंध** स्त्री० (हि) पीतल के बरतन में खटाई या अन्य पदार्थ बहुत देर रखने पर उत्पन्न कसाव।
**पितराइ** स्त्री० (हि) दे० 'पितराइंध'।
**पिता** पुं० (हि) वह सम्बन्धी जिसके वीर्य से उसकी उत्पत्ति हुई हो। जनक। बाप।
**पितापुत्र** पुं० (हि) बाप और बेटा।
**पितामह** पुं० (सं) १-दादा। पिता का पिता। २-शिव। ब्रह्मा। ३-भीष्म।
**पितामही** स्त्री० (सं) दादी। पिता की माता।
**पितिया** पुं० (हि) चाचा। पिता का भाई।
**पितियानी** स्त्री० (हि) चाची।
**पितिया ससुर** पुं० (हि) ससुर का भाई। चचिया-ससुर।
**पितिया सास** स्त्री० (हि) चचिया सास। ससुर के भाई की पत्नी।
**पितु** पुं० (हि) पिता। बाप। पुं० (सं) अन्न। अनाज
**पितुमातु** पुं० (हि) माता और पिता।
**पितृ** पुं० (सं) १-दे० 'पिता'। २-मरे हुए पूर्वज। पितर। (ऐनसेस्टर)।
**पितृऋण** पुं० (सं) शास्त्रानुसार पुत्र उत्पन्न होने पर तीन ऋणों में से एक की मुक्ति।
**पितृक** वि० (सं) १-पैतृक। पिता का दिया हुआ।
**पितृकर्म** पुं० (सं) श्राद्धकर्म।
**पितृकल्प** पुं० (सं) दे० 'पितृकर्म'।
**पितृकार्य** पुं० (सं) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य।
**पितृकुल** पुं०(सं) पिता के वंश या कुल के लोग।
**पितृकृत** वि० (सं) पूर्वजों द्वारा किया हुआ।
**पितृक्रिया** स्त्री० (सं) श्राद्धकम।
**पितृगृह** पुं० (सं) मायका। पीहर। स्त्रियों के पिता का घर।
**पितृघात** पुं० (सं) पिता की हत्या। (पेट्रीसाइड)।

**पितृघातिक** पुं० (सं) पिता का हत्यारा।
**पितृघाती** पुं० (सं) दे० 'पितृघातिक'।
**पितृतंत्र** पुं० (सं) समाज की वह प्राचीन व्यवस्था जिसमें घर का बड़ाबूढ़ा ही गृहस्थ का प्रबन्धक होता था और सब को उसके अनुशासन में रहना पड़ता था। (पैट्रिआर्की)।
**पितृतर्पण** पुं० (सं) १-पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला तर्पण। २-तिल।
**पितृतिथि** स्त्री० (सं) अमावस्या।
**पितृदाय** पुं० (सं) पिता से प्राप्त संपत्ति। बपौती।
**पितृद्रव्य** पुं० (सं) दे० 'पितृदाय'।
**पितृनाथ** पुं० (सं) १-यमराज। २ सब पितरों में श्रेष्ठ।
**पितृपक्ष** पुं० (सं) १-पिता की ओर के लोग। पितृकुल। २-आश्विन का कृष्णपक्ष जिसमें श्राद्धकर्म करना श्रेष्ठ माना गया है।
**पितृपति** पुं० (सं) यमराज का एक नाम।
**पितृप्राप्त** वि० (सं) पिता या पुरखों से प्राप्त।
**पितृबंधु** पुं० (सं) पितृकुल के लोग। पिता के नातेदार
**पितृवशग** वि० (सं) पिता का आज्ञाकारी।
**पितृभक्ति** स्त्री० (सं) १-पुत्र का पिता के प्रति कर्तव्य। २-पिता की भक्ति।
**पितृभोजन** पुं० (सं) १-पितरों को अर्पित किया हुआ भोजन। २-उड़द। माष।
**पितृव्य** पुं० (सं) चाचा।
**पितृवंश** पुं० (सं) पिता का कुल।
**पितृवन** पुं० (सं) श्मशान।
**पितृविसर्जन** पुं० (सं) पितृपक्ष के अन्तिम दिन या आश्विन कृष्णा अमावस्या के दिन होने वाला धार्मिक कृत्य।
**पितृवेश्म** पुं० (सं) मायका। पिता का घर।
**पितृश्राद्ध** पुं० (सं) पितरों के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध।
**पितृसत्तात्मक** वि० (सं) (वह परम्परा) जिसमें पिता की सत्ता को सर्वोच्च माना गया हो। (पैट्रिआर्कल)
**पितृस्थान** पुं० (सं) अभिभावक। वह जो पिता के स्थान पर हो।
**पितृस्थानीय** पुं० (सं) संरक्षक। अभिभावक।
**पितृसू** स्त्री० (सं) १-दादी। २-संध्या।
**पितृहा** पुं० (सं) पिता की हत्या करने वाला।
**पित्त** पुं० (सं) १-यकृत या जिगर में बनने वाला एक नीलापन लिये पीला तरल पदार्थ जो स्वाद में कड़ुवा तथा पाचन में सहायक होता है।
**पित्तकर** वि० (सं) पित्त को उत्पन्न करने वाला।
**पित्तकास** पुं० (सं) पित्तदोष से उत्पन्न खांसी।
**पित्तकोष** पुं० (सं) पित्ताशय।
**पित्तक्षोभ** पुं० (सं) पित्त का प्रकोप।
**पित्तज** वि० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न।
**पित्तज्वर** पुं० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।
**पित्तद्रावी** वि० (सं) पित्त को पिघलाने वाला। पुं० (सं) मीठा नींबू।
**पित्तनाड़ी** स्त्री० (सं) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न एक प्रकार की नाड़ी व्रण।
**पित्तनाशक** वि० (सं) पित्त का नाश करने वाला।
**पित्तपथरी** स्त्री० (हि) पित्तवाहक नाड़ियों में कंकड़ियां सी पड़ जाने का रोग।
**पित्तपांडु** पुं० (सं) पित्त के विकार से उत्पन्न एक रोग जिसमें नेत्र आदि सब पीले पड़ जाते हैं।
**पित्तपापड़ा** पुं० (हि) एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग दवा के रूप में किया जाता है।
**पित्तप्रकोप** पुं० (सं) पित्त का विकार।
**पित्तभेषज** पुं० (सं) मसूर। मसूर की दाल।
**पित्तरक्त** पुं० (सं) रक्तपित्त नामक एक रोग।
**पित्तल** वि० (सं) पित्त को बढ़ाने वाला। पित्तकारी। पुं० (सं) १-भोजपत्र। २-पीतल। ३-हरताल। स्त्री० (हि) जलपीपल।
**पित्तला** स्त्री० (सं) पित्त के दूषित होने के कारण होने वाला योनि का एक रोग।
**पित्तविसर्प** पुं० (सं) एक प्रकार का विसर्प रोग।
**पित्तव्याधि** स्त्री० (सं) पित्त दोष से उत्पन्न रोग।
**पित्तशमन** वि० (सं) पित्त के प्रकोप को दूर करने वाला
**पित्तशूल** पुं० (सं) पित्त विकार से होने वाला एक प्रकार का शूल रोग।
**पित्तशोथ** पुं० (सं) पित्त से उत्पन्न शोथ।
**पित्तसंशमन** पुं० (सं) वे औषधियां जिनसे कुपित पित्त शान्त होता है।
**पित्तस्थान** पुं० (सं) दे० 'पित्ताशय'।
**पित्तहा** पुं० (हि) पित्तपापड़ा। वि० (हि) पित्त को नाश करने वाला।
**पित्ता** पुं० (हि) १-पित्ताशय। २-साहस। ३-पित्त। ४-क्रोध।
**पित्तातिसार** पुं० (सं) पित्त प्रकोप से होने वाला अतिसार रोग।
**पित्तारि** पुं० (सं) १-पित्तपापड़ा। २-चन्दन। ३-लाख।
**पित्ताशय** पुं० (सं) पित्त की वह थैली जो यकृत के पीछे की ओर होती है।
**पित्ती** स्त्री० (हि) पित्त विकार से होने वाला एक रोग जिसमें शरीर पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं। पुं० (हि) चाचा।
**पिथौरा** पुं० (हि) दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज।
**पिदारा** पुं० (हि) दे० 'पिद्दा'।
**पिद्दा** पुं० (हि) १-पिद्दी का नर। २-अत्यन्त तुच्छ

और नगण्य जीव।
पिद्दी स्त्री० (हि) १-बये की जाति की एक छोटी चिड़िया। फुदकी। २-अति तुच्छ प्राणी।
पिधातव्य वि० (सं) ढांपने योग्य।
पिधान पु० (सं) १-म्यान। २-ढकना। ३-आवरण ४-किवाड़।
पिधानक पुं० (सं) १-म्यान। २-ढकना।
पिधायक वि० (सं) ढकने वाला। छिपाने वाला।
पिन स्त्री० (अं) कागज आदि नत्थी की छोटी तथा पतली कील।
पिनक स्त्री० (हि) अफीम आदि के नशे में चूर होने के कारण सिर झूमना।
पिनकना क्रि० (हि) अफीम के नशे में आगे की ओर सिर का झुकाना।
पिनकी पुं० (हि) अफीमची। पिनक लेने वाला आदमी।
पिनपिनहाँ वि० (हि) हर समय रोने वाला (बालक)।
पिनपिनाना क्रि० (हि) १-रोते समय नाक से स्वर निकालना। २-रोगी या दुर्बल बालक का रोना।
पिनाक पुं० (सं) १-शिवजी का धनुष। २-त्रिशूल। ३-डंडा या छड़ी। ४-धनुष।
पिनाकगोप्ता पुं० (सं) शिव।
पिनाकी पुं० (सं) शिव।
पिनस स्त्री० (हि) दे० 'पीनस'।
पिन्ना वि० (हि) सर्वदा रोने वाला। पुं० (हि) धुनकी
पिन्हाना क्रि० (हि) दे० 'पहनाना'।
पिपरमिंट पुं० (अं) पुदीने की जाति का एक पौधा जिसका सत्व ओषधियों में काम आता है
पिपरामूल पुं० (सं) पीपल की जड़।
पिपराही पुं० (हि) पीपल का वन।
पिपास स्त्री० (हि) १-प्यास। तृषा। २-लोभ। लालच
पिपासा स्त्री० (सं) १-पीने की इच्छा। तृषा। २-लालच।
पिपासित वि० (सं) प्यासा। तृषित।
पिपासु वि० (सं) प्यासा। तृषित। लालची।
पिपीलिका स्त्री० (सं) चींटी। च्यूँटी।
पिप्पल पुं० (सं) १-पीपल का वृक्ष। २-चूची। ३-कुर्ती या जाकेट की आस्तीन। ४-जल। ५-पक्षी।
पिप्पली स्त्री० (सं) बड़ी पीपल।
पिप्पलीमूल पुं० (सं) पीपल की जड़। पीपलामूल
पिप्पिका स्त्री० (सं) दांतों का मैल।
पिप्लु पुं० (सं) १-तिल का निशान। २-मस्सा ३-एक प्रकार का मणि।
पिय पुं० (हि) पति। स्वामी।
पियर वि० (हि) पीला।
पियरवा पुं० (हि) प्यारा। प्रियतम।
पियराई स्त्री० (हि) पीलापन।
पियराना क्रि०(हि) पीला पड़ना या होना।
पियरी वि० (हि) पीली। स्त्री० (हि) १-पीली रंगी हुई धोती। २-पीलापन।
पियल्ला पुं० (हि) दूध पीने वाला बच्चा।
पिया पुं० (हि) दे० 'पिय'।
पियारा वि० (हि) प्यारा।
पियास स्त्री० (हि) प्यास।
पियासी स्त्री० (हि) एक प्रकार की मछली।
पियूख पुं० (हि) दे० 'पीयूष'।
पिरकी स्त्री० (हि) फुंसी। छोटा फोड़ा।
पिरथी स्त्री० (हि) दे० 'पृथ्वी'।
पिरथीनाथ पुं० (हि) दे० 'पृथ्वीनाथ'।
पिराई स्त्री० (हि) पीलापन।
पिराक पुं० (हि) गुझिया नामक पकवान।
पिराना क्रि० (हि) दुखना। दर्द करना। पीड़ा अनुभव करना।
पिरारा पुं० (हि) लुटेरा। डाकू।
पिरिच पुं० (देश०) तश्तरी।
पिरीतम पुं० (हि) प्रियतम।
पिरीता वि० (हि) प्यारा।
पिरीति स्त्री० (हि) प्रीति।
पिरोजन पुं० (हि) बालक के कान छेदने की रीति।
पिरोजा पुं०(हि) फिरोजा। हरापन लिये नीला पत्थर विशेष।
पिरोना क्रि० (हि) सुई के छेद में तागा डालना। छेद के आरपार निकालना।
पिरोहना क्रि० (हि) दे० 'पिरोना'।
पिलकना क्रि० (हि) १-गिरना। २-झूलना। या लटकना। ३-चिढ़ाना या चिढ़कर भागना।
पिलकिया स्त्री० (हि) एक छोटी पीले रङ्ग की चिड़िया
पिलना क्रि० (हि) १-किसी ओर वेग से टूट पड़ना। २-भिड़ जाना। ३-रस या तेल निकालने के लिये पेरा जाना। ४-किसी काम में जी-जान से लग जाना।
पिलपिल वि० (हि) दे० 'पिलपिला'।
पिलपिला वि० (हि) इतना कोमल या पिचपिचा कि दबाने से रस या रस बाहर निकलने लगे।
पिलपिलाना क्रि० (हि) इस प्रकार से दबाना कि रस और गूदा बाहर निकल आये।
पिलपिलाहट स्त्री० (हि) पिलपिला होने का भाव या गुण।
पिलवाना क्रि० (हि) १-पिलाने का काम किसी दूसरे से करवाना। २-पेरवाना।
पिलाई स्त्री० (हि) १-पिलाने का भाव या क्रिया। २-तरल पदार्थ को इस तरह डालना कि नीचे के छेदों में से निकल जाय। (ग्राउटिंग)।
पिल्ला पुं० (तामिल) कुत्ते का बच्चा।

**पिल्लू** पुं० (हि) एक प्रकार का सफेद लम्बा बिना पैर का कीड़ा। ढोला।
**पिव** पुं० (हि) प्रियतम।
**पिवाना** क्रि० (हि) दे० 'पिलाना'।
**पिशाच** पुं० (सं) एक हीन देवयोनि। भूत। प्रेत। दुष्ट मनुष्य।
**पिशाचक** पुं० (सं) भूत। प्रेत। पिशाच।
**पिशाचघ्न** वि० (सं) पिशाचों को नष्ट करने वाला। पुं० (हि) पीली सरसों।
**पिशाचचर्या** स्त्री० (सं) श्मशान सेवन।
**पिशाचपति** पुं० (सं) शिव।
**पिशाचबाधा** स्त्री० (सं) पिशाच द्वारा अनिष्ट होना।
**पिशाचभाषा** स्त्री०(सं) पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग संस्कृत के नाटकों में कहीं कहीं मिलता है।
**पिशित** पुं० (सं) मांस। गोश्त।
**पिशिता** पुं० (सं) जटामांसी।
**पिशिताशन** पुं० (सं) १-मांसभक्षी। २-मनुष्य भक्षी राक्षस। ३-भेड़िया।
**पिशुन** पुं० (सं) १-चुगलखोर। २-दुर्जन। ३-केसर। ४-काक। ५-कपास। वि० (सं) चुगली खाने वाला।
**पिष्ट** वि० (सं) १-पिसा हुआ। २-दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया हुआ। पुं० (सं) १-पिसी हुई कोई वस्तु। २-पीठी। पिट्ठी।
**पिष्टपेषण** पुं० (सं) १-पिसे हुए को दुबारा पीसना। २-व्यर्थ काम करना। ३-निरर्थक परिश्रम।
**पिष्टिका** स्त्री० (सं) पिट्ठी। पीठी।
**पिष्टोदक** पुं० (सं) पिसे हुए चावल का पानी।
**पिसनहारी** स्त्री० (हि) आटा पीसने वाली स्त्री।
**पिसना** क्रि० (हि) १-रगड़ या दाब खाकर चूर्ण होना। २-दब या कुचल जाना। ३-पीड़ित होना। घोर कष्ट या हानि सहना। ४-अत्यधिक परिश्रम से क्लांत होना।
**पिसवाज** पुं० (हि) नाचते समय नर्त्तकियों के पहनने का घाघरा।
**पिसवाना** क्रि० (हि) पीसने का काम दूसरे से कराना।
**पिसाई** स्त्री० (हि) १-पीसने की क्रिया या भाव। २-पीसने की मजदूरी। ३-अत्यधिक परिश्रम। ४-चक्की पीसने का काम।
**पिसाच** पुं० (हि) दे० 'पिशाच'।
**पिसान** पुं० (हि) अन्न का पिसा बारीक चूर्ण। आटा।
**पिसाना** क्रि० (हि) पीसने का काम किसी दूसरे से करवाना।
**पिसी** स्त्री० (हि) गेहूं।
**पिसुन** पुं० (हि) चुगलखोर। पिशुन।
**पिसौनी** स्त्री० (हि) १-चक्की पीसने का धंधा। २-अधिक परिश्रम का धंधा।
**पिस्त** पुं० (फा) पिस्ता।
**पिस्तई** वि० (फा) पिस्ते के रंग का। पीलापन लिये हरा
**पिस्ता** पुं० (फा) १-एक प्रसिद्ध और स्वादिष्ट मेवा। २-इसका पेड़।
**पिस्तौल** स्त्री० (हि) तमंचा। बंदूक की तरह गोली दागने का एक छोटा हथियार। (पिस्टल)।
**पिस्सू** पुं० (हि) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जो शरीर का रक्त चूसता है। (फ्लीज़)।
**पिहकना** क्रि० (हि) कोयल, मोर आदि मधुर कंठ वाले पक्षियों का बोलना।
**पिहान** पुं० (हि) ढकने की कोई वस्तु। बरतन का ढक्कन।
**पिहित** वि० (सं) छिपा हुआ। पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करने का उल्लेख होता है।
**पींजना** क्रि० (हि) रूई धुनना।
**पींजर** पुं० (हि) पंजर। पिंजड़ा।
**पींडरा** पुं० (हि) पिंजड़ा।
**पींड** पुं० (हि) १-वृक्ष का धड़ या तना। २-शरीर। देह। पिंड। ३-चरखे के बीच का हिस्सा। ४-पिंडखजूर।
**पींडी** स्त्री० (हि) दे० 'पिंडी'।
**पींडुरी** स्त्री० (हि) दे० 'पिंडुली'।
**पी** पुं० (हि) दे० 'प्रिय'। स्त्री०(हि) पपीहे की बोली।
**पीक** स्त्री०(हि) थूक में मिला पान का रस।
**पीकदान** पुं० (हि) उगालदान। पीक थूकने का पात्र
**पीकना** क्रि० (हि) कोयल तथा पपीहे का बोलना।
**पीका** पुं० (देश०) नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।
**पीच** स्त्री० (हि) चावल का मांड़। पुं० (हि) ठोड़ी।
**पीछ** स्त्री० (हि) १-मांड़। पीच। २-पक्षियों की पूंछ।
**पीछा** पुं० (हि) १-पीछे की ओर का भाग। २-शरीर का पीठ वाला भाग। ३-किसी घटना के बाद का समय। ४-किसी के पीछे रहने का भाव।
**पीछू** अव्य० (हि) दे० 'पीछे'।
**पीछे** अव्य० (हि) १-पीठ की ओर। आगे से उलटा। २-अनन्तर। ३-अन्त में। ४-किसी की अनुपस्थिति में। ५-मरजाने पर। ६-वास्ते। ७-कारण। निमित्त
**पीजन** पुं० (हि) वह धुनकी जिससे भेड़ों के बाल धुने जाते हैं।
**पीजर** पुं० (हि) दे० 'पिंजड़ा'।
**पीटन** पुं० (हि) दे० 'पिटना'।
**पीटना** क्रि० (हि) १-मारना या प्रहार करना। २-चोट लगा कर किसी वस्तु को चिपटी करना। ३-किसी प्रकार से कोई काम निपटा लेना। ४-किसी वस्तु पर चोट पहुँचाना। ५-किसी प्रकार कोई वस्तु

प्राप्त कर लेना।

**पीठ** पुं० (सं) १-पीढ़ा। किसी वस्तु का बना बैठने का आसन। २-वेदी। ३-अधिष्ठान। ४-कुशासन ५-विद्यार्थियों के बैठने का स्थान। ६-बैठने का एक विशेष ढंग। ७-तख्ता। राजसिंहासन। ८-वृत्त के किसी अंक का पूरक। ९-विधान सभा आदि में किसी विशिष्ट दल के बैठने का सुरक्षित स्थान। (बेंच)। १०-न्यायाधीश अथवा न्यायाधीशों का वर्ग (बैंच) स्त्री० (सं) १-पृष्ठभाग। २-शरीर में पेट के पीछे का भाग जिसमें रीढ़ की हड्डी होती है।

**पीठक** पुं० (स) पीढ़ा।

**पीठग** वि० (सं) लंगड़ा। पंगु।

**पीठगर्भ** पुं० (सं) वेदी पर मूर्ति को जमाने के लिए बनाया गया गड्ढा।

**पीठभू** पुं० (सं) प्राचीर के आसपास का भू-भाग। (प्लिन्थ)।

**पीठमर्द** पुं० (स) नायक के चार सखाओं में से एक जो मीठी बातों से नायिका को मना सके। २-नर्त्तकी या वेश्या को नाच सिखाने वाला उस्ताद।

**पीठमर्दिका** स्त्री० (सं) नायक को रिझाने या मनाने में नायिका की सहायता करने वाली।

**पीठविवर** पुं० (सं) दे० 'पीठगर्भ'।

**पीठसर्प** वि० (सं) लंगड़ा।

**पीठस्थविर** पुं० (स) कुल सचिव। विश्वविद्यालय के कागज-पत्र या छात्र-सम्बन्धी विवरण रखने वाला अधिकारी। (रजिस्ट्रार)।

**पीठस्थान** पुं० (सं) कोई विशिष्ट पवित्र स्थान।

**पीठा** पुं० (हि) १-पीढ़ा। २-एक पकवान जो आटे की लोई में पिट्ठी आदि भर कर बनाया जाता है।

**पीठासीन** वि० (स) जो अध्यक्ष के स्थान पर आसीन हो। (प्रजाइडिंग)।

**पीठि** स्त्री० (हि) दे० 'पीठ'।

**पीठिका** स्त्री० (सं) १-पीढ़ा। २-खंभे या मूर्ति का मूल या आधार। ३-पुस्तक का अध्याय। परिच्छेद ४-आसन। ५-किसी अध्यापक का पद या कार्य। (चेयर)।

**पीठी** स्त्री०(हि) उड़द, मूंग आदि की पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

**पीड़** स्त्री० (हि) १-पीड़ा। २-एक प्रकार का सिर पर बाँधने का आभूषण।

**पीड़क** पुं०(स) १-कष्ट या पीड़ा देने वाला। उत्पीड़क २-अत्याचारी।

**पीड़न** पुं० (स) १-दबाने या चाँपने की क्रिया। २-पेलना। पेरना। ३-यन्त्रणा पहुँचाना। ४-उत्पीड़न ५-पीट-पीट कर अनाज बालों से निकालना। ६-पकड़ना। हाथ में लेना। ७-मसलना। ८-उच्छेद। नाश।

**पीड़नीय** वि० (सं) दुःख या कष्ट पहुंचाने योग्य। पुं० (सं) १-बिना मन्त्री का राजा। २-चार प्रकार के शत्रुओं में से एक।

**पीड़ा** स्त्री० (सं) १-वेदना। दर्द। व्यथा। २-रोग। व्याधि। ३-शिरोमाला। ४-कष्ट। तकलीफ।

**पीड़ाकर** वि०(सं) कष्टदायक। दुःख देने वाला।

**पीड़िका** स्त्री० (स) फुन्सी। फुड़िया।

**पीड़ित** वि० (सं) १-दुखित। क्लेशयुक्त। पीड़ायुक्त २-रोगी। ३-दबाया हुआ। ४-नष्ट किया हुआ। ५-दबा कर पतला किया गया। [रोल्ड (स्टील)]।

**पीडुरी** स्त्री० (हि) पिंडली।

**पीढ़ा** पुं० (हि) काठ, बांस या बैंत का कम ऊंचा और छोटा आसन। पाटा।

**पीढ़ी** स्त्री० (हि) १-वंशपरंपरा में किसी के बाप दादे के विचार से गणना-क्रम में कोई स्थान। २-किसी विशेष समय में होने वाले व्यक्तियों की समष्टि। (जेनरेशन) स्त्री० (हि) छोटा पीढ़ा।

**पीत** वि०(सं)१-पीला। २-भूरा। ३-पीया हुआ। पुं० (सं) १-पीला रङ्ग। २-भूरा रंग। ३-कुसुम। ४-पुखराज। ५-हरताल। ६-गंधक।

**पीतकंद** पुं० (सं) १-गाजर। २-शलजम।

**पीतका** स्त्री० (स) हल्दी।

**पीतकाष्ठ** पुं० (सं) १-पीला चन्दन। २-पद्माख।

**पीतता** स्त्री० (सं) पीलापन।

**पीतधातु** पुं० (हि) रामरज। गोपीचन्दन।

**पीतम** वि० (हि) प्रियतम। कांत।

**पीतल** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध उपधातु जो तांबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

**पीतवासा** वि० (सं) पीले वस्त्र पहनने वाला। पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**पीतांबर** पुं० (सं) पीले रङ्ग का वस्त्र। २-श्रीकृष्ण। ३-रेशमी धोती जो पूजा पाठ करते समय पहनी जाती है। वि० (सं) पीले वस्त्र पहनने वाला।

**पीतातंक** पुं०(सं) पश्चिमी देशों का यह भय कि चीन, जापान आदि पीली जातियां सारे संसार पर न छा जायें। (यलो पेरिल)।

**पीता** स्त्री० (सं) १-हल्दी। २-देवदार। ३-पीला केला। ४-भूरे रङ्ग का शीशम।

**पीताब्धि** पुं० (सं) अगस्त्य ऋषि का नाम।

**पीताभ** वि० (सं) १-पीत वर्ण का। २-पीली आभा देने वाला।

**पीतिमा** स्त्री० (सं) पीलापन।

**पीती** पुं० (सं) घोड़ा। स्त्री० (सं) दे० 'प्रीति'।

**पीथ** पुं० (सं) १-सूर्य। २-समय। ३-अग्नि। ४-जल।

**पीथि** पुं० (सं) घोड़ा।

पीन वि० (सं) १-मोटा। स्थूल। २-पुष्ट। ३-संपन्न। पुं० (सं) मोटाई। स्थूलता।
पीनक स्त्री० (हि) अफीम के नशे में ऊंघना। २-नींद के कारण झुक-झुक पड़ना।
पीनता स्त्री० (सं) स्थूलता। मोटाई।
पीनस पुं० (सं) १-जुकाम। २-नाक का एक रोग जिसमें घ्राणशक्ति नष्ट हो जाती है। स्त्री० (हि) पालकी।
पीना क्रि० (हि) १-द्रव पदार्थ को मुख द्वारा ग्रहण करना। २-किसी बात को दबा देना। ३-बरदाश्त करना। सहना। ४-मद्यपान करना। ५-धूम्रपान करना। पुं० (हि) तिल आदि की खली।
पीप स्त्री० (हि) पीब। मवाद। फोड़े या घाव में से निकलने वाला पानी।
पीपर पुं० (हि) दे० 'पीपल'।
पीपरपर्न पुं० (हि) १-पीपल का पत्ता। २-एक आभूषण।
पीपरामूल पुं० (हि) एक प्रसिद्ध औषधि पीपलामूल।
पीपल पुं० (हि) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी हिन्दू लोग पूजा करते हैं। स्त्री० (हि) एक लता जो औषधि के काम आती है।
पीपा पुं० (हि) काठ या लोहे का बना एक बड़ा पात्र जिसमें घी, शराब, तेल आदि रखते हैं।
पीब स्त्री० (हि) दे० 'पीप'।
पीय पुं० (हि) पति। स्वामी।
पीयर वि० (हि) पीला।
पीया पुं० (हि) पति। स्वामी।
पीयूस पुं० (हि) दे० 'पीयूष'।
पीयूष पुं० (सं) १-सुधा। अमृत। २-ब्याने के सात दिन के भीतर का गाय का दूध।
पीयूषभानु पुं० (सं) चन्द्रमा।
पीयूषवर्ष पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
पीर स्त्री० (हि) १-पीड़ा। दुःख। दर्द। २-सहानुभूति करुणा। ३-प्रसवकाल की पीड़ा। वि० (फा) १-बुजुर्ग। वृद्ध। २-महात्मा। ३-धूर्त। चालाक। पुं० (हि) १-परलोक का मार्ग दिखाने वाला। २-मुसलमानों का धर्म गुरु। ३-सोमवार का दिन।
पीरजादा पुं० (फा) किसी पीर या धर्मगुरु की संतान
पीरना क्रि० (हि) पेरना।
पीरा स्त्री० (हि) दे० 'पीड़ा'। वि० (हि) दे० 'पीला'।
पीरानी स्त्री० (फा) पीर की पत्नी।
पीरी स्त्री० (फा) १-वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २-चेला मूंडने का धंधा। ३-धूर्त्तता। ४-चमत्कार।
पीरोजा पुं० (हि) दे० 'फ़िरोजा'।
पील पुं० (फा) १-हाथी। २-शतरंज का मोहरा। पुं० (हि) एक प्रकार का कीड़ा। २-एक प्रकार का वृक्ष।
पीलखाना पुं० (हि) हाथीखाना।
पीलपांव पुं० (हि) श्लीपद नामक एक रोग जिससे हाथ पाँव सूज जाते हैं।
पीलपा पुं० (हि) दे० 'पीलपाँव'।
पीलपाया पुं० (हि) टेक। थूनी।
पीलपाल पुं० (हि) महावत। हाथीवान।
पीलवान पुं० (हि) पीलपाल।
पीलवान पुं० (हि) महावत। हाथीवान।
पीलसोज पुं० (फा) दीप जलाने की दीवट। चिराग-दान।
पीला वि० (हि) १-हल्दी या केसर के रङ्ग का। पीत २-निस्तेज। ३-कांतिहीन।
पीलिमा स्त्री० (हि) पीलापन।
पीलिया पुं० (हि) पांडु रोग।
पीलु पुं० (सं) २-एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २-तीर। बाण। ३-अणु। ४-कीट। ५-हाथी। ६-फूल। ७-हथेली।
पीलू पुं० (हि) १-एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसमें छोटे-छोटे फल लगते हैं। २-सड़े फलों में पड़ने वाले कीड़े। ३-एक राग।
पीव वि० (हि) स्थूल। मोटा। स्त्री०(हि) पीप। मवाद
पीवना क्रि० (हि) दे० 'पीना'।
पीवर वि० (सं) मोटा। स्थूल। भारी। पुं० (स) १-जटा। २-कछुवा।
पीविष्ठ वि० (सं) अत्यधिक मोटा।
पीसना क्रि० (हि) १-रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना। २-किसी वस्तु को जल की सहायता से महीन करना। ३-कुचल देना। ४-कठोर परिश्रम करना। पुं० (हि) १-पीसी जाने वाली वस्तु। २-एक व्यक्ति के हिस्से का कार्य (व्यंग में)।
पीहर पुं० (हि) स्त्री के माता-पिता का घर। पीहर। मायका।
पुंख पुं०(स)१-तीर का वह स्थान जहाँ पर पंख लगा होता है। २-मंगलाचार। ३-बाज पक्षी।
पुंखित वि० (सं) पंखों से युक्त (बाण)।
पुंग पुं० (स) संग्रह। समूह।
पुंगफल पुं० (हि) सुपारी।
पुंगव पुं० (सं) १-बैल। २-सांड। वि० (सं) श्रेष्ठ। उत्तम।
पुंगवकेतु पुं० (सं) शिव।
पुंगीफल पुं० (हि) सुपारी।
पुंछल्ला पुं० (हि) दे० 'पुँछाला'।
पुंछार पुं० (हि) मोर। मयूर।
पुंछाल पुं० (हि) १-दुमवाला। २-साथ न छोड़ने वाला। ३-पिछलग्गू।
पुंज पुं० (सं) ढेर। समूह।
पुंजि स्त्री० (सं) ढेर। समूह।
पुंजिक पुं०(स) १-ओला। २-जमी हुई बरफ।

**पुंजित** वि० (सं) १-जमा हुआ। ढेर लगाया हुआ। २-मिलकर इकट्ठा हुआ। ३-थोड़ा-थोड़ा करके जमा होकर बढ़ा हुआ। (एक्यूम्यूलेटेड)।

**पुंजी** स्त्री० (हि) दे० 'पूंजी'।

**पुंजोत्पादन** पुं० (सं) कारखाने आदि में किसी वस्तु का बड़े पैमाने पर उत्पादन। (मास प्रोडक्शन)।

**पुंडरीक** पुं० (सं) १-कमल पुष्प, विशेषकर श्वेत रङ्ग का। २-सफेद छाता। ३-श्वेत रङ्ग। ४-चीता। ५-सफेद रङ्ग का हाथी। ६-टीका। ७-जल का घड़ा। ८-पानी का रोग। ९-शर। बाण। १०-अग्नि। आग। ११-आकाश।

**पुंडरीकनयन** वि० (सं) कमलनयन।

**पुंडरीकलोचन** वि० (सं) कमलनयन।

**पुंडरीकाक्ष** पुं० (सं) १-विष्णु। २-रेशम के कीड़े पालने वालों की एक जाति। वि० (सं) जिसके कमल के समान नयन हों।

**पुंड्र** पुं० (सं) १-लाल जाति की ऊख। २-कमल। ३-माथे का तिलक। ४-एक प्राचीन देश।

**पुंलक्षणा** स्त्री० (सं) पुरुष के लक्षण वाली नंपुसक स्त्री।

**पुंलिंग** वि० (सं) व्याकरण के अनुसार पुरुषवाचक (शब्द)। (मैस्क्युलिन)।

**पुंवत्** अव्य० वि० (सं) १-पुरुष की तरह। २-पुरुषवाची शब्द की तरह।

**पुंश्चल** पुं० (सं) व्यभिचारी पुरुष।

**पुंश्चली** स्त्री० (सं) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

**पुंश्चलीय** पुं० (सं) वेश्या का पुत्र।

**पुंस** पुं० (सं) पुरुष। नर।

**पुंसत्व** स्त्री० (सं) मर्दानगी।

**पुंसवन** पुं० (सं) १-गर्भाधान के तीन मास बाद का संस्कार। २-दूध। ३-गर्भपिंड।

**पुंसत्व** पुं० (सं) १-पुरुष। मर्दानगी। २-वीर्य। ३-पुरुष की स्त्री समागम की शक्ति। (पोटेन्सी)।

**पुंसत्वदोष** पुं० (सं) नामर्दी। (इम्पोटेंसी)।

**पुआ** पुं० (हि) आटे या मैदे को मीठे रस में सानकर बनाई हुई पूरी या पकौड़ी।

**पुआल** पुं० (हि) दे० 'पयाल'।

**पुकार** पुं० (हि) १-किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। २-किसी अधिकारी आदि से की गई प्रार्थना या फरयाद। दुहाई। ३-किसी वस्तु की अधिक मांग। ४-रक्षा या बचाव के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना।

**पुकारना** क्रि० (हि) १-ऊँचे स्वर में संबोधन करना २-नामोच्चारण करना। ३-चिल्लाकर मांगना, कहना, बुलाना तथा सुनाना। ४-अभियोग लगाना।

**पुख** पुं० (हि) दे० 'पुष्य'।

**पुखर** पुं० (हि) पोखर। तालाब।

**पुखराज** पुं० (हि) एक प्रकार का पीले रङ्ग का रत्न। पीतमणि।

**पुख्तगी** स्त्री० (फा) पुख्ता होने का भाव। दृढ़ता। मजबूती।

**पुख्ता** वि० (फा) पक्का। दृढ़। मजबूत।

**पुगाना** क्रि० (हि) पूरा करना।

**पुचकार** स्त्री० (हि) चुमकार। प्यार करने के लिए ओठों से निकला हुआ चूमने का सा शब्द।

**पुचकारना** क्रि० (हि) चूमने का सा शब्द करते हुए प्यार जताना।

**पुचकारी** स्त्री० (हि) दे० 'पुचकार'।

**पुचारना** क्रि० (हि) पोतना। पुचारा देना।

**पुचारा** पुं० (हि) १-तर कपड़े से पोंछने या पोतने की क्रिया। २-लेप चढ़ाई हुई पतली तह। ३-पोतने का तर कपड़ा। ४-वह तरल पदार्थ जो पोतने के काम आता है। ५-चापलूसी। झूठी प्रशंसा।

**पुच्छ** स्त्री० (सं) १-पिछला या अन्तिम भाग। २-पूंछ। दुम।

**पुच्छल** वि० (हि) दुमदार। पूंछवाला।

**पुच्छलतारा** पुं० (हि) वह तारा जिसके भाप या कोहरे जैसी पूँछ दूर तक दिखाई दे। केतु।

**पुछल्ला** पुं० (हि) १-पूँछ के समान जोड़ी हुई वस्तु। २-बराबर पीछे लगा रहने वाला। ३-लम्बी दुम। ४-पिछलग्गू।

**पुछवैया** पुं० (हि) दे० 'पुछैया'।

**पुछार** पुं० (हि) १-पूछने वाला। २-महत्व समझकर आदर करने वाला। ३-मोर।

**पुछिया** पुं० (हि) मेढ़ा। भेड़।

**पुजना** क्रि० (हि) १-सम्मानित होना। २-पूजा जाना ३-पूरा होना।

**पुजवना** क्रि० (हि) १-पुजाना। २-पूरा करना। ३-सफल करना।

**पुजवाना** क्रि० (हि) १-पूजने का कार्य दूसरे से कराना। २-अपना सम्मान कराना।

**पुजाई** स्त्री० (हि) १-पूजने का कार्य या भाव। २-पूजने की उजरत या मजदूरी।

**पुजाना** क्रि० (हि) १-दे० 'पुजवाना'। २-त्रुटि दूर करना। पूरा करना।

**पुजापा** पुं० (हि) १-देव पूजन करने की सामग्री। २-पूजा की सामग्री रखने का पात्र या झोली।

**पुजारी** पुं० (हि) १-पूजा करने वाला। पूजक। २-मन्दिर आदि में पूजा करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ३-उपासक।

**पुजाही** स्त्री० (हि) पूजा की सामग्री रखने का पात्र या झोली।

पुजेरी पुं० (हिं) पुजारी।
पुजैया पुं० (हि) १-पूजा करने वाला। २-भरने या पूरा करने वाला। स्त्री० (हिं) दे० 'पुजाई'।
पुजौरा पुं० (हिं) १-पूजन के समय देवता को अर्पित करने की सामग्री। २-पूजनअर्चा।
पुट पुं० (हिं) १-किसी वस्तु को मुलायम, तर या हलका करने के लिए दिया जाने वाला छींटा। २-बहुत हलका मिश्रण। ३-भावना। पुं० (सं) १-आच्छादन। ढकने वाली वस्तु। २-दोना। कटोरा। गोल गहरा बरतन। ३-औषध पकाने का मुँह बन्द बरतन। संपुट। ४-रिक्त स्थान। विविर।
पुटकी स्त्री० (हिं) १-पोटली। गठड़ी। २-आकस्मिक मृत्यु। दैवी विपत्ति। ३-तरकारी के रस को गाढ़ा करने के लिये मिलाया गया आटा या बेसन।
पुटग्रीव पुं० (सं) १-घड़ा। कलसा। २-ताँबे का बरतन।
पुटपाक पुं० (सं) १-वैद्यक में वह क्रिया जो औषध को पत्तों के दोने में पकाने के लिए रस कर की जाती है। २-किसी औषध विशेष को भस्मादि बनाने के लिए मुँह बन्द बरतन में रख कर उसे गड्ढे के अन्दर पकाने का विधान। ३-इस प्रकार तैयार की गई औषध या रस।
पुटरिया स्त्री० (हिं) पोटली।
पुटरी स्त्री० (हि) पोटली।
पुटिका स्त्री० (सं) १-इलायची। २-संपुट। ३-पुड़िया
पुटित वि० (सं) १-सुकड़ा हुआ। २-सिला हुआ। ३-बन्द किया हुआ। ४-जो पुट के रूप में किसी आवरण विशेष के अन्दर हो। बन्द। (कैपस्यूल्ड)
पुटियाना क्रि० (हि) फुसलाना।
पुटी स्त्री० (सं) १-कटोरा या छोटा दोना। २-रिक्त स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३-लंगोटी ४-पुड़िया। ५-कौपीन।
पुटीन पुं० (सं) एक प्रकार का सफेदे में वार्निश मिला कर बनाया हुआ मसाला जो किवाड़ में शीशे बैठा कर लगाया जाता है। और लकड़ी में छेद भरने के काम आता है। (पुटी)।
पुट्ठा पुं० (हिं) १-चूतड़ के ऊपर का कड़ा भाग। २-चौपायों (विशेषतः घोड़ों) का चूतड़ वाला भाग। ३-घोड़ों की संख्या के लिए शब्द। ४-किसी पुस्तक की जिल्द का पृष्ठ भाग। ५-पुट्ठे पर का चमड़े का भाग।
पुट्ठी स्त्री० (हिं) गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसमें आरे जुड़े होते हैं।
पुठवार अव्य० (हिं) १-पीछे। २-बगल में।
पुठवाल पुं० (हिं) १-चोरों के दल का वह बलिष्ठ चोर जो संध के मुंह पर पहरे के लिए नियुक्त किया जाता है। २-बुरे काम का सहायक। पृष्ठ-रक्षक। मददगार।
पुड़ा पुं० (हिं) १-पुड़िया। बंडल। २-ढोल मढ़ने का चमड़ा।
पुड़िया स्त्री० (हिं) १-कागज या पत्ता मोड़ कर बनाया गया वह संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी हो। २-इस प्रकार लपेटी दवा या वस्तु की मात्रा। ३-खान। भंडार। ४-धन-संपत्ति।
पुड़ी स्त्री० (हि) १-ढोल मढ़ने का चमड़ा। २-पूरी।
पुण्य वि० (सं) १-पवित्र। शुद्ध। मंगलात्मक। पुं० (सं) १-धर्म कार्य। २-शुभ कार्य का फल। ३-परोपकार आदि का काम।
पुण्यक पुं० (सं) १-वह व्रत जिससे पुण्य फल की प्राप्ति होती है। २-विष्णु।
पुण्यकर्ता पुं० (सं) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला।
पुण्यकर्म पुं० (सं) १-मंगलात्मक कार्य। २-वह कर्म जिसे करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है।
पुण्यकाल पुं० (सं) १-दान-पुण्य का समय। २-शुभ कार्य करने का समय।
पुण्यकृत् वि०(सं) नेक। पुण्यात्मा। धर्मात्मा।
पुण्यकृत्य पुं० (सं) शुभ कार्य। धर्म कार्य।
पुण्यक्षेत्र पुं० (सं) १-तीर्थ स्थान। २-(पुण्य भूमि) आर्यवर्त का नाम।
पुण्यगर्भा स्त्री० (सं) गंगा।
पुण्यत्व पुं० (सं) पुण्यता। पवित्रता।
पुण्यतिथि स्त्री० (सं) १-पुण्य करने का शुभ दिन या तिथि। २-किसी महापुरुष के निधन की तिथि।
पुण्यदर्शन वि० (सं) जिसके दर्शन का फल शुभ हो पुं० (सं) १-देवालय में ठाकुर जी के दर्शन। २-नीलकंठ पक्षी (इसका दर्शन विजयादशमी को करने से पुण्य होता है)।
पुण्यपुरुष पुं० (सं) धर्मात्मा व्यक्ति।
पुण्यभूमि स्त्री० (सं) १-तीर्थ स्थान। २-आर्यावर्त।
पुण्यशील वि० (सं) अच्छे चरित्र या [illegible] वाला। धर्मपरायण।
पुण्यश्लोक वि० (सं) पवित्र चरित्र या आचरण वाला पुं० (सं) १-नल। २-युधिष्ठिर। ३-विष्णु।
पुण्यस्थान पुं० (सं) १-तीर्थ स्थान। पवित्र स्थान। २-देवालय।
पुण्या स्त्री० (सं) तुलसी।
पुण्याई स्त्री० (हि) पुण्य का फल या प्रताप।
पुण्यात्मा वि० (सं) धर्मात्मा। नेक। जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो।
पुण्योदय पुं० (सं) शुभ या पुण्य कर्मों का उदय।
पुतना क्रि० (हिं) पोता जाना। पुताई होना।
पुतरा पुं० (हि) दे० 'पुतला'।
पुतरि स्त्री० (हिं) दे० 'पुत्तलिका'।
पुतरिका स्त्री० (हिं) दे० 'पुत्तलिका'।

**पुतरिया** स्त्री० (हि) दे० 'पुतली'।
**पुतरी** स्त्री० (हि) दे० 'पुतली'।
**पुतला** पुं० (हि) घास, कपड़े, मट्टी या आटे आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार।
**पुतली** स्त्री० (हि) १-स्त्री की आकृति का बना हुआ पुतला। २-गुड़िया। ३-आँख के बीच का काला भाग। ४-कपड़ा बुनने की कल।
**पुतलीघर** पुं० (सं) वह कारखाना जहां कपड़ा आदि बनाने के यन्त्र लगे हों।
**पुताई** स्त्री० (हि) १-पोतने की क्रिया या भाव। २-दीवार आदि पर मिट्टी, चूने आदि की पतली तह चढ़ाने का काम। ३-पोतने की मजदूरी।
**पुतारा** पुं० (हि) दे० 'पुचारा'।
**पुत्त** पुं० (हि) दे० 'पुत्र'।
**पुत्तरी** स्त्री० (हि) १-पुत्री। २-पुतली।
**पुत्तलिका** स्त्री० (सं) दे० 'पुतली'।
**पुत्तली** स्त्री० (सं) पुतली।
**पुत्तिका** स्त्री० (सं) १-मधुमक्खिका। २-दीमक।
**पुत्र** पुं० (सं) बेटा। पूत। लड़का।
**पुत्रलाभ** पुं० (सं) पुत्र की प्राप्ति।
**पुत्रवत** वि० (सं) पुत्र के समान। पुत्र तुल्य।
**पुत्रवती** वि० (सं) जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली।
**पुत्रवधु** स्त्री० (सं) पुत्र की स्त्री। पतोहू।
**पुत्रार्थी** वि० (सं) पुत्र की कामना करने वाला।
**पुत्रिका** स्त्री० (सं) १-लड़की। बेटी। २-पुत्र के स्थान पर मानी हुई बेटी। ३-आंख की पुतली। ४-गुड़िया
**पुत्रिणी** वि० (सं) पुत्र वाली।
**पुत्री** स्त्री० (सं) कन्या। बेटी। लड़की।
**पुत्रेष्टि** स्त्री०(सं) पुत्र की कामना से किया जाने वाला यज्ञ।
**पुत्रेष्टिका** स्त्री० (सं) दे० 'पुत्रेष्टि'।
**पुत्रैषणा** स्त्री० (सं) पुत्र प्राप्ति की कामना।
**पुदीना** पु० (हि) सुगन्धित पत्तियों वाला एक छोटा पौधा जो चटनी आदि में डाला जाता है।
**पुनः** अव्य० (हि) १-फिर। २-पीछे। उपरान्त। ३-दूसरी बार। बार-बार।
**पुनःकरण** पु० (सं) १-फिर से कोई कार्य करना २-दोहराना। (रपेटीशन)।
**पुनःपुनः** (सं) बार-बार।
**पुनःप्राप्ति** स्त्री० (सं) कोई हुई वस्तु फिर से मिलना। (रिकवरी)।
**पुनःसंस्कार** पुं० (सं) उपनयन आदि संस्कार जो दुबारा किये जायें।
**पुनःस्थापन** पु०(सं) फिर से स्थापित करना। (रेस्टोरेशन)।
**पुनर्** अव्य० (सं) फिर। दुबारा।
**पुनरधिनियम** पुं० (सं) दे० 'पुनर्विधायन'। (रीइनेक्टमेंट)।
**पुनरधिनियमित** वि० (सं) जो दुबारा लागू हुआ हो। (अधिनियम)। (रीइनेक्टेड)।
**पुनरधिष्ठापन** पुं० (सं) उसी पद फिर से नियुक्त कर देना। (रीइन्स्टेटमेंट)।
**पुनरपि** अव्य० (हि) फिर भी।
**पुनरबसु** पुं० (हि) दे० 'पुनर्वसु'।
**पुनरभिवचन** पुं० (सं) वह अभिवचन, दलील जिसे दुबारा देने की अनुमति दे दी गई हो। (रीप्लीडर)
**पुनरभिवचन अधिकार** पुं० (सं) फिर से बहस करने का अधिकार (लॉ)। (राइट ऑफ रीप्लीडिंग)
**पुनरन्वीक्षण** पुं० (सं) फिर से अन्वीक्षण या न्याय-विचार करना। (रिट्राई)।
**पुनरस्त्रीकरण** पुं० (सं) १-जिस देश या राष्ट्र के शस्त्र पहले छीन लिये गये हों उसका फिर से शस्त्रीकरण करना। २-सेना को आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित करना। ३-फिर से अस्त्र-सम्भार बढ़ाना। (रीआर्मामेंट)।
**पुनरागत** वि० (सं) लौटा हुआ। फिरा हुआ।
**पुनरागमन** पुं० (हि) १-दुबारा आना। २-फिर से जन्म ग्रहण करना।
**पुनरारोपन** पुं० (हि) फिर से आरोप या बीमा कराना। (रीएश्योरेंस, री-इन्श्योरेंस)।
**पुनरादान** पुं० (सं) किसी, कोई या भेजी हुई वस्तु को फिर से प्राप्त करना। (रिकवरिंग)।
**पुनरादि** वि० (सं) प्रथम। पहला।
**पुनरानयन** पुं० (सं) पुनरागमन। (रिकवरी)।
**पुनरारंभ** पुं० (सं) स्थगित किये हुए कार्य को पुनः आरम्भ करना। ( रिजम्पशन )।
**पुनरारंभण** पुं० (सं) किसी कार्य को दुबारा आरम्भ करना। (रिज्यूम)।
**पुनरावर्त** पुं०(सं) १-चक्कर। घेरा। २-पुनरागमन।
**पुनरावर्तक** वि० (सं) फिर से बार-बार आने वाला (ज्वर)।
**पुनरावृत्त** वि० (सं) १-दोहराया हुआ। जिसने दुबारा जन्म लिया हो। ३-लौटा हुआ।
**पुनरावृत्ति** स्त्री० (सं) १-फिर से लौट कर आना। २-दोहराना। ३-पाठ दोहराना।
**पुनरावेदक** पुं० (सं) १-किसी न्यायालय में किसी के विरुद्ध मुकद्मा दायर करने वाला। २-किसी उप-न्यायालय के निर्णय से सन्तुष्ट न होने पर किसी उच्च-न्यायालय में पुनरावेदन करने वाला व्यक्ति। (अपेलेंट)।
**पुनरावेदन** पुं०(सं) दे० 'पुनर्न्याय-प्रार्थना'। (अपील)
**पुनरावेदन क्षेत्र** पु० (सं) पुनरावेदन न्यायालय का अधिकार क्षेत्र। (ज्यूरिस्डिक्शन ऑफ अपील-कोर्ट)।
**पुनरावेद्य** वि० (सं) पुनरावेदन करने योग्य। (अपीलेबल)।

**पुनरासीन** वि० (सं) जो — बार अपने पद पर हटाये जाने पर दुबारा उसी पद पर बैठाया जाय। (रीइन्स्टेटेड)।

**पुनराहार** पुं० (सं) १-दूसरी बार भोजन करना। दुबारा किया गया भोजन।

**पुनरीक्षण** पुं० (सं) १-फिर से देखना। २-न्यायालय का एक बार देखे हुए मुकदमे को फिर सुनना। (रिवीजन)।

**पुनरीक्षण क्षेत्राधिकार** वि० (सं) पुनरीक्षण न्यायालय का क्षेत्राधिकार। (रिवीजनल ज्यूरिसडिकशन)

**पुनरीक्षित** वि० (सं) जो सुधार करने की दृष्टि से पुनः देखा गया हो (रिवाइज्ड)।

**पुनरीक्षित-पाठ** पुं० (सं) वह विवरण, वक्तव्य आदि जिसकी फिर से जाँच कर ली गई हो। (रिवाइज्ड-वर्शन)।

**पुनरुक्त** वि० (सं) १-फिर से कहा हुआ। २-दोहराया हुआ। (रिपीटेड)।

**पुनरुक्तवदाभास** पुं० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति का भास हो पर वस्तुतः ऐसा न हो।

**पुनरुक्ति** स्त्री० (सं) एक बार कही गई बात को दुबारा दुहराना। (रेपीटेशन)।

**पुनरुच्छ्रित** वि (सं) फिर से बनाया या खड़ा किया हुआ। (री-इरेक्टेड)।

**पुनरुज्जीवन** पुं० (सं) १-फिर से जीवित होना। २-फिर से उन्नति की ओर जाना। (रिवाइवल)।

**पुनरुज्जीवित** वि० (सं) फिर से जीवन प्राप्त किया हुआ। (री-इरेक्टेड)।

**पुनरुत्थान** पुं० (सं) १-फिर से उठना। २-उन्नति करना। ३-कला या साहित्य का पुनर्जन्म या उत्थान। (रिनेसंन्स)।

**पुनरुत्पत्ति** स्त्री० (सं) फिर से जन्म लेना।

**पुनरुत्पादन** पुं० (सं) फिर से उत्पादन या निर्माण करना। (रिप्रोडक्शन)।

**पुनरुत्पादी ऋण** पुं० (सं) वह ऋण जो फिर से उत्पादन करने के लिये लिया गया हो।

**पुनरुद्धार** पुं० (सं) टूटी फूटी या नष्ट हुई वस्तुओं को पुनः यथावत ठीक करना। (रेस्टोर)।

**पुनरुन्नयन** पुं० (सं) किसी स्थगित कार्य को फिर से आरम्भ करना। (रिवाइवल)।

**पुनरेकता** पुं० (सं) पुनः मिल जाना। (रियूनीयन)।

**पुनर्गमन** पुं० (सं) फिर से जाना। दुबारा जाना।

**पुनर्गठन** पुं० (सं) फिर से निर्माण करना।

**पुनर्ग्राह्य भू-वृत्ति** स्त्री० (सं) वह भूमि जो दुबारा पट्टे पर ली जा सके। (रिज्यूमेबल टेन्योर)।

**पुनर्जन्म** पुं० (सं) मरने के बाद फिर से दूसरे शरीर में जन्म ग्रहण करना।

**पुनर्जन्मा** पुं० (सं) ब्राह्मण।

**पुनर्जात** वि० (सं) फिर से उत्पन्न।

**पुनर्देशावर्तन** पुं० किसी को देश से लौटा भेजना। (रिपेट्रियेशन)।

**पुनर्नवन** पुं० (सं) नवीकरण। (रिन्युवल्स)।

**पुनर्नवा** स्त्री० (सं) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियां चौलाई के समान गोल होती है। गदह-पूरना।

**पुनर्निगमन** पुं० (सं) दुबारा जारी करना। (री-ईश्यु)

**पुनर्निर्माण** पुं० (सं) फिर से निर्माण करना। (रिबिल्ड)।

**पुनर्नियन्त्रण** पुं० (सं) फिर से नियन्त्रण में लेना। (रिकन्ट्रोल)।

**पुनर्निर्यात** पुं० (सं) १-फिर से देश के बाहर माल भेजना। २-फिर से देश के बाहर भेजने वाला माल। (री-एक्सपोर्ट)।

**पुनर्नियुक्ति** स्त्री० (सं) किसी पद या काम पर फिर से नियुक्त कर दिया जाना। (रीइंस्टेटमेंट)।

**पुनर्न्याय प्रार्थना** स्त्री० (सं) फिर से विचार के लिए मुकदमा उच्चतर न्यायालय में रखना। (अपील)।

**पुनर्न्यायप्रार्थी** पुं० (सं) वह जो फिर से विचार करने के लिए अपना मामला उच्चतर न्यायालय में रखे। (अपेलेंट)।

**पुनर्पूर** पुं० (सं) फिर से भरने या बैठाने की वस्तु। (रिफिल)।

**पुनर्प्रवेश** पुं० (सं) दुबारा प्रवेश कराने का काम। (रिएन्ट्री)।

**पुनर्भव** पुं० (सं) १-फिर होना। २-नाखून। वि०(सं) जो फिर हुआ हो।

**पुनर्भाव** पुं० (सं) मरणोपरांत पुनः जन्म।

**पुनर्भू** स्त्री० (सं) वह विधवा स्त्री जिसका विवाह पति के मरने के बाद हुआ हो।

**पुनर्भोग** पुं० (सं) पूर्वजन्म में किए गये कर्मों का पुनः भोग।

**पुनर्मिलन** पुं० (सं) बिछड़ने के बाद फिर से मिलना (री-यूनियन)।

**पुनर्मुद्रित** वि० (सं) जिसको फिर से छापा गया हो। (री-प्रिंटेड)।

**पुनर्मुद्रीकरण** पुं०(सं) फिर से मुद्रा या सिक्के बनाना (रीमोनेटाइज़ेशन)।

**पुनर्मूल्यन** पुं० (सं) १-फिर से मूल्य लगाना। २-फिर से मुद्रा आदि का भाव निश्चित करना। (री-वैल्यूएशन)।

**पुनर्पूर्वप्रापण** पुं०(सं) फिर से दुबारा कटौती काटना (रीडिस्काउंट)।

**पुनर्प्रकाशन** पुं० (सं) फिर से प्रकाशित करना।

(रिपब्लिकेशन)।

**पुनर्प्रवर्तनपत्र** पुं०(सं) किसी पक्ष की मृत्यु या विवाह होने पर भी मुकदमा न्यायालय में ज्यों का त्यों बना रहने का नियम (लॉ)। (बिल ऑफ रिवाइवर)।

**पुनर्युक्तकोण** पुं० (सं) वह कोण जो दो समकोणों से बड़ा तथा चार समकोणों से छोटा हो। (रिफ्लेक्स ऐंगल)।

**पुनर्वंटन** पुं० (सं) १-फिर से संपत्ति, धन आदि बांटना। २-सरकार द्वारा फिर से बांटी जाने वाली वस्तु की मात्रा निर्धारित करना। (रीअलॉटमेंट)।

**पुनर्वंटित** वि० (सं) जिसकी मात्रा फिर से निर्धारित कर दी गई हो। (रिअलॉटेड)।

**पुनर्वसु** पुं० (सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से सातवां २-शिव। ३-विष्णु।

**पुनर्वार** अव्य० (सं) फिर से। दुबारा।

**पुनर्वास** पुं० (सं) जिनका घरबार नष्ट हो गया हो उनको फिर से बसाना। (रिहेबिलिटेशन)।

**पुनर्विक्रय** पुं० (हि) दुबारा की बिक्री। (रीसेल)।

**पुनर्विचार** पुं० (सं) सुधार करने के लिए फिर से विचार करना। (रीकन्सीडरेशन)।

**पुनर्विचार न्यायाधिकरण** पुं० (सं) मुकदमों पर फिर से विचार करने वाली अदालत। (अपेलैंट ट्रिब्यूनल)।

**पुनर्विचार न्यायालय** पुं० (सं) छोटी अदालत में निर्णीत मुकदमों पर फिर से विचार करने वाला उच्चतर न्यायालय। (कोर्ट ऑफ अपील)।

**पुनर्विचार-प्रार्थी** पुं० (सं) दे० 'पुनर्न्यायप्रार्थी'। (अपेलेंट)।

**पुनर्वितरण** पुं० (सं) दुबारा वितरण करना। (रीडिस्ट्रीब्यूशन)।

**पुनर्विधायन** पुं० (सं) फिर से कोई अधिनियम आदि बनाना। (रीइनेक्टमेंट)।

**पुनर्विधायित** वि० (सं) जिसका फिर से विधान किया गया हो। (री-इनेक्टेड)।

**पुनर्विनियोजन** पुं० (सं) फिर से विशिष्ट कार्य पर लगाना। (रीएप्रोप्रियेशन)।

**पुनर्विन्यस्त** वि० (सं) फिर से व्यवस्थित या क्रमबद्ध किया हुआ। (रीअरेंज्ड)।

**पुनर्विन्यास** पुं० (सं) फिर से क्रमबद्ध या सुव्यवस्थित करना। (री-अरेन्जमेंट)।

**पुनर्विमलीकृत** वि० (सं) जिसका फिर से स्पष्टीकरण किया गया हो। (री-क्लेरीफाइड)।

**पुनर्विभाजन** पुं० (सं) जिसका एक बार विभाजन हो चुका हो उसका पुनः विभाजन करना। (री-डिवीजन)।

**पुनर्विलोकन** पुं० (सं) १-फिर से देखना। २-न्यायालय में सुने हुए अभियोग को फिर से सुनना। ३-दंडादेश आदि पर फिर से विचार करना। (रिव्यू)।

**पुनर्विवाह** पुं० (सं) विधवा होने पर या अपने पति को छोड़कर दूसरा विवाह करना। (रिमैरिज)।

**पुनःसंधारण** पुं० (सं) पासुर या जुगाली करना।

**पुनि** अव्य० (हि) पुनः। फिर से

**पुनिपुनि** अव्य० (हि) बार-बार।

**पुनिम** स्त्री० (हि) पूर्णिमा।

**पुनी** वि०(हि) पुण्य करने वाला। धर्मात्मा। स्त्री०(हि) पूर्णिमा। अव्य० (हि) पुनः। फिर से।

**पुनीत** वि० (सं) पवित्र। पाक। शुद्ध।

**पुन्न** पुं० (हि) पुण्य।

**पुन्नाग** पुं० (सं) १-एक सदाबहार वृक्ष जिसके लाल रङ्ग के फूल गुच्छों में लगते हैं। २-पुरुष श्रेष्ठ। ३-जायफल। ४-श्वेत कमल।

**पुन्य** पुं० (हि) दे० 'पुण्य'।

**पुन्यताई** स्त्री० (हि) १-पवित्रता। २-धर्मशीलता। ३-पुण्य का फल।

**पुमान्** पुं० (सं) पुरुष। नर।

**पुरंदर** पुं०(सं) १-इन्द्र। २-घर में सेंध लगाने वाला चोर। ३-विष्णु। ४-शिव। ५-अग्नि।

**पुरंध्री** स्त्री० (सं) पति, पुत्र, कन्या आदि से भरी पूरी स्त्री।

**पुरः** अव्य० (हि) आगे। पहले।

**पुरःदान** पुं० (सं) पहले से अदा करना या चुकाना। (प्रीपेमेन्ट)।

**पुरःसंगी** वि० (सं) किसी तथ्य में उससे पूर्व उसके सम्बन्ध रूप में होने वाला। (एसेसरी बिफोर दि फैक्ट)।

**पुरःस्थापन** पुं० (सं) १-प्रस्तुत करना। २-सामने रखना। (इन्ट्रोडक्शन)।

**पुरःस्थापित करना** क्रि० (हि) औपचारिक रूप से सामने रखना। (टु इन्ट्रोड्यूस)।

**पुर** पुं० (सं) १-नगर। शहर। कस्बा। २-घर। ३-कोठा। अटारी। ४-लोक। ५-शरीर। ६-पूंजी। राशि ७-मोट। चरसा। ८-दुर्ग। ९-बाजार। वि० (फा) पूर्ण। पूरा।

**पुरअमन** वि० (फा) शांतिमय।

**पुरइन** स्त्री० (हि) कमल का पत्ता। कमल।

**पुरइया** पुं० (हि) ताना। तागा।

**पुरखा** पुं० (हि) १-पूर्वज। २-घर का बड़ा-बूढ़ा आदमी।

**पुरखुमार** वि० (फा) नशा किये हुए।

**पुरचक** स्त्री० (हि) १-पुचकार।

**पुरजन** पुं० (हि) पुर में रहने वाले लोग।

**पुरजा** पुं० (फा) १-टुकड़ा। खंड। २-कटा हुआ कागज का टुकड़ा। धज्जी। ३-अवयव। अंश। ४-चिड़ियों के महीन पर।

**पुरजोर** *वि०* (फा) ओजपूर्ण । जोरदार ।
**पुरजोश** *वि०* (फा) जोश से भरा हुआ ।
**पुरट** पुं० (सं) सोना । स्वर्ण ।
**पुरण** पुं० (सं) समुद्र । सागर ।
**पुरतः** अव्य०(सं)१-पूर्व । सामने । पहले । २-पीछे से
**पुरत्राण** पुं० (सं) शहर या नगर के चारों ओर रक्षा के लिए बनाई गई दीवार । कोट ।
**पुरद्वार** पुं०(सं) नगर या शहर का फाटक या प्रवेश द्वार ।
**पुरनारी** स्त्री० (सं) वेश्या ।
**पुरपाल** पुं० (सं) १-नगर का रक्षक । कोतवाल । २-जीव ।
**पुरबला** *वि०*(हि) १-पहले का । पूर्व का । पूर्व जन्म का
**पुरबिया** *वि०* (हि) पूरब का ।
**पुरबी** *वि०* (हि) पूरब का ।
**पुरभिद्** पुं० (सं) शिव ।
**पुरमथन** पुं० (सं) शिव का नाम ।
**पुरमार्ग** पुं० (सं) नगर की सड़क ।
**पुररक्षक** पुं० (सं) नगर रक्षक दल का सिपाही या अधिकारी ।
**पुररोध** पुं० (सं) नगर का घेरा डालना ।
**पुरला** स्त्री० (सं) दुर्गा ।
**पुरलोक** पुं० (सं) पुरजन ।
**पुरवइया** स्त्री० (हि) पूरब की ओर से बहने वाली वायु । पुरवाई ।
**पुरवट** पुं० (हि) खेत सींचने का पानी का बड़ा डोल जो बैलों द्वारा खींचा जाता है । मोट । चरसा ।
**पुरवधू** स्त्री० (सं) वेश्या ।
**पुरवना** क्रि० (हि) १-पूरा करना । २-भरना । ३-पूरा होना । पर्याप्त होना ।
**पुरवा** पुं० (हि) १-छोटा गांव । २-मिट्टी का कुल्हड़ स्त्री० (हि) १-पूरब से आने वाली हवा । २-पशुओं के गले का एक रोग ।
**पुरवाई** स्त्री० (हि) पूर्व दिशा से आने वाली हवा ।
**पुरवाना** क्रि० (हि) पूरा करना ।
**पुरवासी** पुं० (सं) नागरिक । नगर निवासी ।
**पुरवैया** स्त्री० (हि) दे० 'पुरवाई' ।
**पुरशासन** पुं० (सं) १-शिव । २-विष्णु ।
**पुरश्चरण** पुं० (सं) १-किसी कार्य को आरम्भ करने से पहले उसे सिद्ध करने का उपाय सोचना और प्रबन्ध करना । २-कार्यसिद्धि के लिए नियमपूर्वक मन्त्र का जाप करना ।
**पुरश्चर्या** स्त्री० (सं) दे० 'पुरश्चरण' ।
**पुरषा** पुं० (हि) दे० 'पुरखा' ।
**पुरसाँ** *वि०* (फा) खैर-खबर लेने वाला या पूछने वाला ।
**पुरसा** पुं० (हि) एक नाप जो साढ़े चार हाथ की होती है ।
**पुरस्** अव्य० (सं) १-आगे । २-सामने । समक्ष । ३-पहले ।
**पुरस्करण** पुं० (सं) १-आगे रखना या देना । २-पुरस्कृत करना । ३-पूरा करना ।
**पुरस्कार** पुं० (सं) १-वह धन या द्रव्य जो किसी अच्छे काम के लिए दिया जाय । इनाम । २-आदर सम्मान । ३-आगे करने या लाने की क्रिया । *वि०* (हि) पारिश्रमिक ।
**पुरस्कृत** *वि०* (सं) १-इनाम में पाया हुआ । २-आगे या सामने रखा हुआ । ३-आदृत । ४-स्वीकृत । ५-जिसे पुरस्कार मिला हो ।
**पुरस्क्रिया** स्त्री० (सं) १-आदर या सम्मान करना । २-आरंभिक कृत्य ।
**पुरस्तात्** अव्य० (सं) १-पूर्व । सामने । २-सबसे आगे । ३-पूर्व दिशा की ओर । ४-पीछे से । ५-अन्त में ।
**पुरस्सर** *वि०* (सं) आगे चलने वाला । पुं० (सं) १-नेता । अगुआ । २-अनुचर ।
**पुरहा** पुं० (सं) १-शिव । २-विष्णु । पुं० (हि) चरस से पानी निकालने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।
**पुरहूत** पुं० (हि) इन्द्र ।
**पुरा** पुं० (हि) १-गांव । २-बस्ती । स्त्री० (हि) १-पूर्व दिशा । २-गंगा । ३-महल्ला । *वि०* (हि) प्राचीन । पुराना । जैसे—पुरातत्व । अव्य० (सं) १-पूर्वकाल में । २-पुराने समय में ।
**पुराकथा** स्त्री० (सं) १-प्राचीन कहानी या कहावत । २-इतिहास ।
**पुराकृत** *वि०* (सं) १-पहले किया हुआ । २-पूर्व जन्म में किया हुआ । पुं० (सं) पूर्व जन्म में किया हुआ पाप या पुण्य ।
**पुराण** *वि०* (सं) पुरातन । प्राचीन । पुं० (सं) १-प्राचीन काल की कोई घटना । २-अतीत काल की कथा । ३-हिन्दुओं के अट्ठारह धार्मिक आख्यान जिनकी रचना वेदव्यास ने की थी । ४-अट्ठारह की संख्या । ५-शिव ।
**पुराणग** पुं०(सं) १-ब्रह्मा । २-पुराण कहने या सुनने वाला ।
**पुराणपंथी** *वि०* (सं) पुरानी रूढ़ियों पर न चलने वालों के प्रति कोई भी उदारता न प्रकट करने वाला (कन्जर्वेटिव) ।
**पुराणपुरुष** पुं० (सं) विष्णु ।
**पुरातत्व** पुं० (सं)वह विद्या जिससे प्राचीन काल, विशेषतः पूर्व इतिहास काल, की वस्तुओं के आधार पर अज्ञात इतिहास की खोज की जाती है । (आर्कियॉलोजी) ।
**पुरातत्वज्ञ** पुं०(सं) पुरातत्व का वेत्ता । (आर्कियॉलो-

जिस्ट)।
पुरातन वि० (सं) १-प्राचीन। पुराना। २-जीर्ण। घिसा हुआ। पुं० (सं) विष्णु।
पुरातनपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
पुराधिप पुं०(सं) नगर या शहर की शासन व्यवस्था का अधिकारी या अध्यक्ष।
पुरान वि० (हि) दे० 'पुराना'। पुं०(हि) दे० 'पुराण'
पुराना वि० (हि) १-बहुत दिनों का। २-जो बहुत दिन का होने के कारण ठीक अवस्था में न रह पाया हो। परिपक्व। ४-प्राचीन। ५-जिसका चलन अब न रहा हो। क्रि० (हि) १-पूरा कराना। २-पालन कराना। ३-पूरा डालना।
पुरारि पुं० (सं) शिव। महादेव।
पुराल पुं० (हि) दे० 'पयाल'।
पुरा-लिपि स्त्री० (सं) हजारों वर्ष पहले प्रचलित लिपि
पुरा-लिपि-शास्त्र पुं०(सं)प्राचीन काल की जानकारी कराने और विवेचन करने वाला शास्त्र। (एपेग्राफी)
पुरालेख पुं० (सं) पुराने सरकारी अभिलेख या कागजात। (आर्काइव्स)।
पुरालेखपाल पुं० (सं) राज्य के पुरालेखों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी। (आर्काइविस्ट)।
पुरावसु पुं० (सं) भीष्म।
पुरावृत पुं० (सं) अतीतकाल का इतिहास। पुराना हाल।
पुराविद वि० (सं) प्राचीन इतिहास या पुरानी बातों को जानने वाला।
पुरि स्त्री० (सं) १-कस्बा। शहर। २-नदी। ३-शरीर
पुरिखा स्त्री० (हि) दे० 'पुरखा'।
पुरिया पुं०(हि) १-वह नरी जिस पर बाने को बुनने से पहले फैलाया जाता है। २-दे 'पुड़िया'।
पुरी स्त्री० (सं) १-नगरी। शहर। २-जगन्नाथपुरी।
पुरीष पुं० (सं) १-विष्ठा। मल। २-कूड़ा-करकट।
पुरीषण पुं० (सं) मलत्याग।
पुरीषोत्सर्ग पुं० (सं) मलत्याग करना।
पुरु पुं० (सं) १-देवलोक। २-दैत्य। ३-शरीर। ४-एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो राजा ययाति के पुत्र थे। ५-सिकन्दर से लड़ने वाले एक राजा का नाम। वि० (सं) प्रचुर।
पुरुख पुं० पुरुष।
पुरुखा पुं० (हि) दे० 'पुरखा'।
पुरुष पुं० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-मानव जाति ३-आत्मा। ४-विष्णु। ५-सूर्य। ६-जीव। ७-पति स्वामी। ८-पूर्वज।
पुरुषक पुं० (सं) घोड़े का पुरुष के समान दो पैरों पर खड़ा होना।
पुरुषकार पुं० (सं) पुरुष का उद्योग या प्रयत्न पुरुषार्थ।
पुरुषकुणप पुं० (सं) मनुष्य की लाश या मृतक शरीर।
पुरुषकेसरी पुं० (सं) १-विष्णु का नृसिंहावतार। २-पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष।
पुरुषघ्नी वि० (सं) अपने पति का वध करने वाली।
पुरुषत्व पुं० (सं) १-मर्दानगी। २-पुंसत्व।
पुरुषद्वेषिणी स्त्री० (सं) अपने पति से वैर भाव रखने वाली स्त्री।
पुरुषद्वेषी वि० (सं) मनुष्य मात्र से द्वेष करने वाला।
पुरुषपुर पुं० (सं) आधुनिक पेशावर का प्राचीन नाम।
पुरुषशार्दूल पुं० (सं) पुरुषों में श्रेष्ठ।
पुरुषांग पुं० (सं) पुरुष की लिंगेन्द्रिय।
पुरुषाद पुं० (सं) १-राक्षस। २-नरभक्षक।
पुरुषादक पुं० (सं) दे० 'पुरुषाद'।
पुरुषाधम पुं० (सं) अधम या नीच मनुष्य।
पुरुषानुक्रम पुं० (सं) पुरुषों से चली आई परंपरा।
पुरुषानुक्रमिक वि०(सं) जो किसी वंश में कोई पीढ़ियों से चला आया हो और आगे भी पीढ़ी चलने की सम्भावना हो। (हैरिडेटरी)।
पुरुषायुष पुं० (सं) मनुष्य की आयु।
पुरुषायुषजीवी वि० (सं) जो मनुष्य की पूरी आयु (लगभग सौ साल) तक जीये।
पुरुषारथ पुं० (हि) दे० 'पुरुषार्थ'।
पुरुषार्थ पुं० (सं) १-पुरुष के प्रयत्न का कार्य। २-पौरुष। पराक्रम। सामर्थ्य। शक्ति। पुंसत्व।
पुरुषेन्द्र पुं० (सं) श्रेष्ठ पुरुष। नृप।
पुरुषोत्तम पुं० (सं) १-पुरुषों में उत्तम। २-विष्णु। ३-नारायण। ४-जगन्नाथ।
पुरुषोत्तम-क्षेत्र पुं० (सं) जगन्नाथपुरी।
पुरुषोत्तम-मास पुं० (सं) मलमास। अधिक मास।
पुरुह वि०(हि) प्रचुर। काफी।
पुरुहूत पुं० (सं) इन्द्र।
पुरूरवा पुं० (सं) एक प्रसिद्ध सोमवंशी राजा जिसका विवाह उर्वशी से हुआ था।
पुरेथा पुं० (हि) हल की मूठ।
पुरैन स्त्री० (हि) दे० 'पुरइन'।
पुरोगंता वि० (सं) दे० 'पुरोग'।
पुरोग वि० (सं) अग्रगामी। जो सामने हो।
पुरोगत वि० (सं) जो पहले गया हो।
पुरोजन्मा वि० (सं) बड़ा भाई।
पुरोटि पुं० (सं) १-नदी का प्रवाह। २-पत्तों का शब्द।
पुरोडाश पुं० (सं) १-जौ के आटे की टिकिया जो कपाल में पका कर होम में टुकड़े करके डाली जाती जाती है। २-हवि। ३-यज्ञ से बची सामग्री। ४-सोमरस।

**पुरोद्यान** पुं०(सं) नगर या शहर का बगीचा। (पार्क)
**पुरोध** पुं० (सं) पुरोहित।
**पुरोधा** स्त्री० (हिं) पुरोहिताई।
**पुरोभाग** पुं० (सं) अग्रभाग। अगला भाग।
**पुरोहित** पुं० (सं) वह ब्राह्मण जो यजमान के सब कृत्य या संस्कार कराता है।
**पुरोहित-तंत्र** पुं०(सं) १-पुरोहितों की शासन व्यवस्था। २-कैथोलिक पदारियों के क्रमानुगत अधिकारियों का वर्ग। (हायरारकी)।
**पुरोहिताई** स्त्री० (हिं) पुरोहित का काम।
**पुरोहितानी** स्त्री० (हिं) पुरोहित की स्त्री।
**पुरोहिती** स्त्री० (हिं) पुरोहिताई।
**पुरौ** पुं० (हिं) पुरवट। चरसा।
**पुर्तगाल** पुं० (अं) योरुप के दक्षिण-पश्चिम में स्पेन देश से लगा एक प्रदेश।
**पुर्तगाली** वि० (हिं) १-पुर्तगाल का रहने वाला। २-पुर्तगाल सम्बन्धी।
**पुर्तगीज** पुं० (अं) १-पुर्तगाल की भाषा। २-पुर्तगाल का निवासी।
**पुर्बला** वि० (हिं) दे० 'पुरबला'।
**पुल** वि०(सं) बहुत सा। पुं० (फा) किसी नदी, नाले आदि के आरपार जाने के लिए बनाया हुआ रास्ता। सेतु। पुं० (सं) १-रोमांच। २-शिव के एक अनुचर का नाम।
**पुलक** पुं० (सं) १-हर्ष, प्रेम आदि के कारण शरीर के रोंगटे खड़े होना। रोमांच। २-खनिज पदार्थ ३-मदिरा पीने का कांच का गिलास। ४-शरीर में पड़ने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
**पुलकना** क्रि० (हिं) पुलकित होना।
**पुलकाई** स्त्री० (हिं) पुलकित होने का भाव।
**पुलकालि** स्त्री० (हिं) हर्ष से प्रफुल्लित रोम। पुलकावलि।
**पुलकावलि** स्त्री० (सं) हर्षातिरेक के कारण खड़ी होने वाली रोमावली।
**पुलकित** वि० (सं) रोमांचित। आनन्दित।
**पुलटिस** स्त्री० (हिं) फोड़े आदि को पकाने के लिए अलसी आदि का मोटा लेप। (पुल्टिस)।
**पुलपुला** वि० (हिं) १-तनिक दबाने पर दब जाने वाला। (ढीला तथा मुलायम पदार्थ)। २-बार-बार दबने, उभड़ने और बन्द होने वाला।
**पुलपुलाना** क्रि० (हिं) किसी वस्तु को दबा कर चूसना।
**पुलस्त** पुं० (हिं) दे० 'पुलस्ति'।
**पुलस्ति** पुं० (सं) ब्रह्मा के मानस पुत्र ऋषियों में से एक ऋषि का नाम।
**पुलस्त्य** पुं० (सं) दे० 'पुलस्ति'।
**पुलहना** क्रि० (हिं) दे० 'पलुहना'।
**पुलाक** पुं० (सं) १-कदन्न विशेष। २-उबला हुआ चावल। भात। ३-मांड। ४-पुलाव। ५-संक्षेप।
**पुलाव** पुं० (हिं) पकाये हुए मांस में पुनः चावल डाल कर बनाया हुआ एक व्यंजन।
**पुलिंदा** पुं० (हिं) लपेटे हुए कागज, कपड़े आदि का मुट्ठा। (बंडल)।
**पुलिन** पुं० (सं) १-नदी का रेतीला तट। २-नदीतट ३-पानी के हट जाने से निकली हुई हाल की भूमि।
**पुलिनवती** स्त्री० (सं) नदी।
**पुलिया** स्त्री० (हिं) छोटे नालों आदि को पार करने का पुल।
**पुलिस** स्त्री० (अं) १-जनता के जानमाल के रक्षार्थ तथा शांति स्थापन के लिए नियुक्त सरकारी कर्मचारियों का वर्ग। २-इस प्रकार के कर्मचारियों का विभाग।
**पुलिसमैन** पुं० (अं) पुलिस का सिपाही।
**पुलिहोरा** पुं० (देश०) एक पकवान।
**पुलोमजा** स्त्री० (सं) शची। इन्द्र की पत्नी।
**पुलोमा** पुं० (सं) १-एक असुर जो इन्द्र का ससुर था। २-राक्षस।
**पुलोमाजित्** पुं० (सं) इन्द्र।
**पुलोमापुत्री** स्त्री० (सं) शची
**पुश्त** स्त्री० (फा) १-पीठ। पृष्ठ। २-वंश परम्परा में कोई एक स्थान।
**पुश्तक** स्त्री० (फा) घोड़े, गधे आदि का पिछले पैरों से लात मारना।
**पुश्तनामा** पुं० (फा) वह कागज जिस पर वंश में उत्पन्न होने वाले पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों के नाम लिखे हों।
**पुश्तवानी** स्त्री० (फा) वह खड़ी लकड़ी जो किवाड़ के पीछे पल्ले को पुष्ट करने के लिए गड़ी होती है।
**पुश्ता** पुं० (फा) मजबूती या पानी की रोक के लिए दीवार के सहारे लगाया हुआ ईंट पत्थरों का ढेर २-बांध। (बैरेज)। ३-किताब की जिल्द का चमड़ा।
**पुश्ताबंदी** स्त्री० (फा) पुश्ता बांधने का कार्य।
**पुश्तापुश्त** अव्य० (फा) कई पीढ़ियों से।
**पुश्तैनी** वि० (हिं) १-कई पीढ़ियों से चला आया हुआ। २-आगे की पीढ़ियों तक चलने वाला।
**पुष्कर** पुं० (सं) १-जल। २-तालाब। सरोवर। ३-नील कमल। ४-हाथी की सूंड की नोक। ५-तलवार की धार। ६-तीर। ७-आकाश। ८-वायुमंडल। ९-अजमेर नगर के निकट एक तीर्थ स्थान १०-राजा नल का छोटा भाई। ११-जंबू आदि-द्वीपों में से एक। १२-एक सूर्य। १३-पिंजड़ा।
**पुष्कर-तीर्थ** पुं० (सं) पुष्कर नाम का एक तीर्थ।
**पुष्करबीज** पुं० (सं) कमल का बीज।

पुष्करमूल पुं० (सं) हाथी की सूंड का छिद्र।

पुष्कराक्ष वि० (सं) कमल के समान नेत्र वाला। पुं० (स) विष्णु।

पुष्करिणी स्त्री० (सं) १- छोटा तालाव। २-हथिनी ३-कमल का तालाव।

पुष्करी पुं० (सं) वह सरोवर जिसमें बहुत से कमल हों। २-हाथी।

पुष्कल पुं० (सं) १-अनाज नापने का एक मान। २-चार ग्राम की भिक्षा। ३-एक प्रकार की वीणा। ४-मेरु पर्वत। वि० (सं) १-विपुल। अधिक। २-पूर्ण। ३-भड़कीला। ४-सर्वोत्तम।

पुष्ट वि० (सं) १-पोषण किया हुआ। २-बलिष्ठ। मोटाताजा। ३-बलवर्द्धक। ४-दृढ़। ५-पूर्ण।

पुष्टई स्त्री० (हि) बल वीर्यवर्द्धक या पुष्ट करने वाली औषध।

पुष्टता स्त्री० (सं) बलिष्ठता। तगड़ापन।

पुष्टि स्त्री०(सं) १-पोषण। २-दृढ़ता। ३-बलवर्द्धक ४-बात का समर्थन। सहारा।

पुष्टिकर वि०(सं) पुष्ट करने वाला। बल-वीर्यवर्द्धक

पुष्टिकारक वि० (सं) पौष्टिक।

पुष्टिमार्ग पुं० (सं) वल्लभाचार्य के मतानुसार एक वैष्णवों का भक्तिमार्ग।

पुष्टीकरण पुं० (सं) किसी कथन या काम को ठीक मान कर उसका अनुमोदन या समर्थन करना। (रैटिफिकेशन)।

पुष्प पुं० (सं) १-फूल। २-ऋतुमती स्त्री का रज। ३-आंख का एक रोग। ४-विकसित होना। ५-कुबेर का पुष्पक विमान।

पुष्पक पुं० (सं) १-फूल। २-लोहे का प्याला। ३-एक विमान जो रावण ने कुबेर से छीन लिया था ४-कंगन। ५-मिट्टी की अंगीठी। ६-रसौत। ७-मंडप।

पुष्पकर्ण वि० (सं) कान पर फूल लगाने वाला।

पुष्पकाल पुं० (सं) १-स्त्रियों का ऋतु समय। २-वसंत काल।

पुष्पकीट पुं० (सं) १-भ्रमर। २-फूल का कीड़ा।

पुष्पकेतन पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पकेतु पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पचयन पुं० (सं) फूल चुनना।

पुष्पचाप पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पचामर पुं० (सं) केवड़ा।

पुष्पज पुं० (सं) फूलों का रस या ... उत्पन्न वस्तु।

पुष्पजासव पुं० (सं) फूलों से बनाई हुई शराब।

पुष्पजीवी पुं० (सं) माली।

पुष्पदंत पुं० (सं) १-शिव के एक गण का नाम। २-एक विद्याधर। ३-वायुकोण के एक दिग्गज का नाम। ४-एक नाग।

पुष्पद पुं० (सं) वृक्ष। वि० (सं) फूल देने वाला।

पुष्पदाम पुं० (सं) १-फूलों की माला। २-एक सोलह अक्षर के चरण वाला छन्द।

पुष्पद्रुम पुं० (सं) वह पौधा जिसमें केवल फूल लगते हों।

पुष्पध्वज पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पनिर्यास पुं० (सं) पुष्परस।

पुष्पपुर पुं० (सं) प्राचीन पाटलिपुत्र जो आजकल पटना के नाम से प्रसिद्ध है।

पुष्पबलि स्त्री० (सं) पुष्पों की भेंट चढ़ाना।

पुष्पबाण पुं० (सं) कामदेव।

पुष्परज स्त्री० (सं) पराग।

पुष्परथ पुं० (सं) वह रथ जो केवल यात्रा आदि के काम आता हो।

पुष्परस पुं० (सं) फूल का मधु।

पुष्पराग पुं० (सं) पुखराज।

पुष्परेणु स्त्री (सं) पराग।

पुष्पवर्ग पुं० (सं) सेमल, कचनार आदि फूलों का गुलदस्ता।

पुष्पवती वि० (सं) १-फूल वाली। २-रजस्वला स्त्री।

पुष्पवर्षण पुं० (सं) फूलों की वर्षा।

पुष्पवाटिका स्त्री० (सं) फुलवारी।

पुष्पवाटी स्त्री० (सं) फुलवारी।

पुष्पवृष्टि स्त्री० (सं) फूलों की वर्षा।

पुष्पशर पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पसमय पुं० (सं) वसंतऋतु।

पुष्पसायक पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पसार पुं० (सं) फूलों का बना शहद या रस।

पुष्पस्नेह पुं० (सं) मरकंद। फूलों का मधु।

पुष्पहास पुं० (सं) पुष्पों का खिलना।

पुष्पहीन वि० (सं) बिना फूल का। पुं० (सं) गूलर का पेड़।

पुष्पहीना वि० (सं) रजस्वला न होने वाली (स्त्री)। बांझ।

पुष्पांजलि स्त्री० (सं) पुष्पों से भरी अंजलि जो देवता को चढ़ाई जाय।

पुष्पाकर पुं० (सं) १-वसंत ऋतु। २-फूलों से सम्पन्न।

पुष्पागम पुं० (सं) वसंतऋतु।

पुष्पाजीव पुं० (सं) माली।

पुष्पापीड पुं० (सं) सिर पर लगाने की फूल माला।

पुष्पायुध पुं० (सं) कामदेव।

पुष्पाराम पुं० (सं) फुलवारी।

पुष्पासव पुं० (सं) फूलों से बना मद्य।

पुष्पित वि० (सं) १-पुष्पसंयुक्त। २-पूर्ण विकसित।

खिला हुआ।
**पुष्पोद्यान** पुं० (सं) फुलवारी। पुष्प वाटिका।
**पुष्पोपजीवी** पुं० (सं) माली।
**पुष्य** पुं० (सं) १-पोषण। २-पुष्टि। ३-सार वस्तु। ४-सत्ताइस नक्षत्रों में से आठवां। ५-पूस का महीना।
**पुष्यमित्र** पुं०(सं) एक प्रतापी राजा का नाम जिसने मौर्यों के पीछे मगध देश में शुंगवंश का राज्य ई० पू० १८५ में स्थापित किया था।
**पुष्यार्क** पुं० (सं) रविवार के दिन पड़ा हुआ पुष्य-नक्षत्र। (ज्यो०)।
**पुस** पुं० (देश०) बिल्ली को प्यार से बुलाने का एक शब्द।
**पुसाना** क्रि० (हि) १-हो सकना या बन पड़ना। २-अच्छा लगना।
**पुस्त** पुं० (सं) १-गीली मट्टी का पलस्तर। २-चित्रकारी। लीपना-पोतना। ३-लकड़ी की बनी हुई वस्तु। ४-मिट्टी खोदने का काम। ५-पुस्तक।
**पुस्तक** स्त्री० (सं) हस्त लिखित या छपी पोथी या किताब। ग्रन्थ। (बुक)।
**पुस्तकमुद्रा** स्त्री० (स) (तंत्र) हाथ की एक मुद्रा।
**पुस्तकाकार** वि० (स) पुस्तक के आकार का।
**पुस्तकागार** पुं० (सं) दे० 'पुस्तकालय'।
**पुस्तकाध्यक्ष** पुं० (स) पुस्तकालय की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (लाइब्रेरियन)।
**पुस्तकालय** पुं० (सं) १-वह स्थान जहां पढ़ने की बहुत सी पुस्तकें हो। (लाइब्रेरी)। २-वह दुकान जहां पुस्तकें बिकती हों। (बुकडिपो)।
**पुस्तकास्तरण** पुं० (सं) पुस्तक का बेठन।
**पुस्तकी** स्त्री० (सं) पुस्तक। पोथी।
**पुस्त-डाक** पुं० (हि) छपी हुई पुस्तक, लेख, समाचार पत्र आदि रियायती दरों पर भेजने का डाकखाने का नियम। (बुकपोस्ट)।
**पुस्तिका** स्त्री० (हि) छोटी या कम पृष्ठ वाली पुस्तक (बुकलेट)।
**पुहकर** पुं० (हि) दे० 'पुष्कर'।
**पुहना** क्रि० (हि) गुथना। पिरोया जाना।
**पुहाना** क्रि० (हि) गुथवाना। पिरोने का काम करना
**पुहप** पुं० (हि) पुष्प। फूल।
**पुहमी** स्त्री० (हि) पृथ्वी।
**पुहमीपति** पुं० (हि) राजा।
**पुहवी** स्त्री० (हि) भूमि। पृथ्वी।
**पुंगी** स्त्री० (हि) वह बाजा जिसे सपेरे बजाते है। बीन।
**पूंछ** स्त्री० (हि) १-दुम। पुच्छ। २-पुछल्ला। किसी का पिछला भाग। ३-पिछलग्गू।
**पूंछना** क्रि० (हि) दे० 'पूछना'।
**पूंछलतारा** पुं० (हि) दे० 'पुच्छलतारा'।
**पूंजी** स्त्री० (हि) १-किसी व्यवसाय में लगाया हुआ धन। मूलधन। (प्रिंसिपल)। २-एकत्रित किया हुआ धन या राशि। ३-वह धन जिससे कोई व्यापार या कारखाना खोला गया हो। (केपिटल)। ४-कारखाने आदि की अचल संपत्ति। ५-किसी में जानकारी। सामर्थ्य। ६-पुञ्ज। समूह।
**पूंजी-अर्हा** पुं०(हि) किसी पूंजी की निर्धारित राशि (केपिटल वेल्यू)।
**पूंजीकर** पुं० (हि) किसी सीमित समवाय (लिमिटेड कम्पनी) के लिए एकत्रित पूँजी पर लगने वाला कर। (केपिटल ड्यूटी)।
**पूंजीकरण** पुं० (हि) मूलधन या पूँजी में परिवर्तन करना। (केपिटेलाइजेशन)।
**पूंजीकृत** वि०(हि) मूलधन या पूंजी में परिणित किया हुआ (केपिटेलाइज्ड)।
**पूंजीकृत-अर्हा** पुं० (हि) उतनी राशि जिसे मूलधन में परिणित राशि कर दिया गया हो। (केपिटेलाइज्ड वेल्यू)।
**पूंजीकृत-लाभ** पुं० (हि) लाभ की वह राशि जिसे पूंजी में परिणित कर दियागया हो। (केपिटेलाइज्ड प्रोफिट)।
**पूंजीकृत-व्यय** स्त्री० (हि) वह व्यय जिसे पूँजी में से पूरा किया गया हो। (केपिटेलाइज्ड एक्सपेंडीचर)।
**पूंजीखाता** पुं० (हि) पूंजी के जमा खर्च का खाता (केपिटल एकाउंट)।
**पूंजीगत मूल्य** पुं०(हि) दे० 'पूंजी-अर्हा'। (केपिटल वेल्यू)।
**पूंजीगत लागत** स्त्री० (हि) निर्माण कार्यों में लगाये जाने वाली पूंजी। (केपिटल आउटले)।
**पूंजीगत व्यय** पुं० (हि) उत्पादक कार्यों में जैसे रेल आदि में खर्च करने वाली राशि। (केपिटल एक्सपेंडीचर)।
**पूंजी तथा आगम लेख** पुं० (हि) वह लेखा या खाता जिसमें पूंजी तथा आयकर आदि का हिसाब लिखा होता है। (केपिटल एण्ड रेवन्यु एकाउन्ट)।
**पूंजी तथा लाभ** पुं० (हि) नफा और निर्धारित पूंजी। (केपिटल एण्ड प्रोफिट)।
**पूंजीतंत्र** पुं० (हि) वह आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूंजीपतियों का स्थान प्रधान और सर्वोपरि हो। (केपिटेलिस्टिक सिस्टम)।
**पूंजीतन्त्रीय** वि० (हि) पूंजी तन्त्र से सम्बन्धित। (केपिटेलिस्टिक)।
**पूंजीदार** पुं० (हि) दे० 'पूंजीपति'।
**पूंजीपति** पुं० (हि) जिसके पास पूंजी हो या जो किसी उद्योग या व्यापार में लगाये। (केपिटेलिस्ट)

**पूंजीपरिव्यय** पुं० (हि) मशीन, कल, पुर्जे आदि व्यय होने वाली पूंजी। (केपिटल कॉस्ट)।
**पूंजीप्रत्यय** पुं० (हि) उधार ली हुई राशि जिसका भुगतान पूंजी में से किया जा सके। (केपिटल क्रेडिट)।
**पूंजीरक्षिति** स्त्री० (हि) किसी भी समय आवश्यकता पड़ने पर काम में लाने के लिये पूंजी में से अलग निकाल कर रखी गई पूंजी। (केपिटल रिजर्व)।
**पूंजीलागत** स्त्री० (हि) दे० 'पूंजी परिव्यय'। (कपिटल कॉस्ट)।
**पूंजीलेखा** स्त्री० (हि) दे० 'पूंजी खाता'। (केपिटल एकाउण्ट)।
**पूंजीवाद** पुं० (हि) वह सिद्धान्त जिसमें पूंजीपतियों का स्थान आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख माना जाता है और वे बे रोकटोक श्रमिकों का शोषण करते हैं। (केपिटेलिज्म)।
**पूंजीवादी** पुं०(हि) जो पूंजीवाद के सिद्धान्त को मानता हो। (केपिटेलिस्ट)।
**पूंजीसंचिति** स्त्री० (हि) दे० 'पूंजी रक्षिति'। (केपिटल रिजर्व)।
**पूआ** पुं० (हि) दे० 'पुआ'।
**पूग** स्त्री० (सं) १-सुपारी का वृक्ष या फल। २-ढेर। समूह। ३-कटहल। ४-शहतूत का पेड़। ५-वह संघ या समवाय जो किसी व्यापार के निमित्त बना हुआ हो। (कम्पनी)।
**पूगकृत** वि० (स) १-जो एकत्रित किया हो। २-जो टीले के आकार का हो।
**पूगना** क्रि० (हि) १-भरना। पूरना। २-नियत समय आ पहुंचना।
**पूगपात्र** पुं०(सं) पीकदान। उगालदान।
**पूगपीठ** पुं० (सं) पीकदान।
**पूगपुष्पिका** स्त्री० (स) विवाह सम्बन्ध स्थिर होने के अवसर पर दिया जाने वाला पुष्प सहित पान।
**पूगफल** पुं० (सं) सुपारी।
**पूगरोट** पुं० (हि) एक प्रकार का ताड़ का वृक्ष।
**पूगवैर** पुं० (सं) अनेक लोगों से बैर या शत्रुता।
**पूगी** पुं० (सं) सुपारी का वृक्ष। स्त्री० (स) सुपारी।
**पूगीफल** पुं० (सं) सुपारी।
**पूगीलता** स्त्री० (सं) सुपारी का पेड़।
**पूछ** स्त्री० (हि) १-पूछने या पूछे जाने की क्रिया या भाव। जिज्ञासा। २-खोज। ३-आदर। सम्मान
**पूछताछ** स्त्री० (हि) दे० 'पूछताछ'।
**पूछना** क्रि० (हि) १-किसी बात को जानने के लिए सवाल करना। २-किसी की खोज-खबर लेना। ३-कद्र करना। ४-टोकना। ५-आदर करना।
**पूछरी** स्त्री० (हि) १-दुम। पूंछ। २-पिछला भाग।
**पूछताछ** स्त्री० (हि) बातचीत करके किसी विषय में खोज या जांच पड़ताल करना।
**पूछाताछी** स्त्री० (हि) पूछने की क्रिया या भाव।
**पूज** वि० (हि) पूजनीय। पुं०(हि) देवता। स्त्री० (हि) विवाह, यज्ञोपवीत आदि के अवसर पर गणेश पूजन की रीति।
**पूजक** पुं० (सं) उपासक। वह जो पूजा करे।
**पूजन** पुं० (सं) १-पूजा की क्रिया। २-आदर। सम्मान।
**पूजना** क्रि० (हि) १-अर्चना या आराधना करना। २-भक्ति या श्रद्धा सहित किसी की सेवा करना। ३-वंदना करना। सिर झुकाना। ४-घूस देना। ५-पूरा होना। भरना। ६-पटना। ७-चुकता होना।
**पूजनीय** वि० (हि) १-पूजने योग्य। २-आदरणीय।
**पूजमान** वि० (हि) पूज्य। पूजनीय।
**पूजयितव्य** वि० (सं) पूजा करने योग्य।
**पूजयिता** पुं० (सं) पूजा करने वाला।
**पूजा** स्त्री० (सं) १-अर्चना। आराधना। २-वह धार्मिक कृत्य जो देवता पर फल, फूल आदि चढ़ाकर किया जाता है। ३-आदरसत्कार। ४-दण्ड या सजा (व्यंग)। ५-किसी को घूस देना।
**पूजाकर** वि० (सं) पूजा करने वाला।
**पूजागृह** पुं० (सं) मन्दिर। देवालय।
**पूजार्ह** वि० (सं) पूजा के योग्य। मान्य।
**पूजित** वि०(स) आराधित। अर्चित।
**पूजितव्य** वि० (सं) पूजनीय। पूजा के योग्य।
**पूजोपकरण** पुं० (स) पूजा के लिए आवश्यक वस्तुएं
**पूज्य** वि० (सं) १-पूजनीय। २-माननीय।
**पूज्यता** स्त्री० (सं) पूज्य होने का भाव।
**पूज्यपाद** वि० (सं) १-अत्यन्त पूज्य और मान्य। २-जिसके पैर पूजने योग्य हों।
**पूज्यमान** वि० (सं) जिसकी पूजा की जा रही हो। सेव्यमान। पुं० (सं) सफेद जीरा।
**पूठी** स्त्री० (हि) पीठ।
**पूड़ी** स्त्री०(हि) १-दे० 'पूरी'। २-तबले या मृदंग पर चढ़ाने का चमड़ा।
**पूत** पुं० (सं) १-सत्यता। सचाई। २-शंख। ३-सूप में फटका हुआ अन्न। ४-जलाशय। वि० (स) शुद्ध। पवित्र। पुं०(हि) १-बेटा। पुत्र। २-चूल्हे के उठे दोनों किनारों और बीच का नुकीला उभार जिस पर पतीली आदि ठहराये जाते हैं।
**पूतड़ा** पुं० (हि) छोटे बच्चे का छोटा बिस्तर।
**पूतन** पुं० (सं) भूत योनि का एक भेद। वैताल।
**पूतना** स्त्री० (सं) १-एक राक्षसी जिसे कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था। २-बालकों का एक रोग। ३-पीली हड़।
**पूतनारि** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**पूतरा** पुं० (हि) १-दे० 'पुतला'। २-बेटा। पुत्र।

**पूता** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-दूब। पुं० (हि) बेटा। पुत्र।

**पूतात्मा** पुं० (सं) विष्णु। वि० (सं) शुद्ध अन्तःकरण वाला।

**पूति** वि०(सं) १-सड़ा हुआ। बुसा हुआ। स्त्री० (सं) १-पवित्रता। २-दुर्गन्ध। ३-मुश्कबिलाव। ४-गन्दा पानी।

**पूती** स्त्री०(हि) लहसन की गांठ के रूप में होने वाली जड़।

**पून** पुं० (देश०) १-जंगली बादाम का पेड़। २-तलवार की मूंठ का नीचे वाला भाग। ३-गुवा का बाहरी भाग।

**पूनव** स्त्री० (हि) पूनो। पूर्णिमा।

**पूनिउँ** स्त्री० (देश०) दे० 'पूनो'।

**पूनी** स्त्री० (हि) धुनी हुई रूई को सलाई में लपेट कर बनाई हुई बत्ती जिससे सूत कातते हैं।

**पूनो** स्त्री० (हि) पूर्णिमा।

**पून्यो** स्त्री० (हि) दे० 'पूनो'।

**पूप** पु० (सं) पूआ। मालपुआ।

**पूपली** स्त्री० (सं) एक प्रकार का मालपुआ।

**पूपलिका** स्त्री० (सं) पूप। पूआ।

**पूपिका** स्त्री० (सं) पूपलिका।

**पूय** पुं० (सं) मवाद। पीप।

**पूयारि** पु० (सं) नीम का पेड़।

**पूर** पुं० (सं) १-भरना। अघाना। २-सन्तुष्ट करना। ३-उड़ेलना। ४-नदी या समुद्र के जल की बाढ़। ५-सरोवर। ६-घाव भरना। व्रण शुद्धि। वि०(हि) दे० 'पूर्ण'। पु० (हि) पकवान में भरे जाने वाले मसाले।

**पूरक** वि० (सं) १-पूरा करने वाला। २-किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण स्वरूप प्रदान करने वाला (कम्प्लिमेन्टरी)। पुं० (सं) १-बिजौरा नीबू। ३-गुणक अंक। ४-प्राणायाम का वह अंग जिसमें नाक मुंह आदि बन्द करके ऊपर सांस खींची जाती है। ५-पूर्ण बनाने वाला अंग। (कम्पलीमेंट)

**पूरण** पुं० (सं) १-भरने की क्रिया। २-समाप्त करने की क्रिया। ३-मृतक-कर्म में होने वाली रोटी या पूड़ी। ४-समुद्र। ५-सेतु। ६-वृष्टि। ७-गुणन।

**पूरन** वि० (हि) दे० 'पूर्ण'। पुं० (हि) उबली तथा पिसी हुई मटर या चने की दाल।

**पूरनकाम** वि० (हि) दे० 'पूर्णकाम'।

**पूरनपरब** पुं० (हि) पूनो। पूर्णिमा।

**पूरनपूरी** स्त्री० (हि) मीठी पूरी। कचौड़ी।

**पूरनमासी** स्त्री० (हि) दे० 'पूर्णमासी'।

**पूरना** क्रि० (हि) १-कमी को पूरा करना। २-ढांकना। ३-मनोकामना सिद्ध कराना। ४-मंगल अवसरों में भूमि पर अबीर या आटे आदि से गोल या चौखूटे क्षेत्र बनाना। ५-बटना। ६-ओतप्रोत होना। ७-छाना।

**पूरनिमा** स्त्री० (हि) दे० 'पूर्णिमा'।

**पूरा** वि० (हि) १-परिपूर्ण। २-समूचा। समग्र। ३-भरपूर। पर्याप्त। ४-पूर्णतया संपन्न किया हुआ। ५-पूर्णतुष्ट।

**पूरानीत-भूमि** स्त्री० (सं) दे० 'जलोढ़-भूमि'। (एल्यूविअल सॉयल)।

**पूरित** वि० (सं) १-भरा हुआ। २-गुणित। ३-तृप्त

**पूरी** स्त्री० (हि) १-तेल या घी में पकाई हुई रोटी। मृदंग आदि पर मढ़ा जाने वाला गोल चमड़ा। स्त्री० (देश०) घास आदि का पूला।

**पूरुख** पुं० (हि) दे० 'पुरुष'।

**पूरुष** पुं० (सं) पुरुष। आत्मा।

**पूर्ण** वि० भरा हुआ। पूरा। २-सर्वांगपूर्ण। (एब्सोल्यूट)। ३-तृप्त। पर्याप्त। यथेष्ट। ४-समग्र। समूचा। ६-समाप्त। सिद्ध। पुं० (सं) १-जल। २-विष्णु। ३-एक नाग का नाम।

**पूर्णक** पुं० (सं) १-स्वर्णचूड़। २-मुर्गा।

**पूर्ण-काम** वि० (सं) १-जिसकी सब कामनायें पूर्ण हों। सुखी हो। २-कामनारहित।

**पूर्णकुंभ** पु० (सं) १-भरा हुआ घड़ा। २-दीवार में घड़े के आकार का सुराख।

**पूर्णगर्भा** वि० (सं) वह स्त्री जिसे शीघ्र प्रसव होने वाला हो।

**पूर्णचंद्र** पुं० (सं) पूर्णिमा का चांद।

**पूर्णतया** क्रि० वि० (सं) पूरे तौर से। पूर्ण रूप से।

**पूर्णतः** क्रि० वि० (सं) पूर्णतया।

**पूर्णप्रज्ञ** वि० (सं) परम ज्ञानी।

**पूर्णबोध** वि० (सं) पूर्णप्रज्ञ।

**पूर्णमासी** स्त्री० (सं) पूर्णिमा। उजियाले पक्ष की अन्तिम तिथि जिस दिन चन्द्रमा का मंडल पूर्ण दिखाई देता है।

**पूर्णविराम** पुं० (सं) किसी वाक्य में उसकी समाप्ति पर उसके अन्त में प्रयुक्त होने वाला चिह्न—( . ), ( । )।

**पूर्णांक** पुं०(सं) १-अविभक्त संख्या। २-किसी प्रश्न-पत्र के लिये निर्धारित अंक।

**पूर्णाधिकारप्राप्त दूत** पुं०(सं)वह दूत जिसे स्वतंत्रता पूर्वक स्वविवेक से काम लेते हुए आवश्यक निर्णय करने का अपनी सरकार की ओर से पूरा अधिकार दिया गया हो। (मिनिस्टर प्लेनीपोटेंशियरी)।

**पूर्णाधिवेशन** पुं०(सं) किसी संस्था या सभा का पूरा अधिवेशन जिसमें उसके सभी सदस्य सम्मिलित हो सकें। (प्लीनरी सेशन)।

**पूर्णायु** स्त्री० (सं) पूरी आयु जो लगभग सौ वर्ष की मानी गई है। वि० (सं) पूरी आयु वाला।

**पूर्णावतार** पुं० (सं) १-किसी देवता का सम्पूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।
**पूर्णाश** वि० (सं) जिसकी आशा या मनोकामना पूरी हो चुकी हो।
**पूर्णाहुति** स्त्री० (सं) १-होम या यज्ञ की अन्तिम आहुति। २-किसी काम का समाप्ति के समय होने वाला अन्तिम कृत्य।
**पूर्णिमा** स्त्री०(सं) पूनो। शुक्लपक्ष की अन्तिम तिथि
**पूर्णेंदु** पुं० (सं) पूर्णिमा का चांद।
**पूर्णोपमा** स्त्री० (सं) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग अर्थात्-उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म प्रकट रूप से प्रस्तुत हों।
**पूर्त** पुं० (सं) १-पालन। २-जनता के लाभार्थ कूएँ, बाग, सड़कें आदि बनाने का काम। ३-परोपकार के कार्य। (चैरिटी)।
**पूर्त-धार्मिक-धर्मस्व** पुं० (सं) धर्मार्थ या परोपकार-सम्बन्धी कार्यों में दान देने का विधान। (चैरिटेबल एण्ड रिलीजस एन्डाउमेंट)।
**पूर्तविभाग** पुं० (सं) वह राजकीय विभाग जिसका कार्य सड़क, नहर, पुल आदि का निर्माण करना होता है। (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट)।
**पूर्त-संस्था** स्त्री० (सं) १-कूएँ, तालाब, धर्मशाला आदि सामाजिक तथा लोकोपकारी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिये संघटित मंडल या समाज २-वह संस्था जो परोपकार के कार्य करे। (चैरिटेबल इंस्टिट्यूशन)।
**पूर्ति** स्त्री० (सं) १-पूर्णता। किसी आरंभ किये हुए कार्य की समाप्ति। २-किसी त्रुटि को पूरा करने का भाव या क्रिया। ३-गुणन। ४-समायोग। ५-उपभोक्ताओं की आवश्यकता पूरी करने के लिए उन्हें वस्तुएँ देना या जुटाना। (सप्लाई)। ६-बही आदि में अवश्यकतानुसार खाने भरने या लिखने की क्रिया। (एन्ट्री)।
**पूर्त्यधिकारी** पुं० (सं) जनता की आवश्यकता की वस्तुओं—लोहा, सीमेन्ट, कपड़ा आदि के समुचित वितरण की व्यवस्था करने वाला अधिकारी (सप्लाई ऑफीसर)।
**पूर्व** पुं० (सं) वह दिशा जिस ओर से सूर्य निकलता है। वि०(सं) १-पुराना। पहले का (प्रीवियस) २-अगला। ३-पिछला। पीछे का। ४-बड़ा। अव्य० (सं) पहले। आगे। पेश्तर।
**पूर्वक** पुं० (सं) पूर्वपुरुष। पुरखा। अव्य० (सं) सहित साथ। जैसे—निश्चयपूर्वक।
**पूर्वकर्म** पुं० (सं) १-पहले किया जाने वाला कर्म। २-पूर्व समय में किया जाने वाला कर्म। ३-पूर्व जन्म में किये हुए कर्म। ४-तैय्यारी।
**पूर्वकाल** पुं० (सं) प्राचीनकाल।
**पूर्वकालिक** वि० (सं) १-प्राचीन। २-जिसकी रचना या उत्पत्ति पूर्वकाल में हुई हो।
**पूर्वकालिक क्रिया** स्त्री०(सं) वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया से पहले होता हो।
**पूर्वकालीन** वि० (सं) प्राचीन।
**पूर्वकृत** वि० (सं) पूर्वकाल में किया हुआ।
**पूर्वक्रयका अधिकार** पुं० (सं) हकशुफा। कोई संपत्ति या भूमि पहले खरीदने का अधिकार। (राइट ऑफ प्री-एंपशन)।
**पूर्वगंगा** स्त्री० (सं) नर्मदा नदी।
**पूर्वग** वि० (सं) पहले जाने वाला। पूर्वगामी।
**पूर्वगामी** वि० (सं) दे० 'पूर्वग'।
**पूर्वज** पुं० (सं) १-बड़ा भाई। अग्रज। २-बाप, दादा आदि जो पहले गये हों। पूर्वपुरुष। पुरखा। (एनेसेस्टर्स, असेन्डेंट्स)।
**पूर्वजन्म** पुं० (सं) इस जन्म से पहले का जन्म। पिछला जन्म।
**पूर्वजन्मा** पुं० (सं) बड़ा भाई। अग्रज।
**पूर्वजा** स्त्री० (सं) बड़ी बहन।
**पूर्वज्ञान** पुं०(सं) १-पिछले जन्म का ज्ञान। २-पूर्वार्जित ज्ञान।
**पूर्वतः** (सं) पहले से।
**पूर्वतन** वि० (सं) पुराना। पहला।
**पूर्वतर** वि० (सं) पहला। पूर्व का।
**पूर्वता** स्त्री० (सं) दे० 'पूर्ववर्तिता'।
**पूर्व तिथित** वि० (हि) जिसमें पहले से आने वाली तिथि या तारीख लिखी हो। (एन्टीडेटेड)।
**पूर्वदत्त** वि० (सं) जो पहले दिया जा चुका हो। (शुल्क आदि)। (प्री-पेड)।
**पूर्वदिन** पुं० (सं) दिन का दुपहर से पहले का भाग।
**पूर्वदेहिक** वि० (सं) पूर्व जन्म में किया हुआ।
**पूर्वदेहिक** वि० (स) दे० 'पूर्वदेहिक'।
**पूर्वधारणा** स्त्री० (सं) किसी के पक्ष या विपक्ष में पहले से बनाई हुई राय। (प्रेजुडिस)।
**पूर्वधारणान्वित** वि० (सं) जो (धारणा) पूर्व राय के आधार पर बनाई गई हो। (प्रेजुडिस्ड)।
**पूर्वधारणायुक्त** वि० (सं) पूर्वधारणान्वित।
**पूर्वनिरूपण** पुं० (सं) भाग्य। किसमत।
**पूर्वनिश्चित** वि० (स) जिसका पहले से ही निश्चय किया गया हो।
**पूर्वपक्ष** पुं० (सं) १-मुद्दई का दावा या अभियोग। २-ऐसी चर्चा, प्रश्न या शंका जिसका समाधान करना पड़े। ३-कृष्णपक्ष।
**पूर्वपद** पुं० (सं) १-वर्तमान पद से पहले का पद। २-किसी समस्त पद का पहला शब्द।
**पूर्वपीठिका** स्त्री० (सं) पहली भूमिका।
**पूर्वपुरुष** पुं० (स) १-पिता, पितामह, प्रपितामह आदि

में से एक। २-पुरखा। ३-ब्रह्मा।

**पूर्वप्रज्ञा** स्त्री० (सं) पूर्वकाल या अतीत का ज्ञान या स्मृति।

**पूर्वप्लावनिक** वि० (सं) प्रलय के समय प्लावन या बाढ़ से पहले का। (ऐंटीडाइलूवियल)।

**पूर्वफाल्गुनी** स्त्री० (सं) अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ।

**पूर्वभाद्रपद** पुं०(सं) सत्ताईस नक्षत्रों में से पच्चीसवां नक्षत्र।

**पूर्वमीमांसा** स्त्री० (सं) एक हिन्दू दर्शनशास्त्र जिसमें कर्मकांड सम्बन्धी विषयों का निर्णय किया गया है।

**पूर्वरंग** पुं० (सं) नाटक के आरम्भ में विघ्नों को शान्त या दर्शकों को सावधान करने लिए गाया जाने वाला गाना या स्तुति।

**पूर्वराग** पुं०(सं) साहित्य में नायक और नायिका का मिलने से पहले चित्रादि देखने से उत्पन्न अनुराग।

**पूर्वरूप** पु० (सं) १-किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्णरूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो। २-आसार। ३-वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। ४-एक अर्थालंकार जिसमें किसी के विशिष्ट गुण, रूप आदि के द्वारा आ जाने अथवा उस वस्तु के फिर से अपने पूर्वरूप में आ जाने का वर्णन होता है।

**पूर्ववत्** अ० (सं) पहले के समान। जैसा पहले था वैसा ही।

**पूर्ववत्-करण** पु० (सं) १-जैसा पहला था वैसा ही बना देना। २-चालू कर देना। ३-प्रभावशाली बना देना। (रेस्टोरेशन)।

**पूर्ववर्तिता** स्त्री० (सं) समय आदि की दृष्टि से पहले का भाव या किया। (प्रिसीडेंस)।

**पूर्ववर्ती** वि० (सं) १-पहले का। २-जो पहले रह चुका हो। (प्रिसीडिंग)।

**पूर्ववाद** पुं० (सं) वह अभियोग जो न्यायालय में उपस्थित किया जाय। (प्लेंट)।

**पूर्ववादी** पुं० (सं) न्यायालय में पहला अभियोग उपस्थित करने वाला। वादी (प्लेंटिफ)।

**पूर्वविद्** वि० (सं) पुरानी बातों को जानने वाला।

**पूर्ववृत्त** पुं० (सं) १-इतिहास। २-पहले का आचरण

**पूर्वसंचित** वि० (सं) पहले से इकट्ठा किया हुआ।

**पूर्वस्थानियता** स्त्री० (सं) दे० 'पूर्ववर्तिता'। (प्रेसीडेंस)।

**पूर्वसम्मोदन** पुं०(सं) किसी नियम, आदेश आदि के बारे में पहले से ही उच्चाधिकारियों से प्राप्त स्वीकृति। (प्रीवियस सेंक्शन)।

**पूर्वस्थिति** स्त्री०(सं) पूर्वावस्था। पहले की दशा।

**पूर्वस्थिति-स्थापन** पुं० (सं) फिर पूर्व स्थिति को (लचीलेपन आदि के कारण) प्राप्त हो जाना। प्रत्यास्थापन। (रेस्टिट्यूशन)।

**पूर्वा** स्त्री० (सं) १-पूरब। पूर्व दिशा। प्राची।

**पूर्वाचल** पुं० (सं) उदयाचल।

**पूर्वाधिकारी** पुं० (सं) १-वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो २-संपत्ति का वह स्वामी जो वर्तमान स्वामी से पहले रहा हो। (प्रेडिसेसर)।

**पूर्वानिल** पुं० (सं) पूरब दिशा से आने वाली हवा।

**पूर्वानुमान** पुं० (सं) निकट भविष्य में होने वाली वर्षा, आंधी, ठंड, उपज या किसी संभावित घटना के बारे में पहले से किया गया अनुमान। (फोरकास्ट)।

**पूर्वानुमति निष्कर्ष** पुं० (सं) वह नतीजा जिसका अनुमान पहले से ही कर लिया गया हो। (फोरगॉन कनक्लूजन)।

**पूर्वानुराग** पुं० (सं) दे० 'पूर्वराग'।

**पूर्वापर** वि० (सं) १-जो आगे और पीछे हो। २-अगला और पिछला। पुं० (सं) पूर्व और पश्चिम अव्य० (सं) आगे-पीछे।

**पूर्वापराधी** पुं०(सं) वह अपराधी या बन्दी जो पहले कई दफा अपराध कर चुका हो। (हिस्ट्री शीटर)।

**पूर्वापर्य** पु० (सं) पूर्वापर का भाव।

**पूर्वाफाल्गुनी** स्त्री० (सं) अश्विन आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र।

**पूर्वाभाद्रपदा** स्त्री०(सं) दे० 'पूर्वभाद्रपद'।

**पूर्वाभिनय** पुं०(सं) शीघ्र ही खेले जाने वाले नाटय का या हमला करने से पहले हमले का अभिनय या अभ्यास। (रिहर्सल)।

**पूर्वाभिषेक** पुं० (सं) १-एक प्रकार का मन्त्र। २-पहले का स्नान।

**पूर्वाभ्यास** पुं० (सं) पहले से किया हुआ अभ्यास

**पूर्वार्जित** वि०(सं) १-पूर्व कर्मों से उपार्जित। २-पहले से कमाया हुआ। पुं० (सं) पुश्तैनी जायदाद या संपत्ति।

**पूर्वार्द्ध, पूर्वार्ध** पुं० (सं) शुभ या आरम्भ का पहला भाग।

**पूर्वावधानता** स्त्री० (सं) अनिष्ट होने की संभावना होने पर पहले से ही सावधान होने की क्रिया (प्रिकॉशन)।

**पूर्वाषाढ़ा** स्त्री० (सं) सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवां नक्षत्र।

**पूर्वाह्न** पुं० (सं) दिन के पहले दो प्रहर।

**पूर्वाह्निक** वि० (सं) दिन के पहले दो प्रहर में किया हुआ काम।

**पूर्वी** वि० (सं) पूरब का। पूर्व दिशा से सम्बन्धित।

**पूर्वेतर** वि० (सं) पूर्व से भिन्न। पश्चिम।

**पूर्वोक्त** वि० (सं) १-जो पहले कहा गया हो। २

जिसकी चर्चा पहले हो चुकी हो। (अफोरसेड, (फोरमोइंग)।
**पूर्वोत्तर** वि० (सं) उत्तरी-पूरबी।
**पूर्वोदाहरण** पुं० (सं) १-नजीर। पहले की कोई घटना जो बाद में वैसी ही घटनाओं के लिए उदाहरण का काम दे। २-किसी न्यायालय की कार्य-विधि या अभिनिर्णय जो आदर्श या मिसाल का काम दे। (प्रिसिडेंट)।
**पूर्वोपाय** पुं० (सं) अनिष्ट होने की संभावना होने पर पहले से ही किया गया उपाय। (प्रिकॉशन)।
**पूल** पुं० (सं) पूला। गट्ठा। बंडल।
**पूलक** पु० (सं) दे० 'पूल'।
**पूला** पु० (हि) मूंज आदि का बँधा हुआ गट्ठा।
**पूलिका** स्त्री० (सं) पूड़ी। पूरी।
**पूली** स्त्री० (हि) छोटा पूला।
**पूषण** पुं० (सं) सूर्य।
**पूषन** पुं० (सं) सूर्य।
**पूस** पुं० (हि) अगहन के बाद और माघ के पूर्व का महीना।
**पृच्छक** वि० (सं) १-प्रश्न करने वाला। पूछने वाला। २-जिज्ञासु।
**पृत्** स्त्री० (सं) सेना।
**पृतनासाह्** पुं०(सं) इन्द्र।
**पृतन्यु** वि० (सं) जो युद्ध करना चाहता हो।
**पृथक्** अव्य० (सं) भिन्न। अलग। जुदा।
**पृथक्करण** पुं० (सं) १-अलग करने की क्रिया या भाव। २-किसी को पद से हटाना। (रिमूवल)।
**पृथक्क्रिया** स्त्री० (सं) १-पृथक्करण। २-विश्लेषण।
**पृथक्ता** स्त्री० (सं) अलगाव। पृथक होने की क्रिया।
**पृथक्तावादी नीति** स्त्री० (सं) अमेरिका के राजनीतिज्ञों का (द्वितीय महायुद्ध पूर्व) यह मत कि अमेरिका को योरुप के झगड़ों से अलग रहना चाहिए। (आइसोलेशनिस्ट-पॉलसी)।
**पृथक्त्व** पुं० (सं) पार्थक्य। अलगाव। (आइसोलेशन)।
**पृथक्त्ववाद** पुं०(सं) युद्ध से पृथक् या उसमें सम्मिलित न होने का सिद्धान्त। (आइसोलेशनिज्म)।
**पृथक्त्ववादी** पु० (सं) पृथक्त्ववाद सिद्धान्त का अनुयायी। (आइसोलेशनिस्ट)।
**पृथक्शय्या** स्त्री० (सं) अलग सोना।
**पृथक्शायी** स्त्री० (सं) अलग सोने वाला।
**पृथग्न्यास** पु० (सं) १-अलग करना या रखना। २-आसपास की स्थितियों से पृथक् रखना। ३-दो वस्तुओं के बीच में कोई ऐसी आड़ खड़ी करना कि विद्युत या ताप का एक वस्तु से दूसरी में संचार न हो सके।
**पृथग्रूप** वि०(सं) अनेक प्रकार का।
**पृथग्वासन-नीति** स्त्री० (स) कुछ लोगों को अन्य लोगों से अन्यत्र या पृथक् बसाने की नीति (विशेषतः दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को अलग बसाने की नीति)। (अपारथीड पॉलिसी)।
**पृथवी** स्त्री० (सं) दे० 'पृथ्वी'।
**पृथा** स्त्री० (सं) राजा पांडु की दो रानियों में से एक। कुन्ती।
**पृथातनय** पुं० (सं) पाण्डव पुत्र, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, (विशेषतः अर्जुन)।
**पृथासुत** पुं० (सं) दे० 'पृथातनय'।
**पृथिवी** स्त्री० (स) दे० 'पृथ्वी'।
**पृथिवीकंप** पुं० (सं) भूकम्प। भूचाल।
**पृथिवीतल** पु०(सं) धरातल। जमीन की सतह।
**पृथिवीनाथ** पुं० (सं) राजा।
**पृथिवीपति** पुं० (सं) राजा।
**पृथी** स्त्री० (सं) दे० 'पृथ्वी'।
**पृथीनाथ** पुं० (सं) राजा।
**पृथु** वि०(सं) १-चौड़ा। विस्तृत। २-महान। विशाल ३-अधिक। ४-असंख्य। ५-चतुर। पुं० (सं) १-त्रेता युग के सूर्यवंशी पंचम राजा जो राजा वेणु के पुत्र थे। २-विष्णु। ३-शिव। ४-अग्नि। ५-काला जीरा। ६-अफीम।
**पृथुग्रीव** वि० (सं) लम्बी गरदन वाला।
**पृथुल** वि० (सं) १-लम्बा। चौड़ा। विस्तृत। २-अधिक। ३-मोटा ताजा। स्थूल।
**पृथुललोचन** वि० (सं) जिसकी बड़ी-बड़ी आंखें हों। पृथुलाक्ष।
**पृथुलवक्षा** वि०(सं) जिसका वक्ष या सीना चौड़ा हो।
**पृथुलविक्रम** वि० (सं) वीर। पराक्रमी।
**पृथुलाक्ष** वि० (सं) बड़ी आंखों वाला।
**पृथुवक्त्र** वि० (सं) बड़े मुंह वाला।
**पृथूदर** वि० (सं) बड़े उदर या पेट वाला। पुं० (सं) मेढ़ा।
**पृथ्वींद्र** पुं० (सं) नृप। राजा।
**पृथ्वी** स्त्री० (स) १-सौर मंडल का वह ग्रह जिस पर हम लोग रहते हैं। जग। (अर्थ)। २-पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग (पत्थर, मिट्टी आदि) जिस पर हम लोग चलते हैं। भूमि। जमीन। धरती। ३-पंच भूतों या तत्वों में से एक। ४-मिट्टी
**पृथ्वीगर्भ** पुं० वि० (सं) गणेश।
**पृथ्वीगृह** पुं० (सं) गुफा।
**पृथ्वीतनया** स्त्री० (सं) सीता।
**पृथ्वीधर** पुं० (सं) पर्वत। पहाड़।
**पृथ्वीनाथ** पु० (सं) राजा।
**पृथ्वीपति** पु० (स) राजा।
**पृथ्वीपाल** पुं० (स) राजा।
**पृथ्वीपुत्र** पुं० (सं) मंगलग्रह।

**पृथ्वीश** पु० (सं) राजा।
**पृष्ट** क्रि० (सं) पूछा हुआ। जिज्ञासित। पु० (स) दे० 'पृष्ठ'।
**पृष्टि** स्त्री० (सं) १-पूछने की क्रिया या भाव। २-पिछला भाग।
**पृष्ठ** पुं०(सं) १-पिछला भाग। (रिवर्स)। २-ऊपरी भाग। ३-पीठ। ४-पुस्तक का पन्ना। (पेज)।
**पृष्ठतः** अव्य० (सं) १-पीछे। २-पीठ की ओर से। पीछे से।
**पृष्ठदेश** पुं० (सं) पीछे का भाग।
**पृष्ठपोषक** पुं० (सं) सहायता करने वाला। सहायक मददगार।
**पृष्ठपोषण** पु० (सं) सहायता करना।
**पृष्ठभाग** पुं० (स) १-पीठ। २-पिछला भाग।
**पृष्ठभूमि** स्त्री० (सं) १-मूर्ति अथवा चित्र में वह सबसे पीछे का भाग जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। (बैक ग्राउन्ड)। २-भूमिका। ३-पहली बातें।
**पृष्ठमांसाद** पुं० (सं) पीठ पीछे बुराई करने वाला व्यक्ति। चुगलखोर।
**पृष्ठमांसादन** पुं० (सं) पीठ पीछे की जाने वाली निंदा। चुगली।
**पृष्ठयान** पुं० (सं) सवारी (घोड़े की पीठ की)।
**पृष्ठरक्षकयुद्ध** पुं० (सं) पीछे हटती हुई सेना के पिछले भाग का, पृष्ठभाग की रक्षा करने वाली टुकड़ी द्वारा शत्रु से बचाव के लिए किया गया युद्ध। (रियरगार्ड एक्शन)।
**पृष्ठरक्षण** पुं० (सं) पिछले या पृष्ठ भाग की रक्षा का कार्य।
**पृष्ठलग्न** वि० (सं) अनुयायी।
**पृष्ठवंश** पुं० (सं) रीढ़।
**पृष्ठशीर्षक** पुं० (सं) दे० 'पताका शीर्षक'। (बैनर-हेडलाइन)।
**पृष्ठांकन** पु० (स) किसी लेख, पत्र, धनादेश आदि के पीछे हस्ताक्षर करना। २-समर्थन आदि के लिए कुछ लिख देना। ३-किसी को कुछ दिये जाने का आदेश देना। (एण्डॉर्समेंट)।
**पृष्ठांकित** वि०(सं) जिस पर हस्ताक्षर कर दिया गया हो या कुछ लिख दिया गया हो। (एडॉर्स्ड)।
**पृष्ठास्थि** स्त्री० (सं) रीढ़ की हड्डी।
**पृष्ठिका** स्त्री० (सं) १-पृष्ठभूमि। २-किसी घटना के पहले की परिस्थितियां। (बैक ग्राउन्ड)।
**पें** पुं० (हि) रोने या फूँक से बाजा बजाने का स्वर।
**पेंग** स्त्री० (सं) भूलने के समय भूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना।
**पेंच** पुं० (हि) दे० 'पेच'।
**पेंठ** स्त्री० (हि) दे० 'पैंठ'।
**पेंडुकी** स्त्री० (हि) १-पंडुक नाम का एक पक्षी। फाख्ता। २-सुनारों की आग सुलगाने की फूंकनी गुल्लिया।
**पेंदा** पुं० (हि) किसी वस्तु का वह भाग जिसके आधार पर वह ठहरी रहती है। तला।
**पेंदी** स्त्री० (हि) १-किसी छोटी वस्तु का निचला भाग २-गुदा। ३-गाजर, मूली आदि की जड़।
**पेंशन** स्त्री० (अं) वह मासिक या वार्षिक वृत्ति जो जो किसी को उसकी पिछली सेवाओं के बदले में उसे या उसके परिवार के लोगों को मिलती है।
**पेंशनयाफ्ता** वि० (हि) जिसे पेंशन मिलती हो। (पेंशनर)।
**पेंसिल** स्त्री० (अं) एक प्रकार की लेखनी जिसमें सीसे, सुरमे, रंगीन खड़िया आदि की सलाई भरी होती है।
**पेउश** पुं० (हि) दे० 'पेउसी'।
**पेउस** पुं० (हि) पेउश।
**पेउसी** स्त्री० (हि) १-ब्यायी हुई गाय या भैंस का का पहले सात दिन का दूध। २-एक प्रकार का पकवान।
**पेखक** पुं० (हि) दर्शक। प्रेक्षक। देखने वाला।
**पेखन** पुं० (हि) दृश्य। तमाशा। प्रेक्षण।
**पेखना** क्रि० (हि) देखना। पु० (हि) दृश्य। वह जो देखा जाय।
**पेच** पुं० (फा) १-घुमाव, चक्कर। २-उलझन। ३-धूर्तता। चालाकी। ४-पगड़ी की लपेट। ५-यन्त्र। मशीन का पुर्जा। ६-युक्ति। ७-कलगी। ८-कानों में पहनने का आभूषण। ६-दो पतंगों की डोर का आपस में उलझना। १०-कुश्ती में पछाड़ने के दांव या युक्ति।
**पेचक** स्त्री० (फा) बटे हुए तागे की गोली जिसमें कपड़े सिये जाते हैं। रील।
**पेचकश** पु० (फा) १-एक औजार जिसमे पेच कसा जाता है। २-वह चक्करदार औजार जिससे बोतल की डांट खोली जाती है।
**पेचताब** पु० (फा) वह क्रोध जो विवशता आदि के कारण प्रकट न किया जाय।
**पेचदार** वि० (फा) १-पेच वाला। जिसके पेच लगा या जड़ा हुआ हो। २-जिसमें कोई उलझाव हो।
**पेचवान** पु० (फा) फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाने की बड़ी सटक। २-बड़ा हुक्का।
**पेचिश** स्त्री० (फा) आंव होने के कारण पेट में होने वाला मरोड़ा। एक रोग।
**पेचीदगी** स्त्री० (फा) पेचीला या घुमावदार होने का भाव। उलझाव।
**पेचीदा** वि० (फा) १-पेचदार। २-जो टेढ़ा या कठिन हो। मुश्किल।

पेचीला वि० (फा) दे० 'पेचीदा'।
पेज स्त्री० (हि) रबड़ी। पुं० (अं) पृष्ठ या पन्ना।
पेट पुं० (हि) १-उदर। शरीर का वह भाग जहां भोजन पहुँच कर पचता है। २- गर्भ। हमल। ३-मन। अन्तःकरण। ६-जीविका। ७-तोप या बन्दूक में गोले भरने की जगह।
पेटक पुं० (सं) १-पिटारा। टोकरी। २-थैला। ३-समूह।
पेटल वि० (हि) बड़े पेट वाला। तोंदल।
पेटा पुं० (हि) १-किसी वस्तु का मध्य भाग। २-सीमा। हद। ४-नदी का पाट। ५-वृत्त। घेरा। ६-नदी के बहने का मार्ग। ७-पशुओं की अंतड़ी। ८-उड़ती पतंग की डोर।
पेटागि स्त्री० (हि) पेट की आग या भूख।
पेटार पुं० (हि) पिटारा।
पेटारा पुं० (हि) दे० 'पिटारा'।
पेटारी स्त्री० (हि) दे० 'पिटारी'।
पेटार्थी वि० (स) भुक्कड़। पेटू।
पेटार्थु वि० (हि) दे० 'पेटार्थी'।
पेटिका स्त्री० (स) १-छोटी पिटारी। २-सन्दूक। पेटी
पेटी स्त्री०(हि) १-सन्दूकची। २-पेट का वह भाग जहां तिल्ली या जिगर होता है। ३-चपरास। ४-पेट पर बांधने का चौड़ा तसमा या कमरबन्द (बेल्ट)। ५-कैंची, उस्तरा आदि रखने की नाई की किसबत। स्त्री० (सं) १-पिटारी। २-छोटा सन्दूक।
पेटीकोट पुं० (अं) साड़ी के नीचे घाघरे की तरह का एक हलका पहनावा। साया।
पेटू वि० (हि) १-जिसे सदा पेट भरने की चिन्ता लगी रहती हो। भुक्कड़। २-बहुत अधिक खाने वाला।
पेटेंट पुं० (अं) एकस्व। कोई आविष्कार या वस्तु जिसका एकस्वीकरण हो चुका हो।
पेट्रोल पु० (अं) एक प्रसिद्ध खनिज तेल जिसकी शक्ति से मोटर बसें आदि चलती हैं।
पेठा पुं० (हि) सफेद कुम्हड़ा।
पेड़ पुं० (हि) वृक्ष। दरख्त।
पेड़ा पुं० (हि) १-खोये और खांड के योग से बनाई हुई एक मिठाई। २-आटे की लोई।
पेड़ी स्त्री० (हि) १-पेड़ का तना। २-मनुष्य के शरीर का भाग। ३-वह खेत जिसमें सर्वप्रथम ईख बोई जाय और फिर उसे जौ या गेहूं बोने के लिए जोता जाय।
पेड़ू पुं० (हि) नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का भाग।
पेन्हाना क्रि० (हि) १-दे० 'पहनाना'। २-गाय, भैंस आदि के थनों में दूध उतर आना।
पेम पुं० (हि) दे० 'प्रेम'।
पेमचा पुं० (देश) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
पेय वि० (सं) पीने योग्य। पुं० (सं) १-पीने की तरल वस्तु। २-दूध। ३-जल। पानी। ४-शरबत।
पेयु पुं० (सं) १-समुद्र। सागर। २-अग्नि। ३-सूर्य।
पेयूष पुं० (सं) १-अमृत। सुधा। २-उस गाय का दूध जिसे ब्याये सात दिन हुए हों। ३-ताजा घी।
पेरना क्रि० (हि) १-दो भारी वस्तुओं के बीच तीसरी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आये। २-सताना या कष्ट देना। ३-आवश्यकता से अधिक देर लगाना। ४-चलाना।
पेरोल पुं० (अं) दे० 'पैरोल'।
पेलना क्रि० (हि) १-दबाकर भीतर घुसाना। दबाना। २-धक्का देना। ३-अवज्ञा करना। टाल देना। ४-त्यागना। हटाना। ५-प्रविष्ट करना। ६-प्रेरित करना।
पेलव वि० (सं) १-दुबला। कृश। २-कोमल।
पेलवाना क्रि० (हि) दूसरे को पेलने में प्रवृत्त करना।
पेला पु० (हि) १-झगड़ा। तकरार। २-अपराध। आक्रमण। ४-पेलने का भाव या क्रिया।
पेलू पुं० (हि) पेलने वाला।
पेवँ पुं० (हि) प्रेम।
पेवस स्त्री० (हि) दे० 'पेउसी'।
पेवसी स्त्री० (हि) पेउसी।
पेश अव्य० (फा) आगे। सम्मुख। सामने।
पेशकब्ज स्त्री० (फा) कटारी।
पेशकश पुं० (फा) १-नजर। भेंट। २-सौगात। तोहफा।
पेशकार पु० (फा) १-वह कर्मचारी जो न्यायालय में न्यायाधीश के आगे कागज पत्र पेश करता है। २-किसी कार्यालय में उच्च अधिकारी के सामने कागज-पत्र पेश करने वाला कर्मचारी या लिपिक।
पेशकारी स्त्री० (फा) पेशकार का पद या कार्य।
पेशखेमा पुं० (फा) १-सेना का वह भाग जो आगे चलता है। २-सेना की खेमा आदि आवश्यक वस्तुएं जो पहले से ही आगे भेज दी गई हों। ३-किसी बात का पूर्व लक्षण।
पेशगाह पुं० (फा) १-दरबार। २-इजलास। ३-सदर मजलिस।
पेशगी स्त्री० (फा) वह धन जो किसी को किसी काम के करने से पहले दे दिया जाय। (एडवान्स)।
पेशगोई स्त्री० (फा) दे० 'पेशीनगोई'।
पेशतर अव्य० (फा) पूर्व। पहले।
पेशताख स्त्री० (फा) अच्छी इमारतों में दरवाजों के ऊपर की ओर निकली मेहराब।
पेशदस्ती स्त्री० (फा) वह अनुचित कार्य जो किसी पक्ष की ओर से पहले हो।
पेशदामन पुं० (फा) नौकर। खिदमतगार।

**पेशबंदी** *स्त्री०* (फा) १-पहले से किया गया प्रबन्ध या बचाव की युक्ति। २-धोखा। छल।
**पेशराज** पुं०(हि) १-पत्थर ढोने वाला मजदूर। २-राज या मेमार के आगे पत्थर या ईंट ढोकर लाने वाला मजदूर।
**पेशल** *वि०* (सं) १-कोमल। सुकुमार। २-मनोहर। ३-चतुर। ४-धूर्त। पुं० (स) विष्णु।
**पेशवा** पु० (फा) १-नेता। सरदार। २-महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की एक उपाधि।
**पेशवाई** *स्त्री०* (फा) १-पेशवाओं का शासन-काल २-पेशवा का पद या कार्य। ३-अगवानी।
**पेशवाज** *स्त्री०* (फा) नाच के समय पहनने का नर्तकियों का घाघरा।
**पेशा** पुं० (फा) वह काम जो मनुष्य जीविका उपार्जित करने के लिए नियमित रूप से करता है धन्धा। व्यवसाय। उद्यम।
**पेशानी** *स्त्री०* (फा) १-ललाट। भाल। माथा। २-भाग्य। ३-किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग।
**पेशाब** पुं० (फा) मूत्र। मूत। (यूरीन)।
**पेशाबखाना** पुं०(फा) पेशाब करने का स्थान (यूरीनल)।
**पेशावर** पु० (फा) व्यवसायी। किसी प्रकार का पेशा करने वाला।
**पेशि** *स्त्री०* (सं) १-अंडा। २-अरहर की दाल।
**पेशी** *स्त्री०* (फा) १-किसी अधिकारी के सम्मुख या न्यायालय में अभियोग या मुकदमे के पेश होने तथा सुनने तक की कार्रवाई। २-किसी के आगे पेश होने का भाव। *स्त्री०* (सं) दे० 'पेशि'।
**पेशी का मुहर्रिर** पुं०(फा) अभियोग सम्बन्धी कागज पत्र हाकिम को पढ़कर सुनाने वाला लिपिक (रीडर)
**पेशीनगोई** *स्त्री०* (फा) भविष्य कथन।
**पेश्तर** *अव्य०* (फा) दे० 'पेशतर'।
**पेषक** *वि०* (स) पीसने वाला।
**पेषण** पुं० (सं) १-पीसना। २-कोई भी कूटने पीसने का यन्त्र।
**पेषणि** *स्त्री०* (सं) १-पीसने की सिल। २-चक्की। ३-खरल।
**पेषणी** *स्त्री०* (सं) दे० 'पेषणि'।
**पेखना** *क्रि०* (हि) १-पीसना। २-देखना।
**पेष्टा** पुं० (सं) पीसने वाला।
**पेस** *अव्य०* (हि) दे० 'पेश'।
**पेसकस** *स्त्री०* (हि) दे० 'पेशकश'।
**पैंजना** पुं० (हि) पैर का कड़ा।
**पैंजनिया** *स्त्री०* (हि) दे० 'पैजनिया'।
**पैंजनी** *स्त्री०* (हि) दे० 'पैजनी'।
**पैंट** पुं० (अं) पतलून। पजामे जैसा एक अंग्रेजी पहनावा।
**पैंठ** पुं० (हि) १-हाट। बाजार। २-वह दिन जिस दिन हाट लगती हो। ३-पहली हुण्डी खो जाने पर दुबारा लिखी हुई हुंडी।
**पैंठौर** पुं० (हि) हाट। दुकान।
**पैंड़** पुं० (हि) १-डग। कदम। २-मार्ग। ३-ढंग या विधि।
**पैंड़ा** पुं० (हि) १-पथ। रास्ता। २-अस्तबल। ३-प्रणाली।
**पैंत** *स्त्री०* (हि) दांव। बाजी।
**पैंतरा** पुं० (हि) १-वार करने के लिये खड़े होने की मुद्रा। २-चाल। युक्ति।
**पैंतरी** *स्त्री०* (हि) जूती।
**पैंतालिस** *वि०* (हि) चालीस और पांच।
**पैंती** *स्त्री०* (हि) १-दे० 'पवित्र'। २-पवित्रता के लिए अनामिका में पहनने की तांबे या त्रिलोह की अंगूठी
**पैंतीस** *वि०* (हि) तीस और पांच।
**पैंयां** *स्त्री०* (हि) पांव। पैर। चरण।
**पैंसठ** *वि०* (हि) साठ और पांच।
**पै** *अव्य०*(हि) १-परन्तु। पर। २-अवश्य। ३-पीछे। अनन्तर। ४-पास। समीप। ओर। तरफ। *प्रत्य०* (हि) १-पर। ऊपर। २-से। द्वारा। *स्त्री०* (हि) १-दोष। त्रुटि। पुं० (हि) १-केवल दूध पर रहने वाला साधु। २-मांडी या कलफ देने की क्रिया।
**पैकर** पुं० (हि) कपास से रूई इकट्ठा करने वाला।
**पैकरमा** *स्त्री०* (हि) दे० 'परिक्रमा'।
**पैकरी** *स्त्री०* (हि) पांव में पहनने का एक गहना।
**पैका** पुं० (अ) १-एक विशेष प्रकार का छापे का टाइप। २-पैसा।
**पैकार** पुं० (फा) फेरीवाला। छोटा व्यापारी।
**पैकारी** पुं० (फा) दे० 'पैकार'।
**पैखाना** पुं० (हि) दे० 'पायखाना'।
**पैगंबर** पुं० (फा) वह धर्माचार्य जो ईश्वर का सन्देश मानव मात्र को सुनाने आता है। नबी।
**पैगंबरी** *स्त्री०* (फा) १-पैगंबर होने का भाव। २-पैगम्बर का पद। *वि०* (फा) पैगम्बर-सम्बन्धी।
**पैग** पुं० (हि) डग। कदम।
**पैगाम** पुं० (फा) १-सन्देसा। सन्देश। २-विवाह के सम्बन्ध की बात।
**पैगामबर** पु० (फा) सन्देश पहुँचाने वाला। दूत। एलची।
**पैगामी** पुं० (फा) सन्देशवाहक। दूत।
**पैज** *स्त्री०*(हि) १-प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। २-होड़। प्रतिद्वन्द्विता।
**पैजनिया** *स्त्री०* (हि) दे० 'पैजनी'।
**पैजनी** *स्त्री०* (हि) पैर में पहनने का एक गहना जो चलने पर झनझनाता है।
**पैजामा** पुं० (हि) दे० 'पाजामा'।

**पैज़ार** पुं० (फा) जूता।
**पैठ** स्त्री० (हि) १-घुसने या प्रवेश करने की क्रिया या भाव। २-गति। पहुँच।
**पैठना** क्रि० (हि) प्रवेश करना। प्रविष्ट होना।
**पैठाना** क्रि० (हि) घुसाना। प्रवेश करना।
**पैठार** पुं० (हि) १-प्रवेश। पैठ। २-प्रवेश द्वार। फाटक। ३-मुहाना।
**पैठारी** स्त्री० (हि) १-प्रवेश। २-पहुंच।
**पैड** पुं० (अं) १-स्याहीसोख कागज की गद्दी। २-कोई छोटी मुलायम गद्दी। ३-छोटे कागज की हड्डी।
**पैड़ी** स्त्री० (हि) १-सीढ़ी। २-पुरवट खींचते समय बैलों के चलने का रास्ता। ३-वह स्थान जहाँ सिंचाई के लिए जलाशय से पानी लेकर ढालते हैं।
**पैतरा** पुं० (हि) दे० 'पैंतरा'।
**पैतरेबाज** वि० (फा) चालबाज।
**पैतरेबाजी** स्त्री० (फा) चालबाजी।
**पैताना** पुं० (हि) दे० पायँता'।
**पैतामह** वि० (सं) १-पितामह सम्बन्धी। २-पितामह से प्राप्त।
**पैतामहिक** वि० (सं) दे० 'पैतामह'।
**पैतृक** वि० (सं) १-पिता सम्बन्धी। २-पुश्तैनी। परम्परागत प्राप्त। मौरूसी। (पैतसेस्ट्रल)।
**पैतृकभूमि** स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ बाप दादा के से रहते आये हों।
**पैतृक-राज्य** पुं० (सं) वह राज्य जिसका राजा न केवल पूर्ण राज्य की प्रभुता भोगता हो पर भूमि का भी स्वामी समझा जाता हो। (पेट्रीमोनियन स्टेट)।
**पैत्त** वि० (सं) पित्त का। पित्त सम्बन्धी।
**पैत्तिक** वि० (सं) पैत्त।
**पैदल** वि० (सं) पैरों-पैरों चलकर जाने वाला। अव्य० (हि) पाँव-पाँव। पैरों से। पुं० (हि) १-बिना सवारी पैरों से चलने की क्रिया। २-पदाती। प्यादा। ३-शतरंज का एक मोहरा।
**पैदा** वि० (फा) १-उत्पन्न। जन्मा हुआ। २-प्रकट। उपस्थित। घटित। ३-प्राप्त। कमाया हुआ। स्त्री० (हि) आमदनी। आय।
**पैदाइश** स्त्री० (फा) जन्म। उत्पत्ति।
**पैदाइशी** वि० (फा) १-जन्म के समय का। २-स्वाभाविक। प्राकृतिक।
**पैदावार** स्त्री० (फा) फसल। उपज। खेत में उपजा अन्न आदि।
**पैना** वि० (हि) १-धारदार। नुकीला। २-भीतर तक जाने वाला। ३-जो अन्दर की वस्तु को देख सके। पुं० (हि) १-अंकुश। २-बैल हांकने की नोकदार छड़ी। ३-नाली। पनाला।
**पैनाना** क्रि० (हि) किसी हथियार आदि की धार को रगड़कर पैनी करना।
**पैमाइश** स्त्री० (फा) १-मापने की क्रिया या भाव। २-किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई आदि का नाप (मेजरमेंट)। ३-जमीनों की लम्बाई तथा चौड़ाई नापने के लिए होने वाली पड़ताल। (सर्वे)।
**पैमाना** पुं० (फा) वह उपकरण जिससे कोई वस्तु नापी जाय। मानदण्ड।
**पैमाल** वि० (हि) दे० 'पामाल'।
**पैयाँ** स्त्री० (हि) पाँव। पैर।
**पैया** पुं० (हि) १-पोला दाना। २-दीन-हीन। ३-पहिया।
**पैर** पुं० (हि) १-वह अंग जिसके द्वारा प्राणी चलते फिरते हैं। पांव। पग। २-धूल पर अंकित पैर का निशान। ३-प्रदर रोग।
**पैरगाड़ी** स्त्री० (हि) पैर से चलने वाली गाड़ी। बाइसिकल। (बाइसाइकल)।
**पैरना** क्रि० (हि) तैरना। पानी के ऊपर हाथ पैर चलाते हुए जाना।
**पैरवी** स्त्री० (फा) १-अनुसरण। २-मुकदमे में अपने पक्ष के समर्थन आदि के लिए किया जाने वाला कार्य। ३-प्रयत्न। कोशिश।
**पैरवीकार** पुं० (फा) पैरवी करने वाला।
**पैरा** पुं० (हि) १-आया हुआ कदम। २-पैर का कड़ा। ३-ऊंची जगह चढ़ने के लिए बल्ले रख कर बनाया हुआ रास्ता।
**पैराई** स्त्री० (हि) १-तैरने या पैरने की क्रिया या भाव। २-तैरने की कला। ३-तैरने की मजदूरी।
**पैराउ** पुं० (हि) दे० 'पैराव'।
**पैराक** पुं० (हि) तैराक। तैरने वाला।
**पैराना** क्रि० (हि) तैराना।
**पैराव** पुं० (हि) इतना गहरा पानी जो केवल तैर कर ही पार किया जा सके। डुबाव।
**पैराशूट** स्त्री० (अं) वह छाता जिसके सहारे वायुयान पर से कूदा जाता है।
**पैरी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का कांसे का गहना जो प्रायः ग्रामीण स्त्रियाँ पैर में पहनती हैं। २-सूखे पौधों पर बैल चला कर दाना अलगाने की क्रिया ३-सीढ़ी। ४-भेड़ों के बाल कतरने का काम।
**पैरेखना** क्रि० (हि) दे० 'परेखना'।
**पैरोकार** पुं० (हि) दे० 'पैरवीकार'।
**पैरोल** पुं० (अं) बन्दी या कैदी का इस शर्त पर कुछ समय के लिए मुक्त करना कि अवधि पूरी होने पर या बीच में हो आज्ञा मिलते ही पुनः जेल में लौट आयेगा।
**पैलगी** स्त्री० (हि) प्रणाम। अभिवादन। पालागन।
**पैला** पुं० (हि) १-अन्न नापने की डलिया। २-दूध,

दही आदि ढांकने का नांद के आकार का बरतन वि० (हि) १-पहला। २-दूसरा।
**पैबंद** पुं०(फा) १-छेद बन्द करने के लिए कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा जो जोड़ कर सी दिया जाता है। थिगली। २-एक पेड़ की टहनी काट कर उसी जाति के दूसरे पेड़ में बांधना जिससे फल स्वादिष्ट हों। ३-इष्ट-मित्र।
**पैबंदकार** पुं० (फा) पैबंद लगाने वाला।
**पैबंदकारी** स्त्री० (फा) पैबंद लगाने की क्रिया।
**पैबंदी** वि०(फा) १-पैबंद लगा कर उत्पन्न किया हुआ २-दोगला। वर्णसंकर। पुं०(फा) बड़ा आड़ू। शफ-तालू।
**पैवस्त** वि० (फा) समाया हुआ। जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। (तरल पदार्थ)।
**पैशाच** वि०(सं) पिशाच का। पिशाच सम्बन्धी। पुं० (सं) एक प्रकार का विवाह जिसमें किसी सोयी हुई या प्रमत्त कन्या का कौमार्य हरण करने वाला उसका पति बन जाता है (स्मृति)।
**पैशाचिक** वि० (सं) १-पिशाच-सम्बन्धी। २-राक्षसी ३-क्रूरतापूर्ण।
**पैशाची** स्त्री० (सं) एक प्रकार की निकृष्ट प्राकृत भाषा
**पैशुन** पुं० (सं) चुगली। पीठ पीछे निंदा।
**पैशुन्य** पुं० (सं) दे० 'पैशुन'।
**पैष्ट** वि० (सं) आटे से बनाया या तैयार किया हुआ
**पैष्टिक** पुं० (सं) अनाज से सींची हुई मदिरा। वि० (सं) आटा या पिट्ठी का बना हुआ।
**पैसना** क्रि० (हि) पैठना। प्रवेश करना। घुसना।
**पैसरा** पुं० (हि) झंझट। बखेड़ा। झगड़ा।
**पैसा** पुं० (हि) १-तांबे का भारतीय सिक्का जो तीन पाई या पाव आने के बराबर होता है। २-धन। दौलत।
**पैसार** पुं० (हि) १-प्रवेश द्वार। २-अन्दर आने का मार्ग।
**पैसेंजर** पुं० (अं) मुसाफिर। यात्री।
**पैसेंजर-गाड़ी** स्त्री० (हि) मुसाफिरों को ले जाने वाली रेलगाड़ी।
**पैहम** स्त्री० (फा) लगातार। निरंतर।
**पों** स्त्री० (हि) १-अधोवायु निकलने का शब्द। २-भोंपू का शब्द।
**पोंकना** क्रि० (हि) १-दस्त या पतला पाखाना आना २-भयभीत होना। पुं० (हि) चौपायों का पतले दस्त आने का रोग।
**पोंगरा** पुं० (हि) बच्चा। बालक।
**पोंगली** स्त्री० (हि) १-दे० 'पोंगी'। २-वह नरिया जो दुबारा चाक पर से बना कर उतारी गई हो (कुम्हार)।
**पोंगा** पुं०(हि) १-टीन आदि की थोथी नली जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं। २-बांस की नली। वि० (हि) १-भोंदू। मूर्ख। २-पोला।
**पोंगापंथी** स्त्री० (हि) १-ढोंग। २-मूर्खतापूर्ण कार्य। वि० (हि) ढोंगी। मूर्ख।
**पोंगी** स्त्री० (हि) १-छोटी पोली नली। २-बांस या ऊख का दो गांठों के बीच का भाग। ३-वह नली जिस पर जुलाहे तागा लपेट कर ताना करते हैं।
**पोंछ** स्त्री० (हि) दे० 'पूँछ'।
**पोंछन** स्त्री० (हि) किसी वस्तु का पोंछ कर निकला हुआ अंश।
**पोंछना** क्रि० (हि) किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु को कपड़े से साफ करना। पुं० (हि) पोंछने का कपड़ा।
**पोआ** पुं० (हि) सँपोला। साँप का बच्चा।
**पोआना** क्रि० (हि) १-पोने का काम दूसरे से कराना २-आटे की लोई बनाकर सेंकने के लिए देना।
**पोइया** स्त्री० (हि) घोड़े की सरपट चाल।
**पोइस** स्त्री० (हि) सरपट चाल।
**पोई** स्त्री० (हि) एक लता जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है। २-कोंपल। अंकुर। ३-गन्ने की पोर। ४-गेहूँ, ज्वार आदि का छोटा पौधा।
**पोख** पुं०(हि) पालन पोसने का सम्बन्ध।
**पोखना** क्रि० (हि) पालना पोसना।
**पोखरा** स्त्री० (हि) खोदकर बनाया हुआ जलाशय। तालाब।
**पोखरी** स्त्री० (हि) छोटा तालाब।
**पोगंड** पुं०(हि) १-पांच से सोलह वर्ष तक का बालक २-छोटे अंगवाला।
**पोच** वि०(हि) १-तुच्छ। क्षुद्र। २-हीन। ३-निर्बल
**पोची** स्त्री० (हि) हेठापन। नीचता। बुराई।
**पोट** स्त्री० (हि) १-गठरी। पोटली। २-ढेर। ३-पुस्तक के पन्नों की वह जगह जहां सिलाई होती है।
**पोटना** क्रि० (हि) १-समेटना। बटोरना। २-फुसलाना। फुसलाना।
**पोटरी** स्त्री० (हि) दे० 'पोटली'।
**पोटल** पुं० (हि) पोटली।
**पोटलक** पुं० (हि) पोटली।
**पोटलिका** स्त्री० (हि) पोटली।
**पोटला** पुं० (हि) बड़ी गठरी।
**पोटली** स्त्री० (हि) १-छोटी गठरी। २-छोटे वस्त्र में कसकर अल्प मात्रा में बांधी हुई वस्तु।
**पोटा** पुं० (हि) १-उदराशय की पेट की थैली। २-साहस। सामर्थ्य। ३-बिसात। समाई। ४-आंख की पलक। ५-उँगली का छोर। चिड़िया का छोटा बच्चा जिसके अभी पर न निकले हों। स्त्री० (स) १-मरदाने लक्षणों वाली स्त्री। २-नौकरानी। ३-घड़ियाल।

**पोटाश** पुं० (अं) पौधों की राख से या खानों से निकला हुआ एक प्रकार का क्षार।
**पोटी** स्त्री० (हिं) कलेजा।
**पोट्टलिका** स्त्री० (हिं) पोटली।
**पोढ़** वि० (हिं) दे० 'पोढ़ा'।
**पोढ़ा** वि० (हिं) १-पुष्ट। दृढ़। मजबूत। २-कठोर।
**पोढ़ाना** क्रि० (हिं) दृढ़ होना। मजबूत होना। पुष्ट बनाना।
**पोत** पुं० (सं) १-किसी जानवर का बच्चा। २-दो वर्ष की आयु का हाथी। ३-कपड़ा। ४-गर्भस्थ पिंड जिस पर भिल्ली न चढ़ी हो। ५-जहाज। नौका। ६-कपड़े की बुनावट। स्त्री० (हिं) १-भूमिकर। २-ढंग। प्रवृत्ति। ४-दाँव। ४-कांच का छोटा दाना।
**पोतघाट** पुं० (हिं) लोहे, पत्थर या लकड़ी का बना ढांचा जो समुद्र में आगे की ओर फैलाहुआ हो और जहां जहाज से आसानी से उतरा जासके। (पीयर)
**पोतड़ा** पुं० (हिं) बच्चों के नीचे बिछाने का छोटा कपड़ा।
**पोतदार** पुं०(हिं) १-खजानची। २-खजाने में रुपये परखने वाला। पारखी।
**पोतधारी** पुं० (सं) जहाज का मालिक या अध्यक्ष।
**पोतध्वज** पुं० (सं) जहाज पर किसी राष्ट्र विशेष या नौसेना विशेष का फहराने वाला परिचायक झण्डा (एनसाइन)।
**पोतन** पुं० (सं) पवित्र। शुद्ध। वि० (सं) पवित्र करने वाला।
**पोतनहर** पुं०(हिं) १-वह पात्र जिसमें पोतने के लिए मिट्टी घोल रखी हो। २-घर या चौका पोतने वाली स्त्री। ३-आंत।
**पोतना** क्रि० (हिं) १-किसी तरल पदार्थ की पतली तह चढ़ाना। २-गोबर, मिट्टी, चूने आदि से किसी स्थान को लेपना। पुं० (हिं) पोतने का कपड़ा।
**पोतनिर्माण उद्योग** पुं० (सं) जहाज या पोत बनाने या निर्माण करने का व्यवसाय। (शिप बिल्डिंग इण्डस्ट्री)।
**पोतभंग** पुं० (सं) पोत या जहाज का चट्टान आदि से टकरा कर नष्ट हो जाना। (शिप-रेक)।
**पोतला** पुं० (हिं) परांठा।
**पोतवाह** पुं० (सं) मल्लाह। मांझी।
**पोतसंतरण** पुं० (सं) किसी नये बने हुए जहाज को समुद्र या पानी में उतारना। (लांचिंग ए शिप)।
**पोता** पुं० (हिं) १-बेटे का बेटा। पौत्र। २-घुली हुई मिट्टी जिससे दीवार पोती जाती है। ३-पोतने का कपड़ा। ४-लगान। ५-अण्डकोष। ६-सामर्थ्य। ७-सोलह प्रधान ऋत्विजों में से एक।
**पोताई** स्त्री० (हिं) १-पोतने का काम। २-पोतने की मजदूरी।
**पोताच्छादन** पुं० (सं) तम्बू। छोलदारी। डोरी।
**पोताधिरोध** पुं०(सं) किसी देश के नौ सेना विभाग द्वारा अपनी बन्दरगाहों पर अन्य देशों के जहाज आने या जाने पर लगाया गया प्रतिबन्ध। (एम्बार्गो)।
**पोतारा** पुं० (हिं) दे० 'पुतारा'।
**पोतारी** स्त्री० (हिं) पोतने का कपड़ा।
**पोतिका** स्त्री० (सं) १-पोई की बेल। १-वस्त्र। कपड़ा।
**पोतिया** पुं०(हिं) १-वह छोटी थैली जिसमें तम्बाकू, सुपारी आदि होती है। २-पहन कर नहाने का कपड़ा। ३-एक छोटा खिलौना।
**पोती** स्त्री०(हिं) १-बेटे की पुत्री। २-मिट्टी की हंडिया पर चढ़ाने का लेप। ३-पोतने की क्रिया या भाव। ४-पानी से तर किया हुआ वह कपड़ा जो मद्य चुआते समय उसके बरतन पर फेरा जाता है।
**पोथा** पुं० (हिं) १-बड़ी पुस्तक। २-कागजों की गड्डी
**पोथी** स्त्री० (हिं) १-पुस्तक। २-लहसुन की गाँठ।
**पोदना** पुं० (हिं) १-एक छोटी चिड़िया। २-ठिगना या नाटा आदमी।
**पोदीना** पुं० (हिं) दे० 'पुदीना'।
**पोद्दार** पुं० (हिं) १-पोतदार। २-मारवाड़ी बनियों की एक उपाधि।
**पोना** क्रि० (हिं) १-गुंधे हुए आटे की लोई को हाथों से घुमा-घुमा कर रोटी का रूप देना। २-पकाना (रोटी)। ३-पिरोना। गूंथना।
**पोप** पुं० (अं) ईसाई धर्म (रोमन केथोलिक) का प्रधान आचार्य।
**पोपला** वि० (हिं) १-जिसके मुँह में दांत न हों। २-सिकुड़ा या पिचका हुआ। ३-जो अन्दर से खाली हो।
**पोपलाना** क्रि० (हिं) पोपला होना।
**पोपली** स्त्री० (हिं) उगी हुई आम की गुठली जिसे घिस कर बच्चे बजाते हैं।
**पोपलीला** स्त्री० (हिं) धर्म का आडम्बर या साधारण लोगों को जाल में फसाने का कार्य।
**पोया** पुं०(हिं) १-ताजा उगा हुआ पौधा। २-सँपोला सांप का बच्चा। ३-बच्चा।
**पोयाबोई** स्त्री० (हिं) छलकपट की बातें।
**पोर** स्त्री० (हिं) १-उंगली की गांठ या जोड़ जहां से वह मुड़ती है। २-उंगली की दो गांठों के बीच का भाग। ३-रीढ़। पीठ। ४-गन्ने की दो गांठों के बीच का भाग।
**पोल** स्त्री० (हिं) १-खोखलो या खाली जगह। शून्य स्थान। खोखलापन। २-सारहीनता। ३-आंगन सहन। ४-प्रवेश द्वार।
**पोला** वि० (हिं) १-जिसका भीतरी भाग खाली हो। २-खोखला। ३-तत्वहीन। सारहीन। जो कड़ा

न हो। पुलपुला। पुं० (हि) सूत का लच्छा। पुं० (देश०) एक वृक्ष।
**पोलिका** स्त्री० (सं) १-पूआ। २-गेहूँ के आटे की पूरी।
**पोलिया** स्त्री०(हि) पैर में पहनने का एक पोला गहना पुं० (हि) दे० 'पौरिया'।
**पोली** स्त्री० (स) दे० 'पोलिका'।
**पोलो** पुं० (अं) घोड़े पर चढ़ कर खेला जाने वाला एक गेंद का खेल।
**पोवना** क्रि० (हि) दे० 'पोना'।
**पोश** पुं० (फा) १-वह जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, जैसे—पलंगपोश। २-सामने से हटाने का संकेत वि० (फा) पहनने वाला।
**पोशाक** स्त्री० (फा) १-पहरावा। परिधान। २-पहनने के सब कपड़े। (ड्रेस)।
**पोशीदगी** स्त्री० (फा) छिपाव।
**पोशीदा** वि० (फा) छिपा हुआ। गुप्त।
**पोष** पुं० (सं) १-पालन-पोषण। २-धन। ३-सन्तोष तुष्टि। ४-वृद्धि। बढ़ती। ५-उन्नति।
**पोषक** पुं० (सं) १-पालक। पालने वाला। २-बढ़ाने वाला। ३-सहायक।
**पोषकतत्व** पुं० (सं) दे० 'खाद्योज'। (विटामिन)।
**पोषण** पुं० (सं) १-पुष्ट करना। बढ़ाना। २-पालन करना। (मेन्टेनेन्स)।
**पोषना** क्रि० (हि) पालना।
**पोषयिता** वि० पुं० (सं) पालन करने वाला।
**पोषाध्यक्ष** पुं० (सं) किसी पशुशाला या पौधों को ठीक प्रकार उगाने तथा उनकी उपज बढ़ाने की प्रयोगशाला की देखभाल करने वाला अधिकारी (नर्सरी-सुपरइन्टेन्डेन्ट)।
**पोषिका** स्त्री० (सं) गले के भीतर की वह नली जिससे भोजन पेट तक पहुँचता है। (एलिमेंटरी केनाल)।
**पोषित** वि० (सं) पाला हुआ।
**पोषिता** वि० पुं० (सं) पालन करने वाला।
**पोषी** वि० पुं० (सं) पालन-पोषण करने वाला।
**पोष्टा** वि० (सं) पालने पोसने वाला।
**पोष्य** वि० (सं) १-पाले जाने योग्य। २-प्रभूत।
**पोष्य-पुत्र** पुं० (सं) दत्तक। जो पुत्र की तरह पाला गया हो।
**पोष्यसुत** पुं० (सं) दे० 'पोष्य-पुत्र'।
**पोस** पुं० (हि) १-पालने का नाता। २-पालने वाले के प्रति होने वाला प्रेम।
**पोसती** पुं० (हि) अफीमची।
**पोसन** पुं० (हि) दे० 'पोषण'।
**पोसना** क्रि० (हि) १-पालन या रक्षा करना। २-अपने पास अपनी रक्षा में रखना। ३-दे० 'पोछना'
**पोस्ट** स्त्री० (अं) १-स्थान। जगह। २-पद। ३-पत्र-वाहक। ४-नौकरी। ५-डाकखाना।
**पोस्टआफिस** पुं० (अं) डाकखाना। पत्रालय।
**पोस्टकार्ड** पुं०(अं) पत्र व्यवहार के काम आने वाला और डाक द्वारा भेजे जाने वाला मोटे कागज का टुकड़ा। प्रेष-पत्रक।
**पोस्टबाक्स** पुं० (अं) डाकखाने में किसी विशेष व्यापारी या व्यक्ति की डाक या चिट्ठियां विशेष रूप से रखने की पेटी। पत्र-पेटिका।
**पोस्टमार्टम** पुं० (अं) १-मृत्यु का कारण ज्ञात करने के लिए शव की चीरफाड़। २-किसी शव को चीर-फाड़ कर परीक्षा करने की क्रिया। मरणोत्तर। शव-परीक्षा।
**पोस्टमास्टर** पुं०(अं) डाकघर का सबसे बड़ा अधि-कारी पत्रपाल।
**पोस्टमास्टर जेनरल** पुं० (अं) किसी प्रदेश के डाक-विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी। महाप्रेषपति।
**पोस्टमैन** पुं०(अं) पत्र-वाहक। डाकिया। पत्र-वितरक
**पोस्टर** पुं०(अं) विज्ञापन-पत्र। बड़े अक्षरों में छपा-हुआ या लिखा विज्ञापन।
**पोस्टल-गाइड** स्त्री० (अं) वह पुस्तिका जिसमें डाक-विभाग द्वारा चिट्ठी पारसल आदि भेजने के नियम आदि छपे होते हैं।
**पोस्त** पुं०(फा) १-छिलका। २- खाल। चमड़ा। ३-अफीम के पौधे का डोडा। ४-अफीम का पौधा।
**पोस्ता** पुं० (फा) वह पौधा जिसके डोडे में से अफीम निकलती है।
**पोस्ती** पुं० (फा) १-नशे के लिए पोस्ट का डोडा पीस कर पीने वाला। २-आलसी आदमी।
**पोस्तीन** पुं० (फा) १-जानवरों की मुलायम खाल का बना हुआ मध्य एशिया के लोगों का एक पह-रावा। २-मुलायम खाल का बना हुआ कोट जिस-के अन्दर की ओर रोयें होते हैं।
**पोहना** क्रि० (हि) १-पिरोना। गूंथना। २-छेदना। ३-पोतना। ४-घिसाना। ५-पीसना।
**पोहमी** स्त्री० (हि) पृथ्वी।
**पौंड** पुं० (हि) दे० 'पाउण्ड'। (स्टर्लिङ्ग)।
**पौंडपावना** पुं० (हि) ब्रिटेन के बैंक में किसी देश की पावने की वह राशि जो अन्तराष्ट्रीय वाणिज्य आदि के लिए उसके पास जमा रहती है और सम-झौते की शर्तों के अनुसार चुकाई जाती है।
**पौंडरीक** वि० (सं) कमल सम्बन्धी। कमल का। पुं० (सं) १-एक प्रकार का कुष्ट। २-स्थल पद्म।
**पौंड़ा** पुं० (हि) एक प्रकार का गन्ना या ईख।
**पौंड्र** पुं० (सं) १-एक देश का नाम। २-उस देश का राजा या निवासी। ३-एक प्रकार का गन्ना। ४-माथे पर का तिलक। ५-मनु के अनुसार एक जाति
**पौंड्रक** पुं० (सं) १-मोटा गन्ना। पौंडा। २-पुण्ड्र

नामक देश।
पौंढ़ना क्रि० (हिं) दे० 'पौढ़ना'।
पौंढ़ा पुं० (हिं) दे० 'पौंड़ा'।
पौंनार स्त्री० (हिं) दे० 'पौनार'।
पौंरना क्रि० (हिं) तैरना।
पौंरि स्त्री० (हिं) दे० 'पौरी'।
पौंरिया पुं० (हिं) दे० 'पौरिया'।
पौंरी स्त्री० (हिं) दे० 'पौरी'।
पौंश्चलीय वि० (सं) कुलटा का। कुलटा सम्बन्धी।
पौंसरा पुं० (हिं) दे० 'पौसला'।
पौ स्त्री० (हिं) १-प्याऊ। २-प्रातःकाल का प्रकाश। किरण। ३-पासे का एक दांव। पुं० (हि) १-जड़। २-पांव।
पौआ पुं० (हिं) १-एक सेर का चौथा भाग। २-पाव भर दूध मापने का एक बरतन।
पौगंड पुं०(सं) १-पांच से दस वर्ष तक की अवस्था। वि० (सं) बालकों जैसा।
पौठ स्त्री० (हिं) भूमि को जोतने की वह रीति जिसमें जोतने का अधिकार प्रति वर्ष बदलता जाता है।
पौड़ना क्रि० (हिं) तैरना।
पौड़ी स्त्री० (हिं) १-पौढ़ी। सीढ़ी। २-लकड़ी का वह मोढ़ा जिस पर मदारी बन्दर को नचाता है।
पौढ़ाना क्रि० (हिं) १-झुलाना। २-सुलाना। लेटना।
पौतवाध्यक्ष पुं० (सं) माल की तौल का निरीक्षण करने वाला अधिकारी।
पौतवाचार पुं० (सं) डंडी मारना। कम तौलना।
पौतिक वि० (सं) १-बदबूदार द्रव्य का बना हुआ। २-वह फोड़ा या जख्म (व्रण) जो सड़ने लगा हो। (सेप्टिक)। पुं० (सं) एक प्रकार का मधु।
पौत्र वि० (सं) पुत्र सम्बन्धी। पुं० (सं) पोता। लड़के का लड़का।
पौत्रिक वि० (सं) १-पौत्र सम्बन्धी। २-पुत्र सम्बन्धी
पौत्रिकेय पुं० (सं) लड़की का लड़का जो अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।
पौत्री स्त्री० (सं) १-पोती। लड़के की लड़की। २-दुर्गा।
पौद स्त्री० (हिं) १-छोटा पौधा। २-वह छोटा पौधा जिसे एक जगह से दूसरी जगह उखाड़ कर लगाया जा सके। ३-वंश। सन्तान। ४-माननीय व्यक्ति की राह में बिछाया हुआ कपड़ा। ५-उपज।
पौदा पुं० (सं) १-दे० पौधा। २-बुलबुल के पेट में बाँधने का रेशम या सूत का फुन्दना।
पौध स्त्री० (हिं) १-उपज। २-पैदाइश।
पौधा पुं०(हिं) १-नया निकलता हुआ पेड़। २-छोटी झाड़ी या पेड़।
पौधि स्त्री० (हिं) दे० 'पौध'।
पौनःपुनिक वि० (सं) बारम्बार होने वाला।
पौन स्त्री० (हिं) १-जीवात्मा। प्राण। २-वायु। हवा। ३-प्रेतात्मा। (भूत)। वि० (हिं) तीन चौथाई।
पौनरुक्त पुं० (सं) बार-बार दोहराने की क्रिया।
पौना स्त्री० (हिं) १-पौन का पहाड़ा। २-लोहे की बड़ी करछी। वि० (हिं) दे० 'पौन'।
पौनार स्त्री० (हिं) कमल के फूल की नाल या डंठल।
पौनारि स्त्री० (हिं) दे० 'पौनार'।
पौनी स्त्री० (हिं) १-नाई, धोबी आदि लोग जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर नेग लेते हैं। २-छोटा पौना।
पौने वि० (हिं) तीन चौथाई। एक में से चौथाई कम।
पौमान पुं० (हिं) १ दे० 'पवमान'। २-जलाशय।
पौरंध्र वि० (सं) स्त्री-सम्बन्धी।
पौर स्त्री० (हिं) दे० 'पौरी'। ड्योढ़ी। वि० (सं) १-नगर-सम्बन्धी। नगर का। २-नगर से उत्पन्न। ३-पेटू। पुं० (सं) नागरिक।
पौरअधिकार पुं० (सं) नागरिक अधिकार।
पौरअधिसेवक पुं०(सं) जनसेवा। (सिविल सर्वेन्ट)
पौरकार्य पुं० (सं) १-जनता का कार्य। २-नगर से सम्बन्धित कार्य।
पौरजन पुं० (सं) नागरिक।
पौरजनपद वि० (सं) नगर या जनपद का।
पौरजानपद पुं० (सं) प्राचीन भारत राजतंत्र में पुर या नगर तथा जनपद अथवा बाकी देश के प्रतिनिधियों का सम्मिलित स्वरूप।
पौरत्व पुं० (सं) दे० 'नागरिकता'।
पौरना क्रि० (हिं) तैरना।
पौरमुख्य पुं० (सं) नगर या पुर का प्रमुख व्यक्ति।
पौरलेखक पुं० (सं) प्राचीन भारत के जनपदों का वह अधिकारी जिसके पास नगर के लेखों की नकल या विवरण रहता था।
पौरव वि० (सं) पुरु-सम्बन्धी।
पौरवृद्ध पुं० (सं) प्रमुख नागरिक।
पौरसख्य पुं० (सं) एक ही नगर का नागरिक होना। सहनागरिकता।
पौरांगना स्त्री० (सं) नगर या पुर में रहने वाली स्त्री
पौरा पुं० (हिं) आया हुआ कदम। पड़े हुए चरण।
पौराण वि० (स) १-पुराण सम्बन्धी। २-पुराण में लिखा या कहा हुआ।
पौराणिक वि० (सं) १-प्राचीन। पुरातन। २-पुराण सम्बन्धी। ३-इतिहास में निष्णात। पुं० (सं) १-पुराण का वेत्ता। २-पुराणवाचक।
पौरिक पुं० (सं) १-नागरिक। २-नगर की शांति की व्यवस्था या रक्षा करने वाला शासक। (पुलिस)
पौरिक-अधिकारिक पुं० (सं) नगर, ग्राम आदि की शांति रक्षा के लिए नियुक्त कर्मचारियों का अधिकारी। (पुलिस ऑफीसर)।
पौरिक-उपपरिदर्शक पुं० (सं) पुलिस का छोटा

दरोगा। (पुलिस सब-इंस्पेक्टर)।
पौरिया पुं० (सं) द्वारपाल। दरबान।
पौरी स्त्री० (हि) १-ड्योढ़ी। २-सीढ़ी। ३-खड़ाऊँ
पौरुष पुं० (सं) १-पुरुषत्व। २-पुरुषों के उपयुक्त काम। पुरुषार्थ। ३-साहस। पराक्रम। वीरता। ४-मनुष्य की पूरी ऊंचाई। ५-उद्योग। उद्यम। वि (सं) पुरुष या मानव सम्बन्धी। मानवी।
पौरुषेय वि० (सं) १-पुरुष-सम्बन्धी। २-आदमी का किया हुआ। ३-आध्यात्मिक।
पौरोहित्य पुं० (सं) पुरोहित का कार्य या पद।
पौर्णमासिक वि० (सं) पूर्णिमा सम्बन्धी। पूर्णिमा के दिन का।
पौर्णमासी स्त्री० (सं) पूनो। पूर्णिमा।
पौर्णमी स्त्री० (स) पूनो। पूर्णिमा।
पौर्णिमा स्त्री० (सं) पूनो। पूर्णिमा।
पौर्व वि० (सं) पूर्व का। पहले का।
पौर्वापर्य पुं० (सं) १-पहले और पीछे का सम्बन्ध। २-अनुक्रम। सिलसिला।
पौर्वाह्निक वि० (सं) पूर्वाह्न में किया जाने वाला।
पौल स्त्री० (हि) नगर के गढ़ का बड़ा फाटक।
पौलना क्रि० (हि) काटना।
पौलस्त्य पुं० (सं) १-पुलस्त्य का वंशज। २-कुबेर। ३-चन्द्रमा। ४-रावण। विभीषण।
पौला पुं० (हि) वह खड़ाऊँ जिसमें खूँटी के स्थान पर अंगूठा फंसाने के लिए रस्सी लगी होती है।
पौलि पुं० (सं) १-फुलका। रोटी। २-भुना हुआ जौ, सरसों आदि। स्त्री० (सं) दे० 'पौली'।
पौलिया पुं० (हि) दे० 'पौरिया'।
पौली स्त्री० (हि) १-पौरी। ड्योढ़ी। २-पैर की उँगलियों से एड़ियों तक का भाग। ३-धूल आदि पर पड़ा पैर का निशान।
पौलोमी स्त्री० (सं) इन्द्र की पत्नी शची। इन्द्राणी।
पौवा पुं० (हि) १-एक सेर का चौथा भाग। २-पाव भर का दूध आदि नापने का बरतन। ३-पाव भर का बाट।
पौष पुं० (सं) १-पूस का महीना। २-एक त्योहार।
पौष्कल्य पुं० (सं) सम्पूर्णता।
पौष्टिक वि०(सं) १-पुष्टकारक बल और वीर्य बढ़ाने वाला।
पौष्प वि० (सं) १-पुष्प सम्बन्धी। २-फूलों या पुष्पों से निकला हुआ। फूलदार।
पौसरा पुं० (हि) १-प्याऊ। वह स्थान जहां पानी पिलाया जाता हो। २-प्यासों को पानी पिलाने का का प्रबन्ध।
पौसला पुं० (हि) दे० 'पौसरा'।
पौहारी वि० (हि) दे० 'पैहारी'।
प्याऊ पुं० (सं) दे० 'पौसरा'।
प्याज पुं० (फा) गोल गांठ के आकार का एक कन्द जिसकी गंध बड़ी उग्र होती है और मसाले, तरकारी आदि में काम आता है।
प्यादा पुं०(फा) १-पैदल सिपाही। २-दूत। हरकारा ३-शतरंज की एक गोट।
प्यार वि० (हि) १-प्रेम। स्नेह। मोहब्बत। २-प्रेम प्रदर्शन के लिए किया स्पर्श चुम्बन आदि। ३-लाड़ चाव।
प्यारा वि० (हि) प्रेमपात्र, प्रिय। जिसे प्यार किया जाय। २-जो अच्छा लगे। ३-जिसे कोई अलग न करना चाहे।
प्याला पुं० (फा) १-छोटा कटोरा। २-पीने का बरतन। ३-भीख मांगने का पात्र। ४-जाम। ५-जुलाहों का नरी भिगोने का पात्र। ६-गर्भाशय। ७-तोप, बन्दूक आदि का वह स्थान जहां रंजक भरी जाती है।
प्यावना क्रि० (हि) दे० 'पिलाना'।
प्यास स्त्री० (हि) १-जल पीने की इच्छा। तृष्णा। पिपासा। २-किसी वस्तु को पीने की प्रबल इच्छा या कामना। ३-प्रबल इच्छा। तृषा।
प्यासा वि० (हि) जो जल पीना चाहता हो। जिसे प्यास लगी हो। तृषित।
प्यूनी स्त्री० (हि) दे० 'पूनी'।
प्यो पुं० (हि) पति। स्वामी।
प्योरी स्त्री० (देश०) १-रूई की मोटी बत्ती। २-एक प्रकार का पीला रङ्ग।
प्योसर पुं० (हि) हाल की ब्यायी हुई गाय का दूध।
प्योसार पुं० (हि) मायका। पीहर।
प्योंवा पुं० (हि) दे० 'पैबंद'।
प्योर पुं० (हि) १-पति। स्वामी। २-प्रियतम।
प्र अव्य० (सं) एक उपसर्ग गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरम्भ, ख्याति और व्यवहार अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है।
प्रकंप पुं० (स) कंपकपी। थर्राहट।
प्रकंपन पुं० (सं) अत्यधिक कंपकंपी या थर्राहट। २-वायु। हवा। वि०(सं) कपकपी वाला। हिलने वाला
प्रकंपित वि० (सं) कांपता हुआ। हिलता हुआ। कंपनयुक्त।
प्रकच वि० (सं) जिसके रोंगटे खड़े हों।
प्रकट वि० (सं) १-प्रत्यक्ष। जाहिर। २-स्पष्ट। साफ ३-आविर्भूत। अव्य० (हि) सबके सामने। प्रत्यक्ष रूप में।
प्रकटना क्रि० (हि) प्रकट होने या करना।
प्रकटित वि० (सं) १-प्रकट किया हुआ। प्रत्यक्ष किया हुआ। २-सर्व साधारण के सामने रखा हुआ।
प्रकटीकरण पुं० (सं) प्रकट करने की क्रिया।
प्रकटीभवन पुं० (सं) प्रकट होने की क्रिया। प्रकट

होना।

**प्रकथन** पुं० (सं) किये हुए कार्य या कही हुई बात की पुष्टि। (एफर्मेशन)।

**प्रकरण** पुं० (सं) १-अध्याय। २-आरम्भिक वक्तव्य ३-प्रसंग। ४-रचना। वर्णन। ५-एक शृंगार प्रधान नाटक। ६-वह वचन जिसमें किसी काम को अवश्य करने का विधान हो।

**प्रकरिका** स्त्री० (सं) नाटक के किसी दो अंशों के बीच का वह अंग जिसमें आगे होने वाली घटना की सूचना दी जाती है। प्रासंगिक कथावस्तु।

**प्रकरी** स्त्री० (सं) १-नाटक के प्रयोजन की सिद्धि के पांच साधनों में से एक जिसमें देशव्यापी चरित्र का वर्णन होता है। २-एक प्रकार का गान। ३-एक प्रासंगिक कथावस्तु।

**प्रकर्तव्य** वि० (सं) अवश्य करने योग्य।

**प्रकर्ता** वि० (सं) अच्छी प्रकार से करने वाला।

**प्रकर्ष** पुं० (सं) १-उत्तमता। उत्कर्ष। २-अधिकता। बहुतायत। ३-विस्तार। ४-विशेषता।

**प्रकर्षण** पुं० (सं) १-खींच लेने की क्रिया। २-हल जोतने की क्रिया। ३-अधिकता। ४-उत्कर्ष।

**प्रकला** स्त्री० (सं) एक कला (समय) का सातवां भाग

**प्रकल्पना** स्त्री० (सं) स्थिर करना। निश्चित करना।

**प्रकांड** पुं० (सं) १-वृक्ष का तना। स्कंध। २-शाखा डाली। ३-वृक्ष। पेड़। वि० (सं) १-बहुत बड़ा। विस्तृत। २-सर्वश्रेष्ठ।

**प्रकाम** वि० (सं) यथेष्ट। पर्याप्त। काफी। पुं० (सं) अभिलाषा। कामना। इच्छा।

**प्रकार** पुं०(सं) १-भेद। किस्म। (काइण्ड)। २-तरह भांति। ३-समानता। ४-ढंग। (मैनर)। स्त्री०(सं) चहारदीवारी। परकोटा।

**प्रकाश** पुं० (सं) वह तत्व या शक्ति जिसके योग से वस्तुओं का रूप आंखों को दिखाई देता है। आलोक ज्योति (लाइट)। २-प्रकट होना। ३-विकास। अभिव्यक्ति। ४-प्रसिद्धि। ख्याति। ५-स्पष्ट होना ६-धूप। घाम। ७-परिच्छेद। वि० (सं) १-चमकीला। २-प्रख्यात। ३-फूला हुआ। ४-विकसित।

**प्रकाशक** पुं० (सं) १-प्रकाश देने वाला। सूर्य। २-अविष्कारकर्त्ता। ३-पुस्तक, समाचार आदि छाप कर बांटने या बेचने वाला व्यक्ति। (पब्लिशर) वि० (सं) १-चमकीला। २-प्रकट करने वाला। ३-प्रसिद्ध।

**प्रकाशकर्ता** पुं० (सं) सूर्य।

**प्रकाशकाम** वि० (सं) प्रसिद्धि या ख्याति का इच्छुक

**प्रकाशकीय** वि०(सं) प्रकाशक सम्बन्धी। प्रकाशक का

**प्रकाशक्रय** पुं० (सं) खुले आम होने वाली खरीद।

**प्रकाशगृह** पुं० (सं) वह ऊंची इमारत या मीनार जो विशेषतः समुद्र में बनी हो और जहां से जहाजों आदि को रास्ता दिखाने के लिए चारों ओर प्रकाश फैलता हो। (लाइट हाउस)।

**प्रकाशन** पुं० (सं) १-प्रकाशित करने का काम। २-प्रकाश में लाने का काम। ३-वे पुस्तक, ग्रन्थ, समाचार-पत्र आदि जो प्रकाशित किये जायँ। (पब्लिकेशन)। वि० (सं) १-प्रकाश करने वाला। चमकीला।

**प्रकाशनारी** स्त्री० (सं) वेश्या।

**प्रकाश परावर्तक** पुं० (सं) १-शीशे आदि का वह टुकड़ा जो प्रकाश ग्रहण करके उसे अन्य दिशा में प्रक्षेपित करे। २-वह यन्त्र जो किसी प्रतिबिंब को ग्रहण करके दूसरी तरफ प्रतिफलित करने की क्षमता रखता हो। (रिफ्लेक्टर)।

**प्रकाश प्रक्षेपक** पुं० (सं) बिजली की बड़ी तेज रोशनी का लैम्प जिसका प्रयोग कर दूर की वस्तु स्पष्ट देखी जा सकती है। (सर्चलाइट)।

**प्रकाशमान** वि० (सं) १-चमकता हुआ। चमकीला २-प्रसिद्ध।

**प्रकाशवान** वि०(सं) १-चमकता हुआ। प्रकाशयुक्त २-प्रसिद्ध।

**प्रकाशवियोग** पुं० (सं) वह वियोग जो गुप्त न रह सके सबको विदित हो जाय।

**प्रकाशस्तंभ** पुं० (सं) प्रकाश-गृह। वह ऊँचा स्तंभ जो समुद्र में जहाजों को चट्टानों से बचाने के लिए और पथ प्रदर्शन के लिए बनाया गया हो। (लाइट-हाउस)। मार्गदर्शक।

**प्रकाशित** वि० (सं) १-चमकता हुआ। २-जिस पर प्रकाश पड़ या निकल रहा हो। ३-जो छप कर लोगों के सामने आ गया हो। (पब्लिश्ड)।

**प्रकाश्य** वि० (सं) १-प्रकट करने योग्य। २-प्रकाशन के योग्य। पुं० (सं) प्रकाश।

**प्रकास** पुं० (हि) दे० 'प्रकाश'।

**प्रकासना** क्रि० (हि) प्रकट करना। प्रकाशित होना।

**प्रकीर्ण** वि०(सं) १-बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २-अनेक प्रकार का। ३-जिसमें अनेक वस्तुएँ मिली हों। पुं० (सं) १-प्रकरण। अध्याय। २-पागल। ३-उद्दंड। ४-फुटकर कविता।

**प्रकीर्णक** वि० (सं) जिसमें कई वस्तुएं एक साथ मिली हों। फुटकर। (मिसलेनियस)। पुं० (सं)१-अध्याय। प्रकरण। २-कई वस्तुओं का मिश्रण। ३-विस्तार। ४-वह पाप जिसका उल्लेख धर्म ग्रंथों में न हो। ५-फुटकर वस्तुओं का संग्रह।

**प्रकीर्णक लेखा** पुं० (सं) फुटकर आय या व्यय का खाता या लेखा। (मिसलेनियस अकाउण्ट)।

**प्रकीर्तन** पुं० (सं) १-जोर-जोर से कीर्तन करना। २-घोषणा करना। ३-प्रशंसा।

**प्रकीर्ति** स्त्री० (सं) १-प्रसिद्धि। ख्याति। २-घोषणा।

**प्रकुपित** वि० (सं) १-जिसका कोप बहुत बढ़ गया हो। २-अति कुपति।
**प्रकुल** पुं० (सं) सुन्दर शरीर। सुडौल बदन।
**प्रकृत** वि० (सं) १-असली। वास्तविक। २-जिसमें कोई त्रुटि या विकार न हो। ३-रचा हुआ। ४-जो अपने यथार्थ रूप में हो। (नॉर्मल)।
**प्रकृतार्थ** पुं० (सं) असली या यथार्थ अभिप्राय। वि० (सं) यथार्थ। असल।
**प्रकृति** स्त्री० (सं) १-किसी व्यक्ति या वस्तु का मूल गुण। स्वभाव। २-वह मूल शक्ति जिससे अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है और जिसका रूप दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है। कुदरत (नेचर) ३-गुणक। ४-स्त्री। ५-माता। ६-वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं।
**प्रकृतिज** वि० (सं) जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। स्वाभाविक।
**प्रकृतिमंडल** पुं० (सं) १-राज्य के स्वामी, अमात्य, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सुहृद तथा बल इन सात अंगों का समूह। प्रजा का समूह।
**प्रकृतिशास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे—जीव, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विवेचन होता है।
**प्रकृतिसिद्ध** वि० (सं) नैसर्गिक। स्वाभाविक।
**प्रकृतिसुभग** वि० (सं) जो स्वभाव से ही सुन्दर हो। जिसमें सहज सौंदर्य हो।
**प्रकृतिस्थ** वि०(सं) १-जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो। स्वाभाविक। २-जिसके होश हवास ठिकाने न हों।
**प्रकृतया** अव्य० (सं) स्वभावतः। स्वभाव से।
**प्रकृष्ट** वि० (सं) १-मुख्य। प्रधान। श्रेष्ठ। २-आकृष्ट। खींचा हुआ। ३-सींचा हुआ। (खेत)।
**प्रकोप** पुं० (सं) १-अत्यधिक कोप। २-क्षोभ। ३-रोग का बढ़ने वाला जोर। बात, पित्त और कफ के विकार से उत्पन्न रोग।
**प्रकोपन** पु० (सं) किसी के प्रकोप को उत्तेजित करना। २-गुस्सा करना। ३-क्षोभ। ४-चंचलता ५-वात, पित्त आदि का कोप।
**प्रकोष्ठ** पुं० (सं) १-कोहनी के नीचे का भाग। २-दरवाजे के पास का कोठा। ३-घर के बीच का आंगन। ३-विधान सभा आदि का वह बाहर वाला कमरा जहां सदस्य गण आपस में या दूसरे लोगों से बातें करते हैं। (लॉबी)।
**प्रकोष्ठक** पुं० (सं) बड़े दरवाजे के पास का कमरा।
**प्रकोष्ठवार्ता** स्त्री० (सं) संसद या विधान सभा से बाहर की गई बातचीत। (लॉबी टॉक)।
**प्रक्खर** पु० (सं) १-घोड़े या हाथी का कवच। २-खच्चर। ३-कुत्ता। वि० (सं) अति तीक्ष्ण।
**प्रक्रम** पुं० (सं) १-क्रम। सिलसिला। २-प्रगति आदि के लिए बीच में पड़ने वाला काल भाग। (स्टेज)। ३-मौका। अवसर। ४-किसी कार्य के आरम्भ में किया गया उपाय। उपक्रम। ५-अतिक्रम। उल्लंघन।
**प्रक्रमण** पु० (सं) १-भली प्रकार घूमना। २-आरम्भ करना। ३-पार करना। ४-आगे बढ़ना।
**प्रक्रमभंग** पुं० (सं) १-किसी काम में आरम्भ किये हुए क्रम का उल्लङ्घन। २-साहित्य में वर्णन करते समय आरम्भ किये क्रम आदि का यथावत पालन न किया जाने का दोष।
**प्रक्रमविरुद्ध** वि० (सं) जिसे आरम्भ करते ही रोक दिया गया हो।
**प्रक्रांत** वि० (सं) १-आरम्भ किया हुआ। २-गत। ३-विवादग्रस्त।
**प्रक्रिया** स्त्री० (सं) वह क्रिया अथवा प्रणाली जिससे कोई वस्तु बनती या होती हो। (प्रोसेस)। २-किसी अभियोग आदि की सुनवाई में होने वाले, आदि से अन्त तक के, समस्त कार्य या ढंग। (प्रोसीजर)। ३-राजचिह्न (चँवर) आदि का धारण करना। ४-किसी काम के पूरे होने के सम्बन्ध में आदि से अन्त तक की सारी कार्रवाई (प्रोसीडिंग)।
**प्रक्षालन** पुं० (सं) जल से साफ करना। धोना।
**प्रक्षालनगृह** पुं० (सं) १-हाथ मुँह धोने आदि का प्रकोष्ठ। २-शौचालय। (लेवेटरी)।
**प्रक्षालित** वि० (सं) धोया या साफ किया हुआ।
**प्रक्षिप्त** वि० (सं) १-फेंका या छितराया हुआ। २-पीछे या आगे की ओर से किसी में मिलाया हुआ ३-आगे की ओर बाढ़ या निकला हुआ। (प्रॉजेक्टेड)।
**प्रक्षेप** पुं० (सं) १-फेंकना। डालना। २-वह जो बाद में बढ़ाया गया हो। ३-किसी बहुत बड़े काम की योजना। (प्रोजेक्ट)।
**प्रक्षेपण** पु० (सं) १-डालना। फेंकना। २-निश्चित करना। जहाज आदि का चलाना। ३-ऊपर से मिलाना।
**प्रखर** वि० (सं) १-अति तीव्र। तीक्ष्ण। २-पैना। धारदार। पुं० (सं) १-खच्चर। २-कुत्ता।
**प्रखरता** स्त्री० (सं) १-तीव्रता। तीक्ष्णता। २-प्रखर होने का भाव। ३-तेजी।
**प्रख्यात** वि० (सं) प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।
**प्रख्याति** स्त्री० (सं) प्रसिद्धि। विख्याति। प्रशंसा।
**प्रख्यापन** पुं० (सं) १-जतलाने के लिए स्पष्ट रूप से कही गई बात। २-सूचित करना। (डिक्लेरेशन, प्रोमलगेशन)।
**प्रख्यापित** वि० (सं) (वह अध्यादेश आदि) जो

सर्व साधारण को स्पष्ट रूप से बता दी गई हो या जिसकी विघोषणा कर दी गई हो। (प्रोमलगेटेड)।

**प्रगंड** पुं० (सं) कंधे से लेकर कोहनी तक का भाग

**प्रगट** पुं० (हि) दे० 'प्रकट'। अव्य० (हि) प्रकट रूप से।

**प्रगटन** पु० (हि) प्रकट होने का भाव या क्रिया।

**प्रगटना** क्रि० (हि) १-प्रकट करना या होना। २-जन्म लेना।

**प्रगटाना** क्रि० (हि) प्रकट करना।

**प्रगति** स्त्री० (सं) १-आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। २-उन्नति कराना।

**प्रगतिरोध** पुं० (सं) १-प्रगति में बाधा या अड़चन पड़ना। (सैट बैक)।

**प्रगतिवाद** पुं० (सं) १-वह सिद्धान्त जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि का निरन्तर आगे बढ़ना ही हितकर माना जाता है। २-प्राचीन रूढ़ियों या बातों को त्रुटिपूर्ण समझना और नई बातों को ग्रहण करने में विश्वास करने का सिद्धान्त।

**प्रगतिशील** वि० (सं) आगे बढ़ने या उन्नति करने वाला।

**प्रगर्भ** वि० (सं) दे० 'प्रगल्भ'।

**प्रगल्भ** वि० (सं) १-चतुर। २-साहसी। उत्साही। ३-निर्भय। ४-हाजिरजवाब। प्रत्युत्पन्नमति। ५-प्रतिभाशाली। ६-निःसंकोच बोलने वाला। ७-गम्भीर। ८-प्रधान। ६-उद्धत। उद्दंड। पुष्ट।

**प्रगल्भता** स्त्री० (सं) प्रोढ़ा। नायिका।

**प्रगासना** क्रि०(हि) प्रकाशित होना। प्रकट होना।

**प्रगाढ़** वि० (सं) १-बहुत गाढ़ा। गहरा। २-अत्यधिक ३-कड़ा। कठोर। पुं० (सं) कष्ट। तपस्या।

**प्रगसना** क्रि० (हि) प्रकाशित करना। २-प्रज्वलित करना।

**प्रगुणता अर्गल** पुं० (सं) दक्षता-अर्गल। सरकारी नौकरी आदि में वेतन वृद्धि के समय एक बाधा जो योग्यता या दक्षता के कारण ही पार की जा सकती है। (एफीशिंसी-बार)।

**प्रगृहीत** वि० (सं) १-जो भली भांति ग्रहण किया गया हो। २-जिसका उच्चारण संधि के नियमों को ध्यान में रखकर किया गया हो।

**प्रग्रह** पु० (सं) १-ग्रहण करना। २-सूर्य या चन्द्रमा के ग्रहण का आरम्भ। ३-रास। लगाम। ४-आदर सत्कार। ५-तराजू की डोरी। ६-कृपा। ७-उपग्रह। ८-घोड़े आदि पशुओं को साधना। ६-कैदी। १०-किरण। ११-नेता। १२-विष्णु।

**प्रघट** वि० (हि) दे० 'प्रकट'।

**प्रघटक** पुं० (सं) सिद्धान्त।

**प्रघटना** क्रि० (हि) प्रकट होना।

**प्रघट्टक** वि० (हि) प्रकट करने वाला।

**प्रघण** पुं० (स) बंगले या मकान को दरवाजे के सामने छाया हुआ स्थान। छज्जा। २-तांबे का बरतन। मुगदर (लोहे का)।

**प्रघन** पुं० (सं) दे० 'प्रघण'।

**प्रघाण** पुं० (स) दे० 'प्रघण'।

**प्रघान** पुं० (हि) दे० 'प्रघण'।

**प्रघोर** वि० (सं) अति घोर।

**प्रघोष** पुं० (स) १-प्रचंड शब्द। २-ऊँची ध्वनि।

**प्रचंड** वि० (सं) १-अत्यन्त तीव्र। तेज। २-कठिन। कठोर। ३-भयानक। ४-असह्य। ५-बलवान। ६-बड़ा। भारी। ७-प्रतापी। ८-बहुत गरम।

**प्रचय** पुं० (सं) १-समूह। २-राशि। ढेर। ३-वृद्धि। ४-फल आदि लकड़ी आदि की सहायता से एकत्रित करना।

**प्रचरण** पुं० (सं) चलना। फिरना।

**प्रचरित** वि० (सं) चलता हुआ। प्रचलित।

**प्रचलन** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का बराबर व्यवहार में आता रहना या होना। २-चलन। प्रथा। रिवाज

**प्रचलित** वि० (स) १-जिसका चलन हो। २-जो इस समय चल रहा हो। (करंट)।

**प्रचार** पुं० (सं) १-चलन। रिवाज। २-घोड़े की आंखों का रोग। ३-कोई नियम, मत या बात फैलाने के लिए बहुत से लोगों के सामने रखना। (प्रोपेगेंडा)।

**प्रचारक** पुं०(सं) प्रचार करने वाला। फैलाने वाला (प्रोपेगेंडा)।

**प्रचारकार्य** पुं० (सं) प्रचार करने का काम। (प्रोपेगेंडा)।

**प्रचारना** क्रि० (हि) १-प्रचार करना। २-सामने खड़े होकर ललकारना।

**प्रचारित** वि० (सं) जिसका प्रचार किया गया हो। प्रचलित। चलता हुआ।

**प्रचारी** वि० (सं) प्रचार करने वाला।

**प्रचालन** पुं० (सं) चलाने की क्रिया।

**प्रचालित** वि० (सं) जो चलाया गया हो। जिसका प्रचलन किया गया हो।

**प्रचित** वि० (सं) वह जिसे एकत्रित किया गया हो। पुं० (सं) दंडक छन्द का एक भेद।

**प्रचुर** वि (सं) बहुत। अधिक। विपुल।

**प्रचुरपुरुष** वि० (सं) बहुत घना बसा हुआ।

**प्रचुरता** स्त्री० (सं) अधिकता। प्रचुर होने का भाव।

**प्रचुराव** पुं० (सं) दे० 'प्रचुरता'।

**प्रच्छन्न** वि० (सं) १-ढका हुआ। लपेटा हुआ। परिवेष्ठित। २-छिपा हुआ।

**प्रच्छन्नचारी** वि० (सं) गुप्त रूप से कार्य करने वाला।

**प्रच्छादन** पु० (सं) १-ढकने या छिपाने का भाव।

२–चादर। ओढ़ने का वस्त्र। ३–आंख की पलक
प्रच्छादित वि० (सं) १–ढका हुआ। २–छिपा हुआ
प्रच्छाय पुं० (सं) १–सघन या घनी छाया। २–छायादार स्थान।
प्रच्छालना क्रि० (हिं) धोना।
प्रछालना क्रि० (हिं) धोना।
प्रजंक पुं० (हिं) पलंग।
प्रजंत अव्य० (हिं) दे० 'पर्यंत'।
प्रजनन पुं० (सं) १–सन्तान उत्पन्न करने का कार्य २–बच्चा जनाने का काम। ३–जन्म। ४–योनि। जन्म देने वाला पिता।
प्रजनयिता पुं० (सं) उत्पन्न करने वाला।
प्रजरना क्रि० (हिं) अच्छी प्रकार जलना।
प्रजल्प पुं० (सं) व्यर्थ की इधर-उधर की बात। गप-शप।
प्रजल्पन पुं० (सं) बातचीत।
प्रजल्पित वि० (सं) व्यक्त। कहा हुआ। प्रकट।
प्रजवन वि० (सं) तेज चाल वाला। वेगवान। तेज
प्रजवी वि० (सं) तेज। फुर्तीला। पुं० (सं) दूत। हरकारा।
प्रजांतक पुं० (सं) यम।
प्रजा स्त्री०(सं) १–सन्तान। औलाद। २–किसी देश, राज्य या राष्ट्र में रहने वाला जन समूह। रिआया रैयत। (पब्लिक)।
प्रजाकाम वि० (सं) सन्तान की इच्छा रखने वाला पुं० (सं) सन्तान की कामना।
प्रजाकार पुं० (सं) प्रजापति। ब्रह्मा।
प्रजाक्षोभ पुं० (सं) राजसत्ता या शासन के विरुद्ध व्याप्त क्षोभ या विद्रोह की भावना। (इनसर्जेन्सी)
प्रजागुप्ति स्त्री० (सं) प्रजा की रक्षा।
प्रजातंतु पुं०(सं) १–वंश। सन्तान। २–वंशपरंपरा।
प्रजातंत्र पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि तथा प्रधान शासन चुनती है। (रिपब्लिक)।
प्रजातंत्रिक दल पुं०(सं) संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राजनैतिक दल। (रिपब्लिकन पार्टी)।
प्रजाता स्त्री० (सं) प्रसूता स्त्री।
प्रजाति स्त्री० (सं) १–प्रजा। २–सन्तान। ३–प्रजनन शक्ति।
प्रजातिगत भेदभाव पुं० (सं) एक प्रजाति का दूसरी प्रजातियों से श्रेष्ठ मान कर उनसे भेद भाव करना (रेशियल डिसक्रिमिनेशन)।
प्रजातिसंहार पुं० (सं) किसी देश या राज्य द्वारा वहां की अल्पसंख्यक जाति या वर्ग को सुनियोजित नीति के अनुसार विनाश का कार्य। (जेनोसाइड)।
प्रजातीर्थ पुं० (सं) जन्म का शुभ काल।
प्रजादान पुं० (सं) चांदी। सन्तानोत्पत्ति।
प्रजानाथ पुं० (सं) १–ब्रह्मा। २–मुनि। ३–दक्ष। ४–राजा।
प्रजापति पुं० (सं) १–सृष्टिकर्त्ता। २–ब्रह्मा। ३–मनु ४–राजा। ५–सूर्य। ६–पिता। ७–अग्नि। ८–दामाद। ९–लिंगेंद्रिय।
प्रजापाल पुं० (सं) राजा।
प्रजापालक पुं० (सं) राजा।
प्रजापालन पुं० (सं) प्रजा का पालन।
प्रजारना क्रि० (हिं) अच्छी प्रकार जलाना।
प्रजावती स्त्री० (हिं) १–भावज। भातृजाया। २–वह स्त्री जिसके कई सन्तान हों। ३–गर्भवती स्त्री।
प्रजावृद्धि स्त्री० (सं) सन्तान की बहुलता।
प्रजाव्यापार पुं०(सं) प्रजा की देखभाल या व्यवस्था
प्रजासत्ता स्त्री० (सं) दे० 'प्रजातंत्र'।
प्रजासत्ताक वि० (सं) (वह शासन पद्धति) जिसमें प्रजा अथवा उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।
प्रजासत्तात्मक वि० (सं) दे० 'प्रजासत्ताक'।
प्रजुरना क्रि० (हिं) १–जलना। प्रज्वलित होना। २–चमकना। प्रकाशित होना।
प्रजुरित वि० (हिं) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजुलित वि० (हिं) दे० 'प्रज्वलित'।
प्रजेश पुं० (सं) दे० 'प्रजापति'।
प्रजेश्वर पुं० (सं) राजा।
प्रजोग पुं० (हिं) दे० 'प्रयोग'।
प्रज्ञ वि० (सं) विद्वान। बुद्धिमान। पुं० (सं) जानकार। विद्वान।
प्रज्ञता स्त्री०(सं) पांडित्य। विद्वत्ता।
प्रज्ञप्ति स्त्री० (सं) १–जनाने या सूचित करने का भाव। २–सूचना पत्र। ३–संकेत। ४–ज्ञान। ५–सूचना। (इन्फर्मेशन) ६–वह पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमें माल का मूल्य तथा विवरण लिखा होता है। (एडवाइस)।
प्रज्ञा स्त्री० (सं) १–बुद्धि। ज्ञान। २–एकाग्रता। ३–सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु पुं० (सं) १–धृतराष्ट्र। २–अंधा। ३–ज्ञानी
प्रज्ञात वि० (सं) प्रसिद्ध। विख्यात। अच्छी तरह जाना हुआ।
प्रज्ञापन पुं० (सं) १–विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। २–इस प्रकार की सूचना, लेख आदि। (इन्फर्मेशन)।
प्रज्ञावृद्ध वि० (सं) जो ज्ञान में बड़ा हो। ज्ञानवृद्ध।
प्रज्ञावान वि० (सं) समझदार। बुद्धिमान।
प्रज्ञाहीन वि० (सं) मूर्ख। बुद्धिहीन। मूढ़।
प्रज्वलन पुं० (सं) जलने की क्रिया। जलना।
प्रज्वलित वि० (सं) १–जलता या धधकता हुआ।

२-चमकीला। चमकता हुआ।
**प्रण** वि०(सं) प्राचीन। पुराना। पुं० (हि) प्रतिज्ञा। किसी कार्य को करने के लिए किया गया दृढ़ निश्चय।
**प्रणत** वि० (सं) १-बहुत झुका हुआ। २-प्रणाम करता हुआ। ३-नम्र। दीन। पुं० (सं) १-प्रणाम करने वाला। २-भक्त। उपासक। ३-सेवक। दास
**प्रणतकाय** वि० (सं) जिसका शरीर झुका हुआ हो
**प्रणतपाल** पुं० (सं) वह जो शरणागत की रक्षा करे।
**प्रणतपालक** पुं० (सं) दे० 'प्रणतपाल'।
**प्रणति** स्त्री० (सं) १-प्रणाम। दंडवत्। २-नम्रता। ३-विनती।
**प्रणदन** पुं० (सं) गर्जन। जोर से शब्द करना।
**प्रणमन** पु० (सं) १-प्रणाम करना। २-झुकना।
**प्रणमना** क्रि० (हि) प्रणाम करना। २-झुकना।
**प्रणम्य** वि० (सं) वंदनीय। जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित हो।
**प्रणय** पुं० (सं) १-प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना। २-विश्वास। ३-प्रेम। ४-मोक्ष। ५-श्रद्धा। ६-प्रसव
**प्रणयकलह** पुं० (सं) नायक और नायिका का आपसी झगड़ा या कलह।
**प्रणयकुपित** वि० (सं) जो प्रणय कलह के कारण रूठ गया हो।
**प्रणयकोप** पुं० (सं) नायिका का अपने नायक के प्रति झूठमूठ का क्रोध।
**प्रणयन** पुं० (सं) १-रचना। बनाना। २-होम के समय अग्नि-संस्कार।
**प्रणयभंग** पुं० (सं) १-विश्वासघात। २-मित्रता भंग हो जाना।
**प्रणयवचन** पुं० (सं) प्यार भरे या प्रेम पूर्ण वचन।
**प्रणयविमुख** वि० (सं) जिसकी प्रेम और मित्रता की ओर प्रवृत्ति न हो।
**प्रणयिनी** स्त्री० (सं) १-वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रेमिका। २-भार्या। पत्नी।
**प्रणयी** पुं०(सं) १-प्रेम करने वाला। प्रेमी। २-पति स्वामी।
**प्रणव** पुं०(सं) १-ओंकार। ओंकार मंत्र। २-परमेश्वर। ३-त्रिदेव।
**प्रणवना** क्रि० (हि) प्रणाम या नमस्कार करना।
**प्रणष्ट** वि० (सं) मृत। जो नष्ट हो गया हो।
**प्रणाम** पुं० (सं) हाथ जोड़ कर किया जाने वाला अभिवादन या प्रणाम।
**प्रणालिका** स्त्री० (सं) १-पानी। परनाली। २-बन्दूक की नली।
**प्रणाली** स्त्री० (सं) १-पानी बहने या निकलने की नाली। २-रीति। परिपाटी। ३-प्रथा। चाल। ४-ढंग। पद्धति। परंपरा। ५-वह छोटा जलमार्ग जो दो समुद्रों या जल के बड़े भागों को मिलाता हो। (चैनल)। ६-कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु कहीं भेजने का उपयुक्त तथा नियत मार्ग या तरीका। (चैनल)।
**प्रणाशी** वि० (सं) नाश करने वाला।
**प्रणिधान** पु० (सं) १-रखा जाना। २-समाधि (योग)। ३-उपासना। ४-चित्त की एकाग्रता। ५-अर्पण। ६-कर्म के फल का त्याग। ७-भक्ति। ८-प्रवेश। गति।
**प्रणिधि** पुं० (सं) १-राज्य के किसी विशेष कार्य के लिए भेजे जाने वाला दूत। (एमीसरी)। २-वह दूत या अभिकर्ता जो गुप्त रूप से कार्य करे। (सीक्रेट एजेंट)। स्त्री०(हि)१-मन की एकाग्रता। २-प्रार्थना। ३-तत्परता।
**प्रणिपतन** पुं० (सं) चरणों में सिर नवाना। प्रणाम। दंडवत।
**प्रणिपात** पुं० (सं) दे० 'प्रणिपतन'।
**प्रणीत** वि० (सं) १-रचित। बनाया हुआ। २-भेजा हुआ। ३-पास पहुंचाया हुआ। लाया हुआ। ४-जिसका मंत्रों से संस्कार किया गया हो। ५-अच्छी तरह से बनाया या पकाया हुआ। ६- प्रिय।
**प्रणेता** स्त्री० (सं) १-रचयिता। बनाने वाला। २-नेता। ३-कर्त्ता।
**प्रणोदित** वि० (सं) प्रेरित। नियोजित।
**प्रतंचा** वि० (हि) दे० 'प्रत्यञ्चा'।
**प्रतक्ष** वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।
**प्रतच्छ** वि० (हि) दे० 'प्रत्यक्ष'।
**प्रतत** वि० (सं) लम्बा-चौड़ा। विस्तृत।
**प्रतति** स्त्री० (सं) विस्तार। फैलाना।
**प्रतन** वि० (सं) प्राचीन। पुरानी।
**प्रतनु** वि० (सं) १-क्षीण। दुबला। २-सूक्ष्म। ३-तुच्छ। ४-बहुत छोटा।
**प्रतप्त** वि० (सं) १-गरमाया हुआ। तपाया हुआ। पीड़ित। सताया हुआ।
**प्रताप** पुं० (सं) १- पौरुष। वीरता। २-दंडजनित तेज। ३-वीरता, शक्ति आदि का वह प्रभाव जिससे विरोधी दबे रहें।
**प्रतापवान** वि० (सं) जो प्रताप वाला हो।
**प्रतापी** वि० (हि) जिसका बहुत अधिक प्रताप हो।
**प्रतारक** पुं० (सं) १-धोखा देने वाला। २-धूर्त। चालाक। ३-ठग।
**प्रतारण** पु० (सं) १-वंचना। ठगी। २ धूर्तता।
**प्रतारणा** स्त्री० (सं) १-धोखा देना। ठगी। वंचना।
**प्रतारित** वि० (सं) १-जो ठगा गया हो। २- जिसे धोखा दिया हो।
**प्रतिचा** स्त्री० (हि) धनुष की डोरी। चिल्ला।

**प्रति** *अव्य०* (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगता है और निम्न अर्थ देता है--१-विरुद्ध। २-सामने। ३-बदले में। ४-हर एक। ५-समान। ६-जोड़ का। ७- मुकाबले में। ८-ओर। तरफ। स्त्री०(सं) एक प्रकार की कई वस्तुओं में अलग-अलग एक-एक वस्तु। अदद। नकल (कॉपी)।

**प्रतिकर** पुं० (सं) किसी की हानि हो जाने पर बदले में दिया जाने वाला धन। क्षतिपूर्ति। हरजाना। (कंपन्सेशन)।

**प्रतिकरक** *वि०* (सं) १-प्रतिकर या क्षतिपूर्ति सम्बन्धी २-प्रतिकर के रूप में दिया जाने वाला। (कम्पन्सेटरी)।

**प्रतिकरण** पुं० (सं) वह काम जो किसी काम के विरोध, प्रतिकार या उत्तर में किया जाय। (काउन्टएक्शन)।

**प्रतिकर्ता** *वि०* पुं० (सं) १-प्रतिकार करने वाला। अपकार का बदला लेने वाला।

**प्रतिकार** पुं० (सं) १-प्रतिशोध। बदला। २-वह काम जो प्रतिकार के रूप में किया गया हो। ३-चिकित्सा। इलाज।

**प्रतिकारक** पुं० (सं) बदला चुकाने वाला। वह जो किसी का प्रतिकार करता हो।

**प्रतिकारी** पुं० *वि०* (सं) प्रतिकार करने वाला।

**प्रतिकाश** पुं०(सं) १-प्रतिबिम्ब। २-चितवन। दृष्टि

**प्रतिकूप** पुं० (सं) खाई। परिखा।

**प्रतिकूल** *वि०* (सं) विपरीत। विरुद्ध। पुं०(सं) विरोध करने वाला।

**प्रतिकूलकारी** *वि०*(सं) १-विरोधी। २-विरुद्ध आचरण करने वाला।

**प्रतिकूलकृत** *वि०* (सं) दे० 'प्रतिकूलकारी'।

**प्रतिकूलवर्ती** *वि०* (सं) दे० 'प्रतिकूलकारी'।

**प्रतिकूलिक** *वि०* (सं) शत्रुता रखने वाला। विरोधी

**प्रतीकृत** *वि०* (सं) १-जिसके विरुद्ध प्रयत्न किया जा चुका है। २-जिसका बदला चुका दिया गया हो। पुं० (सं) १-विरोध। २-प्रतिकार।

**प्रतिक्रम** पुं० (सं) उलटा-पुलटा क्रम या सिलसिला।

**प्रतिक्रमात** *वि०* (सं) बतलाये हुए क्रम से उलटे क्रम से। (वाइस वर्सा)।

**प्रतिक्रिया** स्त्री० (सं) १-प्रतिकार। २-एक तरफ से कोई क्रिया होने पर उसके परिणाम स्वरूप दूसरी ओर से होने वाली क्रिया। ३-विपरीत दिशा में होने वाली गति। (रिएक्शन)।

**प्रतिक्रियात्मक-सहयोग** पुं० (सं) सहयोग के बदले में किया जाने वाला सहयोग। (रिसोप्रोसिव कोऑपरेशन)।

**प्रतिक्रियावादी** पुं० (सं) वह जो उन्नति या सुधार आदि कार्यों या विचारों का विरोध करता हो। (रिएक्शनरी)।

**प्रतिक्षण** *अव्य०* (सं) निरंतर। हर लहमे में।

**प्रतिक्षेप** पुं० (सं) फेंकना। २-रोकना। ३-तिरस्कार

**प्रतिक्षेपक** पुं०(सं) दे० 'प्रकाश परावर्तक'। (रिफ्लेक्टर)।

**प्रतिगमन** पुं० (सं) वापिस आना। लौटना।

**प्रतिगृहीत** *वि०*(सं) १-ग्रहण किया हुआ। २-अंगीकार किया हुआ।

**प्रतिगृहीता** स्त्री० (सं) धर्मपत्नी। वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो।

**प्रतिग्या** स्त्री० (हि) दे० 'प्रतिज्ञा'।

**प्रतिग्रह** पुं० (सं) १-स्वीकार। ग्रहण। २-विधिपूर्वक दिये गये दान को लेना। ३-विवाह। ४-पकड़ना। ५-स्वागत। अभ्यर्थना। ६-कृपा। ७-सेना का पिछला भाग। ८-अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति का अधिकारी गण को जांच या विचारार्थ सौंपा जाना (कस्टडी)।

**प्रतिग्रहण** पुं० (सं) १-विधिपूर्वक दिया हुआ दान लेना। २-स्वागत। ३-विवाह। ४-ऋण की रकम या जुरमाने के बदले न्यायालय के आदेश से सपत्ति आदि पर अधिकार कर लेना। (अटैचमेंट)।

**प्रतिग्रही** *वि०* पुं० (सं) दान लेने वाला।

**प्रतिग्रहीता** पुं० (सं) १-दान लेने वाला। २-पति। स्वामी।

**प्रतिग्राहक** *वि०* पुं० (सं) १-लेने या ग्रहण करने वाला। २-वह जो किसी की दी हुई वस्तु या संपत्ति आदि को ग्रहण करता हो। (रिसीवर)। ३-वह व्यक्ति जो किसी की संपत्ति, आदि की देखभाल या रक्षा के लिए ले ले। (रिसीवर, कस्टोडियन)।

**प्रतिग्राह्य** *वि०* (सं) १-ग्रहण करने योग्य। २-स्वीकार करने योग्य।

**प्रतिघात** पुं०(सं) १-आघात के बदले में किया जाने वाला आघात। २-बाधा। ३-वध।

**प्रतिघातक** पुं० (सं) प्रतिघात करने वाला।

**प्रतिच्छा** स्त्री० (हि) दे० 'प्रतीक्षा'।

**प्रतिच्छाया** स्त्री०(सं) १-चित्र। २-परछाईं। प्रतिबिंब ३-मिट्टी या पत्थर की बनाई हुई मूर्ति। प्रतिमा।

**प्रतिच्छेद** पुं० (सं) बाधा। रुकावट।

**प्रतिछाँई** स्त्री० (हि) प्रतिबिंब। परछाहीं।

**प्रतिछाँह** स्त्री० (हि) दे० 'प्रतिछाँह'।

**प्रतिछाँही** स्त्री० (हि) प्रतिबिंब। प्रतिछाया।

**प्रतिजिह्वा** स्त्री० (सं) गले के भीतर की घन्टी। कव्वा

**प्रतिजिह्विका** स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिजिह्वा'।

**प्रतिज्ञा** स्त्री० (सं) १-किसी काम को करने या न करने के विषय में वचनदान। २-शपथ। सौगंध।

३-अभियोग। दावा।
**प्रतिज्ञात** *वि०* (सं) जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो।
**प्रतिज्ञापत्र** पुं०(सं) १-वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो। इकरारनामा। शर्तनामा। २-प्रतिश्रुति पत्र। (कॉवेनेंट)।
**प्रतिज्ञापत्रक** पुं० (सं) दे० 'प्रतिज्ञापत्र'।
**प्रतिज्ञापत्र मुद्रा** स्त्री० (सं) वह पत्र या लेख जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि उधार ली हुई रकम का वह अमुक तिथि को भुगतान कर देगा। (प्रोमिसरी-नोट)।
**प्रतिज्ञापालन** पुं० (सं) प्रतिज्ञा पूरी करना।
**प्रतिज्ञाभंग** पुं० (सं) प्रतिज्ञा अथवा प्रण को भंग कर देना।
**प्रतितुलन** पुं० (सं) किसी एक ओर पड़े हुए भार का संतुलित करने या उसके प्रभाव को नष्ट करने वाला दूसरी ओर का भार। (कांउटर बेलेंस)।
**प्रतिदान** पुं० (सं) १-ली हुई वस्तु लौटाना। २-एक वस्तु लेकर दूसरी वस्तु देना। विनिमय। ३-धरोहर लौटाना।
**प्रतिदिन** अव्य० (सं) नित्य। हर रोज। (डेली)।
**प्रतिदेय** *वि०* (सं) जो बदलने या लौटाने योग्य हो। पुं० (सं) खरीदकर वापिस की गई वस्तु।
**प्रतिदेश** पुं० (सं) सीमा पर का देश।
**प्रतिद्वंद्व** पुं० (सं) दो समान व्यक्तियों का विरोध।
**प्रतिद्वंद्विता** स्त्री० (सं) बराबर वालों की लड़ाई। प्रतियोगिता। (कम्पिटीशन)।
**प्रतिद्वंद्वी** स्त्री०(सं) दो समान विरोधी व्यक्ति। मुकाबले का लड़ने वाला। शत्रु। प्रतिस्पर्धी। (कम्पिटीटर)।
**प्रतिध्वनन** पुं० (सं) ध्वनि का किसी वस्तु से टकरा कर प्रतिध्वनित होना। (इकोइंग)।
**प्रतिध्वनि** स्त्री० (सं) १-अपने उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई देने वाली ध्वनि। गूंज। प्रतिशब्द। (इको)।
**प्रतिध्वनित** *वि०* (सं) गूंजा हुआ।
**प्रतिनंदन** पुं० (सं) २-वह अभिनंदन जो आशीर्वाद देते हुए किया जाय। २-किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करने का संदेश। बधाई। (कोंग्रेचुलेशन)।
**प्रतिना** स्त्री० (हिं) दे० 'पूतना'।
**प्रतिनायक** पुं० (सं) नाटक अथवा काव्यों में मुख्य नायक का प्रतिद्वंद्वी नायक (विलियन)।
**प्रतिनाह** पुं० (सं) झंडा। निशान।
**प्रतिनियचन** पुं० (सं) किसी का दिया हुआ धन, शुल्क आदि अधिक या अनुचित होने पर उसे लौटाना या उसके खाते में जमा करना। (रिफंड)।
**प्रतिनिधान** पुं० (सं) १-किसी को अपना स्वत्व, अधिकार, कर्तव्य या काम आदि सौंपना। (डिलेगेशन)। २-वह प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों का दल जिनको कहीं किसी विशेष कार्य के लिए निमंत्रित किया जाय। (डेपुटेशन)।
**प्रतिनिधायन** पुं० (सं) १-कुछ लोगों को प्रतिनिधि रूप में कहीं भेजना (डेपुटेशन)। २-किसी विशेष कार्य के लिये कुछ लोगों को कहीं भेजना। (डेलिगेशन)।
**प्रतिनिधि** पुं० (सं) १-प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। ३-वह व्यक्ति जो किसी दूसरे के बदले में कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाय। (रिप्रेजेन्टेटिव)।
**प्रतिनिधिक मतदान** पुं० (सं) प्रतिनिधि रूप में मत या वोट देना। (प्रोक्सी वोटिंग)।
**प्रतिनिधित्व** पुं० (सं) प्रतिनिधि का भाव या कार्य।
**प्रतिनिधि-पत्र** पुं (सं) प्रतिनिधि के रूप में काम करने का अधिकार पत्र या मुख्तारनामा। (पावर ऑफ एटार्नी)।
**प्रतिनिनाद** पुं० (सं) प्रतिध्वनि। गूंज, निनाद या शब्द का टकराकर लौट आना। (रीवरबेशन)।
**प्रतिनियुक्त** *वि०* (सं) जिसे अधिकार सौंप कर किसी दूसरे कार्य विशेष के लिए दूसरे स्थान पर काम करने के लिए नियुक्त किया गया हो। (डेप्यूटेड)।
**प्रतिनियुक्ति** स्त्री० (सं) १-किसी स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को नियुक्त करने का कार्य। २-किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त करके कहीं भेजना। (डेप्यूटेशन)।
**प्रतिपक्ष** पुं० (सं) १-शत्रु। विद्रोही। २-दूसरे पक्ष का। ३-मुद्दई। प्रतिवादी। विरोधी। (डिफेंडेंट)।
**प्रतिपक्ष-नेता** पुं० (सं) विपक्षी पक्ष या दल का संसद या विधान सभा में नेता। (लीडर ऑफ दि ऑपोजीशन)।
**प्रतिपक्षी** पुं०(सं) १-विरोधी। शत्रु। (ऑपोजर)।
**प्रतिपच्छ** पुं० (हिं) दे० 'प्रतिपक्ष'।
**प्रतिपच्छी** पुं० (हिं) दे० 'प्रतिपक्षी'।
**प्रतिपत्ति** स्त्री (सं) १-उपलब्धि। प्राप्ति। २-अनुमान। ३-प्रतिपादन। ४-प्रमाणपूर्वक प्रदर्शन। ५-ज्ञान। ६-संवाद। ७-धाक। मान। ८-प्रवृत्ति। ९-निश्चय। १०-स्वीकृति। (एक्सेप्टेंस)
**प्रतिपत्रक** पुं० (सं) रसीद, बही, चैक बुक (धनादेश पुस्तक) आदि का वह कागज का टुकड़ा जिस पर दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि होती है और जो भेजने या देने वाले के पास ही रह जाता है। (काउंटर फॉइल)।
**प्रतिपत्री** पुं० (सं) दे० 'प्रतिपुरुष'। (प्रॉक्सी)।
**प्रतिपदा** अव्य० (सं) पगपग पर।
**प्रतिपदी** स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिपदा'।
**प्रतिपन्न** *वि०* (सं) १-प्राप्त। २-पूरा या आरम्भ किया

हुआ। ३-प्रमाणित। ४-शरणागत। ५-सम्मानित ६-अंगीकृत। (एक्सेप्टेड)।

प्रतिपरिवह् विपत्र पुं० (सं) वह हुंडियाँ जो (ब्रिटिश शासन काल में) लन्दन स्थित भारत मंत्री के नाम जारी की जाती थीं और उनका भुगतान विदेशों (इंगलैंड) में होना था। (रिवर्स काउंसिल बिल)।

प्रतिपरीक्षण पुं० (सं) न्यायालय में साक्षी का बयान हो चुकने के बाद उसकी सत्यता जानने के लिए या छिपाई हुई बात का पता लगाने के लिए उलटे-सीधे प्रश्न करना। (क्रास-एग्जामिनेशन)।

प्रतिपर्ण पुं० (सं) दे० 'प्रतिपत्रक'। (काउंटर फाइल)

प्रतिपादक पुं० (सं) १-प्रतिपत्र करने वाला। २-निष्पादन या निरूपण करने वाला। ३-निर्वाह करने वाला। ४-उत्पादन। ५-पूरा करने वाला। ६-देने वाला।

प्रतिपादन पुं० (सं) १-भली भांति समझना। प्रतिपत्ति। २-किसी बात का प्रमाण युक्त कथन। ३-प्रमाण। ४-पुरस्कार। ५-दान। ६-उत्पत्ति।

प्रतिपादित वि० (सं) १-जो भली भांति समझा दिया गया हो। २-निर्धारित। ३-प्रदत्त। ३-प्रमाणित।

प्रतिपाद्य वि० (सं) १-निरूपण करने योग्य। समझने योग्य। २-देने योग्य।

प्रतिपान पुं० (सं) १-जल। २-पीने का पानी। ३-पीना।

प्रतिपाप वि० (सं) बुराई का बदला बुराई से देने वाला। पुं० (सं) बुराई के बदले बुराई करना।

प्रतिपापी वि० (सं) दे० 'प्रतिपाप'।

प्रतिपार पुं० (हि) दे० 'प्रतिपाल'।

प्रतिपारना क्रि० (हि) १-रक्षा करना। २-पालन करना।

प्रतिपाल पुं० (सं) पालन या रक्षण करने वाला।

प्रतिपालक पुं० (सं) दे० 'प्रतिपाल'।

प्रतिपालक-अधिकरण पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जो अयोग्य तथा अल्पवयस्कों की संपत्ति आदि का निरीक्षण करता है। (कोर्ट ऑफ वार्ड्स)।

प्रतिपालन पुं० (सं) रक्षण करना। पालन करना।

प्रतिपालना क्रि० (हि) १-पालन करना। २-रक्षा करना।

प्रतिपालनीय वि० (सं) दे० 'प्रतिपाल्य'।

प्रतिपालित वि० (सं) १-पालन किया हुआ। २-रक्षित।

प्रतिपाल्य वि० (सं) १-पालन करने योग्य। रक्षा करने योग्य।

प्रतिपीडन पुं० (सं) १-पीड़ा पहुंचाना। कष्ट देना। २-संपत्ति आदि का अधिकार देकर वापिस ले लेना। ३-शत्रु द्वारा की गई हानि के बदले में उसे हानि पहुँचाना। (रिप्राइजल)।

प्रतिपुरुष पुं० (सं) १-आदमी का पुतला जिसे पहले चोर सेंध आदि पर यह जानने के लिए खड़ा करते थे कि घर में कोई जाग तो नहीं रहा है। २-किसी का स्थानापन्न होकर काम करनेवाला पुरुष (डेपुटी) ३-वह व्यक्ति जिसे किसी सभा में किसी के प्रतिनिधि रूप में कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो प्रतिनिधि। साथी। (प्रॉक्सी)।

प्रतिपुरुषपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति के बदले मतदान करने तथा कोई दूसरे कार्य करने का अधिकार दिया जाय। (प्रॉक्सी)।

प्रतिपुरुष पुं० (सं) दे० 'प्रतिपुरुष'।

प्रतिपूर्ति स्त्री० (सं) किसी व्यक्ति या खाते से लिया या निकला हुआ धन दुबारा देकर उसकी पूर्ति करना। (रिइम्बर्समेंट)।

प्रतिपोषक पुं० (सं) सहायता या मदद करने वाला सहकारी।

प्रतिप्रत्त वि० (सं) किसी के बदले में किया हुआ।

प्रतिप्रभा स्त्री० (सं) प्रतिबिंब। परछाईं।

प्रतिप्रहार पुं० (सं) मार पर मार। अनुरूप प्रहार।

प्रतिप्राप्ति स्त्री० (सं) खोई हुई या गई हुई वस्तु फिर से प्राप्त करना। (रिकवरी)।

प्रतिप्रेषण करना क्रि० (हि) १-कोई प्रार्थना पत्र या आवेदन पत्र आवश्यक कार्रवाई के लिए या स्वीकृति के लिए किसी उच्चाधिकारी के पास भेजना। २-कोई संशयात्मक या विवादास्पद विषय का संशय मिटाने के लिए किसी विशेषज्ञ को भेजना। (रेफर)।

प्रतिफल पुं० (सं) १-छाया। प्रतिबिंब। २-परिणाम। ३-बदले में मिली हुई वस्तु। (रिटर्न, कंसीडरेशन)

प्रतिफलक पुं० (सं) किसी वस्तु को प्रतिफलित करने का यन्त्र। (रिफ्लेक्टर)।

प्रतिफलन पुं० (सं) दे० 'प्रतिफल'।

प्रतिफलित वि० (सं) प्रतिबिंबित।

प्रतिबंध पुं० (सं) १-रुकावट। रोक। २-विघ्न। ३-बाधा। ४-किसी बात या कार्य के लिए लगाई गई शर्त। (कंडीशन)। ५-विदेशों को कोई माल निर्यात करने पर लगाई गई रोक। (एम्बार्गो)। ६-किसी अधिनियम आदि की धारा में या किसी प्रलेख आदि में पड़ने वाली कठिनाई से बचने के लिए बताया गया उपाय। परतुक। (प्रोविज़ो)। ७-प्रतिरोध।

प्रतिबंधक पुं० (सं) १-रोकने वाला। बाधा डालने वाला। वृक्ष। पेड़।

प्रतिबंधु पुं० (सं) वह जो बंधु के समान हो।

प्रतिबद्ध वि० (सं) १-बंधा हुआ। जिसमें कोई प्रतिबन्ध हो। २-नियन्त्रित। ३-जिसमें कोई बाधा डाली गई हो।

**प्रतिबाधित** वि० (सं) जिसे पहले से ही रोक दिया गया हो। (प्रीक्लूडेड)।
**प्रतिबाहु** पुं०(सं) १-बांह का अगला भाग। २-अक्रूर का एक भाई।
**प्रतिबिंब** पुं० (सं) १-परिच्छाया। परछाई। छाया (शेडो रिफलेक्शन)। २-मूर्ति। प्रतिमा। ३-चित्र। ४-दर्पण। शीशा।
**प्रतिबिंबक** पुं० (सं) १-प्रतिबिंबित होना। २-तुलना। ३-अनुगमन।
**प्रतिबिंबना** क्रि० (हि) प्रतिबिंबित होना।
**प्रतिबिंबवाद** पुं० (सं) वेदांत के अनुसार जीव को ईश्वर का प्रतिबिंब मानने का सिद्धान्त।
**प्रतिबिंबित** वि० (सं) १-जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो। २-दर्पण में प्रतिफलित।
**प्रतिबुद्ध** वि० (सं) १-जागा हुआ। २-प्रसिद्ध। ३-उन्नत।
**प्रतिबुद्धि** स्त्री० (सं) उलटी समझ या बुद्धि।
**प्रतिबोध** पुं० (सं) १-जागरण। जगाना। २-ज्ञान।
**प्रतिबोधक** वि० (सं) १-ज्ञान उत्पन्न कराने वाला। २-जगाने वाला। ३-शिक्षा देने वाला। ४-तिरस्कार करने वाला।
**प्रतिबोधन** पुं० (सं) १-जागरण। २-जागृति। ३-ज्ञानोत्पादन।
**प्रतिभट** पुं० (सं) १-बराबर का समान बलवान योद्धा। २-शत्रु। ३-प्रतिद्वंद्वी।
**प्रतिभा** स्त्री० (सं) १-बुद्धि। समझ। २-असाधारण मानसिक शक्ति। ३-बौद्धिक बल। ४-चमक। उज्ज्वलता।
**प्रतिभाग** पुं० (सं) १-प्राचीन काल में लगने वाला एक प्रकार का कर। २-वह शुल्क जो सरकार द्वारा मादक द्रव्य, दियासलाई, नमक कपड़ों आदि पर लगाया गया विशेष कर। (एक्साइज ड्यूटी)।
**प्रतिभाक्षय** पुं० (सं) दे० 'प्रतिमा-हानि'।
**प्रतिभात** वि० (सं) १-चमकीला। २-ज्ञात। ३-प्रतीत ४-जिसका प्रादुर्भाव हुआ।
**प्रतिभामुख** वि० (सं) १-कुशाग्र बुद्धि। २-प्रगल्भ।
**प्रतिभावन** पुं० (सं) एक ओर से दिखाई देने वाली किसी भावना, व्यवहार आदि के परिणामस्वरूप दूसरी ओर से दिखाई पड़ने वाली भावना, वृत्ति आदि। (रिस्पोंस)।
**प्रतिभावान** वि० (सं) जिसकी प्रतिभा हो। प्रतिभा-वाला।
**प्रतिभाव्य** वि० (सं) दे० 'प्रतिभूमोच्य'। (बेलेबल)।
**प्रतिभाशाली** वि०(सं) प्रतिभा वाला। जिसमें प्रतिभा हो।
**प्रतिभासंपन्न** वि० (सं) दे० 'प्रतिभाशाली'।
**प्रतिभास** पुं० (सं) १-प्रकाश। चमक। २-आकृति। धोखा। भ्रम।
**प्रतिभासन** पुं० (सं) १-चमकना। २-दिखाई देना।
**प्रतिभाहानि** स्त्री० (सं) १-प्रकाश या चमक का नाश। २-शक्ति का ह्रास।
**प्रतिभाहीन** स्त्री० (सं) प्रतिभा रहित। बुद्धि का अभाव
**प्रतिभू** पुं० (सं) किसी की जमानत करने वाला। जामिन। (सिक्योरिटी)।
**प्रतिभूति** स्त्री० (सं) वह धन जो प्रतिभू या जामिन ने जमानत के रूप में जमा किया हो। (सिक्यूरिटी-बेल)।
**प्रतिभूपत्र** पुं० (सं) जमानतनामा। वह पत्र जिसमें प्रतिभू अपने उत्तरदायित्व की लिखित स्वीकृति देता है। (बॉड आफ श्योरिटी)।
**प्रतिभूमोच्य** वि० (सं) (वह अपराध) जिसमें अपराध का निर्णय होने तक अपराधी को रिहा कर दिया जाता है। (बेलेबल)।
**प्रतिभेद** पुं० (सं) १-अन्तर। फर्क। २-आविष्कार। भेद खोलना।
**प्रतिभेदन** पुं० (सं) १-विभाग करना। २-खोलना। ३-चीरना। फाड़ना।
**प्रतिभोग** पुं० (सं) उपभोग।
**प्रतिभौ** पुं० (हि) शरीर का बल और तेज।
**प्रतिमंडल** पुं० (सं) १-सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का चारों ओर का मंडल या घेरा। परिवेश। २-प्रतिनिधियों का मंडल या दल।
**प्रतिमंत्रण** पुं० (सं) उत्तर देना। जवाब देना।
**प्रतिमंत्रित** वि० (सं) मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ।
**प्रतिम** वि० (सं) समान। सदृश।
**प्रतिमल्ल** पुं० (सं) १-बराबर का पहलवान। २-विरोध। शत्रुता।
**प्रतिमत** पुं० (सं) वह मत जो किसी दल को जिताने के अभिप्राय से दूसरे विरुद्ध दिया जाय। (काउंटर वोट)।
**प्रतिमा** स्त्री० (सं) १-किसी वास्तविक या कल्पित आधार पर बनाई हुई मूर्ति, चित्र आदि। २-मिट्टी या पत्थर की बनी देवमूर्ति। ३-प्रतिबिंब। छाया। ४-तौलने का बाट। ५-सादृश्य।
**प्रतिमागत** वि० (सं) जो चित्र या प्रतिमा में स्थित हो।
**प्रतिमान** पुं० (सं) १-प्रतिबिंब। परछांई। २-समानता। ३-उदाहरण। ४-हाथी का मस्तक। ५-मानदंड। मानक। (स्टैंडर्ड)। ६-वह वस्तु जो आदर्श के रूप में सामने रखी जाय। (मॉडल)। ७-किसी आदर्श को रख कर उसके अनुरूप बनाई हुई वस्तु। (मॉडल)। ८-(छपाई आदि में) छापे जाने लेखों आदि का वह नमूना जो छापने से पहले संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है (प्रूफ, प्रूफशीट)।

**प्रतिमापूजा** स्त्री० (सं) मूर्तिपूजा।
**प्रतिमुख** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का पिछला भाग। २-नाटक की पंच-सधियों में से एक।
**प्रतिमुद्रण** पुं० (सं) १-खुदे हुए लेख या आकृति आदि पर से उसकी उठी हुई छाप उठाने की क्रिया २-इस प्रकार से छापी हुई प्रति। (बैंक-सिमिलो)
**प्रतिमुद्रांकन** पुं० (सं) जिस पर पहले मुद्रांकन हो चुका हो उस पर बड़े अधिकारी की स्वीकृति सूचित करने के लिए उसकी लगाई हुई मोहर। (काउंटर-सील)।
**प्रतिमुद्रा** स्त्री० (सं) नामांकित मोहर की छाप।
**प्रतिमूर्ति** स्त्री०(सं) किसी के अनुरूप ज्यों की त्यों बनी हुई मूर्ति या चित्र। प्रतिमा।
**प्रतियोग** पुं०(सं) १-विरोधी पदार्थों का संयोग। २-शत्रुता। विरोध। ३-किसी पदार्थ के परिणाम को नष्ट करने वाली वस्तु।
**प्रतियोगिता** स्त्री० (सं) १-किसी कार्य में औरों से बढ़ने का प्रयत्न। २-ऐसा कार्य जिसमें अलग-अलग सफल होने का प्रयत्न करें। (कम्पिटीशन)।
**प्रतियोगिता परीक्षा** स्त्री० (सं) किसी काम या पद के लिए उम्मीदवारों की ली गई परीक्षा जो उनकी योग्यता जांचने के ली जाती है और इसमें उत्तीर्ण होने वाले चुन लिए जाते हैं।
**प्रतियोगी** पुं० (सं) १-शत्रु। विरोधी। २-बाधा डालने वाला। ३-सहायक। ४-बराबर वाला। वि० (सं) प्रतियोगिता करने वाला। मुकाबले का।
**प्रतियोध** पुं० (सं) प्रतिद्वंद्वी। मुकाबले में लड़ने वाला।
**प्रतियोधी** पुं० (सं) दे० 'प्रतियोध'।
**प्रतिरक्षण** पुं० (सं) रक्षा। हिफाजत।
**प्रतिरक्षा** स्त्री० (सं) किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा के निमित्त या अभियोग आदि का उत्तर देने के लिए किया जाने वाला कार्य या व्यवस्था। (डिफेंस)।
**प्रतिरक्षाव्यय** पुं० (सं) देश की प्रतिरक्षा के निमित्त किया जाने वाला व्यय। (डिफेंस एक्सपेंडीचर)।
**प्रतिरथ** पुं० (सं) बराबरी का लड़ने वाला। प्रति-योद्धा।
**प्रतिरव** पुं०(सं) १-प्रतिध्वनि। ३-झगड़ा। विवाद
**प्रतिरुद्ध** वि०(सं)१-अवरुद्ध। रुका हुआ। २-अटका हुआ। फंसा हुआ।
**प्रतिरूप** पुं० (सं) १-प्रतिमा। मूर्ति। २-चित्र। ३-प्रतिनिधि। ४-नमूना। (स्पेसीमन)। वि० (सं) कृत्रिम या बनावटी। नकली। (काउंटरफीट)।
**प्रतिरूपक** पुं०(सं) वह जो नकली या बनावटी वस्तुएं विशेषतः सिक्के नोट आदि बनाता हो। (काउंटर-फीटर)।
**प्रतिरोध** पुं०(सं) १-विरोध। २-बाधा। ३-तिरस्कार ३-प्रतिबिंब। ५-घेरा डालना।
**प्रतिरोधक** पुं०, वि० (सं) १-प्रतिरोध करने वाला। बाधा डालने वाला। २-चोर। डाकू।
**प्रतिरोधन** पुं०(सं) प्रतिरोध करने का भाव अथवा क्रिया।
**प्रतिरोधित** वि०(सं)१-जो रोका गया हो। २-जिसमें बाधा डाली गई हो।
**प्रतिरोपित** वि०(सं) जो (पौधा) दुबारा रोपा गया हो
**प्रतिलब्धि** स्त्री० (सं) किसी पहले खोई हुई या दी गई वस्तु का दुबारा प्राप्त होना। (रिकवरी)।
**प्रतिलिपि** स्त्री० (सं) किसी लेख आदि की ज्यों की त्यों की गई नकल। (कॉपी)।
**प्रतिलिपिक** पुं० (सं) किसी लेख आदि की प्रतिलिपि या नकल करने वाला। (कॉपीइस्ट)।
**प्रतिलिपित** वि० (सं) जिसकी प्रतिलिपि या नकल की गई हो। (कॉपीड)।
**प्रतिलिप्याधिकार** पुं० (सं) बिना ग्रन्थ या पुस्तक लेखक की अनुमति के पुस्तक न छापने का स्वत्व या अधिकार। मुद्रण अधिकार। प्रतिकास्वत्व। कॉपी राइट)।
**प्रतिलेखक** पुं० (सं) दे० 'प्रतिलिपिक'। (कॉपीइस्ट)।
**प्रतिलेखन** पुं० (सं) किसी लिखी हुई पुस्तक, पत्र आदि से कोई अंश ज्यों का त्यों उतार लेना या पुनः उसी तरह लिखना। (ट्रांसक्रिप्शन)।
**प्रतिलोम** वि० (सं) १-प्रतिकूल। विपरीत। २-उलटे क्रम वाला। विपरीत दिशा में जाने वाला। (कॉन-वर्स)। पुं० (सं) नीच या कमीना व्यक्ति।
**प्रतिलोम-विवाह** पुं० (सं) वह विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का पर कन्या उच्च वर्ण की हो।
**प्रतिवक्ता** पुं० (सं) १-उत्तर देने वाला। २-(कानून आदि की) व्याख्या करने वाला।
**प्रतिवचन** पुं० (सं) १-उत्तर। जवाब। २-प्रतिध्वनि
**प्रतिवनिता** स्त्री० (सं) सौत।
**प्रतिवर्त्तन** पुं० (सं) लौट आना। वापिस आना।
**प्रतिवर्ती** वि० (सं) जो मृत्यु के बाद प्राप्त हो। (लाभादि की रकम)। (रिवर्शनरी)।
**प्रतिवर्ती-अधिलाभांश** पुं० (सं) बीमा आदि से मिलने वाला वह अधिलाभांश (बोनस) जो मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी को मिल सके। (रिवर्शनरी बोनस)।
**प्रतिवस्तु** स्त्री० (सं) १-वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के बदले में दी जाय। २-समानान्तर। ३-उपमान।
**प्रतिवस्तूपमा** स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग-अलग वाक्यों में किया जाय।

**प्रतिवहन** पुं० (सं) विरुद्ध दिशा में ले जाना। उलटी ओर ले जाना।
**प्रतिवाक्य** पुं० (सं) १-प्रतिध्वनि। २-प्रत्युत्तर।
**प्रतिवाणी** स्त्री० (सं) प्रत्युत्तर।
**प्रतिवाद** पुं० (सं) १-किसी वाक्य या बात के खंडन करने के निमित्त या उसका विरोध करने के लिए कही हुई बात। २-विरोध। ३-जवाब। (कन्ट्राडिक्शन)।
**प्रतिवादिक** वि० (सं) १-जिसमें प्रतिवाद या खंडन हो। २-विरोधी। (कन्ट्राडिक्टरी)।
**प्रतिवादिता** स्त्री० (सं) प्रतिवाद का भाव।
**प्रतिवादी** पुं०(सं) १-प्रतिवाद या खंडन करने वाला २-वह जो किसी की बात में तर्क करे। ३-वादी की बात का उत्तर देने वाला व्यक्ति। प्रतिपक्षी। (डिफेंडेंट)।
**प्रतिवास** पुं० (सं) पड़ौस।
**प्रतिवासी** पुं० (सं) पड़ौसी। पड़ौस में रहने वाला।
**प्रतिविधि** स्त्री० (सं) प्रतिकार। (रेमेडी)।
**प्रतिवेदक** पुं० (सं) संवाददाता। (रपोर्टर)।
**प्रतिवेदन** पुं० (सं) १-किसी घटना अथवा कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो। किसी को दी जाने वाली सूचना। (रिपोर्ट)।
**प्रतिवेदित** वि० (सं) प्रतिवेदन किया हुआ। (रिपोर्टेड)।
**प्रतिवेदी** वि० (सं) जानने वाला। समझने वाला।
**प्रतिवेश** पुं० (सं) १-पड़ौस। २-आसपास की वस्तुएँ या परिस्थितियां। (एनवायरनमेंट)।
**प्रतिवेशी** पुं० (सं) पड़ौसी।
**प्रतिवेश्म** पुं० (सं) पड़ौस का मकान।
**प्रतिव्यक्ति-कर** पुं० (सं) प्रति व्यक्ति पर लगने वाला कर। (कैपिटेशन टैक्स)।
**प्रतिशत** अव्य० (सं) फीसदी। हर सौ पर। (परसेन्ट)
**प्रतिशतक** पुं० (सं) प्रतिशत के हिसाब से लगाया जाने वाला लेखा। (परसेन्टेज)।
**प्रतिशयन** पुं० (सं) धरना देना।
**प्रतिशयित** वि० (सं) धरना देने वाला। (व्यक्ति)।
**प्रतिशाप** पुं० (सं) फिर से शाप देना।
**प्रतिशासन** पुं० (सं) विरोधी या किसी दूसरे का शासन।
**प्रतिशिष्ट** वि० (सं) १-जिसका निराकरण किया गया हो। २-अस्वीकृत। ३-प्रसिद्ध।
**प्रतिशुल्क** पुं० (सं) विदेशों से आने वाले माल पर इस उद्देश्य से लगाया गया कर कि आयात माल या वस्तु स्वदेश में प्रस्तुत या निर्माण की गई वस्तु से सस्ता न बिके। (काउंटर वेलिंग ड्यूटी)।
**प्रतिशोध** पुं० (सं) बदला लेने की भावना से किया जाने वाला काम बदला। प्रतिकार। (रिवेंज)।
**प्रतिश्यान** पुं० (सं) सरदी। जुकाम।
**प्रतिश्याय** पुं० (सं) जुकाम। सरदी।
**प्रतिश्रयण** पुं० (सं) स्वीकृत। मंजूरी।
**प्रतिश्रवण** पुं०(सं) १-प्रतिज्ञाबद्ध होना। २-प्रतिज्ञा ३-सुनना।
**प्रतिश्रुत** वि०(सं) १-जिसे सुना गया हो। २-जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो।
**प्रतिश्रुति** स्त्री० (सं) १-प्रतिध्वनि। २-स्वीकृति। ३-प्रतिज्ञा। किसी बात के लिए दिया जाने वाला वचन। (प्रॉमिस)। ४-इस बात की जुम्मेदारी कि कोई वस्तु या बात ऐसी ही है जैसी कि बताई गई हो और इसी प्रकार रहेगी। (गारंटी)।
**प्रतिश्रुतिपत्र** पुं० (सं) १-वह पत्र या प्रलेख जिसमें किसी बात की प्रतिज्ञा की गई हो। (कॉवनेंट)। २-राज्य द्वारा चलाई गई वह हुंडी जिसका रुपया निर्धारित समय पर मिलता है। (प्रोमिसरी नोट)
**प्रतिषिद्ध** वि० (सं) १-निषिद्ध। वर्जित। २-देश से बाहर भेजने या आयात करने का निषेध। (कोन्ट्राबैंड)। ३-जिसका प्रतिषेध किया गया हो। (प्रोहिबिटेड)।
**प्रतिषेध** पुं० (सं) १-निषेध। २-खंडन। ३-एक अर्थालंकार जिसमें प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिसमें उसका कुछ विशेष अर्थ निकले। ४-किसी काम को करने की मनाही। (प्रोहिबीशन)।
**प्रतिषेधक** पुं० (सं) जो प्रतिषेध करे। (प्रोहिबिटर)। वि० (सं) जिसमें किसी के द्वारा किसी प्रकार का प्रतिशोध हो। (प्रोहिबिटरी)।
**प्रतिषेध लेख** पुं० (सं) किसी मुकदमे या मामले की कार्रवाई बन्द कर देने का उच्च-न्यायालय का लिखित आदेश। (रिट ऑफ प्रोहिबीशन)।
**प्रतिषेधाधिकार** पुं० (सं) १-किसी राष्ट्र के प्रधान या राष्ट्रपति का विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव को कार्यान्वित होने से रोकने का अधिकार। २-सुरक्षा परिषद द्वारा स्वीकृत किये हुए किसी प्रस्ताव को रोकने का पांच बड़े राष्ट्रों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा राष्ट्रवादी चीन) को प्रतिशोध अधिकार। (पावर आफ विटो)।
**प्रतिष्ठा** स्त्री (सं) १-स्थापना। अवस्थान। २-स्थान। जगह। ३-मान-मर्यादा। ४-देव प्रतिमा की स्थापना ५-आदर। सत्कार। ६-स्थिति। ठहराव। ७-पृथ्वी ८-शरीर। ९-आश्रय।
**प्रतिष्ठान** पुं० (सं) १-स्थापित या प्रतिष्ठित करना। २-पदवी। ३-स्थान। ४-जड़। मूल। ५-देवमूर्ति की स्थापना।
**प्रतिष्ठानपत्र** पुं० (सं) किसी व्यापारिक संस्था। र

सीमित समवाय का नाम, उद्देश्य आदि का ब्योरा देने वाला वह प्रलेख जो उसके संस्थापन के पहले सार्वजनिक रूप में प्रकाशित किया जाय तथा उसका विधिवत पंजीयन किया जाय। (मेमोरेण्डम ऑफ एसोसियेशन)।

**प्रतिष्ठापत्र** पुं॰ (सं) दे॰'मानपत्र'।

**प्रतिष्ठापन** पुं॰(सं) १-स्थापित करने का कार्य। २-किसी देवमूर्ति की स्थापना का काम।

**प्रतिष्ठापयिता** पुं॰ (सं) प्रतिष्ठापन करने वाला।

**प्रतिष्ठापित** वि॰ (सं) जिसका स्थापन किया गया हो। जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो।

**प्रतिष्ठित** वि॰ (सं) १-जिसकी प्रतिष्ठा हो। २-जिसकी स्थापना की गई हो। ३-इज्जतदार। ४-प्रसिद्ध। ५-पयुक्त।

**प्रतिष्ठिति** स्त्री॰ (सं) प्रतिष्ठान। स्थापित करने का भाव या क्रिया।

**प्रतिसंधि** स्त्री॰ (सं) १-ढूंढना। खोजना। २-वियोग

**प्रतिसंस्कार** पुं॰ (सं) टूटी फूटी वस्तुओं को फिर से ठीक करना। मरम्मत करना।

**प्रतिसंहरण** पुं॰ (सं) १-किसी विज्ञप्ति, आदेश आदि को रद्द करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)।

**प्रतिसंहार** पुं॰ (सं) १-त्यागना। २-समेट लेना।

**प्रतिसचिव** पुं॰ (सं) सचिव के स्थान पर उसकी उपस्थिति में काम करने वाला। (डिप्टी सेक्रेटरी)।

**प्रतिसम** वि॰ (सं) जो देखने में समान तथा सुन्दरता के विचार से जिसके अंगों में एकरूपता हो। (सिमिट्रिकल)। जो प्रतिसाम्य हो।

**प्रतिसर** पुं॰ (सं) १-नौकर। सेवक। २-सेना का पिछला भाग। ३-पुष्पहार। ४-प्रभात। ५-घाव का भरना या अच्छा होना। वि॰ (सं) परतंत्र। अधीन

**प्रतिसरकार** स्त्री॰ (हि) किसी देश की प्रतिष्ठित सरकार के विरोध में स्थापित सरकार जो उस सरकार के साथ-साथ कुछ भागों पर शासन करने का प्रयत्न करें। (पैरेलेल गवर्नमेंट)।

**प्रतिसरण** पुं॰ (सं) किसी के सहारे बैठने या विश्राम करने की क्रिया।

**प्रतिसव्य** वि॰ (सं) १-विरुद्ध आचरण करने वाला। २-प्रतिकूल।

**प्रतिसाम्य** पुं॰ (सं) किसी वस्तु, शरीर, या किसी रचना के आकार, बनावट, मान आदि के विभिन्न अंगों में अनुपात और सुन्दरता के विचार से होने वाली पारस्परिक समानता तथा एकरूपता। (सिमेट्री)

**प्रतिसारण** पुं॰ (सं) १-घाव के किनारों की सफाई तथा मलहम पट्टी करना। (ड्रेसिंग)। २-घाव में मल्हम लगाने का एक उपकरण।

**प्रतिसारित** वि॰ (सं) जिसकी मरहम पट्टी हो गई हो। (ड्रेस्ड)।

**प्रतिसेना** पुं॰ (सं) शत्रुपक्ष की सेना।

**प्रतिस्त्री** स्त्री॰ (सं) दूसरे की स्त्री।

**प्रतिस्थान** अव्य॰ (सं) हर जगह।

**प्रतिस्थापन** पुं॰ (सं) अपने स्थान से हटी हुई वस्तु को पुनः उसी स्थान पर रखना। (रिप्लेसमेंट)।

**प्रतिस्नेह** पुं॰ (सं) स्नेह या प्यार के बदले प्यार।

**प्रतिस्पंदन** पुं॰ (सं) हृदय की धकधक।

**प्रतिस्पर्द्धा** स्त्री॰ (सं) १-प्रतियोगिता। होड़। २-झगड़ा। (राइवेल्री)।

**प्रतिस्पर्द्धी** (पुं॰ (सं) १-होड़ करने वाला। प्रतिद्वन्द्वी। (राइवल)।

**प्रतिस्पर्धा** स्त्री॰ (सं) दे॰ 'प्रतिस्पर्द्धा'।

**प्रतिस्पर्धी** पुं॰ (सं) दे॰ 'प्रतिस्पर्द्धी'।

**प्रतिस्राव** पुं॰ (सं) एक नाक का रोग।

**प्रतिहंता** पुं॰ (सं) १-बाधक। रोकने वाला। २-मुकाबले में आकर मारने वाला।

**प्रतिहत** वि॰ (सं) १-भगाया हुआ। हटाया हुआ। २-अवरुद्ध। ३-निराश। ४-चोट खाया हुआ।

**प्रतिहनन** पुं॰ (सं) आघात के बदले में आघात करना

**प्रतिहरण** पुं॰ (सं) विनाश। बरबादी।

**प्रतिहर्ता** पुं॰ (सं) १-सोलह ऋत्विजों में से बारहवाँ। २-नाश करने वाला।

**प्रतिहस्त** पुं॰ (सं) १-प्रतिनिधि। २-काम चलाने के लिए किसी के बदले में कोई दूसरी वस्तु काम में लाने का कार्य। (सब्स्टीट्यूशन)।

**प्रतिहस्तक** पुं॰ (सं) दे॰ 'प्रतिहस्त'।

**प्रतिहस्ताक्षरित** वि॰ (सं) (वह प्रलेख आदि) जिस पर पहले किये गये हस्ताक्षरों के सामने किसी दूसरे ने साक्षीकरण के लिए हस्ताक्षर किये हों। (काउंटर-साइन्ड)।

**प्रतिहस्तापन** पुं॰ (सं) किसी कार्य चलाने के निमित्त एक वस्तु या आदमी के स्थान पर कोई दूसरा आदमी या वस्तु रखना। (सब्सटीट्यूशन)।

**प्रतिहार** पुं॰ (सं) १-दरबार। द्वारपाल। २-मायावी ऐन्द्रजालिक। ३-निवारण। ४-चोबदार। ५-सामवेद गान का एक अंग।

**प्रतिहारक** पुं॰ (सं) १-बाजीगर। २-वह जो प्रतिहार सामगान करता हो।

**प्रतिहार-भूमि** स्त्री॰ (सं) ड्योढ़ी।

**प्रतिहार-रक्षी** स्त्री॰(सं) द्वारपालिका।

**प्रतिहास** पुं॰ (सं) १-हँसी के बदले हँसी। २-कनेर

**प्रतिहिंसा** स्त्री॰ (सं) १-हिंसा जो किसी बैर चुकाने के लिए की जाय। २-बदला लेना।

**प्रतिहित** वि॰ (सं) १-स्थित। रखा हुआ। २-जमाया हुआ।

**प्रतीक** वि॰ (सं) १-विरुद्ध। प्रतिकूल। २-उल्टा। जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। ३-विलोम।

४-आधा। पुं० (सं) १-चिह्न। निशान। पता। २-अंग। ३-मुख। ४-रूप। आकृति। ५-किसी गद्य या पद्य के आदि से अन्त तक के कुछ शब्दों को लिख कर पूरे वाक्य या पद्य का पता लगाना। ६-प्रतिरूप। मूर्ति। ७-वह जो किसी समिष्ट के प्रतिनिधि के रूप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो। (सिम्बल)।

**प्रतीकार** पुं० (सं) दे० 'प्रतिकार'।

**प्रतीकन्यूनन** पुं० (सं) वह प्रस्ताव जो असन्तोष या विरोध प्रकट करने के लिए आय-व्यय की किसी मद में नाम मात्र की कमी करने के लिए रखा जाता है। (टोकन कट)।

**प्रतीकवाद** पुं० (सं) किसी वस्तु या विषय को केवल उसके प्रतीक रूप में देखने या वर्णन करने का सिद्धांत। (सिम्बोलिज्म)।

**प्रतीक्ष** वि० (सं) दे० 'प्रतीक्षक'।

**प्रतीक्षक** वि० (सं) १-आसरा देखने वाला। २-पूजने वाला।

**प्रतीक्षण** पुं० (सं) १-प्रतीक्षा करना। आसरा करना। २-कृपादृष्टि।

**प्रतीक्षा** स्त्री० (सं) आसरा। इन्तजार। प्रत्याशा।

**प्रतीक्षागृह** पुं० (सं) १-किसी उच्च-अधिकारी या बड़े आदमी का वह कमरा जहां बैठकर मिलने वाले उसकी प्रतीक्षा करते है। २-रेलगाड़ी, बस, वायुयान आदि के आने तक प्रतीक्षा करने वाले यात्रियों के बैठने का स्थान। (वेटिंग रूम)।

**प्रतीक्षालय** पुं० (सं) दे० 'प्रतीक्षागृह'।

**प्रतीघात** पुं० (सं) दे० 'प्रतिघात'।

**प्रतीची** स्त्री० (सं) पश्चिम दिशा।

**प्रतीचीन** वि० (सं) १-पश्चिमी। पाश्चात्य। २-जिसने मुँह फेर लिया हो। पराङ्मुख।

**प्रतीचीपति** पुं० (सं) वरुण।

**प्रतीच्य** वि० (सं) पश्चिम दिशा का।

**प्रतीत** वि० (सं) १-विदित। जाना हुआ। २-विख्यात ३-प्रसन्न।

**प्रतीति** स्त्री (सं) १-निश्चित विश्वास या धारणा। २-ख्याति। ३-आनन्द। ४-आदर। ५-लेन देन में माने जाने वाली वचन की प्रामाणिकता। (क्रेडिट.

**प्रतीप** पुं० (सं) १-आशा के प्रतिकूल-घटना या फल २-एक अर्थालंकार उपमेय को उपमान बना दिया जाय या उपमेय द्वारा उपमान के तिरस्कार का वर्णन किया जाय। वि० (सं) १-विरुद्ध। प्रतिकूल। २-विलोम। उलटा।

**प्रतीपग** वि० (सं) उलटा आचरण करने वाला।

**प्रतीपगति** स्त्री० (सं) प्रतिकूल या विरुद्ध गमन।

**प्रतीपगमन** पुं० (सं) दे० 'प्रतीपगति'।

**प्रतीगामी** वि० (सं) विरुद्ध आचरण करने वाला।

**प्रतीपोक्ति** स्त्री० (सं) किसी के वचन के विरुद्ध कथन खण्डन।

**प्रतीयमान** वि० (सं) ऊपर से दिखाई पड़ने या प्रतीत होने वाला। (एपेरेंट)। २-अर्थ या उद्देश्य के रूप में भासित होने वाला। (पर्पर्टेड)।

**प्रतीवेश** पुं० (सं) पड़ोस। प्रतिवेश।

**प्रतीवेशी** पुं० (सं) दे० 'प्रतिवेशी।

**प्रतीहार** पुं० (सं) दे० 'प्रतिहार'।

**प्रतीहारी** स्त्री० (सं) दे० 'प्रतिहारी'।

**प्रतोद** पुं० (सं) १-किसी को किसी काम के लिए उत्तेजित या विवश करना। २-कोड़ा। चाबुक। ३-अंकुश।

**प्रतोष** पुं० (सं) सन्तोष। तुष्टि।

**प्रतोषना** क्रि० (हि) समझाना। संतुष्ट करना।

**प्रत्न** वि० (सं) प्राचीन। पुरातन।

**प्रत्यंकन** पुं० (सं) किसी अंकित की हुई आकृति को ज्यों का त्यों पतला कागज आदि रख कर उतारना। (ट्रेसिंग)।

**प्रत्यंग** पुं० (सं) शरीर का कोई गौण अंग जैसे—नाक।

**प्रत्यंचा** स्त्री० (सं) धनुष की डोरी। चिल्ला।

**प्रत्यंत** वि० (सं) जो सन्निकट हो।

**प्रत्यक्ष** वि० (सं) १-आंखों के सामने वाला। २-जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो। पुं०(सं) चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है। (डायरेक्ट)। अव्य० (सं) सामने। आंखों के सामने।

**प्रत्यक्षता** स्त्री० (सं) प्रत्यक्ष होने का भाव।

**प्रत्यक्षज्ञान** पुं० (सं) इन्द्रियों के और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान।

**प्रत्यक्षदर्शन** पुं० (सं) वह जिसने किसी घटना या कार्य को संघटित होते हुए अपनी आंखों से देखा हो। (आई-विटनस)।

**प्रत्यक्षदर्शी** पुं० (सं) दे० 'प्रत्यक्षदर्शन'।

**प्रत्यक्षवाद** पुं० (सं) एक प्रकार की दार्शनिक प्रणाली जिसमें केवल प्रत्यक्ष या दृश्य बातों या तत्वों को प्रामाणिक माना जाता है। (पोजीटीविज्म)।

**प्रत्यक्षवादी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष ही प्रमाण माने। (पॉजिटिविस्ट)।

**प्रत्यक्षसिद्ध** वि० (सं) जिसकी सिद्धि के लिए केवल प्रत्यक्ष प्रमाण के अतिरिक्त किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो।

**प्रत्यक्षीकरण** पुं० (सं) किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करा देना।

**प्रत्यक्षीभूत** वि० (सं) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।

**प्रत्यनंतर** पुं० (सं) १-किसी के पश्चात उसके स्थान

पर बैठने वाला। उत्तराधिकारी।

**प्रत्यनीक** पुं० (सं) १-शत्रु। २-विरोधी। ३-प्रतिवादी। ४-विघ्न। बाधा। ५-एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहने वाले या संम्बन्धी के प्रति अहित का वर्णन किया जाय। वि० (सं) विरोधी विपक्षी

**प्रत्यपकार** पु० (सं) किसी के अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार।

**प्रत्यभिज्ञा** स्त्री० (सं) १-किसी की सहायता से उत्पन्न होने वाला ज्ञान। २-वह अभेद ज्ञान जिसमें ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक ही समझे जाते हैं। ३-पहचान। (आइडेन्टिफिकेशन)।

**प्रत्यभिज्ञात** वि० (सं) पहचाना हुआ।

**प्रत्यभिज्ञान** पुं० (सं) १-पहचान। २-समान देखी गई वस्तु को देखकर किसी वस्तु को पहचानना।

**प्रत्यभिदेश** पुं०(सं) जिसमें कुछ मानना चाहें उसका किसी और की ओर संकेत करना। (क्रॉस रेफरेंन्स)।

**प्रत्यभियोग** पुं० (सं) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर लगाये। (काउंटर एलीगेशन)।

**प्रत्यभिवाद** पुं० (सं) नमस्कार के बदले नमस्कार।

**प्रत्यभिवादन** पुं० (सं) दे० 'प्रत्यभिवाद'।

**प्रत्यमित्र** पुं० (सं) शत्रु। दुश्मन।

**प्रत्यय** पुं० (सं) १-विश्वास। प्रतीति। २-साख। एतबार। (क्रेडिट)। ३-विचार। ४-ज्ञान। ५-व्याख्या। ६-कारण। ७-आवश्यकता। ८-चिह्न। लक्षण। ९-प्रसिद्धि। १०-सम्मति। ११-सहायक। १२-विष्णु। १३-व्याकरण में वे अक्षर जो किसी मूल धातु या शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय। (सफिक्स)। १४-वह रीति जिससे छन्दों के भेद तथा उनकी संख्या जानी जाती है।

**प्रत्ययपत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें यह लिखा होता है कि इसे ले जाने वाले को अपने खाते में से इतनी रकम या ऋण दे दिया जाय। (लेटर ऑफ क्रेडिट)।

**प्रत्ययप्रतिभू** पुं० (सं) वह प्रतिभू या जमानता जो ऋण देनेवाले को ऋण लेनेवाले के बारे में विश्वास दिलाता है कि वह अच्छा आदमी है।

**प्रत्यर्पण** पुं०(सं) १-ली हुई वस्तु वापिस देना। २-किसी दूसरे देश से आये हुए अपराधी को उसी के देश को सौंप देना। (एक्स्ट्रेडीशन)। ३-जमानत के रूप में ली गई रकम या गलती से ली हुई रकम लौटाना। (रिफंड, रेस्टोरेशन)।

**प्रत्यर्पित** वि० (सं) फेरा हुआ। लौटाया हुआ।

**प्रत्यवाय** पुं० (सं) १-नित्यकर्म न करने से लगने वाला पाप। २-उलटफेर। ३-बाधा। ४-विरोध। ५-हानि। ६-निराशा।

**प्रत्यवेक्षण** पुं० (सं) १-किसी काम को भलीभांति देखना। २-किसी काम या वस्तु को किसी की देखभाल में रखना। (चार्ज)।

**प्रत्यवेक्षा** स्त्री०(सं) देखना भालना। निरीक्षण करना

**प्रत्यवेक्षाय** स्त्री० (सं) दे० 'प्रत्यवेक्षण'।

**प्रत्याक्रमण** पुं० (सं) किसी होने वाले आक्रमण को रोकने के लिए किया गया आक्रमण। जवाबी हमला (काउंटर अटैक)।

**प्रत्याख्यात** वि० (सं) १-जो अंगीकार न किया गया हो। अस्वीकृत। २-प्रसिद्ध।

**प्रत्याख्यान** पुं०(सं) १-खंडन। निराकरण। २-आदर पूर्वक लौटाना। ३-अमान्य करना। (प्रोटेस्ट)।

**प्रत्यागत** वि० (सं) लौट कर आया हुआ।

**प्रत्यागतासु** वि० (सं) जो फिर से जीवित हो गया हो

**प्रत्यागति** स्त्री० (सं) वापिस लौट आना।

**प्रत्यागम** पुं० (सं) लौट आना। दुबारा आना।

**प्रत्यागमन** पुं० (सं) दे० 'प्रत्यागम'।

**प्रत्याघात** पुं०(सं) आघात या चोट के बदले में चोट

**प्रत्यादान** पुं० (सं) देकर वापिस ले लेना।

**प्रत्यादिष्ट** वि० (सं) सावधान किया हुआ।

**प्रत्यादेश** पुं० (सं) १-खंडन। २-निराकरण। ३-चेतावनी।

**प्रत्यानयन** पुं० (सं) १-दूसरे के हाथ में गई वस्तु फिर से पाना। (रेस्टोरेशन)। २-फिर से लौटा दिया जाना। (रेस्टिट्यूशन)।

**प्रत्यापतन** पुं० (सं) किसी संपत्ति के उत्तराधिकारी के न होने पर उसका राज्य के अधिकार में आना (एस्चीट)।

**प्रत्याभूति** स्त्री० (सं) इस बात की जिम्मेदारी कि कोई बात सच्ची है और विश्वासनीय है। (गारंटी)

**प्रत्याय** पुं० (सं) कर। राजस्व। (टैक्स)। स्त्री० (सं) प्रतिफल। बदले में होने वाला लाभ। (रिटर्न)।

**प्रत्यायक** वि० (सं) १-सिद्ध करने वाला। समझाने वाला। २-विश्वास करने वाला। पुं० (सं) राज्यदूतों आदि को दिया गया वह प्रमाणपत्र जिसे दिखाकर वे दूसरे देशों में अपना पद और अधिकार प्राप्त करते हैं। (क्रिडेन्शल)।

**प्रत्यायुक्त** वि० (सं) जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ अधिकार दिया गया हो या उसे प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया हो। (डेलीगेटेड)।

**प्रत्यायोजन** पुं० (सं) अपने कर्तव्य, कार्य या शक्ति आदि किसी को सौंपना। (एक्ट ऑफ डेलीगेटिंग)।

**प्रत्यारंभ** पुं० (सं) १-फिर से आरम्भ करना। २-निषेध।

**प्रत्यारोप** पुं० (सं) किसी के आरोप के उत्तर में

आरोप। काउंटर चार्ज)।

**प्रत्यालोचन** पुं० (सं) किसी के किये गये व्यवहार, निर्णय या लेख को फिर से देखना कि वह ठीक है या नहीं। (रिव्यू)।

**प्रत्यावर्त्तन** पुं०(सं) लौटकर आना। वापिस आना।

**प्रत्यावेदन** पुं० (सं) किसी कथन या वक्तव्य के उत्तर या विरोध में कही गई बात। (काउंटर स्टेटमेंट)।

**प्रत्याशा** स्त्री० (सं) आशा। भरोसा।

**प्रत्याशा में** अव्य० (हि) किसी बात को होने से पहले मान लेने की स्थिति में। (इन एंटिसिपेशन)।

**प्रत्याशित** वि० (सं) आशा या भरोसा किए हुए। (एंटिसिपेटेड)।

**प्रत्याशित-उत्तराधिकारी** पुं० (सं) वह व्यक्ति जिस के उत्तराधिकारी बनने की आशा हो। (एयर एक्सपेक्टेंस)।

**प्रत्याहार** पुं० (सं) १-इन्द्रियनिग्रह। २-प्रतिकार। ३-पीछे हटाना। ४-किसी आदेश प्रस्ताव आदि को वापिस ले लेना। (विद ड्रॉअल)। ५-फिर से ग्रहण या आरम्भ करना। (रिजम्पशन)।

**प्रत्याहूत** वि० (सं) वापस बुलाया हुआ।

**प्रत्याहृत** वि० (सं) हटाया हुआ। पीछे खींचा हुआ।

**प्रत्याह्वयन** पुं० (सं) किसी पद या स्थान से विदेश गये हुए प्रतिनिधि आदि को वापस बुला लेना। (रिकॉल)।

**प्रत्युक्ति** स्त्री० (सं) जवाब। उत्तर।

**प्रत्युत** अव्य०(सं) बरन। बल्कि। इसके विरुद्ध। पुं० (सं) विपरीतता।

**प्रत्युत्तर** पुं० (सं) उत्तर मिल जाने पर दिया गया उत्तर। (रिजॉइंडर)।

**प्रत्युत्थान** पुं० (सं) किसी बड़े या सम्मानित व्यक्ति के आने पर सम्मान प्रदर्शन के लिये उठ खड़ा होना।

**प्रत्युत्पन्न** वि०(सं) १-जो ठीक समय पर सामने आये २-जो फिर से उत्पन्न हुआ हो।

**प्रत्युदाहरण** पुं०(सं) उदाहरण के विपरीत उदाहरण।

**प्रत्युपकार** पुं०(सं) उपकार के बदले में किया गया उपकार।

**प्रत्युपकारी** पुं०(सं) उपकार के बदले में उपकार करने वाला।

**प्रत्युपदेश** पुं० (सं) वह उपदेश जो किसी के उपदेश के बदले में दिया जाय।

**प्रत्युपभोग** पुं० (सं) सुख का उपभोग।

**प्रत्यूष** पुं० (सं) १ प्रभात। तड़का। २-सूर्य।

**प्रत्येक** वि० (सं) बहुतों में से हर एक। (एवरी)।

**प्रथन** पुं०(सं) १-प्रकाश में लाने की क्रिया या भाव। २-विस्तार।

**प्रथम** वि०(सं)१-गिनती में पहले आने वाला। पहला २-सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। ६-मुख्य। प्रधान।

**प्रथमकारक** पुं० (सं) (व्याकरण में) कर्त्ताकारक।

**प्रथमज** वि० (सं) १-जो पहले जनमा हो। २ बड़ा। श्रेष्ठ।

**प्रथमतः** अव्य० (सं) सबसे पहले। पहले-पहल।

**प्रथमदर्शन** पुं० (सं) पहले पहल देखना।

**प्रथमदृष्टितः** अव्य० (सं) पहले समय ही देखने पर (प्राइमाफेसिया)।

**प्रथमदृष्टिसिद्ध** वि० (सं) पहले समय देखने पर प्रमाणित जान पड़ने वाला (प्राइमाफेसी)।

**प्रथम पुरुष** पुं० (सं) वह जिसके बारे में कुछ कहा जाय।

**प्रथमा** स्त्री० (सं) १-व्याकरण में कर्त्ताकारक। २-मदिरा (तांत्रिक)।

**प्रथमाक्रमण** पुं०(सं)१-आक्रमण की पहल। २-आक्रमण का आरम्भ। (एग्रेशन)।

**प्रथमाक्रमणकर्ता** पुं० (सं) आक्रमण का आरम्भ करने वाला।(एग्रेसर)

**प्रथमाक्रमणकारी** पुं० (सं) दे० 'प्रथमाक्रमणकर्ता'।

**प्रथमार्द्ध** पुं० (सं) पूर्वार्द्ध।

**प्रथमर्घ** पुं०(सं) पूर्वार्द्ध।

**प्रथमाश्रम** पुं० (सं) ब्रह्मचर्याश्रम।

**प्रथमी** स्त्री० (हि) पृथ्वी।

**प्रथमेतर** वि० (सं) १-दूसरा। पहले के बाद का। २-भिन्न। दूसरा।

**प्रथमोपचार** पुं० (सं) किसी घायल या दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को चिकित्सक की सहायता प्राप्त होने से पहले किया गया उपचार। (फर्स्टएड)

**प्रथमोपचार-केंद्र** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ प्राथमिक उपचार किया जाता हो।

**प्रथा** स्त्री० (सं) १-रीति-रिवाज। प्रथा। प्रणाली। २-प्रसिद्धि।

**प्रथित** वि० (सं) १-प्रख्यात। प्रसिद्ध। २-विस्तृत। लम्बा-चौड़ा।

**प्रथी** स्त्री० (सं) दे० 'पृथ्वी'।

**प्रद** वि०(सं) दायक। देने वाला।

**प्रदक्षिण** पुं० (सं) १-परिक्रमा। २-योग्य।

**प्रदक्षिणा** स्त्री०(सं) परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

**प्रदग्ध** वि० (सं) जला हुआ।

**प्रदच्छिन** पुं० (हि) दे० 'प्रदक्षिणा'।

**प्रदत्त** वि० (सं) दिया हुआ

**प्रदर** पुं० (सं) १- एक रोग जिसमें स्त्रियों के गर्भाशय से लाल या सफेद पानी सा बहा करता है। २-दरार। ३-सेना का तितर बितर होना।

**प्रदर्शक** पुं० (सं) १-वह जो कोई वस्तु दिखलाये। २- गुरु। पैगंबर। प्रदर्शन करने वाला। (एक्जीबिटर)

प्रदर्शन पुं० (सं) १-दिखाने का कार्य। २-दे० 'प्रदर्शनी'। ३- असन्तोष प्रकट करने के लिए जलूस बनाकर जनता से सहानुभूति प्राप्त करने के लिए नारे लगाना। (डिमॉन्स्ट्रेशन)।

प्रदर्शनी स्त्री० (सं) अनेक प्रकार की वस्तुओं को दिखाने या बेचने के लिए एक स्थान पर रखना। २-वह स्थान जहाँ पर इस प्रकार की वस्तुएं रखी जायँ। नुमाइश। (एक्ज़ीबिशन)।

प्रदर्शिका स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान-विषयक सब बातों का वर्णन हो। (गाइड)।

प्रदर्शित वि० (सं) १- दिखलाया हुआ। २-प्रदर्शनी में रखा हुआ। (एक्ज़ीबिटेड)।

प्रदाता वि०(सं) देने वाला। दाता। पुं० (सं) १-बहुत बड़ा दानी। ३-इन्द्र। ४-दान में दिया जाने वाला धन।

प्रदान पुं० (सं) १-देने की क्रिया। २-दान। ३-विवाह। ४- अंकुश। ५-दिया जाने वाला धन (पेमेंट)। ६-सहायता आदि के लिये दिया जाने वाला या स्वीकृत धन। अनुदान। (ग्रांट)।

प्रदायक पुं० (सं) देने वाला।

प्रदायी पुं० (सं) दे० 'प्रदायक'।

प्रदाह पुं० (सं) १-ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होने वाली जलन। दाह। २-ध्वंस

प्रदिशा स्त्री० (सं) दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

प्रदिष्ट वि० (सं) १-आज्ञा दिया हुआ। दिखाया हुआ। २-जिसके सम्बन्ध में नियमादि के रूप में यह बताया गया हो कि यह किस प्रकार होना चाहिए। (प्रेस्क्राइब्ड)।

प्रदीप पुं० (सं) १-दीपक। प्रकाश। २-तीसरे पहर गाये जाने वाला एक राग। ३-वह जिससे प्रकाश हो।

प्रदीपक पुं० (सं) १-प्रकाश करने वाला। २-छोटा दीया। ३-स्पष्ट करने वाला।

प्रदीपति स्त्री० (हिं) दे० 'प्रदीप्ति'।

प्रदीपन पुं० (सं) १-उजाला या प्रकाश करना। २-उज्ज्वल करना। ३-उत्तेजित करना।

प्रदीपिका स्त्री० (सं) १-छोटी लालटेन। २-एक रागिनी। ३-बिजली की बत्ती। (इलेक्ट्रिक बल्ब) ४-अर्थ स्पष्ट करने वाली पुस्तिका।

प्रदीप्त वि० (सं) १-जलता हुआ। जगमगाता हुआ। २-प्रकाशित। ३-उज्ज्वल। चमकदार।

प्रदीप्ति स्त्री० (सं) १-रोशनी। प्रकाश। २-आभा। चमक।

प्रदुम्न पुं० (हि) दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदेय वि० (सं) देने योग्य। दान करने योग्य।

प्रदेश पुं० (सं) १-किसी देश का वह बड़ा भाग जिसके निवासियों की भाषा, रहन-सहन, शासन-पद्धति आदि एक हों। सूबा। प्रांत। (प्रॉविंस, स्टेट)। २-स्थान। ३-अंग। ४-छोटी बालिश्त। ५-नाम।

प्रदेशनी स्त्री०(सं) तर्जनी। अंगूठे के पास की उंगली।

प्रदेशिनी स्त्री० (सं) दे० 'प्रदेशनी'।

प्रदेशीय वि०(सं) प्रदेश सम्बन्धी। प्रदेश का।

प्रदोष पुं० (सं) १-संध्या के समय होने वाला अंधेरा। २-भारी दोष। ३-आर्थिक लाभ, स्वार्थ, पक्ष आदि के कारण लोगों का पतन। (करप्शन)।

प्रद्युम्न पुं० (सं) १-कामदेव। २-श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत पुं० (सं) १-किरण। रश्मि। आभा। दीप्ति

प्रद्योतन पुं० (सं) १-सूर्य। २-चमक। दीप्ति।

प्रधन पुं० (सं) युद्ध में लूट का माल।

प्रधान वि० (सं) १-मुख्य। सर्वोच्च। २-श्रेष्ठ। पुं० (सं) १-मुखिया। नेता। २-संसार का उपादान कारण। ३-बुद्धि। ४-ईश्वर। ५-सेनाध्यक्ष। ६-किसी संस्था का मुख्य अधिकारी। (चेयरमैन)।

प्रधान-कार्यालय पुं० (सं) किसी व्यापारी संस्था या सरकारी विभाग का मुख्य या केन्द्रीय कार्यालय। (हैड ऑफिस)।

प्रधानतः अव्य० (सं) मुख्य रूप से।

प्रधानमंत्री पुं० (सं) किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री केन्द्रिय मंत्रिमंडल के मंत्रियों में मुख्य मंत्री (प्राइम-मिनिस्टर)।

प्रधानता स्त्री० (सं) प्रधान होने का भाव।

प्रधान-सचिव पुं० (सं) किसी सरकारी विभाग को संभालने वाला मुख्य सचिव। (सेक्रेटरी जनरल, चीफ सेक्रेटरी)।

प्रधान सैन्यावास व्यवस्थापक पुं० (सं) सैनिकों के आवास, साजसज्जा, रसद आदि का प्रबन्ध करने वाले सेना के विभाग का प्रधान अधिकारी। प्रधान रसद व्यवस्थापक। (क्वाटर मास्टर जनरल)।

प्रधानाध्यापक पुं०(सं) किसी विद्यालय या पाठशाला का मुख्य अध्यापक। (हैड मास्टर)।

प्रधानामात्य पुं० (सं) महामात्य। प्रधान मंत्री।

प्रधानी स्त्री० (हि) प्रधान का पद।

प्रध्वंस पुं० (सं) १-नाश। विनाश। २-किसी पदार्थ की अतीत अवस्था। (सांख्यमत)।

प्रन पुं० (हि) दे० 'प्रण'।

प्रनत वि० (हि) दे० 'प्रणत'।

प्रनति स्त्री० (हि) दे० 'प्रणति'।

प्रनप्ता पुं० (सं) लड़के का लड़का।

प्रनमन पुं०(हि) दे० 'प्रणमन'।

प्रनमना क्रि० (हि) प्रणाम करना।

प्रनय पुं० (हि) दे० 'प्रणय'।

प्रनव पुं० (हि) दे० 'प्रणव'।

प्रनवना क्रि० (हिं) प्रणाम करना।
प्रनष्ट वि० (सं) १-नष्ट। बरबाद। २-अगोचर। जो दिखाई न दे।
प्रनाम पुं० (हिं) दे० 'प्रणाम'।
प्रनामी पुं० (हिं) वह जो प्रणाम करे। स्त्री० (हिं) प्रणाम करने के समय ब्राह्मण आदि के सम्मुख रखा जानेवाला धन या दक्षिणा।
प्रनिपात पुं० (हिं) दे० 'प्रणिपात'।
प्रपंच पुं० (सं) १-यह दुनिया और इसका जंजाल। २-संसार। सृष्टि। ३-एक से अनेक होने का क्रम। विस्तार। ४-झगड़ा। ५-आडम्बर। ढोंग। छल। धोखा।
प्रपंचक वि० (सं) फैलाने वाला।
प्रपंचबुद्धि वि- (सं) छली। धोखेबाज। कपटी।
प्रपंचित वि० (सं) १-ठगा हुआ। प्रपंच के जाल में फंसा हुआ। २-भटका हुआ। ३-छला हुआ।
प्रपंची वि० (सं) प्रपंच या ढोंग करने वाला। छली। कपटी।
प्रपंजी स्त्री० (सं) किसी व्यापारिक संस्था, बैंक आदि की वह मुख्य पंजी जिसमें लेने देने तथा आय-व्यय का पूरा ब्यौरा लिखा जाता है। (लेजर)।
प्रपंजीपृष्ठ पुं० (सं) प्रपंजी का वह पृष्ठ जिस पर माल का क्रय विक्रय का हिसाब लिखा जाता है। (लैजर फोलिओ)।
प्रपतित वि० (सं) नीचे गिरा हुआ। मृत।
प्रपत्र पुं० (सं) वह पत्र जिस पर कोष्ठक बने होते है और परीक्षा तथा किसी स्थान के लिए आवेदन पत्र आदि देने के काम आता है। (फॉर्म)।
प्रपथ पुं० (सं) चौड़ी सड़क या मार्ग।
प्रपात पुं० (सं) १-बहुत ऊँचा स्थान जहां से कोई वस्तु सीधी नीचे आकर गिरे। २-पर्वत से नीचे गिरने वाली जल धारा। झरना।
प्रपितामह पुं० (सं) १-दादा का पिता। परदादा। परब्रह्म।
प्रपितामही स्त्री० (सं) पिता की दादी। परदादी।
प्रपितृव्य पुं० (सं) परदादा का भाई।
प्रपीड़क पुं० (सं) बहुत कष्ट देने वाला।
प्रपुत्र पुं० (सं) पोता। लड़के का लड़का।
प्रपूरक वि० (सं) १-पूरा करने वाला। २-तृप्त करने वाला।
प्रपूरित वि० (सं) भरा हुआ। परिपूर्ण।
प्रपौत्र पुं० (सं) पड़पोता। पुत्र का पोता।
प्रपौत्री स्त्री० (सं) पड़पोती। पुत्र की पोती।
प्रफुलना क्रि० (हिं) खिलना।
प्रफुला स्त्री० (हिं) १-कुमुदिनी। २-कमल।
प्रफुलित वि० (हिं) १-खिला हुआ। २-आनंदित।
प्रफुल्ल वि० (सं) १-पूरा खिला हुआ। प्रस्फुटित। २-जिसमें फूल लगे हों। ३-खुला हुआ।
प्रफुल्लनयन वि० (सं) जिसकी आँखें प्रसन्नता के कारण फैली हुई हों।
प्रफुल्लनेत्र वि० (सं) दे० 'प्रफुल्लनयन'।
प्रफुल्लवदन वि० (सं) जिसका मुख प्रसन्न दिखाई देता हो।
प्रबंध पुं० (सं) १-किसी कार्य को भली प्रकार से करने की व्यवस्था। (इन्तज़ाम)। बन्दोबस्त। (मैनेजमेंट)। २-आयोजन। उपाय। ३-बांधने की डोरी आदि। ४-गद्य संबद्ध पद्यों में मिला हुआ ग्रन्थ। ५-बंधा हुआ क्रम या सिलसिला।
प्रबंधअभिकर्ता पुं० (सं) सीमित समवाय या व्यवसायिक संस्था का वह अभिकर्ता जो अन्य कारखानों आदि के प्रबन्ध आदि का काम देखता और बदले में निर्धारित पारिश्रमिक या वेतन लेता है। (मैनेजिंग एजेंट्स)।
प्रबंधक पुं० (सं) दे० 'प्रबंधकर्ता'।
प्रबंधकर्ता पुं० (सं) किसी कार्य को ठीक प्रकार से व्यवस्था करने वाला। (मैनेजर)।
प्रबंधकारिणी स्त्री० (सं) वह समिति जो किसी सभा, समाज के सब प्रबन्ध करती हो। (मैनेजिंग कमेटी)।
प्रबंधकाव्य पुं० (सं) वह काव्य जिसमें किसी घटना विशेष का क्रमबद्ध वर्णन किया गया हो।
प्रबंध संपादक पुं० (सं) वह सम्पादक जो समाचार-पत्र के कार्यालय के संपादकीय विभाग का प्रबन्ध करता है। (मैनेजिंग एडिटर)।
प्रबंध समिति स्त्री० (सं) किसी सभा या संस्था का प्रबन्ध करने वाली समिति। (मैनेजिंग कमेटी)।
प्रबल वि० (सं) १-बलवान। २-प्रचंड। उग्र। ३-घोर। भारी। महान।
प्रबल्हिका स्त्री० (सं) पहेली।
प्रबाल पुं० (हिं) १-मूंगा। विद्रुम। कोंपल। २-सितार या तंबूरे की लकड़ी।
प्रबालपद्म पुं० (हिं) लाल कमल।
प्रबालभस्म पुं० (हिं) मूंगे की भस्म।
प्रबास पुं० (हिं) दे० 'प्रवास'।
प्रबाह पुं० (हिं) दे० 'प्रवाह'।
प्रबाहु पुं० (सं) पहुँचा। हाथ का अगला भाग।
प्रबिसना क्रि० (हिं) घुसना। प्रवेश करना।
प्रबीन वि० (हिं) दे० 'प्रवीण'। स्त्री० (हिं) अच्छी वीणा।
प्रबीर वि० (हिं) दे० 'प्रवीर'।
प्रबुद्ध वि० (सं) १-जागा हुआ। २-होश में आया हुआ। ३-ज्ञानी।
प्रबोध पुं० (सं) १-जागना। नींद खुलना। २-यथार्थ ज्ञान। ३-दिलासा। ढारस। ४-चेतावनी। ५-तत्वज्ञान।

**प्रबोधक** वि० (सं) १-जगाने वाला। समझाने वाला २-सांत्वना देने वाला। चेताने वाला।
**प्रबोधन** पुं० (सं) १-जागरण। जगाना। २-ज्ञान देना। ३-विकसित करने का कार्य। ४-सांत्वना।
**प्रबोधना** क्रि० (हि) १-नींद से जगाना। २-सिखाना पाठ पढ़ाना। ३-सांत्वना देना। ४-ढारस देना।
**प्रबोधनी** स्त्री० (सं) दे० 'प्रबोधिनी'।
**प्रबोधिनी** स्त्री० (सं) १-कार्तिक शुक्ल एकादशी जिस दिन देव चार मास शयन कर जागते हैं। २-जवासा।
**प्रभंजन** पुं० (सं) १-अत्यधिक तोड़ फोड़। टुकड़े-टुकड़े कर डालना। २-पवन। वायु। आंधी।
**प्रभंजनसुत** पुं० (सं) हनुमान।
**प्रभव** पुं० (सं) १-निकास। उद्गमस्थल। २-जन्म। उत्पत्ति। ३-नदी का उद्गम स्थान। ४-उपादान-कारण। ५-शक्ति। पराक्रम। साठ संवत्सरों में से एक।
**प्रभविष्णु** वि० (सं) प्रभावशाली।
**प्रभा** स्त्री० (सं) १-आभा। दीप्ति। २-सूर्यबिंब। ३-सूर्य की एक पत्नी। ४-एक अप्सरा।
**प्रभाउ** पुं० (हि) दे० 'प्रभाव'।
**प्रभाग** पुं० (सं) भाग का भाग। भिन्न का भिन्न।
**प्रभाकर** पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-समुद्र। ४-अग्नि। ५-एक मीमांसादर्शनकार का नाम।
**प्रभाकीट** पुं० (सं) जुगनू। खद्योत।
**प्रभात** पुं० (सं) प्रातःकाल। सवेरा।
**प्रभातफेरी** स्त्री (सं) किसी उत्सव वाले दिन प्रातः गली मोहल्ले में उत्सव का प्रचार करते हुए जलूस बनाकर चक्कर लगाना।
**प्रभाती** स्त्री० (सं) प्रातःकाल गाया जाने वाला एक राग।
**प्रभामंडल** पुं० (सं) महात्माओं, देवताओं आदि के मुख के चारों ओर का दीप्ति मंडल जो चित्रों या मूर्तियों में देख पड़ता है।
**प्रभार** पुं० (सं) किसी कार्य या विभाग आदि की जुम्मेदारी। (चार्ज)।
**प्रभारी** वि० (सं) जिसके ऊपर किसी कार्य या विभाग आदि का उत्तरदायित्व हो। (इनचार्ज)।
**प्रभारी राजदूत** पुं० (सं) अस्थायी रूप से राजदूत के कार्य का भार संभालने वाला उप राजदूत। (चार्ज़ेड फेयर)।
**प्रभारी सदस्य** पुं० (सं) वह सदस्य जिस पर किसी कार्य का भार सौंपा गया हो। (मेम्बर इनचार्ज)।
**प्रभाव** पुं० (सं) १-किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया से होने वाला परिणाम। (एफेक्ट)। २-प्रादुर्भाव। ३-महात्म्य। ४-किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक, सम्मान आदि पर होने वाला परिणाम। (इन्फ्लुएन्स)। ५-अन्तःकरण को किसी एक ओर करने का गुण। ६-सूर्य के एक पुत्र का नाम।
**प्रभावकर** वि० (सं) प्रभाव डालने वाला। असर डालने वाला।
**प्रभाववान** वि० (सं) प्रतापी। शक्तिशाली।
**प्रभावशाली** वि० (सं) जिसका अधिक प्रभाव हो।
**प्रभावान्** वि० (सं) दीप्तियुक्त।
**प्रभावान्वित** वि० (सं) जिस पर प्रभाव पड़ा हो।
**प्रभावित** वि० (सं) प्रभावान्वित।
**प्रभास** पुं० (सं) १-आभा। चमक। २-एक वसु का नाम। ३-एक तीर्थ।
**प्रभासना** क्रि० (हि) प्रकाशित होना। दिखाई पड़ना।
**प्रभास्वर** वि० (सं) चमकीला। दीप्तियुक्त।
**प्रभिन्न** वि० (सं) १-अलग किया हुआ। विभक्त। २-अंगभंग किया हुआ। पुं० (सं) मतवाला हाथी।
**प्रभिन्नकरट** वि० (सं) (वह हाथी) जिसके फटे हुए कुंभिस्थल से तरल पदार्थ बह रहा है।
**प्रभीत** वि०(सं) अत्यधिक डरा हुआ। भयभीत।
**प्रभु** पुं० (सं) १-वह जो अनुग्रह या निग्रह करने में समर्थ हो। अधिपति। २-स्वामी। मालिक। ३-ईश्वर। ४-श्रेष्ठ पुरुष के लिए संबोधन। ५-शब्द। ६-पारा।
**प्रभुता** स्त्री० (सं) १-महत्व। बड़ाई। २-हुकूमत। शासनाधिकार। ३-वैभव।
**प्रभुताई** पुं० (हि) दे० 'प्रभुता'।
**प्रभुभक्त** वि० (सं) स्वामी भक्त। वफादार।
**प्रभुशक्ति** स्त्री० (सं) परम सत्ता। कोष और सेना की शक्ति।
**प्रभुसत्ता** स्त्री० (सं) पूर्ण सत्ता राज्य की वह सत्ता जिसके ऊपर और कोई सत्ता न हो। (सोवरेनटी)
**प्रभू** पुं० (हि) दे० 'प्रभु'।
**प्रभूत** वि० (सं) १-निकला हुआ। उत्पन्न। उद्गत। २-विपुल। अधिक। ३-उन्नत। ४-जो अच्छी प्रकार से हुआ हो। पुं० (सं) पंचभूत। तत्व।
**प्रभूति** स्त्री० (सं) १-निकास। उत्पत्ति। २-शक्ति। बल। ३-पर्याप्तता।
**प्रभृति** अव्य० (सं) इत्यादि। वगैरह।
**प्रभेद** पुं० (सं) १-भेद। भिन्नता। २-स्फोटन। फोड़कर निकालने की क्रिया।
**प्रभेदक** वि० (सं) विभाग करने वाला।
**प्रभेव** पुं० (हि) दे० 'प्रभेद'।
**प्रमंडल** पुं०(सं) १-पहिये का घुरा। २-प्रदेश का वह भाग जिसमें कई मंडल या जिले हों। (कमिश्नरी, डिवीजन)। ३-मिलकर व्यापार आदि करने के लिए बनाया गया समवाय। (कम्पनी)।
**प्रमग्न** वि० (सं) डूबा हुआ।
**प्रमत्त** वि० (सं) १-नशे में चूर। मस्त। २-पागल।

उन्मत्त । ३-असावधान । ४-जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो ।

**प्रमत्तचित्त** वि० (सं) असावधान । लापरवाह ।

**प्रमत्तता** स्त्री० (सं) १-मस्ती । २-पागलपन ।

**प्रमथ** पुं० (सं) १-घोड़ा । २-शिव का एक गण । ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

**प्रमथन** पुं० (सं) १-मथना । २-पीड़ित करना । ३-नष्ट करना ।

**प्रमथनाथ** पुं० (सं) शिव ।

**प्रमथपति** पुं० (सं) शिव ।

**प्रमथित** वि० (सं) १-पीड़ित । २-भली प्रकार मथा हुआ । पुं० (सं) मट्ठा जिसमें जलन हो ।

**प्रमद** पुं० (सं) १-मतवालापन । २-धतूरे का पौधा ३-हर्ष । आनन्द । ४-दान देने का एक ढंग । वि० (सं) मस्त । मतवाला ।

**प्रमदक** पुं० (सं) नास्तिक ।

**प्रमदकानन** पुं० (सं) वह उद्यान जहां राजा रानियों के साथ विहार के लिए जाता है । क्रीड़ोद्यान ।

**प्रमदवन** पुं० (सं) दे० 'प्रमदकानन' ।

**प्रमदा** स्त्री० (सं) सुन्दर युवती स्त्री ।

**प्रमदाकानन** पुं० (सं) दे० 'प्रमदकानन' ।

**प्रमदावन** पुं० (सं) दे० 'प्रमदकानन' ।

**प्रमर्दित** वि० (सं) नष्ट किया हुआ । रौंदा हुआ ।

**प्रमा** स्त्री० (सं) १-शुद्ध या यथार्थ ज्ञान । २-नाप तौल ।

**प्रमाण** पुं० (सं) १-वह कथन या तथ्य जिसमें कुछ सिद्ध हो । सबूत । (प्रूफ) । २-सत्यता । ३-निश्चय ४-मान । हद । ५-मूलधन । ६-प्रमाणपत्र । ७-एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का उल्लेख होता है । ८-वह बात जो दूसरी बात को सिद्ध करती हो । (एवीडेंस) । वि० (सं) १-सत्य २-प्रमाणित । ३-मान्य । ४-परिमाण में बराबर अव्य० (सं) अवधि या सीमा सूचक शब्द । पर्यन्त तक ।

**प्रमाणक** पुं० (सं) १-प्रमाणपत्र । (सर्टिफिकेट) । २ वह पुरजा जो उस पर लिए व्यय को खाते में ठीक प्रकार से चढ़ाये जाने का प्रमाण माना जाता है (वाउचर) ।

**प्रमाणकर्ता** पुं० (सं) वह जो कोई बात प्रमाणित करता हो । (सर्टिफायर) ।

**प्रमाणकोटि** स्त्री० (सं) बहस या वाद विवाद में वा युक्ति जो प्रमाणित स्वीकार की जाती है ।

**प्रमाणज्ञ** पुं० (सं) प्रमाणित या अप्रमाणित बात की परख या जांच करने वाला विशेषज्ञ या पंडित ।

**प्रमाणतः** अव्य० प्रमाण के अनुसार ।

**प्रमाणन** पुं० (सं) किसी लेख या बात का लिखकर प्रमाणित होना स्वीकार करना । (सर्टिफिकेशन)

**प्रमाणना** क्रि० (हि) दे० 'प्रमानना' ।

**प्रमाण-पत्र** पुं० (सं) वह लिखा हुआ लेख या पत्र जो किसी बात का प्रमाण हो । (टेस्टीमोनियल, सर्टिफिकेट) ।

**प्रमाणभूत** वि० (सं) जिसे किसी बात का प्रमाण माना जाय ।

**प्रमाणवचन** पुं० (सं) न्यायसंगत बात ।

**प्रमाणवाक्य** पुं० (सं) दे० 'प्रमाणवचन' ।

**प्रमाणशास्त्र** पुं० (सं) न्यायशास्त्र । तर्कशास्त्र । धर्मशास्त्र ।

**प्रमाणसूत्र** पुं० (सं) नापने का फीता ।

**प्रमाणिक** वि० (सं) १-जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो । २-मानने योग्य । ३-सत्य । ठीक । ४-ठीक या सत्य माना जाने वाला ।

**प्रमाणित** वि० (सं) प्रमाण द्वारा सिद्ध । निश्चित । साबित । (प्रूव्ड, एटेस्टेड, सर्टिफाइड) ।

**प्रमाणीकरण** पुं० (सं) यह लिखना कि अमुक लेख या बात ठीक और प्रमाण सिद्ध है । (सर्टिफिकेशन, अटैस्टेशन) ।

**प्रमाणीकृत** वि० (सं) जिसे प्रमाण रूप में स्वीकार किया गया हो ।

**प्रमाता** पुं० (सं) १-प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करने वाला । २-ज्ञान का कर्त्ता आत्मा । ३-द्रष्टा । साक्षी ।

**प्रमातामह** पुं० (सं) नाना का पिता । परनाना ।

**प्रमातामही** स्त्री० (सं) प्रमातामह की पत्नी । परनानी

**प्रमात्रा** स्त्री० (सं) १-परिमाण । राशि । २-कियत्ता । ३-विशेष मात्रा । ४-एक ही प्रकार भाग जो आवश्यक हों । (क्वांटम) ।

**प्रमाथ** पुं० (सं) १-अत्याचार । पीड़न । २-उत्त... ३-वध । ४-बलात्कार । ५-बलात् हरण ।

**प्रमाथी** वि० (सं) १-मथने वाला । २-दुखःदायी । ३-नाश करने वाला । पुं० (सं) १-राम की सेना का एक बन्दर । २-एक राक्षस ।

**प्रमाद** पुं० (सं) १-किसी कारण वश कुछ को कुछ समझना और कुछ का कुछ करना । २-भ्रम । भ्रांति । ३-अन्तःकरण की दुर्बलता । ४-भूलचूक । ५-नशा । उन्माद । गफलत । (नेग्लीजेंस) ।

**प्रमादवान्** वि० (सं) १-प्रमाद युक्त । २-बिना सोचे काम करने वाल । ३-पागल । मतवाला ।

**प्रमाविका** स्त्री० (सं) १-वह कन्या जिसे किसी दूषित कर दिया हो । २-लापरवाह स्त्री ।

**प्रमादी** वि० (सं) भूलचूक करने वाला । प्रमादयुक्त । पुं० (सं) पागल । बावला ।

**प्रमान** पुं० (हि) दे० 'प्रमाण' ।

**प्रमानना** क्रि० (हि) १-प्रमाण के रूप में मानना । सत्य मानना । २-साबित करना । ३-ठहराना ।

स्थिर करना।

**प्रमानी** *वि०* (हि) प्रमाण योग्य। मानने योग्य।

**प्रमाप** *स्त्री०* (सं) १-नापने या मापने की सुनिर्धारित या स्थिर की हुई तथा बहुमान्य नाप जिसके आधार पर अन्य मापों का निश्चय किया जाय। (स्टैंडर्ड)। २-योग्यता।

**प्रमापक** *पुं०* (सं) सिद्ध या प्रमाणित करने वाला। पुं० (सं) प्रमाण।

**प्रमार्जक** *वि०*(सं) १-साफ करने वाला। २-दूर करने या हटाने वाला।

**प्रमार्जन** *पुं०*(सं) १-धोना। साफ करना। २-भगड़ना। ३-हटाना।

**प्रमित** *वि०* (सं) १-परिमित। २-निश्चित। ३-अल्प ४-विदित। ५-प्रमाणित।

**प्रमिताक्षरा** *स्त्री०* (सं) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं जो क्रमशः इस प्रकार आते हैं, सगण, जगण और अन्त में दो जगण।

**प्रमीत** *वि०* (सं) १-मृत। मरा हुआ। २-यज्ञ के निमित्त मरा हुआ पशु। (डिकीज्ड)।

**प्रमीलन** *पुं०* (सं) निमीलन। आंखें मूंदना।

**प्रमीला** *स्त्री०* (सं) १-नींद। तंद्रा। २-थकावट। ३-शैथिल्य। ४-अर्जुन की एक स्त्री का नाम।

**प्रमीलित** *वि०* (सं) आंखें मूंदे हुए।

**प्रमुक्त** *वि०* (सं) १-छोड़ा या मुक्त किया हुआ। २-त्यागा हुआ।

**प्रमुक्ति** *स्त्री०* (सं) मोक्ष। निर्वाण।

**प्रमुख** *वि०* (सं) १-पहला। प्रथम। २-प्रधान। मुख्य ३-श्रेष्ठ। प्रतिष्ठित। पुं० (सं) दे० 'अध्यक्ष'। (स्पीकर)।

**प्रमुख-सभा** *स्त्री०* (सं) प्रख्यात या प्रमुख व्यक्तियों का सभा। (सीनेट)।

**प्रमुग्ध** *वि०* (सं) १-अचेत। बेहोश। २-अत्यन्त मनोहर। ३-हतबुद्धि।

**प्रमुदित** *वि०* (सं) हर्षित। आनन्दित। प्रसन्न।

**प्रमूढ़** १-मूर्ख। मूढ़। २-घबड़ाया हुआ। व्याकुल।

**प्रमृत** *वि०* (सं) मृत। मरा हुआ। पुं० (सं) सूखी या पाला मारी हुई खेती।

**प्रमेय** *वि०*(सं)१-जो सिद्ध करके हो। २-जो नापा जा सके। पुं० (सं) जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा कराया जा सके।

**प्रमेह** *पुं०* (सं) एक रोग जिसमें वीर्य तथा शरीर की अन्य धातुएं मूत्र मार्ग से निकलती हैं।

**प्रमेही** *वि०* (सं) प्रमेह का रोगी।

**प्रमोद** *पुं०* (सं) १- हर्ष। २-सुख। ३-वृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम।

**प्रमोद-कर** *पुं०* (सं) वह कर जो नाटक चलचित्र आदि मनोरंजन के लिए देखे जाने वाले तमाशों के टिकट के साथ लिया जाता है। (एन्टरटेनमेंट टैक्स)।

**प्रमोद-गोष्ठी** *स्त्री०* (सं०) मित्र मंडली के साथ किसी खुले स्थान पर मनोरंजन या खाने पीने का आयोजन करना। (पिकनिक पार्टी)।

**प्रमोदित** *वि०* (सं) प्रसन्न। हर्षित। पुं० (सं) कुबेर।

**प्रमोदी** *वि०* (सं) हर्षयुक्त। प्रसन्न।

**प्रमोह** *पुं०* (सं) १-मोह। मूर्छा।

**प्रमोहन** *पुं०* (सं) १-मोहित करना। २-एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु के लोगों को प्रमोह उत्पन्न हो जाता है।

**प्रमोहित** *वि०* (सं) स्तब्ध। घबराया हुआ।

**प्रयंक** *पुं०* (सं) दे० 'पर्यंक'।

**प्रयंत** *अव्य०* (सं) दे० 'पर्यंत'।

**प्रयत्न** *पुं०* (सं) १-अध्यवसाय। प्रयास। कोशिश। २-वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया। (व्या०)

**प्रयत्नवान** *वि०* (सं) प्रयत्न या चेष्टा में लगा हुआ।

**प्रयत्नशील** *वि०* (सं) प्रयत्न में लगा हुआ।

**प्रयाग** *पुं०* (सं) १-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो इलाहाबाद में गंगा और यमुना के संगम पर है।

**प्रयागवाल** *पुं०* (हि) प्रयाग का पंडा।

**प्रयाण** *पुं०* (सं) १-प्रस्थान। जाना। २-चढ़ाई। युद्ध यात्रा। ३-आरम्भ। ४-इस लोक को छोड़कर परलोक जाना। (डिपार्चर)।

**प्रयाणकाल** *पुं०* (सं) १-यात्रा करने का समय। २-मृत्यु का समय।

**प्रयाणपटह** *पुं०* (सं) युद्ध के समय सेना इकट्ठा करने के लिये बजाया हुआ डंका।

**प्रयान** *पुं०* (हि) दे० 'प्रयाग'।

**प्रयास** *पुं०* (सं) १-प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग। २-परिश्रम। ३-इच्छा।

**प्रयुक्त** *वि०* (सं) १-भली भाँति जोड़ा हुआ। २-सम्मिलित। ३-जिसका प्रयोग हो चुका हो। (यूज्ड) ४-प्रेरित किया हुआ।

**प्रयुक्त-संस्कार** *पुं०* (सं) साफ करके चमकाया हुआ (रत्नादि)।

**प्रयुत** *वि०* (सं) १-खूब मिला हुआ। २-मिलाजुला अस्पष्ट। ३-सहित। ४-दस लाख।

**प्रयोक्ता** *पुं०* (सं) १-प्रयोग करने वाला। २-नियोजित करने वाला। ३-ब्याज पर रुपया उधार देने वाला। महाजन। ४-अभिनयकर्त्ता। (नाटक)।

**प्रयोग** *पुं०*(सं) १-किसी कार्य में लगना। २-किसी वस्तु का काम में लाया जाना। व्यवहार। ३-किसी बात को समझने या जानने के निमित्त अथवा परीक्षा आदि के रूप में होने वाला कार्य। (एक्सपेरिमेंट)। ४-अभिनय करना। ५-रोग का उपचार। ६-अनुमान के पांच अंगों का उच्चारण। ७-धनवृद्धि

के लिए धन लगाना।
**प्रयोगज्ञ** *वि०* (सं) जिसे अभ्यास तथा अनुभव प्राप्त हो।
**प्रयोगतः** (अं) (सं) प्रयोग द्वारा। अनुसार। रूप में
**प्रयोगनिपुण** *वि०* (सं) 'प्रयोगज्ञ'।
**प्रयोगपत्र** पुं० (सं) बस या रेलगाड़ी में कुछ नियत समय तक यात्रा करने का अधिकार प्रदान करने वाला पत्र। (टिकट)।
**प्रयोगपत्र कार्यालय** पुं० (सं) बस, रेलगाड़ी आदि द्वारा यात्रा करने के लिए अधिकार पत्र जारी या बेचने का कार्यालय। टिकट घर। (बुकिंग ऑफिस)
**प्रयोगविधि** *स्त्री०* (सं) प्रयोगज्ञापक विधि। (मीमांसा)
**प्रयोगशाला** *स्त्री०* (सं) रसायन शाला। वह स्थान जहां पर किसी विषय का विशेषतः रसायनिक प्रयोग या जांच होती हो (लेबोरेटरी)।
**प्रयोगातिशय** पुं० (सं) नाटक में प्रस्तावना का भेद
**प्रतियोगार्थ** पु० (सं) मुख्य कार्य को फलीभूत करने के लिए किया गया गौण कार्य।
**प्रयोगार्ह** *वि०* (सं) जिसका प्रयोग किया जा सके।
**प्रयोगी** पुं० (सं) प्रयोग करने वाला।
**प्रयोजक** पुं० (सं) १-प्रयोग करने वाला। २-अनुष्ठान करने वाला। ३-प्रेरक। ४-व्यवस्था करने वाला। ५-ग्रन्थ लेखक।
**प्रयोजन** पुं० (सं) १-काम। कार्य। अर्थ। २-अभिप्राय। ३-उद्देश्य। ४-उपयोग।
**प्रयोजनवती लक्षणा** *स्त्री०*(सं) वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे।
**प्ररोचना** *स्त्री०* (सं) १-उत्तेजना। बढ़ावा। २-रुचि उत्पन्न करने की क्रिया। ३-नाटक की प्रस्तावना का एक अंग जिसमें आगे होने वाले दृश्य का रोचक वर्णन होता है।
**प्ररोधन** पुं० (सं) चढ़ाना। ऊपर उठाना।
**प्ररोह** पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना। जमना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर। कोंपल।
**प्ररोहण** पुं० (सं) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना। जमना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर।
**प्रलंब** *वि०* (सं) १-लम्बा। २-नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। ३-शिथिल। सुस्त। ४-टंगा हुआ। ५-निकला हुआ। पुं०(सं) १-लटकाव। २-झुकाव। ३-टहनी। शाखा। ४-गले में पड़ी हुई फूल माला। ५-स्त्री के कुच। स्तन।
**प्रलंबन** पुं० (सं) लटकाव। झुकाव। (सस्पैंशन)
**प्रलंब बाहु** *वि०* (सं) जिसकी बाहें बहुत लम्बी हों।
**प्रलंबित** *वि०* (सं) खूब नीचे तक लटकाया हुआ। (एक्सटेंडेड)
**प्रलंबी** *वि०* (सं) १-दूर तक लटकाने वाला, लम्बा। २-सहारा लेने वाला।
**प्रलपन** पु० (सं) १-कहना। कथन। २-ऊटपटांग बकना।
**प्रलयंकर** *वि०* (सं) प्रलय के समान नाशकारी।
**प्रलय** पुं० (सं) १-लय को प्राप्त होना। नाश। २-मृत्यु। विनाश। ३-साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने पर स्मृति नष्ट हो जाती है। ४-अचेतनता। मूर्च्छा। ५-सृष्टि का सर्वनाश।
**प्रलयकर** *वि०* (सं) दे० 'प्रलयंकर'।
**प्रलयकारी** *वि०* (सं) दे० 'प्रलयंकर'।
**प्रलयकाल** पु० (सं) संसार के विनाश का समय।
**प्रलय जलधर** पुं० (सं) प्रलय के समय के बादल।
**प्रलाप** पुं० (सं) अनाप-शनाप बातचीत। व्यर्थ की बकवाद।
**प्रलापक** पुं० (सं) सन्निपात रोग जिसमें रोगी अंड-बंड बोलता है।
**प्रलापी** *वि०* (सं) प्रलाप करने वाला।
**प्रलाभी** *वि०* (सं) १-जिसे करने से अत्यधिक लाभ हो। पद या कार्य। २-लाभदायक। (ल्यूक्रिएटिव)
**प्रलिप्त** *वि०* (सं) चिपटा हुआ, लिपटा हुआ। लिप्त।
**प्रलीन** *वि०* (सं) १-तिरोहित। समाया हुआ। २-चेष्टा रहित। जड़वत।
**प्रलीनता** *स्त्री०* (सं) १-विलीनता। नाश। २-प्रलय। ३-जड़त्व।
**प्रलुब्ध** *वि०* (सं) लालची। जो लालच करता हो। लोभी।
**प्रलुब्धा** *वि०* (सं) (वह स्त्री) जिसे किसी पर-पुरुष से प्रेम हो गया हो।
**प्रलून** *वि०* (सं) टुकड़े किया हुआ। पुं० (सं) एक प्रकार का कीड़ा।
**प्रलेख** पुं० (सं) किसी प्रामाणिक बात या कानूनी दृष्टि से किसी पक्ष या मामले के समर्थन में उपस्थित किए जाने वाला लेख या लिखित पत्र। (डोक्यूमेंट, डीड)
**प्रलेखीय चलचित्र** पुं० (सं) वह चलचित्र जिसमें किसी देश के पुरातत्व, औद्योगिक प्रगति, महत्वपूर्ण घटना आदि का चित्रण किया गया हो। (डोक्युमेंटरी फिल्म)
**प्रलेप** पुं० (सं) लेप। उबटन। मलहम।
**प्रलेपक** पुं० (सं) १-लेप करने वाला। २-एक प्रकार का मन्द ज्वर।
**प्रलेपन** पुं० (सं) लेप लगाने या करने काम।
**प्रलोठन** पुं० (सं) जमीन पर लोटना पोटना।
**प्रलोप** पुं० (सं) विलय। नाश।
**प्रलोभ** पुं० (सं) लालच। अत्यधिक लोभ।
**प्रलोभक** *वि०* (सं) प्रलोभन या लालच देने वाला।

**प्रलोभन** पुं० (सं) १-लोभ या लालच देना। २-वह काम या बात जो किसी को लुभा कर अपनी ओर आकर्षित करने के लिये की गई हो। (एल्योरमेंट टेम्प्टेशन)
**प्रलोभित** वि० (सं) मुग्ध। ललचाया हुआ। मोहित।
**प्रलोभी** वि० (हिं) लोभ में फँसने वाला। लुब्ध।
**प्रवंचक** पुं० (सं) धोखेबाज़। धूर्त। बहुत बड़ा ठग।
**प्रवंचन** पुं० (सं) धोखा देना। ठगना।
**प्रवंचना** पुं० (सं) धूर्तता। ठगी। धोखेबाजी।
**प्रवंचित** वि० (सं) जो ठगा गया हो।
**प्रवक्ता** पुं० (सं) १-अच्छी प्रकार बोलने या कहने वाला। २-वेदादि का उपदेश करने वाला। ३-किसी संस्था या विभाग की ओर से उसकी नीति या बात अधिकृत रूप से कहने वाला (स्पोक्समैन)
**प्रवचन** (पुं० (सं) १-भली भाँति खोलकर समझा कर कहना। अर्थ खोलकर समझाना। २-धार्मिक या नैतिक बातों की कीजाने वाली व्याख्या।
**प्रवण** पुं० (सं) १-भूमि का ढाल या उतार। २-पहाड़ का किनारा। ३-चौराहा। वि० (सं) १-ढलवाँ। २-झुका हुआ। ३-रत। प्रवृत्त। ४-नम्र। ५-तत्पर। उत्सुक। ६-अनुकूल। ७-उदार। ८-निपुण। ६-लम्बा।
**प्रवणता** स्त्री० (सं) प्रवण होने का भाव।
**प्रवत्स्यत्पतिका** स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो।
**प्रवत्स्यत्प्रेयसी** स्त्री० (सं) प्रवत्स्यत्पतिका।
**प्रवत्स्यद्भर्तृका** स्त्री० (सं) प्रवत्स्यत्पतिका।
**प्रवर** वि० (सं) १-प्रधान। मुख्य। २-श्रेष्ठ। ३-योग्यता में अधिक। (सुपीरियर)। पुं० (सं) १-गोत्र प्रवर्तक ऋषि। २-सेनापति। ३-किसी विषय का विशेषज्ञ। (एक्सपर्ट)।
**प्रवरसमिति** स्त्री० (सं) चुने हुए विशेषज्ञों की एक विशेष समिति जो किसी विषय की छानबीन करने के लिये बनाई गई हो। (सेलैक्ट कमिटी।
**प्रवर-स्थापना** पुं०(सं) किसी कार्यालय या विभाग में काम करने वाले प्रवर कर्मचारी। (सुपीरियर स्टाफ)।
**प्रवर्ग** पुं० (सं) कई वर्गों, श्रेणियों या भागों में से एक। (केटेगरी)।
**प्रवर्तक** पुं०(सं) १-सञ्चालक। आरम्भ करने वाला। प्रचलित करने वाला। २-किसी को किसी कार्य (विशेषतः अनुचित) में लगाने या उसकी सहायता करने वाला। (अबेटर) ३-किसी नवीन बात को निकालने या चलाने वाला। (ओरिजीनेटर)। ४-पंच। ५-रंग-मंच में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें पात्र वर्तमान समय के वर्णन की चर्चा करता हुआ रंग-मंच पर आता है।
**प्रवर्तन** पुं० (सं) १-कार्य का आरम्भ करना। २-प्रचलित करना। ३-प्रवृत्ति। ४-कार्य संचालन। ५-किसी अनुचित बात के लिए उकसाना। (अबेटमेण्ट)।
**प्रवर्तित** वि० (सं) १-आरम्भ किया हुआ। २-निकाला हुआ। ३-उत्तेजित। ४-प्रेरित।
**प्रवर्द्धन** पुं० (स) वृद्धि। बढ़ती।
**प्रवर्धन** पुं० (सं) दे० 'प्रवर्द्धन'।
**प्रवर्षण** पुं० (सं) १-प्रथम वृष्टि। वृष्टि। २-किष्किंधा के पास के एक पर्वत का नाम।
**प्रवह** पुं०.(सं) १-तेज बहाव। २-सात वायुओं में से एक। ३-घर नगर आदि से बाहर निकलना।
**प्रवहमान** वि० (सं) तेज बहने वाला। प्रवाहशील।
**प्रवात** पुं०(सं)१-हवा का झोंका। २-अंधड़। आंधी। ३-हवादार स्थान। ४-ढाल। उतार। वि० (स) हवा में हिलता हुआ।
**प्रवाद** पुं० (सं) १-बातचीत। २-जनश्रुति। अफवाह (रयूमर)। ३-अपवाद। ४-किसी को दी जाने वाली सूचना। (रिपोर्ट)।
**प्रवादक** पुं० (स) वाद्य-यन्त्र बजाने वाला (सङ्गीत)।
**प्रवादी** पुं० (स) प्रवाद करने वाला।
**प्रवान** पुं० (हिं) दे० 'प्रमाण'।
**प्रवारण** पुं० (सं) १-निषेध। विरोध। २-इच्छापूर्ण करना। महादान।
**प्रवाल** पुं० (सं) दे० 'प्रवाल'।
**प्रवास** पुं० (सं) १-स्वदेश छोड़कर दूसरे देश में जा बसना। २-विदेश। ३-यात्रा।
**प्रवासगत** वि० (सं) विदेश गया हुआ।
**प्रवासन** पुं० (सं) १-विदेश वास। २-घर से बाहर निकालना। देशनिकाला। २-वध। हत्या।
**प्रवासस्थ** वि० (सं) दे० 'प्रवासगत'।
**प्रवासस्थित** वि० (सं) दे० 'प्रवासगत'।
**प्रवासी** वि० (स) विदेश में रहने वाला।
**प्रवाह** पुं० (सं) १-जल का बहाव। २-बहता हुआ जल। धारा। ३-काम का चलना या जारी रहना। ४-चलता हुआ क्रम। प्रवृत्ति। ५-झुकाव। ६-व्यवहार।
**प्रवाहक** पुं०(स) १-अच्छी तरह ले जाने वाला। २-प्रेत। पिशाच।
**प्रवाहमान** वि० (सं) अधिक प्रवाह वाला।
**प्रवाहमान ईक्षण** पुं० (सं) नदी के प्रवाह को नापना (स्ट्रीम गेजिंग ऑबज़र्वेशन)।
**प्रवाहिका** स्त्री० (सं) १-बहने वाली। २-दस्तों का रोग।
**प्रवाहित** वि० (सं) १-बहता हुआ। २-ढोया हुआ।
**प्रवाहिनी** स्त्री० (सं) नदी।
**प्रवाही** वि० (सं) १-बहाने वाला। २-बहने वाला। ३-तरल। द्रव।

**प्रविधि** स्त्री० (सं) किसी विशेष (कलात्मक) कार्य को करने का विशेष तरीका या कौशल। (टैक्नीक)

**प्रविध्वस्त** वि० (सं) फेंका हुआ।

**प्रविलंब करना** क्रि० (हि) दण्ड देने की कार्रवाई में विलंब करना। (रिप्रीव)।

**प्रविष्ट** वि० (सं) घुसा हुआ। भीतर बैठा हुआ।

**प्रविष्टक** पु० (सं) रंग-भूमि का द्वार।

**प्रविष्ट रोगी** पुं० (सं) वह रोगी जिसका चिकित्सालय में ही भरती करके इलाज किया जाय। (इनडोर-पेशेंट)।

**प्रविष्टि** स्त्री० (सं) १-पुस्तक या खाते में लिखने या चढ़ाने की क्रिया। २-वह चीज जो खाते या वही में चढ़ा ली गई हो। (एन्ट्री)।

**प्रविसना** क्रि० (हि) घुसना। बैठना।

**प्रवीण** वि० (सं) किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण कुशल (प्रोफिशेंयट)।

**प्रवीणता** स्त्री० (सं) निपुणता। चतुराई। दक्षता।

**प्रवीण श्रम** पुं० (सं) वह श्रमिक जो अपने कार्य में निपुण हो। (स्किल्ड लेबर)।

**प्रवीन** वि० (हि) दे० 'प्रवीण'। स्त्री० (हि) अच्छी वीणा।

**प्रवीर** वि० (सं) सुभट। महान योद्धा।

**प्रवृत्त** वि० (सं) १-किसी बात की ओर झुका हुआ। रत। तत्पर। २-प्रस्तुत। उद्यत। ३-उत्पन्न।

**प्रवृत्ति** स्त्री० (सं) १-बहाव। प्रवाह। २-मन का किसी ओर होने वाला झुकाव। लगन। (टेन्डेन्सी) ३-संसार के धन्धों में लीन होना। ४-न्याय में एक प्रकार का यत्न। ५-उत्पत्ति का आरम्भ।

**प्रवृत्तिमार्ग** पुं० (सं) दुनिया के झंझटों में फंसे रहना।

**प्रवृद्ध** वि० (सं) १-पूरा बढ़ा हुआ। वृद्धियुक्त। २-फैला हुआ। विस्तारित। ३-प्रौढ़। ४-उग्र।

**प्रवेग** पुं० (सं) १-अत्यधिक वेग। (टेम्पो)। २-काम करने की तीव्र गति। ३-किसी वस्तु आदि की तीव्र गति से आगे बढ़ने की रफ्तार। (वैलोसिटी)।

**प्रवेणि** स्त्री० (सं) १-बालों का जूड़ा या वेणी। केश-विन्यास। २-हाथी की झूल। ३-जल प्रवाह। ४-रङ्गीन ऊनी कपड़े का थान।

**प्रवेणी** स्त्री० (सं) दे० 'प्रवेणि'।

**प्रवेश** पुं० (सं) १-भीतर जाना। घुसना। २-किसी विषय की जानकारी। ३-गति। रसाई। पहुँच। ४-किसी वर्ग, क्षेत्र, कक्षा आदि में विशिष्ट नियम पालन करते पहुंचना या लिया जाना। (एड्मीशन) ५-द्वार।

**प्रवेशक** पुं० (सं) १-प्रवेश करने वाला। २-नाटक का वह स्थल जहां अभिनेता दो अंकों के बीच की घटना संवाद द्वारा देता है।

**प्रवेशद्वार** पुं०(सं) १-भीतर जाने का मार्ग या रास्ता (एन्ट्रेंस)। २-वह छोटा या बड़ा छिद्र जिसमें से होकर कोई वस्तु प्रवेश करे। (इन्ग्रेस, इनलेट)।

**प्रवेशन** पुं०(सं) १-भीतर जाना। २-घुसना। बैठना ३-सिंहद्वार। ४-समायोजन।

**प्रवेशना** क्रि० (हि) प्रवेश करना या कराना।

**प्रवेश-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसके द्वारा किसी विशेष स्थान पर जाने का अधिकार प्राप्त हो। (टिकट, पास)।

**प्रवेश-परिषद्** पुं० (सं) वह परिषद् जो किसी संस्था, या शिक्षालय कार्यालय आदि में काम सीखने वालों को छांटती है। (एड्मीशन बोर्ड)।

**प्रवेशारोधन** पुं०(सं) धरना। अपनी मांगे पूरी कराने के लिए दुकान, कार्यालय आदि के सामने धरना देना जिससे काम में बाधा पड़े। (पिकेटिंग)।

**प्रवेश-शुल्क** पुं० (सं) १-किसी संस्था में सम्मिलित होने या पहले नाम लिखाने के समय दिये जाने वाला शुल्क। (एडमीशन फी)। २-किसी स्थान में प्रवेश करते समय दिया जाने वाला शुल्क। (एन्ट्रेन्स-फी)।

**प्रवेशिका** स्त्री० (सं) १-प्रवेश-पत्र। २-प्रवेश-शुल्क। ३-किसी विषय की पहली पुस्तक। (प्राइमर)।

**प्रवेशिका-परीक्षा** स्त्री० (सं) उच्च शिक्षालय में प्रवेश करने से पहले दी जाने वाली परीक्षा। (एन्ट्रेन्स-एक्ज़ामिनेशन)।

**प्रवेशित** वि० (सं) प्रवेश कराया हुआ।

**प्रवेष्टा** पुं० (हि) प्रवेश करने वाला। घुसने वाला।

**प्रव्रजन** पुं० (सं) १-घरबार छोड़ कर संन्यास लेना २-अपना देश छोड़ कर दूसरे देश बसने के लिए चले जाना। (माइग्रेशन)।

**प्रव्रज्या** स्त्री० (सं) १-विदेश गमन। २-संन्यास।

**प्रव्रज्याग्रहण** पुं० (सं) संन्यास लेना।

**प्रशंस** स्त्री० (सं) दे० 'प्रशंसा'। वि० (सं) प्रशंसा के योग्य।

**प्रशंसक** वि० (सं) प्रशंसा करने वाला। खुशामदी।

**प्रशंसन** पुं० (सं) १-सराहना। २-प्रशंसा करना। ३-धन्यवाद।

**प्रशंसना** क्रि० (हि) सराहना। प्रशंसा करना।

**प्रशंसनीय** वि० (सं) प्रशंसा के योग्य।

**प्रशंसा** स्त्री०(सं) गुण-वर्णन। श्लाघा। स्तुति। तारीफ

**प्रशंसा-घोष** पुं० (सं) किसी वक्ता के भाषण करते समय उसके कथन के अनुमोदन करने के लिए श्रोताओं द्वारा की गई ध्वनि। (एप्लॉज)।

**प्रशंसित** वि० (सं) जिसकी प्रशंसा की गई हो।

**प्रशंसोपमा** स्त्री० (सं) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय की विशेष प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा व्यक्त की जाती है।

**प्रशंस्य** *वि०* (सं) प्रशंसा के योग्य
**प्रशम** पुं० (सं) १-शमन। शांति। २-निवृत्ति। नाश। ३-रंतिदेव के पुत्र का नाम। (भागवत)।
**प्रशमन** पुं० (सं) १-शांति। २-नाशक। ३-वध ४-प्रतिपादन। ५-अस्त्र प्रहार। ६-आपसी झगड़े को समझाते से निवटाना। (कम्पाउंडिंग)।
**प्रशस्त** *वि०* (सं) १-अच्छा। प्रशंसनीय। २-श्रेष्ठ उक्त। ४-उचित। उपयुक्त। ४-बड़ा या लम्बा चौड़ा। ५-साफ। सुथरा।
**प्रशस्ति** *स्त्री०* (सं) १-स्तुति। प्रशंसा। २-प्रशंसा-सूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है। ३-प्राचीनकाल के वह आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे। ४-प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों पर आदि या अन्त में लिखी कुछ पंक्तियां जिनसे उसके कर्ता, विषय, काल आदि का कुछ पता चलता है।
**प्रशस्तिगाथा** *स्त्री०* (सं) किसी की प्रशंसा में लिखा हुआ गीत।
**प्रशस्तिपट्ट** पुं० (सं) लेख-पत्र।
**प्रशस्य** *वि०*(सं) १-प्रशंसा के योग्य। २-उत्तम। श्रेष्ठ
**प्रशांत** *वि०* (सं) १-स्थिर। अचंचल। २-निश्चल प्रवृत्तिवाला। शांत। पुं० (सं) अमेरिका और एशिया के बीच का महासागर। (पेसिफिक)।
**प्रशांतकाय** *वि०* (सं) सन्तुष्ट।
**प्रशांतचित्त** *वि०* (सं) जिसका मन शांत हो।
**प्रशांतात्मा** पुं० (सं) १-शिव। महादेव। २-शांतचित्त
**प्रशांति** *स्त्री०* (सं) १-पूर्णशांति। २-वह पूर्णशांति जो किसी देश में हो और उपद्रव आदि का अभाव हो। (ट्रैंक्विलिटी)।
**प्रशाखा** *स्त्री०* (सं) शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा।
**प्रशासक** पुं० (सं) १-शासन करने वाला। २-राज्य का प्रशासन या प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति। (एड-मिनिस्ट्रेटर)।
**प्रशासकता** *स्त्री०*(सं) प्रशासन चलाने की कला। प्रशासक का पद। (एडमिनिस्ट्रेटरशिप)।
**प्रशासन** पुं० (सं) १-शिष्य आदि को दी जाने वाली कर्तव्य की शिक्षा। २-राज्य के परिचालन का प्रबंध या व्यवस्था। (एडमिनिस्ट्रेशन)।
**प्रशासन अधिकार** पुं० (स) प्रशासन पर डाला गया अतिरिक्त भार या जुम्मेदारी। (एडमिनिस्टेटिव सरचार्ज)।
**प्रशासनपत्र** पुं० (सं) न्यायालय द्वारा जारी किया गया वह आदेश पत्र जिसमें इच्छापत्रहीन संपत्ति की देखभाल करने के लिए प्रशासक की नियुक्ति की गई हो। (लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन)।
**प्रशासन प्रभार** पुं०(सं) ठीक प्रकार से प्रशासन करने का उत्तरदायित्व। (एडमिनिस्टेटिव चार्ज)।
**प्रशासन भंग** पुं० (सं) आर्थिक संकट या आन्तरिक उपद्रवों के कारण शासन व्यवस्था का भंग हो जाना (ब्रेक डाउन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन)।
**प्रशासनीय कृत्य** पुं० (सं) राज्य-प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य। (एडमिनिस्टेटिव फंक्शन)।
**प्रशिक्षण** पुं० (सं) किसी पेशे या कला कौशल के सम्बन्ध में दी जाने वाली क्रियात्मक शिक्षा। (ट्रेनिंग)।
**प्रशिक्षण केन्द्र** पुं० (सं) आसपास के ग्रामों और नगरों के बीच में पड़ने वाला वह स्थान जहां किसी कला कौशल या ग्रामोद्योग विषयक शिक्षा दी जाती है। (ट्रेनिंग सेन्टर)।
**प्रशिक्षण महाविद्यालय** पुं० (सं) वह महाविद्यालय जहां ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान विषयक सिद्धान्त तथा शिक्षा प्रणाली सिखलाई जाती है। (ट्रेनिंग कॉलेज)।
**प्रशिक्षण विद्यालय** पु० (सं) वह विद्यालय जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। (नार्मल स्कूल)।
**प्रशिक्षार्थी** पुं० (सं) वह शिक्षार्थी जो प्रशिक्षण पा रहा हो। (ट्रेनी)।
**प्रशिक्षित** *वि०* (सं) किसी प्रकार का प्रशिक्षण मिला हो। (ट्रेन्ड)।
**प्रशुल्क** पु० (सं) आयात-निर्यात पर जाने वाला शुल्क या कर। (टैरिफ)।
**प्रशुल्क मंडल** पुं० (सं) विशेषज्ञों की वह समिति जो सरकार को यह सलाह दे कि आयात या निर्यात की किन-किन वस्तुओं पर कर लगाना चाहिए। (टैरिफ बोर्ड)।
**प्रशोष** पुं० (सं) सोखना। सुखाना।
**प्रश्न** पुं० (सं) १-वह बात जो कुछ जानने या जांचने के लिए पूछी जाय और जिसका कोई उत्तर हो। सवाल। २-पूछने की बात। (क्वेश्चन)। ३-विचारणीय विषय। (इश्यू)।
**प्रश्नपत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिस पर परीक्षा के लिए विद्यार्थियों से किये जाने वाले प्रश्न लिखे रहते हैं। (क्वेश्चन पेपर)।
**प्रश्नवादी** पुं० (सं) ज्योतिषी।
**प्रश्नावली** *स्त्री०* (सं) किसी विषय पर लोगों की अधिकार रूप से किसी बात की जांच करने या अभिमत प्राप्त करने के लिए भेजे गये उस विषय से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों की सूची।
**प्रश्नावली पत्रक** पुं० (सं) किसी विषय की विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय से संबंधित व्यक्तियों के पास भेजी गई प्रश्नों की सूची या पत्रक जिसके उत्तर आने तक उस विषय पर कोई

निर्णय नहीं किया जाता (क्वेश्चनेयर)।

**प्रश्नोत्तर** पुं० (सं) प्रश्न और उत्तर। सवाल-जवाब। २-वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

**प्रश्नोत्तरी** स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें किसी विषय के प्रश्नों के उत्तरों को समझाया गया हो। (कैटेकिज्म)।

**प्रश्रय** पुं० (सं) १-आश्रय स्थान। २-आधार। सहारा। ३-विनय। नम्रता।

**प्रश्रयण** पुं० (सं) दे० 'प्रश्रय'।

**प्रश्लिष्ट** वि० (सं) मिलाजुला। संधि प्राप्त।

**प्रश्वास** पुं० (सं) १-वायु के नथने से बाहर निकलने की क्रिया। २-ऐसी वायु।

**प्रष्टव्य** वि० (सं) १-पूछने योग्य। २-पूछने का।

**प्रष्टा** वि० (सं) प्रश्न करने वाला। पूछने वाला।

**प्रसंग** पुं० (सं) १-मेल। सम्बन्ध। २-बातों का परस्पर सम्बन्ध। (कोंटेक्स्ट)। ३-लगन। ४-वार्ता। ५-उपयुक्त संयोग। ६-अवसर। कारण। ७-प्रकरण प्रस्ताव। ८-विस्तार।

**प्रसंसना** क्रि० (हि) प्रशंसा करना।

**प्रसक्त** वि० (सं) १-सम्बन्धयुक्त। लगाया हुआ। २-जो बराबर लगा रहे। ३-अत्यन्त आसक्त। ४-प्रस्तावित। ५-निकट।

**प्रसज्य** वि० (सं) १-जो प्रयोग में लाया जाय। २-संभव।

**प्रसज्यप्रतिषेध** पुं० (सं) एक निषेध विशेष जिसमें विधि की अप्रधानता तथा निषेध की अप्रधानता होती है।

**प्रसन्न** वि० (सं) १-खुश। आह्लादित। २-सन्तुष्ट। ३-अनुकूल। पसंद। ४-स्वच्छ। निर्मल। पुं० (सं) महादेव।

**प्रसन्नजल** वि० (सं) जिसका जल निर्मल हो।

**प्रसन्नता** स्त्री० (सं) १-सन्तोष। तुष्टि। २-हर्ष। ३-अनुग्रह। ४-स्वच्छता। निर्मलता।

**प्रसन्नमुख** वि० (सं) जिसका मुख प्रसन्न हो।

**प्रसन्नवदन** वि० (सं) दे० 'प्रसन्नमुख'।

**प्रसन्नसलिल** वि० (सं) दे० 'प्रसन्नजल'।

**प्रसन्नित** वि० (सं) प्रसन्न। खुश।

**प्रसर** पुं० (सं) १-आगे बढ़ना। २-फैलाना। बढ़ाव ३-दृष्टि का फैलाव। ४-समूह। राशि। ५-प्रभाव। ६-साहस। ७-बाढ़।

**प्रसरण** पुं० (सं) १-आगे बढ़ना। २-फैलाव होना। ३-लूट मार करने के लिए सेना का इधर-उधर फैलना।

**प्रसरित** वि० (सं) १-फैला हुआ। २-विस्तृत। ३-आगे को बढ़ा हुआ।

**प्रसर्पी** वि० (सं) १-रेंगने वाला २-गतिशील।

**प्रसव** पुं० (सं) १-बच्चा जनाने की क्रिया। प्रसूति। २-जन्म। उत्पत्ति। ३-बच्चा। सन्तान। (मेटरनिटी)

**प्रसवगृह** पुं० (सं) बच्चा जनाने का घर (मेटरनिटी होम)।

**प्रसवना** क्रि० (हि) (बच्चा) जनना या उत्पन्न करना

**प्रसव-वेदना** स्त्री० (सं) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।

**प्रसव-व्यथा** स्त्री० (सं) दे० 'प्रसव-वेदना'।

**प्रसवावकाश** पुं० (सं) प्रसव काल में किसी स्त्री को दी जाने वाली छुट्टी। (मैटरनिटी लीव)।

**प्रसविता** पुं० (सं) उत्पन्न करने वाला। पिता।

**प्रसवित्री** स्त्री० (सं) माता।

**प्रसविनी** वि० (सं) जन्म देने वाली।

**प्रसवी** वि० (सं) जन्म देने वाला।

**प्रसवोत्तरकाल** पुं० (सं) बच्चा जनने के बाद की स्त्री की स्थिति या समय। (पोस्टनेटल पीरियड)।

**प्रसाद** पुं० (सं) १-अनुग्रह। कृपा। २-स्वास्थ्य। ३-सफाई। निर्मलता। ४-प्रसन्नता। ५-देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६-दे० 'प्रासाद'। ७-कोई भी पदार्थ जो तुष्टि साधन के लिए भेंट किया जाय। ८-शब्दालंकार के अन्तर्गत कोमलावृत्ति। ९-भोजन। १०-काव्य के तीन गुणों में से एक।

**प्रसादक** वि० (सं) १-अनुग्रह कारक। २-निर्मल। ३-प्रीतिकर। पुं० (सं) प्रसाद। देवधन।

**प्रसादन** पुं० (सं) १-अन्न। २-किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना। (प्रॉपीशियेशन)।

**प्रसादना** स्त्री० (सं) १-चाकरी। सेवा। २-पवित्रता। क्रि० (हि) प्रसन्न करना।

**प्रसादनीय** वि० (सं) प्रसन्न करने योग्य।

**प्रसाद-पट्ट** पुं० (सं) राजा की ओर दिया जाने वाला सम्मानार्थ शिरोवस्त्र।

**प्रसाद-पराङ्मुख** वि० (सं) १-अप्रसन्न। प्रतिकूल। २-किसी की परवाह न करने वाला।

**प्रसादपर्यन्त** अव्य०(सं) (राष्ट्रपति राजा आदि) जब तक चाहें तब तक। (ड्यूरिंग दि प्लेजर ऑफ)।

**प्रसादित** वि० (सं) सन्तुष्ट किया हुआ।

**प्रसादी** स्त्री० (हि) १-वह पदार्थ जो देवताओं को चढ़ाया जाय। २-नैवेद्य। ३-बलि चढ़ाए हुए पशु का मांस। वि० (सं) १-प्रसन्न करने वाला। २-शांत। ३-अनुग्रह करने वाला। ४-निर्मल। स्वच्छ

**प्रसाधक** पुं० (सं) १-सम्पादन करने वाला। सम्पादक। २-सजावट का काम करने वाला। ३-राजाओं आदि को वस्त्राभूषण पहनाने वाला अनुचर।

**प्रसाधन** पुं० (सं) शृङ्गार करना। सजाना। कार्य को पूरा करना। सम्पादन। ३-शृङ्गार का

सजावट का सामान। (साबुन आदि)। (टाइलेट
**प्रसाधनद्रव्य** पुं० (सं) शृङ्गार आदि में काम आने वाली वस्तुएं। (टाइलेट)।
**प्रसाधन-सामग्री** स्त्री० (सं) दे० 'प्रसाधन'।
**प्रसाधनी** स्त्री० (सं) कंघी।
**प्रसाधिका** स्त्री० (सं) वह दासी जो अपनी स्वामिनी का शृङ्गार करती है।
**प्रसाधित** वि० (सं) १-संवारा हुआ। २-जिसका शृङ्गार किया गया हो। ३-सुसपादित।
**प्रसार** पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-संचार। ३-गमन। ४-किसी बात को चारों ओर फैलाना।
**प्रसारक** वि० (सं) फैलाने वाला।
**प्रसारण** पुं०(सं) १-फैलाना। २-बढ़ाना। ३-किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना। ४-रेडियो (आकाशवाणी) के द्वारा सङ्गीत, भाषण आदि सुनने के निमित्त चारों ओर फैलाना। (ब्रॉडकास्टिंग)।
**प्रसारना** क्रि० (हि) फैलाना। बढ़ाना।
**प्रसारिणी** स्त्री० (सं) १-गंधप्रसारिणी लता। २-देव धान्य। ३-सेना को आक्रमण करने के लिए इधर-उधर फैलाना। ४-लजालु।
**प्रसारित** वि० (सं) १-फैलाया हुआ। २-(सङ्गीत, भाषण आदि आकाशवाणी द्वारा) प्रसारण किया हुआ। (ब्रॉडकास्ट)।
**प्रसाविका** स्त्री०(सं) बच्चे जनने वाली दाई। (मिडवाइफ)।
**प्रसिद्ध** वि० (सं) १-विख्यात। मशहूर। २-भूषित। अलंकृत।
**प्रसिद्धि** स्त्री० (सं) १-प्रसिद्ध होने का भाव या क्रिया ख्याति। २-बनाव-शृङ्गार।
**प्रसुप्ति** स्त्री० (सं) प्रगाढ़ निद्रा। नींद।
**प्रसू** वि० (सं) उत्पन्न करने वाली। जनने वाली। स्त्री० (सं) १-माता। जननी। २-घोड़ी। ३-केला। ४-फैलने वाली लता। ५-कोमल घास।
**प्रसूत** वि० (सं) १-उत्पन्न। पैदा। २-उत्पन्न किया हुआ। ३-उत्पादक। स्त्री० (सं) १-कुसुम। फूल। २-प्रसव के पीछे होने वाला एक रोग।
**प्रसूता** स्त्री० (सं) १-जच्चा। बच्चा जनने वाली। २-घोड़ी।
**प्रसूति** स्त्री० (सं) १-प्रसव। २-उत्पत्ति। उद्भव। ३-कारण। प्रकृति। ४-सन्तति। ५-उत्पत्ति स्थान। ६-प्रसूत।
**प्रसूतकल्याण** पुं०(सं) बच्चे जनने तथा जच्चा और बच्चे को सुविधा पहुंचाने से सम्बन्धित कार्य। (मैटरनिटी वेलफेयर वर्क)।
**प्रसूतिका** स्त्री० (सं) जिस स्त्री के बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।
**प्रसूतिगृह** पुं० (सं) बच्चा जनने का स्थान। सौरी।
**प्रसूतिभवन** पुं० (सं) प्रसूतिगृह।
**प्रसूतिज्वर** पुं० (सं) प्रसव के कुछ समय बाद होने वाला ज्वर।
**प्रसूत्यवकाश** पुं० (सं) प्रसवावकाश। (मैटरनिटी-लीव)।
**प्रसून** पुं० (सं) १-फूल। पुष्प। २-कली। ३-फल। वि० (सं) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।
**प्रसूनबाण** पुं० (सं) कामदेव।
**प्रसूनशर** पुं० (सं) कामदेव।
**प्रसृतज** पुं० (सं) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।
**प्रसृति** स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-सन्तान। संतति। ३-सोलह तोले का एक मान। ४-गहरी की गई हथेली।
**प्रसृष्ट** वि० (सं) उत्पन्न। व्यक्त।
**प्रसृष्टा** स्त्री० (सं) १-युद्ध का एक दांव। २-फैलाई हुई उंगलियां।
**प्रसेक** पुं० (सं) १-सींचना। सेचन। २-निचोड़। छिड़काव। ३-पसेव। ४-मुँह या नाक से पानी छूटना।
**प्रसेद** पुं० (सं) पसीना। प्रस्वेद।
**प्रस्तर** पुं०(सं) १-पत्थर। २-फूल और पत्तों की सेज शय्या। ४-समतल। ५-चमड़े की थैली। ६-प्रस्तार ७-अध्याय।
**प्रस्तरभेद** पुं० (सं) पाषाणभेद।
**प्रस्तर-मुद्रण** पुं० (सं) छपाई अथवा मुद्रण की वह प्रक्रिया जिसमें एक विशेष स्याही द्वारा लेखादि लिखकर पत्थर पर उतारते हैं और फिर छापते हैं। (लीथोग्राफी)।
**प्रस्तर-युग** पुं० (सं) वह प्राचीन युग जब लोग पत्थर के हथियारों या औजारों से काम लेते थे। (स्टोन-एज)।
**प्रस्तार** पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-शैय्या। सेज। ३-आधिक्य। ४-चौरस। समतल। परत। ५-घास का जंगल। ६-छन्दशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से एक। ७-वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध वर्गों के क्रम में संगत तथा संभव परिवर्तन या हेर फेर करना। (परम्यूटेशन)।
**प्रस्ताव** पुं० (सं) १-प्रस्तुत प्रसंग। २-प्रस्तावना। ३-किसी सभा या समाज में विचारार्थ या स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाने वाली बात। (रेज़ोल्यूशन)। ४-झगड़ा निपटाने के लिए कोई बात रखना। (ऑफर)।
**प्रस्तावक** पुं० (सं) किसी सभा आदि में प्रस्ताव रखने वाला। (प्रोपोज़र)।
**प्रस्तावना** स्त्री० (सं) १-किसी विषय या कथा के आरम्भ करने से पूर्व का वक्तव्य। भूमिका। प्राक्

यन। २-आरम्भ। (इन्ट्रोडक्शन, प्रीएम्बल)।

**प्रस्ताव-विवादनियंत्रण** पुं० (सं) किसी विधेयक आदि पर विरोधी दल के अनावश्यक बाधा डालने पर अध्यक्षों द्वारा समय निर्धारित करना कि वे उस समय में ही उसे स्वीकृत या अस्वीकृत करने का निश्चय करे। (गिलोटिन ए मोशन)।

**प्रस्तावित** वि० (सं) जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो।

**प्रस्तुत** पुं० (सं) १-जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो। २-जो कहा गया हो। कथित। ३-प्रासंगिक। ४-उद्यत। ५-सम्पादित। ६-उपयुक्त। (प्रेजेंटेड, सबमिटेड)।

**प्रस्तुतांकुर** पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ कहकर उसका अभिप्राय अन्य प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है।

**प्रस्तुतांगगृह निर्माणशाला** स्त्री० (सं) मकान आदि के पहले से अलग-अलग भाग तैयार करने वाला कारखाना जिससे बाद में इन भागों का जोड़कर मकान आसानी खड़ा किया जा सके। (प्रीफेब्रिकेटस हाउस फेक्टरी)।

**प्रस्तुति** स्त्री० (सं) १-प्रशंसा। स्तुति। २-प्रस्तावना ३-तैयारी। उपस्थित। (प्रोडक्शन)।

**प्रस्थान** पुं० (सं) १-गमन। एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। (डिपार्चर)। २-सेना का कूँच। ३-मार्ग। ४-उपदेश का साधन।

**प्रस्थानत्रयी** स्त्री० (सं) गीता, ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषद्

**प्रस्थानी** वि० (हिं) जाने वाला। प्रस्थान करने वाला।

**प्रस्थापक** पुं० (सं) प्रस्ताव आदि सामने लाने या रखने वाला (विधान सभा आदि में) (प्रोपोजर)।

**प्रस्थापन** पुं० (सं) १-प्रस्थान करना। भेजना। २-स्थान। ३-प्रेरणा।

**प्रस्थापना** स्त्री० (सं) १-विधान सभा आदि में रखा गया प्रस्ताव। (प्रोपोजल)। २-विवाह प्रस्ताव।

**प्रस्थापित** वि० (सं) १-भली भांति स्थापित। २-प्रेरित। ३-आगे बढ़ाया हुआ।

**प्रस्थापित करना** क्रि० (सं) कोई प्रस्ताव (विधान सभा आदि में) प्रस्तुत करना। (टु प्रोपोज)।

**प्रस्थित** वि० (सं) १-जो जाने को तैयार हो। २-स्थिर। ३-दृढ़। ४-जो गया हो।

**प्रस्नुत** वि०(सं) १-टपकाने वाला। २-बहाने वाला।

**प्रस्नुतस्तनी** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके स्तनों से वात्सल्य प्रेम के कारण दूध टपक रहा हो।

**प्रस्फुटित** वि० (सं) विकसित। खिला हुआ।

**प्रस्फुरण** पुं० (सं) १-निकलना। २-प्रकाशित होना।

**प्रस्फुरित** वि० (सं) हिलता हुआ। कम्पनयुक्त।

**प्रस्फोट** पुं० (सं) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे आदि का गोला जो तोप, वायुयान आदि द्वारा शत्रु पर फेंका जाता है। (बॉम्ब)।

**प्रस्फोटन** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का वेग से फटना या फूटना जिससे कि उसके भीतर के पदार्थ बाहर निकल पड़ें। २-विकसित होना। खिलना। ३-पीटना। ४-(अन्नादि) फटकना। ५-सूप।

**प्रस्रवण** पुं० (सं) १-जलादि द्रव पदार्थ का टपक-टपक कर बहना। २-दूध। ३-पसीना। ४-सोता। झरना। ५-मूत्र करना।

**प्रस्राव** पुं० (सं) १-जलादि का टपकना या रिसना। २-मूत्र। ३-प्रस्रवण।

**प्रस्रुत** वि० (सं) उमड़ा हुआ। टपका हुआ।

**प्रस्वापन** पुं० (सं) १-वह वस्तु जिसके व्यवहार से निद्रा आये। २-एक प्राचीन अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुपक्ष को निद्रा आ जाती थी।

**प्रस्वीकृत** वि० (सं) जिसे अधिकृत रूप में मान्यता दे दी गई हो। (रिकॉगनाइज्ड)।

**प्रस्वीकृति** स्त्री० (सं) १-छोटी संस्थाओं का केन्द्रिय संस्था द्वारा अस्तित्व, प्रामाणिकता आदि मान लेना। २-मान्यता। (रिकॉगनीशन)।

**प्रस्वेद** पुं० (सं) पसीना।

**प्रस्वेदन** पुं० (सं) पसीना लाने के लिए गर्म पानी से सेंकने की क्रिया (फोमेंटेशन)।

**प्रस्वेदित** वि० (सं) जो पसीने से तर हो।

**प्रह** पुं० (हि) प्रातःकाल।

**प्रहर** पुं० (सं) दिन-रात का आठवाँ भाग। तीन घंटे।

**प्रहरखना** क्रि० (हि) प्रसन्न होना।

**प्रहरण** पुं० (सं) १-छीनना। हरण करना। २-युद्ध। ३-अस्त्र। ४-प्रहार। ५-फेंकना। हटाना। ६-पर्दे वाली डोली या गाड़ी।

**प्रहरी** पुं० (सं) द्वारपाल। पहरेदार।

**प्रहर्ष** पुं० (सं) अत्यधिक हर्ष। आनन्द।

**प्रहर्षण** पुं० (सं) १-आनन्द। २-बुद्ध ग्रह। ३-एक अलंकार जिसमें बिना प्रयत्न किये किसी अभीष्ट फल की सिद्धि का उल्लेख होता है। वि० (सं) हर्ष देने वाला।

**प्रहसन** पुं० (सं) १-हंसी। दिल्लगी। २-एक प्रकार का हास्य रूप प्रधान रूपक।

**प्रहसित** पुं० (सं) एक बुद्ध का नाम। वि० (सं) जिसकी हँसी उड़ाई जाय।

**प्रहाण** पुं० (सं) १-छोड़ना। त्यागना। २-चित्त की एकाग्रता।

**प्रहाणि** स्त्री० (सं) १-परित्याग। २-हानि। ३-नाश।

**प्रहान** पुं० (हि) दे० 'प्रहाण'।

**प्रहानि** स्त्री० (हि) दे० 'प्रहाणि'।

**प्रहार** पुं० (सं) वार। चोट। आघात।

**प्रहारक** वि० (सं) प्रहार करने वाला।

**प्रहारना** *क्रि०* (हि) १-मारना। आघात करना। २-मारने के लिए हथियार चलाना।
**प्रहारित** *वि०* (हि) जिस पर प्रहार हुआ हो।
**प्रहारी** *वि०* (सं) १-प्रहार करने वाला। २-मारने वाला। ३-नष्ट करने वाला।
**प्रहास** *पुं०* (सं) १-अट्टहास। २-नट। ३-शिव।
**प्रहासक** *पुं०* (सं) अट्टहास करने वाला। मसखरा।
**प्रहासी** *पुं०* (सं) १-खूब हंसने वाला। २-विदूषक।
**प्रहृष्ट** *वि०* (सं) अत्यन्त प्रसन्न।
**प्रहृष्टचित्त** *वि०* (सं) बहुत प्रसन्न।
**प्रहृष्टमना** *वि०* (सं) अत्यन्त प्रसन्न।
**प्रहृष्टमुख** *वि०* (सं) जिसका मुख प्रसन्न हो।
**प्रहृष्टवदन** *वि०* (सं) दे० 'प्रहृष्टमुख'।
**प्रहेलि** *स्त्री०* (सं) पहेली।
**प्रहेलिका** *स्त्री०* (सं) पहेली।
**प्रह्लाद** *पुं०* (सं) १-आमोद। आनन्द। २ हिरण्यकश्यप के पुत्र जो विष्णु के परम भक्त थे।
**प्रांगण** *पुं०*(सं) १-आंगन। सहन। २-एक प्रकार का ढोल।
**प्रांजल** *वि०* (सं) १-सीधा। सरल। २- सच्चा। ३-समान। ४-शुद्ध (भाषा)।
**प्रांजलता** *स्त्री०* (सं) शब्द के अर्थ की सफलता।
**प्रांजलि** *वि०* (सं) जो हाथ जोड़े हुए हो।
**प्रांत** *पुं०* (सं) १-अन्त। सीमा। २-सिर। छोर। ३-दिशा। ४-खंड। प्रदेश। ५-किसी बड़े देश का शासनिक विभाग। (प्रॉविंस)।
**प्रांतपति** *पुं०* (सं) प्रांत का सबसे बड़ा अधिकारी। राज्यपाल। (गवर्नर)।
**प्रांतर** *पुं०* (सं) लंबा और सुनसान रास्ता जिसमें जल और वृक्ष न हों। उजाड़। २-जंगल। वन। ३-वृक्ष का कोटर।
**प्रांतिक** *वि०* (सं) प्रांत से संबन्ध रखने वाला।
**प्रांतीय** *वि०* (सं) प्रांत संबन्धी।
**प्रांतीयता** *स्त्री०* (सं) १-प्रांतीय होने का भाव। २-अपने प्रांत के प्रति अतिरिक्त मोह या पक्षपात। (प्रोविंशियलिज्म)।
**प्रांतीय सरकार** *स्त्री०* (हि) प्रांत की शासन व्यवस्था करने वाली सरकार। (प्रॉविंशियल गवर्नमेंट)।
**प्रांतीय स्वराज्य** *पुं०* (सं) किसी संघ राज्य द्वारा प्रांतीय सरकार को आन्तरिक मामलों में स्वतंत्रता पूर्वक आचरण करने का दिया गया अधिकार। (प्रोविंशियल ऑटोनॉमी)।
**प्रांशु** *वि०* (सं०) १-उच्च। ऊँचा। २- *पुं०* (सं) १-विष्णु। २-लम्बा आदमी।
**प्रांशुप्राकार** *वि०* (सं) जिसका परकोटा बहुत ऊँचा या लम्बा हो।
**प्रांशुलभ्य** *वि०* (सं) जो केवल लम्बे आदमी को मिले।
**प्राइवेट** *वि०* (अं०) व्यक्तिगत। निजी।
**प्राइवेट सेक्रेट्री** *पुं०* (सं) किसी बड़े आदमी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि करने वाला निजी सहायक।
**प्राकट्य** *पुं०* (सं) प्रकट होने का भाव।
**प्राकाम्य** *पुं०* (सं) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
**प्राकार** *पुं०* (सं) चहारदीवारी। परकोटा।
**प्राकारीय** *वि०* (सं) चहारदीवारी से घिरा हुआ।
**प्राकाश्य** *पुं०* (सं) १-प्रकीर्ति। यश। ३-प्रकाश का भाव।
**प्राकृत** *वि०* (सं) १-प्रकृति से उत्पन्न। २-स्वाभाविक ३-भौतिक। ४-साधारण। ५-लौकिक। ६-नीच। *स्त्री०* (सं०) १-किसी स्थान की बोलचाल की भाषा। २-एक प्राचीन भारतीय भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी।
**प्राकृतमित्र** *पुं०* (सं) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो।
**प्राकृतशत्रु** *पुं०* (सं) स्वाभाविक शत्रु।
**प्राकृतिक** *वि०* (सं) १-जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ। हो। २-प्रकृति-सम्बन्धी। ३-साधारण। लौकिक। ४-नीच। ५-स्वाभाविक। (नेचुरल)।
**प्राकृतिक चिकित्सा** *स्त्री०* (सं) वह चिकित्सा पद्धति जो मुख्य रूप से प्राकृतिक साधनों पर आधारित हो। (नेचरोपैथी)।
**प्राकृतिक भूगोल** *पुं०* (सं) भूगोल विद्या का वह भाग जिसमें भौगोलिक तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया गया हो।
**प्राच्** *वि०*(सं) पुराना। पहले का। *अव्य०* (सं) आगे। पहले।
**प्राक्** *वि०* (सं) दे० 'प्राक्'।
**प्राक्कथन** *पुं०* (सं) आरम्भ में कही गई बात। भूमिका (फोरवर्ड)।
**प्राक्कलन** *पुं०* (सं) पहले से व्यय या लागत का अनुमान लगाना। (एस्टिमेट)।
**प्राक्काल** *पुं०* (सं) प्राचीन काल।
**प्राक्कालिक** *वि०* (सं) प्राचीन।
**प्राक्कालीन** *वि०* (सं) प्राचीन।
**प्राक्तन** *वि०* (सं) १-प्राचीन। २-पूर्व-जन्म सम्बन्धी।
**प्राखर्य** *पुं०* (सं) प्रखरता। तेजी।
**प्रागनुराग** *पुं०* (सं) पहले से अनुराग।
**प्रागल्भ्य** *पुं०* (सं) १-प्रागल्भता। वीरता। २-अभिमान। ३-योग्यता। ४-प्रधानता। ५-प्रादुर्भाव। ६-साहस। ७-धीरता।
**प्रागुक्ति** *स्त्री०* (सं) पूर्वकथन।

प्रागैतिहासिक वि० (सं) जिस काल का इतिहास मिलता हो उससे पूर्वकाल का (प्रीहिस्टोरिक)।
प्राग्ज्योतिष पु० (सं) महाभारत के अनुसार कामरूप-देश।
प्राग्ज्योतिषपुर पुं० (सं) कामरूप देश (आसाम) की राजधानी (गोहाटी)।
प्राग्देश पुं० (सं) पूर्वी देश।
प्राग्द्वार पुं० (सं) वह घर जिसका द्वार पूर्व की ओर हो।
प्राग्विभाजन-भुगतान पुं० (सं) भारत देश के विभाजन से पहले किया हुआ भुगतान। (प्री-पार्टीशन पेमेन्ट्स)।
प्राची स्त्री० (सं) पूर्व दिशा। पूरब।
प्राचीन वि० (सं) १-पूर्व का। २-पहले का। पुराना।
प्राचीनता स्त्री० (सं) पुरानापन। प्राचीन होने का भाव।
प्राचीपति पुं० (सं) इन्द्र।
प्राचीर पुं० (सं) चारों ओर से घेरने वाली दीवार। चहारदीवारी। परकोटा।
प्राचुर्य पुं० (सं) प्रचुर होने का भाव। अधिकता। विपुलता।
प्राचेतस पुं० (सं) १-मनु। २-दक्ष। ३-वाल्मीकि। ४-विष्णु।
प्राच्छित पुं० (हिं) दे० 'प्रायश्चित'।
प्राच्य वि० (सं) १-पूर्व का। २-पूर्वीय। ३-पुराना।
प्राच्यभाषा स्त्री० (सं) पूरबी भाषा।
प्राजापत्य वि० (सं) १-प्रजापति सम्बन्धी। २-प्रजापति से उत्पन्न। पुं० (सं) १-बारह दिन के एक व्रत का नाम। २-यज्ञ। ३-प्रयाग का एक नाम। ४-रोहिणी नक्षत्र।
प्राजापत्य विवाह पुं० (सं) वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर और कन्या से यह प्रण करवाता है कि हम दोनों मिलकर ग्रहस्थ आश्रम का पालन करेंगें
प्राज्ञ वि० (सं) १-बुद्धि सम्बन्धी। मानसिक। २-बुद्धिमान। चतुर। पुं०(सं) जीवात्मा। (वेदान्त)।
प्राज्ञमान्य वि० (सं) अपने को बुद्धिमान समझने वाला।
प्राज्ञमानी वि० (सं) दे० 'प्राज्ञमान्य'।
प्राज्ञा स्त्री०(सं) १-बुद्धि। समझ। २-चतुर या बुद्धिमती स्त्री। ३-सूर्य की पत्नी का नाम।
प्राज्ञी स्त्री० (स) १-बुद्धिमती स्त्री। २-विद्वान पत्नी
प्राज्य वि० (सं) १-अधिक। विपुल। २-जिसमें बहुत सा घी पड़ा हो।
प्राड्विवाक पुं०(सं) १-न्यायकर्ता। न्यायाधीश। २-वकील।
प्राड् विवेक पुं० (सं) दे० 'प्राड्विवाक'।
प्राण पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-शरीर की वह हवा जिससे वह जीवित रहता हो। ३-सांस। श्वास ४-बल। शक्ति। ५-जीव। आत्मा। ६-इन्द्रिय। ७-प्रेमपात्र। ८-काल का वह विभाग जिसमें दस मात्राओं का उच्चारण हो सके। ९-मूलाधार में रहने वाली वायु। १०-अग्नि। आग।
प्राणआधार पुं०(हिं) १-प्राणों के समान प्रिय व्यक्ति २-पति। स्वामी।
प्राणक पुं० (सं) जीव। प्राणी।
प्राणकर वि० (सं) शक्तिवर्द्धक।
प्राणकष्ट पुं० (सं) प्राण निकलते समय होने वाला दुःख।
प्राणकृच्छ्र पुं० (सं) १-प्राण कष्ट। २-जान-जोखिम।
प्राणघात पुं० (स) वध। हत्या।
प्राणघातक पुं० (सं) हत्यारा। प्राण लेने वाला।
प्राणघ्न वि० (सं) प्राण लेने वाला।
प्राणच्छेद पुं० (सं) वध। हत्या।
प्राणजीवन पुं०(सं) १-प्राणाधार। परम प्रिय व्यक्ति २-विष्णु।
प्राणत्याग पुं० (सं) प्राण त्याग देना। आत्महत्या।
प्राणदंड पुं० (सं) मौत की सजा।
प्राणद वि० (सं) प्राणदाता। प्राणों की रक्षा करने वाला।
प्राणदयित पुं० (सं) पति। स्वामी। वि० (सं) प्राण-प्यारा।
प्राणदा स्त्री० (सं) हड़। हरीतकी।
प्राणदाता पुं० (सं) किसी के प्राण बचाने वाला।
प्राणदान पुं० (सं) किसी के मरने से बचाना।
प्राणधन पुं० (सं) अत्यधिक प्रिय। प्यारा।
प्राणधार वि० (सं) जीवित। जिसमें प्राण हों।
प्राणधारण पुं० (सं) १-जीवन धारण करने का भाव। २-शिव।
प्राणधारी वि० (सं) १-जीवित। २-चेतन।
प्राणन पु० (सं) १-जीवन। २-हिलना डुलना। ३-जल।
प्राणनाथ पुं० (सं) प्रियतम। प्यारा। २-स्वामी। पति। ३-एक संप्रदाय के आचार्य का नाम।
प्राणनाथी पुं० (स) १-प्राणनाथ संप्रदाय का अनुयायी। २-स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय।
प्राणनाश पुं० (सं) प्राणत्याग। हत्या या मृत्यु।
प्राणनाशक वि० (सं) मार डालने वाला।
प्राणनिग्रह पुं० (स) प्राणायाम की क्रिया।
प्राणपण पुं०(सं) जान की बाजी।
प्राणपति पुं० (सं) १-आत्मा। २-हृदय। ४-पति। स्वामी। ४-प्रिय व्यक्ति।
प्राणप्यारा पुं० (हि) परमप्रिय व्यक्ति। स्वामी। पति।

**प्राणप्रतिष्ठा** *स्त्री०* (सं) १-प्राण धारण करना। २-कोई नई मूर्ति की स्थापना करते समय उसमें मंत्रों द्वारा प्राणों की प्रतिष्ठा करना। (हिन्दू धर्मशास्त्र)।
**प्राणप्रद** *वि०* (सं) जो प्राण दे। स्वास्थ्यवर्धक।
**प्राणप्रिय** *वि०* (सं) प्राणों के समान प्रिय।
**प्राणबाधा** *स्त्री०* (हिं) दे० 'प्राणकृच्छ्र'।
**प्राणभक्ष** *वि०* (सं) जो केवल हवा पी कर ही रहता हो।
**प्राणभय** *पुं०* (सं) प्राण जाने का खतरा।
**प्राणभृत** *वि०* (सं) जीवित।
**प्राणमय** *वि०* (सं) जिसमें प्राण हों।
**प्राणमयकोश** पु० (सं) वेदांत के अनुसार पांच कोशों में से दूसरा कोश जो, प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान इन पांचों प्राणों से बना हुआ माना जाता है।
**प्राणयम** पु० (सं) प्राणायाम।
**प्राणयात्रा** *स्त्री०*(सं) १-सांस का खींचना या छोड़ना। २-वह व्यवहार जिसके द्वारा मनुष्य जीवित रहता है।
**प्राणरंध्र** पुं० (सं) १-नाक। २-मुँह।
**प्राणरोध** पुं० (सं) प्राणायाम।
**प्राणवत्ता** *स्त्री०* (सं) जीवित होने का भाव।
**प्राणवल्लभ** पुं० (सं) परम प्रिय। पति। स्वामी।
**प्राणवायु** *स्त्री०* (सं) १-प्राण। २-जीव।
**प्राणविनाश** पुं० (सं) मृत्यु। मौत।
**प्राणविप्लव** पुं० (सं) प्राण विनाश।
**प्राणवियोग** पुं० (सं) मृत्यु।
**प्राणवृत्ति** *स्त्री०* (सं) प्राण, अपान, उदान आदि पंच प्राणों का कार्य।
**प्राणशरीर** पु० (सं) परमात्मा।
**प्राणशोषण** पुं० (सं) बाण।
**प्राणसंकट** पुं० (सं) वह अवस्था जिसमें प्राण जाने का भय हो।
**प्राणसंदेह** पुं० (सं) प्राण संकट।
**प्राणसंशय** पुं० (सं) प्राण संकट।
**प्राणसद्म** पुं० (सं) शरीर।
**प्राणसम** पुं० (सं) प्रियतम। पति। स्वामी। *वि०* (सं) प्राणप्रिय।
**प्राणसमा** *स्त्री०* (सं) पत्नी। प्रियतमा।
**प्राणहर** *वि०* (सं) १-प्राण लेने वाला। घातक। २-बल या शक्ति नाशक।
**प्राणहारक** *वि०* (सं) प्राण लेने वाला।
**प्राणहानि** *स्त्री०* (सं) जान-जोखिम। प्राण जाने की अवस्था।
**प्राणहारी** *वि०* (सं) प्राणहर।
**प्राणहीन** *वि०* (सं) निर्जीव।
**प्राणांत** पुं० (सं) मृत्यु। मरण।
**प्राणांतक** *वि०* (सं) प्राण लेने वाला।
**प्राणाचार्य** पुं० (सं) राजवैद्य।
**प्राणाधार** पुं० (सं) जीवन का सहारा। पति। स्वामी।
**प्राणाधिनाथ** पुं० (सं) पति।
**प्राणायाम** पु० (सं) श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियन्त्रित रूप से खींचने या बाहर निकालने की क्रिया (योग)।
**प्राणायामी** *वि०* (सं) प्राणायाम करने वाला।
**प्राणावरोध** *वि०* (सं) सांस का अवरोध।
**प्राणाहुति** *स्त्री०* (सं) भोजन के समय पांच मंत्र विशेष पढ़ कर खाने की क्रिया।
**प्राणित** *वि०* (सं) जिसमें जीवन का संचार किया गया हो।
**प्राणी** *वि०* (सं) जिसमें प्राण हो। जीवधारी। पुं० (सं) १-जीव। जन्तु। २-मनुष्य।
**प्राणीघाती** *वि०* (सं) प्राणियों की हत्या करने वाला।
**प्राणीवध** पुं० (सं) जीवहत्या।
**प्राणीहिंसा** *स्त्री०* (सं) जीवों को कष्ट देना या मारना।
**प्राणेश** पुं० (सं) प्रियतम। पति। स्वामी।
**प्राणेश्वर** पुं० (सं) दे० 'प्राणेश'।
**प्राणेश्वरी** *स्त्री०* (सं) प्रियतमा। पत्नी।
**प्राणेशा** *स्त्री०* (सं) प्राणेश्वरी।
**प्राणोत्क्रमण** पुं० (सं) मृत्यु।
**प्राणोत्सर्ग** पुं० (सं) मृत्यु।
**प्रातः** पु० (सं) प्रभात। तड़का। सवेरा। *अव्य०* (सं) तड़के। सवेरे।
**प्रातःकर्म** पुं० (सं) वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता है। शौच, स्नान आदि।
**प्रातःकाल** पुं० (सं) दिन चढ़ने का समय। सवेरा।
**प्रातःकालीन** *वि०* (सं) प्रातःकाल-सम्बन्धी। प्रातःकाल का।
**प्रातःकाल संध्या** *स्त्री०* (सं) प्रातःकाल की जाने वाली संध्या।
**प्रातःस्नान** पुं० (सं) सवेरे का स्नान।
**प्रातःस्नायी** *वि०* (सं) प्रातःकाल स्नान करने वाला।
**प्रातःस्मरण** पुं० (सं) सवेरे देवता का स्मरण।
**प्रातःस्मरणीय** *वि०*(सं) प्रातःकाल स्मरण करने योग्य
**प्रात** पुं० (सं) प्रभात। तड़का। सवेरा। *अव्य०* (सं) तड़के। सवेरे।
**प्रातनाथ** पुं० (सं) सूर्य।
**प्रातर** *अव्य०* (सं) तड़के। सवेरे।
**प्रातरशन** पुं०(सं) कलेवा।
**प्रातरह्न** पुं० (सं) दोपहर के पहले का समय।
**प्रातराशी** *वि०* (सं) प्रातःकाल कलेवा या जलपान करने वाला।
**प्रातराहुति** *स्त्री०* (सं) प्रातःकाल दी जाने वाली

आहुति।
**प्रातरगेय** पुं० (सं) प्रातःकाल स्तुति पाठ या वन्दना करने वाला। वि० (सं) जो सबेरे गाया जाय।
**प्रातरभोजन** पुं० (सं) सबेरे किया गया भोजन या कलेवा।
**प्रातिकूल्य** पुं० (सं) प्रतिकूल होने का भाव।
**प्रातिनिधिक** पुं० (सं) प्रतिनिधि।
**प्रातिपक्ष्य** पुं० (सं) प्रतिकूल। विरुद्ध।
**प्रातिपथिक** वि० (सं) यात्रा करने वाला। पु० (सं) यात्री।
**प्रातिपद** वि० (सं) प्रतिपद् सम्बन्धी। आरम्भ का।
**प्रातिपदिक** पुं० (सं) १-अग्नि। २-वह अर्थवान शब्द जो धातु न हो और जिसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से न हुई हो।
**प्रातिभ** वि० (सं) प्रतिभा सम्बन्धी।
**प्रातिभाव्य** पुं० (सं) १-जमानत। २-प्रतिभू का भाव
**प्रातिभाव्यऋण** पुं० (सं) जमानत पर लिया गया ऋण या कर्जा।
**प्रातिभासिक** वि० (सं) १-जो असली न हो। २-जो व्यावहारिक न हो। ३-नकल।
**प्रातिरूपिक** वि० (सं) उसी रूप का। नकली।
**प्रातिलोमिक** वि० (सं) १-विपरत। विरुद्ध। २-प्रतिलोम से उत्पन्न।
**प्रातिलोम्य** पुं० (सं) १-प्रतिलोम का भाव। २-विरुद्धता। ३-प्रतिकूलता।
**प्रातिवेशिक** पुं० (सं) पड़ोसी।
**प्रातिवेश्मक** पुं० (सं) पड़ोसी।
**प्रातिवेश्य** पुं० (सं) १-पड़ोस। २-पड़ोसी।
**प्रातिवेश्यक** पुं० (सं) पड़ोसी।
**प्रातिहारिक** वि० (सं) प्रतिहार सम्बन्धी। पुं० (सं) १-द्वारपाल। २-जादूगर।
**प्रात्यहिक** वि० (सं) दैनिक। प्रतिदिन का।
**प्राथमिक** वि०(सं) १-पहले का। २-आरम्भ का। ३-सबसे अधिक महत्व का।
**प्राथमिकता** स्त्री० (सं) १-प्राथमिक होने का भाव। २-किसी विषय में किसी वस्तु या व्यक्ति को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलने वाला स्थान, अवसर आदि। (प्रायरिटी)।
**प्राथमिकता सूची** स्त्री० (सं) विषयों आदि की सूची जिसमें उन महत्वपूर्ण विषयों को लिखा गया हो जिनको और विषयों से पहले कार्यान्वित करना हो (प्रायरिटी लिस्ट)।
**प्रादुर्भाव** पु०(सं) १-अस्तित्व में आना। प्रकट होना २-उत्पत्ति। ३-आविर्भाव।
**प्रादुर्भूत** वि०(सं) १-प्रकटित। २-विकसित। निकला हुआ। ३-उत्पन्न।
**प्रादुर्भूतमनोभवा** स्त्री० (सं) एक प्रकार की मध्या-नायिका जिसके मन में काम का पूरा प्रादुर्भाव होता है और उसमें काम के सब चिह्न प्रकट होते हैं
**प्रादेश** पुं०(सं) १-अंगूठे की नोक से तर्जनी तक का एक माप। २-प्रदेश। ३-स्थान। प्रांत।
**प्रादेशन** पुं० (सं) दान।
**प्रादेशिक** वि० (सं) प्रदेश सम्बन्धी। किसी प्रदेश का (टैरीटोरियल)। पुं० (सं) किसी प्रदेश का शासक। सूबेदार।
**प्रादेशिक आयुक्त** पुं० (सं) किसी प्रदेश के जटिल कानूनी प्रश्नों को हल करने के लिए नियुक्त उच्च अधिकारी। (रीजनल कमिश्नर)।
**प्रादेशिक क्षेत्राधिकार** पुं० (सं) प्रादेशिक अधिकार या कार्य क्षेत्र। (टैरिटोरियल ज्यूरिसडिक्शन)।
**प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र** पुं० (सं) वह प्रादेशिक स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। (टैरिटोरियल कांस्टीट्यूएंसी)।
**प्रादेशिक भार** पुं० (सं) किसी प्रदेश पर डाला गया भार या जुम्मेदारी। (टैरिटोरियल चार्ज)।
**प्रादेशिक श्रम-भाजन** पुं० (सं) श्रम का राज्य-क्षेत्रिक विभागों के अनुसार वर्गीकरण (टैरिटोरियल डिवीजन ऑफ लेबर)।
**प्रादेशिक-सेना** स्त्री० (सं) किसी प्रदेश में स्थानीय सुरक्षा के उद्देश्य से विशेषतः नागरिकों की तैयार की हुई सेना। (टैरिटोरियल आर्मी)।
**प्रादेशिनी** स्त्री० (सं) तर्जनी।
**प्राधान्य** पुं० (सं) १-प्रधानता। श्रेष्ठता। २-मुख्यता।
**प्राधिकरण** पु० (सं) किसी व्यक्ति को आदेश आदि देने का अधिकार देना।
**प्राधिकार** पु० (सं) किसी व्यक्ति को मिलने वाला वह अधिकार जो उसे बाधाओं या कठिनाइयों से बचाता हो। (प्रिवेलेज)। २-वह जिसे किसी कार्य का अधिकार प्राप्त हो। (अथॉरिटी)।
**प्राधिकारी** पु० (सं) १-वह जिसे अधिकार प्राप्त हो, (अथॉरिटी)। २—अधिकारियों का वर्ग। (अथॉरिटीज)।
**प्राधिकृत** वि० (सं) १-जिसको कोई काम करने का अधिकार हो। (अथॉराइज)। २-जिसे अधिकार या सुभीता मिला हो। (प्रिविलेज्ड)।
**प्राधिकृत अभिकर्ता** पु० (सं) वह अभिकर्ता जिसे विधिपूर्वक किसी के लिये काम करने का अधिकार प्राप्त हो। (अथॉराइज्ड-एजेंट)।
**प्राधिकृत-पूंजी** स्त्री० (सं) किसी कारखाने आदि में लगाई जाने वाली वह पूँजी जिसको किसी सीमित समवाय ने हिस्सेदारों से लेने की अनुमति सरकार से ले ली हो। (अथॉराइज्ड कैपिटल)।
**प्राध्यापक** पु० (सं) किसी महाविद्यालय आदि में

कोई विषय पढ़ाने वाला उच्च शिक्षा प्राप्त अध्यापक जो उस विषय का विशेषज्ञ या विद्वान हो। (प्रोफेसर, लैक्चरर)।
प्रान पु० (हि) दे० 'प्राण'।
प्रानी पु० (हि) दे० 'प्राणी'।
प्रानुमतिपत्र पु० (सं) वह पत्र जिससे किसी नियन्त्रित माल को नियत मात्रा में खरीदने का अधिकार दिया गया हो। (परमिट)।
प्रानेस पु० (हि) दे० 'प्राणेश'।
प्रापक वि० (सं) १-पाने वाला। २-प्राप्त होने वाला
प्रापण पु० (सं) १-प्राप्ति। मिलना। २-प्रेरणा। ले आना।
प्रापणिक पु० (सं) सौदागर। व्यापारी।
प्रापति स्त्री० (हि) सिद्धि। प्राप्ति।
प्रापना क्रि० (हि) पाना। प्राप्त करना।
प्रापयिता पुं० (सं) प्राप्त करने वाला।
प्रापित वि० (सं) पहुंचाया हुआ। प्राप्त किया हुआ
प्रापी वि० (सं) प्राप्त करने वाला।
प्राप्त वि० (सं) १-लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ २-उत्पन्न। ३-सामने आया हुआ।
प्राप्तकाल पुं० (सं) १-कोई कार्य करने योग्य समय उचित समय। २-मरने योग्य काल। ३-विवाह करने योग्य समय। वि० (सं) जिसका समय आ गया हो।
प्राप्तजीवन वि० (सं) जिसको नई जिंदगी हुई हो। पुनर्जीवन।
प्राप्तमनोरथ वि० (सं) जिसकी मनोकामना पूरी हुई हो।
प्राप्तयौवन वि० (सं) जो जवान हो गया हो।
प्राप्तर्तु स्त्री०(सं) वह लड़की जो रजस्वला हो गई हो
प्राप्तव्य वि०(सं) प्राप्त। मिलने वाला।
प्राप्तव्यवहार वि० (सं) बालिग।
प्राप्ताधिकार पुं० (सं) किसी व्यक्ति, वर्ग आदि को काम करने के सुभीते के लिए दिया गया विशेषाधिकार। (प्रीविलेज)।
प्राप्तानुज्ञ वि० (सं) जिसे कोई माल खरीदने पर बेचने के लिए अधिकार पत्र या अनुज्ञा पत्र दिया गया हो। (लाइसेंस्ड)। पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे उपरोक्त अनुज्ञा पत्र दिया गया हो। (लाइसेंसी)।
प्राप्तावसर वि० (सं) दे० 'प्राप्तकाल'।
प्राप्ति स्त्री० (सं) १-उपलब्धि। प्रापण। २-रसीद। पहुंच। ३-अर्जन। ४-उदय। ५-भाग्य। ६-व्याप्ति प्रवेश। ७-मेल। ८-नाटक का सुखद उपसंहार। ९-अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे वांछित पदार्थ मिलता है।
प्राप्तिकर्ता पुं० (सं) वह जिसे कोई वस्तु मिले या प्राप्त हो। (रिसीपिऐंट)।
प्राप्तिका स्त्री० (सं) वह पत्र जिस पर किसी वस्तु की पहुंच का उल्लेख हो। (रिसीप्ट)।
प्राप्त्याशा स्त्री० (सं) मिलने की आशा।
प्राप्य वि० (सं) १-पाने या प्राप्त करने योग्य। २-जो किसी को आवश्यक रूप में प्राप्त करना हो। ३-बाकी धन अथवा वस्तु जो लेनी हो। (ड्यू)।
प्राप्यक पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी के नाम पड़ी रकम या माल का ब्योरा और मूल्य लिखा रहता है प्राप्यधन या बाकी का सूचक पत्र। (बिल)।
प्राबल्य पुं० (सं) १-प्रबलता। २-प्रधानता।
प्राभिकर्ता पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति के प्रतिनिधि रूप में कार्य करने का अधिकार-पत्र प्राप्त हो। (एटॉर्नी)।
प्राभियोक्ता पुं० (सं) किसी के विरुद्ध कोई आक्षेप लगाकर मामला चलाने वाला। (प्रॉसीक्यूटर)।
प्राभियोक्ता-पक्ष पुं० (सं) जिसकी ओर से कोई मामला चलाया गया हो वह पक्ष। (प्रॉसीक्यूशन)।
प्राभियोजन पुं० (सं) किसी के विरुद्ध कोई आरोप लगा कर मामला चलाना। (प्रॉसीक्यूशन)।
प्रामंडलिक वि० (सं) प्रमण्डल-सम्बन्धी। (डिवीजनल)
प्रामाणिक वि० (सं) १-प्रमाण के रूप में मान्य। २-जो प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध हो। (अथॉरिटेटिव)। ३-ठीक मानने योग्य। ४-सत्य।
प्रामाण्य पुं० (सं) १-प्रामाणिकता। २-मान-मर्यादा।
प्रामिसरी वि० (अं) जिसमें किसी बात की प्रतिज्ञा हो
प्रामिसरीनोट पु० (अं) १-वह राजकीय पत्र जिसमें सरकार जनता से कुछ ऋण लेकर ब्याज समेत एक निश्चित समय के बाद लौटाने का करार करती है। २-वह लेख या पत्र जिस पर लेने वाला यह लिख कर हस्ताक्षर करे कि उधार लिया हुआ रुपया वह निश्चित काल पर पत्र दिखाने पर वापिस कर देगा। हुंडी।
प्रायः अव्य० (सं) अकसर। अधिक अवसरों पर। २-लगभग। वि० (सं) अधिकतर। करीब-करीब।
प्राय पुं० (सं) १-समान। बराबर। २-लगभग। ३-आयु। ४-मृत्यु। ५-इष्टसिद्धि के लिए मरण पर्यन्त उपवास करने के लिए उद्यत होना। वि०(सं) समान पूर्ण।
प्रायद्वीप पुं० (हि) दे० 'प्रायोद्वीप'।
प्रायशः अव्य० (सं) बहुधा। अक्सर। अधिकतर। प्रायः।
प्रायश्चित्त पुं० (सं) वह शास्त्रीय कृत्य जिसके करने से पापों का निवारण होता है।
प्रायिक वि० (सं) १-प्रायः या अकसर होने वाला। २-सामान्यतः सभी अवसरों पर अपने नियमों के अनुसार होने वाला। (यूजुअल)। ३-गिनती अनुमान से कुछ ठीक। (एप्रॉक्सीमेट)।

**प्रायोगिक** *वि०*(सं) १-प्रयोग सम्बन्धी। २-प्रयोग के रूप में किया जाने वाला। (अप्लाइड, एक्सपेरिमेंटल)।
**प्रायोज्य** *वि०* (सं) प्रयोग में आने वाला।
**प्रायोद्वीप** पुं० (सं) स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।
**प्रायोपवेश** पुं०(सं) प्राण त्यागने के लिए किया जाने वाला अनशन व्रत।
**प्रायोपवेशन** पुं० (सं) दे० 'प्रायोपवेश'।
**प्रायोवाद** पुं० (सं) कहावत। लोकोक्ति।
**प्रारंभ** पुं० (सं) आरम्भ। आदि। (कमेंसमेंट)।
**प्रारंभण** पुं० (सं) प्रारंभ या शुरू करना।
**प्रारंभिक** *वि०*(सं) १-आरम्भ या शुरू का। २-सबसे पहले होने वाला। (प्रिलिमिनरी)।
**प्रारब्ध** *वि०*(सं) आरम्भ किया हुआ। पुं०(सं) १-वह कर्म जिसका फल भोग आरम्भ हो चुका है। २-भाग्य।
**प्रारूप** पुं० (सं) किसी लेख, प्रस्ताव, योजना, विधेयक आदि का शीघ्रता से प्राथमिक रूप से तैय्यार किया गया रूप जिसमें संशोधन की आवश्यकता पड़ती है। प्रालेख। (ड्राफ्ट)।
**प्रारूपकार** पुं० (सं) प्रारूप या कच्चा मसौदा तैयार करने वाला। (ड्राफ्ट्समैन)।
**प्रार्थन** पुं०(सं) १-प्रार्थना करना। मांगना। याचना।
**प्रार्थना** *स्त्री०*(सं) १-किसी से कुछ मांगना या चाहना २-विनय। ३-निवेदन ४-तंत्रानुसार एक प्रकार की मुद्रा। *क्रि०* (सं) विनती करना।
**प्रार्थनापत्र** पुं० (सं) वह लेख जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। आवेदन पत्र। (एप्लिकेशन)
**प्रार्थनाभंग** पुं० (सं) प्रार्थना की स्वीकृति न मिलना
**प्रार्थनासमाज** पुं० (सं) ब्रह्मसमाज के समान एक मत जिसके अनुयायी मूर्ति पूजा और जातपांत का भेद नहीं मानते।
**प्रार्थनासिद्धि** *स्त्री०*(सं) इच्छा का पूरा होना।
**प्रार्थनीय** *वि०* (सं) प्रार्थना या निवेदन करने योग्य
**प्रार्थयिता** पुं० (सं) प्रार्थना करने वाला।
**प्रार्थित** *वि०* (सं) जो मांगा गया हो। याचित। पु० (सं) इच्छा।
**प्रार्थिक पूंजी** *स्त्री०* (सं) किसी सीमित समवाय की अधिकृत पूंजी का वह अंश जिसके लिए प्रार्थना पत्र स्वीकृत कर लिये गये। (सब्सक्राइब्ड कैपिटल)
**प्रार्थी** *वि०* (सं) प्रार्थना या निवेदन करने वाला।
**प्रार्थ्य** *वि०* (सं) प्रार्थना के योग्य।
**प्रालंब** पुं० (सं) १-वह माला जो गरदन से छाती तक लटकती है। २-रस्सी के समान कोई लटकती हुई वस्तु।
**प्रालंबक** पुं० (सं) सीने तक लटकाने वाली माला।
**प्रालंबिका** *स्त्री०* (सं) गले में पहनने की माला या हार।
**प्रालेख** पुं० (सं) दे० 'प्रारूप'। (ड्राफ्ट)।
**प्रालेय** पुं० (सं) १-हिम। पाला। २-बरफ।
**प्रालेयधर** पुं० (सं) हिमालय।
**प्रालेयशैल** पुं० (सं) हिमालय।
**प्रालेयरश्मि** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
**प्रालेयांशु** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
**प्रालेयाद्रि** पुं० (सं) हिमालय।
**प्रावरण** पुं० (सं) १-ओढ़ने का वस्त्र। चादर। २-ढक्कन। प्रच्छादन।
**प्राविधानिक** *वि०* (सं) १-प्रविधान-विषयक। २-जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। (स्टैट्यूटरी)
**प्राविधिक** *वि०* (सं) किसी कला, शिल्प आदि की विशेष कार्य रीति। (टेकनिकल)।
**प्राविधिक-प्रापत्ति** *स्त्री०* (सं) वह आपत्ति जो नियम, प्रविधि आदि के अननुपालन के आधार पर की गई हो। (टैकनिकल ऑब्जेक्शन)।
**प्राविधिज्ञ** पुं० (सं) किसी अल्प कला आदि की विशेष कार्य रीति का वेत्ता। (टैक्नीशियन)।
**प्रावीण्य** पु० (सं) निपुणता। कुशलता।
**प्रावट** पु० (सं) वर्षाऋतु। पावस।
**प्रावृतकाल** पुं० (सं) वर्षा का मौसम।
**प्रावृत** पुं० (सं) १-घूंघट। बुरका। २-ओढ़ने का वस्त्र। उत्तरीय। (रैपर)। *वि०* (सं) ढका हुआ। घिरा हुआ।
**प्रावृष** पुं० (सं) वर्षाऋतु।
**प्रावृषा** *स्त्री०* (सं) वर्षाऋतु।
**प्रावृषेय** *वि०* (सं) वर्षाकाल में होने वाला।
**प्राव्राज्य** पु० (सं) दे० 'प्रात्राज्य'।
**प्राशन** पुं० (सं) १-खाना। भोजन करना। २-चखना।
**प्राश्निक** पुं० (सं) १-सभा में कार्रवाई चलाने वाला। १-प्रश्न पूछने वाला। ३-छात्रों की परीक्षा के लिए प्रश्नपत्र तैयार करने वाला। (पेपर सैटर)।
**प्रासंगिक** *वि०* (सं) १-प्रसंग सम्बन्धी। २-प्रसंग द्वारा प्राप्त। ३-किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सम्मुख आने वाला (व्यय आदि)। (कंटिन्जेंट)। ४-अकालिक।
**प्रासविक विज्ञान** पुं० (सं) गर्भवती स्त्रियों को प्रसव कराने की कला का ज्ञान। (मैटरनिटी साइन्स)।
**प्रासाद** पुं०(सं) १-बहुत बड़ा मकान। महल। राजभवन। २-देवालय। ३-राजमहल की चोटी।
**प्रासादकुक्कुट** पुं० (सं) कबूतर।
**प्रासादिक** *वि०* (सं) १-दयालु। कृपालु। २-सुन्दर। ३-प्रसाद सम्बन्धी। ४-जो प्रसाद में दिया जाय।
**प्रासादीय** *वि०* (सं) प्रासाद सम्बन्धी। प्रासाद का।

**प्रासूतिक** *वि०* (सं) प्रसूति-सम्बन्धी।
**प्रास्ताविक** *वि०* (सं) १-प्रस्ताव के रूप में काम आने वाला। २-समयोचित।
**प्रास्थानिक** *वि०*(सं) (वह वस्तु) जो प्रस्थान के समय शुभ समझी जाती हो।
**प्रिंसिपल** पुं०(अं) १-किसी महाविद्यालय या विद्यालय का सर्वोच्च अध्यापक या अधिकारी। २-मूल धन।
**प्रिथिमी** *स्त्री०* (हि) पृथ्वी।
**प्रियंकर** *वि०* (सं) प्रसन्नकारक।
**प्रियंवद** *वि०* (सं) मीठा बोलने वाला। प्रियवादी।
**प्रिय** *वि०* (सं) १-जिससे प्रेम हो। प्यारा। २-सुन्दर मनोहर। पुं० (सं) १-पति। स्वामी। २-जमाता। ३-ऋद्धि। ४-कंगनी। ५-हित। बेंत। ६-हरताल ७-ईश्वर।
**प्रियकांक्षी** *वि०* (सं) जो भला चाहे।
**प्रियकारक** *वि०* (सं) भला करने वाला। पुं० (सं) मित्र।
**प्रियकारी** *वि०* (सं) प्रियकारक।
**प्रियजन** पुं० (सं) प्रेमपात्र। सगे-सम्बन्धी।
**प्रियतम** *वि०* (सं) सबसे अधिक प्रिय। पुं० (सं) पति स्वामी।
**प्रियतमा** *वि०* (सं) अत्यधिक प्यारी। *स्त्री०* (सं) पत्नी प्रेमिका।
**प्रियता** *स्त्री०* (सं) प्रेम। प्रिय होने का भाव।
**प्रियत्व** पुं० (सं) प्रियता।
**प्रियदर्शन** *वि०* (सं) मनोहर। सुन्दर। पुं० (सं) १-तोता। २-खिरनी का पेड़।
**प्रियदर्शी** *वि०* (सं) सबको प्रिय समझने वाला। पुं० (सं) अशोक राजा की उपाधि।
**प्रियपात्र** पुं० (सं) जिसके साथ प्रेम किया जाय।
**प्रियभाव** पुं० (सं) प्रेम।
**प्रियभाषी** *वि०* (सं) मधुर वचन बोलने वाला।
**प्रियवचन** पुं० (सं) मधुर वचन। प्रिय वाक्य।
**प्रियवादी** पुं० (सं) १-प्रियभाषी। २-चापलूस।
**प्रिया** *स्त्री०* (सं) १-नारी। स्त्री। २-पत्नी। ३-इलायची। ४-चमेली। मल्लिका। ५-मदिरा। ६-प्रेमिका। माशूका। ७-कंगनी।
**प्रियाल** पुं० (सं) चिरौंजी का पेड़।
**प्रियाला** *स्त्री०* (सं) दाख।
**प्रियोक्ति** *स्त्री०* (सं) चापलूसी की बात। चिकनी चुपड़ी बात।
**प्रीणन** पुं० (सं) प्रसन्न करना। जो प्रसन्न करे।
**प्रीणित** *वि०* (सं) संतुष्ट। प्रसन्न।
**प्रीत** *वि०*(सं) १-प्रसन्न। आह्लादमय। २-संतुष्ट। ३-प्यारा। *स्त्री०* (हि) दे० 'प्रीति'।
**प्रीतम** (हि) दे० 'प्रियतम'।
**प्रीति** *स्त्री०* (सं) १-संतोष। २-हर्ष। आनन्द। ३-प्रेम। ४-कामदेव की स्त्री का नाम जो रति की सौत थी। ५-फलित ज्योतिष के सत्ताइस योगों में से एक।
**प्रीतिकर** *वि०* (सं) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला।
**प्रीतिकर्म** पुं० (सं) प्रेमपूर्ण कार्य।
**प्रीतिकारक** *वि०* (सं) दे० 'प्रीतिकर'।
**प्रीतिकारी** *वि०* (सं) दे० 'प्रीतिकर'।
**प्रीतिदत्त** पुं० (सं) १-प्रेम पूर्वक दिया हुआ दान। २-वह सम्पत्ति जो किसी स्त्री को सगे संबन्धियों से मिली हो।
**प्रीतिदान** पुं० (सं) दे० 'प्रीतिदत्त'।
**प्रीतिधन** पुं० (सं) प्रेम या मित्रता के नाते दिया हुआ धन या रुपया।
**प्रीतिपात्र** पुं० (सं) प्रेमपात्र। कोई भी पुरुष या पदार्थ जिसके प्रति प्रेम हो।
**प्रीतिभोज** पुं० (सं) मित्रों और बन्धुबांधवों के साथ बैठ कर खाना पीना। दावत। (डिनर)।
**प्रीतिवर्द्धन** पुं० (सं) विष्णु। *वि०* (सं) प्रीति बढ़ाने वाला।
**प्रीतिवर्धन** पुं० (सं) दे० 'प्रतिवर्द्धन'।
**प्रीतिवाद** पुं० (सं) मैत्रीपूर्ण बातचीत।
**प्रीति विवाह** पुं० (सं) पहले से प्रेम सम्बन्ध के कारण होने वाला विवाह।
**प्रीति सम्मेलन** पुं० (सं) विद्यालय आदि के नये या पुराने छात्रों का वार्षिकोत्सव आदि पर इकट्ठे होकर एक दूसरे से मिलना तथा नाटक आदि खेलना। (सोश्यल गैदरिंग)।
**प्रीतिस्निग्ध** *वि०* (सं) प्रेम या स्नेह के कारण आर्द्र। (नेत्र)।
**प्रीत्यर्थ** अव्य० (सं) १-प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के लिए। २-लिए। वास्ते।
**प्रूफ** पुं० (अं) १-प्रमाण। सबूत। २-किसी छापे जाने वाले लेख पुस्तकादि का वह नमूना जिसमें गलतियां ठीक की जाती हैं। ३—वस्तु विशेष को रोकने वाला-जैसे वाटर-प्रूफ।
**प्रूफरीडर** पुं० (अं) प्रूफ की अशुद्धियां आदि ठीक करने वाला।
**प्रेंखण** पुं० (सं) १—झूलने की क्रिया या भाव। २-झूला।
**प्रेंखित** *वि०* (सं) झूला हुआ। कंपित।
**प्रेक्षक** पुं० (सं) देखने वाला। दर्शक।
**प्रेक्षण** पुं० (सं) १-देखने की क्रिया। २-नेत्र, आंख। ३-कोई सार्वजनिक तमाशा।
**प्रेक्षणक** पुं० (सं) १-खेल। तमाशा। २-खेल या तमाशा देखने वाला।

**प्रेक्षणीय** वि० (सं) १-देखने योग्य। २-दर्शनीय। ध्यान देने योग्य।
**प्रेक्षा** स्त्री० (सं) १-देखना। २-नृत्य, नाटक आदि देखना। ३-बुद्धि। प्रज्ञा। ४-दृष्टि। निगाह। ५-शोभा। ६-मनन। विलोचन। विचार।
**प्रेक्षाकारी** वि० (सं) विवेक से काम लेने वाला।
**प्रेक्षागृह** पुं० (सं) १-रंगशाला। नाट्यशाला। २-मंत्रणागृह।
**प्रेक्षागार** पुं० (सं) दे० 'प्रेक्षागृह'।
**प्रेक्षावान** वि० (सं) सोच समझ कर काम करने वाला। चतुर।
**प्रेक्षित** वि० (सं) देखा हुआ।
**प्रेक्षिता** पुं० (सं) दर्शक। देखने वाला।
**प्रेक्षी** वि० (सं) बुद्धिमान। समझदार।
**प्रेक्ष्य** वि० (सं) दे० 'प्रेक्षणीय'।
**प्रेत** वि० (सं) मृत। मरा हुआ। पुं० (सं) १-वह मृतात्मा जो और्ध्वदैहिक कृत्य किए जाने के बाद रह जाती है। २-मृत मनुष्य। ३-पिशाचों के समान एक कल्पित देवयोनि। ४-बहुत ही दुष्ट व्यक्ति।
**प्रेतकर्म** पुं० (सं) दाह से लेकर सपिंडी तक का वह कर्म जो मृतक प्राणी के निमित्त किया जाता है।
**प्रेतकृत्य** पुं० (सं) प्रेतकर्म।
**प्रेत कार्य** पुं० (सं) प्रेतकर्म।
**प्रेतगृह** पुं० (सं) श्मशान।
**प्रेतगेह** पुं० (सं) श्मशान।
**प्रेतता** स्त्री० (सं) दे० 'प्रेतत्व'।
**प्रेततर्पण** पु० (सं) वह तर्पण जो किसी के मरने के दिन से सपिंडी के दिन तक किया जाता है।
**प्रेतत्व** पुं० (सं) प्रेत का भाव या धर्म।
**प्रेतदाह** पुं० (सं) मृतक को जलाने आदि का कर्म।
**प्रेतदेह** स्त्री० (सं) मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु के समय से सपिंडीकरण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है।
**प्रेतनदी** स्त्री० (सं) वैतरणी नदी।
**प्रेतनाह** पुं० (सं) यमराज।
**प्रेतनी** स्त्री० (हि) भूतनी। चुड़ैल।
**प्रेतपटह** पुं० (सं) (प्राचीन काल में) जनाने को ले-जाते समय बजाये जाने वाला ढोल।
**प्रेतपति** पुं० (सं) यमराज।
**प्रेतपावक** पुं० (सं) रात के समय रेगिस्तान जंगलों आदि में चलता हुआ दिखाई देने वाला प्रकाश। लुक। शहाब।
**प्रेतपिंड** पुं० (सं) मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक दिया जाने वाला अन्न का वह पिंड जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि पिंड देह बनती है।
**प्रेतपुर** पु० (सं) यमपुरी।
**प्रेतपुरी** स्त्री० (सं) यमपुरी।
**प्रेतबाधा** स्त्री० (सं) प्रेत द्वारा पहुँचाया गया कष्ट।
**प्रेतभाव** पु० (सं) मृत्यु।
**प्रेतभूमि** पुं० (सं) श्मशान।
**प्रेतमेध** पु० (सं) मृतक के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।
**प्रेतराज** पुं० (सं) यमराज।
**प्रेतलोक** पुं० (सं) यमलोक।
**प्रेतवाहित** वि० (सं) जिस पर भूत सवार हो।
**प्रेतशिला** स्त्री० (सं) गया तीर्थ की वह शिला जिस पर प्रेतों के निमित्त पिंडदान दिया जाता है।
**प्रेतशुद्धि** स्त्री० (सं) प्रेतशौच।
**प्रेतशौच** पुं० (सं) किसी मृत नातेदार के सूतक की शुद्धि।
**प्रेतश्राद्ध** पुं० (सं) मरने की तिथि से एक वर्ष के अन्तर में होने वाला सोलह श्राद्ध।
**प्रेताधिप** पुं० (सं) यमराज।
**प्रेतान्न** पुं० (सं) प्रेत के उद्देश्य से दिया जाने वाला अन्न।
**प्रेतावास** पुं० (सं) श्मशान।
**प्रेताशौच** पुं० (सं) मरने का अशौच। सूतक।
**प्रेतास्थि** पुं० (सं) मुर्दे की हड्डी।
**प्रेतेश** पुं० (सं) यमराज।
**प्रेतेश्वर** पु० (सं) यमराज।
**प्रेतोन्माद** पुं० (सं) प्रेत के कारण होने वाला पागल-पन।
**प्रेप्सा** स्त्री० (सं) पाने या प्राप्त करने की इच्छा।
**प्रेम** पुं० (सं) १-किसी के बहुत अच्छा लगने पर सदा उसे पास रहने के लिए प्रेरित करने वाली मनोवृत्ति। प्रीति। प्यार। २-स्त्री और पुरुष का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप तथा कामवासना के कारण होता है। ३-माया और लोभ। ४-केशव के मतानुसार एक अलंकार।
**प्रेमकर्ता** पुं० (सं) प्रीति करने वाला प्रेमी।
**प्रेमकलह** पुं० (सं) प्रेम के कारण हास-परिहास या झगड़ा करना।
**प्रेमगर्विता** स्त्री० (सं) साहित्य में वह नायिका जिसे यह अभिमान हो कि मेरा पति मुझे बहुत चाहता है।
**प्रेमजल** पुं० (सं) १-पसीना। २-प्रेमाश्रु।
**प्रेमनीर** पुं० (सं) प्रेम के कारण आंखों से निकलने वाला आंसू।
**प्रेमपात्र** पु० (सं) वह जिससे प्रेम किया जाय।
**प्रेमपाश** पु० (सं) प्रेम का जाल या फंदा।
**प्रेम-पुलक** स्त्री० (सं) प्रेम के कारण होने वाला रोमांच।
**प्रेमबंध** पु० (सं) गहरा प्रेम।
**प्रेमबंधन** पुं० (सं) प्रेम का बन्धन।
**प्रेमभक्ति** पु० (सं) विष्णु या श्रीकृष्ण की वह भक्ति

जो बड़े प्रेम से की जाय।
प्रेमभगति स्त्री० (हि) दे० 'प्रेम-भक्ति'
प्रेमभाव पुं० (सं) प्रेम का भाव।
प्रेमवारि पुं० (सं) प्रेमाश्रु।
प्रेमाक्षप पुं० (सं) आक्षेप अलंकार का एक भेद जिस में प्रेम का वर्णन करने ही में बाधा दिखलाई जाती है। (केशव)।
प्रेमालाप पुं० (सं) प्रेम-पूर्वक होने वाली बातचीत या वार्तालाप।
प्रेमालिंगन पुं० (सं) १-सप्रेम गले लगाना। (काम-शास्त्र) नायक और नायिका का एक आलिंगन विशेष।
प्रेमाश्रु पु०(सं) प्रेम के कारण नेत्रों से निकलने वाले आंसू।
प्रेमी पुं० (सं) १-प्रेम करने वाला। चाहने वाला अनुरागी। २-आसक्त। आशिक।
प्रेय पुं० (सं) १-सांसारिक सुख। २-एक अलंकार जिसमें एक भाव दूसरे भाव का स्थायी अंग होता है। वि० (सं) प्रियतर।
प्रेयसी स्त्री० (सं) प्रेमिका। पत्नी।
प्रेयान् पुं० (सं) प्रियतम। पति।
प्रेरक पुं० (सं) प्रेरणा देने वाला। किसी कार्य में प्रवृत्त करने वाला।
प्रेरण पुं० (सं) किसी को किसी कार्य में लगाना या प्रवृत्त करना।
प्रेरणा स्त्री० (सं) १-किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करने की क्रिया या भाव। हलकी उत्तेजना। २-दबाव। जोर।
प्रेरणार्थक क्रिया स्त्री० (सं) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यवहार के सम्बन्ध में यह सूचित होता है कि वह किसी प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ।
प्रेरणीय वि० (सं) किसी कार्य के लिए प्रवृत्त अथवा नियुक्त करने योग्य।
प्रेरना क्रि० (सं) प्रेरणा करना।
प्रेरित वि० (सं) १-जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो। २-भेजा हुआ। प्रेषित।
प्रेषक पुं० (सं) किसी के पास कोई वस्तु भेजने वाला। (सेंडर)।
प्रेषण पुं० (सं) १-कोई वस्तु किसी के पास कहीं से भेजना या रवाना करना। (रेमिट)। २-वह वस्तु जो कहीं से किसी के पास भेजी जाय। (रेमिटेंस, कन्साइन्मेंट)।
प्रेषणकर्मी पुं० (सं) चिट्ठी पत्र आदि पंजी में चढ़ाकर बाहर भेजने का कार्य करने वाला लिपिक। डाक-प्रेषक। (डिस्पैचर)।
प्रेषणपुस्तक पुं० (सं) वह पंजी या पुस्तक जिसमें भेजे गये पत्र, चिट्ठी आदि का ब्योरा लिखा जाता है। (डिस्पैच-बुक)।
प्रेषणादेश-पत्र पुं० (सं) वह पत्र जिसमें किसी दूसरे स्थान से कोई वस्तु भेजने का आदेश या आज्ञा लिखी हो। (ऑर्डर फॉर्म)।
प्रेषणीय वि० (सं) किसी स्थान पर भेजने योग्य।
प्रेषना क्रि० (हि) भेजना।
प्रेषित वि०(सं) १-भेजा या रवाना किया हुआ। २-प्रेरित। पुं० (सं) शब्द साधन की एक प्रणाली।
प्रेषितव्य वि० (सं) जो प्रेषण करने के योग्य हो।
प्रेषिती पु० (हि) वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की जाय या भेजी जाय। (एड्रेसी, कंसाइनी)।
प्रेष्य पुं० (सं) १-नौकर। दास। २-दूत। वि० (सं) जो भेजने के योग्य हो।
प्रेष्यवस्तु प्रालेखन पुं० (सं) (रेल के माल गोदाम आदि से) भेजने वाली वस्तु या माल के ब्योरे को पंजी में चढ़ाने और बदले में रसीद काट कर देने का कार्य। (बुकिंग)।
प्रेस पुं० (अं) १-छापाखाना। २-छापने की कल। ३-समाचार पत्रों का वर्ग। ४-रुई आदि को दबाने की कल।
प्रेस-एक्ट पुं०(अं) वह विधि या नियम जिसके द्वारा छापेखाने वालों के स्वत्वों तथा स्वतंत्रता आदि पर नियंत्रण होता है।
प्रेस गैलरी स्त्री०(अ) विधान सभा आदि में समाचार-पत्रों के रिपोर्टरों के बैठने का स्थान।
प्रेस रिपोर्टर पुं०(अं) वह व्यक्ति जो किसी समाचार-पत्र के लिए समाचार एकत्रित या इकट्ठे करता हो।
प्रैय पुं० (सं) प्रेम। स्नेह।
प्रोक्त वि० (सं) कथित। कहा हुआ। उक्त।
प्रोक्ति स्त्री०(सं) किसी की कही गई बात अथवा उक्ति जो कहीं उद्धृत की गई हो या की जाय। (कोटेशन)।
प्रोग्राम पुं० (सं) १-कार्यक्रम। २-कार्यक्रमसूचक-पत्र
प्रोत वि० (सं) १-मिला हुआ। टांका लगा हुआ। २-किसी में भली भांति मिला हुआ। ३-छिपा हुआ। पुं० (सं) (बुना हुआ) कपड़ा। वस्त्र।
प्रोत्फुल्ल वि०(स) विकसित। भली भांति खिला हुआ।
प्रोत्सारण पुं० (सं) पीछा छुड़ाना। पिंड छुड़ाना।
प्रोत्सारित वि० (सं) स्थानांतरित किया हुआ। निकाला या हटाया हुआ।
प्रोत्साह पुं० (सं) अतिशय उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहक पुं० (सं) उत्साह बढ़ाने वाला। हिम्मत बढ़ाने वाला।
प्रोत्साहन पुं० (सं) १-किसी कार्य को करने के लिए उत्साह बढ़ाना। २-नाटक में एक अलंकार।
प्रोत्साहित वि० (सं) जिसका उत्साह खूब बढ़ाया

गया हो। जिसे अति उत्तेजित किया गया हो।
**प्रोद्धरण** पुं० (सं) १-किसी पुस्तक आदि में लिखा हुआ वह अंश जो किसी लेख आदि में काम लाया जाय। २-ऐसे अंश को पढ़कर सुनाना। (साइटेशन)।
**प्रोद्भूत होना** क्रि०(हिं) १-प्रकट होना। निकालना। २-किसी पूंजी पर ब्याज आदि निकलना। ३-किसी के स्वाभाविक परिणाम आदि के रूप में सामने आना। (टु एक्रू)।
**प्रोनोट** पुं० (अं) १-किसी महाविद्यालय या शिक्षालय का अध्यापक। २-जो द्रव्योपार्जन या सिखाने के लिए कोई विशेष काम करे।
**प्रोषित** वि० (स) जो विदेश गया हो। प्रवासी।
**प्रोषितपति** पुं० (सं) वह पति जो अपनी पत्नी के विरह से विकल हो।
**प्रोषितपतिका** स्त्री० (सं) पति के विदेश गमन से दुखी स्त्री या नायिका।
**प्रोषितप्रेयसी** स्त्री० (सं) प्रोषितपतिका।
**प्रोषितभर्तृका** स्त्री० (सं) प्रोषितपतिका।
**प्रोहित** पुं० (स) दे० 'पुरोहित'।
**प्रौढ़** वि० (सं) १- पूर्ण वृद्धि को प्राप्त। पका हुआ २-अच्छी तरह बढ़ा हुआ। ३-जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ४-गूढ़। गंभीर। ५-पुराना। ६-निपुण। चतुर।
**प्रौढ़ता** स्त्री०(स) प्रौढ़ होने का भाव।
**प्रौढ़त्व** पुं० (सं) प्रौढ़ता।
**प्रौढ़पाद** पुं०(सं) उकडूं बैठना।
**प्रौढ़ा** स्त्री० (स) १-अधिक आयुवाली स्त्री। २-साहित्य में वह नायिका जो काम कला आदि अच्छी तरह जानती हो। ३-तीस से लेकर पचास वर्ष की आयु वाली स्त्री।
**प्रौढ़ाअधीरा** स्त्री०(सं) वह प्रौढ़ा जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देख कर प्रत्यक्ष क्रोध करे।
**प्रौढ़ाधीरा** स्त्री० (सं) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देखकर व्यंग रूप से क्रोध प्रकट करे।
**प्रौढ़ाधीराधीरा** स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने नायक में पर-स्त्रीगमन के चिह्न देखने पर कुछ प्रत्यक्ष और कुछ व्यङ्गपूर्वक कोप प्रकट करे।
**प्रौढ़ोक्ति** पुं०(सं) १-अलंकार जिसमें उत्कर्ष का हेतु न होने पर कल्पित किया जाता है। २-किसी बात का बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
**प्रौण** वि० (सं) निपुण। चतुर।
**प्रौद्योगिक शिक्षा** स्त्री० (सं) किसी विशेष कला या व्यवसाय संबंधी शिक्षा। (टैकनीकल एज्युकेशन)।
**प्रोष्ठपद** पुं०(सं०) १-भादों का महीना। २-कुबेर के एक निधिरक्षक का नाम।
**प्लवंग** पुं०(सं) १-बन्दर। वानर। २-मृग। हिरन। ३-साठ संवत्सरों में से एक। ४-पाकर वृक्ष।
**प्लवंगम** पुं० (स) १-बन्दर। मेंढक।
**प्लवगेंद्र** पुं० (सं) हनुमान।
**प्लवन** पुं० (सं) १-तैरना। २-उछलना। कूदना।
**प्लवग** पुं० (सं) १-अग्नि। आग। २-जलपक्षी।
**प्लावन** पुं० (सं) १-जल की बाढ़। २-तैरना। ३-भली-भांति धोना। ४-बहुत दिनों बाद संसार में वह आने वाली भीषण बाढ जो प्रलय रूप में होती है। (डेल्यूज)।
**प्लावनिक** वि० (स) प्लावन या भीषण बाढ़ विषयक। (डायल्यूवियल)।
**प्लावित** वि० (सं) १-बाढ़ में डूबा हुआ। २-पानी में डूबा हुआ।
**प्लीहा** स्त्री० (सं) १-पेट की तिल्ली। २-तिल्ली बढ़ जाने का रोग।
**प्लीहोदर** पुं० (सं) प्लीहा या तिल्ली का रोग।
**प्लुत** पुं० (सं) १—घोड़े की टेढ़ी चाल। पोई। २—सङ्गीत में तीन मात्रा वाली ताल। ३-टेढ़ी चाल। वि० (सं) जल में डूबा हुआ या तर।
**प्लुष** पुं० (सं) १-जलना। २-तृप्ति। ३-प्रेम।
**प्लुष्ट** वि० (सं) जला हुआ। दग्ध।
**प्लेग** पुं० (अं) एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन। २-महामारी।
**प्लेटफार्म** पुं० (अं) १-समतल चबूतरा। २-रेलवे स्टेशन पर बना ऊँचा चबूतरा जिससे सट कर रेलगाड़ी खड़ी होती है।
**प्लैटिनम** पुं० (अं) एक अमूल्य धातु जो चांदी के रंग की होती है।
**प्लोष** पुं० (सं) १-दाह। जलन। २-भक से जल जाना।
**प्लोषण** पुं० (सं) जलन। दाह।

[शब्दसंख्या—३४०३८]

# फ

देवनागरी वर्णमाला का बाईसवां व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
**फंक** स्त्री० (हिं) फांक। कटा हुआ टुकड़ा।
**फंकनी** स्त्री० (हिं) दे० 'फंकी'।
**फंका** पुं० (हिं) दे० 'फंकी'
**फंका** पुं० (हिं) १-टुकड़ा। खण्ड। २-सूखे दानों या

चुकनी की उतनी मात्रा जो एक बार मुँह में फांकी जा सके।
फंकी स्त्री० (हि) १-चूर्ण रूप में फांकने की दवा। २-छोटी फांक या टुकड़ा। ३-उतनी दवा जो एक बार में फांकी जा सके।
फंग पुं० (हि) १-फंदा। २—प्रेम। अनुराग।
फंड पु० (अं) किसी कार्य विशेष के लिए एकत्र धन।
फंद पु० (हि) १-बंधन। २-जाल। फंदा। ३-छल। ४-मर्म। ५-कष्ट।
फंदवार वि० (हि) फन्दा लगाने वाला।
फंदना क्रि० (हि) फंसना। फंदे में आना। चक्कर में आना। क्रि० फांदना। पार करना।
फंदा पुं० (हि) जाल। फसाने की वस्तु। बन्धन। धोखा। जाल। दुःख। कष्ट। छल। फांसी की रस्सी।
फंदाना क्रि० (हि) फांदने का काम करवाना।
फंफाना क्रि० (हि) उफनना।
फंसना क्रि० (हि) फंदे में जाना। चक्कर में फँस-जाना।
फंसाना क्रि० (हि) फंदे में पकड़ना। चक्कर में डालना। चंगुल में ले लेना।
फ पुं० (सं) कड़वे वचन। व्यर्थ बात। झंझावात।
फक वि० स्वच्छ। बिना रंग का। फीका।
फकत वि० (अ) केवल। मात्र।
फकीर पुं० (अ) साधु। भिखारी। निर्धन।
फ़क़ीरनी स्त्री० (अ) फकीर का स्त्रीलिंग शब्द।
फ़क़ीराना वि० (अ) फकीरों के समान।
फक्कड़ पुं० (हि) १-गाली गलौच। २-बिना धन के मस्त रहनेवाला व्यक्ति। ३-गैर जिम्मेदार व्यक्ति।
फख पुं० (फा) गर्व। घमंड।
फगुआ पुं० (हि) फाग या होली की भेंट।
फगुनहट स्त्री० (हि) फागुन की तेज हवा जिसमें धूल उड़ती है।
फजर स्त्री० (अ) प्रातःकाल।
फ़ज़ल पुं० (अ) अरबी के फज्ल शब्द का अपभ्रंश। कृपा। दया। विद्या। महानता।
फजीता पुं० (अ) झगड़ा। झंझट।
फजीहत स्त्री० (अ) अपमान। बदनामी।
फजूल वि० बेकार। व्यर्थ।
फजूल खर्च अपव्यय। व्यर्थ का खर्च। बेकार धन बरबाद करने वाला।
फजूलखर्ची स्त्री० व्यर्थ धन बरबाद करने की आदत।
फज्ल पुं० (अ) कृपा। दया। विद्या। महानता।
फट स्त्री० (हि) टक्कर से उत्पन्न होने वाला शब्द।
फटफट स्त्री० (हि) मोटर साइकिल। अव्य० तुरन्त।
फटक स्त्री० (हि) स्फटिक। बिल्लौर। अव्य० तुरन्त।
फटकन स्त्री० (हि) अनाज को फटकने से निकलने वाले फूस आदि।
फटकना क्रि० (हि) छाज या सूप से अनाज साफ करना। पुं० (हि) गुलेल का फीता। क्रि० (हि) आना। श्रम करना। चला जाना।
फटकवाना क्रि० (हि) फटक कर साफ करवाना।
फटका पु० (हि) १-धुनियों की धुनकी। २-कोरी तुकबन्दी वाली कविता।
फटकार स्त्री० (हि) डाट-डपट। झिड़की। धिक्कार। लानत।
फटकारना क्रि० १-छाज से फटक कर साफ करना। छल से रुपया ठग लेना। ३-डांटना। ४-शस्त्र चलाना।
फटन स्त्री० (हि) फटने की क्रिया। फटने से उत्पन्न दरार। फटने से उत्पन्न पीड़ा।
फटना क्रि० (हि) दो फांक होना। दरार पड़ना। दूध में खटाई पड़ने से उसका सार अलग हो जाना। बादलों का छिन्न भिन्न होना। विदीर्ण होना। छाती फटना। बहुत दुःख होना।
फटफटाना क्रि० (हि) फटफट शब्द करना। तड़-फड़ाना। मुसीबत में हाथ पैर डालना।
फटा वि० (हि) फटा हुआ। दरार वाला।
फटिक पुं० (हि) स्फटिका का अपभ्रंश। संगमरमर।
फटिका स्त्री० (हि) जौ का घटिया शराब। बीयर।
फट्टा पुं० (हि) फाड़ कर बनाई हुई बांस की तह। पटरा।
फट्टी स्त्री० (हि) बांस की चिरी हुई छड़।
फड़ पुं० (हि) जुए का दाव या अड्डा। माल बेचने का स्थान। (सेल्स काउन्टर)। दल। पक्ष। तोप चढ़ाने की गाड़ी का हरसा।
फड़क स्त्री० (हि) फड़कने की क्रिया।
फड़कन स्त्री० (हि) फड़क। धड़कन। आतुरता।
फड़कना क्रि० (हि) स्फुरण। हिलना। फड़फड़ाना। आतुर होना।
फड़काना क्रि० (हि) फड़कने के लिए प्रेरित करना। आतुरता उत्पन्न करना। प्रसन्न करना।
फड़नवीस पुं० (सं) मराठा काल में एक उच्च पद।
फड़फड़ाना क्रि० (हि) घबराना। तड़फड़ाना।
फड़िंगा पु० (हि) पतङ्गा। झींगुर।
फड़िया पुं० (हि) दे० 'फड़बाज'।
फड़ी स्त्री० (हि) ईंटों या पत्थरों का ३० गज × १ गज × १ गज का ढेर।
फड़ई स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा।
फण पुं० (सं) सांप का फन। रस्सी का फन्दा। नाव का ऊपर का भाग।
फणधर पुं० (सं) सांप। शिवजी।
फणी पुं० (सं) सांप। केतु। सीसा।
फणीन्द्र पुं० (सं) शेषनाग, बड़ा सांप।

फणीरा पुं० (सं) फणीन्द्र।
फतवा पुं० (अ) इसलाम के धर्म गुरु का आदेश।
फतह स्त्री० (अ) विजय।
फतिंगा पुं० (हिं) पतंगा।
फतीला पुं० (अ) बेल-बूटे बनाने में प्रयुक्त लकड़ी की तीली।
फतूर पुं० (अ) विकार। खफ्त। उपद्रव।
फतूरिया पुं० (अ) फतूर करने वाला।
फतूह स्त्री० (अ) जीत। जीता हुआ माल।
फतूही स्त्री० (अ) बिना बांह की कुर्ती। फतूह।
फते स्त्री० फतह का अपभ्रंश।
फतेह स्त्री० फतह का अपभ्रंश।
फदकना क्रि० (हिं) फुदकना का अपभ्रंश।
फन पुं० (हिं) सांप का फण। बाल।
फ़न पुं० (फा) मक्कारी। विद्या। गुण।
फनगना क्रि० (हिं) अंकुर फूटना।
फनगा पुं० (हिं) पतंगा।
फनना क्रि० (हिं) कार्यारंभ होना।
फनफनाना क्रि० (हिं) फनफन शब्द करना।
फनस पुं० (हिं) कटहल।
फना स्त्री० (अ) बरबादी। नाश।
फनाना क्रि० (हिं) तैयार होना। तैयार करना।
फनिंद पुं० (हिं) फणीन्द्र का अशुद्ध रूप।
फन्नी स्त्री० (हिं) लकड़ी का टुकड़ा जो दरार में ठोका जाता है। कंघी के समान बुनने का औजार।
फफूंदी स्त्री० (हिं) फलों आदि पर उत्पन्न होने वाली सफेद काई। साड़ी का बंधन।
फफोला पुं० (हिं) छाला। चमड़ी जल जाने पर उस में पानी भर जाने से फूला हुआ भाग।
फबती स्त्री० (हिं) व्यंग्य। चुटकी। ताना।
फबन स्त्री० (हिं) शोभा। फबने का भाव।
फबना क्रि० (हिं) ठीक लगना। शोभा देना।
फबाना क्रि० (हिं) ठीक बैठाना। शोभा के साथ जमना। उचित स्थान पर रखना।
फबि स्त्री० (हिं) शोभा। सुन्दरता।
फबीला वि० (हिं) फबने वाला। सजने वाला।
फरक दे० फड़क।
फ़रक दे० फर्क।
फरकन स्त्री० (हिं) दे० 'फड़कन'।
फरकना क्रि० (हिं) दे० 'फड़कना'।
फरका पुं० (हिं) १-छप्पर। २-पल्ला। छाजन। ३-द्वार का टट्टर।
फरकाना क्रि० (हिं) दे० 'फड़काना'।
फरचा वि० (हिं) शुद्ध। पवित्र। साफ। सुथरा।
फरजंद पुं० (फा) पुत्र।
फरजिंद पुं० (फा) दे० 'फरजंद'।
फरजी पुं० (फा) शतरंज में 'वजीर' नामक मोहरा। वि० (फा) नकली। बनावटी।
फरद स्त्री० (फा) दे० 'फर्द'।
फरना क्रि० (हिं) दे० 'फलना'।
फरफंद पुं० (हिं) छल-कपट। नखरा।
फरफंदी वि० (हिं) छली। कपटी। नखरेबाज।
फरफर पुं० (हिं) उड़ने से या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द।
फरफराना क्रि० (हिं) दे० 'फड़फड़ाना'।
फरफुंदा पुं० (हिं) पतंगा।
फरमा पुं० (अं) 'फार्म' का विकृत रूप। ढांचने का सांचा। डौल। ढांचा। कागज का वह पूरा ताव जो एक बार मशीन पर छपता है।
फरमाइश स्त्री० (फा) आदेश। प्रकट की हुई इच्छा।
फरमाइशी वि०(फा) आदेश पर की हुई बात। अच्छा या बढ़िया।
फरमान पुं० (फा) राजा की आज्ञा। आज्ञापत्र।
फरमाना क्रि० (फा) कहना। आज्ञा देना।
फरयाद स्त्री० (हि) दे० 'फरियाद'।
फरलांग पुं० (अं) मील का आठवां भाग। २२०गज
फरवरी पुं० (अं) ईसा संवत् के वर्ष का दूसरा मास
फरवी स्त्री० (हिं) मुरमुरा। भुना हुआ चावल।
फरश पुं० (अ) दे० 'फर्श'।
फरशी स्त्री० (फा) हुक्का।
फरस पुं० (हिं) दे० 'फर्श'। दे० 'फरसा'।
फरसा पुं० (हि) चौड़ा कुल्हाड़ा। परशु। कुठार। फावड़ा।
फरसी स्त्री० (हिं) दे० फरशी।
फरहत पुं० (अं) १-प्रसन्नता। आनन्द। मनःशुद्धि
फरहद पुं० (हि) बंगाल का समुद्र तटीय वृक्ष विशेष, निंबतरु।
फरहरा पुं० (हिं) झंडा। झंडी का कपड़ा। वि० (हिं) शुद्ध। निर्मल। पृथक। स्पष्ट। खिला हुआ। प्रसन्न
फरहरी स्त्री० (हिं) फल।
फरा पुं० (हिं) एक प्रकार का व्यंजन।
फराक पुं० (हिं) मैदान। वि० लम्बा चौड़ा। (दे० फराख)।
फराकत वि० (हिं) लम्बा-चौड़ा। आयत। पुं० (सं) देखो 'फरागत'।
फराख वि० (हिं) विस्तृत। लम्बा-चौड़ा।
फरागत स्त्री० (अ) छुट्टी। मुक्ति। पाखाने जाना।
फरामोश वि० (फा) भूला हुआ।
फरार वि० (अ) भागा हुआ।
फरासीसी वि०(हिं) 'फ्रांसीसी' शब्द का विकृत रूप।
फरिया स्त्री० (हिं) एक प्रकार का लहँगा। मिट्टी की नांद। रहट की लकड़ियां जिन पर हांड़ियां लटकती हैं।
फरियाद स्त्री०(फा) शिकायत। पीड़ित होने पर न्याया-

लय या राजदरबार में की गई प्रार्थना। (कम्प्लेन्ट) (संविधान)।
फरियादी पुं० (फा) फरियाद करने वाला। (कम्प्लेनेंट)।
फरियाना क्रि० (हि) दे० 'फटकना'।
फरिश्ता पुं० (फा) इस्लाम के ग्रन्थों में वर्णित एक प्रकार का देवदूत। देवता के समान सज्जन व्यक्ति
फरी स्त्री० (हि) गाड़ी का हरसा। फाल। कुशी। एक छोटी सी चमड़े की ढाल।
फरीक पुं० (अ) विपक्षी। प्रतिद्वन्द्वी।
फरुई स्त्री० (हि) दे० 'फरुही'।
फरुही स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा। मथानी। मुरमुरा।
फरेन्द्र पुं० (सं) जामुन का वृक्ष।
फरेब पुं० (फा) छलकपट। धोखा।
फरेबी वि० (फा) धोखेबाज।
फरेरा पुं० दे० 'फरहरा'।
फरेरी स्त्री० (हि) जंगल का एक फल या मेवा।
फरो वि० (फा) दबा हुआ।
फरोख्त स्त्री० (फा) विक्रय। बिक्री।
फर्क पुं० (अ) अन्तर। भेद। परायापन। दुराव। कमी।
फर्ज पुं० (अ) कर्तव्य। उत्तरदायित्व।
फर्ज करना क्रि०(फा) मान लेना। कल्पना करना।
फर्जी वि० (फा) कल्पित। नकली। दे० 'फरजी'।
फर्द स्त्री०(फा) १-वह कागज जिसपर ब्यौरा, लेखा, विवरण आदि लिखा हो। २-शाल। चद्दर। ३-बिना जोड़े का अकेला पशु या पक्षी।
फर्दजुर्म (फा) वह कागज जिसपर अभियुक्त के विरुद्ध अभियोग लिखा होता है। (चार्ज शीट)।
फर्रा पुं० (हि) फसल का एक रोग। लम्बा चौड़ा कागज जिसपर बहुत कुछ लिखा हो। चेतावनी देने वाला दफ्तरी पत्र। मोटी ईंट।
फर्राटा पुं० (हि) तेजी। वेग। खर्राटा।
फर्राश पुं० (अ) वह नौकर जो सफाई आदि करता है
फर्राशी वि० (फा) फर्राश-सम्बन्धी। स्त्री० फर्राश का पद।
फर्श पुं० (फा) आंगन। चौक। पक्का बैठने का स्थान
फर्शी स्त्री० (अ) हुक्का। वि० फर्श सम्बन्धी।
फर्शी सलाम पुं० (अ) फर्श तक झुककर किया हुआ सलाम। खुशामद।
फलंक पुं० (हि) १-देखो 'फलांग'। २-आकाश।
फल पुं० (सं) वनस्पति का गूदेदार खाने योग्य भाग २-परिणाम। नतीजा। ३-चार फल--धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। ४-लाभ। ५-गुण। प्रभाव। ६-बदला ७-शस्त्र का धार वाला भाग। ८-हल के आगे का लोहे वाला भाग। ९-ढाल। १०-त्रिराशि की चौथी राशि। ११-जायफल। १२-गिरी। १३-प्रयोजन। १४-उद्देश्य। १५-ब्याज।
फलकंटक पुं० (सं) कटहल।
फलक पुं० (सं) १-तख्ता। पट्टा। २-चादर। ३-पत्र। पृष्ठ। ४-चौकी। ५-नितंब। कूल्हा। ६-हथेली। ७-फल। ८-कमल का बीज कोष। ९-माथे की हड्डी। १०-धोबी का पट्टा। ११-ढाल। १२-लाभ। १३-खाट का बुनावट वाला भाग।
फलक पुं० (अ) आकाश। स्वर्ग।
फलकना क्रि० (हि) छलकना। फड़कना।
फलका पुं० (हि) फफोला। भलना। जहाज की छत में छोटा सा दरवाजा।
फलकाम वि० फल की कामना करने वाला।
फलतः अव्य० (सं) फलस्वरूप। इसलिए। (कौन्सीक्वेन्टली)।
फलत्रय पुं० (सं) पेट साफ करने का चूर्ण। हरड़, बहेड़ा और आमला। द्राक्षा, परुष और काश्मीरी ये तीन फल।
फलद वि० (सं) फल देने वाला। लाभदायक। वृक्ष।
फलदान पुं० (हि) विवाह पक्का करने के लिए फल आदि देने की रस्म। टीके की रस्म।
फलदार वि० (हि) फल वाला। फलने वाला।
फलना क्रि० (हि) फल देना। फल आना। लाभ प्राप्त होना। शरीर में फुंसियां निकलना। सन्तानवती बनना।
फलना-फूलना क्रि० (हि) फल और फूल वाला होना। सुखी सम्पन्न होना। बाल बच्चों वाला होना।
फल-परिरक्षण पुं० (हि) फलों की सड़ने से रक्षा। फलों का मुरब्बा आदि बनाना। (फ्रूटप्रिजरवेशन)
फल-पाक पुं० (सं) करौंदा।
फलपादक पुं० (सं) फल का वृक्ष।
फल-पुच्छ पुं० (सं) गांठ वाली सब्जी जैसे प्याज। शलगम।
फल-पुष्प पुं० (सं) फल और फूल। फल और फूल दोनों उत्पन्न करने वाली वनस्पति।
फलपुष्पा स्त्री० (सं) पिण्डखजूर।
फलपूर स्त्री० (सं) अनार। दाड़िम।
फलप्रद वि० (सं) फलदायक। लाभदायक।
फलभागी वि० (सं) फल भोगने वाला।
फल-भूमि स्त्री० (सं) फलों का भोग करने का स्थान-स्वर्ग या नर्क।
फलभोग पुं०(सं) फलों का भोग। लाभ-हानि। सुख-दुःख का भोग।
फलयोग पुं० (सं) फल-प्राप्ति। वेतन। पुरस्कार। नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि का स्थान।
फलराज पुं० (सं) तरबूज।
फलवन्ध्य वि०(सं) ऐसा वृक्ष जिसमें फल न लगते हों
फलवर्ति स्त्री० (सं) घाव में भरने की मोटी बत्ती।

फलवर्तुल पुं० (सं) कुम्हड़ा।
फलवान वि० (सं) फलवाला।
फलवृक्षक पुं० (सं) कटहल।
फलश पुं० (सं) कटहल।
फलशाक पुं० (सं) वह फल जिसका साग बनता हो
फलश्रेष्ठ पुं० (सं) आम।
फलसफा पुं० (अ) फिलासफी। दर्शनशास्त्र। तर्क।
फलस्नेह पुं० (सं) अखरोट।
फलां वि० (फा) अमुक।
फलांग स्त्री० (हि) छलांग। एक छलांग में पार किया जाने वाला अन्तर।
फलांगना क्रि० (हि) कूदना। छलांग मारना। कूद कर पार करना।
फलाकांक्षा स्त्री० (सं) फल की आकांक्षा। फल की इच्छा।
फलागम पुं० (सं) फल का आना। फल की ऋतु। शरद्‌ऋतु।
फलाढ्या स्त्री० (सं) जंगली केला।
फलात्मिक पुं० (सं) करेला।
फलादन पुं० (सं) फल खाने वाला। तोता।
फलादेश पुं० (सं) फल बताना। कुंडली जन्मपत्री आदि देखना।
फलाना वि० दे० 'फलां'। क्रि० फलने के लिए प्रेरित करना।
फलाफल पुं० (सं) फल और अफल। अच्छा और बुरा। परिणाम।
फलाम्ल पुं० (सं) अम्ल (खट्टा) फल। इमली आदि
फलाम्ल-पंचक पुं० (सं) पांच खट्टे फल-बेर, अनार, इमली, अम्लबेत, बिजौरा।
फलाराम पुं० (सं) फलों का बाग।
फलार्थी वि० (सं) फल की कामना करने वाला।
फलालैन पुं० (अ) एक प्रकार का कोमल ऊनी कपड़ा
फलाशी वि० (सं) फल ही खाने वाला। फलाहारी। तोता।
फलासव पुं० (सं) फलों का आसव (फ्रूट ज्यूस)।
फलाहार पुं०(सं) फलों का आहार। ऐसा व्रत जिसमें अन्न न खाया जाता हो अन्न के बिना बना हुआ भोजन।
फलाहारी पुं० (हिं) जो फलों का ही भोजन करे।
फलित वि० (सं) फला हुआ। सफल। पूर्ण। सम्पन्न।
फलित-ज्योतिष पुं० (सं) ग्रह नक्षत्रों से मनुष्य के भाग्य का सम्बन्ध जोड़ने वाली विद्या।
फलितव्य वि० (सं) फल देने योग्य।
फली स्त्री० (हि) छोटे बीजों वाला लम्बा और चिपटा फल जिसमें से दालों के दाने निकलते है—मटर, सेम, गवार आदि।
फलीता पुं० (अ. फतीला) बत्ती। पलीता।
फलीभूत वि० (सं) सफल। फलदायक। फलित।
फलेंदा पुं० (हि) दे० 'फलेंद्र'।
फलेंद्र पुं०(सं) बड़ा जामुन जिसमें गूदा और मिठास अधिक हो।
फलोत्पत्ति स्त्री० (सं) फल की उत्पत्ति। लाभ।
फलोदय पुं० (सं) फलोत्पत्ति। लाभ। स्वर्ग। हर्ष। दंड
फलोद्भव वि० (सं) फल से उत्पन्न होने वाला।
फलोपजीवी वि० (सं) फल खाकर निर्वाह करनेवाला फल का व्यवसाय करने वाला।
फल्गु स्त्री० (सं) १-सारहीन। क्षुद्र। शक्तिरहित। २-गया नगर के पास बहने वाली नदी।
फव्वारा पुं० (हि) फुहारा।
फसकड़ा पुं० (हि) चूतड़ टेककर बैठने का ढंग।
फसल स्त्री०(सं) बाग या खेती की पैदावार। अन्न या फल पकने का समय। काल।
फसली वि० (अ) फसल सम्बन्धी।
फसली कौवा पुं० एक प्रकार का पहाड़ी कौवा। स्वार्थी मित्र।
फसली बुखार पुं० (अ) मौसमी बुखार मलेरिया (जूड़ी-ज्वर)।
फसली साल पुं०(अ) अकबर द्वारा चलाया गया एक संवत्सर जो फसलों के अनुसार होता है।
फसाद पुं० (अ) उत्पात। लड़ाई। झगड़ा। बिगाड़। उपद्रव।
फसादी वि० (अ) फसाद करने वाला।
फसाना पुं० (फा) कहानी।
फस्द स्त्री० (अ) रग को काट कर रक्त निकलने की क्रिया।
फहरना क्रि० (हि०) हवा में लहराना।
फांक स्त्री० (हि) फल आदि का लम्बा टुकड़ा। खंड।
फांकना क्रि० (हि) चूर्ण आदि को मुँह में डालना। फंक लेना।
फांका पुं० (हि) फांकने की क्रिया। दे० 'फंकी'।
फांकी स्त्री० (हि) दे० 'फंकी'। दे० 'फांक'।
फांग स्त्री० (हि) एक प्रकार का साग।
फांड स्त्री० दे० 'फांड़ा'।
फांड़ा स्त्री० (हि) धोती का कमर में लपेट कर बांधा हुआ भाग फेंटा।
फांद स्त्री० (हि) फंदा। जाल। छलांग। उछाल। फलांग।
फांदना क्रि० (हि) उछलना। छलांग मार कर पार करना।
फांस स्त्री० (हि) पतला सा बांस या लकड़ी का रेशा जो चमड़ी में फंस जाये, चुभने वाली चीज। खटकने वाली बात। फंदा।
फांसना क्रि० (हि) १-जाल में फंसाना। २-छल से काबू में करना।

**फांसी** स्त्री० (हिं) १-गले में फंदा डालकर प्राण दण्ड देने की प्रथा। फंदे की रस्सी। २-असह्य दुःख।
**फाइन** पुं० (अं) अर्थदण्ड। जुर्माना।
**फाइनल** वि० (अं) अन्तिम। निर्णायक।
**फाइल** स्त्री० (अं) मिसिल। सिलसिले से नत्थी करके रखे गये कागज। पत्र-व्यवहार, पत्रकाएं आदि।
**फाउंड्री** स्त्री० (अं) धातु ढालने का कारखाना।
**फाका** पुं० (अ) भूखापन। अनशन।
**फाकामस्त** वि० (अ) भोजन की कमी होने पर भी मस्त रहने वाला।
**फाकेमस्ती** स्त्री० (अ) फाकामस्त होने की स्थिति या भाव।
**फाखतई** वि० (हिं) फाखता के रङ्ग का। भूरापन लिए हुए लाल रङ्ग का।
**फाखता** स्त्री० पंडुक पक्षी।
**फाग** पुं० (सं) होली। फाल्गुन मास का आनन्दोत्सव। उस उत्सव में गाया जाने वाला गीत।
**फागुन** पुं० (सं) फाल्गुन मास।
**फागुनी** वि० (स) फागुन सम्बन्धी।
**फाजिल** वि०(अ) फालतू बचा हुआ। गुणी। विद्वान
**फाटक** पुं० (हिं) बड़ा द्वार। मुख्य द्वार। कांजी हौस जहाँ आवारा पशुओं को बंद कर दिया जाता है। फटकन।
**फाटका** पुं० (हिं) आगे का सौदा। सट्टा। जुआ। 'फारवर्ड' और 'फ्यूचर'।
**फाटना** क्रि० (हि) देखो 'फटना'।
**फाड़न** स्त्री०(हिं) फाड़ा हुआ भाग। धज्जी। घी तपाने पर निकली हुई छाछ।
**फाड़ना** क्रि०(हि) चीरना। कपड़े या कागज के टुकड़े करना। दूध में खटाई डाल कर पानी अलग करना भेद उत्पन्न करना।
**फातिहा** पुं० (अ) मुसलमानों द्वारा मृतक व्यक्ति के लिए की गई प्रार्थना। आरम्भ।
**फानी** वि० (अ) नाशवान।
**फानूस** पुं० (फा) कंदील। छत में लटकाने के झाड़। मोमबत्ती जलाने का गिलास। ईंटों की भट्टी।
**फाब** स्त्री० (हिं) फबन। शोभा।
**फायदा** पुं० (अ) लाभ। नफा। हित। प्रयोजन। अच्छा फल।
**फायदेमंद** वि० (अ) फायदे देने वाला। लाभदायक।
**फाया** पुं० (हिं) मरहम लगा हुआ कपड़े या रूई का टुकड़ा। फाहा।
**फारखती** स्त्री० (अ) अधिकार छोड़ने की घोषणा। कुछ जातियों में पत्नी को विवाह-सम्बन्ध से मुक्त करने की प्रथा।
**फारम** पुं०(अं) फार्म। प्रपत्र। फरमा। मसौदे का रूप या नमूना। कागज का ताव जो एक बार छपता है एक बार छापने के लिए जमाये हुए अक्षर। खेत जिसमें वैज्ञानिक ढंग से खेती हो। नकशा। नमूना सांचा।
**फारस** पुं० ईरान। पारस।
**फारसी** स्त्री० ईरान की भाषा या वहां का निवासी।
**फारिग** वि० (अ) निवृत्त। मुक्त। शौच जाना। निश्चिन्त।
**फार्म** दे० फारम।
**फाल** स्त्री० (सं) हल के नीचे लगा हुआ लोहे का फल। छालिया। पतले दल का कटा हुआ टुकड़ा। डग। फलांग। कदम। पैंड।
**फालकृष्ट** वि० (स) हल से जोता हुआ।
**फालतू** वि० (हि) आवश्यकता से अधिक। निकम्मा
**फालसई** वि० (फा) फालसे के रङ्ग का। ऊदा।
**फालसा** पुं० (फा) खट मिट्ठे बेर के बराबर के फल जो ऊदे रङ्ग के होते हैं।
**फालिज** पुं० (स) लकवा। अरदंग। पक्षाघात।
**फालूदा** पुं० (फा) एक प्रकार की सेवई जो आइसक्रीम के साथ खाई जाती है।
**फाल्गुन** पुं० (स) भारतीय वर्ष का अंतिम मास जो मार्च के लगभग आता है। अर्जुन। फागुन।
**फाल्गुनी** स्त्री० (स) फाल्गुन मास की पूर्णिमा।
**फावड़ा** पु० (हि) मिट्टी खोदने का या इकट्ठी करने का एक औजार।
**फावड़ी** स्त्री० (हि) छोटा फावड़ा। लीद हटाने का काठ का फावड़ा।
**फासफरस** पुं० (अं) एक तत्व जो हवा लगने पर जलने लगता है।
**फासला** पुं० (अ) दूरी। अन्तर।
**फाहा** पुं० (हि) देह। काया।
**फाहिशा** स्त्री० (अ) कुलटा। छिनाल।
**फिकवाना** क्रि० (हि) किसी से फेंकने का काम करवाना।
**फिकर** स्त्री० (हि) 'फिक्र' का अशुद्ध रूप।
**फिकरा** पुं० (अ) वाक्य। धोखे की बात। झांसा। रीढ़ की हड्डी।
**फिकरेबाज** वि० (अ) धोखेबाज।
**फिकरेबाजी** स्त्री० (अ) धोखेबाजी।
**फिकैत** पुं० (हिं) पटा-बनेठी का खेल खेलने वाला। पटेबाज।
**फिकैति** स्त्री० (हि) पटा-बनेठी का खेल। उसमें कुशलता।
**फिक्र** स्त्री० (अ) चिन्ता। सोच। परवाह।
**फिक्रमंद** वि० (अ) जिसे कोई चिन्ता लगी हो।
**फिटकरी** स्त्री० (हि) एक स्फटिक पदार्थ।
**फिटकार** स्त्री० (हिं) दे० 'फटकार'।
**फिटकी** स्त्री० (हि) छींटा। कपड़े की बनावट में

निकले हुए सूत के कूचरे । दे० 'फिटकरी' ।
**फिटन** स्त्री० (अं) बड़ी और खुली हुई घोड़ा गाड़ी । कोच ।
**फिट्टा** वि०(हि) फटकार खाया हुआ । उदास । अपमानित । श्रीहत ।
**फितरत** स्त्री०(अ) स्वभाव । रचना । चालाकी । पैदाइश ।
**फितरतन** (अ) स्वभाव से ही । प्रकृति से ही ।
**फितरती** वि० (अ) चतुर । चालाक । धोखेबाज । फितूरी ।
**फितूर** वि० (अ) कमी । घाटा । खराबी । झगड़ा ।
**फितूरी** वि० (हि) लड़का । झगड़ालू । उपद्रवी । फितरती ।
**फिदवी** वि० (फा) आज्ञाकारी । पुं० दास । सेवक ।
**फिदा** वि० (अ) आसक्त । मुग्ध । किसी के प्रेम में लिप्त होकर उस पर जान देने वाला ।
**फिदा होना** क्रि० (अ) आसक्त होना । किसी पर जान देना ।
**फिनिया** स्त्री० (हि) कान में पहनने का एक आभूषण
**फिरंग** पुं० (हि) १-यूरोप । विलायत । विदेश । २-गरमी या आतशक की बीमारी ।
**फिरंगिस्तान** पुं० (हि) फिरंगियों का देश । यूरोप ।
**फिरंगी** पुं० (हि) विदेशी । यूरोपीय । गोरा । विलायती ।
**फिरंट** वि० (हि) फिरा हुआ । विरुद्ध । विपरीत । झगड़े पर आमादा । सामना करने वाला । नाराज
**फिर** क्रि० वि० (हि) १-पुनः एक बार और । २-भविष्य में किसी समय । ३-पीछे । उपरान्त । अलावा ।
**फिरकना** क्रि० (हि) नाचना । अपने केन्द्र पर लट्टू के समान घूमना ।
**फिरका** पुं० (अ) सम्प्रदाय । जाति । पंथ । संकीर्ण समुदाय ।
**फिरकापरस्ती** स्त्री० (अ) संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना
**फिरकी** स्त्री० (हि) १—छोटा लट्टू के आकार का खिलौना । २-चरखे में चमड़े का गोल टुकड़ा । ३-कुश्ती का एक पेच । ४-एक प्रकार का व्यायाम । ५-धागा लपेटने की रील ।
**फिरता** वि० (हि) वापस । लौटाया हुआ । पुं० (हि) अस्वीकार ।
**फिरना** क्रि० (हि) १-सैर करना । चक्कर लगाना । भ्रमण करना । टहलना । घूमना । चक्कर काटना । २-लौट जाना । वापस होना । ३-मुड़ना । ४-बिगड़ जाना । ५-विपरीत होना । ६-किसी वस्तु पर पोता जाना । ७-अपनी बात पर दृढ़ न रहना । ८-झुकना ९-टेढ़ा होना । १०-प्रसिद्ध या प्रचारित होना । ११-चलाया जाना । १२-पलटा खाना ।
**फिरनी** स्त्री० (हि) पिसे हुए चावलों को दूध में पका कर बनाया जाने वाला एक पकवान ।
**फिरवाना** क्रि० (हि) फेरना या फिराने का काम करना ।
**फिराऊ** वि० (हि) १-फिरता हुआ । २-वह माल जो फेरा जा सके ।
**फिराक** पुं० (अ) १-वियोग । २-चिन्ता । ३-खोज । ४-खटका ।
**फिरार** दे० 'फरार' ।
**फिरारी** १-दे० 'फरार' । २-ताश के पत्ते में एक चाल में होने वाली जीत ।
**फिरियाद** दे० 'फरियाद' ।
**फिरियादी** दे० 'फरियादी' ।
**फिरिश्ता** दे० 'फरिश्ता' ।
**फिर्का** दे० 'फिरका' ।
**फिलहाल** क्रि० वि० (अ) वर्तमान समय में । इस समय के लिए ।
**फिलासफी** स्त्री० (अ) दर्शनशास्त्र । दे० 'फलसफा' ।
**फिस** वि० (हि) कुछ नहीं ।
**फिसड्डी** वि० (सं) प्रतियोगिता में सबसे पिछड़ा हुआ
**फिसफिसाना** क्रि० (हि) शिथिल होना । ढीला पड़ जाना ।
**फिसलन** स्त्री० (हि) रपटन । फिसलने की क्रिया । ऐसा स्थान जहां फिसलना संभव हो ।
**फिसलना** क्रि० (हि) चिकनाहट के कारण सरक जाना । लोभ में फंस जाना । ऊँचे स्तर से गिर जाना ।
**फिहरिश्त** स्त्री० (फा) फेहरिश्त । सूची ।
**फी** (अ) प्रत्येक । दोष । त्रुटि ।
**फीका** वि०(हि) स्वादहीन । नमकरहित । कांतिहीन । प्रभावहीन । कम चमक वाला ।
**फीता** पुं० (हि) पतली धज्जी । जूते का तेस । बालों में बांधने की पतली पट्टी ।
**फीरनी** दे० 'फिरनी' ।
**फीरोज** वि० (फा) सफल । विजयी । सौभाग्यशाली ।
**फीरोजा** पुं० हरितमणि । वैदूर्य ।
**फीरोजी** वि०(अ) हरितमणि के रंग का । भाग्योदय । सफलता ।
**फील** पुं० (अ) हाथी ।
**फीलखाना** पुं० (फा) हाथियों के बांधने का स्थान ।
**फीलपा** पुं० (फा) पैरों के सूजने का रोग ।
**फीलपाया** पुं० (फा) ईंटों का मोट खंभा । फीलपा ।
**फीलपांव** दे० 'फीलपा' ।
**फीलवान** पुं० (फा) हाथी को चलाने वाला महावत ।
**फीली** स्त्री० (हि) घुटने से लेकर एड़ी तक का मांसल भाग ।
**फ़ील्ड** पुं०(अं) मैदान । गेंद आदि खेलने का स्थान ।

फीस स्त्री० (अं) शुल्क। पारिश्रमिक।
फुंकना क्रि० (हि) जलाना। जलाया जाना। व्यर्थ नष्ट होना। चिंतित रहना। २-पुं० (हि) मुंह आग में हवा छोड़ने की नाली। शरीर में मूत्र थैली।
फुंकनी स्त्री० (हि) मुंह से आग में हवा छोड़ने की नाली।
फुंकरना क्रि० (हि) फुंकार मारना। फूंक मारना।
फुंकवाना क्रि० (हि) फूंक लगवाना। भस्म करवाना।
फुंकार स्त्री० (हि) फुत्कार। सर्प के मुख से वायु का निकलना।
फुंकारना क्रि० (हि) जोर जोर से फुंकार मारना क्रोध में गहरे सांस लेना।
फुंदना पुं० (हि) डोली या झालर के सिरे पर सुन्दरता के लिए बना हुआ फूल जैसा गुच्छा। तराजू की डंडी के बीच की रस्सी। गाँठ। झब्बा।
फुंदिया स्त्री० (हि) दे० 'फुंदना'।
फुंदी स्त्री० (हि) गांठ। फन्दा। बिन्दी। टीका।
फुंसी स्त्री० (हि) छोटा फोड़ा। फुड़िया। गूमड़ी।
फुआ स्त्री० (हि) पिता की बहन। बुआ।
फुआरा दे० 'फुहारा'।
फुकना दे० 'फुंकना'।
फुकनी दे० 'फुंकनी'।
फुचड़ा पुं० (हि) वह सूत आदि का रेशा जो कपड़े, कालीन, चटाई आदि की बुनाई से बाहर निकला रहता है।
फुट वि० (हि) अकेला। पृथक। कम से बाहर। पुं० (अं) बारह इन्च का माप।
फुटकर वि० (हि) अकेला। पृथक। कई प्रकार का मिलाजुला। थोड़ा-थोड़ा। थोक में नहीं। खरीज।
फुटकल दे० 'फुटकर'।
फटका पुं० (हि) छाला। फफोला। धान आदि का ..ावा। गन्ने का रस पकाने का कड़ाह।
फुटकी स्त्री० (हि) छोटी सी दाल। दाना। एक प्रकार की चिड़िया। फुतकी।
फुटबाल पुं० (अं) बड़ी गेंद जिसमें हवा भरी होती है
फुटमत पु० (हि) मतभेद। फूट।
फुटहरा पुं०(हि) भुना हुआ चने या मटर का चबेना
फुटैल वि० (हि)अकेला। जोड़ेहीन। फूटे भाग्यवाला।
फुट्टैल दे० 'फुटैल'।
फुत्कार पुं० (सं) फुंकार।
फुत्कृत्ति दे० 'फुत्कार'।
फुदकना क्रि० (हि) उछलना-कूदना। प्रसन्न होना।
फुदकी स्त्री० (हि) फुदकने वाली एक छोटी चिड़िया।
फुद्दी स्त्री (पं०) भग। स्त्री की योनि।
फुनंग स्त्री (हि) वृक्ष या शाखा का अग्रिम भाग।
फुनगी स्त्री (हि) अंकुर। फुनंग।
फुफ्फुस पुं० (सं) फेफड़ा।
फुफंदी स्त्री० (हि) लहंगे या साड़ी में कसी जाने वाली डोर।
फुफकाना क्रि० (हि) फुफकारना।
फुफकार पुं० (हि) फुंकार।
फुफकारना क्रि० (हि) फुंकारना।
फुफी स्त्री० (हि) दे० 'फूफी'।
फुफुनी दे० 'फुफूंदी'
फुफू दे० 'फूफी'।
फुफेरा पुं० (हि) फूफा के सम्बन्ध से।
फुर स्त्री (हि) उड़ते समय होने वाला परों का शब्द। वि० (हि) सच्चा। सत्य।
फुरकत स्त्री० (अ) वियोग।
फुरकना क्रि० मं (हि) जोर से फूकना।
फुरती दे० 'फुर्ती'।
फुरतीला दे० 'फुर्तीला'।
फुरना क्रि० (हि) निकलना। प्रकाशित होना। मुंह से शब्द निकलना। सत्य ठहराना। असर करना। सफल होना।
फुरफुराना क्रि० (हि) फुरफुर शब्द होना। लहराना। क्रि० (हि) कान में फुरेरी फिराना। फुरफुर करना।
फुरफुरी स्त्री० (हि) फुरफुर शब्द।
फुरमान दे० 'फरमान'।
फुरमाना दे० 'फरमाना'।
फुरसत पुं० (अ) बेकारी। खाली वक्त। छुट्टी। मुक्त
फुरहरना क्रि० (हि) स्फुरित होना। निकलना।
फुरहरी स्त्री० (हि) परों का फड़फड़ाना। कंपकंपी।
फुराना क्रि० (हि) प्रमाणित करना।
फुरेरी स्त्री० (हि) सींक के सिरे पर दवा आदि लगाई हुई रूई। शीत के कारण रोमांच भय से कंपन।
फुर्ती स्त्री० (हि) शीघ्रता। जल्दी।
फुर्तीला पुं० (हि) फुर्ती से काम करने वाला।
फुर्सत दे० 'फुरसत'।
फुलका पुं० (हि) हलकी। पतली और फुली हुई रोटी छाला। फफोला। चीनी बनाने का कड़ाह।
फुलकारी स्त्री० (हि) मलमल पर रेशम की कढ़ाई।
फुलचुही स्त्री० (हि) एक प्रकार की चिड़िया।
फुलझड़ी स्त्री० (हि) एक पटाखा जिससे फूल जैसी चिंगारियां झड़ती हैं। सुन्दरी। मजाक की बात झगड़ा कराने वाली बात।
..लवर पुं० (हि) फूल कढ़ा हुआ वस्त्र।
फुलवाई दे० 'फुलवारी'।
फुलवाड़ी दे० 'फुलवारी'।
फुलवार वि० (हि) प्रसन्न। प्रफुल्लित।
फुलवारी स्त्री० (हि) फूलों का बाग। पुष्पवाटिका।
फुलसुंघी स्त्री० (हि) फुलचुही।
फुलहारा पुं० (हि) माली।

फुलाई स्त्री० (हि) फूलने की क्रिया। एक प्रकार का बबूल।
फुलाना क्रि० (हि) अन्दर हवा भरना। प्रसन्न करना।
फुलायल दे० 'फुलेल'।
फुलाव पुं० (हि) फूलने की क्रिया। सूजन।
फुलावट दे० 'फुलाव'।
फुलावा पुं० (हि) फूल-फुंदने की डोरी जो बालों में गूंथी जाती है।
फुलिंग पुं० (हि) चिङ्गारी।
फुलिया स्त्री० (हि) लौंग के आकार का कानों का गहना। कील का फैला हुआ भाग।
फुलेरा पुं० (हि) फूलों की छतरी।
फुलेल पुं० (हि) सुगन्धित तेल। इत्र।
फुलेली स्त्री० (हि) फुलेल का पात्र। इत्रदानी।
फुलेहरा पुं०(हि) सूत रेशम आदि के बने हुए बन्दरवार।
फुलौरा पुं० (हि) पकौड़ा।
फुलौरी स्त्री० (हि) पकौड़ी। फुलबड़ी।
फुल्ल वि० (सं) फूला हुआ। विकसित। प्रसन्न।
फुस स्त्री०(हि) धीमा स्वर।
फुसकारना क्रि० (हि) फुंकारना। फूंक मारना।
फुसकी स्त्री० (हि) पाद।
फुसफुसा वि० (हि) शीघ्र टूटने वाला। कोरा फूला हुआ।
फुसफुसाना क्रि०(हि) धीरे से कान में बात कहना।
फुसलाना क्रि० (हि) बहका लेना। मना लेना।
फुहार पुं० (हि) हल्की वर्षा। महीन बूंदों की झड़ी।
फुहारा पुं० (हि) फुहार छोड़ने वाला उपकरण।
फुही दे० 'फुहार'।
फूंक स्त्री० (हि) मुँह से छोड़ी गई हवा। सांस। प्राण
फूंकना क्रि० (हि) फूँक मारना। जलाना। भस्म करना। नष्ट करना। सताना। प्रचारित करना।
फूका पुं०(हि) गाय भैंस से बलात् दूध लेने के लिए की गई क्रिया। फूँक मारने की क्रिया। फुँकनी। फफोला। फोड़ा।
फूंद स्त्री० (हि) दे० 'फुंदना'।
फूंदा पुं० (हि) दे० 'फुंदना'। फफुंदी।
फूई स्त्री० (हि) फफूंदी। घी का फूल।
फूट स्त्री० (हि) मतभेद। वैमनस्य। एक प्रकार की ककड़ी।
फूटन स्त्री० (हि) शरीर के जोड़ों में पीड़ा। टूटा हुआ अंश।
फूटना क्रि० (हि) भग्न होना। दरार पड़ना। बिगड़ना। देह में दाने निकलना। खिलना। फूट फैलना प्रकट होना।
फूटा वि० (हि) टूटा हुआ। पुं० (हि) जोड़ों का दर्द। टूटी हुई अन्न की बालें।
फूत्कार पुं० (सं) फुंकार।
फूफा पुं० (हि) पिता की बहिन का पति। पिता का बहनोई। बूआ का पति।
फूफी स्त्री० (हि) पिता की बहन। बूआ।
फूफू दे० 'फूफी'।
फूल पुं०(हि) सुमन। कुसुम। पुष्प। फूल जैसे बेल-बूटे या आभूषण। दीपक का गुल। शव दाह के पश्चात बची हड्डियां। एक मिश्रित धातु। कोढ़ का का दाग। स्त्रियों का मासिक रज। पहली बार खींची हुई मदिरा। घुटने की गोल हड्डी।
फूलकारी स्त्री० (हि) बेलबूटे बनाने का कार्य।
फूलगोभी स्त्री० (हि) एक तरकारी।
फूलदान पुं० (हि) फूल रखने का पात्र।
फूलदार वि० (हि) जिसमें बेलबूटे हों।
फूलना क्रि० (हि) फूल लगना। खिलना। हवा भरने से मोटा हो जाना। मोटा हो जाना। प्रसन्न होना गर्व करना।
फूला पुं० (हि) खील। आंख की पुतली पर सफेद दाग।
फूली स्त्री० (हि) दे० 'फूला'।
फूस पुं० (हि) सूखे तिनके या घास।
फूहड़ वि० (हि) बेढंगा। बेशऊर। भद्दा। गंदा।
फूहड़पन पुं० (हि) फूहड़ होने का भाव।
फूहर दे० 'फूहड़'।
फूही दे० 'फुहार'।
फेंकना क्रि० (हि) ऐसी गति देना कि दूर जा पड़े। जमीन पर गिरा। पटकना। बखेरना। दूर ले जाकर डालना। छोड़ना। अपव्यय करना।
फेंकरना दे० 'फेकरना'।
फेंकाना क्रि० (हि) फेंकने का कार्य करवाना।
फेंट स्त्री० (हि) कमर का घेरा। धोती का कमर पर लपेटा हुआ भाग। फेंटने का कार्य।
फेटना क्रि० (हि) गाढ़े पदार्थ को उछाल कर या हिला कर मिलाना। ताश के पत्तों को मिलाना।
फेंटा पुं० (हि) दे० फेंट। साफा। सूत की अंटी।
फेंटी स्त्री० (हि) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत। फेंटा।
फेकरना क्रि० (हि) नंगा होना। दे० 'फेंकरना'।
फेकारना क्रि० (हि) नंगा सिर करना। जोर से रोना
फेकैत पुं० (हि) पटा-बनेटी खेलने वाला। फेंकने वाला। पहलवान।
फेण दे० 'फेन'।
फेन पुं० (सं) झाग। बुदबुद। नाक का मल। रेंट।
फेनिल वि० (सं) फेन वाला। झागदार।
फेनी स्त्री० (हि) सूत के लच्छे के समान एक मिठाई।
फेफड़ा पुं० (सं) फुप्फुस। सांस लेने का यंत्र।

**फेफड़ी** स्त्री० (हिं) होठों पर जमने वाली पपड़ी। फेफड़े का एक रोग।
**फेफरी** दे० 'फेफड़ी'।
**फेरंड** पुं० (सं) 'गीदड़'।
**फेर** पुं० (हिं) फिरने का भाव। चक्कर। घुमाव। परिवर्तन। झंझट। धोखा। चालबाजी। विनिमय। घाटा। दुविधा।
**फेरना** क्रि० (हिं) चक्कर देना। घुमाना। वापस करना। पोतना। उलटना। प्रचारित करना।
**फेरवट** पुं० (हिं) फेरने का भाव। चक्कर।
**फेरा** पुं० (हिं) परिक्रमा। चक्कर। घेरा।
**फेरि** अव्य० (हिं) पुनः। फिर।
**फेरी** स्त्री० (हिं) 'दे०' फेरा। भिक्षा के लिए घूमना। माल बेचने के लिए चक्कर लगाना।
**फेरीवाला** पुं० (हिं) घूम-घूमकर माल बेचने वाला।
**फेरु** पुं० (सं) गीदड़।
**फेरौरी** स्त्री० (हिं) खपरैल बदलने की क्रिया।
**फेल** पुं० (अ) काम। वि० (अं) असफलता।
**फेहरिस्त** स्त्री० (अ) सूची।
**फैंसी** वि० (अं) तड़क-भड़क वाला। सुन्दर।
**फैज** पुं० (फा) लाभ। परिणाम। लाल मुसलमानी टोपी।
**फैर** स्त्री० (अं) बन्दूक का दगना। (अं) पहर।
**फैल** पुं० (हिं) दे० 'फेल'। नखरा। मक्कारी। हठ। विस्तार।
**फैलना** क्रि० (हिं) विस्तृत होना। मोटा होना। पसरना। बिखरना। प्रचारित होना। मचलना।
**फैलाना** क्रि० (हिं) विस्तृत करना। पसारना। बखेरना। हिसाब लगाना। प्रचारित करना।
**फैलाव** पुं० (हिं) विस्तार। प्रचार।
**फैशन** पुं०(अं) ढंग। रीति। प्रथा। बनाव-शृङ्गार का ढंग।
**फैसला** पुं० (अ) निर्णय। निपटारा।
**फोंक** पुं० (हिं) तीर का पिछला छोर। बाण की फटन
**फोंदा** पुं० (हिं) दे० 'फुंदना'।
**फोंफर** वि० (हिं) पोला। निस्सार।
**फोंफी** स्त्री० (हिं) लम्बी नली। फुंकनी। नाक की कील।
**फोक** पुं० (हिं) सारहीन अंश। भूसा।
**फोकट** वि० (हिं) निस्सार। मुफ्त।
**फोकला** पुं० (हिं) छिलका।
**फोकस** पुं० (अं) केन्द्र बिन्दु।
**फोट** पुं० (हिं) विस्फोट। धड़का।
**फोटा** पुं० (हिं) टीका। बिन्दी।
**फोटो** पुं० (अं) यन्त्र से उतारा हुआ चित्र।
**फोड़ना** क्रि० (हिं) तोड़ना। भग्न करना। भेदभाव उत्पन्न करना। प्रकट करना।
**फोड़ा** पुं० (हिं) मवाद भरा हुआ शोथ।
**फोड़िया** स्त्री० (हिं) फुड़िया। छोटा फोड़ा।
**फोता** पुं० (फा) भूमिकर। रुपये रखने की थैली। अंडकोष।
**फोनोग्राम** पुं०(अं) ग्रामोफोन।
**फोया** पुं० (हिं) रूई का लच्छा। फाया।
**फोरना** दे० 'फोड़ना'।
**फोरमैन** पुं० (अं) मिस्त्री से बड़ा पद।
**फोहा** पुं० (हिं) दे० 'फाहा'। फोया। फाया।
**फोहारा** दे० 'फुहारा'। फव्वारा।
**फौज** पुं० (फा) सेना। झुंड।
**फौजदार** पुं० (फा) सेनापति।
**फौजदारी** स्त्री० (फा) मारपीट। दंड। न्यायालय।
**फौजी** वि० (फा) फौज सम्बन्धी। पुं० सैनिक।
**फौजी कानून** पुं० (फा) सैनिक कानून।
**फौत** वि० (अ) मृत। नष्ट।
**फौती** वि० (अ) मृत्यु सम्बन्धी।
**फौतीनामा** पुं०(फा) मृत्यु की सूचना। मरने वालों की सूची
**फौरन** क्रि० (फा) तत्काल। तुरन्त। तत्क्षण।
**फौलाद** पुं० (फा) कड़ा लोहा। इस्पात।
**फौलादी** वि० (फा) मजबूत। दृढ़। फौलाद का बना हुआ।
**फौवारा** दे० 'फुहारा'। फव्वारा।
**फ्राक** पुं० (अं)घुटने तक का वस्त्र जो महिलाएँ तथा कन्याएँ पहनती हैं।

[शब्दसंख्या—३४६०८]

# ब

**ब** देवनागरी वर्णमाला का तेईसवां व्यञ्जन। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
**बंक** पुं०(अं) बैंक। साहूकारी संस्था। वि० (हिं) तिरछा टेढ़ा। दुर्गम। पुरुषार्थी।
**बंकट** वि० (हिं०) वक्र। टेढ़ा।
**बंका** वि० (हिं०) टेढ़ा। बांका। दलशाली। एक प्रकार का हरा कीड़ा।
**बंकाई** स्त्री० (हिं) टेढ़ापन।
**बंकुर** दे० 'बंक'।
**बंकुरता** दे० 'बंकाई'।
**बंग** पुं० (हिं) बंगाल। दे० 'बंग'। वि० (हिं) टेढ़ा। उद्दण्ड। अज्ञानी।
**बंगड़ी** स्त्री० (हिं) चूड़ियों के साथ पहनने का एक

आभूषण । बङ्गली ।
**बंगला** वि० (हि) बङ्गाल का । स्त्री० (हि) बङ्गाल की भाषा । पुं० (हि) हवादार कोठी ।
**बंगली** स्त्री० (हि) चूड़ियों के साथ आभूषण । बङ्गड़ी ।
**बंगसार** दे० 'बनसार' ।
**बंगा** वि० (हि) टेढ़ा । मूर्ख । उद्दण्ड ।
**बंगाल** पुं० (हि) भारत का एक राज्य । एक राग ।
**बंगाली** पुं० (हि) दे० 'बंगला । एक राग ।
**बंगुरी** स्त्री० (हि) दे० 'बंगड़ी' ।
**बंचक** पुं० (हि) धूर्त । पाखंडी । एक पहाड़ी घास का दाना ।
**बंचना** स्त्री० (हि) ठगी । क्रि० (हि) ठगना । पढ़ना ।
**बंचवाना** क्रि० (हि) पढ़वाना ।
**बंछना** क्रि० (हि) इच्छा करना । चाहना ।
**बंछनीय** दे० 'बांछनीय' ।
**बंछित** दे० 'बांछित' ।
**बंजर** पुं० (हि) ऊसर । वंध्या ।
**बंजरा** पुं० (हि) दे० 'बनजारा' ।
**बंजुल** पुं० (हि) बेंत ।
**बंझा** स्त्री० (हि) वंध्या । बांझ ।
**बंटना** क्रि० (हि) भागों में विभक्त होना । हिस्से अनुसार मिलना ।
**बंटवाई** स्त्री०(हि) दे० 'बंटाई' । पिसवाने की मजदूरी ।
**बंटवाना** क्रि० (हि) वितरित करवाना । पिसवाना ।
**बंटवारा** पुं० (हि) बांटने की क्रिया ।
**बंटा** पुं० (हि) धातु का बना हुआ जलचट । छोटे आकार का पान आदि का डिब्बा ।
**बंटाई** स्त्री०(हि) बांटने की मजदूरी या क्रिया । किसान से फसल का अंश लेकर भूमि जुतवाने की प्रणाली ।
**बंटाधार** वि० (हि) चौपट । नाश ।
**बंटाना** क्रि० (हि) भाग करवाना । अपना अंश लेना ।
**बंटावन** वि० (हि) बंटाने वाला ।
**बंटैया** पुं० (हि) बंटाने वाला ।
**बंडल** पुं० (अं) पुलिंदा । गठरी । गट्ठा ।
**बंडा** पुं० (हि) एक प्रकार का शाक । बड़ी बखारी ।
**बंडी** स्त्री० (हि) बगलबन्दी । फतूही ।
**बंडेर** पुं० (हि) छाजन के ठाट के नीचे का बल्ला ।
**बंडेरी** स्त्री० (हि) दे० 'बंडेरी' ।
**बंद** पुं०(फा) बांध । कैद । बन्धन । जोड़ । कुश्ती का पेच । उपाय । छन्द । समाप्त । रुका हुआ । अवरुद्ध जो खुला न हो ।
**बंदगी** स्त्री० (फा) प्रणाली । प्रार्थना ।
**बंदगोभी** स्त्री० (हि) पत्तों की तह वाली गोभी । करमकल्ला । बुरके में बन्द स्त्री ।
**बंदन** दे० 'वंदन' ।
**बंदनवार** स्त्री० (हि) तोरणद्वार पर डोरी से लटकाये हुए पत्ते आदि ।
**बंदना** दे० 'प्रणाम' । नमस्कार ।
**बंदनी** स्त्री० (हि) सिर का एक आभूषण ।
**बंदनीमाल** स्त्री० (हि) घुटनों तक की माला ।
**बंदर** पुं०(हि) कपि । कीश । मर्कट । वानर । पुं०(फा) पत्तन ।
**बंदरगाह** पुं० (फा) पत्तन समुद्र का घाट जहां जलपोत ठहरते हैं ।
**बंदरघुड़की** स्त्री० (हि) झूठी धमकी ।
**बंदर-बांट** स्त्री०(हि) ऐसा बँटवारा जिसमें बँटवारा करने वाला ही सब कुछ खा जाये ।
**बंदरिया** स्त्री०(हि) वानरी बन्दर का स्त्रीलिंग शब्द
**बंदरी** दे० 'बंदरिया' ।
**बंदा** पुं० (फा) सेवक । दास । जन ।
**बंदरू** वि० (हि) वंदनीय । पूजनीय ।
**बंदिश** स्त्री० (फा) बन्धन । शर्त । कविता की शब्द योजना ।
**बंदी** पुं० (सं) चारण । भाट । स्त्री० (हि) एक आभूषण । दासी । बन्द होने की क्रिया या भाव । कैद कैदी । (संविधान) ।
**बंदीखाना** पुं० (हि) कैदखाना ।
**बंदीगृह** पुं० (हि) कैदखाना ।
**बंदीघर** पुं० (हि) कैदखाना ।
**बंदीछोर** पुं० (हि) बन्धन से छुड़ाने वाला ।
**बंदीप्रत्यक्षीकरण** पुं० (हि) बन्दी को न्यायालय में उपस्थित करने का आदेश । हैबियस कॉर्पस् (संविधान) ।
**बंदीवान** पुं० (हि) कैदी ।
**बंदूक** स्त्री० (हि) गोली चलाने का अस्त्र ।
**बंदूकची** पुं० (हि) बन्दूक चलाने वाला सिपाही ।
**बंदेरी** स्त्री० (हि) दासी ।
**बंदोबस्त** पुं० (फा) प्रबन्ध । व्यवस्था । खेत को नाप कर निर्धारित करने की व्यवस्था ।
**बंध** पुं०(सं) बन्धन । गांठ । कैद । बांध । एक कामासन । बांधने की वस्तु । लगाव । शरीर ।
**बंधक** पुं० (सं) गिरवी । रेहन । मारगेज । बांधने वाला ।
**बंधककर्ता** पुं० (सं) गिरवी रख कर ऋण लेने वाला
**बंधकगृहीता** पुं० (सं) जो गिरवी पर रुपये दे ।
**बंधकपत्र** पुं० (सं) गिरवी रखने का शर्तनामा ।
**बंधकरण** पुं० (सं) कैद करना ।
**बंधकी** पुं० (सं) जिसके पास कोई वस्तु बन्धक रखी जाये । स्त्री० (हि) कुलटा नारी । वेश्या ।
**बंध-तंत्र** पुं० (सं) पूरी सेना जिसके चारों ओर अंग हों ।
**बंधन** पुं० (सं) बांधना । रस्सी आदि बांधने की वस्तु रुकावट । कारागार । वध । जंजीर । शिव । शरीर के जोड़ ।

**बंधनकारी** *वि०* (सं) बांधने वाला।
**बंधन-स्तंभ** पुं० (सं) पशु बांधने का खूंटा।
**बंधन-स्थान** पुं० (सं) अस्तबल। गोशाला।
**बंधना** *क्रि०* (हिं) बंधन में पड़ना। बन्दी होना। पाबन्द होना। पुं० बांधने की वस्तु, रस्सी आदि।
**बंधनागार** पुं० (हिं) कैदखाना।
**बंधनालय** पुं० (हिं) कारागार।
**बंधनि** *स्त्री०* (हिं) उलझाने या फंसाने की वस्तु।
**बंधनीय** *वि०* (सं) बांधने योग्य। पुं० पुल।
**बंध-मोच** *स्त्री०* (सं) एक योगिनी।
**बंधमोचनी** *स्त्री०* (सं) एक योगिनी।
**बंधवाना** *क्रि०* (हिं) बांधने का काम करवाना। कैद करवाना।
**बंध स्तंभ** दे० 'बंधन-स्तंभ'।
**बंध-स्थान** दे० 'बंधन-स्थान'।
**बंधान** पुं० (हिं) बंधा हुआ क्रम। प्रथा। बांध।
**बंधाना** दे० 'बंधवाना'।
**बंधित** *वि०* (हिं) बंधा हुआ। बांझ।
**बंधी** *स्त्री०* (सं) कैद। नियम से वस्तु देना।
**बंधु** पुं० (सं) भाई। मित्र। पति। पिता। एक फूल।
**बंधुआ** पुं० (हिं) कैदी।
**बंधुक** पुं० (हिं) जारज सन्तान।
**बंधुकाम** *वि०* (हिं) स्वजनों से स्नेह रखने वाला।
**बंधुजन** पुं० (हिं) स्वजन। भाईबन्द।
**बंधुजीव** पुं० (हिं) गुलदुपहरिया।
**बंधुजीवक** दे० 'बंधुजीव'।
**बंधुता** दे० 'बंधुत्व'।
**बंधुत्व** पुं० (हिं) बंधु होने का भाव। मैत्री। भाईचारा
**बंधुदत्त** पुं० (सं) दहेज।
**बंधुदा** *स्त्री०* (सं) कुलटा स्त्री। वेश्या।
**बंधुभाव** पुं० (सं) भाईचारा। मैत्री।
**बंधुर** पुं० (सं) मुकुट। हंस। भग। बगुला।
**बंधुरा** *स्त्री०* (हिं) कुलटा स्त्री।
**बंधुल** पुं० (सं) कुलटा का पुत्र। *वि०* आकर्षक। नम्र
**बंधुवा** पुं० (हिं) कैदी।
**बंधूक** पुं० (हिं) गुलदुपहरिया।
**बंधेज** पुं० (हिं) रुकावट। स्तंभन।
**बंध्य** *वि०* (सं) बांधने योग्य। बांझ।
**बंध्या** *स्त्री०* (सं) बांझ।
**बंध्यापन** पुं० (हिं) बांझपन।
**बंध्यापुत्र** पुं० (हिं) असम्भव बात।
**बंपुलिस** पुं० (हिं) सार्वजनिक शौचालय। कमेटी की टट्टियां।
**बंब** पुं० (हिं) डंका। रणनाद। बम-बम का शब्द।
**बंबा** पुं० (हिं) पानी का नल। स्रोत।
**बंबाना** *क्रि०* (हिं) गौ आदि का रंभाना।
पुं० (हिं) बांस आदि की मोटी नाली
**बंस** पुं० (हिं) वंश या बांस।
**बंसरी** *स्त्री०* (हिं) मुरली। बांसुरी।
**बंसवाड़ी** *स्त्री०* (हिं) बांसों का स्थान।
**बंसी** *स्त्री०* (हिं) मुरली। मछली। फंसाने का कांटा।
**बंसीधर** पुं० (हिं) श्रीकृष्ण।
**बंहगी** *स्त्री०* (हिं) कांवर।
**ब** पुं० (सं) भग। जल। वरुण। सिन्धु। सुगन्ध। कुम्भ।
**बक** पुं० (सं) बगुला। कुबेर। एक असुर। एक ऋषि *वि०* (सं) सफेद।
**बकजित** पुं० (सं) श्रीकृष्ण। भीम।
**बकध्यान** पुं० (हिं) बनावटी साधुभाव।
**बकना** *क्रि०* (हिं) व्यर्थ बोलना। बकवास करना।
**बकर** पुं० (अ) १-गाय। २-बैल। ३-कुरानशरीफ की एक सूरत।
**बकरईद** *स्त्री०* (अ) मुसलमानों का एक त्योहार जिसमें बकरे की बलि दी जाती है।
**बकरकसाब** पुं० (अ) कसाई। चिक।
**बकरना** *क्रि०* (हिं) १-बड़बड़ाना। २-अपना दोष कबूल करना।
**बकरा** पुं० (हिं) १-प्रसिद्ध चौपाया जिसका मांस मांसाहारी लोग खाते हैं। २-छाग।
**बकरीद** *स्त्री०* (अ) दे० 'बकरईद'।
**बकलस** पुं० (अं) धातु का छल्ला जो फीता आदि बांधने के काम आता है।
**बकला** पुं० (हिं) १-पेड़ की छाल। २-फल का छिलका।
**बकवाद** *स्त्री०* (हिं) व्यर्थ की बातें।
**बकवाना** *क्रि०* (हिं) किसी से बकवाद करना।
**बकस** पुं० (हिं) १-सन्दूक। २-कीमती जेवर आदि रखने का डिब्बा।
**बकसना** *क्रि०* (हिं) छोड़ देना। क्षमा करना।
**बकसाना** *क्रि०* (हिं) १-दिलाना। क्षमा करना।
**बकसीस** *स्त्री०* (हिं) दान। इनाम। पारितोषिक।
**बकसुआ** पुं० (हिं) दे० 'बकलस'।
**बकाइन** पुं० (हिं) दे० 'बकायन'।
**बकाउर** *स्त्री०* (हिं) दे० 'बकावली'।
**बकाना** *क्रि०* (हिं) १-बकबक कराना। २-रटाना। ३-कहलाना।
**बकायन** पुं० (हिं) नीम की जाति का एक वृक्ष जिसके पत्ते आदि औषध के रूप में प्रयुक्त होते हैं। महानिंब।
**बकाया** पुं० (अ) १-बाकी। शेष। २-बचत।
**बकारि** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-भीमसेन।
**बकारी** *स्त्री०* (हिं) मुख से निकलने वाला शब्द।
**बकावर** *स्त्री०* (हिं) दे० 'गुलबकावली'।

बकावली स्त्री० (हि) दे० 'गुलबकावली'।
बकासुर पुं० (सं) एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकिनव पुं० (हि) दे० 'वकायन'।
बकी स्त्री० (सं) १-बाकासुर की बहन। २-पूतना। ३-मादा बगला।
बकीया वि० (अ) बाकी। अवशिष्ट।
बकुचन स्त्री० (हि) १-हाथ या मुट्ठी से पकड़ना। २-हाथ जोड़ने की मुद्रा।
बकुचना क्रि० (हि) संकुचित होना। सुकड़ना।
बकुचा पुं० (हि) छोटी गठरी।
बकुची स्त्री० (हि) १-छोटी गठरी। २-एक गुलाबी रङ्ग के फूल वाला पौधा।
बकुचौहाँ वि० (हि) बकुचे के समान।
बकुर वि० (सं) भयंकर। पुं०(सं) १-सूर्य। २-तुरही ३-बिजली।
बकुरना क्रि० (हि) दे० 'बकरना'।
बकुराना क्रि० (हि) १-मंजूर या कबूल करना। २-कहलाना।
बकुल पुं० (सं) १-मौलसिरी का पेड़ या फूल। २-शिव।
बकुला पुं० (हि) दे० 'बगुला'।
बकेन स्त्री० (हि) बच्चा देने के साल भर बाद भी दूध देने वाली गाय या भैंस।
बकैयाँ पुं० (हि) बच्चों का घुटने के बल चलना।
बकोट स्त्री०(हि) १-बकोटने की क्रिया या भाव। २-हाथ की संपुटाकार मुद्रा। ३-उतनी मात्रा जितनी एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके।
बकोटना क्रि० (हि) नाखूनों से नोचना।
बकोरी स्त्री० (हि) गुलबकावली।
बकौरी स्त्री० (हि) गुलबकावली।
बक्कम पुं० (हि) एक पेड़ जिसकी छाल और फलों से लाल रङ्ग निकलता है।
बक्कल पुं० (हि) १-छिलका। २-छाल।
बक्काल पुं०(अ) वणिक। बनिया। आटा दाल आदि बेचने वाला।
बक्की वि० (हि) बकवादी।
बक्कुर पुं० (हि) मुख से निकला हुआ शब्द। वचन
बक्खर पुं० (हि) १-दे० 'बाखर'। २-गाय बैल आदि बांधने का स्थान।
बक्षोज पुं० (हि) उरोज।
बक्स पुं० (हि) बकस। सन्दूक।
बखत पुं०(हि) दे० 'वक्त' 'बख्त'।
बखतर पुं० (हि) दे० 'बख्तर'।
बखरा पुं० (हि) १-भाग। हिस्सा। २-दे० 'बाखर'।
बखरी स्त्री० (हि) एक परिवार के रहने योग्य गांव का अच्छा मकान।
बखरैत वि० (हि) साझीदार। हिस्सेदार।
बखसीस स्त्री० (हि) दे० 'बकसीस'।
बखसीसना क्रि० (हि) देना। प्रदान करना।
बखान पुं० (हि) १-वर्णन। २-बड़ाई। प्रशंसा।
बखानना क्रि० (हि) १-वर्णन करना। २-प्रशंसा करना। ३-गालियां देना।
बखार पुं० (हि) किसान लोगों के अन्न रखने का घेरा या बड़ा पात्र।
बखिया पुं० (फा) एक प्रकार की मजबूत और महीन सिलाई।
बखियागर पुं० (फा) बखिया करने वाला।
बखियाना क्रि० (हि) बखिया की सिलाई करना।
बखीर स्त्री० (हि) गुड़ में बनाए हुए मीठे चावल।
बखील वि० (अ) कंजूस। कृपण।
बखीली स्त्री० (अ) कंजूसी। कृपणता।
बखेड़ा पुं० (हि) १-झंझट। झगड़ा। २-आडम्बर। ३-कठिनता।
बखेड़िया वि० (हि) बखेड़ा करने वाला। झगड़ालू।
बखेरना क्रि० (हि) फैलाना। बिखरना।
बख्त पुं० (फा) भाग्य। किस्मत।
बख्तर पुं० (फा) दे० 'बकतर'।
बख्तावर वि० (फा) भाग्यशाली।
बख्श वि० (फा) देने वाला। बख्शिश देने वाला।
बख्शना क्रि० (फा) १-देना। २-छोड़ना। त्यागना। ३-क्षमा करना।
बख्शनामा पुं० (फा) दे० 'बख्शिशनामा'।
बख्शवाना क्रि० (फा) १-देने में प्रवृत्त करना। २-क्षमा करना।
बख्शाना क्रि० (फा) दे० 'बख्शवाना'।
बख्शिश स्त्री० (फा) दे० 'बकसीस'।
बख्शिशनामा स्त्री० (फा) दानपत्र। हिब्बानामा।
बख्शी पुं० (फा) वेतन बांटने वाला खजांची।
बख्शीश स्त्री० (फा) दे० 'बकसीस'।
बग पुं० (हि) बगुला।
बगई स्त्री० (हि) १-कुत्तों आदि पर बैठने वाली एक प्रकार की मक्खी। २-भंग के साथ घोट कर पी जाने वाली एक घास।
बगछुट अव्य० (हि) सरपट। बहुत वेग से। बेतहाशा
बगदना क्रि० (हि) १-बिगड़ना। २-सीधे रास्ते से हट जाना। भूलना।
बगदहा वि० (हि) बिगड़ने वाला।
बगटुट अव्य० (हि) दे० 'बगछुट'।
बगना क्रि० (हि) घूमना-फिरना।
बगर पुं० (हि) १-बड़ा मकान। प्रासाद। २-घर। कोठरी। ३-आंगन। ४-गाय भैंस बांधने का स्थान स्त्री० (हि) दे० 'बगल'।

**बगरना** क्रि० (हि) फैलना। बिखरना।
**बगराना** क्रि० (हि) फैलाना। छितराना।
**बगरी** स्त्री० (हि) मकान। खरीद।
**बगरूरा** पुं० (हि) बवण्डर। बगूला।
**बगल** स्त्री० (फा) १-कंधे के नीचे का गड्ढा। काँख २-पार्श्व। ३-पास की जगह। ४-आस्तीन के कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जानेवाला कपड़े का टुकड़ा
**बगलबंदी** स्त्री० (फा) एक प्रकार की कुरती।
**बगला** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध श्वेत रङ्ग का पक्षी जो मछलियां पकड़ता है और कपट-वृत्ति के कारण प्रसिद्ध है।
**बगलाभगत** वि० (हि) साधु दीख पड़ने वाला परन्तु कपटी।
**बगली** वि० (फा) बगल का। बगल-सम्बन्धी। स्त्री० (फा) १-एक थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखता है २-बगला पक्षी का मादा। ३-किवाड़ की बगल में खोदी हुई सेंध। ४-मुगदर हिलाने का एक ढंग।
**बगली-घूंसा** पुं० (हि) १-वह घूंसा जो बगल से मारा जाय। २-छिप कर किया गया वार।
**बगलौंहा** वि० (हि) तिरछा।
**बगसना** क्रि० (हि) दे० 'बख्शना'।
**बगा** पुं० (हि) बगला। बागा।
**बगाना** क्रि० (हि) १-घुमाना। टहलना। २-भागना
**बगार** पुं० (देश०) गाय भैंस बाँधने का स्थान।
**बगारना** क्रि० (हि) फैलाना। पसारना।
**बगावत** स्त्री०(अ) १-विद्रोह। २-बागी होने का भाव
**बगिया** स्त्री० (हि) छोटा बाग। बगीचा।
**बगीचा** पुं० (फा) वाटिका। छोटा बाग।
**बगीची** स्त्री० (हि) बहुत छोटा बाग।
**बगुला** पुं० (हि) दे० 'बगला'।
**बगुलाभगत** वि० (हि) दे० 'बगलाभगत'।
**बगूरा** पुं० (हि) 'बगूला'।
**बगूला** पुं० (फा) ग्रीष्म ऋतु में भंवर की तरह कभी-कभी घूमने वाली वायु। बवंडर।
**बगेदना** क्रि० (हि) हटा देना। धकेल देना।
**बगेरी** स्त्री० (देश०) गौरेया के समान एक खाकी रङ्ग की चिड़िया।
**बग्गी** स्त्री० (हि) चार पहियों की बन्द या खुली घोड़ा गाड़ी।
**बग्घी** स्त्री० (हि) दे० 'बग्गी'।
**बघंबर** पुं० (हि) दे० 'बाघंबर'।
**बघ** पुं० (हि) बाघ का लघु रूपान्तर।
**बघछाला** पुं०(हि) दे० 'बाघंबर'।
**बघनखा** पुं० (हि) १-बाघ के नख के समान एक हथियार। २-एक गहना।
**बघनहां** पुं० (हि) दे० 'बघनखा'।
**बघनहियाँ** स्त्री० (हि) दे० 'बघनखा'।
**बघना** पुं० (हि) बाघ के नख जैसा एक गहना।
**बघरूरा** पुं० (हि) बगूला।
**बघवार** पुं० (हि) बाघ की मूँछों के बाल।
**बघार** पुं० (हि) १-छौंक। तड़का। २-छौंक की महक। ३-बघारने की क्रिया या भाव।
**बघारना** क्रि० (हि) १-छौंक लगाना। २-योग्यता दिखाने के लिए अधिक बोलना।
**बघूरा** पुं० (हि) दे० 'बगूला'।
**बघेलखंड** पुं० (हि) मध्यभारत का एक प्रदेश जहां बघेले राजपूतों का राज्य था।
**बच** पुं० (हि) बचन। वाक्य। स्त्री० (हि) औषध में काम आने वाला एक पौधा।
**बचका** पुं० (हि) पकवान।
**बचकाना** वि० (हि) बच्चों के योग्य। बच्चों का।
**बचत** स्त्री० (हि) १-बचा हुआ अंश। शेष। २-लाभ ३-बेचने का भाव। (इकोनोमी)।
**बचती** वि० (हि) १-बचत सम्बन्धी। २-अपना खर्चा पूरा करने के बाद बचा हुआ। (सरप्लस)।
**बचन** पुं० (हि) दे० 'वचन'।
**बचना** क्रि० (हि) १-कष्ट आदि से अलग रहना। २-छूट जाना। ३-शेष रहना। ४-अलग रहना। ५-कहना। बोलना।
**बचपन** पुं० (हि) बाल्यावस्था। लड़कपन।
**बचवैया** पुं० (हि) रक्षक। बचाने वाला।
**बचा** पुं० (हि) दे० 'बच्चा'।
**बचाना** क्रि० (हि) १-कष्ट आदि में पड़ने देना। २-अलग रखना। ३-छिपाना। ४-खर्च न होने देना
**बचाव** पुं० (हि) रक्षा। त्राण। बचाने वाला।
**बच्चा** पुं० (हि) १-नवजात शिशु। २-लड़का। बालक।
**बच्चाकश** वि० (फा) बहुत-से बच्चे जनने वाला। (विनोद)।
**बच्चाकशी** स्त्री० (फा) बार-बार बच्चे जनना।
**बच्चादानी** स्त्री० (हि) गर्भाशय।
**बच्ची** स्त्री० (हि) १-नवजात कन्या। २-होंठ के नीचे बीच में उगे हुए बाल।
**बच्छ** पुं० (हि) १-बच्चा। बेटा। २-बछड़ा।
**बच्छल** वि० (हि) दे० 'वत्सल'।
**बच्छस** पुं० (हि) दे० 'वक्ष'।
**बच्छा** पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
**बछ** पुं० (हि) बछड़ा। स्त्री० (हि) दे० 'बच'।
**बछड़ा** पुं० (हि) गाय का बच्चा।
**बछरा** पुं० (हि) बछड़ा।
**बछरू** पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
**बछल** वि० (हि) दे० 'वत्सल'।
**बछवा** पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।
**बछा** पुं० (हि) दे० 'बछड़ा'।

**बछिया** स्त्री० (हि) गाय का मादा बच्चा। बछड़ी।
**बछेरू** पुं० (हिं) बछड़ा। बच्चा।
**बजंत्री** पुं० (हि) १-बाजा बजाने वाला। २-मुसलमानी राज्यकाल में गाने बजाने वालों पर लगने वाला एक कर।
**बजट** पुं० (अं) आगामी वर्ष या मास के लिये आय-व्यय का लेखा जो पहले से तैयार कर के मंजूर कराया जाता है। आयव्ययक।
**बजड़ा** पुं०(हि) दे० 'बजरा'।
**बजना** क्रि० (हि) १-आघात लगने से शब्द होना। २-शस्त्रों का चलाना। ३-उड़ना। ४-प्रख्याति पाना। ५-लड़ाई या मारपीट करना।
**बजनियां** पुं० (हि) बाजा बजाने वाला।
**बजनिहा** पुं० (हि) दे० 'बजनियाँ'।
**बजबजाना** क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ सड़ने के कारण बुलबुले छोड़ना।
**बजमारा** वि० (हि) वज्र से मारा हुआ (गाली)।
**बजरंग** वि० (हि) वज्र के समान सुदृढ़ शरीर वाला। पुं० (हि) हनुमान।
**बजर** पुं० (हि) दे० 'वज्र'।
**बजरबट्टू** पुं०(हि) एक पेड़ जिसके बीज नजर उतारने के लिये पहनाये जाते हैं।
**बजरा** पुं० (हि) १-एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव २-दे० बाजरा।
**बजराग्नि** स्त्री० (हि) बिजली। वज्र की अग्नि।
**बजरी** स्त्री० (हि) कंकर के छोटे छोटे टुकड़े। २-ओला। ३-किले की दीवार पर बना कगुंरा। ४-दे० 'बजरा'।
**बजवाई** स्त्री० (हि) बाजा बजाने की मजदूरी।
**बजवाना** क्रि० (हि) किसी को बजाने में प्रवृत्त करना
**बजवैया** पुं०(हि) बाजा बजाने वाला।
**बजाग्नि** स्त्री० (हि) बिजली।
**बजागिन** स्त्री० (हि) बिजली।
**बजाज** पुं० (अ) कपड़े का व्यापारी।
**बजाजा** पुं० (अ) वह बाजार जिसमें कपड़े वालों की दुकानें हों।
**बजाजी** स्त्री० (अ०) कपड़ा बेचने का व्यवसाय।
**बजाना** क्रि० (हि) १-आघात करके शब्द उत्पन्न करना। २-किसी बाजे में शब्द उत्पन्न करना। ३-आघात करना। ४-पालन करना।
**बजार** पुं० (हि) दे० 'बाजार'।
**बजारी** वि० (हि) दे० 'बाजारी'।
**बजारू** वि० (हि) दे० 'बाजारू'।
**बजुला** पुं० (हि) दे० 'बिजुला'।
**बज्जना** क्रि० (हि) दे० 'बजना'।
**बज्जात** वि० (हि) दे० 'बदजात'।
**बज्र** पुं० (हि) दे० 'वज्र'।
**बझी** पुं० (हि) दे० 'बझी'।
**बझना** क्रि०(हि) १-बंधना। अटकना। २-हठ जाना। दुराग्रह करना।
**बझाउ** पुं० (हि) दे० 'बझाव'।
**बझान** स्त्री० (हि) बझने की क्रिया या भाव।
**बझाना** क्रि० (हि) उलझाना। फंसाना।
**बझाव** पुं० (हि) १-उलझाव। अटकाव। २-फंसने की क्रिया या भाव।
**बझावना** क्रि० (हि) दे० 'बझाना'।
**बट** पुं० (हि) १-दे० 'वट'। २-गोल वस्तु। ३-'बड़ा' नामक पकवान। ४-बट्टा। ५-मार्ग। ६-रस्सी का बल। ७-बाट।
**बटखरा** पुं० (हि) तोलने का बाट।
**बटन** स्त्री० (हि) बटने की क्रिया या भाव। ऐंठन। बल। पुं० (अ) चिपटे आधार की गोल घुंडी जो कमीज आदि में लगी रहती है।
**बटना** क्रि० (हि) १-तागों, तन्तुओं आदि को बटकर रस्सी का रूप देना। २-पिसना। पुं० (हि) १-उबटन। २-रस्सी बुनने का एक औजार।
**बटपरा** पुं० (हि) दे० 'बटमार'।
**बटपार** पुं० (हि०) दे० 'बटमार'।
**बटमार** पुं० (हि) राह में आकर माल छीन लेने वाला। ठग। डाकू।
**बटमारी** स्त्री० (हि) ठगी। डकैती।
**बटला** पुं० (हि) देगचा। बड़ी बटलोई।
**बटली** स्त्री० (हि) बटलोई। देगची।
**बटलोई** स्त्री० (हि) देगची। पतीली।
**बटवाना** क्रि० (हि) बांटने का काम किसी दूसरे से करवाना।
**बटवार** पुं० (हि) १-पहरेदार। २-मार्ग का कर उगाहने वाला।
**बटवारा** पुं० (हि) बांटने का भाव या क्रिया। विभाजन। तकसीम।
**बटा** पुं० (हि) १-गोल वस्तु। २-गेंद। ढेला। ३-पथिक। यात्री। ४-बांटने वाला। ५-भाग लेने वाला। ६-जमींदार को लगान के रूप में पैदावार लेने की व्यवस्था।
**बटाई** स्त्री० (हि) १-बटने की क्रिया या भाव। २-बाँटने की मजदूरी।
**बटाउ** पुं० (हि) राही। पथिक। बटोही।
**बटालियन** स्त्री०(अं) पैदल सेना का वह अंश जिसमें एक हजार सैनिक होते हैं।
**बटिका** स्त्री० (हि) दे० 'वाटिका'।
**बटिया** स्त्री० (हि) १-छोटा गोला। २-सिल पर पीसने का लोढ़ा। ३-छोटा मार्ग।
**बटी** स्त्री० (हि) १-गोली। 'बड़ी' नामक पकवान। २-वाटिका। बगीचा।

बट् पुं० (हिं) दे० 'बटु'।
बटुआ पुं० (हिं) 'बटुवा'।
बटुई स्त्री० (हिं) छोटी पतीली।
बटुरना क्रि० (हिं) सिमटना। इकट्ठा होना।
बटुला पु० (हिं) बड़ी पतीली।
बटुवा १- कई खानों वाली छोटी थैली। २-बड़ी पतीली। देगची।
बटेर स्त्री० (हिं) तीतर के समान एक छोटी चिड़िया।
बटेरबाज पुं० (हिं) बटेर पालने या लड़ाने वाला।
बटेरबाजी स्त्री० (हिं) बटेर पालने या लड़ाने की लत
बटोरन स्त्री० (हिं) १-बटोर कर इकट्ठा किया हुआ ढेर। २-कूड़े का ढेर। ३-खेत में इकट्ठा किया हुआ अन्न का दाना।
बटोरना क्रि० (हिं) समेटना। इकट्ठा करना।
बटोही पुं० (हिं) पथिक। मुसाफिर। यात्री।
बट्ट पुं० (हिं) १-गोला। बटा। २-गेंद। ३-शिकन बल। ४-बटखना।
बट्टा पुं० (हिं) १-वह कमी जो किसी वस्तु के क्रय-विक्रय या लेन देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है। (डिस्काउन्टर)। २-दलाली। ३-हानि। टोटा। ४-कलंक। दाग। स्त्री० (हिं) १-कूटने या पीसने का पत्थर। २-गोल डिब्बा। ३-बाजीगर का करतल दिखाने का प्याला।
बट्टाखाता पुं० (हिं) न वसूल होने वाली रकमों का लेखा या मद। (डेड एकाउन्ट)।
बट्टाढाल वि० (हिं) चिकना और बिलकुल समतल।
बट्टी स्त्री० (हिं) १-किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। २-टिकिया। ३-लोढ़िया।
बट्टू पुं० (हिं) १-धारीदार। चारखाना। २-बजर-बट्टू का पेड़।
बड़ंगा पुं० (हिं) बँडेर।
बड़ स्त्री० (हिं) बकवाद। प्रलाप। पुं० (हिं) बरगद का वृक्ष। वि० (हिं) 'बड़ा' का लघु रूपान्तर।
बड़क स्त्री० (हिं) डींग। शेखी। बकवाद।
बड़दंता वि० (हिं) बड़े-बड़े दांतों वाला।
बड़दुमा पुं० (हिं) लम्बी दुम वाला हाथी।
बड़प्पन पु० (हिं) बड़ा या श्रेष्ठ होने का भाव। महत्व।
बड़पेटा वि० (हिं) बड़े उदर या पेट वाला।
बड़बड़ स्त्री० (हिं) बकवाद। व्यर्थ का बोलना।
बड़बड़ाना क्रि० (हिं) १-बक-बक करना। प्रलाप करना। २ धीरे-धीरे अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहना।
बड़बड़िया वि० (हिं) बड़बड़ाने वाला।
बड़बेरी स्त्री० (हिं) जंगली बेर। झड़बेरी।
बड़बोल वि० (हिं) शेखी मारने वाला। बहुत बोलने वाला।
बड़भाग वि० (हिं) भाग्यवान। भाग्यशाली।
बड़भागी वि० (हिं) दे० 'बड़भाग'।
बड़मुहाँ वि० (हिं) लम्बे मुख वाला।
बड़रा वि० (हिं) दे० 'बड़ा'।
बड़राना क्रि० (हिं) दे० 'बर्राना'।
बड़वा स्त्री० (हिं) १-घोड़ी। २-अश्विनी नक्षत्र। ३-बड़वाग्नि।
बड़वागि स्त्री० (हिं) दे० 'बड़वाग्नि'।
बड़वाग्नि स्त्री० (सं) समुद्राग्नि।
बड़वानल पुं० (सं) दे० 'बड़वाग्नि'।
बड़वार वि० (हिं) दे० 'बड़ा'।
बड़वारी स्त्री० (हिं) १-बड़प्पन। बड़ाई। २-प्रशंसा
बड़हन पुं० (हिं) एक प्रकार का धान। वि० (हिं) बड़ा।
बड़हर पुं० (हिं) दे० 'बड़हर'।
बड़हल पुं० (हिं) एक प्रकार का वृक्ष या उसके फल जो शरीफे के आकार के होते हैं।
बड़हार पुं० (हिं) विवाह के बाद होने वाली बरातियं की ज्योनार।
बड़ा वि० (हिं) १-अधिक। २-विस्तार वाला। ३-लम्बाचौड़ा। ४-अधिक अवस्था वाला। ५-श्रेष्ठ ६-महत्व का। अधिक। पुं० (हिं) १-तली हुई उर की गोल टिकिया। २-एक बरसाती घास।
बड़ा आदमी पुं० (हिं) धनवान तथा प्रभावशाल पुरुष।
बड़ाई स्त्री० (हिं) १-बड़प्पन। २-बड़े होने का भा ३-महत्व। ४-प्रशंसा।
बड़ा काम पुं० (हिं) कठिन काम।
बड़ा कुलंजन पुं० (हिं) मोथा।
बड़ा घर पुं० (हिं) १-जेलखाना। २-अमीर आद का घर।
बड़ा घराना पुं० (हिं) ऊँचा घराना।
बड़ा दिन पुं० (हिं) पच्चीस दिसम्बर का दिन ईसामसीह का जन्म दिन मानते है। (क्रिसमस
बड़ाबाबू पुं० (हिं) मुख्य लिपिक। (हैडक्लर्क)।
बड़ाबूढ़ा पुं० (हिं) गुरुजन। बुजुर्ग।
बड़ाबोल पुं० (हिं) घमंड या अहंकारपूर्ण बात।
बड़ासाहब पुं० (हिं) प्रधान अधिकारी।
बड़ी वि० (हिं) दे० 'बड़ा'। स्त्री० (हिं) १-दाल आदि की सुखाई हुई टिकिया। २-मांस की त की तरह चीर कर सुखाई गई बोटी।
बड़ी इलायची स्त्री० (हिं) बड़े दाने वाली इलाय जो गर्म मसाले में डाली जाती है।
बड़ीमाता स्त्री० (हिं) शीतला। चेचक। (स्मॉल पॉ
बड़ूजा पु० (हिं) दे० 'बिड़ौजा'।
बड़ेरर पु० (देश) बवंडर। बगूला।
बड़ेरा वि० (हिं) बड़ा। प्रधान। मुख्य। पुं०

१-लम्बाई के बल लगी हुई छप्पर के बीच लकड़ी। २-कूएं पर दो खम्भों के बीच की लकड़ी जिस पर घिरनी लगी होती है।
**बड़े लाट** पुं० (हि) प्रधान शासक।
**बड़ौना** पुं० (हि) प्रशंसा। बड़ाई।
**बढ़ती** स्त्री० (हि) दे० 'बढ़ती'।
**बढ़ई** पुं० (हि) वह कारीगर जो लकड़ी को गढ़कर मेज कुर्सी आदि बनाता है।
**बढ़ईगीरी** स्त्री० (हि) बढ़ई का काम।
**बढ़ती** स्त्री० (हि) १-तौल गिनती आदि में होने वाली अधिकता। २-धन आदि की वृद्धि। ३-मूल्य में वृद्धि।
**बढ़वार** पुं० (देश) पत्थर काटने की टांकी।
**बढ़ना** क्रि० (हि) १-वृद्धि को प्राप्त होना। २-नाप, तोल आदि में अधिक होना। ३-मूल्य। योग्यता। अधिकार में वृद्धि होना। ४-किसी स्थान से आगे चलना। ५-दुकान आदि बन्द होना। ६-लाभ होना। ७-दीपक का बुझना।
**बढ़नी** स्त्री० (हि) १-झाड़ू। २-पेशगी। अगमी।
**बढ़वारि** स्त्री० (हि) बढ़ती।
**बढ़ाना** क्रि० (हि) १-परिमाण या विस्तार अधिक करना। २-गिनती नाप तौल आदि में अधिक करना। ३-फैलाना। ४-प्रबल या तीव्र करना। ५-उन्नत करना। ६-दुकान आदि बन्द करना। ७-दीपक बुझाना।
**बढ़ाव** पुं० (हि) १-बढ़ने की क्रिया या भाव। २-अधिकता। विस्तार। ३-उन्नति।
**बढ़ावा** पुं० (हि) १-साहस या हिम्मत बढ़ाने वाली बात। प्रोत्साहन। २-उत्तेजना।
**बढ़िया** वि० (हि) उत्तम। अच्छा। स्त्री० (हि) एक प्रकार की दाल।
**बढ़ैया** पुं० (हि) बढ़ाने वाला। पुं० (देश) बढ़ई।
**बढ़ोतरी** स्त्री० (हि) १-उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २-उन्नति।
**बणिक** पुं० (सं) वाणिज्य या व्यापार करने वाला व्यवसायी। बनिया।
**बणिग्वृत्ति** स्त्री० (हि) व्यापार। व्यवसाय।
**बत** स्त्री० (हि) बात। स्त्री० (हि) बत्तख।
**बतकट** पुं० (हि) जो कही बात का खण्डन करे।
**बतकहाव** पुं० (हि) बातचीत।
**बतकही** स्त्री० (हि) बातचीत।
**बतख** स्त्री० (हि) हंस जाति का एक पक्षी जो पानी पर तैरता है।
**बतचल** वि० (हि) बकवादी।
**बतबढ़ाव** पुं० (हि) विवाद। व्यर्थ बात बढ़ाना।
**बतर** वि० (हि) दे० 'बदतर'।
**बतरस** पुं० (हि) बातचीत का आनन्द।
**बतरान** स्त्री० (हि) वार्तालाप। बातचीत।
**बतराना** क्रि० (हि) बातचीत करना।
**बतरौहां** वि० (हि) बातचीत करने का इच्छुक।
**बतलाना** क्रि० (हि) दे० 'बताना'।
**बताना** क्रि०(हि) १-कहना। जताना। २-समझाना। ३-निर्देश करना। ४-मारपीट कर ठीक राह पर लाना। ५-नृत्य में अंगों की चेष्टा से भाव प्रकट करना।
**बताशा** पुं० (हि) दे० 'बतासा'।
**बतास** स्त्री० (हि) १-वायु। हवा। २-गठिया। बात-रोग।
**बतासा** पुं० (हि) १-चीनी की चासनी टपका कर बनाई हुई एक मिठाई। २-एक प्रकार की आतिश-बाजी।
**बतिया** पुं० (हि) थोड़े दिनों का लगा हुआ कच्चा फल। स्त्री० (हि) दे० 'बात'।
**बतियाना** क्रि० (हि) बातें करना।
**बतियार** स्त्री० (हि) बातचीत।
**बतीसी** स्त्री० (हि) १-नीचे और ऊपर के सब दांत। २-बत्तीस वस्तुओं का समूह।
**बतू** पुं० (हि) कलाबत्तू।
**बतोला** पुं० (हि) झांसा। भुलावा।
**बतौर** अव्य० (फा) १-रीति से। तरह पर। २-सदृश। समान।
**बतौरी** स्त्री० (हि) शरीर में मांस का उभरा हुआ अंश। गुमड़ी।
**बत्तक** स्त्री० (हि) दे० 'बतख'।
**बत्तिस** पुं०, वि० (हि) दे० 'बत्तीस'।
**बत्ती** स्त्री० (हि) १-सूत या रूई का बटा हुआ लच्छा जिससे दीप जलाया जाता है। २-दीपक। ३-मोम-बत्ती। ४-पलीता। ५-कपड़े की बत्ती जो घाव में लगाई जाती है। ६-ऐंठा हुआ कपड़ा। ७-बत्ती के आकार की कोई वस्तु।
**बत्तीस** वि० (हि) तीस और दो। पुं० (हि) बत्तीस की संख्या। ३२।
**बत्तीसा** पुं०(हि) १-बत्तीस मसाले डाल कर बनाया गया लड्डू। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।
**बत्तीसी** स्त्री० (हि) १-बत्तीस का समूह। २-मनुष्य के मुंह में बत्तीस दांतों का समूह।
**बथुआ** पुं०(हि) एक छोटा पौधा जिसका शाक बनाया जाता है।
**बद** स्त्री० (हि) १-जांघ पर की गिलटी। गोहिया। २-पलटा। बदला। ३-पक्ष। ४-जोखिम। ५-चौपायों का एक छूत का रोग। वि० (फा) १-बुरा खराब। निकृष्ट। २-दुष्ट। नीच।
**बदअंदेश** वि० (फा) बुरा चाहने वाला।
**बदअंदेशी** स्त्री० (फा) बदख्वाही।

**बदग्रमनी** स्त्री० (फा) विद्रोह। अशांति। उपद्रव।
**बदग्रमली** स्त्री० (फा) राज्य का कुप्रबन्ध। अशांति। हलचल।
**बदइन्तजामी** स्त्री० (फा) कुप्रबन्ध। अव्यवस्था।
**बदकार** वि० (फा) व्यभिचारी। कुकर्मी।
**बदकारी** स्त्री० (फा) व्यभिचार। कुकर्म।
**बदकिस्मत** वि० (फा) अभागा।
**बदखत** पु०(फा)१-बुरा लेख। वि० बुरा लिखने वाला।
**बदखती** स्त्री० (फा) बुरी लिखावट।
**बदख्वाह** वि० (फा) अनिष्ट चाहने वाला।
**बदगुमान** वि० (फा) सन्देह की दृष्टि से देखने वाला।
**बदगुमानी** स्त्री० (फा) मिथ्या संदेह।
**बदगोई** स्त्री० (फा) १-निंदा। २-चुगली।
**बदचलन** वि० (फा) कुमार्गी। दुश्चरित्र।
**बदजबान** वि० (फा) कटुभाषी। गाली-गलौज बकने वाला।
**बदजबानी** स्त्री० (फा) गाली। कटुवाक्य।
**बदजात** वि० (फा) नीच। छोटा। लुच्चा।
**बदजायका** वि० (फा) जिसका खराब स्वाद हो।
**बदतमीज** वि० (फा) अशिष्ट। गँवार। बेहूदा।
**बदतमीजी** स्त्री० (फा) अशिष्टता। बेहूदगी। गँवारपन।
**बदतर** वि० (फा) किसी की अपेक्षा और भी बुरा।
**बदतरीन** वि० (फा) बुरे से बुरा।
**बदतहजीब** वि० (फा) असभ्य। अशिष्ट। उजड्ड।
**बदतहजीबी** स्त्री० (फा) असभ्यता। अशिष्टता। उजड्डपन।
**बदवयानती** स्त्री०(फा) विश्वासघात। बेईमानी। दगाबाजी।
**बददुआ** स्त्री० (फा) शाप।
**बदन** पु० (फा) देह। शरीर।
**बद-नजर** वि०(फा) बुरी नजर वाला।
**बदनसीब** वि० (फा) अभागा।
**बदनसीबी** स्त्री० (फा) दुर्भाग्य।
**बदनस्ल** वि० (फा) नीच। बुरी नस्ल का।
**बदना** क्रि० (हि) १-कहना। वर्णन करना। २-नियत करना। ३-बाजी लगाना। ४-कुछ महत्व का समझना। ५-स्वीकार करना।
**बदनाम** वि० (फा) जिसकी लोग निंदा करते हों।
**बदनामी** स्त्री० (फा) अपकीर्ति। लोकनिन्दा।
**बदनीयत** वि० (फा) १-नीचाशय। २-बेईमान।
**बदनीयती** स्त्री० (फा) बेईमानी। दगाबाजी।
**बदनुमा** वि० (फा) कुरूप। भद्दा। भोंडा।
**बदपरहेज** वि० (फा) कुपथ्य करने वाला।
**बदपरहेजी** स्त्री० (फा) कुपथ्य। असंयम।
**बदफेल** वि० (फा) दुराचारी। कुकर्मी।
**बदबख्त** वि० (फा) अभागा।
**बदबू** स्त्री० (फा) दुर्गन्ध। बुरी गंध।
**बदमजगी** स्त्री० (फा) बदमजा होना। कटुता।
**बदमजा** वि०(फा) १-बुरे स्वाद वाला। २-आनन्द-रहित।
**बदमस्त** वि० (फा) १-नशे में चूर। मस्त। २-कामोन्मत्त।
**बदमस्ती** स्त्री० (फा) १-मतवालापन। २-कामुकता।
**बदमाश** वि० (फा) १-बुरे कामों से जीविका चलाने वाला। दुर्वृत्त। २-दुष्ट। ३-दुराचारी।
**बदमाशी** स्त्री० (फा) १-बुरी वृत्ति। २-दुष्टता। ३-व्यभिचार।
**बदमिजाज** वि० (फा) बुरे स्वभाव का। चिड़-चिड़ा
**बदमिजाजी** स्त्री० (फा) बुरा स्वभाव। चिड़चिड़ापन
**बदरंग** वि०(फा) १-बुरे या भद्दे रङ्ग का। २-जिसका रङ्ग बिगड़ चुका हो।
**बदर** पुं० (सं) १-बेर का पेड़ या फल। २-कपास। ३-बिनौला। पुं० (हि) मेघ। बादल। वि० (फा) बाहर।
**बदरा** पुं० (हि) बादल। मेघ। स्त्री० (सं) कपास का पौधा।
**बदराई** स्त्री० (हि) बदली।
**बदराह** वि० (फा) १-दुश्चरित्र। दुष्ट। २-बुरे मार्ग पर चलने वाला।
**बदरिका** स्त्री० (सं) १-बेर का पेड़ या फल। २-गंगा का एक उद्गम स्थान। ३-उसके पास का आश्रम। बदरिकाश्रम।
**बद-रिकाब** वि० (फा) जो सवार होते समय कूदे। (घोड़ा)।
**बदरिया** स्त्री० (हि) बदली। मेघ।
**बदरी** स्त्री० (सं) १-बेर का पेड़ या पौधा। २-कपास का पौधा। स्त्री० (हि) बादल। मेघ।
**बदरीनाथ** पुं० (सं) बदरिकाश्रम नामक तीर्थ।
**बदरीनारायण** पुं० (सं) बदरिकाश्रम के मन्दिर की नारायण की मूर्ति।
**बदरीफल** पुं० (सं) बेर का फल।
**बदरीवन** पुं०(सं) १-बेर का जंगल। २-बदरिकाश्रम
**बदरोब** वि० (फा) १-जिसका तनिक भी रोब न हो। २-तुच्छ। भद्दा।
**बदरोबी** स्त्री० (फा) अप्रतिष्ठा।
**बदरौंह** वि० (फा) दे० 'बदराह'।
**बदल** पु० (अ) १-हेरफेर। परिवर्तन। २-पलटा। प्रतिकार।
**बदलगाम** वि० (फा) १-मुँहजोर। मुँहफट। २-मरकश। (घोड़ा)।
**बदलना** क्रि० (हि) १-परिवर्तित होना। २-एक वस्तु हटाकर उसके स्थान पर दूसरी वस्तु रखना या हो जाना। ३-एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्त

हो जाना।

**बदलवाना** क्रि०(हि) बदले का काम दूसरे से कराना।

**बदला** पुं० (हि) १-विनिमय। २-पलटा। एवज। ३-प्रतिकार। ४-नतीजा। परिणाम।

**बदलाई** स्त्री० (हि) १-बदलने की क्रिया या भाव। २-बदले में लगने वाली रकम।

**बदलाना** क्रि० (हि) दे० 'बदलवाना'।

**बदली** स्त्री० (हि) १-फैल कर छाया हुआ बादल। २-बदले जाने की क्रिया या भाव। ३-एक स्थान से हटाकर दूसरी जगह करने वाली नियुक्ति। (ट्रान्सफर)।

**बदलौवल** स्त्री० (हि) हेर-फेर। अदल-बदल।

**बदशकल** वि० (फा) भद्दा। कुरूप।

**बदशगून** वि० (फा) मनहूस। अशुभ।

**बदसलीकगी** स्त्री० (फा) फूहड़पन। बेशऊरी।

**बदसलीका** वि० (फा) असभ्य। बेशऊर। फूहड़।

**बदसलूकी** स्त्री० (फा) १-अशिष्ट व्यवहार। २-बुराई अपकार।

**बदसूरत** वि० (फा) कुरूप। बेडौल।

**बदहजमी** स्त्री० (फा) अजीर्ण। अपच।

**बदहवास** वि० (फा) १-बेहोश। अचेत। २-व्याकुल। ३-श्रांत। शिथिल।

**बदहवासी** स्त्री० (फा) १-अचेतनता। २-व्याकुलता। ३-शिथिलता।

**बदा** वि० (हि) भाग्य में लिखा हुआ।

**बदाबदी** स्त्री० (हि) प्रतियोगिता। होड़। अव्य० (हि) बढ़कर।

**बदाम** पुं० (हि) दे० 'बादाम'।

**बदामी** वि० (हि) दे० 'बादामी'।

**बदि** स्त्री० (हि) बदल। पलटा। अव्य० (हि) बदले में पलटे में।

**बदी** स्त्री० (हि) कृष्णपक्ष। स्त्री० (फा) अपकार। बुराई

**बदूख** स्त्री० (हि) दे० 'बन्दूक'।

**बदूर** पुं० (हि) दे० 'बादल'।

**बदूल** पुं० (हि) दे० 'बादल'।

**बदौलत** अव्य० (फा) १-आसरे से। द्वारा। २-कारण से। ३-वजह से।

**बद्ध** वि० (सं) १-बंधा हुआ। २-अज्ञान में फंसा हुआ। ३-संसार के बन्धन में पड़ा हुआ। ४-जिसके लिए कोई बन्धन न हो। ५-निर्धारित। ६-बैठा हुआ। ७-किसी बंधपत्र से बंधा हुआ। (बाउन्ड)।

**बद्धकोष्ठ** पुं० (सं) अजीर्ण। बदहजमी।

**बद्धदृष्टि** वि० (सं) जो किसी वस्तु पर आँखें जमाये हुए हो।

**बद्धनेत्र** वि० (सं) दे० 'बद्धदृष्टि'।

**बद्धपरिकर** वि० (सं) कमर बांधे हुए। तैयार।

**बद्धप्रतिज्ञ** वि० (सं) वचनबद्ध।

**बद्धमुष्टी** वि०(सं) कृपण। कन्जूस।

**बद्धमूल** वि० (सं) जिसने जड़ पकड़ ली हो।

**बद्धहित पक्ष** पुं० (सं) वह पक्ष जो किसी मामले में दिलचस्पी रखता हो। (इन्टरेस्टेड पार्टी)।

**बद्धांजलित** वि० (सं) करबद्ध। हाथ जोड़े हुए।

**बद्धी** स्त्री० (हि) १-बांधने की कोई वस्तु। डोरी। रस्सी। २-चार लड़ी वाला एक हार।

**बध** पुं० (सं) दे० 'वध'।

**बधना** क्रि० (हि) मार डालना। वध करना। पुं०(हि) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

**बधाई** स्त्री० (हि) १-वृद्धि। २-मंगल। उत्सव। ३-मंगलाचार। ४-किसी के यहाँ शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार या आनन्द प्रकट करने वाला वचन। मुबारकबाद।

**बधाना** क्रि० (हि) वध करना।

**बधाया** पुं० (हि) दे० 'बधाई'।

**बधावना** पुं० (हि) दे० 'बधावा'।

**बधावरा** पुं० (हि) दे० 'बधावा'।

**बधावा** पुं० (हि) २-बधाई। २-मंगलाचार। ३-उपहार।

**बधिक** पुं० (हि) १-वध करने वाला। २-जल्लाद। व्याध।

**बधिया** पुं० (हि) १-अण्डकोश निकाला हुआ पशु २-एक प्रकार का मोटा गन्ना।

**बधियाना** क्रि० (हि) बधिया बनाना।

**बधिर** वि० (सं) जिसमें सुनने की शक्ति न हो। बहरा।

**बधिरता** स्त्री० (सं) बहरापन।

**बधू** स्त्री० (हि) दे० 'वधू'।

**बधूक** पुं० (हि) दे० 'बधूक'।

**बधूटी** स्त्री० (हि) दे० 'वधूटी'।

**बधूरा** पुं० (हि) अंधड़। बगूला। बवण्डर।

**बधैया** स्त्री०(हि) दे० 'बधाई'। पुं०(हि) दे० 'बधिक' २-दे० 'बधावा'।

**बध्य** वि० (सं) मार डालने के योग्य।

**बन** पुं० (सं) १-जंगल। कानन। २-जल। पानी। ३-समूह। ४-बगीचा। ५-कपास का पौधा। स्त्री० (हि) सजावट। सजधज। बाना।

**बनआलू** पुं० (हि) पिंडालू और जिमीकंद के समान एक पौधा।

**बनउर** पुं०(हि) १- दे० 'बिनौला'। २-दे० 'ओला'

**बनकंडा** पुं० (हि) बन में सूखा हुआ गोबर। कंडा। अरना।

**बनक** स्त्री०(हि)१-बनावट। सजावट। २-वेष। बाना ३-बन की उपज। जैसे लकड़ी, गोंद।

**बनकटा** वि० (हि) जंगली।

**बन-कपासी** स्त्री०(हिं) एक पौधा जिसके रेशों से रस्सा बटते हैं।
**बनकर** पुं० (हिं) १-जंगल में होने वाली घास, लकड़ी आदि का कर। २-सूर्य।
**बनखंड** पुं० (हिं) जंगली प्रदेश। जंगल का कोई भाग
**बनखंडी** स्त्री० (हिं) वनस्थली। पु०(हिं) वन में रहने वाला।
**बनखरा** पुं० (हिं) ऐसी भूमि जिसमें पिछली फसल कपास की बोई गई हो।
**बनगरी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की मछली।
**बनचर** पुं० (हिं) १-जंगली पशु। २-जंगली आदमी ३-जलजीव।
**बनचरी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की जंगली घास।
**बनचारी** पुं०(हिं)१-वन में घूमने वाला। २-जंगली जन्तु। ३-जलजीव। ४-वनवासी।
**बनचौंर** स्त्री० (हिं) सुरागाय। सुरभी।
**बनचौंरी** स्त्री० (हिं) दे० 'बनचौंर'।
**बनज** पु० (हिं) १-वाणिज्य। २-कमल। ३-जल में होने वाले पदार्थ।
**बनजना** क्रि० (हिं) व्यापार या रोजगार करना।
**बनजात** पुं० (हिं) कमल।
**बनजारा** पुं०(हिं) १-बैलों पर सामान (अन्न) लाद कर जगह-जगह बेचने वाला व्यक्ति। २-व्यापारी। सौदागर।
**बनजी** पुं० (हिं) १-व्यापार। २-व्यापारी।
**बनड़ा** पुं० (दे०) १-दुल्हा। घर।
**बनत** स्त्री० (हिं) १-बनावट। रचना। २-अनुकूलता। ३-एक प्रकार की रेशम पर काढ़ने की बेल।
**बनताई** स्त्री० (हिं) बन की सघनता या भयंकरता।
**बनतुलसी** स्त्री० (हिं) एक पौधा जिसकी पत्तियां तुलसी के समान होती हैं। बबंरी।
**बनद** पुं० (हिं) बादल। मेघ।
**बनदाम** स्त्री० (हिं) बनमाला।
**बनदेवता** पु० (हिं) दे० 'वनदेवता'।
**बनदेवी** स्त्री० (हिं) दे० 'बनदेवी'।
**बनधातु** स्त्री० (हिं) गेरू या कोई रंगीन मिट्टी।
**बनना** (हिं) १-तैयार होना। रचा जाना। २-काम आने के योग्य होना। ३-एक रूप से बदलकर अन्य रूप में हो जाना। ४-उन्नत दशा को प्राप्त होना। ५-प्राप्त होना। ६-मरम्मत होना। ७-निभना। पटना। ८-मूर्ख या उपहासास्पद सिद्ध होना। ९-सजना। १०-सुअवसर मिलना।
**बननि** स्त्री० (हिं) १-बनावट। २-बनावसिंगार।
**बननिधि** पुं० (हिं) समुद्र।
**बननीबू** पुं० (हिं) एक सदाबहार वृक्ष।
**बनपट** पुं०(हिं) वृक्ष की छाल से बनाया हुआ कपड़ा।
**बनपति** पुं० (हिं) सिंह। शेर।
**बनपथ** पुं० (हिं) वह मार्ग जिसमें जंगल बहुत पड़ता हो।
**बनपाट** पुं० (हिं) जंगली पटसन।
**बनपाती** स्त्री० (हिं) वनस्पति।
**बनपाल** पुं० (हिं) बन या बगीचे का रक्षक। माली।
**बनप्रिय** पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
**बनफशई** वि० (फा) बनफशे के रंग का।
**बनफशा** पुं० (फा) एक पर्वतों पर उगने वाला पौधा जिसके पत्ते आदि दवा के काम आते हैं।
**बनबसन** पु० (हिं) छाल का बना कपड़ा।
**बनबारी** स्त्री० (हिं) वनकन्या।
**बनबाहन** पुं० (हिं) नाव। नौका।
**बनबिलाव** पुं० (हिं) बिल्ली जैसा पर उस से बड़ा जंगली जन्तु।
**बनमानुस** पुं०(हिं) १-बन्दरों से उन्नत मनुष्य आकृति वाला जंगली जन्तु। २-जंगली आदमी (विनोद)
**बनमाला** स्त्री (हिं) दे०'वनमाला'।
**बनमाली** पुं० (हिं) दे०'वनमाली'।
**बनमुरगा** पुं०(हिं) जंगली मुर्गा।
**बनमूंग** पु० (हिं) मोठ।
**बनरखा** पुं०(हिं)१-वन का रक्षक। २-एक जंगली जाति
**बनरा** पुं०(हिं) १-दुल्हा। २-लड़के के विवाह उत्सव में गाया जाने वाला एक गीत। पु० (देश) बन्दर।
**बनराज** पुं० (हिं) वन का राजा। सिंह। शेर। २-बहुत बड़ा पेड़।
**बनराय** पुं०(हिं) दे० 'बनराज'।
**बनरी** स्त्री०(हिं) नववधु।
**बनवना** क्रि० (हिं) बनाना।
**बनवारी** पुं०(हिं) श्रीकृष्ण।
**बनवैया** पु०(हिं) बनाने वाला।
**बनसपति** स्त्री०(हिं) दे० 'वनस्पति'।
**बनाइ** अव्य० (हिं) दे० 'बनाय'।
**बनाउ** पु०(हिं) दे०'बनाव'।
**बनाउरि** स्त्री०(हिं) दे० 'बाणावली'।
**बनागि** स्त्री० (हिं) दावानल।
**बनाग्नि** स्त्री० (हिं) दावानल।
**बनात** स्त्री (हिं) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
**बनाना** क्रि०(हिं) १-रूप या अस्तित्व देना। रचना। २-ठीक अवस्था में लाना ३-किसी को पद, मान, अधिकार आदि देना। ४-उन्नत अवस्था को प्राप्त करना। ५-उपार्जित करना। ६-किसी को व्यंगपूर्वक मूर्ख ठहराना। ७-दोष दूर करके ठीक करना।
**बनाबत** पु०(हिं) विवाह करने के पहले लड़के और कन्या की जन्मकुण्डली मिलाना।
**बनाम** अव्य० (फा) नाम पर का नाम।
**बनाय** अव्य० (हिं) १-बिलकुल। पूर्णतया। २-अच्छी तरह से।

**बनाव** पुं० (हि) १-बनावट। रचना। २-सजावट। ३-युक्ति।
**बनावट** स्त्री० (हि) १-बनने या बनाने का भाव या ढंग। २-आडम्बर। ३-कृत्रिमता।
**बनावटी** वि० (हि) नकली। कृत्रिम। बनाया हुआ।
**बनावन** पु० (हि) अन्न साफ करते समय निकलने वाली लकड़ी, कंकर आदि।
**बनावनहारा** पुं० (हि) रचयिता। बनाने वाला। बिगड़े को बनाने वाला।
**बनावना** क्रि० (हि) दे० 'बनाना'।
**बनावरि** स्त्री० (हि) बाणों की पंक्ति।
**बनासपाती** स्त्री० (हि) दे० 'वनस्पति'।
**बनि** वि० (हि) पूर्ण। समस्त। स्त्री० (हि) मजदूरी के बदले में दिया जाने वाला अन्न। पुं० (हि) खेती पर काम करने वाला मजदूर।
**बनिक** पुं० (हि) दे० 'वणिक्'।
**बनिज** पुं० (हि) दे० 'वाणिज्य'।
**बनिजना** क्रि० (हि) १-व्यापार करना। २-मोल लेना वश में करना।
**बनिजारा** पुं० (हि) दे० 'बनजारा'।
**बनिजारिन** स्त्री० (हि) बनजारा जाति की स्त्री।
**बनिजारी** स्त्री० (हि) बनिजारिन।
**बनित** स्त्री० (हि) वेष। बानक।
**बनिता** स्त्री० (हि) १-औरत। स्त्री। पत्नी।
**बनिया** पुं० (हि) १-व्यापार करने वाला। व्यापारी। २-आटा दाल बेचने वाला। ३-वैश्य।
**बनियाइन** स्त्री० (हि) १-बिना बांह की कुर्ती। २-बनिये की स्त्री। ३-वैश्या स्त्री।
**ब-निस्बत** अव्य० (फा) तुलना में। अपेक्षाकृत।
**बनिहार** पु०(हि) खेत संबन्धी सब काम करने वाला नौकर।
**बनी** स्त्री०(हि) १-वनस्थली। वन का कोई भाग। २-बाग। ३-नववधू। ४-नायिका। स्त्री। ५-कपास। पुं० (हि) बनिया।
**बनौनी** स्त्री० (हि) दे० 'बनैनी'।
**बनीर** पुं० (हि) बैंत।
**बनेठी** स्त्री० (हि) पटेबाजों का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे होते हैं।
**बनैनी** स्त्री० (हि) बनिये की स्त्री। वैश्य जाति की स्त्री।
**बनैला** वि० (हि) जंगली। वन्य (पशु)।
**बनोवास** पु० (हि) दे० 'बनवास'।
**बनौआ** (सं) (हि) बनावटी।
**बनौटी** वि० (हि) कपास के फूल के समान। कपासी।
**बनौरी** पु०(हि) १-वर्षा के साथ गिरने वाला ओला। २-एक रोग जिसमें शरीर पर गांठें पड़ जाती हैं।
**बनौवा** वि० (हि) बनावटी
**बन्नी** स्त्री० (हि) उपज का वह अंश जो खेत पर काम करने वाले मजदूर को दिया जाता है।
**बन्हि** पुं० (हि) दे० 'वह्नि'।
**बप** पुं० (हि) पिता। बाप।
**बपतिस्मा** पुं० (अ) नवजात शिशु या किसी को ईसाई बनाने के समय का एक संस्कार।
**बपना** क्रि० (हि) बीज बोना।
**बपमार** वि० (हि) पितृघातक।
**बपु** पुं० (हि) १-शरीर। देह। २-अवतार। ३-रूप।
**बपुरव** पुं० (हि) दे० 'वपु'।
**बपुरा** वि० (हि) १-बेचारा। अशक्त। २-अनाथ। ३-गरीब।
**बपौती** स्त्री० (हि) पैतृक सम्पति।
**बप्पा** पुं० (हि) पिता। बाप।
**बफारा** पुं० (हि) औषध मिले जल की भाप से शरीर का कोई अंग सेंकना।
**बफौरी** स्त्री० (हि) भाप से पकाई हुई बरी।
**बबकना** क्रि० (हि) उत्तेजना में बोलना।
**बबर** पुं० (फा) १-बड़ा शेर। २-एक प्रकार का मोटा कंबल।
**बबा** पुं० (हि) दे० 'बाबा'।
**बबुआ** पुं० (हि) १-छोटे बच्चे के लिए प्यार का शब्द २-जमींदार। रईस। ३-बालक के आकार की गुड़िया।
**बबुई** पु० (हि) १-कन्या। बेटी। २-छोटी ननद। ३-किसी ठाकुर, सरदार की बेटी।
**बबुर** पुं० (हि) कीकर नामक वृक्ष।
**बबुल** पुं० (हि) दे० 'बबूर'।
**बबुला** पु० (हि) १-बगूला। २-बुलबुला।
**बभनी** स्त्री० (हि) छिपकली के आकार का एक छोटा जन्तु जिसके शरीर पर धारियां होती हैं।
**बम** पु० (अं) विस्फोटक पदार्थ का बना हुआ गोल जो शत्रु की सेना पर फेंका जाता है। पुं० (हि) १-शिव को प्रसन्न करने का 'बम-बम' शब्द। २-शहनाई वालों का छोटा नगाड़ा। ३-तांगे या इक्के का वह बांस जिसमें घोड़े जोते जाते हैं।
**बमकना** क्रि० (हि) शेखी बघारना। डींग हांकना।
**बमकांड** पुं०(हि) बम गिरने की दुर्घटना। (बॉम्बकेस)
**बमगोला** पुं० (हि) दे० 'बम'।
**बमचख** स्त्री०(हि) १-शोर। गुल। २-लड़ाई-झगड़ा। विवाद।
**बमना** क्रि० (हि) कै। करना।
**बमबाज** पुं० (हि) शत्रु पर बम फेंकने वाला।
**बमबाजी** स्त्री० (हि) शत्रु पर बम फेंकने की क्रिया या भाव। बमवर्षा। (बॉम्बिंग)।
**बमबारी** स्त्री० (हि) दे० 'बमबाजी'।

**बमवर्षक** पुं० (हि) एक प्रकार का लड़ाकू वायुयान जिससे शत्रु पर बम वर्षा की जाती है। (बॉम्बर)।
**बमवर्षा** स्त्री० (हि) शत्रु पर वायुयान से बम बरसाने की क्रिया या भाव।
**बमवर्षी** स्त्री० (हि) दे० 'बमवर्षक'।
**बमीठा** पुं० (हि) बाँबी। वाल्मीक।
**बमुकाबला** अव्य० (फा) १-मुकाबले में। २-विरोध में
**बमूजिब** अव्य० (फा) अनुसार। मुताबिक।
**बम्हनी** स्त्री० (हि) १-दे० 'बमनी'। २-आंख का एक रोग। गुहांजनी। ३-लाल रंग की भूमि। ४-ईख में लगने वाला एक रोग। ५-हाथी का एक रोग।
**बयँहत्था** वि० (हि) १-बाएँ हाथ से काम करने वाला २-बाँये हाथ से गेंद फेंकने वाला। (लेफ्ट हैंडर)
**बय** स्त्री० (हि) दे० 'वय'।
**बयन** पुं० (हि) वाणी। बात। बोली।
**बयना** क्रि० (हि) १-बोना। बीज जमना। २-वर्णन करना। कहना। पुं० (हि) दे० 'बैना'।
**बयर** पुं० (हि) दे० 'बैर'।
**बयस** स्त्री० (हि) दे० 'वय'।
**बयसवाला** वि० (हि) 'वयस्क'।
**बयससिरोमनि** स्त्री० (हि) 'यौवन'।
**बया** पुं०(हि) गौरैया के आकार का एक पक्षी जिसका माथा पीला होता है। २-अनाज तौलने वाला।
**बयाई** स्त्री० (हि) अन्नादि तौलने की मजदूरी।
**बयान** पुं०(फा)१-वर्णन। चर्चा। वक्तव्य। २-हाल। विवरण। वृतांत।
**बयान तहरीरी** पुं०(फा) प्रतिवादी का मुकदमे के प्रार्थना पत्र के उत्तर में लिखित बयान जो वह न्यायालय में दाखिल करता है। जवाबदावा। (रिटन स्टेटमेंट)।
**बयाना** पुं०(हि) मूल्य, पारिश्रमिक का वह अंश जो कोई वस्तु खरीदने से पहले बात पक्की करते समय लिया जाता है पेशगी। (एडवान्स)। क्रि०(हि) बड़ बड़ करना।
**बयाबान** पुं० (हि) जंगल। उजाड़।
**बयार** स्त्री०(हि) हवा। पवन।
**बयारि** स्त्री० (हि) बयार।
**बयारी** स्त्री० (हि) दे० 'ब्यालू'।
**बयाला** पुं० (हि) १-दीवार का झरोखा या ताक। २-ताख। आला। ३-गढ़ों में वह स्थान जहां तोपें लगी रहती हैं। ४-पटाव के नीचे खाली जगह।
**बयालिस** वि० (हि) चालीस और दो। पुं० (हि) बयालिस की संख्या। ४२।
**बयासी** वि० (हि) अस्सी और दो। पुं० (हि) बयासी की संख्या। ८२।
**बर** पुं० (हि) १-बरगद। २-रेखा। लकीर। ३-जिद करना। ४-किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के अन्य पदार्थों से अलग हो। ५-दे० 'वर'। अव्य० (फा) ऊपर। अव्य० (हि) वरन्। बल्कि। वि०(फा) १-बढ़ा चढ़ा। श्रेष्ठ। २-पूर्ण। पुं०(फा) फल। वि०(हि) अच्छा। उत्तम।
**बरअंग** स्त्री० (हि) योनि।
**बरई** पुं० (हि) पनवाड़ी। तमोली।
**बरकंदाज** पुं० (हि) वह सिपाही जिसके पास लाठी या बन्दूक होती है। पहरेदार।
**बरकत** स्त्री० (अ) १-लाभ। २-प्रसाद। ३-किसी वस्तु में वृद्धि। ४-समाप्ति। ५-बढ़ोतरी के लिए छोड़ा गया पदार्थ।
**बरकना** क्रि० (हि) निवारण होना। अलग रहना।
**बरकरार** वि० (फा) १-स्थिर। कायम। २-उपस्थित
**बरकाज** पुं० (हि) विवाह।
**बरकाना** क्रि० (हि) १-निवारण करना। २-पीछा छुटाना।
**बरख** पुं० (हि) साल। बरस।
**बरखना** क्रि० (हि) पानी बरसना। वर्षा होना।
**बरखा** स्त्री० (हि) १-मेह बरसना। वृष्टि। २-वर्षा-ऋतु।
**बरखाना** क्रि० (हि) १-बरसाना। २-अधिक देना। ३-ऊपर से छितराकर वर्षा के समान गिराना।
**बरखास** वि० (हि) बरखास्त।
**बरखास्त** वि० (फा) १-नौकरी से हटाया हुआ। २-जिसकी बैठक विसर्जित हो गई हो।
**बरखास्तगी** स्त्री० (फा) १-विसर्जन। २-समाप्ति।
**बरखिलाफ** वि० (फा) प्रतिकूल। विरुद्ध। उलटा।
**बरग** पुं० (हि) दे० 'वर्ग'।
**बरगद** स्त्री० (हि) पीपल, गूलर आदि जाति का एक पेड़ जिसे 'वड़' भी कहते हैं।
**बरच्छा** स्त्री० (हि) दे० 'बरेच्छा'।
**बरछा** पुं० (हि) फेंक कर मारने का शस्त्र। भाला।
**बरछैत** पुं० (हि) बरछा चलाने या रखने वाला।
**बरजना** क्रि० (हि) रोकना। मना करना।
**बरजनि** स्त्री० (हि) मनाही। रुकावट। रोक।
**बरजोर** वि० (फा) १-अत्याचारी। बलवान। अव्य० (फा) बलपूर्वक। जबरदस्ती।
**बरजोरी** स्त्री० (फा) १-अत्याचार। २-बल।
**बरत** पुं० (हि) दे० 'व्रत'। स्त्री० (हि) १-रस्सी। २-नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल खिलाता है
**बरतन** पुं० (हि) १-धातु, मिट्टी आदि के वह उपकरण जिसमें खाने पीने की वस्तु रखी जाती है। पात्र। भांडा। २-व्यवहार। बरतावा।
**बरतना** क्रि० (हि) १-व्यवहार या बरताव करना। २-काम में लाना।
**बरतनी** स्त्री० (हि) १-लिखने का ढंग। २-एक प्रकार की लम्बी कलम।

**बरतरफ** *वि०* (फा) १–किनारे। अलग। २–नौकरी से हटाया हुआ।
**बरताना** *क्रि०* (हि) वितरण करना। बांटना।
**बरती** *वि०* (हि) जिसने उपवास किया हो। *स्त्री०*(हि) दे० 'बत्ती'।
**बरतोर** पुं० (हि) दे० 'बलतोड़'।
**बरद** पुं० (हि) दे० 'बरधा'।
**बरदा** पुं० (हि) दे० 'बरधा'।
**बरदाना** *क्रि०* (हि) १–गाय भैंस आदि का उसके नर पशुओं के साथ जोड़ कराना। २–गाभिन कराना।
**बरदार** *वि०* (फा) १–ले जाने वाला। ३–मानने वाला।
**बरदाश्त** *स्त्री०* (फा) सहन करने का भाव या क्रिया। सहना।
**बरदिया** पुं० (हि) चरवाहा।
**बरध** पुं० (हि) बैल।
**बरधा** पुं० (हि) बैल।
**बरधाना** *क्रि०* (हि) दे० 'बरदाना'।
**बरन** पुं० (हि) दे० 'वर्ण' *अव्य०* (हि) बल्कि।
**बरनन** पुं० (हि) दे० 'वर्णन'।
**बरना** *क्रि०* (हि) १–वर या वधू के रूप में ग्रहण करना वरण करना। २–किसी काम के लिए चुनना। ३–दान देना। बांटना। ४–मना करना। ५–जलना।
**बरपा** *वि०* (फा) उठा हुआ। मचा हुआ। खड़ा हुआ
**बरफ** *स्त्री०* (हि) दे० 'बर्फ'।
**बरफानी** *वि०* (फा) (वह प्रदेश) जहां बरफ की बहुतायत हो
**बरफिस्तान** पुं० (फा) वह प्रदेश जहां सब ओर बरफ ही बरफ हो।
**बरफी** *स्त्री०* (हि) खोया डाल कर बनाई हुई एक मिठाई।
**बरफीला** *वि०* (हि) दे० 'बरफानी'।
**बरबंड** *वि०* (हि) १–शक्तिशाली। बलवान। २–उद्दंड ३–प्रचंड।
**बरबट** *अव्य०* (हि) बरबस। हठात्।
**बरबर** पुं० (हि) १–व्यर्थ की बात। २–दे० 'बर्बर'।
**बरबरियन** *स्त्री०* (हि) जंगलीपन। बर्बरता।
**बरबस** *अव्य०* (हि) १–बलपूर्वक। हठात्। जबरदस्ती २–व्यर्थ।
**बरम** पुं० (हि) कवच। जिरहबख्तर।
**बरमा** पुं० (देश) लकड़ी में छेद करने का एक औजार पुं० (हि) भारत का पड़ोसी ब्रह्मदेश।
**बरमी** *वि०* (हि) ब्रह्मदेश सम्बन्धी। पुं० (हि) ब्रह्मदेश का निवासी। *स्त्री०* (हि) ब्रह्मदेश की भाषा।
**बरम्हा** पुं० (हि) ब्रह्मा। बरमा।
**बरम्हाना** *क्रि०* (हि) किसी का आशीर्वाद लेना। (ब्राह्मण का)।
**बरम्हाव** पुं० (हि) १–ब्राह्मण का आशीर्वाद। २–ब्राह्मणत्व।
**बरम्हावना** *क्रि०* (हि) दे० 'बरम्हाना'।
**बरराना** *क्रि०* (हि) दे० 'बर्राना'।
**बररे** पुं० (हि) भिड़। बर्रे।
**बरवट** *स्त्री०* (हि) तापतिल्ली नामक रोग।
**बरवा** पुं० (हि) दे० 'बरवै'।
**बरवै** पुं०(देश) एक प्रकार का उन्नीस मात्रा का छन्द
**बरषना** *क्रि०* (हि) दे० 'बरसना'।
**बरषा** *स्त्री०* (हि) दे० 'वर्षा'।
**बरषाना** *क्रि०* (हि) दे० 'बरसाना'।
**बरषासन** पुं० (हि) दे० 'वर्षाशन'।
**बरस** पुं० (हि) वर्ष। साल।
**बरसगांठ** *स्त्री०* (हि) १–जन्म दिन। साल गिरह। २–जन्म दिन का उत्सव।
**बरसना** *क्रि०* (हि) १–वर्षा का पानी गिरना। २–वर्षा जल के समान ऊपर से गिरना। ३–अच्छी प्रकार प्रकट होना। ३–ओसाया जाना। ४–चारों ओर या ऊपर से अच्छी मात्रा में आना या गिरना
**बरसाइत** *स्त्री०* (हि) १–जेठ बदी अमावस। २–वर्षा-ऋतु।
**बरसाऊ** *वि०*(हि) जो अभी-अभी बरसने वाला हो। (बादल)।
**बरसात** *स्त्री०*(हि) वर्षाऋतु। वर्षाकाल। सावन-भादों के दिन।
**बरसाती** *वि०* (हि) बरसात सम्बन्धी। बरसात का। पुं० (हि) १–बरसात से बचने के लिए पहनने का कपड़ा। २–बरसात में होने वाली फुंसी। ३–एक आंख का रोग। ४–मकान की सबसे ऊपर की मंजिल पर बना हवादार कमरा।
**बरसाना** *क्रि०*(हि) १–वर्षा करना। २–वर्षा के जल के समान इधर-उधर से बहुत सा गिरना। ३–ओसाना।
**बरसायत** *स्त्री०* (हि) १–शुभ घड़ी या मुहूर्त। २–दे० 'बरसाइत'।
**बरसी** *स्त्री०* (हि) मृतक के निमित्त किया जाने वाला वार्षिक श्राद्ध।
**बरसीला** *वि०* (हि) बरसने वाला। जो बरसने को हो
**बरसौहा** *वि०* (हि) बरसने वाला।
**बरहमंड** पुं० (हि) दे० 'ब्रह्मांड'।
**बरहा** पुं० (हि) खेतों में सिंचाई के लिए बनाई जाने वाली छोटी नाली। पुं० (हि) मोर।
**बरही** *स्त्री०* (हि) वह स्नान जो प्रसूता सन्तान होने के बारहवें दिन करती है। पुं० (हि) १–मोर। २–अग्नि। ३–मुर्गा। *स्त्री०* (देश०) १–ईंधन का बोझ २–मोटी रस्सी।
**बरहीपीड़** पुं० (हि) मोर मुकुट।

**बरहीमुख** पुं० (हिं) देवता ।
**बरहों** पुं० (हिं) दे० 'बरही' ।
**बरांडा** पुं० (हिं) दे० 'बरामदा' ।
**बरांडी** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की विलायती शराब ।
**बरा** पुं० (हिं) १-पिट्ठी का पकवान । बड़ा । २-बरगद का पेड़ । ३-भुजदंड पर बांधने का एक गहना ।
**बराई** स्त्री० (हिं) दे० 'बड़ाई' ।
**बराक** पुं० (हिं) दे० 'बराक' । वि० (हिं) १-नीच । २-शोचनीय । ३-बेचारा ।
**बराटिका** स्त्री० (हिं) दे० 'वराटिका' ।
**बरात** स्त्री० (हिं) विवाह के समय वर सहित कुछ लोगों का कन्यापक्ष के यहां जाना । जनेत ।
**बराती** पुं० (हिं) बरात में वरपक्ष वालों के साथ लड़की वालों के घर तक जाने वाला । वि० (हिं) बरात सम्बन्धी ।
**बराना** क्रि० (हिं) १-जान बूझ कर अलग करना । २-बचना । ३-रक्षा करना । ४-चुनना । छांटना । ५-जलाना । ६-खेतों में पानी देना ।
**बराबर** वि० (फा) १-एकसा । तुल्य । २-समान पद वाला । ३-ठीक । अव्य० (हिं) १-एक साथ । एक पंक्ति में । २-सर्वदा । ३-साथ । ४-लगातार ।
**बराबरी** स्त्री०(हिं) १-समता । समानता । २-सादृश्यता । ३-तुलना ।
**बरामद** पुं० (फा) १-निकलना । २-प्राप्त होना । ३-गंगबरार । ४-आमदनी । ५-खोई हुई वस्तु का कहीं से निकलना ।
**बरामदगी** स्त्री० (फा) बरामद होने का भाव या क्रिया
**बरामदा** पुं०(फा)१-मकान के आगे का छाया हुआ भाग । दालान । २-बारजा ।
**बराय** अव्य० (फा) वास्ते । लिए । निमित्त ।
**बरायखुदा** अव्य०(फा) भगवान के नाम पर ।
**बरायनाम** अव्य० (फा) नाम मात्र के लिए ।
**बरायन** पुं०(हिं) विवाह के समय वर के हाथ में पहनाने का लोहे का छल्ला ।
**बरार** पुं० (हिं) १-एक जंगली पशु । २-मध्य भारत का एक भाग ।
**बराव** पुं० (हिं) निवारण । परहेज । बचाव ।
**बराह** पुं० (हिं) दे० 'बराह' । अव्य० (फा) १-के तौर पर । जरिये से । २-द्वारा ।
**बरिआई** स्त्री० (हिं) १-बलवान होने का भाव । २-बल प्रयोग ।
**बरिआत** स्त्री० (हिं) दे० 'बरात' ।
**बरिआर** वि० (हिं) बलवान । बली । मजबूत ।
**बरिच्छा** स्त्री (हिं) फलदान ।
**बरिबंड** वि० (हिं) बलवान । प्रचंड ।
**बरिया** वि० (हिं) बलवान । शक्तिशाली ।
**बरियाई** स्त्री० (हिं) दे० 'बरिआई' ।
**बरियात** स्त्री० (देश०) दे० 'बरात' ।
**बरियार** पुं० (हिं) बली । बलवान । मजबूत ।
**बरियारा** पुं० (हिं) एक छोटा पौधा ।
**बरिषना** क्रि० (हिं) दे० 'बरसना' ।
**बरिषा** स्त्री० (हिं) दे० 'वर्षा' ।
**बरिस** पुं० (हिं) वर्ष । साल ।
**बरी** स्त्री० (हिं) १-गोल टिकिया । बटी । २-बड़ी । पिट्ठी के सुखाए हुए टुकड़े । वि० (फा) छूटा हुआ । मुक्त ।
**बरीस** पुं० (हिं) दे० 'बरस' ।
**बरीसना** क्रि० (हिं) दे० 'बरसना' ।
**बरु** अव्य (हिं) भले ही परवाह नहीं । वरन् । बल्कि ।
**बरुआ** पुं० (हिं) १-ब्रह्मचारी । २-उपनयन । ३-ब्राह्मणकुमार । ४-मूंज की बड़ी जिससे डलिया बनती है ।
**बरुक** अव्य० (हिं) दे० 'बरु' ।
**बरुणालय** पुं० (हिं) समुद्र ।
**बरुन** पुं० (हिं) दे० 'वरुण' ।
**बरुनी** स्त्री० (हिं) आँख की पलक के किनारे के बाल
**बरुवा** पुं० (हिं) दे० 'बरुआ' ।
**बरूथ** पुं० (हिं) दे० 'वरूथ' ।
**बरेंडा** पुं०(हिं) लकड़ी या मोटा लट्ठा जो खपरेल या छाजन में लम्बाई के बल लगी रहती है ।
**बरेंडी** स्त्री० (हिं) छोटा बरेंडा ।
**बरे** अव्य० (हिं) १-जोर से । २-बलपूर्वक । ३-बदले में ।
**बरेखी** स्त्री० (हिं) विवाह सम्बन्ध स्थिर करने के लिए वर या कन्या को देखना ।
**बरेच्छा** स्त्री० (हिं) मंगनी । विवाह ठहराना ।
**बरेज** पुं० (हिं) पान का बगीचा ।
**बरेजा** पुं० (हिं) बरेज ।
**बरेठ** पुं० (हिं) धोबी ।
**बरेठा** पुं० (हिं) धोबी ।
**बरेत** स्त्री० (हिं) दे० 'बरेता' ।
**बरेता** पुं० (हिं) सन का मोटा रस्सा ।
**बरेदो** पुं० (देश) चरवाहा ।
**बरेषी** स्त्री० (हिं) दे० 'बरेखी' ।
**बरैंडा** पुं० (हिं) दे० 'बरेंडा' ।
**बरोक** पुं० (हिं) फलदान । विवाह की बात पक्की करने के लिए वरपक्ष वालों को दिया जाने वाला धन । अव्य० (हिं) बलपूर्वक । जबरदस्ती ।
**बरोठा** पुं० (हिं) १-ड्योढ़ी । पौरी । २-बैठक । दीवानखाना ।
**बरोरु** वि० (हिं) दे० 'बरोरु' ।
**बरोह** स्त्री० (हिं) बरगद की जटा ।
**बरौंछी** स्त्री० (हिं) सुनार की गहने साफ करने की सुअर के बालों की बनी कूंची ।

**बरौठा** पुं० (हि) दे० 'बरोठा'।
**बरौनी** स्त्री० (हिं) दे० 'बरुनी'।
**बरौरी** स्त्री० (हिं) दे० 'बड़ी'।
**बर्की** वि० (हिं) बिजली सम्बन्धी। बिजली से चलने वाला।
**बर्खास्त** वि० (हिं) दे० 'बरखास्त'।
**बर्ग** पुं० (फा) १-शस्त्र। २-पत्ता।
**बर्छा** पुं० (हिं) दे० 'बरछा'।
**बर्ज** वि० (हि) दे० 'वर्य'।
**बर्जना** क्रि० (हि) दे० 'बरजना'।
**बर्णन** पुं० (हि) दे० 'वर्णन'।
**बर्णना** क्रि० (हिं) वर्णन करना।
**बर्त्तना** क्रि० (हि) दे० 'बरतना'।
**बर्ताव** पुं० (हि) दे० 'बरताव'।
**बर्तुल** वि० (हि) दे० 'वर्तुल'।
**बर्द** पुं० (हि) बैल।
**बर्न** पुं० (हि) दे० 'वर्ण'।
**बर्फ** स्त्री० (फा) भाप के अणुओं की तह जो वातावरण की ठंडक के कारण धूएं के रूप से ऊपर से जमीन पर गिरती है। २-कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी या दूध आदि।
**बर्फानी** वि० (फा) दे० 'वरफानी'।
**बर्फी** स्त्री० (हि) दे० 'बरफी'।
**बर्फीला** वि० (हि) दे० 'बरफानी'।
**बर्बर** वि० (सं) १-घुंघराले बालें वालों वाला। २-असभ्य या जंगली। ३-अशिष्ट। ४-भ्रष्ट उच्चारण किया हुआ। पुं० (सं) १-घुंघराले बाल। २-असभ्य या जंगली आदमी। ३-उजड्ड। ४-एक प्रकार का नृत्य। ५-अस्त्रों की झंकार।
**बर्बरी** वि० (सं) घुंघराले बालों वाला।
**बर्र** पुं० (हि) भिड़। ततैया।
**बर्राना** क्रि० (हिं) बड़बड़ाना। प्रलाप करना।
**बर्रे** पुं० (हि) भिड़। ततैया।
**बर्हण** वि० (सं) १-चीरने फाड़ने वाला। २-शक्तिशाली। बलवान। पुं० (सं) पत्ता या पृष्ठ फाड़ने की क्रिया।
**बर्हणा** वि० (सं) शत्रु का संहार करने वाला।
**बर्ही** पुं० (सं) दे० 'वर्ही'।
**बलंद** वि० (फ़ा) ऊँचा।
**बलंदी** स्त्री० (फा) दे० 'बुलंदी'।
**बल** पुं० (सं) १-शक्ति। सामर्थ्य। २-आश्रय। भरोसा। ३-सेना। ४-पार्श्व। पहलू। पुं० (हि) १-एँठन। मरोड़ा। २-लपेटा। ३-लचक। झुकाव। ४-सिकुड़ना। ५-कमी। अन्तर। ६-टेढ़ापन। ७-अधपके जौ की बाल।
**बलकना** क्रि०(हि) १-खौलना। उबालना। २-आवेश में आना। ३-बन कर बोलना।
**बलकर** वि० (सं) बलकारक। पुं० (सं) हड्डी।
**बलकल** पुं० (हि) दे० 'वल्कल'।
**बलकाना** क्रि०(हि) १-उबालना। २-उत्तेजित करना उभारना।
**बलकारक** वि० (सं) बल बढ़ाने वाला।
**बलगम** पुं० (अ) श्लेष्मा। कफ।
**बलटुट** पुं० (हि) दे० 'बलतोड़'।
**बलतोड़** पुं० (हि) बाल टूटने के कारण होने वाला फोड़ा।
**बलद** पुं० (हिं) बैल। वि० (सं) बल देने वाला।
**बलदर्प** पुं० (सं) बल का घमंड।
**बलदाऊ** पुं० (सं) दे० 'बलदेव'।
**बलदेव** पुं० (स) १-वायु। २-बलराम।
**बलद्विट्** पुं० (सं) इन्द्र।
**बलना** क्रि० (हि) जलना। दहकना।
**बलनाशन** पुं० (सं) इन्द्र।
**बलनिग्रह** पुं० (सं) शांति या बल का क्षय।
**बलपति** पुं० (सं) इन्द्र का एक नाम।
**बलपरीक्षण** पुं० (सं) दो विरोधी दलों द्वारा अपने बल की ली जाने वाली अंतिम परीक्षा। (शो-डाउन)।
**बलप्रद** वि० (सं) बल देने वाला। बलदायक।
**बलबलाना** क्रि० (हि) १-ऊंट का बोलना। २-व्यर्थ बकना।
**बलबलाहट** पुं० (हि) ऊंट की बोली। २-व्यर्थ की बकवाद। ३-घमंड।
**बलवीर** पुं० (सं) बलराम के भाई कृष्ण।
**बलबूता** पुं० (हि) शक्ति। जोर। ताकत।
**बलभद्र** पुं० (सं) १-बलराम का एक नाम। २-नीलगाय। ३-लोध का पेड़।
**बलभी** स्त्री० (हि) सबसे ऊपर के खंड की छत पर बनी हुई कोठरी।
**बलम** पुं० (हि) प्रियतम। पति। नायक।
**बलमद** पुं० (सं) शक्ति या बल का घमंड।
**बलमा** पुं० (हि) दे० 'बलम'।
**बलमीक** पुं० (हि) बाँबी।
**बलय** पुं० (हि) दे० 'वलय'।
**बलया** स्त्री० (हि) दे० 'वलय'।
**बलवंड** वि० (हि) बली। पराक्रमी।
**बलवंत** वि० (हि) बलवान।
**बलवत्** वि० (सं) (विधान या नियम) जिसमें प्राणों का संचार हो चुका हो और व्यवहार या कार्य आरम्भ करने में समर्थ हो। (इनफोर्स)।
**बलवत्ता** स्त्री० (सं) बलवान या शक्तिशाली होने का भाव।
**बलवर्धी** वि० (सं) बल या शक्ति बढ़ाने वाला।
**बलवा** पुं० (हि) १-दंगा। हुल्लड़। फिसाद। २-

विद्रोह। बगावत।

**बलवाई** पुं० (फा) बलवा करने वाले। विद्रोही। उपद्रवी।

**बलवान्** वि० (सं) १-बलिष्ठ। ताकतवर। २-शक्तिशाली। ३-दृढ़। मजबूत।

**बलवार** वि० (हि) बलवान।

**बलशाली** वि०(सं) बली। बलवान।

**बलशील** वि० (सं) बलवान। बलशाली।

**बलसूदन** पुं० (सं) इन्द्र।

**बलसैन्य** पुं० (सं) सेना में बलात् भर्ती किया हुआ व्यक्ति। नई भर्ती। (कन्सक्रिप्ट)।

**बला** स्त्री० (सं) १-बरियारा नामक क्षुप। २-पृथ्वी ३-लक्ष्मी। ४-दक्षप्रजापति की कन्या। ५-एक मंत्र जिसके प्रयोग से युद्ध के समय योद्धा को भूख नहं लगती। ६-दे० 'बला'। स्त्री० (अ) १-आपत्ति विपत्ति। २-दुःख। कष्ट। ३-भूत। प्रेत। ४-रोग

**बलाइ** स्त्री० (हि) दे० 'बला' (अ)।

**बलाक** पुं० (सं) १-बगला। बक। २-राजा पुरु का एक पुत्र।

**बलाकश** वि० (अ) मुसीबत उठाने वाला।

**बलाका** स्त्री० (सं) १-बगली। २-बगलों की पंक्ति। ३-कामुकी स्त्री।

**बलाठ** पुं० (हि) मूंग।

**बलाढ्य** पुं० (सं) माष। उड़द। उरद। वि० (सं) बली। बलशाली।

**बलात्** अव्य० (सं) बल पूर्वक। जबरदस्ती। (फोर्सिबली)।

**बलात् अंशदान लेना** (हि) बलपूर्वक चन्दा उगाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्ट्रीब्यूशन)।

**बलात् अपराधांगीकार करवाना** (हि) बलपूर्वक अपराध को स्वीकार करवाना। (टु एक्सटॉर्ट कन्फैशन ऑफ ए गिल्ट)।

**बलात्-आदान** पुं० (सं) १-बलपूर्वक ले लेना। २-छीनना। (एक्सटॉर्ट)।

**बलात्कार** पुं० (सं) १-किसी की इच्छा के विपरीत बलपूर्वक कोई कार्य करना। २-किसी स्त्री का उसकी इच्छा के विरुद्ध सतीत्व नष्ट करना। (रेप)। ३-अन्याय। अत्याचार। ४-ऋणी को पकड़ कर बैठाना।

**बलात्कार-दापन** पुं० (सं) ऋणी को मार पीट कर रुपया वसूल करना। (स्मृति)।

**बलात्कारित** वि० (सं) जिस पर बलात्कार करके कोई कार्य कराया जाय।

**बलात्कृत** वि०(सं) जिसके साथ बलात्कार किया गया हो। (फोर्स्ड)।

**बलात्कृतविक्रय** पुं० (सं) वह वस्तु जिसे बेचने पर मजबूर कर दिया गया हो। (फोर्स्ड सेल)।

**बलात्-निरोध** पुं० (सं) बलपूर्वक जाने से रोकने वाला। (फोर्सिबिल डिटेनर)।

**बलात्-प्रवेश** पुं० (सं) बलपूर्वक कहीं घुस जाना। (फोर्सिबिल एन्ट्री)।

**बलात्-श्रम** पुं० (सं) बेगार। (फोर्स्ड लेबर)।

**बलात्-सत्तापहरण** पुं० (सं) दे० 'शासन विपर्यय'। (कुडेटा)।

**बलादुद्घाटन** पुं० (सं) किसी स्थान में बलपूर्वक प्रवेश करना। (ब्रेक ओपन)।

**बलादवतरण** पुं०(सं) वायुयान का इंजन में खराबी होने के कारण भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना (फोर्स्ड लैंडिंग)।

**बलादवतरित** वि० (सं) जिसे भूमि पर उतरने के लिए बाध्य होना पड़ा हो। (फोर्स्ड लैंडेड)।

**बलाद्ग्रहण** पुं०(सं)१-किसी से बलपूर्वक छीन लेना २-धन आदि की कोई अनुचित मांग। ३-बलपूर्वक आधीन कर लेना। (केपचर, एक्जेक्शन)।

**बलाद्दाता** पुं० (सं) बलपूर्वक रुपये पैसे छीन लेने वाला। (एक्सटोर्शनर)।

**बलाधिकृत** पुं० (सं) किसी राज्य को सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी। (मार्शल)।

**बलाधिक्य** पुं० (सं) बल की अधिकता।

**बलाध्यक्ष** पुं० (सं) सेनापति।

**बलाबल** पुं० (सं) दो पक्षों का तुलनात्मक बल और निर्बलता।

**बलाय** पुं० (हि) दे० 'बला'।

**बलाराति** पुं० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र।

**बलाहक** पुं०(सं) १-मेघ। बादल। २-श्रीकृष्ण। ३-बगला या सारस।

**बलिदम** पुं० (सं) विष्णु।

**बलि** पुं० (सं) किसी देवता पर चढ़ाया गया खाद्य पदार्थ। २-उपहार। भेंट। ३-पूजा की सामग्री। ४-चढ़ावा। ५-वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा गया हो। ६-खाने की वस्तु। ७-राजकर। स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का फोड़ा। २-मस्सा या अर्श। ३-चमड़े की झुर्री। ४-सखी। ५-चँवर का दंड।

**बलिकनीति** स्त्री० (सं) दो विरोधी दलों की मुकाबले में अपनी शक्ति, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने की नीति। (पावर-पालिटिक्स)।

**बलिकर्म** पुं० (सं) बलिदान।

**बलित** वि० (हि) बलिदान पर चढ़ाया हुआ।

**बलिदान** पुं० (सं) १-किसी देवता के नाम पर बकरे आदि पशु काट कर चढ़ाना। कुरबानी। २-देवता के उद्देश्य से पूजा की सामग्री चढ़ाना।

**बलिद्विट्** पुं० (सं) विष्णु।

**बलिध्वंसी** पुं० (सं) विष्णु।

**बलिनंदन** पु० (सं) बलिराज के पुत्र बाणासुर का नाम।
**बलिपशु** पु०(सं) वह पशु जो देवता के निमित्त बलि चढ़ाया जाय।
**बलिपुष्ट** पु० (सं) कौवा।
**बलिभोज** पुं० (सं) कौवा।
**बलिवर्द** पुं० (सं) सांड। बैल।
**बलिष्ठ** *वि०* (सं) अतिशय बलवान। अधिक बलवान पुं० (सं) ऊंट। उष्ट्र।
**बलिष्ठातिजीवन** पुं० (सं) प्राकृतिक या सामाजिक जीवन-संघर्ष में केवल बलिष्ठों का जीवित रहना। (सर्वाइवल आफ दि फिटेस्ट)।
**बलिहारना** *क्रि०* (हि) निछावर करना। चढ़ा देना
**बलिहारी** *स्त्री०* (हि) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को निछावर कर देना। कुर्बान। निछावर।
**बली** *स्त्री०* (हि) १-चमड़े पर की झुर्री। २-वह रेखा जो त्वचा के सिकुड़ने से पड़ती है। *वि०* (सं) बलवान। ताकतवर।
**बलीमुख** पुं० (हि) बन्दर।
**बलीवर्द** पुं० (सं) सांड। बैल।
**बलुआ** *वि०*(हि) रेतीला जिसमें बालू मिली हो। पु० (हि) वह भूमि जिसमें बालू का अंश अधिक हो।
**बलूची** पुं० (देश) बलूचिस्तान का निवासी। *स्त्री०* वहां की भाषा।
**बलूला** पु० (हि) पानी का बुलबुला।
**बलैया** *स्त्री०* (हि) बला। बलाय। आपत्ति।
**बल्कल** पुं० (सं) दे० 'वल्कल'।
**बल्कि** *अव्य०* (फा) १-अन्यथा। प्रत्युत। इसके विरुद्ध २-अच्छा यह है।
**बल्ब** पुं० (सं) १-बिजली का लट्टू जो प्रकाश देता है। २-एक प्रकार की वनस्पति।
**बल्लभ** *वि०*, पु० (हि) दे० 'वल्लभ'।
**बल्लभी** *स्त्री०* (हि) १-प्रिया। दे० 'वल्लभी'।
**बल्लम** पुं०(हि) १-सोंटा। डंडा। २-छड़। ३-बरछा। ४-वह रुपहला डंडा जो चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं।
**बल्लमटेर** पुं० (हि) स्वयंसेवक। (वालंटियर)।
**बल्लमबरदार** पुं० (हि) बरात, सवारी आदि के आगे बल्लम लेकर चलने वाला।
**बल्लरी** *स्त्री०* (हि) दे० 'वल्लरी'।
**बल्लव** पुं० (सं) १-ग्वाल। अहीर। गोपाल। २-रसोइया। ३-भीम का नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था।
**बल्लवी** *स्त्री०* (सं) गोपी। ग्वालिन।
**बल्ला** पु० (हि) बड़ा, लम्बा और मोटा शहतीर या डंडा। २-डांड। पतवार। ३-गेंद खेलने का चपटा और चौड़ा डंडा। (बैट)।
**बल्लेबाज** पुं० (हि) क्रिकेट के खेल में वह खिलाड़ी जो गेंद को बल्ले से मार कर रन बनाता है। (बैटसमैन)।
**बल्लेबाजी** *स्त्री०* (हि) क्रिकेट के खेल में गेंद पर प्रहार करने की कला या क्रिया। (बैटसमैनशिप)।
**बवंडर** पुं० (हि) चक्रवात। बगूला। आंधी। तूफान
**बवंडा** पुं० (हि) दे० 'बवंडर'।
**बव** पुं० (सं) ज्योतिष के अनुसार एक करण का नाम
**बवधूरा** पुं (हि) बगूला। बवंडर।
**बवन** पुं० (हि) दे० 'बमन'।
**बवना** *क्रि०* (हि) १-छितराना। बिखराना। २-बिखरना। छितरना। पुं० (हि) बौना।
**बवरना** *क्रि०* (हि) दे० 'बौरना'।
**बवासीर** *स्त्री* (सं) एक रोग जिसमें गुदा में मस्से हो जाते हैं। अर्श।
**बशिष्ठ** पुं (सं) दे 'वसिष्ठ'।
**बशीरी** पुं० (हि) एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र।
**बसंत** पुं० (हि) १-एक पौधा। २-दे० 'वसंत'।
**बसंती** *वि०* (हि) १-वसंत ऋतु संबंधी। २-खुलते हुए पीले रंग का। पुं० (हि) हलके पीले रंग का कपड़ा या ऐसा रंग।
**बसंदर** पुं० (हि) दे० 'वैश्वानर'।
**बस** *वि०* (फा) पर्याप्त। भरपूर। *अव्य०* ठहरो। रुको। बस करो। पुं० (हि) शक्ति। काबू। वश। *स्त्री०* (अं) सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने वाली मोटरगाड़ी। लारी।
**बसति** *स्त्री०* (हि) दे० 'बस्ती'।
**बसन** पु० (हि) दे० 'वसन'।
**बसना** *क्रि०*(हि) १-जीवनयापन के लिए कहीं निवास करना। रहना। २-आबाद होना। ३-आकर रहना टिकना। डेरा डालना। ४-बसाया जाना। ५-सुगंध से भर जाना। पुं० (हि) १-किसी वस्तु को लपेट कर रखने का कपड़ा। २-थैली। ३-बरतन। ४-लेनदेन करने की कोठी।
**बसनि** *स्त्री०* (हि) निवास। वास।
**बसनी** *स्त्री०* (हि) रुपये रखने की कमर में बांधने की लम्बी थैली।
**बसर** पुं० (फा) गुजर। निर्वाह।
**बसरऔकात** पु० (फा) जीवनयापन। निर्वाह।
**बसवार** पुं० (हि) छौंक। तड़का। *वि०* (हि) सुगंधित सोंधा।
**बसवास** पु० (हि) १-निवास। रहना। २-स्थिति। ३-ठिकाना।
**बसह** पुं० (हि) बैल।
**बसौंधा** *वि०* (हि) सुवासित। गंधयुक्त।
**बसा** *स्त्री०* (हि) १-दे० 'बस'। २-भिड़। ततैया।

बसात स्त्री० (हि) दे० 'बिसात'।
बसाना क्रि०(हि) १-बसने के लिए स्थान देना। २-आबाद करना। टिकाना। ठहराना। ३-बैठाना। रखना। ४-वश या जोर चलाना। ५-रहना। ६-गंधयुक्त होना। ७-दुर्गन्ध देना।
बसिआना क्रि० (हि) बासी हो जाना।
बसिऔरा पुं० (हि) १-बासी भोजन। २-वह दिन जिसमें बासी भोजन खाया जाता है।
बसिया वि० (हि) दे० 'बासी'। २-बासी भोजन।
बसियाना क्रि० (हि) दे० 'बसिआना'।
बसियौरा पुं० (हि) दे० 'बसिऔरा'।
बसिष्ठ पुं० (हि) दे० 'वसिष्ठ'।
बसीकत स्त्री० (हि) १-बस्ती। आबादी। २-बसने का भाव या क्रिया।
बसीकर वि० (हि) दे० 'वशीकर'।
बसीकरन पुं० (हि) दे० 'वशीकरण'।
बसीठ पुं० (हि) दूत। समाचार या संदेश ले जाने वाला।
बसीठी स्त्री० (हि) दूत का काम। दौत्य।
बसीत्यो पुं० (हि) निवास स्थान। बस्ती।
बसीना पुं० (हि) रिहाइश। निवास।
बसीला वि० (हि) गंधयुक्त। दुर्गंध वाला।
बसु पुं० (हि) दे० 'वसु'।
बसुदेव पुं० (हि) दे० 'वसुदेव'।
बसुधा स्त्री० (हि) दे० 'वसुधा'।
बसुमति स्त्री० (हि) दे० 'वसुमति'।
बसुरी स्त्री० (हि) बांसुरी।
बसूला पुं० (हि) बढ़इयों का लकड़ी गढ़ने का एक औजार।
बसूली स्त्री० (हि) छोटा बसूला।
बसेरा पुं० (हि) १-ठहरने या टिकने का स्थान। २-वह स्थान जहां पक्षी ठहर कर रात बिताते हैं ३-टिकने या बसाने का भाव।
बसेरी वि० (हि) निवासी। रहने वाला।
बसैया वि० (हि) बसने वाला। रहने वाला।
बसोबास पुं० (हि) रहने की जगह। निवास स्थान
बसौंधी स्त्री० (हि) सुगंधयुक्त रबड़ी।
बस्तर पुं० (हि) दे० 'वस्त्र'।
बस्तमोचन पुं० (फा) किसी के सारे वस्त्र छीन लेना।
बस्ता पुं (फा) १-पुस्तक आदि रखने का कपड़े का टुकड़ा। थैला। बसना। २-इस प्रकार बँधी हुई पुस्तक आदि।
बस्तार पुं० (फा) बँधी हुई वस्तुओं का पुलिंदा।
बस्ती स्त्री० (हि) १-वह स्थान जहां लोग घर बना कर रहते हों। २-बहुत से घरों का समूह। जनपद।
बस्त्र पुं०(हि) दे० 'वस्त्र'।
बस्य वि० (हि) दे०'वस्य'।
बहँगा पुं० (हि) बड़ी बहँगी।
बहँगी स्त्री० (हि) बोझ ढोने का वह बांस जिस के दोनों ओर छींके लटके रहते हैं।
बहक स्त्री० (हि) १-पथ भ्रष्टता। २-व्यर्थ की बकवास ३-बहकने का भाव।
बहकना क्रि० (हि) १-भटकना। मार्गभ्रष्ट होना। २-चूकना। ३-किसी के धोखे में आ जाना। ३-आपे में न रहना। ४-किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना (बच्चों का)।
बहकाना क्रि० (हि) १-ठीक राह से हटाकर धोखे से अन्यत्र ले जाना। २-भुलावा देना। ३-बहलाना (बच्चों का)।
बहकावट स्त्री० (हि) बहकाने की क्रिया या भाव।
बहकावा पुं० (हि) भुलावा। वह बात जिससे कोई बहक जाय।
बहतोल स्त्री०(हि) वह नाली जिसमें पानी बहता हो।
बहत्तर वि० (हि) सत्तर और दो। ७२।
बहन स्त्री०(हि) १-अपनी मां से उत्पन्न कन्या। २-चाचा, मामा, आदि की लड़की।
बहना क्रि (हि) १-प्रवाहित होना २-वायु का संचारित होना। ३-अपने या ठीक लक्ष्य से डिगना। ४-फिसल जाना। ५-कुमार्गी होना। ६-(रुपया आदि) नष्ट होना। ७-आदर से चलना। वहन करना। ८-धारण करना। ९-निर्वाह करना। १०-उठना। चलना। ११-कहीं चला जाना।
बहनापा पुं० (हि) बहिन का माना हुआ सम्बन्ध।
बहनी स्त्री० (हि) दे० 'वह्नि'।
बहनु पुं० (हि) सवारी।
बहनेली पुं० (हि) जिसके साथ बहनापा हो।
बहनोई पुं० (हि) बहिन का पति।
बहनौता पुं० (हि) बहिन का पुत्र।
बहनौरा पुं० (हि) बहिन की ससुराल।
बहम पुं० (हि) दे० 'वहम'।
बहर अव्य० (हि) बाहर।
बहरा वि०(हि) कान से न सुनने या कम सुनने वाला
बहरा पत्थर वि० (हि) अतिशय बहरा।
बहराना क्रि० (हि) १-बहलाना। बहकाना। २-फुसलाना। ३-बह जाना। उड़ जाना।
बहरिया वि० (हि) बाहर का। बाहरी। पुं० (हि) वह मन्दिर का कर्मचारी जो प्रायः मन्दिरों के बाहर ही रहते हैं। (वल्लभ सम्प्रदाय)।
बहरियाना क्रि० (हि) १-बाहर करना। अलग करना। २-किनारे से ठहरकर नाव को मँझधार की ओर लेजाना। ३-बाहर की ओर होना। ४-अलग होना
बहरी स्त्री० (हि) एक शिकारी बाज जैसा पक्षी। वि० (हि) १-समुद्र का। २-बाहर का।
बहल स्त्री० (हि) देख 'बहली'।

**बहलना** *क्रि०* (हि) १-दुःख या चिन्ता की बात भूलकर चित दूसरी ओर लगाना। २-भुलावे में आना ३-मनोरंजन होना।
**बहलाना** *क्रि०* (हि) १-व्यथित मन को दूसरी ओर लगाना। २-बहकाना। भुलावा देना। ३-चित्त प्रसन्न करना।
**बहलाव** *पुं०* (हि) १-मनोरंजन। प्रसन्नता। २-बहलने की क्रिया या भाव।
**बहली** *स्त्री०* (हि) रथ के आकार की बैलगाड़ी।
**बहल्ला** *पुं०* (हि) आनन्द। प्रमोद।
**बहल्ली** *पुं०* (?) कुश्ती का एक पेंच।
**बहस** *स्त्री०* (अ) १-वाद। दलील। तर्क। २-झगड़ा। विवाद। ३-होड़। बाजी।
**बहसमुबाहिसा** *पुं०* (अ) वादविवाद। शास्त्रार्थ।
**बहसना** *क्रि०* (हि) १-बहस करना। २-होड़ लगाना। शर्त लगाना।
**बहादर** *वि०* (हि) दे० 'बहादुर'।
**बहादुर** *वि०* (फा) १-उत्साही। साहसी। २-शूरवीर पराक्रमी।
**बहादुराना** *अव्य०* (फा) वीरतापूर्वक। *वि०* बहादुरों का सा।
**बहादुरी** *स्त्री०* (फा) वीरता। शूरता।
**बहाना** *क्रि०* (हि) १-प्रवाहित करना। २-पानी की धारा में डालना। ३-व्यर्थ व्यय करना। ४-सस्ता बेचना। ५-टालना। ६-फेंकना। डालना। *पुं०* (फा) १-अपना बचन करने के लिए कही गई झूठी बात। मिस। हीला। २-तुच्छ। निमित। नाममात्र का कारण।
**बहाने** *अव्य* (हि) ...के हेतु। ...के बहाने से।
**बहानेबाजी** *स्त्री०* (फा) बहाने बनाना।
**बहार** *स्त्री०* (फा) १-बसन्त ऋतु। २-यौवन का विकास। ३-सौंदर्य। ४-विकास। ५-कौतुक। तमाशा। ६-नारंगी का फूल।
**बहारगुर्जरी** *स्त्री०* (फा) सम्पूर्ण जाति की एक रागनी
**बहारनशाल** *पुं०* (फा) एक प्रकार का राग।
**बहारना** *क्रि०* (हि) दे० 'बुहारना'।
**बहारी** *स्त्री०* (हि) दे० 'बुहारी'।
**बहारेदानिश** *स्त्री०* (फा) फारसी का एक संग्रह।
**बहारे-हुस्न** *स्त्री०* (फा) यौवनश्री। छटा।
**बहाल** *अव्य*(फा) पूर्ववत्। असली अवस्था। *वि०*(फा) १-ज्यों का त्यों। भलाचङ्गा। स्वस्थ। ३-प्रसन्न। खुश
**बहाली** *स्त्री०* (फा) फिर उसी स्थान पर नियुक्त होना- *स्त्री०* (हि) झांसापट्टी या धोखा देने वाली बात।
**बहाव** *पुं०* (हि) १-बहने की क्रिया या भाव। २-बहती हुई धारा।
**बहिः** *अव्य०* (सं) बाहर। अलग। बाहर से।
**बहिःशाला** *स्त्री०* (सं) बाहर की ओर का कमरा।
**बहिःशीत** (सं) जो बाहर से ठंडा हो।
**बहिःशुल्क** *पुं०*(सं) विदेश से आने वाली या विदेश को जाने पर लगने वाली चुंगी। (कस्टम ड्यूटी)
**बहिःसद** *वि०*(सं) जो बाहर बैठता हो। बाहर बैठने वाला।
**बहिःस्थ** *वि०* (सं) बाहर का। जो बाहर स्थित हो।
**बहिःस्पर्शी** *वि०*(सं) ऊपरी। दिखाऊ। जो केवल ऊपर ही हो। (सुपरफीशियल)।
**बहिअर** *स्त्री०* (हि) स्त्री।
**बहिक्रम** *पुं०* (हि) अवस्था। उम्र।
**बहित्र** *पुं०* (हि) दे० 'बहित्र'।
**बहिन** *स्त्री०* (हि) बहन। भगिनी।
**बहिनापा** *पुं०* (हि) दे० 'बहनापा'।
**बहियाँ** *स्त्री०* (हि) बाँह।
**बहिया** *स्त्री०* (हि) बाढ़। प्लावन।
**बहिरंग** *वि०* (सं) १-बाहर आया हुआ। २-अलग। ३-जो बाहर हो।
**बहिर** *वि०* (हि) बहरा।
**बहिरत** *वि०* (हि) बाहर।
**बहिरर्थ** *पुं०* (फा) बाह्य उद्देश्य।
**बहिराना** *क्रि०*(हि) १-निकाल देना। बाहर कर देना २-बाहर होना।
**बहिर्गत** *वि०*(सं) १-बाहर आया या निकाला हुआ। २-अलग। जुदा। ३-(क्रिकेट या गेंद बल्ले के खेल में) जो गेंद के (विकटों) यष्ट्रियों के ऊपर की गुल्ली गिरने, पदबाधा होने के कारण या मारी हुई गेंद लपक लेने के कारण खेलने के अधिकार से वंचित हो जाता है। (आउट)। ४-जो पद पर से हटा दिया गया।
**बहिर्गमन** *पुं०* (सं) बाहर को जाना।
**बहिर्गमन द्वार** *पुं०* (सं) नाटकशाला, सिनेमा आदि के भवन में बाहर जाने का रास्ता या द्वार। प्रकोष्ठ (एक्जिट)।
**बहिर्गामी** *वि०* (सं) बाहर जाने वाला।
**बहिर्जगत** *पुं०* (सं) दृश्य जगत।
**बहिर्द्वार** *पुं०* (सं) प्रकोष्ठ। बाहर जाने का रास्ता या द्वार।
**बहिर्निःसारण** *पुं०* (सं) बाहर निकाल देना।
**बहिर्परिजीवी** *वि०* (सं) दूसरे जन्तुओं आदि से भोजन पाने वाला (कीड़ा)। (एक्टोजोआ)।
**बहिर्भाटक** *पुं०*(हि) रेल या बस का किसी वस्तु को बाहर भेजने का भाटक या किराया। (आउटवर्ड फ्रेट)।
**बहिर्भूत** *वि०* (सं) बहिर्गत। जो बाहर आ गया हो
**बहिर्मनस्क** *वि०* (सं) जिसका चित्त किसी दूसरी ओर लगा हो।

**बहिर्मुख** वि० (सं) विपरीत। विमुख। पुं० देवता।
**बहिर्यात्रा** स्त्री० (सं) विदेश यात्रा। कहीं बाहर जाना
**बहिर्यान** पुं०(सं) दे० 'बहिर्यात्रा'।
**बहिर्रति** स्त्री० (सं) रति के दो भेदों में से एक (चुम्बन आदि)।
**बहिर्लापिका** स्त्री० (सं) वह पहेली जिसके उत्तर का शब्द उसकी पद योजना मे नहीं रहता।
**बहिर्लोम** वि० (सं) जिसके बाल बाहर की तरफ झुके हुए हों।
**बहिर्लोमा** वि० (सं) बहिर्लोम।
**बहिर्वाणिज्य** पु० (सं) अन्य देशों के साथ किसी देश का होने वाला व्यापार। (एक्सटरनल ट्रेड)।
**बहिर्वास** पुं० (सं) बाहरी वस्त्र। ऊपर से पहनने का कपड़ा।
**बहिर्वासी रोगी** पु० (सं) वह रोगी जो चिकित्सालय में केवल औषधि लेने जाता है पर वहां रह कर अपनी चिकित्सा नहीं करवाता। (आउटडोर पेशेन्ट)
**बहिर्विकार** पु० (सं) आतशक। सूजाक। गर्मी का रोग।
**बहिर्व्यसनी** वि० (सं) लम्पट। दुराचारी। व्यभिचारी
**बहिला** वि० (हि) बांझ। बन्ध्या।
**बहिश्त** पुं० (फा) मुसलमानों के मतानुसार स्वर्ग।
**बहिष्ठ** वि०(सं) जो बाहर हो।
**बहिष्करण** पु०(सं) १-बाहर निकालना। २-हटाना दूर करना। ३-सब प्रकार के सम्बन्ध तोड़ना।
**बहिष्कार** पुं० (सं) बाहर निकालने का भाव या क्रिया। २-जातिच्युत करना। ३-सामूहिक व्यवहार त्याग। (बॉयकॉट)।
**बहिष्कृत** वि०(सं) १-बाहर निकाला हुआ। २-त्यागा हुआ। परित्यक्त।
**बहिष्क्रिया** स्त्री० (सं) बाह्य संस्कार।
**बही** स्त्री० (हि) हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।
**बहीखाता** पुं० (हि) हिसाब की किताबें। एकाउंट-बुक्स, लैजर।
**बहीर** स्त्री० (हि) १-भीड़। जनसमूह। २-सेना की सामग्री या दूसरे साथ-साथ चलने वाले नौकर।
**बहुँटा** पु० (हि) बांह पर पहनने का एक गहना।
**बहु** वि० (सं) १-विपुल। प्रचुर। २-अनेक। ३-बहुतायत। (मल्टीफेरियस मल्टीपल)।
**बहुकंटक** वि० (सं) बहुत कांटों वाला। पु० (सं) १-जवासा। २-हिंताल वृक्ष।
**बहुक-निगम** पु० (सं) वह निकाय जिसमें बहुत से लोग हों। (कोरपोरेशन एग्रीमेंट)।
**बहुकर** पुं० (हि) झाड़ू देने वाला। २-ऊँट। कई प्रकार के लगाये गये कर। (मल्टीपल टेक्सेस)।
**बहुकर-पद्धति** स्त्री० (सं) कई प्रकार के कर लगाने की व्यवस्था। (मल्टीपल टैक्स सिस्टम)।
**बहुकालीन** वि० (सं) प्राचीन। पुरातन।
**बहुक्षम** वि० (सं) बहुत सहने वाला।
**बहुगंध** वि० (सं) तेज गंध वाला।
**बहुगंध-दा** स्त्री०(सं) कस्तूरी।
**बहुगर्भित** वि० (सं) अनेक वस्तुओं वाली। (ओमनीबस)।
**बहुगर्भित विधेयक** पुं० (सं) वह विधेयक जिसके अन्तर्गत कई प्रकार के मामले हों। (ओमनीबस बिल)।
**बहुगुण** वि० (सं) १-अनेक गुणों से युक्त। २-कई तारों वाला।
**बहुगुना** पुं० (हि) चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन जिसके पैंदे और मुँह का घेर बराबर है।
**बहुजन-तंत्र** पुं० (सं) अनेक मनुष्यों से शासित राज्य (पॉलीक्रीसी)।
**बहुजल्प** वि०(सं) बहुत बोलने वाला आदमी। बातूनी
**बहुज्ञ** वि० (सं) बहुत सी बातें जानने वाला। जानकार।
**बहुतंत्रीक** वि०(सं) जिसमें बहुत से तार हों। (वाद्य)
**बहुत** वि० (हि) १-गिनती में अधिक। अनेक। २-मात्रा में अधिक। ३-यथेष्ट।
**बहुतक** वि० (हि) बहुत से। बहुतेरे।
**बहुतर** वि० (सं) अनेक। प्रभूत।
**बहुता** स्त्री० (सं) बहुत्व। अधिकता।
**बहुताइत** स्त्री०(हि) बहुतायत।
**बहुतात** स्त्री० (हि) अधिकता। ज्यादती।
**बहुतायत** स्त्री० (हि) दे० 'बहुतात'।
**बहुतेरा** वि० (हि) बहुत सा। अधिक। अव्य० (हि) अनेक प्रकार से।
**बहुतेरे** वि० (हि) संख्या में अधिक। अनेक।
**बहुत्व** पुं० (सं) आधिक्य। अधिकता।
**बहुदर्शी** पुं० (सं) जिसने संसार या व्यवहार की बहुत सी बातें देखी हों। चतुर।
**बहुधंधी** वि० (हि) जो बहुत से काम एक साथ अपने साथ लेता हो।
**बहुधन** वि० (सं) धनी। अमीर।
**बहुधर** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**बहुधा** अव्य०(सं) प्रायः। अक्सर। अनेक प्रकार से।
**बहुनाद** पुं० (सं) शंख।
**बहुनामा** वि० (सं) जिसके बहुत से नाम हों।
**बहुपत्नीक** पुं०(सं) बहुपत्नीकवादी। एक से अधिक विवाह करने के सिद्धांत में विश्वास करने वाला। (पोलीगेमिस्ट)।
**बहुपद** पुं०(सं) १-वट वृक्ष। बड़ का पेड़। २-अनेक पदों वाला।
**बहुपदीय** वि० (सं) अनेक वस्तुओं या पद वाला।
**बहुप्रज** वि०(सं) जिसके अधिक सन्तानें हों। पुं०(सं).

१-सूअर। २-चूहा।

**बहुप्रतिज्ञ** *वि०* (सं) जिसमें अधिक अभियोग या दावे हों।

**बहुप्रद** *वि०* (सं) बहुत देने वाला। अतिशय उदार। पुं० (सं) महादेव।

**बहुप्रयोजन** *वि०*(सं) अनेक प्रयोजन वाला। (मल्टी-पर्पज)।

**बहुप्रयोजन-उपक्रमा** *स्त्री०* (सं) बहुमुखी योजना। (मल्टीपर्पज-प्लॉन)।

**बहुप्रयोजन सहकारी समिति** *स्त्री०* (सं) अनेक प्रकार से सहायता देने वाली सहकारी समिति। (मल्टी-पर्पज कोऑपरेटिव सोसाइटी)।

**बहुप्रसू** *स्त्री०* (सं) अनेक बच्चों वाली माता।

**बहुबाहु** पुं० (सं) रावण।

**बहुभक्ष** *वि०* (सं) अधिक खाने वाला।

**बहुभाग्य** *वि०* (सं) भाग्य वाला।

**बहुभाषज्ञ** पुं०(सं) बहुत बातें जानने वाला। (पॉली-ग्लॉट)।

**बहुभाषी** *वि०* (सं) बहुत बोलने वाला। बातूनी।

**बहुभुज** पुं० (सं) वह भुज या क्षेत्र जिसमें बहुत से किनारे हों। (पॉलीगन)।

**बहुभुज-क्षेत्र** पुं० (सं) रेखागणित में वह क्षेत्र जो चार या अधिक रेखाओं से घिरा हो।

**बहुभुजा** *स्त्री०* (सं) दुर्गा।

**बहुभोक्ता** *वि०* (सं) बहुत खाने वाला।

**बहुभोग्य** *स्त्री०* (सं) वेश्या।

**बहुभोजी** *वि०* (सं) बहुत खाने वाला। पेटू।

**बहुमत** पुं० (सं) १-बहुत से लोगों की अलग-अलग राय। २-बहुत से लोगों की मिल कर एक राय। (मेजोरिटी, मेजोरिटी वोट)।

**बहुमानी** *वि०* (सं) अधिक माननीय।

**बहुमान्य** *वि०* (सं) सम्माननीय। पूज्य।

**बहुमार्गी** *स्त्री०* (सं) वह स्थान जहां कई रास्ते मिलते हों।

**बहुमुख** *वि०* (सं) १-बहुत सी बातों की जानकारी रखने वाला। (वर्सेटाइल)। २-बहुप्रयोजन। (मल्टीपर्पज)।

**बहुमुखी परियोजना** *स्त्री०* (सं) अनेक भागों वाली परियोजना। (मल्टीपर्पज प्लेन)।

**बहुमुखी प्रतिभा** *स्त्री०* (सं)) अनेक विषयों की जान-कारी रखने का भाव। (वर्सेटाइल जीनियस)।

**बहुमुखी योजना** *स्त्री०* (सं) वह योजना जिसके अन्तर्गत अनेक छोटी परियोजनाएं सम्मिलित हों। (मल्टीपर्पज स्कीम)।

**बहुमूत्र** पुं० (सं) एक रोग जिसमें बार-बार मूत्र आता है। (डायबेटीज)।

**बहुमूल्य** *वि०* (सं) कीमती। बहुत मूल्य का।

**बहुयाजी** *वि०* (सं) बहुत से यज्ञ करने वाला।

**बहुरङ्ग** *वि०* (सं) अनेक रङ्गों वाला। रङ्ग बिरंगा। (मल्टी कलर)।

**बहुरङ्गी** *वि०* (सं) १-बहुरूपिया। २-अनेक रङ्ग दिखाने वाला।

**बहुरना** *क्रि०* (हि) लौटना। वापिस आना।

**बहुरस** *वि०* (सं) अनेक स्वाद वाला।

**बहुरि** *अव्य०* (स) १-पुनः। फिर। २-इसके उपरांत पीछे। अनन्तर।

**बहुरिपु** *वि०* (सं) जिसके अत्यधिक शत्रु हों।

**बहुरिया** *स्त्री०* (हि) नववधू।

**बहुरी** *स्त्री०* (हि) भुना हुआ अन्न। चबेना।

**बहुरूप** *वि०* (सं) १-अनेक रूप धारण करने वाला। २-चितकबरा। पुं० (सं) १-शिव। ब्रह्म। २-गिर-गिट। ३-केश। ४-तांडव नृत्य का एक भेद।

**बहुरूपक** पुं० (सं) एक जन्तु। *वि०* (सं) बहुत से रूप वाला।

**बहुरूप-दर्शक** पुं० (सं) एक लम्बी नली जिसमें रङ्ग बिरंगे कांच के टुकड़े होते हैं और जिसमें हिलाने पर कई प्रकार की कलापूर्ण आकृतियां दिखाई देती हैं।

**बहुल** *वि०* (सं) अधिक। ज्यादा। अनेक। (मल्टी-फेरियस)।

**बहुलता** *स्त्री०* (सं) १-बहुतायत। अधिकता। २-व्यर्थता।

**बहुला** *स्त्री०* (सं) १-गाय। २-नील का पौधा। ३-इलायची। ४-कार्त्तिका नक्षत्र।

**बहुलाचौथ** *स्त्री०* (हि) भाद्रकृष्णा चतुर्थी।

**बहुलालाप** *वि०* (सं) बातूनी। बकवादी।

**बहुलावन** पुं० (सं) वृन्दावन के चौरासी वनों में से एक का नाम।

**बहुली** *स्त्री०* (सं) इलायची।

**बहुलीकृत** *वि०* (सं) १-बढ़ाया हुआ। २-प्रकट किया हुआ।

**बहुवचन** पुं० (सं) वह शब्द जो एक से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का वाचक होता है (व्या०)।

**बहुविद्** *वि०* (सं) बहुत सी बातें जानने वाला।

**बहुविद्य** *वि०* (सं) बहुमुख। जो अनेक विषयों की जानकारी रखने वाला तथा उन पर लिखने का सामर्थ्य रखने वाला। (वर्सेटाइल)।

**बहुविध** *वि०* (सं) अनेक प्रकार का। (मल्टीपल)।

**बहुविधि-ग्राह्य** पुं० (सं) वह हुंडी जो कानून की दृष्टि से हर प्रकार से ठीक हो। (मल्टीपल लीगल-टेंडर)।

**बहुविधि-परिव्यय** पुं० (सं) किसी वस्तु के लिए सब मिला कर खर्च करने वाला व्यय। (मल्टीपल कोस्ट)

**बहुविधि-परिव्यय-लेखा** पुं०(सं) किसी वस्तु पर सब

मिला कर व्यय किये हुए धन का लेखा। (मल्टीपल-कोस्ट एकाउंट)।
**बहु-विवाह** पुं० (सं) एक पत्नी के जीवित होने हुए दूसरा विवाह करना। (पॉलीगेमी)।
**बहुविस्तीर्ण** वि० (सं) बहुत लम्बा चौड़ा।
**बहुव्ययी** वि० (सं) अत्यधिक खर्च करने वाला। खर्चीला।
**बहुव्रीहि** वि० (सं) जिसके पास बहुत धन हो। पुं० (सं) चार प्रकार के समासों में से एक। (व्या०)।
**बहुश** वि० (सं) बहुत अधिक। अव्य० (सं) १-प्रायः २-बहुत प्रकार से।
**बहुश्रुत** वि० (स) जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। चतुर।
**बहुसंख्यक** पु० (सं) गिनती में अधिक।
**बहूँटा** पु० (हि) बांह पर पहनने का एक आभूषण।
**बहू** स्त्री० (हि) १-लड़के की स्त्री। पुत्रवधू। २-पत्नी स्त्री। ३-दुलहिन।
**बहूपमा** स्त्री० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायें।
**बहेड़ा** पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके फल दवा के काम आते हैं।
**बहेतू** वि०(हि) १-इधर-उधर मारा-मारा फिरने वाला २-आवारा।
**बहेरा** पुं० (हि) दे० 'बहेड़ा'।
**बहेलिया** पुं०(हि) पशु-पक्षी पकड़ने या मारने वाला व्याध। चिड़ीमार।
**बहोर** पुं० (हि) फेरा। वापिसी। पलटा।
**बहोरना** क्रि० (हि) १-लौटाना। वापिस करना। २-घर की ओर हांकना। (पशु आदि)।
**बहोरि** अव्य० (हि) दे० 'बहुरि'।
**बह्र** स्त्री०(अ) छंद या शेर का वजन। पुं० (अ) २-महासागर। २-नदी। ३-जहाजों का बेड़ा। ४-अच्छा घोड़ा।
**बाँ** पुं० (हि) १-गाय के बोलने का शब्द। २-बार। दफा।
**बाँक** पुं० (हि) १-बांह पर पहनने का गहना। २-कमान। धनुष। ३-नदी का मोड़। ४-टेढ़ापन। ५-गन्ना छीलने का सरोते जैसा औजार। ६-लोहे की चीजें पकड़ने का लुहार का शिकंजा। ७-हाथ में पहनने की चौड़ी चूड़ियां। वि० (हि) दे० 'बांका'।
**बांकड़ा** वि० (हि) वीर। साहसी। पुं० (सं) छकड़े आदि में धुरे के नीचे आड़े बल लगी हुई लकड़ी।
**बांकड़ो** स्त्री० (हि) कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता
**बांकना** क्रि० (हि) १-टेढ़ा करना। टेढ़ा होना।
**बांका** वि० (हि) १-टेढ़ा। तिरछा। २-अत्यन्त साहसी वीर। ३-सुन्दर और बना ठना। छैला। पुं० (हि) बांस छीलने का लोहे का औजार।
**बांकिया** पुं० (हि) नरसिंह नामक एक बाद्ययन्त्र।
**बांकुरा** वि० (हि) १-बांका। टेढ़ा। २-पैना। पतली धार का। ३-चतुर।
**बांग** स्त्री० (फा) १-शब्द। आवाज। २-आजान। ३-मुर्गे का सुबह का बोलना।
**बांगड़** पुं० (देश०) हिसार, रोहतक, तथा करनाल के आसपास का प्रदेश।
**बांगड़ू** स्त्री० (हि) बागड़ प्रदेश की बोली या भाषा। वि० (हि) १-मूर्ख। २-उजड्ड।
**बांगर** पुं० (देश०) वह भूमि जो ऊँचाई पर हो और नदी आदि में बाढ़ आने पर भी पानी में न डूबे।
**बांगुर** पुं० (देश) पशु, पक्षियों आदि को फँसाने का फंदा। जाल।
**बांचना** क्रि० (हि) १-पढ़ना। २-बाकी रहना। ३-बचाना। छोड़ देना।
**बांछना** स्त्री० (हि) इच्छा। कामना। अभिलाषा। क्रि० (हि) १-इच्छा करना। २-चुनना। छांटना।
**बांछा** स्त्री०(हि) इच्छा। अभिलाषा।
**बांछित** वि० (हि) जिसकी इच्छा या अभिलाषा की जाय।
**बांछी** पुं०(हि) चाहने वाला। अभिलाषा करने वाला
**बांझ** वि० (हि) जिसके सन्तान न होती हो। वन्ध्या।
**बांझपन** पुं० (हि) बांझ होने का भाव। वंध्यत्व।
**बांझपना** पुं० (हि) दे० 'बांझपन'।
**बांट** स्त्री० (हि) १-बाँटने की क्रिया या भाव। २-भाग। हिस्सा। ३-घास की पयाल का बना रस्सा ४-दे० 'बाट'।
**बांटचूँट** क्रि० (हि) १-हिस्सा लगाना। विभाग करना। २-वितरण करना। ३-थोड़ा-थोड़ा करके सबको देना।
**बांटा** पुं० (हि) भाग। हिस्सा।
**बांड** पुं० (देश) दो नदियों के बीच की भूमि।
**बांडा** पुं० (देश) १-वह पशु जिसके पूँछ न हो। २-परिवारहीन पुरुष। ३- ताता।
**बांद** पुं० (हि) सेवक। दास।
**बांदर** पुं० (हि) बन्दर।
**बांदा** पुं०(हि) एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर आकर पुष्ट होती है।
**बांदी** स्त्री० (हि) दासी। लौंडी। नौकरानी।
**बांदू** पुं० (हि) कैदी। बन्दी।
**बांध** पुं० (हि) १-नदी या जलाशय का पानी रोकने के लिए किनारे पर मट्टी चूने आदि का बना पुस्ता। (डेम)। २-बंधन जो किसी बात पर नियंत्रण रखने के लिए लगाया जाता हो। (बार)।
**बांधना** क्रि० (हि) १- कसने के लिए घेर कर रोकना २-पाबन्द करना। ३-प्रेमपाश में बद्ध करना। ४-

पानी को रोकने के लिए बाँध बाँधना। ५-उपक्रम या योजना करना। ६-स्थिर करना। ७-चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। ८-कैद करना। ९-रस्सी कपड़े आदि में लपेटकर गाँठ लगाना।

**बांधनीपौरि** स्त्री० (हिं) पशुशाला।

**बांधनू** पुं० (हिं) १-पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। २-मनगढ़न्त बात। ३-तोहमत। कलंक। ४-लहरियेदार रंगाई के लिए रंगरेज का चुनरी आदि को बाँध कर रंगना।

**बांधव** पुं० (सं) १-भाई। बन्धु। २-मित्र। ३-रिश्तेदार।

**बांबी** स्त्री० (हिं) १-साँप का बिल। २-दीमकों के रहने का मिट्टी का भिटा।

**बांमी** स्त्री० (हिं) दे० 'बाँबी'।

**बांमन** पुं० (हिं) ब्राह्मण।

**बांस** पुं० (हिं) एक लम्बा गन्ने के आकार का पौधा जो टोकरी आदि बनाने के काम आता है। २-नाव खेने की लग्गी। ३-रीढ़।

**बांसली** स्त्री० (हिं) दे० 'बाँसुरी'।

**बांसा** पुं० (हिं) १-बांस की छोटी नली जो हल के साथ लगी रहती है और जिसमें से बीज गिरते रहते हैं। २-रीढ़ की हड्डी। ३-नथनों के बीच की नाक की हड्डी।

**बांसागड़ा** पुं० (हिं) कुश्ती का एक पेंच।

**बांसी** स्त्री० (हिं) बाँसुरी।

**बांसुरी** स्त्री० (हिं) बाँस की नली का फूँककर बजाया जाने वाला बाजा।

**बांह** स्त्री० (हिं) १-भुजा। हाथ। २-बल। ३-सहायक ४-सहारा। ५-भरोसा। ६-आस्तीन।

**बांहतोड़** पुं० (हिं) कुश्ती का एक पेंच।

**बांहबोल** पुं० (हिं) सहायता देने का वचन।

**बांह मरोड़** पुं० (हिं) कुश्ती का एक पेंच।

**बा** पुं० (हिं) जल। पानी। अव्य० (फा) बार। दफा। स्त्री० (हिं) दे० 'बाई'।

**बाअदब** वि० (फा) विनीत।

**बाअसर** वि० (फा) प्रभावशाली।

**बाइ** स्त्री० (हिं) दे० 'बाई'।

**बाइख्तियार** वि० (फा) अधिकार के साथ।

**बाइनि** स्त्री० (हिं) १-बयना। कहना। २-बीज बोना

**बाइबिल** स्त्री०(अं) इञ्जील। ईसाइयों की धर्म-पुस्तक

**बाइस** पुं० (फा) कारण। सबब वि० (हिं) बीस और दो।

**बाइसिकिल** स्त्री० (अं) दो पहियों वाली गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है।

**बाई** स्त्री० (हिं) १-त्रिदोषों में से वात नामक दोष। २-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३-वेश्याओं के साथ लगने वाला एक शब्द।

**बाईजी** स्त्री० (हिं) वेश्या। नायिका।

**बाईमान** वि० (फा) ईमानदार।

**बाईस** वि० (हिं) बीस और दो।

**बाउ** पुं० (हिं) वायु। हवा।

**बाउर** वि०(हिं) १-पागल। २-भोलाभाला। ३-मूर्ख। ४-मूक। गूँगा।

**बाउरी** स्त्री० (हिं) दे० 'बावली'।

**बाऊ** पुं० (हिं) वायु। हवा।

**बाक** पुं० (हिं) बात। वचन।

**बाकचाल** वि० (हिं) वाचाल। बातूनी।

**बाकना** क्रि० (हिं) बकना। प्रलाप करना।

**बाकल** पुं० (हिं) छाल। वल्कल।

**बाकला** पुं० (हिं) एक प्रकार की बड़ी मटर।

**बाका** स्त्री० (हिं) वाणी। वाचा। बोलने की शक्ति।

**बाकार** वि० (फा) जो कोई काम करता हो।

**बाकायदा** वि० (फा) नियमित।

**बाकी** वि० (अ) जो बच रहा हो। शेष। अवशिष्ट। स्त्री० (अ) घटाने के बाद बची हुई संख्या। अव्य० (फा) लेकिन। अगर। परन्तु।

**बाकीदार** पुं०(हिं) जिस पर लगान या कर बाकी हो।

**बाकुल** पुं० (हिं) दे० 'बाकल'।

**बाखर** पुं० (देश) एक प्रकार की घास।

**बाखरि** स्त्री० (हिं) दे० 'बखरी'।

**बाग** पुं० (हिं) उद्यान। वाटिका। स्त्री० (हिं) लगाम।

**बागडोर** स्त्री० (हिं) लगाम।

**बागना** क्रि० (हिं) १-यों ही टहलना। २-बोलना।

**बागबाग** वि० (फा) अति प्रसन्न। प्रफुल्लित।

**बागबान** पुं० (फा) माली।

**बागबानी** स्त्री० (फा) माली का पद या काम।

**बागर** पुं० (हिं) दे० 'बांगर'।

**बागरज** वि० (फा) जिसको कोई गरज हो।

**बागल** पुं० (हिं) बक। बगला।

**बागा** पुं० (हिं) एक पुराना पहनावा। जामा।

**बागी** पुं० (अ) विद्रोह करने वाला। विद्रोही।

**बागीचा** पुं० (फा) उपवन। उद्यान।

**बागुर** पुं० (देश) पक्षी आदि पकड़ने का फंदा। जाल।

**बाघंबर** पुं० (हिं) बाघ की खाल। जो बिछाने के काम आती है।

**बाघ** पुं० (हिं) सिंह से छोटा शेर।

**बाघनख** पुं० (हिं) दे० 'बघनखा'।

**बाघी** स्त्री० (हिं) जांघ की संधि में पड़ने वाली एक प्रकार की गिलटी।

**बाच** वि० (हिं) १-वर्णनीय। अच्छा। २-सुन्दर।

**बाचना** क्रि० (हिं) दे० 'बाँचना'।

**बाचा** स्त्री० (हिं) १-वाक्य। वचन। २-प्रण। प्रतिज्ञा

**बाचाबंध** *वि०* (हि) प्रतिज्ञाबद्ध।
**बाछ** पुं० (हि) १-दे० 'बाछा'। स्त्री० (हि) वह भाग जहाँ ओठ मिलते हैं।
**बाछा** पुं०(हि) १-गाय का बछड़ा। २-लड़का। बच्चा
**बाज** पुं० (फा) एक शिकारी पक्षी। प्रत्य० शब्दों के अन्त में लगने से व्यसनी, शौकीन आदि का अर्थ देने वाला एक प्रत्यय जैसे-नशेबाज। *वि०* वंचित। रहित। *वि०* (ग्र) कोई कोई। कुछ। विशिष्ट। (फा) फिर। दोबारा। पुं० (हि) १-घोड़ा २-बाजा।
**बाजड़ा** पुं० (हि) दे० 'बाजरा'।
**बाजदावा** पुं० (फा) स्वत्व का त्याग।
**बाजन** पुं० (हि) बाजा।
**बाजना** *क्रि०* (हि) १-बाजे आदि का बजाना। २-लड़ना। ३-कहलाना। ४-आघात पहुँचाना। ५-जा पहुँचना। *वि०* (हि) जो बचता है।
**बाजरा** पुं० (हि) एक प्रकार का मोटा अन्न। जोंधरी
**बाजा** पुं० (हि) वाद्ययन्त्र।
**बाजागाजा** पुं० (हि) १-कई प्रकार के वाद्ययन्त्रों का एक साथ बजना। २-धूमधाम।
**बाजाब्ता** *अव्य०* (फा) नियम के अनुसार। *वि०* (फा) जो नियमानुसार हो।
**बाजार** पुं० (फा) १-वह स्थान जहां पर अनेक प्रकार की दुकानें हों। २-पैंठ। ३-भाव। ४-हाट लगने का दिन।
**बाजारभाव** पुं० (फा) प्रचलित दर।
**बाजारी** *वि०* (फा) १-बाजार सम्बन्धी। २-साधारण ३-मर्यादा रहित। ४-अशिष्ट।
**बाजारी औरत** स्त्री०(फा) वेश्या।
**बाजारी गप** स्त्री०(फा) वह बात जो अविश्वसनीय हो
**बाजारू** *वि०* (हि) दे० 'बाजारी'।
**बाजि** पुं० (हि) १-घोड़ा। २-बाण। ३-पक्षी। *वि०* (हि) चलने वाला।
**बाजी** स्त्री० (फा) १-शर्त। बदान। २-आदि से अन्त तक का कोई खेल जिसमें शर्त लगी हो या हार-जीत लगी हो। ३-दाँव। (खेल में)। पुं० (हि) १-घोड़ा। २-बाजा बजाने वाला।
**बाजीगर** पुं०(फा) जादू के खेल करने वाला। जादूगर।
**बाजीगरी** स्त्री० (फा) १-बाजीगर का काम। २-कपट धोखा।
**बाजु** अव्य०(हि) १-बिना। बगैर। २-सिवा। अतिरिक्त।
**बाजू** पुं० (फा) १-भुजा। बाहु। २-सेना का किसी ओर का पक्ष। ३-पक्षी का डैना। ४-बाजूबन्द।
**बाजूबंद** पुं०(फा) बांह पर पहनने का एक आभूषण
**बाझ** अव्य० (फा) बिना। बगैर।
**बाझन** स्त्री० (हि) १-उलझन। पेंच। २-बखेड़ा। झंझट।
**बाझना** *क्रि०*(हि) दे० 'बझना'।
**बाट** पुं० (हि) १-राह। मार्ग। रास्ता। २-बट्टा। ३-बटखरा। स्त्री० (हि) १-बल। ऐंठन। २-मार्ग।
**बाटकी** स्त्री०(हि) बटलोई।
**बाटना** *क्रि०* (हि) १-पीसना। चूर्ण करना। २-दे० 'बटना'।
**बाटिका** स्त्री० (सं) छोटा बाग। बगीचा।
**बाटी** स्त्री० (हि) १-उपलों पर सेंक कर बनाई जाने वाली गोल रोटी। २-गोली। पिंड। ३-तसला।
**बाड़** स्त्री० (हि) 'बाढ़'।
**बाड़व** पुं०(सं) १-ब्राह्मण। २-बड़वाग्नि। ३-घोड़ियों का झुण्ड। *वि०* (सं) बड़वा सम्बन्धी।
**बाड़ा** पुं० (हि) १-चारों ओर से घिरा हुआ बड़ा मैदान। २-पशुशाला।
**बाड़ि** स्त्री० (हि) १-मेंड़। २-टट्टर। बाड़ी।
**बाड़ी** स्त्री० (हि) १-वाटिका। फुलवारी। २-घर।
**बाढ़** स्त्री० (हि) १-वृद्धि। अधिकता। २-अधिक वर्षा के कारण नदी, तालाब आदि में जल का अत्यधिक बढ़ जाना। जलप्लावन। सैलाब। ३-बन्दूकों या तोपों का लगातार छूटना। ४-तलवार आदि हथियारों की धार। सान।
**बाढ़ना** *क्रि०* (हि) दे० 'बढ़ना'।
**बाढ़ि** स्त्री० (हि) दे० 'बाढ़'।
**बाढ़ी** स्त्री० (हि) १-बाढ़। बढ़ाव। २-अधिकता। ३-किसी को ऋण देने पर मिलने वाला ब्याज। ४-लाभ।
**बाढ़ीवान** पुं० (हि) शस्त्रों आदि पर सान रखने वाला कारीगर।
**बाण** पुं० (सं) एक लम्बा और नुकीला शस्त्र जो धनुष पर चढ़ा कर फेंका जाता है। शर। तीर। २-गाय का थन। ३-निशाना। लक्ष्य। ४-तीर की वह नोक जिसपर पर लगे हों। ५-आग। ६-स्वर्ग। मोक्ष। ७-पाच की संख्या। ८-नरकुल।
**बाणक** पुं० (हि) महाजन। बनिया।
**बाणगंगा** स्त्री० (सं) हिमालय की सोमेश्वर गिरि से निकली हुई एक प्रसिद्ध नदी।
**बाणधि** पुं० (सं) तूण। तरकस।
**बाणमुक्ति** स्त्री० (सं) बाण छोड़ना।
**बाणमोक्षण** पुं० (सं) बाण छोड़ना।
**बाणवर्षण** पुं० (सं) बाणों की वर्षा।
**बाणवर्षी** *वि०* (सं) बाणों की वर्षा करने वाला।
**बाणविद्या** स्त्री०(सं) बाण चलाने की विद्या। तीरंदाजी
**बाणवृष्टि** स्त्री० (सं) बाणों की वर्षा।
**बाणसंधान** पुं० (सं) तीर को धनुष पर चढ़ाना।

बाणसुता स्त्री० (सं) बाणासुर की पुत्री उषा।
बाणहा पु० (सं) विष्णु।
बाणाभ्यास पु० (सं) तीर चलाने का अभ्यास।
बाणावलि स्त्री० (सं) तीरों की पंक्ति।
बाणासन पु० (सं) धनुष।
बाणासुर पु० (सं) राजा बलि के सौ पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र का नाम।
बाणि स्त्री० (सं) दे० 'वाणि','वाणी'।
बाणिज्य पु० (सं) दे० 'वाणिज्य'।
बात पु० (हि) दे० 'वात'। स्त्री० (हि) १-कहा हुआ सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। २-प्रसंग चर्चा। ३-जानी जाने वाली या जताई जाने वाली स्थिति या वस्तु। ४-संदेश। ५-वार्तालाप। ६-मिथ्या कथन। बहाना। ७- प्रतिज्ञा। कौल। ८-साख। विश्वास। ६-आशय। तात्पर्य। १०-रहस्य भेद। ११-उपदेश। १२-विशेष गुण। खूबी। १३-इच्छा। कामना। १४-समस्या। १५-आचरण। व्यवहार। १६-लगाव। सम्बन्ध। १७-स्वभाव। प्रकृति। १८- वस्तु। पदार्थ। १६- कर्त्तव्य।
बातचीत स्त्री० (हि) दो या दो से अधिक व्यक्तियों में होने वाला वार्तालाप।
बाती स्त्री० (हि) दे० 'बत्ती'।
बातुरा वि० (हि) पागल। सनकी।
बातूनिया वि० (हि) बहुत या व्यर्थ की बातें करने वाला।
बातूनी वि० (हि) दे० 'बातूनिया'।
बाथ पु० (हि) गोद। अंकवार।
बाद अव्य० (अ) उपरांत। पीछे। पु० (फा) १-वात। हवा। २-घोड़ा पु० (हि) १-तर्क। बहस। विवाद २-होड़ तूरी। ४-बाजी। शर्त। ५-दे० 'वाद'। अव्य० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।
बादकश पु० (फा) १-धौंकनी। २-छत का पंखा।
बादगीर पु० (फा) झरोखा।
बादना क्रि० (हि) १-तर्क-वितर्क करना। २-झगड़ा करना। ३-ललकारना।
बादनुमा पु०(फा) वायु की दिशा सूचित करने वाला यन्त्र।
बादबान पु० (फा) पाल।
बादर पु० (हि) मेघ। बादल।
बादरायण पु० (सं) वेदव्यास का एक नाम।
बादरायण-संबंध पु० (सं) बहुत ही दूर का रिश्ता या सम्बन्ध।
बादल पु० (हि) १-सूर्य की गरमी के कारण समुद्र आदि से बनी वाष्प जो आकाश पर छा जाती है और बूंदों के रूप में बरसाती है। मेघ। घन। २-एक प्रकार की दूधिया रंग का पत्थर।
बादला पु० (देश) सोने या चांदी का चिपटा और चमकीला तार।
बादशाह पु० (फा) १-बड़ा राजा। शासक। २-सर्वश्रेष्ठ पुरुष। ३-ईश्वर। ४-मनमानी करने वाला। ५-ताश का एक पत्ता। ६-शतरंज का एक मोहरा।
बादशाहज़ादा पु० (फा) राजकुमार।
बादशाहत स्त्री० (फा) शासन। राज्य। हुकूमत।
बादशाही स्त्री० (फा) १-राज्याधिकार। २-शासन। ३-मनमाना व्यवहार। वि०(फा) राजाओं के योग्य बादशाह का।
बादशाही-फरमान पुं०(फा) राजाज्ञा।
बादशाही हुक्म पु०(फा) राजाज्ञा।
बादाम पु० (फा) एक प्रसिद्ध और पौष्टिक मेवा।
बादामी वि० (फा) १-बादाम के छिलके के रंग का। २-बादाम के आकार का। ३-अंडाकार। पु० (हि) १-एक छोटी चिड़िया। २-एक प्रकार की छोटी डिबिया। ३-बादाम के रंग का घोड़ा।
बादामी आंख स्त्री० (फा) बादाम के आकार के छोटे नेत्र।
बादि अव्य० (हि) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।
बादित वि० (हि) बजाया हुआ।
बादी वि० (फा) १-वायु-विकार सम्बन्धी। २-शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने वाला। स्त्री० (फा) वात विकार। पु० (हि) १-किसी के विरुद्ध अभियोग लगाने वाला। मुद्दई। (प्लेंटिफ)। २-शत्रु। प्रतिद्वन्द्वी।
बादीगर पु० (हि) बाजीगर।
बादीपन पु० (हि) वायु विकार।
बादी-बवासीर स्त्री० (हि) एक प्रकार का बवासीर का रोग जिसमें रक्त नहीं बहता।
बादुर पु० (देश) चमगादड़।
बाध पुं० (सं) १-बाधा। अड़चन। पीड़ा। कष्ट। ३-कठिनता। पु० (हि) मूंज की रस्सी।
बाधक पु० (सं) १-रुकावट डालने वाला। २-कष्टदायक। ३-स्त्रियों का एक रोग।
बाधन पु० (सं) १-रुकावट या विघ्न डालना। २-पीड़ा पहुँचाना।
बाधना क्रि० (हि) बाधा डालना।
बाधा स्त्री०(सं)१-अड़चन। विघ्न। २-संकट। कष्ट। ३-भय। ४-भूत प्रेत आदि के कारण होने वाला कष्ट
बाधाहर वि०(सं) बाधा या कष्ट दूर करने वाला।
बाधित वि० (सं) १-जो रोका गया हो। २-असंभव। ३- प्रभावहीन। ग्रस्त।
बाध्य वि० (सं) १-जो रोका जाने वाला हो। २-विवश।
बान पु०(हि)१-बाण। तीर। २-बुनकी की तांत पर मारने का डंडा। ३-बाना नामक एक अस्त्र जो

फेंक कर मारा जाता है। ४-आब। कांति। स्त्री० (हि) १-आदत। अभ्यास। २-सजधज। बनाव-सिंगार।

बानइत पुं० (हि) दे० 'बानैत'।

बानक स्त्री०(हि) १-भेष। वेश। २-एक प्रकार का रेशम। ३-संयोग। परिस्थिति।

बानगी स्त्री०(हि) किसी माल का वह अंश जो ग्राहक को दिखाया जाता है। नमूना।

बानना क्रि० (हि) दे० 'बनाना'।

बानबे वि० (हि) नब्बे और दो। पुं० (हि) बानबे की संख्या। ६२।

बानर पुं० (हि) बन्दर।

बाना पुं०(हि) १-पहनावा। वस्त्र। २-वेश विन्यास ३-रीति। ४-बुनावट। ५-कपड़े की बुनावट का वह तागा जो आड़े बल ताने में भरा जाता है। ६-तलवार के समान एक दुधारा हथियार। ७-पतंग उड़ाने का तागा। क्रि० (हि) फैलाना। सिकोड़ना-जैसे मुँह बनाना।

बानावरी स्त्री० (हि) तीर या बाण चलाने की विद्या

बानि स्त्री० (हि) १-बनावट। सजधज। २-आदत ३-चमक। आभा। ४-वचन। वाणी।

बानिक स्त्री० (हि) १-बनावसिंगार। २-वेश।

बानिन स्त्री० (हि) बनिये की स्त्री।

बानिनि स्त्री० (हि) बनिन।

बानिया पुं० (हि) दे० 'बनिया'।

बानी स्त्री० (हि) दे० 'वाणी'। पुं० (अ) बुनियाद डालने वाला। प्रवर्तक। पुं० (हि) बनिया।

बानैत पुं० (हि) १-तीर चलाने वाला। २-योद्धा। सैनिक। ३-बाना फेरने वाला।

बाप पुं० (हि) पिता। जनक।

बापा पुं० (हि) दे० 'बाप्पा'।

बापी स्त्री० (हि) दे० 'वापी'।

बापू पुं०(हि) १-पिता। बाप। २-राष्ट्रपिता महात्मा-गांधी के लिए उनके अनुयायियों द्वारा लिया जाने वाला आदरसूचक नाम।

बाप्पा पुं० (देश) मेवाड़ के राजवंश के आदिपुरुष का नाम।

बाफता पुं० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिस पर कलाबत्तू या रेशम की बूटियां कढ़ी होती हैं।

बाब पुं० (अ) १-परिच्छेद। अध्याय। २-मुकदमा। ३-प्रकार। तरह। ४-विषय। ५-अभिप्राय।

बाबत स्त्री० (फा) विषय। जरिया।

बाबरची पुं० (हि) दे० 'बावरची'।

बाबा पुं० (फा) १-पिता। २-दादा। ३-लड़कों के लिए प्यार का शब्द। ४-साधु संतों आदि के लिए आदरसूचक शब्द।

बाबी स्त्री० (हि) १-सन्यासिन। २-लड़कियों के लिए प्यार का शब्द।

बाबल पुं० (हि) १-बाबू। २-पिता।

बाबू पुं० (हि) १-पिता के लिये सम्बोधन। २-बड़े आदमियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३-लिपिक।

बाबना पुं० (फा) एक छोटा पौधा जो दवा में काम आता है। और फारस में होता है।

बाम वि०(हि) दे० 'वाम'।

बामा स्त्री० (हि) बाँबी। वि० (हि) वाम-मार्गी।

बाम्हन पुं० (हि) दे० 'ब्राह्मण'।

बाँय वि०(हि) १-दे० 'बायाँ'। २-खाली।

बाय स्त्री० (हि) १-वात का प्रकोप। २-हवा। वायु।

बायक पुं० (हि) १-कहने वाला। २-पढ़ने वाला। ३-दूत।

बायन पुं० (हि) मित्रों या सम्बन्धियों के यहां भेजी जाने वाली मिठाई।

बायवी वि० (हि) बाहर का। अपरिचित। अजनबी।

बायव्य वि० (हि) दे० 'वायव्य'।

बायलर पुं० (हि) १-वह बड़ा पात्र जिसमें कोई वस्तु उबाली जाती है। २-इञ्जन का वह भाग जहाँ पानी से भाप बनती है।

बायला वि० (देश) वायु विकार उत्पन्न करने वाला।

बायली वि० (हि) दे० 'बायवी'।

बायस पुं० (हि) दे० 'वायस'।

बायस्कोप पुं० (अं) एक यंत्र जिसमे चल चित्र दिखाये जाते हैं।

बायाँ वि० (हि) १-दाहिने का उलटा। २-विपरीत। ३-अहित, उपकार या हानि करने वाला। ४-विरोधी या शत्रु। ५-पूर्व की ओर पड़ने वाला वाम।

बायु स्त्री० (हि) दे० 'वायु'।

बायें अव्य० (हि) १-बाईं ओर। २-विपरीत। विरुद्ध

बारंबार अव्य० (हि) लगातार। बार-बार।

बार पुं० (हि) १-द्वार। २-आश्रय। घर। ३-बाढ़। रोक। ४-किनारा। ५-धार। पुं० (फा) १-बोझ। २-पहुँच। ३-दरबार। ४-ऋण। स्त्री० मरतबा। दफा। स्त्री० (हि) १-काल। समय। २-विलंब। देर। ३-दफा।

बारक अव्य० (हि) एक बार। स्त्री० छावनी आदि में सैनिकों के रहने का स्थान।

बारगह स्त्री० (फा) १-थैला। बोरा। २-रसद। ३-काम में न आने योग्य टूटा फूटा सामान। ४-ड्योढ़ी। ५-ऐश्वर्य।

बारगाह स्त्री० (फा) दे० 'बारगह'।

बारजा पुं० (हि) १-मकान के सामने का बरामदा। २-कोठा। अटारी। ३-बरामदा। ४-कमरे के आगे का छोटा दालान।

बारण पुं० (हि) दे० 'वारण'।

बारता स्त्री०(हि) दे० 'वार्ता'।

**बारखाना** पुं० (फा) १-वह सन्दूक, थैला या बोरी जिसमें बांध कर माल बाहर भेजा जाता है। २-रसद। ३-टूटा फूटा सामान।
**बारना** क्रि० (हि) १-मान करना। २-जलाना।
**बारनिश** स्त्री० (हि) लोहे, लकड़ी आदि पर करने का चमकीला रोगन। (वार्निश)।
**बारबधू** स्त्री० (हि) वेश्या।
**बारबरदार** पुं० (फा) १-सामान या बोझा ढोने वाला।
**बारबरदारी** स्त्री० (फा) १-सामान ढोने का काम। २-सामान ढोने की मजदूरी।
**बारमुखी** स्त्री० (हि) वेश्या।
**बारह** वि० (हि) दस और दो।
**बारहखड़ी** स्त्री०(हि) देवनागरी वर्णमाला के व्यंजनों के बारह स्वरों से युक्त रूप।
**बारहदरी** स्त्री० (हि) वह बैठक जिसमें चारों ओर बारह दरवाजे हों।
**बारहबान** पुं० (हि) एक प्रकार का उत्तम सोना।
**बारहबानी** वि० (हि) १-सूर्य के समान चमकवाला। २-खरा। ३-निर्दोष। ४-पूर्ण। पक्का।
**बारहमासा** पुं० (हि) वह गान जिसमें बारह मासों के विरह का वर्णन होता है।
**बारहमासी** वि० (हि) सदाबहार। सब ऋतुओं में फलने फूलने वाला।
**बारहमुकाम** पुं० (हि) ईरानी संगीत के बारह स्वर या पर्दे।
**बारहवफात** स्त्री० (हि, अ) मुसलमानों के अनुसार अरबी महीने की वह बारह तिथियां जिसमें मोहम्मद साहब बारह दिन बीमार पड़कर मरे थे।
**बारहसिंगा** पुं० (हि) हिरन जाति का एक पशु।
**बारहाँ** वि० (हि) बारहवाँ।
**बारा** वि०(हि) बालक। जो सयाना न हो। पुं०(हि) १-बालक। लड़का। २-महीन तार खींचने का यन्त्र पुं० (फा) बार। समय। विषय।
**बारात** स्त्री० (हि) दे० 'बरात'।
**बाराती** पुं० (हि) दे० 'बराती'।
**बारादरी** स्त्री० (हि) दे० 'बारहदरी'।
**बारानी** वि० (फा) बरसाती। स्त्री० वह भूमि जिसमें केवल वर्षा के पानी से उपज होती है। २-वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिए बरसात में ओढ़ा या पहना जाता है।
**बाराह** पुं० (हि) दे० 'बारह'।
**बारि** पुं० (हि) दे० 'वारि'।
**बारिगर** पुं० (हि) शस्त्रों पर सान रखने वाला। सिकलीगर।
**बारिगह** स्त्री० (हि) दे० 'बारगह'।
**बारिबाह** पुं० (हि) बादल। मेघ।
**बारिश** स्त्री० (फा) १-वर्षा। वृष्टि। २-बरसात। वर्षाऋतु।
**बारी** स्त्री० (हि) १-किनारा। तट। २-हाशिया। ३-बाड़। ४-बरतन का मुंह। ५-धार। ६-घर। मकान ७-झरोखा। खिड़की। ८-बन्दरगाह। ९-आगे या पीछे क्रमानुसार आने वाला अवसर। पारी। पुं० (हि) पत्तल आदि बनाने वाली एक जाति। वि० (हि) कम अवस्था की। जो सयानी न हो।
**बारीक** वि० (फा) १-महीन। पतला। २-सूक्ष्म। ३-गूढ़। ४-जिस का अणु अति सूक्ष्म हो। ५-जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और निपुणता प्रकट हो
**बारीका** पुं० (फा) चित्रकार की महीन कलम।
**बारीकी** स्त्री० (फा) १-पतलापन। महीनपन। २-गुण। विशेषता।
**बारीस** पुं० (हि) दे० 'बारीश'।
**बारुणी** स्त्री० (हि) दे० 'वारुणी'।
**बारुनी** स्त्री० (हि) दे० 'वारुणी'।
**बारू** पुं० (हि) दे० 'बालू'।
**बारूद** स्त्री० (हि) गंधक, शोरे और पिसे हुए कोयले का विस्फोटक चूर्ण जो आग लगाने पर भड़क उठता है और जिसमें आतिशबाजी बनती है तथा बन्दूक आदि चलती है। दारू।
**बारूदखाना** पुं०(हि) गोला बारूद रखने की जगह।
**बारे** अव्य० (फा) अन्त को। किन्तु। लेकिन।
**बारोठा** पुं० (हि) विवाह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर की जाती है। बरोठी।
**बाल** पुं० (स) १-बालक। लड़का। २-अनजान। नासमझ। ३-किसी पशु का बच्चा। ४-केश। सूत के समान बारीक तन्तु जो जन्तुओं की त्वचा के ऊपर निकला रहता है। ५-बालक। बच्चा। स्त्री०(हि) जौ, गेहूँ आदि के ऊपरी भाग जिन पर दाने उगते हैं। वि० (हि) १-जो सयाना न हुआ हो। २-हाल का उगा हुआ। ३-जो युवा न हुआ हो। पुं०(अ) एक प्रकार का नृत्य।
**बालक** पुं० (सं) १-लड़का। पुत्र। २-शिशु। ३-अबोध व्यक्ति। ४-बछेड़ा। घोड़े या हाथी का बच्चा।। ५-कंगन। ६-अंगूठा। ७-हाथी की पूँछ
**बालकताई** स्त्री० (हि) १-बाल्यावस्था। २-लड़कपन। ३-बालकों की सी मूर्खता।
**बालकपन** पुं० (हि) १-लड़कपन। नासमझी। २-बालक होने का भाव।
**बालकमानी** स्त्री० (हि) घड़ी में लगाई जाने वाली पतली कमानी।
**बालकांड** पुं०(हि) रामायण का पहला अध्याय जिसमें श्रीरामचन्द्र जी की बाल्यावस्था का वर्णन है।
**बालकाल** पुं०(सं) बाल्यावस्था। बचपन।
**बालकीय** वि० (सं) बालक संबन्धी।

**बालकेलि** स्त्री० (सं) १-बालकों का खेल या खिलवाड़। वह कार्य जिसे करने में परिश्रम पड़े।
**बालक्रीड़न** पुं० (सं) लड़कों का खेल।
**बालक्रीड़नक** पुं० (सं) खिलौना।
**बालक्रीड़ा** स्त्री० (सं) बालकों के खेल और काम।
**बालखंडी** पुं० (स) वह हाथी जिसमें कोई दोष हो।
**बालखोरा** पुं० (फा) सिर के बाल उड़ने का रोग। गंज।
**बालगोपाल** पुं० (सं) १-बाल बच्चे। २-बाल्यावस्था के कृष्ण।
**बालग्रह** पुं०(सं) बालकों के प्राणघातक चार ग्रह या पिशाच।
**बालचन्द्र** पुं० (सं) दूज का चांद।
**बालचर** स्त्री० (हि) वह बालक जिसे अनेक प्रकार के सामाजिक सेवा-कार्य करने की शिक्षा मिली हो। (बॉय स्काउट)।
**बालचरित** पुं० (सं) बालकों का खिलवाड़।
**बालचर्या** स्त्री० (सं) शिशुपालन।
**बालटी** स्त्री० (हि) पानी भरने के काम आने वाली धातु की डोलची। (बकेट)।
**बालटू** पुं० (हि) पेच के दूसरे सिरे पर कसने वाला पेचदार छल्ला। (बोल्ट)।
**बालतोड़** पुं० (हि) झटके आदि से बाल टूटने से होने वाला फोड़ा।
**बालधि** पुं० (सं) दुम। पूँछ।
**बालधी** स्त्री० (हि) दुम। पूँछ।
**बालना** क्रि० (हि) जलाना। प्रज्वलित करना।
**बालपन** पुं० (स) लड़कपन। बचपन।
**बालबच्चे** पुं० (हि) संतान। लड़के वाले। औलाद।
**बालबराबर** अव्य० (हि) रत्तीभर। अतिसूक्ष्म। बहुत बारीक।
**बाल-बाल** अव्य० (हि) प्रत्येक। जरा सा। तनिक स
**बालबुद्धि** स्त्री० (सं) बालकों के समान बुद्धि।
**बालबोध** स्त्री० (सं) देवनागरी लिपि।
**बालब्रह्मचारी** पुं० (सं) वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया हो।
**बालभाव** पुं० (सं) लड़कपन। बालपन।
**बालभोग** पुं० (सं) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रखा जाता है।
**बालभोज्य** पुं० (सं) चना।
**बालम** पुं० (हि) १-पति। स्वामी। २-प्रेमी। प्रणयी
**बालमखीरा** पुं० (हि) एक प्रकार का खीरा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।
**बालमुकुन्द** पुं० (सं) बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।
**बालरोग** पुं० (सं) बालक की व्याधि।
**बाललीला** स्त्री० (सं) बालकों का खेल या क्रीड़ा।
**बालविधवा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो बाल्यावस्था में विधवा हो गई हो।
**बालविधु** पुं० (सं) अमावस्या के बाद दिखाई देने वाला नवीन चन्द्रमा।
**बालविवाह** पुं०(हि) छोटी आयु में होने वाला विवाह
**बालसखा** पुं० (सं) बचपन का साथी या मित्र।
**बालसफा** वि० (हि) बाल उड़ाने वाला। (साबुन या औषधि)।
**बालसूर्य** पुं०(सं) १-उदयकाल का सूर्य। २-वैदूर्यमणि
**बालस्थान** पुं० (हि) लड़कपन। बचपन।
**बालहठ** पुं० (सं) बच्चों का हठ।
**बालहस्त** पुं० (सं) केशों का समूह।
**बाला** स्त्री० (सं) १-बारह वर्ष से सोलह सत्रह वर्ष की जवान लड़की। पत्नी। भार्या। ३-पुत्री। कन्या ४-दो वर्ष की अवस्था की लड़की। ५-छोटी इलायची। ६-नारियल। ७-हल्दी। पुं० (हि) १-हाथ पहनने का कड़ा। २-कान की बाली। ३-सरल। निश्छल। ४-बालकों के समान अनजान। वि०(फा) ऊँचा। जो ऊपर हो। पुं० १-ऊँचाई। लम्बाई। २-डील।
**बालाई** स्त्री० (फा) मलाई। वि० ऊपर का (भाग)।
**बालाई-आमदनी** स्त्री० (फा) १-अतिरिक्त आय। २-वेतन के अतिरिक्त मिलने वाला भत्ता।
**बालाखाना** पुं०(फा) मकान के ऊपर बैठक या कमरा
**बालाजोबन** पुं० (हि) उठती जवानी।
**बालातप** पुं० (सं) प्रातःकाल की धूप।
**बालादित्य** पुं० (सं) हाल का उगा सूर्य।
**बालाध्यापक** पुं० (सं) बच्चों को पढ़ाने वाला।
**बालानशीन** पुं० (फा) (बैठने का) १-सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २-वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो।
**बालापन** पुं० (हि) बचपन। लड़कपन।
**बालाबाला** अव्य० (फा) १-बाहर-बाहर। २-ऊपर-ऊपर।
**बालाभोला** वि० (हि) सरल। सीधासाधा।
**बालामय** पुं० (सं) बच्चों का एक रोग।
**बालायताक** वि० (फा) दूर। अलग।
**बालार्क** पुं० (सं) १-प्रातःकाल का सूर्य। २-कन्याराशि में स्थित सूर्य।
**बालावस्था** स्त्री० (सं) बचपन।
**बालि** पुं० (सं) दे० 'बाली'। स्त्री० (हि) मंजरी।
**बालिका** स्त्री० (सं) १-कन्या। छोटी लड़की। २-पुत्री बेटी। ३-कान की बाली। ४-बालू।
**बालिका दुर्व्यवहार** पुं० (सं) बालिका के साथ अनुचित व्यवहार करना। (एब्यूज ऑफ फीमेल चाइल्ड)
**बालिका विद्यालय** पुं० (सं) लड़कियों की पाठशाला
**बालिकुमार** पुं० (सं) बालि नामक वानरराज का पुत्र अंगद।

बालिग वि० (अ) वयस्क जो बाल्यावस्था पार करके युवा हो चुका हो।
बालिगा स्त्री० (अ) चौदह या पन्द्रह वर्ष की उम्र की लड़की।
बालिश वि० (सं) अबोध। अज्ञान। मूर्ख। पुं० १-शिशु। २-मूर्ख, अबोध व्यक्ति। स्त्री० तकिया।
बालिश्त पुं०(फा) अंगूठे से कनिष्का तक की लम्बाई बत्ता।
बालिश्य पुं० (सं) १-बाल्यावस्था। बचपन। २-बड़े होने पर भी बच्चों की तरह कम समझ होना। (एमेन्शिया)।
बालिस वि० (हि) दे० 'बालिश'।
बालिहंता पुं० (सं) श्रीराम।
बाली स्त्री० (हि) १-कान में पहनने का एक आभूषण २-गेहूँ, जौ आदि पौधों का अग्रभाग जिस पर दाने उठे होते हैं। ३-खेत पर काम करने वालों को मजदूरी के बदले दिया जाने वाला अन्न। ४-सुग्रीव का बड़ा भाई।
बालीकुमार पुं० (सं) अंगद।
बालुका स्त्री० (सं) १-रेत। बालू। २-ककड़ी।
बालू पुं० (हि) रेणुका। रेत।
बालूदानी स्त्री० (हि) स्याही सुखाने के लिए बालू रखने की डिबिया।
बालूशाही स्त्री० (हि) एक प्रकार की मैदा की मिठाई
बालेंदु पुं० (सं) दूज का चांद।
बालेय वि० (सं) १-कोमल। मुलायम। २-बलि देने योग्य। ३-बालकों के लिए हितकर। ४-बलि के वंश का। पुं० (सं) १-गदहा। खर। २-चावल।
बालोपचार पुं० (सं) बच्चों की चिकित्सा।
बाल्य पुं० (सं) १-बचपन। लड़कपन। २-बालक होने की अवस्था। वि० (सं) बालक-सम्बन्धी।
बाल्यकाल पुं० (सं) बचपन।
बाल्हक पुं० (सं) कुंकुम। केसर।
बाल्हिक पुं० (सं) दे० 'बाल्हक'।
बाल्हीक पुं० (सं) दे० 'बाल्हक'।
बाव पुं० (हि) १-वायु। २-वायु प्रकोप। बाई। अपान वायु।
बावड़ी स्त्री० (हि) १-बड़ा और चौड़ा कुआँ जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ हों। २-छोटा और गहरा तालाब।
बावन वि० (हि) पचास और दो। ५२।
बावनवीर वि० (हि) अति चतुर और शूरवीर।
बावर वि० (हि) १-पागल। बावला। २-मूर्ख।
बावरची पुं० (फा) रसोइया। भोजन बनाने वाला। (मुसल०)।
बावरचीखाना पुं०(फा) रसोई घर। पाकशाला।
बावरा वि० (हि) दे० 'बावला'।
बावरि स्त्री० (हि) दे० 'बावली'।
बावरी स्त्री० (हि) दे० 'बावली'।
बावला वि० (हि) १-पागल। २-मूर्ख। ३-जिसके वायु का प्रकोप हो।
बावलापन पुं० (हि) पागलपन। सिड़ीपन।
बावली स्त्री० (हि) दे० 'बावड़ी'।
बावेला पुं० (फा) दे० 'वावेला'।
बावाँ वि० (हि) १-बांई ओर का। २-प्रतिकूल। विरुद्ध।
बाशिंदा पुं० (फा) निवासी। रहने वाला।
बाष्प पुं० (सं) १-आंसू। २-भाप। ३-लोहा।
बाष्पकंठ वि० (सं) जिसका गला भर आया हो।
बाष्पमोचन पुं० (सं) रोना। आंसू बहाना।
बाष्पसलिल पुं० (सं) अश्रुजल। आंसू।
बाष्पांबु पुं० (सं) अश्रुजल।
बासंतिक वि० (सं) १-वसंतऋतु-सम्बन्धी। २-वसंत में होने वाला।
बास पुं० (हि) १-रहने का स्थान। निवास। २-वस्त्र। पोशाक। ३-गंध। महक। ४-दिन। ५-आग।
बासकसज्जा स्त्री० (सं) वह नायिका जो पति या नायक के लिए क्रीड़ा की सामग्री एकत्रित करती हो।
बासठ वि० (हि) साठ और दो।
बासन पुं० (हि) बरतन। भांडा।
बासनबारा पुं० (हि) सुगंधित करने वाला।
बासना स्त्री० (हि) १-इच्छा। चाह। २-गंध। क्रि० (हि) सुगंधित करना। महकाना।
बासफूल पुं० (हि) १-एक प्रकार का धान। २-इस धान का चावल।
बासमती पुं० (हि) एक प्रकार का सुगंधित बढ़िया चावल जो उबालने पर बहुत बढ़ जाता है।
बासर पुं० (हि) दे० 'बासर'।
बासव पुं० (हि) इन्द्र।
बाससी पुं० (सं) वस्त्र। कपड़ा।
बासा पुं० (सं) १-भोजनालय। २-एक प्रकार की घास। ३-निवास स्थान। पुं० (देश०) १-एक प्रकार का पक्षी। २-अडूसा।
बासिग पुं० (हि) एक नाग का नाम।
बासित वि० (हि) सुगंधित किया हुआ।
बासी वि० (हि) १-देर का पका हुआ। २-कुछ समय का रखा हुआ ३-सूखा या कुम्हलाया हुआ। ४-रहने वाला।
बासी-ईद स्त्री० (हि) ईद का दूसरा दिन।
बासी-तिवासी वि० (हि) बहुत दिनों का।
बासीमुंह क्रि० (हि) सुबह जिसने कुछ खाया न हो।
बाह पुं० (हि) १-खेत के जोतने की क्रिया। २-दे० 'बांह'।

**बाहक** पुं० (हि) दे० 'वाहक'।
**बाहकी** स्त्री० (हि) पालकी ढोने का काम करने वाली कहारिन।
**बाहन** पुं० (हि) दे० 'वाहन'।
**बाहना** क्रि० (हि) १-ढोना। लादना। २-चलाना। ३-गाड़ी आदि हांकना। ४-बहाना। ५-खेत जोतना। ६-बाल बहाना। ७-धारण करना।
**बाहनी** स्त्री० (हि) १-सेना। फौज। २-नदी।
**बाहर** अव्य० (हि) १-किसी निश्चित या कल्पित सीमा से अलग अथवा निकला हुआ। २-दूर। पृथक्। ३-बगैर। सिवा। ४-परे।
**बाहरजामी** पुं० (हि) ईश्वर का सगुण रूप।
**बाहर-बाहर** अव्य० (हि) १-दूर-दूर। २-ऊपर-ऊपर
**बाहर-भीतर** अव्य० (हि) अन्दर और बाहर।
**बाहरवाली** स्त्री० (हि) भंगिन।
**बाहरी** वि०(हि) १-बाहर का। २- बाहर वाला। ३-पराया। ४- ऊपरी।
**बाहाँजोरी** अव्य० (हि) भुजा से भुजा या हाथ से हाथ मिलाकर।
**बाहिज** अव्य० (हि) ऊपर से। बाहर से।
**बाहिनी** स्त्री० (हि) १-सेना। फौज। २-नदी। ३-सवारी।
**बाहिर** अव्य० (हि) बाहर।
**बाहु** स्त्री० (सं) भुजा। हाथ। बांह।
**बाहुज** पुं० (सं) १-क्षत्रिय। २-तोता।
**बाहुत्राण** पुं० (सं) एक प्रकार का दस्ताना जो युद्ध के समय पहना जाता है।
**बाहुदंड** पुं० (सं) भुजदंड।
**बाहुदंती** पुं० (सं) इन्द्र।
**बाहुदा** स्त्री० (सं) १-महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम। २-परीक्षित की पत्नी का नाम।
**बाहुपाश** पुं० (सं) १-बाहु के फंदे में। २-आलिंगन करते समय बाहुओं की मुद्रा।
**बाहुपार्श्वता** स्त्री० (सं) बहुमुखी होने का भाव। (मल्टीलेटरिज्म)।
**बाहुपार्श्व व्यापार संविदा** स्त्री० (सं) दूसरे राष्ट्रों के साथ व्यापार सम्बन्धी किए गये बहुमुखी समझौते (मल्टीलेटरल ट्रेड एग्रीमेन्ट)।
**बाहुप्रलम्ब** वि० (सं) लम्बी भुजाओं वाला।
**बाहुबल** पुं० (सं) १-शारीरिक शक्ति। २-पराक्रम। बहादुरी।
**बाहुभूषण** पुं० (सं) बांह पर पहनने का आभूषण।
**बाहुभूषा** स्त्री० (सं) दे० 'बाहुभूषण'।
**बाहुभूषा** स्त्री० (सं) दे० 'बाहुभूषण'।
**बाहुमूल** पुं० (सं) कंधे और बांह के बीच का जोड़।
**बाहुयुद्ध** पुं० (सं) कुश्ती। मल्लयुद्ध।
**बाहुरना** क्रि० (हि) दे० 'बहुरना'। लौटाना।
**बाहुलता** स्त्री० (सं) लता के समान कोमल बाहु।
**बाहुल्य** पुं० (सं) १-बहुतायत। अधिकता। (मल्टीफेरियनस)। २-व्यर्थता।
**बाहुहजार** पुं० (सं) दे० 'सहस्रबाहु'।
**बाह्य** अव्य०(हि) बाहर। परे। वि० बाहर का। बाहरी (आउटडोर, एक्सटरनल)।
**बाह्याचरण** पुं० (सं) दिखावा। आडंबर। ढकोसला।
**बाह्याभित्ति** स्त्री०(सं) बाहर की दीवार। (एक्सटर्नल-वॉल)।
**बाह्यमितव्ययिता** स्त्री० (सं) बाहरी मितव्ययिता। (एक्सटर्नल इकोनोमी)।
**बाह्यरति** स्त्री० (सं) आलिंगन आदि।
**बाह्यरोगी** पुं० (सं) दे० 'बहिर्वासी रोगी'।
**बाह्यस्वरूप** पुं०(सं) बाहरी रूप।(एक्सटर्नल फीचर्स)
**बिंजन** पुं० (हि) दे० 'व्यंजन'।
**बिंद** पुं० (हि) १-पानी की बूँद। २-दोनों भौंहों के बीच का स्थान। ३-बिन्दी। माथे का तिलक।
**बिंदा** पुं० (हि) १-माथे पर का बड़ा और गोल टीका २-इस तरह का कोई चिह्न। स्त्री० १-शून्य। बिंदु। सिफर। २-माथे पर की छोटी गोल टीकी। ३-इस प्रकार का कोई चिह्न।
**बिंदु** पुं० (सं) १-बूँद। शून्य। सिफर। २-दे०'बिंदु'
**बिंदुरी** स्त्री० (हि) बिंदी।
**बिंदुली** स्त्री० (हि) बिंदी।
**बिंध** पुं०(हि) दे० 'विन्ध्याचल'।
**बिंधना** क्रि० (हि) १-बींधा या छेदा जाना। २-उलझना। फंसना।
**बिंब** पुं० (सं) १-प्रतिबिंब। अक्स। छाया। २-प्रतिमूर्ति। ३- सूर्य या चन्द्रमा का मंडल। ४-गिरगिट। ५-सूर्य। ६-आभास। झलक। ७-बाँबी।
**बिंबक** पुं० (सं) १-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल। २-सांचा। ३-कुँदरू।
**बिंबफल** पुं० (सं) कुँदरू।
**बिंबा** पुं० (सं) १-कुँदरू फल। २-प्रतिछाया। ३-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल।
**बिंबी** स्त्री० (सं) कुँदरू की लता।
**बिंबित** वि० (सं) प्रतिबिंबित।
**बिंबोष्ठ** वि० (सं) कुँदरू की तरह लाल होंठ वाला।
**बिंबौष्ठ** वि० (सं) दे० 'बिंबोष्ठ'।
**बि** वि०(हि) दो (संख्या)।
**बिअ** वि० (हि) दो।
**बिआज** पुं० (हि) सूद। ब्याज।
**बिआध** पुं० (हि) व्याध।
**बिआधि** स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
**बिआना** क्रि० (हि) बच्चा देना। ब्याना। (पशु)।
**बिआहना** क्रि० (हि) विवाह करना।
**बिकट** वि० (हि) दे० 'विकट'।

**बिकना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु का मोल लेकर बेचा जाना। २-बिक्री होना।
**बिकरम** पु० (हि) दे० 'विक्रमादित्य'।
**बिकरार** वि०(हि) १-व्याकुल। विकल। बेचैन। २-कठिन। भयानक।
**बिकराल** वि० (हि) दे० 'विकराल'।
**बिकल** वि० (हि) १-व्याकुल। घबराया हुआ। २-बेचैन।
**बिकलाई** स्त्री० (हि) व्याकुलता। बेचैनी।
**बिकलाना** क्रि० (हि) व्याकुल होना या करना।
**बिकवाना** क्रि० (हि) दूसरे को बेचने में प्रवृत्त करना
**बिकसना** क्रि० (हि) १-विकसित होना। २-प्रसन्न होना।
**बिकसाना** क्रि० (हि) १-विकसित करना। २-प्रसन्न करना।
**बिकाऊ** वि० (हि) जो बेचा जाने वाला हो।
**बिकाना** क्रि० (हि) दे० 'बिकना'।
**बिकार** पु० (हि) दे० 'विकार'।
**बिकारी** वि० (हि) १-विकृत रूप वाला। २-हानिकारक। स्त्री० रुपयों या मन सेरों आदि का मान सूचित करने के लिए लगाई जाने वाली टेढ़ी पाई, जैसे—।) ऽ।
**बिकास** पु० (हि) दे० 'विकास'।
**बिकासना** क्रि० (हि) विकसित करना। खिलाना। (फूल)।
**बिकुंठ** पु० (हि) बैकुंठ।
**बिक्ख** पु० (हि) दे० 'विष'।
**बिक्रम** पु० (हि) दे० 'विक्रम'।
**बिक्रमी** वि०(हि) दे० 'विक्रमी'।
**बिक्री** स्त्री० (हि) १-विक्रय। २-बेचने से प्राप्त होने वाला धन।
**बिक्री-कर** पु० (हि) वह राजकीय कर जो ग्राहकों से उनके हाथ बेची हुई वस्तुओं पर लिया जाता है। (सेल्स टैक्स)।
**बिख** पु० (हि) दे० 'विष'।
**बिखम** वि० (हि) दे० 'विषम'।
**बिखय** अव्य० (हि) सम्बन्ध में। विषय में।
**बिखरना** क्रि० (हि) छितराना। तितर-बितर होना।
**बिखराना** क्रि०(हि) इधर-उधर छितराना।
**बिखाद** पु० (हि) दे० 'विषाद'।
**बिखान** पु० (हि) दे० 'विषाण'।
**बिखोला** वि० (हि) दे० 'विषैला'।
**बिखै** अव्य० (हि) दे० 'विखय'।
**बिखेरना** क्रि० (हि) इधर-उधर फैलाना। छितराना।
**बिगंध** वि० (हि) दुर्गंध। बदबू।
**बिग** पु० (हि) भेड़िया।
**बिगड़ना** क्रि० (हि) १-खराब होना। २-बुरी दशा में प्राप्त होना। ३-चाल चलन अच्छा न होना। ४-क्रुद्ध होना। ५-वैमनस्य होना। ६-व्यर्थ खर्च होना। ७-अधिकार से बाहर हो जाना। ८-गलना। सड़ना।
**बिगड़ैल** वि० (हि) १-क्रोधी स्वभाव का। २-हठी। जिद्दी। ३-बुरे चालचलन वाला।
**बिगर** अव्य० (हि) दे० 'बगैर'।
**बिगरना** क्रि० (हि) दे० 'बिगड़ना'।
**बिगराइल** वि० (हि) दे० 'बिगड़ैल'।
**बिगरायल** वि० (हि) दे० 'बिगड़ैल'।
**बिगरैल** वि० (हि) दे० 'बिगड़ैल'।
**बिगलित** वि०(हि) दे० 'विगलित'।
**बिगसना** क्रि० (हि) दे० 'विकसना'।
**बिगसाना** क्रि० (हि) दे० 'विकसाना'।
**बिगाड़** पु० (हि) १-बिगाड़ने की क्रिया या भाव। २-दोष। खराबी। ३-वैमनस्य।
**बिगाड़ना** क्रि० (हि) १-स्वाभाविक गुण या रूप में विकार उत्पन्न कर देना। २-बुरी दशा में लाना। ३-कुमार्ग में लगाना। ४-सतीत्व नष्ट करना। ५-बुरी आदत लगाना। ६-व्यर्थ खर्च करना। ७-बहकाना।
**बिगाना** वि० (हि) दे० 'बेगाना'।
**बिगार** पु० (हि) दे० 'बिगाड़'। स्त्री० (हि) दे० 'बेगार'।
**बिगारि** स्त्री० (हि) दे० 'बेगारी'।
**बिगारी** स्त्री० (हि) दे० 'बेगारी'।
**बिगास** पु० (हि) दे० 'बिकास'।
**बिगासना** क्रि० (हि) विकसित करना। खिलाना।
**बिगिर** अव्य० (हि) दे० 'बगैर'।
**बिगुन** वि० (हि) गुणहीन। जिसमें कोई गुण न हो।
**बिगुर** वि० (हि) जिसने किसी गुरु से शिक्षा न पाई हो। निगुरा।
**बिगुरचन** स्त्री० (हि) 'बिगूचन'।
**बिगुरदा** पु० (देश०) प्राचीन काल का एक अस्त्र।
**बिगुल** पु० (अ) एक प्रकार की तुरही जो सेना एकत्रित करने के लिए बजाई जाती है।
**बिगूचन** स्त्री० (हि) १-असमंजस। २-कठिनता।
**बिगूचना** क्रि० (हि) १-असमंजस में पड़ना। २-पकड़ा जाना। दबाया जाना। ३-दबोचना।
**बिगूतना** क्रि० (हि) दे० 'बिगूचना'।
**बिगोना** क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-छिपाना। ३-तंग करना। ४-बहकाना। ५-बिताना।
**बिग्यान** पु० (हि) दे० 'विज्ञान'।
**बिग्रह** पु० (हि) दे० 'विग्रह'।
**बिघटन** पु० (हि) दे० 'विघटन'।
**बिघटना** क्रि० (हि) १-विघटित करना। विनष्ट करना। २-बिगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।

**बिघन** पुं० (हि) १-बाधा। विघ्न। २-हथौड़ा।

**बिघनहरन** वि० (हि) विघ्न या बाधा को दूर करने वाला। पुं० (हि) गणेशजी।

**बिच** अव्य० (हि) दे० 'बीच'।

**बिचकना** क्रि० (हि) १-(मुख का) टेढ़ा होना। २-भड़कना। चौंकना।

**बिचकाना** क्रि० (हि) १-(मुँह) चिढ़ाना। २-मुँह बनाना। भड़काना। चौंकाना।

**बिचच्छन** वि० (हि) दे० 'विचक्षण'।

**बिचरना** क्रि० (हि) १-घूमना-फिरना। २-पर्यटन करना। यात्रा करना।

**बिचलना** क्रि० (हि) १-विचलित होना। २-मुकरना। ३-साहस छोड़ना।

**बिचला** वि० (हि) जो बीच में हो। बीच वाला।

**बिचलाना** क्रि० (हि) १-विचलित करना। डगमगाना। २-तितरबितर करना।

**बिचवई** पुं० (हि) बीच में झगड़ा निपटाने वाला। मध्यस्थ। स्त्री० (हि) मध्यस्थता।

**बिचवान** पुं० (हि) मध्यस्थ।

**बिचवानी** पुं० (हि) मध्यस्थ।

**बिचहुत** पुं० (हि) १-अन्तर। फर्क। २-दुविधा। सन्देह।

**बिचार** पुं० (हि) विचार। इरादा।

**बिचारना** क्रि० (हि) १-विचार करना। सोचना। २-पूछना।

**बिचारमान** वि०(हि)१-विचारने योग्य। २-बुद्धिमान

**बिचारा** वि० (हि) दे० 'बेचारा'।

**बिचारी** पुं० (हि) विचार करने वाला।

**बिचाल** पुं० (हि) १-अलग करना। २-अन्तर। फर्क

**बिचेत** वि० (हि) १-बेहोश। मूर्छित। २-बदहवास।

**बिचौंहाँ** वि० (हि) बीच का।

**बिच्छित्ति** स्त्री० (हि) दे० 'विच्छित्ति'।

**बिच्छी** स्त्री० (हि) दे० बिच्छू।

**बिच्छू** पुं० (हि) १-एक छोटा जहरीला जानवर जिसके डंक में विष होता है। २-एक प्रकार की घास जिसके स्पर्श से जलन होती है।

**बिच्छेप** पुं० (हि) दे० 'विक्षेप'।

**बिछना** क्रि० (हि) १-बिछाया या फैलाया जाना। २-छितराया जाना। ३-भूमि पर गिराना।

**बिछलन** स्त्री० (हि) फिसलन।

**बिछलना** क्रि० (हि) फिसलना।

**बिछलाना** क्रि० (हि) १-फिसलना। २-डगमगाना।

**बिछवाना** क्रि० (हि) दूसरे को बिछाने में प्रवृत्त करना

**बिछाना** क्रि० (हि) १-बिस्तर, कपड़ा आदि जमीन आदि पर दूर तक फैलाना। २-बिखेरना। ३-मारकर गिरा देना।

**बिछायत** स्त्री० (हि) बिछौना।

**बिछावन** पुं० (हि) दे० 'बिछौना'।

**बिछिप्त** वि० (हि) दे० 'विक्षिप्त'।

**बिछिया** स्त्री० (हि) १-पैर की उँगलियों में पहनने का गहना।

**बिछुआ** पुं० (हि) १-बिछिया। २-एक प्रकार की करधनी।

**बिछुड़न** स्त्री०(हि)१-बिछुड़ने का भाव। २-वियोग। विरह।

**बिछुड़ना** क्रि० (हि) १-अलग या जुदा होना। २-वियोग होना।

**बिछुरंता** पुं० (हि) बिछुड़ने वाला।

**बिछुरना** क्रि० (हि) दे० 'बिछुड़ना'।

**बिछुरनि** स्त्री० (हि) दे० 'बिछुड़न'।

**बिछुवा** पुं० (हि) दे० 'बिछुआ'।

**बिछूना** वि० (हि) जो बिछुड़ गया हो।

**बिछोई** वि० (हि) दे० 'बिछोही'।

**बिछोड़ा** पुं० (हि) वियोग। विरह। जुदाई।

**बिछोही** वि० (हि) बिछुड़ा हुआ।

**बिछौना** पुं० (हि) बिस्तर। वह कपड़े जो सोने या बैठने के लिए बिछाये जाते हैं। बिछावन।

**बिजन** पुं० (हि) छोटा पंखा। वि० दे० 'विजन'।

**बिजना** पुं० (हि) पंखा।

**बिजय** स्त्री० (हि) दे० 'विजय'।

**बिजयघंट** पुं० (हि) मंदिरों में लटकाने का घण्टा।

**बिजयी** वि० (हि) दे० 'विजयी'

**बिजली** स्त्री० (हि) १-पदार्थ के अणुओं के अलग होने से उत्पन्न शक्ति जो रासायनिक क्रिया या आकर्षण शक्ति विशेष से उत्पन्न होती है। विद्युत। २-आकाश में बादलों की रगड़ से उत्पन्न सहसा दिखाई देने वाला प्रकाश। चपला। (इलेक्ट्रिसिटी)। ३-आम के भीतर की गुठली। ४-एक आभूषण। वि० १-अतिशय चंचल। २-चमकीला।

**बिजलीघर** पुं० (हि) वह स्थान जहां से आसपास स्थानों में बिजली पहुँचाई जाती है। (पावर-हाउस)

**बिजहन** वि० (हि) जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

**बिजाती** स्त्री०(हि) १-दूसरी जाति का। २-जातिच्युत ३-दूसरी तरह का।

**बिजान** वि० (हि) अनजाना।

**बिजायठ** पुं० (हि) भुजा पर पहनने का एक आभूषण।

**बिजुरी** स्त्री० (हि) दे० 'बिजली'।

**बिजूका** पुं० (देश) १-पक्षियों को डराने के लिये खेत में टँगी उलटी हांडी या इस प्रकार की कोई वस्तु। २-छली। धोखा।

**बिजूखा** पुं० (देश) 'बिजूका'।

**बिजै** स्त्री० (हि) जीत। विजय।

**बिजोग** पुं०(हि) दे० 'वियोग'।
**बिजोना** क्रि० (हि) देख रेख करना। अच्छी तरह देखना।
**बिजोरा** पुं० (हि) दे० 'बिजौरा'।
**बिजौरा** पुं० (हि) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसके फल नारंगी के आकार के होते है।
**बिजौरी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की बड़ी।
**बिज्जु** स्त्री० (हि) दे० 'बिजली'।
**बिज्जुपात** पुं०(हि) बिजली का गिरना।
**बिज्जुल** पुं० (हि) दे०'छिलका'। स्त्री०(हि) बिजली।
**बिज्जू** पुं० (देश) बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जानवर जो कबरों में से मृत शरीर निकाल कर खाता है।
**बिझकना** क्रि०(हि) दे० 'बिझुकना'।
**बिझुकना** क्रि० (हि) १-भड़कना। २-डरना। भयभीत होना। ३-तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना।
**बिझुका** पुं०(देश) धोखा। कपट।
**बिझुकाना** क्रि० (हि) १-भड़काना। २-डराना।
**बिट** पुं० (हि) १-साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में पूर्ण हो। २-बीट। पक्षियों की विष्ठा। ३-नीच। वेश्यागामी।
**बिटप** पुं० (हि) १-पेड़। २-वृक्ष की नई डाल। ३-झाड़ी।
**बिटपी** पुं० (हि) दे० 'विटपी'।
**बिटरना** क्रि० (हि) १-घंघोला जाना। २-गंदा होना।
**बिटारना** क्रि० (हि) घंघोल कर गन्दा करना।
**बिटिनिया** स्त्री० (हि) दे० 'बेटी'।
**बिटिया** स्त्री० (हि) छोटी लड़की। बच्ची।
**बिटौरा** पुं० (हि) उपलों का ढेर।
**बिट्ठल** पुं० (हि) १-विष्णु का एक नाम। २-शोलापुर में पंढरपुर में स्थित एक देवमूर्ति।
**बिठलाना** क्रि० (हि) दे० 'बिठाना'।
**बिठाना** क्रि० (हि) बैठाना।
**बिडंब** पुं० (हि) दिखावा। आडम्बर।
**बिडंबना** स्त्री० (हि) दे० 'विडंबना'।
**बिड** पुं० (हि) १-विष्ठा। बीट। २-एक प्रकार का नमक।
**बिडई** स्त्री० (हि) गेंडुरी।
**बिडर** वि० (हि) १-बिखरा या छितराया हुआ। २-अलग-अलग। ३-निडर। ढीठ।
**बिडरना** क्रि० (हि) १-बिखरना। २-भय से बिदकना (पशुओं का) ३-नष्ट करना।
**बिडराना** क्रि० (हि) १-इधर-उधर करना। २-भगाना।
**बिडवना** क्रि० (हि) तोड़ना।
**बिडा** पुं० (हि) पेड़। वृक्ष।
**बिडारना** क्रि० (हि) १-डरा कर भगा देना। २-इधर उधर करना।
**बिड़ाल** पुं० (सं) १-बिलाव। बिल्ली। २-एक दैत्य जिसका नाम विड़ालाक्ष था। ३-आँख का ढेला।
**बिड़ालाक्ष** वि० (स) जिसके नेत्र बिल्ली के से हों।
**बिड़ालिका** स्त्री० (सं) १-बिल्ली। २-हरताल।
**बिड़ाली** स्त्री० (सं) १-बिल्ली। २-आँख का एक रोग
**बिड़ी** स्त्री० (हि) दे० 'बीड़ी'।
**बिड़ौजा** पुं० (सं) इन्द्र।
**बिढ़तो** पुं० (हि) कमाई। लाभ। नफा।
**बिढ़वना** क्रि० (हि) १-कमाना। २-संचित या इकट्ठा करना।
**बिढ़ाना** क्रि०(हि) दे० 'बिढ़वना'।
**बित** पुं० (हि) दे० 'वित्त'।
**बितताना** क्रि० (हि) १-बिलखना। व्याकुल होना। सताना।
**बितना** पुं० (हि) दे० 'बित्ता'।
**बितरना** क्रि० (हि) बाँटना। वितरण करना।
**बितवना** क्रि० (हि) बिताना।
**बिताना** क्रि० (हि) (समय) व्यतीत करना। गुजारना।
**बितावना** क्रि० (हि) दे० 'बिताना'।
**बितीतना** क्रि०(हि)१-बीतना। गुजरना। २-बिताना व्यतीत करना।
**बितुंड** पुं० (हि) दे० 'वितुंड'।
**बित्त** स्त्री० (हि) १-धन। २-शक्ति। सामर्थ्य। ३-ऊँचाई। ४-हैसियत। औकात।
**बित्ता** पुं० (हि) बालिश्त। अंगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की लम्बाई।
**बिथकना** क्रि० (हि) १-थकना। २-चकित होना। ३-मोहित होना।
**बिथरना** क्रि० (हि) १-छितराना। २-अलग-अलग होना।
**बिथराना** क्रि० (हि) १-छितराना। २-बिखेरना।
**बिथित** वि० (हि) दे० 'व्यथित'।
**बिथुरित** वि० (हि) बिखरा हुआ।
**बिथोरना** क्रि० (हि) दे० 'बिथराना'।
**बिदकना** क्रि० (हि) १-फटना। चिरना। २-घायल होना। ३-बिचकना।
**बिदकाना** क्रि० (हि) १-विदीर्ण करना। २-घायल करना। ३-भड़काना।
**बिदरन** स्त्री० (हि) दरार। दराज। वि० फाड़ने या चीरने वाला।
**बिदरना** क्रि० (हि) फटना या चीरा जाना।
**बिदारी** पुं० (हि) दे० 'विदारी'।
**बिदारीकंद** पुं० (हि) दे० 'विदारीकंद'।
**बिदिसा** स्त्री० (हि) दे० 'विदिशा'।
**बिदीरना** क्रि० (हि) चीरना। फाड़ना।
**बिहुराना** क्रि० (हि) धीरे-धीरे हंसना। मुस्कराना।
**बिहुरानि** स्त्री० (हि) मुस्कराहट।

**बिदूषना** क्रि० (हि) १-दोष या कलंक लगाना। २-बिगाड़ना।
**बिदेस** पुं० (हि) विदेश। परदेश।
**बिदेसी** वि० (हि) विदेशी।
**बिदोख** पु०(हि) वैर। वैमनस्य। विद्वेष।
**बिदोरना** क्रि०(हि) (मुँह या दांत) खोल कर दिखाना २-फैलाना।
**बिद्दत** स्त्री० (अ) १-खराबी। बुराई। २-कष्ट। ३-विपत्ति। ४-जुल्म। ५-दुर्दशा।
**बिद्ध** वि० (हि) बिंधा हुआ।
**बिधंसना** क्रि० (हि) नष्ट करना।
**बिध** स्त्री०(हि) दे० 'विधि'। पुं० (हि) हाथी के खाने का चारा। २-जमाखर्च का लेखा।
**बिधना** पुं० (हि) ब्रह्मा। विधाता। क्रि० (हि) १-बिंधना। २-फंसाना।
**बिधवपन** पुं० (हि) वैधव्य।
**बिधवा** वि० (हि) जिसका पति मर गया हो।
**बिधवाना** क्रि० (हि) छेद कराना।
**बिधांसना** क्रि० (हि) नष्ट करना। विध्वंस करना।
**बिधाई** पुं० (हि) 'विधायक'।
**बिधाना** क्रि० (हि) बेधा जाना।
**बिधानी** पुं०(हि) बनाने वाला। विधान करने वाला
**बिधि** स्त्री० (हि) दे० 'विधि'।
**बिधिना** पुं० (हि) ब्रह्मा।
**बिधुंतुद** पुं० (हि) दे० 'विधिंतुद'।
**बिधुंसना** क्रि० (हि) नष्ट करना। विध्वंस करना।
**बिधुर** वि० (हि) दे० 'विधुर'।
**बिन** अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
**बिनई** पुं० (हि) १-विनती करने वाला। २-नम्र।
**बिनउ** स्त्री० (हि) दे० 'विनय'।
**बिनठना** क्रि० (हि) नाश होना। बिगड़ना।
**बिनता** स्त्री० (हि) दे० 'विनता'।
**बिनति** स्त्री० (हि) दे० 'बिनती'।
**बिनती** स्त्री० (हि) प्रार्थना। निवेदन।
**बिनन** स्त्री०(हि) १-चुनने की क्रिया या भाव। चुनावट। २-कूड़ाकरकट जो किसी चीज के चुनने पर निकले।
**बिनना** क्रि० (हि) १-चुनना। २-छांट कर अलग करना। ३-दे० 'बुनना'।
**बिनय** स्त्री० (हि) दे० 'विनय'।
**बिनयना** क्रि० (हि) विनय करना। प्रार्थना करना।
**बिनवट** स्त्री० (हि) पटायनेठी का खेल।
**बिनवना** क्रि० (हि) विनय करना। प्रार्थना करना।
**बिनशना** क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-नष्ट करना।
**बिनसना** क्रि०(हि) १-नष्ट होना। २-बरबाद करना
**बिनसाना** क्रि० (हि) नष्ट या चौपट करना।
**बिना** अव्य० (हि) छोड़ कर। बगैर। स्त्री०(अ) नींव। बुनियाद।
**बिनाई** स्त्री० (हि) १-बीनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २-बुनने का भाव अथवा मजदूरी। ३-आधार।
**बिनाती** स्त्री० (हि) दे० 'बिनती'।
**बिनाना** क्रि० (हि) दे० 'बुनवाना'।
**बिनानी** वि० (हि) १-ज्ञानवान। २- अनजान। स्त्री० विवेचन। गौर।
**बिनावट** स्त्री० (हि) दे० 'बुनावट'।
**बिनास** पु० (हि) दे० 'विनाश'।
**बिनासना** क्रि० (हि) विनिष्ट या बरबाद करना।
**बिनासी** वि० (हि) विनाशी। नष्ट होने वाला।
**बिनाह** पुं० (हि) दे० 'विनाश'।
**बिनि** अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
**बिनु** अव्य० (हि) दे० 'बिना'।
**बिनूठा** वि० (हि) अनूठा।
**बिनौला** पुं० (हि) कपास के बीज।
**बिपक्ष** पुं० (हि) दे० 'विपक्ष'।
**बिपक्षी** वि० (हि) दे० 'विपक्षी'।
**बिपच्छ** पुं० (हि) शत्रु। वैरी। वि० प्रतिकूल। विमुख
**बिपच्छी** पुं० (हि) दे० 'विपक्षी'।
**बिपत** स्त्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
**बिपता** स्त्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
**बिपति** स्त्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
**बिपत्ति** स्त्री० (हि) दे० 'विपत्ति'।
**बिपथ** पुं० (हि) कुमार्ग। गलत राह।
**बिपद** स्त्री० (हि) विपत्ति। आफत। मुसीबत।
**बिपर** पुं० (हि) विप्र। ब्राह्मण।
**बिपाक** पुं० (हि) दे० 'विपाक'।
**बिपाशा** स्त्री० (हि) व्यास नदी।
**बिपासा** स्त्री० (हि) दे० 'विपाशा'।
**बिपोहना** क्रि० दे० 'विपोहना'।
**बिफर** वि०(हि) दे० 'विफल'।
**बिफरना** क्रि० (हि) १-विद्रोही होना। बागी होना। २-नाराज होना। बिगड़ना।
**बिबछना** क्रि० (हि) १-विरोध करना। २-उलझना। फंसना।
**बिबर** वि० (हि) दे० 'विविर'।
**बिबरन** वि०(हि) दे० 'विवर्ण'। पुं० दे० 'विवरण'
**बिबस** वि० (हि) दे० 'विवश'। अव्य० लाचार होकर
**बिबसाना** क्रि० (हि) विवश या लाचार होना।
**बिबहार** पु० (हि) दे० 'व्यवहार'।
**बिबाई** स्त्री० (हि) दे० 'विवाई'।
**बिबाक** स्त्री० (हि) दे० 'बेबाक'।
**बिबाकी** स्त्री० (हि) दे० 'बेबाकी'।
**बिबादना** क्रि० (हि) विवाद करना। झगड़ा करना।
**बिबाहना** क्रि० (हि) विवाह करना।

बिबि *वि०* (हि) दो।
बिब्बोक पुं०(हि) रूप या सुन्दरता के घमंड के कारण उपेक्षा।
बिभचारी *वि०* (हि) दे० 'व्यभिचारी'।
बिभाना *क्रि०* (हि) चमकना। चमकदार होना।
बिभावरी *स्त्री०* (हि) दे० 'विभावरी'।
बिभिनाना *क्रि०* (हि) प्रथक या अलग करना। अलगाना।
बिभीषक *वि०*(सं) डराने वाला। भयभीत करने वाला डरावना।
बिभीषिका *स्त्री०* (सं) दे० 'विभीषिका'।
बिभु पुं० (हि) दे० 'विभु'।
बिभौ पुं० (हि) अधिकता। ऐश्वर्य।
बिमन *वि०* (हि) १-जिसे बहुत दुःख हो। २-उदास चिंतित। *अव्य०* अनमना होकर।
बिमर्दना *क्रि०* (हि) मसलना। नाश करना।
बिमान पुं० (हि) १-वायुयान। हवाई जहाज। २-अनादर।
बिमानी *वि०* (हि) जिसे किसी प्रकार का अभिमान न हो। निरभिमान।
बिमानीकृत *वि०* (हि) १-जिसका अनादर किया गया हो। २-जिसने वायुयान बनाया हो।
बिमूढ़ *वि०* (हि) दे० 'विमूढ़'।
बिमोचना *क्रि०* (हि) १-मुक्त करना। २-छोड़ना। ३-टपकाना।
बिमोहना *क्रि०* (हि) मोहित करना। लुभाना।
बिमौट पुं० (हि) बाँबी। बाल्मीक।
बिमौटा पुं० (हि) बाँबी।
बिय *वि०* (हि) १-दो। युग्म। २-दूसरा।
बियत पुं० (हि) दे० 'आकाश'।
बिया *वि०* (हि) अन्य। अपर। दूसरा। पुं०(हि) दे० 'बीज'।
बियाज पुं० (हि) दे० 'ब्याज'।
बियाध पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
बियाधा पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
बियाधि *स्त्री०* (हि) दे० 'व्याधि'।
बियाना *क्रि०* (हि) बच्चा दे० (पशुओं के लिए)।
बियापना *क्रि०* (हि) दे० 'व्यापना'।
बियाबान पुं० (हि) १-उजाड़ जगह। २-जंगल। ३-सुनसान मैदान।
बियारी *स्त्री०* (हि) ब्यालू। रात का भोजन।
बियारू *स्त्री०* (हि) दे० 'ब्यालू'।
बियाल पुं० (हि) १-सर्प। २-शेर।
बियालू *स्त्री०* (हि) दे० 'ब्यालू'।
बियाहना *क्रि०* (हि) विवाह करना।
बियोग पुं० (हि) दे० 'वियोग'।
बिरंग *वि०* (हि) १-कई रङ्ग वाला। २-बिना रङ्ग का
बिरंचि पुं० (हि) ब्रह्मा।
बिरंजी *स्त्री०* (हि) छोटी कील। छोटा कांटा।
बिरई *स्त्री०* (हि) १-छोटा बिरवा। २-जड़ी-बूटी।
बिरकत *वि०* (हि) दे० 'विरक्त'।
बिरखभ पुं० (हि) दे० 'वृषभ'।
बिरचना *क्रि०* (हि) बनाना। रचना।
बिरछ पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
बिरछिक *स्त्री०* (हि) दे० 'वृश्चिक'।
बिरछीक *स्त्री०* (हि) दे० 'वृश्चिक'।
बिरज *वि०* (हि) निर्दोष। निर्मल।
बिरझना *क्रि०* (हि) उलझना। झगड़ना।
बिरझाना *क्रि०* (हि) क्रोधित होना।
बिरतंत पुं० (हि) दे० 'वृत्तांत'।
बिरतांत पुं० (हि) दे० 'वृत्तांत'।
बिरता पुं० (हि) सामर्थ्य। शक्ति।
बिरताना *क्रि०* (हि) बरताना। बांटना।
बिरति *स्त्री०* (हि) दे० 'विरक्ति'।
बिरथा *वि०* (हि) व्यर्थ। फजूल। निरर्थक। *अव्य०* बिना किसी कारण के।
बिरदंग पुं० (हि) दे० 'मृदंग'।
बिरद पुं० (हि) १-बड़ाई। यश। २-दे० 'विरद'।
बिरदैत *वि०* (हि) प्रसिद्ध। नामी। पु० प्रसिद्ध वीर या योद्धा।
बिरध *वि०* (हि) दे० 'वृद्ध'।
बिरधाई *स्त्री०* (हि) बुढ़ापा। वृद्धावस्था।
बिरधापन पुं० (हि) बुढ़ापा।
बिरमना *क्रि०* (हि) १-ठहरना। २-आरम्भ करना। ३-मोहित होकर कहीं रुक या फंस जाना।
बिरमाना *क्रि०* (हि) १-रोक रखना। ठहराना। २-सुस्ताना। ३-मोहित करके रोक रखना।
बिरल *वि०* (हि) दे० 'विरल'।
बिरला *वि०* (हि) कोई-कोई। इक्का-दुक्का।
बिरले *वि०* (हि) बहुत थोड़े। इनेगिने।
बिरवा पुं० (हि) १-वृक्ष। पौधा।
बिरवाई *स्त्री०* (हि) १-छोटे पौधों का समूह। २-वह स्थान जहां बहुत से छोटे पौधे हों।
बिरवाही *स्त्री०* (हि) दे० 'बिरवाई'।
बिरस *वि०* (हि) दे० 'विरस'। पुं० बिगाड़।
बिरसना *क्रि०* (हि) विलास करना। भोग करना।
बिरह पुं० (हि) दे० 'विरह'।
बिरहा पुं० (हि) १-एक प्रकार का देहाती गीत। २-विरह।
बिरहाना *क्रि०* (हि) विरह से पीड़ित होना।
बिरही पुं० (हि) दे० 'विरही'।
बिराग पुं० (हि) दे० 'विराग'।
बिरागना *क्रि०* (हि) विरक्त होना।

बिराजना क्रि० (हि) १-शोभित होना। २-बैठना। (आदरसूचक)।
बिरादर पुं० (फा) भाई। भ्राता।
बिरादरकुशी स्त्री० (फा) बन्धुवध।
बिरादरजादा पुं० (फा) भतीजा।
बिरादराना वि० (फा) भाई जैसा। भाई के अनुरूप।
बिरादरी स्त्री० (फा) १-भाईचारा। बन्धुत्व। २-एक ही जाति के लोगों का समूह।
बिरान वि० (हि) १-पराया। बेगाना। २-दूसरे का।
बिराना वि०(हि) दे० 'बिराना'। क्रि० मुँह चिढ़ाना
बिराल पुं० (हि) दे० 'बिडाल'।
बिरावना क्रि० (हि) दे० 'बिराम'।
बिरास पुं० (हि) दे० 'विलास'।
बिरासी वि० (हि) दे० 'विलासी'।
बिरिख पुं० (हि) दे० 'वृक्ष'।
बिरिछ पुं० (हि) वृक्ष।
बिरिध वि० (हि) दे० 'वृद्ध'।
बिरियाँ स्त्री० (हि) १-समय। वेला। २-बार। दफा
बिरी स्त्री० (हि) १-गठरी। २-पान का बीड़ा। ३-बीड़ी।
बिरुझना क्रि० (हि) उलझना। झगड़ना।
बिरुझाना क्रि० (हि) उलझना।
बिरुद पुं० (हि) दे० 'बिरद'।
बिरुदैत वि० (हि) दे० 'बिरदैत'।
बिरुघाई स्त्री० (हि) वृद्धावस्था।
बिरूप वि० (हि) दे० 'विरूप'।
बिरोधना क्रि० (हि) बैर या विरोध करना। द्वेष करना।
बिरोलना क्रि० (हि) दे० 'बिलोड़ना'।
बिलंद वि० (हि) दे० 'बुलंद'।
बिलंब पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
बिलंबना क्रि० (हि) १-विलंब या देर करना। २-रुकना। ठहरना।
बिलंबित वि० (हि) दे० 'विलंबित'।
बिल पुं०(सं) जमीन खोद कर बनाई हुई पतली, तंग जगह जिसमें जीव जन्तु रहते है। (अं) १-पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्त मूल्य अथवा पारिश्रमिक का ब्योरा होता है। २-किसी कानून का वह मसौदा जो विधान सभा में उपस्थित किया जाय। विधेयक।
बिलकारी पुं० (सं) चूहा।
बिलकुल अव्य० (प) १-पूरा-पूरा। सब। २-सिर से पैर तक। ३-आदि से अन्त तक।
बिलखना क्रि० (हि) १-विलाप करना। रोना। २-दुःखी होना। ३-सिकुड़ना।
बिलखाना क्रि० (हि) १-रुलाना। २-दुःखी करना। ३-बिलखाना।
बिलग वि० (हि) अलग। पृथक। पुं० अलगाव। पार्थक्य।
बिलगाना क्रि० (हि) १-अलग करना। २-अलग होना। ३-चुनना।
बिलच्छन वि० (हि) दे० 'विलक्षण'।
बिलछना क्रि० (हि) देख कर समझ लेना। ताड़ना
बिलटी स्त्री० (हि) रेल या मोटर द्वारा भेजे जाने वाले माल की रसीद जिसे दिखाने पर पाने वाले को वह माल मिलता है।
बिलनी स्त्री० (हि) १-आंख की पलक पर होने वाली एक छोटी फुंसी। गुहांजनी। २-काला भौंरा।
बिलपना क्रि० (हि) विलाप करना। रोना।
बिलफेल अव्य० (प) इसी समय। अभी।
बिलबिलाना क्रि०(हि) १-छोटे-छोटे कीड़ों का रेंगना २-व्याकुल होकर प्रलाप करना। ३-कष्ट या पीड़ा के कारण रोना या बिल्लाना। ४-भूख से बेचैन हो जाना।
बिलम पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
बिलमना क्रि० (हि) १-विलंब या देर करना। २-ठहराना। ३-प्रेम हो जाने के कारण पास रह जाना
बिलमाना क्रि० (हि) रोक रखना। अटका रखना।
बिलल्ला वि० (हि) १-जिसे कोई शऊर या ढंग न हो। २-मूर्ख। गावदी।
बिलसना क्रि० (हि) १-शोभा देना भला या अच्छा जंचना। २-भोगना।
बिलसाना क्रि० (हि) १-काम में लाना। २-दूसरे को भोगवाना।
बिलस्त पुं० (हि) बालिश्त। बित्ता।
बिलहरा पुं० (हि) पान के बीड़े रखने के बांस की तीलियों का एक छोटा डिब्बा।
बिला अव्य० (प) बिना। बगैर।
बिलाई स्त्री० (हि) १-बिल्ली। २-किवाड़ों को बन्द करने के लिए लगाई जाने वाली सिटकनी। ३-एक कांटों या अंकुसी का गुच्छा जिससे कूएँ में पड़े बरतन निकाले जाते हैं।
बिलातकल्लुफ अव्य० (प) बिना किसी संकोच के। बिना किसी रोक टोक के।
बिलाना क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-अदृश्य होना
बिलानागा अव्य० (प) प्रतिदिन। हररोज।
बिलाप पुं० (हि) दे० 'विलाप'।
बिलापना क्रि० (हि) विलाप करना। रोना।
बिलायत पुं० (हि) दे० 'विलायत'।
बिलार पुं० (हि) बिल्ला। बड़ी बिल्ली।
बिलारी स्त्री० (हि) बिल्ली।
बिलाव पुं० (हि) बिल्ली। मार्जार।
बिलावल पुं० (हि) एक सवेरे के समय गाये जाने वाला राग। स्त्री० प्रेमिका। पत्नी।

बिलास पुं० (हि) दे० 'विलास'।
बिलासना क्रि० (हि) भोग करना। बरतना।
बिलासिनी स्त्री० (हि) वेश्या।
बिलासी वि० (हि) दे० 'विलासी'।
बिलिया स्त्री० (हि) कटोरी।
बिलुठना क्रि० (हि) कष्ट या पीड़ा के कारण जमीन पर लोटना।
बिलूर पुं० (हि) दे० 'बिल्लौर'।
बिलेशय पुं०(सं) बिल में रहने वाला सांप आदि।
बिलैया स्त्री० (हि) १-बिल्ली। २-सटकनी।
बिलोकना क्रि०(हि) १-देखना। २-परीक्षा करना। जांचना।
बिलोकनि स्त्री० (हि) १-देखना। २-दृष्टि। निगाह। चितवन।
बिलोचन पुं०(हि) आंख। नेत्र।
बिलोड़ना क्रि०(हि) १-दूध आदि मथना। २-डालना। उड़ेलना।
बिलोन वि० (हि) १-बिना नमक वाला। २-भद्दा। कुरूप।
बिलोना क्रि० (हि) १-दूध आदि मथना। २-डालना। उड़ेलना। पुं० १-बिलो कर निकाली जाने वाली वस्तु। नवनीत। मक्खन। २-वह पात्र जिसमें दूध आदि बिलोया जाता है।
बिलोरना क्रि० (हि) दे० 'बिलोड़ना'।
बिलोल वि० (हि) सुन्दर। चंचल।
बिलोलना क्रि० (हि) हिलना। डोलना।
बिलोवना क्रि० (हि) दे० 'बिलोना'। पुं० वह पात्र जिसमें दूध दही बिलोया जाता है।
बिलौटा पुं० (हि) बिल्ली का बच्चा।
बिलौर पुं० (हि) दे० 'बिल्लौर'।
बिल् अव्य० (हि) द्वारा। लिए। साथ। से।
बिल्कुल अव्य० (हि) दे० 'बिल्कुल'।
बिल्फेल अव्य०(हि) दे० 'बिलफेल'।
बिल्ला पुं० (हि) १-बिलाव। मार्जार। २-कपड़े की वह पतली पट्टी जिसे चपरासी, स्वयंसेवक आदि अपनी पहचान के लिए लगाते हैं।
बिल्लाना क्रि० (हि) बिलाप करना।
बिल्ली स्त्री० (हि) १-शेर, चीते, व्याघ्र आदि की जाति का एक छोटा पशु जो मांसाहारी होता है और प्रायः घरों में रहता है। २-दरवाजे पर लगाने वाली सटकनी।
बिल्लौर पुं० (हि) १-एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर। स्फटिक। २-स्वच्छ शीशा जिसकी चूड़ियां आदि बनती हैं।
बिल्लौरी वि० (हि) १-बिल्लौर का बना हुआ। २-बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिल्व पुं० (सं) बेल का पेड़।
बिवछना क्रि० (हि) दे० 'बिवछना'।
बिवरना क्रि०(हि) १-सुलझना। २-केश सुलझाना।
बिवराना क्रि० (हि) १-बाल सुलझाना। २-बाल सुलझवाना।
बिवसाइ पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
बिवाई स्त्री०(हि) पैर के तलवे में चमड़े फटने का रोग
बिवान पुं० (हि) रथ। विमान।
बिवेचना क्रि० (हि) विवेचन करना। विचार करना।
बिशाखा स्त्री० (हि) राधा की एक सखी का नाम।
बिष पुं० (हि) दे० 'विष'।
बिषया स्त्री० (हि) विषय। वासना।
बिषान पुं० (हि) विषाण। सींग।
बिषारा वि० (हि) विषाक्त।
बिषिया स्त्री० (हि) दे० 'बिषया'।
बिसंच पुं० (हि) १-संभाल कर न रखना। २-कार्य की हानि। बाधा। ३-भय। डर।
बिसंभर पुं० (हि) दे० 'विश्वंभर'। वि० जो संभाला न जा सके।
बिसंभार वि० (हि) जिसकी सुधबुध खो गई हो। असावधान।
बिस पुं० (हि) दे० 'विष'।
बिसकरमा पुं० (हि) दे० 'विश्वकर्मा'।
बिसखपरा पुं० (हि) गोह जाति का एक [illegible] जन्तु।
बिसखापर पुं० (हि) दे० 'बिसखपरा'।
बिसखोपरा पुं० (हि) दे० 'बिसखपरा'
बिसतरना क्रि० (हि) फैलाना। विस्तर करना।
बिसतार वि० (हि) दे० 'विस्तार'।
बिसद वि० (हि) दे० 'विशद'।
बिसन पुं० (हि) दे० 'व्यसन'।
बिसनी वि०(हि)१-दे० 'व्यसनी'। २-छैला। शौकीन ३-वेश्यागामी।
बिसमउ पुं० (हि) दे० बिसमय'।
बिसमय पुं० (हि) १-आश्चर्य। विस्मय। २-गर्व। ३-सन्देह।
बिसमरना क्रि० (हि) भूलना।
बिसमव पुं० (हि) दे० 'बिसमय'।
बिसमिल्ला पुं० (हि) श्रीगणेश। आरम्भ।
बिसयक पुं० (हि) १-देश। प्रदेश। २-राज्य। रियासत।
बिसरना क्रि० (हि) भूलना। याद न रहना।
बिसरात पुं० (हि) खच्चर। अश्वतर।
बिसराना क्रि० (हि) विस्मृत करना। भुलाना।
बिसराम पुं० (हि) दे० 'विश्राम'।
बिसरामी वि० (हि) विश्राम देने वाला।
बिसरावना क्रि० (हि) दे० 'बिसराना'।
बिसवास पुं० (हि) दे० 'विश्वास'।

**बिसवासिनि** वि० (हि) १-जिस पर विश्वास न हो २-विश्वासघातिनी।
**बिसवासी** वि० (हिं) १-विश्वास करने वाला। जिस पर विश्वास हो।
**बिससना** क्रि०(हिं) १-विश्वास करना। २-वध करना ३-शरीर काटना। चीरना। फाड़ना।
**बिसहना** क्रि० (हिं) १-मोल लेना। २-जानबूझकर अपने साथ लगाना।
**बिसहर** पुं० (हि) विसधर। साँप। सर्प।
**बिसा** पुं० (हि) दे० 'बिस्वा'।
**बिसाइंध** स्त्री० (हि) दे० 'बिसायँध'।
**बिसाख** स्त्री० (हि) दे० 'विशाखा'।
**बिसात** स्त्री० (ग्र) १-हैसियत। औक़ात। २-वित्त। सामर्थ्य'। शक्ति। ४-चौपड़ या शतरंज आदि खेलने का कपड़ा।
**बिसातखाना** पुं०(ग्र) बिसाती की दुकान।
**बिसातबाना** पुं० (ग्र) वह वस्तुएँ जो बिसाती की दूकान पर मिलती हैं।(स्टेशनरी)।
**बिसाती** पुं० (ग्र) १-कपड़ा बिछा कर उस पर सौदा लगा कर बेचने वाला। २-सुई, तागा, दवात तथा शृङ्गार आदि की साधारण वस्तुएँ बेचने वाला।
**बिसाना** क्रि०(हि) १-दे० 'बसाना'। जहरबाद होना
**बिसायंध** स्त्री० (हि) सड़ी मछली जैसी दुर्गन्ध। वि० जिसमें बदबू आती हो।
**बिसारद** पुं०(हि) दे० 'विशारद'।
**बिसारना** क्रि० (हि) विस्मृत करना। भुलाना।
**बिसारा** वि०(हि) विषैला। विषाक्त। विषभरा।
**बिसास** पुं०(हिं) दे० 'विश्वास'।
**बिसासिन** स्त्री० (हि) जिस पर विश्वास न किया जा सके। विश्वासघातिनी।
**बिसासिनी** (स्त्री)हि० विश्वासघातिनी।
**बिसासी** वि० (हि) विश्वासघाती। धोखेबाज।
**बिसाहना** क्रि० (हि) १-खरीदना। मोल लेना। २-जानबूझकर पीछे लगाना। पुं० (हि) १-खरीदी हुई वस्तु। सौदा। २-मोल लेने की क्रिया।
**बिसाहनी** स्त्री०(हि) मोल ली जानेवाली वस्तु। सौदा।
**बिसाहा** पुं० (हि) सौदा।
**बिसियर** वि०(हि) विषैला। ज़हरीला।
**बिसुरना** क्रि०(हि) दे० 'बिसूरना'
**बिसूरना** क्रि० (हि) १-मन दुखी करना। सिसक कर रोना। स्त्री०(हि) चिन्ता। सोच। फ़िक्र।
**बिसेख** वि० (हि) दे०'विशेष'।
**बिसेखता** स्त्री०(हि) दे०'विशेषता'।
**बिसेखना** क्रि० (हि) विशेष प्रकार से वर्णन करना।
**बिसेसर** पुं० (हि) दे०'विश्वेश्वर'।
**बिसैंधा** वि०(हि) जिसमें बिसायँध या बदबू आती है
**बिसोक** वि० (हि) शोकरहित।
**बिस्कुट** पुं० (हि) खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई एक प्रकार की टिकिया।
**बिस्तर** पुं० (फा) बिछाने के कपड़े। बिछौना।
**बिस्तरना** क्रि० (हि) १-फैलाना। २-फैलना।
**तरा** पुं० (हि) दे० 'बिस्तर'।
**बिस्तार** पुं०(हि) दे० 'विस्तार'।
**बिस्तारना** क्रि० (हि) फैलाना। विस्तृत करना।
**बिस्तुइया** स्त्री० (हि) छिपकली।
**बिस्मिल्लाह** स्त्री० (ग्र) श्रीगणेश। आरम्भ।
**बिस्राम** पुं० (हि) दे० 'विश्राम'।
**बिस्वा** पुं० (हि) एक बीघे का बीसवां भाग।
**बिस्वास** पुं० (हि) दे० 'विश्वास'।
**बिहँग** पुं० (हि) दे० 'विहंग'।
**बिहंडना** क्रि०.(हि) १-तोड़ना। नष्ट करना। २-मार डालना।
**बिहँसना** क्रि० (हि) मुस्कराना।
**बिहँसाना** क्रि० (हि) १-हँसाना। हर्षित करना। २-बिहँसना। खिलना।
**बिहँसौहा** वि० (हि) हँसता हुआ।
**बिह** वि० (फा) दे० 'बेह'।
**बिहग** पुं० (हि) दे० 'विहग'।
**बिहद** वि० (हि) दे० 'बेहद'।
**बिहवल** वि० (हि) दे० 'विह्वल'।
**बिहरना** क्रि० (हि) १-घूमना-फिरना। सैर करना। २-फटना। विदीर्ण होना।
**बिहराना** क्रि० (हि) फटना।
**बिहान** पुं० (हि) १-सवेरा। प्रातःकाल। २-आने वाला दिन। कल।
**बिहाना** क्रि०(हि) १-छोड़ना। त्यागना। २-गुजरना बीतना।
**बिहार** पुं० (हि) दे० 'विहार'।
**बिहारना** क्रि० (हि) विहार करना। क्रीड़ा करना।
**बिहारी** वि० (हि) दे० 'विहारी'। पुं० बिहार का निवासी।
**बिहाल** वि० (हि) दे० 'बेहाल'।
**बिहि** पुं० (हि) ब्रह्मा। विधि।
**बिहिश्त** पुं० (फा) स्वर्ग। बैकुंठ। (मुसल०)।
**बिहिश्ती** पुं० (फा) १-भिश्ती। २-बिहिश्त का रहने वाला।
**बिही** पुं० (फा) १-एक वृक्ष विशेष जिसके फल अमरूद की तरह होते हैं। २-इस पेड़ के फल (मेवा)। ३-अमरूद।
**बिहीदाना** पुं० (फा) बिही का बीज।
**बिहीन** वि० (हि) दे० 'विहीन'।
**बिहुरना** क्रि० (हि) १-दे० 'बिछुरना'। २-छोड़ना।
**बिहून** वि० (हि) दे० 'विहीन'।
**बिहोरना** क्रि० (हिं) बिछुड़ना।

बींदना क्रि० (हि) १-अनुमान करना। जांचना। २-चुभाना। बींधना।
बींधना क्रि० (हि) १-फंसना। उलझना। २-छेदना। बेधना।
बी स्त्री० (हि) १-बीबी। २-प्रतिष्ठित महिला।
बीका वि० (हि) टेढ़ा।
बीख पुं० (हि) १-पद। क़दम। २-दे० 'विष'।
बीग पुं० (हि) भेड़िया।
बीघा पुं० (हि) भूमि, खेत का नाप जो बीस बिस्वे का होता है।
बीच पुं० (हि) १-किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य २-बीच का अन्तर। अवकाश। ३-अवसर। ४-अन्तर। भेद।
बीचि स्त्री० (हि) दे० 'वीचि'।
बीछना क्रि० (हि) चुनना। छांटना।
बीछी स्त्री० (हि) बिच्छू।
बीछू स्त्री० (हि) बिच्छू।
बीज पुं० (सं) १-फूल या अनाज के वह दाने या फल की वह गुठली जिनसे वैसे ही नये पौधे उत्पन्न होते हैं। २- प्रधान कारण। ३-वीर्य। ४-हेतु। ५-मंत्र का प्रधान अंग। ६-बीजगणित। ७-अक्षर या ध्वनि।
बीजक पुं० (सं) १-सूची। तालिका। २-वह सूची जिसमें माल का ब्योरा लिखा होता है। (इनवोइस)। ३-बिजौरा नीबू।
बीजकोष पुं० (सं) फूलों का वह भाग जिसमें बीज भरा रहता है।
बीजगणित पुं०(सं) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मान कर अज्ञात संख्याएं मालूम की जाती है। (एल्जबरा)।
बीजगर्भ पुं० (सं) परवल।
बीजन पुं० (हि) पंखा। बेना।
बीजना क्रि० (हि) दे० 'बोना'।
बीजरी स्त्री० (हि) दे० 'बिजली'।
बीजल वि० (सं) वह जिसमें बीज हो।
बीजांकुर पुं० (सं) अंकुर।
बीजांकुरन्याय पुं०(सं) वह यथार्थ कि बीज से अंकुर और अंकुर से बीज होता है और यही पदार्थों का नित्य प्रवाह है।
बीजा पुं० (हि) बीज। वि० (हि) अन्य। दूसरा।
बीजाक्षर पुं० (स) तंत्र में किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर।
बीजी वि० (हि) १-बीज विषयक। २-बीज वाला। स्त्री० १-गिरी। २-गुठली। ३-मींगी। पुं० १-पिता २-सूर्य।
बीजु स्त्री० (हि) बिजली।
बीजुपात पुं० (हि) बिजली का गिरना।
बीजुरी स्त्री० (हि) बिजली।
बीजू वि० (हि) बीज से उत्पन्न। 'कलमी' का उलटा पुं० दे० 'बिज्जू'।
बीझ वि० (हि) दे० 'बीझा'।
बीझना क्रि० (हि) लिप्त होना। फंसना।
बीझा वि० (हि) १-निर्जन। एकान्त (स्थान)। २-घना।
बीट स्त्री० (हि) चिड़ियों या पक्षियों की विष्ठा।
बीड़ स्त्री० (हि) एक के ऊपर एक रखे हुए सिक्कों की गड्डी।
बीड़ा पुं० (हि) १-तलवार की म्यान के पास बँधी रहने वाली डोरी। २-पान की गिलौरी।
बीड़ी स्त्री० (हि) १-पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिससे चुरुट आदि के समान सुलगा कर पिया जाता है। २-छोटा बीड़ा। ३-गठरी। ४-एक प्रकार की नाव।
बीतना क्रि० (हि) १-समय गुजरना। २-दूर होना। ३-घटित होना। घटाना। पड़ना।
बीता पुं० (हि) दे० 'बित्ता'।
बीती स्त्री० (हि) किसी पर बीती हुई बात। घटना। वृतांत।
बीथि स्त्री० (हि) दे० 'वीथी'।
बीथित वि० (हि) दे० 'व्यथित'।
बीथी स्त्री० (हि) दे० 'वीथी'।
बीधना क्रि० (हि) दे० 'बींधना'।
बीन स्त्री० (हि) १-वीणा। २-सपेरों के बजाने का तूमड़ा।
बीनकार पुं०(हि) १-वीणावादक। २-बीन बजानेवाला।
बीनना क्रि० (हि) १-चुनना। २-छांटना। अलग करना। ३-बींधना। ४-बुनना।
बीफै पुं० (हि) बृहस्पतिवार।
बीबी स्त्री० (फा) १-कुलीन स्त्री। कुलवधू। २-पत्नी ३-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ४-अविवाहित लड़की। कन्या (आगरा)।
बीभत्स वि० (सं) १-घृणित। २-क्रूर। ३-पापी। पुं० काव्य के नवरसों में से सातवां जिसमें रक्त, मांस आदि का वर्णन होता है।
बीमा पुं० (फा) किसी प्रकार की हानि (विशेषतः आर्थिक) होने की अवस्था में कुछ रकम देने का उत्तरदायित्व जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में लिया जाता है। आगोप। (इन्श्योरेंस)।
बीमादार पुं०(फा) वह व्यक्ति जिसने बीमा कराया हो। (पॉलिसी होल्डर)।
बीमापत्रक पुं० (हि) बीमा करने वाली संस्था या बीमा कराने वाले व्यक्ति के बीच हुए समझौता का लिखित पत्रक। (इंश्योरेंस पॉलिसी)।

**बीमार** स्त्री० (फा) रोगग्रस्त व्यक्ति। मरीज। वि० रोगी। आशिक।
**बीमारदारी** स्त्री० (फा) रोगियों की सुश्रूषा।
**बीमारी** स्त्री० (फा) १-रोग। व्याधि। २-झंझट। ३-बुरी आदत। लत।
**बीय** वि० (हि) दे० 'बीज'।
**बीया** वि० (हि) दे० 'दूसरा'। पुं० बीज। दाना।
**बीर** वि० (हि) दे० 'वीर'। पुं० भ्रात। भाई। स्त्री० १-सखी। सहेली। २-कान का आभूषण। ३-कलाई में पहनने का गहना। ४-चरागाह। ५-स्त्री
**बीरउ** पुं० (हि) दे० 'बिरवा'।
**बीरज** पुं० (हि) दे० 'वीर्य'।
**बीरन** पुं० (हि) १-भाई। भ्राता। २-खस।
**बीरबहूटी** स्त्री० (हि) एक छोटा रेंगने वाला कीड़ा जो लाल रंग का होता है। इन्द्रवधू।
**बीरा** पुं० (हि) १-पान का बीड़ा। २-देवता के प्रसाद के रूप में भक्तों को मिलने वाला फल फूल
**बीरी** स्त्री० (हि) दे० 'बीड़ी'।
**बीरो** पुं०(हि) दे० 'बिरवा'।
**बील** वि० (हि) पोला। अन्दर से खाली। पुं० १-बेल। २-नीची जमीन जहां पानी भरा रहता है।
**बीवी** स्त्री० (फा) स्त्री। पत्नी। गृहिणी।
**बीस** वि० (हि) उन्नीस और एक। २०।
**बीसबिस्वे** अव्य० (हि) निश्चयपूर्वक। बहुत करके।
**बीसरना** क्रि० (हि) भूलना। भूल जाना।
**बीसी** स्त्री० (हि) १-बीस वस्तुओं का समूह। कोड़ी २-भूमि का एक नाप। ३-प्रति बीघे दो बिस्वे की उपज। ४-साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से एक
**बीह** वि० (हि) बीस।
**बीहड़** वि० (हि) १-जो सरल हो। २-ऊबड़-खाबड़ या ऊँचा-नीचा।
**बुंद** स्त्री० (हि) १-बूँद। बिन्दु। कतरा। २-वीर्य वि० (हि) थोड़ा सा। पुं० (हि) तीर।
**बुंदकी** स्त्री० (हि) १-छोटी गोल बिन्दी। २-किसी वस्तु पर बना या पड़ा हुआ गोल धब्बा।
**बुंदकीदार** वि०(हि) जिस पर बुंदकी बनी या लगी हो
**बुंदेलखंड** पुं०(हि) उत्तर प्रदेश का वह भाग जिसमें जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदे के जिले पड़ते हैं।
**बुंदेलखंडी** वि० (हि) बुन्देलखंड का निवासी। स्त्री०(हि बुन्देलखंड की भाषा।
**बुंदेला** पुं० (हि) १-क्षत्रियों का एक वंश। २-बुन्देल वंश का कोई आदमी। ३-बुन्देलखंड का निवासी।
**बुंदौरी** स्त्री० (हि) बुंदिया या बूंदी नामक मिठाई
**बुआ** स्त्री०(हि) दे० 'बूआ'।
**बुक** स्त्री०(हि) एक प्रकार का कलफ दिया हुआ महीन कपड़ा। स्त्री० (अं) पुस्तक। पुं० (न) हास्य।
**बुकचा** पुं० (हि) १-गठरी जिसमें कपड़े बँधे हों।
**बुकची** स्त्री० (हि) १-कपड़ों की छोटी गठरी। २-सुई डोरा रखने की दर्जी की थैली।
**बुकटा** पुं० (हि) दे० 'बकोटा'।
**बुकनी** स्त्री०(हि)१-किसी वस्तु का पिसा हुआ महीन चूर्ण। २-वह चूर्ण जिसे पानी में मिलाने पर रंग बनता है।
**बुकवा** पु० (देश) उबटना।
**बुकुना** पुं० (हि) १-बुकनी। २-पाचक। चूर्ण।
**बुक्क** पुं० (सं) १-हृदय। २-बकरा।
**बुक्कन** पुं०(स) कुत्ते आदि जानवरों की बोली।
**बुक्का** स्त्री०(सं) १-हृदय। कलेजा। २-गुर्दे का मांस ३-बकरी। ४-रक्त। ५-अभ्रक का चूर्ण।
**बुखार** पुं० (अ) १-भाप। बाष्प। २-ज्वर। ताप। ३-दुःख, क्रोध आदि का आवेग।
**बुगचा** पुं० (तु) कपड़ों की गठरी।
**बुज** पु० (फा) बकरा। स्त्री०(फा) बकरी।
**बुजकसाब** पुं०(फा) क़साई। बूचड़।
**बुजदिल** वि० (फा) कायर। डरपोक।
**बुजदिली** स्त्री०(फा) कायरता।
**बुजुर्ग** वि० (फा) १-वृद्ध। बड़ा। २-पाजी। दुष्ट। पुं० (फा) बापदादा। पूर्वज।
**बुजुर्गाना** वि० (फा) बुजुर्गों के अनुरूप।
**बुजुर्गी** स्त्री० (फा) बड़ापन। बुजुर्ग होने का भाव।
**बुझना** क्रि० (हि) १-आग का आप से आप शांत हो जाना। २-ठंडा होना। ३-छौंका जाना। ४-पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंडा होना। ५-मन का आवेग शांत होना। ६-मिटना। (प्यास)।
**बुझाई** स्त्री० (हि) बुझाने की क्रिया या मजदूरी।
**बुझाना** क्रि० (हि) १-अग्नि को शांत करना। २-तपी हुई वस्तु को जल डाल कर ठंडा करना। ३-पानी को छौंकना। ४- मन के आवेग को शांत करना। ५-किसी को बुझाने में प्रवृत्त करना। ६-बोध कराना। ज्ञात कराना। ७-सांत्वना देना।
**बुझौवल** स्त्री० (हि) दे० 'पहेली'।
**बुट** स्त्री० (हि) दे० 'बूटी'।
**बुटना** क्रि० (हि) भागना। दौड़कर चला जाना।
**बुड़की** स्त्री० (हि) डुबकी। गोता।
**बुड़ना** क्रि० (हि) डूबना।
**बुढ़भस** स्त्री० (हि) बुढ़ापे में जवानी की उमंग।
**बुड़ाना** क्रि० (हि) डुबाना।
**बुड़बुड़ाना** क्रि० (हि) बड़-बड़ करना।
**बुड्ढा** वि० (हि) बूढ़ा।
**बुढ़ाई** स्त्री० (हि) बुढ़ापा।
**बुढ़ाना** क्रि० (हि) बूढ़ा होना।
**बुढ़ापा** पुं० (हि) वृद्धावस्था।
**बुढ़िया** स्त्री० (हि) वृद्धा स्त्री।
**बुत** पुं० (फा) १-मूर्ति। प्रतिमा। २-प्रियतम।

बुतखाना पुं० (फा) मंदिर।
बुततराश पुं० (फा) मूर्तियां बनाने वाला कलाकार
बुतना क्रि० (हि) बुझना।
बुतपरस्त पुं० (फा) १-मूर्तिपूजक। २-रसिक।
बुतपरस्ती स्त्री० (फा) मूर्तिपूजा।
बुतशकीन पुं० (फा) मूर्ति को तोड़ने या नष्ट करने वाला।
बुताना क्रि० (हि) १-बुझना। २-बुझाना।
बुताम पुं० (हि) बटन।
बुत्त वि० (हि) दे० 'बुत'।
बुत्ता पुं० (हि) १-धोखा। झांसापट्टी। २-हीला। बहाना।
बुदबुद पुं० (सं) बुलबुला।
बुदबुदा पुं० (हि) पानी का बुलबुला।
बुद्ध वि० (सं) १-जो जागा हुआ हो। २-ज्ञानवान ३-विद्वान। पंडित। पुं० एक प्रसिद्ध महात्मा का नाम जो बौद्धधर्म के प्रवर्तक थे, इनका जन्म ई० पू० ५५० में नेपाल की तराई में हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन और माता का नाम महामाया था।
बुद्धगया स्त्री० (सं) गया के पास का एक स्थान जहां बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था।
बुद्धत्व पुं० (सं) बुद्ध पद।
बुद्धधर्म पुं० (सं) बौद्ध-धर्म।
बुद्धपुराण पुं०(सं) पाराशररचित 'ललितलघुविस्तार'
बुद्धगम पुं० (सं) बौद्ध धर्म के सिद्धांत।
बुद्धि स्त्री० (सं) १-सोचने समझने की शक्ति। समझ (इन्टेलैक्ट)।
बुद्धिकौशल पुं०(सं) चतुराई।
बुद्धिगम्य वि० (सं) जो बुद्धि से समझा जा सके। समझ के भीतर।
बुद्धिग्राह्य वि० (सं) बुद्धिगम्य।
बुद्धिचक्षु पुं० (सं) धृतराष्ट्र।
बुद्धिजीव-वर्ग पुं०(सं) बुद्धि बल से जीविका उपार्जन करने वाले लोगों का वर्ग। (इन्टेलिजेंशिया)।
बुद्धि-जीवी वि० (सं) जो केवल बुद्धि बल से ही जीविका चलाता हो।
बुद्धि-तत्व पुं० (सं) वह मानसिक तत्व या शक्ति जिससे समझने बूझने की क्षमता आती है। (इन्टेलैक्चुअलिटी)।
बुद्धि-दोष पुं० (सं) समझ की कमी।
बुद्धिपर वि० (सं) जो समझ से परे हो।
बुद्धि-पुरस्सर अव्य० (सं) इच्छापूर्वक। सोच समझ कर।
बुद्धिपूर्वक अव्य० (सं) दे० 'बुद्धि-पुरस्सर'।
बुद्धिबल पुं० (सं) बुद्धि का बल।
बुद्धिभ्रंश पुं० (सं) एक प्रकार का पागलपन जिसमें बुद्धि ठीक प्रकार से काम नहीं करती। (डिमेन्शिआ)।
बुद्धिमत्ता स्त्री० (सं) समझदारी। अक्लमंदी।
बुद्धिमान् वि० (सं) समझदार। चतुर।
बुद्धिमानी स्त्री० (स) दे० 'बुद्धिमत्ता'।
बुद्धियोग पुं० (सं) ज्ञानयोग।
बुद्धिवंत वि० (सं) बुद्धिमान्।
बुद्धिवाद पुं० (सं) अन्य विषयों की तरह धर्म में भी बुद्धि को सर्वोपरि मानने का सिद्धांत। (रेशनेलिज्म)
बुद्धिवादी पुं०(सं) बुद्धिवाद में विश्वास रखने वाला (रेशनेलिस्ट)।
बुद्धिविलास पुं०(सं)कल्पना।
बुद्धिवैभव पुं० (सं) बुद्धिबल।
बुद्धि-शक्ति स्त्री० (सं) मेधाशक्ति।
बुद्धिशाली वि० (सं) समझदार। बुद्धिमान।
बुद्धिहीन वि० (सं) जिसमें बुद्धि न हो। मूर्ख।
बुधंगड़ वि० (हि) नासमझ। मूर्ख।
बुध पुं० (सं) १-सौर मण्डल में सूर्य के निकट एक ग्रह। २-देवता। ३-विद्वान व्यक्ति। ४-कुत्ता।
बुधजन पुं० (सं) विद्वान। पंडित।
बुधजायी पुं० (हि) बुध के पिता चांद।
बुधरत्न पुं० (हि) मरकतमणि। पन्ना।
बुधवान पुं० (हि) दे० 'बुद्धिमान'।
बुधवार पुं० (हि) मंगल और बृहस्पतिवार के बीच का दिन।
बुधि स्त्री० (हि) दे० 'बुद्धि'।
बुध्य वि० (सं) जानने योग्य।
बुनकर पुं० (हि) कपड़ा बुनने वाला। जुलाहा।
बुनना क्रि० (हि) १-करघे पर तागों से कपड़ा तैयार करना। २-यंत्र या सलाई से मोजे, बनियान आदि ऊनी या सूती तागों से तैयार करना। ३-कुर्सी, चारपाई आदि के बीच का खाली स्थान बेंत के छिलके या बान से भरना। ४-तागों से कोई वस्तु तैय्यार करना जैसे—जाल बुनना।
बुनवाना क्रि० (हि) बुनने के कार्य में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बुनाई स्त्री० (हि) बुनने का कार्य या मजदूरी।
बुनावट स्त्री० (हि) बुनने का कार्य या ढंग।
बुनियाद स्त्री० (फा) १-नींव। जड़। मूल। २-वास्तविकता।
बुनियादी वि० (फा) १-मूल से सम्बन्धित। आधारित। २-प्रारंभिक।
बुबुकना क्रि० (हि) ज़ोर-ज़ोर से रोना।
बुबुकारी स्त्री० (हि) ज़ोर-ज़ोर से रोना।
बुभुक्षा स्त्री० (सं) क्षुधा। भूख।
बुभुक्षित वि० (सं) जिसे भूख लगी हो। भूखा।
बुभुक्षु वि० (सं) १-भूखा। २-सांसारिक सुख भोग

का इच्छुक।
**बुर** स्त्री० (हिं) योनि। भग। (गाली में प्रयुक्त)।
**बुरकना** क्रि० (हिं) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना। भुरभुराना।
**बुरका** पुं० (अ) मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा जिसमें सिर से पैर तक सब अंग ढक जाते हैं। नक़ाब।
**बुरकापोश** वि० (अ) जो बुरका पहने हुए हो।
**बुरा** वि० (हिं) १-जो अच्छा न हो। २-निकृष्ट। मंद। खराब।
**बुराई** स्त्री०(हिं) १-बुरा होने का भाव। बुरापन। २-नीचता। ३-निंदा। शिकायत।
**बुरादा** पुं०(फा)१-लकड़ी चीरने पर निकलने वाला चूरा। २-चूरा। २-चूर्ण।
**बुरापन** पुं० (हिं) दे० 'बुराई'।
**बुराभला** पुं० (हिं) १-अच्छाई-बुराई। २-अपशब्द
**बुरा वक्त** पुं० (हिं) कष्ट का समय।
**बुरा हाल** पुं०(हिं) दुर्दशा।
**बुरुश** पुं० (अ) कूर्चा की तरह की एक वस्तु जो दांत मांजने, रोगन करने, तसवीर बनाने तथा बाल सँवारने आदि के काम आती है और इसमें तार या बाल लगे होते हैं। (ब्रश)।
**बुर्ज** पुं० (हिं) १-गरगज। २-मीनार का ऊपरी भाग ३-गुब्बारा। ४-राशिचक्र।
**बुर्जतोप** स्त्री० (हिं) वह तोप जो चारों तरफ घूमने वाली बुर्ज पर लगी होती है। (टरैटगन)।
**बुर्जी** स्त्री० (हिं) छोटा बुर्ज।
**बुर्द** स्त्री० (फा) १-उपरी लाभ। नफा। २-शर्त। होड़ ३-शतरंज के खेल में केवल बादशाह का रह जाना
**बर्दाफरोश** पुं०(फा)स्त्रियों को उड़ा कर बेचने वाला
**बुलंद** वि० (फा) ऊँचा।
**बुलंद-इकबाल** वि० (फा) सौभाग्यशाली।
**बुलंद-हिम्मत** वि०(फा) बहुत हिम्मत वाला।
**बुलंदी** स्त्री० (फा) ऊँचाई।
**बुलबुल** स्त्री० (अ) काले रङ्ग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुरीला बोलती है।
**बुलबुलबाज** पुं० (अ) बुलबुल पालने का शौकीन।
**बुलबुला** पुं० (हिं) पानी का बुल्ला। बुदबुदा।
**बुलवाना** क्रि०(हिं) बुलाने का काम दूसरों से कराना
**बुलाक** पुं० (तु०) नथ में का लंबोतरा या सुराहीदार मोती।
**बुलाकी** पुं० (हिं) घोड़े की एक जाति।
**बुलाना** क्रि० (हिं) १-पुकारना। २-किसी को पास आने को कहना। ३-किसी को बोलने में प्रवृत्त करना
**बुलावा** पुं० (हिं) निमंत्रण। बुलाने की क्रिया या भाव।
**बुलौआ** पुं० (हिं) दे० 'बुलावा'।
**बुल्ला** पुं० (हिं) दे० 'बुलबुला'।
**बुहारना** क्रि० (हिं) झाड़ू लगाना। झाड़ना। साफ करना।
**बुहारी** स्त्री० (हिं) झाड़ू। सोहनी। बढ़नी।
**बूँद** स्त्री० (हिं) १-किसी तरल पदार्थ या जल का बिंदु कतरा। टोप। २-वीर्य। ३-बुँदकीदार कपड़ा।
**बूँदा** पुं० (हिं) १-बड़ी टिकली। २-कान का बुन्दा।
**बूँदाबाँदी** स्त्री० (हिं) हलकी वर्षा।
**बूँदी** स्त्री० (हिं) १-वर्षा के जल की बूँद। २-एक प्रकार की बेसन की मिठाई।
**बू** स्त्री० (फा) १-गंध। बास। महक। २-दुर्गंध। बदबू। ३-ढङ्ग। आनबान।
**बूआ** स्त्री० (हिं) पिता की बहन। फूफी।
**बूकना** क्रि० (हिं) १-महीन या बारीक पीसना। २-गढ़-गढ़ कर बातें करना।
**बूचड़** पुं० (हिं) कसाई। मांस बेचने वाला।
**बूचड़खाना** पुं० (हिं) कसाईखाना।
**बूचा** वि० (हिं) १-कटे हुए कान का। कनफटा। २-नंगा।
**बूजना** क्रि०(हिं)१-धोखा देना। छिपाना। २-(बिल, छेद आदि का) बन्द करना या मूँदना।
**बूझ** स्त्री० (हिं) १-समझ। बुद्धि। २-पहेली। बुझौ-बल।
**बूझना** क्रि० (हिं) १-समझना। जानना। २-पहेली का उत्तर निकालना।
**बूट** पुं०(हिं) १-चने का हरा पौधा। २-चने का हरा दाना। ३-वृक्ष। (अ) एक प्रकार का जूता।
**बूटना** क्रि० (हिं) भागना।
**बूटनि** स्त्री० (हिं) बीरबहूटी।
**बूटा** पुं० (हिं) १-छोटा वृक्ष। पौधा। २-कपड़ों, दीवार आदि पर बनाए हुए फूल पत्तियां।
**बूटी** स्त्री० (हिं) वनस्पति। जड़ी। २-भांग। ३-किसी वस्तु पर बने फूल पत्तों के चिह्न।
**बूड़ना** क्रि० (हिं) १-डूबना। गर्क होना। २-लीन होना।
**बूड़ा** पुं० (हिं) जल आदि में डूब मरने वाला व्यक्ति जो प्रेत बन गया हो।
**बूढ़** पुं० (हिं) लालरङ्ग। बीरबहूटी। वि० (देश०) बूढ़ा।
**बूढ़ा** पुं० (हिं) दे० 'बुड्ढा'। स्त्री० बुढ़िया।
**बूढ़ाखर्राट** पुं० (हिं) अनुभवी और चालाक व्यक्ति।
**बूढ़ापौंग** पुं० (हिं) मूर्ख व्यक्ति।
**बूढ़ाफूँस** पुं० (हिं) बहुत बूढ़ा।
**बूता** पुं० (हिं) शक्ति। बल। सामर्थ्य।
**बूरना** क्रि० (हिं) दे० 'बूड़ना'।
**बूरा** पुं० (हिं) १-कच्ची चीनी। शक्कर। २-साफ की हुई चीनी। ३-चूर्ण।

**बृंद** पुं० (हि) दे० 'वृन्द'।
**बृक** पुं० (हि) १-भेड़िया। २-गीदड़।
**बृच्छ** पुं० (हि) वृक्ष। पेड़।
**बृष** पुं० (हि) दे० 'वृष'।
**बृषकेतु** पुं० (हि) शिव।
**बृषध्वज** पुं० (हि) शिव। महादेव।
**बृषभ** पुं० (हि) दे० 'वृषभ'।
**बृहत्** वि० (सं) १-बड़ा। विशाल। २-लम्बा-चौड़ा। (लार्ज)। ३-दृढ़। बलिष्ठ। ४-ऊँचा (स्वर)।
**बृहत्कथा** स्त्री० (सं) गुणाढ्य रचित कहानियों की पुस्तक।
**बृहत्काय** वि० (सं) बड़े डीलडौल वाला।
**बृहत्तर** वि० (सं) १-और अधिक बड़ा या विशाल २-देश आदि से अधिक विस्तार का।
**बृहन्नला** स्त्री० (सं) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।
**बृहस्पति** पुं० (सं) १-एक देवता का नाम जो देवताओं के गुरु माने जाते है। २-सौरमंडल के पांचवें ग्रह का नाम।
**बृहस्पतिवार** पुं० (सं) गुरुवार। बुधवार और शुक्रवार के बीच का दिन।
**बेंग** पुं० (हि) मेंढक।
**बेंच** स्त्री० (मं) १-लोहे, लकड़ी आदि की बनी लम्बी चौकी। २-न्यायालय। ३-न्यायाधीश का आसन ४-मानसेवी। दंडाधिकारियों (ऑनेरेरी मेजिस्ट्रेट्स) का इजलास।
**बेंट** स्त्री०(हि) औजार आदि में काठ की लगी मूँठ।
**बेंड़** स्त्री० (हि) भार को रोकने की टेक। चाँड़।
**बेंड़ना** क्रि० (हि) बन्द करना।
**बेंड़ा** वि० (हि) १-आड़ा। तिरछा। २-कठिन।
**बेंड़ी** स्त्री० (हि) खेत की सिंचाई करने के काम आने वाली बड़ी बांस की टोकरी।
**बेंत** पुं० (हि) एक लता जिसके डंठलों से छड़ियां, टोकरियां बनती है। और छिलके आदि से कुर्सी आदि बनी जाती है।
**बेंदा** पुं० (हि) १-माथे पर का गोल तिलक। टीका। २-माथे को गोल टिकली। ३-एक माथे पर लगाने का आभूषण।
**बेंदी** स्त्री०(हि)१-टिकली। बिंदी। २-माथे पर लगाने का छोटा आभूषण।
**बेंवड़ा** पुं०(हि) १-किवाड़ के पीछे लगाई जाने वाली लकड़ी। २-अरगल।
**बें[illegible]** स्त्री० (हि) दे० 'ब्योंत'।
**बे** अव्य० (फा) बिना। बगैर।
**बेअंत** वि० (फा) जिसका अंत न हो। अथाह।
**बेअकल** वि० (फा) नासमझ। मूर्ख।
**बे-अकली** स्त्री० (फा) नासमझी। मूर्खता।
**बे-अदब** वि०(फा) उद्दण्ड। जो बड़ों का अदब न करे
**बे-अदबी** स्त्री० (फा) उद्दण्डता। बड़ों का सम्मान न करना।
**बे-आब** वि० (फा) जिस में चमक न हो। २-जिसकी प्रतिष्ठा न हो।
**बे-आबरू** वि० (फा) बेइज्जत।
**बे-आबरूई** स्त्री० (फा) बेइज्जती।
**बे-इंसाफी** स्त्री० (फा) अन्याय।
**बे-इज्जत** वि० (फा) अपमानित। अप्रतिष्ठित।
**बे इज्जती** स्त्री०(फा) १-अप्रतिष्ठितता। २-अपमान।
**बे-इल्म** वि० (फा) जो पढ़ा लिखा न हो। जो कोई विद्या न जानता हो।
**बे-ईमान** वि० (फा) १-अधर्मी। २-अविश्वासनीय। ३-छलकपट या अनाचार करने वाला।
**बे-ईमानी** स्त्री (फा) बेईमान होने का भाव।
**बे-उज्र** वि०(फा) जिसे कोई बात मानने या कोई कार्य करने में आपत्ति न हो।
**बे-कद्री** स्त्री० (फा) बेकद्र होने का भाव।
**बे-करार** वि० (फा) व्याकुल। बिकल।
**बे-करारी** स्त्री०(फा) व्याकुलता। बेचैनी। घबराहट।
**बे-कल** वि०(फा) व्याकुल। बेचैन।
**बे-कली** स्त्री (फा) व्याकुलता। विकलता।
**बे-कस** वि० (फा) १-निःसहाय। निराश्रय। २-दीन अनाथ।
**बे-कसी** वि०(फा) दीनता। विवशता।
**बे-कहा** वि० (फा) किसी का कहा न मानने वाला। उद्धत।
**बे-कानूनी** वि० (फा) नियमविरुद्ध।
**बे-काबू** वि०(फा)१-लाचार। विवश। २-जो किसी के काबू में न हो।
**बे-काम** वि०(फा) दे० 'बेकार'।
**बे-कायदगी** स्त्री०(फा) अनियमितता।
**बे-कायदा** वि०(फा) कायदे के खिलाफ। नियमविरुद्ध
**बे-कार** वि०(फा) १-निठल्ला। निकम्मा। २-निरर्थक व्यर्थ।
**बे-कारी** स्त्री०(फा) १-खाली या निरुद्यम का भाव २-वह अवस्था जिसमें निर्वाह के लिये किसी के हाथ में कोई काम धंधा न हो। (अनएंम्प्लायमेंट)
**बे-कारयो** पुं० (हि) बुलाने का शब्द जैसे-अरे, ओ आदि।
**बे-कुसूर** वि० (फा) निर्दोष।
**[illegible]ख** पुं० (हि) १-भेस। स्वरूप। २-नकल। स्वांग।
**[illegible]खटके** अव्य० (फा) बेधड़क। बिना संकोच या भय के।
**बेखबर** वि०(फा) १-अनजान। नाबालिग। २-बेसुध बेहोश।
**बेखबरी** स्त्री० (फा) बेखबर होने का भाव। अज्ञानता

बेहोशी।
**बेखुदी** स्त्री० (फा) आत्मविस्मृति।
**बेखौफ** वि० (फा) निर्भय। निडर।
**बेख्वाबी** स्त्री० (फा) निद्रा न आना।
**बेग** पुं० (हि) दे० 'वेग'। पुं० (तु०) सरदार। पुं० (अ) चमड़े आदि का थैला।
**बेगड़ी** पुं० (देश) १-नगीना बनाने वाला। हीरा तराशने वाला।
**बेगना** क्रि० (हि) जल्दी करना।
**बेगपाइप** पुं० (अ) बैंड बाजे के साथ बजने वाली बीन। मशकबीन।
**बेगम** स्त्री० (तु) १-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। २-बड़े आदमी की पत्नी। रानी। ३-पत्नी। ४-एक ताश का पत्ता। वि० (फा) जिसे कोई चिंता न हो।
**बेगर** वि० (हि) भिन्न। पृथक।
**बेगाना** वि० (फा) १-दूसरा। गैर। पराया। २-अनजान।
**बेगार** स्त्री० (फा) १-बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती लिया जाने वाला काम। २-वह काम जो मन लगाकर न किया जाये।
**बेगारी** स्त्री० (फा) दे० 'बेगार'।
**बेगि** अव्य० (हि) वेगपूर्वक। झटपट। तुरन्त।
**बेगुनाह** वि० (फा) निर्दोष। जिसने कोई पाप न किया हो।
**बेघर** वि० (फा) गृहहीन।
**बेचक** पुं० (हि) बेचने वाला।
**बेचना** क्रि०(हि) मूल्य लेकर बदले में कोई वस्तु देना विक्रय करना।
**बेचवाना** क्रि० (हि) दे० 'बिकवाना'।
**बेचवाल** पुं० (हि) दे० 'बेचू'।
**बेचाना** क्रि० (हि) दे० 'बिकवाना'।
**बेचारगी** स्त्री० (फा) दीनता। विवशता।
**बेचारा** वि० (फा) जिसका कोई साथी या सहारा न हो। गरीब। दीन।
**बेचिराग** वि० (फा) उजड़ा हुआ। जहाँ दीया तक न जलता हो।
**बेची** स्त्री०(हि) १-बेचने की क्रिया या भाव। २-बिक्री
**बेचू** पुं० (हि) बेचने वाला।
**बेचैन** वि०(फा) व्याकुल। विकल। जिसे चैन न पड़ता हो।
**बेचैनी** स्त्री० (फा) व्याकुलता। विकलता।
**बेचोबा** पुं० (फा) बिना खंबे का तम्बू या खेमा।
**बेजड़** वि०(फा) निर्मूल। जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।
**बेजबान** वि० (फा) १-जिसमें बोलने की शक्ति न हो गूंगा। २-मूक। (जानवर)। ३-जो विरोध करना न जानता हो। दीन।
**बेजा** वि० (फा) अनुचित। ना-मुनासिब।
**बेजान** वि० (फा) १-निष्प्राण। मुरदा। मृतक। २-मुरझाया हुआ। ३-निर्बल।
**बेजाब्ता** वि० (फा) कानून या नियम के विरुद्ध।
**बेज़ार** वि० (फा) जो किसी बात से बहुत तंग आगया हो।
**बेज़ारी** स्त्री० (फा) परेशानी।
**बेजोड़** वि० (फा) १-अखंड। २-अद्वितीय। निरूपम। ३- जिसमें कोई जोड़ न हो।
**बेझड़** पुं० (हि) मटर, चना, गेहूँ, आदि मिला हुआ अन्न या ऐसी फसल।
**बेझना** क्रि० (हि) बेधना। निशाना लगाना।
**बेझा** स्त्री० (हि) निशाना। लक्ष्य।
**बेटकी** स्त्री० (हि) दे० 'बेटी'।
**बेटला** पुं० (हि) दे० 'बेटा'।
**बेटवा** पुं० (हि) बेटा।
**बेटा** पुं० (हि) पुत्र। सुत। लड़का।
**बेटी** स्त्री० (हि) पुत्री। लड़की। कन्या।
**बेटीवाला** पुं० (हि) कन्या का पिता।
**बेटीव्यवहार** पुं० (हि) विवाह-सम्बन्ध।
**बेठन** पुं० (हि) वह कपड़ा जो किसी वस्तु को धूल से बचाने के लिए उस पर चढ़ाया गया हो।
**बेठिकाना** वि० (फा) अविश्वासनीय। जिसका कोई ठौर न हो।
**बेठिकाने** वि० (फा) १-जो अपनी ठीक जगह पर न हो। २- व्यर्थ। निरर्थक।
**बेड़** स्त्री० (हि) दे० 'बाड़'।
**बेड़ना** क्रि० (हि) बाड़ लगाना।
**बेड़ा** पुं० (हि) १-नदी पार करने के लिए बड़े लट्ठों आदि का बनाया हुआ ढांचा। २-नाव। ३-जहाजों का समूह। वि० १-आड़ा। तिरछा। २-कठिन। विकट।
**बेड़ी** स्त्री० (हि) १-लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों आदि के हाथ पैर बांधे रखने के लिए पहनाई जाती है। २-खेत में पानी डालने की टोकरी ३-छोटी नाव।
**बेडौल** वि० (फा) १-कुरूप। भद्दा। २-बेढंगा। जो अपनी जगह न जंचे।
**बेढंगा** वि० (फा) जो ठीक प्रकार से सजाया या रखा न गया हो। बेतर्तीब। २-कुरूप। भद्दा।
**बेढ़** पुं० (हि) १-नाश। बरबादी। २-वह बोई हुई वस्तु जिसका अंकुर निकल आया हो।
**बेढ़ई** स्त्री० (हि) पिट्ठी भर कर बनाई हुई कचौरी।
**बेढ़ना** क्रि० (हि) १-रक्षा के लिए बाड़ बनाना। २-चौपायों को घेर कर हांक ले जाना।
**बेढब** वि० (फा) बेढंगा। भद्दा। कुरूप। अव्य०

अनुचित रूप से। बेतरह।
**बेढ़ा** पुं०(हि) १-हाथ का गहना। २-तरकारी आदि बोने के लिए चारों ओर से घेरा हुआ स्थान।
**बेणी** स्त्री० (हि) दे० 'वेणी'।
**बेणीफूल** पुं० (हि) फूल के आकार का बना हुआ सिर पर लगाने का आभूषण। सीसफूल।
**बेत** पुं० (हि) दे० 'बेंत'।
**बेतकल्लुफ** वि० (फा) १-जिसे शिष्टाचार का विशेष ध्यान न हो। १-स्पष्टभाषी। सीधासाधा।
**बेतकल्लुफी** स्त्री० (फा) सरलता। सादगी। बेतकल्लुफ होने का भाव।
**बेतना** क्रि० (हि) प्रतीत होना। जान पड़ना।
**बेतमीज** वि० (फा) अभद्र। उजड्ड। फूहड़।
**बेतरतीब** वि० (फा) क्रमरहित। अव्यवस्थित।
**बेतरह** अव्य०(फा) बुरी तरह से। असाधारण रूप से
**बेतरीके** अव्य० (फा) अनुचित रूप से। बिना तरीके के।
**बेतहाशा** अव्य० (फा) १-शीघ्रता से। २-बहुत घबरा कर। ३-बिना सोचे समझे।
**बेताब** वि० (फा) १-अशक्त। दुर्बल। २-विकल। व्याकुल।
**बेतार** वि० (फा) बिना तार का। जिसमें तार न हो
**बेतार का तार** पुं० (हि) बिना तार के भेजा जाने वाला तार। (वायरलेस)।
**बेताल** पुं० (हि) भाट। बन्दी। वि० जिसमें ताल का ठीक ध्यान न रखा गया हो।
**बेतुका** वि० (फा) असंगत। जिसमें कोई तुक न हो। बेढंगा।
**बेतुकी** वि० (फा) असंगत (बात)।
**बेद** पुं० (हि) १-दे० 'वेद'।
**बेदखली** स्त्री०(फा) संपत्ति पर से कब्जा या अधिकार हटाया जाना। (इजेक्टमेंट)।
**बेदना** स्त्री० (हि) दे० 'वेदना'।
**बेदम** वि० (फा) १-निर्जीव। मृत। २-अधमरा। ३-जर्जर। बोदा।
**बेदर्द** वि० (फा) कठोर हृदय। निर्दय।
**बेदर्दी** स्त्री० (फा) निर्दयता। कठोरता।
**बेदाग** वि० (फा) निष्कलंक। निरपराध। बेकसूर।
**बेदाना** वि०(फा) जो दाना या समझदार न हो। पुं० १-एक प्रकार का काबुली अनार। २-एक प्रकार का शहतूत।
**बेदानिशी** स्त्री० (फा) नासमझी।
**बेदाम** वि० (फा) बिना दाम का। मुफ्त।
**बेदार** वि० (फा) चौकन्ना। जागरूक।
**बेदारबख्त** वि० (फा) भाग्यशाली।
**बेदारी** स्त्री० (फा) जागरूकता। जागरण।
**बेदिल** वि० (फा) जिसका दिल टूट गया हो। उदास
**बेध** पुं० (हि) १-छेद। २-मोती मूँगा आदि में किया हुआ छेद।
**बेधक** पुं० (हि) बेधने वाला।
**बेधड़क** अव्य० (फा) १-बिना संकोच के। २-निडर होकर। वि० १-निःसंकोच। २-आशंकारहित। ३-निडर। निर्भय।
**बेधना** क्रि० (हि) किसी नुकीली वस्तु से छेद करना छेदना। २-घाव करना।
**बेधिया** पुं० (हि) अंकुश। अँकुसा।
**बेधीर** वि० (हि) धैर्यरहित।
**बेन** पुं०(हि) १-मुरली। बाँसुरी। २-सपेरों के बजाने की तूमड़ी। ३-बाँस। ४-महुवर।
**बेनजीर** वि० (फा) अनुपम। बेजोड़।
**बेना** पुं० (हि) १-बाँस का बना छोटा पंखा। २-खस। ३-बांस। ४-माथे का आभूषण।
**बेनाम** वि० (फा) जिसका कोई नाम न हो। गुमनाम
**बेनामोनिशान** वि० (फा) बेपता। जिसका कोई पता न हो।
**बेनिमून** वि० (हि) बेजोड़। अनुपम।
**बेनियाज** वि० (फा) जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता न हो। बेपरवाह।
**बेनी** स्त्री० (हि) १-स्त्रियों की चोटी। २-त्रिवेणी। ३-किवाड़ में जड़ी वह लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।
**बेनु** पुं० (हि) दे० 'वेणु'।
**बेनूर** वि० (हि) जिसकी ज्योति चली गई हो।
**बेनौरा** पुं० (हि) बिनौला।
**बेनौरी** स्त्री०(हि) बिनौले के समान छोटे छोटे ओले।
**बेपता-चिट्ठीघर** पुं० (हि) डाकखाने का वह विभाग जिसमें ऐसे पत्रों को जिनमें पाने वाले का पता ठीक नहीं लिखा होता, पता खोज कर उनके पास भेजा जाता है। (डेडलैटर आफिस)।
**बेपनाह** वि० (फा) निराश्रय।
**बेपरदगी** स्त्री० (फा) १-परदे का न होना। २-भेद खुल जाना।
**बेपरदा** वि० (फा) जिस पर परदा हो। प्रकट। खुला ३-नग्न।
**बेपरवा** वि० (फा) जिसे कोई चिंता न हो। बेफिक्र। २-उदार। ३-मनमौजी।
**बेपरवाह** वि० (फा) दे० 'बेपरवाह'।
**बेपरवाही** स्त्री० (फा) १-बेफिक्री। २-अपने मन के अनुकूल काम करना।
**बेपर्दगी** स्त्री० (फा) दे० 'बेपरदगी'।
**बेपाइ** वि० (हि) जिसका कोई उपाय न हो।
**बेपीर** वि० (फा) जिसके हृदय में सहानुभूति न हो। २-निर्दय। बेरहम।
**बेफसल** वि० (फा) बेमौसम। बेवक्त।

बेफ़ायदा वि० (फा) जिससे कोई लाभ न हो। व्यर्थ का।
बेफ़िक्र वि० (फा) जिसे कोई चिन्ता न हो। निश्चिन्त
बेफ़िक्री स्त्री० (फा) निश्चिन्तता।
बेबस वि० (फा) पराधीन। परवश। लाचार।
बेबसी स्त्री० (फा) १-विवशता। लाचारी। परवशता
बेबाक वि० (फा) चुकता किया हुआ। (ऋण अथवा हिसाब)।
बेबाकी स्त्री० (हि) निर्भयता। धृष्टता। स्त्री० (फा) चुकता। बेबाक होना।
बेबुनियाद वि० (फा) निमूंल।
बेब्याहा वि० (हि) कुँआरा। अविवाहित।
बेभाव अव्य० (हि) बेहद। बे हिसाब से।
बेमज़ा वि० (फा) जिसमें कोई स्वाद न हो। बद-जायका।
बेमतलब अव्य० (फा) बेकार। बिना किसी प्रयोजन के। वि० (फा) निरर्थक।
बेमन वि० (हि) जिसका मन न लगता हो।
बेमरम्मत वि० (फा) बिना सुधारा। टूटाफूटा।
बेमसरफ़ वि० (फा) जिसका कोई उपयोग न हो। निकम्मा।
बेमानी वि० (फा) निरर्थक।
बेमालूम वि० (फा) जो मालूम न पड़ता हो। अज्ञात
बेमिलावट वि० (फा) जिसमें मिलावट न हो। शुद्ध खालिस।
बेमुनासिब वि० (फा) अनुचित।
बेमुरौवत वि० (फा) जिसमें शील संकोच का अभाव हो। तोताचश्म।
बेमुरौवती स्त्री० (फा) बे मुरव्वत होने का भाव।
बेमेल वि० (फा) बेजोड़। जो मेल न खाता हो।
बेमौका वि०(फा) जो ठीक अवसर पर न हो। अयुक्त
बेमौत अव्य० (फा) बिना मौत आये (मरना)।
बेमौसिम वि० (फा) मौसम न होने पर भी होने वाला।
बेयरा पुं० (हि) दे० 'बेरा'।
बेरंग वि० (फा) जिसमें कोई आनन्द न हो।
बेर पुं० (हि) १-एक मंझोले आकार का कंटीला वृक्ष जिसके फल की गुठली कड़ी होती है। २-इस वृक्ष का फल। स्त्री० (हि) १-दफा। बार। २-विलम्ब।
बेरहम वि० (फा) निर्दय। निष्ठुर।
बेरहमी स्त्री० (फा) निर्दयता। निष्ठुरता।
बेरा पुं० (हि) १-समय। बेला। २-तड़का। भोर ३-कच्चा कुआँ। ४-दे० 'बेड़ा'। पुं० (देश) एक में मिला जौ और चना। पुं०(अं) साहब लोगों का चपरासी।
बेराम वि० (देश) दे० 'बीमार'।
बेराह वि० (फा) पथभ्रष्ट।
बेरी स्त्री० (हि) १-दे० 'बेड़ी'। २-नाव।
बेरुख वि० (फा) १-बे मुरव्वत। २-नाराज। क्रुद्ध।
बेरुखी स्त्री० (फा) अवसर पड़ने पर मुंह फेर लेना। उपेक्षा।
बेरोकटोक अव्य० (फा) बिना किसी खटके के।
बेरोजगार वि० (फा) जिसके पास कोई काम-धंधा न हो।
बेरोजगारी स्त्री० (फा) बेकारी।
बेरौनक वि० (फा) उदास। जिस पर रौनक न हो।
बेलंद वि० (हि) ऊँचा।
बेलंब पुं० (हि) दे० 'विलंब'।
बेल पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके फल का छिलका कड़ा होता है। २-इस वृक्ष का फल। बिल्व श्रीफल। स्त्री० १-लता। वल्ली। २-सन्तान। वंश। ३-नाव खेने का डांड। ४-फीते पर बना रेशमी या जरदोजी का काम। ५-विवाह आदि पर नेगियों को दिया जाने वाला धन। ६-लम्बाई के बल में कपड़े पर बनी फूल पत्तियां। ७-एक प्रकार की कुदाली।
बेलगाम वि० (फा) सरकश। मुंहजोर।
बेलगिरी स्त्री० (हि) बेल के फल का गूदा।
बेलचा पुं० (फा) एक प्रकार की छोटी कुदाली।
बेलज्जत वि० (फा) स्वादरहित।
बेलड़ी स्त्री०(हि) छोटी बेल या लता।
बेलदार पुं० (फा) फावड़ा चलाने या जमीन खोदने वाला मजदूर।
बेलदारी स्त्री० (फा) फावड़े से भूमि खोदने का काम
बेलन पुं० (हि) १-लम्बातरे आकार का पत्थर या लोहे का भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते या कंकर आदि कूटकर सड़क बनाते हैं (रोलर)। २-काठ का गोल दस्ता जिससे रोटी आदि बेली जाती है। ३-इस प्रकार का कोई बड़ा पुर्जा जो यन्त्रों में लगता है।
बेलनदार वि० (हि) जिसमें बेलन लगा हो।
बेलना पुं०(हि) दे० 'बेलन'। क्रि० रोटी बनाने के लिए चकले पर लोई रखकर पतला करना।
बेलपत्ती स्त्री० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलपत्र पुं० (हि) बेल के वृक्ष की पत्तियां।
बेलपात पुं० (हि) दे० 'बेलपत्र'।
बेलबूटा पुं० (हि) कागज, दीवार, कपड़े आदि पर बनाई गई फूल पत्तियां।
बेलरी स्त्री० (हि) दे० 'बेल'।
बेलवाना क्रि० (हि) दूसरे को बेलने के लिए प्रवृत्त करना।
बेलसना क्रि० (हि) सुख या आनन्द लूटना। भोग-करना।
बेला पुं० (हि) १-चमेली के समान सुगंध वाला एक पौधा। २-लहर। ३-समय। ४-कटोरा। ५-समुद्र

का किनारा। ६-एक वाद्ययन्त्र।
बेलाग वि० (फा) १-बिना आधार का। २-बिल्कुल अलग। ३-व्यवहार में खरा।
बेलि स्त्री० (हि) दे० 'बेल'।
बेलिहाज वि० (फा) निर्लज्ज।
बेलौ पुं० (हि) सङ्गी। साथी।
बेलुत्फ वि० (फा) बेमजा। रसरहित।
बेलुत्फी स्त्री० (फा) आनन्द या मजा न आना।
बेलौस वि० (फा) १-सच्चा। खरा। २-बेमुरव्वत।
बेलौसी स्त्री० (फा) खरापन। सच्चाई। निष्पक्षता।
बेवकत वि० (फा) तुच्छ। प्रतिष्ठा रहित।
बेवकूफ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ। निर्बुद्धि।
बेवक्त अव्य० (फा) कुसमय में।
बेवट स्त्री० (हि) १-संकट। २-विवशता।
बेवपारी पुं० (देश) 'व्यापारी'।
बेवफा वि० (फा) १-कृतघ्न। २-दुःशील। ३-उपकार न मानने वाला।
बेवफाई स्त्री० (फा) कृतघ्नता। बेवफा होने का भाव
बेवरा पुं० (हि) विवरण। ब्योरा।
बेवरेवार वि० (हि) विवरणसहित। ब्योरेवार।
बेवसाउ पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
बेवस्था स्त्री० (हि) दे० 'व्यवस्था'।
बेवहरना क्रि० (हि) बरताव करना। बरतना।
बेवहरिया पुं० (हि) १-लेन देन करने वाला। महाजन। २-मुनीम।
बेवहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
बेवा स्त्री० (फा) विधवा।
बेवाई स्त्री० (हि) दे० 'बिवाई'।
बेवान पुं० (हि) दे० 'विमान'।
बेश वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेशऊर वि० (फा) फूहड़। मूर्ख।
बेशक अव्य० (फा) बिना किसी संदेह के। जरूर। निःसंदेह।
बेशकीमत वि० (फा) मूल्यवान। बहुमूल्य।
बेशकीमती वि० (फा) दे० 'बेशकीमत'।
बेशर्म वि० (फा) निर्लज्ज। बेहया।
बेशर्मी स्त्री० (फा) निर्लज्जता। बेहयापन।
बेशी स्त्री० (फा) १-अधिकता। लाभ।
बेशुमार वि० (फा) अगणित। असंख्य।
बेश्म पुं० (हि) घर। निवास स्थान।
बेश्वंर पुं० (हि) अग्नि।
बेसँभर वि० (हि) बेसुध। बेहोश।
बेस पुं० (हि) दे० 'वेश'।
बेसन पुं० (हि) चने की दाल का पिसा हुआ आटा।
बेसनी वि०(हि) बेसन का बना हुआ। स्त्री० १-बेसन की पूरी। २-वह कचौरी जिसमें बेसन भरा हो।
बेसबब अव्य० (फा) अकारण।
बेसबरा वि० (फा) दे० 'बेसब्र'।
बेसबरी स्त्री० (फा) असंतोष। अधैर्य।
बेसब्र वि० (फा) जिसमें धीरज न हो।
बेसब्री स्त्री० (फा) अधैर्य। अधीरता।
बेसमझ वि० (फा) मूर्ख। नासमझ।
बेसर पुं०(हि) खच्चर। स्त्री० नाक में पहनने की नथ वि० आश्रयरहित।
बेसरा वि० (फा) आश्रयहीन। पुं० (देश) एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
बेसरोसामान वि० (फा) जिसके पास कुछ भी सामग्री न हो। निर्धन। कंगाल।
बेसलीका वि० (फा) फूहड़।
बेसवा स्त्री० (हि) वेश्या। रंडी।
बेसवापन पुं० (हि) वेश्यावृत्ति।
बेसहना क्रि० (हि) मोल लेना।
बेसा स्त्री० (हि) वेश्या।
बेसामान वि० (फा) जिसके पास माल असबाब या उपकरण न हों।
बेसारा वि० (हि) बैठाने, रखने या जमाने वाला।
बेसाहना क्रि० (हि) १-खरीदना। २-जानबूझकर अपने सिर लेना। (बैर संकट आदि)।
बेसाहिनी स्त्री० (हि) मोल लेने की क्रिया।
बेसाहा पुं० (हि) खरीदा हुआ माल। सौदा।
बेसिलसिला वि० (फा) अव्यवस्थित। किसी क्रम के बिना।
बेसिलसिले अव्य० (फा) बिना क्रम के।
बेसी वि० (फा) अधिक। ज्यादा।
बेसुध वि०(हि) अचेत। बदहवास।
बेसुधी स्त्री० (हि) अचेतनता। बेखबरी।
बेसुर वि० (हि) जिसका स्वर ठीक न हो (सङ्गीत)।
बेसुरा वि०(हि)१-जो नियमित स्वर में न हो (संगीत) २-बेमौका।
बेसूद वि० (फा) व्यर्थ। जिसमें कोई लाभ न हो।
बेस्वा स्त्री० (देश०) वेश्या।
बेस्वाद वि० (हि) १-स्वाद रहित। २-जिसका स्वाद खराब हो।
बेहँसना क्रि० (हि) जोर से हँसना।
बेह पुं० (हि) छेद। सूराख। वि०(फा) भला। अच्छा।
बेहड़ वि० (हि) दे० 'बीहड़'। पुं० जंगल आदि का विकट स्थान।
बेहकीकत वि० (फा) उपेक्षा के योग्य। तुच्छ।
बेहतर वि० (फा) अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा। अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द। अच्छा।
बेहतरी स्त्री० (फा) अच्छापन। भलाई।
बेहद वि० (फा) असीम। अपार। बहुत अधिक।
बेहना पुं० (हि) १-धुनिया। रूई धुनने वाला २-जुलाहों की एक छोटी जाति।

बेहया वि० (फा) बेशर्म। निर्लज्ज।
बेहयाई स्त्री० (फा) निर्लज्जता।
बेहर वि० (देश) १-स्थावर। अचर। २-अलग। पुं० (हि) बावली। बापी।
बेहरना क्रि० (हि) किसी वस्तु का फटना या चिर-जाना।
बेहरा वि०(देश) अलग। पृथक। जुदा।
बेहराना क्रि० (हि) १-फाड़ना। विदीर्ण करना। २-फटना। विदीर्ण होना।
बेहरी स्त्री० (हि) वह धन जो चन्दे के रूप में इकट्ठा किया जाय।
बेहाल वि०(फा) जिसकी दशा अच्छी न हो। व्याकुल विकल।
बेहाली स्त्री० (फा) व्याकुलता। बेचैनी।
बेहिजाबी स्त्री० (फा) निर्लज्जता।
बेहिम्मत वि० (फा) डरपोक।
बेहिसाब वि० (फा) बेहद। बहुत अधिक।
बेहुनर वि० (फा) जिसमें कोई हुनर या कला न हो।
बेहुनरा वि० (फा) दे० 'बेहुनर'।
बेहूदगी स्त्री० (फा) अशिष्टता। असभ्यता।
बेहूदा वि०(फा) अशिष्ट। असभ्य।
बेहून अव्य० (हि) बिना। बगैर। रहित।
बेहोफ वि० (फा) जिसे कोई चिन्ता न हो। बेफिक्र।
बेहोश वि० (फा) मूर्छित। बेसुध। जिसे होश न हो।
बेहोशी स्त्री० (फा) मूर्छा। अचेतनता।
बैंक पुं० (अ) वह स्थान जहां ब्याज आदि पाने के लिए रुपया जमा करते है और ऋण भी लेते हैं।
बैंकर पुं० (अ) महाजन। साहूकार।
बैंगन पुं० (हि) दे० 'बैंगन'।
बैंगनी वि० (हि) बैंगन के रङ्ग का ललाई लिए नीला रंग।
बैंजनी वि० (हि) दे० 'बैंगनी'।
बैंडा पुं० (हि) दे० 'बेड़ा'।
बैंत पुं० (हि) दे० 'बैंत'।
बै स्त्री० (हि) १-कंघी। बैसर (जुलाहे की)। २-दे० 'वय'। (अ) १-बेचना। २-बिक्री।
बैकना क्रि० (हि) बहकना।
बैकुंठ पुं० (हि) दे० 'वैकुंठ'।
बैखरी स्त्री० (हि) १-दे० 'वैखरी'। २-चिल्लाहट।
बैग पुं० (अ) थैला। झोला।
बैगन पुं० (हि) एक पौधा जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है। भंटा।
बैगनी वि० (हि) दे० 'बैंगनी'। पुं० बैंगन के जैसे रंग।
बैजंती स्त्री० (हि) दे० 'बैजयंती'।
बैज पुं० (अं) १-चपरास। २-चिह्न। ३-बिल्ला।
बैट पुं० (अं) क्रिकेट आदि खेल खेलने का बल्ला।
बैटरी स्त्री० (अं) १-एक यन्त्र जिसमें रासायनिक पदार्थों द्वारा बिजली तैयार की जाती है। २-प्रकाश करने का एक यन्त्र जिसमें सैल लगे होते है। ३-तोपखाना।
बैठक स्त्री० (हि) १-बैठने का स्थान या आसन। २-चौपाल। ३-बैठने की मुद्रा। ४-मूर्त्ति या खंभे आदि का आधार या चौकी। ५-जमाव। ६-संग। मेल। ७-एक प्रकार की कसरत। ८-सभा, समिति आदि का एक बार का अधिवेशन। (मीटिंग)।
बैठकखाना पुं० (हि) बैठ कर किसी से बात करने का कमरा।
बैठकबाज वि० (हि) धूर्त। शरारत करने वाला।
बैठका पुं० (हि) दे० 'बैठकखाना'।
बैठकी स्त्री०(हि) १-एक प्रकार की कसरत। २-आधार आसन। पद्दतल। ३-दीवट। मेज पर रखकर जलाने का लैंप। (टेबल लैंप)।
बैठन स्त्री०(हि) १-बैठने की क्रिया या भाव। २-बैठक आसन।
बैठना क्रि० (हि) १-टाँगों का आश्रय छोड़ कर इस प्रकार होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहें। स्थिर होना। आसन जमाना। २-अभ्यस्त होना। ३-तरल पदार्थ में मिली हुई वस्तु का तल में जा लगना ४-धंसना। ५-पिचक जाना। ६-(काम धंधा) बिगड़ना। ७-लागत लगाना। ८-गुड़ का पिघल जाना। ९-घोड़े आदि पर सवार होना। १०-किसी पद पर स्थित होना। ११-जमना। १२-किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ जा रहना। १३-अस्त होना। १४-बेरोजगार रहना। १५-अंडे सेना।
बैठनि स्त्री० (हि) बैठने का ढंग।
बैठवाना स्त्री० (हि) बैठने या रोपने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बैठाना क्रि० (हि) १-स्थिर करना। उपविष्ट करना। २-बैठने के लिए कहना। ३-ठीक जमाना। ४-पद पर नियुक्त करना। ५-धंसाना या डुबाना। ६-घोड़े आदि पर सवार कराना। ७-काम धंधे के योग्य न रखना। ८-(फोड़ा आदि) पिचकाना। ९-अपनी जगह पर लाना।
बैठारना क्रि० (हि) दे० 'बैठाना'।
बैठालना क्रि० (हि) दे० 'बैठाना'।
बैड़ाल वि० (सं) बिल्ली सम्बन्धी।
बैड़ालव्रती वि० (सं) १-ढोंगी। कपटी। २-आडम्बर करने वाला।
बैत स्त्री० (अ) पद्य। श्लोक।
बैतबाजी स्त्री० (अ) शेर आदि पढ़ने की प्रतियोगिता।
बैतरनी स्त्री० (हि) दे० 'वैतरणी'।
बैताल पुं० (हि) दे० 'बेताल'।
बैतालिक पुं० (हि) दे० 'वैतालिक'।

बैद पुं० (हि) दे० 'वैद्य'।
बैदई पुं० (हि) वैद्य का काम।
बैदाई स्त्री० (हि) उपचार। इलाज।
बैदेही स्त्री० (हि) दे० 'वैदेही'।
बैन पुं० (हि) वचन। बात।
बैनतेय पुं० (हि) गरुड़।
बैना पु० (हि) त्योहार आदि पर भेजे जाने वाला बायना। क्रि० बोना।
बैपारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
बैयर स्त्री० (हि) औरत। स्त्री।
बैयाँ अव्य० (हि) घुटनों के बल।
बैया पुं० (हि) १-बै। बैसर (जुलाहे)। २-छोटी ननँद।
बैरंग वि०(अं) डाक द्वारा भेजी गई वह चिट्ठी जिस पर कोई टिकट न लगाया हो। (बेयरिंग)।
बैर पुं० (हि) १-शत्रुता। दुश्मनी। २-वैमनस्य। दुर्भाव।
बैरक पुं०(अ) निशान। झंडा। पताका। स्त्री० छावनी में बनी सिपाहियों के रहने की एक साथ बनी कोठरियां।
बैरख पुं० (हि) दे० 'बैरक' (अ)।
बैरन स्त्री० (हि) सौत। पुं० (अं) एक उपाधि जो इंगलैंड में सामंतों को दी जाती है।
बैरिन स्त्री० (हि) वह स्त्री जो शत्रुता रखे। सौत।
बैराखी स्त्री०(हि) स्त्रियों की भुजा पर पहनने का एक गहना।
बैराग पुं० (हि) दे० 'वैराग्य'।
बैरागी पुं० (हि) एक प्रकार के वैष्णव मत को मानने वाले साधु।
बैराना क्रि० (हि) वायु विकार से पीड़ित होना।
बैरिस्टर पुं० (अं) एक प्रकार के विधिज्ञ जिनका दरजा वकीलों से बड़ा होता है।
बैरी वि० (हि) शत्रु। द्वेषी। विरोधी।
बैल पुं० (हि) १-गो-जाति का बधिया किया हुआ पशु जो गाड़ी और हल में जोता जाता है। २-मूर्ख।
बैलगाड़ी स्त्री० (हि) वह गाड़ी जो बैलों द्वारा खींची जाती है।
बैलमुतनी स्त्री० (हि) गो-मूत्र।
बैसंदर पुं० (हि) अग्नि।
बैस स्त्री० (हि) १-आयु। उम्र। २-यौवन।
बैसना क्रि० (हि) दे० 'बैठना'।
बैसर स्त्री० (हि) जुलाहों की कंघी जिससे वे बाने को ठीक करते हैं।
बैसवाड़ी स्त्री० (हि) १-अवध के पश्चिमी प्रांत बैसवाड़ की बोली। २-अवधी का एक भेद।
। पुं० (हि) दे० 'बैसाख'।
बैसाखी स्त्री० (हि) १-लाठी या डंडा जिसे बगल के नीचे लगा कर लंगड़े लोग सहारा लेकर चलते हैं। २-वैशाख की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला त्योहार।
बैसाना क्रि०(हि) बैठाना।
बैसारना क्रि०(हि) बैठाना। स्थिर करना।
बैसिक पुं० (हि) वेश्यागामी।
बैहर वि०(हि) १-भयानक। २-क्रोधी। स्त्री०(हि) वायु
बोंगना पुं०(हि) चौड़े मुँह का एक बरतन।
बोंड़ा पु०(देश) बारूद में आग लगाने का पलीता।
बोआई स्त्री०(हि) बोने का काम या मजदूरी।
बोक पुं० (हि) बकरा।
बोज पुं० (देश) घोड़ों का एक भेद।
बोझ पुं० (हि) १-बँधी हुई वस्तुओं का ढेर। भार। भारीपन। गुरुत्व। ३-उत्तरदायित्व। ४-उतना भार जितना एक आदमी या पशु ले जा सकता है। ५-रुचि के विरुद्ध काम। (लोड)।
बोझना क्रि०(हि) लादना।
बोझल वि०(हि) भारी। वजनी।
बोझिल वि० (हि) बोझल।
बोझा पुं० (हि) दे० 'बोझ'।
बोझाई स्त्री०(हि) बोझने का कार्य या मजदूरी।
बोट स्त्री०(अं) नाव। नौका।
बोटा पु०(हि) १-लकड़ी का कटा हुआ मोटा टुकड़ा। २-कटा हुआ टुकड़ा।
बोटी स्त्री० (हि) मांस का छोटा काटा हुआ टुकड़ा।
बोड़ना क्रि० (हि) डुबाना।
बोड़ा पुं०(हि) १-अजगर। बड़ा साँप। २-लोबिया।
बोड़ी स्त्री०(हि) १-दमड़ी। २-अति अल्प धन। ३-एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनाई जाती है
बोतल स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का कांच का बरतन जिसकी गर्दन लम्बी होती है।
बोतलवासिनी स्त्री०(हि) मदिरा। शराब।
बोतली वि०(हि) १-बोतल के रंग का कालापन लिये हरा।
बोदर स्त्री० (हि) लचीली छड़ी।
बोदा वि० (हि) १-मूर्ख। गावदी। २-सुस्त। ३-जो दृढ़ न हो।
बोदापन पुं० (हि) १-बुद्धि का तेज न होना। २-मूर्खता।
बोध पुं० (सं) १-ज्ञान। जानकारी। २-धीरज। सन्तोष।
बोधक वि० (सं) १-बोध कराने वाला। २-सूचक। पुं०(सं) शृङ्गार रस के हावों में से एक हाव।
बोधगम्य वि० (सं) समझ में आने योग्य।
बोधन पुं०(सं) १-बोध या ज्ञान कराना। २-जगाना। ३-सूचित करना। ४-दीपदान।

बोधना क्रि० (हिं) १-समझाना। ज्ञान देना। २-जताना।
बोधनीय वि० (सं) समझाने योग्य।
बोधि पुं० (सं) १-पूर्ण ज्ञान। २-पीपल का पेड़। ३-समाधि भेद।
बोधित वि० (सं) ज्ञापित। जनाया हुआ।
बोधितरु पुं० (सं) गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे भगवान बुद्ध को बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ था।
बोधितव्य वि० (सं) जताने या समझाने योग्य।
बोधिद्रुम पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिवृक्ष पुं० (सं) दे० 'बोधितरु'।
बोधिसत्व पुं० (सं) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परन्तु बुद्ध न हो सका हो। (महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम)।
बोध्य वि० (सं) समझाने योग्य।
बोनस पुं० (अं) १-वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके पारिश्रमिक या वेतन के अतिरिक्त दिया जाय २-सीमित समवाय द्वारा हिस्सेदारों को दिया जाने वाला अतिरिक्त लाभ।
बोना क्रि० (हि) १-खेत में उपजने के लिए बीज बखेरना। २-किसी बात का सूत्रपात करना।
बोनी स्त्री० (हि) बोने की क्रिया या बोने का मौसम।
बोबा पुं० (हि) १-स्तन। थन। २-घर का समान। ३-गठरी।
बोय स्त्री० (देश) दे० 'बू'।
बोर स्त्री० (हि) डुबोने की क्रिया। डुबाव।
बोरका पुं० (हि) दवात।
बोरना क्रि० (हि) १-डुबाना। २-डुबा कर भिगोना। ३-घुले रङ्ग में डुबा कर रंगना। ४-नष्ट करना। (मर्यादा)।
बोरसी स्त्री० (देश) अँगीठी।
बोरा पुं० (हि) १-अनाज आदि भर कर रखने का टाट का बड़ा थैला। २-घुंघरू।
बोरिया स्त्री० (हि) छोटा थैला। पुं० (फा) १-बिस्तर २-चटाई।
बोरी स्त्री० (हिं) टाट का छोटा थैला या बोरा।
बोर्ड पुं० (अं) १-किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। मंडल। २-कागज की मोटी दफ्ती। ३-कमेटी।
बोल पुं० (हि) १-मुख से उच्चारण किया हुआ शब्द वचन। वाणी। २-व्यंग। ताना। ३-गीत या बाजे के बंधे हुए शब्द। ३-प्रतिज्ञा। ४-संख्या।
बोलचाल स्त्री० (हिं) १-बातचीत। साधारण भाषा। २-बोलने का विशेष ढंग।
बोलता पुं० (हिं) १-आत्मा। २-जीवनतत्व। प्राण ३-मनुष्य। वि० खूब बोलने वाला। वाचाल।
बोलती स्त्री० (हि) बोलने की शक्ति। वाणी।
बोलनहारा वि०(हि) बोलने वाला। पुं०दे० 'बोलता'
बोलना क्रि० (हि) १-मुंह से शब्द निकालना। उच्चारण। २-किसी वस्तु से शब्द उत्पन्न करना या निकलना। ३-कुछ कहना। ४-बाकी न रहना। ५-जीर्ण होना। ६-हार मान लेना। ७-उत्तर में कुछ कहना। ८-पुकारना। ९-छेड़छाड़ करना।
बोलपट पुं० (हि) वह चलचित्र जिसमें पात्रों के संवाद आदि भी सुनाई देते हों। (टॉकी)।
बोलवाना क्रि० (हि) उच्चारण कराना।
बोलसर पुं० (हि) १-मौलसरी। २-एक प्रकार का घोड़ा।
बोलाचाली पुं०(हि) बोलचाल।
बोलावा पुं० (हि) निमंत्रण। बुलावा।
बोली स्त्री० (हि) १-किसी प्राणी से निकला हुआ शब्द। वाणी। २-सार्थक बात। ३-नीलाम में जोर से चिल्ला कर दाम लगाना। ४-किसी विशेष स्थान पर बना शब्दों को उच्चारण करने का ढंग जिसका व्यवहार केवल बातचीत में होता है पर साहित्य में नहीं। (डाइलैक्ट)।
बोलीठोली स्त्री० (हि) व्यंग। कटाक्ष।
बोलीदार पुं० (हि) वह आसामी जिसे खेत बिना किसी लिखत-पढ़त के दिया गया हो।
बोल्शेविक (रूसी) रूस के साम्यवादी दल का अग्रगामी या चरमपंथी सदस्य।
बोल्शेविज्म पुं० (अं) रूस के साम्यवादी दल के चरमपंथी दल का एक सिद्धांत।
बोवाई स्त्री० (हि) दे० 'बोआई'।
बोवाना क्रि० (हि) बोने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना।
बोह स्त्री० (देश) डुबकी।
बोहनी स्त्री० (हि) किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहित पुं० (हिं) बड़ी नाव। जहाज।
बोहित्थ पुं० (हि) दे० 'बोहित्थ'।
बौंड़ स्त्री०(हि) १-लता। बेल। २-दूर तक फैली लम्बी टहनी।
बौंड़ना क्रि०(हि) १-बेल की तरह फैलाना। २-टहनी फेंकना।
बौंडर पुं० (हि) दे० 'बवंडर'।
बौंड़ी स्त्री० (हि) १-पौधों या लताओं का कच्चा फल या कलियां। २-फली। ३-दमड़ी।
बौआना क्रि० (हि) स्वप्न अवस्था में कुछ कहना।
बौखल वि० (हि) सनकी। पागल।
बौखलाना क्रि० (हि) क्रोध में आकर असम्बद्ध बातें करना।
बौखलाहट स्त्री० (हि) क्रोधावेश। बदहवासी।
बौड़ाह स्त्री० (हि) दे० 'बौछार'।

बौछार स्त्री० (हिं) १-हवा के झोंके से आने वाली झड़ी। २-किसी वस्तु का अधिक मात्रा या संख्या में आकर गिरना। ३-लगातार कटु आलोचना की बातें।
बौड़ना क्रि० (हि) दे० 'बौराना'।
बौड़म वि०(हि) नासमझ। मूर्ख। पागल। पुं० पागल व्यक्ति।
बौड़हा वि० (हि) दे० 'बौड़म'।
बौद्ध वि० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा प्रचलित। पुं० गौतम बुद्ध के चलाये हुए धर्म का अनुयायी।
बौद्धधर्म पुं० (सं) महात्मा बुद्ध द्वारा चलाया गया धर्म।
बौद्धमत पुं० (सं) दे० 'बौद्धधर्म'।
बौना पुं० (हि) बहुत ठिगना आदमी। नाटा मनुष्य
बौर पुं० (हि) १-आम की मंजरी। २-मौर।
बौरई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौरना क्रि० (हि) आम की मंजरी निकलना।
बौरहा वि० (हि) पागल। विक्षिप्त। बावला।
बौरा वि० (हि) १-बावला। पागल। २-भोला। ३-मूर्ख। ४-गूँगा।
बौराई स्त्री० (हि) पागलपन।
बौराना क्रि० (हि) १-विक्षिप्त या पागल हो जाना। २-किसी को पागल बनाना। बेवकूफ बनाना।
बौराह वि० (हि) बावला। पागल।
बौरी स्त्री० (हि) बावली स्त्री।
बौहर स्त्री० (हि) बधू। दुलहिन।
ब्यंग पुं० (हि) दे० 'व्यंग'।
ब्यंजन पुं० (हि) दे० 'व्यंजन'।
ब्यक्ति स्त्री० (हि) दे० 'व्यक्ति'।
ब्यवसाय पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
ब्यवहरिया पुं०(हि) लेनदेन करने वाला। महाजन।
ब्यवहार पुं० (हि) १-दे० 'व्यवहार'। २-रुपये का लेनदेन।
ब्यवहारी वि० (हि) लेनदेन करने वाला। व्यापारी। व्यवहार करने वाला।
ब्यसन पुं० (हि) दे० 'व्यसन'।
ब्याज पुं० (हि) १-वह धन जो मूलधन पर मिलता है सूद। २-दे० 'व्याज'।
ब्याजबट्टा पुं० (हि) लाभ-हानि।
ब्याजू वि० (हि) ब्याज पर लगाया हुआ (धन)।
ब्याध पुं० (हि) दे० 'व्याध'।
ब्याधा स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याधि स्त्री० (हि) दे० 'व्याधि'।
ब्याना क्रि०(हि) गर्भ से निकलना या जनना। (पशु)
ब्यापक वि० (हि) दे० 'व्यापक'।
ब्यापना क्रि० (हि) १-व्याप्त होना। २-चारों ओर छाना या फैलना। ३-घेरना। ४-प्रभाव दिखाना।
ब्यापार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्यापारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्यार स्त्री० (हि) हवा। वायु।
ब्यारि स्त्री० (हि) दे० 'बयारी'।
ब्यारी स्त्री० (हि) दे० 'ब्यालू'।
ब्याल पुं० (हि) दे० 'व्याल'।
ब्याली स्त्री० (हि) सांपिन। नागिन। वि० सर्पो को धारण करने वाला।
ब्यालू पुं० (हि) रात का भोजन। बियारी।
ब्याह पुं० (हि) विवाह। शादी। पाणिग्रहण।
ब्याहता वि० (हि) जिसके साथ विवाह हुआ हो। पुं० पति।
ब्याहना क्रि० (हि) किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ विधिवत् विवाह करना।
ब्योंच स्त्री० (देश) मोच।
ब्योंचना क्रि०(हि) १-सहसा मुड़ जाने से नस आदि का अपने स्थान से हट जाना। मोच आजाना। २-किसी अंग का इधर-उधर मुड़ जाना।
ब्योंत स्त्री० (हि) १-कार्य पूर्ण करने की युक्ति। २-ढंग। युक्ति। उपाय। संयोग। अवसर। ४-पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काट-छांट। ५-आयोजन।
ब्योंतना क्रि०(हि) १-शरीर के नाप के अनुसार कपड़ा काटना-छांटना। २-मारना। काटना। मार डालना।
ब्योंताना क्रि० (हि) नाप के अनुसार दर्जी से कपड़ा कटवाना।
ब्योपार पुं० (हि) दे० 'व्यापार'।
ब्योपारी पु० (हि) दे० 'व्यापारी'।
ब्योरन स्त्री० (हि) बालों को संवारने का ढंग।
ब्योरना क्रि० (हि) १-उलझे हुए बालों को सुलझाना। २-उलझे हुए तागों को सुलझाना।
ब्योरा पुं० (हि) किसी घटना के अन्तर्गत एक एक बात का उल्लेख। वृतांत। समाचार।
ब्योरेवार अव्य० (हि) विस्तारपूर्वक।
ब्योसाय पुं० (हि) दे० 'व्यवसाय'।
ब्योहर पुं० (हि) रुपये उधार देने का काम।
ब्योहरा पुं० (हि) सूद पर रुपये के लेन-देन का व्यापार।
ब्योहरिया पुं० (हि) सूद पर रुपये का लेन-देन करने वाला।
ब्योहार पुं० (हि) दे० 'व्यवहार'।
ब्यौहरिया पु० (हि) दे० 'ब्योहरिया'।
ब्यौहार पु० (हि) दे० 'व्यवहार'।
ब्रंद पु० (हि) दे० 'वृंद'।
ब्रज पुं० (हि) दे० 'वृज'।
ब्रजना क्रि० (हि) चलना। गमन करना।
ब्रह्मंड पु० (हि) दे० 'ब्रह्मांड'।

**ब्रह्म** पु० (सं) १-वह सब से बड़ी नित्य चेतनसत्ता जो जगत् का मूल कारण और सच्चिदानंदस्वरूप मानी गई है। २-ईश्वर। परमात्मा। ३-ब्राह्मण। ४-ब्रह्मा (समास में)। ५-वेद। ६-एक की संख्या। ७-तपस्या।

**ब्रह्मकन्यका** स्त्री० (सं) १-सरस्वती। ब्राह्मीबूटी।

**ब्रह्मकन्या** स्त्री० (सं) दे० 'ब्रह्मकन्यका'।

**ब्रह्मकर्म** पु० (सं) १-वेदविहित कर्म। २-ब्राह्मण का कर्म।

**ब्रह्मकल्प** पु० (सं) ब्रह्मा की आयु। वि० (सं) ब्रह्मा के समान।

**ब्रह्मगांठ** स्त्री० (हि) यज्ञोपवीत की मुख्य गांठ।

**ब्रह्मग्रह** पु० (सं) ब्रह्मराक्षस।

**ब्रह्मघातक** पु० (सं) ब्राह्मण का वध करने वाला।

**ब्रह्मघातिनी** स्त्री० (सं) १-ब्राह्मण की हत्या करने वाली स्त्री। २-रजस्वला होने की संज्ञा।

**ब्रह्मघाती** पु० (सं) दे० 'ब्रह्मघातक'।

**ब्रह्मघोष** पु० (सं) १-वेदध्वनि। २-वेदपाठ।

**ब्रह्मघ्न** वि० (सं) ब्राह्मण को मारने वाला।

**ब्रह्मचारिणी** स्त्री० (सं) १-ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाली स्त्री। २-दुर्गा। पार्वती। २-सरस्वती। ३-भारंगी बूटी।

**ब्रह्मचारी** पु० (सं) जो ब्रह्मचर्य-व्रत का संकल्प किये हो। २-स्त्री-संसर्ग आदि से अलग विद्याध्ययन करने वाला पुरुष।

**ब्रह्मज्ञ** पु०(सं) वेदांत का तत्व समझने वाला। ज्ञानी।

**ब्रह्मज्ञान** पु० (सं) ब्रह्म का या पारमार्थिक सत्ता का ज्ञान।

**ब्रह्मज्ञानी** वि०(सं) परमार्थ तत्त्व का ज्ञान रखनेवाला।

**ब्रह्मण्य** वि० (सं) १-ब्रह्म या ब्रह्मा सम्बन्धी। २-ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखने वाला।

**ब्रह्मतत्व** पु० (सं) ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान।

**ब्रह्मतेज** पु० (सं) १-ब्रह्म का तेज। २-ब्रह्मचर्य का तेज।

**ब्रह्मत्व** पु०(सं) १-ब्राह्मणत्व। २-ब्रह्म होने का भाव या धर्म।

**ब्रह्मदंड** पु० (सं) १-ब्राह्मण का शाप। २-ब्रह्मचारी का डंडा।

**ब्रह्मदूषक** वि० (सं) जो वेद की निंदा करता हो।

**ब्रह्मदेय** पु० (सं) ब्राह्मण को दान में दी हुई वस्तु।

**ब्रह्मदोष** पु० (सं) ब्राह्मण की हत्या करने का पाप।

**ब्रह्मद्रोही** वि० (सं) ब्राह्मणों से वैर रखने वाला।

**ब्रह्मद्वार** पु० (सं) खोपड़ी के बीच माना हुआ वह छिद्र जिससे योगियों के प्राण निकलते हैं। ब्रह्मछिद्र

**ब्रह्मद्विट्** वि० (सं) ब्राह्मण या वेद के प्रति द्वेष।

**ब्रह्मनाभ** पु० (सं) विष्णु।

**ब्रह्मनिष्ठ** वि० (सं) ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला

**ब्रह्मपद** पु० (सं) १-ब्रह्मत्व। २-मोक्ष। मुक्ति।

**ब्रह्मपारायण** पु० (सं) सारे वेदों का अध्ययन।

**ब्रह्मपाश** पु० (सं) ब्रह्मा का पाश नामक एक अस्त्र।

**ब्रह्मपुत्र** पु० (सं) १-ब्राह्मण का बेटा। २-एक नदी का नाम जो मानसरोवर से निकल कर आसाम में होती हुई बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। ३-मनु। ४-नारद। ५-वशिष्ठ।

**ब्रह्मपुत्री** स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-सरस्वती नदी।

**ब्रह्मपुर** पु० (सं) १-ब्रह्मलोक। २-ब्रह्म के अनुभव का स्थान हृदय।

**ब्रह्मपुरी** स्त्री० (सं) १-वाराणसी। २-ब्रह्मलोक।

**ब्रह्मफाँस** स्त्री० (हि) दे० 'ब्रह्मपाश'।

**ब्रह्मबल** पु० (सं) वह तेज या शक्ति जो तप से प्राप्त हो।

**ब्रह्मभाव** पु० (सं) ब्रह्म में लीन होना।

**ब्रह्मभूत** पु०(सं) जो ब्रह्म में लीन हो गया हो।

**ब्रह्मभोज** पु० (सं) ब्राह्मण को भोजन कराने का कर्म

**ब्रह्ममुहूर्त** पु० (सं) सूर्योदय के तीन या चार घड़ी पहले का समय।

**ब्रह्मयज्ञ** पु० (सं) १-पंच महायज्ञों में से एक। २-वेद पढ़ना।

**ब्रह्मरंध्र** पु० (सं) दे० 'ब्रह्मद्वार'।

**ब्रह्मराक्षस** पु० (सं) वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु से मर कर राक्षस होगया हो।

**ब्रह्मरेखा** पु० (सं) दे० 'ब्रह्मलेख'।

**ब्रह्मर्षि** पु० (सं) ब्राह्मण ऋषि।

**ब्रह्मलेख** पु० (सं) ब्रह्मा का लिखा हुआ भाग्य का लेख।

**ब्रह्मलोक** पु० (सं) मोक्ष का एक भेद। ब्रह्मा का लोक

**ब्रह्मवादी** वि० (सं) वेदों को पढ़ने या सिखाने वाला

**ब्रह्मविद्** वि०(सं) ब्रह्म को जानने या समझने वाला।

**ब्रह्मविद्या** स्त्री० (सं) १-वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म को जान सकें। २-दुर्गा।

**ब्रह्मवेत्ता** वि० (सं) दे० 'ब्रह्मविद्'।

**ब्रह्मवेदी** वि० (सं) दे० 'ब्रह्मविद्'।

**ब्रह्मशासन** पु० (सं) वेद या स्मृति की आज्ञा।

**ब्रह्मसमाज** पु० (सं) एक मात्र ब्रह्म की उपासना करने वाला एक संप्रदाय।

**ब्रह्मसुता** स्त्री० (सं) सरस्वती।

**ब्रह्मस्व** पु० (सं) ब्राह्मण का धन।

**ब्रह्मस्वहारी** वि० (सं) ब्राह्मण का धन चोरी करने वाला।

**ब्रह्महत्या** स्त्री० (सं) ब्राह्मण को मार डालना।

**ब्रह्मांड** पु० (सं) १-संपूर्ण विश्व जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २-विश्वगोलक। ३-खोपड़ी। कपाल।

**ब्रह्मा** पु० (सं) ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करने वाला है। विधाता।

सृष्टिकर्ता।
ब्रह्माणी स्त्री० (सं) १-ब्रह्मा की स्त्री। २-सरस्वती। एक नदी का नाम।
ब्रह्मानंद पुं० (सं) ब्रह्म के ज्ञान से मिलने वाला आनंद।
ब्रह्माभ्यास पुं० (सं) वेदाभ्यास।
ब्रह्मार्पण पुं० (सं) ब्रह्म को सर्व कर्मफल का समर्पण।
ब्रह्मासन पुं० (सं) वह आसन जिसमें बैठकर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है।
ब्रह्मास्त्र पुं०(सं) एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र जो मंत्र द्वारा चलता था।
ब्रह्मोपदेश पुं० (सं) वेद स्मृति या ब्रह्मज्ञान की शिक्षा
ब्रात पुं० (हि) दे० 'व्रात्य'।
ब्राह्म वि० (सं) ब्रह्म सम्बन्धी। पुं० १-विवाह का एक भेद। २-एक पुराण। ३-नारद। ४-नक्षत्र।
ब्राह्मण पुं०(सं) १-हिन्दुओं के चार वर्णों में से पहला द्विज। २-वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता ३-शिव। ४-विष्णु। ५-अग्नि।
ब्राह्मणक पुं० (सं) नाम मात्र का ब्राह्मण। अयोग्य ब्राह्मण।
ब्राह्मणत्व पुं० (सं) ब्राह्मण का धर्म, भाव या अधिकार।
ब्राह्मणद्वेषी वि० (सं) ब्राह्मण से द्वेष करने वाला।
ब्राह्मणप्रिय पुं० (सं) विष्णु।
ब्राह्मणभोजन पुं० (सं) धार्मिक विचार से कराया हुआ ब्राह्मणों का भोजन।
ब्राह्मणवध पुं० (सं) ब्राह्मण की हत्या।
ब्राह्मणी स्त्री० (सं) १-ब्राह्मण जाति की स्त्री। २-बुद्धि।
ब्राह्मण्य पुं० (सं) १-ब्राह्मणत्व। २-ब्राह्मणों का समुदाय।
ब्राह्ममुहूर्त पुं० (सं) दे० 'ब्रह्ममुहूर्त'।
ब्राह्मविवाह पुं० (सं) वह विवाह जिसमें कन्यादान दिया जाता है।
ब्राह्मसमाज पुं० (हि) दे० 'ब्रह्मसमाज'।
ब्राह्मी स्त्री० (सं) ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति। २-सरस्वती। ३-वाणी। ४-भारत की एक प्राचीन लिपि जिससे देवनागरी, बङ्गला आदि लिपियां निकली हैं। ५-एक बूटी जो औषध के काम आती है।
ब्रिटिश वि० (अं) अंग्रेजी। ब्रिटेन सम्बन्धी।
ब्रिटिशराज पुं० (हि०) अंग्रेजी राज्य।
ब्रिटेन पुं० (अं) इगलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स।
ब्रीगेड पुं० (अं) सेना का एक समूह। वाहिनी।
ब्रीगेडियर पुं० (अं) वाहिनीपति।
ब्रीड़ पुं० (हि) दे० 'व्रीड़'।
ब्रीड़ना क्रि० (हि) लजाना। लज्जित होना।
ब्रीड़ा पुं० (हि) दे० 'व्रीड'।
ब्रीवियर पुं० (अं) एक प्रकार का छोटा टाइप (मुद्रण)
ब्रेक पुं० (अं) १-पहिये की गति को रोकने का एक यन्त्र। २-रेलगाड़ी में गार्ड का डिब्बा।
ब्लाउज पुं० (अं) स्त्रियों के पहनने की एक विलायती ढंग की कुरती।
ब्लॉक पुं० (अं) १-तांबे, जस्ते, काठ आदि का वह ठप्पा जिससे चित्र आदि छापे जाते हैं। २-भूमि का चौकोर टुकड़ा या वर्ग।

[शब्दसंख्या--३७७१२]

# भ

**भ** हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
भंकार पुं० (हि) भयंकर ध्वनि का शब्द।
भंग पुं० (सं) १-तरंग। लहर। २-पराजय। ३-खंड ४-टेढ़ापन। कुटिलता। ५-गमन। ६-टूटने का भाव। विध्वंस। (ब्रीच)। ८-बाधा। ९-भय। १०-लकवा नामक रोग। ११-सभा आदि समाप्त करना (डिस्पर्स)। स्त्री० (हि) दे० भांग।
भंगघुटना पुं० (हि) भांग घोटने का मोटा डंडा।
भंगड़ वि० (हि) बहुत भांग पीने वाला। भंगेड़ी।
भंगना क्रि० (हि) १-टूटना। २-दबना। ३-हार मानना। ४-तोड़ना। ५-दबाना।
भँगरा पुं० (हि) १-एक प्रकार का भांग के नशे का बना मोटा कपड़ा। २-एक बूटी।
भंगराज पुं०(हि)१-कोयल के आकार की एक चिड़िया २-एक बूटी।
भंगरैया स्त्री० (हि) दे० 'भँगरा।
भँगवासा स्त्री० (सं) हलदी।
भँगार पुं० (हि) १-बरसात के दिनों में जमीन धसने जाने से बना गड्ढा। २-घास-फूस। कूड़ा-करकट ३-गड्ढा।
भंगि स्त्री० (सं) १-विच्छेद। २-टेढ़ाई। ३-विन्यास अन्दाजा। ४-लहर। ५-भंग। ६-व्याज। ७-प्रतिकृति। ८-कुटिलता।
भंगिमा स्त्री० (सं) १-कुटिलता। २-स्त्रियों के हाव-भाव या कोमल चेष्टाएँ। अंगनिवेश। अन्दाज। ३-लहर। प्रतिकृति।
भंगी पुं० (हि) १-एक जाति जिसके अधिकांश लोग मैला या विष्ठा उठाते हैं। २-भंगेड़ी। वि० भंग या नाश होने वाला।
भंगुर वि० (सं) १-नाशवान। २-टेढ़ा। कुटिल।

**भंगुष्ट** पुं०(सं) एक प्रकार का पूर्वी भारत में होनेवाला बलप्रवर्द्धक फल। मंगोस्ताँ। (मेंगोस्टीन)।
**भंगेड़ी** वि० (सं) जिसे भांग पीने की लत हो। भंगड़ी
**भँगेरा** पुं० (हि) दे० 'भँगरा'।
**भँगेला** पुं० (हि) दे० 'भँगरा'।
**भंजक** वि० (सं) तोड़ने या भंग करने वाला।
**भंजन** पुं० (सं) १-तोड़ना। भंग करना। २-ध्वंस। ३-नाश। ४-भांग। ५-वायु के कारण होने वाली पीड़ा। वि० भंग करने या तोड़ने वाला।
**भंजनशील** वि० (सं) जो गिरने या पीटा जाने पर चूर-चूर हो जाय। (ब्रिटल)।
**भंजनशीलता** स्री (सं) गिरने या पीटा जाने पर चूर-चूर हो जाने का गुण। (ब्रिटलनेस)।
**भंजना** क्रि०(हि) १-टुकड़े होना। २-किसी बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलवाना। ३-(नागे आदि) बटा जाना। ४-कागज के तावों को कई परतों में मोड़ना। ५-टुकड़े करना। स्री० १-टूटना। २-बिखरना। ३-नाश होना। ४-पीड़ा।
**भँजाई** स्री० (हि) १-भँजाने की क्रिया या भाव। २-भँजाने की मजदूरी। ३-दे० 'भुनाई'।
**भँजाना** क्रि० (हि) १-भँजाने, तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना। २-दे० 'भुनाना'।
**भंटा** पुं० (हि) बैंगन।
**भंड** पुं० (सं) दे० 'भांड'। (क्लाउन)। वि० १-अश्लील गन्दी बातें बकने वाला। २-धूर्त। पाखण्डी।
**भंडता** स्री० (सं) १-भांडों का ओछा परिहास। २-मन के बुरे भाव। ३-भांडों का काम।
**भँडताल** पुं० (हि) एक प्रकार का निम्न कोटि का गाना और नाच जिसमें और लोग तालियां पीटते हैं।
**भँडतिल्ला** पुं० (हि) दे० 'भँडताल'।
**भँडना** क्रि० (हि) १-बिगड़ना। हानि पहुँचाना। २-तोड़ना। भग करना। ३-बदनाम करना।
**भँडर** पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।
**भँडरिया** स्री० (हि) १-एक जाति विशेष जिसके लोग फलित ज्योतिष आदि से लोगों का भविष्य बता कर अपनी जीविका चलाते हैं। २-दीवार में बना हुआ ताख जिसमें पल्ले लगे हों। वि० पाखंडी। ढोंगी।
**भंडा** पुं०(हि) १-बर्तन। पात्र। भांडा। २-भंडार। ३-भेद। रहस्य।
**भंडाना** क्रि०(हि) १-उछलकूद मचाना। २-वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना।
**भंडाफोड़** पुं० (हि) रहस्य का भेद प्रकट होना।
**भंडार** पुं० (हि) १-कोष। खजाना। २-खाने पीने आदि की वस्तुएं रखने का स्थान। ३-उदर। पेट ४-पाकशाला। ५-दे० 'भंडारा'। ६-सामान रखने का भंडारा। (वेअर हाउस)।
**भंडारा** पुं० (हि) १-दे० 'भंडार'। २-समूह। झुण्ड ३-वह भोज जिसमें साधु संतों को खिलाया जाता है।
**भंडारी** पुं० (हि) १-कोषाध्यक्ष। खजांची। २-भंडार का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी। ३-रसोइया। स्री० १-छोटी कोठरी। २-कोश। खजाना।
**भँडेरिया** पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।
**भँडेहर** पुं० (हि) १-छोटे मिट्टी के बरतन। २-व्यर्थ की वस्तुओं का किसी छोटे स्थान पर लगा हुआ ढेर।
**भँड़ौआ** पुं० (हि) १-भांडों के गाने की गति। २-निम्न कोटि की साधारण कविता।
**भँभाना** क्रि० (हि) गाय आदि पशुओं का चिल्लाना या बोलना। रँभाना।
**भँभीरी** स्री० (हि) १-एक बरसाती फतिंगा। २-एक छोटा खिलौना। फिरकी।
**भँभेरी** स्री० (हि) भय। डर।
**भँवना** क्रि० (हि) १-घूमना। फिरना। २-चक्कर लगाना।
**भँवर** पुं० (हि) १-भौंरा। २-जल के बीच में वह स्थान जहाँ लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है। आवर्त। ३-गड्ढा। ४-प्रेमी। ५-पति।
**भँवरकली** स्री० (हि) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार लगी रहती है कि घूम सके।
**भँवरजाल** पुं० (हि) भ्रमजाल। सांसारिक झगड़े।
**भँवरभीख** स्री० (हि) वह भीख जो घूम-घूम कर माँगी जाय।
**भँवरा** पुं० (हि) भौंरा। भ्रमर।
**भँवरी** स्री० (हि) १-भँवर। पानी का चक्कर। २-गश्त। फेरी। ३-परिक्रमा। ४-बालों का एक केन्द्र पर घूमे हुए होना।
**भँवाना** क्रि० (हि) १-घुमाना। २-चक्कर देना। ३-उलझन में डालना।
**भँवारा** वि० (हि) भ्रमणशील। घूमने वाला।
**भ** पुं० (सं) १-नक्षत्र। २-ग्रह। ३-राशि। ४-भ्रमर। ५-पहाड़। ६-भ्रांति। ७-छंदशास्त्र में भगण का सूक्ष्म रूप।
**भइया** पुं०(हि) १-भाई। २-भ्राता। ३-बराबर वालों के लिये व्यवहार में लाने का आदरसूचक शब्द।
**भउजाई** पुं० (हि) दे० 'भौजाई'।
**भकक्षा** स्री० (हि) नक्षत्रों के चलने का मार्ग।
**भकभकाना** क्रि० (हि) भक-भक शब्द करके जलना। चमकना।
**भकाऊँ** पुं० (हि) एक कल्पित व्यक्ति जिससे बच्चे डराये जाते हैं। हव्वा।

भकुआ वि० (हिं) मूर्ख। मूढ़।
भकुआना क्रि०(हिं) १-भौंचक्का होना। २-चकपकाना। ३-चकपका देना। ४-मूर्ख बनाना।
भकूट पुं० (सं) राशियों का एक समूह जो विवाह की गणना में शुभ माना जाता है। (फ० ज्यो०)।
भकोसना क्रि० (हिं) १-बिना चबाये हुए ही जल्दी-जल्दी खाना। निगलना।
भक्त वि० (सं)१-बांटा हुआ। २-बांट कर दिया हुआ ३-सेवा या भक्ति करने वाला। ४-अनुयायी। पुं (हिं) १-उपासक। २-अन्न। ३-उबला हुआ चावल
भक्तकार पुं० (सं) रसोइया। पाचक।
भक्तदास पुं० (सं) भोजन मात्र पर सेवा करने वाला दास।
भक्तबच्छल वि० (सं) दे० 'भक्तवत्सल'।
भक्तमंड पुं० (सं) चावल का मांड।
भक्तवत्सल वि० (सं) भक्तों पर कृपा रखने वाला (विष्णु)।
भक्तशाला स्त्री० (सं) १-पाकशाला। २-धर्मोपदेश सुनने का स्थान।
भक्ताई स्त्री० (हिं) दे० 'भक्ति'।
भक्ति स्त्री०(सं) १-बांटना। अनेक भागों में विभक्त करना। २-भाग। ३-बांटने या विभाग करने वाली रेखा। ४-अंग। अवयव। ५-पूजा। ६-सेवा-सुश्रूषा। ७-श्रद्धा। ८-रचना। ६-ईश्वर या पूज्य देवता के प्रति असीम श्रद्धा और अनुराग। १०-उपचार। ११-विश्वास। १२-किसी के प्रति होने वाला श्रद्धाभाव।
भक्तिगम्य वि० (सं) जो सेवा से प्राप्त होता हो। (शिव)।
भक्तिपूर्वक अव्य० (सं) भक्तिसहित।
भक्तिप्रवण वि० (सं) जो भक्ति में लीन हो।
भक्तिभाजन वि० (सं) जो भक्ति करने के योग्य हो।
भक्तिमान् वि० (सं) जिसमें भक्ति हो।
भक्तिमार्ग पुं० (सं) मोक्ष प्राप्त करने का एक तरीका
भक्तियोग पुं० (सं) भक्ति के द्वारा भगवान को प्राप्त करने की साधना।
भक्ष पुं०(सं) १-खाने का पदार्थ। भोजन। २-भक्षण खाने का काम।
भक्षक वि०, पुं० (सं) १-भोजन करने वाला। २-स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करने वाला।
भक्षण पुं० (सं) १-भोजन करना। २-आहार। भोजन।
भक्षणीय वि० (सं) खाने योग्य।
भक्षना क्रि० (हिं) भोजन करना।
भक्षित वि० (सं) खाया हुआ।
भक्षी वि० (सं) दे० 'भक्षक'।
भक्ष्य वि० (सं) जो खाया जा सके। (एडीबल)। पुं० आहार। भोजन।
भक्ष्याभक्ष्य पुं०(सं) खाने और न खाने योग्य पदार्थ
भख पुं० (हिं) भोजन। आहार।
भखना क्रि० (हिं) १-खाना। भोजन करना। २-निगलना।
भगंदर पुं० (हिं) एक रोग जिसमें गुदा के भीतर किनारे में फोड़ा हो जाता है।
भग पुं० (सं) १-सूर्य। २-ऐश्वर्य। ३-इच्छा। ४-महात्म्य। ५-धर्म। ६-मोक्ष। ७-सौभाग्य। ८-धन ६-चन्द्रमा। स्त्री० स्त्री की योनि या जननेंद्रिय।
भगण पुं० (सं) १-खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर। २-छन्दशास्त्रानुसार एक गण जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और दो लघु वर्ण होते हैं। (SII)।
भगत वि० (हि) १-भक्त। सेवक। २-विचारवान। ३-साधु। ४-जो मांसहारी न हो। पुं० १-वैष्णव मत को मानने वाला साधु। २-राजस्थान की एक जाति। ३-होली में रचा जाने वाला स्वांग।
भगतबछल वि० (हि) दे० 'भक्तवत्सल'।
भगति स्त्री० (हिं) दे० 'भक्ति'।
भगतिया पुं० (हि) राजस्थान की गाना बजाने का कार्य करने वाली एक जाति।
भगती स्त्री० (हिं) दे० 'भक्ति'।
भगदड़ स्त्री०(हिं) बहुत से लोगों का सहसा इधर-उधर दौड़ना।
भगन वि० (हिं) दे० 'भग्न'।
भगना क्रि० (हिं) दे० 'भागना'। पुं० भानजा।
भगनी स्त्री० (हिं) दे० 'भगिनी'।
भगर पुं० (हिं) सड़ा हुआ अनाज या अन्न। पुं० (देश) छल। फरेब।
भगरना क्रि० (हिं) अनाज की गरमी पाकर सड़ने लगना।
भगल पुं० (देश) दे० 'भगर'।
भगवंत वि० (हिं) दे० 'भगवान'।
भगवत् पुं० (सं) ईश्वर। परमात्मा।
भगवती स्त्री० (सं) १-देवी। २-सरस्वती। ३-दुर्गा। ४-गंगा।
भगवद्भक्ति स्त्री० (सं) भगवान की भक्ति।
भगवदीय वि०(सं)१-भगवत्-सम्बन्धी। पुं० भगवान का भक्त।
भगवान वि० (हिं) १-धन, संपत्ति या ऐश्वर्य वाला २-पूज्य। पुं० १-ईश्वर। २-पूज्य। और आदरणीय व्यक्ति। ३-विष्णु। ४-बुद्ध। ५-शिव।
भगाना क्रि० (हिं) १-किसी को दौड़ने या भागने में प्रवृत्त करना। २-ऐसा कार्य करना जिससे दूसरा कहीं से हट जाय। ३-किसी दूसरे की स्त्री या बच्चे आदि को उड़ा ले जाना। (एबडक्शन)।
भगिनिका स्त्री० (सं) भगिनी। बहन।

भगिनी स्त्री० (सं) बहन। सहोदरा।
भगिनीपति पुं० (सं) बहनोई।
भगिनीसुत पुं० (सं) भांजा।
भगीरथ पुं०(सं) अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जो गंगा को तपस्या करके पृथ्वी पर लाये थे। वि० बड़ा। भारी।
भगीरथ कन्या स्त्री० (सं) गंगा।
भगीरथ प्रयत्न पुं० (सं) असाधारण कोशिश या प्रयत्न।
भगीरथ सुता स्त्री० (सं) गंगा।
भगोड़ा पुं०(हि) १-वह जो अपना कार्य, पद अथवा कर्तव्य छोड़ कर कहीं भाग गया हो। (फ्यूजिटिव) २-काम या दंड के डर से भागा हुआ। (एब्सकोंडर)
भगोल पुं० (सं) नक्षत्र। चक्र। खगोल।
भगोष्ठ पुं० (सं) भग के बाहर के सिरे का भाग।
भगौती स्त्री० (हि) दे० 'भगवती'।
भगौहाँ वि० (हि) १-भागने के लिए सदा तैयार रहने वाला। २-कायर। ३-गेरुआ।
भग्गुल वि० (हि) दे० 'भगोड़ा'।
भग्गू वि० (हि) १-कायर। २-डर कर भागने वाला।
भग्न वि० (सं) १-टूटा हुआ। २-पराजित।
भग्नक्रम वि० (सं) जिसका सिलसिला या क्रम टूट गया हो।
भग्नचित्त वि० (सं) जिसका दिल टूट गया हो। हताश
भग्नचेष्ट वि० (सं) विफल होने के कारण चेष्टा रहित होने वाला।
भग्नदर्प वि० (सं) जिसका घमण्ड टूट गया हो।
भग्नप्रक्रम पुं० (सं) एक काव्य दोष।
भग्नप्रतिज्ञ वि० (सं) जिसकी प्रतिज्ञा टूट गई हो।
भग्नमना वि० (सं) हतोत्साह।
भग्नमनोरथ वि० (सं) नाकाम। जिसकी कामना पूरी न हुई हो।
भग्नव्रत वि० (सं) जिसका व्रत टूट गया हो।
भग्नश्री वि० (सं) जो पहले कभी सुन्दर रही हो।
भग्नांश पुं० (सं) १-मूल द्रव्य का कोई अलग किया हुआ भाग। २-गणितशास्त्र के अनुसार किसी पूरी संख्या का कोई भाग-जैसे १/२। (फ्रेक्शन)।
भग्नावशेष पुं० (सं) १-टूटे-फूटे मकानों का बचा-हुआ अंश। खंडहर। (रिमेन्स)। २-किसी वस्तु के टूटे-फूटे अशेष।
भग्नाशा वि० (सं) हताश।
भग्नोत्साह वि० (सं) जिसमें उत्साह न रहा हो।
भग्नोद्यम वि० (सं) जिसका उद्यम व्यर्थ गया हो।
भचक स्त्री० (हि) भचकने की क्रिया या भाव।
भचकना क्रि० (हि) १-आश्चर्य से स्तब्ध रह जाना। २-चलने में लंगड़ा मालूम पड़ना।
भचक्र पुं०(सं) १-ग्रहों या राशियों के चलने का मार्ग २-नक्षत्रों का समूह।
भच्छ पुं० (हि) दे० 'भक्ष'।
भच्छक वि० दे० 'भक्षक'।
भच्छन पुं० (हि) दे० 'भक्षण'।
भच्छना क्रि० (हि) खाना।
भजन पुं०(सं) १-भाग। खंड। २-सेवा। पूजा। ३-जप। ४-वह गीत जिसमें किसी देवता या ईश्वर के गुणों का कीर्तन हो।
भजना क्रि० (हि) १-देवता आदि का नाम। जपना भजन करना। २-आश्रय लेना। ३-सेवा करना। ४-भागना। ५-भाग जाना। ६-प्राप्त होना।
भजनानंद पुं० (सं) ईश्वर भजन में मिलने वाला आनन्द।
भजनानंदी वि० (सं) ईश्वर भजन में मग्न रहने वाला।
भजनी वि० (हि) भजन गाने वाला। गायक।
भजनीक पुं० (हि) भजन गाने वाला। भजनी।
भजनोपदेशक पुं० (हि) भजन गाकर उपदेश देने वाला भजनी।
भजाना क्रि० (हि) १-भागना। २-भगाना।
भट पुं० (सं) १-योद्धा। २-सैनिक। सिपाही। ३-पहलवान।
भटई स्त्री०(हि) १-भाट का काम। २-दूसरों की झूठी प्रशंसा और खुशामद।
भटकना क्रि० (हि) १-इधर-उधर व्यर्थ घूमना। २-रास्ता भूल जाने के कारण घूमना। भ्रम में पड़ना
भटका पुं० (हि) इधर-उधर व्यर्थ घूमने की क्रिया या भाव।
भटकाना क्रि०(हि) १-गलत रास्ता बताना। २-धोखा देना।
भटकैया पुं० (हि) १-भटकने वाला। २-भटकाने वाला।
भटकौहाँ वि० (हि) भटकने वाला।
भटभटी स्त्री० (हि) वह अवस्था जिसमें चकाचौंध होने के कारण कुछ दिखाई न पड़े।
भटभरा पुं० (हि) दो वीरों का आपस में भिड़ना। भिड़न्त। २-टक्कर। ३-मार्ग में अचानक हो जाने वाली भेंट।
भटू स्त्री० (हि) १-सखी। २-स्त्रियों का एक आदर-सूचक सम्बोधन।
भट्ट पुं० (सं) १-ब्राह्मणों की एक उपाधि। २-योद्धा ३-भाट।
भट्टाचार्य पुं० (सं) १-दर्शन शास्त्र का पंडित। माननीय अध्यापक।
भट्टारक पुं० (सं) १-ऋषि। २-सूर्य। ३-पंडित। ४-राजा। वि० पूज्य। मान्य।
भट्टा पुं० (हि) १-बड़ी भट्टी। २-ईंटें खपड़े या चूना

आदि पकाने का बजाया। (किन)।
भट्ठी स्त्री० (हिं) १-एक विशेष प्रकार का बना बड़ा चूल्हा। २-देशी शराब बनाने का कारखाना।
भठियारखाना पुं० (हि) १-भठियारी का मकान २-वह स्थान जहां शोरगुल होता हो तथा जो असभ्य लोगों की बैठक हो।
भठियारन स्त्री० (हिं) १-भठियारे की लड़की या स्त्री भठियारिन। भठियारी।
भठियारपन पुं० (हि) १-भठियारे का काम। २-भठियारों के समान अश्लील गालियां बकना।
भठियारा पुं० (हि) सराय में ठहरने वालों के लिये भोजनादि का प्रबन्ध करने वाला।
भठिहारिन स्त्री० (हि) भटियारन।
भड़क स्त्री० (हि) १-भड़कने की क्रिया या भाव। ऊपरी चमकदमक।
भड़कदार वि० (हि) १-जिस में खूब चमकदमक हो। चमकीला। २-रोबदार।
भड़कना क्रि० (हि) १-तेजी से जल उठना। २-सहसा चौंक पड़ना। ६-क्रुद्ध होना। ४-अचानक उग्र रूप धारण कर लेना।
भड़काना क्रि० (हि) १-प्रज्वलित करना। जलाना। २-उत्तेजित करना। ३-भयभीत कर देना (पशु आदि को)। ४-बहकाना। ५-बढ़ावा देना।
भड़कीला वि०(हि)१-भड़कदार। चमकीला। २-डरकर उत्तेजित होने वाला।
भड़कीलापन पुं० (हि) चमकदमक। भड़कीले होने का भाव।
भड़भड़ स्त्री० (हि) १-आघात आदि से होने वाला शब्द। २-भीड़। ३-व्यर्थ बकवास।
भड़भड़ाना क्रि० (हि) भड़भड़ शब्द करना।
भड़भड़िया वि० (हि) अत्यधिक व्यर्थ की बातें करने वाला।
भड़भांड पुं० (हि) एक प्रकार का कंटीला और विषैला पौधा। घमोय।
भड़भूंजा पुं० (हि) भाड़ में अन्न आदि भूनने का काम करने वाली एक जाति।
भड़वा पु० (हि) दे०'भडुआ'।
भड़साईं स्त्री० (हि) दे० 'भड़'।
भड़हर पुं० (हि) बरतन। भांड़ा।
भड़ार पुं० (हि) दे० 'भंडार'।
भड़ास स्त्री० (हि) १-मन में छिपा हुआ दुःख या गुब्बार। २-मुंह के अन्दर से पानी छिड़कने पर निकलने वाली गरमी।
भडिहा पुं० (देश) चोर।
भड़िहाई अव्य० (हि) चोरों के समान लुक छिपकर। स्त्री० (हि) चोरी।
भडुआ स्त्री० (हिं) वेश्याओं या छिनाल स्त्रियों की दलाली करने वाला व्यक्ति।
भड़ेरिया पुं० (हि) दे० 'भड्डर'।
भड्डर पु० (हि) ब्राह्मणों का एक वर्ग जो सामुद्रिक आदि के द्वारा या तीर्थों में लोगों को दर्शन कराकर अपनी जीविका चलाता है।
भणन पुं० (सं) वर्णन। कहना। कथन।
भणना क्रि० (हि) कहना। बोलना।
भणित स्त्री० (सं) कही हुई बात। कथा। वि० कहा-हुआ।
भतवान पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें लड़के वालों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।
भतार पुं० (हि) दे० 'भर्तार'।
भतीजा पुं० (हि) भाई का लड़का।
भत्ता पुं० (हि) वह दैनिक या मासिक व्यय जो कर्मचारी को यात्रा, अतिरिक्त कार्य या महँगाई के रूप में दिया जाता है। (एलाउन्स)।
भदंत वि० (सं) पूज्य। मान्य। पुं०(हि) बौद्धभिक्षुक
भदई स्त्री० (हि) भादों में पक कर तैयार होने वाली फसल। वि० भादों का। भादों सम्बन्धी।
भदेश वि० (हि) भद्दा। भोंडा।
भदौंह वि० (हि) दे० 'भदौहाँ'।
भदौहाँ वि० (हि) भादों में होने वाला जैसे-आम।
भद्दा पुं० (हि) १-जो देखने में अच्छा न लगे। २-कुरूप। अश्लील।
भद्दापन पुं० (हि) भद्दे होने का भाव।
भद्र वि० (स) १-सभ्य। सुशिक्षित। २-श्रेष्ठ। ३-साधु। पुं० १-कल्याण। २-चन्दन। ३-महादेव। ४-स्वर्ण। सोना। ५-राम की सभा का एक सभासद जिसके कहने पर सीता जी को बनवास दिया गया था। ६-पर्वत। ७-बैल। पुं० (हि) सिर। दाढ़ी। मूछों आदि का मुडन।
भद्रजन पुं० (सं) शिष्ट या भला आदमी।
भद्रपुरुष पुं० (सं) दे० 'भद्रजन'। (जेन्टलमैन)।
भद्रा स्त्री० (सं) शिष्ट स्त्री। स्त्री० (हि) १-आकाश-गङ्गा। २-गाय। ३-दुर्गा। ४-बाधा। विघ्न। ५-हल्दी। ६-रास्ता।
भनक स्त्री० (हि) १-धीमा शब्द। ध्वनि। २-उड़ती खबर।
भनकना क्रि० (हि) कहना।
भनना क्रि० (हि) कहना।
भनभनाना क्रि०(हि) भनभन शब्द करना। गुञ्जारना
भनभनाहट स्त्री० (हि) भनभनाने का शब्द। गुञ्जार।
भनित वि० (हि) दे० 'भणित'।
भबका पुं० (हि) अर्क निकालने या मद्य चुआने का एक प्रकार का घड़ा।
भबकी स्त्री० (हि) १-बन्दर की घुड़की। २-बनावटी घुड़की।

भभड़ (हि) स्त्री० भीड़भाड़ ।
भभक स्त्री० (हि) १-भभकने की क्रिया । २-किसी वस्तु का सहसा गरम होकर ऊपर उबलना । ३-रह-रहकर आने वाली दुर्गन्ध ।
भभकना क्रि०(हि) १-उबलना । २-गरमी पाकर किसी वस्तु का फूटना । ३-भड़कना ।
भभका पुं० (हि) दे० 'भबका' ।
भभकी स्त्री० (हि) दे० 'भबकी' ।
भम्भड़ स्त्री० (हि) दे० 'भम्भड़' ।
भभरना क्रि० (हि) १-डरना । २-घबरा जाना । ३-भ्रम में पड़ना ।
भभूका पुं० (हि) ज्वाला । लपट ।
भभूत स्त्री० (हि) वह भस्म जो शैव लोग मस्तक पर लगाते हैं ।
भभूदर स्त्री० (हि) गरम राख ।
भयंकर वि० (सं) डरावना । भयानक । भीषण । (डेन्जरस) ।
भयंकर उज्जवाल्य वि० (सं) जो जरा सी गरमी पाने पर या चिंगारी लगने पर शीघ्रता से जल उठता हो । (डेन्जरसली इनफ्लेमेबल) ।
भयंकर उपकरण पुं० (सं) वह औजार या उपकरण जिनमें जरा-सी असावधानी बरतने पर जान जोखम में पड़ जाती है । (डेन्जरस इन्स्ट्रुमेंट) ।
भयंकर नौभांड विनियम पुं० (हि) विस्फोटक आदि भयंकर वस्तु एक जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने का विनियम । (डेन्जरस कार्गोज रेग्यूलेशन्स) ।
भयंकर रोग पुं० (हि) वह रोग जिसमें जीवन खतरे में हो । (डेन्जरस डिजीज) ।
भय पुं० (सं) १-एक मनोविकार जो आपत्ति या अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है । डर । खौफ (डेंजर) । २-बालकों का एक रोग जो डर जाने से होता है । क्रि० (देश) हुआ ।
भयकर वि० (सं) भयानक । भयंकर ।
भयजनक वि० (सं) दे० 'भयंकर' ।
भयग्रस्त वि० (सं) अत्यधिक डरा हुआ ।
भयत्राता पुं० (सं) भय दूर करने वाला ।
भयनाशन वि०(सं) भय नष्ट करने वाला । पुं० विष्णु
भयप्रद वि० (सं) भयानक । भय उत्पन्न करने वाला । (डेंजरस) ।
भयप्रद-भवन पुं० (सं) वह मकान जिसके गिरने का डर हो । (डेंजरस बिल्डिंग) ।
भयप्रद-व्यापार पुं० (सं) वह व्यापार जिसमें किसी प्रकार का खतरा हो । जैसे तस्कर व्यापार । (डेंजरस ट्रेड) ।
भयप्रद-शस्त्र पुं० (सं) वह शस्त्र जिसके नाम सुनने पर ही डर लगे । (डेंजरस वेपन) ।
भयभीत वि० (सं) डरा हुआ ।
भयमोचन वि० (सं) भय दूर करने वाला ।
भयविह्वल वि० (सं) भय से व्याकुल ।
भयशील वि० (सं) डरपोक ।
भयशून्य वि० (सं) निर्भय ।
भयसूचना स्त्री० (सं) भय से सचेत करने के लिए दी गई सूचना । (अलार्म) ।
भयसूचना-घंटी स्त्री० (हि) खतरे की घण्टी । (अलार्म बेल) ।
भयहरण वि० (सं) भय या डर दूर करने वाला ।
भयहारी वि० (सं) भयहरण ।
भया क्रि० (देश) हुआ । पुं० (हि) दे० 'भाई' ।
भयाकुल वि० (सं) भयभीत । भय से व्याकुल ।
भयाक्रांत वि०(सं) भय से अभिभूत ।
भयातुर वि० (सं) भय से घबराया हुआ ।
भयान वि० (हि) भयानक । डरावना ।
भयानक वि० (सं) जिसे देखने से डर लगे । भयंकर (डेंजरस,ड्रेडफुल) पुं०(सं) साहित्य के नौ रसों में से एक जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन होता है ।
भयानक पशु पुं० (हि) हिंसक पशु जैसे सिंह आदि (डेंजरस एनीमल) ।
भयानक वस्तुएं स्त्री०(हि) वह वस्तुएँ जिनके रखने में जोखिम हो । (डेंजरस गुड्स) ।
भयाना क्रि० (देश) १-डराना । २-डरना । भयभीत होना ।
भयावन वि०(हि) दे० 'भयावना' ।
भयावना वि० (हि) डरावना ।
भयावह वि० (सं) भयंकर । डरावना । खौफनाक ।
भरंत स्त्री० (हि) १-भ्रम । संदेह । २-भरने की क्रिया या भाव ।
भर वि०(हि) कुल । पूरा । सब । तमाम । अव्य० बल के द्वारा । पुं० १-बोझ । भार । २-एक जाति का नाम (सं) १-वह जो पालन पोषण करता हो । २-युद्ध । लड़ाई ।
भरकना क्रि० (हि) दे० 'भड़कना' ।
भरका पुं० (देश) वह निर्जन तथा पहाड़ी स्थान का गड्ढा जिस में चोर डाकू छिपे रहते हैं ।
भरकाना क्रि० (हि) दे० 'भड़काना' ।
भरण पुं० (सं) १-पालन-पोषण । २-वेतन । ३-किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तु पहुंचाना । (सप्लाई) । ४-उत्पादन ।
भरणतट पुं०(सं) १-नदी का घाट । जहाजी गोदाम घाट । (व्हार) ।
भरणतट-प्रभार पुं० (सं) घाट पर माल चढ़ाने या उतारने का कर । (व्हारफेज) ।
भरणतटाध्यक्ष पुं०(सं) घाट का अधिकारी । (व्हार फिंजर) ।

**भरणपोषण** पुं० (सं) किसी को पालने पोसने की क्रिया या भाव। (मेन्टेनेन्स, सपोर्ट)।

**भरण-रेचन-दिवस** पुं० (सं) माल जहाज आदि में उतारने या चढ़ाने का निश्चित दिन। (ले-डे)।

**भरण-रेचन-काल** पुं० (सं) वह निश्चित समय जिसमें माल लादने या उतारने का काम समाप्त होना चाहिए। (ले-टाइम)।

**भरत** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र जी के छोटे भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २-शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र का नाम। ३-अभिनेता। नट। ४-खेत। क्षेत्र। ५-प्राचीन भारत के एक प्रदेश का नाम। ६-जुलाहा। पुं० एक प्रकार का लावा पक्षी। (देश) १-कांसा नामक धातु। २-ठठेरा। स्त्री० मालगुजारी। प्रथम चक्रवर्ती।

**भरणी** स्त्री० (सं) १-घिया। तोरई। २-एक लग्न जो भूमि जोतने के लिए शुभ मानी जाती है। ३-एक नक्षत्र। वि० भरण-पोषण करने वाली।

**भरतखंड** पुं० (सं) भारत का प्राचीन नाम।

**भरता** पुं० (देश०) एक प्रकार का सालन जो आलू और बैंगन आदि को भून कर बनाया जाता है। २-वह जो दबाने के कारण विकृत हो गया हो। पुं० दे० 'भर्त्ता'।

**भरताग्रज** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।

**भरतार** पुं० (देश) स्वामी। पति। मालिक।

**भरती** स्त्री० (हि) १-किसी वस्तु में भरे जाने का भाव। २-सेना आदि में प्रविष्ट होने के लिए जाने का भाव। (रिक्रूटमेंट)। ३-केवल स्थान पूर्ति के लिए रखी गई व्यर्थ की वस्तुएँ या बातें। ४-वह नाव जिसमें माल लादा जाता है। ५-नदी की बाढ़। ६-समुद्र का ज्वार-भाटा।

**भरत्थ** पुं० (देश०) भरत (राम के छोटे भाई)।

**भरथ** पुं० (सं) दे० 'भरत'।

**भरथरी** पुं० (हि) दे० 'भर्तृहरि'।

**भरदूल** पुं० (हि) लवा (पक्षी)।

**भरद्वाज** पुं०(सं) १-एक वैदिक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक और मंत्रकार थे। २-भरत पक्षी। ३-बौद्धों के अनुसार एक अर्हत का नाम। ४-एक गोत्र का नाम।

**भरना** क्रि०(हि) १-खाली स्थान को पूरा करने के लिये कोई वस्तु डालना। २-उलटना। उड़ेलना। ३-तोप बन्दूक आदि में गोला आदि डालना। ४-पद पर नियुक्त करना। ५-छेद को बन्द करना। ६-ऋण चुकाना। ७-किसी के बारे में गुप्त रूप से निंदात्मक बातें कहना। ८-निबाहना। ९-खेत में पानी देना। १०-डसना। काटना। ११-पशुओं पर बोझ लादना। १२-शरीर पर पोतना। १३-शरीर का पुष्ट होना। १४-गर्भ धारण करना (पशु)। १५-चेचक के दानों का सारे शरीर में निकल आना। १६-घाव का पूरा हो आना। पुं० (हि) १-भरने की क्रिया या भाव। २-घूस उत्कोच।

**भरनि** स्त्री० (हि) पोशाक। पहनावा।

**भरनी** स्त्री० (हि) १-करघे की ढरकी। २-मोरनी। एक जंगली बूटी।

**भरपाई** स्त्री० (हि) १-पूरा पावना मिल जाना। २-पूरे पावने की दी जाने वाली रसीद।

**भरपूर** वि० (हि) पूरी तरह से भरा हुआ। अव्य० (हि) पूर्णरूप से।

**भरपेट** अव्य० (हि) पेट भरकर।

**भरभराना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-रोमांच हो आना। ३-सहसा नीचे आ गिरना।

**भरभराहट** स्त्री० (हि) सूजन। वरम।

**भरभेटा** पुं० (हि) सामना। मुठभेड़। मुकाबिला।

**भरम** पुं० (हि) १-भ्रांति। भ्रम। सन्देह। धोखा। २-भेद। रहस्य। ६-साख।

**भरमना** क्रि० (हि) घूमना। चलना। २-भटकना। धोखे में पड़ना। स्त्री० (हि) भूल। धोखा। भ्रम।

**भरमाना** क्रि० (हि) १-भ्रम में डालना। बहकाना। २-भटकना।

**भरमार** स्त्री० (हि) अधिकता। बहुतायत।

**भरराना** क्रि०(हि) भररर शब्द सहित गिरना। २-टूट पड़ना। पिल पड़ना।

**भरवाई** स्त्री० (हि) भरने का भाव, क्रिया या मजदूरी २-बोझ उठाने की टोकरी या झल्ली।

**भरवाना** क्रि० (हि) किसी को भरने में प्रवृत्त करना।

**भरसक** अव्य० (हि) यथाशक्ति। जहां तक हो सके।

**भरसाना** स्त्री० (हि) डाँट। फटकार।

**भरसाईं** स्त्री० (देश) भाड़।

**भरहराना** क्रि० (हि) दे० 'भहराना'।

**भराई** स्त्री० (हि) भरने का काम या मजदूरी।

**भराव** पुं०(हि) भरने का भाव या काम। भरना। २-कसीदा काढ़ने में पत्तियों के बीच का स्थान। तागे से भरना।

**भरित** वि० (सं) १-भरा हुआ। २-पाला पोसा हुआ

**भरी** स्त्री० (हि) एक तौल जो एक रुपये के बराबर होता है।

**भरु** पुं० (हि) बोझ। वजन।

**भरुआना** क्रि० (हि) भारी होना।

**भरुहाना** क्रि० (हि) १-घमंड करना। २-बहकाना। उत्तेजित करना।

**भरुही** स्त्री० (देश) कलम बनाने की एक प्रकार की कच्ची कलक। (हि) लवा।

**भरेठ** पुं० (हि) दरवाजे के ऊपर के पटाव की लकड़ी

**भरैया** वि० (हि) १-भरने वाला। २-पालन करने वाला।

**भरोसा** पुं० (हि) १-आश्रय। सहारा। २-आशा।

३–दृढ़ विश्वास।
**भर्ग** पुं० (हिं) शिव। महादेव।
**भर्ता** पुं०(सं) १–अधिपति। स्वामी। २–पति। विष्णु
**भर्तृघ्नी** स्त्री० (सं) पति की हत्या करने वाली स्त्री।
**भर्तादारक** पुं० (सं) राजकुमार।
**भर्तादारिका** स्त्री० (सं) राजकन्या। राजकुमारी।
**भर्तादेवता** स्त्री०(सं) पति को देवता मानने वाली स्त्री
**भर्तार** पुं० (हिं) पति। स्वामी।
**भर्तृमति** स्त्री० (सं) सधवा स्त्री।
**भर्तृव्रत** पुं० (सं) पतिव्रत।
**भर्तृहरि** पुं० (सं) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के भाई थे।
**भर्त्सना** स्त्री० (सं) १–निंदा। शिकायत। २–डांटडपट फटकार।
**भर्म** पुं० (हिं) दे० 'भ्रम'।
**भर्मन** पुं० (हिं) दे० 'भ्रमण'।
**भर्य** पुं०(सं) गुजारे का खर्च।
**भर्रा** पुं० (हिं) १–पक्षी की उड़ान। २–एक चिड़िया।
**भर्राना** पुं० (हिं) भर्र-भर्र शब्द होना।
**भर्सन** स्त्री० (हिं) दे० 'भर्त्सना'।
**भल** वि० (हिं) दे० 'भला'।
**भलमनसात** स्त्री० (हिं) सज्जनता। भले आदमी होने का भाव।
**भलमनसी** स्त्री० (हिं) दे० 'भलमनसात'।
**भरी शतघ्नी** स्त्री० (हिं) भरी हुई बन्दूक। (लोडेड-गन)।
**भला** वि० (हिं) १–जो स्वभाव से अच्छा हो। उत्तम प्रकृति का। २–श्रेष्ठ। अच्छा। ३–भला आदमी। सज्जन।
**भलाई** स्त्री० (हिं) १–भला होने का भाव। भलापन। २–नेकी। उपकार। ३–हित। लाभ।
**भलाचंगा** वि० (हिं) हृष्टपुष्ट।
**भलाबुरा** वि० (हिं) १–हानि और लाभ। २–डांट। फटकार।
**भलामानस** पुं० (हिं) १–सज्जन। दुष्ट पुरुष। (व्यंग)
**भले** अव्य० (हिं) खूब। वाह।
**भलेरा** पुं० (हिं) दे० 'भला'।
**भले-ही** अव्य० (हिं) ऐसा हुआ तो हुआ करे।
**भल्ल** पुं० (सं) १–वध। हत्या। २–दान। ३–भालू। ४–भाला। ५–शिव।
**भल्लक** पुं० (सं) १–भालू। एक प्राचीन जनपद।
**भल्लुक** पुं० (सं) भालू।
**भल्लूक** पुं० (सं) १–भालू। २–कुत्ता।
**भवंग** पुं० (हिं) सांप। सर्प।
**भवंगा** पुं० (हिं) सर्प।
**भवंगम** पुं० (हिं) सर्प।
**भवंत** वि० (हिं) आप लोगों का। आपका।
**भवँना** क्रि० (हिं) १–घूमना। २–चक्कर लगाना।
**भव** पुं० (सं) १–जन्म। उत्पत्ति। २–मेघ। ३–शिव ४–संसार। ५–सत्ता। ६–कारण। ७–जन्म मरण का दुःख। कामदेव। पुं० (हिं) डर। भय। वि० (हिं) १–शुभ। २–उत्पन्न।
**भवचक्र** पुं० (सं) मायाजाल।
**भवचाप** पुं० (सं) शिव का धनुष।
**भवत्संमानकारी** वि० (सं) आपका आदर करने वाला (बड़ों को पत्र लिखने में अन्त में नाम लिखने का विशेषण)। (योर्स रैस्पेक्टिवली)।
**भवदनुगत** वि० (सं) दे० 'भवदाज्ञाकारी'।
**भवदनुरत** वि० (सं) दे० 'भवदीय सद्भावी'।
**भवदाज्ञाकारी** वि० (सं) आपका आज्ञाकारी (प्रार्थना पत्र आदि में अन्त में नाम लिखने का विशेषण)। (योर्स ओबीडियन्टली)।
**भवदीय** वि०(सं) आपका (पत्रों के अन्त में)। (योर्स)
**भवदीयसत्यैषी** वि० (सं) आपका सदा सच्चाई पर रहने वाला। (योर्स ट्रूली)।
**भवदीय सद्भावी** वि० (सं) आपसे मित्रता और प्रेम का भाव रखने वाला (योर्स सिन्सीयरली)।
**भवन** पुं० (सं) १–घर। मकान। २–प्रसाद। महल। ३–जन्म। उत्पत्ति। ४–सत्ता।
**भवन निर्माण विज्ञान** पुं० (सं) भवन। मकान आदि बनाने की कला का शास्त्र। (आर्कीटेक्चर)
**भवना** क्रि० (हिं) दे० 'भँवना'।
**भवनापचरण** पुं०(सं) किसी के मकान अहाते आदि में अनधिकार रूप से प्रवेश करना। (हाउस ट्रैस-पास)।
**भवनी** स्त्री० (देश) स्त्री। पत्नी। गृहणी।
**भवन्निष्ठ** वि० (सं) आपमें विश्वास करने वाला। (व्यापारिक पत्रों आदि में पत्र के अन्त में नाम से पहले लिखने का विशेषण)। (योर्स फेथफुली)।
**भवभय** पुं० (सं) संसार में बारम्बार जन्म लेने का भय।
**भवभामिनी** स्त्री० (सं) पार्वती। भवानी।
**भवभीति** स्त्री० (सं) जन्म मरण का भय।
**भवभूष** वि० (हिं) दे० 'भवभूषण'।
**भवभूषण** वि० (हिं) संसार के भूषण।
**भवभोग** पुं० (सं) लौकिक सुख का उपभोग।
**भवमोचन** पुं० (सं) संसार के बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाला। (ईश्वर)।
**भवशूल** पुं० (सं) सांसारिक दुःख और कष्ट।
**भवशेखर** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**भवसागर** पुं० (सं) संसाररूपी सागर।
**भवसिंधु** पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
**भवाँ** स्त्री० (हिं) भौंरी। चक्कर। फेरी।
**भवाँना** क्रि० (हिं) घुमाना। चक्कर देना।

भवांबुधि पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
भवा स्त्री० (हि) पार्वती।
भवात्मज पुं०(सं) गणेश।
भवानी पुं० (सं) १-पार्वती। दुर्गा।
भवानीकांत पुं० (सं) शिव।
भवानीनंदन पुं० (सं) गणेश। कार्त्तिकेय।
भवानीपति पुं० (सं) शिव।
भवानीवल्लभ पुं० (सं) शिव।
भवाब्धि पुं० (सं) दे० 'भवसागर'।
भवि वि० (हि) दे० 'भव्य'।
भवितव्य वि० (सं) होनहार। भवनीय।
भवितव्यता स्त्री० (सं) १-होनी। २-भाग्य।
भविष्य पुं० (सं) आने वाला समय या काल।
भविष्यकाल पुं० (सं) क्रिया के तीन कालों में से एक (व्या०)।
भविष्यगुप्ता स्त्री (सं) वह नायिका जिसे रति में प्रवृत्त होने की इच्छा हो पर इसे नायक से छिपाने का प्रयत्न करे।
भविष्यज्ञान पुं० (सं) होने वाली बातों की जानकारी।
भविष्यत् पुं०(सं) आगामी काल। आने वाला समय।
भविष्यत्काल पुं० (सं) आने वाला समय। भविष्य।
भविष्यद्वक्ता पुं० (सं) ज्योतिषी। भविष्य की बातें पहले से बताने वाला।
भविष्यद्वाणी स्त्री० (सं) आने होने वाली बात जो किसी ने पहले से बता दी हो। पेशीनगोई।
भविष्यविधि स्त्री० (सं) वह विधि जो किसी संस्था या सरकारी कर्मचारी के माहवारी वेतन से काट कर उसमें उतना ही रुपया जमा करके इकट्ठी होती रहती है और अवसर ग्रहण करने के समय कर्मचारी को दे दी जाती है। संभरण निधि। (प्राविडेंट फण्ड)
भवीला वि० (हि) १-भाव पूर्ण। २-बांका। तिरछा।
भवेश पुं०(सं) संसार का स्वामी। शिव।
भव्य वि० (सं) १-देखने में विशाल और सुन्दर। २-शुभ। ३-योग्य। ४-श्रेष्ठ। ५-प्रसन्न।
भष पुं० (हि) भोजन। आहार।
भषना क्रि० (हि) खाना। भोजन करना।
भसना क्रि० (हि) १-पानी के ऊपर तैरना। २-पानी में डूबना।
भसम पुं० (हि) दे० 'भस्म'।
भसान पुं० (हि) पूजा उपरांत मूर्ति को नदी में बहाने की क्रिया (इमर्शन)
भसाना क्रि० (हि) १-पानी पर तैरना। २-पानी में डुबोना।
भसिंड पुं० (हि) कमलनाल।
भसींड पुं० (हि) कमलनाल।
भसुंड पुं० (हि) हाथी।
भसुर पुं० (हि) जेठ। पति का भाई।
भसूंड पुं० (हि) हाथी की सूँड।
भस्म पुं० (सं) १-राख। २-अग्निहोत्र की राख जो माथे पर लगाई जाती है। ३-एक प्रकार की पत्थरी वि० जो जल कर राख हो गया हो।
भस्मचय पुं० (सं) राख का ढेर।
भस्मधानी स्त्री० (हि) सिगरेट आदि की राख झाड़ने की रकाबी। (ऐशट्रे)।
भस्मपुंज पुं० (सं) भस्मराशि।
भस्मप्रिय पुं० (सं) शिव।
भस्मराशि स्त्री० (सं) दे० 'भस्मचय'।
भस्मसात् वि० (सं) जो भस्म रूप हो गया हो।
भस्मस्नान पुं० (सं) सारे शरीर पर राख मलना।
भस्मावशेष वि०(सं) राख के रूप में बचा हुआ अंश
भस्मासुर पुं० (सं) एक दैत्य का नाम जिसे शिव जी का यह वरदान था कि वह जिस पर हाथ रख दे वह भस्म हो जायगा।
भस्मित वि० (सं) १-जला कर भस्म किया हुआ। २-जला हुआ।
भस्मीभूत वि० (सं) पूर्णतया जला हुआ। जला कर राख बना हुआ।
भस्सड़ वि० (हि) बहुत मोटा या भद्दा (आदमी)।
भहराना क्रि० (हि) १-सहसा नीचे आ गिरना। २-टूट पड़ना। ३-फिसल पड़ना।
भाँऊ पुं० (हि) दे० 'भाव'।
भाँग स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ लोग नशा करने के लिए पीस कर पीते हैं। भंग। विजया। (इण्डियन हेम्प)।
भाँज स्त्री०(हि) १-किसी वस्तु को तह करने या मोड़ने का भाव। २-घुमाने की क्रिया। ३-रुपये नोट आदि भुनाने के बदले दिया जाने वाला बट्टा।
भाँजना क्रि० (हि) १-तह करना। मोड़ना। २-तागों को बटना। ३-मुगदर घुमाना।
भाँजा पुं० (हि) दे० 'भानजा'।
भाँजी स्त्री०(हि) किसी होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही गई बात। चुगली।
भाँट पुं० (हि) दे० 'भाट'।
भाँड़ पुं० (हि) १-विदूषक। मसखरा। (बफून)। २-महफिलों में नाच-गाकर जीविका उपार्जन करने वाला। ३-हँसी। दिल्लगी। ४-विनाश। ५-रहस्योद्घाटन। ६-बरतन। भाँड़ा। ७-उपद्रव।
भांड पुं० (हि) १-भाँड़ा। बरतन। (वेसल)। २-माल। पण्य। व्यापार की वस्तुएँ।
भांड वाष्पयान पुं० (सं) माल ले जाने वाला जल-पोत। (कार्गो स्टीमर)।
भांडवाहन पुं० (सं) मालगाड़ी का डिब्बा। (वैगन)
भांडागार पुं० (सं) १-भंडार। वह स्थान जहाँ बहुत सी वस्तुएँ रखी हों। गोदाम। सरकारी गोदाम।

(वेअर हाउस)। २-कोश। खजाना।
**भांडागार-प्रधिपत्र** पुं०(सं)वह अधिपत्र जिसे दिखा-कर गोदाम से माल निकाला जाता है। (वेयर-हाउस वारेंट)।
**भांडागार पंजी** स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें सरकारी मालगोदाम के माल का हिसाव-किताव लिखा जाता है। (वेयरहाउस रजिस्टर)।
**भांडागार-पत्तन** स्त्री० (सं) वह सरकारी मालगोदाम जो माल रखने के लिए बन्दरगाहों पर बनाया जाता है। (वेयरहाउस पोर्ट)।
**भांडागार-पुस्त** स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें सरकारी मालगोदाम का विवरण लिखा होता है। (वेयर-हाउस बुक)।
**भांडागार-भाटक** पुं० (सं) सरकारी गोदाम में माल रखने का भाटक या किराया। (वेयरहाउस रेंट)।
**भांडागार-सुविधाएं** स्त्री० (सं) बाहर से माल मंगाने या भेजने के लिए जहाज या रेलगाड़ी पर लादने या उतारने से पहले माल रखने की सुविधाएँ। (वेयरहाउस फेसीलिटीज)।
**भांडागारिक** पुं०(सं) १-भांडागार की देख रेख तथा व्यवस्था करने वाला कर्मचारी। (वेयरहाउस मैन) २-भंडारी। खजांची।
**भांडागारिक सेवक** पुं० (सं) भांडागार में काम करने वाला कर्मचारी।
**भांडागारी** पुं० (सं) भांडागार की व्यवस्था करने वाला अधिकारी। (वेयरहाउस कीपर)।
**भांडार** पुं०(सं) १-भंडार। २-वह स्थान जहां बेचने वाले का माल रखा रहता हो (स्टॉक)। ३-खजाना कोश। ४-अत्यधिक मात्रा में गुण आदि का आधार स्थान।
**भांडारगृह** पुं० (सं) वह स्थान जहां अनेक प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ रखी होती हैं। (स्टोर हाउस)।
**भांडारपंजी** स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें भांडार में रहने वाली वस्तुओं का लेखा होता है। (स्टॉक-रजिस्टर)।
**भांडारपाल** पुं० (सं) भांडार का मुख्य अधिकारी। (स्टोर कीपर)।
**भांडारिक** पुं० (सं) १-दे० 'भंडारी'। २-वह जो बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भंडार रखता हो। (स्टाकिस्ट)।
**भांडारी** पुं० (सं) दे० 'भांडारिक'।
**भांति** स्त्री०(हि) १-तरह। किस्म। प्रकार। २-मर्यादा
**भांपना** क्रि० (हि) १-दूर से देख कर समझ लेना। भांपना। ताड़ना। २-देखना।
**भांपू** पुं० (हि) भाँपने या ताड़ने वाला।
**भांय-भांय** पुं० (हि) निर्जन स्थान या सन्नाटे में आप से आप होने वाला शब्द।
**भांवना** क्रि० (हि) १-चक्कर देना। खरादना। २-सुन्दर बनाने के लिए अच्छी तरह गढ़ना।
**भांवर** स्त्री० (हि) १-चक्कर लगाना। २-हल जोतते समय खेत के चारों ओर घूम आना। ३-विवाह के समय वधु और वर की अग्नि के चारों ओर की परिक्रमा।
**भांवरा** पुं० (हि) फेरा। चक्कर। परिक्रमा।
**भांस** स्त्री० (हि) शब्द। अवाज।
**भा** अव्य० (हि) यदि इच्छा हो। या। चाहे। स्त्री० (सं) १-चमक। प्रकाश। २-शोभा। छवि। ३-रश्मि ४-विजली। विद्युत। ५-चित्र। (फोटो)।
**भाइ** पुं० (हि) १-प्रेम। प्रीति। स्वभाव। ३-विचार। स्त्री० (हि) १-तरह। भांति। २-रंगढंग। ३-चमक। दीप्ति।
**भाइप** पुं० (हि) भाईचारा।
**भाई** पुं० (हि) १-अपने माता पिता से उत्पन्न दूसरा लड़का या व्यक्ति। भ्राता। २-बराबर वालों के लिये आदरसूचक शब्द।
**भाईचारा** पुं० (हि) परम मित्र या बन्धु होने का भाव
**भाईदूज** पुं० (हि) भैयादूज।
**भाईबंद** पुं० (हि) १-एक ही वंश या गोत्र के लोग। २-मित्रवर्ग।
**भाईबिरादर** पुं० (हि) दे० 'भाईबंध'।
**भाई-बिरादरी** स्त्री० (हि) जाति या समाज के लोग।
**भाउ** पुं० (हि) दे० 'भाव'।
**भाऊ** पुं० (हि) १-प्रेम। स्नेह। २-भावना। ३-स्वभाव। ४-महत्व। ५-स्वरूप। ६-महत्व। ७-प्रभाव। ८-विचार।
**भाएँ** अव्य० (हि) समझ में। बुद्धि के अनुसार।
**भाकसी** स्त्री० (हि) भट्ठी।
**भाखना** क्रि० (हि) कहना। बोलना।
**भाखा** स्त्री० (हि) दे० 'भाषा'।
**भाग** पुं० (हि) १-हिस्सा। खंड। २-पार्श्व। ओर। भाग्य। ४-सौभाग्य। ५-ललाट। ६-प्रातःकाल। ७-गणित में किसी राशि की संख्या को कई अंशों में बांटने की क्रिया।
**भागड़** स्त्री० (हि) दे० 'भगदड़'।
**भागण** पुं० (हि) १-भाग्यवान। सूर्य आदि की प्रभा
**भागदौड़** स्त्री० (हि) १-दौड़धूप। २-भगदड़।
**भागधेय** पुं० (सं) १-भाग्य। किस्मत। २-राजा को दिया जाने वाला कर। ३-दायाद। संपिंड।
**भागना** क्रि० (हि) १-पालायन करना। २-कोई काम करने से बचना या डरना। ३-टल जाना। ४-हट जाना।
**भागफल** पुं० (सं) भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त संख्या।
**भागभरा** वि० (हि) भाग्यवान।

भागवत वि० (हि) भाग्यवान ।
भागवत पुं० (सं) १-अट्ठारह पुराणों में से एक । २-ईश्वर का भक्त । ३-तेरह मात्रा का एक छन्द । वि० भगवान-सम्बन्धी ।
भागाभाग स्त्री० (हि) दे० 'भागड़' ।
भागार्ह वि० (सं) जो भाग देने योग्य हो ।
भा-ग्राही वि० (सं) वह (पदार्थ) जिस पर फोटो । (भा) का अक्स लेने की क्षमता होती है । (फोटो-रिसेप्टिव) ।
भागिता स्त्री०(सं) किसी व्यापार में किसी का हिस्सा होना । साझेदारी । (पार्टनरशिप) ।
भागिता-अधिनियम पुं० (सं) साझेदारी में व्यापार आदि करने के लिए बनाया गया अधिनियम । (पार्टनरशिप एक्ट) ।
भागिता-अवसायन पुं० (सं) साझेदारी को समाप्त करने का कार्य । (लिक्वीडेशन ऑफ पार्टनरशिप)
भागितानिधि स्त्री० (सं) वह निधि जो साझे की हो । (पार्टनरशिप फण्ड) ।
भागिता-लेखा पुं० (सं) साझेदारी के व्यापार का लेखा । (पार्टनरशिप एकाउंट) ।
भागिता-विलेख पुं०(सं) साझे में व्यापार आदि चलाने के लिए आपस में किया गया लिखित समझौता । (पार्टनरशिप डीड) ।
भागिता-सार्थ पुं०(सं) वह व्यापारिक संस्था, दुकान या कारोबार जिसमें एक से अधिक साझेदार हों । (पार्टनरशिप फर्म) ।
भागिता-हित पुं० (सं) किसी दुकान या व्यापार में किसी साझेदार का हित । (पार्टनरशिप इन्टेरेस्ट)
भागिनेय पुं० (सं) भानजा ।
भागी स्त्री० (सं) १-हिस्सेदार । साझी । (पार्टनर) । २-अधिकारी । ३-शिव । वि० १-हिस्सेदार । शामिल । २-भागवाला ।
भागीदार पुं० (हि) हिस्सेदार । सहभागी ।
भागी प्रवेश पुं० (सं) किसी को साझेदार बनाना । (एडमीशन ऑफ पार्टनर) ।
भागीमृत्यु पुं०(सं) किसी साझेदार की मृत्यु हो जाना (डेथ ऑफ पार्टनर) ।
भागीरथ पुं० (हि) दे० 'भगीरथ' ।
भागीरथी स्त्री०(सं) १-गंगा नदी । २-गंगा की एक शाखा का नाम ।
भाग्य पुं० (सं) नसीब । तकदीर । दैव । नियति । विधि । प्रारब्ध ।
भाग्यक्रम पुं० (सं) भाग्य का फेर ।
भाग्यदा स्त्री० (सं) घुड़-दौड़ में टिकट देख कर या टिकटों को बक्से में डाल कर मशीन द्वारा निकलने वाले टिकट वालों को इनाम देने की पद्धति । (लॉटरी) ।
भाग्यदा कार्यालय पुं० (सं) भाग्यदा निकालने का कार्यालय । (लॉटरी ऑफिस) ।
भाग्यदोष पुं० (सं) किस्मत की खराबी ।
भाग्यपत्रक पुं० (सं) वह कागज का टुकड़ा या गोली जिसे फेंक कर या उठा कर माल का बटवारा किया जाता है । (लॉट) ।
भाग्यबल पुं०(सं) तकदीर का बल ।
भाग्यलिपि स्त्री० (सं) वह जो भाग्य में लिखा हो ।
भाग्यवश अव्य० (सं) तकदीर से ।
भाग्यवाद पुं० (सं) भाग्य के अनुसार अच्छा बुरा मानने का सिद्धांत ।
भाग्यवान वि०, पुं० (सं) अच्छे भाग्य वाला । स्त्री-भाग्यशाली ।
भाग्यविधाता पुं० (सं) भाग्य बनाने वाला ।
भाग्यविपर्यय पुं० (सं) दिनों का फेर ।
भाग्यविप्लव पुं० (सं) दुर्भाग्य ।
भाग्यशाली वि० (सं) भाग्यवान ।
भाग्यसंपत स्त्री० (सं) सौभाग्य ।
भाग्यहीन वि० (सं) बदनसीब । अभागा ।
भाग्योदय पुं०(सं) तकदीर का खुलना ।
भा-चित्र पुं० (सं) प्रकाश की सहायता से यंत्र द्वारा लिए जाने वाला छाया चित्र । आलोक चित्र । (फोटोग्राफ) ।
भा-चित्र अनुभाग पुं० (सं) किसी कार्यालय का वह अनुभाग जहां भा-चित्र लेने का कार्य होता है । (फोटो सेक्शन) ।
भा-चित्र-निर्वचन समूह पुं०(सं) (सेना में) वायुयान द्वारा लिए गये चित्रों का निर्वचन करने वाले सैनिकों का एक विशेष दल जो इसी कार्य पर लगाया जाता है (फोटो इन्टरप्रेटेशन टीम) ।
भा-चित्रिक पुं०(सं) फोटो या भा-चित्र उतारने वाला (फोटोग्राफर) ।
भा-चित्रिणा स्त्री०(सं) १-वह शास्त्र जिसमें भा-चित्र उतारने की विधि के बारे में दिया हुआ होता है । २-भाचित्र उतारने की क्रिया या भाव (फोटोग्रैफी)
भाजक वि० (सं) विभाग करने वाला । बांटने वाला । पुं० वह अंक जिससे किसी संख्या का भाग किया जाय । (गणित) ।
भाजन पुं० (सं) १-बरतन । भांडा । २- आधार । पात्र । योग्य ।
भाजना क्रि० (हि) भागना ।
भाजित वि० (सं) १-विभक्त । अलग किया हुआ । २-जिसे अन्य संख्या से भाग दिया गया हो(गणित)
भाजी स्त्री०(स) तरकारी, साग आदि खाने की वनस्पतियां या फल ।
भाज्य पुं० (सं) वह अंक जिसमें भाजकांक से भाग किया जाता है । वि० विभाग करने योग्य ।

**भाट** पुं० (हि) १-राजाओं का यश गान करने वाले कवि। चारण। २-ऐसे कवियों की एक जाति। ३-राजदूत। स्त्री० नदी के किनारों के बीच की भूमि।
**भाटक** पुं० (सं) १-भाड़ा। किराया। (फ्रेट, फेयर) २-मकान या जमीन का किराया। (रेंट)।
**भाटक अभिकर्त्ता** पुं०(सं) मकान आदि का किराया उगाने वाला अभिकर्त्ता। (रेन्टेल एजेन्ट)।
**भाटकअर्हा** पुं० (सं) किसी भूमि या मकान की वह कीमत जितना उससे किराया आता है। (रैन्टल-वेल्यू)।
**भाटक तालिका** स्त्री०(सं)दे० 'भाटकराशि'। (रेन्टल)
**भाटकपंजी** स्त्री० (सं) किराया आदि लिखने की पंजी (रेन्टल रजिस्टर)।
**भाटकपत्र** पुं० (सं) वह पत्रक जिसमें जहाज या रेल द्वारा भेजे जाने वाले माल का वजन या भार,भाड़ा आदि लिखा हो। (फ्रेट नोट)।
**भाटक प्रपंजी** स्त्री० (सं) मकान आदि के किराये का लेखा लिखने की प्रपंजी। (रेन्टलैजर)।
**भाटक प्रभार** पुं० (सं) १-वह राशि जो किराये के रूप में ली जाती है। (रेन्ट चार्ज)। २-भेजे जाने वाले भार के भार पर लगाया गया भाड़ा। (फ्रेट-चार्ज)।
**भाटक पावती** स्त्री० (सं) वह रसीद जो जहाज या रेल द्वारा माल भेजने के भाड़े को दे देने पर दी जाती है। और जिसको दिखा कर माल मिल सकता हो। (फ्रेट- रिलीज)।
**भाटकमुक्त-अनुदान** पुं० (सं) वह अनुदान जिस पर कोई सूद न लिया जाता हो। (रेन्ट फ्री ग्रांट)।
**भाटकमुक्त-क्षेत्र** पुं० (सं) वह क्षेत्र जिसका कोई किराया न लिया जाय। (रेन्ट फ्री होल्डिंग)।
**भाटकमुक्त-भूमि** स्त्री० (सं) वह भूमि जिसका कोई कर या किराया न लिया जाय। (रेन्ट फ्री लेंड)।
**भाटक यान** पुं० (सं) किराए पर चलाने वाली सवारी गाड़ी। (टैक्सी)।
**भाटकराशि** स्त्री०(सं)किराये से होने वाली सारी आय (रेन्टल)।
**भाटक संग्रह अभिकर्ता** पुं०(सं) वह अभिकर्ता जिसे मकान आदि का किराया उगाह कर इकट्ठा करने रसीद देने का अधिकार हो। (रेन्ट कलक्टिंग-एजेंट)।
**भाटकसूचि** स्त्री०(सं) वह सूची जिसमें किरायेदारों के नाम और किराया आदि लिखा हो। (रेन्ट रोल)।
**भाटकाज्ञप्ति** स्त्री० (सं) न्यायालय द्वारा किराये की वसूली के लिए दिया गया आज्ञापत्र। (रेन्ट डिक्री)
**भाटक समाहर्ता** पुं०(सं) भाटक या किराया उगाहने वाला अधिकारी। (रेन्ट ऑफीसर)।
**भाटकार्थवाद** पुं०(सं) किराया वसूल करने के लिए किया गया मुकद्दमा। (रेन्ट सूट)।
**भाटकित** पुं०(सं)वह भूमि या मकान जो किराये पर देने के लिए हो। (टेनेमेन्ट)।
**भाटकितगृह** पुं० (सं) वह मकान जो किराये पर उठाने के लिए बनाया गया हो। (टेनेमेन्ट हाउस)
**भाटकित जलयात्रा** स्त्री० (सं) वह जलयात्रा जिसमें पहले से ही भाड़ा देकर जगह जहाज में सुरक्षित करवा ली गई हो। (चार्टेड वॉयेज)।
**भाटकित जलयान** पुं० (सं) वह जलयान या जहाज जिसका पूरा भाड़ा देकर जल यात्रा के लिए केवल अपने लिए पहले से ही सुरक्षित कर लिया गया हो। (चार्टेड शिप)।
**भाटकित पोत** पुं०(सं) वह छोटा जहाज या पोत जो भाड़ा देकर पहले से केवल अपने लिए सुरक्षित करवा लिया गया हो। (चार्टेड वेसल)।
**भाटके-ग्राही** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो अपने लिए जलयान आदि पहले से ही भाड़ा देकर सुरक्षित करवाता हो। (चार्टरर)।
**भाटा** पुं० (हि) १-पानी का उतार। २-समुद्र के चढ़ाव का उतरना। ३-पथरीली भूमि।
**भाठ** पुं०(हि)१-नदी के चढ़ाव के साथ बहकर आने वाली मिट्टी। २-नदी के किनारे के बीच की जमीन ३-धारा। चढ़ाव।
**भाठा** पुं० (हि) १-दे० 'भाटा'। २-गड्ढा।
**भाठी** स्त्री० (हि) दे० 'भट्ठी'।
**भाड़** पुं० (हि) भड़भूँजे की अनाज भूनने की भट्ठी।
**भाड़ा** पुं० (हि) किसी स्थान से कोई वस्तु दूसरी जगह भेजने तथा किसी के दूसरे स्थान पर किसी सवारी पर चढ़ने का भाड़ा (फेअर)। किराया।
**भाड़ैती** स्त्री० (हि) धन के लोभ में कोई काम करने वाला। भाड़े का टट्टू। (हायलिंग)।
**भाण** पुं० (सं) १-हास्य रस का वह रूपक जिसमें केवल एक रूप ही होता है (नाटक)। २-ज्ञान। ३-व्याज।
**भात** पुं० (हि) १-पानी में उबाल कर पकाया हुआ चावल। २-विवाह की एक रीति जिसमें वर या कन्या के मामा दोनों को अलग-अलग कपड़े आभूषण आदि देते हैं। ३-विवाह की एक रीति जिसमें (वरपक्ष) समधी को भात खिलाया जाता है
**भाति** स्त्री० (सं) चमक। दीप्ति।
**भाथा** पुं० (हि) १-तरकश। २-बड़ी भाथी।
**भाथी** पुं०(हि) भट्ठी में आग सुलगाने की धौंकनी।
**भादों** पुं० (हि) सावन के बाद और कुँवार के पहले का महीना। भाद्रपद।
**भाद्र** पुं० (सं) भादों का महीना।
**भाद्रपद** पुं० (सं) भाद्र। भादों।
**भान** पुं०(सं) १-प्रकाश। रोशनी। २-दीप्ति।

३-ज्ञान। ४-आभास। ५-कल्पित विचार।
भानजा पुं० (हि) बहन का लड़का।
भानना क्रि० (हि) १-तोड़ना। भंग करना। २-नष्ट करना। ३-समझना।
भानमती स्त्री० (हि) जादूगरनी।
भानवी स्त्री० (हि) यमुना।
भानवीय वि० (सं) भानु संबंधी। पुं०(सं) दाहिनी ओर की आंख।
भाना क्रि०(हि) १-अच्छा लगना। पसंद आना। २-जान पड़ना। ३-चमकना।
भानु पु० (सं) १-सूर्य। किरण। ३-राजा। ४-मंदार आक। स्त्री० (सं) दक्ष की कन्या का नाम।
भानुज पुं०(सं) १-यम। २-शनिश्चर।
भानुजा स्त्री० (सं) यमुना।
भानुपाक पुं० (सं) धूप में रख कर औषध तैयार करने की क्रिया।
भानुप्रताप पुं० (सं) एक राजा का नाम जो मरने पर रावण हुआ (रामा०)।
भानुमती स्त्री० (सं) एक प्रसिद्ध जादूगरनी (कदाचित कल्पित)।
भानुमान वि० (सं) दीप्तिवान। चमकदार। तेजयुक्त
भानुमुखी स्त्री० (सं) सूर्यमुखी।
भानुवार पु० (सं) रविवार।
भानुसुत पु० (सं) १-यम। २-शनिश्चर।
भानुसुता स्त्री० (सं) यमुना।
भाप पु० (हिं) १-वाष्प। उबालते हुए पानी में निकलने वाले सूक्ष्म जल कण जो धूएँ के रूप में उड़ते हुए दिखाई देते हैं (स्टीम)। २-द्रव्य पदार्थों की वह अवस्था जो ताप पाकर विलीन होने पर होती है (वेपर)।
भापना क्रि० (हि) दे० 'भांपना'।
भाफ पु० (हि) दे० 'भाप'।
भाभर पुं०(हि) १-पहाड़ों की तराई का जंगल। २-एक घास जिसकी रस्सी बटी जाती है।
भाभरा वि० (हि) लाल।
भाभी स्त्री० (हि) बड़े भाई की स्त्री भौजाई।
भामंडल पुं० (सं)१-सूर्य, चंद्रमा आदि के चारों ओर दिखाई देने वाला प्रकाश का घेरा। २-तेजस्वी पुरुषों के मुख के चारों ओर दिखाई देने वाला वलय प्रभामंडल। (हालो)।
भाम स्त्री (हि) स्त्री। औरत।।
भामा स्त्री० (हि) १-स्त्री। औरत। २-क्रुद्ध स्त्री।
भामिनी स्त्री० (सं)१-क्रोध करनेवाली स्त्री। २-सुन्दर स्त्री।
भामी स्त्री० (सं) तेज स्त्री। वि०(हि) क्रुद्ध। नाराज।
भामुद्रण पुं० (सं) एक प्रकार की छपाई। जिसमें फोटो लेकर छपाई की जाती है। (फोटो प्रिंटिंग)।
भाय पुं० (हि) भाई।
भायप पुं० (हि) भाईचारा।
भाया वि० (हि) प्रिय। प्यारा। पुं० (हि) भाई।
भार पुं० (सं) १-किसी वस्तु का गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है। वजन। बोझ। (वेट)। २-उत्तरदायित्व। (चार्ज)। ३-वह बोझा जो किसी वाहन या किसी अंग पर रख कर कहीं ले जाया जाता है। (लोड, बर्डन)। ४-किसी वस्तु की रेहन पड़े रहने, बन्धक होने या ऋण ग्रस्त होने की अवस्था (संवि०)। (एनकम्बरेंस)। ५-देखभाल। संभाल। ६-एक तौल।
भारआक्रान्त वि०(सं)जो बन्धक रखी हुई हो या जिस पर ऋण ले रखा हो (एन्कम्बर्ड)।
भारकेंद्र पु० (सं) गुरुत्व केंद्र। भार का मध्य केंद्र। सेंटर ऑफ ग्रेविटी)।
भारक्षम वि० (सं) भार ले जाने की क्षमता। (जहाज आदि)।
भारग्रस्त वि० (सं) दे० 'भारआक्रान्त'। (एन्कम्बर्ड)
भारग्रस्तसंपदा स्त्री० (सं) वह संपत्ति जिस पर ऋण का भार हो या जो रेहन रखदी गई हो (एन्कम्बर्ड-एस्टेट)।
भारजीवी पुं० (सं) बोझा उठा कर जीविका चलाने वाला। पल्लेदार।
भार तथा माप पुं० (सं) सामूहिक रूप से भारों के बट्टे तथा कई प्रकार के माप। (वेट एण्ड मेजरस)
भारत पुं० (सं) १-भारतवर्ष। हिन्दुस्तान। २-भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ३-महाभारत का मूलरूप ४-अग्नि। दे० 'भारतवर्ष'। ५-लम्बा-चौड़ा विवरण। ६-घोर युद्ध।
भारत आरक्षी सेवा स्त्री०(सं) भारत की पुलिस सेवा में अधिकारी नियुक्त करने का आयोग (इंडियन-पुलिस सर्विस)।
भारतखंड पुं० (सं) दे० 'भरतखंड'।
भारतदंड-संहिता स्त्री० (सं) जाब्ता। फौजदारी (इण्डियन पीनल कोड)।
भारतमहासागर पुं० (सं) भारतवर्ष के दक्षिण के महासागर का नाम।
भारतमाता स्त्री० (सं) भारतभूमि।
भारतवर्ष पुं० (सं) वह देश जो एशिया में हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। हिन्दुस्तान। आर्यवर्त्त। (इण्डिया)।
भारतवर्षीय वि० (सं) भारतवर्ष संबन्धी।
भारतवासी पुं० (सं) भारत देश में रहने वाला। भारतीय।
भारत संतान पुं०(सं) भारतवासी।
भारतीय-आयकर पुं० (सं) भारत में आय पर लगने वाला कर। (इण्डियन इन्कमटैक्स)।

**भारत-शासन** पुं० (सं) भारत की सरकार। गवर्नमेंट-ऑफ इन्डिया)।
**भारत-शासन आगोप मुद्रांक** पुं०(सं) भारत के बीमा-पत्रक पर लगाए जाने वाले टिकट। (गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया इन्श्योरेंस स्टेम्प)।
**भारत-शासन टंकशाला** स्त्री० (सं) भारत सरकार की टकसाल। (इन्डिया गवर्नमेंट मिंट)।
**भारति** स्त्री० (हि) भारती।
**भारती** स्त्री० (सं) १-वचन। वाणी। २-सरस्वती। ३-ब्राह्मी। ४-एक वर्णन शैली। ५-मंगलग्रह।
**भारतीय** वि० (सं) भारत-सम्बन्धी। भारत का। पुं० भारतवर्ष का निवासी।
**भारतीय अधिनियम** पुं० (सं) भारतवर्ष में लागू होने वाला अधिनियम। (इन्डिया एक्ट)। (इंडियन लिमिटेशन एक्ट)।
**भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम** पुं० (सं) भारत के उत्तराधिकार के अधिनियम। (इन्डियन सक्सेशन एक्ट)।
**भारतीय अवधि अधिनियम** पुं० (सं) किसी सम्पत्ति आदि के बारे में मुकदमा दायर करने की अवधि के बारे में अधिनियम।
**भारतीय उत्प्रवास अधिनियम** पुं० (सं) भारत से दूसरे देश में जाकर बसने वालों से सम्बन्धित अधिनियम। (इंडियन एमिग्रेशन एक्ट)।
**भारतीय खनि तथा व्यावहारिक भौमिकी विद्यालय** पुं० (सं) भारत सरकार का वह विद्यालय जिसमें खानों तथा भू-शास्त्र के सम्बन्ध में शिक्षा दी जाती है। (इंडियन स्कूल आफ माइन्स एन्ड एप्लाइड साइंस)।
**भारतीय नागरिक** पुं० (सं) भारत का नागरिक। (इंडियन नेशनल)।
**भारतीय प्रत्याभूति मुद्रणालय** पुं० (सं) वह मुद्रणालय जिसमें भारत के राजकीय मुद्रांक तथा नोट आदि छपते हैं। (इंडियन सिक्यूरिटी प्रेस)।
**भारतीय प्रमाप संस्था** स्त्री० (हि) वह संस्था जो भारत में निर्माण की गई वस्तुओं के प्रमाप निर्धारित करती है। (इंडियन स्टेंडर्ड इंस्टीट्यूशन)।
**भारतीय पारपत्र अधिनियम** पुं०(सं) भारत से बाहर यात्रा करने के लिये दिये जाने वाले पार-पत्र सम्बन्धी नियम। (इंडियन पासपोर्ट एक्ट)।
**भारतीय प्रशासन सेवा** स्त्री० (सं) वह सेवा जिसमें भारत की शासन व्यवस्था चलाने वाले अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। (इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस)।
**भारतीय फल प्रायोगिकी विद्यालय** पुं० (सं) वह भारतीय विद्यालय जिसमें फलों के उद्योग के सम्बन्ध में शिक्षा दी जाती है। (इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ फ्रूट टेकनोलॉजी)।
**भारतीय भाषा माध्यमिक पाठशाला** स्त्री० (सं) वह माध्यमिक पाठशाला जिसमें भारतीय भाषा की शिक्षा दी जाती है। (इन्डियन वर्नेकुलर मिडिल-स्कूल)।
**भारतीय वायु सेना** स्त्री (सं) भारत की वायु सेना। (इंडियन एयरफोर्स)।
**भारतीय युद्धस्मारक** पुं०(सं) भारत में बना युद्ध-स्मारक। (इंडियन वार मेमोरियल)।
**भारतीय विज्ञान विहार** पुं० (सं) भारत का वह उच्च शिक्षालय जहाँ विज्ञान की उच्च शिक्षा दी जाती है और अनुसंधान किया जाता है। (इंडियन ऐकडेमी आफ साइंसेज)।
**भारतीय संग्रहालय** पुं० (हि) पुरातत्व सम्बन्धी तथा अन्य ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रहालय। (इंडियन म्युजियम)।
**भारतीय संचित बल (सेना)** पुं० (सं) भारत की वह सेना जो विपत्ति काल में साधारण सेना के अतिरिक्त सेवा के लिए तैयार रहती है। (इंडियन रिजर्व फोर्सेज)।
**भारतीय संयान समवाय** पुं० (सं) भारतीय रेल समवाय। (इंडियन रेलवे कम्पनी)।
**भारतीय समुद्र** पुं० (सं) भारत के तट से लगने वाले समुद्र की वह सीमा जहाँ तक भारत शासन का अधिकार माना जाता है। (इंडियन वाटर्स)।
**भारतीय सामुद्र न्यायालय** पुं० (सं) वह न्यायालय जहाँ भारत के सामुद्रिक जहाजों आदि के झगड़े निबटाये जाते हैं। (इन्डियन मेरीटाइम कोर्ट)।
**भारतीयीकरण** पुं० (सं) विभागों तथा संस्थाओं में विदेशी कर्मचारियों को हटाकर उन के स्थान पर भारतीयों को नियुक्त करना जिससे केवल भारतीयों की प्रधानता रहे।
**भारथ** पुं० (हि) १-दे० 'भारत'। २-युद्ध।
**भारथी** पुं० (हि) सिपाही। योद्धा।
**भारदंड** पुं० (सं) बहँगी।
**भारद्वाज** पुं० (सं) १-भरद्वाज के वंशज। २-द्रोणाचार्य। ३-भरदूल नामक पक्षी। ४-हड्डी। ५-मंगल ग्रह।
**भारधारक** पुं०(सं) वह जिस पर किसी के काम करने का या किसी वस्तु की रक्षा करने का उत्तरदायित्व हो। (चार्ज होल्डर)।
**भारना** क्रि० (हि) १-बोझ लादना। दबाना। २-भार डालना।
**भारप्रमाणक** पुं० (सं) वह प्रमाण पत्र जो इस बात का सूचक हो कि किसी व्यक्ति को किसी कार्य का भार सौंप दिया गया हो। (चार्ज-सार्टीफिकेट)।
**भारभूत** पुं० (सं)। बहुत भारी बोझ (डेड वेट)।

**भारभृत्** *वि०* (सं) बोझा उठाने वाला।
**भारयष्टि** *स्त्री०* (सं) भारदंड। बहँगी।
**भारवाह** पुं० (सं) बोझा ढोने वाला।
**भारवाह अधिकारी** पुं०(सं) वह अधिकारी जिस पर किसी पद या कार्य का सम्पूर्ण भार हो।
**भारवाहक** पुं० (स) दे० 'भारवाह'।
**भारवाहन** पुं०(सं) १-बोझा ढोने की क्रिया या भाव २-पशु। ३-गाड़ी।
**भारवाहिक** पुं० (सं) दे० 'भारवाह'।
**भारवाही** *वि०* (सं) दे० 'भारवाह'।
**भारशंकु** पुं० (सं) भार उठाने का डंडा। लटकन। (लिवर)।
**भारसह** पुं० (स) गधा। *वि०* जिसमें भार उठाने का सामर्थ्य हो।
**भारहर** पुं० (सं) बोझा उठाने वाला।
**भारहारी** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-विष्णु।
**भारहीन** *वि०* (सं) जिसमें भार न हो। (व्हेटलेस)।
**भारा** *वि०* (हिं) दे० 'भारी'।
**भाराक्रांत** *वि०* (सं) १-जो बोझ से दबा हुआ हो। २-जिस पर संपत्ति आदि रहन रखकर ऋण चुकाने का भार डाला गया हो।
**भारिक** *वि०* (स) १-बोझा ढोने वाला। २-जिसके कारण भार पड़े।
**भारिकमत** पुं० (सं) १-सभापति का वह मत जो वह किसी विवाद ग्रस्त विषय का निर्णय करने के लिए देता है। (कास्टिंग वोट)।
**भारित** *वि०* (सं) १-जिस पर कोई भार हो। २-जिस पर कोई ऋण हो। (एनकम्बर्ड)।
**भारित देशनांक** पुं० (सं) किसी वस्तु का सापेक्ष मूल्यांकन करने वाले देशनांक। (व्हेटेड इनडेक्स नम्बर्स)।
**भारितमाध्य** पुं०(सं) किसी वस्तु का सापेक्ष मूल्यांकन करने वाले माध्य। (व्हेटेड एवरेज)।
**भारी** *वि०* (हिं) १-जिसमें अधिक बोझ हो। २-असह्य। ३-कठिन। ४-प्रबल। ५-गंभीर। ६-शांत ७-सूजा हुआ।
**भारीपन** पुं० (हिं) १-गुरुत्व। २-भारी होने का भाव
**भारी वस्तु** *स्त्री०* (स) वह वस्तु जिसमें बहुत बोझा या भार हो। (डैड व्हेट)।
**भारोद्वह** पुं० (सं) भार ढोने वाला।
**भारोपीय** *वि०* (सं) भारत तथा योरुप में समानरूप से पाये जाने वाले या उत्पन्न। (इन्डो यूरोपियन)
**भार्गव** पुं० (सं) १-भृगु के वंश से उत्पन्न पुरुष। २-परशुराम। ३-हाथी। ४-कुम्हार। ५-एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ६-हीरा। ७-अमरबेलि।
**भार्गवी** *स्त्री०* (सं) १-लक्ष्मी। २-पार्वती। ३-दूब।
**भार्गवीय** *वि०* (सं) भृगु सम्बन्धी।
**भार्गवेश** पुं० (सं) परशुराम।
**भार्या** *स्त्री०* (सं) पत्नी। स्त्री। (गृहकार, वाइफ)।
**भार्याटिक** *वि०* (सं) जो पत्नी के शासन में रहता हो
**भार्याद्रोही** *वि०* (स) पत्नी से झगड़ा करने वाला।
**भार्यात्व** पुं० (स) भार्या या पत्नी होने का भाव।
**भाल** पुं० (सं) १-कपाल। माथा। ललाट। २-तेज। (हि) १-भाला। २-तीर का फल। ३-भालू। रीछ।
**भालचंद्र** पुं० (सं) महादेव।
**भालनयन** पु० (सं) शिव।
**भालना** क्रि०(हि)१-ध्यानपूर्वक देखना। २-ढूंढना। खोजना।
**भाललोचन** पुं० (सं) शिव।
**भाला** पुं० (हि) नेजा। बरछा।
**भालाबरदार** पुं०(हि)भाला लेकर चलने वाला व्यक्ति
**भालि** *स्त्री०* (हि) १-बरछा। २-शूल। कांटा।
**भाली** *स्त्री०* (हि) भाले या बरछे की नोक।
**भालु** पुं० (हि) दे० 'भालू'।
**भालुक** पु० (सं) रीछ।
**भालू** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध हिंसक पशु जिसके सारे शरीर पर काले,भूरे या सफेद बाल होते है। रीछ।
**भावंता** पुं० (हि) १-प्रिय। २-होनहार। भावी।
**भाव** पुं०(सं) १-होने की क्रिया या तत्व। २-विचार ख्याल। (नोशन)। ३-अभिप्राय। ४-आत्मा। ५-जन्म। ६-वस्तु। पदार्थ। ७-विभूति। ८-मुख की चेष्टा या आकृति। ९-पर्यालोचन। १०-स्वभाव। ११-मन की छिपी हुई गूढ़ इच्छा। १२-ढंग। १३-दशा। १४-प्रतिष्ठा। १५-किसी बिकी की वस्तु का मूल्य। दर।(रेट)। १६-नाज। नखरा। १७-जन्म-कुण्डली में ग्रहों के विभिन्न स्थान। १८-नृत्य,गीत आदि में भाव दिखाने की अंगचेष्टा। १९-श्रद्धा।
**भावइ** *अव्यय* (हि) यदि इच्छा हो तो।
**भावक** *अव्य०* (हि) किंचित, थोड़ा सा। *वि०* (सं) भावपूर्ण। पुं० १-भावना करने वाला। २-भक्त। प्रेमी। ३-भाव। उत्पादक। उत्पन्न करने वाला।
**भावगति** *स्त्री०* (हिं) इच्छा। इरादा। विचार।
**भावगम्य** *वि०* (सं) भक्तिपूर्वक ग्रहण करने योग्य।
**भावग्राह्य** *वि०* (सं) भक्तिपूर्वक ग्रहण करने योग्य।
**भावग्राही** *वि०* (सं) भाव या अभिप्राय को समझने वाला।
**भावज** पुं० (सं) कामदेव। *स्त्री०* (हि) भाभी। भाई की पत्नी।
**भावज्ञ** *वि०* (सं) मानसिक भाव जानने वाला।
**भावता** *वि०* (हिं) १-जो भला लगे। २-प्रिय।
**भाव-ताव** पुं० (हिं) १-किसी वस्तु का मूल्य या दर २-रङ्ग-ढंग।
**भावन** *वि०* (हिं) अच्छा या भला लगने वाला। पुं०

(स) १-भावना। २-विष्णु।
**भावना** स्त्री० (सं) १-विचार। खयाल। २-साधारण विचार या कल्पना। ३-चाह। इच्छा। ४-पुट। ५-चूर्ण, जल आदि को रस में घोटने की क्रिया। ६-कौआ। ७-स्मरण। ८-धारणा। (कॉम्प्लेक्स)।
**भावनामय** वि० (सं) काल्पनिक।
**भावनि** स्त्री० (हि) इच्छानुसार काम या बात।
**भावनीय** वि० (सं) सोचने विचारने के योग्य।
**भावप्रधान** वि० (सं) दे० 'भाववाच्य'।
**भावप्रवण** वि० (सं) भावुक।
**भावप्रवणता** स्त्री० (सं) भावुकता।
**भावबोधक** वि० (सं) भाव प्रकट करने वाला।
**भावभक्ति** स्त्री० (सं) १-ईश्वर की भक्ति का भाव। २-आदर-सत्कार।
**भावमैथुन** पुं० (सं) जैनमतानुसार मन में मैथुन का विचार रखना।
**भाववाचक** वि० (सं) किसी वस्तु का भाव या गुण सूचित करने वाली (व्या०)
**भाववाच्य** पुं० (सं) क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया का कर्ता और कर्म के स्थान पर केवल कोई भाव हो (व्या०)।
**भावव्यंजक** वि० (सं) भावबोधक।
**भावशबलता** स्त्री० (सं) एक अलंकार जिसमें अनेक भावों की सन्धि होती है।
**भावशांति** स्त्री० (सं) साहित्य में एक अवस्था जिसमें किसी नये विरोधी भाव के आने पर पहले का कोई भाव समाप्त हो जाता है।
**भावशुद्धि** स्त्री० (सं) नेकनीयत।
**भावसंधि** स्त्री० (सं) वह अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है।
**भावांतर** पुं० (सं) १-अर्थांतर। २-मन दूसरी ओर हो जाना।
**भावानुग** वि० (सं) जो भावों का अनुसरण करता हो
**भावाभास** पुं० (सं) साहित्य में भाव का अनुपयुक्त स्थान पर दिखाया जाना।
**भावार्थ** पुं० (सं) १-वह अर्थ जो मूल का भाव मात्र हो। २-अभिप्राय। आशय।
**भाविक** पुं० (सं) वह अनुमान जो होने वाला हो। वि० मर्मज्ञ।
**भावित** वि० (सं) १-सोचा हुआ। विचारा हुआ। २-शुद्ध किया हुआ। ३-मिलाया हुआ। ४-जिसमें पुट दिया गया हो। ५-भेंट किया हुआ ६-सुगंधित
**भाविप्रदान** पुं० (सं) भविष्य में भेजा जाने वाला माल। (फ्यूचर डिलीवरी)।
**भावी** स्त्री० (हि) १-आने वाला समय। २-होनी। भाग्य। वि० (सं) भविष्य में आने वाला।
**भावीदायाद** पुं०(सं) भविष्य में बनने वाला दायाद (फ्यूचर एअर)।
**भावीपण्य** पुं० (हि) सट्टा। (फ्यूचर्स)।
**भावीभाटक** पुं० (सं) भविष्य में लिया जाने वाला किराया। (फ्यूचर रेंट)।
**भावीसंपदा** स्त्री० (सं) भविष्य में मिलने वाली संपत्ति (फ्यूचर एस्टेट)।
**भावी हस्तांतरण पत्र** पुं० (सं) भविष्य में संपत्ति आदि का हस्तांतरण करने का पत्रक। (फ्यूचर एश्योरेंस)।
**भावुक** वि० (सं) १-भावना करने वाला। सोचने वाला। २-उत्तम भावना करने वाला। ३-जिसके मन पर कोमल भावों का सहज में प्रभाव पड़ता हो (सेन्टिमेंटल)।
**भावुकता** स्त्री० (सं) भावुक होने का भाव या गुण। (सेन्टिमेन्टेलिज़्म)।
**भावै** अव्य (हि) चाहे।
**भावोदय** पुं० (सं) एक अलंकार जिसमें किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन होता।
**भावोद्दीपक** वि० (सं) जो भावों को उत्तेजित करे।
**भावोन्मत्त** वि० (सं) भावविह्वल।
**भावोन्मेष** पुं० (सं) भाव का उत्पन्न होना।
**भाव्य** वि० (सं) १-विचारणीय। २-सिद्ध करने योग्य ३-भावी।
**भाषक** पुं० (सं) बोलने वाला। कहने वाला।
**भाषज्ञ** पुं० (सं) भाषा का ज्ञाता।
**भाषण** पुं० (सं)१-बातचीत। कथन। २-व्याख्यान वक्तृता (स्पीच)।
**भाषण-प्रतियोगिता** स्त्री० (सं) किसी विषय पर बोलने की प्रतियोगिता।
**भाषना** क्रि० (हि) १-बोलना। कहना। २-भोजन करना।
**भाषांतर** पुं०(सं) एक भाषा का दूसरी भाषा में किया हुआ अनुवाद तर्जुमा। (ट्रांसलेशन)।
**भाषा** पुं० (सं) १-बोली। जबान। मुख से निकले हुए सार्थक शब्दों या वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किये जाते हैं। २-किसी देश के निवासियों की प्रचलित बात करने का ढंग। ३-आधुनिक हिन्दी। ४-वाक्य। वाणी। ५-सरस्वती। (लैंग्वेज)
**भाषाज्ञान** पुं०(सं) किसी भाषा के व्याकरण का ज्ञान
**भाषाबद्ध** वि०(सं) साधारण भाषा में लिखा या बना-हुआ।
**भाषाविज्ञान** पुं०(सं) वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति, विकास, और रूपपरिवर्तन आदि का विवेचन होता है। (फिलोलोजी)
**भाषाविद** पुं० (सं०) १-किसी भाषा का पूर्ण पंडित। २-अनेक भाषाओं का ज्ञाता। (लिंग्विस्ट)।

भाषासम पुं० (सं) शब्दों की ऐसी योजना जिससे वाक्य कई भाषाओं का माना जा सके (अलंकार)
भाषाशास्त्र पुं० (सं) दे० 'भाषाविज्ञान'।
भाषित वि० (सं) कहा हुआ। पुं० (सं) बातचीत। कथन।
भाषिता वि० (सं) बात करने वाला।
भाष्य पुं० (सं) १-सूत्रों की व्याख्या या टीका। २-किसी गूढ़ विषय की विस्तृत व्याख्या या विवेचना करने वाला। (कॉमेन्टेटर)।
भासंत वि० (सं) सुन्दर। दीप्तियुक्त। पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।
भास पुं० (सं) १-दीप्ति। चमक। २-किरण। ३-इच्छा। ४-स्वाद। ५-मिथ्याज्ञान। गोशाला।
भासक पुं० (सं) प्रकाशक। द्योतक।
भासना क्रि० (हि) १-मालूम होना। २-चमकना। ३-लिप्त होना। ४-कहना। बोलना।
भासमंत वि० (सं) चमकदार।
भासमान वि०(सं) जान पड़ता हुआ या दिखाई देता हुआ।
भासित वि० (सं) प्रकाशित। तेजोमय। चमकीला।
भासुर पुं० (सं) १-बिल्लौर। स्फटिक। २-वीर। बहादुर। ३-कोढ़ की दवा। वि० (सं) चमकीला।
भास्कर पुं०(सं)१-सुवर्ण। सोना। २-सूर्य। ६-अग्नि वीर। ५-शिव। ६-पत्थर पर बेलबूटे बनाने की कला।
भास्करद्युति पुं० (सं) विष्णु।
भास्करप्रिय पुं० (सं) लाल।
भास्करि पुं० (सं) शनि।
भास्कर्य पुं० (हि) मिट्टी के खिलौने या मूर्ति बनाने वाला कलाकार।
भास्वर वि०(सं) १-कोढ़ की दवा। २-सूर्य। ३-दिन वि० (सं) चमकदार।
भास्वान वि० (सं) चमकदार। पुं० (सं) १-सूर्य २-दीप्ति। ३-वीर।
भिंग पुं०(हि) दे० 'भृंग'। स्त्री० (देश) बाधा।
भिंगराज पुं० (हि) दे० 'भृंगराज'।
भिंजना क्रि० (हि) दे० 'भिगोना'
भिंडी स्त्री० (सं) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनाई जाती है। (लेडीज् फिंगर)।
भिंदिपाल पुं० (सं) एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था।
भिआ पुं० (हि) भाई।
भिक्षण पुं० (सं) भीख मांगना।
भिक्षा स्त्री० (सं) १-मांगना। २-भीख। ३-सेवा। चाकरी।
भिक्षाचर पुं० (सं) भिक्षुक।
भिक्षाचर्या स्त्री० (सं) भिक्षावृत्ति।
भिक्षाजीवी पुं० (सं) भीख मांग कर निर्वाह करने वाला।
भिक्षाटन पुं० (सं) भीख मांगने के लिये इधर-उधर घूमना।
भिक्षान्न पुं० (सं) भीख में मिला हुआ अन्न।
भिक्षापात्र पुं० (सं) वह पात्र जिसमें भिखारी भीख मांगते हैं।
भिक्षार्थी वि० (सं) भिक्षुक। भिखमंगा।
भिक्षावृत्ति स्त्री० (सं) भीख मांगकर जीविका चलाना
भिक्षार्ह वि० (सं) भिक्षा देने योग्य।
भिक्षु पुं० (सं) १-भिखमंगा। भिखारी। २-बौद्ध संन्यासी। ३-संन्यासी।
भिक्षुक पुं० (सं) भिखारी। भीख मागने वाला।
भिक्षुकी स्त्री० (सं) भिक्षुक-स्त्री।
भिक्षुणी स्त्री० (सं) बौद्ध संन्यासिनी।
भिखमंगा पुं० (हि) भिखारी। भीख मांगने वाला।
भिखारिणी स्त्री० (हि) दे० 'भिखारिन'।
भिखारिन स्त्री० (हि) भीख मांगने वाली स्त्री।
भिखारी पुं० (हि) भिखमंगा। भीख मांगने वाला।
भिखिया स्त्री० (हि) भीख।
भिगाना क्रि० (हि) दे० 'भिगोना'।
भिच्छा स्त्री० (सं) दे० 'भिक्षा'।
भिच्छु पुं० (हि) दे० 'भिक्षु'।
भिजवना क्रि० (हि) १-पानी में तर करना। २-किसी को भिगोने में प्रवृत्त करना।
भिजवाना क्रि० (हि) दे० 'भेजना'।
भिजाना क्रि० (हि) १-दे० 'भिगोना'। २-दे० 'भिजवाना'।
भिजोना क्रि० (हि) दे० 'भिगोना'।
भिज्ञ वि० (सं) ज्ञाता। जानकार।
भिड़त स्त्री० (सं) मुठभेड़। भिड़ने की क्रिया या भाव
भिड़ स्त्री० (सं) ततैया। बर्रे।
भिड़ना क्रि० (हि) १-टक्कर खाना। २-लड़ना। ३-पास पहुंचना। ४-सटना।
भितरिया पुं० (सं) मन्दिर के भीतरी भाग में रहने वाला पुजारी। वि० (हि) भीतर का।
भितल्ला पुं० (हि) अस्तर। कपड़े के अन्दर का पल्ला वि० (सं) अन्दर का।
भितल्ली स्त्री० (हि) चक्की के नीचे का पाट।
भिताना क्रि० (हि) भयभीत होना। डरना।
भित्ति स्त्री० (सं) १-दीवार। डर। टुकड़ा। २-वह पदार्थ जिस पर चित्र अंकित किया जाता है।
भित्तिचित्र पुं० (सं) दीवार पर अंकित किया गया चित्र।
भित्तिचोर पुं० (सं) दीवार में सेंध लगा कर चोरी करने वाला चोर।
भिद पुं० (सं) भेद। अन्तर।
भिदना क्रि० (हि) १-अन्दर धसना। २-घायल होना।

छेदा जाना।
भिदुर पुं० (हि) वज्र।
भिनकना क्रि० (हि) १-भिन-भिन शब्द करना। २-घृणा उत्पन्न करना। ३-कोई काम अधूरा रहजाना
भिनभिनाना क्रि० (हि) भिन-भिन शब्द करना।
भिनसार पुं० (हि) सवेरा। प्रभात।
भिनहीं अव्य० (हि) सवेरे। तड़के।
भिन्न वि० (सं) १-अलग। पृथक। २-दूसरा। अन्य। (डिफरेन्ट)। पुं० १-इकाई से कम भाग की संख्या सूचित करने वाली कोई संख्या (गणित)। (फ्रेक्शन) किसी तेज धार के अस्त्र से शरीर का कोई भाग कट जाना। (वैद्यक)।
भिन्न-आदेश पुं० (सं) कोई दूसरा आदेश। (डिफरेन्ट आर्डर)।
भिन्नक्रम वि० (सं) जिसका क्रम या सिलसिला टूट गया हो।
भिन्नता स्त्री० (सं) भिन्न होने का भाव। अलगाव।
भिन्नदेशीय वि० (सं) किसी दूसरे देश का।
भिन्नभिन्नात्मा पुं० (सं) चना।
भिन्नमतावलंबी पुं० (सं) दूसरे मत या मजहब का अनुयायी।
भिन्नरुचि वि० (सं) जिसकी रुचि अलग हो।
भिन्नहृदय वि० (सं) जिसका दिल छिद गया हो।
भिन्नात्मक वि० (सं) (गणित) वह संख्या जिसमें इकाई का कोई भाग भी लगा हो। (फ्रेक्शनल)।
भिन्नाना क्रि०(हि) (बदबू आदि) से सिर चकराना।
भिन्नार्थ वि० (सं) जिसका उद्देश्य भिन्न हो।
भिन्नोदर पुं० (सं) सौतेला भाई।
भियना क्रि० (हि) डरना।
भिरना क्रि० (हि) दे० 'भिड़ना'।
भिलनी स्त्री० (हि) १-भील जाति की एक स्त्री। २-भील की स्त्री।
भिलावां पुं० (हि) एक जंगली वृक्ष जिसका विषैला फल औषधि के काम आता है।
भिल्ल पुं० (हि) दे० 'भील'।
भिश्त स्त्री० (फा) स्वर्ग। वैकुण्ठ।
भिश्ती पुं० (फा) मशक से पानी भर कर ढोने वाला सक्का। मशकी।
भिषक पुं० (सं) वैद्य।
भिषग्विद पुं० (हि) वैद्य।
भिष्टा स्त्री० (हि) विष्ठा। मल।
भिसत स्त्री० (हि) स्वर्ग।
भिस्ती पुं० (हि) दे० 'भिश्ती'।
भिस्स स्त्री० (हि) भँसीड़। कमल की जड़।
भींचना क्रि० (हि) १-खींचना। कसना। २-मूँदना बंद करना। (आंख)।
भींजना क्रि० (हि) १-गीला होना। २-पुलकित हो जाना। ३-नहाना। समाजाना।
भींट पुं० (हि) दे० 'भीत'। स्त्री० दीवार।
भी अव्य०(हि) १-अवश्य। जरूर। २-अधिक। विशेष ३-तक। स्त्री० भय। डर।
भीउँ पुं० (हि) दे० 'भीम'।
भीक स्त्री० (हि) दे० 'भीख'।
भीकर वि० (सं) भयोत्पादक।
भीख स्त्री० (हि) १-भिक्षा। २-भिक्षा में मिला हुआ धन या पदार्थ। खैरात।
भीखन वि० (हि) भयानक। डरावना।
भीखम पुं० (हि) भीष्मपितामह। वि० भयानक। डरावना।
भीगना क्रि० (हि) किसी तरल पदार्थ या पानी से तर या आर्द्र होना।
भीजना क्रि० (हि) दे० 'भीगना'।
भीट पुं० (हि) दे० 'भीटा'।
भीटा पुं०(देश) १-टीले के समान कुछ ऊँची जमीन २-वह बनाई गई ऊँची और ढलवाँ जमीन जिस पर पान के पौधे लगाये जाते हैं।
भीड़ स्त्री० (हि) १-जनसमूह। एक ही स्थान पर एक ही समय में आदमियों का जमाव। २-संकट। ३-किसी बात की अधिकता।
भीड़ना वि० (हि) १-मिलाना। २-लगाना।
भीड़भड़क्का पुं० (हि) दे० 'भीड़भाड़'।
भीड़भाड़ स्त्री० (हि) जनसमूह।
भीड़ा वि० (हि) तंग। संकुचित। स्त्री० भिंडी।
भीत स्त्री०(सं) १-दीवार। भित्तिका। २-विभाग करने वाला परदा। ३-छत। ४-स्थान। ५-कसर। त्रुटि ६-टुकड़ा। खंड। ७-अवसर। ८-दरार।
भीतर अव्य० (हि) अन्दर। में। पुं० १-अन्तःकरण हृदय। २-जनानखाना।
भीतरी वि०(हि) १-अन्दर का। २-गुप्त। छिपा हुआ
भीति स्त्री० (स) १-डर। भय। २-कंप। ३-दीवार।
भीतिकर वि० (सं) भयकर। डरावना।
भीतिकृत वि० (सं) भय उत्पन्न करने वाला।
भीती स्त्री० (हि) १-दीवार। २-डर।
भीन पुं० (हि) प्रातःकाल। सवेरा।
भीनना क्रि० (हि) भर जाना। समाजाना।
भीनी वि० (हि) मीठी। हलकी (सुगंध)।
भीम पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-भयानक रस ४-अर्जुन के छोटे भाई भीमसेन। वि० भीषण। भयानक। २-बहुत बड़ा।
भीमकर्मा वि० (सं) महापराक्रमी।
भीमता स्त्री० (सं) भयानकता। भयंकरता।
भीमतिथि स्त्री० (सं) माघसुदी एकादशी।
भीमनाद पुं० (स) शेर। सिंह।
भीमपराक्रम वि० (सं) महाबली।

भीमपूर्वज पुं० (सं) युधिष्ठिर ।
भीमरथी पु० (सं) वह आयु जो ७७ वर्ष ७ माह ७ दिन समाप्त होने पर होती है ।
भीमरूप वि० (सं) भयंकर आकृति वाला ।
भीमसेन पुं० (सं) पांडव पुत्र भीम ।
भीमसेनी कपूर पुं० (सं) एक प्रकार का उत्तम कपूर ।
भीमा स्त्री०(सं) १-कोड़ा । चाबुक । २-दक्षिण भारत की एक नदी । २-दुर्गा । एक प्रकार की नाव । वि० भयंकर । भीषण ।
भीर स्त्री० (हि) १-दे० 'भीड़' । २-कष्ट । दुःख । ३-विपत्ति । वि० १-डरा हुआ । कायर ।
भीरना क्रि० (हि) डरना । भयभीत होना ।
भीरु वि० (सं) डरपोक । कायर । स्त्री० १-शतावरी । २-बकरी । ३-छाया । पुं० १-गीदड़ । २-बाघ ।
भीरुता स्त्री० (हि) १-कायरता । २-डर । भय ।
भीरुताई स्त्री० (हि) दे० 'भीरुता' ।
भीरू वि० (हि) दे० 'भीरु' । स्त्री० स्त्री । औरत ।
भीरे अव्य० (हि) पास । निकट । समीप ।
भील पुं०(हि)एक प्रसिद्ध जंगली जाति जो राजपूताने में पायी जाती है ।
भीलनी स्त्री० (हि) भील की स्त्री ।
भीलु वि० (सं) भीरु । डरपोक ।
भीलुक पुं० (सं) भालू । वि० डरपोक ।
भीव पु० (हि) भीमसेन ।
भीष स्त्री० (हि) दे० 'भीख' ।
भीषण वि०(सं) १-भयानक । २-विकट । घोर । पुं० १-भयानक रस । २-कबूतर । ३-शिव । ४-सलाई ५-त्रहला । ६-कुँदरू ।
भीषणता स्त्री० (सं) भयंकरता । डरावनापन ।
भीष्म पुं०(सं) राजाशांतनु के पुत्र । देवव्रत । गांगेय २-भयानक रस (साहि०) । ३-शिव । ४-राक्षस । वि० भीषण । भयंकर ।
भीष्मक पु० (सं) विदर्भ देश के राजा का नाम ।
भीष्मपितामह पुं० (सं) दे० 'भीष्म' ।
भीष्माष्टमी स्त्री० (सं) माघशुक्ला अष्टमी जिसे भीम ने प्राण त्यागे थे ।
भुंइ स्त्री० (हि) पृथ्वी । भूमि ।
भुंजना क्रि० (हि) १-भुनना । २-झुलसना ।
भुंजवा पुं० (हि) भड़भूजा ।
भुंडा वि० (हि) १-बिना सींग का । २-बदमाश । दुष्ट
भुअंग पुं० (सं) सर्प । सांप ।
भुअंगम पुं० (हि) सर्प ।
भुआ पु० (हि) दे० 'भूआ' ।
भुइं स्त्री० (हि) भूमि ।
भुइंकंप पुं० (हि) भूकंप ।
भुइंचाल पु० (हि) भूकंप ।
भुइंधारा पुं० (हि) तहखाना ।
भुइंहरा पु० (हि) तहखाना ।
भुक पुं० (हि) १-भोजन । आहार । २-अग्नि ।
भुकड़ी स्त्री० (हि) सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलने वाली फूई ।
भुकराँद स्त्री० (हि) सड़े हुए खाद्य पदार्थों से आने वाली बदबू ।
भुकाना क्रि० (हि) व्यर्थ की बकवाद करने में प्रवृत्त करना ।
भुक्कड़ वि० (हि) दे० 'भुक्खड़' ।
भुक्खड़ वि० (हि) १-भूखा । २-पेटू । ३-दरिद्र । कंगाल ।
भुक्त वि० (सं) १-खाया हुआ । २-भोगा हुआ । ३-जिसका नगद रुपया देकर वस्तु ले ली गई हो । ४-जो भुना लिया गया हो । (केश्ड) ।
भुक्तपूर्व वि० (सं) जो पहले भोगा जा चुका हो ।
भुक्तभोग वि० (सं) जो किसी कर्म आदि का फल भोग चुका हो ।
भुक्तभोगी पुं० (सं) वह जिसने भोगा हो ।
भुक्तशेष स्त्री० (सं) खाने से बचा हुआ । उच्छिष्ट ।
भुक्ति स्त्री० (सं) १-भोजन । आहार । २-लौकिक सुख । ३-दखल । कब्जा । ४-अधिकार पत्र के अनुसार नकद धन या कोई वस्तु लेना । (कैश) ।
भुक्ति-पात्र पुं०(सं) भोजन का पात्र ।
भुक्तोच्छिष्ट पुं० (सं) जूठन ।
भुखमरा वि० (हि) १-भुक्खड़ । २-पेटू ।
भुखमरी स्त्री० (हि) घोर अकाल । अन्न के अभाव में भूखों मरने की अवस्था ।
भुखाना क्रि० (हि) भूखा होना ।
भुगत स्त्री० (हि) दे० 'भुक्ति' ।
भुगतना क्रि० (हि) १-भोगना । सहना । २-पूरा होना । निबटना ।
भुगतान पुं० (हि) १-भुगतने की क्रिया या भाव । २-मूल्य चुकाना । (पेमेंट) । ३-खरीदा हुआ माल देना । (डिलीवरी) ।
भुगतानतुला स्त्री० (हि) हिसाब की वह मद जो एक देश को दूसरे को चुकता देनी शेष हो । ( बेलेंस आफ पेमेंट ) ।
भुगताना क्रि० (हि) १-भोगना । संपादन करना । पूरा करना । बिताना । ४- चुकाना ।
भुगाना क्रि० (हि) दे० 'भोगवाना' ।
भुगुत स्त्री० (हि) १-बिसात । २-मुक्ति ।
भुगुति स्त्री० (हि) दे० 'मुक्ति' ।
भुग्गा वि० (देश) मूर्ख ।
भुच्चड़ वि० (हि) मूर्ख ।
भुजंग पुं० (सं) १-सांप । सर्प । २-स्त्री का उपपति । जार । ३-सीसा नामक धातु ।
भुजंगम पुं० (सं) १-सर्प । २-सीसा नामक धातु ।

३-आठ की संख्या।
भुजंगभुक पुं० (सं) १-गरुड़। २-मोर।
भुजंगभोजी पुं० (सं) गरुड़।
भुजंगशत्रु पुं० (सं) गरुड़।
भुजंगा पुं० (सं) काले रंग का एक पक्षी।
भुजंगिनी स्त्री० (सं) १-सांपिन। नागिन। २-गोपाल नामक एक छंद।
भुजंगी स्त्री० (सं) सांपिन। १-एक प्रकार का छंद।
भुजंगेश पुं० (सं) शेषनाग।
भुज पुं० (सं) १-बाहु। बांह। २-हाथ। ३-शाखा। ४-लपेट। ५-समकोण का एक पूरक कोण। ६-त्रिभुज का एक आधार। ७-दो की संख्या का सूचक शब्द। ८-हाथी की सूँड।
भुजकोटर पुं (सं) काँख।
भुजग पुं० (सं) सर्प। सांप।
भुजगदारण पुं० (सं) गरुड़।
भुजगभोजी पुं० (सं) गरुड़।
भुजगराज पुं० (सं) शेषनाग।
भुजगांतर पुं०(सं) १-मोर। २-गरुड़। ३-नेवला।
भुजगाशन पुं०(सं) १-मोर। २-गरुड़।
भुजगी स्त्री० (सं) सांपिन। सर्पिणी।
भुजगेंद्र पुं० (सं) शेषनाग।
भुजच्छाया स्त्री० (सं) निरापद। आश्रय।
भुजदंड पुं०(सं) बाहुरूपी दंड।
भुजदल पुं०(सं) हथेली।
भुजपात पुं० (सं) दे० 'भोजपत्र'।
भुजपाश पुं० (सं) दोनों हाथों की वह मुद्रा जो गले मिलने पर होती है।
भुजबंद पुं० (सं) बाजूबंद।
भुजबंध पुं० (सं) १-अङ्गद। २-भुजवेष्टन।
भुजबंधन पुं०(सं) भुजपाश।
भुजबल पुं० (सं) बाहुबल।
भुजवाथ पुं० (सं) दे० 'भुजपाश'।
भुजमूल पुं० (सं) खवा। कंधा।
भुजयष्टि स्त्री० (सं) दे० 'भुजदंड'।
भुजलता स्त्री० (सं) लता जैसी सुकोमल बांह।
भुजवा पुं० (हि) भड़भूंजा।
भुजवीर्य पुं० (सं) बाहुबल। बाहुबलि। शिवपुत्र।
भुजा स्त्री० (सं) बांह। हाथ।
भुजामूल पुं०(सं) कंधा।
भुजाली स्त्री० (हि) एक प्रकार की बरछी।
भुजिया पुं० (हि) १-उबाले हुए धान का चावल। २-सूखी भून कर बनाई गई तरकारी।
भुजेना पुं० (हि) भुना हुआ दाना। चबैना
भुजैना पुं० (हि) १-भुना हुआ अन्न। २-भुनने की मजदूरी। ३-नोट आदि के बदले में दिया जाने वाला धन।
भुट्टा पुं० (हि) १-मक्के ज्वार बाजरे की बाल। २-गुच्छा।
भुतनी स्त्री० (हि) दे० 'भूतनी'।
भुनगा पुं० (हि) १-उड़ने वाला कीड़ा। फतिङ्गा। २-फूलों पर उड़ने वाला एक कीड़ा। ३-बहुत ही तुच्छ या निर्बल मनुष्य।
भुनना क्रि० (हि) १-भूना जाना। २-आग की गरमी में लाल होना। ३-रुपये नोट आदि सिक्के के रूप में परिणित करना।
भुनभुनाना क्रि० (हि) १-भुनभुन शब्द करना। बड़बड़ाना।
भुनवाई स्त्री० (हि) १-भूनने की क्रिया या भाव। २-भुनने की मजदूरी।
भुनाई स्त्री० (हि) दे० 'भुनाई'।
भुनाना क्रि० (हि) १-भूनने का काम किसी दूसरे से कराना। २-बड़े सिक्कों को छोटे सिक्कों में परिणित करना।
भुवि स्त्री० (हि) पृथ्वी।
भुरकना क्रि० (हि) १-सूख कर भुरभुरा होना। २-भुरभुराना। ३-बुरकना। छिड़कना।
भुरकस पुं० (हि) दे० 'भुरकुस'।
भुरकाना क्रि०(हि) १-भुरभुरा करना। २-छिड़कना ३-बहकाना।
भुरकुन पुं० (हि) चूरा। चूर्ण।
भुरकुस पुं० (हि) जिस वस्तु को कुचल और कूटकर चूर्ण कर दिया गया हो।
भुरता पुं० (हि) १-भरता। २-वह पदार्थ जो कुचलने पर विकृत अवस्था को प्राप्त हो गया हो।
भुरभुरा वि० (हि) तनिक सा आघात पाने पर चूर-चूर होने वाला।
भुरभुराहट पुं० (हि) भुरभुरापन।
भुरवना क्रि०(हि) १-भ्रम में डालना। २-फुसलाना।
भुरहरा पुं० (हि) प्रातःकाल। सवेरा।
भुराई स्त्री० (हि) भोलापन। पुं० (हि) भूरापन।
भुराना क्रि० (हि) १-भूलना। २-भुरवाना।
भुरावना क्रि० (हि) दे० 'भुराना'।
भुर्भुरिका स्त्री० (सं) एक प्रकार की मिठाई।
भुर्रा वि० (हि) अतिशय काला।
भुलक्कड़ वि० (हि) जिसका स्वभाव भूलने वाला हो।
भुलना वि० (हि) जिसे स्मरण न रहता हो।
भुलवाना क्रि० (हि) १-भ्रम में डालना। २-भुलाना।
भुलसना क्रि० (हि) गरम राख में भुलसना।
भुलाना क्रि० (हि) १-भूलने का प्रेरणार्थक रूप। २-भ्रम में डालना। ३-विस्मृत करना। भूल जाना। ५-भटकना।
भुलावा पुं० (हि) छल। कपट। चक्कर।
भुवंग पुं० (हि) दे० 'भुजंग'।

भुवंगम पुं० (हिं) दे० 'भुजंगम'।
भुव पुं० (सं) अग्नि। आग। स्त्री० (हिं) १-पृथ्वी। २-भौंह।
भुवपति पुं० (हिं) राजा।
भुवपाल पुं० (हिं) दे० 'भूपाल'।
भुवन पुं० (सं) १-जगत। २-जल। ३-जन। लोग। ४-लोक। ५-सृष्टि।
भुवनत्रय पुं० (सं) स्वर्ग, पाताल और मर्त्य।
भुवनपावनी स्त्री० (सं) गंगा।
भुवनभर्ता पुं० (सं) सारे जगत का पालन-पोषण करने वाला।
भुवनमाता स्त्री० (सं) दुर्गा।
भुवनविदित वि० (सं) जगत्प्रसिद्ध।
भुवनेश्वर पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो उड़ीसा में पुरी के पास है। २-वहां स्थापित शिव की प्रधान मूर्ति।
भुवनेश्वरी स्त्री० (सं) तंत्रानुसार एक देवी का नाम।
भुवनौका पुं० (सं) देवता।
भुवर्लोक पुं० (सं) अन्तरिक्ष लोक।
भुवा पुं० (हिं) रूई।
भुवार पुं० (हिं) दे० 'भुवाल'।
भुवाल पुं० (हिं) राजा।
भुशुंडि पुं० (सं) काकभुशुण्डी। एक प्रकार का अस्त्र
भुसी स्त्री० (हिं) दे० 'भूसी'।
भुसुंड स्त्री० (हिं) सूँड।
भुसौरा पुं० (हिं) वह स्थान जहां पर भूसा रखा जाता है।
भूँकना क्रि० (हिं) १-(कुत्ते आदि का) भूँ-भूँ शब्द करना। २-व्यर्थ बकना।
भूँजना क्रि० (हिं) १-तलना। पकाना। २-सताना। ३-भोगना। ४-भोग करना।
भूँजा पुं० (हिं) १-भुना अन्न। चबेना। २-भड़भूँजा
भूँड़ स्त्री० (हिं) वह मिट्टी जिसमें बालू मिली हुई हो।
भूँडरी स्त्री० (हिं) जमींदार द्वारा नाई या धोबी को दी गई माफी की जमीन।
भूँसना क्रि० (हिं) दे० 'भूकना'।
भू स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-स्थान। जगह। ३-सत्ता ४-प्राप्ति। ५-पदार्थ। स्त्री० (देश) भौंह।
भू-अभिलेख पुं० (सं) वह अभिलेख जो भूमि के नाप जोख, स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में हो। (लैंड-रेकर्ड्स)।
भू-अभिलेख-स्थापना स्त्री० (सं) भू-अभिलेख तैयार करने वाले कर्मचारी। (लैंड रेकर्ड एस्टेब्लिशमेंट)।
भू-अभिलेखागार पुं० (सं) वह कार्यालय जहां भू-अभिलेख रखे जाते है। (लैंड रेकर्ड ऑफिस)।
भूआ पुं० (सं) रूई का सा मुलायम टुकड़ा। स्त्री०
भू-आगम पुं० (सं) राज्य की भू-संपत्ति-कर से होने वाली आय (लैंड रेवेन्यू, रेवेन्यू)।
भू-आगम मंडल (बोर्ड) पुं० (सं) भू-आगम विभाग के अधिकारियों का वह निकाय जो इस विभाग की व्यवस्था करता है। (बोर्ड आफ रेवेन्यू)।
भूई स्त्री० (हिं) दे० 'भूआ' पुं०।
भू-उत्पादन का अंश पुं० (हिं) भूमि की उपज का अंश। (पोर्शन आफ दि प्रोड्यूस आफ दि लैंड)।
भू-उपनिवेशन पुं० (सं) भूमि पर लोगों को बसाना (लैंड कोलोनाइजेशन)।
भू-उपस्थायक पुं० (सं) भूमि सम्बन्धी देखभाल करने वाला गुमाश्ता। (लैंड स्टेवर्ड)।
भूकंप पुं० (सं) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के भीतर उथल-पुथल होने से ऊपरी भाग का हिल उठना। भूचाल। (अर्थक्वेक)।
भूकंपमापक पुं० (सं) वह यंत्र जिसके द्वारा भूकंप के केन्द्र की दूरी, प्रवेग आदि मालूम की जाती है। (सीस्मोमीटर, सीज्मोग्राफ)।
भूकंपविज्ञान पुं० (सं) भूकंप के स्वरूप तथा कारणों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान। (सीज्मोलॉजी)।
भूकंपसूचक यंत्र पुं० (सं) दे० 'भूकंपमापक'। (सीज्मोमीटर)।
भूक स्त्री० (हिं) दे० 'भूख'।
भूकना क्रि० (हिं) दे० 'भूखना'।
भूकर्ण पुं० (सं) पृथ्वी का व्यास।
भूकर्मी पुं० (हिं) हवाई अड्डे पर काम करने वाले वे कर्मचारी जिन्हें केवल भूमि पर ही काम करना पड़ता है। उड़ने वाले वायुयान के साथ नहीं। (ग्राउंड स्टाफ़)।
भूखंड पुं० (सं) १-भूमि का कोई भाग अंश या टुकड़ा (ट्रैक्ट)। २-भूमि का कोई छोटा अंश। (प्लॉट)।
भूख स्त्री० (हिं) १-खाने की इच्छा। क्षुधा। २-आवश्यकता। ३-समाई। ४-अभिलाषा। कामना।
भूखन पुं० (हिं) दे० 'भूषण'।
भूखना क्रि० (हिं) भूषित करना। सजाना।
भूख-हड़ताल स्त्री० (हिं) अनशन।
भूखा वि० (हिं) १-जिसे भूक लगी हो। क्षुधित। २-किसी बात का अभिलाषी। ३-दरिद्र। गरीब।
भूगर्भ पुं० (सं) पृथ्वी का भीतरी भाग।
भूगर्भगृह पुं० (सं) तहखाना।
भूगृह पुं० (सं) तहखाना।
भूगृहादि पुं० (सं) भूमि और मकान। (लैंड एण्ड बिल्डिंग)।
भूगर्भविद्या स्त्री० (सं) दे० 'भूगर्भशास्त्र'।
भूगर्भशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के

ऊपरी तथा भीतरी भाग के तत्वों तथा उनके वर्तमान रूप कैसे बने, इन बातों का विवेचन होता है। (जियोलॉजी)।

**भूगर्भित** *वि०* (सं) १-भूगर्भ के अन्दर या भीतरी भाग में होने वाला। (सबटरेनियम)। २-भूमि में दफनाया हुआ। (इन्टर्ड)।

**भूगोल** पुं० (सं) १-पृथ्वी। २-वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के ऊपरी तथा उसके प्राकृतिक विभागों आदि के स्वरूप का वर्णन होता है। (ज्योग्रेफी)।

**भूगोलशास्त्र** पुं० (सं) दे० 'भूगोल'।

**भूगोलक** पुं० (सं) भूमंडल।

**भूचर** पुं० (सं) १-भूमि पर रहने वाले प्राणी। २-शिव। ३-दीमक।

**भूचरी** *स्त्री०* (सं) योग की एक समाधि।

**भूचर्या** *स्त्री०* (सं) अंधकार। धरती की छाया।

**भूचाल** पुं० (हि) भूकंप।

**भूच्छाया** *स्त्री०* (सं) दे० 'भूचर्या'।

**भूछाया** *स्त्री०* (सं) ग्रहण के समय सूर्य या चन्द्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की छाया। (अम्ब्रा)।

**भूजंतु** पुं० (सं) सीसा (धातु)।

**भूजंबु** पुं० (सं) १- गेहूँ। २-वन-जामुन।

**भूजात** पुं० (सं) वृक्ष।

**भूटानी** *वि०* (हि) भूटान देश का। भूटान संबन्धी पुं० (हि) भूटान का निवासी। २-भूटान का घोड़ा। *स्त्री०* (हि) भूटान की भाषा।

**भूटिया** *वि०* (हि) भूटान का। पुं० (हि) भूटान का निवासी।

**भूडोल** पुं० (हि) भूकंप।

**भूत** पुं० (हि) १-वे मूलद्रव्य जिनकी सहायता से सृष्टि की रचना हुई है। २-प्राणी। ३-जीव। ४-सत्य। ५-वृक्ष। ६-कृष्ण पक्ष। ७-बीता हुआ समय। ८-मृत शरीर। शव। ९-मृत प्राणी की आत्मा। १०-वे कल्पित आत्माएं जिनके विषय में यह माना जाता है कि वह नाना प्रकार के उपद्रव करके लोगों को कष्ट पहुँचाते हैं। प्रेत। शैतान। *वि०* (हि) १-बीता हुआ। गत। २-मिला हुआ। ३-समान।

**भूतकाल** पुं० (हि) बीता हुआ समय।

**भूतखाना** पुं० (हि) बहुत ही मैला-कुचैला या गन्दा घर।

**भूतग्रस्त** *वि०* (हि) जिस पर भूत सवार हो।

**भूतत्व** पुं० (सं) पृथ्वी के भीतर के पदार्थों का विज्ञान

**भूतत्वविज्ञान** पुं० (सं) भूगर्भ-शास्त्र।

**भूतत्व-विद्या** *स्त्री०* (सं) भूगर्भ शास्त्र।

**भूतत्व-विद्** पुं० (सं) भूगर्भ शास्त्र का पंडित।

**भूतत्वी** *वि०* (सं) भूगर्भ सम्बन्धी। (जियोलोजिक)।

**भूतत्वी परिमाप** पुं० (सं) भूगर्भ सम्बन्धी परिमाप (जियोलोजिकल सर्वे)।

**भूतनाथ** पुं० (सं) शिव।

**भूतनायिका** *स्त्री०* (सं) दुर्गा।

**भूतनाशन** पुं० (सं) १-रुद्राक्ष। २-सरसों। ३-हींग। ४-भिलावाँ।

**भूतनी** *स्त्री०* (हि) प्रेत स्त्री। भुतनी।

**भूतपूर्व** *वि०* (सं) वर्तमान समय से पहले का।

**भूतप्रेत** पुं० (सं) भूत-पिशाच आदि।

**भूतभावन** पुं० (सं) १-महादेव। विष्णु।

**भूतभाषा** *स्त्री०* (सं) पैशाची भाषा।

**भूतभाषिका** पुं० (सं) पैशाची।

**भूतल** पुं० (सं) १-पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग। धरातल। (लैंड सर्फेस)। २-संसार। ३-पाताल।

**भूतल-अधिकार** पुं० (सं) १-भूमि पर मकान आदि बनाने का अधिकार। २-भूमि जोतने आधिकार। (सर्फेस राइट)।

**भूतलक्षी** *वि०* (सं) भूतगत विषय पर विचार करने वाला। (रिट्रोस्पेक्टिव)।

**भूतल-जलराशि** *स्त्री०* (सं) भूतल पर स्थित होने वाली नदी। तालाब आदि। (सर्फेस वाटर्स)।

**भूतल-भाटक** पुं०(सं) भूतल पर मकान आदि बनाने या जोतने के अधिकार के बदले में किया जाने वाला भाटक। (सर्फेस रेंट)।

**भूतल-स्रोत** पुं० (सं) भूतल पर की नदी या झरना आदि। (सर्फेस स्ट्रीम)।

**भूतल-हानि** *स्त्री०* (सं) भूतल को पहुँचाई गई हानि। (सर्फेस डेमेज)।

**भूतवाद** पुं (सं) दे० 'भौतिकवाद'।

**भूतवाहन** पुं० (सं) शिव।

**भूतविद्या** *स्त्री०* (सं) आयुर्वेद का वह विभाग जिसमें मानसिक रोगों का उपचार किया गया है।

**भूतसिद्ध** *वि०* (सं) जिसने भूत प्रेतों को अपने वश में करने की सिद्धि करली हो।

**भूतसिद्धि** *स्त्री०*(सं) भूतों को वश में करने की विद्या। (सोरसेरी)।

**भूतसृष्टि** *स्त्री०*(सं) भूत चढ़ जाने पर होने वाली भ्रांति

**भूतसाधक** पुं० (सं) भूतों को वश में करने वाला। (सोरसरर)।

**भूतहत्या** *स्त्री०* (सं) जीवहत्या।

**भूतांतक** पुं० (सं) १-यम। १-रुद्र।

**भूतात्मा** पुं० (सं) १-शरीर। २-ईश्वर। ३-शिव। ४-जीवात्मा।

**भूताधिपति** पुं० (सं) शिव।

**भूतानुकंपा** *स्त्री०* (सं) जीवों पर दया करना।

**भूताली** *स्त्री०* (सं) पृथ्वी के ऊपर का भाग।

**भूताविष्ट** *वि०*(सं) जिस पर भूत सवार हो गया हो।

**भूतावेश** पुं० (सं) प्रेतबाधा।

भूति स्त्री०(सं) १-वैभव। २-भस्म। राख। ३-उत्पत्ति ४-वृद्धि। ५-आठ प्रकार की सिद्धियां। ६-लक्ष्मी। ७-हाथी के मस्तक को रंग कर शृङ्गार करना। ८-पकाया हुआ मांस।
भूतिनी स्त्री० (सं) १-भूत योनि की स्त्री। २-डाकिनी
भूतुंबी स्त्री० (सं) एक प्रकार की ककड़ी।
भूतेश पुं० (सं) शिव।
भूतेश्वर पुं० (सं) शिव।
भूतोन्माद पुं० (सं) भूत या पिशाच के आक्रमण या प्रभाव से होने वाला उन्माद।
भूदान पुं० (सं) १-भूमि, घर, खेत आदि का दान। २-भूमिहीन किसानों को भूमि आदि देने के लिए चलाये गये आन्दोलन को सहयोग देने के रूप में किया गया दान।
भूदार पुं० (सं) सूअर।
भूदृश्य पुं०(सं) १-भूमि का वह भाग जो एक दृश्य में दिखाई दे। २-प्राकृतिक या ग्राम्यदृश्य। ३-ग्राम्य-दृश्य का चित्र। (लैंडस्केप)।
भूदेव पुं० (सं) राजा।
भूधर पुं०(सं) १-पहाड़। २-शेषनाग। ३-राजा। ४-विष्णु। ५-सात की संख्या। ६-शिव।
भूधरराज पुं० (सं) हिमालय।
भूधारक पुं० (सं) (संवि०) वह किसान जिसने भूमि जोतने के लिए किराये पर ले रक्खी हो। (टेराटेनेंट)
भूधारिणी स्त्री० (सं) वह स्त्री जो संपत्ति या भूमि की मालिक हो। (लैंड लेडी)।
भूधारी स्त्री० (सं) वह किसान जिसे भूधृति का अधिकार हो। (टेन्योर होल्डर)।
भूधृति स्त्री० (सं) जोतने बोने का भूमि पर होने वाला किसान का अधिकार। (लैंड टेन्योर)।
भून पुं० (सं) दे० 'भ्रूण'।
भूनना क्रि० (हि) १-आग पर रखकर पकाना। २-गरम बालू में डाल कर पकाना। ३-तलना। ४-अत्यधिक कष्ट देना।
भूनाग पुं० (सं) १-केंचुआ। २-भूमिनाग।
भूनिंब पुं० (सं) चिरायता।
भूनेता पुं० (सं) राजा।
भूप पुं० (सं) राजा।
भूपटल पुं० (सं) भूतल।
भूपतित वि० (सं) जो (घायल होकर) पृथ्वी पर गिर पड़ा हो।
भूपरिधि स्त्री० (सं) पृथ्वी की परिधि।
भू-परिमाप स्त्री० (सं) भूमि के किसी खंड आदि की नाप जोख। (लैंड सर्वे)।
भूपवित्र पुं० (सं) गोबर।
भूपाल पुं० (सं) १-राजा। नृप। २ मध्य भारत में भोपाल राज्य।
भूपुत्र पुं० (सं) मंगलग्रह।
-पुत्री स्त्री० (सं) सीता।
-न्द्र पुं० (सं) सम्राट।
भूप्रतिभूति स्त्री०(सं) वह जमानत जो पृथ्वी या संपत्ति के रूप में हो। (लैंडेड सिक्यूरिटी)।
भूभर्ता पुं० (सं) राजा।
भूभल स्त्री० (हि) गरम राख या धूल।
भूभाग पुं० (सं) प्रदेश। खण्ड।
भूभागहारी पुं० (सं) ईश्वर।
भूभुक पुं० (सं) राजा।
भूभृत पुं० (सं) १-पर्वत। पहाड़। २-राजा।
भूमंडल पुं० (सं) पृथ्वी।
भूमध्यसागर पुं० (सं) योरोप और एशिया के मध्य का सागर। (मेडीटरेनियन सी)।
भूमय स्त्री० (सं) १-सूर्य की भार्या छाया। वि० मिट्टी का बना हुआ।
भूमयी स्त्री० (सं) दे० 'भूमय' (स्त्री०)।
भूमहेन्द्र पुं० (सं) राजा।
भूमापक पुं० (सं) भूमि की नाप जोख करने वाला। (सर्वेयर)।
भूमापन पुं० (सं) किसी खेत आदि की सीमा आदि निर्धारित करने के उद्देश्य से भूमि की नाप जोख करना। (सर्वे)।
भूमापन अधिकारी पुं० (सं) भूमापन करने वाला अधिकारी। (सर्वे आफीसर)।
भूमापन एकक पुं०(सं) भूमापकों का वह दल जो एक स्थान पर एक साथ भूमि की नाप जोख करता है (सर्वे यूनिट)।
भूमापन कर्कट पुं० (सं) यह (कम्पास) कर्कट जिसके द्वारा भूमि नापने के लिए दिशा मालूम की जाती है। (सर्वे कम्पास)।
भूमापन चिह्न पुं० (सं) भूमि की नाप जोख करने के लिए लगाए गए चिह्न। (सर्वे मार्क)।
भूमापन-शृंखला पुं० (सं) भूमि की नाप जोख करने की लोहे की जंजीर। (सर्वे चेन्स)।
भूमापन सीमाचिह्न पुं० (सं) खेत आदि पर नाप जोख कर बाद लगाया हुआ सीमा का चिह्न। (लैंडबाउंड्री मार्क्स)।
भूमापनांक पुं०(सं) वह अंक जो किसी विशेष स्थान के भूमापन के कागजों पर स्मरण के लिए दिया जाता है। (सर्वे नम्बर)।
भूमि स्त्री० (सं) १-पृथ्वी के ऊपर का वह ठोस भाग जिसमें नदी, पर्वत आदि हैं और हम लोग रहते हैं २-भूखंड का छोटा भाग जिस पर किसी का अधिकार हो। (एस्टेट)। ३-स्थान। जगह। ४-नींव। ५-प्रदेश। ६-जीभ। ७-उत्पत्ति स्थान।
भूमि-अधिकोश पुं० (सं) भूमि आदि रेहन रख कर

ब्याज पर रुपया देने वाला बैंक। (लैंड बैंक)।
भूमि-अन्य संक्रामण-अधिनियम पुं० (सं) भूमि के अधिकार को दूसरे को दे देने के सम्बन्ध में लागू होने वाला अधिनियम। (लैंड एलीयेनेशन एक्ट)
भूमि-अर्जन पुं० (सं) किसी विशेष राजकीय कार्य के लिए किसी भूमि का खरीदना। (लैंड एक्वीजीशन)
भूमि-अवाप्ति-अधिकारी पुं० (सं) वह अधिकारी जिसे किसी राजकीय काम के लिए किसी भूमि को खरीद लेने की व्यवस्था करता है। (लैंड एक्वीजीशन आफीसर)।
भूमि-अवाप्ति-अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके द्वारा किसी सार्वजनिक या राज्यादि की विशेष आवश्यकता पूरी करने के लिए भूमि खरीद लेने का सरकार को अधिकार है। (लैंड एक्वीजीशन एक्ट)।
भूमि-उपयोग-समंक पुं० (सं) भूमि सम्बन्धी उपयोगी भूमि के आंकड़े। (लैंड युटिलाइजेशन स्टेटिस्टिक्स)
भूमिकंप पुं० (सं) भूचाल। भूकंप।
भूमिकम्पन पुं० (सं) भूकंप।
भूमिकर पुं० (सं) भूमि पर लगने वाला सरकारी लगान। (लैंड टैक्स)।
भूमिका स्त्री० (सं) १-रचना। २-किसी लेख या ग्रन्थ के आरम्भ का वह कथन जिससे उसकी ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। (इन्ट्रोडक्शन)। ३-पृष्ठभूमि। (बैक ग्राउन्ड)। ४-नाटक आदि में किसी पात्र का अभिनय।
भूमिकागत पुं० (सं) नाटकीय पोशाक पहनने वाला
भूमिकुष्मांड पुं० (सं) भूमि पर होने वाला कुम्हड़ा।
भूमिगृह पुं० (सं) तहखाना।
भूमिजा स्त्री० (सं) सीता।
भूमिजीवी पुं० (सं) किसान। कृषक। खेतिहर।
भूमितल पुं० (सं) भूतल।
भूमिदान पुं० (सं) भूमि या जमीन का दान।
भूमिदेव पुं० (सं) १-ब्राह्मण। २-राजा।
भूमिधर पुं० (सं) १-पर्वत। २-शेषनाग। ३-वह किसान जिसने खेत पर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।
भूमिधारण पुं० (सं) भूमि अधिकार प्राप्त होना। (लैंड होल्डिंग)।
भूमिनाग पुं० (सं) केंचुआ।
भूमिप पुं० (सं) राजा।
भूमिपक्ष पुं० (सं) अत्यधिक तेज घोड़ा।
भूमिपट्टा पुं० (सं) पट्टे पर ली हुई भूमि का पत्रक। (ग्राउंड लीज)।
भूमिपति पुं० (सं) राजा।
भूमिपरिकल्पक पुं० (सं) वह मजदूर जो खेत पर काम करता हो। (लैंड जॉबर)।
भूमिपरिव्यय पुं० (सं) भूमि की कीमत। (कॉस्ट आफ लैंड)।
भूमिप्रभार पुं० (सं) भूमि पर लगने वाला अतिरिक्त कर। (लैंड चार्जेस)।
भूमिया पुं० (सं) १-जमींदार। २-ग्राम देवता। ३-किसी देश का आदिवासी।
भूमिरुह पुं० (सं) वृक्ष।
भूमिलवण पुं० (सं) शोरा।
भूमिलाभ पुं० (सं) मृत्यु।
भूमिलेपन पुं० (सं) गोबर।
भूमिव्यवस्था पुं० (सं) भूमि के सम्बन्ध में प्रबन्ध-व्यवस्था। (लैंड सैटलमेंट)।
भूमिवर्गीकरण पुं० (सं) कृषि योग्य भूमि का अलग हिस्सा लगाना। (लैंड क्लासिफिकेशन)।
भूमिशयन पुं० (सं) भूमि पर सोना।
भूमिसंरक्षण पुं० (सं) भूमि का कटाव आदि से बचाव करना। (लैंड कन्जर्वेशन)।
भूमिसत्र पुं० (सं) भूदान यज्ञ।
भूमिसात् पुं० (सं) जो गिर कर भूमि के साथ मिल गया हो।
भूमिसुर पुं० (सं) ब्राह्मण।
भूमिस्वामी पुं० (सं) १-भूमि का मालिक। (लैंडलॉर्ड)।
भूमिहस्तांतर-अधिनियम पुं० (सं) भूमि के स्वामित्व हस्तांतरित करने से सम्बन्धित अधिनियम। (लैंड-एलीनिगेशन एक्ट)।
भूमिहार पुं० (सं) उत्तर प्रदेश और बिहार में रहने वाली एक जाति विशेष।
भूमीश्वर पुं० (सं) राजा।
भूयः अव्य० (सं) १-पुनः। फिर। २-बहुत। अधिक
भूयशः अव्य० (सं) १-बहुधा। २-अधिक करके। अधिकतर।
भूयसी वि० (सं) बहुत अधिक। अव्य० (सं) बार बार।
भूयसीदक्षिणा स्त्री० (सं) मंगल कार्य के अन्त में ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा।
भूयोभूयः अव्य०(सं) बार-बार।
भूर वि० (हि) बहुत अधिक। पुं० बालू।
भूरज पुं० (हि) भोजपत्र वृक्ष। (सं) पृथ्वी की धूल-मिट्टी।
भूरजपत्र पुं० (हि) भोजपत्र।
भूरसीदक्षिणा स्त्री० (हि) दे० 'भूयसी दक्षिणा'।
भूरा पुं० (हि) १-मिट्टी की तरह मटमैला रङ्ग। २-गोरा। ३-चीनी। वि० मिट्टी के रङ्ग का खाकी।
भूराजस्व पुं० (सं) जोती-बोई जाने वाली जमीन पर लगने वाला सरकारी कर। (लैंड रैवेन्यू)।
भूरि पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-स्वर्ण। इन्द्र

*वि०* १-अधिक। प्रचुर। २-बड़ा भारी।
**भूरिता** *स्त्री०* (सं) १-अधिकता। २-प्रचुरता।
**भूरिद** *वि०* (सं) बहुत दान देने वाला।
**भूरिदा** *वि०* (सं) महादानी।
**भूरिभाग** *वि०* (सं) बड़ा भाग्यशाली।
**भूरुह** पुं० (सं) वृक्ष।
**भूरोह** पुं० (सं) केंचुआ।
**भूर्ज** पुं० (सं) भोजपत्र नामक वृक्ष।
**भूर्जपत्र** पुं० (सं) भोजपत्र।
**भूर्लोक** पुं०(सं) संसार। मृत्युलोक।
**भूल** *स्त्री०* (हि) १-भूलने का भाव। २-गलती। चूक ३-अशुद्धि। (ऐरर, मिस्टेक)।
**भूलक** *वि०* (हि) भूल करने वाला।
**भूलचूक** *स्त्री०* (हि) भूल। गलती।
**भूलना** *क्रि०* (हि) १-याद न रखना। २-याद न रहना। ३-गलती करना या होना। ४-धोखे में आना। ५-इतराना। ६-खो देना। *वि०* (हि)भूलने वाला।
**भूलभुलैया** *स्त्री०*(हि) कोई घुमावदार वस्तु की रचना जिसमें आदमी जल्दी ही मार्ग भूल जाता है और ठिकाने पर नहीं पहुँचता।
**भूवा** पुं० (हि) दे० 'भूआ'।
**भूषण** पुं० (सं) १-अलंकार। गहना। २-विष्णु। ३-वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़ती हो।
**भूषण-पेटिका** *स्त्री०* (सं) रत्नमंजूषा।
**भूषणीय** *वि०* (सं) सजाने योग्य।
**भूषन** पुं० (हि) दे० 'भूषण'।
**भूषना** *क्रि०* (हि) १-सजाना। अलंकृत करना। २-गहने पहनना।
**भूष्य** *वि०* (सं) दे० 'भूषणीय'।
**भूषा** *स्त्री०* (सं) १-आभूषण। गहने। जेवर। २-सजाने की क्रिया या सामग्री।
**भूषाचार** पुं०(सं) १-कपड़े आदि पहनने का विशेष ढङ्ग। २-रीति। तौर। तरीका। ३-उच्च वर्गों में प्रचलित ढङ्ग। (फैशन)।
**भूषित** *वि०* (सं) १-सजाया हुआ। २-गहने पहने हुए। अलंकृत।
**भूसन** पुं० (हि) दे० 'भूषण'।
**भूसना** *क्रि०* (हि) दे० 'भूँकना'।
**भूसा** पुं० (हि) अनाज का डंठल जो टुकड़े करके पशुओं को खिलाया जाता है।
**भूसी** *स्त्री०* (हि) १-भूसा। २- अनाज आदि के ऊपर का छिलका।
**भूसेंचन** पुं० (सं) भूमि की सिंचाई। (इरीगेशन)।
**भू-सेंचन अभियन्ता** पुं० (सं) भूमि की सिंचाई का प्रबन्ध करने वाला इन्जीनियर। (इरीगेशन इन्जीनियर)।
**भूसेंचन अभियंत्रण** *स्त्री०* (सं) भूमि की सिंचाई के लिये नहर आदि खोदकर प्रबन्ध करना। (इरीगेशन इंजीनियरिंग)।
**भूसेंचन कर्मान्त** पुं० (सं) भूमि की सिंचाई के लिए नहर आदि बनाने का काम। (इरीगेशन वर्क्स)
**भूसेंचन परियोजना** *स्त्री०* (सं) भूमि की सिंचाई के लिए नहर, कुएँ आदि बनाने की परियोजना। (इरीगेशन प्रॉजेक्ट)।
**भूसेंचक** पुं० (सं) भूमि की सिंचाई करने वाला। (इरीगेटर)।
**भृंग** पुं० (सं) १-भौंरा। २-भिलनी नामक कीड़ा।
**भृंगज** पुं० (सं) अभ्रक। अगरु।
**भृंगजा** *स्त्री०* (सं) भारंगी।
**भृंगपर्णिका** *स्त्री०* (सं) छोटी इलायची।
**भृंगराज** पुं० (सं)१-भौंरा। २-काले रंग का एक पक्षी
**भृंगावली** *स्त्री०* (सं) भौंरों की पंक्ति।
**भृंगि** पुं० (सं) शिव के एक अनुचर का नाम।
**भृंगी** *स्त्री०* (सं) १-भौंरी। २-भिलनी नामक कीड़ा। ३-भांग। पुं० शिव का एक गण।
**भृंगीश** पुं० (सं) शिव।
**भृकुटि** *स्त्री०* (सं) भौं चढ़ाना। भ्रूभंग। तेवरी।
**भृगु** पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध गोत्र प्रवर्तक मुनि का नाम। २-जमदग्नि। ३-परशुराम। ४-समुद्र तट पर ढलुआं चट्टान। (क्लिफ)। ५-शुक्रग्रह।
**भृगुज** पुं० (सं) १-भार्गव। २-शुक्राचार्य।
**भृगुतुंग** पुं० (सं) २-हिमालय की एक चोटी। २-शिव।
**भृगुनंदन** पुं०(सं) परशुराम।
**भृगुपति** पुं० (सं) परशुराम।
**भृगुपुत्र** पुं० (सं) शुक्र।
**भृगुरेखा** *स्त्री०* (सं) विष्णु की छाती पर का चिह्न जो भृगु के लात मारने पर बना था।
**भृगुवार** पुं० (सं) शुक्रवार।
**भृगुश्रेष्ठ** पुं० (सं) परशुराम।
**भृत** *वि०* (सं) १-भरा हुआ। पूरित। २-पाला पोसा हुआ। पुं० दास। नौकर।
**भृतक** पुं० (सं) नौकर।
**भृतकाध्यापक** पुं० (सं) वेतन लेकर पढ़ाने का काम करने वाला अध्यापक।
**भृति** *स्त्री०*(सं) १-भरने की क्रिया या भाव। २-सेवा नौकरी। ३-मजदूरी। ४-वेतन (वेजेज)। ५-मूल्य ६-वह धन जो पत्नी को निर्वाह के निमित्त मिलता है। (एलीमनी, मेंन्टेनेन्स)।
**भृतिकर्मकर** पुं० (सं) नौकर। मजदूर।
**भृतिनिधि** *स्त्री०* (सं) वह निधि जो वेतन आदि देने के लिए अलग रखी जाती है। (वेजेज फंड)।
**भृतिभोगी** *वि०* (सं) १-वेतन लेकर किसी का भी

कोई विशेष काम करने या लड़ने वाला। (मर्सीनरी) २-किराये का सैनिक।
भृतिविश्लेषण-पुस्त स्त्री० (सं) वह पुस्तक जिसमें विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों के वेतन का विश्लेषण होता है। (वेजेज ऐनेलिसिस बुक)।
भृत्य पुं०(सं) नौकर। चाकर। सेवक।
भृत्यभर्ता पुं० (सं) गृहस्वामी। नौकर रखने वाला।
भृत्यभाव पुं० (सं) सेवाभाव।
भृत्यवर्ग पुं० (सं) दास-समूह।
भृत्यवृत्ति स्त्री० (सं) सेवकों का पालना।
भृत्यशाली वि० (सं) जिसके पास बहुत से सेवक या दास हों।
भृत्या स्त्री०(सं) दासी। नौकरानी। सेविका।
भृश वि० (सं) अत्यधिक। बहुत शक्तिशाली।
भृशकोपन वि०(सं) अत्यधिक क्रोध करने वाला।
भृशदुःखित वि० (सं) अत्यधिक दुःखित।
भेंट स्त्री० (हि) १-मिलना। मुलाकात। २-उपहार। नजराना। (ऑफरिङ्ग)।
भेंटना क्रि० (हि) १-मुलाकात करना। २-गले या छाती से लगाना। आलिङ्गन करना।
भेंटाना क्रि० (हि) १-मिलना। २-किसी वस्तु तक हाथ पहुँचाना। ३-मुलाकात करना।
भेंना क्रि० (हि) भिगोना। तर करना।
भेंवना क्रि० (हि) दे० 'भेंना'।
भेइ पुं० (देश) दे० 'भेद'।
भेउ पुं० (देश) दे० 'भेद'
भेक पुं० (सं) 'मेंढक'।
भेकभुक पुं० (सं) सांप। सर्प।
भेकरव पुं० (सं) मेंढकों का टर्राना।
भेकी स्त्री० (सं) मेंढकी।
भेख पुं०(हि) दे 'वेष'।
भेखज पुं० (हि) दे० 'भेषज'।
भेजना क्रि० (हि) किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना। प्रेषण।
भेजवाना क्रि० (हि) भेजने का काम किसी और से कराना।
भेजा पुं० (हि) १-सिर या खोपड़ी के अन्दर का गूदा २-मस्तिष्क। दिमाग। ३-चंदा। मेंढक।
भेटना क्रि० (हि) दे० 'भेंटना'।
भेड़ स्त्री० (हि) १-बकरी के आकार का एक चौपाया जिसकी ऊन के कंबल और वस्त्र बनाए जाते है। २-मूर्ख आदमी।
भेड़ा पुं० (हि) भेड़ जाति का नर। मेष।
भेड़िया पुं० (हि)कुत्ते से मिलता जुलता एक जंगली हिंसक जन्तु जो छोटे जानवरों को उठा ले जाता है
भेड़ियाधसान पुं० (हि) १-भेड़चाल। २-बिना सोचे समझे दूसरे का अनुसरण करना।
भेड़ी स्त्री०(हि) १-दे०'भेड़'। २-भेड़ का कमाया हुआ चमड़ा।
भेतव्य वि० (सं) जिस से डरा जाय।
भेत्ता वि० (सं) विघ्न या बाधा डालने वाला। भेदन करने वाला।
भेद पुं०(सं) भेदन, छेदन या अलग करने की क्रिया या भाव। २-रहस्य। ३-मर्म। तात्पर्य। ४-अन्तर। फर्क। (डिफरेंस)। ५-शत्रु पक्ष के लोगों को एक दूसरे का विरोधी बना कर अपने पक्ष में मिलाना। ६-जाति।
भेदक वि० (सं) १-भेदने या छेदने वाला। २-रेचक दस्तावर।
भेदकातिशयोक्ति स्त्री० (सं) एक अतिशयोक्ति अलंकार जिसमें किसी की अति या अधिकता का वर्णन 'या', 'ही', 'न्यारा' आदि शब्द लगा कर किया जाता है।
भेदकर वि० (सं) भेद करने वाला।
भेदकारी वि० (सं) दे० 'भेदकर'।
भेददर्शी वि० (सं) द्वैतवादी।
भेदन पुं०(सं)१-भेदने की क्रिया या भाव। २-बेधना छेदना। ३-भेद लेने की क्रिया या भाव। (एस्पिनेज)।
भेदनीति स्त्री० (सं) फूट डालने की नीति।
भेदबुद्धि स्त्री० (सं) एकता का अभाव। फूट। अलगाव।
भेदभाव पुं० (सं) कुछ विशिष्ट लोगों के साथ अन्तर या फर्क का भाव रखना। (डिस्क्रिमिनेशन)।
भेदवादी वि० (सं) भिन्न मत अवलंबी।
भेदित वि०(सं) अलग किया हुआ। भेद किया हुआ।
भेदिया पुं० (सं) १-गुप्तचर। २-जासूस। ३-गुप्त रहस्य जानने वाला।
भेदी पुं०, वि० (सं) १-गुप्त रहस्य बताने वाला। २-छेदने वाला।
भेदीसार पुं० (सं) बढ़ई की लकड़ी में छेद करने का औजार। बरमा।
भेदू पुं० (देश) मर्म या रहस्य जानने वाला।
भेद्य वि० (सं) भेदन करने के योग्य।
भेद्यरोग पुं० (सं) वह रोग जिसमें शरीर के किसी अंग की चीरफाड़ की जाय।
भेना क्रि० (हि) 'भिगोना'।
भेय वि० (सं) दे० 'भेतव्य'।
भेर पुं० (सं) डंका। नगाड़ा।
भेरा पुं० (देश) एक प्रकार की नाव।
भेरी स्त्री० (सं) बड़ा ढोल या नगाड़ा। दुंदुभी।
भेरीकार पुं० (सं) नगाड़ा बजाने वाला।
भेला पुं० (हि) १-भेंट। २-मिड़ंत। ३-लकड़ी की बनी नाव। ३-(गुड़ आदि का) बड़ा पिंड या ढेला

**भेली** स्त्री० (हिं) गुड़ आदि की गोल पिंडी।
**भेव** पुं० (हिं) १-रहस्य। भेद। २-बारी। पारी।
**भेवना** क्रि०(हिं) तर करना। भिगोना।
**भेय** पुं० (हिं) दे० 'वेष'।
**भेषज** पुं० (सं) १-औषध। दवा। (मेडिसिन)। २-जल। ३-सुख। ४-विष्णु। ५-उपचार
**भेषज रसायन** पुं० (सं) १-दवा में काम आने वाले रसायन। (फार्म्यूसूटिक केमेस्ट्री)।
**भेषजांग** पुं० (सं) औषधि खाने के बाद या साथ खाने वाला पदार्थ। अनुपान।
**भेषजागार** पुं० (सं) दवा की दुकान। (फार्मेसी)।
**भेषना** क्रि० (हिं) १-भेष बनाना। २-पहनना।
**भेस** पुं० (हिं) १-वेष। पहनावा। २-किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ बनावटी रूप तथा पहने हुए वस्त्र।
**भेसज** पुं० (हिं) दे० 'भेषज'।
**भेसना** क्रि० (हि) १-कपड़े पहनना। २-भेस बनाना
**भैंस** स्त्री० (हि) १-गाय जैसा काले या भूरे रंग का पशु की मादा जो दूध के निमित्त पाली जाती है।
**भैंसा** पुं० (हिं) भैंस का नर।
**भैं** पुं० (हिं) दे० 'भय'।
**भैक्ष** पुं० (सं) १-भिक्षा मांगने की क्रिया या भाव। २-भीख।
**भैक्षकाल** पुं० (सं) भिक्षा मांगने का समय।
**भैक्षचर्या** स्त्री० (सं) भिक्षा मांगने का काम।
**भैक्षजीविका** स्त्री० (सं) भिक्षा मांग कर जीविका चलाना।
**भैक्षभुज** वि०(सं) भिक्षा मांग कर निर्वाह करने वाला
**भैक्षवृत्ति** स्त्री० (सं) दे० 'भैक्षचर्या'।
**भैक्षान्न** पुं० (सं) भिक्षा में मिला हुआ अन्न।
**भैक्ष्य** पुं० (सं) भिक्षा। भीख।
**भैचक** वि० (हिं) चकित। विस्मित।
**भैच्चक** वि० (हिं) दे० 'भैचक'।
**भैन** स्त्री० (हिं) बहन।
**भैना** स्त्री० (हिं) बहन।
**भैनी** स्त्री० (हिं) बहन।
**भैने** पुं० (हिं) भानजा।
**भैया** पुं० (हिं) १-भाई। भ्राता। २-बराबर वालों के लिए आदरसूचक शब्द।
**भैयाचारा** पुं० (हिं) भाईचारा।
**भैयादूज** स्त्री० (हि) भाई दूज कार्तिक-शुक्ला द्वितीया।
**भैरव** वि० (सं) १-भीषण शब्द वाला। २-विकट। भयानक। पुं० १-शंकर। महादेव। २-साहित्य के भयानक रस। ३-संगीत का एक राग। ४-ताल का एक भेद। ५-कपाली। ६-गीदड़।
**भैरवकारक** वि० (सं) भयानक। डरावना।
**भैरवी** स्त्री० (सं)१-एक देवी का नाम। चामुण्डा। २-एक रागनी। (संगीत)। ३-पार्वती। ४-एक नदी।
**भैरवीचक्र** पुं०(सं) देवी पूजन के निमित्त एकत्रित एक तांत्रिकों का मंडल।
**भैरवी यातना** स्त्री०(सं) मरते समय की भीषण यातना जो उनकी शुद्धि के लिए भैरव जी देते हैं।
**भैरवीय** वि० (सं) भैरव सम्बन्धी।
**भैरवेश** पुं० (सं) महादेव।
**भैषज** पुं० (सं) १-औषधि। दवा। २-लवा पक्षी।
**भैषजिक** वि० (सं) १-औषध या दवा सम्बन्धी। २-चिकित्सा सम्बन्धी। (मेडीकल)।
**भैषजिक पत्रोपाधि** स्त्री० (सं) वैद्यक या डाक्टरी की परीक्षा पास करने के पश्चात् चिकित्सा करने के लिए दी गई उपाधि। (मेडीकल डिप्लोमा)।
**भैषजिक परीक्षा** स्त्री० (सं) रोग मालूम करने के लिए डाक्टर या वैद्य द्वारा की गई परीक्षा। (मेडिकल एक्जामिनेशन)।
**भैषजिक प्रमाण पत्र** पुं० (सं) वह प्रमाण पत्र जो किसी व्यक्ति को रोगी प्रमाणित करने के लिए दिया जाता है। (मेडिकल सार्टिफिकेट)।
**भैषजिक मण्डली** स्त्री० (सं) वैद्य या डाक्टरों की बनाई गई मण्डली। (मेडिकल बोर्ड)।
**भैषजिक व्यय** पुं० (सं) चिकित्सा या दवा के लिए होने वाला व्यय। (मेडिकल एक्सपेंसेस)।
**भैषजिक विद्यालय** पुं० (सं) वह विद्यालय जहां रोग निदान आदि की शिक्षा दी जाती है। ( मेडिकल कॉलेज )।
**भैषजिक विधिशास्त्र** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें चिकित्सा प्रणाली औषधियां आदि के प्रयोग आदि के नियमों का विवेचन होता है। (मेडिकल ज्यूरिसप्रुडेन्स)।
**भैषजिक वृत्तिक** पुं० (सं) चिकित्सा करने वाला डाक्टर या वैद्य। (मेडिकल प्रेक्टीशनर)।
**भैषजिक संस्था** स्त्री० (सं) वह संस्था जो वैद्यक या डाक्टरी आदि की शिक्षा या चिकित्सा विधि की उन्नति के लिए बनाई गई हो। (मेडिकल इंस्टीट्यूशन)।
**भैषजिक सहायता** स्त्री० (सं) चिकित्सा आदि की सहायता। (मेडिकल असिस्टेन्ट)।
**भैषजिक साक्षी** पुं०(सं) वह गवाह जो किसी के रोगी होने का साक्ष्य दे। (मेडिकल विटनेस)।
**भैषजिक सेवा समिति** स्त्री० (सं) भैषजिक सेवा के लिये बनाई गई समिति। (मेडिकल सर्विसेज कमिटी)।
**भैषज्य** पुं० (सं) औषध। दवा।
**भैष्मकी** स्त्री० (सं) भीष्मक की कन्या। रुक्मिणी।
**भैहा** पुं० (हिं) डरा हुआ। भयभीत।
**भोंकना** क्रि० (हिं) नुकीली वस्तु जोर से धसाना।

पुसेड़न ।(स्टैव) ।
भोंगाल पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा भोंपा ।
भोंचाल पुं० (हि) दे० 'भूकंप' ।
भोंडा वि०(हि) कुरूप । भद्दा । (बॉच) ।
भोंडापन पुं० (हि) १-भद्दापन । २-बेहूदापन ।
भोंतरा वि० (हि) (वह शस्त्र) जिसकी नोक या धार तेज न हो । कुन्द धार वाली ।
भोंतला वि० (हि) दे० 'भोंतरा' ।
भोंदू वि० (हि) १-मूर्ख । २-भोला । सीधा ।
भोंपा पुं० (हि) दे० 'भोंपू' ।
भोंपू पुं० (हि) १-एक प्रकार का तुरही जैसा बाजा । २-कारखाने आदि में समय की सूचना देने वाली सीटी ।
भों-भों पुं० (हि) कुत्ते आदि के भोंकने का शब्द ।
भो अव्य०(हि) हुआ । अव्य०(सं) हे ! हो ! संबोधन-सूचक शब्द ।
भोकस वि० (हि) भूखा । भुक्खड़ । पुं० राक्षस ।
भोक्तव्य वि० (सं) भोगने के योग्य ।
भोक्ता वि० (सं) १-भोग करने वाला । भोजन करने वाला । ३-ऐयाश । पुं० १-विष्णु । २-राजा । ३-पति । ४-प्रेत ।
भोग पुं०(सं) १-सुख-दुःख आदि का अनुभव करना २-कष्ट । दुःख । ३-विलास । सुख । ४-स्त्री संभोग ५-प्रारब्ध । ६-भक्षण । आहार । ७-परिमाण । ८-घर । ९-धन । १०-अर्थ । ११-वह स्थिति जिसमें किसी पदार्थ को पास रख कर उसका उपयोग किया जाता है। अधिकार । (पजेशन) । १२-पंक्तिबद्ध सेना । १३-सर्प ।
भोगजात वि० (सं) भोग से उत्पन्न । (कष्ट) ।
भोगतृष्णा स्त्री० (सं) भोग करने की इच्छा ।
भोगदेह स्त्री० (सं) स्वर्ग या नरक का भोग करने के लिए सूक्ष्म देह (पुराण) ।
भोगधर पुं० (सं) सांप । सर्प ।
भोगना क्रि० (हि) १-सुख, दुःख आदि कर्मफल का अनुभव करना । २-सहना । ३-स्त्री प्रसंग करना ।
भोगनाथ पुं० (सं) पालन करने वाला ।
भोगपति पुं० (सं) किसी नगर या प्रांत आदि का प्रधान शासक या अधिकारी ।
भोगपत्र पुं० (सं) राजा को उपहार भेजने के संबंध में लिखा जाने वाला पत्र ।
भोगपाल पुं० (सं) साईस ।
भोगपिशाचिका स्त्री० (सं) भूख ।
भोगबंधक पुं० (सं) रेहन रखने की वह प्रणाली जिसमें ऋण के सूद के स्थान पर महाजन को उस वस्तु के भोग करने का अधिकार होता है । (मोर्टगेज विद पजेशन) ।
भोगभुक् वि० (सं) भोग करने वाला ।
भोगभूमि स्त्री० (सं) १-भारतवर्ष से अन्य देश । २-जैनमतानुसार स्वर्ग लोक जहां कल्पवृक्ष से सारी इच्छाएं पूरी होती है ।
भोगभृतक पुं० (सं) बिना वेतन केवल कपड़े रोटी पर रहने वाला नौकर ।
भोगलाभ पुं०(सं) सुख-भोग आदि की प्राप्ति ।
भोगलिप्सा स्त्री० (सं) लत । व्यसन ।
भोगली स्त्री० (देश) १-छोटी नली । नाक की लौंग ३-कँगनी । ४-चपटे तार का सलमा । ५-कान में पहनने के फूल की कील ।
भोगवती स्त्री०(सं) १-गंगा । २-पाताल गंगा । ३-एक तीर्थ ।
भोगवना क्रि० (हि) भोगना ।
भोगवान् पुं० (सं) १-सांप । २-गति । ३-नाट्य ।
भोगवाना क्रि०(हि) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना ।
भोग-विलास पुं० (सं) आमोदप्रमोद । ऐश ।
भोगशील वि० (सं) भोगी ।
भोगसद्म पुं० (सं) अन्तःपुर । जनानखाना ।
भोगस्थान पुं०(सं) १-शरीर । २-अन्तःपुर । रमणगृह
भोगाधिकार पुं०(सं) भूमि, संपत्ति आदि पर वह अधिकार जो उस पर निर्धारित समय से पहले से काबिज होने के कारण प्राप्त होता है । (अकुपेन्सी राइट) ।
भोगाना क्रि० (हि) दे० 'भोगवाना' ।
भोगार्ह वि० (सं) जिसका भोग किया जा सके । पुं० धन । दौलत ।
भोगावास पुं०(सं) अन्तःपुर ।
भोगींद्र पुं०(सं)पतंजली का एक नाम ।
भोगी पुं०(सं) १-भोगने वाला । २-सांप । ३-राजा ४-जमींदार । ५-शेषनाग ।
भोग्य वि० (सं) १-भोगने में काम लाने योग्य । २-खाद्य (पदार्थ) । पुं० १-धन । २-धान्य । ३-भोगबंधक ।
भोग्या स्त्री० (सं) वेश्या ।
भोज पुं० (हि) १-बहुत से लोगों का एक साथ बैठ कर भोजन करना । दावत । ज्योनार । २-भोज्य पदार्थ । पुं० १-चन्द्रवंशियों का एक वंश । २-भोजपुर । ३-कान्यकुब्ज का एक राजा । ४-कृष्ण के एक सखा का नाम ।
भोजक पुं० (सं) भोजन करने वाला । वि० १-भोगी विलासी । २-भोजन करने वाला ।
भोजन पुं० (सं) १-खाने की वस्तु खाना । २-भोज्य पदार्थ ।
भोज-काल पुं०(सं) भोजन करने का समय ।
भोजनखानी स्त्री० (हि) पाकशाला । रसोईघर ।
भोजनगृह पुं० (हि) रसोईघर ।
भोजनत्याग पुं० (सं) भोजन छोड़कर उठ जाना ।

**भोजनभट्ट** पुं० (हिं) पेटू।
**भोजनभूमि** स्त्री० (सं) भोजन करने का स्थान।
**भोजनवस्त्र** पुं० (सं) खाना। कपड़ा।
**भोजनवेला** स्त्री० (सं) खाने का समय।
**भोजनव्यय** पुं० (सं) खाने पीने का व्यय।
**भोजनशाला** स्त्री० (सं) रसोईघर।
**भोजनार्थी** वि० (सं) भूखा।
**भोजनालय** पुं० (सं) १-रसोईघर। २-होटल। ३-भोजनशाला। (रेस्टोरां, होटल)।
**भोजनीय** वि० (सं) खाने के योग्य।
**भोजपति** पुं० (सं) १-भोज राजा। २-कंस।
**भोजपत्र** पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी छाल पर प्राचीन काल में ग्रंथ लिखे जाते थे।
**भोजयिता** वि० (हिं) भोजन करने वाला।
**भोजपुर** पुं०(सं) भोजपुर नामक एक जनपद।
**भोजपुरिया** पुं० (सं) भोजपुर का निवासी।
**भोजपुरी** वि० (सं) भोजपुर का। पुं० भोजपुर का निवासी।
**भोजराज** पुं० (सं) राजा भोज।
**भोजविद्या** स्त्री० (सं) बाजीगरी। इन्द्रजाल।
**भोजी** वि० (सं) भोजन करने वाला।
**भोज्य** पुं० (सं) खाद्य पदार्थ। वि० खाने योग्य।
**भोटिया** पुं० (हिं) भूटान का निवासी। स्त्री० भूटान की भाषा।
**भोडर** पुं० (हिं) अभ्रक। अबरक।
**भोडल** पुं० (हिं) अबरक।
**भोथरा** वि० (हिं) कुंठित। जिसकी धार कुन्द हो।
**भोना** क्रि० (हिं) १-घुलना। २-लीन होना। ३-आसक्त होना।
**भोपा** पुं० (हिं) १-मूर्ख। २-भोंपू।
**भोमि** स्त्री० (हिं) दे० 'भूमि'।
**भोर** पुं० (हिं) १-प्रातःकाल। तड़का। २-धोखा। वि० (देश) भोला। सीधा।
**भोराई** स्त्री० (हिं) भोलापन। सरलता।
**भोराना** क्रि० (हिं) १-भ्रम या धोखे में डालना। २-धोखे में आना।
**भोलना** क्रि० (हिं) भुलावा देना। बहकाना।
**भोला** वि०(हिं) १-सीधा-सादा। २-सरल। ३-मूर्ख।
**भोलानाथ** पुं० (हिं) शिव।
**भोलापन** पुं०(हिं) १-सादगी। सरलता। २-मूर्खता।
**भोलाभाला** वि० (हिं) निश्छल। सरल। सीधासादा।
**भोहरा** पुं० (हिं) खोह।
**भौं** स्त्री० (हिं) भौंह। भृकुटी।
**भौंकना** क्रि० (हिं) दे० 'भूंकना'।
**भौंचाल** पुं० (हिं) दे० 'भूकंप'।
**भौंड़ा** वि० (हिं) दे० 'भोंड़ा'।
**भौंतुआ** पुं०(हिं) १-खटमल के आकार का एक काला कीड़ा। २-बगल की गिल्टी। ३-तेली का बैल।
**भौंर** पुं० (हिं) १-भौंरा। भ्रमर। मुश्की घोड़ा।
**भौंरा** पुं०(हिं) एक काले रंग का ततैया से बड़ा पतंगा २-बड़ी मधुमक्खी। ३-काला या लाल ततैया। ४-गाड़ी के पहिये का मध्य भाग। लट्ठा। ५-रहट की खड़े बल की चरखी। ६-तहखाना। ७-खात। ८-लट्टू।
**भौंराना** क्रि० (हिं) १-घुमाना। चक्कर देना। २-विवाह के समय फेरे दिलाना। ३-घूमना। चक्कर काटना।
**भौंराला** वि० (हिं) घुँघराला।
**भौंरी** स्त्री० (हिं) १-पशुओं के शरीर पर चक्करदार बाल जो कि शुभ माने जाते हैं। २-विवाह के समय फेरे पड़ना। ३-आवर्त्त। ४-बाटी।
**भौंह** स्त्री० (हिं) आँख पर की हड्डी के बाल। भौं। भृकुटी।
**भौ** पुं० (हिं) १-संसार। जगत। २-डर। भय।
**भौगोलिक** वि० (सं) भूगोल का। भूगोल सम्बन्धी। (ज्योग्राफिकल)।
**भौगोलिक अपरीक्षण** पुं०(सं) भूगोल संबन्धी अपरीक्षण।(ज्योग्राफिकल सर्वे)।
**भौगोलिक कारक** पुं० (सं) भूगोल संबन्धी कारण। (ज्योग्राफिकल फैक्टर)।
**भौगोलिक स्थिति** स्त्री० (सं) भूगोल संबन्धी स्थिति। (ज्योग्राफिकल सिचुएशन)
**भौचक्का** वि० (हिं) हक्काबक्का। चकित।
**भौजंग** वि० (सं) सर्प या साँप सम्बन्धी।
**भौज** स्त्री० (हिं) भाभी। भावज।
**भौजाई** स्त्री० (हिं) भाई की पत्नी। भाभी।
**भौजी** स्त्री० (हिं) भाभी।
**भौतिक** वि०(सं) १-पंचभूत से सम्बन्ध रखने वाला। २-पार्थिव। (मेटीरियल)। ३-शरीर सम्बन्धी। (फिजीकल)।
**भौतिक प्रतिवेदन** पुं० (सं) किसी वस्तु या बात का विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन। (फिजिकल रिपोर्ट)।
**भौतिक पृथक्करण** पुं०(सं) किसी को किसी से जुदा कर देना। (फिजिकल सेपरेशन)।
**भौतिक भार** पुं० (सं) किसी वस्तु का भार। (फिजिकल व्हेट)।
**भौतिक भूगोल** पुं०(सं) भूगोल की वह शाखा जिसमें पृथ्वी के किसी अंश की बनावट आदि के सम्बन्ध में विवेचन होता है।(फिजिकल ज्योग्राफी,(फिजियोग्राफी)।
**भौतिकवाद** पुं० (सं) पदार्थवाद। (मेटीरियलिज्म)।
**भौतिकविज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी तत्वों जल, वायु आदि का विवेचन होता है। (फिजिकल साइंस)।

भौतिकविद्या स्त्री० (सं) १-भूत प्रेतों को जगाने की विद्या। जादूगरी। २-भौतिक विज्ञान।
भौतिकी स्त्री० (सं) वह विज्ञान की शाखा जिसमें पृथ्वी के पदार्थों के भौतिक रूप गुणों आदि का विवेचन होता है। (फिजिक्स)।
भौतिकीयता स्त्री० (सं) किसी पदार्थ आदि में शरीर आदि होने के गुण। (फिजिकेलिटी)।
भौतिकीविद पुं० (सं) भौतिकी सम्बन्धी ज्ञान रखने वाला। (फिजिसिस्ट)।
भौन पुं० (हि) दे० 'भवन'।
भौना क्रि० (हि) घूमना। चक्कर लगाना।
भौम वि०(सं) १-भूमि सम्बन्धी। भूमि का। २-भूमि से उत्पन्न। पुं० १-मंगलग्रह। पुच्छलतारा।
भौमप्रदोष पुं० (सं) मंगलवार को पड़ने वाला दोष।
भौमरत्न पुं० (सं) मूंगा।
भौमवार पुं० (सं) मंगलवार।
भौमासुर पुं० (सं) नरकासुर नामक राक्षस।
भौमिक वि० (सं) भूमि सम्बन्धी। पुं० जमींदार। (लैंड लार्ड)।
भौमिक अधिकार पुं० (सं) भूमि को जोतने बोने का अधिकार जो भूमि के मालिक को होता है। (लैंड टेन्योर)।
भौमिकी स्त्री० (सं) १-भूतत्त्व विद्या। (ज्योलाजी)
भौमी स्त्री० (सं) सीता।
भौम्य वि०(सं) भूमि-सम्बन्धी।
भौर पुं० (हि) १-दे० 'भौंरा'। २-घोड़ों का एक भेद
भ्यौ पुं०(स) पतंगा।
भ्रंश पुं०(सं) १-अधःपतन। २-नीचे गिरना। ३-नाश
भ्रंशन पुं० (सं) १-पतन। २-नाश। ३-कष्ट होना। वि० अधःपतन करने वाला।
भ्रंशित वि० (सं) नीचे गिरा हुआ।
भ्रंशी वि० (सं) १-नीचे गिरने वाला। २-नाश होने वाला। ३-छीजने वाला।
भ्रंशोद्धार पुं० (सं) डूबे हुए जहाज या अन्य वस्तु को पानी या समुद्र में से निकालना। (साल्वेज)
भ्रकुटि स्त्री० (सं) भौंह। भृकुटि।
भ्रमंत पुं० (सं) छोटा घर या मकान।
भ्रम पुं० (सं) १-किसी वस्तु को कुछ और समझना मिथ्या कथन। २-संशय। संदेह। ३-मूर्च्छा। ४-नल। पनाला। ५-कुम्हार का चाक। ६-भ्रमण। वि० १-घूमने वाला। चक्कर काटने वाला। २-भ्रमण करने वाला। (हि) मान। प्रतिष्ठा।
भ्रमकारी वि० (सं) भ्रम या संशय उत्पन्न करने वाला
भ्रमण पुं०(सं) १-घूमना। फिरना। २-आना जाना ३-यात्रा। सफर। ४-चक्कर। फेरी।
भ्रमणकारी वि० (सं) घूमने वाला। घुमक्कड़।
भ्रमणवृत्तांत पुं० (सं) यात्रा का वर्णन।
भ्रमन पुं० (हि) दे० 'भ्रमण'।
भ्रमना क्रि०(हि) १-घूमना। फिरना। २-धोखा खाना ३-भूल करना।
भ्रमनि स्त्री० (हि) दे० 'भ्रमण'।
भ्रमर पुं० (सं) १-भौंरा। २- दोहे का एक भेद। ३-एक छन्द का भेद।
भ्रमरकीट पुं० (सं) एक तरह का ततैया।
भ्रमरगीत पुं० (सं) एक गीत संग्रह जिसमें उद्धव को गोपियों ने भ्रमर को संबोधित करके उलाहना दिया था।
भ्रमरनिकर पुं० (सं) मधुमक्खियों के झुंड।
भ्रमरावली स्त्री० (सं) भौंरों की पंक्ति।
भ्रमरी स्त्री० (सं) १-मिरगी का रोग। २-भ्रमर की मादा। ३-पार्वती।
भ्रमात्मक वि० (सं) १-सन्दिग्ध। जिसके सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न हो। २-भ्रममूलक।
भ्रमाना क्रि०(हि) १-घुमाना। २-बहकाना। ३-भ्रम में डालना।
भ्रमासक्त पुं०(सं) अस्त्र-शस्त्र आदि साफ करने वाला
भ्रमि स्त्री० (सं) १-चक्कर। २-सेना का चक्रव्यूह। ३-कुम्हार का चाक। ४-प्रमाद। ५-भँवर।
भ्रमित वि० (सं) १-जिसे भ्रम हुआ हो। शंकित। २-घूमता या चक्कर खाता हुआ।
भ्रमितनेत्र वि० (सं) भेंडी आंख वाला। ऐंचाताना।
भ्रमी वि० (सं) १-जिसको भ्रम हो। शंकित। २-चकित।
भ्रमीन वि० (हि) भ्रमण करने वाला।
भ्रष्ट वि० (सं) १-अपने स्थान से गिरा हुआ। पतित २-दूषित। ३-बदचलन। दुराचारी।
भ्रष्टनिद्र वि० (सं) जिसको नींद न आती हो।
भ्रष्टमार्ग वि० (सं) कुमार्ग पर चलने वाला।
भ्रष्टश्री वि० (सं) भाग्यहीन।
भ्रष्टाचार वि० (सं) जिसका आचार बिगड़ गया हो पुं० १-बेईमानी। दुराचार। २-घूसखोरी। (ब्राइबरी)।
भ्रष्टाचरण वि० (सं) १-बदचलन। २-दुराचारी।
भ्रांत पुं० (सं) १-धोखे में आया हुआ। २-जिसे भ्रम हुआ हो। ३-घबराया हुआ। ४-उन्मत्त। ५-घुमाया हुआ।
भ्रांतकथन पुं० (सं) १-असत्य कथन। २-भ्रम में डालने वाला कथन। (मिसरिप्रिजेन्टेशन)।
भ्रांतापह्नुति स्त्री० (सं) एक अलंकार जिसमें भ्रम दूर करने के लिए सच्ची बात का वर्णन होता है।
भ्रांति स्त्री० (सं) १-धोखा। भ्रम। २-संदेह। शक। ३-भ्रमण। ४-भूल। ५-पागलपन। ६-एक काव्यालंकार। ७-अयथार्थ ज्ञान। (फेलेसी)।
भ्रांतिकर वि० (सं) भ्रम में डालने वाला।

भ्रांतिकारी वि० (सं) जो धोखे में डालने वाला हो। जो सच न हो। (फेलेशियस)।
भ्रांतिकारीपरिणाम पुं०(सं) वह परिणाम जो अयथार्थ ज्ञान पर आधारित हो। (फेलेशियस कन्क्लूजन)।
भ्रांतिमान् वि०(सं) १-संशय युक्त। २-चक्कर खाता हुआ।
भ्राजक वि० (सं) चमकाने वाला।
भ्राजन पुं० (सं) चमकदमक।
भ्राजना क्रि० (हि) शोभा पाना। शोभित होना।
भ्राजमान वि० (हि) शोभायमान।
भ्राजि स्त्री० (सं) चमकदमक।
भ्रात पुं० (हि) दे० 'भ्राता'।
भ्राता पुं० (सं) सहोदर। सगा भाई।
भ्रातृक पुं० (सं) वह धन जो भाई से मिला हो।
भ्रातृज पुं० (सं) भतीजा। भाई का लड़का।
भ्रातृजा स्त्री० (सं) भतीजी।
भ्रातृजाया स्त्री० (सं) भाभी। भाई की स्त्री।
भ्रातृद्वितिया स्त्री० (सं) भैयादूज। कार्तिक सुदी दूज
भ्रातृपुत्र पुं० (सं) भतीजा। भाई का लड़का।
भ्रातृभाव पुं० (सं) १-भाई जैसा प्रेम तथा सम्बन्ध। २-भाईचारा (फ्रटरनिटी)
भ्रातृवधू स्त्री० (सं) भाई की स्त्री। भाभी।
भ्रातृहन्ता पुं० (सं) भाई का वध करने वाला। भ्रातृहत्या। (फ्रेट्री साइड)।
भ्रातृसमाज पुं० (सं) भाईचारा बढ़ाने और एक दूसरे को लाभ पहुँचाने के निमित्त बनाया गया एक समाज। (फ्रैटरनल सोसाइटी)।
भ्रातुष्पुत्र पुं० (सं) भतीजा।
भ्रातुष्पुत्री स्त्री० (सं) भतीजी।
भ्रात्रीय वि० (सं) भ्राता सम्बन्धी। (फ्रेटरनल)। पुं० (सं) भतीजा।
भ्रात्रीय भागोप पुं०(सं) भ्रात्रीय बीमा। (फ्रेटरनल-इन्श्योरेंस)
भ्रात्रेय वि० (सं) भाई सम्बन्धी। पु० (सं) भतीजा।
भ्राम वि० (सं) १-भ्रमयुक्त। २-घूमने वाला। पुं० (सं) दे० 'भ्रम'।
भ्रामक वि०(सं) १-भ्रम उत्पन्न करने वाला। २-संदेह उत्पन्न करने वाला। ३-घुमाने वाला। ४-धूर्त।
भ्रामर पुं० (सं) १-शहद। मधु। २-रास। ३-दोहे का एक भेद। ४-चुम्बक पत्थर। वि० (सं) भ्रमर-संबंधी।
भ्राष्ट्र पुं० (सं) १-वह पात्र जिस में भड़भूजा अन्न डालकर भूनता है। २-आकाश।
भ्रास्त्रिक पुं० (सं) शरीर की एक नाड़ी।
भ्रुकुंस पुं० (सं) स्त्री का वेश बना कर नाचने वाला मनुष्य।
भ्रुकुटि स्त्री० (सं) भौं। आंख की हड्डी के ऊपर के बाल
भ्रुकुटी स्त्री० (सं) दे० 'भ्रुकुटि'।
भ्रू स्त्री० (सं) भौंह।
भ्रूकुटी स्त्री० (सं) दे० 'भ्रुकुटि'।
भ्रूकुटीमुख पुं०(हि) एक प्रकार का सर्प।
भ्रूक्षेप पुं० (सं) भौं टेढ़ी करना। संकेत जताने के लिए भौं को तिरछा करना।
भ्रूण पुं० (सं) स्त्री का गर्भ। २-बालक की वह अवस्था जो गर्भ में होती है। (एम्ब्रायो)।
भ्रूणघ्न पुं० (सं) भ्रूण हत्या करने वाला।
भ्रूणहत्या स्त्री०(सं) १-गर्भ गिरा कर बच्चे को मार देना। २-गर्भ के बालक की हत्या।
भ्रूणहा पुं० (सं) भ्रूण हत्या करने वाला।
भ्रूभंग पुं० (सं) त्योरी चढ़ाना (क्रोध में)।
भ्रूभेद पुं० (सं) दे० 'भ्रूभंग'।
भ्रूमध्य पुं० (सं) दोनों भवों के मध्य का स्थान।
भ्रूलता पुं० (सं) वह भौं जो मेहरावदार हों।
भ्रूविकार स्त्री० (सं) त्योरी बदलना।
भ्रूविक्रिया स्त्री० (सं) दे० 'भ्रूभंग'।
भ्रूविक्षेप पुं० (सं) त्योरी बदलना। अप्रसन्नता प्रकट करना।
भ्रूविचेष्टित पुं० (सं) त्योरी चढ़ाना।
भ्रूविलास पुं० (सं) त्योरी चढ़ाना।
भ्रेष पुं० (सं) १-चलना। २-भय। ३-नाश।
भ्वहरना क्रि० (हि) भयभीत होना।
भ्वासर वि० (देश) मूर्ख।

[शब्दसंख्या--३६३७१]

# म

**म** देवनागरी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण ओष्ठ-नासिका द्वारा होता है
मंकुर पुं० (सं) दर्पण। आइना।
मंख पुं० (सं) १-राजा का बंदीजन। २-मरहम।
मंखी स्त्री० (देश) एक गहना जो बच्चों के गले में पहनाया जाता है।
मंग पुं० (सं) १-नाव का अग्रभाग। २-जहाज का एक बाजू।
मंगता पुं० (हि) १-भिखमंगा। २-भिक्षुक।
मंगन पुं० (हि) भिखमंगा।
मंगनी स्त्री० (हि) १-मांगने की क्रिया या भाव। २-मांगने पर कोई वस्तु कुछ समय के लिए देना। ३-वह रस्म जिसमें लड़के और कन्या का सम्बन्ध पक्का

होता है ।

**मंगल** पुं० (सं) १-कल्याण । २-मनोकामना पूर्ण होना । ३-सौरजगत का एक ग्रह । ४-मंगलवार । ५-विष्णु ।

**मंगलकलश** पुं० (सं) मंगल अवसरों पर पानी भर कर पूजा के लिए रखा जाने वाला घड़ा या पात्र ।

**मंगलकाम** वि० (सं) शुभचिंतक ।

**मंगलकामना** स्त्री० (सं) शुभ या कल्याण की कामना ।

**मंगलकारक** वि० (सं) शुभ ।

**मंगलकारी** वि० (सं) कल्याणकारी ।

**मंगलकार्य** पुं०(सं) शुभ कार्य । विवाह, जन्म आदि का शुभ उत्सव ।

**मंगलकाल** पुं० (सं) शुभ समय ।

**मंगलगान** पुं० (सं) मंगलकार्य के अवसर पर गाया जाने वाला गाना-बजाना ।

**मंगलगीत** पुं०(सं) शुभ उत्सवों पर गाया जाने वाला गीत ।

**मंगलग्रह** पुं० (सं) १-सौर जगत का पृथ्वी से छोटा और चन्द्रमा से बड़ा एक ग्रह । २-शुभग्रह ।

**मंगलघट** पुं० (सं) दे० 'मंगलकलश' ।

**मंगलदायक** वि० (सं) कल्याणकारी ।

**मंगलपाठक** पुं०(सं) भाट । बन्दीजन ।

**मंगलप्रद** वि० (सं) शुभ । जिससे मंगल होता है ।

**मंगलप्रिय** वि० (सं) कल्याणकारी ।

**मंगलबाजा** पुं० (सं) शुभ अवसरों पर बजाने वाला बाजा ।

**मंगलवार** पुं०(सं) सोमवार के बाद पड़ने वाला दिन

**मंगलसूत्र** पुं०(सं) वह डोरा जो देवता के प्रसाद रूप में कलाई पर बाँधा जाता है ।

**मंगलस्नान** पुं० (सं) किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान ।

**मंगला** स्त्री० (सं) १-पतिव्रता स्त्री । २-पार्वती । ३-सफेद दूब । ४-हल्दी ।

**मंगलाचरण** पुं० (सं) किसी शुभ कार्य के आरम्भ में पढ़े जाने वाले मंगलसूचक पद्य । (हि० दू०) ।

**मंगलाचार** पुं० (सं) आशीर्वादोच्चारण ।

**मंगलाष्टक** पुं० (सं) विवाह अवसर पर वर-वधू के कल्याण के लिए पढ़े जाने वाले श्लोक ।

**मंगलामुखी** स्त्री० (सं) वेश्या ।

**मंगली** वि०(सं) जिसकी जन्मकुण्डली के चौथे, आठवें और बारहवें स्थान पर मंगल हो (अशुभ) ।

**मंगलेच्छु** वि० (सं) शुभ या भला चाहने वाला ।

**मंगलोत्सव** पुं० (सं) १-मंगलवार को होने वाला उत्सव । २-शुभ उत्सव ।

**मंगल्य** स्त्री० (सं) १-चंदन । २-सोना । सुवर्ण । ३-अनेक तीर्थों से लाया हुआ जल । वि० १-शुभ । २-साधु ।

**मंगवाना** क्रि० (हि) दूसरे को कोई वस्तु आदि मांगने में प्रवृत्त करना ।

**मंगाना** क्रि० (हि) १-मंगवाना । २-मंगनी कराना । ३-विवाह की बातचीत पक्की कराना ।

**मंगेतर** वि० (सं) जिसके साथ किसी की मंगनी हुई हो ।

**मंगोल** पुं० (सं) मध्य एशिया में रहने वाली एक जाति ।

**मंच** पुं० (सं) १-खाट । २-खाट के समान बनी हुई बैठने की पटड़ी । ३-ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाय ।

**मंचमंडप** पुं० (सं) १-फसल की रखवाली के लिये ऊँचा बना हुआ मचान । २-विवाह आदि के अवसर पर बनाया गया कोई मचान ।

**मंचिका** स्त्री० (सं) १-कुर्सी । २-कठौता ।

**मंछुर** पुं० (सं) मच्छर ।

**मंजन** पुं०(हि)१-दांत साफ करने का चूर्ण या बुकनी २-स्नान ।

**मंजना** क्रि० (हि) १-मांजा जाना । २-अभ्यास होना

**मंजर** पुं० (अ) १-दृश्य । नजारा । २-झरोखा । ३-देखने योग्य वस्तु ।

**मंजरित** वि० (सं) १-फूलों से सम्पन्न । २-कलियों से युक्त ।

**मंजरी** स्त्री० (सं) १-छोटे पौधे, लता आदि का नया निकला हुआ कल्ला । कोंपल । २-मोती । ३-तुलसी ४-गुच्छा । ५-लता । बेल ।

**मंजरीक** पुं० (सं) १-तुलसी । २-मोती । ३-बेंत (लता) । ४-अशोक वृक्ष ।

**मंजरीचामर** पुं० (सं) मंजरी के आकार का चँवर ।

**मंजाई** स्त्री० (हि) मांजने की क्रिया या मजदूरी ।

**मंजारी** स्त्री० (हि) बिल्ली ।

**मंजिका** स्त्री० (सं) वेश्या ।

**मंजिमा** स्त्री० (सं) सुन्दर ।

**मंजिल** स्त्री० (अ) १-यात्रा के समय ठहरने का स्थान २-मकान का खण्ड ।

**मंजिलगाह** स्त्री० (अ) ठहरने का स्थान ।

**मंजिलहस्ती** स्त्री० (अ) जिन्दगी ।

**मंजिले मकसूद** स्त्री० (अ) असली कामना । अभीष्ट

**मंजिष्ठा** स्त्री० (सं) मजीठ ।

**मंजिष्ठामेह** पुं० (सं) एक प्रकार का प्रमेह ।

**मंजिष्ठाराग** पुं० (सं) १-मजीठे के रंग जैसा पक्का २-स्थायी मनुष्य ।

**मंजीर** पुं० (सं) १-नूपुर । घुँघरू । २-ताल ।

**मंजीरा** पुं० (सं) दे० 'मजीरा' ।

**मंजु** वि० (सं) सुन्दर । मनोहर । मनमोहन ।

**मंजुकेशी** पुं०(सं) श्रीकृष्ण । वि० सुन्दर बाल वाला ।

मंजुगति वि० (सं) मनोहर चाल वाली।
मंजुगमना वि०(सं) मनोहर चाल वाली। स्त्री० हंसिनी
मंजुघोषा स्त्री० (सं) एक अप्सरा का नाम। वि० मधुर स्वर वाला।
मंजुभाषिणी स्त्री० (सं) मधुर स्वर वाली स्त्री।
मंजुभाषी वि० (सं) मधुरभाषी।
मंजुल वि०(सं) मनोहर। सुन्दर। खूबसूरत। पुं० १-कुंज। जलाशय या नदी का किनारा।
मंजूर वि० (अ) स्वीकृत।
मंजूरी स्त्री० (अ) स्वीकृति।
मंजूषा पुं० (सं) १-छोटा डिब्बा या पिटारी। २-पिंजरा। ३-अभिनन्दन पत्र, पान आदि भेंट करने की तश्तरी। (कास्केट) या डिब्बा।
मँझला वि० (हि) दे० 'मझला'।
मंझा पुं० (हि)१-खाट। पलंग। २-मांझा। ३-चरखे का चक्र। वि०(देश) बीच का।
मँझियाना क्रि० (हि) १-नाव खेना। २-चीर कर पार करना।
मँझोला वि० (हि) दे० 'मझोला'।
मंठ पुं० (सं) बालूशाही जैसा एक मैदे का प्राचीन पकवान।
मंड पुं० (सं) १-मांड। २-भूषा। सजावट। ३-मेंढक
मंडन पुं० (सं) १-सजाना। २-प्रमाण द्वारा सिद्ध करना। ३-भरना।
मंडनप्रेमी वि० (सं) अलङ्कार प्रिय।
मंडना क्रि० (हि) १-सजाना। २-युक्ति द्वारा सिद्ध करना। ३-दलित करना।
मंडप पुं० १-किसी उत्सवादि के लिए फूल पत्तों और कपड़ों से छाकर सजाया हुआ मंच। २-शामियाना ३-देव मंदिर के ऊपर का गोलाकार हिस्सा।
मंडपिका स्त्री० (सं) छोटा मंडप।
मंडपी स्त्री० (हि) छोटा मंडप।
मंडर पुं० (हि) दे० 'मंडप'।
मंडरना क्रि० (हि) चारों ओर से छा जाना।
मंडराना क्रि० (हि) १-चक्कर देते हुए उड़ना। २-किसी के चारों ओर घूमना।
मंडल पुं०(सं) १-परिधि। घेरा। २-गोलाई। विस्तार ३-परिवेश। ४-किसी विशेष कार्य,व्यवसाय, प्रदर्शन आदि के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संगठित दल। (कम्पनी)। ५-मामलों के निर्णय करने वाला अधिकरण। (बोर्ड)। ६-क्षितिज। ७-प्रदेश।
मंडलनृत्य पुं० (सं) गोलाई में घूमते हुए नाचना।
मंडलाकार वि० (सं) गोला। मंडप के आकार का।
मंडलाग्र पुं० (सं) खंजर।
मंडलाधिप पुं० (सं) दे० 'मंडलेश्वर'।
मंडलाधीश पुं० (सं) दे० 'मंडलेश्वर'।
मंडलायुक्त पुं०(सं) किसी प्रदेश का उपयुक्त। (डिप्टी कमिश्नर)।
मंडली स्त्री० (हि) १-समूह। २-छोटा मण्डल। दूब।
मंडलीक पुं० (हि) मण्डल अथवा बारह राजाओं का अधिपति।
मंडलेश्वर पुं० (सं) एक मण्डल का अधिपति।
मंडवा पुं०(हि) शामियाना। मण्डप।
मँड़ार पुं० (हि) १-गड्ढा। २-झाबा। डलिया।
मंडित वि० (सं) १-सजाया हुआ। २-छाया हुआ। पूरित।
मंडी स्त्री०(हि) १-थोक बिक्री का स्थान। बड़ा बाजार
मंडुआ पुं० (देश) एक प्रकार का मोटा अनाज। मकड़ा।
मंडूक पुं०(सं) १-मेंढक। २-एक ताल। ३-घोड़े की एक जाति।
मंडूर पुं० (सं) लोहे का मैल। सिंघान।
मंढ़ा पुं० (हि) कमखाब का काम करने का लकड़ी का एक औजार।
मंत पुं० (हि) १-सलाह। २-मन्त्र। ३-योग।
मंतव्य वि० (सं) मानने योग्य। पुं० मत। विचार।
मंत्र पुं०(सं) १-वेद वाक्य। २-गुप्त सलाह। ३-इष्ट-सिद्ध के लिए किया जाने वाला जप। ४-वेदों का ब्राह्मण-भाग से भिन्न भाग।
मंत्रकार पुं० (सं) मन्त्र रचने वाला। ऋषि।
मंत्रकुशल वि० (सं) परामर्श देने में कुशल।
मंत्रगृह पुं०(सं) सलाह या मन्त्रणा लेने का कमरा।
मंत्रजल पुं० (सं) मंत्र से प्रवाहित किया गया जल।
मंत्रज्ञ पुं० (सं) मन्त्रणा देने में कुशल व्यक्ति।
मंत्रणा पुं० (सं) परामर्श। सलाह। (एडवाइस)।
मंत्रणाकार पुं० (सं) परामर्श देने वाला। (एडवाइजर)।
मंत्रणा-परिषद् स्त्री०(सं) वह परिषद् जो किसी विशेष विषय पर मंत्रणा देने के लिए बनाई गई हो। (एडवाइजरी काउंसिल)।
मंत्रद पुं० (सं) मन्त्रों की शिक्षा देने वाला गुरु।
मंत्रदर्शी वि० (सं) वेदज्ञ।
मंत्रदेवता पुं० (सं) मंत्रों द्वारा बुलाया जाने वाला देवता।
मंत्रद्रष्टा पुं० (सं) वेद मंत्रों को समझने वाला।
मंत्रपाठ पुं० (सं) वेदमंत्रों का पाठ।
मंत्रपूत वि० (सं) मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ।
मंत्रप्रयोग पुं० (सं) मंत्रों का प्रयोग करना।
मंत्रप्रयुक्ति पुं० (सं) दे० 'मंत्रप्रयोग'।
मंत्रबल पुं० (सं) मंत्रों की शक्ति।
मंत्रबीज पुं० (सं) मूलमंत्र।
मंत्रभेद पुं०(सं) गुप्त मंत्रणा या सलाह को प्रकट कर देना।
मंत्रमुग्ध वि० (सं) वश किया हुआ। जकड़ा।

**मंत्रवादी** पुं० (सं) १-मंत्रज्ञ। २-जादूगर।
**मंत्रविद्** वि० (स) मंत्रज्ञ।
**मंत्रविद्या** स्त्री० (स) तंत्रविद्या। मंत्रशास्त्र।
**मंत्रशक्ति** स्त्री० (सं) १-युद्ध में चतुराई या चालाकी। २-मंत्र का प्रभाव।
**मंत्रसंहिता** स्त्री० (स) वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।
**मंत्रसाधन** पुं० (सं) अभिलषित विषय की सिद्धि।
**मंत्रसिद्धि** स्त्री० (स) १-मंत्र का सिद्ध होना। २-मंत्रों की सफलता।
**मंत्रहीन** वि० (सं) अदीक्षित।
**मंत्रालय** पुं० (हि) किसी राज्य के मन्त्री तथा उसके विभाग का कार्यालय। २-मन्त्री, अधिकारी वर्ग, सचिव और अन्य कर्मचारी। (मिनिस्टरी)।
**मंत्रालयिक-सेवक** पुं० (स) किसी मन्त्रालय का सेवक (मिनिस्टीरियल सर्वेन्ट)।
**मंत्रालयिक सेवा** स्त्री०(सं) किसी मन्त्रालय की सेवा (मिनिस्टीरियल सर्विस)।
**मंत्रिणी** स्त्री० (सं) सलाह देने वाली।
**मंत्रित** वि० (सं) १-अभिमन्त्रित। २-परामर्श किया हुआ।
**मंत्रित्व** पुं०(सं) मन्त्री का काम या पद। (मिनिस्टरशिप)।
**मंत्रिपक्ष** पुं०(सं) मन्त्रियों का दल। (मिनिस्टीरियल, पार्टी, मिनिस्टीरियल बेंचस)।
**मंत्रिपरिषद्** पुं० (स) मन्त्रियों की सभा या परिषद्। (केबिनेट, काउंसिल आफ मिनिस्टर्स)।
**मंत्रिपोषक** पुं० (सं) मन्त्रिपक्ष का पक्ष लेने वाला। (मिनिस्टीरियलिस्ट)।
**मंत्रिमंडल** पुं० (सं) मन्त्रियों की सभा। (केबिनेट,-मिनिस्ट्री)।
**मंत्रिमंडलीय सकट** स्त्री०(सं) किसी देश अथवा राज्य के मन्त्रियों में विचारों के मत भेद होने के कारण उत्पन्न संकट। (केबिनेट क्राइसिस)।
**मंत्री** पुं० (सं) १-परामर्श देने वाला। २-वह व्यक्ति विशेष जिसके परामर्श से किसी विभाग के सब कार्य होते है (मिनिस्टर)। ३-किसी मन्त्रालय या राजकीय विभाग का वह अधिकारी जो नियमित रूप से अपने सब कार्य चलाता हो। सचिव (सेक्रेटरी)
**मंत्रेला** पुं० (हि) तन्त्र मन्त्र या झाड़ फूँक जानने वाला।
**मंथ** पुं० (सं) १-मथना। २-हिलाना। ३-कम्पन। ४-मथानी। ५-सूर्य किरण।
**मंथन** पुं० (सं) १-मथना। बिलोना। २-मथानी। ३-गहरी छानबीन। अवगाहन।
**मंथनघट** पुं० (सं) दही बिलोने का बड़ा मटका।
**मंथर** वि० (सं) १-धीमा गति वाला। मन्द। २-गंभीर।
**मंथरगति** वि० (सं) धीमी चाल वाला। स्त्री० (सं) मन्द गति।
**मंथरा** स्त्री० (सं) कैकेई की दासी जो कुबड़ी थी। (रामा०)।
**मंद** वि० (स) १-धीमा। सुस्त। आलसी। २-मूर्ख। ३-शिथिल। ४-दुष्ट।
**मंदकर्म** वि० (सं) कार्यहीन।
**मंदकांति** पुं (सं) चन्द्रमा।
**मंदग** वि० (सं) धीरे चलने वाला। पुं० शनि।
**मंदगति** वि० (सं) धीमी चाल चलने वाला।
**मंदचेता** वि० (सं) कम बुद्धि वाला। मन्दबुद्धि।
**मंदता** स्त्री० (सं) १-आलस्य। २-धीमापन। ३-क्षीणता।
**मंदबुद्धि** वि० (सं) कम अक्ल। मूर्ख।
**मंदभागी** वि० (स) अभागा। हतभाग्य।
**मंदभाग्य** वि० (सं) दुर्भाग्य। अभाग्य।
**मंदमति** वि० (स) मन्द बुद्धि।
**मंदर** पुं० (सं) १-वह पर्वत जो समुद्र मथते समय देवताओं ने मथानी बनाया था। २-स्वर्ग। ३-दर्पण।
**मंदला** पुं० (सं) एक प्रकार का बाजा।
**मंदसमीर** पुं० (स) हलका वायु का झोंका।
**मंदस्मित** पुं० (सं) हलकी हँसी।
**मंदा** वि०(हि) १-धीमा। मन्द। २-ढीला। ३-सस्ता कम मूल्य का। ४-जिसका भाव घट गया हो। ५-घटिया।
**मंदाकिनी** स्त्री० (सं) १-आकाश गंगा। २-गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। ३-एक नदी का नाम। ४-एक वर्णवृत्त।
**मंदाक्रांता** स्त्री० (सं) सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
**मंदाग्नि** पुं०(सं) अन्न न पचने का रोग। बदहजमी अपच।
**मंदात्मा** वि० (सं) १-नीच। अधम। २-मूर्ख।
**मंदानिल** पुं० (सं) सुखद हलकी वायु।
**मंदार** पुं० (सं) १-स्वर्ग का एक वृक्ष। २-आक का पेड़। ३-हाथी। ४-मन्दर नाम का पर्वत। ५-स्वर्ग
**मंदारमाला** स्त्री० (सं) मन्दार के फूलों का हार।
**मंदिर** पुं० (सं) १-वास स्थान। घर। २-देवालय। ३-शिविर।
**मंदिल** पुं० (हि) मन्दिर। घर।
**मंदी** स्त्री० (हि) १-भाव कम होना। २-सस्ती। ३-तेजी का उलटा।
**मंदोदरी** वि० (सं) सूक्ष्म पेट वाली। स्त्री० रावण की स्त्री का नाम।
**मंदोष्ण** वि० (सं) गुनगुना। कम गरम।
**मंद्र** पुं० (सं) १-गंभीर। ध्वनि। २-मृदंग। ३-

हाथियों की एक जाति।
**मंद्राज** पुं० (हि) मद्रास।
**मंशा** स्त्री० (अ) कामना। इच्छा। इरादा।
**मंसूख** वि० (हि) दे० 'मनसूख'।
**मँहगा** वि० (हि) दे० 'महँगा'।
**म** पुं० (सं) १-शिव। २-चन्द्रमा। ३-यम। ४-विष ५-ब्रह्मा।
**मइका** पुं० (हि) दे० 'मायका'।
**मइमंत** वि० (हि) दे० 'मैमंत'।
**मई** स्त्री० (हि) १-एक जाति। २-ऊँटनी। पुं० (अं-मे) अंग्रेजी वर्ष का पांचवाँ महीना
**मउर** पुं० (हि) दे० 'मौर'।
**मउरछोराई** स्त्री०(हि) १-विवाह के बाद मौर खोलने की रस्म। २-इस रस्म पर मिलने वाला धन।
**मउलसिरी** स्त्री० (हि) दे० 'मौलसिरी'।
**मउसी** स्त्री० (हि) माता की बहन।
**मकई** स्त्री० (हि) एक अन्न का नाम। ज्वार।
**मकड़ा** पुं० (हि) बड़ी मकड़ी।
**मकड़ाना** क्रि० (हि) १-इतराना। २-अकड़ना।
**मकड़ी** स्त्री०(हि) एक कीड़ा जो अपने तंतुओं से जाला बुनकर उसमें मक्खियां आदि फँसाता है।
**मकतब** पुं० (अ) पाठशाला। मदरसा।
**मकदूर** पुं० (अ) सामर्थ्य। शक्ति।
**मकना** क्रि० (हि) दे० 'मुकना'।
**मकनातीस** पुं० (अ) चुम्बक पत्थर।
**मकफूल** वि० (अ) रेहन रखा हुआ।
**मकबरा** पुं० (अ) वह इमारत जिसमें किसी राजा की कब्र हो।
**मकबूजा** वि० (अ) अधिकृत।
**मकबूलियत** स्त्री० (अ) लोकप्रियता।
**मकबूलेखुदा** पुं० (अ) खुदा का प्यारा।
**मकरंद** पुं०(सं) १-फूलों का रस। २-फूलों का केसर ३-एक ताल। ४-मधु। ५-एक वर्णवृत्त।
**मकर** पुं० (सं) १-मगर या घड़ियाल। २-मछली। ३-बारह राशियों में से एक। ४-कुबेर के नौ निधियों में से एक। ५-एक पर्वत का नाम।
**मकरकुंडल** पुं० (सं) मकर या मछली के आकार का कुंडल।
**मकरकेतु** पुं० (सं) कामदेव।
**मकरक्रांति** स्त्री० (सं) अक्षरेखा।
**मकरतार** पुं० (हि) बादले का तार।
**मकरध्वज** पुं० (सं) १-कामदेव। २-एक प्रसिद्ध आयुर्वेद का रस। ३-लौंग। ४-अहिरावण का एक द्वारपाल।
**मकरलांछन** पुं० (सं) कामदेव।
**मकरवाहन** पुं० (सं) वरुण।
**मकरव्यूह** पुं० (सं) मकर के आकार का एक सैनिक व्यूह।
**मकरसंक्रांति** स्त्री०(सं) १-वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। २-माघ मास की संक्रांति
**मकराकृत** वि० (सं) मकर या मछली के आकार का।
**मकरालय** पुं० (सं) समुद्र।
**मकराश्व** पुं० (सं) वरुण।
**मकरी** स्त्री० (सं) १-मकर की मादा। २-चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जो जूए से बंधी रहती है।
**मकसद** पुं० (अ) १-मनोरथ। २-मनोकामना। ३-अभिप्राय।
**मकसूद** वि०(अ) अभिप्रेत। उद्दिष्ट। पुं०१-अभिप्राय २-मनोरथ।
**मकान** पुं० (अ) १-घर। गृह। २-निवास स्थान।
**मकानदार** वि० (अ) मकान वाला।
**मकाम** पुं० (अ) दे० 'मुकाम'।
**मकु** अव्य० (हि) १-चाहे। २-बल्कि। वरन्। ३-कदाचित। शायद।
**मकुट** पुं० (हि) दे० 'मुकुट'।
**मकुना** पुं० (हि) १-बिना दांत वाला या छोटे-छोटे दांत वाला। २-बिना मूछों वाला आदमी।
**मकुनी** स्त्री० (देश) १-बेसनी रोटी। २-एक प्रकार की बाटी जिसमें मैथी और मसाला भरा होता है।
**मकूनी** स्त्री० (हि) दे० 'मकुनी'।
**मकूला** पुं०(अ) १-कहावत। २-वचन। कथन।
**मकोई** स्त्री० (देश) दे० 'मकोय'।
**मकोड़ा** पुं० (हि) छोटा कीड़ा।
**मकोय** स्त्री० (हि) १-एक छोटा पौधा जिसके पत्ते और फल दवा के काम आते हैं। २-रसभरी।
**मकोरना** क्रि० (हि) दे० 'मकोड़ना'।
**मक्का** पुं०(हि) मकई ज्वार (अ) मुसलमानों का तीर्थ स्थान जो अरब में है।
**मक्कार** वि० (अ) छली। कपटी। धूर्त।
**मक्कारी** स्त्री० (अ) छल। कपट। धूर्तता।
**मक्खन** पुं० (हि) दही को मथ कर निकला हुआ सार-भाग। नवनीत।
**मक्खी** स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध उड़ने वाला कीड़ा जो प्रायः सर्वत्र पाया जाता है। २-बन्दूक आदि का वह उभरा हुआ अंश जिससे निशाना साधा जाता है।
**मक्खीचूस** पुं० (हि) भारी कंजूस। परम कृपण।
**मक्खीमार** वि० (हि) १-मक्खी मारने वाला। २-निकम्मा। घृणित।
**मक्र** पुं०(अ) १-छल। कपट। २-बनावट। ३-धोखा
**मक्रचांदनी** स्त्री० (अ) १-धोखा देने वाली वस्तु। २-पिछली रात की चांदनी जिससे सबेरे का भ्रम होता है।
**मक्षिका** स्त्री० (सं) मक्खी।

मक्षिकामल पु० (सं) मोम ।
मक्षिकासन पु० (सं) मधुमक्खियों का छत्ता ।
मख पु० (सं) यज्ञ ।
मखजन पु० (अ) खजाना । कोष । भंडार ।
मखतूल पु० (हि) काला रेशम ।
मखतूली वि० (हि) काले रेशम का बना हुआ ।
मखत्राता पु०(सं) १-यज्ञ की रक्षा करने वाला । २-रामचन्द्र ।
मखदूम पु०(अ) १-स्वामी । मालिक । २-जिसकी सेवा की जाय ।
मखद्वेषी पु० (हि) राक्षस ।
मखन पु० (हि) मक्खन ।
मखनिया पु० (हि) मक्खन बनाने वाला । वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो ।
मखमल स्त्री०(अ) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसके एक ओर रोएँ उभरे होते हैं ।
मखमली वि० (अ) १-मखमल का बना हुआ । २-मखमल का सा ।
मखशाला स्त्री० (सं) यज्ञशाला ।
मखहा पु० (सं) १-शिव । इन्द्र ।
मखाग्नि स्त्री० (सं) यज्ञ में पवित्र की गई अग्नि ।
मखाना पु० (हि) तालमखाना ।
मखान्न पु० (सं) तालमखाना । मखाना ।
मखी स्त्री० (हि) मक्खी ।
मखौल पु० (हि) हँसीठट्ठा । उपहास । दिल्लगी ।
मखौलिया वि० (हि) हँसोड़ । दिल्लगीबाज ।
मग पु० (हि) मार्ग । रास्ता । (सं) मगध देश ।
मगज पु० (हि) १-मस्तिष्क । दिमाग । २-गिरी ।
मगजचट पु० (हि) मगज चाट जाने वाला बकवादी
मगजपच्ची स्त्री० (हि) बकवास ।
मगजपच्ची स्त्री०(हि) कुछ करने के लिए बहुत दिमाग खपाना । सिर खपाना ।
मगजी स्त्री० (फा) गोट जो रजाई आदि पर लगाई जाती है ।
मगण पु० (सं) छन्दशास्त्र के आठ गणों में से एक
मगद पु० (हि) मूंग या उड़द के बेसन के बने लड्डू
मगदूर पु० (हि) 'मकदूर' ।
मगध पु० (सं) १-दक्षिण बिहार का प्राचीन नाम । २-राजाओं का गुणगान करने वाला ।
मगन पु० (स) १-डूबा या समाया हुआ । २-प्रसन्न खुश । ३-बेहोश । लीन ।
मगना क्रि० (हि) १-लीन या तन्मय होना । २-डूबना।
मगर पु० (हि) मकर या घड़ियाल नामक जलजन्तु २-मछली । ३-मछली के आकार का कान का गहना। अव्य० (फा) लेकिन । परन्तु । पर ।
मगरमच्छ पु० (हि) १-घड़ियाल नामक जल जन्तु । २-बड़ी मछली ।
मगरा वि० (हि) १-सुस्त । २-जिद्दी । उद्दंड ।
मगरिब पु० (अ) पश्चिम दिशा । पच्छिम ।
मगरिबी वि० (अ) पश्चिमी । पच्छिम का ।
मगरूर वि० (अ) घमंडी । अभिमानी ।
मगरूरी स्त्री० (अ) घमंड । अभिमान ।
मगह पु० (हि) मगध देश ।
मगहपति पु० (हि) जरासंध जो मगध का राजा था ।
मगहय पु० (हि) मगध देश ।
मगही वि० (हि) १-मगध देश सम्बन्धी । मगध में उत्पन्न ।
मगु पु० (हि) मार्ग । पथ । रास्ता ।
मग्ग पु० (हि) रास्ता । मार्ग ।
मग्ज पु० (अ) १-मस्तिष्क । दिमाग । २-गूदा ।
मग्जरोशन स्त्री० (फा) सुंघनी । नास ।
मग्न वि० (सं) १-डूबा हुआ । २-तन्मय । लीन । ३-मदमस्त ।
मघवा पु०(सं) इन्द्र ।
मघवाजित पु० (सं) मेघनाथ ।
मघा स्त्री०(सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से दसवां नक्षत्र २-एक प्रकार की औषध ।
मघोनी स्त्री० (हि) इन्द्राणी । शची ।
मघौना पु० (हि) नीले रंग का कपड़ा ।
मचक स्त्री० (हि) बोझ । दबाव ।
मचकना क्रि० (हि) किसी वस्तु के दबने या दबाने से होने वाला मचमच शब्द ।
मचका पु० (हि) १-झोंक । झटका । २-झूले की पेंग
मचकाना क्रि० (हि) मचकने में प्रवृत्त करना ।
मचना क्रि० (हि) १-आरम्भ होना । (शोर आदि) । २-छाजाना । फैलाना (कीर्ति आदि) ।
मचमचाना क्रि० (हि) १-दबने से मचमच शब्द होना २-कामातुर होना ।
मचलना क्रि० (हि) किसी वस्तु के प्राप्त करने के लिए हठ करना । अड़ना ।
मचला वि० (हि) १-अनजान बनने वाला । २-जिद करने वाला । पु० (हि) बांस की टोकरी ।
मचलाना क्रि० (हि) ओकाई आना । मतली मालूम होना ।
मचली स्त्री० (हि) कै आने की प्रवृत्ति । मतली ।
मचवा पु० (हि) १-खाट । पलंग । २-खाट या चौकी का पाया । ३-नाव ।
मचान पु०(हि) खेत की रखवाली या शिकार खेलने के लिए चार लट्ठों पर बाँध कर बनाया गया ऊँचा स्थान । २-मंच । दीवट ।
मचाना क्रि० (हि) १-मचना का सकर्मक रूप । २-मैला या गंदा करना ।
मचामच स्त्री० (हि) किसी वस्तु को दबाने से होने-वाला मचमच शब्द ।

**मचिया** स्त्री० (हिं) १-छोटी चारपाई। २-पीढ़ी।
**मचिलई** स्त्री० (हिं) १-मचलने का भाव। २-हठ।
**मच्छ** पुं० (हिं) १-बड़ी मछली। २-दे० 'मत्स्य'।
**मच्छघातिनी** स्त्री० (हिं) मछली पकड़ने की वंसी।
**मच्छड़** पुं० (हिं) दे० 'मच्छर'।
**मच्छर** पुं० (हिं) एक प्रकार का उड़ने वाला पतङ्गा जिसके काटने से कई रोग हो जाते है।
**मच्छरदानी** स्त्री० (हिं) मसहरी। मच्छरों से बचने के लिए चारों ओर लगाने का जाली का पर्दा।
**मच्छी** स्त्री० (हिं) दे० 'मछली'।
**मच्छीकांटा** पुं० (हिं) १-एक प्रकार की सिलाई। २-कालीन की जालीदार वेल।
**मच्छीभवन** पुं० (हिं) मछली आदि पालने का तालाव
**मच्छीमार** पुं० (हिं) धीवर। मल्लाह।
**मच्छोदरी** स्त्री० (हिं) वेदव्यास की माता सत्यवती
**मछली** स्त्री० (हिं) सदा जल में रहने वाला एक प्रसिद्ध जलजन्तु जिसकी कई जातियां होती हैं। मत्स्य। २-मछली के आकार का कोई पदार्थ।
**मछलीदार** पुं० (हिं) दरी की एक बुनावट।
**मछलीमार** पुं० (हिं) धीवर। मछुआ।
**मछवा** पुं० (हिं) १-वह नाव जिस पर से मछली पकड़ी जाती हैं। २-मल्लाह।
**मछुआ** पुं० (हिं) मछली पकड़ने वाला। धीवर। मल्लाह।
**मछुवा-जहाज** पुं० (हिं) मछली पकड़ने या शिकार खेलने की बड़ी नाव या जहाज। (ट्रॉलर)।
**मजकूर** वि० (फा) जिसका उल्लेख पहले हो चुका हो उक्त।
**मजकूरी** पुं० (फा) १-ताल्लुकेदार। २-सम्मन तामील कराने वाला चपरासी। ३-विना वेतन का चपरासी ४-वह भूमि जिसका बटवारा न हो सके और सर्व-साधारण के लिए छोड़ दी गई हो।
**मजदूरी** पुं० (फा) १-शारीरिक परिश्रम से जीविका चलाने वाला। श्रमिक। २-बोझा ढोने वाला। (लेबरर)।
**मजदूर-दल** पुं० (हिं) संघटित श्रमिक वर्ग। (लेबर-कम्बिनेशन)।
**मजदूरसंघ** पुं० (हिं) मजदूरों का संघ। (लेबर यूनियन)।
**मजदूरी** स्त्री० (फा) १-मजदूर का काम। २-पारिश्र-मिक। मजूरी। (वेजेज)।
**मजना** क्रि० (हिं) १-डूबना। २-अनुरक्त होना।
**मजनू** पुं० (फा) १-पागल। दीवाना। २-प्रेमी। आशिक।
**मजबूत** वि० (अ) १-दृढ़। पुष्ट। पक्का। २-अचल। स्थिर।
**मजबूती** स्त्री० (अ) १-दृढ़ता। पुष्टता। २-बल। साहस।
**मजबूर** वि० (अ) विवश। लाचार।
**मजबूरन** अव्य० (अ) लाचारी से। विवश होकर।
**मजबूरी** स्त्री० (अ) असमर्थता। विवशता। लाचारी।
**मजमा** पुं० (अ) बहुत से लोगों का एक जगह पर जमाव। जमघट।
**मजमुआ** वि० (अ) जमा या एकत्र किया हुआ। संगृहीत।
**मजमून** पुं० (अ) १-किसी लेख आदि का विषय। लेख
**मजमून नवीस** पुं० (अ) निबंधकार।
**मजलिस** पुं० (अ) १-सभा। जलसा। समाज। २-महफिल। नाच-रंग।
**मजलूम** वि० (अ) अत्याचार से पीड़ित।
**मजहब** पुं० (अ) धार्मिक सम्प्रदाय। मत। पंथ। धर्म
**मजहबी** वि० (अ) किसी धार्मिक मत से संबन्ध रखने वाला।
**मजा** पुं० (अ) १-आनन्द। सुख। २-स्वाद। ३-हँसी-दिल्लगी।
**मजाक** पुं० (अ) १-हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। ठठोली। २-रुचि। प्रवृत्ति।
**मजाकपसंद** वि० (अ) हँसोड़।
**मजाकन** अव्य० (अ) मजाक के तौर पर।
**मजाकिया** वि० (अ) मजाक या हँसी-दिल्लगी करने वाला।
**मजाज** पुं० (हिं) १-गर्व। अभिमान। २-दे० 'मिजाज'। ३-अधिकार। हक।
**मजार** पुं० (अ) १-समाधि। मकबरा। २-कब्र।
**मजारी** स्त्री० (हिं) बिल्ली।
**मजाल** स्त्री० (अ) सामर्थ्य। शक्ति।
**मजीठ** स्त्री० (हिं) एक लता जिसकी जड़ से लाल रंग तैयार किया जाता है।
**मजीठी** वि० (हिं) मजीठे के रंग का लाल।
**मजीर** स्त्री० (हिं) फूलों का गुच्छा। मंजीर।
**मजीरा** पुं० (हिं) ताल देने की कांसे का छोटी कटो-रियों की जोड़ी (संगीत)।
**मजूर** पुं० (हिं) १-मजदूर। २-मोर। मयूर।
**मजूरी** स्त्री० (हिं) दे० 'मजदूरी'। (वेजेज) (संक्षि०)।
**मजेज** वि० (हिं) घमंड। दर्प। अहंकार।
**मज्ज** स्त्री० (हिं) हड्डी के भीतर का गूदा।
**मज्जन** पुं० (सं) स्नान। नहाना।
**मज्जा** स्त्री० (सं) हड्डी के भीतर भराहुआ स्निग्ध पदार्थ या गूदा।
**मज्जारस** पुं० (सं) वीर्य। शुक्र।
**मज्जासार** स्त्री० (सं) जायफल।
**मझ** वि० (हिं) बीच। मध्य।
**मझधार** स्त्री० (हिं) १-नदी के मध्य भाग की धारा। २-किसी कार्य का मध्य।
**मझला** वि० (हिं) मध्य का। बीच का।

मझाना क्रि० (हि) १-प्रविष्ट करना। २-बीच मे धंसाना। ३-थाह लेना।
मझार अव्य० (हि) बीच में। भीतर।
मझालना क्रि० (हि) दे० 'मझाना'।
मझियाना क्रि० (हि) १-नाव खेना। २-बीच में से हो जाना। ३-बीच में होकर आना।
मझियारा वि० (हि) बीच का।
मझोला वि०(हि)१-बीच का। २-मध्यम आकार का
मझोली स्त्री० (हि) १-एक तरह की बैलगाड़ी। २-मांझियों का एक औजार।
मट पुं० (हि) मटका। मटकी।
मटक स्त्री० (हि) १-मटकने की क्रिया या भाव। २-गति। चाल।
मटकना क्रि० (हि) १-लचक कर नखरे से चलना। २-नखरे से हाथ या आंख नचाना। ३-विचलित होना। ४-लौटना। पु० मिट्टी का कुल्हड़।
मटकनि स्त्री० (हि) दे० 'मटक'।
मटका पुं० (हि) मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट।
मटकाना क्रि०(हि) नखरों के साथ अंगों का संचालन करना
मटकी स्त्री० (हि) छोटा घड़ा।
मटकीला वि० (हि) मटकने वाला।
मटकौअल स्त्री० (हि) मटकने की क्रिया या भाव।
मटमैला वि० (हि) मट्टी के रङ्ग का भूनिया।
मटर पुं० (हि) एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न।
मटरगश्त पुं० (हि) १-धीरे-धीरे चलना। टहलना। २-सैर सपाटा। ३-आवारा फिरना।
मटरगश्ती स्त्री० (हि) १-सैर-सपाटा। २-आवारा घूमना।
मटरचूड़ा पुं० (हि) मटर के साथ चूड़ा मिला कर बनाई हुई घुघरी।
मटिया वि० (हि) मटमैला। खाकी। स्त्री० मिट्टी। मृत शरीर। शव।
मटियाफूस वि० (हि) बहुत दुर्बल और वृद्ध। जर्जर
मटियासान वि० (हि) गया-बीता। नष्टप्राय।
मटियामेट वि०(हि) नष्ट। मिट्टी में मिला हुआ।
मटियाला वि० (हि) दे० 'मटमैला'।
मटुक पुं० (हि) दे० 'मुकुट'।
मटुका पुं० (हि) दे० 'मटका'।
मटुकिया स्त्री० (हि) मटकी।
मटुकी स्त्री० (हि) मटकी।
मट्टी स्त्री० (हि) दे० 'मिट्टी'।
मट्ठर पुं० (हि) आलसी। सुस्त।
मट्ठा पुं० (हि) छाछ। मक्खन निकाल लेने के बाद बना हुआ दही का पानी।
मठ पुं०(सं) १-वह मकान जिसमें किसी महन्त के आधीन अन्य साधु रह सकें। २-निवास। स्थान। ३-विद्यामंदिर। ४-देवालय। मंदिर।
मठधारी पुं०(सं) वह साधु या महन्त जिसके आधीन कोई मठ हो।
मठरी स्त्री० (हि) मैदे की बनी नमकीन टिकिया।
मठा पुं० (हि) दे० 'मट्ठा'।
मठाधीश पुं० (सं) महन्त।
मठिया स्त्री० (हि) १-छोटा मठ। २-छोटी कुटी। ३-फूल। (धातु) की बनी गरीब ग्रामीण स्त्रियों के पहनने की चूड़ियां।
मठी पुं० (सं) छोटा मठ।
मठोर स्त्री०(हि) दही मथने और छाछ रखने की मटकी
मड़ई स्त्री०(हि) १-छोटा मंडप। २-पर्णशाला। कुटिया
मड़राना क्रि० (हि) दे० 'मंडराना'।
मड़वा पुं० (हि) दे० 'मंडप'।
मड़हट पु० (हि) दे० 'मरघट'।
मड़ा पुं० (हि) कमरा। बड़ी कोठी।
मडुआ पुं० (हि) एक प्रकार का अन्न।
मड़ैया स्त्री० (हि) १-झोपड़ी। कुटी। २-छोटा मंडप ३-मिट्टी या घासफूस का बना छोटा घर।
मढ़ वि० (हि) अड़कर बैठने वाला।
मढ़ना क्रि० (हि) १-चारों ओर से लपेट या घेर देना २-पुस्तक पर जिल्द चढ़ाना। ३-थोपना। ४-चित्र आदि को चौखटे में जड़ना।
मढ़वाना क्रि० (हि) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ाई स्त्री० (हि) १-मढ़ने का काम या भाव। २-मढ़ने की मजदूरी।
मढ़ी स्त्री० (हि) १-छोटा मठ। २-कुटिया। ३-मंदिर
मढ़ैया पुं० (हि) मढ़ने वाला।
मणि स्त्री० (सं) १-बहुमूल्य रत्न। जवाहरात। २-भगांकुर। ३-लिंग का अग्रभाग। ४-बकरी के गले की थैली। ५-श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति।
मणिकंकण पुं० (सं) वह कंकण जिसमें रत्न जड़े हुए हों।
मणिकंचन योग पुं०(सं) सोने पर सुहागा वाला श्रेष्ठ संयोग।
मणिकुंडल पुं० (सं) रत्नजड़ित कुण्डल।
मणिदीप पुं०(सं) १-रत्न जड़ित दीवा। २-दीवे का काम देने वाला मणि।
मणिदोष पुं० (सं) रत्नादि का दोष।
मणिधर पुं० (सं) सर्प। सांप।
मणिबंध पुं० (सं) कलाई। पहुँचा।
मणिमाला स्त्री०(सं) १-लक्ष्मी। २-मणियों की माला
मत अव्य० (हि) न। नहीं। (निषेधवाचक शब्द)। पुं०(सं) १-सम्मति। राय। २-आशय। भाव। ३-धर्म। पथ। ४-ज्ञान। पूजा। ५-जिस विषय में कोई व्यक्ति रुचि रखता हो उस विषय के सम्बन्ध में उसका प्रकट किया हुआ विचार। ६-निर्वाचन

आदि के समय दी जाने वाली सम्मति। (वोट)।
**मतगणना** पुं० (सं) किसी निर्वाचन में दिये हुए मतों या वोटों की गिनती। (काउंटिंग आफ वोटस)।
**मतदाता** पुं०(सं) किसी निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने का अधिकारी। (वोटर)।
**मतदातृ-सूची** स्त्री० (सं) किसी निर्वाचन क्षेत्र में मत देने के अधिकारी, वयस्क लोगों की सूची। (वोटिंग लिस्ट)।
**मतदान** पुं० (सं) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने की क्रिया या भाव। (वोटिंग)।
**मतदानकक्ष** पुं० (सं) किसी मतदान केन्द्र का वह कमरा जहाँ किसी मोहल्ले को मतदान की सुविधा प्राप्त हो। (पोलिंग बूथ)।
**मतदानकोष्ठ** पुं० (सं) दे० 'मतदानकक्ष'।
**मतदानकेन्द्र** पुं०(सं) वह स्थान जहाँ मतदाताओं को किसी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान करने के लिए खड़े होने तथा मतदान करने की व्यवस्था हो। (पोलिंग स्टेशन)।
**मतदानपत्र** पुं० (सं) शलाका-पत्र। वह पत्र जिस पर चुनाव में खड़े होने वाले व्यक्ति का नाम और चिह्न अंकित हो और जिस पर मतदाता को अपना चिह्न लगाकर शलाका पेटिका (बैलट बाक्स) में डालता है। (बैलट पेपर)।
**मतदान पेटिका** स्त्री० (सं) वह पेटी जिसमें मतदान पत्र छोड़े जाते हैं। शलाका-पेटिका। (बैलट बॉक्स)
**मतपेटिका** स्त्री० (सं) दे० 'मतदान पेटिका'।
**मतदेय** वि० (सं) वह विषय या मद जिस पर सदस्यों का मत व्यय करने के लिए किया जा सके। (वोटेबल)।
**मतदेय-पद** पुं०(सं) वह पद जिस पर सदस्यों का मत लेना आवश्यक हो। (वोटेबल आइटम)।
**मतदेयव्यय** पुं०(सं) वह व्यय जिसपर सदस्यों का मत लेना आवश्यक हो। (वोटेबल एक्सपेंडीचर)।
**मतना** क्रि० (हिं) १-मत या राय निश्चित करना। २-नशे में चूर होना।
**मतपत्र** पुं० (सं) दे० 'मतदानपत्र'।
**मतभेद** पुं० (सं) आपस में एक दूसरे की राय या सम्मति न मिलना।
**मतलब** पुं० (अ) १-अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। २-अर्थ। ३-स्वार्थ। ४-उद्देश्य। ५-सम्बन्ध। वास्ता
**मतलबी** वि० (अ) स्वार्थी। खुदगरज।
**मतवार** वि० (हि) मतवाला।
**मतवारा** वि० (हि) मतवाला।
**मतवाला** वि० (हिं) १-नशे में चूर। २-पागल। उन्मत्त। ३-जिसे अभिमान हो।
**मतसंग्रह** पुं० (सं) किसी विशेष प्रश्न पर मताधिकारियों के मतों को एकत्रित करना।
**मतस्वातंत्र्य** पुं०(सं) विचार, राय, या मत की स्वतंत्रता।
**मतसाम्य** पुं०(सं) सबको मत देने का समान अधिकार। (इक्वेलिटी आफ वोट्स)।
**मतांतर** पुं० (सं) १-भिन्न मत। २-विचारों की भिन्नता।
**मता** पुं० (हि) मत। सम्मति। सलाह।
**मताधिकार** पुं० (सं) संसद आदि के सदस्य निर्वाचित करने के लिए मत देने का अधिकार। (फ्रेंचाइज सफरेज)।
**मताधिकारी** पुं०(सं) जिसे मतदान करने का अधिकार हो। (वोटर)।
**मतानुयाचक** पुं० (सं) वह जो किसी निर्वाचन क्षेत्र में अपने पक्ष में मत देने के लिए मतदाताओं से प्रार्थना करे। (कन्वेसर)।
**मतानुयायी** वि०(सं) किसी धार्मिक संप्रदाय या किसी व्यक्ति विशेष के मत को मानने वाला।
**मतारी** स्त्री० (हि) माता।
**मतार्थी** पुं० (सं) मत देने के लिए जो प्रार्थना करे। उम्मीदवार। (कैंडीडेट)।
**मतार्थीघटक** पुं० (सं) किसी मतार्थी की ओर से मतदान केन्द्र पर काम करने वाला। (पोलिंग एजेंट)
**मतावलंबी** वि० (सं) किसी एक मत, सिद्धांत या संप्रदाय का अवलम्बन करने वाला।
**मति** स्त्री० (सं) १-समझ। बुद्धि। २-इच्छा। ३-स्मृति। अव्य० (हि) मत। वि० सदृश्य। समान।
**मतिद्वैध** पुं० (सं) मतभेद।
**मतिभ्रंश** पुं० (सं) पागलपन।
**मतिभ्रम** पुं० (सं) बुद्धिनाश। पागलपन।
**मतिमंद** वि० (सं) चतुर। बुद्धिमान।
**मतिमान्** वि० (सं) विचारवान। बुद्धिमान।
**मतिहीन** वि० (सं) मूर्ख। बुद्धिहीन।
**मती** स्त्री० (हि) दे० 'मति'। अव्य० (हिं) दे० 'मत'।
**मतीर** पुं० (हि) तरबूज।
**मतीरा** पुं० (हिं) तरबूज।
**मतेई** पुं० (सं) विमाता।
**मतैक्य** पुं० (सं) किसी विषय में सब लोगों का मत या विचार एक होना। (यूनेनिमिटी)।
**मत्कुण** पुं० (सं) खटमल।
**मत्त** वि० (सं) १-मस्त। मतवाला। २-पागल। ३-प्रसन्न। खुश।
**मत्तता** स्त्री० (सं) मत्त होने का भाव। मतवालापन
**मत्तताई** स्त्री० (हि) दे० 'मत्तता'।
**मत्ता** स्त्री०(सं)१-एक वर्णवृत। २-मदिरा। प्रत्यय(सं) मान् से बनने वाला भाववाचक रूप।
**मत्था** पुं०(हि) १-भाल। ललाट। २-सिर। ३-किसी पदार्थ का ऊपरी भाग।

**मत्थे** *अव्य०* (हि) १-मस्तक या सिर पर। २-आसरे या भरोसे पर।
**मत्सर** पुं० (सं) १-डाह। हसद। जलन। २-क्रोध
**मत्सरी** *वि०* (सं) दूसरों से डाह करने वाला।
**मत्स्य** पुं० (सं) १-मछली। २-मीनराशि। ३-एक पुराण। ४-छप्पयछन्द का एक भेद। ५-विराट् देश का एक नाम।
**मत्स्यगंधा** *स्त्री०* (सं) व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।
**मत्स्यघाती** पुं० (सं) मछुआ।
**मत्स्यजीवी** पुं० (सं) मछुआ। मछली पकड़ने वाला।
**मत्स्यदेश** पुं० (सं) विराट् देश।
**मत्स्यवेधनी** *स्त्री०* (सं) मछली पकड़ने की बंसी।
**मत्स्यावतार** पुं० (सं) विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम।
**मत्स्येन्द्रनाथ** पुं० (सं) एक प्रसिद्ध हठयोगी साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।
**मत्स्योपजीवी** पुं० (सं) मछुआर।
**मथन** पुं०(सं) १-मथने की भाव या क्रिया। बिलोना। २-वध।
**मथना** *क्रि०*(हि) १-किसी तरल पदार्थ को लकड़ी, रई आदि से बिलोना। २-कष्ट करना। ३-घूम-घूम कर पता लगाना।
**मथनिया** *स्त्री०* (हि) वह मटका जिसमें दही मथा जाता है।
**मथनी** *स्त्री०* (हि) १-मथनिया। २-रई। मथानी। ३-मथने की क्रिया।
**मथवाह** पुं० (हि) महावत।
**मथानी** *स्त्री०* (हि) एक प्रकार का डंडा जिससे दही मथ कर नवनीत निकाला जाता है।
**मथित** *वि०* (सं) १-मथा हुआ। २-घोल कर अच्छी तरह मिलाया हुआ।
**मथो** पुं० (हि) मथनी।
**मथुरिया** *वि०* (हि) मथुरा से सम्बन्ध रखने वाला। मथुरा का।
**मथूल** पुं० (देश) मस्तूल।
**मथ्य** पुं० (हि) माथा।
**मद** पुं०(सं) १-हर्ष। आनन्द। २-वीर्य। ३-मतवाले हाथियों की कनपटी से निकलने वाला द्रव। ४-शराब। मद्य। ५-नशा। ६-घमंड। ७-शहद। ८-उन्माद।
**मदक** पुं० (हि) अफीम के सत से बनने वाला एक विशेष पदार्थ जो तम्बाकू के समान पीया जाता है।
**मदकची** *वि०* (हि) मदक पीने वाला।
**मदकर** *वि०*(सं) जिससे मद या नशा हो। पुं० धतूरा
**मदकल** *वि०* (सं) १-मस्त। मतवाला। २-पागल।
**मदगंध** पुं० (हि) १-मद्य। २-चितवन।
**मदगल** *वि०* (सं) दे० 'मदकल'।
**मदघ्नी** *स्त्री०* (सं) पूतिका। पोय।
**मदजल** पुं० (सं) हाथी का मद। दान।
**मदज्वर** पुं० (सं) बैल आदि का नशा या घमंड।
**मदद** *स्त्री०* (अ) १-सहायता। सहारा। २-साथ काम करने वालों का समूह।
**मददगार** *वि०* (अ) सहायक।
**मदन** पुं० (सं) १-कामदेव। २-अनुराग। ३-काम क्रीड़ा। ४-खंजनपक्षी। ५-भ्रमर। ६-बसंत काल।
**मदनकंटक** पुं० (सं) सात्विक। रोमांच।
**मदनकदन** पुं० (सं) शिव।
**मदनकलह** पुं० (सं) प्रेम का झगड़ा।
**मदनगोपाल** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**मदनदमन** पुं० (सं) शिव का एक नाम।
**मदनदिवस** पुं० (सं) मदनोत्सव का दिन।
**मदनपक्षी** पुं० (सं) खंजन पक्षी।
**मदनफल** पुं० (सं) मैनफल।
**मदनमस्त** पुं० (सं) चम्पा की जाति का एक तीव्र सुगंध वाला पौधा।
**मदनमहोत्सव** पुं० (सं) एक प्राचीन समय का होली जैसा उत्सव। होली।
**मदनमोहन** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**मदनरिपु** पुं० (सं) शिव।
**मदनांतक** पुं० (सं) शिव।
**मदनातुर** *वि०* (सं) कामातुर।
**मदनारि** पुं० (सं) शिव।
**मदनोत्सव** पुं० (सं) दे० 'मदन महोत्सव'।
**मदनोद्यान** पुं० (सं) सुन्दर बगीचा। प्रमोद-वन।
**मदमत्त** *वि०* (सं) मतवाला।
**मदमाता** *वि०* (हि) १-कामुक। मस्त।
**मदमुकुलिताक्षी** *स्त्री०*(सं) वह स्त्री जिसकी आँखें मस्ती में बन्द सी हो रही हों।
**मदर** पुं० (हि) मंडराना। घेरना।
**मदरसा** पुं० (अ) पाठशाला। विद्यालय।
**मदहोश** *वि०*(हि) १-नशे में चूर। २-बदहवास। ३-बेहोश।
**मदांध** *वि०*(सं) जो नशे के कारण अंधा हो। मदोन्मत्त।
**मदानि** *वि०* (देश) कल्याण करने वाला।
**मदार** पुं० (सं) १-हाथी। २-धूर्त। ३-सूअर। पुं० (हि) आक का पौधा।
**मदारिया** पुं०(हि) बंदर, भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर।
**मदारी** पुं० (हि) दे० 'मदारिया'।
**मदालु** *वि०* (सं) मस्त। जिसके मद गिरता हो।
**मदिर** *वि०* (सं) नशीला। मस्त करने वाला।
**मदिरा** *स्त्री०* (सं) शराब। मद्य। दारू।
**मदिराक्षी** *स्त्री०* (सं) वह स्त्री जिसकी आँखे सुन्दर हों

मदिरालय पुं० (सं) शराबखाना।
मदीय वि० (सं) मेरा।
मदीला वि० (हि) नशे से भरा हुआ। नशीला।
मदोन्मत्त वि० (सं) मदांध। नशे में चूर।
मदोवै पुं० (हि) मन्दोदरी।
मद्द स्त्री० (अ) १-वह आड़ी लकीर जिसे खींच कर लेख लिखना आरंभ किया जाता है। २-शीर्षक। ३-खाना। खाता। ४-विभाग।
मद्दत स्त्री० (हि) सहायता।
मद्दा वि० (हि) मंदा। सस्ता।
मद्धिम वि० (हि) १-मध्यम। २-मन्द।
मद्धे अव्य० (हि) १-बीच में। २-लेखे या हिसाब में बाबत। (आन-एकाउन्ट ऑफ)।
मद्य पुं० (सं) मदिरा। शराब।
मद्यप वि० (सं) शराबी। मद्य पीने वाला।
मद्यपान पुं० (सं) शराब पीना।
मद्यपायी वि० (सं) शराबी।
मद्यपाशन पुं० (सं) मद्य के साथ खाने की चटपटी चीज। चाट।
मद्यभांड पुं० (सं) शराब रखने का पात्र।
मद्यसार पुं० (सं) १-सुरा। अंगूर की शराब। (अल्कोहल)।
मद्यसारिक वि० (सं) जिसमें मद्यसार मिला हुआ हो (अल्कोहलिक)।
मद्यसारिक पान पुं०(सं) वह पेय पदार्थ जिसमें मद्य-सार मिला हुआ हो। (अल्कोहलिक लिकर)।
मद्र पुं०(सं) १-एक प्राचीन जनपद का नाम। २-हर्ष
मद्रसुता स्त्री० (सं) माद्री।
मध वि० (हि) दे० 'मध्य'।
मधु पुं०(सं) १-शहद। फूलों का रस। २-पानी। ३-अमृत। ४-मकरंद। ५-शराब। ६-दूध। मक्खन। ७-मिसरी। ८-वसंतऋतु। ९ चैत्र मास।
मधुकंठ पुं० (सं) कोयल।
मधुकर पुं० (सं) १-भौंरा। २-कामी पुरुष। ३-एक प्रकार का चावल।
मधुकरी स्त्री० (सं) १-बाटी। २-भौंरी। भ्रमरी। ३-संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता है।
मधुकोष पुं० (सं) शहद का छत्ता।
मधुकोश पुं० (सं) दे० 'मधुकोष'।
मधुघोष पुं० (सं) कोयल।
मधुचक्र पुं० (सं) मधुमक्खियों का छत्ता।
मधुज पुं० (सं) मोम।
मधुजा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
मधुत्रय पुं० (सं) शहद, घी और मिश्री इन तीनों का समुदाय।
मधुद्रुम पुं०(सं) १-आम का पेड़। २-महुए का पेड़
मधुप पुं०(सं) १-भौंरा। भ्रमर। २-शहद की मक्खी ३-उद्धव।
मधुपटल पुं० (सं) शहद की मक्खियों का छत्ता।
मधुपति पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
मधुपर्क पुं० (सं) देवता को अर्पण करने के लिए मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद।
मधुपुर पुं०(सं) आधुनिक मथुरानगर का एक प्राचीन नाम।
मधुपुरी पुं० (सं) मथुरा।
मधुबन पुं०(सं) ब्रजभूमि, पार्श्वनाथ के एक वन का नाम
मधुबाला स्त्री० (सं) १-भ्रमरी। २-साक़ी।
मधुमक्खी स्त्री० (हि) शहद की मक्खी।
मधुमक्षिका स्त्री० (सं) मधुमक्खी।
मधुमक्षी स्त्री० (सं) शहद की मक्खी।
मधुमेह पुं० (सं) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें पेशाब के साथ शकर आती है।
मधुमेही वि० (सं) जो मधुमेह के रोग से पीड़ित हो।
मधुयष्टिका स्त्री० (सं) मुलेठी।
मधुर वि० (सं) १-मीठा। जो सुनने में अच्छा लगे। २-मनोरंजक। ३-मंदगामी। ४-सौम्य। ५-जो क्लेशप्रद न हो।
मधुरई स्त्री० (हि) मधुरता। कोमलता।
मधुरता स्त्री० (हि) मिठास। माधुर्य।
मधुरत्व पुं० (हि) दे० 'मधुरता'।
मधुरस वि०(सं) मीठे रस वाला। पुं० १-ईख। गन्ना २-ताड़।
मधुराज पुं० (सं) भौंरा।
मधुराना क्रि० (हि) १-मीठा होना। २-सुन्दर हो जाना।
मधुरान्न पुं० (सं) मिठाई। मिष्टान्न।
मधुरिका स्त्री० (सं) सौंफ।
मधुरिन स्त्री० (हि) एक पानी के रङ्ग का द्रव्य जो स्वाद में मीठा और विस्फोटक पदार्थ तथा ... बनाने के काम आता है। (ग्लिसरीन)।
मधुरिपु पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
मधुरिमा स्त्री० (सं) मधुरता। मिठास।
मधुरी स्त्री० (हि) दे० 'माधुरी'।
मधुलिट् पुं० (सं) भौंरा।
मधुलेह पुं० (सं) भौंरा।
मधुलोलुप पुं० (सं) भौंरा।
मधुवन पुं० (सं) १-ब्रज का एक वन। २-कोयल।
मधुवल्ली स्त्री (सं) मुलेठी।
मधुशर्करा स्त्री० (सं) वह शकर जो शहद से बनी हो
मधुशेष पुं० (सं) मोम।
मधुसहाय पुं० (सं) कामदेव।
मधुसारथि पुं० (सं) कामदेव।
मधुसुहृदय पुं० (सं) कामदेव।

**मधुसूदन** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**मधुहा** पुं० (सं) विष्णु।

**मधूक** पु० (स) १-महुए का वृक्ष। २-मुलेठी।

**मधूत्सव** पुं० (सं) वसंतोत्सव।

**मधूषक** पुं० (सं) मोम।

**मध्य** पुं० (स) १-किसी वस्तु के बीच का भाग। २-कमर। कटि। ३-अन्तर। ४-पश्चिम दिशा। ५-सङ्गीत में बीच का सप्तक। ६-नृत्य में वह गति जो न मन्द हो न तेज। अव्य०(हि) बीच में। वि० १-उपयुक्त। ठीक। २-अधम। ३-बीच का।

**मध्यक** पुं० (सं) कई संख्याओं, मूल्यों, मानों आदि को मिला कर उनकी समष्टि का किया हुआ सम विभाग जो मध्यमान सूचित करता है। सामान्य। (एवरेज)।

**मध्यग** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो कुछ बट्टा लेकर किसी खरीदार को किसी बेचने वाले से कोई माल दिलाता है। दलाल। (ब्रोकर)।

**मध्यगत** वि० (सं) मध्यम। बीच का।

**मध्यजन** पुं० (सं) १-दो पक्षों के बीच में संपर्क स्थापित करने वाला आदमी। २-भोक्ताओं और उत्पादकों के बीच में पड़कर माल वितरण करने वाला व्यक्ति। (मिडिलमैन)।

**मध्यदिवस** पु० (सं) दोपहर।

**मध्यदेश** पुं० (सं) भारत का वह प्रदेश जो हिमालय, विंध्याचल,कुरुक्षेत्र और प्रयाग के बीच स्थित है।

**मध्यपूर्व** पुं०(सं) एक पारिभाषिक शब्द जो योरोपियों की दृष्टि से एशिया का दक्षिण-पश्चिमी तथा अफ्रीका का उत्तर-पूर्वी भाग का द्योतक है, इसमें मुख्यतः अरब देश, फारस, ईराक, सीरिया आदि सम्मिलित है। (मिडिल-ईस्ट)।

**मध्यम** वि० (सं) १-मध्य का। बीच का। २-औसत मान का। पु० १-सङ्गीत में सप्त स्वरों में से चौथा स्वर 'म'। २-एक राग। ३-साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक।

**मध्यमपद-लोपी** पुं० (सं) वह समास जिसमें पहले पद का आगामी पद से सम्बन्ध बताने वाला शब्द लुप्त हो जाता है।

**मध्यमपांडव** पुं० (सं) अर्जुन।

**मध्यमपुरुष** पुं० (सं)(व्या०) वह व्यक्ति जिसके बारे में कुछ कहा गया हो।

**मध्यमलोक** पुं० (सं) मृत्युलोक। पृथ्वी।

**मध्यमवय** पुं० (सं) अधेड़ उम्र या आयु।

**मध्यमवयस्क** वि० (सं) अधेड़ आयु वाला।

**मध्यमा** स्त्री० (सं) १-हाथ की बीच की उँगली। २-रजस्वला स्त्री। ३-वह नायिका जो प्रेमी के प्रेम अथवा दोष के अनुसार उसका आदरभाव या अपमान करे। ४-अधेड़ आयु की स्त्री।

**मध्ययुग** पुं० (सं) १-प्राचीन युग तथा आधुनिक युग के बीच का समय। २-यूरोप एशिया आदि के इतिहास के अनुसार सन् ६०० से सन् १५०० तक का युग। (मिडिल एजेस)।

**मध्ययुगीन** वि० (सं) मध्य युग का। (मिडीवल)।

**मध्यरात्रि** स्त्री०(सं) आधीरात।

**मध्यलोक** पुं० (हि) मृत्युलोक। पृथ्वी।

**मध्यवय** पुं० (सं) अधेड़ आयु। वि० (स) अधेड़ उम्र वाला।

**मध्यवर्ती** वि०(सं) जो मध्य में हो। बीच का।

**मध्यवित्त** वि० (सं) जो न गरीब हो न अमीर।

**मध्यवित्तवर्ग** पु० (स) समाज के वे लोग जो न गरीब न अमीर होते है और प्रायः बुद्धिजीवी हो होते हैं। (बुर्जवा)।

**मध्यस्थ** पुं० (सं) वह जो किसी झगड़े का बीच में पड़कर समझौता करवाता हो। तटस्थ। (आर्बीट्रेटर)।

**मध्यस्थनिर्णय** पुं० (सं) (संवि०) वह निर्णय जो किसी मध्यस्थ ने किया हो। (आर्बीट्रेशन)।

**मध्यस्थ न्यायाधिकरण** पु० (सं) वह पंच अदालत जो झगड़ों का समझौता करवाने के लिये बनाया गया हो।(आर्बीट्रल ट्रिब्यूनल)।

**मध्यस्थता** स्त्री०(सं) मध्यस्थ होने का भाव या कर्म।

**मध्यस्थल** पुं० (सं) कमर।

**मध्यांतर रेखा** स्त्री० (सं) वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों में से होकर पृथ्वी के चारों ओर गई हो। (मेरीडियन)।

**मध्या** स्त्री० (स) १-काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम एक समान हो। २-बीच की उँगली। ३-एक वर्णवृत्त।

**मध्यावकाश** पुं० (सं) पढ़ाई, खेल, कार्यालय आदि में वह अवकाश जो बीच में लोगों को सुस्ताने तथा जलपान करने के लिये दिया जाता है। (रिसेस)।

**मध्याह्न** पु० (सं) ठीक दोपहर का समय।

**मध्याह्नोत्तर** पुं० (सं) दोपहर के बाद का समय।

**मध्ये** अ० (हि) दे० 'मद्धे'।

**मध्व** पु० (सं) १- दे० 'मधु'। २-एक संप्रदाय के प्रवर्तक।

**मध्वसंप्रदाय** पुं०(स) मध्व द्वारा प्रचलित एक वैष्णव संप्रदाय।

**मनः** पु० (स) मन।

**मनःकल्पित** वि० (सं) कल्पित। मनगढ़न्त।

**मनःक्षेप** पु० (स) मन का उद्वेग।

**मनःप्रसाद** पुं०(सं) मन की प्रसन्नता।

**मनःप्रसूत** वि० (सं) कल्पित।

**मनःशक्ति** स्त्री० (सं) मनोबल।

**मनःसंताप** पु० (सं) ग्लानि।

**मनःसंस्कार** पु० (सं) मन पर पड़ने वाला प्रभाव।
**मन** पुं०(सं) १-प्राणियों की वह शक्ति जिससे अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि होते हैं २-इच्छा। इरादा। विचार। ३-अन्तःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है।
**मनई** पुं० (हि) आदमी। मनुष्य।
**मनकना** क्रि०(हि) १-हिलना-डोलना। २-तर्क-वितर्क करना।
**मनकरा** वि० (हि) चमकीला।
**मनका** पुं० (हि) १-माला का दाना। २-माला। ३-गरदन के पीछे वाली हड्डी।
**मनकामना** स्त्री० (हि) दे० 'मनोकामना'।
**मनकूला** वि० (ग्र) जो स्थिर या स्थावर न हो। चल
**मनकूला जायदाद** स्त्री० (ग्र) चल संपत्ति।
**मनकूहा** वि० (ग्र) विवाहित।
**मनगढ़ंत** वि० (हि) जिसकी वास्तविक सत्ता न हो। कपोलकल्पित।
**मनघड़ंत** वि० (हि) मनगढ़ंत।
**मनचला** वि०(हि) १-निडर। २-साहसी। ३-रसिक
**मनचाहा** वि० (हि) चाहा हुआ। इच्छित। २-यथेष्ट
**मनचीता** वि० (हि) मन में सोचा हुआ। मनचाहा
**मनजात** पुं० (हि) कामदेव।
**मनन** पु० (सं) १-चिंतन। २-भलीभांति समझकर किया जाने वाला अध्ययन या विचार।
**मननशील** वि० (सं) जो बार-बार मनन या चिंतन करता रहता हो।
**मननीय** वि० (सं) चिंतन करने योग्य।
**मनवांछित** वि० (हि) दे० 'मनोवांछित'।
**मनभाया** वि० (हि) जो मन को अच्छा लगे। प्रिय।
**मनभावन** वि० (हि) मन को भाने वाला।
**मनमथन** पुं० (हि) कामदेव।
**मनमाना** वि० (हि) १-जो मन को भला लगे। मनपसंद। २-मनचाहा।
**मनमानी** स्त्री० (हि) मनमाना काम।
**मनमानी-धरजानी** स्त्री० (हि) स्वेच्छापूर्ण कार्रवाई।
**मनमुखी** वि० (हि) स्वेच्छाचारी।
**मनमुटाव** पुं० (हि) मन में होने वाला वैमनस्य।
**मनमोदक** पुं० (हि) मन में सोची हुई सुखद पर असंभव बात। मन के लड्डू।
**मनमोहन** पु० (हि) श्रीकृष्ण। वि० प्रिय। मन को मोहने वाला।
**मनमौजी** वि० (हि) स्वेच्छाचारी।
**मनरंजन** वि० (हि) दे० 'मनोरंजन'।
**मनरोचन** वि० (हि) मन को मुग्ध करने वाला।
**मनलाडू** पुं० (देश) मनमोदक।
**मनवाना** क्रि०(हि) किसी को मनाने में प्रवृत्त करना।
**मनशा** पुं०(ग्र) १-इच्छा। इरादा। २-अर्थ। तात्पर्य
**मनश्चक्षु** पुं० (सं) मन की आंख। अन्तर्दृष्टि।
**मनसना** क्रि० (हि) १-संकल्प करके दान करना। २-इच्छा करना।
**मनसब** पुं० (ग्र) १-पद। स्थान। २-कर्म। ३-अधिकार। ४-वृत्ति।
**मनसबदार** पुं० (ग्र) अधिकारी। ओहदेदार।
**मनसा** स्त्री०(स) एक देवी का नाम। (हि) १-कामना। इच्छा। २-मन। बुद्धि। ३-अभिप्राय। अव्य० मन से। मन के द्वारा।
**मनसाना** क्रि० (हि) १-उत्साह या उमंग में आना। २-संकल्प करके दान करना।
**मनसिज** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कामदेव।
**मनसूख** वि० (ग्र) १-जो अप्रामाणिक ठहराया गया हो। अतिवर्तित। २-परित्यक्त।
**मनसूखी** स्त्री० (ग्र) मनसूख होने का भाव या क्रिया
**मनसूबा** पुं० (ग्र) १-युक्ति। आयोजन। २-विचार इरादा।
**मनसूबेबाज** पुं० (ग्र) युक्ति सोचने वाला।
**मनसूर** पुं०(ग्र) एक मुसलमान फकीर जो सूफी-मत आचार्य माना जाता है।
**मनस्** पुं० (सं) दे० 'मन'।
**मनस्क** पुं० (स) मन का अल्पार्थक रूप।
**मनस्कांत** वि० (सं) १-मन के अनुकूल। २-प्रिय। प्यारा। पुं० मनोरथ। इच्छा।
**मनस्काम** पुं० (सं) मनोरथ। मन की अभिलाषा।
**मनस्ताप** पुं० (सं) १-आंतरिक दुःख। २-पछतावा पश्चाताप।
**मनस्तुष्टि** स्त्री० (सं) मन का संतोष।
**मनस्तृप्ति** स्त्री० (सं) मन की तृप्ति।
**मनस्वी** वि० (स) १-बुद्धिमान। २-स्वेच्छाचारी।
**मनहर** वि० (हि) मनोहर।
**मनहरण** वि० (हि) मनोहर। पुं० १-एक वर्णवृत्त। २-मोहने की क्रिया।
**मनहरन** वि० (हि) मन हरने वाला।
**मनहार** वि० (हि) दे० 'मनोहारी'।
**मनहारी** वि० (हि) दे० 'मनोहारी'।
**मनहु** अव्य० (हि) मानो। जैसे। यथा।
**मनहूस** वि०(ग्र) १-अशुभ। बुरा। २-मुस्त। आलसी ३-अप्रिय दर्शन।
**मना** पुं० (ग्र) १-निषिद्ध। वर्जित। २-अनुचित।
**मनाई** स्त्री० (हि) दे० 'मनाही'।
**मनाक्** अव्य० (सं) थोड़ा सा। जरा सा।
**मनाग्** अव्य० (सं) दे० 'मनाक्'।
**मनादी** स्त्री० (हि) दे० 'मुनादी'।
**मनाना** क्रि० (हि) १-रूठे हुए को प्रसन्न करना। २-दूसरे को मनाने में उद्यत करना। ३-प्रार्थना या स्तुति करना। ४-स्वीकार करना।

**मनार** पुं० (हि) दे० 'मीनार'।
**मनावन** पुं० (हि) १-मनाने की क्रिया या भाव। २-रूठे हुए को प्रसन्न करना।
**मनाही** स्त्री० (हि) १-मना करने की क्रिया या भाव। २-निषेध। अवरोध।
**मनि** स्त्री० (हि) दे० 'मणि'।
**मनिका** पुं० (हि) दे० 'मनका'।
**मनिया** स्त्री० (हि) मनका।
**मनियार** वि०(हि) १-उज्ज्वल। चमकीला। २-स्वच्छ
**मनिहार** पुं० (हि) १-चूड़ियाँ पहनाने वाला। २-फेरीवाला जो बिंदी, टिकली, चूड़ी आदि बेचता है
**मनिहारन** स्त्री० (हि) चूड़ी बेचने या पहनाने वाली।
**मनिहारिन** स्त्री० (हि) दे० 'मनिहारन'।
**मनिहारिन-लीला** स्त्री० (हि) श्रीकृष्ण की राधा को मनिहारिन का वेष बनाकर चूड़ियाँ पहनाने की लील
**मनीआर्डर** पुं० (अं) एक स्थान से दूसरे स्थान डाक द्वारा रुपया भेजने का धनादेश।
**मनीषा** स्त्री०(सं)१-बुद्धि। अक्ल। २-स्तुति। प्रशंसा।
**मनीषिका** स्त्री० (स) बुद्धि। अक्ल। २-इच्छा।
**मनीषी** वि० (स)० १-पंडित। ज्ञानी। २-बुद्धिमान्।
**मनु** पुं०(सं)१-ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। २-मत। ३-चौदह की संख्या। अव्य० (हि)० मानो। जैसे।
**मनुज** पुं० (सं) मनुष्य। आदमी।
**मनुजात** पु०(स) मनुष्य। आदमी। वि० (सं) मनुष्य से उत्पन्न।
**मनुजाद** पुं० (सं) मनुष्यों को खाने वाला। राक्षस।
**मनुजाधिप** पुं० (सं) राजा।
**मनुजेन्द्र** पुं० (सं) राजा।
**मनुजेश्वर** पुं० (सं) राजा।
**मनुजोत्तम** पुं० (स) जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हो।
**मनुष** पुं० (सं) दे० 'मनुष्य'।
**मनुषी** स्त्री० (स) स्त्री। औरत।
**मनुष्य** पुं० (स) आदमी। नर। मानव।
**मनुष्यकृत** वि० (सं) मनुष्य का बनाया हुआ।
**मनुष्यगणना** स्त्री० (सं) किसी स्थान या देश के निवासियों की होने वाली गणना। (सेंसेस)।
**मनुष्यलोक** पुं० (सं) मृत्यु लोक। पृथ्वी।
**मनुष्यता** स्त्री० (सं) १-मनुष्यता का भाव। २-दया-भाव। ३-सभ्यता। शिष्टता।
**मनुसंहिता** स्त्री० (सं) मनुस्मृति।
**मनुस** पुं० (हि) मनुष्य। मर्द। युवा।
**मनुसाई** स्त्री०(हि)१-पुरुषार्थ। बहादुरी। २-मनुष्यता
**मनुसाना** क्रि० (हि) पुरुषत्व का भाव जाग्रत होना
**मनुस्मृति** स्त्री० (सं) आदि मनु द्वारा बनाया गया धर्म-शास्त्र।
**मनुहार** स्त्री० (हि) १-खुशामद। २-विनय। ३-आदरसत्कार। ४-शान्ति।
**मनुहारना** क्रि० (हि) १-मनाना। २-विनय करना ३-आदरसत्कार करना।
**मनुहारनीति** स्त्री० (हि) मानने की नीति।
**मनूरी** स्त्री० (हि) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी
**मने** वि० (हि) दे० 'मना'।
**मनों** अव्य० (हि) मानो। जैसे।
**मनो** पु० (सं) मनस् का समास का रूप।
**मनोकामना** स्त्री० (हि) इच्छा। अभिलाषा।
**मनोगत** वि० (सं) मन में आया हुआ। पुं० कामदेव
**मनोगति** स्त्री० (सं) मन की गति। इच्छा। चित्त-वृत्ति।
**मनोज** पुं० (सं) कामदेव।
**मनोज्ञ** वि० (स) मनोहर। सुन्दर।
**मनोदंड** पुं० (सं) मन का निग्रह।
**मनोदाही** वि० (हि) मन को जलाने वाला। हृदय-ग्राही।
**मनोदौर्बल्य** पुं०(सं) मन की दुर्बलता। (इनफर्मिटी-आफ माइन्ड)।
**मनोनयन** पुं० (स) किसी को मनोनीत करना। (नॉमिनेट)।
**मनोनिग्रह** पुं०(सं) मन को रोकना या वश में रखना।
**मनोनियोग** पुं० (सं) किसी कार्य में खूब मन लगाना।
**मनोनिवेश** पुं० (स) दे० 'मनोनियोग'।
**मनोनीत** वि० (स) १-जो मन के अनुकूल हो। २-जो चुना गया हो। (डेजिगनेटेड)।
**मनोभंग** पुं० (सं) उदासी। नैराश्य।
**मनोभव** पुं० (सं) कामदेव।
**मनोभाव** पुं० (सं) मन में उत्पन्न होने वाला भाव। विचार।
**मनोमय** वि० (सं) १-मानसिक। २-मन से युक्त। ३-मानस।
**मनोमयकोष** पुं० (सं) आत्मा के पंचकोषों में से तीसरा।
**मनोरंजक** वि० (सं) मन को बहलाने या प्रसन्न करने वाला।
**मनोरंजन** पुं० (सं) १-मनोविनोद। दिल-बहलाव। २-मन को प्रसन्न करने वाला कोई खेल-तमाशा। (संवि०)। (एन्टरटेनमेंट)।
**मनोरंजन-कर** पुं० (सं) प्रमोद-कर खेल-तमाशों के टिकटों पर लगने वाला राजकीय कर। (संवि०) (एन्टरटेनमेंट-टैक्स)।
**मनोरथ** पुं० (सं) इच्छा। अभिलाषा।
**मनोरमा** स्त्री० (सं) १-सुन्दर स्त्री। २-सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ३-एक गंधर्व की पत्नी का नाम।
**मनोरा** पुं० (हि) दीवार आदि पर पूजन आदि के

मनोरा पुं० (हि) दीवार आदि पर पूजन आदि के लिए बने गोबर के चित्र।
मनोराज्य पुं० (स) मानसिक कल्पना।
मनोराभूमक पुं० (हि) एक प्रकार का गीत।
मनोरोग-चिकित्सक पुं० (सं) मानसिक रोगों की चिकित्सा करने वाला। (साइकियेटिस्ट)।
मनोलीला स्त्री० (सं) कोई कल्पित बात या विचार जिसका कोई अस्तित्व न हो। (फेन्टम)।
मनोवांछा स्त्री० (सं) इच्छा। अभिलाषा।
मनोवांछित वि० (सं) इच्छित। मनचाहा।
मनोविकल वि० (सं) १-जिसका चित्त ठिकाने न हो २-जिसका मानसिक विकास ठीक तरह से न हो पाया हो। (संवि०)। (मेन्टल डेफिशेन्ट)।
मनोविकार पुं० (सं) मन में उठने वाले भाव-क्रोध, दया, प्रेम आदि।
मनोविज्ञान पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें चित्त की प्रवृत्तियों का तथा मन में उठने वाली भावनाओं आदि की मीमांसा हो। मानसशास्त्र। (साइकॉलोजी)।
मनोविश्लेषण पुं०(सं) मनुष्य के चित्त की प्रवृत्तियों तथा विचारों की विश्लेषण। (साइको-अनेलिसिस)
मनोवृत्ति स्त्री० (सं) मन की स्थिति। मन का विकार
मनोवेग पुं०(सं) मन के विकार। मनोविकार। (मूड, डिस्पोजीशन)।
मनोवैकल्य पुं० (सं) वह अवस्था जिसमें ठीक प्रकार से मानसिक विकास न होने के कारण बुद्धि पूरी तौर से परिपक्व नहीं होती (मेन्टल डेफीशेन्सी)।
मनोवैज्ञानिक वि० (सं) मनोविज्ञान सम्बन्धी। पुं० मनोविज्ञान का ज्ञाता। (साइकिस्ट)।
मनोव्याधि स्त्री० (स) मानस रोग।
मनोसर पुं० (हि) मनोविकार। मन की वृत्ति।
मनोहर वि० (सं) १-सुन्दर। मनोज्ञ। २-मन को हरने वाला। पुं० १-छप्पय छन्द का एक भेद। २-एक संकर राग का नाम। ३-स्वर्ण। सोना।
मनोहरता स्त्री० (सं) सुन्दरता।
मनोहरताई स्त्री० (हि) सुन्दरता
मनोहारी वि० (सं) सुन्दर। मनोहर।
मनौती स्त्री०(हि) १-असंतुष्ट को संतुष्ट करना। मन्नत।
मन्नत स्त्री० (हि) किसी काम की सिद्धि के लिए कोई पूजा आदि करना। मनौती।
मन्मथ पुं० (सं) १-कामदेव। २-कैथ।
मन्मथप्रिया स्त्री० (सं) रति।
मन्मथालय पु०(स) आम का पेड़। २-प्रेमी-प्रेमिकाओं के मिलने का स्थान।
मन्य वि० (सं) अपने आपको समझने वाला (समास में)।
मन्यु पुं० (सं) १-स्तोत्र। २-कर्म। ३-योग। ४-क्रोध ५-अहङ्कार। ६-अग्नि।
मन्युमान् वि० (सं) क्रोधी। अहंकारी।
मन्वंतर पुं० (सं) ब्रह्मा के एक दिन के चौदहवें भाग के बराबर इकहत्तर चतुर्युगियों का काल। २-दुर्भिक्ष। अकाल।
मफरूर वि० (अ) भागा हुआ। (अपराधी)।
मम सर्व० (सं) मेरा (मेरी)।
ममता स्त्री० (हि) १-अपना समझने का भाव। २-स्नेह। मोह। ३-लोभ।
ममत्व पुं०(सं) १-अपनापन। ममता। २-स्नेह। गर्व
ममरखी स्त्री० (हि) बधाई।
ममाखी स्त्री० (हि) शहद की मक्खी।
ममिया वि० (हि) जो सम्बन्ध में मामा के स्थान पर हो।
ममिया ससुर पुं०(हि) पत्नी या पति का मामा।
ममिया सास स्त्री०(हि) पति या पत्नी की मामी।
ममियौरा पुं० (हि) मामा का घर।
ममीरा पुं०(अ) एक हल्दी की जाति के पौधे की जड़ जो नेत्र रोगों की दवा है।
ममोला पुं० (हि) १-एक छोटा पक्षी जिसे खंजन कहते हैं। २-बहुत छोटा बच्चा।
मयंक पुं० (हि) चन्द्रमा।
मयंद पुं० (हि) १-सिंह। २-राम की सेना के एक वानर का नाम।
मय प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय जो प्रचुरता तथा तद्रूप विकार का बोधक होता है जैसे-मंगलमय। अव्य० (अ) में। स्त्री० (फा) शराब। मदिरा। पुं० (सं) १-एक महान शिल्पी दैत्य जिसने इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों का महल बनाया था (पुराण)। २-ऊँट। ३-खच्चर ४-घोड़ा। ५-मुख।
मयकदा पुं० (फा) मधुशाला। शराबखाना।
मयकश वि० (फा) शराब पीने वाला।
मयकशी स्त्री० (फा) शराब पीना।
मयखाना पुं०(फा) शराबखाना।
मयगज पु० (हि) मतवाला हाथी।
मयन पुं० (हि) कामदेव।
मयना स्त्री० (हि) मैना।
मयपरस्त वि० (फा) शराबी।
मयफरोश पुं० (फा) शराब बेचने वाला। (कलाल)।
मयमंत वि० (हि) मदमस्त।
मयमत्त वि० (हि) नशे में चूर।
मयस्सर वि० (अ) मिला हुआ। प्राप्त। सुलभ।
मया स्त्री० (हि) माया।
मयार वि० (हि) दयालु। कृपालु।
मयारी स्त्री० (देश) वह डंडा या धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है।
मयूख पुं०(सं) १-किरण। रश्मि। २-दीप्ति। प्रकाश

३-ज्वाला । ४-शोभा । ५-कील । ६-पार्वती ।
**मयूर** पुं० (सं) १-मोर । २-एक पर्वत (पुराण) ।
**मयूरनृत्य** पुं० (सं) एक प्रकार का मोर जैसा नृत्य ।
**मयूरपुच्छ** पुं० (स) मोर की पूँछ ।
**मयूरी** स्त्री० (सं) मोरनी ।
**मरंद** पुं० (सं) मकरंद ।
**मरक** पुं०(अ) १-मृत्यु । मरण । महामारी । स्त्री०(हि) १-संकेत । बढ़ावा ।
**मरकज** पुं० (अ) १-वृत्त का मध्य विंदु । २-प्रधान या मुख्य स्थान ।
**मरकजी** वि० (अ) प्रधान । केन्द्रीय ।
**मरकत** पुं० (सं) पन्ना ।
**मरकना** क्रि० (हि) किसी वस्तु का दब कर टूटना ।
**मरकहा** वि० (हि) (सींग से) मारने वाला । (पशु) ।
**मरकाना** क्रि० (हि) किसी वस्तु को दबा कर तोड़ना
**मरखन्ना** वि० (हि) सींग से मारने वाला (पशु) ।
**मरगजा** वि० (हि) मलादला । मसला हुआ ।
**मरघट** पुं० (हि) वह स्थान जहाँ मुरदे जलाये जाते हैं । श्मशान ।
**मरचा** पुं० (हि) मिरचा ।
**मरज** पुं० (हि) मर्ज । रोग ।
**मरजाद** स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा' ।
**मरजादा** स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा' ।
**मरजिया** वि० (हि) १-मरकर जीने वाला । २-मृतप्राय । ३-जो प्राण देने पर उतारू हो ।
**मरजी** स्त्री० (अ) १-स्वीकृति । २-इच्छा । ३-खुशी । प्रसन्नता ।
**मरजीवा** वि० (हि) दे० 'मरजिया' ।
**मरण** पुं० (सं) १-मृत्यु । २-मरने का भाव । ३-बछनाग ।
**मरणगति** स्त्री० (सं) आबादी के प्रति हजार लोगों के पीछे होने वाली मृत्युओं की संख्या । (डैथरेट) ।
**मरणधर्मा** वि० (सं) मरणशील ।
**मरणशील** वि० (सं) मरने वाला ।
**मरणशुल्क** पुं० (सं) किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी सारी सम्पत्ति पर लगने वाला राजकीय कर (डैथ ड्यूटी) ।
**मरणांतक** वि० (सं) जिसका अन्त केवल मृत्यु ही हो
**मरणाशौच** पुं० (सं) मृत्यु के कारण घर वालों को लगने वाला अशौच ।
**मरणीय** वि० (सं) मरने वाला ।
**मरणोन्मुख** वि० (सं) जो मृत्युशैय्या पर पड़ा हो ।
**मरतबा** पुं० (हि) १-पद । ओहदा । २-बार । दफा ।
**मरतबान** पुं० (हि) अमृतबान । अचार आदि डालने का बड़ा पात्र ।
**मरता** वि० (हि) मरता हुआ । मृतप्राय ।
**मरद** पुं० (हि) दे० 'मर्द' ।
**मरदई** स्त्री० (हि) १-पुरुषत्व । २-साहस । ३-वीरता
**मरदना** क्रि० (हि) १-मलना । मसलना । २-चूर्ण करना । ध्वंस करना । ३-गूँथना ।
**मरदनिया** पुं० (हि) बड़े लोगों के तेल मालिश करने वाला ।
**मरदानगी** स्त्री० (हि) दे० 'मर्दानगी' ।
**मरदाना** पुं० (हि) दे० 'मर्दाना' ।
**मरदूद** वि० (अ) १-तिरस्कृत । २-लुच्चा । नीच ।
**मरन** पुं० (हि) दे० 'मरण' ।
**मरना** क्रि०(हि) १-प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त होना । २-अत्यंत दुःख या कष्ट सहना । ३-सूखना । ४-मुर्झाना । ५-मृतक के समान होना । ६-पराजित होना । ७-पछताना । ८-रोना । ९-प्राप्त न होना । १०-आसक्त होना ।
**मरनि** स्त्री० (हि) दे० 'मरनी' ।
**मरनी** स्त्री० (हि) १-मृत्यु । मौत । २-कष्ट । ३-मृतक सम्बन्धी क्रिया कर्म ।
**मरभुखा** वि० (हि) १-भुक्खड़ । २-दरिद्र । कंगाल ।
**मरम** पुं० (हि) दे० 'मर्म' ।
**मरमर** पुं० (यू०) एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर-जैसे संगमरमर ।
**मरमराना** क्रि० (हि) १-मरमर शब्द करना । २-इस प्रकार दबना या दबाना कि मरमर का शब्द हो
**मरम्मत** स्त्री० (अ) १-किसी वस्तु के टूटे फूटे भाग को फिर से ठीक करना । सुधार । जीर्णोद्धार ।
**मरम्मती** वि० (अ) मरम्मत करने योग्य ।
**मरवाना** क्रि०(हि)१-वध कराना । २-दूसरे को मारने की प्रेरणा देना ।
**मरसा** पुं० (हि) एक प्रकार का साग ।
**मरसिया** पुं० (अ) १-किसी की मृत्यु पर बनाई गई शोक सूचक कविता । २-मरण-शोक । सियापा ।
**मरहट** पुं० (हि) दे० 'मरघट' ।
**मरहटा** पुं० (हि) दे० 'मराठा' ।
**मरहठा** पुं० (हि) दे० 'मराठा' ।
**मरहठी** स्त्री० (हि) मराठी भाषा । वि० महाराष्ट्र संबंधी
**मरहम** पुं० (अ) औषध का गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव पर लगाया जाता है । लेप ।
**मरहमपट्टी** स्त्री० (अ) १-घाव का इलाज करना । २-मरहम पट्टी बांधना ।
**मरहला** पुं०(अ) १-पड़ाव । ठिकाना । २-कठिन काम या प्रसंग । ३-झोंपड़ी । ४-दर्जा ।
**मरहून** वि० (अ) बंधक रक्खा हुआ ।
**मरहूना** वि० (अ) जो रहन किया गया हो । (सम्पत्ति आदि) ।
**मरहूम** वि० (अ) मृत । स्वर्गवासी ।
**मराठा** पुं०(हि) महाराष्ट्र प्रदेश का रहने वाला ।
**मराठी** स्त्री० (हि) महाराष्ट्र की भाषा । वि० महाराष्ट्र

संबंधी ।
**मरातिब** पुं० (अ) १-पद । ओहदा २-मकान का खंड । ३-पृष्ठ । तह ।
**मराना** क्रि० (हि) दे० 'मरवाना' ।
**मरायल** वि० (हि) १-जिसने कई बार मार खाई हो दुर्बल । २-सत्वहीन । ३-घाटा । टोटा ।
**मरार** पुं० (सं) खलिहान ।
**मराल** पुं०(सं)१-हंस । २-एक प्रकार की बत्तख । ३-बादल । ४-हाथी । ५-काजल । ६-घोड़ा ।
**मरिंद** पुं० (हि) दे०१-'मरंद' । २-दे० मलिंद ।
**मरियम** स्त्री० (अ) १-ईसा मसीह की माता का नाम २-कुमारी ।
**मरियल** वि० (हि) बहुत दुर्बल। दुबला और कमजोर
**मरी** स्त्री० (हि) १-महामारी । २-एक प्रकार का भूत ३-साबूदाने का पेड़ ।
**मरीचि** स्त्री० (सं) १-किरण । २-कांति । ज्योति । ३-मृगतृष्णा । पुं० कश्यप के पिता का नाम ।
**मरीचिका** स्त्री० (सं) १-मृगतृष्णा । २-किरण ।
**मरीचिजल** पुं० (सं) मृगतृष्णा ।
**मरीचिमाली** पुं० (सं) १-सूर्य । २-चन्द्रमा ।
**मरीची** पुं० (सं) १-सूर्य । २-चन्द्रमा । वि० जिसमें किरणें हों ।
**मरीज** पुं० (अ) रोगी । बीमार ।
**मरु** पुं० (सं) १-रेगिस्तान । मरुस्थल । २-वह पर्वत जिसमें जल का अभाव हो । ३-एक पौधा ।
**मरुआ** पुं० (हि) १-वनतुलसी जाति के एक पौधे का नाम । २-हिंडोले के ऊपर की लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है ।
**मरुत्** पुं० (सं) १-पवन । २-पवन देवता । ३-सोना। ४-प्राण । ५-सौंदर्य । ६-मरुआ ।
**मरुत्तनय** पुं० (सं) १-हनुमान् । २-इन्द्र ।
**मरुत्पट** पुं० (सं) बादबान ।
**मरुत्पति** पुं० (सं) इन्द्र ।
**मरुत्वान** पुं० (सं) १-इन्द्र । २-हनुमान ।
**मरुदेश** पुं० (सं) रेगिस्तान ।
**मरुद्वाह** पुं० (सं) १-ऊँट । २-आग । ३-धूँआ ।
**मरुद्वीप** पुं० (सं) मरुदेश में स्थित छोटा उपजाऊ स्थान । (ओएसिस) ।
**मरुभूमि** स्त्री०(सं) रेगिस्तान । बालू का निर्जल स्थान जहां कोई वनस्पति आदि न होती हो ।
**मरुरना** क्रि० (हि) ऐंठना । बल खाना ।
**मरुवक** पुं० (सं) १-व्याघ्र । बाघ । २-राहु । ३-मरुआ ।
**मरुस्थल** पुं० (सं) रेगिस्तान । मरुभूमि ।
**मरू** वि० (हि) कठिन । दुरूह ।
**मरूरा** पुं० (हि) मरोड़ । ऐंठन । बल ।
**मरोड़** पुं० (हि) १-ऐंठन । बल । २-व्यथा । क्षोभ । ३-घमंड । ४-क्रोध ।
**मरोड़ना** क्रि० (हि) १-ऐंठना । बल डालना । २-मार डालना । ३-पीड़ा देना । ४-मसलना ।
**मरोर** स्त्री० (हि) १-ऐंठन । २-बेचैनी । ३-क्रोध । ४-अफसोस ।
**मर्कट** पुं० (सं) १-बानर । बन्दर । २-मकड़ा । ३-एक प्रकार का विष ।
**मर्कटी** स्त्री०(सं) १-बानरी । २-मकड़ी । ३-अजमोदा
**मर्ज** पुं० (अ) १-रोग । बीमार । व्याधि । २-आदत । लत ।
**मर्जी** स्त्री० (अ) दे० 'मरजी' ।
**मर्तबा** पुं० (अ) १-पदवी । पद । २-दफा । बार ।
**मर्तबान** पुं० (हि) दे० 'मरतबान' ।
**मर्त्य** पुं० (सं) १-शरीर । २-भूलोक । ३-मनुष्य । वि० नश्वर ।
**मर्त्यधर्मा** वि० (सं) मरणशील ।
**मर्त्यलोक** पुं० (सं) मनुष्य लोक । भूलोक ।
**मर्द** पुं० (सं) मर्दन । (फा) १-मनुष्य । २-पुरुष । नर । ३-पुरुषार्थी व्यक्ति । ४-वीर । ५-पति ।
**मर्दआदमी** पुं० (फा) १-वीर । २-भला आदमी ।
**मर्दक** पुं० (सं) मर्दन करने वाला ।
**मर्दन** पुं० (सं) १-कुचलना । मसलना । २-रौंदना । ३-नाश करना । ४-शरीर में मालिश करना ।
**मर्दना** क्रि० (हि) १-मर्दन करना । २-मसलना । ३-मार डालना । ४-नष्ट करना ।
**मर्दल** पुं० (सं) एक प्रकार का मृदंग ।
**मर्दानगी** स्त्री० (फा) १-पुरुषत्व । २-वीरता ।
**मर्दाना** वि० (फा) १-पुरुष-सम्बन्धी । २-पौरुष्योचित ३-वीर । साहसी । ४-पुरुषों का-सा ।
**मर्दित** वि० (सं) १-मला या मसला हुआ । २-नष्ट किया हुआ । ३-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।
**मर्दी** स्त्री० (फा) मरदानगी । वीरता ।
**मर्दुआ** पुं० (हि) १-तुच्छ पुरुष । २-पति । ३-कोई दूसरा आदमी ।
**मर्दुम** पुं० (फा) १-मनुष्य । २-आंख की पुतली । ३-जनसाधारण ।
**मर्दुमखोर** पुं० (फा) नरभक्षी ।
**मर्दुमशिनास** वि० (फा) आदमी को पहचानने वाला
**मर्दुमशुमारी** स्त्री० (फा) देश के रहने वाले मनुष्यों की गणना । जनसंख्या ।
**मर्दुमी** स्त्री० (फा) १-पौरुष । मर्दानगी । २-पुंसत्व ।
**मर्दूद** वि० (हि) दे० 'मरदूद' ।
**मर्म** पुं० (सं) १-स्वरूप । २-रहस्य । भेद । ३-संधि स्थान । ४-प्राणियों का वह स्थान जहां चोट लगने से अधिक वेदना होती है ।
**मर्मकील** पुं० (सं) पति ।
**मर्मग** वि० (सं) मर्मज्ञ ।

**मर्मघाती** वि० (सं) बहुत पीड़ा पहुंचाने वाला।
**मर्मघ्न** वि० (सं) मर्मघातक।
**मर्मच्छिद** वि० (सं) मर्म भेदने वाला।
**मर्मच्छेदक** वि० (सं) मर्मभेदक।
**मर्मज्ञ** वि० (सं) १-किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ। २-भेद जानने वाला।
**मर्मपारग** वि० (सं) भली भांति अभिज्ञ।
**मर्मपीड़ा** स्त्री० (सं) मन को पहुँचने वाला क्लेश या दुःख।
**मर्मप्रहार** पुं० (सं) वह आघात जो मर्म स्थान पर हो
**मर्मभेद** पुं० (सं) १-किसी भेद या रहस्य का खुलना २-हृदय का भेदन।
**मर्मभेदन** पुं० (सं) मर्मभेदक अस्त्र। तीर। बाण।
**मर्मभेदी** वि०(हि) हृदय में चुभने वाला। हार्दिक कष्ट पहुँचाने वाला। पुं० (सं) बाण।
**मर्मर** पुं० (स) १-पत्तों की खड़कन। २-कलफदार कपड़े की खरभर।
**मर्मरध्वनि** स्त्री० (सं) खड़खड़ाहट।
**मर्मरित** वि० (सं) जिसमें मर्मर शब्द हो।
**मर्मवचन** पुं० (सं) दिल में चुभने वाली बात या वचन।
**मर्मवाक्य** पुं० (सं) रहस्य की बात। गूढ़बात।
**मर्मविद्** वि० (सं) मर्मज्ञ।
**मर्मवेधी** वि० (सं) मर्मज्ञ।
**मर्मस्थल** पुं० (सं) १-शरीर के वह कोमल अंग जहां चोट लगने से मृत्यु की संभावना होती है। २-वह स्थल जिस पर आक्षेप या आघात करने पर मानसिक क्लेश हो।
**मर्मस्थान** पुं० (सं) मर्मस्थल।
**मर्मस्पर्शी** वि० (सं) मर्म को स्पर्श करने या प्रभाव डालने वाला।
**मर्मस्पृक्** वि० (सं) मर्मस्पर्शी।
**मर्मांतक** वि० (सं) मन में चुभने वाला। मर्मभेदी।
**मर्माघात** पु० (सं) हृदय पर गहरी चोट लगाना।
**मर्माहत** वि० (सं) जिसके दिल पर गहरी चोट पहुँची हो।
**मर्मी** वि० (सं) रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ।
**मर्मोद्घाटन** पुं० (सं) भेद का खुल जाना।
**मर्याद** स्त्री० (हि) दे० 'मर्यादा'।
**मर्यादा** स्त्री० (सं) १-सीमा। हद। २-तट। किनारा ३-प्रतिज्ञा। करार। ४-सदाचार। ५-नियम। ६-मान। ७-गौरव। धर्म। प्रतिष्ठा।
**मर्षण** पुं० (सं) १-क्षमा। माफी। २-रगड़। घर्षण
**मर्षणीय** वि० (सं) क्षम्य। क्षमा करने योग्य।
**मर्षित** वि० (सं) क्षमा किया हुआ।
**मलंग** पुं० (फा) १-एक प्रकार के मुसलमान साधु। २-सफेद बगला।
**मल** पुं० (सं) १-मैल। गंदगी। २-विष्ठा। ३-दोष। विकार। पाप। ४-शरीर से निकलने वाला विकार या मैल।
**मलखंभ** पुं० (हि) १-कसरत करने का खंभा। २-खंभे पर की जाने वाली कसरत।
**मलखभ** पुं०(हि) दे० 'मलखंभ'।
**मलखान** पुं० (हि) आल्हा उदल का चचेरा भाई।
**मलगजा** वि०(हि) मला दला हुआ। पुं० बेसन कर घी या तेल में तले बैंगन के टुकड़े।
**मलता** वि० (हि) मला या घिसा हुआ (सिक्का)।
**मलद्वार** पुं० (स) गुदा।
**मलधात्री** स्त्री० (सं) बच्चे के गन्दे कपड़े तथा मल-मूत्र आदि साफ करने वाली धाय।
**मलना** क्रि० (हि) १-मसलना। घिसना। २-मालिश करना। ३-मरोड़ना। हाथ से बार-बार रगड़ना या दबाना।
**मलपृष्ठ** पुं० (सं) पुस्तक का बाहरी पहला पृष्ठ।
**मलवा** पु० (हि) १-टूटा करकट। २-टूटे या गिरे हुए मकान की ईंटें पत्थर आदि या उनका ढेर।
**मलभुक** पुं० (सं) कौआ।
**मलमल** पुं० (हि) बारीक सूत का बना बारीक कपड़ा।
**मलमलाना** क्रि० (हि) १-बार-बार स्पर्श करना। २-बार-बार आलिंगन करना। ३-पछताना।
**मलय** पुं० (स) १-त्रावंकोर के पूर्व और मैसूर के दक्षिण का प्रदेश। २-दक्षिणी भारत का एक पर्वत जहां चंदन के पेड़ बहुत होते है। ३-सफेद चंदन
**मलयगिरि** पुं० (स) १-मलय पर्वत। २-सफेद चंदन
**मलयज** पुं० (सं) १-राहु। २-चंदन।
**मलयद्रुम** पुं० (सं) १-मदन (वृक्ष)। २-चंदन।
**मलयसमीर** स्त्री० (सं) दक्षिणी वायु। मलय पर्वत की ओर से आने वाली वायु।
**मलयाचल** पुं० (सं) मलय पर्वत।
**मलयानिल** पु० (सं) १-दक्षिणी वायु। २-सुगन्धित वायु। ३-वसंत काल की वायु।
**मलयालम** पुं० (सं) १-दक्षिण के एक पहाड़ी प्रदेश का नाम जो पश्चिमी घाट के किनारे है। २-वहां की भाषा।
**मलयुग** पुं० (सं) कलियुग।
**मलयोद्भव** पुं० (सं) चन्दन।
**मलरोधक** वि० (सं) जो मल को रोके। कब्जियत करने वाला।
**मलवाना** क्रि० (सं) मलने का काम दूसरे से कराना
**मलवाहनपद्धति** स्त्री० (स) नगर का कूड़ा करकट इकट्ठा करके नगर के बाहर हटवा देने की पद्धति। (कन्सर्वेन्सी सिस्टम)।
**मलविसर्जन** पुं०(सं) पाखाना करना। मल त्यागना।
**मलशुद्धि** स्त्री० (सं) पेट साफ करना।

मलसा पुं० (हिं) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।
मलहम पुं० (हिं) दे० 'मरहम'।
मलाई स्त्री० (हिं) १-दूध गर्म करने पर उस पर जमने वाली तह। २-सार। तत्व। ३-मलने की क्रिया या मजदूरी।
मलाट पुं० (हिं) एक प्रकार का मोटा घटिया कागज
मलान वि० (हिं) दे० 'म्लान'।
मलानि स्त्री० (हिं) दे० 'म्लानि'।
मलाबार पुं० (हिं) भारत देश के दक्षिण प्रांत का एक प्रदेश।
मलाबार-हिल पुं० (हिं, अ) बंबई की एक पहाड़ी जहां धनिकों के निवास स्थान हैं।
मलामत स्त्री० (अ) १-लानत। फटकार। २-मैल। गंदगी।
मलाया पुं० (हिं) बर्मा के दक्षिण में स्थित एक प्रायद्वीप।
मलार पुं० (हिं) वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग (सङ्गीत)।
मलाल पुं० (अ) १-दुख। रंज। २-उदासीनता। उदासी। ३-विषाद।
मलावरोध पुं० (सं) कब्ज। (कॉन्स्टीपेशन)।
मलाशय पुं० (सं) पेट की बड़ी आंतों का निचला भाग जहां मल रहता है।
मलाह पुं० (हिं) दे० 'मल्लाह'।
मलिद पुं० (हिं) भौंरा।
मलिक पुं० (अ) १-राजा। २-अधीश्वर। सरदार। ३-एक उपाधि।
मलिका स्त्री० (अ) महारानी।
मलिच्छ पुं० (हिं) दे० 'म्लेच्छ'।
मलित पुं० (देश) सुनारों की नक्काशी के काम के गहने साफ करने की कूंची।
मलिन वि० (सं) १-मैला। गंदला। २-दूषित। ३-बदरङ्ग। ४-फीका। ५-म्लान।
मलिनमुख वि० (सं) उदास।
मलिनाई स्त्री० (हिं) मैलापन। मलिनता।
मलिनाना क्रि० (हिं) मैला होना।
मलिनावास पुं० (सं) दरिद्रों या मजदूरों की गन्दी बस्तियां। (स्लम्ज)।
मलियामेट वि० (हिं) तहसनहस। सर्वनाश। बरबादी
मलीदा पुं०(हिं)१-चूरमा। २-एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
मलीन वि० (हिं) १-मैला। मलिन। २-उदास।
मलीनता स्त्री० (हिं) मलिनता।
मलूक पुं०(हिं) १-एक प्रकार का पक्षी। २-एक कीड़ा। वि० सुन्दर।
मलेच्छ पुं० (हिं) दे० 'म्लेच्छ'।
मलेरिया पुं० (अं) मच्छरों के काटने से आने वाला ज्वर। जूड़ी।
मलैया पुं० (देश) ओस में रखे दूध को मथ कर बनाया हुआ फेन।
मलोत्सर्ग पुं० (सं) मलत्याग।
मलोला पुं० (हिं) मलाल।
मलोलना क्रि० (हिं) १-पछताना। २-दुःखी होना।
मलोल पुं० (हिं) १-मानसिक व्यथा। २-दुःख। रंज। ३-अरमान। इच्छा।
मल्ल पुं० (सं) १-एक प्राचीन जाति। पहलवान। पट्ठा। ३-दीप। ४-कपोल। ५-पात्र।
मल्लक्रीड़ा पुं० (सं) पहलवानों का दंगल।
मल्लभूमि स्त्री० (सं) अखाड़ा।
मल्लयुद्ध पुं० (सं) कुश्ती।
मल्लविद्या पुं० (सं) कुश्ती।
मल्लशाला स्त्री० (सं) अखाड़ा।
मल्लर पुं० (सं) मलार नाम का एक राग।
मल्लाह पुं० (अ) मांझी। केवट।
मल्लाही वि० (अ) मल्लाह सम्बन्धी। स्त्री० मल्लाह का काम।
मल्लिका स्त्री० (सं) १-एक प्रकार का बेला जिसे मोतिया कहते हैं। २-एक बर्तन।
मल्हराना क्रि०(हिं) १-स्नेह से शरीर पर हाथ फेरना। २-चुमकारना।
मल्हाना क्रि० (हिं) दे० 'मल्हराना'।
मवक्किल पुं० (हिं) दे० 'मुवक्किल'।
मवाद पुं०(अ)१-सामग्री। मसाला। २-पीब। गंदगी
मवास पुं० (हिं) १-दुर्ग। गढ़। २-शरण या रक्षा का स्थान।
मवासी स्त्री० (हिं) छोटा गढ़। गढ़ी। पुं० १-गढ़-पति। २-प्रधान। मुखिया।
मवेशी पुं०(फा) चौपाया। ढोर। पशु।
मवेशीखाना पुं० (फा) वह बाड़ा जिसमें पशु रखे जाते हैं। पशुशाला।
मशक स्त्री० (फा) चमड़े का वह थैला जिसमें भिश्ती एक स्थान से दूसरे स्थान पानी ले जाता है। पुं० (सं) १-मच्छर। डांस। २-एक चर्म रोग।
मशकहरी स्त्री० (सं) मसहरी।
मशक्कत स्त्री० (अ) १-श्रम। परिश्रम। २-वह मेहनत जो कैदियों से जेल में कराई जाती है।
मशक्कती वि० (अ) मेहनती। मशक्कत करने वाला।
मशगूल वि० (अ) कार्य में लगा हुआ। लीन। प्रवृत्त
मशरिक पुं० (अ) पश्चिमी।
मशरू पुं० (अ) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
मशवरा पुं०(अ) १-सलाह। परामर्श। २-साजिश।
मशविरा पुं० (अ) दे० 'मशवरा'।
मशहूर वि० (अ) प्रख्यात। प्रसिद्ध।
मशाल स्त्री०(अ) डंडे में चीथड़ा लपेट कर बनाई हुई

मोटी बत्ती जिसे हाथ में लेकर चलते हैं।
**मशालची** पुं० (अ) मशाल लेकर चलने वाला।
**मशीन** स्त्री० (अ) यन्त्र। कल।
**मशीनगन** स्त्री० (अ) वह स्वचालित बन्दूक जिसमें से लगातार सैकड़ों गोलियां छूटती हैं।
**मशीनमैन** पुं० (अ) १-वह कर्मचारी जो मशीन चलाता है। २-छापेखाने का मशीन चलाने वाला कर्मचारी।
**मश्क** पुं० (अ) अभ्यास।
**मष** पुं० (हि) मख। यज्ञ।
**मषि** स्त्री० (सं) १-काजल। २-सुरमा। ३-स्याही।
**मष्ट** वि० (हि) १-जो भूल गया हो। २-मौन। चुप।
**मस** स्त्री० (हि) १-स्याही। रोशनाई। २-मूँछ निकलने से पहले की रोमावली। पुं०(हि) दे० 'मशक'।
**मसकत** स्त्री० (हि) दे० 'मशक्कत'। पुं० (अ) अरब-देश का अनार।
**मसकीन** वि० (हि) दे० 'मिस्कीन'।
**मसखरा** वि० (अ) १-हँसोड़। परिहास करने वाला। २-विदूषक।
**मसखरापन** पुं० (अ) हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी।
**मसखरी** स्त्री० (अ) हँसी। मजाक।
**मसखवा** पुं० (हि) मांसाहारी। मांस खाने वाला।
**मसजिद** स्त्री० (अ) वह स्थान या भवन जहां पर मुसलमान लोग सामूहिक रूप में नमाज पढ़ते हैं।
**मसनद** स्त्री० (अ) १-गाव-तकिया। बड़ा तकिया। २-वह स्थान जहां तकिया लगाया जाय। धनिकों के बैठने की गद्दी।
**मसनदनशीं** वि० (अ) मसनद पर बैठने वाला।
**मसनवी** स्त्री० (अ) उर्दू-फारसी का प्रबन्ध काव्य जिसके हर शेर का काफिया जुदा होता है शेर के दोनों मिसरों का काफिया एक।
**मसमुंद** पुं० (हि) धक्कम धक्का। कशमकश।
**मसयारा** पुं० (हि) १-मशाल। २-मशालची।
**मसरफ** पुं० (अ) १-उपयोग। काम में आना।
**मसल** स्त्री० (अ) कहावत। लोकोक्ति।
**मसलति** स्त्री० (हि) दे० 'मसलहत'।
**मसलना** क्रि० (हि) १-उंगलियों में दबाकर रगड़ना। २-जोर से दबाना। ३-गूंधना।
**मसलहत** स्त्री० (अ) १-रहस्य। २-गुप्त तथा गूढ़ हितकर सलाह।
**मसलहत-अंदेश** वि० (अ) हित या भलाई का विचार करने वाला।
**मसलहतन्** अव्य० (अ) हित या लाभ की दृष्टि से।
**मसला** पुं० (अ) १-कहावत। २-समस्या। विचारणीय विषय।
**मसवरा** पुं० (हि) प्रसव के उपरान्त एक मास बाद होने वाला स्नान।
**मसवासी** पुं० (हि) १-वह साधु या पुरुष जो एक माह से अधिक किसी स्थान पर न रहे। २-वह स्त्री जो एक पुरुष के पास एक माह से अधिक न रहे। वेश्या।
**मसविदा** पुं० (अ) दे० 'मसौदा'।
**मसहरी** स्त्री० (हि) १-मच्छर आदि से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लगाया गया जालीदार कपड़ा। २-वह पलंग जिसमें ऐसा कपड़ा लगा हो।
**मसहार** पुं०(हि) मांसाहारी।
**मसा** पुं० (हि) १-मच्छर। २-मस्सा।
**मसान** पुं० (हि) १-मुर्दे फूंकने का स्थान। मरघट। २-बच्चों का एक रोग। ३-रणभूमि।
**मसानिया** पुं० (हि) १-श्मशान पर रहने वाला। डोम। २-ओझा।
**मसानी** स्त्री० (हि) १-मसान में रहने वाली डंकिनी, पिशाचिनी आदि।
**मसालहत** स्त्री० (अ) १-समझौता। २-मेलमिलाप।
**मसाला** पुं० (हि) १-साधारण सामग्री। २-वे पदार्थ जिनकी सहायता से कोई वस्तु तैयार होती है। ३-औषधियों आदि का कोई अंश। ४-धनिया, मिर्च आदि जो साग में पड़ते हैं। ५-साधन।
**मसालेदार** वि० (हि) जिसमें मसाला मिला हुआ हो। चटपटा।
**मसाहत** स्त्री० (अ) नापना। पैमाइश।
**मसि** स्त्री० (सं) १-लिखने की स्याही। २-काजल। कालिख।
**मसिजीवी** पुं० (सं) लेखक।
**मसिधान** पुं० (सं) दवात।
**मसिधानी** स्त्री० (सं) दवात।
**मसिपत्र** पुं० (सं) वह कागज जिस पर स्याही चढ़ी होती है जिसे दो कागजों के बीच में रखकर लिखने से नीचे वाले कागज पर वही लिखावट उतर आती है। (कार्बनपेपर)।
**मसिपात्र** पुं० (सं) दवात।
**मसियार** पुं० (हि) मशाल।
**मसियारा** पुं० (हि) मशालची।
**मसिबिंदु** पुं० (सं) नजर से बचाने के लिये बालकों के लगाने वाली काली बिंदी। डिठौना।
**मसी** स्त्री० (सं) मसि। स्याही।
**मसीत** पुं० (हि) मसजिद।
**मसीद** पुं० (हि) मसजिद।
**मसीह** पुं० (अ) ईसाइयों का धर्म गुरु महात्मा ईसा।
**मसीहा** पुं० (अ) मुर्दों को जिला देने वाला।
**मसीही** वि० (हि) ईसामसीह सम्बन्धी। पुं० (हि) ईसाई।
**मसू** स्त्री० (हि) कठिनता। कठिनाई।
**मसूड़ा** पुं० (हि) मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें

दांत उगे होते हैं।
**मसूर** पुं० (हि) एक प्रकार का द्विदल अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
**मसूरिका** स्त्री० (सं) १-शीतला। माता। चेचक। २-छोटी माता।
**मसूरी** स्त्री० (सं) दे० 'मसूरिका'।
**मसूसना** क्रि० (हि) दे० 'मसोसना'।
**मसृण** वि० (सं) चिकना और 'मुलायम'।
**मसेवरा** पुं० (हि) मांस की बनी हुई भोजन-सामग्री
**मसोसना** क्रि० (हि) १-मनोवेग को रोकना। २-मन ही मन में कुढ़ना। मरोड़ना। ४-निचोड़ना।
**मसोसा** पुं० (हि) १-कुढ़ने का भाव। २-मन की पीड़ा। ३-पश्चाताप।
**मसौदा** पुं०(अ) १-लेख का वह पूर्वरूप जिसमें काट-छांट न की गई हो। प्रालेख। २-युक्ति। मनसूबा।
**मसौदानवीस** पुं० (अ) मसौदा बनाने वाला।
**मसौदेबाज़** वि० (अ) १-युक्ति या उपाय सोचने वाला। २-धूर्त। चालाक।
**मस्करी** पुं० (हि) १-संन्यासी। २-भिक्षु। ३-चन्द्रमा स्त्री० (हि) दे० 'मसखरी'।
**मस्खरा** वि० (हि) दे० 'मसखरा'।
**मस्जिद** स्त्री० (हि) दे० 'मसजिद'।
**मस्त** वि० (फा) १-मतवाला। मदोन्मत्त। २-यौवन-मद से भरा हुआ। ३-परम आनन्दित। ४-मदपूर्ण ५-अभिमानी।
**मस्तक** पुं० (सं) सिर।
**मस्तकशूल** पुं० (सं) सिर का दर्द।
**मस्ताना** वि० (हि) १-मस्तों का सा। २-मस्त। मत्त। क्रि० (हि) मस्त होना।
**मस्तिष्क** पुं० (सं) १-मस्तक के भीतर का भेजा। मगज। २-दिमाग।
**मस्ती** स्त्री० (सं) १-मस्त होने की क्रिया या भाव। २-भोग या प्रसंग की प्रबल कामना। ३-मद। ४-कुछ वृक्षों आदि में होने वाला स्राव।
**मस्तूल** पुं० (पुर्त) नाव या जहाज के बीच का वह मोटा लट्ठा जिस पर पाल बांधा जाता है। (मास्ट)
**मस्सा** पुं० (हि) १-शरीर पर उभरा हुआ छोटा दाना। २-बवासीर रोग में गुदा के भीतर उभरे हुए मांस के दाने।
**महँ** अव्य० (हि) में।
**महँगा** वि० (हि) १-जिसका मूल्य सामान्य से अधिक हो। २-बहुमूल्य।
**महँगाई** स्त्री० (हि) महँगी के कारण मिलने वाला भत्ता।
**महँगी** स्त्री०(हि) १-महँगे होने का भाव। महँगाई। २-दुर्भिक्ष। अकाल।
**महंत** पुं० (हि) १-किसी मठ या साधु मंडली का अधिष्ठाता। २-साधु-समाज का प्रधान।
**महंती** स्त्री० (हि) १-महंत का भाव। २-महंत का पद।
**मह** वि०(हि) १-महा। अति। बहुत। २-श्रेष्ठ। बड़ा। अव्य० (हि) में।
**महक** स्त्री० (हि) गंध। बास। बू।
**महकदार** वि० (हि) महकने वाला। गंध देने वाला।
**महकना** क्रि० (हि) १-गंध देना। बास आना।
**महकमा** पुं० (अ) किसी विशिष्ट कार्य के लिए बनाया हुआ विभाग। कचहरी।
**महकान** पुं० (हि) दे० 'महक'।
**महकीला** वि० (हि) दे० 'महकदार'।
**महज** वि० (अ) १-शुद्ध। खालिस। २-केवल। सिर्फ।
**महजर** पुं० (अ) उपस्थित या हाजिर होने का स्थान।
**महजरनामा** पुं० (अ) हिंसा विषयक साक्षीपत्र।
**महजिद** स्त्री० (हि) मसजिद।
**महज्जन** पुं० (सं) दे० 'महाजन'।
**महत** पुं० (हि) दे० 'महत्व'। स्त्री० (हि) प्रतिष्ठा।
**महता** पुं० (हि) १-गांव का मुखिया। २-मुन्शी। ३-सरदार।
**महताब** स्त्री० (फा) १-चांदनी। २-एक आतिशबाजी ३-संकेत के लिए लगी जहाजों पर नीली रोशनी। पुं० (फा) चन्द्रमा।
**महताबी** स्त्री० (फा) १-एक आतिशबाजी जिसके जलने पर केवल रोशनी होती है। २-बाग के बीच का गोल चबूतरा। ३-चकोतरा।
**महतारी** स्त्री० (हि) माता।
**महती** स्त्री० (सं) नारद की वीणा का नाम। वि० (सं) बहुत बड़ी महान्।
**महतु** पुं० (हि) महिमा। बड़ाई। महत्व।
**महतो** पुं० (हि) पण्डों की एक उपाधि। २-कहार। ३-सरदार। मुखिया।
**महत्** वि० (सं) १-बहुत बड़ा। विशाल। २-प्रधान। ३-श्रेष्ठ। ४-ऊँचा।
**महत्तम** वि० (सं) सब से बड़ा। श्रेष्ठ।
**महत्तमसमापवर्तक** पुं० (सं) वह संख्या जिसका भाग दो या दो से अधिक अन्य संख्याओं में पूरा हो सके।
**महत्तर** वि० (सं) दो में से बड़ा या श्रेष्ठ।
**महत्ता** स्त्री० (सं) १-महिमा। २-गुरुता। ३-उच्च पद। ४-बड़प्पन। ऊँचाई। (मेग्नीट्यूड)। (संधि)
**महत्त्व** पुं० (सं) १-बड़प्पन। बड़ाई। गुरुता। २-श्रेष्ठता। उत्तमता। (इम्पॉर्टेन्स)।
**महत्त्वपूर्ण** वि० (सं) महत्त्व वाला।
**महत्त्वयुक्त** वि० (सं) महत्त्वपूर्ण।
**महत्त्वशाली** वि० (सं) महत्त्ववाला।
**महत्त्वाकांक्षा** स्त्री० (सं) महत्त्व या बड़प्पन पाने की

अभिलाषा ।
**महराशय** वि० (सं) उच्च विचार वाला ।
**महदी** पुं० (अ) १-मुसलमानों के बारहवें इमाम । २-पथप्रदर्शक ।
**महदूद** वि० (अ) परिमित ।
**महन** पुं० (हि) दे० 'मथन' ।
**महना** क्रि० (हि) दे० 'मथना' ।
**महनिया** पुं० (हि) मथने वाला ।
**महनीय** वि० (स) १-माननीय । प्रतिष्ठापात्र । पूज्य २-महान् ।
**महनु** पुं० (हि) मथन करने वाला । विनाशक ।
**महफिल** स्त्री० (अ) १-सभा । जलसा । २-नाच गाने का जलसा ।
**महफूज** वि० (अ) सुरक्षित ।
**महबूब** पुं० (अ) १-प्रेमपात्र । २-मित्र ।
**महबूबा** स्त्री०(अ) प्रेमिका ।
**महमंत** वि० (हि) मदमत्त । मतवाला ।
**महमद** पुं० (हि) मुहम्मद ।
**महमदी** वि० (हि) मुसलमान ।
**महमह** अव्य० (हि) सुगन्धित रूप में ।
**महमहाना** क्रि० (हि) गंध या महक देना । गमकना ।
**महमा** स्त्री० (हि) दे० 'महिमा' ।
**महमेज** स्त्री० (फा) जूते के पीछे बांधने की लोहे की नाल जिससे घोड़े के एंड़ लगाते हैं ।
**महर** पुं० (हि) १-बड़े आदमियों के लिए व्रज में व्यवहृत एक आदरसूचक शब्द । २-एक पक्षी । (अ) वह धन या संपत्ति जो मुसलमानों में विवाह के समय वर कन्या को देने का वचन देता है । वि० सुगंधित ।
**महरम** पुं० (अ) १-भेद या रहस्य जानने वाला । २-वह निकट सम्बन्धी जिसके साथ विवाह जायज न हो (मुसलमानों में) । स्त्री० १-अंगिया । २-अंगिया की कटोरी ।
**महरा** पुं० (हि) १-कहार । २-सरदार । वि० श्रेष्ठ । बड़ा ।
**महराई** स्त्री० (हि) प्रधानता । श्रेष्ठता ।
**महराज** पुं० (हि) दे० 'महाराज' ।
**महराजा** पुं० (हि) दे० 'महाराजा' ।
**महराना** पुं० (हि) १-वह स्थान, महल्ला या गांव जहां महरे रहते है । २-दे० 'महाराणा' ।
**महराब** पुं० (हि) दे० 'मेहराब' ।
**महरि** स्त्री० (हि) १-व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द । २-घरवाली । ३-एक पक्षी ।
**महरी** स्त्री० (हि) दे० 'महरि' ।
**महरूम** वि० (अ) जिसे न मिले । वंचित ।
**महरेटा** पुं० (हि) १-महर का बेटा । २-श्रीकृष्ण ।
**महरेटी** स्त्री०(हि)१-वृषभानु महर की लड़की, राधिका
**महर्घता** स्त्री० (हि) महंगी ।
**महर्लोक** पुं०(सं) पुराणानुसार चौदह लोकों में से एक
**महर्षि** पुं० (सं) बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि ।
**महल** पुं० (अ) १-राजाओं या धनिकों के रहने का बहुत बड़ा मकान । प्रासाद । २-अन्तःपुर । ३-अवसर । ४-बड़ा कमरा । ५-पहाड़ी मधु मक्खी ।
**महलदार** पुं० (अ) महल का प्रबन्ध करने वाला ।
**महलसरा** स्त्री० (अ) अन्तःपुर । रनिवास ।
**महल्ला** पुं०(अ) शहर या नगर का वह भाग जिसमें बहुत मकान हों ।
**महल्लेदार** पुं० (अ) महल्ले का चौधरी ।
**महसिल** पुं० (हि) उगाहने वाला । महसूल आदि उगाहने वाला ।
**महसूल** पुं० (अ) १-कर । २-भाड़ा । भाटक । ३-जमीन का लगान । (टैक्स) ।
**महसूली** वि० (अ) १-महसूल के योग्य । २-बैरंग ।
**महसूस** वि०(अ)जिसका ज्ञान या अनुभव हो । अनुभूत
**महां** अव्य० (हि) में ।
**महांग** वि० (सं) भारी-भरकम । मोटा । स्थूल ।
**महांधकार** पुं० (सं) १-घोर अन्धकार । २-अज्ञान ।
**महा** पुं० (हि) मट्ठा । छाछ । वि० (सं) १-अत्यधिक सर्वश्रेष्ठ । २-बहुत बड़ा ।
**महाअन्वेषक** पुं० (सं) किसी न्यायालय की ओर से जांच करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी । (इन-स्पेक्टर-जनरल) ।
**महाअहि** पुं० (सं) शेषनाग ।
**महाई** स्त्री० (हि) मथने का काम या मजदूरी ।
**महाउत** पुं० (हि) दे० 'महावत' ।
**महाउर** पुं० (हि) दे० 'महावर' ।
**महाकवि** पुं० (सं) १-बहुत बड़ा कवि । २-महाकाव्य का रचने वाला ।
**महाकाय** वि० (सं) स्थूल शरीर वाला । मोटा । बड़े डीलडौल वाला । पुं० १-हाथी । २-शिव का एक अनुचर ।
**महाकार्तिकी** स्त्री० (सं) कार्तिक की पूर्णिमा ।
**महाकाल** पुं० (सं) १-महादेव । २-शिव के एक गण का नाम । ३-समय जो अनन्त और अखण्ड है ।
**महाकाली** स्त्री० (सं) १-दुर्गा की एक मूर्ति । २-महाकाल रूपी शिव की पत्नी ।
**महाकाव्य** पुं० (सं) १-वह बड़ा काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन हो । २-बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्य । (एपिक्स) ।
**महाकुमार** पुं० (स) युवराज ।
**महाकोशल** पुं० (सं)आधुनिक मध्य प्रदेश का वह भाग जहां हिन्दी भाषा बोली या लिखी जाती है ।
**महाक्रतु** पुं० (सं) बहुत बड़ा यज्ञ ।
**महाखर्व** पुं० (सं) सौ खरब की संख्या ।

महाचार्य पुं० (सं) प्रधान आचार्य।
महाजन पुं० (सं) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-धनी व्यक्ति। ३-भलामानुस। ४-ऋण देने वाला। ५-रुपये के लेन देन का व्यापार करने वाला। (क्रेडिटर)।
महाजनक पुं० (सं) दादा, दादी तथा नाना, नानी आदि। (ग्रान्ड पेरेन्ट्स)।
महाजनी स्त्री० (स) १-महाजनों के व्यापार की भाषा मुंडी। २-रुपये के लेन देन का व्यवसाय। (बैंकिंग)
महाज्ञानी पुं० (सं) १-बहुत बड़ा ज्ञानी या पंडित। २-शिव।
महाढ्य वि० (सं) बहुत धन वाला। धनिक।
महतत्त्व पुं० (हि) दे० 'महत्तत्त्व'।
महातपा पुं० (सं) विष्णु। वि० कठोर तप करने वाला।
महातम पुं० (हि) दे० 'महात्म्य'।
महातल पुं० (सं) चौदह तलों में से पृथ्वी के नीचे का पांचवा तल।
महातिक्त पुं० (सं) १-नीम। २-चिरायता।
महात्मा पुं० (सं) १-श्रेष्ठ तथा उच्च विचारों वाला सदाचारी पुरुष। महापुरुष। ३-परमात्मा। ४-सन्त ५-योगी।
महात्याग पुं० (सं) दान।
महात्यागी पुं० (सं) शिव।
महादंड पुं० (सं) १-भारी दंड। २-यम के दूत। ३-मृत्युदण्ड।
महादंत पुं० (सं) १-शिव। २-हाथी दांत।
महादंष्ट्र पुं० (सं) १-शिव। २-एक असुर का नाम।
महादशा स्त्री० (सं) भोग्यकाल।
महादान पुं० (सं) १-ग्रहण आदि के समय दिया जाने वाला दान। २-तुलादान। ३-स्वर्ग की प्राप्ति के लिए दिया जाने वाला दान।
महादारु पुं० (सं) देवदार।
महादेव पुं० (सं) शिव।
महादेवी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पटरानी।
महादेश पुं० (सं) भूमण्डल का वह बड़ा भाग जिसमें कई महाद्वीप या देश हों। जैसे एशिया। बरैआजम (कॉन्टिनेंट)।
महाद्वार पुं० (सं) मकान आदि का मुख्य द्वार।
महाद्वीप पुं० (सं) दे० 'महादेश'।
महाधिकारपत्र पुं० (सं) सन् १२१५ ई० में ब्रिटेन के सम्राट जॉन द्वारा लिखित वह पत्र जिसमें वैयक्तिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रता सर्व साधारण को प्रदान की गई थी। मेग्नाकार्टा।
महाधिवक्ता पुं० (सं) वह मुख्य अधिवक्ता जो सरकार की ओर से संघीय या उच्चतम न्यायालय आदि में पेश किये मामलों में सरकार के पक्ष की पैरवी करता है। (एडवोकेट जनरल)।
महानता स्त्री० (हि) बड़प्पन। महत्ता।
महानवमी स्त्री०(सं) आश्विनशुक्ला-नवमी।
महानाटक पुं०(सं) एक प्रकार का बड़ा नाटक जिसमें दस अंक होते हैं।
महानिंब पुं० (सं) बकायन।
महानिद्रा स्त्री० (सं) मृत्यु। मौत।
महानिर्वाण पुं० (स) परिनिर्वाण।
महानिशा स्त्री० (सं) १-आधीरात। २-कल्प के अन्त में होने वाली प्रलय की रात।
महानीच पुं० (सं) धोबी।
महानील पुं० (सं) १-एक प्रकार का नीलम। २-सबसे बड़ी संख्या। वि० गहरा नीला।
महानुभाव पुं० (सं) बड़ा भारी आदरणीय व्यक्ति।
महान् वि० (सं) बहुत बड़ा। विशाल।
महानृत्य पुं० (सं) शिव।
महानेत्र पुं० (सं) शिव।
महान्यायवादी पुं० (सं) (संवि०) वह सर्वाधिकार सम्पन्न बड़ा सरकारी वकील जो सरकारी मुकदमों की पैरवी के लिए नियुक्त होता है। (एटार्नी जनरल)।
महापंचविष पुं० (सं) पांच मुख्य विषों का समूह-शृङ्गी, कालकूट, मुस्तक, वत्सनाग और शंखकर्णी।
महापगा स्त्री० (सं) एक प्राचीन नदी का नाम।
महापत्तन पुं०(स) (संवि०) बड़ा बन्दरगाह। (मेजर पोर्ट)।
महापत्रपाल पुं० (सं) डाक-विभाग का राजधानी में रहने वाला सबसे बड़ा उच्चाधिकारी। (पोस्ट-मास्टर जनरल)।
महापथ पुं० (सं) १-राजपथ। २-परलोक का मार्ग ३-हिमालय के एक तीर्थ का नाम। ४-शिव।
महापद्म पुं० (सं) १-सौ पद्म की संख्या। २-एक नन्दवंशी राजा। ३-कुबेर की एक निधि। ४-सफेद कमल। ५-आठ दिग्गजों में से एक।
महापद्मनंद पुं० (सं) नंद वंश का अन्तिम राजा।
महापवित्र पुं० (सं) विष्णु।
महापातक पुं०(सं) मनु के मतानुसार पांच बड़े पाप ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार तथा पाप करने वालों का साथ।
महापातकी वि० (सं) महापातक करने वाला। बड़ा पापी।
महापात्र पुं० (सं) १-सूतक कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण। २-महामंत्री।
महापाप पुं० (सं) महापातक।
महापुराण पुं० (सं) दे० 'पुराण'।
महापुरुष पुं०(सं) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-नारायण। ३-दुष्ट (व्यंग्य)।
महाप्रज्वलन पुं० (सं) भयानक अग्निकाण्ड जिसमें

आग बहुत दूर तक फैलने की संभावना हो और बहुत ही नुकसान हो। (कोनफ्लेग्रेशन)।

**महाप्रभु** पुं० (सं) १-चैतन्य महाप्रभु। २-ईश्वर। ३-शिव। ४-विष्णु। ५- वल्लभाचार्य जी की एक एक आदरसूचक पदवी।

**महाप्रलय** पुं० (सं) वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का नाश होता है।

**महाप्रशासक** पुं० (सं) वह प्रशासक जो और प्रशासकों में पदादि में बड़ा होता है। (एडमिनिस्ट्रेटर-जनरल)।

**महाप्रसाद** पुं० (सं) १-जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात। २-देवताओं का प्रसाद या बलि। ३-मांस (व्यंग्य)।

**महाप्रस्थान** पुं०(सं) १-प्राण त्याग करने लिए हिमालय की ओर जाना। २-मरण।

**महाप्राज्ञ** वि०(सं) महापंडित।

**महाप्राण** पुं० (सं) वह वर्ण जिसके उच्चारण करने में प्राणवायु का विशेष प्रयोग करना पड़ता है। (व्याकरण)। (एस्पीरेटेड)।

**महाप्राभिकर्ता** पुं० (सं) महान्यायवादी। (एटार्नी-जनरल)।

**महाबन** पुं० (हि) वृन्दावन के अन्दर एक बन का नाम।

**महाबल** वि० (सं) अतिशय बलवान। पुं० १-वायु २-सीसा। ३-बुद्ध।

**महाबलाधिकृत** पुं०(सं) सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी (फील्ड मार्शल)।

**महाबाहु** वि० (सं) १-लम्बी भुजा वाला। २-बली। पुं० १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-विष्णु।

**महाब्राह्मण** पुं० (सं) १-मृतक-कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण।

**महाभाग** वि० (सं) भाग्यवान्।

**महाभागवत** पुं० (सं) १-एक पुराण का नाम। २-परम वैष्णव। ३-मनु, नारद आदि बारह महाभक्त

**महाभारत** पुं० (सं) एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जो व्यास ने रचा था और जिसमें कौरव पाण्डव के युद्ध आदि का वर्णन किया गया है।

**महाभाष्य** पुं०(सं) पाणिनि के व्याकरण पर पतंजली का लिखा हुआ प्रसिद्ध भाष्य।

**महाभिक्षु** पुं० (सं) भगवान बुद्ध।

**महाभियोग** पुं० (सं) वह बड़ा अभियोग जो उच्च अधिकारियों (राष्ट्रपति आदि) पर कोई हानिकारक कार्य करने पर लगाया जाता है। (इम्पीचमेंट)। (संवि०)।

**महाभीत** वि० (सं) बड़ा डरपोक या लजालु।

**महाभीम** पुं० (सं) १-राजा शांतनु। २-शिव के एक द्वारपाल का नाम। वि० बहुत भयंकर।

**महाभीरु** पुं० (सं) ग्वालिन नामक बरसाती कीड़ा। वि० (सं) बहुत डरने वाला।

**महाभैरव** पुं० (सं) शिव।

**महामंडल** पुं० (सं) प्रधान, बड़ा या केन्द्रिय संघ या मंडल।

**महामंत्र** पुं०(सं)१-उत्कृष्ट मंत्र। २-बड़ा प्रभावशाली मंत्र जिससे कार्यसिद्धि निश्चित हो।

**महामंत्री** पुं० (सं) प्रधान मंत्री। वह मन्त्री जो और सब मन्त्रियों से बड़ा होता है। (प्राइम मिनिस्टर)

**महामणि** पुं० (सं) मूल्यवान रत्न।

**महमति** वि०(सं) बड़ा बुद्धिमान। पुं० १-एक बोधिसत्व का नाम। २-गणेश।

**महामना** वि० (सं) ऊँचे विचार तथा उदार चित्त वाला।

**महामहिम** वि० (सं) जिसकी महिमा अत्यधिक हो (राजपालादि के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द)। (हिज एक्सिलेंसी)।

**महामहोपाध्याय** वि०(सं) १-गुरुओं का गुरु। २-एक उपाधि।

**महामांस** पुं० (सं) १-गाय का मांस। २-नरमांस।

**महामाई** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-काली।

**महामात्य** पुं० (सं) महामन्त्री। प्रधान सचिव।

**महामान्य** वि०(सं) सर्वोत्कृष्ट माननीय। स्वतंत्र राष्ट्रों के नरेशों या सम्राट के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द (हिज मैजस्टी)।

**महामाया** स्त्री० (सं) १-प्रकृति। २-गंगा। ३-दुर्गा ४-गौतम बुद्ध की माता का नाम।

**महामारी** स्त्री० (सं) १-वह संक्रामक रोग जिसके कारण एक साथ बहुत सारे लोग मर जाते हैं। २-महाकाली।

**महामृग** पुं० (सं) १-हाथी। २-कोई बड़ा पशु।

**महामृत्युंजय** पुं० (सं) शिव का एक मंत्र जिससे अकाल मृत्यु नहीं होती।

**महाय**वि० (हि) महान्। बहुत। अधिक।

**महायज्ञ** पुं० (सं) हिंदूधर्मशास्त्रानुसार प्रतिदिन किये जाने वाले धार्मिक कर्म।

**महायान** पुं० (सं) १-बौद्धों के तीन प्रधान संप्रदायों में से एक। २-एक विद्याधर का नाम।

**महायुद्धपोत** पुं०(सं) बड़ा लड़ाकू पोत। जंगी जहाज (कैपिटलशिप)।

**महायोगी** पुं०(सं) १-शिवजी। २-विष्णु। ३-मुर्गा।

**महारंभ** वि० (सं) बड़े कार्य आरंभ करने वाला।

**महारण्य** पुं० (सं) बीहड़ जंगल। बड़ा जंगल।

**महारत्न** पुं० (सं) हीरा, पन्ना आदि नौ रत्नों में से एक।

**महारथ** पुं० (सं) बहुत बड़ा योद्धा जो हजारों से अकेला लड़ सके।

**महारथी** पुं० (सं) दे० 'महारथ'।
**महारस** पुं० (सं) १-खजूर। २-गन्ना। ३-कसेरू। ४-पारा। ५-अभ्रक। ६-जामुन का पेड़। ७-कांतिसार लोहा। ८-सोनामक्खी।
**महाराज** पुं०(सं) १-बहुत बड़ा राजा। २-गुरु, ब्राह्मणादि के लिए आदरसूचक शब्द।
**महाराजाधिराज** पुं०(सं) अनेक राजाओं का प्रधान राजा।
**महाराणा** पुं० (सं) नेपाल और मारवाड़ के राजाओं की उपाधि।
**महारानी** स्त्री०(सं) किसी महाराज की रानी। पटरानी
**महारात्रि** स्त्री० (सं) १-आधी रात। २-महाप्रलय की रात। ३-दुर्गा।
**महारावण** पुं० (सं) पुराणों में वर्णित वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थी।
**महारावल** पुं० (अ) डूंगरपुर, जैसलमेर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।
**महाराष्ट्र** पुं० (सं) १-बहुत बड़ा राष्ट्र। २-दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। ३-इस प्रदेश का निवासी।
**महाराष्ट्री** स्त्री० (सं) महाराष्ट्र में बोली जाने वाली जाने वाली भाषा। मराठी।
**महाराष्ट्रिय** वि० (सं) महाराष्ट्र-संबंधी।
**महारुद्र** पुं० (सं) शिव।
**महारेता** पुं० (सं) शिव।
**महार्घ** पुं० (सं) एक दानव का नाम। वि० बहुत अधिक मूल्य का। महंगा।
**महार्घता** स्त्री० (सं) महंगाई। महँगी।
**महार्णव** पुं० (सं) १-महासागर। २-शिव।
**महार्बुद** पुं० (सं) सौ करोड़ की संख्या।
**महार्ह** वि० (सं) बहुमूल्य। पुं० सफेद चन्दन।
**महाल** पुं० (अ) १-मुहल्ला। टोली। २-चकबन्दी के हिसाब से कई गांवों का समूह।
**महालक्ष्मी** स्त्री० (सं) १-नारायण की एक शक्ति का नाम। २-लक्ष्मी की एक मूर्ति का नाम।
**महालय** पुं० (सं) १-पितृपक्ष जो कुँआर के कृष्णपक्ष में होता है। २-तीर्थ।
**महालया** स्त्री० (सं) पितृपक्ष की अंतिम तिथि।
**महालिंग** पुं० (सं) महादेव।
**महालेखापाल** पुं० (सं) सरकार के डाक, रेल आदि विभागों तथा सार्वजनिक विभागों के हिसाब किताब को देखने वाला प्रधान अधिकारी। (एकाउन्टेंट-जनरल)।
**महालेखापरिदाक** पुं०(सं) सरकारी विभागों के हिसाब किताब आदि का परीक्षण या जांच करने वाला उच्च अधिकारी। (ऑडीटर जनरल)।
**महालोह** पुं०(सं) चुम्बक।
**महावट** स्त्री० (हि) सरदी की पहली वर्षा।
**महावत** पुं० (हि) पीलवान।
**महावर** पुं० (हि) लाख का रङ्ग जिसे स्त्रियां पैरों पर लगाती है।
**महावरा** (सं) दूब (घास)। पुं०(हि) दे० 'मुहावरा'।
**महावराह** पुं० (सं) विष्णु के बारह अवतार।
**महावरी** स्त्री० (हि) लाख के रङ्ग की गोली।
**महावाक्य** पुं०(सं) १-उपनिषद् के 'अहं ब्रह्मास्मि' तथा 'अयमात्मा ब्रह्म' आदि वाक्य। २-दान देते समय पढ़ा जाने वाला संकल्प।
**महावाणिज्य दूत** पुं० (सं) वह वाणिज्य दूत जो किसी दूसरे देश में अपने देश के नियुक्त वाणिज्य दूतों को उस देश की राजधानी में अपना कार्यालय बना कर देखभाल करता है। (काउंसल जनरल)।
**महावात** पुं० (सं) जोर की हवा। आंधी। तूफान।
**महावादी** वि० (सं) जो शास्त्रार्थ करने में प्रबल हो।
**महावायु** स्त्री० (सं) दे० 'महावात'।
**महावारुणी** स्त्री० (सं) गंगा स्नान का एक योग।
**महाविद्या** स्त्री० (सं) १-दुर्गा देवी। तंत्रोक्त दस देवियां-काली, तारा आदि।
**महाविद्यालय** पुं०(सं) वह विद्यालय जहां उच्च शिक्षा दी जाती है। (कॉलेज)।
**महावीर** वि० (सं) बहुत बड़ा वीर। पुं० १-हनुमान २-गरुड़। ३-गौतम बुद्ध का एक नाम। ४-जैनियों के चौदहवें तीर्थंकर जो राजा सिद्धार्थ के पुत्र और त्रिशला रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।
**महावीर-चक्र** पुं० (सं) भारत में स्वतंत्रता के बाद रणभूमि में असाधारण वीरता दिखाने के लिए दिया जाने वाला पदक जो परमवीरचक्र से छोटा होता है।
**महाव्रण** पुं० (सं) दुष्टव्रण।
**महाव्रत** पुं० (सं) वह व्रत जो बारह वर्ष तक चलता रहे।
**महाशंख** पुं०(सं) १-सौ शंख की संख्या। २-एक बड़ा शंख। ३-कुबेर की एक निधि।
**महाशक्ति** पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-शिव। स्त्री० दुर्गा।
**महाशन** वि० (सं) पेटू। बहुत खाने वाला।
**महाशय** पुं० (सं) १-उच्च विचारों वाला व्यक्ति। महानुभावी। २-समुद्र।
**महाश्मशान** पुं० (सं) काशी नगरी का एक नाम।
**महाश्रमण** पुं० (सं) भगवान बुद्ध का एक नाम।
**महाष्टमी** स्त्री० (सं) आश्विनशुक्ला-अष्टमी।
**महासंस्कार** पुं० (सं) अंत्येष्टि।
**महासत्व** पुं० (सं) १-एक बोधिसत्व का नाम। २-कुबेर।
**महासभा** स्त्री०(सं) १-बहुत बड़ा संघ या सभा। २-

हिन्दू महासभा।
महासभाई वि० (हि) हिन्दू महासभा का सदस्य।
महासमुद्र पुं० (सं) बहुत बड़ा समुद्र। महासागर। (हाई सी)।
महासर्ग पुं०(सं) वह नयी सृष्टि जो महाप्रलय के बाद की जाती है।
महासंधिविग्रहिक पुं० (सं) परराष्ट्र मन्त्री। (फोरेन मिनिस्टर)।
महासागर पुं० (सं) बहुत बड़ा समुद्र।
महासरधि पुं० (स) अरुण।
महासाहस पुं० (सं) १-जबर्दस्ती छीन लेना। डकैती २-बलात्कार। ३-अति साहस।
महासाहसिक वि० (स) अति साहस करने वाला। पुं० १-चोर। डाकू। २-बलात्कार करने वाला।
महासिद्धि स्त्री० (स) एक प्रकार का जादू।
महासुख पुं० (स) १-सजावट। शृङ्गार। २-बुद्धदेव
महिं अव्य० (हि) में।
महि स्त्री० (स) १-पृथ्वी। २-महिमा। ३-विज्ञान-शक्ति।
महिख पुं० (हि) दे० 'महिष'।
महिदेव पुं० (स) ब्राह्मण।
महिमा स्त्री० (सं) १-गौरव। महत्व। २-प्रभाव। प्रताप। ३-आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
महिमामंडित वि० (सं) महिमायुक्त।
महिमामयी वि० (सं) महिमा वाली।
महिमावान वि० (सं) गौरव या महिमा वाला।
महियाँ अव्य० (हि) में।
महियाउर पुं० (हि) मट्ठे में पका हुआ चावल।
महिला स्त्री० (सं) १-भले घर की स्त्री। स्त्री। मदमत्त स्त्री।
महिलादीर्घा स्त्री०(सं) महिलाओं के बैठने की लम्बी तथा कम चौड़ी जगह। (लेडीज-गैलरी)।
महिष पुं०(सं) १-भैंसा। २-महिषासुर नामक एक दैत्य।
महिषाक्ष पुं० (सं) १-भैंसा। २-गुग्गुल।
महिषासुर पुं० (सं) रंभा नामक दैत्य का पुत्र जिसे दुर्गा देवी ने मारा था।
महिषासुरघातिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।
महिषी स्त्री० (सं) १-भैंस। २-रानी। ३-सैरिंध्री।
महिषेश पुं० (सं) १-महिषासुर। २-यमराज।
महिसुता स्त्री० (सं) सीताजी।
महिसुर पुं० (हि) ब्राह्मण।
मही स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-मिट्टी। ३-नदी। ४-सेना। ५-देश। स्थान। ६-अवकाश।
महीज पुं० (सं) १-अदरक। २-मंगलग्रह।
महीजा स्त्री० (सं) सीता।
महीधर पुं० (सं) १-विष्णु। २-पर्वत।
महीन वि० (हि) १-पतला। २-बारीक। ३-झीना।
महीना पुं०(हि) १-मास। २-तीस दिन। ३-मासिक वेतन। ४-स्त्रियों का मासिक धर्म।
महीप पुं० (सं) राजा।
महीपाल पुं० (सं) नृप। राजा।
महीपुत्र पुं० (सं) मंगलग्रह।
महीपुत्री स्त्री०(सं) सीता।
महीभुक् पुं० (सं) राजा।
महीभृत् पुं० (सं) राजा।
महीयान् वि० (सं) बहुत बड़ा। महान्।
महीर स्त्री० (हि) १-मट्ठे में पकाया हुआ चावल। २-तपाये हुए मक्खन की तलछट।
महीरुह पुं० (सं) वृक्ष। पेड़।
महीश पुं० (सं) राजा।
महीसुत पुं० (स) मंगलग्रह।
महीसुता स्त्री० (सं) सीता।
महीसुर पुं० (सं) ब्राह्मण।
महुँ अव्य० (सं) में।
महुअर पुं०(हि) १-तम्बू नामक एक प्रकार का बाजा २-दे० 'महुअरी'।
महुअरी स्त्री० (हि) आटे में महुआ मिला कर बनाई हुई रोटी।
महुआ पुं० (हि) एक प्रकार का वृक्ष जिसके फलों की शराब बनाई जाती है।
महुआरी स्त्री० (हि) महुए का जंगल या बाग।
महुकम वि० (अ) पक्का। दृढ़।
महुर्दा पुं० (हि) महोत्सव।
महुलिया पुं० (देश) महुआ। स्त्री० महुवे की शराब
महुवरि स्त्री० (हि) महुअर नामक बाजा।
महुवा पुं० (हि) दे० 'महुआ'।
महूक पुं० (हि) १-महुआ। २-मुलेठी।
महूरत पुं० (हि) दे० 'मुहूर्त'।
महूष पुं० (हि) १-शहद। २-महुआ।
महेंद्र पुं०(सं) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-एक पर्वत का नाम।
महेर स्त्री० (हि) दे० 'महेरा'। पुं० (देश) झगड़ा। बखेड़ा।
महेरा पुं० (हि) १-मट्ठा। २-मट्ठे में उबाल कर बनाया हुआ चावल।
महेरि स्त्री० (हि) दे० 'महेरा'।
महेरी स्त्री० (हि) उबाली हुई ज्वार। वि० अड़चन डालने वाला।
महेलिका स्त्री० (सं) १-महिला। रमणी। २-बड़ी इलायची।
महेश पुं० (सं) १-शिव। २-ईश्वर।
महेशानी स्त्री० (हि) पार्वती।
महेश्वर पुं० (सं) १-शिव। २-ईश्वर। ३-स्वर्ग।

सोना।
**महेश्वरी** स्त्री० (सं) दुर्गा।
**महेस** पुं० (हि) दे० 'महेश'।
**महेसी** पुं० (हि) पार्वती।
**महेसुर** पुं० (हि) महेश्वर।
**महोक्ष** पुं० (सं) बड़ा बैल।
**महोखा** पुं० (हि) एक प्रकार का कौवे के आकार का भूरे रङ्ग का पक्षी जिसकी बोली बहुत तीव्र होती है
**महोगनी** पुं० (अ) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट और कीमती होती है।
**महोच्छव** पुं० (हि) दे० 'महोत्सव'।
**महोत्सव** पुं० (सं) बड़ा उत्सव।
**महोदधि** पुं०(सं) समुद्र।
**महोदय** पुं०(सं) १-महाशय (सर)। २-स्वर्ग। ३-स्वामी। ४-कान्यकुब्ज देश।
**महोदया** स्त्री०(सं) १-महिलाओं के लिए प्रयोग किया जाने वाला आदरसूचक शब्द। २-नागवाला।
**महोदर** वि० (सं) जिसका पेट बड़ा हो। पुं० १-एक नाग। २-एक दैत्य। ३-शिव।
**महोदार** वि० (सं) बहुत उदार चित्त वाला।
**महोद्यम** वि० (सं) बहुत उत्साह वाला।
**महोन्नति** स्त्री० (सं) भारी उन्नति।
**महोपाध्याय** वि० (सं) बड़ा अध्यापक या पंडित।
**महोबा** पुं० (हि) उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक भाग।
**महोबिया** वि० (हि) महोबे का।
**महोरस्क** वि० (सं) जिसकी छाती चौड़ी हो।
**महोला** पुं०(हि)१-बहाना। हीला। २-छल। धोखा
**महौघ** पुं० (सं) समुद्री तूफान।
**महौजा** वि० (सं) अति तेजस्वी।
**माँ** स्त्री० (हि) माता। जननी।
**माँख** पुं० (हि) दे० 'माख'।
**माँखना** क्रि०(हि) १-नाराज होना। २-मन में दुःख या खेद करना।
**माँग** स्त्री० (हि) १-मांगने की क्रिया या भाव। २-आवश्यकता। ३-वह वस्तु या बात जिसके लिए प्रार्थना की जाय। (डिमांड)। ४-सिर के बालों को संवार कर बनाई गई रेखा।
**मांगचोटी** स्त्री० (हि) बनाव-शृङ्गार।
**मांगटीका** पुं० (हि) माथे पर पहनने का एक गहना।
**मांगन** पुं० (हि) १-मांगने का भाव। २-याचक।
**मांगना** क्रि० (हि) १-किसी-किसी वस्तु के देने के लिए प्रार्थना करना। २-चाहना। पुं० याचक।

पुं०(हि)१-वह पत्र जिसमें कोई वस्तु विशेषतः मूल्य देकर मंगवाने की प्रार्थना लिखी होती है (आर्डर फॉर्म)। २-वह पत्र जिसमें कोई मांग विशेषतः आर्थिक मांग लिखी होती है। (रिट आफ-डिमान्ड)।
**मांगफूल** पुं० (हि) दे० 'मांगटीका'।
**मांगलिक** वि० (स) शुभ या मंगल करने वाला। पुं० नाटक का मंगल-पाठ करने वाला पात्र।
**मांगल्य** वि० (सं) मंगलकारक। शुभ। पुं० माङ्गलिकता।
**मांचना** क्रि० (हि) १-आरम्भ या शुरू होना। २-प्रसिद्ध होना।
**मांजना** क्रि० (हि) १-जोर से मल कर किसी वस्तु को साफ करना। ३-मांझा देना। ४-अभ्यास करना।
**मांजा** पुं० (देश) पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक होता है।
**मां-जाई** स्त्री० (हि) सगी बहन।
**मां-जाया** पुं० (हि) सगा भाई।
**मांजिष्ठ** वि०(सं) १-मजीठे का सा। २-लाल रङ्ग का
**मांझ** अव्य० (हि) भीतर। मध्य। बीच।
**मांझा** पुं० (हि) १-नदी के बीच का टापू या जमीन २-विवाह के अवसर पर पहनने के पीले कपड़े। ३-पतंग की डोर जिस पर मसाला चढ़ाया हुआ होता है।
**मांझिल** वि० (हि) बीच का। मध्य का।
**मांझी** पुं०(हि) १-नौका खेने वाला। केवट। मल्लाह २-मध्यस्थ।
**मांट** पुं० (हि) १-मटका। अटारी।
**मांठ** पुं० (हि) १-मटका। २-मिट्टी का बड़ा पात्र जिसमें नील घोला जाता है।
**मांड** पुं० (हि) १-उबले हुए चावलों का पानी। कलफ २-पसाव।
**मांड़ना** क्रि० (हि) १-मलना। मसलना। २-गूंथना। ३-लेप करना। ४-कुचलना। रौंधना। ५-चलना। ३-अन्न के बालों में से दाने अलग करना। ७-सेया करना।
**मांडलिक** पुं० (सं) १-किसी मंडल या प्रांत का शासक २-शासन कार्य।
**मांडव** पुं० (हि) मंडप।
**मांडवी** स्त्री० (सं) राम के भाई भरत की पत्नी।
**मांड़ा** पुं०(हि) १-एक नेत्र रोग। २-मंडप। ३- एक प्रकार की रोटी।
**मांड़ी** स्त्री०(हि) १-सूत या कपड़े पर लगाये जानेवाला कलफ। २-भात का पसावन।
**मांडयो** पुं० (हि) मंडप।
**मांत** वि० (हि) १-मस्त। उन्मत्त। पागल। दीवाना। ३-उदास। ४-मात।
**मांतना** क्रि० (हि) उन्मत होना। पागल होना।
**मांता** वि० (हि) पागल। उन्मत।
**मांत्रिक** पुं०(सं) वह जो मंत्रों के पाठ करने में दक्ष हो

मांथ पुं० (हि) माथा। सर।
मांथबंधन पुं० (हि) १-सिर पर लपेटने का कपड़ा। २-स्त्रियों के बाल बांधने की ऊनी डोरी।
मांथर्य पु० (स) सुस्ती। धीमापन।
मांद पुं० (सं) हिंसक जानवरों की रहने की जगह। खोह। गुफा। वि० (सं) १-उदास। श्रीहीन। २-हलका। ३-मात।
मांदगी स्त्री० (हि) १-रोग। २-थकावट।
मांद्य पुं० (सं) १-कमी। न्यूनता। २-मंद होने का भाव। ३-रोग।
मांदना क्रि० (हि) नशे में चूर होना।
मांस पुं० (सं) १-शरीर में हड्डियों तथा चमड़े का मुलायम तथा लचीला पदार्थ। गोश्त। २-फल का गूदा।
मांसग्रंथि स्त्री० (सं) शरीर के भिन्न अंगों में निकलने वाली मांस की गाठें।
मांसज पुं० (सं) चरबी।
मांसप १-भूत। प्रेत। २-दैत्य।
मांसपिंड पुं०(सं) मांस का बना हुआ शरीर।
मांसपेशी स्त्री० (सं) १-शरीर के अन्दर आपस में जुड़े हुए मांसपिण्ड। पट्ठा। २-गर्भधारण किये सात दिन तक का भ्रूण।
मांसभक्षी पुं० (सं) मांस खाने वाला। मांसाहारी।
मांसभेत्ता पुं० (स) मांस काटने वाला।
मांसभेदी पुं० (सं) मांसभेत्ता।
मांसभोजी वि० (सं) मांसभक्षी।
मांसरस पुं० (सं) मांस का रसा। शोरबा।
मांसल वि० (सं) १-मांस से भरा हुआ। २-पुष्ट। दृढ़ मजबूत। ३-उद्दड।
मांसविक्रय पु० (हि) १-मांस बेचने वाला। कसाव। २-धन के लिए पुत्री को बेचने वाला।
मांसवृद्धि स्त्री० (सं) शरीर के किसी अंग के मांस का बढ़ जाना।
मांससार पुं० (सं) चरबी।
मांसस्नेह पुं० (सं) चरबी।
मांसाद वि० (सं) मांसभक्षी।
मांसादी वि० (सं) मांसाहारी।
मांसाशी पुं० (सं) १-मांसाहारी। २-राक्षस।
मांसाहारी पुं० (सं) १-मांस खाने वाला। २-दूसरे जीव जन्तुओं का मांस खाकर निर्वाह करने वाला।
मांसोपजीवी पुं० (सं) मांस बेच कर निर्वाह चलाने वाला।
मांहों अव्य० (हि) में। बीच में।
मा अव्य० (सं) मत। नहीं। स्त्री० (हि) १-लक्ष्मी। २-माता। जननी।
माई स्त्री०(हि) १-मामी। २-पुत्री। कन्या। ३-छोटा पूत्रा।
माई स्त्री० (हि) १-माता। जननी। २-बड़ी या बूढ़ी स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द।
माकूल वि० (अ) १-उचित। ठीक। २-अच्छा। ३-कायल। ४-यथेष्ट। पूरा।
माकूलपसंद वि० (अ) समझदार। ठीक बात को मान लेने वाला।
माख पुं०(हि) १-अप्रसन्नता। नाराजगी। २-घमंड। ३-पछतावा।
माखन पुं० (हि) मक्खन। नवनीत।
माखनचोर पुं० (हि) श्रीकृष्ण।
माखना क्रि०(हि) अप्रसन्न या नाराज होना।
मागध पुं०(सं) १-एक प्राचीन जाति। २-भाट। ३-जरासंध का एक नाम। वि० मगध देश का।
मागधी स्त्री० (सं) १-मगध देश की राजकुमारी। २-मगध देश की प्राचीन भाषा।
माघ पुं०(सं) पूस के बाद आने वाला माह का महीना।
माघी स्त्री० (हि) माघमास की पूर्णिमा।
माच पुं० (हि) दे० 'मचान'।
माचना क्रि० (हि) दे० 'मचना'।
माचल वि० (हि) १-हठी। जिद्दी। २-मचलने वाला।
माचा पुं० (हि) छोटी खाट या बड़ी मचिया।
माची स्त्री० (हि) १-हल जोतने का जुआ। २-बैल गाड़ी में की वह जगह जहाँ गाड़ीवान बैठता है ३-पीढ़ी।
माछ पुं० (हि) मछली।
माछर पुं० (हि) मच्छर।
माछी स्त्री० (हि) मक्खी।
माजरा पुं० (अ) १-वृत्तान्त। हाल। घटना।
माजू पुं० (हि) एक प्रकार की झाड़ी जिसकी डालियों में से गोंद निकलता है।
माजून स्त्री० (अ) चाशनी के साथ मिला कर बनाई गई दवा या अवलेह।
माजूफल पुं० (हि) माजू नामक झाड़ी का गोंद जो दवा में काम आता है।
माट पुं०(हि)१-मटका। घड़ा। २-रङ्गरेज का कपड़ा रङ्गने का मिट्टी का पात्र।
माटा पुं० (हि) लाल चींटी।
माटी स्त्री० (हि) दे० 'मिट्टी'।
माठ पुं० (हि) १-मटका। २-एक प्रकार मिठाई।
माड़ना क्रि०(हि) १-मचाना। ठानना। करना। २-भूषित करना। ३-पहनना। ४-आदर करना।
माड़व पुं० (हि) मंडप।
माड़ा वि० (हि) १-खराब। निकम्मा। २-दुर्बल। ३-रोगी।
माड़ा पुं० (हि) १-मकान के दूसरे खंड का कमरा। २-मचिया।

**माडी** स्त्री० (हि) दे० 'मढ़ी'।
**माणिक** पुं० (सं) लाल। पद्मराग। (रत्न)।
**माणिक्य** पु० (सं) दे० 'माणिक'।
**मातंग** पुं० (सं) १-हाथी। २-चांडाल। ३-एक नाग का नाम।
**मात** स्त्री०(हि) माता। माँ। (अ) पराजय। हार। वि० पराजित। (देश) मतवाला।
**मातदिल** वि०(हि) बहुत गरम न बहुत ठंडा। शीतोष्ण
**मातना** क्रि० (हि) मस्त होना। नशे में होना।
**मातबर** वि० (अ) विश्वास के योग्य।
**मातबरी** स्त्री० (अ) विश्वासनीयता। मातबर होने का भाव।
**मातम** पुं०(अ) १-मृतक का शोक। २-किसी दुर्घटना के कारण उत्पन्न शोक।
**मातमपुर्सी** स्त्री० (अ) मृतक के संबन्धियों के पास जाकर उन्हें सांत्वना देना।
**मातमी** वि० (अ) शोकसूचक। मातम संबन्धी।
**मातमीलिबास** पु० (अ) शोकसूचक काला या नीले रंग का कपड़ा।
**मातरिपुरुष** पुं० (सं) घर पर माता के सामने डींग हाँकने वाला और बाहर कुछ भी न कर सकने वाला व्यक्ति।
**मातलि** पुं० (सं) इन्द्र के सारथी का नाम।
**मातहत** वि० (अ) अधीनस्थ कर्मचारी। सहकारी।
**मातहती** स्त्री० (अ) मातहत या आधीन होने का काम या भाव।
**माता** स्त्री० (सं) १-जन्म देने वाली स्त्री। जननी। माँ। २-गौ। ३-भूमि। ४-लक्ष्मी ५-खेती। ६-शीतला। चेचक। वि० (सं) मापक। मापने वाला।
**मातामह** पुं० (सं) माता के पिता। नाना।
**मातामही** स्त्री० (सं) नानी।
**मातुल** पुं० (सं) १-मामा। २-धतूरा।
**मातुला** स्त्री० (सं) १-मामी। २-धतूरा। ६-भंग।
**मातुलानी** स्त्री० (सं) मामी।
**मातुली** स्त्री० (सं) मामी।
**मातुलेय** पुं० (सं) मामा का लड़का। ममेरा भाई।
**मातृ** स्त्री० (सं) दे० 'माता'।
**मातृक** वि० (सं) माता-संबन्धी। पुं० (सं) मामा।
**मातृकल्याणगृह** पुं०(सं) वह स्थान जहाँ माता बनने वाली स्त्रियों की देखभाल का तथा शिशुजन्म का प्रबन्ध होता है। मैटरनिटी वेलफेयर सेंटर।
**मातृका** स्त्री० (सं) १-माता। २-धाय। ३-देवी। ४-इन्द्राणी।
**मातृगण** पुं० (सं) शिव के परिवार।
**मातृगामी** वि० (सं) माता के साथ विषय भोग करने वाला।
**मातृगोत्र** पुं० (सं) माता का गोत्र या कुल।
**मातृघातक** पुं० (सं) माता की हत्या करने वाला।
**मातृघाती** पुं० (सं) मातृ घातक।
**मातृत्व** पुं०(सं) मां होने का भाव। मां-पन।
**मातृदेव** पुं० (सं) वह जो अपनी माता को ही इष्ट-देव मानता हो
**मातृपक्ष** पुं० (सं) माता कुल, नाना, मामा आदि
**मातृपितृहीन** वि०(सं) अनाथ। जिसके माँ बाप न हो
**मातृपूजन** पुं० (सं) माता की पूजा।
**मातृभाषा** स्त्री० (सं) वह भाषा जो बालक बचपन से ही अपने माँ बाप से सीखता है। मादरी जबान। (मदर टंग)।
**मातृभूमि** स्त्री० (सं) जन्मभूमि।
**मातृष्वसा** स्त्री० (सं) मौसी। माँ की बहन।
**मातृसत्तात्मक** वि० (सं) जिसमें माता की सत्ता ही सर्वोपरि मानी गई हो (प्रणाली)। मैट्रिआर्कल।
**मातृसपत्नी** स्त्री० (सं) विमाता। सौतेली मां।
**मातृहंता** पुं० (सं) माता की हत्या करने वाला।
**मातृहत्या** स्त्री० (सं) माता की हत्या। (मैट्रिसाइड)।
**मात्र** अव्य० (सं) केवल। भर। सिर्फ।
**मात्रा** स्त्री०(सं) १-परिमाण। मिकदार। (क्वान्टिटी) २-एक बार खाने भर की औषध। ३-बारहखड़ी लिखते समय वह स्वर चिह्न या रेखा जो शब्दों के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है। ४-शक्ति। ५-रूप। ६-संगीत में गीत का समय निरूपित करने के लिए उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण में लगता है। ७-राशि। रकम। (अमाउन्ट)।
**मात्रिक** वि० (सं) १-मात्रा-सम्बन्धी। २-जिसमें मात्राओं की गणना का विचार हो। एकाई। (यूनिट)।
**मात्रिकछंद** पुं० (सं) वह छन्द जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।
**मात्सर्य** पुं० (सं) डाह। जलन।
**मात्स्य** वि० (सं) मछली-सम्बन्धी।
**मात्स्य-न्याय** पुं०(सं) बलवान द्वारा निर्बल को खा-जाना।
**माथ** पुं० (हि) दे० 'माथा'।
**माथा** पुं०(हि) १-सिर का ऊपरी और सामने वाला भाग। मस्तक। २-किसी वस्तु का ऊपरी भाग।
**माथुर** वि० (सं) मथुरा-सम्बन्धी। मथुरा का। पुं० १-ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। २-कायस्थों की एक जाति। ३-मथुरा का निवासी।
**माथे** अव्य० (हि) १-माथे या मस्तक पर। २-भरोसे
**मादक** वि० (सं) नशा उत्पन्न करने वाला। नशीला। (इन्टॉक्सीकेटिंग)।
**मादकता** स्त्री०(सं) नशीलापन। मादक होने का भाव
**मादन** वि०(सं) १-मादक। २-मस्त करने वाला। पुं०

१-कामदेव के पांच बाणों में से एक। २-लौंग। ३-धतूरा।

**मादर** स्त्री० (फा) माता। माँ।

**मादरजाद** वि०(फा) १-जन्म का पैदायशी। २-सगा सहोदर।

**मादरिया** स्त्री० (हि) मां। माता।

**मादरी** वि० (फा) १-माता-सम्बन्धी। माता का। २-जन्मसिद्ध।

**मादरीजबान** स्त्री० (फा) मातृभाषा।

**मादा** स्त्री०(फा) स्त्री जाति का प्राणी या जीव। 'नर' का उलटा।

**मादिक** वि० (हि) नशीला। स्त्री० मदिरा। शराब।

**मादिकता** स्त्री० (हि) दे० 'मादकता'।

**माद्दा** पुं० (अ) १-मूलतत्व। २-योग्यता। सामर्थ्य। ३-मवाद। पीव। ४-शब्द की व्युत्पत्ति। शब्द का मूल।

**माद्रवती** स्त्री० (सं) राजा परीक्षित की स्त्री का नाम।

**माद्री** स्त्री०(सं) पांडु की पत्नी तथा नकुल और सहदेव की माता का नाम।

**माद्रेय** पुं० (सं) माद्रीपुत्र नकुल और सहदेव।

**माधव** पुं० (सं) १-विष्णु। २-बैसाख मास। ३-वसंतऋतु। ४-काला उर्द। ५-एक वर्णवृत्त। ६-महुवे का वृत्त।

**माधवक** पुं० (सं) महुवे की शराब।

**माधवी** स्त्री०(सं) १-एक चमेली-लता के समान सुगंधित फूल वाली लता। २-तुलसी। ३-दुर्गा। ४-शहद की बनी चीनी। ५-एक प्रकार की मदिरा।

**माधुरई** स्त्री० (हि) मधुरता। मिठास।

**माधुरिया** स्त्री० (हि) दे० 'माधुरी'।

**माधुरी** स्त्री० (सं) १-मिठास। २-माधुर्य। शोभा। ३-मदिरा। ४-मिठाई।

**माधुर्य** पुं०(सं) १-मधुर होने का भाव। २-लावण्य सौन्दर्य। ३-मिठास। ४-वाक्य का एक से अधिक अर्थ होना।

**माधैया** पु०(हि) दे० 'माधव'।

**माधो** पुं० (हि) दे० 'माधव'।

**माधौ** पुं० (हि) दे० 'माधव'।

**माध्य** वि० (सं) बीच का। मध्य का।

**माध्यम** वि० (स) बीच का। बिचले भाग का। पुं० १-वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय। २-साधन। (मीडियम)।

**माध्यमिक** पुं० (सं) १-बौद्धों का एक भेद। २-मध्य देश का निवासी। वि० बीच का। मध्य का।

**माध्यमिक पाठशाला** स्त्री० (सं) माध्यमिक शिक्षा की पाठशाला। (सेकेन्डरी स्कूल)।

**माध्यमिक-शिक्षा** स्त्री० (सं) प्रारंभिक शिक्षा के बाद और उच्च शिक्षा से पहले दी जाने वाली शिक्षा। (सेकेन्डरी एज्युकेशन)।

**माध्यस्थ** पुं०(सं) १-मध्यस्थ। २-दलाल। ३-विवाह करने वाला ब्राह्मण।

**माध्याकर्षण** पुं०(सं) पृथ्वी के अन्दर की वह आकर्षण शक्ति जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचती रहती है और जिसके कारण सब पदार्थ पृथ्वी पर ही गिरते है। (ग्रेविटेशन)।

**माध्याह्निक** वि० (सं) ठीक मध्याह्न या दोपहर का।

**माध्यिका** स्त्री० (सं) त्रिभुज के किसी शीर्ष से सामने वाले भुज के अर्धक बिंदु तक खींची जाने वाली सरल रेखा। (मीडियन)।

**माध्व** वि० (सं) १-मधु का बना हुआ। मीठा। २-मध्व संप्रदाय का अनुयायी।

**माध्वसंप्रदाय** पुं०(स).मध्वाचार्य द्वारा चलाया गया एक वैष्णव संप्रदाय।

**माध्वी** स्त्री०(सं)१-मदिरा। शराब। २-महुए की बनी शराब।

**मान** पुं० (स) १-परिमाण। नाप, तोल आदि। २-नापने या तौलने का साधन। ३-मानदण्ड। (स्टैन्डर्ड)। ४-ताल का एक विराम। ५-प्रमाण। ६-अभिमान।

**मानकंद** पुं० (सं) बंगाल में रहने वाला एक मीठा कन्द। सालिब मिश्री।

**मानक** पुं०(सं) १-मानकन्द। २-निश्चित किया हुआ मानदण्ड। (स्टैन्डर्ड)।

**मानकलह** पुं० (सं) १-ईर्ष्या। डाह। २-प्रतिद्वन्द्विता

**मानकीकरण** पुं० (सं) एक जैसी बहुत सी वस्तुओं का मान स्थिर करना। (स्टैन्डर्डाइजेशन)।

**मानगृह** पुं० (सं) रूठ कर बैठने का स्थान। कोप भवन।

**मानचित्र** पुं० (सं) नकशा। (चार्ट, मैप)।

**मानता** स्त्री० (हि) मन्नत। मनौती।

**मानदंड** पुं० (सं) पैमाना।

**मानदेय** पुं०(सं) वह धन जो किसी व्यक्ति को काम करने के बदले प्रतिष्ठित रूप में दिया जाता है। (ऑनोरेरियम)।

**मानधन** वि०(सं) जो अपनी प्रतिष्ठा को ही धन समझता हो।

**मानना** क्रि०(हि) १-सहमत होना। २-ठीक मार्ग पर चलना। ३-समझना। ४-प्रसन्न होना। ५-स्वीकार करना। ६-मन्नत करना। ७-किसी का बहुत आदर करना।

**माननीय** वि० (सं) जो मान करने योग्य हो। आदरणीय। पुं० प्रतिष्ठित लोगों के नाम से पहले लगाने की एक उपाधि। (ऑनरेबल)।

**मानपत्र** पुं० (सं) अभिनन्दन-पत्र। (एड्रेस आफ वेलकम)।

**मानपरेखा** पुं० (हि) आशा। भरोसा।
**मानभंग** पुं०(सं) १-मानहानि। २-नायिका के मान का टूटना।
**मानमंदिर** पुं० (सं) १-मानगृह। २-वेधशाला।
**मानमनौती** स्त्री०(हि) १-रूठने और मनाने की क्रिया। २-पारस्परिक प्रेम।
**मानमरोर** पुं० (हि) विगाड़। झगड़ा।
**मानमोचन** पुं० (सं) साहित्य के अनुसार रूठे हुए को मनाने के छः उपाय।
**मानव** पुं० (सं) मनुष्य। आदमी। मनुज। वि० १-मनु-सम्बन्धी। २-मनुष्योचित।
**मानव-उपभोग** पुं०(सं) मनुष्य की उपभोग की वस्तुएँ। (ह्यूमैन कन्जक्शन)।
**मानवता** स्त्री० (स) १-मनुष्यता। आदमीपन। २-संसार के समस्त मनुष्यों का समाज। (ह्यूमेनिटी)।
**मानवती** स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने पति से मान कराती है।
**मानवधर्मशास्त्र** पुं० (सं) १-मनुस्मृति। २-मनुष्यों की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करने वाला शास्त्र। (एन्थ्रोपॉलोजी)।
**मानव-पराग** पुं०(सं) मनुष्यों को खरीदने और बेचने का व्यापार। (ट्रैफिक इन ह्यूमैन बीइंग्स)।
**मानव-व्यापार** पुं० (सं) दे० 'मानव-पराग'।
**मानवविज्ञान** पुं० (सं) मानवशास्त्र। (एन्थ्रोपोलॉजी)
**मानवी** स्त्री० (सं) नारी। स्त्री। औरत। वि० दे० 'मानवीय'।
**मानवीय** वि० (सं) मानव-सम्बन्धी।
**मानवेंद्र** वि०(सं) मनुष्योचित प्रवृत्ति वाला। (ह्यूमेन)
**मानस** पुं०(हि) मनु। (सं) १-हृदय। मन। २-मन-सरोवर। ३-संकल्प विकल्प। ४-कामदेव। ५-रामचरितमानस। वि० (स) मन के द्वारा होने वाला। मन का।
**मानसचारी** पुं० (सं) हंस। वि० जो मानसरोवर में रहता हो।
**मानसजन्मा** पुं० (सं) कामदेव।
**मानसदेन** पुं० (हि) राजा।
**मानसपुत्र** पुं० (सं) वह पुत्र या सन्तान जो केवल इच्छा मात्र से ही उत्पन्न हुआ हो। (पुराण)।
**मानसपूजा** स्त्री० (सं) मन ही मन में की जाने वाली पूजा।
**मानसरोवर** पुं० (सं) हिमालय पर्वत पर एक प्रसिद्ध झील। २-शरीर के अन्दर का शून्य स्थान। अमृत कुण्ड।
**मानसविज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें मन की प्रकृति, प्रवृत्ति तथा मन किस प्रकार काम करता है इन सब बातों का विवेचन होता है। (मेन्टल-साइन्स)।
**मानसशास्त्र** पुं० (सं) दे० 'मानसविज्ञान'।
**मानसशास्त्री** पुं० (सं) मानस-शास्त्र का वेत्ता।
**मानसिक** वि० (सं) १-मन की कल्पना से उत्पन्न। २-मन-सम्बन्धी। (मेन्टल)।
**मानसी** वि० (सं) मन का। मन से उत्पन्न।
**मानस्थापन** पुं० (सं) विभिन्न मान या मानक स्थापित करने का कार्य। (एस्टेबलिशमेंट आफ स्टैन्डर्ड्स)।
**मानहानि** स्त्री० (सं) अपमान। कोई ऐसी बात या कार्य जिससे किसी का मान घटे। (डिफेमेशन)।
**मानहुँ** अव्य० (हि) मानो।
**माना** क्रि० (हि) १-नापना। तौलना। २-जांचना। ३-समाना। आना।
**मानिंद** वि० (फा) समान। सदृश्य। तुल्य।
**मानिक** पुं० (हि) रत्न। लाल। (सं) आठ पल का एक मान। वि० जिसका कुछ मान हो। परिमाण वाला। (क्वान्टिटेटिव)।
**मानिक-रेत** स्त्री० (हि) मानिक का चूरा।
**मानित** वि० (सं) सम्मानित। प्रतिष्ठित।
**मानिता** स्त्री० (सं) १-आदर। सम्मान। प्रतिष्ठा। २-गौरव। ३-अहङ्कार। गर्व।
**मानित्व** पुं० (सं) दे० 'मानिता'।
**मानिनी** वि०(स) १-मान व गर्व करने वाली। २-रूठने वाली।
**मानी** पु० (अ) १-तात्पर्य। २-अर्थ। मतलब। ३-अभिप्राय।
**मानुख** पुं० (हि) मनुष्य।
**मानुप** वि० (सं) मानव। मनुष्य का। पुं० मनुष्य।
**मानुषिक** वि० (स) मनुष्य का। मनुष्य सम्बन्धी।
**मानुषी** वि० (हि) मनुष्य सम्बन्धी। स्त्री० (सं) १-स्त्री औरत। ३-तीन प्रकार की स्त्रियों में से एक।
**मानुष्य** वि० (सं) मनुष्य का।
**मानुष्यक** वि० (सं) मनुष्य सम्बन्धी।
**मानुस** पुं० (हि) मनुष्य। आदमी।
**माने** पुं० (अ) मतलब। आशय। अर्थ।
**मानो** अव्य० (हि) मानलो कि ऐसा होगा। गोया। जैसे।
**मान्य** वि०(स) १-मानने योग्य। २-जिसे विधिपूर्वक मान्यता दी गई हो। (वेलिड रेकग्नाइज्ड)।
**मान्यता** स्त्री० (स) न्याययुक्तता। प्रबलता। पुष्टता। सिद्धता। (वैलिडिटी)।
**माप** स्त्री० (सं) मापने की क्रिया या भाव। नाप। (मेजर)।
**मापक** पुं० (स) १-वह जिससे कुछ मापा जाय। नाप। २-वह जो मापता हो। ३-पैमाना।
**मापन** पु०(सं) १-मापने की क्रिया। २-तराजू। (मेजरमेंट)।

**मापना** क्रि० (हिं) किसी वस्तु के वर्गत्व, घनत्व का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना।
**मापमान** पुं० (सं) मापक। पैमाना। (स्केल)।
**माफ** वि० (हिं) क्षमा किया हुआ।
**माफिक** वि० (हिं) १-अनुकूल। अनुसार। २-योग्य
**माफी** स्त्री० (हिं) १-वह भूमि जिसका राज्य की ओर से कर माफ हो। २-क्षमा।
**माफीदार** वि०(हिं) जिसको माफी की भूमि मिली हो
**माम** पुं० (हिं) ममता।
**मामलत** स्त्री० (हिं) मामला। विवाद। झगड़ा।
**मामलतदार** पु० (हिं) तहसीलदार। (म० प्र०)।
**मामला** पुं० (ग्र) १-काम। व्यापार। २-विवाद। झगड़ा। ३-मुकदमा। ४-प्रधान विषय।
**मामा** (हिं) माता का भाई। स्त्री० (फा) १-माता। माँ २-नौकरानी। ३-रोटी पकाने वाली। ४-बुड्ढी स्त्री
**मामिला** पुं० (हिं) दे० 'मामला'।
**मामी** स्त्री० (हिं) १-मामा की पत्नी। २-अपने दोष पर ध्यान न देना।
**मामूँ** पुं० (हिं) माँ का भाई। मामा।
**मामूर** वि० (ग्र) भरा हुआ। पूर्ण।
**मामूल** वि०(ग्र) जिस पर अमल किया गया हो। पु० रीति। परिपाटी।
**मामूली** वि० (ग्र) १-सामान्य। २-नियमित। ३-साधारण।
**मायँ** अव्य० (हिं) बीच में। मध्य में।
**माय** स्त्री० (हिं) १-माँ। माता। माया।
**मायक** पु० (सं) मायावी। माया करने वाला।
**मायका** पुं० (हिं) नैहर। पीहर।
**मायन** पुं० (हिं) विवाह से पूर्व मातृ का पूजन तथा पितृ-निमंत्रण का कार्य।
**मायनी** स्त्री० (हिं) मायाविनी।
**माया** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-धन। सपत्ति। ३-अविद्या। ४-छल। सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण प्रकृति। ६-जादू। इन्द्रजाल। ७-बुद्धि। (हिं) १-माता। २-ममत्व। ३-कृपा। दया।
**मायाकार** पुं०(सं) जादूगर। ऐंद्रजालिक।
**मायाजाल** पुं० (सं) १-गृहस्थी का जंजाल। २-मोह
**मायाजीवी** पुं०(सं) मायाकार।
**मायापटु** वि० (सं) मायावी।
**मायापाश** पुं० (सं) माया जाल। माया का फंदा।
**मायामय** वि० (सं) मायायुक्त।
**मायामृग** पुं० (सं) सीता जी को हरने के लिए रावण का स्वर्ण मृग का रूप।
**मायायुद्ध** पुं०(सं) वह युद्ध जो माया बल से या छल कपट से किया जाय।
**मायावती** स्त्री० (सं) कामदेव की पत्नी का एक नाम
**मायावाद** पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर के अतिरिक्त संसार की समस्त वस्तुओं को अनित्य तथा असत्य माना जाता है। संसार को मिथ्या मानने का सिद्धांत।
**मायावादी** पुं० (सं) मायावाद में विश्वास करने वाला।
**मायावान्** वि० (सं) मायावी। पु० कंस।
**मायावी** पुं० (हिं) १-छली। फरेबी। २-धूर्त। ३-परमात्मा। ४-बिल्ली।
**मायिक** वि० (सं) १-माया से बना हुआ। २-बना-वटी। जाली। माया करने वाला।
**मायी** वि०(सं) १-माया करने वाला। २-छली। पु० १-ईश्वर। २-छलिया।
**मायूर** वि०(सं) मोर या मयूर सम्बन्धी।
**मायूस** वि०(ग्र) निराश। नाउम्मेद।
**मायूसी** स्त्री० (ग्र) निराशा। नाउम्मीदी।
**मार** पुं० (सं) १-कामदेव। २-धतूरा। ३-विष। ४-विघ्न। स्त्री०(हिं) १-आघात। २-लक्ष्य। ३-क्लेश कष्ट। ५-मारपीट। लड़ाई। अव्य० अत्यन्त। बहुत
**मारक** वि० (सं) १-मार डालने वाला। २-विष के प्रभाव को नष्ट करने वाला।
**मारक-स्थान** पुं० (सं) जन्म-कुण्डली में लग्न से सातवाँ और दूसरा स्थान।
**मारका** पुं० (ग्र) १-निशान। २-चिह्न। (मार्क)।
**मारकाट** स्त्री० (हिं) युद्ध। लड़ाई।
**मारकीन** पु० (हिं) एक प्रकार का कोरा मोटा कपड़ा
**मारकेश** पुं०(सं) जन्मकुण्डली का वह योग जिससे मृत्यु की संभावना हो।
**मारग** पुं० (हिं) दे० 'मार्ग'।
**मारगन** पुं० (हिं) १-बाण। तीर। २-भिखमंगा।
**मारजन** पुं०(हिं) दे० 'मार्जन'।
**मारण** पु० (सं) मार डालना। जान लेना।
**मारतौल** पुं० (हिं) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।
**मारना** क्रि० (हिं) १-प्राण लेना। चोट पहुँचाना। २-कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना। ३-फेंकना। ४-शिकार खेलना। ५-प्रभाव घटना। ६-लगाना। करना। ७-सहना।
**मारफत** स्त्री० (ग्र) १-ईश्वरीय ज्ञान। २-जरिया। वसीला।
**मारवाड़ी** वि०(हिं) मारवाड़ देश सम्बन्धी। मारवाड़ का।
**मारा** वि० (हिं) १-मारा हुआ। निहत। २-जिस पर मार पड़ी हो।
**मारात्मक** वि० (सं) १-हिंसक। २-दुष्ट। ३-प्राण-नाशक।
**मारामार** अव्य०(हिं) अत्यन्त शीघ्रता से। स्त्री० १-मारपीट। २-भगदड़।
**मारि** स्त्री० (सं) १-मार डालना। २-महामारी।

**मारिष** पुं० (सं) १-नाटक का सूत्रधार। २-प्रतिष्ठित
**मारी** स्त्री० (सं) १-महामारी। २-चंडी।
**मारीच** पुं०(सं) वह राक्षस जिसने स्वर्ण हिरन बन-कर सीता जी को धोखा दिया था।
**मारुत** पुं० (सं) १-पवन। हवा। २-वायु। देवता।
**मारुततनय** पुं० (सं) हनुमान।
**मारुतात्मज** पुं० (सं) हनुमान।
**मारुति** पुं० (सं) १-भीम। २-हनुमान।
**मारू** पुं० (हि) १-युद्ध में बजाया और गाया जाने वाला एक राग। २-बड़ा नगाड़ा। ३-मरु देश का निवासी। वि० मारने वाला। हृदयवेधक।
**मारे** अव्य० (हि) वजह से।
**मार्ग** पुं० (सं) १-रास्ता। पथ। (रूट)। २-किसी कार्य को करने का साधन या तरीका।
**मार्गकर** पुं० (सं) किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाने वाला कर। (टोल टैक्स)।
**मार्गण** पुं०(सं)१-ढूंढना। अन्वेषण। जांच। (इन्वेस्टेगेशन)। २-मांगना। ३-वाण।
**मार्गणा** पुं०(सं) १-याचना। ढूंढना।
**मार्गतोरण** पुं० (सं) स्वागत के लिए रास्ते में बनाया गया बड़ा फाटक।
**मार्गदर्शक** पुं० (सं) पथप्रदर्शक।
**मार्गन** पुं० (हि) वाण। तीर।
**मार्गरक्षक** पुं० (सं) वह सशस्त्र व्यक्ति जो किसी व्यक्ति-समूह, या माल की रक्षा के लिए साथ-साथ चले। (एस्कॉर्ट)।
**मार्गशिर** पुं० (सं) दे० 'मार्गशीर्ष'।
**मार्गशीर्ष** पुं० (सं) अगहन का महीना।
**मार्गशोधक** पुं० (सं) रास्ता साफ करने वाला।
**मार्गित** वि० (सं) १-खोजा हुआ। २-अभिलषित।
**मार्गी** पुं० (सं) १-पथिक। २-मार्गदर्शक। ३-मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति।
**मार्च** पुं० (अं) १-फरवरी के बाद और अप्रैल से पहले आने वाला ईसवी सन् का तीसरा महीना। २-सैनिकों की नपी तुली चाल। ३-प्रस्थान।
**मार्जन** पुं० (सं) १-सफाई। २-भूल दोष आदि का परिहार। ३-शुद्ध या पवित्र करना। ४-पवित्र करने के लिए तीर्थादि का जल छिड़कना।
**मार्जनी** स्त्री० (सं) झाड़ू। बुहारी।
**मार्जनीय** वि० (सं) मार्जन करने योग्य। पुं० अग्नि
**मार्जार** पुं०(सं) १-बिलार। बिलाव। २-लाल चीता नामक वृक्ष।
**मार्जारकंठ** पुं० (सं) मोर।
**मार्जारी** स्त्री० (सं) १-कस्तूरी। २-मादा बिल्ली।
**मार्जित** वि० (सं) स्वच्छ या साफ किया हुआ।
**मार्तंड** पुं० (सं) १-सूर्य। २-आक। ३-सूअर।
**मार्त्तिक** वि० (सं) मिट्टी का बना हुआ।
**मार्त्य** वि० (सं) मरणशील।
**मार्दव** पुं० (सं) १-अहंकार का त्याग। २-सरलता। कोमलता। ३-दूसरे के कष्ट से दुःखित होना।
**मार्फत** अव्य० (अ) द्वारा। जरिये।
**मार्मिक** वि० (सं) १-मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला। २-मर्मज्ञ।
**माल** स्त्री० (हि) १-माला। हार। २-चरखे की डोरी जिससे तकुआ घूमता है। (अ) १-धन। संपत्ति। २-सामग्री। सामान। ३-क्रय-विक्रय की वस्तुएँ। (गुड्स)। ४-कर के रूप में मिलने वाला अन्न या धन। ५-उत्तम या स्वादु भोजन। ६-कोई उत्तम वस्तु। पुं० (मं) पहलवान।
**मालग्रदालत** स्त्री० (अ) लगान आदि के मुकदमे सुनने वाली कचहरी। (रेवेन्यू कोर्ट)।
**मालकंगनी** स्त्री० (स) एक लता जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है।
**मालकोश** पुं० (सं) एक संपूर्ण जाति का राग।
**मालखाना** पुं०(अ) वह राजकीय या विभागीय स्थान जहां माल जमा रहता है। भंडार।
**मालगुजार** पुं० (अ) १-लगान वसूल करने वाला। २-जमींदार (म० प्र०)।
**मालगुजारी** स्त्री० (अ) लगान। भूमिकर।
**मालगोदाम** पुं०(अ)१-वह स्थान जहां व्यापारिक माल रखा जाता है। २-रेल के स्टेशनों या बन्दरगाहों पर वह स्थान जहां बाहर भेजने वाला माल या कहीं से आया हुआ माल रहता है
**मालटाल** पुं० (हि) धन-दौलत।
**मालती** स्त्री० (सं) १-एक प्रकार की सुगंधित फूलों वाली बेल। २-युवति।
**मालदार** वि० (अ) अमीर। धनी।
**मालपुआ** पुं० (हि) आटे में चीनी मिला कर बनाया गया मीठा पकवान।
**मालमंत्री** पुं० (सं) राजस्वमंत्री। (रेवेन्यू मिनिस्टर)
**मालमता** पुं० (अ) सामान। धन-दौलत।
**मालमहकमा** पुं० (अ) राजस्व विभाग। (रेवेन्यू-डिपार्टमेंट)।
**मालय** वि० (सं) मलय प्रदेश का। मलय सम्बन्धी पुं० चन्दन।
**मालव** पुं० (सं) १-मालव। २-मालवा का निवासी ३-एक राग।
**मालवीय** वि० (सं) मालवा सम्बन्धी। पुं० १-मालवा का निवासी। २-ब्राह्मणों की एक उपजाति।
**माला** स्त्री० (सं) १-पंक्ति। २-फूलों का हार। गजरा ३-समूह। ४-दूब। ५-लड़ी।
**मालाकार** पुं० (सं) गजरा या माला बनाने वाला। माली।
**मालादीपक** पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें पूर्व

कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के का हेतु बतलाया जाता है।
**मालामाल** *वि०* (फा) बहुत सम्पन्न।
**मालिक** पुं० (अ) १-ईश्वर। २-स्वामी। ३-पति। (स)१-माली। २-धोबी। ३-एक प्रकार की चिड़िया
**मालिका** *स्त्री०*(अ) १-पंक्ति। २-माला। ३-मकान का दूसरा खंड। ३-चमेली।
**मालिकाना** पुं० (फा) १-स्वामित्व। २-वह दस्तूरी जो आसामी जमींदार को देता है।
**मालिकी** *स्त्री०*(फा) १-मालिक का स्वत्व। २-मालिक होने का भाव।
**मालिन** *स्त्री०* (हि) १-माली की स्त्री। २-वह स्त्री जो माली का काम करे।
**मालिनी** *स्त्री०* (सं) १-मालिन। २-वह नदी जिसके तट पर मेनका के गर्भ से शकुन्तला का जन्म हुआ था। ३-चम्पानगरी। ४-द्रौपदी का एक नाम।
**मालिन्य** पुं० (सं) १-मलीनता। २-अंधकार।
**मालियत** *स्त्री०* (फा) १-मूल्य। कीमत। २-धन। संपत्ति।
**मालिया** पुं० (अ) मोटे रस्सों में दी जाने वाली एक प्रकार की गाँठ।
**माली** पुं० (हि) १-बाग में पौधों आदि की देखभाल करने वाला व्यक्ति। २-एक जाति विशेष। ३-एक छन्द। *वि०* (सं) जो माला धारण किये हुए हो। (फा) धन या अर्थ सम्बन्धी।
**मालीखूलिया** पुं० (यू०) १-एक रोग। २-चित्त का सदा उदास रहना।
**मालूम** *वि०* (अ) जाना हुआ। विदित।
**मालोपमा** *स्त्री०* (सं) एक उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के भिन्न-भिन्न धर्मों वाले अनेक उपमान बनाये जाते हैं।
**माल्य** पुं० (सं) १-फूल। माला।
**माल्यजीवक** पुं० (स) माली।
**माल्यवान्** *वि०*(सं) जिसने माला पहन रखी हो। पुं० १-एक राक्षस। २-एक पर्वत का नाम। (पुराण)।
**मावत** पुं० (हि) महावत।
**मावस** *स्त्री०* (हि) अमावस।
**मावा** पुं० (हि) १-सार। सत्व। २-दूध का खोया। ३-अण्डे के भीतर का पीला रस। ४-तम्बाकू का खमीरा। ५-चन्दन का इत्र।
**माश** पुं० (फा) उड़द।
**माशा** पुं० (हि) आठ रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल
**माशाअल्लाह** *अव्य०*(अ) १-क्या कहना। २-भगवान भरोसे।
**माशूक** पुं० (अ) प्रेमपात्र। प्रिय।
**माशूका** *स्त्री०* (अ) प्रेमिका।
**माशूकाना** *वि०* (अ) प्रेमिकों जैसा।
**माशूकी** *स्त्री०* (अ) माशूक होने का भाव।
**माशूकेहकीकी** पुं० (अ) खुदा। ईश्वर।
**माष** पुं० (सं) १-उड़द। २-मस्सा। ३-मूर्ख। (देश) १-गर्व। २-क्रोध।
**माषना** *क्रि०* (हि) दे० 'माखन'।
**माषपर्णी** *स्त्री०* (सं) जंगली उड़द।
**माषयोनि** पुं० (सं) पापड़।
**मास** पुं० (सं) वर्ष का बारहवां भाग। महीना।
**मासकालिक** *वि०* (सं) महीने भर तक रहने वाला।
**मासजात** *वि०* (सं) महीने भर का।
**मासदेय** *वि०* (सं) जो एक महीने में चुकानी हो।
**मासना** *क्रि०* (हि) १-मिलना। २-मिलाना।
**मासप्रवेश** पुं० (सं) महीने का आरंभ होना।
**मासमान** पुं० (सं) वर्ष।
**मासस्तोम** पुं० (सं) एक प्रकार का यज्ञ।
**मासांत** पुं० (सं) १-महीने का अंत। २-अमावस्या। ३-संक्रांति।
**मासावधिक** *वि०* (सं) एक महीने भर तक रहने वाला
**मासिक** *वि०* (सं) १-मास संबंधी। २-महीने में एक बार या माहवार होने वाला। (मन्थली)। पुं० (सं) १-प्रति मास मिलने वाला वेतन। २-प्रति मास प्रकाशित होने वाला पत्र।
**मासिक धर्म** पुं० (सं) रजोधर्म। (मेन्सेस)।
**मासी** *स्त्री०* (हि) मौसी। मां की बहन।
**मासूम** *वि०* (अ) अपराध या दोष रहित। बेगुनाह।
**मास्टर** पुं० (अं) १-स्वामी। मालिक। २-शिक्षक। ३-किसी विषय में प्रवीण। ४-बालकों के लिये व्यवहृत शब्द।
**मास्टर-की** *स्त्री०* (अं) वह कुञ्जी जिससे विभिन्न कुञ्जियों से खुलने वाले ताले खुल जाते हों।
**मास्टरी** *स्त्री०* (अं) १-अध्यापन कार्य। २-मास्टर का भाव।
**मास्य** *वि०* (सं) जो महीने भर का हो।
**माह** *अव्य०* (हि) बीच में। मध्य में।
**माह** पुं० (हि) १-माघ। २-उड़द। ३-मास। महीना।
**माहत** *स्त्री०* (हि) महत्व। बड़ाई।
**माहताब** पुं० (फा) १-चन्द्रमा। चांदनी।
**माहताबी** *स्त्री०* (फा) १-छत या खुला चबूतरा। २-एक आतिशबाजी।
**माहना** पुं० (हि) उमड़ना।
**माहनामा** पुं० (फा) मासिक पत्र।
**माह-ब-माह** *अव्य०*(फा) प्रतिमास। माहवार।
**माहली** पुं० (हि) १-सेवक विशेषतः अन्तःपुर का। २-नौकर। दास।
**माहवार** *अव्य०* (फा) प्रतिमास।
**माहवारा** पुं० (फा) मासिक वेतन।
**माहवारी** *अव्य०* (फा) माहवार। *स्त्री०*(फा) स्त्रियों का

मासिक धर्म।
**माहाँ** अव्य(हि) दे० 'महँ'।
**माहा** पुं०(हि) कपड़ा। पट।
**माहात्म्य** पुं० (सं) १-महिमा। महत्व। २-आदर। मान।
**माहिं** अ० (हि) १-भीतर। २- में। पर।
**माहिर** वि०(अ) ज्ञात। जानकार। पुं०(सं) इन्द्र।
**माहिला** पुं०(अ) मांझी। मल्लाह।
**माहिष** वि० (सं) १-भैंस का (दूध आदि)। २-भैंस संबंधी।
**माहिष्मती** स्त्री० (सं) दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर (आधुनिक मंडला)।
**माही** स्त्री० (फा) मछली। (हि) एक नदी का नाम।
**माहीमरातिब** पुं० (फा) राजा की सवारी के आगे महीं आदि के चिह्न के झण्डे लेकर चलने वाले।
**माहुर** पुं० (हि) विष।
**माहेंद्र** वि० (सं) १-इन्द्र सम्बन्धी। २-जिसके देवता इन्द्र हों।
**मिंडाई** स्त्री० (हि) मींडने की क्रिया या मजदूरी।
**मिंत** पुं० (हि) मित्र।
**मिआद** स्त्री० (हि) दे० 'मीआद'।
**मिआन** पुं० (हि) दे० 'मियान'।
**मिकदार** स्त्री० (अ) मात्रा। मिकदार।
**मिचकाना** क्रि० (हि) पलकों का झपकाना या बंद करना।
**मिचना** क्रि० (हि) आँखों का बन्द होना।
**मिचराना** क्रि० (हि) इच्छा न होते हुए भी खाना।
**मिचलाना** क्रि० (हि) मिचली आना।
**मिचली** स्त्री० (हि) वमन करने की इच्छा।
**मिचौनी, मिचौली** स्त्री० (हि) आँख बन्द करने की क्रिया। (आँखमिचौली)।
**मिछा** वि० (हि) मिथ्या। झूठ।
**मिजराब** स्त्री० (अ) सितार या तानपुरा बजाने का उंगलियों में पहनने का छल्ला।
**मिजाज** पुं० (अ) १-प्राकृतिक। तासीर। २-मन की व्यवस्था। ३-गर्व।
**मिजाजपुरसी** स्त्री० (अ) स्वास्थ्य का हाल पूछना।
**मिजाजमुबारक** पुं० (अ) दे० 'मिजाजशरीफ'।
**मिजाजवाला** वि० (अ) घमंडी। अभिमानी।
**मिजाजशरीफ** पुं० (अ) आप अच्छे तो हैं।
**मिजाजी** वि० (हि) अभिमानी घमंडी।
**मिटना** क्रि० (हि) १-अंकित चिह्न का नष्ट होना। २-न रह जाना।
**मिटाना** क्रि० १-नष्ट करना। २-चौपट करना। ३-चिह्न आदि दूर करना।
**मिटिया** स्त्री० (हि) मटकी। वि० मिट्टी का।
**मिटियाना** क्रि० (हि) मिट्टी लगाकर साफ करना।
**मिटियामहल** पुं० (हि) मिट्टी का मकान। झोंपड़ी (व्यंग)।
**मिटियासाँप** पुं० (हि) एक प्रकार का काली चित्तियों वाला मटमैला सांप।
**मिट्टी** स्त्री० (हि) १-पृथ्वी। भूमि। २-भुरभुरा पदार्थ जो धरातल पर सब जगह पाया जाता है। धूल। ३-शरीर। ४-मृत शरीर। ५-शारीरिक बनावट।
**मिट्टी का तेल** पुं०(हि) एक खनिज तेल जो लालटेन आदि जलाने के काम आता है।
**मिट्ठी** स्त्री० (हि) चुम्बन।
**मिट्ठू** वि० (हि) १-मिष्टभाषी। २-तोता।
**मिठ** वि० (हि) मीठा का संक्षिप्त रूप।
**मिठबोला** वि०(हि) मधुरभाषी। २-मन में कपट और ऊपर से मीठी बातें करने वाला।
**मिठलोना** वि०(हि) जिसमें लोन या नमक पड़ा हुआ हो।
**मिठाई** स्त्री०(हि) १-मिठास। माधुरी। २-कोई खाने का मीठा पदार्थ। ३-कोई अच्छी बात।
**मिठाना** क्रि० (हि) मीठा होना।
**मिठौरी** स्त्री० (हि) उड़द या मूँग की बड़ी।
**मिडिल** वि० (अ) मध्य। बीच।
**मिडिलची** पुं० (हि) मिडिल परीक्षा में पास या उत्तीर्ण।
**मिडिलक्लास** पुं० (हि) आठवीं कक्षा। मध्यम श्रेणी।
**मिढ़लिया** स्त्री० (हि) कुटी। झोंपड़ी।
**मितंग** पुं० (हि) हाथी।
**मित** वि० (सं) १-परिमित। २-थोड़ा। कम।
**मितद्रु** पुं० (सं) समुद्र।
**मितभाषी** पुं० (सं) सोच समझ कर बोलने वाला।
**मितभोजी** वि० (सं) थोड़ा भोजन करने वाला।
**मितमति** पुं० (सं) थोड़ी बुद्धि वाला।
**मितव्ययिता** स्त्री० (सं) कम खर्च करना।
**मितव्ययी** वि०-(सं) कम खर्च करने वाला। किफायतसार।
**मिताई** स्त्री० (हि) मित्रता।
**मिताक्षरा** स्त्री० (सं) याज्ञवल्क्यस्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।
**मितार्थ** वि० (सं) थोड़ी बातें कहकर अपना काम करने वाला बुद्धिमान दूत।
**मिताहार** पुं० (सं) थोड़ा भोजन।
**मिति** स्त्री० (सं) १-मान। परिमाण। २-हद। सीमा ३-काल की अवधि।
**मिती** स्त्री० (हि) १-चन्द्रमास की तिथि। २-दिन।
**मितीकाटा** पुं० (हि) एक एक दिन और एक एक रकम का सूद जोड़ने का सरल ढंग।
**मिति-पूजना** पुं० (हि) हुण्डी की मियाद पूरी होना।
**मितोपभोग योजना** स्त्री० (सं) उपभोग की वस्तुओं को अल्प मात्रा में खर्च करने की योजना। (आस्टे-

रिटी स्कीम)।

**मित्त** पुं० (हि) दे० 'मित्र'।

**मित्र** पुं०(हि) १-वह जो सब बातों में शुभचिंतक या सहायक हो। सखा। दोस्त। २-सूर्य। ३-भारत के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। ४-युद्ध में सहायता देने वाला राष्ट्र।

**मित्रकर्म** पुं० (सं) मित्र के योग्य काम।

**मित्रघ्न** वि० (सं) १-मित्र का हत्यारा। २-विश्वासघातक।

**मित्रता** स्त्री० (सं) मित्र होने का भाव या धर्म।

**मित्रत्व** पुं० (सं) मित्रता।

**मित्रद्रोह** पुं० (सं) मित्र से द्रोह या शत्रुता करना।

**मित्रद्रोही** वि० (सं) मित्र का विरोध करने वाला।

**मित्रपंचक** पुं० (सं) घी, शहद, गुंजा, सुहागा, और गुग्गल इन पांचों का समूह। (वैद्यक)।

**मित्रभाव** पुं० (सं) मित्र का धर्म। मित्रता।

**मित्रभेद** पुं० (सं) मित्रता का टूट जाना।

**मित्रराष्ट्र** पुं०(सं) मित्रतापूर्ण व्यवहार करने वाला राष्ट्र। (एलाइड पावर)।

**मित्रलाभ** पुं० (सं) दोस्तों का मिलना।

**मिताई** स्त्री०(हि) मित्रता। दोस्ती।

**मित्रावरुण** पुं० (सं) मित्र तथा वरुण नामक देवता।

**मिथः** अव्य०(सं) परस्पर। आपस में।

**मिथिला** स्त्री०(सं) वर्तमान तिरहुत जहां राजा जनक राज करते थे।

**मिथिलापति** पुं० (सं) राजा जनक।

**मिथुन** पुं० (सं) १-स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २-बारह राशियों में से एक राशि। ३-समागम। मेल (जेमिनी)।

**मिथुनीकरण** पुं० (सं) जोड़ा मिलाना।

**मिथुनीभाव** पुं०(सं) समागम। जोड़ा खाना।

**मिथ्या** वि० (सं) असत्य। झूठ। (फाल्स)।

**मिथ्याचर्या** स्त्री० (सं) झूठा या कपट व्यवहार।

**मिथ्याचार** पुं० (सं) कपटपूर्ण आचरण।

**मिथ्याजल्पित** वि० (सं) झूठी चर्चा।

**मिथ्याज्ञान** पुं० (सं) भ्रम। भूल।

**मिथ्यात्व** पुं० (सं) १-मिथ्या होने का भाव। २-माया।

**मिथ्याध्यवसिति** स्त्री० (सं) एक काव्यालंकार जिसमें किसी एक असंभव बात को मानकर दूसरी बात कही जाती है।

**मिथ्यानाम** पुं० (सं) वह शब्द या नाम जो किसी वस्तु विशेष कार्य अथवा व्यक्ति के लिए उपयुक्त न हो सके। (मिसनोमर)।

**मिथ्यापवाद** पुं० (सं) झूठा आरोप। झूठी तोहमत।

**मिथ्यापुरुष** पुं० (सं) छाया पुरुष।

**मिथ्याप्रतिज्ञ** वि० (सं) झूठा वायदा करने वाला। विश्वासघाती।

**मिथ्याभास** पुं० (सं) वास्तविक स्थिति से विरुद्ध या उलटा होने वाला आभास। (पैराडॉक्स)।

**मिथ्याभियोग** पुं० (सं) झूठा आरोप।

**मिथ्यारोपण** पुं० (सं) झूठे आरोप या आधार हीन अफवाहें फैलाकर बदनाम करना। (विलिफिकेशन)

**मिथ्यावचन** पुं० (सं) असत्य या झूठा कथन।

**मिथ्यावादी** पुं० (सं) झूठ बोलने वाला।

**मिथ्याहार** पुं०(सं) अयुक्त आहार। ऊटपटांग खाना।

**मिथ्योपचार** पुं० (सं) वह चिकित्सा जो ठीक न हो।

**मिनकना** क्रि० (हि) बहुत ही दबक कर धीरे से बोलना।

**मिनट** पुं० (अ) एक घण्टे का साठवां भाग।

**मिनमिनाना** क्रि० (हि) नाक से बोलना। नकियाना

**मिनहा** पुं० (अ) १-किसी में से काटा या घटाया हुआ। २-मुजरा किया हुआ।

**मिनहाई** स्त्री० (अ) कटौती।

**मिन्नत** स्त्री० (अ) १-विनय। विनती। २-दीनता।

**मिन्नत-गुजार** वि० (अ) आभारी। कृतज्ञ।

**मिमियाना** क्रि० (हि) बकरी या भेड़ का बोलना।

**मियाँ** पुं० (फा) १-स्वामी। मालिक। पति। ३-महाशय। ४-पहाड़ी। राजपूतों की एक उपाधि।

**मियाँबीबी** पुं० (फा) पति-पत्नी।

**मियाँमिट्ठू** पुं० (फा) १-मधुरभाषी। २-तोता। ३-महामूर्ख।

**मियाद** स्त्री० (हि) दे० 'मीआद'।

**मियान** स्त्री० (फा) १-वह खेत जो गांव के बीच में हो। २-गाड़ी का बम। ३-तलवार रखने का खोल वि० मझोले आकार का।

**मियानी** स्त्री(फा) पाजामें के पायंचों के बीच का कपड़ा।

**मिरग** पुं० (हि) मृग। हिरन।

**मिरगचिड़ा** पुं० (हि) एक चिड़िया।

**मिरगछाला** स्त्री० (हि) दे० 'मृगछाला'।

**मिरगी** स्त्री० (हि) एक मानसिक रोग जिसमें रोगी अचानक जमीन पर गिर पड़ता है। (एपीलेप्सी)

**मिरचा** स्त्री० (हि) लाल मिर्च।

**मिरजई** स्त्री० (फा) एक प्रकार का बन्ददार कमर तक का कुरता।

**मिरजा** पुं० (फा) १-मीर या अमीर का लड़का। २-राजकुमार। ३-मुगलों की एक उपाधि। वि० कोमल सुकुमार।

**मिरजान** पुं० (फा) मूंगा।

**मिरदंग** पुं० (हि) दे० 'मृदंग'।

**मिरवना** क्रि० (हि) मिलाना।

**मिरियासी** स्त्री० (हि) पैतृक संपत्ति।

**मिर्गी** स्त्री०(हि) दे० 'मिरगी'।

**मिर्च** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की फली जो बहुत

चरपरी होती है और साग आदि व्यञ्जनों में डाली जाती है। लाल मिरच। २-उक्त प्रकार का एक गोल छोटा दाना। काली मिर्च।

**मिल** स्त्री० (अ) १-अनाज आदि पीसने की कल जो बिजली से चलती है। २-कपड़ा आदि बनाने का बड़ा कारखाना।

**मिलकना** क्रि० (हि) जलना।

**मिलकी** स्त्री० (अ) दे० 'मिल्की'।

**मिलता-जुलता** वि० (हि) समान। एक सा।

**मिलन** पुं०(सं)१-मिलाप। भेंट। २-मिश्रण। मिलावट

**मिलनसार** वि० (हि) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने-जुलने वाला।

**मिलनसारी** स्त्री० (हि) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने का गुण।

**मिलना** क्रि०(हि) १-सम्मिलित होना। २-दो अलग अलग पदार्थों का एक होना। ३-संभोग करना। ४-मेलमिलाप होना। ५-पता लगाना। भेंट करना।

**मिलनी** स्त्री०(हि) कन्या पक्ष वालों का वर पक्ष वालों से मिलना तथा रुपये आदि देने की एक रस्म।

**मिलवना** क्रि० (हि) दे० 'मिलाना'।

**मिलवाई** स्त्री०(हि) दे० 'मिलाई'।

**मिलवाना** क्रि० (हि) १-किसी को मिलने में प्रवृत्त करना। २-परिचय कराना।

**मिलाई** स्त्री०(हि) १-मिलाने की मजदूरी। २-मिलनी ३-जेल के कैदियों की अपने घर वालों से भेंट।

**मिलाजुला** वि० (हि) १-मिश्रित। २-सम्मिलित।

**मिलान** पुं० (हि) १-तुलना। मुकाबला। २-मिलाई ३-जांचना।

**मिलाना** क्रि० (हि) १-सम्मिलित या मिश्रित करना। २-जोड़ना। चिपकाना। ३-तुलना करना। ४-जांच करना। ५-संधि या सुलह कराना। ६-बाजा-यन्त्रों को सुर में करना। ७-स्त्री या पुरुष का संयोग कराना।

**मिलाप** पुं० (हि) १-मेल। २-भेंट। मुलाकात। ३-संभोग। ४-प्रेम। ५-मित्रता।

**मिलाव** पुं० (हि) १-मिलने की क्रिया या भाव। २-मिलाप।

**मिलावट** स्त्री० (हि) १-मिश्रण। २-बढ़िया वस्तु में घटिया या नकली वस्तु का मिश्रण। ३-खोट।

**मिलिंद** पुं० (सं) भौंरा।

**मिलिक** स्त्री० (हि) दे० 'मिल्क'।

**मिलित** वि० (सं) युक्त। मिला हुआ।

**मिलौनी** स्त्री० (हि) १-मिलाई। २-मिलावट।

**मिल्क** स्त्री० (अ) १-जमींदारी। २-माल। संपत्ति। ३-अधिकार। ४-भूमि-अधिकार।

**मिल्कियत** स्त्री० (हि) दे० 'मिल्कीयत'।

**मिल्की** पुं० (अ) जमींदार। जागीरदार।

**मिल्कीयत** स्त्री० (अ) १-जागीर। संपत्ति। २-भूमि या संपत्ति पर मालिक का अधिकार।

**मिल्लत** स्त्री० (अ) धार्मिक सम्प्रदाय। (हि) १-मेल जोल मिलाप। २-मिलनसारी। ३-मंडली।

**मिशन** पुं० (अ) १-वह व्यक्ति या मंडली जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजी जाय। २-उद्देश्य ३-वह संस्था, विशेष कर ईसाई मतावलम्बियों की, जो संघटित रूप में धर्म प्रचार का उद्योग करती है ४-दूतमंडल।

**मिशनरी** स्त्री० (अ) ईसाई धर्मोपदेशक। पादरी।

**मिश्र** वि० (सं) १-मिला हुआ। २-श्रेष्ठ। बड़ा। ३-संयुक्त। पुं० १-कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि। २-रक्त। ३-सन्निपात। ४-मूली।

**मिश्रगुणा** पुं० (हि) आने पाई या मन, सेर आदि की गुणा।

**मिश्रण** पुं०(सं) १-मिलावट (मिक्सचर)। २-गणित में जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना।

**मिश्र-धातु** स्त्री० (सं) दो या दो से अधिक धातुओं को मिला कर बनाई हुई बढ़िया धातु। (एलॉय)।

**मिश्रधान्य** पुं० (सं) कई प्रकार के धन जो एक में मिले हों।

**मिश्रभाग** पुं०(सं) मन, सेर या आने, पाई का भाग (गणित)।

**मिश्रवन** पुं० (सं) बैंगन।

**मिश्रवर्ण** पुं० (सं) गन्ना। वि० रङ्गबिरङ्गा।

**मिश्रशब्द** पुं० (सं) खच्चर।

**मिश्रित** वि० (सं) एक में ही मिले हुए।

**मिश्री** स्त्री० (हि) दे० 'मिस्री'।

**मिष** पुं० (सं) १-छल। कपट। २-बहाना। ३-ईर्ष्या ४-सेचन। ५-होड़।

**मिष्ट** वि०(सं) १-मीठा। मधुर। पुं० मिठाई। मीठा रस।

**मिष्टभाषी** पुं० (सं) मीठा बोलने वाला। मधुरभाषी

**मिष्टान्न** पुं० (सं) पकवान। मिठाई।

**मिस** पुं०(हि) १-बहाना। हीला। २-पाखंड। आडम्बर। (फा) तांबा।

**मिसगार** पुं० (फा) कसेरा।

**मिसहा** पुं० (हि) बहानेबाज। पाखंडी।

**मिसकीन** वि० (अ) दे० 'मिस्कीन'।

**मिसकीनता** स्त्री० (हि) दीनता। गरीबी। नम्रता।

**मिसना** क्रि० (हि) मिलना। मिश्रित होना।

**मिसरा** पुं० (अ) १-शेर का आधा भाग। २-पद। ३-उर्दू की कविता के लिए दी गई समस्या।

**मिसरी** स्त्री० (हि) १-मिस्र देश की भाषा। २-थाल आदि में जमाई हुई दानेदार चीनी।

**मिसरोटी** स्त्री० (हि) १-मिस्से आटे की रोटी। २-बाटी।

**मिसल** स्त्री० (हि) दे० 'मिसिल'।
**मिसहा** वि०(हि) बहानेबाज। कपटी। ढोंगी।
**मिसाल** स्त्री०(अ) १-उपमा। उदाहरण। २-लोकोक्ति कहावत।
**मिसिल** स्त्री० (अ) १-किसी एक विषय या मुकदमे से सम्बन्ध रखने वाले एक जगह किए हुए कागज-पत्र (फाइल)। २-किसी पुस्तक के अलग-अलग छापे हुए फार्म जो सिलाई के लिए रखे गए हों।
**मिसिली** वि० (अ) जिसकी मिसल बन चुकी हो। सजायाफ्ता।
**मिस्कीन** वि०(अ) १-दीन। बेचारा। २-गरीब। ३-सीधासाधा।
**मिस्कीनी** स्त्री०(अ) १-दीनता। २-गरीबी। ३-सुशीलता।
**मिस्कोट** पु० (हि) १-गुप्त परामर्श। २-भोजन। ३-एक साथ भोजन करने वाले।
**मिस्टर** पुं० (अ) महाशय।
**मिस्तरी** पुं०(हि) यंत्रों की मरम्मत करने, काठ, धातु की वस्तुएँ बनाने का कारीगर।
**मिस्तरीखाना** पु० (हि) लोहार और बढ़ई दोनों का एक जगह बैठकर काम करने का स्थान।
**मिस्मरेजम** पु० (हि) इच्छा शक्ति से दूसरे आदमी को मूर्छित या अपने वश में करने की विद्या।
**मिस्र** पुं० (अ) उत्तरी अफ्रीका में स्थित एक प्राचीन देश।
**मिस्री** स्त्री० (हि) १-दे० 'मिसरी'। २-मिस्र देश की भाषा।
**मिस्ल** वि०(अ) सामान्य। तुल्य। बराबर।
**मिस्सा** पुं० (हि) १-कई प्रकार की दालों को पीसकर बनाया गया आटा। २-मूंग उड़द आदि दालों का भूसा।
**मिस्सी** स्त्री० (हि) स्त्रियों के शृंगार की एक वस्तु। जिसके मलने पर मसूड़े काले पड़ जाते हैं।
**मिस्सी-काजल** पुं० (हि) बनाव-शृङ्गार।
**मिहचना** क्रि० (हि) दे० 'मीचना'।
**मिहानी** स्त्री० (हि) मथानी।
**मिहिचना, मिहीचना** क्रि० (हि) दे० 'मीचना'।
**मिहिर** पुं० (सं) १-सूर्य। २-बादल। ३-चन्द्रमा। ४-पवन।
**मिहीं** वि० (हि) महीन। बारीक।
**मींगनी** स्त्री० (हि) दे० 'मेंगनी'।
**मींग** स्त्री० (हि) बीज का गूदा। गिरी।
**मींजना** क्रि० (हि) १-हाथों को मलना। मसलना। २-आंखें बन्द करना।
**मींडना** क्रि० (हि) हाथों को मसलना या मलना।
**मीआद** स्त्री० (अ) अवधि। मियाद।
**मीआदी** वि० (हि) १-जिसके लिए अवधि नियत हो। २-जो कारागार रह चुका हो।
**मीआदी-बुखार** पुं०(हि) वह बुखार जो नियत अवधि पर बिना दवाई उतर जाता है। सन्निपात। (टाइफाइड)।
**मीच** स्त्री० (हि) मृत्यु।
**मीचना** क्रि० (हि) (आंखें) मूँदना या बन्द करना।
**मीचु** स्त्री० (हि) मौत। मृत्यु।
**मीजना** क्रि० (हि) मसलना। मलना।
**मीजान** स्त्री० (अ) १-तुला। तराजू। २-योग। जमा (गणित)।
**मीटर** पुं० (अ) बिजली, पानी या किसी और वस्तु के नापने का यन्त्र।
**मीठा** वि० (हि) १-मधुर। २-स्वादिष्ट। ३-धीमा। सुस्त। ४-साधारण। ५-नपुंसक। ६-प्रिय। पुं० १-मिठाई। २-गुड़। ३-मीठा नीबू।
**मीठाकद्दू** पुं० (हि) कुम्हड़ा। सीताफल।
**मीठाचावल** पुं०(हि) चीनी या गुड़ डालकर उबाला हुआ चावल।
**मीठाठग** पुं० (हि) मीठा बोल कर ठगने वाला मित्र
**मीठातंबाकू** पुं० (हि) वह पीने का तम्बाकू जिसमें शीरा और गुड़ अधिक मिलाया गया हो।
**मीठातेल** पुं० (हि) तिल का तेल।
**मीठानीम** पुं० (हि) एक छोटा वृक्ष जिसमें मीठी गंध निकलती है।
**मीठापानी** पुं० (हि) नीबू का सत, और गैस मिला बोतल में बन्द पानी। (लेमोनेड)।
**मीठा बरस** पुं०(हि) स्त्रियों की अवस्था का अठारहवां वर्ष।
**मीठाभात** पुं० (हि) दे० 'मीठा चावल'।
**मीठामीठा** वि० (हि) थोड़ा-थोड़ा।
**मीठी** वि० (हि) मधुर। मिठास वाली।
**मीठीछुरी** वि०(हि) विश्वासघातक। कपटी। छली।
**मीठीतूंबी** स्त्री० (हि) कद्दू।
**मीठीनजर** स्त्री० (हि) प्रेम भरी दृष्टि।
**मीठीनींद** स्त्री० (हि) सुख की नींद
**मीठीमार** स्त्री० (हि) प्रेम की मार।
**मीठीलकड़ी** स्त्री० (हि) मुलेठी।
**मीड़** स्त्री०(हि) स्वर बदलने का सुन्दर ढंग। (संगीत)
**मीत** पुं० (हि) मित्र।
**मीन** स्त्री० (स) १-मछली। २-एक राशि। ३-एक नक्षत्र। (पिसेस)।
**मीनकेतन** पुं० (स) कामदेव।
**मीनक्षेत्र** पुं० (सं) १-मछलियों को सुरक्षित रखने तथा उनकी नसल बढ़ाने का क्षेत्र। २-वह राजकीय-विभाग जिसके अधीन मछलियों के संवर्धन, क्रय-विक्रय आदि की व्यवस्था की जाती है। (फिशरीज)।

**मीनगंधा** स्त्री० (सं) सत्यवती। मत्स्यगंधा।

**मीनध्वज** पुं० (सं) कामदेव।

**मीन-मेख** पुं० (हि) १-सोचविचार। २-असमंजस। ३-दोष निकालना।

**मीना** पुं० (फा) १-नीले रङ्ग का पत्थर। २-सुराही। ३-सोने चांदी पर किया जाने वाला एक प्रकार का रङ्गीन काम। ४-शराब। ५-रङ्गबिरंगा शीशा।

**मीनाकार** पुं० (फा) सोने चांदी आदि पर मीना करने वाला।

**मीनाकारी** स्त्री० (फा) १-सोने पर रङ्ग-बिरङ्गा किया जाने वाला काम। २-दूसरे के काम में दोष निकालना।

**मीनाबाजार** पुं० (फा) बहुत सुन्दर और सजा हुआ बाजार जहाँ अधिकतर स्त्रियां ही जाती हैं।

**मीनार** (फा) १-बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तम्भ या इमारत। लाट। धरहरा।

**मीनालय** पुं० (स) समुद्र।

**मीमांसक** पुं० (सं) मीमांसा या विवेचन करने वाला.

**मीमांसा** स्त्री० (सं) १-तर्कवितर्क द्वारा यह अनुमान लगाना कि कोई बात कैसी है। २-हिन्दुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन।

**मीमांसाकार** पुं० (सं) मीमांसा सूत्र के रचयिता जैमिनी ऋषि।

**मीयाद** स्त्री० (अ) दे० 'मियाद'।

**मीर** पु०(सं) १-समुद्र। २-सीमा। ३-जल। ४-पर्वत का भाग। पुं० (फा) १-सरदार। नेता। २-मुसलमानों के सैयदों की एक उपाधि। ३-ताश के बादशाह का पत्ता। ४-कोई प्रतियोगिता जीतने वाला।

**मीरजा** पुं० (हि) दे० 'मिर्जा'।

**मीर-मुंशी** पुं० (फा) प्रधान लिपिक। पेशकार।

**मीरास** स्त्री० (अ) उत्तराधिकार में मिली हुई संपत्ति। बपौती।

**मीरासी** पुं०(अ) एक मुसलमान जाति जो गाने बजाने का काम करती है।

**मील** पुं० (अ) १७६० गज का एक माप। (माइल)।

**मीलित** वि० (सं) १-मूंदा हुआ। २-सिकोड़ा हुआ। पुं० एक अलंकार।

**मुंगरा** पुं० (हि) १-लकड़ी का हथौड़ा। २-नमकीन बुँदियां।

**मुंगरी** स्त्री० (हि) छोटा मुंगरा।

**मुंगौछी** स्त्री० (हि) मूंग की बनी हुई बरी।

**मुंगौरी** स्त्री० (हि) दे० 'मुंगौछी'।

**मुंचन** पुं० (हि) दे० 'मोचन'।

**मुंज** पुं० (हि) मूँज।

**मुंजमणि** पु० (हि) पुखराज।

**मुंजमेखला** स्त्री० (हि) मूंज की बनी करधनी।

**मुंड** पुं० (सं) १-खोपड़ी। सिर। २-कटा हुआ सिर ३-नाई। वृक्ष का ठूंठ। वि० मुंडा हुआ। बिना बाल का।

**मुंडक** पुं० (सं) १-नाई। सिर।

**मुंडकर** पुं० (सं) प्रति व्यक्ति पर लगने वाला कर (पोल टैक्स)।

**मुंडकरी** स्त्री०(हि) दोनों घुटनों के बीच में सिर रखने की मुद्रा।

**मुंडचिरा** पुं० (हि) वह मुसलमान फकीर जो भिक्षा न मिलने पर सिर को घायल कर लेते हैं।

**मुंडचिरापन** पुं० (हि) लेनदेन के काम में झगड़ा।

**मुंडन** पुं० (सं) १-सिर या किसी अंग के बाल साफ करना। २-बच्चों के पहली दफा बाल उतारने का संस्कार।

**मुंडना** क्रि० (हि) १-उस्तरे आदि से सिर के बाल उतरवाना। लूटा या ठगा जाना।

**मुंडमाला** स्त्री० (सं) कटे हुए सिरों की माला।

**मुंडमाली** पुं० (सं) शिव। कटे हुए मुंडों की माला पहनने वाला।

**मुंडला** पुं० (हि) १-चरखे के बीच का भाग। २-एक जंगली जाति।

**मुंडा** पुं० (हि) १-वह जिसके बाल मुंडे हुए हों। २-सिर मुंडा कर जो साधु बन गया हो। ३-बिना सींग का पशु। ४-लौंडा (पंजाबी)। ५-महाजनी लिपि। ६-एक जाति। ७-बिना नोक का जूता। मुर्गाबी। ८-एक आदिवासी जाति। (सं) १-संन्यासिनी। २-वह स्त्री जिसने बाल मुंडवा लिए हों। (हि) बिना बाल या सींग का गंजा।

**मुँडाई** स्त्री० (हि) मूंडने की क्रिया या मजदूरी।

**मुँडाना** क्रि० (हि) दे० 'मुड़ाना'।

**मुँडासा** पुं०(हि) सिर पर बांधने की पगड़ी या साफा

**मुंडित** वि० (सं) मुँडा हुआ। पुं० लोहा।

**मुंडिया** स्त्री० (हि) १-सिर। मूँड। २-सिर मुँडा साधू। ३-बिना मात्रा की महाजनी भाषा।

**मुंडी** स्त्री० (हि) १-वह स्त्री जिसका सिर मुँडा हो। २-विधवा। ३-एक प्रकार की जूती। ४-महाजनी भाषा। वि० (सं) बिना बाल या सींग का। पुं०१-शिव। २-नाई।

**मुँडेर** स्त्री० (हि) १-मुँडेरा। २-खेत के चारों ओर मेड़ या डोला।

**मुँडेरा** पुं० (हि) १-छाती की दीवार का ऊपर उठा हुआ भाग। २-किसी प्रकार का बांधा हुआ पुश्ता।

**मुँडेरी** स्त्री० (हि) छोटा मुँडेरा।

**मुंडो** स्त्री० (हि) १-सिर मुँडी स्त्री। २-विधवा। (गाली)।

**मुंतजिम** पुं० (अ) प्रबंध करने वाला। व्यवस्थापक।

**मुंतजिर** वि० (अ) प्रतीक्षा करने वाला।

**मुँदना** क्रि०(हि) १-बन्द होना। २-छिपना। ३-छिद्र आदि का पूर्ण होना।
**मुँदरी** स्त्री० (हि) १-अंगूठी। २-सादा उंगली में पहनने का छल्ला।
**मुंशियाना** वि० (हि) मुंशियों का सा।
**मुंशी** पुं० (अ) १-लिखने का काम करने वाला। लिपिक। २-उर्दू या फारसी का अध्यापक। ३-मजमून लिखने वाला।
**मुंशीगिरी** स्त्री० (अ) मुंशी का काम या पद।
**मुंसरिम** पुं० (अ) १-प्रबंधक। २-समाहर्त्रालय (कलक्टॉरेट) का प्रधान कर्मचारी।
**मुंसिफ** पुं० (अ) १-न्याय करने वाला। २-दीवानी विभाग का न्यायाधीश जो छोटे मुकदमे करता है।
**मुंसिफी** स्त्री० (अ) १-मुंसिफका पद। २-मुंसिफ की अदालत। ३-न्यायशीलता।
**मुँह** पुं० (हि) १-प्राणियों का वह अंग जिसमे वे बोलते और खाते हैं। २-चेहरा। ३-किसी वस्तु का ऊपरी कुछ खुला हुआ भाग। ४-छिद्र। ५-सामना। ६-साहस। हिम्मत। अव्य० ओर। तरफ
**मुँह-अँधेरे** अव्य (हि) बहुत सवेरे। तड़के।
**मुँह-अखरी** वि० (हि) जबानी।
**मुँहचंग** पुं० (हि) एक प्रकार का बाजा।
**मुँहचटौवल** स्त्री० (हि) १-चुम्बन। २-बकवाद।
**मुँहचोर** वि० (हि) झेंपू। दूसरों के सामने आने से कतराने वाला।
**मुँहचोरी** स्त्री० (हि) मुंहचोर होने का भाव।
**मुँहछुआई** स्त्री० (हि) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना।
**मुँहछुट** वि० (हि) मुँहफट।
**मुँहजोर** वि० (हि) १-बकवादी। २-उद्दण्ड। मुँहफट
**मुँहजोरी** स्त्री० (हि) १-उद्दण्डता। लड़कपन।
**मुँह-दर-मुँह** अव्य० (हि) सामने।
**मुँहदिखाई** स्त्री०(हि) पहली बार वधु के ससुराल आने पर मुंह देखने की रस्म या उसमें दिया गया धन।
**मुँह-देखा** वि० (हि) १-दिखाऊ। २-केवल सामने होने वाला। ३-सदा आज्ञा की प्रतीक्षा में रहने वाला।
**मुँह-पातर** वि० (हि) बकवादी।
**मुँह-फट** वि० (हि) जो अनुचित या कटु बात कहने में संकोच न करता हो।
**मुँह-बंद** वि० (हि) १-जिसका मुँह खुला न हो। २-कुमारी।
**मुँह-बंधा** पुं० (हि) जैन साधु जो मुँह पर कपड़ा बांधते है।
**मुँह-बोला** वि० (हि) माना हुआ। मुंह से कहकर बनाया हुआ।
**मुँह-भर** अव्य० (हि) अच्छी तरह से। दिल से।
**मुँह-मांगा** वि० (हि) अपनी इच्छा के अनुकूल।
**मुँह-लगा** वि० (हि) हठी। जिद्दी। शोख।
**मुँहाचही** स्त्री० (हि) शेखी बघारना। डींग मारना।
**...मुँह** अव्य० (हि) मुँह तक। भरपूर। लबालब।
**मुँहासा** पुं०(हि) युवावस्था में मुँह पर निकलने वाले दाने।
**मुअज्जम** वि० (अ) बुजुर्ग। पूज्य।
**मुअज्जिन** पुं०(अ) वह जो मस्जिद से नमाज के लिए सबको बुलाने के लिए अजाँ देता है।
**मुअत्तल** वि० (अ) १-जिसके पास काम न हो। २-जो अभियोग लगने के कारण जाँच के अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने स्थान से हटा दिया गया हो।
**मुअत्तली** स्त्री० (अ) काम से कुछ समय तक अलग कर दिया जाना।
**मुअल्लिम** पुं० (अ) शिक्षक। अध्यापक।
**मुआ** वि० (हि) मरा हुआ। मृत।
**मुआइना, मुआयना** पुं० (अ) निरीक्षण।
**मुआफ** वि० (अ) दे० 'माफ'।
**मुआफिक** वि० (अ) दे० 'मुवाफिक'।
**मुआफिकत** स्त्री० (अ) १-अनुरूपता। २-अनुकूलता। ३-मित्रता।
**मुआमला** पुं० (अ) दे० 'मामला'।
**मुआवजा** पुं० (अ) १-बदला। पलटा। २-हानि के बदले में मिलने वाला धन।
**मुकट** पुं० (हि) दे० 'मुकुट'।
**मुकतई** स्त्री० (हि) १-मुक्ति। २-छुटकारा।
**मुकता** पुं० (हि) दे० 'मुक्ता'। वि० अधिक। बहुत
**मुकतालि** स्त्री० (हि) दे० 'मुक्तावली'।
**मुकति** स्त्री० (हि) दे० 'मुक्ति'।
**मुकदमा** पुं० (हि) १-वह विवाद जो किसी पक्ष द्वारा न्यायालय के सम्मुख निर्णय के लिए रखा गया हो। दावा। नालिश।
**मुकदमेबाज** वि० (हि) प्रायः मुकदमे लड़ने वाला।
**मुकदमेबाजी** स्त्री० (हि) मुकदमा लड़ने का कार्य।
**मुकद्दम** वि० (अ) १-प्राचीन। पुराना। २-आवश्यक ३-सर्वश्रेष्ठ।
**मुकद्दमा** पुं० (अ) दे० 'मुकदमा'।
**मुकद्दर** पुं० (अ) भाग्य। प्रारब्ध।
**मुकद्दरआजमाई** स्त्री०(अ) भाग्य या मुकद्दर की परीक्षा करना।
**मुकना** क्रि०(हि) १-मुक्त होना। छूटना। २-समाप्त होना।
**मुकम्मल** वि० (अ) पूरा किया हुआ। पूर्ण।
**मुकरना** क्रि० (हि) १-कोई बात कहकर उससे फिर जाना। २-मुक्त होना।
**मुकरी** स्त्री० (हि) वह कविता जिसमें पहले कही गई बात से मुकरते हुए फिर और तरह बात बनाते हुए कहा जाय।

मुकर्रम वि० (अ) पूज्य। सम्मान करने योग्य।
मुकर्रर वि० (अ) १-निश्चित। नियत। २-नियुक्त। अव्य० फिर। दुबारा।
मुकलाना क्रि० (हि) १-खोलना। २-छोड़ना।
मुकाबला पुं० (अ) सामान। मुठभेड़। तुलना।
मुकाबिल वि० (अ) १-सामने वाला। २-समान। पुं० प्रतिद्वन्द्वी। अव्य० सामने।
मुकाम पुं० (हि) १-स्थान। जगह। २-पड़ाव। ३-सङ्गीत में सरोद का कोई परदा। ४-अवसर।
मुकामी वि० (हि) स्थानीय। स्थानिक।
मुकामी-अधिकारी पुं० (हि) स्थानीय अफसर।
मुकामी-खबर स्त्री० (हि) स्थानीय समाचार।
मुकियाना क्रि० (हि) आटा गूंदने की तरह शरीर को मुक्कियों से बार-बार दबाना।
मुकुंद पुं० (सं) १-विष्णु। २-पारा। ३-कृष्ण।
मुकुंदक पुं० (सं) १-एक प्रकार का धान। २-प्याज
मुकुट पुं० (सं) राजाओं आदि के सिर पर धारण करने का ताज।
मुकुटधारी वि० (सं) ताज या मुकुट धारण करने वाला।
मुकुताहल पुं० (हि) मोती।
मुकुर पुं० (सं) १-शीशा। दर्पण। २-बेर का पेड़। ३-मोतिया।
मुकुल पुं० (सं) १-कली। २-शरीर। ३-आत्मा। ४-पृथ्वी। ५-जमालगोटा।
मुकुलित वि० (सं) १-जिसमें कलियां मिलती हों। २-कुछ-कुछ खुला। ३-झपता हुआ (नेत्र)।
मुक्का पुं० (हि) आघात। प्रहार या आघात करने के लिए बंधी हुई मुट्ठी। घूंसा।
मुक्की पुं० (हि) घूंसा। मुक्का। २-मुट्ठी बांध कर किसी के शरीर पर धीरे-धीरे थकावट दूर करने के लिए मारना।
मुक्केबाजी स्त्री० (हि) मुक्के की लड़ाई। घूँसेबाजी।
मुक्केस पुं० (हि) दे० 'मुक्कैश'।
मुक्कैश पुं०(अ) जरी का बना हुआ कपड़ा। बादला। ताश।
मुक्कैशी वि० (अ) जरी या ताश का बना हुआ।
मुक्कैशीगोखरू पुं० (हि) तारों को मोड़ कर बनाया एक प्रकार का महीन गोखरू।
मुक्त वि० (सं) १-जो बंधन से छुटकारा पा गया हो २-चलने के लिए छोड़ा हुआ। ३-स्वच्छन्द। ४-मोक्षप्राप्त।
मुक्तकंचुक पुं० (सं) वह सर्प जिसने अभी केंचुली छोड़ी हो।
मुक्तकेश वि० (सं) जिसका जूड़ा खुला हुआ हो।
मुक्तकेशी स्त्री० (सं) काली देवी का एक नाम।
मुक्तचेता वि० (सं) जिसे मोक्ष प्राप्त करने का ज्ञान हो गया हो।
मुक्तद्वार वि० (सं) जिसका द्वार खुला हो। निर्बाध।
मुक्तवसन वि०(सं) नंगा। बिना कपड़े पहने हुए। पुं० दिगम्बर जैन।
मुक्तवाणिज्य पुं० (सं) दे० 'मुक्तव्यापार'।
मुक्तव्यापार पुं० (सं) वह विदेशों के साथ होने वाला व्यापार जिसमें कर आदि की बाधाएँ न हों। (फ्री-ट्रेड)।
मुक्तव्यापारनीति स्त्री०(सं) दूसरे देशों के साथ बिना किसी बाधा या कर आदि के व्यापार करने की नीति। (फ्री ट्रेड पॉलिसी)।
मुक्तहस्त वि० (सं) जो उदारतापूर्वक दान करता हो उदार।
मुक्ता स्त्री० (सं) १-मोती। २-रासना।
मुक्ताकलाप पुं० (सं) मोतियों का हार।
मुक्तागार पुं०(सं) सीपी जिसमें से मोती निकलता है
मुक्तागुण पुं० (सं) मोतियों की लड़ी।
मुक्ताफल पुं० (सं) १-मोती। २-कपूर।
मुक्तालता स्त्री० (सं) मोतियों का हार।
मुक्तावली स्त्री० (सं) मोतियों की माला या लड़ी।
मुक्ति स्त्री० (सं) १-बन्धन, अभियोग से छूटने का भाव। (रिलीज)। २-मोक्ष। नियम या पणभार से छुटकारा। (एक्जेम्पशन)।
मुक्तिक्षेत्र पुं० (सं) १-काशी। २-कावेरी नदी के पास का क्षेत्र।
मुक्तिधाम पुं० (सं) तीर्थ।
मुक्तिपत्र पुं० (सं) छुटकारा देने का आज्ञा पत्र। (रिलीज-आर्डर)।
मुक्तिप्रद पुं० (सं) हरा मूंग। वि० मुक्ति देने वाला
मुक्तिफौज पुं० (स) योरुप में देश की उन्नति के लिए या (ईसाई) धर्म प्रचार के लिए बनाए गये स्वयं-सेवकों का संघटन। (साल्वेशन आरमी)।
मुक्तिमंडप पुं० (सं) काशी का विश्वनाथ मन्दिर।
मुक्तिमार्ग पुं० (सं) साधन। मुक्ति पाने का रास्ता।
मुक्तियुद्ध पुं० (सं) किसी राष्ट्र के स्वयं सेवकों द्वारा अपने देश को विदेशी राष्ट्र से मुक्त कराने के लिए किया गया युद्ध। (वार आफ लिबरेशन)।
मुक्तिलाभ पुं० (सं) छुटकारा। मुक्ति।
मुक्तिस्नान पुं० (सं) १-मोक्ष की प्राप्ति के बाद का स्नान। २-ग्रहण की समाप्ति।
मुख पुं० (सं) १-मुँह। २-घर का दरवाजा। ३-आरम्भ। ४-शब्द। ५-नाटक। ६-जीरा।
मुखकांति पुं० (स) सौंदर्य।
मुखचित्र पुं०(सं) किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ या आरम्भ में दिया हुआ चित्र।
मुखचूर्ण पुं० (सं) चेहरे पर सुन्दरता के लिए मलने का सुगंधित चूर्ण। (पाउडर)।

**मुखच्छद** पुं० (सं) नकाब। बुरका।
**मुखज** वि० (सं) मुँह से उत्पन्न। पुं० ब्राह्मण।
**मुखड़ा** पुं० (हि) मुख। चेहरा। (सुन्दरतासूचक)।
**मुखतार** पुं० (अ) किसी के प्रतिनिधि रूप में काम करने वाला अधिकार प्राप्त कर्मचारी। अभिकर्त्ता। (एजेंट)।
**मुखतारनामा** पुं० (अ) वह पत्रक जिसके द्वारा किसी को प्रतिनिधि रूप में कार्य करने को दिया जाता है (पावर आफ एटार्नी)।
**मुखतारी** स्त्री० (अ) मुख्तार होकर दूसरे के प्रतिनिधि रूप में मुकदमा आदि लड़ने का कार्य।
**मुख्तारे-आम** पुं० (अ) वह व्यक्ति जिसे किसी के प्रतिनिधि रूप में कार्य करने का अधिकार हो।
**मुख्तारे-खास** पुं० (अ) वह व्यक्ति जिसे किसी विशेष काम या मुकदमे के लिए अधिकार पत्र दिया गया हो।
**मुखदूषण** पुं० (सं) प्याज।
**मुखदूषिका** स्त्री० (सं) मुँहासा।
**मुखधावन** पुं० (सं) मुँह धोना।
**मुखन्नस** पुं० (अ) नपुंसक।
**मुखपट** पुं० (सं) घूँघट।
**मुखपत्र** पुं० (स) वह पत्र जिसके द्वारा किसी दल या संस्था के विचार जनता में फैलाये जायें। (ऑर्गन)
**मुखपाक** पुं० (सं) मुख पर छोटे-छोटे घाव हो जाने का रोग।
**मुखपात्र** पुं० (सं) वह जिसकी आड़ में रहकर कोई कार्य किया जाय। प्रवक्ता।
**मुखपिंड** पुं० (सं) मृत मनुष्यों के मुख में अंत्येष्टि से पहले दिया जाने वाला पिंड।
**मुखपिडिका** पुं० (सं) मुँहासा।
**मुखपृष्ठ** पुं०(सं) पुस्तक या समाचार का पहला पृष्ठ।
**मुखप्रक्षालन** पुं० मुँह धोना।
**मुखप्रसाद** पुं० (सं) मुख की प्रसन्न मुद्रा।
**मुखप्रिय** पुं० (सं) १-स्वादिष्ट। २-ककड़ी। ३-नारंगी
**मुखबंध** पुं० (सं) प्रस्तावना। किसी ग्रन्थ की भूमिका
**मुखबंधन** पुं० (सं) दे० 'मुखबंध'।
**मुखबिर** पुं० (अ) १-खबर देने वाला। जासूस। २-वह अपराधी जो सरकारी गवाह बन जाय।
**मुखबिरी** स्त्री० (अ) जासूसी।
**मुखभूषण** पुं० (सं) पान।
**मुखमंडल** पुं० (सं) चेहरा।
**मुखमार्जन** पुं० (सं) मुँह धोना।
**मुखर** वि० (सं) अप्रिय या कटु बोलने वाला।
**मुखरित** वि० (सं) मुख से निकला हुआ। (शब्द या वाक्य)। शब्दायमान।
**मुखरुचि** स्त्री० (सं) दे० 'मुखकांति'।
**मुखरोग** पुं० (सं) मुँह में छाले या मसूड़ों की सूजन आदि का रोग।
**मुखरोधकनियम** पुं०(सं)दे०'मुखावरोधक अधिनियम'
**मुखरोधन** पुं० (सं) भाषण देने या बोलने पर रोक लगा देना। मुँह बन्द कर देना। (गैगिंग)।
**मुखलेप** पुं० (सं) मुँह पर लगाने का सौंदर्य बढ़ाने का लेप।
**मुखवाद्य** पुं० (सं) मुँह से बजाने वाले बाजे जैसे-बंसरी।
**मुखवास** पुं० (सं) मुख को सुगन्धित करने के लिए इलायची आदि का बना एक चूर्ण।
**मुखशुद्धि** स्त्री० (सं) १-मुख को मंजन आदि करके साफ करना। २-सुगन्धित वस्तुएँ खाकर मुख की दुर्गंध दूर करना।
**मुखशोथ** पुं० (सं) मुख पर की सूजन।
**मुखशोष** पुं० (सं) १-प्यास। २-गरमी या प्यास के कारण मुख सूखना।
**मुखश्री** पुं० (सं) मुख कांति।
**मुखस्राव** पुं० (सं) १-थूक। २-मुँह में से निकलने वाली राल आदि का बच्चों का एक रोग।
**मुखाकृति** स्त्री० (सं) चेहरा।
**मुखाग्र** पुं० (सं) १-ओंठ। २-किसी वस्तु का अग्र भाग। वि० कंठस्थ। जो जबानी याद हो।
**मुखातब** पुं० (अ) जिससे बातचीत की जाय।
**मुखातिब** वि० (अ) बातचीत करने वाला। जिससे कुछ कहा जाय।
**मुखापेक्षी** वि० (सं) दूसरे का मुँह ताकने वाला। आश्रित।
**मुखामय** पुं० (सं) मुख का रोग।
**मुखारी** स्त्री० (सं) १-चेहरा। २-अग्रभाग।
**मुखालफत** स्त्री० (अ) शत्रुता। विरोध।
**मुखालिफ** वि० (अ) १-विरोधी। २-शत्रु।
**मुखावरोधक अधिनियम** पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके द्वारा भाषण आदि पर प्रतिबन्ध लगा हो। (गैगिंग एक्ट)।
**मुखासव** पुं० (सं) १-थूक। २-लार। ३-अधरामृत
**मुखिया** पुं०(सं) १-प्रधान। नेता। सरदार। (चीफ) २-किसी आदिवासी जाति का सरदार। (हैडमैन)।
**मुखिल** वि० (अ) विघ्न डालने वाला।
**मुख्तलिफ** वि० (अ) १-भिन्न। जुदा। २-अनेक प्रकार का।
**मुख्तसर** वि० (अ) १-संक्षिप्त। २-छोटा। ३-अल्प।
**मुख्तसरन** अव्य० (अ) संक्षेप में।
**मुख्तार** पुं० (अ) दे० 'मुखतार'।
**मुख्य** वि० (सं) १-सबसे बड़ा। प्रधान। २-अपने विभाग में सबसे बड़ा अधिकारी। (चीफ)।
**मुख्यआयुक्त** पुं० (सं) किसी देश के केन्द्र आधीन प्रांत का शासक। (चीफ कमिश्नर)।

**मुख्यतः** अव्य० (सं) मुख्य रूप से। खास तौर से।
**मुख्यता** स्त्री० (सं) प्रधानता। श्रेष्ठता।
**मुख्यनिर्वाचन आयुक्त** पुं० (सं) किसी राज्य या देश के निर्वाचन करने का मुख्य अधिकारी। (चीफ इलेक्शन कमिश्नर)।
**मुख्यन्यायाधिपति** पुं० (सं) किसी प्रांत या प्रदेश के सर्वोच्च न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश। (चीफ जस्टिस)।
**मुख्यन्यायाधीश** पुं० (सं) किसी मंडल या जिले का प्रधान न्यायाधीश जो वहां के न्यायाधीशों में प्रधान हो। (चीफ जज)।
**मुख्यमंत्री** पुं० (सं) किसी प्रदेश का वह मन्त्री जो और सब मन्त्रियों में मुख्य होता है। (चीफ मिनिस्टर)।
**मुख्यार्थ** पुं० (सं) किसी शब्द का प्रधान अर्थ या मतलब।
**मुख्यालय** पुं०(सं) प्रधान कार्यालय का मुख्य निवासी (हेडक्वार्टर)।
**मुख्याधिष्ठाता** पुं०(सं)किसी विश्वविद्यालय की देख-रेख करने के लिए निर्वाचित मुख्य अधिकारी। (रेक्टर)।
**मुगदर** पुं० (हिं) व्यायाम के प्रयोग में आने वाली भारी मुंगरियों की जोड़ी।
**मुगरा** पुं० (हि) दे० 'मुँगरा'।
**मुगल** पुं० (फा) मुसलमानों की एक लड़ाकू तातारी जाति।
**मुगलई** वि० (फा) मुगलों का सा। मुगली।
**मुगलईटोपी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की ऊँची कलगी-युक्त टोपी।
**मुगलाई** वि० (फा) दे० 'मुगलई'।
**मुगलानी** स्त्री० (फा) १-मुगल जाति की स्त्री। २-दासी। ३-कपड़ा सीने वाली।
**मुगलिया** वि० (फा) मुगल सम्बन्धी। मुगलों का।
**मुगली** वि० (फा) मुगलों जैसा।
**मुगलीघुट्टी** स्त्री० (फा) एक प्रकार की घुट्टी जो मुगल बच्चों को दी जाती थी।
**मुगालता** पुं०(अ) छल। कपट। धोखा।
**मुग्ध** वि० (सं) १-मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मूर्ख। २-सुन्दर। नवीन। ३-मोहित।
**मुचकुंद** पुं० (हि) सुगन्धित फूलों वाला एक वृक्ष।
**मुचना** क्रि० (हि) १-मोचन होना। २-किसी अंग में मोच आना।
**मुचलका** पुं० (तु०) वह प्रतिज्ञापत्र जिसमें कोई अनुचित कार्य करने पर नियत समय पर न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा होती है और आज्ञा न मानने पर अर्थ दण्ड दिया जाता है।
**मुचुकुंद** पुं० (सं) १- दे० 'मुचकुंद'। २-मान्धाता के एक पुत्र का नाम (भागवत)।
**मुछंदर** पुं० (हि) जिसकी मूछें बड़ी-बड़ी हों।
**मुछमुंडा** वि०(हि) जिसकी मूँछ न हो या जिसने मूँछे मुँडा ली हों।
**मुछाकड़ा** वि० (हि) बड़ी मूँछों वाला।
**मुछियल** वि० (हि) बड़ी बड़ी मूछों वाला।
**मुजक्कर** पुं०(अ) पुलिंग। नर।
**मुजमिल** वि० (अ) जिसे संक्षेप में कहा गया हो। पुं० दो या दो से अधिक संख्याओं का जोड़।
**मुजरा** वि० (अ) हिसाब में जमा किया हुआ। पुं० १-वह जो जारी किया गया हो। २-किसी रकम में से काटी गई रकम। ३-वेश्या का महफिलों में बैठकर गाना। ४-किसी का बड़े के सामने जाकर अभिनंदन करना।
**मुजरागाह** पुं०(अ) शाही दरबार का वह स्थान जहाँ खड़े होकर अभिनंदन करते हैं।
**मुजरिम** पुं० (अ) अभियुक्त। जिस पर कोई अभियोग लगा हो।
**मुजाविर** पुं० (अ) मसजिद या दरगाह में झाड़ू आदि लगाने वाला।
**मुजायका** पुं० (अ) १-परवा। २-अड़चन।
**मुजाहिद** वि०(अ) १-प्रयत्न करने वाला। २-बाधाओं से लड़ने वाला।
**मुझे** सर्व० (हि) मैं का कर्मरूप। मुझको।
**मुटका** पुं० (हि) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
**मुटरी** स्त्री० (हि) गठरी।
**मुटाई** स्त्री० (हि) १-मोटापन। स्थूलता २-गर्व। अहंकार।
**मुटाना** क्रि० (हि) १-स्थूल या मोटा हो जाना। २-घमंड होना।
**मुटासा** वि० (हि) जो धनवान होने पर घमंडी हो गया हो।
**मुटिया** पुं० (हि) मजदूर।
**मुट्ठा** पुं० (हि) १-घास-फूस का पूला। २-पुलिंदा। ३-औजार या शस्त्र आदि का दस्ता। ४-धुनिये का बेलन।
**मुट्ठी** स्त्री० (हि) १-हाथ की वह मुद्रा जो उंगलियों को हथेली की ओर मोड़ने से बनती है। उतनी वस्तु जो एक प्रकार की मुद्रा में आये। ३-इसकी चौड़ाई का माप।
**मुठभेड़** स्त्री० (हि) १-टक्कर। भिड़न्त। भेंट। सामना
**मुठिका** स्त्री० (हि) १-मुट्ठी। घूँसा।
**मुठिया** स्त्री० (हि) १-दस्ता। २-धुनिये का बेलन। ३-किसी वस्तु का वह भाग जो पकड़ा जाता है।
**मुठी** स्त्री० (हि) मुट्ठी।
**मुठुकी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का काठ का खिलौना।
**मुड़कना** क्रि० (हि) मुरकना।

**मुड़ना** क्रि०(हिं) १-घूमकर या बल खाकर किसी ओर जाना। २-किसी वस्तु का दबकर झुकना। ३-घूम जाना।
**मुड़ला** वि०(हि) गंजा।
**मुड़वारी** स्त्री०(हि) १-मुँडेरा। २-सिरहाना।
**मुड़वाना** क्रि० (हिं) १-उस्तरे से बाल उतारना। २-मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।
**मुड़हर** पुं० (हि) स्त्रियों की साड़ी का सिर पर का भाग। २-सिर का अग्रभाग।
**मुड़ाना** क्रि० (हि) मुंडन करना। मुंडाना।
**मुड़िया** पुं० (हि) १-महाजनी लिपि। २-सिर मुँडा हुआ व्यक्ति।
**मुतग्रल्लिक** वि० (ग्र) १-सम्बद्ध। सम्मिलित। अव्य० सम्बन्ध में। विषय में।
**मुतग्रल्लिम** पुं० (ग्र) शिक्षार्थी।
**मुतक्का** पुं० (देश) १-मुँडेरा। २-छोटा खंभा। ३-मीनार।
**मुतफन्नी** वि० (ग्र) चालाक। धोखेबाज।
**मुतफर्रिकात** स्त्री० (ग्र) १-फुटकर वस्तुएं। २-फुटकर व्यय की मद।
**मुतबन्ना** पुं० (ग्र) दत्तक पुत्र। वि० गोद लिया हुआ।
**मुतलक** अव्य० (ग्र) कुछ भी। तनिक भी। वि० निपट निरा। बिल्कुल।
**मुतलाशी** वि० (हि) ढूँढ़ने या तालाश करने वाला।
**मुतवज्जह** वि०(ग्र) जिसने किसी की ओर ध्यान दिया हो। प्रवृत्त।
**मुतवल्ली** पुं० (ग्र) किसी नाबालिग और उसकी संपत्ति का रक्षक। वली।
**मुतसद्दी** पुं० (ग्र) १-लेखक। मुंशी। २-प्रबन्धकर्त्ता ३-मुनीम। पेशकार।
**मुतासिरी** स्त्री० (हि) मोतियों की माला या कण्ठी।
**मुताबिक** अव्य०(ग्र) अनुसार। वि० अनुकूल। समान
**मुतालबा** पुं० (ग्र) पावना। प्राप्तव्य धन।
**मुतास** स्त्री० (हि) मूतने की इच्छा।
**मुताह** पुं०(ग्र) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।
**मुताही** वि० (ग्र) जिसके साथ मुताह किया गया हो। रखेली (स्त्री)।
**मुतिलाडू** पुं० (हि) मोतीचूर का लड्डू।
**मुतेहरा** पुं० (हि) कलाई में पहनने का एक गहना।
**मुत्तला** वि० (ग्र) जिसे सूचित किया गया हो।
**मुत्तहिदा** वि० (ग्र) संयुक्त। इकट्ठा।
**मुद** पुं० (सं) हर्ष। आनन्द।
**मुदर्रिस** पुं० (ग्र) अध्यापक।
**मुदर्रिसी** स्त्री०(ग्र) १-अध्यापकी। २-मुदर्रिस का पद।
**मुदवंत** वि० (सं) प्रसन्न। खुश।
**मुदा** अव्य० (सं) मगर। किन्तु। परन्तु। स्त्री० (सं) आनन्द।
**मुदाखलत** स्त्री०(ग्र) बाधा डालना। अड़चन डालना। रोक-टोक।
**मुदाखलत बेजा** स्त्री० (ग्र) किसी के घर जाकर बिना आज्ञा लिए लौट आना।
**मुदाम** अव्य० (ग्र) १-सदैव। हमेशा। सदा। २-निरंतर। ३-ठीक-ठीक।
**मुदामी** वि० (ग्र) सदा होता रहने वाला।
**मुदित** वि० (सं) प्रसन्न। खुश।
**मुदिता** स्त्री० (स) १-साहित्य में वह नायिका जो पर-पुरुष प्रीति संबंधी कामना की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है। २-हर्ष। आनन्द।
**मुदिर** पुं० (सं) १-बादल। २-मेंढक। ३-कामुक।
**मुद्गर** पुं० (हि) दे० 'मुगदर'।
**मुद्दई** पुं० (ग्र) वादी। २-शत्रु। बैरी।
**मुद्दत** स्त्री (ग्र) १-अवधि। २-बहुत दिन।
**मुद्दती** वि० (ग्र) जिसकी कोई अवधि नियत हो।
**मुद्दालेह** पुं० (ग्र) प्रतिवादी। जिस पर दीवानी दावा हो।
**मुद्ध** वि० (हि) दे० 'मुग्ध'।
**मुद्धा** पुं० (देश) टखना।
**मद्धी** स्त्री० (देश) खिसकने वाली रस्सी की गांठ।
**मुद्र** पुं० (सं) छपाई आदि में काम आने वाले सीसे के बने अक्षर। (टाइप)
**मुद्रक** पुं० (सं) १-छापने वाला। समाचार पत्र आदि का वह अधिकारी जिसपर उस के छापने का उत्तर-दायित्व होता है (प्रिंटर)।
**मुद्रण** पुं० (सं) छपाई। २-ठप्पे आदि की सहायता से मुद्रा तैयार करना। (प्रिंटिंग)।
**मुद्रणयंत्र** पुं० (सं) १-छपाई यंत्र जिससे पुस्तक तथा समाचार पत्र आदि छापे जाते हैं (प्रिंटिंग मेशीन)।
**मुद्रणस्वातंत्र्य** पुं०(सं) किसी भी समाचार को (केवल अश्लील और राजद्रोह या हिंसा प्रवर्तक लेखों को छोड़ कर) स्वतंत्रता-पूर्वक अपनी सम्मति या खबरें को देने की स्वतंत्रता। (फ्रीडम आफ दि प्रेस)।
**मुद्रणालय** पुं० (सं) छापाखाना। (प्रिंटिंग-प्रेस)।
**मुद्रधान** पुं० (सं) छपाई के टाईप रखने का खानेदार ढांचा। (टाइप केस)।
**मुद्रलिख** पुं० (सं) कागज आदि पर छापे के अक्षर हाथ द्वारा छापने का यंत्र। (टाइप राइटर)।
**मुद्रलिखित** वि० मुद्रलिख द्वारा लिखित कागज। (टाइप्ड)।
**मुद्रिलिखित-प्रति** स्त्री० (सं) मुद्रलिख द्वारा छापी गई प्रति। (टाइप्ड-कॉपी)।
**मुद्रलेखक** पुं० (सं) मुद्रलिख से कागज या पत्र छापने वाला। (टाइपिस्ट)।
**मुद्रलेखन** पुं० (सं) मुद्रलिख द्वारा पत्र आदि छापने

का कार्य । (टाइपिंग) ।

**मुद्रलेखन-अनुभाग** पुं०(सं) किसी कार्यालय या विभाग में मुद्रलेखन का अनुभाग । (टाइपिंग सेक्शन) ।

**मुद्रलेखन-पत्र** पुं० (सं) मुद्रलिख द्वारा छापने का कागज । (टाइपिंग पेपर) ।

**मुद्रलेखनयंत्र** पुं० (सं) मुद्रलिख । (टाइपराइटर) ।

**मुद्रांक** पुं० (सं) धातु का बना हुआ वह उपकरण जिस पर उलटे अक्षर खुदे होते हैं और जिसे लाख लगाकर किसी कागज की प्रमाणिकता सिद्धि करने के लिए अंकित करते है । (सील) ।

**मुद्रांकन** पुं० (सं) १-मुद्रा की सहायता से अंकित करने का काम । २-छपाई ।

**मुद्रांक-शुल्क** पुं० (सं) सरकार द्वारा मुकदमे आदि के कागजों पर लगने वाला कर । (स्टेम्प ड्यूटी) ।

**मुद्रांकित** वि० (सं) जिस पर मुद्रा लगा दी गई हो मोहर किया हुआ । (सील्ड) ।

**मुद्रा** स्त्री० (सं) १-किसी के नाम की छाप । मोहर । (सील) । २-रुपया-पैसा । ३-अँगूठी । ४-सीसे के छपाई के ढले हुए अक्षर । (टाइप) । ५-खड़े होने या बैठने का कोई विशेष ढंग । (पोस्चर) । ६-कहीं जाने का परवाना या आज्ञापत्र ।

**मुद्राकार** पुं० (सं) मोहर या मुद्रा बनाने वाला ।

**मुद्राध्यक्ष** पुं० (सं) कहीं जाने का पारपत्र (पासपोर्ट) देने वाला अधिकारी ।

**मुद्राबाहुल्य** पुं० (सं) दे० 'मुद्रास्फीति' ।

**मुद्रायंत्र** पुं० (सं) छापने की मशीन । (प्रेस) ।

**मुद्रारक्षक** पुं० (सं) वह राजकीय अधिकारी जिसके पास सरकारी मोहर रहती है ।

**मुद्रालिपि** स्त्री० (सं) छापी हुई लिपि । छाप ।

**मुद्रा-विज्ञान** पुं० (सं) दे० 'मुद्राशास्त्र' ।

**मुद्रा-विस्तार** पुं० (सं) दे० 'मुद्राशास्त्र' ।

**मुद्रा-शास्त्र** पुं०(सं) पुराने सिक्कों से प्राचीन इतिहास का विवेचन करने वाला शास्त्र । (न्यूमिसमैटिक्स)

**मुद्रास्फीति** स्त्री० (सं) किसी देश में जनता में अत्यधिक नोटों (छपी हुई कागजी मुद्रा) का परिचलन होना जिससे वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता है । (इन्फ्लेशन) । मुद्रा का फैलाव ।

**मुद्रास्फीतिरोधक** वि० (सं) मुद्रा के फैलाव को रोकने के लिए किये गये उपाय । (एन्टी इन्फ्लेशनरी) ।

**मुद्रिक** स्त्री० (सं) दे० 'मुद्रिका' ।

**मुद्रिका** स्त्री० (सं) १-वह अंगूठी जिस पर मुद्रा बनी होती है । २-अंगूठी । ३-सिक्का ।

**मुद्रित** वि०(सं) १-जिसका मुद्रण हुआ हो । २-मोहर किया हुआ । (सील्ड) ।

**मुधा** अव्य० (सं) व्यर्थ । बेफायदा । वि० १-निष्प्रयोजन । २-मिथ्या । झूठ । पुं० असत्य । मिथ्या ।

**मुनक्का** पुं० (अ) बड़ी किशमिश । सुखाया हुआ बड़ा अंगूर ।

**मुनहसर** वि० (हि) दे० 'मुनहसिर' ।

**मुनहसिर** वि० (अ) आश्रित । अवलंबित ।

**मुनादी** स्त्री० (अ) ढोल आदि पीटकर की जाने वाली घोषणा । ढिंढोरा ।

**मुनाफा** पुं० (अ) लाभ । नफा ।

**मुनारा** पुं० (हि) दे० 'मीनार' ।

**मुनासिब** वि० (अ) उचित । योग्य । ठीक ।

**मुनि** पुं० (सं) १-वह जो मनन करे । २-तपस्वी । त्यागी । ३-सात की संख्या ।

**मुनिकुमार** पुं० (सं) कम आयु का मुनि ।

**मुनिभक्त** पुं० (सं) तिन्नी नामक चावल ।

**मुनिभोजन** पुं० (सं) दे० 'मुनिभक्त' ।

**मुनियाँ** स्त्री० (देश) लाल नामक पक्षी की मादा ।

**मुनींद्र** पुं० (सं) १-ऋषि श्रेष्ठ । २-बुद्धदेव ।

**मुनी** पुं० (हि) दे० 'मुनि' ।

**मुनीम** पुं०(हि)१-सहायक । २-आय व्यय का हिसाब लिखने वाला लिपिक ।

**मुनीमखाना** पुं० (हि) मुनीमों के बैठने का स्थान ।

**मुनीमी** स्त्री० (हि) मुनीम का कार्य या पद ।

**मुनीश, मुनीश्वर** पुं० (सं) १-मुनियों में श्रेष्ठ । २-भगवान बुद्ध । ३-विष्णु ।

**मुन्ना, मुन्नु** पुं० (देश) १-छोटों के लिए प्रेमसूचक शब्द । २-प्रिय ।

**मुन्यन्न** पुं० (सं) मुनियों के खाने का अन्न ।

**मुफलिस** वि० (अ) निर्धन । गरीब ।

**मुफलिसी** वि० (अ) गरीबी । निर्धनता ।

**मुफसिद** पुं० (अ) झगड़ालू आदमी ।

**मुफस्सल** वि० (अ) विस्तृत । ब्योरेवार । पुं० केंद्रस्थ नगर के आसपास का स्थान ।

**मुफीद** वि० (अ) लाभदायक ।

**मुफ्त** वि० (अ) बिना दाम या मूल्य का । अव्य० व्यर्थ बे फायदा ।

**मुफ्तखोर** वि० (अ) मुफ्त का माल खाने वाला ।

**मुफ्तखोरी** स्त्री० (अ) मुफ्त में खाने का कार्य या भाव

**मुफ्ती** पुं० (अ) १-मुसलमान धर्मशास्त्री । २-शहर का हाकिम ।

**मुबलिग** पुं० (अ) धन की संख्या । रकम ।

**मुबारक** वि० (अ) १-जिससे बरकत हो । २-शुभ । मङ्गलमय ।

**मुबारकबाद** पुं० (अ) बधाई ।

**मुबारकबादी** स्त्री० (अ) १-बधाई । २-बधाई देने के लिए गाया गया गीत ।

**मुबारकी** स्त्री० (अ) बधाई ।

**मुबाहसा** पुं० (अ) किसी विषय के निर्णय के लिए होने वाला विवाद । बहस ।

**मुमकिन** वि० (अ) जो हो सकता हो । संभव ।

**मुमानियत** पुं० (अ) मनाही।
**मुमुक्षा** स्त्री० (सं) मोक्ष की इच्छा।
**मुमूर्षा** स्त्री० (सं) मर जाने की इच्छा।
**मुमूर्षु** वि०(सं) जो मरने ही वाला हो। मरणासन्न।
**मुयस्सर** वि० (अ) दे० 'मयस्सर'।
**मुरंडा** पुं० (देश) भुने हुए गरम गेहूँ में गुड़ मिलाया हुआ लड्डू।
**मुर** पुं० (सं) १-वेष्टन। २-एक दैत्य का नाम। अव्य० फिर। दोबारा।
**मुरई** स्त्री० (हि) मूली।
**मुरक** स्त्री० (हि) मोच खाने की क्रिया या भाव।
**मुरकना** क्रि० (हि) १-मुड़ना। २-फिरना। घूमना। ३-लौटना। ४-मोच खाना। ५-विनष्ट होना।
**मुरकाना** क्रि० (हि) १-फेरना। घुमाना। २-किसी अंग में मोच खाना। ३-नष्ट करना।
**मुरकी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की कान की छोटी बाली। २-संगीत में किसी स्वर को सुन्दरता से घुमाते हुए दूसरे स्वर पर ले आना।
**मुरखाई** स्त्री० (हि) मूर्खता।
**मुरगा** पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध पक्षी जो सुबह बांग देता है। २-एक चिड़िया।
**मुरगाबी** स्त्री० (फा) मुरगे के आकार का एक जल पक्षी जो मछलियां खाता है।
**मुरगी** स्त्री० (हि) मादा मुरगा।
**मुरचंग** पुं० (हि) दे० 'मुहचंग'।
**मुरचा** पुं (हि) दे० 'मोरचा'।
**मुरछना** क्रि०(हि) १-शिथिल होना। २-मूर्छित होना।
**मुरछल** पुं०(हि) दे० 'मोरछल'।
**मुरछा** स्त्री० (हि) दे० 'मूर्छा'।
**मुरछाना** क्रि०(हि) मूर्छित होना।
**मुरछित** वि० (हि) दे० 'मूर्छित'।
**मुरज** पुं (सं) मृदंग। पखावज।
**मुरझना** क्रि० (हि) दे० 'कुम्हलाना'।
**मुरझाना** क्रि० (हि) १-फूल, पत्ते आदि का कुम्हलाना। २-सुस्त या उदास होना।
**मुरदा** पुं० (फा) प्राणरहित शरीर। शव। वि० १-मृत। २-बेदम। ३-मुरझाया हुआ।
**मुरदाखोर** पुं० (फा) मुरदा खाने वाला।
**मुरदादिल** वि० (फा) निरुत्साह।
**मुरदादिली** स्त्री० (फा) निरुत्साहित होना।
**मुरदार** वि० (फा) १-मरा हुआ। मृत। २-अशक्त। ३-अपवित्र। पुं० अपनी मौत मरा हुआ पशु।
**मुरदारखोर** पुं०(फा) मरे हुए पशुओं का मांस खाने वाला।
**मुरदारमाल** पुं० (फा) मुफ्त का या हराम का माल।
**मुरदासंग** पुं०(फा) सेन्दूर और सीसे का एक मिश्रण जो दवा के काम आता है।
**मुरदासन** पुं० (फा) दे० 'मुरदासंग'।
**मुरधर** पुं० (हि) १-मारवाड़। २-मरुस्थल।
**मुरना** क्रि० (हि) दे० 'मुड़ना'।
**मुरब्बा** पुं० (अ) १-फल आदि का पाक जो चीनी में सुरक्षित किया जाता है। २-चार बराबर भुजाओं वाला चतुष्कोण। ३-वर्ग। वि० (अ) उसी अंक से गुणन द्वारा प्राप्त।
**मुरमुरा** पुं० (हि) एक प्रकार का भुना हुआ चावल या ज्वार। लावा।
**मुररिया** स्त्री० (हि) ऐंठन।
**मुरला** स्त्री० (सं) १-नर्मदा नदी। २-केरल देश की एक नदी।
**मुरलिका** स्त्री० (सं) बांसुरी। मुरली।
**मुरलिया** स्त्री० (हि) मुरली। बांसुरी।
**मुरली** स्त्री० (सं) १-बाँसुरी। वंशी। २-एक प्रकार का चावल।
**मुरलीधर** पुं० (स) श्रीकृष्ण।
**मुरली मनोहर** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**मुरवा** पुं० (हि) १-पैर का गिट्टा। २-एक प्रकार की कपास।
**मुरवी** स्त्री० (हि) धनुष की डोरी। चिल्ला।
**मुरशिद** पुं०(अ) १-गुरु। २-पूज्य। ३-धूर्त। चालाक.
**मुरहा** पुं० (हि) सिर।
**मुरहा** पुं० (सं) श्रीकृष्ण। वि० (हि) १-अनाथ। यतीम। २-मूलनक्षत्र में उत्पन्न होने वाला। ३-उपद्रवी।
**मुराड़ा** पुं० (देश) जलती हुई लकड़ी।
**मुराद** स्त्री० (अ) १-अभिलाषा। कामना। २-आशय अभिप्राय।
**मुरादी** वि० (अ) अभिलाषी। आकांक्षी।
**मुराना** क्रि० (हि) १-चुभलाना। २-मोड़ना।
**मुराफा** पुं० (अ) छोटी अदालत में हारने पर बड़ी अदालत में अपील करना।
**मुरार** पुं० (हि) १-कमलनाल। २-श्रीकृष्ण।
**मुरारि** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-विष्णु।
**मुरायठ** पुं० (देश) पगड़ी।
**मुरासा** पुं० (हि) १-कर्णफूल। २-मुँडासा।
**मुरीद** पुं० (अ) १-शिष्य। चेला। २-अनुयायी।
**मुरीदी** पुं० (अ) शिष्यत्व।
**मुरु** पुं० (हि) दे० 'मुर'।
**मुरुआ** पुं० (देश) पैर का गट्टा।
**मुरुख** वि० (हि) दे० 'मूर्ख'।
**मुरुखाई** स्त्री० (हि) मूर्खता।
**मुरुझना** क्रि० (हि) दे० 'मुरझाना'।
**मुरैठा** पुं० (हि) साफा। पगड़ी।
**मुरेर** स्त्री० (हि) दे० 'मरोड़'।
**मुरेरना** क्रि० (हि) मरोड़ना।

मुरेरा पुं० (हिं) १-मरोड़। २-मुंडेर।
मुरौवत स्त्री० (अ) १-शील। संकोच। २-भलमनसी।
मुरौवती स्त्री० (अ) मुरौवत करने वाला।
मुर्ग पुं० (अ) दे० 'मुरगा'।
मुर्गबाज पुं० (अ) वह जो मुरगे लड़ाता हो।
मुर्गबाजी स्त्री० (अ) मुरगे लड़ाने का शौक।
मुर्गाबी स्त्री० (फा) दे० 'मुरगाबी'।
मुर्दनी स्त्री० (फा) १-चेहरे पर दिखाई देने वाले मृत्यु के लक्षण। २-शव की अंत्येष्टि क्रिया के लिए लोगों का उसके साथ जाना।
मुर्दा पुं० (फा) दे० 'मुरदा'।
मुर्रा पुं० (हिं) १-पेट में की मरोड़। २-मरोड़फली (औषध)।
मुर्री स्त्री० (हिं) १-कपड़े, धागों आदि का सिरा मोड़ कर लगाई गई गांठ। २-ऐंठन।
मुर्रीदार वि० (हिं) गांठदार। ऐंठनयुक्त।
मुर्वी स्त्री० (सं) धनुष की प्रत्यंचा या डोरी।
मुलक पुं० दे० 'मुल्क'।
मुलकना क्रि०(हिं) १-पुलकित होना। २-मुस्कराना। ३-मचकना।
मुलकित वि० (हिं) मुस्कराता हुआ। प्रसन्न।
मुलजम वि० (अ) दे० 'मुलजिम'।
मुलजिम वि० (अ) अभियुक्त।
मुलतवी वि० (अ) स्थगित।
मुलतानी वि० (हिं) मुलतान सम्बन्धी। मुलतान का। पुं० मुलतान का निवासी। स्त्री० एक राग।
मुलतानी मिट्टी स्त्री०(हिं) तख्ती पोतने तथा सिर धोने की एक प्रकार की चिकनी मिट्टी।
मुलना क्रि० (हिं) मुल्ला। मौलवी।
मुलमची पुं० (हिं) सोने या चांदी का मुलम्मा करने वाला।
मुलम्मा वि०(अ)१-सोने या चांदी की चढ़ाई हुई हलकी रंगत या तह। २-कलई। गिलटी। ३-ऊपरी तड़क-भड़क। १-चमकता हुआ। २-सोना या चांदी चढ़ाया हुआ।
मुलहठी स्त्री० (हिं) दे० 'मुलेठी'।
मुलहा वि० (हिं) १-मूल नक्षत्र में जन्मा हुआ। २-उपद्रवी।
मुला पुं० (हिं) मुल्ला। मौलवी।
मुलाकात स्त्री० (अ) १-आपस में मिलना। भेंट। २-मिलाप। ३-रतिक्रीड़ा।
मुलाकाती पुं०(अ) १-परिचित। २-भेंट करने के लिए आने वाला।
मुलाजमत स्त्री० (अ) नौकरी। चाकरी।
मुलाजमतपेशा पुं०(अ) नौकरी करके जीविका चलाने वाला व्यक्ति।
मुलाजिम पुं० (अ) नौकर। चाकर।
मुलायम वि० (अ) १-जो कड़ा न हो। नरम। २-सुकुमार।
मुलायमत स्त्री०(अ) मुलायम होने का भाव। सुकुमारता
मुलायमी स्त्री० (अ) दे० 'मुलायमत'।
मुलाहजा पुं०(अ) १-निरीक्षण। २-संकोच। ३-रियायत।
मुलुक पुं० (हि) दे० 'मुल्क'।
मुलेठी स्त्री० (हिं) गुंजा नामक लता जिसकी जड़ औषध में काम आती है।
मुल्क पुं० (अ) १-देश। २-प्रदेश। ३-संसार।
मुल्कगीरी स्त्री० (अ) मुल्क जीतना।
मुल्कदारी स्त्री०(अ) शासन। व्यवस्था।
मुल्की वि० (अ) १-देश-सम्बन्धी। देशी। २-शासन-सम्बन्धी।
मुल्कीलाट पुं० (हि) गवर्नर जनरल।
मुल्तवी वि० (अ) स्थगित।
मुल्लह पुं० (देश) पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल में छोड़ा हुआ पक्षी। वि० मूर्ख। सीधासादा।
मुल्ला पुं० (अ) मुसलमानों का धर्माचार्य। पुरोहित। मौलवी।
मुल्लाना पुं० (हि) मुल्ला। कट्टर मुसलमान।
मुवक्कल पुं० (अ) वह जिसे करने के लिए कोई काम सौंपा गया हो।
मुवक्किल पुं०(अ) अपने कार्य के लिए वकील नियुक्त करने वाला व्यक्ति।
मुवज्जिन पुं० (अ) दे० 'मुअज्जिन'।
मुवना क्रि० (हिं) मरना।
मुवाफिक वि० (हि) १-अनुसार। अनुरूप। २-योग्य ३-उचित।
मुशज्जर पुं० (अ) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा।
मुशल पुं० (सं) धान आदि कूटने का डंडा। मूसल।
मुशली पुं० (सं) बलराम।
मुशायरा पुं० (अ) वह कवि सम्मेलन जिसमें उर्दू के शेर या कविता पढ़ी जायँ।
मुशाहरा पुं० (अ) वेतन।
मुश्क पुं०(अ) कस्तूरी। स्त्री० (देश) कंधे और कोहनी का मांसल भाग। बांह।
मुश्किल वि०(अ) कठिन। दुष्कर। स्त्री० (अ) १-कठिनता। दिक्कत। २-विपत्ति।
मुश्की वि० (फा) कस्तूरी के रङ्ग का। श्याम।
मुश्की वि० (फा) कस्तूरी के रङ्ग का। श्याम। पुं० काले रङ्ग का घोड़ा।
मुश्त पुं० (फा) मुट्ठी।
मुश्तरका वि० (फा) साझे का। संयुक्त।
मुश्तरका खानदान पुं० (फा) संयुक्त परिवार।
मुश्तरका जायदाद स्त्री० (अ) साझे की संपत्ति।
मुश्ताक वि० (फा) १-इच्छा रखने वाला। इच्छुक।

२-प्रेमी।
**मुषल** पुं० (सं) १-मूसल। २-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
**मुषली** स्त्री० (सं) १-तालमूलिका। २-छिपकली।
**मुषित** वि० (सं) १-चुराया हुआ। २-ठगा हुआ।
**मुषीवान्** पुं० (सं) चोर।
**मुषुर** स्त्री० (हि) गूँजने का शब्द। गुँजार।
**मुष्टि** स्त्री० (सं) १-मुट्ठी। मुक्का। २-मूँठ। ३-चोरी ४-अकाल। ५-मुट्ठी भर मात्रा। वि० (हि) मौन।
**मुष्टिक** पुं० (सं) १-कंस के दरबार के एक पहलवान का नाम। २-घूँसा। ३-सुनार।
**मुष्टिकांतक** पुं० (सं) बलराम।
**मुष्टिका** स्त्री० (सं) १-मुक्का। घूँसा। २-मुट्ठी।
**मुष्टिद्यूत** पुं० (सं) एक प्रकार का जुआ।
**मुष्टिद्वंद्व** पुं० (सं) गद्दीदार दस्ताने पहन कर घूँसे से एक दूसरे पर प्रहार करने का ढंग। (बॉक्सिंग)।
**मुष्टिबंध** पुं० (सं) मुट्ठी बांधना।
**मुष्टिभिक्षा** स्त्री० (सं) एक मुट्ठी चावल की भिक्षा।
**मुष्टिमेय** वि०(सं) १-मुट्ठी भर। २-थोड़ा। अल्प।
**मुष्टियुद्ध** पुं० (सं) मूके या घूँसों की लड़ाई। (बाक्सिंग)।
**मुसकनि** स्त्री० (हि) मुस्कराहट।
**मुसकनिया** स्त्री० (हि) दे० 'मुस्कान'।
**मुसकराना** क्रि०(हि) बहुत मंद रूप से हँसना। होठों में हँसना।
**मुसकराहट** स्त्री० (हि) मुस्कराने का भाव या क्रिया। मधुर मन्दहास।
**मुसकान** स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
**मुसकाना** क्रि० (हि) मुसकराना।
**मुसकानि** क्रि० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
**मुसकिराना** क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
**मुसकिराहट** स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराना'।
**मुसक्यान** स्त्री० (हि) दे० 'मुसकाना'।
**मुसक्याना** क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
**मुसजर** स्त्री० (हि) दे० 'मुशज्जर'।
**मुसटी** स्त्री० (हि) चुहिया।
**मुसना** क्रि० (हि) अपहृत होना। चुराया जाना।
**मुसन्ना** पुं० (अ) १-प्रतिलिपि। २-प्रतिपर्ण। रसीद का वह भाग जो देने वाले के पास रह जाता है।
**मुसब्बर** पुं० (अ) ग्वारपाठा का जमा कर सुखाया हुआ रस जो औषध के काम आता है।
**मुसमंद** वि० (हि) ध्वस्त। नष्ट।
**मुसम्मात** स्त्री० (अ) १-नाम्नी। नामधारिणी। स्त्री। औरत।
**मुसल** पुं० (सं) मूसल।
**मुसलधार** अव्य० (सं) दे० 'मूसलाधार'।
**मुसलमान** पुं० (अ) मुहम्मद साहब के चलाए हुए इस्लामी संप्रदाय का अनुयायी।
**मुसलमानी** वि०(अ) मुसलमान संबंधी। स्त्री० १-छोटे बालकों की इन्द्री के अग्रभाग का चमड़ा काटने की मुसलमानों की एक रीति। २-मुसलमान स्त्री।
**मुसलायुध** पुं० (सं) बलराम।
**मुसलिम** पुं० (अ) मुसलमान।
**मुसलिम-लीग** स्त्री० (अ) सन्१९०६ में स्थापित मुसलमानों की एक राजनैतिक संस्था।
**मुसली** स्त्री० (सं) एक वनस्पति की जड़ जो वीर्य पौष्टिक होती है।
**मुसल्लम** वि०(अ) अखण्ड। पूरा। साबुत।
**मुसल्ला** पुं० (अ)१-एक चटाई या दरी जिस पर नमाज पढ़ी जाती है। २-एक बड़े दीये के आकार का एक पात्र। ६-ईदगाह। पुं० (देश) मुसलमान।
**मुसव्विर** पुं० (अ) १-चित्रकार। २-बेल बूटे बनाने वाला।
**मुसव्वरी** स्त्री० (अ) १-चित्रकारी। २-बेल बूटे बनाने का काम
**मुसहर** पुं० (हि) एक आदिवासी जाति जो पत्तों के दोने बनाने का काम करती है।
**मुसाफिर** पुं० (अ) यात्री। पथिक।
**मुसाफिरखाना** पुं० (अ) १-यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। २-रेल के स्टेशन पर मुसाफिरों के ठहरने के लिये बना हुआ स्थान।
**मुसाफिर गाड़ी** स्त्री०(अ) वह रेलगाड़ी जो मुसाफिरों को ले जाती है। (पैसेंजर ट्रेन)।
**मुसाफिरत** स्त्री० (अ) दे० 'मुसाफिरी'।
**मुसाफिरी** स्त्री० (अ) यात्रा। पर्यटन।
**मुसाहत** स्त्री० (अ) राजा या धनवानों के साथ उठने बैठने वाले या सहवासी होने का भाव या क्रिया।
**मुसाहिब** पुं० (अ) १-सहवासी। २-साथ उठने बैठने वाला (विशेषतः राजा या धनवानों का)।
**मुसाहिबी** स्त्री० (अ) मुसाहिब का काम या पद।
**मुसीबत** स्त्री० (अ) १-कष्ट। तकलीफ। २-विपत्ति। संकट।
**मुसीबतजदा** वि० (अ) जो किसी विपदा में फँसा हो। दुखिया।
**मुसुकाना** क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
**मुसुकाहट** स्त्री० (हि) दे० 'मुसकराहट'।
**मुसौवर** पुं० (हि) दे० 'मुसव्विर'।
**मुस्कराना** क्रि० (हि) दे० 'मुसकराना'।
**मुस्कराहट** स्त्री० (हि) दे० 'मुस्कराहट'।
**मुस्क्यान** स्त्री (हि) दे० 'मुसकान'।
**मुस्टंडा** वि०(हि) १-मोटा-ताजा। हृष्टपुष्ट। २-गुण्डा बदमाश।
**मुस्त** पुं० (सं) नागरमोथा।
**मुस्तक** पुं० (सं) नागरमोथा।

**मुस्तकबिल** वि० (अ) आगामी। पुं० भविष्यतकाल।
**मुस्तकिल** वि० (अ) १-स्थिर। अटल। २-दृढ़।
**मुस्तकिल जगह** स्त्री० (अ) पक्की नौकरी या पद।
**मुस्तकिल मिजाज** वि० (अ) स्थिर चित्त।
**मुस्तगीस** पुं० (अ) १-फरियादी। २-दावेदार। अभियोक्ता।
**मुस्तनद** वि० (अ) प्रामाणिक।
**मुस्तसना** वि० (अ) प्रथक् किया हुआ।
**मुस्तैद** वि० (अ) १-सन्नद्ध। तत्पर। २-चुस्त। चालाक
**मुस्तैदी** स्त्री० (अ) १-प्रसन्नता। तत्परता। २-उत्साह।
**मुहकम** वि० (अ) दृढ़। पक्का।
**मुहकमा** पुं० (अ) दे० 'महकमा'।
**मुहतमिम** पुं० (अ) प्रबन्धक। व्यवस्थापक।
**मुहताज** वि० (अ) १-निर्धन। गरीब। २-आश्रित। निर्भर। ३-आकांक्षी। ४-जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता हो और वह उसके पास न हो।
**मुहताजखाना** पुं० (अ) गरीबों को भोजन आदि देने का स्थान।
**मुहताजी** स्त्री० (अ) मुहताज होने का भाव या क्रिया।
**मुहब्बत** स्त्री० (अ) १-प्रेम। प्रीति। २-मित्रता। ३-लगन। ४-स्नेह।
**मुहब्बती** वि० (अ) प्रेम करने वाला। स्नेहशील।
**मुहम्मद** पुं० (अ) अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी संप्रदाय चलाया।
**मुहम्मदी** पुं० (अ) मुहम्मद साहब का अनुयायी। मुसलमान।
**मुहय्या** वि० (अ) दे० 'मुहैया'।
**मुहर** स्त्री० (हि) अक्षर, चिह्न, हस्ताक्षर आदि छाप लेने तथा उन्हें दबाकर अंकित करने का ठप्पा। २-उक्त ठप्पे की छाप। ३-स्वर्णमुद्रा। अशर्फी। ४-अंगूठी।
**मुहरबरदार** वि० (हि) मुहर रखने वाला अधिकारी। (शासकीय)।
**मुहरशाही** स्त्री० (हि) राजकीय मुद्रा।
**मुहरा** पुं० (हि) १-सामने का भाग। आगा। २-निशाना। मुखाकृति। ३-शतरंज की कोई गोट। ४-घोड़े के मुँह पर लगाने का एक साज। (फा) १-सीप। शंख। २-मनका। ३-वह शीशा जिसमें पन्नी घोटी जाती है।
**मुहराबाजी** स्त्री० (फा) बाजीगरी।
**मुहरी** स्त्री० (हि) दे० 'मोरी'।
**मुहर्रम** पुं० (अ) अरब वर्ष का पहला महीना जिसमें इमामहुसैन शहीद हुए थे। २-इस महीने के पहले दस दिन जब इमामहुसैन के प्रति शोक मनाया जाता है।
**मुहर्रमी** वि० (अ) १-मुहर्रम सम्बन्धी। २-शोकसूचक मनहूस।
**मुहर्रिर** पुं० (अ) लेखक। मुन्शी। लिपिक।
**मुहर्रिरी** पुं० (अ) मुहर्रिर का काम या पद।
**मुहलत** स्त्री० (अ) दे० 'मोहलत'।
**मुहल्ला** पुं० (हि) दे० 'मुहल्ला'।
**मुहसिन** पुं० (अ) अनुग्रह या एहसान करने वाला।
**मुहसिल** पुं० (हि) दे० 'मुहस्सिल'।
**मुहस्सिल** पुं० (अ) १-कर उगाहने वाला। २-तहसीलदार।
**मुहाफिज** पुं० (अ) संरक्षक। हिफाजत करने वाला।
**मुहाफिजखाना** पुं० (अ) कचहरी या अदालत के पास मिसलें रखने का स्थान। (रेकर्ड)।
**मुहाफिजदफ्तर** पुं० (अ) मुहाफिजखाने की देखभाल रखने वाला। (रेकर्ड कीपर)।
**मुहार** स्त्री० (अ) ऊँट की नकेल।
**मुहाल** वि० (अ) १-असंभव। २-कठिन। ३-दुष्कर। पुं० दे० 'महाल'।
**मुहावरत** स्त्री० (अ) आपस की बातचीत।
**मुहावरा** पुं० (अ) किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षण या व्यंजना द्वारा निकलता हो। २-अभ्यास।
**मुहासबा** पुं० (अ) १-हिसाब। लेखा। २-पूछताछ।
**मुहासरा** पुं० (अ) घेरा। चारों ओर से घेरा डालने का काम।
**मुहासिब** पुं० (अ) हिसाब की जांच करने वाला।
**मुहासिल** पुं० (अ) १-आय। आमदनी। २-लाभ। ३-उगाहने पर मिला हुआ धन।
**मुहिं** सर्व० (हि) दे० 'मोहिं'।
**मुहिब्ब** पुं० (अ) मित्र। दोस्त।
**मुहिब्बेवतन** पुं० (अ) देशभक्त।
**मुहिम** स्त्री० (अ) १-कोई विकट या बड़ा काम। २-युद्ध। ३-सैनिक आक्रमण। अभिमान।
**मुहीम** स्त्री० (हि) दे० 'मुहिम'।
**मुहु** अव्य० (सं) बार-बार। फिर-फिर।
**मुहूर्त** पुं० (सं) १-दिन रात का तीसवां भाग। २-निर्दिष्ट समय। ३-फलित ज्योतिष के अनुसार किसी कार्य को करने का समय।
**मुहैया** वि० (अ) प्रस्तुत। उपस्थित। तैयार।
**मुह्यमान** वि० (स) जिसमें मोह हो। जो मूर्छित हो गया हो।
**मूँग** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
**मूँगफली** पुं० (हि) एक प्रकार का फल जिसका तेल निकाला जाता है और खाया भी जाता है।
**मूँगरी** स्त्री० (देश) एक प्रकार की तोप।
**मूँगा** पुं० (हि) १-समुद्र में रहने वाले कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में होती है। विद्रुम। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

मूँगिया वि० (हि) मूँग का सा। गहरे हरे रङ्ग का।
मूँछ स्त्री० (हि) ऊपरी होंठ पर के बाल जो केवल पुरुषों के होते है।
मूँज स्त्री० (हि) एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियों के स्थान पर पतली पत्तियाँ होती हैं और जिसका बान बटा जाता है।
मूँड़ पुं० (हि) सिर। माथा।
मूँड़कटा पुं० (हि) बहुत हानि पहुँचाने वाला।
मूँडन पु० (हि) बच्चों का मुंडन-संस्कार।
मूँडन-छेदन पुं० (हि) बच्चों के बाल उतरवाने और कान छिदवाने का एक संस्कार।
मूँड़ना क्रि० (हि) १-उस्तरे से हजामत करना। २-ठगना।
मूँड़ी स्त्री० (हि) सिर।
मूँड़ीकटा वि० (हि) मरने योग्य। (गाली)।
मूँड़ीबंध पु० (हि) कुश्ती का एक दाव।
मूँदना क्रि०(हि) १-आच्छादित करना। ढांकना। २-द्वार मुंह आदि पर कुछ रख कर बंद करना।
मूँदर स्त्री० (हि) अंगूठी। मुंदरी।
मूक वि० (स) १-गूँगा। अवाक्। २-दीन। विवश।
मूकना क्रि० (हि) १-दूर या अलग करना। छोड़ना त्यागना। २-बन्धन खोलना।
मूक-बधिर वि० (सं) गूँगा और बहरा।
मूक-बधिर-विद्यालय पुं० (सं) गूँगे और बहरों का विद्यालय। (डेफ एण्ड डम्ब स्कूल)।
मूका पु० (हि) १-दीवार के आरपार बना छेद। झरोखा। २-मुक्का। घूँसा।
मूखना क्रि० (हि) दे० 'मूसना'।
मूचना क्रि० (हि) दे० 'मोचना'।
मूछ स्त्री० (हि) दे० 'मूँछ'।
मूजी वि० (अ) दुष्ट। खल। दुर्जन।
मूठ स्त्री० (हि) १-मुट्ठी। २-दस्ता। मुठिया। ३-मुट्ठी भर वस्तु। ४-एक प्रकार का जुआ। ५-जादू-टोना।
मूठना क्रि० (हि) मर मिटना। नष्ट होना।
मूठा पुं० (हि) दे० 'मूठा'।
मूठि स्त्री० (हि) दे० 'मूठ'।
मूठी स्त्री० (हि) दे० 'मुट्ठी'।
मूड़ पुं० (हि) दे० 'मूँड़'।
मूढ़ वि० (सं) १-मूर्ख। २-स्तब्ध।
मूढ़गर्भ पुं० (स) बिगड़ा हुआ गर्भ।
मूढ़ग्राह पुं० (सं) लच्त। गलत धारणा।
मूढ़चेता वि० (सं) मूर्ख।
मूढ़ता स्त्री० (सं) मूर्खता। अज्ञान।
मूढ़ात्मा पुं० (सं) मूर्ख।
मूत पुं० (हि) पेशाब। मूत्र।
मूतना क्रि० (हि) पेशाब करना।

मूत्र पुं० (सं) वह विषैला पदार्थ जो प्राणियों के जननेन्द्रिय या उपस्थमार्ग से निकलता है। पेशाब।
मूत्रकृच्छ पुं० (सं) रुक-रुककर पेशाब आने का रोग।
मूत्रग्रंथि पुं० (सं) मूत्राघात रोग का एक भेद।
मूत्रजठर पुं० (सं) मूत्राघात से उत्पन्न एक दोष।
मूत्रदोष पुं० (सं) प्रमेह। मूत्र में कोई दोष होना।
मूत्रनिरोध पुं० (सं) पेशाब का रुक जाना।
मूत्रपथ पुं० (सं) मूत्र निकलने का मार्ग।
मूत्र परीक्षा स्त्री० (सं) मूत्र की जाँच करके रोग को मालूम करना।
मूत्रल वि० (सं) अधिक पेशाब लाने वाली।
मूत्रवृद्धि स्त्री० (सं) मूत्र का अधिक मात्रा में आना।
मूत्र शुक्र पुं (सं) मूत्र के साथ वीर्य आने का रोग।
मूत्रशूल पुं० (सं) मूत्र नली में होने वाला शूल। (यूरीनरी कॉलिक)।
मूत्राघात पुं० (सं) मूत्र या पेशाब बन्द हो जाने का रोग।
मूत्राशय पुं० (सं) नाभि के नीचे अन्दर का वह भाग जहां मूत्र संचित होता है।
मूत्रित वि० (सं) १-पेशाब के साथ निकला हुआ। २-जो पेशाब से गंदा हो गया हो।
मूर पुं० (हि) उत्तर पश्चिम अफ्रीका में रहने वाली एक मुसलमान जाति।
मूरख वि० (हि) दे० 'मूर्ख'।
मूरखताई स्त्री० (हि) मूर्खता।
मूरछना स्त्री० (हि) दे० 'मूर्च्छना'।
मूरछा स्त्री० (हि) दे० 'मूर्छा'।
मूरत स्त्री०(हि) दे० 'मूर्ति'।
मूरति स्त्री०(हि) दे० मूर्ति'।
मूरध पुं० (हि) दे० 'मूर्द्धा'।
मूरि स्त्री० (हि) जड़। मूल।
मूरुख वि० (हि) दे० 'मूर्ख'।
मूर्ख वि० (हि) बेवकूफ। नासमझ। मूढ़।
मूर्खता पुं० (सं) नासमझी। बेवकूफी।
मूर्खत्व पुं० (सं) नासमझी। नादानी।
मूर्ख-पंडित वि० (सं) शिक्षित मूर्ख।
मूर्खमंडल वि० (सं) मूर्खों का दल।
मूर्खिनी स्त्री० (हि) मूर्ख स्त्री।
मूर्च्छन पु० (सं) १-संज्ञा का लुप्त होना। २-मूर्च्छित करने का मंत्र। ३-कामदेव का बाण।
मूर्च्छना स्त्री० (सं) संगीत में सातों सुरों का आरोह-अवरोह का क्रम।
मूर्च्छा स्त्री० (सं) रोग, भय, शोक आदि के कारण उत्पन्न वह अवस्था जिसमें प्राणी संज्ञाहीन या बेहोश हो जाता है।
मूर्च्छा रोग पु०(सं) हिस्टीरिया या दौरे पड़ने की बीमारी।

**मूर्च्छित** वि० (सं) १-अचेत। बेसुध। २-भस्म किया हुआ (पारा आदि)।

**मूर्त** वि० (सं) १-साकार। २-कठिन (कंक्रीट)। ३-मूर्छित।

**मूर्ति** स्त्री० (सं) १-शरीर। देह। २-[illegible]। ३-आकृति। स्वरूप। सूरत। ४-किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई प्रतिमा। विग्रह। ५-[illegible]।

**मूर्तिकला** स्त्री० (सं) मूर्ति बनाने की कला।

**मूर्तिकार** पुं० (सं) मूर्ति या तस्वीर बनाने वाला।

**मूर्तिपूजक** पुं० (सं) मूर्ति पूजने वाला।

**मूर्तिभंजक** पुं० (सं) १-मूर्ति को व्यर्थ समझ कर तोड़ने वाला।

**मूर्तिमान्** वि०(सं) जो शरीर के रूप में हो। स-शरीर। प्रत्यक्ष। गोचर।

**मूर्द्ध, मूर्ध** पुं० (सं) सिर।

**मूर्धखोल** पुं० (सं) छतरी। छाता।

**मूर्धज** वि०(सं) सिर से उत्पन्न होने वाला। पुं० बाल। केश।

**मूर्धन्य** वि० (सं) १-मूर्धा से सम्बन्ध रखने वाला। २-मस्तक में स्थित।

**मूर्धन्य-वर्ण** पुं०(सं) वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्धा से होता है जैसे-ऋ, ट, ठ आदि।

**मूर्धवेष्ठन** पुं० (सं) साफा। पगड़ी।

**मूर्धा** स्त्री० (सं) सिर।

**मूर्धाभिषिक्त** वि० (सं) जिसके माथे पर तिलक लगाया गया हो। सर्वमान्य।

**मूर्धाभिषेक** पुं०(सं) सिर पर अभिषेक या जल सिंचन होना। (राज्याभिषेक)।

**मूल** पुं० (सं) १-जड़। कन्द। २-आरम्भ। ३-आदि हेतु। ४-उद्भव स्थल। ५-पूंजी। ६-आधार। नींव। ७-स्वयं ग्रन्थाकार द्वारा लिखित ग्रन्थ। (ओरिजनिल)। ८-पड़ोस। ९-निकुञ्ज। वि० मुख्य प्रधान। (केपिटल)।

**मूलक** (सं) १-मूली। कन्दमूल। २-एक स्थावर विष ३-मूलस्वरूप। वि० १-उत्पन्न करने वाला। २-जिसके मूल में कुछ हो।

**मूलकर्म** पुं० (सं) १-जादू। इन्द्रजाल। टोना। २-प्रधान कर्म।

**मूलकारण** पुं० (सं) उपादानकारण।

**मूलग्रंथ** पुं०(सं) असल ग्रन्थ जिसकी टीका या भाषान्तर आदि किया गया हो।

**मूलच्छेद** पुं० (सं) १-जड़ से नाश। २-पूर्ण नाश।

**मूलच्छेदन** पुं० (सं) मूलच्छेद।

**मूलतः** अव्य० (सं) प्रथमतः। मूल रूप में।

**मूलधन** पुं० (सं) वह असल धन जो किसी के पास हो या व्यापार में लगाया गया हो। (प्रिंसिपल)।

**मूलधातु** स्त्री० (सं) मज्जा।

**मूलपदार्थ** पुं० (सं) वे पदार्थ या तत्व जिनसे सब पदार्थ बने हैं। (एलिमेंट)।

**मूलपाठ** पुं०(सं) १-किसी भाषा की प्रारम्भिक पुस्तक। २-किसी लेखक के मूल शब्द। (टैक्स्ट)।

**मूलपुरुष** पुं० (सं) किसी वंश का आदि पुरुष या सबसे पहला पुरखा।

**मूल-प्रकृति** स्त्री० (सं) संसार की वह आदिम-सत्ता जिसका यह संसार परिणाम या विकास है।

**मूलभूत** वि० (सं) किसी वस्तु के मूल या तत्व से संबंध रखने वाला। [illegible]।

**मूलमन्त्र** पुं० (सं) [illegible]।

**मूलवित्त** पुं० (सं) [illegible]।

**मूलव्याधि** स्त्री० [illegible] रोग। [illegible]।

**मूलव्रती** पुं० (सं) केवल फलों का आहार करके रहने वाला।

**मूलस्थान** पुं० (सं) १-वह स्थान जहां बाप दादा रहते आये हों। २-[illegible]। ३-ईश्वर। ४-राजधानी।

**मूलस्रोत** पुं० (सं) नदी, झरने आदि का उद्गम स्थान।

**मूलिक** वि० (सं) १-मूल सम्बन्धी। २-कन्द खाकर रहने वाला। (साधु)।

**मूलिका** स्त्री० (सं) औषधियों की जड़। जड़ी।

**मूली** स्त्री०(हि) १-मोटी और चरपरी जड़ वाला एक पौधा। २-एक प्रकार का बांस। (सं) १-ज्येष्ठी। २-छिपकली।

**मूल्य** पुं०(सं) १-किसी वस्तु को खरीदने के बदले दिया जाने वाला धन। कीमत। दाम। (प्राइस)। २-वह गुण या तत्व जिसके कारण किसी वस्तु का महत्व होता है। (वेल्यू)।

**मूल्यस्तर** पुं० (सं) मूल्यों के बढ़ाने की सीमा या स्तर (लेवल आफ प्राइसेस)।

**मूल्यन** पुं० (सं) मूल्य निरूपण। (वेल्यूएशन)।

**मूल्यनिरूपण** पुं० (सं) किसी वस्तु संपत्ति या योग्यता का मूल्य ठहराना। (वेल्यूएशन)।

**मूल्यरहित** वि० (सं) जिसका अधिक मूल्य न हो। सस्ता। निकम्मा।

**मूल्यवृद्धि** स्त्री० (सं) दाम या मूल्य का बढ़ना।

**मूल्यवान्** वि० (सं) कीमती। जिसका अधिक मूल्य हो। श्रेष्ठ। (कोस्टली)।

**मूल्यसूचनांक** पुं० (सं) खाद्यान्न या अन्य आवश्यक सामग्रियों या वस्तुओं का विभिन्न समयों में औसतन मूल्य बताने के अंक जो सामान्य स्थिति में १०० मान कर मूल्यों के घटने बढ़ने का मान लगाया जाता है। (इंडेक्स नम्बर)।

**मूल्यह्रासकोष** पुं० (सं) किसी कारखाने आदि में लगी हुई कलों या यन्त्रों आदि के मूल्यों में घिसाई आदि के कारण वह कमी जो लाभ में से घटा दी

जाता है। और अलग खाते में जमा करली जा है। (डेप्रिसियेशन फण्ड)।

मूल्यहीन वि० (सं) दे० 'मूल्यरहित'।

मूल्यांकन पु० (सं) किसी का मूल्य या महत्व आँकना अथवा समझना। (एप्रिसियेशन, वेल्यूएशन)।

मूल्यादेय-वस्तुएँ स्त्री० (सं) डाक द्वारा भेजी गई वह वस्तुएँ जो प्राप्त करने वाले को अंकित मूल्य लेकर दी जाती है। (वेल्यूपेबल आर्टिकल्स)।

मूल्याधिरोह पु० (सं) दे० 'मूल्योत्कर्ष'।

मूल्यानुपातीकर पु०(सं) किसी वस्तु विशेष पर उसके मूल्य के अनुसार लगाया जाने वाला कर। (ऐड-वेलारिम ड्यूटी)।

मूल्यापकर्ष पु० (सं) सरकारी या अन्य कारखाने आदि में लगी कलों आदि के मूल्य में घिसने का कारण लगाई जाने वाली कमी (डेप्रिसिएशन)।

मूल्यावपात पु०(सं) वस्तुओं के मूल्यों में कुछ कारणों से एकाएक कमी आजाना। मन्दी। सस्ती। (स्लम्प)

मूल्यावरोहण पु० (सं) दे० 'मूल्यापकर्ष'।

मूल्योत्कर्ष पु० (सं) सरकारी ऋणपत्रों, मुद्रा आदि में के सापेक्ष मूल्य में बढ़ोतरी होना। (एप्रिसियेशन)

मूश पु० (फा) चूहा।

मूशदान पु० (फा) चूहेदान।

मूष पु० (सं) चूहा।

मूषक पु० (सं) १-चूहा। २-चोर।

मूषकवाहन पु० (सं) गणेश।

मूषण पु० (सं) चुराना।

मूषा स्त्री० (सं) १-सोना आदि गलाने की घरिया। २-गोखरू। ३-झरोखा।

मूषिक पु० (सं) १-चूहा। २-एक प्राचीन जनपद (महाभारत)।

मूषिकरथ पु० (सं) गणेश जी।

मूषिक-विषाण पु० (सं) कोई अनहोनी बात जैसे चूहे के सींग।

मूषिका स्त्री० (सं) १-छोटा चूहा। चुहिया। २-एक लता।

मूस पु० (हि) चूहा।

मूसदानी स्त्री० (हि) चूहेदानी।

मूसना क्रि० (हि) चुराना। चोरी करना।

मूसर पु० (हि) दे० 'मूसल'।

मूसल पु० (हि) लम्बा और मोटा डंडा जिससे धान कूटते हैं। २-राम या कृष्ण के पद का एक चिह्न।

मूसलचंद पु० (हि) १-हट्टा कट्टा पर निकम्मा पुरुष। २-असभ्य। गंवार।

मूसलाधार अव्य० (हि) मूसल के समान मोटी धार से (वर्षा)।

मूसली स्त्री० (हि) दे० 'मुसली'।

मूसा पु० (हि) १-चूहा। २-यहूदी लोगों के एक पैग़म्बर का नाम।

मृग पु० (सं) १-चौपाया मात्र। पशु। २-हिरन ३-अगहन का महीना। ४-खोज। अन्वेषण। ५-कस्तूरी का नाफा। ६-चार प्रकार के पुरुषों में से एक।

मृगकानन पु०(सं) शिकार के लिए उपयुक्त कानन या वन।

मृगचर्म पु० (सं) हिरन का चमड़ा जो शुद्ध माना जाता है।

मृगछाला स्त्री० (हि) मृगचर्म।

मृगछौना पु० (हि) मृग का बच्चा।

मृगजल पु० (सं) मृग तृष्णा की लहरें।

मृगतृषा स्त्री० (सं) दे० 'मृगतृष्णा'।

मृगजल-स्नान पु० (सं) अनहोनी बात जैसे मृगजल में स्नान करना।

मृगतृष्णा स्त्री० (सं) जल अथवा जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप में होती है। मृगमरीचिका।

मृगतृष्णिका स्त्री० (सं) दे० 'मृगतृष्णा'।

मृगदाव पु० (सं) १-वह वन जिसमें पर्याप्त मृग हों। २-काशी के पास का सारनाथ नामक स्थान।

मृगधर पु० (सं) चन्द्रमा।

मृगनयनी स्त्री० (सं) बहुत सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।

मृगनाभि पु० (सं) कस्तूरी।

मृगपति पु० (सं) सिंह। शेर।

मृगमद पु० (सं) कस्तूरी।

मृगमरीचिका स्त्री० (सं) मृगतृष्णा।

मृगमास पु० (सं) मार्गशीर्ष।

मृगमेद पु० (सं) कस्तूरी।

मृगया पु० (सं) शिकार। आखेट।

मृगयावन पु० (सं) आखेट खेलने का जंगल।

मृगराज पु० (सं) सिंह। शेर।

मृगरोचना पु० (सं) कस्तूरी।

मृगलांछन पु० (सं) चन्द्रमा।

मृगलेखा स्त्री०(सं) चन्द्रमा का धब्बा।

मृगलोचना स्त्री० (सं) मृग के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

मृगलोचनी वि० (सं) दे० 'मृगनयनी'।

मृगशावक पु० (सं) हरिण का बच्चा।

मृगशिरा पु० (सं) सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवा।

मृगशीर्ष पु० (सं) मृगशिरानक्षत्र।

मृगश्रेष्ठ पु० (सं) व्याघ्र। शेर।

मृगांक पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-रत्न, स्वर्ण आदि से बना हुआ एक रस।

मृगांतक पु० (सं) चीता।

मृगाक्षी वि० (सं) दे० 'मृगनयनी'।

मृगाजिन पु० (सं) मृगचर्म।

मृगादन पु० (सं) शेर। चीता।

मृगारि पु० (सं) शेर। सिंह।

मृगाशन पु० (सं) सिंह।

मृगी स्त्री० (सं) १-हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी। २-चार प्रकार की स्त्रियों में से एक।
मृगेंद्र पुं० (सं) सिंह। शेर।
मृग्य वि० (सं) खोजने योग्य।
मृड़ पुं० (सं) शिव। महादेव।
मृड़ानी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-भवानी
मृड़ालिनी स्त्री०(सं) १-कमल का पौधा। २-वह स्थान जहाँ बहुत कमल हों।
मृड़ाली स्त्री० (सं) कमलनाल।
मृणाल स्त्री० (सं) १-कमलनाल। २-कमल की जड़। ३-खस।
मृणालिनी स्त्री० (सं) कमलिनी। २-वह स्थान जहाँ कमल हो। ३-कमलों का समूह।
मृण्मय वि० (सं) मिट्टी का बना हुआ।
मृत वि० (सं) १-मरा हुआ। जिसे मरे कुछ समय हो गया हो।
मृतक पुं० (सं) १-मृत प्राणी या उसका शरीर। २-मरण का अशौच।
मृतकल्प वि० (सं) जो मरा न हो पर मरे के समान हो।
मृतगृह पुं० (सं) कब्र।
मृतचेल पु० (सं) मृतक के ऊपर डाला हुआ कपड़ा।
मृतदार पु० (सं) विधुर। रँडुआ।
मृतनिर्यातक पु० (सं) मुरदे को श्मशान तक पहुँचाने का काम करने वाला।
मृतभर्तृका स्त्री० (सं) विधवा। राँड।
मृतलेखा पुं०(सं) वह खाता या लेखा जिसमें न कुछ जमा होता है न कुछ निकला हुआ है और चालू न हो। (डेड एकाउंट)।
मृत-वत्सा स्त्री० (सं) ऐसी स्त्री जिसके बच्चे जीवित न रहते हों।
मृतसंजीवनी स्त्री० (सं) मरे हुए आदमी में जान डाल डाल देने वाली औषधि।
मृत-स्नान पु० (सं) मुर्दे को अन्त्येष्टि क्रिया से पहले कराया जाने वाला स्नान।
मृतकांतक वि० (सं) सियार। गीदड़।
मृताशौच पु० (सं) वह अशौच जो आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृति स्त्री० (सं) मरण। मृत्यु।
मृतिपात्र पु० (सं) मिट्टी का बर्तन।
मृत्पिंड पु० (सं) मिट्टी का ढेला।
मृत्तिका स्त्री० (सं) मिट्टी।
मृत्तिका-लवण पुं० (सं) लोना।
मृत्यु स्त्री० (सं) १-मरण। मौत। २-यमराज। ३-विष्णु। ४-माया। ५-कलि। ६-ग्यारह रुद्रों में सेएक
मृत्युकन्या स्त्री० (सं) यमराज की पुत्री।
मृत्युकर पुं० (सं) मृत्यु पर संपत्ति कर लगाया जाने वाला कर। (डैथ ड्यूटी)।
मृत्युकाल पुं० (सं) मौत का समय या घड़ी।
मृत्युदूत पुं० (सं) यम के दूत।
मृत्युपत्र पुं० (सं) वसीयतनामा।
मृत्युयोग पुं० (सं) ग्रहों का वह योग जिससे मृत्यु की संभावना होती है।
मृत्युलेख पु० (सं) मृत्यु से पहले अपनी संपत्ति या धन आदि का बटवारा या दान देने की इच्छा करने के लिए लिखा गया पत्र। (टेस्टामेंट)।
मृत्युलोक पुं० (सं) यमलोक। मर्त्यलोक।
मृत्युशय्या पु० (सं) १-वह पलंग या बिस्तरा जिसपर कोई मरे। २-जिसकी मृत्यु निश्चित हो।
मृत्सा स्त्री० (सं) चिकनी मिट्टी।
मृथा अव्य० दे० 'वृथा'।
मृदंग पु० (सं) एक प्रकार का बाजा यंत्र जो ढोलक से कुछ लम्बा होता है।
मृदंगी स्त्री० (सं) तोरई।
मृदा स्त्री० (सं) मिट्टी।
मृदित वि०(सं) पिसा हुआ। चूर्ण किया हुआ।
मृदु वि० (सं) १-कोमल। मुलायम। नरम। २-जो सुनने में मधुर हो। ३-सुकुमार। ४-मन्द।
मृदुकोष्ठ वि० (सं) जिसके हलके जुलाब से ही दस्त आ जायँ।
मृदुता स्त्री० (सं) १-कोमलता। २-धीमापन।
मृदुल वि० (सं) १-कोमल। नरम। २-दयामय। ३-सुकुमार।
मृदुलाई स्त्री० (सं) कोमलता। सुकुमारता।
मृदुस्पर्श पुं०(सं) कोमल स्पर्श। वि० जो छूने में नरम या कोमल हो।
मृदूकरण पुं० (सं) तीक्ष्णता कम करना। २-कोमल बना देना। (मिटिगेशन)।
मृनाल पुं० (हि) दे० 'मृणाल'।
मृषा अव्य०(सं) झूठमूठ। व्यर्थ। वि० असत्य। झूठा
मृषाज्ञान पु० (सं) झूठी समझ।
मृषाभाषी वि० (सं) झूठ बोलने वाला। झूठा।
मृषावादी पु० (सं) झूठा आदमी।
मृष्ट वि० (सं) १-साफ किया हुआ। २-पवित्र किया हुआ। शोधित।
में प्रत्य० (हि) अधिकरण कारक का चिह्न जो शब्द के अन्त में लग कर उसके भीतर अन्दर या चारों ओर होना सूचित करता है। स्त्री० बकरी के बोलने का शब्द।
मेंगनी स्त्री० (हि) चूहे या भेड़ बकरी की छोटी-छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा।
मेंड़ स्त्री (हि) १-खेतों की सीमासूचक हदबन्दी। २-सीमा। हद। ३-मर्यादा।
मेंड़बंदी स्त्री० (हि) मेंड़ लगाने का काम या भाव।

मेंडराना क्रि० (हिं) १-दे० 'मंडराना'। २-घेरकर गोल चक्कर बनाना।
मेंढक पुं० (हिं) मेढक।
मेंढकी स्त्री० (हिं) मेढकी।
मेंबर पुं० (अ) सभासद्। सदस्य।
मेंह पुं० (हिं) आकाश से बरसने वाला पानी। वर्षा।
मेंहदी स्त्री० (हिं) दे० 'मेहदी'।
मेकल पुं० (सं) एक पर्वत का नाम।
मेख स्त्री० (फा) १-लकड़ी का खूँटा। २-कील। कांटा ३-पच्चर।
मेखड़ा स्त्री० (हिं) बांस की पट्टी का घेरा जो भाले के मुँह पर बाँध देते हैं।
मेखल स्त्री० (हिं) दे० 'मेखला'।
मेखला स्त्री० (सं) १-किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली डोरी, शृङ्खला, रेखा आदि। २-करधनी। तगड़ी। ३-मंडल। ४-गोल घेरा। ५-वह पेटी या कमरबन्द जिसमें तलवार बांधी जाती है।
मेखली स्त्री० (हिं) १-एक बिना बांह का चोगा या पहनावा। करधनी।
मेगनी स्त्री० (हिं) दे० 'मेगनी'।
मेघ पुं० (सं) १-बादल। २-एक राग का नाम।
मेघकाल पुं० (सं) वर्षाऋतु।
मेघगर्जन पुं० (सं) बादल की गरज।
मेघजाल पुं० (सं) घनघोर घटा।
मेघज्योति स्त्री० (सं) बिजली।
मेघडंबर पुं० (सं) १-बादल की गरज। २-बड़ा शामियाना।
मेघदीप पुं० (सं) बिजली।
मेघदूत पुं०(सं) महाकवि कालिदास प्रणीत एक खंड-काव्य।
मेघद्वार पुं०(सं) आकाश। व्योम।
मेघधनु पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
मेघनाद पुं० (सं) १-बादल का गर्जन। २-वरुण। ३-रावण के पुत्र इन्द्रजीत का नाम।
मेघमाला पुं० (सं) मेघ या बादलों की घटा।
मेघयोनि स्त्री० (सं) १-कुहरा। २-धूआँ।
मेघरेखा स्त्री० (सं) दे० 'मेघमाला'।
मेघलेखा स्त्री० (सं) दे० 'मेघमाला'।
मेघवाई स्त्री० (हिं) घनघोर घटा।
मेघवाहन पुं० (सं) १-इन्द्र। २-एक बौद्धराज का नाम।
मेघवती पुं० (सं) चातक।
मेघसार पुं० (सं) चीनिया। कपूर। घनसार।
मेघांत पुं० (सं) शरत्काल।
मेघा पुं० (हिं) मेंढक। मंडूक।
मेघागम पुं० (सं) वर्षाकाल। २-धाराकदम्ब।
मेघाच्छन्न वि० (सं) बादलों से ढका हुआ।
मेघाडंबर पुं० (सं) १-बादलों की घड़घड़ाहट। २-बादल का फैलाव।
मेघानंद पुं० (सं) १-मोर। २-बगला।
मेघारि पुं० (सं) पवन। हवा।
मेघावलि स्त्री० (हिं) बादलों की घटा।
मेघोदय पुं० (सं) घटा का छाना।
मेचक पुं० (सं) १-अंधकार। अँधेरा। २-धूआँ। ३-बादल। वि० श्यामल। काला।
मेचकता स्त्री० (सं) कालापन।
मेचकताई स्त्री० (हिं) कालापन।
मेज स्त्री० (फा) पढ़ने लिखने या खाना खाने के लिए बनी ऊँची चौकी। (टेबल)।
मेजपोश पुं० (फा) मेज के ऊपर बिछाने का कपड़ा।
मेज़बान पुं० (फा) १-वह जिसके यहाँ कोई मेहमान या अतिथि आकर ठहरे। २-आतिथ्य करने वाला
मेज़बानी स्त्री० (फा) मेहमानदारी। आतिथि-सत्कार।
मेजा पुं० (हिं) मेंढक।
मेट पुं० (हिं) कुलियों या मजदूरों का सरदार या जमादार।
मेटक पुं० (हिं) नाशक। मिटाने वाला।
मेटनहार पुं० (हिं) मिटाने वाला। हटाने वाला।
मेटना क्रि० (हिं) दे० 'मिटाना'।
मेटा पुं० (हिं) मटका।
मेड़िया स्त्री० (हिं) मण्डप। छोटा घर।
मेढ़ी स्त्री० (हिं) तीन लड़ों वाली सिर गूंथने की चोटी
मेथिका स्त्री (सं) मेथी।
मेथी स्त्री० (हिं) एक पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है।
मेथौरी स्त्री० (हिं) मूँग या उड़द की बरी में मेथी का साग मिला होता है।
मेद पुं० (सं) चरबी। २-मोटाई या चर्बी का रोग। ३-कस्तूरी। वि० (सं) स्थूलकाय। जिस शरीर में अधिक चर्बी हो।
मेदा पुं० (अ) पेट का वह भीतरी भाग जिसमें अन्न पकता है। आमाशय।
मेदिनी स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। धरती। २-मेदा।
मेदुर वि० (सं) चिकना। स्निग्ध।
मेध पुं० (सं) १-यज्ञ। २-हवि। ३-यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु।
मेधा स्त्री० (सं) बात को समझने या स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। धारणा शक्ति।
मेधावन वि० (सं) दे० 'मेधावी'।
मेधावी वि०(सं) १-जिस की धारणा शक्ति तीव्र हो। बुद्धिमान। २-पंडित। पुं० (सं) १-तोता। २-मदिरा जौ। ४-बकरा।

मेध्य वि० (स) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। पुं० (सं) १-कत्था। २-जौ। ३-बकरा)।
मेनका स्त्री०(सं) १-स्वर्ग की एक अप्सरा जो शकुन्तला की माता थी। २-पार्वती की माता का नाम।
मेनकात्मजा स्त्री० (स) १-शकुन्तला। २- पार्वती।
मेना स्त्री० (सं) १-हिमवान की पत्नी जो पार्वती की माता थी। २-मेनका।
मेम स्त्री० (हि) १-पुराने अमेरिका आदि पाश्चात्य देश की स्त्री। २-एक ताश का पत्ता।
मेम साहिबा स्त्री० (हि) मेम की तरह रहने वाली स्त्री मेम।
मेमना पु० (हि) भेड़ का बच्चा।
मेमार पुं० (अ) भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। राजा।
मेर पुं० (हि) दे० 'मेल'।
मेरवना क्रि० (हि) दे० 'मिलाना'।
मेरा पु० (हि) दे० 'मेला'। सर्व० मैं, के सम्बन्ध-कारक का एक रूप।
मेराउ पुं० (हि) मेराव।
मेराना क्रि०(हि) दे० 'मिलना'।
मेरावा पु० (हि) मेल। मिलाप।
मेरु पुं० (सं) १-एक पर्वत जो सोने का बताया जाता है। (पुराण)। २-जपमाला के बीच का बड़ा दाना। ३-पिंगल या छन्द-शास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने लघु, गुरु के कितने छन्द हो सकते हैं। ४-उत्तरी ध्रुव।
मेरुदंड पुं०(स) १-पीठ के मध्य की हड्डी। रीढ़। २-पृथ्वी के दोनों ध्रुव के मध्य की सीधी कल्पित रेखा
मेल पु० (स) १-समागम। मिलाप। २-एकता। सुलह ३-मित्रता। ४-संगति। ५-जोड़। समता। ६-ढंग ७-मिश्रण। स्त्री० (अ) १-डांक। २-डाकगाड़ी।
मेलजोल पुं० (सं) घनिष्टता।
मेलन पुं० (सं) १-मिलन। २-मिलने की क्रिया या भाव।
मेलना क्रि०(हि) १-मिलना। २-डालना। ३-पहनना ४-एकत्र होना।
मेला पु० (हि) १-भीड़। २-उत्सव। त्योहार, उत्सव आदि पर होने वाली भीड़। स्त्री० (सं) १-समागम। २-मिलाप। ३-अंजन। स्याही।
मेलान पु० (हि) १-ठहराव। २-पड़ाव। डेरा।
मेलापक पु० (स) १-एकत्र करने वाला। २-जमघट भीड़।
मेली वि० (हि) १-जिससे मेलमिलाप हो। २-मिलन सार। ३-सगी।
मेली-मुलाकाती पु० (हि) १-साथी। २-मित्र।
मेवा पुं० (फा) किशमिश, बादाम आदि सुखाये हुए बढ़िया फल।
मेवाटी स्त्री० (हि) मेवे भर कर पकाया जाने वाला एक पकवान।
मेवाफरोश पुं० (फा) मेवा या ताजे फल बिकेता।
मेवासा पु० (हि) दे० 'मवास'।
मेवासी पुं० (हि) १-घर का मालिक। २-किले में रहने वाला।
मेष पु० (सं) १-भेड़। २-बारह राशियों में से पहली राशि। ३-एक औषध।
मेषपालक पु० (स) गड़ेरिया।
मेषसंक्रांति स्त्री० (सं) सौ वर्ष के प्रारम्भ का दिन।
मेहदी स्त्री० (हि) एक झाड़ी जिसकी पत्तियों को पीस कर स्त्रियां तलवे या हथेली पर रङ्गने के लिए लगाती हैं।
मेह पु० (हि) १-मेघ। बादल। २-वर्षा। पु० (सं) १-मूत्र। प्रमेह रोग। ३-मेंढा।
मेहतर पु० (फा) हलालखोर। भंगी।
मेहतरानी स्त्री० (फा) भंगिन।
मेहनत स्त्री० (अ) परिश्रम।
मेहनतकश वि०(अ) १-परिश्रमी। २-कष्ट उठाने वाला
मेहनताना पुं० (अ) किसी काम की मजदूरी। पारिश्रमिक।
मेहनती वि० (अ) परिश्रमी।
मेहमान पुं० (फा) अतिथि। पाहुना।
मेहमानखाना पुं० (फा) अतिथियों को ठहराने का स्थान। मुसाफिरखाना।
मेहमानदार पुं० (फा) अतिथि सत्कार करने वाला।
मेहमानदारी स्त्री० (फा) अतिथि-सत्कार।
मेहमान-नवाज वि० (फा) अतिथि का आदर-सत्कार करने वाला।
मेहमान-नवाजी स्त्री० (फा) मेहमानदारी।
मेहमानी स्त्री० (हि) १-अतिथि-सत्कार। २-मेहमान बन कर रहने का भाव।
मेहर स्त्री० (फा) कृपा। अनुग्रह। दया।
मेहरबान वि० (फा) कृपालु। दयालु।
मेहरा पुं० (हि) १-खत्रियों की एक जाति। जनखा। ३-स्त्रियों में बहुत रहने वाला।
मेहराब स्त्री०(अ) द्वार आदि के ऊपर को अर्ध गोलाकार कटा हुआ (द्वार)।
मेहराबी वि० (अ) मेहराबदार। स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
मेहरारू स्त्री० (हि) स्त्री। औरत।
मेहरी स्त्री० (हि) स्त्री। पत्नी।
मैं सर्व (हि) सर्वनाम उत्तम पुरुष के कर्त्ता का रूप। स्वयं।
मैंड़ स्त्री० (हि) दे० 'मेंड़'।
मै अव्य० (हि) दे० 'मय'। स्त्री० (फा) मदिरा। मय। शराब। (अ) साथ। सहित।

मैकदा पुं० (फा) मदिरालय।
मैकश पुं० (फा) मद्यप। शराब पीने वाला।
मैकशी स्त्री० (फा) मद्यपान।
मैका पुं० (हिं) दे० 'मायका'।
मैगल वि० (हिं) दे० 'मदगल'।
मैजल स्त्री० (हिं) दे० 'मंजिल'।
मैड़ स्त्री० (हिं) दे० 'मेंड'।
मैत्रावरुण पु० (सं) १-अगस्त्य। २-वसिष्ठ।
मैत्री स्त्री० (सं) मित्रता। दोस्ती।
मैत्रेयी स्त्री० (सं) १-अहिल्या। २-याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम।
मैत्र्य पु० (सं) मित्रता। दोस्ती।
मैथिल पु० (सं) १-मिथिला देश का निवासी। २-राजा जनक। वि० मिथिला सम्बन्धी।
मैथिली स्त्री० (सं) जानकी। सीता।
मैथुन पु०(सं) स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग 'रतिक्रीड़ा।
मैथुनज्वर पुं० (सं) काम-ज्वर।
मैथुनिक वि० (सं) मैथुन से सम्बन्ध रखने वाला। (सैक्सुअल)।
मैदा पुं० (फा) बहुत बारीक पिसा हुआ और चोकर निकाला हुआ आटा।
मैदान पुं० (फा) १-लम्बा चौड़ा खाली स्थान। २-समतल भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३ रण-भूमि। ४-किसी वस्तु का विस्तार।
मैदानी वि० (फा) मैदान सम्बन्धी।
मैन पुं० (हिं) १-कामदेव। २-मोम।
मैनमय वि० (हिं) कामासक्त।
मैनसिल पुं० (हि) एक प्रकार की पीली धातु जो दवा में काम आती है।
मैना स्त्री० (हि) १-एक काले रङ्ग की चिड़िया जो मनुष्यों की सी बोली बोलती है। सारिका। २-मेनका।
मैमंत वि० (हिं) १-मतवाला। २-अभिमानी।
मैमत स्त्री० (हि) ममता।
मैया स्त्री० (हिं) मां। माता।
मैर स्त्री० (हिं) सांप के विष की लहर।
मैल पुं० (हि) १-किसी वस्तु पर पड़ी हुई अथवा जमी हुई धूल, गर्द आदि। २-दोष विकार।
मैलखोरा वि०(हिं) (रङ्ग आदि) जिस पर जमा हुआ मैल जल्दी न दिखाई दे। पुं० १-घोड़े की काठी के नीचे रखने का नमदा। २-बनियान।
मैला वि० (हिं) जिस पर मैल जमा हुआ हो। मलिन अस्वच्छ। २-विकारयुक्त। गन्दा। पुं० १-विष्ठा २-कूड़ा-करकट।
मैलाकुचैला वि० (हि) गन्दा। बहुत मैला।
मैहर पुं० (हिं) मायका।
मों प्रत्य० (हिं) दे० 'में'। सर्व० दे० 'मो'।
मोंगरा पुं० (हि) दे० 'मुँगरा'।
मोंछ स्त्री० (हि) दे० 'मूँछ'।
मोंड़ा पुं० (देश) बालक। लड़का।
मोंढ़ा पुं०(हि) १-कन्धा। २-सरकण्डे या बांस का तिपाई जैसा ऊँचा आसन।
मो सर्व० (हि) मेरा।
मोक पुं० (सं) केंचुल।
मोकना क्रि० (हि) १-छोड़ना। २-फेंकना। भिक्षा करना।
मोकल वि० (हि) छूटा हुआ। मुक्त।
मोकला वि० (हि) १-लम्बा-चौड़ा।
मोक्ष पु० (स) १-बन्धन से मुक्त। छुटकारा। २-जन्म-मरण से छुटकारा। मुक्ति। ३-मृत्यु। ४-पतन ५-पाँडर का वृक्ष।
मोक्षक पुं० (सं) १-मोक्ष देने वाला। २-मोरवा वृक्ष
मोक्षण पुं० (सं) मोक्ष देने की क्रिया।
मोक्ष्य वि० (स) जो मोक्ष के योग्य हो। मोक्ष का अधिकारी।
मोखा पुं० (हि) दीवार में बना छोटा छेद।
मोगरा पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया और बड़ा बेला (पुष्प)।
मोगल पुं० (हि) दे० 'मुगल'।
मोघ वि० (सं) जो न होने के समान हो।
मोच स्त्री०(हि) शरीर के किसी अंग के जोड़ का इधर-उधर हट जाना।
मोचक पुं० (सं) १-छुड़ाने वाला। २-केला। ३-संन्यासी। ४-सेंमल का पेड़।
मोचन पुं० (सं) १-मुक्त करना। २-दूर करना। ३-छीन लेना।
मोचना क्रि०(हि) १-छोड़ना। २-गिराना। ३-बंधन से मुक्त करना। ४-बहाना। पुं० (हि) १-नाई की बाल उखाड़ने की चिमटी। २-लुहार का एक औजार
मोचयिता वि० (सं) मुक्त कराने वाला।
मोचरस पुं० (सं) सेमल का गोंद।
मोची पुं० (हि) जूते आदि बनाने वाला कारीगर। (सं) छुड़ाने वाला।
मोच्छ पुं० (हि) दे० 'मोक्ष'।
मोजा पुं० (फा) १-जुर्राब। २-पिंडली का निचला भाग।
मोट स्त्री० (हि) गठरी। पुं० चरसा। वि० १-मोटा २-साधारण।
मोटर स्त्री० (अं) १-एक विशेष प्रकार का यंत्र जिससे अन्य यंत्रों का संचालन किया जाता है। २-आन्तरिक दहन की प्रक्रिया से चलने वाली गाड़ी। मोटरगाड़ी।
मोटरकार स्त्री० (अं) मोटरगाड़ी।
मोटरखाना पुं० (हि) मोटरगाड़ी रखने का स्थान।

(अँगरेज)।
**मोटर-ड्राइवर** पुं०(अं) मोटरगाड़ी का चालक।
**मोटरबस** पुं० (अं) माल ढोने या सवारी लेजाने वाली बड़ी मोटरगाड़ी। लारी।
**मोटरबोट** पुं० (अं) यन्त्र द्वारा स्वचालित नाव।
**मोटरसाइकिल** स्त्री० (अं) यन्त्र द्वारा स्वचालित साइकिल। फटफटिया।
**मोटा** वि० (हि) १-स्थूल। जिसके शरीर में आवश्यकता से अधिक मांस हो। २-दलदार। ३-साधारण से अधिक घेरे या मान वाला। ४-साधारण। ५-भद्दा। ६-भारी। कठिन। घमंडी।
**मोटाई** स्त्री० (हि) स्थूलता। २-शरारत। पाजीपन।
**मोटाकाम** पुं० (हि) वह काम जिसमें अधिक बुद्धि लगाने की आवश्यकता न पड़े।
**मोटाझोटा** वि० (हि) १-साधारण। २-घटिया।
**मोटाताजा** वि० (हि) हृष्टपुष्ट।
**मोटाना** क्रि० (हि) १-मोटा होना। २-घमंडी होना। ३-धनवान होना।
**मोटापन** पुं० (हि) मोटाई। स्थूलता।
**मोटापा** पुं० (हि) मोटापन।
**मोटिया** पुं० (हि) १-मोटा देशी कपड़ा। खद्दर। २-मजदूर। बोझा ढोने वाला।
**मोटी-आसामी** पुं० (हि) वह जिसके पास बहुत धन हो।
**मोटीअकल** स्त्री० (हि) गूढ़ बातों को समझने में असमर्थ बुद्धि।
**मोटीआवाज** स्त्री० (हि) १-भारी आवाज। २-भद्दी आवाज।
**मोटीबात** स्त्री० (हि) सबकी समझ में आने वाली साधारण बात।
**मोटेमल** पुं०(हि)१-अधिक मोटा आदमी। २-ढीला आदमी।
**मोटेहिसाब** अव्य० (हि) लगभग। अन्दाज से।
**मोट्टायित** पुं० (सं) साहित्य में वह भाव जिसमें नायिका अपने आंतरिक प्रेम को कटु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी नहीं छिपा सकती।
**मोठ** स्त्री० (हि) मूंग की तरह का एक मोटा अन्न।
**मोठस** वि० (देश) मौन। चुप।
**मोड़** पुं० (हि) १-रास्ते में वह स्थान जहां से मुड़ा जाता है। २-वह स्थान जहां से रास्ता किसी ओर मुड़ता हो। ३-मुड़ने की क्रिया या भाव।
**मोड़तोड़** पुं० (हि) घुमाव।
**मोड़ना** क्रि०(हि) १-किसी को मुड़ने में प्रवृत्त करना। २-फेरना। लौटाना। ३-कुंठित करना। ४-किसी छड़ जैसी वस्तु का कुछ अंश दूसरी ओर करना।
**मोड़ी** स्त्री० (हि) १-घसीट या शीघ्र लिखने की लिपि २-मराठी भाषा की एक लिपि।
**मोतदिल** वि० (अ) दे० 'मातदिल'।
**मोतबर** वि० (अ) जिस पर विश्वास किया जा सके। विश्वासनीय।
**मोतियादाम** पुं० (हि) एक वर्णवृत्त।
**मोतिया** पुं० (हि) १-एक प्रकार का बेला। २-एक प्रकार का सलमा। ३-एक चिड़िया। वि० १-पीले और हलके गुलाबी रङ्ग का। २-मोती की तरह गोल दाने का।
**मोतियाबिंद** पुं० (हि) आंखों का एक रोग जिसमें पुतलियों के आगे एक झिल्ली आ जाती है।
**मोती** पुं० (हि) सीपियों में से निकलने वाला एक बहुमूल्य रत्न। मुक्ता।
**मोतीचूर** पुं० (हि) छोटी बुंदियों का लड्डू।
**मोतीझिरा** पुं० (हि) छोटी शीतला का रोग। मंथज्वर।
**मोतीबेल** स्त्री० (हि) बेले का वह भेद जिसे मोतिया कहते हैं।
**मोतीभात** पुं० (हि) एक विशेष प्रकार का भात
**मोतीसिरी** स्त्री० (हि) मोतियों की माला की कंठी।
**मोथरा** वि०(हि) कुण्ठित। जिसकी धार तेज न हो।
**मोथा** पुं० (हि) नागरमोथा।
**मोद** पुं० (सं) १-आनन्द। हर्ष। २-एक वर्णवृत्त।
**मोदक** पुं० (सं) १-लड्डू। २-एक वर्णवृत्त। वि० आनन्ददायक।
**मोदन** पुं०(सं) १-प्रसन्न करना। २-सुगन्धी फैलाना।
**मोदना** क्रि० (हि) १-प्रसन्न या आनन्दित होना। २-सुगन्धि फैलाना।
**मोदित** वि० (सं) हर्षित। प्रसन्न।
**मोदी** पुं० (हि) १-आटा, दाल, चावल आदि बेचने वाला। बनिया।
**मोधू** वि० (हि) मूर्ख। बेवकूफ।
**मोना** क्रि० (हि) भिगोना। तर करना। पुं० ढक्कनदार झाबा या पिटारी।
**मोनिया** स्त्री० (हि) छोटी पिटारी या मोना।
**मोनोटाइप-मशीन** स्त्री० (अं) छापे के अक्षर ढाल कर कम्पोज करने वाला एक यन्त्र।
**मोपला** पुं० (देश) मद्रास में पाई जाने वाली एक मुसलमानी जाति।
**मोम** पुं० (फा) १-एक चिकना, कोमल पदार्थ जिससे मधुमक्खियां का छत्ता बना होता है। २-इससे मिलता जुलता कोई पदार्थ। ३-रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार किया गया ऐसा पदार्थ।
**मोमगर** पुं० (फा) मोम की वस्तुएँ निर्माण करने वाला।
**मोमजामा** पुं० (फा) वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हो।

मोमदिल वि०(फा) मोम के समान कोमल हृदय वाला
मोमबत्ती स्त्री० (फा) मोम की बनी बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।
मोमिन पुं०(अ) १-धर्मनिष्ठ मुसलमान। २-जुलाहों की एक जाति।
मोमिया स्त्री० (फा) १-मसाला लगा कर रखा गया शव। २-इस प्रकार शव को नष्ट होने से बचाने का मसाला।
मोमियाई स्त्री० (फा) १-नकली शिलाजीत। २-मृतकों के शव को नष्ट होने से बचाने का मसाला
मोमी वि० (फा) १-मोम का बना हुआ। २-मोम का सा।
मोमीछींट स्त्री० (फा) एक प्रकार का मुलायम छींटदार कपड़ा।
मोमीमोती पुं० (फा) नकली मोती।
मोयन पुं० (हि) गुंधे हुए आटे में डाला जाने वाला तेल या घी जिससे बनने वाली वस्तु मुलायम होती है।
मोयनदार वि० (हि) जिसमें मोयन लगाया गया हो।
मोरंग पुं० (देश) नैपाल देश का पूर्वीभाग।
मोर पुं० (हिं) १-एक अत्यन्त सुन्दर बड़ा पत्ती। २-नीलम की आभा। सर्व० (हि) दे० 'मेरा'।
मोरचंदा पुं० (हि) दे० 'मोरचन्द्रिका'।
मोरचन्द्रिका स्त्री० (हि) मोर के पंख पर की चन्द्राकार बूटी।
मोरचा पुं० (फा) १-जंग। लोहे पर नमी के कारण पड़ने वाला अंश। २-किले के चारों ओर रक्षा के लिए खोदा गया गड्ढा। वह स्थान जहाँ से नगर या गढ़ की रक्षा की जाती है। युद्ध में होने वाला सामना।
मोरचाबन्दी स्त्री०(हि) शत्रु पर आक्रमण करने अथवा अपना बचाव के लिए बनाया हुआ मोरचा।
मोरचाल पुं० (हि) एक प्रकार का व्यायाम।
मोरछल पुं० (हि) मोर की पूँछ के परों को इकट्ठा बांध कर बनाया हुआ चँवर।
मोरछली पुं० (हि) १-मोरछल हिलाने वाला। २-दे० 'मौलसिरी'।
मोरछांह स्त्री० (देश) दे० 'मोरछल'।
मोरध्वज पुं०(हि) एक प्रसिद्ध भक्त राजा। (पुराण)
मोरन स्त्री०(हि) शिखरन। बिलोया हुआ दही जिसमें सुगन्धित वस्तुएँ डाली गई हों।
मोरना क्रि०(हि) १-दही का मक्खन निकालना। २-दे० 'मोड़ना'।
मोरनी स्त्री० (हि) १-मोर पक्षी की मादा। २-नथ में लटकाने का मोर की आकृति का टिकरा।
मोरपंख पुं०(हि). १-मोर का पर। २-मोर के पर की कलगी।
मोरपंखी स्त्री०(हि) १-मोर पंख के समान सिरे वाली नाव। २-एक व्यायाम। वि० मोर के पंख के रङ्ग का। गहरा चमकीला नीला। पुं० एक प्रकार का गहरा चमकीला रङ्ग।
मोरपखा पुं० (हि) १-मोर का पर। २-मोर पंख की कलगी।
मोरमुकुट पुं०(हि) मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवा पुं०(हि) १-दे० 'मोर'। २-एक वृक्ष।
मोराना क्रि० (हि) १-चारों ओर घूमना। फिरना। ऊख की अंगारी को कोल्हू में दबाना।
मोरी स्त्री० (हि) १-नाली। मोहरी। २-मोर की मादा। मोरनी।
मोर्चा पुं० (हि) दे० 'मोरचा'।
मोल पुं० (हि) कीमत। दाम। मूल्य।
मोलतोल पुं० (हि) भाव ठहराना। दाम ठहराना।
मोलना पुं० (हि) मौलाना। टूटना।
मोलभाव पुं० (हि) मोलतोल।
मोलवी पुं० दे० 'मौलवी'।
मोलाई स्त्री० (हि) दे० 'मोलतोल'।
मोवना क्रि०(हि) दे० 'मोना'।
मोष पुं० (हि) दे० 'मोक्ष'। (सं) १-चोरी। लूटना। २-वध। हत्या। ३-दण्ड देना।
मोषक पुं० (सं) चोर।
मोषण पुं० (सं) चोरी करना।
मोषयितापुं० (सं) चोरी कराने वाला।
मोह पुं० (सं) १-अज्ञान। २-भ्रम। भ्रांति। ३-सांसारिक वस्तुओं को सब कुछ समझना। ४-प्रेम। ममता। ५-मूर्छा। बेहोशी।
मोहक वि० (सं) १-मोह उत्पन्न करने वाला। २-मन को लुभाने वाला।
मोहड़ा पुं० (हि) १-किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २-मुँह। ३-दे० 'मोहरा'।
मोहताज वि० (हि) दे० 'मुहताज'।
मोहन वि० (सं) मोह उत्पन्न करने वाला। पुं० १-मोहित करने की क्रिया या भाव। २-श्रीकृष्ण। ३-बारह मात्राओं की एक ताल। ४-कामदेव के पांच बाणों में से एक। ४-प्राचीनकाल का शत्रु को मूर्छित करने का एक अस्त्र। ५-धतूरे का पौधा।
मोहनभोग पुं० (हि) एक प्रकार का हलवा।
मोहनमाला पुं० (हि) वह माला जो सोने के दानों की बनी हो।
मोहना क्रि० (हि) १-मोहित होना। रीझना। २-बेहोश होना। ३-मुग्ध करना।
मोहनास्त्र पुं० (सं) प्राचीन काल का शत्रु को मूर्छित करने का मन्त्रचालित अस्त्र।
मोहनिद्रा स्त्री० (सं) १-मोह रूपी निद्रा। २-उत्कट आत्मविश्वास।

मोहनिशा स्त्री० (सं) वह काल रात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायेगा।
मोहनी स्त्री०(सं) १-माया। २-एक वर्णवृत्त। ३-पोई का साग। ४-लुभाने का प्रभाव।
मोहब्बत स्त्री० (हि) दे० 'मुहब्बत'।
मोहभंग पुं० (सं) अज्ञान का दूर होना।
मोहमंत्र पुं० (सं) मोह में फंसने वाला मंत्र।
मोहर स्त्री० (हि) दे० 'मुहर'।
मोहरा पुं० (हि) १-किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २-सेना की अगली पंक्ति। ३-गाय बैल आदि के मुँह पर बांधने की जाली। ४-शतरंज की गोटी। ५-जहरमोहरा। ६-अँगिया के बन्द।
मोहरात्रि स्त्री० (स) दे० 'मोहनिशा'।
मोहरी स्त्री० (हि) १-पात्र आदि का छोटा मुँह या खुला भाग। २-पाजामे का वह भाग जिसमें टांगें रहती हैं।
मोहर्रिर पुं० (म) दे० 'मुहर्रिर'।
मोहलत स्त्री० (म) दे० 'मुहलत'।
मोहल्ला पुं० (हि) दे० 'मुहल्ला'।
मोहार पुं० (हि) १-द्वार। २-मुहँड़ा। ३-अग्र भाग ४-मधु का छत्ता।
मोहाल पुं० (हि) दे० 'महाल'।
मोहिं सर्व० (हि) मुझको। मुझे।
मोहि सर्व० (हि) दे० 'मोहिं'।
मोहित वि० (सं) १-मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २-आसक्त। लुब्ध।
मोहिनी वि० (सं) मोहने वाली। स्त्री० (सं) १-बेला का फूल। २-विष्णु का एक अवतार। ३-माया। ४-वैशाख शुक्ला-एकादशी।
मोही वि० (सं) १-मोह करने वाला। २-लोभी। ३-भ्रम में पड़ा हुआ।
मौंगा वि० (सं) मौन। चुप।
मौंगी स्त्री० (सं) चुप्पी। मौन।
मौंज वि० (सं) मूँज का बना।
मौंजी स्त्री०(सं) मूँज की तीन लड़ी की बनी हुई रस्सी
मौंजीबंध पुं० (सं) उपनयन। मूँजी की करधनी पहनना।
मौंड़ा पुं० (हि) लड़का।
मौका पुं०(म) १-वह स्थान जहां पर कोई घटना घटी हो। २-अवसर। ३-समय। ४-स्थान।
मौका-बेमौका अव्य० (म) चाहे जब।
मौकूफ वि० (म) १-स्थगित किया हुआ। २-बरखास्त। ३-रद्द किया हुआ। ४-आश्रित।
मौकूफी स्त्री० (म) १-प्रतिबन्ध। रुकावट। २-बरखास्तगी।
मौक्तिक पुं० (सं) मोती।
मौक्तिकदाम पुं० (सं) १-मोतियों की लड़ी। २-एक वर्णवृत्त।
मौक्तिकसर पुं० (सं) मोतियों का हार।
मौक्य पुं० (सं) मौन। चुप्पी। मूकता।
मौख वि० (स) १-वह पाप जो मुख से हो। २-एक प्रकार का मसाला।
मौखर्य पुं० (सं) मुखरता। वाचालता। मुँहजोरी।
मौखिक वि० (सं) १-मुख का। २-जबानी।
मौखिक-परीक्षा स्त्री० (सं) वह परीक्षा जिसमें जबानी प्रश्नों का उत्तर जबानी ही दिया जाता है (वाइवा-वोसी)।
मौग्ध्य पुं० (सं) मुग्धता।
मौज स्त्री० (म) १-लहर। तरङ्ग। २-मन की उमंग। ३-धुन। ४-सुख। आनन्द।
मौजा पुं० (म) गांव। ग्राम।
मौजी वि० (हि) १-जो मन में आये वही काम करने वाला। २-सदा प्रसन्न रहने वाला।
मौजूँ वि० (म) उपयुक्त।
मौजूद वि० (फा) १-उपस्थित। विद्यमान। २-प्रस्तुत। तैयार।
मौजूदगी स्त्री० (फा) उपस्थिति। विद्यमान।
मौजूदा वि० (म) १-वर्तमान काल का। २-उपस्थित। वर्तमान।
मौड़ा पुं० (देश) लड़का।
मौढ्य पुं० (सं) मूढ़ता।
मौत स्त्री०(फा) १-मरण। मृत्यु। २-काल। ३-वह जो प्राणियों के प्राण निकालता है। २-वह कष्ट या वैसा कष्ट जैसा मरने के समय होता है।
मौदक वि० (सं) लड्डू या मिठाई संबन्धी।
मौदकिक पुं० (सं) हलवाई। (कन्फेक्शनर)।
मौद्गलि पुं० (सं) कौआ। काक।
मौद्गल्य पुं० (सं) मुद्गल ऋषि के गोत्रज।
मौद्गल्यायन पुं० (स) गौतम बुद्ध के एक प्रधान शिष्य का नाम।
मौन पुं० (सं) १-मुनियों का वृत या चर्या। २-चुप रहना। ३-बरतन। ४-फागुन महीने का पहला पक्ष। ५-मूत्र का पिटारा।
मौनभंग पुं० (सं) चुप्पी तोड़ना और बोलना।
मौनमुद्रा स्त्री० (सं) मौन भाव।
मौनव्रत पुं० (हि) चुप रहने का व्रत।
मौनव्रती वि० (सं) मौनव्रत धारण करने वाला।
मौना पुं० (हि) १-घी, तेल आदि रखने का बरतन। २-पिटारा।
मौनी वि० (हि) मौन धारण करने वाला (साधु)। स्त्री (हि) टोकरी। पिटारी।
मौनीअमावस्या स्त्री (सं) माघ मास की अमावस्या।
मौर पुं० (हि) १-विवाह के अवसर पर वर द्वारा पहने जाने का एक मुकुट। २-प्रधान। मंजरी। बौर

गरदन।
मौरना क्रि० (हि) वृक्षों पर मंजरी लगना।
मौरसिरी स्त्री० (हि) दे० 'मौलसिरी'।
मौरी स्त्री० (हि) छोटा मौर।
मौरूसी वि० (अ) बाप दादे के समय का चला आया पैतृक (धन संपत्ति)।
मौरूसी काश्तकार पुं० (अ) वह किसान जिसकी संतान को भी जमीन पर वही अधिकार मिला हुआ हो।
मौर्ख्य पुं०(सं) मूर्खता।
मौर्य पुं० (सं) अशोक और चंद्रगुप्त के वंश का नाम
मौर्वी स्त्री० (सं) धनुष की प्रत्यंचा।
मौलवी पुं० (अ) १-अरबी भाषा का पंडित। २-मुसलमानी धर्म का आचार्य।
मौलवी-गिरी स्त्री० (अ०) १-अध्यापन कार्य। २-मौलवी का काम।
मौलसिरी स्त्री० (हि) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल आते हैं। बाकुल।
मौला पुं० (फ) १-मित्र। दोस्त। २-मददगार। सहायक। ३-स्वामी। ४-ईश्वर।
मौलादौला वि० (फ) १-लापरवाह। सीधा। दानी।
मौलाना पुं० (अ) दे० 'मौलवी'।
मौलि पुं० (स) १-चोटी। सिरा। २-मस्तक। सिर। ३-जूड़ा। ४-किरिट। ५-भूमि। ६-सरदार। ७-अशोक वृक्ष।
मौलिक वि० (सं) १-मूल से सम्बन्ध रखने वाला। तात्त्विक। (फन्डामेंटल)। २-जो किसी की नकल न हो बल्कि उद्भावना से निकले हों (विचार या ग्रन्थ)। (ओरिजिनल)।
मौलिकता स्त्री० (सं) मौलिक होने का भाव।
मौलि-मणि पुं० (सं) किरीट या मुकुट में लगा हुआ मणि।
मौली वि० (सं) १-मुकुटधारी। २-जिसके सिर पर चोटी हो।
मौष्टा स्त्री० (सं) मुक्का मुक्की। घूसमघूसा।
मौष्टिक पुं० (सं) चोर। ठग।
मौसम पुं० (हि) दे० 'मौसिम'।
मौसर वि० (हि) दे० 'मुयस्सर'।
मौसा पुं० (हि) मौसी का पति।
मौसिम पुं० (अ) १-ऋतु। २-उपयुक्त समय।
मौसिमी वि० (अ) समयोपयोगी। २-ऋतु सम्बन्धी।
मौसिमी बुखार पुं० (अ) मलेरिया बुखार।
मौसिमे-खिज़ां पुं० (अ) पतझड़।
मौसिमेबहार पुं० (अ) बसंत।
मौसिया पुं० (हि) मौसा। वि० दे० 'मौसेरा'।
मौसी स्त्री० (हि) मां की बहन।
मौसूफ वि० (अ) १-जिसकी प्रशंसा की गई हो। २-जिसका वर्णन किया गया हो।
मौसेरा वि० (हि) मौसी के सम्बन्ध का।
मौहूर्तिक वि० (सं) मुहूर्त बताने वाला। (ज्योतिषी) पुं० दक्ष की कन्या से उत्पन्न एक देव गण।
म्याँव स्त्री० (हि) बिल्ली की बोली।
म्यान पुं० (फा) तलवार, कटार आदि रखने का खाना। खड्कोश। शरीर।
म्याना क्रि० (हि) म्यान में रखना। पुं० (देश) दे० 'मियाना'।
म्यानी स्त्री० (हि) दे० 'मियानी'।
म्युनिसिपैलिटी स्त्री० (अ) नगर-पालिका। नगर के स्वास्थ्य स्वच्छता आदि का प्रबंध करने वाली निर्वाचितसदस्यों की सभा।
म्यों स्त्री० (हि) दे० 'म्याँव'।
म्रक्षण पुं०(सं) १-मक्खन। अपने दोषों को छिपाना। २-तेल लगाना। ३-मसलना।
म्रजाद स्त्री० (हि) मर्यादा।
म्रदिमा स्त्री० (सं) १-कोमलता। मृदुता। २-नम्रता।
म्रदिष्ट वि० (सं) अत्यन्त कोमल।
म्रियमाण वि० (स) मरे हुए के समान।
म्लात वि० (सं) कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। म्लान
म्लान वि० (सं) १-मलिन। मुरझाया हुआ। २-दुर्बल। ३-मैला।
म्लानमना वि० (सं) हतोत्साह। उदास।
म्लानि स्त्री० (सं) १-मलिनता। २-ग्लानि।
म्लायी वि० (सं) १-ग्लानियुक्त। २-दुखी।
म्लेच्छ पुं०(सं) हिन्दुओं के अनुसार वे जातियां जिन में वर्णाश्रम धर्म न हो। वि० १-नीच। पापी।
म्लेच्छकंद पुं० (सं) लहसुन।
म्लेच्छजाति स्त्री० (सं) अनार्य या वह जाति जिसकी भाषा संस्कृत न हो।
म्लेच्छदेश पुं० (सं) अनार्य देश।
म्लेच्छभाषा स्त्री० (स) अनार्य या विदेशी भाषा।
म्लेच्छ-भोजन पुं० (सं) १-गेहूँ। यावक। बोरो।
म्लेच्छमंडल पुं० (सं) म्लेच्छ देश।
म्लेच्छमुख पुं० (सं) तांबा।
म्लेच्छाश पुं० (सं) गेहूँ।
म्लेच्छित पुं० (सं) मलेच्छ भाषा। अनार्य भाषा।
म्हा सर्व० (हि) दे० 'मुझ'।
म्हारा सर्व० (हि) दे० 'हमारा'।

# य

**य** देवनागरी वर्णमाला का छब्बीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

**यंता** पुं० (सं) १-सारथी। २-महावत। ३-शासक।

**यंत्र** पुं० (सं) १-तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार के कोष्ठक आदि (एम्यूलेट)। २-किसी विशेष कार्य के लिए या कोई वस्तु बनाने का उपकरण। कल। (मशीन)। ३-ताला। ४-बन्दूक। ५-बाजा। ६-नियन्त्रण।

**यंत्रक** पुं० (सं) दे० 'यंत्री'।

**यंत्रगृह** पुं० (सं) १-वह स्थान जहां यन्त्र लगे हुए हों। (वर्कशॉप) २-वेधशाला। ३-वह स्थान जहां प्राचीन काल में अपराधियों को यन्त्रणा दी जाती थी।

**यंत्रचातुर्य** पुं० (सं) यन्त्र या कल के कल-पुरजे ठीक करने तथा यन्त्र चलाने में विशेष योग्यता। (टेकनीक)।

**यंत्रजात** पु० (सं) कई प्रकार के यन्त्रों या कलों का समूह। (मशीनरी)।

**यंत्रज्ञ** पुं० (सं) दे० 'यंत्री'।

**यंत्रणा** स्त्री० (सं) १-क्लेश। २-कष्ट। यातना। ३-दर्द। पीड़ा। यातना।

**यंत्रपुत्रक** पुं० (सं) यन्त्र द्वारा हाथ पैर चलाने वाला पुतला। (रोबॉट)।

**यंत्रमंत्र** पुं० (सं) जादू-टोना। टोटका।

**यंत्रमातृका** स्त्री० (सं) चौसठ कलाओं में से एक जिसमें यन्त्र बनाने की कला सम्मिलित है।

**यंत्रविद्** पुं० (सं) यन्त्र विद्या को भली भांति जानने वाला। (एञ्जिनियर)।

**यंत्रविद्या** स्त्री० (सं) दे० 'यन्त्रशास्त्र'।

**यंत्रशाला** स्त्री० (सं) १-वेधशाला। २-वह स्थान जहां अनेक प्रकार के यन्त्र रखे हों या बनते हों।

**यंत्रशास्त्र** पुं० (सं) यन्त्र, पुल, एञ्जिन आदि बनाने, चलाने तथा निर्मित करने की विद्या या शास्त्र।

**यंत्रसज्ज** वि० (सं) मशीनगनों, टैंकों आदि से युक्त और आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित (सेना)।

**यंत्रसज्जित-सेना** स्त्री० (सं) आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों टैंकों आदि से सुसज्जित सेना। (मेकेनाइज्ड आर्मी)

**यंत्रसमुच्चय** पुं० (सं) कई छोटी कलों या बड़े यन्त्रों का एक स्थान पर लगाया हुआ समूह। (प्लांट)।

**यंत्रसूत्र** पुं० (सं) वह धागा जिससे कठपुतली नचाई जाती है। सूत।

**यंत्रालय** पुं० (सं) १-छापाखाना। प्रेस। २-यन्त्रशाला।

**यंत्रिका** स्त्री० (सं) स्त्री की छोटी बहन। साली। पु० ताला।

**यंत्रित** स्त्री० (सं) १-यन्त्र द्वारा रोका या बँधा हुआ। २-ताला लगा हुआ।

**यंत्री** पु० (सं) १-यन्त्र-मंत्र करने वाला। तांत्रिक। २-यन्त्र के कल-पुरजे ठीक करने वाला या चलाने वाला। (मेकेनिक)।

**य** पु० (सं) १-यश। २-योग। ३-सवारी। यान। ४-संयम। ५-यव। जौ। ६-यम। ७-प्रकाश। ८-त्याग।

**यक** वि० (फा) अकेला। एक।

**यकचश्म** वि० (फा) १-काना। २-जिसका केवल एक रुख हो (तस्वीर आदि)।

**यकचश्मी** वि० (फा) एक ही दृष्टि से सबको देखने वाला।

**यकजा** वि० (फा) मिश्रित। इकट्ठा।

**यकजान** वि० (फा) घनिष्ट। एक दिल।

**यकबयक** अव्य० (फा) अचानक। सहसा।

**यकबारगी** अव्य० (फा) दे० 'यकबयक'।

**यकमुश्त** अव्य० (फा) इकट्ठा। एक बार में।

**यकरंगा** वि० (फा) केवल एक ही रङ्ग का। एक सार।

**यकरुखा** वि० (फा) एक ही रुख का।

**यकलाई** स्त्री० (फा) केवल एक ही पाट की चादर। आवरण। नकाब।

**यकलौता** वि० (फा) एक मात्र। इकलौता।

**यकसर** वि० (फा) अकेला।

**यकसाँ** वि० (फा) एक समान। बराबर

**यकसानियत** स्त्री० (फा) सदृशता। एक समान होने का भाव।

**यकसार** वि० (फा) एक जैसा।

**यकसाला** वि० (फा) एक वर्ष का।

**यकीन** पुं० (अ) विश्वास। इतबार।

**यकीनन** अव्य० (अ) १-अवश्य। २-निःसन्देह। ३-बेशक।

**यकीनी** वि० (फा) असंदिग्ध।

**यकुम** स्त्री० (फा) मास की पहली तिथि।

**यकृत** पु०(सं) पेट की दाईं ओर की वह थैली जिसमें से भोजन पचाने का रस निकलता रहता है। जिगर (लीवर)।

**यक्ष** पु० (सं) १-एक देवयोनि जिसके राजा कुबेर हैं २-इन्द्र के राजभवन का नाम।

**यक्षकर्दम** पुं० (सं) १-अगर। २-कपूर। ३-अंगराग

**यक्षग्रह** पुं०(सं) पुराणानुसार एक कल्पित ग्रह जिसके आक्रमण से मनुष्य पागल हो जाता है।

**यक्षनायक** पुं० (सं) कुबेर।

यक्षप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षपुर पुं० (सं) अलकापुरी।
यक्षरस पुं० (सं) पुष्पों के रस से बनाई हुई मदिरा
यक्षराज पुं० (स) कुबेर।
यक्षाधिप पुं० (सं) कुबेर।
यक्षाधिपति पुं० (सं) कुबेर।
यक्षिणी स्त्री० (स) १-यक्ष की पत्नी। २-कुबेर की पत्नी। ३-यक्ष जाति की स्त्री।
यक्षी स्त्री० (सं) दे० 'यक्षिणी'।
यक्ष्मनी स्त्री० (सं) अंगूर। किशमिश।
यक्ष्मा स्त्री० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।
यक्ष्मी पुं० (स) तपेदिक का रोगी।
यखनी स्त्री० (फा) १-उबाले हुए मांस का रस। शोरबा। २-केवल लहसुन, प्याज, धनिया नमक तथा अदरक डालकर पकाया हुआ मांस।
यगण पुं० (सं) छंद शास्त्र के आठ गणों में से वह जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राएं होती है। (ISS)।
यगाना वि० (फ) १-आत्मीय। नातेदार। २-अकेला फर्द। ३-अनुपम।
यग्य पुं० (हिं) दे० 'यज्ञ'।
यच्छ पुं० (हिं) दे० 'यक्ष'।
यच्छिनी स्त्री० (हिं) दे० 'यक्षिणी'।
यजन पुं० (सं) १-विधिवत्। २-यज्ञ करने का स्थान
यजमान पुं० (सं) ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि देकर कोई धार्मिक कृत्य करने वाला।
यजमानी पुं० (हि) पुरोहिती।
यजुर्विद् पुं० (सं) यजुर्वेद का ज्ञाता।
यजुर्वेद पुं० (सं) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञकर्मो का विवरण तथा विधान है।
यजुर्वेदी वि० (सं) दे० 'यजुर्वेदीय'।
यजुर्वेदीय वि० (सं) १-यजुर्वेद को समझने वाला। यजुर्वेद सम्बन्धी।
यज्ञ पुं० (सं) १-प्राचीन भारतीय आर्यों का एक धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होता है। मख। याग। २-विष्णु।
यज्ञक पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकाल पुं० (सं) १-यज्ञ आदि के लिये शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट समय। २-पूर्णमासी।
यज्ञकुंड पुं०(सं) हवन करने का यज्ञ या कुण्ड।
यज्ञकृत् पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
यज्ञघ्न पुं० (सं) १-राक्षस। २-यज्ञ का विध्वंस करने वाला।
यज्ञतुरंग पुं० (सं) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला घोड़ा।
यज्ञत्राता पुं० (सं) विष्णु। यज्ञ की रक्षा करने वाला।
यज्ञदुट पुं० (सं) ब्रह्मघ्न।
यज्ञद्वेषी पुं० (स) यज्ञ का विरोध करने वाला।
यज्ञद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री।
यज्ञधर पुं० (स) विष्णु।
यज्ञधूम पुं० (सं) हवन का धूआँ।
यज्ञपति पुं० (सं) १-विष्णु। २-यजमान।
यज्ञपत्नी स्त्री० (सं) १-यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा। २-यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों की स्त्रियां।
यज्ञपशु पुं० (सं) १-वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। २-घोड़ा। ३-बकरा।
यज्ञपात्र पुं० (सं) काठ के बरतन जो यज्ञ के काम आते हैं।
यज्ञपुरुष पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञफलद पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभांड पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभाग पुं० (सं) १-यज्ञ का वह अंश जो देवताओं को दिया जाता है। २-ऐसा देवता।
यज्ञभाजन पुं० (सं) यज्ञपात्र।
यज्ञभूमि स्त्री० (सं) यज्ञक्षेत्र। वह स्थान जहां पर यज्ञ होता है।
यज्ञभूषण पुं० (सं) कुश।
यज्ञभृत् पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञभोक्ता पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञमंडप पुं० (सं) यज्ञ करने के लिए बनाया गया मंडप।
यज्ञमहोत्सव पुं० (सं) वह भारी उत्सव जो यज्ञ के लिए किया गया हो।
यज्ञमुख पुं० (सं) यज्ञ का आरम्भ।
यज्ञयूप पुं० (सं) वह खंभा जिससे यज्ञ में बलि देने वाला पशु बांधा जाता है।
यज्ञरस पुं० (सं) सोम।
यज्ञवराह पुं० (सं) विष्णु।
यज्ञवाह पुं० (सं) १-यजमान। २-कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
यज्ञवाहन पुं० (सं) १-यज्ञ करने वाला। २-ब्राह्मण। ३-विष्णु।
यज्ञवाही पुं० (सं) यज्ञ का सब काम करने वाला।
यज्ञवेदी स्त्री० (सं) यज्ञ की वेदिका।
यज्ञशत्रु पुं० (सं) राक्षस।
यज्ञसदन पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञस्थाणु पुं० (सं) दे० 'यज्ञयूप'।
यज्ञहोता पुं० (सं) १-यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला। २-उत्तम मनु के पुत्र का नाम।
यज्ञांग पुं० (सं) १-विष्णु। २-गूलर का पेड़। ३-खैर का पेड़।
यज्ञागार पुं० (सं) यज्ञशाला।
यज्ञात्मा पुं० (सं) विष्णु।

**यज्ञारि** पुं० (सं) १-शिव। २-राक्षस।
**यज्ञिय** वि० (सं) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। पुं० देवता।
**यज्ञियदेश** पुं० (सं) १-भारतवर्ष। २-यज्ञादि के लिए उपयुक्त देश।
**यज्ञीय** वि० (सं) यज्ञ का।
**यज्ञेश्वर** पुं० (सं) विष्णु।
**यज्ञेष्ट** पुं० (सं) रोहिस नामक घास।
**यज्ञोपवीत** पुं०(सं) १-जनेऊ। २-उपनयन। संस्कार
**यज्ञोपवीत संस्कार** पुं० (सं) उपनयन संस्कार। जनेऊ धारण करने का संस्कार।
**यज्य** वि० (सं) यजन करने योग्य।
**यज्वा** पुं० (सं) विधिवत् यज्ञ करवाने वाला।
**यतन** पुं० (सं) प्रयत्न। उद्योग।
**यतनीय** वि० (सं) यत्न करने योग्य।
**यतमान** पुं० (सं) १-यत्न करता हुआ। २-बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ कर अच्छी प्रवृत्तियाँ बनाने का यत्न करने वाला।
**यतात्मा** वि० (सं) संयमी।
**यति** पुं० (सं) १-वह जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। त्यागी। सन्यासी। २-छप्पय छन्द का एक भेद। ३-श्वेतांबर जैन साधु। स्त्री० विश्राम विराम। विरति।
**यतिधर्म** पुं० (सं) सन्यास।
**यतिपात्र** पुं० (सं) सन्यासी का भिक्षापात्र।
**यतिभंग** पुं० (सं) एक छन्द दोष जिसमें यति या विराम ठीक स्थान पर नहीं पड़ता।
**यतिभ्रष्ट** पुं० (सं) वह छन्द जिसमें यतिभंग दोष हो
**यतिसांतपन** पुं० (सं) एक प्रकार का चांद्रायणव्रत।
**यती** स्त्री० (सं) दे० 'यति'।
**यतीम** पुं० (अ) १-अनाथ। २-एक सीप में एक ही निकलने वाला मोती।
**यतीमखाना** पुं० (अ) अनाथालय।
**यत्** सर्व० (स) जो।
**यत्किंचित** अव्य० (सं) थोड़ा सा। बहुत कम। कुछ
**यत्न** पुं० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २-उपाय। ३-रक्षा का प्रबन्ध। ४-उपचार। चिकित्सा
**यत्नपर** वि० (सं) दे० 'यत्नमान्'।
**यत्नपूर्वक** अव्य० (स) उद्योग से। उपाय द्वारा।
**यत्नवती** वि० (सं) कोशिश में लगी हुई।
**यत्नवान्** वि० (सं) यत्न करने वाला।
**यत्नशील** वि० (स) यत्न में लगा हुआ। सचेष्ट।
**यत्र** अव्य० (सं) जहां। जिस जगह।
**यत्रतत्र** अव्य० (सं) इधर-उधर। जहां-तहां।
**यथांश** वि० (सं) यथा योग्य।
**यथा** अव्य० (सं) जिस तरह। जैसे।
**यथाकथित** वि० (सं) जैसे पहले कहा गया हो।
**यथाकर्तव्य** अव्य० (सं) कर्तव्य के अनुसार।
**यथाकर्म** अव्य० (सं) कर्म के अनुसार।
**यथाकाम** वि० (सं) इच्छानुसार।
**यथाकामी** वि० (सं) स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करने वाली।
**यथाकार्य** वि० (सं) जैसा करना चाहिए।
**यथाकाल** अव्य० (सं) उपयुक्त समय में।
**यथातथ्य** अव्य० (सं) ज्यों का त्यों। जैसा हो उसी के अनुसार।
**यथातृप्ति** अव्य०(सं) जी भरकर।
**यथादृष्ट** वि० (सं) जैसा देखा गया हो।
**यथानियम** अव्य० (सं) नियमानुसार।
**यथानिर्दिष्ट** वि० (सं) जैसी आज्ञा दी गई हो।
**यथानुपूर्वक** वि० (सं) परम्परा के अनुकूल।
**यथापूर्व** अव्य० (सं) ज्यों का त्यों।
**यथाप्रयोग** अव्य०(सं) प्रयोग के अनुरूप।
**यथाभाग** अव्य० (सं) १-भाग के अनुसार जितना चाहिए उतना। २-यथोचित।
**यथामति** अव्य० (सं) बुद्धि या समझ के अनुसार।
**यथामूल्य** अव्य० (सं) मूल्य के अनुसार।
**यथायथ** अव्य० (सं) जैसा चाहिए वैसा।
**यथायोग्य** अव्य०(सं) जैसा उचित हो वैसा। उपयुक्त मुनासिब।
**यथारीति** अव्य० (स) प्रचलित रीति के अनुसार।
**यथारुचि** वि० (सं) इच्छा के अनुरूप।
**यथार्थ** अव्य० (सं) १-ठीक। उचित। २-जैसा है वैसा। ३-सत्य।
**यथार्थतः** अव्य० (स) यथार्थ में। वास्तव में। सच-मुच।
**यथार्थवाद** पुं० (सं) १-जो बात जिस रूप में है उसे उसी रूप में ग्रहण करने या मानने का सिद्धांत। २-आदर्शवाद के सिद्धांत का उलटा। ३-साहित्य में वह सिद्धांत कि जो वस्तुएं जिस रूप में दिखाई देती है उसी रूप में उनका वर्णन होना चाहिये। (रियलिज्म)।
**यथार्थवादी** पुं० (सं) यथार्थवाद के सिद्धांत को मानने वाला।
**यथालब्ध** वि० (सं) जितना प्राप्त हो सके उसी के अनुसार।
**यथालाभ** वि० (सं) जो कुछ मिले उसके अनुसार।
**यथावकाश** अव्य०(सं) छुट्टी के मुताबिक।
**यथावत** अव्य०(सं) जैसा था वैसा ही। अच्छी तरह पूर्ण रीति से।
**यथावसर** अव्य०(सं) जैसा अवसर पड़े उसी के अनुसार।
**यथाविधि** अव्य० (सं) जिस प्रकार से।
**यथाविहित** अव्य० (सं) विधि के अनुसार।

यथाशक्ति अव्य० शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार।
यथाशक्य अव्य० जहां तक संभव हो। भरसक।
यथाशास्त्र अव्य० (सं) शास्त्र के अनुसार।
यथाशीघ्र अव्य० (सं) जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी।
यथाश्रुति वि० (सं) वेदानुसार।
यथासंख्य पुं० (सं) क्रम नामक अलंकार का एक दूसरा नाम।
यथासंभव अव्य० (सं) जहाँ तक हो सके।
यथासमय अव्य० (सं) १-ठीक समय पर। २-समयानुसार।
यथासाध्य अव्य० (सं) यथाशक्ति।
यथास्थान अव्य० (सं) ठीक जगह पर।
यथास्थिति अव्य० (सं) जैसा है वैसा ही रहने वाला।
यथास्थिति समझौता पुं० (हिं) वह समझौता जिसके अनुसार अब तक चली आई हुई स्थिति को वैसी ही बनाये रखना हो। (स्टेंडस्टिल एग्रीमेंट)।
यथेच्छ वि० (सं) इच्छा के अनुसार।
यथेच्छाचार पुं० (सं) मनमाना काम करना। स्वेच्छाचार।
यथेच्छाचारी वि० (सं) मनमाना कार्य करने वाला। मनमौजी।
यथेप्सित वि० (सं) दे० 'यथेच्छ'।
यथेष्ट वि० (सं) जितना चाहिये उतना। पर्याप्त।
यथेष्टाचरण पुं० (सं) दे० 'यथेष्टाचार'।
यथेष्टाचार पुं० (सं) इच्छा के अनुसार व्यवहार करना।
यथेष्टाचारी वि० (सं) इच्छानुसार आचरण करने वाला।
यथोक्त वि० (सं) जैसा कहा गया हो।
यथोचित वि० (सं) जैसा या जितना उचित हो वैसा या उतना।
यथोपयुक्त वि० (सं) यथायोग्य।
यदपि अव्य० (हिं) दे० 'यद्यपि'।
यदा अ० (सं) १-जिस समय। जब। जहां।
यदाकदा अव्य०(सं) जबतब। कभी-कभी।
यदि अव्य०(सं) अगर। जो।
यदु पुं० (सं) १-राजा ययाति के एक पुत्र का नाम। २-यदुवंश।
यदुकुल पुं० (सं) दे० 'यदुवंश'।
यदुनंदन पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
यदुनाथ पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
यदुपति पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
यदुभूप पुं (सं) श्रीकृष्ण।
यदुराई पुं० (हिं) यदुराज।
यदुराज पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
यदुवंश पुं (सं) राजा यदु का कुल।
यदुवर पुं (सं) श्रीकृष्ण।
यदुवीर पुं (सं) श्रीकृष्ण।
यदृच्छया स्त्री० (सं) १-अकस्मात। अचानक। २-दैव संयोग से। मनमाने ढङ्ग से।
यदृच्छा स्त्री० (सं) स्वेच्छाचरण। मनमानापन। २-आकस्मिक संयोग।
यदृच्छालब्ध वि० (सं) दैवसंयोग से प्राप्त।
यद्यपि अव्य० (सं) यदि ऐसा है ही। अगरचे।
यद्वातद्वा अव्य० (सं) कभी-कभी।
यम पु० (सं) १-मृत्यु के देवता। यमराज। २-जुड़वां बच्चों का जोड़ा। यमज। ३-निग्रह। ४-चित्त को धर्म में स्थिर रखने वाले कर्मों का साधन। ५-कौआ ६-शनि। ७-विष्णु। ८-वायु। ९-दो की संख्या।
यमक पुं०(सं) एक शब्दालंकार जिस में एक ही शब्द कई बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आता है। २-संयम। ३-एक प्रकार का सैनिक व्यूह। ४-यमज।
यमकात पुं० (सं) दे० 'यमकातर'।
यमकातर पुं०(सं) यम का छुरा या तलवार।
यमकीट पुं० (सं) केंचुआ।
यमघंट पुं० (सं) १-दीपावली के बाद का दिन। २-एक योग जिस में शुभ कार्य नहीं किये जाते (फ० ज्यो०)।
यमचक्र पुं०(सं) यमराज का अस्त्र।
यमज पुं०(सं) १-जुड़वां बच्चे। २-वह घोड़ा जिसके एक ओर का अंग दुर्बल हो।
यमजातना स्त्री० (हिं) दे० 'यमयातना'।
यमजित् पुं०(सं) मृत्यु पर विजय पाने वाले। मृत्युञ्जय।
यमतर्पण पुं० (सं) यम को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला एक यज्ञ।
यमदंड पुं०(सं) यमराज का डंडा। काल का डण्डा
यमदंष्ट्रा स्त्री० (सं) १-क्वार, कार्तिक तथा अगहन के महीने जब रोग होने की बहुत आशंका होती है। २-यम की दाढ़।
यमदग्नि पुं० (सं) परशुराम के पिता का नाम।
यमदुतिया स्त्री० (हिं) दे० 'यमद्वितिया'।
यमदूत पुं० (सं) १-कौआ। २-यम के दूत।
यमदूतक पुं० (सं) दे० 'यमदूत'।
यमद्वार पुं० (सं) यमराज के घर का द्वार।
यमद्वितिया पुं० (सं) कार्तिक शुक्ला द्वितिया। भाईदूज।
यमधार पुं० (सं) दुधारी तलवार।
यमन पुं०(सं) १-नियम से बांधना। २-बन्धन। ३-ठहराना। ४-रोकना। ५-यमराज। (अ) अरब का एक प्रदेश।
यमनक्षत्र पुं० (सं) भरणी नक्षत्र जिसके देवता यम माने जाते हैं।
यमनाथ पुं० (सं) यमराज।

**यमनिका** स्त्री० (हि) दे० 'यवनिका'।
**यमनी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
**यमपुर** पुं० (सं) यमलोक।
**यमपुरुष** पुं० (सं) यम के दूत। यमराज।
**यमभगिनी** स्त्री० (सं) यमुना नदी।
**यमयातना** स्त्री० (सं) १-नरक की यातना। २-मृत्यु के समय होने वाला कष्ट।
**यमरथ** पुं० (सं) भैंसा।
**यमराज** पुं० (सं) यमों के राजा धर्मराज जो मृत प्राणियों के पाप पुण्य का लेखा देखते हैं।
**यमराज्य** पुं० (सं) यमलोक।
**यमला** स्त्री० (सं) १-एक हिचकी आने का रोग। २-एक नदी का नाम। ३-एक तांत्रिक देवी का नाम।
**यमलार्जुन** पुं० (सं) कुबेर के दो पुत्रों के नाम जो नारद के शाप से गोकुल में अर्जुन वृक्ष बन गये थे और श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया था।
**यमवरा** वि० (सं) आजन्म अविवाहिता।
**यमव्रत** पुं० (सं) राजा का निष्पक्ष शासन।
**यमसभा** पुं० (सं) यमराज की कचहरी।
**यमसूर्य** पुं० (सं) ऐसा मकान जिसके दोनों कमरे उत्तर और पश्चिम की ओर हों।
**यमस्तोम** पुं० (सं) एक दिन में सम्पन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।
**यमहंता** पुं०(सं) काल का विनाश करने वाला।
**यमानुजा** स्त्री० (सं) यमुना।
**यमालय** पुं० (सं) यमपुर।
**यमी** स्त्री० (सं) यमुना नदी। पुं० संयमी।
**यमुना** स्त्री० (सं) १-यम की बहन। २-उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। ३-दुर्गा।
**यमुनाभिद्** पुं० (सं) बलराम।
**यमुनोत्तरी** स्त्री० (स) हिमालय में गढ़वाल के पास का स्थान जहां से यमुना नदी निकली है।
**ययावर** पुं० (देश) दे० 'यायावर'।
**यव** पुं० (सं) १-जौ। २-बारह सरसों और एक जौ की तौल। ३-वह वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो। ४-वेग। तेजी।
**यवक्षार** पुं० (सं) जौ के पौधे को जला कर निकाला हुआ क्षार।
**यवद्वीप** पुं० (सं) जावा द्वीप का प्राचीन नाम।
**यवन** पुं० (सं) १-यूनान देश का निवासी। २-मुसलमान। ३- तेज घोड़ा। ४-वेग।
**यवनप्रिय** पुं० (सं) मिर्च।
**यवनानी** वि० (सं) यवन या यूनान देश-सम्बन्धी। स्त्री० यूनान की भाषा।
**यवनिका** पुं० (सं) १-कनात। २-नाटक का पर्दा।
**यवनी** स्त्री० (सं) १-यवन की स्त्री। २-यवन जाति की स्त्री।
**यवास** पुं० (सं) जवासा नामक कांटेदार क्षुप।
**यश** पुं० (सं) १-ख्याति। नेकनामी। कीर्ति। २-प्रशंसा। बड़ाई।
**यशव** पुं० (फा) एक प्रकार का हरा पत्थर जो चीन लंका में होता है।
**यशस्कर** वि० (सं) कीर्तिकारक।
**यशस्काम** वि० (सं) यश की कामना करने वाला।
**यशस्वती** स्त्री० (सं) कीर्तिमती।
**यशस्वान्** वि० (सं) दे० 'यशस्वी'।
**यशस्विनी** स्त्री० (सं) १-बन-कपास। २-गंगा। ३-महाज्योतिष्मती।
**यशस्वी** वि० (सं) जिसका खूब यश हो।
**यशील** वि० (हि) यशस्वी।
**यशुमति** स्त्री० (हि) दे० 'यशोदा'।
**यशोगाथा** स्त्री० (सं) कीर्तिगान। गौरव कथा।
**यशोदा** स्त्री०(सं) १-नन्द की पत्नी जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २-दलीप की माता का नाम। ३-एक वर्णवृत्त।
**यशोधन** वि० (सं) यश ही जिसका एक मात्र धन हो।
**यशोधरा** स्त्री० (सं) १-गौतम बुद्ध की पत्नी। २-सावन मास की चौथी रात।
**यशोधरेय** पुं० (सं) यशोधरा का पुत्र राहुल।
**यशोमति** स्त्री० (सं) यशस्वती। यशोदा।
**यष्टि** स्त्री० (सं) १-छड़ी। लाठी। २-टहनी। शाखा ३-मुलेठी। ४-मोतियों की माला। ५-बेल। ६-बाँह।
**यष्टिक** पुं० (सं) तीतर पक्षी।
**यष्टिका** स्त्री० (सं) १-हाथ में रखने की लाठी या बेंत। २-मुलेठी। ३-बावली।
**यष्टि-त्रय** पुं०(स) क्रिकेट के खेल में मैदान के बीच-में बल्लेबाजों के खड़े होने के स्थान के पीछे लगाई जाने वाली दोनों ओर के तीन-तीन डंडे। (विकेट्स)।
**यष्टिमधु** पुं० (सं) मुलेठी।
**यष्टियंत्र** पुं० (स) धूपघड़ी।
**यष्टिरक्षक** पुं० (स) क्रिकेट के खेल में बल्लेबाज और यष्टित्रय (विकेट्स) के पीछे गेंद को रोकने वाला खिलाड़ी। (विकेट कीपर)।
**यष्टी** स्त्री० (सं) १-मोतियों की माला जिसमें बीच-बीच में मणि भी हों। २-मुलेठी।
**यह** सर्व० (हि) एक सर्वनाम जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त निकटवर्ती सभी बातों या संज्ञाओं के लिए होता है।
**यहाँ** अव्य० (हि) इस स्थान पर। इस जगह।
**यहि** सर्व (हि) यह।
**यही** अव्य० (हि) निश्चित रूप से यह।
**यहूदिन** स्त्री० (हि) यहूदी की स्त्री।

**यहूदी** पुं०(हि) १-यहूदी देश का निवासी। २-शमी जाति के अंतर्गत एक अनार्य जाति।
**यांचा** स्त्री० (हि) सविनय मांगना।
**यांत्रिक** पुं० (सं) वह जो यंत्रों को बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। (मैकेनिक)। वि० १-यंत्र सम्बन्धी। २-यन्त्र से चलाने वाला। (मैकेनिकल)।
**या** वि० सर्व० (हि) व्रजभाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगाने के पहले का रूप। अव्य (फा) अथवा या। यदि यह न हो।
**या-इलाही** पुं०(फा) (दुआ मांगने का शब्द) ऐ खुदा
**याक** पुं० (हि) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।
**याकूत** पुं० (अ) एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।
**याग** पुं० (सं) यज्ञ।
**यागसंतान** पुं० (सं) इन्द्र पुत्र जयन्त का एक नाम।
**याचक** पुं० (सं) १-मांगने वाला। २-भिखारी।
**याचकता** स्त्री० (सं) भीख मांगने का कार्य या भाव।
**याचन** पुं० (सं) दे० 'याचना'।
**याचना** क्रि०(सं) मांगना। कुछ पाने के लिए प्रार्थना करना। स्त्री० मांगने की क्रिया।
**याचमान** वि० (सं) मांगने वाला। याचक।
**याचिका** स्त्री०(सं) वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। (पेटीशन)।
**याचित** वि० (सं) माँगा हुआ।
**याचिता** पुं० (सं) भिखारी। प्रार्थी।
**याच्य** वि० (सं) मांगने योग्य।
**याज** पुं० (सं) १-अन्न। २-एक ऋषि का नाम।
**याजक** पुं० (सं) १-यज्ञ करने वाला। २-राजा का हाथी। ३-मस्त हाथी।
**याजन** पुं० (सं) यज्ञ करना।
**याजनीय** वि० (सं) यज्ञ करने योग्य।
**याजि** पुं० (सं) यज्ञ करना।
**याजी** पुं० (सं) यज्ञ करने वाला।
**याज्ञवल्क्य** पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। २-राजा जनक के गुरु का नाम। ३-एक स्मृतिकार ऋषि।
**याज्ञसेनी** स्त्री० (सं) द्रौपदी का एक नाम।
**याज्ञिक** पुं० (सं) १-यज्ञ करने या कराने वाला। २-गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
**याज्य** वि० (सं) १-यज्ञ में दी जाने वाली (दक्षिणा) २-यज्ञ कराने योग्य।
**याञ्जा** स्त्री०(सं) दे० 'यांचा'।
**यात** वि० (सं) १-लब्ध। पाया हुआ। २-ज्ञात।
**यातना** स्त्री० (सं) कष्ट। पीड़ा।
**यातायात** पुं० (सं) १-एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने की क्रिया। (कम्यूनिकेशन)। २-यात्रियों या माल का गमनागम। (ट्रैफिक)।
**यातुधान** पुं० (सं) राक्षस।
**यात्रा** स्त्री० (सं) १-सफर। २-धार्मिक उद्देश्य से पवित्र स्थान पर दर्शन पूजा आदि के लिए जाना। ३-प्रस्थान। प्रयाण। ४-उत्सव। ५-एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना, गाना दोनों होते हैं।
**यात्राधिदेय** पुं० (सं) यात्रा में व्यय होने वाले खर्चे के बदले में मिलने वाला भत्ता। (ट्रैवलिंग अलाउंस)।
**यात्रावाल** पुं०(सं) तीर्थ स्थानों में दर्शन आदि कराने वाला पण्डा।
**यात्रिक** पुं० (सं) १-यात्रा का प्रयोजन। २-पथिक। यात्री। वि० यात्रा-सम्बन्धी। २-प्रथानुकूल।
**यात्री** पुं० (सं) १-यात्रा करने वाला। मुसाफिर। २-तीर्थाटन करने वाला।
**याथातथ्य** पुं०(सं) ज्यों का त्यों होने का भाव।
**याथार्थ्य** पुं०(सं) वास्तविकता। यथार्थ होने का भाव
**याद** स्त्री० (फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण करने की क्रिया।
**यादगार** स्त्री० (फा) स्मृति चिह्न। स्मारक।
**यादगारी** स्त्री० (फा) दे० 'यादगार'।
**याददाश्त** स्त्री०(फा) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण रखने के लिए लिखी हुई बात।
**यादव** पुं० (सं) १-यदु के वंश के लोग। २-श्रीकृष्ण
**यादवी** स्त्री० (सं) १-यदुकुल की स्त्री। २-दुर्गा।
**यादवीय** वि० (सं) यादव सम्बन्धी। पुं० गृहयुद्ध।
**यादृश** वि० (सं) जैसा। जिस प्रकार का।
**यान** पुं०(सं) १-किसी भी तरह की सवारी। वाहन २-विमान। ३-गति। ४-शत्रु पर आक्रमण करना
**यानभत्ता** पुं० (सं) कोई यान या सवारी रखने के बदले मिलने वाला भत्ता (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
**यानांतरण** पुं० (सं) माल या यात्रियों का एक यान या पोत से उतार कर दूसरे में पहुँचाया जाना। (ट्रांसशिपमेंट)।
**यानाधिदेय** पुं० (सं) दे० 'यानभत्ता'। (कन्वेयेन्स अलाउंस)।
**यानी** अव्य० (अ) तात्पर्य यह है। अर्थात्।
**यापन** पुं० (सं) १-चलाना। २-व्यतीत करना। ३-निबटाना। ४-परित्याग। ५-मिटाना।
**यापता** वि०(फा) पाया हुआ।
**याब** पुं० (फा) पाने वाला (व्यक्ति)।
**याभ** पुं० (सं) मैथुन।
**याम** पुं० (सं) १-एक पहर या तीन घन्टे का समय २-काल। समय। स्त्री० (हि) रात। वि० (सं) यम-सम्बन्धी।
**यामघोष** पुं० (सं) मुर्गा।

**यामाता** पुं० (सं) दामाद ।
**यामि** स्त्री० (सं) दे० 'यामी' ।
**यामिक** पुं० (सं) पहरेदार ।
**यामित्र** पुं० (सं) दे० 'जामित्र' ।
**यामिनी** स्त्री० (हिं) दे० 'यामिनी' ।
**यामिनी** स्त्री० (सं) १-रात । २-हलदी । ३-कश्यप की पत्नी का नाम ।
**यामिनीचर** पुं० (सं) १-राक्षस । २-उल्लू ।
**यामी** स्त्री० (स) १-रात । २-कुलवधु ।
**याम्या** स्त्री० (सं) १-दक्षिण दिशा । २-भरणी नक्षत्र
**याम्योत्तर रेखा** स्त्री०(स) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है ।
**यायावर** पुं० (स) १-संन्यासी । २-याचना । ३-खानाबदोश । ४-अश्वमेध का घोड़ा ।
**यायी** पुं० (सं) जाने वाला ।
**यार** पुं० (फा) १-मित्र । प्रेमी । २-हिमायती । ३-पर स्त्री से प्रेम करने वाला ।
**याराना** पुं० (फा) १-मित्रता । मैत्री । स्त्री पुरुष की अनुचित रूप से की गई मैत्री ।
**यारी** स्त्री० (फा) मित्रभाव । मैत्री ।
**याल** स्त्री० (तु) अयाल । घोड़े की गरदन के ऊपर के बाल ।
**यावक** पुं० (सं) १-जौ । २-जौ का सत्तू । ३-उड़द ४-लाख । ५-महावर ।
**यवज्जीवन** अव्य०(सं) जन्मभर । जब तक जीवन रहे
**यावत्** वि० (सं) १-जब तक । २-कुल । सब ।
**यावनी** वि० (हि) यवन सम्बन्धी ।
**यावास** पुं० (सं) १-घास, डण्ठल आदि का पूला । २-जवासे की मदिरा ।
**यास** पुं० (सं) १-लाल जवासा । २-चेष्टा ।
**यासु** सर्व० दे० 'जासु' ।
**युक्त** वि० (सं) १-किसी के साथ मिला हुआ । संयुक्त २-नियुक्त । ३-उचित । ४-पूर्ण । ५-आसक्त ।
**युक्तमना** वि० (सं) दत्तचित्त ।
**युक्ताक्षर** पुं० (सं) संयुक्त वर्ण ।
**युक्ताहार** पुं० (सं) उचित आहार ।
**युक्ति** स्त्री० (सं) १-उपाय । २-कौशल । ३-चाल । रीति । ४-न्याय । ५-अनुमान । ६-ठीक तर्क । ७-योग । ८-एक अर्थालंकार ।
**युक्तिकर** वि० (सं) उचित । विचारपूर्ण ।
**युक्तिपूर्ण** वि० (सं) दे० 'युक्तिकर' ।
**युक्तिमूलक** वि० (सं) तर्कसंगत । (रेशनल) ।
**युक्तियुक्त** वि० (सं) युक्तिपूर्ण ।
**युक्तिसंगत** वि० (सं) तर्क के अनुकूल ।
**युक्त्याभास** पुं०(सं) वह तर्क जो ऊपर से बुद्धिमता पूर्ण हो पर वास्तव में तथ्यहीन हो । (सोफिस्ट्री) ।
**युगंधर** पुं० (सं) १-गाड़ी का बम । २-कूबर ।
**युग** पुं० (सं) १-जोड़ा । युग्म । २-जुआ । ३-पीढ़ी । पुश्त । ४-समय । जमाना । ५-काल के चार भेद, कलयुग, सतयुग आदि । ६-इतिहास का कोई बड़ा काल जिसमें एक ही प्रकार की घटनाएँ होती रही हों । (एज) ।
**युगचेतना** स्त्री० (सं) किसी काल की कोई विशिष्ट प्रवृत्ति ।
**युगति** स्त्री० (हि) दे० 'युक्ति' ।
**युगधर्म** पुं० (स) समय के अनुकूल व्यवहार ।
**युगपत्** अव्य० (सं) एक साथ । एक समय । जोड़े में
**युगपुरुष** पुं०(सं) अपने समय का सबसे बड़ा आदमी
**युगप्रतीक** पुं० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष ।
**युगम** पुं० (हि) दे० 'युग्म' ।
**युगयुग** अव्य० (सं) बहुत काल तक ।
**युगल** पुं० (सं) युग्म । जोड़ा ।
**युगलक** पुं० (सं) वह कुलक जिसमें दो श्लोकों अथवा पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय हो ।
**युगांत** पुं० (सं) प्रलय ।
**युगांतक** पुं० (सं) प्रलय ।
**युगांतर** पुं० (सं) दूसरा युग । दूसरा समय ।
**युगावतार** पुं० (सं) युग का श्रेष्ठ पुरुष या अवतार ।
**युग्म** पुं० (सं) १-जोड़ा । युग । द्वंद्व । युगलक ।
**युग्मक** पुं० (सं) जोड़ा । युगम ।
**युग्मचारी** पुं० (सं) जोड़े में चलने वाले ।
**युग्मज** पुं० (सं) जुड़वां बच्चे ।
**युग्मेच्छा** स्त्री० (सं) समागम की इच्छा ।
**युग्य** पुं० (स) १-दो घोड़ों की गाड़ी । २-गाड़ी जोते जाने वाले दो पशु । वि० जो जोता जाने के योग्य हो ।
**युग्यवाह** पुं० (सं) गाड़ीवान ।
**युत** वि०(सं) १-युक्त । सहित । २-मिला हुआ ।
**युद्ध** पुं० (सं) दो पक्षों की सेनाओं में होने वाली लड़ाई । रण । संग्राम ।
**युद्धक** वि०(सं) युद्ध करने वाला । युद्ध सम्बन्धी ।
**युद्धकारी** वि० (सं) लड़ाई लड़ने वाला ।
**युद्धकाल** पुं० (सं) लड़ाई का समय ।
**युद्धक्षेत्र** पुं० (सं) दे० 'युद्धभूमि' ।
**युद्धपरिषद्** स्त्री० (स) युद्ध संचालन करने के लिए मन्त्री मण्डल आदि की बनाई हुई समिति । (वार काउंसिल) ।
**युद्धपोत** पुं० (सं) लड़ाई में काम आने वाला पोत । (वार शिप) ।
**युद्धबन्दी** पुं० (सं) युद्ध का कैदी । (वार प्रिजनर) ।
**युद्धभूमि** स्त्री० (सं) रणक्षेत्र ।
**युद्धमय** वि० १-युद्ध सम्बन्धी । २-युद्ध प्रिय ।

**युद्धमंत्री** पुं० (सं) वह मंत्री जो विभाग का संचालन करता है। (वार मिनिस्टर)।
**युद्धमार्ग** पुं०(सं) युद्ध से झगड़े निबटाने की पद्धति।
**युद्धरंग** पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-युद्धस्थल।
**युद्धरत** वि० (सं) लड़ाई में लगा हुआ। युद्ध में जूझा हुआ। (बेलिग्रेंट)।
**युद्धलिप्त** वि० (सं) युद्धरत।
**युद्धविद्या** स्त्री०(सं) युद्ध की विद्या।
**युद्धवीर** पुं० (सं) रण करने में निपुण।
**युद्धशक्ति** स्त्री० (सं) युद्ध करने का बल।
**युद्धशाली** वि० (सं) साहसी। वीर।
**युद्धशास्त्र** पुं० (सं) युद्ध का विज्ञान।
**युद्धसार** पुं० (सं) घोड़ा।
**युद्धस्थगन** पुं० (सं) लड़ाई का अस्थायी या स्थाई रूप से सन्धि होने से पहले बंद होना।(सीज फायर)
**युद्धाचार्य** पुं० (सं) युद्ध विद्या की शिक्षा देने वाला।
**युद्धापराधी** पुं० (सं) वह जिसने युद्ध में कोई बड़ा अपराध या कोई भेद शत्रु को दिया हो। (वार-क्रिमिनल)।
**युद्धोत्तर-अर्थव्यवस्था** स्त्री० (सं) युद्ध समाप्त होने पर उत्पन्न स्थितियों के अनुसार बनाई गई विशेष अर्थ व्यवस्था। (पोस्टवार एकॉनोमी)।
**युद्धोत्तेजक** पुं० (सं) युद्ध को बढ़ावा देने वाला। (वारमोंगर)।
**युद्धोत्तेजन** पुं० (सं) युद्ध की नीति को भाषणों आदि द्वारा बढ़ावा देना। (वारमोंगरिंग)।
**युद्धोन्मत** वि० (सं) १-लड़ाका। २-युद्ध करने के लिये उतावला।
**युद्धोपकरण** पुं०(सं) युद्ध की सामग्री। (एम्यूनीशन) (आर्मामेन्ट्स)।
**युधिष्ठिर** पुं० (सं) पाँच पांडवों में से सबसे बड़े का नाम।
**युध्य** वि० (सं) जिसके साथ युद्ध किया जाय।
**युयुत्सा** स्त्री० (सं) १-लड़ने या युद्ध करने की इच्छा।
**युयुत्सु** वि० (सं) जो लड़ने की इच्छा रखता हो।
**युवक** पुं० (सं) सोलह वर्ष से पैंतिस वर्ष की अवस्था वाला। युवा। जवान।
**युवगंड** पुं० (सं) मुँहासा।
**युवति** स्त्री० (सं) १-जवान स्त्री। २-प्रियंगु। ३-हल्दी।
**युवती** स्त्री० (सं) दे० 'युवति'।
**युवराई** स्त्री० (हि) दे० 'युवराज'।
**युवराज** पुं० (सं) राजा का सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।
**युवराजी** स्त्री० (हि) युवराज का पद।
**युवराज्ञी** स्त्री० (सं) युवराज की स्त्री।
**युवरानी** स्त्री (हि) युवराज्ञी।
**युवा** वि० (सं) युवक। जवान।
**युवापिडिका** स्त्री० (सं) मुँहासा।
**युष्मदीय** वि० (सं) तुम लोगों का।
**यूँ** अव्य० (हि) दे० "यों"।
**यूथ** पुं० (सं) समूह। झुण्ड। (ग्रुप)। २-सेना। फौज।
**यूथक** पुं० (सं) दे० 'यूथ'।
**यूथचारी** वि० (सं) समूह या झुण्ड में चलने वाले (हाथी इत्यादि)।
**यूथनाथ** पुं० (सं) १-सेनापति। २-झुण्ड का स्वामी या सरदार।
**यूथपति** पुं० (सं) सरदार। सेनापति।
**यूथपाल** पुं०(सं) दे० 'यूथपति'।
**यूथबन्ध** पुं० (सं) १-समूह। २-सेना की टुकड़ी।
**यूथभ्रष्ट** वि० (सं) जो यूथ में से निकाल दिया गया हो।
**यूथमुख्य** पुं० (सं) किसी सेना की टुकड़ी का नायक।
**यूथिका** स्त्री (सं) जूही का पौधा और उसका फूल।
**यूथी** स्त्री० (सं) दे० 'यूथिका'।
**यूनानी** पुं० (हि) १-यूनान देश की भाषा। २-यूनान देश का निवासी। ३-यूनान देश की एक चिकित्सा प्रणाली। वि० (हि) यूनान देश का।
**यूनियन** स्त्री०(अ) सभा। संघ।
**यूनिवर्सिटी** स्त्री० (अ) विश्वविद्यालय। विद्यापीठ।
**यूप** पुं० (सं) १-यज्ञ में वह खम्भा जिससे बलि देने वाला पशु बांधा जाता है। २-विजय स्तंभ।
**यूरेनियम** पुं०(अं) एक भारी रेडियोधर्मी खनिज तत्व जो अणुबम बनाने के काम आता है।
**यूरोप** पुं० (अ) पूर्वी गोलार्द्ध का सबसे छोटा महाद्वीप जो पश्चिम में काकेशस और यूराल के उस पार से आरम्भ होता है।
**यूरोपियन** पुं० (अं) यूरोप महादेश के किसी देश का निवासी। वि० यूरोप का।
**यूरोपीय** वि० (हि) यूरोप सम्बन्धी। यूरोप का।
**यूष** पुं० (सं) मूंग आदि का जूस।
**यूह** पुं० (हि) समूह। झुण्ड। यूथ।
**ये** सर्व० (हि) दे० 'यह'। यह का बहुवचन।
**येई** सर्व० (हि) यही।
**येऊ** सर्व० (हि) यह भी।
**येतो** वि० (देश) इतना।
**येन** सर्व० (सं) जिससे।
**येन केन प्रकारेण** अव्य० (सं) जिस किसी भी तरह
**येहू** अव्य० (हि) यह भी।
**यों** अव्य० (हि) इस प्रकार।
**यो** सर्व० (हि) यह।
**योक्तव्य** वि० (सं) १-नियुक्त करने के योग्य। २-जोड़ने के योग्य।

**योक्ता** पुं० (सं) १-गाड़ीवान। २-जोड़ने वाला। ३-उत्तेजक।

**योक्त्र** पुं० (सं) १-गाड़ी के जुए में बैल बांधने की रस्सी। २-रस्सी बांधने का पेंच।

**योग** पु० (सं) १-संयोग। मेल। २-ध्यान। ३-धोखा ४-प्रयोग। ५-प्रेम। ६-लाभ। ७-नाम। ८-बैलगाड़ी। ६-नियम। १०-परिणाम। ११-उपयुक्तता १२-वैराग्य। १३-गणित में दो अथवा दो से अधिक राशियों का जोड़। १४-सुभीता। १५-दूत। १६-फलित ज्योतिष में सूर्य या चन्द्रमा का विशिष्ट स्थान पर आना। १७-हठयोग।

**योगकन्या** स्त्री० (सं) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जिसे वसुदेव कृष्ण की जगह देवकी के पास रख आये थे।

**योगक्षेम** पुं० (सं) १-लाभ और उसकी रक्षा। २-गुजारा। ३-कुशलमंगल। ४-राष्ट्र की शांति तथा सुव्यवस्था। (पीस एण्ड ऑर्डर)। ५-वह संपत्ति जिसका बटवारा न हो।

**योगगामी** वि० (सं) योगबल से जाने वाला।

**योगदर्शन** पुं० (सं) १-पतंजलि ऋषि का दर्शन जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान है।

**योगदान** पुं० (सं) किसी कार्य में साथ देना।

**योगनिद्रा** स्त्री० (सं) १-सोने और जागने के बीच की स्थिति। २-योग की समाधि। ३-रण क्षेत्र में वीरों की मृत्यु।

**योगफल** पुं० (सं) दो या दो से अधिक संख्याओं का जोड़।

**योगबल** पुं०(सं) १-तपोबल। योग साधना से प्राप्त शक्ति। २-ऐन्द्रिजालिक शक्ति।

**योगभ्रष्ट** पुं०(सं) वह योगी जिसके योग की साधना पूरी न हुई हो।

**योगमाया** स्त्री० (सं) १-योग की अलौकिक शक्ति। २-भगवती।

**योगरूढ़ि** पुं० (सं) दो शब्दों के योग से बनने वाला वह शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़ कर कोई विशेष अर्थ बतलाते।

**योगवान** पुं० (सं) योगी।

**योगविद्** पुं० (सं) १-योगशास्त्र का ज्ञाता। २-शिव ३-जो औषधियों के मिश्रण से दवाई बनाता हो।

**योगवृत्ति** स्त्री० (सं) योग द्वारा प्राप्त चित्त की शुभ वृत्ति।

**योगशक्ति** स्त्री० (सं) तपोबल।

**योगशब्द** पुं० (सं) सामान्य अर्थ देने वाला यौगिक शब्द।

**योगशास्त्र** पुं० (सं) पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योग साधन पर एक ग्रन्थ।

**योगशास्त्री** पुं० (सं) योगशास्त्र का जानकार।

**योगसिद्ध** पुं० (सं) सिद्धि प्राप्त व्यक्ति। योगी।

**योगसिद्धि** स्त्री० (सं) योग की सफलता।

**योगसूत्र** पुं० (सं) सूत्रों का संग्रह।

**योगांग** पुं० (सं) पतंजलि के मत से योग के आठ अंग--यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

**योगांजन** पुं० (सं) एक प्रकार का आंखों का अंजन या लेप। सिद्धांजन।

**योगाभ्यास** पुं० (सं) योगशास्त्रानुसार योग का साधन।

**योगाराधन** पुं० (सं) योग अभ्यास करना।

**योगासन** पुं० (सं) योग साधन के आसन या बैठने के ढंग विशेष।

**योगिनी** स्त्री० (सं) १-तपस्विनी। २-रण-पिशाचिनी ३-दुर्गा की सहचरी। ४-योगमाया। ५-तत्काल योगिनी।

**योगींद्र** पुं० (सं) बहुत बड़ा योगी।

**योगी** पुं० (सं) १-आत्मज्ञानी। २-योग साधन करने वाला। ३-शिव।

**योगीश** पुं० (सं) दे० 'योगीश्वर'।

**योगीश्वर** पुं०(सं) १-योगियों में श्रेष्ठ। २-शिव।

**योगेश** पुं० (सं) बहुत बड़ा योगी।

**योगेश्वर** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-शिव। ३-बड़ा योगी।

**योगेश्वरी** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-शाक्तों की एक देवी।

**योग्य** वि०(सं) १-उपयुक्त। लायक पात्र। २-समर्थ। ३-उचित। ४-आदरणीय। ५-अधिकारी।

**योग्यता** स्त्री० (सं) १-बुद्धिमता। २-उपयुक्तता। ३-सामर्थ्य। ४-अनुकूलता। ५-लियाकत।

**योजक** पु० (सं) १-मिलाने या जोड़ने वाला। २-योजना बनाने वाला। संयोजक।

**योजन** पुं० (सं) १-योग। संयोग। २-परमात्मा। ३-आठ कोस का एक माप।

**योजनगंधा** स्त्री० (सं) व्यास की माता और शांतनु की पत्नी का नाम। सत्यवती।

**योजनगंधिका** स्त्री० (सं) दे० 'योजनगंधा'।

**योजना** स्त्री० (सं) १-प्रयोग। व्यवहार। २-मिलान मेल। ३-रचना। ४-किसी बड़े कार्य को करने का विचार या आयोजन। (स्कीम)। ५-घटना। ६-कोई काम या उद्देश्य सिद्ध करने के लिए उपाय, साधन आदि की निश्चित रेखा। (प्रोजेक्ट,प्लान)

**योजनीय** वि० (सं) १-संयोग या मिलान करने योग्य २-योग का प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य (एप्लीकेबल)।

**योज्य** वि० (सं) दे० 'योजनीय'।

यौद्धा पुं० (सं) १-वह जो युद्ध करता हो। २-युद्ध में लड़ने वाला सिपाही।
योनि स्त्री० (सं) १-उत्पत्ति स्थान। २-स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ३-जल। ४-शरीर। ५-गर्भाशय। ६-अन्तःकरण। ७-प्राणियों की जातियां जो चौरासी लाख कही गई हैं।
योनिज पुं० (सं) जो योनि से उत्पन्न हुआ हो (अंडे से उत्पन्न न हुआ हो)।
योनिदोष पुं० (सं) उपदंश रोग जिसे गरमी या आतशक भी कहते हैं।
योनिफूल पुं० (हि) योनि के भीतर की वह गांठ जिसके ऊपर एक छिद्र होता है जो गर्भाशय के लिए वीर्य ग्रहण करता है।
योनिभ्रंश पुं० (सं) गर्भाशय के उलट जाने का एक रोग।
योनिमुक्त पुं० (सं) जो जन्म लेने से मुक्त हो गया हो। जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।
योनिमुद्रा स्त्री० (सं) तांत्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा।
योनिशूल पुं० (सं) योनि का एक रोग।
योनिसंभव पुं० (सं) दे० 'योनिज'।
योषणा स्त्री० (सं) दुश्चरित्रा स्त्री।
योषा स्त्री० (सं) स्त्री। औरत।
योषित् स्त्री० (सं) स्त्री।
योषिता स्त्री० (सं) स्त्री। औरत।
यौ सर्व० (हि) यह का एक रूप।
यौक्तिक वि० (सं) युक्ति सम्बन्धी। युक्तिसंगत। ठीक।
यौगिक वि० (सं) योग का। योग सम्बन्धी। पुं० १-प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २-दो या अधिक पदार्थों का बना मिश्रण। (कम्पाउंड)।
यौतक पुं० (सं) १-दहेज। विवाह के समय कन्या को दिया जाने वाला धन। २-उपहार।
यौतुक पुं० (सं) दे० 'यौतक'।
यौथिक वि० (सं) १-यूथ या समूह-सम्बन्धी। २-यूथ में रहने वाला।
यौद्धिक वि० (सं) युद्ध का। युद्ध-सम्बन्धी।
यौन वि० (सं) १-योनि-सम्बन्धी। २-लैंगिक।
यौवन पुं० (सं) १-बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था के बीच की अवस्था। जवानी। २-स्त्रियों के स्तन। ३-जोबन।
यौवनकंटक पुं० (सं) मुँहासा।
यौवनलक्षण पुं०(सं) १-जवानी के चिह्न। २-स्त्रियों के स्तन। ३-सौन्दर्य। लावण्य।
यौवराजिक वि० (सं) युवराज का। युवराज-सम्बन्धी
यौवराज्य पुं०(सं) युवराज का पद या युवराज होने का भाव।
यौवराज्याभिषेक पुं० (सं) प्राचीन समय में राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के युवराज बनाये जाने के समय का अभिषेक तथा अन्य कृत्य।

[शब्दसंख्या--४३५५५]

# र

र देवनागरी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।
रंक वि०(सं)१-दरिद्र। धनहीन। कृपण। ३-आलसी पुं० भिक्षुक। २-निर्धन व्यक्ति। ३-कंजूस व्यक्ति।
रंग पुं० (सं) १-रांगा नाम की एक धातु। २-रणक्षेत्र। ३-नृत्यगीत। ४-वर्ण। पदार्थ का वह गुण जिसका ज्ञान केवल आंखों द्वारा ही होता है। (कलर। ५-शरीर या मुख की रंगत (कम्पलेक्शन) ६-जिससे कोई वस्तु रंगी जाय। ७-युवावस्था। ८-आतंक। ९-सौंदर्य। १०-प्रभुत्व जमना। ११-क्रीड़ा। उत्सव। १२-दशा। १३-युद्ध। १४-रंगमंच। १५-प्रेम। १६-आनन्द।
रंगक्षेत्र पुं० (सं) १-रंगस्थल। २-वह स्थान जो उत्सव आदि के लिए सजाया जाता है।
रंगगृह पुं० (सं) रंगभूमि।
रंगजीवक पुं० (सं) १-चित्रकार। २-अभिनेता।
रंगढंग पुं० (हि) १-दशा। अवस्था। २-व्यवहार। ३-लक्षण।
रंगत स्त्री० (हि) १-रंग। वर्ण। २-दशा। ३-अवस्था।
रंगतरा पुं० (हि) बड़ी और मीठी नारङ्गी।
रंगद्वार पुं० (सं) नाटकगृह का प्रवेशद्वार।
रंगना क्रि० (हि) १-किसी घुले हुए रङ्ग में डाल कर रंगीन करना। २-किसी के प्रेम में फंसना। ३-किसी पर आसक्त होना।
रंगपाशी स्त्री० (फा) होली का उत्सव।
रंगपीठ पुं० (सं) नृत्यशाला।
रंगप्रवेश पुं० (सं) अभिनय करने के लिए किसी अभिनेता का रंगभूमि पर आना।
रंगबाति स्त्री० (सं) शरीर पर लगाने की सुगन्धित वस्तुओं की बत्ती।
रंगबिरंगा वि०(सं) १-कई रंगों का। २-अनेक प्रकार का।
रंगभरिया पुं० (हि) रङ्ग करने वाला। रंगसाज।
रंगभवन स्त्री० (सं) आमोद-प्रमोद या भोगविलास करने का स्थान।
रंगभूमि स्त्री० (सं) १-नाट्यशाला। खेल तमाशे का

स्थान। २-रणक्षेत्र। ३-अखाड़ा।
**रंगमंच** पुं० (सं) १-नाट्यशाला। २-वह स्थान जहां नाटक खेला जाय या कोई उत्सव हो। (स्टेज)।
**रंगमंडप** पुं० (सं) रंगभूमि।
**रंगमहल** पुं० (हिं) दे० 'रंगभवन'।
**रंगमाता** स्त्री० (सं) लाख।
**रंगमार** पुं० (फा) एक ताश का खेल।
**रंगरली** स्त्री० (हिं) आमोदप्रमोद। मौज।
**रंगरस** पुं० (स) आनन्द-मंगल। आमोद-प्रमोद।
**रंगरसिया** पुं०(हिं) भोग विलास करने वाला व्यक्ति
**रंगरूट** पुं० (हिं) १-सेना या पुलिस में नया भर्ती होने वाला सिपाही। २-नौसिखुआ।
**रंगरूप** पुं० (स) सूरत-शकल।
**रंगरेज** पुं० (फा) कपड़े रंगने वाला।
**रंगरेली** स्त्री० (हिं) दे० 'रंगरली'।
**रंगवाई** क्रि० (हिं) दे० 'रंगाना'।
**रंगवाना** क्रि० (हिं) रंगने का काम दूसरे से कराना।
**रंगविद्याधर** पुं० (सं) १-ताल का एक भेद। २-अभिनेता। ३-जो नाचने में प्रवीण हो।
**रंगशाला** स्त्री० (सं) १-रंगभूमि। २-नाट्यशाला। ३-वह लम्बा चौड़ा भवन और उद्यान आदि जिसमें चलचित्र बनाए जाते हैं। (स्टुडियो)।
**रंगसाज** पुं० (फा) रंग बनाने वाला।
**रंगसाजी** स्त्री० (फा) रंगसाज का काम।
**रंगांगण** पुं० (सं) रंगभूमि।
**रँगाई** स्त्री० (हिं) रंगने का कार्य या मजदूरी।
**रँगाजीवी** स्त्री० (सं) रंगसाज।
**रँगाना** क्रि० (हिं) दूसरे को रंगाने में प्रवृत्त करना।
**रंगालय** पुं० (सं) रंगभूमि।
**रँगावट** स्त्री० (हिं) रंगाई।
**रंगावतारक** पुं० (सं) १-रंगरेज। २-अभिनेता।
**रंगावतारी** पुं० (हिं) अभिनेता। नट।
**रंगिणी** स्त्री० (हिं) परिहास करने वाली स्त्री।
**रंगी** वि० (हिं) १-मौजी। रंगीला। २-रंगीन।
**रंगीन** वि० (फा) १-रंगा हुआ। २-विलासप्रिय। ३-मजेदार।
**रंगीनी** स्त्री० (फा) १-सजावट। शृङ्गार। २-रसिकता ३-बांकापन।
**रंगीला** वि० (हिं) १-रसिक। मौजी। २-सुन्दर। ३-प्रेमी।
**रंगोपजीवी** पुं० (सं) अभिनेता। नट।
**रंच** वि० (हिं) अल्प। थोड़ा। तनिक।
**रंचक** वि० (हिं) दे० 'रंच'।
**रंज** पुं० (फा) १-दुःख। खेद। २-शोक।
**रंजक** वि०(सं)१-प्रसन्न करने वाला। २-रंगने वाला स्त्री० (हिं) बत्ती लगाने के लिए बन्दूक के प्याले पर रखी जाने वाली बारूद।
**रंजन** पुं० (सं) १-रंगने की क्रिया। २-पित्त। ३-लाल चन्दन। ४-चित्त प्रसन्न करना। ५-रंगों से अंकित किया हुआ चित्र। (पेन्टिंग)। वि० मन प्रसन्न करने वाला।
**रंजनकारीसाहित्य** पुं० (सं) मन बहलाव के लिए पढ़ाने की छोटी कहानियों आदि की पुस्तकें जिनके पढ़ने पर जोर नहीं पड़ता। (लाइट लिटरेचर)।
**रंजना** क्रि० (हिं) १-रंगना। २-किसी को प्रसन्न करना।
**रंजित** वि० (सं) १-रंगा हुआ। २-अनुरक्त। ३-प्रसन्न।
**रंजिश** स्त्री० (फा) वैमनस्य। अनबन। मनमुटाव।
**रंजीदगी** वि० (फा) दे० 'रंजिश'।
**रंजीदा** १-दुःखित। २-अप्रसन्न। असंतुष्ट।
**रंड** वि० (स) १-चालाक। धूर्त। २-विकल। बेचैन।
**रंडा** स्त्री० (स) विधवा। रांड।
**रंडापा** पुं० (हि) वैधव्य।
**रंडी** स्त्री० (हि) वेश्या।
**रंडीबाज** पुं० (हि) वेश्यागामी।
**रंडीबाजी** स्त्री० (हि) वेश्यागमन।
**रंडुआ** पुं० (हि) वह आदमी जिसकी स्त्री मर गई हो
**रंता** वि० (हि) अनुरक्त।
**रंति** स्त्री० (सं) १-केलि। क्रीड़ा। २-विराम।
**रंतिदेव** पुं० (सं) १-बड़े दानी राजा का नाम। (पुराण)। २-विष्णु।
**रँदना** क्रि०(हि) रंदे से छील कर लकड़ी साफ करना।
**रंदा** पुं० (हि) एक बढ़ई का औजार जिससे लकड़ी छील कर साफ की जाती है।
**रंधक** पुं० (सं) १-रसोइया। नाशक।
**रंधन** पुं० (स) १-रांधना। २-नष्ट करना।
**रंध्र** पुं० (सं) १-छेद। सूराख। २-भग। योनि। ३-दोष।
**रंभ** पुं० (सं) १-बांस। २-भारी स्वर।
**रंभण** पुं० (स) १-गले लगाना। आलिंगन करना। २-रंभाना।
**रंभन** पुं० (हि) दे० 'रंभण'।
**रंभा** स्त्री० (सं) १-केला। २-गौरी। ३-गाय का रंभाना या चिल्लाना। ४-वेश्या। ५-उत्तर दिशा।
**रँभाना** क्रि० (हि) गाय का शब्द करना।
**रंभापति** पुं० (सं) इन्द्र।
**रंभाफल** पुं० (सं) केला।
**रंभित** वि० (सं) १-शब्द किया हुआ। २-बजाया हुआ।
**रंभोरु** वि० (सं) १-(वह स्त्री) जिसकी जाँघें केले के समान उतार चढ़ाव वाली हों। २-सुन्दर।
**रँहचटा** पुं० (हि) चाका। लालसा। लालच।

र पुं० (सं) १-अग्नि। पावक। २-कामाग्नि। ३-गरमी। ताप। ४-झुलसना। ५-सितार का एक बोल।
रअय्यत स्त्री० (अ) १-प्रजा। २-काश्तकार।
रअय्यत-आजार वि० (अ) प्रजा को कष्ट देने वाला।
रअय्यतदार वि० (अ) शासक। अधिकारी।
रअय्यतदारी स्त्री० (अ) शासन। राज्य।
रअय्यतनिवाज वि० (अ) प्रजा की रक्षा करने वाला।
रअय्यतपरवर वि० (अ) प्रजा का पालन करने वाला
रअय्यतवारी वि० (अ) १-अलग अलग। २-एक एक काश्तकार के साथ।
रइको अव्य० (हि) जरा भी। गई भर।
रइनि स्त्री० (हि) रात। रात्रि। निशि।
रई स्त्री० (हि) १-दही मथने की लकड़ी। मथानी। २-गेहूँ का मोटा आटा। सूजी। ३-चूर्णमात्र। वि० १-डूबी हुई। २-अनुरक्त। ३-युक्त।
रईस पु० (अ) धनी। अमीर। बड़ा आदमी।
रउताई पुं० (हि) स्वामित्व। प्रभुत्व।
रउरे सर्व० (हि) आप।
रकत पुं० (हि) रक्त। खून। वि० लाल।
रकतकंद पु० (हि) १-प्रवाल। मूँगा। रतालू।
रकतांक पुं० (हि) १-मूँगा २-कुंकुम। केसर। ३-लालचन्दन।
रकबा पुं० (अ) क्षेत्रफल।
रकम स्त्री० (अ) १-धन। सम्पत्ति। गहना। धन की राशि। ४-प्रकार। ५-धनवान। ६-धूर्त। ७-लगान की दर।
रकमी पुं०(हि) वह किसान जिसके साथ कोई विशेष रिआयत की जाय।
रकाब स्त्री० (फा) १-सवारी के घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने के पावदान। २-तश्तरी।
रकाबदार पु० (फा) १-हलवाई। २-साईस। ३-खासाबरदार जो बादशाहों के साथ खाना लेकर चलता है। ४-खानसामा। जो खाना परोसता या लगाता है।
रकाबत स्त्री० (अ) १-एक स्त्री के कई प्रेमी होना। २-प्रेम में होड़।
रकाबी स्त्री० (हि) १-तश्तरी। २-घोड़े के एक ओर लटकने वाली तलवार।
रक्त पुं० (सं) १-शरीर में बहने वाला लाल तरल पदार्थ। खून। रुधिर। २-कुँकुम। केसर। ३-तांबा। ४-कमल। ५-सिंदूर। ६-लाल चन्दन। ७-लाल रङ्ग। ८-पतंग की लकड़ी। ९-एक प्रकार का विषैला मेंढक।
रक्तआमातिसार पुं० (सं) एक रोग जिसमें खून के दस्त होने लगते हैं।
रक्तकंठ पुं० (सं) १-कोयल। २-बैंगन। वि० (सं) सुरीली आवाज वाला। जिसका कण्ठ लाल हो।
रक्तकुमुद पुं० (सं) कुईं।
रक्तकुष्ट पुं० (सं) विसर्प नामक रोग।
रक्तक्षय पुं० (सं) रक्तस्राव।
रक्तक्षेपण पुं० (सं) एक व्यक्ति का रक्त निकाल कर दूसरे रोग ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में पहुँचाने की क्रिया। (ब्लड ट्रांसफ्यूजन)।
रक्तग्रीव पुं० (सं) १-कबूतर। २-राक्षस।
रक्तचंचु पुं० (सं) तोता। शुक।
रक्तचंदन पुं० (सं) लाल रंग का चन्दन।
रक्तचाप पुं० (सं) एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त वेग साधारण की अपेक्षा घट या बढ़ जाता है। (ब्लड प्रेशर)।
रक्तचूर्ण पुं० (सं) १-सिंदूर। २-कमीला।
रक्तज वि० (सं) १-जो रक्त से उत्पन्न हो। २-रक्त विकार से उत्पन्न होने वाला (रोग)।
रक्तजवा स्त्री० (सं) जवाकुसुम।
रक्तजिह्वा पुं० (सं) सिंह। शेर।
रक्ततुंड पुं० (सं) तोता।
रक्तता स्त्री० (सं) ललाई। लालिमा।
रक्तदान-बैंक पुं०(हि) वह संस्था जो युद्ध में घायल होने वाले या दूसरे रोगियों के लिए जिन्हें रक्त की आवश्यकता होती है पहले से ही दूसरे स्वस्थ लोगों से रक्त लेने का प्रबंध करती है (ब्लडबैंक)।
रक्तदूषण वि० (सं) रक्त को दूषित करने वाला।
रक्तदृग स्त्री० (सं) कोयल। वि० लाल आंखों वाला।
रक्तधातु पुं० (सं) १-गेरू। २-तांबा।
रक्तनयन पुं० (सं) १-कबूतर। २-चकोर।
रक्तनेत्र पुं० (सं) १-सारस पक्षी। २-कबूतर। ३-चकोर।
रक्तप पुं० (सं) राक्षस। वि० रक्त पीने वाला।
रक्तपट पुं० (सं) वह जो लाल रंग के कपड़े धारण करता हो।
रक्तपल्लव पुं० (सं) अशोक वृक्ष।
रक्तपात पुं० (सं) १-खून खराबी। २-लहू बहना। ३-ऐसा प्रहार जिससे रक्त बहे।
रक्तपायी वि० (सं) रक्त पीने वाला। पुं० खटमल।
रक्तपारद पुं० (सं) हिंगुल। शिंगरफ।
रक्तपाषाण पुं० (सं) १-लाल पत्थर। २-गेरू।
रक्तपित्त पुं० (सं) नाक से खून बहना। नकसीर का रोग।
रक्तपुष्प पुं० (सं) १-कनेर। २-अनार का पेड़। ३-पुन्नाग।
रक्तप्रदर पुं० (सं) एक प्रकार का प्रदर जिसमें स्त्रियों की योनि से रक्त बहता है।
रक्तप्रमेह पु० (सं) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें खून के रंग का मूत्र आता है।

रक्तफूल पु० (हि) १-जवापुष्प । २-वटवृक्ष ।

रक्तमोचन पुं० (सं) शरीर का खून निकालना ।

रक्तरोग पुं० (सं) रक्त दूषित होने से उत्पन्न होने वाला रोग ।

रक्तलोचन पुं० (सं) कबूतर ।

रक्तवसन पु० (स) संन्यासी ।

रक्तवीज पुं० (सं) १-दाड़िम । अनार । २-रीठा । ३-एक राक्षस जो शुम्भ और निशुम्भ का सेनापति था ।

रक्तवृष्टि स्त्री०(सं) आकाश से लाल रंग के पानी की वर्षा होना ।

रक्तव्रण पु०(सं) ऐसा फोड़ा जिसमें मवाद की जगह रक्त बहता हो ।

रक्तसंबंध पुं० (सं) वंश या कुल का सम्बन्ध ।

रक्तस्राव पु० (स) १-शरीर के किसी अंग या नस के फटने पर खून बहना । (हैमरेज) । २-घोड़ों की आंखों से लाल पानी बहने का रोग ।

रक्तांबर पुं०(स) १-लाल रङ्ग का वस्त्र । २-संन्यासी

रक्तांबु पुं० (सं) रक्त का पारदर्शी और पतला भाग जो अभी लाल न हुआ हो । चेप (सीरम) ।

रक्ताक्त वि० (स) १-खून से लथपथ । २-लाल रङ्ग का ।

रक्ताक्ष पुं० (सं) १-चकोर । २-सारस । ३-कबूतर । ४-भैंस । ५-साठ सम्वत्सरों में से अट्ठावनवें का नाम ।

रक्तातिसार पुं० (सं) एक प्रकार का अतिसार जिसमें खून के दस्त होते हैं ।

रक्ताधरा स्त्री०(सं) किन्नरी ।

रक्ताभ वि०(सं) लालरङ्ग की आभा से युक्त । ललाई लिए हुए ।

रक्तार्श पु० (स) खूनी बवासीर ।

रक्तिम वि० (सं) ललाई लिए हुए ।

रक्तिमा स्त्री० (सं) लाली । ललाई । सुर्खी ।

रक्तोत्पल पुं० (सं) लाल कमल ।

रक्तोपल पु० (स) गेरू नामक लाल मिट्टी ।

रक्ष पुं०(सं)१-रक्षक । २-रक्षा । ३-लाख । ४-छप्पय छन्द का एक भेद ।

रक्षक पुं० (स) १-रक्षा करने वाला । २-पहरेदार । पालन करने वाला ।

रक्षकपोत पुं० (स) युद्ध काल में माल ले जाने वाले पोतों की रक्षा करने वाला जंगी पोत । (एस्कोर्ट वैसल) ।

रक्षण पु० (स) १-रक्षा करना । २-सुरक्षित रखना । (कोई स्थान आदि) । (रिजर्वेशन) । ३-पालना पोसना ।

रक्षणकर्ता पु० (सं) रक्षा करने वाला ।

रक्षणीय वि० (सं) रक्षा करने के योग्य ।

रक्षन पु० (हि) दे० 'रक्षण' ।

रक्षना क्रि० (हि) रक्षा करना । बचाना ।

रक्षस पुं० (हि) असुर । दैत्य । राक्षस ।

रक्षा स्त्री० (सं) १-आपत्ति, आक्रमण, हानि, नाश आदि से बचाव । (प्रोटेक्शन डिफेंस) । २-रेशम का धागा जो बच्चों की कलाई पर बांधा जाता है (भूत, प्रेत से बचाने या नजर लगने से बचाने के लिए) ।

रक्षाइव स्त्री० (हि) राक्षसपन ।

रक्षागृह पुं०(सं) १-प्रसूतिगृह । २-युद्धकाल में हवाई हमले से बचने के लिए जमीन के अन्दर बनाए गये सुरक्षित स्थान । (शेल्टर) ।

रक्षादल पुं० (सं) आरक्षकों (पुलिस) की तरह का विपत्ति काल में देश में शांति बनाये रखने तथा सहायता करने के लिए नवयुवकों का बनाया गया एक दल । (होम गार्ड) ।

रक्षामंत्री पुं० (स) देश की रक्षा की व्यवस्था करने वाले रक्षा विभाग का मन्त्री । (डिफेंस मिनिस्टर) ।

रक्षाप्रदीप पुं० (सं) भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिए जलाया गया दीप । (तन्त्र) ।

रक्षाबंधन पुं० (सं) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होने वाला एक हिन्दुओं का त्योहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है । सलोनो ।

रक्षाभूषण पुं० (सं) वह जन्तर या गहना जो भूत-प्रेत की बाधा से बचाने के लिए पहना जाय ।

रक्षामणि पुं० (सं) वह मणि या रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये पहना जाय ।

रक्षारत्न पु० (स) दे० 'रक्षामणि' ।

रक्षित वि० (सं) १-जिसकी रक्षा की गई हो । २-किसी व्यक्ति या कार्य के लिये अलग रखा हुआ (रिजर्व्ड) । सुरक्षित ।

रक्षित-राज्य पुं०(सं) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राष्ट्र के संरक्षण में हो और उस राष्ट्र से केवल सीमित अधिकार प्राप्त हों । (प्रोटेक्टोरेट) ।

रक्षिता स्त्री० (सं) रखेल । बिना विवाह किये वैसे ही रखी हुई स्त्री । (कीप) ।

रक्षी पुं० (सं) १-रक्षा करने वाला । पहरेदार । २-राक्षसों की पूजा करने वाला ।

रक्ष्य वि० (सं) रक्षा करने योग्य । रक्षणीय ।

रक्ष्यमाण वि० (स) जिसकी रक्षा हो सकती हो या हो रही हो ।

रख, रखा स्त्री० (हि) वह भूमि जो पशुओं के लिए चरने के लिए छोड़ दी गई हो ।

रखना क्रि० (हि) १-स्थिर करना । ठहराना । २-नष्ट न होने देना । ३-संग्रह करना । ४-सौंपना । ५-अपने अधिकार में लेना । ६-नियुक्त करना । ७-पकड़ या रोक लेना । ८-आघात करना । ९-स्थापित

करना। १०-धारण करना। ११-मदना। १२-ऋणी होना। १३-निवास करना। १४-उपपत्नी बनाना। १५-गर्भ धारण करना। १६-अंडे देना।

**रखनी** *स्त्री०* (हि) उपपत्नी। रखेल।

**रख-रखाव** *पुं०*(हि) १-पालन-पोषण। २-किसी वस्तु या काम की देख रेख रखते हुए उसे चालू रखना (मेन्टेन)।

**रखला** *पुं०* (हि) दे० 'रहँकला'।

**रखवाई** *स्त्री०*(हि) १-खेतों की रखवाली। २-रखवाली की मजदूरी। रखने की क्रिया या ढंग।

**रखवाना** *क्रि०* (हि) रखने का काम दूसरों से कराना।

**रखवार** *पुं०* (हि) रखवाला। चौकीदार।

**रखवारी** *स्त्री०* (हि) दे० 'रखवाली'।

**रखवाला** *पुं०* (हि) १-रक्षक। रक्षा करने वाला। २-चौकीदार। पहरेदार।

**रखवाली** *स्त्री०* (हि) रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

**रखाई** *स्त्री०* (हि) रखने की क्रिया भाव या मजदूरी।

**रखान** *स्त्री०* (हि) पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि। चरी।

**रखाना** *क्रि०* (हि) १-रक्षा करना। २-पहरा देना।

**रखिया** *पुं०* (हि) १-रक्षक। रखने वाला। २-गांव में पूजा के लिए सुरक्षित वृक्ष।

**रखियाना** *क्रि०* (हि) बरतन आदि को राख से मांजना।

**रखीसर** *पुं०* (हि) १-नारद ऋषि। २-ऋषिवर।

**रखेड़िया** *पुं०* (हि) ढोंगी साधु।

**रखेली** *स्त्री०* (हि) उपपत्नी। बिना विवाह किये घर में रखी हुई स्त्री।

**रखैया** *पुं०* (हि) १-रक्षा करने वाला। २-रखने वाला।

**रखैल** *स्त्री०* (हि) दे० 'रखेली'।

**रखौंत** *पुं०* (हि) गोचर भूमि। चरी।

**रखौना** *पुं०* (हि) दे० 'रखौंत'।

**रग** *स्त्री०* (फा) १-शरीर की नस या नाड़ी। २-पत्तों में दिखाई देने वाली नसें।

**रगड़** *स्त्री०* (हि) १-घर्षण। २-हलके घर्षण से उत्पन्न चिह्न। ३-झगड़ा। ४-भारी श्रम।

**रगड़ना** *क्रि०* (हि) १-घर्षण करना। २-पीसना। ३-परेशान करना। ४-अभ्यास के लिए कोई काम बार-बार करना। ५-अति परिश्रम करना।

**रगड़वाना** *क्रि०*(हि) रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

**रगड़ा** *पुं०* (हि) १-रगड़ने की क्रिया या भाव। २-निरंतर चलने वाला। झगड़ा। ३-अत्यधिक परिश्रम करना।

**रगड़ा-झगड़ा** *पुं०*(हि) लड़ाई झगड़ा।

**रगड़ान** *स्त्री०* (हि) रगड़ने की क्रिया या भाव। रगड़ा

**रगड़ी** *वि०* (हि) १-रगड़ने वाला। २-झगड़ालू।

**रगत** *पुं०* (हि) रक्त। खून।

**रगदना** *क्रि०* (हि) दे० 'रगेदना'।

**रगर** *स्त्री०* (हि) दे० 'रगड़'।

**रगवाना** *क्रि०* (हि) चुप कराना। शांत कराना।

**रगाना** *क्रि०* (देश) चुप या शांत करना या होना।

**रगी** *स्त्री०* (देश) एक प्रकार का मोटा अन्न जो मैसूर में होता है।

**रगीला** *वि०* (हि) १-हठी। जिद्दी। २-दुष्ट। पाजी।

**रगेद** *स्त्री०* (हि) १-दौड़ने या भागने की क्रिया। २-पशुओं आदि के संयोग की प्रवृत्ति या अवसर।

**रगेदना** *क्रि०* (हि) भगाना। खदेड़ना। दौड़ना।

**रघु** *पुं०* (सं) १-अयोध्या के सूर्यवंशी प्रसिद्ध राजा जो दिलीप के पुत्र और श्रीरामचन्द्र जी के परदादा थे। २-रघुवंश में उत्पन्न।

**रघुकुल** *पुं०*(सं) राजा रघु का वंश।

**रघुकुलचन्द्र** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्रजी।

**रघुनंद** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघुनंदन** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघुनाथ, रघुनायक, रघुपति** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्रजी।

**रघुराई** *पुं०* (हि) श्रीरामचन्द्रजी।

**रघुराय** *पुं०* (हि) श्रीरामचन्द्रजी।

**रघुरैया** *पुं०* (हि) दे० 'रघुराय'।

**रघुवंश** *पुं०* (सं) १-महाराज रघु का कुल या वंश। महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध ग्रन्थ

**रघुवंशमणि** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघुवंशी** *वि०* (सं) रघु के वंश का। *पुं०* क्षत्रियों की एक उपजाति।

**रघुवर** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघुवीर** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघुश्रेष्ठ** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रघूत्तम** *पुं०* (सं) श्रीरामचन्द्र।

**रचना** *स्त्री०* (सं) १-रचने या बनाने की क्रिया या भाव। निर्माण। (क्रिएशन)। २-बनाने का ढंग। कौशल। ३-निर्मित पदार्थ। ४-फूलमाला बनाना। ५-स्थापित करना। ६-उद्यम। ७-केश विन्यास। ८-साहित्यिक कृति। *क्रि०* (हि) १-निर्माण करना। २-विधान करना। ३-ग्रन्थ आदि लिखना। (कम्पोजीशन)। ४-प्रस्तुत करना। ५-सजाना। ६-अनुष्ठान करना। ७-रङ्गना।

**रचनात्मक** *वि०* (सं) १-जो किसी प्रकार की रचना से सम्बन्ध रखता हो। (क्रिएटिव)। २-जो देश या समाज की उन्नति से सम्बन्धित हो। (कन्सट्रक्टिव)

**रचयिता** *पुं०*(सं) बनाने वाला। रचना करने वाला

**रचवाना** *क्रि०* (हि) १-रचने का काम दूसरे से कराना। बनवाना। २-मेंहदी लगाना।

रचाना क्रि० (हि) १-आयोजन करना। २-रंगना। ३-हाथ पैर में मेंहदी लगाना।
रचित वि० (सं) रचना किया हुआ।
रचिपचि अव्य० (हि) परिश्रम करके।
रच्छ पु० (हि) दे० 'रक्ष'।
रच्छक पु० (हि) दे० 'रक्षक'।
रच्छन पुं० (हि) दे० 'रक्षण'।
रच्छस पुं० (हि) दे० 'राक्षस'।
रच्छा स्त्री० (हि) दे० 'रक्षा'।
रज पु० (हि) १-चांदी। २-धोबी। (सं) १-फूलों का पराग २-स्त्रियों के मासिक धर्म के समय निकलने वाला रक्त। स्त्री० धूल। गर्द।
रजक पुं० (सं) धोबी।
रजतंत स्त्री० (हि) वीरता। शूरता।
रजत स्त्री० (सं) १-चांदी। रूपा। २-हाथीदांत। वि० १-सफेद। २-लाल।
रजतजयंती स्त्री० (सं) किसी संस्था, मनुष्य या किसी महत्वपूर्ण कार्य के होने के पच्चीस वर्ष पश्चात् मनाई जाने वाली जयन्ती। (सिल्वर जुबिली)।
रजतपट पु० (सं) वह श्वेत पर्दा जिस पर चल चित्र दिखाया जाता है। (सिल्वर स्क्रीन)।
रजतपर्वत पुं० (सं) चांदी का पर्वत।
रजतपात्र पुं० (सं) चांदी का बरतन।
रजतभाजन पु० (सं) रजतपात्र।
रजतमय वि० (सं) चांदी का बना हुआ।
रजताई स्त्री० (हि) सफेदी।
रजताकर पुं० (सं) चांदी की खान।
रजताचल पु० (सं) कैलाश पर्वत।
रजतोपम पु० (सं) रूपामाखी।
रजधानी स्त्री० (हि) दे० 'राजधानी'।
रजन स्त्री० (सं) राल। (रेजिन)।
रजना क्रि० (हि) १-रङ्गा जाना। २-रङ्ग में डुबाना।
रजनी स्त्री० (सं) १-रात। रात्रि। २-हल्दी। ३-नील ४-लाख। ५-एक नदी।
रजनीकर पुं० (सं) चन्द्रमा।
रजनीगंधा स्त्री० (सं) रात के समय फूलने वाला एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल।
रजनीचर पुं० (सं) १-राक्षस। २-चन्द्रमा। वि० रात के समय घूमने-फिरने वाला।
रजनीजल पुं० (सं) कुहरा। ओस।
रजनीपति पु० (सं) चन्द्रमा।
रजनीमुख पु० (सं) सन्ध्या। सायंकाल।
रजनीरमण पु० (सं) चन्द्रमा।
रजनीश पु० (सं) चन्द्रमा।
रजपूत पु०(हि) दे० 'राजपूत'।
रजपूती स्त्री० (हि) १-राजपूत होने का भाव। २-शूरता। वीरता।
रजब पु०(अ) मुसलमानों के साल का सातवां चान्द्रमास।
रजबहा पु० (हि) किसी नदी या नहर से निकला हुआ बड़ा नल।
रजवंती स्त्री० (सं) रजस्वला।
रजवती वि० (सं) रजस्वला।
रजवाड़ा पु०(हि) १-राज्य। देशी रियासत। २-राजा।
रजवार पुं० (हि) राजा का दरबार। राजद्वार।
रजस्वला वि० (सं) जिस का रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमति।
रजा स्त्री० (अ) १-इच्छा। मरजी। २-अनुमति। ३-छुट्टी। ४-हुक्म। स्वीकृति।
रजाइस स्त्री० (हि) आज्ञा। हुक्म।
रजाई स्त्री० (हि) १-राजा होने का भाव। २-ओढ़ना लिहाफ।
रजाना क्रि० (हि) १-राज्यसुख का भोग करना। २-बहुत सुख देना।
रजाय स्त्री० (हि) दे० 'रजा'।
रजिया स्त्री० (देश) अन्न नापने का प्रायः डेढ़ सेर का एक मान।
रजिस्टर पुं० (अं) १-वह बही या किताब जिसमें हिसाब किताब लिखा जाता है। २-हाजिरी की किताब। पञ्जी।
रजिस्टर्ड वि० (सं) पञ्जीबद्ध।
रजिस्ट्रार पु० (अ) वह अधिकारी जिसका काम दस्तावेजों या प्रतिज्ञा पत्रों को विधिवत् पञ्जीबद्ध करना होता है। पंजीयक।
रजिस्ट्री स्त्री० (अ) १-किसी प्रतिज्ञापत्र को विधिवत पञ्जीबद्ध करने का काम। २-चिट्ठी आदि का डाकखाने में पञ्जीबद्ध कराने का काम जिससे चिट्ठी पते पर पहुँचाने का डाकखाने पर कानूनन उत्तरदायित्व होता है।
रजिस्ट्रेशन पुं० (अं) पञ्जीबद्ध कराना। पञ्जीयन
रजील वि० (अ) नीच। छोटी जाति का।
रजु स्त्री० (हि) दे० 'रज्जु'।
रजोकुल पुं० (हि) राजवंश। राजा का घराना।
रजोगुण पुं० (सं) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिसमें उनकी भोगविलास तथा बनावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।
रजोदर्शन पुं० (सं) रजस्वला होना। स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोधर्म पु० (सं) स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोविरति स्त्री० (सं) स्त्रियों के जीवन का वह परिवर्तन जब उनका मासिक धर्म अंतिम रूप से बन्द हो जाता है। (मेनोपॉज)।
रज्जाक वि० (अ) खुराक या रोजी देने वाला। पु० खुदा। ईश्वर।

**रज्जु** स्त्री०(सं) १-रस्सी। २-स्त्रियों के सिर की चोटी
**रज्जुकण्ठ** पुं०(सं) एक प्राचीन आचार्य का नाम
**रटंत** स्त्री०(हि) रटाई। रटने की क्रिया या भाव।
**रट** स्त्री० (हि) कोई बात या शब्द बार-बार बोलने का काम।
**रटन** स्त्री० (हि) रटने की क्रिया या भाव।
**रटना** क्रि० (हि) १-कोई शब्द या बात बारबार कहना। २-कण्ठस्थ करने के लिए बारबार पढ़ना।
**रढ़ना** क्रि० (हि) दे० 'रटना'।
**रण** पु० (सं) १-लड़ाई। युद्ध। जंग २-रमण। ३-शब्द। ४-गति। ५-भेड़।
**रणकर्म** पुं० (सं) लड़ाई। युद्ध।
**रणकामी** पुं०(सं) युद्ध की इच्छा करने वाला।
**रणकारी** पुं० (सं) युद्ध करने वाला।
**रणकोष** पुं० (सं) युद्ध की सहायता के लिए इकट्ठा किया गया धन। (वारफण्ड)।
**रणक्षेत्र** पु० (सं) लड़ाई का मैदान।
**रणखेत** पुं० (हि) रणक्षेत्र।
**रणछोड़** पुं० (हि) श्रीकृष्ण का एक नाम।
**रणत्कार** पुं० (सं) १-खड़खड़। झनकार। २-शब्द। गुञ्जार।
**रणदुंदुभी** पुं० (सं) युद्ध का नगाड़ा। मारू बाजा।
**रणनीति** स्त्री० (सं) युद्ध चलाने या किलेबन्दी करने का ढंग। (स्ट्रैटेजी)।
**रणपंडित** पुं० (सं) युद्ध कला में प्रवीण।
**रणपोत** पु० (सं) युद्ध में प्रयोग किए जाने वाला पोत। (वारशिप)।
**रणप्रिय** पुं० (सं) १-विष्णु। २-बाज पक्षी।
**रणभूमि** स्त्री० (सं) लड़ाई का मैदान।
**रणभेरी** स्त्री० (सं) दे० 'रणदुंदुभी'।
**रणमत्त** पु० (सं) हाथी।
**रणरंग** पुं० (सं) लड़ाई का उत्साह। २-युद्धक्षेत्र। युद्ध।
**रणलक्ष्मी** स्त्री० (सं) युद्ध की देवी। विजय लक्ष्मी।
**रणबंदी** पुं०(सं) युद्धबंदी। रण में पकड़ा गया शत्रु-सैनिक। (केप्टिव)।
**रणवाद्य** पु० (सं) युद्ध में बजने वाले बाजे।
**रणशिक्षा** स्त्री० (सं) लड़ाई की शिक्षा। युद्ध का अभ्यास।
**रणसंकुल** पुं० (सं) घनघोर युद्ध।
**रणसज्जा** पुं० (सं) युद्ध की तैयारी।
**रणसहाय** पुं० (सं) युद्ध में सहायता करने वाला।
**रणसिंघा, रणसिंहा** पुं० (सं) तुरही।
**रणस्थल** पुं० (सं) युद्धक्षेत्र। रणभूमि।
**रणांगण** पु० (सं) रणभूमि। लड़ाई का मैदान।
**रत** वि०(सं) १-अनुरक्त। आसक्त। २-लीन। लिप्त पुं० १-मैथुन। २-योनि। ३-लिंग। ४-प्रेम।
**रतजगा** पुं० (सं) १-रातभर होने वाला आनन्दोत्सव २-रातभर विवाह आदि पर जागना।
**रतन** पु० (हि) दे० 'रत्न'।
**रतनजोत** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की मणि। २-एक क्षुप। ३-बड़ी दन्ती।
**रतनाकर** पुं० (हि) दे० 'रत्नाकर'।
**रतनागर** पु० (हि) समुद्र।
**रतनार** वि० (हि) दे० 'रतनारा'।
**रतनारा** वि० (हि) कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।
**रतनारी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का धान। लाली।
**रतनालिया** वि० (हि) दे० 'रतनारा'।
**रतनावली** स्त्री० (हि) दे० 'रत्नावली'।
**रतमुंहा** वि० (हि) लाल मुख वाला। पुं० बन्दर।
**रताना** क्रि० (हि) १-रत होना। २-किसी को अपनी ओर करना।
**रति** पु० (सं) १-कामदेव की पत्नी। २-मैथुन। ३-प्रेम। ४-शोभा। ५-सौभाग्य। ६-साहित्य में शृङ्गार रस का स्थाई भाव। ७-रहस्य।
**रतिक** अव्य० (हि) रत्तीभर। बहुत थोड़ा।
**रतिकर** पुं० (सं) १-कामी। २-एक समाधि। वि० जिसमें आनन्द की वृद्धि हो।
**रतिकलह** पुं० (सं) समागम। मैथुन।
**रतिकांत** पुं० (सं) कामदेव।
**रतिकुहर** पुं० (सं) योनि। भग।
**रतिकेलि** स्त्री० (सं) संभोग। भोगविलास।
**रतिक्रिया** स्त्री० (सं) मैथुन। संभोग।
**रतिज-रोग** पुं० (सं) स्त्री संभोग से उत्पन्न होने वाले रोग। गर्मी। सूजाक। (वेनेरल डिजीज)।
**रतिज्ञ** पुं० (सं) १-वह जो स्त्री में अपने प्रति प्रेम उत्पन्न करने में प्रवीण हो। २-जो रतिक्रीड़ा में प्रवीण हो।
**रतिदान** पुं० (सं) मैथुन। संभोग।
**रतिनाथ** पुं० (सं) कामदेव।
**रतिनायक** पुं० (सं) कामदेव।
**रतिपति** पुं० (सं) कामदेव।
**रतिप्रिय** पुं० (सं) कामदेव। वि० कामुक।
**रतिबंध** पुं० (सं) मैथुन करने का ढंग। आसन।
**रतिबंधु** पुं० (सं) नायक। पति।
**रतिभवन** पुं० (सं) १-योनि। २-सम्भोग करने का स्थान।
**रतिभाव** पु० (सं) १-स्त्री और पुरुष का आपस का का आकर्षण। २-प्रेम। ३-दाम्पत्यभाव।
**रतिमंदिर** पुं० (सं) दे० 'रतिभवन'।
**रतिभौन** पुं० (हि) दे० 'रतिभवन'।
**रतिराई** पुं० (हि) कामदेव।
**रतिवंत** वि० (हि) सुन्दर।
**रतिशक्ति** स्त्री० (सं) रमण या सहवास करने का बल

रती स्त्री० (हि) १-कामदेव की पत्नी। २-सौंदर्य। ३-तेज। कांति। ४-मैथुन। ५-एक ढाई जौ और आठ धान की तौल। वि० थोड़ा। कम। अल्प।
रतोको अव्य० (हि) रत्ती भर। जरा भी। अल्प।
रतीश पु० (सं) कामदेव।
रतोपल पु० (हि) १-लाल कमल। २-गेरू। ३-लाल सुरमा।
रतौंधी स्त्री० (हि) आंखों का एक रोग जिसमें रात को कुछ नहीं दिखाई देता।
रत्त पु० (हि) दे० 'रक्त'।
रत्तल स्त्री० (देश) एक तौल जो लगभग आधा सेर की होती है।
रत्ती स्त्री० (हि) १-आठ चावल की एक तौल। २-घुंघची का दाना। ३-शोभा।
रत्थी स्त्री० (हि) अरथी।
रत्न पु० (सं) १-बहुमूल्य चमकीले खनिज पत्थर जो आभूषण आदि में लगाये तथा पहने जाते हैं। मणि। २-मनिक। लाल। वि० सर्वश्रेष्ठ।
रत्नकर्णिका स्त्री०(सं) कान में पहनने का रत्न जड़ित आभूषण।
रत्नगर्भा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
रत्नगिरि पु० (सं) बिहार में स्थित पर्वत का प्राचीन नाम।
रत्नगृह पु० (सं) बौद्धों के स्तूप के मध्य की कोठरी जिसमें रत्न आदि सुरक्षित रहते थे।
रत्नच्छाया पु० (सं) रत्नों की चमक। दीप्ति।
रत्नदीप पु०(सं) १-रत्न जड़ित दीप। २-एक कल्पित रत्न जिससे पाताल में उजाला होता है।
रत्ननिचय पु० (सं) रत्नों की राशि।
रत्ननिधि स्त्री० (सं) १-समुद्र। २-खंजन। ३-विष्णु ४-मेरु पर्वत।
रत्नपरीक्षक पु० (सं) रत्नों को परखने वाला। जौहरी।
रत्नपर्वत पु० (सं) सुमेरु पर्वत।
रत्नपारखी पु० (सं) जौहरी।
रत्नप्रदीप पु० (सं) दीपक के समान चमकने वाला रत्न।
रत्नाकर पु० (सं) १-समुद्र। २-वह स्थान जहाँ से रत्न निकलते हैं। ३-बुद्ध का नाम। ४-वाल्मीकि मुनि का पहले का नाम। रत्नों का समूह।
रत्नागिरि स्त्री० (हि) दे० 'रत्नगिरि'।
रत्नाचल पु० (सं) दान के निमित्त लगाया हुआ रत्नों का ढेर जो पर्वत के रूप में होता है।
रत्नाधिपति पु० (सं) कुबेर।
रत्नावली स्त्री० (सं) १-रत्नों की श्रेणी। २-रत्नों की माला। ३-एक अर्थालंकार।
रत्नेश पु०(सं) १-समुद्र। २-कुबेर।
रथ पु० (सं) १-एक प्रकार की सवारी या गाड़ी जो दो या चार पहियों की होती है। बहल। स्यंदन २-शरीर। पैर। ३-शतरंज का एक मोहरा जिसे ऊंट कहते हैं।
रथक्षोभ पु० (सं) रथ में बैठ कर चलने पर अनुभव होने वाला झटका।
रथचरण पु० (सं) १-रथ के पहिये। २-चकवा।
रथपति पु० (सं) रथ का नायक। रथी।
रथपाद पु०(सं) दे० 'रथचरण'।
रथमहोत्सव पु० (सं) रथयात्रा का उत्सव।
रथयात्रा स्त्री०(सं) आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला उत्सव जिसमें जगन्नाथ जी, सुभद्रा और बलराम जी की प्रतिमाएँ रथ पर सवार करके निकाली जाती है।
रथयान् पु० (सं) सारथी।
रथवाह पु०(सं) १-सारथी। २-घोड़ा।
रथवाहक पु०(सं) सारथी। रथ हांकने वाला।
रथशाला स्त्री० (सं) अस्तबल। गाड़ीखाना।
रथशास्त्र स्त्री० (सं) रथ चलाने की विद्या।
रथसूत पु० (सं) सारथी।
रथांग पु० (सं) १-रथ का पहिया। २-चकवा। ३-चक्र नामक अस्त्र।
रथांगपाणि पु० (सं) विष्णु।
रथिक पु० (सं) रथी। जो रथ पर सवार हो।
रथी पु० (सं) रथ पर सवार होकर लड़ने वाला योद्धा।
रथोत्सव पु० (सं) रथ यात्रा का उत्सव।
रथोद्धता स्त्री० (सं) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
रथ्य पु० (सं) १-रथ में जोड़े जाने वाला घोड़ा। २-रथ चलाने वाला। ३-पहिया।
रथ्या स्त्री० (सं) १-रथों के आने जाने का रास्ता। या सड़क। २-चौराहा। ३-कई रथ या गाड़ियां। ४-नाली।
रथ्यायान पु० (सं) सड़क पर बिछाई गई लोहे की पटरी पर चलने वाली सवारी ले जाने वाली गाड़ी (ट्राम)।
रद पु० (सं) दाँत। वि० (अ) १-खराब। नष्ट। २-तुच्छ। निरर्थक।
रदच्छद पु० (सं) ओंठ। ओष्ठ।
रदछद पु० (सं) १-ओंठ। २-रति के समय दांतों के लगने का चिन्ह।
रददान पु०(सं) रति के समय दांतों का चिह्न लगाना।
रदन पु० (सं) दांत।
रदनच्छद पु० (सं) अधर। ओष्ठ।
रदपट पु० (सं) अधर। ओंठ।
रदी पु० (सं) हाथी।
रद्द वि० (अ) १-बदला हुआ। परिवर्तित। २-खराब

या निकम्मा ठहराया हुआ।
**रद्दा** पुं०(देश) १-दीवार पर चिनी गई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह। २-तह। स्तर। ३-चिनी हुई मिठाइयों का स्तर। ४-कुश्ती का एक पेंच ५-भालू के मुख पर बांधने की चमड़े की थैली।
**रद्दी** वि० (फा) निकम्मा। बेकार। स्त्री० पुराने और काम में न आने वाले कागज।
**रन** पुं० (हि) १-रण। युद्ध। २-जंगल। पुं० (देश) झील। ताल।
**रनकना** क्रि० (हि) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।
**रनछोर** पुं०(हि) दे० 'रणछोड़'।
**रनन** क्रि० (हि) झनकार होना। बजना।
**रनबांकुरा** पुं० (हि) वीर। योद्धा।
**रनवास** पुं० (हि) रानियों के रहने का महल। अन्तःपुर।
**रनित** वि० (हि) बजता हुआ।
**रनिवा** पुं० (हि) दे० 'रनवास'।
**रनी** पुं० (हि) वीर। योद्धा।
**रपट** स्त्री० (हि) १-फिसलना। २-दौड़। ३-ढाल। उतार। स्त्री० (हि) घात्या। रिपोर्ट। सूचना।
**रपटना** क्रि० (हि) १-फिसलना। २-झपटना। ३-कोई काम झटपट करना।
**रपटाना** क्रि० (हि) १-फिसलाना। २ खिसकाना।
**रपट्टा** पुं० (हि) १-फिसलने की क्रिया। २-झपट। चपेट। ३-दौड़-धूप।
**रफ** वि० (अं) जो चिकना और साफ न हो। २-खुरदरा।
**रफते-रफते** अव्य० (हि) दे० 'रफ्ता-रफ्ता'।
**रफल** पुं (हि) ऊनी चादर। (रैपर)। स्त्री० (हि) दे० 'राइफल'।
**रफा** वि० (फा) १-दूर किया हुआ। निवारित। २-शांत या दबा हुआ।
**रफू** पुं०(अ) फटे या कटे हुए कपड़े पर फटे हुए स्थान को तागे की बुनावट से ठीक करना।
**रफूगर** पुं० (अ) रफू करने वाला।
**रफ्तनी** स्त्री० (फा) १-जाने की क्रिया या भाव। २-माल निकासी।
**रफ्तार** स्त्री० (फा) चाल। गति।
**रफ्ता-रफ्ता** अव्य० (फा) धीरे-धीरे।
**रब** पुं० (अ) ईश्वर। परमेश्वर।
**रबड़** पुं० (हि) १-बट जाति का एक वृक्ष। २-इस वृक्ष से निकलने वाले दूध का बनाया हुआ लचीला पदार्थ जो बहुत सी वस्तुओं के काम आता है।
**रबड़छंद** पुं० (हि) वह छन्द जिसमें मात्रा आदि का विचार न हो (व्यंग)।
**रबड़ी** स्त्री० (हि) औटा कर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिली होती है।
**रबाना** पुं० (देश) एक प्रकार का छोटा डफ।
**रबाब** पुं० (अ) एक प्रकार का सारङ्गी की तरह का बाजा।
**रबाबिया** पुं० (हि) रबाब बजाने वाला।
**रबी** स्त्री० (अ) १-वसंतऋतु। २-वसंतऋतु में काटी जाने वाली फसल।
**रब्त** पुं० (अ) १-अभ्यास। २-मेलजोल।
**रब्त-जब्त** पुं० (अ) घनिष्ठता।
**रब्ब** पुं० (अ) दे० 'रब'।
**रभस** पुं० (सं) १-वेग। २-हर्ष। ३-प्रेमोत्साह। ४-उत्सुकता। ५-पछतावा। ६-रहस्य।
**रमक** पुं० (सं) १-उपपति। जार। २-प्रेमी। स्त्री०(हि) १-तरङ्ग। २-झकोरा। ३-पेंग।
**रमकना** क्रि० (हि) १-हिंडोले पर पेंग मारना। २-झूमते या इतराते हुए चलना।
**रमजना** पुं० (हि) दे० 'रामजना'।
**रमझोला** पुं० (हि) घुंघरू। नूपुर।
**रमण** वि० (सं) १-सुन्दर। २-प्रिय। ३-रमने वाला। पुं० १-विलास। क्रीड़ा। २-मैथुन। ३-पति। ४-कामदेव। ५-अंडकोष। ६-जघन। ७-सूर्य का सारथी। ८-एक वर्णवृत्त।
**रमण-गमना** स्त्री० (हि) साहित्य में वह नायिका जो यह समझ कर दुःखित होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा और मैं वहां उपस्थित न थी।
**रमणा** स्त्री० (सं) दे० 'रमणी'।
**रमणी** स्त्री० (सं) १-सुन्दर युवति स्त्री। २-स्त्री।
**रमणीक** वि० (सं) सुन्दर। मनोहर।
**रमणीय** वि० (सं) मनोहर। सुन्दर।
**रमणीयता** स्त्री० (सं) १-सुन्दरता। २-साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे।
**रमता** वि० (हि) जो बराबर घूमता फिरता रहता हो।
**रमन** वि० (हि) दे० 'रमण'।
**रमना** क्रि० (हि) १-आनन्द करना। २-भोग विलास के निमित्त कहीं ठहरना। ३-व्याप्त होना। ४-घूमना-फिरना। ५-लीन होना। ६-चल देना। पुं० १-वह स्थान जहां चरने के लिए पशु छोड़े जाते हैं। २-बाग। ३-कोई रमणीक स्थान।
**रमनी** स्त्री० (हि) दे० 'रमणी'।
**रमनीक** वि० (हि) दे० 'रमणीक'।
**रमनीय** वि० (हि) दे० 'रमणीय'।
**रमल** पुं० (अ) पासे फेंक कर अच्छा या बुरा होने वाला फल बताने की विद्या।
**रमसरा** पुं० (हि) दे० 'रामशर'।
**रमा** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-पत्नी।
**रमाकांत** पुं० (सं) विष्णु।
**रमाधव** पुं० (सं) विष्णु।

रमानरेश पुं०(सं) विष्णु।
रमाना क्रि० (हि) लीन या अनुरक्त करना।
रमापति पु० (सं) विष्णु।
रमारमण पुं० (सं) विष्णु।
रमित वि० (हि) मुग्ध। जिसका मन किसी में रमा हुआ हो।
रमेश पु० (सं) विष्णु।
रमेश्वर पु० (सं) विष्णु।
रमैती स्त्री० (हि) १-काम के बदले में काम करने की रीति। २-ऐसे काम का दिन।
रमैनी स्त्री० (हि) कबीरदास जी के चौपाइयों और दोहे में कहे गये कुछ शब्द।
रमैया पु० (हि) १-ईश्वर। राम। २-आत्मा।
रम्माल पु० (सं) रमल जानने वाला। नजूमी।
रम्य वि० (सं) २-सुन्दर। २-मनोरम।
रम्हाना क्रि० (हि) गाय का बोलना या रंभाना।
रय पु० (सं) १-धूल। गर्द। २-वेग। तेजी।
रयन स्त्री० (हि) रात।
रयना स्त्री० (हि) रात्रि। रात।
रय्यत स्त्री० (हि) दे० 'रैयत'।
रर स्त्री० (हि) रटन। रट।
ररना क्रि० (हि) दे० 'रटना'।
ररिहा वि० (हि) १-ररने वाला। २-बार-बार गिड़-गिड़ा कर मांगने वाला।
रलना क्रि० (हि) मिलना।
रलाना क्रि० (हि) मिलाना। सम्मिलित करना।
रली स्त्री० (हि) १-विहार। क्रीड़ा। २-प्रसन्नता। आनन्द। पुं० (देश) एक प्रकार का अन्न।
रल्ल पुं० (हि) रेला। हल्ला।
रव पुं० (सं) १-ध्वनि। गुंजार। २-आवाज। शब्द। ३-शोर। पुं० (हि) १-रवि। २-सूर्य। ३-गति।
रवकना क्रि०(हि) १-दौड़ना। लपकना। २-उछलना
रवण पु० (सं) १-कांसा नामक धातु। २-कोयल ३-रव शब्द। ४-ऊंट। ५-विदूषक। वि० १-शब्द करता हुआ। २-तप्त। ३-चंचल।
रवणरेती स्त्री०(सं) यमुना तट की रेतीली भूमि जहं श्रीकृष्ण खेला करते थे।
रवताई स्त्री० (हि) १-राजा होने का भाव। २-प्रभुत्व
रवन वि० (हि) रमण करने वाला। पु० पति। स्वामी
रवना क्रि० (हि) १-क्रीड़ा करना। २-बोलना। शब्द करना। पुं० (हि) रावण।
रवनि स्त्री० (हि) १-रमणी। सुन्दरी। २-पत्नी।
रवनी स्त्री० (हि) दे० 'रवनि'।
रवन्ना पुं० (हि) १-वह कागज जिस पर भेजे हुए माल का ब्योरा लिखा होता है। २-वह आज्ञापत्र जिससे किसी रास्ते से जाने का अधिकार मिलता है। (ट्रांजिट पास)।
रवा पुं० (हि) १-कण। दाना। २-सूजी। ३-बारूद का दाना। ४-घुंघरू में शब्द करने के लिए डाले के छर्रे। वि० (फा) १-ठीक। उचित। २-प्रचलित।
रवाज पुं०(फा) परिपाटी। प्रथा। चलन।
रवादार वि० (हि) १-दानेदार। २-शुभचिंतक।
रवानगी स्त्री० (फा) प्रस्थान।
रवाना वि० (फा) प्रस्थित। जो कहीं भेजा गया हो।
रवाब पु० (हि) दे० 'रबाब'
रवाबिया पु० (हि) १-लाल बलुआ पत्थर। २-रबाबिया।
रवाभर अव्य० (हि) जरासा। बहुत थोड़ा।
रवायत स्त्री० (अ) १-कहावत। २-कहानी।
रवारवी स्त्री० (फा) १-शीघ्रता। २-दौड़ादौड़।
रवि पुं०(सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-नायक। सरदार ४-आक। ५-लाल अशोक वृक्ष।
रविकर पुं० (सं) सूर्यकिरण।
रविकांतमणि पुं० (सं) सूर्यकांतमणि।
रविकुल पुं० (सं) सूर्यवंश।
रविकुलमणि पुं० (सं) श्रीरामचन्द्रजी।
रविज पुं० (सं) शनि।
रविजा स्त्री० (सं) यमुना।
रवितनय पु० (सं) १-यमराज। २-शनैश्चर। ३-कर्ण।
रवितनया स्त्री० (सं) यमुना।
रवितनूजा स्त्री० (सं) यमुना।
रविनंद स्त्री० (सं) दे० 'रवितनय'।
रविनंदिनी स्त्री० (सं) यमुना।
रविपुत्र पु० (सं) दे० 'रवितनय'।
रविपूत पुं० (सं) दे० रवितनय'।
रविबिंब पु० (सं) १-रविमंडल। २-मानिक।
रविमंडल पुं० (सं) सूर्य के चारों ओर दिखाई देने वाला लाल गोला।
रविमणि पुं० (सं) सूर्यकांतमणि।
रविवंशी पुं० (सं) सूर्यवंशी।
रविवार पुं० (सं) इतवार। शनिवार के बाद और सोमवार के पहले पड़ने वाला दिन।
रविश स्त्री० (फा) १-गति। चाल। २-ढंग। ३-बाग की क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।
रविसारथि पुं० (सं) अरुण।
रविसुअन पु० (हि) १-अश्विनीकुमार। २-दे० 'रवितनय'।
रविसुत पुं० (हि) दे० 'रवितनय'।
रवैया पु० (हि) १- चलन। चालचलन। २- ढंग।
रशना स्त्री० (सं) करधनी।
रशनोपमा स्त्री० (सं) रसनोपमा नामक अलंकार।
रश्क पुं० (फा) ईर्ष्या। डाह।
रश्मि पुं० (सं) १-किरण। २-घोड़े की लगाम। ३-

बगैची।

रस पुं० (सं) १-स्वाद। २-छः की संख्या। ३-किसी पदार्थ का सार। ४-साहित्य के नौ रस और वात्सल्य रस। ५-सुख का अनुभव। ६-प्रेम। ७-काम क्रीड़ा। ८-उमंग। ९-गुण। १०-कोई तरल पदार्थ ११-वनस्पतियों, फलों आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश। १२-वीर्य। १३-भांति। तरह। १४-शरबत। १५-प्राणियों के शरीर से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ। १६-पारा। १७-भस्म। १८ विष २०-दूध।

रसकर्म पुं० (सं) वैद्यक में पारे आदि से भस्म आदि बनाने की रीति।

रसकेलि स्त्री० (स) १-विहार। २-क्रीड़ा। ३-हंसी ठट्ठा। दिल्लगी।

रसखोर स्त्री० (सं) मीठा भात। शर्बत या ऊख के रस में पकाये हुए चावल।

रसगंधक पुं० (सं) १-गंधक। रसौत। ३-शिंगरफ।

रसगुनी स्त्री० (हि) काव्य अथवा संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

रसगुल्ला पुं० (हि) छेने से बनने वाली एक बंगाली मिठाई।

रसघ्न स्त्री० (सं) सुहागा।

रसज पुं० (सं) १-गुड़। २-रसौत। ३-शराब की तल छट।

रसजात पुं० (सं) रसौत।

रसज्ञ वि० (सं) १-काव्य अथवा साहित्य के मर्म को समझने वाला। २-निपुण। ३-रस का जानने वाला।

रसज्ञा स्त्री० (सं) १-गंगा। २-जीभ।

रसज्येष्ठ पुं०(सं) १-मधुर रस। २-शृङ्गार रस।

रसद वि० (सं) १-स्वादिष्ट। २-सुखद। पु० चिकित्सक। स्त्री० (फा) १-वह जो बांटने पर हिस्से के अनुसार मिले। २-कच्चा अनाज। जो अभी पकाया जाना हो। ३-सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है। (प्रोविजन्स)।

रसदार वि० (हि) १-रसवाला। २-स्वादिष्ट।

रसधातु पुं० (सं) १-पारा। २-शरीर की रस नामक धातु।

रसधेनु स्त्री०(सं)१-जीभ। जिह्वा। २-स्वाद। ३-करधनी। ४-लगाम। रस्सी। ५-चन्द्रहार। क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे बहाना या टपकाना। २-ध्यान मग्न होना। ३-प्रेम में लीन होना। ४-स्वाद लेना। ५-प्रफुल्लित होना।

रसनाथ पुं० (सं) पारा।

रसनायक पुं० (सं) १-महादेव। २-पारा।

रसनाल पु० (सं) पक्षी (जिनके केवल जीभ होती है दांत नहीं होते)।

रसनीय वि० (सं) १-स्वाद लेने योग्य। २-स्वादिष्ट।

रसनेन्द्रिय स्त्री०(स) जीभ। जिह्वा।

रसनोपमा स्त्री० (स) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय आगे चलकर उपमान हो जाता है।

रसपति स्त्री० (सं) १-चन्द्रमा। २-पारा। ३-शृङ्गार-रस। ४-राजा।

रसपर्पटी स्त्री०(सं) वैद्यक में एक रसौषध जो संग्रहणी आदि में दी जाती है।

रसप्रबन्ध पुं०(स) १-नाटक। २-वह कविता जिसमें एक ही विषय कई सम्बन्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसभरी स्त्री० (हि) एक प्रकार का स्वादिष्ट फल जो वसन्त में आता है।

रसभस्म पुं० (सं) पारे की भस्म।

रसभीना वि० (हि) १-आनन्द-मग्न। २-तर। गीला।

रसमसा वि० (हि) १-आनन्द-मग्न। २-तर। ३-पसीने से भरा। श्रांत।

रसमाता स्त्री० (हि) जीभ।

रसमातृका स्त्री० (सं) जीभ।

रसमारण पु० (स) वैद्यक में पारे को मारने या शुद्ध करने की क्रिया।

रसमि स्त्री० (हि) १-किरण। २ आभा। चमक।

रसमुंडी स्त्री० (हि) एक बंगला मिठाई का नाम।

रसमैत्री स्त्री० (स) दो ऐसे रसों को मिलाना जिनसे स्वाद में वृद्धि हो।

रसराज पु०(सं) १-पारा। २-शृङ्गार रस। ३-रसौत ४-वैद्यक में तिल्ली की एक दवा।

रसराय पुं० (हि) दे० 'रसराज'।

रसरी स्त्री० (हि) रस्सी।

रसवंत पुं०(हि)रसिक। रसिया। रमज्ञ। वि० रसीला।

रसवंती स्त्री० (हि) रसौत।

रसवत स्त्री० (हि) रसौत।

रसवत्ता स्त्री० (सं) १-रसीलापन। मिठास। २-सुन्दरता।

रसवाद पु० (स) १-प्रेमपूर्ण विवाद या झगड़ा। २-बकवाद। ३-प्रेम की बातचीत।

रसवान् वि० (सं) रसपूर्ण। जिसमें रस हो।

रसवाहिनी स्त्री० (सं) वह नाड़ी जो भोजन से बने रस को शरीर में फैलाती है।

रसविक्रमी पु० (सं) शराब बेचने वाला।

रसविरोध पु० (सं) रसों का ठीक मेल न होना। (सुश्रुत)। २-एक ही पद में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति।

रसशार्दूल पुं० (सं) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

रसशास्त्र पु० (सं) रसायन-शास्त्र।

रसशोधन पुं० (सं) १-पारे को शुद्ध करने की क्रिया २-सुहागा।

रससंरक्षण पु० (सं) वैद्यक की वह चार क्रियाएँ

जिनसे पारे को शुद्ध किया जाता है।
रससंस्कार स्त्री० (सं) पारे को शुद्ध करने का अट्ठारह संस्कार।
रससार पुं० (सं) शहद। मधु।
रससिंदूर पुं०(सं) वैद्यक में पारे और गंधक के योग से बनने वाला एक रसौषध।
रसां, रसा वि० (फा) पहुँचाने वाला—जैसे चिट्ठी-रसा।
रसांजन पुं० (सं) रसौत।
रसा स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-जीभ। ३-रसातल। ४-अंगूर। ५-आम। पुं० (हि) तरकारी आदि का तरल अंश। झोल। शोरवा।
रसाइन पुं० (हि) दे० 'रसायन'।
रसाइनी पुं० (हि) १-रसायन विद्या का ज्ञाता। २-कीमियागर।
रसाई स्त्री० (फा) पहुँच। किसी तक पहुंचने का भाव या क्रिया।
रसात्मक वि० (सं) सुन्दर। रस से भरा हुआ।
रसातल पुं० (सं) पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक।
रसाध्यक्ष पुं० (सं) मादक द्रव्यों की जांच पड़ताल करने वाला सरकारी अधिकारी।
रसाना क्रि०(हि) १-रसपूर्ण करना। २-प्रसन्न करना
रसाभास पुं० (सं) १-साहित्य में रस का ऐसे अवसर पर आना जहां उपयुक्त न हो। २-एक अलंकार।
रसायन पुं० (सं) १-तांबे से सोना बनाने का एक कल्पित योग। २-वह औषध जो मनुष्य को पुष्ट और स्वस्थ बनाये रखे। ३- पदार्थों के तत्वों का ज्ञान।
रसायनज्ञ पुं० (सं) रसायनशास्त्र का वेत्ता।
रसायनविज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें पदार्थों के तत्वों का अथवा उनमें होने वाले विकासों या परिवर्तनों का विवेचन होता है। (केमिस्ट्री)।
रसायनशास्त्र पुं० (सं) दे० 'रसायनविज्ञान'।
रसायनश्रेष्ठ पुं० (सं) पारा।
रसायनिक वि० (सं) दे० 'रासायनिक'।
रसायनी पुं० (हि) दे० 'रसायनज्ञ'। स्त्री०(सं) बुढ़ापे को दूर करने वाली औषध।
रसार वि० (हि) दे० 'रसाल'।
रसाल पुं० (सं) १-आम। २-गन्ना। ३-गेहूँ। ४-कटहल। वि० १-मधुर। २-रसीला। ३-सुन्दर। ४-स्वादिष्ट। ५-शुद्ध। पुं० (देश) कर। राजस्व।
रसालय पुं० (सं) १-आम का पेड़। २-रस आदि बनाने का स्थान। ३-आमोद-प्रमोद का स्थान।
रसाल-शर्करा स्त्री० (सं) गन्ने के रस से बनी हुई चीनी।
रसाला पुं० (हि) दे० 'रिसाला'।
रसाली पुं० (सं) १-रसिक। २-गन्ना। ३-चना।
रसाव पुं० (हि) १-रसने की क्रिया या भाव। २-ऐसा अंश। ३-खेत जोत कर और पाटे से बराबर करके छोड़ देना।
रसावर पुं० (हि) दे० 'रसौर'।
रसाष्टक पुं० (सं) आठ महारसों का समूह जिसमें पारा, ईंगुर आदि सम्मिलित है।
रसास्वादी वि० (सं) १-रस का स्वाद लेने वाला। पुं० (हि) भौंरा।
रसिआउर पुं० (देश) ईख के रस में पकाये हुए चावल।
रसिक वि० (सं) १-रस या आनन्द लेने वाला। २-काव्य का मर्मज्ञ। ३-सहृदय। ४-रसिया। ५-घोड़ा। ६-सारस। ७-एक छन्द।
रसिकता स्त्री० (सं) १-रसिक होने का भाव या धर्म। २-हँसीठट्ठा।
रसिकाई स्त्री० (हि) रसिकता।
रसित वि० (सं) १-ध्वनि करता हुआ। २-बहता हुआ। ३-रसयुक्त। ४-जिस पर मुलम्मा चढ़ा हो।
रसिया पुं० (हि) १-रसिक। २-फागुन में गाया जाने वाला एक गाना।
रसियाव पुं० (हि) गन्ने के रस में पके हुए चावल।
रसी पुं० (हि) दे० 'रसिक'।
रसीद स्त्री० (फा) १-किसी वस्तु की पहुँच। २-किसी वस्तु के प्राप्त होने पर प्रमाण स्वरूप लिखा हुआ पत्र। ३-पता। खबर। ४-प्राप्तिका।
रसील वि० (हि) दे० 'रसीला'।
रसीला वि० (हि) १-रसयुक्त। २-स्वादिष्ट। ३-रस लेने वाला। ४-बांका। ५-भोगविलास का प्रेमी।
रसीलापन पुं० (हि) रसीला होने का भाव या धर्म।
रसूम पुं० (अ) १-कानून। नियम। २-नियत कर या राजस्व। ३-नेग। नजराना। ४-रस्म।
रसूम-अदालत पुं० (अ) दावा दायर करते समय दिया जाने वाला धन। (कोर्टफीस)।
रसूल पुं० (अ) पैगम्बर। ईश्वर का दूत।
रसेंद्र स्त्री० (सं) १-पारा। २-जीरा। ३-धनिया। ४-लोबिया।
रसे-रसे अव्य० (हि) धीरे-धीरे।
रसेश्वर पुं० (सं) १-पारा। २-एक रसौषध।
रसेस पुं० (हि) १-नमक। २-श्रीकृष्ण।
रसोइया पुं० (हि) भोजन बनाने वाला।
रसोई स्त्री० (हि) १-पकाई हुई खाने की वस्तु। २-स्थान जहाँ भोजन बनता है।
रसोईखाना पुं० (हि) पाकशाला।
रसोईघर पुं० (हि) पाकशाला।
रसोईदार पुं० (हि) रसोइया।

रसोईदारी स्त्री० (हिं) १-रसोइये का पद। २-भोजन बनाने का काम।
रसोईबरदार पुं० (हिं) भोजन ले जाने वाला।
रसोवर पुं० (स) शिंगरफ।
रसोद्भव पुं० (सं) रसौत।
रसोद्भूत पुं० पुं० (सं) रसौत।
रसोय स्त्री० (हिं) भोजन।
रसौत स्त्री० (हिं) एक प्रसिद्ध औषधि।
रसौर पुं० (हिं) रसिआउर।
रस्ता पुं० (हि) दे० 'रास्ता'।
रस्म पुं० (अ) १-रिवाज। प्रथा। परिपाटी। २-मेलजोल।
रस्मि स्त्री० (हिं) दे० 'रश्मि'।
रस्मी वि० (हि) रस्म सम्बन्धी।
रस्सा पुं० (हि) बहुत मोटी और बड़ी रस्सी।
रस्सी स्त्री० (हि) डोरी। सूत आदि को बटकर बनाई हुई रज्जु।
रस्सीबाट पुं० (हि) रस्सी बटने वाला।
रहँकला पुं० (हिं) १-एक तोप लादने की गाड़ी। २-एक हलकी गाड़ी।
रहँचटा पुं० (हि) उत्सुकतापूर्ण लालसा। चसका।
रहँचट पुं० (हि) कूएँ में से पानी निकालने का एक यन्त्र।
रहँटा पुं० (हि) सूत कातने का चरखा।
रहः पुं० (सं) १-निर्जन स्थान। २-यथार्थता। ३-रहस्य।
रहचटा पुं० (हि) दे० 'रहँचटा'।
रहचह स्त्री० (हिं) चिड़िया की बोली।
रहजन पुं० (फा) डाकू। लुटेरा।
रहजनी स्त्री० (फा) डकैती। लुटेरापन।
रहठा पुं० (देश) अरहर के पौधे का सूखा डंठल।
रहन स्त्री० (हिं) १-रहने की क्रिया या भाव। २-आचार। व्यवहार।
रहन-सहन स्त्री० (हि) जीवन व्यतीत करने और काम करने का ढंग।
रहना क्रि० (हिं) १-स्थित होना। ठहरना। २-रुकना ३-निवास करना। ४-ठीक ढंग से आचरण करना ५-नौकरी करना। ६-बाकी बचना।
रहनि स्त्री० (हि) १-रहने की क्रिया या भाव। २-लगन। ३-आचरण।
रहनी स्त्री० (हि) दे० 'रहनि'।
रहम पुं० (अ) १-दया। २-करुणा। ३-कृपा।
रहमत स्त्री० (अ) दया। कृपा।
रहमदिल वि० (अ) कृपालु।
रहमान वि० (अ) बड़ा दयावान। पुं०। ईश्वर।
रहर स्त्री० (हि) दे० 'अरहर'।
रहरी स्त्री० (हि) अरहर।
रहल स्त्री० (हि) १-पुस्तक पढ़ने का लकड़ी का ढांचा २-सफर।
रहस पुं० (हि) १-लीला। क्रीड़ा। २-आनंद। ३-एकांत स्थान।
रहसना क्रि० (हि) प्रसन्न होना।
रहसि स्त्री० (हि) १-रहस्य। २-एकांत स्थान।
रहस्य पुं० (सं) १-गुप्त भेद। २-मर्म की बात। ३-गूढ़त्व। ४-मजाक।
रहस्यवाद पुं० (सं) ईश्वर के प्रत्यक्ष संपर्क के लिए मनन या चिंतन करने की प्रवृत्ति। (मिस्टीसिज्म)
रहस्यवादी पुं० (सं) रहस्यवाद में विश्वास रखने वाला।
रहासहा वि० (हि) बचाखुचा। बचा-बचाया।
रहाइश स्त्री० (हि) १-रहने का स्थान। २-स्थिति। ३-बरदाश्त।
रहाई स्त्री० (हि) १-रहना। २-कल। चैन। आराम
रहाना क्रि० (हि) १-रहना। २-होना।
रहित वि० (स) बिना। रहित। बगैर।
रहिता पुं० (हि) चना।
रहीम वि० (अ) दयालु। कृपालु। पुं० १-एक मुसलमान कवि का उपनाम। २-ईश्वर।
रांक वि० (हि) दे० 'रंक'।
रांकव वि० (हि) दे० 'रंक'।
रांगड़ी पुं० (देश) पंजाब में उपजने वाला एक प्रकार का चावल।
रांगा पुं० (हि) सीसे के रङ्ग की एक मुलायम धातु।
रांच अव्य० (हि) दे० 'रंच'।
रांचना क्रि० (हि) १-चाहना। १-रङ्ग पकड़ना। ३-बनाना। ४-रङ्ग चढ़ाना।
रांजना क्रि० (हि) १-काजल लगाना। २-रङ्गना। ३-टूटे हुए बरतन में टांका लगाना।
रांटा पुं० (देश) टिटिहरी चिड़िया। पुं० (हि) दे० 'रहँटा'।
रांड़ स्त्री० (हिं) १-विधवा। २-वेश्या।
रांध पुं० (हि) १-निकट। पास। २-पड़ोस।
रांध-पड़ोस अव्य० (हि) आस-पास।
रांधना क्रि० (हि) भोजन पकाना।
रांपी स्त्री० (देश) चमड़ा काटने का खुरपी के आकार का औजार।
रांभना क्रि० (हि) गाय का बोलना।
राआ पुं० (हि) राजा।
राइ पुं० (हि) १-छोटा राजा। २-सरदार। वि० (हि) उत्तम। श्रेष्ठ।
राइता पुं० (हि) दे० 'रायता'।
राइफल स्त्री० (हि) एक प्रकार की बंदूक।
राई स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की छोटी सरसों। २-[illegible]। मात्रा। ३-राजसी।

**राईभर** अव्य० (हिं) अल्प। बहुत थोड़ा सा।
**राउ** पुं० (हिं) राजा।
**राउत** पुं० (हिं) १-राजवंश का कोई व्यक्ति । २-सरदार। बहादुर। ४-क्षत्रिय।
**राउर** पुं० (हिं) महल का अन्तःपुर। रनवास। *वि०* श्रीमान्। आपका।
**राउल** पुं० (हिं) १-राजा। २-राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।
**राकस** पुं० (हिं) राक्षस।
**राकसिन** *स्त्री०* (हिं) राक्षसी।
**राकसी** *स्त्री०* (हिं) राक्षसी।
**राका** *स्त्री०* (सं) १-पूर्णिमा की रात । ३-चन्द्रमा । पूर्णमासी। ४-पहली बार रजस्वला होने वाली स्त्री
**राकापति** पुं० (स) चन्द्रमा।
**राकेश** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**राक्षस** पुं०(सं) १-दैत्य। असुर। २-आठ संवत्सरों में से एक। ३-कोई दुष्ट प्राणी।
**राक्षसविवाह** पुं०(सं) विवाह की वह प्रणाली जिसमें बधू के लिए युद्ध करना पड़ता है।
**राक्षसी** *स्त्री०* (सं) १-राक्षस की स्त्री। २-दुष्ट स्वभाव की स्त्री।
**राख** *स्त्री०* (हिं) जले हुए पदार्थ का शेष अंश भस्म राख।
**राखना** *क्रि०*(हिं)१-रक्षा करना। २-रखवाली करना ३-छिपना। ४-रोक रखना। ५-बनाना।
**राखी** *स्त्री०* (हिं) १-रक्षाबंधन का डोरा। २-सलोनो के त्योहार पर कलाई पर मंगल सूत्र बांधना।
**राग** पुं० (सं) १-अनुराग। प्रेम। २-प्रिय या अप्रिय वस्तु के प्रति मन में उठने वाले भाव। ३-रङ्ग। लाल रङ्ग। ४-ईर्ष्या। द्वेष। ५-स्वर, ताल और लययुक्त संगीत। ६-सुगंधित लेप। ७-कष्ट। क्लेश
**रागना** *क्रि०* (हिं) १-अनुरक्त होना। २-रङ्गा जाना। ३-निमग्न होना। ५-गाना। अलापना।
**रागिनी** *स्त्री०* (सं) संगीत में किसी राग का भेद या पत्नी।
**रागी** पुं० (हिं) १-अनुरागी। प्रेमी। २-गवैया। *स्त्री०* रानी। *वि०* रङ्गा हुआ।
**राघव** पुं० (सं) १-रामचन्द्रजी। २-दशरथ। ३-रघुवंश में उत्पन्न वस्तु। ४-एक समुद्री मछली।
**राचना** *क्रि०* (हिं) १-रचना। बनाना। २-बनना। ३-अनुरक्त होना। ४-रङ्गा जाना। ५-लीन होना ६-प्रभावान्वित होना।
**राछ** पु० (हिं) १-कारीगरी का औजार। २-लकड़ी के भीतर का पक्का अंश। ३-बरात। ४-चक्की के बीच का खूंटा। ५-लोहार का बड़ा हथौड़ा।
**राछस** पुं० (हिं) दे० 'राक्षस'।
**राज** पुं० (सं) राजा का लघु रूप। (हिं) १-राज्य। शासन। (गवर्नमेंन्ट)। २-राज्य। ३-प्रभुत्व। ४-बड़ी संपत्ति या जमींदारी। (इस्टेट)। ५-मकान बनाने वाला कारीगर।
**राज़** पुं० (फा) रहस्य। गुप्त बात।
**राजऋण** पुं० (सं) राष्ट्र या देश के नाम पर उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया गया ऋण। २-वह पत्र जो इस ऋण के बदले में ऋण देने वाले व्यक्तियों को दिया जाता है। (स्टॉक बॉंड)।
**राजकदंब** पुं० (सं) स्वादिष्ट फलों वाला कदंब।
**राजकन्या** *स्त्री०* (सं) १-राजपुत्री। २-केवड़े का फूल।
**राजकर** पुं० (सं) राजस्व। (टैक्स)।
**राजकर्ता** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो किसी को राजगद्दी पर बैठने या उतारने की क्षमता रखता हो।
**राजकाज** पुं० (हिं) राजप्रबंध। व्यवस्था।
**राजकीय** *वि०* (सं) राजा या राज्य से सम्बन्ध रखने वाला। सरकारी।
**राजकीयपक्ष** पुं०(सं) वह दल जिसके हाथ में राज्य-शासन हो। (ऑफिशियल पार्टी)।
**राजकीयप्राभियोक्ता** पुं० (सं) सरकार की ओर से मुकदमे चलाने वाला प्राभियोक्ता (गवर्नमेंट प्रोसीक्यूटर)।
**राजकुंअर** पुं० (हिं) राजकुमार।
**राजकुमार** पुं० (सं) राजा का लड़का।
**राजकुमारी** *स्त्री०* (सं) राजा की लड़की।
**राजकुल** पुं० (सं) राजाओं का वंश या खानदान।
**राजकुष्मांड** पुं० (सं) बैंगन।
**राजकोषीय-नीति** *स्त्री०* (सं) सरकार की आय या कोष सम्बन्धी नीति। (फिस्कल पॉलिसी)।
**राजगद्दी** *स्त्री०* (हिं) १-राजसिंहासन। २-राज्याभिषेक। ३-राज्याधिकार।
**राजगामी** *स्त्री०* (सं) जब्त की हुई संपत्ति या धन। (एसचीट)।
**राजगीर** पुं०(हिं) राज। मकान बनाने वाला कारीगर।
**राजगीरी** *स्त्री०* (हिं) राजगीर का पद या कार्य।
**राजगृह** पुं०(सं)१-राजा का महल। २-एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है।
**राजचिह्न** पुं० (सं) राजाओं के अधिकारसूचक चिह्न; दण्ड, छत्र आदि। (इनसिग्निया)।
**राजचिह्नक** पुं० (स) उपस्थ। शिश्न।
**राजतंत्र** पुं० (सं) १-राज्य का शासन और व्यवस्था (पॉलिटी)। २-वह शासन प्रणाली जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। (मोनार्की)।
**राजता** *स्त्री०* (सं) राजा का पद, भाव या काम।
**राजत्व** पु० (सं) राजता।
**राजदंड** पु० (सं) १-राजा की आज्ञा से दिया जाने वाला दण्ड। २-राजा का अधिकारसूचक दण्ड।

**राजदंत** पुं० (सं) दांतों की पंक्ति का वह बीच का दांत जो औरों से बड़ा और चौड़ा होता है।

**राजदया** स्त्री० (सं) किसी न्यायालय द्वारा मृत्यु दण्ड दिया जाने पर राष्ट्रपति का वह अधिकार जिससे वह अभियुक्त को क्षमा प्रदान कर सकते हैं (क्लीमेंसी)।

**राजदूत** पुं० (सं) राज्य की ओर से किसी दूसरे राज्य या देश में भेजा या नियुक्त किया जाने वाला दूत (एम्बैसेडर)।

**राजदूतावास** पुं० (सं) राजदूत के रहने का स्थान। (एम्बैसी)।

**राजद्रोह** पुं० (सं) राजा के या राज्य के प्रति किया गया विद्रोह। (सेडीशन)।

**राजद्रोही** पुं० (सं) राज्य से द्रोह करने वाला। बागी।

**राजद्वार** पुं० (सं) १-राजा का द्वार या ड्योढ़ी। २-न्यायालय।

**राजधर्म** पुं० (सं) राजा का कर्तव्य।

**राजधानी** स्त्री० (सं) किसी देश या राज्य का वह प्रधान नगर जहां से उसका शासन होता है। (कैपिटल)।

**राजनय** पुं० (सं) दो राष्ट्रों के बीच समझौता करने का राजनैतिक कुटिल व्यवहार। (डिप्लोमेसी)।

**राजना** क्रि० (हिं) १-उपस्थित होना। २-सोहना। शोभित होना।

**राजनीति** स्त्री० (सं) राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन और अन्य देशों के साथ व्यवहार होता है। (पॉलिटिक्स)।

**राजनीतिक** वि० (सं) राजनीति-सम्बन्धी। (पॉलिटिकल)।

**राजनीतिज्ञ** पुं० (सं) राजनीति को भली भांति समझने वाला। (पॉलिटीशियन)।

**राजन्य** पुं० (सं) १-राजा। २-क्षत्रिय।

**राजपंखी** पुं० (हिं) राजहंस।

**राजपटोल** पुं०(सं) एक प्रकार का परवल।

**राजपत्नी** स्त्री० (सं) १-रानी। २-पीतल। धातु।

**राजपत्रित** वि० (सं) वह (अधिकारी)। जिसकी नियुक्ति, स्थानांतरण आदि सरकार द्वारा प्रकाशित विज्ञप्ति द्वारा हो। (गजेटेड)।

**राजपथ** पुं० (सं) मुख्य मार्ग। सब लोगों के प्रयोग के लिए बनाई गई लम्बी-चौड़ी सड़क।। (हाईवे)

**राजपद्धति** स्त्री०(सं) १-राजनीति। २-राजशासन की प्रणाली। (पॉलिटी)।

**राजपुत्र** पुं० (सं) १-राजकुमार। २-एक उपाधि। २-एक वर्णसंकर जाति।

**राजपुत्रा** स्त्री० (सं) राजमाता। (क्वीन-मदर)

**राजपुत्री** स्त्री० (सं) १-राजकुमारी। २-राजपूत की लड़की।

**राजपुरुष** पुं० (सं) १-राज्य का कोई कर्मचारी। २-राज्य या शासन की नीति को भलीभांति समझने वाला। (स्टेट्समैन)।

**राजपूत** पुं० (हिं) क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

**राजप्रमुख** पुं० (सं) राजस्थान, मैसूर, त्रावंकोर आदि राज्यसंघों में नियुक्त देशी रियासतों के राजा जिन्होंने राजपाल का पद ग्रहण किया हुआ है।

**राजप्रसाद** पुं० (सं) राजा का महल। राजमहल।

**राजप्रेष्य** वि० (सं) राज्य या राजा की ओर से भेजे जाने वाले। (ऑन सर्विस)।

**राजबंदी** पुं० (सं) वह कैदी या बन्दी जिसे सरकार ने बिना कोई मुकदमा चलाये संदेह के कारण कैद कर रखा हो। (स्टेट प्रिजनर)।

**राजबाड़ी** स्त्री० (हिं) १-राजा की वाटिका। २-राजमहल।

**राजबाहा** पुं० (हिं) बड़ी नहर।

**राजभंडार** पुं० (सं) राजकोष। खजाना।

**राजभक्त** वि० (सं) जो अपने राजा के प्रति निष्ठा या भक्ति रखता हो। (लॉयल)।

**राजभक्ति** स्त्री० (सं) राजा के प्रति प्रेम और निष्ठा। (लायल्टी)।

**राजभवन** पुं०(हिं) १-राजा का महल। २-राजधानी का वह स्थान जहाँ राज्यपाल, उपराज्यपाल या राष्ट्रपति निवास करता है। (गवर्नमेंट हाउस)।

**राजभाषा** स्त्री०(सं) किसी देश की वह भाषा जिसका उपयोग उसके न्यायालयों या सब कार्यों में होता है (स्टेट लैंग्वेज)।

**राजभोग** पुं० (सं) १-वह उत्तम वस्तुएँ जिनका उपभोग राजा लोग करते हैं। २-एक प्रकार का का चावल।

**राजमंडल** पुं०(सं) ऐसे राजाओं का राज्य जो किसी राज्य के आस पास हो।

**राजमहल** पुं०(सं) राजा का महल। प्रासाद।

**राजमहिषी** स्त्री० (सं) पटरानी।

**राजमाता** स्त्री० (सं) किसी देश के राजा या शासक की यात्रा।

**राजमार्ग** पुं० (सं) राजपथ। चौड़ी सड़क।

**राजमुद्रा** स्त्री० (सं) राजा या राज्य की वह मुद्रा जो राजकीय पत्रों पर अंकित की जाती है। (रायलसील)।

**राजमुनि** पुं० (सं) राजर्षि।

**राजयक्ष्मा** पुं० (सं) क्षय नामक रोग। तपेदिक।

**राजयक्ष्मी** वि० (सं) क्षय रोगी।

**राजयान** पुं० (सं) १-पालकी। २-राजा की सवारी का निकलना। ३-वह सवारी जो राजा के लिए हो।

**राजयोग** पुं० सं) १-योग शास्त्र में वर्णित पतंजलि का योग का उपदेश। २-किसी की जन्म-कुण्डली

का वह योग जिसके पड़ने पर वह राज या राजतुल्य होता है (फ० ज्यो०)।
**राजरथ** पुं० (सं) राज की सवारी का रथ।
**राजराज** पु० (सं) १-सम्राट। २-कुबेर। ३-चन्द्रमा
**राजराजेश्वर** पुं०(सं) १-राजाओं का राजा। अधिराज। २-एक रसौषध।
**राजराजेश्वरी** स्त्री० (सं) १-राजेश्वर की पत्नी। साम्राज्ञी। २-दस महाविद्याओं में से एक।
**राजरोग** पुं० (सं) १-ऐसा रोग जो असाध्य हो। २-क्षय रोग। तपेदिक।
**राजर्षि** पुं० (सं) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुलोत्पन्न हो।
**राजलक्ष्मी** स्त्री०(सं) १-राजश्री। २-राजा की शोभा
**राजवंश** पुं०(सं) राजा का कुल या वंश। (डाइनेस्टी)
**राजवर्त्म** पुं० (सं) राजपथ। लम्बी चौड़ी सड़क। राजमार्ग।
**राजवल्लभ** पु० (सं) १-खिरनी। २-बड़ा आम। ३-पेंवदी बेर। ४-एक मिश्र औषध।
**राजविद्या** स्त्री० (सं) राजनीति।
**राजविद्रोह** पुं० (सं) बगावत। राजद्रोह।
**राजविद्रोही** पुं० (सं) राजद्रोही। बागी।
**राजवीथी** स्त्री० (सं) राजपथ। चौड़ी सड़क।
**राजवैद्य** पुं० (सं) १-राजाओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य। २-कुशल चिकित्सक।
**राजश्री** स्त्री० (सं) राजा की शोभा या वैभव।
**राजसंसद** पुं० (सं) १-दरबार। २-राजसभा। ३-वह न्यायालय जिसका न्यायाधीश राजा हो।
**राजस** वि० (सं) रजोगुण से उत्पन्न। पुं० क्रोध। आवेश।
**राजसत्ता** स्त्री० (सं) १-राजशक्ति। २-वह सत्ता जो किसी देश के भरणपोषण, वर्द्धन तथा रक्षण के लिए स्थापित की जाती है।
**राजसत्तात्मक** वि० (सं) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो।
**राजसदन** पुं० (सं) १-राजा का महल। २-(आधुनिक) राजधानी में वह स्थान जहाँ किसी प्रदेश का राज्यपाल रहता है।
**राजसभा** स्त्री० (सं) १-राजाओं की सभा। २-राजदरबार।
**राजसमाज** पुं० (सं) १-राजा लोग। २-राजाओं का दरबार या समाज।
**राजसाक्षी** पुं० (सं) अपराधियों में से वह व्यक्ति जो सरकार की तरफ से गवाह बनजाता है। (एप्रूवर)
**राजसिक** वि० (सं) दे० 'राजस'।
**राजसिरी** स्त्री० (हिं) दे० 'राजश्री'।
**राजसी** वि०(हिं)१-राजाओं के योग्य। २-दे० 'राजस'। स्त्री० (सं) दुर्गा।
**राजसूय** पुं० (सं) वह यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल सम्राट को होता है।
**राजस्थान** पुं०(सं) १-राजपूताना। २-अलवर, जयपुर आदि कई रियासतों का संयुक्त प्रदेश।
**राजस्व** पुं० (सं) कर, शुल्क आदि के रूप में सरकार को होने वाली आय। (रेवेन्यू)।
**राजस्वमंत्री** पु० (सं) राजस्व विभाग का मंत्री। (रेवेन्यू मिनिस्टर)।
**राजहंस** पु० (सं) १-एक प्रकार का बड़ा हंस। २-एक संकर राग का नाम।
**राजांक** पुं० (सं) दे० 'राजचिह्न'। (इनसिग्निया)।
**राजा** पु० (सं) १-किसी देश या जाति का प्रधान शासक। नरेश। नृप। २-ब्रिटिश शासन काल की एक उपाधि।
**राजाज्ञा** स्त्री० (सं) राजा या राज्य की आज्ञा।
**राजाधिदेय** पुं० (सं) राजाओं को सरकारी खजाने से निजी खर्च के लिए दी जाने वाली बँधी हुई रकम। (प्राइवी पर्स)।
**राजाधिराज** पुं० (सं) सम्राट राजाओं का राजा।
**राजाधिष्ठान** पुं० (सं) १-वह नगर या स्थान जहां राजा का महल हो। २-राजधानी।
**राजासन** पुं० (सं) तख्त। राजसिंहासन।
**राजि** स्त्री० (सं) १-पंक्ति। कतार। २-रेखा। ३-राई पुं० आयु के पुत्र का नाम।
**राजिका** स्त्री० (सं) १-राई। २-दे० 'राजि'।
**राजिव** पुं० (हिं) कमल।
**राजी** स्त्री० (सं) १-पंक्ति। श्रेणी। २-राई। ३-लाल सरसों।
**राज़ी** वि० (अ) १-सहमत। अनुकूल। २-स्वस्थ। ३-प्रसन्न। स्त्री० अनुकूलता। रजामन्दी।
**राजीनामा** पु० (अ) वह लेख जो वादी तथा प्रतिवादी के समझौते होने के बाद लिखा जाता है और न्यायालय में पेश किया जाता है।
**राजीव** पुं० (सं) १-कमल। २-नील कमल। २-एक मृग जिसकी पीठ पर धारियां होती हैं।
**राजेन्द्र** पुं० (सं) १-राजाओं का राजा। २-सम्राट
**राजेश्वर** पु० (सं) सम्राट। राजाधिराज।
**राजोपकरण** पुं० (सं) दे० 'राजचिह्न'।
**राजोपजीवी** पुं० (सं) १-राज्य कर्मचारी। २-राजा की सेवा करके जीविका उपार्जन करने वाला।
**राज्ञी** स्त्री० (सं) १-रानी। २-सूर्य की स्त्री का नाम २-नीलवृक्ष।
**राज्य** पुं० (सं) १-शासन। २-एक राजा या एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा शासित देश। (स्टेट)।
**राज्यकर्ता** पुं० (सं) १-शासक। २-अधिकारी। ३-राजा।
**राज्यक्षेत्र** पुं०(सं) १-प्रदेश। २-किसी देश का भूभाग जो किसी सत्ता के आधीन सीमा के अन्तर्गत

हो। (टैरिटरी)।

**राज्यक्षेत्रातीत अधिकार** पुं० (सं) एक देश में बसने वाले विदेशियों को अपने देश जैसे ही न्याय आदि के मामले में अधिकार प्राप्त होना (एक्स्ट्रा टैरिटोरियल राइट)।

**राज्यक्षेत्रातीतप्रवर्तन** पुं० (सं) सीमा के बाहर का कार्य संपादन। (एक्स्ट्रा टैरिटोरियल ऑपरेशन)।

**राज्यक्ता** स्त्री० (सं) राजता।

**राज्यच्युत** वि० (सं) राजसिंहासन से हटाया हुआ।

**राज्यच्युति** स्त्री० (सं) राजा का राजसिंहासन से उतार दिया जाना।

**राज्यतंत्र** पुं० (सं) राज्य की शासन-प्रणाली। (पॉलिटी)।

**राज्यत्याग** पुं० (सं) राजा का अपना राज्य छोड़ देना। (एब्डिकेशन)।

**राज्यधुरा** स्त्री० (सं) राज्यशासन-प्रभार।

**राज्यनिधि** स्त्री० (सं) किसी राज्य की निधि। (स्टेट-फण्ड)।

**राज्यपरिषद्** स्त्री०(सं) किसी राज्य के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह परिषद् जो साधारण या विधान सभा के प्रस्तावों आदि पर पुनर्विचार करने के लिए बनाई जाती है। (काउन्सिल आफ स्टेट)।

**राज्यपाल** पुं० (सं) किसी प्रदेश का सर्वोच्च पदाधिकारी जिसकी नियुक्त राष्ट्रपति या सर्वोच्च सत्ता द्वारा होती है। (गवर्नर)।

**राज्यभंग** पु० (सं) राज्य का नाश।

**राज्यलक्ष्मी** स्त्री० (सं) १-राजश्री। २-विजयकीर्ति।

**राज्यलोभ** पुं०(सं)राज्यों को प्राप्त करने की आकांक्षा

**राज्यव्यवस्था** पुं० (सं) राज्य-नियम। वह व्यवस्था जिसके अनुसार प्रजा के शासन का प्रबंध किया जाता है।

**राज्यसंचालनपरिषद्** स्त्री० (सं) राजा या शासक की बीमारी या अल्पवयस्कता के कारण कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की बनाई हुई परिषद् जो राज्य का संचालन करती है। (रीजेंसी काउन्सिल)।

**राज्यसंघ** पुं०(सं) अनेक ऐसे राज्यों का संघ जो कुछ बातों में स्वतंत्र पर एक प्रबल केन्द्र के आधीन होते है (फेडिरेशन)।

**राज्यसंरक्षक** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो शासक के अस्वस्थ होने या अल्पवयस्क होने पर राज्य का संचालन करता है। (रीजेंट)।

**राज्यसभा** स्त्री० (सं) दे० 'राज्यपरिषद्'। (काउन्सिल आफ स्टेट)।

**राज्यसरकार** स्त्री० (हि) किसी राज्य की सरकार जो कुछ बातों में स्वतंत्र पर एक प्रबल केन्द्र के आधीन होते हैं। (स्टेट गवर्नमेंन्ट)।

**राज्यसूची** स्त्री० (सं) वह सूची या तालिका जिसमें राज्यों के नाम अंकित हो। (स्टेट लिस्ट)।

**राज्यस्थायी** पुं० (सं) राजा। शासक।

**राज्यांग** पुं०(सं)राजा के साधक आठ अंग--स्वामी, आमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल और सुहृद।

**राज्याभिषेक** पुं० (सं) किसी राजा के राजसिंहासन पर बैठने के समय होने वाला कृत्य। राज्यारोहण। (कोरोनेशन)।

**राज्यारोहण** पुं० (सं) किसी राजा का पहले पहल राजसिंहासन पर बैठना।

**राठ** पुं० (हि) १-राज्य। २-राजा।

**राठवर** पुं० (हि) दे० 'राठौर'।

**राठौर** पुं० (हि) मारवाड़ी राजपूतों की एक शाखा।

**राणा** पुं० (हि) राजा।

**रात** स्त्री० (हि) सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक का समय। रात्रि। निशा।

**रातदिन** अव्य० (हि) सदा। सर्वदा।

**रातना** क्रि० (हि) १-लाल रंग से रंग जाना। २-रंगीन होना। ३-अनुरक्त होना।

**राता** वि० (हि) लाल। रंगा हुआ।

**राति** स्त्री० (हि) रात।

**रातिचर** पु० (हि) राक्षस।

**रात्रि** स्त्री० (सं) रात। निशा।

**रात्रिकर** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**रात्रिचार** पुं० (सं) १-रात को चलने वाला। २-निशाचर। राक्षस।

**रात्रिपाठशाला** स्त्री० (सं) वह पाठशाला जहां दिन में काम करने वालों को रात को पढ़ाने का प्रबन्ध हो (नाइट-स्कूल)।

**रात्रिपुष्प** पु० (सं) रात को खिलने वाला फूल। कुंई।

**रात्रिमणि** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**रात्र्यंध** पु० (सं) १-वह जिसे रतौंधी रोग हो। २-वह जिसे रात को न दिखाई देता हो।

**राधना** क्रि० (हि) १-आराधना या पूजा करना। २-काम निकलना।

**राधा** स्त्री०(सं)१-प्रीति। प्रेम। २-वैशाख की पूर्णिमा ३-वृषभानु गोप की कन्या जो श्रीकृष्ण की प्रेयसी थी। राधिका। ४-बिजली।

**राधाकांत** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**राधावल्लभ** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**राधावल्लभी** पुं० (सं) वैष्णवों का एक संप्रदाय।

**राधाष्टमी** स्त्री० (सं) भादोंसुदी अष्टमी।

**राधिका** स्त्री० (सं) दे० 'राधा'।

**राधेय** पुं० (सं) कर्ण।

**राध्य** वि० (सं) आराध्य।

**रान** स्त्री० (फा) जाँघ। जंघा।

**राना** पु० (हि) राणा। राजा। क्रि० अनुरक्त होना

**रानी** स्त्री० (हि) १-राजा की पत्नी। २-स्वामिनी

३-स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक शब्द
राब स्त्री० (हिं) पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राबड़ी स्त्री० (हिं) रबड़ी। बसौंधी।
राम पुं० (सं) १-परशुराम। २-बलराम। ३-राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र। ४-ईश्वर। ५-तीन की संख्या।
रामकजरा पुं० (देश) एक प्रकार का (अगहनिया) धान।
रामचंगी स्त्री० (देश) एक प्रकार की तोप।
रामचंद्र पुं० (सं) अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो अवतार माने जाते हैं।
रामजननी पुं० (हिं) १-कौशल्या। २-बलराम की माता। ३-रेणुका।
रामजना पुं० (हिं) एक संकर जाति जिसकी स्त्रियां वेश्यावृत्ति या नाच गाने का काम करती हैं। २-वह जिसके माता पिता का कुछ पता न हो।
रामजनी स्त्री० (हिं) १-रामजना जाति की स्त्री। २-वेश्या।
रामजमनी पु० (हिं) एक प्रकार का बहुत बारीक चावल।
रामतरोई स्त्री० (सं) भिंडी जिसकी तरकारी बनती है
रामतारक पु०(सं) राम का तारक यंत्र-रां रामायनमः
रामति स्त्री० (हिं) १-भिक्षकों की फेरी। २-इधर-उधर घूमना।
रामदल पुं० (सं) १-रामचन्द्रजी की वानर सेना। २-बहुत बड़ी और प्रबल सेना।
रामदाना पुं० (हिं) एक प्रकार का धान।
रामदास पुं०(सं)१-हनुमान। २-एक प्रकार का धान ३-छत्रपति शिवाजी के गुरु का नाम।
रामदूत पुं० (सं) हनुमानजी।
रामधाम पु० (सं) साकेत लोक जहां भगवान राम-रूप में विराजमान माने जाते हैं।
रामनवमी स्त्री० (सं) चैत्रसुदी नवमी जो रामचन्द्रजी की जन्म तिथि है।
रामना क्रि० (हिं) घूमना। फिरना।
रामनामी स्त्री० (हिं) १-वह कपड़ा जिस पर राम-राम छपा होता है। २-एक प्रकार का हार।
रामपुर पुं० (सं) १-स्वर्ग। अयोध्या।
रामफटाका पुं० (हिं) रामानुज-संप्रदाय के लोगों के तिलक।
रामफल पु० (हिं) १-सीताफल। २-शरीफा।
रामबांस पुं० (हिं) एक प्रकार का मोटा बाँस।
रामबान वि० (सं) १-अचूक। २-तुरंत लाभकारी (औषध)।
रामभोग पुं० (सं) १-एक प्रकार का चावल। २-एक प्रकार का आम।
राममंत्र पुं० (सं) दे० 'रामतारक'।
रामरज स्त्री० (सं) एक प्रकार की पीली मट्टी।
रामरस पुं० (हिं) १-नमक। २-घोटी हुई भांग।
रामराज्य पुं० (सं) १-अत्यंत सुखदायक राज्य। २-श्रीरामचन्द्रजी का सुखदायक शासन काल।
रामराम पुं० (हिं) प्रणाम। नमस्कार। स्त्री० सामना मुलाकात।
रामरौला पु०(हिं) व्यर्थ का शोरगुल।
रामलवण पुं० (सं) साँभर। नमक।
रामलीला पुं० (सं) १-श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र की लीला। २-एक एकमात्रिक छंद।
रामवाण वि० (सं) दे० 'रामबाण'।
रामशर पुं० (सं) एक प्रकार का सरकंडा।
रामशिला स्त्री० (सं) गया का एक तीर्थ स्थान।
रामसखा पुं० (सं) सुग्रीव।
रामा स्त्री० (सं) १-सुन्दर स्त्री। २-। नदी। ३-लक्ष्मी। ४-सीता। ५-हींग। ६-गायन कला में प्रवीण स्त्री।
रामातुलसी स्त्री० (सं) एक प्रकार की तुलसी जिसका डण्ठल सफेद होता है।
रामायण पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो।
रामायणी पुं० (हिं) रामायण की कथा कहने वाला। वि० (हिं) रामायण-सम्बन्धी।
रामायन पुं० (हिं) दे० 'रामायण'।
रामायुध पुं० (सं) धनुष।
राय पुं० (हिं) १-राजा। २-सरदार। ३-भाटों की उपाधि। वि० १-बड़ा। २-बढ़िया। स्त्री० (फा) सलाह। सम्मति। (ओपीनियन)।
रायकरौंदा पुं० (हिं) बड़ा करौंदा जो बेर के बराबर होता है।
रायता पु०(हिं) दही में पड़ा कद्दू बुँदिया आदि।
रायभोग पुं० (हिं) एक प्रकार का धान।
रायमुनी स्त्री० (हिं) लाल नामक पक्षी की मादा।
रायरासि स्त्री० (हिं) राजा का कोष।
रायल वि०(अं) राजकीय। स्त्री० एक प्रकार की छपाई की कलों या कागजों का माप जो २० इंच चौड़ी और २६ इंच लम्बा होता है।
रायसा पुं० (हिं) एक काव्य जिसमें राजा के जीवन चरित्र का वर्णन होता है।
रायसाहब पुं० (हिं) एक उपाधि जो अंग्रेजों के काल में रईसों और राजकर्मचारियों को दी जाती थी।
रार स्त्री० (हिं) झगड़ा। विवाद।
राल स्त्री० (सं) १-एक प्रकार का वृक्ष। २-इस वृक्ष का निर्यास। ३-प्रायः बच्चों के आने वाला लसदार थूक।
राव पु० (सं) १-राजा। २-सरदार। ३-दे० 'राय'

**रावचाव** पुं० (हिं) १-राग-रंग। २-दुलार। प्यार।
**रावटी** स्त्री० (हिं) १-कपड़े का बना छोटा डेरा। २-किसी वस्तु का बना छोटा घर।
**रावण** वि० (सं) जो दूसरों को रुलाता हो। पुं० लंका का प्रसिद्ध राक्षसराज जिसे श्रीरामचन्द्रजी ने मारा था।
**रावणारि** पुं० (सं) रामचन्द्रजी।
**रावणि** पुं० (सं) मेघनाद।
**रावत** पुं० (हि) १-छोटा राजा। २-वीर। ३-सरदार
**रावन** पुं० (हि) दे० 'रावण'।
**रावना** क्रि० (हिं) दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।
**रावबहादुर** पु० (हिं) अंग्रेजी राज्य की दक्षिणी भारत के रईसों को दी जाने वाली उपाधि।
**रावर** पु० (हि) रनिवास। अन्तःपुर। सर्व० आपका
**रावरा** सर्व० (हि) आपका।
**रावल** पुं० (हि) १-रनिवास। २-राजा। ३-राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि। ४-प्रधान। सरदार।
**राशन** पुं०(अ)१-खाने पीने की मिलने वाली सामग्री विशेषतः अन्न और चीनी। २-नियंत्रित मूल्य पर खाने पीने की सामग्री मिलने की व्यवस्था।
**राशि** स्त्री० (सं) १-एक प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का ढेर। २-किसी का उत्तराधिकारी। ३-क्रांति-वृत्ति में पड़ने वाले तारों के बारह समूह-मेष, वृष, कन्या आदि। ४-मात्रा। (एमाउंट, सम)।
**राशिचक्र** पुं०(सं) ग्रहों के चलने का मार्ग। (जोडिएक)।
**राशिनाम** पुं०(सं)किसी का वह नाम जो उसके जन्म-काल की राशि के अनुसार होता है।
**राशिप** पुं० (सं) किसी राशि का अधिपति, देवता।
**राशिभाग** पुं० (सं) किसी राशि का अंश (ज्यो०)।
**राशिभोग** पुं० (सं) वह समय जो किसी ग्रह को किसी राशि के रहने में लगता है।
**राष्ट्र** पु०(सं) १-राज्य। २-देश। ३-वह लोक समुदाय जो एक ही देश में बसता हो या एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकताबद्ध हो। (नेशन)
**राष्ट्र-कूट** पु० (सं) दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश।
**राष्ट्रपति** पुं० (सं) आधुनिक प्रजातंत्र-प्रणाली में देश का सर्वप्रधान शासक। (प्रेजीडेन्ट)।
**राष्ट्रपतिभवन** पुं० (सं) भारत में दिल्ली स्थित राष्ट्रपति का निवास-स्थान।
**राष्ट्रपरिषद्** स्त्री० (सं) किसी राष्ट्र के मुख्य प्रतिनिधियों की सभा। (काउंसिल आफ स्टेट)।
**राष्ट्रभाषा** स्त्री० (सं) किसी देश या राष्ट्र की वह प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग वहां के अन्य भाषी लोग भी करते है। (नैशनल लैंग्वेज)।
**राष्ट्रभेद** पुं० (सं) प्राचीन राजनीति के अनुसार वह उपाय जिसके द्वारा शत्रुराजा के राज्य में उपद्रव या विद्रोह खड़ा किया जाता था।
**राष्ट्रमंडल** पुं० (सं) कुछ ऐसे राष्ट्रों का समूह जिनमें सबको समान अधिकार प्राप्त हों तथा सबके कुछ निश्चित उत्तरदायित्व हों। (कॉमनवेल्थ)।
**राष्ट्रवाद** पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के ही हित को प्रधानता दी जाय। (नैशनेलिज्म)।
**राष्ट्रवादी** पुं० (सं) वह जो अपने राष्ट्र के हित और कल्याण का पक्षपाती हो। (नैशनेलिस्ट)।
**राष्ट्र-विप्लव** पुं० (सं) किसी देश या राष्ट्र में होने वाला विद्रोह।
**राष्ट्रसंघ** पुं० (सं) संसार के कुछ प्रमुख तथा बहुत से अन्य राष्ट्रों का संघ जो द्वितीय महायुद्ध के बाद संसार में शांति बनाये रखने के लिए बनाया गया था। (युनाइटेड स्टेट्स आर्गेनाइजेशन)।
**राष्ट्रिक** पुं०(सं) किसी देश का निवासी। (नेशनल) वि० राष्ट्र का। राष्ट्र-सम्बन्धी।
**राष्ट्रीय** वि०(सं) राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का। (नेशनल)
**राष्ट्रीयकरण** पु० (सं) देश के उपयोग और उन्नति के लिए कारखाने आदि बनाने के लिए भूमि या उद्योगों को सरकार द्वारा अपने हाथ में मुआवजा दे कर ले लेने का कार्य। (नैशनेलाइजेशन)।
**राष्ट्रीयता** स्त्री० (सं) अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।
**रास** पु० (सं) कोलाहल। हल्ला। स्त्री० १-कृष्ण की गोपियों के साथ लीला का अभिनय। २-शृंखला। ३-विलास। (अ) लगाम। बागडोर।
**रासक** पुं० (सं) हास्यरस का एक प्रकार का एकांकी नाटक।
**रासचक्र** पु० (हिं) दे० 'राशिचक्र'।
**रासनशीन** पुं० (हि) गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक
**रासभ** पुं० (सं) गधा। खच्चर।
**रासभी** स्त्री० (सं) गधी।
**रासायनिक** वि० (सं) रसायनशास्त्र से संबंध रखने वाला। पुं० रसायन-शास्त्र का ज्ञाता।
**रासायनिक-परीक्षक** पुं०(सं) वह जो किसी पदार्थ के रसायनिक तत्वों का विश्लेषण या जांच करता है। (केमिकल-एक्जामिनर)।
**रासि** स्त्री० (हिं) दे० 'राशि'।
**रासु** वि० (हिं) १-सीधा। २-ठीक।
**रासो** पुं० (हिं) किसी राजा के वीरतापूर्ण युद्धों के विवरणों युक्त पद्य में लिखा जीवन चरित्र।
**रास्त** वि० (फा) १-सीधा। सरल। २-ठीक। ३-उचित।
**रास्तबाज** वि० (फा) निष्कपट। सच्चा।
**रास्ता** पुं० (फा) १-मार्ग। राह। २-प्रथा। ३-उपाय

**राह** स्त्री० (फा) १-मार्ग। रास्ता। २-प्रथा। नियम। ३-कोल्हू की नाली।
**राहखर्च** पुं०(फा) यात्रा में होने वाला खर्च। मार्ग-व्यय।
**राहगीर** पुं० (फा) पथिक। मुसाफिर।
**राहचलता** पुं० (हिं) १-पथिक। २-जिसका प्रस्तुत विषय से सम्बन्ध न हो।
**राहचल** स्त्री० (हि) रङ्गढंग।
**राहजन** पु० (फा) डाकू। लुटेरा।
**राहजनी** स्त्री० (फा) डकैती। लूट।
**राहत** स्त्री० (अ) आराम। सुख। चैन।
**राहदानी** स्त्री० (फा) पारपत्र। (पासपोर्ट)।
**राहदारी** स्त्री० (फा) सड़क का कर। चुङ्गी।
**राहना** क्रि० (हि) १-चक्की के पाटों को खुरदरा करना। २-रेती को खुरदरा करना।
**राहर** पुं० (हि) अरहर।
**राहि** स्त्री० (हि) राधा।
**राहित्य** पुं०(सं) १-न होना। २-रहित होने का भाव
**राहिन** पुं० (अ) बंधक रखने वाला व्यक्ति।
**राही** पुं० (फा) पथिक। मुसाफिर।
**राहु** पुं०(सं) नौ ग्रहों में से एक। (हि) एक प्रकार की मछली। राहू।
**राहुग्रसन** पुं० (सं) ग्रहण।
**राहुग्रास** पुं० (सं) ग्रहण।
**राहुल** पुं० (सं) गौतमबुद्ध का पुत्र।
**राहुस्पर्श** पुं०(सं) ग्रहण।
**रिंगण** पुं०(सं) १-रेंगना। २-सरकना। ३-डिगना।
**रिंगन** स्त्री० (हिं) दे० 'रिंगण'।
**रिंगाना** क्रि० (हि) १-रेंगने में दूसरे को प्रवृत्त करना। २-धीरे धीरे चलाना।
**रिंद** पुं० (फा) स्वेच्छाचारी तथा स्वच्छन्द व्यक्ति। वि० मतवाला। मस्त।
**रिश्रायत** स्त्री०(फा) १-नरमी। २-कृपा ३-छूट। कमी
**रिश्रायती** वि० (फा) कमी किया हुआ।
**रिश्रायती-छुट्टी** स्त्री० (फा) ग्यारह महीने काम करने के बाद एक महीने की मिलने वाली सवेतन छुट्टी।
**रिश्राया** स्त्री० (फा) प्रजा।
**रिकवँछ** स्त्री० (हिं) उड़द की पिट्ठी और अरुई के पत्तों का बना एक खाद्य पदार्थ।
**रिकशा** पुं०(अं) दो पहियों की एक छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचता है।
**रिकाब** स्त्री० (हिं) 'रकाब'।
**रिकाबी** स्त्री० (हिं) दे० 'रकाबी'।
**रिक्त** स्त्री० (हिं) १-खाली। शून्य। २-निर्धन। गरीब पुं० जंगल। वन।
**रिक्तता** स्त्री० (सं) खाली या रिक्त होने का भाव।
**रिक्तस्थान** पुं० (सं) किसी कर्मचारी अथवा अधिकारी के हट जाने पर खाली होने वाला स्थान। (वेकेन्सी)।
**रिक्ता** स्त्री०(सं) चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां
**रिक्ति** स्त्री०(सं) १-खाली होना। २-दे० 'रिक्तस्थान' (वेकेन्सी)।
**रिक्थ** पुं० (सं) १-भू-संपति या धन दौलत। (प्रोपर्टी) २-वह पूँजी जो किसी कारबार में लगाई हो और डूबने वाली न हो। (एसेट्स)।
**रिक्थ-पत्र** पुं०(सं) इच्छापत्र। वसीयतनामा (विल)
**रिक्थहारी** पुं०(सं) १-वह जिसे उत्तराधिकार धन संपत्ति मिले। २-मामा।
**रिक्थी** पुं०(सं) धनसंपत्ति का उत्तराधिकारी।
**रिक्शा** स्त्री० (हि) दे० 'रिकशा'।
**रिक्ष** पुं० (हि) दे० 'ऋक्ष'।
**रिक्षपति** पुं० (हि) दे० 'ऋक्षपति'।
**रिखभ** पुं० (हि) दे० 'ऋषभ'।
**रिखि** पुं० (हि) दे० 'ऋषि'।
**रिग** पु० (हि) दे० 'ऋक्'।
**रिचा** स्त्री० (हि) दे० 'ऋचा'।
**रिचीक** पुं० (हि) दे० 'ऋचीक'।
**रिच्छ** पुं० (हि) भालू।
**रिजक** पुं० (अ) जीविका।
**रिजाली** स्त्री० (फा) निर्लजता।
**रिजु** वि० (हि) दे० 'ऋजु'।
**रिज्क** पुं० (अ) रोजी। खुराक।
**रिझकवार** पुं० (हि) १-रीझने वाला। २-किसी गुण पर प्रसन्न होने वाला।
**रिझवना** क्रि० (हि) दे० 'रिझाना'।
**रिझवार** पुं०(हि) प्रसन्न होने वाला। अनुरागी।
**रिझाना** क्रि० (हि) १-किसी को अपने ऊपर प्रसन्न करना। २-लुभाना।
**रिझायल** वि० (हिं) रीझने वाला।
**रिझाव** पुं० (हि) रीझने की क्रिया या भाव।
**रिझावना** क्रि० (हि) दे० 'रीझना'।
**रितु** स्त्री० (हि) दे० 'ऋतु'।
**रितुवंती** स्त्री० (हि) रजस्वला स्त्री।
**रितना** क्रि० (हिं) खाली होना।
**रितवना** क्रि०(हिं) खाली करना।
**रिद्धि** स्त्री० (हि) दे० 'ऋद्धि'।
**रिन** पुं० (हिं) दे० 'ऋण'।
**रिनिश्राँ** वि० (हि) ऋणी। कर्जदार।
**रिनी** वि० (देश) ऋणी।
**रिपु** पुं० (सं) १-शत्रु। वैरी। २-जन्मकुण्डली में लग्न से छठा स्थान।
**रिपुघातु** वि० (स) शत्रुओं का नाश करने वाला।
**रिपुघ्न** वि० (सं) रिपुघाती।
**रिपुता** स्त्री० (सं) शत्रुता। दुश्मनी।

**रिपोर्ट** स्त्री० (अं) १-किसी घटना का विस्तार से वर्णन जो किसी को सूचना देने के लिए किया जाय २-किसी संस्था आदि के कार्यों का विवरण।
**रिपोर्टर** पुं० (अं) १-संवाददाता। २-रिपोर्ट लिखने वाला व्यक्ति।
**रिमझिम** स्त्री० (हि) वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें गिरना फुहार। अव्य० छोटी बूँदों के रूप में (वर्षा)।
**रियासत** स्त्री०(अ)१-राज्य। अमलदारी। २-अमीरी। रईसी। ३-वैभव।
**रियासती** वि० (अ) रियासत सम्बन्धी।
**रियाह** स्त्री० (अ) शरीर के अन्दर की वायु।
**रिर** स्त्री० (हि) हठ। जिद।
**रिरना** क्रि० (हि) गिड़गिड़ाना।
**रिरिहा** पुं० (हि) गिड़गिड़ाकर दीनतापूर्वक मांगने वाला।
**रिलना** क्रि०(हि)१-मिल जाना। २-पैठना। घुसना
**रिवाज** पुं० (अ) रस्म। रिवाज। प्रथा।
**रिवाल्वर** पुं० (अं) एक प्रकार का तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियां भरी जा सकती है।
**रिश्ता** पुं० (फा) नाता। सम्बन्ध।
**रिश्तेदार** पुं० (फा) नातेदार। सम्बन्धी।
**रिश्तेदारी** स्त्री० (फा) सम्बन्ध। नाता।
**रिश्तेमंद** पुं० (फा) सम्बन्धी। नातेदार।
**रिश्वत** स्त्री० (अ) घूस। उत्कोच। (ब्राइब)।
**रिश्वतखोर** पुं० (अ) घूस लेने या खाने वाला।
**रिश्वतखोरी** स्त्री० (अ) घूस लेने का भाव या काम।
**रिषभ** पुं० (हि) दे० 'ऋषभ'।
**रिष** पुं० (हि) दे० 'ऋषि'।
**रिष्ट** पुं० (सं)१-कल्याण। मंगल। २-अमंगल। नाश वि० नष्ट। बरबाद। (हि) १-मोटाताजा। २-प्रसन्न
**रिस** स्त्री० (हि) क्रोध। गुस्सा।
**रिसना** क्रि० (हि) बहुत बारीक छिद्रों में से निकलना रसना।
**रिसवाना** क्रि० (हि) दे० 'रिसाना'।
**रिसहा** वि० (हि) क्रोधी।
**रिसाना** क्रि० (हि) १-क्रुद्ध होना। २-दूसरे को क्रुद्ध करना।
**रिसानी** स्त्री० (हि) क्रोध।
**रिसाल** पुं० (फा) राज्यकर।
**रिसालदार** पुं० (फा) १-घुड़सवार सेना का अधिकारी। २-राज्यकर ले जाने वालों का प्रधान संचालक।
**रिसाला** पुं० (अ) १-घुड़सवार सेना। २-मासिक पत्र।
**रिसि** स्त्री० (हि) दे० 'रिस'।
**रिसिआना** क्रि० (हि) १-क्रुद्ध होना। २-दूसरे को क्रुद्ध करना।
**रिसिक** स्त्री० (हि) तलवार।
**रिसियाना** क्रि० (हि) दे० 'रिसिआना'।
**रिसौंहा** वि०(हि) १-क्रोध से भरा। २-थोड़ा नाराज
**रिहन** पुं० (अ) गिरवी रखना। रेहन।
**रिहननामा** पुं० (अ) वह लेख जिसमें किसी वस्तु के रेहन का उल्लेख हो।
**रिहल** स्त्री०(अ)किताब खोल कर रखने की कैंचीनुमा तख्ती।
**रिहा** वि० (फा) १-मुक्त। बंधनों से छूटा हुआ। २-संकट आदि से मुक्त।
**रिहाई** स्त्री० (फा) मुक्ति। छुटकारा।
**रींधना** क्रि० (हि) दे० 'राँधना'।
**री** अव्य०(हि) एरी। अरी (स्त्रियों के लिए सम्बोधन-सूचक शब्द)।
**रीछ** पुं० (हि) भालू।
**रीछराज** पुं० (हि) जामवंत।
**रीझ** स्त्री० (हि) १-किसी बात पर प्रसन्न होना। २-मोहित होने का भाव।
**रीझना** क्रि० (हि) मोहित या मुग्ध होना।
**रीढ** वि० (हि) बुरा। खराब। स्त्री० तलवार।
**रीठा** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल कपड़े धोने के काम आते हैं।
**रीठी** स्त्री० (हि) दे० 'रीठा'।
**रीढ़** (हि) स्त्री० पीठ के बीच की लम्बी खड़ी हड्डी। मेरुदण्ड।
**रीत** स्त्री० (हि) दे० 'रीति'।
**रीतना** क्रि०(हि) १-खाली करना। २-रिक्त होना।
**रीता** वि० (हि) खाली। रिक्त।
**रीति** स्त्री०(सं) १-किसी काम को करने का ढंग। २-रस्म। नियम। कायदा। ३-विशिष्ट पद रचना।
**रीतिकाल** पुं० (स) हिन्दी साहित्य का वह काल जब रीति-ग्रन्थ रचने की प्रवृत्ति थी।
**रीतिग्रंथ** पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें ओज, माधुर्य आदि गुणों का विवेचन हो।
**रीम** स्त्री० (अं) वह कागज की गड्डी जिसमें बीस दस्ते हों।
**रीस** स्त्री० (हि) दे० 'रिस'।
**रीसना** क्रि० (हि) क्रुद्ध होना।
**रुंज** पुं० (देश) एक प्रकार का बाजा।
**रुंड** पुं० (सं) १-सिर कट जाने पर बचा हुआ धड़। २-वह शरीर जिसके हाथ पैर कट गये हों।
**रुंदवाना** क्रि० (हि) रौंदवाना। पैरों से कुचलवाना।
**रुंधती** स्त्री० (हि) वशिष्ठ मुनि की स्त्री का नाम।
**रुंधना** क्रि० (हि) १-मार्ग रुकना। २-उलझना। ३-घेरा जाना।
**रु** अव्य० (हि) और। पुं० १-शब्द। २-वध। ३-गति।

रुआं पुं० (हिं) रोम। रोआं।
रुआना क्रि० (हि) रुलाना।
रुआब पु० (हिं) १-धाक। रोब। २-भय। आतंक।
रुई स्त्री० (हिं) १-कपास के डोडे का रेशेदार घूआ जिसे कातकर सूत बनाया जाता है। २-बीजों के ऊपर का रोआँ।
रुईदार वि० (हिं) जिसमें रुई भरी हो।
रुकना क्रि० (हि) १-अटकाना। अवरुद्ध होना। २-आगे बढ़ना। किसी चलते हुए काम का बंद हो जाना।
रुकवाना क्रि० (हि) रुकने का काम दूसरे से कराना।
रुकाव पुं० (हिं) १-रुकावट। रोक। २-मलावरोध। कब्ज्। ३-स्तंभन।
रुकावट स्त्री० (हिं) रुकने की क्रिया या भाव। अवरोध। २-बाधा। विघ्न।
रुक्का पुं० (अ) १-छोटा पत्र। पुरजा। परचा। ऋण लेते समय वाला लेख।
रुक्ख पुं० (हि) वृक्ष। रूख।
रुक्मिणी स्त्री० (सं) श्रीकृष्ण की रानी।
रुक्ष वि० (सं) १-जिसमें चिकनाहट न हो। रूखा। २-खुरदरा। ३-शुष्क। पुं० वृक्ष।
रुक्षता स्त्री०(सं) रूखापन। रूखाई।
रुख पुं० (फा) १-कपोल। गाल। २-मुख। आकृति। ४-चेष्टा। ५-कृपादृष्टि। ६-सामने का भाग। ७-शतरंज की एक गोट।
रुखसत स्त्री० (अ) १-छुट्टी। अवकाश। २-विदाई।
रुखसताना पुं० (फा) वह इनाम जो विदा होते समय दिया जाता है (राजा या रईस द्वारा)
रुखसती वि० (हि) जिसे छुट्टी मिली हो। स्त्री० १-दुलहन की विदाई। २-विदा के समय दिया जाने धन।
रुखसार पुं० (फा) कपोल। गाल।
रुखाई स्त्री० (हिं) १-रूखापन। २-व्यवहार की कठोरता। ३-शुष्कता।
रुखाना क्रि० (हिं) १-रूखा होना। २-नीरस होना सूखना।
रुखानी स्त्री० (हिं) १-बढ़इयों का एक औजार। २-संगतराश की एक टांकी।
रुखावट स्त्री० (हि) दे० 'रुखाई'।
रुखाहट स्त्री० (हिं) दे० 'रुखाई'।
रुखिता स्त्री० (हिं) रूठने वाली नायिका।
रुखौंहा वि० (हिं) रुखा सा। रुखाई लिये हुए।
रुग्ण वि० (हिं) १-अस्वस्थ। बीमार २-झुका हुआ।
रुग्णतावकाश पुं० (सं) बीमारी के कारण से लिया गया अवकाश या छुट्टी। (मेडिकल लीव)।
रुच स्त्री० (हि) दे० 'रुचि'।
रुचना क्रि० (हिं) पसंद आना। रुचि के अनुकूल होना।
रुचि स्त्री० (सं) १-मन की प्रवृत्ति चाह। २-किरण। ३-शोभा। ४-भूख। ५-स्वाद।
रुचिकर वि० (सं) रुचि प्रसन्न करने वाला। पसंद।
रुचिकारक वि० (सं) १-रुचिकर। २-स्वादिष्ट।
रुचिकारी वि० (सं) स्वादिष्ट। २-मनोहर।
रुचिता स्त्री० (सं) १-रोचकता। २-अनुराग। ३-सुन्दरता।
रुचिमति स्त्री० (सं) उग्रसेन की पत्नी और श्रीकृष्ण की नानी का नाम।
रुचिर वि०(सं) १-सुन्दर। २-मीठा। ३-भूख बढ़ाने वाला।
रुचिराई स्त्री० (हि) सुन्दरता। मनोहरता।
रुचिवर्द्धक वि० (सं) १-भूख बढ़ाने वाला। २-रुचिकर।
रुच्छ वि० (हि) १-रूखा। २-क्रुद्ध। पुं० दे० 'रूख'
रुज पु० (सं) १-रोग। २-कष्ट। ३-घाव। ४-भांग।
रुजग्रस्त वि० (सं) रोगी। बीमार।
रुजाली स्त्री० (सं) रोग या कुष्ठों का समूह।
रुजी वि० (हि) अस्वस्थ। बीमार।
रुजू वि० (अ) प्रवृत्त।
रुझना क्रि०(हि) १-घाव आदि भरना। २-उलझना।
रुझान पु० (अ) १-किसी ओर प्रवृत्त होना। २-साधारण प्रवृत्ति।
रुठ पुं० (हि)क्रोध। अमर्ष। गुस्सा।
रुठना क्रि० (हि) दे० 'रूठना'।
रुठाना क्रि० (हिं) किसी को रूठने में प्रवृत्त करना। नाराज करना।
रुणित वि० (सं) बजता हुआ।
रुत स्त्री०(हिं) दे० 'ऋतु'। पुं० कलरव। शब्द। ध्वनि
रुतबा पुं० (अ) १-पद। २-ओहदा। ३-प्रतिष्ठा।
रुतबादार वि० (अ) प्रतिष्ठित।
रुदन पुं० (सं) रोना। क्रन्दन।
रुदराछ पुं० (हिं) दे० 'रुद्राक्ष'।
रुदित वि० (सं) रोता हुआ।
रुद्ध वि० (सं) १-घेरा हुआ। रोका हुआ। २-मुँदा हुआ। ३-जिसकी गति रोक ली गई हो।
रुद्धकण्ठ वि०(सं) जिसका का गला रुँध गया हुआ।
रुद्र पु० (सं) एक प्रकार के गण देवता। २-ग्यारह की संख्या। ३-शिव का उग्र रूप। ४-रौद्ररस। वि० भयंकर। डरावना।
रुद्रपति पुं० (सं) शिव। महादेव।
रुद्रपत्नी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-अलसी।
रुद्रप्रिया स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-हर्रे।
रुद्रभूमि स्त्री० (सं) श्मशान। मरघट।
रुद्रविंशति स्त्री० (सं) प्रभवादि साठ वर्षों में अंतिम बीस वर्ष।
रुद्राक्ष पु०(सं) एक वृक्ष जिसके गोल बीजों की माला

बनाई जाती है।
**रुद्राणी** स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-एक लता। ३-एक रागिनी।
**रुद्रारि** पुं० (सं) कामदेव।
**रुद्रावास** पुं०(सं) काशीक्षेत्र जहाँ शिवजी का निवास माना जाता है।
**रुधिर** पुं० (सं) १-खून। लहू। २-केसर। ३-मंगल-ग्रह।
**रुधिरपायी** पुं० (सं) १-रक्त पीने वाला। २-राक्षस
**रुधिरपित्त** पुं० (सं) नकसीर रोग।
**रुधिराशन** पुं० (सं) राक्षस।
**रुनझुन** स्त्री० (हिं) झनकार। नूपुर आदि के बजने का स्वर।
**रुनाई** स्त्री० (हिं) लाली। सुर्खी।
**रुनित** वि० (हिं) बजता हुआ।
**रुनुक-झुनुक** स्त्री० (हिं) नूपुर आदि का रुनझुन शब्द
**रुपना** क्रि० (हिं) १-रोपा जाना। लगाया जाना २-अड़ना।
**रुपमनी** स्त्री० (हिं) सुन्दर स्त्री।
**रुपया** पुं० (हिं) भारत में प्रचलित एक सिक्का। जो सोलह आने का होता है। धन। संपत्ति।
**रुपया-पैसा** पुं० (हिं) धन। संपत्ति।
**रुपयावाला** वि० (हिं) अमीर। धनी।
**रुपहला** वि० (हिं) चांदी के रङ्ग का।
**रुपैया** पुं० (हिं) रुपया।
**रुबाई** पुं० (अ) उर्दू या फारसी की चार चरण वाली कविता।
**रुमंच** पुं० (हिं) दे० 'रोमांच'।
**रुमांचित** वि०(हिं) दे० 'रोमांचित'।
**रुमा** स्त्री० (सं) सुग्रीव की पत्नी का नाम।
**रुमाल** पुं० (फा) दे० 'रूमाल'।
**रुमावली** स्त्री० (हिं) दे० 'रोमावली'।
**रुराई** स्त्री० (हिं) सुन्दरता।
**रुरु** पुं० (सं) १-कस्तूरी मृग। २-एक वृक्ष का नाम। ३-एक ऋषि का नाम।
**रुरुआ** पुं० (हिं) एक प्रकार का बड़ा उल्लू।
**रुरुक्ष** वि० (सं) रूक्ष। रूखा।
**रुलना** क्रि० (हिं) इधर-उधर मारा फिरना। ठोकरें खाना।
**रुलाई** स्त्री० (हिं) रोना। रोने की क्रिया या भाव।
**रुलाना** क्रि० (हिं) १-दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। २-इधर-उधर रुलने देना।
**रुवाई** स्त्री० (हिं) दे० 'रुलाई'।
**रुष्ट** वि० (सं) कुपित। अप्रसन्न। नाराज।
**रुष्टता** स्त्री० (सं) रुष्ट होने का भाव। अप्रसन्नता।
**रुसना** क्रि० (हिं) दे० 'रूसना'।
**रुसवा** वि० (फा) निन्दित। जलील।
**रुसवाई** वि० (फा) अपमान और दुर्गति।
**रुसित** वि० (हिं) रुष्ट। नाराज।
**रुसूम** पुं० (हिं) दे० 'रसूम'।
**रुसूल** पुं० (अ) पैगम्बर। रसूल।
**रुस्ट** वि० (हिं) दे० 'रुष्ट'।
**रुस्तम** पुं० (फा) १-फारस देश का एक प्रसिद्ध पहलवान। २-बहुत वीर।
**रुहठि** स्त्री० (हिं) रूठने की क्रिया या भाव।
**रुहिर** पुं० (हिं) लहू। खून। रक्त।
**रुहेलखंड** पुं०(सं) अवध के पश्चिमोत्तर भाग का एक प्रदेश।
**रुहेला** पुं० (हिं) रुहेलखण्ड में बसने वाले पठानों की एक जाति।
**रूँदना** क्रि० (हिं) दे० 'रौंदना'।
**रूँधना** क्रि०(हिं)१-चारों ओर से कँटीले झाड़ आदि से घेरना। २-रोकना।
**रू** पुं० (फा) १-मुँह। चेहरा। २-द्वार। ३-आशा। ४-सिरा। ५-सामना।
**रूई** स्त्री० (हिं) दे० 'रुई'।
**रूक्ष** वि० (सं) जो चिकना न हो। रूखा।
**रूख** पुं० (हिं) पेड़। वृक्ष।
**रूखना** क्रि० (हिं) रूठना। रूसना।
**रूखरा** पुं० (हिं) वृक्ष। पेड़।
**रूखा** वि०(हिं) १-जो चिकना न हो। २-फीका। ३-नीरस। ४-खुरदरा। ५-शीलरहित। ६-विरक्त।
**रूखापन** पुं० (हिं) १-रुखाई। २-नीरसता। ३-कठोरता। ४-स्वादहीनता। ५-उदासीनता।
**रूखासूखा** वि० (हिं) १-बिना मसाले का। २-बिना घी का। ३-सादा।
**रूचना** क्रि० (हिं) दे० 'रुचना'।
**रूज** पुं० (हिं) एक प्रकार की कलई करने की लाल बुकनी।
**रूझना** क्रि० (हिं) उलझना।
**रूठ** स्त्री० (हिं) १-रूठने की क्रिया या भाव। २-क्रोध
**रूठन** स्त्री०(हिं) नाराजगी। रूठने की क्रिया या भाव
**रूठना** क्रि० (हिं) १-रूसना। २-अप्रसन्न हो कर चुप या अलग हो जाना।
**रूठनि** स्त्री० (हिं) दे० 'रूठन'।
**रूड़** वि० (हिं) श्रेष्ठ। उत्तम।
**रूड़ो** वि० (हिं) दे० 'रूड़'।
**रूढ़** वि० (सं) १-चढ़ा हुआ। २-आरूढ़। ३-उत्पन्न ३-गँवार। ४-कठोर। ५-अकेला। पुं० यौगिक शब्द जिसके खण्ड करने पर कोई अर्थ न निकले।
**रूढ़यौवन** स्त्री० (सं) एक प्रकार की नायिका।
**रूढ़ा** स्त्री०(सं)वह लक्षणा जो प्रचलित चली आती हो और जिसका व्यवहार भिन्न अर्थ के लिए न हो।
**रूढ़ि** स्त्री० (सं) १-चढ़ाई। २-वृद्धि। ३-उभार। ४-

जन्म। ५-उत्पत्ति। ६-ख्याति। ७-विचार। ८-बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा। (कस्टम)।
**रूप** पुं० (सं) १-शकल। सूरत। स्वभाव। ३-सौंदर्य ४-शरीर। ५-वेष। भेस। ६-दशा। अवस्था। ७-समान। तुल्य। ८-चिह्न। ६-भेद। १०-रूपक। ११-चांदी।
**रूपक** पुं० (सं) १-मूर्ति। प्रतिकृति। २-वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है। ३-एक परिमाण का नाम। ४-चांदी। ५-रुपया। ६-सात मात्रा की एक ताल।
**रूपक-कार्यक्रम** पुं० (सं) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित प्रहसन, नाटक आदि। (फीचर-प्रोग्राम)।
**रूपकातिशयोक्ति** स्त्री० (सं) वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाया जाता है।
**रूपगर्विता** स्त्री० (सं) वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व हो।
**रूपजीविनी** स्त्री० (सं) वेश्या। रंडी।
**रूपजीवी** पुं० (सं) बहुरूपिया।
**रूपभेद** पुं० (सं) स्वरूप या अर्थ में आंशिक परिवर्तन या अदल बदल करना। (मॉडिफिकेशन)।
**रूपमनी** वि० (हि) रूपवती।
**रूपमय** वि० (हि) अतिशय सुन्दर।
**रूपरेखा** स्त्री० (सं) १-किसी योजना का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार आदि की परिचायक हो। (प्लान)। २-वह चित्र जो केवल रेखा रूप में हो। (स्केच)। ३-किसी कार्य के सम्बन्ध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है। (आउट लाइन)।
**रूपवंत** वि० (हि) सुन्दर। रूपमान।
**रूपव** वि० (हि) दे० 'रूपवंत'।
**रूपवान** वि० (सं) सुन्दर।
**रूपशाली** वि० (सं) रूपमान्। सुन्दर।
**रूपांकक** पुं० (सं) किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक तथा सुन्दर ढङ्ग या नमूना निश्चित करने वाला। (डिजाइनर)।
**रूपांकन** पुं० (सं) किसी वस्तु की रूपरेखा। बनावट आदि सुन्दर कलात्मक ढंग से बनाना (डिजाइन) निश्चित करने वाला। (डिजाइनर)।
**रूपांतर** पुं० (सं) किसी वस्तु का परिवर्तित रूप (ट्रांसफॉरमेशन, वेरिएशन्स)।
**रूपांतरण** पु० (सं) किसी वस्तु के रूप आदि का बदल दिया जाना। (ट्रांसफॉरमेशन)।
**रूपांतरित** वि० (सं) जिसका रूप आदि बदल दिया गया हो (ट्रांसफोर्म)।
**रूपा** पुं० (हि) १-चांदी। सफेद घोड़ा। ३-घटिया चांदी।
**रूपाजीवी** स्त्री० (हि) वेश्या।
**रूपाध्यक्ष** पुं० (सं) टकसाल का प्रधान अधिकारी।
**रूपी** वि० (सं) १-रूपधारी। २-तुल्य। समान। ३-सुन्दर।
**रूपोपजीविनी** स्त्री० (सं) वेश्या। रंडी।
**रूपोपजीवी** पुं० (हि) बहुरूपिया।
**रूप्यक** पुं० (सं) रुपया।
**रूम** पुं० (फा) तुर्की देश का एक नाम। पुं० (अं) कमरा।
**रूमना** क्रि० (हि) झूलना। झूमना।
**रूमाल** पुं० (हि) १-हाथ मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा। पजामे की मियानी।
**रूरना** क्रि० (हि) चिल्लाना। जोर से शब्द करना।
**रूरा** वि० (हि) १-श्रेष्ठ। उत्तम। २-सुन्दर। ३-बहुत बड़ा।
**रूल** पुं० (अं) १-नियम। कायदा। २-लकीर खींचने का डंडा। ३-सीधी खींची हुई लकीर।
**रूलर** पुं० (अं) १-सीधी लकीर खींचने का डंडा। २- शासक।
**रूलना** क्रि० (हि) दबा देना। २-रुलना।
**रूष** पुं० (हि) दे० 'रूख'।
**रूषा** वि० दे० 'रूखा'।
**रूसना** क्रि० (हि) दे० 'रूठना'।
**रूसा** स्त्री० (हि) एक सुगंधित घास जिसमें से तेल निकालते हैं।
**रूसी** वि०(हि) रूस देश का। रूस देश संबंधी। स्त्री० (हि) रूस देश की भाषा। २-रूस देश का निवासी। पुं० (देश) सिर के ऊपर की पतली झिल्ली जो टुकड़े हो-होकर उतरती है।
**रूह** स्त्री० (अ) १-आत्मा। जीव। २-सत्त। सार। ३-एक प्रकार का इत्र।
**रूहना** क्रि० (हि) १-चढ़ना। २-उमड़ना। ३-चारों ओर से घिरना। ४-रुंधना।
**रूहानी** वि० (अ) आत्मिक।
**रेंकना** क्रि० (हि) १-गधे का बोलना। २-भद्दे या बे सुरे ढंग से गाना।
**रेंगटा** पुं० (हि) गधे का बच्चा।
**रेंगना** क्रि० (हि) १-धीरे-धीरे चलना। २-धीरे-धीरे जमीन से रगड़ खाते हुए चलना।
**रेंगनी** स्त्री० (हि) भटकटैया।
**रेंगाना** क्रि० (हि) पेट के बल धीरे-धीरे चलाना।
**रेंट** पुं० (हि) नाक का मल।
**रेंड़** पुं० (हि) एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।
**रेंड़ खरबूज़ा** पुं० (हि) पपीता।
**रेंड़ी** स्त्री० (हि) रेंड का बीज।
**रे** अव्य० (सं) छोटे या तुच्छ आदमियों के लिये

सम्बोधन । पुं० (हिं) सरगम का एक स्वर ।
रेउड़ी स्त्री (हिं) दे० 'रेवड़ी' ।
रेख स्त्री० (हिं) १-रेखा । २-चिह्न । ३-नई निकली हुई मूछें ।
रेखता पुं० (फा) १-एक प्रकार की गजल । २-उर्दू भाषा का आरम्भिक रूप और नाम ।
रेखना क्रि० (हिं) १-रेखा या लकीर खींचना । २-खरोंचना ।
रेखा स्त्री० (सं) १-लकीर । २-लम्बा और पतला चिह्न २-वह जिसमें लम्बाई हो पर चौड़ाई या मोटाई न हो (रेखागणित) । ३-गणना । गिनती । ४-रूप आकार । ५-हथेली की लकीरें जिनसे ज्योतिषी भाग्यफल बताता है । ६-हीरे के बीच में दिखाई देने वाली लकीर ।
रेखागणित पुं० (सं) गणित का वह विभाग जिसमें कोणों, रेखाओं और वृत्तों का विवरण होता है (ज्यामेट्री) ।
रेखाचित्र पुं० (सं) किसी व्यक्ति या वस्तु का रेखाओं के रूप में बना चित्र । (स्केच) ।
रेखापत्र पुं० (सं) १-आंकड़ों का सारिणीयुक्त विवरण । २-नौपरिवहन में प्रयुक्त होने वाला मानचित्र । रूपरेखा । (चार्ट) ।
रेखित वि० (हि) १-खिंचा हुआ । अङ्कित । २-जिस पर लकीर पड़ी हो । ३-मसका हुआ ।
रेखित-धनादेश पुं० (सं) वह धनादेश जिस पर एक ओर दो रेखा खिंची होती हैं और जिसका रुपया केवल बैंक के दूसरे हिसाब में जमा हो सकता है, नकद रुपया सीधा नहीं मिल सकता । (क्रास्डचैक)
रेग स्त्री० (फा) बालू ।
रेगिस्तान पुं० (फा) मरुस्थल । बालू या रेत का मैदान ।
रेचक वि० (सं) जिसके खाने से दस्त आये ।
रेचन पुं० (सं) १-दस्त लाना । २-जुल्लाब ।
रेचना क्रि० (हि) वायु या मल को बाहर निकालना
रेजगारी स्त्री० (हि) १-छोटे सिक्के-इकन्नी, दुअन्नी आदि । २-छोटे टुकड़े ।
रेजगी स्त्री० (हि) दे० 'रेजगारी' ।
रेजा पुं० (फा) १-बहुत छोटा टुकड़ा । २-मजदूर का लड़का । ३-सुनार का एक औजार । ४-कपड़े आदि का खण्ड ।
रेण स्त्री० (स) १-धूल । २-बालू । ३-पृथ्वी । ४-कणिका ।
रेणका स्त्री०(सं) १-बालू । रेत । । २-रज । धूल । ३-पृथ्वी । ४-परशुराम की माता का नाम ।
रेत पुं० (हिं) १-वीर्य । २-रज । ३-पारा । स्त्री० १-बालू । २-बलुआ मैदान ।
रेतना क्रि०(हि) रेती से रगड़ कर काटना या छीलना।
रेता पुं० (हि) १-बालू । २-धूल । ३-बालुआ मैदान
रेती स्त्री० (हि) १-एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु पर रगड़ने से महीन कण कट कर गिरते हैं । २-रेतीली भूमि । ३-नदी के बीच की भूमि ।
रेतीला वि० (हि) बालुकामय । जिसमें या जहां रेत हो ।
रेनु स्त्री० (हिं) दे० 'रेणु' ।
रेनुका स्त्री० (हि) दे० 'रेणुका' ।
रेफ पुं० (सं) १-किसी अक्षर के ऊपर आने वाला हलंत रकार जैसे सर्प । २-रकार (र) । ३-राग ।
रेरुआ पुं० (हिं) बड़ा उल्लू पक्षी ।
रेरुवा पुं० (हिं) बड़ा उल्लू पक्षी ।
रेल स्त्री० (सं) १-लोहे के शहतीर । २-वह रेल की पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है । ३-भाप के इन्जन के द्वारा चलने वाली गाड़ी । (हि) १-बहाव २-आधिक्य ।
रेलगाड़ी स्त्री० (हि) लोहे की पटरी पर चलने वाली गाड़ी । (रेलवे ट्रेन) ।
रेलठेल स्त्री० (हि) १-भारी भीड़ । २-मार-मार । ३-अधिकता ।
रेलना क्रि०(देश)१-धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना ढकेलना । २-अधिक होना ।
रेलमंत्री पुं० (हि) मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके आधीन रेल विभाग हो ।
रेलपेल स्त्री० (हि) दे० 'रेलठेल' ।
रेला पुं० (देश) १-तेज बहाव । २-समूह द्वारा धावा ३-जनसमूह का आगे बढ़ना ।
रेवड़ पुं० (देश) भेड़ बकरी आदि का झुण्ड ।
रेवड़ी स्त्री० (हि) तिल और चीनी की बनी मीठी टिकिया ।
रेवतक पुं० (सं) कबूतर । परावत ।
रेवती स्त्री० (स) १-सत्ताइसवां नक्षत्र । २-बलराम का नाम । ३-दुर्गा । ४-गाय ।
रेवतीरमण पुं० (सं) बलराम ।
रेवा स्त्री० (सं) १-नर्मदा नदी का एक नाम । २-रति ३-नील का पौधा ।
रेशम पुं० (फा) एक प्रकार का महीन, चमकीला तथा दृढ़ रेशा जिससे कपड़े बनाए जाते हैं ।
रेशमी वि० (फा) १-रेशम का बना हुआ । २-मुलायम ।
रेशा पुं० (फा) महीन सूत । तंतु ।
रेष पुं० (सं) १-क्षति । हानि । २-हिंसा । स्त्री० (हि) दे० 'रेख' ।
रेह स्त्री० (हि) खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है ।
रेहन पुं० (फा) किसी के पास कोई वस्तु इस शर्त पर रखना कि ऋण चुकाने पर लौटाली जायगी । बंधक

**रेहनदार** पुं० (फा) वह जिसके पास कोई वस्तु बंधक रखी जाय।
**रेहननामा** पुं० (फा) वह कागज जिस पर रेहन की शर्त लिखी हो।
**रेहल** स्त्री० (अ) दे० 'रिहल'।
**रेहुआ** वि० (हिं) जिसमें रेह अधिक हो।
**रैअति** स्त्री० (हिं) दे० 'रैयत'।
**रैतुआ** पुं० (हिं) दे० 'रायता'।
**रैदास** पुं० (हिं) एक प्रसिद्ध भक्त जो चमार जाति के थे।
**रैन** स्त्री० (हिं) रात्रि। रात।
**रैनि** स्त्री० (हिं) रात।
**रैनी** स्त्री० (हिं) चांदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिए बनाई जाती है।
**रैमुनिया** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की अरहर।
**रैयत** स्त्री० (अ) रिआया। प्रजा।
**रैयाराव** पुं० (हिं) १-छोटा राजा। २-सरदार।
**रैल** स्त्री० (देश) समूह। राशि।
**रैवत** पुं० (सं) १-शिव। २-एक पर्वत जो गुजरात में है। ३-मेघ। ४-एक दैत्य।
**रोआँ** पुं० (हिं) दे० 'रोयाँ'।
**रोंगटा** पुं० (हिं) लोम। रोयां।
**रोंगटी** स्त्री० (हिं) खेल में बेइमानी करना।
**रोंव** पुं० (हिं) शरीर के बाल। रोम।
**रोआब** पुं० (हिं) प्रभाव। आतंक।
**रोक** स्त्री० (हिं) १-रुकावट। अवरोध। २-प्रतिबंध (चेक)। ३-निषेध। ४-रोकने वाली बात।
**रोकझोंक** स्त्री० (हिं) दे० 'रोकटोक'।
**रोकटोक** स्त्री० (हिं) वह आंच जो कहीं आने-जाने या कुछ करते समय बीच में हो। मनाही। निषेध।
**रोकड़** पुं० (हिं) १-नकद रुपया पैसा आदि (कैश) २-जमा। धन। पूँजी।
**रोकड़-बही** स्त्री० (हिं) वह बही जिसमें प्रति दिन का आय-व्यय लिखा जाता है। (कैशबुक)।
**रोकड़-बिक्री** स्त्री० (हिं) वह बिक्री जो नकद दाम लेकर की गई हो।
**रोकड़िया** पुं०(हिं) वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और जमा-खर्च का हिसाब होता है। (कैशियर)।
**रोकथाम** स्त्री० (हिं) किसी अनुचित कार्य को रोकने का प्रयत्न।
**रोकना** क्रि० (हिं) १-कहीं जाने से मना करना। २-होती हुई बात को बन्द करना। ३-मना करना। ४-बाधा डालना। ५-आगे न बढ़ने देना। ६-काबू में रखना। ७-बढ़ती हुई सेना या दल का सामना करना।
**रोख** पुं० (हिं) दे० 'रोष'।
**रोग** पुं० (सं) शरीर के अस्वस्थ होने की अवस्था बीमारी। मर्ज। व्याधि।
**रोगकारक** वि० (सं) बीमारी पैदा करने वाला।
**रोगग्रस्त** वि० (सं) रोग से पीड़ित।
**रोगन** पुं० (फा) १-तेल। चिकनाई। २-चमकाने के लिए लगाया जाने वाला लेप (पॉलिश) (वारनिश) ३-लाख आदि से बना मसाला। ४-चमड़ा मुलायम करने का मसाला।
**रोगनदार** वि० (फा) जिस पर रोगन किया गया हो।
**रोगनाशक** वि० (सं) बीमारी दूर करने वाला।
**रोगनिदान** पुं० (सं) रोग के लक्षण, उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान। (डायग्नोसिस)।
**रोगनिरोधकद्रव्य** पुं० (सं) वह दवा जो रोगों की उत्पत्ति या प्रसार को रोकती हो। (प्रोफिलैक्टिक ड्रग)।
**रोगनी** वि० (फा) रोगन किया हुआ। रोगनदार।
**रोगप्रतिबंधनिरोधा** स्त्री० (सं) दे० 'निरोध'। (क्वारैन्टीन)।
**रोगाक्रांत** वि० (सं) व्याधिग्रस्त।
**रोगातुर** वि० (सं) रोग से घबराया हुआ।
**रोगार्त** वि० (सं) रोग से दुःखी।
**रोगिणी** वि० (सं) रोगी (स्त्री)।
**रोगिया** पुं० (हिं) रोगी। बीमार।
**रोगिहा** पुं० (हिं) बीमार। रोगी।
**रोगी** वि० (हिं) जो बीमार हो। जो स्वस्थ न हो।
**रोगीवाहकगाड़ी** स्त्री० (हिं) दे० 'परिचारगाड़ी'। (एम्ब्युलेंस कार)।
**रोगोत्तर-स्वास्थ्यलाभ** पुं० (सं) रोग के होने के बाद पूर्णरूप से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने की क्रिया। (कनवेलेसंस)।
**रोचक** वि० (सं) १-रुचिकर। २-मनोरंजक।
**रोचन** वि० (सं) १-रोचक। २-शोभा देने वाला। ३-लाल। ४-प्रिय लगाने वाला। पुं० १-कमीला। २-प्याज। ३-अनार। ४-सेंली। ५-गोरोचन। ६-कामदेव के पांच बाणों में से एक।
**रोचना** स्त्री०(सं) १-लाल कमल। २-श्रेष्ठ स्त्री। ३-आकाश। ४-वंशलोचन।
**रोचि** स्त्री० (सं) १-चमक। दीप्ति। २-किरण।
**रोचिष्ण** वि० (सं) १-चमकीला। २-अच्छे वस्त्र-भूषण पहने हुए।
**रोज** पुं० (हिं) १-रुदन। २-रोना-पीटना। विलाप।
**रोज** पुं० (फा) दिन। दिवस। अव्य० प्रतिदिन। नित्य।
**रोजगार** पुं० (फा) १-व्यापार। २-व्यवसाय। तिजारत।
**रोजनामचा** पुं० (फा) १-प्रतिदिन का काम लिखने की बही। २-रोकड़।
**रोज-ब-रोज** अव्य० (फा) प्रतिदिन। नित्य।

**रोजमर्रा** *अव्य०* (फा) प्रतिदिन । नित्य ।
**रोजा** पुं० (फा) १-उपवास । २-रमजान मास में तीस दिन तक होने वाला उपवास (मुसलमान) ।
**रोजादार** पुं०(फा) रोजा रखने वाला ।
**रोजाना** *अव्य०* (फा) नित्य । प्रतिदिन ।
**रोजी** *स्त्री०* (फा) १-जीविका । २-नित्य का भोजन । ३-जीवन निर्वाह का सहारा ।
**रोजीदार** पुं० (फा) वह जिसे प्रतिदिन खर्च के लिए कुछ मिलता हो ।
**रोजीना** *वि०* (फा) नित्य का । रोज का । पुं०दैनिक मजदूरी ।
**रोझ** *स्त्री०* (देश) नील गाय ।
**रोट** पुं० (हि) १-बहुत बड़ी और मोटी रोटी । २-देवताओं पर चढ़ाने की मीठी रोटी या पूआ ।
**रोटिका** *स्त्री०* (हि) छोटी रोटी । फुलकी ।
**रोटिहा** पुं० (हि) केवल भोजन पर काम करने वाला नौकर ।
**रोटी** *स्त्री०* (हि) १-गुँधे हुए आटे की आग पर पकाई हुई लोई या चपाती । २-जीविका । ३-भोजन ।
**रोटी-कपड़ा** पुं०(हि) खाने पीने की सामग्री या व्यय
**रोठा** पुं० (हि) दे० 'रोड़ा' ।
**रोड़ा** पुं० (हि) १-ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला । २-एक प्रकार का धान ।
**रोदन** पुं० (सं) रोना । विलाप करना ।
**रोदसी** *स्त्री०* (सं) १-स्वर्ग । २-पृथ्वी ।
**रोध** पुं०(सं)१-रुकावट । २-रोक । ३-तट । किनारा ४-थारी ।
**रोधक** पुं० (सं) रोकने वाला ।
**रोधन** पुं० (सं) १-रोक । रुकावट । २-दमन ।
**रोधना** *क्रि०* (हि) रोकना ।
**रोना** *क्रि०* (हि) १-दुखी होकर आंसू बहाना । २-बुरा मानना । ३-पछताना । पुं० १-दुःख । खेद । २-अपने दुःख का वर्णन । *वि०* जरा सी बात पर रो पड़ने वाला ।
**रोनी-धोनी** *वि०* (हि) दुःख या शोकसूचक चेष्टा बनाए रहने वाली । *स्त्री०* रोने-धोने की वृत्ति ।
**रोपक** *वि०* (सं) रोपने वाला ।
**रोपण** पुं० (सं) १-ऊपर रखना । २-लगाना । जमाना । ३-स्थिर रखना । ४-मोहित करना । ५-घाव पर लेप लगाना ।
**रोपना** *क्रि०* (हि) १-जमाना । २-लगाना । ३-अड़ाना । ठहराना । ४-बोना । ५-रोकना । ६-कुछ लेने के लिए हाथ बढ़ाना ।
**रोपनी** *स्त्री०* (हि) रोपने का काम ।
**रोपित** *वि०* (सं) १-लगाया या जमाया हुआ । २-स्थापित । ३-भ्रांत । मोहित । ४-खड़ा किया हुआ
**रोब** पुं० (अ) शक्तिशाली होने या बड़प्पन की धाक प्रभाव । आतंक । दबदबा ।
**रोबदाब** पुं० (अ) आतंक । तेज ।
**रोबदार** *वि०* (अ) रोबीला । प्रभावशाली ।
**रोमंथ** पुं० (सं) जुगाली ।
**रोम** पुं० (सं) १-देह के बाल । रोआँ । २-छेद । छिद्र । ३-जल । ४-ऊन । ५-इटली की राजधानी ।
**रोमकूप** पुं० (सं) शरीर के छेद । जिनमें से रोएँ निकलते हैं ।
**रोमन** *वि०* (अं) रोम नगर अथवा राष्ट्र का । *स्त्री०* वह लिपि जिसमें अंग्रेजी आदि भाषाएं लिखी जाती हैं ।
**रोमद्वार** पुं० (सं) दे० 'रोमकूप' ।
**रोमराजी** *स्त्री०* (सं) दे० 'रोमावली' ।
**रोमलता** *स्त्री०*(सं) दे० 'रोमावली' ।
**रोमहर्षण** पुं० (सं) अचानक बहुत अधिक हर्ष या भय से रोएं खड़े होना । रोमांच । सिहरन । *वि०* भयंकर । भीषण ।
**रोमांच** पुं० (सं) आनन्द या भय से रोएँ खड़े होना
**रोमांचित** *वि०* (सं) १-पुलकित । २-भय से जिसके रोंगटे खड़े हो गए हों ।
**रोमाग्र** पुं० (सं) रोएँ की नोक ।
**रोमानी** *वि०* (सं) जिसमें मुख्य रूप से शारीरिक प्रेम का वर्णन हो ।
**रोमाली** *स्त्री०* (सं) दे० 'रोमावली' ।
**रोमावली** *स्त्री०* (सं) रोमों की पंक्ति जो विशेष कर पेट के बीचोंबीच नाभि के ऊपर की ओर गई हो ।
**रोमिल** *वि०* (हि) रोएँदार ।
**रोयाँ** पुं० (हि) लोम । रोम ।
**रोर** *स्त्री०*(हि) १-कोलाहल । रौला । हल्ला । २-उपद्रव उत्पात । ३-बहुत से लोगों का रोने का शब्द । *वि०* प्रचंड । तेज । २-उपद्रवी ।
**रोरा** पुं० (हि) १-चूर । गाँजा । दे० 'रोर' ।
**रोरी** *स्त्री०* (हि) रोली जिसका तिलक लगता है । २-चहल-पहल । *वि०* (हि) सुन्दर ।
**रोल** *स्त्री०* (हि) १-कोलाहल । २-शब्द । ध्वनि । पुं० पानी का बहाव । पुं० (देश) एक नक्काशी का औजार ।
**रोला** पुं० (हि) १-कोलाहल । २-घोर युद्ध । ३-एक छंद ।
**रोवनहार** पुं० (हि) १-रोने वाला । २-किसी के मरने पर रोने वाला ।
**रोवना** *क्रि०* (हि) दे० 'रोना' । *वि०* १-चिढ़ने वाला । २-तुरन्त रो पड़ने वाला ।
**रोवनिहारा** *वि०* (हि) दे० 'रोवनहार' ।
**रोवनी-धोवनी** *स्त्री०* (हि) रोने-धोने की चेष्टा । मनहूसी ।
**रोवाँ** पुं० (हि) दे० 'रोवाँ' ।
**रोवासा** *वि०* (हि) जो रो-देने को हो ।

रोशन वि० (फा) १-जलता हुआ । प्रदीप्त । २-चमकदार । ३-प्रसिद्ध । ४-प्रकट ।
रोशन-चौकी स्त्री० (फा) शहनाई ।
रोशनजमीर वि० (फा) सुबुद्ध । अकलमंद ।
रोशनदान पुं० (फा) झरोखा । (वेन्टीलेटर) ।
रोशनदिमाग वि० (फा) दे० 'रोशनजमीर' ।
रोशनाई स्त्री० (फा) १-लिखने की स्याही । २-प्रकाश । उजाला ।
रोशनी स्त्री० (फा) उजाला । प्रकाश ।
रोष पुं० (सं) १-क्रोध । गुस्सा । २-चिढ़ । ३-कुढ़न । ४-जोश ।
रोस पुं० (हिं) दे० 'रोष' । स्त्री० दे० 'रौस' ।
रोसनाई स्त्री० (हिं) दे० 'रोशनाई' ।
रोसनी स्त्री० (हिं) दे० 'रोशनी' ।
रोह पुं० (सं) १-चढ़ना । चढ़ाई । २-कली । ३-अंकुर । पुं० (देन) नीलगाय ।
रोहक पुं० (सं) १-सवार । २-चढ़ने वाला ।
रोहण पुं० (सं) १-ऊपर चढ़ना । २-अंकुरित होना । ३-शुक्र । वीर्य ।
रोहना क्रि०(हिं) चढ़ना । २-ऊपर की ओर ले जाना । ३- सवार होना । ४-चढ़ना ।
रोहिणी स्त्री०(सं) १-गाय । २-बिजली । ३-सत्ताइस नक्षत्रों में से एक । ४-त्वचा की छोटी परत ।
रोहिणीपति पुं० (सं) १-चंद्रमा । वासुदेव ।
रोहिणीश पुं० (सं) १-चंद्रमा । २-वासुदेव ।
रोहित वि० (सं) लाल रंग का । पुं० १-लाल रंग । २-केसर । ३-रक्त । ४-इंद्र धनुष ।
रोहिनी स्त्री० (हिं) दे० 'रोहिणी' ।
रोही वि० (सं) चढ़ने वाला । पुं० (हिं) १-पीपल का वृक्ष । २-गूलर का पेड़ । ३-एक घास ।
रोहू स्त्री० (हिं) एक प्रकार की बड़ी मछली ।
रौंट स्त्री० (हिं) १-हंसी या खेल में बुरा मानना । २-चिढ़कर बेइमानी करना ।
रौंद स्त्री० (हिं) रौंदना । चक्कर । गश्त । (राउंड) ।
रौंदन स्त्री० (हिं) रौंदने की क्रिया या भाव । मर्दन
रौंदना क्रि० (हिं) १-पैरों से कुचलना । मर्दित करना । २-खूब पीटना ।
रौंस पुं० (हिं) १-निशन । २-घट्टा ।
रौ पुं० (हिं) दे० 'रव' । स्त्री० (फा) १-गति । चाल २-वेग । ३-पानी का बहाव । ४-धुन । ५-चाल । ढंग
रौक्ष्य पुं० (सं) रुखाई । रुक्षता । रूखापन ।
रौगन पुं० (अ) १-तेल । २-लाख आदि का बना हुआ पक्का रङ्ग ।
रौगनी वि० (अ) १-तेल का । २-रोगन फेरा हुआ ।
रौचनिक वि० (सं) रोली से रङ्गा हुआ ।
रौजा पुं० (अ) वह कब्र जिस पर इमारत बनी हो । समाधि । २-स्वांग ।
रौताइन स्त्री० (हिं) १-स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द । २-ठकुराइन ।
रौताई स्त्री० (हिं) राव या रावत का पद । सरदारी । ठकुराई ।
रौद्र वि० (सं) १-रुद्र सम्बन्धी । २-प्रचण्ड । ३-क्रोध पूर्ण । पुं० (सं) १-क्रोध । २-काव्य के नौ रसों में से एक । ३-धूप । ४-यमराज । ५-एक संवत्सर । ६-एक केतु ।
रौद्रता स्त्री० (सं) १-भयंकरता । २-प्रचण्डता ।
रौद्री स्त्री० (सं) १-रुद्र की पत्नी । गौरीदेवी । २-गांधार स्वर की दो श्रुतियों में से एक ।
रौन पुं० (हिं) पति । रमण करने वाला ।
रौनक स्त्री० (अ) १-चमकदमक । २-प्रफुल्लता । ३-शोभा ।
रौनकदार वि० (अ) सजा हुआ ।
रौनी स्त्री० (हिं) दे० 'रमणी' ।
रौप्य वि० (सं) चांदी का । पुं० (सं) चांदी । रूपा ।
रौर पुं० (हिं) कोलाहल । शोर । कुहराम ।
रौरव वि० (सं) १-भयङ्कर । २-बेईमान । ३-चंचल । पुं० (सं) एक नरक ।
रौरा पुं० (हिं) दे० 'रौला' । सर्व० (हिं) आपका ।
रौराना क्रि० (हिं) व्यर्थ प्रलाप करना । बकना ।
रौरे सर्व० (हिं) आप (आदरसूचक सम्बोधन) ।
रौल पुं० (हिं) दे० 'रौल' ।
रौला पुं० (हिं) १-कोलाहल । हल्ला । २-ऊधम । हलचल ।
रौशन वि० (हिं) दे० 'रोशन' ।
रौशनी स्त्री० (हिं) दे० 'रोशनी' ।
रौस स्त्री० (फा) १-गति । चाल । २-रङ्ग-ढङ्ग । ३-बाग की क्यारियों के बीच का रास्ता ।
रौहिणेय पुं० (सं) १-बलराम । २-गाय का बछड़ा । ३-बुधग्रह । ४-पन्ना ।

[शब्दसंख्या—४५१६४]

# ल (ल)

ल देवनागरी वर्णमाला का अट्ठाइसवां व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान दन्त है ।
लंक स्त्री० (सं) १-कमर । २-कटि । स्त्री० (हिं) लङ्का द्वीप ।
लंकनाथ पुं० (सं) १-रावण । २-विभीषण ।
लंकपति पुं० (सं) दे० 'लंकनाथ' ।

**लंकलाट** पुं० (हिं) एक प्रकार का चिकना धुला हुआ कपड़ा। लट्ठा। (लौंग क्लॉथ)।
**लंका** स्त्री० (सं) १-भारत के दक्षिण का एक टापू जहां रावण राज्य करता था। २-काला चना। ३-शाखा
**लंकाधिपति** पुं० (सं) १-रावण। २-विभीषण।
**लंकापति** पुं० (सं) रावण।
**लंकेश** पुं० (सं) १-रावण। २-विभीषण।
**लंग** स्त्री० (फा) लंगड़ापन। वि० (फा) लङ्गड़ा। पुं० (सं) उपपति। जार। स्त्री० (हिं) दे० 'लाँग'।
**लंगड़** वि० (हिं) लँगड़ा।
**लँगड़ा** वि० (हि) १-जिसका एक पैर काम न देता हो। २-जिसका एक पाया न हो। पुं० (हिं) एक प्रकार का बढ़िया आम।
**लँगड़ाना** क्रि० (हिं) लँगड़े होकर चलना।
**लंगर** पुं० (फा) १-लोहे का बड़ा और भारी कांटा जो नाव या जहाज को एक स्थान पर ठहरने में उपयोग किया जाता है। २-नटखट बछड़े आदि के गले में बांधने का लकड़ी का कुन्दा। ३-पैर में पहनने का चांदी का तोड़ा। ४-कोई लटकती हुई भारी वस्तु। ५-लङ्गोट। ६-वह स्थान जहां बहुत से लोगों का भोजन एक साथ पकता हो तथा भोजन गरीबों को बँटता हो। ७-कपड़े सिलाई से पहले कच्चा टांका। ८-कमर के नीचे का भाग। वि० (फा) १-भारी। २-वजनी। ३-नटखट।
**लंगरखाना** पुं० (फा) वह स्थान जहां गरीबों को पकाया हुआ भोजन बाँटा जाता है।
**लँगराई** स्त्री० (हिं) शरारत। ढिठाई।
**लँगराना** क्रि० (हिं) दे० 'लँगड़ाना'।
**लँगरी** स्त्री० (हिं) शरारत।
**लँगरैया** स्त्री० (हिं) शरारत।
**लंगूर** पुं० (हिं) १-एक प्रकार का बन्दर जिसका मुँह काला और पूँछ लम्बी होती है। २-बन्दर। ३-दुम। पूंछ।
**लंगोट** पुं० (हिं) रुमाली। कमर पर बांधने का वस्त्र जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते है।
**लंगोटबंद** वि० (हिं) ब्रह्मचारी।
**लंगोटा** पुं० (हिं) दे० 'लंगोट'।
**लंगोटिया-यार** पुं० (हिं) बचपन का साथी। बालमित्र
**लंगोटी** स्त्री० (हिं) छोटा लंगोट।
**लंघक** वि०(स)१-लांघने वाला। २-नियम भंग करने वाला।
**लंघन** पुं० (सं) १-अतिक्रमण। लांघना। २-उपवास
**लंघनक** पुं०(सं) १-लांघने वाला। २-पुल। सेतु।
**लंघनट** पुं० (सं) कलाबाजी का खेल दिखाने वाला नट।
**लंघना** क्रि० (हिं) लाँघना। स्त्री० (सं) उपेक्षा। लापरवाही।
**लंघनीय** वि० (सं) १-लाँघने के योग्य। २-उल्लंघन करने के योग्य।
**लँघाना** क्रि०(हिं) १-पार करना। २-पार उतारना।
**लंघित** वि० (सं) १-पार किया हुआ। २-उपेक्षित।
**लंजिका** स्त्री० (सं) वेश्या।
**लंठ** वि० (हिं) मूर्ख।
**लँडूरा** वि०(हिं) बिना पूंछ का। कटी हुई पूंछ वाला (पशु, पक्षी)।
**लँतरानी** स्त्री० (अ) शेखी।
**लँदराज** पुं० (हिं) एक प्रकार की मोटी चादर।
**लंप** पुं० (हिं) दीपक। चिराग। (लैंप)।
**लंपट** वि० (सं) व्यभिचारी। विषयी। पुं० उपपति। स्त्री का यार।
**लंपटता** स्त्री० (सं) दुराचार। कुकर्म।
**लंब** पुं० (सं) १-किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरने वाली रेखा। (परपेंडिक्युलर)। २-ज्योतिष में एक प्रकार की गति। ३-पति। ४-अंग। वि० लंबा (हॉरिजेन्टल)।
**लंबकर्ण** पुं० (सं) १-बकरा। २-हाथी। ३-गधा। ४-खरगोश। वि० लंबे कान वाला।
**लंबकेश** वि० (सं) लम्बे केश वाला।
**लंबग्रीव** पुं० (सं) ऊँट।
**लंबजठर** वि० (सं) तोंदल। मोटे पेट वाला।
**लंबतड़ंग** वि० (सं) ताड़ की तरह लम्बा।
**लंबन** पुं० (सं) १-झूलने की क्रिया। २-लम्बा करना ३-कोई काम या बात कुछ समय के लिए टालना। (अबेयन्स)।
**लंबमान** वि० (सं) विस्तृत। दूर तक फैला हुआ।
**लंबर** पुं० (हि) दे० 'नम्बर'।
**लंबरदार** पुं० (हि) दे० 'नम्बरदार'।
**लंबा** वि० (हि) १-जो एक दिशा में ही बहुत दूर तक चला गया हो। २-दीर्घ। ३-जो बहुत ऊँचा हो। ४-(समय) जिसका विस्तार बहुत हो।
**लंबाई** स्त्री० (हि) लम्बा होने की अवस्था।
**लंबाचौड़ा** वि० (हि) विस्तृत।
**लंबान** पुं० (हि) लम्बाई।
**लंबान-चौड़ान** स्त्री० (हि) लम्बाई-चौड़ाई।
**लंबायमान** वि० (हि) १-बहुत लम्बा। २-लेटा हुआ
**लंबित** वि०(स) १-लम्बा। २-विचार, निश्चय आदि के लिए कुछ समय के लिए टाला हुआ। (पेंडिंग)। पुं० मांस।
**लंबू** वि० (हि) लम्बा (व्यंग में आदमी के लिए)।
**लंबोतरा** वि० (हि) लम्बे आकार का। जो अपेक्षाकृत लम्बा हो।
**लंबोदर** पुं० (सं) गणेशजी। वि० बड़े पेट वाला।
**लंबोष्ठ** पुं० (स) ऊँट। वि० लम्बे ओठ वाला।
**ल** पुं० (सं) १-इन्द्र। २-पृथ्वी।

लउ स्त्री० (हिं) लगन । लौ ।
लउग्रा पु० (हिं) दे० 'घीया' ।
लउकी स्त्री० (हिं) दे० 'लौकी'।
लउटी स्त्री० (हिं) दे० 'लकुटी'।
लकड़दादा पुं० (हिं) परदादा से बड़ा दादा ।
लकड़बग्घा पुं० (हिं) एक भेड़िया से बड़ा हिंसक पशु
लकड़हारा पुं०(हिं) जङ्गल में लकड़ी काट कर बेचने वाला।
लकड़ा पुं० (हिं) लकड़ी का मोटा कुन्दा । लक्कड़ ।
लकड़ाना क्रि० (हिं) १-सूखी लकड़ी की तरह कड़ा हो जाना।
लकड़ी स्त्री० (हिं) १-वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग २-ईंधन । ३-छड़ी । लाठी । ४-गतका । पटा ।
लकदक पुं०(फा) वह पथरीला मैदान जहां पेड़ आदि न हों।
लकब पुं० (अ) उपाधि । पदवी । खिताब ।
लकलक पुं०(अ) एक जल पक्षी जिसकी गरदन लंबी होती है। सारस । वि० लम्बी गरदन वाला ।
लकवा पुं० (अ) एक वात का रोग जिसमें कोई अंग सुन्न या बेकार हो जाता है। फालिज । (पोलिओ)
लकसी स्त्री०(हिं) फल आदि तोड़ने की लग्गी जिस पर चन्द्राकार लोहे का फल लगा होता है।
लकीर स्त्री० (हिं) एक सीध में लगी लम्बी आकृति । रेखा ।२-दूर तक रेखा के समान बना हुआ चिह्न ३-धारी । ४-पंक्ति ।
लकुच पुं०(स) बड़हर का पेड़ । पुं०(हिं) दे० 'लकुट'
लकुट स्त्री० (हिं) लाठी । छड़ी। स्त्री० (सं) १-लुकाट का वृक्ष। लुकाट ।
लकुटी स्त्री० (हिं) लाठी । छड़ी ।
लकुरी स्त्री० (हिं) लकड़ी।
लक्कड़ पुं० (हिं) दे० 'लकड़ा'।
लक्का पुं० (हिं) एक प्रकार का कबूतर विशेष जो नृत्य करता है।
लक्का-कबूतर पुं० (हिं) नृत्य की एक मुद्रा ।
लक्खी पुं० (हिं) १-लखपति । २-घोड़ों की एक जाति वि० (हिं) १-लाख के रंग का । २-लाखों से सम्बन्ध रखने वाला।
लक्तक पुं० (सं) अलता जो स्त्रियां पैरों में लगाती हैं। २-चिथड़ा ।
लक्ष पुं० (सं) १-एक लाख की संख्या। २-किसी उद्देश्य से किसी बात या वस्तु का ध्यान रखना । ३-दे० 'लक्ष्य' । ४-पैर । ५-चिह्न । वि० एक लाख । सौ हजार ।
लक्षण पुं०(सं) १ किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जा सके। २-रोग की पहचान । ३-नाम । ४-परिभाषा । ५-शरीर के अंग में वह चिह्न जो शुभ या अशुभ के द्योतक होते हैं । ६-रङ्गढंग ७-दर्शन । ८-सारस पक्षी ।
लक्षणकर्म पु० (सं) परिभाषा ।
लक्षणज्ञ पु० (सं) वह जो लक्षण जानता हो।
लक्षणभ्रष्ट वि० (सं) भाग्यहीन । जिससे शरीर पर शुभ चिह्न न हों।
लक्षण-लक्षणा स्त्री० (सं) लक्षणा का वह भेद जिसमें एक का लक्षण दूसरे से ज्ञात हो जाता है।
लक्षणा स्त्री०(सं)१-शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण से भिन्न अर्थ प्रकट हो। मादा सारस । ३-मादा हंस । ४-उद्देश्य ।
लक्षणी वि० (सं) चिह्नों को जानने वाला। लक्षण जानने वाला ।
लक्षना क्रि० (हिं) देखना । लखना ।
लक्षपति पुं० (सं) लखपती ।
लक्षवेधी वि० (सं) निशाने का भेद करने वाला।
लक्षि स्त्री० (सं) दे० 'लक्ष्मी' ।
लक्षित वि० (स) १-बतलाया हुआ । निर्दिष्ट । २-देखा हुआ । ३-लक्षणा शक्ति से समझा जाने वाला (अर्थ)।
लक्षित-लक्षणा स्त्री० (सं) एक प्रकार की लक्षणा ।
लक्षिता स्त्री० (सं) वह नायिका जिसके पर पुरुष से होने वाले सम्बन्ध को और लोग जानते हैं।
लक्षितार्थ पुं० (सं) वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलता है।
लक्षी स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त जिसके चरण में आठ रगण होते हैं।
लक्ष्म पुं० (स) लक्षण । चिह्न । निशान ।
लक्ष्मण पुं० (सं) १-राजा दशरथ के एक पुत्र का नाम जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । २-चिह्न ।
लक्ष्मणा स्त्री० (सं) १-श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक । २-एक जड़ी । पुत्रकन्दा ।
लक्ष्मी स्त्री० (सं) १-धन की अधिष्ठात्री देवी जो कि विष्णु की पत्नी मानी जाती है। २-धन । संपत्ति । ३-शोभा। ४-गृहस्वामिनी । ५- वीर स्त्री । ६-दुर्गा का एक नाम । ७-चंद्रमा की ग्यारहवीं कला। ८-सौभाग्य ।
लक्ष्मीकांत पुं० (सं) विष्णु भगवान ।
लक्ष्मीनाथ पुं० (सं) विष्णु ।
लक्ष्मीनिधि पुं० (सं) राजा जनक का पुत्र का नाम।
लक्ष्मीपति पुं० (सं) १-विष्णु। २-राजा।
लक्ष्मीपुत्र पुं० (सं) १-धनी व्यक्ति। धनवान । २-कामदेव । घोड़ा।
लक्ष्मीपूजा पुं० (सं) दीपावली के अवसर पर होने वाला लक्ष्मी का पूजन ।
लक्ष्मीफल पुं० (सं) बेल ।
लक्ष्मीश पुं० (सं) १-विष्णु। २-आम का वृक्ष ।

**लक्ष्य** पुं० (सं) १-वह जिस पर निशाना लगाया जाय। निशाना (टार्गेट)। २-जिस पर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय। ३-अनुमेय। वह जिसका अनुमान लगाया जाय। ४-बहाना। ५-उद्देश्य। ६-अभिधान। (डेजिग्नेशन)
**लक्ष्यभेद** पुं० (सं) चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना साधना।
**लक्ष्यवेध** पुं० (सं) दे 'लक्ष्यभेद'।
**लक्ष्यवेधी** पुं० (सं) उड़ते या तेज दौड़ते या चलते पदार्थों पर ठीक निशाना लगाने वाला।
**लक्ष्यसिद्धि** स्त्री० (सं) उद्देश्य की प्राप्ति।
**लक्ष्यहा** पुं० (सं) बाण।
**लक्ष्यार्थ** पुं० (सं) लक्षणा से निकलने वाला अर्थ।
**लखघर** पुं० (हि) लाख का घर।
**लखन** पुं० (हि) राम के भाई लक्ष्मण। स्त्री० लिखने की क्रिया या भाव।
**लखना** क्रि० (हि) १-देखना। २-ताड़ना।
**लखपती** पुं० (हि) जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो।
**लखपेड़ा** वि० (हि) जिसमें बहुत अधिक पेड़ हों (बाग)।
**लखराऊँ** पुं० (हि) बहुत बड़ा बाग।
**लखलुट** वि० (हि) अपव्यय करने वाला।
**लखलखा** पुं० (म) १-कोई सुगंधित द्रव्य। २-कस्तूरी आदि का बना एक विशेष सुगंधित द्रव्य जो मूर्छित व्यक्ति को होश में लाता है।
**लखाई** स्त्री० (हि) पहचान। लक्षण।
**लखाउ** पुं० (हि) दे 'लखाव'।
**लखाना** क्रि० (हि) दिखाई। २-दिखलाना। ३-अनुमान करा देना।
**लखाव** पुं० (हि) १-लक्षण। पहचान। चिह्न। २-निशानी के रूप में दी गई वस्तु।
**लखिमी** स्त्री० (हि) दे० 'लक्ष्मी'।
**लखिया** पुं० (हि) वह जो लखता हो।
**लखी** पुं० (हि) लाख के रङ्ग का घोड़ा।
**लखुआ** पुं० (हि) १-गेहूँ में लगने वाला एक रोग। लाही। २-लाल मुँह का बन्दर।
**लखेदना** क्रि० (हि) खदेड़ना।
**लखेरा** पुं०(हि)लाख की चूड़ियां आदि बनाने वाला। उसकी जाति।
**लखोट** स्त्री० (हि) स्त्रियों के हाथ में पहनने वाली लाख की चूड़ी।
**लखौटा** पुं० (हि) १-चन्दन केसर आदि से बनने वाला उबटन। २-सिन्दूर आदि रखने की डिबिया
**लखौरी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर। २-पुरानी चाल की छोटी, पतली ईंट। ३-किसी देवता पर उसके प्रिय वृक्ष की पत्तियां चढ़ाना।
**लगन** स्त्री० (हि) १-किसी कार्य या व्यक्ति की ओर पूर्णतया ध्यान लगाना। लौ। २-लगाव। सम्बन्ध स्नेह। पुं० १-विवाह का मुहूर्त। २-वे दिन जब विवाह होते हैं। (फा) एक प्रकार की थाली।
**लगनपत्री** स्त्री० (हि) विवाह की तिथिसूचक चिट्ठी।
**लगनवट** स्त्री० (हि) लगन। प्रेम। मुहब्बत।
**लगना** क्रि०(हि)१-दो पदार्थों के तल मिलना। सटना २-किसी वस्तु पर कुछ जड़ना। ३-मिलाना। ४-उगना। ५-ठिकाने पर पहुँचना। ६-खर्च होना ७-ज्ञात होना। ८-स्थापित होना। ९-टकराना। १०-जलन आदि मालूम होना। ११-किसी लत का आरम्भ होना। १२-जारी होना। १३-आवश्यक होना। १४-सड़ना। १५-रगड़ खाना। १६-जलना १७-साथ होना। १८-चिमटना। १९-छूना। २०-बन्द होना। २१-फैलना। २२-बढ़ना। २३-ताक में रहना। २४-जहाज का किनारे पर लगना। २५-सम्बन्ध में कुछ होना।
**लगनि** स्त्री० (हि) दे० 'लगन'।
**लगभग** अव्य० (हि) प्रायः। बहुत कुछ। करीब-करीब
**लगर** पुं० (देश) चील के आकार का एक शिकारी पक्षी।
**लगलग** वि० (हि) बहुत दुबला-पतला। सुकुमार।
**लगव** वि० (हि) १-असत्य। झूठ। २-व्यर्थ।
**लगवाना** क्रि० (हि) लगाने का काम किसी दूसरे से कराना।
**लगवार** पुं० (हि) स्त्री का यार। जार।
**लगातार** अव्य० (हि) निरंतर। बराबर।
**लगान** पुं० (हि) १-लगने या लगाने की क्रिया। २-खेती या भूमि पर लगाने वाला कर। (रेन्ट)। ३-बोझा उतार कर सस्ताने का स्थान। ४-नाव ठहरने का घाट।
**लगाना** क्रि०(हि) १-सटाना। २-मिलाना। ३-चिपकाना। ४-सीना। जोड़ना। ५-जमाना। ६-व्यय या खर्च करना। ७-पोतना। ८-सड़ना। गलना। ९-जड़ना। १०-गाड़ना। ११-सटाना। १२-छुआना। १३-दांव पर धनादि रखना। १४-धारण करना। १५-अंकित करना। १६-दाम आंकना। १७-फैलाना। १८-करना। जहाज को पार लाना। १९-लागू करना। (इम्पोज)।
**लगाम** स्त्री० (फा) १-घोड़े के मुँह में लगाया जाने ढाँचा जिसके दोनों ओर रस्से या चमड़े बँधे होते हैं। रास। बाग।
**लगाव** स्त्री० (हि) १-लगन। २-प्रेम।
**लगायत** अव्य० (म) आखीर तक। अन्त तक।
**लगार** स्त्री० (हि) १-नियमानुसार नित्य कार्य करना। बन्धेज। २-लगाव। ३-क्रम। सिलसिला

४-लगन । ५-सम्बन्धी । ६-भेदिया । ७-वह स्थान जहां से जुआरी जुआ खेलने के स्थान तक पहुँचाये जाते हैं ।
**लगालगी** स्त्री० (हिं) १-लाग । लगन । प्रीति । २-सम्बन्ध । मेलजोल ।
**लगाव** पु० (हिं) सम्बन्ध । वास्ता ।
**लगावट** स्त्री० (हिं) १-सम्बन्ध । वास्ता । २-प्रीति ।
**लगि** अव्य० (हिं) दे० 'लग' ।
**लगी** स्त्री० (हिं) १-दे० 'लग्गी' । २-प्रेम । ३-भूख । ४-इच्छा । ५-दाग ।
**लगुड** पुं० (सं) लाठी । डण्डा ।
**लगूर** स्त्री० (हिं) दुम ।
**लगूल** स्त्री० (हिं) दुम । पूँछ ।
**लगौहाँ** वि० (हिं) जो किसी से लगन लगने को उद्यत हो ।
**लग्गा** पुं० (हिं) १-लम्बा बांस । २-अंकुसी लगा फल तोड़ने का बांस । ३-काम आरम्भ करना ।
**लग्गी** स्त्री० (हिं) छोटा लग्गा ।
**लग्घड़** पु० (देश०) १-बाज । २-लकड़बग्घा ।
**लग्घी** स्त्री० (हिं) दे० 'लग्गी' ।
**लग्न** पुं० (सं) १-शुभ कार्य का मुहूर्त । २-विवाह । ३-विवाह के दिन । वि० (सं) १-लगा हुआ । २-लज्जित । ३-आसक्त ।
**लग्नक** पुं० (स) १-प्रतिभू । जामिन । २-एक राग ।
**लग्नपत्र** पुं० (हिं) १-जन्मपत्री । ३-वह पत्र जिसमें विवाह की तिथि आदि का ब्योरा होता है ।
**लग्नपत्रिका** स्त्री० (हिं) दे० 'लग्नपत्र' ।
**लग्नेश** पुं० (सं) फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो ।
**लघिमा** स्त्री० (सं) १-लघुता । २-एक सिद्ध जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य आकार में छोटा बन सकता है ।
**लघु** वि० (सं) १-छोटा । कम । २-शीघ्र । ३-हलका ४-निःसार । ५-नीच । ६-दुर्बल । पुं० (सं) व्याकरण में वह शब्द जो एक ही मात्रा का होता है-अ इ, उ आदि ।
**लघुकरण** पुं० (हिं) कम करना । घटाना । (कम्यूट)
**लघुकाय** वि० (सं) नाटे कद का । पु० (सं) बकरा ।
**लघुगति** वि० (सं) शीघ्रगामी । तेज चलने वाला ।
**लघुचेता** वि० (सं) नीच , तुच्छ विचारों वाला ।
**लघुतम** वि० (सं) सबसे छोटा ।
**लघुतम समावर्तक** पुं० (सं) वह सबसे छोटी संख्या जो छोटी या अधिक संख्याओं से, बिना शेष के विभाजित हो सके ।
**लघुपाक** पुं०(सं) सहज में पचने वाला खाद्यपदार्थ ।
**लघुलिपि** स्त्री० (सं) शीघ्रलीपि । (शॉर्टहैण्ड) ।
**लघुवाद न्यायालय** पुं० (सं) वह न्यायालय जिसमें छोटे विवादों या मामलों पर विचार होता हो । (स्मॉल कॉज कोर्ट) ।
**लघुशंका** स्त्री० (सं) पेशाब करना ।
**लघुहस्त** वि० (सं) कुशल तीरन्दाज ।
**लघ्वी** स्त्री० (सं) १-कोमलांगी नजाकत से भरी स्त्री । छोटी गाड़ी ।
**लच** स्त्री० (हिं) लचकने की क्रिया या भाव । लचक ।
**लचक** स्त्री० (हिं) वह गुण जिसके कारण कोई वस्तु दबती या झुकती हो ।
**लचकन** स्त्री० (हिं) दे० 'लचक' ।
**लचकना** क्रि० (हिं) १-दबने पर बीच से झुकना । २-स्त्रियों का कोमलता तथा नखरे का कारण चलते समय रह-रहकर झुकना ।
**लचकनि** स्त्री० (हिं) लचक ।
**लचकाना** क्रि० (हिं) झुकाना । लचाना ।
**लचकीला** वि० (हिं) लचकने योग्य । लचकदार ।
**लचकौहाँ** वि० (हिं) दे० 'लचकीला' ।
**लचन** स्त्री० (हिं) दे० 'लचक' ।
**लचना** क्रि० (हिं) दे० 'लचकना' ।
**लचलचा** वि० (हिं) लचकदार ।
**लचाना** क्रि० (हिं) लचकाना । झुकाना ।
**लचार** वि० (हिं) दे० 'लाचार' ।
**लचारी** स्त्री० (हिं) दे० 'लाचारी' । स्त्री० (देश) १-भेंट । नजर । २-एक प्रकार का गीत ।
**लचीला** वि० (हिं) १-लचकदार । २-जिसमें सहज में परिवर्तन हो सके । (फ्लेक्सीबल) ।
**लच्छ** पुं०(हिं) १-बहाना । २-निशाना ३-एक लाख की संख्या । स्त्री० लक्ष्मी ।
**लच्छण** पुं० (हिं) लक्षण । चिह्न ।
**लच्छन** पुं० (हिं) दे० 'लच्छण' ।
**लच्छना** स्त्री० (हिं) दे० 'लक्षणा' ।
**लच्छमी** स्त्री० (हिं) दे० 'लक्ष्मी' ।
**लच्छा** १-गुच्छे के रूप में गुथे हुए तार । २-हाथ या पैर में पहनने का गहना । ३-एक प्रकार की मिठाई ४-सूत की तरह के लम्बे तार ।
**लच्छेदार** वि० (हिं) १-जिसमें लच्छे पड़े हों । २-चिकनी-चुपड़ी तथा मजेदार (बात) ।
**लच्छि** पुं० (हिं) एक लाख की संख्या । स्त्री० 'लक्ष्मी'
**लच्छित** वि०(हिं) १-देखा हुआ । २-चिह्नित । अंकित
**लच्छिनाथ** पुं० (हिं) लक्ष्मी के पति विष्णु ।
**लच्छिमी** स्त्री० (हिं) दे० 'लक्ष्मी' ।
**लच्छी** पुं० (हिं) एक प्रकार का घोड़ा । स्त्री० सूत, रेशम, ऊन, तार आदि की अण्टी या गुच्छी ।
**लछन** पुं० (हिं) १-लक्षण । २-लक्ष्मण ।
**लछमन** पुं० (हिं) लक्ष्मण ।
**लछमनझूला** पुं० (हिं) १-ऋषिकेश के पास का एक पुल । २-रस्सियों या तारों से लटका हुआ कोई पुल ।

लछमी स्त्री० (हि) दे० 'लक्ष्मी'।
लछारा वि० (हि) लम्बा।
लज स्त्री० (हि) लाज। शर्म। हया।
लजना क्रि० (हि) लजाना। लज्जित होना।
लजवाना क्रि० (हि) दूसरे को लज्जित कराना।
लजाधुर वि० (हि) शर्मीला। जो बहुत ही लज्जा करे
लजाना क्रि० (हि) १-लज्जित होना। २-लज्जित करना।
लजारू पु० (हि) छूने से सिकुड़ने वाला एक पौधा।
लजालू पु० (हि) लजारू। छुईमुई का पेड़।
लजावनहारा पु० (हि) लज्जित करने वाला।
लजावना क्रि० (हि) 'लजवाना'।
लजियाना क्रि० (हि) १-लजाना। २-लजवाना।
लजीज वि० (अ) स्वादिष्ट (खाद्यपार्थ)।
लजीला वि० (हि) जिसमें लाज हो। लज्जाशील।
लजुरी स्त्री० (हि) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी।
लजोर वि० (हि) लज्जाशील।
लजोहा वि० (हि) लजीला। शर्मीला।
लजौना वि० (हि) लज्जित करने वाला।
लजोहाँ वि० (हि) लज्जाशील।
लज्जत स्त्री० (अ) स्वाद। मजा।
लज्जतदार वि० (अ) स्वादिष्ट। जायकेदार।
लज्जा स्त्री० (सं) वह मनोभाव जो संकोच आदि के कारण दूसरों का सामना नहीं करने देता। शर्म। मान।
लज्जाकारी वि० (सं) लज्जा उत्पन्न करने वाला।
लज्जाप्रद वि० (सं) दे० 'लज्जाकारी'।
लज्जालु पु० (सं) दे० 'लजालु'। वि० लजीला। शर्मीला।
लज्जावंत वि० (सं) लजीला। पु० लजालु का पौधा
लज्जावाह वि० (सं) दे० 'लज्जाकारी'।
लज्जावान् वि० (सं) लज्जाशील। शर्मदार।
लज्जाशील वि० (सं) जिसे स्वभावतः जल्दी लाज लगती हो।
लज्जाशून्य वि० (सं) जिसे लाज शर्म न हो।
लज्जाहीन वि० (सं) वेहया। बेशर्म।
लज्जित वि० (सं) लज्जा से वशीभूत।
लट स्त्री० (हि) बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके। केशलता। २-लपट। लौ। ३-बेंत।
लटजीरा पु० (हि) चिचड़ा।
लटक स्त्री० (हि) १-अङ्गों की कोमल, मनोहर चेष्टा। २-लटकन। ३-ढलुवाँ जमीन।
लटकन पु० (हि) १-लुभावनी चाल। २-लटकने वाली वस्तु। ३-नाक का गहना। ४-कलगी में लगे रत्नों का गुच्छा।
लटकना क्रि० (हि) १-किसी आधार से नीचे की ओर टांगना। लटकाना। २-खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ३-काम का अधूरा पड़ा रहना।
लटकवाना क्रि० (हि) लटकाने का काम दूसरे से कराना।
लटका पु० (हि) १-ढंग। २-बनावटी कोमल चेष्टा ३-उपचार आदि की छोटी सहज युक्ति। ४-एक प्रकार का चलता गाना। ५-टोटका।
लटकाना क्रि० (हि) १-टांगना। २-लचकाना। ३-आसरे में रखना। ४-देर करना। ५-लटकाने में प्रवृत्त करना।
लटकीला वि० (हि) झूमता हुआ। लचकदार।
लटकौआ वि० (हि) लटकने वाला।
लटना क्रि० (हि) १-थक कर गिरजाना। २-दुबला और अशक्त होना। ३-शिथिल होना। ४-विकल होना। ५-लुभाना। ६-लीन होना।
लटपट वि० (हि) १-ढीलाढाला। २-अस्त-व्यस्त। ३-टूटाफूटा (अक्षर)। ४-जिसमें सिलवट पड़ी हों (कपड़ा)।
लटपटा वि० (हि) दे० 'लटपट'।
लटपटाना क्रि० (हि) १-लड़खड़ाना। २-विचलित होना। ३-लुभाना। ४-अनुरक्त होना।
लटा वि० (हि) १-लोलुप। लंपट। २-नीच। ३-तुच्छ ४-पतित। बुरा।
लटापटी स्त्री० (हि) लड़ाई-झगड़ा।
लटापोट वि० (हि) मोहित। मुग्ध।
लटिया स्त्री० (हि) सूत आदि की छोटी लच्छी।
लटी स्त्री० (हि) १-गप। झूठी बात। २-बुरी बात। ३-साधुनी। ४-वेश्या।
लटुआ पु० (हि) दे० 'लट्टू'
लटूरी स्त्री० (हि) दे० 'लटूरी'।
लटू पु० (हि) दे० 'लट्टू'
लटूरी स्त्री० (हि) बालों की एक लट। अलक।
लट्टू पु० (हि) १-एक प्रकार का गोल खिलौना जो रस्सी में बाँध कर जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है। २-बिजली की बत्ती। (बल्ब)।
लट्ठ पु० (हि) मोटी और मजबूत लाठी। बड़ा डंडा
लट्ठबंद पु० (हि) लठैत लाठी बांधने वाला आदमी।
लट्ठबाज वि० (हि) लाठी चलाने वाला। लठैत।
लट्ठमार वि० (हि) १-लठैत। लट्ठ मारने वाला। २-कठोर (बात)।
लट्ठा पु० (हि) १-लकड़ी का लम्बा बल्ला। २-एक प्रकार का कपड़ा। ३-लकड़ी का खम्भा। ४-धरन ५-शहतीर।
लठिया स्त्री० (हि) लाठी।
लठैत पु० (हि) लाठी की लड़ाई में निपुण व्यक्ति।
लड़ंत स्त्री० (हि) १-लड़ाई। भिड़न्त। २-सामना।
लड़ स्त्री० (हि) १-एकसी वस्तुओं की माला। २-रस्सी या डोर के कई तारों का एक तार। ३-पंक्ति।

४-पंक्तियों में लगे मंजरियों या फूलों का छड़ी के आकार का गुच्छा।
**लड़क** पुं० (हि) लड़का।
**लड़कई** स्त्री० (हिं) १-लड़कपन। बाल्यावस्था। २-नादानी। चंचलता।
**लड़कखेल** पुं० (हिं) १-बच्चों का खेल। २-साधारण बात या काम।
**लड़कपन** पुं० (हिं) १-बाल्यावस्था। २-चंचलता। ३-नासमझी।
**लड़कबुद्धि** स्त्री० (हिं) १-अपरिपक्व बुद्धि। २-लड़कों जैसी बुद्धि।
**लड़का** पुं० (हिं) १-बालक। छोकरा। २-पुत्र।
**लड़काई** स्त्री० (हि) दे० 'लड़कई'।
**लड़कावाला** पुं० (हि) सन्तान।
**लड़किनी** स्त्री० (हि) दे० 'लड़की'।
**लड़की** स्त्री० (हिं) १-कम आयु की (स्त्री)। बालिका २-पुत्री।
**लड़कीवाला** पुं० (हिं) १-कन्या का पिता या संरक्षक २-विवाह में कन्या पक्षवाला।
**लड़कौरी** वि० (हिं) जिसकी गोद में बच्चा हो। बच्चे वाली।
**लड़कैया** स्त्री० (हिं) लड़कपन।
**लड़खड़ाना** क्रि० १-डगमगाना। २-झोंका खाकर नीचे आना।
**लड़खड़ी** स्त्री० (हिं) डगमगाहट।
**लड़ना** क्रि० (हिं) १-भिड़ना। युद्ध करना। २-मल्ल-युद्ध करना। ३-जङ्ग करना। सेनाओं का युद्ध करना। ४-झगड़ा करना। तकरार करना। ५-मेल मिल जाना। ६-बिच्छू आदि का डंक मारना। ७-टकराना।
**लड़बावरा** वि० (हिं) १-अल्हड़। २-मूर्ख। ३-गंवार
**लड़बौरा** वि० (हिं) लड़बावरा।
**लड़ाई** स्त्री० (हिं) १-भिड़न्त। युद्ध। २-मल्लयुद्ध। ३-झगड़ा। विवाद। ४-दोनों सेनाओं में युद्ध। वाद-विवाद। ६-टक्कर। ७-अनबन। विरोध। ८-प्रहार।
**लड़ाई-बंदी** स्त्री० (हिं) समझौता करके युद्ध बन्द करना।
**लड़ाका** वि० (हिं) १-योद्धा। सिपाही। २-झगड़ालू।
**लड़ाना** क्रि० (हिं) १-लड़ने में प्रवृत्त करना। २-भिड़ाना। ३-लक्ष्य पर पहुँचना। ४-कलह के लिये उद्यत करना। ५-परस्पर उलझना। ६-प्रेम से पुचकारना।
**लड़ायता** वि० (हिं) दे० 'लड़ैता'।
**लड़ी** स्त्री० दे० 'लड़'।
**लड़ीला** वि० (हिं) दे० 'लाड़ला'।
**लड़ुआ** पुं० (हि) मोदक। लड्डू।
**लड़ैता** वि० (हि) १-लाड़ला। २-जो प्यार के कारण बिगड़ गया हो। धृष्ट। ३-प्रिय। ४-लड़ने वाला।
**लड्डुक** पुं० (सं) दे० 'लड्डू'।
**लड्डू** पु० (हि) गोल बँधी हुई मिठाई। मोदक।
**लड्याना** क्रि० (हि) दुलार करना।
**लढ़ा** पुं० (हि) बैलगाड़ी।
**लढ़िया** स्त्री० (हि) बैलगाड़ी।
**लत** स्त्री० (हि) बुरी आदत।
**लतखोर** वि० (हि) १-नीच। २-सदा लात खाने वाला।
**लतड़ी** स्त्री० (हिं) दे० 'लतरी'।
**लतरी** स्त्री० (हि) केसारी नामक अन्न
**लतहा** वि० (हि) लात मारने वाला (पशु)।
**लता** स्त्री० (स) वह पौधा जो जमीन या किसी आधार पर फैलता है। बेल। २-कोमल शाखा।
**लताकुंज** पुं० (सं) लताओं से छाया हुआ स्थान।
**लतागृह** पुं० (सं) लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।
**लताड़** स्त्री० (हि) दे० 'लथाड़'।
**लताड़ना** क्रि० (हि) १-पैरों से कुचलना। २-लातों से मारना। ३-फटकारना। झाड़ना।
**लतापता** पुं० (हि) बेल और पत्ते। जड़ी बूटी।
**लताभवन** पुं० (सं) दे० 'लतागृह'।
**लतामंडप** पुं० (सं) लताओं से बना मंडप या घर।
**लतावितान** पुं० (सं) लताओं से बना मंडप।
**लतिका** स्त्री० (सं) छोटी लता।
**लतियर** वि० (हि) दे० 'लतखोर'।
**लतियाना** क्रि० (हि) १-लातें मारना। २-पैरों से दबाना।
**लतीफ** वि० (अ) १-स्वादिष्ट। २-बढ़िया। मनोहर।
**लतीफमिजाज** वि० (अ) खुशमिजाज।
**लतीफा** पुं० (अ) १-चुटकुला। २-हँसी की बात। ३-अनूठी बात।
**लतीफाबाज** वि० (अ) विनोदी। हँसाने वाला।
**लत्ता** पुं० (हि) १-कपड़ा। २-फटा पुराना कपड़ा। ३-चीथड़ा।
**लत्ती** स्त्री० (हि) १-पशुओं के पद प्रहार का लात। २-कपड़े की लम्बी धज्जी। ३-लात मारने की क्रिया। ४-लट्टू की डोरी।
**लथपथ** वि० (हि) १-भीगा हुआ। तर। २-कीचड़ आदि में सना हुआ।
**लथाड़** स्त्री० (हि) १-जमीन पर घसीटने की क्रिया। २-झिड़की। ३-पराजय। ४-हानि।
**लथाड़ना** क्रि० (हि) दे० 'लथेड़ना'।
**लथेड़ना** क्रि०(हि) १-कीचड़ आदि में लपेटना। २-मैला करना। ३-जमीन पर पटक कर घसीटना। ४-तङ्ग करना। ५-डांटना।

**लदना** क्रि० (हि) १-बजन या भार ऊपर लेना। २-पूर्ण होना। ३-सामान ढोने वाले वाहन पर वस्तुओं का रखा जाना। ४-मरना। ५-किसी भारी वस्तु का अन्य किसी वस्तु पर रखा जाना।
**लदवाना** क्रि० (हि) लादने का काम दूसरे से कराना।
**लदाउ** वि० (हि) जो लादने को हो। पुं० लदाव। भराव।
**लदाऊ** पुं० (हि) दे० 'लदाउ'।
**लदान** स्त्री० (हि) लादने का सामान।
**लदाना** क्रि० (हि) दे० 'लदवाना'।
**लदाव** पुं०(हि) १-लदान। २-भार। बोझ। ३-बिना धरन की ईंट की छत की चिनाई का जोड़।
**लदावना** क्रि० (हि) माल लाद कर ले जाना।
**लदुआ** वि० (हि) दे० 'लदुवा'।
**लदुवा** वि० (हि) बोझ ढोने वाला।
**लद्दू** वि० (हि) दे० 'लदुवा'।
**लद्धड़** वि०(हि) मोटा होने के कारण सुस्त। आलसी
**लद्धड़पन** पु० (हि) सुस्ती। काहिली।
**लद्धना** क्रि० (हि) प्राप्त करना।
**लप** पुं० (हि) १-लपलपाने की क्रिया या भाव। २-छुरी तलवार की चमक की गति। ३-अंजलि। ४-अंजलि भर कोई चीज।
**लपकना** क्रि० (हि) झपट कर या शीघ्रता से आगे बढ़ना। २-टूट पड़ना। ३-कोई वस्तु पाने के लिए हाथ आगे बढ़ाना।
**लपझप** वि० (हि) १-चंचल। २-इधर-उधर की निरंतर बातें करने वाला। ३-तेज। फुर्तीला।
**लपट** स्त्री० (हि) १-आग की लौ। ज्वाला। २-गरम वायु का झोंका। ३-किसी गंध से भरा हुआ झोंका
**लपटना** क्रि०(हि)१-लिपटना। २-सटना। ३-फंसना। ४-रत रहना।
**लपटा** पु० (हि) १-लपसी। २-गाढ़ी वस्तु। ३-कढ़ी ४-थोड़ा लगाव।
**लपटाना** क्रि० (हि) १-लिपटाना। २-गले लगाना। ३-घेरना। ४-संलग्न। सटना। ५-उलझना।
**लपटौआँ** वि० (हि) १-सटा हुआ। २-लिपटने वाला
**लपटौना** पुं० (हि) कपड़ों पर चिपक जाने वाली एक प्रकार की घास।
**लपना** क्रि० (हि) १-झोंक के साथ इधर-उधर चलना २-झुकना। ३-लपकना।
**लपलपाना** क्रि०(हि)१-बेंत, छड़ी आदि का एक तरफ से हिलाए जाने पर इधर-उधर झुकना। २-छुरी आदि का चमकना। ३-लपाना। ४-छुरी तलवार आदि को निकाल कर चमकाना।
**लपलपाहट** स्त्री०(हि) १-लपलपाने का भाव या क्रिया २-चमक।
**लपसी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का पतला हलुआ। २-गीली गाढ़ी वस्तु।
**लपाना** क्रि० (हि) १-लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना। २-आगे बढ़ाना।
**लपेट** स्त्री० (हि) १-लपेटने की क्रिया या भाव। २-बल। ऐंठन। ३-घेरा। ४-उलझन। ५-पकड़।
**लपेटन** स्त्री० (हि) १-लपेट। २-बल। फेरा। ३-ऐंठन ४-उलझन। पुं० १-लपेटने वाली वस्तु। २-बांधने का कपड़ा। ३-पैरों में उलझने वाली वस्तु।
**लपेटना** क्रि० (हि) १-घुमाते हुए किसी वस्तु के चारों ओर लगाना। परिवेष्टित करना। २-कपड़े आदि के अन्दर बंधना। ३-गीली या गाढ़ी वस्तु पोतना। ४-उलझन आदि में किसी को सम्मिलित करना।
**लपेटवां** वि० (हि) १-जिसे लपेट सकें। २-जिसमें सोने चांदी के तार लपेटे हों। ३-जिसका अर्थ छिपा हो। गूढ़। ४-घुमाव-फिराव का।
**लप्पड़** पुं० (हि) दे० 'थप्पड़'।
**लफंगा** वि० (हि) १-लम्पट। व्यभिचारी। २-शोहदा
**लफना** क्रि० (हि) दे० 'लपना'।
**लफलफानि** स्त्री० (हि) लपलपाहट।
**लफ्ज** पुं० (अ) १-शब्द। २-बोल।
**लफ्ज-ब-लफ्ज** अव्य० (अ) शब्दशः।
**लफ्जी** वि० (अ) शाब्दिक।
**लफ्जीमानी** पुं० (अ) शब्दार्थ।
**लफ्फाज** वि० (अ) १-बातूनी। २-लच्छेदार बातें करने वाला।
**लब** पुं० (फा) ओंठ। होठ।
**लबझना** क्रि० (हि) उलझना। फँसना।
**लबड़धोंधों** स्त्री० (हि) १-व्यर्थ गुलगपाड़ा। २-अंधेर कुव्यवस्था।
**लबड़ना** क्रि० (हि) १-झूठ बोलना। २-गप हांकना
**लबनी** स्त्री० (देश) १-ताड़ के पेड़ में बांधने की लम्बी हांडी। २-बड़ा कड़ाहा।
**लबरा** वि० (हि) १-झूठ बोलने वाला। १-गप्पी।
**लबलबी** स्त्री० (फा) बन्दूक में घोड़े की कमानी।
**लबादा** पुं० (फा) १-लम्बा चोगा। २-रुई का बड़ा कोट।
**लबाब** वि० (अ) विशुद्ध। खालिस। पुं० (अ) १-सारांश। २-गूदा।
**लबार** वि० (हि) १-झूठा। २-गप्पी।
**लबारी** स्त्री० (हि) झूठ बोलना। वि० (हि) १-झूठा, २-चुगलखोर।
**लबालब** अव्य० (हि) ऊपर तक या किनारे तक भरा हुआ)।
**लबेद** पु० (हि) १-वेद के विरुद्ध वचन। दन्त कथा। २-प्रथा। ३-भोंडी बात।
**लबेदी** स्त्री० (हि) १-छोटा डण्डा। लाठी। २-जबरदस्ती।

**लब्ध** वि० (सं) १-मिला हुआ। २-उपार्जित। पुं० (सं) गणित में भाग करने पर आया हुआ फल।
**लब्धकाम** वि० (सं) सफल मनोरथ।
**लब्धकीर्ति** वि० (सं) प्रसिद्ध। विख्यात।
**लब्धचेता** वि०(सं) होश में आया हुआ।
**लब्धनामा** वि० (स) दे० 'लब्धकीर्ति'।
**लब्धप्रतिष्ठ** वि० (सं) दे० 'लब्धनामा'।
**लब्धविद्य** वि० (सं) शिक्षित। विद्वान।
**लब्धसंज्ञ** वि० (स) जो होश में हो।
**लब्धसिद्धि** वि० (स) जो किसी कला में पूर्ण निपुणता प्राप्त कर चुका हो।
**लब्धि** स्त्री०(हि) १-प्राप्ति। लाभ। २-प्रश्न का उत्तर।
**लभनी** स्त्री० (हि) दे० 'लवनी'।
**लभ्य** वि० (सं) १-पाने योग्य। २-उचित। ३-न्याय-संगत।
**लम** प्रत्य (हिं) लंबा का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों के आगे लगाया जाता है। जैसे-लमतड़ग।
**लमकना** क्रि० (हिं) १-उत्कंठित होना। २-लटकना। ३-लपकना।
**लमगोड़ा** वि० (हिं) लंबी टाँगों वाला।
**लमघिचा** वि० (हि) जिसकी गरदन लंबी हो।
**लमछड़** पुं० (हि) १-बरछी। भाला। २-पुरानी चाल की बंदूक। वि० पतला और लम्बा।
**लमछुआ** वि० (हि) दे० 'लम्बोतरा'।
**लमतड़ंग** वि० (हि) बहुत लम्बा या ऊँचा।
**लमधी** पुं० (हिं) समधी का दूसरा समधी।
**लमाना** क्रि० (हि) १-लम्बा करना। २-दूर तक आगे बढ़ाना। ३-लम्बा होना।
**लय** पुं० (सं) ध्यान में लीन होना। २-एक का दूसरे में समाना। ३-विनाश। प्रलय। ४-अनुराग। प्रेम। ५-मिल जाना। ६-स्थिरता। मूर्छा। स्त्री० गीत गाने का सुन्दर ढंग। धुन। २-संगीत में ताल का ठीक होना।
**लर** स्त्री० (हि) दे० 'लड़'।
**लरकई** स्त्री० (हि) लड़कपन।
**लरकना** क्रि०(हिं) १-झुकना। २-लटकना। ३-नीचे खिसकना।
**लरकाना** क्रि० (हि) १-लटकाना। २-झुकाना।
**लरकिनी** स्त्री० (हि) लड़की।
**लरखराना** क्रि० (हि) लड़खड़ाना।
**लरखरनि** स्त्री० (हि) लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।
**लरखारना** क्रि० (हिं) लड़खड़ाना।
**लरजना** क्रि० (हि) १-कांपना। २-हिलना। ३-डरजाना।
**लरजा** पुं० (फा) १-कंपकंपी। २-भूकंप। एक प्रकार का ज्वर।
**लरभर** वि० (हि) प्रचुर। अत्यधिक मात्रा में।
**लरना** क्रि० (हि) लड़ना।
**लरनि** स्त्री० (हि) १-लड़ाई। २-लड़ने का ढंग।
**लराई** स्त्री० (हि) लड़ाई।
**लराका** वि० (हि) दे० 'लड़ाका'।
**लरिकई** स्त्री० (हि) १-लड़कपन। २-चपलता।
**लरिकसलोरी** स्त्री० (हि) खेलवाड़। लड़कों का खेल
**लरिका** पुं० (हि) लड़का।
**लरिकाई** स्त्री० (हि) लड़कपन।
**लरिकिनी** स्त्री० (हि) लड़की।
**लरिया** पुं० (देश) दुपट्टा।
**लरी** स्त्री० (हि) दे० 'लड़ी'।
**ललक** स्त्री० (हि) प्रबल अभिलाषा।
**ललकना** क्रि० (हि) १-ललचना। २-प्रेम या चाह से भरना।
**ललकार** स्त्री० (हि) १-उच्च स्वर से युद्ध के लिए आह्वान। हाँक। २-लड़ने का बढ़ावा।
**ललकारना** क्रि० (हि) १-लड़ने के लिए चिल्लाकर बुलाना। २-लड़ने के लिए बढ़ावा देना।
**ललकित** वि० (हि) गहरी चाह से भरा हुआ।
**ललचना** क्रि० (हि) १-लालच करना। २-लालसा से अधीर होना। ३-मोहित होना।
**ललचाना** क्रि०(हि)१-किसी को कुछ दिखा कर उसके पाने के लिए आधीन करना। २-लुभाना।
**ललचौंहाँ** वि० (हि) लालच से भरा हुआ।
**ललन** पुं०(सं) १-प्यारा बालक। २-पति। ३-लड़का। ४-साल का पेड़।
**ललना** स्त्री० (सं) १-सुन्दर स्त्री। २-जीभ। ३-एक वर्णवृत्त।
**ललनाप्रिय** पुं०(हि) १-कदंब का पेड़। २-बेर।
**ललनी** स्त्री० (हि) बांस की कोई नली।
**ललरी** स्त्री० (हि) कान का निचला भाग।
**ललहीछठ** स्त्री० (हि) भाद्र कृष्ण की हल-षष्ठी।
**लला** पुं०(हि)१-प्यारा या दुलारा लड़का। २-लड़का ३-नायक के लिए प्रेम का शब्द।
**ललाई** स्त्री० (हि) लालिमा। लाली।
**ललाट** पुं०(स)१-मस्तक। माथा। २-भाग्य का लिखा
**ललाटतट** पुं० (सं) मस्तक या माथे का तल।
**ललाटपट्ट** पुं० (सं) दे० 'ललाटतट'।
**ललाटफलक** पुं० (सं) दे० 'ललाटतट'।
**ललाटरेखा** स्त्री० (सं) कपाल की रेखा। भाग्यलेख।
**ललाट-लेखा** स्त्री० (सं) दे० 'ललाटरेखा'।
**ललाटाक्ष** पुं० (सं) शिव।
**ललाना** क्रि० (हिं) लोभ करना। ललचना।
**ललाम** वि० (सं) १-रमणीय। सुन्दर। २-लाल रङ्ग का। ३-बड़ा। श्रेष्ठ। पुं० १-अलंकार। भूषण। २-तिलक।
**ललामी** स्त्री० (सं) १-कान में पहनने का एक गहना।

२-लाली । ३-सुन्दरता ।
**ललित** क्रि० (सं) १-सुन्दर । मनोहर । २-हिलता-डोलता हुआ । पुं० १-शृङ्गार रस में सुकुमारता से अंग हिलाना । २-एक वर्णवृत्त । ३-एक अलंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसका प्रतिबिंब वर्णन किया जाता है । ४-एक राग ।
**ललितई** स्त्री० (हि) दे० 'ललिताई' ।
**ललितकला** स्त्री० (सं) वह कला जिसके व्यक्त करने में सौंदर्य की अपेक्षा होती है । जैसे—संगीत । (फाइन आर्ट्स) ।
**ललितपद** पुं० (सं) अट्ठाइस मात्रा का एक छन्द । वि० जिसमें सुन्दर शब्द या पद हों ।
**ललितपुराण** पुं०(सं) बौद्धों का ललितविस्तार नामक ग्रन्थ ।
**ललितलोचन** पुं० (सं) सुन्दर नेत्र ।
**ललितविस्तार** पुं० (सं) दे० 'ललितपुराण' ।
**ललिता** स्त्री० (सं) १-रमणी । २-स्वेच्छाचारी स्त्री ३-दुर्गा । ४-कस्तूरी । ५-राधिका की एक सखी । ६-एक रागिनी । ७-एक वर्णवृत्त । ८-एक नदी (पुराण) ।
**ललिताई** स्त्री० (हि) सुन्दरता । लालित्य ।
**ललितापंचमी** स्त्री० (सं) आश्विन शुक्ला-पंचमी ।
**ललितोपमा** स्त्री० (सं) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय या उपमान की समता जताने के लिए तुल्य, समान आदि शब्द प्रयोग न करके मित्रता, निरादर, ईर्ष्या आदि का भाव प्रकट हो ।
**ललो** स्त्री० (हि) १-लड़की । २-लाड़ली लड़की । ३-नायिका के लिए प्यार का शब्द ।
**ललौहाँ** वि० (हि) लाली लिए हुए ।
**लल्ला** पुं० (हि) दे० 'लला' ।
**लल्लो** स्त्री० (हि) जीभ । जबान ।
**लल्लोचप्पो** स्त्री० (हि) किसी को प्रसन्न करने के लिए की गई चिकनी चुपड़ी बातें । खुशामद ।
**लल्लोपत्तो** स्त्री० (हि) दे० 'लल्लोचप्पो' ।
**लवंग** पुं० (सं) १-लौंग का वृक्ष । २-इस वृक्ष की सूखी कली । लौंग ।
**लवंगलता** स्त्री०(सं) १-लौंग का पेड़ या उसकी शाखा २-एक बंगाली मिठाई ।
**लव** पुं० (सं) १-बहुत थोड़ी मात्रा । २-लवा नामक पक्षी । ३-दो काष्ठा का समय । ४-लवंग । ५-काटना ६-विनाश । ७-ऊन । बाल (पशु) । ८-रामचन्द्रजी के दो पुत्रों में से एक ।
**लवकना** क्रि० (हि) १-चमकना । २- दिखाई देना ।
**लवका** स्त्री०(हि) १-चमक । २-बिजली । ३-कौंधा ।
**लवण** पुं० (सं) २-नमक । (साल्ट) । २-पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक । ३-एक असुर का नाम । वि० (सं) १-नमकीन । खारा । २-सलोना । सुन्दर
**लवणत्रय** पुं० (सं) सैंधव, बिट् और सचल इन तीन प्रकार के नमकों का समूह ।
**लवणभास्कर** पुं० (सं) वैद्यक का एक प्रसिद्ध हाजिम चूर्ण ।
**लवण-समुद्र** पुं० (सं) खारे पानी का समुद्र ।
**लवणांतक** १-लवणासुर को मारने वाले शत्रुघ्न । २-नीबू ।
**लवणालय** पुं० (सं) १-लवणासुर द्वारा बसाई गई आधुनिक मथुरा । २-समुद्र ।
**लवणिमा** स्त्री० (सं) सुन्दरता । सलोनापन ।
**लवणोदधि** पुं० (सं) लवण समुद्र ।
**लवन** पुं० (सं) १-काटना । २-खेत की कटाई । ३-लौनी । खेत काटने की मजदूरी के बदले दिया हुआ अन्न ।
**लवना** क्रि० (हि) १-पके हुए अन्न को खेतों से अलग कर इकट्ठा करना । वि० (हि) लोनी ।
**लवनाई** स्त्री० (हि) लावण्य । सुन्दरता ।
**लवनि** स्त्री० (हि) १-खेत की फसल काटने की क्रिया २-खेत काटने की मजदूरी के बदले दिया अन्न ।
**लवनी** स्त्री० (हि) १-दे० 'लवनि' । २-नवनीत । मक्खन । स्त्री० (सं) शरीफे का पेड़ या फल ।
**लवनीय** वि० (सं) काटने के योग्य ।
**लवर** स्त्री० (हि) अग्नि की लपट । ज्वाला ।
**लवली** स्त्री० (सं) १-एक विषम वर्णवृत्त । २-हरफा-रेवड़ी का वृक्ष ।
**लवलीन** वि० (हि) तन्मय । तल्लीन । मग्न ।
**लवलेश** पुं० (सं) १-अत्यन्त । अल्पमात्रा । २-जरा-सा लगाव ।
**लवलेस** पुं० (सं) दे० 'लवलेश' ।
**लव्य** वि० (सं) दे० 'लवनीय' ।
**लवा** पुं० (हि) १-अन्न का दाना जो भूनने से फूल गया हो । २-एक तीतर की जाति का छोटा पक्षी ।
**लवाई** वि० (देश) हाल की ब्याई हुई गाय । स्त्री० (हि) १-खेत की फसल की कटाई । २-कटाई की मजदूरी ।
**लवाजिमा** पुं० (अ) १-बड़े आदमियों के साथ रहने वाले लोग । २-आवश्यक सामग्री ।
**लवारा** पुं० (हि) गाय का बछड़ा वि० (हि) आवारा
**लवासी** वि० (हि) १-लम्पट । २-बकवादी । ३-बदचलन ।
**लशकर** पुं० (फा) १-सेना । फौज । २-सेना की छावनी । ३-जहाज पर काम करने वाले मल्लाह ।
**लशकरगाह** पुं० (फा) छावनी । शिविर ।
**लशकरनवीस** पुं० (फा) सेना (फौज) का वेतन बाँटने वाला ।
**लशुन** पुं० (सं) लहसुन ।
**लशून** पुं० (सं) लहसुन ।

लश्करी वि० (फा) १-फौज का। सैनिक। २-जहाज पर काम करने वाला। ३-जहाज से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० १- सिपाही। सैनिक। २-जहाजी। ३-जहाजियों की बोली
लश्करी-बोली स्त्री० (फा) जहाज वालों की बोली।
लषन पुं० (हि) दे० 'लखन'।
लषना क्रि० (हि) दे० 'लखना'।
लषित वि० (स) अभिलषित। चाहा हुआ।
लस पुं०(सं) १-वह गुण जिससे कोई वस्तु चिपकती हो। २-आकर्षण। ३-गोंद। लासा।
लसकर पुं० (हि) दे० 'लश्कर'।
लसगर पुं० (हि) दे० 'लश्कर'।
लसदार वि० (हि) जिसमें चिपकने का गुण हो।
लसना क्रि०(हि)१-चिपकाना। चपकना। २-विराजना
लसनि स्त्री० (हि) १-स्थिति। २-शोभा। छटा।
लसम वि० (देश) दागी। खोटा। दूषित।
लसलसा वि० (हि) लसदार। चिपचिपा।
लसलसाना क्रि० (हि) लसयुक्त होना।
लसलसाहट पुं० (हि) चिपचिपाहट। लसदार या चिपचिपा होने का भाव।
लसा स्त्री० (सं) १-केसर। २-हल्दी।
लसिका स्त्री० (स) थूक। लार।
लसित वि०(सं) सुशोभित। सुन्दर जान पड़ता हुआ।
लसी स्त्री०(हि) १-लस। चिपचिपाहट। २-आकर्षण। ३-लोभ का योग। ४-दूध और पानी का शरबत।
लसीका स्त्री० (सं) १-थूक। २-मवाद। ३-पीब। ४-शरीर में से रक्त की तरह निकलने वाला एक तरल पदार्थ। (लिम्फ)।
लसीला वि०(हि) जिसमें लस हो। चिपचिपा। सुन्दर
लसुनिया पुं० (हि) एक बहुमूल्य पत्थर।
लसोड़ा पुं०(हि) एक प्रकार का वृक्ष जिसके गोल बेर के समान फल दवा के काम आते हैं।
लसोढ़ा पुं० (हि) दे० 'लसोड़ा'।
लसोटा पुं० (हि) १-गोंदानी। बहेलियों का बांस का चोंगा जिसमें चिड़िया फँसाने का लासा लगा होता है।
लस्टमपस्टम अव्य० (हि) १-जैसे-तैसे। २-धीरे-धीरे। ३-किसी तरह से।
लस्त वि० (सं) शोभायुक्त। वि० (हि) १-शिथिल। थका हुआ। २-असक्त।
लस्सी स्त्री० (हि) १-छाछ। मठा। २-दही घोलकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ।
लहँगा पुं० (हि) १-स्त्रियों के कटि के नीचे का भाग ढांपने का घेरदार पहरावा। साया।
लहक स्त्री०(हि) १-आग की लपट। २-चमक। शोभा
लहकना क्रि०(हि) १-लहराना। २-आग सुलगाना। ३-लपकना। ४-हवा का बहना। ललकना।
लहकाना क्रि० (हि) १-झोका खिलाना। २-लपकाना। ३ आगे बढ़ाना। ४-किसी के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भड़काना।
लहकारना क्रि०(हि)१-उत्साह दिला कर आगे बढ़ाना २-कुत्ते को क्रुद्ध करके किसी के पीछे लगाना।
लहकौर स्त्री०(हि) विवाह की वह रीति जिसमें दुलहा-दुलहिन एक दूसरे को कौर खिलाते हैं।
लहकौरि स्त्री० (हि) दे० 'लहकौर'।
लहजा पुं० (अ) गाने या बोलने का ढंग। स्वर। लय।
लहजा पुं० (अ) क्षण। पल। अल्पकाल।
लहनदार पुं०(फा) लेनदार। महाजन। जिसे अपना दिया हुआ ऋण लेने का अधिकार हो।
लहना क्रि०(हि)१-प्राप्त करना। २-काटना। छीलना पुं० १-भाग्य। २-ऋण जो मिलने को हो।
लहबर पुं० (हि) १-एक प्रकार का चोगा। २-ऊँचा झंडा। ३-एक प्रकार का तोता।
लहमा पुं० (फा) निमेष। क्षण। पल।
लहर पुं० (हि) १-वायु के झोंके से और स्पर्श से पानी में इधर-उधर होने वाली गति। हिलोर। तरंग २-उमंग। जोश। ३-रोग में पीड़ा का रह-रह कर होने वाला वेग। ४-टेढ़ी या तिरछी रेखा या चाल ५-स्वर का वायु में कंप। ६-वायु का झोका। ७-महक।
लहरदार वि० (हि) जो बल खाता गया हो।
लहरना क्रि० (हि) दे० 'लहराना'।
लहरपटोर पुं० (हि) एक प्रकार का रेशमी धारीदार कपड़ा।
लहरपटोरी पुं० (हि) दे० 'लहरपटोर'।
लहरबहर स्त्री० (हि) आनन्द तथा सुख।
लहरा पुं० (हि) १-लहर। तरङ्ग। २-मौज। आनन्द ३-नाच या गाना आरम्भ होने से पहले सारङ्गी या तबले पर बजने वाली एक गत।
लहराना क्रि० (हि) १-हवा के झोकों से लहरों का इधर-उधर हिलना-डोलना। २-इधर-उधर झोका खाते हुए चलना। ३-हिलोरें मारना। ४-उमङ्ग में होना। ५-दहकना। ६-टेढ़ी चाल में ले जाना।
लहरिया पुं० (हि) १-एक प्रकार का धारीदार कपड़ा २-लहर के समान टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं का समूह। ३-जरी के कपड़े के किनारी बनी हुई बेल।
लहरियादार वि० (हि) जिसमें लहरिया की टेढ़ीमेढ़ी लकीरें पड़ी हों।
लहरी स्त्री० (सं) लहर। तरङ्ग। मौज। वि० (हि) मनमौजी।
लहलहा वि० (हि) १-हराभरा। लहलहाता हुआ। २-प्रफुल्ल। ३-हृष्टपुष्ट।
लहलहाना क्रि० (हि) १-हराभरा होना। २-प्रसन्न

होना। ३-पनपना। ४-सूखे पेड़ों में फिर पत्तियां आना।
**लहसुन** पुं० (हिं) एक पौधा जिसकी जड़ गोल गांठ के रूप में होती है और मसाले के काम आती है। रत्न का एक दोष।
**लहसुनिया** पुं० (हिं) एक बहुमूल्य पत्थर।
**लहा** पुं० (हिं) दे० 'लाह'।
**लहाछेह** पुं० (हिं) १-नाच की द्रुत गति। २-नाच की एक गति। ३-शीघ्रता। फुर्ती।
**लहालह** वि० (हि) दे० 'लहलहा'।
**लहालोट** वि० (हि) १-हँसी से लोटता हुआ। २-आनन्द के मारे उछलता हुआ।
**लहासी** स्त्री० (हि) १-जहाज या नाव की मोटी रस्सी २-मार्ग में निकली हुई जड़।
**लहिं** अव्य० (हि) तक। पर्यन्त।
**लहु** अव्य० (हि) दे० 'लौं'।
**लहुरा** वि० (हि) छोटा। कनिष्ठ।
**लहू** पुं० (हिं) रक्त। रुधिर। खून।
**लहूलुहान** वि० (हिं) खून से तरबतर।
**लाक** स्त्री० (हि) १-ताजी कटी हुई फसल। २-कमर कटि। ३-परिमाण।
**लांग** स्त्री० (हि) धोती का वह भाग जो पीछे खोसा जाता है।
**लांघना** क्रि० (हि) १-इस पार या उस पार जाना। २-किसी चीज को उछल कर पार करना।
**लांच** स्त्री० (देश) रिश्वत। घूस।
**लांछन** पुं० (स) १-चिह्न। २-दाग। ३-दोष। कलङ्क
**लांछना** स्त्री० (हि) दे० 'लांछन'।
**लांछनित** वि० (हि) दे० 'लांछित'।
**लांछित** वि० (सं) जिसे लांछित या दोष लगा हो। कलङ्कित।
**लांबा** वि० (हिं) दे० 'लंबा'।
**ला** अव्य० (अ) नहीं। न। बिना। स्त्री० (सं) लेना-देना।
**लाइ** स्त्री० (हि) अग्नि। आग।
**लाइन** स्त्री० (अं) १-रेखा। कतार। पंक्ति। २-रेल की सड़क। ३-सैनिकों का वास-स्थान।
**लाइलाज** वि० (अ) १-जिसका कोई इलाज न हो। २-असाध्य।
**लाइल्म** वि० (अ) १-अनपढ़। मूर्ख। २-बेखबर।
**लाई** स्त्री० (हि) १-धान का लावा। २-चुगली। स्त्री० (फा) १-एक रेशमी कपड़ा। २-एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
**लाईलतरी** स्त्री० (हि) चुगली।
**लाकड़ी** स्त्री० (हि) लकड़ी।
**लाकरी** स्त्री० (हि) लकड़ी।
**लाकुटिक** वि० (स) डण्डा या लकड़ी का धारण करने वाला।
**लाकेट** पुं० (अं) वह लटकन जो किसी जंजीर आदि में शोभा के लिये पहना जाता है।
**लाक्षणिक** वि० (सं) १-जिससे लक्षण प्रकट हो। लक्षण सम्बन्धी। पुं० (सं) १-लक्षण जानने वाला २-एक ३२ मात्रा का छन्द।
**लाक्षा** स्त्री० (सं) १-लाख। लाह। २-एक प्रकार का लाल रङ्ग।
**लाक्षागृह** पुं० (सं) लाख का वह घर जो दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनाया था।
**लाक्षारस** पुं० (सं) महावर।
**लाख** वि० (हि) १-सौ हजार। २-बहुत अधिक। स्त्री० (सं) एक प्रकार का प्रसिद्ध लाल पदार्थ जिसे पीपल आदि के पेड़ों पर कीड़े बनाते हैं। २-लाख के कीड़े
**लाखना** क्रि० (हिं) १-बन्द करने के लिये छेद में लाख लगाना। २-जान लेना।
**लाखपती** पुं० (हिं) दे० 'लखपती'।
**लाखा** पुं० (हिं) १-लाख का बना हुआ एक रङ्ग। २-मारवाड़ी भक्त। ३-गेहूँ के पौधे का एक रोग।
**लाखागृह** पुं० (हि) दे० 'लाक्षागृह'।
**लाखिराज** वि० (अ) (वह भूमि) जिसका लगान न देना पड़े।
**लाखी** वि० (अ) १-मटमैला। २-लाख के रङ्ग का लाल। ३-लाख का बना हुआ। पुं० (हिं) लाख के रङ्ग का घोड़ा।
**लाग** स्त्री० (हि) १-सम्बन्ध। लगाव। २-लगन। ३-प्रेम। ४-उपाय। ५-ऐंद्रिजालिक कौशल वाला स्वांग। ६-प्रतियोगिता। ७-शत्रुता। ८-जादू। टोना। ९-टीका लगाने का चेप। १०-रस। भस्म। ११ लगान। १२-एक नृत्य।
**लागडांट** स्त्री० (हि) १-शत्रुता। २-प्रतियोगिता। ३-नृत्य की एक क्रिया।
**लागत** स्त्री० (हि) वह व्यय जो किसी वस्तु को बनाने में खर्च होता है। (कॉस्ट)।
**लागना** क्रि० (हि) दे० 'लगाना'।
**लागि** अव्य० (हि) १-कारण। हेतु। वास्ते। लिये। २-से। द्वारा।
**लागुडिक** वि० (सं) जिसके हाथ में लाठी हो। पुं० (सं) पहरेदार।
**लागू** वि० (हि) १-जो लग सकता हो। २-जो लगाया जा सके। (एप्लिकेबल)।
**लागे** अव्य० (हि) वास्ते। लिये। निमित्त।
**लाघव** पुं० (सं) १-लघुता। २-कमी। न्यूनता। ३-हाथ की सफाई। तेजी। ४-आरोग्यता। ५-नपुंसकता।
**लाघवी** स्त्री० (हि) शीघ्रता। फुर्ती।
**लाचार** वि० (फा) १-जिसका कुछ वश न चले। २-

असमर्थ। विवश।
लाचारी स्त्री० (फा) विवशता। मजबूरी।
लाची स्त्री० (हि) दे० 'इलायची'।
लाचीदाना पुं० (हि) इलायची के ऊपर चीनी चढ़ा-कर बनाई गई मिठाई।
लाछन पुं० (हि) कलङ्क। लांछन।
लाछी स्त्री० (हि) लक्ष्मी।
लाज स्त्री० (हि) १-लज्जा। शर्म। हया। २-प्रतिष्ठा। ३-धान का लावा।
लाजक पुं०(हि) धान का भुना हुआ लावा।
लाजना क्रि० (हि) उत्तेजित होना। शर्माना।
लाजभक्त पुं० (सं) लावा या खोई का पकाया हुआ भात।
लाजवंत वि० (हि) जिसे लाज या शर्म हो। हयादार
लाजवर्द पुं० (फा) एक कीमती पत्थर।
लाजवर्दी वि० (फा) लाजवर्द के रङ्ग का। हल्के नीले रंग का।
लाजा स्त्री० (सं) १-चावल। २-धान की खील। लावा।
लाजिम वि० (अ) १-आवश्यक। २-उचित।
लाजिमी वि० (अ) दे० 'लाजिम'।
लाट पुं० (हि) १-ऊँचा और मोटा खंभा। २-इस प्रकार की बनावट या इमारत। ३-किसी प्रांत या प्रदेश का सबसे बड़ा शासक। (गवर्नर)। ४-बहुत सी वस्तुओं का समूह जो एक साथ बेचा जाय। (सं) १-एक प्राचीन देश। २-वांध। ३-अनुराग।
लाटरी स्त्री०(अ) वह योजना जिसमें लोगों को गोली उठा कर उनके भाग्य के अनुसार धन या कोई बहु-मूल्य वस्तु दी जाती है।
लाटानुप्रास पुं० (सं) एक शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है परन्तु अन्वय में हेर-फेर के करने से अर्थ बदल जाता है।
लाटिका स्त्री० (सं) साहित्य में चार प्रकार की रच-नाओं में से एक।
लाटी स्त्री० (हि) वह अवस्था जिसमें ओठ और मुंह का थूक सूख जाता है।
लाठालाठी स्त्री० (हि) लाठियों से आपस में प्रहार करना।
लाठी स्त्री० (हि) बड़ा डंडा। लकड़ी।
लाड़ पुं० (हि) बच्चों के साथ किया जाने वाला दुलार।
लाड़चाव पुं० (हि) प्यार। दुलार।
लाड़लड़ंता पुं० (हि) बड़े प्यार के साथ पला हुआ।
लाड़ला वि० (हि) दुलारा। जिससे लाड़ किया जाय
लाडू पुं० (हि) लड्डू। मोदक।
लात स्त्री० (हि) १-पैर। पद। पांव। २-पदाघात। लात से किया गया प्रहार।
लाद स्त्री० (हि) १-पेट। आंत। २-लदाई। ३-माल लाद कर ले जाने वाले पशु।
लादना क्रि०(हि) १-किसी पर बोझ रखना। २-ढोने के लिए वस्तुओं को भरना।
लादिया पुं० (हि) बोझ लादकर ले जाने का काम करने वाला।
लादी पुं० (हि) पशु पर लादी गई गठरी या बोझ।
लाधना क्रि० (हि) पाना या प्राप्त करना।
लानत स्त्री० (अ) धिक्कार। भर्त्सना।
लानत-मलामत स्त्री० (अ) १-धिक्कार। २-झिड़की।
लाना क्रि० (हि) १-कहीं से कोई वस्तु लेकर आना। २-उपस्थित करना। ३-देना या सामने रखना। ४-लगाना। ५-आग लगाना।
लाने अव्य० (हि) १-लिये। २-निमित्त। वास्ते।
लापता वि० (हि) जिसका पता न हो। (नोट टू से बल)।
लापता-चिट्ठीघर पुं० (हि) वह डाकखाने का विभाग जहां उन पत्रों को खोल कर और पढ़कर ठीक व्यक्ति को पहुँचाया जाता है जिन पर ठीक पता नहीं लिखा होता। (डेड लैटर आफिस)।
लापरवाह वि० (अ) बेफ़िक्र।
लापसी स्त्री० (हि) दे० 'लपसी'।
लाबर वि० (हि) दे० 'लबार'।
लाभ पुं० (सं) १-मिलना। प्राप्ति। २-उपकार। ३-कारोबार में होने वाला मुनाफा। (प्रॉफिट)।
लाभकर वि०(सं) १-दे० 'लाभकारक'। पुं० आयात-कर। (इम्पोस्ट)।
लाभकरजोत स्त्री० (हि) काश्तकार या किसान द्वारा जोती हुई वह भूमि जिसकी उपज से होने वाली आय भरण-पोषण के व्यय के लिये पर्याप्त हो। (एकोनॉमिक होल्डिंग)।
लाभकारक वि० (सं) जिससे लाभ होता हो। लाभ-कारी।
लाभकारी वि० (सं) लाभजनक।
लाभदायक वि० (सं) दे० 'लाभकारक'।
लाभपद पुं० (सं) वह पद जिससे लाभ होता हो। (ऑफिस आफ प्रॉफिट)।
लाभलिप्सा स्त्री० (हि) लाभ या मुनाफा कमाने की प्रबल इच्छा।
लाभ-विभाजन पुं० (सं) वह योजना जिसके अनु सार किसी संस्था में होने वाली आय को हिस्से-दारों तथा मजदूरों में उचित ढंग से बांटने की व्यवस्था की जाती है। (प्रोफिट शेयरिंग स्कीम)।
लाभयोजना पुं० (सं) दे० 'लाभ-विभाजन'।
लाभस्थान पुं०(सं) फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म-कुंडली में लग्न से ग्यारहवाँ स्थान।
लाभांश पुं० (सं) किसी सीमित समवाय (लिमिटेड-

कम्पनी) के लाभ का वह अंश जो हिस्सेदारों को उनके लाभ के अनुसार मिलता है। (डिविडेन्ड)।

**लाभालाभ** पुं० (सं) हानि और लाभ।

**लाम** पुं० (हि) १-सेना। फौज। २-बहुत से लोगों का समूह। ३-ब्रिगेड। अव्य० (देश) दूर। (अ) अरबी भाषा की वर्णमाला का एक अक्षर।

**लामकाफ** पुं० (अ) अपशब्द। बेहूदा बात।

**लामजहब** वि०(अ) नास्तिक। जिसका कोई धर्म न हो।

**लामन** पुं० (देश) लँहगा।

**लामा** पुं० (तिब्ब०) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य तथा शासक। वि० (देश) लम्बा।

**लामिसाल** वि० (अ) अद्वितीय। बेजोड़।

**लामें** अव्य० (हि) दूर। अन्तर पर।

**लाय** स्त्री० (हि) १-लपट। ज्वाला। २-अग्नि।

**लायक** पुं० (हि) दे० 'लाजक'।

**लायक** वि० (अ) १-योग्य। २-उचित। ठीक। ३-समर्थ। (फिट)।

**लायकी** स्त्री० (अ) सुयोग्यता। उपयुक्तता।

**लायची** स्त्री० (हि) इलायची।

**लार** स्त्री० (हि) १-मुँह से निकलने वाला थूक। २-कतार। ३-लुआब। अव्य० साथ। पीछे।

**लारी** स्त्री० (अ) वह लम्बी मोटर गाड़ी जिसमें बहुत आदमी बैठने तथा सामान रखने की जगह होती है

**लारू** पुं० (हि) लड्डू।

**लाल** पुं०(हि) १-पुत्र। २-छोटा और प्यारा बच्चा। ३-प्रिय व्यक्ति। ४-एक छोटी लाल रङ्ग की भूरी चिड़िया। ५-आधुनिक सोवियत-रूस, बोल्शेविक और बोल्शेविक क्रांति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द। (रेड)। ६-क्रांतिसूचक शब्द। ७-चाह। ८-लालसा। ९-लाल चीन। वि० १-सुर्ख। रक्त के रङ्ग का। २-बहुत अधिक क्रुद्ध। ३-(बहु-खिलाड़ी) जो खेल में पहले जीत गया हो। (फा) मानिक नामक एक रत्न।

**लालअंगारा** वि०(हि)१-अत्यधिक क्रोध के कारण लाल २-बिलकुल लाल।

**लालचंदन** पुं० (हि) वह चन्दन जिसका रङ्ग लाल होता है।

**लालच** पुं० (हि) कुछ पाने की अधिक और अनुचित इच्छा।

**लालचहाँ** वि० (हि) लोभी। लालची।

**लालची** वि० (हि) जिसे बहुत अधिक लालच हो।

**लालटेन** स्त्री० (हि) प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल, बत्ती और चारों ओर गोल शीशा होता है। (लैंटर्न)।

**लालड़ी** पुं०(हि) एक प्रकार का लाल रङ्ग का नगीना

**लालन** पुं० (सं) प्रेमपूर्वक बच्चों को प्रसन्न करना। (हि) १-प्रिय पुत्र। २-बालक। ३-लाड़ या दुलार करना।

**लालना** क्रि० (हि) लाड़ या दुलार करना।

**लालनीय** वि० (सं) लाड़ या दुलार करने योग्य।

**लालफीता** पुं० (हि) १-सरकारी कागजों पर बांधने का लाल फीता। २-सरकारी कागजों में किसी विषय पर निर्णय पर पहुँचने में पेचीदा प्रणाली के कारण लगने वाली देर। (रेडटेपिज्म)।

**लालबुझक्कड़** पुं० (हि) बातों का मूर्खतापूर्ण या अटकलपच्चू अर्थ लगाने वाला व्यक्ति।

**लालमन** पुं० (हि) १-एक प्रकार का बड़ा तोता। २-श्रीकृष्ण।

**लालरी** पुं० (हि) दे० 'लालड़ी'।

**लालशक्कर** स्त्री० (हि) बिना साफ की हुई चीनी। खाँड।

**लालसमुद्र** पुं० (हि) दे० 'लालसागर'।

**लालसा** स्त्री० (सं) १-कुछ पाने की बहुत इच्छा। उत्कट अभिलाषा। २-दोहद।

**लालसाग** पुं० (हि) मरसा नामक साग।

**लालसागर** पुं०(हि) भारतीय महासागर का भाग जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है।

**लालसिरा** पुं० (हि) मुर्गा।

**लालसी** वि० (हि) लालसा या इच्छा करने वाला।

**लालसेना** स्त्री० (हि) १-क्रांतिकारी सेना। २-सोवियत रूस की सेना। (रेड आर्मी)।

**लाला** पुं० (हि) १-एक आदरसूचक संबोधन। महाशय। २-कायस्थ और बनिया जाति का वाचक शब्द। ३-बच्चों के लिये संबोधन। पुं० (फा) गुलेलाला नामक पुष्प। वि० लाल रंग का। स्त्री०(सं) राल। थूक।

**लालाप्रमेह** पुं०(हि) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें पेशाब के साथ राल जैसा पदार्थ आता है।

**लालास्राव** पुं० (हि) राल। थूक। मुखस्राव।

**लालायित** वि०(सं) जिसे बहुत लालसा हो। लोलुप।

**लालालु** वि० (सं) दे० 'लालायित'।

**लालित** वि० (सं) १-दुलारा। प्यारा। २-जो पाला पोसा गया हो।

**लालित्य** पुं० (सं) ललित का भाव। सौंदर्य। मनोहरता।

**लालिमा** स्त्री० (सं) लाली। अरुणता। ललाई।

**लाली** स्त्री० (हि) १-अरुणता। ललाई। २-प्रतिष्ठा। ३-सुरखी। पिसी हुई ईंट। ४-आसाम की एक नदी का नाम।

**लाले** पुं० (हि) लालसा। अभिलाषा।

**लालो** पुं० (हि) दे० 'लाले'।

**लाल्य** वि० (सं) दुलार करने योग्य।

**लाल्हा** पुं० (हि) मरसा नामक साग।

**लाव** पुं० (सं) १-लवा नामक पक्षी। २-लौंग। स्त्री०

(हि) १-अग्नि। २-मोटी रस्सी। ३-लगन।
लावक पुं० (स) १-लवापक्षी। २-घरसा ३-विभाजक।
लावणिक वि० (सं) नमक का। नमक सम्बन्धी पुं० १-नमकदान। २-नमक बेचने वाला।
लावण्य पुं० (स) १-अत्यंत सुन्दरता। २-स्वभाव का अच्छापन।
लावण्य-लक्ष्मी स्त्री० (सं) बहुत अधिक सुन्दरता।
लावदार पुं०(हि) तोप में बत्ती लगाने वाला तोपची।
लावनता स्त्री० (हि) अत्यधिक सुन्दरता।
लावना क्रि० (हि) १-लाना। २-स्पर्श करना। ३-जलाना।
लावनि स्त्री० (हि) सौंदर्य। लावण्य।
लावनी स्त्री० (हि) एक प्रकार का छंद जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है।
लावनीबाज वि० (हि) लावनी गाने वाला।
ला-बबाली पुं०(म) १-बेफिक्र। उच्छृंखल। स्त्री० (प्र) लापरवाही। उपेक्षा।
लावल्द वि० (प्र) संतानरहित।
लावा पु०(सं) लावा नामक पक्षी। (हि) धान, ज्वार आदि के दाने जो भूनने पर फूल जाते हैं। खील। (मं) राख और पिघली हुई धातु मिला वह पदार्थ जो ज्वालामुखी से निकलता है।
लावापरछन पुं० (हि) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का भाई उसकी अंजलिया में अन्न डालता है।
लावारिसी वि० (प्र) १-जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। २-जिसका कोई मालिक न हो (वस्तु)।
लाविक पुं०(सं) भैंसा।
लाश स्त्री० (फा) किसी प्राणी का मृत शरीर। शव
लाष स्त्री० (हि) लाख। लाह।
लाषना क्रि० (हि) दे० 'लखना'।
लास पुं० (हि) एक प्रकार का नाट। मटक। (सं) जूस। रसा। शोरबा।
लासक पुं० (सं) १-मोर। मयूर। २-नर्त्तक। अभिनेता।
लासकी स्त्री० (सं) १-अभिनेत्री। २-नर्त्तकी।
लासा पुं०(हि)१-कोई लसदार वस्तु। चेप। २-किसी को फंदे में फसाने का साधन।
लासानी वि० (प्र) अनुपम। बेजोड़।
लासि पुं० (हि) दे० 'लास्य'।
लासिका स्त्री० (स) १-नर्त्तकी। २-वेश्या।
लासु पुं० (हि) दे० 'लास्य'।
लास्य पुं० (सं) १-नृत्य। नाच। २-शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करने वाला कोमल स्त्रियों का नृत्य.
लाहल वि० (प्र) असाध्य। पुं० (हि) दे० 'लाहौल'
लाही स्त्री० (हि) १-लाख उत्पन्न करने वाला कीड़ा २-लाखा खील। ३-फागुन की उपज को हानि पहुचाने वाला कीड़ा।
लाहौरी-नमक पुं० (हि) सेंधा-नामक।
लाहौल पुं० (प्र) एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसे मुसलमान लोग भूत प्रेत या बला को भगाने के लिए प्रयोग करते हैं।
लिंग पुं० (सं) १-चिह्न। २-लक्षण। ३-गुप्तेंद्रिय ४-शिव की इस आकार की मूर्ति। ५-वह तत्व जिसके द्वारा पुरुष और स्त्री का भेद प्रकट होता है (व्याकरण)। ६-अठारह पुराणों में से एक। (सेक्स)।
लिंगदेह पुं० (सं) सूक्ष्म-शरीर।
लिंगधर वि० (सं) आडम्बरी। ढोंगी।
लिंगधारी वि० (स) चिह्न धारण करने वाला।
लिंगप्रतिष्ठा स्त्री० (स) शिवलिंग की स्थापना करना।
लिंगवृत्ति पुं० (स) आडम्बरी। ढकोसलेबाज।
लिंगशरीर पुं० (सं) दे० लिंगदेह'।
लिंगार्चन पुं० (सं) शिवलिंग की पूजा।
लिंगिनी स्त्री० (सं) वह स्त्री जो धर्म का आडम्बर करती हो।
लिंगी पुं० (सं) १-चिह्न वाला। २-आडम्बरी। ३-हाथी।
लिंगेंद्रिय पुं० (सं) पुरुषों की मूत्रेन्द्रिय।
लिफ पुं० (प्र) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम आता है।
लिए हिन्दी का एक सम्प्रदान कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लग कर उसके निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है।
लिक्खड़ पुं० (हि) बहुत बड़ा लेखक। (व्यङ्ग)।
लिक्षा स्त्री० (सं) १-जूँ का अण्डा। लीख। २-एक सूक्ष्म।
लिक्षिका स्त्री० (सं) लीख।
लिख पुं० (सं) लिखने वाला। लेखक।
लिखत स्त्री० (हि) १-दे० 'लिखित'। २-वह लेख जिसमें दो पक्षों के समझौते की शर्तें लिखी हों। (इन्स्ट्रूमेंट)।
लिखतपढ़त स्त्री० (हि) लिखा-पढ़ी का कोई कागज।
लिखधार पुं० (हि) लिखने वाला। लेखक।
लिखना क्रि० (हि) १-कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। २-अंकित करना। ३-काव्य, लेख आदि की रचना करना।
लिखनी स्त्री० (हि) कलम।
लिखवाई स्त्री० (हि) दे० 'लिखाई'।
लिखवाना क्रि० (हि) दे० 'लिखाना'।
लिखवार पुं० (हि) दे० 'लिखधार'।
लिखाई स्त्री० (हि) १-लिखने का ढंग। लिखावट। २-लेख। लिपि। ३-लिखने का पारिश्रमिक।

**लिखाई-पढ़ाई** स्त्री० (हि) विद्योपार्जन।
**लिखाना** क्रि० (हि) १-लिपिबद्ध कराना। २-दूसरे से लिखने का काम कराना।
**लिखापढ़ी** स्त्री० (हि) १-पत्र-व्यवहार। २-लिखने और पढ़ने का काम। ३-किसी बात या व्यवहार का लिख कर पक्का होना।
**लिखावट** स्त्री० (हि) १-लिखे हुए अक्षर आदि। २-लेखशैली।
**लिखित** वि० (सं) १-लिखा हुआ। अंकित। २-जो लेख के रूप में हो। (डॉक्युमेंटरी)। पुं० (सं) १-लिखी हुई बात। २-प्रमाणपत्र।
**लिखित-पाठक** पु० (सं) हस्तलिखित लेख या पत्र पढ़ने वाला।
**लिखितव्य** वि० (स) लिखने या अंकित करने योग्य।
**लिखित-सूचना** स्त्री० (हि) किसी बात को लिख कर दी गई सूचना। (नोटिस राइटिंग)।
**लिख्या** स्त्री० (सं) १-जूँ का अण्डा। लीख। २-एक परिमाण।
**लिच्छवि** पुं० (सं) एक इतिहास-प्रसिद्ध (राजवंश)।
**लिटाना** क्रि० (हि) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
**लिट्ट** पु० (देश) अंगाकड़ी। बिना तवे आग पर सेंकी मोटी रोटी।
**लिट्टी** पुं० (देश) बाटी। अंगाकड़ी।
**लिडार** वि० (हि) डरपोक। कायर। पुं० (देश) गीदड़।
**लिपटना** क्रि० (हि) १-गले लगाना। २-चारों ओर से घेरते हुए सटाना। ३-परिश्रम करना।
**लिपटाना** क्रि० (हि) १-सलग्न करना। २-आलिंगन करना।
**लिपड़ी** स्त्री० (हि) १-लेई या गीला चिपचिपा पदार्थ
**लिपना** क्रि० (हि) १-लीपा पोता जाना। २-रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।
**लिपवाना** क्रि० (हि) लीपने का काम दूसरे से कराना।
**लिपाई** स्त्री० (हि) १-लीपने का काम या मजदूरी। २-दीवार पर घुली हुई मिट्टी आदि की तह फैलाना
**लिपाना** क्रि० (हि) १-पुताना। २-घुली हुई मिट्टी या गोबर का लेप कराना।
**लिपि** स्त्री० (सं) १-अक्षर, वर्णों के अंकित चिह्न। २-वर्णमाला के शब्द लिखने की प्रणाली। (करेक्टर)। ३-लेख।
**लिपिक** पुं० (सं) १-लेखक। २-कार्यालय में लिखा-पढ़ी का काम करने वाला। (क्लर्क)।
**लिपिकर** पुं० (स) लेखक। लिपिक। (क्लर्क)।
**लिपिकर्म** पुं० (स) चित्रकारी।
**लिपिक-विभ्रम** पुं० (सं) वह भूल जो लेखक या लिपिक द्वारा की गई हो। (क्लेरिकल मिस्टेक)।
**लिपिकार** पुं० (सं) दे० 'लिपिकर'।
**लिपिज्ञान** पुं० (सं) लिपि लिखने की कला।
**लिपिफलक** पुं० (स) वह पट्टी जिस पर कागज रख कर लिखा जाता है।
**लिपिबद्ध** वि० (सं) लिखित। लिखा हुआ।
**लिपिसज्जा** स्त्री० (सं) लिख ने की सामग्री।
**लिप्त** वि० (स) १-लिपा पुता हुआ। चर्चित। २ लीन। तत्पर। काम में लगा हुआ।
**लिप्सा** स्त्री० (सं) लोभ। लालच। पाने की इच्छा।
**लिप्सु** पु० (सं) लोभी। लोलुप।
**लिफाफा** पु० (फा) १-कागज की वह चौकोर थैली जिसमें पत्र आदि लिखकर भेजे जाते हैं। (एन्वेलप)। २-आडम्बर। ३-दिखावटी। तड़कभड़क।
**लिफाफिया** वि० (फा) १-दिखावटी। २-कमजोर।
**लिबड़ना** क्रि० (हि) कीचड़ आदि में लथपथ होना या करना।
**लिबड़ी** स्त्री० (हि) कपड़ा-लत्ता।
**लिबड़ी-बारवाना** पु० (हि) साधारण गृहस्थी का सब सामान। (तुच्छतासूचक)।
**लिबास** पुं० (अ) पहनने की पोशाक। वस्त्र।
**लियाकत** स्त्री० (अ) योग्यता। गुण।
**लिलाट** पुं० (हि) दे० 'ललाट'।
**लिलार** पु० (हि) १-भाल। माथा। २-कुएं का वह सिरा जहां चरसे का पानी उलटते हैं।
**लिलोही** पुं० (देश) हाथ का बटा हुआ देशी सूत।
**लिव** स्त्री० (हि) लगन।
**लिवाना** क्रि० (हि) लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।
**लिवाल** पुं० (हि) लेने वाला।
**लिवैया** वि० (हि) लेने वाला या ले जाने वाला।
**लिसोड़ा** पुं० (हि) एक वृक्ष जिसके फल गुच्छों में लगते हैं।
**लिहाज** पुं०(अ) १-व्यवहार में किसी बात या व्यक्ति का आदर करना। २-शील-संकोच। ३-सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ४-लाज। ५-पक्षपात।
**लिहाजा** अव्य० (अ) अतः। इसलिए।
**लिहाड़ा** वि० (देश) १-नीच। गिरा हुआ। २-खराब निकम्मा।
**लिहाड़ी** स्त्री० (देश) निंदा। हँसी।
**लिहाफ** पु० (अ) जाड़े के दिनों में ओढ़ने का एक प्रकार का रूई भरा वस्त्र।
**लिहित** वि० (हि) चाटता हुआ।
**लीक** स्त्री० (हि) १-लकीर। रेखा। २-गाड़ी के पहिए से पड़ने वाली लकीर। ३-प्रतिष्ठा। ४-प्रथा। चाल पगडंडी। ५-सीमा।
**लीख** स्त्री० (हि) जूँ का अंडा।
**लीग** स्त्री० (अ) सभा। संघ।

लीचड़ *वि०* (देश) १-सुस्त। आलसी। २-निकम्मा
लीचर *वि०* (देश) दे० 'लीचड़'।
लीची *स्त्री०* (हि) एक सदाबहार मीठे फल वाला।
लीढ *वि०*(सं) आस्वादित। चाटा हुआ।
लीथोग्राफ पुं०(अं) पत्थर का छापा जिस पर हाथ से लिखकर या चित्र खींचकर छापा जाता है।
लीद *स्त्री०*(देश) घोड़े, गधे, ऊँट, हाथी आदि पशुओं का मल।
लीन *वि०* (सं) १-किसी में समाया हुआ। तन्मय। ३-ध्यानमग्न।
लीनता *स्त्री०* (सं) १-तन्मयता। २-किसी को दुख न पहुँचाना। (जैनमत)।
लीपना *क्रि०* (हिं) गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना। पोतना।
लीबर *वि०* (हिं) कीचड़ आदि से भरा हुआ।
लीमू पुं० (हिं) नीबू।
लीर *स्त्री०* (हि) धज्जी। पतला कपड़ा।
लील *वि०* (हि) नीले रंग का। पुं० नील।
लीलकंठ पुं० (हि) नीलकंठ पक्षी।
लीलगाय *स्त्री०* (हि) नीलगाय।
लीलगर पुं० (हि) दे० 'रंगरेज'।
लीलना *क्रि०* (हिं) गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।
लीलया *अव्य०* (सं) १-खिलवाड़ में। २-बहुत सहज में।
लीलहिँ *अव्य०* (हि) अनायास। खेल में।
लीलांबुज पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीला *स्त्री०* (सं) १-केवल विनोद या मनोरंजक के हेतु किया जाने वाला काम या व्यापार। क्रीड़ा। २-प्रेम-विनोद। ३-एक वर्णवृत्त। ४-एक मात्रिक छन्द जिसमें बारह मात्राएं होती हैं और अन्त में एक जगण होता है। ५-विचित्र काम। ६-अवतारों के चरित्र का अभिनय। ७-काला घोड़ा। *वि०* (हिं) नीला।
लीलाकमल पुं०(सं) कमल का वह फूल जिसे लीला या क्रीड़ा के लिए हाथ में लिया गया हो।
लीला-कलह पुं० (सं) बनावटी झगड़ा।
लीलागृह पुं० (सं) खेल या लीला करने का भवन।
लीलाचतुर *वि०* (सं) खेल या क्रीड़ा में कुशल।
लीलापद्म पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीलाब्ज पुं० (सं) दे० 'लीलाकमल'।
लीलाभरण पुं० (सं) केवल खेल या क्रीड़ा के लिए पहना हुआ गहना।
लीलामय *वि०* (सं) क्रीड़ायुक्त।
लीलायित *वि०* (सं) खेल या अभिनय करने वाला
लीलावती *वि०*(सं) क्रीड़ा करने वाली। विलासवती। *स्त्री०* १-प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् भास्कराचार्य की पत्नी जिसने लीलावती नामक गणित की पुस्तक बनाई थी। २-दुर्गा। ३-एक रागिनी।
लीलावान् *वि०* (सं) क्रीड़ाशील। रमणीय।
लीलासाध्य *वि०* (सं) सहज में होने वाला।
लीलास्थल पुं० (सं) क्रीड़ा करने का स्थान।
लीलोद्यान पुं० (सं) १-क्रीड़ा उद्यान। २-देवताओं का उद्यान।
लुंगाड़ा पुं० (हि) लुच्चा। शोहदा। लफंगा।
लुंगी *स्त्री०* (हि) १-धोती के स्थान पर लपेटने का कपड़ा। तहमद। २-एक चिड़िया।
लुंचन पुं० (सं) १-चुटकी से झटके के साथ उखाड़ना नोचना। २-काटना।
लुंचित *वि०*(सं) नोचा या उखाड़ा जाना।
लुंचितकेश पुं० (सं) जैन साधु जिनके सिर के बाल हाथों से नुचे होते हैं।
लुंचित-मूर्धज पुं० (सं) दे० 'लुंचितकेश'।
लुंज *वि०* (हिं) १-लंगड़ा-लूला। २-बिना पत्ते का। ठूंठ (पेड़)।
लुंठन पुं० (सं) १-लुढ़कना। २-लूटना। चुराना।
लुंठित *वि०* (सं) १-जमीन पर गिरा हुआ। २-जो लूटा या खसोटा गया हो।
लुंड पुं० (सं) चोर। पुं० (हि) बिना सिर का धड़।
लुंडमुंड *वि०* (हिं) १-जिसके हाथ पैर तथा सिर कट गये हों। २-लँगड़ा लूला। ३-ठूंठ।
लुंडा *वि०* (हिं) १-जिसके दुम या पर झड़ गये हों। २-जिसके पूँछ के बाल उड़ गये हों। (बैल)। पुं० (हि) सूत की कुकड़ी।
लुंडिका *स्त्री०* (सं) लपेटे हुए सूत की गोली।
लुंड़ियाना *क्रि०* (हि) सूत की रस्सी आदि को पिंडी रूप में लपेटना।
लुंडी *स्त्री०* (हि) दे० 'लुंडिका'। *वि०* (हि) जिसकी पूँछ या पर झड़ गये हों।
लुंबिनी *स्त्री०* (सं) कपिलवस्तु के पास का उपवन जहाँ गौतमबुद्ध उत्पन्न हुए थे।
लुआठ पुं० (हि) दे० 'लुआठा'।
लुआठा पुं० (हि) अधजली या जलती हुई लकड़ी।
लुआब *वि०* (अ) लसदार या चिपचिपा गूदा।
लुआबदार *वि०* (अ) १-चिपचिपा। लसदार। २-लसदार गूदे वाला।
लुआर *स्त्री०* (हि) दे० 'लू'।
लुकंजन पुं० (हि) एक अंजन जिसके लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।
लुक पुं० (हि) १-चमकदार रोगन। वार्निश। २-ज्वाला। लौ। ३-उल्कामुख प्रेत।
लुकदार *वि०* (हि) जिस पर रोगन किया गया हो।
लुकना *क्रि०* (हि) १-आड़ में होना। २-छिपना।
लुकमा पुं० (अ) ग्रास। कौर। निवाला।

लुकमान पु० (अ) कुरान शरीफ में वर्णित एक प्रसिद्ध और बुद्धिमान हकीम।
लुकसाज़ पुं० (हि) रोग़न या लुक करने का काम करने वाला।
लुकाछिपी स्त्री० (हि) आंखमिचौनी का खेल।
लुकाट पुं० (हि) एक खट मीठे फल वाला वृक्ष।
लुकाठ पुं० (हि) दे० 'लुकाट'।
लुकाना क्रि० (हि) आड़ में आना। छिपाना।
लुकार स्त्री० (हि) दे० 'लुक'।
लुकेठा पुं० (हि) जलती हुई लकड़ी। लुआठा।
लुकोना क्रि० (हि) छिपाना।
लुक्कायित वि० (सं) लुका या छिपा हुआ। अदृश्य।
लुगड़ा पुं० (देश) वस्त्र। कपड़ा।
लुगत स्त्री० (अ) १-भाषा। शब्द। ३-शब्दकोश।
लुगदा पुं० (देश) गीला पिंडा। लोंदा।
लुगदी स्त्री० (देश) छोटा गीला पिंडा।
लुगरा पुं० (हि) १-कपड़ा। वस्त्र। २-ओढ़नी। ३-जीर्ण वस्त्र।
लुगरी स्त्री० (हि) फटी पुरानी धोती।। स्त्री० (देश) चुगली।
लुगाई स्त्री० (हि) स्त्री। औरत।
लुगात पुं० (अ) १-शब्दकोष। २-शब्दावली।
लुगी स्त्री० (हि) १-फटी हुई धोती। तहमद। २-लहँगे का संजाफ।
लुगा पुं०(हि) कपड़ा। वस्त्र।
लुचवाना क्रि० (हि) नोचवाना। उखड़वाना।
लुचुई स्त्री० (हि) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।
लुच्चा वि० (हि) १-दुराचारी। २-शोहदा। नीच। बदमाश।
लुच्ची स्त्री०(हि) दे० 'लुचुई'। वि० (हि) दे० 'लुच्चा'
लुटंत स्त्री० (हि) लूट।
लुटकना क्रि० (हि) दे० 'लटकना'।
लुटना क्रि० (हि) १-दूसरों के द्वारा लूटा जाना। २-बरबाद होना। ३-दे० 'लुठना'।
लुटरना क्रि० (हि) लुढ़कना।
लुटरा वि० (हि) घुँघराला।
लुटाना क्रि० (हि) १-दूसरों को लूटने देना। २-बहुत सस्ते दामों पर बेचना। ३-बहुत अधिक खर्च करना या दान देना।
लुटावना क्रि० (हि) दे० 'लुटाना'।
लुटिया स्त्री० (हि) छोटा लोटा।
लुटेरा पुं० (हि) लूटने वाला। डाकू। दस्यु।
लुठना क्रि० (हि) जमीन पर गिर कर लोटना।
लुठाना क्रि०(हि) भूमि पर डालकर लोटाना। २-लुढ़काना।
लुठित वि० (सं) गिरा हुआ। लुढ़का हुआ।
लुड़कना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़कना'।
लुड़काना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़काना'।
लुढ़कना क्रि० (हि) १-भूमि पर ऊपर नीचे फिरते हुए बढ़ना या चलना। २-गिर कर ऊपर नीचे हो जाना।
लुढ़काना क्रि० (हि) इस प्रकार छोड़ना कि चक्कर खाता हुआ दूर चला जाय।
लुढ़ाना क्रि० (हि) दे० 'लुढ़काना'।
लुढ़ियाना क्रि- (हि) गोल बत्ती के समान तुरपई करना। गोल तुरपना।
लुतरा वि० (देश) १-चुगलखोर। २-नटखट।
लुत्थ स्त्री० (हि) लाश। शव। लोथ।
लुत्फ पुं० (अ) १-कृपा। २-उत्तमता। ३-आनन्द। ४-रोचकता।
लुनना क्रि० (हि) १-खेत से पकी फसल काटना। २-नष्ट करना।
लुनाई स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-दे० 'लवनी'।
लुनेरा पुं०(हि) १-खेत की फसल काटने वाला। २-लोनिया नामक जाति।
लुपना क्रि० (हि) आड़ में होना। छिपना।
लुप्त वि० (सं) १-छिपा हुआ। गुप्त। अदृश्य। पुं० चोरी का माल।
लुप्ति स्त्री० (सं) वह भूलें जो लिखने में रह गई हों। (ओमीन्शस)।
लुप्तोपमा स्त्री०(सं) वह उपमा अलंकार जिसमें उसके चार अंगों में से उसका कोई अंग लुप्त हो।
लुबधना क्रि० (हि) लुभाना। लुब्ध होना।
लुबुध वि० (हि) दे० 'लुब्ध'।
लुबुधना क्रि० (हि) लुब्ध होना। लुभाना।
लुब्ध वि० (सं) १-पूरी तरह से लुभाया हुआ। २-मोहित। पुं० (सं) शिकारी। बहेलिया।
लुब्धक पुं० (सं) १-शिकारी। २-लोभी या लालची मनुष्य। ३-एक तेजवान तारा।
लुब्धना क्रि० (हि) दे० 'लबुधना'।
लुब्ब पुं० (अ) १-तत्व। सार भाग। २-गूदा।
लुब्बेलुबाब पुं० (अ) १-निचोड़। २-इत्र। ३-सार।
लुभाना क्रि० (हि) १-मोहित होना। २-लालच में पड़ना। ३-तनमन की सुध भूलना। ४-मोहित करना। रिझाना। ५-भ्रांत करना।
लुरकना क्रि०(हि) अधर में टँक कर भूलना। लटकना
लुरका पुं० (हि) झुमका।
लुरकी स्त्री० (हि) १-कान की मुरकी। २-झुमका।
लुरना क्रि० (हि) १-झूलना। २-झुक पड़ना। ३-कहीं से एक बारगी आजाना। ४-प्रवृत्त होना। आकर्षित होना।
लुरियाना क्रि० (हि) १-प्रेम पूर्वक स्पर्श करना। आलिंगन करना। २-प्यार करना।
लुरी स्त्री० (हि) हाल की ब्याही हुई गाय।

लुलना क्रि० (हि) लटकते हुए हिलना। डोलना। लहराना।
लुलित वि० (सं) लटकता या भूलता हुआ।
लुलितकुंडल वि० (सं) जिसके कुण्डल हिलते हों।
लुवार स्त्री० (हि) लू। गरम हवा।
लुहना क्रि० (हि) लुभाना। ललचाना। मोहित होना
लुहार पुं० (हि) १-लोहे का काम करने वाला। २-लोहे का काम करने वाली एक जाति।
लुहारी स्त्री० (हि) १-लोहे की वस्तुएं बनाने का काम २-लुहार जाति की स्त्री।
लूंबरी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।
लू स्त्री० (हि) गरमी के दिनों में चलने वाली तपी हुई हवा। तप्त वायु।
लूक स्त्री० (हि) १-आग की लपट। २-टूटा हुआ तारा। ३-जलती हुई लकड़ी। ४-लू।
लूकट पुं० (हि) १-आग। २-जलती हुई लकड़ी।
लूकना क्रि० (हि) १-आग लगाना। २-जलाना। ३-लुकना।
लूका पुं० (हि) १-आग की लपट। २-सिरे पर से जलती हुई लकड़ी।
लूखा वि० (हि) दे० 'रूखा'।
लूगड़ पुं० (हि) १-कपड़ा। वस्त्र। २-चादर। ओढ़नी ३-पुरानी रजाइयों में से निकली पुरानी रुई।
लूगा पुं० (देश) १-कपड़ा। वस्त्र। २-धोती।
लूग्रर पुं० (हि) दे० 'लुआठ'।
लूट स्त्री० (हि) १-किसी का धन सम्पत्ति जबरदस्ती छीन लेना। २-लूटने से मिला हुआ माल।
लूटक पुं० (हि) १-लूटने वाला। २-डाकू। लुटेरा। ३-शोभा में बढ़ जाने वाला।
लूटखसोट स्त्री० (हि) लूटमार।
लूटखूंद स्त्री० (हि) लूटमार।
लूटना क्रि० (हि) १-किसी को डरा, धमका या मार-कर उसका धन ले लेना। २-बहुत दाम लेना। ठगना। ३-अनुचित रूप से ले लेना। ४-मोहित करना।
लूटपाट स्त्री० (हि) लूटमार।
लूटमार स्त्री० (हि) शारीरिक कष्ट या यन्त्रणा देकर धन छीन लेना।
लूटि स्त्री० (हि) दे० 'लूट'।
लूत स्त्री० (हि) मकड़ी।
लूता स्त्री० (सं) १-मकड़ी। २-च्यूँटी। ३-मकड़ी के मूतने से होने वाले फफोले। स्त्री० (हि) लूका। आग
लूतामय पुं० (सं) मकड़ी नामक रोग।
लूती स्त्री० (हि) लुआठी।
लूनना क्रि० (हि) दे० 'लुनना'।
लूम पुं० (सं) पूंछ। दुम। पुं० (हि) एक राग। पुं० (अं) कपड़ा बुनने का करघा।
लूमड़ी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।
लूमना क्रि० (हि) लटकना।
लूम-विष पुं० (हि) वह जीव जो पूँछ से डंक मारते हैं-जैसे बिच्छू।
लूरना क्रि०(हि) दे० 'लुरना'।
लूला वि०(हि) १-जिसका हाथ कटा हो। टुण्डा। २-असमर्थ।
लूह स्त्री० (हि) दे० 'लू'।
लूहर स्त्री० (हि) दे० 'लू'।
लूड़ पुं० (हि) बँधे हुए मल की बत्ती।
लूडी स्त्री०(हि) १-बंधा मल। २-बकरी या ऊंट की मेंगनी।
लूहड़ा पुं० (देश) पशुओं का झुण्ड।
लहड़ी स्त्री० (देश) भेड़,बकरी आदि का समूह।
लई अव्य० (हि) तक। पर्यन्त। स्त्री० १-अवलेह। २-लपसी। ३-कागज चिपकाने के लिए गाढ़ा उबाला हुआ मैदा। ४-चिनाई का गाढ़ा चूना।
लई-पूँजी स्त्री० (हि) सारी जमा।
लेख पुं० (सं) १-लिखित अक्षर। लिपि। २-लिखाई ३-किसी विषय पर लिख कर प्रकट किये गये विचार मजमून। ४-देवता। ५-वह लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधि-कारी ने दी हो। (रिट)। वि० (हि) लिखने योग्य स्त्री० पक्की बात।
लेखक पुं० (सं) १-लिखने वाला। लिपिकार। २-ग्रन्थ लिखने वाला। ग्रन्थकार। ३-लिपिक। ४-पत्रादि के लिए लेख लिखने वाला।
लेखक-प्रमाद पुं० (सं) लिपिक या लिपिकार की भूल
लेखन पुं० (सं) १-लिखने की कला या विद्या। २-हिसाब लगाना। ३-वमन करना। ४-चित्र बनाने का काम।
लेखन-सामग्री स्त्री०(सं) कागज, कलम, दवात,स्याही, आदि लिखने की सामग्री। (स्टेशनरी)।
लेखनहार वि० (हि) लिखने वाला।
लेखनिका स्त्री० (सं) तूलिका। कलम।
लेखनी स्त्री० (सं) लिखने का साधन। कलम।
लेखनी-कर्मरोधन पुं० (सं) किसी कार्यालय में कर्म-चारियों का मालिकों से झगड़ा होने पर अपनी मांगें मनवाने के लिए कार्यालय में चुपचाप बैठकर लिखना पढ़ना बन्द करना। (पेनडाउन स्ट्राइक)।
लेखनी-जिह्वा स्त्री० (सं) विलायती ढंगों की कलम के आगे खोंसने की लोहे या धातु की वह नोकदार वस्तु जिससे लिखा जाता है। (निब)।
लेखनीय वि० (सं) लिखने योग्य।
लेखपद्धति स्त्री० (सं) दे० 'लेखप्रणाली'।
लेखप्रणाली स्त्री० (सं) लिखने का ढंग। लेखनशैली।
लेखपाल पुं० (सं) पटवारी।

**लेखहार** पुं० (सं) पत्रवाहक । डाकिया ।
**लेखहारक** पुं० (सं) दे० 'लेखहार' ।
**लेखहारी** पुं० (सं) दे० 'लेखहार' ।
**लेखा** पुं० (हि) १-गणना । हिसाब-किताब । २-आय-व्यय अथवा घटना का विवरण । (स्टेटमेंट, अकाउंट) ३-अनुमान । विचार । स्त्री० (सं) १-लिपि । लिखावट । २-लेखा । लकीर । ३-चित्र । ४-श्रेणी । पंक्ति । ५-किरण । रश्मि ।
**लेखाकर्म** पुं० (सं) आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम । (अकाउन्टेन्सी) ।
**लेखाछलयोजन** पुं० (सं) आय-कर आदि से बचने या और किसी कारण हिसाब तैयार करने में छल करना । (मैनिपुलेशन आफ अकाउन्ट्स) ।
**लेखाध्यक्ष** पुं० (सं) वह कर्मचारी या व्यक्ति जो आय-व्यय आदि का हिसाब-किताब या रोकड़ रखने के काम के लिए उत्तरदायी हो और इसी काम के लिए नियुक्त किया गया हो । (अकाउन्टेन्ट) ।
**लेखापत्तर** पुं० (सं) वह कागज या बही जिसमें आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है । (अकाउन्ट बुक) ।
**लेखा-परीक्षक** पुं० (सं) वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जांच-पड़ताल करता हो । (ऑडिटर) ।
**लेखा-परीक्षण** पुं० (सं) आय-व्यय के हिसाब की जांच पड़ताल । (ऑडिट) ।
**लेखापाल** पुं० (सं) दे० 'लेखाध्यक्ष' ।
**लेखाबही** स्त्री० (सं) दे० 'लेखापत्तर' ।
**लेखिका** स्त्री० (सं) १-लिखने वाली । २-ग्रन्थ या पुस्तक बनाने वाली ।
**लेखित** वि० (सं) लिखवाया हुआ ।
**लेखे** अव्य० (हि) समक्ष में । विचार के अनुसार ।
**लेख्य** वि० (सं) लिखा जाने योग्य । पुं० १-लिखी हुई वस्तु या पत्रादि । लेखा । २-किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई बात । (रेकार्ड) । ३-दस्तावेज (डॉक्यूमेन्ट) ।
**लेख्यकृत** वि० (सं) जिसकी लिखा-पढ़ी हो चुकी हो
**लेख्यपत्र** पुं० (सं) १-लिखने योग्य पत्र । २-दस्तावेज ३-ताड़ का पेड़ ।
**लेख्यपत्रक** पुं० (सं) दे० 'लेख्यपत्र' ।
**लेख्यारूढ** वि० (सं) जिसके सम्बन्ध में लिखा पढ़ी हो गई हो ।
**लेजम** स्त्री० (फा) १-धनुष का अभ्यास करने की कमान । २-कसरत करने की वह भारी कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी होती है ।
**लेजिम** पुं० (हि) दे० 'लेजम' ।
**लेजुर** स्त्री० (सं) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी ।
**लेट** पुं० (देश) चूने की वह परत जो छत या गच्छ पर डाली जाती है । वि० (अं) जो ठीक समय पर न आए ।
**लेटना** क्रि० (हि) १-पीठ को धरती पर लगा कर सारा शरीर उस पर ठहराना । २-मरजाना ।
**लेटरबक्स** पुं० (हि) डाकखाने का वह सन्दूक जिसमें कहीं भेजने के लिए चिट्ठियां डाली जाती हैं । (लैटर बॉक्स) ।
**लेटाना** क्रि० (हि) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना ।
**लेडी** स्त्री० (अं) १-भले घर की स्त्री । महिला । २-लार्ड या सरदार की पत्नी ।
**लेडी-डॉक्टर** स्त्री० (अं) महिला चिकित्सक या डाक्टर
**लेन** पुं० (हि) १-लेने की क्रिया या भाव । २-लहना पावना ।
**लेनदार** पुं० (हि) जिसका कुछ धन बाकी हो । महाजन ।
**लेनदेन** स्त्री० (हि) १-आदान-प्रदान । २-बिक्री का माल या रुपया देने या लेने का व्यवहार ।
**लेनहार** वि० (हि) लेने वाला । लेनदार ।
**लेना** क्रि० (हि) १-ग्रहण करना । थामना । २-मोल लेना । ३-जीतना । ४-धरना । ५-अभ्यर्थना करना ६-भार ग्रहण करना । ७-सेवन करना । ८-स्वीकार करना । ९-काटना । १०-संभोग करना । ११-संचय करना ।
**लेप** पुं० (हि) १-ऐसी वस्तु जो लीपी, पोती या चुपड़ी जाय । २-उबटन । ३-लगाव ।
**लेपन** पुं० (सं) लेई जैसी चीज की तह चढ़ाना ।
**लेपना** क्रि० (हि) गाढ़े गीले पदार्थ की तह चढ़ाना
**लेमू** पुं० (फा) नींबू ।
**लेमूनिचोड़** पुं० (फा) वह व्यक्ति जो हर एक के साथ खाने में शरीक होजाय ।
**लेरुआ** पुं० (देश) १-लंडू । २-बछड़ा ।
**लेलिहान** वि० (सं) ललचाया हुआ । पुं० १-सर्प । २-शिव ।
**लेव** पुं० (हि) १-लेप । २-दीवार पर लगाने का गिलावा । ३-पतीली या हांडी की पेंदी पर जलने से बचाने के लिये चढ़ा हुआ मिट्टी का लेप ।
**लेवा** पुं० (हि) १-दे० 'लव' । २-सिरे से पतवार तक का नाव की पेंदी का तख्ता । ३-गाय, भैंस आदि का थन । ४-वर्षा के पानी में मिट्टी का घुल जाना ।
**लेवादेई** स्त्री० (हि) दे० 'लेनदेन' ।
**लेवाल** पुं० (हि) लेने या खरीदने वाला ।
**लेश** पुं० (सं) १-अणु । २-सूक्ष्मता । ३-चिह्न । ४-संसर्ग । ५-एक अलङ्कार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही अंश में रोचकता आती है । वि० अल्प । थोड़ा ।
**लेष** पुं० (हि) दे० 'लेश, लेख' ।
**लेषना** क्रि० (हि) दे० 'लिखना,' 'लखना' ।

**लेखनी** स्त्री० (हिं) लेखनी
**लेखे** अव्य० (हिं) दे० 'लेखे'।
**लेस** पुं० (हिं) १-दे० 'लेश'। मिट्टी का गिलावा। २-लेप। स्त्री० (अ) फीता।
**लेसदार** वि० (हिं) जिसमें लस हो। चिपचिपा।
**लेसना** क्रि० (हिं) १-जलाना। २-पोतना। ३-चिपकाना। ४-चुगली खाना। ५-विषाद उत्पन्न करने के लिए किसी को उत्तेजित करना।
**लेहन** पुं० (सं) चखना। चाटना।
**लेहाजा** अव्य० (हिं) दे० 'लिहाजा'।
**लेहाड़ा** वि० (देश) दे० 'लिहाड़ा'।
**लेहाड़ी** स्त्री० (देश) दे० 'लिहाड़ी'।
**लेहाफ** पुं० (हिं) दे० 'लिहाफ'।
**लेह्य** वि० (सं) जो चाटा जाता हो। पुं० अवलेह। चाट कर खाई जाने वाली वस्तु।
**लैंग** वि० (सं) लिंग-सम्बन्धी (व्याकरण)।
**लैंगिक** वि० (सं) १-लिंग-सम्बन्धी। २-स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय से सम्बन्ध रखने वाला। यौन। (सेक्सुअल)। पुं० १-मूर्ति बनाने वाला। २-वैशेषिक दर्शन के अनुसार प्रमाण।
**लैंप** पुं० (अं) दीपक। चिराग।
**लै** अव्य० (हिं) तक। पर्यन्त।
**लैटिन** स्त्री० प्राचीन इटली देश की साहित्यिक भाषा जो रोमन काल में प्रचलित थी।
**लैन** स्त्री० (हिं) १-सीधी लकीर। २-कतार। पंक्ति। ३-सिपाहियों के रहने का स्थान। (लाइन)।
**लैरु** पुं० (हिं) १-बछड़ा। २-बच्चा।
**लैला** स्त्री०(अ) १-प्रेमिका। २-सुन्दर स्त्री। ३-लैला-मजनूँ की प्रेम कथा की नायिका।
**लैला-मजनूँ** पुं० (अ) प्रेमी-प्रेमिका। आशिक-माशूक
**लैसंस** पुं० (हिं) वह प्रमाण पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाता है। (लाइसेंस)।
**लैस** वि० (हिं) १-हथियार आदि से सजा हुआ। २-सब प्रकार से तय्यार। पुं० १-कमानी। २-सिरका। (अं) फीता। (लेस)।
**लों** अव्य० (हिं) तक। समान।
**लोंड़ी** स्त्री० (हिं) कान का लोलक।
**लोंदा** पुं० (हिं) डले के रूप में गीले पदार्थ का बांधा हुआ पिंड।
**लोइ** पुं० (हिं) लोक। स्त्री० १-प्रभा। २-लौ। शिखा
**लोइन** पुं० (हिं) दे० 'लावण्य'।
**लोई** स्त्री० (हिं) १-गुँधे हुए आटे का पेड़ जिसे बेल कर रोटी बनाते हैं। २-ऊनी चादर।
**लोकंजन** पुं० (हिं) दे० 'लुकंजन'।
**लोकंदा** पुं० (हिं) विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।
**लोकंदी** स्त्री० (हिं) कन्या के पहले-पहल ससुराल जाते समय भेजी हुई दासी।
**लोक** पुं० (सं) १-संसार। जगत। २-वह स्थान जिसका बोध प्राणियों को हो या उन्होंने उसकी कल्पना की हो। उपनिषदों के अनुसार दो लोक हैं इहलोक तथा परलोक। ३-स्थान। निवास। ४-लोग। जनता। समाज। सर्वसाधारण लोग। (पीपल)। (पब्लिक)। ५-अंश। ६-दिशा। वि० सर्वसाधारण जनता से सम्बन्धित।
**लोक-अधिसूचना** स्त्री० (सं) राज्य या शासन द्वारा जनसाधारण के लिए निकाली गई विज्ञप्ति या सूचना। (पब्लिक नोटिफिकेशन)।
**लोक-अभिकर्ता** पुं० (सं) जनसाधारण के लिए काम करने वाला अभिकर्ता। (पब्लिक एजेन्ट)।
**लोक-अभियोक्ता** पुं० (सं) सरकारी वकील। (पब्लिक प्रोसिक्यूटर)।
**लोक-उधार** पुं०(हिं) जनता या जनसाधारण से सरकार द्वारा लिया गया ऋण। (पब्लिक क्रेडिट)।
**लोक-उपक्रम** पुं० (सं) जनता या जनसाधारण द्वारा चलाये नये कारखाने या धन्धे। (पब्लिक एन्टरप्राइस)।
**लोक-उपयोग** पुं० (सं) जनसाधारण के उपयोग में आने वाली। (पब्लिक यूज)।
**लोक-एकाधिकार** पुं० (सं) वह व्यवसाय आदि जिनको केवल जनता या जनसाधारण को करने का ही अधिकार प्राप्त हो। (पब्लिक मोनोपोली)।
**लोककंटक** पुं० (सं) ऐसी बात जिससे जनसाधारण को कष्ट पहुँचे। (पब्लिक न्यूसेन्स)।
**लोककलंक** पुं० (सं) जनसाधारण द्वारा किया गया कोई नीचता का कार्य। (पब्लिक इग्नोमिनी)।
**लोककर्म** पुं० (सं) जनसाधारण के काम में आने वाला सरकार द्वारा किया गया कार्य। (पब्लिक-वर्क्स)।
**लोककर्मलेखा** पुं० (सं) जनसाधारण के काम आने वाले कामों में व्यय होने वाले धन का लेखा। (पब्लिक वर्क्स अकाउन्ट)।
**लोककर्ता** पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु।
**लोककथा** स्त्री० (सं) जनसाधारण में प्रचलित कथाएँ (फॉक स्टोरीज)।
**लोककल्याण** पुं० (सं) जनसाधारण के कल्याण के लिए किया गया कोई काम। (वेलफेयर आफ दि पीपल)।
**लोककल्याणनीति** स्त्री० (सं) सरकार द्वारा निर्धारित वह नीति जिसके द्वारा यह देखा जाता है कि कौन कौन से कानून लोक-कल्याण के विरुद्ध हैं और उनका संशोधन किया जाता है। (पब्लिक पॉलिसी)
**लोककल्याण-सिद्धांत** पुं०(सं)कानून का यह सिद्धान्त

कि जो जनसाधारण को हानि पहुँचाने वाले अधिनियमों को अनियमित ठहराया जा सकता है (पब्लिक पॉलिसी)।
**लोककार्य** पुं० (सं) जनसाधारण से सम्बन्ध रखने वाले काम। (पब्लिक अफेयर्स)।
**लोकक्षेम-विधेयक** पुं० (सं) जनसाधारण की रक्षा के लिए बनाया गया विधेयक। (पब्लिक सेफ्टी बिल)।
**लोकगीत** पुं० (सं) जनसाधारण में प्रचलित गीत। (फॉक सांग्स)।
**लोकगुप्तचर** पुं० (सं) जनसाधारण के लिए गुप्तचर का काम करने वाला व्यक्ति। (पब्लिक डिटेक्टिव)
**लोक-घोषणा** स्त्री० (सं) दे० 'नीतिघोषणा'। (मेनीफेस्टो)।
**लोकजलवाहन** पुं० (सं) जनसाधारण द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली नावें, जहाज आदि। (पब्लिक वाटर कन्वेयन्स)।
**लोकजित्** पुं० (सं) १-महात्मा बुद्ध। २-ऋषि। वि० लोक को विजय करने वाला।
**लोकटी** स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।
**लोकतंत्र** पुं० (सं) वह शासन-प्रणाली जिसमें सत्ता जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में होती है। (डेमाक्रेसी)।
**लोकतंत्रवादी** पुं० (सं) १-लोकतंत्र के सिद्धांत को मानने वाला। २-अमेरिका के लोकतंत्र दल का सदस्य। (डेमोक्रेट)।
**लोकतंत्रीकरण** पुं० (सं) किसी शासन-प्रणाली को लोकतंत्र के सिद्धांतों के रूप में बदलना। (डेमाक्रेटाइजेशन)।
**लोकतटबंध** पुं०(सं)जनसाधारण के काम आने वाला तटबंध। (पब्लिक एम्बैंकमेन्ट)।
**लोकत्रय** पुं०(सं) तीनों लोक-स्वर्ग, मृत्यु और पाताल
**लोकत्रयी** स्त्री० (सं) दे० 'लोकत्रय'।
**लोक-धन** पुं०(सं)जनता का पैसा। (पब्लिक मनीज)
**लोक-धुन** स्त्री० (हि) अफवाह। जनश्रुति।
**लोकना** क्रि० (हि) १-ऊपर से गिरती हुई वस्तु हाथों में रोकना। २-बीच में ही उड़ा लेजाना।
**लोकनाथ** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-राजा। ३-बुद्ध।
**लोकनायक** पुं० (सं) तीनों लोकों को देखने वाला (सूर्य)।
**लोकनिक्षेप** पुं०(सं) निक्षेप के रूप में सरकार के पास जनता द्वारा जमा किया हुआ धन। (पब्लिक डिपॉजिट)।
**लोकनिगम** पुं०(सं) जनता द्वारा बनाया गया निगम (पब्लिक कॉरपोरेशन)।
**लोकनिधि** स्त्री० (हि) जनता द्वारा कर रूप में दिया हुआ कोष। (पब्लिक फण्ड्स)।
**लोकनिर्माणविभाग** पुं० (सं) वह सरकारी विभाग जो लोक कल्याण के लिए सड़कें आदि बनाने की व्यवस्था करता है। (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट)।
**लोकनिरीक्षण** पुं० (सं) जनता द्वारा निरीक्षण। (पब्लिक इंस्पेक्शन)।
**लोकनृत्य** पुं० (सं) वह नृत्य जो देहातों आदि में नाचे जाते हैं। (फॉक डान्सेस)।
**लोकनेता** पुं० (सं) १-लोकप्रिय नेता। २-शिव।
**लोकप** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-लोकपाल। ३-राजा।
**लोकपति** पुं० (सं) दे० 'लोकप'।
**लोक-पथ** पुं० (सं) सार्वजनिक व्यवहार करने का ढंग या तरीका।
**लोकपद** पुं० (सं) जनसाधारण से सम्बन्ध रखने वाला पद।
**लोकपद्धति** स्त्री० (सं) दे० 'लोकपथ'।
**लोकपाल** पुं० (सं) १-पुराणानुसार आठों दिशाओं के आठ दिक्पाल। २-शिव। ३-राजा। ४-विष्णु।
**लोकप्रत्यय** पुं० (सं) जो सब जगह हो प्रचलित हो (प्रथा आदि)।
**लोकप्रवाद** पुं० (सं) वह बात जो जनसाधारण में प्रचलित हो।
**लोकप्रसिद्ध** वि० (सं) विश्वविख्यात।
**लोकप्रिय** वि० (सं) जो सर्वसाधारण को प्रिय लगे।
**लोकबंधु** पुं० (सं) १-शिव। २-सूर्य।
**लोकबांधव** पुं० (सं) दे० 'लोकबंधु'।
**लोकबाह्य** वि० (सं) १-समाज से निकला हुआ। जातिच्युत। २-संसार से निराला।
**लोकभर्ता** पुं० (सं) संसार को पालने-पोसने वाला।
**लोकभावन** पुं० (सं) १-सबकी भलाई करने वाला। २-संसार की रचना करने वाला।
**लोकभावना** स्त्री० (सं) जनसाधारण की सेवा करने की धारणा। (पब्लिक स्प्रिट)।
**लोकभावी** पुं० (सं) दे० 'लोकभवन'।
**लोकमत** पुं० (सं) जनमत। किसी विषय पर जनसाधारण की राय। (पब्लिक ओपीनियन)।
**लोकमात्रा** स्त्री० (सं) १-व्यवहार। २-व्यापार। ३-आजीविका।
**लोकरंजन** पुं० (सं) जनता को प्रसन्न करने वाला। सर्वप्रियता।
**लोकरव** पुं० (सं) जनश्रुति। अफवाह। प्रवाद।
**लोक-लीक** स्त्री० (हि) लौकिक लाज या मर्यादा।
**लोकलोचन** पुं० (सं) सूर्य।
**लोकवचन** पुं० (सं) अफवाह। प्रवाद।
**लोकवाद** स्त्री० (सं) अफवाह। किंवदन्ती।
**लोकवार्ता** स्त्री० (सं) पुरानी प्रथाओं सम्बन्धी जनसाधारण में प्रचलित बातों का विवेचन। (फॉकलोर)।

लोकवाहन पुं० (सं) जनसाधारण का सामान ढोने वाली मोटरलारी। (पब्लिक कैरियर)।
लोकविज्ञात वि० (सं) प्रसिद्ध। विख्यात।
लोकविरुद्ध वि० (सं) जनसाधारण से अलग मत रखने वाला।
लोकविश्रुत वि० (सं) संसार भर में प्रसिद्ध।
लोकव्यवहार पुं० (सं) सर्वसाधारण में प्रचलित रीति।
लोकशिक्षण-संचालक पुं० (सं) सार्वजनिक शिक्षा-विभाग का संचालक। (डायरेक्टर ऑफ पब्लिक एज्यूकेशन)।
लोकश्रुति पुं० (सं) जनश्रुति। अफवाह।
लोकसंग्रह पुं० (सं) १-संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २-संसार का कल्याण या सबकी भलाई।
लोकसत्ता स्त्री० (सं) वह शासन प्रणाली जिसमें सब अधिकार जनता के हाथ में हों।
लोकसत्तात्मक वि० (सं) सर्वसाधारण द्वारा चलाये जाने वाला। (शासन)।
लोकसभा स्त्री० (सं) १-प्रतिनिधि सत्तात्मक राज्यों में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। (हाउस ऑफ पीपल) २-भारतीय गणराज्य का निम्न सदन।
लोकसेवक पुं० (सं) वह जो राज्य की ओर से जनता की सेवा करने के लिये नियुक्त हो। (पब्लिक सर्वेंट)।
लोक-सेवा स्त्री० (सं) १-जनसाधारण के हित के लिये सेवाभाव से किया जाने वाला काम। २-राज्य की सेवा या नौकरी। (पब्लिक सर्विस)।
लोकसेवाआयोग पुं० (सं) प्रशासन का काम चलाने के लिये पदाधिकारी नियुक्त करने में परीक्षा आदि लेकर सहयोग देने वाला आयोग। (पब्लिक सर्विस कमीशन)।
लोकसिद्ध वि० (सं) १-प्रचलित। २-समाज द्वारा स्वीकृत।
लोकस्वास्थ्य पुं० (सं) जनसाधारण या जनता का स्वास्थ्य। (पब्लिक हैल्थ)।
लोकहित पु० (सं) सर्वसाधारण का लाभ। (पब्लिक गुड)।
लोकांतर पुं० (सं) परलोक।
लोकांतर-गमन पुं० (सं) मृत्यु।
लोकांतारित वि० (सं) मृत। मरा हुआ। स्वर्गीय।
लोकाचार पुं० (सं) लोकव्यवहार।
लोकाट पुं० (सं) एक वृक्ष जिसके फल मीठे और बेर के समान होते हैं।
लोकाधिप पुं० (सं) १-लोकपाल। २-बुद्ध।
लोकाना क्रि० (हिं) उछालना। अधर में फेंकना।
लोकानुग्रह पुं० (सं) जनसाधारण का कल्याण।
लोकापवाद पुं० (सं) लोकनिन्दा।
लोकाभ्युदय पुं० (सं) जनता की उन्नति।
लोकायत पुं० (सं) १-वह मनुष्य जो परलोक को न मानता हो। २-दुर्मिल नामक छन्द।
लोकायतिक पुं० (सं) नास्तिक। चार्वाक।
लोकेश्वर पुं० (सं) १-लोकपाल। २-ईश्वर।
लोकैषणा स्त्री० (सं) स्वर्ग-सुख प्राप्ति की कामना।
लोकोक्ति स्त्री० (सं) १-कहावत। मसल। २-एक अलंकार।
लोकोत्तर वि० (सं) अलौकिक। जो संसार में न होता हो।
लोकोपकार पुं० (सं) सर्वसाधारण के लाभ का काम
लोकोपयोगी वि० (सं) सर्वसाधारण के काम।
लोकोपयोगी सेवा स्त्री० (सं) वह कार्य या व्यवस्था जो सर्वजनिक हित के या काम की हो जैसे नगर की सफाई आदि। (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस)।
लोखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'लोमड़ी'।
लोखर पुं० (हि) २-नाई के कैंची, उस्तरा आदि औजार। २-बढ़इयों के औजार।
लोग पुं० (हिं) आसपास के सब आदमी।
लोगबाग पुं० (हिं) जनसाधारण। जनता।
लोगाई स्त्री० (हिं) दे० 'लुगाई'।
लोच पुं० (हिं) १-लचलचाहट। लचक। २-कोमलतापूर्ण सौन्दर्य। ३-अभिलाषा। ४-जैन साधुओं का अपने सिर के बाल उखाड़ना।
लोचन पुं० (सं) आँख। नयन।
लोचनगोचर पुं० (सं) दृष्टि की दौड़। दिखाई पड़ने वाला क्षेत्र।
लोचनपथ पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर'।
लोचन-मार्ग पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर'।
लोचनांचल पुं० (सं) दे० 'लोचनगोचर'।
लोचना क्रि० (हिं) १-प्रकाशित करना। २-रुचि उत्पन्न करना। ३-अभिलाषा करना। ४-कामना करने वाला। ५-तरसना। ६-शोभा देने वाला। पुं० (हिं) १-नाई। २-दर्पण।
लोट पुं० (हिं) १-घाट। २-त्रिवली। स्त्री० लुढ़कना
लोटन पुं० (हिं) १-एक प्रकार का हल। २-जमीन पर लुढ़कने वाला कबूतर। ३-मार्ग की कंकरियां।
लोटनसज्जी स्त्री० (हिं) एक प्रकार की सज्जी।
लोटना क्रि० (हिं) १-किसी वस्तु, आधार या भूमि पर चित्त या पट होते हुए इधर-उधर होना। लुढ़कना २-कष्ट से करवटें बदलना। ३-लेटना। विश्राम करना
लोटनापोटना क्रि० (हिं) विश्राम करना। सोना।
लोटपटा पुं० (हि) विवाह में वधु और वर के पीढ़ों स्थान बदलने की रीति।
लोटपोट स्त्री० (हिं) विश्राम करना। लेटना।
लोटा पुं० (हिं) पानी रखने का एक पात्र।

**लोटिया** स्त्री० (हि) छोटा लोटा।
**लोडन** पु० (सं) १-हिलाने डुलाने की क्रिया। २-मंथन।
**लोड़ना** क्रि० (हि) आवश्यकता होना। जरूरत होना।
**लोड़ित** वि० (सं) १-हिलाया डुलाया हुआ। २-मंथित।
**लोढ़ना** क्रि० (हि) १-चुनना। तोड़ना। २-ओटना।
**लोढ़ा** पु० (हि) पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर चीजें पीसी जाती है। बट्टा।
**लोढ़िया** स्त्री० (हि) छोटा लोढ़ा।
**लोथ** स्त्री० (हि) मृत शरीर। शव। लाश।
**लोथड़ा** पु० (हि) मांसपिंड।
**लोथरा** पु० (हि) दे० 'लोथड़ा'।
**लोथि** स्त्री० (हि) दे० 'लोथ'।
**लोन** पु० (हि) १-नमक। २-लावण्य। सौन्दर्य।
**लोनहरामी** वि० (हि) कृतघ्न। नमकहराम।
**लोना** वि० (हि) १-नमकीन। २-सलोना। सुन्दर। पु० ईंट पत्थर का कमजोर हो कर झड़ना। २-दीवार से झड़ने वाली नमकीन मट्टी। क्रि० फसल काटना।
**लोनाई** स्त्री० (हि) लावण्य। सुन्दरता।
**लोनिया** पु० (हि) नमक या लोन बनाने का काम करने वाली एक जाति। स्त्री० लोनी नामक साग।
**लोनी** स्त्री० (हि) १-कुल्फे की जाति का एक साग। २-पत्थर की पत्ती पर का क्षार। ३-वह मट्टी जिससे लोनिया लोग शोरा बनाते हैं।
**लोप** पु० (सं) १-नाश। २-गायब होना। ३-अभाव ४-व्याकरण में वह नियम जिसमें शब्द साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं। ५-विच्छेद।
**लोपना** क्रि० (हि) १-लुप्त करना। छिपाना। २-लुप्त होना। ३-नष्ट होना।
**लोपविभ्रम** पु० (सं) भूलचूक (हिसाब आदि में) (एरर्स एण्ड ओमीशन्स)।
**लोपांजन** पु० (सं) वह कल्पित अंजन जिसके संबंध में कहा जाता है कि लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।
**लोबान** पु० (अ) एक प्रकार का सुगन्धित गोंद जो जलाने तथा दवा के काम आता है।
**लोबानी** वि० (अ) जिसमें लोबान हो।
**लोबिया** पु० (हि) १-एक प्रकार का सफेद बड़ा बोड़ा
**लोभ** पु० (सं) १-लालच। लिप्सा। २-कृपणता। कंजूसी।
**लोभना** क्रि० (हि) १-मुग्ध या मोहित होना। २-मोहित करना।
**लोभनीय** वि० (सं) १-जिस पर लोभ हो सके। सुन्दर। २-जो लुभाया जा सके।
**लोभाना** क्रि० (हि) मोहित या मुग्ध करना या होना।
**लोभार** वि० (हि) लुभाने वाला।
**लोभित** वि० (सं) लुभाया हुआ। मुग्ध।
**लोभी** वि० (हि) १-जिसे बहुत लालच हो। २-लुब्ध
**लोम** पु० (सं) १-रोम। २-बाल। पु० (हि) नर-लोमड़ी।
**लोमकीट** पु० (सं) जूँ।
**लोमकूप** स्त्री० (सं) शरीर का वह छिद्र जो रोएँ की जड़ में होता है। लोमगर्त।
**लोमगर्त** पु० (सं) दे० 'लोमकूप'।
**लोमघ्न** पु० (सं) गंज नामक रोग।
**लोमड़ी** स्त्री० (हि) कुत्ते या गीदड़ के आकार का एक प्रसिद्ध जंगली पशु।
**लोमरंध्र** पु० (सं) दे० 'लोमकूप'।
**लोमराजि** स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
**लोमविवर** पु० (सं) दे० 'लोमावली'।
**लोमहर्ष** पु० (सं) रोमांच। पुलक।
**लोमहर्षक** वि० (सं) रोमांचकारी।
**लोमहर्षण** वि० (सं) हर्ष या भय के कारण रोएँ खड़े करने वाला। पु० (सं) रोमांच।
**लोमा** स्त्री० (सं) वच। वचा।
**लोमालि** स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
**लोमाली** स्त्री० (सं) दे० 'लोमावली'।
**लोमावली** स्त्री० (सं) नाभि से सीने तक उगे हुए बाल।
**लोय** पु० (हि) १-लोग। २-आंख। नयन। स्त्री० (हि) लौ। लपट।
**लोयन** पु० (हि) आंख। नेत्र।
**लोर** वि० (हि) १-चंचल। २-उत्सुक। इच्छुक। पु० (हि) १-आंसू। २-कान के कुंडल। ३-लटकन।
**लोरना** क्रि० (हि) १-चंचल होना। २-लपकना। ३-झुकना। ४-लिपटना। ५-लोटना।
**लोरवा** पु०(देश) आंसू।
**लोरी** स्त्री० (हि) १-वह गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं। २-तोते की एक जाति।
**लोल** वि० (सं) १-हिलता-डोलता। २-चंचल। ३-परिवर्तनशील। ४-क्षणभंगुर। ५-उत्सुक। ६-लोभी
**लोलक** पु० (सं) १-नथों बालियों आदि की लटकन। २-कान की लौल। लोलकी। ३-घन्टे की लटकन।
**लोलकी** स्त्री० (हि) कान के नीचे का लटकने वाला भाग।
**लोलचक्षु** वि० (सं) जिसके नेत्र चंचल हों या चारों ओर देखते हों।
**लोलजिह्व** वि० (सं) लोभी। लालची। पु० सांप
**लोलना** क्रि० (हि) हिलना-डोलना।
**लोलनेत्र** वि० (सं) दे० 'लोलचक्षु'।
**लोललोचन** वि० (सं) दे० 'लोलचक्षु'।
**लोला** स्त्री० (सं) १-जीभ। २-लक्ष्मी। ३-एक प्रकार

यून। ४-एक ६४ हाथ लम्बी नाव। पुं०(हिं) शिश्न। उपस्थ।
लोलाक्षिका स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी आंखें नाचती हों।
लोलाक्षी स्त्री० (सं) दे० 'लोलाक्षिका'।
लोलिनी स्त्री० (सं) चंचल प्रवृत्ति की स्त्री।
लोलुप वि० (सं) १-लोभी। लालची। २-बहुत उत्सुक।
लोलुपता स्त्री० (स) लालच। लोभ।
लोलुपत्व पुं० (स) दे० 'लोलुपता'।
लोवा स्त्री० (हिं) लोमड़ी। पुं० एक तीतर की जाति का छोटा पक्षी।
लोष्ट पुं० (सं) १-मिट्टी का ढेला। २-पत्थर।
लोहंडा पुं० (हिं) १-लोहे की छोटी कढ़ाई। २-तसला।
लोह पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध काले रङ्ग की धातु जिसके यंत्र तथा हथियार बनते है। २-रक्त। ३-लाल बकरा।
लोहकार पुं० (सं) लोहार।
लोहकिट्ट पुं० (सं) लोहे का मोर्चा या जंग।
लोहचून पुं० (हिं) दे० 'लोहचूर्ण'।
लोहचूर्ण पुं० (सं) लोहे का बुरादा।
लोहप्रतिमा स्त्री० (सं) लोहे की बनी मूर्ति।
लोहबान पुं० (हिं) दे० 'लोबान'।
लोहमहल पुं० (सं) लोहे का मोर्चा या जंग।
लोहलंगर पुं० (हिं) १-जहाज का लंगर। २-बहुत भारी वस्तु।
लोहसार पुं० (सं) फौलाद।
लोहांगी स्त्री० (हिं) वह लकड़ी या छड़ी जिसके सिरे पर लोहा लगा रहता है।
लोहा पुं० (हिं) १-एक काले रङ्ग की धातु जिसके हथियार, यन्त्र आदि बनते हैं। २-अस्त्र। ३-लाल रङ्ग का बैल। ४-लोहे की बनी वस्तु।
लोहाकर पुं० (सं) लोहे की खान।
लोहाना स्त्री० (हिं) लोहे के बरतन में खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रङ्ग या स्वाद आ जाना।
लोहार पुं० (हिं) लोहे का काम करने वाली एक जाति।
लोहारखाना पुं० (हिं) लोहे के काम करने की जगह
लोहारी स्त्री० (हिं) लोहे का काम।
लोहिका स्त्री० (स) लोहे का बरतन।
लोहित वि० (सं) लाल। रक्त। पुं० (हिं) मङ्गलग्रह।
लोहितग्रीव पुं० (सं) अग्नि।
लोहिया पुं० (सं) १-लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला। २-मारवाड़ियों की एक जाति। ३-लोहे की बनी गोली। ४-लाल रङ्ग का बैल।
लोही स्त्री० (हिं) उषाकाल या प्रभात के समय की लाली।
लोहू पुं० (हिं) रक्त। खून।
लौं अव्य० (हिं) १-तक। पर्यन्त। २-समान। तुल्य
लौंकना क्रि० (हिं) १-दिखाई देना। २-चमकना। ३-आंखों में चकाचौंध होना।
लौंग स्त्री०(हिं)१-एक झाड़ की कली जो मसाले और दवा के काम आती है। २-लौंग के आकार की नाक की कील।
लौंगलता स्त्री० (हिं) एक प्रकार की बंगाली-मिठाई।
लौंडा पुं०(हिं)१-लड़का। छोकरा। २-सुन्दर लड़का वि० १-अबोध। २-छिछोरा।
लौंडी स्त्री० (हिं) दासी।
लौंडेबाज वि० (हिं) १-वह व्यक्ति जो सुन्दर लड़कों को अप्राकृतिक सम्बन्ध के कारण प्रेम करता है।
लौंडेबाजी स्त्री०(हिं) लौंडों के साथ अप्राकृतिक कुकर्म।
लौंद पुं० (हिं) दे० 'मलमास'।
लौंदरा पुं० (हिं) वह वर्षा जो वर्षा ऋतु में पहले ग्रीष्मकाल में होती है।
लौ स्त्री० (हिं) १-आग की लपट। २-दीप शिखा। ३-लगन। चाह। ४-आशा।
लौआ पुं० (हिं) कद्दू। घीया।
लौकना क्रि० (हिं) दिखाई देना।
लौकायतिक पुं० (स) नास्तिक। लोकायत मत का अनुयायी।
लौकिक वि० (स) सांसारिक। ऐहिक। (सिक्यूलर)। व्यावहारिक।
लौकी स्त्री० (हिं) घीया।
लौटपटा पुं० (हिं) दे० 'लोटपटा'।
लौटना क्रि०(हिं) १-कहीं से वापिस आना। २-पीछे की ओर घूमना। ३-उलटना। पलटना।
लौट-पौट स्त्री०(हिं) १-वह छपाई जिसमें उलटा-सीधा न हो। २-उलटने-पुलटने की क्रिया।
लौट-फेर पुं० (हिं) उलट-फेर। हेर-फेर। भारी परिवर्तन।
लौटाना क्रि० (हिं) १-पलटाना। २-वापिस करना। ३-ऊपर से नीचे करना।
लौटानी अव्य० (हिं) लौटते समय या बार।
लौन पुं० (हिं) नमक।
लौना पुं०(हिं)१-पशु का एक अगला और एक पिछला पैर बांधने की रस्सी। २-ईंधन। ३-फसल काटने का काम। वि० सुन्दर। लावण्ययुक्त।
लौनी स्त्री० (हिं) १-फसल की कटाई। २-लहना। ३-नवनीत।
लौरी स्त्री० (देश) गाय की बछिया
लौल्य पुं०(सं) १-चंचलता। अस्थिरता। २-उत्सुकता ३-उत्कट कामना।
लौस पुं०(फा) १-धब्बा। २-लिप्त होना। ३-मिला-

वट।

**लोह** पुं० (सं) लोहा नामक धातु। (आयरन)।

**लोहआवरण** पुं०(सं) वह प्रतिबन्ध व्यवस्था या परदा जिससे एक देश में होने वाली घटनाओं का दूसरे देशवासियों को पता न चले (विशेष कर रूसदेश के लिए प्रयुक्त)। (आयरन कर्टेन)।

**लोहकार** पुं० (सं) लोहार।

**लोहज** पुं० (सं) मोरचा। जंग।

**लोह-दीवार** स्त्री० (हिं) दे० 'लोह-आवरण'।

**लोहबंध** पुं० (सं) लोहे की जंजीर।

**लोहभांड** पुं० (स) १-लोहे के बरतन। २-लोहे,पीतल आदि की बनी हुई अन्य वस्तुएं। (हार्ड वेयर)।

**लोहमल** पुं० (सं) लोहे का जंग या मोर्चा।

**लोहयुग** पुं० (स) इतिहास में सभ्यता के विचार से वह युग जब अस्त्र, शस्त्र, औजार आदि लोहे के बनते थे। (आयरन एज)।

**लोहविहीन** वि० (सं) दे० 'लोहेतर'। (नोनफेरस)।

**लोहसार** पुं० (सं) एक प्रकार का लवण जो लोहे से बनाया जाता है।

**लोहित्य** पुं० (सं) १-लाल सागर। २-ब्रह्मपुत्र नदी वि० लोहे का। लाल रंग का।

**लोहेतर** वि० (सं) वह जिसमें लोहे की मिलावट न हो। (नानफेरस)।

**ल्याना** क्रि० (हिं) दे० 'लाना'।

**ल्यावना** क्रि० (हिं) दे० 'लाना'।

**ल्यौ** स्त्री० (हिं) धुन। लौ। लगन।

**ल्वारि** स्त्री० (हिं) लू। गर्म हवा।

**ल्हासा** पुं० (हिं) दे० 'लासा'।

[शब्दसंख्या—४६५६४]

# व

**व** देवनागरी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण दांत और ओठ की सहायता से किया जाता है।

**वंक** वि० (सं) झुका हुआ। टेढ़ा। पुं० नदी का मोड़

**वंकट** वि० (हि) १-वक्र। टेढ़ा। २-कुटिल। ३-दुर्गम विकट।

**वंकनाली** स्त्री० (सं) सुषुम्ना नामक नाड़ी जो मध्य में मानी गई है।

**वंकिम** वि० (सं) टेढ़ा। वक्र।

**वंक्षण** पुं० (सं) मूत्राशय और जंघास्थल का संधि-स्थान।

**वंग** पुं० (सं) १-बंगाल प्रदेश। २-रांगा (धातु)। ३-रांगे की भस्म। ४-कपास। ५-बैंगन।

**वंगीय** वि० (सं) बंगाल-सम्बन्धी। बङ्गाल का।

**वंचक** वि० (सं) १-धूर्त। २-ठग। ३-दुष्ट। खल।

**वंचकता** स्त्री० (सं) १-धूर्तता। २-ठगी। ३-दुष्टता।

**वंचन** पुं० (सं) १-छल। धोखा। २-ठगना। ३-किसी योग्य वस्तु को भोग न कर पाना (प्राइवेशन)

**वंचना** स्त्री० (सं) धोखा। जाल। फरेब। क्रि० (हि) १-ठगना। पढ़ना।

**वंचित** वि० (सं) १-जो ठगा गया हो। २-विमुख। ३-अलग किया हुआ। ४-जिसे कोई वस्तु न दी गई हो।

**वंजुल** पु० (सं) १-बेंत। २-अशोक का वृक्ष। ३-एक पक्षी का नाम।

**वंदन** पुं० (स) स्तुति और प्रणाम।

**वंदनमाला** स्त्री० (स) बन्दनवार।

**वंदनवार** स्त्री० (हि) दे० 'बंदनवार'।

**वंदना** स्त्री० (स) १-स्तुति। २-प्रणाम। ३-तिलक। क्रि० (हि) स्तुति करना।

**वंदनीय** वि० (स) जो वंदना के योग्य हो।

**वंदारु** पुं० (स) १-स्तोत्र। २-बांदी। वि० १-प्रशंसा करने वाला। माननीय।

**वंदित** वि० (सं) पूज्य। जिसकी वंदना की जाय।

**वंदितव्य** वि० (स) पूज्य। वंदना के योग्य।

**वंदी** पुं० (स) दे० 'बन्दी'। (प्रिजनर)।

**वंदीजन** पुं० (सं) एक प्राचीन जाति जो राजाओं की कीर्ति बखानते थे। चारण।

**वंदीपाल** पुं० (सं) बन्दीगृह का रक्षक। (जेलर)।

**वंद्य** वि० (स) आदरणीय। पूजनीय।

**वंध्य** वि० (सं) १-निष्फल। २-जिसमें उत्पन्न करने की शक्ति न हो।

**वंध्या** स्त्री० (सं) वह स्त्री या गाय जिसके संतान न होती हो।

**वंध्यातनय** पुं० (सं) कोई अनहोनी बात।

**वंध्यापुत्र** पुं० (सं) दे० 'वंध्यातनय'।

**वंध्यासुत** पुं० (सं) दे० 'वंध्यातनय'।

**वंध्यीकरण** पुं० (सं) १-पुंसत्व से रहित कर देना। २-किसी विशेष प्रक्रिया द्वारा भूमि को वंध्य बना देना। (स्टेरिलाइजेशन)।

**वंश** पुं० (सं) १-बांस। २-रीढ़। ३-नाक की हड्डी। बाँसा। ४-बाँसुरी। ५-परिवार। खानदान। ६-बाहु आदि की लम्बी हड्डियाँ। ७-खड्ग के मध्य का भाग। ८-युद्ध सामग्री। ९-विष्णु। १०-फूल। ११-वंशलोचन।

पुं० (सं) वंशलोचन।

पुं० (सं) दे० 'वंशलोचन'।

पुं० (स) बांस की टोकरी आदि बनाने का

काम।

**वंशज** पुं० (सं) १-किसी वंश में उत्पन्न संतान। २-पुत्र। ३-औलाद। (डिसेन्डेन्ट)।

**वंशजा** स्त्री० (सं) १-कन्या। २-दे० 'वंशलोचन'।

**वंशतंडुल** पुं० (सं) बांस में का चावल।

**वंशतालिका** स्त्री० (सं) बांस का वृक्ष।

**वंशतिलक** पुं० (सं) एक छन्द का नाम।

**वंशधर** पुं० (सं) १-वंशज। संतान। २-वंश की मर्यादा रखने वाला।

**वंशधारी** पुं०(सं) बांस धारण करने वाला। वंशधर।

**वंशनाड़िका** स्त्री० (सं) बांस की नली।

**वंशनाड़ी** स्त्री० (सं) दे० 'वंशनाड़िका'।

**वंशनाथ** पुं० (सं) किसी वंश का प्रधान पुरुष।

**वंशनालिका** स्त्री० (सं) दे० 'वंशनाड़िका'।

**वंशराज** पुं० (सं) सबसे बड़ा बांस।

**वंशरोचना** पुं० (सं) बन्सलोचन।

**वंशलोचन** पुं० (सं) बांस की अन्दर की नली में बनने वाला श्वेत पदार्थ। बन्सलोचन।

**वंशवर्धन** वि० (सं) कुल का गौरव या मर्यादा बढ़ाने वाला।

**वंशवृक्ष** पुं० (सं) वह लेख जो किसी वंश के मूल-पुरुष से लेकर परवर्ती विकास तथा उसमें उत्पन्न सब लोगों के स्थान आदि सूचित करता हो।

**वंशवृद्धि** स्त्री० (सं) वंश का विस्तार।

**वंशस्थ** पुं० (सं) एक वर्णवृत्त।

**वंशहीन** वि० (सं) जिसके वंश में कोई भी न हो।

**वंशागत** वि० (सं) परम्परा से चला आया हुआ।

**वंशावली** स्त्री०(सं) किसी वंश के लोगों की क्रम से बनी हुई सूची।

**वंशिका** स्त्री० (सं) १-वंशी। मुरली। २-अगर की लकड़ी।

**वंशी** स्त्री० (सं) मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला एक बाजा। बांसुरी।

**वंशीधर** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**वंशीरव** पुं० (सं) वंशी की ध्वनि।

**वंशीवट** पुं० (सं) वृन्दावन का वह बरगद का पेड़ जहाँ कृष्ण वंशी बजाया करते थे।

**वंशीवादन** पुं० (सं) वंशी बजाना।

**व** पुं० (सं) १-वायु। २-बाण। ३-वरुण। ४-सांत्वना। ५-समुद्र। वि० (सं) बलवान्। अव्य० (फा) और।

**वक** पुं० (सं) दे० 'बक'।

**वकअत** स्त्री० (सं) १-वकत। २-प्रतिष्ठा। इज्जत।

**वकालत** स्त्री० (अ) १-दूत का काम। २-वकील का पेशा। ३-न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से जिरह करना।

**वकालतनामा** पुं० (अ) किसी मुकदमे की पैरवी करने का वकील को दिया गया अधिकार पत्र।

**वकील** पुं० (अ) १-दूत। २-प्रतिनिधि। ३-अभिवक्ता ४-वह जिसने वकालत की परीक्षा पास करली हो। और अदालत में किसी की ओर से बहस करे।

**वकीली** स्त्री० (हि) वकालत।

**वकुल** पुं० (सं) दे० 'बकुल'।

**वक्त** पुं० (अ) १-समय। काल। २-अवसर। ३-अवकाश। ४-मरने का नियत समय। मृत्युकाल।

**वक्तन-फ-वक्तन** अव्य०(अ) १-यदाकदा। कभी-कभी २-यथासमय।

**वक्तव्य** वि० (सं) १-कहने योग्य। २-कुछ कहने योग्य ३-हीन। तुच्छ। पुं० (सं) किसी विषय में कोई कही गई बात जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिये हो। (स्टेटमेंट)।

**वक्ता** वि० (सं) १-बोलने वाला। २-भाषण करने वाला। पुं० (सं) कथा कहने वाला।

**वक्तृता** स्त्री० (सं) १-वाक्पटुता। २-भाषण देने की योग्यता। ३-भाषण। व्याख्यान।

**वक्तृत्व** पुं० (सं) दे० 'वक्तृता'।

**वक्त्र** पुं० (सं) १-मुख। २-कार्य का आरम्भ। ३-एक प्रकार का छन्द।

**वक्त्रासव** पुं० (सं) थूक। लार।

**वक्फ** पुं० (अ) १-धर्मार्थ दान की हुई सम्पत्ति। २-किसी के लिये कोई वस्तु छोड़ देना।

**वक्फनामा** पुं० (अ) दान-पत्र।

**वक्र** वि० (सं) १-टेढ़ा। बांका। २-कुटिल। ३-झुका-हुआ। ४-निर्दय।

**वक्रगति** वि० (सं) १-उलटी चाल वाला (ग्रह आदि)। २-कुटिल।

**वक्रगामी** वि० (सं) टेढ़ी चाल चलने वाला। २-शठ कुटिल।

**वक्रग्रीव** पुं० (सं) ऊँट।

**वक्रचंचु** पुं० (सं) तोता।

**वक्रता** स्त्री० (सं) क्रूरता।

**वक्रतुंड** पुं० (सं) १-तोता। २-गणेश जी।

**वक्रत्व** पुं० (सं) दे० 'वक्रता'।

**वक्री** वि० (सं) १-अपने मार्ग को छोड़ कर पीछे हटने वाला। २-कुटिल।

**वक्रोक्ति** स्त्री० (सं) १-वह काव्यालंकार जिसमें श्लेष से वाक्य का कुछ और ही अर्थ निकलता है। २-चमत्कारपूर्ण उक्ति।

**वक्षःस्थल** पुं० (सं) छाती।

**वक्ष** पुं० (हि) १-छाती। उरस्थल। २-बैल।

**वक्षस्छद** पुं० (सं) कवच।

**वक्षोज** पुं० (सं) स्तन। कुच।

**वक्षोरुह** पुं० (सं) स्तन। कुच।

**वक्ष्यमाण** १-वि० (सं) १-वक्तव्य। २-जिसे कह रहे

हो।
बगला स्त्री० (सं) दे० 'बगलामुखी'।
बगलामुखी स्त्री० (सं) दस महाविद्याओं के अन्तर्गत एक देवी विशेष।
वगैरह अव्य० (अ) इत्यादि। आदि।
बचन पुं० (सं) १-मुख से निकलने वाले सार्थक शब्द। २-उक्ति। कथन। ३-व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है।
वचनकर वि० (सं) अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला
वचनकारी वि० (सं) आज्ञाकारी।
वचनपटु वि० (सं) बोलने में प्रवीण।
वचनपत्र पुं० (सं) वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत समय पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है। (प्रोमिसिरी नोट)।
वचनबंध पुं० (सं) किसी से भविष्य में मिलने तथा कोई काम करने का आपस में निश्चित समय। (एंगेजमेंट)।
वचनबद्ध वि० (सं) जिसने किसी को वचन दिया हो
वचनविदग्धा स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने वचन की चतुराई से अपने उपपति का प्रेम साध लेती है
वचसा अव्य० (सं) वचन द्वारा।
वचस्वी वि० (सं) जो भाषण देने में प्रवीण हो।
वच्छ पुं० (हि) छाती।
वज़न पुं० (अ) १-भार। बोझ। २-तौल। ३-मान-मर्यादा। ४-चित्रकला की वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक रंग दूसरे से विषम हो जाय।
वज़नकश पुं० (अ) तोलने वाला व्यक्ति।
वज़नदार वि० (अ) १-भारी। बोझिल। २-महत्व वाला।
वज़नी वि० (अ) १-जिसमें अधिक बोझ हो। भारी। २-मानने योग्य।
वजह स्त्री०(अ)१-कारण। हेतु। २-तत्व। ३-प्रकृति
वजा स्त्री० (अ) १-बनावट। २-सजधज। चालढाल ३-रूप। आकृति। ४-दशा। ५-रीति। प्रणाली।
वजादार वि०(अ) जिसकी रचना या बनावट सुन्दर हो।
वज़ारत स्त्री०(अ) १-वज़ीर या मन्त्री का कार्य। २-मन्त्री का कार्यालय।
वजाहत स्त्री० (अ) १-बड़प्पन। २-सुन्दरता।
वजीफा पुं० (अ) १-विद्वानों आदि को दी जाने वाली आर्थिक सहायता। वृत्ति। २-मुसलमानों का धार्मिक पाठ।
वज़ीर पुं० (अ) १-मन्त्री। २-शतरंज की एक गोट।
वज़ीरी स्त्री० (अ) वजीर का काम या पद।
वज़ीरे-आज़म पुं० (अ) प्रधान मन्त्री।
वज़ीरे-खारजा पुं० (अ) परराष्ट्र-मन्त्री।
वज़ीरे-जंग पुं० (अ) युद्ध-मन्त्री।
वज़ीरे-तालीम पुं० (अ) शिक्षा-मन्त्री।
वज़ीरे-माल पुं० (अ) राजस्व मन्त्री।
वज़ू पुं० (अ) नमाज पढ़ने से पहले हाथ पैर धोने का काम।
वजूद पुं० (अ) १-अस्तित्व। मौजूदगी। २-शरीर। ३-सृष्टि।
वजूहात स्त्री०(अ) कारणों का समूह (बहुवचन शब्द)
वज्र पुं० (सं) १-इन्द्र का प्रधान अस्त्र। २-विद्युत। ३-हीरा। ४-भाला। ५-बरछी। ६-एक प्रकार का लोहा। ७-पत्थर। वि० १-बहुत कठिन। २-घोर। विकट।
वज्रघोष पुं० (सं) १-बिजली की कड़क। २-भारी शब्द।
वज्रतुंड पुं० (सं) १-गीध। २-मच्छर। ३-गरुड़। ४-गणेश।
वज्रपाणि पुं० (सं) १-इन्द्र। २-ब्राह्मण। ३-एक बोधिसत्व।
वज्रपात पुं० (सं) १-बिजली का गिरना। २-सहसा कोई संकट आना।
वज्रलेप पुं० (सं) एक प्रकार का पत्थर की मूर्ति आदि में जोड़ लगाने का मसाला।
वज्रसार पुं० (सं) हीरा।
वज्रहृदय वि० (सं) कठोर दिल का।
वज्रांग पुं० (सं) १-सांप। २-हनुमान।
वज्रायुध पुं० (सं) इन्द्र।
वज्री पुं० (सं) १-इन्द्र। २-एक प्रकार की ईंट।
वज्रोली स्त्री० (हि) हठयोग की एक मुद्रा।
वट पुं० (सं) बरगद का पेड़।
वटक पुं० (सं) १-गोल बट्टा। २-पकौड़ा। बड़ा। ३-आठ माशे की एक तौल।
वटिका स्त्री० (सं) छोटी गोली या टिकिया।
वटी स्त्री० (सं) दे० 'वटिका'।
वटु पुं० (सं) दे० 'बटुक'।
वटुक पुं०(सं) १-बालक। लड़का। २-ब्रह्मचारी। ३-भैरव।
वटूक पुं० (सं) दे० 'वटिका'।
वडवा स्त्री० (सं) १-घोड़ी। २-दासी। ३-वेश्या। ४-ब्राह्मणी। ५-नक्षत्र।
वडवामुख पुं० (सं) शिव।
वडवासुत पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
वणिक पुं० (सं) १-जो व्यापार द्वारा अपनी जीविका चलाता हो। २-वैश्य। बनिया। व्यापारी।
वणिक-कटक पुं० (सं) दे० 'वणिक्सार्थ'।
वणिक-कर्म पुं० (सं) बनिये का पेशा। व्यापार।
वणिक-क्रिया स्त्री० (सं) दे० 'वणिक् कर्म'।
वणिक-सार्थ पुं०(सं) व्यापारियों का समूह। कारवाँ

वणिग्ग्राम पुं० (सं) व्यापारियों की सभा या मंडल।
वतन पुं० (म) देशभक्ति।
वतनी वि० (म) अपने देश का।
वत अव्य० (सं) समान। तुल्य। सादृश्य।
वत्स पुं० (सं) १-लड़का। बच्चा। २-वत्सर। वर्ष ३-छाती। ४-कंस का एक अनुचर।
वत्सकामा स्त्री०(सं) वह स्त्री जिसे पुत्र की कामना हो
वत्सतरी स्त्री० (सं) तीन वर्ष की आयु की बछिया।
वत्सदंत पुं० (स) एक प्रकार का तीर।
वत्सनाभ पुं० (सं) १-एक वृक्ष विशेष। २-एक बछ-नाग नामक मीठा विष।
वत्सपालक पुं० (सं) १-बछड़ा पालने वाला। २-श्रीकृष्ण या बलराम।
वत्सपीता स्त्री० (सं) वह गाय जो अपने बछड़े को दूध पिला चुकी हो।
वत्सर पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-विष्णु का नाम
वत्सराज पुं० (सं) प्राचीन वत्स देश का राजा, उद-यन।
वत्सल वि० (सं) १-सन्तान के प्रेम से भरा हुआ। २-छोटों से स्नेह रखने वाला।
वत्सिमा स्त्री० (सं) बचपन।
वदंती स्त्री० (सं) कथा। बात।
वदतोव्याघात पुं० (सं) कथन का वह दोष जिसमें एक बात कह कर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाय
वदन पुं० (सं) १-चेहरा। मुख। २-बात कहना। बोलना। ३-सामना। अग्रभाग।
वदनपवन पुं० (सं) साँस।
वदनमारुत पुं० (सं) साँस।
वदनामय पुं० (सं) मुँह का एक रोग।
वदन्य वि० (सं) दे० 'वदान्य'।
वदान्य वि० (सं) १-बहुत बड़ा दानी। २-मधुरभाषी
वदाम पुं० (हि) दे० 'बादाम'।
वदि पुं० हि) कृष्णपक्ष।
वदी पु० (हि) दे० 'बदि'।
वदुसाना क्रि० (हि) दोषा देना। बुरा भला कहना।
वद्य वि० (सं) कहने योग्य।
वद्यपक्ष पुं० (सं) कृष्णपक्ष।
वध पुं० (सं) किसी मनुष्य को किसी उद्देश्य से जान बूझ कर मार डालना। मारण।
वधक वि० (सं) वध करने वाला।
वधकर्माधिकारी पुं० (सं) जल्लाद।
वधजीवी पुं० (सं) १-व्याध। बहेलिया। २-कसाई।
वधदंड पुं० (सं) प्राणदंड। शारीरिक दण्ड।
वधनिग्रह पुं० (सं) फांसी की सजा।
वधभूमि स्त्री० (सं) १-वह स्थान जहां प्राण दंड दिया जाय। २-कसाईखाना।
वधस्थान पुं० (सं) दे० 'वधभूमि'।
वधार्ह वि० (सं) वध करने के योग्य।
वधालय पुं० (सं) वह स्थान जहां पशुओं का वध किया जाता है। (स्लाटरहाउस)।
वधिक पुं० (सं) दे० 'बधिक'।
वधिर वि० (सं) दे० 'बधिर'।
वधु स्त्री० (सं) १-पुत्र की स्त्री। बहू। २-दुलहन।
वधुका स्त्री० (सं) दे० 'वधु'।
वधू स्त्री० (सं) १-नव विवाहिता स्त्री। दुल्हन। २-पत्नी। ३-पुत्र की बहू।
वधूगृह प्रवेश पुं० (सं) वधू के पति के गृह में प्रवेश करने की एक रीति।
वधूधन स्त्री० (सं) स्त्री-धन।
वधूटी स्त्री० (सं) १-नवयुवती। २-वधू। दुलहन।
वधूत पुं० (सं) दे० 'अवधूत'।
वधोपाय पुं० (सं) वध करने के साधन या हथियार।
वध्य वि० (सं) मार डालने योग्य।
वध्यघातक पुं० (स) प्राणदंड दिये हुए व्यक्ति का वध करने वाला।
वध्यभूमि स्त्री० (सं) दे० 'वधभूमि'।
वन पुं० (सं) १-जङ्गल। (फारेस्ट)। २-बगीचा। ३-जल। ४-घर। ५-रश्मि। ६-फूलों का गुच्छा।
वनकदली स्त्री० (सं) जङ्गली केला।
वनकुंजर पुं० (सं) जंगली हाथी।
वनगज पुं० (सं) जंगली हाथी।
वनगमन पुं० (सं) संन्यास ग्रहण करना।
वनचर पुं० (सं) १-वन में विचरने वाला। २-वन-वासी। ३-वन्य पशु। ४-शरभ नामक वन जन्तु।
वनचारी वि० (सं) वन में घूमने वाला या रहने वाला
वनज पुं० (सं) १-वन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ २-कमल। ३-जंगली नीबू।
वनजात पुं० (सं) दे० 'वनज'।
वनजीवी पुं० (स) लकड़हारा।
वनद पुं० (सं) मेघ। बादल।
वनदेव पुं० (सं) वन का अधिष्ठाता देवता।
वनदेवी स्त्री० (सं) वन की अधिष्ठात्री देवी।
वननाशन पुं० (स) किसी क्षेत्र के जंगल काटकर बहने या खेती योग्य बना देना। (डिफॉरेस्टेशन)।
वनपाल पुं० (सं) जंगल की देखरेख करने का अधि-कारी (रेंजर)।
वनप्रस्थ वि० (सं) तपस्वी। वन में तप करने वाला।
वनमहोत्सव पुं० (सं) भारत सरकार द्वारा चलाया गया वन और वृक्ष लगाने का उत्सव।
वनमातंग पुं० (सं) जंगली हाथी।
वनमानुष पुं० (सं) बिना पूँछ का बड़ा बन्दर जो मनुष्य के आकार का होता है।
वनमाला स्त्री० (सं) १-जंगली फूलों की माला। २-घुटने तक लम्बी अनेक ऋतुओं में होने वाले फूलों

वनी माला।
**बनमाली** पुं० (सं) श्रीकृष्ण। वि० (सं) वनमाला धारण करने वाला।
**बनरक्षक** पुं० (सं) दे० 'वनसंरक्षक'।
**बनसंरक्षक** पुं० (स) वह सरकारी उच्चाधिकारी जो वनों को नष्ट होने से बचाने तथा उनकी रक्षा करने की व्यवस्था करता है। (कंजर्वेटर ऑफ फोरेस्ट)।
**बनराज** पुं० (हि) सिंह। शेर।
**बनराजी** स्त्री०(स) १-वृक्ष समूह। २-जंगल में होकर जाने वाली पगडंडी।
**बनरुह** पु० (स) कमल का फूल।
**बनरोपण** पुं० (सं) किसी भूमि में वृक्षादि लगाकर जंगल में परिणित करने का काम। (एफोरेस्टेशन)।
**बनलक्ष्मी** स्त्री० (सं) १-वन की शोभा। २-केला।
**बनवास** स्त्री० (सं) १-वन या जङ्गल में रहना २-बस्ती छोड़ कर जङ्गल में बसने का दण्ड।
**बनवासी** वि० (सं) वन में रहने वाला।
**बनविज्ञान** पु० (सं) वृक्षादि लगाने के तरीके आदि से सम्बन्धित विज्ञान। (सिल्वीकल्चर)।
**बनव्रीहि** पु० (सं) तिन्नी।
**बनस्थ** पु० (सं) १-वन में रहने वाला। २-वानप्रस्थ ३-मृग।
**बनस्थली** स्त्री० (सं) वनभूमि।
**बनस्पति** स्त्री०(स) १-वे वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों। २-पेड़-पौधे। ३-वटवृक्ष।
**बनस्पति-घी** पु० (हि) मूँगफली के तेल में नारियल बिनौले आदि साफ करके यांत्रिक उपायों से जमाया हुआ तेल।
**बनस्पति शास्त्र** पु० (हि) वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधे की जातियों आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)।
**बनहास** पुं० (सं) १-काँस। २-कुँद का फूल।
**बनांत** पुं० (सं) जंगली भूमि या मैदान।
**बनांतर** पुं० (स) जङ्गल का भीतरी भाग।
**बनाग्नि** स्त्री० (सं) दावानल। जङ्गल में लगने वाली आग।
**बनिता** स्त्री० (सं) १-औरत। २-प्रियतमा। ३-छः वर्गों की एक वृत्ति।
**बनी** पुं० (हि) वानप्रस्थ। स्त्री० छोटा वन या जङ्गल।
**बनोत्सर्ग** पुं०(सं) मन्दिर, कुआँ आदि बनाकर जन-साधारण के लिए दान देना।
**बनौषधि** स्त्री० (सं) जङ्गल की जड़ी बूटी।
**बन्य** वि० (स) १-वन में उत्पन्न होने वाला। २-जङ्गली।
**बन्या** स्त्री० (सं) १-गहरा जङ्गल। २-जङ्गलों का समूह। ३-बाढ़।
**बपन** पुं० (स) १-केश मूँडना। २-बीज बोना।
**बपित** वि० (सं) बीज बोया हुआ।
**बपु** पुं० (सं) १-शरीर। देह। २-रूप।
**बपुमान** पुं० (हि) सुन्दर और हृष्टपुष्ट शरीर वाला।
**बपुष्मान** वि० (सं) १-सुन्दर। २-शारीरिक।
**बप्ता** पुं० (सं) १-पिता। २-कवि। ३-नाई। वि० बीज बोने वाला।
**बप्र** पुं०(सं) १-मिट्टी की दीवार। २-शहर। ३-धूल ४-टीला। ५-भवन की नींव।
**बप्रक्रिया** स्त्री० (स) दे० 'बप्रक्रीड़ा'।
**बप्र-क्रीड़ा** स्त्री० (स) सांड, बैल आदि का मिट्टी के ढेर को सींग से उछालने की क्रीड़ा।
**बफा** स्त्री० (अ) १-वायदा पूरा करना। २- पूर्णता। ३-सुशीलता।
**बफात** स्त्री० (अ) मरत। मृत्यु।
**बफादार** वि० (अ) १-वचन या कर्त्तव्य का पालन करने वाला। २-ईमानदार। सच्चा।
**बफादारी** स्त्री० (अ) बफादार होने का भाव या धर्म।
**बफद** पुं० (अ) प्रतिनिधि मंडल। (डेपुटेशन)।
**बबा** स्त्री० (अ) १-महामारी। मरी। २-छूत का रोग
**बबाई** वि० (अ) १-महामारी-रूप। २-छुतही।
**बबाल** पुं० (अ) १-बोझ। भार। २-आपत्ति। ३-आफत। ४-ईश्वरी प्रकोप।
**बमन** पुं०(स) १-कै करना। उलटी करना। २-पीड़ा ३-आहुति।
**बमना** क्रि० (हि) कै या उलटी करना।
**बमित** वि० (सं) बमन या कै किया हुआ।
**बयःपरिणति** स्त्री० (सं) आयु की प्रौढ़ता।
**बयःसंधि** स्त्री० (सं) जवानी और लड़कपन के बीच का काल।
**बयःस्थ** वि० (सं) बलिष्ठ। जवान। पुं० एक ही आयु का मित्र।
**बय** स्त्री० (सं) १-आयु। अवस्था। २-बीता हुआ जीवन।
**बयन** पुं० (सं) बुनने का काम। बुनाई।
**बयस** पुं० (सं) १-अवस्था। उम्र। २-पक्षी।
**बयस्क** वि० (स) १-उमर या अवस्था। २-बालिग।
**बयस्क-मताधिकार** वि० (स) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना भेद भाव के प्राप्त होता है। (एडल्ट सफरेज)।
**बयस्य** पुं० (सं) १-समवयस्क। २-मित्र। दोस्त।
**बयस्या** स्त्री० (सं) १-सखी। २-ईंट।
**बयोवृद्ध** वि० (सं) जो अवस्था में बड़ा हो। बड़ाबूढ़ा
**बरंच** अव्य० (सं) १-अपितु। बल्कि। परन्तु। लेकिन
**बर** पुं० (सं) १-देवता आदि से मांगा हुआ मनोरथ। २-देवता से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि। ३-वह जिसके साथ कन्या का विवाह

निश्चित हो। पति। दूल्हा। वि०(हिं)१-उन्मत्त। २-उच्च कोटि का।
बरक पुं० (अ) १-पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ। २-पत्र। ३-धातु का पतला पत्तर।
बरकसाज पुं० (अ) चांदी या सोने का वरक बनाने वाला।
बरज वि० (स) ज्येष्ठ। बड़ा।
बरजिश स्त्री० (फा) व्यायाम।
बरण पुं० (सं) १-किसी को किसी काम के लिए चुनना। (सेलेक्शन)। २-आवरण। ३-ऊँट। ४-पुल।
बरणस्वातंत्र्य पुं० (स) चुनने या वरण की स्वतंत्रता (फ्रीडम आफ चोइस)।
बरणी स्त्री० (सं) मंगल कार्य में सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान।
बरणीय वि० (स) १-पूज्य। २-श्रेष्ठ।
बरद वि० (सं) १-वर देने वाला। २-शुभ।
बरदक्षिणा स्त्री० (स) दहेज। २-वह धन जो लड़की वाले से विवाह के समय मिलता है।
बरदाता वि० (सं) वर देने वाला।
बरदान पुं० (सं) देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना।
बरदानी पुं० (सं) मनोरथ पूर्ण करने वाला।
बरदायक वि० (सं) वर देने वाला।
बरदी स्त्री (अ) वह पहिनावा जो किसी विशेष विभाग के कार्यकर्त्ताओं के लिए नियत हो। (यूनीफॉर्म)।
बरना क्रि०(हिं) १-वरण करना। २-विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना। ३-ग्रहण या धारण करना।
बरन् अव्य (हिं) बल्कि। लेकिन।
बरपक्ष पुं० (सं) १-बरात। २-लड़के वाले।
बरम पुं० (हि) दे० 'वर्म'।
बरयात्रा स्त्री० (सं) बरात। वर का मित्रों, सम्बन्धियों के साथ कन्या के घर जाना।
बरही पुं० (हिं) मोर।
बरांग पुं० (सं) १-मस्तक। २-गूदा। ३-योनि। ४-हस्ती। ५-विष्णु।
बरांगना स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।
बराक पुं० (सं) १-शिव। २-युद्ध। ३-पापड़ा। वि० १-शोचनीय। २-नीच।
बराट पुं० (सं) १-कौड़ी। २-रस्सी। डोरी। ३-पद्म-बीज।
बराटक पुं० (सं) १-कौड़ी। २-कमलगट्टा। ३-रस्सी
बरानना स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।
बरान्न पुं० (सं) दला हुआ उत्तम अन्न।
बरार्थी वि० (सं) वर चाहने वाला।
बरासत स्त्री० (अ) १-वारिस होने का भाव। २-उत्तराधिकारी। ३-उत्तराधिकार से मिला हुआ धन
बरासतन अव्य० (अ) उत्तराधिकार रूप में।
बरासतनामा पुं० (अ) उत्तराधिकार-पत्र।
बराह पुं० (सं) १-सूअर। शूकर। २-एक मान। ३-एक पर्वत का नाम। ४-सांड। ५-भेड़।
बरिष्ठ वि०(सं) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-उच्च कोटि का
बरीयता स्त्री० (सं) किसी वस्तु को दी गई अधिमान्यता। (प्रेफरेन्स)।
बरीयान वि०(सं) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-माननीय।
बरुण पुं० (सं) १-एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। २-जल। ३-पानी। (नेपचून)।
बरुणात्मजा स्त्री० (सं) मदिरा। शराब।
बरुणावास पुं० (सं) समुद्र। सागर।
बरूथ पुं० (स) १-तनुत्राण। बकतर। २-ढाल। ३-रथ को रक्षित करने के लिये पड़ी हुई लोहे की जंजीरों की चादर। ४-सेना।
बरूथप पुं० (सं) सेनापति।
बरूथिनी स्त्री० (सं) सेना। फौज।
बरेण्य वि० (सं) १-प्रधान। मुख्य। २-पूज्यनीय। श्रेष्ठ।
बरोरु वि० (सं) १-सुन्दर जांघ वाली स्त्री। २-सुन्दर स्त्री।
बरोरू वि० (सं) दे० 'वरोरु'।
वर्ग पुं० (सं) १-एक ही तरह की वस्तुओं का समूह। कोटि। श्रेणी। (ग्रुप)। २-परिच्छेद। ३-दो समान अंकों का गुणनफल। (स्क्वेयर)। ४-शब्द शास्त्र में एक ही स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णों का समूह जैसे कवर्ग। ५-वह समानान्तर चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ तथा कोण बराबर हों।
वर्गपद पुं० (सं) वह अङ्क जिसके घात से कोई वर्गाङ्क बना हो। वर्गमूल।
वर्गपहेली स्त्री० (हि) वह पहेली जिसमें एक वर्गाकार चतुर्भुज में ऊपर से नीचे और बांये से दांये खाली छोटे वर्गों में खाली स्थान ठीक प्रकार दिये हुए संकेतों के अनुसार पूरा करने पर पारितोषिक दिया जाता है। (क्रॉसवर्ड पज़ल)।
वर्गफल पुं० (सं) वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।
वर्गमूल पुं० (सं) किसी वर्ग का वह अंक जिसे उसी अंक से गुणा करने पर वही वर्गाङ्क आता है। जैसे २५ का वर्गमूल ५ है।
वर्गलाना क्रि० (फा) १-उकसाना। २-बहकाना। फुसलाना।
वर्गाङ्क पुं० (सं) किसी अङ्क को उसी अङ्क से गुणा करने पर प्राप्त होने वाला गुणनफल।
वर्गीकरण पुं० (सं) वर्ग के अनुसार बहुत सी वस्तुओं

या व्यक्तियों को अलग-अलग करना। (क्लासीफिकेशन)।

**वर्गीय** वि० (सं) वर्ग-सम्बन्धी।

**वर्चस्व** पुं० (सं) १-तेज। २-श्रेष्ठता।

**वर्चस्वान्** वि० (सं) तेजवान। दीप्तियुक्त।

**वर्चस्वी** वि० (सं) तेजस्वी। दीप्तियुक्त। पुं० (सं) चन्द्रमा।

**वर्जक** वि० (सं) त्याग करने वाला।

**वर्जन** पुं० (सं) १-त्याग। छोड़ना। २-मनाही। ३-हिंसा। मारण।

**वर्जना** स्त्री० (सं) दे० 'वर्जन'। क्रि० (हिं) मना करना

**वर्जित** वि० (सं) १-छोड़ा हुआ। २-निषिद्ध।

**वर्ज्य** वि० (सं) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-जो मना हो।

**वर्ण** पुं० (सं) १-पदार्थों के काले पीले आदि भेदों के नाम। रङ्ग। २-हिन्दुओं के चार विभाग ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ३-भेद। प्रकार। किस्म। ४-अक्षर। ५-बड़ाई। ६-सोना। ७-चित्र।

**वर्णक** पुं० (सं) १-अभिनेता के वस्त्र या पोशाक। २-नकाब।

**वर्णक्रम** पुं० (सं) १-वर्णव्यवस्था। २-अक्षरक्रम।

**वर्णखंडमेरु** पुं० (सं) पिंगल या छन्दशास्त्र में वह जिससे यह ज्ञान हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते है तथा प्रत्येक वृत्त में कितने लघु या गुरु वर्ण होंगे।

**वर्णगत** वि० (सं) वर्ण-सम्बन्धी।

**वर्णच्छटा** स्त्री० (सं) दे० 'वर्णपट'।

**वर्णन** पुं० (सं) १-सविस्तार कहा जाने वाला हाल बयान। २-चित्रण।

**वर्णना** स्त्री० (सं) सराहना। गुणकथन।

**वर्णनातीत** वि० (सं) जिसका वर्णन न हो सके।

**वर्णनाश** पुं० (सं) किसी वर्ण का शब्द में से नष्ट हो जाना। जैसे—पृषतोदर से स्थान में पृषोदर।

**वर्णपट** पुं० (सं) किसी छिद्र में से आने वाले प्रकाश को त्रिपार्श्वकाच (प्रिज्म) में से गुजरने पर दिखाई देने वाले इन्द्रधनुष वाले सात रंग। (स्पैक्ट्रम)।

**वर्णपताका** स्त्री० (सं) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा वर्ण वृत्तों के भेदों में आने वाली लघु और गुरु मात्राओं की गिनती या संख्या ज्ञात होजाती है

**वर्णपरिचय** पुं० (सं) १-संगीत या अक्षरों का ज्ञान २-ऐसे ज्ञान की कोई पुस्तक।

**वर्णपात** पुं० (सं) दे० 'वर्णनाश'।

**वर्णप्रत्यय** पुं० (सं) छन्दशास्त्र की वे क्रियाएँ जिनके द्वारा वर्णवृत्तों के भेद या स्वरूप जाने जाते हैं।

**वर्णप्रस्तार** पुं० (सं) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा छन्दों के कितने भेद हो सकते हैं और इन भेदों के कितने प्रकार के स्वरूप हो सकते हैं।

**वर्णभेद** पुं० (सं) जाति या रंग के कारण होने वाला भेद भाव।

**वर्णमर्कटी** स्त्री० (सं) छन्दशास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं।

**वर्णमाला** स्त्री० (सं) किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से लिखित सूची। (एल्फाबेट्स)।

**वर्णराशि** स्त्री० (सं) अक्षरों के रूपों की श्रेणी की लिखित सूची।

**वर्णविकार** पुं० (सं) निरुक्त के अनुसार एक वर्ण का बिगड़ कर दूसरा वर्ण बन जाना।

**वर्णविचार** स्त्री० (सं) आधुनिक व्याकरण का वह भाग जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण तथा संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। (आर्थोग्राफी)।

**वर्णविद्वेष** पुं० (सं) वर्ण या रंग के कारण भेदभाव करना विशेषतः श्वेत जाति के लोगों की काले रंग के लोगों से द्वेष करने की प्रवृत्ति। (कलर प्रज्युडिस)।

**वर्णविपर्यय** पुं० (सं) निरुक्त के अनुसार वर्णों का उलट फेर होना जैसे—हिंसा से सिंह।

**वर्णवृत्त** पुं० (सं) वह छन्द या पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम एक से होते हैं।

**वर्णव्यवस्था** स्त्री० (सं) हिन्दू समाज के चार वर्णों में विभाजित करने की रीति।

**वर्णसंकर** पुं० (सं) वह जो दो अलग-अलग जाति के यौन सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ हो।

**वर्णांतर** पुं० (सं) दूसरी जाति।

**वर्णांध** वि० (सं) जिसे रङ्गों का ज्ञान या भास न होता हो। (कलर ब्लाइण्ड)।

**वर्णानुक्रम से** अव्य० (हि) वर्णों के क्रम के अनुसार। (एल्फाबैटिकली)।

**वर्णाश्रम** पुं० (सं) चारों वर्णों का आश्रम।

**वर्णाश्रम-धर्म** पुं० (सं) चारों वर्णाश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक कल्याण प्राप्त हो सकता हो।

**वर्णिक** पुं० (सं) लेखक।

**वर्णिकवृत्त** पुं० (सं) दे० 'वर्णवृत्त'।

**वर्णिका** स्त्री० (सं) १-स्याही। २-सोने का पानी। ३-चन्द्रमा। ४-कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय (चित्रकला)।

**वर्णित** वि० (सं) १-कथित। कहा हुआ। २-जिसका वर्णन हो चुका हो। (डिस्क्राइब्ड)।

**वर्ण्य** पुं० (सं) १-प्रस्तुत विषय। २-उपमेय। ३-केसर कुंकुम। वि० वर्णन के योग्य।

**वर्तका** स्त्री० (सं) दे० 'वर्तकी'।

**वर्तकी** स्त्री० (सं) बटेर पक्षी की मादा।

**वर्तन** पुं० (सं) १-बरताव । व्यवहार । २-वृत्ति । व्यवसाय । ३-घुमाना । ४-परिवर्तन । ५-स्थिति । ६-स्थापन । ७-सिलबट्टे से पीसना । ८-वर्तमान ९-बरतन । १०-शल्यकंपन कर्म । ११-कौआ । १२-तकली ।
**वर्तन-अभिकर्ता** पुं० (सं) किसी व्यापार आदि में दलाली लेकर किसी बड़ी व्यापारिक संस्था का माल दूकानदारों को बेचने वाला । (कमीशन एजेंट) ।
**वर्तनी** स्त्री० (सं) १-बटने या पीसने की क्रिया । पेषण २-रास्ता ।
**वर्तमान** वि० पुं० (सं) १-जो इस समय हो या चल रहा हो । (एक्जिस्टिंग) । २-उपस्थित । विद्यमान । (प्रेजेन्ट) । ३-आधुनिक । पुं० १-व्याकरण के तीन कालों में से पहला । २-समाचार । ३-वृतांत । ४-चलता व्यवहार ।
**वर्ति** स्त्री० (सं) १-बत्ती । २-अंजन । ३-वह बत्ती जो चिकित्सक घाव में देता है । ४-औषध बनाना । ५-उबटन । ६-गोली । बट्टी ।
**वर्तिग्रह** पुं० (सं) किसी दीपक आदि का वह भाग जिसमें बत्ती पड़ी रहती है तथा जो उसकी लौ का नियन्त्रण भी करता हो । (वर्नर) ।
**वर्तिका** स्त्री० (सं) १-बटेर । २-बत्ती । ३-सलाई ।
**वर्तित** वि०(सं)१-संपादित । किया हुआ । २-चलाया हुआ । ३-ठीक किया हुआ ।
**वर्ती** वि०(हिं) १-बरतने वाला । २-स्थित रहने वाला पुं० १-बत्ती । २-सलाई ।
**वर्तुल** वि० (सं) गोलाकार । गोल । पुं० १-मटर । २-गाजर ।
**वर्तुलाकार** वि० (सं) गोल ।
**वर्तुलाकृति** वि० (सं) गोल ।
**वर्त्म** पुं० (सं) १-पथ । मार्ग । २-लीक । ३-किनारा ४-पलक । ५-आधार ।
**वर्दी** स्त्री (हिं) दे० 'वरदी' ।
**वर्द्धक, वर्धक** वि० (सं) १-बढ़ाने वाला । २-काटने वाला ।
**वर्द्धकी, वर्धकी** पुं०(सं) लकड़ी का काम करनेवाला बढ़ई ।
**वर्द्धन, वर्धन** पुं० (सं) १-बढ़ाना । २-वृद्धि । ३-पशुओं आदि को पाल-पोसकर वृद्धि करना । (ब्रीडिंग) । ४-काटना । छीलना ।
**वर्द्धमान, वर्धमान** वि० (सं) १-बढ़ता हुआ । २-बढ़ने वाला । पुं० १-सकोरा । २-बङ्गाल के एक जिले का नाम ।
**वर्द्धयिता, वर्धयिता** पुं० (सं) बढ़ाने वाला ।
**वर्द्धित, वर्धित** वि० (सं) १-बढ़ाया । बढ़ाया हुआ । २-पूर्ण । ३-कटा हुआ ।
**वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु** वि० (सं) बढ़ने वाला ।
**वर्म** पुं० (सं) १-कवच । बकतर । २-घर । पित्तपापड़ा
**वर्मधर** वि० (सं) दे० 'वर्महर' ।
**वर्महर** वि० (सं) कवचधारी ।
**वर्मा** पुं० (सं) क्षत्रियों की एक उपाधि ।
**वर्य** वि०(सं) १-श्रेष्ठ । २-प्रधान । पुं० कामदेव ।
**वर्वट** पुं० (सं) लोबिया ।
**वर्वर** पुं० (सं) १-एक देश का नाम । २-इस देश के निवासी । ३-पामर । नीच । ४-घुँघराले बाल ।
**वर्ष** पुं० (सं) १-एक बारह मास या महीने । साल बरस । २-वृष्टि । जल बरसना । ४-पुराणानुसार सात द्वीपों का समूह या विभाग ।
**वर्षक** वि० (सं) जल की वर्षा करने वाला । २-बरसाने वाला ।
**वर्षगाँठ** स्त्री० (हिं) जन्मदिन का उत्सव ।
**वर्षघ्न** पुं० (सं) १-पवन । २-ग्रहों का योग जिससे वर्षा नष्ट हो जाती है ।
**वर्षण** पुं० (सं) १-वृष्टि । बरसना । २-छिड़काव ।
**वर्षत्र** पुं० (सं) दे० 'वर्षत्राण' ।
**वर्षत्राण** पुं० (सं) छाता ।
**वर्षपति** पुं० (सं) वर्ष के अधिपति ग्रह ।
**वर्षप्रवेश** पुं० (सं) नये वर्ष या साल का आरम्भ ।
**वर्षप्रिय** पुं० (सं) चातक पक्षी ।
**वर्षफल** पुं० (स) किसी व्यक्ति के वर्षभर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का वर्णन । (फ० ज्यो०) ।
**वर्षबोध** पुं० (सं) वर्ष में एक बार प्रकाशित होने वाला एक ग्रन्थ जिसमें सारे साल की प्रमुख घटनाएँ सामाजिक तथा राजनीतिक बातों का विवरण होता है । (ईयरबुक) ।
**वर्षांग** पुं० (सं) महीना ।
**वर्षा** स्त्री० (सं) १-बरसात । २-वृष्टि । ३-किसी वस्तु का अधिक मात्रा में ऊपर को गिरना ।
**वर्षाकाल** पुं० (सं) वर्षा की ऋतु । बरसात ।
**वर्षागम** पुं० (सं) वर्षाकाल का आगमन ।
**वर्षाधिप** पुं० (सं) वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति होता है ।
**वर्षाप्रिय** पुं० (सं) चातक । पपीहा ।
**वर्षाबीज** पुं० (सं) ओला ।
**वर्षाशन** पुं० (सं) साल भर के लायक भोजन के रूप में दिया जाने वाला अन्नदान ।
**वर्षीण** वि० (सं) साल का ।
**वर्षीय** वि० (स) साल का ।
**वर्षेश** वि० (सं) दे० 'वर्षाधिप' ।
**वर्षोपल** पुं० (सं) ओला ।
**वर्ह** पुं० (सं) १-मोरपंख । २-ग्रन्थिपर्णी । ३-पत्र । पत्ता ।
**वर्ही** पुं० (सं) १-मोर । मयूर । २-तगर ।
**वलन** पुं० (सं) १-घुमाव । फिराव । २-घेरा । ३-

विपथगमन। वक्रगति। ४-ग्रहादि का अपने मार्ग से विचलित होना।
बलभि, बलभी स्त्री० (सं) १-सदर फाटक। २-अटारी। ३-काठियावाड़ प्रांत की एक प्राचीन नगरी का नाम।
बलय पुं० (सं) १-मण्डप। घेरा। २-कंकड़। ३-चूड़ी
बलयित वि० (सं) घिरा हुआ।
बलाक पुं० (सं) बगला।
बलायत स्त्री० (अ) १-दे० 'विलायत'। २-बली होना
बलाहक पुं० (सं) दे० 'बलाहक'।
बलि स्त्री० (सं) १-रेखा। लकीर। २-सिकुड़ने के कारण पड़ी हुई लकीर। ३-बल। ४-देवता पर चढ़ाई जाने वाली वस्तु या पशु। ५-बवासीर का मस्सा। ६-गन्धक।
बलित वि० (सं) १-लचका या बल खाया हुआ। २-मोड़ा हुआ। ३-परिवृत। घेरा हुआ। ४-जिसमें झुर्रियां पड़ी हों। ५-आच्छादित। ६-मिला हुआ। पुं० (सं) १-काली मिर्च। २-नाच की एक मुद्रा।
बली स्त्री० (सं) १-झुर्री। सिलवट। २-श्रेणी। पंक्ति ३-रेखा। पुं० (अ) १-मालिक। स्वामी। २-शासक ३-साधु। ४-अभिभावक।
बलीमुख पुं० (सं) बन्दर।
बलीवर्द पुं० (सं) बैल।
बल्कल पुं० (सं) १-वृक्ष की छाल। २-वृक्ष की छाल वस्त्र। ३-ऋग्वेद की एक शाखा।
बल्द पुं० (सं) बेटा। पुत्र।
बल्दीयत स्त्री० (अ) पिता के नाम का परिचय या पता।
बल्मी स्त्री० (सं) १-चींटी। २-दीमक।
बल्मीक पुं० (सं) १-दीमक के रहने का स्थान। बिमोट। २-वह मेघ जिस पर सूर्य की किरणें पड़ती हों। ३-वाल्मीकि मुनि।
बल्लकी स्त्री० (सं) १-वीणा। २-एक वृक्ष।
बल्लभ वि० (सं) प्रियतम। प्यारा। स्त्री० (सं) १-पति स्वामी। २-अध्यक्ष। मानिक। ३-नायक।
बल्लभा स्त्री० (सं) प्रेमिका। प्रेयसी।
बल्लभी स्त्री० (सं) १-गोपिका। २-गुजरात का एक नगर।
बल्लरि स्त्री० (सं) दे० 'बल्लरी'।
बल्लरी स्त्री०(सं) १-वल्लीलता। २-मंजरी। ३-मेथी ४-एक प्रकार का बाजा।
बल्लवी स्त्री० (सं) गोपिका।
बल्लाह अव्य० (अ) ईश्वर की शपथ है। सचमुच।
बशंकर वि० (सं) जो बश में करता हो।
बशंवद वि०(सं)१-बशीभूत। २-आज्ञाकारी।
बश पुं० (सं) १-अधिकार। २-अधिकार की सीमा। ३-इच्छा। ४-जन्म। ५-वेश्यालय। वि० १-आज्ञाकारी। अधीन।
बशकर वि० (सं) बशीभूत।
बशगा स्त्री० (सं) वह स्त्री जो किसी के बशीभूत हो।
बशवर्ती वि० (सं) अधीन। किसी के बश में रहने वाला।
बशा स्त्री० (सं) १-बांझ स्त्री। २-पत्नी। ३-गाय। ४-ननद। ५-हथिनी।
बशानुग पुं०(सं) आज्ञाकारी। अधीन। वि० बशीभूत
बशिता स्त्री० (सं) १-अधीनता। २-मोहने की क्रिया या भाव।
बशित्व पुं०(सं) दे० 'बशिता'।
बशिष्ठ पुं० (सं) दे० 'बसिष्ठ'।
बशी वि० (सं) १-वश में किया हुआ। २-अपने को वश में करने वाला।
बशीकर वि० (सं) वश में करने वाला।
बशीकरण पुं० (सं) १-वश में करना। २-तंत्र मंत्र द्वारा किसी को वश में करना।
बशीकृत वि०(सं) १-किसी प्रकार वश में किया हुआ २-मुग्ध। मोहित।
बशीभूत वि० (सं) १-अधीन। २-दूसरे के वश में आया हुआ।
बश्य वि० (सं) वश में आने वाला या रहने वाला। पुं० १-सेवक। दास। २-मातहत।
बश्यका स्त्री० (सं) वश में रहने तथा आज्ञा में रहने वाली स्त्री।
बश्यता स्त्री०(सं) वश में होने की अवस्था। अधीनता
बसंत पुं० (सं) १-चैत और वैशाख के महीने में होने वाली छः ऋतुओं में एक ऋतु। बहार का मौसम। २-एक राग।
बसंतकाल पुं० (सं) बसंतऋतु।
बसंतघोष पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
बसंतघोषी पुं०(सं) दे० 'बसंतघोष'।
बसंततिलक पुं०(सं) दे० 'बसंततिलका'।
बसंततिलका स्त्री० (सं) एक वर्णवृत्त।
बसंतपञ्चमी स्त्री० (सं) माघ के महीने की शुक्ल पञ्चमी।
बसंतबंधु पुं० (सं) कामदेव।
बसंतमहोत्सव पुं० (सं) होलिकोत्सव।
बसंतयात्रा स्त्री० (सं) बसन्तोत्सव।
बसंतव्रण पुं० (सं) मसूरिका।
बसंतसख पुं० (सं) कामदेव।
बसंती वि०(सं) हलके पीले रङ्ग का। पुं० (हिं) सरसों के फूल जैसा हलका पीला रंग।
बसंतोत्सव पुं०(सं) होली के अगले दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव। होलिकोत्सव।
बसअत वि० (अ) १-विस्तार। २-समाई। ३-चौड़ाई ४-शक्ति। सामर्थ्य।
बसति स्त्री० (सं) दे० 'बसती'।

बसती स्त्री० (सं) १-वास । रहना । २-रात । ३-घर
बसन पुं० (सं) १-वस्त्र । कपड़ा । २-निवास । ३-आवरण । ४-स्त्रियों की कमर का आभूषण ।
बसवास पुं० (अ) १-शंका । भ्रम । संदेह । २-प्रलोभन ।
बसवासी वि० (अ) १-विश्वास न करने वाला । २-भुलावे में डालने वाला ।
बसह पुं० (हिं) बैल । वृषभ ।
बसा स्त्री० (सं) १-मेद । २-चरबी ।
बसित वि० (स) १-पहना हुआ । धारण किया हुआ २-बसा हुआ । ३-जमा किया हुआ (अन्न) ।
बसितव्य वि० (स) पहनने योग्य ।
बसिष्ठ पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित थे । २-सप्तऋषि-मंडल का तारा ।
बसी पुं० (अ) वह व्यक्ति जिसके नाम वसीअत की गई हो ।
बसीका पुं० (अ) सरकारी खजाने में जमा किये हुए धन का वह सूद जो जमा करने वाले के वंशजों को मिलता है ।
बसीकादार पुं० (अ) जिसने बसीका लिखा हो ।
बसीयत स्त्री०(अ) मरने से पहले अपनी संपत्ति आदि के बारे में किसी को देने के सम्बन्ध में लिखित या मौखिक इच्छा प्रकट करना ।
बसीयतनामा पुं० (अ) वह लेख जिसमें वसीयत की शर्तें लिखी हों ।
बसीला पुं० (अ) १-सम्बन्ध । २-आश्रम । ३-किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग ।
बसुंधरा स्त्री०(सं) १-पृथ्वी । २-अश्वफलक की कन्या
बसु पुं० (सं) १-वैदिक देवताओं का एक गण । २-आठ की संख्या । ३-जल । ४-स्वर्ण । ५-सूर्य । ६-कुबेर । ७-रश्मि । ८-शिव ।
बसुदेव पुं० (सं) श्रीकृष्ण के पिता का नाम ।
बसुधा स्त्री० (सं) १-पृथ्वी । २-लक्ष्मी ।
बसुमती स्त्री० (सं) १-पृथ्वी । २-राज्य । देश ।
बसुश्रेष्ठ पुं० (सं) १-चांदी । २-श्रीकृष्ण ।
बसूल वि० (अ) १-मिला या लिया हुआ । प्राप्त । २-उगाहा हुआ ।
बसूली स्त्री० (अ) उगाही । दूसरे से अपना धन प्राप्त करने की क्रिया । (रिकवरी) ।
बस्तव्य वि० (सं) ठहरने योग्य ।
बस्ति स्त्री० (सं) १-नाभि के नीचे का स्थान । पेडू । २-मूत्राशय । ३-पिचकारी । (एनीमा) ।
बस्तिकर्म पुं० (सं) गुप्तेन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगाना ।
बस्तिकोश पुं० (सं) मूत्राशय ।
बस्ती वि० (अ) मध्य का । बीच का ।
वस्तु स्त्री० (सं) १-वास्तविक या कल्पित सत्ता । चीज २-वे साधन या सामग्री जिनसे कोई चीज बनी हो ३-किसी नाटक या काव्य का कथानक । ४-सत्य । ५-इतिवृत्त ।
वस्तुजगत पुं० (सं) दिखाई देने वाला सारा जगत ।
वस्तुज्ञान पुं० (सं) १-किसी वस्तु की पहचान । २-तत्वज्ञान ।
वस्तुतः अव्य० (सं) १-वास्तव में । २-सचमुच । (एक्चुअली) ।
वस्तुनिर्देश पुं० (सं) नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमें उसकी कथा की एक झलक दिखाई जाती है ।
वस्तुप्रेषणादेश पुं० (सं) बाहर से माल भेजने के लिए आया हुआ लिखित पत्र । (इन्डेन्ट) ।
वस्तुवाद पुं० (सं) वह दार्शनिक वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जैसा दृश्य है उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है ।
वस्तुविनिमय पुं० (सं) वस्तुओं की अदला-बदली ।
वस्तुस्थिति स्त्री० (सं) वास्तविक स्थिति या परिस्थिति
वस्तूत्प्रेक्षा स्त्री० (सं) साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद ।
वस्तूपमा स्त्री० (सं) उपमा-अलंकार का एक भेद ।
वस्त्र पुं० (सं) कपड़ा ।
वस्त्रगृह पुं० (सं) कपड़े का बना घर । खेमा ।
वस्त्रग्रंथि स्त्री० (सं) १-नाभि के पास लगने वाली धोती की गांठ । २-नाड़ा । इजारबन्द ।
वस्त्रदशा स्त्री० (स) कपड़े या धोती का किनारा ।
वस्त्रधारणी स्त्री० (सं) अलगनी ।
वस्त्रपुत्रिका स्त्री० (सं) गुड़िया । पुतली ।
वस्त्रपूत वि० (सं) कपड़े से छानकर शुद्ध किया हुआ ।
वस्त्रबंध पुं० (सं) नाड़ा । इजारबन्द । नीवी ।
वस्त्रभवन पुं० (सं) कपड़े का बना हुआ घर । डेरा तम्बू । खेमा ।
वस्त्रभेदक पुं० (सं) दे० 'वस्त्रभेदी' ।
वस्त्रभेदी पुं० (सं) दर्जी ।
वस्त्रविलास पुं० (सं) अच्छी वेशभूषा पहनने का शौकीन ।
वस्त्रवेश्म पुं० (सं) डेरा । खेमा । तम्बू ।
वस्त्रांचल पुं० (सं) कपड़े का छोर या किनारा ।
वस्त्रांत पुं० (सं) दे० 'वस्त्रांचल' ।
वस्त्रागार पुं० (सं) कपड़े की दुकान ।
वस्ल पुं० (अ) मिलन । मिलाप ।
वह सर्व० (हि) एक शब्द जिसके द्वारा वक्ता तथा श्रोता के अतिरिक्त तीसरे मनुष्य का सङ्केत किया जाता है । २-दूर के पदार्थों का सङ्केत करने वाला या परोक्ष वस्तुओं का सूचक शब्द । वि० (हि) बोझा उठाकर लेजाने वाला । वाहक ।(यौगिक के अन्त में)

**वहन** पुं० (सं) १-ढोकर या खींचकर लेजाना। २-ऊपर उठाना। ३-कन्धे या सिर पर लेना। ४-खम्भे के नौ भागों में से सबसे नीचे का भाग। ५-विद्युत प्रसारण का द्रव्य पदार्थों आदि में से संचरण। (कनवेक्शन)।
**वहनपत्र** पुं० (सं) वह पत्र जो जहाज का प्रधान अधिकारी जहाज पर लदे हुए माल को प्रेषती तक माल पहुँचाने के प्रमाण रूप में माल भेजने वाले को देता है। (बिल ऑफ लेडिंग)।
**वहनीय** वि० (सं) उठा या खींच कर लेजाने योग्य। २-ऊपर उठाने योग्य।
**वहम** पुं० (अ) १-मन में होने वाली मिथ्या धारणा २-भ्रम। ३-झूठा सन्देह।
**वहमी** वि० (अ) १-वहम करने वाला। ३-वृथा सन्देह द्वारा उत्पन्न।
**वहशत** स्त्री० (अ) १-असभ्यता। २-जङ्गलीपन। उजड्डता। २-पागलपन। ४-अधीरता।
**वहशियाना** वि० (अ) जङ्गली आदमी के अनुरूप। असभ्य।
**वहशी** वि० (अ) जङ्गली। असभ्य।
**वहाँ** अव्य० (हि) उस जगह। उस स्थान पर।
**वहिःशुल्क** पुं० (सं) वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आने या बाहर जाने वाले माल पर लगाया जाता है। (कस्टम ड्यूटी)।
**वहित्र** पुं० (सं) १-नाव। २-पोत। जहाज।
**वहिरंग** पुं० (सं) १-शरीर का बाहरी या ऊपरी भाग वह व्यक्ति जो अपने दल का न हो।
**वहिर्गत** वि० (सं) दे० 'बहिर्गत'।
**वहिर्देश** पुं० (सं) १-बाहर का स्थान। २-अज्ञात स्थान। ३-विदेश। ४-द्वार।
**वहिर्द्वार** पुं० (सं) दे० 'बहिर्द्वार'।
**वहिर्मुख** पुं० (सं) दे० 'बहिर्मुख'।
**वहिर्लापिका** स्त्री० (सं) दे० 'बहिर्लापिका'।
**वहिर्विकार** पुं० (सं) दे० 'बहिर्विकार'।
**वहिष्कार** पुं० (सं) दे० 'बहिष्कार'।
**वहिष्कृत** वि० (सं) दे० 'बहिष्कृत'।
**वहीं** अव्य० (हिं) उसी जगह।
**वही** सर्व० (हि) जिनका उल्लेख हुआ हो। वह ही। पूर्वोक्त ही।
**वहे** सर्व० (हि) वही।
**वह्नि** पुं० (सं) १-अग्नि। २-भूख। हाजमा। ३-जठराग्नि।
**वह्निकुंड** पुं० (सं) अग्निकुण्ड।
**वह्निजाया** स्त्री० (सं) स्वाहादेवी।
**वह्निमित्र** पुं० (सं) वायु। हवा।
**वह्निमुख** पुं० (सं) देवता।
**वह्निशिखा** स्त्री० (सं) १-कलियारी नामक विष। २-आग की लपट।
**वांछनीय** वि० (सं) १-चाहने योग्य। २-इष्ट। ३-जिसका होना अनुचित न हो।
**वांछा** स्त्री० (सं) इच्छा। अभिलाषा।
**वांछित** वि० (सं) चाहा हुआ। अभिलाषित।
**वांछितव्य** वि० (सं) इच्छा करने योग्य। चाहने योग्य
**वांछय** वि० (सं) दे० 'वांछितव्य'।
**वा** अव्य० (सं) या। अथवा। सर्व० (हि) बृजभाषा में वह का विकृत रूप।
**वाइ** सर्व० (हि) उसको।
**वाइदा** पुं० (अ) दे० 'वायदा'।
**वाक** पुं० (सं) १-बगलों का समूह। २-वाक्य। स्त्री० (सं) १-वाणी। २-सरस्वती।
**वाकई** अव्य० (अ) वस्तुतः। सचमुच।
**वाकिआ** पुं० (अ) १-घटना। २-वृतान्त। समाचार
**वाकिआनवीस** पुं० (अ) समाचार या खबरें भेजने वाला।
**वाकिआनिगार** पुं० (अ) दे० 'वाकिआनवीस'।
**वाकिआती** वि० (अ) घटनास्थल से प्राप्त।
**वाकिआती-शहादत** स्त्री० (अ) घटनास्थल से मिलने वाली शहादत।
**वाकिफ** वि० (अ) १-जानकार। २-अनुभवी।
**वाकिफकारी** स्त्री० (अ) जानकारी। परिचय।
**वाकिफीयत** स्त्री० (अ) परिचय। जानकारी। ज्ञान।
**वाके** वि० (अ) १-होने वाला। असली। २-सामने आने वाला।
**वाकोवाक्य** पुं० (सं) १-बातचीत। २-आपसी तर्क-वितर्क।
**वाक्** पुं० (सं) १-वाणी। २-सरस्वती। ३-बोलने की इन्द्रिय।
**वाक्-कलह** पुं० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
**वाक्-केलि** स्त्री० (सं) हँसी-मजाक। ठिठोली।
**वाक्चपल** वि० (सं) १-बहुत बातें बनाने वाला। २-गड़भड़िया।
**वाक्छल** पुं० (सं) शब्दों का कुछ का कुछ अर्थ लगा धोखा देना।
**वाक्पटु** वि० (सं) बात करने में चतुर।
**वाक्पति** पुं० (सं) १-निर्दोष बात। २-विष्णु। ३-बृहस्पति।
**वाक्पाटव** पुं० (सं) भाषण देने में प्रवीणता।
**वाक्पारुष्य** पुं० (सं) १-बचन की कठोरता। २-मुँहजोरी।
**वाक्प्रतोद** पुं० (सं) ताना।
**वाक्य** पुं० (सं) व्याकरण के अनुसार क्रम से लगा हुआ सार्थक शब्द समूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।
**वाक्यखंडन** पुं० (सं) किसी तर्क का खंडन।

**वाक्यपद्धति** स्त्री० (सं) वाक्य रचना की विधि।
**वाक्यरचना** स्त्री० (सं) नियमों के अनुसार वाक्य बनाना।
**वाक्यविन्यास** पुं० (सं) पदों का ठीक स्थान पर रखा जाना। (व्या०)।
**वाक्यविशारद** वि० (सं) जो भाषण देने में दक्ष हो
**वाक्शलाका** वि० (सं) चुभने वाली बात।
**वाक्स्तंभ** पुं० (सं) बोल न निकलना। अवाक् रह जाना।
**वागना** क्रि०(हि) १-चलना। २-दे० 'वागना'।
**वागीश** पुं० (सं) १-बृहस्पति। २-ब्रह्मा। ३-कवि वि० अच्छा बोलने वाला।
**वागीशा** स्त्री० (सं) सरस्वती।
**वागीश्वर** पुं० (सं) दे० 'वागीश'।
**वागीश्वरी** स्त्री० (सं) सरस्वती।
**वागीसा** स्त्री०(हि) दे० 'वागीशा'।
**वागुरा** स्त्री० (सं) मृगों को फँसाने का जाल। फंदा
**वागुरिक** पुं० (सं) शिकारी। हिरन फँसाने वाला।
**वाग्** स्त्री० (सं) वाक् का समासगत रूप।
**वाग्जाल** पुं० (सं) बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।
**वाग्दंड** पुं० (सं) डाँट। फटकार। बुराभला कहना
**वाग्दत्त** वि० (सं) जिसे दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो।
**वाग्दत्ता** स्त्री० (सं) वह कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो।
**वाग्दान** पुं० (सं) १-कुछ देने या करने का वचन (प्रॉमिस)। २-कन्या के पिता का वरपक्ष वालों को विवाह का वचन देना।
**वाग्देवता** पुं० (सं) वाणी। सरस्वती।
**वाग्देवी** स्त्री० (सं) सरस्वती।
**वाग्दोष** पुं० (सं) १-बोलने की त्रुटि। २-व्याकरण विषयक त्रुटि। निंदा या गाली।
**वाग्मिता** स्त्री० (सं) भाषण करने में दक्षता। पांडित्य
**वाग्मित्व** पुं० (सं)-दे० 'वाग्मिता'।
**वाग्मी** पुं०(सं) १-अच्छा वक्ता। २-पंडित। विद्वान ३-बृहस्पति। ४-एक पुरुवंशी राजा।
**वाग्युद्ध** पुं० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
**वाग्विदग्ध** वि० (सं) बोलचाल में प्रवीण।
**वाग्विभव** पुं० (सं) भाषा का विशेष ज्ञान।
**वाग्विरोध** पुं० (सं) कहासुनी। झगड़ा।
**वाग्विलास** पुं० (सं) परस्पर प्रेम और सुख से बातें करना।
**वाग्वीर** पुं०(सं) वह व्यक्ति जो बोलने में बहुत चतुर हो।
**वाग्वैदग्ध्य** पुं० (सं) १-बात करने में निपुणता। २-सुन्दर अलंकार तथा चमत्कारपूर्ण उक्तियों की निपुणता।
**वाङ्मय** वि० (सं) १-वचन सम्बन्धी। २-वचन द्वारा किया हुआ। जो पठन-पाठन का विषय हो। पुं० साहित्य।
**वाङ्मुख** पुं० (सं) उपन्यास।
**वाचक** वि० (सं) बताने वाला। द्योतक। सूचक। बोधक। पुं० १-नाम। संज्ञा। २-किसी बड़े अधिकारी को कागज आदि पढ़कर सुनाने वाला। पेशकार। (रीडर)।
**वाचकधर्मलुप्ता** स्त्री० (सं) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।
**वाचकपद** पुं० (सं) सार्थक शब्द।
**वाचकलुप्ता** स्त्री० (सं) वह उपमालंकार जिसमें उपमा-वाचक शब्द का लोप हो।
**वाचकोपमानधर्मलुप्ता** स्त्री० (सं) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय भर ही हो।
**वाचकोपमानलुप्ता** स्त्री० (सं) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।
**वाचकोपमेयलुप्ता** स्त्री० (सं) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।
**वाचन** पुं० (सं) १-पढ़ने का काम। पठन। २-विधायिका सभा में किसी विधेयक (बिल) का तीन बार पढ़ा जाना। आवृत्ति (रीडिंग)। ३-कहना बताना। ४-प्रतिपादन।
**वाचनालय** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए समाचार पत्र, पुस्तकें आदि रहती हैं। (रीडिंग रूम)।
**वाचस्पति** पुं० (सं) १-बृहस्पति। २-वाणी। वचन। बहुत बड़ा विद्वान्।
**वाचा** स्त्री० (सं) १-वाणी। २-वचन। शब्द।
**वाचाट** वि० (सं) १-वाचाल। २-बकवादी।
**वाचाबंध** वि० (सं) प्रतिज्ञा या वचन से बँधा हुआ।
**वाचाबंधन** पुं० (सं) प्रतिज्ञाबद्ध होना।
**वाचाल** वि० (सं) १-बोलने में तेज। २-व्यर्थ बकने वाला।
**वाचालता** स्त्री० (सं) १-बहुभाषिता। बहुत बोलना। २-बातचीत में निपुणता।
**वाचाविरुद्ध** वि० (सं) जो कहने के योग्य न हो।
**वाचिक** वि० (सं) १-वाणी-सम्बन्धी। २-वाणी से किया हुआ। ३-संकेत में कहा हुआ। पुं० (सं) अभिनय का वह भेद जिसमें केवल बातचीत तथा उसके ढंग से ही अभिनय का तात्पर्य समझा जा सकता है।
**वाची** वि० (सं) प्रकट करने वाला। सूचक। वाचक।
**वाच्य** वि० (सं) १-कहने योग्य। २-शब्द संकेत द्वारा जिसका बोध हो। ३-जिसे लोग भला बुरा कहें।

पुं० प्रतिपादन।
वाच्यार्थ पुं० (सं) वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो।
वाच्यावाच्य पुं० (सं) कहने या न कहने योग्य बात
वाजपेयी पुं० (सं) १-कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि। २-अत्यंत कुलीन व्यक्ति। ३-वह व्यक्ति जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो।
वाजिब वि० (अ) उचित। मुनासिब।
वाजिबी वि० (अ) उचित। ठीक। आवश्यक।
वाजी पुं० (सं) १-घोड़ा। २-फटे हुए दूध का पानी ३-हवि।
वाजीकरण पुं० (सं) वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है।
वाट पुं० (सं) १-मार्ग। रास्ता। २-वस्तु। ३-मंडप
वाटिका स्त्री० (सं) १-बाग। २-बगीचा। ३-इमारत
वाडव पुं० (सं) दे० 'बाडव'।
वाडव वि० (सं) घोड़ी से संबंधित। पुं० १-समुद्र के अन्दर की अग्नि। २-घोड़ों का समूह।
वाडवाग्नि स्त्री० (सं) वह कल्पित अग्नि जो समुद्र में जलती हुई मानी गई हो।
वाडवानल पुं० (सं) दे० 'वाडवाग्नि'।
वाण पुं० (सं) दे० 'बाण'।
वाणिज्य पुं० (सं) १-व्यापार। रोजगार। २-बड़े पैमाने पर चलाया गया कोई व्यापार जिसमें बैंकों का व्यापार, सीमित समवायों के हिस्सों की बिक्री आदि का काम होता हो। (कॉमर्स)।
वाणिज्यदूत पुं० (सं) किसी राज्य का वह दूत जो दूसरे देश में व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रखने तथा बढ़ाने के लिए रखा जाता है। (काउन्सल)।
वाणिज्यालय पुं०(सं) व्यापार या वाणिज्य का मुख्य स्थान। दुकान। बाजार। (एम्पोरियम)।
वाणी स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-वचन। मुख से निकले हुए सार्थक शब्द। वाक् शक्ति। ३-जीभ।
वात पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-वैद्यक के अनुसार शरीर की वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं।
वातचक्र पुं० (सं) १-ज्योतिष में एक योग। २-बवंडर। चक्रवात।
वातज वि० (सं) वायु द्वारा उत्पन्न।
वातज्वर पुं० (सं) एक प्रकार का ज्वर।
वातप्रकोप पुं० (सं) वात या वायु का शरीर में बढ़ जाना।
वातव्याधि स्त्री० (सं) गठिया रोग।
वातसख पुं० (सं) अग्नि। आग।
वातात्मज पुं० (सं) हनुमान।
वातापि पुं० (सं) एक असुर का नाम।
वातापिद्विट् पुं० (सं) अगस्त्य।
वातापिसूदन पुं० (सं) अगस्त्य।
वातापिहा पुं० (सं) अगस्त्य।
वातायन पुं० (सं) १-झरोखा। खिड़की। २-घोड़ा। ३-एक प्राचीन जनपद।
वातारि पुं० (सं) १-एरंड। २-शतमूली। ३-अजवायन। ४-जिमीकन्द। ५-सतावर। ६-नील का पौधा।
वातावरण पुं० (सं) १-वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेरा हुआ है। २-आस-पास की परिस्थिति जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता हो। (एटमॉसफियर)।
वातावर्त पुं० (सं) बवंडर। चक्रवात।
वाताश पुं० (सं) सर्प। सांप।
वाताशी पुं० (सं) सर्प। सांप।
वातास स्त्री० (हि) हवा। वायु। बयार।
वातुल वि० (सं) १-वायु-प्रधान। २-जिसकी बुद्धि वायु-प्रकोप के कारण ठिकाने न हो। पुं० बावला आदमी।
वात्या स्त्री० (सं) चक्रवात। बवंडर।
वात्याचक्र पुं० (सं) बवंडर।
वात्सरिक वि०(सं) वार्षिक। सालाना। पुं० ज्योतिषी
वात्सल्य पुं० (सं) १-प्रेम। स्नेह। २-वह स्नेह जो माता पिता का सन्तान पर होता है।
वात्सल्यरस पुं० (सं) स्नेह का एक भाव जिसे दसवां रस माना जाता है।
वाद पुं० (सं) १-किसी तथ्य या तत्व के निर्णय के लिए होने वाला तर्क। शास्त्रार्थ। २-तत्वज्ञों द्वारा निश्चित कोई मत या सिद्धांत। (इज्म)। ३-बहस विवाद। ४-न्यायालय में उपस्थित किया हुआ अभियोग। मुकद्‌मा। (सूट)।
वादक पुं० (सं) १-बाजा बजाने वाला। २-वक्ता। ३-तर्क-शास्त्र करने वाला।
वादक-दल पुं० (सं) दे० 'वाद्यवृंद'।
वादक-वृंद पुं० (सं) दे० 'वाद्यवृंद'।
वादग्रस्त वि० (सं) जिसके बारे में विवाद या मतभेद हो। (डिसप्युटेड)।
वादन पुं० (सं) १-बाजा बजाना। २-बाजा।
वादपत्र पुं० (सं) न्यायालय में किसी के विरुद्ध होने वाली फरियाद या प्रार्थना। अभियोग। नालिश। (प्लेंट)।
वादपद पुं० (सं) न्यायालय में रखे गये विवाद या मुकद्‌में में वह विषय जो झगड़े के मूल कारण हो (इश्यू)।
वादप्रतिवाद पुं० (सं) १-उत्तर का उत्तर। उत्तर-प्रत्युत्तर। २-बहस। (डिसकशन)। ३-शास्त्रार्थ।
वाद-मूल पुं० (सं) वह मूल झगड़े का कारण जिसके लिए न्यायालय में मुकदमा चलाया गया हो। (कॉज

आफ एक्शन) ।

**वादयुद्ध** पुं० (सं) १–झगड़ा । २–शास्त्रीय झगड़ा ।

**वादविवाद** पुं० (सं) १–तर्क-वितर्क । बहस । २–किसी पक्ष के खंडन या मंडन में होने वाली बातचीत । (कन्ट्रोवर्सी) ।

**वादविषय** पुं०(सं) वह विषय जिस पर विचार किया जाया । विचारणीय विषय (मैटर आफ डिसकशन, सबजैक्ट मैटर) ।

**वादव्यय** पुं० (सं) मुकदमें का वह खर्चा या व्यय जो मुकद्दमा जीतने वाले को न्यायालय द्वारा दिया जाय (कास्ट्स) ।

**वादरामोप्ति** स्त्री०(सं) न्यायालय में उपस्थित किये गये मुकद्दमे का खारिज कर दिया जाना । (अबेटमेंट आफ सूट) ।

**वादहेतु** पुं० (सं) दे० 'वादमूल' ।

**वादा** पुं० (अ) १–वचन । इकरार । २–नियत समय या घड़ी । (अन्डरटेकिंग प्रॉमिस) ।

**वादाखिलाफ** वि०(अ) जो अपना वचन पूरा न करे ।

**वादाखिलाफी** स्त्री०(अ) वचन देकर उसे न निभाना ।

**वादाशिकन** वि०(अ) वचन को तोड़ने वाला ।

**वादानुवाद** पुं० (सं) दे० 'वाद-विवाद' ।

**वादित्र** पुं० (सं) बाजा । वाद्य ।

**वादित्र-लगुड** पुं०(सं)नगाड़ा या ढोल आदि बजाने की लकड़ी ।

**वादी** पुं०(सं) १–वक्ता । बोलने वाला । २–न्यायालय में कोई वाद या मुकदमा प्रस्तुत करने वाला । फरियाद । मुद्दई । (प्लेन्टिफ) । ३–विचार के लिए कोई तर्क उपस्थित करने वाला ।

**वाद्य** पुं० (सं) १–बाजा । २–बजाना । ३–वह यन्त्र जिसके द्वारा संगीत के स्वर निकलते हों ।

**वाद्यमान** वि० (सं) जिसे बजने या बोलने में प्रवृत्त किया जाय । पुं० वाद्य-संगीत ।

**वाद्यवृंद** पुं० (सं) कई प्रकार के बाजों का एक साथ सुर में बजना । (आरकेस्ट्रा) ।

**वाद्यसंगीत** पुं०(सं) वाद्य यन्त्रों को बजाने से उत्पन्न मधुर ध्वनि । (इन्स्ट्रुमेंन्टल म्युजिक) ।

**वाद्यस्थान** पुं० (सं) वह स्थान जहां वाद्यवृन्द बजाने वाले बैठते हैं । (नाटकशाला आदि में) ।

**वानप्रस्थ** पुं० (सं) प्राचीन भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा जिसमें पचास वर्ष का हो जाने पर वन में रहने का विधान है ।

**वानप्रस्थ्य** पुं०(सं) वानप्रस्थ की अवस्था या भाव ।

**वानर** पुं० (सं) १–बन्दर । २–दोहे का एक भेद ।

**वानरकेतन** पुं० (सं) अर्जुन ।

**वानरकेतु** पुं० (सं) अर्जुन ।

**वानरध्वज** पुं० (सं) अर्जुन ।

**वानरी** स्त्री० (सं) १–बन्दर की मादा । २–केवाँच । ३–बन्दरों की सेना ।

**वानरेंद्र** पुं० (सं) सुग्रीव ।

**वानस्पतिक खाद** स्त्री०(हि) गोबर, पौधों, मल आदि के मिश्रण से बनाई गई उपज बढ़ाने वाली खाद (कम्पोस्ट) ।

**वानस्पत्य** वि० (सं) वनस्पति-सम्बन्धी । पुं० वनस्पतियों के तत्वों, वृद्धि तथा पोषण आदि से सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र । (आरबोरिकल्चर) ।

**वाना** स्त्री० (सं) बटेर नामक पक्षी ।

**वानिक** वि० (सं) बन में रहने वाला ।

**वानी** पुं० (सं) १–बेंत । २–सरकंडा ।

**वानीरक** पुं० (सं) मूंज । तृण ।

**वानीरगृह** पुं० (सं) सरकंडे या बेंत का बना मंडप ।

**वापस** वि० (फा) १–लौटकर अपने स्थान पर आया हुआ । २–मालिक को फेरा या लौटाया गया ।

**वापसी** वि०(फा) फेरा या लौटाया हुआ । स्त्री० लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव ।

**वापसीकिराया** पुं० (हि) वापसी आने और जाने दोनों तरफ का किराया ।

**वापसीटिकट** पुं० (हि) वह टिकट जो यात्रा पर जाते समय तथा लौटते समय काम आये ।

**वापसीमुलाकात** स्त्री० (फा) किसी मुलाकात या भेंट के बदले में की जाने वाली भेंट ।

**वापसीयात्रा** स्त्री० (हि) यात्रा के निर्दिष्ट स्थान से लौटने की यात्रा ।

**वापसीसफर** स्त्री० (फा) दे० 'वापसीयात्रा' ।

**वापि** स्त्री० (सं) तालाब । सरोवर ।

**वापिका** स्त्री० (सं) १–छोटा तालाब । २–बावली ।

**वापी** स्त्री० (सं) वापिका । बावली ।

**वाम** वि०(सं) १–बायाँ । उलटा । दाहिना । २–प्रतिकूल । ३–बुरा । स्त्री० स्त्री ।

**वामक** पुं० (सं) अंगभंगी का भेद । वि० १–विरुद्ध । २–वमन करने वाला ।

**वामकुक्षी** स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना' ।

**वामकदेवी** स्त्री० (सं) १–दुर्गा । २–सावित्री ।

**वामन** वि० (सं) १–छोटे डीलडौल का । बौना । २–नाटा । छोटा । पुं० (सं) १–विष्णु का एक अवतार । २–विष्णु । ३–शिव ।

**वामनक** वि० (सं) बौना । पुं० (सं) १–नाटे कद का आदमी । २–एक पर्वत । ३–नाटापन ।

**वामनयना** स्त्री० (सं) सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री ।

**वामपंथी** पुं० (सं) दे० 'वामपक्षी' ।

**वामपक्षी** पुं० (सं) उग्र विचार या मत रखने वाला (राजनीति में) । (लेफ्टिस्ट) ।

**वामभ्रू** स्त्री० (सं) १–बायीं भौं । २–सुन्दर भौं वाली स्त्री ।

**वाममार्ग** पुं० (सं) एक तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस

आदि के सेवन का विधान है।
**वाममोष** पुं० (सं) बहुमूल्य आभूषणों तथा अन्य वस्तुओं की चोरी।
**वामरथ** पुं० (सं) एक गोत्राकार ऋषि।
**वामशील** वि० (सं) दुष्ट या बुरे स्वभाव का।
**वामस्वभाव** वि० (सं) अच्छे स्वभाव वाला।
**वामहस्तिक** वि० (सं) दे० 'बयँहत्था'। (लेफ्टहैंडर)।
**वामांगिनी** स्त्री० (सं) भार्या। पत्नी।
**वामांगी** स्त्री० (सं) पत्नी।
**वामा** स्त्री० (सं) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। ३-गधी।
**वामाक्षी** स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
**वामागम** पुं० (सं) तांत्रिक मत का एक भेद।
**वामाचार** पुं० (सं) दे० 'वामागम'।
**वामाचारी** पुं० (सं) १-वाममार्गी। २-तांत्रिक मत को मानने वाला।
**वामावर्त** वि० (सं) बाँई ओर घूमा हुआ। २-बाँई ओर से आरम्भ होने वाला।
**वामी** स्त्री० (सं) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। गधी वि० (सं) वामाचारी।
**वामेक्षणा** स्त्री० (सं) दे० 'वामनयना'।
**वामोरु** स्त्री० (सं) सुन्दर जङ्घा वाली स्त्री।
**वामोरू** स्त्री० (सं) दे० 'वामोरु'।
**वाय** पुं० (सं) १-बुनना। २-साधन। स्त्री० (हि) वायु। सर्व० (हि) उसको।
**वायक** पुं० (सं) १-बुनने वाला। २-जुलाहा।
**वायदंड** पुं० (सं) जुलाहों की ढरकी।
**वायन** पुं० (सं) देव पूजा या विवाह आदि के लिये बनने वाला पकवान।
**वायरज्जु** पुं० (सं) जुलाहों की करघे की वे।
**वायव** वि० (सं) १-पश्चिमोत्तर। २-वायु सम्बन्धी।
**वायवी** स्त्री० (सं) उत्तर-पश्चिम का कोण।
**वायवीय** वि० (सं) वायु-सम्बन्धी।
**वायव्य** स्त्री० (सं) पश्चिमोत्तर दिशा।
**वायस** पुं० (सं) १-कौआ। २-अगर का पेड़।
**वायसराति** पुं० (सं) उल्लू।
**वायसारी** पुं० (सं) उल्लू।
**वायसी** स्त्री० (सं) १-काकमाची। २-सफेद घुंघची। ३-कौवे की मादा।
**वायु** स्त्री० (सं) वात। हवा। (एअर)।
**वायुग्रस्त** वि० (सं) गठिया या उन्माद रोग से पीड़ित
**वायुघट** पुं० (सं) शीशे का बना वह बेलनाकार पात्र जिसमें वायव्य द्रव भरकर प्रयोग किये जाते हैं। (गैस जार)।
**वायुतनय** पुं० (सं) हनुमान।
**वायुदंड** पुं० (सं) वह पिचकारी जिससे हवा भरी जाती है। (एयर पम्प)।
**वायुनन्दन** पुं० (सं) हनुमान।
**वायुपुत्र** पुं० (सं) हनुमान। भीम।
**वायुपंचक** पुं० (सं) शरीर में स्थिति पांच वायुओं का समूह।
**वायुपथ** पुं० (सं) आकाश में हवाई जहाजों के रास्ते (एयरवेज)।
**वायुभक्ष** वि० (सं) केवल वायु पीकर ही जीवित रहने वाला।
**वायुभक्षक** पुं० (सं) वह व्यक्ति या जन्तु जो केवल वायु पीकर ही रहे।
**वायुभक्ष्य** पुं० (सं) सर्प। सांप।
**वायुभारमापक यंत्र** पुं० (सं) वायुमण्डल में वायु का दबाव मालूम करने का यन्त्र जिससे मौसम के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। (बैरोमीटर)।
**वायुभुक** वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
**वायुभोजन** वि० (सं) दे० 'वायुभक्ष'।
**वायुमंडल** पुं० (सं) १-आकाश। २-दे० 'वातावरण'
**वायुमार्ग** पुं० (सं) दे० 'वायुपथ'।
**वायुयान** पुं० (सं) हवा में उड़ने वाला यान। हवाई जहाज। (एयरोप्लेन)।
**वायुलोक** पुं० (सं) १-पुराणोक्त एक लोक का नाम। २-आकाश।
**वायुवर्त्म** पुं० (सं) आकाश। आसमान।
**वायुवाह** पुं० (सं) १-धूआं। धुम्र। २-भाप।
**वायुसंभव** पुं० (सं) हनुमान।
**वारंट** पुं० (अं) वह आज्ञा पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी कर्मचारी को कोई विशेष अधिकार दिया जाय।
**वारंटगिरफ्तारी** पुं० (हि) न्यायालय का वह आज्ञा-पत्र जिसके द्वारा किसी सरकारी अधिकारी को किसी अपराधी आदि को पकड़ कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने का अधिकार देता है।
**वारंट-तलाशी** पुं० (हि) किसी सरकारी कर्मचारी को किसी व्यक्ति के मकान आदि की तलाशी लेने का अधिकार-पत्र।
**वारंटरिहाई** पुं० (हि) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी हवालात में बंद या गिरफ्तार व्यक्ति को छोड़ने की आज्ञा हो।
**वारंवार** अव्य० (हि) दे० 'बारंबार'।
**वार** पुं० (सं) द्वार। दरवाजा। २-अवरोध। ३-आवरण। ४-क्षण। ५-सप्ताह का दिन। ६-बाण ७-दफा। बारी। ८-अवसर। ९-शिव। पुं० १-चोट। आघात। २-आक्रमण। हमला। ३-नदी का परला किनारा।
**वारक** पुं० (सं) १-वारण या निषेध करने वाला। २-रोकने वाला।
**वारकन्यका** स्त्री० (सं) दे० 'वारकन्या'।

वारकन्या स्त्री० (सं) वेश्या। रंडी।
वारण पुं० (सं) १-निषेध। मनाही। २-रुकावट। बाधा। ३-कवच। ४-हाथी। ५-अंकुश।
वारणशाला पुं०(सं) हाथीखाना।
वारणीय वि०(सं) निषेध करने योग्य।
वारतीय स्त्री० (हिं) वेश्या।
वारद पुं० (हि) बादल। मेघ।
वारदात स्त्री० (अ) १-भीषण या विकट दुर्घटना। २-दंगा-फसाद।
वारन स्त्री०(हि) निछावर। बलि। पुं० दे० 'वन्दनवार'।
वारना क्रि० (हि) निछावर करना। पुं० उत्सर्ग। निछावर।
वारनारी स्त्री० (सं) वेश्या।
वार्निश स्त्री० (अं) वह रोगन जिसे किसी वस्तु पर लगाने से चमक आये।
वारपार पुं० (हि) दे० 'आरपार'। अव्य० (हिं) इस किनारे से उस किनारे तक।
वारमुखी स्त्री० (सं) वेश्या।
वारयुवती स्त्री० (सं) वेश्या।
वारयोषित् स्त्री० (सं) वेश्या।
वारांगणा स्त्री० (सं) वेश्या।
वारा पुं० (हिं) १-लाभ। फायदा। २-खर्च की बचत ३-इस ओर का किनारा। वार। वि० १-निछावर किया हुआ। २-सस्ता।
वाराणसी स्त्री० (सं) काशी। बनारस।
वाराणसेय वि०(सं) बनारस में उत्पन्न या बना हुआ
वाराह पुं० (सं) दे० 'वराह'।
वाराही स्त्री० (सं) एक मातृका का नाम। २-शूकरी
वारि पुं० (सं) १-जल। पानी। तरल पदार्थ। स्त्री० १-वाणी। सरस्वती। २-हाथी बांधने की जंजीर। ३-छोटा कलसा। हाथीखाना।
वारिचर पुं०(सं) १-जलजन्तु। २-मछली। ३-शंख।
वारिचामर पुं० (सं) शैवाल। सेवार।
वारिचारी वि० (सं) जल में रहने वाला। (जीव)।
वारिज पुं०(सं) १-कमल। २-मछली। ३-शंख। ४-घोंघा। ५-कौड़ी। ६-उत्तम स्वर्ण।
वारिजात वि०(सं) जल में उत्पन्न। पुं० (सं) दे० 'वारिज'।
वारिजीवक वि० (सं) जल से अपनी जीविका या निर्वाह चलाने वाला।
वारित वि० (सं) १-जिसकी मनाही की गई हो वर्जित। निवारित। २-छिपाया हुआ। आवरित।
वारितसाहित्य पुं०(सं) वह साहित्य (लेख,पत्र, पुस्तकें आदि) जिन को पास रखने की या पढ़ने की सरकार ने मनाही करदी हो। (प्रोस्क्राइब्ड लिटरेचर)
वारितस्कर पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारित्रा स्त्री० (सं) छाता।
वारिद पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-नागरमोथा।
वारिदात स्त्री० (हि) दे० 'वारदात'।
वारिदुर्ग वि० (सं) जो जल के कारण दुर्गम हो।
वारिधर पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारिधानी स्त्री० (सं) जलाधार।
वारिधारा स्त्री० (सं) वर्षा। जल की धारा।
वारिधि पुं० (सं) समुद्र।
वारिनाथ पुं० (सं) १-वरुण। २-समुद्र। ३-मेघ। बादल।
वारिनिधि पुं० (सं) समुद्र।
वारिप वि०(सं) जल पीने या उसकी रक्षा करने वाला।
वारिपथिक पुं० (सं) जलयात्रा करने वाला।
वारिपर्णी स्त्री० (सं) १-काई। २-जलकुम्भी।
वारिपूर्णी स्त्री०(सं) दे० 'वारिपर्णी'।
वारिप्रवाह पुं० (सं) जलप्रपात। २-जलधारा।
वारिपृश्नी स्त्री० (सं) दे० 'वारिपर्णी'।
वारिबंधन पुं० (सं) बाँध बना कर जल को इकट्ठा करना।
वारिबालक पुं० (सं) एक गंधद्रव्य।
वारिभव पुं० (सं) रसांजन।
वारिमुक पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारिमूली स्त्री० (सं) दे० 'वारिपर्णी'।
वारियंत्र पुं० (सं) फव्वारा। जलयंत्र।
वारियाँ स्त्री० (हि) निछावर। बलि।
वारिरथ पुं० (सं) नाव।
वारिराज पुं० (सं) वरुण।
वारिराशि पुं० (सं) समुद्र।
वारिरुह पुं० (सं) कमल।
वारिवदन पुं० (सं) पानी-आमला।
वारिवर पुं० (सं) करौंदा।
वारिवर्त पुं० (सं) एक मेघ का नाम।
वारिवल्लभा स्त्री० (सं) बिदारी।
वारिवह वि० (सं) पानी या जल ले जाने वाला।
वारिवाह पुं० (सं) १-मेघ। २-मोथा।
वारिवाहन पुं० (सं) मेघ। बादल।
वारिवाही वि० (सं) पानी ढोने वाला।
वारिविहार पुं० (सं) जलक्रीड़ा।
वारिश पुं० (सं) विष्णु।
वारिशय वि० (सं) जल में शयन करने वाला।
वारिशास्त्र पुं० (सं) फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ जिसमें वर्षा सम्बन्धी बातें लिखी हैं।
वारिसम्भव पुं० (सं) लौंग।
वारिस पुं० (फा) १-उत्तराधिकारी। २-दायद।
वारींद्र पुं० (सं) समुद्र।
वारीफेरी स्त्री० (हि) किसी प्रियजन के ऊपर कुछ द्रव्य या कोई वस्तु घुमाकर इसलिये छोड़ना। जिस से सारी बाधाएँ दूर हो जायें।

**वारुणी** स्त्री० (सं) १-मदिरा । शराब । २-वरुण की पत्नी । ३-एक पर्वत का नाम । ४-पश्चिम दिशा ५-उपनिषद् विद्या ।
**वारुणीश** पुं० (सं) विष्णु ।
**वार्** पुं० (सं) १-जल । २-रक्षक ।
**वार्म्रासन** पुं० (सं) जलाधार ।
**वार्ड** पुं० (ग्रं) १-रक्षा । २-विशिष्ट कार्य के लिये घेर कर बनाया हुआ स्थान । ३-नगर में मुहल्ले का समुदाय जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये बनाया गया हो । ४-जेल या अस्पताल आदि अन्दर के अलग-अलग विभाग ।
**वार्डर** पुं० (ग्रं) १-रक्षा । २-जेल का पहरेदार ।
**वार्तमानिक** वि० (सं) वर्तमानकाल-सम्बन्धी ।
**वार्ता** स्त्री० (हिं) दे० 'वार्त्ता' ।
**वार्त्ता** स्त्री० (सं) १-जनश्रुति । अफवाह । २-सम्वाद वृत्तांत । हाल । ३-विषय । प्रसंग । बात । ४-दुर्गा ५-पेशा । वृत्ति (वाणिज्यादि) । ६-अन्य के द्वारा क्रय-विक्रय होना । ७-बात चीत । (टॉक) ।
**वार्त्तायन** पुं० (सं) वह समाचार पत्र जिसमें राज्य-सम्बन्धी बातें होती है और जो किसी सरकार द्वारा ही छापा जाता है । (गजट) ।
**वार्त्तालाप** पुं० (सं) बातचीत ।
**वार्त्तावह** पुं० (सं) सन्देश पहुँचाने वाला दूत । हर-कारा । २-नीतिशास्त्र का अध्ययन से सम्बद्ध भाग ।
**वार्त्ताहर** पुं० (सं) दूत । सन्देशवाहक ।
**वार्त्तिक** पुं०(सं) १-किसी ग्रंथ की टीका । २-वृत्त या आचार शास्त्र का अध्ययन करने वाला । ३-चर । दूत ।
**वार्त्तिककार** पुं० (सं) कात्यायन ।
**वार्द्धक्य** पुं० (सं) बुढ़ापा ।
**वार्धानी** स्त्री० (स) घड़ा । मटका ।
**वार्धारा** स्त्री० (सं) जलधारा ।
**वार्धि** पुं० (सं) समुद्र ।
**वार्धेय** पुं० (सं) समुद्री नमक ।
**वार्वाह** पुं० (सं) मेघ । बादल ।
**वार्षिक** वि० (सं) १-वर्ष सम्बन्धी । २-जो प्रति वर्ष होती हो । (ईयरली एन्युअल) ।
**वार्षिक वित्तविवरण** पुं० (सं) वार्षिक आर्थिक प्रकथन । वार्षिक आय-विवरण । (एन्युअल फाइ-नेन्शल स्टेटमेंट) ।
**वार्षिकी** स्त्री० (सं) १-प्रतिवर्ष दी जाने वाली वृत्ति या अनुदान । (एन्युइटी) । २-प्रतिवर्ष होने वाला कोई प्रकाशन । ३-बेले का फूल ।
**वार्हस्पत्य** वि० (सं) बृहस्पति-सम्बन्धी । पुं० १-नास्तिक । २-अग्नि ।
**वालंटियर** पुं०(ग्रं) वह व्यक्ति जो बिना किसी वेतन के कार्य में अपनी इच्छा से योग दे । स्वयंसेवक ।
**वाल** पुं० (सं) घोड़े की पूँछ के बाल ।
**वालधि** पुं० (सं) १-पूँछ । २-भैंसा । ३-एक मुनि का नाम ।
**वालप्रिय** पुं० (सं) गाय की जाति का एक पशु जिसः की पूँछ के बालों का चँवर बनाया जाता है ।
**वालमृग** पुं० (सं) दे० 'वालप्रिय' ।
**वालि** पुं० (सं) सुग्रीव का बड़ा भाई और अंगद का पिता ।
**वालिका** स्त्री० (सं) १-दे० 'वालिका' । २-बालू । ३-इलायची । ४-कान का एक गहना ।
**वालिद** पुं० (ग्र) पिता । बाप ।
**वालिदा** स्त्री० (ग्र) मां । माता ।
**वलिदैन** पुं० (ग्र) मां-बाप ।
**वालुका** स्त्री० (सं) १-रेत । बालू । २-शाखा । ३-हाथ-पैर । ४-कपूर । ५-ककड़ी ।
**वालुकाब्धि** पुं० (सं) मरुस्थल । रेगिस्तान ।
**वालुकार्णव** पुं० (स) रेगिस्तान ।
**वाल्कल** वि० (सं) वल्कल या छाल का ।
**वाल्मीकि** पुं० (स) एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचियता थे ।
**वाल्मीकीय** वि० (सं) १-वाल्मीकि-सम्बन्धी । २-वाल्मीकि की बनाई हुई ।
**वाल्लभ्य** पुं० (सं) १-लोकप्रियता । २-प्रिय होने का भाव ।
**वावैला** पुं० (ग्र) १-विलाप । रोना-कलपना । २-कोला-हल । हल्ला ।
**वाष्प** पुं०(सं) १-भाप । २-आंसू । ३-लोहा ।
**वाष्प-उष्मक** पुं० (सं) वस्तुओं को भाप की गरमी से गरम करना (स्टीम बाथ) ।
**वाष्पकंठ** वि०(सं) जिसका गला भर आया हो ।
**वाष्पपूर** पुं० (सं) आंसुओं की बाढ़ ।
**वाष्पमोक्ष** पुं० (सं) आंसू आना । अश्रु पात ।
**वाष्पमोक्षण** पुं० (सं) दे० 'वाष्पमोक्ष' ।
**वाष्पवृष्टि** स्त्री० (सं) आंसुओं की वृष्टि या वर्षा ।
**वाष्पशील** वि० (सं) जो खुला छोड़ने पर शीघ्र ही वाष्प रूप में परिवर्तित हो जाय । (वोलेटाइल) ।
**वाष्पाकुल** वि०(सं) जिसकी आंखें आंसुओं के कारण धुँधली पड़ गई हों ।
**वाष्पीकरण** पुं० (सं) किसी तरल पदार्थ का वाष्प के रूप में बदलना या बदलने की क्रिया । (इवो-परेशन) ।
**वासंतिक** वि० (सं) वसन्त-सम्बन्धी । पुं० १-विदू-षक । २-अभिनेता । ३-नट ।
**वास** पुं० (सं) १-निवास । रहना । २-घर । मकान ३-सुगन्ध । बू । ४-अडूसा ।
**वासक** पुं० (स) १-अडूसा । २-दिन । वासर । ३-राग का एक भेद । वि० रहने के लिए प्रेरणा देने

वाला।
वासकसज्जा स्त्री० (सं) वह नायिका जो अपने प्रेमी के लिए शृङ्गार करके बाट जोहे।
वासगृह पुं० (स) १-सोने का कमरा। शयनागार। २-अन्तःपुर। जनानखाना।
वासगेह पुं० (स) दे० 'वासागृह'।
वासतेय वि० (सं) बसती के योग्य। रहने योग्य।
वासन पुं० (स) १-सुगन्धित करना। २-वस्त्र। ३-वास। ४-ज्ञान।
वासना स्त्री० (सं) १-प्रत्याशा। २-ज्ञान। ३-संस्कार स्मृति। हेतु। ४-कामना। ५-मिथ्या विचार। क्रि० (हिं) दे० 'वासना'।
वासभवन पुं० (सं) वासगृह।
वासयष्टि स्त्री० (सं) पालतू पक्षियों के लिये बनाई गई छतरी।
वासयिता पुं० (सं) १-कपड़े से ढकने वाला। २-रक्षा करने वाला।
वासर पुं० (सं) दिन। दिवस।
वासरकन्यका स्त्री० (सं) रात।
वासरकृत् पुं० (सं) सूर्य।
वासरमणि पुं० (सं) सूर्य।
वासराधीश पुं० (स) सूर्य। सूरज।
वासरेश पुं० (सं) सूर्य।
वासव पुं० (सं) १-इन्द्र। २-धनिष्ठानक्षत्र।
वासवचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
वासवज पुं० (सं) अर्जुन।
वासवदिक् स्त्री०(सं) पूर्वदिशा।
वासव्यवस्था स्त्री० (सं) रहने या ठहराने की व्यवस्था (एकोमोडेशन)।
वासा स्त्री० (सं) १-वासक। २-अडूसा। ३-माधवीलता।
वासागार पुं० (सं) दे० 'वासागृह'।
वासित वि०(सं) १-सुगन्ध से युक्त या वासित किया हुआ। २-वस्त्राच्छादित। ३-बासी। जो ताजा न हो
वासिल वि० (अ) १-प्राप्त। २-जो वसूल हुआ हो या मिला हो।
वासिलनवीस पुं० (अ) मालगुजारी का हिसाब रखने वाला तहसीलदार का लिपिक।
वासिलबाकी स्त्री० (अ) वह रकमें जो वसूल हो चुकी हों और अभी बाकी हों। इन रकमों का हिसाब।
वासी वि० (सं) रहने वाला। निवास करने वाला।
वासुकि पुं० (सं) दे० 'वासुकी'।
वासुकी पुं० (सं) आठ नागराजों में से दूसरा।
वासुदेव पुं०(सं) १-श्रीकृष्ण। २-पीपल का पेड़।
वास्कट स्त्री० (हिं) बिना आस्तीन और कालर की कोट के नीचे पहनने की फतूही। (वेस्टकोट)।
वास्तव वि० (स) यथार्थ। प्रकृत। असली।
वास्तविक वि० (सं) जो वास्तव में हुआ हो। ठीक। (एक्चुअल)।
वास्तव्य वि०(अ) १-रहने या बसने योग्य। २-अधिवासी। पुं० बस्ती। आबादी।
वास्ता पुं०(अ) १-सम्बन्ध। लगाव। २-मित्रता। ३-स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।
वास्तु पुं० (सं) १-वह स्थान जहां घर बनाया जाय २-घर। मकान। इट, पत्थर आदि से बनी हुई इमारत।
वास्तुकर्म पुं०(सं) गृहनिर्माण।
वास्तुकर्मकार पुं०(सं) दे० 'वास्तुकर्मज्ञ'।
वास्तुकर्मज्ञ पुं० (सं) मकान, पुल आदि बनाने की कला में प्रवीण। (आर्किटेक्ट)।
वास्तुकाल पुं० (सं) मकान आदि बनाने के लिये उपयुक्त समय या काल।
वास्तुविद्या स्त्री० (सं) दे० 'वास्तुशास्त्र'।
वास्तुशास्त्र पुं० (सं) भवननिर्माण-कला।
वास्ते अव्य० (अ) १-लिये। निमित्त। २-हेतु। कारण
वास्तोष्पति पुं० (सं) १-इन्द्र।
वाह अव्य० (फा) १-प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द धन्य। २-तिरस्कारसूचक शब्द। पुं० (सं) १-वाहन। सवारी। २-लाद कर खींचकर ले जाने वाला। ३-भैंसा। ४-बैल। ५-वायु।
वाहक पुं०(सं) १-बोझ ढोने या खींचने वाला। २-भारवाहक।
वाहकढोर पुं० (हिं) गाड़ी या हल आदि में जुतने वाले पशु। (ड्राफ्ट कैटल)।
वाहक धनादेश पुं० (सं) वह धनादेश या चैक जिसका रुपया किसी व्यक्ति को मिल सकता है जो उसे बैंक में पेश करे। (बेयरर-चैक)।
वाहक-नलिका स्त्री० (सं) एक पात्र से दूसरे पात्र में पहुंचाने के लिये लगाई गई नली। (जॉइनिंग ट्यूब)
वाहन पुं० (सं) १-सवारी। २-वह जिसके आधार पर कोई वस्तु कहीं पर पहुचाई जाती हो। (विहिकल)। ३-उद्योग करना।
वाहनकार पुं० (सं) रथ आदि सवारी के साधन बनाने वाला।
वाहन श्रेष्ठ पुं० (सं) घोड़ा।
वाहना स्त्री० (सं) सेना। फौज। क्रि० (हिं) दे० 'बाहना'।
वाहवाही स्त्री० (फा) प्रशंसा करना। बहुत लोगों का वाह-वाह शब्द कहना।
वाहिता पुं० (सं) १-नायक। मुखिया। २-चलाने वाला।
वाहिद वि० (अ) एक। अकेला। पुं० (अ) १-खुदा का नाम। २-एक की संख्या।
वाहिदिया पुं० (अ) मुसलमानों का एक सम्प्रदाय

या भेद।
**बाहिनी** स्त्री० (सं) १-सेना। फौज। २-सेना की एक टुकड़ी जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते हैं। (ब्रिगेड)।
**बाहिनीनिवेश** पुं० (सं) सेना का पड़ाव।
**बाहिनीपति** पुं० (सं) १-सेनानायक। २-बाहिनी का सेनापति। (ब्रिगेडियर)।
**बाहिनीश** पुं० (सं) सेनापति।
**बाहियात** वि० (फा) १-व्यर्थ। २-बुरा। खराब।
**बाही** वि० (म) १-सुस्त। ढीला। २-निकम्मा। ३-मूर्ख। ४-आवारा। ५-बेहूदा। वि० (सं) वहन करने वाला।
**बाहीतबाही** वि० (म) १-बेहूदा। २-आवारा। ३-बे सिर-पैर का। स्त्री० (म) अण्डबण्ड बातें। गाली-गलौज।
**बाहु** स्त्री० (सं) दे० 'बाहु'।
**बाह्य** पुं० (सं) रथ। यान। सवारी। वि० १-वहन करने योग्य। २-जो वहन करता हो। ३-दे० 'बाह्य' (एक्सटरनल)।
**बाह्य आक्रमण** पुं० (सं) बाहर के किसी देश का आक्रमण। (एक्सटरनल अग्रेशन)।
**बाह्यांतर** वि० (सं) भीतर और बाहर का। अव्य० भीतर और बाहर।
**बाह्येंद्रिय** स्त्री० (सं) शरीर की पांच इन्द्रियां जो बाह्य विषयों को ग्रहण करती है-आंख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।
**विंदक** पुं० (सं) १-पाने या प्राप्त करने वाला। २-जानने वाला। ज्ञाता।
**विंदु** पुं०(सं) १-जल-कण। बूँद। (ड्रॉप)। २-बिंदी ३-वह बिंदी जो हाथी के मस्तक पर शोभा के लिए बनाई जाती है। ४-शून्य। ५-अनुस्वार। ६-कण ७-रेखागणित में वह जिसका स्थान तो हो पर जिसके विभाग न हों (पॉइन्ट)। वि० १-ज्ञाता। देता। २-दाता। ३-जानने योग्य।
**विंदुपातक** पुं०(सं) शीशे की एक नली जिस पर रबड़ लगा होता है और रबड़ दबाने पर एक एक बूँद करके तरल पदार्थ गिरता है। यह कान या आंख में दवा डालने के काम आता है (ड्रॉपर)।
**विंदुर** पुं० (हि) छोटे चिह्न। बुँदकी।
**विंध** पुं० (हि) विंध्य पर्वत। विंध्याचल।
**विंध्य** पुं० (सं) भारत के मध्य में पूर्व पश्चिम में फैली हुई प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी।
**विंध्यकूट** पुं०(सं) १-विंध्य-पर्वत। २-अगस्त्यमुनि का नाम।
**विंध्यकूटक** पुं० (सं) दे० 'विंध्यकूट'।
**विंध्यगिरि** पुं० (सं) विंध्य पर्वत श्रेणी।
**विंध्यनिवासी** पुं० (सं) दे० 'विंध्यवासी'।
**विंध्यवासिनी** स्त्री०(सं) मिर्जापुर जिले के पास स्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति।
**विंध्यवासी** वि० (सं) विंध्य पर रहने वाला। पुं० अगस्त्य मुनि।
**विंध्याचल** पुं०(सं) १-विंध्यपर्वत। २-वह बस्ती जहां विंध्यवासिनी देवी की मूर्ति है।
**विंध्याटवी** स्त्री०(सं) विंध्याचल का जङ्गल।
**विंध्याद्रि** पुं० (सं) विंध्य पर्वत।
**विंध्यारि** पुं० (सं) अगस्त्यमुनि।
**विंबक** पुं० (सं) दे० 'बिंबक'।
**विंब** पुं० (सं) दे० 'बिंब'।
**विंबा** स्त्री० (सं) दे० 'बिंबा'।
**विंबित** वि० (सं) दे० 'बिंबित'।
**विंबी** स्त्री० (सं) दे० 'बिंबी'।
**विंबोष्ठ** वि० (सं) दे० 'बिंबोष्ठ'।
**विंश** वि० (सं) बीसवां।
**विंशति** स्त्री० (सं) बीस की संख्या।
**विंशतिबाहु** पुं० (सं) रावण।
**विंशतिभुज** पुं० (सं) रावण।
**विंशवार्षिक** वि० (सं) बीस वर्ष तक रहने वाला।
**विंशोत्तरी** पुं० (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य का शुभाशुभ फल जानने की रीति।
**वि** उप० (सं) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे जोड़ने पर यह अर्थ देता है :- १-विशेष, जैसे - विहीन। २-अनेक रूपता, जैसे-विविध। ३-निषेध या विपरीतता, जैसे-विक्रय। पुं० (सं) १-अन्न। १-आकाश। ३-चक्षु। स्त्री० (सं) १-पक्षी। २-घोड़ा।
**विकंपन** पुं०(सं)१-कांपना। २-एक राक्षस का नाम।
**विकंपित** वि० (सं) हिलता हुआ। कांपता हुआ।
**विकंपी** वि० (सं) विकम्पित।
**विकच** वि० (सं) १-विकसित। खिला हुआ। २-जिसके बाल न हों। पुं० (सं) १-बालों की लट। २-एक प्रकार का धूमकेतु। ३-ध्वजा।
**विकचित** वि० (सं) १-विकसित। २-खुला हुआ।
**विकट** वि० (सं) १-भयङ्कर। भीषण। २-कठिन। ३-दुर्गम। ४-वक्र। ५-विशाल। ६-बिना चटाई का
**विकटाकृति** वि० (सं) भयङ्कर आकृति वाला।
**विकटाक्ष** वि० (सं) भयङ्कर या डरावनी आँखों वाला।
**विकत्थन** पुं० (सं) झूठी प्रशंसा।
**विकत्था** स्त्री० (सं) आत्म प्रशंसा।
**विकरार** वि० (हि) १-विकराल। भयङ्कर। २-विकल बेचैन।
**विकराल** वि० (सं) भीषण। भयानक। डरावना।
**विकर्ण** पुं० (सं) वह सरल रेखा जो चतुर्भुज के आमने-सामने के कोणों के शीर्षकों को मिलाती हो। (रेखागणित)। (डायगोनल)। वि० (सं) भयङ्कर। डरावना।

**विकर्म** पुं० (सं) १-निषिद्ध कर्म । २-अवसर से लाभ उठाना । वि० (सं) दुराचारी । २-अच्छे कर्म न करने वाला ।
**विकर्षण** पुं० (सं) १-व्याकुल । २-जिसमें कला न हो । ३-खण्डित । ४-अपूर्ण । ५-असमर्थ ।
**विकलन** पुं० (सं) खाते या रोकड़ बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना । किसी के नाम अथवा खर्च की मद में लिखना । (डेबिट) ।
**विकलांग** वि० (सं) जिसका कोई अङ्ग टूटा या खराब हो । अङ्गहीन ।
**विकला** स्त्री० (सं) १ चन्द्रमा की कला का सोलहवां भाग । २-वह स्त्री जिसका रजोदर्शन बन्द हो गया हो ।
**विकलाना** क्रि० (हि) घबराना । व्याकुल या बेचैन होना ।
**विकलित** वि० (सं) १-व्याकुल । २-दुःखी । पीड़ित
**विकलीकृत** वि०(सं) जो किसी अंगभंग होने के कारण कोई काम करने में असमर्थ हो गया हो । (डिसेबल्ड) ।
**विकल्प** पुं० (सं) १-धोखा । भ्रम । २-मन में कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और बातें सोचना ३-व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण । ४-वह अवस्था जिसमें सामने आये कई पदार्थों में से मन पसन्द वस्तु को ले लेने की छूट हो । (ऑप्शन) । ५-विलक्षणता ।
**विकल्पन** पुं० (सं) १-सन्देह में पड़ना । २-अनिश्चय ।
**विकल्पित** वि० (सं) १-संदिग्ध । २-अनियमित ।
**विकसन** पुं० (सं) १-विकास होना । २-(कलियां आदि का) खिलना ।
**विकसना** क्रि० (हि) १-विकसित होना । २-खिलना ३-प्रसन्न होना ।
**विकसित** वि० (सं) १-विकास को प्राप्त होने वाला । २-खिला हुआ ।
**विकस्वर** वि० (सं) १-खिला हुआ । २-प्रसन्न । ३-कपट रहित । ४-स्पष्ट सुनाई देने वाला । पुं० काव्य में वह अलंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कह कर साधारण बात से उसकी पुष्टि की जाती है ।
**विकार** पुं० (सं) १-बिगाड़ । २-दोष । ३-मन में उत्पन्न होने वाला प्रबल प्रभाव या वृत्ति । ४-व्याकरण में उसके नियमानुसार किसी शब्द का रूप बदलना । ५-परिणाम । ६-हानि ।
**विकारी** वि० (सं) १-जिसमें कोई विकार या बिगाड़ हो । २-जिसके मन में राग-द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हों । पुं० साठ संवत्सरों में से एक का नाम ।
**विकाल** पुं० (सं) १-अतिकाल । देर । २-शाम । संध्याकाल । ३-जब देवता के निमित्त कार्य करने का समय बीत गया हो ।
**विकालक** पुं० (सं) दे० 'विकाल' ।
**विकाश** पुं० (सं) १-प्रकाश । रोशनी । २-विस्तार । ३-प्रस्फुटन । ४-आकाश । ५-काव्य में एक अलंकार ।
**विकाशित** वि० (सं) दे० 'विकासित' ।
**विकाशी** वि० (सं) १-प्रकट होने वाला । २-खिलने वाला ।
**विकास** पुं० (सं) १-प्रसार । फैलाव । २-प्रस्फुटित होना । ३-विज्ञान की वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु सामान्य अवस्था से धीरे-धीरे पूर्ण अवस्था को प्राप्त होता है । (इवोल्यूशन)। ४-किसी वस्तु में अच्छी बातें बढ़ाकर उसे उन्नत करना । (डेवलपमेंट) ।
**विकासक** वि० (सं) बढ़ाने वाला । खोलने वाला ।
**विकासन** पुं० (सं) १-विकसित होने का भाव या क्रिया । २-खिलना (कली आदि का) ।
**विकासना** क्रि० (हि) १-प्रकट करना । २-विकसित करना । ३-खिलना । ४-प्रकट करना ।
**विकासवाद** पुं० (सं) आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं का एक सिद्धांत जिसमें यह माना गया है कि आरम्भ में पृथ्वी पर एक ही मूल तत्व था तथा सब वनस्पतियां, वृक्ष, जीवजन्तु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले फैले और बढ़े हैं ।
**विकासित** वि० (सं) १-विस्तारित । २-प्रकाशित । ३-प्रस्फुटित ।
**विकिर** पुं० (सं) १-पक्षी । चिड़िया । २-कुआँ । ३-अक्षत ।
**विकिरण** पुं० (सं) १-बहुत सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना । २-एक केन्द्र से ताप आदि किरणों का प्रसारण होना । (रेडिएशन) ।
**विकीर्ण** वि० (सं) १-चारों ओर बिखेरा या फैलाया हुआ । २-प्रसिद्ध । पु० स्वर के उच्चारण का एक दोष ।
**विकीर्णकारी** वि० (सं) चारों ओर फैलाने वाला ।
**विकीर्णकेश** वि० (सं) जिसके केश या बाल बिखरे हुए हों ।
**विकीर्णमूर्धज** वि० (सं) दे० 'विकीर्णकेश' ।
**विकुंचित** स्त्री० (स) मुड़ा हुआ । सिकुड़ा हुआ ।
**विकुंठ** वि० (सं) जो कुंठित न हो । तेज धार वाला । पुं० (हि) वैकुंठ ।
**विकुंठित** वि० (सं) १-निर्बल । २-भोथरा ।
**विकृत** वि० (सं) १-बिगड़ा हुआ । २-जो भद्दा हो गया हो । ३-असाधारण । ४-अपूर्ण । ५-रोगी । ६-जो युक्ति तर्क के अनुसार ठीक न हो वरन अम-

पूर्ण हो। (परवर्स)।
**विकृतटंक** पुं० (सं) घिसा हुआ सिक्का जिसकी लिखावट न पढ़ी जाती हो। (डिफेस्डकॉइन)।
**विकृतदर्शन** *वि०* (सं) जिसकी शकल या सूरत बिगड़ गई हो।
**विकृतवृष्टि** पुं० (सं) ऐंचाताना। भैंगा।
**विकृति** *स्त्री०* (सं) १-बिगाड़। विकार। २-रोग। ३-मूल धातु से बिगड़ कर बना हुआ शब्द। ४-शत्रुता। ५-मन में होने वाला क्षोभ। ६-सत्य, न्याय, तर्क नियम के सिद्धांतों से विपरीत होने की अवस्था। (परवर्शन, परवर्सिटी)।
**विकृष्ट** *वि०* (सं) १-खींचा या खींचा हुआ। २-जिसका अन्त कर दिया गया हो (विधान आदि)।
**विकेंद्रीयकरण** पुं० (सं) सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटा कर आसपास के भिन्न अंगों में बाँटना। (डिसेन्ट्रलाइजेशन)।
**विक्टोरिया** *स्त्री०* (अं) एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।
**विक्रम** पुं० (सं) १-पराक्रम। २-शक्ति। ३-गति। ४-प्रकार। ढंग। ५-साठ संवत्सरों में से एक। ६-दे० 'विक्रमादित्य'। *वि०* श्रेष्ठ।
**विक्रमाजीत** पुं० (हि) दे० 'विक्रमादित्य'।
**विक्रमादित्य** पुं० (सं) उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनका विक्रम-संवत् चलाया हुआ है
**विक्रमाब्द** पुं० (सं) विक्रमादित्य के नाम से चलाया गया संवत्।
**विक्रमी** *वि०* (सं) १-जिसमें वीरता हो। २-विक्रम का। विक्रम सम्बन्धी। पुं० १-विष्णु। शेर।
**विक्रय** पुं० (सं) मूल्य लेकर कोई वस्तु देना। बेचना। बिक्री। (सेल, डिस्पोजल)।
**विक्रयक** पुं० (सं) विक्रेता। बेचने वाला।
**विक्रयकला** *स्त्री०*(सं) ग्राहकों को माल बेचने की कला। (सेल्समैनशिप)।
**विक्रयण** पुं० (सं) बेचने की क्रिया। बिक्री।
**विक्रयधन** पुं० (सं) व्यापारी द्वारा एक दिन एक सप्ताह या एक माह की बिक्री से मिला हुआ कुछ धन। (टर्नओवर)।
**विक्रयपंजी** *स्त्री०*(सं) वह बही या खाता जिसमें प्रतिदिन का लेखा लिखा रहता है। (सेल्सजनरल)।
**विक्रयपत्र** पुं० (सं) १-वह पत्र जिसमें बेची हुई वस्तु का नाम, दाम और विक्रेता का नाम पता आदि लिखा रहता है। २-नकद बिक्री की दी हुई रसीद। (कैशमेमो)।
**विक्रयप्रतिक्रोष्टा** पुं० (सं) नीलाम करने वाला। (आक्शनर)।
**विक्रयप्रपंजी** *स्त्री०* (सं) वह खाता-बही जिसमें बेची हुई वस्तुओं का पूरा विवरण हर वस्तु का अलग-रहता है। (सैल्स लैजर)।
**विक्रयलेख** पुं० (सं) बैनामा। वह लेखपत्र जिसमें भूमि, मकान आदि चीजों को बेचने का पूरा विवरण तथा कीमत आदि लिखी हो और जिसको पंजीबद्ध कर लिया गया हो। (सेलडीड)
**विक्रयिक** पुं० (सं) वह जो मूल्य लेकर किसी के हाथ कोई वस्तु बेचे।
**विक्रयी** पुं० (सं) (सेल्समैन) बेचने वाला।
**विक्रिया** *स्त्री०* (सं) १-विकार। खराबी। २-किसी क्रिया के विरुद्ध होने वाली प्रक्रिया। (रिएक्शन)।
**विक्री** *स्त्री०*(हि) १-वह धन जो बेचने पर प्राप्त हुआ हो। २-विक्रय।
**विक्रीत** *वि०* (सं) बेचा हुआ।
**विक्रेतव्य** *वि०* (सं) जिसे बेचा जा सके।
**विक्रेता** पुं० (सं) बिक्री करने वाला।
**विक्रेय** *वि०* (सं) जो बिकने को हो। बिकाऊ।
**विक्रोध** *वि०* (सं) जिसमें क्रोध न हो।
**विक्लांत** *वि०*(सं) १-थका हुआ। २-हतोत्साह।
**विक्षत** *वि०* (सं) चोट खाया हुआ। घायल।
**विक्षिप्त** *वि०* (सं) १- फैला हुआ। २-व्यक्त। ३-पागल। ४-पागलों का सा। पुं० १-जिसके मस्तिष्क में विकार हो पागल। (ल्यूनेटिक)। २-व्याकुल।
**विक्षिप्तता** *स्त्री०* (सं) १-व्याकुलता। २-पागलपन।
**विक्षिप्तालय** पुं० (सं) वह स्थान जहां पर पागल व्यक्तियों को रख कर उनकी देखरेख तथा चिकित्सा की जाती है। (ल्यूनेटिक असाइलम)।
**विक्षुब्ध** *वि०* (सं) जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न हो। क्षुब्ध।
**विक्षेप** पुं० (सं) ऊपर या इधर-उधर डालना। ३-२-मन का भटकना। ३-बाधा। ४-छावनी। ५-धनुष की डोरी खींचना। ६-एक रोग।
**विक्षेपण** पुं० (सं) १-इधर उधर फैंकने की क्रिया। २-झटका देने की क्रिया। ३-विघ्न। बाधा। ४-चिल्ला चढ़ाने की क्रिया।
**विक्षोभ** पुं० (सं) १-मन की चंचलता। उद्वेग। २-अप्रिय घटना के कारण मन में होने वाला विकार।
**विखंडन** पुं० (सं) किसी किये हुए करार को तोड़ना। (एब्रोगेशन)।
**विखंडित** *वि०* (सं) विघटित किया हुआ। २-टुकड़े किया हुआ। ३-जिसका खण्डन किया हुआ हो।
**विख** पुं० (हि) विष। जहर।
**विखाद** पुं० (हि) दे० 'विषाद'।
**विखान** पुं० (हि) सींग। विषाण।
**विखायँध** *स्त्री०* (हि) कड़वी गंध।
**विख्यात** *वि०* (सं) प्रसिद्ध। मशहूर।
**विख्याति** *स्त्री०* (सं) प्रसिद्ध। शोहरत।
**विख्यापन** पुं० (सं) कोई बात सबकी जानकारी के लिए सार्वजनिक रूप से प्रकट करना। (एनाउन्स-

मेंट)।

**विगत** *वि०*(सं) १-बीता हुआ (समय)। २-जो अभी तुरंत बीता है। ४-रहित। ४-निष्प्रभ। ५-जो कहीं इधर-उधर चला गया हो।

**विगतकल्मष** *वि०* (सं) पापरहित। शुद्ध।

**विगतज्ञान** *वि०* (सं) जिसकी अकल मारी गई हो।

**विगतनयन** *वि०* (सं) जिसकी आंखें नष्ट हो गई हों।

**विगतभय** *वि०* (सं) जो किसी से डरता न हो।

**विगतभी** *वि०* (सं) निर्भीक।

**विगतराग** *वि०* (सं) जिसमें राग न रह गया हो।

**विगतार्तवा** *स्त्री०* (सं) वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया हो।

**विगतासु** *वि०* (सं) मरा हुआ। मृत।

**विगति** *स्त्री०* (सं) १-विगति का भाव। २-दुर्गति। खराबी।

**विगद** *वि०* (सं) जिसके कोई रोग न हो।

**विगर्हणीय** *वि०* (सं) १-जो निन्दा के योग्य हो। २-दुष्ट।

**विगर्हित** *वि०* (सं) १-बुरा। खराब। २-निषिद्ध। ३-जिसे डांटा या फटकारा गया हो।

**विगलन** *पुं०* (सं) १-शिथिल होना। २-जीर्ण वस्तु का गलना या सड़ना। ३-विगड़ना। वह या गिर-कर अलग होना।

**विगलित** *वि०* (सं) १-टपक-कर निकला हुआ। २-गिरा हुआ। ३-शिथिल। ४-विगड़ा हुआ।

**विगुण** *वि०* (सं) १-मूर्ख। २-विना डोरी का। ३-खराब।

**विग्रह** *पुं०* (सं) १-दूर या अलग करना। २-विश्ले-षण के लिए प्रत्येक शब्द को अलग-अलग करना (व्या०)। ३-कलह। ४-युद्ध। ५-फूट डालना। ६-शरीर। ७-शृङ्गार। ८-शिव।

**विघटन** *पुं०*(सं) १-संयोजक अंगों को अलग-अलग करना। (डिसोल्यूशन)। २-बिगड़ना। ३-नष्ट करना।

**विघटिका** *स्त्री०* (सं) एक घड़ी का साठवां अंश जो चौबीस सैकण्ड के बराबर होता है।

**विघटित** *स्त्री०* (सं) १-जो तोड़ा फाड़ा गया हो। २-जिसके टुकड़े अलग-अलग किये गये हों। ३-नष्ट।

**विघन** *पुं०* (सं) १-चोट पहुंचाना। २-एक बड़े आकार का हथोड़ा। घन। (हि) दे० 'विघ्न'।

**विघात** *पुं०* (सं) १-चोट। आघात। २-नाश। ३-हत्या। ४-बाधा। ५-विफलता।

**विघाती** *पुं०* (सं) १-प्रहार करने वाला। २-हत्या करने वाला। घातक।

**विघूर्णन** *पुं०* (सं) १-चारों ओर घुमाना। २-चक्कर देना।

**विघूर्णित** *वि०* (सं) चारों ओर घुमाया हुआ।

**विघोषण** *पुं०* (सं) चिल्ला कर घोषित करना।

**विघ्न** *पुं०* (सं) १-बाधा। रुकावट। २-विरोध।

**विघ्नक** *वि०* (सं) विघ्न या बाधा डालने वाला।

**विघ्नकर** *वि०* (सं) दे० 'विघ्नक'।

**विघ्नकर्ता** *वि०* (सं) दे० 'विघ्नक'।

**विघ्नकारी** *वि०* (सं) १-जो बाधा डालता हो। २-भयानक।

**विघ्नजित** *पुं०* (सं) गणेशजी।

**विघ्ननाशक** *पुं०* (सं) गणेशजी।

**विघ्नहारण** *पुं०* (सं) गणेशजी।

**विघ्नांतक** *पुं०* (सं) गणेशजी।

**विघ्नेश** *पुं०* (सं) गणेशजी।

**विघ्नेशकांता** *स्त्री०* (सं) सफेद दूब।

**विघ्नेशवाहन** *पुं०* (सं) चूहा।

**विचकित** *वि०* (सं) घबराया हुआ।

**विचक्षण** *वि०* (सं) १-चमकता हुआ। २-निपुण। ३-पंडित। ४-जो स्पष्ट न दिखाई दे।

**विचच्छन** *वि०* (हि) दे० 'विचक्षण'।

**विचय** *पुं०* (सं) १-एकत्र करना। २-जांच पड़ताल करना।

**विचयन** *पुं०* (सं) १-इकट्ठा करना। २-परीक्षा करना।

**विचरण** *पुं०* (हि) १-अचल। ३-घूमना फिरना।

**विचरन** *पुं०* (हि) दे० 'विचरण'।

**विचरना** *क्रि०* (हि) घूमना। चलना फिरना।

**विचरनि** *स्त्री०* (हि) दे० 'विचरण'।

**विचर्चिका** *स्त्री०* (सं) १-एक प्रकार का खुजली का का रोग। २-छोटी फुन्सी।

**विचल** *वि०* (सं) १-अस्थिर। २-डिगा हुआ। ३-प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

**विचलना** *क्रि०* (हि) १-घबराना। २-दृढ़ न रहना। ३-अपने स्थान से इधर-उधर होना।

**विचलाना** *क्रि०* (हि) १-हटा कर इधर-उधर रखना। २-कोई घबराहट का काम करना।

**विचलित** *वि०* (सं) १-अस्थिर। चंचल। २-अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धांत आदि से हटा हुआ।

**विचार** *पुं०* (सं) १-संकल्प। २-मन में उठने वाली कोई बात। भावना। ३-सोचना-समझना। ४-मुकदमे की सुनवाई तथा फैसला

**विचारक** *पुं०*(सं)१-विचार करने वाला। २-न्याया-धीश। ३-गुप्तचर। ४-पथप्रदर्शक।

**विचारकर्ता** *पुं०* (सं) १-न्यायाधीश। २-सोचने-विचारने वाला।

**विचारज्ञ** *पुं०* (सं) १-वह जो विचार करना जानता हो। २-न्यायाधीश।

**विचारणीय** *वि०* (सं) १-जिस पर विचार करना उचित या आवश्यक हो। २-संदिग्ध।

**विचारधारा** *स्त्री०* (सं) १-किसी सम्प्रदाय या जाति

विशेष का कोई सोचने का ढङ्ग। २-किसी आर्थिक सिद्धान्त के अनुकूल विचार करने की पद्धति। (आइडिओलॉजी)।
**विचारना** क्रि० (हि) विचार करना।
**विचारपति** पुं० (सं) न्यायालय का वह उच्चाधिकारी जो किसी मुकदमे का निर्णय विचार करके देता है। (जज)।
**विचारमूढ़** वि० (सं) जिसमें विचार करने की शक्ति न हो।
**विचारवान्** वि० (सं) जिसमें विचार करने की शक्ति हो। विचारशील।
**विचारशक्ति** स्त्री० (सं) वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय।
**विचारशास्त्र** पुं० (सं) मीमांसा-शास्त्र।
**विचारशील** वि० (सं) विचारवान।
**विचारशीलता** स्त्री० (सं) विचारशक्ति होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता।
**विचारसरणी** स्त्री० (सं) विचार करने का ढङ्ग या पद्धति।
**विचारस्थल** पुं० (सं) १-तर्क। २-वह स्थान, जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो। न्यायालय।
**विचार-स्वातंत्र्य** पुं० (सं) किसी देश की ओर की वह स्वतन्त्रता जिसके अनुसार कोई भी अपने विचार बे रोकटोक प्रकट कर सके। (फ्रीडम ऑफ थाट)।
**विचाराध्यक्ष** पुं० (सं) वह जो न्यायालय का प्रधान हो। प्रधान विचारक।
**विचारित** वि० (सं) विचारा हुआ। जिस पर विचार किया गया हो।
**विचारी** पुं० (सं) १-विचार करने वाला। २-विचरण करने वाला।
**विचार्य** वि० (सं) विचारणीय।
**विचिकित्सा** स्त्री० (सं) १-सन्देह। २-वह जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जा सके।
**विचित्त** वि० (सं) १-अचेत। बेहोश। २-जिसका चित्त ठिकाने न हो।
**विचित्ति** स्त्री० (सं) १-बेहोशी। २-चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था।
**विचित्र** वि० (सं) १-कई रङ्गों वाला। २-सुन्दर। ३-विलक्षण। ४-विस्मित करने वाला। पुं० (सं) १-एक अर्थालङ्कार। २-मनु के एक पुत्र का नाम।
**विचित्रता** स्त्री० (सं) १-विलक्षणता। २-रङ्ग-बिरङ्गा होने का भाव।
**विचित्रवीर्य** पुं० (सं) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम।
**विचित्रशाला** स्त्री० (सं) अजायबघर।
**विचित्रांग** पुं० (सं) १-मोर। २-बाघ।
**विचुंबित** पुं० (सं) १-छूआ हुआ। २-विशेष प्रकार से चूमा हुआ।
**विचूर्णित** वि० (सं) जिसे अच्छी तरह से पीसा हुआ हो।
**विचेतन** वि० (सं) १-बेसुध। बेहोश। २-विवेकहीन
**विचेष्ट** वि० (सं) जिसमें किसी प्रकार की चेष्टा न हो।
**विच्छित्ति** स्त्री० (सं) १-टुकड़े करना। २-विच्छेद। ३-कमी। ४-कविता में यति। ५-साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री साधारण शृङ्गार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है। ६-बेढङ्गापन।
**विच्छिन्न** वि० (सं) १-विभक्त। २-अलग। ३-जिसका विच्छेद हुआ हो। ४-कुटिल। पुं० (सं) योग में राग द्वेषादि क्लेशों की दशा जिसमें बीच में उनका विच्छेद होता है।
**विच्छेद** पुं० (सं) १-काटकर अलग करना। २-बीच में क्रम टूटना। ३-टुकड़े-टुकड़े होना। ४-वियोग। ५-नाश। ६-अध्याय। ७-अवकाश। ८-तोड़ने की क्रिया।
**विछलना** क्रि० (हि) १-फिसलना। २-विचलित होना
**विछेव** पुं० (हि) बिछोह। वियोग।
**विछोई** पु० (हि) वियोगी।
**विछोह** पुं० (हि) वियोग।
**विछोही** पुं० (हि) वियोगी।
**विजन** पुं० (सं) १-एकान्त। २-निराला। पुं० (हि) हवा करने का पंखा।
**विजनता** स्त्री० (सं) विजन होने का भाव।
**विजना** पुं० (हि) हवा करने का पंखा।
**विजय** स्त्री० (सं) युद्ध, विवाद, प्रतियोगिता आदि होने वाली जीत। जय।
**विजयचिह्न** पुं० (सं) दे० 'विजयोपहार'।
**विजयदुंदुभि** स्त्री० (सं) विजय होने पर बजाया जाने वाला नगाड़ा।
**विजयपताका** स्त्री० (सं) १-विजय प्राप्त करने के समय फहराई जाने वाली पताका। २-कोई विजय-चिह्न।
**विजय यात्रा** स्त्री० (सं) विजय प्राप्त करने के विचार से की गई यात्रा।
**विजयलक्ष्मी** स्त्री० (सं) विजय प्राप्त कराने वाली देवी
**विजयशील** वि० (सं) सदा जीतने या सफल होने वाला।
**विजया** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-पार्वती की एक सखी का नाम। ३-भांग। ४-दस मात्राओं के एक छन्द का नाम। ५-आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
**विजयादशमी** स्त्री० (सं) आश्विन शुक्ला दशमी जो हिन्दुओं का बड़ा त्योहार है।
**विजयार्थी** वि० (सं) विजय की कामना करने वाला।
**विजयास्त्र** पु० (सं) वह साधन या अस्त्र जिसके

कारण विजय हो। (ट्रम्पकार्ड)।
विजयी पुं० (सं) १-जीतने वाला। २-अर्जुन।
विजयोत्सव पुं० (सं) १-विजयादशमी का उत्सव। २-वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में मनाया जाय।
विजयोपहार पुं० (सं) क्रिकेट, हॉकी फुटबॉल आदि खेलों तथा किसी युद्ध की जीत में जीत होने पर प्राप्त विजय की स्मृति रूप रखने को कोई चीज। (ट्रॉफी, शील्ड)।
विजल वि० (सं) जलरहित। पुं० (सं) वर्षा का अभाव।
विजाति वि० (सं) १-दूसरी जाति का। २-दूसरी प्रकार का।
बिजुली स्त्री० (हिं) बिजली।
विजृंभ पुं० (सं) १-भौं सिकोड़ना। २-जँभाई। उबासी।
विजृंभक पुं० (सं) एक विद्याधर।
विजृंभण पुं०(सं) १-जँभाई लेना। २-भौं-सिकोड़ना। खिल्ला बढ़ाना।
विजृंभा स्त्री० (सं) जँभाई। उबासी।
विजेता पुं० (सं) विजय प्राप्त करने वाला। विजयी।
विजेय वि० (सं) जिस पर विजय प्राप्त की जाने को हो।
बिजै स्त्री० (हिं) दे० 'विजय'।
बिजोग वि० (हिं) वियोग।
बिजोगी वि० (हिं) वियोगी।
बिजोर पुं० (हिं) दे० 'बिजौरा'। वि० कमजोर। निर्बल।
बिज्जु स्त्री० (हिं) विद्युत। बिजली।
बिज्जुलता स्त्री० (हिं) विद्युत। बिजली।
विज्ञ वि०(सं) १-जानकार। २-बुद्धिमान। ३-विद्वान पंडित।
विज्ञता स्त्री० (सं) १-विद्वता। पांडित्य। २-बुद्धिमत्ता
विज्ञत्व पुं० (सं) दे० 'विज्ञान'।
विज्ञप्ति स्त्री० (सं) १-जतलाने या सूचित करने की क्रिया। (नोटिफिकेशन)। २-विज्ञापन। ३-अधिकृत रूप से निकाली गई सूचना। (कम्यूनिक)।
विज्ञात वि० (सं) १-जाना या समझा हुआ। २-प्रसिद्ध। मशहूर।
विज्ञान पुं० (सं) १-ज्ञान। २-किसी विषय की जानी हुई बातों और तत्वों का वह विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो (साइन्स)। २-कार्य-कुशलता। ३-कर्म। ४-अविद्या या माया नामक वृत्ति। ५-आत्मा। ६-ब्रह्म। ७-मोक्ष। ८-निश्चयात्मक बुद्धि। ९-आकाश।
विज्ञानमय वि० (सं) ज्ञानयुक्त।
विज्ञानमयकोश पुं० (सं) दे० 'विज्ञानमयकोष'।
विज्ञानमयकोष पुं० (सं) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का समूह।
विज्ञानवादी पुं० (सं) १-योग मार्ग का अनुयायी। योगी। २-वह जो आधुनिक विज्ञान का पक्षपाती हो।
विज्ञानी पुं० (हिं) १-वह जिसे किसी विषय का ज्ञान हो। वैज्ञानिक। २-विज्ञानवेत्ता।
विज्ञापक पुं० (सं) वह जो विज्ञापन करता हो।
विज्ञापन पुं० (सं) १-जानकारी कराना। २-इश्तहार ३-बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो लोगों को विशेषतः सामयिक पत्रों द्वारा दी जाती है। (एडवर्टाइज़मेंट)।
विज्ञापनदाता पुं० (सं) विज्ञापन देने वाला। (एडवर्टाइज़र)।
विज्ञापन-पत्र पुं०(सं) विज्ञापन का समाचार पत्र।
विज्ञापन-पुस्तिका स्त्री० (सं) सूचीपत्र।
विज्ञापित वि० (सं) जिसका विज्ञापन किया गया हो (एडवर्टाइज्ड)। २-जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफाइड)।
विज्ञेय वि० (सं) जानने या समझने योग्य।
विट पुं० (सं) १-कामुक। लंपट। २-धूर्त। चालाक। ३-वह जिसने कोई वेश्या को रख लिया हो। ४-चूहा। ५-मल। ६-वह नायक जो भोगविलास में सब कुछ खो बैठा हो।
विटप पुं० (सं) १-वृक्ष। पेड़। २-वृक्ष या लता की नई शाखा। कोंपल।
बिटपी पुं० (हिं) १-वृक्ष। पेड़। २-वट वृक्ष। ३-कोंपल। ४-अंजीर का पेड़।
विट् पुं० (सं) १-वेश्या। २-मनुष्य। ३-प्रवेश।
विट्ठल पुं०(हिं) दक्षिण भारत की एक विष्णु की मूर्ति का नाम।
विट्ठलकवच पुं० (हिं) एक कवच।
विट्पति पुं० (सं) दामाद। जमाई।
विडंब पुं० (सं) १-कष्ट देना। २-छेड़खानी। ३-नकल उतारना। ४-चिढ़ाना।
विडंबन पुं० (सं) १-नकल करना। २-भांडपन करना ३-उपहास करना।
विडंबना स्त्री० (सं) १-किसी को चिढ़ाने के लिए नकल करना। २-उपहास करना।
विडंबनीय वि० (सं) १-नकल उतारने योग्य। २-उपहास करने योग्य।
विडंबित वि० (सं) १-नकल उतारा हुआ। २-हँसी उड़ाया हुआ। ३-नीच। ४-निराश।
विडंबी पुं० (सं) विडंबना करने वाला।
विड पुं० (सं) काला नमक।
बिडरना क्रि०(हिं) १-तितरबितर होना। २-भागना। दौड़ना।
बिडराना क्रि० (हिं) १-तितर-बितर करना। २-

भगाना। २-तंग करना।
बिडारना क्रि० (हिं) दे० 'बिड़राना'।
बिडाल पुं० (सं) १-बिल्ली। २-आँख की पिंड। ३-एक आँख की दवा।
बिडालाक्ष वि० (सं) दे० 'बिडालाक्ष'।
बिडाली स्त्री० (सं) १-बिल्ली। २-बिदारी-कंद।
बिडोजा पुं० (सं) इन्द्र का एक नाम।
बिडौजा पुं० (सं) इन्द्र का एक नाम।
बितंडा स्त्री० (सं) व्यर्थ का विवाद या कहा सुनी।
बितंडावाद पुं० (सं) साधारण सी बात को व्यर्थ की कहासुनी में बढ़ा देना।
बितंत पुं० (हि) बिना तार का (बाजा)।
बित वि० (हि) १-जानकार। ज्ञाता। २-चतुर। निपुण।
बितत वि० (सं) बिस्तृत। फैला हुआ। पुं० १-बीणा या बीणा जैसा कोई वाद्य यंत्र। २-ढोल, मृदङ्ग आदि से निकलने वाले शब्द।
बितताना क्रि० (हिं) व्याकुल या बेचैन होना।
बितति स्त्री० (सं) फैलाव। बिस्तार।
बितथ वि० (सं) १-व्यर्थ। २-मिथ्या. झूठ। पुं० आज्ञा निषेध। (डिफाल्ट)।
बितथी पुं० (हि) जो आज्ञा, निश्चय, आभार आदि का ठीक प्रकार से उचित रूप से पालन न कर सका हो। (डिफाल्टर)।
बितन पुं० (सं) कामदेव।
बितनु वि० (सं) जो बहुत सूक्ष्म हो।
बितपन्न वि० (सं) १-निपुण। २-बिकल। ३-व्युत्पन्न
बितरक पुं०(सं) १-बांटने वाला। २-वह जो किसी के अभिकर्ता के रूप में थोक व्यापारियों को उसकी तैयार की हुई वस्तुएं देता हो। (डिस्ट्रीब्यूटर)।
बितरण पुं०(सं)१-देना। अर्पण करना। २-बांटना। (डिस्ट्रीब्यूशन)।
बितरन पुं० (हि) दे० 'बितरण'।
बितरना क्रि० (हिं) बांटना। बितरण करना।
बितरिक्त अव्य० (हिं) सिवा। अतिरिक्त।
बितरित वि० (सं) बाँटा हुआ।
बितरेक अव्य० (हिं) छोड़कर। सिवा।
बितर्क पुं० (सं) १-तर्क के उत्तर में दिया जाने वाला दूसरा तर्क। (आर्गुमेन्ट)। २-सन्देह। ४-एक अर्थालंकार।
बितल पुं० (सं) पुराणोक्त सात पातालों में से तीसरा।
बितस्ता स्त्री० (सं) झेलम नदी का प्राचीन नाम।
बिताडन पुं० (हिं) दे० 'ताड़ना'।
बितान पुं० (सं) १-बिस्तार। फैलाव। २-बड़ा तम्बू या खेमा। ३-यज्ञ। ४-सिर पर या आघात आदि पर बांधा जाने वाला बंधन।
बितानना क्रि०(हि) १-खेमा या शामियाना। २-कोई वस्तु तानना।
बितिक्रम पुं० (हि) दे० 'व्यतिक्रम'।
बितीत वि० (हिं) दे० 'व्यतीत'।
बितुंड पुं० (हि) हाथी।
बितुष वि० (सं) जिसका छिलका हटा दिया गया हो
बितृष्ण पुं० (सं) निस्पृह। उदासीन।
बितृष्णा स्त्री० (सं) तृष्णा का अभाव।
बित्त पुं० (सं) १-धन। संपति। २-संस्था या राज्य की आय और उस की व्यवस्था। ३-आर्थिक प्रबन्ध (फाइनैन्स)। वि० १-सोचा या विचारा हुआ। २-प्राप्त। प्रसिद्ध।
बित्तकाम वि०(सं) लोभी। लालची।
बित्तजाय वि० (सं) विवाहित।
बित्तद वि० (सं) धन देने वाला।
बित्तनाथ पुं० (सं) कुबेर।
बित्तनिचय पुं० (सं) धन की बहुत बड़ी रकम।
बित्तप वि० (सं) धन की रक्षा करने वाला।
बित्तपति पुं० (सं) कुबेर का एक नाम।
बित्तप्रबंधक पुं० (सं) किसी व्यवसाय में धन का प्रबन्ध करने वाला। (फाइनैन्शियर)।
बित्तमंत्री पुं० (सं) अर्थमंत्री। किसी राज्य के अर्थ-विभाग की देखरेख करने वाला मन्त्री। (फाइनैन्स मिनिस्टर)।
बित्तवान वि० (सं) धनवान। रईस। पैसे वाला।
बित्तविधेयक पुं० (सं) किसी राज्य का वह विधेयक जो आगामी वर्ष के आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखता हो और विधान सभा में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाता है। (फाइनैन्स बिल)।
बित्तसाधन पुं० (सं) किसी संस्था या राज्य के धन प्राप्ति करने के साधन। (फाइनेन्सेज)।
बित्तागम पुं० (सं) धन प्राप्ति के साधन।
बित्ताढ्य वि०(सं) बहुत धन वाला।
बित्ताप्ति स्त्री०(स) धन या रुपये-पैसे की प्राप्ति।
बित्तीय वि० (स) वित्त से सम्बन्ध रखने वाला। (फाइनैन्शयल)।
बित्तेश पुं० (सं) कुबेर।
बित्तेश्वर पुं० (सं) कुबेर।
बित्तेहा स्त्री० (सं) लालच। धन की इच्छा।
बित्रप वि० (स) निर्लज्ज। बेहया।
बित्रस्त वि० (सं) भयभीत। डरा हुआ।
बिथकना क्रि० (हिं) १-थकना। २-शिथिल होना। ३-चकित होकर चुप हो जाना।
बिथकित वि० (हि) १-थका हुआ। शिथिल। २-मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकना।
बिथराना क्रि०(हिं) १-फैलाव। २-बिखराना। छितराना।
बिथारना क्रि० (हिं) दे० 'बिथराना'।

**विथा** स्त्री० (हिं) १-व्यथा। २-रोग। बीमारी।
**विथित** वि० (हिं) दुःखी। व्यथित।
**विथुर** पुं० (सं) १-राक्षस। २-चोर। ३-नाश। वि० १-व्यथित। २-अल्प।
**विथुरा** स्त्री० (सं) विरहणी।
**विदंश** स्त्री० (सं) एक प्रकार की कौड़ी।
**विदग्ध** पुं० (सं) १-पंडित। विद्वान। २-रसिक। ३-चतुर। वि० जला हुआ।
**विदग्धक** पुं० (सं) जलता हुआ शव।
**विदग्धता** स्त्री० (सं) विद्वता। पांडित्य।
**विदग्धा** स्त्री० (सं) वह परकीया नायिका जो बड़ी चतुरता से पर पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
**विदमान** अव्य०(हिं) सामने। सम्मुख।
**विदरना** क्रि० (हिं) १-फटना। विदीर्ण होना। २-फाड़ना।
**विदर्भ** पुं० (सं) १-आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम। २- एक प्राचीन राजा। ३-मसूड़े फूलने का एक रोग।
**विदर्भजा** स्त्री० (सं) १-अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपमुद्रा का नाम। २-दमयंती का एक नाम। ३-रुक्मणी।
**विदर्भतनया** स्त्री० (सं) दमयंती।
**विदर्भराज** पुं० (सं) दमयंती के पिता जो विदर्भ के राजा थे।
**विदर्भसुभ्रू** पुं० (सं) दमयंती।
**विदलन** पुं० (सं) १-मलने-दलने या दबाने की क्रिया २-फाड़ना। टुकड़े करना। इधर-उधर करना।
**विदलना** क्रि० (हिं) दलित करना। नष्ट करना।
**विदलित** वि० (सं) १-रौंदा हुआ। मला हुआ। २-टुकड़े किया हुआ। ३-फाड़ा हुआ।
**विदा** स्त्री० (सं) बुद्धि। ज्ञान। स्त्री० (हिं) १-प्रस्थान रवाना होना। २-कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति।
**विदाई** स्त्री० (हिं) १-विदा होने की क्रिया या भाव। २-विदा होने की अनुमति। ३-विदा के समय दिया जाने वाला धन।
**विदार** पुं०(सं) १-चीरना। फाड़ना। २-युद्ध। समर
**विदारक** पुं०(सं) १-नदी के नीचे की पहाड़ी या वृक्ष ३-नदी के गर्भ में खोदा हुआ कूप या गढ़।
**विदारण** पुं० (सं) १-फाड़ना। २-हत्या करना। ३-युद्ध। संग्राम। ४-कनेर का पेड़। ५-नौसादर।
**विदारना** क्रि० (हिं) फाड़ना।
**विदारिका** स्त्री०(सं) १-एक प्रकार की डाकिनी जो घर से बाहर अग्निकोण में रहती है। २-कड़वी तूँबी।
**विदारित** वि० (सं) फाड़ा या विदीर्ण किया हुआ।
**विदारी** वि० (हिं) फाड़ने वाला। स्त्री० (सं) १-कंठ-रोग। २-कान का एक रोग। ३-शालपर्णी। ४-मेढ़ासींगी आदि औषधियों का एक गण। (वैद्यक)
**विदारीकंद** पुं० (सं) कुम्हड़ा।
**विदित** वि०(सं) जाना हुआ। ज्ञात। पुं० कवि।
**विदिशा** स्त्री० (सं) १-वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २-एक नदी।
**विदिसा** स्त्री० (हिं) दे० 'विदिशा'।
**विदीर्ण** वि० (सं) १-फाड़ा या फटा हुआ। ३-मार डाला हुआ। निहित।
**विदीर्णमुख** वि० (सं) जिसका मुँह खुला हो।
**विदीर्णहृदय** वि० (सं) जिसका दिल टूट गया हो।
मर्माहत।
**विदुर** वि०(सं) चतुर। पुं० १-जानकार। ज्ञाता। २-पंडित। ३-पांडु के छोटे भाई का नाम।
**विदुष** पुं० (सं) विद्वान। पंडित।
**विदुषी** स्त्री० (सं) विद्वान स्त्री।
**विदूर** वि० (सं) जो बहुत दूर हो। पुं० १-एक पर्वत का नाम। २-एक देश का नाम। ३-एक मणि।
**विदूषक** पुं० (सं) १-कामुक। २-अपने वेष, चेष्टा आदि से दूसरों को हँसाने वाला। मसखरा (क्लाउन)। २-नाटक का वह पात्र जो नायक का अन्तरङ्ग मित्र होता है। ३-भांड।
**विदूषण** पुं० (सं) दोष लगाना।
**विदूषना** क्रि० (हिं) १-सताना। २-दुःखी होना। ३-दोष लगाना।
**विदेश** पुं० (सं) अन्य देश। परदेश।
**विदेशगमन** पुं० (सं) परदेश जाना।
**विदेशज** पुं०(सं) विदेश या अन्य देश का बना हुआ या उत्पन्न।
**विदेशवास** पुं० (सं) दूसरे में वास करना या रहना
**विदेशवासी** वि० (सं) दूसरे देश में रहने वाला।
**विदेशस्थ** वि० (सं) किसी दूसरे देश में घटित होने वाला।
**विदेशी** वि० (हिं) दूसरे देश या देशों से सम्बन्धित। (फॉरेन)। २-परदेशी।
**विदेशीय** वि० (सं) दूसरे देश का।
**विदेह** पुं० (सं) १-राजा जनक। २-प्राचीन मिथिला देश। ३-इस देश का निवासी। वि० १-जो शरीर रहित हो। २-बेसुध।
**विदेहकुमारी** स्त्री० (सं) सीता।
**विदेहजा** स्त्री० (सं) सीता।
**विदेहत्व** पुं०(सं) १-विदेह होने का भाव। २-मृत्यु।
**विद्** वि० (सं) १-जानकार। २-पंडित। ज्ञानी। पुं० १-बुधग्रह। २-तिल का पौधा।
**विद्ध** वि० (सं) १-बीच में से छेद किया हुआ। २-फेंका हुआ। ३-घायल। ४-टेढ़ा। ५-सटा हुआ।
**विद्यमान** वि० (सं) उपस्थित। मौजूद।
**विद्यमानता** स्त्री० (सं) उपस्थिति। मौजूदगी।
**विद्या** स्त्री० (सं) १-शिक्षा द्वारा उपार्जित ज्ञान। २-

मोक्ष प्राप्ति करने वाला ज्ञान । ३-वे शास्त्र जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है। ४-ज्ञान के विशेष विभाग। ५-गुण। ६-दुर्गा।
**विद्यागम** पुं० (सं) विद्या की प्राप्ति या लाभ।
**विद्यादाता** पुं० (सं) विद्या देने वाला गुरु।
**विद्याधन** पुं० (सं) १-विद्या रूपी धन। २-अपनी विद्या द्वारा कमाया हुआ धन।
**विद्याधर** पुं०(सं) १-देवयोनि विशेष। २-एक प्रकार का रतिबंध। ३-वैद्यक में एक प्रकार का यन्त्र।
**विद्याधरी** स्त्री० (सं) विद्याधर जाति की स्त्री।
**विद्याधिराज** पुं० (सं) वह जो परम पंडित हो।
**विद्यानुशीलन** पुं० (सं) विद्या का अध्ययन करना।
**विद्यापति** पुं० (सं) १-एक मैथिल कवि। २-राजदरबार का सबसे विद्वान व्यक्ति।
**विद्यापीठ** पुं० (सं) शिक्षा का बड़ा केन्द्र। महाविद्यालय।
**विद्याबल** पुं० (सं) १-शास्त्रों के ज्ञान का बल। २-जादू का बल।
**विद्याभाक्** वि० (सं) विद्वान।
**विद्याभ्यास** पुं० (सं) विद्या का अध्ययन।
**विद्यामंदिर** पुं० (सं) विद्यालय।
**विद्यामठ** पुं०(सं) १-वह मठ जहाँ साधुओं को विद्या सिखाई जाती है। २-महाविद्यालय।
**विद्यारंभ** पुं० (सं) बालक की पढाई या शिक्षा आरंभ करने का संस्कार।
**विद्यार्जन** पुं० (सं) विद्या या ज्ञान द्वारा कुछ प्राप्त करना।
**विद्यार्जित** वि० (सं) जो विद्या के द्वारा प्राप्त हो।
**विद्यार्थी** पुं० (सं) छात्र। विद्या पढ़ने वाला।
**विद्यालय** पुं०(सं) वह स्थान जहां विद्या पढाई जाती हो। पाठशाला।
**विद्यालाभ** पुं० (सं) विद्या का प्राप्त होना।
**विद्यावान** वि० (स) विद्वान।
**विद्याविक्रय** पुं० (सं) धन लेकर विद्या पढ़ाना।
**विद्याविद्** वि०(सं) विद्वान। पंडित।
**विद्याविहीन** वि० (सं) अपढ़। मूर्ख।
**विद्यावृद्ध** वि० (सं) जिसको बहुत अधिक ज्ञान हो।
**विद्याव्रत** पुं० (सं) गुरु के घर रह कर विद्या प्राप्त करने के विचार से लिया गया व्रत।
**विद्याहीन** वि० (सं) १-अपढ़। अशिक्षित। २-मूर्ख।
**विद्युच्चालक** वि० (सं) (वह पदार्थ) जिसके एक सिरे से विद्युत लगते ही दूसरे सिरे तक पहुँच जाय।
**विद्युत्** स्त्री० (सं) १-बिजली। (इलेक्ट्रिसिटी)। २-संध्या। ३-एक उल्का। वि० चमकदार।
**विद्युत्कण** पुं० (सं) प्रत्येक परमाणु के गर्भ में घनविद्युत् से आविष्ट कण। (इलेक्ट्रॉन)।
**विद्युत्कंप** पुं०(सं) बिजली की कौंधना या चमकना
**विद्युत्पतन** पुं० (सं) दे० 'विद्युत्पात'।
**विद्युत्पात** पुं० (सं) बिजली का गिरना।
**विद्युदणु** पुं० (सं) १-ऋणविद्युदणु। (इलेक्ट्रोन) २-धनविद्युदणु (प्रोटोन)।
**विद्युदुन्मेष** पुं० (सं) बिजली का चमकना।
**विद्युद्घात** पुं० (सं) १-बिजली की कुर्सी पर बिठा कर दी जाने वाली मौत की सजा। २-बिजली के कारण होने वाली मृत्यु। (इलेक्ट्रोक्यूशन)।
**विद्युद्दर्शकयंत्र** पुं (सं) वह यन्त्र जिसके द्वारा यह मालूम किया जाता है कि किसी पदार्थ में विद्युत है या नहीं। (इलेक्ट्रोस्कोप)।
**विद्युद्दाम** पुं० (सं) बिजली की कौंध या रेखा।
**विद्युद्द्योत** पुं० (सं) विद्युत की चमक।
**विद्युद्धारक** पुं० (सं) रेडियो, टेलीफोनादि में लगने वाला वह यन्त्र जो बिजली गिरने पर यन्त्रों को सुरक्षित रखता है। (लाइटिंग अरेस्टर)।
**विद्युन्मापक** पुं० (सं) बिजली की शक्ति आदि मालूम करने का यन्त्र। (वोल्टामीटर)।
**विद्युन्माला** स्त्री० (सं) १-एक छन्द। २-बिजली का कोई समूह।
**विद्युल्लता** स्त्री० (सं) बिजली की दिखाई देने वाली टेढ़ी-मेढ़ी रेखा।
**विद्युल्लेखा** स्त्री० (सं) १-वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। २-बिजली।
**विद्योतक** वि० (सं) दे० 'विद्योती'।
**विद्योती** वि० (सं) प्रभावशाली।
**विद्योपार्जन** पुं०(सं) विद्या का अध्ययन करना।
**विद्रधि** स्त्री० (सं) पेट में का एक घातक फोड़ा। (कैंसर)।
**विद्रावक** वि० (सं) १-पिघलाने वाला। २-भगानेवाला।
**विद्रावण** पुं० (सं) १-पिघलना। २-भागना। ३-उड़ना। ४-फाड़ना। ५-नष्ट करने वाला।
**विद्रावित** वि० (सं) १-पिघलाया हुआ। २-भगाया हुआ। ३-इधर-उधर किया हुआ।
**विद्रावी** पुं० (सं) १-भागने वाला। २-गलने वाला। ३-फाड़ने वाला।
**विद्रुत** वि० (सं) १-भागा हुआ। २-गला हुआ। ३-पिघला हुआ। पुं० (सं) युद्ध करने का एक ढंग।
**विद्रुम** पुं० (सं) १-प्रवाल। मूंगा। २-कोंपल। वि० (सं) वृक्षरहित।
**विद्रोह** पुं० (सं) १-द्वेष। २-वह बड़ा उपद्रव जो किसी राज्य को हानि पहुंचाने या उलटने के लिये किया गया हो। बगावत। (रिवोल्ट)।
**विद्रोही** पुं० (सं) १-द्वेष करने वाला। २-बागी। बलवा करने वाला।
**विद्वज्जन** पुं० (सं) १-चतुर या विद्वान मनुष्य। २-

मुनि । ऋषि ।
**विद्वत्ता** स्त्री० (सं) पांडित्य ।
**विद्वत्व** पुं० (सं) विद्वता । पांडित्य ।
**विद्वान** पुं० (सं) १-जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। २-सर्वज्ञ । ३-जो आत्मा के स्वरूप को जानता हो। (लर्नेड) ।
**विद्विट** वि० (सं) दे० 'विद्विष' ।
**विद्विष** पुं० (सं) शत्रु । दुश्मन । वि० (सं) शत्रुता रखने वाला ।
**विद्वेष** पुं० (सं) १-शत्रुता । बैर । २-विरोध । विपरीतता । (रिपगनेन्सी) ।
**विद्वेषक** पुं० (सं) जो द्वेष रखता हो । शत्रु ।
**विद्वेषण** पुं० (सं) १-शत्रुता । २-शत्रु । बैरी । ३-एक तांत्रिक क्रिया जिसके द्वारा दो व्यक्तियों में बैर उत्पन्न किया जाता है।
**विद्वेषणी** स्त्री० (सं) १-यज्ञ की अन्तिम कन्या का का नाम । २-क्रोध करने वाली स्त्री ।
**विद्वेष्य** पुं० (सं) १-द्वेष का पात्र या भाजन । २-कक्कोल ।
**विधस** पुं० (हि) विध्वंस । नाश ।
**विधंसना** क्रि० (हि) कष्ट या बरबाद करना ।
**विध** पुं० (सं) ब्रह्मा । स्त्री० (हि) प्रकार । तरह ।
**विधना** क्रि० (हि) १-प्राप्त करना । २-साथ लगाना स्त्री० (हि) होनी । होनहार । पुं० (हि) ब्रह्मा ।
**विधनुष्क** वि० (सं) दे० 'विधन्वा' ।
**विधन्वा** वि० (सं) जिसके पास तीर-कमान या धनुष हो ।
**विधर्म** वि० (सं) १-जिसमें गुण न हों । २-धर्म निन्दित । पुं० (सं) दूसरे का धर्म ।
**विधर्मी** पुं० (सं) १-अधर्म करने वाला । २-जो दूसरे धर्म का अनुयायी हो । धर्मभ्रष्ट ।
**विधवा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका पति मर चुका है बेवा । (विडो) ।
**विधवागामी** वि० (सं) विधवा से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला ।
**विधवापन** पुं० (सं) विधवा होने की अवस्था । रंडापा । वैधव्य ।
**विधवा-विवाह** पुं० (सं) किसी विधवा से शादी या विवाह करना ।
**विधवाश्रम** पुं० (सं) वह स्थान या आश्रम जहां विधवाओं के पालन-पोषण का प्रबन्ध हो ।
**विधसना** क्रि० (हि)१-नष्ट करना । अस्त-व्यस्त करना
**विधाता** पुं० (सं) १-जन्म देने वाला । २-विधान करने वाला । ३-सृष्टि की रचना करने वाला । ईश्वर । ब्रह्म ।
**विधात्री** स्त्री० (सं) १-रचने या बनाने वाली । २-व्यवस्था या प्रबन्ध करने वाली ।
**विधान** पुं० (सं) १-अनुष्ठान । २-व्यवस्था । प्रबन्ध ३-काम करने की प्रणाली । ४-उपाय । ५-हाथी का ग्रास । ६-पूजा । ७-धन । सम्पत्ति । ८-राज्य या शासन द्वारा किसी विशेष विषय में सामूहिक रूप से बनाये गये नियम । कानून । (एक्ट) ।
**विधानक** पुं० (सं) १-विधान । विधि । २-रीति या विधि जानने वाला ।
**विधानज्ञ** पुं० (सं)१-विधान का वेत्ता । २-आचार्य
**विधानपरिषद्** स्त्री० (सं) १-वह परिषद् या सभा जिसमें देश के लिये कानून कायदे आदि बनते हैं २-भारत में विधान सभा को छोड़कर दूसरा सदन जिसमें अधिकतर सदस्य नामजद किये जाते हैं। (लेजिस्लेटिव काउन्सिल) ।
**विधानमंडल** पुं० (सं) लोकतन्त्री शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये कानून तथा पुराने कानूनों में संशोधन आदि करती है। (लेजिस्लेचर) ।
**विधानसभा** स्त्री० (सं) लोकतन्त्री शासन में निर्वाचित प्रतिनिधियों की वह सभा जिसमें देश के कानून आदि बनते है। (लेजिस्लेटिव असेम्बली)
**विधायक** वि० (सं) १-विधान करने वाला । २-रचने वाला । ३-निर्देशक । ४-(वह पत्र, आज्ञा आदि) जिसके द्वारा कोई विधान किया जाय या कोई आज्ञा दी जाय । (मेन्डेटरी) । पुं० १-निर्माता । विधान सभा का सदस्य । (लेजिस्लेटर) ।
**विधायन** पुं० (सं) १-विधान बनाना । २-राज्य, शासन या विधायिका सभा का कोई कानून बनाना (इनेक्टमेंट) ।
**विधायी** वि० (सं) दे० 'विधायक' ।
**विधायीकार्य** पुं० (सं) विधान निर्माण या कानून बनाने का कार्य । (लेजिस्लेटिव बिजनेस) ।
**विधारा** पुं०(सं) एक लता जो दवा में काम आती है
**विधावन** पुं०(सं) विधान या कानून बनाना ।
**विधावित** वि० (सं) इधर-उधर बिखरा हुआ । अस्त-व्यस्त ।
**विधि** स्त्री० (सं) १-प्रणाली । रीति । व्यवस्था । ३-शास्त्रोक्त । विधान । ४-व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई कार्य करने की आज्ञा दी जाती है । ५-कानून (लॉ) । ६-साहित्य में वह अलंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है । ७-प्रकृति । ८-भांति ।
**विधिक** वि०(सं) विधि या कानून से सम्बन्धित । २-जो विधि के अनुसार ठीक हो । (लीगल) ।
**विधिग्राह्यमुद्रा** स्त्री० (सं) वह मुद्रा जिसके द्वारा कोई ऋण चुकाना विधिवत माना जाय । (लीगल टेन्डर मनी) ।
**विधिघ्न** वि० (सं) विधि या कानून को तोड़ने वाला.

विधिज्ञ पुं० (सं) १-विधि का जानकार। २-कानून बनाने वाला वकील। (लॉयर)।
विधिनिषेध पुं० (सं) किसी कार्य को न करने की या करने की शास्त्रोक्त आज्ञा।
विधिपरामर्शी पुं० (सं) सरकार को कानूनी बातों की सलाह देने वाला परामर्शदाता तथा पदाधिकारी (लीगल रिमेम्बरेन्स)।
विधिपालक क्रि० (सं) कानून या विधि का पालन करने वाला। (लॉ एबाइडिंग)।
विधिपूर्वक अव्य०(सं) कानून या नियम के अनुसार
विधिप्रयोग पुं० (सं) नियम का विनियोग।
विधिभंग पुं० (सं) कोई ऐसा कार्य करना जिससे कोई कानून या नियम टूटता हो। (ब्रीच ऑफ लॉ)
विधिरानी स्त्री० (हि) सरस्वती।
विधिलोक पुं० (सं) ब्रह्मलोक।
विधिवत् अव्य० (सं) दे० 'विधिपूर्वक'।
विधिवधू स्त्री० (सं) सरस्वती।
विधिवशात् अव्य० (सं) दैवयोग से।
विधिवाहन पुं० (सं) ब्रह्मा की सवारी, हंस।
विधिविज्ञान पुं०(सं) किसी देश या राष्ट्र की सामान्य विधि (कॉमन लॉ) तथा प्रविधियों की समष्टि (ज्यूरिसप्रूडेन्स)।
विधिविपर्यय पुं० (सं) भाग्य का उल्टा अथवा खराब होना।
विधिविहित वि० (सं) विधि या नियम के अनुसार।
विधिशास्त्र पुं० (सं) दे० 'विधिविज्ञान'।
विधिसचिव पुं० (सं) वह सचिव जो विधि अथवा कानून सम्बन्धी पत्रों आदि के उत्तर देता है। (लीगल-सेक्रेटरी)।
विधिस्नातक पुं० (सं) वह व्यक्ति जिसने कानून की परीक्षा पास करके उपाधि प्राप्त करली हो। (बेचलर ऑफ लॉ)।
विधिहीन वि० (सं) विधिरहित। शास्त्र विरुद्ध।
विधुंत पुं० (सं) दे० 'विधुंतद'।
विधुंतद पुं० (सं) राहु।
विधु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-वायु। ३-कपूर। ४-विष्णु। ५-जलस्नान। ६-पाप छुड़ाना।
विधुक्षय पुं० (सं) १-असित पक्ष। २-चन्द्रमा का क्षीण होना।
विधुदार स्त्री०(सं) चन्द्रमा की पत्नी, रोहिणी नक्षत्र।
विधुप्रिया स्त्री० (सं) दे० 'विधुदार'।
विधुबंधु पुं० (सं) कुमुद का फूल।
विधुबैनी स्त्री० (हि) चन्द्रमुखी।
विधुमंडल पुं० (सं) चन्द्रमण्डल।
विधुमणि पुं०(सं) चन्द्रकांतमणि।
विधुमुखी स्त्री० (सं) चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली स्त्री।
विधुर पुं० (सं) दुखी। व्याकुल। २-असमर्थ। ३-वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो। (विडोअर)।
विधुरा पुं० (सं) १-व्याकुल। २-कानों के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि।
विधुवदनी स्त्री० (सं) दे० 'विधुवदनी'।
विधूत वि० (सं) १-कांपता हुआ। २-छोड़ा हुआ। ३-दूर किया हुआ।
विधूतकल्मष वि० (सं) जो पापों से मुक्त हो गया हो।
विधूतकेश वि० (सं) जिसके बाल बिखरे हुए हों।
विधूतपाप्मा वि०(सं) दे० 'विधूतकल्मष'।
विधूनन पुं० (सं) कांपना।
विधूनित पुं० (सं) कांपता हुआ।
विधूम वि० (सं) धूमरहित। बिना धुएँ का।
विधूम्र वि० (सं) मटमैले रङ्ग का। धूसर।
विधेय वि० (सं) १-जिसका करना उचित हो। २-जो नियम के अनुसार किया जाय। ३-आधीन। ४-(वह शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी सम्बन्ध में कहा जाय।
विधेयक पुं० (सं) किसी कानून का वह प्रस्तावित रूप जो विधान सभा में पारित करने के लिए उपस्थित किया जाता है। मसौदा। (बिल)।
विधेयज्ञ वि० (सं) जो अपने कर्त्तव्य को समझता हो
विधेयता स्त्री०(सं)१-विधान की योग्यता। २-आधीनता।
विधेयत्व पुं० (सं) विधेयता।
विध्य वि०(सं)१-बिंधने योग्य। २-जो बेधा या छेदा जाने वाला हो।
विध्यनुकूल वि० (सं) जिसमें कानून या विधि के अनुसार कोई भी कमी न हो। जो विधिवत् हो। (वेलिड)।
विध्यलंकार पुं०(सं) साहित्य में वह अलंकार जिसमें सिद्ध विषय का फिर से विधान किया गया हो।
विध्यलंक्रिया स्त्री० (सं) दे० 'विध्यलंकार'।
विध्याभास पुं० (सं) एक अर्थालंकार जिसमें अनिष्ट आदि की संभावना होते हुए भी विवश होकर किसी बात की सम्मति दी जाती है।
विध्वंस पुं० (सं) नाश। बरबादी।
विध्वंसक वि०(सं) नाश करने वाला। पुं० तीव्र गति से चलने वाला लड़ाई का जहाज (डिस्ट्रॉयर)।
विध्वंसन पुं० (सं) नाश करना। बरबाद करना।
विध्वंसित वि० (सं) नष्ट या बरबाद किया हुआ।
विध्वंसी पुं० (सं) नाश या बरबाद करने वाला। नाशकारी।
विध्वस्त वि० (सं) नष्ट किया हुआ।
विन सर्व० (हि) उस। अव्य० विना।
विनत वि० (सं) १-झुका हुआ। २-नम्र। ३-संकुचित। ४-वक्र। पुं० शिव।

विनतड़ी स्त्री० (हि) दे० 'विनति'।
विनता वि० (सं) कुबड़ी। स्त्री० १-पदुमूत्र के रोगियों को होने वाला फोड़ा। २-दक्ष की एक कन्या।
विनतानंदन पुं० (सं) गरुड़।
विनतासूनु पुं० (सं) अरुण। गरुण।
विनति स्त्री० (सं) १-सुझाव। २-नम्रता। सुशीलता ३-प्रार्थना। विनती। ४-शासन दण्ड।
विनती स्त्री० (हि) दे० 'विनती'।
विनम्र वि०(सं) १-झुका हुआ। २-विनीत। सुशील।
विनम्रकंधर वि०(सं) जिसकी ग्रीवा या गरदन झुकी हुई हो।
विनय स्त्री० (सं) १-नम्रता या। प्रणति। २-प्रार्थना। ३-शासन। ४-नीति। ५-शिक्षा।
विनयकर्म पुं० (सं) १-विनय विद्या। २-शिक्षाज्ञान।
विनयन पुं० (सं) १-विनय। नम्रता। २-शिक्षा। ३-निर्णय। ४-दूर करना।
विनयपिटक पुं०(सं) (बौद्ध) अनुशासन से सम्बन्धित नियमों का संग्रह।
विनयप्रमाथी वि०(सं) जो अनुशासन भंग करे।
विनयवाक् वि० (सं) मीठा बोलने वाला।
विनयवान् वि० (सं) जिसमें नम्रता हो। शिष्ट।
विनयशील वि० (सं) नम्र। शिष्ट।
विनयावतन वि०(सं) दे० 'विनम्र'।
विनयी वि० (सं) विनययुक्त। विनयशील।
विनवना क्रि०.(हि) नष्ट या बरबाद होना।
विनशन पुं० (सं) नष्ट होना। बरबादी।
विनशना क्रि० (हि) नष्ट होना।
विनशाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना। २-बिगड़ना। ३-विनसना।
विनश्वर वि० (सं) अनित्य। बहुत दिनों तक रहने वाला।
विनश्वरता स्त्री० (सं) अनित्यता।
विनश्वरत्व स्त्री० (सं) विनश्वरता।
विनष्ट वि०(सं) १-नष्ट। मृत। २-बिगड़ा हुआ। ३-पतित।
विनष्टचक्षु वि० (सं) जो अंधा हो गया हो।
विनष्टदृष्टि वि० (सं) जिसकी दृष्टि नष्ट हो गई हो।
विनष्टधर्म वि० (सं) (वह देश) जिसके नियम भ्रष्ट हो गये हों।
विनष्टि स्त्री० (सं) १-नाश। २-पतन। ३-लोप।
विनसना क्रि० (हि) नष्ट होना।
विनसाना क्रि० (हि) १-नष्ट करना या होना। २-बिगड़ना।
विना अव्य (सं) अभाव में। बगैर।
विनाती स्त्री० (हि) विनीत।
विनायक पुं० (सं) १-गणेश। २-गरुड़। ३-बाधा। विघ्न। ४-गुरु। ५-देवी का स्थान।
विनायककेतु पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
विनायक चतुर्थी स्त्री० (सं) माघसुदी चौथ।
विनाश पुं० (सं) १-नाश। २-लोप। ३-बिगाड़। ४-तबाही। ५-हानि।
विनाशक वि० (सं) १-विनाश करने वाला। २-बिगाड़ने वाला।
विनाशधर्मा वि० (सं) जो नष्ट होने वाला हो। क्षण-भंगुर।
विनाशन पुं० (सं) १-नष्ट करना। २-संहार करना। ३-खराब करना। ४-एक दैत्य।
विनाशयिता वि० (सं) नष्ट करने वाला।
विनाशी वि० (सं) १-नाश करने वाला। २-मारने वाला।
विनाशोन्मुख वि० (सं) जो नाश की ओर अग्रसर हो।
विनास वि० (हि) दे० 'विनाश'।
विनासक पुं० (हि) विनाशक।
विनासन पुं० (हि) दे० 'विनाशन'।
विनासना क्रि० (हि) १-नष्ट करना या होना। २-वध करना।
विनिंदक पुं० (सं) अत्यन्त निन्दा करने वाला।
विनिंदित वि० (सं) जिसकी बहुत निन्दा हुई हो। लांछित।
विनिद्र वि० (सं) १-जागा हुआ। २-खिला हुआ या फूला हुआ।
विनिद्रता स्त्री० (सं) १-जागरूकता। २-अनिद्रा की स्थिति। ३-प्रबोध।
विनिद्रत्व पुं० (सं) विनिद्रता।
विनिपतित वि०(सं) बहुत ही नीचे गिरा हुआ।
विनिपात पुं० (सं) १-विनाश। २-वध। ३-अपमान
विनिपातक वि० (सं) १-संहार करने वाला। २-विनाशकारी। ३-अपमान करने वाला।
विनिपातित वि० (सं) १-नष्ट किया हुआ। २-जिसको बहुत नीचे गिरा दिया गया हो।
विनिमय पुं० (सं) १-अदल-बदल। परिवर्तन। २-वह प्रक्रिया जिसके अनुसार अलग-अलग देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होकर आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं। (एक्सचेन्ज)।
विनिमय अधिकोश पुं० (सं) वह बैंक जिसमें एक की मुद्रा के स्थान पर दूसरे देश की मुद्रा का अदला बदला होता है। (एक्सचेन्ज बैंक)।
विनिमीलन पुं० (सं) बन्द होना। मुँदना।
विनिमीलित वि० (सं) मुँदा हुआ। जो बन्द होगया हो।
विनिमीलितेक्षण वि० (सं) जिसने आँखें बन्द करली हों।
विनिमेष पुं० (सं) आंख के झपकने की क्रिया।
विनिमेषण पुं० (सं) दे० 'विनिमेष'।

**विनियंत्रण** पुं० (सं) नियंत्रण का हटाया जाना या दूर करना। (डिकन्ट्रोल)।
**विनियताहार** वि० (सं) जो बहुत ही कम खाता है।
**विनियम** पुं० (सं) १-वह नियम जो किसी विशेष आज्ञा के अनुसार किसी प्रकार की व्यवस्था या प्रबन्ध के लिए बना हो। (रेगुलेशन)। २-शासन। ३-नियन्त्रण। रोक।
**विनियमक** वि० (सं) (किसी पंखे आदि) की रफ्तार कम या अधिक करने वाला। (रेगुलेटर)।
**विनियमन** पुं० (सं) नियमित करना। व्यवस्थापित करना। अनुशासन करना। (रेगुलेट)।
**विनियम्य** पुं० (सं) नियमित करने योग्य।
**विनियुक्त** वि० (सं) १-नियोजित। २-प्रेरित। ३-अर्पित।
**विनियोक्ता** वि० (सं) नियुक्त करने वाला।
**विनियोग** पुं० (सं) १-किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। २-व्यापार में पूँजी लगाना। (इन्वेस्टमेंट)। ३-प्रयोग में लाना। (एप्रोप्रियेशन) ४-सम्पत्ति आदि किसी प्रकार दूसरे को देना। (डिस्पोजल)।
**विनियोगविधेयक** पुं० (सं) विनियोग या उपयोजन सम्बन्धी विधेयक। (एप्रोप्रिएशन बिल)।
**विनियोगिका (वृति)** स्त्री० (सं) विनियोग करने की सूक्ष्म बुद्धि या वृति। (डिस्पोजिंग माइंड)।
**विनियोजित** वि० (सं) १-लगाया हुआ। २-अर्पित। ३-प्रेरित।
**विनियोज्य** वि० (सं) उपयोग या काम में लाया जाने वाला।
**विनिर्गत** वि० (सं) १-निकला हुआ। २-गया हुआ। निष्क्रांत। ३-बीता हुआ। अतीत।
**विनिर्दिष्ट** वि०(सं) विशेष रूप से निर्दिष्ट किया हुआ (स्पेसिफाइड)।
**विनिर्देश** पुं० (सं) विशेष रूप से किया हुआ कोई निर्देश या निश्चित रूप से बताई हुई कोई बात। (स्पेसिफिकेशन)।
**विनिर्मल** वि० (सं) जो अत्यधिक साफ या निर्मल हो।
**विनिर्मित** वि० (सं) विशेष रूप से बनाया हुआ।
**विनिर्मुक्त** वि० (सं) १-बाहर निकाला हुआ। २-अवाच्छन्न। ३-छूटा हुआ।
**विनिर्वर्तित** वि० (सं) लौटा हुआ।
**विनिवृत्त** वि० (सं) १-लौटा हुआ। २-रोका हुआ। ३-कर्म त्याग किया हुआ।
**विनिवृत्ति** स्त्री० (सं) १-रोक। बन्दी। २-अन्त। समाप्ति।
**विनिवेदित** वि० (सं) जिसकी घोषणा करदी गई हो।
**विनिश्चय** पुं० (सं) किसी विषय में (विशेषतः सभा, समिति या न्यायालय) होने वाला निर्णय या निश्चय। (डिसीजन)।
**विनिश्चायक** वि० (सं) विनिश्चय का निर्णय करने वाला। (डिसीसिव)।
**विनिषिद्ध-व्यापार** पुं० (सं) उन वस्तुओं का व्यापार जिनके आयात या निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा हुआ हो या जिन्हें युद्धग्रस्त देशों को एक तटस्थ देश द्वारा बेचना अनुचित माना गया हो। (कॉन्ट्राबैंड-ट्रेड)।
**विनीत** वि० (सं) १-सुशील। २-शिष्ट। ३-जितेन्द्रिय ४-ग्रहण किया हुआ। ५-शासित। ६-धार्मिक। ७-साफ-सुथरा।
**विनीतता** स्त्री० (सं) नम्रता। विनीत होने का भाव
**विनीतत्व** पुं० (सं) विनीतता।
**विनु** अव्य० (हि) दे० 'विना'।
**विनोक्ति** स्त्री० (सं) वह काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है।
**विनोद** पुं० (सं) १-कौतूहल। तमाशा। २-क्रीड़ा। ३-प्रमोद। परिहास। ४-प्रसन्नता। हर्ष।
**विनोदन** पुं०(सं) १-आमोद-प्रमोद करना। २-हँसी-दिल्लगी करना।
**विनोदी** वि०(सं) १-कुतूहल करने वाला। २-चुहल-बाज। ३-आनन्दी। ४-क्रीड़ाशील।
**विन्यस्त** वि० (सं) १-स्थापित। २-यथास्थान बैठा हुआ। जड़ा हुआ। ३-डाला हुआ। क्षिप्त।
**विन्यास** पुं० (सं) १-स्थापन। २-सजाना। रचना। ३-जड़ना। ४-किसी स्थान पर डालना।
**विपंच** पुं० (सं) पंचों में मतभेद होने पर विवादग्रस्त मामले का निर्णय करने वाला। (अम्पायर)।
**विपंचिका** स्त्री० (सं) दे० 'विपंची'।
**विपंची** स्त्री० (सं) १-एक प्रकार की वीणा। २-मुरली बाँसुरी।
**विपक्ष** पुं०(सं) १-विरोध या दूसरा पक्ष। २-खण्डन ३-शत्रुपक्ष। विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। ४-व्याकरण में किसी नियम के विरुद्ध व्यवस्था।
**विपक्षी** पुं० (सं) १-विरोधी। शत्रु। २-प्रतिद्वंद्वी। ३-प्रतिवादी।
**विपज्जनक** वि० (सं) विपदा उत्पन्न करने वाला।
**विपणि** पुं० (सं) १-दुकानदार। २-व्यवसायी।
**विपणी** स्त्री० (सं) १-दुकान। २-हाट। ३-व्यापार ४-व्यापार की वस्तु।
**विपत्काल** पुं० (सं) संकट का समय।
**विपत्ति** स्त्री०(सं)१-दुःख। सङ्कट। २-दुःख की स्थिति या अवस्था। बुरे दिन। (कैलेमिटी)।
**विपत्तिकर** वि० (सं) संकट पैदा करने वाला।
**विपत्तिकाल** पुं० (सं) दुःख के दिन। बुरे दिन।
**विपत्र** पुं० (सं) १-किसी बैंक या महाजन को दिया

हुआ वह पत्र जिसमें यह लिखा होता है कि अमुक दिन उधार ली हुई रकम चुका दी जायगी। हुण्डी। २–विनिमय पत्र। (बिल)।

**विपथ** पुं० (सं) १–कुमार्ग। बुरा रास्ता। २–बगल वाला रास्ता। ३–बुरी चाल। ४–रथ।

**विपथगा** स्त्री० (सं) बुरे मार्ग पर जाने वाली स्त्री। कुलटा।

**विपथगामी** वि०(सं)१–कुमार्गी। २–चरित्रहीन। बद-चलन।

**विपदा** स्त्री० (सं) विपत्ति। आफत।

**विपदाक्रांत** वि० (स) विपत्ति में फंसा हुआ।

**विपद्** स्त्री० (सं) विपत्ति। आफत। सङ्कट।

**विपद्ग्रस्त** वि० (सं) जो संकट में फंसा हुआ हो।

**विपन्न** वि० (सं) १–विपत्ति में पड़ा हुआ। २–दुखी। ३–झंझट में पड़ा हुआ। ४–भ्रम में पड़ा हुआ। ५–मृत।

**विपरिधान** पुं० (सं) सेना, पुलिस आदि के कर्मचारियों की एक सी बनी वरदी या पहनावा। (यूनिफॉर्म)।

**विपरीत** वि० (सं) १–प्रतिकूल। विरुद्ध। २–उलटा। पुं० १–एक अर्थालंकार जिसमें स्वयं साधक ही किसी सिद्धि का बाधक दिखलाया जाता है। २–सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक।

**विपरीतकारी** वि० (सं) विपरीत या विरुद्ध काम करने वाला।

**विपरीतगति** वि० (सं) उलटी ओर जाने वाला।

**विपरीतचेता** वि० (सं) जिसका दिमाग फिर गया हो जो पागल हो गया हो।

**विपरीततः भी** अव्य०(हि) उलटे क्रम से भी। (वाइस-वर्सा)।

**विपरीतता** स्त्री० (सं) विपरीत होने का भाव।

**विपरीतत्व** पुं० (सं) विपरीतता।

**विपरीतमति** वि० (सं) विपरीतचेता।

**विपरीतरति** स्त्री० (सं) एक प्रकार की रति।

**विपरीतलक्षणा** स्त्री०(सं)व्यंग या मजाक में कही गई उलटी बात।

**विपरीता** स्त्री० (सं) दुश्चरित्रा स्त्री।

**विपरीतार्थ** वि० (सं) जिसका अर्थ उलटा हो।

**विपर्णक** वि० (सं) पर्णरहित। बिना पत्तों का। पुं० टेसू।

**विपर्यय** पुं० (सं) १–उलट-पुलट। २–भूल। गलती। ३–भ्रम। ४–उलट कर फिर पहले रूप, स्थान आदि में आना। (रिवर्शन)।

**विपर्यस्त** वि० (सं) १–जो उलट-पलट गया हो। २–जिसे अमान्य या ठीक न समझ कर रद्द कर दिया गया हो। (ओवर-रूल्ड)।

**विपर्याय** पुं० (सं) किसी शब्द का उलटा अर्थ प्रकट करने वाला शब्द। (एंटोनिम)।

**विपर्यास** पुं० (सं) १–उलट-पलट। व्यतिक्रम। २–और का और। ३–एक वस्तु का दूसरे स्थान पर होना।

**विपल** पुं० (सं) एक पल का साठवाँ भाग।

**विपलायन** पुं० (सं)१–इधर-उधर भागना। २–भागना।

**विपाक** पुं०(स) १–पकना। २–पूरी अवस्था को पहुँचना। ३–परिणाम। ४–पचना। ५–स्वाद। ६–दुर्दशा।

**विपाटक** पुं० (स) खोदने या उखाड़ने वाला।

**विपाटन** पुं० (स) उखाड़ना। खोदना।

**विपादिका** स्त्री० (स) १–पहेली। २–एक कुष्ट रोग।

**विपादित** वि० (स) नष्ट किया हुआ।

**विपाशा** स्त्री० (स) पंजाब की व्यास नदी का प्राचीन नाम।

**विपिन** पुं० (सं) १–वन। जङ्गल। २–उपवन। वि० (सं) भयानक। डरावना।

**विपिनचर** पुं० (सं) १–जङ्गल में रहने वाला। २–पशु आदि। ३–जंगली आदमी।

**विपिनपति** पुं० (सं) सिंह।

**विपिनविहारी** पुं० (सं) १–वन में विहार करने वाला। २–श्रीकृष्ण।

**विपुत्र** वि० (सं) जिसके पुत्र न हो। पुत्रहीन।

**विपुल** वि० (सं) १–संख्यापरिमाण आदि में अधिक २–वृहत्। अगाध।

**विपुलता** स्त्री० (सं) आधिक्य। बहुतायत।

**विपुलत्व** पुं० (सं) विपुलता।

**विपुला** स्त्री० (सं) १–पृथ्वी। २–एक वर्णवृत्त। ३–आर्याछन्द के तीन भेदों में से एक।

**विपुलाई** स्त्री० (सं) विपुलता। अधिकता।

**विपुलेक्षण** वि० (स) बड़े नेत्र वाला।

**विपुष्ट** वि० (स) जो पुष्ट न हो। क्षीण।

**विपोहना** क्रि० (हि) १–पोतना। लीपना। २–नाश करना।

**विप्र** पुं० (सं) १–ब्राह्मण। २–पुरोहित। ३–मन्त्र वेदों का ज्ञाता। वि० (सं) बुद्धिमान।

**विप्रकृत** वि० (सं) १–जिसे क्षति पहुँची हो। २–जिस का अनादर किया हो।

**विप्रकृति** स्त्री० (स) १–क्षति। २–प्रतिशोध। बदला। ३–परिवर्तन।

**विप्रकृष्ट** वि० (सं) १–जो बहुत दूर हो। २–हराया-हुआ। ३–विस्तृत।

**विप्रचरण** पुं० (सं) विष्णु की छाती पर का भृगु मुनि की लात का चिह्न।

**विप्रच्छन्न** वि० (सं) जो छिपा हुआ हो। गुप्त।

**विप्रणाश** पुं० (सं) मृत्यु। नाश।

**विप्रतारित** वि० (सं) जिसे धोखा दिया गया हो।

विप्रतिकृत *वि०* (सं) जिसका विरोध किया गया हो।
विप्रतिपत्ति *स्त्री०* (सं) १-विरोध। २-परस्पर विरुद्ध वाक्य। ३-किसी बात का उलटा निरूपण। ४-बद-नामी।
विप्रतिपन्न *वि०* (सं) १-जो कई प्रकार से सिद्ध किया जाय। २-जिसका विरोध किया जाय।
विप्रनष्ट *वि०* (सं) विशेष रूप से नष्ट।
विप्रमत्त *वि०* (सं) अति प्रमत्त।
विप्रमोहित *वि०* (सं) जिसकी बुद्धि मारी गई हो।
विप्रयाण पुं० (सं) भागना। पलायन।
विप्रयुक्त *वि०* (सं) १-वियोजित। २-बिछड़ा हुआ। ३-मुक्त किया हुआ। ४-जिसका विभाग न हुआ हो।
विप्रयोग पुं० (सं) १-पार्थिक्य। बिलगाव। २-वियोग ३-झगड़ा। मनमुटाव।
विप्रयोगी *वि०* (सं) जो अलग होगया हो।
विप्रलंभ पुं० (सं) १-प्रिय वस्तु का न मिलना। २-वियोग। ३-छल। ४-धूर्तता। ५-बुरा काम।
विप्रलंभन पुं० (सं) छल या कपट करना।
विप्रलंभशृङ्गार पुं० (सं) वह जिसमें विरह का वर्णन होता है।
विप्रलब्ध *वि०* (सं) १-जिसे इच्छित वस्तु न मिली हो। २-प्रतारित।
विप्रलब्धा *स्त्री०* (सं) वह नायिका जो संकेत स्थान पर प्रिय को न पाकर दुःखी होती है।
विप्रलाप पुं० (सं) १-व्यर्थ की बक-बक। २-झगड़ा। विवाद। ३-कटुवचन।
विप्र-समागम पुं० (सं) ब्राह्मणों के साथ उठने-बैठने वाला व्यक्ति।
विप्रस्व पुं० (सं) ब्राह्मणों का धन या सम्पत्ति।
विप्रेषक पुं० (सं) किसी दूर रहने वाले व्यक्ति को कोई वस्तु या रुपया आदि भेजने वाला। (रेमिटर)
विप्रेषण पुं० (सं) किसी दूर के स्थान पर कोई वस्तु या रुपया पैसा डाक, तार, रेलगाड़ी आदि द्वारा भेजना। (रेमिटैंस)।
विप्रोषित *वि०* (सं) बाहर भेजा हुआ।
विप्रोषितभर्तृका *स्त्री०* (सं) वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी प्रवास में हो।
विप्लव पुं० (सं) १-उपद्रव। अशान्ति। २-विद्रोह। ३-विपत्ति। ४-बाढ़। ३-दूसरे राष्ट्र द्वारा कराया गया बलवा। ६-भभकी। ७-नाव का डूबना।
विप्लवी *वि०* (सं) उपद्रव करने वाला।
विप्लावक पुं० (सं) १-विप्लव या उपद्रव मचाने वाला। २-बलवाई। ३-जल की बाढ़ लाने वाला।
विप्लावित *वि०* (सं) १-घबड़ाया हुआ। २-बहाया हुआ। ३-जिसे नष्ट किया गया हो
विप्लुप्त *वि०* (सं) १-बिखरा हुआ। २-घबराया हुआ। ३-व्यग्र। दुःखी। ४-पतित। ५-सत के कारण किसी वस्तु के अभाव से व्याकुल।
विप्लुप्तनेत्र *वि०* (सं) जिसके नेत्रों में आँसू हों।
विप्लुप्तभावी *वि०* (सं) जो साफ न बोलता हो।
विप्लुप्ति *स्त्री०* (सं) हलचल। उपद्रव।
विप्सा *स्त्री०* (सं) दे० 'वीप्सा'।
विफल *वि०* (सं) १-जिसमें फल न आया हो। २-निष्फल। व्यर्थ। ३-जो न होने के समान हो।
विफाक पुं० (अ) १-एक राय होना। २-संघ।
विबंधन पुं० (सं) (फोड़े आदि को) कपड़े से विशेष रूप से बाधना। *वि०* जो कब्ज करे।
विबंधु *वि०*(सं) १-जिसके भाई बन्धु न हों २-अनाथ।
विबल *वि०* (सं) १-बल रहित। २-दुर्बल। ३-विशेष बलवान।
विबाधा *स्त्री०* (सं) कष्ट। क्लेश। पीड़ा।
विबुध *वि०*(सं) १-जाग्रत। जागा हुआ। २-विकसित ३-ज्ञानप्राप्त।
विबुधगुरु पुं० (सं) बृहस्पति।
विबुध-तटिनी *स्त्री०*. (सं) आकाशगंगा।
विबुधतरु पुं० (सं) कल्पवृक्ष।
विबुधद्विट् पुं० (सं) राक्षस। दैत्य।
विबुधधेनु *स्त्री०* (सं) कामधेनु।
विबुधरिपु पुं० (सं) दैत्य।
विबुधपति पुं० (सं) इन्द्र।
विबुधप्रिया *स्त्री०* (सं) देवी। भगवती।
विबुधबेलि *स्त्री०* (सं) कल्पलता।
विबुधमति *वि०* (सं) चतुर। दक्ष।
विबुधराज पुं० (सं) इन्द्र।
विबुधवन पुं० (सं) नन्दनकानन।
विबुधविलासिनी *स्त्री०*(सं) देवांगना। २- अप्सरा।
विबुधवैद्य पु० (सं) अश्विनीकुमार।
विबुधसद्म पु० (सं) स्वर्ग।
विबुधस्त्री *स्त्री०* (सं) अप्सरा।
विबुधाचार्य पुं० (सं) बृहस्पति।
विबुधाधिप पु० (सं) देवताओं का राजा इन्द्र।
विबुधापगा *स्त्री०* (सं) आकाशगंगा।
विबुधावास पुं०(सं) १-स्वर्ग। २-मन्दिर।
विबुधेश्वर पु० (सं) इन्द्र।
विबोध पुं० (सं) १-जागरण। जागना। २-अच्छा ज्ञान। ३-सावधान होना। ४-होश में आना। ५-विकाश। प्रफुल्लता।
विबोधन पुं० (सं) १-जागना। २- आँख खोलना। ३-समझाना-बुझाना।
विबोधित *वि०* (सं) १-जगाया हुआ। २-विकसित। ३-ज्ञापित।
विब्बोक पुं० (सं) दे० 'बिब्बोक'।
विभंग पुं० (सं) १-गठन या रचना। २-टूटना। ३

विभाग। ४-क्रम या परम्परा का टूटना। ५-भौं की चेष्टा। ६-मुख का भाव या चेष्टा। ७-चोट या आघात से शरीर की कोई हड्डी टूटना। (फ्रेक्चर)
**विभंज** *वि०* (सं) १-टूटना। फूटना। २-ध्वंस। नाश
**विभक्त** *वि०* (सं) १-विभाजित। बाँटा हुआ। २-अलग किया हुआ।
**विभक्ता** *वि०* (सं) १-विभाजन करने वाला। २-जो व्यवस्था करे।
**विभक्ति** *स्त्री०* (सं) १-विभाग। २-अलगाव। ३-विभाजित या अलग होने की क्रिया या भाव। ४-शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिस से उस शब्द का क्रिया पद से सम्बन्ध ज्ञात होता है (व्या०)।
**विभग्न** *वि०* (स) १-टूटा-फूटा हुआ। २-अलग हुआ
**विभव-कर** पुं० (सं) वह कर जो किसी से उसकी धन सम्पत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता हो। (सरकम्सटैनसेज-टैक्स)।
**विभज्य** *वि०* (सं) जिसका विभाग करना हो।
**विभव** पुं० (सं) १-धन। संपत्ति। २-शक्ति। ऐश्वर्य ३-सौंदर्य। ४-आधिक्य। ५-साठ संवत्सरों में से एक। ६-मोक्ष।
**विभवमद** पुं० (सं) धन का मद या अहंकार।
**विभववान** *वि०* (सं) [स्त्री० विभववती] १-धनी। अमीर। २-शक्तिशाली।
**विभवशाली** *वि०* (स) १-धनी। २-ऐश्वर्य वाला।
**विभवी** *वि०* (सं) विभववान्।
**विभांडक** पुं० (सं) एक ऋषि का नाम।
**विभांडिका** *स्त्री०* (सं) आहुल्य वृक्ष।
**विभांडी** *स्त्री०* (सं) नीलापराजिता।
**विभांति** *स्त्री०* (हिं) प्रकार। भेद। किस्म। *वि०* (सं) अनेक प्रकार का। *अव्य०* अनेक प्रकार से।
**विभा** *स्त्री०* (सं) १-प्रभा। चमक। २-प्रकाश। ३-किरण। रश्मि। ४-शोभा।
**विभाकर** पुं० (सं) १-प्रकाश वाला। २-सूर्य। ३-अग्नि। ४-राजा। ५-आक।
**विभाग** पुं० (सं) १-बँटवारा। २-अंश। ३-पुस्तक का प्रकरण। ४-सुभीते के लिए कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र। (डिपार्टमेंट)। ५-पैतृक सम्पति का अंश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय। महकमा।
**विभागक** *वि०* (सं) विभाग करने वाला।
**विभागकल्पना** *स्त्री०* (सं) हिस्से बैठाना।
**विभागतः** *अव्य०* (सं) हिस्से के अनुसार।
**विभागधर्म** पुं० (सं) बँटवारे या विभाजन से सम्बन्धित कानून।
**विभागपत्रिका** *स्त्री०*(सं) वह पत्रक जिसमें बँटवारे का पूरा ब्योरा लिखा होता है।
**विभाग-भिन्न** पुं० (सं) तक्र। छाछ।
**विभागरेखा** *स्त्री०* (सं) सीमा पर लगाई जाने वाली रेखा।
**विभागवत्** *वि०* (सं) विभाग के तुल्य।
**विभागशः** *अव्य०* (स) विभाग के अनुसार।
**विभागात्मक नक्षत्र** पुं० (सं) रोहिणी आर्द्रा आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र।
**विभागाध्यक्ष** पुं०(सं) किसी विभाग का उच्च अधिकारी। (डिपार्टमेंटल हैड)।
**विभागी** पुं० (स) १-विभाग करने वाला। २-हिस्सा पाने वाला। हिस्सेदार।
**विभाजक** पुं०(सं) १-विभाग करने वाला। २-बांटने वाला। गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी संख्या को भाग दिया जाय।
**विभाजन** पुं० (सं) १-विभाग करने या बांटने की क्रिया या भाव। २-पात्र। बर्तन।
**विभाजनघंटी** *स्त्री०* (हि) विधान सभा या संसद में किसी विधेयक पर बहस समाप्त होने पर उस पर मत जानने के लिए सदस्यों को अपने-अपने स्थान पर आ जाने की सूचना देने वाली घंटी। (डिवीजन बैल)।
**विभाजनीय** *वि०* (सं) विभाग करने या बाँटने योग्य।
**विभाजित** *वि०* (सं) जो बांटा गया हो। विभक्त।
**विभाज्य** *वि०* (सं) १-बांटा जाने योग्य। २-विभाग करने योग्य।
**विभात** पुं० (सं) प्रभात। सवेरा।
**विभाति** *स्त्री०* (सं) सुन्दरता। शोभा।
**विभाना** *क्रि०*(हि) १-चमकना। २-शोभा पाना। ३-चमकना। ४-शोभित करना।
**विभारना** *क्रि०*(हि) १-चमकना। २-झलकना।
**विभाव** पुं० (स) साहित्य में रति आदि भावों को उनके आश्रय में उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाली वस्तु या व्रत। रसविधान में भाव का उद्बोधक।
**विभावन** पुं० (सं) १-विशेष रूप से चिंतन। २-शिनाख्त। (आइडेन्टिफिकेशन)।
**विभावन-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (आइडेन्टिटी कार्ड)।
**विभावना** *स्त्री०* (सं) १-साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति, प्रतिबन्ध होते हुए भी कार्य की सिद्धि या जो जिस कार्य का कारण नहीं हुआ करता उस कार्य में उत्पत्ति, विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति अथवा कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई जाती है। २-स्पष्ट धारना। ३-प्रमाण। ४-निर्णय।
**विभावनीय** *वि०* (सं) भावना या चिन्तन करने योग्य
**विभावरी** *स्त्री०* (सं) १-रात्रि। २-वह रात जिसमें

तारे चमकते हों। ३-हल्दी। ४-दूती। ५-बहुत बोलने वाली स्त्री।
**विभावरीकांत** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**विभावरीमुख** पुं० (सं) संध्या।
**विभावरीश** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**विभावसु** वि० (सं) जिसमें प्रकाश की अधिकता हो। पुं० १-सूर्य। २-आक। ३-अग्नि।
**विभावित** वि० (सं) १-चिन्तन किया हुआ। २-कल्पित। ३-निश्चित। ४-स्वीकृत।
**विभाव्य** वि० (सं) जिसके होने की आशा या संभावना हो। जो हो सकता हो। (प्राबेबुल)।
**विभाव्यता** स्त्री० (सं) विभाव्य का भाव।
**विभाषा** स्त्री० (सं) १-व्याकरण में वे स्थल जहां ऐसे वचन पाये जायँ कि--'ऐसा न होता' आदि। २-विकल्प।
**विभाषित** वि० (सं) वैकल्पिक।
**विभास** पुं० (सं) चमक। २-सुबह का एक राग। ३-सप्तऋषियों में से एक।
**विभासक** वि० (सं) [स्त्री० विभासिका] १-चमकने वाला। २-चमकाने वाला। ३-प्रकाशित करने वाला।
**विभासना** क्रि० (हि) चमकना। झलकना।
**विभासिका** वि० (सं) चमकने वाली।
**विभासित** वि०(सं) १-चमकता हुआ। २-प्रकट।
**विभिन्न** वि० (सं) १-प्रथक। २-अनेक प्रकार का। ३-उलटा। ४-हताश। ५-कटा हुआ।
**विभिन्नता** स्त्री०(सं) पार्थक्य। अलगाव।
**विभीत** वि० (सं) डरा हुआ। पुं० (सं) बहेड़े का वृक्ष
**विभीतक** पुं० (सं) बहेड़े का वृक्ष।
**विभीति** स्त्री०(सं) १-डर। भय। २-शङ्का। सन्देह।
**विभीषक** वि० (सं)डराने वाला। भयानक।
**विभीषण** वि० (सं) बहुत डरावना। भयानक। पुं० रावण का भाई जो रामचन्द्रजी की ओर से उससे लड़ा।
**विभीषणा** वि० (सं) [स्त्री० प्र०] डरावनी। भयानक स्त्री० एक मुहूर्त का नाम।
**विभीषिका** स्त्री०(सं) १-डराना। भयभीत करना। २-भयानक कांड या दृश्य।
**विभु** वि० (सं) १-बहुत बड़ा। २-सर्वव्यापक। ३-नित्य। ४-चिरस्थाई। पुं० १-ब्रह्मा। २-आत्मा। ३-प्रभु। ४-शिव। ५-भृत्य।
**विभुक्ततु** वि० (सं) शत्रु को डराने वाला।
**विभुग्न** वि० (सं) कुछ टूटा हुआ।
**विभुता** स्त्री० (सं) १-प्रभुता। २-सर्वव्यापकता। ३-ऐश्वर्य। ४-अधिकार।
**विभूति** स्त्री० (सं) १-अधिकता। २-विभव। ३-धन-सम्पत्ति। ४-अलौकिक शक्ति। ५-लक्ष्मी। ६-प्रभुत्व ७-सृष्टि। ८-शिव के अंग में लगाने की भस्म।
**विभूतिमान** वि० (सं) १-शक्ति-सम्पन्न। २-धनवान
**विभूत्व** पुं० (सं) दे० 'विभुता'।
**विभूषण** वि० (सं) १-भूषण। गहना। २-गहनों से सजाना।
**विभूषना** क्रि० (हि) १-गहनों से सजाना। २-सुशोभित करना।
**विभूषित** वि० (सं) १-अलंकृत। २-(गुण आदि से) युक्त। ३-शोभित।
**विभेंटन** पुं० (हि) भेंटना। गले मिलना।
**विभेद** पुं० (सं) १-विभिन्नता। २-अनेक भेद। ३-विशेष रूप से किया किया गया भेद (डिसक्रिमिनेशन)। ४-भेदन करना। ५-कटाव। दरार। ६-मिश्रण।
**विभेदक** पुं० (सं) १-भेदन करने वाला। २-एक से दूसरे की विशेषता प्रकट करने वाला।
**विभेदकारी** वि० (सं) १-कटने वाला। २-भेद करने वाला। ३-फूट डालने वाला।
**विभेदन** पुं० (सं) १-काटना। तोड़ना। ३-धंसाना। ३-अलग-अलग करना। ४-भेद दिखाना या डालना।
**विभेदना** क्रि० (हि) १-भेद न करना। २-काटना। ३-प्रवेश करना। ४-भेद डालना।
**विभेदी** वि० (सं) १-काटने या छेदने वाला। २-२-धंसने वाला। ३-भेद करने वाला।
**विभेदीकरण** पुं० (सं) व्यवहार आदि में एक को अपेक्षा दूसरे से भेद भाव करना। (डिसक्रिमिनेशन)।
**विभेद्य** वि० (सं) भेदने या छेदने योग्य।
**विभोर** वि० (हि) १-विह्वल। विकल। ३-मग्न। ३-मस्त।
**विभौ** पु० (हि) दे० 'विभव'।
**विभ्रम** पुं० (सं) १-भ्रमण। २-भ्रम। ३-सन्देह। ४-घबराहट। ५-शोभा। ६-स्त्रियों का एक भाव जिसमें प्रियतम को देख कर हर्ष के कारण गहने उलटे पहन लेती हैं।
**विभ्रांत** वि० (सं) १-भ्रम में पड़ा हुआ। २-घूमता हुआ।
**विभ्रांतमना** वि० (सं) जिसकी बुद्धि मारी गई हो।
**विभ्रांति** स्त्री० (सं) १-चक्कर। फेरा। २-भ्रम। ३-घबराहट।
**विभ्राजित** वि० (सं) जो चमकाया गया हो।
**विभ्राट** पुं० (सं) १-आपत्ति। संकट। २-बखेड़ा। उपद्रव। वि० प्रकाशमान्।
**विमंडन** पुं० (सं) १-शृंगार करना। सजाना। २-भूषण। अलकार।
**विमंडित** वि० (सं) १-सजा हुआ। २-सहित। युक्त ३-सुशोभित।

**विमंथन** पुं० (सं) खूब मथना।
**विमंथित** वि० (सं) अच्छी प्रकार से मथा हुआ।
**विमत** पुं०(सं) १-विपरीत सिद्धांत। २-विपक्ष में दिया जाने वाला मत।
**विमत-टिप्पणी** स्त्री० (सं) किसी विषय की जांच आदि के लिए बनाई गई समिति के सदस्यों द्वारा किये गये प्रतिवेदन से अपना विरोध प्रकट करने के लिए किसी सदस्य या सदस्यों द्वारा अलग से जोड़ा गया वक्तव्य। (मिनट आफ डिसेन्ट)।
**विमद** वि० (सं) १-जो मतवाला न हो। मद रहित। २-(वह हाथी) जिसमें मद न हो।
**विमन** वि० (सं) १-उदास। खिन्न। २-अनमना।
**विमर्द** पुं० (सं) १-खूब मर्दन करना। २-उबटन करना। ३-स्पर्श। ४-नाश। ५-युद्ध। ६-ग्रहण।
**विमर्दक** वि० (सं) १-मसल डालने वाला। २-ध्वस्त करने वाला।
**विमर्श** पुं० (सं) १-किसी बात का विवेचन। २-आलोचना। समीक्षा। ३-परामर्श। ४-परीक्षा।
**विमर्शन** पुं०(सं) आलोचना अथवा विवेचना करना। तर्क।
**विमर्शी** वि० (सं) आलोचना अथवा विवेचना करने वाला।
**विमर्ष** पुं० (सं) १-विचार या विवेचन। २-आलोचना। ३-परीक्षा। ४-परामर्श। ५-नाटक की पांच संधियों में से एक।
**विमल** वि० (सं) १-स्वच्छ। २-पवित्र। ३-सुन्दर। ४-पारदर्शक।
**विमला** वि० (सं) निर्मल। स्वच्छ। स्त्री० (सं) १-एक भूमि। २-सरस्वती। ३-चांदी आदि का मुलम्मा।
**विमलापति** पुं० (सं) विष्णु।
**विमांस** पुं० (सं) अपवित्र या न खाने योग्य मांस।
**विमाता** स्त्री० (सं) सौतेली मां।
**विमातृज** पुं० (सं) सौतेला भाई।
**विमान** पुं० (सं) १-उड़नखटोला। आकाश मार्ग से गमन करने वाला रथ। २-वृद्ध मनुष्य की धूम-धाम से निकाली गई अर्थी। ३-हवाई जहाज। (एअरोप्लेन)। ४-रथ। घोड़ा। ५-सात खण्ड का मकान। ६-परिमाण। ७-अनादर।
**विमानकर्मी** पुं० (सं) विमान या हवाई जहाज पर काम करने वाले कर्मचारी। (एयर क्रू)।
**विमानघर** पुं० (सं) विमान खड़ा करने का घर। (हेंगर)।
**विमानचारी** वि० (सं) विमान द्वारा यात्रा करने वाला।
**विमानचालक** पुं० (सं) हवाई जहाज या विमान चलाने वाला। (पाइलट)।
**विमानचालन** पुं० (सं) विमान या हवाई जहाज चलाने की क्रिया। (एविियेशन)।
**विमानचालन विज्ञान** पुं० (सं) विमान या हवाई जहाज चलाने की विद्या। (एयरोनॉटिक्स)।
**विमानवाहकपोत** पुं० (सं) अनेक हवाई जहाजों को ले जाने वाला समुद्री जहाज जिसकी लम्बी चौड़ी छत पर हवाई जहाज उतर सकते हैं तथा ऊपर उड़ सकते हैं। (एयर क्राफ्ट कैरियर)।
**विमानवेधी तोप** स्त्री० (हि) एक प्रकार की तोप जो हवाई जहाजों को गोली मारकर नीचे गिरा सकती है। (एन्टी एयरक्राफ्ट गन)।
**विमान सेनाधिकारी** पुं० (सं) किसी वायु सेना की टुकड़ी का नायक। (विंग कमांडर)।
**विमानना** स्त्री० (सं) १-तिरस्कार। २-अपमान।
**विमानास्थान** पुं० (सं) हवाई जहाज के उतरने या ठहरने का स्थान या केन्द्र। (एयरवेज)।
**विमानित** वि० (सं) जिसका आदर किया गया हो। तिरस्कृत।
**विमानीकृत** वि० (सं) १-हवाई जहाज या विमान बनाया हुआ। २-अपमानित।
**विमार्ग** पुं० (सं) १-बुरी चाल या रास्ता। २-झाड़ू।
**विमार्गगा** स्त्री० (सं) बुरे मार्ग पर चलने वाली स्त्री। कुलटा।
**विमार्गगामी** वि० (सं) बुरी राह पर जाने वाला।
**विमार्जन** पुं० (सं) १-साफ करना। २-पवित्र करना।
**विमुक्त** वि० (सं) १-अच्छी तरह मुक्त। २-स्वतंत्र। स्वच्छन्द। ३-त्यक्त। ४-बरी। ५-दण्ड आदि से बचा हुआ।
**विमुक्तकंठ** वि०(सं) अधिक जोर से रोने या चिल्लाने वाला।
**विमुक्तशाप** वि० (सं) जिसे किसी शाप से छुटकारा मिल गया हो।
**विमुक्ति** स्त्री० (सं) १-छुटकारा। रिहाई। २-मुक्ति मोक्ष। ३-अभियोग से छूटना।
**विमुक्तिपथ** पुं० (सं) स्वर्ग या मोक्ष का पथ।
**विमुख** वि० (सं) १-विरत। २-जिसके मुख न हो। ३-विरुद्ध। ४-निराश। ५-जो अनुरक्त न हो।
**विमुग्ध** वि० (सं) १-मोहित। २-भ्रांत। ३-घबराया हुआ। ४-मतवाला। ५-पागल।
**विमुग्धक** पुं० (सं) १-मोहित करने वाला। २-एक प्रकार का छोटा अभिनय। नकल।
**विमुग्धकारी** पुं० (सं) १-मोहने वाला। २-भ्रम में डालने वाला।
**विमुद** वि० (सं) उदास। खिन्न।
**विमुद्रीकरण** पुं० (सं) किसी नोट या सिक्के का मुद्रा के रूप में चलना बन्द करना। (डीमोनेटाइजेशन)
**विमूढ़** वि० (सं) १-विशेष रूप से मोहित। २-बेसुध

३-ज्ञानरहित। ४-नादान।

**विमूढक** पुं० (सं) नाटक में एक प्रहसन।

**विमूढगर्भ** पुं० (सं) वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो।

**विमूढचेता** वि० (सं) जिसमें समझ न हो। मूर्ख।

**विमूढभाव** पुं० (सं) अचेत होने की अवस्था या भाव।

**विमूर्च्छ** वि० (सं) जिसे होश आ गया हो।

**विमूल** वि० (सं) १-निर्मूल। नष्ट। २-बिना जड़ का।

**विमूलन** पुं० (सं) १-जड़ से उखाड़ना। २-ध्वंस।

**विमृश्य** वि० (सं) आलोचना या समीक्षा के योग्य।

**विमोक्ता** पुं० (सं) मुक्त करने वाला।

**विमोक्ष** पुं० (सं) १-बन्धन का खुलना। २-मुक्ति। छुटकारा ३-निर्वाण। ४-उग्रह। ५-प्रक्षेपण।

**विमोक्षण** पुं० (सं) १-बन्धन आदि खोलना। २-मुक्त करना।

**विमोघ** वि० (सं) न चूकने वाला। अमोघ।

**विमोचक** वि० (सं) मुक्त करने वाला। छोड़ने वाला।

**विमोचन** पुं० (सं) १-बन्धन आदि से छूटना। २-संदिग्ध प्रमाणों के कारण अभियोग से मुक्त होना। (एक्विटल)। ३-किसी आवर्तक भार देने से छूटने के लिए एक ही बार में कुछ इकट्ठा धन देना। (रिडम्पशन) ४-निकालना। ५-गिरना।

**विमोचना** क्रि० (हि) १-छुटकारा देना। २-निकालना। ३-गिराना।

**विमोचनीय** वि० (सं) छोड़ने योग्य।

**विमोचित** वि० (सं) १-खुला हुआ। २-मुक्त किया हुआ।

**विमोह** पुं० (सं) १-मोह। अज्ञान। २-एक नाटक का नाम। ३-बेहोशी।

**विमोहक** पुं० (सं) १-मुग्ध करने वाला। २-साधु [illegible] वाला। ३-ललचाने वाला।

**विमोहन** पुं० (सं) १-मुग्ध करना। २-सुधबुध भूलना। ३-दूसरे को वश में करना। ४-एक नरक।

**विमोहनशील** वि० (सं) १-धोखा देने वाला। २-लुभाने वाला।

**विमोहना** क्रि० (हि) १-मोहित होना। २-बेसुध होना। ३-धोखे में डालना। ४ बेसुध करना।

**विमोहित** वि० (सं) १-मुग्ध। लुभाया हुआ। २-मूर्छित।

**विमोही** वि० (सं) १-मोहित करने वाला। २-भ्रम में डालने वाला। ३-निष्ठुर। ४-बेहोश करने वाला।

**विमौट** पुं० (हि) बाँबी। वाल्मीक।

**विरुपाग** पुं० (हि) शिव।

**विय** वि० (हि) १-दो। जोड़ा। २-दूसरा।

**वियत्** पुं० (सं) १-आकाश। २-वायुमंडल।

**वियत्पताका** स्त्री० (सं) बिजली। विद्युत।

**वियद्गंगा** स्त्री० (सं) आकाशगंगा।

**वियन्मणि** पुं० (सं) सूर्य।

**वियुक्त** वि० (सं) १-जिसका वियोग हुआ हो। २-अलग। ३-रहित। (माइनस)।

**वियो** वि० (हि) दूसरा। अन्य।

**वियोग** पुं० (सं) १-अलग होना। २-विरह। ३-अलग होने का दुःख। ४-कम किया जाना।

**वियोगशृङ्गार** पुं० (सं) दे० 'विप्रलंभशृंगार'।

**वियोगांत** वि० (सं) जिसकी कथा का अन्त दुख पूर्ण हो (नाटक, कथा आदि)।

**वियोगावसान** वि० (सं) जिसकी मृत्यु या अन्त विरह में हो।

**वियोगिन** स्त्री० (सं) दे० 'वियोगिनी'।

**वियोगिनी** वि० (सं) जो अपने प्रेमी से बिछुड़ गई हो।

**वियोगी** वि० (सं) अपनी प्रेमिका से बिछुड़ा हुआ विरही। पुं० १-विरही व्यक्ति। २-चकवा।

**वियोजक** पुं०(सं) १-पृथक करना। २-गणित में वह संख्या जिसे दूसरी संख्या में से घटाना हो।

**वियोजन** पुं० (सं) १-किसी वस्तु के संयोजक अंगों को अलग करना। २-गणित में बाकी। ३-युद्ध काल में बढ़े सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना। (डिमिलिटेराइजेशन)।

**वियोजित** वि० (सं) अलग किया हुआ। रहित।

**वियोज्य** वि०(सं) जिसे अलग करना हो। पुं० गणित में वह संख्या जो घटती हो।

**विरंग** वि० (हि) १-बदरङ्ग। २-अनेक रंगों का।

**विरंच** पुं० (सं) ब्रह्मा।

**विरंचि** पुं० (सं) सृष्टि रचने वाला ब्रह्मा।

**विरंजन** पुं० (सं) वह प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु के सब रंग निकल जायँ। (ब्लीचिंग)।

**विरक्त** वि० (सं) १-विमुख। २-अप्रसन्न। खिन्न। ३-उदासीन। पुं० (सं) ऐसे बाजे जो केवल ताल देने के काम आते है।

**विरक्ति** स्त्री० (सं) १-विराग। २-उदासीन। ३-अप्रसन्नता।

**विरचन** पुं० (सं) १-निर्माण। २-तैयारी।

**विरचना** क्रि० (हि) १-निर्माण करना। २-सजाना। ३-विरक्त होना।

**विरचयिता** पुं० (सं) रचने या बनाने वाला।

**विरचित** वि० (सं) १-निर्मित। २-रचा हुआ। लिखा हुआ।

**विरजस** वि० (सं) निर्मल। स्वच्छ। स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसे रजोदर्शन न होता हो।

**विरजा** स्त्री० (सं) दे० 'विरजस्'।

**विरत** वि० (सं) १-विमुख। २-निवृत्त। ३-विरक्त। वैरागी। ४-लीन। ५-कार्य या पद से हटा हुआ।

(रिटायर्ड)।

**विरति** स्त्री० (सं) १-उदासीनता। २-विरत होने का का भाव। ३-कार्य, पद, या सेवा से अलग होना। (रिटायर्मेन्ट)।

**विरथ** वि० (सं) १-जिसके पास सवारी न हो। २-पैदल। ३-रथ से घिरा हुआ।

**विरद** पुं० (हि) १-बड़ा नाम। २-यश। ख्याति। वि० (सं) बिना दाँत का।

**विरदावली** स्त्री० (हि) प्रशंसा या यश के गीत।

**विरदैत** वि० (हि) बड़े नाम वाला। यश वाला।

**विरमण** पुं० (सं) १-रुकना। ठहरना। २-रम जाना।

**विरमना** क्रि० (हि) १-अनुरक्त हो जाना। २-रुकना ३-वेगादि का थमना या कम होना।

**विरमाना** क्रि० (हि) १-अनुरक्त करना। २-मोहित करके रोकना। ३-फँसा रखना।

**विरल** वि० (सं) १-जो घना न हो। २-जो अधिकता से न मिले। ३-पतला। ४-अल्प। ५-दुर्लभ।

**विरलित** वि० (सं) जो घना न हो।

**विरव** वि० (सं) नीरव। शब्दरहित। पुं० (सं) अनेक प्रकार के शब्द।

**विरस** वि० (सं) १-नीरस। फीका। २-अरुचिकर। ३-(वह काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो पुं० (सं) काव्य रसभङ्ग।

**विरह** पुं० (सं) १-किसी से अलग होने का भाव। २-वियोग। ३-दुःख वि० (सं) रहित।

**विरहज** वि० (सं) विरह से उत्पन्न।

**विरहजन्य** वि० (सं) विरहज।

**विरहज्वर** पुं० (सं) वियोग से उत्पन्न ताप।

**विरहाग्नि** स्त्री० (सं) दे० 'विरहाग्नि'।

**विरहाग्नि** स्त्री० (सं) विरह की अग्नि।

**विरहानल** पुं० (सं) दे० 'विरहाग्नि'।

**विरहिणी** वि० (सं) जिसे अपने प्रेमी या पति का वियोग हो।

**विरहित** वि० (सं) रहित। शून्य। बिना।

**विरही** वि० (हि) वियोगी।

**विरहोत्कंठिता** स्त्री० (सं) वह नायिका जिसका प्रेमी नियत समय पर कारणवश न आ सके।

**विराग** पुं० (सं) १-रुचि या इच्छा का अभाव। २-उदासीन भाव। ३-वैराग्य। ४-एक में मिले हुए दो राग।

**विरागी** वि० (हि) १-जिसे चाह न हो। उदासीन। २-विरक्त। संसार त्यागी।

**विराजना** क्रि० (हि) १-शोभित होना। फबना। २-बैठना। ३-विद्यमान होना (आदरसूचक)।

**विराजमान** वि० (सं) १-प्रकाशमान। चमकता हुआ २-उपस्थित। ३-बैठा हुआ।

**विराजित** वि०(सं) १-सुशोभित। २-प्रकाशित। उपस्थित।

**विराट** पुं० (सं) १-मत्स्यदेश। २-इस देश के राजा ३-महाभारत का एक पर्व। ४-संगीत में एक ताल का नाम।

**विराट्** पुं० (सं) १-विश्वरूप ब्रह्म। २-विश्व। ३-क्षत्रिय। ४-कीर्ति। (सं) बहुत भारी।

**विराम** पुं० (सं) १-रुकना। ठहरना। २-विश्राम। ३-वाक्य में वह स्थान जहां बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है। ४-यति।

**विरामकाल** पुं० (सं) वह समय या छुट्टी जो विराम करने के लिए मिलती है।

**विरामण** पुं० (सं) रुकाव। ठहराव।

**विरामसंधि** स्त्री० (सं) किसी कारण से कुछ काल के लिए युद्ध बन्द करने की संधि। (ट्रूस)।

**विराल** पुं० (सं) विड़ाल। बिल्ली।

**विराव** पुं०(सं) १-शब्द। बोली। कलरव। २-हल्ला-गुल्ला। वि० शब्दरहित।

**विरास** पुं० (हि) दे० 'विलास'।

**विरासत** स्त्री० (हि) दे० 'वरासत'।

**विरासी** वि० (हि) दे० 'विलासी'।

**विरिंच** पुं० (सं) दे० 'विरिंचि'।

**विरिंचि** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव।

**विरिक्त** वि० (सं) १-बिलकुल साफ किया हुआ। २-जिसे दस्त कराये गये हों।

**विरुज** वि० (सं) स्वस्थ। नीरोग।

**विरुझना** क्रि० (हि) दे० 'उलझना'।

**विरुझाना** क्रि० (हि) १-उलझाना। २-उलझ..। ३-मचलना।

**विरुत** वि० (सं) कूजित। स्वयुक्त। गूंजता हुआ।

**विरुद** पुं० (सं) १-राजाओं की स्तुति। यशवर्णन। २-यश। ३-प्राचीन राजाओं की एक पदवी।

**विरुदावली** स्त्री० (सं) कीर्ति या यश का विस्तृत रूप में गान।

**विरुद्ध** वि०(सं) १-प्रतिकूल। खिलाफ। २-अप्रसन्न ३-अनुचित। ४-विपरी। ५-खिलाफ।

**विरुद्धता** स्त्री० (सं) १-विरुद्ध होने का भाव। २-विपरीतता। उलटापन।

**विरुद्धाचरण** पुं० (सं) बुरा आचरण। बुरा या प्रतिकूल कर्म।

**विरुद्धासन** पुं० (सं) वह आहार जिसे वर्जित कर दिया गया हो।

**विरुद्धोक्ति** स्त्री० (सं)१-झगड़ा। कलह। २-प्रतिकूल वचन।

**विरूक्ष** वि० (सं) जो रूखा न हो।

**विरूढ़** वि० १-चढ़ा हुआ। आरूढ़। २-उगा हुआ। अङ्कुरित। ३-खूब गढ़ा हुआ।

**विरूप** वि० (सं) १-अनेक रंग रूपों वाला। २-भद्दा

३-परिवर्तित। ४-शोभाहीन। ५-विरुद्ध। पुं० (सं) १-कुरूप शकल। २-पांडु रोग। ३-शिव।
**विरूपक** वि० (सं) १-कुरूपा। भद्दा। २-अनुचित।
**विरूपता** स्त्री० (सं) १-विरूप होने का भाव। २-कुरूपता। भद्दापन।
**विरूपाक्ष** वि० (सं) जिसकी आँखें डरावनी या भद्दी हों। पुं० (सं) १-शिव। २-एक नाग। ३-शिव का एक अनुचर।
**विरेचक** वि० (सं) दस्तावर।
**विरेचन** पुं० (सं) १-जुलाब। २-दस्त लाना। ३-निकालना।
**विरोद्धा** वि० (सं) जो विरोध करता हो।
**विरोध** पुं० (सं) १-मेल न होना। २-शत्रुता। ३-व्याघात। ४-किसी कार्य को रोकने का प्रयत्न। ५-भिन्न-भिन्न विचारों में होने वाला पारस्परिक विपरीत भाव। (रिपगनेन्सी)। ६-उलटी स्थिति ७-नाश। ८-एक अर्थालंकार। ९-नाटक का वह अंग जिसमें विपत्ति का आभास दिखाया जाता है।
**विरोधक** वि० (सं) विरोध करने वाला।
**विरोधकारक** वि० (सं) झगड़ा पैदा करने वाला।
**विरोधकारी** वि० (सं) कलह या मनमुटाव बढ़ाने वाला।
**विरोधकृत** वि० (सं) जो विरोध करता हो।
**विरोधक्रिया** स्त्री० (सं) कलह। झगड़ा।
**विरोधन** पुं० (सं) १-विरोध करना। २-नाश। ३-असमंजस्य। ४-बाधा। वि० (सं) विरोध करने वाला।
**विरोधना** क्रि० (हि) विरोध, शत्रुता या लड़ाई करना।
**विरोधपरिहार** पुं० (सं) विरोध या झगड़ा दूर करना।
**विरोधाभास** पुं० (सं) १-दो बातों में दिखाई देने वाला विरोध। २-एक अर्थालंकार।
**विरोधित** वि० (सं) जिसका विरोध किया गया हो।
**विरोधिता** स्त्री० (सं) १-शत्रुता। विरोध। २-नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। (फ० ज्यो०)।
**विरोधी** वि० (हि) १-विरोध करने वाला। २-विपक्षी ३-शत्रु। पुं० (सं) साठ संवत्सरों में से एक।
**विरोपित** वि० (सं) (पौधा) जो रोपा या लगाया गया हो।
**विरोपितव्रण** वि० (सं) जो घाव भर गया हो।
**विरोमा** वि० (सं) बिना रोम या रोएँ का।
**विलंघना** स्त्री० (सं) १-लांघ कर पार करना। २-हराना।
**विलंघनीय** वि० (सं) १-लांघने या पार करने योग्य। २-परास्त करने योग्य।
**विलंघ्य** वि०(सं) १-पार करने योग्य। २-परास्त होने योग्य। ३-सहज।
**विलंब** पुं० (सं) बहुत काल। साधारण या नियत से अधिक समय। देर। (डिले)।
**विलंबकारी-प्रस्ताव** पुं० (सं) विधान सभा आदि में उपस्थित किया जाने वाला ऐसा प्रस्ताव जिसका उद्देश्य किसी विधेयक आदि या सभा के सामने उपस्थित विषय की कार्रवाई के समाप्त होने में देर लगे। (डाइलेटरी मोशन)।
**विलंबन** पुं० (सं) १-विलम्ब या देर करना। २-लटकना। ३-सहारा पकड़ना।
**विलंबना** क्रि० (हि) १-देर करना। २-लटकाना। ३-सहारा लेना।
**विलंबित** वि० (सं) १-जिसमें देरी हुई हो। २-लटकता हुआ। ३-मन्दगति से गाया जाने वाला (गाना)। पुं० चलने में सुस्त पशु जैसे—हाथी, भैंस तथा गैंडा।
**विलंब करना** क्रि० (हि) कोई प्रश्न, विचार आदि को किसी आने वाली तिथि या समय के लिए स्थगित कर देना। (पोस्टपोन)।
**विलक्षण** वि० (सं) १-अद्भुत। अनोखा। २-असाधारण।
**विलक्षणता** स्त्री० (सं) अपूर्वता। अनोखापन।
**विलक्षित** वि० (सं) १-जो अच्छी प्रकार से सुना या समझा गया हो। २-जिसका कोई चिह्न न हो। ३-जिसका कोई भेद न किया गया हो।
**विलक्ष्य** वि० (सं) १-लक्ष्य या निशाना चूक जाने वाला (बाण)। २-बिना किसी लक्ष्य के।
**विलखना** क्रि० (हि) १-दुखी होना। बिलखना। २-देखना। पता पाना।
**विलखाना** क्रि० (हि) विकल करना।
**विलग** वि० (हि) अलग। पृथक। पुं० अन्तर। फरक भेद।
**विलगाना** क्रि० (हि) १-अलग होना। २-विभक्त या अलग दिखाई देना। ३-अलग करना।
**विलग्न** वि० (सं) १-चिपटा हुआ। २-घुमाया हुआ ३-बीता हुआ। ४-पतला। नाजुक। पुं० १-कमरा २-कूल्हा।
**विलग्नमध्या** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी कमर पतली हो।
**विलच्छन** वि० (हि) दे० 'विलक्षण'।
**विलज्ज** वि० (सं) निर्लज्ज। बेहया। बेशर्म।
**विलज्जित** वि० (सं) जो शर्मिन्दा हो। लजाया हुआ।
**विलपन** पुं० (सं) विलाप। रुदन।
**विलपना** क्रि० (हि) रोना। विलाप करना।
क्रि० (हि) रुलाना।
**विलपित** वि० (सं) विलाप करते हुए।
**विलय** पुं० (सं) १-लीन होना। २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु में समा जाना। ३-घुल या गल जाना ४-विघटित होना। ५-किसी रियासत आदि का

पास के इलाके के साथ मिल जाना। (मर्जर)। ६-लोप होना।
**विलयन** पुं० (सं) दे० 'विलय'।
**विलसन** पुं० (सं) १-चमकना। १-क्रीड़ा। प्रमोद।
**विलसना** क्रि० (हि) १-शोभा पाना। २-क्रीड़ा करना। ३-आनन्द मनाना।
**विलसाना** क्रि०(हि) भोगना। आनन्द मनाना।
**विलसित** वि० (हि) १-हर्षित। २-शोभित।
**विलाप** पुं० (सं) रोकर दुःख प्रकट करना। रोना। रुदन।
**विलापना** क्रि० (हि) १-विलाप या शोक करना। २-२-वृक्ष रोपना या लगाना।
**विलापी** वि० (सं) रोने वाला।
**विलायत** स्त्री० (अ) १-विदेशी। २-दूर का देश।
**विलायती** वि० (अ) १-विदेशी। २-दूसरे देश का बना हुआ।
**विलायती-डाक** स्त्री०(अ) योरोप से आने वाली डाक
**विलायती बैंगन** पुं०(हि) एक प्रकार के सफेद रङ्ग का बैंगन।
**विलास** पुं० (सं) १-मनोविनोद। २-आनन्द। हर्ष ३-कोई मनोहर चेष्टा। ४-यथेष्ट सुख भोगना। ५-स्त्रियों की पुरुषों के प्रति अनुरागयुक्त चेष्टाएँ।
**विलासक** पुं० (सं) इधर-उधर फिरने वाला।
**विलासकोदंड** पुं० (सं) कामदेव।
**विलासगृह** पुं० (सं) प्रमोद या क्रीड़ागृह।
**विलासचाप** पुं० (सं) कामदेव।
**विलासधन्वा** पुं० (सं) कामदेव।
**विलासन** पुं० (सं) १-चमकने की क्रिया।
**विलासमंदिर** पुं० (सं) विलासगृह।
**विलासिनी** स्त्री० (सं) १-सुन्दरी युवा स्त्री। २-वेश्या ३-एक वर्णवृत्त।
**विलासी** वि० (सं) १-कामी। २-आमोद-प्रमोद में लगा रहने वाला।
**विलीक** वि० (हि) अनुचित।
**विलीन** वि० (सं) १-लुप्त। अदृश्य। २-मिला हुआ। ३-नष्ट। ४-छिपा हुआ।
**विलीयन** पुं० (सं) १-पिघलना। २-घुलना।
**विलुंठन** पुं० (सं) १-चोरी करना। २-लूटना।
**विलुंठित** वि० (सं) १-जो चोरी किया गया हो। २-लौटा हुआ।
**विलुप्त** वि० (सं) १-अदृश्य। लुप्त। २-नष्ट।
**विलुप्तवित्त** वि० (सं) जिसका धन लूट लिया गया हो
**विलुलित** वि० (सं) १-चंचल। अस्थिर। २-लहलहाता हुआ।
**विलेख** पुं० (सं) १-विचार। २-सोच-विचार। ३-वह साधन पत्र जिसमें दो पक्षों में होने वाला अनुबन्ध लिखा हो जो निष्पादक के द्वारा हस्तान्तरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो। (डीड)।
**विलेखन** पुं० (सं) १-नदी का मार्ग। २-खरोंचना। ३-फाड़ना। ४-विभाग करना।
**विलेप** पुं० (सं) १-लेप। २-गारा। पलस्तर।
**विलेपन** पुं० (सं) १-लेप करना। २-लेप करने का पदार्थ।
**विलेपनी** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसने सुगन्धित लेप लगा रखा हो।
**विलेपी** वि० (सं) १-लेप करने वाला। २-पलस्तर करने वाला। ३-लसदार।
**विलेप्य** वि० (सं) जिसका पलस्तर या लेप किया गया हो।
**विलेवासी** पुं० (सं) सर्प।
**विलेशय** पुं० (सं) १-वह जीव जो बिल या दरार में रहता है। २-सर्प।
**विलोकन** पुं० (सं) १-देखना। २-जानकारी प्राप्त करना। ३-विचार करना।
**विलोकना** क्रि०(हि) १-देखना। २-अवलोकन।
**विलोकनि** स्त्री० (हि) दे० 'विलोकना'।
**विलोकनीय** वि० (सं) देखने योग्य।
**विलोकी** वि० (सं) १-देखने वाला। २-जानकारी प्राप्त करने वाला।
**विलोचन** पुं० (सं) १-नेत्र। नयन। २-एक नरक का नाम। ३-आँख फोड़ने की क्रिया।
**विलोचनपथ** पुं० (सं) दृष्टिपथ।
**विलोचनांबु** पुं० (सं) आँसू।
**विलोडक** पुं० (सं) चोर।
**विलोडन** पुं० (सं) १-हिलना। डुलना। २-बिलोना मथना।
**विलोड़ना** क्रि० (हि) दे० 'बिलोड़ना'।
**विलोड़ित** वि० (सं) १-हिलाया हुआ। २-मथा हुआ बिलोया हुआ। पुं० (सं) छाछ। मठा।
**विलोना** क्रि० (हि) दे० 'बिलोना'।
**विलोप** पुं० (सं) १-किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २-रद्द करना। (कैंसलेशन)। ३-किसी वाक्य या रचना का कुछ अंश निकालना। (ओमीशन)। ४-बाधा। ५-आघात। ६-लोप। ७-नाश।
**विलोपना** क्रि० (हि) १-नष्ट या लुप्त करना। २-लेकर भागना।
**विलोपित** वि० (सं) १-लुप्त किया हुआ। २-नष्ट या भङ्ग किया हुआ।
**विलोपी** वि० (सं) नाश करने वाला। भङ्ग करने वाला।
**विलोपीकरण** पुं० (सं) रद्द या प्रभावहीन बना देना (रिपील)।
**विलोप्य** वि० (सं) भङ्ग करने या नाश करने योग्य।
**विलोभन** पुं० (सं) १-लोभ दिखाना। २-मोहित या

आकर्षित करना। ३-ललचाना।
**विलोम** *वि०* (सं) विपरीत। उलटा। पुं० (सं) १-नीचे की ओर आने का क्रम। २-सर्प। ३-वरुण। ४-रहट। ५-कुत्ता।
**विलोमा** *वि०* (सं) १-नीचे की ओर या उलटा मुड़ा हुआ। २-जिसके केश न हों।
**विलोमित** *वि०* (सं) उलटा हुआ। नीचे की ओर मुड़ा हुआ।
**विलोमी** *स्त्री०* (सं) आंवला।
**विलोल** *वि०* (सं) १-चञ्चल। २-सुन्दर।
**विलोलतारक** *वि०* (सं) चंचल नेत्र वाला।
**विलोललोचन** *वि०* (सं) जिसकी आँखों में आंसू हों
**विलोलहार** *वि०* (सं) जिसका हार हिल रहा हो।
**विलोलित** *वि०* (सं) १-क्षुब्ध किया हुआ। २-हिलाया हुआ।
**विलोलितदृक्** *वि०* (सं) जिसके नेत्र चंचल हों।
**विलोलुप** *वि०* (सं) १-जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो। २-जो लालची न हो।
**विल्व** पुं० (सं) बेल का पेड़।
**विवंधक** पुं० (सं) १-कोष्ठबद्धता। २-रोकने वाला
**विव** *वि०* (हि) दे० 'विवि'
**विवक्ता** पुं० (सं) १-कहने वाला। २-संशोधन करने वाला। ३-किसी बात को प्रकट करने वाला।
**विवक्षा** *स्त्री०* (सं) १-कहने की इच्छा। २-अर्थ। तात्पर्य। ३-फल या परिणाम रूप में होने वाली बात (इम्प्लिकेशन)।
**विवक्षित** *वि०* (सं) १-जिसके कहने की इच्छा हो। २-इच्छित। अपेक्षित।
**विवक्षु** *वि०* (सं) बोलने या कोई बात कहने की इच्छा वाला।
**विवदना** *क्रि०* (हि) विवाद करना। झगड़ना।
**विवर** पुं० (सं) १-छिद्र। छेद। २-बिल। ३-दरार ४-गुफा। कन्दरा।
**विवरण** पुं० (सं) १-किसी बात या कार्य से संबंधित मुख्य बातों का वर्णन। वृत्तान्त। हाल। (आउट डिस्क्रिप्शन)। २-व्याख्या। टीका।
**विवरण पत्रिका** *स्त्री०* (सं) किसी विद्यालय, परीक्षा, आदि की नियमावली या पाठ्यक्रम आदि की सूचना देने वाली पुस्तक। (प्रोस्पेक्टस)।
**विवरणिका** *स्त्री०* (सं) सभा, संस्थाओं, या घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिये भेजा जाय। (रिपोर्ट)।
**विवरणी** *स्त्री०* (सं) पैदावार आदि की आंकड़ों के साथ तैयार की गई विवरणिका जो उच्च अधिकारियों के पास भेजी जाती है। (रिटर्न)।
**विवरना** *क्रि०* (हि) दे० 'विवरना'।
**विवर्जन** पुं० (सं) १-परित्याग। २-उपेक्षा। अनादर
**विवर्जित** *वि०* (सं) १-वर्जित। निषिद्ध। २-उपेक्षित रहित।
**विवर्ण** पुं० (सं) साहित्य में वह भाव जिसमें लज्जा, मोह क्रोध आदि के कारण नायक या नायिका का मुख रंग बदल जाता है। *वि०* १-बदरंग। २-कांतिहीन। ३-नीच। ४-कुजाति।
**विवर्त** पुं० (सं) १-समूह। नाच। नृत्य। ३-आकाश ४-रूपांतर। ५-भ्रम।
**विवर्तन** पुं० (सं) १-घूमना। चक्कर लगाना। २-घूमना-फिरना। ३-नृत्य।
**विवर्तित** *वि०* (सं) १-परिवर्तित। २-उखड़ा हुआ। ३-मोच आया हुआ। (अंग)।
**विवर्धन** पुं० (सं) १-बढ़ाना। २-किसी छोटी वस्तु के प्रतिचित्र को किसी विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा बड़ा करना। (मैगनीफिकेशन)।
**विवर्धित** *वि०* (सं) १-बढ़ा हुआ। २-उन्नत।
**विवश** *वि०* (सं) १-बेबस। मजबूर। २-पराधीन। ३-जो काबू में न आवे। ४-अशक्त।
**विवशता** *स्त्री०* (सं) १-बेबसी। मजबूरी। २-पराधीनता।
**विवस** *वि०* (हि) दे० 'विवश'।
**विवसता** *स्त्री०* (हि) दे० 'विवशता'।
**विवसन** *वि०* (सं) वस्त्ररहित। नग्न। नंगा।
**विवस्त्र** *वि०* (सं) नग्न। नंगा।
**विवस्वान्** पुं० (सं) १-सूर्य। २-सूर्य का सारथी अरुण। ३-अर्कवृक्ष।
**विवाद** पुं० (सं) १-कोई ऐसी बात या विषय जिसमें दो या अधिक विरोधी पक्ष हों तथा जिसको सत्यता निर्णय होना हो। (डिसप्यूट)। २-वाक्युद्ध। ३-झगड़ा। ४-मुकदमा (सूट)।
**विवादनिवारक-समिति** *स्त्री०*(सं) कारखानों के मालिक तथा मजदूरों के बीच होने वाले झगड़े को निबटाने के लिए नियुक्त समिति। (कंसीलिएशन बोर्ड)।
**विवादशमन** पुं०(सं) किसी झगड़े का निबटाना।
**विवादांत-प्रस्ताव** पुं० (सं) (विधान सभा या संसद आदि में) किसी विवाद को समाप्त करने के लिए सब सदस्यों द्वारा किया गया प्रस्ताव (मोशन आफ क्लोजर)।
**विवादार्थी** पुं० (सं) मुकदमा चलाने वाला। वादी। मुद्दई। (प्लेंटिफ)।
**विवादास्पद** *वि०* (सं) जिस पर या जिसके विषय में विवाद हो। (डिसप्यूटेड)।
**विवादी** पुं०(हि) १-झगड़ा करने वाला। २-मुकदमा लड़ने वालों में से एक पक्ष।
**विवास** पुं० (सं) १-प्रवास। २-निर्वासन। देश-निकाला।
**विवासन** पुं० (सं) दे० 'विवास'।

**विवासित** *वि०* (सं) निकाला हुआ। देश से बाहर निकाला हुआ।
**विवाह** पुं० (सं) धार्मिक तथा सामाजिक वह कृत्य जिसके द्वारा पति और पत्नी का सम्बन्ध स्थापित होता है। ब्याह। शादी। पाणिग्रहण।
**विवाहकाम** *वि०* (सं) शादी करने का इच्छुक।
**विवाहकाल** पुं०(सं) शादी करने का ठीक या उचित समय।
**विवाहना** *क्रि०* (हि) विवाह करना।
**विवाहविच्छेद** पुं०(सं) पति तथा पत्नी का वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ देना। तलाक। (डाइवोर्स)।
**विवाहसंबंध** पुं०(सं) शादी के द्वारा होनेवाला सम्बन्ध
**विवाहित** *वि०* (सं) जिसका विवाह हो गया हो।
**विवाहिता** *वि०*(सं)(वह स्त्री) जिसका विवाह हो चुका हो।
**विवाही** *वि०* (हि) ब्याही हुई।
**विवि** *वि०* (हि) १-दो। २-दूसरा।
**विविक्त** *वि०* (सं) १-अलग किया हुआ। २-बिखरा हुआ। ३-निर्जन। ४-पवित्र। ५-व्यक्त। पुं० संन्यासी। त्यागी।
**विविध** *वि०* (सं) अनेक प्रकार का।
**विविर** *वि०* (सं) १-खोह। गुफा। २-बिल। ३-दरार
**विवीत** पुं० (सं) १-वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हुआ हो। २-ऐसी चरागाह।
**विवीतभर्ता** पुं० (सं) गोचरभूमि का स्वामी।
**विवृत** *वि०* (सं) १-विस्तृत। फैला हुआ। २-खुला हुआ। ३-जिसकी व्याख्या की गई हो।
**विवृतद्वार** *वि०* (सं) १-जो नियन्त्रित न हो। २-जिसका द्वार खुला हो। ३-असीम।
**विवृतभाव** *वि०* (सं) जो निष्कपट हो।
**विवृतानन** *वि०* (सं) जिसका मुख खुला हुआ हो।
**विवृति** *वि०* (सं) १-वह वक्तव्य जो अपने किसी कार्य को अनुचित समझे जाने पर उसके स्पष्टीकरण के लिए गया हो। (एक्सप्लेनेशन)। २-टीका भाष्य ३-चक्र के समान घूमना।
**विवृतोक्ति** *स्त्री०* (सं) वह अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं ही प्रकट कर देता है
**विवृत्त** *वि०* (सं) १-चक्कर खाता हुआ। २-ऐंठा हुआ। ३-चलायमान्। ४-प्रदर्शित।
**विवृत्ति** *स्त्री०*(सं)१-विस्तार। २-लुढ़कना। ३-चक्कर खाना।
**विवृद्धि** *स्त्री०*(सं)१-उन्नति। २-बढ़ोतरी। ३-तरक्की ४-समृद्धि।
**विवृद्धिकर** *वि०* (सं) उन्नत करने वाला।
**विवेक** पुं० (सं) १-भली-बुरी बातें सोचने समझने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)। २-मन की वह शक्ति जिससे अच्छे या बुरे का ज्ञान होता है। (कॉशंस)। ३-बुद्धि। ४-सत्यज्ञान।
**विवेकरहित** *वि०* (सं) मूर्ख। अज्ञानी।
**विवेकवान्** *वि०*(सं) १-भले बुरे को पहचानने वाला। बुद्धिमान्।
**विवेकविरह** *वि०* (सं) मूर्ख। अज्ञान।
**विवेकविशद** *वि०*(सं) जो समझ में आ जाये। स्पष्ट।
**विवेकविश्रांत** *वि०*(सं) अज्ञान। मूर्ख।
**विवेकाधीन** *वि०* (सं) जो किसी के विवेक पर आश्रित हो। (इन दि डिस्क्रीशन)।
**विवेकिता** *स्त्री०* (सं) १-ज्ञान। २-सत् या असत् का विचार।
**विवेकी** पुं० (हि) १-भले बुरे का ज्ञान वाला। २-ज्ञानी। ३-न्यायशील। ४-बुद्धिमान।
**विवेचक** पुं० (सं) विवेचना करने वाला। विवेकी।
**विवेचन** पुं० (सं) १-विचार पूर्वक निर्णय करना। २-तर्क-वितर्क। ३-परीक्षा। ४-मीमांसा।
**विवेचनीय** *वि०* (सं) विचार करने योग्य।
**विवेचित** *वि०* (सं) जिसकी विवेचना की गई हो।
**विव्वोक** पुं० (सं) दे० 'बिव्वोक'।
**विशंक** *वि०*(सं) निर्भय। निडर।
**विशद** *वि०* (सं) १-स्वच्छ। २-स्पष्ट। ३-व्यक्त। ४-प्रसन्न। ५-सफेद। ६-मनोहर।
**विशल्य** *वि०* (सं) कष्ट और चिन्ता से रहित।
**विशल्यकरण** *वि०* (सं) घाव भरने वाला।
**विशल्या** *स्त्री०*(सं) १-गडुच। २-नागदंती। ३-अग्निशिखा। ४-लक्ष्मण की स्त्री का नाम।
**विशसिता** पुं० (सं) १-काटने वाला। २-चांडाल।
**विशस्त** *वि०* (सं) १-जिसे मार डाला गया हो। २-काटा हुआ। ३-अमर्यादित।
**विशस्त्र** *वि०* (सं) जिसके पास कोई हथियार न हो।
**विशाखा** *स्त्री०*(सं) १-सत्ताइस नक्षत्रों में से सोलहवाँ २-एक प्राचीन जनपद। ३-सफेद गदहपूरना।
**विशारद** पुं० (सं) १-किसी विषय का अच्छा जानकार। पंडित। २-वह जो किसी कार्य में दक्ष हो।
**विशाल** *वि०*(सं) १-विस्तृत। लम्बा-चौड़ा। २-शानदार। ३-प्रसिद्ध।
**विशालता** *स्त्री०* (सं) विशाल या बड़ा होने का भाव।
**विशाला** *स्त्री०* (सं) १-इन्द्रायन। २-पोई का साग। ३-दक्ष की एक कन्या का नाम।
**विशालाक्ष** पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु। ३-गरुड़। *वि०* जिसके नेत्र बड़े और सुन्दर हों।
**विशालाक्षी** *स्त्री०*(सं) १-बड़ी तथा सुन्दर आँखों वाली स्त्री। २-पार्वती। ३-एक योनि।
**विशिख** पुं० (सं) १-एक प्रकार की घास। २-बाण। तीर। ३-वह स्थान जहां रोगी रहता हो। *वि०* चोटी या शिखा रहित।
**विशिष्ट** *वि०* (सं) जिसमें कोई विशेषता हो। २-विल-

नाम। ३-मिला हुआ। ४-मुख्य।

**विशिष्ट-कुल** *वि०* (सं) जो उत्तम वंश में पैदा हुआ हो

**विशिष्टजनोनमत-संग्रह** *पुं०* (सं) सर्वसाधारण द्वारा किसी विशिष्ट विषय पर प्रकट किये गये मतों का संग्रह जो प्रायः समाचार पत्रों द्वारा किया जाता है (गैलप पोल)।

**विशिष्टता** *स्त्री०* (सं) १-विशिष्ट का भाव या धर्म। २-विशेषता।

**विशिष्टांग** *पुं०* (सं) किसी लेख, वस्तु, नाटक आदि की विशेषताएँ। (फ़ीचर्स)।

**विशिष्टाद्वैत** *पुं०* (सं) एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न माने गये है।

**विशिष्टाधिकार** *पुं०* (सं) १-प्रधान या राज का वह अधिकार जिस पर सिद्धान्ततः कोई प्रतिबन्ध न हो (प्रीरोगेटिव)। २-वह विशिष्ट अधिकार जिसका दूसरा कोई हिस्सेदार न हो।

**विशिष्टीकरण** *पुं०* (सं) १-किसी विषय के विशेष रूप से अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना। २-किसी वस्तु को विशेष लक्षणों के कारण अलग करना। (स्पेशेलाइजेशन)।

**विशीर्ण** *वि०* (सं) १-सूखा हुआ। २-दुबला। पतला ३-जीर्ण।

**विशुद्ध** *वि०* (सं) १-बिना किसी मिलावट का। २-सत्य। *पुं०* (सं) हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर के छः चक्रों में से पाँचवां।

**विशुद्धचरित्र** *वि०* (सं) जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो

**विशुद्धात्मा** *वि०* (सं) जिसका आचरण शुद्ध तथा पवित्र हो।

**विशुद्धि** *स्त्री०* (सं) १-शुद्धता। पवित्रता। २-परिशोध। ३-सादृश्य।

**विशुद्धिचक्र** *पुं०* (सं) हठयोग के अनुसार शरीर में के छः चक्रों में से पांचवाँ।

**विशुद्धिवाद** *पुं०* (सं) कठोर धार्मिक जीवन व्यतीत करने का कुछ ईसाइयों का सिद्धान्त। (प्यूरिटैनिज़्म) कठोरता भाव।

**विशूचिका** *स्त्री०* (हिं) दे० 'विसूचिका'।

**विशून्य** *वि०* (सं) जो पूर्णरूप से खाली हो।

**विशृंखल** *वि०* (सं) १-जिसमें कड़ी या शृङ्खला न हो। २-जो किसी तरह न रोका जा सके।

**विशृंग** *वि०* (सं) जिसके सींग न हों।

**विशेष** *पुं०* (सं) १-अन्तर। २-प्रकार। ढङ्ग। ३-साधारण से अतिरिक्त। (एक्स्ट्रा)। ४-किसी विषय में अपनी सम्मति के रूप में कही जाने वाली बात (रिमार्क)। ५-एक अलंकार। *वि०* (सं) १-असाधारण। २-अधिक।

**विशेषक** *पुं०* (सं) १-तिलक। २-साहित्य में वह पद जिसके श्लोकों की एक ही क्रिया होती है। *वि०* (सं) विशिष्ट। विलक्षण। (स्पेशेलिस्ट)।

**विशेषण** *पुं०* (सं) १-वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २-व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञावाची शब्द की विशेषता सूचित करता हो।

**विशेषता** *वि०* (सं) १-विशेष का भाव या धर्म। २-विलक्षणता।

**विशेषना** *क्रि०* (हिं) १-विशेष रूप देना। २-निश्चय करना।

**विशेषविद** *पुं०* (सं) दे० 'विशेषज्ञ'।

**विशेषित** *वि०* (सं) १-जो खास तौर पर पृथक् किया गया हो। २-जिसमें कोई विशेषण लगा हो।

**विशेषितस्वीकृति** *स्त्री०* (सं) किसी प्रस्ताव आदि की समिति द्वारा कुछ प्रतिबन्ध लगा कर दी गई सम्मति (क्वालिफाइड एक्सेप्टेन्स)।

**विशेषोक्ति** *स्त्री०*(सं) वह अलंकार जिसमें पूर्ण कारण रहते हुए भी कार्य न होने का वर्णन हो।

**विशेष्य** *पुं०* (सं) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।

**विशोक** *वि०* (सं) जिसे कोई शोक न हो। *पुं०* शोक का न होना।

**विशोणित** *वि०* (सं) जिसमें रक्त न हो।

**विशोध** *वि०* (सं) विशुद्ध या साफ करने योग्य।

**विशोधन** *पुं०* (सं) १-भली भांति साफ करना। २-विष्णु।

**विशोधनीय** *वि०* (सं) विशुद्ध या साफ करने योग्य।

**विशोधित** *वि०* (सं) विशुद्ध या साफ किया हुआ।

**विशोषण** *पुं०* (सं) अच्छी तरह सोखना।

**विशोषित** *वि०* (सं) शुष्क किया हुआ।

**विशोषी** *वि०* (सं) अच्छी तरह सोखने वाला।

**विश्** *स्त्री०* (सं) १-वह जिसने जन्म लिया हो। २-कन्या।

**विश्रंभ** *पुं०* (सं) १-दृढ़ विश्वास। (कॉन्फीडेन्स)। २-प्रेम। ३-प्रेम का झगड़ा। ४-आजादी से घूमना।

**विश्रंभकथा** *स्त्री०* (सं) प्रेम की बातें।

**विश्रंभण** *पुं०* (सं) किसी का विश्वास प्राप्त करना।

**विश्रंभी** *वि०* (सं) दे० 'विश्वस्त'।

**विश्रब्ध** *वि०* (सं) १-शांत। २-निडर। ३-विश्वास के योग्य।

**विश्रब्ध-नवोढा** *स्त्री०*(सं) वह नायिका जिसका अपने पति पर थोड़ा बहुत विश्वास होने लगा हो।

**विश्रांत** *वि०* (सं) १-जो विश्वास करता हो। २-रुका हुआ। ३-थका हुआ।

**विश्रांति** *स्त्री०* (सं) १-विश्राम। आराम। २-थकावट ३-विराम।

**विश्रांतिकाल** *पुं०* (सं) काम करने के नियत समय में बीच में आराम करने की छुट्टी। (रेसेस)।

**विश्राम** पुं० (सं) १-श्रम मिटाना। आराम करना २-ठहरने का स्थान। ३-सुख। चैन।
**विश्रामभवन** पुं० (सं) वह स्थान जहां यात्री विश्राम करते हों। (रेस्ट-हाउस)।
**विश्रामवेश्म** पुं० (सं) आराम करने का कमरा।
**विश्रामालय** पुं० (सं) दे० 'विश्रामभवन'।
**विश्री** वि० (सं) १-जिसकी कांति जाती रही हो। २-भद्दा। कुरूप।
**विश्रुत** वि० (सं) १-प्रसिद्ध। २-जो जाना या सुना हुआ हो।
**विश्रुति** स्त्री० (सं) १-प्रसिद्ध। २-भरना या रसना। ३-कोई बात सब लोगों को जताने का कार्य (पब्लिसिटी)।
**विश्लथ** वि० (सं) १-थका हुआ। २-जिसके बन्धन टूट गये हों। ३-ढीला।
**विश्लथित** वि०(सं) १-जिसके बन्धन टूट गये हों। २-क्लांत।
**विश्लिष्ट** वि०(सं)१-जिसका विश्लेषण हुआ हो। २-विकसित। ३-प्रकाशित। ४-शिथिल। ५-मुक्त।
**विश्लेष** पुं० (सं) १-अलग होना। २-वियोग। ३-शिथिलता। ४-विकास। ५-किसी तरफ से मन हटाना।
**विश्लेषण** पुं० (सं) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों या किसी बात के सब अंगों को परीक्षा के लिए अलग-अलग करना। (एनेलेसिस)।
**विश्लेषी** वि० (सं) अलग किया हुआ। २-बिखरने वाला।
**विश्वंभर** पुं० (सं) १-परमेश्वर। ईश्वर। २-विष्णु
**विश्वंभरा** स्त्री० (सं) पृथ्वी।
**विश्व** पुं० (सं) १-समस्त ब्रह्मांड। २-संसार। जगत ३-विष्णु। ४-शरीर। ५-जीवात्मा।
**विश्वकर्ता** पुं० (सं) परमेश्वर।
**विश्वकर्मा** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा। ३-एक शिल्पशास्त्र के देवता। ४-बढ़ई। ५-मेमार। राज। ६-लोहार।
**विश्वकाय** पुं० (सं) विष्णु।
**विश्वकोश** पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत विवरण रहता है।
**विश्वकोष** पुं० (सं) दे० 'विश्वकोश'।
**विश्वगुरु** पुं० (सं) विष्णु।
**विश्वगोचर** वि० (सं) जो सबको समझ में आजाय।
**विश्वचक्षु** वि० (सं) ईश्वर।
**विश्वजनीय** वि० (सं) जो सबके लिए लाभदायक हो
**विश्वजयी** वि० (सं) संसार को जीतने वाला।
**विश्वजित** वि०(सं) जो समस्त विश्व पर विजय प्राप्त कर चुका हो।
**विश्वनाथ** पुं० (सं) १-विश्व का स्वामी। २-शिव। ३-काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।
**विश्वनाथपुरी** स्त्री० (सं) काशी।
**विश्वपा** पुं० (सं) ईश्वर।
**विश्वपाल** पुं० (सं) ईश्वर।
**विश्वपावन** वि० (सं) सबका पालन करने वाला।
**विश्वपावनी** स्त्री० (सं) तुलसी।
**विश्वपूजित** वि० (सं) जो सबके द्वारा पूजा जाता है
**विश्वपूज्य** वि० (सं) जिसका सब लोग सम्मान करते हों।
**विश्वप्रकाशक** पुं० (सं) सूर्य।
**विश्वभर्ता** पुं० (सं) ईश्वर।
**विश्वभोजन** पुं० (सं) सब प्रकार की चीजें खाना।
**विश्वमूर्ति** पुं० (सं) विष्णु।
**विश्वमोहन** वि० (सं) सब को मोहित करने वाला।
**विश्वलोचन** पुं० (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।
**विश्वविख्यात** वि० (सं) जो सारे संसार में प्रसिद्ध हो।
**विश्वविजयी** वि० (सं) सारे संसार को विजय करने वाला।
**विश्वविद्** पुं० (सं) १-जो सब कुछ जानता हो। २-ईश्वर।
**विश्वविद्यालय** पुं० (सं) वह बड़ा विद्यापीठ जिसमें उच्च शिक्षा देने के अनेक महाविद्यालय हों। (यूनिवर्सिटी)।
**विश्वविश्रुत** वि० (सं) जो संसार भर में प्रसिद्ध हो।
**विश्वव्यापक** पुं० (सं) ईश्वर।
**विश्वव्यापी** वि० (सं) जो सब जगह व्याप्त हो।
**विश्वश्रवा** पुं० (सं) रावण के पिता का नाम।
**विश्वश्री** वि०(सं) जो सबके लिए उपयोगी हो (अग्नि, आग)।
**विश्वसंभव** पुं० (सं) परमेश्वर।
**विश्वसंहार** पुं० (सं) संसार का नाश।
**विश्वसख** पुं० (सं) सबका दोस्त या मित्र।
**विश्वसनीय** वि० (सं) जिसका विश्वास या एतराज किया जा सके।
**विश्वसृक्** पुं० (सं) ब्रह्मा।
**विश्वसृष्टा** वि० (सं) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा।
**विश्वसृष्टि** स्त्री० (सं) संसार की रचना।
**विश्वस्त** वि० (सं) जिसका विश्वास किया जाय।
**विश्व-स्वास्थ्य-संघटन** पुं० (सं) वह अंतरराष्ट्रीय संस्था जो विभिन्न देशों के लोकस्वास्थ्य की उन्नति करने के प्रयत्नों में सहायता देती है। (वर्ल्ड हैल्थ-ओरगेनाईजेशन)।
**विश्वहर्ता** पुं० (सं) शिव।
**विश्वहेतु** पुं० (सं) विष्णु।
**विश्वात्मा** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-शिव। विष्णु। ब्रह्मा।
**विश्वाद्** पुं० (सं) अग्नि।
**विश्वाधार** पुं० (सं) ईश्वर।

**विश्वाधिप** पु० (सं) ईश्वर ।
**विश्वामित्र** पु० (सं) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो बड़े क्रोधी थे और गाधिज और कौशिक भी कहलाते हैं ।
**विश्वास** पु० (सं) यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या अमुक आदमी ऐसा करेगा ।
**विश्वासकारक** वि० (सं) १-विश्वास करने वाला । २-जिसमें विश्वास उत्पन्न हो ।
**विश्वासघात** पु० (सं) किसी के विश्वास के विरुद्ध की गई क्रिया ।
**विश्वासघातक** वि० (सं) विश्वास करने पर भी धोखा देने वाला ।
**विश्वासघाती** वि० (सं) विश्वासघातक ।
**विश्वासपात्र** पु० (सं) वह व्यक्ति जिस पर विश्वास किया जाय ।
**विश्वासप्रद** वि० (सं) विश्वास पैदा करने वाला ।
**विश्वास प्रस्ताव** पु० (सं) वह प्रस्ताव जो किसी सभा संस्था के अध्यक्ष या मन्त्रिमण्डल में विश्वास प्रकट करने के लिये पेश किया गया हो । (वोट ऑफ कोन्फिडेन्स) ।
**विश्वासभंग** पु० (सं) किसी के विश्वास के विरुद्ध कोई काम करना ।
**विश्वासभाजन** वि० (सं) विश्वासपात्र ।
**विश्वासिक** पु० (सं) वह जिस पर भरोसा किया जा सके ।
**विश्वासी** वि० (सं) १-विश्वास करने वाला । २-जिस पर भरोसा किया जाय ।
**विश्वास्य** वि० (सं) विश्वास करने के योग्य ।
**विश्वदेव** पु० (सं) १-अग्नि । २-देवताओं का एक गण ।
**विश्वेश्वर** पु० (सं) १-परमेश्वर । २-शिव की एक मूर्ति ।
**विश्वोत्पत्ति-विज्ञान** पु० (सं) वह विज्ञान जिसमें विश्व की उत्पत्ति तथा विकास आदि का विवेचन होता है । (कास्मोगॉनी) ।
**विष** पु० (सं) १-वह पदार्थ जिसके खाने पर मनुष्य मर जाता है । जहर । गरल । २-अतीस । ३-वत्सनाग ।
**विषकंठ** पु० (सं) शिव ।
**विषकन्या** स्त्री० (सं) प्राचीन काल में वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिये विष प्रविष्ट किया जाता था कि उसके साथ सम्भोग करने वाला तत्काल ही मर जाये ।
**विषकुंभ** पु० (सं) विष से भरा घड़ा ।
**विषघातक** पु० (सं) वह जिससे विष का प्रभाव हटता या दूर होता है ।
**विषघाती** वि० (सं) विष के प्रभाव को दूर करने वाला ।
**विषघ्न** पु० (सं) जवासा । वि० (सं) विष को नाश करने वाला ।
**विषण्ण** वि० (सं) दुःखी । खिन्न ।
**विषण्णचेता** वि० (सं) उदास । दुःखी ।
**विषण्णता** स्त्री० (सं) १-खिन्न या दुःखी होना । २-मूर्खता ।
**विषण्णमुख** वि० (सं) जिसके मुख से खिन्नता झलकती हो ।
**विषतंत्र** पु० (सं) वैद्यक में सर्प आदि के विष को दूर करने वाली तांत्रिक लकड़ी । २-कमलनाल ।
**विषदोषहर** वि० (सं) विष के असर को हटाने वाली
**विषधर** पु० (सं) सांप ।
**विषधरी** स्त्री० (सं) सांपिन ।
**विषपन्नग** पु० (सं) विषैला सांप ।
**विषपुच्छ** पु० (सं) बिच्छू ।
**विषप्रयोग** (सं)पु० औषधि में विष का प्रयोग ।
**विषभक्षण** पु० (सं) विषखाना ।
**विषभिषक्** पु० (सं) विष उतारने वाला वैद्य ।
**विषमंत्र** पु० (सं) विष के प्रभाव को अन्त करने वाला मंत्र ।
**विषम** वि० (सं) १-असमान । २-(वह संख्या) जो दो पर भाग देने पर पूरी न बँट सके । ३-बहुत कठिन । ४-अति तीव्र । ५-भयंकर । पु० १-संगीत की एक ताल । २-एक छन्द । ३-एक अर्थालंकार । ४-संकट । ५-चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक ६-पहली, तीसरी, पाचवीं आदि तक संख्याओं पर पड़ने वाली राशियां ।
**विषम कोण-समचतुर्भुज** पु० (सं) वह समानान्तर चतुर्भुज जिसके चारों कोण समकोण न हों पर उसकी दो भुजाएँ बराबर हों । (रोम्बस) ।
**विषमचतुर्भुज** पु० (सं) वह चतुर्भुज जिसकी चारों भुजाएँ बराबर न हों ।
**विषमज्वर** पु० (सं) १-वह ज्वर जिसके आने का कोई समय न हो । २-जूड़ी-बुखार । ३-क्षय रोग ।
**विषमता** स्त्री० (सं) १-असमानता । २-विरोध । बैर
**विषमत्व** पु० (सं) विषमता ।
**विषमत्रिभुज** पु० (सं) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर न हों ।
**विषमदृष्टि** वि० (सं) ऐंचाताना । भैंगा ।
**विषमनयन** पु० (सं) शिव ।
**विषमपाद** वि० (सं) जिसके पैर बराबर न हों ।
**विषमबाण** पु० (सं) कामदेव ।
**विषमबाहु-त्रिभुज** पु० (सं) वह त्रिभुज जिसकी कोई सी भी भुजा बराबर न हो । (स्केलीन ट्राइऐंगल) ।
**विषमवृत्त** पु०(सं) ऐसा छन्द जिसको कोई भी चरण समान न हो ।
**विषमसंधि** पु० (सं) वह सन्धि जिसके अनुसार

तत्काल सहायता न दी जाय।
**विषमाक्ष** पुं० (सं) शिव।
**विषमित** वि० (सं) १-जो भीषण शत्रु बन गया हो। २-अव्यवस्थित।
**विषमेक्षण** पुं० (स) शिव।
**विषमेषु** पुं० (सं) कामदेव।
**विषय** पुं०(सं) १-जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाय (सबजेक्ट)। २-सम्भोग। ३-सम्पति। ४-राज्य। ५-वह जो इन्द्रिया ग्रहण करें।
**विषयक** वि० (सं) किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला। सम्बन्धित।
**विषयकर्म** पुं०(स) सांसारिक काम-धन्धे।
**विषयज्ञान** पुं० (सं) सांसारिक कामों से जानकारी।
**विषयनिरति** स्त्री० (सं) विषयों में आसक्ति।
**विषय-निर्धारिणी-समिति** स्त्री० (सं) किसी सभा में रखे जाने वाले विषय प्रस्तावों को हल से ही निश्चित करने वाली उपसमिति। (सबजेक्ट कमेटी)।
**विषय-निर्वाचिनी-समिति** स्त्री०(सं) विषय-निर्धारिणी-समिति।
**विषयपति** पुं० (सं) किसी छोटे जनपद या प्रांत का राजा।
**विषयपराङ्मुख** वि० (सं) जो सांसारिक विषयों से विरक्त हो।
**विषयलोलुप** वि० (सं) जो विषय-सुख का लोभी हो।
**विषयसमिति** स्त्री०(सं) दे०'विषय-निर्धारिणी-समिति'
**विषयसुख** पुं० (सं) इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला सुख।
**विषयस्पृहा** स्त्री० (सं) विषय-सुखों की इच्छा।
**विषयांतर** पुं० (सं) प्रस्तुत विषय को छोड़कर इधर उधर की बातें करना।
**विषया** स्त्री०(सं) विषयवासना।
**विषयात्मक** वि० (सं) विषयरूप।
**विषयाधिप** पुं० (सं) दे० 'विषयपति'।
**विषयानुक्रमणिका** स्त्री० (सं) किसी ग्रन्थ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषयसूची।
**विषयाभिरति** पुं० (सं) विषयभोग।
**विषयासक्त** वि० (सं) जो विषयों में रत हो।
**विषयासक्ति** स्त्री० (सं) विषयभोगों में लीन रहना।
**विषयी** पुं०(हि) १-भोगविलास में रत रहने वाला। कामी। २-कामदेव। ३-धनवान। ४-राजा।
**विषवमन** पुं० (सं) जहर उगलना।
**विष-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें विषयों की की उत्पत्ति उनके गुणों आदि का विवेचन होता है। (टॉक्सिकॉलोजी)।
**विषवृक्ष** पुं० (सं) गूलर।
**विषवृक्षन्याय** पुं० (सं) एक न्याय जिसके अनुसार किसी वस्तु के बुरे होने पर उसे नष्ट नहीं करना चाहिए।
**विषवैद्य** पु० (सं) तन्त्र-मन्त्रादि की सहायता से विष के प्रभाव को नष्ट करने वाला।
**विषव्रण** पु०(सं) जहरबाद। जहरीला फोड़ा। (कैंसर)
**विषहंता** पुं० (सं) जहर के असर को दूर करने वाला।
**विषहर** पुं० (सं) १-विषनाशक मन्त्र या औषध। २-चोरक।
**विषहा** वि० (सं) विष को नाश करने वाला।
**विषहीन** वि० (सं) जिसमें जहर न हो।
**विषहृदय** वि० (सं) बुरे दिल का।
**विषांतक** पुं० (सं) १-वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट हो। २-शिव।
**विषाक्त** वि० (सं) विषयुक्त। जहरीला।
**विषाण** पुं० (सं) १-हाथीदांत। २-पशु का सींग। ३-सूअर का दांत। ४-इमली।
**विषाणी** पुं०(सं)१-वह जिसके सींग हों। २-बैल। ३-हाथी। ४-सूअर। ५-सिंघाड़ा।
**विषाद** पुं० (सं) १-दुःख। खेद। २-काम करने की इच्छा न होना। ३-मूर्खता। ४-निश्चेष्ट होने का भाव।
**विषानन** पुं० (सं) सर्प।
**विषान्न** पुं० (सं) विष मिला हुआ भोजन।
**विषापहरण** पुं० (सं) ज़हर के असर को दूर करना।
**विषायुध** पुं० (सं) १-सांप। २-जहर में बुझा अस्त्र
**विषास्त्र** पुं० (सं) दे० 'विषायुध'।
**विषुव** पुं० (स) वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुंचने से दिन और रात बराबर होते हैं।
**विषुवत्** वि० (सं) मध्य का। पुं० दे० 'विषुव'।
**विषुवद्दिन** पुं० (सं) वह दिन जब दिन और रात के समय में अन्तर नहीं रहता।
**विषुवरेखा** स्त्री० (सं) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वीतल के पूरे मानचित्र पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारों ओर जाती हुई मानी गई है। (इक्वेटर)।
**विषूचिका** स्त्री० (सं) हैजे का रोग।
**विष्कंभ** पुं० (सं) १-विस्तार। २-विघ्न। ३-बाधा। ४-शहतीर। ५-नाटक का वह भाग जिसमें होने वाले अभिनय से पहले उसकी सूचना दी जाती है
**विष्टप** पुं० (सं) भुवन। लोक।
**विष्टि** स्त्री० (सं) १-बेगार। २-वेतन। ३-काम। ४-वर्षा।
**विष्ठा** स्त्री० (सं) मल। पाखाना।
**विष्णु** पुं० (सं) १-हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि के पालन-पोषण करने वाले माने जाते हैं। २-अग्नि।
**विष्णुपदी** स्त्री० (सं) गंगानदी।

**विष्णुपुरी** स्त्री० (सं) वैकुण्ठ। विष्णुलोक।
**विष्णुप्रिया** स्त्री० (सं) तुलसी का पौधा।
**विष्णुयान** पु० (सं) गरुड़।
**विष्णुवल्लभा** स्त्री० (सं) तुलसी का पौधा।
**विष्णुवाहन** पु० (सं) गरुड़।
**विष्णुशक्ति** स्त्री० (सं) लक्ष्मी।
**विष्णुशिला** स्त्री० (सं) शालग्राम।
**विष्फार** पु० (सं) धनुष की टङ्कार।
**विसंगत** वि० (सं) असंगत। असम्बद्ध।
**विसंवाद** पु० (सं) १-डाँट। डपट। २-विरोध। वि० (सं) विलक्षण अद्भुत।
**विसंवाहक** पु० (सं) चीनी का बना हुआ वह पदार्थ जो ताप या विद्युत के प्रवाह को रोकने के लिये विद्युद्‌हीन तथा विद्युन्मय। पदार्थ के बीच में लगाया जाता है। (इन्सुलेटर)।
**विसंवाहन** पु० (सं) विद्युत् या ताप के प्रवाह को रोकने के लिये विद्युन्मय पदार्थ तथा विद्युद्‌ विहीन पदार्थ के बीच में कुचालक पदार्थ लगा कर अलग कर देना। (इन्स्यूलेशन)।
**विस** पु० (सं) दे० 'विष'।
**विसदृश** वि० (सं) १-उलटा। विपरीत। २-असमान ३-विलक्षण।
**विसयना** क्रि० (हि) अस्त होना।
**विसवना** क्रि० (हि) अस्त होना।
**विसर्ग** पु० (सं) १-दान। २-छोड़ना। ३-व्याकरण वह चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है और जिसका चिह्न (:) होता है तथा उच्चारण आधे ह के समान होता है। ४-मृत्यु। ५-प्रलय।
**विसर्जन** पु० (सं) १-छोड़ना। परित्याग। २-विदा करना। ३-दान। ४-किसी कर्मचारी पर कोई दोष लगाकर अलग करना। (डिसमिसल)। ५-भंग किया जाना। (सभा आदि)।
**विसर्जित** वि० (सं) १-त्यक्त। छोड़ा हुआ। २-भेजा हुआ।
**विसर्पिका** स्त्री० (सं) विसर्प रोग। खुजली।
**विसर्पी** वि० (सं) फैलने वाला।
**विसाल** वि० (हि) दे० 'विशाल'।
**विसूचिका** स्त्री० (सं) दे० 'विषूचिका'।
**विसूरण** पु० (सं) १-दुख। रंज। २-चिन्ता। वैराग्य।
**विसृष्ट** वि० (सं) १-विशेष रूप से बनाया हुआ। २-त्यक्त। ३-भेजा हुआ।
**विस्तर** वि० (सं) १-बड़ा तथा लम्बा चौड़ा। विस्तृत २-बहुत अधिक। पु० (सं) दे० 'विस्तार'।
**विस्तरणी** स्त्री० (सं) हिलने-डुलने में असमर्थ रोगी या हताहत व्यक्ति को उठा कर लेजाने का ढांचा। (स्ट्रेचर)।
**विस्तरणीवाहक** पु० (सं) विस्तरणी में रोगी को लिटा कर लेजाने वाले व्यक्ति। (स्ट्रेचर बेयरर)।
**विस्तार** पु० (सं) १-लम्बाई-चौड़ाई। फैलाव। २-पेड़ की शाखा। ३-गुच्छा। ४-विष्णु। ५-शिव।
**विस्तारण** पु० (सं) १-विस्तार करना। २-फैलाना
**विस्तारना** क्रि० (हि) विस्तार करना।
**विस्तारित** वि० (सं) जिसका विस्तार किया गया हो। बढ़ाया हुआ। (एक्सटेन्डेड)।
**विस्तारी विधेयक** पु० (सं) किसी पुराने अधिनियम आदि की अवधि बढ़ाने के लिये संसद् या विधान सभा में उपस्थित किया जाने वाला विधेयक। (एक्सटेंडिंग बिल)।
**विस्तीर्ण** वि० (सं) १-विस्तृत। २-विशाल। ३-विपुल अत्यधिक।
**विस्तृत** वि० (सं) १-लम्बा-चौड़ा। २-यथेष्ट विवरण वाला। ३-दूर तक फैला हुआ। विशाल।
**विस्तृति** स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-व्याप्ति। ३-वृत का व्यास।
**विस्थापन** पु० (सं) किसी स्थान के रहने वालों को बलपूर्वक उस स्थान से हटाना (डिसप्लेसमेंट)।
**विस्थापित** वि० (सं) जिसे अपने स्थान से बलपूर्वक हटाया गया हो। (डिसप्लेस्ड)।
**विस्फार** पु० (सं) १-धनुष की टंकार। २-धनुष की डोरी। ३-विस्तार। ४-स्फूर्ति। ५-विकास।
**विस्फारित** वि०(सं) १-भली प्रकार फैलाया या खोला हुआ। २-फाड़ा हुआ। ३-कंपाया हुआ।
**विस्फीति** स्त्री० (सं) कृत्रिम रूप में फूले हुए पदार्थ या मुद्रा के फैलाव को फिर पूर्व स्थिति में लाना। (डिफ्लेशन)।
**विस्फुटित** वि० (सं) खुला या खिला हुआ।
**विस्फोट** पु० (सं) १-किसी पदार्थ का अन्दर की गर्मी से बाहर फूट पड़ना। २-जहरीला फोड़ा।
**विस्फोटक** पु० (सं) १-जहरीला फोड़ा। २-आग या गर्मी से भड़क उठने वाला पदार्थ। (एक्सप्लोसिव)।
**विस्फोटन** पु० (सं) किसी पदार्थ का उबाल आदि के कारण फूट बहना। जोर का शब्द।
**विस्मयंकर** वि० (सं) आश्चर्यजनक।
**विस्मयंगम** वि० (सं) आश्चर्यजनक।
**विस्मय** पु०(सं) १-आश्चर्य। २-साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी-भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में होता है। ३-गर्व। ४-सन्देह।
**विस्मयकारी** वि० (सं) विस्मय उत्पन्न करने वाला।
**विस्मयन** पु० (सं) विस्मय या आश्चर्य होना।
**विस्मयाकुल** वि० (सं) आश्चर्ययुक्त।
**विस्मयी** वि० (सं) आश्चर्यान्वित।
**विस्मरण** पु० (सं) भूल जाना।
**विस्मित** वि० (सं) जिसे आश्चर्य या विस्मय हुआ

हो। चकित।
**विस्मृत** *वि०* (सं) भूला हुआ।
**विस्मृति** *स्त्री०* (सं) भूल जाना।
**विस्रब्ध** *वि०* (सं) दे० 'विश्रब्ध'।
**विस्रस्त** *वि०* (सं) १-फैला या बिखरा हुआ। २-अशक्त। ३-जो ढीला पड़ गया हो।
**विस्रस्त-बन्धन** *वि०* (सं) जिसके बन्धन ढीले पड़ गये हों।
**विस्रस्तवसन** *वि०*(सं) जिसके कपड़े ढीले पड़ गये हो।
**विस्रस्तहार** *वि०*(सं) जिसका हार सरक कर गिर गया हो।
**विस्राम** पुं० (हि) दे० 'विश्राम'।
**विस्रावरण** पुं० (सं) १-रक्त चुआना या बहाना। २-अर्क निकालना।
**विस्रुत** *वि०* (सं) १-भूला हुआ। २-बहा हुआ।
**विस्रुति** *स्त्री०* (सं) बहना। रिसना।
**विस्वर** *वि०*(सं) बेसुरा।
**विस्वाद** *वि०* (सं) फीका। स्वादहीन।
**विहंग** पुं० (सं) १-पक्षी। चिड़िया। २-बाण। तीर ३-मेघ। ४-सूर्य। ५-चन्द्रमा। ६-ग्रह।
**विहंगम** पुं० (सं) पक्षी।
**विहंगमा** *स्त्री०* (सं) १-बहँगी की वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर बोझ लटकाया जाता है। २-सूर्य की एक किरण।
**विहंगमिका** *स्त्री०* (सं) बहँगी।
**विहंगराज** पुं० (सं) गरुड़।
**विहंगारााति** पुं० (सं) बाजपक्षी।
**विहंगिका** *स्त्री०* (सं) बहँगी।
**विहँडना** *क्रि०* (हि) १-वध करना। नष्ट करना।
**विहंतव्य** *वि०* (सं) बध या नष्ट करने योग्य।
**विहँसना** *क्रि०* (हि) मुसकाना।
**विहग** पुं० (सं) दे० 'विहंग'।
**विहगपति** पुं० (सं) गरुड़।
**विहगेंद्र** पुं० (सं) गरुड़।
**विहगेश्वर** पुं० (सं) गरुड़।
**विहरण** पुं० (सं) १-घूमना-फिरना। २-वियोग। ३-फैलाना।
**विहरना** *क्रि०* (हि) विहार करना। घूमना फिरना।
**विहसन** पुं० (सं) मंदहास। मुसकान।
**विहसित** *वि०* (सं) मुसकराता हुआ। पुं० (सं) मंद-हास।
**विहान** पुं० (सं) प्रातःकाल। सवेरा।
**विहाना** *क्रि०* (हि) परित्याग करना।
**विहायस** पुं० (सं) १-आकाश। २-दान। ३-पक्षी।
**विहार** पुं० (सं) १-टहलना। घूमना। २-सुख प्राप्ति के लिए होने वाली क्रीड़ा। ३-रतिक्रीड़ा। ४-बौद्ध भिक्षुओं का मठ। संघाराम।
**विहारगृह** पुं० (सं) रति क्रीड़ा करने का स्थान।
**विहारभूमि** *स्त्री०* (सं) १-चरागाह। २-क्रीड़ा भूमि।
**विहारवन** पुं०(सं) क्रीड़ोद्यान।
**विहारवापी** *स्त्री०* (सं) क्रीड़ा के निमित्त बना हुआ स्थान।
**विहारस्थली** *स्त्री०* (सं) क्रीड़ा-स्थान।
**विहारस्थान** पुं० (सं) क्रीड़ा-स्थान।
**विहारी** पुं० (सं) श्रीकृष्ण। *वि०* विहार करने वाला।
**विहास** *वि०* (सं) हास्यरहित।
**विहित** *वि०* (सं) १-जिसका विधान किया गया हो। (प्रेसक्राइब्ड)।
**विहितनिषिद्धकर्म** पुं० (सं) १-वे कर्म जिनको करने का शास्त्रों में विधान हो। २-वे कर्म जिन्हें न करने का शास्त्रों में आदेश हो। ( एक्टस् आफ कमीशन एण्ड ओमीशन )।
**विहीन** *वि०* (सं) १-रहित। बिना। २-त्यागा हुआ।
**विहीनजाति** *वि०* (सं) नीच या दलित जाति का।
**विहीनवर्ण** *वि०* (सं) विहीन जाति।
**विहून** *वि०* (हि) दे० 'विहीन'।
**विहृत** पुं० (सं) स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक।
**विह्वल** *वि०* (सं) घबराया हुआ। व्याकुल।
**विह्वलता** *स्त्री०* (सं) व्याकुलता। घबराहट।
**विह्वलत्व** पुं० (सं) विह्वलता।
**वीक्ष** पुं० (सं) दृष्टि। नजर।
**वीक्षण** पुं० (सं) देखने की क्रिया। निरीक्षण।
**वीक्षणीय** *वि०* (सं) देखने योग्य। दर्शनीय।
**वीचि** *स्त्री०* (सं) १-लहर। तरंग। २-अवकाश। ३-सुख। ४-चमक।
**वीचिक्षोभ** पुं० (सं) लहरों या तरंगों का उठना।
**वीचितरंगन्याय** पुं० (सं) लहरों के उठने के समान क्रमबद्ध एक के बाद दूसरे काम का होना।
**वीचिमाली** पुं० (सं) समुद्र।
**वीची** *स्त्री०* (सं) दे० 'वीचि'।
**वीज** पुं० (सं) दे० 'बीज'।
**वीजक** पुं० (सं) दे० 'बीजक'।
**वीजन** पुं० (सं) पंखा झलना। २-पंखा। ३-चकोर ४-चँवर।
**वीजांकुरन्याय** पुं० (सं) दे० 'बीजांकुर-न्याय'।
**वीजित** *वि०* (सं) १-पंखा झल कर शांत किया हुआ। २-जो जल से सींचा हुआ हो।
**वीटक** पुं० (सं) पान का बीड़ा।
**वीटा** *स्त्री०* (सं) एक छोटे बच्चे का प्राचीन गुल्ली डंडे जैसा खेल।
**वीटि** *स्त्री०* (सं) पान का बीज।
**वीटिका** *स्त्री०* (सं) पान का बीड़ा।
**वीटी** *स्त्री०* (सं) दे० 'वीटिका'।

**बीण** स्त्री० (हिं) दे० 'वीणा'।
**वीणा** स्त्री० (सं) १-एक सितार जैसा प्रसिद्ध वाद्य-यन्त्र जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है। बीन। २-बिजली।
**वीणादंड** पुं० (सं) वीणा का लम्बा डण्डा जो मध्य में होता है।
**वीणापाणि** स्त्री० (सं) सरस्वती।
**वीणारव** पुं० (सं) वीणा का स्वर या संगीत।
**वीणावादक** पुं० (सं) वीणा बजाने वाला।
**वीणावादन** पुं० (सं) वीणा बजाना।
**वीणावादिनी** स्त्री० (सं) सरस्वती।
**वीत** पुं० (सं) १-घोड़ा या हाथी जो युद्ध के काम के अयोग्य हो। २-हाथी को अङ्कुश से मारना। वि० (सं) १-जो छोड़ दिया गया हो। मुक्त। २-जो समाप्त हो चुका हो। ३-सुन्दर।
**वीतकलमष** वि० (सं) जो पाप से दूर हो।
**वीतकाम** वि० (सं) जिसे कोई इच्छा न हो।
**वीतघृण** वि० (सं) १-निष्ठुर। २-निर्दय।
**वीतचिंत** वि० (सं) जिसे कोई चिन्ता न हो।
**वीतजन्म-जरस** वि० (सं) जो जन्म या बुढ़ापे से मुक्त हो।
**वीततृष्ण** वि० (सं) जिसमें कोई वासना न रही हो।
**वीतदंभ** वि० (सं) जिसने अहङ्कार त्याग दिया हो।
**वीतभय** वि० (सं) जिसका भय छूट गया हो।
**वीतभीति** वि० (सं) जो किसी से डर न करता हो।
**वीतमत्सर** वि० (सं) जिसे किसी से द्वेष न हो।
**वीतमल** वि० (सं) १-पापरहित। २-विमल।
**वीतराग** पुं० (सं) १-जिसने सांसारिक सुखों या वस्तुओं के प्रति अनुराग या असक्ति छोड़ दी हो। २-बुद्ध का एक नाम। ३-जैनियों के तीर्थङ्कर की एक पदवी का नाम।
**वीतव्रीड** वि० (सं) जिसमें लज्जा न हो।
**वीतशंक** वि० (सं) जिसे कोई भय या शङ्का न हो।
**वीतशोक** वि० (सं) जिसने शोक या दुःख का त्याग किया हो। पुं० (सं) अशोक नामक वृक्ष।
**वीथि** स्त्री० (सं) १-दृश्यकाव्य में रूपक का एक भेद जिसमें एक ही अङ्क और एक ही नायक होता है। २-मार्ग। ३-आकाशमार्ग। ४-आकाश में नक्षत्रों के रहने का विशिष्ट स्थान।
**वीथिका** स्त्री० (सं) दे० 'विथि'।
**वीप्सा** स्त्री० (सं) १-एक अर्थालंकार जहां एक शब्द को बार-बार कहा जाय। पुनरुक्ति। २-व्याप्ति।
**वीर** पुं० (सं) १-बहादुर। बलवान। २-योद्धा। सिपाही। ३-साहस का काम करने वाला। ४-पुत्रादि के लिये एक सम्बोधन। ५-कुशल। ६-निपुण। ७-कर्म। ८-लोहा। ९-कुश। १०-खस। पुं० (हिं) भाई।
**वीरकर्मा** पुं० (सं) वीरोचित काम करने वाला।
**वीरकेशरी** पुं० (सं) वीरों में सिंह के समान।
**वीरगति** स्त्री० (सं) १-रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़ कर मरने पर प्राप्त होने वाली गति। २-स्वर्ग।
**वीरचक्र** पुं० (सं) भारत गणराज्य की ओर से युद्ध क्षेत्र में वीरता दिखाने वाले सैनिकों को दिया जाने वाला एक पदक।
**वीरचक्रेश्वर** पुं० (सं) विष्णु।
**वीरजननी** पुं० (सं) वीर पुत्र को जन्म देने वाली।
**वीरधन्वा** पुं० (सं) कामदेव।
**वीरपट्ट** पुं० (सं) प्राचीन काल में युद्ध में पहनी जाने वाली एक पोशाक।
**वीरपत्नी** पुं० (सं) वीर आदमी की पत्नी।
**वीरपाण** पुं० (सं) वह पेय पदार्थ जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये पीते हैं।
**वीरपानक** पुं० (सं) दे० 'वीरपाण'।
**वीरपूजा** पुं० (सं) वीरों या महापुरुषों का बहुत अधिक आदर सम्मान। (हीरोवर्शिप)।
**वीरप्रजायिनी** स्त्री० (सं) दे० 'वीरप्रजावती'।
**वीरप्रजावती** स्त्री० (सं) वीर पुत्र को जन्म देने वाली
**वीरप्रसवा** स्त्री० (सं) दे० 'वीरप्रजावती'।
**वीरप्रसू** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो वीर सन्तान उत्पन्न करती है।
**वीरभद्र** पुं० (सं) १-अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २-शिव का एक गण। ३-खस।
**वीरभद्रक** पुं० (सं) खस। उशीर।
**वीरभार्या** स्त्री० (सं) वीर पत्नी।
**वीरमर्दल** पुं० (सं) प्राचीन काल में युद्ध में बजाने का एक ढोल।
**वीरमाता** पुं० (सं) वीर जननी।
**वीरमानी** पुं०(सं) वह जो अपने को वीर समझता हो
**वीरमार्ग** पुं० (सं) स्वर्ग।
**वीररस** पुं० (सं) वह काव्य रस जिसमें वीरता से शत्रु का दमन या कठिनाई आदि पर विजय पाने का वर्णन हो।
**वीरराघव** पुं० (सं) श्री रामचन्द्र।
**वीरव्रत** वि० (सं) जिसका दृढ़ संकल्प हो।
**वीरशयन** पुं० (सं) युद्धक्षेत्र।
**वीरशय्या** स्त्री० (सं) रणक्षेत्र।
**वीरश्रेष्ठ** पुं० (सं) वीरों में श्रेष्ठ।
**वीरसू** वि० (सं) वीरों को उत्पन्न करने वाली।
**वीरा** स्त्री० (सं) १-वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों २-शतावर। ३-ब्राह्मी। ४-एक प्राचीन नदी का नाम।
**वीराचारी** पुं० (सं) एक प्रकार के वाम मार्गी जो वीरभाव से उपासना करते हैं।
**वीरान** वि० (फा) उजाड़।

वीरासन पुं० (सं) साधकों की एक प्रकार की बैठने की मुद्रा।
वीरुत् स्त्री० (सं) १-लता। २-औषध। ३-पौधा।
वीरेंद्र पुं० (सं) वीरों का प्रधान या मुखिया।
वीर्य पुं० (सं) १-शरीर की वह धातु जिससे उसमें शक्ति, तेज तथा कांति आती है और सन्तान उत्पन्न होती है। शुक्र। २-बल। ३-अन्न आदि का बीज
वीर्यवान वि० (सं) बलवान। शक्तिशाली।
वीर्याधान पुं० (सं) गर्भाधान।
वीहार पुं० (हि) दे० 'विहार'।
वुजू पु० (अ) नमाज पढ़ने से पहले हाथ मुँह धोकर पवित्र होना।
वुराना क्रि० (हि) १-डराना। २-समाप्त होना।
वुसूल पुं० (अ) १-मिलना। प्राप्ति। २-पहुँचना।
वुसूलबाकी स्त्री० (अ) वह धन जो अभी लेना बाकी हो।
वुसूली वि० (अ) प्राप्त करने योग्य। स्त्री० (सं) वह धन जो प्राप्त किया गया हो।
वृंत पुं० (सं) १-कच्चा तथा छोटा फल। २-स्तन का अग्रभाग।
वृंद पुं० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-सौ करोड़ की संख्या। ३-एक मुहूर्त।
वृंदगायक पुं०(सं)कई गायकों के साथ मिल कर गाने वाला।
वृंदवाद्य स्त्री०(सं) नाटक आदि में किसी विशेष स्थान पर कई वादकों द्वारा सामूहिक रूप से बजाया गया वाद्य। (ओरकेस्ट्रा)।
वृंदा स्त्री० (सं) १-तुलसी। २-राधिका का एक नाम
वृंदार वि० (सं) सुन्दर। मनोहर।
वृंदारक पुं० (सं) १-देवता। २-श्रेष्ठ व्यक्ति।
वृक पुं० (सं) १-भेड़िया। २-गीदड़। ३-कौवा। ४-चोर। ५-वज्र। ६-क्षत्रिय।
वृककर्मा पुं० (सं) एक दानव का नाम।
वृकाराति पुं० (सं) कुत्ता।
वृकारि पुं० (सं) कुत्ता।
वृकोदर पुं० (सं) भीमसेन।
वृक्क पुं० (सं) मूत्राशय। गुरदा।
वृक्कक पुं० (सं) गुरदा।
वृक्का स्त्री० (सं) हृदय।
वृक्ष पुं० (सं) १-पेड़। २-पेड़ के समान वह आकृति जिसमें कोई मूल वस्तु और शाखाएँ हों।
वृक्षरोपण पुं० (सं) पेड़ लगाना।
वृक्षवाटिका स्त्री० (सं) बाग। बगीचा।
वृक्षसेचन पुं० (सं) वृक्षों में पानी देना।
वृक्षस्नेह पुं०(सं) वृक्ष से निकलने वाला तरल पदार्थ
वृक्षायुर्वेद पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें वृक्षों की चिकित्सा का वर्णन होता है।
वृज पुं० (सं) दे० 'व्रज'।
वृजन्य पुं० (सं) वह जो परम साधु हो।
वृजिन पुं० (सं) १-पाप। २-दुःख। ३-त्वचा। ४-रक्त। बाल। वि० कुटिल।
वृत्त पु० (सं) १-वृतांत। हाल। २-चरित्र। ३-वृत्ति ४-गोला। ५-घेरा। ६-आचार। ७-स्तन का अग्रभाग। ८-बीस वर्णमाला एक छन्द। वि० १-बीता हुआ। २-दृढ़। ३-गोलाकार। ४-मृत। ५-ढका हुआ। ६-सिद्ध।
वृत्तखंड पुं० (सं) १-किसी वृत्त का कोई अंश। (सेक्टर)। २-मेहराब।
वृत्तचूड़ वि० (सं) १-मेहराब। २-जिसका चूड़ाकरण संस्कार हो चुका हो।
वृत्तपत्र पुं०(सं) वह पत्रक जिसमें विधान सभा आदि के प्रत्येक दिन के विनिश्चयों का अभिलेख लिखा जाता है (जर्नल)।
वृत्तपत्रक पुं० (सं) वह पत्र जिसमें अपराधी के पहले अपराधों के इतिहास का ब्यौरा लिखा जाता है। (हिस्ट्री शीट)।
वृत्तांत पुं० (सं) १-समाचार। विवरण। २-प्रक्रिया ३-प्रस्ताव। ४-अवसर। ५-भाव।
वृत्तांतानुमेय-साक्ष्य पुं० (सं) कोई बात प्रमाणित करने में सहायता देने वाली वे बातें जो किसी ने अपने बयान में कही हों पर परिस्थिति के आधार पर जिनका अनुमान लगाया जा सके। (सरकम्सटेन्श्यल ऐवीडेन्स)।
वृत्तार्थ पुं० (सं) वृत्त का आधा भाग।
वृत्ति स्त्री०(सं)१-जीविका। रोजी। पेशा। (प्रोफेशन) २-किसी योग्य या दरिद्र छात्र आदि को सहायतार्थ दिया जाने वाला धन। (स्टाइपेन्ड)। ३-सूत्रों आदि की व्याख्या। ४-व्यापार। ५-स्वभाव। प्रकृति ६-कर्त्तव्य।
वृत्तिकर पुं० (सं) किसी पेशे पर लगने वाला कर। (प्रोफेशन टैक्स)।
वृत्तमूलक-प्रतिनिधित्व पुं० (सं) दे० 'व्यवसायिक प्रतिनिधित्व'।
वृत्य वि० (सं) जो नियुक्त करने के योग्य हो।
वृत्र पुं० (सं) १-अन्धेरा। २-बादल। ३-शत्रु। ४-एक पर्वत।
वृत्रघ्न पुं० (सं) इन्द्र।
वृत्रहा पु० (सं) इन्द्र।
वृत्रारि पु० (सं) इन्द्र।
वृथा वि० (सं) १-व्यर्थ। फजूल। अव्य० बिना मतलब के।
वृथावादी वि० (सं) झूठ बोलने वाला।
वृद्ध पुं० (सं) १-अधिक आयु वाला। बूढ़ा। (एल्डर) २-पंडित। ३-जो साधारण की अपेक्षा बड़ा तथा

श्रेष्ठ हो।
**वृद्धता-अधिदेय** पुं० (सं) बुढ़ापे के कारण किसी कर्मचारी के काम करने में असमर्थ होने पर दी जाने वाली वृत्ति। (सुपर एनुएशन अलाउंस)।
**वृद्धा** स्त्री० (सं) १-बुड्ढी स्त्री। बुढ़िया। २-अंगूठा
**वृद्धावस्था** स्त्री० (सं) १-बुढ़ापा। २-मनुष्यों में साठ वर्ष से अधिक की अवस्था।
**वृद्धाश्रम** पुं० (सं) संन्यास।
**वृद्धि** स्त्री०(सं)१-बढ़ती। आधिक्य। २-सूद। ब्याज ३-समृद्धि। ४-वेतन में होने वाली बढ़ती। (इन्क्रिमेन्ट)।
**वृद्धिकर** वि० (सं) बढ़ती करने वाला।
**वृद्धिकर्म** पुं० (सं) नांदीमुख नामक श्राद्ध।
**वृश्चिक** पुं० (सं) १-बिच्छू। २-बारह राशियों में आठवीं राशि।
**वृष** पुं०(सं)१-सांड। २-श्रीकृष्ण। ३-बारह राशियों में से दूसरी। ३-पति। ४-गेहूँ। ५-चूहा। ६-चन्द्रमा ७-मोर का पंख।
**वृषकर्मा** वि० (सं) बैल की तरह परिश्रम करने वाला।
**वृषकेतन** पुं० (सं) १-गणेश। २-शिव।
**वृषण** पुं० (सं) १-इन्द्र। २-सांड। ३-विष्णु। ४-घोड़ा।
**वृषपति** पुं० (सं) १-शिव। २-हिजड़ा।
**वृषभ** पुं० (सं) १-सांड या बैल। २-साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद।
**वृषभकेतु** पुं० (सं) शिव।
**वृषभध्वज** पुं० (सं) शिव।
**वृषल** पुं० (सं) १-शूद्र। २-दासी से उत्पन्न पुरुष। ३-बदचलन। ४-घोड़ा।
**वृषली** स्त्री०(सं)१-वह रजस्वला कन्या जिसका विवाह न हुआ हो। २-शूद्र जाति की स्त्री। ३-रजस्वला स्त्री। ४-वह स्त्री जिसके मरी हुई सन्तान उत्पन्न होती हो।
**वृषादित्य** पुं० (सं) ज्येष्ठ की संक्रांति का सूर्य।
**वृषोत्सर्ग** पुं०(सं) किसी मृत पूर्वज के नाम पर बछड़े को दाग कर सांड बना कर छोड़ना।
**वृष्ट** वि० (सं) वर्षा के रूप में गिरा हुआ।
**वृष्टि** स्त्री० (सं) १-वर्षा। मेंह। २-ऊपर से बहुत सी वस्तुओं का एक साथ गिराया जाना। ३-किसी क्रिया का कुछ समय तक अबाधगति से होना।
**वृष्टिकर** वि० (सं) वर्षा करने वाला।
**वृष्टिकाल** पुं० (सं) बरसात। वर्षाऋतु।
**वृष्टिपात** पुं० (सं) वर्षा का होना।
**वृष्य** पुं० (सं) १-बल तथा वीर्यवर्द्धक वस्तु। २-गन्ना। ३-उड़द की दाल। ४-आंवला। ५-कमल नाल।
**वृहत्** वि० (सं) बहुत बड़ा। भारी। विशाल।
**वृहन्नला** पुं०(सं) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।
**वृहस्पति** पुं० (सं) अंगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं।
**वेंकटेश** पुं० (सं) विष्णु।
**वेंकटेश्वर** पुं० (सं) विष्णु की वेंकटगिरि में स्थित मूर्ति।
**वे** वि०(हि) वह का बहुवचन या सम्मानसूचक शब्द।
**वेकट** पुं० (सं) १-युवक। २-मसखरा। ३-जौहरी। ४-एक प्रकार की मछली।
**वेक्षण** पुं० (सं) भली भांति देखना। देखभाल। (इन्सपेक्शन)।
**वेग** पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। मलमूत्र आदि शरीर के बाहर निकालने की प्रवृत्ति। ३-तेजी। जोर। ४-शीघ्रता। ५-प्रसन्नता। ६-उद्योग। ७-दृढ निश्चय।
**वेगगा** स्त्री० (सं) नदी।
**वेगवान** वि० (सं) तेज चलने वाला। पुं० विष्णु।
**वेगवृद्धि** स्त्री० (सं) चाल या रफ्तार तेज करना। (एक्सिलरेशन)।
**वेगानिल** पुं० (सं) आंधी। प्रचंडवायु।
**वेणि** स्त्री० (सं) १-बालों की चोटी। २-धारा।
**वेणी** स्त्री०(सं) १-स्त्रियों के बालों की गुँथी हुई चोटी। २-जलप्रवाह। ३-भीड़भाड़। ४-भेद।
**वेणीदान** पुं० (सं) प्रयाग में बाल उतरवाने का एक संस्कार।
**वेणी-संवरण** पुं० (सं) स्त्रियों का अपने बालों की चोटी गूँथना।
**वेणीसंहार** पुं० (सं) वेणी संवरण।
**वेणु** पुं० (सं) १-बाँस। २-बाँसुरी।
**वेणुकार** पुं० (सं) मुरली या बाँसुरी बनाने वाला।
**वेणुमय** वि० (सं) बाँस का बना हुआ।
**वेणुवादक** पुं० (सं) बाँसुरी बजाने वाला।
**वेणुवादन** पुं० (सं) बाँसुरी बजाना।
**वेतन** पुं० (सं) १-किसी को कोई काम करते रहने के बदले में दिया जाने वाला धन। तनखाह। (सैलरी)। २-पारिश्रमिक। (वेजेज)। ३-चांदी।
**वेतनक्रम** पुं० (सं) वेतन का दरजा। (ग्रेड ऑफ पे)।
**वेतनजीवी** वि० (सं) वेतन लेकर काम करने वाला।
**वेतनदाता** पुं० (सं) सैनिकों, कर्मचारियों या मजदूरों आदि को वेतन वितरण करने वाला। (पे मास्टर)
**वेतनफलक** पुं० (सं) वह कागज जिस पर कर्मचारियों के वेतन का पूरा विवरण होता है। (पे शीट)।
**वेतनभोगी** पुं० (सं) वेतन लेकर काम करने वाला कर्मचारी।
**वेताल** पुं० (सं) १-द्वारपाल। २-शिव का एक गण ३-एक भूत योनि। ४-छप्पय छन्द का छठा भेद।

**वेतालसाधन** पुं० (सं) साधना के द्वारा वेताल को वश में करना।
**वेत्ता** वि० (सं) ज्ञाता। जानने वाला।
**वेत्र** पुं० (सं) बेंत।
**वेत्रकार** पुं० (सं) बेंत का सामान बनाने वाला।
**वेत्रधर** पुं० (सं) १-द्वारपाल। २-बड़े आदमियों की छड़ी लेकर साथ चलने वाला सेवक।
**वेत्रधारक** पुं० (सं) वेत्रधर।
**वेत्रधारी** पुं० (सं) रईस आदमी का नौकर।
**वेत्रभृत** पुं० (सं) दे० 'वेत्रधर'।
**वेत्रहस्त** पुं० (सं) वेत्रधर।
**वेत्राघात** पुं० (सं) बेंत से पीटना।
**वेत्रासन** पुं० (सं) बेंत की बनी हुई कुर्सी या आसन
**वेत्री** पुं० (सं) १-द्वारपाल। २-चोबदार।
**वेद** पुं० (सं) १-सच्चा या वास्तविक ज्ञान। २-भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान धार्मिक ग्रन्थ जो संख्या में चार हैं। ३-वृत्त। ४-वित्त।
**वेदक** वि० (सं) परिचय कराने वाला।
**वेदघोष** पुं० (सं) वेद पाठ की आवाज़।
**वेदज्ञ** पुं० (सं) १-वेदों का जानने वाला। २-ब्रह्मज्ञानी।
**वेदतत्त्व** पुं० (सं) वेद का मर्म या भाव।
**वेदत्रयी** स्त्री० (सं) ऋक्, यजु और साम इन तीनों वेदों का समुच्चय।
**वेदध्वनि** स्त्री० (सं) वेदघोष।
**वेदन** पुं० (सं) दे० 'वेदना'।
**वेदना** स्त्री० (सं) १-पीड़ा। व्यथा। २-चिकित्सा। ३-चमड़ा।
**वेदनिंदक** पुं० (सं) १-वेदों की निन्दा करने वाला २-नास्तिक।
**वेदनिंदा** स्त्री० (सं) वेदों पर विश्वास न होना।
**वेदपाठ** पुं० (सं) वेदों को पढ़ना।
**वेदपाठक** पुं० (सं) वेदों का पाठ करने वाला।
**वेदपारग** पुं० (सं) वैदिक कार्यों का जानकार।
**वेदमाता** स्त्री० (सं) १-गायत्री। २-सरस्वती।
**वेदवचन** पुं० (सं) वेदों में आये हुए वचन।
**वेदवाक्य** पुं० (सं) १-वेद का वाक्य। २-वह बात जिसका खंडन न हो सके।
**वेदवाद** पुं० (सं) वेद के सम्बन्ध में होने वाली बहस
**वेदवादी** पुं० (सं) वेदों का पूर्ण ज्ञाता या पण्डित।
**वेदविक्रयी** वि० (सं) जो धन लेकर वेद पढ़ाता हो।
**वेदविद्** पुं० (सं) १-वेदज्ञ। २-विष्णु।
**वेदविहित** वि० (सं) जिसकी वेदों में अनुमति दी गई हो।
**वेदव्यास** पुं० (सं) दे० 'व्यास'।
**वेदसम्मत** वि० (सं) वेदविहित।
**वेदांग** पुं० (सं) १-वेदों के अंग जो संख्या में छः हैं २-सूर्य। ३-आदित्य का नाम।
**वेदांत** पुं० (सं) १-वेदों के अंतिम भाग जिसमें आत्मा, ईश्वर, जगत् आदि का विवेचन है। (ब्रह्मविद्या)। २-अद्वैतवाद।
**वेदांतज्ञ** पुं० (सं) वेदांत का जानकार।
**वेदांतवादी** पुं० (सं) जो वेदांत दर्शन को मानता हो
**वेदांती** पुं० (सं) वेदांत का अच्छा जानकार। ब्रह्मवादी।
**वेदाध्ययन** पुं० (सं) वेदों का अध्ययन या पढ़ना।
**वेदाध्यापक** पुं० (सं) वेदों का पढ़ाने वाला।
**वेदाध्यायी** पुं० (सं) वेदों का पाठ करने वाला।
**वेदिका** स्त्री० (सं) १-वेदी। २-वह चबूतरा जिसपर इमारत बनाई जाय।
**वेदित** वि० (सं) १-निवेदित। २-जो देखा गया हो।
**वेदितव्य** वि० (सं) जानने योग्य। ज्ञातव्य।
**वेदी** स्त्री० (सं) १-शुभ और धार्मिक कार्य के लिए बनाई गई छायादार भूमि। २-सरस्वती। वि०(हिं) १-पण्डित। २-जानकार। ३-विवाद करने वाला।
**वेदोक्त** वि० (सं) वेदों में कहा हुआ।
**वेद्य** वि० (सं) १-जानने योग्य। २-कहने योग्य। ३-प्राप्त करने योग्य।
**वेध** पुं० (सं) १-वेधना। २-यन्त्रों आदि से ग्रहों, तारों आदि की गतिविधि देखना। ३-गंभीरता। ४-शिव। ५-सूर्य। ६-ज्ञानी।
**वेधशाला** स्त्री० (सं) वह स्थान जहाँ ग्रहों तारों आदि की गतिविधि देखने के लिए यन्त्र लगे हुए हैं। (ऑब्जर्वेटरी)।
**वेधक** वि० (सं) १-छेदने वाला। २-वेध करने वाला
**वेधन** पुं०(सं) १-छेदना। २-तीर आदि से निशाना मारना। ३-आहत करना।
**वेधनिका** स्त्री० (सं) मणियों आदि में छेद करने का औज़ार।
**वेधनी** स्त्री०(सं) १-जोंक। २-मेथी। वि० छेदने वाली
**वेधनीय** वि० (सं) वेध करने योग्य।
**वेधालय** पुं० (सं) वेधशाला।
**वेधित** वि० (सं) जो वेधा या छेदा गया हो।
**वेधी** वि० (हिं) १-छेदने वाला। २-वेध करने वाला
**वेध्य** वि० (सं) जिसे वेध किया जाय।
**वेपथु** पुं० (सं) कम्प। कँपकँपी।
**वेपन** पुं० (सं) १-कांपना। २-वातरोग।
**वेला** स्त्री० (सं) १-काल। समय। २-तट। सीमा। ३-लहर। ४-मर्यादा। ५-वाणी। ६-भोजन। ७-रोग ८-मसूड़ा।
**वेलाकूल** पुं० (सं) समुद्र का तट।
**वेलाजल** पुं०(सं) ज्वार में आने वाला जल। (टाइडल वाटर्स)।
**वेलातट** पुं० (सं) समुद्रतट।

वेलातिक्रम पुं० (सं) विलम्ब।
वेलातिग वि० (सं) जो किनारे से ऊपर बह गया हो
वेलाद्रि पुं० (सं) समुद्रतट पर का पर्वत।
वेलापत्रक पुं० (सं) समय-सारिणी। (टाइम टेबल)
वेल्लि,वेल्ली स्त्री० (सं) लता। बेल।
वेश पुं० (सं) १-वस्त्रादि पहनने का ढंग। २-पोशाक ३-तम्बू। ४-मकान। ५-वेश्या का घर।
वेशधर पुं० (सं) छद्मवेशी।
वेशभूषा स्त्री० (सं) पहनने के कपड़े तथा ढंग।
वेशयुवति स्त्री० (सं) वेश्या।
वेशवनिता स्त्री० (सं) वेश्या।
वेश्म पुं० (सं) घर। मकान।
वेश्मांत पुं० (सं) अन्तःपुर। जनानखाना।
वेश्या स्त्री० (सं) वह स्त्री जो नाच गाकर तथा अपना रूप बेचकर धन कमाती हो।
वेश्यागमन पुं० (सं) कामवासना के कारण वेश्या के घर जाना।
वेश्यागामी पुं० (सं) रंडीबाजी।
वेश्यागृह पुं० (सं) चकला। वेश्या का घर।
वेश्यापति पुं० (सं) वेश्या का पति।
वेश्यापुत्र पुं० (सं) १-वेश्या का पुत्र। २-नाजायज पुत्र।
वेश्यावृत्ति स्त्री० (सं) धन लेकर दूसरे आदमी से संभोग करना। वेश्या का पेशा।
वेश्यालय स्त्री० (सं) वह स्थान जहां पर वेश्याएँ पेशा कमाती हों। चकला। (ब्रोथल)।
वेष पुं० (सं) १-दे० 'वेश'। २-नैपथ्य। ३-कर्म। ४-वेश्या का मकान।
वेषधर वि० (सं) दे० 'वेषधारी'।
वेषधारी वि० (सं) दूसरे का वेष बनाने वाला। ढोंगी
वेष्टन पुं० (सं) १-लपेटना। २-कोई वस्तु लपेटने का कपड़ा। ३-पगड़ी। ४-मुकुट।
वेष्टित वि० (सं) १-चारों ओर से घिरा हुआ २-लपेटा हुआ। ३-अवरुद्ध।
वेष्य वि० (सं) जिसने अपना वेष बदला हो।
वेसन पुं० (सं) दे० 'बेसन'।
वेसर पुं० (सं) गदहा।
वेस्टकोट पुं० (अं) जाकट। फतुही।
वै वि० (हि) दो। अव्य० एक निश्चयसूचक शब्द।
वैकटिक पुं० (सं) जौहरी।
वैकट्य पुं० (सं) विकटता।
वैकथिक पुं० (सं) शेखीबाज।
वैकल्पिक वि० (सं) १-एकांगी। २-जो अपनी इच्छा के अनुसार ग्रहण किया जा सके। (ऑप्शनल)। ३-उन दो या अधिक पदार्थों में से एक जिसे अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। (ऑल्टरनेटिव)।
वैकल्पिक-सदस्य पुं० (सं) ऐसे दो सदस्यों में से एक जो एक के सदस्यता स्वीकार न करने पर उसका स्थान ग्रहण कर सकता है। (ऑल्टरनेटिव मेम्बर)
वैकल्य पुं०(सं)१-विकलता। २-कातरता। ३-न्यूनता ४-अभाव।
वैकाल पुं०(सं) सायंकाल। मध्याह्नोत्तर।
वैकालिक वि० (सं) उपयुक्त समय पर न होने वाला
वैकालीन वि० (सं) दे० 'वैकालिक'।
वैकुंठ पुं० (सं) १-विष्णु। २-स्वर्ग। ३-विष्णुलोक ४-इन्द्र।
वैकुंठ-चतुर्दशी स्त्री० (सं) कार्त्तिक-शुक्ला चतुर्दशी।
वैकुंठभुवन पुं० (सं) विष्णुलोक।
वैक्रम वि० (सं) शक्ति सम्बन्धी।
वैक्रमीय वि० (सं) दे० 'विक्रमी'।
वैक्लव पुं० (सं) १-व्याकुलता। घबड़ाहट। २-पीड़ा
वैखरी स्त्री० (सं) १-वाणी का व्यक्त रूप। २-वाक्-शक्ति।
वैखानस पुं० (सं) १-वानप्रस्थी। २-एक प्रकार के ब्रह्मचारी जो वन में रहते थे।
वैगुण्य पुं०(सं) १-गुणहीनता। २-दोष। ३-नीचता
वैचक्षण्य पुं० (सं) निपुणता। होशियारी।
वैचित्र पुं० (सं) विचित्रता। विलक्षणता।
वैचित्र्य पुं० (सं) १-भिन्नता। २-विचित्रता। ३-सुन्दरता।
वैजन्य पुं० (सं) विजनता। एकान्त।
वैजयंत पुं० (सं) १-इन्द्र का राजभवन। २-घर। ३-इन्द्र का झण्डा।
वैजयंती स्त्री० (सं) १-पताका। झण्डी। २-एक प्रकार की पांच रंग के फूलों की माला।
वैजयिक वि० (सं) विजय का।
वैजात्य पुं० (सं) विलक्षणता। लम्पटता।
वैज्ञानिक पुं० (सं) विज्ञान का ज्ञाता। (साइन्टिस्ट) वि० (सं) विज्ञान सम्बन्धी।
वैडूर्य पुं० (सं) दे० 'वैदूर्य'।
वैतंडिक पुं० (सं) व्यर्थ का झगड़ा या बहस करने-वाला।
वैतथ्य पुं० (सं) विफलता।
वैतनिक पुं० (सं) वह जो वेतन पर काम करता हो। (सेलेरीड)।
वैतरणि स्त्री० (सं) दे० 'वैतरणी'।
वैतरणी स्त्री० (सं) १-नरक स्थित एक नदी का नाम कलिंग देश की एक नदी।
वैतस पुं० (सं) पुरुषेन्द्रिय। लिंग।
वैताल पुं० (सं) स्तुतिपाठक। भाट। वि० (सं) वेताल का।
वैतालिक पुं० (सं) वेताल की उपासना करने वाला
वैतुष्य पुं० (सं) भूसी निकालने का कार्य।
वैतृष्ण्य पुं० (सं) तृष्णा से रहित होने का भाव।

वैश्रवण्य वि० (सं) कुबेर सम्बन्धी।
वैत्रक वि० (सं) बेंतदार।
वैत्रकीय वि० (सं) बेंत सम्बन्धी।
वैत्रासुर पुं० (सं) एक असुर का नाम।
वैद वि० (सं) विद्वान या पण्डित सम्बन्धी। पुं० (हि) दे० 'वैद्यक'।
वैदक पुं० (हि) दे० 'वैद्यक'।
वैदग्ध पुं० (सं) १-पांडित्य। २-कार्यकुशलता। ३-रसिकता। ४-हावभाव।
वैदर्भी स्त्री० (सं) काव्य की एक प्रकार की रीति जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है।
वैदिक पुं० (सं) वेदों का अनुयायी। वि० (सं) वेद-संबन्धी।
वैदिक कर्म पुं० (सं) वेदों के अनुसार किया गया कर्म।
वैदूर्य पुं० (सं) लहसुनिया (रत्न)।
वैदेशिक वि० (सं) १-विदेश का। २-दूसरे देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाला। (फोरेन)।
वैदेशिकनीति स्त्री० (सं) किसी देश या राष्ट्र की दूसरे राष्ट्रों या देशों के लिए निर्धारित नीति। (फोरेन पॉलिसी)।
वैदेशिक-व्यापार पुं०(सं) किसी देश का दूसरे देशों के साथ होने वाला व्यापार। (फोरेन ट्रेड)।
वैदेही स्त्री० (सं) सीता।
वैद्य पुं०(सं) १-पण्डित। २-वह चिकित्सक जो वैद्यक-शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करता हो। ३-बङ्गाल की एक जाति। वि० वेद सम्बन्धी।
वैद्यक पुं० (सं) चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद।
वैद्यराज पुं० (सं) वह जो अच्छा वैद्य हो।
वैद्यविद्या स्त्री० (सं) चिकित्साशास्त्र।
वैद्यशास्त्र पुं०(सं) चिकित्सा सम्बन्धी विद्या।
वैद्या स्त्री० (सं) स्त्री-चिकित्सक।
वैद्युत वि० (सं) विद्युत-सम्बन्धी। बिजली का।
वैद्रुम वि० (सं) विद्रुम सम्बन्धी। मूँगे का।
वैध वि०(सं) १-जो कानून के अनुसार हो। (लीगल) २-जो संविधान के अनुसार हो। (कन्स्टीटयूशनल)
वैधमिक वि०(सं) जो धर्म के अनुसार न हो।
वैधर्म्य पुं० (सं) विधर्मी होने का भाव। नास्तिकता।
वैधव पुं० (सं) बुध।
वैधवेय पुं० (सं) विधवा का पुत्र।
वैधव्य पुं० (सं) विधवापन। रंडापा।
वैधव्यलक्षणोपेता स्त्री० (सं) वह कन्या जिसमें आगे चलकर विधवा होने के चिह्न हों।
वैधानिक वि० (सं) १-विधान के नियमों से सम्बन्ध करने वाला। (कन्स्टीटयूशनल)। २-जो विधान के रूप में हो। (स्टेटयूटरी)।
वैधीकरण पुं० (सं) विधि के अनुकूल बना देना। (वैलिडेशन)।
वैधुर्य पुं० (सं) १-विधुर होने का भाव। २-भ्रम। ३-कम्पित होने का भाव।
वैनतेय पुं०(सं) १-विनता की संतान। २-गरुड़। ३-अरुण।
वैनयिक पुं०(सं) १-विनय। प्रार्थना। २-जो शास्त्रों का अध्ययन करता हो। वि० विनय का।
वैनाशिक वि० (सं) १-विनाश-सम्बन्धी। २-पराधीनता।
वैपरीत्य पुं० (सं) विपरीतता। प्रतिकूलता।
वैपारी पुं० (हि) दे० 'व्यापारी'।
वैपुल्य पुं० (सं) अधिकता। विपुलता।
वैफल्य पुं० (सं) विफल होने का भाव। विफलता।
वैभव पुं० (सं) १-धन-सम्पत्ति। २-विभव। ३-ऐश्वर्य।
वैभवशाली पुं० (सं) जिसके पास बहुत धन हो। मालदार। अमीर।
वैभाषिक वि०(सं) १-वैकल्पिक। २-विभाषा सम्बन्धी
वैभिन्न्य पुं० (सं) विभिन्नता।
वैभ्राज पुं० (सं) स्वर्ग का उपवन। २-एक पर्वत। ३-एक लोक।
वैभ्राजक पुं० (सं) स्वर्ग का एक उपवन।
वैमत्य पुं० (सं) १-मतभेद। २-फूट।
वैमत्यसूचक वि० (सं) असहमति सूचित करने वाला। (डिसकॉर्डेंट)।
वैमनस्य पुं० (सं) शत्रुता। दुश्मनी।
वैमल्य पुं० (सं) विमलता।
वैमात्र वि० (सं) विमाता से उत्पन्न। सौतेला।
वैमात्रक पुं० (सं) सौतेला भाई।
वैमात्रा स्त्री० (सं) सौतेली बहन।
वैमात्री स्त्री० (सं) सौतेली बहन।
वैमात्रेय पुं० (सं) सौतेला भाई।
वैमात्रेयी स्त्री० (सं) सौतेली बहन।
वैमानिक वि० (सं) विमान सम्बन्धी। पुं० १-जो विमानपर सवार हो। २-विमान पर काम करने वाला। (एयरमैन)। वह जो उड़ सकता हो।
वैमुख्य पुं० (सं) १-विमुखता। २-विपरीतता।
वैयक्तिक वि० (सं) किसी एक व्यक्ति-सम्बन्धी। व्यक्तिगत। (पर्सनल)।
वैयक्तिकबंध पुं०(सं) किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया वह प्रतिज्ञापत्र जिसके अनुसार लिखित बात को पूरा न करने की अवस्था में उसे दण्ड दिया जा सकता है। (पर्सनल बॉंड)।
वैया पुं०(हि) एक प्रत्यय जिसका अर्थ 'वाला' होता है
वैयाकरण पुं० (सं) व्याकरण का पंडित। वि० व्याकरण सम्बन्धी।
वैयाघ्र वि० (सं) व्याघ्र सम्बन्धी। पुं० व्याघ्र की खाल

का मढ़ा एक प्रकार का रथ।
**वैयात्य** पुं० (सं) निर्लज्जता। बेहयापन।
**वैरंकर** वि० (स) दुश्मनी दिखाने वाला।
**वैर** पुं० (सं) १-शत्रुता। दुश्मनी। २-प्रतिहिंसा।
**वैरकारक** वि० (सं) दुश्मनी करने वाला।
**वैरकारी** वि० (सं) झगड़ा करने वाला।
**वैरप्रतिक्रिया** स्त्री० (सं) वैर। प्रतिकार।
**वैरप्रतिकार** पुं० (सं) वैर का बदला।
**वैरभाव** पुं० (सं) शत्रुता।
**वैररक्षी** वि० (सं) शत्रुता दूर करने वाला।
**वैरल्य** पुं० (सं) १-विरलता। २-एकांत।
**वैरव्रत** पुं० (सं) शत्रुता की प्रतिज्ञा।
**वैरशुद्धि** स्त्री० (सं) शत्रुता का बदला।
**वैरस** पुं० (सं) इच्छा का न होना। अरुचि।
**वैरस्य** पुं० (सं) वैरस।
**वैरागी** पुं० (सं) १-विरक्त। जिसने वैराग्य ले रखा हो। २-एक प्रकार के वैष्णव साधु।
**वैराग्य** पुं० (सं) सांसारिक सुख भोगों तथा कामों आदि से होने वाली विरक्ति।
**वैराज्य** पुं० (सं) १-एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन। २-विदेशियों का शासन।
**वैरि** पुं० (स) वैरी। शत्रु।
**वैरी** पुं० (सं) शत्रु। दुश्मन।
**वैरूप्य** पुं०(स) १-विरूपता। २-विकृत होने का भाव
**वैरेचन** वि० (सं) विरेचन का। विरेचन-सम्बन्धी।
**वैरेचनिक** वि० (सं) दे० 'वैरेचन'।
**वैरोचन** पुं० (सं) १-बुद्ध का एक नाम। २-सूर्यपुत्र का नाम। ३-अग्निपुत्र का नाम।
**वैरोचननिकेतन** पुं० (सं) पाताल।
**वैरोचनि** पुं० (सं) १-बुद्ध। २-राजा बलि। ३-सूर्य के एक पुत्र का नाम।
**वैलक्षण्य** पुं० (सं) १-अभिन्नता। २-विलक्षणता।
**वैवर्ण** पुं० (सं) १-मलिनता। २-सौंदर्य का अभाव
**वैवर्ण्य** पुं० (सं) दे० 'वैवर्ण'।
**वैवश्य** पुं० (स) १-विवशता। २-लाचारी। ३-दुर्बलता।
**वैवाहिक** वि० (सं) विवाह से सम्बन्ध रखने वाला।
**वैवाह्य** वि० (सं) १-विवाह सम्बन्धी। २-विवाह के योग्य हो।
**वैशंपायन** पुं० (सं) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।
**वैशद्य** पुं० (सं) १-निर्मलता। २-विशदता।
**वैशाख** पुं० (सं) १-चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना। २-मथानी का डंडा।
**वैशाखनंदन** पुं० (सं) गधा।
**वैशाखी** स्त्री० (सं) वैशाख मास की पूर्णमासी।
**वैशारद्य** पुं० (सं) १-पांडित्य। २-दक्षता।
**वैशिक** वि०(सं) वेश-सम्बन्धी। पुं० वेश्यागामी नायक (साहित्य)।
**वैशिष्ट** पुं० (सं) असाधारण। विशिष्टता।
**वैशिष्ट्य** पुं० (सं) १-विशिष्टता। २-विशेषता।
**वैशेषिक** पुं० (सं) १-छः दर्शनों में से एक। २-वैशेषिक-दर्शन का ज्ञाता। वि० किसी विशेष विषय से सम्बन्ध रखने वाला।
**वैशेष्य** पुं० (सं) विशेषता।
**वैश्य** पुं० (सं) भारतीय आर्यों की वर्ण व्यवस्था के चार वर्णों में से तीसरा जिसका काम कृषि, गो रक्षा और वाणिज्य है।
**वैश्यकर्म** पुं० (सं) वैश्य का पेशा।
**वैश्यवृत्ति** पुं० (सं) वैश्य का पेशा।
**वैश्रवण** पुं० (सं) १-कुबेर। २-शिव।
**वैश्वजनीन** वि० (सं) १-समस्त संसार के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० सारे जगत के लोगों का कल्याण करने वाला।
**वैश्वदेव** वि० (सं) सारे देवों से सम्बन्ध रखने वाला। पुं० १-विश्वदेव के लिए किया जाने वाला यज्ञ।
**वैश्वदेवत** पुं० (सं) दे० 'विश्वदेविक'।
**वैश्वदेविक** पुं० (सं) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।
**वैश्वमनस** पुं० (सं) एक प्रकार का मास।
**वैश्वयुग** पुं० (सं) वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत् आदि पांच संवत्सरों का युग (फ० ज्यो०)।
**वैश्वरूप** वि० (सं) अनेक रूपों वाला। पुं० विश्व।
**वैश्वरूप्य** पुं० (सं) बहुरूपता।
**वैश्वानर** पुं०(स) १-अग्नि। २-पित्त। ३-परमात्मा चेतन।
**वैषम** पुं० (सं) १-विषमता। २-संकट। ३-मूल।
**वैषम्य** पुं० (सं) दे० 'वैषम'।
**वैषयिक** वि०(सं) विषय सम्बन्धी। पुं० लंपट। विषयी
**वैषुवत** पुं० (सं) १-केन्द्र। २-संक्रांति।
**वैष्णव** पुं० (सं) १-विष्णु का उपासक तथा भक्त। २-हिन्दुओं का एक विष्णु उपासक संप्रदाय।
**वैष्णवी** स्त्री० (सं) १-विष्णु की शक्ति। २-दुर्गा। ३-गंगा। ४-तुलसी। ५-पृथ्वी।
**वैसा** वि० (हि) उस तरह का।
**वैसे** अव्य० (हि) उस तरह से। उस प्रकार से।
**वैहायस** वि० (स) व्योम या आकाश सम्बन्धी। आसमानी।
**वैहासिक** पुं० (स) मसखरा। विदूषक। भांड।
**वोक** पुं० (हि) ओर। तरफ।
**वोछा** वि० (हि) दे० 'ओछा'।
**वोट** पुं० (अं) निर्वाचन में किसी उम्मीदवार के पक्ष में जाने वाली राय या मत।
**वोड़ना** क्रि० (स) फैलाना।
**वोढव्य** वि० (सं) ढोने योग्य

**वोद** वि० (सं) तर। आर्द्र। गीला।
**वोदर** पुं० (सं) पेट। उदर।
**वोद्र** पुं० (सं) पेट। उदर।
**वोर** स्त्री० (हि) तरफ। ओर।
**वोहित्थ** पुं० (सं) १-बड़ी नाव। २-जहाज। पोत।
**व्यंग** पुं० (सं) १-गूढ़ अर्थ। २-ताना। बोली। ३-मेंढक। ४-एक रोग जिसमें मुँह में छाले पड़ जाते हैं।
**व्यंग्यचित्र** पुं० (सं) वह चित्र जो उपहास की दृष्टि से बनाया गया हो। (कार्टून)।
**व्यंग्योक्ति** स्त्री० (सं) वह उक्ति जिसमें व्यंग हो।
**व्यंजक** वि० (सं) व्यक्त या सूचित करने वाला।
**व्यंजन** पुं० (सं) १-वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के बोला जा सके। (व्याकरण)। २-व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया। ३-पका हुआ भोजन। ४-चावल आदि के साथ खाये जाने वाला पदार्थ। ५-चिह्न। ६-अंग। ७-मूँछ। ८-दिन।
**व्यंजनकार** पुं० (सं) खाना बनाने वाला।
**व्यंजनसंधि** स्त्री० (सं) व्यंजन वर्णों के मिलने पर होने वाला विकार।
**व्यंजना** स्त्री० (सं) १-व्यक्त करने की क्रिया या भाव। २-शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवा कुछ विशेष अर्थ निकलते हैं।
**व्यंजनावृत्ति** स्त्री० (सं) व्यङ्गपूर्ण भाव में लिखने का ढंग।
**व्यंजित** वि० (सं) १-व्यक्त किया हुआ। २-चिह्नित
**व्यक्त** वि० (सं) १-जो प्रकट किया गया हो। २-स्पष्ट ३-स्थूल। बड़ा।
**व्यक्ति** स्त्री०(सं) व्यक्त होने की क्रिया या भाव। पुं० (सं) १-मनुष्य। आदमी। २-जाति या समूह में से कोई एक। (इनडिविड्युअल)।
**व्यक्तिगत** वि० (सं) किसी व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाला। वैयक्तिक।
**व्यक्तित्व** पुं० (सं) वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी की स्पष्ट और स्वतन्त्र सत्ता सूचित होती है। (पर्सनेलिटी)।
**व्यक्तीकरण** पुं० (सं) १-व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया। २-संपादन करना।
**व्यक्तीभूत** वि० (सं) व्यक्त किया हुआ।
**व्यग्र** वि० (सं) १-घबड़ाया हुआ। २-भयभीत। ३-व्यस्त।
**व्यग्रमना** वि० (सं) घबड़ाया हुआ।
**व्यजन** पुं० (सं) हवा करने का पंखा।
**व्यतिक्रम** पुं० (सं) १-क्रमभंग। उलटफेर। २-बाधा।
**व्यतिक्रमण** पुं० (सं) क्रम या सिलसिले में उलटफेर करना।
**व्यतिक्रमी** वि० (सं) १-अपराधी। २-पाप करने वाला।
**व्यतिक्रांत** वि० (सं) १-भंग किया हुआ। २-जिसमें विपर्यय हुआ हो।
**व्यतिक्षेप** पुं० (सं) १-झगड़ा। २-अदल-बदल।
**व्यतिचार** पुं० (सं) १-पापकर्म करना। २-दोष। ऐब
**व्यतिपात** पुं० (सं) बहुत भारी उत्पात।
**व्यतिरिक्त** वि० (सं) १-भिन्न। अलग। बढ़ा हुआ। अव्य० अतिरिक्त। अलावा।
**व्यतिरेक** पुं०(सं) १-अभाव। २-भेद। ३-अतिक्रम। ४-भिन्नता। ५-एक अर्थालंकार।
**व्यतीत** वि० (सं) बीता। हुआ। गत।
**व्यतीतना** क्रि० (हि) बीतना।
**व्यतीपात** पुं० (सं) १-बहुत बड़ा उपद्रव। २-अपमान। ३-ज्योतिष-शास्त्र में सत्ताइस योगों में से सत्रहवाँ योग।
**व्यत्यय** वि० (सं) १-उल्लंघन। २-रोक। अड़चन।
**व्यथयिता** वि०(सं) १-वेदना या कष्ट देने वाला। २-दण्ड देने वाला।
**व्यथा** स्त्री० (सं) १-पीड़ा। वेदना। २-दुःख। क्लेश। ३-भय। डर।
**व्यथाकुल** वि० (सं) १-कष्ट से व्याकुल। २-व्यथित।
**व्यथाक्रांत** वि० (सं) दे० 'व्यथित'।
**व्यथित** वि० (सं) १-दुःखित। २-भयभीत। ३-व्याकुल।
**व्यपकर्ष** पुं० (सं) १-निन्दा। २-शिकायत।
**व्यपगत** वि० (सं) १-गया हुआ। २-असावधानी के कारण भूला हुआ। ३-वह अधिकार या सुभीता जो समय पर उपयोग न आने के कारण हाथ से निकल गया हो। (लेप्सड)।
**व्यपगतरश्मि** स्त्री० (सं) जिसकी किरणें विलीन हो गई हों।
**व्यपगति** स्त्री० (सं) १-असावधानी के कारण की गई छोटी भूल। २-नियत समय तक किसी अधिकार या सुभीते का उपयोग न करना। (लैप्स)।
**व्यपगम** पुं० (सं) प्रस्थान।
**व्यपगमन** पुं० (सं) दे० 'व्यपगति'।
**व्यभिचार** पुं०(सं)१-दुश्चरित्रता। २-पाप। ३-किसी नियम आदि को भंग करना। ३-किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध।
**व्यभिचारिणी** स्त्री० (सं) व्यभिचार कराने वाली स्त्री।
**व्यभिचारी** पुं० (सं) १-व्यभिचार करने वाला। २-वह जो अपने पथ से भ्रष्ट हुआ हो। ३-पर-स्त्री-गमन।
**व्यभिचारीभाव** पुं० (सं) साहित्य में वह भाव जो रस के उपयोगी होकर जलतरंगवत् उसमें सचरण करते हैं और समय-समय पर मुख्य भाव का रूप धारण करते हैं।

व्यय पुं०(सं) १-किसी वस्तु का विशेषतः धन आदि का इस प्रकार काम में आना कि वह समाप्त हो जाय। खर्च। (एक्सपेंडीचर)। २-खपत। ३-नाश
व्ययशाली वि० (सं) फजूल खर्च करने वाला।
व्ययशील वि० (सं) अपव्ययी।
व्ययित वि० (सं) व्यय या खर्च किया हुआ।
व्ययी वि० (सं) १-बहुत खर्च करने वाला। २-नष्ट होने वाला।
व्यर्थ अव्य० (सं) बिन मतलब के। यों ही। वि० १-अर्थ रहित। २-निरर्थक। ३-जिसका कोई फल न हो। (नल्ल)।
व्यर्थन पुं० (सं) आज्ञा, निर्णय आदि रद्द करना। (नलिफिकेशन)।
व्यलीक पुं० (सं) १-अपराध। २-डांट। ३-दुःख कष्ट। ४-खिट। ५-विलक्षणता। वि० १-अप्रिय। २-अपरिचित। ३-विलक्षण। ४-कपट।
व्यवकलन पुं० (सं) गणित में घटाने या बाकी करने की क्रिया।
व्यवकलित वि० (सं) बाकी निकाला हुआ। घटाया हुआ।
व्यवच्छिन्न वि० (सं) १-अलग। २-विभाग करके अलग किया हुआ। ३-निर्धारण किया हुआ।
व्यवच्छेद पुं० (सं) १-पृथकता। २-विभाग। खण्ड। ३-छुटकारा। ४-ठहराना।
व्यवच्छेदक वि० (सं) अलग करने वाला।
व्यवदात वि० (सं) १-चमकीला। २-स्वच्छ। साफ।
व्यवदान पुं० (सं) किसी वस्तु को शुद्ध तथा साफ करना।
व्यवदीर्ण वि० (सं) १-जिसके खण्ड हो गये हों। २-२-हतबुद्धि।
व्यवधा स्त्री० (सं) १-वह जो बीच में हो। २-छिपाव ३-पर्दा।
व्यवधाता वि० (सं) १-अलग करने वाला। २-बीच में पड़ने वाला। ३-पर्दा करने वाला।
व्यवधान पुं० (सं) १-ओट। परदा। २-रुकावट। बाधा। ३-विभाग। ४-परदा। ५-विच्छेद।
व्यवधायक पुं० (सं) १-छिपने वाला। २-अड़ करने या छिपाने वाला।
व्यवसाय पुं० (सं) १-जीविका निर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य। धंधा। पेशा। (अकुपेशन)। २-रोजगार। ३-कामधंधा। ४-निश्चय। ५-प्रयत्न ६-विचार। ७-अभिप्राय। ८-शिव।
व्यवसायप्रशिक्षण पुं० (सं) किसी व्यवसाय या पेशे को सिखाने के लिए दिया गया प्रशिक्षण (वोकेशनल ट्रेनिंग)।
व्यवसायबुद्धि वि० (सं) जिसका दृढ़ निश्चय हो।
व्यवसायक वि० (सं) पक्के निश्चय से काम करने वाला।
व्यवसायसंघ पुं० (सं) किसी व्यवसाय या उद्योग में काम करने वाले कर्मचारियों की संस्था जो संगठित रूप से उद्योगपतियों से अपनी मांग मनवाने का संघर्ष या प्रयत्न करती है। (ट्रेड यूनियन।
व्यवसायात्मक वि० (सं) उत्साहपूर्वक।
व्यवसायी पुं० (सं) १-व्यवसाय करने वाला। २-व्यापार करने वाला। ३-वह जो किसी काम का अनुष्ठान करता हो। वि० उद्यम करने वाला। २-परिश्रम करने वाला।
व्यवस्था स्त्री० (सं) १-किसी काम का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निर्धारित हुआ हो। २-प्रबन्ध। ३-स्थिरता। ४-शर्त। ५-निश्चित सीमा।
व्यवस्थान पुं० (सं) १-परस्पर होने वाला समझौता। २-सङ्गठित सभा या संघ। (कम्पैक्ट)। ३-व्यवस्था।
व्यवस्थान प्रज्ञप्ति स्त्री० (सं) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। (बौद्ध)।
व्यवस्थापक पुं० (सं) १-प्रबन्ध-कर्त्ता। (मैनेजर)। २-शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला। ३-व्यवस्थापिका-सभा का कोई सदस्य।
व्यवस्थापत्र पुं० (सं)वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्याख्या या वैचारिक विधान लिखा हो।
व्यवस्थापिका सभा स्त्री० (सं) किसी देश के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो देश के लिये कानून आदि बनाती है। (लेजिस्लेटिव काउंसिल)।
व्यवस्थापित वि० (सं) १-व्यवस्था किया हुआ। २-नियमित।
व्यवस्थित वि० (सं) १-जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था हो। नियमित। २-जिसका निर्णय हो चुका हो।
व्यवस्थिति स्त्री० (सं) १-उपस्थित या स्थिर होना। २-व्यवस्था। प्रबन्ध।
व्यवहर्ता पुं० (सं) किसी अभियोग आदि पर विधि-पूर्वक विचार करने वाला। न्यायकर्त्ता।
व्यवहार पुं० (सं) १-कार्य। २-सामाजिक प्रबन्ध में दूसरों के साथ किया जाने वाला आचरण। (कंडक्ट) ३-रुपये-पैसे का लेन-देन का काम। (डीलिंग)। ४-कार्यान्वित करना। (एक्शन)। ५-मुकद्दमा। (केस)। ६-किसी मुकदमे की सारी प्रक्रिया। (प्रोसीडिंग्स)। ७-उपचार। (यूजेज)। ८-परिपाटी
व्यवहारक पुं० (सं) वह जो वकालत या न्याय करता हो। २-वयस्क। बालिग। ३-व्यापारी।
व्यवहारज्ञ पुं० (सं) १-व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता। २-पूर्ण वयस्क।
व्यवहारतंत्र पुं० (सं) व्यवहारशास्त्र।
व्यवहारदर्शन पुं० (सं) व्यवहार या मुकदमों का विचार या सुनवाई करना।

व्यवहारद्रष्टा पुं० (सं) विचारपति।
व्यवहारनिरीक्षक पुं० (सं) वह अधिकारी जो छोटे या साधारण मुकद्मों की सरकार की ओर से पैरवी करता है। (कोर्ट इन्सपेक्टर)।
व्यवहारन्यायालय पुं० (सं) वह न्यायालय जिसमें केवल अर्थ-सम्बन्धी वादों या मुकद्मों पर विचार किया जाता है। (सिविल कोर्ट)।
व्यवहारपद पुं० (सं) व्यवहार या मुकद्मे का विषय
व्यवहार-प्राप्त वि० (सं) वयस्क। बालिग।
व्यवहारलक्षण पुं० (सं) मुकद्मों की जांच संबन्धी कोई विशेषता।
व्यवहारवाद पुं०(सं) वह वाद या मुकदमा जो केवल अर्थ से संबन्ध रखता हो। दीवानी दावा। (सिविल सूट)।
व्यवहारविधि स्त्री० (सं) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार संबन्धी बातों का उल्लेख हो। न्यायशास्त्र।
व्यवहार-विषय पुं० (सं) वाद या मुकदमे का विषय
व्यवहारशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें विधान के निर्णय और अपराधों के दण्ड का विवेचन होता है। धर्मशास्त्र।
व्यवहारसिद्धि स्त्री० (सं) व्यवहार शास्त्र के अनुसार अभियोगों का निर्णय करना।
व्यवहारस्थिति पुं० (सं) वाद या मुकदमे के विचार से संबन्ध रखने वाली कार्रवाई।
व्यवहारार्थी पुं० (सं) मुद्दई। मुकदमा दायर करने वाला। (प्लेंटिफ)।
व्यवहारासन पुं० (सं) न्यायासन।
व्यवहारास्पद पुं० (सं) नालिश। फरियाद।
व्यवहारिक वि० (स) १-जो व्यवहार के लिये ठीक हो। २-कानून संबन्धी। ३-मुकदमेबाज।
व्यवहारिकजीव पुं०(सं) विज्ञानमय कोष जो ज्ञानेंद्रिय के साथ बुद्धि के संयुक्त होने से होता है। (वेदांत)
व्यवहारी पुं० (स) १-व्यवहार करने वाला। २-प्रचलित। ३-मुकदमा लड़ने वाला।
व्यवहार्य वि० (सं) १-व्यवहार या काम में लाने या आने योग्य। २-जिसे क्रियात्मक रूप दिया जासके। (प्रेक्टीकल)।
व्यवहित वि० (सं) जिसके आगे किसी प्रकार का पर्दा पड़ गया हो।
व्यवहृत वि० (सं) २-व्यवहार या काम में लाया हुआ। २-जिसका प्रयोग होता है।
व्यष्टि पुं०(स)समिष्टि का कोई एक पृथक एवं विशिष्ट अंश। समिष्टि का उलटा व्यक्ति।
व्यष्टिवाद पुं०(स) व्यष्टि की स्वतन्त्र सत्ता मानने का सिद्धान्त।
व्यसन पुं० (सं) १-विपत्ति। २-बुरी लत। ३-विषयों के प्रति आसक्ति। ४-दुःख। ५-व्यर्थ का उद्योग ६-दुर्भाग्य। ७-काम, क्रोध आदि से उत्पन्न दोष।
व्यसनकाल पुं० (स) सङ्कट का दिन।
व्यसनप्राप्ति स्त्री० (सं) सङ्कट का दिन आना।
व्यसनाक्रांत वि० (सं) जो सङ्कट में हो।
व्यसनागम पुं० (सं) बुरे दिनों का आना।
व्यसनात्यय पुं० (सं) सङ्कट या विपत्ति का अन्त।
व्यसनान्वित वि० (सं) सङ्कट में फँसा हुआ।
व्यसनाप्लुत वि० (सं) व्यसनान्वित।
व्यसनार्त वि० (सं) आपद्ग्रस्त। सङ्कटापन्न।
व्यसनी पुं० (हि) १-वह जिसे किसी काम या बात का व्यसन हो। २-वेश्यागामी।
व्यस्त वि० (स) १-घबराया हुआ। व्याकुल। २-काम में फँसा या लगा हुआ। ३-व्याप्त। ४-फेंका हुआ। ५-स्थानान्तरित किया हुआ।
व्यस्तक वि० (स) बिना हड्डी का।
व्यस्तकेश वि० (सं) जिसके बाल बिखरे हुए हों।
व्याकरण पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है। (ग्रामर)।
व्याकीर्ण वि० (सं) जो चारों ओर अच्छी प्रकार फैलाया गया हो।
व्याकुल वि० (सं) १-घबड़ाया हुआ। २-बहुत उत्कंठित। कातर।
व्याकुलचित्त वि० (सं) जो बहुत घबड़ाया हुआ हो।
व्याकुलमूर्धज वि० (सं) जिसके केश बिखरे हुए हों।
व्याकुललोचन वि० (सं) जिसे कम दिखाइ देता हो
व्याकुलित वि० (सं) घबड़ाया हुआ। विकल।
व्याकूति स्त्री० (सं) छल। धोखा।
व्याकृति स्त्री०(सं) १-व्याख्यान। २-वाक्यों में शब्दों का क्रम जिसके आधार पर उसका अर्थ निकलता है। (कन्स्ट्रक्शन)।
व्याक्रोश पुं० (सं) किसी का तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना। २-चिल्लाना।
व्याख्या स्त्री० (सं) किसी जटिल वाक्य के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। (एक्सप्लेशन)। २-वर्णन।
व्याख्यागम्य वि० (सं) जो टीका या व्याख्या आदि की सहायता से समझाया जा सके।
व्याख्यात वि० (स) जिसकी व्याख्या की गई हो।
व्याख्यातव्य वि० (सं) व्याख्या के योग्य।
व्याख्याता पुं० (सं) १-व्याख्या करने वाला। २-भाषण करने वाला।
व्याख्यान पुं०(सं) १-वक्तृता। २-भाषण। ३-वर्णन करने का कार्य। व्याख्या करना।
व्याख्यानपीठ पुं० (सं) किसी सभा का वह मंच जहाँ से व्याख्यान दिया जाता है। सभामंच। (रोस्ट्रम)।
व्याख्यानशाला स्त्री० (स) वह स्थान जो व्याख्यान या भाषण देने के लिए हो।

**व्याघात** पुं० (सं) १-बाधा। विघ्न। २-किसी के अधिकार या स्वत्व पर होने वाला आघात। (इनफ्रिन्जमेंट)। ३-मार। ४-एक काव्यालंकार जिसमें एक ही उपाय द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

**व्याघ्र** पुं० (सं) बाघ। शेर।

**व्याघ्रचर्म** पुं० (सं) बाघ की खाल।

**व्याघ्रनख** पुं० (सं) १-बाघ का नाखून। २-नख नामक गंधद्रव्य।

**व्याघ्रपुच्छ** पुं० (सं) बाघ की पूँछ।

**व्याघ्रलोम** पुं० (सं) बाघ की मूँछ।

**व्याघ्रास्य** पुं० (सं) १-शिव। २-बिल्ली।

**व्याघ्राण** पुं० (सं) सूँघना।

**व्याघ्री** स्त्री० (सं) १-बाघ की मादा शेरनी। २-एक प्रकार की कौड़ी।

**व्याज** पुं० (सं) १-छल। बहाना। २-बाधा। ३-विलम्ब। पुं० (हि) दे० 'ब्याज'।

**व्याजनिंदा** स्त्री० (सं) १-किसी बहाने से की जाने वाली निंदा। २-वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार से निन्दा की जाय।

**व्याजस्तुति** स्त्री० (सं) १-वह स्तुति जो साधारणतः देखने में स्तुति न जान पड़े। २-वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार की स्तुति की जाती है।

**व्याजी** स्त्री० (सं) बिक्री में माप या तौल के ऊपर कुछ थोड़ा सा और देना।

**व्याजोक्ति** स्त्री० (सं) १-कपट भरी बात। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी स्पष्ट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का मिस किया जाय।

**व्याड** पुं० (सं) १-सर्प। २-बाघ। ३-इन्द्र। वि० धूर्त।

**व्यादान** पुं० (सं) १-फैलाव। विस्तार। २-उद्घाटन।

**व्याध** पुं० १-जङ्गली पशुओं को मार कर जीवन निर्वाह करने वाला। शिकारी। २-बहेलिया। ३-इस काम को करने वाली एक जाति। वि० दुष्ट।

**व्याधि** स्त्री० (सं) १-रोग। बीमारी। २-विपत्ति। ३-झंझट। ४-साहित्य में एक संचारी भाव।

**व्याधिकर** वि० (सं) बीमारी पैदा करने वाला।

**व्याधिग्रस्त** वि० (सं) रोगी। बीमार।

**व्याधित** वि० (सं) रोगी। बीमार।

**व्याधिनिग्रह** पुं०(सं) रोग को बढ़ने से रोकना।

**व्याधिपीड़ित** वि०(सं) रोगी।

**व्याधिभय** पुं० (सं) रोग का डर।

**व्याधिमंदिर** पुं० (सं) शरीर।

**व्याधियुक्त** वि० (सं) बीमार।

**व्याधिरहित** वि० (सं) जिसके कोई रोग न हो।

**व्याधिहर** वि० (सं) रोग या व्याधि को दूर करने वाला।

**व्यान** पुं० (सं) शरीरस्थ पांच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में व्याप्त होती है।

**व्यापक** वि० (सं) १-चारों ओर फैला हुआ। २-भरा या छाया हुआ। घेरने या ढकने वाला।

**व्यापकपुरुषमताधिकार** पुं० (सं) किसी देश या राज्य के सभी वयस्क व्यक्तियों को केवल पागल या अपराध में दंडित व्यक्तियों को छोड़ कर मत प्रदान करने का अधिकार (यूनिवर्सल मैनहुड सफरेज)

**व्यापन** पुं०(सं) फैलना। व्याप्त होना।

**व्यापना** क्रि० (हि) किसी वस्तु के अन्दर व्याप्त होना या फैलाना।

**व्यापादक** वि० (सं) १-दूसरों की बुराई की इच्छा रखने वाला। २-हत्या या विनाश करने वाला।

**व्यापादनीय** वि०(सं) मार डालने या नष्ट करने योग्य

**व्यापाद्य** वि० (सं) व्यापादनीय।

**व्यापादित** वि० (सं) मृत। मारा हुआ।

**व्यापार** पुं० (सं) १-कार्य। काम। २-काम करना। (ऑपरेशन)। ३-चीजें खरीद कर बेचने का काम (ट्रेड)। ४-सहायता।

**व्यापारचिह्न** पुं० (सं) वह विशेष चिह्न जो व्यापारी माल पर उसे अन्य व्यापारियों के माल से प्रथक सूचित करने के लिये अंकित किया जाता है। (ट्रेड मार्क)।

**व्यापारमंडल** पुं० (सं) वह सभा जो व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करती है। (चेम्बर्स आफ कॉमर्स)।

**व्यापारिक** वि० (सं) व्यापार-सम्बन्धी।

**व्यापारी** पुं० (हि) व्यवसाय, व्यापार या रोजगार करने वाला। (डीलर, ट्रेडर)। वि० (हि) व्यापार सम्बन्धी।

**व्यापी** वि० (हि) व्याप्त होने या चारों ओर फैलने वाला।

**व्याप्त** वि० (सं) १-किसी वस्तु या स्थान में भरा, फैला या छाया हुआ। २-सीमा में या अन्तर्गत आया हुआ।

**व्याप्ति** स्त्री० (सं) १-व्याप्त होने की क्रिया, भाव या सीमा। २-न्यायशास्त्र में किसी पदार्थ का पूर्ण या एक रूप से मिला या फैला हुआ होना।

**व्यामूढ़** वि० (सं) अत्यधिक घबड़ाया हुआ।

**व्यामोह** पुं० (सं) मोह। अज्ञान।

**व्यायाम** पुं०(सं) १-बल बढ़ाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक परिश्रम। कसरत (एक्सरसाइज) २-पौरुष। ३-काम। ४-सैनिक कवायद।

**व्यायामभूमि** स्त्री० (सं) व्यायाम करने की जगह।

**व्यायामशाला** स्त्री० (सं) व्यायाम भूमि।

**व्यायामी** पुं० (सं) १-कसरत करने वाला। २-परिश्रमी।

**व्यायोग** पुं० (सं) रूपक या दृष्टि काव्य का एक भेद जिसकी कथा पौराणिक या ऐतिहासिक तथा एक

अंक की होती है।

**व्याल** पुं० (सं) १-सांप। २-बाघ। ३-राजा। ४-दण्डक छन्द का एक भेद। वि० (सं) दुष्ट।

**व्यालखड्ग** पुं० (सं) व्याघ्र नख नामक एक गन्धद्रव्य

**व्यालग्राह** पुं० (सं) संपेरा।

**व्यालनख** पुं० (सं) दे० 'व्याघ्रनख'।

**व्यालपाणि** पुं० (सं) दे० 'व्याघ्रनख'।

**व्यालप्रहरण** पुं० (सं) 'व्याघ्रनख'।

**व्यालसूदन** पुं० (सं) गरुड़।

**व्यालाद** पुं० (सं) गरुड़।

**व्यालू** पुं० (हि) वह भोजन जो रात के समय किया किया जाय।

**व्यावर्तक** पुं० (सं) पीछे की ओर लौटने वाला।

**व्यावर्तन** पुं० (सं) १-घेरने या चारों ओर से रोक लेने की क्रिया। २-घूमना या चक्कर खाना। ३-लपेट। पट्टी।

**व्यावर्तित** वि० (सं) १-चक्कर खिलाया हुआ। २-लपेटा हुआ। ३-लौटाया हुआ।

**व्यावसायिक प्रतिनिधित्व** पुं० (सं) वह प्रतिनिधित्व जो व्यवसाय के अनुसार दिया गया हो (रिप्रेजन्टेशन)।

**व्यावहारिक** पुं० १-व्यवहार या बरताव सम्बन्धी। २-व्यवहार में आने या लाने योग्य।

**व्यावहारिकऋण** पुं० (सं) किसी कारबार के लिए लिया हुआ ऋण।

**व्यावृत** वि० (सं) १-जो ढका हुआ न हो। २-हटाया हुआ। ३-परदा किया हुआ। ४-अपवाद किया हुआ।

**व्यावृति** स्त्री० (सं) १-ढकना। २-छांटना। ३-आवृत करना।

**व्यावृत्त** वि० (सं) १-छूटा हुआ। निवृत्त। २-वर्जित ३-टूटा हुआ। ४-विभाजित। ५-मनोनीत। ६-ढका हुआ। ७-प्रशंसित। ८-घुमाया हुआ।

**व्यावृत्ति** स्त्री० (सं) १-खण्डन। २-मन से पसन्द करने का काम। ३-बचत। (सेविंग)। ४-चारों ओर फेरना। ५-प्रशंसा। ६-निषेध। ७-बाधा। ८-नियोग।

**व्यासंग** पुं० (सं) १-बहुत अधिक आसक्ति। २-बहुत अधिक भक्ति या अनुराग।

**व्यास** पुं० (सं) पाराशर के पुत्र कृष्णद्वैपायन जो वेदों के संग्रहकर्ता तथा पुराणों के रचयिता माने जाते हैं। २-कथावाचक। ३-वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त अथवा गोल क्षेत्र के बीच में होती हुई गई हो। तथा उसके दोनों सिरे किसी परिधि से हों ४-विस्तार।

**व्यासकूट** पुं०(सं) १-वेदव्यास के महाभारत में आये हुए कूट श्लोक। २-माल्यवान पर्वत पर रामचन्द्रजी द्वारा सीता के लिए कहे गए कूट श्लोक।

**व्यासक्त** वि० (सं) १-जो बहुत अधिक आसक्त हुआ हो। २-एक ही प्रकार के होने के कारण परस्पर सम्बद्ध या सदृश। (एलाइड)।

**व्यासदेव** पुं० (सं) कृष्णद्वैपायन।

**व्यासपूजा** स्त्री० (सं) आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन होने वाली गुरुपूजा।

**व्यासमाता** स्त्री० (सं) सत्यवती।

**व्यासार्द्ध** पुं० (सं) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग। (रेडियस)।

**व्यासासन** पुं० (सं) कथावाचक का वह आसन जिस पर बैठकर वह कथा कहता है।

**व्यासिद्ध** पुं० (सं) मना किया हुआ। २-अवरुद्ध। ३-किसी पद या विशेष कार्य के लिए मुख्य रूप से सुरक्षित किया हुआ। (रिजर्व्ड)।

**व्यासेध** पुं०(सं) किसी विशिष्ट व्यक्ति को किसी पद, कार्य आदि के लिए अलग रखने की क्रिया। (रिजर्वेशन)।

**व्याहत** वि० (सं) १-मना किया हुआ। वर्जित। २-व्यर्थ। ३-बुरा। निषिद्ध।

**व्याहृति** स्त्री०(सं) १-कथन। उक्ति। २-भूः भुवः स्वः इन तीनों का मन्त्र।

**व्युत्क्रम** पुं० (सं) १-क्रम में उलट-फेर। २-मृत्यु।

**व्युत्थान** पुं० (सं) विरुद्ध या खिलाफ कार्य करना। २-रोकना। ३-स्वाधीन होकर कार्य करना। ४-किसी राज्य के विरुद्ध बगावत करना। (रिवोल्ट)।

**व्युत्पत्ति** स्त्री० (सं) १-उद्गम या उत्पत्ति का स्थान २-शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो। (डेरीवेशन)। ३-शास्त्रों का अच्छा ज्ञान।

**व्युत्पत्तिरहित** वि० (सं) जिसके मूल रूप का पता न चल सका हो।

**व्युत्पन्न** वि० (सं) १-जिसका संस्कार हो चुका हो। किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता।

**व्युत्पादक** वि० (सं) उत्पन्न करने वाला।

**व्युपदेश** पुं० (सं) १-मिस। बहाना। २-ठगी। कपट

**व्यूढ** वि० (सं) १-स्थूल। मोटा। २-उत्तम। ३-तुल्य समान। ४-दृढ़। मजबूत। पुं० (सं) १-विवाहित। २-जो व्यूह बनाकर खड़ा हो।

**व्यूह** पुं०(सं) १-समूह। निर्माण। रचना। ३-शरीर सेना। ४-युद्ध के समय की जाने वाली सेना की स्थापना। ५-किसी विपत्ति या आक्रमण से बचने के लिए की हुई ऊपर की रचना।

**व्यूहन** पुं० (सं) १-युद्ध के समय सेना की भिन्न-भिन्न स्थानों पर नियुक्त करने की क्रिया। शरीर के अंग-प्रत्यंगों की बनावट। ३-मिलाना।

**व्यूहभंग** पुं० (सं) सेना का तितरबितर होना।

**व्यूहभेद** पुं० (सं) दे० 'व्यूहभंग'।

व्यूहरचना पुं० (सं) सेना को ठीक स्थान पर नियुक्त रखना।
व्यूहित वि० (सं) व्यूहबद्ध।
व्योम पुं० (सं) १-आकाश। २-मेघ। बादल। ३-जल। पानी।
व्योमकेश पुं० (सं) शिव।
व्योमगंगा स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
व्योमग वि०(सं) आकाश में उड़ने वाला।
व्योमगमनी विद्या स्त्री० (सं) आकाश में उड़ने की विद्या।
व्योमचर वि० (सं) आकाश में विचरण करने वाला
व्योमचारी पुं० (सं) १-वह जो आकाश में विचरण करता हो। २-देवता। ३-पक्षी।
व्योमपुष्प पुं० (सं) कोई असंभव बात या वस्तु।
व्योमयान पुं० (सं) हवाई जहाज। वायुयान।
व्योमरत्न पुं० (सं) सूर्य।
व्योमवर्त्म पुं० (सं) आकाशमार्ग।
व्योमसरिता स्त्री० (हिं) आकाशगंगा।
व्योमसरित् स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
व्योमस्थली स्त्री० (सं) पृथ्वी। जमीन।
व्रज पुं० (सं) १-जाना या चलना। २-समूह। झुण्ड। ३-मथुरा तथा वृन्दावन के आसपास का क्षेत्र। जो श्रीकृष्ण की लीला भूमि थी।
व्रजक पुं० (सं) तपस्वी।
व्रजकिशोर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजन पुं० (सं) गमन। चलन।
व्रजनाथ पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजभाषा पुं० (सं) एक प्रसिद्ध भाषा जो मथुरा आगरे आदि में बोली जाती है तथा जिसमें तुलसी बिहारी आदि अनेक कवियों ने ग्रन्थ लिखे हैं।
व्रजभू वि० (सं) व्रज में उत्पन्न।
व्रजमंडल पुं० (सं) व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।
व्रजमोहन पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजस्त्री स्त्री० (सं) गोपिका।
व्रजांगना स्त्री० (सं) १-गोपिका। २-व्रज की स्त्री।
व्रजेंद्र पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रजेश्वर पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
व्रज्या स्त्री० (सं) १-घूमना-फिरना। २-आक्रमण ३-जाना। ४-एक स्थान पर बहुत सी वस्तुएं एकत्रित करना। ५-दल। ६-रङ्गभूमि।
व्रण पुं० (सं) १-फोड़ा। २-घाव।
व्रणकारक-गैस स्त्री० (सं) एक प्रकार की विषैली गैस जिसके शरीर सम्पर्क से शरीर पर छाले पड़ जाते हैं (ब्लिस्टर गैस)।
व्रणग्रंथि स्त्री० (सं) फोड़े के ऊपर होने वाली गांठ।
व्रणपट्ट पुं० (सं) घाव या फोड़े पर बांधने की पट्टी।
व्रणपट्टिका स्त्री० (सं) दे० 'व्रणपट्ट'।
व्रणशोधन पुं० (सं) घाव या फोड़े की सफाई।
व्रणसंरोहण पुं० (सं) घाव का भरना।
व्रणित वि० (सं) १-आहत। जख्मी। २-जिसे घाव लगा हो। ३-जो फोड़े में परिणत हो गया हो। (अल्सरेटेड)।
व्रणी पुं० (हि) व्रण का रोगी।
व्रत पुं० (सं) १-भोजन करना। २-धार्मिक अनुष्ठान के लिये नियमपूर्वक उपवास करना। ३-प्रतिज्ञा। संकल्प।
व्रतग्रहण पुं० (सं) १-कोई धार्मिक कृत्य करने का संकल्प करना। २-संन्यास लेना।
व्रतचर्या स्त्री० (सं) किसी प्रकार का व्रत करने या रखने का काम।
व्रतति स्त्री० (सं) दे० 'व्रतती'।
व्रतती स्त्री० (सं) १-विस्तार। फैलाव। २-लता।
व्रतपारण पुं० (सं) १-व्रत की समाप्ति। २-प्रतिज्ञा-भङ्ग।
व्रतभंग पुं० (सं) व्रतभंग होना।
व्रतलोपन पुं० (सं) दे० 'व्रतभंग'।
व्रतविसर्जन पुं० (सं) व्रत समाप्त करना।
व्रतसंरक्षण पुं० (सं) व्रत का पालन करना।
व्रतसमापन पुं० (सं) व्रत की समाप्ति।
व्रतस्नान पुं० (सं) वह स्नान जो व्रत के बाद किया जाता है।
व्रतहानि स्त्री० (सं) व्रत को तोड़ना।
व्रती पुं० (हि) १-जिसने व्रत धारण किया हो। २-ब्रह्मचारी। ३-यजमान।
व्राचट स्त्री० (हि) १-अपभ्रंश भाषा का एक भेद जो सिन्ध (पाकिस्तान) में प्रचलित था। २-पैशाचिक भाषा का एक भेद।
व्राचड स्त्री० (हि) दे० 'व्राचट'।
व्रात पुं० (सं) वह परिश्रम जो जीविका के लिये किया जाय।
व्रातपति पुं० (सं) किसी दल या संघ का अध्यक्ष।
व्रात्य वि० (सं) १-व्रत-सम्बन्धी। व्रत का। पुं० (सं) वर्णसंकर। दोगला।
व्रीड पुं० (सं) लज्जा। शर्म।
व्रीडित वि० (सं) लज्जित।
व्रीहि पुं० (सं) १-धान। २-चावल।
व्रीह्यगार पुं० (सं) धान का गोदाम।
व्रैहेय पुं० (सं) वह खेत जिसमें धान उग सकें।

[शब्दसंख्या—४६६६२]

# श ( )

**श** देवनागरी वर्णमाला का तीसवाँ व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान प्रधानतः तालु है।

**शंक** पुं० (सं) १-भय। डर २-शंका। ३-बैल।

**शंकना** क्रि० (हि) १-शंका या सन्देह करना। २-डरना।

**शंकनीय** वि० (सं) १-शंका करने योग्य। २-भय के योग्य।

**शंकर** वि० (सं) १-मंगलकारक। २-लाभदायक। पुं० १-शिव। २-कबूतर। ३-एक राग जो रात्रि के समय गाया जाता है। ४-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ तथा १० के विश्राम से २६ मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरु लघु होता है।

**शंकरा** पुं० (हि) १-एक राग। २-शिव। ३-पार्वती।

**शंकराचार्य** पुं०(सं) अद्वैतमत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

**शंकरी** स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-एक रागिनी। ३-शमीवृक्ष।

**शंका** स्त्री० (सं) १-अनिष्ट का भय। डर। २-सन्देह। ३-काव्य में एक संचारी भाव।

**शंकाजनक** वि० (सं) सन्देह उत्पन्न करने वाला।

**शंकानिवारण** पुं० (सं) शंका या सन्देह दूर किया जाना।

**शंकानिवृत्ति** स्त्री० (सं) दे० 'शंकानिवारण'।

**शंकाशील** वि०(सं)शंका करने वाला। शक्की मिजाज वाला।

**शंकासमाधान** पुं० (सं) शंका को दूर करना।

**शंकित** वि० (सं) १-डरा हुआ। भयभीत। २-जिसे सन्देह हुआ हो। ३-अनिश्चितता।

**शंकु** पुं० (सं) १-कोई नुकीली वस्तु। २-मेख। कील ३-खूँटी। ४-भाला। ५-विष। शिव।

**शंकुला** स्त्री० (सं) सुपारी काटने का सरौता।

**शंख** पुं० (सं) १-एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बजाया जाता है। २-सौ पद्म की संख्या। ३-कनपटी। ४-चरणचिह्न ५-हाथी का गंडस्थल।

**शंखक्षीर** पुं० (सं) असंभव बात। अनहोनी बात।

**शंखचरी** स्त्री०(सं) १-ललाट पर का चन्दन का तिलक २-भाल। ललाट।

**शंखधर** पुं० (सं) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। वि० शंख-धारण करने वाला।

**शंखपाणि** पुं० (सं) विष्णु।

**शंखभृत** पुं० (सं) विष्णु।

**शंखविष** पुं० (सं) संखिया।

**शंखासुर** पुं० (सं) एक दैत्य का नाम जो ब्रह्मा से वेद चुरा कर समुद्र गर्भ में जा छिपा था।

**शंखिनी** स्त्री० (सं) १-एक औषध। २-कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक। ३-सांप। ४-बौद्धों की एक शक्ति।

**शंगरफ** पुं० (फा) दे० 'शिंगरफ'।

**शंजरफ** पुं० (फा) शिंगरफ।

**शंठ** पुं० (सं) १-विवाहित। २-नपुंसक। ३-मूर्ख।

**शंड** पुं० (सं) १-नपुंसक। हिजड़ा। २-सांड। ३-पागल। ४-कमलिनी।

**शंपा** स्त्री० (सं) १-बिजली। २-कमर। कटि।

**शंब** पुं० (सं) १-लोहे की जंजीर। २-इन्द्र का वज्र ३-नियमित रूप से हल जोतने की क्रिया।

**शंबर** पुं० (सं) १-युद्ध। २-मछली। ३-तालवृक्ष। ४-एक दैत्य का नाम। वि० १-भाग्यवान। सुखी। २-बहुत बढ़िया।

**शंबरसूदन** पुं० (सं) कामदेव।

**शंबरारि** पुं० (सं) मदन। कामदेव।

**शंबल** पुं०(सं)१-सम्बल। पाथेय। २-तट। ३-कुञ्ज। ४-ईर्ष्या।

**शंबु** पुं० (सं) सीपी। घोंघा।

**शंबुक** पुं० (सं) सीपी। घोंघा।

**शंबूक** पुं० (सं) १-सीपी। घोंघा। २-हाथी की सूंड का अगला भाग। ३-एक तपस्वी शूद्र का नाम।

**शंभु** पुं० (सं) १-शिव। २-एक दैत्य का नाम। (रामायण)। ३-एक वर्णवृत्त। ४-विष्णु। ५-पारा

**शंस** पुं० (सं) १-शपथ। २-प्रतिज्ञा। ३-इच्छा। ४-चापलूसी। ५-वक्तता। ६-प्रशंसा।

**शंसा** स्त्री० (सं) दे० 'शंस'।

**शऊर** पुं० (अ) १-बुद्धि। २-भली प्रकार काम करने का ढंग या योग्यता।

**शऊरदार** पुं० (अ) जिसमें शऊर हो। समझदार।

**शक** पुं० (सं) १-एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। २-तातार देश। (अ) शंका। सन्देह।

**शकट** पुं० (सं) १-बैलगाड़ी। २-भार। ३-शरीर। देह। ४-रोहिणी नक्षत्र।

**शकटव्यूह** पुं० (सं) सेना की ऐसी बनावट जिसमें आगे पतला और पीछे मोटी हो।

**शकटहा** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।

**शकर** स्त्री० (हि) दे० 'शक्कर'।

**शकरकंद** पुं० (फा) एक प्रकार का मीठा कंद।

**शकरजबान** वि० (फा) मीठा बोलने वाला।

**शकरपारा** पुं० (फा) १-एक प्रकार की चौकोर मिठाई

२-एक नीबू जैसा बड़ा फल।
**शकल** पुं० (सं) १-त्वचा। चमड़ा। २-छाल। ३-खांड। ४-टुकड़ा। स्त्री० (फा) १-चेहरा। स्वरूप। ३-मुख का भाव। ४-बनावट। ५-ढंग।
**शकलसूरत** स्त्री० (हिं) मुख की आकृति।
**शकांतक** पुं० (सं) शक जाति का अन्त करने वाला
**शकाब्द** पुं०(सं) राजा शालिवाहन का चलाया हुआ एक शक-सम्वत्।
**शकारि** पुं० (स) शकजाति का शत्रु। विक्रमादित्य।
**शकुंत** पुं० (सं) १-पक्षी। २-कीड़ा। ३-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
**शकुंतला** स्त्री० (सं) १-महाकवि कालिदास का एक प्रसिद्ध नाटक। २-राजा दुष्यन्त की पत्नी, विश्वामित्र से मेनका के गर्भ से उत्पन्न पुत्री का नाम।
**शकुन** पुं० (स) १-शुभ महूर्त्त। २-शुभ महूर्त्त में होने वाला कार्य। ३-किसी विशेष कार्य के आरंभ में दिखाई देने वाले शुभ या अशुभ लक्षण (सगुन) ४-मंगल अवसरों पर गाये जाने वाले गीत।
**शकुनशास्त्र** पुं०(सं) एक ग्रन्थ विशेष जिसमें शकुनों के शुभ या अशुभ होने का विवेचन होता है।
**शकुनि** पुं० (सं) १-पक्षी। २-गिद्ध। ३-दुर्योधन के मामा का नाम। ४-दुष्ट आदमी।
**शक्कर** स्त्री० (फा) १-चीनी। २-खांड। पुं०(सं) १-बैल। २-वृष।
**शक्की** वि० (अ) हर बात में सन्देह करने वाला।
**शक्त** वि० (सं) समर्थ। ताकतवर।
**शक्ति** स्त्री० (सं) १-बल। ताकत। वह तत्व जो कोई काम करता, कराता या क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखाता हो। (इनर्जी)। २-बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सोना आदि हो (पावर)। ३-प्रकृति। ४-अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करने वाले शाक्त कहलाते हैं। (तन्त्र)। ५-दुर्गा। ६-लक्ष्मी। ७-गौरी। ८-भग। ९-तलवार १०-अधिकार।
**शक्तिधुलाधर** पुं० (सं) कार्त्तिकेय।
**शक्तिपरस्तात्** अव्य० (सं) किसी अधिकार या शक्ति के बाहर। (आल्ट्रावायर्स)।
**शक्तिपूजक** पुं० (सं) १-शक्ति का उपासक। शाक्त २-तान्त्रिक।
**शक्तिपूजा** स्त्री० (सं) शक्ति का शाक्त द्वारा होने वाला पूजन।
**शक्तिभृत्** पुं० (सं) कार्त्तिकेय। स्कन्द।
**शक्तिमत्ता** स्त्री०(स) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म ताकत।
**शक्तिमत्त्व** पुं० (सं) शक्तिमत्ता।
**शक्तिसंतुलन** पुं०(सं) दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना। (बैलेंस आफ पावर)।
**शक्तिसंपन्न** वि० (सं) बलवान्। ताकतवर।
**शक्तु** पुं० (सं) सत्तू।
**शक्य** वि० (सं) १-क्रियात्मक रूप से हो सकने योग्य सम्भव। २-जिसमें शक्ति हो।
**शक्यार्थ** पुं० (सं) शब्द की अभिधा शक्ति से मालूम किया जाने वाला अर्थ।
**शक्र** पुं० (स) १-इन्द्र। २-ज्येष्ठा नक्षत्र। ३-रगण के चौथे भेद की संज्ञा (।ऽ।ऽ)। वि० समर्थ। योग्य।
**शक्रगोप** पुं० (स) बीरबहूटी।
**शक्रचाप** पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
**शक्रज** पुं० (स) काकपक्षी।
**शक्रजात** पुं० (स) कौवा।
**शक्रजित्** पुं० (सं) मेघनाद।
**शक्रनंदन** पुं० (सं) अर्जुन।
**शक्रवाहन** पुं० (सं) मेघ। बादल।
**शक्रसुत** पुं० (सं) इन्द्र का पुत्र बलि।
**शक्राणि** स्त्री०(सं)१-शची। इन्द्राणी। २-निर्गुण्डी।
**शक्ल** स्त्री० (हि) दे० 'शकल'।
**शक्वर** पुं० (सं) १-बैल। २-आकाश।
**शख्स** पु० (अ) व्यक्ति। मनुष्य। आदमी।
**शख्सी** वि० (अ) व्यक्तिगत।
**शख्सीहकूमत** स्त्री० (अ) एकतन्त्र राज्य। (डिक्टेटर शिप)।
**शख्सीयत** स्त्री० (अ) व्यक्तित्व।
**शगल** पुं०(अ)१-व्यापार। कामधंधा। २-मनोविनोद
**शगुन** पुं० (हिं) १-शकुन। २-भेंट। नजराना। ३-विवाह में बात पक्की करने की रस्म।
**शगूफा** पुं०(फा) १-कली। २-पुष्प। ३-कोई नई और विलक्षण बात।
**शचि** स्त्री० (स) दे० 'शची'।
**शची** स्त्री० (सं) १-इन्द्र की पत्नी। २-सतावर। ३-बुद्धि। ४-वक्तृत्व शक्ति।
**शचीपति** पुं० (स) इन्द्र।
**शजरा** पुं० (अ) १-पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा। २-वृक्ष।
**शटा** स्त्री० (सं) जटा।
**शठ** वि० (सं) १-धूर्त। चालाक। २-लुच्चा। ३-दुष्ट ४-मूर्ख। पुं० साहित्य में वह नायक जो पर स्त्री से प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करें।
**शठता** स्त्री० (सं) १-धूर्त्तता। २-पाजीपन। बदमाशी
**शठत्व** पुं० (सं) शठता।
**शण** पुं० (सं) १-सन नाम का पौधा। २-भंग।
**शत** वि० (सं) सौ।
**शतक** पुं० (सं) १-सौ का समूह। २-शताब्दी। ३-एक तरह की सौ वस्तुओं का समूह।
**शतकोटि** पुं० (सं) १-सौ करोड़ की संख्या। २-हीरा ३-इन्द्र का वज्र।

शतक्रतु पुं० (सं) १-इन्द्र। २-वह जिसने यज्ञ किये हों।
शतखंड पुं० (सं) १-स्वर्ण। सोना। २-सोने की बनी हुई कोई वस्तु।
शतगु वि० (सं) सौ गाय रखने वाला।
शतग्रंथि स्त्री० (सं) १-सफेद दूब। २-नीली दूब।
शतघ्नी पुं० (सं) १-एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। २-एक प्राणघातक रोग जो गले में होता है। ३-तोप।
शतदल पुं० (सं) पद्म। कमल।
शतद्रु पुं० (सं) सतलज नदी का प्राचीन नाम।
शतधा स्त्री० (सं) दूब।
शतपत्र वि० (सं) १-सौ दलों या पत्तों वाला। २-सौ पंखों वाला। पुं० (सं) १-कमल। २-मोर। ३-मैना। ४-सारस।
शतपद पुं० (सं) १-कनखजूरा। २-च्यूँटी।
शतपदी स्त्री० (सं) १-कनखजूरा। २-सतावर। ३-एक लता।
शतपाद पुं० (सं) दे० 'शतपद'।
शतपुत्री वि० (सं) १-सतावर। २-शतपुतिया तरोई।
शतमख पुं० (सं) १-इन्द्र। २-उल्लू।
शतमन्यु वि० (सं) १-उत्साही। २-क्रोधी। पुं० (सं) १-इन्द्र। २-उल्लू।
शतरंज पुं० (फा) एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटों से खेला जाता है। (चैस)।
शतरंजबाज पुं० (फा) शतरंज का खिलाड़ी।
शतरंजबाजी स्त्री० (फा) शतरंज खेलने का व्यसन।
शतरंजी स्त्री० (फा) १-रंग-बिरंगे फूलों की बनी हुई दरी या बिछावन। १-शतरंज खेलने की बिसात। ३-शतरंज का खिलाड़ी।
शतवार्षिक वि० (सं) हर सौ साल पर होने वाला।
शतवार्षिकी स्त्री० (सं) सौ साल तक रहने वाली।
शतवीर पुं० (सं) विष्णु।
शतशीर्ष पुं० (सं)१-विष्णु। २-एक प्रकार का अभिमन्त्रित अस्त्र। (रामा०)।
शतशः अव्य० (सं) सौ प्रकार से।
सतह्रदा स्त्री० (सं) १-वज्र। २-विजली।
शतांश पुं० (स) सौवां भाग।
शतांशतापमापक पुं० (सं) वह तापमापक यन्त्र जो सौ भागों में विभक्त हो। (सेंटीग्रेड थर्मामीटर)।
शतानंद पुं० (सं) १-विष्णु। २-ब्रह्मा। ३-श्रीकृष्ण ४-गौतम मुनि।
शतानीक पुं० (सं) १-बुड्ढा आदमी। २-सौ सिपाहियों का नायक। ३-श्वसुर।
शताब्द वि० (सं) सौ वर्ष का। पुं० (सं) सौ वर्ष।
शताब्दी स्त्री० (सं) १-सौ वर्ष का समय। २-किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष का समय (सेन्चरी)।
शतायु वि० (स) सौ वर्ष की आयु वाला।
शतावधान पुं० (स) वह मनुष्य जो बहुत सी बातें एक बार सुनने पर याद रख सकता है।
शती स्त्री० (सं) १-सौ का समूह। सैकड़ा। २-शताब्दी।
शत्रुंजय वि० (सं) दुश्मन या शत्रु को जीतने वाला।
शत्रु पुं० (सं) १-वैरी। दुश्मन। २-एक असुर का नाम।
शत्रुघ्न पुं० (सं) राम के छोटे भाई का नाम जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वि० (सं) शत्रुओं को मारने वाला।
शत्रुजित वि० (स) शत्रु को जीतने वाला।
शत्रुता स्त्री० (सं) दुश्मनी। वैरभाव।
शत्रुहंता वि० (सं) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्रुहा वि० (सं) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्वरी स्त्री० (सं) रात। रात्रि।
शद्रि पुं० (सं) १-मेघ। बादल। २-हाथी। स्त्री० १-खंड। २-विजली।
शनाख्त स्त्री० (सं) १-परिचय। २-पहचान।
शनि पुं०(सं) १-सौर जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। २-दुर्भाग्य। ३-शनिवार।
शनिप्रिय पुं० (सं) नीलम। नीलमणि।
शनिवार पुं० (सं) शुक्रवार और रविवार के बीच का दिन या बार।
शनैः अव्य० (सं) धीरे। आहिस्ता।
शनैश्चर पुं० (स) दे० 'शनि'।
शनैःशनैः अव्य० (सं) धीरे-धीरे।
शपथ स्त्री० (सं) १-कसम। सौगन्ध। २-प्रतिज्ञा। (ओथ)।
शपथग्रहण पुं० (सं) कोई पद आदि ग्रहण करने से पहले गुप्तता की शपथ लेना।
शपथपत्र पुं० (सं) किसी बात की सत्यता प्रख्यापित करने के समय। शपथपूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाने वाला पत्र। हलफनामा। (एफीडेविट)।
शपन पुं० (स) १-शपथ। कसम। २-गाली।
शफकत स्त्री० (सं) १-कृपा। दया। २-प्यार। प्रेम।
शफर स्त्री० (सं) पोठिया नामक मछली।
शफरी स्त्री० (सं) एक प्रकार की मछली।
शफा स्त्री० (अ) १-आरोग्यता। २-तन्दुरुस्ती।
शफाखाना पुं० (अ) चिकित्सालय। अस्पताल।
शब स्त्री० (फा) रात्रि। रात।
शबनम स्त्री० (फा) १-ओस। तुषार। २-एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।
शबनमी स्त्री० (फा) १-मसहरी। २-ओस से बचने

लिए छत पर टांगने का कपड़ा।
**शबर** पुं०(सं) १-एक दक्षिण भारत की जङ्गली जाति २-हबसी। जङ्गली। ३-भील। शिव। *वि०* चितकबरा। रंगबिरंगा।
**शबरी** *स्त्री०* (सं) १-शबर जाति की एक रामभक्त स्त्री। (रामा०)।
**शबल** *वि०* (सं) १-चितकबरा। रंगबिरंगा। पुं० १-एक नाग। २-बौद्धों का धार्मिक कृत्य विशेष। ३-चित्रक।
**शबला** *स्त्री०*(सं)१-चितकबरी गाय। कामधेनु।
**शबाब** पु० (अ) १-यौवन काल। २-पूर्ण विकसित या सुन्दर जान पड़ने की अवस्था। ३-अत्यधिक सौन्दर्य।
**शबीह** *स्त्री०* (अ) १-तसवीर। चित्र। २-समानता।
**शब्द** पु० (सं) १-ध्वनि। आवाज। २-सार्थक-ध्वनि। ३-सन्तों के बनाए हुए पद।
**शब्दकार** *वि०* (सं) ध्वनिकारक।
**शब्दकारी** *वि०* (सं) शब्द करने वाला।
**शब्दकोश** पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें अक्षर क्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची शब्दों का संग्रह किया गया हो। (डिक्शनरी)।
**शब्दकोष** पुं० (सं) दे० 'शब्दकोश'।
**शब्दचातुर्य** पुं० (सं) बोल-चाल की प्रवीणता। वाग्मिता।
**शब्दचालि** *स्त्री०* (सं) एक प्रकार का नृत्य।
**शब्दचित्र** पुं० (सं) १-शब्दों में किसी विषय या बात का इस प्रकार वर्णन करना जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े। (स्केच)। २-अनुप्रास नामक एक अलङ्कार।
**शब्दचोर** पुं० (हि) वह लेखक जो दूसरों के लेख या कविताओं में से शब्द चुराकर अपने लेख में प्रस्तुत करे।
**शब्दपति** पुं० (सं) वह नेता जिसके अनुयायी न हों।
**शब्दप्रमाण** पुं० (सं) ऐसा प्रमाण जिसका आधार किसी का कथन हो।
**शब्दभेद** पुं० (सं) १-व्याकरण में शब्दों का वह विभाग जिसके अनुसार यह निश्चित किया जाता है कि कौन से शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रिया या अव्यय आदि हैं। (पार्टस ऑफ स्पीच)। २-दे० 'शब्दभेद'।
**शब्दभेदी** पुं० (सं) दे० 'शब्दवेधी'।
**शब्दविद्या** *स्त्री०* (सं) व्याकरण।
**शब्दवेधी** पुं० (सं) १-केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारने वाला व्यक्ति। २-दशरथ। ३-अर्जुन।
**शब्दशक्ति** *स्त्री०* (सं) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उस शब्द के द्वारा कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है
**शब्दशः** *अव्य०* (सं) किसी के लिखे या बोले गये शब्द का ठीक अनुसरण करते हुए।
**शब्दशास्त्र** पुं० (सं) व्याकरण।
**शब्दश्लेष** पुं० (सं) वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में व्यवहृत किया जाय।
**शब्दसंग्रह** पुं० (सं) शब्दकोश।
**शब्दसाधन** पुं० (सं) व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की उत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन होता है।
**शब्दसौन्दर्य** पुं० (सं) शब्दों के उच्चारण की सुगमता
**शब्दसौकर्य** पुं० (सं) दे० 'शब्दसौन्दर्य'।
**शब्दसौष्ठव** पु० (सं) किसी लेख या शैली में प्रयुक्त किये हुए शब्दों की सुन्दरता या कोमलता।
**शब्दाडंबर** पुं० (सं) बड़े-बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की कमी हो।
**शब्दाढ्य** पुं० (सं) कांसा (धातु)।
**शब्दातीत** पुं० (सं) वह जो शब्दों से परे हो। ईश्वर
**शब्दाध्यहार** पुं० (सं) किसी वाक्य को पूरा करने के लिए अपनी ओर से शब्द जोड़ना।
**शब्दानुशासन** पुं० (सं) व्याकरण।
**शब्दायमान** *वि०* (सं) शब्द करता हुआ।
**शब्दार्थ** पुं० (सं) किसी शब्द का अर्थ।
**शब्दालंकार** पुं० (सं) काव्य में वह अलंकार जिसमें प्रयुक्त होने वाले शब्दों से चमत्कार उत्पन्न हो तथा उनके पर्याय रखने से वह चमत्कार न रहे।
**शब्दावली** *स्त्री०* (सं) १-विषय अथवा कार्य सम्बन्धी शब्द-सूची। २-किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का प्रकार (वर्डिङ्ग)।
**शम** पुं० (सं) १-शांति। २-मोक्ष। ३-अन्तःकरण तथा इन्द्रियों को वश में रखना। ४-शान्तरस का स्थायीभाव। ५-तिरस्कार। ६-हाथ।
**शमई** *वि०* (हि) १-शमा के रङ्ग का। २-शमा का।
**शमन** पुं०(सं)१-दोष, विचार, उपद्रव आदि दबाना २-यज्ञ के निमित्त पशुओं का दमन। ३-शांति। ४-तिरस्कार। ५-आघात। ६-दमन। ७-रात्रि।
**शमलोक** पुं० (सं) स्वर्ग।
**शमशीर** *स्त्री०* (फा) तलवार।
**शमशीरजनी** *स्त्री०* (फा) तलवार का युद्ध।
**शमशीरदम** *वि०* (फा) तलवार के वार की काट करने वाला।
**शमशेर** *स्त्री०* (फा) तलवार।
**शमशेरबहादुर** *वि०* (फा) तलवार का धनी।
**शमा** *स्त्री०* (अ) मोमबत्ती।
**शमादान** पुं० (अ) दीवट। वह आधार जिस पर मोमबत्ती रखी जाती है।
**शमा व परवाना** पुं० (अ) दीपक तथा पतंग।
**शमित** *वि०*(सं)१-शांत किया हुआ। २-जिसका शमन

किया गया हो।

**शमी** स्त्री० (सं) पंजाब, राजस्थान, गुजरात आदि में पाया जाने वाला एक प्रकार का वृक्ष। सफेद कीकर

**शमीकरण** पुं० (सं) १-दो पक्षों के झगड़े को शांति-पूर्वक निबटाना। २-शांत करना। (पैसिफिकेशन)

**शय** पुं० (सं) १-सांप। २-शय्या। ३-निद्रा। ४-हाथ। ५-पण।

**शयन** पुं० (सं) १-सेना। २-शय्या। बिछौना। ३-संभोग।

**शयनआरती** स्त्री० (सं) देवता की रात्रि के समय की जाने वाली आरती।

**शयनकक्ष** पुं० (सं) सोने का कमरा या घर।

**शयनगृह** पुं० (सं) शयनागार।

**शयनमंदिर** पुं० (सं) सोने का स्थान। शयनगृह।

**शयनशाला** स्त्री० (सं) वह बड़ा कमरा जहां बहुत से लोग सोते हों या उनके सोने की व्यवस्था हो। (डॉरमिटरी)।

**शयनागार** पुं० (सं) सोने का स्थान या गृह।

**शयनीय** वि० (सं) सोने के योग्य।

**शयालु** पुं०(सं)१-वह जिसे नींद आई हो। २-कुत्ता ३-शृगाल। ४-अजगर।

**शयित** वि० (सं)१-निद्रित। सोया हुआ। २-शय्या पर लेटा हुआ।

**शय्या** स्त्री० (सं) १-बिछौना। बिस्तर। २-पलंग। खाट।

**शय्यागत** वि० (सं) बिछौना पर सोने वाला।

**शय्यादान** पुं० (सं) मृतक के उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, बिछौना, बरतन आदि दान देना।

**शय्याध्यक्ष** पुं० (सं) दे० 'शय्यापालक'।

**शय्यापाल** पुं० (सं) 'शय्यापालक'।

**शय्यापालक** पुं० (सं) वह जो राजाओं के शयनागार की व्यवस्था करता है।

**शय्याव्रण** पुं० (सं) बहुत दिन तक रोगग्रस्त होने पर शय्या पर पड़े रहने के कारण रीढ़ की हड्डी छिलजाने के कारण होने वाला घाव।

**शरंड** पुं० (सं) १-पक्षी। २-धूर्त। ३-छिपकली। ४-एक आभूषण।

**शर** पुं० (सं) १-तीर। बाण। २-सरकण्डा। ३-दूध की मलाई। ४-खस। ५-भाले का फल। ६-चिन्ता ७-हिंसा।

**शरअ** स्त्री० (अ) १-कुराने-शरीफ में बताया हुआ विधान। २-परिपाटी। ३-मुसलमानों का धर्मशास्त्र

**शरअन** अव्य० (अ) कुराने-शरीफ के विधान के अनुसार।

**शरई** वि० (अ) मुसलमानी धर्म या शरअ के अनुसार

**शरईदाढ़ी** स्त्री० (अ) एक मुठी और दो अंगुल लम्बी दाढ़ी।

**शरईपाजामा** पुं० (अ) टखना से ऊँची मोहरी वाला पाजामा।

**शरईशादी** स्त्री० (अ) वह विवाह जिसमें बाजे तथा धूमधाम न हो।

**शरकांड** पुं० (सं) सरकंडा। सरपत।

**शरघा** स्त्री० (सं) मधुमक्खी।

**शरच्चंद्र** पुं० (सं) शरदऋतु का चांद।

**शरजाल** पुं० (सं) तीरों का ढेर या समूह।

**शरण** स्त्री० (सं) १-रक्षा। आश्रय। २-बचाव की जगह। ३-घर। (शेल्टर)।

**शरणदाता** पुं०(सं) शरण में आये मनुष्य को अभयदान देने वाला। रक्षक।

**शरणस्थान** पुं० (सं) १-भूमि के नीचे बनाया हुआ वह सुरक्षित स्थान जहां हवाई हमले से बचने के लिए छिपा जाता है। २-वह स्थान जहां दंडित व्यक्ति शरण लेता है (सैंक्चुअरी)।

**शरणागत** वि० (सं) शरण में आया हुआ।

**शरणार्थी** वि० (सं) शरण चाहने वाला। पुं० १-वह जो अपने स्थान से बलपूर्वक हटा कर दूसरे स्थान पर जाने के लिए विवश किया गया हो। (रिफ्यूजी) २-शरण चाहने वाला व्यक्ति।

**शरणार्थी-बस्ती** स्त्री०(हि) वह बस्ती जहां पर शरणार्थी बसाये गये हों।

**शरणि** स्त्री० (सं) १-रास्ता। मार्ग। २-पृथ्वी। ३-हिंसा।

**शरण्य** वि० (सं) शरणागत की रक्षा करने वाला।

**शरता** स्त्री० (सं) तीर या बाण चलाने की कला।

**शरत्** स्त्री० (सं) १-एक ऋतु जो आश्विन तथा कार्तिक में होती है। २-वर्ष। साल।

**शरद्** स्त्री० (सं) दे० 'शरत्'।

**शरद्काल** पुं० (सं) आश्विन और कार्तिक के महीने

**शरधि** पुं० (सं) तूणीर। तरकश।

**शरपट्टा** पुं० (हिं) एक प्रकार का अस्त्र।

**शरबत** पुं० (अ) १-कोई मीठा पेय पदार्थ। २-चीनी आदि में तैयार किया हुआ किसी औषध का रस। ३-पानी घुली हुई शक्कर या खांड। ४-एक सगाई की रस्म।

**शरबतपिलाई** स्त्री० (हिं) विवाह में शरबत पिलाने का नेग।

**शरबती** पुं० (हिं) १-एक प्रकार का कुछ लाली लिये हुए पीला रंग। २-मिट्ठा नामक नीबू चकोतरा। ३-एक प्रकार का मीठा फालसा। वि० रसदार। रसीला

**शरबती-नीबू** पुं० (हिं) १-चकोतरा। २-गलगल।

**शरबती-फालसा** पुं० (हिं) एक प्रकार का खटमिट्ठा फालसा।

**शरबतेदीदार** पुं० (अ) शरबत जैसा शांतिकर दर्शन

**शरभ** पुं० (सं) १-एक कल्पित पशु जो सिंह से भी

बलवान बताया जाता है। अष्टपाद। २-हाथी का बच्चा। ३-टिड्डी। ४-विष्णु। ५-एक वर्णवृत्त
**शरम** स्त्री० (सं) १-लज्जा। हया। २-सङ्कोच। लिहाज। ३-प्रतिष्ठा। इज्जत।
**शरमाऊ** वि० (हि) शरमीला। लजालु।
**शरमाना** क्रि० (हि) लज्जित होना या करना।
**शरमाशरमी** अव्य० (हि) लाज के कारण।
**शरमिंदा** वि० (फा) लज्जित।
**शरमीला** वि० (हि) लजीला। लज्जालु।
**शरवारण** पुं० (सं) ढाल। (शील्ड)।
**शरशय्या** स्त्री० (सं) बाणों की बनी शय्या।
**शरसंधान** पुं० (सं) तीर या बाण द्वारा निशान साधना।
**शरह** स्त्री० (अ) १-दर। भाव। २-टीका। ३-किसी बात को स्पष्ट करने के लिये कही गई बात।
**शरहबंदी** स्त्री० (अ) भावों की सूची या तालिका।
**शरहमुऐयन** वि० (अ) जिसके लगान की दर निश्चित हो।
**शरहलगान** स्त्री० (अ) मालगुजारी की दर।
**शरहसूद** स्त्री० (अ) सूद या ब्याज की दर।
**शराकत** स्त्री० (फा) साझा।
**शराटि** स्त्री० (सं) दे० 'शराडि'।
**शराटिका** स्त्री० (सं) दे० 'शराडि'।
**शराडि** स्त्री० (सं) टिटहरी।
**शराति** स्त्री० (सं) टिटहरी।
**शराफ** पुं० (अ) दे० 'सराफ'।
**शराफत** स्त्री० (अ) सज्जनता। भलमनसाहत।
**शराफा** पुं० (हि) दे० 'सराफा'।
**शराफी** स्त्री० (हि) दे० 'सराफी'।
**शराब** स्त्री० (अ) १-मदिरा। सुरा। २-पेय।
**शराबखाना** पुं० (अ) मदिरालय। (बार)।
**शराबखोर** वि० (अ) जिसे शराब पीने की लत हो।
**शराबखोरी** स्त्री० (अ) १-मदिरापान। २-शराब की लत।
**शराबख्वार** पुं० (अ) शराब पीने वाला।
**शराबख्वारी** स्त्री० (अ) दे० 'शराबखोरी'।
**शराबी** पुं० (अ) शराब पीने वाला।
**शराबेतहूर** स्त्री० (अ) स्वर्ग या बहिश्त में मिलने वाली पवित्र सुरा।
**शराबोर** वि० (फा) बिल्कुल भीगा हुआ। तरबतर। लथपथ।
**शरारत** स्त्री० (अ) दुष्टता। पाजीपन। नटखट होने का भाव।
**शराश्रय** पुं० (सं) तरकश। तूणीर।
**शरासन** पुं० (सं) १-धनुष। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
**शरिष्ठ** वि० (हि) श्रेष्ठ।
**शरीअत** स्त्री० (अ) मुसलमानों का धर्मशास्त्र।
**शरीक** वि० (अ) १-किसी कार्य में साथ देने वाला। २-मिला हुआ। सम्मिलित।
**शरीकजुर्म** वि० (अ) अपराध में सहायता देने वाला
**शरीकेजलसा** वि० (अ) सभा में उपस्थित (लोग)।
**शरीफ** पुं० (अ) १-भला आदमी। सज्जन। २-कुलीन। ३-मक्के के प्रधान की एक उपाधि। ४-पवित्रतासूचक शब्द।
**शरीफजादा** पुं० (सं) कुलीन तथा सज्जन पुरुष का बेटा।
**शरीफा** पुं० (हि) १-मझोले आकार का एक वृक्ष। २-इस वृक्ष का फल। श्रीफल।
**शरीर** पु० (सं) १-प्राणियों के सब अङ्गों का समूह। देह। बदन। तन। काया। २-किसी वस्तु का सारा विस्तार या ढाँचा जिसमें उसके सब अंग सम्मिलित हों। (फ्रेम)। वि० (अ) दुष्ट। पाजी। नटखट
**शरीरज** पुं० (सं) १-रोगी। बीमारी। २-कामदेव। ३-पुत्र। बेटा।
**शरीरत्याग** पुं० (सं) मौत। मृत्यु।
**शरीरदंड** पुं० (सं) शारीरिक दण्ड या कष्ट देना।
**शरीरपतन** पुं० (सं) १-धीरे-धीरे शरीर का क्षीण होना २-मृत्यु। मौत।
**शरीरपात** पुं० (सं) मौत। मृत्यु।
**शरीरबंध** पुं० (सं) शरीर या देह का ढाँचा।
**शरीरभृत** पुं० (सं) १-वह जो शरीर धारण किये हुए हो। २-जीवात्मा। ३-विष्णु।
**शरीरयात्रा** स्त्री० (सं) १-जीवन। २-शरीर। बनाए रखने के साधन।
**शरीररक्षक** पुं० (सं) अंगरक्षक।
**शरीरवान्** वि० (सं) देहधारी।
**शरीरविज्ञान** स्त्री० (सं) दे० 'शरीरशास्त्र'।
**शरीरवृत्ति** स्त्री० (सं) शरीर का पालनपोषण। जीविका
**शरीरशास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों की बनावट तथा उनके कार्यों का विवेचन होता है।
**शरीरांत** पुं० (सं) मृत्यु। मौत। देहान्त।
**शरीरी** पुं० (हि) १-प्राणी। शरीरधारी। २-जीव। आत्मा। वि० (सं) शरीर वाला।
**शरु** पुं० (सं) १-क्रोध। २-वज्र। ३-बाण। ४-हथियार। ५-हिंसक। वि० १-बहुत पतला। २-जिसका अग्रभाग नुकीला तथा पतला हो।
**शर्करा** स्त्री० (सं) १-शक्कर। २-चीनी। खांड। ३-पथरी रोग। ३-बालू। ४-कंकड़।
**शर्कराधेनु** स्त्री० (सं) दान के उद्देश्य से बनाई हुई खांड की गाय। (पुराण)।
**शर्कराप्रमेह** पु० (सं) वह प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ शरीर की शर्करा भी निकल जाती है।

शर्त स्त्री० (अ) १-दांव। बाजी। २-किसी कार्य के पूरा होने के लिए नियन्त्रण के रूप में होने वाली आवश्यक बात या काम। (कंडीशन)। ३-कैद। पाबन्दी।
शर्तबंद पुं०(अ) प्रतिज्ञा पत्र से नियत समय तक काम करने वाला। (मजदूर)।
शर्तिया वि० (अ) बिलकुल ठीक। निश्चित। अव्य० शर्त बदकर। निश्चयपूर्वक।
शर्ती अव्य० (अ) दे० 'शर्तिया'।
शर्तिया वि० (अ) दे० 'शर्तिया'।
शर्बत पुं० (हि) दे० 'शरबत'।
शर्बती पुं० (हि) दे० 'शरबती'।
शर्म स्त्री० (हि) १-लज्जा। हया। २-लिहाज। ३-प्रतिष्ठा।
शर्मगीं वि० (फा) शर्मिंदा।
शर्मनाक वि० (फा) लज्जाजनक।
शर्मसार वि० (फा) लज्जित।
शर्मा पुं० (सं) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्माऊ वि० (सं) लजालु।
शर्माना क्रि० (हि) दे० 'शरमाना'।
शर्माशर्मी अव्य० (हि) शर्म के कारण से।
शर्मिंदगी स्त्री० (फा) लज्जित होना।
शर्मिंदा वि० (फा) जिसे जल्दी लाज आती हो। लजीला।
शर्मीला वि० (हि) लज्जायुक्त।
शर्व पुं० (सं) १-शिव। २-विष्णु।
शर्वर पुं० (सं) १-अन्धकार। २-कामदेव। ३-संध्या
शर्वरी स्त्री० (सं) १-रात। २-संध्या। ३-स्त्री। हल्दी
शर्वरीकर पुं० (सं) चन्द्रमा।
शर्वरीनाथ पुं०(सं) चन्द्रमा।
शर्वरीपति पुं० (सं) चन्द्रमा।
शर्वरीश पुं०(सं) चन्द्रमा।
शर्वाणी स्त्री० (सं) पार्वती।
शलगम पुं० (फा) दे० 'शलजम'।
शलजम पुं०(हि) गाजर की तरह का एक प्रसिद्ध कंद
शलजमी वि० (हि) शलजम जैसा।
शलजमी आँखें स्त्री० (हि) बड़े और सुन्दर नेत्र।
शलभ पुं० (सं) १-शरभ। २-टिड्डी। ३-पतंगा। ४-छप्पय छन्द का एक भेद।
शलाका स्त्री० (सं) १-सलाई। सीख। सलाख। २-बाण। ३-निर्वाचन आदि में छोटी छोटी रङ्गीन गोलियां अथवा कागजों की सहायता से गुप्त रूप से दिया गया मत (बैलट)। ४-हड्डी। ५-मैनापक्षी
शली स्त्री० (सं) साही नामक एक जन्तु।
शलूका पुं०(फा) एक प्रकार की आधी बाँह की कुरती
शल्य पुं० (सं) १-शास्त्र चिकित्सा। २-हड्डी। ३-गाली। दुर्वचन। ४-एक प्रकार का बाण। ५-भाला। ६-वे वस्तुएँ जिनसे शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा या रोग उत्पन्न होता है।
शल्यकर्ता पुं०(सं) शस्त्रचिकित्सा करने वाला।
शल्यक्रिया स्त्री० (सं) चीरफाड़ का इलाज। (सर्जरी)
शल्यचिकित्सा स्त्री० (सं) चीरफाड़ के द्वारा रोग को दूर करना। (सर्जरी)।
शल्यतंत्र पुं० (सं) आठ प्रकार के तंत्रों में से एक। (सुश्रुत)।
शल्यनिबंधक पुं० (सं) वह सरकारी अधिकारी जो शल्य चिकित्सा की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के नामों को पंजीबद्ध करता है। (सर्जिकल रजिस्ट्रार)
शल्यलोम पुं० (सं) साही नामक जन्तु के शरीर पर का काँटा।
शल्यविज्ञान पुं० (सं) दे० 'शल्यशास्त्र'।
शल्यशास्त्र पुं०(सं) वह शास्त्र जिसमें शरीर के फोड़े का चीरफाड़ के द्वारा चिकित्सा करने का विधान होता है। (सर्जरी)।
शल्यारि पुं० (सं) युधिष्ठिर।
शल्याहरण पुं०(सं) शरीर में गड़े काँटे को निकालना।
शल्योद्धरण पुं० (सं) दे० 'शल्याहरण'।
शल्योद्योग पुं० (सं) शल्य चिकित्सा में काम आने वाले औजार के बनाने का उद्योग। (सर्जीकल इन्स्ट्रूमेन्ट इन्डस्ट्री)।
शल्ल पुं० (सं) १-त्वचा। चमड़ा। २-वृक्ष की छाल ३-मेंढक।
शल्लक पुं० (सं) १-सलई। २-साही नामक जन्तु। ३-चमड़ा।
शल्ली स्त्री० (सं) दे० 'शल्य'।
शव पुं० (सं) प्राणरहित देह या शरीर। मुर्दा। लाश
शवकाम्य पुं० (सं) कुत्ता।
शवदहन पुं० (सं) दे० 'शवदाह'।
शवदाह पुं० (सं) मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया।
शवदाहस्थान पुं० (सं) श्मशान।
शवपरीक्षा स्त्री० (सं) मृत शरीर की वह परीक्षा जो मृत्यु के कारण जानने के लिए की जाती है। (पोस्ट मार्टम)।
शवभस्म पुं० (सं) चिता की भस्म या राख।
शवयान पुं० (सं) शव ले जाने की अर्थी।
शवर पुं० (सं) १-एक प्राचीन जाति। २-जल। ३-शिव।
शवरथ पुं० (सं) शवयान।
शवरी स्त्री० (सं) १-शवर जाति की एक स्त्री। २-श्रमण नामक शवर जाति की एक स्त्री जिसने राम की अभ्यर्थना की थी। (रामा०)।
शवल वि० (सं) दे० 'शबल'।
शवलित वि० (सं) मिश्रित। मिला हुआ।

**शवली** स्त्री० (सं) दे० 'शबला'।
**शवशयन** पु० (सं) श्मशान। मरघट।
**शवसमाधि** स्त्री० (सं) शव को जल में या जमीन में गाड़ने का कार्य या संस्कार।
**शवसाधन** पु० (सं) शव के ऊपर बैठ कर तंत्रोक्त यन्त्र को सिद्ध करना।
**शवाच्छादन** पु० (सं) कफन।
**शवान्न** पु० (सं) १-वह अन्न जो खाने योग्य न रह गया हो। २-मृत शरीर का मांस।
**शव्वाल** पु० (अ) मुसलमानों के हिजरी सन् का दसवाँ महीना।
**शश** पु० (सं) १-खरगोश। २-चन्द्रमा का कलङ्क। ३ कामशास्त्र के अनुसार पुरुषों के चार भेदों में से एक। ४-बोल नामक गन्धद्रव्य। वि० (फा) पाच और एक छः।
**शशक** पु० (सं) १-खरगोश। खरहा। २-दे० 'शश'
**शशकविषाण** पु० (सं) अनहोनी बात।
**शशघातक** पु० (सं) श्येन या बाज नामक पक्षी।
**शशधर** पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
**शशपहल** वि० (फा) छः कोण वाला। षट्कोण।
**शशमाही** वि० (फा) छः माही। अर्द्धवार्षिक।
**शशलक्षण** पु० (सं) चन्द्रमा।
**शशलांछन** पु० (सं) चन्द्रमा।
**शशांक** पु० (सं) १-चन्द्रमा। कपूर।
**शशांकज** पु० (सं) (चन्द्रमा का पुत्र) बुध।
**शशांकमुकुट** पु० (सं) शिव। महादेव।
**शशांकशेखर** पु० (सं) शिव। महादेव।
**शशांकसुत** पु० (सं) बुध।
**शशा** पु० (सं) दे० 'शश'।
**शशि** पु० (हि) दे० 'शशी'।
**शशी** पु० (सं) चन्द्रमा।
**शशीकर** पु० (सं) चन्द्रकिरण। चांदनी।
**शशीकला** स्त्री० (सं) १-चन्द्रमा का अंश। २-एक वर्णवृत्त।
**शशीकांत** पु० (सं) १-चन्द्रकांतमणि। २-कुमुद।
**शशीखंड** पु० (सं) १-शिव। २-चन्द्रकला। ३-एक विद्याधर का नाम।
**शशीग्रह** पु० (सं) चन्द्रग्रहण।
**शशीज** पु० (सं) बुधग्रह।
**शशीतिथि** स्त्री० (सं) पूनों। पूर्णिमा।
**शशीधर** पु० (सं) शिव।
**शशीपुत्र** पु० (सं) बुधग्रह।
**शशीप्रभ** पु० (सं) १-मोती। कुमुद। वि० (सं) जिसमें चन्द्रमा के समान प्रभा हो।
**शशीप्रभा** स्त्री० (सं) चांदनी।
**शशीप्रिया** स्त्री० (सं) पुराणों के अनुसार सत्ताइस नक्षत्र जिन्हें चन्द्रमा की पत्नी कहा गया है।
**शशीभाल** पु० (सं) शिव। महादेव।
**शशीभूषण** पु० (सं) शिव। महादेव।
**शशीभृत्** पु० (सं) शिव।
**शशीमंडल** पु० (सं) चन्द्रमा का मंडल या घेरा।
**शशीमणि** पु० (सं) चन्द्रकांतमणि।
**शशीमौलि** पु० (सं) शिव। महादेव।
**शशीरस** पु० (सं) अमृत।
**शशीरेखा** स्त्री० (सं) चन्द्रकला।
**शशीलेखा** स्त्री० (सं) १-चन्द्रकला। २-गिलोय।
**शशीवदना** वि० (सं) चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली स्त्री।
**शशीश** पु० (सं) १-शिव। २-कार्तिकेय।
**शशीशाला** स्त्री० (सं) शीशमहल।
**शशीशेखर** पु० (सं) शिव।
**शशीसुत** पु० (सं) बुधग्रह।
**शशीहीरा** पु० (हि) चन्द्रकांतमणि।
**शस्ति** स्त्री० (सं) प्रशंसा। तारीफ।
**शसा** पु० (हि) खरगोश। खरहा।
**शस्त्र** पु० (सं) १-वे साधन जिनसे शत्रु पर आक्रमण तथा आत्म रक्षा की जाती है। (आर्म्स)। २-औजार। ३-उपाय।
**शस्त्रकर्म** पु० (सं) फोड़ों आदि को चीरने-फाड़ने की क्रिया।
**शस्त्रकार** पु० (सं) दे० 'शस्त्रकारक'।
**शस्त्रकारक** पु० (सं) शस्त्र बनाने वाला।
**शस्त्रकोष** पु० (सं) शस्त्र रखने का कोष। म्यान।
**शस्त्रक्रिया** स्त्री० (सं) फोड़े आदि की चीरफाड़।
**शस्त्रगृह** पु० (सं) शस्त्रशाला। हथियारघर।
**शस्त्रचिकित्सा** स्त्री० (सं) चीर-फाड़ द्वारा चिकित्सा। शल्यचिकित्सा। (सर्जरी)।
**शस्त्रजीवी** पु० (सं) योद्धा। सैनिक।
**शस्त्रधारी** वि० (सं) हथियार धारण करने वाला।
**शस्त्र निर्माणशाला** स्त्री०(सं) तोप, गोले, बन्दूक आदि शस्त्र बनाने का कारखाना। (आर्डनेन्स-फेक्टरी)।
**शस्त्रन्यास** पु० (सं) हथियारों का परित्याग।
**शस्त्रपाणि** वि० (सं) शस्त्र से सुसज्जित।
**शस्त्रपूत** वि०(सं) युद्ध में शस्त्र से मारे जाने के कारण पापों से छूटा हुआ।
**शस्त्रप्रहार** पु० (सं) हथियार साफ करने वाला।
**शस्त्रविद्या** स्त्री० (सं) हथियार चलाने की विद्या।
**शस्त्रवृत्ति** पु० (सं) योद्धा। सैनिक। सिपाही।
**शस्त्रशाला** स्त्री० (सं) हथियार घर। शस्त्रागार।
**शस्त्रशास्त्र** पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें तलवार आदि चलाने का विवेचन हो।
**शस्त्रहत** वि० (सं) तलवार से मारा हुआ।
**शस्त्राख्य** पु०(सं) पूर्वदिशा में दिखाई देने वाला केतु
**शस्त्रागार** पु० (सं) शस्त्र रखने का स्थान। शस्त्र-

शाला ।

शस्त्रजीव पुं० (सं) दे० 'शस्त्रजीवी' ।

शस्त्री स्त्री० (स) छुरी । चाकू । वि० १-शस्त्र चलाने वाला । २-शस्त्र रखने वाला ।

शस्त्रोपजीवी पुं० (सं) पेशेवर सिपाही ।

शस्य पुं० (स) १-अन्न । अनाज । २-फसल । ३-नई घास । ४-किसी वृक्ष का फल या उसकी पैदावार । ५-सद्गुण ।

शस्यक्षेत्र पुं० (सं) अनाज का क्षेत्र ।

शस्यध्वंसी वि० (सं) अन्न का नाश करने वाला । पुं० तूर्ण वृक्ष ।

शस्यभक्षक वि० (सं) अन्न खाने वाला ।

शस्यमंजरी स्त्री० (सं) गेहूँ आदि की नई बाल ।

शस्यशील वि० (सं) धान्य से परिपूर्ण ।

शस्यसंपन्न वि० (सं) शस्यशाली ।

शस्यसंपद स्त्री० (स) धान्य या अनाज की बहुलता ।

शस्यागार पुं० (स) खलिहान । अन्न रखने का स्थान ।

शस्याक पुं०(सं) छोटी शमी ।

शहंशा पुं० (फा) शहंशाह ।

शहंशाह पुं० (फा) महाराजाधिराज । सम्राट् ।

शहंशाही वि०(स) राजसी । शाहों का सा । स्त्री०(फा) शहंशाह का भाव या धर्म । २-शहंशाह का पद ।

शह वि० (फा) बड़ा-बढ़ा । श्रेष्ठतर । (यौगिक शब्दों में जैसे—शहसवार) । स्त्री० १-बढ़ावा देने की क्रिया । २-शतरंज के खेल में कोई मुहरा कोई ऐसी जगह रखना जहां से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो । किश्त ।

शहकार पुं० (फा) दे० 'शाहकार' ।

शहचाल स्त्री० (फा) शतरंज में बादशाह की वह चाल जो और मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है ।

शहजादगी स्त्री० (फा) शहजादा होने की स्थिति ।

शहजादा पुं० (फा) १-राजकुमार । २-युवराज ।

शहजादी स्त्री० (फा) राजकुमारी ।

शहजोर वि० (फा) बली । बलवान् ।

शहजोरी स्त्री० (फा) १-बल । ताकत । २-जबरदस्ती ।

शहतरा पुं० (फा) दे० 'शाहतरा' ।

शहतीर पुं० (फा) लकड़ी का बड़ा और लम्बा लट्ठा जो प्रायः इमारत में काम आता है ।

शहतूत पुं०(फा) मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी फलियां मीठी होती हैं ।

शहद पुं०(प) मधुमक्खियों द्वारा फूलों से संग्रह करके छत्तों में संचित शीरे की तरह का मीठा पदार्थ । मधु ।

शहना पुं० (प) १-शासक । २-कोतवाल । ३-खेत का रखवाला । ४-संग्रह करने वाला ।

शहनाई स्त्री० (फा) अलगोजे के आकार का मुँह से बजाने वाला बाजा । नफीरी ।

शहपर पुं० (फा) पक्षी के पर का सबसे बड़ा डैना ।

शहबाज पुं० (फा) बड़ा बाज पक्षी ।

शहबाला पुं० (फा) वह छोटा बालक जो बरात में दूल्हे के पीछे बैठता है ।

शहबुलबुल स्त्री० (फा) एक प्रकार की बुलबुल ।

शहमात स्त्री० (फा) शतरंज के खेल में बादशाह को किश्त देकर मात देना ।

शहर पुं० (फा) पुर । नगर ।

शहरखबरा वि० (फा) शहर भर की खबर रखने वाला

शहरगश्त वि० (फा) शहर भर का चक्कर काटने वाला ।

शहरदार वि० (फा) शहर में रहने वाला ।

शहरपनाह स्त्री० (फा) नगर के चारों ओर बनी हुई पक्की दीवार ।

शहरबंद पुं० (फा) क़ैदी । कारागार ।

शहरबदर वि० (फा) नगर से बाहर निकला हुआ

शहरबशहर अव्य० (फा) एक नगर से दूसरे नगर को जगह-जगह ।

शहरबाश पुं० (फा) शहर का रहने वाला ।

शहरयार पुं०(फा) १-राजा । २-समकालीन राजाओं में सबसे बड़ा ।

शहरयारी स्त्री०(फा) राजाओं जैसा दबदबा ।

शहरुख स्त्री० (फा) शतरंज में बादशाह को हाथी की शह ।

शहरुखी स्त्री० (फा) १-सामने का आघात । २-शतरंज के खेल में बादशाह को ऐसे स्थान पर रखना जिससे हाथी का शह पड़े ।

शहवत स्त्री० (फा) कामवासना ।

शहसवार पुं० (फा) कुशल घुड़सवार ।

शहसवारी स्त्री० (फा) कुशल घुड़सवारी ।

शहादत स्त्री० (अ) १-गवाही । २-सुबूत । ३-प्रमाण (विटनस) । ३-धर्मयुद्ध में लड़ते हुए मारा जाना ।

शहादतनामा पुं० (अ) वह कलमा जो मुसलमान लोग मुर्दे के साथ कफन में रखते हैं ।

शहाना वि०(फा) १-शाही । राजसी । २-बहुत बढ़िया । पुं० विवाह के समय वर के पहनने का जोड़ा । (देश) संपूर्ण जाति का एक राग ।

शहानाकान्हड़ा पुं० (हि) एक प्रकार का कान्हड़ा राग

शहानाजोड़ा पुं० (फा) दूल्हे के पहनने का लाल रंग का जोड़ा ।

शहानावक्त पुं० (फा) १-संध्या काल । २-सुहावना समय ।

शहानीचूड़ियां स्त्री० (फा) लाल रंग की चूड़ियां ।

शहानीमेंहदी स्त्री०(फा) गहरे लाल रंग वाली मेंहदी

शहाब पुं० (फा) एक प्रकार का गहरा लाल रंग ।

शहाबी वि० (हि) गहरे लाल रंग का ।

**शही** स्त्री (हि) १-शाही। २-एक मिठाई।
**शहीद** पुं० (अ) किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देने वाला व्यक्ति। अपने को बलि देने वाला व्यक्ति। (मार्टीयर)।
**शहीदी** वि० (हि) १-लाल। २-शहीद होने को तत्पर
**शहीदीजत्था** पुं०(हि) शहीदी होने के लिए तत्पर लोगों का जत्था।
**शहीदीतरबूज** पुं० (हि) एक प्रकार का बढ़िया तरबूज
**शांकर** वि० (सं) १-शंकर सम्बन्धी। २-शंकराचार्य का। पुं० १-शंकराचार्य का अनुयायी। २-सांड।
**शांख** पुं०(सं) शंख की ध्वनि। वि० १-शंख सम्बन्धी २-शंख का बना हुआ।
**शांत** वि० (सं) १-जिसमें चिन्ता, क्षोभ, उद्वेग, दुःख आदि न हों। २-स्वस्थ। ३-हो-हल्ला से रहित। ४-निश्चल। ५-मृत। ६-(वह देश) जिसमें झगड़े आदि न हों। ७-धीर तथा सौम्य। ८-मौन। ९-अप्रभावित। १०-बुझा हुआ। ११-उत्साहरहित। पुं० १-विरक्त व्यक्ति। २-काव्य के नौ रसों में से एक।
**शांतनु** पुं० (सं) १-भीष्म पितामह के पिता का नाम २-ककड़ी।
**शांता** स्त्री० (सं) १-महर्षि ऋष्यश्रृंग की पत्नी का नाम। २-रेणुका। ३-संगीत में एक श्रुति।
**शांति** स्त्री० (सं) १-चित्त की स्वस्थता। २-निश्चलता ३-स्तब्धता। सन्नाटा। ४-युद्ध, मारकाट आदि का अभाव (पीस)। ५-बाधा आदि दूर करने वाला धार्मिक उपचार। ६-विराग। ७-गंभीरता।
**शांतिक** वि० (सं) शांति सम्बन्धी। पुं० शांतिकर्म।
**शांतिकर** वि० (सं) शांति करने वाला।
**शांतिकर्म** पुं० (सं) बाधा, दुष्ट ग्रह आदि द्वारा होने वाले अमंगल का उपचार।
**शांतिकलश** पुं० (सं) शांति के उद्देश्य से रखा गया घड़ा।
**शांतिगृह** पुं० (सं) यज्ञ के अन्त में पापों की शांति के लिए स्नान करने का स्नानागार।
**शांतिजल** पुं० (सं) यज्ञ या पूजा का मन्त्रमय शांति देने वाला जल।
**शांतिद** पुं० (सं) विष्णु। वि० शांति देने वाला।
**शांतिदाता** पुं० (सं) शांति देने वाला।
**शांतिदायक** पुं० (सं) वह जो शांति दे।
**शांतिदायी** वि० (सं) शांति देने वाला।
**शांतिनिकेतन** पुं० (सं) १-शांति देने वाला स्थान। २-विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित बङ्गाल प्रदेश में जगद्विख्यात एक विश्वविद्यालय
**शांतिपर्व** पुं०(सं) महाभारत ग्रन्थ का बारहवाँ पर्व।
**शांतिपात्र** पुं० (सं) वह पात्र जो शुभ अवसरों पर ग्रहों आदि की शांति के लिए रखा जाता है।
**शांतिप्रद** वि० (सं) शांतिदायी।
**शांतिप्रिय** वि० (सं) जो शांति की इच्छा रखता हो।
**शांतिभंग** पुं० (सं) कोई ऐसा उपद्रव या अनुचित काम जिससे शांतिपूर्वक रहने वाले लोगों के सुख काम में बाधा पड़ती हो। (ब्रीच आफ पीस)।
**शांतिमय** वि० (सं) शांति से पूर्ण।
**शांतिरक्षक** पुं० (सं) (देश में) शांति की रक्षा करने वाला।
**शांतिरक्षा** स्त्री० (सं) उपद्रव आदि को रोकने वाला।
**शांतिवाद** पुं० (सं) वह सिद्धांत जो युद्ध और संघर्ष का विरोध करता हो और सब विवाद शांति से तय करने के पक्ष में हो। (पैसिफिज्म)।
**शांतिवादी** पुं० (सं) शांतिवाद सिद्धांत को मानने वाला। (पैसिफिस्ट)।
**शांतिस्थापन** पुं० (सं) शांति या अमन कायम करना
**शांब** पुं० (सं) एक राजा का नाम।
**शांबर** वि० (सं) १-शंबर दैत्य-सम्बन्धी। २-साँभर मृग का।
**शांबरिक** पुं० (सं) जादूगर। मायावी।
**शांबरी** स्त्री०(सं) १-माया। इन्द्रजाल। २-जादूगरनी पुं० १-चन्दन विशेष। २-लोध्र।
**शांबुक** पुं० (सं) घोंघा।
**शांबूक** पुं० (सं) घोंघा।
**शांभव** वि० (सं) शंभू या शिव सम्बन्धी। पुं० १-देवदार। २-कपूर। ३-शिवपुत्र। ४-गुग्गुल। ५-एक विष।
**शांभवी** स्त्री०(सं) १-दुर्गा। २-नीली दूब।
**शाइक** वि० (अ) दे० 'शायक'।
**शाइर** पुं० (अ) दे० 'शायर'।
**शाइरा** स्त्री० (अ) दे० 'शायरा'।
**शाइस्तगी** स्त्री० (फा) १-विनय। २-शिष्टता।
**शाइस्ता** वि० (फा) १-सभ्य। २-शिष्ट। ३-विनीत। शिक्षित।
**शाकंभरी** स्त्री०(सं)१-दुर्गा। २-साँभर नमक। नगर।
**शाकंभरीय** वि० (सं) साँभर झील से उत्पन्न। पुं० साँभर नमक।
**शाक** पुं० (सं) १-साग। भाजी। तरकारी (वेजिटेबल)। २-भोजन। ३-सिरस वृक्ष। ४-शक राजा शालिवाहन का संवत्। ५-शक्ति। ६-सात द्वीपों में से एक (पुराण)। वि० शक जाति-सम्बन्धी। (अ) १-भारी। कठिन। २-दुःखदायी(काम)।
**शाकतरु** पुं० (सं) १-वरुण नामक वृक्ष। २-सागौन का पेड़।
**शाकभक्ष** वि० (सं) शाकाहारी।
**शाकल** पुं० (सं) १-खण्ड। २-एक प्रकार का साँप। ३-हवन की सामग्री। वि० टुकड़े से सम्बन्धित।
**शाकाहार** पुं० (सं) १-मांसाहार का उलटा। २-अन्न

या शाक, फलफूल आदि का भोजन।
**शाकाहारी** *वि०* (सं) केवल साग-भाजी तथा अन्न खाने वाला।
**शाकिनी** *स्त्री०* (सं) १-वह भूमि जिसमें साग बोया जाय। २-डायन।
**शाकिर** *वि०* (अ) १-सन्तोषी। २-कृतज्ञ।
**शाकी** *वि०* (अ) १-शिकायत करने वाला। चुगलखोर २-नालिश करने वाला।
**शाकुंतल** *वि०* (सं) शकुन्तला सम्बन्धी। पुं० (शकुन्तला का पुत्र) भरत।
**शाकुंतलेय** पुं० (सं) दे० 'शाकुन्तल'।
**शाकुंतिक** पुं० (सं) चिड़ीमार।
**शाकुन** *वि०* (सं) १-पक्षी सम्बन्धी। २-सगुन वाला। पु० १-बहेलिया। २-सगुन।
**शाकुनिक** पुं० (सं) बहेलिया। चिड़ीमार।
**शाकुनेय** पुं० (सं) १-बकासुर। २-एक मुनि का नाम ३-एक प्रकार का छोटा उल्लू।
**शाक्त** *वि०*(सं) शक्ति-सम्बन्धी। पुं० शक्ति का उपासक। तन्त्रपद्धति से पूजा करने वाला।
**शाक्तिक** पुं० (सं) १-शक्ति का उपासक। २-भाला-धारी।
**शाक्तेय** पुं० (सं) शक्ति का उपासक।
**शाक्त्य** पुं० (सं) शाक्तेय।
**शाक्य** पुं० (सं) एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नैपाल की तराई में रहती थी और जिसमें गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था।
**शाक्यमुनि** पुं० (सं) गौतम बुद्ध की एक उपाधि।
**शाक्र** पुं० (सं) ज्येष्ठानक्षत्र।
**शाख** पुं० (सं) १-कार्तिकेय। २-भाग। *स्त्री०*(फा) १-टहनी। डाली। २-सींग। ३-खण्ड। फांक। ४-नदी आदि में निकली हुई छोटी धार।
**शाख-दर-शाख** *वि०*(फा) १-बहुत सी शाखाओं वाला २-विस्तृत।
**शाखा** *स्त्री०* (सं) १-वृक्षों के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी। २-किसी मूल पदार्थ से इसी प्रकार निकले हुए अंग। ३-किसी संस्था का वह अंग जो दूर होने पर भी उसके आधीन तथा उसके अनुसार कार्य करता हो। (ब्रांच)। पुं० (फा) १-टहनी। २-वह लकड़ी जिसमें अपराधी के हाथ पैर देकर उसे दण्ड दिया जाता है।
**शाखासंक्रमण** पुं० (सं) १-एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद जाना। २-एक विषय अधूरा छोड़ कर दूसरा विषय हाथ में लेना। ३-किसी विषय का थोड़ा अध्ययन करना।
**शाखाचंद्रन्याय** पुं० (सं) एक न्याय या कहावत जो ऐसी बात के विषय में कही जाती है जो केवल देखने में जान पड़ती है पर वास्तव में नहीं होती।
**शाखानगर** पुं० (सं) उपनगर।
**शाखापित्त** पुं० (सं) एक रोग विशेष जिसमें हाथ पैर में जलन होती है।
**शाखापुर** पुं० (सं) उपनगर। किसी नगर के आस-पास की फैली हुई बस्ती।
**शाखाभृत्** पुं० (सं) पेड़। वृक्ष।
**शाखामृग** पुं० (सं) १-बन्दर। २-गिलहरी।
**शाखारंड** पुं० (सं) शाखादण्ड।
**शाखारथ्या** पुं० (सं) बड़े पथ से निकली हुई छोटी सड़क।
**शाखावात** पुं० (सं) हाथ पैर में होने वाला वात रोग
**शाखोच्चार** पुं०(सं)विवाह के अवसर पर होने वाला वंशावली का बखान।
**शाखोट** पु० (सं) दे० 'शाखोटक'।
**शाखोटक** पुं० (सं) सिहोर का पेड़।
**शाख्य** *वि०* (सं) टहनी या शाखा के समान।
**शागिर्द** पुं० (फा) शिष्य। चेला।
**शागिर्दपेशा** पुं० (फा) १-कर्मचारी। २-सेवक। ३-बड़ी कोठी के पास नौकरों का घर।
**शागिर्दाना** *वि०* (फा) शिष्य की तरह।
**शागिर्दी** *स्त्री०* (फा) १-शिष्यता। २-टहल। सेवा।
**शाज** *वि०* (अ) १-अनोखा। २-दुर्लभ।
**शाटिका** *स्त्री०* (सं) दे० 'शाटी'।
**शाटी** *स्त्री०* (सं) साड़ी। धोती।
**शाठ्य** पुं० (सं) १-शठता। २-दुष्टता।
**शाण** पुं० (सं) १-हथियारों की धार तेज करने का पत्थर। सान। २-कसौटी। ३-सन का कपड़ा। ४-सन। *वि०* १-सन (पौधा) सम्बन्ध। २-सन का बना हुआ।
**शाणक** पुं० (सं) सन बना हुआ वस्त्र।
**शाणाजीव** पुं० (सं) १-सान पर अस्त्र आदि की धार तेज करके अपना निर्वाह चलाने वाला। २-अस्त्रों की धार लगाने वाला।
**शाणि** पुं० (सं) पटुआ।
**शाणित** *वि०*(सं) सान पर धार तेज किया हुआ। २-कसौटी पर कसकर देखा हुआ।
**शाणी** *स्त्री०* (सं) १-सन के रेशे से बना हुआ कपड़ा २-चीथड़ा। ३-सान। ४-कसौटी। ५-छोटा खेमा ६-यज्ञोपवीत के समय पहनने का छोटा कपड़ा।
**शाणोपल** पुं० (सं) सान चढ़ाने का पत्थर।
**शात** *वि०* (सं)१-सान पर तेज किया हुआ। २-क्षीण दुबला-पतला। पुं० धतूरा।
**शातिर** *वि०* (अ) १-चालाक। काइयां। २-निपुण। पुं० १-दूत। २-शतरंज का खिलाड़ी।
**शातोदरी** पुं० (सं) वह जिसकी कमर पतली हो। २-क्षीण। पतला।
**शात्रव** पुं० (सं) १-शत्रुता। २-शत्रु। शत्रुओं का

समूह।
**शादियाना** पुं०(फा) १-खुशी का बाजा। २-वह धन जो विवाह के समय किसान जमींदार को देता है। ३-बधाई।
**शादी** स्त्री० (फा) १-विवाह। २-आनन्दोत्सव।
**शाद्वल** वि० (सं) हराभरा। पुं० १-हरी घास। २-बैल। ३-मरु प्रदेश की वह छोटी हरियाली जहां कुछ बस्ती भी हो।
**शान** स्त्री० (फा) १-तड़क-भड़क। ठाठ-बाट। २-करामात। शक्ति। ऐश्वर्य। पुं० (स) शाण। सान।
**शानगुमान** पुं० (फा) दे० 'सानगुमान'।
**शानदार** वि० (फा) १-तड़क-भड़क वाला। २-भव्य। विशाल। ३-वैभवपूर्ण। ४-ठसक वाला।
**शानशौकत** स्त्री०(अ) तड़क-भड़क। ठाट-बाट।
**शाप** पुं० (सं) १-वह शब्द या वाक्य जो किसी अनिष्ट की कामना से कहा जाय। २-धिक्कार। ३-ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय।
**शापग्रस्त** वि० (सं) जिसे शाप दिया गया हो। शापित
**शापना** क्रि० (हि) शाप देना।
**शापनिर्वृति** स्त्री० (सं) शाप से छुटकारा या मुक्ति।
**शापमुक्त** वि० (सं) जिसका शाप छूट गया हो।
**शापांत** पुं० (सं) शाप का अन्त होना।
**शापांबु** पुं० (सं) वह जल जिसे हाथ में लेकर शाप दिया जाय।
**शापावसान** पुं० (सं) शाप का अन्त होना।
**शापित** वि० (सं) शापग्रस्त।
**शापोद्धार** पुं०(सं) शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा।
**शाफरिक** पुं० (सं) मछली पकड़ने वाला। मछुआ।
**शाफा** पुं० (फा) १-घाव में दवा में भिगोकर अन्दर रखने की बत्ती। २-दस्त लाने के लिये लगाई जाने वाली साबुन की बत्ती।
**शाबर** वि० (सं) १-दुष्ट। २-पाजी। पुं० १-हानि बुराई। २-अंधकार। ३-तांबा। ४-एक प्रकार का चन्दन।
**शाबरी** स्त्री० (सं) शबरों की भाषा जो प्राकृत का एक भेद है।
**शाबल्य** पुं० (सं) रंग-बिरंगी वस्तुओं का मिश्रण।
**शाबाश** अव्य० (फा) एक प्रशंसासूचक शब्द- वाह! वाह! धन्य हो!
**शाबाशी** स्त्री० (फा) १-किसी काम की प्रशंसा। २-साधुवाद।
**शाब्द** वि० (सं) १-शब्द सम्बन्धी। २-शब्द विशेष पर निर्भर। पुं० (सं) १-शब्दशास्त्री। २-व्याकरण
**शाब्दव्यंजना** स्त्री० (सं)किसी शब्द विशेष पर आधारित कीगई व्यंजना।
**शाब्दिक** वि० (सं) १-शब्द सम्बन्धी। २-शब्दों में कहा हुआ। ३-एक एक शब्द का किया गया अनुवाद (लिटरल)।
**शाम** स्त्री० (फा) सांझ। सन्ध्या। वि० (सं) शम-सम्बन्धी। पुं० (सं) सामगान। पुं० (देश) अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश जिसे सीरिया कहते हैं
**शामत** स्त्री० (अ) १-दुर्भाग्य। २-विपत्ति। दुर्दशा।
**शामती** वि० (अ) जिसकी दुर्दशा होने को हो।
**शामियाना** पुं० (फा) एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा।
**शामिल** वि० (फा) सम्मिलित।
**शामिलमिसिल** वि० (फा) (मुकदमे का कागज) मिसिल के साथ नत्थी किया हुआ।
**शामिलात** स्त्री० (अ) साझा।
**शामिलाती** वि० (अ) मिलाहुआ। संयुक्त।
**शामी** वि० (हि) शाम देश सम्बन्धी। पुं० (हि) छड़ी आदि की नोक पर लगाया जाने वाला।
**शायक** पुं० (सं) १-तलवार। २-तीर। वि० (अ) १-हीन। २-इच्छुक।
**शायद** अव्य० (फा) कदाचित्। सम्भव है।
**शायर** पुं० (अ) कवि।
**शायरा** स्त्री० (अ) कवयित्री।
**शायरी** स्त्री० (अ) १-कविताएँ रचना। २-काव्य। ३-कविता।
**शाया** वि० (अ) १-प्रकट। २-प्रकाशित। छपा हुआ।
**शायित** वि० (सं) १-सुलाया या लेटाया हुआ। २-पतित। गिरा हुआ।
**शायी** वि० (हि) सोने वाला। (यौगिक के अन्त में)।
**शारंग** पुं० (सं) दे० 'सारंग'।
**शारंगी** स्त्री० (सं) दे० 'सारंगी'।
**शारद** वि० (सं) १-शरद्काल का। २-नवीन। ३-लज्जावान। पुं० १-वर्ष। २-बादल। ३-सफेद कमल। ४-हरी मूँग।
**शारदज्योत्स्ना** स्त्री० (सं) शरद्ऋतु की चांदनी।
**शारदा** स्त्री०(सं) १-एक प्रकार की वीणा। २-सरस्वती ३-दुर्गा। ४-ब्राह्मी। ५-एक प्राचीन लिपि।
**शारदीय** वि० (सं) शरद्काल।
**शारद्य** वि० (सं) शरद्काल का।
**शारि** पुं० (सं) पासा खेलने की गोट। स्त्री० १-मैना २-छलकपट।
**शारिका** स्त्री० (सं) १-मैना नामक पक्षी। २-शतरंज खेलना। ३-दुर्गा।
**शारीर** वि० (सं) १-शरीर-सम्बन्धी। २-शरीर से उत्पन्न। पुं० १-बैल। शरीर को होने वाला दुःख
**शारीरक** वि० (सं) शरीर से युक्त। शरीरधारी।
**शार्कर** पुं० (सं) १-दूध का फेन। २-वह स्थान जहाँ कंकर या पत्थर हों। वि० १-कंकरीला। पथरीला। २-शक्कर या चीनी का बना हुआ।

शार्ङ्ग पुं० (सं) १-धनुष। २-मयूरक। ३-विष्णु का धनुष।
शार्ङ्गधन्वा पुं० (सं) १-विष्णु। २-धनुर्धारी सैनिक ३-श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गपाणि पुं० (सं) शार्ङ्गधन्वा।
शार्ङ्गायुध पुं० (सं) शार्ङ्गधन्वा।
शार्दूल पुं० (सं) १-बाघा। चीता। २-एक चिड़िया ३-दोहे का एक भेद। ४-यजुर्वेद की एक शाखा।
शार्वरी स्त्री०(सं) १-रात। रात्रि। २-लोध। पुं० साठ संवत्सरों में से एक।
शाल पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध वृक्ष का नाम। साखू। साल। २-वृक्ष। ३-एक मछली। ४-राल। स्त्री०(फा) एक प्रकार की ऊनी चादर। दुशाला।
शालग्राम पुं० (सं) १-पत्थर की गोल बटिया जो विष्णु की मूर्ति मान कर पूजी जाती है। २-गंडक नदी के पास एक गांव जहां यह गोल बटियां पाई जाती हैं।
शालदोज पुं० (फा) शाल या दुशाले के किनारे पर बेलबूटे काढ़ने वाला कारीगर।
शालबाफ पुं० (फा) १-शाल-दुशाले बुनने वाला कारीगर। २-एक प्रकार का लाल रेशमी कपड़ा।
शालभ पुं० (सं) पतंगे के समान विपत्ति में कूद पड़ने वाला। वि० शलभ-सम्बन्धी।
शाला स्त्री० (सं) १-घर। मकान। २-जगह। ३-एक वर्णवृत्त।
शालाकी पुं० (सं) १-शल्य चिकित्सक। जर्राह। २-नाई। ३-तलवार या बरछी धारण करने वाला।
शालाक्य पुं० (सं) १-कान, नाक, आंख मुख आदि रोगों का चिकित्सक। २-आयुर्वेद में उक्त चिकित्सा का वर्णन।
शालातुरीय पुं० (सं) पाणिनि का एक नाम।
शालि पुं० (सं) १-बासमती चावल। २-गन्ना। ३-काला जीरा।
शालिगोप पुं० (सं) धान के खेत का रखवाला।
शालिचूर्ण पुं० (सं) चावल का आटा।
शालिधान पुं० (सं) बासमती चावल।
शालिवाहन पुं०(सं)एक प्रसिद्ध राजा का नाम जिसने शक-सम्वत् चलाया था।
शालिहोत्र पुं० (सं) १-पशु चिकित्सा विज्ञान। २-घोड़ा। (वेटेरिनेरी)।
शालिहोत्री पुं० (सं) १-घोड़ा। २-पशु चिकित्सक। (वेटेरिनेरी-डॉक्टर)।
शाली वि० (सं) संयुक्त। सहित। समास में जैसे-प्रतिभाशाली।
शालीन वि०(सं) १-नम्र। विनीत। २-अच्छे विचार वाला। ३-धृष्ट। लज्जाशील।
शालीनता स्त्री० (सं) १-नम्रता। लज्जा। शरम। ३-अधीनता।
शालीय वि० (सं) १-शालाओं का सम्बन्धी। २-शालवृक्ष का।
शाल्मल पुं० (सं) दे० 'शाल्मलि'।
शाल्मलि पुं० १-पृथ्वी के सात विभागों में से एक। २-सेंमल का वृक्ष।
शाव पुं० (सं) १-बच्चा विशेषकर पशु का। २-मृतक ३-भूरा रंग। ४-मरघट। वि० शव सम्बन्धी।
शावक पुं० (सं) किसी भी पशु या पक्षी का बच्चा।
शाश्वत वि० (सं) १-कभी भी नष्ट न होने वाला। नित्य। (इटर्नल)।
शाश्वतिक वि० (सं) दे० 'शाश्वत'।
शासक पुं०(सं) १-वह जो शासन करता हो। (रूलर) २-हाकिम। ३-राजा। ४-वह व्यक्ति जो दण्ड देता है।
शासकमंडली स्त्री० (सं) राज्य के विभिन्न प्रदेशों में राज्य-व्यवस्था करने वालों का समूह।
शासकवर्ग पुं० (सं) शासक-मंडली।
शासन पुं० (सं) १-आज्ञा। आदेश। २-नियंत्रण। ३-राज्य के कार्यों की व्यवस्था तथा संचालन। हकूमत। (गवर्नमेंट)। ४-शासक-मंडल(ऑथारिटी) ५-राजत्व काल। ६-दंड। ७-राजा की दान की हुई भूमि। ८-वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय।
शासनकर्ता पुं० (सं) शासन।
शासनतंत्र पुं० (सं) राज्य शासन करने का ढंग या प्रणाली।
शासनपत्र पुं० (सं) राजा या शासक के हस्ताक्षरों से निकाली हुई राजाज्ञा। फरमान। २-वह ताम्र-पत्र जिस पर राजाज्ञा लिखी या खोदी गई हो।
शासनप्रणाली स्त्री० (सं) शासन करने का ढंग।
शासनव्यवस्था स्त्री० (सं) १-शासन-प्रणाली। २-शासन से सम्बन्धित प्रबन्ध या व्यवस्था।
शासनांतर्गत वि० (सं) दे० 'शासनाधीन'।
शासनादिष्ट प्रदेश पुं०(सं) वे पिछड़े हुए भूमि प्रदेश जिनको प्रथम महायुद्ध के बाद विजेता राष्ट्रों में ब्रिटेन को शासन चलाने के लिए राष्ट्रसंघ ने सौंप दिया था। (मैनडेटेड टैरिटरीज)।
शासनादेश पुं० (सं) प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने पर जर्मनी तथा तुर्की के अफ्रीका में स्थित उपनिवेश जो राष्ट्रसंघ ने फ्रांस तथा ब्रिटेन को शासन चलाने के लिए तब तक के लिए सौंप दिए थे जब तक वे स्वशासन के योग्य न हो जायें। (मेनडेड)।
शासनाधीन वि० (सं) १-अधिकृत। जो शासन के भीतर हों।
शासनिक विपर्यय पुं० (सं) १-बलात् सत्तापहरण। २-शासन-व्यवस्था में बलात् किया गया परिवर्तन

(कूडेटा)।
**शासनीय** *वि०*(सं) १-शासन करने योग्य। २-सुधारने योग्य। ३-दंड देने योग्य।
**शासित** *स्त्री०* (सं) १-जिस पर शासन किया जाय। २-दण्डित। पुं० (सं) १-प्रजा। निग्रह। संयम।
**शासिता** *वि०* (सं) १-दण्ड देने वाला। २-शासन करने वाला।
**शासनिकाय** पुं० (सं) १-शासन करने वाली सभा या परिषद्। २-राज्य संचालन करने वाले अधिकारियों का समूह। (गवर्निंग-बॉडी)।
**शास्ता** पुं० (सं) १-शासक। राजा। २-पिता। ३-गुरु।
**शास्त्र** पुं० (सं) सर्वसाधारण के हित के लिये विधान बनाने वाले धार्मिक ग्रन्थ। २-किसी विषय का सारा ज्ञान जो क्रम से किया गया हो। (साइन्स) विज्ञान।
**शास्त्रकार** पुं० (सं) शास्त्र बनाने वाला।
**शास्त्रकोविद** *वि०* (सं) जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो।
**शास्त्रचक्षु** पुं० (सं) १-व्याकरण। २-ज्ञानी। पण्डित
**शास्त्रचर्चा** *स्त्री०* (सं) शास्त्रों का अध्ययन या उन पर विचार परामर्श।
**शास्त्रज्ञ** पुं० (सं) शास्त्रों का जानकार।
**शास्त्रदर्शी** पुं० (सं) शास्त्रज्ञ।
**शास्त्रप्रवक्ता** पुं० (सं) शास्त्रों का उपदेश करने वाला।
**शास्त्रवक्ता** पुं० (सं) शास्त्रप्रवक्ता।
**शास्त्रविद्** *वि०* (सं) शास्त्रों को जानने वाला।
**शास्त्रविधान** पुं० (सं) शास्त्र की आज्ञा।
**शास्त्रविधि** *स्त्री०* (सं) शास्त्रों में दिये गये आचार-व्यवहार सम्बन्धी नियम या आदेश।
**शास्त्रविमुख** *वि०* (सं) धर्मशास्त्र के अध्ययन से पराङ्मुख।
**शास्त्रविरुद्ध** *वि०* (सं) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं का विरोध करने वाला।
**शास्त्रविहित** *वि०* (सं) जिसकी शास्त्रों में आज्ञा दी गई हो।
**शास्त्रसंगत** *वि०* (सं) शास्त्रविहित।
**शास्त्रसम्मत** *वि०* (सं) शास्त्रों के अनुसार।
**शास्त्रसिद्ध** *वि०* (सं) शास्त्रों के अनुकूल। धर्मशास्त्र द्वारा प्रतिपादित।
**शास्त्राचरण** पुं० (सं) शास्त्रों के आदेशों का पालन।
**शास्त्रानुमोदित** *वि०* (सं) दे० 'शास्त्रविहित'।
**शास्त्रानुशीलन** पुं० (सं) शास्त्रों का अध्ययन।
**शास्त्रार्थ** पुं० (सं) शास्त्रों का अर्थ, विवेचन तथा सिद्धान्तों पर वाद-विवाद।
**शास्त्री** पुं० (सं)१-शास्त्रों का ज्ञाता। २-एक उपाधि जो संस्कृत में इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय द्वारा दी जाती है।
**शास्त्रीय** *वि०* (सं) शास्त्र सम्बन्धी। शास्त्र का।
**शास्त्रोक्त** *वि०* (सं)शास्त्रों में कहा या बतलाया हुआ
**शास्य** *वि०* (सं) १-शासन करने के योग्य। २-सुधारने योग्य। दण्ड देने योग्य।
**शाहंशाह** पुं० (फा) राजाओं का राजा। सम्राट्। महाराजाधिराज।
**शाहंशाही** *स्त्री०* (फा) १-शाहंशाह का कार्य या भाव २-व्याकरण का खरापन।
**शाह** पुं० (फा) १-महाराज। बादशाह। २-मुसलमान फकीर। *वि०* (फा) महान्। बड़ा।
**शाहकार** पुं० (फा) किसी कला की सर्वश्रेष्ठ कृति।
**शाहखर्च** *वि०* (फा) बहुत अधिक व्यय करने वाला।
**शाहजादगी** *स्त्री०* (फा) शाहजादा होने की अवस्था
**शाहजादा** पुं० (फा) बादशाह का पुत्र। महाराजकुमार।
**शाहतरा** पुं० (फा) पित्तपापड़ा।
**शाहदरा** पुं० (फा) किसी महल या किले के नीचे बसी हुई आबादी।
**शाहबंदर** पुं०(फा) किसी देश का प्रधान बन्दरगाह
**शाहरग** *स्त्री०* (फा) गले में से होकर जाने वाली बड़ी रग।
**शाहराह** पुं० (फा) राजपथ। (हाई वे)।
**शाहाना** *वि०* (फा) राजसी। पुं० वर को पहनाने का जामा। २-एक रोग।
**शाहानाजोड़ा** पुं० (फा) विवाह के समय वर को पहनाने का लाल रंग का जोड़ा।
**शाहानामिजाज** पुं० (फा) नाजुकमिजाज।
**शाहिद** पुं० (अ)१-साक्षी। गवाह। *वि०* (अ) सुन्दर
**शाही** *वि०*(फा) बादशाहों का। *स्त्री०* (फा) कुम्भ आदि पर निकलने वाली साधुओं की सवारी।
**शिंगरफ** पुं० (फा) हिंगुल।
**शिंगरफी** *वि०* (फा) शिंगरफ के रंग का। लाल।
**शिंघाण** पुं० (सं) १-लोहमल। २-दाढ़ी। ३-फूला अण्डकोष। ४-नाक में चेप जिससे झिल्ली तर रहती है।
**शिंघाणक** पुं० (सं) नाक का चेप। बलगम। कफ।
**शिंजन** पुं० (सं) १-मधुर ध्वनि। २-आभूषणों की झंकार। *वि०* (सं) मधुरध्वनि करने वाला।
**शिंजित** *वि०* (सं) झंकार करता हुआ।
**शिंजिनी** *स्त्री०* (सं) १-नूपुर। पैंजनी। २-अंगूठी। ३-धनुष की डोरी।
**शिंबा** *स्त्री०* (सं) १-फली। छीमी। २-सेम। ३-दाल द्विदल अन्न।
**शिंबिका** *स्त्री०* (सं) दे० 'शिंबा'।
**शिंबी** दे० 'शिंबा'।
**शिंशपा** *स्त्री०* (सं)१-शीशम का वृक्ष। २-अशोक वृक्ष
**शिंशुपा** *स्त्री०* (हिं) दे० 'शिंशपा'।

**शिशुमार** पुं० (सं) सूंस नामक एक जलजन्तु।
**शिकंजबीन** पुं० (हिं) दे० 'सिकंजबीन'।
**शिकंजा** पुं० (फा) १-दबाने, कसने आदि का यन्त्र २-वह यन्त्र जिसमें जिल्दसाज किताब को दबाकर उनके पन्ने काटते हैं। ३-एक प्राचीन यन्त्र जिसमें अपराधी की टांग कस दी जाती थी। ४-कोल्हू। ५-रूई दबाने का पेंच।
**शिकन** स्त्री० (फा) सिलवट।
**शिकम** पुं० (फा) उदर। पेट।
**शिकमी** वि०(फा) १-किसी के अन्तर्गत रहने वाला २-पेट सम्बन्धी।
**शिकरम** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की गाड़ी।
**शिकरा** पुं० (फा) एक प्रकार का बाज पक्षी।
**शिकवा** पुं० (फा) शिकायत। उलाहना।
**शिकस्त** स्त्री० (फा) १-पराजय। २-टूटना। ३-विफलता।
**शिकस्ता** वि० (फा) १-टूटा हुआ। भग्न।
**शिकस्तादिल** वि० (फा) भग्नहृदय।
**शिकस्तानवीस** पुं०(फा) जल्दी-जल्दी घसीट लिखने वाला।
**शिकस्ताहाल** वि० (फा) फटेहाल।
**शिकायत** स्त्री० (अ) १-निन्दा। २-चुगली। ३-उलाहना। ४-रोग। बीमारी।
**शिकायती** वि० (अ) शिकायत करने वाला।
**शिकार** पुं० (फा) १-आखेट। मृगया। २-मांस। ३-वह पशु जो आखेट में मारा जाय। ४-आहार खाद्य। ५-आसामी। वह जिसके फंसने पर बहुत लाभ हो।
**शिकारगाह** स्त्री० (फा) १-शिकार खेलने की जगह। २-जङ्गल में पेड़ आदि पर बनाया हुआ वह मचान जिस पर बैठ कर शेर आदि का शिकार किया जाता है।
**शिकारबंद** पुं०(फा) घोड़े के चारजामें के पीछे समान बांधने का तस्मा।
**शिकारी** पुं० (फा) शिकार खेलने वाला। व्याध।
**शिकारी-कुत्ता** पुं०(फा) शिकार में मदद करने वाला कुत्ता।
**शिकारी-जानवर** पुं० (फा) वह पशु जो आहार के लिये दूसरे पशुओं का शिकार करता है।
**शिक्य** पुं० (सं) दे० 'शिक्या'।
**शिक्या** स्त्री० (सं) १-छींका। २-बहँगी के दोनों छोरों पर बंधा हुआ रस्सी का जाल। ३-तराजू की डोरी
**शिक्षक** पुं०(सं) १-शिक्षा देने वाला। २-विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला। गुरु। उस्ताद।
**शिक्षण** पुं० (सं) पढ़ने का काम। तालीम। शिक्षा।
**शिक्षणकला** स्त्री० (सं) पढ़ने की कला।
**शिक्षणशास्त्र** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें बच्चों को शिक्षा देने के ढंग का विवेचन होता है।
**शिक्षणीय** वि० (सं) शिक्षा देने योग्य।
**शिक्षा** स्त्री० (सं) १-विद्या पढ़ाने तथा कोई कला सीखने की क्रिया। तालीम (ऐज्युकेशन,इन्सट्रक्शन) २-उपदेश। ३-एक वेदांग जिसमें वेदों के स्वरों आदि का विवेचन होता है। ४-पाठ। सबक। ५-परामर्श। ६-शासन।
**शिक्षागुरु** पुं० (सं) विद्या पढ़ाने वाला गुरु।
**शिक्षादीक्षा** स्त्री० (सं) उपदेश या शिक्षा द्वारा चारित्रिक तथा मानसिक विकास।
**शिक्षापद्धति** स्त्री० (सं) विद्या पढ़ने का ढंग।
**शिक्षापरिषद्** स्त्री० (सं) १-शिक्षा का प्रबंध करने वाली सभा। २-वैदिक कालीन शिक्षा संस्था जो एक ऋषि या आचार्य के आधीन होती थी एवं उसी के नाम से प्रसिद्ध होती थी।
**शिक्षाप्रणाली** वि० (सं) शिक्षापद्धति।
**शिक्षाप्रद** वि० (सं) शिक्षा देने वाला।
**शिक्षाप्रसार योजना** स्त्री०(सं) स्त्रियों, प्रौढ़ों तथा बच्चों को साक्षर बनाने तथा शिक्षा फैलाने की योजना। (एज्युकेशन एक्सपेन्शन स्कीम)।
**शिक्षामंत्री** पुं०(सं) वह मन्त्री जिसके आधीन किसी राज्य या देश का शिक्षा विभाग हो। (एज्युकेशन मिनिस्टर)।
**शिक्षार्थी** पुं० (सं) वह जो किसी कला या विद्या को सीखने में लगा हुआ हो। छात्र।
**शिक्षालय** पुं० (स) वह स्थान जहां शिक्षा दी जाय। विद्यालय।
**शिक्षाविभाग** पु० (सं) वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है (एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट)।
**शिक्षाशास्त्र** पु० (सं) वह शास्त्र जिसमें विद्यार्थियों को पढ़ाने के ढंग का विवेचन होता है। (डिटैक्टिक्स)।
**शिक्षित** वि० (सं) जिसने शिक्षा प्राप्त की हो। पढ़ा लिखा।
**शिक्षिताक्षर** पुं० (सं) वह जिसने विद्या पढ़ी हो।
**शिक्ष्यमाण** पुं० (सं) दे० 'पद शिक्षार्थी'। (एप्रेंटिस)।
**शिखंड** पुं०(सं) १-मोर की पूँछ। २-चोटी। शिखा ३-काकुल।
**शिखंडक** पुं० (सं) १-दे० 'शिखंड'। २-मुर्गा। ३-एक विशेष रत्न। मानिक।
**शिखंडिनी** स्त्री० (सं) १-मोरनी। मयूरी। २-जूही। ३-मुर्गी। ४-द्रुपदराज की कन्या जो कुरुक्षेत्र में पुरुष रूप में लड़ी थी।
**शिखंडी** पुं० (सं) १-स्वर्ण यूथिका। २-मोर। ३-मुर्गा। ४-मोर की पूंछ। ५-श्रीकृष्ण। ६-द्रुपद का एक पुत्र जिसे अर्जुन ने महाभारत के युद्ध में आगे

करके भीष्म का वध किया था।
शिख स्त्री० (हिं) दे० 'शिखा'।
शिखर पुं०(सं) १-सिर। चोटी। २-पहाड़ की चोटी ३-मन्दिर या मकान के ऊपर का नुकीला भाग। कलश। ४-मंडप। गुम्बद।
शिखरन स्त्री० (हिं) दही का बनाया हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ।
शिखरिणी स्त्री० सं) १-रोमावली। २-किशमिश। ३-दही तथा चीनी का रस। ४-सत्रह अक्षरों का वर्णवृत्त। ५-नारी रत्न।
शिखरी पुं० (सं) १-पर्वत। पहाड़ी। २-दुर्ग। ३-अपामार्ग। ४-वृक्ष। ५-लोबान। ६-ज्वार। मका एक प्रकार का मृग। वि० (सं) चोटी युक्त।
शिखलोहित स्त्री० (सं) कुकरमुत्ता। (फुंगस)।
शिखा स्त्री० (स) १-चोटी। २-कलगी। ३-आग की लपट। ४-दीपक की लौ। ५-प्रकाश-किरण। ६-नोक। ७-दामन। ८-पेड़ की जड़। ९-डाली। शाखा। १०-एक वर्णवृत्त।
शिखातरु पुं० (सं) दीवट।
शिखाधर पुं० (सं) मोर। मयूर।
शिखाबंधन पुं० (सं) चोटी बाँधना।
शिखामणि पुं० (सं) सिर पर पहनने का रत्न।
शिखावृद्धि स्त्री० (सं) प्रत्येक दिन बढ़ने वाला। सूद-दर सूद।
शिखावान वि० (सं) शिखा वाला। पुं० (सं) १-मोर मयूर। २-अग्नि।
शिखासूत्र पुं० (सं) ब्राह्मणों के चिह्न, चोटी तथा जनेऊ।
शिखिनी स्त्री० (सं) १-मुर्गी। २-मयूरी। मोरनी।
शिखी वि० (सं) शिखा या चोटी वाला। पुं० १-मयूर। २-मुर्गा। ३-सारस। ४-घोड़ा। ५-बैल। ६-ब्राह्मण। ७-अग्नि। ८-तीन की संख्या। ९-दीपक। १०-बाण। तीर। ११-पुच्छलतारा। १२-[illegible] विशेष।
शिखीपिच्छ पुं० (सं) मोर की पूँछ।
शिखीपुच्छ पुं० (सं) शिखीपिच्छ।
शिखीवाहन पुं० (सं) कार्त्तिकेय।
शिगाफ पुं० (फा) १-छिद्र। दरार। २-चीरा।
शिगूफा पुं० (फा) १-कली। २-फूल। ३-चुटकुला।
शित वि० (सं) १-[illegible]। दुबला। २-नुकीला। ३-धारदार। पुं० (सं) विश्वामित्र के एक गोत्रज ऋषि
शिताफल पुं० (सं) सीताफल।
शिताब स्त्री० (फा) शीघ्र। जल्दी।
शिताबी स्त्री० (फा) १-तेजी। २-शीघ्रता।
शिति वि० (सं) १-श्वेत। २-काला। कृष्ण। पुं० (सं) भोजपत्र।
शितिकंठ पुं० (सं)१-जलकाक। मुर्गाबी। २-चातक ३-मोर। ४-शिव।
शिथिल वि० (सं) १-ढीला। २-सुस्त। धीमा। ३-आज्ञा अथवा विधान। ४-(वह वाक्य) जिसकी शब्द योजना ठीक न हो। ५-जो थकावट के कारण धीमा पड़ गया हो।
शिथिलता स्त्री० (सं) १-शिथिल होने का भाव। २-वाक्य में शब्दों का ठीक या संगतयोजना न होना
शिथिलबल वि० (सं) जिसका बल कम होगया हो।
शिथिलाई स्त्री० (हिं) शिथिलता।
शिथिलाना क्रि० (हिं) १-शिथिल या ढीला होना। २-थकना। ३-ढीला करना।
शिथिलित वि० (सं) शिथिल या ढीला पड़ा हुआ हो
शिथिलीकरण पुं० (सं) शिथिल या ढीला करना।
शिथिलीकृत वि० (सं) शिथिल या ढीला किया हुआ
शिथिलीभूत वि० (सं) जो शिथिल हो गया हो।
शिद्दत स्त्री० (अ) १-तेज। उग्रता। २-अधिकता।
शिनाख्त स्त्री० (फा) १-पहचान। २-परख।
शिप्रा स्त्री० (सं) हिमालय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।
शिफर स्त्री० (हिं) ढाल।
शिफा स्त्री० (सं) १-एक वृक्ष जिसके रेशेदार जड़ के प्राचीनकाल में कोड़े बनते थे। २-कोड़े की फटकार या मार। ३-माता। ४-लता। ५-शंख। ६-कोड़ा। स्त्री० (अ) १-रोग का छुटकारा। २-स्वास्थ्य।
शिफाखाना पुं० (अ) हस्पताल।
शिबिका स्त्री० (स) दे० 'शिविका'।
शिरःपीड़ा स्त्री०(सं) सिर या माथे की पीड़ा।
शिरःशूल पुं० (सं) सिर का दर्द।
शिर पुं० (सं) १-सिर। २-माथा। ३-चोटी। सिरा ४-सेना का अग्रभाग। ५-पद्य के चरण का आरम्भ ७-मुखिया। ८-शय्या।
शिरकत स्त्री०(अ) १-साझा। २-सम्मिलित होने का भाव। ३-किसी काम में योग।
शिरकतनामा पुं० (अ) वह पत्रक जिसमें साझे की शर्तें लिखी हो।
शिरकती वि० (अ) साझे का। मिला हुआ। संयुक्त।
शिरज पुं० (सं) केश। बाल।
शिरत्राण पुं० (हि) दे० 'शिरस्त्राण'।
शिरपेंच पुं० (हि) दे० 'सरपेंच'।
शिरफूल पुं०(हि) एक आभूषण जिसे स्त्रियां सिर में पहनती हैं। सिरफूल।
शिरश्छेद पुं० (सं) दे० 'शिरच्छेदना'।
शिरश्छेदन पुं० (सं) सिर काटना।
शिरश्छेदन-यंत्र पुं०(सं) एक यन्त्र जिसके द्वारा दंडित व्यक्ति का सिर धड़ से अलग किया जाता है (गिलो-टीन)।

शिरसिज पुं० (सं) केश। बाल।
शिरसिरुह पुं० (स) केश। बाल।
शिरस्क वि० (सं) मस्तक-सम्बन्धी।
शिरस्त्र पुं० (सं) युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी।
शिरस्त्राण पु० (सं) दे० 'शिरस्त्र'।
शिरस्थ पुं० (सं) १-नेता। अगुआ। २-प्रधान।
शिरहन पु० (हिं) १-तकिया २-सिराहना।
शिरा स्त्री०(सं)१-शरीर में रक्त की छोटी नस जिसके द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में होकर रक्त हृदय में पहुंचता है। २-कोई ऐसी नली। ३-जमीन के अन्दर बहने वाला सोता।
शिराकती वि०(हिं) सम्मिलित। साझे का।
शिराकतीकारोबार पुं० (हि) साझे का।
शिरीष पुं० (स) १-सिरस का वृक्ष। २-कोमल फूल वाला।
शिरीषक पुं० (सं) दे० 'शिरीष'।
शिरोगृह पुं० (सं) अट्टालिका। कोठा।
शिरोगेह पुं० (सं) दे० 'शिरोगृह'।
शिरोज पुं० (सं) बाल। केश।
शिरोदाम पुं० (सं) पगड़ी। साफा।
शिरोधार्य वि० (सं) आदरसहित ग्रहण करने योग्य
शिरोपाव पुं० (सं) दे० 'सिरोपाव'।
शिरोभूषण पुं० (सं) १-शिर पर धारण करने का गहना। २-शिरोमणि। ३-मुकुट।
शिरोभ्यंग पुं० (सं) सिर में तेल लगाना।
शिरोमणी पुं० (सं) सिर पर पहनने का रत्न। वि० सबसे उत्तम।
शिरोमाली पुं० (सं) शिव। महादेव।
शिरोरुह पुं० (सं) सिर के बाल। केश।
शिरोरोग पुं० (सं) सिर का दर्द।
शिरोवर्ती पुं० (सं) प्रधान। मुख्य।
शिरोवेष्ठन पुं० (सं) पगड़ी। साफा।
शिर्क पुं० (अ) खुदा या ईश्वर में द्वैतभाव।
शिल पुं० (सं) खेत काटने के बाद उसमें अन्न एकत्र करने का काम। उञ्छ।
शिलक पुं० (सं) दे० 'शिल्लक'।
शिल्लक पुं० (सं) नकद रुपया।
शिला स्त्री० (सं) १-पत्थर। २-चट्टान। ३-मनुशिला ४-पत्थर की बटिया। ५-गेरू। ६-कपूर।
शिलाज पुं०(सं)१-लोहा। २-शिलाजीत। ३-चट्टानों में से निकलने वाला पेट्रोल।
शिलाजतु पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलाजीत स्त्री० (हि) पहाड़ों की चट्टानों में से निकलने वाली एक पौष्टिक काली औषध। मोमियाई।
शिलातल पुं० (सं) पत्थर या शिला का ऊपरी हिस्सा
शिलात्मज पुं० (सं) लोहा।
शिलात्व पुं० (सं) शिला का भाव या धर्म।
शिलादान (सं) पुं० ब्राह्मण को शालग्राम की मूर्ति का दान।
शिलानिर्माणविज्ञान पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें शिलाओं की रचना, स्वरूप आदि का विवेचन हो (पिट्रोलॉजी)।
शिलानिर्यास पुं० (सं) दे० 'शिलाजीत'।
शिलान्यास पुं० (सं) नींव का पत्थर रखा जाना।
शिलापट्ट पु० (सं) १-मसाला पीसने की सिल। २-पत्थर की चट्टान।
शिलापट्टक पुं० (सं) दे० 'शिलापट्ट'।
शिलापुत्र पुं० (सं) सिल पर मसाला पीसने का बट्टा
शिलाफलक पुं० (सं) पत्थर का बट्टा।
शिलाबंध पुं० (सं) पत्थरों का परकोटा या प्राचीर।
शिलाभव पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलामुद्रित वि० (सं) एक विशेष प्रकार के पत्थर पर खोदकर मुद्रित या छापा हुआ।
शिलारस पुं० (सं) एक प्रकार का सुगन्धित रस जो लोहबान की तरह होता है।
शिलारोपण पुं० (सं) दे० 'शिलान्यास'।
शिलालिपि पुं० (सं) दे० 'शिलालेख'।
शिलालेख पुं० (सं) पत्थर पर खुदा हुआ या लिखा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलावृष्टि पुं० (सं) आकाश से ओले गिरना।
शिलासार पुं० (सं) लोहा।
शिलास्वेद पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलाहरि पुं० (सं) शालिग्राम की मूर्ति।
शिलि पुं० (सं) भोजपत्र। स्त्री० (सं) चौखट के नीचे की लकड़ी। देहली।
शिली स्त्री० (सं) १-देहलीज। २-केंचुआ। ३-भाला ४-मेंढक। ५-भोजपत्र।
शिलीपद पुं० (सं) फीलपांव नामक रोग।
शिलीमुख पुं० (सं) १-भ्रमर। २-बाण। ३-मूर्ख। ४-युद्ध।
शिलेय वि० (सं) शिला सम्बन्धी। शिला का। पुं० (सं) शिलाजीत।
शिलोद्भव पुं० (सं) १-पीला चन्दन। २-शैलेय।
शिल्प पुं० (सं) १-दस्तकारी। कोई हाथ का बना काम। कारीगरी। २-कल सम्बन्धी व्यापार।
शिल्पकला पुं० (सं) हाथ का बना काम। दस्तकारी।
शिल्पकार पुं० (सं) १-शिल्पी। २-राज। मेमार।
शिल्पकौशल पुं० (सं) दे० 'शिल्पकला'।
शिल्पगृह पुं० (सं) वह स्थान जहां बहुत से कारीगर काम करते हैं। कारखाना।
शिल्पजीवी पुं० (सं) दस्तकार। शिल्पी। (आर्टिजन)
शिल्पलिपि स्त्री० (सं) तांबे या पत्थर पर अक्षर खोदने की विद्या।

**शिल्पविद्या** स्त्री० (सं) १-गृह-निर्माण कला। २-हाथ से बनाकर वस्तुएँ तैयार करने की विद्या।
**शिल्पविद्यालय** पुं० (सं) वह पाठशाला या स्कूल जहां शिल्पविद्या सिखाई जाती हो।
**शिल्पशाला** पुं० (सं) शिल्पगृह।
**शिल्पशास्त्र** पुं० (सं) दे० 'शिल्पविद्या'।
**शिल्पिक** वि०(सं) शिल्प-सम्बन्धी। (टैकनीकल)।
**शिल्पी** पुं० (सं) १-शिल्प का काम करने वाला। २-किसी शिल्प का अच्छा जानकार। (टैक्नीशियन) ३-राज। ४-चित्रकार।
**शिव** पुं० (सं) १-कल्याण। मङ्गल। २-रुद्र। ३-परमेश्वर। ४-हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करने वाले माने जाते हैं। ५-एक मृग। ६-लिंग। ७-एक प्रकार का छन्द। ८-समुद्र लवण ६-गीदड़।
**शिवकांता** स्त्री० (सं) दुर्गा।
**शिवकारी** वि० (सं) मंगल या कल्याण करने वाला।
**शिवता, शिवत्व** स्त्री० (सं) १-शिव का भाव या धर्म २-मोक्ष।
**शिवधातु** पुं० (सं) १-पारद। पारा। २-गोदन्ती नामक मणि।
**शिवनिर्माल्य** पुं० (सं) शिव पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने योग्य नहीं होता। २-परम अग्राह्य-वस्तु।
**शिवपुरी** स्त्री० (सं) काशी नगरी।
**शिवप्रिया** स्त्री० (सं) १-भांग। २-धतूरा। ३-स्फटिक ४-रुद्राक्ष। ५-दुर्गा।
**शिवबीज** पुं० (सं) शिव का वीर्य। पारा।
**शिवमौलिसुता** स्त्री० (सं) गंगा।
**शिवरात्रि** स्त्री० (सं) फाल्गुनकृष्णा चतुर्दशी।
**शिवरानी** स्त्री० (हि) पार्वती।
**शिवलिंग** पुं० (सं) शिव या महादेव की पिण्डी जिसका पूजन होता है।
**शिवलोक** पुं० (सं) कैलास।
**शिववल्लभ** पुं० (सं) आम का पेड़।
**शिववल्लभा** स्त्री०(सं) १-पार्वती। २-सेवती।
**शिववीर्य** पुं० (सं) पारा। पारद।
**शिवा** स्त्री० (सं) १-पार्वती। सती। २-दुर्गा। ३-वह स्त्री जो भाग्यशालिनी हो।
**शिवानी** स्त्री० (सं) १-दुर्गा। पार्वती।
**शिवाराति** पुं० (सं) १-कुत्ता। २-कामदेव।
**शिवालय** पुं० (सं) १-शिव का मन्दिर। २-कोई देवमन्दिर। ३-श्मशान।
**शिवाला** पुं० (हि) शिव का मन्दिर।
**शिविका** स्त्री० (सं) डोली। पालकी।
**शिविर** पुं० (सं) १-सेना ठहरने का स्थान। डेरा। पड़ाव। २-वह स्थान जहाँ कुछ लोग किसी विशेष कार्य से रहें। (कैम्प)। ३-दुर्ग। किला।
**शिवेतर** वि० (सं) अशुभ। हानिकारक।
**शिशिर** पुं०(सं) १-जाड़ा। शीतकाल। २-माघ और फाल्गुन की ऋतु। ३-विष्णु। ४-हिम। ५-लाल चन्दन। वि० (सं) शीतल। ठण्डा।
**शिशिरकाल** पुं० (सं) जाड़े की ऋतु।
**शिशिरकिरण** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**शिशिरघ्न** पुं० (सं) अग्नि। आग।
**शिशिरदीधिति** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**शिशिरमयूख** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**शिशिररश्मि** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**शिशिरांत** पुं० (सं) बसन्त।
**शिशु** पुं० (सं) १-छोटा बालक विशेषतः आठ वर्ष तक की आयु का बच्चा। (इन्फेन्ट)। १-पशुओं का बच्चा। ३-कार्तिकेय का एक नाम।
**शिशुकल्याणकेन्द्र** पुं० (सं) वह स्थान या केन्द्र जहां शिशुओं के स्वास्थ्य की देख भाल तथा उनकी उन्नति का प्रयत्न किया जाता हो। (चाइल्ड वेलफेयर-सेन्टर)।
**शिशुता** स्त्री० (सं) बचपन। शिशु का भाव या धर्म।
**शिशुताई** स्त्री० (हि) शिशुता। बचपन।
**शिशुत्व** पुं० (सं) शिशुता।
**शिशुपन** पुं० (सं) दे० 'शिशुता।
**शिशुपाल** पुं०(सं)चेदि देश के राजा का नाम जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।
**शिशुमार** पुं०(सं) १-मगर की आकृति वाला नक्षत्र-मंडल। २-श्रीकृष्ण। ३-सूंस नामक जलजन्तु।
**शिश्न** पुं० (सं) पुरुष की उपस्थेन्द्रिय। लिंग।
**शिश्नोदरपरायण** वि० (सं) कामुक और पेटू।
**शिश्नोदरवाद** पुं० (सं) उदर या जननेंद्रिय से सम्बन्धित शास्त्र या सिद्धान्त। २-फ्रायड का काम-सिद्धान्त।
**शिष** पुं० (हि) शिष्य। स्त्री० १-शिक्षा। सीख। २-मूंडन के समय छोड़े जाने वाले बाल।
**शिषा** स्त्री० (हि) शिखा। चोटी।
**शिषी** पुं० (हि) मोर। मयूर।
**शिष्ट** वि० (सं) १-सभ्य। अच्छे स्वभाव, आचरण तथा व्यवहार वाला। २-धर्मशील। ३-शांत। ४-श्रेष्ठ। ५-आज्ञाकारी। पुं० १-मन्त्री। २-सभ्य। ३-सभासद।
**शिष्टजीवनस्तर** पुं० (सं) अच्छी प्रकार का रहन-सहन २-श्रेष्टता।
**शिष्टत्व** पुं० (सं) शिष्टता।
**शिष्टप्रयोग** पुं० (सं) शिष्ट या सभ्य व्यक्तियों द्वारा काम में लाया जाना।
**शिष्टमंडल** पुं०(सं) कुछ शिष्ट लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जाय (डेली-

गेशन, मिशन)।

शिष्टसभा स्त्री० (सं) राज्यसभा। राज्यपरिषद्।

शिष्टसम्मत वि०(सं)जिसका शिष्टों ने अनुमोदन किया हो।

शिष्टाचार पुं० (सं) १-शिष्ट तथा उत्तम व्यवहार। २-आने वाले का आदर सम्मान। ३-दिखावटी तथा ऊपरी सभ्य व्यवहार। (डीसेन्सी। ४-नम्रता

शिष्टाचारी वि०(सं)१-किसी संस्था आदि के नियमों के अनुकूल आचरण करने वाला। २ सदाचारी। ३-विनम्र।

शिष्य पु० (सं) १-वह जिसे किसी ने पढ़ाया हो। चेला। वि० १-शिक्षा देने योग्य। २-उपदेश देने योग्य।

शिष्यता स्त्री० (सं) शिष्य होने का भाव या धर्म।

शिष्यत्व पु० (सं) दे० 'शिष्यता'।

शिष्यपरंपरा स्त्री० (सं) वह शिष्य-मंडली जो किसी गुरुसंप्रदाय के परम्परागत हो।

शिस्त स्त्री० (फा) १-निशाना। लक्ष्य। २-दूरबीन की तरह का जमीन नापने का एक यन्त्र। ३-मछली पकड़ने का कांटा।

शीआ पुं० (अ) मुसलमानों का एक संप्रदाय जो मोहम्मद साहब के बाद अली को ही खिलाफत का हकदार मानता है।

शीकर पुं० (सं) १-ओस। शबनम। २-वायु। ३-जलकण। ४-शीत। ५-फुहार।

शीघ्र अव्य० (सं) १-बिना विलम्ब के। जल्दी से। २-चटपट।

शीघ्रकारी वि० (सं) १-जल्दी काम करने वाला। २-तीव्र। कड़ा। ३-जल्दी ही प्रभाव उत्पन्न करने वाला।

शीघ्रकोपी वि० (सं) १-चिड़चिड़ा। २-जल्दी ही क्रोधित होने वाला।

शीघ्रग वि० (सं) शीघ्र चलने वाला। पुं० १-वायु २-सूर्य। ३-खरगोश।

शीघ्रगामी वि० (सं) दे० 'शीघ्रग'।

शीघ्रता स्त्री० (सं) १-शीघ्र करने का भाव। २-जल्दी। फुरती। (डिसपेच)।

शीघ्रत्व पुं० (सं) दे० 'शीघ्रता'।

शीघ्रपतन पुं०(सं) स्त्री प्रसंग के समय वीर्य का शीघ्र ही स्खलित हो जाना।

शीघ्रबुद्धि वि० (सं) तेज बुद्धि वाला।

शीघ्रलिपि स्त्री० (सं) लिखने का एक विशेष ढंग जिसके द्वारा बोलने के साथ शीघ्रता से लिखा जा सकता है। (शॉर्ट हैंड)।

शीघ्रवेधी पु० (सं) जल्दी बाण चलाने वाला

शीत वि०(सं) १-ठंडा। २-शिथिल। सुस्त। पुं० १-जाड़ा। सर्दी। २-जाड़े का मौसम जो अगहन, पूस और माघ में होता है। २-सर्दी। जुकाम। ३-जल। पानी। ४-ओस। ५-बेंत। ६-कपूर।

शीतकटिबंध पु० (सं) पृथ्वी के वे दो विभाग जो भूमध्य रेखा से २३॥ अंश उत्तर तथा दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जहां सर्दी बहुत पड़ती है। (फ्रीजिड जोन)।

शीतकर पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर। वि० ठंडा करने वाला।

शीतकारी यंत्र पुं०(सं) एक यन्त्र जो उसमें रखी हुई वस्तुओं को ठंडा करता है तथा खराब होने से बचाता है। और यह अलमारी के आकार का होता है। (रेफ्रीजेटर)।

शीतकाल पुं० (सं)१-हेमन्तऋतु। २-जाड़े का मौसम अगहन और पूस के महीनों में पड़ने वाली ऋतु।

शीतकालीन वि० (सं) शीतकाल में होने वाला।

शीतकिरण पु० (सं) चन्द्रमा।

शीतज्वर पु० (सं) जाड़े से चढ़ने वाला बुखार। (मलेरिया)।

शीततरंग स्त्री० (सं) शीतकाल में किसी स्थान पर अत्यधिक सर्दी या बरफ पड़ने पर उसके प्रभाव से किसी दिशा में बढ़ने वाली शीत की वह तरंग जिससे सर्दी कुछ दिनों के लिये बहुत बढ़ जाती जाती है। (कोल्डवेव)।

शीतदीधित पुं० (सं) चन्द्रमा।

शीतद्युति पुं० (सं) चन्द्रमा।

शीतप्रधान पुं० (सं) १-वह वस्तु जिसकी तासीर ठण्डी हो। २-वह स्थान जहां सर्दी अधिक पड़ती है

शीतभानु पुं० (सं) चन्द्रमा।

शीतमयूख पुं० (सं) चन्द्रमा।

शीतमरीचि पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शीतमूलक पु० (सं) खस। उशीर।

शीतयुद्ध पुं० (सं) दो विरोधी विचार वाले राष्ट्रों में या उनके गुटों में होने वाला परस्पर वह वाग्युद्ध जिसमें जनसाधारण को ऐसा आभास होने लगता है कि महायुद्ध अनिवार्य है। (कोल्ड वार)।

शीतरश्मि पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शीतल वि० (सं) १-ठण्डा। सर्द। २-शांत। ३-प्रसन्न सतुष्ट।

शीतलचीनी स्त्री० (हि) एक प्रकार का मसाला।

शीतलता स्त्री० (सं) १-ठण्डापन। सर्दी। २-जड़ता

शीतलताई स्त्री० (सं) दे० 'शीतलता'।

शीतलपाटी स्त्री० (हि) एक प्रकार की चटाई।

शीतला स्त्री० (सं) १-चेचक नामक रोग। २-इस रोग की अधिष्ठात्री देवी। ३-नीली दूब।

शीतलावाहन पुं० (सं) गधा।

शीतसंग्रह पुं० (सं) यन्त्रों द्वारा ठंढे किये हुए कमरे में या कोठ में सड़ने से बचाने के लिये रखी हुई

खाद्य सामग्रियों का संग्रह। (कोल्ड स्टोरेज)।
शीतांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शीताकुल *वि०*(सं) सर्दी से कांपने वाला।
शीतातप पुं० (सं) सर्दी और गर्मी।
शीताद पुं० (स) दांत के मसूड़ों का एक रोग जिसमें मसूड़ों से मवाद आने लगता है। (पायोरिया)।
शीताद्रि पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
शीताभ पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
शीतोष्ण *वि०* (सं) ठंडा तथा गर्म।
शीत्कार पुं० (स) संभोग के समय स्त्री द्वारा की गई सी-सी की ध्वनि। सीत्कार।
शीन पुं० (सं) १-मूर्ख। २-अजगर। *वि०* जमा हुआ। (प) अरबी तथा फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसका उच्चारण 'श' की तरह होता है।
शीभर पुं० (सं) वर्षा की झड़ी।
शीर *वि०* (सं) नुकीला। तेज। पुं० अजगर। (फा) दूध। खीर।
शीरख्वोर *वि०* (फा) दुधमुँहा (बच्चा)।
शीरख्वार *वि०* (फा) दे० 'शीरख्वोर'।
शीरा पुं० (फा) दे० 'शीरा'।
शीरा पुं०(फा) १-शरबत। २-चाशनी।
शीराजा पुं० (फा) १-बना हुआ रङ्गीन या सफेद फीता। २-प्रबन्ध। इन्तजाम। ३-सिलसिला।
शीराजाबंद पुं० (सं) जिसकी जिल्दबन्दी हो चुकी हो (पुस्तक)।
शीराजी *वि०* (फा) शीराज नगर का। पुं० १-मीठा मधुर। २-प्रिय। प्यारा।
शीरीं *वि०* (फा) १-एक मीठा। मधुर। २-प्रिय। प्यारा। *स्त्री०* फरहाद की प्रेयसी का नाम।
शीरींकलाम *वि०* (फा) १-मीठा बोलने वाला। २-मधुर भाषा बोलने वाला।
शीरींबयान *वि०* (फा) मधुरभाषी।
शीरींबयानी *स्त्री०* (फा) मीठा बोलना।
शीरीनी *स्त्री०* (फा) १-मिठास। मीठापन। २-मिठाई ३-बताशा। सिरनी।
शीर्ण *वि०* (सं) १-छितराया हुआ। २-च्युत। ३-जीर्ण। फटा पुराना। ४-दुबला। पतला। ५-मुरझाया हुआ। पुं० एक गन्ध द्रव्य।
शीर्णकाय *वि०* (सं) पतला-दुबला।
शीर्णता *स्त्री०* (सं) १-कृशता। २-टूटा फूटा होना।
शीर्णत्व पुं० (सं) दे० 'शीर्णता'।
शीर्ष पुं० (स) १-सिर। कपाल। २-माथा। मस्तक ३-चोटी। सिरा। ४-अग्रभाग। ५-खाते आदि की मद या विभाग का नाम। (हैड)। ६-एक प्रकार की घास। ७ किसी त्रिभुज की आधार रेखा के ऊपर का वह बिन्दु जिस पर दो सरल रेखाएँ दो ओर से आकर कोण बनाएँ। (वर्टेक्स)।
शीर्षक पुं० (सं) १-दे० 'शीर्ष'। २-वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिए किसी लेख या निबन्ध के ऊपर लिखा जाय।
शीर्षच्छेद पुं० (सं) सिर काटना।
शीर्षत्राण पुं० (सं) शिरस्त्राण।
शीर्षपटक पुं० (सं) मस्तक पर बांधने की पट्टी।
शीर्षपवक पुं० (सं) १-सिर पर लपेटने का कपड़ा। २-साफा। पगड़ी।
शीर्षरक्ष पुं० (सं) दे० 'शिरस्त्राण'।
शीर्षबिन्दु पुं० (सं) १-सिर के ऊपर की ओर का ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान। २-मोतियाबिन्द
शीर्षस्थान पुं० (सं) १-सबसे ऊपर का स्थान। २-माथा। सिर।
शीर्षस्थानीय *वि०*(सं) १-प्रधान। २-श्रेष्ठ।
शील पुं०(सं)१-स्वभाव की प्रवृति। मिजाज। चाल-ढाल। (डिस्पोजीशन)। २-उत्तम स्वभाव या आचरण। ३-संकोच। ४-कोमल हृदय। ५-अजगर। *वि०* तत्पर। प्रवृत्त। यौगिक के अन्त में जैसे- दान-शील)।
शीलता *स्त्री०* (सं) शील का भाव। साधुता।
शीलधारी पुं० (सं) शिव। महादेव।
शीलवान् *वि०* (सं) १-सुशील। २-अच्छे आचरण का।
शीलवृत्त *वि०* (सं) सुशील।
शीश पुं० (हि) दे० 'शीर्ष'।
शीशम पुं० (हि) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती तथा सजावटी सामान बनाने के काम आती है।
शीशमहल पुं०(हि)१-कांच का महल। २-वह कमरा या मकान जिसकी दीवार पर बहुत से शीशे लगे हों।
शीशा पुं० (फा) १-कांच नामक पारदर्शी मिश्र धातु। २-दर्पण। आइना। ३-झाड़, फानूस आदि कांच के बने सजावट के समान।
शीशी *स्त्री०* (फा) शीशे का लम्बोतरा छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।
शुंग पुं०(सं) १-वटवृक्ष। २-कोंपल। ३-फूल के नीचे का आधार या कटोरी।
शुंठि *स्त्री०* (सं) सोंठ।
शुंठी *स्त्री०* (सं) सूखी अदरक। सोंठ।
शुंड पुं० (सं) १-हाथी की सूंड। २-हाथी का मद।
शुंडक पुं० (स) १-रणभेरी। २-शराब उतारने या बेचने वाला।
शुंडा *स्त्री०* (स) १-सूँड़। २-मदिरा पीने का स्थान। ३-वेश्या। ४-मदिरा।
शुंडापान पुं० (सं) शराबखाना।
शुंडाल पुं० (सं) हाथी।
शुंडिका *स्त्री०* (स) १-वह स्थान जहां शराब बिकती

है। २-एक प्राचीन जाति।

शुंडी पुं० (सं) १-हाथी। २-कलवार। स्त्री० गले का कौआ। घांटी।

शुंभ पुं०(सं) एक असुर का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था।

शुंभघातिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंभनाशिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंभमर्दिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।

शुंशमार पुं० (सं) सूँस नामक एक जलजन्तु।

शुऊर पुं० (अ) १-सलीका। ढंग। २-बुद्धि।

शुऊरदार वि० (अ) जिसे काम करने का ढंग आता हो।

शुक पुं० (सं) १-तोता। सुग्गा। २-सिरिस नामक वृक्ष। ३-वस्त्र। ४-कपड़े का आंचल। ५-पगड़ी। शुकदेव।

शुकतरु पुं० (सं) सिरिस नामक पेड़।

शुकतुंड पुं० (सं) १-तोते की चोंच। २-तांत्रिकों की पूजन के समय की हाथों की एक मुद्रा।

शुकदेव पुं० (सं) वेदव्यास के पुत्र का नाम।

शुकद्रुम पुं० (सं) सिरिस का पेड़।

शुकनालिका-न्याय पुं० (सं) तोता जिस प्रकार फँसाने की नली में लोभ के कारण फँस जाता है उसी प्रकार फँसने की रीति।

शुकनासिका स्त्री० (सं) तोते की चोंच जैसी नाक।

शुकपुच्छ पुं० (सं) १-गन्धक। २-तोते की पूंछ।

शुकवल्लभ पुं० (सं) अनार।

शुकवाहन पुं० (सं) कामदेव।

शुकादन पुं० (सं) अनार।

शुकी स्त्री० (सं) २-तोते की मादा। सुग्गी। २-कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकेष्ठ पुं० (सं) सिरिस वृक्ष।

शुकोदर पुं० (सं) तालीश वृक्ष।

शुकोह पुं० (फा) १-दबदबा। २-प्रताप। ३-रौब। ४-आतंक।

शुक्त वि० (सं) १-खमीर उठाया हुआ। २-खट्टा। ३-कठोर। ४-निर्जन। ५-अप्रिय। ३-मिला हुआ। पुं० (सं) १-कांजी। २-मांस। ३-सिरका। ४-कठोर वचन। ५-खटाई।

शुक्ति स्त्री० (सं) १-सीप। सीपी। २-शंख। ३-घोंघा। ४-बवासीर रोग। ५-नख। ६-आँख का एक रोग ७-हड्डी। ८-घोड़े की छाती या गरदन पर की भौंरी ९-एक तौल।

शुक्तिज पुं० (सं) मोती।

शुक्तिपत्र पुं० (सं) छतिवन का वृक्ष।

शुक्तिपर्णी पुं० (सं) दे० 'शुक्तिपत्र'।

शुक्तिपेशी स्त्री० (सं) सीप का खोल।

शुक्तिबीज पुं० (सं) मोती।

शुक्तिमणि पुं० (सं) मोती।

शुक्तिवधू स्त्री० (सं) सीप। सीपी।

शुक्तिस्पर्श पुं० (सं) मोती के दाग या धब्बे।

शुक्र वि० (सं) १-चमकीला। २-स्वच्छ। पुं० (सं) १-अग्नि। २-एक प्रसिद्ध ग्रह। ३-पुरुष का वीर्य। ४-जेठ का महीना। ५-चित्रक वृक्ष। ६-पौरुष। बल। ७-बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच में पड़ने वाला दिन। ८-स्वर्ण। ९-धन। सम्पत्ति। १०-आंखों में का फूला नामक रोग। पुं० (अ) धन्यवाद।

शुक्रगुजार वि० (अ) आभारी। कृतज्ञ।

शुक्रगुजारी स्त्री० (अ) कृतज्ञता।

शुक्रदोष पुं० (सं) नपुंसकता। क्लीवत्व।

शुक्रप्रमेह पुं० (सं) धातुक्षीणता नामक एक रोग।

शुक्रभुक् पुं० (सं) मोर। मयूर।

शुक्रभू पुं० (सं) मज्जा।

शुक्रल वि० (सं) १-जिसमें वीर्य हो। २-वीर्य उत्पन्न करने वाला।

शुक्रवार पुं० (सं) बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच का दिन।

शुक्रवासर पुं० (सं) दे० 'शुक्रवार'।

शुक्रस्तंभ पुं० (सं) ध्वजभंग अथवा नपुंसकता विशेष जो बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है।

शुक्रांग पुं० (सं) मोर। मयूर।

शुक्रा स्त्री० (सं) वंसलोचन।

शुक्राचार्य पुं० (सं) महर्षि भृगु के पुत्र जो दैत्यों के गुरु माने जाते हैं।

शुक्राना पुं० (फा) मुकदमा जीतने के बाद वकील को मेहनताने के अतिरिक्त दिया जाने वाला धन।

शुक्रिया पुं० (फा) धन्यवाद।

शुक्रीया पुं० (फा) धन्यवाद।

शुक्ल वि० (सं) उजला। सफेद। पुं० (सं) १-शुक्लपक्ष। सुदी। २-ब्राह्मणों की एक पदवी। ३-एक नेत्र रोग। ४-मक्खन। नवनीत। ५-चांदी। रजत। ३-योग। ७-विष्णु। ८-कुण्ड नामक पुष्पवृक्ष। ९-शिव। १०-सफेद अरण्ड का पेड़।

शुक्लदुग्ध पुं० (सं) सिंघाड़ा।

शुक्लधातु पुं० (सं) खड़िया मिट्टी।

शुक्लपक्ष पुं० (सं) अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के पन्द्रह दिन।

शुक्लफेन पुं० (सं) समुद्रफेन।

शुक्ला स्त्री० (सं) १-सरस्वती। २-शक्कर। चीनी। ३-वह स्त्री जिसका रंग सफेद हो।

शुक्लिमा स्त्री० (सं) सफेद होने का भाव। श्वेतता।

शुक्लोदन पुं० (सं) एक प्रकार का चावल।

शुचि पुं० (सं) १-अग्नि। २-गर्मी। ग्रीष्म। ३-

ज्येष्ठमास । ४-आषाढ़ मास । ५-चन्द्रमा । ६-विप्र । ७-कार्तिकेय । *स्त्री०* १-पवित्रता । स्वच्छता । २-कश्यप की कन्या का नाम । *वि०* १-शुद्ध । पवित्र । २-स्वच्छ । साफ । ३-निर्दोष ।

**शुचिकर्मा** *वि०* (सं) सदाचारी । पवित्र करने वाला ।

**शुचिता** *स्त्री०* (सं) १-पवित्रता । २-वह स्वच्छता जो स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक है । (सैनिटेशन) ।

**शुचिद्रुम** *पु०* (सं) पीपल ।

**शुचिरोचि** *पु०* (सं) चन्द्रमा ।

**शुचिव्रत** *पु०* (सं) अच्छे तथा पवित्र काम का संकल्प या बीड़ा उठाने वाला ।

**शुचिष्मान्** *वि०* (सं) प्रकाशयुक्त ।

**शुजा** *वि०* (अ) बहादुर । वीर ।

**शुतुर** *पु०* (फा) ऊँट । उष्ट्र ।

**शुतुरखाना** *पु०* (फा) उष्ट्रशाल ।

**शुतुरगाव** *पु०* (फा) जिराफ नामक जन्तु ।

**शुतुरनाल** *पु०* (फा) एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊँट पर लादकर चलाई जाती है ।

**शुतुरमुर्ग** *पु०*(फा) एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट के समान होती है ।

**शुतुरसवार** *पु०* (सं) सांडनी की सवारी करने वाला

**शुदनी** *स्त्री०* (फा) होनी । नियति । होनहार । भावी ।

**शुदा** *वि०* (फा) जो व्यतीत हो चुका हो (समास में) ।

**शुद्ध** *वि०* (सं) १-स्वच्छ । २-पवित्र । ३-ठीक सही । ४-खालिस । ५-निर्दोष । *पु०* १-सेंधा नमक । २-काली मिर्च । ३-चांदी । ४-शिव । ५-एक राग । ७-सप्तऋषियों में से एक ।

**शुद्धकर्मा** *वि०* (सं) पवित्र काम करने वाला ।

**शुद्धता** *स्त्री०* (सं) १-पवित्रता । २-स्वच्छता । ३-निर्दोषता ।

**शुद्धत्व** *पु०* (सं) शुद्धता ।

**शुद्धधी** *वि०* (सं) पवित्र विचारों वाला ।

**शुद्धमति** *वि०* (सं) दे० 'शुद्ध धी' ।

**शुद्धपक्ष** *पु०* (सं) शुक्लपक्ष ।

**शुद्धहृदय** *वि०* (सं) कपट या छलरहित ।

**शुद्धांत** *पु०* (सं) अन्तःपुर ।

**शुद्धांतचारी** *पु०* (सं) अन्तःपुर का द्वाररक्षक ।

**शुद्धांतरक्षक** *पु०* (सं) शुद्धांतचारी ।

**शुद्धा** *स्त्री०* (सं) इन्द्रजव ।

**शुद्धात्मा** *पु०* (सं) शिव । *वि०* पवित्र स्वभाव वाला ।

**शुद्धापह्नुति** *स्त्री०* (सं) एक काव्यालंकार जिसमें उपमेय को असत्य ठहरा कर उपमान की असत्यता स्थापित की जाती है ।

**शुद्धि** *स्त्री०*(सं) १-स्वच्छता । सफाई । २-वह धार्मिक संस्कार या कृत्य जो किसी धर्मच्युत या विधर्मी व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए होता है । ३-दुर्गा ।

**शुद्धिपत्र** *पु०*(सं) १-ग्रन्त का वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहां पर क्या अशुद्धि रह गई है । (एरेटा) । २-वह प्रमाण पत्र जो शुद्धि करने के बाद पण्डितों द्वारा दिया जाता है ।

**शुद्धपत्रक** *पु०* (सं) वह पत्र जिसमें अशुद्धियां तथा उनका शुद्ध रूप हो सकता है । (करक्शन स्लिप) ।

**शुद्धोदन** *पु०* (सं) भगवान बुद्धदेव के पिता का नाम ।

**शुद्धाशुद्धि** *स्त्री०* (सं) अशुद्ध तथा शुद्ध का भाव ।

**शुन** *पु०* (सं) १-कुत्ता । २-एक गोत्रकार ऋषि का नाम । ३-पिल्ला ।

**शुनाशीर** *पु०* (सं) १-इन्द्र । २-वायु तथा सूर्य । ३-इन्द्र तथा वायु । ४-उल्लू ।

**शुनी** *स्त्री०* (सं) कुतिया ।

**शुनीर** *पु०* (सं) कुतियों का झुण्ड ।

**शुबहा** *पु०* (फा) १-सन्देह । शक । २-भ्रम । धोखा

**शुभंकर** *वि०* (सं) मंगल या शुभ करने वाला ।

**शुभंकरी** *स्त्री०* (सं) पार्वती ।

**शुभ** *वि०* (सं) १-भला । अच्छा । २-मंगलप्रद । *पु०* १-कल्याण । भलाई । २-चांदी । ३-बकरा । ४-सत्ताइस योगों में से एक (फ० ज्यो०) ।

**शुभकर** *वि०* (सं) मंगलप्रद । कल्याण करने वाला ।

**शुभकारी** *स्त्री०* (सं) पार्वती ।

**शुभकर्मा** *वि०* (सं) पवित्र या अच्छे कर्म करने वाला ।

**शुभग्रह** *पु०*(सं) अच्छा फल देने वाला ग्रह ।

**शुभचिंतक** *वि०* (सं) भला चाहने वाला । हितैषी ।

**शुभदंती** *स्त्री०* (सं) वह स्त्री जिसके सुन्दर दांत हों ।

**शुभदर्शन** *वि०* (सं) १-सुन्दर । जिसका मुख देखने से कोई शुभ काम हो ।

**शुभदायी** *पु०* (सं) मंगल या शुभ करने वाला ।

**शुभलग्न** *पु०* (सं) शुभमुहूर्त ।

**शुभशंसी** *वि०* (सं) किसी मंगल बात की खबर देने वाला ।

**शुभसूचक** *वि०* (सं) कोई खुशखबरी सुनाने वाला ।

**शुभसूचना** *स्त्री०* (सं) खुशखबरी ।

**शुभस्थली** *स्त्री०* (सं) १-पवित्र स्थान । २-यज्ञभूमि

**शुभांग** *वि०* (सं) सुन्दर । मनमोहक ।

**शुभांगी** *स्त्री०* (सं) १-कामदेव की स्त्री रति का नाम २-राजा कुरु की पत्नी का नाम । *वि०* सुन्दर (स्त्री)

**शुभा** *स्त्री०* (सं) १-शोभा । २-कांति । चमक । ३-बकरी । ४-इच्छा । ५-देवसभा । *पु०* (हिं) दे० 'शुबहा' ।

**शुभाकांक्षी** *वि०* (सं) शुभ या कल्याण चाहने वाला । हितैषी ।

**शुभागमन** *पु०* (सं) मंगलप्रद आगमन । (वेल्कम) ।

**शुभानुष्ठान** *पु०* (सं) कोई शुभ या मंगलकारी कर्म

**शुभावह** *वि०* (सं) शुभ या कल्याणकारी ।

**शुभाशीर्वाद** *पु०* (सं) भला चाहते हुए दिया गया

आशीर्वाद ।
शुभाशीष पुं० (सं) दे० 'शुभाशीर्वाद' ।
शुभ्र वि० (सं) १-श्वेत । सफेद । उजला । २-चमकीला । पुं० १-सांभर नमक । २-रूपा । चांदी । ३-चरबी । ४-फिटकरी । ५-चीनी । ६-पद्माख । ७-अबरक । ८-सफेद रङ्ग ।
शुभ्रकर पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शुभ्रता स्त्री० (सं) १-सफेदी । श्वेतता । २-उज्ज्वलता
शुभ्रभानु पुं० (सं) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।
शुभ्ररश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा ।
शुभ्रांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।
शुमार पुं० (फा) १-गणना । गिनती । २-लेखा । हिसाब ।
शुमाली वि० (फा) उत्तरी । उत्तर का ।
शुमाली हवा स्त्री०(फा) उत्तर की ओर से आने वाली वायु ।
शुरुआत स्त्री० (अ) आरम्भ ।
शुरू पुं० (अ) आरम्भ (शुरूआत का एक वचन) ।
शुल्क पुं०(सं) १-वह देन जो किसी नियम या परिपाटी के अनुसार अनिवार्य रूप से लिया जाता है २-आयात, निर्यात, विक्रय आदि की वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगने वाला कर (कस्टम, ड्यूटी) ३-वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया जाय (फी) । ४-शर्त । ५-दहेज । ६-मूल्य ।
शुल्कग्राही पुं० (सं) शुल्क उगाहने या एकत्र करने वाला ।
शुल्कसीमान्त पुं०(सं)किसी देश की सीमा पर वस्तुओं आयात या निर्यात पर लिया जाने वाला शुल्क । (कस्टम फ्रण्टियर्स) ।
शुल्काध्यक्ष पुं० (सं) चुङ्गी का सबसे बड़ा अधिकारी या अध्यक्ष ।
शुल्कार्ह वि० (सं) शुल्क लगाये जाने योग्य । जिस पर शुल्क लग सकता हो । (ड्यूटीएबल) ।
शुश्रूषक पुं० (सं) सेवा करने वाला । सेवक ।
शुश्रूषा स्त्री० (सं) १-सेवा । टहल । २-रोगी की परिचर्या । ३-खुशामद । ४-कथन । ५-किसी से कुछ सुनने की इच्छा ।
शुष्क वि० (सं) २-सूखा । खुश्क । जिसमें तरी न हो। २-नीरस । ३-निरर्थक । ४-जिससे मनोरंजन न होता हो । ५-निर्मोही ।
शुष्कता स्त्री० (सं) १-सूखापन । २-स्नेहहीनता । ३-रसहीनता ।
शुष्कवृक्ष पुं० (सं) धव का वृक्ष । धौ ।
शुष्कव्रण पुं० (सं) योनिकन्द नामक एक स्त्रियों को होने वाला रोग ।
शुष्कांग पुं० (सं) धव का वृक्ष । वि० दुबला-पतला ।
शुष्कार्द्र पुं० (सं) सोंठ ।
शुष्कार्द्रक पुं० (सं) सोंठ ।
शुहदा वि० (अ) लम्पट । बदमाश । बदचलन ।
शुहदापन पुं० (अ) लम्पटता । बदमाशी । बदचलनी
शुहरत स्त्री० (अ) १-प्रसिद्धि । २-ख्याति । ३-बदनाम । ४-नेकनामी ।
शूक पुं०(सं) १-यव । जौ । २-अन्न की बाल । ३-एक प्रकार का तृण । ४-शिखा । ५-कागज नत्थी करने की सूई । आलपिन । (पिन) । ६-एक प्रकार की गन्दगी में उत्पन्न होने वाला कीड़ा । ७-दया ।
शूकधानी स्त्री०(सं) कागज नत्थी करने वाली सुइयां लगाने की डिब्बी । (पिनकुशन) ।
शूकपत्र पुं० (सं) बिन। विष वाला सर्प ।
शूकपिंडी स्त्री० (सं) किवांछ । कौंछ ।
शूकर पुं० (सं) सूअर । वाराह ।
शूकरकंद पुं० (सं) वाराहीकन्द ।
शूकरक्षेत्र पुं० (सं) वह तीर्थ स्थान जहां विष्णु ने वाराह अवतार धारण किया था और जिसका वर्तमान नाम सोरों है ।
शूकरी स्त्री० (सं) १-सूअर की मादा । सूअरी । २-सूँस नामक जलजन्तु ।
शूकवती स्त्री० (सं) कौंछ । किवाँछ ।
शूकशिंबा स्त्री० (सं) कौंछ । किवांछ ।
शूचिवेधन पुं० (सं) सूई की सहायता से दवा शरीर में पहुंचाना । (इन्जेक्शन) । सूचीवेधन ।
शूची स्त्री० (सं) सूई ।
शूति स्त्री० (सं) बढ़ोतरी । वृद्धि ।
शूतिपर्ण पुं० (सं) अमलतास ।
शूद्र पुं०(सं) १-आर्यों के चार वर्णों में से चौथा तथा अन्तिम वर्ण जिसका कर्म पहले तीनों वर्णों की सेवा करना बताया गया है । २-दास । ३-इस वर्ण का मनुष्य । ४-निकृष्ट । ५-हरिजन । अछूत ।
शूद्रक पुं०(सं) १-मृच्छकटिक का रचयिता । २-शूद्र ।
शूद्रजन्मा वि० (सं) जो शूद्र से उत्पन्न हुआ हो ।
शूद्रप्रिय पुं० (सं) प्याज ।
शूद्रयाजक पुं० (सं) शूद्र के लिए यज्ञ कराने वाला पुरोहित ।
शूद्रसेवा स्त्री० (सं) शूद्र की नौकरी या सेवा ।
शूद्रा स्त्री० (सं) शूद्र जाति की स्त्री । शूद्री ।
शूद्राणी स्त्री० (सं) शूद्रा ।
शूद्रान्न पुं० (सं) शूद्र वर्ण के स्वामी से प्राप्त अन्न
शूद्रावेदी पुं० (सं) शूद्रों के अतिरिक्त वह व्यक्ति जिसने शूद्राणी के साथ विवाह कर लिया हो ।
शूद्रासुत पुं० (सं) शूद्रामाता और द्विज या ब्राह्मण पिता से उत्पन्न सन्तान ।
शूद्री स्त्री० (सं) शूद्र की स्त्री । शूद्रा ।
शून वि० (हि) दे० 'शून्य' ।
शूना स्त्री० (सं) १-गृहस्थ के घर का वह स्थान जहां

अनजाने अनेक जीवों की हत्या होती है (चूल्हा, चक्की, झाड़, जलपात्र और ऊखली)। २-तालु के ऊपर की छोटी जीभ।
शून्य पुं० (सं) १-वह स्थान जिसके भीतर कुछ भी न हो। (वोयड)। खाली जगह। २-आकाश। ३-बिंदु। ४-एकांत स्थान। ५-ईश्वर। ६-स्वर्ग। ७-अभाव। राहित्य। वि० १-खाली। जिसके भीतर कुछ न हो। २-निराकार। ३-असत्। ४-विहीन। रहित।
शून्यगर्भ पुं०(सं) पपीता नामक फल। वि० १-जिसमें कुछ भी न हो। २-सार रहित। ३-मूर्ख।
शून्यता स्त्री० (सं) शून्य का भाव या धर्म।
शून्यत्व पुं० (सं) शून्यता।
शून्यदृष्टि स्त्री० (सं) उदास तथा लक्ष्यहीन दृष्टि।
शून्यपथ पुं० (सं) १-निर्जन मार्ग। २-आकाश।
शून्यपदवी स्त्री० (सं) ब्रह्मरंध्र।
शून्यमध्य पुं० (सं) वह वस्तु जिसके बीच का भाग खाली हो।
शून्यमनस्क वि० (सं) जिसका किसी कार्य करने में मन न लगता हो।
शून्यवाद पुं० (सं) (बौद्धों का) एक सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता २-नास्तिकता।
शून्यवादी पुं० (सं) १-शून्यवाद सिद्धांत को मानने वाला। २-बौद्ध। ३-नास्तिक।
शून्यहृदय वि० (सं) जिसके मन में कोई सन्देह न हो
शूप पुं० (हिं) शूर्प। सूप। फटकनी।
शूरंमन्य वि० (सं) जो स्वयं को शूर न होते हुए भी शूर मानता हो।
शूर पुं० (सं) १-वीर। बहादुर। २-योद्धा। ३-सूर्य। ४-सिंह। ५-सूअर। ६-चीता। ७-कृष्ण के पितामह का नाम।
शूरण पुं० (सं) जमीकन्द। सूरन।
शूरता स्त्री० (सं) शौर्य। वीरता। बहादुरी।
शूरताई स्त्री० (हिं) दे० 'शूरता'।
शूरत्व पुं० (सं) शूरता। वीरता।
शूरमानी पुं० (सं) अपनी वीरता पर अभिमान करने वाला। जिसे अपनी वीरता पर पूर भरोसा हो।
शूरविद्या स्त्री० (सं) युद्ध आदि करने की विद्या।
शूरवीर पुं० (सं) सूरमा। अच्छा वीर और योद्धा।
शूरश्लोक पुं० (सं) वीरों के साहसपूर्ण कृत्यों की कहानी।
शूरसेन पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के पितामह का नाम। २-मथुरा के आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम
शूरसेनप पुं० (सं) कार्त्तिकेय। वि० वीरों की सेना का पालन करने वाला।
शूरा पुं० (हिं) १-वीर। सूरमा। २-सूर्य।
शूर्प पुं० (सं) १-सूप। २-एक प्राचीन तौल।
शूर्पकर्ण पुं० (सं) १-हाथी। २-गणेश। ३-सूप जैसा कानों वाला।
शूर्पणखा स्त्री० (सं) रावण की बहन का नाम जिसके नाक और कान लक्ष्मण ने काटे थे।
शूल पुं० (सं) १-बरछे की तरह एक प्राचीन अस्त्र। २-लम्बा तथा नुकीला कांटा। ३-वायु के प्रकोप से होने वाली एक प्रकार की वेदना। ४-पीड़ा। ५-सूली, जिसपर पहले अपराधियों को प्राणदंड दिया जाता था। ६-झंडा। पताका। ७-मृत्यु।
शूलधन्वा पुं० (सं) शिव।
शूलधारी पुं० (सं) शिव।
शूलना क्रि० (हिं) १-शूल या कांटे के समान गड़ना। २-दुःख या पीड़ा देना।
शूलनाशन पुं० (सं) १-हींग। २-सौवर्चल लवण। ३-वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो शूलरोग में दिया जाता है।
शूलनाशी पुं० (सं) हींग।
शूलपाणि पुं०(सं) शिव। महादेव।
शूलहस्त पुं० (सं) शिव। महादेव
शूलहृत पुं० (सं) हींग।
शूलिका स्त्री० (सं) १-कबाब। २-वह सलाख जिसमें मांस खोंसकर भूनते हैं
शूलिनी स्त्री० (सं) दुर्गा।
शूली स्त्री०(सं) १-सूली। २-पीड़ा। ३-शूल। पुं०(हिं) १-शिव। खरगोश।
शूल्य पु० (सं) कबाब।
शूल्यपाक पु० (सं) कबाब।
शूल्यमांस पुं० (सं) कबाब।
शृंखल पुं० (सं) १-कमर में पहनने की जंजीर। २-सांकल। ३-हथकड़ी। बेड़ी। ४-नियम। ५-सिलसिला।
शृंखला स्त्री० (सं) १-क्रम। सिलसिला। २-श्रेणी। ३-जंजीर। सांकल। ४-कटिवस्त्र। ५-कमर में पहनने की तगड़ी। करधनी। ६-एक अलंकार जिसमें पहले कहे गए हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन होता है (साहित्य)। ७-परम्परा।
शृंखलाबद्ध वि० (सं) १-सिलसिलेवार। जो क्रम से हो। २-बँधा हुआ।
शृंखलित वि० (सं) १-क्रमबद्ध। सिलसिलेवार। २-पिरोया हुआ। ३-शृङ्खला से बँधा हुआ।
शृंग पुं० (सं) १-शिखर। २-गाय, भैंस बकरी आदि के सींग। ३-सींग नामक बाद्ययन्त्र। ४-कंगूरा। ५-कमल। ६-अदरक। सौंठ। ७-प्रभुत्व। ८-उत्तेजना। ९-स्तन। छाती। १०-पानी का फौव्वारा। वि० तीक्ष्ण। तेज।

**शृंगग्राहिकान्याय** पुं० (सं) एक न्याय जिसका प्रयोग किसी कठिन कार्य का एक भाग हो जाने पर शेष अंश का संपादन इस प्रकार सहज हो जाता है जिस प्रकार सींग मारने वाले बैल का एक सींग पकड़ने पर दूसरा सींग पकड़ना सहज हो जाता है
**शृंगज** पुं० (सं) १-तीर। शर। २-अगर। वि० सींग का बना हुआ।
**शृंगप्रहारी** पुं० (सं) शिव।
**शृंगमूल** पुं० (सं) सिंघाड़ा।
**शृंगार** पुं० (सं) १-सजावट। सजाना। २-साहित्य के नौ रसों में से सबसे अधिक प्रसिद्ध तथा प्रधान रस जिसमें नायक-नायिका के मिलन तथा वियोग के सुखों तथा कष्टों का वर्णन होता है। ३-वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़े। ४-वस्त्राभूषणों से स्त्रियों का स्वयं को सजाना। ५-अदरक। ६-संभोग। ७-लौंग। ८-सेंदूर। ९-चूर्ण। १०-स्वर्ण सोना।
**शृंगारचेष्टा** स्त्री० (सं) कामचेष्टा।
**शृंगारण** पुं० (सं) प्रेम दर्शन। (स्त्री के प्रति) प्रेम जतलाना।
**शृंगारभाषित** पु०(सं) प्रेमवार्तालाप।
**शृंगारभूषण** पुं० (सं) १-सिंदूर। २- हरताल।
**शृंगारवेश** पुं० (सं) वह सुन्दर वेश जिसे पहन कर प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।
**शृंगारिक** वि० (सं) शृङ्गार-सम्बन्धी।
**शृंगारिणी** स्त्री० (सं) १-शृङ्गार करने वाली स्त्री। २-एक वर्णवृत्त प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।
**शृंगारिया** पुं० (हिं) वह जो अनेक प्रकार के रूप बनाता है। बहुरूपिया।
**शृंगारी** पुं० (सं) १-सुपारी। २-हाथी। ३-मानिक। ४-कामुक व्यक्ति। ५-शृङ्गार करने वाला व्यक्ति। वि० शृङ्गारिक।
**शृंगिक** पुं० (सं) सिंगिया विष।
**शृंगी** पुं० (सं) १-हाथी। २-वृक्ष। ३-सींग वाला पशु। ४-शिव। ५-एक सींग का बना एक वाद्य-यन्त्र। ६-पर्वत। ७-सींगिया विष। ८-एक ऋषि का नाम जिसके शाप से राजा परीक्षित को साँप ने डसा था। १०-स्वर्ण। ११-शिव। १२-सिङ्गी नामक मछली।
**शृग** पु० (सं) दे० 'शृगाल'।
**शृगाल** पुं० (सं) १-सियार। गीदड़। २-वासुदेव। ३-एक दैत्य का नाम। वि० १-डरपोक। २-निष्ठुर ३-दुष्ट।
**शेख** पुं० (अ) १-मुहम्मद साहब के वंशजों की एक उपाधि। २-मुसलमानों के चार वर्णों में से एक पहला तथा श्रेष्ठ वर्ण। ३-आचार्य। पीर। बूढ़ा।
**शेखचिल्ली** पुं० (अ) १-एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति २-व्यर्थ बड़े मन्सूबे बांधने वाला। ३-मूर्ख। मसखरा।
**शेखर** पुं० (सं) १-सिर। शीर्ष। २-मुकुट। ३-शिखर पर्वत की चोटी। ४-रगण के पांचवें भेद की संज्ञा। (।।ऽ।)। ५-संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद। वि० (सं) श्रेष्ठ।
**शेखसद्दो** पुं० (अ) अपढ़ स्त्रियों द्वारा पूजा जाने वाला एक पीर।
**शेखी** स्त्री० (फा) १-गर्व। घमण्ड। २-शान। अकड़ ३-डींग। बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।
**शेखीखोर** वि० (फा) डींग हांकने वाला।
**शेखीबाज** वि० (फा) १-घमण्डी। अभिमानी। २-डींग मारने वाला।
**शेफालिका** स्त्री० (सं) नील सिन्धुवार का पौधा।
**शेफाली** स्त्री० (सं) दे० 'शेफालिका'।
**शेर** पुं० (फा) १-बिल्ली की जाति का एक हिंसक पशु। २-बहुत बड़ा वीर तथा साहसी पुरुष।
**शेरदरवाजा** पुं० (फा) वह बड़ा दरवाजा जिसके दोनों ओर शेर की मूर्तियां हों।
**शेरदहाँ** वि० (फा) १-शेर के से मुख वाला। २-जिसके छोरों पर शेर का मुख बना हो।
**शेरदिल** वि० (फा) बहादुर। वीर। निडर।
**शेरनुमा** वि० (फा) शेर के आकार का।
**शेरपंजा** पुं० (फा) शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहाँ।
**शेरबच्चा** पुं० (फा) १-शेर का बच्चा। २-वीर तथा साहसी पुरुष की सन्तान।
**शेरवानी** स्त्री० (फा) घुटने तक का एक प्रकार का बंद गले का कोट या लबादा।
**शेल** पुं० (हिं) बरछी। शल्य।
**शेवाल** पुं० (सं) सेवार। शैवाल।
**शेष** पुं० (सं) १-बाकी। बची हुई वस्तु। २-(गणित) घटाने से बची हुई संख्या या रकम बाकी। (बैलेंस-रिमेण्डर)। ३-अन्त। समाप्ति। ४-परिणाम। फल ५-वह शब्द जो किसी शब्द का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। ६-नाश। मरण। ७-एक दिग्गज। ८-हाथी। ९-कमालगोटा। १०-एक छप्पय छन्द ४६ गुरु, ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। वि० (सं) १-अवशिष्ट। बाकी। समाप्त।
**शेषकाल** पुं० (सं) मृत्यु का समय।
**शेषधर** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**शेषर** पुं० (हिं) दे० 'शेखर'।
**शेषरात्रि** स्त्री० (सं) रात का अन्तिम प्रहर।
**शेषशायी** पुं० (सं) विष्णु।
**शेषांश** पु० (सं)१-बाकी बचा हुआ अंश। २-अन्तिम अंश।
**शेषा** स्त्री० (सं) देवता पर चढ़ा हुआ नैवेद्य या प्रसाद

के रूप में बांटा जाता है।
**शेषावस्था** स्त्री० (सं) बुढ़ापा।
**शेषोक्त** वि० (सं) अन्त में कहा हुआ।
**शेख** पुं० (सं) १-पतित ब्राह्मण की सन्तान। पु० (अ) १-मुसलमानों की चार जातियों में से पहली। २-महन्त। ३-धर्मशास्त्र के ज्ञाता। ३-कबीले का सरदार।
**शैतान** पुं० (अ) १-इस्लाम, ईसाई आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध चलाता है। २-भूत। प्रेत। ३-बहुत बड़ा दुष्ट ४-बहुत नटखट व्यक्ति।
**शैतानी** स्त्री० (अ) पाजीपन। दुष्टता। वि० १-दुष्टतापूर्ण। शैतान का।
**शैत्य** पुं० (सं) शीत। ठण्डक।
**शैथिल्य** पु० (सं) १-शिथिलता। ढिलाई। २-सुस्ती
**शैदा** वि० (सं) प्रेम से उन्मत्त होने वाला।
**शैल** पुं० (सं) १-चट्टान। २-पर्वत। पहाड़। ३-शिलाजीत। ४-रसौत। वि० १-शिला सम्बन्धी। २-पथरीला। ३-कठोर। कड़ा।
**शैलकन्या** स्त्री० (सं) पार्वती।
**शैलकुमारी** स्त्री० (सं) पार्वती।
**शैलकूट** पुं० (सं) पर्वत की चोटी।
**शैलज** पुं० (सं) छरीला।
**शैलजा** स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-दुर्गा।
**शैलजात** पुं० (सं) छरीला।
**शैलतटी** स्त्री० (सं) पहाड़ की तराई।
**शैलतनया** स्त्री (सं) पार्वती।
**शैलधर** पुं० (सं) श्रीकृष्ण।
**शैलनंदनी** स्त्री० (सं) पार्वती।
**शैलनिर्यास** पुं० (सं) शिलाजीत।
**शैलपति** पुं० (सं) हिमालय-पर्वत।
**शैलपुत्री** स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-गङ्गानदी। ३-दुर्गा
**शैलरंध्र** पुं० (सं) गुफा।
**शैलराज** पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
**शैलराजसुता** स्त्री० (सं) पार्वती। २-गंगा। ३-दुर्गा
**शैलबीज** पु० (सं) भिलावां।
**शैलसुता** स्त्री० (सं) पार्वती।
**शैलाधिप** पुं० (सं) हिमालय पर्वत।
**शैलाधिराज** पुं० (सं) शैलाधिप।
**शैली** स्त्री० (सं) १-चाल। ढब। ढंग। २-प्रणाली। तर्ज। ३-रीति। प्रथा। ४-वाक्यरचना का वह ढंग जो लेखक की भाषा सम्बन्धी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। (स्टाइल)। ५-साहित्य।
**शैलीकार** पुं० (सं) किसी विशिष्ट शैली का निर्माण करने वाला लेखक।
**शैलूष** पु० (सं) १-नाटक अथवा अभिनय करने वाला। २-धूर्त। चालाक।
**शैलेंद्र** पुं० (सं) हिमालय।
**शैलेंद्रसुता** स्त्री० (सं) पार्वती।
**शैलेय** वि० (सं) १-पथरीला। २-पहाड़ी। ३-पत्थर से उत्पन्न। पुं० १-शिलाजीत। २-सेंधा नमक। ३-भ्रमर।
**शैल्य** वि० (सं) १-पथरीला। पत्थर का। २-कड़ा। कठोर।
**शैव** वि० (सं) शिव का। शिव सम्बन्धी। पुं० १-शिव का उपासक। २-शिव के उपासकों का एक संप्रदाय। ३-धतूरा। ४-वासुदेव।
**शैवल** पुं० (सं) १-पद्मकाष्ठ। २-सेवार। ३-एक पर्वत।
**शैवलिनी** स्त्री० (सं) नदी।
**शैवाल** पुं० (सं) सेवार।
**शैशव** वि० (सं) १-शिशु सम्बन्धी। २-बाल्यावस्था का। पुं० १-बचपन। (चाइल्डहुड)। २-बच्चों का-सा व्यवहार। लड़कपन।
**शैशिर** वि०(सं) १-शिशिर सम्बन्धी। २-शिशिर ऋतु में होने वाला। पुं० १-एक ऋषि। २-काले रंग का पपीहा।
**शोक** पुं०(सं) प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग से या दुःखदायी घटना के कारण मन में होने वाला उत्पन्न कष्ट।
**शोककारक** वि० (सं) शोक उत्पन्न करने वाला।
**शोकनाशन** वि० (सं) शोक दूर करने वाला।
**शोकपरायण** वि० (सं) शोकग्रस्त।
**शोकविह्वल** वि० (सं) दे० 'शोकाकुल'।
**शोकसंतप्त** वि० (सं) शोक या चिन्ता से जला हुआ
**शोकसूचक** वि० (सं) शोक की सूचना देने वाला।
**शोकहर** वि० (सं) शोक दूर करने वाला।
**शोकाकुल** वि० (सं) शोक से व्याकुल।
**शोकातुर** वि० (सं) शोक से घबराया हुआ।
**शोकाभिभूति** वि० (सं) शोकातुर।
**शोकार्त** वि० (सं) शोक से व्याकुल।
**शोकाविष्ट** वि० (सं) शोक से पीड़ित।
**शोकावेग** पुं० (सं) बारम्बार शोक की अनुभूति का होना।
**शोकोपहत** वि० (सं) शोक से विकल।
**शोख** स्त्री० (फा) १-धृष्ट। पाजी। ढीठ। २-चपल। चंचल। ३-नटखट। ४-गहरा तथा चमकदार।
**शोखी** स्त्री० (फा) १-धृष्टता। ढिठाई। २-चंचलता। ३-चुलबुलापन। ४-चटकीलापन।
**शोच** पु० (सं) १-दुःख। अफसोस। २-चिन्ता। खटका।
**शोचनीय** वि० (सं) १-जिसकी दशा देखकर चिन्ता हो। २-बहुत हीन तथा बुरा।
**शोच्य** वि० (सं) १-विचार करने योग्य। २-शोच-

नीय।
**शोण** पुं० (सं) १-लाल रंग। अरुणता। लाली। २-अग्नि। ३-रक्त। ४-सोन नामक नदी। ५-लाल गन्ना।
**शोणपद्म** पुं० (सं) लाल कमल।
**शोणभद्र** पुं० (सं) सोन नदी।
**शोणरत्न** पुं० (सं) मानिक। लाल।
**शोणित** वि० (सं) लाल। सुर्ख। पुं० १-रक्त। लहू। २-पौधों का रस। ३-केसर। ४-तांबा।
**शोणितचंदन** पुं० (सं) लालचन्दन।
**शोणितोपल** पुं० (सं) मानिक। लाल।
**शोणिमा** स्त्री० (सं) लालिमा। लाली।
**शोथ** पुं० (सं) १-सूजन। वरम। २-अंग सूज जाने का एक रोग।
**शोथघ्नी** पुं० (सं) १-गदहपूरना। २-शालपर्णी।
**शोथारि** पुं० (सं) गदहपूरना।
**शोध** पुं० (सं) १-शुद्ध करने वाला संस्कार। २-दुरुस्ती। ३-(ऋण का) चुकता या अदा करना। ४-परीक्षा। जांच। ५-खोज। तलाश।
**शोधक** पुं० (सं) १-सुधार करने वाला। २-शोधने वाला। ३-खोजने वाला।
**शोधन** पुं० (सं) १-शुद्ध करना। (प्योरिफाइंग)। २-ठीक करना। सुधारना। ३-छानबीन। जांच। ४-ऋण चुकाना (पेमेन्ट)। ५-प्रायश्चित। ६-चाल सुधारने के निमित्त दण्ड। ७-साफ करना। विरेचन। ८-मल। ९-नीबू। १०-गणित में घटाने की क्रिया।
**शोधना** क्रि० (हिं) १-शुद्ध या साफ करना। २-सुधारना। ३-औषध के लिए धातु का संस्कार करना। ४-खोजना। ढूंढना।
**शोधनी** स्त्री० (सं) १-झाड़ू। २-नील। ३-एक औषध ४-ताम्रवल्ली।
**शोधनीय** वि०(सं) शुद्ध करने योग्य। २-चुकाने योग्य ढूँढ़ने योग्य।
**शोधवाना** क्रि०(हिं) १-शोधने का काम कराना। २-तलाश कराना।
**शोधाई** स्त्री० (हिं) शोधने की मजदूरी।
**शोधित** वि० (सं) १-शुद्ध किया हुआ। २-जिसका शोध हुआ हो।
**शोधैया** वि० (हिं) शोधने वाला।
**शोध्य** वि० (सं) शुद्ध करने योग्य।
**शोध्यपत्र** पुं० (सं) छापे जाने वाली वस्तु का नमूना जो छापने से पहले अशुद्धियां ठीक करने के लिये तैयार किया जाता है। (प्रूफ)।
**शोबदा** पुं० (अ) १-हाथ की सफाई का काम। २-इन्द्रजाल का काम। ३-छल। धोखा। ४-जादू।
**शोबा** पुं० (अ) १-विभाग। शाखा। २-टुकड़ा।
**शोभ** वि० (सं) सजीला। सुन्दर। स्त्री० (हिं) शोभा। चमक। दीप्ति।
**शोभन** वि० (सं) १-सजीला। सुन्दर। २-रमणीय। श्रेष्ठ। उत्तम। ४-उपयुक्त। मंगलदायक। पुं० १-ग्रह। २-अग्नि। ३-शिव। ४-बृहस्पति का ग्यारहवां संवत्सर। ५-कमल। ६-रांगा। ७-आभूषण। ८-धर्म। पुण्य। ९-एक अलंकार।
**शोभना** स्त्री०(सं) १-हल्दी। २-सुन्दर स्त्री। ३-स्कन्द की अनुचरी एक मातृका। क्रि०(हिं)सोहना। शोभा देना।
**शोभांजन** पुं०(स) सहिंजन का पेड़।
**शोभा** स्त्री०(सं)१-कांति। चमक। २-सजावट। ३-वर्ण रंग। छवि। सुन्दरता। ५-एक वर्णवृत्त। ६-दलाली का धन।
**शोभाकर** वि० (सं) शोभा करने वाला।
**शोभाधर** वि० (स) सुन्दर। रमणीय।
**शोभान्वित** वि०(सं) सुन्दर। सजीला।
**शोभामय** वि० (सं) देखने में सुन्दर लगने वाला।
**शोभायमान** वि० (सं) शोभा देने या बढ़ाने वाला। सुन्दर।
**शोभाशून्य** वि० (सं) जो सुन्दर न हो। शोभारहित।
**शोभाहीन** वि०(सं) शोभाशून्य।
**शोभित** वि०(सं)१-सुन्दर। २-सजता हुआ। ३-विराजमान।
**शोभिनी** स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री।
**शोभी** वि० (सं) शोभा देने वाला। चमकने वाला।
**शोर** पुं०(फा)१-जोर की आवाज। कोलाहल। २-धूम प्रसिद्धि।
**शोरगुल** पुं० (फा) हल्लागुल्ला।
**शोरबा** पुं०(फा) उबली हुई तरकारी या मांस का रस जूस। रसा।
**शोरा** पुं० (फा) मिट्टी से निकलने वाला एक प्रसिद्ध क्षार।
**शोरिश** स्त्री० (फा) १-खलबली। हलचल। २-बलवा बगावत।
**शोला** पुं०(देश) एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी हलकी होती है। पुं० (अ) आग की लपट। ज्वाला।
**शोशा** पुं० (फा) १-चुटकुला। २-निकली हुई नोक ३-व्यंग्य। ४-झगड़ा खड़ा करने वाली बात।
**शोष** पुं० (सं) १-सूखने या खुश्क होने का भाव। २-क्षय। छीजने का भाव। ३-शरीर का क्षीण होना। ४-एक प्रकार का राजयक्ष्मा रोग। ५-सूखापन। खुश्की। ६-बच्चों का सूखा नामक रोग।
**शोषक** पुं० (सं) १-सुखाने वाला। २-सोखने वाला ३-क्षीण करने वाला। ४-दूसरों का धन हरण करने वाला। (एक्सप्लॉयटर)।
**शोषण** पुं० (सं) १-सोखना। २-सुखाना। ३-नाश

करना। ४-अधीनस्थ या दुर्बल के परिश्रम आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। (एक्सप्लायटेशन) ५-सोंठ। ६-कामदेव का एक बाण। ७-सोनपाठा
**शोषणीय** *वि०* (सं) शोषण करने योग्य।
**शोषयिता** *वि०* (सं) शोषण करने वाला।
**शोषित** *वि०* (सं) १-जिसका शोषण किया गया हो २-जो सोखा गया हो।
**शोषी** *वि०* (सं) शोषक।
**शोहदा** पुं० (अ) १-बदमाश। गुण्डा। २-लम्पट। व्यभिचारी। ३-बहुत बनाव-सिंगार करने वाला।
**शोहदापन** पुं० (हिं) १-गुण्डापन। २-छैलापन।
**शोहरत** *स्त्री०* (अ) प्रसिद्धि। ख्याति। धूम।
**शोहरा** पुं० (अ) दे० 'शोहरत'।
**शौंड** पुं० (सं) १-मुर्गा। २-मत्त। मदिरा में मस्त। ३-देवधान्य।
**शौंडिक** पुं० (सं) कलवार। मदिरा बेचने या बनाने वाली जाति।
**शौंडिकी** *स्त्री०* (सं) शौंडिक जाति की स्त्री।
**शौंडिनी** *स्त्री०* (सं) दे० 'शौंडिका'।
**शौंडी** पुं० (सं) मदिरा बेचने वाला।
**शौआल, शौवाल** पुं० (अ) मुसलमानों के साल का दसवां चांद का महीना जिसकी पहली तिथि को ईद मनाई जाती है।
**शौक** पुं० (अ) १-व्यसन। चस्का। २-किसी वस्तु की प्राप्ति या सुख के भोग की लालसा। ३-झुकाव। प्रवृत्ति।
**शौकत** *स्त्री०* (अ) शान। प्रताप। गौरव।
**शौकिया** *अव्य०* (अ) शौक पूरा करने के लिये। *वि०* शौक से भरा हुआ।
**शौकीन** पुं० (अ) १-वह जिसे किसी बात का शौक हो। २-छैला। सदा बनाठना रहने वाला।
**शौकीनी** *स्त्री०* (अ) १-तमाशबीनी। २-ऐयाशी।
**शौकीया** *अव्य०* (अ) दे० 'शौकिया'।
**शौक्तिक** *वि०* (सं) मोती सम्बन्धी। पुं० मोती। मुक्ता
**शौक्तिकेय** पुं० (सं) मुक्ता। मोती।
**शौक** *वि०* (सं) शुक का। शुक्र सम्बन्धी।
**शौक्ल्य** पुं० (सं) उज्ज्वलता। श्वेतता। सफेदी।
**शौच** पुं० (सं) १-शुद्धता। पवित्रता। २-सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना। ३-मलत्याग, कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सवेरे उठकर पहले किया जाता है। ४-पखाने या टट्टी जाना।
**शौचकर्म** पुं० (सं) शास्त्रानुसार शुद्धि की क्रिया।
**शौचकूप** पुं० (सं) संडास।
**शौचगृह** पुं० (सं) पखाना। पखाने की कोठरी आदि
**शौचागार** पुं० (सं) दे० 'शौचगृह'।
**शौचाचार** पुं० (सं) दे० 'शौचकर्म'।
**शौचालय** पुं० (सं) वह स्थान या कमरा जहां लघु-शङ्का आदि की व्यवस्था हो। (लेवेटरी)।
**शौद्धोदनि** पुं० (सं) बुद्धदेव।
**शौध** *वि०* (हिं) पवित्र। निर्मल। *स्त्री०* (सं) सुधि।
**शौनिक** पुं० (सं) १-कसाई। मांसविक्रेता। २-शिकार मृगया।
**शौरसेन** पुं० (सं) आजकल के व्रजमण्डल का प्राचीन नाम। *वि०* शूरसेन-सम्बन्धी।
**शौरसेनी** *स्त्री०* (सं) शौरसेन प्रदेश की प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो नागर भी कहलाती थी।
**शौर्य** पुं० (सं) १-शूरता। वीरता। पराक्रम। २-शूर का धर्म। ३-नाटक में आरभटी नामक वृत्ति।
**शौल्किक** *वि०* (सं) शुल्क सम्बन्धी। पुं० चुंगी विभाग का दरोगा। शुल्काध्यक्ष।
**शौहर** पुं० (फा) स्त्री का पति। खाविंद।
**श्मशान** पुं० (सं) वह स्थान जहां मुर्दे जलाए जाते हैं। मरघट। मसान।
**श्मशाननिवासी** पुं० (सं) १-शिव। २-भूत। प्रेत।
**श्मशानपति** पुं० (सं) शिव। महादेव।
**श्मशानपाल** पुं० (सं) चांडाल।
**श्मशानवैराग्य** पुं० (सं) वह अस्थायी वैराग्य जो श्मशान में जाने पर होता है।
**श्मशानसाधन** पुं० (सं) आधी रात को मुर्दे की छाती पर बैठकर मन्त्र सिद्ध करना। (तांत्रिक)।
**श्मश्रु** पुं० (सं) मूँछ। दाढ़ी।
**श्मश्रुकर** पुं० (सं) नापित। नाई।
**श्मश्रुमुखी** *स्त्री०* (सं) वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूँछें हों।
**श्मश्रुल** *वि०* (सं) दाढ़ी-मूँछों वाला।
**श्याम** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-प्रयाग के अक्षयवट का नाम। ३-एक राग जो संध्या के समय गाया जाता है। ४-धतूरा। ५-सेंधा नमक। ६-बादल। ७-काली मिर्च। ८-कोयल। ९-श्याम नामक देश *वि०* १-सांवला। २-काला और नीला मिला हुआ (रंग)।
**श्यामकण्ठ** पुं० (सं) १-मोर। मयूर। २-शिव। ३-नीलकण्ठ पक्षी।
**श्यामकर्ण** पुं० (सं) काले कान वाला सफेद घोड़ा।
**श्यामकांडा** *स्त्री०* (सं) गाँडरदूब।
**श्यामचटक** पुं० (सं) श्याम नाम का पक्षी।
**श्यामचूड़ा** *स्त्री०* (सं) दे० 'श्यामचटक'।
**श्यामटीका** पुं० (हिं) वह काला टीका जो बच्चों को नजर लगने से बचाने के लिए लगाया जाता है। डिठौना।
**श्यामता** *स्त्री०* (सं) १-कालापन। कृष्णता। सांवला-पन। २-उदासी। मलिनता।
**श्यामल** *वि०*(सं) १-काले रंग का। काला। २-कुछ-कुछ काला। सांवला।
**श्यामलता** *स्त्री०* (सं) १-सांवलापन। २-कालापन।

**श्यामसुंदर** पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण। २-एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।
**श्यामा** स्त्री० (सं) १-राधिका। राधा। २-एक गोपी का नाम। ३-सोलह वर्ष की युवती। ४-यमुना-नदी। ५-काले रंग की गाय। ६-रात्रि। रात। ७-कबूतरी। ८-स्त्री। ९-नील। १०-हल्दी। ११-सांवां अन्न। १२-छाया। १३-कालिका देवी। १४-बंझा १५-कस्तूरी। वि० १-तपाये हुए सोने के रंग वाली। २-सावले रंग की।
**श्यामाक** पुं० (सं) सांवां अन्न।
**श्यामिका** स्त्री० (सं) १-काला रंग। २-कालापन। ३-उदासी। मलिनता।
**श्याल** पुं० (सं) १-साला। २-बहनोई। पुं० (हि) सियार। गीदड़।
**श्यालक** पुं० (सं) साला।
**श्यालकी** स्त्री० (सं) साली।
**श्यालिका** स्त्री० (सं) साली।
**श्येन** पुं० (सं) १-बाज नामक एक शिकारी पक्षी। २-दोहे का एक भेद। ३-पीला रङ्ग।
**श्येनजीवी** पुं०(सं) बाज पक्षी पकड़ कर और बेचकर निर्वाह करने वाला।
**श्येनिका** स्त्री० (सं) १-एक वर्णवृत्त। २-बाज पक्षी की मादा।
**श्येनी** स्त्री०(सं) १-दे० 'श्येनिका'। २-कश्यप की एक कन्या का नाम।
**श्रद्धा** स्त्री० (सं) १-ईश्वर, धर्म अथवा बड़ों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्यभाव। आस्था। (फेथ)। २-विश्वास। ३-आदर। ४-पवित्रता। ५-कर्दममुनि की एक कन्या जिसका विवाह अत्रि ऋषि से हुआ था। ६-वैवस्वत मनु की पत्नी का नाम।
**श्रद्धालु** वि० (सं) जिसके मन में श्रद्धा हो।
**श्रद्धावान्** पुं० (हि) १-श्रद्धालु पुरुष। २-धर्मनिष्ठ। वि० (सं) श्रद्धायुक्त।
**श्रद्धास्पद** वि० (सं) जिसके प्रति श्रद्धा करना उचित हो। पूजनीय।
**श्रद्धेय** वि० (सं) श्रद्धास्पद।
**श्रम** पुं० (सं) १-शरीर को थकाने वाला काम। परिश्रम। मेहनत। २-थकावट। ३-धनोपार्जन के लिये किया जाने वाला इस प्रकार का काम। (लेबर)। ४-क्लेश। दुःख। ५-व्यायाम। ६-अभ्यास। ७-चिकित्सा। ८-प्रयास। ९-तप। १०-साहित्य में कार्य करते-करते संतुष्ट एव शिथिल हो जाने का एक संचारी भाव। ११-दौड़धूप।
**श्रमकण** पुं० (सं) पसीने की बूँदें। स्वेदबिन्दु।
**श्रमकार्यालय** पुं० (सं) वह कार्यालय जो श्रमिकों की संख्या, दशा आदि की जानकारी देता है। (लेबर-ब्यूरो)।
**श्रमघ्न** वि० (स) श्रम या थकावट को दूर करने वाला।
**श्रमजल** पुं० (सं) श्रमजीवी।
**श्रमजल** पुं० (सं) पसीना। प्रस्वेद।
**श्रमजित्** वि० (सं)परिश्रम करने पर भी न थकने वाला।
**श्रमजीवी** वि० (सं) श्रम या मजदूरी करके जीविका चलाने वाला। पुं० मजदूर। मेहनतकश। (लेबरर)।
**श्रमण** पुं० (स) १-बौद्ध संन्यासी। २-यति। मुनि।
**श्रमणक** पुं० (सं) जैन या बौद्ध मुनि।
**श्रमदान** पुं० (सं) सार्वजनिक हित के लिये सड़क कुआँ, विद्यालय आदि बनाने के लिये स्वेच्छा से अपने श्रम का निर्माण कार्य में दान देकर सहयोग देना।
**श्रमदिन** पुं० (हि) श्रम या साधारण दिन जो हर अवस्था में आठ घण्टे से अधिक न हो। (नॉर्मल-डे ऑफ लेबर)।
**श्रमबिंदु** पुं० (सं) पसीना। स्वेद।
**श्रमविभाग** पुं० (स) १-किसी देश या राज्य का वह विभाग जो श्रमिकों के सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है। (लेबर डिपार्टमेंट)। २-किसी कार्य के अलग-अलग अंगों के सम्पादन के लिये अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त करना। (डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ लेबर)।
**श्रमविवाद** पुं० (सं) वह झगड़ा जो श्रमिकों के वेतन, अधिलाभांश तथा दूसरे इस प्रकार के प्रश्नों के कारण मिल मालिकों या मालिकों से होता है। (लेबर डिस्प्यूट)।
**श्रमशीकर** पुं० (सं) श्रमकण।
**श्रमशील** वि० (सं) परिश्रम करने वाला।
**श्रमसंघ** पुं० (सं) कारखाने आदि में काम करने वालों का वह सङ्घ जो मजदूरों के अधिकारों, हितों की रक्षा करने की ओर ध्यान देता है। (लेबर-यूनियन)।
**श्रमसाध्य** वि० (सं) जो परिश्रम द्वारा पूरा किया जा सकता हो।
**श्रमसीकर** पुं० (स) पसीना। श्रमकण।
**श्रमिक** पुं० (सं) वह जो शारीरिक श्रम करके निर्वाह करता हो। (लेबरर) वि० श्रम सम्बन्धी। शारीरिक-श्रम का।
**श्रमिकआन्दोलन** पुं० (सं) वह आन्दोलन जो श्रमजीवी अपने वर्ग के हित के लिए या समाजवाद के प्रचार के लिए करते हैं। (लेबर मूवमेंट)।
**श्रमिक-कल्याण-कार्य** पुं०(सं) श्रमिकों को साफ सुथरे मकान तथा हर प्रकार की भलाई के लिए किया जाने वाला कार्य। (लेबर वेल्फेयर वर्क)।
**श्रमिक-कल्याण-केंद्र** पुं० (सं) वह स्थान जहाँ श्रमिकों की भलाई के लिए काम किए जाते हैं। (लेबर वेल्फेयर सेंटर)।

**श्रमिक-क्षतिपूर्ति-अधिनियम** पुं० (सं) काम करते समय श्रमिकों को चोट आदि लगाने पर उनकी हानि पूरी करने के लिए व्यवसायिक संस्थाओं या मालिकों से हरजाना दिलवाने वाला अधिनियम। (वर्कमेंस कम्पन्सेशन एक्ट)।

**श्रमिकदिन** पुं० (हि) एक दिन में एक श्रमिक द्वारा किए हुए काम को इकाई मानकर तथा हड़ताल आदि के दिनों का हिसाब लगाकर प्राप्त की हुई दिनों की संख्या (मैन-डेज)।

**श्रमित** वि० (सं) थका हुआ। क्लांत।

**श्रमी** पुं० (हि) १-मेहनती। २-श्रमजीवी।

**श्रवण** पुं० (सं) १-शब्द का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय। कान। कर्ण। २-सुनना। ३-धार्मिक कथाओं तथा वेदों का सुनना। ४-बीसवां नक्षत्र ५-टपकना। रसना। बहना।

**श्रवणगोचर** वि० (सं) जो सुनाई पड़ सके।

**श्रवणपथ** पुं० (सं) कान।

**श्रवणपालि** स्त्री० (सं) कान की नोक या ललरी।

**श्रवणप्रत्यक्ष** वि० (सं) दे० 'श्रवणगोचर'।

**श्रवणविद्या** स्त्री० (सं) वह विद्या जो श्रवणेन्द्रिय के सम्पर्क से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है।

**श्रवणविवर** पुं० (सं) कान का छिद्र।

**श्रवणविषय** पुं० (सं) श्रवणगोचर विषय या वस्तु।

**श्रवणीय** वि० (सं) सुनने लायक।

**श्रवणेन्द्रिय** पुं० (सं) १-कान। २-सुनने की शक्ति

**श्रवन** पुं० (हि) कान।

**श्रवना** क्रि० (हि) १-बहना। चूना। टपकना। २-रसना। ३-गिरना।

**श्रवित** वि० (सं) बहा हुआ।

**श्रव्य** वि० (सं) १-जो सुना जा सके। २-सुनने योग्य

**श्रव्यकाव्य** पुं० (सं) वह काव्य जो केवल सुना जा सके पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।

**श्रांत** वि० (सं) १-शांत। २-थका हुआ। ३-निवृत्त ४-जो सुख भोग कर तृप्त हो चुका हो। ५-दुःखी। ६-शांत।

**श्रांति** स्त्री० (सं) १-थकावट। २-खेद। दुख। ३-विश्राम। ४-परिश्रम।

**श्राद्ध** पुं० (सं) १-वह धार्मिक कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। २-पितृ-पक्ष। ३-श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला काम।

**श्राद्धकर्ता** पुं० (सं) वह जो श्राद्ध करता हो।

**श्राद्धकर्म** पुं० (सं) दे० 'श्राद्धक्रिया'।

**श्राद्धक्रिया** स्त्री० (सं) श्राद्ध के सम्बन्ध में होने वाले धार्मिक कृत्य।

**श्राद्धदिन** पुं० (सं) वह तिथि जिस दिन मृत व्यक्ति के लिए वर्ष में एक बार श्राद्ध कर्म किया जाता है

**श्राद्धपक्ष** पुं० (सं) पितृ-पक्ष।

**श्राद्धिक** वि० (सं) श्राद्ध सम्बन्धी। पुं० श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से भोजन करने वाला।

**श्राप** पुं० (हि) दे० 'शाप'।

**श्रावक** पुं० (सं) १-जैनी। जैनधर्म का अनुयायी। २-बौद्ध भिक्षुक। ३-शिष्य। ४-नास्तिक। ५-दूर का शब्द।

**श्रावण** पुं० (सं) १-आषाढ़ के बाद आने वाला मास २-सुनने की क्रिया या भाव। ३-शब्द। ४-पाखंड वि० १-श्रवणनक्षत्र-सम्बन्धी। २-श्रवण या कानों से सुनने से सम्बन्ध रखने वाला। (ऑडिटरी)।

**श्रावणी** स्त्री० (सं) १-सावन के महीने की पूर्णिमा रक्षाबंधन का दिन। २-घुण्डी। ३-एक अष्टवर्गीय औषधि।

**श्रावस्ती** स्त्री० (सं) एक प्राचीन नगरी का नाम जो कोशल में गंगातट पर बसी हुई थी।

**श्रावा** स्त्री० (सं) पीच। माड़।

**श्रावित** वि० (सं) १-सुना हुआ। २-वह लेख या दस्तावेज जिसे सुनकर लिखने वाले ने उस पर अपनी स्वीकृति को सूचित करने के लिए हस्ताक्षर कर दिया हो। (अटेस्टेड)।

**श्राव्य** वि० (सं) सुनने योग्य।

**श्री** स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। कमला। २-सरस्वती। ३-धन। ४-चमक। ५-चन्दन। ६-शोभा। ७-विभूति ८-उपकरण। ९-वृद्धि। १०-अधिकार। ११-लौंग १२-एक आदरसूचक शब्द जो लिखने में पुरुषों के नाम से पहले लगाया जाता है। १३-धर्म, काम तथा अर्थ। पुं० १-कुबेर। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। ४-एक राग। ५-एक वर्णवृत्त। वि० १-योग्य। २-श्रेष्ठ। ३-शुभ। ४-सुन्दर।

**श्रीकंठ** पुं० (सं) शिव। महादेव।

**श्रीकर** पुं० (सं) १-लाल कमल। २-एक उपनिषद्। ३-विष्णु। वि० सौंदर्य बढ़ाने वाला।

**श्रीकांत** पुं० (सं) विष्णु।

**श्रीकारी** पुं० (सं) एक मृग विशेष। कुरङ्ग।

**श्रीक्षेत्र** पुं० (सं) जगन्नाथपुरी तथा उसके आसपास के प्रदेश का नाम।

**श्रीखंड** पुं० (सं) १-शिखरण। २-मलयगिरि का चन्दन।

**श्रीगणेश** पुं० (सं) शुरुआत। आरम्भ।

**श्रीदामा** पुं० (सं) १-सुदामा। २-श्रीकृष्ण के साले का नाम।

**श्रीधाम** पुं० (सं) १-वैकुण्ठ। २-पद्म।

**श्रीनंदन** पुं० (सं) कामदेव।

**श्रीनाथ** पुं० (सं) विष्णु।

**श्रीनिकेत** पुं० (सं) १-लाल कमल। २-स्वर्ग। ३-स्वर्ण। ४-गन्धाबिरोजा।

**श्रीनिकेतन** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-विष्णु।

**श्रीनिवास** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-विष्णु।
**श्रीपंचमी** स्त्री० (सं) माघ शुक्ला पञ्चमी। बसन्त-पञ्चमी।
**श्रीपति** पुं०(सं) १-रामचन्द्र। २-कुबेर। ३-श्रीकृष्ण ४-विष्णु। ५-राजा।
**श्रीफल** पुं० (सं) १-नारियल। २-बेल। ३-आँवला ४-धन। ५-चिकनी सुपारी।
**श्रीभ्राता** पुं० (सं) चन्द्र, अश्व आदि चौदह रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी के भाई माने जाते हैं।
**श्रीमंत** पुं० (सं) १-स्त्रियों के सिर की मांग। २-एक शिरोभूषण। ३-किसी फर्म के नाम से पहले लिखा जाने वाला शब्द। (मेसर्स)। वि० १-श्रीमान्। २-धनवान।
**श्रीमती** स्त्री० (सं) १-स्त्रियों के नाम से पहले प्रयुक्त होने वाला एक सम्मानसूचक शब्द। २-श्रीमान् का स्त्रीलिंग। ३-पत्नी का वाचक शब्द (मिसेज) ४-लक्ष्मी। ५-राधा।
**श्रीमान्** पुं० (सं) १-धनवान। २-पुरुषों के नाम से पहले प्रयुक्त होने वाला एक आदरसूचक शब्द। श्रीयुत्। (मिस्टर)। २-विष्णु। ३-कुबेर। ४-शिव
**श्रीमुख** पुं० (सं) १-वेद। २-सुन्दर मुख। ३-सूर्य। ४-साठ संवत्सरों में से एक।
**श्रीमूर्ति** स्त्री० (सं) विष्णु की मूर्ति।
**श्रीयुक्त** वि०(सं) १-जिसमें शोभा हो। २-दे०'श्रीयुत'
**श्रीयुत** वि० (सं) पुरुषों के नाम से पहले प्रयुक्त होने वाला एक आदर सूचक विशेषण।
**श्रीरमण** पुं० (सं) १-विष्णु। २-संकर राग।
**श्रीरवन** पुं०(हिं) विष्णु।
**श्रीराग** पुं० (सं) सम्पूर्ण जाति के एक राग का नाम
**श्रीराम** पुं० (सं) दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो अवतार माने गये हैं।
**श्रील** वि० (सं) १-जिसमें शोभा हो। २-जिसमें अश्लीलता न हो।
**श्रीवंत** वि० (सं) सम्पत्तिशाली। ऐश्वर्यवान्।
**श्रीवत्स** पुं० (सं) १-विष्णु। २-जैनमत के अनुसार अर्हतों का एक चिह्न।
**श्रीवर** पुं० (सं) विष्णु।
**श्रीवल्लभ** पुं० (सं) १-धनवान् व्यक्ति। २-विष्णु।
**श्रीश** पुं० (सं) विष्णु।
**श्रीसहोदर** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**श्रीहत** वि० (सं) १-निस्तेज। २-शोभाहीन।
**श्रीहरि** पुं० (सं) विष्णु।
**श्रुत** वि० (सं) १-सुना हुआ। २-प्रसिद्ध। ३-जो परम्परा से सुनते आये हों।
**श्रुतकीर्ति** स्त्री० (सं) राजा जनक के भाई की कन्या का नाम जिसका विवाह शत्रुघ्न के साथ हुआ था।
**श्रुतशील** वि० (सं) सदाचारी तथा विद्वान। पुं० विद्या और सदाचार।
**श्रुताध्ययन** पुं० (सं) शास्त्रों या वेदों का अध्ययन।
**श्रुतानुश्रुत** पुं०(स) १-सुनी-सुनाई बात। २-कहावत (हियर-से)।
**श्रुतानुश्रुत-साक्ष्य** पुं० (सं) वह साक्ष्य जो बहुत लोगों से सुनी हुई बात पर आधारित हो। (हीयर-से एवीडेन्स)।
**श्रुति** स्त्री० (सं) १-सुनना। २-सुनने की इन्द्रिय। कान। ३-सृष्टि के आरंभ से चला आया पवित्र ज्ञान। ४-संगीत का एक सप्तक। ५-विद्या। ६-विद्वता। ७-चार की संख्या। ८-श्रवणनक्षत्र।
**श्रुतिकटु** पुं० (सं) कर्कश वर्णों के प्रयोग से होने वाला काव्य रचना का एक दोष।
**श्रुतिकीर्ति** स्त्री० (सं) दे० 'श्रुतकीर्ति'।
**श्रुतिगम्य** वि० (सं) दे०' श्रुतिगोचर'।
**श्रुतिगोचर** वि० (सं) १-जो सुना हुआ हो। २-जो सुना जा सके।
**श्रुतिपथ** पुं० (सं) १-कान। २-वेदविहित मार्ग।
**श्रुतिप्रमाण** पुं० (सं) वेदों द्वारा प्रमाणित।
**श्रुतिभाल** पुं० (सं) चार सिर वाले ब्रह्मा।
**श्रुतिमंडल** पुं० (सं) कान के बाहर की ओर घेरा।
**श्रुतिमधुर** वि० (सं) जो सुनने में मधुर हो।
**श्रुतिमुख** पुं० (सं) ब्रह्मा। वि० जिसका मुख वेद हो
**श्रुतिमूल** पुं० (सं) १-वेदसंहिता। २-कान की जड़।
**श्रुतिरंजक** वि० (सं) कान को मधुर लगने वाला।
**श्रुतिरंजन** वि० (सं) दे० 'श्रुतिरंजक'।
**श्रुतिलेख** पुं० (सं) किसी के बोले हुए वाक्य को को सुनकर लिखना। इमला। आलेख। (डिक्टेशन)
**श्रुतिविवर** पुं० (सं) कान का छेद।
**श्रुतिविषय** पुं० (सं) १-वेदों के वर्णित विषय। २-शब्द।
**श्रुतिवेध** पुं० (सं) वर्णवेध संस्कार।
**श्रुतिसुख** वि० (स) जो सुनने में मधुर हो। (संगीत आदि।
**श्रुतिसुखकर** वि० (सं) दे० 'श्रुतिसुखद'।
**श्रुतिसुखद** वि० (सं) जो कानों को मधुर लगे।
**श्रुतिस्मृति** स्त्री० (सं) वेद या धर्मशास्त्र।
**श्रुतिहर** वि० (सं) दे० 'श्रुतिहारी'।
**श्रुतिहारी** वि० (स) कानों को मधुर लगने वाला।
**श्रुत्य** वि० (सं) १-प्रसिद्ध। २-प्रशस्त। ३-सुना जाने योग्य।
**श्रुत्यानुप्रास** पुं० (सं) अनुप्रास अलङ्कार के पांच भेदों में से एक जिसमें एक ही स्थान से बोले जाने वाले शब्द दो या दो से अधिक बार आते हैं।
**श्रुवा** दे० स्त्री० (सं) 'स्रुवा'।
**श्रूयमाण** वि० (सं) जो प्रायः सुना जाता रहा हो।

**श्रेणि** स्त्री० (सं) १-पंक्ति । २-क्रम । परम्परा । ३ योग्यता, कर्तव्य आदि की दृष्टि से किया गया विभजन । दरजा । (क्लास) । ४-पानी भरने का डोल ५-एक ही तरह के व्यापार करनेवालों का संघ । वर्ग (कॉरपोरेशन) ।

**श्रेणिका** स्त्री० (सं) १-डेरा । खेमा । २-एक छन्द । ३-एक तृण ।

**श्रेणिबद्ध** वि० (सं) श्रेणी या पंक्ति के रूप में लगा हुआ । (क्लासिफाइड) ।

**श्रेणी** स्त्री० (सं) दे० 'श्रेणि' ।

**श्रेणीकरण** १-बहुत सी वस्तुओं को अलग-अलग श्रेणियों में रखना । (क्लासिफिकेशन) । २-व्यापारियों आदि की संख्या को विधिवत् श्रेणी का रूप देना । (इन्कॉरपोरेशन) ।

**श्रेणीकृत** वि० (सं) जिसका वर्गीकरण किया गया हो

**श्रेणीधर्म** पुं० (सं) व्यवसायियों की मण्डली या पंचायत की रीति या नियम ।

**श्रेणीपाद** पुं० (सं) वह राष्ट्र या राज्य जिसमें श्रेणियों या पंचायतों की प्रधानता हो ।

**श्रेणीबद्ध** वि० (सं) दे० 'श्रेणिबद्ध' ।

**श्रेणीभुक्त** वि० (सं) १-मिश्रित । २-श्रेणीबद्ध ।

**श्रेय** वि० (सं) १-अधिक । बेहतर । २-श्रेष्ठ । उत्तम । ३-कल्याणकारी । ४-यश देने वाला । पुं० (सं) १-अच्छापन । २-कल्याण । ३-सदाचार । ४-किसी काम के लिये मिलने वाला यश । (क्रेडिट) । ५-ज्योतिष में दूसरा महूर्त्त ।

**श्रेयस्कर** वि० (सं) श्रेष्ठ बनाने वाला ।

**श्रेष्ठ** वि० (सं) १-सर्वोत्तम । २-प्रधान । मुख्य । ३-वृद्ध । ज्येष्ठ । ४-कल्याणभाजन । पुं० (सं) १-विष्णु । २-ब्राह्मण । ३-कुबेर ।

**श्रेष्ठा** स्त्री० (सं) १-बहुत उत्तम स्त्री । २-स्थल कमल

**श्रेष्ठाश्रम** पुं० (स) १-गृहस्थाश्रम । २-गृहस्थ ।

**श्रेष्ठी** पुं० (सं) सेठ । महाजन । धनवान व्यक्ति ।

**श्रोण** वि० (सं) पंगु । खंज । पुं० (हिं) रक्त । रुधिर ।

**श्रोणि** स्त्री० (सं) १-कमर । कटि । २-नितम्ब । चूतड़ ३-पथ । ४-यज्ञ की वेदी का किनारा ।

**श्रोणिसूत्र** पुं० (सं) करधनी । मेखला ।

**श्रोणी** स्त्री० (सं) १-कमर । २-नितम्ब । ३-मध्य भाग कटि प्रदेश ।

**श्रोत** पुं० (सं) सुनने की इन्द्रिय । कान ।

**श्रोतव्य** वि० (सं) जो सुनने योग्य हो ।

**श्रोता** पुं० (सं) सुनने वाला ।

**श्रोतावर्ग** पुं० (सं) किसी एक स्थान पर एकत्र होकर किसी उपदेश, व्याख्यान आदि को सुनने वाले सब लोग । (ऑडियन्स) ।

**श्रोत्र** पुं० (सं) १-वेदज्ञान । २-कान ।

**श्रोत्रपेय** वि० (सं) जो सुनने योग्य हो ।

**श्रोत्रमूल** पुं० (सं) कान की जड़ । कर्णमूल ।

**श्रोत्रसुख** वि० (सं) दे० 'श्रुतिसुख' ।

**श्रोत्रिय** पुं० (सं) १-ब्राह्मणों का एक भेद । २-वह ब्राह्मण जिसने वेदों का अध्ययन किया हो ।

**श्रोत्री** पुं० (हिं) दे० 'श्रोत्रिय' ।

**श्रोन** पुं० (हिं) दे० 'शोण' ।

**श्रोनित** पुं० (हिं) दे० 'शोणित' ।

**श्रौत** वि० (सं) १-श्रवण सम्बन्धी । २-श्रुति या वेद सम्बन्धी । ३-जो वेदों के अनुसार हो ।

**श्रौत्र** पुं० (सं) कान । कर्ण ।

**श्रौन** पुं० (हिं) दे० 'श्रवण' ।

**श्लक्ष्ण** वि० (सं) १-सुकुमार । कोमल । २-चिकना । चमकदार । ३-सूक्ष्म । ४-मनोहर । ५-ईमानदार ।

**श्लक्ष्णक** पुं० (स) सुपारी । पुङ्गीफल ।

**श्लक्ष्णत्वक्** पुं० (सं) सुन्दर वल्कल या छिलका ।

**श्लथ** वि० (सं) १-ढीला । शिथिल । २-धीमा । मन्द ३-दुर्बल । छूटा हुआ ।

**श्लथांग** वि० (सं) जिसके अंग शिथिल पड़ गये हों

**श्लाघन** पुं० (सं) अपनी प्रशंसा करने वाला । वि० डींग हांकने वाला ।

**श्लाघनीय** वि० (सं) १-उत्तम । श्रेष्ठ । २-प्रशंसा के योग्य ।

**श्लाघा** स्त्री० (सं) १-चापलूसी । खुशामद । २-प्रशंसा ३-स्तुति । ४-चाह । ५-इच्छा पालन ।

**श्लाघ्य** वि० (सं) १-श्रेष्ठ । २-प्रशंसा के योग्य । ३-अच्छा ।

**श्लिष्ट** वि० (सं) १-जुड़ा या मिला हुआ । २-आलिंगित । ३-चिपका हुआ ।

**श्लिष्टरूपक** पुं० (स) वह अलंकार जिसमें श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपक अलंकार होता है ।

**श्लीपद** पुं० (सं) पांव या टांग फूलने का एक फीलपांव नामक रोग ।

**श्लीपदी** वि० (सं) जिसे फीलपांव का रोग हो ।

**श्लील** वि० (सं) १-शुभ । २-उत्तम । ३-शिष्टों के योग्य । सभ्योचित ।

**श्लेष** पुं० (सं) १-संयोग । मिलना । २-आलिंगन । ३-जुड़ना । ४-वह अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ निकाले जा सकते हों ।

**श्लेष्मा** पुं० (सं) १-कफ । बलगम । २-बाँधने की रस्सी ।

**श्लैष्मक** वि० (सं) कफ या बलगम उत्पन्न करने वाला

**श्लोक** पुं० (सं) १-शब्दध्वनि । २-स्तुति । प्रशंसा ३-कीर्ति । ४-पुकार । आह्वान । ५-संस्कृत का कोई पद ।

**श्वः** अव्य० (स) आने वाले दूसरे दिन । कल ।

**श्व** पुं० (सं) कुत्ता (श्वा का समास रूप) ।

**श्वपच** पुं० (सं) १-चांडाल । २-कुत्ते का मांस खाने

वाला।

**श्वपति** पुं० (सं) १-वह जो कुत्ता पालता हो। २-कुत्ते का स्वामी।

**श्वपाक** पुं० (सं) चांडाल।

**श्वभीरु** पुं० (सं) शृगाल। गीदड़।

**श्ववृत्ति** स्त्री० (सं) १-निकृष्ट नौकरी द्वारा निर्वाह। २-दूसरे के भरोसे रहने की वृत्ति या आदत।

**श्वसुर** पुं०(सं) ससुर। पति या पत्नी का पिता।

**श्वशुरक** पुं० (सं) ससुर।

**श्वश्रू** स्त्री० (सं) सास। पति या पत्नी की माता।

**श्वसन** पुं० (सं) १-सांस लेना। २-हांफना। ३-आह भरना। ४-पवन। ५-फुफकारना।

**श्वसित** वि० (सं) १-जो श्वास लेता है। २-जीवित पुं० १-ठण्डा सांस। २-निश्वास।

**श्वस्तन** वि० (सं) आने वाले दिन का। कल।

**श्वा** पुं० (सं) कुत्ता।

**श्वान** पुं० (सं) १-कुत्ता। २-लोहे का एक भेद। ३-एक छप्पय छन्द।

**श्वाननिद्रा** स्त्री० (सं) झपकी। हलकी नींद।

**श्वानवैखरी** स्त्री० (सं) कुत्ते का गुर्राना।

**श्वानी** स्त्री० (सं) कुत्ते की मादा। कुतिया।

**श्वापद** पुं० (सं) हिंसक पशु।

**श्वास** पुं० (सं) १-सांस। नाक से प्राणियों का हवा खींचने तथा निकालने की क्रिया। २-दमा। सांस का रोग।

**श्वासकष्ट** पुं० (सं) १-दमा। २-सांस लेने में होने वाला कष्ट।

**श्वासकास** पुं० (सं) १-दमा तथा खांसी। २-दमे की खांसी।

**श्वासक्रिया** स्त्री० (सं) सांस खींचने तथा निकालने की क्रिया।

**श्वासकुठार** पुं० (सं) दमा या श्वास रोग की एक औषधि।

**श्वासधारण** पुं० (सं) श्वास रोक रखने की क्रिया।

**श्वासप्रश्वास** पुं० (सं) सांस लेना या निकालना।

**श्वासरोध** पुं० (सं) १-सांस रोकना। दम घुटना।

**श्वासहिक्का** स्त्री० (सं) हिचकी।

**श्वासहीन** वि० (सं) मरा हुआ। मृत।

**श्वासा** स्त्री० (सं) १-सांस। दम। २-प्राणवायु।

**श्वासोच्छ्वास** पुं० (सं) वेग से सांस लेना और छोड़ना।

**श्वेत** वि० (सं) १-सफेद। चिट्टा। २-उज्ज्वल। शुभ्र ३-गोरा। ४-निष्कलंक। पुं० १-सफेद रङ्ग। २-चांदी। ३-शंख। ४-सफेद घोड़ा। ५-सफेद बादल। ६-कौड़ी। ७-शरीर के चमड़े की तीसरी तह।

**श्वेतकाक** पुं० (सं) (सफेद कौआ) असंभव बात।

**श्वेतकुष्ठ** पुं० (सं) सफेद दागों वाला कोढ़।

**श्वेतगज** पुं० (सं) ऐरावत नामक हाथी।

**श्वेतच्छद** पुं० (सं) १-हंस। २-बनतुलसी।

**श्वेतदूर्वा** स्त्री० (सं) सफेद दूब या घास।

**श्वेतद्युति** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**श्वेतधातु** पुं० (सं) खड़िया।

**श्वेतपत्र** पुं० (सं) १-हंस। २-कागज पर छपी कोई राजकीय विज्ञप्ति जो किसी विषय वार्ता, संधिचर्चा के ऊपर विचार करके अन्त में निकाली गई हो। (व्हाइट पेपर)।

**श्वेतप्रदर** पुं० (सं) स्त्रियों का एक रोग जिसमें योनि से श्वेत रङ्ग की एक धातु निकलती रहती है।

**श्वेतप्रस्तर** पुं० (सं) सफेद पत्थर। सफेद संगमरमर

**श्वेतभानु** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**श्वेतमयूख** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**श्वेतसार** पुं० (सं) १-कत्था। खैर। २-अन्न या तरकारियों का वह श्वेत सत जो प्रायः कपड़ों पर कलफ लगाने तथा दवाओं आदि के काम आता है। कलफ। (स्टार्च)।

**श्वेतहय** पुं० (सं) १-इन्द्र का घोड़ा।

**श्वेतहस्ती** पुं० (सं) ऐरावत।

**श्वेतांक** पुं० (सं) कागज के भीतर उसकी बनावट में विशेष प्रक्रिया से बनाया हुआ श्वेत चिह्न या अक्षरावली। (वाटरमार्क)।

**श्वेतांकित** वि० (सं) जिस पर किसी विशेष प्रक्रिया द्वारा श्वेत चिह्न अंकित किया गया हो। (वाटर मार्कड)।

**श्वेतांग** वि० (सं) जिसका रंग सफेद हो। सफेद रंग के शरीर वाला।

**श्वेतांबर** पुं० (सं) १-श्वेत वस्त्र धारण करने वाला २-जैनियों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।

**श्वेतांशु** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**श्वेत्र** पुं० (सं) सफेद कोढ़।

[शब्दसंख्या—४१८०१]

# ष

**ष** देवनागरी के व्यञ्जन वर्णों में इकतीसवां अक्षर जिसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा होता है। इसका प्राचीन लिखावट में ख के स्थान पर प्रयोग होता था।

**षंड** पुं० (सं) १-समूह। राशि। २-सांड। ३-नपुंसक ४-शिव। ५-कमल समूह। ६-धृतराष्ट्र के एक पुत्र

का नाम।
**षंडक** पुं० (सं) नपुंसक।
**षंडत्व** पुं० (सं) हीजड़ापन। नामर्दी। नपुंसकता। (इम्पोटेन्सी)।
**षंढ** पुं० (सं) दे० 'षंड'।
**षंढा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषों जैसी हो
**षट्** वि० (सं) छः (गिनती में) पुं० १-छः की संख्या। २-षाडव जाति का एक राग।
**षट्क** पुं० (सं) १-छः की संख्या। २-छः वस्तुओं का समुदाय।
**षट्कर्म** पुं० (सं) वे छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका चलाने के विहित बताए गए हैं- दान देना लेना, भिक्षाव्यापार, खेती, उंछ। २-ब्राह्मण के छः काम-पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना। ३-झंझट। ४-झगड़ा।
**षट्कोण** वि० (सं) छः कोने या कोण वाला। पुं० १-इन्द्र। २-छः पहलू की कोई आकृति।
**षट्चक्र** पुं० (सं) १-षड्यन्त्र। २-हठयोग में माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर के छः चक्र।
**षट्तिला** स्त्री०(सं) माघ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी
**षट्पद** वि० (सं) छः पैर वाला। पुं० १-भ्रमर। भौंरा किलनी।
**षट्पदी** स्त्री० (सं) १-भ्रमरी। भौंरी। २-छप्पय छंद वि० छः पैर वाली।
**षट्रस** पुं० (हि) दे० 'षड्रस'।
**षट्राग** पुं० (सं) १-संगीत के छः प्रधान राग-भैरव मलार, हिंडोल, मालकोश, मल्हार तथा दीपक। २-बखेड़ा। झंझट।
**षट्रिपु** पुं० (सं) दे० 'षड्रिपु'।
**षट्शास्त्र** पुं० (सं) हिन्दुओं के छः दर्शन--सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा तथा वेदांत।
**षडंग** पुं० (सं) १-वेद के छः अंग--शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २--शरीर के छः अंग-दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़। वि० छः अंग वाला।
**षडंघ्रि** पुं० (सं) भौंरा। भ्रमर।
**षडग्नि** स्त्री० (सं) कर्मकाण्ड में बताई हुई छः प्रकार की अग्नियां--गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य तथा औपसन्याग्नि।
**षडानन** पुं० (सं) १-संगीत में स्वरसाधन की एक प्रणाली। २-कार्तिकेय। वि० छः मुख वाला।
**षड्** वि० (सं) छः। षष्।
**षड्ऋतु** स्त्री०(सं) छः ऋतुएँ।
**षड्ग** पुं०(सं) दे० 'षड्ज'।
**षड्गुण** पुं० (सं) वह जिसमें छः गुण हों (ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य तथा धर्म)।
**षड्दर्शन** पुं० (सं) दे० 'षट्शास्त्र'।
**षड्दर्शनी** पुं० (हि) छः दर्शनों को जानने वाला।
**षड्धा** अव्य० (सं) छः तरह से।
**षड्यंत्र** पुं० (सं) १-किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जाने वाली कार्रवाई। भीतरी चाल। (कॉन्सपिरेसी)। २-कपटपूर्ण आयोजन।
**षड्योग** पुं० (सं) योगाभ्यासकरने के छः तरीके।
**षड्योनि** पुं० (सं) शिलाजीत।
**षड्रस** पुं०(सं) छः प्रकार के रस-मधुर, लवण, तिक्त कटु, कषाय तथा अम्ल।
**षड्राग** पुं० (स) दे० 'षट्राग'।
**षड्रिपु** पुं० (सं) काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तथा अहंकार मनुष्य के ये छः विकार।
**षड्रेखा** स्त्री० (स) खरबूजा।
**षड्लवण** पुं०(सं) छः प्रकार के नमक-सेंधा, सामुद्र आदि।
**षड्वक्त्र** पुं० (सं) कार्त्तिकेय।
**षड्वदन** पुं० (सं) कार्त्तिकेय।
**षड्वर्ग** पुं० (सं) छः वस्तुओं का समुदाय।
**षड्विकार** पुं० (सं) प्राणी के छः परिणाम या विकार उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालपन, प्रौढ़ता, वृद्धता तथा मृत्यु।
**षड्विध** वि० (सं) छः प्रकार का।
**षण** वि०(सं) छः। षष्।
**षण्मास** पुं० (सं) छः महीने।
**षण्मासिक** वि० (सं) छमाही। अर्धवार्षिक।
**षण्मास्य** पुं० (सं) छः महीने का समय।
**षण्मुख** वि० (सं) छः मुख वाला। पुं० कार्त्तिकेय।
**षष्टि** वि० (सं) साठ। स्त्री० साठ की संख्या। ६०।
**षष्टयंशक** पुं० (सं) एक प्रकार का यन्त्र जिसकी सहायता से नक्षत्रों को देख कर यह स्थिर किया जाता है कि जहाज की क्या स्थिति है।
**षष्ठ** वि० (सं) छठ।
**षष्ठांश** पुं० (सं) १-छठा भाग। २-अन्न का वह छठवाँ भाव जो कर के रूप में दिया जाता है।
**षष्ठी** स्त्री० (सं) १-चन्द्रमास के किसी पक्ष की छठी तिथि। २-दुर्गा। ३-सम्बन्ध-कारक (व्याकरण)। ४-छठी। बालक के जन्म से छठा दिन या उस दिन का उत्सव।
**षष्ठीतत्पुरुष** पुं० (सं) तत्पुरुष समास का एक भेद।
**षष्ठीप्रिय** पुं० (सं) कार्त्तिकेय।
**षाड्गुण्य** पुं०(सं) १-दे० 'षड्गुण'। २-वह गुणनफल जो किसी संख्या को छः से गुणा करने पर प्राप्त हुआ हो।
**षाण्मातुर** पुं० (सं) १-कार्त्तिकेय। २-वह जिसकी छः माताएँ हैं।
**षाण्मासिक** वि० (सं) १-छःमाही। २-छः मास का। पुं० मृत्यु के छः मास बाद होने वाला श्राद्ध।

षोडंत वि० (सं) छ दांत वाला ।
षोडन पुं० (सं) छ दांत का बैल जो जवान माना जाता है। वि० छ दांत वाला ।
षोडश वि०(सं) सोलह । पुं० सोलह की संख्या '१६'
षोडश-कला स्त्री० (सं) चन्द्रमा की सोलह कला ।
षोडशगण पुं० (सं) पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, पांच भूत तथा मन इन सबका समुदाय ।
षोडश-दान पुं० (सं) सोलह प्रकार के दान-भूमि, आसन, पानी, कपड़ा, दीपक, अन्न, पान, छत्र, सुगन्धि, फूलमाला, फल, सेज, गाय, खड़ाऊँ, सोना तथा चांदी ।
षोडशपूजन पुं० (स) दे० 'षोडशोपचार' ।
षोडशमातृका पुं०(सं) सोलह देवियां—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः तथा आत्मदेवता ।
षोडशविध वि० (सं) सोलह प्रकार का ।
षोडश-शृङ्गार पुं० (सं) पूर्ण शृङ्गार जो सोलह प्रकार का कहा गया है ।
षोडश-संस्कार पुं० (सं) गर्भाधान से मृत कर्म के सोलह वैदिक संस्कार ।
षोडशावर्त्त पुं० (सं) शङ्ख ।
षोडशी वि० (सं) १-सोलहवी । २-सोलह वर्ष की (युवती) । स्त्री०१-सोलह साल की स्त्री । नवयौवना स्त्री । २-दस महाविद्याओं में से एक । ३-एक यज्ञ पात्र । ४-इन सोलह पदार्थों का समूह--ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य तप, मन्त्र, कर्म और नाम । ५-हिन्दुओं में मृतक-सम्बन्धी वह कर्म जो मृत्यु के दसवें दिन या ग्यारहवें दिन होता है ।
षोडशोपचार पुं०(सं) पूजन के सोलह अंग--आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद, आचमन, मधुपर्क,स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा तथा वंदना ।
ष्ठीवन पुं० (सं) थूकना ।
ष्ठीवित वि० (सं) जो थूका गया हो ।
ष्ठेवन पुं० (सं) १-थूक । २-थूकने की क्रिया ।
ष्ठ्यूत वि० (सं) थूका हुआ ।

[शब्दसंख्या—५१८७६]

# स

स देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यञ्जन जिसका उच्चारण स्थान दन्त है ।

सँइतना क्रि० (हि) १-लीपना । पोतना । २-सहेजना । ३-संचय करना ।
सँउपना क्रि० (हि) दे० 'सौंपना' ।
संक स्त्री० (हि) शङ्का । डर ।
संकट पुं० (सं) १-विपत्ति । आफत । (डेन्जर) । २-कष्ट । पीड़ा । ३-दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता ४-दर्रा । ५-जल अथवा थल के दो बड़े भागों को बीच से जोड़ने वाला तंग रास्ता । वि० १-तंग । सङ्कीर्ण । २-भयानक । ३-दुःखदायी ।
संकटनाशन वि० (सं) विपत्ति को हटाने वाला ।
संकटनिवारण पुं० (सं) किसी भय या विपत्ति को को रोकना । (प्रिवेन्शन ऑफ डेंजर) ।
संकटमय वि० (सं) जिसमें खतरा हो । भयानक । (हेजार्डस) ।
संकटमुख वि० (सं) सङ्कीर्ण या तङ्ग मुख वाला ।
संकटसंकेत पुं० (सं) वह सन्देश जो विमान या जहाज के सङ्कटग्रस्त होने पर सहायतार्थ बेतार के यन्त्र द्वारा प्रेरित किया जाता है । (एस० ओ० एस०) ।
संकटापन्न वि० (सं) जो कष्ट ग्रस्त हो । सङ्कटग्रस्त ।
संकत पुं० (हि) दे० 'संकेत' ।
संकना क्रि० (हि) १-डरना । २-शङ्का या सन्देह करना ।
संकर पुं० (सं) १-दो वस्तुओं को मिलाकर एक हो जाना । २-वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता पिता से हुई हो । दोगला । ३-आग के जलने का शब्द । ४-झाड़ू देने से उड़ने वाली धूल । पुं० (हि) दे० 'शंकर' ।
संकरघरनी स्त्री० (हि) पार्वती ।
संकरा वि० (हि) पतला । कम चौड़ा । तंग । स्त्री० साँकल । जंजीर । शृङ्खला ।
संकराना क्रि० (हि) सङ्कुचित होना या करना ।
संकरीकरण पुं० (सं) १-दो वस्तुओं को एक में मिलाने का कार्य । २-अवैध रूप से जातियों का मिश्रण ।
संकर्षण पुं० (सं) १-खींचना । २-हल जोतना । ३-बलराम । ४-वैष्णवों का एक सम्प्रदाय ।
संकर्षणविद्या स्त्री० (स) एक स्त्री के गर्भ से बच्चा निकल कर दूसरी स्त्री के गर्भ में रखने की विद्या
संकल पुं० (सं)१-सङ्कलन । २-मिलाना । स्त्री० (हि) दे० 'सांकल' ।
संकलन स्त्री० (सं) १-संग्रह करना । २-ढेर । समूह । ३-अनेक ग्रन्थों से अच्छे-अच्छे विषय या बातें चुनना । ४-इस प्रकार चुनकर बनाया हुआ ग्रन्थ (कम्पाइलेशन) । ५-गणित में जोड़ करना ।
संकलना स्त्री० (सं) १-इकट्ठा करना । जोड़ना । ३-मिलाना ।
संकलप पुं० (हि) दे० 'संकल्प' ।

**संकलपना** *क्रि०* (हिं) १-दृढ़ निश्चय करना। २-मंत्र पढ़ कर दान देने का निश्चय करना। ३-विचार करना।

**संकलित** *वि०* (सं) १-चुना हुआ। २-इकट्ठा किया हुआ। ३-योजित। (कम्पाइन्ड)।

**संकल्प** पुं० (सं) १-इच्छा। इरादा। २-दान कर्म से पहले मन्त्र पढ़ कर दान देने का दृढ़ निश्चय प्रकट करना। ३-इस प्रकार उच्चारित मन्त्र।

**संकल्पक** *वि०* (सं) विचार या संकल्प करने वाला।

**संकल्पित** *वि०* (सं) जिसका दृढ़ निश्चय या इरादा किया गया हो।

**संकष्ट** पुं० (सं) दे० 'संकट'।

**संका** *स्त्री०* (हि) डर। शङ्का।

**संकाना** *क्रि०* (हि) १-डरना। शंकित करना। २-डराना।

**संकारना** *क्रि०* (हिं) संकेत करना।

**संकाश** *अव्य०* (सं) १-सदृश। समान। २-पास।

**संकीर्ण** *वि०* (सं) १-संकरा। कम चौड़ा। २-क्षुद्र। तुच्छ। छोटा।

**संकीर्णता** *स्त्री०* (सं) १-संकरापन। २-तुच्छता। नीचता।

**संकीर्तन** पुं० (सं) १-स्तुति। प्रशंसा। २-आराध्य देवता का जाप करना।

**संकु** पुं० (सं) छेद। पुं० (देश) बरछी।

**संकुचन** पुं० (सं) दे० 'संकोच'।

**संकुचना** *क्रि०* (हि) दे० 'सकुचना'।

**संकुचित** *वि०* (सं) १-जिसे संकोच हो। २-सिकुड़ा हुआ। ३-सँकरा। ४-अनुदार।

**संकुपित** *वि०* (सं)जिसे क्रोध आया हुआ हो। क्रोधित

**संकुल** *वि०* (सं) १-संकीर्ण। २-भरा हुआ। पुं० १-युद्ध। २-समूह। ३-भीड़। ४-असङ्गत वाक्य।

**संकुलता** *स्त्री०* (सं) सङ्कुलित होने का भाव।

**संकुलित** *वि०* (सं) १-घना। संकीर्ण। २-भरा हुआ परिपूर्ण।

**संकेंद्रण** पुं० (सं) १-इकट्ठा करना। २-केन्द्र की ओर लेजाना (जैसे शक्ति, सेना, ध्यान)। ३-एक स्थान पर एकत्रित करना। (कॉनसन्ट्रेशन)।

**संकेंद्रण-सिद्धांत** पुं० (सं) पूँजीपतियों से धन निकाल कर शक्तिशाली सरकारी न्यासों, गुटों आदि में लगाने का मार्क्सवादियों का सिद्धान्त। (थिअरी ऑफ कॉनसन्ट्रेशन)।

**संकेंद्रितप्रयास** पुं० (सं)वह प्रयास जिसमें सारी शक्ति केवल एक ही स्थान पर लगादी गई हो। (कॉन-सन्ट्रेटेड एफर्ट)।

**संकेत** पुं० (सं) १-अपना भाव प्रकट करने की कोई शारीरिक चेष्टा। इशारा। २-प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान। ३-पते की बातें। ४-चिह्न। निशान। ५-शृङ्गार चेष्टा। पुं० (हिं) कठि-नाई। संकट या भय की स्थिति।

**संकेतगृह** पुं० (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।

**संकेतचिह्न** पुं० (सं) वाक्यों, पदों, नामों आदि सूचक चिह्न जो संकेत के रूप में होते हैं। (एब्रि-वियेशन)

**संकेतना** *क्रि०* (हि) संकट या कष्ट में डालना।

**संकेतनिकेतन** पुं० (सं) प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का स्थान।

**संकेतभूमि** *स्त्री०* (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।

**संकेतरूप** पुं० (सं) दे० 'संकेतचिह्न'।

**संकेत-लिपि** *स्त्री०* (सं) किसी भाषा के शब्दों के छो[टे] संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई लेख-प्रणाल[ी] जिससे भाषण बहुत शीघ्र लिखे जाते हैं। (शार्टहैं[ड])

**संकेतस्थान** पुं० (सं) दे० 'संकेतनिकेतन'।

**संकेताक्षर** पुं० (सं) वह अक्षर जो संकेत रूप में लि[खे] गये हों। (साइफर)।

**संकेतित** *वि०* (सं) १-जो संकेत या इशारे से बता[या] गया हो। २-निश्चित।

**संकेलना** *क्रि०* (हिं) समेटना।

**संकोच** पुं० (सं) १-सिकुड़ना। २-थोड़ी लज्जा ३-हिचक। आगापीछा। ४-भय। ५-कमी। ६ बहुत सी बातें थोड़े में कहना। ७-एक अलंकार।

**संकोचकारी** *वि०*(सं) जो लजाता हो। शर्मीला।

**संकोचन** पुं० (सं) १-सिकुड़ने की क्रिया। २-किसी वस्तु से दबाकर किसी वस्तु का आयतन कम करने की क्रिया। (कम्प्रेशन)।

**संकोचना** *क्रि०* (हि) संकोच करना।

**संकोचनी** *स्त्री०* (सं) लजालू लता।

**संकोचरेखा** *स्त्री०* (सं) झुर्री। सिलवट।

**संकोची** पुं० (हिं) १-संकोच या शर्म करने वाला। २-सिकुड़ने वाला।

**संकोपना** *क्रि०* (हि) क्रुद्ध होना।

**संक्रम** पुं०(सं) १-कठिनता से आगे बढ़ना। २-से[तु] ३-किसी स्थान पर पुल बना कर पार करना। ४-प्राप्ति। ५-संक्रमण।

**संक्रमण** पुं०(सं) १-गमन। चलना। २-एक अवस्था से धीरे-धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचन[ा] (ट्रांजीशन)। ३-घूमना। पर्यटन। ४-सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरी में प्रवेश करना।

**संक्रमण-काल** पुं० (सं) एक युग से निकल कर दूसरे युग या स्थिति में धीरे-धीरे बदलते हुए पहुँचने का समय। (ट्रांजीशनल पीरियड)।

**संक्रमणनाश** पुं० (सं) रोग के फैलने से बचाव (डिसइन्फेक्शन)।

**संक्रमित** *वि०* (सं) १-स्थापित। २-प्रतिबिंबित। ३-पहुँचाया हुआ।

**संक्रमित माल** पुं० (हिं) वह माल जो एक जगह से रवाना कर दिया गया पर अभी रास्ते में ही हो। (गुड्स इन ट्रांजिट)।
**सक्रांत** पुं० (सं) वह धन जो कई पीढ़ियों में चला आया हो।
**संक्रांति** स्त्री० (सं) १-सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २-ऐसा समय (जो पर्व माना जाता है)। ३-प्रतिबिंब। ४-हस्तांतरण। ५-मिलन
**संक्रांतिकाल** पुं० (सं) दे० 'संक्रमण-काल।
**संक्रामक** वि० (सं) छूत से फैलने वाला (रोग)। (इन्फेक्शियस)।
**संक्रामित** वि० (सं) १-जो हस्तांतरित किया गया हो। २-बताया हुआ।
**संक्रामी** वि० (सं) (रोग) फैलने वाला।
**संक्रोन** पुं० (हिं) दे० 'संक्रांति'।
**संक्षेश** पुं० (सं) १-जिसे संक्षेप में कहा गया हो। खुलासा। २-थोड़ा। अल्प। ३-छोड़ा या फेंका हुआ।
**संक्षिप्तलिपि** स्त्री० (सं) दे० 'संकेतलिपि'।
**संक्षिप्त-विधिकविचार** पुं० (सं) अदालत में किसी मुकदमे का संक्षेप रूप में किया गया विचार। (समरी, ट्रायल)।
**संक्षिप्तीकरण** पुं० (सं) किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त करना।
**सक्षेप** पुं० (सं) १-कोई बात थोड़े में कहना। २-सार। रूप। ३-समाहार। ४-चुम्बक।
**सक्षेपक** वि०(सं) १-छोटा रूप देने वाला। २-फेंकने वाला।
**सक्षेपण** पुं० (सं) १-संक्षेप रूप में प्रस्तुत करना। (एब्रिजमेंट)। २-कांट-छांट करना।
**संक्षेपतः** अव्य० (सं) थोड़े में। संक्षेप में।
**सख** पुं० (हि) दे० 'शंख'।
**सखनारी** स्त्री० (हि) एक छन्द।
**संखिया** पुं० (हि) एक सफेद उपधातु जो बहुत तीव्र विष होता है।
**संख्यक** वि० (सं) सख्या वाला।
**संख्या** स्त्री० (सं) १-गिनती। तादाद। २-अदद। ३-सामयिक पत्र का अंक। ४-बुद्धि। ५-विचार।
**संख्यातीत** वि० (स) बहुत सारे। अनगिनत।
**संख्यान** पुं० (सं) १-संख्या। गिनती। २-लेने देने या आय-व्यय का लिखा हुआ हिसाब। (एकाउन्ट)
**संख्या-लिपि** स्त्री०(सं) एक लिखने की प्रणाली जिसमें अक्षरों के स्थान पर केवल संख्या लिखी जाती है।
**संख्यावाचक** वि० (सं) जिससे संख्या की जानकारी होती हो।
**संख्येय** वि० (सं) जो गिना जा सके।
**संग** अव्य० (हिं) साथ। सहित। पुं० १-मिलना। मिलन। २-सहवास। ३-अनुराग। आसक्ति। (फा) पत्थर। पाषाण। वि० पत्थर के समान कठोर।
**संग-अंदाज** पुं० (फा) १-किले की दीवार पर शत्रु पर पत्थर फेंकने के लिए बने छिद्र। २-इन छिद्रों में से पत्थर फेंकने वाला।
**संगचकमाक** पुं० (फा) एक प्रकार का पत्थर जिसकी रगड़ से आग निकलती है।
**संगठन** पुं० (हि) दे० 'संघटन'।
**संगठित** वि० (हि) दे० 'संघटित'।
**संगणना** स्त्री० (सं) १-गिन कर हिसाब लगाना। २-आंकड़ों का हिसाब लगा कर अन्दाजा लगाना। (कम्प्यूटेशन)।
**संगत** वि० (सं) हर प्रकार से मेल खाने वाला। (कन्सिसटेंट)। स्त्री० (हि) १-साथ। सोहबत। २-उदासीन या निरमले साधुओं के रहने का मठ। ३-सङ्ग। ४-सम्बन्ध। ५-बाजा बजा कर गाने वाले का साथ देना।
**संगतरा** पुं० (पुर्त) सन्तरा।
**संगतराश** पुं० (फा) पत्थर गढ़ने या काटने वाला कारीगर।
**संगतार्थ** वि० (सं) ठीक अर्थ वाला।
**संगति** स्त्री० (सं) १-सङ्ग। साथ। २-मेल। मिलाप ३-प्रसंग। ४-सम्बन्ध। ५-ज्ञान। ६-आगे पीछे के वाक्यों से मेल खाने वाला। (कन्सिसटेंसी)।
**संगती** वि० (हि) १-साथी। २-गवैये के साथ बाजा बजाने वाला।
**संगत्याग** पुं० (सं) विरक्ति।
**संगदिल** वि० (फा) कठोर हृदय।
**संगपुश्त** पुं० (फा) कछुआ।
**संगम** पुं० (सं) १-मेल। मिलाप। सम्मेलन। २-वह स्थान जहां दो नदियां मिलें। ३-सङ्ग। साथ। ४-दो या दो से अधिक वस्तुएँ मिलने का भाव।
**संगमरमर** पुं० (फा) एक प्रकार का प्रसिद्ध चिकना सफेद पत्थर जो इमारत बनाने के काम आता है।
**संगमित** वि० (सं) मिलाया हुआ।
**संगमुरदार** पुं० (फा) मुरदासंख।
**संगमूसा** पुं० (फा) सङ्गमरमर की तरह का काला पत्थर जिसकी मूर्तियां बनती हैं।
**संगर** पुं० (स) १-युद्ध। संग्राम। २-विपत्ति। ३-नियम। पु० (फा) १-मोरचा। २-सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारों ओर की खाई।
**संगरण** पुं०(सं) पीछा करना।
**संगराम** पुं० (हिं) दे० 'संग्राम'।
**संगरेजा** पुं० (फा) पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े।
**संगसाथ** पुं० (हिं) मैत्री। दोस्ती। मित्रता।
**संगसार** पुं० (फा) प्राचीन काल में अरब देशों में प्रचलित एक दण्ड देने की प्रणाली जिसमें अपराधी

को आधा जमीन में गाड़ कर पत्थर मार-मार कर मार डाला जाता था।
**संगसारी** स्त्री० (फा) दे० 'संगसार'।
**संगसुर्ख** पुं० (फा) एक प्रकार का लाल रंग का पत्थर
**संगसुलेमानी** पुं० (फा) एक प्रकार का पत्थर जो काला तथा सफेद दोनों मिले जुले रंग का होता है
**संगाती** पुं० (हि) १-सङ्गी। साथी। २-मित्र। दोस्त।
**संगायन** पुं० (सं) साथ-साथ मिलकर गाना या स्तुति करना।
**संगिनी** स्त्री० (हि) १-सहचरी। २-भार्या। पत्नी।
**संगिस्तान** पुं० (फा) वह प्रदेश जो पथरीला हो।
**संगी** पुं० (हि) १-मित्र। दोस्त। २-साथी। पुं० (देश) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र वि० (फा) संगीन। पत्थर का।
**संगीत** पुं० (सं) १-स्वर, ताल, लय आदि के नियमानुसार किसी पद्य को मनोरंजक रूप से उच्चारण करना। गाना। २-बहुत से लोगों का एक साथ गाना। ३- नृत्य तथा बाजों के साथ गाने की कला वि० (स) साथ मिलकर गाया हुआ।
**संगीतज्ञ** पुं० (सं) वह जो संगीत विद्या में निपुण हो। गवैया।
**संगीतवेश्म** पु० (सं) संगीत भवन।
**संगीतविद्या** स्त्री० (सं) दे० 'संगीत-शास्त्र'।
**संगीतशाला** स्त्री० (सं) संगीत भवन।
**संगीतशास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें संगीत-सम्बन्धी विद्या का विवेचन होता है।
**संगीन** वि० (फा) १-पत्थर का बना हुआ। २-विकट। ३-मोटा या भारी। ४-पेचीदा। स्त्री० (फा) वह बरछी जो बन्दूक के सिरे पर लगी होती है।
**संगीनजुर्म** पुं० (फा) वह अपराध जो कठोर दण्ड देने योग्य हो।
**संगीनदिल** वि० (फा) दे० 'संगदिल'।
**संगीनदिली** स्त्री० (फा) निर्दयता।
**संगीनी** स्त्री० (फा) १-विकटता। २-मजबूती। ३-ठोसपन।
**संगुप्त** वि० (सं) १-सुरक्षित। २-अच्छी तरह से गुप्त रखा हुआ।
**संगेआतिश** पुं० (फा) चकमक पत्थर।
**संगेपा** पुं० (फा) झामां। पैर का मैल साफ करने का पत्थर।
**संगेमजार** पुं० (फा) वह पत्थर जो कब्र पर लगा हो और उस पर मृत व्यक्ति का नाम खुदा हो।
**संगेराह** पु० (फा) वह पत्थर जो रास्ते में पड़ा हो और जिससे राहगीरों को कष्ट हो।
**संगृहीत** वि० (सं) १-संग्रह किया हुआ। सङ्कलित। २-प्राप्त। ३-जो स्वीकार किया हुआ हो।
**संगृहीता** पुं० (सं) वह जो संग्रह करता हो।
**संगोपन** पुं० (सं) छिपाना।
**संग्रंथन** पुं० (सं) सङ्घटन। एक साथ मिलकर बांधन
**संग्रह** पुं० (सं) १-जमा करना। सङ्कलन। २-वह पुस्तक जिसमें अनेक विषय एकत्रित किये गये हो। ३-ग्रहण करना। ३-सूची। ५-निग्रह। संयम। ६-रक्षा। ७-कब्ज। ८-सभा। जमघट। ९-शिव।
**संग्रहकार** पुं० (सं) संग्रह करने वाला।
**संग्रहण** पुं० (सं) १-स्त्री को हरण करके ले जाना २-प्राप्ति। ३-नग जड़ना। ४-सहवास। ५-व्यभिचार। ६-स्त्री के कपोल,स्तन आदि वर्ज्य स्थानों का स्पर्श।
**संग्रहणी** स्त्री० (सं) एक प्रकार का रोग जिसमें खून और आंव के दस्त आते हैं।
**संग्रहणीय** वि० (सं) संग्रह करने योग्य।
**संग्रहना** क्रि० (हि) संचय करना। संग्रह करना।
**संग्रहाध्यक्ष** पुं० (सं) वह स्थान जहां अनेक प्रकार की वस्तुओं का संग्रह हो। (म्यूजियम)।
**संग्रहालयाध्यक्ष** पुं० (सं) वह पदाधिकारी जो किसी संग्रहालय का अध्यक्ष हो। (क्यूरेटर)।
**संग्रही** पुं० (सं) वह जो संग्रह करता हो।
**संग्रहीता** पुं० (सं) वह जो एकत्र या संग्रह करता हो
**संग्राम** पुं० (सं) युद्ध। लड़ाई।
**संग्रामजित्** वि० (स) लड़ाई में जीतने वाला। पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
**संग्रामतूर्य** पुं० (सं) लड़ाई में बजाया जाने वाला बाजा।
**संग्रामपटह** पुं० (सं) लड़ाई में बजाया जाने वाला नगाड़ा।
**संग्रामभूमि** स्त्री० (सं) युद्धक्षेत्र।
**संग्राममृत्यु** स्त्री० (सं) रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त होना।
**संग्रामांगण** पुं० (सं) रणक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
**संग्रामार्थी** वि० (सं) युद्ध की इच्छा करने वाला।
**संग्राहक** पुं० (सं) संग्रहकर्ता। संग्रह करने वाला।
**संग्राही** पुं० (सं) १-वह पदार्थ जो कफ दोष, धातु मल आदि तरल पदार्थों को खींचता हो। २-कब्जियत करने वाली दवा।
**संग्राह्य** वि० (सं) संग्रह करने योग्य।
**संघ** पुं० (सं) १-समुदाय। समूह। २-संघटित समाज। ३-ऐसे राज्यों का समूह जो अपने क्षेत्र में कुछ स्वतंत्र हों पर कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए केंद्रियशासन के आधीन हो। (यूनियन, फेडरेशन) ४-बौद्ध भिक्षुकों का धार्मिक समाज या निवास स्थान। मठ। ५-प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य।
**संघचारी** पुं० (सं) १-बहुमत के अनुसार आचरण करने वाला। २-मछली। ३-झुण्ड या समुदाय में चलने वाले—मृग, हाथी आदि।

**संघजीवी** वि० (सं) जो दल बनाकर रहता हो।
**संघट** पु० (सं) १-संघटन। मिलन। २-युद्ध। झगड़ा। ३-समूह। ढेर।
**संघटन** पुं० (सं) १-मेल। संयोग। २-नायक और नायिका का मिलाप। ३-बनावट। रचना। बिखरी हुई शक्ति को किसी कार्य के लिए तैयार करना। (आर्गेनाइजेशन)।
**संघटना** स्त्री० (सं) १-शब्दों का संयोग। २-मिलना संयुक्त करना।
**संघटित** वि०(सं) जिसका संघटन हुआ हो। (आर्गेनाइज्ड)।
**संघट्ट** पुं० (सं) १-रचना। बनावट। गठन। २-संघर्ष।
**संघट्टन** पुं० (सं) १-रचना। बनावट। २-घटना। ३-टक्कर। भिड़न्त।
**संघट्टना** पुं० (सं) दे० 'संघटन'।
**संघट्टित** वि० (सं) १-गूँथा हुआ। २-इकट्ठा किया हुआ। ३-गठित। ४-चलाया हुआ। ५-घर्षित।
**संघती** पुं० (हिं) सङ्गी। साथी।
**संघन्यायालय** पुं० (सं) सङ्घ राज्य का सर्वोच्च न्यायालय। (फेडरल कोर्ट)।
**संघपति** पुं० (सं) किसी दल या समूह का नायक। मुखिया।
**संघभेद** पुं० (सं) (बौद्ध) सङ्घ में फूट डालने का अक्षम्य अपराध।
**संघभेदक** वि० (सं) (बौद्ध) सङ्घ में फूट डालने वाला
**संघरना** क्रि० (हिं) नाश करना। संहार करना। मार डालना।
**संघर्ष** पुं० (सं) १-रगड़। घिस्सा। (फ्रिक्शन)। २-प्रतियोगिता। ३-दो दलों में होने वाला विरोध। (कन्फ्लिक्ट)।
**संघर्षण** पुं० (सं)१-रगड़ने या रगड़ खाने की क्रिया २-रगड़ने की वस्तु-झामा, उबटन आदि।
**संघर्षशाली** वि० (सं) द्वेष रखने वाला।
**संघर्षसमिति** स्त्री० (सं) किसी आन्दोलन, या मांगें तथा प्राप्य अधिकारों को मनवाने के लिये किये जाने वाले संघर्ष का निर्देशन करने वाली समिति (कमिटी ऑफ एक्शन)।
**संघर्षी** वि० (सं) द्वेष रखने वाला। रगड़ खाने वाला
**संघवृत्ति** स्त्री० (सं) सहयोग।
**संघसमाजवाद** पुं० (सं) क्रांतिकारी श्रमिकों का वह आन्दोलन जो स्थापित राज्य को भङ्ग करके व्यवसाय सङ्घों (ट्रेड्यूनियन्स) की सत्ता स्थापित करना चाहता हो। (सिंडिकेलिज्म)।
**संघात** पुं० (सं) १-समूह। झुण्ड। २-निवास स्थान ३-कुछ लोगों का समूह जो मिलकर काम करने के लिये बनाया गया हो। (बॉडी)। ४-वध। ५-गहरी चोट। ६-शरीर। वि० घना। सघन।
**संघातचारी** वि० (सं) दल या समूह बनाकर रहने वाला।
**संघाती** पुं०(सं) १-वध करने वाला। २-मार डालने वाला। पुं० (हिं) १-साथी। २-मित्र।
**संघार** पुं० (हिं) दे० 'संहार'।
**संघारना** क्रि० (हिं) संहार करना। हत्या करना।
**संघाराम** पुं० (सं) विहार। प्राचीन समय के वह मठ जहां बौद्ध भिक्षुक रहते थे।
**संघीयसंविधान** पुं०(सं) ऐसे राज्यों के सङ्घ का संविधान जो कुछ विशिष्ट विषयों के स्वाधीन हो।(फ़ेडरल कन्स्टीटयूशन)।
**संघोष** पुं० (सं) जोर का शब्द। घोष।
**संच** पुं० (हिं) १-संचय। २-देखभाल। रक्षा। पुं० (सं) लिखने की स्याही।
**संचक** पुं० (हिं) इकट्ठा करने वाला।
**संचना** क्रि० (हिं) १-एकत्र करना। २-रक्षा करना
**संचय** पुं० (सं) १-समूह। ढेर। २-एकत्रीकरण। ३-अधिकता।
**संचयन** पुं० (सं) संग्रह करना। जमा करना।
**संचयिक** पुं० (सं) संचय करने वाला।
**संचयी** पुं० (हिं) १-जमा करने वाला। २-कंजूस।
**संचरण** पुं० (सं) दे० 'संचार'।
**संचरना** पुं० (सं) १-फैलाना। संचार करना। २-जन्म देना। ३-प्रचार करना।
**संचान** पुं० (सं) बाज। शिकरा।
**संचार** पुं० (सं) १-गमन। चलना। २-फैलना। ३-कष्ट। विपत्ति। ४-मार्ग प्रदर्शन। ५-चलाने की क्रिया। ६-उत्तेजन। ७-एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने के साधन। (कम्यूनिकेशन)।
**संचारक** पुं०(सं) १-संचार करने वाला। २-नायक दलपति। ३-चलाने वाला।
**संचारजीवी** वि० (सं) खानाबदोश।
**संचारण** पुं० (सं) १-मिलाना। २-पास लाना। ३-संवाद कहना।
**संचारना** क्रि० (हिं) १-संचार करना। फैलाना। २-प्रचार करना। ३-जन्म देना।
**संचारपथ** पुं० (सं) हवाखोरी करने या टहलने का स्थान।
**संचार-साधन** पुं० (सं) यातायात से सम्बन्ध रखने वाले साधन। (मीन्स आफ कम्यूनिकेशन)।
**संचारिका** स्त्री० (सं) १-दूती। कुटनी। २-नाक। ३-युग्म। जोड़।
**संचारित** वि० (सं) १-जिसका संचार किया गया हो २-चलाया हुआ। ३-फैलाया हुआ।
**संचारी** वि० (सं) १-संचरण करने वाला। २-गतिशील। पुं० १-साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव

की पुष्टि करते हैं। २-आगंतुक। ३-वायु। ४-संगीतशास्त्र के अनुसार गीत के चार चरणों में से तीसरा।
**संचालक** पुं० (सं) १-चलाने वाला। परिचालक। २-कार्य अथवा कार्यालय आदि का काम चलाने वाला। (मेनेजर)।
**संचालन** पुं० (सं) १-चलाना। २-ऐसा प्रबन्ध करना जिससे कोई काम लगातार चलता रहे। (कन्डक्ट)
**संचालनसमिति** स्त्री० (सं) वह समिति जो किसी सभा आदि के संचालन करने के लिए बनाई गई हो। (स्टीयरिंग कमिटी)।
**संचिका** स्त्री० (सं) एक विषय के पत्रादि रखने की नत्थी। (फाइल)।
**संचित** वि०(सं) १-एकत्र किया हुआ। २-ढेर लगाया हुआ। ३-संचिका में लगाया हुआ। (फाइल्ड)।
**संचितकर्म** पुं० (सं) पूर्वजन्म के वह कर्म जिनका अभी फल न मिला हो
**संचितकोष** पुं० (सं) दे० 'भविष्यनिधि' (प्रोविडेन्ट-फंड)।
**संचिति** स्त्री० (सं) एक पर एक रखना।
**संचेय** वि० (सं) संचय करने योग्य।
**संजम** पुं० (हि) दे० 'संयम'।
**संजमी** वि० (हि) दे० 'संयमी'।
**संजय** पुं० (सं) १-धृतराष्ट्र के मन्त्री का नाम। २-ब्रह्मा। ३-शिव।
**संजात** वि० (सं) १-उत्पन्न। २-प्राप्त। पुं० पुराणानुसार एक जाति का नाम।
**संजातकोप** पुं० (सं) क्रुद्ध।
**संजातकौतुक** वि० (सं) चकित। हैरान।
**संजातनिर्वेद** वि० (सं) विरक्त।
**संजाफ** स्त्री० (फा) कपड़े पर टकी हुई झालर। गोट मगजी।
**संजाफी** वि० (फा) जिसमें संजाफ लगी हो।
**संजाब** पुं० (हि) एक प्रकार का घोड़ा।
**संजीदगी** स्त्री० (फा) विचार या व्यवहार की गंभीरता।
**संजीदा** वि० (फा) १-शांत। गंभीर। २-बुद्धिमान्।
**संजीवन** पुं० (सं) १-जिलाने वाला। २-भली प्रकार जीवन बिताना।
**संजीवनी** वि० (सं) जीवन देने वाली। स्त्री० मृतक को जीवित करने वाली एक कल्पित बूटी।
**संजीवनीविद्या** स्त्री० (सं) मरे हुए व्यक्ति को जिलाने की एक कल्पित विद्या।
**संजीवित** वि० (सं) जो मरने के बाद फिर जीवित किया गया हो।
**संजुक्त** वि० (हि) दे० 'संयुक्त'।
**संजुग** पुं० (हि) संग्राम। लड़ाई।
**संजुत** वि० (हि) दे० 'संयुक्त'।
**संजूत** वि० (हि) तैयार।
**संजोई** अव्य० (हि) साथ में। संग में।
**संजोइल** वि० (हि) १-सुसज्जित। एकत्र।
**संजोउ** पुं० (हि) १-उपक्रम। तैयारी। २-सामग्री।
**संजोग** पुं० (हि) दे० 'संयोग'।
**संजोगिता** स्त्री० (सं) राजा जयचन्द की पुत्री जिसका राजा पृथ्वीराज ने अपहरण किया था।
**संजोगिनी** स्त्री० (हि) दे० 'संयोगिनी'।
**संजोगी** वि० (हि) दे० 'संयोगी'।
**संजोना** क्रि० (हि) अलंकृत करना। सजाना।
**संजोवना** क्रि० (हि) सँजोना। सजाना।
**संजोवल** वि० (हि) १-सजा हुआ। २-सावधान। ३-सेना सहित।
**संज्ञा** स्त्री० (सं) १-चेतन। होश। २-बुद्धि। ३-ज्ञान ४-नाम। ५-व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है। ६-संकेत। ७-गायत्री।
**संज्ञाकरण** पुं० (सं) नाम रखना।
**संज्ञात** वि०(सं) जो भलीभांति समझा या जाना हुआ हो।
**संज्ञान** पुं० (सं) संकेत। इशारा।
**संज्ञापुत्री** स्त्री० (सं) यमुना।
**संज्ञासुत** पुं० (सं) शनिदेव।
**संज्ञाहीन** वि० (सं) बेसुध। बेहोश
**सँझला** वि० (हि) १-सन्ध्या या साँझ का। २-मँझले से छोटा और सबसे छोटे से बड़ा।
**सँझवाती** स्त्री० (सं) १-संध्या के समय जलाया जाने वाला दीपक। २-इस समय गाया जाने वाला गीत वि० संध्या का।
**संझा** स्त्री० (हि) साँझ। संध्या।
**संझोखा** पुं० (हि) संध्या समय।
**सँझोखें** अव्य० (हि) संध्या समय में।
**संड** पुं० (हि) सांड।
**संडमुसंड** वि० (हि) हट्टाकट्टा। मोटाताजा। हृष्टपुष्ट।
**सँडसा** पुं० (हि) एक प्रकार का लोहे का बड़ा चिमटा या औजार जो गरम या किसी वस्तु के पकड़ने के काम आता है।
**सँड़सी** पुं० (हि) छोटा सँड़सा। जँबूरी।
**संडा** वि०(हि) हृष्टपुष्ट। मोटाताजा। पुं० मोटा और बलवान मनुष्य।
**संडास** पुं० (हि) एक प्रकार का पाखाना जो गहरा गढ़ा खोदकर बनाया जाता है। शौचकूप।
**सँड़ासी** स्त्री० (हि) दे० 'सँड़सी'।
**संत** पुं० (हि) १-साधु। महात्मा। २-ईश्वरभक्त। ३-एक इक्कीस मात्राओं का छंद।
**संतत** अव्य०(सं) १-सदा। सर्वदा। हमेशा। निरंतर

लगातार । स्त्री० (हिं) दे० 'संतति' ।
सततज्वर पुं० (सं) निरंतर रहने वाला ज्वर या बुखार ।
संतति स्त्री० (सं) १-बालबच्चे । औलाद । २-प्रजा ३-गोत्र । दल । ४-निरंतर किसी बात का होना ।
संततिनिरोध पुं० (सं) संयम या कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भदान न होने देना । (बर्थकंट्रोल) ।
संतपन पुं० (सं) १-भली प्रकार तपने की क्रिया । २-अत्यधिक दुःख देना ।
संतप्त वि० (सं) १-दग्ध । जला हुआ । २-दुःखी । पीड़ित । ३-मलीन मन । ४-थका हुआ ।
संतरण पुं०(सं) १-अच्छी प्रकार तारने या होने की क्रिया । २-तारक । ३-नाश करने वाला ।
संतरणशील-हिमशिला स्त्री० (सं) पानी में तैरती हुई बर्फ की बड़ी चट्टान या शिला (आइसबर्ग) ।
संतरा पुं० (हिं) एक प्रकार की बड़ी नारङ्गी जो मीठी होती है ।
संतरी पुं० (हिं) पहरेदार । (सेन्ट्री) ।
संतर्जन पुं० (सं)१-डराना । धमकाना । २-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।
संतसमागम पुं० (सं) संतों की संगति या साथ ।
संतस्थान पुं० (सं) साधुओं का निवास स्थान । मठ ।
संतान पुं० (सं) १-बाल-बच्चे । सन्तति । औलाद । २-वंश । ३-विस्तार । ४-कल्पवृक्ष ।
संतानकर्म पुं० (सं) सन्तान को जन्म देना । प्रजनन
संतानानिग्रह पुं० (सं) दे० 'संततिनिग्रह' ।
संताप पुं० (सं)१-जलाना । २-अत्यधिक कष्ट देना ३-शत्रु । ४-मानसिक कष्ट । ५-दाह नामक रोग
संतापकारी वि० (सं) जो कष्ट देता हो ।
संतापन पुं० (सं) १-जलाना । २-अत्यधिक कष्ट देना । ३-कामदेव के पांच बाणों में से एक ।
संतापना क्रि० (हिं) सताना । दुःख या कष्ट देना ।
संतापहारक वि० (सं) कष्ट दूर करने वाला । आराम देने वाला ।
संतापित वि० (सं) सन्तप्त । पीड़ित ।
संतीं अव्य० (हिं) द्वारा । से ।
संतुलन पुं० (सं) १-दो पक्षों का बल बराबर होना या रखना । २-आपेक्षिक भार या वजन बराबर या ठीक करना ।
संतुलित वि० (सं)जिन वस्तुओं, देश आदि का भार या बल आदि बराबर रखा गया हो ।
संतुष्ट वि० (सं) १-तृप्त । २-जिसे सन्तोष होगया हो
संतुष्टि स्त्री० (सं) १-तृप्ति । २-सन्तोष । ३-इच्छा का पूरा होना ।
संतुष्टिकरण पुं० (सं) किसी को सन्तुष्ट रखने की क्रिया । (एपीजमेंट) ।
संतोख पुं० (हिं) दे० 'संतोष' ।
संतोखी वि० (हिं) दे० 'संतोषी' ।
संतोष पुं० (सं) १-सदा प्रसन्न रहना तथा किसी बात की इच्छा न करना । सब्र । २-तृप्ति । ३-किसी बात की चिन्ता या शिकायत न होना ।
संतोषक वि० (सं) सन्तुष्ट करने वाला ।
संतोषण पुं० (सं) सन्तोष । सन्तुष्ट करने का भाव या क्रिया ।
संतोषना क्रि० (हिं) १-सन्तोष दिलाना । २-सन्तोष होना ।
संतोषित वि० (सं) सन्तुष्ट ।
संतोषी वि० (सं) जो सदा सन्तोष रखता हो ।
संत्यक्त वि० (सं) १-त्यागा हुआ । २-रहित । ३-बिना ।
संत्यजन पुं० (सं) परित्याग ।
संत्रस्त वि० (सं) १-डरा हुआ । भयभीत । २-व्याकुल ३-पीड़ित ।
संत्रास पुं० (सं) १-कष्ट । २-डर । ३-आतङ्क ।
संत्रासित वि० (सं) डराया हुआ ।
संत्री पुं० (हिं) दे० 'संतरी' ।
संथा स्त्री० (हिं) पाठ । सबक ।
संदंश पुं०(सं) १-चिमटी । २-सँड़सी । ३-एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीरफाड़ के काम आती है ।
संदंशिका स्त्री० (सं) १-चिमटी । २-संडासी । ३-कैंची ।
संद पुं०(हिं) छेद । दरार । बिल । पुं०(डिं०) चन्द्रमा (देश) दबाव ।
संदर्भ पुं० (सं) १-निबन्ध । लेख । २-रचना । ३-वह पुस्तक जिसमें अन्य पुस्तकों में आये हुए गूढ़ शब्दों का स्पष्टीकरण हो । (रेफरेन्स-बुक) । ४-प्रकरण । प्रसंग । (कॉन्टेक्स) । ५-विस्तार ।
संदर्भविरुद्ध वि० (सं) जिसमें संदर्भ का निर्वाह न हुआ हो ।
संदर्शन पुं० (सं) १-परीक्षा । अवलोकन । २-ज्ञान । ३-आकृति ।
संदल पुं० (फा) चन्दन ।
संदली वि० (फा) सन्दल या चन्दन का । पुं० १-एक प्रकार का हाथी । २-एक प्रकार का पीला रङ्ग । स्त्री० चौकी । तिपाई ।
संदि स्त्री० (हिं) मेल । संधि ।
संदिग्ध वि० (सं) १-सन्देहपूर्ण । २-जिस पर सन्देह हो । ३-जिसे खतरा हो ।
संदिग्धजनसूची स्त्री०(सं) ऐसे लोगों की सूची जिनसे कोई खतरा हो । (ब्लेक लिस्ट) ।
संदिग्धता स्त्री० (सं) १-संदिग्ध होने का भाव । २-अलंकार शास्त्रानुसार एक दोष जिसमें किसी उक्ति का अर्थ ठीक-ठीक प्रकट नहीं होता ।
संदिग्धत्व पुं० (सं) दे० संदिग्धता' ।

**संदिग्धबुद्धि** वि०(सं) जो हर वस्तु को शक या सन्देह की दृष्टि से देखता है।
**संदिग्धार्थ** वि० (सं) जिसका अर्थ शंकायुक्त हो।
**संदीपक** वि० (सं) उद्दीपक। उद्दीपन करने वाला।
**संदीपन** पुं० (सं) १-उद्दीपन। २-कामदेव का एक बाण। ३-श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।
**संदूक** पुं० (अ) लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी। बक्स।
**संदूकचा** पुं० (अ) छोटा सन्दूक या पेटी।
**संदूकची** स्त्री० (अ) छोटा सन्दूक। पेटी।
**संदूकड़ी** स्त्री० (अ) छोटा सन्दूक।
**संदूख** पुं० (हि) सन्दूक।
**संदूर** पुं० (हि) दे० 'सिंदूर'।
**संदेश** पुं० (सं) १-समाचार। २-किसी उद्देश्य से कही या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात (मैसेज) ३-एक बङ्गाली मिठाई।
**संदेशग्राहक** पुं० (सं) समाचार लेजाने या पहुंचाने वाला। कासिद। दूत।
**संदेशा** पुं० (हि) दे० 'संदेश'।
**संदेस** पुं० (सं) दे० 'संदेश'।
**संदेसा** पुं० (हि) जबानी कहलाया हुआ समाचार।
**संदेह** पुं०(सं) १-किसी विषय में यह धारणा कि यह ठीक है या नहीं। शंका। संशय। २-एक अर्थालंकार।
**संदेहवाद** पुं० (सं) १-निर्णय करते समय मस्तिष्क की अवस्था। संशयवाद। २-सत्य के सम्बन्ध में किसी निश्चित सिद्धांत पर न पहुंचने की प्रवृत्ति। (स्केप्टिसिज्म)।
**संदेहवादी** वि० (सं) जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। संशयात्मा।
**संदेहात्मक** वि० (सं) जिसके बारे में सन्देह हो।
**संदोह** पुं० (सं) समूह। झुण्ड।
**संधना** क्रि० (हि) मिलना। संयुक्त होना।
**संधाता** पुं० (सं) १-विष्णु। २-लोहे के टुकड़ों को जोड़ने वाला।
**संधान** पु० (सं) १-संयुक्त करना। मिलाना। २-निशाना लगाना। ३-पता लगाना। ४-मदिरा। शराब। ५-मदिरा बनाना। ६-जमा खर्च करना। (एड्जेस्टमेन्ट)। ७-किसी वस्तु को सड़ाकर उसका खमीरा उठाना। (फर्मेन्टेशन)। ८-अचार। ९-सौराष्ट्र का एक नाम। १०-मेलमिलाना।
**संधानना** क्रि० (हि) १-निशाना लगाना। २-तीर चलाना। ३-किसी अस्त्र को प्रयोग के लिए ठीक करना।
**संधाना** पुं० (हि) अचार।
**संधानित** वि० (सं) संयुक्त। जोड़ा हुआ। मिलाया हुआ।
**संधि** स्त्री० (सं) १-दो टुकड़ों या वस्तुओं के मिलने का स्थान। जोड़। २-मेल। संयोग। ३-दो राष्ट्रों में आपस में सद्भाव बढ़ाने तथा आक्रमण न करने का समझौता। सुलह (ट्रीटी)। ४-व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने के कारण होता है। ५-सेंध। ६-भग। ७-साधन। ८-एक स्थिति के समाप्त होने पर दूसरी अवस्था आरम्भ का समय।
**संधिचोर, संधिचौर** पु०(सं) सेंधिया चोर। सेंध लगा कर चोरी करने वाला।
**संधितस्कर** पुं० (सं) दे० 'संधिचोर'।
**संधिभंग** पुं० (सं) शरीर के किसी अंग के जोड़ का टूटना।
**संधिविग्रहक** पुं० (सं) पर-राष्ट्रों के साथ युद्ध अथवा संधि का निर्णय करने वाला मन्त्री या अधिकारी।
**संधिविग्रहिक** पुं० (सं) दे० 'संधिविग्रहक'।
**संधिविच्छेद** पु० (सं) १-संधिगत शब्दों का अलग-अलग करना। २-समझौते का टूटना।
**संधेय** वि० (सं) जिसके साथ संधि की जा सके।
**संध्या** स्त्री० (सं) १-सायंकाल। शाम। २-आर्यों की उपासना जो सवेरे, दोपहर और सन्ध्या को होती है ३-दो युगों के मिलने का समय। युगसंधि। ४-सीमा। हद। ५-सन्धान। ६-एक प्रकार का फूल।
**सध्याराग** पुं० (सं) १-श्याम-कल्याणराग। २-सिंदूर
**संध्याराम** पुं० (सं) ब्रह्मा।
**संध्यावंदन** पुं० (सं) संध्या के समय की उपासना।
**संध्योपासन** पुं० (सं) संध्यावंदन।
**संन्यास** पुं०(सं)१-हिन्दुओं के चार आश्रमों में से एक २-अपने कानूनी अधिकारों का परित्याग (सिविल सुइसाइड)। ३-त्यागी और विरक्त होकर काम करने का आश्रम।
**संन्यासी** पुं० (सं) संन्यास आश्रम में रहने वाला।
**संपति** स्त्री० (हि) दे० 'संपत्ति'।
**संपत्ति** स्त्री०(सं) १-धन। दौलत। जायदाद। (प्रॉपर्टी) २-ऐश्वर्य। वैभव। ३-लाभ। ४-अधिकता।
**संपत्तिदान** पुं० (सं) भूमिहीन किसानों को भूमि देने के कार्य के लिए सम्पत्ति का दान देना।
**संपदा** स्त्री० (सं) १-धन-दौलत। सम्पत्ति। वैभव। ऐश्वर्य।
**संपरीक्षण** पुं० (सं) किसी कार्य; लेख आदि के सम्बन्ध में भली प्रकार देखकर यह जांचना कि वह ठीक और नियमानुसार है या नहीं। (स्क्रुटिनी)।
**संपर्क** पुं० (सं) १-सम्बन्ध। वास्तव। २-स्पर्श। ३-मिलावट। ४-योग। जोड़। (गणित)।
**संपर्क-पदाधिकारी** पुं०(सं) सरकार या प्रजाजन में सम्पर्क बनाए रखने वाला पदाधिकारी। (लियेजन ऑफीसर)।

संपा स्त्री० (सं) बिजली। विद्युत।
संपात पुं०(सं) १-मेल। संसर्ग। २-एक साथ गिरना। ३-संगम स्थान। ४-वह स्थान जहां एक रेखा दूसरी रेखा से मिले। ५-टूट पड़ना। ६-झपेट। ७-अवशिष्ट अंश।
संपाती वि० (सं) एक साथ कूदने या झपटने वाला। पुं० (हिं) दे० 'संपत्ति'।
संपादक पुं० (सं) १-कार्य सम्पन्न करने वाला। २-प्रस्तुत करने वाला। ३-किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम आदि लगाकर निकालने वाला। (एडीटर)।
संपादकीय वि० (सं) संपादक सम्बन्धी। पुं० समाचार पत्र का वह लेख जो किसी विशिष्ट विषय पर सम्पादक द्वारा लिखा होता है।
संपादन पुं० (सं) १-काम ठीक प्रकार से पूरा करना २-ठीक करना। ३-किसी पुस्तक या समाचार पत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना (एडीटिंग)।
संपादना क्रि० (हिं) १-पूरा करना। २-ठीक करना।
संपादित वि० (सं) १-पूरा किया हुआ। २-(पुस्तक, समाचार-पत्र आदि को) क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (एडीटेड)।
संपालक पुं० (सं) किसी की सम्पति आदि की देख-रेख करने वाला। अभिरक्षक। (कस्टोडियन)।
संपीडन पुं० (सं) १-खूब दबाना या निचोड़ना। २-अत्यधिक पीड़ा। ३-शब्द के उच्चारण का एक दोष।
संपुट पुं०(सं) १-खप्पर। ठीकरा। २-डिब्बा। ३-दोना। ४-अंजली। ५-बाकी। उधार। ६-कोश।
संपुटी स्त्री०(सं) १-कटोरी। छोटा प्याला। २-तश्तरी
संपुष्टि स्त्री० (सं) किसी वक्तव्य या कथन की दूसरे सूत्र से पुष्टि हो जाना। (कोरोबोरेशन)।
संपूज्य वि० (सं) अत्यधिक आदरणीय।
संपूर्ण वि० (सं) १-समस्त। पूरा। २-समाप्त। पूर्ण ३-खूब भरा हुआ। पुं० १-वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २-आकाशभूतः।
संपूर्णतः अव्य० (सं) पूरी तरह से।
संपूर्णतया अव्य० (सं) पूरी तरह से।
संपृक्त वि० (सं) १-संसर्ग में आया हुआ। २-मिला हुआ। ३-संयुक्त।
संपृक्त-द्रावण पुं० (सं) ऐसा घोल जिसमें गर्म करने पर भी मिश्रित करने वाला पदार्थ और न घुल सके (सेचुरेटेड सोल्यूशन)।
संपृष्ट वि० (सं) जिससे पूछ-ताछ की गई हो।
सँपेरा पुं० (हिं) सांप पालने वाला। मदारी।
संपै स्त्री० (हिं) दे० 'संपत्ति'।
सँपोला पुं० (हिं) सांप का बच्चा।
सँपोलिया पुं० (हिं) सांप पकड़ने वाला।
संपोषित वि० (सं) जिसका अच्छी प्रकार से पालन-पोषण किया गया हो।
संपोष्य वि० (सं) पालने-पोषने योग्य।
संप्रज्ञात पुं० (सं) योग में समाधि के दो प्रधानों में से एक। वि० भली प्रकार जाना या समझा हुआ।
संप्रज्ञातयोगी पुं० (सं) वह योगी जिसका विषय के प्रति बोध बना हुआ हो।
संप्रज्ञात-समाधि स्त्री० (सं) एक प्रकार की समाधि जिसमें विषयों का बोध नष्ट नहीं होता।
संप्रति अव्य० (सं) अभी। इस समय।
संप्रदान पुं० (सं) १-दान देने की क्रिया या भाव। २-मन्त्रोपदेश। दीक्षा। ३-भेंट। नजर। ४-किसी वस्तु को किसी के पास पहुँचाना। (डिलीवरी)। ५-व्याकरण में चतुर्थ कारक।
संप्रदाय वि० (सं) १-कोई विशेष धार्मिक मत। (कम्यूनिटी)। २-किसी मत के अनुयायियों की मण्डली। (सेक्ट)। ३-परिपाटी। रीति। ४-मार्ग। पथ।
संप्रदायवाद पुं० (सं) केवल अपने संप्रदाय को प्रधानता देते हुए दूसरे संप्रदायों से द्वेष करने का सिद्धान्त। (कम्यूनेलिज्म)।
संप्रदायवादी पुं० (सं) वह व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को अधिक महत्व देता हो और दूसरे संप्रदायों से द्वेष रखता हो। (कम्यूनेलिस्ट)।
संप्रसारण पुं० (सं) फैलाना। य, व, र, ल का इ, उ, ऋ, लृ में परिवर्तन। (व्याकरण)।
संप्राप्त वि० (सं) १-उपस्थित। पहुंचा हुआ। पाया हुआ। ३-घटित।
संप्राप्तयौवन वि० (सं) युवा। बालिग।
संप्राप्तविद्या वि० (सं) जो पूरी विद्या प्राप्त कर चुका हो।
संप्रेक्षक पुं० (सं) १-आय-व्यय या हिसाब-किताब की जांच करने वाला। (ऑडीटर)। २-दर्शक।
संप्रेक्षण पुं० (सं)१-हिसाब-किताब जांचने का काम (ऑडिटिंग)। २-जांच करना।
संप्रेषण पुं० (सं) एक व्यक्ति या स्थान से दूसरे व्यक्ति या स्थान तक विचार, समाचार, रोगाणु आदि पहुँचाना। (ट्रांसमिशन)।
संबंध वि० (सं) १-जुड़ना। मिलना। २-संपर्क। लगाव। वास्ता। (कनक्शन)। ३-नाता। रिश्ता। ४-विवाह या उसका निश्चय। ५-गहरी मित्रता। ६-किसी सिद्धान्त का हवाला।
संबंधकारक पुं० (सं) एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबन्ध सूचित करने वाला कारक।
संबंधातिशयोक्ति स्त्री० (सं) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें असंबन्ध में संबंध बनाया

जाता है।

**संबंधी** *वि०*(सं) १-विषयक। २-सम्बन्ध रखने वाला। ३-सिलसिले या प्रसंग का। पुं० १-समधी। २-रिश्तेदार।

**संबंधी-शब्द** पुं० (सं) वह शब्द जो सम्बन्ध प्रकट करता हो।

**संबत्** पुं० (हिं) दे० 'संवत्'।

**संबद्ध** *वि०* (सं) १-सम्बन्धयुक्त। २-बाँधा या जुड़ा हुआ। ३-सहित। संयुक्त।

**संबद्धीकरण** पुं० (सं) १-किसी विद्यालय से सम्बन्ध हो जाना। २-किसी समाज का सदस्य बना लिया जाना (एफीलियेशन)।

**संबर** पुं० (हिं) दे० 'संवरण'।

**संबरण** पुं० (हिं) दे० 'संवरण'।

**संबरना** *क्रि०* (हिं) १-नियंत्रण करना। २-रोकना।

**संबल** पुं० (सं) १-सहारा। २-जल। ३-शंबल।

**संबाद** पुं० (हिं) दे० 'संवाद'।

**संबुक** पुं० (हिं) घोंघा।

**संबुद्ध** *वि०* (सं) १-ज्ञानी। ज्ञानवान। २-जाग्रत। ३-ज्ञात। पुं० १-बुद्ध। २-जिन।

**संबुद्धि** *स्त्री०*(सं) १-पूर्णज्ञान। बुद्धिमान। २-आह्वान

**संबोध** पुं० (सं) १-पूरा ज्ञान या बोध। २-पूरी जानकारी। ३-धीरज।

**संबोधन** पुं० (सं) १-जागना। २-पुकारना। ३-व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिए प्रयोग सूचित होता है। ४-समाधान करना। किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना।

**संबोधना** *क्रि०*(हिं) १-सम्बोधन करना। २-समझाना बुझाना।

**संबोधित** *वि०* (सं) १-जिसका ध्यान आकर्षित किया गया हो। २-बोधित।

**संबोध्य** पुं० (सं) १-वह जिसे सम्बोधन किया जाय २-वह जिसे बनाया जाय।

**संभर** पुं० (सं) १-पोषण करने वाला। २-सांभर-झील। ३-रोकथाम। ४-समूह। ५-इकट्ठा करना।

**संभरण** पुं० (सं) १-भरण-पोषण की व्यवस्था या सामग्री। (प्रॉविजन)। २-रचना। ३-साथ रखना

**संभरण-निधि** *स्त्री०* (सं) दे० 'भविष्यनिधि'। (प्रॉविडेन्ट फंड)।

**संभरना** *क्रि०* (हिं) किसी सहारे पर रुका रह सकना २-सावधान होना। ३-बचा रहना। ४-कार्य। भार उठाया जाना। ५-रोग से छूटकर स्वस्थ होना

**संभव** पुं० (सं) १-उत्पत्ति। संयोग। ३-सहवास। ४-हेतु। ५-शोभा। ६-हो सकने के योग्य होना। उपयुक्तता। ७-ध्वंस। नाश। ८-युक्ति। *वि०* जो हो सकता हो। (पॉसिबल)।

**संभवतः** *अव्य०* (सं) हो सकता है। संभव है।

**संभवना** *क्रि०* (हिं) १-उत्पन्न करना। २-उत्पन्न होना। ३-संभव होना।

**संभवनीय** *वि०* (सं) १-संभव। मुमकिन।

**सँभार** पुं० (सं) १-एकत्र या संचय करना। २-भंडार। (स्टोर)। ३-तैयारी। ४-धन। संपत्ति। ५-पालन पोषण।

**सँभारना** *क्रि०* (हिं) दे० 'संभालना'।

**सँभाल** *स्त्री०* (हिं) १-देखरेख। रक्षा। २-पोषण या देखरेख का भार।

**सँभालना** *क्रि०* (हिं) १-रोक कर वश में रखना। २-भार ऊपर लेना। ३-गिरने न देना। ४-बुरी दशा में जाने से रोकना। ५-किसी मनोवेग को रोकना

**सँभाला** पुं० (हिं) मृत्यु से पहले कुछ चेतनता सी आनी।

**संभावना** *स्त्री०* (सं) १-हो सकना। (पॉसिबिलिटी)। २-कल्पना। अनुमान। ३-मान। प्रतिष्ठा। ४-एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन होता है।

**संभावनीय** *वि०* (सं) १-जो हो सकता हो। २-आदर-सत्कार के योग्य। ३-कल्पना के योग्य।

**संभावित** *वि०* (सं) १-विचारा हुआ। कल्पित। २-जिसके होने की सभावना हो। (प्रॉबेबल)।

**संभावितव्य** *वि०* (सं) १-कल्पना या अनुमान के योग्य। २-संभव। ३-सत्कार के योग्य।

**संभाव्य** *वि०* (सं) १-जो हो सकता हो। २-कल्पना के योग्य।

**संभाषण** पुं० (सं) १-कथनोपकथन। २-बातचीत।

**संभाषण-निपुण** *वि०* (सं) बातचीत करने में प्रवीण

**संभाषणीय** *वि०* (सं) जो बातचीत करने योग्य हो

**संभाषी** *वि०* (सं) बातचीत करने वाला।

**संभाष्य** *वि०* (सं) जिससे बातचीत करना उचित हो

**संभीत** *वि०* (सं) अत्यधिक डरा हुआ।

**संभु** पुं० (हिं) दे० 'शंभु'।

**संभुक्त** *वि०* (सं) १-काम से लाया हुआ। २-बहुत थका हुआ।

**संभूत** *वि०* (सं) १-उत्पन्न। २-युक्त। सहित। ३-एक साथ उत्पन्न करने वाले।

**संभूय** *अव्य०* (सं) एक साथ। साझे में।

**संभूय-समुत्थान** पुं० (सं) १-साझे का कारबार। २-साझियों में होने वाला वाद-विवाद।

**संभृति** *स्त्री०* (सं) १-इकट्ठा करने की क्रिया। २-सामान। सामग्री। ३-राशि। ढेर। ४-भीड़। समूह। ५-अधिकता।

**संभेद** पुं० (सं) १-खूब भिड़ना। २-आपस में मिले हुए तत्वों या पदार्थों का अलग होना (क्लीवेज)।

**संभोग** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का होने वाला उप-

भोग या व्यवहार। २-मैथुन। ३-प्रेमी तथा प्रेमिका का होने वाला मिलाप।
**संभोगी** वि० (सं) संभोग करने वाला।
**संभोजन** पु० (सं) १-भोज। दावत। २-खाना। खाने की वस्तु।
**संभ्रम** पु० (सं) १-फेर। चक्कर। घूमना। २-हलचल धूम। ३-उतावली। ४-व्याकुलता। ५-मान। गौरव ६-सटपटाना।
**संभ्रांत** वि० (सं) १-घुमाया या चक्कर दिया हुआ। २-भ्रम में पड़ा हुआ। ३-सम्मानित।
**संभ्रांति** स्त्री०(सं) १-उद्वेग। घबराहट। २-आतुरता हड़बड़ी।
**संभ्राजना** क्रि० (हि) भली भांति सुशोभित करना।
**संयत** वि०(सं) १-बँधा हुआ। बद्ध। २-दमन किया हुआ। ३-क्रमबद्ध। ४-विग्रही। ५-उचित सीमा में रोक कर रखा हुआ।
**संयतचेता** वि० (सं) जिसमें अपने मन को वश में रखने की क्षमता हो।
**संयतात्मा** वि० (सं) दे० 'संयतचेता'।
**संयताहार** वि० (सं) बहुत कम खाने वाला। मिताहारी।
**संयति** स्त्री० (सं) वश में रखना।
**संयम** पु० (सं) १-रोक। दाब। २-इन्द्रियनिग्रह। ३-बन्धन में। ४-प्रलय। ५-प्रयत्न। ६-योग में-ध्यान, धारणा तथा समाधि का साधन।
**संयमन** पु० (सं) १-रोग। दमन। २-निग्रह। ३-खींचना। तानना (लगाम आदि)। ४-बन्द रखना ५-बल को वश में रखना।
**संयमित** वि० (सं) १-दमन किया हुआ। २-बंधा या कसा हुआ। ३-वश में लाया हुआ।
**संयमी** वि० (सं) १-वासनाओं तथा मन को काबू में रखने वाला। २-पथ्य में रहने वाला।
**संयुक्त** वि० (सं) १-जुड़ा या लगा हुआ सम्बन्ध। (एनेक्स्ड)। २-समन्वित। एक में मिला हुआ। ३-साथ रह कर या मिल कर कार्य करने वाला। (ज्वाइन्ट)।
**संयुक्तकुटुंब** पु०(सं) वह कुटुम्ब जिसमें माता-पिता, भाई-भतीजे सब एक साथ ही मिल कर रहते हों।
**संयुक्तनिर्वाचकवर्ग** पु०(सं) वह निर्वाचकों का समूह जो बिना किसी भेदभाव के असंप्रदायिकता के आधार पर ही मत देने का अधिकारी हो तथा उसमें अनेक संप्रदायों के लोग शामिल हों। (ज्वाइन्ट इलेक्टोरेट)।
**संयुक्तराष्ट्रसंघ** पु० (सं) द्वितीय महायुद्ध के बाद अन्तरराष्ट्रीय झगड़ों और समस्याओं पर विचार करने के लिए तथा सद्भावना बढ़ाने की संस्था। (यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गेनाइजेशन)।
**संयुक्तलेखा** पु० (हि) वह लेखा या हिसाब किताब जो एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा संयुक्त रूप से खोला जाता है। (ज्वाइन्ट एकाउन्ट)।
**संयुक्तसरकार** पु० (हि) संकट काल या किसी विशेष स्थिति में दो या दो से अधिक दलों के सदस्यों की बनाई गई सरकार। (कोलियेशन गवर्नमेन्ट)।
**संयुक्तस्कंधप्रमंडल** पु० (सं) वह प्रमंडल जिसमें एक से अधिक साझेदार हों। (ज्वाइंट स्टाक कम्पनी)।
**संयोग** पु० (सं) १-मेल। मिलान। २-लगाव। सम्बन्ध। ३-सहवास। ४-दो या कई बातों का अचानक एक साथ होना। ५-दो या अधिक व्यंजनों का मेल। ५-मतैक्य।
**संयोगशृङ्गार** पु० (सं) साहित्य में शृङ्गार रस का एक भेद जिसमें प्रेमी-प्रेमिका के मिलन आदि का वर्णन होता है।
**संयोगिनी** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसका पति उसके साथ ही हो।
**संयोगी** वि० (सं) १-मिला हुआ। २-संयोग करने वाला। ३-विवाहित। ४-जो अपनी प्रिया के साथ हो।
**संयोजक** पु० (सं) १-जोड़ने या मिलाने वाला। २-सभा या समिति का वह प्रमुख सदस्य जो उसकी बैठक बुलाने तथा अध्यक्ष के रूप में उसका काम चलाने के लिये नियुक्त होता है। (कन्वीनर)। ३-व्याकरण में दो शब्दों को मिलाने के लिए आता है
**संयोजन** पु० (सं) १-जोड़ना। मिलाना। २-किसी छोटे प्रांत को बलपूर्वक बड़े राज्य में मिलाना। (अनेक्सेशन)।
**संयोज्य** वि० (सं) १-मिलने योग्य। २-जो मिलने या जोड़ा जाने वाला हो।
**संयोना** क्रि० (हि) सजाना।
**संरक्षक** पु० (सं) १-रक्षा करने वाला। २-आश्रय में रखने वाला। (पेट्रन)। ३-अभिभावक।
**संरक्षकता** स्त्री० (सं) १-संरक्षक का कार्य। २-संरक्षक होने का भाव।
**संरक्षण** पु० (सं) १-हानि, विपत्ति आदि से बचाना २-देखरेख। निगरानी। ३-अधिकार। ४-दूसरे देशों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा। (प्रोटेक्शन)।
**संरक्षणकर** पु० (सं) दूसरे राष्ट्रों से व्यापार करने में अनुचित प्रतियोगिता से देशी उद्योगों की रक्षा करने के लिये आयात किये गये माल पर लगाया जाने वाला अतिरिक्त कर। (प्रोटेक्शन ड्यूटी)।
**संरक्षणीय** वि० (सं) संरक्षण के योग्य।
**संरक्षित** वि० (सं) १-अच्छी प्रकार बचाकर रखा हुआ। २-अपने संरक्षण में लिया हुआ।
**संरक्षित राज्य** पु० (सं) वह छोटी रियासत या राज्य

जो सुरक्षा की दृष्टि से किसी बड़े राज्य के अधीन हो। (प्रोटेक्टोरेट)।
**संरक्ष्य** *वि०* (सं) संरक्षण या रक्षा के योग्य।
**सँरसी** *स्त्री०* (हिं) मछली पकड़ने का कांटा। वंसी।
**संराधन** पुं० (सं) १-प्रसन्न करना। २-पूजा करना ३-ध्यान। ४-जयजयकार। ५-किसी असंतुष्ट व्यक्ति को खुश करना। (रिकन्सिलियेशन)।
**संराधित** *वि०* (स) जिसे पूजा आदि द्वारा प्रसन्न किया गया हो।
**संराध्य** *वि०* (सं) पूजा करने योग्य।
**संलग्न** *वि०* (सं) १-मिला हुआ। सटा हुआ। २-सम्बद्ध। ३-किसी दूसरे के साथ अन्त में जुड़ा हुआ। (अपेन्डेड)।
**संलाप** पुं० (सं) १-प्रलय। २-निद्रा। ३-पक्षियों का उतरना या नीचे बैठना।
**संलिप्त** *वि०* (सं) १-लीन। भलीभाँति लिप्त। २-खूब लगा हुआ।
**संलेख** पुं० (सं) १-पूर्ण संयम (बौद्ध)। २-वह लेख जो विधिपूर्वक लिखा हुआ तथा प्रमाणिक माना जाता हो। (डीड)।
**संवत्** पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-संख्या के विचार से चलने वाली वर्ष गणना में से कोई वर्ष। ३-वह वर्ष गणना जो राजा विक्रमादित्य के समय से चली आती है।
**संवत्सर** पुं० (सं) १-वर्ष। साल। २-शिव।
**संवत्सरीय** *वि०* (सं) वार्षिक। हर वर्ष होने वाला।
**संवर** *स्त्री०* (हिं) १-स्मरण। याद। २-वृत्तान्त। हाल
**संवरण** पुं० (सं) १-चुनना। पसन्द करना। २-हटाना। दूर करना। ३-इच्छा को दबाना। ४-कन्या के विवाह के लिये वर को चुनना।
**संवरणशील** *वि०* (सं) जिसमें रोक सकने की सामर्थ्य हो।
**संवरणशेष** पुं०(सं) रोकड़बाकी। (क्लोजिंग बैलेन्स)
**संवरणस्कंध** पुं० (सं) गोदाम में वह बचा हुआ माल जो सारे दिन के लेन देन के बाद बचा हो। (क्लोजिंग स्टॉक)।
**सँवरना** *क्रि०* (हिं) १-सजना। २-बनना। ३-याद करना।
**सँवरिया** *वि०* (हिं) दे० 'साँवला। पुं० श्रीकृष्ण।
**संवर्ती-सूची** *स्त्री०* (हिं) एक ही समय में कई स्थानों से प्रकाशित होने वाली लिपि। (कॉनकरेन्ट लिस्ट)
**संवर्द्धक, संवर्धक** *वि०* (सं) बढ़ाने वाला।
**संवर्द्धन, संवर्धन** पुं० (सं) १-बढ़ाना। २-उन्नत करना। ३-पालना-पोसना।
**संवल** पुं० (सं) दे० 'संबल'।
**सँवा** *वि०* (देश) समान। सदृश। (कबीर)।
**संवाद** पुं० (सं) १-वार्तालाप। बातचीत। २-समाचार। खबर। ३-विवरण। हाल। (रिपोर्ट)। ४-प्रसंग। कथा। ५-नियुक्ति। ६-सहमति। ७-स्वीकार
**संवाददाता** पुं० (सं) १-संवाद या समाचार देने वाला। २-वह जो किसी विशेष स्थान से समाचार लिख कर समाचार पत्र में छपने के लिए भेजता हो कोरेस्पान्डेन्ट, रिपोर्टर)।
**संवादन** पुं० (सं) १-बातचीत करना। २-सहमत होना। ३-बजाना।
**संवादविलोपन** पुं० (सं) समाचार पत्रों द्वारा किसी समाचार को सामूहिक रूप से न छापना। (ब्लैक-आउट ऑफ न्यूज)।
**संवादी** *वि०* (सं) बातचीत करने वाला। २-सहमत होने वाला। पुं० संगीत में वह शब्द जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता है। तथा सहायक होता है।
**सँवार** पुं० (सं) १-छिपाना। आच्छादन। २-शब्दों के उच्चारण में कंठ का दवाव। ३-बाधा। अड़चन
**सँवारना** *क्रि०* (हिं) १-सजाना। २-ठीक करना। ३-क्रम से रखना। ४-किसी काम को सुचारु रूप से सम्पन्न करना।
**संवारित** *वि०* (सं) १-मना किया हुआ। २-ढांका हुआ। ३-रोका हुआ।
**संवार्य** *वि०* (सं) १-मना करने योग्य। २-हटाने योग्य। ३-छिपाने योग्य।
**संवावदूक** *वि०* (सं) सहमत होने वाला।
**संवास** पुं० (सं) १-खुशबू। सुगन्ध। २-श्वास के के साथ निकलने वाली दुर्गन्ध। ३-मकान। ४-सहवास। प्रसंग। ५-सार्वजनिक स्थान।
**संवाहक** पुं० (सं) १-ले जाने वाला। २-ढोने वाला ३-शरीर दबाने या मलने वाला।
**संवाहन** पुं० (सं) १-ढोना। २-चलाना। ३-शरीर की मालिश। ४-गतिमान् करना।
**संवित्** *स्त्री०* (सं) दे० 'संविद्'।
**संवित्-पत्र** पुं० (सं) संधिपत्र।
**संविद** *वि०* (सं) चेतन। चेतानुयुक्त। पुं० वादा। समझौता।
**संविदा** *स्त्री०* (सं) कुछ निश्चित शर्तों पर दो पक्षों के बीच होने वाला समझौता। (कंट्रैक्ट)।
**संविदान** *वि०* (सं) १-जानकार। २-समझदार।
**संविद्** *स्त्री०* (सं) १-चेतना। बोध। ज्ञान। २-बुद्धि। ३-संवेदन। ४-वृत्तांत। ५-नाम। ६-युद्ध। ७-सम्पत्ति। ८-समझौता ९-मिलने का पहले से ठहराया हुआ स्थान। १०-रीति। प्रथा। ११-तोषण
**संविधान** पुं०(सं) १-व्यवस्था। २-रीति। ३-रचना। ४-वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन तथा व्यवस्था होती है। (कन्स्टीट्यूशन)। ५-अनुष्ठापन

**संविधानक** पुं० (सं) अलौकिक घटना।
**संविधान-सभा** स्त्री० (सं) वह सभा या परिषद् जो किसी देश, जाति या राष्ट्र के राजनैतिक शासन की नियमावली बनाने के लिए संघटित हो (कन्स्टीच्यूएन्ट असेम्बली)।
**संविधि** स्त्री० (सं) १-विधान रीति। २-प्रबन्ध। व्यवस्था।
**संविभाजन** पुं०(सं) १-साझा। बांट। २-दोष आदि का दायित्व अलग-अलग सम्बन्धित व्यक्तियों में उचित रूप से विभाजित करना। २-बांटने के निमित्त अलग-अलग अंश करना। (अपोर्शनमेन्ट)
**संवृत्त** वि० (सं) १-आच्छादित। २-रक्षित। ३-लपेटा हुआ। ४-(गला) रुँधा हुआ। ५-सीमा किया हुआ।
**संवृद्ध** वि० (सं) १-उन्नत। २-बढ़ा हुआ।
**संवृद्धि** स्त्री०(सं) १-समृद्धि। २-किसी वस्तु के बाहरी अङ्गों में लगातार बाद में होने वाली वृद्धि। (एक्रीशन)।
**संवेग** पुं० (सं) १-उद्विग्नता। घबड़ाहट। २-पूर्ण वेग। ३-भय। ४-जोर। अतिरेक।
**संवेदन** पुं० (सं) १-सुख-दुःख आदि का अनुभव करना। जताना। २-ज्ञान।
**संवेदनवाद** पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि ज्ञान की प्राप्ति संवेदना से होती है। (सेन्सेशनेलिज्म)।
**संवेदना** स्त्री० (सं) १-मन में होने वाला बोध या अनुभव। २-सहानुभूति। किसी के कष्ट को देख कर मन में होने वाला दुःख।
**संवेदनीय** वि० (सं) १-बताया या जताया हुआ। २-अनुभव योग्य।
**संवेदित** वि०(सं) १-अनुभव किया हुआ। २-जताया हुआ।
**संवेष्टक** पुं० (सं) वह व्यक्ति जो पुस्तकें, दवाएँ तथा अन्य वस्तुएँ कागज आदि में ठीक प्रकार से लपेट कर बाहर भेजने के लिए तैयार करता हो। (पैकर)
**संवेष्टन** पुं० (सं) १-लपेटना। २-घेरना। ३-बांधना।
**संवेष्टन-व्यय** पुं० (सं) किसी माल को बाहर भेजने के लिये उसको डिब्बे में बन्द करने तथा कागज आदि में लपेट कर तैयार करने पर आने वाला व्यय। (पैकिंग चार्जेज)।
**संवेष्टिका** स्त्री० (सं) १-गत्ते या लकड़ी की पेटी आदि में बन्द किया हुआ माल। २-किसी वस्तु का कोई छोटा बंडल (पैकेट)।
**संवेष्टित** वि० (सं) जो किसी कागज आदि में बन्द या लपेटा गया हो अथवा साथ रखा गया हो। (एनक्लोज्ड)।
**संशय** पुं० (सं) १-ऐसा ज्ञान जिसमें पूरा निश्चय न हो। सन्देह। शंका। २-आशंका। डर।
**संशयात्मक** वि० (सं) जिसमें सन्देह हो। संदिग्ध।
**संशयात्मा** पुं० (सं) जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। सन्देहवादी।
**संशयालु** वि० (सं) सन्देहशील। विश्वास न करने वाला।
**संशयित** वि० (सं) संशय या दुविधा में पड़ा हुआ।
**संशयिता** पुं० (सं) संशय करने वाला।
**संशयी** वि० (सं) शक्की। सन्देह करने वाला।
**संशयोच्छेदी** वि० (सं) संशय या सन्देह दूर करने वाला।
**संशयोपमा** स्त्री० (सं) एक उपमा अलङ्कार जिसमें कई वस्तुएँ एक साथ संशय रूप में कही जाती हैं।
**संशीति** स्त्री० (सं) १-सन्देह। संशय। २-भली भांति सान पर चढ़ाना।
**संशीलन** पुं० (सं) किसी कार्य को नियमपूर्वक करना। अभ्यास करना।
**संशुद्ध** वि० (सं)१-शुद्ध किया हुआ। २-चुकाया हुआ (ऋण आदि)। ३-अपराध से मुक्त किया हुआ।
**संशुद्धि** स्त्री० (सं) १-पूरी पवित्रता। २-शरीर की सफाई।
**संशोधक** पुं० (सं) १-संशोधन करने वाला। २-चुकाने वाला। ३-बुरी से अच्छी दशा में लाने वाला।
**संशोधन** पुं० (सं) १-भूल आदि सुधारना। २-प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाव-बढ़ाव करने का सुझाव। (अमेण्डमेन्ट)। ३-ऋण का पूरा भुगतान करना।
**संशोधनीय** वि० (सं) सुधारने या ठीक करने योग्य।
**संशोधित** वि० (सं) १-शुद्ध किया हुआ। २-जिसका संशोधन हुआ हो।
**संशोधी-विधेयक** पुं० (सं) किसी अधिनियम आदि में कोई सुधार करने के लिये उपस्थित किया जाने वाला विधेयक। (अमेंडिंग बिल)।
**संशोध्य** वि० (सं) सुधारने या ठीक करने योग्य।
**संश्रय** पुं० (सं) १-मेल। संयोग। २-आश्रय। ३-सम्पर्क। सम्बन्ध। ४-अवलम्ब। ५-घर। ६-अंग ७-शरण। स्थान।
**संश्रयण** पुं० (सं) सहारा लेना। २-शरण लेना।
**संश्रयी** वि० (सं) सहारा या शरण लेने वाला।
**संश्रित** वि० (सं) १-जुड़ा हुआ। संयुक्त। २-संलग्न ३-आलिङ्गन। ४-आसरे या भरोसे पर रहने वाला
**संश्लिष्ट** वि० (सं)१-जुड़ा या सटा हुआ। २-मिश्रित ३-आलिंगित। पुं० १-राशि। ढेर। २-एक प्रकार का मण्डप।
**संश्लेष** पुं० (सं) १-मेल। मिलाप। २-भेंटना। ३-

सटाव।

संश्लेषण पुं० (सं) १-एक में मिलाना। २-लगाना ३-कार्य के कारण या नियम सिद्धान्त आदि से उनके फल अथवा परिणाम पर विचार करना। (सिन्थेसिस)।

संश्लेषित वि० (सं) १-जोड़ा या मिलाया हुआ। २-आलिंगन किया हुआ।

सस पुं० (हि) दे० 'संशय'। पुं० (देश) बरकत। वृद्धि।

ससइ पुं० (हि) संशय।

संसक्त वि० (सं) किसी की सीमा के साथ लगा हुआ (कण्टीजियस)। २-सम्बद्ध। ३-लीन।

संसक्तचेता वि० (सं) जिसका मन किसी विषय में लीन हो।

संसक्ति स्त्री० (सं) १-किसी के साथ सटे होने का भाव। २-एक जैसे तत्वों का आपस में मिलकर एकरूप होना। (कोहीज़न)। ३-सम्बन्ध। लगाव। ४-प्रवृत्ति।

संसज्जन पुं० (सं) सेना को युद्ध के लिए पूरी तरह शस्त्रों से सुसज्जित करना। (मोबिलाइजेशन)।

संसज्जित वि० (सं) युद्ध के लिए शस्त्रों आदि से सुसज्जित (सेना)। (मोबिलाइज्ड)।

संसद् स्त्री० (सं) १-सभा। समाज। राजसभा। दरबार। राज्य अथवा शासन सम्बन्धी कार्यों में सहायता देने तथा पुराने विधानों में संशोधन और नये विधान बनाने के लिए प्रजा द्वारा निर्वाचित सदस्यों की सभा। (पार्लिमेंट)।

संसय पुं० (हि) दे० 'संशय'।

संसरण पुं० (सं) १-चलना। २-सेना की अबाध यात्रा। राजमार्ग। ४-सराय। धर्मशाला। ५-भव-चक्र।

संसर्ग पु०(सं) १-मिलन। विलाप। २-साथ। संगति ३-चपला। ४-लगाव। ५-परिचय। ६-घनिष्ठता। ७-वह बिंदु जहां एक रेखा दूसरी रेखा को काटती हो। ८-स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध।

संसर्गज वि० (सं) जो संसर्ग से उत्पन्न हुआ हो।

संसर्गदोष पुं० (स) संगत से होने वाली बुराई या दोष।

संसा पुं० (हि) संशय।

संसार पुं० (सं) १-दुनिया। जगत्। मृत्युलोक। २-आवागमन। ३-मायाजाल। ४-घर। ५-निरंतर एक अवस्था में जाते रहना।

संसारचक्र पुं० (सं) १-आवागमन। भवचक्र। २-मायाजाल।

संसारबंधन पुं० (सं) दुनिया के बंधन। सांसारिक बन्धन।

संसारयात्रा स्त्री० (सं) १-जीवन का निर्वाह। २-जीव।

संसारसुख पुं० (सं) भौतिक सुख।

संसारी वि० (सं) १-संसार सम्बन्धी। लौकिक। २-२-भौतिक। ३-लोक व्यवहार में कुशल। ४-बारबार जन्म ग्रहण करने वाला।

संसिक्त वि० (सं) अच्छी तरह से सींचा हुआ। तर।

संसिद्ध वि० (सं) १-प्राप्त। २-भलीभांति किया हुआ। स्वस्थ। ४-उद्यत। ५-निपुण। ६-मुक्त।

संसिद्धि स्त्री० (सं) १-सफलता। प्राप्ति। २-स्वस्थता ३-मोक्ष। मुक्ति। ४-स्वभाव। ५-मदमस्त स्त्री।

संसूचित वि० (सं) १-प्रकट किया हुआ। २-डांटा-डपटा हुआ।

संसृति स्त्री०(सं) १-जगत्। संसार। २-आवागमन।

संसृष्ट वि० (सं) १-एक साथ उत्पन्न। २-मिश्रित। ३-रचित। ४-सगृहीत। ५-संबद्ध। ६-शामिल। ७-वमन आदि द्वारा शुद्ध किया हुआ। ८-बहुत परिचित। पुं० घनिष्ठता।

संसृष्टि स्त्री० (सं) १-एक साथ उत्पत्ति। २-मिश्रण। ३-रचना। ४-लगाव। घनिष्टता। ५-संग्रह।

संसेवित वि० (सं) १-जो भलीभांति व्यवहार में लाया गया हो। २-जिसकी अच्छी प्रकार से सेवा की गई हो।

संसौ पुं० (हि) प्राण। श्वास।

संस्करण पुं० (सं) १-ठीक करना। संस्कार करना। २-पुस्तकों की एक बार की छपाई। (एडीशन)। परिष्कृत करना।

संस्कर्ता पुं० (सं) संस्कार करने वाला।

संस्कार पुं० (सं) १-दोषादि दूर करके पवित्र करना सुधार। २-पूर्वजन्म का मन पर पड़ने वाला प्रभाव ३-हिन्दुओं में धार्मिक दृष्टि से शुद्धि तथा उन्नत करने के लिए होने वाले सोलह विशिष्ट कृत्य। ४-मन, रुचि, आचार-विचार आदि को उन्नत करने का कार्य। ५-मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया।

संस्कारक पुं० (सं) १-शुद्ध करने वाला। २-संस्कार करने वाला।

संस्कारकर्ता पुं० (सं) वह ब्राह्मण जो संस्कार करता है।

संस्कारज वि० (स) जो संस्कार से उत्पन्न हो।

संस्कारपूत वि० (सं) जो संस्कार द्वारा शुद्ध या पवित्र किया गया हो।

संस्कारवर्जित वि० (सं) (वह व्यक्ति) जिसका कोई न हुआ हो।

संस्कारहीन वि० (सं) जिसका संस्कार न हुआ।

संस्कृत वि० (स) १-शुद्ध किया हुआ। २-परमार्जित ३-जिसका संस्कार हुआ हो। ४-पकाया हुआ। स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन तथा प्रसिद्ध भाषा।

संस्कृति स्त्री० (स) १-शुद्धि। सफाई। २-संस्कार।

सुधार। ३-किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उनका मन, रुचि, आचार-विचार, कलाकौशल तथा सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है। (कलचर)।
**संस्खलित** वि० (सं) १-गिरा हुआ। च्युत। २-भूला हुआ। पु० भूलचूक।
**संस्तवन** पु० (सं) १-यशगान। २-प्रशंसा करना। ३-किसी व्यक्ति को योग्य बताकर उसकी सिफारिश करना। (कमेंडिंग)।
**संस्ताव** पु० (सं) १-एक स्वर में मिलकर गाना। २-प्रशंसा। ३-परिचय। ४-यज्ञ में स्तुति पाठ करने वाले ब्राह्मणों का अवस्थान भूमि।
**संस्ताव्य** वि० (सं) जो प्रशंसा के योग्य हो। (कमेंडेबल)।
**संस्था** स्त्री० (सं) १-स्थिति। ठहरना। २-व्यवस्था। बँधा नियम। ३-मर्यादा। ४-जत्था। सभा। ५-किसी धार्मिक, सामाजिक अथवा लोकोपकारी विशेष कार्य के लिए संघटित समाज या मण्डल। (इन्स्टिट्यूशन)। ६-किसी कार्यालय या विभाग में कार्य करने वाले सब लोगों का वर्ग (एस्टेब्लिशमेंट)। ७-परम्परा।
**संस्थागार** पु०(सं) सभा-भवन।
**संस्थान** पु० (सं) १-स्थिति। २-स्थापन। ठहराना। ३-अस्तित्व। ४-पूरा अनुसरण। ५-देश। ६-किसी राज्य में की जागीर आदि। (एस्टेट)। ७-प्रबन्ध। व्यवस्था। ८-स्वभाव। ९-चौराहा। १०-पड़ोस। ११-ढांचा। १२-साहित्य आदि का उन्नति के लिए स्थापित सभा।
**संस्थापक** पु०(सं) १-प्रवर्त्तक। स्थापित करने वाला ३-रूप या आकार देने वाला।
**संस्थापन** पु० (सं) १-सभा, मडली, संस्था आदि बनाना। २-रूप या आकार देना। ३-कोई नई बात चलाना।
**संस्थापित** वि० (सं) संस्थापन किया हुआ।
**संस्थिति** स्त्री०(सं) १-खड़ा होने का भाव। २-ठहराव जमाव। ३-ज्यों का त्यों रहने का भाव। ४-दृढ़ता ५-अनित्य। ६-व्यवस्था। ७-गुण। ८-स्वभाव। ९-मृत्यु। १०-राशि। ढेर।
**संस्फेट** पु०(सं) युद्ध। लड़ाई।
**संस्फोट** पु० (सं) युद्ध। लड़ाई।
**संस्मरण** पु०(सं) १-स्मरण। खूब याद। २-संस्कार-जन्य ज्ञान। ३-किसी व्यक्ति के सम्बन्ध की स्मरणीय घटनाएँ तथा उनका उल्लेख। (रेमिनेन्सेज)
**संस्मरणीय** वि० (सं) १-पूर्ण स्मरण करने योग्य। २-अतीत। महत्व का। ४-नाम जपने योग्य।
**संस्मारक** पु० (सं) १-स्मरण कराने वाला। २-किसी व्यक्ति की स्मृति में बनाया गया कोई स्मारक, भवन आदि।
**संहत** वि० (सं) १-मिलाया हुआ। २-ठोस। ३-एकत्र। ४-कठोर। ५-जुड़ा हुआ।
**संहति** स्त्री० (सं) १-मेल। मिलान। २-राशि। ढेर २-समूह। ३-ठोसपन। घनता।
**संहरण** पु० (सं) १-संग्रह करना। ३-गूंथना। ३-प्रलय। ४-छानना। ५-संहार करना।
**संहारना** क्रि० (हि) १-नष्ट होना। २-संहार करना
**संहार** पु० (सं) १-एकत्र करना। समेटना। २-समेट कर बांधना। गूंथना। ३-नाश। ध्वंस। ४-प्रलय। ५-मार डालना। (युद्ध आदि में)। ६-रोक ७-छोड़ा हुआ बाण फिर वापिस लौटाना।
**संहारक** पु० (सं) नाश या संहार करने वाला। २-संग्रहकर्ता।
**संहारकारी** वि० (सं) संहार या नाश करने वाला।
**संहारकाल** पु० (सं) प्रलयकाल।
**संहारना** क्रि० (हि) १-मार डालना। २-नाश करना
**संहित** वि० (सं) १-सम्बद्ध। २-सम्मिलित। ३-संयुक्त। ४-मेल में आया हुआ। ४-एकत्रित किया हुआ।
**संहिता** स्त्री० (सं) १-मिलावट। २-मिले हुए होने का भाव। ३-व्याकरण में संधि। ४-वह ग्रन्थ जिसमें पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। ५-वेदों का भाग। ६-अधिकारियों द्वारा नियम आदि का किया गया संग्रह। (कोड)।
**संहृति** स्त्री० (सं) १-संग्रह। २-नाश। ३-प्रलय। ४-रोक। ५-समाप्ति। ६-संक्षेप। खुलासा। ७-हरण।
**संहृष्ट** वि० (सं) १-पुलकित। २-जिसके भय से रोंगटे खड़े हो गये हों। भयभीत।
**संहृष्टमना** वि० (सं) जो प्रसन्न हो। प्रसन्नचित।
**स** पु० (सं) १-शिव। २-ईश्वर। ३-सर्प। ४-पक्षी ५-जीवात्मा। ६-वायु। ७-चन्द्रमा। ८-कांति। ९-चिन्ता। १०-ज्ञान। ११-सङ्गीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। १२-छन्दशास्त्र में 'सगण' का संक्षिप्त रूप।
**सइ** अव्य० (हि) से। साथ।
**सइना** स्त्री० (हि) सेना। फौज।
**सइयो** स्त्री० (हि) सखी। सहेली।
**सई** स्त्री० (हि) १-वृद्धि। बरकत। २-सरस्वती नदी ३-सखी।
**सईस** पु० (हि) साईस।
**सउँ** अव्य० (हि) सों। से।
**सक** पु० (हि) १-धाक। २-शक। ३-शक्ति।
**सकट** पु० (हि) गाड़ी। छकड़ा। शकट।
**सकत** स्त्री० (हि) १-बल। शक्ति। २-धन। सम्पत्ति अव्य० जहां तक हो सके। यथाशक्ति।

**सकता** पुं० (हि) १-बेहोशी । २-स्तब्धता । ३-कविता में विराम (।) यति भंग का दोष ।
**सकती** स्त्री० (हि) १-शक्ति । बल । २-शक्ति नामक अस्त्र ।
**सकना** क्रि० (हि) कोई काम करने में समर्थ होना । करने योग्य ।
**सकपक** स्त्री० (हि) घबड़ाहट । हिचक ।
**सकपकाना** क्रि० (हि) १-आगा-पीछा करना । घबड़ाना । २-चकित होना । ३-लज्जित होना ।
**सकर** वि० (हि) १-जिसके हाथ हों । २-सूँड़युक्त । ३-किरणयुक्त । स्त्री० (देश) शकर ।
**सकरना** क्रि० (हि) १-स्वीकृत होना । २-कबूला जाना ।
**सकरपाला** पुं० (हि) दे० 'शकरपारा' ।
**सकरा** वि० (हि) १-जूठा । २-तंग । संकीर्ण ।
**सकरुण** वि० (सं) दयाशील । जिसमें करुणा हो ।
**सकर्ण** वि० (स) कान वाला । पु० (सं) वह जो सुनता हो ।
**सकर्मक** वि० (सं) १-काम में लगा हुआ । २-व्याकरण में कर्म संयुक्त ।
**सकल** वि० (स) सब । कुल । समस्त ।
**सकलपरिसंपत्** स्त्री० (स) वह सारी परिसम्पत् जिसमें ऋणादि की रकम भी लगा ली गई हो । (ग्रास-असेट्स) ।
**सकलप्रिय** वि० (सं) जो सबको प्रिय लगे । पुं० (सं) चना ।
**सकलात** पुं० (हि) १-ओढ़ने की रजाई । दुलाई । २-भेंट । उपहार । ३-मखमली कपड़ा ।
**सकलाती** वि० (स) १-श्रेष्ठ । २-मखमल का ।
**सकलाधार** पुं० (स) शिव ।
**सकसकाना** क्रि० (हि) अत्यधिक भयभीत होना ।
**सकसना** क्रि० (हि) १-डरना । भयभीत होना । २-अड़ना । फँसना ।
**सकसाना** क्रि०(हि)१-डराना । २-भयभीत करना । ३-फसाना ।
**सका** पुं० (देश) दे० 'सक्का' ।
**सकाना** क्रि० (हि) १-हिचकना । २-शङ्का करना । ३-दुखी होना ।
**सकाम** वि० (सं) १-जिसके मन में वासना हो । २-कामुक । ३-प्रेमी । ४-फल की इच्छा से काम करने वाला ।
**सकारना** क्रि० (हि) १-स्वीकार करना । २-महाजन का अपने नाम आई हुई हुंडी मान्य करना । (टु ऑनर ए बिल ऑर ड्राफ्ट) ।
**सकारा** पु० (हि) महाजनी में वह धन जो हुण्डी सकारने या उसका समय फिर से बढ़ाने के समय लिया जाता है ।
**सकारात्मक** वि०(सं) स्वीकारात्मक ।
**सकारे** अव्य० (हि) सवेरे । तड़के ।
**सकारै** अव्य० (हि) दे० 'सकारे' ।
**सकाल** अव्य० (सं) १-सवेरे । २-ठीक समय पर ।
**सकाश** अव्य० (सं) पास । निकट । समीप ।
**सकिलना** क्रि० (हि) १-फिसलना । सरकना । २-पूरा होना । ३-सिमटना ।
**सकुच** स्त्री० (हि) सङ्कोच । लाज । शर्म ।
**सकुचना** क्रि० (हि) १-सङ्कोच करना । २-(फूलों का) बन्द होना ।
**सकुचाई** स्त्री० (हि) संकोच । लज्जा ।
**सकुचाना** क्रि० (हि) १-संकोच करना । २-सिकोड़ना । ३-लज्जित करना ।
**सकुचीला** वि० (हि) शरमीला । संकोच करने वाला ।
**सकुचौहां** वि०(सं) संकोच करने वाला ।
**सकुड़ना** क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना' ।
**सकुन** पु० (हि) १-पक्षी । चिड़िया । २-दे० 'शकुन'
**सकुनी** स्त्री० (हि) पक्षी । पखेरू ।
**सकुपना** क्रि० (हि) दे० 'सकोपना' ।
**सकुल्य** पु० (सं) सगोत्र ।
**सकूनत** स्त्री०(सं) १-पता । निवास स्थान ।
**सकूनती** वि० (हि) दे० 'सकूनती' ।
**सकृत्** अव्य० (स) १-एक बार । २-सदा । साथ पु० १-काक । २-पशुओं का मल ।
**सकेत** पुं० (हि) १-संकेत । इशारा । २-दुःख । कष्ट । वि० सङ्कीर्ण । सङ्कुचित ।
**सकेतना** क्रि० (हि) सङ्कुचित होना । सिकुड़ना ।
**सकेरना** क्रि० (हि) १-एकत्र करना । समेटना । २-बन्द करना ।
**सकेलना** क्रि० (हि) इकट्ठा करना ।
**सकेला** पु० (हि) एक प्रकार का लोहा । स्त्री० इस लोहे से बनी हुई तलवार ।
**सकैतव** वि० (सं) कपटी । धोखेबाज ।
**सकोच** पु० (हि) दे० 'संकोच' ।
**सकोड़ना** क्रि० (हि) दे० 'सिकोड़ना' ।
**सकोपना** क्रि० (हि) क्रोध या गुस्सा करना ।
**सकोपित** वि (हि) क्रुद्ध । कोपित ।
**सकोरना** क्रि० (हि) सिकोड़ना ।
**सकोरा** पुं० (हि) मिट्टी का छोटा प्याला । कसोरा ।
**सक्का** पुं० (फा) भिश्ती । सक्का ।
**सक्तु** पुं० (सं) सत्तू ।
**सक्तुकारक** पुं० (सं) सत्तू बनाने या बेचने वाला ।
**सक्तुधानी** स्त्री० (सं) सत्तू रखने का बरतन ।
**सक्थि** स्त्री० (स) १-एक गर्म स्थान । जङ्घा । २-हड्डी । ३-गाड़ी का लट्ठा ।
**सक्र** पुं० (हि) शक्र । इन्द्र ।
**सक्रधनु** पुं० (हि) मेघनाद ।
**सक्कारि** पु० (हि) मेघनाद ।

**सक्रिय** *वि०* (सं) १-जो क्रियात्मक रूप में हो। २-जिसमें क्रिया भी हो। ३-जिसमें कुछ करके दिखाया जाय।
**सक्रिय-सेवा** *स्त्री०* (सं) युद्धक्षेत्र में किसी सैनिक द्वारा किया गया कार्य या सेवा। (एक्टिव सर्विस)
**सक्षण** *वि०* (सं) हारा हुआ। पराभूत।
**सक्षम** *वि०* (सं) १-जिसमें क्षमता हो। २-समर्थ। ३-किसी कार्य के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त। (कम्पीटेन्ट)।
**सखर** पुं० (सं) एक राक्षस का नाम। *वि०* (हि) दे० 'सखरा'।
**सखरच** *वि०* (हि) अमीरों की तरह खर्च करने वाला शाहखर्च।
**सखरज** *वि०* (हि) दे० 'सखरच'।
**सखरस** पुं० (हि) मक्खन।
**सखरा** पुं० (हि) १-क्षारयुक्त। खारा। २-निखरा का उलटा। ३-कच्ची रसोई।
**सखरी** *स्त्री०*(हि) दाल रोटी आदि कच्ची रसोई। (डिं०)पहाड़ी। छोटा पहाड़।
**सखसावन** पुं० (हि) १-पालकी। २-पलंग। ३-आराम कुर्सी।
**सखा** पुं० (हि) १-साथी। २-सहयोगी। ३-मित्र। ४-साहित्य में नायक का सहचर जो उसके सुखदुःख में उसके समान ही दुःखसुख में प्राप्त होते हैं।
**सखाभाव** पुं० (सं) घनिष्टता। गहरी मित्रता।
**सखावत** *स्त्री०* (अ) १-दानशील। २-उदारता।
**सखी** *स्त्री०* (सं) १-सहेली। सहचरी। २-साहित्य में नायिका के साथ रहने वाली वह स्त्री जिससे वह अपने मन की सब बातें कहती है। एक मात्रिक छन्द का एक भेद। *वि०*(अ) दाता। दानी।
**सखीभाव** पुं० (सं) एक प्रकार की भक्ति जिसमें भक्त अपने आप को इष्ट देवता की सखी या पत्नी मानकर उसकी उपासना करता है।
**सखीसंप्रदाय** पुं०(सं) एक वैष्णव संप्रदाय जो सखी भाव को मानता है।
**सखुआ** पुं० (हि) शालवृक्ष।
**सखुन** पुं० (फ) १-बातचीत। कथन। २-उक्ति। ३-काव्य। कविता। वचन। कौल।
**सख्त** *वि०* (अ) १-कड़ा। कठोर। २-कठिन। ३-कठोर व्यवहार करने वाला।
**सख्तगीर** *वि०* (अ) छोटे से अपराध पर भी कड़ी सजा देने वाला। निर्दयी।
**सख्तघड़ी** *स्त्री०* (अ) कठिनाई का काल।
**सख्तजबान** *वि०* (अ) कटुभाषी।
**सख्तदिल** *वि०* (फ) निर्दय। जिसमें दया न हो।
**सख्तपंजा** *वि०*(अ) लालची। लोभी।
**सख्तमिजाज** *वि०* (अ) क्रोधी।
**सख्तलगाम** *वि०*(अ)१-मुहजोर। २-सरकश (घोड़ा)।
**सख्ती** *स्त्री०* (अ) १-कठोरता। कड़ाई। २-क्रूरता। कठिनता।
**सख्य** पुं० (सं) १-सखा का भाव। सखापन। २-मित्रता। दोस्ती। ३-भक्ति का वह भाव जिसमें इष्टदेव को भक्त अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।
**सख्यता** *स्त्री०* (सं) सखापन। मैत्री। दोस्ती।
**सख्यविसर्जन** पुं० (सं) मित्रता भंग हो जाना।
**सगंध** *वि०* (सं) १-जिसमें गंध हो। २-अभिमानी। पुं० सम्बन्धी।
**सग** *वि०* (हि) सगा। सम्बन्धी। अपना।
**सगड़ी** *स्त्री* (हि) छोटा सग्गड़।
**सगण** *वि०* (सं) दल या सेनायुक्त। पुं० छन्दशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है (IIS)।
**सगन** पुं० (हि) १-दे० 'सगण'। २-दे० 'शकुन'।
**सगनौती** *स्त्री०* (हि) शकुन विचारना।
**सगपन** पुं० (हि) दे० 'सगापन'।
**सगपहती** *स्त्री०* (हि) वह दाल जो साग मिलाकर पकाई गई हो।
**सगपैती** *स्त्री०* (हि) दे० 'सगपहती'।
**सगबग** *वि०* (हि) १-सराबोर। लथपथ। २-द्रवित। ३-परिपूर्ण।
**सगबगना** *क्रि०* (हि) जाग्रत होना।
**सगबगाना** *क्रि०*(हि) १-लथपथ होना। २-सकपकाना
**सगमत्ता** पुं० (हि) साग मिलाकर पकाया हुआ चावल या भात।
**सगर** *वि०*(सं) विषैला। विषयुक्त। पुं० एक सूर्यवंशी राजा का नाम।
**सगरा** *वि०* (हि) सब। तमाम। कुल। पुं० १-झील तालाब।
**सगर्भ** *वि०*(सं) सगा। सहोदर। एक ही गर्भ से उत्पन्न
**सगर्भा** *स्त्री०* (सं) १-सगी बहन। २-गर्भवती स्त्री।
**सगल** *वि०* (हि) दे० 'सकल'।
**सगा** *वि०* (हि) १-सहोदर। एक माता से उत्पन्न। जो अपने कुल का हो।
**सगाई** *स्त्री०* (हि) मंगनी। विवाह का निश्चय। २-नाता। सम्बन्ध।
**सगापन** पुं० (हि) सगा होने का भाव।
**सगारत** *स्त्री०* (हि) दे० 'सगापन'।
**सगुण** *वि०* (सं) गुण वाला। पुं० १-साकार ब्रह्म। परमात्मा का वह रूप जिसमें सत्व, रज और तम तीनों हों। २-सगुण रूपक की पूजा करने वाला संप्रदाय।
**सगुणोपासना** *स्त्री०* (सं) सगुणरूपक की उपासना।
**सगुन** पुं०(हि) १-दे०'सगुण'। २-दे०'शकुन'।

**सगुनाना** क्रि० (हिं) शकुन निकालना या देखना।
**सगुनिया** पुं० (हिं) सगुन निकालने या बताने वाला
**सगुनौती** स्त्री० (हिं) शकुन विचारने का काम।
**सगुरा** वि० (हिं) जिसके गुरु हो। जिसने गुरू से दीक्षा ले ली हो।
**सगृह** पुं० (सं) सपत्नीक। घर गृहस्थी वाला।
**सगोत** वि० (हिं) दे० 'सगोत्र'।
**सगोती** पुं० (हिं) १-सगोत्र। २-भाई-बन्धु।
**सगोत्र** पुं० (सं) १-एक ही गोत्र के लोग। २-वंश। ३-एक ही साथ पिण्डदान आदि करने वाला।
**सगौती** स्त्री० (देश) खाने का मांस।
**सग्गड़** पुं० (हिं)बोझ ढोने वाली एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं।
**सघन** वि० (सं) १-अविरल। सघन। २-ठोस। ठस
**सघनता** स्त्री० (सं) निबिड़ता। सघन होने का भाव।
**सच** वि० (हिं) १-सत्य। जैसा हो वैसा। २-ठीक। ३-वास्तविक।
**सचकित** वि० (सं) १-चकित। २-डरा हुआ।
**सचना** क्रि० (हिं) १-संचय करना। २-पूरा करना। ३-सजना।
**सचमुच** अव्य०. (हिं) १-वास्तव में। वस्तुतः। २-अवश्य। निश्चय।
**सचर** वि० (हिं) गतिशील। चलायमान। सचल।
**सचरना** क्रि० (हिं) १-फैलना। संचरित होना। २. बहुत प्रचलित होना।
**सचराचर** पुं० (सं) संसार के चर और अचर सभी पदार्थ तथा प्राणी।
**सचल** पुं० (सं) चलायमान। चर। जंगम पदार्थ। वि० १-चंचल। २-जो अचल न हो।
**सचलता** स्त्री० (सं) गतिशीलता।
**सचललवण** पुं० (सं) साँभर नमक।
**सचाई** स्त्री० (हिं) १-सत्यता। ईमानदार। २-यथार्थता।
**सचान** पुं० (हिं) बाजपक्षी।
**सचारना** क्रि० (हिं) फैलाना। संचारित करना।
**सचारु** वि० (सं) अत्यधिक सुन्दर।
**सचावट** स्त्री० (हिं) सत्यता। सचाई।
**सचिंत** वि० (सं) जिसे चिन्ता या फिकर हो।
**सचिक्कण** वि० (सं) बहुत चिकना।
**सचिक्कन** वि० (हिं) बहुत चिकना।
**सचित्त** वि० (सं) जिसका ध्यान एक ओर लगा हुआ हो।
**सचित्र** वि० (सं) जिसमें चित्र हों। जो चित्रों से संयुक्त हो।
**सचिव** पुं० (सं) १-सहायक। २-मित्र। ३-वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों तथा जो उस विभाग के मंत्री के आधीन होता है। (सेक्रेटरी)। ४-वह व्यक्ति जो निजी पत्र-व्यवहार के लिए नियुक्त किया गया हो। ५-धतूरे का पौधा।
**सचिवता** स्त्री० (सं) मंत्रित्व। सचिव होने का भाव।
**सचिवत्व** पुं० (सं) दे० 'सचिवता'।
**सचिवालय** पुं० (सं) वह भवन जिसमें किसी राज्य या प्रादेशिक सरकार के सचिवों, मंत्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते है (सेक्रिटेरियेट)।
**सची** स्त्री० (सं) १-इन्द्र की पत्नी का नाम। अमर।
**सचीनंदन** पुं० (सं) १-जयन्त। २-श्री चैतन्यदेव।
**सचु** पुं० (देश) १-सुख। आराम। २-प्रसन्न।
**सचेत** वि०(हिं) १-जो चेतनायुक्त हो। २-सावधान ३-समझदार।
**सचेतक** पुं० (सं) दे० 'चेतक'। (ह्निप)।
**सचेतन** वि० (सं) १-चेतनायुक्त। २-सावधान। चतुर। पुं० वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो।
**सचेती** स्त्री० (हिं) १-सावधानी। २-सचेत होने का भाव।
**सचेल** वि०(सं) जो वस्त्रों से आच्छादित हो।
**सचेष्ट** वि० (सं) १-जो चेष्टा करे। २-जिसमें चेष्टा हो।
**सचैल** वि० (सं) दे० 'सचेल'।
**सच्चरित** वि० (सं) जिसका चरित्र अच्छा हो।
**सच्चरित्र** वि०(सं) दे० 'सच्चरित'।
**सच्चा** वि०(हिं) १-सत्यवादी। २-यथार्थ। वास्तविक ठीक। असली। पूरा।
**सच्चाई** स्त्री० (हिं) सत्यता। सच्चा होने का भाव।
**सच्चापन** पुं० (हिं) सचाई। सत्यता।
**सच्चिक्कन** वि० (हिं) दे० 'सचिक्कण'।
**सच्चिदानंद** पुं०(सं) (सत्‌चित तथा आनन्द से संयुक्त) ब्रह्म।
**सच्छंद** वि० (हिं) दे० 'स्वच्छंद'।
**सच्छत** वि० (हिं) घायल। आहत।
**सच्छाय** वि० (सं) १-जो छायादार हो। २-चमकदार
**सच्छास्त्र** पुं० (सं) अच्छा या उत्तम शास्त्र या ग्रन्थ
**सच्छिद्र** वि० (सं) जिसमें दोष हो। छेददार।
**सच्छी** पुं० (हिं) दे० 'साक्षी'।
**सच्छील** पुं० (सं) सदाचार। वि० शीलवान।
**सज** स्त्री०(हिं) १-सजावट। २-गढ़न। बनावट। ३-शोभा। ४-सुन्दरता।
**सजग** वि० (हिं) सचेत। सावधान। होशियार।
**सजदार** वि० (हिं) सुन्दर।
**सजधज** स्त्री० (हिं) सजावट। बनाव। शृङ्गार।
**सजन** पुं० (हिं) १-सज्जन। भला आदमी। २-पति स्वामी। ३-प्रियतम। वि० (सं) जिसमें जन या लोग हों।

**सजना** क्रि० (हिं) १-सज्जित या अलंकृत होना। २-शोभित होना। ३-सजाना। ४-शस्त्र से सुसज्जित होना। पुं० (हिं) प्रियतम। पति।
**सजनी** स्त्री० (हिं) सहेली। सखी।
**सजल** वि० (सं)१-जल से पूर्ण। २-अश्रुपूर्ण (नेत्र) आंसुओं से भरा हुआ (नेत्र)।
**सजलनयन** वि० (सं) जिसकी आंखें अश्रुपूर्ण हों।
**सजवना** क्रि० (हिं) सजाना।
**सजवाई** स्त्री० (हिं) १-सजाने का भाव। २-सजाने की मजदूरी।
**सजवाना** क्रि० (हिं) सुसज्जित करवाना।
**सज़ा** स्त्री० (फा)१-दण्ड।२-कारागार में बन्द करने का दण्ड।
**सजाइ** स्त्री० (हिं) सजा। दण्ड।
**सजाई** स्त्री० (हिं) १-सजाने की मजदूरी। २-सजाने की क्रिया।
**सज़ा-ए-मौत** स्त्री० (फा) प्राणदण्ड। मौत की सजा।
**सजागर** वि० (सं) दे० 'सजग'।
**सजात** वि० (सं) १-जो साथ में उत्पन्न हुआ हो। २-सजाति।
**सजातकाम** वि० (सं)जो सम्बन्धियों पर शासन करने का इच्छुक।
**सजातीय** वि० (सं) एक ही जाति या वर्ग के (लोग)।
**सजातीयकर्म** पुं० (सं) किसी क्रिया का वह काम जिसका अर्थ वही होता है जो क्रिया का हो जैसे-दौड़ दौड़ना। (कॉग्नेट ऑब्जेक्ट)।
**सजात्य** वि० (सं) एक ही वर्ग या जाति का।
**सजान** पुं० (हिं) १-ज्ञाता। जानकार। २-चतुर। होशियार।
**सजाना** क्रि० (हिं) १-वस्तुओं को यथाक्रम रखना। २-नवीन वस्तुएँ जोड़ या रखकर सुन्दर बनाना। अलंकृत करना।
**सजानि** वि० (सं) पत्नी के साथ। सपत्नीक।
**सजाय** स्त्री० (देश) दे० 'सज़ा'।
**सजायाफ़्ता** वि० (फा) जो कैद की सजा पा चुका हो
**सजायाब** वि० (फा) १-दण्डनीय। २-जो कानून के अनुसार दण्ड पा चुका हो।
**सजाव** स्त्री० (हिं) एक प्रकार का दही।
**सजावट** स्त्री० (हिं)१-सजे हुए होने की क्रिया या भाव २-तैयारी। ३-शोभा।
**सजावन** पुं० (हिं) दे० 'सजावट'।
**सजावल** पुं० (तु०) १-सरकारी कर वसूल करने वाला अधिकारी। तहसीलदार। २-सिपाही। जमादार। राजकर्मचारी।
**सजीउ** वि० (हिं) दे० 'सजीव'।
**सजीला** वि०(हिं) १-सजधजकर या बनठनकर रहने वाला। छैला। २-सुन्दर।
**सजीव** वि०(सं) १-जिसमें जीवन या प्राण हों। २-जिसमें तेज या ओज हो।
**सजीवन** पुं० (हिं) संजीवन नामक बूटी।
**सजीवनबूटी** स्त्री० (हिं) दे० 'संजीवनबूटी'।
**सजीवनमूल** पुं० (हि) संजीवन नामक बूटी।
**सजीवनी** स्त्री० (हि) वह कल्पित मन्त्र जिसके प्रभाव से मृत प्राणी भी जी उठता है।
**सजुग** वि० (हि) सजग। सचेत।
**सजूरी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की मिठाई।
**सजोना** क्रि० (हि) दे० 'सजाना'।
**सजोयल** वि० (हि) दे० 'संजोइल'।
**सजोषण** पुं० (सं) बहुत दिनों से चली आई हुई समान प्रीति।
**सज्ज** वि० (सं) १-तैयार किया हुआ। २-ठीक किया हुआ। ३-सब प्रकार से लैस।
**सज्जन** पुं०(स) सबके साथ अच्छा तथा उचित व्यवहार करने वाला। २-प्रियतम।
**सज्जनता** स्त्री० (सं) सज्जन होने का भाव। भलमनसाहत।
**सज्जनताई** स्त्री० (हिं) सज्जनता।
**सज्जा** स्त्री० (सं) १-वेशभूषा। २-सजावट। स्त्री० (हिं) १-शय्या। २-शय्यादान। वि० दाहिना।
**सज्जाद** वि० (अ) पूजा करने वाला। उपासक।
**सज्जादा** पुं० (अ) १-वह कपड़ा जिस पर मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २-आसन। ३-पीरों या फकीरों की गद्दी।
**सज्जादानशीं** पुं० (अ) १-मुसलमान पीर या बड़ा फकीर। २-गद्दी या तकिया लगाकर बैठने वाला
**सज्जित** वि० (सं) १-सजा हुआ। अलंकृत। २-आवश्यक वस्तुओं या सामग्रियों से युक्त।
**सज्जी** स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध क्षार जिससे वस्तुएँ धोई या साफ की जाती हैं।
**सज्जीखार** पुं० (हिं) सज्जी।
**सज्जीबूटी** स्त्री० (हिं) एक वनस्पति जिससे सज्जी निकाली जाती है।
**सज्ञान** वि० (स) १-चतुर। २-ज्ञानवान्। बुद्धिमान
**सज्य** वि० (सं) ज्यायुक्त (धनुष)।
**सज्या** स्त्री० (हि) १-शय्या। २-सज्जा।
**सटक** स्त्री० (हिं) १-सटकने की क्रिया या भाव। २-धीरे से चल देना। ३-हुक्का पीने की नली।
**सटकना** क्रि० (हि) धीरे से खिसक जाना। चम्पत होना। २-अनाज निकालने के लिए बालों को कूटना।
**सटकाना** क्रि० (हि) १-छड़ी या कोड़े से मारना। २-सड़-सड़ कर करके हुक्का पीना।
**सटकार** स्त्री० (हि) सटकने की क्रिया या भाव।
**सटकारना** क्रि० (हि) १-छड़ी या कोड़े से मारना।

२-फटकारना ।
**सटकारा** *वि०* (हि) चिकना, मुलायम तथा लम्बा (बाल) ।
**सटकारी** *स्त्री०* (हि) लचकदार पतली छड़ी ।
**सटक्का** पुं० (हि) दौड़ । झपट ।
**सटना** *क्रि०* (हि) १-चिपकना । २-इस प्रकार आपस में मिलना कि तल एक दूसरे से मिल जायँ । ३-मारपीट होना ।
**सटपट** स्त्री० (हि) १-चकपकाहट । २-शील । संकोच ३-संकट ।
**सटपटाना** *क्रि०* (हि) १-सटपट की ध्वनि होना । २-सटपट शब्द होना ।
**सटरपटर** *वि०*(हि) १-तुच्छ । छोटामोटा । २-साधारण या मामूली । *स्त्री०* १-उलझन का काम । २-व्यर्थ का या तुच्छ काम ।
**सट-सट** *अव्य०*(हि) १-शीघ्र । तुरन्त । २-'सट' शब्द सहित ।
**सटा** *स्त्री०* (हि) १-जटा । २-शिखा । ३-केशर ।
**सटाक** पुं० (हि) 'सट' शब्द ।
**सटाकी** *स्त्री०* (हि) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी
**सटान** *स्त्री०* (हि) १-मिलान । २-दो वस्तुओं के सटने या मिलने का स्थान । जोड़ ।
**सटाना** *क्रि०* (हि) १-दो वस्तुओं को मिलाना या जोड़ना । २-लाठी या डंडे से लड़ाई करना ।
**सटियल** *वि०* (देश) घटिया । रद्दी ।
**सटिया** *स्त्री०* (हि) १-सोने या चांदी की एक प्रकार की चूड़ी । २-मांग में सिन्दूर भरने की चांदी की कलम । ३-दे० 'साटी' ।
**सटीक** *वि०* (सं) जिसमें मूल के अतिरिक्त टीका भी हो । व्याख्यासहित । *वि०* (हि) बिलकुल ठीक ।
**सटोरिया** पुं० (हि) सट्टेबाज ।
**सट्ट** पुं० (सं) दरवाजे की चौखट में दोनों ओर की लकड़ियां । बाजू । (हि) सट्टा ।
**सट्टक** पुं० (सं) १-प्राकृत भाषा में रचित छोटा रूपक २-जीरा मिला हुआ मट्ठा ।
**सट्टा** पुं० (देश) १-इकरारनामा । २-सामान्य व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्री का वह भेद जो केवल तेजो मन्दी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है । (स्पेकुलेशन) । ३-हाट ।
**सट्टा-बट्टा** पुं० (हि) १-मेल मिलाप । २-चालबाजी । ३-अनुचित सम्बन्ध ।
**सट्टी** *स्त्री०* (हि) वह बाजार जिसमें एक ही प्रकार की वस्तुएँ कुछ निश्चित समय के लिए आकर बिकती हैं । हाट ।
**सट्टेबाज** पुं० (हि) वह जो केवल तेजी-मन्दी के विचार से खरीद-बिकी करता हो । (स्पेक्यूलेटर)
**सठ** पुं० (हि) दे० 'शठ' ।
**सठता** *स्त्री०* (हि) १-शठता । २-मूर्खता ।
**सठियाना** *क्रि०* (हि) १-साठ वर्ष का होना । २-बुढ़ापे के कारण बुद्धि का ठीक काम न देना ।
**सड़क** *स्त्री०* (हि) आने-जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग ।
**सड़न** *स्त्री०* (हि) सड़ने की क्रिया या भाव । गलन ।
**सड़ना** *क्रि०* (हि) १-जल मिले पदार्थ में खमीर उठ आना । २-किसी वस्तु में ऐसा विकार होना कि वह गलने लगे और उसमें दुर्गन्ध आने लगे । ३-हीन अवस्था में पड़ा रहना ।
**सड़सठ** *वि०* (हि) साठ और सात । (६७) ।
**सड़ान** *स्त्री०*(हि) १-सड़ने की दुर्गन्ध । २-सड़ने की क्रिया या भाव ।
**सड़ाना** *स्त्री०* (हि) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना ।
**सड़ायँध** *स्त्री०* (हि) किसी वस्तु के सड़ने पर उसमें से आने वाली दुर्गन्ध ।
**सड़ाव** पुं० (हि) सड़ने की क्रिया या भाव । सड़ान ।
**सड़ासड़** *अव्य०* (हि) १-'सड़सड़' शब्द के साथ । २-शीघ्रता से ।
**सड़ियल** *वि०* (हि) १-सड़ा हुआ । २-खराब । ३-निकृष्ट ।
**सण** पुं० (हि) दे० 'शण' ।
**सणतूल** पुं० (हि) सन का रेशा ।
**सणसूत्र** पुं० (हि) सन की बनी हुई रस्सी ।
**सत** *वि०* (हि) १-सत्य । सच । २-वास्तविक । यथार्थ पुं० १-सत्यतापूर्ण धर्म । जीव । ३-किसी पदार्थ का सारभाग ।
**सतकार** पुं०(हि) दे० 'सत्कार' । आदर । सम्मान ।
**सतकारना** *क्रि०* (हि) आदर या सत्कार करना ।
**सतकोन** *वि०* (हि) सात कोनों वाला ।
**सतगुरु** पुं०(हि) १-परमात्मा । २-सच्चा और अच्छा गुरु ।
**सतजुग** पुं० (हि) सत्ययुग ।
**सतत** *अव्य०* (सं) १-सदा । सर्वदा । २-निरंतर । लगातार ।
**सततगति** पुं० (सं) हवा । पवन ।
**सततज्वर** पुं० (सं) एक दिन में दो बार आने वाला ज्वर ।
**सततदुर्गत** *वि०* (सं) जो सदा कष्ट में रहता हो ।
**सतदंता** *वि०* (हि) सात दांत वाला (पशु) ।
**सतदल** पुं० (हि) १-कमल । २-सौ दलों वाला कमल
**सतनजा** पुं० (हि) सात प्रकार के भिन्न-भिन्न अन्नों का मेल ।
**सतनु** *वि०* (सं) देह या शरीर वाला ।
**सतपतिया** *स्त्री०*(हि) १-सात पति करने वाली स्त्री । २-एक प्रकार की तोरई । ३-छिनाल ।

**सतपत्र** पुं० (हिं) कमल ।
**सतपरब** पुं० (हिं) बांसा ।
**सतपुतिया** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की तरोई ।
**सतफेरा** पुं० (हिं) विवाह के अवसर पर होने वाला सतपदी नामक कर्म ।
**सतभाव** पुं० (हिं) १-सद्भाव । २-सचाई । ३-सीधापन ।
**सतभौंरी** स्त्री० (हिं) दे० 'सतफेरा' ।
**सतमख** पुं० (हिं) १-इन्द्र । २-सौ यज्ञ करने वाला ।
**सतमासा** पुं० (हिं) १-गर्भ के सातवें मास में उत्पन्न होने वाला शिशु । २-गर्भदान के सातवें महीने में होने वाली एक रस्म ।
**सतमूली** स्त्री० (हिं) शतावरी । शतावर ।
**सतयुग** पुं० (हिं) सत्ययुग ।
**सतरंगा** वि० (हिं) सात रङ्गों वाला । पुं० (हिं) इन्द्र-धनुष ।
**सतरंज** स्त्री० (हिं) दे० 'शतरंज' ।
**सतरंजी** स्त्री० (हिं) दे० 'शतरंजी' ।
**सतर** स्त्री० (अ) १-लकीर । रेखा । २-पंक्ति । कतार । ३-ओट । ४-स्त्री या पुरुष की गुप्त इन्द्रिय । वि० (अ) १-वक्र । टेढ़ा । २-क्रुद्ध । नाराज ।
**सतरपोश** वि० (अ) (वह वस्तु) जिससे शरीर ढका जाय या लज्जा निवारण की जाय ।
**सतरपोशी** स्त्री० (अ) १-तन ढकना । २-लज्जा निवारण करना ।
**सतरह** वि० (हिं) दे० 'सत्तरह' ।
**सतराना** क्रि० (हिं) १-क्रोध करना । कोप करना । २-कुढ़ना । चिढ़ना ।
**सतराहट** स्त्री० (हिं) क्रोध । कोप । गुस्सा ।
**सतरौंहाँ** वि० (हिं) १-क्रुद्ध । कुपित । २-कोपसूचक ।
**सतर्क** वि० (सं) १-दलील के साथ । तर्कयुक्त । २-सचेत । सावधान ।
**सतर्कता** स्त्री० (सं) १-सतर्क होने का भाव । २-सावधानी ।
**सतर्पना** क्रि० (हिं) १-सन्तुष्ट करना । २-भलीभांति तृप्त करना ।
**सतलज** स्त्री० (हिं) पंजाब की पांच नदियों में से एक नदी का नाम ।
**सतलड़ी** स्त्री० (हिं) सात लड़ी वाली माला या हार ।
**सतलरी** स्त्री० (हिं) दे० 'सतलड़ी' ।
**सतवंती** स्त्री० (हिं) सती । पतिव्रता ।
**सतसंग** पुं० (हिं) दे० 'सतसंगति' ।
**सतसंगति** स्त्री० (हिं) अच्छी संगति ।
**सतसंगी** वि० (हिं) अच्छी संगति में रहने वाला ।
**सतसई** स्त्री० (हिं) किसी कवि के सात-सौ पद्यों का संग्रह । सप्तशती ।
**सतह** स्त्री० (अ) १-किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल (सर्फेस) । २-रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लम्बाई चौड़ाई हो पर मोटाई न हो ।
**सतहत्तर** वि० (सं) सत्तर और सात । (७७) ।
**सतांग** पुं० (हिं) रथ । यान ।
**सतानंद** पुं० (सं) गौतमऋषि के पुत्र का नाम ।
**सताना** क्रि० (हिं) १-कष्ट पहुंचाना । २-तङ्ग करना ।
**सतार** वि० (स) तारों वाला । ताराओं से युक्त । पुं० (जैन) ग्यारहवाँ स्वर्ग ।
**सतालू** पुं० (हिं) दे० 'शफतालू' ।
**सतावना** क्रि० (हिं) दे० 'सताना' ।
**सतावर** स्त्री० (हिं) एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम आते हैं । शतमूली ।
**सतासी** वि० (हिं) अस्सी और सात (८७) ।
**सति** पुं० (हिं) दे० 'सत्य' । स्त्री० (हिं) १-अंत । २-नाश । ३-दान ।
**सतिवन** पुं० (हिं) एक सदाबहार का बड़ा वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम आती है । सप्तपर्णी ।
**सती** वि० (सं) १-पतिव्रता । पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष का ध्यान मन में न लाने वाली । स्त्री० १-पतिव्रता स्त्री । २-पति की मृत देह के साथ जल मरने वाली स्त्री । ३-मादा (पशु) ।
**सतीचौरा** पुं० (हिं) वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारकस्वरूप बनाया जाता है ।
**सतीत्व** पुं० (सं) सती होने का भाव । पतिव्रत्य ।
**सतीत्वहरण** पुं० (सं) किसी सदाचारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक सम्भोग करना ।
**सतीन** पुं० (सं) १-एक प्रकार की मटर । २-अपराजिता । ३-बांस ।
**सतीपन** पुं० (हिं) सतीत्व ।
**सतीपुत्र** पुं० (सं) साध्वी स्त्री का पुत्र ।
**सतीर्थ** पुं० (सं) एक ही गुरू से पढ़ने वाला । सहपाठी ब्रह्मचारी । वि० तीर्थयुक्त ।
**सतीव्रत** पुं० (सं) पतिव्रत्य ।
**सतीव्रता** स्त्री० (सं) पतिव्रता स्त्री ।
**सतुआ** पुं० (हिं) सत्तू ।
**सतुआन** स्त्री० (हिं) दे० 'सतुआ-संक्रांति' ।
**सतुआ-संक्रांति** स्त्री० (हिं) मेष की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है ।
**सतुष** पुं० (सं) तुष या भूसीयुक्त अन्न । वि० भूसी वाला ।
**सतून** पुं० (फा) स्तम्भ । खम्भा ।
**सतूना** पुं० (हिं) बाजपक्षी की झपट ।
**सतृट** वि० (सं) दे० 'सतृष्ण' ।
**सतृष** वि० (सं) दे० 'सतृष्ण' ।
**सतृष्ण** वि० (सं) १-तृष्णा से युक्त । २-प्यासा । ३-इच्छुक ।

सतेजा वि० (सं) तेजस्वी। शक्तिसम्पन्न।
सतोखना क्रि० (हि) १-सन्तुष्ट करना।
सतोगुण पुं० (हि) दे० 'सत्त्वगुण'।
सतोगुणी वि० (हि) सत्त्वगुण वाला। सात्विक।
सतौसर पुं० (हि) सतलड़ा।
सत् वि० (सं) १-सत्य। २-यथार्थ। ३-उचित। ४-उपस्थित। ५-वर्तमान। ६-साधारण। ७-सुन्दर। ८-विद्वान। पुं० १-सज्जन पुरुष। २-यथार्थता। ३-असत्यता।
सत्कथा स्त्री० (सं) अच्छी बात या कथा।
सत्करण पुं० (सं) १-सत्कार करना। २-मृतक की अन्त्येष्टि करना।
सत्कर्तव्य वि०(सं)१-सत्कार करने योग्य। २-जिसका सत्कार करना हो।
सत्कर्ता पुं० (सं) १-सत्कार करने वाला। २-सत्कर्म करने वाला।
सत्कर्म पुं० (सं) १-पुण्य कर्म। २-अच्छा संस्कार। ३-अच्छा काम।
सत्कर्मा वि० (सं) पुण्य या अच्छा कर्म करने वाला।
सत्कला स्त्री० (सं) ललितकला।
सत्कवि पुं० (सं) श्रेष्ठ कवि। सुकवि।
सत्कायदृष्टि स्त्री० (सं) बौद्धमत के अनुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग, शरीर आदि के बने रहने का सिद्धांत।
सत्कार पुं० (सं) १-आदर या सम्मान। आतिथ्य मेहमानदारी। ३-धन आदि देकर किया जाने वाला सम्मान।
सत्कार्य वि० (सं) सत्कार करने योग्य। पुं० १-उत्तम काम।
सत्कार्यवाद पुं०(सं) सांख्य का एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह बताया गया है कि बिना कारण कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।
सत्कीर्ति स्त्री० (सं) यश। नेकनामी।
सत्कुल पुं० (सं) उत्तम कुल।
सत्कुलीन वि० (सं) बहुत अच्छे वंश का।
सत्कृत वि० (सं) १-अच्छी तरह किया हुआ। २-अलंकृत। ३-आदृत। पुं० १-सत्कार। आदर। २-सत्कर्म।
सत्कृति पुं० (सं) वह जो अच्छे काम करता हो। सत्कर्मी। स्त्री० (हि) उत्तम कार्य।
सत्क्रिया स्त्री० (सं) १-पुण्य। २-आदर। सत्कार। ३-आयोजन।
सत्त पुं० (हि) १-सार भाग। सत। २-सत्व।
सत्तम वि० (सं) १-सर्वश्रेष्ठ। २-परम पूज्य। ३-परम साधु।
सत्तर वि० (हि) साठ और दस। (७०)।
सत्तरह वि० (हि) दस और सात।
सत्तांतरित प्रदेश पुं०(सं) वह प्रदेश जिसका शासन किसी दूसरे देश को सौंप दिया गया हो। (सीडेड टेरिटरी)।
सत्ता स्त्री०(सं) १-अस्तित्व। २-शक्ति। सामर्थ्य। ३-वह शक्ति जो अधिकार, बल या सामर्थ्य का उपभोग करके अपना काम करती है। (पावर)।
सत्ताइस वि० (हि) बीस और सात।
सत्ताधारी पुं० (सं) वह अधिकारी जिसके हाथ में सत्ता हो।
सत्तानवे वि० (हि) नब्बे और सात।
सत्तार पुं० (अ) १-दोष छिपाने वाला। २-ईश्वर। ३-परदा डालने वाला।
सत्तावन वि० (हि) पचास और सात। ५७।
सत्तासी वि० (हि) अस्सी और सात। ८७।
सत्तू पुं० (हि) भुने हुए चने, जौ आदि का आटा।
सत्त्र पुं० (सं) १-यज्ञ। घर। ३-सदावर्त। ४-निरन्तर कुछ दिनों तक होने वाला संसद का एक बार का अधिवेशन (सेशन)। ५-वह नियत काल जिसमें कोई प्रतिनिधि या कार्यकर्ता काम करता है (टर्म)। ६-तालाब। ७-जङ्गल। ८-परिवेषण। ९-धोखा।
सत्त्व पुं० (सं) १-सार। मूलतत्व। २-जीवन। ३-स्वभाव। धर्म। ४-हवा। ५-प्राणी। ६-अस्तित्व ७-पनाह। ८-विशेषता। ९-संज्ञा। नाम। १०-धन। ११-जलाशय। १२-जङ्गल। १३-यज्ञ। १४-दान। १५-प्रकृति के तीन गुणों में से एक का नाम
सत्त्वकर्ता पुं० (सं) सृष्टिकर्ता।
सत्त्वगुण पुं० (सं) प्रकृति के तीन गुणों में से एक का नाम।
सत्त्वगुणी वि० (सं) जिसमें सत्त्वगुण हो।
सत्त्वधाम पुं० (सं) विष्णु।
सत्त्वपति पुं० (सं) प्राणियों का स्वामी।
सत्त्वप्रधान वि० (सं) दे० 'सत्त्वगुणी'।
सत्त्वलक्षणा स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसमें गर्भवती होने के लक्षण हों।
सत्त्वलोक पुं० (सं) जीवलोक।
सत्त्वशाली वि० (सं) १-जिसमें उत्साह हो। २-साहसी।
सत्त्वसंपन्न वि० (सं) जिसका चित्त शांत हो।
सत्त्ववान वि०(सं) १-जो जीवित हो। २-साहसयुक्त ३-जो मौजूद हो।
सत्पथ पुं० (सं) १-सदाचार। २-उत्तम मार्ग। ३-उत्तम सिद्धांत।
सत्पात्र पुं० (सं) १-अच्छा वर। २-दान आदि ग्रहण करने योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति।
सत्पुत्र पुं० (सं) योग्य पुत्र जो पितरों के निमित्त कर्म करे।

सत्पुरुष पुं० (सं) सदाचारी पुरुष ।
सत्यंकार पुं० (सं) १-वायदा या वचन पूरा करना २-वायदा पूरा करने की जमानत के रूप में कुछ पेशगी देना ।
सत्य वि०(सं) १-यथार्थ । ठीक । २-वास्तविक । स्त्री० १-यथार्थ तत्व । २-न्यायसंगत तथा धर्म की बात ३-पारमार्थिक सत्ता । ४-पीपल का पेड़ । ५-विष्णु ६-शपथ । ७-प्रतिज्ञा । ८-चार युगों में से पहला।
सत्यकाम वि० (सं) सत्य का प्रेमी ।
सत्यघ्न वि० (सं) वचन तोड़ने वाला ।
सत्यजित् पुं० (सं) १-यज्ञ । २-वासुदेव के एक भतीजे का नाम । २-एक दानव।
सत्यज्ञ वि० (सं) सत्य को जानने वाला ।
सत्यतः अव्य० (सं) वास्तव में । सचमुच ।
सत्यता स्त्री० (सं) १-वास्तविकता । २-सचाई । ३-नित्यता ।
सत्यदर्शी वि० (सं) जो सत्यासत्य का विवेक करे ।
सत्यदृक् वि० (सं) दे० 'सत्यदर्शी' ।
सत्यधन वि० (सं) जिसका सत्य ही धन हो ।
सत्यधर्म पुं० (सं) १-मनु का एक पुत्र । १-शाश्वत सत्य ।
सत्यनामा वि० (सं) जिसका नाम सही हो ।
सत्यनारायण पुं०(स) विष्णु भगवान का एक नाम
सत्यनिष्ठ वि० (सं) सदा सत्य पर दृढ़ रहने वाला ।
सत्यपर वि० (सं) ईमानदार ।
सत्यपरायण वि० (सं) सच्चा ।
सत्यपारमिता स्त्री० (सं) सत्य की (सिद्धि) ।
सत्यपूत वि० (सं) सत्य द्वारा पवित्र किया हुआ ।
सत्यप्रतिज्ञ वि० (सं) अपनी प्रतिज्ञा या बात पर दृढ रहने वाला ।
सत्यभामा स्त्री० (सं) श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में एक ।
सत्यभेदी वि० (सं) प्रतिज्ञा तोड़ने वाला ।
सत्ययुग पुं० (सं) पौराणिक काल की गणना के अनुसार चार युगों में से पहला।
सत्ययुगी वि० (सं) १-सतयुग का । २-बहुत प्राचीन ३-सच्चरित्र । धर्मात्मा ।
सत्यरत वि० (सं) सच्चा । ईमानदार ।
सत्यलोक पुं०(सं) सबसे ऊपर का लोक । जहां ब्रह्मा निवास करता है ।
सत्यवक्ता वि० (सं) सदा सत्य बोलने वाला ।
सत्यवचन पुं० (सं) १-सच बोलना । २-प्रतिज्ञा । वायदा ।
सत्यवती स्त्री० (सं) मत्स्यगंधा नामक धीवर कन्या । २-नारद की पत्नी का नाम ।
सत्यवाक पुं० (सं) सच बोलना ।
सत्यवाक् स्त्री०(सं) दे० 'सत्यवचन' । पुं० १-प्रतिज्ञा। २-सत्य कथन ।
सत्यवाक्य पुं० (सं) सत्यवचन ।
सत्यवाचक पुं०(सं) सदा सच बोलने वाला ।
सत्यवाद पुं० (सं) १-सत्य बोलना । २-धर्म पर दृढ़ रहना ।
सत्यवादी वि०(सं) १-सत्य कहने वाला । २-प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला । ३-धर्म पर दृढ़ रहने वाला ।
सत्यवान वि०(सं) १-सत्य बोलने वाला । २-वचन का पालन करने वाला । पुं० शाल्वदेव के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम ।
सत्यवाहन वि०(सं) धर्म पर दृढ़ रहने वाला ।
सत्यवृत्त पुं०(सं) सदाचार । वि० सदाचारी ।
सत्यवृत्ति स्त्री० (सं) सत्य आचरण ।
सत्यव्रत पुं०(सं) १-सत्य बोलने का नियम या प्रतिज्ञा २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । वि० सत्य के नियम का पालन करने वाला ।
सत्यशील वि० (सं) सच्चा ।
सत्यसंकल्प वि० (सं) दृढ़ संकल्प ।
सत्यसंगर पुं० (सं) कुबेर । वि० प्रतिज्ञा का पालन करने वाला ।
सत्यसंध वि०(सं) अपने वचन का पालन करने वाला
सत्यसंधा स्त्री० (सं) द्रौपदी ।
सत्यसंरक्षण पुं० (सं) प्रतिज्ञा का पालन करना ।
सत्यसाक्षी पुं० (सं) वह गवाह जो विश्वसनीय हो
सत्यसार वि० (सं) बिलकुल सच ।
सत्यस्थ वि० (सं) अपने वचन पर अड़ने वाला ।
सत्यस्वप्न वि० (सं) जिसके स्वप्न सच्चे निकलते हों
सत्या स्त्री० (सं) १-सत्यता । २-दुर्गा । ३-सत्यवती ४-सीता ।
सत्याग्रह पुं० (सं) किसी सत्य अथवा न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शान्तिपूर्वक हठ करना ।
सत्याग्रही पुं० (सं) वह जो सत्याग्रह करता हो ।
सत्यात्मक वि० (सं) जिसका सार सत्य हो ।
सत्यात्मज पुं० (सं) सत्यभामा के पुत्र का नाम ।
सत्यात्मा पुं० (सं) वह व्यक्ति जो सदा सच बोलता हो । सत्यवादी ।
सत्यानास पुं० (हि) सर्वनाश । बरबादी । ध्वंस ।
सत्यानासी वि० (हि) १-सर्वनाशी । २-अभागा ।
सत्यानुरक्त वि० (सं) सत्यवादी ।
सत्यापन पुं० (सं) १-यह कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है (सर्टिफिकेशन) । २-मिलान या जांच करके सत्यता सिद्ध करना । (वेरिफिकेशन) । ३-लेख आदि पर ठीक होने की बात लिखकर प्रमाणित करना । (एटेस्टेशन) ।
सत्यालापी वि० (सं) सत्यवादी ।
सत्येतर पुं० (सं) झूठ । असत्यता ।
सत्र पुं०(सं) दे० 'सत्त्र' ।

**सत्रन्यायालय** पुं० (सं) वह बड़ी अदालत जहां जूरी की सहायता से हत्या, डाकेजनी, आदि के फौजदारी के मामलों की सुनवाई होती है। (सैशनकोर्ट)
**सत्रप** वि० (सं) शर्मीला। लज्जाशील। संकोची। पुं० दे० 'त्रप'।
**सत्रह** वि० (हि) दस और सात। सत्तरह।
**सत्रहीं** स्त्री० (हि) मृत्यु के बाद सत्रहवें दिन किया जाने वाला कृत्य।
**सत्रावसान** पुं० (सं) विधान सभाओं आदि के अधिवेशन को अनिश्चित काल के लिये अधिकारक रूप में स्थगित करना। (प्रोरोगेशन)।
**सत्रु** पुं० (सं) दे० 'शत्रु'।
**सत्रुघन** पुं० (हि) दे० 'शत्रुघ्न'।
**सत्रुहन** पुं० (हि) दे० 'शत्रुघ्न'।
**सत्व** पुं० (हि) दे० 'सत्त्व'।
**सत्वर** अव्य० (सं) शीघ्र। जल्दी। तुरन्त।
**सत्संग** पुं० (सं) १-साधुओं या सज्जनों का संग, साथ। २-वह समाज जिसमें धर्म की चर्चा हो।
**सत्संगति** स्त्री० (सं) दे० 'सत्संग'।
**सत्संसर्ग** पुं० (सं) दे० 'सत्संग'।
**सत्सन्निधान** पुं० (सं) दे० 'सत्समागम'।
**सत्समागम** पुं० (सं) सज्जन या भले आदमियों का संसर्ग।
**सत्सहाय** पुं० (सं) अच्छा दोस्त या मित्र। वि० जिस के नेक साथी या मित्र हों।
**सथर** स्त्री० (हि) भूमि। पृथ्वी।
**सथिया** पुं० (हि) १-स्वस्तिक का चिह्न। २-भारतीय ढङ्ग से फोड़ों की चीरफाड़ करने वाला।
**सथूत्कार** वि० (सं) बात करते समय जिसके मुँह से थूक निकलता हो। पुं० बात करते समय मुँह से थूक निकलना।
**सद** पुं० (सं) १-सभा। २-रहने का स्थान। अव्य० (हि) तुरन्त। तत्काल। वि० (हि) १-ताजा। २-नवीन। नया। स्त्री० (हि) आदत। प्रकृति।
**सदई** अव्य० (हि) १-मण्डली। सभा। २-एक प्रकार का छोटा मण्डप। ३-एक गड़रिये का गीत।
**सदका** पुं० (अ) १-निछावर। उतारा। २-दान। ३-उतारन। उतारा। ४-अनुग्रह। प्रसाद।
**सदन** पुं० (सं) १-घर। मकान। २-वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार तथा नियम, विधान आदि बनाने वाली सभा का अधिवेशन होता है। ३-उक्त स्थान पर होने वाले लोगों का समूह (हाउस) ४-स्थिरता। ५-थकावट। ६-सभा।
**सदमा** पुं० (अ) १-आघात। चोट। २-मानसिक आघात। ३-नुकसान। ४-धक्का।
**सदय** वि० (सं) जिसके मन में दया हो।
**सदयहृदय** वि० (सं) रहमदिल। दयावान।
**सदर** वि० (अ) प्रधान। मुख्य। पुं० केंद्रस्थल। २-सभापति। वि० (सं) डरा हुआ।
**सदरअमीन** पुं० (अ) वह अधिकारी जो न्यायाध्यक्ष के नीचे काम करता हो।
**सदरआला** पुं० (अ) वह न्यायाध्यक्ष जो किसी दूसरे न्यायाध्यक्ष के आधीन हो। (सब-जज)।
**सदरजहाँ** पुं० (अ) एक जिन जिसकी मुसलमान स्त्रियाँ मनौती करती हैं।
**सदरदीवान** पुं०(अ) शाही खजाने का प्रधान अधिकारी।
**सदरदीवानी-अदालत** पुं०(अ) उच्चन्यायालय(हाईकोर्ट)
**सदरबाजार** पुं० (अ) १-बड़ा या मुख्य बाजार। २-छावनी का बाजार।
**सदरबोर्ड** पुं० (अ) माल की सबसे बड़ी अदालत या विभाग।
**सदरमालगुजार** पुं० (अ) सरकार को सीधे मालगुजारी देने वाला व्यक्ति।
**सदरी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की बिना बाँह की कुर्ती।
**सदर्थना** क्रि० (हि) समर्थन करना।
**सदर्प** अव्य० (सं) अहंकारपूर्वक। वि० अहंकारी।
**सदसद्विवेक** पुं० (सं) अच्छे बुरे की पहचान।
**सदसि** अव्य० (सं) सदन या सभा में। पुं० (हि) १-घर। मकान। २-सभा।
**सदस्य** पुं०(सं) सभासद। सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। (मेम्बर)।
**सदस्यता** स्त्री०(सं) सदस्य का भाव या पद। (मेम्बरशिप)।
**सदा** अव्य० (सं) १-निरन्तर। २-नित्य। हमेशा। स्त्री० (अ) १-गूँज। प्रतिध्वनि। २-पुकार। ३-शब्द ध्वनि। आवाज। ४-रट।
**सदाकत** स्त्री० (अ) सच्चाई। सत्यता।
**सदागति** पुं० (सं) १-हवा। २-सूर्य। ३-ब्रह्म। वि० सदा गतिशील रहने वाला।
**सदाचरण** पुं० (सं) अच्छा चाल-चलन। उत्तम आचरण।
**सदाचार** पुं० (सं) १-शिष्ट व्यवहार। २-अच्छा आचरण।
**सदाचारिता** स्त्री० (सं) दे० 'सदाचरण'।
**सदाचारी** पुं० (सं) १-नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण वाला व्यक्ति। २-धर्मात्मा।
**सदात्मा** वि० (सं) जिसका अच्छा स्वभाव हो। नेक
**सदानंद** पुं० (सं) १-वह जो सदा आनन्द में रहे। २-शिव। ३-विष्णु।
**सदाफल** पुं० (सं) १-गूलर। २-बेर। ३-नारियल। ४-कटहल।
**सदाबरत** पुं० (हि) दे० 'सदावर्त'।
**सदाबहार** वि० (हि) १-जो सदा फूले। २-जो सदा

हरा रहे।
सदार वि० (सं) सपीनक।
सदारत स्त्री० (अ) प्रधान का पद। सभापतित्व।
सदावर्त पुं० (हि) १-वह स्थान जहां भूखों को नित्य भोजन मिलता हो। २-नित्य दिया जाने वाला दान।
सदावर्ती पुं० (हि) १-सदावर्त बांटने वाला। बड़ा दानी।
सदाशय वि० (सं) भलामानस। सज्जन पुरुष।
सदाशिव पुं०(सं)१-सदा शुभ और मंगल। २-महादेव। ३-सदा कल्याण करने वाला।
सदासुहागिन वि० (हि) जो सदा सौभाग्यवती बनी रहे।
सदिया स्त्री० (फा) एक प्रकार का लाल पक्षी।
सदी स्त्री० (फा) १-शताब्दी। २-सैकड़ा। ३-किसी विशेष सौ वर्ष के मध्य का समय। (सेन्चरी)।
सदुक्ति स्त्री० (सं) अच्छे वचन या कथन।
सदुपदेश पु० (सं) नेक सलाह। अच्छा उपदेश।
सदुपयोग पु० (सं) अच्छी तरह काम में लाना। अच्छा उपयोग।
सदूर पु० (हिं) सिंह। शार्दूल।
सदृश वि० (सं) १-अनुरूप। समान। २-उपयुक्त। ३-तुल्य। बराबर।
सदृशता स्त्री० (सं) समानता। अनुरूपता।
सदेह अव्य० (सं) १-बिना शरीर त्याग किये हुए। २-प्रत्यक्ष में।
सदैव अव्य० (सं) सर्वदा। सदा ही।
सदोष वि० (सं) दोष सहित। दोषी। अपराधी।
सदोषमानव-हत्या स्त्री०(सं) वह मानव हत्या जिसको अपराध समझा या माना जाय। (कल्पेबल होमीसाइड)।
सद् वि० (सं) दे० 'सत्'।
सद्गति स्त्री० (सं) १-मरने के बाद अच्छे लोक में जाना। २-उत्तम गति।
सद्गव पुं० (सं) अच्छी नसल का सांड।
सद्गुण पु० (सं) अच्छा गुण।
सद्गुरु पुं० (सं) १-अच्छा गुरु। २-परमात्मा।
सद्ग्रंथ पुं०(सं)अच्छा ग्रन्थ या सन्मार्ग बताने वाली पुस्तक।
सद्ग्रह पुं० (सं) शुभ या कल्याणकारी ग्रह।
सद्द पुं० (हिं) शब्द। ध्वनि। अव्य० तुरन्त। फौरन
सद्धर्म पु० (सं) १-उत्तम धर्म। २-बौद्धधर्म।
सद्भाव पुं० (सं) १-अच्छा भाव। २-मैत्री। ३-निष्कपट भाव।
सद्म पुं० (सं) १-घर। मकान। २-युद्ध। ३-पृथ्वी और आकाश। ४-दर्शक।
सद्यः अव्य० (सं) १-आज ही। २-अभी। ३-तुरन्त तत्काल। पुं० शिव।
सद्यःकृत वि० (सं) जो तत्काल ही किया गया हो।
सद्यःक्रीत वि०(सं) जो उसी दिन ही खरीदा गया हो
सद्यःप्रसूता वि० (सं) जिसके अभी बच्चा हुआ हो।
सद्यःप्राणकर वि० (सं) शीघ्र ही शक्ति बढ़ाने वाला।
सद्यःफल वि० (सं) जिसका फल शीघ्र ही मिल जाय।
सद्यःस्नात वि० (सं) जिसने हाल ही में स्नान किया हो।
सद्यश्छिन्न वि० (सं) जो तुरन्त ही काटकर अलग किया गया हो।
सद्यस्तन वि० (सं) १-नया। २-ताजा। ३-हाल ही का।
सद्योजात वि० (सं) अभी का जन्मा।
सद्योजाता स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसने तुरन्त ही बच्चे को जन्म दिया हो।
सद्योत्पन्न वि० (सं) दे० 'सद्योजात'।
सद्योव्रण पुं० (सं) हाल ही में लगा हुआ घाव।
सद्योहत वि० (सं) जो हाल ही में हत हुआ हो।
सद्र पुं० (अ)१-सबसे ऊँचा स्थान। २-प्रधान अधिकारी। ३-सीना। छाती। ४-शीर्षभाग।
सद्रअदालत स्त्री० (अ) सर्वोच्च न्यायालय।
सद्रमजलिस पुं० (अ) सभापति।
सद्रेआजम पुं० (अ) १-प्रधानमन्त्री। २-प्रधान न्यायाध्यक्ष।
सधन वि० (सं) अमीर। धनी। पुं० सामान्य धन।
सधना क्रि० (हि) १-पूरा होना। २-काम चलाना। ३-अभ्यस्त होना। मँजना। ४-प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। ५-लक्ष्य ठीक होना। ६-घोड़े आदि को सवारी के योग्य बनाना।
सधर पुं० (सं) ऊपर का ओंठ।
सधर्म वि० (सं) १-समान गुण या क्रिया वाला। २-तुल्य। समान।
सधर्मी वि०(सं) एक ही या समान धर्म का अनुयायी।
सधवा स्त्री० (हि) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।
सधाना क्रि० (हिं) साधने का काम दूसरों से कराना।
सधावर पुं० (हि) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।
सधूम वि० (सं) धूएँ से भरा हुआ।
सनंदन पु० (सं) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम।
सन पुं० (हिं) एक पौधा जिसके रेशे से रस्सियां आदि बनाई जाती हैं। (जूट)। वि० (हि) सन्न। स्तब्ध। स्त्री० किसी चीज को तेजी से चलाने या घुमाने से उत्पन्न होने वाला शब्द।
सनअत स्त्री० (अ) १-पेशा। हुनर। २-अलंकार। ३-कारीगरी।

**सनग्रतगर** पुं० (अ) कारीगर।
**सनक** पुं० (सं) ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक। स्त्री० पागलों की सी ध्वनि या आचरण।
**सनकना** क्रि० (हि) १-पागल होना। २-पागलों जैसी बातें करना।
**सनकाना** क्रि० (हि) पागल बनाना।
**सनकारना** क्रि० (हि) १-संकेत या इशारा करना। २-संकेत से बुलाना। ३-किसी काम के लिए इशारा करना।
**सनकियाना** क्रि० (हि) १-सनकना। २-सनकाना। ३-इशारा करना।
**सनत्** पुं० (स) ब्रह्मा।
**सनतकुमार** पुं० (सं) १-ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम। २-जैनियों के तीसरे तीर्थ का नाम।
**सनद** स्त्री० (अ) १-प्रमाण। सबूत। २-भरोसा करने की वस्तु। ३-तकियागाह। ४-प्रमाण-पत्र (सर्टिफिकेट)।
**सनदयाफ्ता** वि०(अ) १-किसी परीक्षा में उत्तीर्ण। २-जिसे किसी कार्य का प्रमाणपत्र मिला हो।
**सनदी** वि०(अ) सनदयाफ्ता।
**सनना** क्रि० (हि) १-तर या गीला होकर किसी वस्तु में मिलना। २-लीन होना।
**सनमान** पुं०(हि) दे० 'सम्मान'।
**सनमानना** क्रि० (हि) सम्मान या सत्कार करना।
**सनमुख** अव्य० (हि) दे० 'सन्मुख'।
**सनसनाना** क्रि० (हि) १-सनसन शब्द सहित (हवा का) चलना या बहना। २-खौलते हुए पानी में सनसन का शब्द होना।
**सनसनाहट** पु० (हि) १-हवा चलने का शब्द। २-सनसनी। ३-खौलते हुए पानी का शब्द।
**सनसनी** स्त्री० (हि) १-शरीर के सम्वेदन सूत्रों में होने वाली झनझनी। २-किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलने वाली उत्तेजना। उद्वेग। घबराहट (सेन्सेशन)।
**सनहकी** स्त्री०(अ) मिट्टी का एक पात्र जो बहुधा मुसलमान लोग काम में लाते हैं।
**सनाढ्य** पुं० (हि) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।
**सनातन** पु० (सं) १-अनादि काल। २-बहुत दिन से चली आई परम्परा। ३-ब्रह्मा। ४-विष्णु। वि० १-अत्यन्त प्राचीन। २-नित्य। शाश्वत। ३-बहुत दिनों से चला आया हुआ।
**सनातनधर्म** पु० (सं) १-प्राचीन या परम्परागत धर्म २-आजकल का हिन्दू धर्म जिसमें मूर्तिपूजा आदि विहित है।
**सनातनपुरुष** पुं० (सं) विष्णु।
**सनातनी** पु० (हि) सनातन धर्म का अनुयायी। वि० बहुत दिनों से चला आया हुआ।
**सनाथ** वि० (सं) जिसका कोई रक्षक या मददगार हो
**सनाथा** स्त्री० (स) वह स्त्री जिसका स्वामी जीवित हो
**सनाभि** पुं० (सं) १-सहोदर भाई। २-सपिंड। ३-नजदीकी रिश्तेदार।
**सनाभ्य** पुं० (सं) एक ही कुल या वंश का पुरुष।
**सनामा** वि० (सं) एक ही नाम वाला। सदृश्य।
**सनाय** स्त्री०(सं) स्वर्णपत्री। एक पौधा जिसकी पत्तियां दस्तावर होती है।
**सनाह** पुं० (हि) बख्तर। कवच।
**सनि** पुं० (हि) दे० 'शनि'।
**सनित** वि० (स) १-मिश्रित। २-सना हुआ। एक में मिला हुआ।
**सनिद्र** वि० (सं) सोया हुआ।
**सनियम** वि० (सं) नियमित।
**सनिर्घृण** वि० (स) निर्दय। कठोर।
**सनीचर** पुं० (हि) दे० 'शनैश्चर'।
**सनीचरी** पुं०(हि) शनि की दशा जिसमें दुःख व्याधि आदि की अधिकता रहती है।
**सनीड** अव्य० (सं) पड़ोस में। समीप। वि० पास का। पड़ोस में रहने वाला।
**सनील** वि० (सं) दे० 'सनीड'।
**सनेस** पुं० (हि) दे० 'संदेश'।
**सनेसा** पु० (हि) दे० 'संदेश'।
**सनेह** पु० (हि) दे० 'स्नेह'।
**सनेही** वि० (हि) प्रेमी। स्नेह करने वाला। पुं० प्रियतम। प्यारा।
**सने-सने** अव्य० दे० 'शनैःशनैः'।
**सन्** पुं० (अ) १-संवत्। २-साल। वर्ष।
**सन्-ईसवी** पुं०(अ) ईसाइयों का ईसा के जन्म दिन से आरम्भ होने वाला संवत्।
**सन्न** पुं० (स) चिरोंजी का पेड़। वि० हि) १-स्तब्ध। संज्ञाशून्य। ठक। ३-सहसा मौन या चुप। ४-डर या भय से चुप।
**सन्नद्ध** वि० (सं) १-तैयार। उद्यत। ६-लीन। काम में पूरी तरह से लगा हुआ।
**सन्नाटा** पु०(हि) १-नीरवता। स्तब्धता। २-निर्जनता। ३-चुप्पी। ४-जोर से हवा चलने का शब्द।
**सन्नाह** पुं० (सं) १-कवच। २-प्रयत्न।
**सन्निकट** अव्य० (सं) समीप। पास।
**सन्निकर्ष** पुं० (सं) १-लगाव। सम्बन्ध। २-नाता। रिश्ता। ३-समीपता।
**सन्निधान** पुं०(सं)१-निकटता। समीपता। २-रखना धरना। ३-स्थापित करना। ४-निधि। ५-किसी वस्तु को रखने का स्थान।
**सन्निधि** स्त्री० (सं) १-समीपता। २-अपने सामने की स्थिति। ३-पड़ोस।

**सन्निपात** पु० (सं) १-एक साथ गिरना या पड़ना। २-संयोग। ३-जुटना। मिलना। ४-इकट्ठा होना। एक रोग जिसमें कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते हैं। सरसाम।
**सन्निविष्ट** वि० (सं) १-किसी के अन्दर मिलाया हुआ। २-स्थापित। प्रतिष्ठित। ३-समाया हुआ। ४-समीप का। ५-लगा या जड़ा हुआ।
**सन्निविष्ट करना** क्रि०(हि) हटाए हुए शब्दों के स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग करना। (टु इन्सर्ट)।
**सन्निवेश** पु० (सं) १-एक साथ स्थित होना। २-समाना। ३-एकत्र होना। ४-घर। रहने की जगह। ५-चौपाल। ६-रचना। ७-बनावट। ८-स्तम्भ मूर्ति आदि की स्थापना।
**सन्निवेशन** पु०(सं) १-सजा, जमा या लगाकर रखना। २-मिलाना। सन्निविष्ट करना। ३-स्थापित करना। ४-ठहराना।
**सन्निवेशित** वि० (सं) १-बैठाया या जमाया हुआ। २-स्थापित। ३-ठहराया हुआ।
**सन्निहित** वि० (सं) १-पास का। २-साथ या पास रखा हुआ। ३-ठहराया हुआ। ४-उद्यत। तत्पर। ५-रखा या धरा हुआ।
**सन्न्यसन** पु० (हि) (स) १-सांसारिक विषयों का त्याग। २-धरना। रखना। ३-खड़ा करना। ४-जमाना। बैठाना। फेंकना। छोड़ना।
**सन्न्यस्त** वि० (सं) १-रखा या धरा हुआ। २-जमाया हुआ। ३-खड़ा किया हुआ। ४-फेंका हुआ
**सन्न्यास** पु० (स) १-त्याग। छोड़ना। २-वैराग्य। सांसारिक बंधनों को त्यागने की वृत्ति। ३-धरोहर ४-सहसा शरीर त्याग। इकरार। ३-बाजी। होड़। जटामासी।
**सन्न्यास ग्रहण** पु० (सं) आर्यों के चार आश्रमों में अन्तिम आश्रम में प्रवेश करना।
**सन्न्यासी** पु० (हि) सन्न्यास-आश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति। २-त्यागी। वैरागी।
**सन्मान** पु० (हि) दे० 'सम्मान'।
**सन्मानना** क्रि० (हि) दे० 'सनमानना'।
**सन्मार्ग** पु० (सं) अच्छा मार्ग। सुपथ।
**सन्मुख** अव्य० (हि) दे० 'सम्मुख'।
**सन्यासी** पु० (हि) दे० 'सन्न्यासी'।
**सपक्ष** पु० (स) १-अनुकूल पक्ष। २-सहायक। ३-न्याय के अन्तर्गत वह दृष्टांत या बात जिसमें साध्य अवश्य हो। वि० १-तरफदार। पक्ष लेने वाला। २-पोषक। समर्थक।
**सपच्छ** पु० (सं) दे० 'सपक्ष'।
**सपत** अव्य० (हि) दे० 'सपदि'।
**सपताक** वि० (हि) जो भुण्डयुक्त हो।
**सपत्न** पु० (सं) शत्रु। दुश्मन। वि० शत्रुता रखने वाला।
**सपत्नजित** वि० (सं) शत्रु को जीतने वाला। पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
**सपत्नी** स्त्री०(सं) सौत। सौतिन। पत्नी की दृष्टि से उसके पति की दूसरी स्त्री।
**सपत्नीक** वि० (सं) पत्नी के सहित।
**सपत्र** वि० (सं) जिसके पंख हों।
**सपथ** पु० (हि) दे० 'शपथ'।
**सपदि** अव्य० (सं) तुरन्त। उसी समय।
**सपन** पु० (हि) दे० 'स्वप्न'।
**सपना** पु० (हि) दे० 'स्वप्न'।
**सपरदा** पु० (हि) नृत्य करने वाली वेश्या के साथ तबला या सारङ्गी बजाने वाला।
**सपरदाई** पु० (हि) दे० 'सपरदा'।
**सपरना** क्रि० (हि) १-काम का पूरा हो सकना। २-निबटाना। ३-तैयार होना।
**सपराना** क्रि० (हि) १-पूरा कर सकना। २-काम पूरा करना।
**सपरिकर** वि० (सं) अनुचरवर्ग के साथ।
**सपरिजन** वि० (सं) दे० 'सपरिकर'।
**सपरिवार** वि० (सं) बालबच्चों सहित।
**सपरिवाह** वि० (सं) ऊपर तक पूरा भरा हुआ। छलकता हुआ।
**सपरिश्रम-कारावास** पु० (सं) वह कारावास या कैद जिसमें अपराधी से खूब परिश्रम का काम लिया जाय। (रिगोरस इम्प्रिजनमेन्ट)।
**सपाट** वि० (हि) समतल। जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो।
**सपाटा** पु० (हि) १-दौड़। २-चलने या दौड़ने का वेग। झपट्टा।
**सपाद** वि० (स) १-जिसमें एक चौथाई और मिला हो २-चरणसहित।
**सपिंड** पु० (सं) वंशज। एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितर को पिंड देता हो।
**सपिंडीकरण** पु० (सं) १-किसी को गोद आदि लेकर सपिंड होने का अधिकार देना। २-एक श्राद्ध विशेष।
**सपुलक** वि० (सं) पुलक या हर्ष सहित। रोमांचित।
**सपूत** पु० (हि) अच्छा और योग्य पुत्र।
**सपूती** स्त्री० (हि) १-योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता। २-लायकी।
**सपेत** वि० (हि) सफेद।
**सपेती** स्त्री० (हि) सफेदी।
**सपेद** वि० (फा) सफेद।
**सपेला** पु० (हि) सांप का बच्चा।
**सपोला** पु० (हि) सांप का बच्चा।
**सप्त** वि० (सं) गिनती में सात।

**सप्तऋषि** पुं० दे० 'सप्तर्षि'।
**सप्तक** पुं०(सं)१-सात वस्तुओं का समूह। २-संगीत में सात स्वरों का समूह।
**सप्तकोण** पुं० (सं) वह क्षेत्र जो सात रेखाओं से घिरा हुआ हो।
**सप्तज्वाल** पुं० (सं) अग्नि।
**सप्तदश** वि०(सं) १-सत्तरहवां। २-सत्तरह।
**सप्तद्वीप** पुं० (सं) पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग (पुराण)।
**सप्तधातु** पुं० (सं) १-चन्द्रमा का एक घोड़ा। २-रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि तथा शुक्र यह शरीर की सात धातुओं का संयोजक द्रव्य। वि० सात धातुओं का बना हुआ।
**सप्तनाडिका** स्त्री० (सं) सिंघाड़ा।
**सप्तपदी** स्त्री० (सं) विवाह के समय वर-वधु का अग्नि की सात परिक्रमा करना।
**सप्तपराक** पुं० (सं) एक प्रकार का तप।
**सप्तपर्ण** पुं० (सं)१-एक प्रकार की मिठाई। २-छतिवन। वि० जिसके सात पत्ते हों।
**सप्तपर्णक** पुं० (सं) दे० 'सप्तपर्ण'।
**सप्तपर्णी** स्त्री० (सं) लज्जालु।
**सप्तपाताल** पुं० (सं) पृथ्वी के नीचे के सात लोक-अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।
**सप्तपुत्री** स्त्री० (सं) सतपुतिया नामक तरकारी।
**सप्तपुरी** स्त्री० (सं)मथुरा, अयोध्या, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जयिनी और द्वारका ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्ष देने वाले कहे गये हैं।
**सप्तप्रकृति** स्त्री० (सं) राज्य के सात अंग-राजा, मन्त्री सामन्त, देश, कोष, गढ़, और सेना।
**सप्तभुज** पुं० (सं) सात भुजाओं वाला क्षेत्र।
**सप्तम** वि० (सं) सातवाँ।
**सप्तमी** स्त्री० (सं) १-चन्द्रमास के किसी पक्ष का सातवाँ दिन। २-अधिकरण कारक की सातवीं विभक्ति।
**सप्तराशिक** पुं० (सं) गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियां होती हैं।
**सप्तर्षि** पुं० (सं) १-गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप तथा अत्रि ऋषियों का मंडल या समूह। २-वह सात तारे जो ध्रुव की परिक्रमा करते हुए उत्तर दिशा में दिखाई देते हैं।
**सप्तविध** वि० (सं) सात तरह का।
**सप्तशती** स्त्री० (सं) १-सात सौ का समूह। २-सात सौ पद्यों का समूह। सतसई।
**सप्तस्वर** पुं०(सं) सङ्गीत की सरगम या एक सप्तक।
**सप्तहय** पुं० (सं) दे० 'सप्ताश्व'।
**सप्तांशु** पुं० (सं) शनिग्रह। वि० सात किरणों वाला।
**सप्तार्चि** पुं०(सं) अग्नि। २-शनि। ३-चित्रक वृक्ष।
**सप्तार्णव** पुं० (सं) सात समुद्रों का समूह।
**सप्तालु** पुं० (सं) दे० 'सफतालू'।
**सप्ताश्र** पुं० (सं) सात भुजाओं वाला क्षेत्र।
**सप्ताश्व** पुं० (सं) सूर्य।
**सप्ताह** पुं० (सं) १-सात दिनों का काल। २-सोमवार से रविवार तक के सात दिन। हफ्ता।
**सप्रतिबंध स्वीकृति** स्त्री० (सं) वह स्वीकृति जिसमें शर्तें लगी हुई हों। विशेषित स्वीकृति। (कण्डीशनल और क्वालिफाइड एक्सेप्टेन्स)।
**सप्रमाण** वि० (सं) प्रमाणसहित। ठीक। प्रामाणिक।
**सफ** स्त्री० (फा) १-पंक्ति। २-फर्श। ३-चटाई।
**सफतालू** पुं० (हि) आड़ू।
**सफदर** वि० (अ) वीर। योद्धा।
**सफर** पुं० (अ) १-यात्रा। २-प्रस्थान। ३-हिजरी सन का दूसरा महीना।
**सफरखर्च** पुं० (अ) मार्गव्यय।
**सफरनामा** पुं० (अ) किसी यात्रा का लिखित वर्णन
**सफरमैना** पुं० (हि) सेना के उस विभाग के कर्मचारी जो सेना से आगे जाकर मार्ग साफ करने तथा पुल आदि बनाने का काम करते हैं। (सैपरमैन)।
**सफरी** वि० (अ) सफर में काम आने वाला (छोटा तथा हलका)। स्त्री० (हि) सौरी नामक मछली। (देश) धातु का एक प्रकार का पीला वरक या पन्नी
**सफल** वि० (सं) १-जिसमें फल लगे हों। २-जिसका कुछ परिणाम हो। सार्थक। ३-कृतकार्य। कामयाब
**सफलता** स्त्री० (सं) १-सिद्धि। कामयाबी। २-पूर्णता
**सफलित** वि० (सं) दे० 'सफलीभूत'।
**सफलीकरण** पुं० (सं) १-सफल करना। २-पूर्ण करना।
**सफलीभूत** वि० (सं) जो सफल हुआ हो।
**सफहा** पुं० (अ) १-तल। रुख। २-वरक। पृष्ठ।
**सफ़ा** वि० (अ) १-साफ। स्वच्छ। २-पाक। पवित्र। ३-चिकना। पुं० पुस्तक का पृष्ठ।
**सफ़ाई** स्त्री० (अ) १-साफ होने का भाव। २-लड़ाई-झगड़े का निबटारा। ३-अभियुक्त का अपनी निर्दोषता प्रमाणित करना। ४-समाप्ति। ५-चतुराई। ६-फुर्ती। ७-ऋण चुकता हो जाना।
**सफ़ाचट** वि० (हि) १-एक दम स्वच्छ। २-जो जमा या लगा रहने न दिया जाय। जिस पर कुछ जमा या लगा न रह गया हो।
**सफ़ाया** पुं० (अ) १-पूरी सफाई। कुछ भी शेष न रह जाना। २-पूर्ण विनाश।
**सफ़ीना** पुं० (अ) १-बही। किताब। २-अदालती परवाना।
**सफीर** स्त्री०(हि) १-चिड़ियों की आवाज। २-पक्षियों को बुलाने के लिए दी जाने वाली सीटी। पुं० (अ)

राजदूत।
सफील स्त्री० (अ) पक्की चहारदिवारी। परकोटा।
सफूफ पुं० (अ) चूर्ण। बुकनी।
सफेद वि० (फा) १-उजला। श्वेत। २-सादा। कोरा।
सफेददाग पुं० (फा) श्वेतकुष्ट।
सफेदपोश पुं० (फा) १-साफ कपड़े पहनने वाला व्यक्ति। २-साधारण गृहस्थ पर भला आदमी।
सफेदसियाह पुं०(फा)१-अच्छा या बुरा। २-बनाना-बिगाड़ना।
सफेदा पुं० (फा) १-जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा के काम आता है। २-एक प्रकार का बढ़िया आम ३-एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।
सफेदी स्त्री० (फा) १-सफेद होने का भाव। २-दीवार आदि पर चूने या सफेद रङ्ग की पुताई।
सबंधमुक्ति स्त्री० (सं) किसी कैदी या अपराधी को कारागार से कुछ समय के लिए किसी विशेष कारण-वश इस शर्त पर छोड़ दिया जाना कि वह उस अवधि के समाप्त होते ही फिर जेल में वापिस आ जायगा (पेरोल)।
सब वि० (हिं) १-समस्त। जितने हों कुल। २-पूरा। सारा।
सबक पुं० (फा) १-पाठ। २-शिक्षा। नसीहत। ३-ऐसा दण्ड जो चेतावनी का काम दे। ४-एक दिन में गुरु द्वारा पढ़ाया हुआ पाठ का भाग।
सबज वि० (हिं) दे० 'सब्ज'।
सबद पुं० (हिं) १-शब्द। २-किसी साधु महात्मा के वचन।
सबब पुं० (अ) १-कारण। हेतु। २-साधन।
सबर पुं० (अ) संतोष। धैर्य।
सबरा वि० (हि) सब। सारा। कुल।
सबरी स्त्री० (हि) १-दे० 'शबरी'। २-गड्ढा खोदने का एक औजार।
सबल वि०(सं)१-बलवान्। २-जिसके साथ सेना हो
सबार अव्य (हिं) शीघ्र। जल्दी।
सबारे अव्य (हिं) शीघ्र। जल्दी।
सबील स्त्री० (अ) १-उपाय। युक्ति। २-प्याऊ।
सबीह वि० (अ) गोरा-चिट्टा।
सबू पुं० (फा) गगरी। मटका।
सबूत पुं० (हिं) दे० 'सुबूत'।
सबेरा पुं० (हि) दे० 'सवेरा'।
सब्ज वि० (फा) १-कच्चा और ताजा (फलादि)। २-हरा। ३-शुभ।
सब्जकदम वि० (फा) जिसका आना मनहूस माना जाता हो (केवल व्यंग में)।
सब्जबख्ती स्त्री० (फा) सौभाग्य।
सब्जा पुं० (फा) १-हरियाली। २-भांग। ३-पन्ना नामक रत्न। ४-कान में पहनने का एक गहना। ५-कालापन लिए सफेद रङ्ग का घोड़ा।
सब्जी स्त्री०(फा) १-हरापन। २-हरियाली। ३-साग-भाजी।
सब्जीफरोश पुं० (फा) साग-भाजी बेचने वाला।
सब्जीमंडी स्त्री०(फा) वह स्थान जहां सागभाजी तथा फल बिकते हों।
सब्र पुं० (अ) सन्तोष। धैर्य।
सभंग वि० (सं) खण्ड वाला। जिसके टुकड़े हों।
सभंगश्लेष पुं० (सं) शब्द का खण्ड करने पर बनने वाला श्लेष का एक रूप।
सभय वि० (सं) १-डरा हुआ। २-खतरनाक।
सभर्तृका स्त्री० (सं) सधवा।
सभा स्त्री० (सं) १-परिषद्। २-गोष्ठी। ३-समिति ४-वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये बनाई गई हो। ५-द्यूत। जूआ। ६-मकान। घर। ७-समूह।
सभाकक्ष पुं० (सं) दे० 'प्रकोष्ठ'। (लॉबी)।
सभाकार पुं० (सं) सभा करने वाला।
सभागा वि० (हि) होनहार। भाग्यवान।
सभाग्य वि० (सं) भाग्यशाली।
सभागृह पुं० (सं) सभा भवन। वह स्थान या भवन जहां किसी समिति या सभा का अधिवेशन होता है
सभाग्रणी पुं० (सं) संसद या विधान सभा आदि का सदस्यों द्वारा निर्वाचित वह नेता जो सभा का कार्यक्रम आदि निर्धारित करता है (बहुधा प्रधान मन्त्री या मुख्य मन्त्री ही इस पद के लिये रखे जाते हैं)। (लीडर ऑफ दी हाउस)।
सभाचातुर्य पुं० (सं) समाज या सभा में बोलने की वाक्पटुता।
सभात्याग पुं० (सं) सभा की किसी कार्रवाई या अध्यक्ष की किसी व्यवस्था के प्रति विरोध प्रकट करने के लिये किसी सदस्य का सभा से बाहर चला जाना। (वॉक आउट)।
सभानायक पुं० (सं) दे० 'सभापति'।
सभानेता पुं० (सं) दे० 'सभाग्रणी'।
सभापति पुं० (सं)किसी सभा का मुखिया या अध्यक्ष (प्रेजिडेण्ट)।
सभामंडन पुं० (सं) सभा भवन में की गई सजावट।
सभार्य वि० (सं) सपत्नीक।
सभार्यक वि० (सं) सपत्नीक।
सभासचिव पुं० (सं) लोकसभा या विधान सभा का वह सदस्य जो किसी मन्त्री के साथ मिलकर उसके काम-काज में सहायता देता है तथा वेतन भी लेता है। (पार्लियामेण्ट सेक्रेटरी)।
सभासद पुं० (सं) १-वह जो किसी सभा का सदस्य हो। (मेम्बर)। २-अदालत की पंचायत या जूरी का सदस्य।

**सभेय** *वि०* (सं) १-विद्वान। २-शिष्ट।
**सभोचित** *वि०* (सं) सभा के योग्य। विद्वान। पण्डित
**सभ्य** *वि०* (स) अच्छे आचार-विचार रखने वाला। शिष्ट। (सिविल)। पुं० १-पंच। २-सभासद।
**सभ्यता** *स्त्री०* (सं) १-शील और सज्जन होने का भाव शराफत। २-सदस्यता। ४-किसी राष्ट्र या जाति की वे सब बातें जो उसके सिद्धान्त, सौजन्य एवं उन्नति होने की सूचक होती है। (सिविलाइजेशन)
**सभ्यत्व** पुं० (सं) दे० 'सभ्यता'।
**सभ्येतर** *वि०* (सं) उजड्ड। गँवार। अशिक्षित।
**समंजस** *वि०* (सं) प्रसंग, उल्लेख आदि के विचार से ठीक बैठाने वाला। उपयुक्त। ठीक।
**समंत** पुं०(सं) किनारा। सीमा। सिरा। *वि०* समस्त। कुल।
**समंद** पुं० (फा) अश्व। घोड़ा।
**समंदर** पुं० (हिं) समुद्र।
**सम** *वि०* (स) १-समान। तुल्य। २-जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो। ३-(वह संख्या) जिसे दो पर भाग देने पर कुछ भी शेष न बचे। पुं० १-सम संख्या पर पड़ने वाली राशि-दो, चार इत्यादि। २-साहित्य में वह अलङ्कार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग का वर्णन होता है। ३-गणित में वह रेखा जो उस अङ्क पर बनाई जाती है जिसका वर्गमूल निकलता हो। ४-ताल का एक अङ्ग। (सङ्गीत)।
**समकक्ष** *वि०* (सं) समान। तुल्य। बराबर का (पैरेलल)।
**समकक्ष सरकार** *स्त्री०*(हिं)वह नई सरकार जो पुरानी सरकार को अवैध या अयोग्य मान कर उसे नष्ट करने के लिए बनाई गई हो (पैरेलल गवर्नमेन्ट)।
**समकालीन** *वि०* (स) जो (दो या अधिक में से) एक ही समय में हुआ हो। (कन्टेम्परेरी)।
**समकोण** पुं० (सं) ज्यामिति में ९० अंश का कोण (राइट एंगल)। *वि०* (वह क्षेत्र) जिसके सारे कोण बराबर हों।
**समकोण त्रिभुज** पुं० (सं) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसका एक कोण समकोण हो (राइट एंगल्ड ट्राइएंगल)।
**समक्ष** *अव्य०* (सं) सामने। सन्मुख।
**समक्षेत्र** पुं० (सं) एक या अधिक वक्र या सरल रेखाओं से घिरा हुआ समतल का भाग। (प्लेन-फिगर)।
**समग्र** *वि०* (सं) सब। सारा।
**समचतुरश्र** पुं०(सं) वर्गक्षेत्र। *वि०* जिसके चारों कोण बराबर के हों।
**समचतुरस्र** *वि०* (सं) दे० 'समचतुरश्र'।
**समचतुर्भुज** पुं० (सं) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी सारी भुजाएँ बराबर हों।
**समचतुष्कोण** *वि०* (सं) जिसके चारों कोण बराबर अंश के हों।
**समचर** *वि०* (सं) सदा सबके साथ एक सा व्यवहार या आचरण करने वाला।
**समचित्त** पुं० (स) दे० 'समचेता'।
**समचेता** पुं० (स) वह जिसके चित्त की वृत्ति सब जगह एक सी हो।
**समझ** *स्त्री०* (हिं) १-बुद्धि। अक्ल। २-ध्यान खयाल।
**समझना** *क्रि०* (हिं) किसी बात को अच्छी तरह से जान लेना।
**समझाना** *क्रि०* (हि) किसी बात को किसी के मन में भली भांति बैठाना।
**समझाव** पुं० (हि) दे० 'समझावा'।
**समझावा** पुं० (हि) समझने या समझाने की क्रिया या भाव।
**समझौता** पुं० (हि) व्यवहार, लेने देने आदि के झगड़ों या विवादों में सब पक्षों में आपस में मिलकर होने वाला निबटारा। (एग्रीमेन्ट, कम्प्रोमाइज)
**समतल** *वि०* (सं) जिसकी सतह या तल बराबर हो। सपाट। पुं० वह तल जिसके कोई भी दो बिंदु लेकर यदि रेखा खींची जाय तो इनमें मिलने वाली रेखा एक ही तल में रहती है।
**समता** *स्त्री०* (सं) समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। (इक्वेलिटी)।
**समतुलित** *वि०* (सं) जो समान भार का हो।
**समतूल** *वि०* (हिं) समान। बराबर।
**समतोलन** पुं० (सं) १-महत्व आदि के विचार से सबको बराबर रखना। २-दोनों पक्षों या पलड़ों को बराबर रखना (बैलेंसिंग)।
**समत्थ** *वि०* (हि) दे० 'समर्थ'।
**समत्व** पुं० (सं) समता। तुल्यता। बराबरी।
**समत्रिबाहु त्रिभुज** पुं० (सं) ऐसा त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों। (इक्विलेटरल ट्राइएंगल)
**समत्रिभुज** पुं० (सं) वह त्रिकोण जिसकी तीनों भुजा बराबर हों।
**समदन** पुं० (सं) युद्ध। लड़ाई। स्त्री० (देश) भेंट। उपहार।
**समदना** *क्रि०* (हि) १-भेंटना। प्रेम सहित मिलना २-भेंट या उपहार देना।
**समदर्शन** पुं० (सं) सबको एक सा देखना।
**समदर्शी** पुं० (सं) सबको बराबर या एक सा समझने या देखने वाला।
**समदृष्टि** पुं० (सं) समदर्शी।
**समधाना** *क्रि०* (हि) १-रखना। धरना। २-सौंप देना।
**समद्युति** *वि०* (सं) एक-सी या बराबर कांतिवाला।
**समद्विबाहुत्रिभुज** पुं०(सं) वह त्रिकोण जिसकी केवल

दो भुजाएँ बराबर हों (आइसॉसिलीज ट्राइएंगल)।
**समद्विभाग करना** *क्रि०* (हि) दो बराबर के भागों में विभक्त करना। (टु डिवाइड)।
**समद्विभुज** पुं० (सं) वह चतुर्भुज जिसकी दो भुजाएं बराबर हों।
**समधर्मा** *वि०* (सं) समान स्वभाव का।
**समधिक** *वि०* (सं) बहुत। अधिक।
**समधियाना** पुं० (हि) समधी का घर।
**समधी** पुं० (हि) पुत्र या पुत्री का ससुर।
**समधीत** *वि०* (सं) भलीभांति अध्ययन किया हुआ।
**समधौरा** पुं० (देश) विवाह की एक रस्म जिसके अनुसार समधियों की मिलाई होती है।
**समध्व** *वि०* (सं) जो साथ-साथ यात्रा करे।
**समन** पुं० (हि) १-दे० 'सम्मान'। २-दे० 'शमन'।
**समनगा** स्त्री० (सं) १-बिजली। २-सूर्य-किरण।
**समनुज्ञा** स्त्री० (सं) किसी विषय की पुष्टि या समर्थन करते हुए मान्य करना। (सैंक्शन)।
**समनुज्ञात** *वि०* (सं) १-पूरी तरह से मान्य। २-जिसे अधिकार दे दिया गया हो।
**समन्वय** पुं० (सं) १-विरोध का अभाव। मिलाप। मिलाना। २-कार्य और कारण की संगति या निर्वाह।
**समन्वित** *वि०*(सं) १-संयुक्त। मिला हुआ। २-जिसमें कोई रुकावट न हो।
**समन्वेषण** पुं० (सं) किसी प्रदेश में जाकर वहां की चारों ओर की स्थिति तथा नई बातों का पता लगाना। (एक्स्प्लोरेशन)।
**समपरिधान** पुं० (सं) दे० 'विपरिधान' (यूनीफॉर्म)
**समपहरण** पुं०(सं)दण्ड के रूप में किसी की सम्पत्ति, धन आदि का सरकार द्वारा जब्त किया जाना। (कनफिस्केशन)।
**समप्रभ** *वि०* (सं) एकसी दीप्ति या कांति वाला।
**समबहुभुज** पुं० (सं) ऐसा बहुभुज क्षेत्र जिसके कोण तथा भुजाएँ दोनों बराबर हों। (रेगुलर पॉलीगन)
**समबुद्धि** पुं० (सं) वह जिसकी बुद्धि, सुख, दुःख हानि, लाभ आदि सबमें एक ही समान रहती हो।
**समभाग** पुं० (सं) समान भाग। बराबर का हिस्सा।
**समभुज-बहुभुज** पुं० (सं) वह बहुभुज क्षेत्र जिसकी सारी भुजाएँ बराबर हों। (इक्विलेटरल पॉलीगन)
**समभूमि** स्त्री० (सं) वह जमीन जो हमवार हो।
**समभितआकृति** स्त्री० (सं) वह आकृति जिसकी बीच की रेखा के बल तह करने पर दोनों ओर के कोण रेखा या भाग ठीक ठीक उतरें (सिमिट्रिकल फिगर)
**समय** पुं० (सं) १-काल। वक्त। २-अवसर। मौका ३-अवकाश। ४-अंतिम काल। ५-प्रथा। ६-कौल करार। ७-सिद्धांत। ८-व्यवहार। ९-सामान्य रीति रस्म।
**समयच्युति** स्त्री०(सं) १-अवसर का हाथ से निकल जाना। २-चूक जाना।
**समयज्ञ** पुं० (सं) १-समयानुसार चलने वाला। २-विष्णु।
**समयदान** पुं० (सं) किसी से किसी विषय पर बातचीत करने के लिए मिलने का समय पहले से ही निश्चित कर लेना। (एंगेजमेंट)।
**समयनिष्ठ** *वि०* (सं) प्रत्येक काम ठीक समय पर करने वाला। (पंक्चुअल)। समय का पाबंद।
**समयबंधन** *वि०* (सं) जो प्रतिज्ञा से बँधा हुआ हो।
**समयभेद** पुं० (सं) वचन तोड़ना।
**समयविपरीत** *वि०*(सं) प्रतिज्ञा या वादा पूरा न करने वाला।
**समयविभाग** पुं० (सं) दे० 'समयसूची'।
**समयविभागपत्र** पुं० (सं) दे० 'समयसूची'।
**समयसारिणी** पुं० (सं) दे० 'समयसूची'।
**समयसूची** स्त्री० (सं) कोष्ठकों की वह सारिणी जिसमें भिन्न-भिन्न समयों पर होने वाले कार्यों का विवरण सूची के रूप में होता है। (टाइम टेबल)।
**समयानुवर्ती** *वि०* (सं) जो वर्तमान समय की रीति के अनुसार चलता हो।
**समयोचित** *वि०*(सं) जो किसी अवसर के उपयुक्त हो।
**समर** *वि०* (सं) युद्ध। लड़ाई।
**समरकर्म** पुं० (सं) लड़ने का काम।
**समरत्थ** पुं० (हि) दे० 'समर्थ'।
**समरथ** पुं० (हि) दे० 'समर्थ'।
**समरभूमि** स्त्री० (सं) युद्धक्षेत्र। रणभूमि।
**समरपोत** पुं० (सं) जङ्गी जहाज। युद्धपोत। लड़ाई में काम आने वाला जहाज।
**समरविजयी** *वि०* (सं) युद्ध में जीतने वाला।
**समरशूर** पुं० (सं) लड़ाई में वीरता दिखाने वाला योद्धा।
**समरस** *वि०*(सं)१-एक ही तरह के रस वाले (पदार्थ) २-सदा एक सा रहने वाला। ३-एक ही विचार के
**समरसीमा** स्त्री० (सं) रणभूमि। युद्धक्षेत्र।
**समरांगण** पुं० (सं) युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
**समरागम** पुं० (सं) युद्ध का आरम्भ होना।
**समराजिर** पुं० (सं) रणभूमि।
**समराना** *क्रि०* (हि) सजाना। या सजवानी।
**समरूप** *वि०* (सं) समान रूप वाला।
**समरूप प्रस्ताव** पुं०(सं) वह प्रस्ताव जो किसी दूसरे प्रस्ताव से मिलता-जुलता हो। (आइडेंटिकल-मोशन)।
**समरोचित** *वि०* (सं) जो युद्ध या लड़ाई के लिए उपयुक्त हो।
**समरोद्यत** *वि०* (सं) जो युद्ध के लिये उद्यत या तैयार हो।

**समर्घ** वि० (सं) कम मूल्य का। सस्ता।
**समर्चन** पुं० (सं) अच्छी तरह पूजन करने का काम।
**समर्चना** स्त्री० (सं) अच्छी तरह की जाने वाली पूजा
**समर्थ** वि० (सं) १-जिसमें कोई काम करने की शक्ति हो। २-दूसरे पदार्थों आदि पर प्रभाव डालने की शक्ति रखने वाला (एफेक्टिव)। ३-प्रयुक्त होने के योग्य। पुं० भलाई। हित।
**समर्थक** वि० (सं) समर्थन करने वाला। पुं० चंदन की लकड़ी।
**समर्थता** स्त्री० (सं) सामर्थ्य। शक्ति।
**समर्थत्व** पुं० (सं) दे० 'समर्थता'।
**समर्थन** पुं०(सं)१-किसी मत का पोषण। (सेकेंडिंग) २-मीमांसा। ३-विवेचन। किसी वस्तु के बारे में उसके ठीक होने के बारे में निर्णय करना।
**समर्थना** स्त्री० (सं) १-किसी न होने वाले कार्य के लिए प्रयत्न करना। २-अनुरोध।
**समर्थनीय** वि०(सं) जिसका समर्थन किया जा सके।
**समर्थित** वि० (सं) जिसका समर्थन किया गया हो।
**समर्पक** वि० (सं) १-समर्पण करने वाला। २-किसी माल को कहीं पहुँचाने के लिए सौंपने वाला। (कन्साइनर)।
**समर्पण** पुं० (सं) १-भेंट या नजर करना। २-धर्म-भाव या श्रद्धाभाव से कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडिकेशन)। ३-कहीं पहुंचाने के लिये किसी को सौंपा हुआ माल। (कन्साइन्मेन्ट)।
**समर्पणमूल्य** पुं०(सं) बीमा पत्र की अवधि पूरी होने से पहले ही उसे समर्पित करने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन। (सरेन्डर वेल्यू)।
**समर्पना** क्रि० (हि) सौंपना। समर्पण करना।
**समर्पयिता** वि० (सं) सौंपने या समर्पण करने वाला
**समर्पित** वि० (सं) १-जो समर्पण किया गया हो। २-(वह माल) जो कहीं बाहर भेजने के लिये सौंपा गया हो। (कन्साइण्ड)।
**समलंकृत** वि० (सं) अच्छी तरह से सजा हुआ।
**समलंबचतुर्भुज** पुं० (सं) ऐसा चतुर्भुज जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर हों। (ट्रैपीजियन)।
**समल** पुं० (सं) मल। विष्ठा। वि० मैला।
**समलोष्टकांचन** वि० (सं) जिसकी नजर में मिट्टी का ढेला और स्वर्ण बराबर हो।
**समवयस्क** वि० (सं) बराबर की आयु या उमर का।
**समवरोध** पुं०(सं) नाकेबन्दी। किसी स्थान की सेना, युद्धपोतों द्वारा इस तरह घेरा डालना कि उस स्थान से आना-जाना रुक जाय। (ब्लाकेड)।
**समवर्ण** वि० (सं) १-एक ही जाति में उत्पन्न। २-एक ही रङ्ग का।
**समवर्ती** वि० (सं) १-सबके साथ एक सा व्यवहार करने वाला। २-किसी से पक्षपात न दिखाने वाला। ३-जो एक ही दूरी पर स्थित हो। ४-साथ-साथ चलने वाला। (कॉनकरेण्ट)।
**समवाय** पुं० (सं)१-समूह। झुण्ड। २-न्याय में वह सम्बन्ध जो गुणी के साथ गुणों का तथा जाति के साथ व्यक्ति का होता है। ३-कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिये बनी हुई वह वह संस्था जिसके साझीदारों को उसके व्यापार में होने वाले लाभ का अंश मिलता है। (कम्पनी)।
**समवायी** वि० (सं) १-जिसमें समवाय का नित्य सम्बन्ध हो।
**समवायीकारण** पुं० (सं) वह कारण जो अलग न किया जा सके।
**समवितरण** पुं० (सं) कपड़े या खाद्यान्न की कमी होने पर निश्चित मात्रा में कपड़े या खाद्यान्न बांटने की व्यवस्था। (रेशनिङ्ग)।
**समविभाग** पुं० (सं) सम्पत्ति, धनादि का बराबर हिस्सों में बटवारा।
**समविषम** पुं० (सं) वह भूमि जो समतल न हो। ऊबड़-खाबड़ हो।
**समवीर्य** वि० (सं) जिसमें बराबर बल हो।
**समवृत्त** पुं० (सं) वह वृत्त या छन्द जिसके चारों चरण समान हों।
**समवृत्ति** पुं० (सं) धीरता।
**समवेत** वि० (सं) १-एकत्र। इकट्ठा किया हुआ। २-किसी के साथ श्रेणी में आया हुआ। ३-नित्य सम्बन्ध में बँधा हुआ।
**समवेतन** पुं० (सं) सेना, अनुयायियों आदि का एक साथ एकत्र होना। समागमन। (रैली)।
**समवेत होना** क्रि० (हि) १-एकत्र होना। २-सभा, समाज आदि के सदस्यों का एक स्थान पर इकट्ठा या जमा होना। (टु मीट)।
**समवेष** पुं० (सं) समान या एक जैसा वेष या पोशाक
**समशीतोष्ण** वि०(सं) (वह स्थान) जो न अधिक गर्म तथा न अधिक ठण्डा हो।
**समशीतोष्ण कटिबन्ध** पुं० (सं) पृथ्वी के भाग जो उष्णकटिबन्ध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक पड़ते हैं तथा जहां न तो बहुत सर्दी पड़ती है और न हो अधिक गरमी। (टेंपरेट जोन)।
**समशील** वि० (सं) समान आचरण वाला।
**समष्टि** स्त्री० (सं) १-जितने हों उन सबका समूह जिसमें उसके सारे अङ्गों का समावेश होता है। २-साधुओं का वह भण्डारा जिसमें स्थानिक साधु निमन्त्रित होते हैं।
**समसंधि** स्त्री० (सं) दो राष्ट्रों के बीच किया गया वह समझौता या सन्धि जो बराबर की शर्तों पर किया गया हो।

**समसमयवर्ती** वि० (सं) साथ-साथ होने वाले।
**समसर** स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।
**समसामयिक** वि० (सं) (वह दो या दो से अधिक) जो एक ही काल या समय में संघटित हुए हों।
**समसेर** स्त्री० (हि) तलवार।
**समस्त** वि० (सं) १-कुल। समग्र। २-समास के नियमों से मिला या मिलाया हुआ।
**समस्या** स्त्री० (सं) १-वह उलझन वाली बात जिसका निर्णय सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसङ्ग (प्रॉबलम)। २-सङ्घटन। ३-किसी छन्द आदि का वह अन्तिम चरण जो कवियों के आगे पूरा करने के लिये रखा जाता है।
**समस्यापूर्ति** स्त्री० (सं) १-किसी समस्या के आधार पर कोई छन्द आदि बनाना। २-किसी विचारणीय विषय की पूर्ति होना।
**समां** पुं० (हि) समय। वक्त।
**समा** स्त्री० (सं) वर्ष। साल। पुं० दे० 'समाँ'। पुं० (अ) आकाश।
**समाई** स्त्री० (हि) १-सामर्थ्य। शक्ति। २-बिसात। औकात।
**समाउ** पुं० (हि) निर्वाह। गुञ्जाइश।
**समाकलन** पुं० (सं) किसी खाते में प्राप्त रकम को उसमें जमा की ओर लिखना। (क्रेडिट)।
**समाख्यान** पुं० (सं) १-भली भांति कहना। २-किसी घटना की मुख्य बातें क्रम से कहना। (नेरेशन)।
**समागत** वि० (सं) १-आया हुआ। २-जो सामने मौजूद या उपस्थित हो।
**समागति** स्त्री० (सं) आगमन।
**समागम** पुं० (सं) १-आना। २-कुछ लोगों का किसी उद्देश्य को लेकर आपस में मिलना या सम्बद्ध होना (एसोसियेशन)। ३-मिलना। ४-मैथुन।
**समागमन** पुं० (सं) दे० 'समवेतन'। (रैली)।
**समाचार** पुं० (सं) संवाद। खबर। हाल। (न्यूज़)।
**समाचारपत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचारपत्र तथा स्थानीय समाचार छपे रहते हैं। (न्यूजपेपर)।
**समाचारप्रेष** पुं० (सं) १-अनेक प्रकार की खबरों का भेजा जाना। २-समाचार के रूप में भेजी जाने वाली सामग्री (न्यूज-डिस्पेच)।
**समाचारसूचना** स्त्री० (सं) वह सूचना जो समाचार के रूप में समाचारपत्र में छपने के लिए निकाली गई हो। (प्रेस नोट)।
**समाज** पुं० (सं) १-समूह। गिरोह। २-एक स्थान पर रहने वाला या एक प्रकार का काम करने वालों का वर्ग या समुदाय। ३-किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। (सोसाइटी)।
**समाजवाद** पुं० (सं) वह सिद्धांत जिसके अनुसार राज्य के समस्त उत्पादन साधनों पर समाज का अधिकार हो तथा उससे उत्पादित संपत्ति का जहां तक हो सके सबको बराबर मिलने की व्यवस्था हो। (सोशलिज्म)।
**समाजवादी** पुं० (सं) जो समाजवाद के सिद्धांत को मानता हो। (सोशलिस्ट)।
**समाजविग्रह** पुं० (सं) वर्गयुद्ध।
**समाजशास्त्र** पुं० (सं) वह शास्त्र जो मनुष्यों को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज तथा संस्कृति की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करता है। (सोशियोलॉजी)।
**समाजसेवक** पुं० (सं) समाज की उन्नति या भलाई के लिए काम करने वाला।
**समाजसेवा** स्त्री० (सं) समाज की उन्नति या भलाई के लिए काम करना।
**समाजी** पुं० (हि) किसी समाज (विशेषतः आर्य-समाज) का सदस्य।
**समाजीकरण** पुं० (सं) १-उत्पादनों का साधनों को समाज के अधिकार के अन्तर्गत लाना। २-निजी तथा वैयक्तिक संपत्ति पर सामाजिक अधिकार होना (सोशेलाइजेशन)।
**समाज्ञा** स्त्री० (सं) यश। कीर्ति। बड़ाई।
**समाज्ञात** वि० (सं) १-प्रसिद्ध। २-माना हुआ।
**समादत्त** वि० (सं) सम्मानित। आदर के योग्य।
**समादर** पुं० (सं) आदर। सम्मान।
**समादरणीय** वि० (सं) आदर-सत्कार के योग्य।
**समादान** पुं० (सं) १-पूरा-पूरा दान देना। २-उपयुक्त दान देना। ३-किए गये व्रतों की उपेक्षा। (जैन०)
**समादृत** वि० (सं) सम्मानित। जिसका खूब आदर हुआ हो।
**समादेय** वि० (सं) १-आदर करने के योग्य। २-स्वागत करने योग्य।
**समादेश** पुं० १-वह आज्ञा जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। (इनजंक्शन)। २-साधिकार किसी को कोई काम करने की आज्ञा देना।
**समाद्रित** वि० (सं) दे० 'समादृत'।
**समाधान** पुं० (सं) १-किसी का सन्देह दूर करने वाली बात या काम। २-मतभेद या विरोध दूर करना। ३-निराकरण। निवृत्ति। ४-नियम। ५-अनुसंधान। अन्वेषण। ६-समर्थन। ७-ध्यान। ८-तपस्या। ९-नाटक में कथा भाग की मुख्य घटना।
**समाधानना** क्रि० (हि) १-सान्त्वना देना। २-किसी का सन्देह दूर करना।
**समाधि** स्त्री० (सं) १-ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २-वह स्थान जहां किसी का मृत शरीर या अस्थियां गाड़ी गई हों। ३-योगसाधना जिसमें प्राणी सांसा-

रिक क्लेशों से मुक्ति पाकर अनेक शक्तियां प्राप्त करता है। ४-एक अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी काम के सुगमतापूर्ण होने का वर्णन होता है। ५-नियम। ६-ग्रहण करना। ७-प्रतिज्ञा। ८-बदला। ९-समर्थन। १०-आरोप। ११-चुप रहना। १२-योग। १३-असाध्य काम करने के लिये उद्योग करना।

**समाधिक्षेत्र** पुं० (सं) वह स्थान जहां मृत योगियों, महात्माओं के शव गाड़े जाते हैं। कबरिस्तान।

**समाधित** वि० (सं) जो समाधि में लीन हो।

**समाधिदशा** स्त्री० (सं) वह दशा जब योगी समाधि में परमात्मा में तन्मय होता है और स्वयं को भूल कर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

**समाधिनिष्ठ** वि० (सं) दे० 'समाधिस्थ'।

**समाधिभंग** पु० (सं) किसी बाधा के कारण समाधि का टूट जाना।

**समाधिलेख** पुं० (सं) समाधि या कब्र के पत्थर पर स्मरणार्थ लिखा गया लेख (एपिटा)।

**समाधिस्थ** वि० (सं) जो समाधि लगाये हुए हो।

**समाधिस्थल** पुं० (सं) समाधिक्षेत्र।

**समाधी** वि० (सं) दे० 'समाधिस्थ'।

**समाधेय** वि० (सं) जिसका समाधान हो सके।

**समान** वि०(सं) रूप,गुण, आकार, मान, मूल्य, महत्व आदि के विचार से एक जैसे। बराबर। पु० १-सन्। २-शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। स्त्री० (हि) समानता। बराबरी।

**समानकोणिक बाहुभुज** पुं० (सं) वह बहुभुज जिसके समस्त कोण आपस में बिल्कुल बराबर हों। (एकिवएग्यूलर पॉलिगन)।

**समानता** स्त्री० (सं) समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी।

**समानत्व** पुं० (सं) समानता। बराबरी।

**समानधर्मी** वि० (सं) समान या एक से गुण वाला।

**समाननामा** वि० (सं) नामरासी।

**समानयन** पुं० (सं) अच्छी तरह से या आदरपूर्वक आने की क्रिया।

**समानवयस्क** वि० (सं) एक ही उम्र या आयु का। हमउम्र।

**समानवर्ण** वि० (सं) १-एक ही जाति का। २-एक जैसे रङ्ग का।

**समानशील** वि० (सं) एक जैसे स्वभाव का।

**समानसंख्य** वि० (सं) बारबार गिनती या संख्या वाला।

**समानांतर** वि० (सं) (दो या अधिक रेखाएँ आदि) १-जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें। २-साथ-साथ काम करने या चलने वाला। (पैरेलल)।

**समानांतर चतुर्भुज** पु० (सं) ऐसा चतुर्भुज जिसकी आमने सामने की भुजाएँ समानांतर हों। (पैरेलेलोग्राम)।

**समानांतर रेखाएँ** पुं० (सं) वे रेखाएँ जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक दूसरे से समान अन्तर पर हों। (पैरेलल लाइन्स)।

**समाना** क्रि० (हि) भरना। किसी वस्तु के अन्दर पहुँच कर भर जाना या उसमें लीन होना।

**समानाधिकरण** पुं० (सं) १-व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है। २-एक ही या समान श्रेणी। ३-एक ही पदार्थ पर आधारित।

**समानाधिकार** पुं० (सं) बराबरी का अधिकार।

**समानार्थ** पुं० (सं) वे शब्द जिनका अर्थ एक ही हो अथवा एकसा हो। पर्य्याय।

**समानार्थक** वि० (सं) समान अर्थ वाला।

**समानोदक** पु० (सं) ऐसा सम्बन्धी जिसे तर्पण में दिया हुआ जल मिले। जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।

**समानोदर्य** पुं० (सं) सहोदर।

**समानोपमा** स्त्री० (सं) उपमा-अलंकार का एक भेद।

**समापक** वि० (सं) समाप्त करने वाला।

**समापन** पु० (सं) १-काम पूरा या समाप्त करना (डिस्पोजल)। २-विवाद, विचार आदि के समय उनका अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना (वाइण्डिंग अप)। ३-समाधान। ४-मार डालना

**समापनप्रस्ताव** पुं० (सं) विवादग्रस्त विषय के विवाद को समाप्त करने के लिए कोई प्रस्ताव रखना। विवादांत प्रस्ताव। (मोशन आफ क्लोजर)।

**समापनीय** वि० (सं) १-समाप्त करने योग्य। २-मार डालने योग्य।

**समापनीयपट्टा** पुं० (हि) किसी निश्चित समय के बाद समाप्त हो जाने वाला पट्टा। (टरमिनेबल-लीज)।

**समापन्न** वि० (सं) १-समाप्त किया हुआ। २-मिला हुआ। ३-क्लिष्ट। कठिन। पु० हत्या करना।

**समापादन** पुं० (सं) १-समाप्त या पूरा करना। २-मूल रूप देना।

**समापिका** स्त्री० (सं) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित हो।

**समापित** वि० (सं) समाप्त या पूरा किया हुआ।

**समापी** पुं० (सं) वह जो समाप्त या खतम करता हो।

**समाप्त** वि० (सं) जो खतम या पूरा हो गया हो।

**समाप्तप्राय** वि० (सं) लगभग समाप्त।

**समाप्तलंभ** पुं० (सं) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

**समाप्ति** स्त्री० (सं) १-किसी बात या काम आदि का

समाप्त या पूरा होना। २-प्राप्ति। ३-विवाद का अन्त करना।
**समाप्य** *वि०* (सं) समाप्त करने योग्य।
**समायुक्त** *वि०* (सं) आवश्यकता पड़ने पर दिया या पास पहुँचाया हुआ। (सप्लाइड)।
**समायोग** पुं०(सं) १-ऐसा प्रबन्ध करना कि लोगों की आवश्यकता की वस्तुएँ उन्हें मिल जायँ। (सप्लाई) २-संयोग। ३-बहुत से लोगों का एकत्र होना। ४-निशाना ठीक करना।
**समायोजक** पुं० (सं) वह जो समायोग करता हो अथवा लोगों को उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाता हो (सप्लायर)।
**समायोजन** पु० (सं) दे० 'समायोग'।
**समारंभ** पुं० (सं) १-अच्छी तरह से आरम्भ होना। २-समारोह।
**समारंभण** पुं० (सं) गले लगाना। आलिंगन।
**समारब्ध** *वि०* (सं) आरम्भ या शुरू किया हुआ।
**समारम्भ्य** *वि०*(सं) समारंभ करने के योग्य।
**समाराधन** पुं०(सं)१-भली भांति आराधना या उपासना करना। २-खुश या प्रसन्न करना। ३-सेवा करना।
**समारूढ़** *वि०* (सं) १-चढ़ा हुआ। २-भरा हुआ। (घाव)।
**समारोप** पुं० (सं) १-दे० 'आरोप'। २-स्थानांतरण ३-चढ़ाना।
**समारोपक** पुं०(सं) १-उत्पन्न करने वाला। २-बढ़ाने वाला।
**समारोपण** पुं० (सं) दे० 'आरोपण'।
**समारोपित** *वि०* (सं) १-चढ़ाया या ताना हुआ (धनुष)। २-स्थानांतरित।
**समारोह** पु० (सं) १-भारी आयोजन। धूमधाम। २-धूमधाम से होने वाला कोई बड़ा काम या उत्सव
**समार्हता** *स्त्री०* (सं) समता। बराबरी। सादृश्यता। तुल्यता। (पैरिटि)।
**समालंबन** पु० (सं) सहारा। टेक।
**समालिंगन** पुं० (सं) भली भांति किया गया या प्रगाढ़ आलिंगन।
**समालोचक** पुं० (सं) १-समालोचना करने वाला। २-किसी पदार्थ के गुण, दोष आदि की विवेचना करने वाला। ३-किसी रचना या ग्रन्थ के गुण दोष आदि का प्रतिपादन करने वाला।
**समालोचन** पु० (सं) दे० 'समालोचना'।
**समालोचना** *स्त्री०* (सं) १-अच्छी प्रकार से गुण, दोष का पता लगाने के लिए देखना-भालना। २-इस प्रकार देखे हुए गुणों और दोषों की विवेचना वाला लेख।आलोचना। (रिव्यू)।
**समावर्तन** पु० (सं), १-वापस आना। लौटना। २-अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरुकुल में से स्नातक बनकर लौटने पर होने वाला समारोह या संस्कार
**समावह** *वि०* (सं) प्रस्तुत करने वाला।
**समावाय** पु०(सं) दे० 'समवाय'।
**समावास** पु० (सं) १-रहने का स्थान। निवास स्थान। २-शिविर। पड़ाव।
**समावासित** *वि०* (सं) बसाया या ठहराया हुआ।
**समाविष्ट** *वि०* (सं) १-समाया हुआ। २-एकाग्रचित्त
**समावृत** *वि०* (सं) १-ढका हुआ। २-घेरा हुआ ३-रक्षित। छाया हुआ।
**समावृत्त** *वि०* (सं) जो गुरुकुल से विद्याध्ययन पूर्ण करके लौट आया हो।
**समावेश** पु० (सं) १-एक साथ या एक जगह रहना। २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अन्तर्गत होना।
**समाश्लिष्ट** *वि०* (सं) लीन। संलग्न
**समाश्लेष** पुं० (सं) आलिङ्गन।
**समाश्वस्त** पुं०(सं) १-जिसे भलीभांति आश्वासन मिल गया हो। २-प्रोत्साहित।
**समाश्वासन** पुं०(सं) १-उत्साहित करना। २-अच्छी प्रकार आश्वासन देना।
**समासंग** पुं० (सं) मिलन। मिलाप। मेल।
**समास** पुं० (सं) १-संक्षेप। २-संग्रह। ३-समर्थन। ४-व्याकरण के नियमानुसार दो शब्दों का मिल॰ कर एक होना।
**समासक्त** *वि०* (सं) संयुक्त। मिला हुआ।
**समासचिह्न** पुं० (सं) दे० 'समासरेखा' (हाइफन)।
**समासन्न** *वि०* (सं) निकटस्थ। पास का।
**समासप्राय** *वि०* (सं) जिसमें बहुत अधिक समास हों
**समासबहुल** *वि०* (सं) दे० 'समासप्राय'।
**समासरेखा** *स्त्री०* (सं) दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर संयुक्त शब्द बनाने के लिए उनके बीच में दी जाने वाली छोटी रेखा (हाइफन)।
**समासीन** *वि०* (सं) साथ बैठा हुआ।
**समासोक्ति** *स्त्री०* (सं) वह अर्थालंकार जिसमें समान कार्य, समान लिंग एवं समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।
**समाहरण** पुं० (सं) दे० 'समाहार'।
**समाहर्ता** *वि०* (सं) १-जो किसी वस्तु का संक्षेप करता हो। २-मिलाने वाला। पुं० संग्राहक।
**समाहार** पुं०(सं) संग्रह। राशि। २-ढेर। ३-कर चन्दा आदि उगाहना। (कलेक्शन)। ४-मिलाना। ५-ठीक ढंग से इकट्ठा होना। (फोरमेशन)।
**समाहारद्वंद्व** पुं० (सं) द्वंद्व समास का भेद।
**समाहित** *वि०*(सं) १-एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ। केन्द्रित। शांत। समास। ५-स्वीकृत।
**समाहूत** *वि०* (सं) १-जिसे ललकारा गया हो। २-

बुलाया गया।
**समाह्वाता** वि० (सं) १-बुलाने वाला। २-ललकारने वाला।
**समाह्वान** पुं० (सं) १-आह्वान। बुलाना। २-जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना।
**समितिंजय** पुं० (सं) १-वह जो युद्ध में विजयी हुआ हो। २-यम। ३-विष्णु। ४-वह जिसने किसी सभा आदि में विजय प्राप्त की हो।
**समिति** स्त्री० (सं)१-सभा। समाज। २-किसी विशेष काम के लिये बनी हुई छोटी सभा। (कमिटी)। ३-वैदिक कालीन वह सभा जिसमें राजनैतिक विषयों पर विचार होता था।
**समिध** पुं० (सं) अग्नि।
**समिधा** स्त्री० (सं) दे० 'समिध्'।
**समिधि** स्त्री० (सं) यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
**समिध्** स्त्री० (सं) १-आग जलाने की लकड़ी। २-यज्ञकुण्ड में जलाने की लकड़ी।
**समीकरण** पुं० (सं) १-समान या बराबर करना। २-गणित में वह क्रिया जिसमें किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात-राशि जानी जाती है।
**समीक्षक** पुं० (सं) वह जो समीक्षा करता हो। छान-बीन और जांच-पड़ताल करने वाला। समालोचक।
**समीक्षण** पुं० (सं) १-आलोचना। २-देखना। ३-अन्वेषण। जांच-पड़ताल।
**समीक्षा** स्त्री० (सं) छानबीन या जांच-पड़ताल करने के लिये कोई बात अच्छी तरह देखना। आलोचना।
**समीचीन** वि० (सं) १-उपयुक्त। ठीक। २-न्यायसंगत ३-उचित। वाजिब।
**समीचीनता** स्त्री० (सं) समीचीन होने का भाव या धर्म।
**समीति** स्त्री० (हि) दे० 'समिति'।
**समीप** वि० (सं) पास। निकट। नजदीक।
**समीपता** स्त्री० (सं) निकटता। समीप होने का भाव या धर्म।
**समीपवर्ती** वि० (सं) समीप या पास का।
**समीपस्थ** वि० (सं) पास का।
**समीर** पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-पथिक। बटोही। ३-प्रेरणा।
**समीरकुमार** पुं० (सं) हनुमान।
**समीरण** पुं० (सं) १-वायु। हवा। पवनदेव।
**समीहा** स्त्री० (सं) १-प्रयत्न। उद्योग। २-इच्छा। ३-जांच। पड़ताल।
**समुंद** पुं० (हि) समुद्र।
**समुंदर** पुं० (हि) समुद्र।
**समुंदरफल** पुं० (हि) दे० 'समुद्रफल'।
**समुचित** वि० (सं) १-उचित। ठीक। २-उपयुक्त।
**समुच्चय** पुं० (सं)१-कुछ वस्तुओं का एक में मिलना (कम्बिनेशन)। २-समूह। राशि। ३-कुछ वस्तुओं का एक स्थान पर एकत्र होना। (क्यूमलेशन)। ४-वह आपत्ति जिसमें यह निश्चय हो कि इस उपाय के अतिरिक्त अन्य उपायों से काम हो सकता है। ५-साहित्य में एक अलङ्कार।
**समुच्छ्रित** वि० (सं) १-ढेर लगाया हुआ। २-संगृहीत।
**समुच्छित्ति** स्त्री० (सं) १-विनाश। २-टुकड़े-टुकड़े करना।
**समुच्छिन्न** वि० (सं) १-नष्ट। २-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। फटा हुआ।
**समुच्छेद** पुं० (सं) १-जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २-ध्वंस। नाश।
**समुच्छेदन** पुं० (सं) १-नष्ट करना। २-जड़ से उखाड़ना।
**समुच्छ्वास** पुं० (सं) लम्बा सांस। दीर्घप्रश्वास।
**समुज्ज्वल** वि० (सं) १-खूब उजला। चमकता हुआ। २-चमकीला।
**समुझ** स्त्री० (हि) दे० 'समझ'।
**समुझना** क्रि० (हि) दे० 'समझना'।
**समुझनि** स्त्री० (हि) समझने की क्रिया।
**समुत्कंटकित** वि० (सं) जिसमें रोमांच हो।
**समुत्कंठा** स्त्री० (सं) १-घबड़ाहट। व्यग्रता। २-तीव्र इच्छा।
**समुत्कीर्ण** वि० (सं) टूटा हुआ।
**समुत्थान** पुं० (सं) १-उत्पत्ति। २-उठने की क्रिया या भाव। ३-आरम्भ।
**समुत्थापक** वि० (सं)जगाने या उठाने वाला। (बौद्ध)
**समुत्सुक** वि० (सं) १-अत्यन्त विकल या चिंतित। २-विशेष रूप से उपयुक्त।
**समुद** वि०(सं) प्रसन्नतायुक्त। अव्य० प्रसन्नतापूर्वक
**समुदय** पुं० (सं) १-उदय। २-दिन। ३-लड़ाई। ४-ज्योतिष में लग्न। वि० सब। समस्त। कुल।
**समुदलहर** पुं० (हि) एक प्रकार का कपड़ा।
**समुदाय** पुं० (सं) १-समूह। ढेर। २-झुण्ड। गिरोह ३-वर्ग। (कम्यूनिटी)। ४-युद्ध। ५-उदय। ६-उन्नति। ७-पीछे की ओर की सेना।
**समुदायि** पुं० (हि) ढेर। समूह।
**समुदाव** पुं० (हि) समूह। राशि। झुण्ड।
**समुदित** वि० (सं) १-उठा हुआ। २-उत्पन्न। जात। ३-उन्नत।
**समुद्गीर्ण** वि० (सं) १-वमन किया हुआ। २-जो उगला गया हो।
**समुद्धरण** पुं० (सं)१-वमन करने पर पेट से निकला हुआ अन्न। २-ऊपर की ओर उठाने या निकालने की क्रिया। ३-उद्धार।
**समुद्धर्ता** पुं० (सं)१-वह जो ऊपर की ओर उठता या

निकलता हो। २-उद्धार करने वाला। ३-ऋण उतारने वाला।

**समुद्धार** पु० (सं) दे० 'समुद्धरण'।

**समुद्बोधन** पुं० (सं) १-पूरी तरह जागृति करना। २-होश में आना।

**समुद्यत** वि० (सं) अच्छी तरह से तैयार।

**समुद्र** पुं० (सं) खारे पानी की वह जलराशि जो पृथ्वी के स्थल भाग को चारों ओर से घेरे हुए हैं सागर। उदधि। २-किसी विषय या गुणादि का बहुत बड़ा आगार। ३-एक प्राचीन जाति।

**समुद्रगमन** पुं० (सं) समुद्रयात्रा (वोयेज)।

**समुद्रगा** स्त्री० (सं) १-नदी। २-गंगा नदी।

**समुद्रगामी** वि० (सं) समुद्री व्यापार करने वाला। समुद्र में जाने वाला।

**समुद्रझाग** पुं० (हि) समुद्र का फेन। समुद्रफेन।

**समुद्रतटवर्ती प्रदेश** पुं० (सं) समुद्र के किनारे का किसी देश का भूभाग। (मैरिटाइम प्रॉविन्स)।

**समुद्रयिता** स्त्री० (सं) नदी।

**समुद्रपत्नी** स्त्री० (सं) नदी।

**समुद्रफल** पुं० (सं) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल दवा के काम आते हैं।

**समुद्रफेन** पुं० (सं) समुद्र के झाग जो उसके किनारे पर आया करते हैं तथा जो औषध के रूप में काम आते है।

**समुद्रमंथन** पुं० (सं) दे० 'समुद्रमथन'।

**समुद्रमथन** पु०(सं) १-समुद्र को मथना। २-पुराणानुसार एक दानव का नाम।

**समुद्रमालिनी** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**समुद्रमेखला** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**समुद्रयात्रा** स्त्री० (सं) समुद्र मार्ग से अन्य देशों में जाना।

**समुद्रयान** पुं० (सं) समुद्र में चलने वाला जहाज। जलपोत।

**समुद्रलवण** पुं० (सं) समुद्र के जल से तैयार होने वाला नमक।

**समुद्रवल्लभा** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**समुद्रवासना** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**समुद्रवह्नि** पुं० (सं) बड़वानल।

**समुद्रवासी** पुं० (सं) समुद्र में या समुद्र तट पर रहने वाला।

**समुद्रांबरा** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**समुद्री** वि० (हि) १-समुद्र-सम्बन्धी। २-समुद्र की ओर से आने वाली। ३-नौ-बल सम्बन्धी।

**समुद्रीतार** पुं० (हि) समुद्र में पानी के अन्दर से होकर जाने वाला तार। (केबल)।

**समुद्रीय** वि० (सं) समुद्र का। समुद्र सम्बन्धी।

**समुद्वेग** पु० (सं) १-अत्यधिक घबराहट। २-डर। त्रास।

**समुन्नत** वि० (सं) १-बहुत ऊँचा। २-जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। पुं० एक प्रकार का खंभा। (वास्तुविद्या)।

**समुन्नति** स्त्री० (सं) १-पर्याप्त उन्नति। २-महत्त्व। उच्चता।

**समुन्मूलन** पुं० (सं) पूर्णरूप से नाश।

**समुपकरण** पु० (सं) सामान। सामग्री।

**समुपस्थित** वि० (सं) १-आया हुआ। उपस्थित। २-प्रकट।

**समुल्लास** पुं० (सं) १-उल्लास। आनन्द। २-ग्रन्थ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

**समुल्लेख** पुं० (सं) १-खनन। खोदना। २-छीलना। ३-उन्मूलन।

**समुहा** वि०(हि) १-सामने का। आगे का। २-सामना। अव्य० सामने।

**समुहाना** क्रि० (हि) सामने आना। सन्मुख होना।

**समुहैं** अव्य० (हि) सामने।

**समूचा** वि०(हि) सारा। पूरा। साबुत।

**समूढ** वि० (सं) १-ढेर लगाया हुआ। संगृहीत। २-पकड़ा हुआ। ३-भोगा हुआ। ४-विवाहित। ५-ठीक।

**समूर** पुं० (सं) दे० 'समूरु'।

**समूरु** पु० (सं) साबर नामक हिरन।

**समूरुक** पुं० (सं) दे० 'समूरु'।

**समूल** वि० (सं) जिसका मूल या हेतु हो। अव्य० जड़ से। मूल सहित।

**समूह** पुं० (सं) १-समुदाय। झुण्ड। २-एक जैसी बहुत सी वस्तुओं का ढेर।

**समूहकार्य** पुं० (सं) किसी वर्ग विशेष या समाज का कार्य।

**समूहवाद** पु०(सं) १-भूमि आदि पर सामूहिक प्रभुत्व की आवश्यकता पर जोर देने वाला सिद्धांत। २-उद्योग में सामूहिक पूंजी का प्रतिपादन करने का सिद्धांत। (कलैक्टिविज़्म)।

**समूहोत्पादन** पुं० (सं) दे० 'पुंजोत्पादन'। (मास-प्रोडक्शन)।

**समृद्ध** वि० (सं) सम्पन्न। धनवान्।

**समृद्धि** स्त्री० (सं) १-धन आदि की अधिकता। सम्पन्नता। २-सफलता। ३-प्रभाव।

**समेटना** क्रि० (हि) १-बिखरी या फैली हुई वस्तुएँ एकत्रित करना। २-अपने ऊपर लेना।

**समेत** वि० (सं) संयुक्त। मिला हुआ। अव्य० सहित साथ।

**समै** पु० (हि) समय।

**समैया** पुं० (हि) समय।

**समो** पु० (हि) समय।

**समोखना** क्रि० (हि) बहुत ताकीद या जोर देकर कहना।
**समोना** क्रि० (हि) मिलाना।
**समोसा** पु० (हि) सिंघाड़े के आकार का एक नमकीन पकवान।
**समौ** पु० (हि) समय।
**समौरिया** वि० (हि) समवयस्क।
**सम्** उप०(सं) शब्दों के पहले आकर—साथ, पूर्णता, अच्छाई आदि का सूचक एक उपसर्ग।
**सम्मंत्रणा** स्त्री०(स) आपस में मशवरा करने का कार्य (कॉन्फ्रेंस)।
**सम्मत** वि० (सं) सहमत। जिसकी राय मिलती हो।
**सम्मति** स्त्री० (सं) १- राय। सलाह। २-आदेश। ३-मत। ४-किसी विषय में लोगों का एक मत होना। ५-किसी प्रस्ताव आदि को ठीक मानकर दी जाने वाली अनुमति। (कॉन्सेन्ट)।
**सम्मन** पु० (अं) न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है। (सम्मन्स)।
**सम्मर्द** पु० (सं) १-युद्ध। लड़ाई। समूह। भीड़। ३-आपसी लड़ाई-झगड़ा।
**सम्मान** पु० (सं) इज्जत। गौरव। प्रतिष्ठा। वि० १-मान सहित। २-जिसका मान पूरा हो।
**सम्मानना** क्रि०(हि) सम्मान करना। आदर करना।
**सम्मानित** वि० (सं) प्रतिष्ठित। इज्जतदार।
**सम्मान्य** वि० (स) आदर करने योग्य।
**सम्मार्जक** पु० (स) १-झाड़ने वाला। मेहतर। भंगी २-झाड़ू।
**सम्मार्जन** पु० (सं) झाड़ना। बुहारना।
**सम्मार्जनी** स्त्री० (सं) झाड़ू।
**सम्मार्जित** वि०(सं) १-भली भांति झाड़ा-बुहारा हुआ। २-नष्ट किया हुआ।
**सम्मिलन** पु० (सं) मेल। मिलाप।
**सम्मिलन-विलेख** पु० (सं) वह लिखित समझौता जिसके अनुसार किसी राज्य या प्रदेश को किसी बड़े राज्य में मिलाने की शर्त तथा सम्बन्धी पक्षों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हों। (इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन)।
**सम्मिलित** वि० (सं) मिला हुआ। युक्त। मिश्रित
**सम्मिश्रक** पु० (सं) १-वह जो किसी प्रकार का मिश्रण करता हो। २-औषधियों का मिश्रण तथा रोगियों के लिए दवा तैयार करने वाला। (कम्पाउण्डर)।
**सम्मिश्रण** पु० (स) १-मेल। मिलावट। कई तरह की औषधियां मिलाकर रोगी के लिए दवा बनाना (कम्पाउंडिंग)।
**सम्मीलन** पु०(स) मुँदना। सिकुड़ना। (पुष्पादि का।
**सम्मुख** अव्य० (सं) समक्ष। सामने।
**सम्मुखकोण** पु० (स) दो सीधी रेखाओं के किसी एक बिंदु पर एक दूसरे को काटने पर बने आमने-सामने के दोनों कोण। (वर्टीकली ओपोजिट एंगल्ज)।
**सम्मेलन** पु० (सं) किसी विशेष उद्देश्य से या किसी बात पर विचार करने के लिए एकत्र होने वाला समाज (कानफरेंस)। २-जमघट। ३-मिलाप।
**सम्मोदन** पु० (सं) किसी नियम आदि की उच्चाधिकारियों द्वारा पुष्टि। (सैंक्शन)।
**सम्मोह** पु० (सं) १-मोह। प्रेम। २-भ्रम। संदेह। २-मूर्छा। बेहोशी। ४-एक वर्णवृत्त।
**सम्मोहक** पु० (स) १-लुभावना। २-एक प्रकार का सन्निपातज्वर।
**सम्मोहन** पु० (सं) १-मोहित करना। २-वह जिससे मोह उत्पन्न हो। ३-कामदेव के पांच बाणों में एक
**सम्मोहित** वि०(सं) १-मूर्छित। बेहोश। मुग्ध किया हुआ।
**सम्म्राज** पु० (हि) साम्राज्य।
**सम्यक्** वि० (स) पूरा। सब। अव्य० १-सब तरह से अच्छी प्रकार। २-स्पष्टतः। ३-पूर्णतयाः।
**सम्याना** पु० (हि) दे० 'शामियाना'।
**सम्रथ** वि० (हि) दे० 'समर्थ'।
**सम्राज्ञी** स्त्री०(सं)सम्राट की पत्नी। २-किसी साम्राज्य की अधीश्वरी।
**सम्राट** पु० (सं) महाराजाधिराज। वह बड़ा राजा जिसके आधीन अनेक राज्य या राजा हो। (एम्पररर)।
**सम्हलना** क्रि० (हि) दे० 'सँभालना'।
**सय** वि० (हि) सौ।
**सयण** पु० (हि) शयन। लेटने की क्रिया।
**सयन** पु० (हि) शयन।
**सयान** पु० (हि) बुद्धिमानी। चतुराई।
**सयानपन** पु० (हि) चतुरता।
**सयाना** पु०(हि) अधिक या पूरी आयु वाला। वयस्क वि० १-बुद्धिमान। २-चतुराई। धूर्त।
**सरंजाम** पु० (अ) १-कार्य की समाप्ति। २-व्यवस्था ३-सामग्री। सामान।
**सरंड** पु० (सं) १-गिरगिट। २-एक पक्षी का नाम। ३-लम्पट।
**सरःकाक** पु० (स) हंस।
**सरःकाकी** स्त्री० (सं) हंसनी।
**सर** पु० (सं) १-जलाशय। तालाब। झील। (हि) १-तीर। २-चिता। (फा) १-सिर। २-सिरा। चोटी। ३-ताश का कोई बड़ा पत्ता। ४-सरदार। ५-शीर्षक। वि० १-जीता हुआ। अभिभूत। (अ) अंग्रेजों के शासन काल में उनके सहायक तथा

खुशामदियों को दी जाने वाली एक बड़ी उपाधि।

**सरअंजाम** पुं० (फा) दे० 'सरंजाम'।

**सरई** स्त्री० (हि) सरपत का एक भेद।

**सरकंडा** पु० (हि) सरपत की जाति का एक पौधा।

**सरक** पु० (सं) १-सरकने की क्रिया या भाव। २-गुड़ की बनी मदिरा। ३-मद्यपात्र। ४-शराब का खुमार। स्त्री० (हि) बांस आदि की छोटी फाँस या सींक जो खाल आदि में धँस जाती है।

**सरकना** क्रि० (हि) खिसकना।

**सरकश** वि० (फा) १-उद्दंड। उद्धत। २-शरारती। ३-शासन न मानने वाला।

**सरकशी** स्त्री० (फा) १-उद्दंडता। २-शरारत।

**सरकसी** पुं० (अ) वह दल जो पशुओं और कलाबाजी आदि का खेल दिखाता है।

**सरकार** स्त्री० (फा) १-मालिक। २-देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता (गवर्नमेन्ट)।

**सरकारी** वि० (फा) १-सरकार या मालिक का। २-राज्य का। राजकीय।

**सरकारी अभियाचना** स्त्री० (हि) जनता की अपनी आवश्यकता बतलाते हुए राज्य से की जाने वाली मांग (पब्लिक डिमांड)।

**सरखत** पुं० (फा) १-वह कागज या दस्तावेज जिस पर मकान, दुकान आदि के किराये पर दिये जाने की शर्तें लिखी होती हैं। २-परवाना। आज्ञापत्र। ३-दिये हुए या चुकाये हुए ऋण का ब्यौरा।

**सरग** पु० (हि) स्वर्ग।

**सरगना** पुं० (फा) सरदार। अगुवा।

**सरगम** पुं०(हि) सङ्गीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम। स्वरग्राम।

**सरगरोह** पु० (फा) अगुवा। मुखिया। सरदार।

**सरगर्मी** स्त्री० (फा) १-जोश। आवेश। २-उमंग। उत्साह।

**सरगही** स्त्री० (हि) दे० 'सहरगही'।

**सरगुन** वि० (हि) दे० 'सगुण'।

**सरगुनिया** पुं० (हि) वह जो सगुण का उपासक हो

**सरजना** क्रि० (हि) १-सृष्टि करना। २-रचना। बनाना।

**सरज़मीन** स्त्री० (फा) देश। राज्य।

**सरजा** पुं० (हि) १-सरदार। २-सिंह।

**सरजीव** वि०(हि) जिसमें जान या जीव हो। सजीव

**सरजोर** वि० (फा) १-जबरदस्त। २-उद्दण्ड। ३-विद्रोही। ३-बलवान।

**सरण** पुं० (स) सरकना। खिसकना।

**सरणमार्ग** पुं० (स) जाने का रास्ता।

**सरणि** स्त्री० (सं) दे० 'सरणी'।

**सरणी** स्त्री० (स) १-मार्ग। रास्ता। २-लकीर। रेखा ३-पगडंडी। ४-ढंग।

**सरतराश** पुं० (स) नाई। सिर के बाल काटने वाला।

**सरताज** पुं० (फा) दे० 'सिरताज'।

**सरताबरता** पु० (हि) बांट। बँटाई।

**सरतारा** वि० (हि) जो अपना काम करके निश्चिंत हो गया हो।

**सरद** वि० (हि) दे० 'सर्द'।

**सरदई** वि० (हि) सरदे के रङ्ग का। हरापन लिए पीला रंग।

**सरदर** अव्य० (हि) १-एक सिरे से। २-औसत में।

**सरदर्द** पुं० (फा) १-सिर का दर्द। २-कष्ट। दुःख।

**सरदा** पुं० (फा) एक प्रकार का बढ़िया काबुली खरबूजा।

**सरदार** पु० (फा) १-अगुवा। नायक। २-किसी प्रदेश का शासक। ३-धनी। ४-सिखों की पदवी।

**सरदारनी** स्त्री० (हि) १-सरदार की पत्नी। २-कोई प्रतिष्ठित सिख महिला।

**सरदारी** स्त्री० (फा) सरदार का पद या भाव।

**सरधन** वि० (हि) धनवान्।

**सरधा** स्त्री० (हि) दे० श्रद्धा। पुं० दे० 'सरदा'।

**सरन** स्त्री० (हि) दे० 'शरण'।

**सरनदीप** पुं० (हि) लंका। सिंहलद्वीप।

**सरना** क्रि० (हि) १-खिसकना। चलना। २-हिलना। ३-काम चलना। ४-निबटना।

**सरनाम** वि० (फा) प्रसिद्ध। मशहूर।

**सरनामा** पुं० (फा) १-शीर्षक। २-पत्र के आरम्भ का सम्बोधन। ३-लिफाफे आदि पर लिखा जाने वाला पता।

**सरनी** स्त्री० (हि) रास्ता। मार्ग।

**सरपंच** पु०(फा) पंचायत का सभापति। पंचों में मुख्य

**सरपंजर** पुं० (हि) बाणों का बना घेरा या पिंजड़ा।

**सरप** पु० (हि) दे० 'सर्प'।

**सरपट** पुं० (हि) घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल। अव्य० तेज चाल में।

**सरपत** पु० (हि) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लंबी पत्तियां होती हैं जो छप्पर आदि बनाने के काम आती है।

**सरपरस्त** पुं०(फा)१-अभिभावक। संरक्षक। २-रक्षा करने वाला।

**सरपरस्ती** स्त्री० (फा) १-अभिभावकता। २-संरक्षा।

**सरपि** पु० (हि) घी।

**सरपेंच** पुं० (फा) दे० 'सरपेच'।

**सरपेच** पुं० (फा) पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।

**सरफ़राज़** वि० (फा) १-उच्च पदस्थ। धन्य। कृतार्थ

**सरफराना** क्रि० (हि) व्याकुल होना। घबराना।

**सरफ़रोश** वि० (फा) खतरा मोल लेने वाला। निडर

**सरफरोशी** स्त्री०(फा) १-निडरता। २-वीरता। जान पर खेल जाना।
**सरफा** पुं० (हि) दे० 'सर्फ'।
**सरब** वि० (हि) दे० 'सर्व'।
**सरबत्तरि** अव्य० (हि) हर जगह। सर्वत्र।
**सरबदा** अव्य० (हि) सर्वदा। हमेशा।
**सरबराह** पुं० (फा) १-प्रबंधकर्ता। २-मजदूरों आदि का जमादार। ३-मार्ग में ठहरने तथा भोजन का का प्रबन्ध करने वाला।
**सरबस** पुं० (हि) दे० 'सर्वस्व'।
**सरबसर** अव्य०(फा) सरासर। सोलहों आने। बराबर
**सरबाज़** वि० (फा) निडर। वीर। जान पर खेलने वाला।
**सरबुलन्द** वि० (फा) सम्मानित। प्रतिष्ठित।
**सरबोर** वि० (हि) दे० 'सराबोर'।
**सरम** स्त्री० (हि) शरम। लज्जा।
**सरमद** वि० (म) १-नित्य। सदा रहने वाला। २-मस्त।
**सरमा** पुं० (म) शीत काल। स्त्री० (म) १-देवताओं की एक कुतिया का नाम। २-कश्यप की एक पत्नी का नाम। ३-कुतिया।
**सरमाई** स्त्री० (फा) सर्दी के कपड़े। वि० जाड़े के।
**सरमापुत्र** पुं० (सं) कुत्ता।
**सरमाया** पुं०(फा) १-मूलधन। पूँजी। २-धन-दौलत संपत्ति।
**सरमायादार** पुं० (फा) धनी। अमीर। पूँजीपति।
**सरमायादारी** स्त्री०(फा) पूँजीपति होने का भाव।
**सरयू** स्त्री० (म) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम।
**सरराना** क्रि० (हि) हवा में बहने या हवा में किसी वस्तु को वेग से हिलने या चलने से उत्पन्न शब्द।
**सरल** वि० (सं) १-निष्कपट। सीधा-साधा। २-सहज। सुगम। ३-सच्चा। पुं० १-चीड़ का पेड़ तथा इससे निकलने वाला गन्धाबिरोजा। २-एक चिड़िया। ३-अग्नि। ४-एक बुद्ध का नाम।
**सरलकाष्ठ** पुं० (म) चीड़ की लकड़ी।
**सरलता** स्त्री० (सं) १-सीधापन। निष्कपटता। २-सुगमता। ३-सादगी। ४-सत्यता।
**सरलद्रव** पुं०(सं) १-गन्धाबिरोजा। तारपीन का तेल
**सरलनिर्यास** पुं०(सं) १-गन्धाबिरोजा। २-तारपीन का तेल।
**सरलरेखा** स्त्री० (सं) वह रेखा जिसकी दिशा सदा एक ही रहती हो। (स्ट्रेट लाइन)।
**सरलित** वि० (सं) सीधा। जो सीधा किया हुआ हो।
**सरलीकरण** पुं० (म) किसी कठिन विषय को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्प्लिफिकेशन)।
**सरव** वि० (सं) शब्दायमान।
**सरवन** पुं० (हि) दे० 'श्रवण'।
**सरवनी** स्त्री० (हि) दे० 'सुमिरनी'।
**सर-ब-पा** अव्य० (फा) सिर से पैर तक। पुं० सर्वाङ्ग
**सरवर** पुं० (हि) दे० 'सरोवर'। पुं० (फा) अधिपति सरदार।
**सरवरि** स्त्री० (हि) १-समता। बराबरी। २-प्रतियोगिता।
**सरवरिया** वि० (हि) सरयू पार का। पुं० सरयूपारी।
**सर-ब-सामान** पुं० (फा) सामान। असबाब।
**सरवाक** पुं० (हि) १-प्याला। सम्पुट। २-दीया। कसोरा।
**सरवान** पुं० (हि) तम्बू। खेमा।
**सरवार** पुं० (हि) सरयू पार का भू-भाग।
**सरशुमारी** स्त्री० (फा) मर्दुमशुमारी।
**सरस** वि० (सं) १-रस से भरा हुआ। २-स्वादिष्ट। रसपूर्ण। ताजा।
**सरसई** स्त्री० (हि) १-सरस्वती देवी। २-सरस्वती-नदी। ३-सरसता। ४-पहले पहल दिखाई देने वाले फल के अङ्कुर।
**सरसठ** वि० (हि) सड़सठ। सात और साठ।
**सरसना** क्रि० (हि)१-पनपना। हरा होना। २-बढ़ना ३-शोभित होना। ४-रसपूर्ण होना। ५-कोमल या सरस भाव में होना।
**सरसर** पुं० (हि) १-जमीन पर रेंगने का शब्द। २-वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। अव्य० सरसर शब्द के साथ।
**सरसराना** क्रि० (हि) १-सनसनाना। २-जल्दी-जल्दी कोई काम करना। ३-सांप या किसी कीड़े का रेंगना।
**सरसराहट** स्त्री० (हि) १-किसी कीड़े आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २-सुरसुराहट। ३-वायु चलने का शब्द।
**सरसरी** अव्य० (हि) १-भली प्रकार ध्यान न लगाकर जल्दी में। २-स्थूल रूप में। ३-विना समझे-बूझे। वि० जल्दी या लापरवाही का।
**सरसरी तहकीकात** स्त्री० (हि) वह जांच जिसमें पूरा साक्ष्य न लिखा जाय।
**सरसरी नज़र** स्त्री० (हि) दे० 'सरसरी निगाह'।
**सरसरीनिगाह** स्त्री० (हि) चलती निगाह। विहग दृष्टि
**सरसाई** स्त्री० (हि) १-सरलता। २-शोभा। सुन्दरता ३-अधिकता।
**सरसाना** क्रि० (हि) १-रसपूर्ण करना। २-हराभरा करना। ३-सजना।
**सरसिका** स्त्री० (सं) १-छोटा ताल। २-बावली।
**सरसिज** पुं० (सं) १-कमल। २-वह जो ताल में उत्पन्न हुआ हो।
**सरसी** स्त्री० (सं) १-छोटा ताल। २-बावली। ३-एक वर्णवृत्त।

सरसुति स्त्री० (देश) दे० 'सरस्वती'।
सरसेटना क्रि० (हि) फटकारना। २-भला बुरा कहना
सरसों स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।
सरसौंहाँ वि० (हि) सरस बनाया हुआ।
सरस्वती स्त्री० (स) १-विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी। शारदा। २-विद्या। ३-पंजाब की एक नदी का नाम। ४-एक रागिनी। ५-गौ। ६-एक छन्द का नाम।
सरस्वती पूजा स्त्री० (सं) सरस्वती पूजा का उत्सव। जो बसन्तपंचमी को मनाया जाता है।
सरहंग पु० (फा) १-सेना का अधिकारी। २-पहलवान। ३-कोतवाल। ४-चोबदार। ५-पैदल सिपाही
सरह स्त्री० (हि) १-पतङ्ग। २-टिड्डी।
सरहज स्त्री० (हि) साले की स्त्री।
सरहद स्त्री० (फा) १-सीमा। २-चौहद्दी बनाने की रेखा।
सरहदी वि० (फा) १-सीमा सम्बन्धी। २-सरहद पर रहने वाला।
सरहरा वि० (हि) लम्बोतरा। ऊपर की ओर सीधा बढ़ा हुआ।
सरहरी स्त्री० (हि) सरपत का एक भेद।
सरहिंद पु० (हि) पंजाब के एक स्थान का नाम।
सरा स्त्री० (हि) १-चिता। २-सराय।
सराई स्त्री० (हि) १-सलाई। शलाका। २-सरकण्डे की पतली छड़ी। ३-सकोरा। स्त्री० (देश) पाजामा
सराग पु० (हि) १-लोहे की सीख। नुकीली छड़। २-एक लकड़ी जो कुलाबे के बीच में लगाई जाती है
सराजाम पु० (हि) सामग्री। सामान।
सराध पु० (हि) दे० 'श्राद्ध'।
सराना क्रि० (हि) पूर्ण करना।
सराप पु० (हि) दे० 'शाप'।
सरापना क्रि० (हि)१-शाप देना। कोसना। २-गाली देना।
सरापा पु० (फा) नख-सिख। सर्वाङ्ग।
सराफ पु० (अ) १-सोने चांदी का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २-रुपये-पैसे रखकर बैठने वाला वह दुकानदार जिससे रुपये नोट आदि भुनाते है।
सराफखाना पु० (अ) बैंक। कोठी।
सराफा पु० (अ) १-सर्राफ का काम। २-सराफों का बाजार।
सराफी स्त्री० (हि) १-सराफ का काम। २-वह लिपि जिसमें महाजन लोग लिखते हैं। मुण्डी। ३-नोट आदि भुनाने का बट्टा।
सराफी परचा पु० (हि) हुण्डी।
सराब पु० (अ) १-मृगतृष्णा। २-धोखा देने वाली चीज। पु०(हि) शराब।
सराबोर वि० (हि) बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर।
सराय स्त्री० (फा) १-यात्रियों के ठहरने का स्थान। २-रहने का स्थान।
सराव पु० (हि) १-मदिरापान का प्याला। २-दीया ३-कसोरा।
सरावगी पु० (हि) श्रावक धर्मावलम्बी। जैन।
सरावन पु० (हि) वह पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करते हैं।
सरास पु० (हि) भूसी।
सरासन पु० (हि) कमान। धनुष।
सरासर अव्य० (हि) १-प्रत्यक्ष। २-बिलकुल। पूरा-पूरा।
सरासरी स्त्री० (अ) १-आसानी। शीघ्रता। २-मोटा अन्दाज। अव्य० (अ) मोटे तौर पर।
सराह स्त्री० (हि) प्रशंसा। बड़ाई।
सराहना क्रि० (हि) प्रशंसा या बड़ाई करना। स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।
सराहनीय वि० (हि) १-प्रशंसा के योग्य। २-अच्छा बढ़िया।
सरि स्त्री० (सं) झरना। निर्झर। स्त्री० (हि) १-बराबरी। समता। २-नदी। वि० (हि) समान। सदृश बराबर।
सरिका स्त्री० (सं) १-मोतियों की लड़ी। २-मुक्ता। मोती। ३-रत्न। ४-छोटा ताल।
सरिगम पु० (हि) दे० 'सरगम'।
सरित स्त्री० (हि) नदी।
सरितपति पु० (सं) समुद्र।
सरिता स्त्री० (हि) धारा। नदी।
सरित् स्त्री० (स) नदी।
सरित्वान् पु० (सं) समुद्र।
सरिया स्त्री०(देश०) १-ऊँची जमीन। २-कोई छोटा सिक्का। पु० (हि) पतली छड़। सरई।
सरियाना क्रि० (हि) १-तरतीब लगाकर इकट्ठा करना २-मारना। लगाना।
सरिवन पु० (हि) १-एक दवा। २-शालपर्णी।
सरिवर स्त्री० (हि) समता। बराबरी।
सरिवरि स्त्री० (हि) समता। बराबरी।
सरिश्त स्त्री० (फा) १-रचना। सृष्टि। २-प्रकृति। स्वभाव।
सरिश्ता पु० (फा) १-कार्यालय २-महकमा। दफ्तर
सरिश्तेदार पु० (फा) १-किसी विभाग का प्रधान अधिकारी। २-मुकदमों की मिसल रखने वाला कर्मचारी।
सरिस वि० (हि) समान। सदृश।
सरी स्त्री० (सं) १-छोटा तालाब। २-झरना। सोता। चश्मा।
सरीक वि० (हि) दे० 'शरीक'।

**सरीकता** स्त्री० (हि) हिस्सा। साझा।
**सरीखा** वि० (हि) समान। सदृश।
**सरीफा** पु० (हि) दे० 'शरीफा'।
**सरीर** पु० (हि) दे० 'शरीर'।
**सरीसृप** पु० (सं) १-रेंगकर चलने वाले जन्तु। २-सर्प। ३-विष्णु।
**सरीहन** अव्य० (अ) खुले तौर पर।
**सरुज** वि० (सं) रोगी।
**सरुष** वि० (सं) कुपित। क्रोधयुक्त।
**सरुहना** क्रि० (हि) चंगा या अच्छा होना।
**सरुहाना** क्रि० (हि) सुधारना या अच्छा करना।
**सरूप** वि० (सं) १-एक ही रङ्ग रूप का। २-समान। ३-सुन्दर। पुं० (हि) स्वरूप।
**सरूपता** स्त्री० (सं) १-समानता। एकरूपता। २-चार प्रकार की मुक्तियों में से एक।
**सरूपत्व** स्त्री० (सं) दे० 'सरूपता'।
**सरूर** पु० (हि) १-खुशी। आनन्द। हलका नशा। मादकता।
**सरेइजलास** अव्य० (फा) भरी कचहरी में।
**सरेख** वि० (हि) अवस्था में बड़ा और समझदार।
**सरेखना** क्रि० (हि) दे० 'सहेजना'।
**सरेखा** वि० (हि) दे० 'सरेख'।
**सरेदरबार** अव्य०(फा) खुल्लमखुल्ला। भरे दरबार में।
**सरेफ** वि० (सं) रेफयुक्त।
**सरे-बाजार** अव्य० (फा). जनता के सन्मुख। खुले आम। सबके सामने।
**सरे-राह** अव्य० (फा) रास्ते में। बीच में।
**सरे-लश्कर** पु० (फा) सेनापति।
**सरेश** पुं० (फा) एक प्रकार का लसदार पदार्थ जो चमड़े को उबाल कर बनाया जाता है तथा गोंद के समान होता है।
**सरे-शाम** अव्य० (फा) शाम होते ही।
**सरेस** पुं० (फा) दे० 'सरेश'।
**सरोंट** स्त्री० (हि) कपड़े में पड़ी सिलवट।
**सरो** पु० (हि) एक प्रकार का सीधा पेड़ जो बगीचे में शोभा के लिए लगाया जाता है।
**सरोई** पु० (हि) एक ऊँचा पेड़ जिसकी छाल से रङ्ग निकाला जाता है।
**सरोकार** पुं०(फा) १-वास्ता। २-आपस के व्यवहार का सम्बन्ध।
**सरोकारी** वि० (फा) वास्ता रखने वाला।
**सरोज** पुं० (सं) कमल।
**सरोजना** क्रि० (हि) पाना।
**सरोजमुखी** वि० (सं) कमल के सदृश मुख वाली। सुन्दरी।
**सरोजिनी** स्त्री० (सं) १-कमलों से भरा जलाशय। २-कमल का फूल। ३-कमलों का समूह।
**सरोता** पुं०(हि) दे० 'सरौता'।
**सरोद** पु० (फा) १-बीन की तरह का एक बाजा। नाचने गाने की क्रिया।
**सरोरुह** पुं० (सं) कमल।
**सरोवर** पु० (सं) १-झील। २-तालाब।
**सरोष** वि० (सं) कुपित। क्रोधित। अव्य० क्रोध से। क्रोध सहित।
**सरोही** स्त्री० (हि) दे० 'सिरोही'।
**सरौता** पु० (हि) सुपारी काटने का औजार।
**सरौती** स्त्री० (हि) १-छोटा सरौता। २-एक प्रकार की ईख।
**सर्कस** पुं० (अ) दे० 'सरकस'।
**सर्कार** स्त्री० (हि) दे० 'सरकार'।
**सर्ग** पुं० (सं) १-गमन। चलना या आगे बढ़ना। २-संसार। सृष्टि। ३-छोड़ना। फेंकना। ४-उद्गम। उत्पत्ति। ५-प्रवाह। ६-स्वभाव। ७-झुकाव। प्रवृत्ति। ८-प्रयत्न। ९-प्रकरण। परिच्छेद। १०-प्राकृतिक वस्तुओं, जीवों आदि का कोई स्वतन्त्र तथा पूरा वर्ग (किङ्डम)। पुं० (हि) दे० 'स्वर्ग'।
**सर्गकर्ता** पुं० (सं) सृष्टि करने वाला। ब्रह्मा।
**सर्गपताली** पुं० (हि) वह बैल जिसका एक सींग ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। वि० ऐंचाताना।
**सर्गबंध** पुं० (सं) वह महाकाव्य या ग्रन्थ जो सर्गों में बद्ध हो।
**सर्गुन** वि० (हि) दे० 'सगुन'।
**सर्चलाइट** स्त्री० (अं) एक तीव्र प्रकाश वाली बिजली की रोशनी जो हवाई अड्डों पर मार्ग-प्रदर्शन के लिये लगी रहती है। प्रकाश-प्रक्षेपक। अन्वेषक-प्रकाश।
**सर्ज** पुं० (सं) १-राल। धूना। २-विजयसाल। ३-सलाई का पेड़। स्त्री० (अं)एक प्रकार का गरम ऊनी कपड़ा।
**सर्जन** पुं० (सं) १-कोई वस्तु छोड़ना या चलाना। २-सृष्टि होना। ३-कोई वस्तु बनाकर तैयार करना (क्रिएशन)। ४-सेना का पिछला भाग। ५-साल का गोंद। पुं० (अं) शल्यचिकित्सक।
**सर्जनिर्यासक** पुं० (सं) राल। धूना।
**सर्जू** स्त्री० (हि) सरयू नदी।
**सर्त** स्त्री० (हि) दे० 'शर्त'।
**सर्द** वि० (फा) १-ठण्डा। शीतल। २-सुस्त। मन्द। ३-निरुत्साह।
**सर्दई** वि० (हि) कुहरापन लिये पीला। खरबूदे के रङ्ग का।
**सर्दगर्म** वि० (फा) १-समय का हेरफेर। २-ऊँच-नीच।
**सर्दमिजाज** वि० (फा) जिसमें उत्साह न हो।
**सर्दा** पु० (फा) दे० 'सरदा'।
**सर्दार** पुं० (हि) दे० 'सरदार'।

**सर्दी** स्त्री० (हि) १-ठंड। शीतलता। २-जाड़ा। शीत। ३-जुकाम।
**सर्दीगर्मी** स्त्री० (हि) जाड़ा-गरमी।
**सर्प** पु० (सं) १-साँप। २-रेंगना। ३-नागकेसर। ४-एक म्लेच्छ जाति।
**सर्पकोटर** पुं० (सं) साँप का बिल। बांबी।
**सर्पगृह** पुं० (सं) बांबी।
**सर्पण** पुं० (सं) १-रेंगना। २-छोड़े हुए तीर का भूमि से लगते हुए जाना।
**सर्पफेण** पुं० (सं) अफीम।
**सर्पबेलि** स्त्री० (सं) पान। नागवल्ली।
**सर्पभक्षक** पुं० (सं) १-मोर। मयूर। २-नकुल।
**सर्पभुक** पुं० (सं)१-नेवला। २-मोर। ३-सारस पक्षी
**सर्पमणि** पुं० (सं) साँप के फण का रत्न।
**सर्पयज्ञ** पुं० (सं) सर्पों के नाश के लिये किया जाने वाला यज्ञ।
**सर्पराज** पुं० (सं) १-शेषनाग। २-वासुकि।
**सर्पलता** स्त्री० (सं) दे० 'सर्पवल्ली'।
**सर्पवल्ली** स्त्री० (सं) नागवल्ली। पान।
**सर्पविद्** पुं० (सं) सँपेरा। वि० जिसे साँपों का ज्ञान हो।
**सर्पविद्या** स्त्री० (सं) सांप को पकड़ने तथा वश में करने की विद्या।
**सर्पविवर** पुं० (सं) बांबी। सांप का बिल।
**सर्पवेद** पुं० (सं) दे० 'सर्पविद्या'।
**सर्पसत्र** पु० (सं) दे० 'सर्पयज्ञ'।
**सर्पहा** पुं० (सं) १-गरुड़। २-नेवला।
**सर्पा** स्त्री० (सं) १-सर्पिणी। २-फणिलता।
**सर्पाक्ष** पुं० (सं) १-रुद्राक्ष। २-सरहँटी।
**सर्पाराति** पुं० (सं) दे० 'सर्पारि'।
**सर्पारि** पुं० (सं) १-गरुड़। २-नेवला। ३-मोर।
**सर्पावास** पु० (सं) १-बांबी। सांप का बिल। २-चंदन का वृक्ष।
**सर्पाशन** पुं० (सं) १-मोर। २-गरुड़।
**सर्पि** पुं० (सं) १-घृत। घी। २-एक वैदिक ऋषि का नाम।
**सर्पिणी** स्त्री० (सं) १-सांपिन। २-भुजगी नामक लता।
**सर्पिल** वि० (सं) १-सांप की तरह टेढ़ा-तिरछा। २-सांप की तरह कुण्डली मारे।
**सर्पी** वि० (हि) रेंग कर चलने वाला। पुं० घी।
**सर्फ** पुं० (फा) अपव्यय। फालतू या फ़ज़ूल खर्च। (अ) १-व्यतीत करना। २-खर्च करना।
**सर्फा** पुं० (अ) व्यय। खर्च।
**सर्फी** वि० (अ) जो व्याकरण को समझता हो। वैयाकरण।
**सर्बस** पुं० (हि) दे० 'सर्वस्व'।
**सर्म** स्त्री० (हि) दे० 'शर्म'।
**सर्राफ** पुं० (अ) दे० 'सराफ'।
**सर्राफा** पुं० (हि) दे० 'सराफा'।
**सर्राफी** स्त्री० (हि) दे० 'सराफी'।
**सर्वंकष** वि० (सं) सबको कष्ट देने वाला। निर्दयी। पु० १-पापी-निर्दय व्यक्ति।
**सर्वंभरि** वि० (सं) सबका पालन-पोसन करने वाला।
**सर्वंसहा** स्त्री० (सं) पृथ्वी। धरा।
**सर्वंहर** वि० (सं) सब कुछ हर ले जाने वाला।
**सर्व** वि० (सं) समस्त। सब। कुल। पुं० १-शिव। २-विष्णु। ३-रसौत। ४-पारा। ५-जल।
**सर्वकांचन** वि० (सं) जो खालिस सोने का हो।
**सर्वकाम** पुं० (सं) १-सब इच्छाएँ रखने वाला। २-शिव। ३-एक बौद्ध अर्हत का नाम।
**सर्वकामिक** वि०(सं) समस्त इच्छाएँ पूर्ण करने वाला
**सर्वकाम्य** वि० (सं) १-जिसकी सब लोग इच्छा करें २-जो सबको प्रिय हो।
**सर्वकारी** वि० (सं) सब कुछ करने योग्य। पुं० सब का रचयिता।
**सर्वकाल** अव्य० (सं) सब दिन। हर समय।
**सर्वकालीन** वि० (सं) सब समय या काल का।
**सर्वक्षमा** स्त्री० (सं) किसी विशेष कारणवश किसी विशेष कोटि के बन्दियों को क्षमा प्रदान करके कारागार से एक साथ मुक्त कर देना (एमनेस्टी)।
**सर्वक्षय** पुं० (सं) प्रलय। सब का नाश।
**सर्वक्षारनीति** स्त्री० (सं) युद्धकाल में युद्धग्रस्त क्षेत्र से पीछे हटाने वाली सेनाओं का उपयोगी सामग्री तथा पुल आदि को नष्ट करने की नीति जिससे शत्रु उनसे कोई लाभ न उठा सके (स्कार्च्ड अर्थ पॉलिसी)।
**सर्वगंध** पुं० (सं) १-दालचीनी। २-इलायची। ३-केसर। वि० जिसमें हर प्रकार की गंध हो।
**सर्वग** वि० (सं) सर्वव्यापक। पुं० १-जल। पानी। २-आत्मा। ३-ब्रह्मा। शिव।
**सर्वगामी** वि० (हि) दे० 'सर्वग'।
**सर्वग्रंथि** पुं० (सं) पीपलामूल।
**सर्वग्रह** वि० (सं) एक ही बार में सब कुछ खा जाने वाला।
**सर्वग्रस** पुं० (सं) पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।
**सर्वजनीन** वि० (सं) सार्वजनिक। सब का।
**सर्वजनीय** वि० (सं) सबके लिए लाभकारी।
**सर्वजित्** वि० (सं) १-सबको जीतने वाला। २-उत्तम पुं० १-साठ संवत्सरों में से एक। २-मृत्यु। काल।
**सर्वजीवी** वि० (सं) जिसके, पिता, पितामह तथा प्रपितामह तीनों जीते हों।
**सर्वज्ञ** वि० (सं) सब कुछ जानने वाला। पुं० १-ईश्वर। २-देवता। शिव। ३-बुद्ध।

**सर्वज्ञाता** *वि०* (सं) दे० 'सर्वज्ञ'।
**सर्वतः** *अव्य०* (सं) १-चारों ओर। २-सब प्रकार से ३-पूर्णतया।
**सर्वतोदक्ष** *वि०* (सं) १-जो सब बातों में चतुर हो। २-(वह खिलाड़ी) जो बल्लेबाजी, गेंदबाजी तथा क्षेत्ररक्षणादि सब खेल के अङ्गों में दक्ष हो (ऑलराउन्डर)।
**सर्वतोभद्र** *वि०*(सं) १-सब ओर से शुभ। २-जिसकी मूंछ, दाढ़ी, सिर आदि के सब बाल मुँड़े हों। पुं० १-एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवता पर चढ़ाने वाले वस्त्र पर लगाया जाता है। २-एक प्रकार का चित्र काव्य। ३-एक प्रकार की पहेली। ४-बांस। ५-हठयोग का एक आसन।
**सर्वतोमुख** *वि०* (सं) १-जिसका मुख चारों ओर हो २-व्यापक। पु० १-एक प्रकार की व्यूह रचना। २-जल। पानी। ३-जीव। आत्मा। ४-आकाश। ५-स्वर्ग। ६-अग्नि।
**सर्वत्र** *अव्य०* (सं) सब जगह। हर जगह।
**सर्वथा** *अव्य०* (सं) १-सब प्रकार से। २-सब। बिल्कुल।
**सर्वद** *वि०* (सं) सब कुछ देने वाला।
**सर्वदमन** *वि०*(सं) सब का नाश या दमन करने वाला। पु० भरत।
**सर्वदर्शी** पुं० (सं) सब कुछ देखने वाला।
**सर्वदा** *अव्य०* (सं) हमेशा। सदा।
**सर्वदाता** *वि०* (सं) सर्वस्व देने वाला।
**सर्वदान** पुं० (सं) सर्वस्व दान।
**सर्वदिग्विजय** *स्त्री०* (सं) विश्वविजय।
**सर्वदेवमय** पुं०(सं) शिव। *वि०* जिसमें सब देव हों।
**सर्वदेशीय** *वि०* (सं) सब देशों में पाया जाने वाला।
**सर्वद्रष्टा** *वि०* (सं) सब कुछ देखने वाला।
**सर्वधन्वी** पु० (सं) कामदेव।
**सर्वनाम** पुं० (सं) व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के नाम पर प्रयुक्त होता है-मैं, तू, वह आदि।
**सर्वनाश** पुं० (सं) सत्यानाश। विध्वंस।
**सर्वनियंता** पु० (सं) सब को वश में करने वाला।
**सर्वपावन** *वि०* (सं) सब को पवित्र करने वाला।
**सर्वपूजित** *वि०* (सं) जिसकी सब लोग पूजा करते हों पुं० शिव।
**सर्वपूत** *वि०* (सं) सब तरह से पवित्र।
**सर्वप्रद** *वि०* (सं) सब कुछ देने वाला।
**सर्वप्रिय** *वि०* (सं) सब को प्रिय या भला लगने वाला। (पॉपुलर)।
**सर्वबंधविमोचन** *वि०* (सं) सबके बंधन तोड़ने वाला पुं० शिव।
**सर्वभक्षी** *वि०* (सं) सब कुछ खा जाने वाला। पु० अग्नि।
**सर्वभोगी** *वि०*(सं) सब कुछ भोगने या खाने वाला।
**सर्वभोग्य** *वि०* (सं) जो सबके भोगने योग्य हो।
**सर्वमंगला** *स्त्री०* (सं) १-दुर्गा। २-लक्ष्मी। *वि०* सब प्रकार का मङ्गल करने वाली।
**सर्वरक्षी** *वि०* (सं) सबकी रक्षा करने वाला।
**सर्वरसोत्तम** पुं० (सं) लवण। नमक।
**सर्वरी** *स्त्री०* (हि) दे० 'शर्वरी'।
**सर्वरीस** पुं० (हि) दे० 'शर्वरीश'।
**सर्ववल्लभ** *वि०* (सं) जो सबको प्यारा या प्रिय हो।
**सर्ववल्लभा** *स्त्री०* (सं) व्यभिचारिणी। कुलटा स्त्री।
**सर्वविद्** *वि०* (सं) सर्वज्ञ। पु० परमात्मा।
**सर्वविद्य** *वि०* (सं) सब विषयों में विद्वान।
**सर्ववेत्ता** *वि०* (सं) दे० 'सर्वज्ञ'।
**सर्वव्यापक** *वि०* (सं) सब पदार्थों में व्याप्त रहने वाला। पुं० १-शिव। २-ईश्वर।
**सर्वव्यापी** *वि०* (सं) दे० 'सर्वव्यापक'।
**सर्वशः** *अव्य* (सं) १-पूरा-पूरा। २-समूचा। ३-पूर्ण रूप से।
**सर्वशक्तिमान्** *वि०* (सं) सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला। पु० ईश्वर।
**सर्वशून्य** *वि०* (सं) १-बिल्कुल खाली। २-सबको बिना अस्तित्व के मानने वाला।
**सर्वश्राव्य** *वि०* (सं) जो सबको सुनने योग्य हो।
**सर्वश्री** *वि०* (सं) एक आदरसूचक विशेषण जो बहुत से नामों के उल्लेख होने पर सबके नाम के आगे 'श्री' न लगा कर उन सबके सामूहिक सूचक रूप में लगाया जाता है।
**सर्वश्रेष्ठ** *वि०* (सं) सबसे उत्तम।
**सर्वसंगत** पु० (सं) साठी धान।
**सर्वस** पु० (हि) दे० 'सर्वस्व'।
**सर्वसम्मत** *वि०* (सं) जिसके पक्ष में सब सदस्यों का मत हो।
**सर्वसम्मति** *स्त्री०* (सं) सब की राय।
**सर्वसह** पु० (सं) गूगल। *वि०* सर्वस्व सहन करने वाला।
**सर्वसहा** *स्त्री०* (सं) पृथ्वी।
**सर्वसाक्षी** पुं० (सं) १-ईश्वर। २-अग्नि। ३-वायु।
**सर्वसाधारण** पु० (सं) सभी लोग। जनता। *वि०* जो सब में पाया जाय (कॉमन)।
**सर्वसामान्य** *वि०* (सं) १-जो सब में सामान्य रूप में पाया जाय (कॉमन)। २-जो सब लोगों के लिए हो (पब्लिक)।
**सर्वसुलभ** *वि०* (सं) जो आसानी से मिल सकता हो
**सर्वस्व** पुं० (सं) सारी संपत्ति या पूञ्जी। जो कुछ पास में हो वह सब कुछ।
**सर्वस्वदंड** पु० (सं) सारी संपत्ति का हरण कर लेने का दण्ड।

**सर्वस्वयुद्ध** पुं० (सं) वह युद्ध जिसमें सब साधनों को प्रयोग किया जाय। सर्वांगिक युद्ध (टोटलवार)

**सर्वस्वाहानीति** स्त्री०(सं) सर्वक्षारनीति (स्कार्च्ड अर्थ (पॉलिसी)।

**सर्वहारा** पुं० (सं) समाज का श्रमिक वर्ग (प्रोलिटेरियेट)।

**सर्वांग** पुं० (सं) १-सम्पूर्ण शरीर। २-समस्त अवयव।

**सर्वांगपूर्ण** वि० (सं) जो सब प्रकार से पूर्ण हो।

**सर्वांग सम त्रिभुज** पुं०(सं) ऐसे दोनों त्रिभुज जिनके तीन कोण और तीनों भुज दूसरे त्रिकोण के ऐसे छः अङ्गों के बराबर हों (आइडेन्टिकली ईक्वल, + काम्प्लुएन्ट)।

**सर्वांगसुंदर** वि० (सं) १-जिसका सारा बदन सुन्दर हो। २-जिसके सब अवयव या अंश सुन्दर हों।

**सर्वांगीण** वि० (सं) १-समस्त अंगों से सम्बन्धित। सम्पूर्ण। २-व्यापी।

**सर्वांतक** वि०(सं) सब का नाश या अन्त करने वाला

**सर्वात्मा** पुं०(सं) १-सम्पूर्ण विश्व की आत्मा। ब्रह्म २-शिव। ३-अर्हंत।

**सर्वात्मिक राष्ट्र** पुं० (सं) वह राष्ट्र जहां की सत्ता केवल एक ही दल या शासक दल के हाथ में हो तथा जिसके अन्तर्गत व्यक्तिगत जीवन, नागरिकों के सार्वजनिक जीवन के अतिरिक्त शामिल हो। (टोटैलिटैरियन स्टेट)।

**सर्वाधिक** वि० (सं) सबसे अधिक या ज्यादा।

**सर्वाधिकार** पुं० (सं) सब कुछ करने का अधिकार। सारे अधिकारी।

**सर्वाधिकार सुरक्षित** पुं० (सं) किसी लेखक, कवि आदि की किसी रचना की प्रतियां छापने का वह स्वत्व जो कर्त्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। (आल राइट्स रिज़र्व्ड)।

**सर्वाधिकारी** पुं०(सं) १-सारा अधिकार रखने वाला २-हाकिम।

**सर्वाधिपत्य** पुं० (सं) सबके ऊपर का प्रभुत्व।

**सर्वान्नभक्षक** वि० (सं) हर प्रकार का भोजन या खाद्य सामग्री खाने वाला।

**सर्वाशय** पुं० (सं) १-सबका आधार स्थान। २-शिव

**सर्वाशी** वि० (हि) सब कुछ खाने वाला।

**सर्वास्तिवाद** पुं० (सं) वह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तविक सत्ता है, वे असत् नहीं है।

**सर्वेश** पुं० (सं) दे० 'सर्वेश्वर'।

**सर्वेश्वर** पुं० (सं) १-सब का स्वामी। २-ईश्वर। ३-शिव। ४-चक्रवर्ती राजा।

**सर्वेश्वरवाद** पुं० (सं) यह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह विश्व के सभी प्राणियों और तत्वों में समान रूप से वर्त्तमान है।(पैंथीइज्म)।

**सर्वेसर्वा** वि० (सं) जिसे किसी विषय अथवा कार्य में सब प्रकार के और पूरे अधिकार हों।

**सर्वोच्च** वि० (सं) सबसे ऊँचा या बढ़कर।

**सर्वोच्चन्यायालय** पुं० (सं) देश का सबसे बड़ा न्यायालय।(सुप्रीम कोर्ट)।

**सर्वोच्चसत्ता** स्त्री० (सं) देश की सबसे बड़ी शक्ति या सत्ता।(पेरामाउन्ट पावर)।

**सर्वोत्तम** वि० (सं) सबसे उत्तम। सबसे बढ़कर या अच्छा।

**सर्वोदय** पुं० (सं) स्वतंत्र भारत में सब लोगों की नैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिये चलाया गया एक आन्दोलन।

**सर्वोपकारी** वि० सबकी सहायता करने वाला।

**सर्वोपरि** वि० (सं) सबसे बढ़कर या ऊपर।

**सर्षप** पुं० (सं) १-सरसों। २-सरसों भर का मान या तौल। ३-एक प्रकार का विष।

**सलई** स्त्री० (हि) १-चीड़ का पेड़। २-चीड़ का गोंद

**सलक्षण** वि० (सं) लक्षणयुक्त।

**सलग** वि० (सं) पूरा। समूचा। जिसके टुकड़े न हुए हों।

**सलगम** पुं० (हि) दे० 'शलगम'।

**सलजम** पुं० (हि) दे० 'शलगम'।

**सलज्ज** वि० (सं) लज्जाशील। जिसमें लज्जा हो।

**सलतनत** स्त्री० (हि)१-राज्य। २-साम्राज्य। ३-प्रबन्ध ४-सुभीता।

**सलना** क्रि० (हि) भेद या छेदा जाना। पुं० लकड़ी में छेद करने का बरमा। पुं० (सं) मोती।

**सलभ** पुं० (हि) दे० 'शलभ'।

**सलमा** पुं०(हि) सोने या चांदी का वह तार जो कपड़ों पर बेल-बूटे बनाने के काम आता है। बादला।

**सलवट** स्त्री० (हि) दे० 'सिलवट'।

**सलवार** स्त्री० (फा) १-पाजामे के नीचे पहनने का जांघिया। २-एक प्रकार का ढीला पाजामा जो विशेषतः पंजाब में पहना जाता है।

**सलहज** स्त्री० (हि) साले की स्त्री।

**सला** स्त्री० (अ) दावत के लिये दिया जाने वाला निमन्त्रण।

**सलाई** स्त्री० (हि) १-किसी धातु या लकड़ी की पतली छड़। २-दियासलाई। ३-सलाने की मजदूरी या भाव। ४-चीड़ की लकड़ी।

**सलाए आम** स्त्री० (अ) वह प्रीतभोज जिसमें सब लोगों को बुलाया जाय।

**सलाक** पुं०(हि) बाण। तीर।

**सलाकना** क्रि० (हि) सलाई की सहायता से लकीर या कोई चिह्न बनाना।

**सलाख** स्त्री० (फ़ा) १-धातु की मोटी तथा लम्बी छड़ २-लकीर ।
**सलाजीत** स्त्री० (हि) दे० 'शलाजीत' ।
**सलात** स्त्री० (ग्र) नमाज ।
**सलातीन** पुं० (ग्र) 'सुलतान' के बहुवचन का रूप ।
**सलाद** पु० (हि) १-गाजर, मूली आदि का सिरके में बना हुआ अचार । २-एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे ही खाए जाते हैं । (सैलाड) ।
**सलाबत** स्त्री० (ग्र) १-वीरता । २-कठोरता ।
**सलाम** पुं० (ग्र) प्रणाम । बन्दगी ।
**सलाम-अलेकम** स्त्री० (ग्र) मुसलमानों का नमस्कार करने का एक सम्बोधन जिसका अर्थ तुम सलामत रहो होता है ।
**सलामत** स्त्री० (ग्र)१-हानि या आपत्ति से बचा हुआ रक्षित । २-सकुशल । ३-स्थिर । कायम ।
**सलामती** स्त्री० (ग्र) १-स्वस्थता । २-कुशलक्षेम । ३-जीवन । ४-एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।
**सलामी** स्त्री० (ग्र)१-सलाम करना । २-सैनिकों आदि को सलाम करने की प्रणाली । ३-इस प्रकार से बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना । ४-जमीन के किराये से अतिरिक्त लिया गया धन । पगड़ी ।
**सलाह** स्त्री० (ग्र)१-सम्मति । राय । २-परामर्श । स्त्री० (हि) मेल । सुलह ।
**सलाहकार** पुं० (ग्र) वह जो परामर्श देता हो ।
**सलिंगी** वि० (स)१-आडम्बरी । २-केवल चिह्न धारण करने वाला ।
**सलि** स्त्री० (हि) चिंता ।
**सलिता** स्त्री० (हि) नदी ।
**सलिल** पुं० (सं) जल । पानी ।
**सलिलकुंतल** पुं० (स) शैवाल । सिवार ।
**सलिलकुक्कुट** पुं०(सं) मुर्गाबी ।
**सलिलक्रिया** स्त्री० (स) जलांजलि । प्रेत का तर्पण ।
**सलिलज** पुं० (सं) दे० 'सलिलजन्मा' ।
**सलिलजन्मा** पुं० (सं) १-कमल । २-जल में उत्पन्न होने वाला ।
**सलिलपति** पुं० (सं) १-समुद्र । २-वरुण ।
**सलिलप्रिय** पु० (सं) सूअर । शूकर ।
**सलिलभय** पु० (सं) जल या बाढ़ का भय ।
**सलिलभर** पु० (सं) तालाब । झील ।
**सलिलभुक्** पु० (सं) बादल ।
**सलिलयोनि** वि० (सं) जल में उत्पन्न होने वाला ।
**सलिलराज** पु० (सं) १-वरुण । २-समुद्र ।
**सलिलराशि** पु० (सं) १-जलाशय । २-नदी ।
**सलिलांजलि** स्त्री० (स) मृतक के उद्देश्य से दी जाने वाली जलांजली ।
**सलिलाधिप** पु० (स) वरुण जो जल के अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं ।
**सलिलार्थी** वि० (सं) प्यासा ।
**सलिलालय** पु० (सं) समुद्र ।
**सलिलाशय** पुं० (सं) जलाशय । तालाब ।
**सलिलेचर** पुं० (स) जलचर । जीव ।
**सलिलेश** पुं० (स) वरुण ।
**सलिलेश्वर** पु० (सं) वरुण ।
**सलिलोद्भव** पुं० (स) १-कमल । २-जल में उत्पन्न होने वाली कोई वस्तु या जीव ।
**सलिलोपजीवी** वि० (सं) केवल जल पीकर जीवित रहने वाला ।
**सलिलौका** पु० (सं) जोंक ।
**सलीका** पुं० (ग्र) १-ठीक प्रकार से काम करने का ढंग । योग्यता । शऊर । २-शिष्टता । ३-हुनर ।
**सलीकादार** वि०(ग्र) १-जिसे सलीका हो । शऊरदार २-सभ्य । ३-हुनरमंद ।
**सलीकामंद** वि० (ग्र) दे० 'सलीकादार' ।
**सलीता** पु० (हि) मारकीन की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।
**सलीम** वि० (ग्र) १-ठीक । २-विनम्र । ३-सभ्य । ४-स्वस्थ । पु० राजा अकबर के पुत्र जहांगीर का बचपन का नाम ।
**सलीमचिश्ती** पुं० (ग्र) अकबर के धार्मिक गुरू का नाम जो फतहपुर सीकरी में रहते थे तथा अकबर ने जहांगीर का जन्म उनके आशीर्वाद के कारण मानकर सलीम रखा था ।
**सलीमशाही** स्त्री० (ग्र) एक प्रकार का हलका तथा सुन्दर मुलायम जूती ।
**सलीस** वि० (ग्र) १-सहज । सुगम । २-समतल । ३-मुहावरेदार तथा चलती हुई (भाषा) ।
**सलीसजबान** स्त्री० (ग्र) वह भाषा जिसमें बहुत से मुहावरे आदि हों ।
**सलीपर** पु० (ग्र) १-वह जूता जिसका केवल पंजा ढका रहता है । २-रेल की पटरियों के नीचे बिछाने की लकड़ी या तख्ता ।
**सलूक** पुं० (हि) दे० 'सुलूक' ।
**सलूका** पुं० (हि) एक प्रकार की फतूही या बण्डी ।
**सलूनो** पुं० (हि) दे० 'सलोनो' ।
**सलैनो** क्रि० (हि) १-सलाना । २-काट या छीलकर ठीक बनाना ।
**सलैला** वि० (हि) १-फिसलने वाला । २-चिकना ।
**सलोट** स्त्री० (हि) दे० 'सिलवट' ।
**सलोतर** पु० (हि) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला ।
**सलोतरी** पुं० (हि) दे० 'सलोतर' ।
**सलोन** वि० (हि) दे० 'सलोना' ।

**सलोना** वि० (हिं) १-नमकीन । २-सुन्दर । रसीला ।
**सलोनापन** पुं० (हिं) सलोना होने का भाव ।
**सलोनो** पु० (हिं) हिन्दुओं का रक्षाबन्धन नामक त्योहार । राखीपूनों ।
**सलौना** वि० (हिं) दे० 'सलोनो' ।
**सल्तनत** स्त्री० (अ) १-राज्य । हुकूमत । २-प्रबन्ध । व्यवस्था ।
**सल्लकी** स्त्री० (सं) सलई ।
**सल्लम** पुं० (हिं) एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।
**सव** पु० (सं) १-जल । पानी । २-पुष्परस । ३-सूर्य ४-सन्तान । ५-चन्द्रमा । वि० अनाड़ी । पुं० (हिं) दे० 'शव' ।
**सवत** स्त्री० (हिं) दे० 'सौत' ।
**सवति** स्त्री० (हिं) दे० 'सौत' ।
**सवत्स** वि० (सं) जिसके साथ बच्चा हो ।
**सवधूक** वि० (सं) जिसके साथ पत्नी हो । सपत्नीक ।
**सवन** पुं० (सं) १-प्रसव । बच्चा जनना । २-चन्द्रमा । ३-यज्ञ । ४-अग्नि । ५-सोमपान ।
**सवयस** वि० (सं) दे० 'सवयस्क' ।
**सवयस्क** वि० (सं) समान वय या उमर वाले ।
**सवर्ण** वि० (सं) १-समान । सदृश । २-समान जाति या वर्ण का ।
**सवर्णन** पु० (सं) भिन्नों को समान हर वाले भिन्नों के रूप में पलटना (गणित)
**सवांग** पुं० (हिं) दे० 'स्वांग' ।
**सवा** वि० (हिं) जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो ।
**सवाई** स्त्री० (हिं) १-ऐसा ऋण जिसमें मूलधन का सवाया रुपया चुकाना पड़ता है । २-मूत्र सम्बंधी एक रोग । ३-जयपुर के महाराजों की एक उपाधि ।
**सवाक्चित्र** पु० (सं) वह चलचित्र जिसमें पात्रों के अभिनय के अतिरिक्त उनका बोलना,गाना, रोना आदि भी सुनाई दे । (टॉकी)
**सवाद** पुं० (हि) दे० 'स्वाद'
**सवादिक** वि० (हिं) दे० 'सवादिल
**सवादिल** वि० (हिं) स्वाद देने वाला । स्वादिष्ट ।
**सवाब** पुं० (अ) १-भलाई । २-पुण्य ।
**सवाया** वि० (हि) सवागुना । पूरे से एक चौथाई अधिक ।
**सवार** पुं० (फा) १-अश्वारोही सैनिक । २-वह जो घोड़े, गाड़ी, ऊँट या किसी वाहन पर चढ़ा हो । वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ ।
**सवारा** पुं० (हिं) सबेरा । प्रातःकाल ।
**सवारी** स्त्री० (फा) १-वाहन । वह चीज जिस पर सवार हों । २-वह व्यक्ति जो सवार हो । ३-जलूस
**सवारे** अव्य० (हिं) जल्दी । शीघ्र । पुं० प्रातःकाल ।
**सवारें** अव्य० (हिं) दे० 'सवारे' ।
**सवाल** पुं०(अ) १-मांग । २-प्रश्न । पूछने की क्रिया ३-गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है । ४-परीक्षा में जांच के समय उत्तर पाने के लिए दिया जाने वाला प्रश्न ।
**सवालख्वानी** स्त्री० (फा) कचहरी में प्रार्थना पत्रों का पढ़ा जाना ।
**सवालजवाब** पुं० (फा) १-वाद-विवाद । बहस । २-झगड़ा । हुज्जत ।
**सविकल्प** वि० (सं) दे० 'सविकल्पक' ।
**सविकल्पक** वि० (सं) १-संदिग्ध । सन्देहयुक्त । २-जो किसी विषय के दोनों पक्षों को कुछ निर्णय न कर सकने के कारण मानता हो । पुं० १-वेदांत के अनुसार ज्ञाता तथा ज्ञेय के भेद का ज्ञान ।
**सविकार** वि० (सं) जिसमें विकार हो ।
**सविता** पुं० (स) १-बारह की संख्या । २-सूर्य । ३-आक । मदार ।
**सवितापुत्र** पुं० (सं) १-शनि । यम ।
**सविद्य** वि० (स)१-विद्वान । २-एक ही समान विषय का अध्ययन या विवेचन करने वाला ।
**सविधि** वि० (सं) विधि या कानून युक्त । अव्य० कानून के अनुसार ।
**सविनय** वि० (सं) विनय सहित । विनीत भाव से ।
**सविनय अवज्ञा** स्त्री० (सं) राज्य अथवा अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मान कर उसका उल्लंघन करना । (सिविल डिसओबीडियेन्स) ।
**सविशेष** वि०(सं) असाधारण । जिसमे विशेष गुण हों
**सविस्तर** वि०(सं) पूरे ब्योरे के साथ । अव्य०विस्तार-पूर्वक ।
**सविस्मय** वि० (सं) आश्चर्यचकित । विस्मित ।
**सवेरा** पु० (हि) १-प्रातःकाल । दिन निकलने का समय । २-निश्चित या नियत समय के पहले का समय ।
**सवैया** पु०(हि) १-सवा-सेर का बाट । २-वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है । ३-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है ।
**सव्य** वि० (सं) १-वाम । बांया । २-दक्षिण दाहिना ३-प्रतिकूल । पु० १-यज्ञोपवीत । २-चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में से एक । ३-विष्णु
**सव्यसाची** स्त्री० (स) (दांये तथा बांये हाथों से सुग मता पूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का नाम पड़ा) अर्जुन
**सव्येतर** वि० (सं) दाहिना ।
**सशंक** वि० (सं) १-जिसे शंका हो । २-भयभीत । ३-शंका उत्पन्न करने वाला ।
**सशंकना** क्रि० (हि) १-डरना । २-शंकायुक्त करना ।
**सशब्द** वि० (सं) शब्दयुक्त । कोलाहलयुक्त ।

**सशरीर** वि० (सं) १-देह या शरीर युक्त। २-मूर्त।
**सशरीरप्रतिभू** पु० (स) वह व्यक्ति जो जमानत के तौर पर रखा गया हो (हॉस्टेज)।
**सशस्त्र** वि० (सं) हथियारों से युक्त।
**सश्रमकारावास** पु०(स) सपरिश्रम कारावास (रिगोरस इम्प्रिजनमेन्ट)।
**सस** पु० (हि) १-चन्द्रमा। २-खेतीबारी।
**ससक** पु० (हि) खरहा। खरगोश।
**ससकना** क्रि० (हि) १-घबड़ाना। व्याकुल होना।
**ससधर** पु० (हि) चन्द्रमा।
**ससना** क्रि० (हि) १-घबराना। २-कांपना।
**ससहाय** वि० (सं) मित्रों या सहायकों के साथ।
**ससा** पु० (स) १-खरगोश। २-खीरा।
**ससाना** क्रि० (हि) दे० 'ससना'।
**ससि** पु० (हि) चन्द्रमा।
**ससिधर** पु० (हि) चन्द्रमा।
**ससिहर** पु० (हि) चन्द्रमा।
**ससी** पु० (हि) चन्द्रमा।
**ससुर** पु० (हि) १-किसी के पति या पत्नी का पिता। श्वसुर। २-एक गाली।
**ससुरा** पु० (हि) १-ससुर। २-ससुराल।
**ससुरार** स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
**ससुरारि** स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
**ससुराल** स्त्री० (हि) पति या पत्नी के पिता (ससुर) का घर।
**ससैन** वि० (सं) दे० 'ससैन्य'।
**ससैन्य** वि० (सं) सेना का साथ।
**सस्ता** वि० (हि) १-साधारण से कम मूल्य का। २-मामूली। साधारण। ३-जो महँगा न हो।
**सस्ताना** क्रि० (हि) १-भाव सस्ता करना। २-सस्ता हो जाना।
**सस्ता माल** पु०(हि) घटिया किस्म का माल।
**सस्ता समय** पु० (हि) वह समय या काल जब सब माल सस्ते हों।
**सस्ती** स्त्री० (हि) १-सस्तापन। महँगी का अभाव। २-वह समय जब चीजें सस्ते दामों पर मिलती हैं।
**सस्त्रीक** वि०(सं) सपत्नीक। स्त्री या पत्नी के साथ।
**सस्नेह** वि० (स) स्नेहसहित। प्रीतियुक्त।
**सस्पृह** वि० (सं) जिसको इच्छा हो। इच्छुक।
**सस्मित** वि०(सं) मुस्कराता या हँसता हुआ। अव्य० मुस्कराते हुए।
**सस्य** पु०(सं) १-धान्य। शस्त्र। ३-गुण। ४-शस्य। ५-वृक्षों का फल।
**सस्यआवर्तन** पु० (सं) खेत में क्रम से एक के बाद दूसरी प्रकार की फसल बार-बार बदल कर तैयार करना। (क्रॉप रोटेशन)।
**सस्यपाल** पु० (सं) खेत की रखवाली करने वाला।
**सस्यरक्षक** पु० (सं) खेत की रखवाली करने वाला।
**सहँगा** वि० (हि) सस्ता।
**सह** अव्य (सं) समेत। सहित। वि० १-उपस्थित। मौजूद। २-सहनशील। समर्थ। पु० १-समानता २-शक्ति। बल। ३-सहायक। ४-सहयोग।
**सहकर्ता** पु० (सं) सहायक। मदद करने वाला।
**सहकार** पु० (सं) १-सहायक। २-औरों के साथ काम करने की वृत्ति या भाव। सहयोग। (कोआपरेशन)। ३-कलमी आम।
**सहकारता** स्त्री० (सं) सहायता। मदद।
**सहकार-समिति** स्त्री०(सं) वह संस्था जो कुछ विशिष्ट व्यापारी, उपभोक्ता आदि आपस में मिलकर सब के लाभ के लिए बनाते हैं (कोऑपरेटिव सोसाइटी)।
**सहकारिता** स्त्री०(सं) १-सहायता। मदद। सहयोग।
**सहकारी** पु० (सं) १-साथ मिलकर काम करने वाला। सहयोगी। २-सहायक।
**सहगमन** पु० (सं) १-पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना। सती होना। २-साथ जाने की क्रिया।
**सहगवन** पु० (हि) दे० 'सहगमन'।
**सहगान** पु० (स) १-कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना। २-वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय। (कोरस)।
**सहगामिनी** स्त्री०(सं) १-सहगमन करने वाली स्त्री। २-पत्नी। ३-सहेली।
**सहगामी** वि० (सं) १-साथ जाने वाला। २-समवर्ती
**सहगौन** पु० (हि) दे० 'सहगमन'।
**सहचर** पु० १-संगी। साथी। २-सेवक। भृत्य। नौकर। मित्र। सखा।
**सहचरी** स्त्री० (सं) पत्नी। २-सखी। सहेली।
**सहचरिणी** स्त्री० (स) दे० 'सहचरी'।
**सहज** पु० (सं) १-स्वभाव। २-सगा भाई। वि० १-स्वाभाविक। २-साथ उत्पन्न होने वाला। ३-साधारण। ४-सरल।
**सहजन** पु० (हि) 'सहिजन'।
**सहजात** वि० (सं) १-सहोदर। सगा (भाई)। २-जुड़वाँ (बच्चे)। यमज।
**सहजारि** पु० (सं) सहज शत्रु (जिससे संपत्ति आदि में झगड़ा होने का डर हो)।
**सहजै** अव्य० (हि) १-अनायास। २-सरलता से।
**सहजोदासीन** वि० (स) जो साधारण रूप से जान-पहचान का हो।
**सहत** पु० (हि) दे० 'शहद'।
**सहताना** क्रि० (हि) श्रम या थकावट दूर करना। सुसताना।
**सहदानी** स्त्री० (हि) पहचान। चिह्न। निशानी।
**सहदूल** पु० (हि) दे० 'शार्दूल'।
**सहदेई** स्त्री० (हि) क्षुप जाति की एक वनौषध।

सहदेव पुं०(सं) पांडु के सबसे छोटे पुत्र का नाम।
सहधर्मिणी स्त्री० (सं) पत्नी। भार्या। स्त्री।
सहधर्मी पुं० (सं) पति। वि० समान धर्म वाला।
सहन पुं० (सं) १-आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (अबाइड)। २-क्षमा। ३-सहने का भाव या क्रिया। पुं० (प्र) १-घर के मकान का आंगन। २-एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ३-एक प्रकार का गफ और मोटा कपड़ा।
सहनभंडार पुं० (हि) १-खजाना। कोष। २-दौलत धनराशि।
सहनशील वि०(सं) १-सहने या बरदाश्त करने वाला २-संतोषी।
सहना क्रि० (हि) १-झेलना। बरदाश्त करना। २-परिणाम भोगना। २-भार वहन करना।
सहनाई स्त्री० (हि) दे० 'शहनाई'।
सहनीय वि० (सं) सहन करने योग्य।
सहपाठी पुं० (सं) वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।
सहप्रतिवादी पुं० (सं) मुकद्दमे का वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप में उत्तरदायी बतलाया गया हो। (को-डिफेंडेन्ट)।
सहबाला पुं० (हि) दे० 'शहबाला'।
सहभोज पुं०(सं) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। दावत।
सहभोजन पुं० (सं) एक साथ बैठकर भोजन करना।
सहम पुं० (फा) १-डर। भय। २-संकोच। लिहाज
सहमत वि० (सं) एक राय। जिसकी राय दूसरे से मिलती हो। (एग्रीड)।
सहमति स्त्री० (सं) सहमत होने का भाव या क्रिया। (एग्रीमेंट)।
सहमना क्रि० (हि) डरना। भयभीत होना।
सहमरण पुं० (सं) दे० 'सहगमन'।
सहमाना क्रि० (हि) भयभीत करना। डराना।
सहयोग पुं० (सं) १-साथ मिलकर काम करने का भाव। २-बहुत से लोगों का मिलकर काम करने का भाव। (कोऑपरेशन)। ३-मदद। सहायता।
सहयोगी पुं० (सं)१-साथ मिलकर काम करने वाला साथी। सहकारी। २-समकालीन। ३-आधुनिक भारत में भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में मिलकर काम करने वाला व्यक्ति
सहर पुं० (प्र) प्रातःकाल। सवेरा। पुं० (हि) १-जादू टोना। २-शहर। अव्य० (हि) धीरे-धीरे। मन्द-गति से।
सहरगही स्त्री० (प्र) वह हलका आहार या भोजन जो मुसलमान लोग रमजान के दिनों में व्रत रखने से पहले प्रातःकाल खाते है।
सहरगाह अव्य० (प्र) तड़के। सवेरे
सहरदम अव्य० (प्र) तड़के। सवेरे।
सहराई वि० (प्र) जङ्गली।
सहराना क्रि० (हि) १-सहलाना। २-भय से कांपना
सहरी स्त्री० (हि) सफरी नामक मछली। स्त्री० (प्र) दे० 'सहरगही'।
सहलंगी पुं० (हि) हमराही। रास्ते का साथी।
सहल वि० (प्र) सरल। सहज। सुगम।
सहलाना क्रि० (हि) १-किसी वस्तु या अङ्ग पर धीरे-धीरे हाथ फेरना। २-मलना।
सहवर्ती वि० (सं) पास या साथ रहने वाला।
सहवास पुं० (सं) १-साथ रहना। २-मैथुन। संभोग
सहविस्तारी वि० (सं) जो साथ-साथ फैला हुआ हो (कोएक्सटेंसिव)।
सहशय्या स्त्री० (सं) एक साथ सोना।
सहस वि० (हि) दे० 'सहस्र'। वि० (सं) जो हँसता हुआ हो।
सहसकिरण पुं० (हि) सूर्य।
सहसगो पुं० (हि) सूर्य।
सहसजीभ पुं० (हि) शेषनाग
सहसदल पुं० (हि) कमल।
सहसपत्र पुं० (हि) कमल।
सहसफन पुं० (हि) शेषनाग।
सहसमुख पुं० (हि) शेषनाग।
सहससीस पुं० (हि) शेषनाग।
सहसा अव्य० (सं) अकस्मात्। एकाएक।
सहसाक्रामक चमू स्त्री० (सं) सेना की वह साहसी टुकड़ी जिसको शत्रु पर अकस्मात् भयानक आक्रमण करने की शिक्षा दी जाती है। (शॉकट्रूप्स)।
सहसाक्षि पुं० (हि) इन्द्र।
सहसाखी पुं० (हि) इन्द्र।
सहसानन पुं० (हि) शेषनाग।
सहसोपचार पुं० (सं) मानसिक तथा अन्य रोगों के उपचार के लिए चकित या झकझोर देने वाला उपाय (शॉक ट्रीटमेन्ट)।
सहस्र पुं०(सं) दस-सौ की संख्या। हजार की संख्या।
सहस्रकर पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रकिरण पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रकांडा स्त्री० (सं) सफेद दूब।
सहस्रगु पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रगुण वि० (सं) हजारगुना।
सहस्रघाती वि० (सं) एक हजार व्यक्तियों को मारने वाला (एक युद्ध-यन्त्र)।
सहस्रचक्षु पुं० (सं) इन्द्र।
सहस्रदल पुं० (सं) शतदल। कमल।
सहस्रदीधिति पुं० (सं) सूर्य।
सहस्रधा वि०(सं) १-एक हजार प्रकार का। २-हजार गुना।

सहस्रधी वि० (सं) बहुत बड़ा बुद्धिमान।
सहस्रनयन पु० (सं) १-विष्णु। २-इन्द्र।
सहस्रनामा पु० (सं) १-विष्णु। २-शिव।
सहस्रनेत्र पु० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्रपति पुं० (सं) हजार गांव का मालिक तथा शासक।
सहस्रपत्र पु० (सं) कमलपत्र।
सहस्रबाहु पु०(सं) १-शिव। २-राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र का नाम।
सहस्रबुद्धि वि० (सं) अत्यधिक चतुर।
सहस्रभानु पु० (सं) सूर्य।
सहस्रभुजा पुं० (सं) दे० 'सहस्रबाहु'।
सहस्रमरीचि पु० (सं) सूर्य।
सहस्ररश्मि पु० (सं) सूर्य।
सहस्रलोचन पु० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्रवक्त्र वि० (सं) जिसके हजार मुख हों।
सहस्रवदन पु० (सं) १-विष्णु। २-शिव।
सहस्रशः अव्य० (सं) हजार बार।
सहस्रशीर्षा पु० (सं) विष्णु।
सहस्रांशु पु० (सं) सूर्य।
सहस्रांशुज पु० (सं) शनि।
सहस्राक्ष पु० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सहस्राधिपति पु० (सं) एक हजार गावों का शासनकर्ता।
सहस्रानन पुं० (सं) विष्णु।
सहस्राब्दि स्त्री०(सं) किसी संवत् के हर एक से हजार तक के वर्षों का समूह। (माइलीनियम)।
सहा स्त्री० (सं) पृथ्वी।
सहाइ पु० (हि) सहायक। मददगार। स्त्री० सहायता
सहाई पु० (हि) सहायक। स्त्री० सहायता।
सहाध्यायी पु० (सं) सहपाठी। वह जो साथ पढ़ा हो।
सहाना वि० (हि) दे० 'शहाना'।
सहानुभूति स्त्री० (सं) हमदर्दी। किसी का दुःख देखकर दुःखी होना।
सहापराधि पुं०(सं) किसी अपराध की अपराध करने में सहायता देने वाला अपराधी। (अकम्पलिस)।
सहाब पुं० (हि) दे० 'शहाब'। पुं० (अ) बादल।
सहाय पु० (सं) १-मदद। सहायता। २-आश्रय। ३-सहायक।
सहायक वि० (सं) १-सहायता करने वाला। २-(वह नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। ३-सहकारी। (असिस्टेंट)।
सहायक-आजीविका स्त्री० (सं) अपने मुख्य पेशे के अतिरिक्त खर्च को पूरा करने के लिए बचे हुए समय में किया गया कोई दूसरा काम या पेशा। (सबसीडियरी ऑक्यूपेशन)।
सहायक-नदी स्त्री०(सं) वह छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो।
सहायक-संपादक पु० (सं) संपादक के संपादन-कार्य में सहायता देने वाला व्यक्ति। (असिसटेन्ट एडिटर)।
सहायता स्त्री० (सं) १-किसी के कार्य-सम्पादन में योग देना। मदद। २-वह धन जो किसी काम को आगे बढ़ाने के लिए दिया जाय। (एड)।
सहायतागृह पुं० (सं) संकटग्रस्त लोगों को सहायता के लिये बनाया हुआ गृह। (रेस्क्यू होम)।
सहार पु० (हि) १-सहनशीलता। २-सहने की क्रिया। (सं) १-आम्रवृक्ष। २-महाप्रलय।
सहारना क्रि० (हि) १-सहन करना। सहना। २-सँभालना। ३-गवारा करना।
सहारा पुं० (हि) १-आश्रय। आसरा। २-भरोसा। ३-सहायता।
सहालग पुं० (हि) शादी या उत्सव आदि मनाने के शुभ दिन। लगन।
सहावल पुं० (हि) दे० 'साहुल'।
सहिंजन पु० (हि) दे० 'सहिजन'।
सहिजन पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लम्बी फलियों की तरकारी बनती है।
सहिजानी स्त्री० (हि) पहचान। निशानी। चिह्न।
सहित अव्य० (सं) साथ। समेत।
सहिता वि० (सं) सहन या बरदाश्त करने वाला।
सहियो स्त्री० (हि) बरछी।
सहिदान पु० (हि) चिह्न। निशान।
सहिदानी स्त्री० (हि) १-स्मृति के लिये किसी की दी हुई वस्तु। निशानी। २-पहचान। चिह्न।
सहिष्णु वि०(सं) सहनशील। बरदाश्त करने वाला।
सहिष्णुता स्त्री० (सं) सहनशीलता।
सहिष्णुत्व पु० (सं) सहिष्णुता। सहनशीलता।
सही वि० (फा) १-ठीक। शुद्ध। २-सत्य। प्रामाणिक
सहीसलामत वि० (फा) १-जिसमें किसी प्रकार की बाधा न हुई हो। २-स्वस्थ।
सहुँ अव्य० (हि) १-तरफ। ओर। २-सामने।
सहूलियत स्त्री० (अ) सुभीता।
सहृदय वि० (सं)१-दूसरों के दुःख-सुख को समझने वाला। रसिक। भावुक। ३-दयालु।
सहृदयता स्त्री० (सं) १-सौजन्य। २-रसिकता। ३-दयालुता।
सहेजना क्रि०(हि) १-सँभालना। २-सँभालने या याद रखने के लिये कहना।
सहेट पुं० (हि) दे० 'सहित'।
सहेत पुं० (हि) प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट गुप्त स्थान।
सहेतु वि० (सं) दे० 'सहेतुक'।

**सहेतुक** वि० (सं) जिसमें कुछ उद्देश्य हो।
**सहेलरी** स्त्री० (हि) सखी। सहेली।
**सहेली** स्त्री० (हि) स्त्री के साथ रहने वाली कोई अन्य स्त्री। सङ्गिनी।
**सहैया** पु० (हि) सहायता करने वाला। वि० सहन करने वाला।
**सहोक्ति** स्त्री० (सं) वह काव्यालङ्कार जिसमें 'सह' 'संग' आदि शब्दों का व्यवहार होता है तथा अनेक कार्य साथ ही होते दिखाए जाते हैं।
**सहोदर** पु० (सं) सगा भाई। वि० सगा। एक ही माता से उत्पन्न।
**सह्य** वि० (स) १-जो सहा जा सके। २-आरोग्य। पु० १-समानता। २-सह्याद्रि। ३-साम्य। बराबरी
**सह्याद्रि** पु० (सं) एक पर्वत जो पश्चिमी घाट का एक भाग है तथा जो समुद्र तट से कुछ हट कर
**साँई** पु० (हि) १-स्वामी। मालिक। २-ईश्वर। ३-पति। ४-मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।
**सांकड़** पु० (हि) १-जञ्जीर। शृंखला। २-दरवाजे की सिकड़ी।
**सांकड़ा** पु० (हि) पैर में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।
**सांकर** स्त्री० (हि) जंजीर। पुं० सकट। विपत्ति। वि १-सँकरा।
**सांकरा** वि० (हि) दे० 'सँकरा'।
**सांकर्य** पु० (सं) मिलावट। मिश्रण।
**सांकल** स्त्री० (हि) जंजीर। शृङ्खला।
**सांकेतिक** वि० (सं) जो सकेत के रूप में हो।
**सांक्रमिक** वि० (सं) छूत से उत्पन्न होने वाला।
**सांक्षेपिक** वि० (सं) संक्षिप्त किया हुआ।
**सांख्य** पु० (स) महर्षि कपिल कृत एक प्रसिद्ध दर्शन जिसमें प्रकृति तथा चेतन पुरुष ही जगत का मूल माना गया है। वि० १-संख्या-सम्बन्धी। २-गणना करने वाला।
**सांख्यिक** पु० (सं) जन्म-मरण, उत्पादन के प्रामाणिक आंकड़े इकट्ठे करने वाला विशेषज्ञ। (स्टैटिस्टीशियन)।
**सांख्यिकी** स्त्री०(सं) किसी विषय की सख्याएँ प्रामाणिक रूप से एकत्र करके उनके आधार पर कोई सिद्धांत या निष्कर्ष निकालने की विद्या। (स्टैटिस्टिक्स)।
**सांख्यिकीय-मंत्रणाकार** पु० (सं) उत्पादन, जन्म, मरण तथा अन्य विषयों के आंकड़ों को प्रमाणित रूप में एकत्र करने के सम्बन्ध में सलाह देने वाला (स्टैटिस्टिकल एडवाइजर)।
**सांग** वि० (सं) १-सब अंगों से युक्त। २-सम्पूर्ण। स्त्री० (हि) एक प्रकार की बरछी।
**सांगतिक** वि० (सं) १-सामाजिक। २-संगति से सम्बन्ध रखने वाला। पु० १-अतिथि। २-अजनबी।
**सांगी** स्त्री० (हि) १-बरछी। २-गाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान। ३-गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली।
**सांगोपांग** वि० (सं) सब अंगों तथा उपायों से युक्त।
**सांघात** पु० (सं) समूह। दल।
**सांघातिक** वि०(सं) १-सङ्घात से सम्बन्ध रखने वाला २-(आघात) जिससे आदमी मर सकता हो। घातक, (फेटेल)।
**सांधिक** वि० (सं) सङ्घ का। सङ्घ-सम्बन्धी।
**सांच** वि० (हि) सत्य। ठीक। पु० सत्य बात।
**सांचर नमक** पु० (हि) सौवर्चल नमक।
**सांचला** वि० (हि) सच्चा। सत्यवादी।
**सांचा** पु० (हि) १-वह उपकरण जिसमें गीली वस्तु डाल कर उसी के आकार की दूसरी और वस्तुएँ ढाली जाती हैं। २-बेलबूटे का ठप्पा। छापा। वि० सच्चा।
**सांचारिक** वि० (सं) जंगम।
**सांचिया** पु० (हि) १-किसी वस्तु का सांचा बनाने वाला। २-सांचे में ढालने वाला।
**सांचिला** वि० (हि) सच्चा।
**सांची** स्त्री० (हि) पुस्तक की छपाई का एक तरीका। पु० एक प्रकार का खाने का पान।
**सांझ** स्त्री० (हि) संध्या। सायङ्काल।
**सांझा** पु० (हि) दे० 'साझा'।
**सांझी** स्त्री० (हि) मंदिरों में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई गई बेल-बूटों की सजावट जो प्रायः उत्सवों के समय की जाती है।
**सांट** स्त्री० (हि) १-छड़ी। २-कोड़ा। ३-शरीर पर कोड़े की मार का पड़ा हुआ निशान।
**सांटा** पु० (हि) १-कोड़ा। चाबुक। २-गन्ना। ३-करघे का वह डंडा जिसकी सहायता से सूत ऊपर नीचे होते हैं। ४-ऐंड।
**सांटिया** पु०(हि) डोंडी पीटने वाला।
**सांटी** स्त्री० (हि)१-पतली छोटी छड़ी। २-बाँस आदि की पतली कमची। ३-मेलमिलाप। ४-बदला।
**सांठ** पु० (देश) १-गन्ना। २-सरकंडा। ३-अनाज पीटने का डंडा। ४-मेलमिलाप।
**सांठगाँठ** स्त्री० (हि) १-मेलमिलाप। २-छिपा और दूषित सम्बन्ध।
**सांठना** क्रि० (हि) पकड़े रहना।
**सांठि** स्त्री० (हि) दे० 'सांठी'।
**सांठी** स्त्री० (हि) पूँजी। धन। पु० साठी नामक धान।
**सांड** वि० (सं) अण्डयुक्त। जो बधिया न किया गया हो।

**सांड़** पु० (हि) १-केवल सन्तान उत्पन्न करने के लिए छोड़ा गया गाय का नर। २-मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ बैल।
**सांड़नी** स्त्री० (हि) तेज चाल चलने वाली ऊँटनी।
**सांड़ा** पु० (हि) छिपकली की जाति का एक जङ्गली जन्तु जिसकी चरबी दवा के रूप में काम आती है
**सांड़िया** पु० (हि) १-साँड़नी पर सवारी करने वाला व्यक्ति। २-तेज चाल चलने वाला ऊँट।
**सांत** वि० (सं) १-जिसका अन्त अवश्य होता हो। अन्तयुक्त। वि० (हि) शांत।
**सांतर** वि० (स) झीना। अन्तयुक्त।
**सांतापिक** वि० (सं) सताप या कष्ट देने वाला।
**सांति** स्त्री० (हि) दे० 'शांति'।
**सांत्वन** पुं० (सं) १-आश्वासन। ढारस। २-प्रणय। प्रेम। ३-मिलन। ४-कुशल-मङ्गल पूछना।
**सांत्वना** स्त्री० (सं) १-आश्वासन। ढारस। २-सुख ३-प्रेम। प्रणय।
**सांथरी** स्त्री० (हि) १-चटाई। बिछौना।
**सांदीपनि** पु० (स) श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा देने वाले आचार्य।
**सांद्र** पुं० (सं) वन। जंगल। वि० १-घना। घोर। स्निग्ध। चिकना। ३-सुन्दर।
**सांध** पुं०(हि) लक्ष्य। निशाना। वि० (सं) १-सन्धि-सम्बन्धी। पुं० (स) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
**सांधना** क्रि० (हि) १-निशान साधना। २-मिलाना। ३-पूरा करना। साधना।
**सांधिविग्रहिक** पुं० (स) प्राचीन काल के राजाओं का वह अधिकारी जिसे संधि या विग्रह करने का अधिकार होता था।
**सांध्य** वि० (सं) सन्ध्या-सम्बन्धी।
**सांध्यकुसुमा** स्त्री०(सं)सन्ध्याकाल में फूलने या खिलने वाले पौधे, वृक्षादि।
**सांध्यभोजन** पुं० (सं) ब्यालू।
**सांप** पुं० (हि) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला विषैला कीड़ा सर्प। भुजंग। विषधर।
**सांपत्तिक** वि० (सं) सम्पत्ति का। सम्पत्ति-सम्बन्धी।
**सांपद** वि० (सं) सम्पति-सम्बन्धी।
**सांपा** पुं० (हि) दे० 'सियापा'।
**सांपिन** स्त्री० (हि) १-सांप की मादा। २-घोड़े के शरीर पर एक प्रकार की अशुभ भौंरी।
**सांपिया** पुं० (हि) सांप के रंग से मिलता-जुलता काला रंग।
**सांप्रत** अव्य० (सं) तत्काल। इसी समय। अभी।
**सांप्रतिक** वि० (स) १-आधुनिक। २-जो इस समय चल रहा हो। (करेन्ट)।
**सांप्रदायिक** वि०(सं) किसी विशेष सम्प्रदाय से संबंध रखने वाला।
**सांप्रदायिकता** स्त्री० (सं) १-साम्प्रदायिक होने का भाव। २-केवल अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता तथा हितों का विशेष ध्यान रखना तथा दूसरे सम्प्रदायों की उपेक्षा करना।
**सांबर** पु० (सं) १-दे० 'सांभर'। २-सांभर नमक। (हि) सम्बल। पाथेय। राहखर्च।
**सांभर** पु० (हि) १-भारतीय मृगों की एक जाति। २-राजस्थान की एक झील। ३-उसके जल से बना नमक।
**सामुहे** अव्य० (हि) सम्मुख। सामने।
**सांवत** पु० (हि) १-योद्धा। सामन्त। २-एक राग।
**सांवत्सर** पुं० (सं) गणक। ज्योतिषी।
**सांवत्सर रथ** पु० (सं) सूर्य।
**सांवत्सरिक** वि० (सं) सम्वत्सर-सम्बन्धी। पु० ज्योतिषी।
**सांवत्सरिक श्राद्ध** पुं० (सं) वह श्राद्ध जो हर साल किया जाय।
**सांवत्सरी** स्त्री० (सं) वह श्राद्ध जो मृत्यु के एक वर्ष बाद किया जाता है।
**सांवर** वि० (हि) दे० सांवला'।
**सांवलताई** स्त्री० (हि) दे० 'सांवलापन'।
**सांवला** वि० (हि) कुछ-कुछ हल्के श्याम वर्ण का। पुं० १-श्रीकृष्ण। २-प्रेमी या पति (गीत में)।
**सांवलापन** पुं० (हि) सांवला (रंग) होने का भाव।
**सांवाँ** पु० (हि) चेना या कंगनी जाति का एक घटिया अन्न।
**सांवादिक** वि० (सं) सम्वाद या समाचार सम्बन्धी। पुं०१-समाचार या खबर भेजने वाला। (न्यूज़मैन) २-सड़क पर समाचार-पत्र बेचने वाला।
**सांव्यवहारिक** पुं०(सं) वह व्यापारी जो किसी समवाय का हिस्सेदार के रूप में काम करता हो।
**सांशयिक** वि० (सं) संशय या सन्देह करने वाला।
**सांस** स्त्री० (हि) १-श्वास। दम। २-अवकाश। ३-समाई। ४-सन्धि या दरज। ५-दमे का रोग।
**सांसत** स्त्री० (हि) १-दम घुटने का सा कष्ट। २-झंझट। बखेड़ा। ३-अत्यन्त कष्ट या पीड़ा।
**सांसतघर** पुं० (हि) काल कोठरी।
**सांसति** स्त्री० (हि) दे० 'साँसत'।
**सांसद** वि० (सं) (कथन व्यवहार आदि) जो संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो (पार्लमेन्टरी)।
**सांसना** क्रि० (हि) १-डांटना-डपटना। २-दण्ड देना ३-कष्ट देना।
**सांसा** पुं० (हि) १-श्वास। दम। २-अवकाश। ३-जीवन। ४-प्रमाण। ५-सन्देह। ६-डर। भय।
**सांसारिक** वि० (सं) संसार का। लौकिक। ऐहिक।
**सांस्कारिक** वि० (सं) संस्कार-सम्बन्धी।

**सांस्कृतिक** वि० (सं) संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाला
**सांस्पर्शिक** वि० (सं) छूत से फैलने वाला (रोग)। (कन्टेजियस)।
**सा** अव्य० (हि) १-समान। तुल्य। २-एक परिमाण-सूचक शब्द। पुं० सरगम का षड्ज स्वर। स्त्री०(सं) १-लक्ष्मी। २-पार्वती।
**साइक** पुं० (हि) दे० 'शायक'।
**साइत** स्त्री० (हि) १-पल। क्षण। २-मुहूर्त्त। ३-शुभ समय। ४-समय।
**साइबान** पुं० (हि) दे० 'सायबान'।
**साइयाँ** पुं० (हि) दे० 'साँई'।
**साइर** पुं० (देश) दे० 'सायर'।
**साई** पुं० (हि) दे० 'सांई'।
**साई** स्त्री०(हि) १-वह धन जो पारिश्रमिक देकर कोई काम करने से पहले बातचीत पक्की करने के लिए दिया जाता है। पेशगी। बयाना (अर्नेस्ट मनी)। २-वह सहायता जो किसान लोग एक दूसरे को देते हैं।
**साईस** पुं० (हि) घोड़े की देख-भाल करने वाला नौकर।
**साउज** पुं० (हि) वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है।
**साक** पुं० (हि) सब्जी। तरकारी। साग।
**साकट** पुं० (हि) १-शाक्त मत को मानने वाला। २-निगुरा। ३-दुष्ट। पाजी।
**साकर** वि० (हि) संकीर्ण। तंग। सँकरा। स्त्री० १-सांकल। २-शक्कर।
**साकल्य** पुं० (सं) दे० 'शाकल्य'।
**साकल्यवचन** पुं० (सं) समस्त या पूरा पाठ।
**साकांक्ष** वि० (सं) इच्छा करने वाला। इच्छुक।
**साका** पुं० (हि) १-संवत्। २-प्रसिद्धि। ३-कीर्त्ति-स्मारक। ४-धाक। ५-समय।
**साकार** वि० (सं) १-मूर्तिमान। २-रूप या आकार वाला। पुं० ब्रह्म का मूर्त्तिमान रूप।
**साकारोपासना** स्त्री० (स) ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी उपासना करना।
**साकिन** वि०(अ) १-रहने वाला। निवासी। २-गति-हीन।
**साकिनहाल** वि० (अ) वर्तमान काल में रहने वाला।
**साकी** पुं० (अ) १-मदिरापान कराने वाला। २-वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रेमिका।
**साकूत** वि०(स) अभिप्राय सहित। जिसका कुछ अर्थ हो।
**साकूतस्मित** पुं० (सं) अभिप्राय सहित मुसकान।
**साकूतहसित** पु० (सं) दे० 'साकूतस्मित'।
**साकेत** पुं०(सं) अयोध्यानगरी।
**साकेतक** पुं० (सं) अयोध्या का निवासी।
**साकेतन** पुं० (सं) अयोध्या।
**साक्तुक** वि० (सं) सत्तू का। सत्तू-सम्बन्धी। पुं० जौ, जिससे सत्तू बनता है।
**साक्ष** वि० (सं) १-नेत्रवाला। २-जपमालायुक्त।
**साक्षर** वि०(सं) शिक्षित। जो पढ़ना-लिखना जानता हो।
**साक्षरता** स्त्री० (सं) पढ़े-लिखे होने का भाव।
**साक्षरताआंदोलन** पुं० (सं) अपढ़ों को पढ़ा लिखा बनाने के लिया चलाया हुआ आंदोलन। (लिटरेसी कैम्पेन)।
**साक्षात्** अव्य० (सं) प्रत्यक्ष। सामने। सम्मुख। वि० साकार। पुं० मुलाकात। भेंट।
**साक्षात्कर** वि०(सं) १-मुलाकात या भेंट करने वाला २-पदार्थों का इन्द्रियों द्वारा होने वाला (ज्ञान)।
**साक्षात्करण** पुं० (सं) १-अनुभूति। २-किसी बात का उसी समय का कारण।
**साक्षात्कर्ता** वि० (सं) सर्वद्रष्टा।
**साक्षात्कार** पुं० (स) १-भेंट। २-ज्ञान। ३-अनु-भूति।
**साक्षात्कारी** पुं० (सं) १-साक्षात् करने वाला। २-भेंट करने वाला।
**साक्षात्कृत** वि० (सं) सामने आया हुआ। प्रत्यक्ष।
**साक्षाद्दृष्ट** वि० (सं) (स्वयं) आंखों से देखा हुआ।
**साक्षिता** स्त्री० (सं) साक्षी का काम। गवाही।
**साक्षित्व** पुं० (सं) दे० 'साक्षिता'।
**साक्षी** पुं० (सं) १-वह जिसने कोई घटना अपनी आंखों से देखी हो। २-गवाह। ३-दूर से देखने वाला। तटस्थदर्शक। स्त्री० गवाही। शहादत। (विटनस)।
**साक्षीकरण** पुं० (सं) किसी लेख, दस्तावेज या बात के साक्षिरूप में हस्ताक्षर करना। सत्यापन। (अटे-स्टेशन)।
**साक्षीकृत** वि० (सं) जिसको हस्ताक्षर द्वारा सच्ची नकल या प्रतिलिपि होने को स्वीकार किया गया हो। (अटेस्टेड)।
**साक्षीपरीक्षण** पुं० (सं) गवाह या साक्षी से सच्ची बात मालूम करने लिए प्रश्न करना। (क्रॉस एक्जा-मिनेशन)।
**साक्षेप** वि० (सं) जिसमें व्यङ्ग या ताना हो।
**साक्ष्य** पुं० (सं) १-गवाही। शहादत। २-प्रमाण। (एविडेन्स)।
**साक्ष्यविधि** स्त्री० (सं) गवाही या साक्ष्य-सम्बन्धी कानून। (लॉ आफ एविडेन्स)।
**साख** पुं० (हि) १-साक्षी। गवाह। २-प्रमाण। ३-धाक। ४-मर्यादा। ५-लेन-देन का खरापन। स्त्री० दे० 'साखा'।
**साख-पत्र** पुं० (हि) सार्वजनिक ऋण-पत्र जिसकी

जामिन सरकार होती है तथा समवायों के हिस्सों की तरह जिसकी बिक्री होती है। (सिक्युरिटीज)।

**साखना** क्रि० (हि) साक्षी देना। गवाही देना।

**साखर** वि० (हि) दे० 'साक्षर'।

**साखा** स्त्री० (हि) १-डाली। टहनी। २-वंश या जाति की शाखा। ३-चक्की का धुरा।

**साखी** पुं० (हि) १-गवाह। २-ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद। ३-गवाही। ४-वृक्ष।

**साखू** पुं० (हि) शालवृक्ष।

**साखोचार** पुं० (हि) दे० 'शाखोच्चार'।

**साखोचारन** पुं०(हि) दे० 'शाखोच्चार'।

**साख्य** पुं० (सं) मित्रता। दोस्ती।

**साग** पुं० (हि) शाक। भाजी। तरकारी।

**सागपात** पुं० (हि) १-रूखासूखा भोजन। २-तुच्छ और निकम्मी वस्तु।

**सागर** पुं० (सं)१-समुद्र। जलधि। २-बड़ा जलाशय ३-एक प्रकार के संन्यासी। ४-एक प्रकार का मृग ५-सात या चार की संख्या। ६-दस पद्म। ७-एक नाग का नाम। ८-बहुत बड़ी रकम या पुञ्ज। वि० समुद्र सम्बन्धी।

**सागरगंभीर** पुं० (सं) एक प्रकार की समाधि।

**सागरगम** वि० (सं) सागर या समुद्र में जाने वाला।

**सागरगा** स्त्री० (सं) १-गङ्गा नदी। २-नदी।

**सागरगामी** स्त्री० (सं) दे० 'सागरगा'।

**सागरज** पुं० (सं) समुद्र लवण।

**सागरधीर** वि०(सं) समुद्र की तरह गंभीर तथा शांत

**सागरनेमि** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**सागरमेखला** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**सागरवासी** पुं० (सं) समुद्र में या समुद्र के किनारे रहने वाला।

**सागरशक्ति** स्त्री० (स) समुद्र से निकाला जाने वाला सीप।

**सागरसूनु** पुं० (सं) चन्द्रमा।

**सागरांत** पुं० (सं) समुद्र का किनारा। समुद्रतट।

**सागरांता** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**सागरांबरा** स्त्री० (सं) पृथ्वी।

**सागवन** पुं० (हि) दे० 'सागौन'।

**सागवान** पुं० (हि) दे० 'सागौन'।

**सागू** पुं० (हि) ताड़ की जाति का एक वृक्ष। (सैगो)

**सागूदाना** पुं० (हि) साबूदाना। सागू के वृक्ष के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र ही पच जाते हैं

**सागौन** पुं० (सं) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है तथा किवाड़ या मेज-कुर्सी बनाने के काम आती है।

**साचि** अव्य० (सं) तिरछे या टेढ़े रूप में।

**साचिविलोकित** वि० (स) तिरछी नजर या चितवन।

**साचिविक** वि० (सं) सचिव या उसके कार्यालय से सम्बन्धित। (सेक्रेटेरियल)।

**साचिविक स्तर पर** वि० (सं)(वह बातचीत या समझौता) जो दो राज्यों के किसी विभाग के सचिवों के बीच की जाय। (ऑन सक्रेटेरियल लेवल)।

**साज** पुं० (सं) पूर्वभाद्रपद-नक्षत्र। पुं० (फा) १-सजावट। ठाटबाट। २-वाद्ययन्त्र। बाजा। ३-सजाने अथवा कसने की सामग्री। ४-लड़ाई का हथियार। वि० (फा) १-मरम्मत करने या बनाने वाला। २-बनाया हुआ जैसे-दस्तसाज-हाथ का बनाया हुआ। (समास में)।

**साजन** पुं० (हि) १-पति। २-प्रेमी। ३-ईश्वर। ४-सज्जन।

**साजना** क्रि० (हि) १-सजाना। २-सजना।

**साजबाज** पुं० (फा) १-तैयारी। २-मेलजोल।

**साजसामान** पुं० (फा) १-उपकरण। सामग्री। २-ठाटबाट।

**साजा** वि० (हि) १-अच्छा। सुन्दर।

**साजात्य** पुं० (सं) १-एक ही जाति वाला। २-एक ही प्रकार की वस्तु।

**साजिंदा** पुं० (फा) साज या बाजा बजाने वाला।

**साजिद** पुं० (अ) वन्दना या सिजदा करने वाला।

**साजिश** पुं० (फा) १-किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने में सहायक होना। २-मेलमिलाप। ३-षड्यन्त्र।

**साजिशी** वि० (फा) साजिश या गुप्त मन्त्रणा करने वाला।

**साजुज्य** पुं० (हि) दे० 'सायुज'।

**साझा** पुं० (हि) १-हिस्सा। भाग। २-हिस्सेदारी।

**साझी** पुं० (हि) किसी व्यवसाय या काम में हिस्सा रखने वाला। हिस्सेदार।

**साझेदार** पुं० (हि) दे० 'साझी'।

**साझेदारी** स्त्री० (हि) साझेदार होने का भाव। शराकत।

**साट** स्त्री० (हि) १-छड़ी के आघात का दाग। २-छड़ी

**साटक** पुं० (हि)१-छिलका। भूसी। २-निरर्थक तथा तुच्छ वस्तु।

**साटन** स्त्री० (हि) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा (सैटिन)।

**साटना** क्रि० (हि) १-मिलाना। २-किसी को किसी काम के लिये गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना।

**साटमार** पुं० (हि) हाथियों को लड़ाने वाला।

**साटी** स्त्री० (देश) १-सामान। सामग्री २-कमची। सॉटी।

**साटोप** वि० (सं) १-घमण्ड या अहंकार से फूला हुआ। २-बादल की तरह गरजता हुआ।

**साठ** वि० (हि) पचास और दस। पुं० (हि) तीस और तीस के योग की संख्या। ६०।

**साठनाठ** वि० (हि) १-निर्धन। दरिद्र। २-नीरस।

रूखा । ३-तितर-बितर ।

**साठा** पुं० (देश) १-गन्ना । २-साठी नामक धान । ३-वह खेत जो बहुत लम्बा चौड़ा हो। ४-एक प्रकार की मधुमक्खी । वि० साठ साल का ।

**साठी** पुं० (हि) एक प्रकार का धान ।

**साड़ी** स्त्री० (हि) १-स्त्रियों के पहनने की धोती । २-साढ़ी ।

**साढ़सातो** स्त्री० (देश) दे० 'साढ़ेसाती' ।

**साढ़ी** स्त्री० (हि) १-आसाढ़ में बोई जाने वाली फसल । २-दूध पर की मलाई । ३-साल वृक्ष का गोंद । ४-साड़ी ।

**साढ़ू** पुं० (हि) पत्नी की बहन का पति ।

**साढ़े** वि० (हि) आधे के साथ ।

**साढ़ेसाती** स्त्री० (हि) शनिग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात माह या साढ़े सात दिन तक रहता है ।

**सात** वि० (हि) चार और तीन । पुं० चार और तीन की संख्या के योग की संख्या । ७ ।

**सातत्य** पुं०(सं) १-सतत का भाव। २-सदा निरन्तर होते रहना ।

**सातपांच** पुं० (हिं) १-धोखा । २-चालबाजी । ३-मिस । बहाना । ४-झगड़ा । तकरार ।

**साति** स्त्री० (हिं) शास्ति । दंड ।

**सातिक** वि० (हि) सात्त्विक ।

**सातिग** वि० (हि) सात्त्विक ।

**सात्त्विक** वि० (सं) १-सतोगुणी । २-पवित्र । ३-सत्व गुण से उत्पन्न । पुं० १-साहित्य में सतोगुण से उत्पन्न -- स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग कंप, वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय यह अंग विकार । २-ब्रह्मा ३-विष्णु । ४-सात्त्विक वृत्ति । ५-चार प्रकार के अभिनयों में से एक ।

**सात्म्य** पुं० (सं) १-सारूप्य । २-वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके पान करने से शरीर को लाभ पहुँचता है । ३-अभ्यास ।

**सात्रिकपरिक्षा** स्त्री० (सं) विद्यालय आदि में एक सत्र की पढ़ाई समाप्त होने पर ली जाने वाली परीक्षा (टरमिनल एक्जामिनेशन) ।

**सात्विक** पुं० (सं) दे० 'सात्त्विक' ।

**साथ** पुं० (हि) १-संगति । २-संगी । ३-घनिष्टता । ४-कबूतरों का झुण्ड । अव्य० १-सहित । से । २-विरुद्ध । ३-प्रति । ४-द्वारा ।

**साथरा** पुं० (हिं) १-चटाई । बिस्तर । २-कुश की बनी चटाई ।

**साथरी** स्त्री० (हिं) कुश की बनी चटाई ।

**साथसाथ** अव्य० (हिं) एक साथ ।

**साथी** पुं० (हि) १-संगी । २-दोस्त । मित्र ।

**साद** पुं० (सं) १-विशुद्धता । २-शुभ । ३-नाश । ४-क्षीणता । ५-क्लांति । पुं० (अ) किसी बात को ठीक मानने के चिह्न । वि० (अ) १-सभ्य । भद्र । २-सज्जन । भला । शुभ ।

**सादगी** स्त्री० (फा) सादापन । सरलता । २-सीधापन निष्कपटता ।

**सादर** अव्य० (सं) आदर या सम्मान के साथ ।

**सादा** वि० (फा) १-साधारण बनावट का । २-बिना मिलावट या आडम्बर के । ३-बिना बेल बूटे वाला। ४-सीधा । सरल । ५-जिस पर कुछ लिखा न हो । ६-सफेद । जिसका कोई रंग न हो ।

**सादा-कपड़ा** पुं०(फा) वह कपड़ा जिसका शोख रंग न हो या जिस पर बेल बूटे न कढ़े हुए हों ।

**सादा-कागज** पुं० (फा) वह कागज जिस पर कुछ लिखा न हो ।

**सादाकार** पुं० (फा) सुनार । सोने चांदी का काम करने वाला ।

**सादादिल** वि० (फा) १-निष्कपट । २-सीधा । सरल

**सादामिजाज** वि० (फा) जिसके मिजाज में बनावट न हो ।

**सादिक** वि० (अ) ठीक । सत्य ।

**सादित** वि० (सं) छिन्न-भिन्न । ध्वस्त ।

**सादी** स्त्री० (फा) १-लाल की जाति की एक छोटी चिड़िया । २-बिना पिट्ठी की पूरी । पुं०१-शिकारी २-घोड़ा । ३-दे० 'शादी' ।

**सादूर** पुं० (हिं) १-सिंह । शार्दूल । २-कोई हिंसक पशु ।

**सादृश्य** पुं० (स) १-एकरूपता । समानता । २-तुलना। ३-कुरंग । मृग । ४-परस्पर विरोधी या भिन्न तत्वों में पाई जाने वाली समानता । अतिदेश । (एनालॉजी) ।

**साद्यन्त** वि० (सं) पूरा । संपूर्ण ।

**साध** पुं० (हिं) १-साधु । २-योगी । ३-सज्जन । ४-एक जाति । स्त्री० १-इच्छा । अभिलाषा । २-गर्भवती स्त्री के सातवें महीने पर मनाया जाने वाला एक उत्सव । वि० उत्तम । अच्छा ।

**साधक** पुं० (सं) १-साधना करने वाला । २-साधन ३-योगी । ४-ओझा । ५-वह जो अनुकूल और सहायक हो । ६-पित्त । ७-दौना ।

**साधन** पुं० (स) १-काम आरम्भ करके पूरा करना २-पालन करना । ३-अपने पद के कर्तव्यों का पालन करना । ४-विधिक लेख्यों आदि में बतलाये हुये कार्य के पूर्ण करना । (एक्जीक्यूशन) । ५-उपकरण । (मीन्स) । ६-उपाय । युक्ति । ७-कारण । हेतु । ८-गमन । ९-धन । १०-पदार्थ वस्तु । ११-सिद्धि । १२-प्रमाण । १३-तपस्या द्वारा मंत्र सिद्ध करना । १४-कोई वस्तु तैयार करने की सामग्री ।

१५-संधान ।
**साधनता** स्त्री० (सं) १-साधन का भाव या धर्म । २-साधने की क्रिया ।
**साधनत्व** पुं० (सं) साधनता ।
**साधनहार** वि० (हि) जो साधा जा सके ।
**साधना** स्त्री० (सं) १-कोई काम सिद्ध करने की क्रिया या भाव । २-आराधना । ३-साधन । क्रि० (हि) १-पूरा करना । २-अभ्यास करना । ३-निशाना लगाना । ४-वश में करना । ५-एकत्र करना । ६-शोधना । ७-प्रमाणित करना । ८-नकली को असल जैसा कर दिखाना ।
**साधनीय** वि०(सं) १-जो साधा जा सके । २-साधना करने योग्य ।
**साधयिता** पुं० (सं) साधन करने वाला ।
**साधर्म्य** पुं० (सं) एकधर्मता । समान गुण या धर्म होने का भाव ।
**साधस** पुं० (हि) दे० 'साध्वस' ।
**साधार** वि० (सं) जिसका कुछ आधार हो । आधार-युक्त ।
**साधारण** वि० (सं) १-जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो । सामान्य । मामूली । (आर्डिनरी) २-सरल । सहज । ३-बहुतों से सम्बन्ध रखने वाला। ४-सार्वजनिक । आम । (जनरल) ।
**साधारणतः** अव्य० (हिं) १-साधारण रूप से । २-बहुधा । प्रायः ।
**साधारणतया** अव्य० (स) दे० 'साधारणतः' ।
**साधारण-धर्म** पुं० (सं) १-वह धर्म जो सबके लिये हो । २-चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्म । ३-वह धर्म जो साधारणतया सब पदार्थों में पाया जाता हो ।
**साधारण-निर्वाचन** पुं० (सं) ससद आदि के सब सदस्यों का चुनाव । आम चुनाव । (जनरल इलेक्शन) ।
**साधारण स्त्री** स्त्री०(सं) वेश्या ।
**साधित** वि० (स) १-साधा हुआ । २-शोधित । ३-जिसका नाश किया गया हो । ४-जिसे दण्ड दिया गया हो । ५-जो चुकाया गया हो (ऋण आदि) ।
**साधु** पुं० (सं) १-कुलीन । आर्य । २-धार्मिक जीवन बिताने वाला सन्त व्यक्ति । ३-सज्जन । ४-जैन साधु । ५-मुनि । ६-जिन । वि० १-अच्छा । २-प्रशंसनीय । ३-उचित । ४-शिष्ट और शुद्ध (भाषा)
**साधुता** स्त्री० (सं) १-साधु होने का भाव या धर्म । २-साधुओं का आचरण । ३-सज्जनता । ४-भलाई ५-सीधापन ।
**साधुत्व** पुं० (सं) साधुता ।
**साधुभाव** पुं० (स) सज्जनता । साधुता ।
**साधुवाद** पुं० (सं) किसी को कोई भला काम करने पर 'साधु-साधु' कहकर उसकी प्रशंसा करना ।
**साधुवादी** वि० (सं) सच बोलने वाला । सत्यवादी ।
**साधुसंगत** पुं० (सं) अच्छी सङ्गति । सत्सङ्गति ।
**साधुसम्मत** वि० (सं) जो अच्छे लोगों को मान्य हो ।
**साधुसाधु** अव्य० (सं) धन्य-धन्य । वाह-वाह ।
**साधू** पुं० (हि) दे० 'साधु' ।
**साधो** पुं० (हि) धार्मिक पुरुष । सन्त । साधु ।
**साध्य** वि० (सं) १-जो सिद्ध हो सके । २-साधनीय । ३-सरल । ४-जो प्रमाणित करना हो । ५-जानने योग्य । ६-प्रतिकार करने योग्य । पुं०१-बारह गण-देवता । २-देवता । ३-ज्योतिष में एक शुभ योग । ४-सामर्थ्य । ५-न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय ।
**साध्यता** स्त्री० (सं) साध्य का भाव या धर्म ।
**साध्यपक्ष** पुं० (सं) विवाद में वह पक्ष जिसे प्रमाणित करना हो ।
**साध्यसिद्धि** स्त्री० (सं) वह जिसे किसी कार्य का सम्पादन करना हो ।
**साध्वस** पुं० (सं) १-भय । २-व्याकुलता । ३-प्रतिभा ।
**साध्वाचार** पुं० (सं) १-शिष्टाचार । २-साधुओं का सा आचरण ।
**साध्वी** वि० (सं) पतिव्रता या पवित्र आचरण वाली (स्त्री) ।
**सानंद** पुं० (सं) १-समाधि का भेद । २-सङ्गीत के सोलह ध्रुवों में से एक । अव्य० आनन्दसहित ।
**सान** पुं० (हि) वह पत्थर जिस पर अस्त्र, चाकू आदि की धार तेज की जाती है ।
**सानगुमान** पुं० (हि)१-इशारा । २-विचार । ख्याल । ३-सुराग ।
**सानी** स्त्री० (हि) १-चारे की सामग्री जो पानी में मिलाकर पशुओं को खिलाई जाती है । २-गाड़ी के पहिये में लगाई जाने वाली गिट्टक । वि० (अ) १-दूसरा । २-मुकाबले का ।
**सानु** पुं० (स) १-पर्वत की चोटी । २-सिरा । छोर । ३-समतल भूमि । ४-वन । ५-मार्ग । ६-सूर्य । ७-पल्लव । ८-पण्डित ।
**सानुकम्प** वि० (सं) कोमल हृदय वाला । दयालु ।
**सानुकूल** वि० (सं) अनुकूल ।
**सानुक्रमसंस्थान** पुं० (सं) वह संस्था जिसके अधिकारी क्रमानुगत नियुक्त होते हों । (हायरेरकी) ।
**सानुक्रोश** वि० (सं) दयालु ।
**सानुज** वि० (स) जिसके छोटा भाई हो ।
**सानुनय** वि०(स) शिष्ट । विनम्र । अव्य० विनयपूर्वक ।
**सानुनासिक** वि० (सं) १-नाक से बोलने वाला । २-जिसके उच्चारण में नाक का योग हो (अक्षर) ।
**सानुप्रास** वि० (सं) अनुप्रासयुक्त ।
**सान्नहनिक** वि० (सं) कवचधारी ।

**सान्निध्य** पुं० (सं) १-समीपता । २-एक प्रकार की मुक्ति या मोक्ष ।
**सान्निपातिक** वि० (सं) १-सन्निपात सम्बन्धी । २-त्रिदोष से उत्पन्न होने वाला रोग ।
**सान्वय** वि० (सं) वंश वाला । २-एक सा काम करने वाला ।
**साप** पुं० (हिं) दे० 'शाप' ।
**सापत्न** वि० (सं) सौत की कोख से उत्पन्न । सौत सम्बन्धी ।
**सापत्नक** पुं० (सं) सौतों की परस्पर की शत्रुता ।
**सापत्नेय** वि० (सं) सौतेला ।
**सापत्न्य** पुं० (सं) १-सौत की दशा । सौतिया भाव । २-वैर-भाव । ३-सौत का लड़का ।
**सापना** क्रि० (हिं) १-शाप देना । कोसना ।
**सापवादक** वि०(सं) जिसमें बुराई या अपवाद हो सके
**सापिंड्य** पुं०(सं) सपिंड होने का भाव या धर्म ।
**सापेक्ष** वि० (सं) १-किसी से अपेक्षा रखने वाला २-जो विचार, निर्णय या आज्ञा की अपेक्षा में रुका या पड़ा हुआ हो । (पेंडिंग) ।
**साप्ताहिक** वि० (सं) १-सप्ताह-सम्बन्धी । २-प्रति सप्ताह होने वाला । ३-हफ्तेवार । (वीकली) । पुं० वह समाचार पत्र जो सात दिन में एक बार प्रकाशित होता हो ।
**साफ़** वि० (अ) स्वच्छ । निर्मल । २-शुद्ध । खालिस ३-स्पष्ट । ४-उज्ज्वल । ५-चमकीला । ६-निष्कपट ७-सादा । कोरा । ८-समतल । हमवार । ९-रिक्त खाली । १०-जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो । ११-जिसमें कोई तत्व या सार न हो । १२-(लेन-देन) जो चुकता कर दिया गया हो । १३-जीवित न छोड़ना ।
**साफ़-इन्कार** पुं० (अ) स्पष्ट मुकर जाना ।
**साफ़गोई** स्त्री० (अ) स्पष्टभाषिता ।
**साफ़-जवाब** पुं०(अ) स्पष्ट रूप से दिया गया उत्तर ।
**साफ़दिल** वि० (अ) जिसके हृदय में कपट न हो ।
**साफल्य** पुं० (सं) १-सफलता । सिद्धि । २-लाभ ।
**साफ़साफ़** अव्य० (अ) स्पष्टतः ।
**साफ़ा** पुं० (हिं) १-सिर पर बांधने का पगड़ी । मुँडासा । २-कपड़े धोना । ३-जानवरों का शिकार के लिए अथवा कबूतरों का दूर तक की उड़ान के लिए तैयार होने के लिए उपवास करना ।
**साफ़िर** वि० (अ) यात्रा करने वाला । पुं० पतला-दुबला घोड़ा ।
**साफ़ी** स्त्री० (अ) १-भांग छानने या सुलफे की चिलम के नीचे लगाने का कपड़ा । २-हाथ में रखने का रूमाल । ३-कपड़छन करने का कपड़ा । ४-लकड़ी साफ करने का रन्दा ।
**साफ़ीनामा** पुं० (अ) राजीनामा ।
**साबर** पुं० (हिं) १-साँभर । २-एक प्रकार का मुलायम हिरन का चमड़ा जो मलमल जैसा मुलायम होता है । ३-शाबर जाति के लोग । ४-मिट्टी खोदने का एक औजार ।
**साबल** पुं० (हिं) बरछी । भाला ।
**साबिक़** वि० (अ) पहले का । पुराना । प्राचीन ।
**साबिक़दस्तूर** अव्य० (अ) यथापूर्व । जैसे पहले था वैसा ।
**साबिक़ा** पुं० (अ) १-जानपहचान । २-सरोकार ।
**साबित** वि० (फा) प्रामाणिक । सिद्ध । (अ) १-पूरा साबुत । २-ठीक ।
**साबितक़दम** वि० (अ) अपने निश्चय पर अटल रहने वाला ।
**साबिर** वि० (अ) बरदाश्त या सहन करने वाला ।
**साबुन** पुं० (हिं) दे० 'साबून' ।
**साबूदाना** पुं० (हिं) दे० 'सागूदाना' ।
**साबून** पुं०(अ) तेल,क्षार आदि के मिश्रण से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर तथा कपड़े साफ किये जाते हैं । (सोप) ।
**साबूनसाजी** स्त्री० (अ) साबुन बनाने का काम या व्यापार ।
**साभिप्राय** वि० (सं) जिसका कुछ अभिप्राय या मतलब हो ।
**साभिमान** वि० (सं) अहंकारी । घमंडी ।
**सामंजस्य** पुं० (सं) १-औचित्य । २-अनुकूलता । ३-मेल ।
**सामंत** पुं० (सं) १-वीर । योद्धा । २-शक्तिशाली जमींदार या सरदार । ३-समीपता । नजदीकी ।
**सामंतचक्र** पुं० (सं) आस-पास के राजाओं का मण्डल ।
**सामंततंत्र** पुं० (सं) दे० 'सामंतवाद' ।
**सामंतवाद** पुं० (सं) किसी राज्य के अन्तर्गत वह प्रणाली जिसमें सामंतों या सरदारों आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिकार या पूरे अधिकार होते है (फ्यूडलिज्म, फ्यूडल-सिस्टम) ।
**सामंतेश्वर** पुं० (सं) चक्रवर्ती । सम्राट ।
**साम** पुं० (सं) गाये जाने वाले वेद मन्त्र । २-चार वेदों में से तीसरा वेद । ३-राजनीति में शत्रु को मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की नीति । (हिं) दे० 'शाम' । (अ) नूह के बड़े बेटे का नाम जिसकी सन्तानें अरब, यहूदी लोग माने जाते है ।
**सामकारी** पुं० (सं) १-सांत्वना देने वाला । २-एक प्रकार का सामगान ।
**सामग** पुं० (सं) १-साम वेद का पण्डित । २-विष्णु ।
**सामगर्भ** पुं० (सं) विष्णु ।
**सामगान** पुं० (सं) १-एक साम । २-सामवेद का अच्छा पंडित । ३-साम का गान ।

**सामगान-प्रिय** पुं० (सं) शिव।
**सामगाय** पुं० (स) सामगान।
**सामगायक** पुं० (स) सामवेद का अच्छा पंडित।
**सामगायी** पुं० (सं) साम गाने वाला।
**सामगीत** पुं० (स) दे० 'सामगान'।
**सामग्री** स्त्री० (सं) १-वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य में उपभोग होता है। २-असबाब। सामान। ३-जरूरी सामान। ४-साधन।
**सामत** पुं० (हि) दे० 'सामंत'। स्त्री० दे० 'शामत'।
**सामत्रय** पुं० (सं) हर्रे, सोंठ तथा गिलोय इन तीनों का वर्ग।
**सामध** पुं० (हि) समधियों का परस्पर मिलना।
**सामध्वनि** स्त्री० (सं) सामगान की आवाज या ध्वनि
**सामना** पुं०(हि) १-भेंट। मुलाकात। २-प्रतियोगिता ३-आगे वाला भाग।
**सामने** अव्य० (हि) १-समक्ष। आगे। २-उपस्थिति में। ३-मुकाबले में। विरुद्ध।
**सामयिक** वि० (सं) १-समय से सम्बन्ध रखने वाला २-वर्तमान समय का। ३-समय को देखते हुए उपयुक्त। समय के अनुसार।
**सामयिकपत्र** पुं० (सं) १-कुछ निश्चित समय के बाद बार-बार प्रकाशित होने वाला पत्र। (पीरियॉडिकल)। २-वह इकरारनामा जिसमें बहुत से लोग अपना-अपना धन लगा कर अभियोग की पैरवी के निमित्त लिखा पढ़ी करते हैं।
**सामायिकवार्ता** स्त्री० (सं) आकाशवाणी द्वारा किसी सामयिक प्रश्न, विषय पर प्रसारित की जाने वाली वार्ता। (टॉपिकल टॉक)।
**सामर** पुं० (हि) दे० 'समर'। वि० समर का। युद्ध सम्बन्धी।
**सामरथ** स्त्री० (हि) दे० 'सामर्थ्य'।
**सामराधिप** पुं० (सं) सेनापति। (कमांडर)।
**सामरिक** वि० (सं) समर या युद्ध से सम्बन्ध रखने वाला।
**सामरिकता** स्त्री० (सं) १-युद्ध। लड़ाई। २-युद्ध के कामों में लगा रहना।
**सामरेय** वि० (सं) दे० 'सामरिक'।
**सामर्थ** पुं० (हि) दे० 'सामर्थ्य'।
**सामर्थ्य** पुं० (सं) १-कुछ कर सकने की शक्ति। २-योग्यता। ३-शब्दों की व्यंजना शक्ति। ४-व्याकरण में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध।
**सामर्थ्यहीन** वि० (सं) निर्बल। कमजोर।
**सामवाद** पुं० (सं) मधुर वचन।
**समवायिक** वि० (स) १-समवाय सम्बन्धी। २-समूह या झुण्ड सम्बन्धी। पुं० वजीर। मन्त्री।
**सामवायिकराज्य** पुं० (सं) वे राज्य जो किसी युद्ध निमित्त मिल गये हों।
**सामविद्** पुं० (सं) सामवेद का अच्छा ज्ञाता।
**सामवेद** पुं० (सं) चार वेदों में तीसरा जिसमें गाये जाने वाले स्तोत्र हैं।
**सामवेदी** पुं० (सं) सामवेद का पंडित।
**सामसाली** पुं० (हि) राजनीतिज्ञ। साम, दाम, दंड और भेद अंगों को राजनीति में जानने वाला।
**सामस्त** वि० (हि) दे० 'समस्त'।
**सामहिं** अव्य० (हि) दे० 'समहिं'।
**सामहि** अव्य० (हि) सामने। सम्मुख।
**सामाँ** पुं० (हि) दे० 'सामा'।
**सामा** पुं० (हि) १-साँवाँ। २-सामान। स्त्री० दे० 'श्यामा'।
**सामाजिक** वि० (सं) सारे समाज से सम्बन्ध रखने वाला। समाज का। (सोशल)। पुं० काव्य नाटक आदि का श्रोता या दर्शक।
**सामाजिकव्यवस्था** स्त्री०(सं) समाज के निर्माण आदि का तरीका। (सोशल ऑर्डर)।
**सामाजसुरक्षा** स्त्री० (सं) चोर डाकुओं से सुरक्षा तथा बेकारी आदि दूर करने की व्यवस्था। (सोशल सिक्यूरिटी)।
**सामान** पुं० (फा) १-सामग्री। असबाब। २-उपक्रम आयोजन।
**सामानग्रामिक** वि० (सं) एक ही गांव के रहने वाले
**सामानेजंग** पुं० (फा) लड़ाई के काम आने वाली युद्ध सामग्री।
**सामानेसफर** पुं० (फा) सफर में काम आने वाली आवश्यक वस्तुएँ।
**सामान्य** वि० (सं) १-जिसमें कोई विशेषता न हो। २-साधारण। ३-मध्यम। पुं० १-समानता। बराबरी। २-किसी जाति या प्रकार की सब वस्तुओं में पाया जाने वाला एक सा गुण। ३-साहित्य में एक अलंकार विशेष।
**सामान्यज्ञान** पुं० (सं) मामूली बातों का ज्ञान।
**सामान्यतः** अव्य० (सं) दे० 'सामान्यतया'।
**सामान्यतया** अव्य० (सं) साधारण या मामूली तौर पर।
**सामान्यनायिका** स्त्री० (सं) वेश्या।
**सामान्यभविष्यत्** पुं० (सं) भविष्य-क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है।
**सामान्यभूत** पुं० (सं) क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है तथा भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती, जैसे—गया।
**सामान्यलक्षण** पुं० (सं) वह गुण जो किसी एक सामान्य को देख कर उसी के अनुसार उस जाति के अन्य सब पदार्थों को प्राप्त होते हैं।
**सामान्यवनिता** स्त्री० (सं) वेश्या।
**सामान्य-वर्तमान** पुं० (सं) वर्तमान क्रिया का वह

रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—'खाता है'।
**सामान्यविधि** *वि०* (सं) साधारण कानून, विधि या आज्ञा। २-किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार प्रचलित होता है। (कॉमन लॉ)।
**सामासिक** *वि०* (सं) समास से सम्बन्ध रखने वाला। समास का।
**सामिष** *वि०* (सं) १-आमिष सहित। निरमिष का उलटा। २-मांसयुक्त।
**सामी** पुं० (हि) दे० 'स्वामी'। *स्त्री०* दे० 'शामी'।
**सामीप्य** पुं० (सं) १-समीप का भाव। निकटता। २-एक प्रकार की मुक्ति।
**सामुझि** *स्त्री०* (हि) दे० 'समझ'।
**सामुदायिक** *वि०* (सं) समुदाय का। सामूहिक।
**सामुदायिक योजना** *स्त्री०* (सं) शिक्षा प्रसार, पथ-निर्माण कूएँ या नल लगाने तथा कृषिसुधार संबंधी वह कार्य या योजनायें जिनको जनता सामूहिक रूप से पूरा करती हो। (कम्युनिटी प्रोजेक्ट)।
**सामुद्र** *वि०* (सं) समुद्र का। पुं० १-समुद्र-फेन। २-समुद्र से निकला नमक। ३-समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला व्यवसायी। ४-नारियल। ५-नाविक।
**सामुद्रक** पुं० (सं) १-समुद्र से निकला नमक। २-दे० 'सामुद्रिक।
**सामुद्रज्ञ** पुं० (सं) दे० 'सामुद्रविद्'।
**सामुद्र बंधु** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**सामुद्रविद्** *वि०*(सं) शरीर के चिह्नों को देखकर शुभाशुभ बताने की विद्या जानने वाला।
**सामुद्रिक** *वि०* (सं) समुद्र सम्बन्धी। पुं० वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य के शारीरिक लक्षणों विशेषतः हथेली को देखकर शुभ या अशुभ फल बताए जाते हैं। २-इस विद्या का जानकार।
**सामुहाँ** *अव्य०* (हि) सामने। सम्मुख। पुं० अग्रभाग सामना।
**सामुहें** *अव्य०* (हि) दे० 'सामुहाँ'।
**सामूहिक** *वि०* (सं) समूह का। समूह से सम्बन्ध रखने वाला।
**सामोद** *वि०* (सं) १-प्रसन्न। २-सुगन्धित।
**सामोपचार** पुं० (सं) दे० 'सामोपाय'।
**सामोपाय** पुं० (सं) कठोर उपाय काम में न लाकर नरम उपायों से काम निकालना।
**साम्मत्य** पुं० (सं) सम्मति का भाव।
**साम्मुख्य** पुं० (सं) उपस्थित होने का भाव। विद्यमानता।
**साम्य** पुं० (सं) समानता।
**साम्यतंत्र** पुं० (सं) दे० 'साम्यवाद'।
**साम्यवाद** पुं० (सं) मार्क्स द्वारा चलाया हुआ एक सिद्धान्त जिसके अनुसार ऐसे समाज की स्थापना होनी चाहिए जिसमें वर्गभेद न हो तथा सरकार की सम्पत्ति पर सब का समान अधिकार हो। (कम्यूनिज्म)।
**साम्यवादी** पुं०(सं) साम्यवाद सिद्धान्त का अनुयायी (कम्यूनिस्ट)।
**साम्यावस्था** *स्त्री०* (सं) वह स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियां इतनी तुली हुई हों कि कोई अपना प्रभाव डालकर कोई विकार उत्पन्न न कर सके। (इक्वीलिब्रियम)।
**साम्यावस्थान** पुं० (सं) सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों की समावस्था।
**साम्राज्य** पुं०(सं) १-वह बड़ा राज्य जिसके आधीन बहुत से देश हों तथा जिसमें एक राष्ट्र का शासन हो। सार्वभौम राज्य। (एम्पायर)। २-आधिपत्य। पूर्णाधिकार।
**साम्राज्यलक्ष्मी** *स्त्री०* (सं) तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।
**साम्राज्यवाद** पुं० (सं) साम्राज्य को बनाये रखने तथा उसको निरन्तर बढ़ाने के लिए दूसरे राज्यों को अपने आधीन करने का सिद्धांत। सैनिक बल या छल कपट से दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिला लेने की नीति। (इम्पीरियेलिज्म)।
**साम्राज्यवादी** पुं० (सं) साम्राज्यवाद के सिद्धांत पर विश्वास करने वाला। (इम्पीरियलिस्ट)।
**साम्राज्यांतर्गत अधिमान्यता** *स्त्री०*(सं) वाणिज्य आदि में ब्रिटेन के राष्ट्रमंडल के देशों में अन्य देशों की तुलना में आयात या निर्यात कर लगाकर अधिमान्यता देने की नीति। (इम्पीरियल प्रिफरेंस)।
**साम्हने** *अव्य०* (हि) दे० 'सामने'।
**सायं** पुं० (सं) दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम २-बाण। तीर।
**सायंकाल** पुं० (सं) संध्याकाल। शाम। संध्या।
**सायंकालिक** *वि०* (सं) दे० 'सायंकालीन'।
**सायंकालीन** *वि०* (सं) संध्या के समय का। शाम का
**सायंगृह** पुं० (सं) वह जो संध्या समय जहां पहुँचता हो वहीं घर बना लेता हो।
**सायंनिवास** पुं० (सं) वह विश्रामघर जहां संध्या को ठहरा जाता है।
**सायंप्रातः** *अव्य०* (सं) सुबह-शाम।
**सायंभोजन** पुं० (सं) ब्यालू।
**सायंसंध्या** *स्त्री०* (सं) सायंकाल के समय की जाने वाली संध्या।
**सायक** पुं०(सं) १-बाण। तीर। खड्ग। ३-पांच की संख्या। ४-एक वर्णवृत्त।
**सायकपुङ्ख** पुं० (सं) बाण का पङ्ख वाला भाग।

सायत स्त्री० स्त्री० (हि) दे० 'सायत'।
सायन पुं० (सं) सूर्य की एक गति।
सायबान पुं० (फा) मकान के आगे धूप से बचने के लिए टीन आदि का छाजन। बरामदा।
सायम वि० (अ) रोजा या व्रत रखने वाला।
सायम् अव्य० (सं) शाम के समय।
सायर पु० (हि) सागर। पुं० (अ) १-वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २-अतिरिक्त फुटकर आय। वि० (अ) फुटकर। प्रकीर्णक।
सायरखर्च पुं० (अ) फुटकर खर्च।
सायल पुं० (अ) १-प्रश्नकर्त्ता। २-भिखारी। फकीर ३-प्रार्थना करने वाला। ४-न्यायालय में प्रार्थना-पत्र देने वाला। ५-उम्मीदवार।
साया पुं० (फा) १-छाया। छांह। २-परछाई। ३-भूत-प्रेत आदि। ४-असर। प्रभाव। पुं० (अ) १-एक जनाना पहनावा जो घाघरे जैसा होता है। २-पेटीकोट।
सायावार वि० (फा) छायायुक्त।
सायुज्य पुं० (सं) १-मिलन। योग। २-एक प्रकार की मुक्ति।
सारंग पुं० (सं) १-एक प्रकार का मृग। २-श्येन। बाज। ३-शंख। ४-मयूर। ५-सूर्य। ६-भ्रमर। ७-हंस। ८-कमल। ९-कपूर। १०-चन्द्रमा। ११-घोड़ा १२-स्वर्ण। १३-बाण। १४-दीपक। १५-श्रीकृष्ण १६-रात्रि। १७-स्त्री। १८-हाथी। १९-विष्णु भगवान का धनुष। २०-भूमि। २१-स्त्री। २२-बाल। केश। २३-सिंह। २४-सर्प। २५-मेंढक। २६-कामदेव। २७-कुच। स्तन। २८-छप्पय छन्द का एक भेद। २९-कोयल। ३०-कागज। वि० १-रङ्गा हुआ। २-सुन्दर। ३-सरस।
सारंगधर पुं० (सं) कांच। शीशा।
सारंगज पुं० (सं) मृग। हिरन।
सारंगजदृशी स्त्री० (सं) मृग के समान नेत्र वाली सुन्दर स्त्री।
सारंगनाथ पुं० (सं) सारनाथ का प्राचीन पौराणिक नाम।
सारंगपाणि पुं० (स) विष्णु।
सारंगपानि पुं० (हि) विष्णु।
सारंगलोचना वि० (सं) मृगनयनी स्त्री।
सारंगा स्त्री० (हि) १-एक रागिनी का नाम। २-एक प्रकार की नाव।
सारंगाक्षी स्त्री० (सं) मृगनयनी स्त्री।
सारंगिक पुं० (सं) १-चिड़ीमार। बहेलिया। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, यगण और सगण होते है।
सारंगिया पु० (हि) वह जो सारंगी बजाता हो।
सारंगी स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध बाद्ययन्त्र।
सार पुं० (सं) १-तत्व। सत्त। २-तात्पर्य। निष्कर्ष ३-रस। अर्क। ४-जल। ५-गूदा। ६-वह भूमि जिस पर दो फसलें होती है। ७-मज्जा। ८-धन। ९-तलवार। १०-शक्ति। ११-शरीरस्थ आठ स्थिर पदार्थ त्वक, रक्त मांसादि। १२-एक वर्णवृत्त १३-एक अर्थालंकार। १४-अनार का पेड़। १५-मूंग। वि० १-उत्तम। २-दृढ़। ३-न्याय। पुं० (हि) १-मैना। २-पालन-पोषण। ३-शय्या। ४-साला। ५-संभाल।
सारखा वि० (हि) सदृश। समान।
सारगर्भ वि० (स) दे० 'सारगर्भित'।
सारगर्भित वि० (सं) जिसमें सार या तत्व हो। तत्व-पूर्ण।
सारग्राही वि० (सं) वस्तुओं या विषयों का सार ग्रहण करने वाला।
सारणि स्त्री० (सं) १-छोटी नदी। २-धारा। ३-ढंग रीति।
सारणिक पुं० (सं) पथिक। राहगीर।
सारणी स्त्री० (सं) १-छोटी नदी। २-तालिका। (टेबल)।
सारथि पुं० (सं) १-रथ चलाने वाला। २-समुद्र। सागर।
सारथी पु० (हि) दे० 'सारथि'।
सारद स्त्री० (हि) सरस्वती। शारदा। वि० (सं) सार देने वाली। शरद्-सम्बन्धी। शारदी।
सारदी वि० (हि) दे० 'शारदीय'। स्त्री० (सं) जल-पीपल।
सारदूल पुं० (हि) दे० 'शार्दूल'।
सारना क्रि० (हि) १-पूर्ण या समाप्त करना। २-साधना। बनाना। ३-सुशोभित करना। ४-प्रहार करना। ५-सँभालना।
सारनाथ पुं० (सं) बनारस से चार मील दूर उत्तर पश्चिम में एक स्थान जहां पर शिव का मन्दिर तथा एक बहुत बड़ा बौद्ध स्तूप है।
सारभाटा पुं० (सं) समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर से पीछे हटना।
सारमेय स्त्री० (सं) १-कुत्ता। २-सरमा की सन्तान। अक्रूर के भाई का नाम।
सारमेय चिकित्सा स्त्री० (सं) कुत्ते के काटने का इलाज।
सारमेयी स्त्री० (सं) कुतिया।
सारल्य पुं० (सं) सरलता।
सारवान वि० (सं) १-रसदार। २-मजबूत। कठोर। ठोस। ३-कीमती।
सारस पुं० (सं) १-एक प्रकार का लम्बी टांगों वाला बड़ा पक्षी। २-चन्द्रमा। ३-हंस। ४-कमल। ५-कमर में बांधने का एक स्त्रियों का आभूषण। ६-

छप्पय छन्द का एक भेद । ७-कमल ।
**सारसप्रिया** *स्त्री०* (सं) सारसी ।
**सारसुता** *स्त्री०* (हिं) यमुना ।
**सारसुती** *स्त्री०* (हिं) सरस्वती ।
**सारस्य** *वि०* (सं) बहुत रस वाला । पुं० रसदार होने का भाव ।
**सारस्वत** पुं० (सं) १-पंजाब में सरस्वती नदी के किनारे प्राचीन देश का नाम । २-इस प्रदेश के निवासी । ३-इस प्रदेश में रहने वाले ब्राह्मण । *वि०* १-सारस्वत प्रदेश का । २-विद्वानों का ३-सरस्वती सम्बन्धी ।
**सारस्वत कल्प** पुं० (सं) सरस्वती पूजा सम्बन्धी एक कृत्य विशेष ।
**सारस्वतव्रत** पुं० (सं) सरस्वती देवी के उद्देश्य से किया जाने वाला व्रत ।
**सारस्वतोत्सव** पुं० (सं) सरस्वती देवी की पूजा के उपलक्ष में मनाया जाने वाला एक उत्सव ।
**सारांश** पुं०(सं)१-सार । संक्षेप । २-तात्पर्य । निष्कर्ष ३-परिणाम । नतीजा ।
**सारा** *वि०* (हिं) सम्पूर्ण । समस्त । *स्त्री०* (सं) १-केला २-दूब । ३-थूहर । पुं० (सं) एक अलङ्कार । पुं० (हिं) साला ।
**सारार्थी** *वि०* (सं) किसी वस्तु विशेष से लाभ उठाने की इच्छा करने वाला ।
**सारि** पुं० (सं)१-जूआ खेलने का पासा । २-चौपड़ खेलने वाला । ३-गोटी ।
**सारिउं** *स्त्री०* (हिं) मैना ।
**सारिका** *स्त्री०* (सं) १-मैना नामक पक्षी । २-सितार आदि का वह उठा हुआ भाग जिस पर तार टिके होते हैं ।
**सारिकामुख** पुं० (सं) एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।
**सारिखा** *वि०* (हिं) दे० 'सरीखा' ।
**सारिणी** *स्त्री०* (सं) १-कपास । २-महाबला । ३-धमासा । ४-रक्तपुनर्नवा । *स्त्री०* (हिं)दे० 'सारणी'
**सारिफलक** पुं० (सं) १-चौपड़ की एक गोट । २-चौपड़ का पासा ।
**सारिवा** *स्त्री०* (सं) अनन्तमूल ।
**सारी** *स्त्री०* (सं) १-मैना । २-पासा । गोट । ३-थूहर *स्त्री०* (हिं) साड़ी । पुं० (हिं) अनुकरण करने वाला
**सारूप्य** पुं० (सं) समानता । सरूपता । वह मुक्ति जिसमें भक्त या उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है ।
**सारो** पुं० (हिं) एक प्रकार का धान । *स्त्री०* (हिं) मैना ।
**सारोपा** *स्त्री०* (सं) साहित्य में वह लक्षणा जिसमें एक पदार्थ का दूसरे में आरोप होता है ।
**सार्थ** पुं० (सं) १-समूह । झुण्ड । २-वणिकों का वर्ग । ३-जन्तुओं का झुण्ड । ४-व्यापारिक माल *वि०* अर्थसहित ।
**सार्थक** *वि०* (सं) १-अर्थसहित । २-सफल । उपकारी गुणकारी ।
**सार्थकता** *स्त्री०* (सं) १-सफलता । २-सार्थक होने का भाव ।
**सार्थघ्न** पुं० (सं) लुटेरा । डाकू । *वि०* कारवां को बरबाद कर देने वाला ।
**सार्थपति** पुं० (सं) व्यापारी । वणिक ।
**सार्थपाल** पुं० (सं) पथिकों या कारवां की रक्षा करने वाला ।
**सार्थभृत्** *वि०*(सं) धनी । मालदार । पुं० कारवां का नेता ।
**सार्थहा** *वि०* (सं) कारवां को लूटने वाला । पुं० डाकू लुटेरा ।
**सार्थहीन** *वि०* (सं) जो अपने कारवां से बिछुड़ गया हो ।
**सार्दूल** पुं० (हिं) सिंह । शार्दूल ।
**सार्द्ध,सार्ध** *वि०* (सं) १-सहित । २-ड्योढ़ा ।
**सार्द्र** *वि०* (सं) भीगा हुआ । गीला ।
**सार्पिष** *वि०* (सं) दे० 'सार्पिष्क' ।
**सार्पिष्क** *वि०* (सं) १-घी सम्बन्धी । २-घी में तला हुआ ।
**सार्व** पुं० (सं) १-बुद्ध । २-जिन । *वि०* सबसे सम्बन्ध रखने वाला ।
**सार्वकालिक** *वि०* (सं) जो सब कालों में होता हो ।
**सार्वजनिक** *वि०* (सं) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला ।
**सार्वजनिकनिर्माण-विभाग** पुं० (सं) लोक-निर्माण-विभाग । (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) ।
**सार्वजनिक व्यवस्था** *स्त्री०*(सं)जनता या सर्वसाधारण में शांति बनाए रखने के लिए की गई व्यवस्था । (पब्लिक ऑर्डर) ।
**सार्वदेशिक** *वि०* (सं) १-सब देशों से सम्बन्ध रखने वाला । २-सब देशों में होने वाला ।
**सार्वनामिक** *वि०* (सं) सर्वनाम-सम्बन्धी (व्या०) ।
**सार्वभौतिक** *वि०* (सं) सब भूतों या तत्वों से सम्बन्ध रखने अथवा उनमें होने वाला ।
**सार्वभौम** पुं० (सं) १-चक्रवर्ती राजा । २-हाथी । *वि०* समस्त पृथ्वी या उसके सब देशों से सम्बन्ध रखने वाला या उनमें होने वाला ।
**सार्वभौमिक** *वि०* (सं) सारी पृथ्वी पर होने वाला । उस पर फैला हुआ ।
**सार्वरात्रिक** *वि०* (सं) सारी रात होने वाला ।
**सार्वलौकिक** *वि०* (सं) १-सार्वजनिक । २-जो सारे संसार में व्याप्त हो ।
**सार्वत्रिक** *वि०* (सं) सब स्थानों में होने वाला ।

**सार्षप** पुं० (सं) १-सरसों। २-सरसों का तेल। ३ सरसों का साग। वि० सरसों-सम्बन्धी।
**सालंकार** वि० (सं) १-अलंकार युक्त। २-आभूषित सजा हुआ।
**सालंब** वि० (सं) जिसे कोई सहारा हो।
**साल** पुं० (फा) वर्ष। बरस। स्त्री० (हिं) १-छेद। सुराख। २-घाव। पीड़ा। ३-शाला। ४-लकड़ी का चौकोर सूराख। (सं) १-जड़। मूल। २-राल। धूना। ३-वृक्ष। ४-किला। कोट। ५-सियाल। ६-एक प्रकार की मछली।
**सालआइंदा** पुं० (फा) आने वाला वर्ष।
**सालक** वि० (हिं) कष्ट देने वाला। सालने वाला।
**सालग्राम** पुं० (हिं) दे० 'शालग्राम'।
**सालगिरह** स्त्री० (फा) जन्मदिन। बरसगांठ।
**सालगुजश्ता** पुं० (फा) बीता हुआ वर्ष।
**सालतमाम** पुं० (फा) वर्ष का अन्त।
**सालतमामी** स्त्री० (फा) सालाना विवरण।
**सालन** पुं० (हिं) पके हुए साग-मांस की तरकारी। (सं) सालवृक्ष की राल।
**सालना** क्रि०(हिं)१-कसकना। २-चुभना। ३-लकड़ी आदि में छेद करके उसमें दूसरी लकड़ी फँसाना। ४-कष्ट देना।
**सालनामा** पुं० (फा) किसी पत्रिका का वार्षिक अंक
**सालममिस्री** स्त्री० (हिं) सुधामूली।
**सालरस** पुं० (सं) सालवृक्ष से निकलने वाली राल धूना।
**सालवाहन** पुं० (सं) शालिवाहन राजा का एक नाम
**सालसा** पुं० (अ) खून साफ करने का एक प्रकार का काढ़ा।
**साला** पुं० (हिं) १-अपनी पत्नी का भाई। २-एक गाली। (देश) मैना। सारिका।
**सालातुरीय** पुं० (हिं) दे० 'शालतुरीय'।
**सालाना** वि० (फा) वार्षिक।
**सालार** पुं० (फा) १-मार्ग दर्शक। २-अगुआ। प्रधान नेता।
**सालारेजंग** पुं० (फा) सेनापति।
**सालि** पुं० (हिं) दे० 'शालि'।
**सालिग्राम** पुं० (हिं) दे० 'शालग्राम'।
**सालिम** वि० (अ) पूर्ण। पूरा। सम्पूर्ण।
**सालियाना** वि० (हिं) दे० 'सालाना'।
**सालिस** वि० (अ) तीसरा। तृतीय। पुं० पंच। दो व्यक्तियों में फैसला करने वाला तीसरा व्यक्ति।
**सालिसनामा** पुं० (अ) दे० 'पंचनामा'।
**साली** स्त्री० (फा) खेती के औजारों की मरम्मत के लिये दी जाने वाली सालाना मजदूरी। २-वह भूमि जो सालाना देन के हिसाब से ली जाती है (हिं) पत्नी की बहन।
**सालोक्य** पुं० (सं) १-दूसरे के साथ एक ही स्थान या लोक में निवास। २-वह मुक्ति जिसमें प्राणी भगवान के लोक को प्राप्त होता है।
**सावंत** पुं० (हिं) दे० 'सामंत'।
**साव** पुं०(हिं) दे० 'साहू'। (डिं) बालक। पुत्र।
**सावक** पुं० (हिं) १-दे० 'शावक'। २-दे० 'श्रावक'
**सावकाश** पुं० (सं) १-अवकाश। छुट्टी। २-अवसर अव्य० फुर्सत या सुभीते से।
**सावचेत** वि० (हिं) सतर्क। सावधान।
**सावचेती** पुं० (हिं) सावधानी। सतर्कता।
**सावज** पुं० (हिं) दे० 'साउज'।
**सावत** वि० (हिं) १-डाह। ईर्ष्या। २-सौतिया डाह
**सावधान** वि० (सं) सचेत। सतर्क। होशियार।
**सावधानता** स्त्री० (सं) सतर्कता। होशियारी।
**सावधि** वि० (सं) अवधियुक्त। जिसमें या जिसकी कुछ अवधि हो।
**सावधि-अधि** स्त्री० (सं) वह गिरवी जिसे छुड़ा लेने की अवधि हो।
**सावधिक** वि० (सं) निश्चित समय या काल के बाद होने वाला या निकलने वाला (पत्र)। (पीरिओडिकल)।
**सावधिक-पत्र** पुं० (सं) वह पत्र जिसका प्रकाशन एक निश्चित काल के पश्चात होता हो। (पीरिओडिकल)।
**सावधिक प्रस्फोट** पुं०(सं) वह बम जो एक निश्चित समय के बाद अपने आप ही फट जाता है (टाइम-बॉम्ब)।
**सावधि-निक्षेप** पुं० (सं) बैंक का वह खाता जिसमें निश्चित काल तक के लिए धन जमा कराया जाता है। (फिक्स्ड डिपोजिट)।
**सावन** पुं० (हिं) १-अषाढ़ के बाद का महीना। श्रावण। २-इस महीने में गाया जाने वाला एक गीत। ३-कजली नामक गीत। (सं) १-यज्ञ की सामग्री। २-वरुण। ३-पूरे दिन और रात का समय।
**सावनी** वि०(हिं) सावन-सम्बन्धी। पुं० १-एक प्रकार का चावल। २-भादों में बोया जाने वाला तम्बाकू स्त्री० दे० 'सावन'।
**सावर** पुं० (हिं) १-एक प्रकार का लोहे का लम्बा औजार। २-एक मृग। (सं) १-अपराध। २-पाप ३-एक मृग विशेष।
**सावर्ण्य** पुं०(सं)१-रंग की समानता। २-श्रेणी तथा जाति की एकरूपता।
**सावशेष** वि० (सं) १-जिसमें कुछ शेष हो। २-अपूर्ण अधूरा।
**सावशेष-जीवित** वि० (सं) जिसकी आयु शेष हो।
**सावशेष-बंधन** वि०(सं) जिसके बन्धन अभी न टूटे

हों।

**सावित्री** स्त्री० (सं) १-गायत्री। २-सरस्वती। ३-सत्यवान की पत्नी जो अपने सतीत्व के कारण प्रसिद्ध है। ४-यमुना नदी। ५-सधवा। सुहागिन ६-आंवला। ७-ब्रह्मा की पत्नी।

**सावित्रीव्रत** पुं० (सं) ज्येष्ठ की अमावस्या को पति की दीर्घायु के लिये स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत।

**सावित्रेय** पुं० (सं) यम।

**साश्चर्य** वि०(सं)१-अद्भुत। विलक्षण। २-आश्चर्य-चकित।

**साश्रु** अव्य० (सं) आंखों में आंसू भरके। वि० जिसमें आंसू भरे हुए हों।

**साष्टांग** वि० (सं) आठों अङ्ग से।

**साष्टांग प्रणाम** पुं० (सं) सिर, हाथ, पैर, हृदय, आंख, जांघ, वाचा तथा मन इन आठों से भूमि पर लेटकर किया गया प्रणाम।

**साष्टांगयोग** पुं० (सं) वह योग जिसमें नियम, यम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि ये आठों अंग हों।

**सास** स्त्री० (हि) पति या पत्नी की माता।

**सासति** स्त्री० (हि) १-दण्ड। सजा। २-शासन।

**सासन** पुं० (हि) दे० 'शासन'।

**सासना** पुं० (हि) दे० 'शासन'।

**सासरा** पुं० (हि) दे० 'ससुराल'।

**सासा** स्त्री० (हि) १-सन्देह। शक। २-श्वास। साँस

**सासु** स्त्री० (हि) दे० 'सास'।

**सासुर** पुं० (हि) १-ससुर। २-ससुराल।

**साह** पुं० (हि) १-भला आदमी। साधु। २-साहूकार। धनी। ३-शाह। ४-दरवाजे की चौखट का लकड़ी या पत्थर का लम्बा टुकड़ा जो दोनों ओर लगा होता है।

**साहचर्य** पुं० (सं) १-साथ। संग। २-सहचारता।

**साहजिक** वि० (सं) १-स्वाभाविक। २-स्वभाव या सहज बुद्धि से होने वाला।

**साहनी** स्त्री० (हि) १-सेना। फौज। २-साथी। ३-संगी। पुं० मध्यकालीन भारत में एक प्रकार के राज कर्मचारी।

**साहब** पुं० (अ) १-प्रभु। स्वामी। २-मित्र। ३-ईश्वर ४-एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५-यूरोपियन गोरा।

**साहबजादा** पुं० (अ) १-भले आदमी का लड़का। २-पुत्र। बेटा।

**साहब-बहादुर** पुं० (अ) १-अंग्रेज पदाधिकारी। २-अंग्रेजों की तरह रहने वाला पदाधिकारी।

**साहब-सलामत** स्त्री (अ) आपस में मिलने के समय होने वाला अभिनन्दन।

**साहबाना** वि० (अ) साहब संबन्धी। साहब का।

**साहबी** स्त्री० (अ) १-प्रभुता। २-बड़ाई। ३-साहब होने का भाव।

**साहबीयत** स्त्री० (अ) अंग्रेजी चालढाल।

**साहबुलबुल** स्त्री० (अ)एक प्रकार की सफेद रंगवाली बुलबुल।

**साहस** पुं० (सं) १-वह मानसिक दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने के लिये प्रवृत्त करती है। हिम्मत। २-बलपूर्वक दूसरे का धन लेना। ३-कोई बुरा काम

**साहसिक** वि० (सं) १-निडर। निर्भीक। २-हठीला। पुं० १-पराक्रमी। साहस करने वाला। २-डाकू। चोर।

**साहसी** वि० (सं) साहस अथवा हिम्मत रखने वाला। दिलेर।

**साहस्र** वि० (सं) सहस्र सम्बन्धी। हजार का।

**साहाय्य** पुं० (सं) सहायता। मदद।

**साहि** पुं० (हि) १-राजा। २-साहू।

**साहित्य** पुं० (सं) १-सहित या साथ होने का भाव २-किसी भाषा या देश के उन समस्त ग्रंथों, लेखों आदि का समूह जिसमें स्थायी उच्च और गूढ़ विषयों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। (लिटरेचर)। ३-वे सभी ग्रन्थ जिनका सौन्दर्य, गुण, रूप अथवा भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता हो। ४-किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखने वाले सारे ग्रन्थों तथा लेखों आदि का समूह। ५-गद्य एवं पद्य की शैली तथा लेखों और कार्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौन्दर्य या नायिका-भेद तथा अलंकारादि से सम्बन्धित ग्रन्थों का समूह। ६-किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखने वाली समस्त बातों का विवरण जो प्रायः विज्ञापन के रूप में बँटता है (लिटरेचर)।

**साहित्यकार** पुं० (सं) वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो।

**साहित्यशास्त्र** पुं० (सं) वह ग्रन्थ जिसमें साहित्य के विभिन्न अंगों की विवेचना की गई हो।

**साहित्यादि महाविद्यालय** पुं०(सं) वह महाविद्यालय जहां साहित्य इतिहास आदि विषयों की विद्या पढ़ाई जाती हो। (आर्ट्स कालेज)।

**साहित्यिक** वि० (सं) साहित्य-सम्बन्धी।

**साहित्यिक उपनाम** पुं० (सं) किसी रचना, ग्रन्थ आदि के लेखक द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला बनावटी नाम (पेन-नेम)।

**साहिनी** स्त्री० (हि) दे० 'साहनी'।

**साहिब** पुं० (हि) दे० 'साहब'।

**साहियाँ** पुं० (हि) दे० 'साँई'।

**साहिल** पुं० (अ) १-समुद्र का तट। २-नदी का किनारा।

साही पुं० (हि) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसके शरीर पर लम्बे कांटे होते हैं।
साहु पुं० (हि) १-सज्जन। २-सेठ।
साहुल पुं० (हि) एक प्रकार का यन्त्र जिससे दीवार की सीध नापी जाती है।
साहू पुं० (हि) दे० 'साहु'।
साहूकार पुं० (हि) बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठी वाला।
साहूकारा पुं० (हि) १-महाजनी कारबार। २-वह स्थान जहां ऐसा कारबार होता है।
साहूकारी स्त्री० (हि) साहूकार होने का भाव।
साहब पुं० (हि) दे० 'साहब'।
साहें स्त्री० (हि) भुजदंड। बाजू। अव्य० सामने सन्मुख।
सिउं अव्य० (हि) दे० 'स्यों'।
सिंकना क्रि० (हि) सेंका जाना। सिकना।
सिंगरफ पुं० (फा) ईंगुर।
सिंगरौर पुं० (हि) प्रयाग के पास एक स्थान जो शृङ्गवेरपुर माना जाता है।
सिंगल स्त्री० (देश) एक प्रकार की मछली। पुं० (हि) दे० 'सिगनल'।
सिंगा पुं० (हि) तुरही नामक बाजा। रणसिंगा।
सिंगार पुं० (हि) १-सजावट। सज्जा। बनाव। २-शोभा। ३-शृङ्गार-रस।
सिंगारदान पुं० (हि) एक प्रकार का छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृङ्गार का सामान रखा जाता है।
सिंगारना क्रि० (हि) १-सजाना। शृङ्गार करना। २-सजाया जाना।
सिंगार-मेज स्त्री० (हि) एक प्रकार की दराजदार मेज जिस पर एक बड़ा दर्पण लगा होता है। (ड्रेसिंग-टेबल)।
सिंगार-हाट स्त्री० (हि) वह बाजार जिसमें (सजकर) वेश्याएं बैठती हैं।
सिंगारिया वि०(हि) देवमूर्त्ति का शृङ्गार करने वाला।
सिंगारी वि० (हि) शृङ्गार करने वाला।
सिंगिया पुं० (हि) हल्दी की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।
सिंगी पुं० (हि) फूंक कर बजाया जाने वाला एक बाजा। स्त्री०१-एक प्रकार की मछली। २-सींग की वह नली जिसके द्वारा जर्राह लोग दूषित रक्त चूस कर निकालते हैं।
सिंगौटी स्त्री० (हि) १-वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रियां शृङ्गार की सामग्री रखती है। २-बैल के सींग पर पहनने का एक आभूषण।
सिंघ पुं० (हि) दे० 'सिंह'।
सिंघण पुं० (हि) १-नाक की रेंट या श्लेष्मा। २-लोहे का जंग या मुरचा।
सिंघल पुं० (हि) दे० 'सिंहल'।
सिंघली वि० (हि) 'सिंहली'।
सिंघाड़ा पुं० (हि) १-पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है। २-समोसा। ३-इस प्रकार का बेलबूटा।
सिंघाण पुं० (सं) दे० 'सिंघाण'।
सिंघासन पुं० (हि) 'सिंहासन'।
सिंघिनी स्त्री० (हि) शेरनी।
सिंघी स्त्री० (हि) १-सोंठ। २-एक छोटी मछली।
सिंघेला पुं० (हि) शेर का बच्चा।
सिंचन पुं० (सं) १-सींचना। २-जल छिड़कना।
सिंचना क्रि० (हि) सींचा जाना।
सिंचाई स्त्री० (हि) सींचने का काम या मजदूरी
सिंचाना क्रि० (हि) १-पानी छिड़कवाना। २-सींचने का काम कराना।
सिंचित वि० (सं) १-सींचा हुआ। २-भीगा हुआ। तर।
सिंचौनी स्त्री० (हि) दे० 'सिंचाई'।
सिंजा स्त्री० (सं) गहनों आदि के आपस में टकराने से उत्पन्न होने वाला स्वर।
सिंजित पुं० (सं) दे० 'सिंजा'।
सिंदन पुं० (हि) स्यन्दन। रथ।
सिंदूर पुं०(सं) ईंगुर का पिसा हुआ चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागनें मांग में भरती हैं।
सिंदूरतिलक पुं० (सं) सिंदूर का तिलक।
सिंदूरतिलका स्त्री० (सं) सधवा स्त्री।
सिंदूरदान पुं० (सं) विवाह के अवसर पर वर का वधू की मांग में सिंदूर भरना।
सिंदूरबंदन पुं० (सं) दे० 'सिंदूरदान'।
सिंदूरवंदन पुं० (सं) दे० 'सिंदूरदान'।
सिंदूरिया वि० (हि) सिंदूर के रंग का।
सिंदूरी वि० (हि)सिंदूर के रंग का। पीला मिला गहरा लाल। स्त्री० (हि) लाल हल्दी।
सिंदोरा पुं० (हि) सिंदूर रखने की डिबिया।
सिंध पुं० (हि)१-पाकिस्तान का एक प्रान्त। २-पंजाब की एक नदी। ३-भैरव राग की एक रागिनी।
सिंधी स्त्री० (हि) सिन्ध प्रान्त की भाषा। पुं० सिंध देश का निवासी।
सिंधु पुं० (सं) १-नद। बड़ी नदी। २-समुद्र। ३-सिन्ध प्रदेश। ४-एक राग। ५-सिन्धु प्रान्त का एक निवासी। ६-पंजाब के पश्चिमी भाग की एक प्रसिद्ध नदी। स्त्री० यमुना में मिलने वाली एक छोटी नदी।
सिंधुकन्या स्त्री० लक्ष्मी।
सिंधुज वि० (सं) १-सागर से उत्पन्न। २-सिंधु देश में होने वाला। पुं० १-शंख। २-सेंधा नमक। ३-

पारा।
सिंधुजा स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-सीप।
सिंधुजन्मा वि० (सं) १-समुद्र से उत्पन्न। २-सिंधु देश में उत्पन्न।
सिंधुर पुं० (सं) १-हाथी। २-आठ की संख्या।
सिंधुरमणि पुं० (सं) गजमुक्ता।
सिंधुरवदन पुं० (सं) गणेश।
सिंधुरगामिनी वि० (सं) गजगामिनी। (स्त्री)।
सिंधुसंगम पुं० (सं) नदी का मुहाना।
सिंधुसुता स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-सीप।
सिंधोरा पुं० (हि) सिंदूर रखने का डिब्बा।
सिंधोरी स्त्री० (हि) सिंदूर रखने की छोटी डिबिया
सिंसपा स्त्री० (हि) शीशम का वृक्ष।
सिंह पुं० (सं) १-बिल्ली की जाति में सबसे अधिक बलवान तथा हिंसक जङ्गली जन्तु। मृगेन्द्र। केसरी। शेरबबर। २-बहुत बड़ा वीर। ३-ज्योतिष में बारह राशियों में से एक। ४-छप्पय छन्द का एक भेद। ५-एक राग का नाम।
सिंहद्वार पुं० (सं) किले, महल आदि का सदर और बड़ा फाटक।
सिंहध्वनि पुं० (सं) दे० 'सिंहनाद'।
सिंहनाद पुं० (सं) १-सिंह की गरज। २-युद्ध में वीरों की ललकार। ३-एक वर्णवृत्त। ४-शिव। ५-रावण के एक पुत्र का नाम।
सिंहपौर पुं० (हि) सिंहद्वार।
सिंहल पुं० (सं) १-एक द्वीप जो भारत के दक्षिण में है जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं। २-इस द्वीप का निवासी।
सिंहली वि० (हि) सिंहल द्वीप का। पुं० सिंहल द्वीप का निवासी। स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।
सिंहवाहना स्त्री० (सं) दुर्गादेवी।
सिंहवाहिनी स्त्री० (सं) दुर्गादेवी।
सिंहाण पुं० (सं)-दे० 'सिंघाण'।
सिंहान पुं० (हि) दे० 'सिंघाण'।
सिंहानक पुं० (सं) नाक का मल। रेंट।
सिंहारहार पुं०(हि) दे० 'हारसिंगार'।
सिंहावलोकन पुं० (सं) १-सिंह के समान आगे पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २-संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन। ३-पद्य रचना में एक युक्ति जिसमें पहले चरण के अंत में के कुछ शब्द या वाक्य लेकर अगला चरण चलता है।
सिंहासन पुं० (सं) १-राजा या देवता के बैठने का आसन। २-एक प्रकार का चंदन।
सिंहासनभ्रष्ट वि०(सं) जिसे राजगद्दी से उतार दिया गया हो।
सिंहासनस्थ वि० (सं) तख्तनशीन।
सिंहिका स्त्री० (सं) १-राहु की माता का नाम जो एक राक्षसी थी। २-एक प्रकार का छंद। ३-टेढ़े घुटने वाली लड़की। ४-बनभटा।
सिंहिकातनय पुं० (सं) राहु।
सिंहिकापुत्र पुं० (सं) राहु।
सिंहिकेय पुं० (सं) राहु।
सिंहिनी स्त्री० (हि) शेरनी। सिंह की मादा।
सिंही स्त्री० (सं) १-सिंहनी। शेरनी। २-आर्याछंद का एक भेद। ३-थूहर। ४-सिंघा नामक बाजा। ५-पीली कौड़ी।
सिंहोदरी वि० (सं) सिंह के समान पतली कमर वाली (स्त्री)।
सिअनि स्त्री० (हि) सीवन। सिलाई।
सिअरा वि० (हि) शीतल। ठण्डा।
सिआना क्रि० (हि) सिलाना।
सिआर पुं० (हि) गीदड़।
सिकंजबी स्त्री० (फा) नीबू के रस में चीनी डालकर बनाया हुआ शरबत।
सिकंजा पुं० (हि) दे० 'शिकंजा'।
सिकंदर पुं०(हि) एक प्रख्यात विजेता जो मकदूनिया नरेश का पुत्र था तथा जिसने मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान तथा हिन्दुस्तान के सिंधु प्रदेश तक का भाग जीत लिया था।
सिकंदरा पुं० (हि) रेल का सिगनल जो आने या जाने वाली गाड़ी को रास्ता साफ होने का संकेत देता है।
सिकड़ी स्त्री० (हि) १-किवाड़ की कुण्डी। सांकल। जंजीर। २-जंजीर के आकार का आभूषण। ३-तगड़ी।
सिकत स्त्री० (हि) बालू। सिकता।
सिकता स्त्री० (सं) १-बालू। रेत। २-चीनी। शर्करा ३-एक प्रकार का प्रमेह।
सिकतामय वि० (सं) बालू या रेतयुक्त। पुं० बालू से बना तट या द्वीप।
सिकत्तर पुं० (हि) किसी संस्था या सभा का मंत्री। (सेक्रेट्री)।
सिकर पुं०(हि) शृगाल। गीदड़। स्त्री० जंजीर।
सिकली स्त्री० (अ) अस्त्रादि मांज कर साफ करने की क्रिया।
सिकलीगढ़ पुं० (अ) दे० 'सिकलीगर'।
सिकलीगर पुं० (हि) तलवार तथा छुरी आदि पर धार देने वाला कारीगर।
सिकहर पुं० (हि) छीका।
सिकहरा पुं० (हि) छीका।
सिकार पुं० (हि) दे० 'शिकार'।
सिकारी पुं० (हि) दे० 'शिकारी'।
सिकुड़न स्त्री०(हि) सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ बल। शिकन।

**सिकुड़ना** क्रि० (हि) १-सिमटना। संकुचित होना। २-बल या शिकन पड़ना। ३-तनाव के कारण छोटा होना।
**सिकुरना** क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
**सिकोड़ना** क्रि०(हि) १-संकुचित करना। २-समेटना। ३-तंग या संकीर्ण करना।
**सिकोरना** क्रि० (हि) दे० 'सिकोड़ना'।
**सिकोरा** पुं० (हि) कसोरा। सकोरा।
**सिकोही** वि० (हि) १-वीर। २-गर्वीला।
**सिक्कड़** पुं० (हि) १-जंजीर। २-सांकल। ३-सिकड़ी।
**सिक्कर** पुं० (हि) दे० 'सिक्कड़'।
**सिक्का** पुं० (हि) १-मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २-मुद्रा। टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का टुकड़ा जो विनिमय का साधन होता है। रुपया-पैसा। ३-अधिकार। प्रभुत्व।
**सिक्ख** पुं० (हि) १-शिष्य। चेला। २-गुरु नानक के पंथ का अनुयायी। स्त्री० १-सीख। २-शिखा। चोटी।
**सिक्त** वि०(सं) १-सींचा हुआ। २-तर अथवा भीगा हुआ।
**सिक्थ** पुं० (सं) १-उबाले हुए चावल का दाना। २-भात का पिंड या ग्रास। ३-मोम। ४-मोतियों का गुच्छा। ५-नील।
**सिखंडी** पुं० (हि) दे० 'शिखंडी'।
**सिख** पुं० (हि) दे० 'सिक्ख'।
**सिखना** क्रि० (हि) दे० 'सीखना'।
**सिखर** पुं० (हि) दे० 'शिखर'।
**सिखरन** स्त्री० (हि) दे० 'शिखरन'।
**सिखलाना** क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
**सिखवना** क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
**सिखा** स्त्री० (हि) दे० 'शिखा'।
**सिखाना** क्रि० (हि) १-शिक्षा या उपदेश देना। २-पढ़ाना। ३-धमकाना। दण्ड देना।
**सिखापन** पुं० (हि) १-शिक्षा। उपदेश। २-सिखाने का काम।
**सिखावन** पुं० (हि) शिक्षा। सीख।
**सिखावना** क्रि० (हि) दे० 'सिखाना'।
**सिखिर** पुं० (हि) दे० 'शिखर'।
**सिखी** पुं० (हि) १-दे० 'शिखी'। २-मुर्गा। ३-मोर
**सिगनल** पु० (ग्र) १-दे० 'सिकंदरा'। २-संकेत।
**सिगरा** वि० (हि) संपूर्ण। सब। सारा।
**सिगरेट** पुं० (ग्र) तम्बाकू से भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धूँआ लोग पीते हैं।
**सिगरो** वि० (हि) दे० 'सिगरा'।
**सिगरौ** वि० (हि) दे० 'सिगरा'।
**सिगार** पुं० (ग्रं) चुरुट।
**सिचान** पुं० (हि) बाज पत्ती।
**सिचाना** क्रि० (हि) दे० 'सिंचाना'।
**सिच्छक** पुं० (हि) दे० 'शिक्षक'।
**सिच्छा** स्त्री० (हि) दे० 'शिक्षा'।
**सिजदा** पुं० (ग्र) प्रणाम। दण्डवत्।
**सिजदागाह** पुं०(ग्र) सिजदा करने का स्थान।
**सिजादर** पुं० (हि) नाव आदि में पाल चढ़ाने का रस्सा।
**सिझना** क्रि० (हि) आंच पर पकाना।
**सिझाना** क्रि० (हि) १-कष्ट देना। २-आंच पर पकाना।
**सिटकिनी** स्त्री०(हि) किवाड़ बन्द करने के लिए लोहे या पीतल का एक उपकरण। चिटकनी।
**सिटपिटाना** क्रि० (हि) १-मंद पड़ जाना। दब जाना। २-भयभीत या सकुचा कर चुप होना।
**सिट्टी** स्त्री० (हि) १-बहुत बढ़चढ़कर बोलना। २-डींग मारना।
**सिट्ठी** स्त्री० (हि) दे० 'सीठी'।
**सिठाई** स्त्री० (हि) १-फीकापन। नीरसता। २-मन्दता।
**सिड़** स्त्री० (हि) पागलपन की सी अवस्था। सनक उन्माद। धुन।
**सिड़पना** पुं० (हि) १-पागलपन। २-सनक।
**सिड़बिल्ला** स्त्री० (हि) १-शरीर, वस्त्रादि से गन्दा और पागल। २-मूर्ख। भोंदू।
**सिड़ी** वि० (हि) १-पागल। २-सनकी।
**सितंबर** पुं० (ग्र) अंग्रेजी साल का नवाँ महीना जो तीस दिन का होता है।
**सित** वि० (सं) १-सफेद। श्वेत। २-स्वच्छ। निर्मल साफ। पुं० १-शुक्रग्रह। २-शुक्लपक्ष। ३-मूली। ४-चन्दन। ५-भोजपत्र। ६-सफेद तिल। ७-चांदी
**सितकंठ** वि० (सं) जिसकी गरदन सफेद हो। पुं० मुर्गाबी। (हि) महादेव। शिव।
**सितकर** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-भीमसेनी कपूर।
**सितकर्णी** स्त्री० (सं) अड़ूसा। वासक।
**सितकर्मा** वि० (सं) जिसने पवित्र कर्म किये हों।
**सितकाच** पुं० (सं) १-बिल्लौर। २-हलब्बी शीशा
**सितकुंजर** पुं० (सं) १-इन्द्र। २-ऐरावत हाथी।
**सितखंड** पुं० (सं) मिश्री का डला।
**सितगुंजा** स्त्री० (सं) सफेद घुमची।
**सितच्छद** पुं० (सं) १-हंस। २-लाल। सहिंजन।
**सितता** स्त्री० (सं) सफेदी।
**सिततुरग** पुं० (सं) अर्जुन।
**सितदर्भ** पुं० (सं) श्वेतकुश।
**सितदीधिति** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**सितद्रु** पुं० (सं) एक प्रकार की लता।
**सितद्रुम** पुं० (सं) १-अर्जुन (वृक्ष)। २-मोरट।

**सितद्विज** पुं० (सं) हंस।
**सितधातु** पुं० (सं) १-शुक्ल वर्ण की धातु। २-खड़िया मिट्टी।
**सितपक्ष** पुं० (सं) हंस।
**सितपच्छ** पुं० (हि) हंस।
**सितपद्म** पुं० (सं) सफेद कमल।
**सितपुंडरीक** पुं० (सं) श्वेत कमल।
**सितभानु** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**सितम** पुं० (फा) १-अत्याचार। जुल्म। २-अनर्थ।
**सितमकश** वि० (फा) अत्याचार सहने वाला।
**सितमगर** वि० (फा) अन्यायी। दुःखदायी।
**सितमजदा** वि० (फा) सितमकश।
**सितमणि** स्त्री० (सं) बिल्लौर। स्फटिक।
**सितमना** वि० (सं) जिसका हृदय पवित्र हो।
**सितमरसीदा** वि० (फा) दे० 'सितमकश'।
**सितयामिनी** स्त्री० (सं) १-चांदनी रात। २-चांदनी
**सितरश्मि** पुं० (सं) चन्द्रमा।
**सितराम** पुं० (सं) चांदी।
**सितरुचि** वि० (सं) सफेद रङ्ग का।
**सितवराह** पुं० (सं) श्वेतवराह।
**सितवल्लरी** स्त्री० (सं) जंगली जामुन।
**सितवाजी** पुं० (सं) अर्जुन।
**सितवारण** पुं० (सं) दे० 'सितकुंजर'।
**सितसर्षप** पुं० (सं) पीली सरसों।
**सितसिंधु** पुं० (सं) क्षीर-सागर।
**सितांग** पुं० (सं) १-श्वेतरोहित। २-बेला।
**सितांबर** वि० (सं) सफेद वस्त्र धारण करने वाला। पुं० (सं) श्वेताम्बर जैन।
**सितांबुज** पुं० (सं) सफेद कमल।
**सितांभोज** पुं० (सं) सफेद कमल।
**सितांशु** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
**सितांशुक** वि० (सं) सफेद वस्त्र धारण करने वाला।
**सिता** स्त्री० (सं) १-चीनी। शक्कर। २-ज्योत्स्ना। ३-मोतिया का फूल। ४-मदिरा। ५-शुक्लपक्ष। ६-सफेद दूब। ७-गोरोचन। ८-चांदी। ९-सफेद सेम।
**सितातपत्र** पुं० (सं) सफेद छत्र या छाता जो राज-चिह्न होता है।
**सितानन** वि० (सं) सफेद मुख वाला। पुं० (सं) १-गरुड़। २-बेल का पेड़।
**सिताब** अव्य० (फा) तुरन्त। झटपट। जल्दी।
**सिताबी** स्त्री० (फा) १-चांदनी। २-शीघ्रता।
**सिताब्ज** पुं० (सं) सफेद कमल।
**सितार** पुं० (हिं) तारों का बना एक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र
**सितारबाज** पुं० (हिं) सितार बजाने वाला।
**सितारबाजी** स्त्री० (हिं) सितार बजाने की कला।
**सितारा** पुं० (फा) १-नक्षत्र। तारा। २-भाग्य। प्रारब्ध। ३-चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिंदिया जो शोभा के लिये कपड़ों आदि में टांगी जाती है। चमकी। ४-बन्दूक की टोपी का अगला सफेद भाग पुं० (हि) सितार।
**सितारिया** पुं० (हि) सितार बजाने वाला।
**सितारेहिंद** पुं० (फा) अंग्रेजी राजत्वकाल में सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि।
**सिताश्व** पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-अर्जुन।
**सितासित** पुं० (सं) १-काला और सफेद। २-बलदेव ३-यमुना समेत गङ्गा। ४-शुक्र के समेत शनि।
**सिति** वि० (स) दे० 'शिति'।
**सितुई** स्त्री० (हि) ताल की सीपी।
**सितुही** स्त्री० (हि) दे० 'सितुई'।
**सितोत्पल** पुं० (सं) सफेद कमल।
**सितोद्भव** पुं० (सं) चन्दन। संदल। वि० चीनी से बना हुआ या उत्पन्न।
**सितोपल** पुं० (सं) १-खड़िया मिट्टी। २-बिल्लौर।
**सितोपला** स्त्री० (स) १-मिस्री। २-चीनी। शक्कर।
**सिथिल** वि० (हि) दे० 'शिथिल'।
**सिदना** क्रि० (हि) पीड़ा या कष्ट पहुँचाना।
**सिदामा** पुं० (हि) दे० 'श्रीदामा'।
**सिदिक** वि० (अ) सत्य। सच्चा।
**सिदौसी** अव्य० (हि) जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक।
**सिद्क** स्त्री० (अ) सत्यता। सच्चाई।
**सिद्ध** वि० (सं) १-जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो चुकी हो। २-जिसकी आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो चुकी हो। ३-सफल। प्रमाणित (प्रूव्ड)। ४-कृतार्थ कामयाब। ६-जो योग में विभूतियां प्राप्त कर चुका हो। ७-निर्णित। ८-शोधित। ९-चुकता। १०-तैयार। ११-बना हुआ। १२-प्रसिद्ध। पुं० (सं) १-पूर्णयोगी या ज्ञानी। २-एक प्रकार के देवता। ३-व्यवहार। ४-गुड़। ५-काला धतूरा। ६-सफेद सरसों। ७-ज्योतिष का एक योग।
**सिद्धकाम** वि० (सं) १-जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २-सफल।
**सिद्धकार्य** वि० (सं) सफल।
**सिद्धगुटिका** स्त्री० (सं) वह गुटिका जिसकी सहायता से कोई रसायन बनाया या कोई सिद्धि की जाती है
**सिद्धजल** पुं० (सं) १-कांजी। २-औटाया हुआ जल
**सिद्धता** स्त्री० (सं) सिद्ध होने की अवस्था। २-प्रामाणिकता। ३-पूर्णता।
**सिद्धतापस** पुं० (सं) वह तपस्वी जिसने सिद्धि प्राप्त की हो।
**सिद्धत्व** पुं० (सं) सिद्धता।
**सिद्धदोष** वि० (सं) जिसका अपराध प्रमाणित हो चुका हो। (कन्विक्टेड)।
**सिद्धनर** पुं० (स) वह व्यक्ति जिसे सिद्धि प्राप्त हो

गई हो।

**सिद्धनाथ** पुं० (सं) शिव। महादेव।

**सिद्धपक्ष** पुं० (सं) १-किसी बात या आज्ञा का वह अंश जो प्रमाणित हो चुका हो। २-प्रमाणित बात

**सिद्धपुरुष** पुं० (सं) दे० 'सिद्धनर'।

**सिद्धप्राय** वि० (सं) जो लगभग सिद्धि प्राप्त कर चुका हो।

**सिद्धभूमि** स्त्री०(सं) १-सिद्धपीठ। २-वह स्थान जहां योगियों को सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।

**सिद्धमंत्र** पुं० (सं) सिद्ध किया हुआ मंत्र।

**सिद्धयोगी** पुं० (सं) शिव। महादेव।

**सिद्धरस** पुं० (सं) पारा।

**सिद्धरसायन** पुं० (सं) दीर्घजीवन तथा प्रभूत शक्ति देने वाली औषधि।

**सिद्धलक्ष** वि० (सं) जिसका निशाना न चूकने वाला हो।

**सिद्धलोक** पुं० (सं) सिद्धों का लोक।

**सिद्धविनायक** पुं० (सं) गणेश की एक मूर्ति का नाम

**सिद्धसंकल्प** वि० (सं) जिसकी सब कामनाएँ पूरी हों

**सिद्धसारस्वत** वि० (सं) जो सरस्वती को सिद्ध कर चुका हो।

**सिद्धसिंधु** पुं० (सं) आकाशगंगा।

**सिद्धस्थाली** स्त्री० (सं) सिद्ध योगियों की बटलोई जिसमें जितनी आवश्यकता हो उतना भोजन निकाला जा सकता है।

**सिद्धहस्त** वि० (सं) जिसका हाथ किसी कार्य के करने में खूब बैठा या मँजा हो। कुशल। निपुण।

**सिद्धांगना** स्त्री० (सं) सिद्ध देवताओं की स्त्रियां।

**सिद्धांजन** पुं०(सं)वह अंजन या सुरमा जिसके लगाने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं

**सिद्धांत** पुं० (सं)१-विचार एवं तर्क द्वारा निश्चित किया गया मत (प्रिंसिपल)। २-ऋषियों आदि के मान्य उपदेश (केनन्स, डॉक्ट्रीन्स)। ३-सार की बात। ४-किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित मत। (थियोरी)।

**सिद्धांतकोटि** स्त्री० (सं) तर्क का वह स्थल जो अन्तिम या निर्णायक होता है।

**सिद्धांतकौमुदी** स्त्री० (सं) संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसके रचयिता भट्टोजिदीक्षित थे।

**सिद्धांतज्ञ** पुं० (सं) सिद्धांत को जानने वाला।

**सिद्धांतपक्ष** पुं० (सं) वह पक्ष जो तर्कसंगत हो।

**सिद्धांतवाद** पुं० (सं) मतवाद।

**सिद्धांती** पुं०(सं) १-शास्त्रों आदि के सिद्धांत जानने वाला। २-अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहने वाला।

**सिद्धांतीय** वि० (सं) सिद्धांत सम्बन्धी।

**सिद्धांबा** स्त्री० (सं) दुर्गा।

**सिद्धान्न** पुं० (सं) पका हुआ अन्न

**सिद्धापगा** स्त्री० (सं) आकाशगङ्गा।

**सिद्धार्थ** पुं० (सं) १-गौतम बुद्ध। २-महावीर स्वामी के पिता का नाम। ३-साठ संवत्सरों में से एक। वि० सफल मनोरथ। जिसका अभीष्ट सिद्ध हो चुका हो।

**सिद्धासन** पुं० (सं) १-योगसाधन का एक प्रकार का आसन। २-सिद्धपीठ।

**सिद्धि** स्त्री० (सं) १-सफलता। २-प्रमाणित होना। ३-निर्णय। निश्चय। ४-पकना। सीझना। ५-योग साधन के अलौकिक फल। ६-निशाना मारना। ७-भाग्योदय। ८-भांग। ९-दुर्गा। १०-सङ्गीत में एक श्रुति। ११-मुक्ति। १२-नाटक के छत्तीस लक्षणों में से एक। १३-छप्पयछन्द का एक भेद। १४-वृद्धि

**सिद्धिकर** वि० (सं) सफल बनाने वाला।

**सिद्धिकारक** वि० (सं) मनोरथ पूरा कराने वाला।

**सिद्धिकारी** वि० (सं) कोई बात सिद्ध या पूरी कराने वाला।

**सिद्धिद** वि० (सं) सिद्धि देने वाला। मोक्ष देने वाला

**सिद्धिदाता** पुं० (सं) गणेश।

**सिद्धिप्रद** वि० (सं) सिद्धि देने वाला।

**सिद्धिभूमि** स्त्री० (सं) वह स्थान जहां योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।

**सिद्धिमार्ग** पुं० (सं) वह रास्ता जो सिद्ध लोक को पहुँचाने वाला हो।

**सिद्धियात्रिक** पुं० (सं) वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिए यात्रा करता हो।

**सिद्धिलाभ** पुं० (सं) सिद्धि की प्राप्ति।

**सिद्धिवाद** पुं० (सं) ज्ञानगोष्ठी।

**सिद्धिविनायक** पुं० (सं) गणेश की एक मूर्त्ति।

**सिद्धिस्थान** पुं० (सं) १-सिद्धि प्राप्त करने का स्थान २-तीर्थस्थान।

**सिद्धीश्वर** पुं० (सं) १-शिव। २-एक पुण्य क्षेत्र का नाम।

**सिद्धेश्वर** पुं० (सं) १-शिव। २-योगिराज।

**सिद्धेश्वरी** स्त्री० (सं) एक देवी विशेष।

**सिध** वि० (हि) दे० 'सिद्ध'।

**सिधाई** स्त्री० (हि) सीधापन। सरलता।

**सिधाना** क्रि० (हि) दे० 'सिधारना'।

**सिधारना** क्रि० (हि) १-जाना। गमन करना। २-मरना। ३-सुधारना।

**सिधि** स्त्री० (हि) दे० 'सिद्धि'।

**सिधिगुटका** पुं० (हि) दे० 'सिद्धगुटिका'।

**सिध्मा** स्त्री० (सं) १-कुष्ट का रोग। २-कुष्ट का दाग।

**सिन** पुं० (अ) उम्र। अवस्था।

**सिनक** स्त्री० (हि) नाक से निकलने वाला मल। रेंट

**सिनकना** क्रि० (हि) जोर से हवा निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना।

**सिनी** स्त्री० (सं) गोरे रंग वाली स्त्री।
**सिनीवाली** स्त्री० (सं) १-एक वैदिक देवी। २-शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ३-दुर्गा। ४-एक नदी का नाम
**सिनेट** स्त्री० (अं) विश्वविद्यालय की प्रबन्धकारिणी समिति।
**सिनेमा** पुं० (अं) चलचित्र।
**सिनेमाहाउस** पुं० (अं) वह स्थान जहां चलचित्र दिखाया जाता है। सिनेमागृह।
**सिन्नी** स्त्री० (हि) १-मिठाई। २-पीर या देवता पर चढ़ाई जाने वाली मिठाई।
**सिपर** स्त्री० (फा) ढाल।
**सिपरा** स्त्री० (हि) दे० 'सिप्रा'।
**सिपह** पुं० (फा) सिपाह। सेना। फौज।
**सिपहगी** स्त्री० (फा) सिपाही का काम।
**सिपहदार** पुं० (फा) सेनानायक।
**सिपहसालार** पुं० (फा) सेनापति।
**सिपाई** पुं० (हि) दे० 'सिपाही'।
**सिपारस** स्त्री० (फा) दे० 'सिफारिश'।
**सिपारसी** वि० (हि) दे० 'सिफारिशी'।
**सिपारिस** स्त्री० (फा) दे० 'सिफारिश'।
**सिपाह** स्त्री० (फा) सेना। फौज।
**सिपाहगरी** स्त्री० (फा) सैनिकवृत्ति।
**सिपाहसालार** पुं० (फा) सेनापति।
**सिपाहियाना** वि० (फा) सिपाहियों का सा।
**सिपाही** पुं० (फा) १-सैनिक। योद्धा। २-पुलिस या रक्षा विभाग का एक छोटा कर्मचारी। ३-पहरेदार ४-वीर। बहादुर।
**सिपुर्द** वि० (फा) १-सौंपा हुआ। २-दिया हुआ।
**सिपुर्दगी** स्त्री० (फा) सौंपने का भाव।
**सिपुर्दनामा** पुं० (फा) सौंपने या सुपुर्द करने का लेख या समर्पण पत्र।
**सिप्पर** स्त्री० (हि) दे० 'सिपर'।
**सिप्पा** पुं० (देश) १-निशाने पर किया गया वार। २-कार्य साधन का उपाय। ३-प्रभाव। ४-धाक। सिक्का।
**सिप्रा** स्त्री० (सं) १-भैंस। २-स्त्री की करधनी। ३-उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी।
**सिफत** स्त्री० (अ) १-गुण। २-विशेषता।
**सिफर** पुं० (अ) शून्य। बिन्दी।
**सिफलगी** स्त्री० (अ) ओछापन। कमीनापन।
**सिफला** वि० (अ) १-नीच। २-छिछोरा।
**सिफलापन** पुं० (अ) १-नीचता। २-छिछोरापन।
**सिफली** वि० (अ) नीचा। नीचे का।
**सिफली अमल** (अ) वह मंत्र जिसमें शैतान या प्रेतात्माओं से सहायता ली जाती है।
**सिफा** स्त्री० (हि) दे० 'शिफा'।
**सिफारत** स्त्री० (अ) १-दूत या सफीर का काम या पद। २-किसी दूसरे देश में भेजा हुआ प्रतिनिधि-मंडल।
**सिफारतखाना** पुं० (अ) दूतावास।
**सिफारिश** स्त्री० (फा) किसी के पक्ष में कोई अनुकूल अनुरोध। किसी के बारे में भलाई की बात करना।
**सिफारिशनामा** पुं० (फा) सिफारिशी-पत्र।
**सिफारिशी** वि० (फा) १-सिफारिश करने वाला। २-खुशामदी। ३-जिसमें सिफारिश हो।
**सिफारिशी टट्टू** पुं० (फा) जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो।
**सिफाल** पुं० (फा) मिट्टी का बरतन।
**सिफाला** पुं० (फा) मिट्टी का बरतन।
**सिबिका** स्त्री० (हि) दे० 'शिबिका'।
**सिमंत** पुं० (हि) दे० 'सीमंत'।
**सिमई** स्त्री० (म) सिवई।
**सिमटना** क्रि० (हि) १-सिकुड़ना। २-शिकन पड़ना ३-इकट्ठा होना। ४-निबटना। ५-लज्जित होना। ६-सिटपिटा जाना।
**सिमरना** क्रि० (हि) सुमिरना। याद करना।
**सिमल** पुं० (हि) १-हलका जूआ। २-जूए में पड़ी खूँटी।
**सिमाना** पुं० (हि) सिवाना। हद। सीमा। क्रि० दे० 'सिलाना'।
**सिमिटना** क्रि० (हि) दे० सिमटना।
**सिमृति** स्त्री० (हि) दे० 'स्मृति'।
**सिमेटना** क्रि० (हि) दे० 'सिमटना'।
**सिय** स्त्री० (हि) जानकी। सीता।
**सियना** क्रि० (हि) १-रचना। उत्पन्न करना। २-सीना
**सियरा** वि० (हि) १-ठण्डा। शीतल। २-कच्चा।
**सियराई** स्त्री० (हि) ठण्डक। शीतलता।
**सियराना** क्रि० (हि) ठण्डा होना।
**सिया** स्त्री० (हि) जानकी। सीता।
**सियादत** स्त्री० (अ) १-राज्य। २-बढ़ाई। ३-सय्यद-जाति।
**सियान** वि० (हि) दे० 'सयाना'। क्रि० दे० 'सिलाना'
**सियापा** पुं० (हि) मृत व्यक्ति के शोक में स्त्रियां के इकट्ठे होकर रोने की रीति।
**सियार** पुं० (हि) गीदड़।
**सियार-लाठी** पुं० (देश) अमलतास।
**सियाल** पुं० (हि) गीदड़। शृगाल।
**सियाली** स्त्री० (देश) एक प्रकार का विदारीकन्द। वि० जाड़े की ऋतु की (फसल)।
**सियासत** स्त्री० (अ) देश के शासनप्रबन्ध की व्यवस्था स्त्री० (हि) १-कष्ट। २-दंड।
**सियासतदां** पुं० (अ) राजनीतिज्ञ।
**सियासी** वि (अ) देश के प्रबन्ध की व्यवस्था से

सम्बन्धित।
**सियाह** वि० (फा) १-काला। २-अशुभ।
**सियाहकार** वि० (फा) १-बदचलन। २-व्यभिचारी।
**सियाहकारी** स्त्री० (फा) १-बदचलनी। २-पाप।
**सियाहचश्म** वि० (फा) १-बेवफा। २-काली आंखों वाला।
**सियाहजबान** वि० (फा) कटुवचन बोलने वाला।
**सियाहपोश** वि० (फा) १-शोक मनाने वाला। २-काले रंग के कपड़े पहनने वाला।
**सियाहा** पुं० (फा) १-आय-व्यय के लेखे की बही। रोजनामचा। २-मालगुजारी जमा करने की बही।
**सियाहानवीस** पुं० (फा) सियाहा लिखने वाला मुंशी
**सियाही** स्त्री०(फा) १-स्याही। रोशनाई। २-कालापन ३-अंधकार। ४-दोष।
**सिर** पुं० (हि) १-कपाल। खोपड़ी। सिर के सबसे आगे का ऊपर का भाग। २-ऊपर का छोर। सिरा। चोटी। ३-शरीर का गरदन के ऊपर का भाग। ४-सरदार। आरम्भ।
**सिरई** पुं० (हि) चारपाई के सिराहने की पट्टी।
**सिरकटा** वि० (हि) १-अनिष्ट या बुराई करने वाला। २-जिसका सिर कट गया हो। ३-अपकारी।
**सिरका** पुं० (फा) धूप में पका कर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।
**सिरकी** स्त्री०(हि) १-सरकंडे का एक छोटा छप्पर जो प्रायः बैलगाड़ियों पर आड़ करने के लिए रखते हैं। २-सरकंडा। सरई।
**सिरखप** वि० (हि) परिश्रमी। २-निश्चय का पक्का। ३-सिर खपाने वाला।
**सिरखपी** स्त्री० (हि) १-परिश्रम। हैरानी। २-साहस-पूर्ण कार्य।
**सिरखिली** स्त्री० (देश) एक प्रकार की चिड़िया।
**सिरगा** स्त्री० (दे०) घोड़े की एक जाति।
**सिरचंद** पुं० (हि) हाथी के मस्तक का अर्धचन्द्राकार का एक गहना।
**सिरचढ़ा** वि० (हि) १-ढीठ। जिद्दी। २-मुँहलगा।
**सिरजक** पुं० (हि) १-सृष्टिकर्त्ता। परमेश्वर। २-रचने या बनाने वाला।
**सिरजन** पुं० (हि) सृष्टि करना। रचना।
**सिरजनहार** पुं० (हि) सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर।
**सिरजना** क्रि० (हि) १-रचना। बनाना। २-संचय करना। ३-उत्पन्न या तैयार करना।
**सिरजित** वि० (हि) सिरजा या रचा हुआ।
**सिरताज** पुं० (हि) १-मुकुट सिरोमणि। ३-सरदार
**सिरत्राण** पुं० (हि) दे० 'शिरत्राण'।
**सिरदार** पुं० (हि) दे० 'सरदार'।
**सिरदारी** स्त्री०(हि) दे० 'सरदारी'।
**सिरनामा** पुं० (हि) १-सरनामा। २-लेख आदि का शीर्षक।
**सिरनेत** पुं० (हि) १-पगड़ी। चीरा। २-क्षत्रियों की एक शाखा।
**सिरपाव** पुं० (हि) दे० 'सिरोपाव'।
**सिरपेच** पुं० (हि) १-पगड़ी। २-पगड़ी पर बांधने की कलगी। ३-पगड़ी के ऊपर का कपड़ा।
**सिरपोश** पुं० (हि) १-टोप। कुलाह। २-बन्दूक के ऊपर का कपड़ा। ३-सिर पर का आवरण।
**सिरफूल** पुं० (हि) एक प्रकार का गहना। जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।
**सिरफेंटा** पुं०(हि) साफा। पगड़ी।
**सिरबंद** पुं० (हि) साफा।
**सिरबंदी** स्त्री० (हि) एक प्रकार का गहना जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।
**सिर-मगजन** पुं०(हि) माथापच्ची।
**सिरमनि** पुं० (हि) दे० 'शिरोमणि'।
**सिरमुंडा** वि० (हि) १-जिसके सिर के बाल मुँडे हुए हों। २-निगोड़ा।
**सिरमौर** पुं० (हि) दे० 'सिरताज'।
**सिररुह** पुं० (हि) दे० 'शिरोरुह'।
**सिरस** पुं० (हि) शीशम के समान एक ऊँचा वृक्ष।
**सिरहाना** ०पु (हि) सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।
**सिरा** पुं० (हि) १-अंतिम भाग। २-नोक। ३-लम्बाई का अंत। छोर। ४-ऊपर का भाग। ५-अग्रभाग। ६-शुरू का हिस्सा। स्त्री० १-रक्तनाड़ी। २-सिंचाई की नाली। ३-खेत की सिंचाई। ४-गगरा। ५-पानी की पतली धार।
**सिराजाल** पुं० (हि) १-आंख की पतली तथा सूक्ष्म धमनियों का शोथ। नाड़ियों का जाल।
**सिराजी** पुं० (हि) शिराज का घोड़ा या कबूतर।
**सिरात** स्त्री० (अ) इस्लाम धर्म के अनुसार कयामत के दिन दोजख पर बनाया जाने वाला पुल।
**सिराना** क्रि० (हि) १-मंद पड़ना। २-समाप्त होना। ३-शीतल या ठण्डा होना। ४-मिटना। ५-बीत जाना। ६-ठण्डा करना। ७-बिताना। ८-समाप्त करना।
**सिराप्रहर्ष** पुं० (हि) दे० 'सिराहर्ष'।
**सिरावन** पुं० (हि) वह पाटा जिससे जुता हुआ खेत बराबर करते हैं।
**सिरावना** क्रि० (हि) दे० 'सिराना'।
**सिराहर्ष** पुं० (सं) १-आंख की डोरी की लाली। २-२-पुतली।
**सिरिख** पुं० (हि) दे० 'शिरीष'।
**सिरिश्ता** पुं० (हि) दे० 'सरिश्ता'।
**सिरिस** पुं० (हि) दे० 'शिरीष'।

**सिरी** पुं० (हि) दे० 'श्री'। स्त्री० (सं) १-करघा। २-कलियारी।
**सिरीपंचमी** स्त्री० (हि) बसंतपञ्चमी।
**सिरीस** पुं० (हि) दे० 'शिरीष'।
**सिरोपाउ** पुं० (सं) दे० 'सिरोपाव'।
**सिरोपाव** पुं० (हि) वह पूरी पोशाक जो राजदरबार मे किसी के सम्मान के रूप में मिलती है।
**सिरोमनि** पुं० (हि) दे० 'शिरोमणि'।
**सिरोरुह** पुं० (हि) दे० 'शिरोरुह'।
**सिरोही** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की चिड़िया। २-तलवार। ३-राजस्थान की एक रियासत।
**सिर्का** पुं० (हि) दे० 'सिरका'।
**सिर्फ** अव्य० (म) केवल। मात्र। वि० १-एक मात्र। २-अकेला। ३-शुद्ध।
**सिल** स्त्री० (हि) १-शिल। पत्थर। चट्टान। २-पत्थर की चौकोर पटिया। ३-रुई की पूनी बनाने की पटरी। पुं० (हि) उंछवृत्ति।
**सिलगना** क्रि० (हि) दे० 'सुलगना'।
**सिलप** पुं० (हि) दे० 'शिल्प'।
**सिलपट** वि० (हि) १-चौरस। बराबर। २-चौपट। ३-घिसा या मिटा हुआ। स्त्री० १-चट्टी। २-चप्पल (स्लीपर)।
**सिलबट्टा** पुं० (हि) सिल और लोढ़ा।
**सिलवट** स्त्री० (हि) १-सिकुड़न। २-बल।
**सिलवाना** क्रि० (हि) दे० 'सिलाना'।
**सिलसिला** पुं० (म) १-बँधा हुआ। क्रम। २-श्रेणी पंक्ति। ३-व्यवस्था। ४-लड़ी। शृङ्खला। वि० (हि) १-गीला। २-रपटन वाला। ३-चिकना।
**सिलसिलेवार** वि० (म) क्रमानुसार।
**सिलह** पुं० (म) हथियार। शस्त्र।
**सिलहखाना** पुं० (म) अस्त्रागार।
**सिलहपोश** वि० (म) हथियारों से सुसज्जित।
**सिलहिला** वि० (हि) रपटन वाला। चिकना।
**सिला** स्त्री० (हि) दे० 'शिला'। पुं० १-फटकने के लिए रखा हुआ अनाज का ढेर। २-कटे हुए खेत से चुना हुआ दाना। ३-उञ्छवृत्ति। पुं०(म) प्रतिकार। बदला।
**सिलाई** स्त्री० (हि) १-सीने का काम। २-सीने की मजदूरी। ३-सीवन। टांका। ४-सीने का ढंग। ऊख या ज्वार में लगने वाला एक कीड़ा।
**सिलाजीत** पुं० (हि) दे० 'शिलाजीत'।
**सिलाना** क्रि०(हि) १-सिलवाना। २-किसी को सीने में प्रवृत्त करना।
**सिलाबी** वि० (हि) तर। सीलवाला।
**सिलारस** पुं० (हि) १-सिल्हक नामक पेड़। २-उक्त वृक्ष का गोंद।
**सिलावट** पुं० (हि) संगतराश।
**सिलाह** पुं०(म) १-कवच। २-हथियार।
**सिलाहखाना** पुं० (म) शस्त्रालय।
**सिलाहपोश** पुं० (म) दे० 'सिलाहबन्द'।
**सिलाहबंद** पुं० (म) सशस्त्र। हथियारबन्द।
**सिलाही** पुं० (म) सिपाही। सैनिक।
**सिलिप** पुं० (हि) दे० 'शिल्प'।
**सिलीपट** पुं० (हि) लकड़ी आदि की वह पटिया जो रेल की लाइनों के नीचे बिछाई जाती है। (स्लीपर)
**सिलीमुख** पुं० (हि) दे० 'शिलीमुख'।
**सिलेट** स्त्री० (हि) दे० 'स्लेट'।
**सिलोच्च** पुं० (हि) एक प्राचीन पर्वत।
**सिलौट** पुं० (हि) १-सिल और बट्टा। २-सिल।
**सिलौटा** पुं० (हि) दे० 'सिलौट'।
**सिलौटी** स्त्री० (हि) छोटी सिल।
**सिल्क** पुं० (अं) १-रेशम। २-रेशमी कपड़ा।
**सिल्ला** पुं० (हि) फसल कट जाने पर खेत में गिरे दाने।
**सिल्ली** स्त्री० (हि) १-एक ओर से चीरकर निकाला हुआ तख्ता। २-सान। हथियार, चाकू आदि की धार तेज करने का पत्थर। ३-फटकने के लिये रखा हुआ अनाज का ढेर।
**सिव** पुं० (हि) दे० 'शिव'।
**सिवई** स्त्री० (हि)गुँधे हुए आटे या मैदा के पतले सेव या सूत जैसे लच्छे जो पकाकर खाये जाते हैं। सिवैयाँ।
**सिवा** स्त्री० (हि) दे० 'शिवा'। अव्य० (म) अलावा अतिरिक्त। वि० (म) अधिक। ज्यादा।
**सिवाइ** अव्य० (हि) दे० 'सिवा'।
**सिवान** पुं० (हि) १-सीमा। हद। २-ग्राम के अन्तर्गत भूमि। ३-फसल का किसान और जमींदार का बटवारा।
**सिवाय** अव्य० (हि) दे० 'सिवा'।
**सिवार** स्त्री० (हि) पानी में होने वाली एक प्रकार की लम्बी घास।
**सिवाल** पुं० (हि) दे० 'सिवार'।
**सिवाला** पुं० (हि) शिवालय। शिव का मन्दिर।
**सिविका** स्त्री० (हि) दे० 'शिविका'।
**सिविर** पुं० (हि) दे० 'शिविर'।
**सिवैयां** स्त्री० (हि) दे० 'सिवई'।
**सिष** पुं० (हि) दे० 'शिष्य'।
**सिष्ट** पुं० (हि) बंसी की डोरी। दे० 'शिष्ट'।
**सिष्य** पुं० (हि) दे० 'शिष्य'।
**सिसु** पुं० (हि) दे० 'शिशु'।
**सिसकना** क्रि० (हि) १-सिसकी मारकर (रोना)। २-जी धड़कना। ३-तरसना। ४-मरणासन्न होना।
**सिसकार** क्रि० (हि) १-सुसकारना। मुख से सीटी से शब्द निकलना। २-सीत्कार करना।

**सिसकारी** स्त्री० (हि) १-सिसकने का शब्द । सीत्कार
**सिसकी** स्त्री० (हि) १-धीरे-धीरे रोने का शब्द । २-सिसकारी । सीत्कार ।
**सिसिर** पुं० (हि) शिशिर ।
**सिसु** पुं० (हि) दे० 'शिशु' ।
**सिसुता** पुं० (हि) दे० 'शिशुता' ।
**सिसुपाल** पुं० (हि) दे० 'शिशुपाल' ।
**सिसुमार** पुं० (हि) दे० 'शिशुमार' ।
**सिस्टि** स्त्री० (हि) दे० 'सृष्टि' ।
**सिस्य** पुं० (हि) दे० 'शिष्य'
**सिहरन** स्त्री० (हि) सिहरने की क्रिया या भाव ।
**सिहरना** क्रि० (हि) भय या शीत से कांपना ।
**सिहरा** पुं० (हि) दे० 'सेहरा' ।
**सिहराना** क्रि० (हि) १-डराना । २-सरदी से कांपना।
**सिहलाना** क्रि० (हि) १-ठण्डा होना । २-ठण्ड पड़ना ३-सर्दी लगजाना ।
**सिहरी** स्त्री०(हि) १-कंपकंपी । जूड़ीताप । ३-रोमांच । ४-भय ।
**सिहाना** क्रि०(हि) १-ललचाना । २-मुग्ध होना । ३-ईर्ष्या उत्पन्न करना । ४-अभिलाषा या ईर्ष्या भरी दृष्टि से देखना ।
**सिहारना** क्रि० (हि) १-तलाश करना । २-जुटाना ।
**सिहिटि** स्त्री० (हि) दे० 'सृष्टि' ।
**सिहोड़** स्त्री० (हि) थूहर । सेहुड़ ।
**सिहोर** पुं० (हि) थूहर ।
**सींक** स्त्री० (हि) १-सरकंडा । २-घास आदि का पतला डंठल । ३-तिनका । ४-नाक की कील । मूँज आदि की पतली तीली ।
**सींका** पुं० (हि) १-छींका । २-पौधे की बहुत पतली टहनी । डण्डी ।
**सींकिया** वि० (हि) सींक जैसा पतला । पुं० एक प्रकार का रङ्गीन कपड़ा ।
**सींकिया-पहलवान** पुं० (हि) दुबला-पतला आदमी जो अपने को बहुत बलवान बनाता हो ।
**सींग** पुं०(हि) १-विषाव । खुर वाले पशुओं के सिर के दोनों ओर निकलने वाले अवयव । २-सींगी नामक सींग का बना बाजा ।
**सींगड़ा** पुं० (हि) सींग का चोंगा जिसमें बारूद रखी जाती है । सींगी नामक बाजा ।
**सींगी** स्त्री० (हि) १-सुराखदार सींग जिससे शरीर का दूषित रक्त निकाला जाता है । २-हिरन के सींग का बना एक बाजा ।
**सींच** स्त्री० (हि) १-सिंचाई । २-छिड़काव ।
**सींचना** क्रि० (हि) १-खेती आदि में पानी देना । २-तर करना । ३-छिड़कना ।
**सींवँ** स्त्री० (हि) सीमा । हद । मर्यादा ।
**सी** वि० (हि) सदृश । समान । स्त्री० १-सिसकारी । सीत्कार । २-बीज की बोआई ।
**सी. आई. डी.** पुं० (अ) खुफिया विभाग । (क्रिमिनल इन्वैस्टिगेशन डिपार्टमेंट) ।
**सीउ** पुं० (हि) शीत । ठण्ड ।
**सीकर** पुं० (सं) १-पानी की बूँद । जलकण । २-पसीना । स्वेद । स्त्री० जंजीर । सिकड़ी ।
**सीकल** पुं० (देश) जल । पकाया हुआ आम । स्त्री० (हि) हथियार की सफाई ।
**सीकस** पुं० (देश) ऊसर ।
**सीका** पुं० (हि) १-सिर पर पहनने का सोने का आभूषण । २-छींका ।
**सीकाकाई** स्त्री० (हि) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी कलियां रीठे की भांति काम आती हैं ।
**सीख** स्त्री० (हि) १-शिक्षा । तालीम । २-परामर्श । सलाह । ३-वह बात जो दिखाई जाय । (फा) १-सीखचा । २-लोहे की सलाख जिस पर कबाब बनाते हैं ।
**सीखन** स्त्री० (हि) शिक्षा । सीख ।
**सीखना** क्रि० (हि) १-काम करने का ढंग जानना । २-ज्ञान प्राप्त करना । ३-अनुभव प्राप्त करना । ४-सितार आदि बजाने का अभ्यास करना ।
**सीखा-पढ़ा** वि० (हि) १-अनुभवी । २-शिक्षित । ३-जानकार ।
**सीखा-सिखाया** वि० (हि) १-कुशल । २-शिक्षित ।
**सीगा** पुं० (अ) १-विभाग । महकमा । २-सांचा । ढांचा । ३-व्यापार । पेशा ।
**सीजना** क्रि० (हि) दे० 'सीझना' ।
**सीझ** स्त्री० (हि) सीझने की क्रिया या भाव ।
**सीझना** क्रि० (हि) १-आंच पर पकना या गलना । २-कष्ट सहना । ३-तपस्या करना । ४-सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि से भीग कर मुलायम होना
**सीटी** स्त्री० (हि) १-वह महीन शब्द जो होठों को सिकोड़ने और वायु बाहर फेंकने से होता है । २-इस प्रकार का वाद्ययंत्रादि से निकला कोई शब्द । ३-उक्त वाद्ययन्त्र ।
**सीटीबाज** पुं० (हि) सीटी बजाने वाला ।
**सीठा** वि० (हि) फीका । नीरस ।
**सीठापन** पुं० (हि) फीकापन । नीरसता ।
**सीठी** स्त्री०(हि) १-रस निचोड़े हुए फलादि का नीरस अंश । खूद । २-सारहीन पदार्थ । ३-फीकी या बचीखुची चीज ।
**सीड़** स्त्री० (हि) तरी । नमी । सील ।
**सीढ़ी** स्त्री० (हि) १-ऊँचे स्थान पर चढ़ने का साधन जिस पर एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों । निसेनी । जीना । पैड़ी । २-जीने का बना हुआ पैर रखने का स्थान । ३-पुड़िया के आकार का लकड़ी का पाटा जो खण्डसाल में चीनी साफ करने

के काम आता है।
**सीत** पुं० (हि) दे० 'शीत'।
**सीतकर** पुं० (हि) चन्द्रमा।
**सीतल** वि० (हि) दे० 'शीतल'।
**सीतलचीनी** स्त्री० (हि) दे० 'शीतलचीनी'।
**सीतलपाटी** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की बढ़िया चिकनी चटाई। २-एक प्रकार का धारीदार कपड़ा
**सीतला** स्त्री० (हि) दे० 'शीतला'।
**सीतलामाई** स्त्री० (हि) शीतलादेवी।
**सीता** स्त्री० (सं) १-वह रेखा जो भूमि जोतते समय हल की फाल से बनती है। कूँड। २-मिथिला के राजा जनक तथा श्रीरामचन्द्र की पत्नी का नाम। ३-राजा की निज की भूमि। ४-मदिरा। ५-आकाशगङ्गा की एक धारा। ६-एक वर्णवृत्त।
**सीताजानि** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्रजी।
**सीताध्यक्ष** पुं० (सं) वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी का कामकाज देखता है
**सीतानाथ** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
**सीतापति** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
**सीताफल** पुं० (सं) १-कुम्हड़ा। २-शरीफा।
**सीतारमण** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
**सीतारवन** पुं० (हि) श्रीरामचन्द्र।
**सीतारौन** पुं० (हि) श्रीरामचन्द्र।
**सीतावर** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
**सीतावल्लभ** पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
**सीत्कार** पुं० (सं) वह सी-सी का शब्द जो अत्यन्त पीड़ा या आनन्द के समय मुख से निकलता है। सिसकारी।
**सीत्कृति** स्त्री० (सं) दे० 'सीत्कार'
**सीथ** पुं० (हि) पके हुए अन्न का दाना।
**सीथि** पुं० (हि) दे० 'सीथ'
**सीदना** क्रि० (हि) कष्ट झेलना। दुःख पाना।
**सीध** स्त्री० (हि) १-सीधी रेखा या दिशा। २-लक्ष्य। निशान।
**सीधा** वि० (हि) १-अवक्र। सरल। जो टेढ़ा न हो। २-निष्कपट। भोलाभाला। ३-शिष्ट। ४-शांत। प्रकृति का। ५-सहल। आसान। ६-दाहिना। ७-जो शीघ्र ही समझ में आजाये। ८-जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। पुं० (हि) १-बिना पका अन्न। २-सामने का भाग। अव्य० (हि) सम्मुख। ठीक सामने की ओर।
**सीधा उलटा** वि० (हि) ऊटपटांग। गलत।
**सीधापन** पुं० (हि) सरलता। भोलापन।
**सीधासादा** वि० (हि) १-जिसमें तड़क-भड़क न हो। २-भोलाभाला।
**सीधी** वि० (हि) दे० 'सीधा'।
**सीधीतरह** अव्य० (हि) १-सिधाई से। २-सज्जनता से।
**सीधीनज़र** स्त्री० (हि) प्रसन्नतासूचक दृष्टि।
**सीधीबात** स्त्री० (हि) स्पष्ट रूप से कही गई बात।
**सीधीराह** स्त्री० (हि) भलाई का मार्ग।
**सीधी लकीर** स्त्री० (हि) सरल रेखा।
**सीधे** अव्य० (हि) १-सामने की ओर। २-बिना मुड़े ३-शिष्ट व्यवहार से।
**सीधेमुंह** अव्य० (हि) १-शिष्टता से। २-अच्छी तरह से।
**सीन** पुं० (अं) १-दृश्य। दृश्यपट। २-रंगमंच का कोई परदा जिस पर दृश्य चित्रित होते हैं। ३-नाटक का कोई घटनास्थल।
**सीन-सीनरी** स्त्री० (अ) रङ्गमंच की सजावट की आवश्यक वस्तुएँ।
**सीनरी** स्त्री० (अ) १-प्राकृतिक दृश्य। २-रङ्गमंच की सजावट का आवश्यक सामान।
**सीना** क्रि० (हि) टांका मारना। कपड़े को धागे से जोड़ना। पुं० (फा) छाती। वक्षस्थल।
**सीनाजोर** वि० (फा) बलवान। जबरदस्त।
**सीनापिरोना** क्रि० (हि) सिलाई और बेलबूटे का काम करना।
**सीनाबंद** पुं० (फा) १-अंगिया। चोली। २-गिरेबान का हिस्सा। ३-वह घोड़ा जो अगले पैर से लँगड़ाता हो। ४-घोड़े पर कसी जाने वाली पेटी।
**सीप** पुं० (हि) १-शंखादि के सामान कठोर आवरण वाला एक जलजन्तु। २-वह लम्बोतरा पात्र जिसमें तर्पण या देवपूजा आदि के लिए जल रखा जाता है। ३-उक्त जलजन्तु का कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनते हैं।
**सीपज** पुं० (हि) मोती।
**सीपति** पुं० (हि) विष्णु। श्रीपति।
**सीपर** पुं० (हि) ढाल। सिपर।
**सीपसुत** पुं० (हि) मोती।
**सीपिज** पुं० (हि) मोती।
**सीपी** स्त्री० (हि) दे० 'सीप'।
**सीबी** स्त्री० (हि) सीत्कार। सिसकारी।
**सीमंत** पुं० (सं) १-स्त्रियों के सिर की मांग। २-वैद्यक के अनुसार अस्थियों का संधि स्थान। ३-हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भस्थिति के आठवें माह में किया जाता है।
**सीमंतकरण** पुं० (हि) सिर के बालों की मांग काढ़ना।
**सीमंतोन्नयन** पुं० (सं) द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा जो गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।
**सीम** स्त्री० (हि) सीमा। हद। पराकाष्ठा।
**सीमल** पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
**सीमांकन** पुं० (सं) किसी देश, राज्य या प्रदेश की

बटवारा करके हद की रेखा या चिह्न आदि बनाना (डिमार्केशन)।
**सीमांत** पुं० (सं) वह स्थान जहां सीमा का अन्त होता हो। (फ्रंटियर)।
**सीमांतपूजन** पुं० (सं) वर का पूजन जब वह बरात के साथ गांव की सीमा पर पहुँचता है।
**सीमांतप्रदेश** पुं० (सं) सरहद या सीमा का इलाका।
**सीमा** स्त्री० (सं) १-किसी प्रदेश या वस्तु के चारों ओर के विस्तार की अन्तिम रेखा या स्थान। हद। सरहद (बाउन्डरी)। २-नियम या मर्यादा की हद (लिमिट)। ३-मांग।
**सीमागुल्म** पुं० (सं) सीमा पर बनाई गई चौकी। (बैरियर)।
**सीमाचिह्न** पुं०(सं) १-किसी देश या राज्य की सीमा को बताने वाला चिह्न या पदार्थ। २-किसी व्यक्ति, जाति या देश की वह मुख्य घटना जो परिवर्तन की सूचक हो। (लैंडमार्क)।
**सीमातिक्रमण** पुं० (सं) दे० 'सीमोल्लंघन'।
**सीमापारण** पुं० (सं) दे० 'सीमाप्रक्षेपण'।
**सीमाप्रक्षेपण** पुं०(सं) क्रिकेट या गेंदबल्ले के खेल में गेंद को इतने वेग से मारना कि वह खेल के मैदान की बाहरी सीमा तक पहुँच जाय या उसे पार कर जाय (बाउण्डरी)।
**सीमाबद्ध** वि० (सं) परिमित। जिसकी सीमा नियत हो चुकी हो।
**सीमाशुल्क** पुं० (सं) वह शुल्क जो देश के बाहर से आयात होने वाले या बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगता है। (कस्टम ड्यूटी)।
**सीमेंट** पुं० (अं) एक प्रकार का पत्थरों का चूर्ण जो पलस्तर करने के काम आता है।
**सीमोल्लंघन** पुं० (सं) १-किसी राज्य पर आक्रमण करने के लिए अपनी सीमा पार करके उसकी सीमा में पहुँचना। २-मर्यादा के विरुद्ध काम करना।
**सीय** स्त्री० (हि) सीता। जानकी।
**सीयन** स्त्री० (हि) दे० 'सीवन'।
**सीयरा** वि० (हि) दे० 'सियरा'।
**सीर** पुं० (सं) १-हल। २-जोतने वाले बैल। ३-सूर्य। स्त्री० (हि) १-साझा। २-किसी के साझे में भूमि जोतने की रीति। ३-वह भूमि जिसे जमींदार के साझे में खुद बोता हो। ४-रक्त की नाड़ी। ५-चौपायों का एक रोग।
**सीरख** पुं० (हि) दे० 'शीर्ष'।
**सीरधर** पुं० (सं) बलराम। वि० हल धारण करने वाला।
**सीरध्वज** पुं० (सं) १-बलराम। २-राजा जनक।
**सीरनी** स्त्री० (हि) शीरनी। मिठाई।
**सीरपाणि** पुं० (सं) हलधर। बलराम।
**सीरभृत्** वि० (सं) हल धारण करने वाला। पुं० हलधर।
**सीरवाह** पुं०(सं) १-हलवाहा। २-जमींदार की ओर से काम करने वाला कर्मचारी।
**सीरवाहक** पुं० (सं) दे० 'सीरवाह'।
**सीरा** पुं० (हि) सिराहना। वि० १-शीतल। ठण्डा। मौन। चुपचाप।
**सीरायुध** पुं० (सं) बलराम।
**सील** स्त्री० (हि) भूमि की आर्द्रता। नमी। पुं० १-दे० 'शील'। २-एक लकड़ी का औजार जिस पर चूड़ियां गोल की जाती है। स्त्री० (अ) १-मुद्रा। ठप्पा। २-एक प्रकार की समुद्री मछली।
**सीलवंत** वि० (हि) शीलवान्। सुशील।
**सीलवान्** वि० (हि) सुशील।
**सीला** पुं० (हि) १-खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की प्राचीन ऋषियों की वृत्ति। २-सिल्ला। वि० गीला। आर्द्र। नम।
**सीवँ** स्त्री० (हि) दे० 'सीमा'।
**सीवक** पुं० (सं) सीनेवाला।
**सीवन** स्त्री० (सं) १-सीने का काम। २-दरार। संधि ३-वह रेखा जो अंडकोश से लेकर मलद्वार तक जाती है। ४-सिलाई के टांके।
**सीस** पुं०(हि) १-सिर। माथा। २-कंधा। ३-अंतरीप पुं० (सं) सीसा।
**सीस-अङ्कनी** स्त्री०(सं) सीसे की बनी पेंसिल। (लेड-पेंसिल)।
**सीसक** पुं० (सं) सीसा।
**सीसज** पुं० (सं) सिंदूर।
**सीसताज** पुं० (हि) शिकारी जानवरों के सिर पर पहनने की टोपी।
**सीसत्रान** पुं० (हि) टोप। शिरस्त्राण।
**सीसफूल** पुं०(हि) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।
**सीसम** पुं० (हि) दे० 'शीशम'।
**सीसमहल** पुं० (हि) वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों पर चारों ओर शीशा लगा हो।
**सीसा** पुं० (हि) १-हलके काले रङ्ग की मूलधातु। २-शीशा। दर्पण।
**सीसी** स्त्री० (हि) १-सीत्कार। सिसकारी। २-दे० 'शीशी'।
**सीसों** पुं० (हि) शीशम।
**सीसो** पुं० (देश) शीशम।
**सीह** स्त्री० (हि) महक। गन्ध। पुं० (देश) साही नामक जन्तु।
**सुं** अव्य० (हि) दे० 'सों'।
**सुंगवंश** पुं० (सं) मौर्यवंश अन्तिम सम्राट के प्रधान सेनापति पुष्पमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राज-

वंश।
**सुंघनी** स्त्री० (हि) सूँघने के लिये बनाई गई तम्बाकू की बुकनी। हुलास।
**सुंघाना** क्रि० (हि) किसी को सुंघाने में प्रवृत्त करना।
**सुंड** पुं० (हि) सूँड। शुण्ड।
**सुंडभुसुंड** पुं० (हि) हाथी।
**सुंडा** स्त्री० (हि) सूँड।
**सुंदर** वि० (स) १-रूपवान। खूबसूरत। २-अच्छा। भला। पु० १-कामदेव। २-एक वृक्ष विशेष। ३ एक नाग।
**सुंदरता** स्त्री० (सं) सौंदर्य। खूबसूरती।
**सुंदरताई** स्त्री० (हि) सुन्दरता।
**सुंदरत्व** पु० (हि) सुन्दरता।
**सुंदरम्मन्य** पुं० (सं) वह जो स्वयं को सुन्दर समझता हो।
**सुंदराई** स्त्री० (हि) सुन्दरता।
**सुंदरी** स्त्री० (हि) १-सुन्दर स्त्री। २-हल्दी। ३-एक वर्णवृत्त। ४-एक प्रकार की मछली। वि० रूपवती।
**सुँधाई** स्त्री० (हि) सौंधापन।
**सुँधावट** स्त्री० (हि) सौंधापन। सौंधी महक।
**सुंबा** पुं० (हि) १-तोप भरने का गज। २-खूँटी। ३-पत्थर फोड़ने का एक औजार।
**सुंबुल** पु० (फा) एक प्रकार की घास जिसकी उपमा फारसी साहित्य में घुँघराले बालों से की जाती है।
**सुंभा** पुं० (हि) दे० 'सुंबा'।
**सु** उप० (सं) सुन्दर या श्रेष्ठ वाचक एक उपसर्ग। वि० १-सुन्दर। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-शुभ। भला। पुं० सुन्दरता। २-हर्ष। ३-पूजा। ४-उत्कर्ष। ५-आज्ञा। ६-कष्ट। अव्य० (हि) तृतीया, पंचमी तथा षष्ठी विभक्ति का चिह्न। सर्व० सो। वह।
**सुअ** पुं० (हि) पुत्र।
**सुअटा** पु० (हि) सुग्गा। तोता।
**सुअन** पुं० (हि) पुत्र। बेटा।
**सुअनजर्द** पुं० (हि) एक प्रकार का फूल।
**सुअना** क्रि० (हि) उगना। उदय होना।
**सुअर** पुं० (हि) दे० 'सूअर'।
**सुअरदंता** वि०(हि)सूअर के समान दांतों वाला। पुं० एक प्रकार का हाथी।
**सुअवसर** पुं० (सं) अच्छा अवसर। अच्छा मौका।
**सुआ** पुं० (हि) तोता। सुग्गा।
**सुआउ** वि० (हि) दीर्घायु।
**सुआद** पुं० (डि) याद। स्मरण।
**सुआन** पुं० (हि) दे० 'श्वान'।
**सुआमी** पुं० (हि) दे० 'स्वामी'।
**सुआर** पुं० (हि) रसोइया।
**सुआल** वि० (सं) मीठे स्वर से बोलने या बजाने वाला।
**सुआसन** पु० (सं) बैठने का सुन्दर आसन या पीढ़ा।
**सुआसिन** स्त्री०(हि)१-सहचरी। पड़ोसन। २-सधवा सुहागिन।
**सुआसिनी** स्त्री० (हि) दे० 'सुआसिन'।
**सुई** स्त्री० (हि) दे० 'सूई'।
**सुकंठ** वि०(सं)१-जिसका कंठ सुन्दर हो। २-सुरीला जिसका स्वर मीठा हो। पुं० सुग्रीव।
**सुकंदक** पुं० (स) १-प्याज। २-एक प्राचीन देश। ३-उसका निवासी।
**सुक** पुं० (हि) १-तोता। शुक। २-सिरस का पेड़। ३-एक राक्षस का नाम जो रावण का दूत था।
**सुकचाना** क्रि० (हि) दे० 'सकुचाना'।
**सुकड़ना** क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
**सुकदेव** पु० (हि) दे० 'शुकदेव'।
**सुकनासा** वि० (हि) तोते की सी नाक वाला। सुन्दर नाक वाला।
**सुकन्या** स्त्री० (सं) १-अच्छी कन्या। २-च्यवन-ऋषि की पत्नी का नाम।
**सुकर** वि० (सं) १-जो सहज में हो सके। २-जो सहज में सुव्यवस्थित किया जा सके।
**सुकरा** स्त्री० (सं) अच्छी और सीधी गाय।
**सुकरात** पुं० (अ) एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो प्लेटो (अफलातून) के गुरु थे।
**सुकराना** पु० (हि) दे० 'शुकराना'।
**सुकरित** वि० (हि) दे० 'सुकृत'।
**सुकर्मा** पुं० १-ज्योतिष के अनुसार सत्ताइस योगों में से एक। २-उत्तम कार्य करने वाला व्यक्ति। ३-विश्वकर्मा। ४-विश्वामित्र।
**सुकर्मी** वि० (सं) १-सदाचारी। २-सत्कर्म करने वाला।
**सुकल्पित** वि० (सं) १-अच्छी तरह से बनाया हुआ २-सुसज्जित।
**सुकाना** क्रि० (हि) दे० 'सुखाना'।
**सुकाल** पुं० (सं) १-अच्छा समय। २-सस्ती का समय।
**सुकावना** क्रि० (हि) दे० 'सुखाना'।
**सुकिज** पुं० (हि) शुभ या उत्तम कार्य।
**सुकिया** स्त्री० (हि) स्वकीया नायिका।
**सुकीउ** स्त्री० (हि) स्वकीया नायिका।
**सुकीर्ति** स्त्री०(सं) १-यश। २-नेकनामी। वि० कीर्तियुक्त।
**सुकुआर** वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।
**सुकुड़ना** क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
**सुकुति** स्त्री० (हि) सीप। शुक्ति।
**सुकुमार** वि० (सं) १-कोमल। नाजुक। २-कोमल अङ्गों वाला। पुं० १-कोमलांग बालक। २-कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य। ३-कंगनी। ४-

तम्बाकू का पत्ता।
**सुकुमारता** स्त्री० (सं) कोमलता। नजाकत। सुकुमार होने का भाव।
**सुकुमारत्व** पुं० (सं) सुकुमारता।
**सुकुमारी** स्त्री० (सं) १-चमेली। २-एक प्रकार की फली। ३-ईख। ४-बड़ा करेला। ५-कन्या। ६-लड़की बेटी। वि० कोमलांगी। कोमल अंगों वाली।
**सुकुरना** क्रि० (हि) दे० 'सिकुड़ना'।
**सुकुल** पुं० (सं) १-उत्तम कुल। २-कुलीन। (हि) दे० 'शुक्ल'।
**सुकुलज** वि० (सं) दे० 'सुकुलजन्मा'।
**सुकुलजन्मा** वि० (सं) सद्वंशजात।
**सुकुवांर** वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।
**सुकुवार** वि० (हि) दे० 'सुकुमार'।
**सुकूनत** स्त्री० (अ) १-निवास। २-रिहाइश।
**सुकूनती** वि० (अ) रहने का (स्थान)।
**सुकृत** पुं० (सं) १-पुण्य। २-सत्कर्म।
**सुकृति** स्त्री० (सं) अच्छा काम। वि० पुण्य या अच्छा काम करने वाला।
**सुकृत** वि० (सं) १-धार्मिक। २-उत्तम तथा शुभ कार्य करने वाला। ३-भाग्यवान।
**सुकृत्य** पुं० (सं) १-उत्तम कार्य। २-एक प्राचीन ऋषि का नाम।
**सुकेशा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
**सुकेशी** स्त्री० (सं) १-सुन्दर केशों वाली स्त्री। २-एक अप्सरा का नाम। पुं० वह जिसके बाल सुन्दर हों।
**सुक्ख** पुं० (हि) दे० 'सुख'।
**सुक्ति** पुं० (सं) एक पर्वत का नाम। स्त्री० दे० 'शुक्ति'।
**सुक्र** पुं० (हि) शुक्र। पुं० अग्नि।
**सुक्रित** पुं० (हि) दे० 'सुकृत'।
**सुक्ल** वि० (हि) दे० 'शुक्ल'।
**सुक्षम** वि० (हि) दे० 'सूक्ष्म'।
**सुखंडी** स्त्री० (हि) बच्चों के शरीर सूखने का रोग। सूखा रोग। वि० बहुत दुबला-पतला।
**सुखद** वि० (हि) सुखदायी।
**सुख** पुं० (सं) वह अनुकूल तथा प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की इच्छा हो। २-एक वर्णवृत्त। ३-आरोग्य। ४-जल। ५-स्वर्ग। ६-वृद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध। वि० १-प्रसन्न। २-धार्मिक। ३-उपयुक्त।
**सुख-आसन** पुं० (हि) पालकी। डोली।
**सुखकंद** वि० (सं) सुख देने वाला।
**सुखकंदन** वि० (हि) दे० 'सुखकंद'।
**सुखकंदर** वि० (सं) सुख का घर।
**सुखक** वि० (हि) सूखा। शुष्क।
**सुखकर** वि० (सं) १-सुख देने वाला। २-सुगम। सहज में होने वाला।
**सुखकरण** वि० (सं) सुख या आनन्द उत्पन्न करने वाला।
**सुखकरन** वि० (हि) दे० 'सुखकरण'।
**सुखकारक** वि० (सं) सुख देने वाला।
**सुखकारी** वि० (सं) सुखकारक।
**सुखकृत** वि० (सं) सहज में किया जाने वाला।
**सुखग** वि० (सं) आराम से चलने या जाने वाला।
**सुखग्राह्य** वि०(सं) जो सहज में लिया जा सके।
**सुखजनक** वि० (सं) सुखद। सुखदायक।
**सुखदरन** वि० (हि) सुख देने वाला।
**सुखतला** पुं० (हि) चमड़े का वह टुकड़ा जो जूते के अन्दर रखा जाता है।
**सुखता** स्त्री० (सं) सुख का भाव या धर्म।
**सुखत्व** पुं० (सं) सुखता।
**सुखथर** पुं० (हि) वह स्थान जहां सुख मिले।
**सुखद** वि० (सं) सुख या आनन्द देने वाला। पुं० १-विष्णु। २-संगीत में एक ताल।
**सुखदनियां** वि० (हि) दे० 'सुखदायी'।
**सुखदा** वि० (सं) सुख या आनन्द देने वाली। स्त्री० १-गङ्गा। २-अप्सरा। ३-एक छन्द।
**सुखदाइन** वि० (हि) दे० 'सुखदायिनी'।
**सुखदाई** वि० (हि) सुख देने वाला।
**सुखदात** वि० (सं) दे० 'सुखदाता'।
**सुखदाता** वि० (सं) सुखद। सुख देने वाला।
**सुखदानी** वि० (हि) सुख देने वाली। स्त्री० (हि) एक वर्णवृत्त।
**सुखदाय** वि० (सं) दे० 'सुखदायक'।
**सुखदायक** वि० (सं) सुखद। सुख देने वाला।
**सुखदायिनी** वि० (सं) सुख देने वाली। स्त्री० मांस-रोहिणी नामक लता।
**सुखदायी** वि० (सं) सुखद।
**सुखदाव** वि० (हि) सुख देने वाला।
**सुखदास** पुं० (देश) एक प्रकार का धान।
**सुखदुःख** पुं० (सं) आराम और कष्ट।
**सुखदेनी** वि० (हि) सुख देने वाली।
**सुखदेन** वि० (हि) दे० 'सुखदाई'।
**सुखदोह्या** स्त्री० (सं) वह गाय जो सहज में दुही जा सके।
**सुखधाम** पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-सुख का घर। ३-जो सुखमय हो तथा दूसरों को सुख देता हो।
**सुखन** पुं० (फ़ा) १-वार्त्तालाप। २-कविता। ३-उक्ति
**सुखनतकिया** पुं० (फ़ा) वह शब्द या लघु वाक्य जो निरर्थक होते हुए भी लोग वार्तालाप में प्रयोग करते हैं। जैसे-'जो है सो' इत्यादि।
**सुखना** क्रि० (हि) दे० 'सूखना'।
**सुखपाल** पुं० (हि) एक प्रकार की पालकी।
**सुखप्रद** वि० (सं) सुखद। सुख देने वाला।

सुखप्रश्न पु० (सं) कुशलता पूछना।
सुखप्रसवा स्त्री० (सं) सुख से प्रसव करने स्त्री।
सुखप्राप्त वि० (सं) सहज में ही मिला हुआ। सुखी
सुखभाक वि० (सं) सुख भोगने वाला।
सुखभागी वि० (सं) सुखी। सुख भोगने वाला।
सुखभुक वि० (सं) सुखी। भाग्यवान।
सुखभोगी वि० (सं) सुख का भोग करने वाला।
सुखभोजन पु० (सं) स्वादिष्ट भोजन।
सुखमन स्त्री० (हि) दे० 'सुषुम्ना'।
सुखमा स्त्री० (हि) १-शोभा। सुषमा। छवि। २-एक वर्णवृत।
सुखरात्रि स्त्री० (हि) १-सुहागरात। २-दीवाली की रात। ३-आनन्द मनाने की रात।
सुखराशि वि० (सं) जो सुख का भंडार है।
सुखरास वि० (हि) जो सर्वथा सुखमय हो।
सुखरासी वि० (हि) दे० 'सुखराशि'।
सुखवत वि० (हि) १-खुश। प्रसन्न। सुखदायक।
सुखवन पु० (हि) १-सूखने के लिए धूप में डाली गई फसल। २-गीले अक्षरों की स्याही सुखाने की बालू।
सुखवा पुं० (हि) सुख। आनन्द।
सुखवाद पु० (सं) वह सिद्धांत जिसकी सीमा केवल व्यक्तिगत सुख नहीं वरन अखिल मानव जाति का सुख पहुँचाने का लक्ष्य रखती है।
सुखवान वि० (सं) सुखी।
सुखवार वि० (हि) सुखी। प्रसन्न।
सुखशयन पुं० (सं) आराम या चैन से सोना।
सुखशय्या स्त्री० (सं) आराम की नींद या शय्या।
सुखशांति स्त्री० (सं) सुख और चैन।
सुखसलिल पु०(सं) नीम गरम पानी।
सुखसागर पुं० (सं) १-भागवत के दसवें स्कंध का हिन्दी अनुवाद। सुख का सागर।
सुखसाधन पुं० (सं) सुख प्राप्त करने का साधन।
सुखसाध्य वि० (सं) जो सहज में ही किया जा सके।
सुखसार पुं० (हि) मोक्ष।
सुखस्पर्श वि० (सं) छूने से सुख देने वाला।
सुखस्वप्न पुं० (सं) सुखी जीवन की कल्पना।
सुखांत पुं० (सं) १-वह जिस का अन्त सुखमय हो। २-वह नाटक जिसके अन्त में कोई सुखपूर्ण घटना हो। (कॉमेडी)।
सुखांतनाटक पु० (सं) वह नाटक जिसके अन्त में कोई सुखपूर्ण घटना हो। (कॉमेडी)।
सुखाधिकारवाद पु० (सं) वह मुकदमा जो दूसरे की भूमि, पथ आदि का अपने आराम के लिए प्रयोग करने के कारण किया गया हो। (सूट आफ-ईजमेंट)।
सुखाना क्रि० (हि) १-गीली वस्तु का गीलापन दूर करने के लिए धूप में या आग पर रखना। २-आर्द्रता दूर करना। ३-दुर्बल बनाना।
सुखानुभव पु० (सं) सुख का अनुभव।
सुखापन्न वि० (सं) जिसे सुख या आनन्द प्राप्त हो।
सुखारा वि० (हि) १-प्रसन्न। सुखी। २-सुखद।
सुखारी वि० (हि) दे० 'सुखारा'।
सुखार्थी वि० (हि) सुख चाहने वाला।
सुखाली वि० (हि) सुखदायक।
सुखावह वि० (सं) सुख या आराम देने वाला।
सुखासन पुं०(सं)१-पालकी। डोली। २-वह आसन जिस पर सुख से बैठा जाय।
सुखासीन वि० (सं) सुख से बैठा हुआ।
सुखिया वि० (हि) दे० 'सुखिया'।
सुखित वि० (हि) १-प्रसन्न। खुश। २-सूखा हुआ।
सुखिया वि० (हि) सुखी। जिसे हर प्रकार का सुख हो।
सुखिर पुं० (देश) सांप की बांबी।
सुखी वि० (हि) खुश। आनन्दित। जिसे सब प्रकार के सुख हों। जिसे कोई दुःख न हो।
सुखेतर पुं० (सं) सुख से भिन्न-दुख, कष्ट।
सुखेन पुं० (हि) दे० 'सुषेण'।
सुखैना वि० (हि) सुखद। सुख देने वाला।
सुखैषी वि० (सं) सुख की इच्छा करने वाला।
सुखोत्सव पुं० (सं) आनन्द उत्सव।
सुखोदक पुं० (सं) गरम जल। सुख सलिल।
सुखोपेक्षी पुं० (सं) विलास तथा सुखमय जीवन के प्रति उदासीन रहते हुए सदाचार मय सात्विक जीवन बिताने का लक्ष्य मानने वाला दार्शनिक। (स्टोइक)।
सुखोष्ण वि० (सं) नीम गरम। कुनकुना। पुं० नीम गरम पानी।
सुख्ख पुं० (देश) सुख।
सुख्यात वि० (सं) सुप्रसिद्ध।
सुख्याति स्त्री० (सं) १-यश। कीर्ति। २-ख्याति। प्रसिद्धि।
सुगंध स्त्री० (सं) १-अच्छी महक। सौरभ। खुशबू। २-चन्दन। ३-नील-कमल। ४-टाल। ५-चना। ६-कसेरू। ७-बासमती चावल। ८-मरुआ। वि० सुगन्धित।
सुगंधबाला स्त्री० (सं) क्षुप जाति की एक प्रकार की बनौषधि।
सुगंधि स्त्री० (सं) १-अच्छी महक। सुगन्ध। २-आम ३-परमेश्वर। धनिया। वि० सुन्दर गन्ध वाला।
सुगंधित वि० (सं) सुवासित। खुशबूदार। जिसमें अच्छी गंध हो।
सुगठित वि० (सं) १-सुन्दर गठन वाला। २-कसा हुआ।

**सुगणक** वि० (सं) अच्छा ज्योतिषी।
**सुगत** पु० (सं) १-बुद्धदेव। २-बौद्ध।
**सुगति** स्त्री० (सं) १-मोक्ष। २-शुभगति नामक एक छन्द।
**सुगना** पुं० (हि) १-सुग्गा। तोता। २-सहिंजन का पेड़।
**सुगम** वि० (सं) १-सहज। सरल। २-जो सहज में जाने योग्य हो।
**सुगमता** स्त्री० (सं) सरलता।
**सुगर** पु० (स) शिंगरफ। हिंगुल।
**सुगल** पु० (हि) बाली का भाई सुग्रीव।
**सुगाध** वि० (सं) १-(नदी) जिसे सहज में पार किया जा सके। २-(नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके।
**सुगाना** क्रि० (हि) १-दुःखी होना। २-बिगड़ना। ३-(किसी के मैलेपन आदि से) घृणा करना। ४-४-सन्देह करना।
**सुगुप्त** वि० (सं) अच्छी तरह छिपाकर रखा हुआ।
**सुगुप्तलेख** पुं० (सं) १-अत्यन्त गोपनीय पत्र। २-ऐसे चिह्नों या अक्षरों में लिखा हुआ पत्र जिसे पाने वाले के अतिरिक्त दूसरा समझ न सके।
**सुगुरा** पुं० (हि) वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।
**सुगृहीत** वि० (सं) अच्छी तरह से ग्रहण किया हुआ।
**सुगृहीतनामा** वि० (सं) प्रातःकाल स्मरणीय।
**सुगया** स्त्री० (हि) अंगिया। चोली।
**सुग्गा** पुं० (हि) तोता।
**सुग्गापंखी** पुं० (हि) एक प्रकार का अगहनिया धान
**सुग्रीव** वि० (सं) सुन्दर ग्रीवा वाला। पुं० १-वानरराज बालि का छोटा भाई जो रामचन्द्र का सखा था २-इन्द्र। ३-शिव। ४-शंख। ५-राजहंस। ६-नायक। ७-विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक।
**सुघट** वि० (सं) १-सुन्दर। सुडौल। २-जो सहज में बन जाता हो।
**सुघटित** वि० (सं) अच्छी तरह से बना हुआ।
**सुघड़** वि० (हि) १-सुन्दर। सुडौल। २-निपुण।
**सुघड़ई** स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-चतुरता। निपुणता
**सुघड़ता** स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
**सुघड़पन** पु० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
**सुघड़ाई** स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
**सुघड़ी** स्त्री० (हि) शुभ घड़ी।
**सुघर** वि० (हि) दे० 'सुघड'।
**सुघरई** स्त्री० (हि) दे० 'सुघरता'।
**सुघरता** स्त्री० (हि) १-सुन्दरता। २-निपुणता।
**सुघरपन** पु० (हि) दे० 'सुघरता'।
**सुघराई** स्त्री० (हि) दे० 'सुघड़ई'।
**सुघरी** स्त्री०(हि) शुभघड़ी। वि० सुन्दर। सुडौल।
**सुच** वि० (हि) दे० 'शुचि'।
**सुचक्षु** पुं० (सं) १-शिव। २-गूलर। ३-ज्ञानी। वि० सुन्दर नेत्रों वाला। स्त्री० एक नदी का नाम।
**सुचना** क्रि० (हि) संचय करना। इकट्ठा करना।
**सुचरित** पुं०(स) उत्तम आचरण वाला। नेकचलन।
**सुचरिता** स्त्री० (सं) पतिव्रता स्त्री।
**सुचरित्र** वि० (सं) उत्तम आचरण वाला।
**सुचा** वि० (हि) दे० 'शुचि'। स्त्री० ज्ञान। चेतना।
**सुचाना** क्रि० (हि) १-दिखलाना। २-सोचने में प्रवृत्त करना। ३-सुझाना।
**सुचार** स्त्री० (हि) अच्छी चाल। वि० सुन्दर। सचारु
**सुचारु** वि० (सं) अत्यन्त सुन्दर। पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
**सुचाल** स्त्री० (हि) अच्छी चाल। उत्तम आचरण।
**सुचालक** वि० (सं) ऐसी वस्तु या पदार्थ जिसमें से विद्युत, ताप आदि का परिचालन आसानी से हो सके। (गुड कन्डक्टर)।
**सुचाली** वि०(हि) सदाचारी। उत्तम आचरण वाला।
**सुचाव** पुं० (हि) १-सुझाने की क्रिया या भाव। २-सुझाव। सूचना।
**सुचिंतित** वि० (सं) अच्छी तरह सोचा या विचारा हुआ।
**सुचि** वि० (हि) दे० 'शुचि'। स्त्री० (हि) दे० 'सूई'।
**सुचिकर्मा** वि० (हि) दे० 'शुचिकर्मा'।
**सुचित** वि० (हि) १-निश्चिन्त। २-एकाग्र। स्थिर। ३-पवित्र।
**सुचितई** स्त्री० (हि) १-निश्चिंतता। २-बे-फिक्री। ३-एकाग्रता।
**सुचिती** वि० (हि) १-स्थिरचित्त। २-निश्चिन्त। बे-फिक्र।
**सुचित्त** वि० (सं) दे० 'सुचित'।
**सुचित्तता** स्त्री० (सं) १-निश्चिंतता। २-एकाग्रता।
**सुचित्र** वि० (सं) १-अनेक रंगों का। २-अनेक प्रकार का।
**सुचिमंत** वि० (हि) शुद्ध आचरण वाला। सदाचारी।
**सुची** स्त्री० (हि) दे० 'शुचि'।
**सुचेत** वि० (हि) सतर्क। चौकन्ना।
**सुचेता** वि० (सं) उदार आशय वाला।
**सुच्छंद** वि० (हि) दे० 'स्वच्छन्द'।
**सुच्छ** वि० (हि) दे० 'स्वच्छ'।
**सुच्छम** वि० (हि) दे० 'सूक्ष्म'।
**सुजंघ** वि० (सं) सुन्दर जांघों वाला।
**सुजन** पुं०(सं) सज्जन पुरुष। भला आदमी। पुं०(हि) स्वजन। परिवार के लोग।
**सुजनता** स्त्री० (सं) सौजन्य। भलमनसाहत।
**सुजनी** स्त्री० (फा) एक प्रकार की बड़ी और मोटी

चादर।
सुजन्मा वि० (सं) १-उत्तम रूप से जन्मा हुआ। २-अच्छे कुल में उत्पन्न।
सुजल पुं० (सं) कमल।
सुजला वि० (सं) जहां जल की बहुतायत हो तथा कमी न हो।
सुजस पुं० (हि) दे० 'सुयश'।
सुजाक पुं० (हि) दे० 'सूजाक'।
सुजागर वि० (सं) १-सुन्दर। २-प्रकाशमान।
सुजात वि० (सं) १-कुलीन। २-सुन्दर। पुं० भरत के एक पुत्र का नाम।
सुजाता स्त्री० (सं) १-गोपीचन्दन। २-एक ग्रामीण कन्या का नाम जिसने भगवान बुद्ध को भोजन कराया था। ३-कुलीन सुन्दरी।
सुजान वि० (हि) १-चतुर। सयाना। २-निपुण। प्रवीण। ३-पंडित। ४-सज्जन। पुं० (हि) १-पति प्रेमी। २-ईश्वर।
सुजानता स्त्री० (हि) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी वि० (हि) ज्ञानी। पंडित।
सुजिह्व वि० (सं) १-मधुरभाषी। २-जिसकी जिह्वा सुन्दर हो।
सुजेय वि० (सं) जिसे सुगमता से जीता जा सके।
सुजोग पुं० (हि) १-सुयोग। २-अच्छा संयोग।
सुजोधन पुं० (हि) दे० 'सुयोधन'।
सुजोर वि० (हि) दृढ़। मजबूत।
सुज्ञ वि० (सं) १-भलीभांति जानने वाला। २-पंडित
सुझाना क्रि० (हि) १-दूसरे को सूझ ध्यान में लाना। २-दिखाना।
सुझाव पुं०(हि) वह बात जो सुझाई जाय (सजेशन)
सुटुकना क्रि० (हि) १-सुकड़ना। २-सिकुड़ना। ३-चुपके से खिसक जाना। ४-चाबुक लगाना।
सुठ वि० (हि) दे० 'सुठि'।
सुठहर पुं० (हि) अच्छा स्थान।
सुठार वि० (हि) सुन्दर। सुडौल।
सुठि वि० (हि) १-सुन्दर। बढ़िया। २-बहुत अच्छा अव्य० १-पूरा। २-बिलकुल।
सुठौना वि० (हि) दे० 'सुठि'।
सुड़कना क्रि० (हि) दे० 'सुरकना'।
सुड़सुड़ाना क्रि० (हि) सुड़सुड़-शब्द उत्पन्न करना।
सुडौल वि० (हि) सुन्दर डौल या आकार वाला।
सुढंग पुं० (हि) १-अच्छा ढंग या रीति। २-अच्छे रङ्ग का। सुन्दर।
सुढर वि० (हि) १-कृपालु। २-सुडौल।
सुढार वि० (हि) १-सुन्दर। सुडौल। २-सुन्दर बना हुआ।
सुतंत वि० (हि) दे० 'स्वतंत्र'।
सुततर वि० (हि) दे० 'स्वतंत्र'।
सुतंत्र वि० (हि) दे० 'स्वतंत्र'।
सुत पुं०(सं) १-पुत्र। बेटा। २-दसवें मनु का पुत्र। वि० १-उत्पन्न। जात। २-पार्थिव।
सुतदा वि० (सं) पुत्र देने वाली (स्त्री)। स्त्री० पुत्रदा नामक लता।
सुतधार पुं० (हि) दे० 'सूत्रधार'।
सुतना पुं० (हि) दे० 'सूथना'। क्रि० सूतना।
सुतनु पुं०(सं) १-उग्रसेन का एक पुत्र। २-एक बन्दर वि० सुन्दर शरीर वाला। स्त्री० १-सुन्दर शरीर वाली स्त्री। २-उग्रसेन की कन्या का नाम। ३-अक्रूर की स्त्री का नाम।
सुतर पुं० (हि) दे० 'शुतुर'। वि० (सं) सरलतापूर्वक पार करने योग्य।
सुतरनाल स्त्री० (हि) दे० 'शुतुरनाल'।
सुतरसवार पुं० (हि) दे० 'शुतुरसवार'।
सुतरां अव्य० (सं) १-अतः। इसलिए। २-और भी ३-अत्यंत। ४-अवश्य।
सुतरी स्त्री० (हि) १-तुरही। २-सुतारी। ३-सुतली
सुतल पुं० (सं) सात पाताल लोकों में से एक।
सुतली स्त्री० (हि) सूत या सन की बनी हुई डोरी।
सुतहर पुं० (हि) दे० 'सुतार'।
सुतहार पुं० (हि) दे० 'सुतार'।
सुतही स्त्री० (हि) सीपी।
सुता स्त्री० (सं) कन्या। पुत्री। लड़की।
सुतादान पुं० (सं) कन्यादान।
सुतान वि० (सं) १-सुरीला। २-सुन्दर।
सुताना क्रि० (हि) दे० 'सुलाना'।
सुतापति पुं० (सं) दामाद। जामाता।
सुतापुत्र पुं० (सं) नाती।
सुतार पुं० (हि) १-बढ़ई। २-कारीगर। शिल्पी। वि० १-एक आचार्य। २-एक प्रकार की सिद्धि। (सं) १-अत्यंत। उज्ज्वल। २-जिसके नेत्र की पुतलियां सुन्दर हों। ३-अत्यंत उच्च।
सुतारी स्त्री०(हि) १-जूता सीने का सूआ। २-सुनार या बढ़ई का काम। पुं० शिल्पकार।
सुतार्थी वि० (सं) जिसे पुत्र की अभिलाषा हो।
सुतासुत पुं० (सं) नाती।
सुतिन स्त्री० (हि) १-सुन्दर बाला। २-सुन्दर स्त्री।
सुतिनी स्त्री० (सं) पुत्रवती।
सुतिया स्त्री० (देश) हँसली नामक गले में पहनने का गहना।
सुतिहार पुं० (हि) दे० 'सुतार'।
सुती वि० (हि) १-पुत्र वाला। २-पुत्र की कामना करने वाला।
सुतीक्षण वि० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीक्ष्ण वि० (सं) बहुत तीक्ष्ण या तेज। पुं० (हि) अगस्त्य मुनि के भाई का नाम।

सुतीक्षन पुं० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीच्छन पुं० (हि) दे० 'सुतीक्ष्ण'।
सुतीर्थ वि० (सं) जिसे सुगमता से पार किया जा सके। पुं० १-पवित्र स्नानस्थल। २-अच्छा मार्ग
सुतुही स्त्री० (हि) १-छोटे बच्चों को दूध पिलाने की सीपी। २-बड़ सीपी जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है।
सुतोत्पत्ति स्त्री० (सं) पुत्रजन्म।
सुतोष पुं० (सं) सन्तोष। सब्र। वि० १-प्रसन्न। २-सन्तुष्ट।
सुतोषण वि० (सं) दे० 'सुतोष'।
सुथना पुं० (हि) सुथना।
सुथना पुं० (हि) पायजामा।
सुथनिया स्त्री० (हि) दे० 'सुथनी'।
सुथनी स्त्री० (हि) १-एक प्रकार का स्त्रियों के पहनने का पायजामा। २-पिंडालू। रतालू।
सुथरा वि० (हि) स्वच्छ। निर्मल। साफ।
सुथराई स्त्री० (हि) सुथरापन। स्वच्छता। निर्मलता।
सुथरापन पुं० (हि) दे० 'सुथराई'।
सुदंत पुं० (सं) १-नट। २-नर्तक। वि० सुन्दर दांतों वाला।
सुदंष्ट्र पुं०(सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक राक्षस। वि० जिसके सुन्दर दांत हों।
सुदक्षिण पुं०(सं) पौंड्रक राजा के पुत्र का नाम। वि० १-कुशल। २-विनम्र। ३-उदार।
सुदक्षिणा स्त्री० (सं) १-राजा दिलीप की स्त्री का नाम। २-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम।
सुदच्छिन पुं० (हि) दे० 'सुदक्षिण'।
सुदती वि० (सं) सुन्दर दांत वाली (स्त्री)।
सुदरसन पुं० (हि) दे० 'सुदर्शन'।
सुदरसनपानि पुं० (हि) दे० 'सुदर्शनपाणि'।
सुदर्श वि०(सं) १-जो भली भांति देखा जा सके। २-जो देखने में सुन्दर हो।
सुदर्शन पुं० (सं) विष्णु भगवान के एक चक्र का नाम। २-शिव। ३-अग्निपुत्र। ४-मछली। ५-जैनमतानुसार वर्त्तमान अवसर्पिणी के अट्ठारहवें अर्हत के पिता का नाम। ६-जैनों के नौ बलदेवों में से एक का नाम। ७-गिद्ध। ८-सुमेरु। वि० मनोरथ। देखने में सुन्दर।
सुदर्शनचक्र पुं० (सं) विष्णु का चक्र।
सुदर्शनचूर्ण पुं० (सं) वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।
सुदर्शन-पाणि पुं० (सं) विष्णु।
सुदामा पुं० (सं)१-श्रीकृष्ण के एक सहपाठी जो बहुत दरिद्र थे। २-कंस के माली का नाम। ३-एक पर्वत ४-समुद्र। ५-बादल। स्त्री० उत्तरी भारत की एक नदी। वि० खूब देने वाला।
सुदि स्त्री० (हि) दे० 'सुदी'।
सुदिन पुं० (सं) अच्छा या शुभ दिन।
सुदी स्त्री० (हि) चन्द्रमास का शुक्ल पक्ष।
सुदीपति स्त्री० (हि) दे० 'सुदीप्त'।
सुदीप्ति स्त्री० (सं) अधिक प्रकाश। खूब उजाला।
सुदीर्घ वि०(सं) बहुत लम्बा या विस्तृत। पुं० चिचड़ा
सुदुःसह वि० (सं) जिसको सहन करना कठिन हो।
सुदुर्लभ वि० (सं) जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो
सुदुष्कर वि० (सं) जो बहुत ही कठिन हो।
सुदुष्प्राप वि० (सं) जिसका पाना बहुत कठिन हो।
सुदुस्त्यज वि० (सं) जिसको छोड़ना या त्याग करना बहुत कठिन हो।
सुदूर वि० (सं) बहुत दूर। (फार)।
सुदूरपूर्व पुं० (सं) अति पूर्व के देश-चीन, जापान, आदि। (फार-ईस्ट)।
सुदृढ़ वि० (सं) खूब दृढ़ या मजबूत।
सुदृष्टि पुं० (सं) गिद्ध। स्त्री० उत्तम दृष्टि। वि० दूरदर्शी।
सुदेश पुं० (सं) १-उपयुक्त स्थान। २-सुन्दर देश। वि० सुन्दर।
सुदेस पुं० (हि) दे० 'सदेश'।
सुदेसी वि० (हि) दे० 'स्वदेशी'।
सुदौसी अव्य० (हि) शीघ्रतापूर्वक।
सुद्दा पुं० (अ) कड़ा और सूखा मल।
सुद्ध वि० (हि) दे० 'शुद्ध'।
सुद्धि स्त्री० (हि) दे० 'शुद्धि'।
सुधंग वि० (हि) अच्छा ढङ्ग।
सुध स्त्री० (हि) १-स्मृति। याद। २-चेतना। होश। ३-खबर पता। वि० (हि) दे० 'शुद्ध'।
सुधन वि० (सं) अमीर। बहुत धनी।
सुधना क्रि० (हि) १-ठीक किया जाना। २-शुद्ध किया जाना।
सुधन्वा वि० (सं) अच्छा धुरन्धर। पुं० १-विष्णु। २-विदुर। ३-विश्वकर्मा। ४-कुरु का एक पुत्र।
सुधबुध स्त्री० (हि) ज्ञान। चेतना। होशहवास।
सुधमना वि० (हि) १-जो होश में हो। २-सतर्क। सचेत।
सुधरना क्रि० (हि) १-दोष या त्रुटियां दूर करना। २-सस्कार होना। ३-बिगड़े हुए को बनाना।
सुधरवाना क्रि० (हि) १-दोष दूर करना। ठीक करवाना।
सुधराई स्त्री० (हि) सुधारने का काम या मजदूरी।
सुधर्म पुं०(सं) १-उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य। २-जैन तीर्थंकर महावीर जी के दस शिष्यों में से एक। वि० धर्मनिष्ठ। धर्मपरायण।
सुधां अव्य० (हि) समेत। साथ।
सुधांशु पुं० (सं) चन्द्रमा।

सुधांशु पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
सुधा स्त्री० (सं) १-अमृत। २-जल। ३-पृथ्वी। ४-दूध। ५-बिजली। ६-आंवला। ७-विष। ८-चूना ९-एक प्रकार का वृत्त। १०-पुत्री। ११-बधू। १२ मधु। १३-घर।
सुधाई स्त्री० (हि) १-सीधापन। २-शोधाई।
सुधाकंठ पुं० (सं) कोयल। कोकिल।
सुधाकर पुं० (स) चन्द्रमा।
सुधाकार पुं० (सं) सफेदी या चूना करने वाला। राज। मिस्त्री।
सुधाक्षालित वि० (सं) जिस पर सफेदी की हुई हो।
सुधागेह पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाघट पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाजीवी पुं० (सं) सफेदी करके निर्वाह करने वाला मजदूर।
सुधादीधिति पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाधर पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधाधवल वि० (सं) चूने के समान सफेद।
सुधाधवलित वि० (सं) सफेदी किया हुआ।
सुधाधी वि० (हि) सुधा या अमृत के समान।
सुधाना क्रि०(हि) १-ठीक करना। २-याद दिलाना।
सुधानिधि पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-समुद्र। ३-एक दंडकवृत्त।
सुधापाषाण पुं० (सं) खड़िया।
सुधाभवन पुं० (सं) पलस्तर किया हुआ मकान।
सुधाभित्ति स्त्री० (सं) वह दीवार जिस पर सफेदी की गई हो।
सुधाभुक् पुं० (सं) देवता।
सुधाभोजी पुं० (सं) अमृत भोजन करने वाले देवता
सुधामय वि० (सं) १-चूने का बना हुआ। २-अमृत से भरा हुआ। पुं० राजभवन।
सुधामयूख पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधार पुं०(हि) संस्कार। सुधारने की क्रिया या भाव
सुधारक पुं० (हि) १-संशोधक। सुधार करने वाला २-सामाजिक या धार्मिक सुधार के लिए प्रयत्न करने वाला।
सुधारना क्रि० (हि) दोष या बुराई दूर करना।
सुधार-न्यास पुं० (सं) वह समिति जो नगर की विकास योजनाएँ बनाकर उनके अनुसार नगर-सुधार या उन्नति के कार्य करती है। (इम्प्रूवमेंट-ट्रस्ट)।
सुधारश्मि पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधारस पुं० (स) १-अमृत। २-दूध।
सुधारा वि० (हि) सरल। सीधा।
सुधारालय पुं० (सं) वह कारागार जहां अपराधी बालक दण्ड भोगने तथा नैतिक दृष्टि से सुधारे जाने के लिए भेजे जाते हैं। (रिफार्मेटरी)।
सुधावर्ष पुं० (सं) अमृत वर्षा।
सुधावर्षी वि० (सं) अमृत बरसाने वाला। पुं० १-बुद्ध का एक नाम। २-ब्रह्मा।
सुधावास पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-खीरा।
सुधावृष्टि स्त्री० (सं) अमृत की वर्षा।
सुधाश्रवा पुं० (हि) अमृत की वर्षा करने वाला।
सुधासदन पुं० (सं) चन्द्रमा।
सुधासागर पुं० (सं) अमृत का समुद्र।
सुधासिंधु पुं० (सं) दे० 'सुधासागर'।
सुधासिक्त वि० (सं) अमृत से सींचा हुआ।
सुधि स्त्री० (हि) दे० 'सुध'।
सुधी वि० (स) अच्छी बुद्धि वाला। पुं० पण्डित व्यक्ति। स्त्री० सुबुद्धि।
सुधीर वि० (सं) जिसमें बहुत धैर्य हो।
सुधौत वि० (सं) अच्छी प्रकार से साफ किया हुआ या धोया हुआ।
सुनकिरवा पुं० (हि) एक प्रकार का कीड़ा।
सुनगुन स्त्री० (हि) १-सुराग। टोह। २-कानाफूसी।
सुनत वि० (सं) झुका हुआ। स्त्री० (हि) दे० 'सुन्नत'
सुनति पुं० (सं) एक दैत्य का नाम। स्त्री० (हि) दे० 'सुन्नत'।
सुनना क्रि० (हि) १-श्रवण करना। २-किसी की प्रार्थना पर ध्यान देना। ३-विचारार्थ दोनों पक्षों की बात सामने आने देना। ४-अपनी बुराई की बात, डांटफटकार आदि का श्रवण करना।
सुनबहरी स्त्री० (हि) फीलपा नामक रोग।
सुनयना स्त्री० (सं) १-जनक की पत्नी का नाम। २-स्त्री। औरत।
सुनरिया स्त्री० (हि) दे० 'सुनरी'।
सुनरी स्त्री० (हि) सुन्दर नारी।
सुनवाई स्त्री० (हि) १-अभियोग आदि का विचार के लिये सुना जाना। २-सुनने की क्रिया या भाव।
सुनवैया वि० (हि) सुनने वाला।
सुनसान वि० (हि) १-निर्जन। २-उजाड़। वीरान।
सुनहरा वि० (हि) दे० 'सुनहला'।
सुनहला वि० (हि) सोने के रंग का सा।
सुनहा पुं० (हि) कुत्ता।
सुनाई स्त्री० (हि) दे० 'सुनवाई'।
सुनाद पुं० (सं) शंख। वि० सुन्दर शब्द वाला।
सुनाना क्रि० (हि) १-श्रवण कराना। २-भला बुरा कहना। ३-जताना। ४-किसी को सम्बोधित करके कुछ कहना।
सुनाभ पुं० (सं) १-सुदर्शन चक्र। २-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३-एक मंत्र। वि० जिसकी नाभि सुन्दर हो।
सुनाभि वि० (सं) जिसकी नाभि सुन्दर हो।
सुनाम पुं० (सं) यश। ख्याति।
सुनामा वि० (सं) यशस्वी। कीर्तिशाली। पुं० कंस के

आठ भाइयों में से एक।
सुनार पुं० (हि) १-सोने चांदी के गहने बनाने वाला कारीगर। २-उक्त काम करने वालों की जाति पुं० (सं) १-कुतिया का दूध। २-सांप का अंडा।
सुनारी स्त्री० (हिं) १-सुनार का काम। २-सुनार की स्त्री।
सुनावनी स्त्री० (हिं) १-विदेश आदि से किसी आत्मीय की मृत्यु का समाचार आना। २-वह स्नान आदि कृत्य जो विदेश से किसी आत्मीय की की मृत्यु का समाचार आने पर होता है।
सुनासा स्त्री० (सं) सुन्दर नाक।
सुनासिक वि० (सं) सुन्दर नाक वाला।
सुनासीर पुं०(सं) १-देवता। २-इन्द्र।
सुनाहक अव्य० (हि) दे० 'नाहक'।
सुनिग्रह वि० (सं) जिस पर सहज में ही नियन्त्रण किया जा सके।
सुनिद्र वि० (स) जो अच्छी तरह सोया हो।
सुनिश्चय पुं० (सं) १-दृढ़ निश्चय। २-उत्तम निश्चय।
सुनिश्चित वि० (सं) पक्का। दृढ़तापूर्वक निश्चित।
सुनीति स्त्री० (सं) १-उत्तम नीति। २-ध्रुव भक्त की माता का नाम। पुं० शिव।
सुनेत्र पुं० (सं) १-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २-चकवा वि० जिसके नेत्र सुन्दर हों।
सुनैया वि० (हि) सुनने वाला।
सुनोबी पुं० (देश) एक प्रकार का घोड़ा।
सुन्न वि० (हि) निर्जीव। जड़वत्। पुं० सिफर। शून्य।
सुन्नत स्त्री० (अ) कुछ धर्मों में होने वाली एक रस्म। खतना। मुसलमानी।
सुन्नसान वि० (हि) दे० 'सुनसान'।
सुन्ना पुं० (हि) शून्य। सिफर।
सुन्नी पुं० (अ) मुसलमानों का एक संप्रदाय।
सुपंख वि० (सं) १-सुन्दर परों से युक्त। २-सुन्दर तीरों से युक्त।
सुपंथ पुं० (सं) उत्तम मार्ग। सन्मार्ग।
सुपक वि० (हि) दे० 'सुपक्व'।
सुपक्व वि० (सं) अच्छी तरह पका हुआ।
सुपच पुं० (हि) १-डोम। चांडाल। २-भंगी।
सुपठ वि० (सं) सरलता से पढ़ा जाने योग्य।
सुपत वि० (हि) मान वाला। प्रतिष्ठायुक्त।
सुपत्र वि० (सं) सुन्दर पत्तों वाला।
सुपत्थ पुं० (हि) दे० 'सुपथ'।
सुपथ पुं० (सं) १-सन्मार्ग। २-एक वर्णवृत्त। वि० समतल। हमवार।
सुपथ्य पुं० (सं) हितकर या अच्छा पथ।
सुपन पुं० (हि) दे० 'स्वप्न'।
सुपना पुं० (हि) दे० 'स्वपन'।
सुपनाना क्रि० (हिं) स्वपन दिखाना।
सुपरण पुं० (हि) दे० 'सुपर्ण'।
सुपरन पुं० (हि) दे० 'सुपर्ण'।
सुपर-रायल पुं० (अं) २२x२६ इञ्च के छपाई के कागज का नाप।
सुपरस पुं० (हि) दे० 'स्पर्श'।
सुपर्ण पुं० (सं) १-गरुड़। २-मुरगा। ३-किरण। ४-देवगन्धर्व। ५-सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। ६-सुन्दर पत्र या पत्ता। वि० १-सुन्दर परों वाला। २-सुन्दर पत्तों वाला।
सुपर्णक पुं० (सं) १-गरुड़। २-अमलतास। ३-सदापर्ण। वि० सुन्दर परों या पत्तों वाला।
सुपर्णी स्त्री० (सं) १-कमलिनी। २-गरुड़ की माता का नाम।
सुपर्णेय पुं० (सं) गरुड़।
सुपर्वा स्त्री० (सं) सफेद दूब। वि० १-जिसके जोड़े या गाँठ सुन्दर हों। २-सुन्दर अध्याय वाला। (ग्रन्थ)। पुं०(सं) १-देवता। २-शुभ मुहूर्त। ३-बाँस। ४-बाण। ५-धूआँ।
सुपात्र पुं० (सं) अच्छा पात्र। दान शिक्षा आदि लेने या कोई कार्य करने के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति।
सुपार वि० (सं) सरलता से पार होने योग्य।
सुपारग पुं० (सं) शाक्यमुनि। वि० उत्तम रूप से पार करने वाला।
सुपारण वि० (सं) जिसका सरलता से अध्ययन या पाठ किया जा सके।
सुपारी स्त्री० (हि) १-नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके छोटे,गोल फल काट कर पान के साथ खाये जाते हैं। २-लिंग का अग्रभाग।
सुपार्श्व वि०(सं) सुन्दर पार्श्व वाला। पुं० १-जैनियों के २४ तीर्थङ्करों में से एक। २-पाकर वृक्ष। ३-पारस। पीपल।
सुपास पुं० (देश) आराम। सुख।
सुपासी वि० (हि) सुख या आनन्द देने वाला।
सुपीन वि० (सं) बहुत छोटा या बड़ा।
सुपुत्र पुं० (सं) अच्छा और योग्य पुत्र।
सुपुत्रिका स्त्री० (सं) अच्छे पुत्र वाली।
सुपुरुष पुं० (सं) सुन्दर पुरुष।
सुपुर्द वि० (हि) दे० 'सुपर्द'।
सुपुष्करा स्त्री० (सं) स्थल कमलिनी।
सुपूत वि० (सं) अत्यंत पवित्र। वि० (हि) अच्छा या सुयोग्य (पुत्र)।
सुपूती स्त्री० (हि) अच्छे पुत्र वाली स्त्री।
सुपेत वि० (हि) सफेद।
सुपेती स्त्री० (हि) सफेदी।

सुपेद *वि०* (हिं) सफेद।
सुपेदी *स्त्री०* (हिं) १-ओढ़ने की रजाई। २-बिस्तर। ३-सफेदी।
सुपेली *स्त्री०* (हिं) छोटा सूप।
सुप्त *वि०*(सं) १-सोया हुआ। २-सोने के लिए लेटा हुआ। ३-सुस्त। मुंदा हुआ। (फूल)।
सुप्तक पुं० (सं) निद्रा। नींद।
सुप्तघातक *वि०* (सं) १-निद्रित अवस्था में वध करने वाला। २-खूँखार। हिंस्र।
सुप्तज्ञान पुं० (सं) स्वप्न।
सुप्तता *स्त्री०* (सं) १-निद्रा। नींद। २-सुप्त होने का भाव।
सुप्तत्व पुं० (सं) सुप्तता।
सुप्तप्रबुद्ध *वि०* (सं) जो अभी सोकर उठा हो।
सुप्तप्रलपित पुं०(सं) वह प्रलाप जो निद्रित अवस्था में किया जाय।
सुप्तवाक्य पुं० (सं) वह वाक्य या शब्द जो निद्रित अवस्था में कहे जाएँ
सुप्तविज्ञान पुं० (सं) स्वप्न। सपना।
सुप्तांग पुं०(सं) चेष्टारहित अंग।
सुप्ति *स्त्री०* (सं) १-नींद। निद्रा। २-ऊँघाई। ३-विश्वास। ४-सुप्तांगता।
सुप्तोत्थित *वि०* (सं) जो अभी सोकर उठा हो।
सुप्रज *वि०* (सं) उत्तम और अधिक संतान वाला।
सुप्रतिज्ञ *वि०* (सं) दृढ़प्रतिज्ञ।
सुप्रतिष्ठ *वि०* (सं) सुविख्यात। बहुत प्रसिद्ध।
सुप्रतिष्ठा *स्त्री०* (सं) १-अच्छी प्रतिष्ठा। २-एक वर्ण-वृत्त। ३-मंदिर या प्रतिमा आदि की स्थापना। ४-अभिषेक।
सुप्रतिष्ठित *वि०* (सं) जिसकी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा हो।
सुप्रयुक्त *वि०* (सं) ठीक प्रकार से प्रयोग में लाया

सुप्रलाप पुं० (सं) सुन्दर भाषण।
सुप्रसन्न पुं० (सं) कुबेर। *वि०* १-अत्यन्त निर्मल। २-हर्षित। ३-बहुत प्रसन्न।
सुप्रसव पुं० (सं) विना किसी कष्ट के होने वाला प्रसव।
सुप्रसिद्ध *वि०* (सं) सुविख्यात। बहुत प्रसिद्ध।
सुप्राप *वि०* (सं) जो सरलता से मिल सके। सुलभ।
सुप्राप्य *वि०* (सं) सुलभ।
सुप्रिया *स्त्री०* (सं) १-सोलह मात्राओं का एक वृत्त २-एक अप्सरा का नाम। ३-प्रिय स्त्री।
सुफल पुं० (सं) १-उत्तम फल या परिणाम। २-३-अनार। ४-मूँग। *वि०* १-सुफल। २-सुन्दर फल वाला (अस्त्र)।
सुफलक पुं० (सं) अक्रूर नामक यादव के पिता का नाम।
सुफलक सुत पुं० (सं) अक्रूर।
सुफेद *वि०* (हिं) दे० 'सफेद'।
सुबंत *वि०* (सं) (वह शब्द) जो प्रथमा से सप्तमी तक की विभक्तियों से युक्त हो।
सुबंतपद पुं० (सं) वह शब्द जिसमें कारक विभक्ति हों।
सुबंधु *वि०* (सं) जिसके उत्तम बन्धु या मित्र हों।
सुबरन पुं० (हिं) १-स्वर्ण। सोना। २-उत्तम रंग।
सुब *वि०* (सं) अत्यन्त बलवान। पुं० १-शिव। २-२-शकुनि के पिता का नाम। ३-श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम।
सुबस *वि०* (हिं) स्वाधीन। *अव्य०* आजादी से। स्वतंत्रतापूर्वक।
सुबह *स्त्री०* (अ) प्रातःकाल। सवेरा।
सुबहदम *अव्य०* (अ) बहुत तड़के। मुँह अँधेरे।
सुबहसुबह *अव्य०* (अ) बहुत तड़के।
सुबहान पुं० (अ) दे० 'सुभान'।
सुबास *स्त्री०* (हिं) सुगन्ध। अच्छी महक। पुं० १-सुन्दर वासस्थान। २-एक प्रकार का धान।
सुबासना *स्त्री०* (हिं) सुगन्ध। खुशबू। *क्रि०* महकना। सुवासित करना।
सुबासिक *वि०* (हिं) दे० 'सुवासित'।
सुबासित *वि०* (हिं) दे० 'सवासित'।
सुबाहु *वि०* (सं) सुन्दर या दृढ़ भुजाओं वाला। *स्त्री०* (हिं) १-सेना। फौज। २-एक अप्सरा। पुं० (सं) १-एक नागासुर। २-एक बोधिसत्व का नाम।
सुबाहु शत्रु पुं० (सं) श्रीरामचन्द्र।
सुबिस्ता पुं० (हिं) दे० 'सुभीता'।
सुबीज पुं० (सं) १-शिव। २-खसखस। पोस्तदाना। *वि०* उत्तम बीज वाला।
सुबीता पुं० (हिं) दे० 'सुभीता'।
सुबुक *वि०* (फा) १-सुन्दर। २-हलका। पुं० घोड़े की एक जाति।
सुबुकदस्त *वि०* (फा) शीघ्रता से काम करने वाला।
सुबुकदस्ती *स्त्री०* (फा) हाथ की फुर्ती।
सुबुद्धि *वि०* (सं) उत्तम बुद्धिवाला। *स्त्री०* उत्तम बुद्धि।
सुबू *स्त्री०* (हिं) दे० 'सुबह'।
सुबूत पुं० (हि) दे० 'सबूत'।
सुबोध *वि०* (सं) सरल। जो सरलता से समझ में सके।
सुभंग पुं० (सं) नारियल का पेड़।
सुभ *वि०* (हिं) दे० 'शुभ'।
सुभक्ष्य पुं० (सं) बढ़िया तथा स्वादिष्ट भोजन।
सुभग *वि०* (सं) १-सुन्दर। २-भाग्यवान। ३-प्रियतम। ४-सुखद।
सुभगा *वि०* (सं) १-सुन्दरी। २-सुहागिन। की

१-वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २-एक रागिनी। ३-बेला। ४-पांच वर्ष की कुमारी।
सुभग्ग वि० (हि) दे० 'सुभग'।
सुभट पुं० (सं) महायोद्धा।
सुभटवंत वि० (हि) बड़ा योद्धा।
सुभट्ट पुं० (सं) बहुत बड़ा विद्वान या पण्डित।
सुभद्र वि० (सं) १-सज्जन। भला। २-भाग्यवान। पुं० १-विष्णु। २-सौभाग्य। ३-मंगल। कल्याण
सुभद्रा स्त्री० (सं) १-दुर्गा का एक रूप। २-श्रीकृष्ण की बहन तथा अर्जुन की पत्नी का नाम।
सुभद्रेश पुं० (सं) अर्जुन।
सुभर वि० (हि) दे० 'शुभ्र'।
सुभाइ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'। अव्य० स्वभावतः
सुभाउ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभाग वि०(सं) भाग्यवान्। पुं० (हि) दे० 'सौभाग्य'
सुभागी वि० (हि) भाग्यशाली। भाग्यवान्।
सुभागीन वि० (हि) अच्छे भाग्य वाला।
सुभाग्य वि० (सं) अत्यंत भाग्यशाली। पुं० (देश) सौभाग्य।
सुभान अव्य० (प्र) धन्य। वाह-वाह।
सुभाना क्रि० (हि) भला जान पड़ता। शोभित होना
सुभानु पुं० (सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक संवत्सर। वि० उत्तम या सुन्दर प्रकाश से युक्त।
सुभाय पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभायक वि० (हि) स्वाभाविक। स्वभावतः।
सुभाव पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
सुभावित वि० (सं) उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध)।
सुभाषित वि० (सं) १-सुन्दर ढंग से कहा हुआ। २-अच्छा भाषण करने वाला। पुं० एक बुद्ध का नाम २-सुन्दर उक्ति।
सुभाषित और विनोद पुं०(हि) विलक्षण उत्तर तथा अनोखी बात कहने की क्षमता। (ह्यूमर एण्ड-विट)।
सुभाषी वि० (हि) मधुर बोलने वाला।
सुभास्वर वि० (सं) चमकदार। दीप्तिमान। पुं० पितरों का एक वर्ग।
सुभिक्ष पुं०(सं) ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न की उपज पर्याप्त हो। सुकाल।
सुभी वि० (हि) मंगलकारक। शुभकारक।
सुभीता पुं० (देश) १-सुअवसर। सुयोग। २-सुगमता। (कनवीनियेन्स)।
सुभुज वि० (सं) सुबाहु। सुन्दर भुजाओं वाला।
सुभूषित वि० (सं) उत्तम रूप से भूषित।
सुभोटी स्त्री० (हि) दे० 'शोभा'।
सुभ्र वि० (हि) दे० 'शुभ्र'।
सुभ्रू वि० (सं) दे० 'सुभ्र'।
सुभ्रू वि० (सं) जिसकी भौं सुन्दर हों। स्त्री० सुन्दर स्त्री।
सुमंगली स्त्री० (सं) विवाह में। सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।
सुमंत पुं० (हि) दे० 'सुमंत्र'।
सुमंत्र पुं०(सं) १-राजा दशरथ का मंत्री तथा सारथी २-आय-व्यय का प्रबन्ध करने वाला मन्त्री।
सुमंत्रित वि० (सं) जिसे अच्छी सलाह या मंत्रणा दी गई हो।
सुम पुं० (सं) १-पुष्प। २-चन्द्रमा। ३-आकाश। (फा) घोड़े या अन्य चौपायों के खुर।
सुमत वि० (सं) ज्ञानवान। बुद्धिमान।
सुमति स्त्री०(सं) १-अच्छी मति या बुद्धि। २-आपस का मेलजोल। ३-भक्ति। प्रार्थना। वि० अच्छी बुद्धिवाला।
सुमदोन पुं० (हि) वह दोना जो फूलों से भरा हो।
सुमधुर वि० (सं) बहुत मधुर या मीठा। पुं० एक प्रकार का शाक।
सुमध्यमा स्त्री० (सं) दे० 'सुमध्या'।
सुमध्या स्त्री० (सं) सुन्दर कमर वाली स्त्री।
सुमन पुं० (सं) १-देवता। २-ज्ञानी। ३-पुष्प। वि० १-सुन्दर। २-सहृदय।
सुमनचाप पुं० (सं) कामदेव।
सुमनमाल पुं० (हि) फूलों का हार।
सुमनराज पुं० (हि) इन्द्र।
सुमनस पुं०(सं) १-देवता। २-पंडित। ३-महात्मा। ४-पुष्प। फूल। वि० प्रसन्नचित्त।
सुमनस्क वि० (सं) सुखी। प्रसन्न।
सुमना स्त्री० (सं) १-चमेली। २-सेवती। ३-कैकेयी का असली नाम। ४-वीरव्रत की माता का नाम।
सुमनित स्त्री० (सं) सुन्दर मणियों से जड़ा हुआ।
सुमनोकस पुं० (सं) देवलोक। स्वर्ग।
सुमनौकस पुं० (सं) स्वर्ग। देवलोक।
सुमरन पुं० (हि) दे० 'स्मरण'।
सुमरना क्रि० (हि) १-स्मरण या ध्यान करना। २-नाम जपना।
सुमरनी स्त्री० (हि) जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।
सुमात्रा पुं० (हि) मलयद्वीपपुञ्ज का एक बड़ा द्वीप।
सुमानस वि० (सं) अच्छे मन का। सुहृदय।
सुमानी वि० (सं) स्वाभिमानी।
सुमार पुं० (हि) दे० 'शुमार'। वि० चुना हुआ।
सुमार्ग पुं० (सं) सन्मार्ग। सुपथ।
सुमाली पुं०(सं) १-सुकेश राक्षस के पुत्र का नाम। २-एक बानर नाम। (फा) एक अरब जाति।
सुमित्र पुं० (सं) १-अभिमन्यु के सारथी का नाम।

२-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। *वि०* उत्तम मित्रों वाला।
**सुमित्रा** *स्त्री०*(सं)१-लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम। २-मार्कण्डेय की माता का नाम।
**सुमित्रातनय** *पुं०* (सं) लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न।
**सुमित्रानन्दन** *पुं०* (सं) लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न।
**सुमिरन** *पुं०* (हि) दे० 'स्मरण'।
**सुमिरना** *क्रि०*(हि) दे० 'सुमरना'।
**सुमिरनिया** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुमरनी'।
**सुमुख** *वि०* (सं) १-सुन्दर मुख वाला। २-सुन्दर। ३-प्रसन्न। ४-अनुकूल। *पुं०* १-शिव। २-गणेश आचार्य। ४-राई।
**सुमुखी** *स्त्री०* (सं) १- सुन्दर मुख वाली स्त्री। २-दर्पण। ३-एक अप्सरा। ४-एक वर्णवृत्त। *वि०* सुन्दर मुख वाली।
**सुमृत** *स्त्री०* (हि) दे० 'स्मृति'।
**सुमृति** *स्त्री०* (हि) दे० 'स्मृति'।
**सुमेध** *वि०* (सं) उत्तम बुद्धिवाला। सुबुद्धि।
**सुमेधा** *वि०* (सं) दे० 'सुमेध'।
**सुमेरु** *पुं०*(सं) पुराणवर्णित एक कल्पित पर्वत जो सब पर्वतों का राजा तथा सोने का बताया गया है। जप करने की माला का ऊपर वाला दाना। ३-उत्तरी ध्रुव। ४-एक छंद। *वि०* बहुत ऊंचा। २-बहुत सुन्दर।
**सुयं** *अव्य०* (हि) दे० 'स्वयं'।
**सुयंवर** *पुं०* (हि) दे० 'स्वयंवर'।
**सुयश** *पुं०* (सं) सुकीर्त्ति। सुनाम। *वि०* यशस्वी।
**सुयशा** *वि०* (सं) अच्छे यश वाला।
**सुयुक्ति** *स्त्री०* (सं) सुन्दर या अच्छा उपाय।
**सुयोग** *पुं०* (सं) अच्छा योग। सुअवसर।
**सुयोग्य** *वि०* (सं) बहुत योग्य। काबिल।
**सुयोधन** *पुं०* (सं) दुर्योधन।
**सुरंग** *वि०* (सं) १-सुन्दर रङ्गवाला। २-सुडौल। ३-रसपूर्ण। *पुं०* १-शिंगरफ। २-नारङ्गी। ३-रङ्ग भेद के अनुसार एक प्रकार का घोड़ा। *स्त्री०* (हि) १-जमीन खोद कर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। २-जमीन के नीचे खोद कर बनाई हुई नाली जिसमें बारूद भर कर किले की दीवट आदि उड़ाते हैं। ३-एक यन्त्र जिसके द्वारा समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पैंदे में छेद-कर उन्हें डुबोया जाता है। ४-एक यन्त्र-जिसे रास्ते में बिछाकर शत्रुओं का नाश किया जाता है। (माइन)। ५-सेंध।
**सुरंगप्रसारक-पोत** *पुं०*(हि)शत्रु के आक्रमण को रोकने के लिए समुद्र में बारूद की सुरंगें बिछाने का पोत (माइनलेयर)।
**सुरंगमार्जक-पोत** *पुं०*(हि) समुद्र में बिछाई हुई बारूद की सुरंगों को हटाने वाला पोत। (माइनस्वीपर)।
**सुर** *पुं०* (सं) १-देवता। २-सूर्य। ३-पण्डित। ४-मुनि। (हि) स्वर। ध्वनि।
**सुरकंत** *पुं०* (हि) इन्द्र।
**सुरकना** *क्रि०* (हि) दे० 'सुड़कना'।
**सुरकानन** *पुं०* (सं) वह बन जिसमें देवता विहार करते हैं।
**सुरकारु** *पुं०* (सं) विश्वकर्मा।
**सुरकार्मुक** *पुं०* (सं) इन्द्रधनुष।
**सुरकुदाव** *पुं०* (हि) धोखा देने के लिए स्वर बदल-कर बोलना।
**सुरक्त** *वि०* (सं) १-गहरे लाल रङ्ग का। २-गाढ़ा रंगा हुआ। ३-बहुत सुंदर। ४-अनुरक्त।
**सुरक्षण** *पुं०* (सं) अच्छी प्रकार से रक्षा करने का काम।
**सुरक्षा** *स्त्री०*(सं) अच्छी तरह से की जाने वाली रक्षा रखवाली। हिफाजत।
**सुरक्षापरिषद्** *स्त्री०* (सं) संयुक्त राष्ट्र संघ की वह कार्यपालिका परिषद् जिसमें अमेरिका,ब्रिटेन,फ्रांस, रूस तथा चीन देशों के अतिरिक्त कुछ अन्य देश भी सदस्य होते हैं और जिसका उद्देश्य विश्व शांति बनाए रखना होता है। (सिक्यूरिटी काउन्सिल)।
**सुरक्षित** *वि०* (सं) जिसकी ठीक प्रकार से रक्षा की गई हो।
**सुरक्षित कोष्ठक** *पुं०* (सं) किसी बैंक या अधिकोष के सुरक्षित कमरे में बने वह कोष्ठक या खाने जिसमें लोग अपने गहने तथा बहुमूल्य वस्तुएँ सुरक्षा के लिये बैंक को कुछ वार्षिक रकम देकर रखते हैं। (सेफ्टी वाल्ट)।
**सुरख** *वि०* (हि) दे० 'सुर्ख'।
**सुरखा** *वि०* (हि) दे० 'सुर्खा'।
**सुरखाब** *पुं०* (फा) चकवा नामक पक्षी।
**सुरखिया** *स्त्री०* (हि) लाल गरदन वाला एक पक्षी।
**सुरखी** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुर्खी'।
**सुरग** *पुं०* (हि) दे० 'स्वर्ग'।
**सुरगज** *पुं०* (सं) इन्द्र का हाथी।
**सुरगाय** *स्त्री०* (हि) कामधेनु।
**सुरगिरि** *पुं०* (सं) सुमेरु पर्वत।
**सुरगुरु** *पुं०* (सं) बृहस्पति जो देवताओं के गुरु माने जाते हैं।
**सुरगैया** *स्त्री०* (हि) कामधेनु।
**सुरचाप** *पुं०* (सं) इन्द्रधनुष।
**सुरच्छन** *पुं०* दे० 'सुरक्षण'।
**सुरज** *पुं०* (हि) दे० 'सूर्य'। *वि०* (सं) (वह फूल) जिसमें उत्तम पराग हो।
**सुरजन** *पुं०* (सं) देवताओं का वर्ग या समूह। *वि०* १-चतुर। चालाक। २-सज्जन।

सुरझन स्त्री० (हिं) दे० 'सुलझन'।
सुरझना क्रि० (हिं) दे० 'सुलझना'।
सुरझाना क्रि० (हिं) दे० 'सुलझाना'।
सुरझावना क्रि० (हिं) दे० 'सुलझाना'।
सुरत पुं० (सं) १-संभोग। मैथुन। २-एक बौद्ध भिक्षु। स्त्री० (हिं) याद। ध्यान।
सुरतक्रीड़ा स्त्री० (सं) सम्भोग। मैथुन।
सुरतकेलि स्त्री० (सं) काम क्रीड़ा।
सुरतगुप्ता स्त्री० (सं) दे० 'सुरतगोपना'।
सुरतगोपना स्त्री० (सं) काम क्रीड़ा के चिह्न छिपाने वाली स्त्री।
सुरतग्लानि स्त्री०(सं) रति से उत्पन्न ग्लानि या शिथिलता।
सुर-तरंगिणी स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरतरु पुं० (सं) देवदारु।
सुरता स्त्री० (सं) १-देवत्व। २-मैथुन से प्राप्त आनन्द। ३-एक अप्सरा। स्त्री० (हिं) चिन्ता। २-चेत। सुधि। वि० (हिं) चतुर। समझदार।
सुरतात पुं० (सं) १-कश्यप जो देवताओं के पिता थे २-इन्द्र।
सुरतान पुं० (सं) दे० 'सुलतान'।
सुरति स्त्री०(हिं) १-कामकेलि। २-चेत। स्मरण। ३-सुरत।
सुरतिगोपना स्त्री० (सं) वह नायिका जो कामकेलि करके अपनी सखियों से छिपाती हो।
सुरतिवंत वि० (हिं) कामातुर।
सुरती स्त्री० (हिं) सिगरेट, बीड़ी में पिया जाने वाला या पान के साथ खाया जाने वाला तम्बाकू।
सुरत्न पुं० (सं) १-स्वर्ण। २-माणिक्य। वि० १-सर्वश्रेष्ठ। २-उत्तम रत्नों वाला।
सुरत्राण पुं० (हिं) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-श्रीकृष्ण
सुरत्राता पुं० (हिं) दे० 'सुरत्राण'।
सुरथा स्त्री०(सं)१-एक अप्सरा। २-पुराणों में वर्णित एक नदी।
सुरथाकार पुं० (सं) एक वर्ष।
सुरदार वि० (हिं) सुरीले कण्ठ वाला।
सुरद्रुम पुं० (सं) १-कल्पवृक्ष। २-देवदारु।
सुरद्विट पुं० (सं) १-राहु। २-असुर।
सुरधाम पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरधुनी स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरधेनु स्त्री० (सं) कामधेनु।
सुरनदी स्त्री० (सं) गंगा। आकाशगंगा।
सुरनाथ पुं० (सं) इन्द्र।
सुरनायक पुं० (सं) इन्द्र।
सुरनारी स्त्री० (सं) देवबाला। देवांगना।
सुरनाह पुं० (हिं) इन्द्र।
सुरनिम्नगा स्त्री० (सं) गंगा।
सुरनिर्झरिणी स्त्री० (सं) आकाशगंगा।
सुरप पुं० (हिं) इन्द्र।
सुरपति पुं० (सं) १-इन्द्र। २-विष्णु।
सुरपतितनय पुं० (सं) १-अर्जुन। २-जयन्त।
सुरपथ पुं० (सं) आकाश।
सुरपर्वत पुं० (सं) सुमेरु।
सुरपादप पुं० (सं) कल्पतरु।
सुरपाल पुं० (सं) इन्द्र।
सुरपालक पुं० (सं) इन्द्र।
सुरपुर पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरपुरी स्त्री० (सं) अमरावती।
सुरपुरोधा पुं० (सं) बृहस्पति।
सुरप्रिया स्त्री० (सं) १-एक अप्सरा। २-चमेली।
सुरफाकताल पुं० (हिं) मृदंग की एक ताल।
सुरबहार पुं० (हिं) सितार की तरह का एक वाद्ययंत्र
सुरबाला स्त्री० (सं) देवता की स्त्री या कन्या। देवांगना।
सुरबुली स्त्री० (हिं) एक पौधा जिसकी जड़ से एक प्रकार का सुन्दर लाल रङ्ग निकलता है।
सुरबृच्छ पुं० (हिं) दे० 'सुरवृक्ष'।
सुरबेल स्त्री० (हिं) कल्पलता।
सुरभंग पुं० (हिं) दे० 'स्वरभंग।
सुरभवन पुं० (सं) १-मंदिर। २-अमरावती।
सुरभान पुं० (हिं) १-इन्द्र। २-सूर्य।
सुरभि स्त्री० (सं) १-गाय। २-पृथ्वी। ३-तुलसी। ४-सुगन्ध। ५-सुरा। ६-सलई। वि० १-सुवासित २-श्रेष्ठ। ३-सदाचारी। पुं० (सं) १-स्वर्ण। २-२-वसंतकाल। ३-गंधक। ४-राल। ५-सफेद कीकर
सुरभिचूर्ण पुं० (सं) वह बुकनी या चूरा जिसमें खुशबू मिली हुई हो।
सुरभित वि० (सं) सुवासित। सुगंधित।
सुरभितनय पुं० (सं) बैल। सांड।
सुरभिमास पुं० (सं) १-वसंत। २-चैत का महीना।
सुरभिमान वि० (सं) जिसमें सुगन्ध हो।
सुरभिमुख पुं० (सं) वसंत का आगमन।
सुरभिषक् पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
सुरभिसमय पुं० (सं) वसंत।
सुरभी स्त्री० (सं) १-सुगन्धी। २-गाय। ३-चन्दन। ४-वनतुलसी।
सुरभूप पुं० (सं) १-इन्द्र। विष्णु।
सुरभूरुह पुं० (सं) १-कल्पतरु। २-देवदारु।
सुरभोग पुं० (सं) अमृत।
सुरभौन पुं०(हिं) दे० 'सुरभवन'।
सुरमई वि० (फा) सुरमे के रङ्ग का। हलका नीला। पुं० १-हलका नीला रङ्ग। २-इस रङ्ग की कोई वस्तु। ३-इस रङ्ग का घोड़ा। स्त्री० (सं) एक प्रकार की चिड़िया।

सुरमणि पुं० (सं) चिंतामणि।
सुरमृत्तिका स्त्री० (सं) गोपीचन्दन।
सुरमा पुं० (फा) एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आंखों में अंजन की तरह लगाते हैं।
सुरमाकश वि० (फा) सुरमा लगाने वाला।
सुरमादान पुं० (फा) दे० 'सुरमादानी'।
सुरमादानी स्त्री० (फा) एक विशेष प्रकार का पात्र जिसमें सुरमा रखा जाता है।
सुरमै वि० (हिं) दे० 'सरमई'।
सुरमौर पुं० (हिं) विष्णु।
सुरम्य वि० (सं) अत्यंत मनोहर। परम सुन्दर और रमणीक।
सुरयुवति स्त्री० (सं) अप्सरा।
सुरयोषित स्त्री० (सं) अप्सरा।
सुरराई पुं० (हिं) इन्द्र।
सुरराज पुं० (हिं) इन्द्र।
सुरराव पुं० (हिं) इन्द्र।
सुररिपु पुं० (सं) राक्षस।
सुररुख पुं० (हिं) कल्पवृक्ष।
सुरर्षि पुं० (सं) देवर्षि।
सुरलता स्त्री० (सं) बड़ी मालकंगनी।
सुरली स्त्री० (हिं) सुन्दर क्रीड़ा।
सुरलोक पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरलोकसुन्दरी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-अप्सरा।
सुरवधू स्त्री० (सं) देवाङ्गना।
सुरवन पुं० (सं) देवोद्यान।
सुरवल्लभा स्त्री- (सं) सफेद दूब।
सुरवाणि स्त्री० (सं) देववाणी। संस्कृत भाषा।
सुरवाल पुं० (फा) पायजामा।
सुरवास पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरवाहिनी स्त्री० (सं) गंगा।
सुरविटप पुं० (सं) कल्पवृक्ष।
सुरविलासिनी स्त्री० (सं) अप्सरा।
सुरवीथी स्त्री० (सं) नक्षत्रों का मार्ग।
सुरवी पुं० (सं) इन्द्र।
सुरवृक्ष पुं० (सं) कल्पतरु।
सुरवैद्य पुं० (सं) अश्विनीकुमार।
सुरवैरी पुं० (सं) असुर। राक्षस।
सुरशत्रु पुं० (सं) असुर।
सुरशाखी पुं० (सं) कल्पवृक्ष।
सरशिल्पी पुं० (सं) विश्वकर्मा।
सुरश्रेष्ठ पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव। ३-गणेश। ४-इन्द्र। ५-वह जो देवताओं से श्रेष्ठ हो।
सुरस वि० (सं) १-रसीला। सरस। २-सुन्दर। ३ मधुर।
सुरसती स्त्री० (हिं) १-सरस्वती। २-एक प्रकार की नाव।
सुरसदन पुं० (सं) 'स्वर्ग'।
सुरसद्म पुं० (सं) स्वर्ग।
सुरसरि स्त्री० (हिं) १-गङ्गा। २-गोदावरी।
सुरसरिता स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरसरित् स्त्री० (सं) गंगा।
सुरसरित्सुत पुं० (सं) भीष्म।
सुरसा स्त्री० (सं) १-एक अप्सरा। २-एक प्रसिद्ध नाग माता। ३-तुलसी। ४-दुर्गा। ५-अंकुश के नीचे का नोकदार भाग।
सुरसाई पुं० (हिं) १-इन्द्र। २-शिव।
सुरसाल वि० (हिं) सुरपीड़क।
सुरसाहब पुं० (हिं) १-विष्णु। २-इन्द्र।
सुरसिंगार पुं० (हिं) एक वाद्ययंत्र।
सुरसिंधु स्त्री० (सं) गङ्गा।
सुरसुंदरी स्त्री० (सं) १-दुर्गा। २-अप्सरा। ३-देवकन्या।
सुरसुरभी स्त्री० (सं) कामधेनु।
सुरसुराना क्रि० (हिं) १-कीड़ों आदि का रेंगना। २-हलकी खुजली होना या उत्पन्न करना।
सुरसुराहट स्त्री० (हिं) १-सुरसुर होने का भाव। २-खुजलाहट। गुदगुदी।
सुरसुरी स्त्री० (हिं) १-सुरसुराहट। २-चावल तथा गेहूँ में लगने वाला एक कीड़ा।
सुरसेनप पुं० (हिं) कार्त्तिकेय।
सुरसेना स्त्री० देवताओं की सेना।
सुरसैयाँ पुं० (हिं) इन्द्र।
सुरसैनी स्त्री० (हिं) सुरशायनी।
सुरस्त्री स्त्री० (सं) अप्सरा।
सुरस्रोतस्विनी स्त्री० (सं) गङ्गा,।
सुरस्वामी पुं० (सं) १-विष्णु। २-शिव। ३-इन्द्र।
सुरहना क्रि० (हिं) घाव का भरना या सूख जाना।
सुरहरा वि० (हिं) जिसमें सुरसुर का शब्द हो।
सुरही स्त्री० (हिं) १-सोलह चित्ती कौड़ियां जिनसे जूआ खेला जाता है। २-उक्त कौड़ियों से होने वाला जूआ। ३-एक प्रकार की घास।
सुरांगना स्त्री० (सं) १-देवांगना। २-अप्सरा।
सुरा स्त्री०(सं) १-मद्य। मदिरा। २-जल। पानी। ३ पीने का बरतन।
सुराई स्त्री०(हिं) शूरता। वीरता।
सुराकार पुं० (सं) शराब बनाने वाला। कलाल।
सुराकुंभ पुं० (सं) मदिरा रखने का घड़ा।
सुराख पुं० (फा) छेद। छिद्र। पुं० दे० 'सुराग'।
सुराग पुं० (अ) षड्यंत्र, अपराध आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता। टोह। पुं० (हिं) १-प्रगाढ़ प्रेम। २-सुन्दर राग।
सुरागाय स्त्री० (हिं) एक प्रकार की जङ्गली गाय

जिसकी पूँछ का चमर बनाया जाता है।
सुरागार पुं० (सं) १-शराबखाना। २-देवगृह।
सुरागृह पुं० (सं) शराबखाना।
सुराघट पुं० (सं) सुराकुम्भ।
सुराचार्य पु० (सं) वृहस्पति।
सुराज पुं० (हि) दे० 'स्वराज्य', 'सुराज्य'।
सुराजा पुं० (हि) १-अच्छा राजा। २-सुराज्य।
सुराजीव पुं० (सं) विष्णु।
सुराजीवी पुं० (सं) कलाल। शराब बनाने वाला।
सुराज्य पुं० (सं) अच्छा तथा सुखद राज्य या शासन पुं० (हि) दे० 'स्वराज्य'।
सुराधानी स्त्री० (सं) वह गगरी जिसमें मदिरा रखी जाती है।
सुराधिप पुं० (सं) इन्द्र।
सुराधीश पुं० (सं) इन्द्र।
सुरानीक पु० (सं) देवताओं की सेना।
सुराप वि० (स) १-शराबी। २-ज्ञानी। बुद्धिमान।
सुरापगा स्त्री० (सं) गङ्गा नदी।
सुरापात्र पुं०(सं) मदिरा पीने या रखने का बरतन।
सुरापान पुं० (सं) १-मदिरा पीना। २-मदिरापान के समय साथ खाये जाने वाले पदार्थ।
सुरापीत वि० (स) जिसने शराब पी हुई हो।
सुराप्रिय वि० (सं) जिसे शराब की लत हो। जिसे सुरा बहुत प्रिय हो।
सुराब्धि पुं० (स) सुरा का समुद्र।
सुराभांड पुं० (स) सुरापात्र।
सुराभाजन पुं० (सं) मदिरा रखने का बरतन।
सुरामंड पुं० (सं) मदिरा में खमीर उत्पन्न होने के कारण पड़े हुए झाग।
सुरामत्त वि० (सं) मदिरा के नशे में चूर। मदमस्त।
सुरामद पुं० (सं) मदिरा का नशा।
सुराय पुं० (हि) अच्छा राज।
सुरायुद्ध पुं० (सं) देवताओं का अस्त्र।
सुरारि पुं० (सं) १-राक्षस। २-एक दैत्य का नाम।
सुरारिहंता पुं० (स) विष्णु।
सुरारिहा पुं० (सं) शिव।
सुरार्चन पुं० (सं) देवपूजा।
सुरालय पुं० (सं) १-स्वर्ग। २-देव मन्दिर। ३-मदिरालय।
सुराव पुं० (सं) १-उत्तम ध्वनि। २-एक प्रकार का घोड़ा।
सुरावास पुं० (सं) सुमेरु।
सुराश्रय पुं० (सं) मेरु पर्वत।
सुरासमुद्र पुं० (सं) दे० 'सुराब्धि'।
सुरासार पुं० (सं) कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भबके की सहायता से निकाला हुआ मादक तरल पदार्थ जो मदिरा बनाने तथा रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है। शराब। (अल्कोहल)।
सुरासुर पुं० (स) देवता और दानव।
सुराही स्त्री०(अ) १-धातु, मिट्टी आदि का जल रखने का पात्र जिसका मुख नली के आकार का दूर तक निकला होता है। २-सोने चांदी आदि का बना हुआ लम्बोतरा टुकड़ा। ३-पान के आकार की कपड़े की काट। ४-हुक्के के नेचे का चिलम रखने वाला भाग।
सुराहीदार वि०(अ) सुराही की तरह गोल तथा लम्बोतरा।
सुराहीदार-गरदन स्त्री० (अ) सुन्दर तथा तथा लम्बी गरदन।
सुराहीनुमा वि० (अ) सुराही के आकार का।
सुरी स्त्री० (सं) देवांगना।
सुरीला वि० (हि) मधुर स्वर वाला। बोलने, गाने आदि में जिसका स्वर मीठा हो।
सुरुख वि० (हि) १-अनुकूल। प्रसन्न रह कर दया करने वाला। २-स्वरूप। ३-लाल। सुर्ख।
सुरुखरू वि० (हि) दे० 'सुर्खरू'।
सुरुचि स्त्री० (सं) १-उत्तम रुचि। २-बहुत प्रसन्नता ३-ध्रुव की विमाता का नाम। वि० १-स्वाधीन। २-जिसकी रुचि उत्तम हो।
सुरुज वि० (सं) बहुत बीमार। पुं० (हि) सूर्य।
सुरुजमुखी पुं० (हि) दे० 'सूर्यमुखी'।
सुरूप वि० (सं) १-सुन्दर आकृति वाला। २-सुन्दर
सुरूर पुं०(अ) १-हलका नशा। मादकता। २-खुमार आनन्द।
सुरेंद्र पुं० (सं) १-इन्द्र। २-राजा।
सुरेंद्रगोप पुं० (सं) बीरबहूटी।
सुरेंद्रचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष।
सुरेश पुं० (सं) १-शिव। २-इन्द्र। ३-विष्णु। ४-श्रीकृष्ण।
सुरेस पुं० (हि) दे० 'सुरेश'।
सुरै स्त्री० (देश) एक प्रकार की अनिष्टकारी घास। (डिं) गाय।
सुरैत स्त्री० (हि) रखेली। बिना विवाह किये घर में रखी हुई स्त्री।
सुरैतवाल पुं० (हि) सुरैत का लड़का।
सुरैतिन स्त्री० (हि) दे० 'सुरैत'।
सुरोचि वि० (हि) सुन्दर।
सुरोपम वि० (स) देवता के समान। पूज्य।
सुर्ख वि० (फा) लाल। लाल वर्ण का। पुं० गहरा लाल रंग।
सुर्खपोश वि०(फा)जो लाल वस्त्र को धारण किये हुए हो।
सुर्खरू वि० (फा) १-तेजस्वी। २-प्रतिष्ठित। ३-काम में सफलता मिलने के कारण जिसके मुख पर लाली

आ गई हो।
**सुर्खसर** पुं० (फा) दे० 'सुर्खसार'।
**सुर्खसार** पु० (फा) १-एक प्रकार की लाल रंग के सिर वाली चिड़िया। २-ईरानी।
**सुर्खसफेद** पु० (फा) १-लाली लिए हुए गोरा रंग। २-सोना चांदी। *वि०* सुन्दर।
**सुर्खा** पुं० (फा) १-आंख में होने वाली लाली। २-लाल रंग का घोड़ा। ३-लाल रंग का कबूतर।
**सुर्खाब** पुं० (फा) चक्रवाक। चकवा-चकवी।
**सुर्खी** स्त्री० (फा) १-ललाई। लालिमा। २-लेखादि २-शीर्षक। ३-खून। लहू। रक्त। ४-दे० 'सुरखी'
**सुर्खीमायल** *वि०* (फा) हलके लाल रंग का।
**सुर्ता** *वि०* (हि) समझदार। होशियार।
**सुर्ती** स्त्री० (हि) दे० 'सुरती'।
**सुलंक** पुं० (हि) दे० 'सोलंकी'।
**सुलंकी** पु० (हि) दे० 'सोलंकी'।
**सुलक्ष** *वि०* (सं) दे० 'सुलक्षण'।
**सुलक्षण** *वि०*(सं) १-अच्छे लक्षणों वाला। २-भाग्यवान। पु० १-शुभ लक्षण। २-अच्छे चिह्न। ३-एक प्रकार का छन्द।
**सुलक्षणा** स्त्री० (सं) पार्वती की एक सखी का नाम। *वि०* शुभ या अच्छे लक्षण वाली।
**सुलग** अव्य० (हि) समीप। पास। निकट।
**सुलगन** स्त्री० (हि) सुलगने की क्रिया या भाव।
**सुलगना** क्रि० (हि) जलना। दहकना। अत्यधिक दुःखी होना।
**सुलगाना** क्रि० (हि) १दहकाना। जलाना। २-सतप्त या दुखी काम करना।
**सुलच्छन** *वि०* (हि) दे० 'सुलक्षण'।
**सुलच्छनी** *वि०* (हि) अच्छे लक्षणों वाली।
**सुलछ** *वि०* (हि) सुन्दर।
**सुलझन** स्त्री० (हि) सुलझाव। सुलझाने की क्रिया या भाव।
**सुलझाना** क्रि० (हि) उलझन या जटिलता को दूर करना।
**सुलझाव** पुं० (हि) सुलझना। सुलझाने की क्रिया या भाव।
**सुलटा** *वि०* (हि) सीधा। उलटे का विपरीत।
**सुलतान** पु० (अ) बादशाह। महाराज।
**सुलताना** स्त्री० (अ) १-महारानी। मलिका। २-सुलतान की मां।
**सुलतानाचंपा** पुं० (अ) पुन्नाग नामक वृक्ष।
**सुलतानी** स्त्री० (फा) १-बादशाही। राज्य। २-एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। *वि०* लाल रङ्ग का
**सुलतानीबानात** स्त्री० (फा) एक प्रकार की बढ़िया बानात।
**सुलतानीबुलबुल** स्त्री० (फा) एक प्रकार की बुलबुल।
**सुलप** *वि०* (हि) १-स्वल्प। २-मन्द। पुं० सुन्दर आलाप।
**सुलफ** *वि०* (हि) १-लचीला। २-नाजुक। कोमल।
**सुलफा** पु०(हि) १-सूखा तम्बाकू जो गांजे के समान चिलम में पिया जाता है। २-चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाने वाला तम्बाकू। चरस।
**सुलफेबाज** *वि०* (हि) चरस या गाजा पीने वाला।
**सुलभ** *वि०* (सं) सहज में मिलने वाला। २-सरल। ३-साधारण। ४-उपयोगी। पु० अग्निहोत्र की अग्नि।
**सुलभमुद्रा** स्त्री० (स) किसी देश की वह मुद्रा जो अन्य देशों में माल आदि भेजने के कारण उन देशों में अधिक मात्रा में इकट्ठी हो गई हो तथा जिससे उन देशों से सुगमता से आवश्यक माल मंगाया जा सकता हो। (सापट करेंसी)।
**सुलभमुद्राक्षेत्र** पु०(सं) वह क्षेत्र जहां से सुलभ मुद्रा प्राप्त हो सकती है (सापटकरेंसी एरिया)।
**सुलभ्य** *वि०* (सं) सहज में प्राप्त होने वाला।
**सुललित** *वि०* (सं) अत्यन्त सुन्दर। अति ललित।
**सुलह** स्त्री० (फा) १-मेल। मिलाप। २-लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर होने वाला मेल। सन्धि।
**सुलहकुल** *वि०* (फा) सबके साथ मेल रखने वाला।
**सुलहनामा** पु० (फा) वह पत्र जिस पर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों।
**सुलाखना** क्रि० (हि) सोने या चांदी को तपा कर परखना।
**सुलागना** क्रि० (हि) दे० 'सुलगाना'।
**सुलाना** क्रि० (हि) १-किसी को सोने में प्रवृत्त करना. २-लिटाना। डाल देना।
**सुलाह** स्त्री० (हि)दे० 'सुलह'।
**सुलिपि** स्त्री० (सं) साफ तथा उत्तम लिपि।
**सुलूक** पुं० (अ) १-अच्छा बरताव या व्यवहार। २-प्रेम। ३-ईश्वर के प्रति अनुराग।
**सुलेख** पुं० (सं) सुन्दर लिखावट।
**सुलेखक** पु० (सं) अच्छा लेखक।
**सुलेमाँ** पुं० (फा) १-यहूदियों का बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २-एक पहाड़।
**सुलेमान** पुं० (फा) दे० 'सुलेमाँ'।
**सुलोक** पु० (स) स्वर्ग।
**सुलोचन** *वि०* (सं) सुनेत्र। जिसकी आंखें सुन्दर हों पु० (सं) १-हिरण। २-चकोर।
**सुलोचना** स्त्री० (सं) १-रावण पुत्र मेघनाद की पत्नी का नाम। २-अप्सरा। ३-राजा माधव की स्त्री का नाम।
**सुलोचनी** *वि०* (हि) सुन्दर आंखों वाली।
**सुलोम** *वि०* (सं) जिसके सुन्दर लोम या रोएँ हो।
**सुलोहित** पुं० (सं) सुन्दर रक्तवर्ण। सुन्दर लाल रंग

वि० सुन्दर लाल रंग वाला ।
सुब पु० (हि) पुत्र ।
सुवक्ता पु० (हि) अच्छा व्याख्यान देने वाला ।
सुवक्त्र पु० (सं) १-शिव । २-वनतुलसी । वि० सुन्दर मुँह वाला ।
सुवक्षा स्त्री० (सं) विभीषण की माता । वि० चौड़ी छाती वाला । २-सुन्दर वचन ।
सुवच वि० (सं) १-मिष्टभाषी । २-सुन्दर बोलने वाला । पु० सुन्दर वचन ।
सुवटा पु० (हि) दे० 'सुअटा' ।
सुवदन वि० (सं) जिसका मुख सुन्दर हो । पु० वन-तुलसी ।
सुवदना स्त्री० (सं) सुन्दर स्त्री ।
सुवन पु० (सं) १-सूर्य । २-अग्नि । ३-चन्द्रमा । पु० (हि) दे० 'सुअन' ।
सुवना पु० (हि) सुग्गा । तोता ।
सुवनारा पु० (हि) दे० 'सुअन' ।
सुवपु वि० (सं) सुन्दर शरीर वाला ।
सुवरण पु० (हि) दे० 'स्वर्ण' ।
सुवर्चक पु० (सं) १-सज्जी । २-एक प्राचीन ऋषि का नाम ।
सुवर्चल पु० (सं) १-काला नमक । २-एक प्राचीन देश ।
सुवर्चला स्त्री० (सं) १-सूर्य की पत्नी का नाम । २-ब्राह्मी । ३-तीसी ।
सुवर्चस पु० (सं) शिव । वि० कांतियुक्त ।
सुवर्चस्क वि० (सं) १-चमकदार । २-कांतियुक्त ।
सुवर्चिक पु० (सं) सज्जी ।
सुवर्ण वि० (सं) १-सोने का । २-सुन्दरवर्ण या रङ्ग का । पु० सोना । स्वर्ण । २-एक माशे की एक पुरानी मुद्रा । ३-सोलह माशे का एक मान । ४-धन सम्पत्ति । ५-धतूरा । ६-एक वृत्त का नाम ।
सुवर्णकदली स्त्री० (सं) चम्पा-केला ।
सुवर्णकमल पु० (सं) लाल कमल ।
सुवर्णकरनी स्त्री० (हि) एक प्रकार की जड़ी ।
सुवर्णकार पु० (सं) स्वर्णकार । सुनार ।
सुवर्णकृत् पु० (सं) सुनार ।
सुवर्णगर्भा स्त्री० (सं) वह भूमि जिसमें सोना हो । वि० सोने की खान वाली ।
सुवर्णगिरि पु० (सं) राजगृह के एक पर्वत का नाम ।
सुवर्णगैरिक पु० (सं) लाल गेरू ।
सुवर्णद्वीप पु० (सं) सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम ।
सुवर्णधेनु पु० (सं) सोने की गाय जो दान के उद्देश्य से बनाई जाती है ।
सुवर्णपद्म पु० (सं) लाल कमल ।
सुवर्णपृष्ठ वि० (सं) जिस पर सोने का पतरा चढ़ा हुआ हो ।
सुवर्णप्रतिमा स्त्री० (सं) सोने की मूर्त्ति ।
सुवर्णमान पु० (सं) एक मुद्रा-प्रणाली जिसके अनुसार कागजी मुद्रा या बैङ्कों के नोटों का भुगतान किसी भी समय, किसी निश्चित या निर्धारित दर के अनुसार सोने के रूप में किया जा सके । (गोल्ड-स्टैण्डर्ड) ।
सुवर्णयूथिका स्त्री० (सं) दे० 'सुवर्णयूथी' ।
सुवर्णयूथी स्त्री० (सं) पीली जूही । स्वर्ण जूही ।
सुवर्णरंभा स्त्री० (सं) सुवर्ण कदली ।
सुवर्णरेखा स्त्री० (सं) कसौटी पर पड़ी हुई सोने की लकीर ।
सुवर्णसूत्र पु० (सं) सोने का तार ।
सुवर्षा स्त्री० (सं) मोतिया ।
सुवस वि० (हि) जो अपने वश या अधिकार में हो
सुवह वि० (हि) १-सहज में वहन करने या उठाने योग्य । २-धीर । पु० (सं) एक प्रकार की वायु ।
सुवा पु० (हि) दे० 'सुआ' ।
सुवाग्मी वि० (हि) सुवक्ता । बहुत सुन्दर व्याख्या देने वाला ।
सुवाच्य वि० (सं) जो सुगमता से पढ़ा जा सके ।
सुवाना क्रि० (हि) दे० 'सुलाना' ।
सुवार पु० (हि) १-रसोइया । २-अच्छा वार या दिन ।
सुवास पु० (सं) १-सुगन्ध । खुशबू । २-शिव । ३-सुन्दर घर । ४-एक वर्णवृत्त । वि० सुन्दर वस्त्रों से युक्त ।
सुवासित वि० (सं) सुगन्धयुक्त । खुशबूदार ।
सुवासिन स्त्री० (हि) दे० 'सुआसिन' ।
सुवासिनी स्त्री० (सं) १-युवा अवस्था में भी पिता के घर रहने वाली स्त्री । २-सधवा स्त्री ।
सुवासी वि० (सं) बढ़िया मकान में रहने वाला ।
सुविख्यात वि० (सं) सुप्रसिद्ध । बहुत मशहूर ।
सुविग्रह वि० (सं) सुन्दर शरीर या रूप वाला ।
सुविचारित वि० (सं) अच्छी तरह से सोचा हुआ ।
सुविदग्ध वि० (सं) अत्यधिक धूर्त या चालाक ।
सुविदित वि० (सं) अच्छी तरह जाना हुआ ।
सुविद् पु० (सं) पंडित या विद्वान व्यक्ति । वि० विद्वान ।
सुविद्य वि०(सं) सुशील । अच्छे या नेक स्वभाव का
सुविधा स्त्री० (हि) दे० 'सुभीता' ।
सुविधाधिकार पु०(सं) किसी का अपनी भूमि,पथादि का अपनी सुविधा के लिए प्रयोग करने तथा किसी दूसरे द्वारा दुरुपयोग होने से रोकने का अधिकार । (राइट आफ इजेक्टमेंट) ।
सुविधायककोष पु०(सं)दे० 'भविष्यनिधि' । (प्रॉविडेन्ट फण्ड) ।
सुविधि स्त्री० (सं) १-अच्छा नियम या कानून । २-

अच्छा ढंग ।
**सुविनीत** *वि०* (सं) १-बहुत नम्र । २-सुशिक्षित ।
**सुविस्मित** *वि०* (सं) अत्यधिक चकित ।
**सुविहित** *वि०* (सं) १-सुव्यवस्थित । २-भली भांति किया हुआ ।
**सुबीज** *वि०* (सं) दे० 'सबीज' ।
**सुवीर** *वि०* (सं) १-बहुत बड़ा वीर । २-महान योद्धा पुं० १-शिव । २-वीर । योद्धा । ३-स्कंद ।
**सुवृत्त** *पुं०* (सं) जमीकन्द । *वि०* १-सच्चरित । २-गुणवान । ३-सुन्दर । ४-साधु ।
**सुवृत्ति** *स्त्री०* (सं) १-उत्तम वृत्ति । २-सदाचारी । सच्चरित्र ।
**सुवेल** *पुं०* (सं) त्रिकूट पर्वत का नाम । *वि०* १-बहुत झुका हुआ । २-शांत । नम्र ।
**सुवेश** *वि०* (सं) १-सुन्दर । रूपमान । २-वस्त्रादि से सज्जित । पुं० सफेद ईख ।
**सुवेष** *वि०* (सं) दे० 'सुवेश' ।
**सुवेस** *वि०* (हि) दे० 'सुवेश' ।
**सुवैया** *पुं०* (हि) सोने वाला ।
**सुव्यवस्था** *स्त्री०* (सं) १-अच्छा प्रबन्ध । २-सुन्दर व्यवस्था ।
**सुव्यवस्थित** *वि०* (सं) उत्तम रूप से व्यवस्थित ।
**सुव्रत** *वि०* (सं) १-दृढ़ प्रतिज्ञा पालन करने वाला । २-धर्मनिष्ठ । पुं० १-स्कंध के एक अनुचर का नाम २-ब्रह्मचारी । ३-वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत का नाम ।
**सुव्रता** *स्त्री०* (सं) १-वह गाय जो सहज में दुही जा सके । २-एक अप्सरा । ३-दक्ष की एक कन्या का नाम ।
**सुशंस** *वि०* (सं) १-प्रशंसनीय । २-प्रख्यात ।
**सुशब्द** *वि०* (सं) जिसकी आवाज अच्छी हो ।
**सुशासन** पुं० (सं) अच्छा तथा सुव्यवस्थित शासन ।
**सुशासित** *वि०* (सं) भली भांति नियंत्रित या शासित
**सुशास्य** *वि०* (सं) सहज में शासित या नियंत्रित करने योग्य ।
**सुशिक्षित** *वि०*(सं) जिसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की हो
**सुशील** *वि०* (सं) १-अच्छे शील या स्वभाव का । अच्छे आचरण का । साधु । ३-विनीत । नम्र । ४-सरल ।
**सुशीलता** *स्त्री०* (सं) १-सुशील का भाव । २-सच्चरित्रता । ३-नम्रता ।
**सुशीला** *स्त्री०* (सं) १-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम २-राधा की एक अनुचरी । ३-सुदामा की पत्नी । ४-यमपत्नी ।
**सुशोभन** *वि०* (सं) १-बहुत सुन्दर । २-बहुत शोभा वाला ।
**सुशोभित** *वि०* (सं) अच्छी तरह शोभित और सजता हुआ ।
**सुश्राव्य** *वि०*(सं) जो सुनने में मीठा या मधुर लगता हो ।
**सुश्री** *वि०* (सं) १-बहुत सुन्दर । २-बहुत धनी । *स्त्री०* एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम से पहले लगाया जाता है ।
**सुश्रीक** पुं० (सं) सलई । *वि०* दे० 'सुश्री' ।
**सुश्रुत** पुं० (सं) १-आयुर्वेद के सुश्रुत संहिता नामक ग्रन्थ के रचयिता का नाम । २-उक्त आचार्य का ग्रन्थ ।
**सुश्रुतसंहिता** *स्त्री०*(सं)सुश्रुत द्वारा रचित एक प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्र ग्रन्थ ।
**सुश्रूखा** *स्त्री०* (हि) दे० 'शुश्रूषा' ।
**सुश्रूषा** *स्त्री०* (हि) दे० 'शुश्रूषा' ।
**सुश्रोणि** *वि०* (सं) सुन्दर नितम्ब वाली (स्त्री) ।
**सुश्लिष्ट** *वि०* (सं) १-अतिदृढ़ । २-अतिशय श्लेषयुक्त ।
**सुश्लोक** *वि०* (सं) सुप्रसिद्ध । पुण्यात्मा ।
**सुष** पुं० (हि) दे० 'सुख' ।
**सुषमना** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुषुम्ना' ।
**सुषमनि** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुषुम्ना' ।
**सुषमा** *स्त्री०* (सं) १-अत्यधिक शोभा या सुन्दरता । २-जैनमतानुसार काल का एक नाम । ३-दस अक्षरों वाला एक वृत्त ।
**सुषमाशाली** *वि०* (सं) जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता हो ।
**सुषाना** *क्रि०* (हि) दे० 'सुखाना' ।
**सुषारा** *वि०* (हि) दे० 'सुखारा' ।
**सुषिक्त** *वि०* (सं) भलीभांति सींचा हुआ ।
**सुषिर** पुं० (सं) १-बांस । २-अग्नि । ३-हवा के दबाव या जोर से बजने वाला । ४-बेंत । ५-छेद । ६-वायुमंडल । ७-लकड़ी । ८-काठ । ९-चूहा । *वि०* जिसमें छेद हों । खोखला । पोला ।
**सुषुप्त** *वि०* (सं) गहरी नींद में सोया हुआ ।
**सुषुप्ति** *स्त्री०* (सं) १-घोर निद्रा । २-अज्ञान । ३-योग साधन में एक अवस्था ।
**सुषुम्णा** *स्त्री०* (सं) दे० 'सुषुम्ना' ।
**सुषुम्ना** *स्त्री०*(सं) हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है तथा वैद्यक में इसका स्थान नाड़ी के मध्य में माना जाता है ।
**सुषेण** पुं० (सं) १-विष्णु । २-एक यक्ष । ३-एक नागासुर । ४-करौंदा । ५-बेंत ।
**सुषोपति** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुषुप्ति' ।
**सुषोप्ति** *स्त्री०* (हि) दे० 'सुप्ति' ।
**सुष्ठु** *अव्य०* (सं) १-अत्यन्त । अतिशय । २-यथायोग्य । ३-भलीभांति । पुं० १-सत्य । २-प्रशंसा ।

सुष्ठुता स्त्री० (सं) १-मंगल। भलाई। २-सुन्दरता। ३-सौभाग्य।
सुष्मना स्त्री० (हि) दे० 'सुषुम्ना'।
सुसंग पुं० (हि) अच्छी संगत या सोहबत।
सुसंगति स्त्री० (हि) अच्छी संगत।
सुसंपन्न वि०(सं)१-जिसके पास काफी धन या संपत्ति हो। २-भली भांति प्राप्त किया हुआ।
सुसंस्कृत वि० (स) उत्तम संस्कार युक्त।
सुस स्त्री० (हि) दे० 'सुसा'।
सुसकना क्रि० (हि) दे० 'सिसकाना'।
सुसज्जित वि० (सं) अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ। शोभायमान।
सुसताना क्रि०(हि) श्रम मिटाने के लिए विश्राम करना
सुसमय पुं० (सं) सुकाल। सुभिक्ष। अच्छा समय।
सुसमा स्त्री० (हि) अग्नि। स्त्री० (हि) दे० 'सुषमा'।
सुसर पुं० (हि) दे० 'ससुर'।
सुसरा पुं० (हि) दे० 'ससुर'।
सुसरार स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
सुसरारि स्त्री० (हि) दे० 'ससुराल'।
सुसराल स्त्री० (हि) ससुर का घर।
सुसह पुं० (सं) शिव। वि० जो सहज में उठाया या सहन किया जा सके।
सुसा स्त्री० (हि) बहन। भगिनी। पुं० (देश) एक प्रकार का पक्षी।
सुसाध्य वि० (सं) सुगम। सहज में हो सकने वाला।
सुसाना क्रि० (हि) सिसकना।
सुसिक्त वि० (सं) अच्छी तरह से सींचा हुआ।
सुसिद्ध वि० (स) उत्तम रूप में सिद्ध।
सुसकना क्रि० (हि) सिसकना।
सुसुपि स्त्री० (देश) दे० 'सुषुप्ति'।
सुसेन पुं० (हि) दे० 'सुषेण'।
सुसेव्य वि० (सं) भलीभांति सेवा करने योग्य।
सुस्त वि० (फा) १-दुर्बल। २-उदास। हतप्रभ। ३-आलसी। ४-धीमी चाल वाला।
सुस्तकदम वि० (फा) धीरे-धीरे चलने वाला।
सुस्तना स्त्री० (सं) दे० 'सुस्तनी'।
सुस्तनी स्त्री० (स) सुन्दर स्तनों से युक्त। २-वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।
सुस्ताई स्त्री० (हि) दे० 'सुस्ती'।
सुस्ताना क्रि(हि) सुसताना। आराम करना। थकावट दूर करना।
सुस्ती स्त्री० (फा) १-शिथिलता। २-आलस्य।
सुस्तैन पु० (हि) दे० 'स्वस्त्ययन'।
सुस्थ वि० (सं) १-निरोग। २-प्रसन्न। ३-अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ।
सुस्थचित्त वि० (सं) जिसका चित्त प्रसन्न हो।
सुस्थता स्त्री० (सं) १-निरोगता। २-स्वस्थता। ३-प्रसन्नता।
सुस्थमानस वि० (सं) दे० 'सुस्थचित्त'।
सुस्थिति स्त्री० (स) अच्छी अवस्था। २-कुशलक्षेम। ३-प्रसन्नता।
सुस्थिर वि० (सं) अविचल। अत्यन्त स्थिर या दृढ़।
सुस्नात पुं० (सं) वह जिसने यज्ञ के बाद स्नान किया हो।
सुस्पर्श वि० (सं) कोमल। मुलायम। छूने पर अच्छा लगने वाला।
सुस्मित पुं० (सं) हँसमुख। हँसोड़।
सुस्मिता स्त्री० (स) हँसमुख स्त्री।
सुस्वर वि० (सं) सुकंठ। सरीला। स्त्री० १-सुन्दर स्वर। २-शंख। ३-जैनमतानुसार कर्म विशेष जिससे मनुष्य का स्वर मधुर तथा सुरीला होता है।
सुस्वाद वि० (सं) १-अच्छे स्वाद वाला। जायकेदार २-मीठा।
सुस्वादु वि० (सं) दे० 'सुस्वाद'।
सुस्वादुतोय वि० (सं) मीठे पानी वाला।
सुहंग वि० (हि) सस्ता। कम मूल्य का।
सुहंगम वि० (हि) आसान। सहज।
सुहंगा वि० (हि) सस्ता। सुहग।
सुहटा वि० (हि) सुहावना। सुन्दर।
सुहनी स्त्री० (हि) दे० 'सोहनी'।
सुहबत स्त्री०(अ) १-मित्रता। २-साथ। सङ्ग। ३-सहवास। ४-गोष्ठी।
सुहबती वि० (अ) १-साथ उठने बैठने वाला। २-मित्रता रखने वाला।
सुहराब पुं० (फा) रुस्तम का लड़का जो उसी के हाथों मारा गया था।
सुहल पु० (हि) दे० 'सुहेल'।
सुहा पुं० (हि) लाल नामक पक्षी।
सुहाग पुं० (हि) १-सौभाग्य। स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। २-विवाह के समय स्त्रियां द्वारा गाये जाने वाले गीत। ३-वह वस्त्र जो विवाह के समय वर को पहनाये जाते हैं।
सुहाग घोड़ी स्त्री० (हि) वह गीत जो विवाह के समय वर पक्ष वालों के यहाँ वधू के रूपगुण के बखान में गाये जाते हैं।
सुहागन स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
सुहागपिटारा पुं० (हि) दे० 'सुहागपिटारी'
सुहागपिटारी स्त्री० (हि) शृङ्गार-सामग्री रखने की वह पिटारी जो वर द्वारा वधू को दी जाती है।
सुहागपुड़ा पुं० (हि) दे० 'सुहागपुड़िया'।
सुहागपुड़िया स्त्री० (हि) गोट आदि लगाकर बनाई हुई वह कागज की पुड़िया जिसमें सुगन्धित वस्तुएँ वधू के लिये वर द्वारा भेजी जाती हैं।
सुहागभरी वि० (हि) सखी। सौभाग्ययुक्त।

सुहागरात स्त्री० (हि) वर और वधू के प्रथम मिलन की रात।
सुहागसेज स्त्री० (हि) वह पलङ्ग जो कन्यादान में दिया जाता है तथा जिस पर वर और वधू साथ सोते हैं।
सुहागा पुं० (हि) एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधक के सोतों से निकलता है।
सुहागिन स्त्री० (हि) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सुहागिनि स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
सुहागिनी स्त्री० दे० 'सुहागिन'।
सुहागिल स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
सुहाता वि० (हि) जो सहा जा सके।
सुहाना क्रि० (हि) १-अच्छा या भला लगना। २-सशोभित होना। वि० सुहावना।
सुहाया वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहारी स्त्री० (हि) बिना पिट्ठी की सादी पूरी।
सुहाल पुं० (हि) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव वि० (हि) सुन्दर। सुहावना। पुं० सुन्दर हाथ
सुहावता वि० (हि) भला लगने वाला। भला।
सुहावन वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहावना वि० (हि) देखने में सुन्दर या भला लगने वाला। प्रियदर्शन।
सुहावला वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
सुहास वि० (सं) सुन्दर या मधुर मुस्कान वाला।
सुहासिनी वि० (सं) सुन्दर मुस्कान वाली (स्त्री)।
सुहृत् वि० (सं) स्नेहयुक्त हृदय वाला। पुं० १-मित्र २-ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुण्डली में चौथा स्थान।
सुहृत्ता स्त्री० (सं) मित्रता। सुहृत का भाव या धर्म।
सुहृत्याग पुं० (स) मित्रता का भङ्ग हो जाना।
सुहृत्प्राप्ति स्त्री० (सं) मित्रता का होना।
सुहृदय वि० (सं) १-अच्छे हृदय वाला। सहृदय। स्नेहशील।
सुहृद् वि० (सं) दे० 'सुहृत'।
सुहृद्बल पुं० (सं) मित्र राजा की सेना।
सुहृद्भेद पुं० (सं) मित्र का अलग हो जाना।
सुहेल पुं० (अ) एक कल्पित तारा जिसके उदय होने पर कीड़े मकोड़े मर जाते है तथा चमड़े में सुगन्ध उत्पन्न हो जाती है तथा जिसको कवि लोग शुभ मानते हैं।
सुहेलरा वि० (हि) १-सुन्दर। सुहावना। २-सुखदायक।
सुहेला वि० (हि) दे० 'सुहेलरा'। पुं० १-मङ्गल गीत २-स्तुति।
सुहैल पुं० (अ) दे० 'सुहेल'।
सूँ अव्य० (हि) करण और अपादान का चिह्न 'से'।
सूँइस स्त्री० (हि) दे० 'सूँस'।
सूँघना क्रि० (हि) १-नाक से गन्ध का अनुभव करना। २-बहुत थोड़ा भोजन करना (व्यंग)। ३-(सांप का) काटना। डसना।
सूँघा पुं० (हि) १-भेदिया। जासूस। २-केवल सूँघकर भूमि में पानी या खजाना बताने वाला। ३-वह कुत्ता जो केवल सूँघ कर शिकार का पता लगा ले।
सूँड़ पुं० (हि) हाथी के अग्रभाग का वह लम्बा अङ्ग जिससे वह नाक का वह का काम है। शुण्ड।
सूँडाल पुं० (हि) हाथी।
सूँड़ी स्त्री० (हि) अनाज या फसल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सूँस पुं० (हि) एक प्रकार का बड़ा जल जन्तु। शिशुमार। सूस।
सूँह अव्य० (हि) सामने। सन्मुख।
सूअर पुं० (हि) एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो जङ्गली तथा पालतू दोनों प्रकार का होता है। शूकर २-एक गाली।
सूअरनी स्त्री० (हि) १-शूकरी। मादा सूअर। २-बहुत बच्चे जनने वाली स्त्री।
सूअरबियान स्त्री० (हि) प्रति वर्ष बच्चा जनने वाली स्त्री।
सूआ पुं० (हि) १-सुग्गा। तोता। २-बड़ी सूई। ३-सींख।
सूई स्त्री० (हि) १-लोहे का एक पतला उपकरण जिसके एक सिरे में धागा पिरो कर कपड़ा सीया जाता है २-किसी विशेष परिमाण, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या कांटा। ३-पौधों का छोटा पतला अंकुर। ४-पिन।
सूईकारी स्त्री० (हि) दे० 'सूचीकार्य' (नीडलवर्क)।
सूईडोरा पुं० (हि) एक मालखम्भ की कसरत।
सूक पुं० (सं) १-वायु। हवा। २-कमल। (हि) १-शुक्र। २-शुक्र नक्षत्र।
सूकना क्रि० (हि) दे० 'सूखना'।
सूकर पुं० (सं) १-सूअर। २-एक प्रकार का मृग। ३-सफेद धान। ४-एक नरक।
सूकरक्षेत्र पुं० (सं) १-एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो सोरों के नाम से प्रसिद्ध है।
सूकरखेत पुं० (सं) दे० 'सूकरक्षेत्र'।
सूकरगृह पुं० (सं) सूअरों के रहने का बाड़ा।
सूकरी स्त्री० (सं) १-मादा सूअर। सूअरी २-एक प्रकार की चिड़िया।
सूका पुं० (हि) चवन्नी (सिक्का)। वि० दे० 'सूखा'।
सूक्त पुं० (सं) १-उत्तम। भाषण। २-वेद मन्त्रों का समूह। ३-महद्वाक्य। वि० अच्छी तरह कहा

हुआ।

**सूक्ति** स्त्री०(सं) उत्तम या सुन्दर युक्ति, पद वाक्यादि

**सूक्षम** वि० (हिं) दे० 'सूक्ष्म'।

**सूक्ष्म** वि० (सं) बहुत छोटा, बारीक या महीन। पुं० १-अणु। परिमाणु। २-परब्रह्म। ३-लिंगशरीर ४-शिव। ५-एक काव्यालंकार। ६-जैनमतानुसार एक कर्म विशेष जिसके उदय से मनुष्य सूक्ष्म जीवों की योनि का जन्म लेता है।

**सूक्ष्मकोण** पुं० (सं) वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

**सूक्ष्मतंडुल** पुं० (सं) १-खसखस। पोस्तदाना। २-चूना।

**सूक्ष्मदर्शकयन्त्र** पुं० (सं) अणुवीक्षण यन्त्र। खुर्दबीन (माइक्रोस्कोप)।

**सूक्ष्मदर्शी** वि० (सं) १-बारीक बातों को सोचने वाला कुशाग्र बुद्धि। २-अत्यन्त बुद्धिमान।

**सूक्ष्मदृष्टि** स्त्री० (सं) छोटी-छोटी बातें तक सहज में समझ या देख लेने वाली दृष्टि।

**सूक्ष्मदेह** स्त्री० (सं) सूक्ष्म शरीर।

**सूक्ष्मपत्रिका** स्त्री० (सं) १-सतावर। २-सौंफ। ३-आकाशमांसी।

**सूक्ष्मपरीक्षण** पुं० (सं) १-ब्यौरे आदि के बारे में भलीभांति छानबीन करना। २-मतदान आदि में बेईमानी होने पर उसकी जांच करना। ३-उत्तर-पुस्तकों आदि की फिर से छानबीन करना। (स्क्रूटिनी)।

**सूक्ष्मबदर** पुं० (सं) झड़बेरी।

**सूक्ष्मबदरी** स्त्री० (सं) झड़बेरी।

**सूक्ष्मबीज** पुं० (सं) खसखस। पोस्तदाना।

**सूक्ष्मबुद्धि** वि० (सं) तीक्ष्ण बुद्धि वाला। स्त्री० वह जो या बारीकी तक पहुंचने वाली तीक्ष्ण बुद्धि।

**सूक्ष्ममति** स्त्री० (सं) दे० 'सूक्ष्मबुद्धि'।

**सूक्ष्मशरीर** पुं०(सं) वह कल्पित शरीर जो पांच प्राणों, पांच ज्ञानेन्द्रियों, पांच सूक्ष्मभूतों और मन तथा बुद्धि के योग से बना हुआ तथा मनुष्य के उपरान्त भी बना रहने वाला माना जाता है। लिंग शरीर।

**सूक्ष्मशर्करा** स्त्री० (सं) बालुका।

**सूक्ष्मा** स्त्री० (सं) १-जूही। २-छोटी इलायची। ३-करुणी नामक पौधा। ४-मूसली। ५-बालुका।

**सूख** वि० (हिं) सूखा। शुष्क।

**सूखना** क्रि० (हिं) १-नमी, तरी आदि का निकल जाना। रसहीन होना। २-जल का न रहना या कम होजाना। ३-उदास होना। ४-तेज नष्ट हो जाना। ५-डरना।

**सूखा** वि० (हिं) १-रस, जल, नमी आदि से रहित। २-तेजहीन। ३-कोरा। ४-केवल। ५-हृदयहीन। पुं० १-पानी न बरसने की अवस्था। अनावृष्टि। २-तम्बाकू का सुखाया हुआ पत्ता। ३-एक प्रकार की खांसी। ४-वह स्थान जहां जल न हो। ५-भाग ६-नदी के किनारे की भूमि।

**सूखाजवाब** पुं० (हिं) साफ इन्कार।

**सूखीखुजली** स्त्री० (हिं) एक प्रकार की खुजली का रोग जिसमें दाने पकते नहीं, केवल उनमें खुजली होती है।

**सूखीतनख्वाह** स्त्री० (हिं) जिसके साथ भोजन या कपड़ा न मिलता हो।

**सूखीतरकारी** स्त्री० (हिं) वह तरकारी जिसमें रसा न हो।

**सूखेटुकड़े** पुं० (हिं) १-रोटी के सूखे हुए टुकड़े। २-निर्धन का भोजन।

**सूघर** वि० (हिं) दे० 'सुघड़'।

**सूचक** वि० (सं) सूचना देने वाला। बोधक। ज्ञापक पुं० (सं) १-सूई। २-दरजी। ३-सिद्ध। ४-सूत्रधार। ५-बुद्ध। ६-कुत्ता। ७-बिल्ली। ८-कौआ। ९-गीदड़। १०-बगुला। ११-बरामदा। १२-गुप्तचर। १३-ऊँची दीवार। १४-चुगलखोर।

**सूचकवाक्य** पुं० (सं) वह बात जो भेदिये द्वारा बताई गई हो।

**सूचन** पुं० (सं) १-बताने या जताने की क्रिया। २-सुगंध फैलाने की क्रिया। ३-जासूसी करना। ४-संकेत से बताना।

**सूचना** स्त्री० (सं) १-वह बात जो किसी को जो किसी को जताने या बताने के लिये कही गई हो। (इन्फार्मेशन)। २-विज्ञापन। इश्तिहार। (नोटिस)। ३-दुर्घटना आदि के सम्बन्ध में किसी अधिकारी द्वारा मुकदमे होने से पहले दिया गया विवरण। (रिपोर्ट)। ४-हिंसा। ५-अभिनय। क्रि० बतलाना जताना।

**सूचनापट्ट** पुं० (सं) वह लकड़ी आदि का तख्ता जिस पर सर्वसाधारण की जानकारी के लिये कोई सूचना लटकाई या चिपकाई गई हो। (नोटिसबोर्ड)

**सूचनापत्र** पुं० (सं)वह पत्र जिस पर किसी प्रकार की सूचना लिखी या छपी हो। इश्तहार। (नोटिस)।

**सूचनामंत्री** पुं० (सं) जनकल्याण संबन्धी सरकारी कामों की सूचना सर्वसाधारण में पहुँचाने के तथा उनकी मांगों तथा शिकायतों को सरकार तक पहुँचाने के काम करने वाले विभाग पर नियन्त्रण रखने वाला मंत्री। (इन्फर्मेशन मिनिस्टर)।

**सूचनाधिकारी** पुं० (सं) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जो राज्य के कार्यों या प्रगति आदि के संबन्ध में सर्वसाधारण को प्रमाणित सूचनाएँ देता हो। (इन्फार्मेशन ऑफीसर)।

**सूचनालय** पुं० (सं)वह सरकारी कार्यालय जहां राज्य से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाएँ या समाचार सर्व-

साधारण में प्रसारित करने का काम होता हो। (इनफर्मेशन ब्यूरो)।
**सूचनीय** वि० (सं) सूचित करने योग्य।
**सूचा** वि० (हिं) १-विशुद्ध। २-साफ-सुथरा। ३-होश-हवास में।
**सूचि** स्त्री० (सं) १-सूई। २-केवड़ा। ३-एक नृत्य-विशेष। ४-एक प्रकार का सैनिक व्यूह। ५-जङ्गला। कटहरा। ६-दृष्टि। ७-सिटकनी। ८-तालिका।
**सूचिक** पुं० (सं) दरजी।
**सूचिका** स्त्री० (सं) १-सूई। २-हाथी की सूँड। ३-केवड़ा। ४-एक अप्सरा।
**सूचिकाधर** पुं० (सं) हाथी।
**सूचिकामुख** पुं० (सं) शंख। वि० शङ्ख की तरह नुकीले मुँह वाला।
**सूचित** वि० (सं) ज्ञापित। जिसकी सूचना दी गई हो।
**सूचितव्य** वि० (सं) सूचित करने योग्य।
**सूचिपत्र** पुं० (हिं) दे० 'सूचीपत्र'।
**सूचिभेद्य** वि० (सं) १-बहुत घना। २-सूई से छेद करने योग्य।
**सूची** स्त्री० (सं) १-कपड़ा सीने की सूई। २-नामावली। फहरिस्त। तालिका (लिस्ट)। ३-दे० 'सूचि'
**सूचीकटाहन्याय** पुं० (सं) एक न्याय जिसका प्रयोग कठिन तथा सरल कामों में से पहले सरल काम करने के सम्बन्ध में किया जाता है।
**सूचीकर्म** पुं० (सं) सिलाई का काम।
**सूचीकार्य** पुं० (सं) कपड़े आदि पर सूई से बेल-बूटे आदि काढ़ने का कार्य। (नीडल वर्क)।
**सूचीपत्र** पुं० (सं) वह पुस्तिका जिसमें बहुत सी वस्तुओं की नामावली, विवरण, मूल्य आदि हों। तालिका। सूची। (केटेलॉग)।
**सूचीमुख** पुं० (सं) १-सूई का छेद या नकुआ जिसमें धागा पिरोया जाता है। २-पक्षी। ३-हीरा। ४-एक नरक का नाम। ५-कुशा।
**सूचीवेधन** पुं० (सं) सूई की सहायता से दवा आदि का शरीर के अन्दर पहुँचाना। (इन्जेक्शन)।
**सूचीव्यूह** पुं० (सं) एक तरह की व्यूह रचना।
**सूचीशिल्प** पुं० (सं) दे० 'सूचीकार्य'।
**सूचीसूत्र** पुं० (सं) सीने के काम आने वाला तागा।
**सूच्छम** वि० (हिं) दे० 'सूक्ष्म'।
**सूच्य** वि० (सं) सूचना के योग्य। सूचित करने योग्य
**सूच्यग्र** पुं० (सं) सूई की नोक।
**सूच्याकार** वि० (सं) सूई के आकार का। लम्बा तथा नुकीला।
**सूच्यार्थ** पुं० (सं) शब्दों की व्यंजना शक्ति से निकलने वाला अर्थ (साहित्य)।
**सूछम** वि० (सं) दे० 'सूक्ष्म'।
**सूच्छम** वि० (सं) दे० 'सूक्ष्म'।
**सूज** स्त्री० (हिं) १-सूई। २-सूजन।
**सूजन** स्त्री० (हिं) सूजने की क्रिया या भाव। शोथ।
**सूजना** क्रि०(हिं) रोग, चोट या वात प्रकोप के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना।
**सूजा** पुं० (हिं) १-सूआ। २-एक औजार जिसका सिरा नुकीला होता है।
**सूजाक** पुं० (फा) मूत्रेन्द्रिय का एक रोग जो दूषित लिंग तथा योनि के योग से होता है।
**सूजी** स्त्री० (हिं) १-गेंहूँ का एक विशेष प्रकार का दरदरा आटा। २-सूई। ३-कम्बल की पट्टी सीने का सूआ। पुं० दरजी।
**सूझ** स्त्री० (हिं) १-सूझने का भाव। २-दृष्टि। नजर ३-उपज। ४-कल्पना।
**सूझना** क्रि० (हिं) १-दिखाई देना। २-ध्यान में आना। ३-मुक्त होना।
**सूझबूझ** स्त्री० (हिं) समझ। देखने या समझने की शक्ति। अकल।
**सूट** पुं० (अं) पहनने के सब कपड़े विशेषतः कोट और पतलून।
**सूटकेस** पुं० (अं) पहनने के कपड़े रखने का हल्का सन्दूक।
**सूत** पुं० (हिं) १-रूई, रेशम, आदि का वह पतला बटा हुआ धागा जिससे कपड़ा बुना जाता है। डोरा। धागा। २-किसी वस्तु में से निकला हुआ ऐसा तार। ३-इमारत के काम में लकड़ी आदि पर निशान लगाने की डोरी। ४-करधनी। ५-सूत्र। (सं) १-वर्णसंकर जाति। २-रथ हाँकने वाला। सारथि। ३-भाट। ४-कथा कहने वाला। ५-सूत्रधार। वि० अच्छा-भला।
**सूतक** पुं० (सं) १-जन्म। २-घर के सन्तान होने पर परिवार वालों पर लगने वाला अशौच। ३-सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण। ४-पारा।
**सूतकगेह** पुं० (सं) प्रसूतिगृह।
**सूतकभोजन** पुं० (सं) वह भोज जो लड़के के जन्म पर दिया जाता है।
**सूतकर्म** पुं० (सं) रथ चलाने का धंधा या पेशा।
**सूतका** स्त्री० (सं) दे० 'सूतिका'।
**सूतकाशौच** पुं० (सं) वह अशौच जो जन्म के समय होता है।
**सूतज** पुं० (सं) कर्ण।
**सूततनय** पुं० (सं) कर्ण।
**सूतता** स्त्री०(सं) १-सूत का भाव या धर्म। २-सारथि का नाम।
**सूतधार** पुं० (हिं) बढ़ई।
**सूतनंदन** पुं० (सं) १-कर्ण। २-उग्रश्रवा।
**सूतना** क्रि० (हिं) शयन। सोना। पुं० पायजामा।
**सूतपुत्र** पुं० (सं) १-सारथि का बेटा। २-कीचक।

२-कर्ण।
**सूतपुत्रक** पुं० (सं) कर्ण।
**सूतरी** स्त्री० (हि) दे० 'सुतली'।
**सूतलड़** पुं० (हि) रहँट।
**सूति** स्त्री० (सं) १-जन्म। प्रसव। २-उद्गम। ३-पैदावार। उपज। ४-सीवन। सीना। ५-वह स्थान जहां से सोमरस निकाला जाता था। ६-सोमरस निकालना।
**सूतिका** स्त्री०(सं) १-वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो। २-वह गाय जिसने हाल ही में बच्चा जना हो।
**सूतिकागृह** पुं० (सं) वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसवगृह।
**सूतिकागार** पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह।
**सूतिकागेह** पुं० (सं) सूतिकागृह।
**सूतिकाभवन** पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
**सूतिकामारुत** पुं० (सं) प्रसव के समय होने वाली पीड़ा।
**सूतिकारोग** पुं० (सं) प्रसूता को होने वाले रोग।
**सूतिकाल** पुं० (सं) बच्चा जनने का समय।
**सूतिकावास** पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
**सूतिगृह** पुं० (सं) सूतिकागृह। जच्चाखाना।
**सूतिमारुत** पुं० (सं) दे० 'सूतिकामारुत'।
**सूतिरोग** पुं० (सं) दे० 'सूतिकारोग'।
**सूतिवात** पुं० (सं) प्रसव वेदना।
**सूती** वि० (हि) सूत का बना हुआ। स्त्री० १-साधी। २-डोडे में से अफीम काढ़ने की सीपी।
**सूती कपड़ा** पुं० (हि) सूत का बना हुआ कपड़ा।
**सूतीगृह** पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
**सूतीघर** पुं० (सं) दे० 'सूतिकागृह'।
**सूत्कार** पुं० (हि) दे० 'सीत्कार'।
**सूत्र** पुं०(सं) १-सूत। धागा। २-रेखा। लकीर। ३-नियम। व्यवस्था। ४-करधनी। ५-थोड़े शब्दों में कहा गया पद्य जिसका गूढ़ अर्थ हो। ६-सुराग। (क्ल्यू)। ७-वह संकेत पद या शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने के मूल सिद्धांत, प्रतिक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो (फार्मूला)। ८-एक वृक्ष।
**सूत्रकंठ** पुं० (सं) १-ब्राह्मण। २-कबूतर। ३-खंजन खजरीट।
**सूत्रकरण** पुं० (सं) सूत्रवाक्य का निर्माण।
**सूत्रकर्ता** पुं० (सं) सूत्रग्रन्थ का रचयिता।
**सूत्रकर्म** पुं० (सं) १-बढ़ई का काम। २-राज या मेमार का काम।
**सूत्रकार** पुं० (सं) १-सूत्र रचयिता। २-बढ़ई। ३-जुलाहा। ४-मकड़ी।
**सूत्रकृत्** पुं० (सं) दे० 'सूत्रकार'।
**सूत्रक्रीड़ा** स्त्री० (सं) एक प्रकार का सूत का खेल।
**सूत्रजाल** पुं० (सं) सूत का बना हुआ जाल।
**सूत्रण** पुं० (सं) सूत बनाने की क्रिया।
**सूत्रदरिद्र** वि० (सं) (वह वस्त्र) जिसमें सूत कम हो।
**सूत्रधर** पुं० (सं) दे० 'सूत्रधार'।
**सूत्रधार** पुं० (सं) वह नट जो नाट्यशाला का प्रधान तथा नाटक की व्यवस्था करता है। २-बढ़ई। ३-एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।
**सूत्रपदी** वि० (सं) सूत जैसे पतले पैर वाली।
**सूत्रपात** पुं०(सं) नींव पड़ना। किसी काम के आरंभ में होने का पूरा आयोजन।
**सूत्रबद्ध** वि० (सं) सूत्र रूप में लिखित।
**सूत्रभृत्** पुं० (सं) सूत्रधार।
**सूत्रयंत्र** पुं० (सं) १-करघा। २-सूत का बना जाल।
**सूत्रवाप** पुं० (सं) सूत बनाने की क्रिया। बुनाई।
**सूत्रविद** पुं० (सं) सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।
**सूत्रवीणा** स्त्री० (सं) प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा जिसमें तारों के स्थान पर सूत्र लगाये जाते थे
**सूत्रवेष्टन** पुं० (सं) १-करघा। २-बुनाई।
**सूत्रशाला** स्त्री० (सं) सूत कातने या एकत्र करने का कारखाना।
**सूत्रसंचालक** पुं० (सं) वह राजनीतिज्ञ जो गुप्त रूप से घटनाओं का सूत्र-संचालन करता है (वायर-पुलर)।
**सूत्रिका** स्त्री० (सं) १-हार। माला। २-सेंवई।
**सूत्रित** वि० (सं) सूत्र के रूप में लाया या बनाया हुआ(फार्मूलेटेड)।
**सूत्री** वि०(सं) जिसमें सूत्र हो। पुं० १-काक। कौआ २-सूत्रधार।
**सूत्रीय** वि० (सं) सूत्र-सम्बन्धी। सूत्र का।
**सूथन** पुं० (देश) १-एक तरह का पायजामा। २-एक जंगली वृक्ष।
**सूथनी** स्त्री० (देश) १-मुसलमान स्त्रियां द्वारा पहने जाने वाला पायजामा। २-एक कंद।
**सूद** पुं० (फा) १-लाभ। फायदा। २-ऋण दिये गये धन के बदले में मूलधन के अतिरिक्त मिलने वाला धन। ब्याज। (इन्टरेस्ट)। पुं० (सं) १-रसोइया भोज्य पदार्थ। व्यञ्जन। ३-पाप। ४-सारथी का काम। ५-दोष। ६-लोभ। ७-एक प्राचीन जनपद।
**सूदक** वि० (सं) नाश करने वाला।
**सूदखोर** पुं० (फा) सूद या ब्याज लेने वाला।
**सूदखोरी** स्त्री० (फा) सूद लेने काम या भाव।
**सूदख्वार** पुं० (फा) दे० 'सूदखोर'।
**सूददरसूद** पुं० (फा) ब्याज का भी ब्याज। चक्रवृद्धि (कम्पाउंड इन्टेरेस्ट)।
**सूदन** पुं० (सं) १-वध करना। मार डालना। २-

अंगीकरण। ३-फेंकने की किया। *वि०* विनाश करने वाला।
**सूदना** *क्रि०* (हि) नष्ट करना।
**सूदशाला** *स्त्री०* (सं) रसोईघर। पाकशाला।
**सूदशास्त्र** *पुं०* (स) पाकशास्त्र।
**सूदी** *वि०* (फा) (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर दी गई हो। ब्याजू।
**सूद्र** *पु०* (हि) दे० 'शूद्र'।
**सूध** *वि०* (हि) १-सीधा। २-शुद्ध।
**सूधना** *क्रि०* (हि) १-सिद्ध होना। २-सत्य या ठीक होना।
**सूधरा** *वि०* (हि) दे० 'सीधा'।
**सूधा** *वि०* (हि) दे० 'सीधा'।
**सूधे** *अव्य०* (हि) सीधी तरह से।
**सून** *पुं०* (स) १-प्रसव। जनना। २-पुत्र। बेटा। ३-फूल की कली। *वि०* १-विकसित। २-उत्पन्न। *पु०* (हि) शून्य। *वि०* १-सुनसान। निर्जन। २-रहित हीन।
**सूनशर** *पुं०* (सं) कामदेव।
**सूनसान** *वि०* (हि) दे० 'सुनसान'।
**सूना** *वि०* (हि) निर्जन। एकांत। जहां कोई न हो। *स्त्री०* (सं) १-पुत्री। बेटी। २-कसाईखाना। ३-मांस की बिक्री। ४-गृहस्थ के घर में ऐसा स्थान-चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा या झाड़ू में कोई भी वस्तु या चीज जिसकी हिंसा होने की संभावना रहती है। ५-हत्या। ६-हाथी के अंकुश का दस्ता।
**सूनादोष** *पुं०*(सं) वह दोष जो चूल्हा, चक्की, ओखली आदि से होने वाली हिंसा से होता है।
**सूनापन** *पु०* (हि) १-सन्नाटा। २-सूना होने का भाव
**सूनिक** *पुं०* (सं) दे० 'सूनी'।
**सूनी** *पुं०* (सं) मांस बेचने वाला।
**सूनु** *पुं०* (सं) १-पुत्र। २-छोटा भाई। ३-नाती। ४-सूर्य। ५-आक। ६-सोमरस चुआने वाला।
**सूनू** *स्त्री०* (सं) बेटी। पुत्री।
**सूनृत** *पुं०* (सं) १-सत्य और प्रिय भाषण। २-मंगल आनन्द। *वि०* १-सत्य तथा प्रिय। २-दयालु।
**सूप** *पुं०* (सं) १-पकाई हुई दाल उसका पानी। २-रसोइया। ३-बाण। ४-रसेदार तरकारी। *पुं०*(हि) अनाज फटकने का छाज।
**सूपक** *पुं०* (हि) रसोइया।
**सूपकर्ता** *पुं०* (सं) रसोइया। पाचक।
**सूपकार** *पुं०* (स) रसोइया।
**सूपकारी** *पु०* (हि) दे० 'सूपकार'।
**सूपकृत** *पुं०* (सं) दे० 'सूपकार'।
**सूपच** *पुं०* (हि) दे० 'श्वपच'।
**सूपधूपक** *पु०* (सं) हींग।
**सूपधूपन** *पुं०* (सं) हींग।
**सूपनखा** *स्त्री०* (हि) दे० 'शूर्पणखा'।
**सूपशास्त्र** *पुं०* (सं) पाकशास्त्र।
**सूपा** *पुं०* (हि) छाज। सूप।
**सूपिक** *पु०*(स) १-रसोइया। २-पकी हुई दाल आदि का रेसा।
**सूफ** *पु०* (प्र) १-पशम। ऊन। २-काली स्याही की दवात में डाला जाने वाला लत्ता या चीथड़ा। (देश) *पु०* (हि) सूप।
**सूफिया** *पु०* (प्र) मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय
**सूफियाना** *वि०* (प्र) १-सादा। २-सूफिया जैसा।
**सूफी** *वि०* (प्र) १-मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है। २-इस संप्रदाय का अनुयायी।
**सूफीखयाल** *वि०*(प्र) सूफियों जैसे विचार रखने वाला
**सूबा** *पु०* (फा) १-किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २-दे० 'सूबेदार।
**सूबेदार** *पु०* (फा) १-किसी सूबे या प्रांत का प्रधान शासक। २-सेना विभाग का एक छोटा पद। ३-इस पद पर रहने वाला व्यक्ति।
**सूबेदारी** *स्त्री०* (फा) सूबेदार का पद या काम।
**सूभर** *वि०* (हि) १-सुन्दर। सफेद।
**सूम** *वि०* (हि) कृपण। कंजूस। *पुं०*(सं) १-जल। २-दूध। ३-आकाश। ४-स्वर्ग।
**सूमड़ा** *वि०* (हि) दे० 'सूम'।
**सूमी** *पुं०* (देश) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।
**सूर** *पुं०*(सं) १-सूर्य। २-आक। ३-पंडित। आचार्य ४-मसूर। ५-सूरदास। ६-अंधा। ७-छप्पय छंद का एक भेद। *पुं०* (हि) १-सूअर। २-भूरे रङ्ग का घोड़ा। ३-शूल। *पुं०* (देश) पठानों की एक जाति *पु०* (प्र) तुरही।
**सूरकंद** *पुं०* (सं) जमींदार।
**सूरकांत** *पु०* (सं) सूर्यकांत।
**सूरकुमार** *पु०* (हि) वसुदेव।
**सूरज** *पुं०* (हि) १-सूर्य। २-एक प्रकार का गोदना। ३-सूरदास। ४-सुग्रीव। ५-शूरवीर का पुत्र। ६-कर्ण। यम।
**सूरजतनी** *स्त्री०* (हि) दे० 'सूर्यतनया'।
**सूरजबंसी** (हि) दे० 'सूर्यवंशी'।
**सूरजभगत** *पुं०* (हि) एक प्रकार की गिलहरी।
**सूरजमुखी** *पुं०* (हि) दे० 'सूर्यमुखी'।
**सूरजसुत** *पुं०* (हि) १-सुग्रीव। २-कर्ण।
**सूरजसुता** *स्त्री०* (हि) यमुना।
**सूरजा** *स्त्री०* (सं) यमुना।
**सूरण** *पुं०* (सं) सूरन। जमीकंद।
**सूरत** *स्त्री०*(फा) १-रूप। आकृति। २ छवि। सौंदर्य २-उपाय। युक्ति। ४-अवस्था। दशा। *पुं०* (हि) बम्बई प्रांत का एक नगर। *पु०* (देश) एक प्रकार

का विषैला पौधा। स्त्री० (अ) कुरानशरीफ का कोई प्रकरण। स्त्री० (हिं) सुध। ध्यान। स्मरण वि० (हिं) अनुकूल। मेहरबान।

सूरतआशना वि०(फा) मामूली जान-पहचान वाला।

सूरतआशनाई स्त्री० (फा) मामूली जान पहचान। अल्प परिचय।

सूरतशक्ल स्त्री० (फा) रूप। सुन्दरता।

सूरतहराम वि० (फा) जो भीतर से खराब तथा ऊपर से भला हो।

सूरता स्त्री० (हि) वीरता।

सूरताई स्त्री० (हि) वीरता।

सूरति स्त्री० (हि) दे० 'सूरत'।

सूरतेहाल स्त्री० (फा) वर्तमान अवस्था।

सूरदास पुं०(हि) ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि जो अन्धे थे।

सूरन पुं० (हि) जमीकंद।

सूरपनखा स्त्री० (हि) दे० 'शूर्पणखा'।

सूरपुत्र पुं० (सं) १-कर्ण। २-सुग्रीव। ३-शनि। ४-यम।

सूरबीर पुं० (हि) दे० 'शूरवीर'।

सूरमुखी पुं० (सं) १-सूर्यमुखी। २-शमीशा।

सूरमुखीमनि पु० (हि) सूर्यकांतमणि।

सूरमा पुं० (हि) वीर। बहादुर।

सूरवाँ पुं० (हि) दे० 'सूरमा'।

सूरसागर पुं० (हि) हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि सूरदास कृत एक ग्रंथ का नाम जिस में श्रीकृष्ण की बाल-लीला का वर्णन है।

सूरसावंत पुं० (हि) १-युद्धमंत्री। २-नायक। सरदार

सूरसुत पुं० (सं) १-शनिग्रह। -सुग्रीव। ६-कर्ण।

सूरसुता स्त्री० (सं) यमुना।

सूरसूत पुं० (सं) अरुण जो सूर्य का सारथी है।

सूरसेन पुं० (सं) दे० 'शूरसेन'।

सूरसेनपुर पु० (हि) मथुरा।

सूरा पुं० (हि) अनाज के दाने में पाया जाने वाला एक कीड़ा।

सूराख पुं० (फा) १-छेद। छिद्र। २-शाला।

सूराखदार वि० (फा) जिस में छिद्र हो।

सूरी पुं० (हि) भारत का एक प्राचीन मुसलमानों का राज्यवंश। स्त्री० (स) विदुषी। पंडिता। २-सूर्य की पत्नी। ३-राई। ४-कुन्ती। वि० (फा) सूर वंश का

सूरज पुं०(हि) दे० 'सूर्य'।

सूरवा पुं० (हि) दे० 'सूरमा'।

सूर्प पुं० (सं) सूप। शूर्प।

सूर्पनखा स्त्री० (हि) दे० 'शूर्पणखा'।

सूर्य पु० (सं) १-सौर जगत का वह सब से बड़ा और ज्वलंत पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है। प्रभाकर। दिनकर। २-बारह की संख्या। ३-आक। मदार। ४-बलि के एक पुत्र का नाम।

सूर्यकमल पु० (सं) सूरजमुखी का फूल।

सूर्यकर पुं० (सं) सूर्य की किरण।

सूर्यकांत पुं० (सं) १-एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २-सूरजमुखी शीशी। ३-एक प्रकार का फूल। ४-एक पर्वत का नाम।

सूर्यकांति स्त्री० (सं) १-सूर्य का प्रकाश या दीप्ति। तिल का फूल। एक प्रकार का पुष्प।

सूर्यग्रहण पुं० (सं) पृथ्वी और सूर्य के मध्य चंद्रमा के आजाने तथा उसकी छाया से पड़ने वाला ग्रहण

सूर्यज पुं० (सं) १-यम। २-शनिग्रह। ६-सुग्रीव। ४-कर्ण।

सूर्यजा स्त्री०(सं) यमुना नदी।

सूर्यतनय पुं० (सं) दे० 'सूर्यज'।

सूर्यतनया स्त्री० (सं) यमुना नदी।

सूर्यतेज पुं० (सं) धूप। सूर्य का तेज।

सूर्यनंदन पुं० (सं) १-कर्ण। २-शनि।

सूर्यनगर पु० (सं) कश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

सूर्यनारायण पुं० (सं) सूर्य देवता।

सूर्यपक्व वि० (सं) १-सूर्य के ताप से पका हुआ। २-अपने आप पका हुआ।

सूर्यपत्नी स्त्री० (स) छाया। संज्ञा।

सूर्यपर्व पुं० (स) वह पर्व जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है।

सूर्यपुत्र पुं० (सं) १-शनि। २-यम। ३-वरुण। ४-सुग्रीव। ५-कर्ण। ६-अश्विनीकुमार।

सूर्यपुत्री स्त्री० (सं) १-यमुना। २-बिजली।

सूर्यपुर पुं० (सं) दे० 'सूर्यनगर'।

सूर्यप्रभ वि० (सं) सूर्य से समान दीप्ति वाला।

सूर्यबिंब पुं० (सं) सूर्य का मण्डल।

सूर्यमंडल पुं० (सं) सूर्य का घेरा।

सूर्यमणि पुं० (सं) १-सूर्यकांतमणि। २-एक पुष्प-वृक्ष।

सूर्यमुखी पुं० (सं) एक प्रकार का पीले रङ्ग का फूल जो सूर्योदय के समय अपना मुख सूर्य की ओर तथा सूर्यास्त के समय मुख नीचे कर लेता है।

सूर्ययंत्र पु० (सं) १-सूर्य के मंत्र और बीज से अङ्कित ताम्रपत्र जिसका सूर्य के उद्देश्य से पूजन किया जाता है। २-वह दूरबीन जिससे सूर्य की गति विधि का हाल जाना जाता है।

सूर्यरश्मि स्त्री० (सं) १-सूर्य की किरण। २-सविता।

सूर्यलोक पुं० (स) सूर्य के रहने का लोक (कहते हैं कि युद्धक्षेत्र में वीर गति प्राप्त करने वाले इसी लोक में जाते हैं)।

सूर्यवंश पुं०(सं) भारतवर्ष के राजाओं का एक प्राचीन

वंश जिसकी उत्पत्ति मनु के पुत्र इक्ष्वाकु नाम से की जाती है।
सूर्यवंशी वि० (सं) सूर्यवंश का।
सूर्यसंक्रम पुं० (सं) दे० 'सूर्यसंक्रमण'।
सूर्यसंक्रमण पुं० (सं) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।
सूर्यसंक्रांति पुं० (सं) दे० 'सूर्यसंक्रमण'।
सूर्यसिद्धांत पुं० (सं) ज्योतिष विद्या का भास्कराचार्य द्वारा रचित गणित का एक ग्रन्थ।
सूर्यसुत पुं० (सं) १-कर्ण। २-शनि। ३-सुग्रीव।
सूर्यांशु पुं० (सं) सूर्य की किरण।
सूर्या स्त्री० (सं) १-सूर्य की पत्नी। २-संज्ञा। ३-नव-विवाहिता स्त्री।
सूर्याणी स्त्री० (सं) संज्ञा। सूर्य की पत्नी।
सूर्यातप पुं० (सं) सूर्य की गरमी। धूप।
सूर्यात्मज पुं० (सं) १-शनि। २-कर्ण। ३-सुग्रीव।
सूर्यावर्त पुं० (सं)१-आधासीसी नामक सिर की पीड़ा २-एक प्रकार का जलपात्र।
सूर्यास्त पुं० (सं) १-सन्ध्या को सूर्य का डूबना या छिपना। २-सन्ध्या का समय।
सूर्योदय पुं० (सं) १-सूर्य का उदय होना। २-सूर्य निकलने का समय। प्रातःकाल। सवेरा।
सूर्योदयगिरि पुं० (सं) उदयाचल।
सूर्योपासक पुं० (सं) सूर्य की उपासना करने वाला।
सूर्योपासना स्त्री० (सं) सूर्य की आराधना या पूजा।
सूल पुं० (हि) दे० 'शूल'।
सूलधर पुं० (हि) दे० 'शूलधर'।
सूलधारी पुं० (हि) दे० 'शूलधर'।
सूलना क्रि० (हि) १-नुकीली वस्तु से छेदना। २-कष्ट देना। ३-पीड़ित होना। ४-नुकीली वस्तु से छिदना
सूलपानि पुं० (हि) दे० 'शूलपाणि'।
सूली स्त्री० (हि) १-प्राणदण्ड। २-फांसी। ३-लोहे की नुकीली छड़ जिस पर बिठाकर अपराधी को प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था।
सूवना क्रि० (हि) बहना। प्रवाहित होना।
सूवर पुं० (हि) दे० 'सूअर'।
सूवा पुं० (हि) सुग्गा। तोता।
सूस पुं० (हि) सूँस नामक जलजन्तु जो मगर की तरह होता है।
सूसमार पुं० (हि) दे० 'सूस'।
सूसि पुं० (हि) दे० 'सूस'।
सूहा पुं० (हि) १-एक प्रकार का लाल रङ्ग। २-एक संपूर्ण जाति का राग। वि० लाल रङ्ग का।
सूहाकान्हड़ा पुं० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।
सूहाटोड़ी स्त्री० (हि) सम्पूर्ण जाति की एक सङ्कर रागिनी।
सूहाबिलावल पुं० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।
सूहाश्याम पुं० (हि) सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।
सूही वि० (हि) दे० 'सूहा'।
सृंखला स्त्री० (हि) दे० 'शृंखला'।
सृंग पुं० (हि) दे० 'शृंग'।
सृंगबेर पुं० (हि) अदरक। सोंठ।
सृंगबेरपुर पुं० (हि) दे० 'शृंगबेरपुर'।
सृंगी पुं० (हि) दे० 'शृंगी'।
सृकंडु स्त्री० (सं) खाज। खुजली।
सृक पुं० (सं) १-शूल। भाला। २-बाण। ३-वायु। तीर। पुं० माला। गजरा। हार।
सृगाल पुं० (सं) १-शृगाल। गीदड़। २-धूर्त। ३-कायर। ४-बदमिजाज व्यक्ति।
सृगालिनी स्त्री० (सं) गीदड़ी। सियारिन।
सृगाली स्त्री० (सं) दे० 'शृगालिनी'।
सृग्विनी स्त्री० (हि) दे० 'स्रग्विणी'।
सृजक पुं० (हि) सृष्टि करने वाला।
सृजन पुं० (हि) १-सृष्टि रचना करने की क्रिया। २-सृष्टि।
सृजनशीलता स्त्री०(हि) रचना शक्ति।
सृजनहार पुं० (हि) सृष्टिकर्ता।
सृजना क्रि० (हि) रचना करना। सृष्टि रचना।
सृज्य वि० (सं) १-जो उत्पन्न किया जाने वाला हो २-जो छोड़ा या निकाला जाने वाला हो।
सृत वि० (सं) चला या खिसका हुआ।
सृष्ट वि० (सं) १-जिसकी सृष्टि या रचना की गई हो। निर्मित। रचित। २-त्यक्त। ३-युक्त। ४-निश्चित। ५-अलंकृत। ६-बहुत। पुं० टेंटू। तेंदुक
सृष्टि स्त्री० (सं) १-उत्पत्ति। पैदाइश। २-संसार। ३-संसार की उत्पत्ति। ४-उदारता। ५-प्रकृति। निसर्ग।
सृष्टिकर्ता पुं० (सं) संसार की रचना करने वाला ब्रह्मा। ईश्वर।
सृष्टिकृत् पुं० (सं) सृष्टिकर्ता।
सृष्टिविज्ञान पुं० (सं) दे० 'सृष्टिशास्त्र'।
सृष्टिशास्त्र पुं० (सं) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट तथा विकास का विवेचन होता है (कॉस्मोजेनी)।
सृष्ट्यंतर पुं० (सं) किसी दूसरी जाति की स्त्री से विवाह करने के बाद होने वाली सन्तान।
सेंक स्त्री० (हि) १-सेंकने की क्रिया या भाव। २-ताप गरमी।
सेंकना क्रि० (हि) १-आग पर या उसके सामने रख कर गरमी पहुँचाना। २-धूप में गरमी पहुँचाने वाली वस्तु के सामने रखकर उसकी गरमी से लाभ उठाना।

सेंगर पुं० (हि) १-एक पौधा। २-इस पौधे की फली ३-क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।
सेंट स्त्री० (हि) दूह की धार। पुं० (अं) सुगन्धित द्रव्य। इत्र।
सेंत स्त्री० (हि) पास का कुछ खर्च न होना।
सेंतना क्रि० (हि) १-बटोरकर रखना। २-समेटना।
सेंतमेंत अव्य० (हि) १-मुफ्त में। २-व्यर्थ। फजूल
सेंति स्त्री० (हि) दे० 'सेंती'।
सेंती स्त्री० (हि) दे० 'सेंत'। प्रत्य० पुरानी। हिन्दी में करण और अपादान की विभक्ति।
सेंथी स्त्री० (हि) बरछी। भाला।
सेंदुर पुं० (हि) सिंदूर।
सेंदुरा वि० (हि) सिंदूर के रङ्ग का लाल।
सेंदुरिया पुं० (हि) एक सदाबहार पौधा। वि० लाल या सिन्दूर के रङ्ग का।
सेंदुरियाग्राम पुं० (हि) एक प्रकार का आम जो पकने पर कुछ-कुछ लाल रङ्ग का हो जाता है।
सेंदुरी वि० (हि) दे० 'सेंदुरिया'। स्त्री० लाल गाय।
सेंद्रिय वि० (सं) १-जिसमें इन्द्रियां हों। २-जिसमें मरदानगी हो।
सेंध स्त्री० (हि) चोरी करने के लिए दीवार तोड़ कर बनाया हुआ छेद। नकब।
सेंधना क्रि० (हि) सेंध लगाना।
सेंधा पुं० (हि) खान में से निकलने वाला नमक। सैंधव।
सेंधिया वि० (हि) १-सेंध लगाने वाला। २-दीवार में छेद करके चोरी करने वाला। पुं० सिंधिया।
सेंधुआर पुं०(देश) एक प्रकार का मांसाहारी जन्तु।
सेंमल पुं० (हि) सेमल। सेंहुड़।
सेंवई स्त्री० (हि) गुँधे हुए मैदे से बनाये हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी के साथ पका कर खाये जाते हैं।
सेंवर पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सेंहुआ पुं०(हि) एक चर्म रोग जिसमें शरीर पर श्वेत चित्ते पड़ जाते हैं।
सेंहुड़ पुं० (हि) थूहर।
से प्रत्य० (हि) करण तथा अपादान कारण का चिह्न वि० समान। सदृश। सर्व० वे। स्त्री०(सं) १-सेवा। २-कामदेव की पत्नी।
सेई स्त्री० (हि) अनाज नापने का काठ का गहरा बरतन।
सेउ पुं० (हि) दे० 'सेब'।
सेकंड पुं० (अं) एक मिनट का साठवां भाग।
सेक पुं० (सं) १-पानी छिड़कना। पेड़ों को सींचना २-अभिषेक। ३-तेल लगाना या मलना।
सेकपात्र पुं० (सं) पानी सींचने का बरतन। डोल।
सेकभाजन पुं० (सं) दे० 'सेकपात्र'।
सेक्तव्य वि०(सं)१-सींचने के योग्य। २-जिसे सींचना हो।
सेक्ता वि० (सं) सींचने वाला। तर करने वाला। पुं० १-पति। २-सींचने वाला।
सेक्रेटरी पुं० (अं) १-वह उच्च कर्मचारी जिसके आधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मन्त्री। सचिव। २-वह अधिकारी जिस पर किसी संस्था के कार्य-सम्पादन का भार हो।
सेख पुं० (हि) १-अन्त। समाप्ति। २-शेख। ३-शेष सर्पराज।
सेखर पुं० (हि) दे० 'शेखर'।
सेखावत पुं० (हि) राजपूतों की एक जाति या शाखा
सेखी स्त्री० (हि) दे० 'शेखी'।
सेगा पुं० (अ) विभाग। महकमा।
सेच पुं० (स) छिड़काव। सिंचाई।
सेचक वि० (सं) सींचने वाला। पुं० बादल। मेघ।
सेचन पुं० (सं) १-सिंचाई। २-छिड़काव। ३-अभिषेक। ४-धातु की ढलाई।
सेचनक पुं० (सं) अभिषेक।
सेचनघट पुं०(सं) वह बरतन जिससे जल सींचते हैं
सेचनी स्त्री० (सं) बाल्टी। डोल्ची।
सेचनीय वि० (सं) सींचने या छिड़कने योग्य।
सेचत वि० (स) १-जो सींचा गया हो। २-जिस पर छींटे दिये गये हों।
सेच्य वि० (सं) १-सींचने योग्य। जिसे सींचना हो
सेज स्त्री०(हि) शय्या। बिछौना।
सेजपाल पुं० (हि) शयनागार का रक्षक। शय्यापाल।
सेजरिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेजिया स्त्री० (हि) दे० 'सेज'।
सेज्या स्त्री० (हि) दे० 'शय्या'।
सेझवारि पुं० (हि) सह्याद्रि श्रेणी।
सेझना क्रि० (हि) हटना। दूर होना।
सेटना क्रि०(हि)१-मानना। २-महत्व स्वीकार करना।
सेठ पुं० (हि) १-धनी और महाजन। बड़ा साहूकार २-धनी और प्रतिष्ठित वणिकों की उपाधि। ३-खत्रियों की एक जाति।
सेढ़ा पुं० (देश) भादों के महीने में होने वाला एक प्रकार का धान।
सेत पुं० (हि) पुल। सेतु। वि० श्वेत। सफेद।
सेतद्युति पुं० (हि) चन्द्रमा।
सेतबंध पुं० (हि) दे 'सेतुबंध'।
सेती अव्य० (हि) दे० 'से'।
सेतु पुं० (सं) १-नदी आदि पर का पुल। २-पानी की रुकावट के लिये बना हुआ बांध। (डैम)। ३-सीमा। हद। ४-मर्यादा। प्रतिबंध। ५-टीका। व्याख्या। ६-वह मकान जिसमें धरनें लोहे की कीलों से जड़ी हुई हों।

सेतुक पुं०(सं)१-पुल। २-बांध। ३-बरुणवृक्ष।
सेतुकर पुं० (सं) सेतु या पुल बनाने वाला।
सेतुकर्म पुं० (सं) पुल या सेतु बनाने का काम।
सेतुपथ पुं० (सं) दुर्गम स्थानों तथा पहाड़ों पर जाने का मार्ग।
सेतुबंध पुं० (सं) १-पुल बनाने का काम। २-कन्याकुमारी के पास का वह पुल जो लंका पर चढ़ाई करते समय रामचंद्र जी ने बनवाया था। नहर।
सेतुबंधन पुं० (सं) १-पुल बाँधना। पुल। ३-बांध।
सेतुभेत्ता पुं० (सं) सेतु या पुल तोड़ने वाला।
सेतुभेद पुं०(सं)१-पुल का टूटना। २-बांध का टूटना
सेतुवा पुं (हि) दे० 'सूस'।
सेतुशैल पुं० (सं) दो देशों के बीच में पड़ने वाला पहाड़।
सेथिया पुं०(हि) आंखों का इलाज करने वाला।
सेद पुं० (हि) दे० 'स्वेद'।
सेदरा वि० (हि) दे० 'स्वेदज'।
सेन पुं० (सं) १-शरीर। २-जीवन।३-बङ्गाल की वैद्य जाति की एक उपाधि। ४-एक भक्त नाई का नाम। वि० १-सनाथ। २-अधीन। पुं०(हि) बाज पक्षी।
सेनक पुं० (सं) एक वैयाकरण।
सेनकुल पुं० (सं) बंगाल का एक राजवंश।
सेनजित् वि० (सं) सेना को जीतने वाला। पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। स्त्री० एक अप्सरा।
सेनप पुं० (सं) सेनापति।
सेनपति पुं० (हि) सेनापति।
सेना स्त्री० (सं) १-अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित तथा युद्ध की शिक्षा पाये हुए सैनिकों का बड़ा दल। फौज। पल्टन। (मिलिटरी)। २-भाला बरछी। ३-इन्द्र का बज्र। ४-इन्द्राणी। क्रि० (हि) १-सेवा टहल करना। २-आराधना करना। ३-मादा पक्षी का गर्मी पहुँचाने के लिये अंडों पर बैठना।
सेनाकक्ष पुं० (सं) सेना का पार्श्व या बाजू।
सेनाकर्म पुं० (सं) १-सेना का नेतृत्व। २-सेना की व्यवस्था।
सेनाग्र पुं० (सं) सेना का वह दल जो आगे चलता है
सेनाचर पुं० (सं) सैनिक। सिपाही।
सेनाजीव पुं० (सं) दे० 'सेनाजीवी'।
सेनाजीवी पुं० (सं) सैनिक। सिपाही।
सेनादार पुं० (हि) सेनानायक। फौजदार।
सेनाधिकारी पुं० (सं) सेनानायक। फौज का अफसर या अधिकारी।
सेनाधिनाथ पुं० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधिप पुं० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधिपति पुं० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाधीश पुं० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनाध्यक्ष पुं० (सं) दे० 'सेनापति'।
सेनानायक पुं० (सं) १-सेनापति। २-सेना का बड़ा अधिकारी।
सेनानी पुं० (सं) १-सेनापति। २-कार्तिकेय। ३-एक रुद्र का नाम। ४-एक विशेष प्रकार का पासा।
सेनापति पुं०(सं) सेना का बड़ा या प्रधान अधिकारी (कमान्डर-इन-चीफ)। २-कार्तिकेय। ३-हिन्दी के एक कवि का नाम।
सेनापति-पति पुं० (सं) प्रधान सेनापति।
सेनापाल पुं० (सं) सेनानायक।
सेनापृष्ठ पुं० (सं) सेना का पिछला भाग।
सेनाभङ्ग पुं० (सं) सेना को तितर-बितर कर भगा देना।
सेनाभिगोप्ता पुं०(सं) सेना की रक्षा करने वाला।
सेनामुख पुं०(सं)१-सेना का अगला भाग। २-सेना का एक दल जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े तथा १५ पैदल सिपाही होते हैं।
सेनायत्त करना क्रि० (हि) सर्वसाधारण को सेना में भरती होने के लिये विवश करना। (कमांडियर)
सेना-रसद-विभाग पुं० (सं) वह विभाग जो सेना के लिये खाद्य सामग्री आदि जुटाने की व्यवस्था करता है। (कमिसेरियेट)।
सेनावास पुं० (सं) १-वह स्थान जहां पर सेना रहती हो। छावनी। २-डेरा। खेमा।
सेनावाह पुं० (सं) सेनानायक।
सेनाव्यूह पुं० (सं) युद्ध के समय भिन्न-भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के विभिन्न अंगों की स्थापना या युक्ति।
सेनास्थान पुं० (सं) छावनी। शिविर।
सेनि स्त्री० (हि) दे० 'श्रेणी'।
सेनिका स्त्री० (हि) १-एक छन्द। २-बाज पक्षी की मादा।
सेनी स्त्री० (फा) तश्तरी। (हि) १-पंक्ति। कतार। २-सीढ़ी। जीना। ३-बाजपक्षी की मादा। पुं० (हि) सहदेव का अज्ञातवास का नाम।
सेनुर पुं० (देश) सिन्दूर।
सेफालिका स्त्री० (हि) दे० 'शेफालिका'।
सेब पुं० (फा) नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल तथा उसका वृक्ष।
सेम स्त्री० (हि) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनाई जाती है।
सेमई पुं० (हि) हलका हरा रंग। स्त्री० दे० 'सेवई'।
सेमर पुं० (देश) दलदली जमीन। (हि) दे० 'सेमल'
सेमल पुं०(हि) एक बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल आते हैं जिनके डोडों में गूदे के स्थान पर रूई होती है।
सेमलमूसला पुं० (हि) सेमल वृक्ष की जड़।
सेमेटिक पुं०(अ) नृवंश-शास्त्र के अनुसार एक मानव-

वर्ग जिसमें अरब, मिस्री, यहूदी, सीरियन आदि जातियों को गिना जाता है।
सेर पुं० (हि) १-सोलह छटांक या अस्सी तोले का एक तौल। २-दे० 'शेर'। वि० (फा) तृप्त। (देश) एक अगहनिया धान।
सेरसाहि पुं० (फा) दिल्ली का बादशाह शेरशाह।
सेरवा पुं०(हि) १-वह कपड़ा जिससे अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। २-सिरहाने की ओर की खाट की पाटी।
सेरही स्त्री० (हि) एक प्रकार का लगान जो काश्तकार को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता है।
सेरा पुं० (फा) सींची हुई जमीन। (हि) खाट के सिराहने की ओर की पाटी।
सेरी स्त्री० (फा) १-तृप्त। सन्तोष। २-मन का भरना या अघाना।
सेर्ष्य वि० (सं) जो ईर्ष्यायुक्त हो।
सेल पुं० (हि) १-भाला। बरछा। २-सन का रस्सा ३-हल में लगी हुई नली जिसमें से होकर बीज भूमि पर गिरता है। (देश) वह काठ का बरतन जिससे नाव के अन्दर का पानी बाहर निकालते हैं।
सेलखड़ी स्त्री० (हि) दे० 'सिलखड़ी'।
सेलना क्रि० (हि) मरजाना। चल बसना।
सेला पुं० (हि) १-रेशमी चादर या दुपट्टा। २-साफा ३-वह धान जो भूसी अलग करने से पहले कुछ उबाल लिया गया हो।
सेलिया पुं० (देश) घोड़े की एक जाति।
सेली स्त्री० (हि) १-बरछी। २-छोटा दुपट्टा। ३-गांती ४-बद्धी माला। ५-एक मछली। (देश) दक्षिण भारत में होने वाला एक छोटा पेड़।
सेल्ल पुं० (हि) दे० 'सेल्ला'।
सेल्ला पुं० (हि) १-भाला। २-बरछी।
सेल्ह पुं० (हि) १-भाला। २-बरछी। ३-सायेदार भूमि।
सेल्हना क्रि० (हि) मर जाना।
सेल्हा पुं० (हि) एक प्रकार का अगहनिया धान।
सेल्ही स्त्री० (हि) दे० 'सेली'।
सेवँ पुं० (देश) एक प्रकार का ऊँचा पेड़।
सेवँई स्त्री० (हि) गुँधे हुए आटे के बने सूत जैसे लंबे लच्छे।
सेवँर पुं० (हि) दे० 'सेमल'।
सेव पुं० (हि) १-एक बेसन का बना हुआ पकवान जो सूत जैसा होता है। २-दे० 'सेव'। स्त्री० (हि) दे० 'सेवा'।
सेवक पुं० (सं) १-सेवा करने वाला नौकर सेवन करने वाला। ३-भक्त। उपासक। ४-सीने वाला दरजी।
सेवकाई स्त्री० (हि) सेवा। टहल। खिदमत।
सेवग पुं० (हि) दे० 'सेवक'।
सेवड़ा पुं० (हि) १-जैन साधु। २-एक ग्राम देवता। पुं० (देश) मैदा के मोटे सेव या पकवान।
सेवति स्त्री० (हि) दे० 'स्वाति'।
सेवती स्त्री० (सं) सफेद गुलाब।
सेवन पुं० (सं) १-परिचर्या। २-उपासना। ३-नियमित रूप से किया जाने वाला उपयोग। ४-उपभोग ५-एक प्रकार की घास।
सेवना क्रि० (हि) दे० 'सोना'।
सेवनी स्त्री० (सं) १-सूई। २-सीवन। टांका। ३-जूही स्त्री० (हि) दासी।
सेवनीय वि० (सं) १-सेवा के योग्य। २-व्यवहार के योग्य। ३-सोने योग्य।
सेवर पुं० (हि) दे० 'शबर'।
सेवरी स्त्री० (हि) दे० 'शबर'।
सेवांजलि स्त्री० (सं) भक्त या सेवक का दोनों हथेलियों के जुड़े हुए संपुट में स्वामी या उपास्य को कुछ अर्पण।
सेवा स्त्री० (सं) १-परिचर्या। टहल। २-नौकरी। ३-सार्वजनिक या राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जुम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। ४-उक्त विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों का वर्ग। (सर्विस)। ५-उपासना। ६-आश्रय। ७-रक्षा।
सेवाकाल पुं० (सं) वह अवधि जिसमें किसी ने नौकरी की हो।
सेवाजन पुं० (स) नौकर। सेवक। दास।
सेवाटहल स्त्री० (हि) परिचर्या। सेवा सुश्रूषा।
सेवाती स्त्री० (हि) दे० 'स्वाति'।
सेवादक्ष वि० (सं) जो सेवा करने में कुशल हो।
सेवाधर्म पु० (सं) सेवक का धर्म या कर्त्तव्य।
सेवानियोजनालय पु० (स) दे० 'नियोजनकेंद्र'। (एम्प्लाइमेंट ब्यूरो)।
सेवापंजी स्त्री० (स)वह पंजी जिसमें सेवकों के सेवाकाल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती है। (सर्विस बुक)।
सेवाभिरत वि० (सं) सेवा में लीन।
सेवाभृत वि० (स) जो सेवा में लगा हुआ हो।
सेवायुक्त वि० (सं) वह जो किसी सेवा या नौकरी में लगा हुआ हो। (एम्पलायड)।
सेवाय वि० (हि)अधिक। ज्यादा। अव्य० दे० 'सिवा'
सेवायोजक पुं० (सं) किसी संस्था या कारखाने में लोगों को नौकरी पर नियुक्त करने वाला। (एम्पलायर)।
सेवायोजनालय पुं० (सं) दे० 'नियोजनालय'।
सेवार स्त्री० (हि) दे० 'सिवार'।

सेवारा पुं० (हि) दे० 'सेवड़ा'।
सेवाल पुं० (हि) दे० 'सिवार'।
सेवाविलासनी स्त्री० (सं) दासी। नौकरानी। सेविका
सेवावृत्ति स्त्री० (सं) नौकरी।
सेवि पुं० (सं) १-बेर। २-सेब। वि० (हि) दे० 'सेवित'
सेविका स्त्री० (सं) दासी। नौकरानी।
सेवित वि० (स) १-जिसकी सेवा की जाय। २-उपभोग किया हुआ। ३-पूजित। पुं० १-बेर। २-सेब
सेवितव्य वि० (सं) १-सेवा के योग्य। २-आश्रय के योग्य।
सेविता स्त्री० (सं) १-सेवा। नौकरी। २-उपासना। ३-आश्रय। पुं० सेवक।
सेवी वि० (सं) १-सेवा करने वाला। २-पूजा करने वाला।
सेवोपहार पुं० (सं) वह धन जो किसी कर्मचारी को लंबे अरसे तक नौकरी करने के बाद अवकाश ग्रहण करने के समय दिया जाता है। (ग्रेचुइटी)।
सेव्य वि० (सं) १-जिसकी सेवा करनी उचित हो। २-जिसकी सेवा की जाय। ३-पूजा के योग्य। ४-रक्षण के योग्य। पुं० १-स्वामी। मालिक। २-खसखस। ३-जल। ४-समुद्री नमक।
सेव्यसेवकभाव पुं० (सं) भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी तथा अपने को सेवक माना जाता है।
सेश्वर वि० (सं) १-ईश्वरयुक्त। २-जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।
सेष पुं० (हि) १-दे० 'शेष'। २-दे० 'शेख'।
सेस पुं० (हि) दे० 'शेष'।
सेसनाग दे० 'शेषनाग'।
सेसर पुं० (हि) १-ताश का एक रङ्ग। २-जालसाजी
सेसरिया वि० (हि) छल से दूसरे का धन हरण करने वाला।
सेहत स्त्री० (अ) दे० 'स्वास्थ्य'।
सेहतखाना पुं० (अ) जहाज में मूत्रादि करने की कोठरी।
सेहतनामा पुं० (अ) नीरोग होने का प्रमाणपत्र।
सेहतबख्श पुं० (अ) आरोग्य करने वाली।
सेहरा पुं० (हि) १-विवाह के समय वर को पहनाने का फूलों या सुनहरे तारों की बनी मालाओं का पुञ्ज। २-विवाह का मुकुट। मौर। ३-विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत।
सेहराबंधाई स्त्री० (हि) नाई को दिया जाने वाला सेहरा बांधने का नेग।
सेहरी स्त्री० (हि) एक प्रकार की छोटी मछली।
सेही पुं० (हि) लोमड़ी के आकार का एक जन्तु जिसकी पीठ पर नुकीले कांटे होते हैं।
सेहुँआ पुं० (हि) एक प्रकार का चर्म रोग जिससे शरीर पर भूरे दाग पड़ जाते हैं।
सैंगर पुं० (हि) बबूल की फली।
सैंतना क्रि० (हि) १-संचित करना। २-समेटना। ३-सहेजना। ४-मार डालना।
सैंतालिस वि० (हि) चालीस और सात।
सैंतीस वि० (हि) तीस और सात।
सैंथी स्त्री० (हि) छोटा भाला। बरछी।
सैंदूर वि० (सं) सिंदूर के रङ्ग का।
सैंधव पुं० (स) १-नमक। २-सिन्ध देश का घोड़ा ३-सिंध देश का निवासी। वि० १-सिंध देश में उत्पन्न। २-सिंध देश का।
सैंधवपति पुं० (सं) जयद्रथ जो सिंध का राजा था
सैंधवी स्त्री० (सं) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंया पुं० (हि) दे० 'सैयां'।
सैंह वि० (सं) १-सिंह सम्बन्धी। २-सिंह के समान
सैंहथी स्त्री० (हि) दे० 'सैंथी'।
सैंहिकेय पुं० (सं) राहु।
सै वि० (हि) सौ। स्त्री० १-तत्व। सार। वीर्य। ३-बल। ४-वृद्धि।
सैकड़ा पुं० (हि) सौ का समूह।
सैकड़े अव्य० (हि) प्रतिशत। प्रति सौ के हिसाब से
सैकत वि० (सं) १-रेतीला। २-बालू का बना। पुं० १-बालुआ किनारा। २-रेतीली जमीन।
सैकतिक वि० (सं) १-सैकत सम्बन्धी। २-सन्देहजीवी। पुं० १-साधु। २-मंगलसूत्र।
सैकल पुं० (अ) हथियारों को साफ करने तथा सान चढ़ाने का काम।
सैथी स्त्री० (हि) बरछी। छोटा भाला।
सैद पुं० (हि) दे० 'सैयद'।
सैदगाह स्त्री० (हि) दे० 'शिकारगाह'।
सैद्धांतिक पुं० (सं) १ सिद्धांत का ज्ञान। विद्वान। पंडित। २-तांत्रिक। वि० सिद्धांत-सम्बन्धी।
सैन स्त्री० (हि) १-संकेत। इशारा। २-निशान। चिह्न। ३-दे० 'सेना'। पुं० (देश) एक प्रकार का बगला।
सैनपति पुं० (हि) सेनापति।
सैनभोग पुं०(हि) वह नैवेद्य जो रात के समय मंदिरों में चढ़ाया जाता है।
सैना स्त्री० (हि) दे० 'सेना'।
सैनापति पुं० (हि) सेनापति।
सैनापत्य पुं० (सं) सेनापति का पद या काम। वि० सेनापति सम्बन्धी।
सैनिक पुं० (सं) १-सिपाही। २-प्रहरी। ३-किसी का वध करने के लिए रखा हुआ व्यक्ति। वि० सेना का। सेना सम्बन्धी।
सैनिकता स्त्री० (सं) १-सैनिक जीवन। सैनिक का पद या काम। २-युद्ध। लड़ाई।

**सैनिकवाद** पुं० (सं) नित्य भयंकर युद्धोपकरण बनाने या विराट् सेना रखने का सिद्धांत। (मिलिटरी-इज़्म)।

**सैनिकसहचारी** पुं०(सं) किसी राजदूत के साथ उसके कार्यालय में काम करने वाला वह सैनिक अधिकारी जो उसे सैनिक विषयों पर परामर्श देता है (मिलिटरी अटेशे)।

**सैनिकीकरण** पुं० (सं) लोगों को सैनिक बनाने तथा सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम। (मिलिटिराइजेशन)।

**सैनी** पुं० (हि) नाई। हज्जाम। स्त्री० दे० 'सेना'।

**सैनेय** वि० (हि) सेना के योग्य। लड़ने के योग्य।

**सैनेश** पुं० (हि) सेनापति।

**सैनेस** पुं० (हि) सेनापति।

**सैन्य** पुं० (सं) १-सैनिक। सिपाही। २-सेना। फौज ३-पलटन। ४-प्रहरी। ५-छावनी। वि० सेना-सम्बन्धी। सेना का।

**सैन्यकक्ष** पुं० (सं) दे० 'सेनाकक्ष'।

**सैन्यक्षोभ** पुं० (सं) सेना का विद्रोह। फौजी बगावत

**सैन्यद्रोह** पुं० (सं) सेना का विद्रोह। (म्यूटिनी)।

**सैन्यनायक** पुं० (सं) सेनानायक।

**सैन्यनिवेशभूमि** स्त्री० (सं) वह स्थान जहां सेना पड़ाव डाले।

**सैन्यपति** पुं० (सं) सेनापति।

**सैन्यपाल** पुं० (सं) सेनापति।

**सैन्यपृष्ठ** पुं० (सं) सेना का पिछला भाग।

**सैन्यवास** पुं० (सं) सेना का पड़ाव। छावनी।

**सैन्यविभागाध्यक्ष** पुं० (सं) सेना-विभाग का वह प्रधान अधिकारी जो सेनापति के आदेश से विभिन्न सेना की व्यवस्था करता है तथा अन्य आदेशों का पालन करता है। (एडजूटेंट जनरल)।

**सैन्यवियोजन** पुं० (सं) सङ्गठित सेना को भंग करके सैनिकों को बरखास्त कर देना। (डिमॉबिलाइजेशन)

**सैन्यशिक्षार्थी** पुं०(सं) वह शिक्षार्थी जो सैनिक विद्यालय में शिक्षा पा रहा हो। (कैडेट)।

**सैन्यसंसज्जन** पुं० (सं) सेनाओं का युद्ध के लिये शस्त्रों से सुसज्जित करके तैयार करना। (मॉबिलाइजेशन ऑफ दी आरमी)।

**सैन्यसज्ज** स्त्री० (सं) युद्ध के लिये सेना की तैयारी।

**सैन्यसंदेशवाहक** पुं० (सं) वह अधिकारी जो सेनापति की आज्ञाएँ युद्धस्थल तक तथा युद्धस्थल की स्थिति के बारे में विवरण सेनापति तक पहुँचाने का कार्य करता है (एडीकांग)।

**सैन्याधिपति** पुं० (सं) सेनानायक।

**सैन्याध्यक्ष** पुं० (सं) सेनानायक।

**सैन्यावास** पुं० (सं) सैनिकों के रहने के लिये विशेष प्रकार का स्थान। (बैरक)।

**सैन्योपवेशन** पुं०(सं) सेना का पड़ाव या डेरा डालना।

**सैफ** स्त्री० (अ) तलवार।

**सैफी** वि० (हि) तिरछा।

**सैयद** पुं० (अ) १-मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का एक आदमी। २-मुसलमानों की चार जातियों में से दूसरी जाति।

**सैयाँ** पुं० (हि) स्वामी। पति।

**सैया** स्त्री० (हि) दे० 'शय्या'।

**सैयाद** पुं० (अ) १-बहेलिया। २-चिड़ीमार। व्याध।

**सैरंध्र** पुं० (सं) १-घर का नौकर। २-एक वर्णसङ्कर जाति।

**सैरंध्रिका** स्त्री० (सं) परिचारिका। दासी।

**सैरंध्री** १-अंतःपुर में काम करने वाली दासी। २-दूसरे घर में रहने वाली स्त्री। ३-द्रोपदी का वह नाम जो अज्ञातवास के समय रखा गया था।

**सैर** स्त्री० (फा)१-मौज। आनन्द। २-मन बहलाने के लिये कहीं जाना। इधर-उधर घूमना-फिरना। ३-मनोरंजक दृश्य। ४-बाग,बगीचे आदि में कुछ मित्रों का होने वाला खानपान तथा आमोदप्रमोद वि० (सं) हल या सीर सम्बन्धी।

**सैरगाह** पुं० (फा) सैर करने का स्थान।

**सैरसपाटा** पुं० (फा)मन बहलाव के लिये कहीं घूमने फिरने जाना।

**सैरिंध्री** स्त्री० (सं) दे० 'सैरंध्री'।

**सैल** स्त्री० (हि) १-सैर। २-सेल। ३-बाढ़। ४-स्रोत बहाव।

**सैलकुमारी** स्त्री० (हि) दे० 'शैलकुमारी'।

**सैलजा** स्त्री० (हि) दे० 'शैलजा'।

**सैलतनया** स्त्री० (हि) पार्वती।

**सैलसुता** स्त्री० (हि) पार्वती।

**सैला** पुं० (हि) १-लकड़ी का छोटा डंडा। मेख। २-गुल्ली। ३-मुँगरी। ४-वह छोटा डंडा जो जुवे के छेद में डाला जाता है।

**सैलात्मजा** स्त्री० (हि) पार्वती।

**सैलानी** वि०(हि) सैर-सपाटा करने या मनमाना घूमने वाला।

**सैलाब** पुं० (फा) बाढ़। जलप्लावन।

**सैलाबा** पुं० (फा) वह फसल जो पानी में डूब गई हो।

**सैलाबी** वि० (फा) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो। स्त्री० सील। तरी।

**सैलूष** पुं० (हि) दे० 'शैलूष'।

**सैव** पुं० (हि) दे० 'शैव'।

**सैवल** (हि) दे० 'शैवाल'।

**सैव्य** पुं० (हि) दे० 'शैव्य'।

**सैस** वि० (सं) दे० 'सैसक'।

**सैसक** वि० (सं) १-सीसे का बना हुआ। २-सीसा

सम्बन्धी ।
सैसव पुं० (हिं) दे० 'शैशव'।
सैसवता स्त्री० (हिं) दे० 'शैशव'।
सैवाल पुं० (सं) दे० 'शैवाल'।
सैहथी स्त्री० (सं) १-बरछी। २-भाला। ३-शक्ति।
सों प्रत्य० (हि) द्वारा। से। वि० दे० 'सा'। अव्य० दे० 'सौंह'। सर्व० दे० 'सो'। स्त्री० दे० 'सौंह'।
सोंचरनमक पुं० (हि) काला नमक।
सोंज स्त्री० (हि) दे० 'सौंज'।
सोंटा पुं० (हि) १-मोटा डंडा। २-भांग घोटने का डंडा। ३-लोबिया। ४-मस्तूल बनाने की लकड़ी।
सोंटाबरदार पुं० (हि) आसाबरदार। बल्लमदार।
सोंठ स्त्री० (हि) सुखाई हुई अदरक। शुण्ठि।
सोंठौरा पुं० (हि) सोंठ डाल कर बनाया हुआ सूजी का लड्डू।
सोंध पुं० (हि) दे० 'सौंध'।
सोंधा वि० (हि) १-सुगन्धित। २-मिट्टी पर पहली वर्षा पड़ने पर आने वाली सुगन्ध। पुं० १-सिर के बाल धोने का सुगन्धित मसाला। २-सुगन्ध।
सोंध वि० (हि) दे० 'सोंधा'।
सोंह स्त्री० (हि) दे० 'सौंह'।
सोंहीं अव्य० (हि) दे० 'सौंह'।
सोंहैं अव्य० (हि) दे० 'सौंह'।
सो सर्व(हि)वह। अव्य० इसलिये। वि० समान। भांति
सोऽहम पद (सं) वह (अर्थात् ब्रह्म) मैं ही हूँ।
सोऽहमस्मि पद (सं) वही मैं हूँ अर्थात मैं ही ब्रह्म हूँ
सोअना क्रि० (हि) दे० 'सोना'।
सोआ पुं० (हि) एक प्रकार का मृग।
सोई स्त्री० (हि) वह गड्ढा जहाँ बरसात का पानी रुक जाता है। सर्व.दे० 'वही'। अव्य दे० 'सो'।
सोऊ सर्व.(हि) वह भी।
सोक पुं० (हि) दे०'शोक'। (देश) चारपाई बुनने के समय बुनावट में वह छेद जिसमें रस्सी निकाल-कर कसते हैं।
सोकन पुं० (हि) वह बैल जिसका रंग कालापन लिए हुए सफेद हो।
सोकना क्रि०(हि)१-सोकना। २-शोक या रंज करना
सोकित वि० (हि) शोकयुक्त।
सोखक वि० (हि) १-शोषण करने वाला। २-नाश करने वाला।
सोखता पुं० (हि) दे० 'सोख्ता'।
सोखना क्रि० (हि) १-शोषण करना। २-जल या नमी चूस लेना। २-पीना। पान करना (व्यंग)।
सोखाई स्त्री०(हि)१-सोखने की क्रिया, भाव या मज-दूरी। २-जादूटोना।
सोख्त स्त्री० (फा) जलन।
सोख्ता पुं० (हि) स्याहीसोख। लिखे हुए लेख पर की स्याही सोखने वाला खुरदरा कागज। (ब्लाटिंग पेपर)। वि० (फा) १-जला हुआ। २-प्रेमी। ३-विषाद युक्त। पुं० (फा) बुझा हुआ कोयला जिसमें जल्दी से आग लग जाती है।
सोग पुं० (हि) शोक। दुःख। रंज।
सोगिनी वि० (हि) शोक करने वाली (स्त्री)।
सोगी वि० (हि) शोकार्त्त। शोक मनाने वाला।
सोच पुं० (हि) १-चिन्ता। फिक्र। २-दुःख। ३-पश्चात्ताप।
सोचक पुं० (हि) दरजी।
सोचना क्रि० (हि) १-किसी विषय पर मन में कुछ विचार करना। २-चिंता या फिक्र करना। ३-खेद करना।
सोचविचार पुं० (हि) सोचने तथा समझने की क्रिया या भाव।
सोचाना क्रि० (हि) दे० 'सुचाना'।
सोज स्त्री०(हि)१-सूजन। शोथ। २-सामग्री। सामान पुं० (फा) वेदना। जलन। संताप।
सोजन पुं० (फा) १-सूई। २-कांटा।
सोजाक पुं०(हि) दे० 'सूजाक'।
सोझ वि० (हि) सीधा।
सोझा वि० (हि) सीधा।
सोटा पुं० (हि) दे० 'सोंटा'। पुं० (देश०) सुग्गा। तोता।
सोडा पुं० (अं) एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रासायनिक प्रक्रिया से शुद्ध करके बनाया जाता है
सोडावाटर पुं० (अं) एक प्रकार का पानी जिसमें कारबन डाईऑक्साइड गैस मिली होती है तथा जो बहुत पाचक होता है।
सोढ वि०(सं) १-सहिष्णु। सहनशील। २-जो सहन किया गया हो।
सोढर वि०(देश०) मूर्ख। बेवकूफ।
सोढव्य वि० (सं) सह्य। सहन करने योग्य।
सोत पुं० (हि) स्रोता। सोता।
सोता पुं० (हि) १-कहीं से निकल कर बराबर बहने वाली जल की छोटी धारा। झरना। २-नहर। ३-नदी की शाखा।
सोतिया स्त्री० (हि) दे० 'सोता'।
सोतिहा पुं० (हि) वह कूआँ जिसमें सोते से पानी आता हो।
सोती स्त्री०(हि)१-सोता। धारा। २-नदी की शाखा। स्त्री० (देश०) स्वाती नक्षत्र।
सोत्कंठ वि० (हि) उत्कंठायुक्त।
सोत्कर्ष वि० (सं) उत्तम। दिव्य। उत्कर्षयुक्त।
सोत्सव वि० (सं) १-उत्सवसहित। २-प्रसन्न। खुश।
सोथ पुं० (हि०) दे० 'शोथ'।
सोदर पुं०(सं) सगा भाई। वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

**सोदरा** स्री० (सं) सगी बहन।

**सोदरी** स्री० (हि०) सगी बहन।

**सोदरीय** वि० (सं) दे० 'सोदर'।

**सोध** पुं०(हि०) १-खोज। खबर। २-संशोधन। ३-चुकता या बेबाक होना। पु०(हि०) महल। प्रासाद।

**सोधक** पुं० (हि०) दे० 'शोधक'।

**सोधन** पुं० (हि०) १-खोज। तलाश। २-अनुसंधान करने की क्रिया। ३-ठीक करने का काम।

**सोधना** क्रि० (हि) १-साफ या शुद्ध करना। २-दोष दूर करना। ३-ढूँढ़ना। ४-कुछ संस्कार करके धातुओं को औषध रूप में काम में लाने योग्य बनाना। ५-निश्चित करना। ६-ऋण चुकाना।

**सोधवाना** क्रि०(हि) दे० 'सोधना'।

**सोधान** क्रि०(हि) १-सोधने का काम दूसरे से कराना। ३-तलाश करना।

**सोन** पुं०(हि) १-बिहार का एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है। २-दे० 'सोना'। वि० लाल। अरुण। स्री० एक प्रकार की सदाबहार बेल। पुं० (हि) लहसुन। पुं० (देश) एक जलपक्षी।

**सोनकिरवा** पुं० (हि) १-एक प्रकार का कीड़ा। २-जुगनू।

**सोनकेला** पुं० (हि) चम्पाकेला। पीपलकेला।

**सोनचंपा** पुं० (हि) पीले या सोने के रङ्ग की चम्पा।

**सोनचिरी** स्री० (हि) १-नट जाति की स्त्री। नटी। २-नर्तकी।

**सोनजरद** स्री० (हि) पीली जूही।

**सोनजर्द** स्री० (हि) पीली जूही।

**सोनजिरद** स्री० (हि) पीली जूही। स्वर्णयूथिका।

**सोनजूही** स्री० (हि) एक प्रकार की पीले रङ्ग वाली जूही।

**सोनभद्र** पुं० (सं) सोन नदी।

**सोनरास** पुं० (देश) पका हुआ पान।

**सोनवाना** वि० (हि) सुनहला। सोने का।

**सोनहला** वि० (हि) सोने के रङ्ग का। पुं० भटकैया का कांटा।

**सोनहा** पुं० (हि) कुत्ते की जाति का एक जंगली जानवर।

**सोना** पुं० (हि) १-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य उज्ज्वल पीले रंग की धातु जिसके गहने बनते हैं। स्वर्ण। कंचन २-राजहंस। ३-बहुत सुन्दर तथा बहुमूल्य पदार्थ। ४-मझोले आकार का एक पहाड़ी वृक्ष। क्रि० (हि) १-लेट कर शरीर तथा मस्तिष्क को विश्राम देने की अवस्था में होना। नींद लेना। शयन। २-शरीर के किसी अंग का शून्य होना। ३-किसी विषय या बात की ओर उदासीन होकर चुप अथवा निष्क्रिय रहना।

**सोनागेरू** पुं० (हि) अधिक लाल तथा मुलायम जाति का गेरू।

**सोनाचांदी** स्री० (हि) धन। दौलत। माल।

**सोनापाठा** पुं०(हि) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसके फल, बीज तथा छाल दवा के काम आते हैं।

**सोनामक्खी** स्री०(हि) १-एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग दवा के रूप में होता है। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

**सोनामाखी** स्री० (हि) दे० 'सोनामक्खी'।

**सोनामुखी** स्री० (हि) स्वर्णपत्री।

**सोनिजरद** स्री० (हि) दे० 'सोनजर्द'।

**सोनित** पुं० (हि) दे० 'शोणित'।

**सोनी** पुं० (हि) सुनार। स्वर्णकार।

**सोपकरण** वि० (सं) उपकरणयुक्त।

**सोपत** पुं० (हि) दे० 'सुभीता'।

**सोपाधि** वि० (सं) दे० 'सोपाधिक'।

**सोपाधिक** वि० (सं) १-जिसमें कोई शर्त या प्रतिबन्ध हो (कण्डीशनल)। २-जो किसी सीमा या मर्यादा से बांधा हुआ हो (क्वालिफाइड)।

**सोपान** पुं० (सं) १-जीना। सीढ़ी। २-मोक्ष प्राप्ति का उपाय (जैन)।

**सोपानकूप** पुं०(सं) वह कूआं जिसमें नीचे तक जाने के लिए सीढ़ी लगी हो।

**सोपानपंक्ति** स्री० (सं) सीढ़ियों का क्रम।

**सोपानपरंपरा** स्री० (सं) दे० 'सोपानपंक्ति'।

**सोपानपथ** पुं० (सं) सीढ़ी। जीना।

**सोपानपद्धति** स्री० (सं) दे० 'सोपानपथ'।

**सोपानमार्ग** पुं० (सं) दे० 'सोपानपथ'।

**सोपानिका** स्री० (सं) मकान के नीचे के खण्ड से ऊपर तक के किसी खण्ड में पहुँचाने या वहां से नीचे के खण्ड तक पहुँचाने का बिजली का उत्थानक। उन्नयनयन्त्र। (लिफ्ट)।

**सोपानिका-चालक** पुं० (सं) उन्नयनयन्त्र को चलाने वाला। (लिफ्टमैन)।

**सोपानित** वि० (सं) सोपान या सीढ़ियों वाली।

**सोपि** सर्व० (सं) १-वही। २-वह भी। ३-दे० सोऽपि।

**सोफता** पुं० (हि) १-एकांत स्थान। २-रोगादि में कुछ कमी होना।

**सोफा** पुं०(अं)एक प्रकार का लम्बा गद्दीदार आसन कोच।

**सोफियाना** वि०(हि) दे० 'सूफियाना'। देख पड़ने पर सदा अच्छा लगाने वाला।

**सोफी** पुं० (हि) दे० 'सूफी'।

**सोभ** स्री०(हि) दे० 'शोभ'। पुं० (सं) गंधर्वों के एक नगर का नाम।

**सोभन** पुं० (हि) दे० 'शोभन'।

**सोभना** क्रि० (हि) शोभा देना।

सोभनीक वि० (हिं) सुन्दर। जिसमें शोभा हो।
सोभर पि० (हिं) सूतिकागृह। जच्चाखाना।
सोभांजन पुं० (सं) दे० 'शोभांजन'।
सोभा स्त्री० (हिं) दे० 'शोभ'।
सोभाकारी वि० (हिं) सुन्दर। शोभायुक्त।
सोभायमान वि० (हिं) दे० 'शोभित'।
सोभार वि० (हिं) जिसमें उभार हो। अव्य० उभार के साथ।
सोभित वि० (हिं) दे० 'शोभित'।
सोम पुं० (सं) १-सोमवार। २-चन्द्रमा। ३-अमृत ४-जल। ५-एक प्राचीन भारतीय लता जिसका सेवन वैदिक ऋषि मादक पदार्थ के रूप में करते थे ६-यम। ७-कुबेर। ८-स्वर्ग। ९-वायु। १०-आठ वस्तुओं में से एक। ११-एक पर्वत का नाम। १२-सोमयज्ञ।
सोमकर पुं० (सं) चन्द्रमा की किरण।
सोमकलश पुं० (सं) सोमरस रखने का पात्र या घड़ा।
सोमकांत वि०(सं) चन्द्रमा जैसी कांति वाला। चमकदार। पुं० चन्द्रकांतमणि।
सोमकाम वि० (सं) जिसे सोमपान करने की अभिलाषा हो।
सोमजाजी पु० (हिं) सोमयाजी।
सोमदेव पुं० (सं) १-चन्द्रमा। २-सोमदेवता।
सोमन पुं० (हिं) एक प्रकार का अस्त्र।
सोमनस पुं० (हिं) दे० 'सौमनस्य'।
सोमनाथ पुं० (सं) बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक जिसका मन्दिर काठियावाड़ में है तथा जिसे सन् १०२४ ई० में महमूद गजनबी ने लूटा था।
सोमप वि० (सं) १-यज्ञ में सोमरस पीने वाला। २-सोमरस पान करने वाला।
सोमपर्व पुं० (सं) सोमपान करने का उत्सव या पर्व।
सोमपा वि० (सं) दे० 'सोमप'।
सोमपात्र पुं० (सं) सोमरस पीने या रखने का बरतन।
सोमपान पुं० (सं) सोमरस पीने की क्रिया।
सोमपायी वि० (सं) सोमरस पीने वाला।
सोमपुत्र पुं० (सं) चन्द्रमा के पुत्र, बुध।
सोमप्रदोष पुं० (सं) सोमवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत।
सोमप्रभ वि० (सं) सोम या चन्द्रमा के समान प्रभाव वाला।
सोमबंधु पुं० (सं) १-कुमुद। २-सूर्य। ३-बुध।
सोमबेल स्त्री० (हिं) गुलचन्दनी का पौधा।
सोममख पुं० (सं) सोमयज्ञ।
सोममद पुं० (सं) सोमरस पान करने से होने वाला नशा।
सोमयज्ञ पुं० (सं) प्राचीन काल में एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था।
सोमयाग पुं० (सं) दे० 'सोमयज्ञ'।
सोमरस पुं० (सं) सोमलता का रस।
सोमराग पुं० (सं) सङ्गीत में एक राग।
सोमराज पुं० (सं) चन्द्रमा।
सोमराज्य पुं० (सं) चन्द्रलोक।
सोमरोग पुं० (सं) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग।
सोमलता स्त्री० (सं) १-दे० 'सोम'। २-गिलोय। ३-ब्राह्मी।
सोमलतिका स्त्री० (सं) दे० 'सोमलता'।
सोमलोक पुं० (सं) चन्द्रलोक।
सोमवंशीय वि० (सं)चन्द्रवंश का। चन्द्रवंश में उत्पन्न
सोमवंश्य वि० (सं) दे० 'सोमवंशीय'।
सोमवती अमावस्या स्त्री० (सं) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जो पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरि स्त्री० (सं) दे० 'सोमवल्लरी'।
सोमवल्लरी स्त्री० (सं) १-ब्राह्मी। २-एक वर्णवृत्त। ३-सोमलता।
सोमवल्ली स्त्री० (सं) १-सोमलता। २-गिलोय। ३-ब्राह्मी। ४-सुदर्शन।
सोमवार पुं० (सं) सात वारों में से एक जो रविवार और मंगलवार के बीच में पड़ता है। चन्द्रवार।
सोमवासर पुं० (सं) दे० 'सोमवार'।
सोमविक्रयी पुं० (सं) सोमरस बेचने वाला।
सोमसुत पुं० (सं) चन्द्रमा का पुत्र, बुध।
सोमाष्टमी स्त्री० (सं) वह अष्टमी तिथि जो सोमवार को पड़े।
सोमास्त्र पुं० (सं) एक प्रकार का अस्त्र।
सोमाह पुं० (सं) सोमवार का दिन।
सोमाहुति स्त्री० (सं) सोमरस की आहुति।
सोमेश्वर पुं० (सं) दे० 'सोमनाथ'।
सोमोद्भव पुं० (सं) श्रीकृष्ण। वि० चन्द्रमा से उत्पन्न
सोमोद्भवा स्त्री० (सं) नर्मदा नदी।
सोम्य वि० (सं) १-सोमयुक्त। सोम का। २-सोमपान के योग्य। ३-सोम की आहुति देने वाला।
सोय सर्व० (हिं)१-वही। २-सो। स्त्री० दे० 'सुभीता'
सोयम वि० (फा) तीसरा।
सोया पुं० (हिं) दे० 'सोआ'।
सोर पुं० (हिं) १-शोर। हल्ला। २-सुप्रसिद्ध। नाम ३-तट। किनारा। स्त्री० जड़। मूल। पुं० (सं) टेढ़ी चाल।
सोरठ पुं० (हिं) १-भारत का सौराष्ट्र प्रांत। २-एक राग का नाम।
सोरठमल्लार पुं० (हिं) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
सोरठा पुं० (हिं) अड़तालिस मात्राओं का एक छन्द।
सोरठी स्त्री० (हिं) एक रागिनी का नाम।

**सोरनी** स्त्री० (हि) १-झाड़ू। बुहारी। २-मृतक का तीसरे दिन होने वाला एक संस्कार जिसमें उसकी राख बटोर कर जलाशय में डाल दी जाती है।
**सोरवा** पुं० (हि) दे० 'शोरवा'।
**सोरह** वि० (हि) दे० 'सोलह'।
**सोरही** स्त्री० (हि) १-सोलह चित्ती कौड़ियों का समूह जिससे जूआ खेला जाता है। २-इन कौड़ियों खेला जाने वाला जूआ। ३-कटी हुई फसल का सोलह पूलों का बोझ।
**सोरा** पुं० (हि) दे० 'शोरा'।
**सोलंकी** पुं० (देश) क्षत्रियों का वह प्राचीन राजवंश जिसका शासन गुजरात में बहुत दिनों तक रहा।
**सोल** वि० (सं) १-शीतल। ठण्डा। २-कसैला; खट्टा। तथा तीता।
**सोलपंगो** पुं० (डि) केंकड़ा।
**सोलह** वि० (हि) दस और छः।
**सोलहनहाँ** पुं० (हि) सोलह नाखून वाला हाथी।
**सोलहसिंगार** पुं०(हि) स्त्रियों का पूरा सिंगार जिसके अन्तर्गत शरीर में उबटन लगाना, स्नान, सुन्दर वस्त्र, बाल सँवारना, काजल, सिंदूर भरना आदि शामिल हैं।
**सोला** पुं० (देश) एक प्रकार का झाड़ जिसके छिलके से अंग्रेजी टोप बनते हैं।
**सोल्लास** अव्य० (हि) आनन्द और उत्साह सहित। उल्लासपूर्वक।
**सोवज** पुं० (हि) शिकार का जानवर आदि।
**सोवन** पुं० (हि) सोने की क्रिया या भाव।
**सोवनार** स्त्री० (हि) शयनागार। सोने का कमरा।
**सोवरी** स्त्री० (हि) दे० 'सौरी'।
**सोवा** पुं० (हि) दे० 'सोआ'।
**सोवाना** क्रि० (हि) सुलाना।
**सोवियत** पुं० (रूसी) १-रूसी मजदूरों या सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभा। २-आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओं के प्रतिनिधि चलाते हैं।
**सोवैया** पुं० (हि) सोने वाला।
**सोषक** पुं० (हि) दे० 'शोषक'।
**सोषण** पुं० (हि) दे० 'शोषण'।
**सोषना** क्रि० (हि) सोखना।
**सोष** वि० (हि) सोखने वाला।
**सोसनी** वि० (हि) लाली लिये हुए नीले रङ्ग का।
**सोसु** वि० (हि) दे० 'सोषु'।
**सोस्मि** पद (सं) दे० 'सोऽहम्'।
**सोहँ** अव्य० (हि) दे० 'सौंह'।
**सोहं** वि० (हि) दे० 'सोऽहम्'।
**सोहंग** वि० (हि) दे० 'सोऽहम्'।
**सोहंमम** वि० (हि) दे० 'सोऽहम्'।
**सोहगी** स्त्री० (हि) १-विवाह की एक रीति जिसमें तिलक के बाद वर पक्ष वाले लड़की के लिये गहने आदि भिजवाते हैं। २-सिंदूर आदि सुहागसूचक वस्तुएँ।
**सोहन** वि० (हि) सुहावना। सुन्दर। पुं० १-सुन्दर पुरुष। २-नायक। एक प्रकार का रन्दा या रेती।
**सोहनपपड़ी** स्त्री० (हि) एक प्रकार की बढ़िया मिठाई
**सोहनहलवा** पु० (हि) मेवे, घी, चीनी आदि के मेल से बनाई गई एक प्रसिद्ध बढ़िया मिठाई।
**सोहना** क्रि० (हि) १-सुन्दर। शोभित लगना। २-रुचिकर लगना। ३-खेत की लगी घास अलगाना पुं० (फा) कसेरों का एक नुकीला औजार।
**सोहनी** स्त्री०(हि) १-झाड़ू। २-खेत की निराई। वि० सुन्दर। सुहावनी। सोहनी नामक रागिनी।
**सोहबत** पुं० (अ) १-संग। साथ। २-संभोग। स्त्री-प्रसंग।
**सोहमस्मि** पद (सं) दे० 'सोऽहमस्मि'।
**सोहर** पुं० (हि) संतान होने पर गाया जाने वाला एक मंगल गीत।
**सोहरत** स्त्री० (हि) दे० 'शोहरत'।
**सोहराना** क्रि० (हि) सहलाना।
**सोहला** पुं० (हि) घर में बच्चा पैदा होने पर गाये जाने वाले मंगल गीत।
**सोहाइन** वि० (हि) सुहावना।
**सोहाई** स्त्री०(हि)१-खेत की निराई। २-इस काम की मजदूरी।
**सोहाग** पुं० (हि) १-दे० 'सुहाग'। २-दे० 'सुहागा' (देश) एक प्रकार का मझोले आकार का सदाबहार वृक्ष।
**सोहागा** पुं० (हि) १-वह पाटा जिससे जुते हुए खेत में मिट्टी बराबर करते हैं। २-सुहागा।
**सोहागिन** स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
**सोहागिनी** स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
**सोहागिल** स्त्री० (हि) दे० 'सुहागिन'।
**सोहाता** वि० (हि) सुन्दर। सुहावना।
**सोहाना** क्रि० (हि) दे० 'सुहावना'।
**सोहाया** वि० (हि) सुन्दर। मनोरम।
**सोहारद** पुं० (हि) दे० 'सौहार्द'।
**सोहारी** स्त्री० (हि) पूरी (पकवान)।
**सोहावन** वि० (हि) दे० 'सुहावना'।
**सोहावना** वि० (हि) दे० 'सुहावना'। क्रि० दे०'सुहावना।
**सोहासित** वि० (हि) १-अच्छा लगने वाला। सुखकर। २-सुन्दर। पु० खुशामद।
**सोहिँ** अव्य० (हि) दे० 'सौंह'।
**सोहिनी** वि०(हि) सुन्दर। सुहावनी। स्त्री० १-करुण रस की एक रागिनी। २-झाड़ू।

सोहिल पुं० (हि) सुहेल नामक तारा। अगस्त्य तारा
सोहिला पुं० (हि) दे० 'सोहला'।
सोहीं अव्य० (हि) सामने।
सोहैं अव्य० (हि) सामने।
सौं स्त्री० (हि) दे० 'सौंह'। अव्य० दे० 'सों'। प्रत्य० दे० 'सों' या 'सा'।
सौंकारा पुं० (हि) प्रातःकाल। सवेरा।
सौंकेरा पुं० (हि) प्रातःकाल। सवेरा।
सौंकेरे अव्य० (हि) १-तड़के। सवेरे। २-समय से कुछ पहले। जल्दी।
सौंघा वि० (हि) १-अच्छा। उत्तम। २-ठीक। ३-सस्ता। पुं० बालों में लगाने का एक सुगन्धित मसाला।
सौंघाई स्त्री० (हि) १-अधिकता। बहुतायत। २-सस्तापन।
सौंचना क्रि० (हि) १-मल या मूत्र त्याग करना। २-मल या मूत्र त्याग आदि के बाद हाथ आदि धोना।
सौंचरनमक पुं० (हि) काला नमक।
सौंचाना क्रि० (हि) मल त्याग कराना।
सौंज स्त्री० (हि) दे० 'सौज'।
सौंजाई स्त्री० (हि) दे० 'सोज'।
सौंतुख अव्य० (हि) सामने।
सौंदन स्त्री० (हि) कपड़े धोने से पहले उन्हें रेह मिले पानी में भिगाना।
सौंदना क्रि० (हि) सानना। आपस में मिलाना।
सौंदर्ज पुं० (हि) दे० 'सौंदर्य'।
सौंदर्य पुं० (सं) सुन्दरता। खूबसुरती।
सौंदर्यता स्त्री० (सं) सुन्दरता। रमणीयता।
सौंदर्यविज्ञान पुं० (सं) सौन्दर्य सम्बन्धी विज्ञान। (ईस्थेटिक्स)।
सौंध स्त्री० (हि) सुगन्ध। खुशबू। पुं० (हि) महल। प्रासाद।
सौंधना क्रि० (हि) १-सुगन्धित करना। २-सानना।
सौंधा वि० (हि) १-अच्छा। रुचिकर। २-सोंधा। पुं० १-सुगन्ध। २-बालों में लगाने का एक सुगन्धित मसाला।
सौंनमक्खी स्त्री० (हि) दे० 'सोनामक्खी'।
सौंनी पुं० (हि) स्वर्णकार। सुनार।
सौंपना क्रि० (हि) १-किसी के सुपुर्द करना। हवाले करना। २-सहेजना।
सौंफ स्त्री० (हि) एक छोटा पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।
सौंफिया वि० (हि) सौंफ से तैयार की हुई (शराब)।
सौंफी वि० (हि) दे० 'सौंफिया'।
सौंभरि पुं० (हि) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
सौंर पुं० (हि) मिट्टी के बरतन भांडे जो बालक जन्म के दसवें दिन फोड़ दिये जाते हैं।
सौंरई स्त्री० (हि) साँवलापन।
सौंरना क्रि० (हि) १-स्मरण करना। २-सँवरना।
सौंरा वि० (हि) सांवला। श्यामल।
सौंह स्त्री० (हि) सौगन्ध। शपथ। अव्य० सामने।
सौंही स्त्री० (हि) एक प्रकार का अस्त्र। अव्य० सामने
सौ वि० (हि) १-गिनती में पचास का दुगुना। नब्बे और दस। २-सा। जैसा।
सौक स्त्री० (हि) सपत्नी। सौत। वि० एक सौ। पुं० 'शोक'।
सौकर वि० (हि) १-सूअर या सूकर सम्बन्धी।
सौकरक वि० (हि) दे० 'सौकर'।
सौकरिक पुं० (सं) १-व्याध। शिकारी। २-सूअर का शिकार खेलने वाला। ३-सूअरों का व्यापारी।
सौकरीय वि० (सं) सूअर सम्बन्धी।
सौकर्य पुं० (सं) १-सुसाध्यता। सुकरता। २-सुभीता सूअरपन।
सौकीन पुं० (हि) दे० शौकीन'।
सौकुमार्य पुं० (सं) १-सुकुमारता। यौवन। जवानी। ३-काव्य का एक गुण जिसके लाने के लिए ग्राम्य तथा श्रुत कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।
सौक्ष्म्य पुं० (सं) सूक्ष्म का भाव। सूक्ष्मता का भाव। बारीकी।
सौख पुं० (सं) १-सुख। आराम। सुख का अपत्य। पुं० (हि) दे० 'शौक'।
सौख्य पुं० (सं) १-सुख का भाव। सुखत्व। २-सुख। आराम।
सौख्यद वि० (सं) सुख या आनन्द देने वाला।
सौख्यदायक वि० (सं) सुखद।
सौख्यदायी वि० (सं) सुखद।
सौगंद स्त्री० (सं) शपथ। कसम।
सौगंध पुं० (सं) १-गंधी। २-सुगंध। ३-एक वर्णसंकर जाति। भूतृण। वि० सुगन्धित। स्त्री० (हि) शपथ। कसम।
सौगंधिक पुं० (सं) १-नीलकमल। लाल कमल। ३-श्वेत कमल। ४-भूतृण। ५-गन्धक। ६-रूसा घास ७-गन्धक। वि० सुवासित। सुगन्धित।
सगंध्य पुं० (सं) सुगन्धि का भाव या धर्म।
सौगत पुं० (सं) बौद्ध। वि० १-सुगत संबन्धी। २-सुगत का मत।
सौगतिक पुं० (सं) १-बौद्धभिक्षु। २-नास्तिक। ३-अनीश्वरवादी। बौद्धधर्म का अनुयायी।
सौगम्य पुं० (सं) आसानी। सुगमता।
सौगात स्त्री० (तु) भेंट। उपहार। तोहफा।
सौगाति वि० (हि) कम कीमत का। सस्ता।
सौघा वि० (हि) सस्ता। कम कीमत का।
सौच पुं० (हि) दे० 'शौच'।

**सौचि** पुं० (सं) दरजी।
**सौचिक** पुं० (सं) दरजी।
**सौचिक्य** पुं० (सं) सीने का काम। दरजी का काम।
**सौज** क्रि० (हि) सामग्री। साज सामान। वि० शक्तिशाली।
**सौजना** क्रि० (हि) सजना।
**सौजन्य** पुं० (सं) सुजनता। भलमनसाहत।
**सौजन्यता** स्त्री० (सं) सज्जनता। भलमनसाहत।
**सौजा** पुं० (हि) वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।
**सौत** स्त्री० (हि) स्त्री की दृष्टि से उसके पति की दूसरी पत्नी।
**सौतन** स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
**सौतनी** स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
**सौति** स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
**सौतिन** स्त्री० (हि) दे० 'सौत'।
**सौतिया-डाह** स्त्री०(हि) दो सौतों में होने वाली ईर्ष्या २-ईर्ष्या। जलन।
**सौतुक** अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
**सौतुख** अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
**सौतुष** अव्य० (हि) दे० 'सौंतुख'।
**सौतेला** वि० (हि) १-सौत से उत्पन्न। जिसका सम्बन्ध सौत के रिश्ते से हो।
**सौत्र** वि० (सं) १-सूत का। सूत सम्बन्धी। सूत्र में वर्णित या कथित। पुं० (सं) ब्राह्मण।
**सौत्रांतिक** पुं० (सं) बौद्धों का एक भेद।
**सौदा** पुं० (फा) १-खरीदने या बेचने की वस्तु। २-खरीदने, बेचने या लेन देन की बातचीत या व्यवहार। ३-क्रय-विक्रय। पुं० (अ) पागलपन का एक रोग। सनक।
**सौदाई** पुं० (अ) पागल। बावला। दीवाना।
**सौदागर** पुं० (फा) व्यापारी। व्यवसायी।
**सौदागरी** स्त्री० (फा) व्यापार। व्यवसाय। सौदागर का काम।
**सौदागरी माल** पुं० (फा) व्यापार का या तिजारती माल।
**सौदाबही** स्त्री० (फा) वह बही जिसमें खरीदी या बेची हुई वस्तु लिखी जाती है।
**सौदामनी** स्त्री० (सं) १-विद्युत। बिजली। २-एक अप्सरा। ३-एक रागिनी।
**सौदामिनी** स्त्री०(सं) दे० 'सौदामनी'।
**सौदायिक** पुं० (सं) स्त्री-धन जो उसे विवाह के समय मिलता है तथा जो उसका निजी धन माना जाता है।
**सौदासुल्फ** पुं० (फा) बाजार से खरीदी जाने वाली वस्तुएँ।
**सौदेबाज** वि० (फा) अपने फायदे या लाभ का पूरा ध्यान रखकर सौदा खरीदने वाला।
**सौध** वि० (सं) सफेदी या पलस्तर किया हुआ। पुं० भवन। २-चांदी। रजत। ३-दूधिया पत्थर।
**सौधकार** पुं० (सं) प्रासाद या भवन बनाने वाला।
**सौधतल** पुं०(सं) भवन या प्रासाद का नीचे का तल।
**सौधर्म्य** पुं०(सं) सज्जनता। साधुता। सुधर्म का भाव
**सौन** अव्य० (हि) प्रत्यक्ष। सामने। पुं० (सं) १-कसाई। २-कसाई के घर का मांस। वि० कसाई-खाने से सम्बन्ध रखने वाला।
**सौनक** पुं० (हि) दे० 'शौनक'।
**सौनन** स्त्री० (हि) कपड़ों को धोने से पहले उनमें रेह आदि लगाना। सौंदना।
**सौना** पुं० (हि) दे० 'सोना'।
**सौनिक** पुं० (सं) १-कसाई। २-बहेलिया।
**सौनीतेय** पुं० (सं) ध्रुव।
**सौपना** क्रि० (हि) दे० 'सौंपना'।
**सौभद्र** पुं० (सं) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का नाम।
**सौभद्रेय** पुं० (सं) अभिमन्यु।
**सौभांजन** पुं० (हि) दे० 'शोभांजन'
**सौभागिनी** स्त्री० (हि) सुहागिन। सधवा स्त्री।
**सौभागिनेय** पुं० (सं) किसी सुहागिन का पुत्र।
**सौभाग्य** पुं० (सं) अच्छा भाग्य। २-सुख। आनंद ३-ऐश्वर्य। वैभव। ४-स्त्री के सधवा होने की अवस्था। सुहाग। ५-अनुराग। ६-सुन्दरता। ७-सफलता। ८-सिंदूर। ९-सुहागा।
**सौभाग्यचिह्न** पुं० (सं) १-अच्छे भाग्य का चिह्न। २-सधवा होने का चिह्न (सिंदूर आदि)।
**सौभाग्यतंतु** पुं० (सं) दे० 'सौभाग्यसूत्र'।
**सौभाग्यतृतीया** स्त्री० (सं) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की तृतीया जो बहुत पवित्र मानी जाती है।
**सौभाग्यवती** वि० (सं) १-सधवा। सुहागिन। २-अच्छे भाग्य वाली।
**सौभाग्यवान्** वि० (सं) जिसका भाग्य अच्छा हो। सुखी और संपन्न।
**सौभाग्यसूत्र** पुं० (सं) मंगलसूत्र। विवाह के समय वर द्वारा वधू के गले में डाला हुआ सूत्र।
**सौभिक्ष्य** पुं० (सं) अन्न की अधिकता के विचार से अच्छा समय। सुकाल।
**सौम** वि० (सं) १-सोमलता सम्बन्धी। २-चन्द्रमा सम्बन्धी। (हि) दे० 'सौम्य'।
**सौमन** पुं० (सं) १-एक प्राचीन अस्त्र। २-फूल। पुष्प।
**सौमनस** वि० (सं) १-सुमनों या फूलों का। २-मनोहर। सुन्दर। पुं० १-प्रसन्नता। २-अनुग्रह। कृपा ३-जायफल।
**सौमनस्य** पुं० (सं) १-भलमनसाहत। २-प्रसन्नता।

३-प्रेम। प्रीति। ४-सन्तोष।

**सौमिक** वि० (सं) १-सोमरस से किया हुआ (यज्ञ) २-सोमयज्ञ सम्बन्धी। ३-चान्द्रायण व्रत करने वाला पुं० सोमरस रखने का पात्र।

**सौमित्र** पुं० (सं) १-लक्ष्मण। २-मित्रता।

**सौमित्रा** स्त्री० (हि) दे० 'सुमित्रा'।

**सौमुख्य** पुं० (सं) १-प्रसन्नता। २-सुमुखता।

**सौम्य** पुं० (सं) १-सोमयज्ञ। २-बुध। ३-अगहन का महीना। ४-रक्त का वह पूर्व रूप जिसमें लाल रङ्ग का होने से पहले रहता है। (सीरम)। ५-उपासक। ६-ब्राह्मण। ७-बायां हाथ। पित्त। ६-साठ संवत्सरों में से एक। १०-सुशीलता। ११-हथेली का मध्य भाग। १२-एक दिव्यास्त्र। वि० १-सोम या चन्द्रमा से सम्बन्धित। २-नम्र। ३-सुन्दर ४-शुभ। ५-चमकीला।

**सौम्यग्रह** पुं० (सं) शुभग्रह।

**सौम्यता** स्त्री० (सं) १-सौम्य होने का भाव। २-शीलता। ३-सुशीलता। ४-सौंदर्य। ५-उदारता। दयालुता।

**सौम्यत्व** पुं० (सं) सौम्यता।

**सौम्यदर्शन** वि० (सं) देखने में सुन्दर।

**सौम्यमुख** वि० (सं) सुन्दर मुख वाला।

**सौम्याकृति** स्त्री० (सं) जिसकी आकृति सुन्दर हो।

**सौर** वि० (सं) १-सूर्य सम्बन्धी। सूर्य का। २-सूर्य से उत्पन्न। ३-सूर्य के प्रभाव से होने वाला। (सोलर)। पुं० १-सूर्य का उपासक। २-सूर्यवंशी ३-शनिग्रह। ४-धनिया। ५-दाहिनी आँख। स्त्री० (हिं) १-सौड़। चादर। ओढ़नी। २-सौरी नामक मछली।

**सौरज** पु० (हिं) दे० 'शौर्य'।

**सौरजगत** पुं० (सं) सूर्य तथा उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों (पृथ्वी, मंगल, बुध, शुक्र, शनि आदि) का समूह या वर्ग जो आकाशचारी पिंडों में स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जाता है। (सोलर सिस्टम)

**सौरभ** पुं० (सं) १-सुगन्ध। खुशबू। २-आम। ३-केसर। ४-धनिया।

**सौरभित** वि० (सं) सुगन्धित। महकने वाला।

**सौरमास** पुं० (सं) एक सौर संक्रांति से दूसरी सौर संक्रांति तक का महीना।

**सौरलोक** पुं० (सं) दे० 'सूर्यलोक'।

**सौरवर्ष** पुं० (सं) एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का वर्ष।

**सौरसंवत्सर** पुं० (सं) दे० 'सौरवर्ष'।

**सौरस्य** पुं० (सं) सुरसता।

**सौराज्य** पुं० (सं) सुराज्य। अच्छा शासन।

**सौराष्ट्र** पुं० (सं) १-गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २-इस देश का निवासी। वि० सोरठ देश का निवासी।

**सौराष्ट्रमृत्तिका** स्त्री० (सं) गोपीचन्दन।

**सौराष्ट्रिक** वि० (सं) सौराष्ट्र सम्बन्धी। पु० १-सौराष्ट्र देश का निवासी। २-कांसा नामक धातु।

**सौरास्त्र** पुं० (सं) एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

**सौरि** पुं० (सं) १-शनि। २-हुलहुल का पौधा। पुं० (हिं) दे० 'शौरि'।

**सौरिरत्न** पुं० (सं) नीलम नामक मणि।

**सौरी** स्त्री० (हि) १-जच्चाखाना। २-एक प्रकार की मछली। (सं) १-सूर्य की पत्नी। २-गाय।

**सौर्य** वि० (सं) सूर्य सम्बन्धी। सूर्य का। पुं० (स) १-शनि। २-एक संवत्सर।

**सौर्यप्रभ** वि० (सं) सूर्य की प्रभा या दीप्ति से कार्य करने वाला।

**सौलक्षण्य** पुं० (स) सुलक्षणता।

**सौलभ्य** पुं० (सं) सुलभता।

**सौवर्चल** पु० (सं) सोंचर नमक। २-सज्जी। वि० सुवर्चल सम्बन्धी।

**सौवर्चस** वि० (सं) कांतिमान। प्रभायुक्त।

**सौवर्ण** वि० (सं) १-सोने का। २-सोने से बना। पुं० स्वर्ण। सोना।

**सौवर्णभेदिनी** स्त्री० (सं) फूलफेन।

**सौवर्णिक** पुं० (सं) सुनार। स्वर्णकार।

**सौवीर** पुं० (सं) १-सिंधु नदी के आस-पास का प्रदेश। २-उक्त प्रदेश का निवासी। ३-किसी एक प्रकार की कांजी जो जौ को सड़ा कर बनाई जाती है (बीयर)।

**सौवीरांजन** पुं० (सं) सुरमा।

**सौष्ठव** पुं० (सं) १-सुष्ठुता। सुडौलपन। २-सौंदर्य ३-तेजी। ४-नाटक का एक अङ्ग।

**सौसन** पुं० (फा) दे० 'सोसन'।

**सौहँ** स्त्री० (हिं) सौगन्द। कसम। अव्य० सामने। आगे।

**सौहर** पुं० (हि) दे० 'शौहर'।

**सौहार्द** पुं० (सं) १-सुहृद होने का भाव। २-सज्जनता। ३-मित्रता।

**सौहार्द्य** पुं० (सं) दे० 'सौहार्द'।

**सौहीं** स्त्री० (हि) १-एक प्रकार की रेती। २-एक प्रकार का हथियार। अव्य० आगे। सामने।

**सौहृद** पुं० (सं) १-दोस्ती। मित्रता। २-मित्र। वि० मित्र सम्बन्धी।

**सौहृद्य** पुं० (सं) सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

**स्कंत्ता** वि० (सं) छलांग मारने या कूदने वाला।

**स्कंद** पुं० (सं) १-निकलना। २-विनाश। ध्वंस। ३-कार्तिकेय। ४-शरीर। ५-पारा। ६-शिव। ७-पंडित। ८-बालक के नौ प्रकार के घातक रोगों या ग्रहों में से एक।

स्कंदक पुं० (सं) १-वह जो उछले। २-सैनिक। ३-एक छन्द।
स्कंदगुप्त पुं० (सं) गुप्त वंश के एक प्रसिद्ध सम्राट् जिसका समय सन् ४५० ई० से ४६७ ई० तक माना जाता है।
स्कंदजननी स्त्री० (सं) पार्वती।
स्कंध पुं०(सं) १-कंधा। २-वृक्ष के तने के ऊपर का वह भाग जिसमें से डालियां निकलती हैं। ३-शाखा। ४-समूह। ५-भंडार (स्टाक)। ६-ग्रन्थ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ७-शरीर। ८-युद्ध। ९-दर्शनशास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप रस और गंध। १०-राजा। ११-सफेद चील। १२-आर्याछन्द का एक भेद। १३-बौद्धों के मत में रूप वेदना, विज्ञान, संज्ञा तथा संस्कार ये पांचों पदार्थ वस्तुएं।
स्कंधपंजी स्त्री० (सं) वह पंजी जिसमें भंडार में रखी वस्तुओं का विवरण हो। (स्टॉक बुक)।
स्कंधमणि पुं० (सं) एक प्रकार का जन्तर या तावीज
स्कंधवाह पुं० (सं) वह पशु जो कन्धे के बल बोझ घसीटता हो।
स्कंधवाहक पुं० (सं) दे० 'स्कंधवाह'।
स्कंधवाह्य वि० (सं) जिसे कन्धे पर ढोया जाय।
स्कंधावार पुं० (सं) १-राजधानी। २-राजा का शिविर। ३-व्यापारियों के ठहरने की जगह। ४-सेना।
स्कंधिक पुं० (सं) बैल।
स्कंभ पुं० (सं) १-खंभा। २-परमेश्वर।
स्कांधिक पुं० (सं) वह सौदागर जो बिक्री के लिए अपने गोदाम में बहुत सी वस्तुएँ जमा करता हो (स्टॉकिस्ट)।
स्कूल पुं० (अं) १-विद्यालय। २-शाखा। सम्प्रदाय ३-कोई विशिष्ट विचारधारा।
स्कूली वि० (हिं) स्कूल का। स्कूल सम्बन्धी।
स्खलन पुं० (सं) १-पतन। गिरना। २-चूना या टपकना। ३-फिसलना। ४-सत्पथ से भ्रष्ट होना। ५-लड़खड़ाना।
स्खलित वि० (सं) १-गिरा हुआ। २-सरका या फिसला हुआ। ३-चूका हुआ।
स्टांप पुं० (अं) १-अदालत में प्रार्थना पत्र लिखकर भेजने का सरकारी कागज। २-डाक का टिकट। ३-मुद्रा। मोहर।
स्टीमर पुं० (अं) भाप से चलने वाला छोटा जलपोत
स्टूल पुं० (अं) तीन या चार पायों की ऊँची चौकी जिस पर एक ही व्यक्ति बैठ सकता है।
स्टेशन पुं० (अं) १-वह स्थान जहां निर्दिष्ट समय पर नियमित रूप से रेलगाड़ियां ठहरती हैं तथा यात्री चढ़ते उतरते हैं। २-रथ या मोटरगाड़ी आदि का ठहराने का स्थान। ३-वह स्थान जहां कुछ लोगों की, रहने के लिए नियुक्ति हो।
स्टेशनमास्टर पुं० (अं) रेल के स्टेशन का प्रधान अधिकारी।
स्तंब पुं० (सं) १-गुल्म। २-एक पर्वत। ३-घास की आंटी।
स्तंभ पुं०(सं) १-खंभा। २-पेड़ का तना। ३-जड़ता अचलता। ४-रुकावट। प्रतिबन्ध। ५-अभिमान। ६-तन्त्र में किसी शक्ति को रोकने वाला प्रयोग। ७-समाचार पत्रादि में पृष्ठ का खड़ा विभाग या किसी विशेष विषय के लिए निर्धारित स्थान (कॉलम)। ८-सहारा। टेक। ९-साहित्य में किसी कारण अथवा घटना से अंगों की गति रुक जाना जो सात्विक भावों में माना जाता है।
स्तंभक वि० (सं) १-रोकने वाला। रोधक। २-कब्ज करने वाला। ३-वीर्य शीघ्र स्खलित होने से रोकने वाली (औषधि)।
स्तंभन पुं० (सं) १-अवरोध। रुकावट। २-मल या वीर्य को रोकना। ३-कामदेव के पांच बाणों में से एक। ४-वह औषध जिससे वीर्यपात रुके।
स्तंभलेखक पुं० (सं) किसी समाचार पत्र में किसी विशेष विषय पर नियमित रूप से लेखादि लिखने वाला।
स्तंभित वि० (सं) १-दृढ़ किया हुआ। २-जड़ीभूत ३-दबाया हुआ।
स्तनंधय पुं० (सं) १-दूधपीता बच्चा। वत्स। २-बछड़ा। वि० दूधपीता।
स्तन पुं० (सं) स्त्रियों या मादा पशुओं का वह अंग जिसमें दूध रहता है। छाती।
स्तनकलश पुं० (सं) अच्छे सुपुष्ट स्तन।
स्तनकील पुं० (सं) स्त्रियों के स्तन में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।
स्तनकुंभ पुं० (सं) दे० 'स्तनकलश'।
स्तनकुड्मल पुं० (सं) कली के समान स्तन।
स्तनकोरक पुं० (सं) दे० 'स्तनकुड्मल'।
स्तनचूचुक पुं० (सं) स्तन का अग्रभाग।
स्तनत्याग पुं० (सं) बच्चे आदि का स्तन का दूध पीना छोड़ना।
स्तनदात्री स्त्री० (सं) छाती से दूध पिलाने वाली स्त्री
स्तनन पुं० (सं) १-ध्वनि। शब्द। २-मेघ। गर्जन। ३-भीषण नाद।
स्तनप पुं० (सं) दूध पीता बच्चा।
स्तनपतन पुं०(सं) स्तन का ढीला पड़ कर लटकना।
स्तनपान पुं० (सं) स्तन में से दूध पीना।
स्तनपायी वि० (सं) स्तन से दूध पीने वाला शिशु। वि० स्तन में से दूध पीना।
स्तनमंडल पुं० (सं) स्तन का घेरा।

स्तनमुख पुं० (सं) चूचुक। स्तन का अग्रभाग।
स्तनशोष पुं० (सं) स्तन सूख जाने का एक रोग।
स्तनांशुक पुं०(सं) स्तन बांधने का कपड़ा। अँगिया।
स्तनाग्र पुं० (सं) चूचुक।
स्तनावरण पुं० (सं) स्तन ढँकने का वस्त्र। अँगिया
स्तनित पुं० (सं) १-बादल की गरज। २-करतल ध्वनि। ३-शब्द। ध्वनि। ४-बिजली की कड़क।
स्तनोत्तरीय पुं० (सं) दे० 'स्तनावरण'।
स्तन्य पुं० (सं) दूध। वि० १-जो स्तन में हो। २-स्तन सम्बन्धी।
स्तन्यत्याग पुं० (सं) दे० 'स्तनत्याग'।
स्तन्यदा वि० (सं) (वह स्त्री) जिसके स्तनों से दूध निकलता हो।
स्तन्यदान पुं० (सं) स्तन से दूध पिलाना।
स्तन्यप वि० (सं) स्तन से दूध पीने वाला।
स्तन्यपान पुं० (सं) स्तन में मुँह लगाकर दूध पीना।
स्तन्यपायी वि० (सं) स्तन पान करने वाला।
स्तन्यभुक वि० (सं) दे० 'स्तन्यपायी'।
स्तन्यरोग पुं० (सं) वह रोग जो बीमार माता के दूध पीने से होता है।
स्तबक पुं०(सं) १-गुच्छा। २-फूलों का गुच्छा। ३-मोर की पूँछ के पंख। ४-समूह।
स्तब्ध वि० (सं) १-स्तम्भित। २-दृढ़। पक्का। ३-मन्द। ४-हठी। ५-अभिमानी। पुं० वंशी का स्वर धीमा पड़ना।
स्तब्धता स्त्री० (सं) १-जड़ता। हीनता। २-बधिरता ३-स्थिरता।
स्तब्धत्व पुं० (सं) दे० 'स्तब्धता'।
स्तब्धदृष्टि वि० (सं) दे० 'स्तब्धनयन'।
स्तब्धनयन वि० (सं) जिसकी टकटकी बँध गई हो।
स्तब्धबाहु वि० (सं) जिसके हाथ सुन्न पड़ गये हों।
स्तब्धमति वि० (सं) मन्दबुद्धि।
स्तब्धाक्ष पुं० (सं) दे० 'स्तब्धदृष्टि'।
स्तब्धि स्त्री० (सं) १-जड़ता। २-स्थिरता।
स्तभि स्त्री० (सं) जड़ता।
स्तर पुं० (सं) १-एक दूसरी के ऊपर लगी हुई परत। २-भूमि आदि का वह विभाग जो उसके विभिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है। (स्ट्रेटा)।
स्तरण पुं० (सं) १-पलस्तर। २-बिछौना। ३-फैलाना।
स्तरिमा पुं० (सं) शय्या। सेज।
स्तरीभूत वि० (सं) जो जमकर स्तर के रूप में बन गया हो। (स्ट्रेटिफाइड)।
स्तव पुं० (सं) १-स्तोत्र। २-स्तुति। ३-प्रशंसा।
स्तवक पुं० (सं) १-प्रशंसा करने वाला। २-गुल-दस्ता। ३-समूह। ४-राशि। ५-पुस्तक का अध्याय
स्तवन पुं० (सं) स्तुति करना।
स्तवनीय वि० (सं) स्तुति करने योग्य।
स्तावक पुं० (सं) १-प्रशंसक। २-बन्दीजन।
स्तिमित वि० १-निश्चल। २-तर। ३-प्रसन्न। पुं० १-स्थिरता। २-नमी।
स्तिमितनयन वि० (सं) जिसने टकटकी लगा रखी हो
स्तीर्ण वि० (सं) विस्तृत। फैलाया हुआ।
स्तुक पुं० (सं) संतान।
स्तुत वि० (सं) जिसकी स्तुति की गई हो।
स्तुति स्त्री० (सं) १-प्रशंसा। बड़ाई। किसी के गुणों का बखान। दुर्गा।
स्तुतिपाठक पुं० (सं) स्तुति पाठ करने वाला। चारण भाट।
स्तुतिप्रिय वि० (सं) जो स्तुति या प्रशंसा का इच्छुक हो।
स्तुतिवादक पुं० (सं) प्रशंसा करने वाला।
स्तुत्य वि० (सं) प्रशंसनीय।
स्तूप पुं० (सं) १-टीला। २-वह टीला जो भगवान-बुद्ध या किसी बौद्ध की अस्थि, केश आदि की स्मृति चिह्न को सुरक्षित रखने के लिये बनाया गया हो। ३-ऊँचा।
स्तूपभेदक पुं० (सं) स्तूप को नष्ट करने वाला।
स्तेन पुं० (सं) १-चोर। २-चोरी।
स्तेननिग्रह पुं० (सं) चोरों का दमन।
स्तेय पुं० (सं) चोरी।
स्तैन पुं० (सं) १-चोरी। २-चोर।
स्तैन्य पुं० (सं) १- चोर। २-चोरी।
स्तोक वि० (सं) १-बहुत छोटा। २-मन्द। ३-चातक ४-जैनियों के काल विभाग में उतना समय जितना सात दफा सांस लेने से लगता है।
स्तोककाय वि० (सं) जिसका कद छोटा हो।
स्तोतव्य वि० (सं) स्तुति के योग्य।
स्तोता पुं० (सं) विष्णु। वि० स्तुति करने वाला।
स्तोत्र पुं० (सं) १-स्तुति। २-देवतादि का छन्दोबद्ध गुणगान।
स्तोत्रकारी पुं० (सं) स्तुति करने वाला।
स्तोम पुं० (सं) १-स्तुति। २-समूह। ३-यज्ञ। ४-धन। ५-मस्तक। ६-अनाज। ७-धन। ८-लोहे की नोक वाला डण्डा।
स्तोम्य वि० (सं) स्तुत्य।
स्तौपिक पुं० (सं) १-स्तूप में सुरक्षित रखने योग्य अस्थि, नख, केशादि स्मृति चिह्न। २-जैन यतियों की मार्जनी।
स्त्रींद्रिय स्त्री० (सं) योनि।
स्त्री स्त्री० (सं) १-नारी। औरत। २-किसी जीव-जन्तु की मादा। ३-सफेद चींटी। ४-पत्नी। ५-

एक वृत्त जिसमें दो गुरु होते हैं

**स्त्रीकुसुम** पुं० (सं) रजःस्राव।

**स्त्रीचरित्र** पुं० (सं) औरतों के कर्म, आचार, व्यवहार आदि।

**स्त्रीजन** पुं० (सं) स्त्री जाति

**स्त्रीजननी** स्त्री० (सं) वह स्त्री जो केवल लड़की ही जने।

**स्त्रीजाति** स्त्री० (सं) स्त्री वर्ग।

**स्त्रीजित** वि० (सं) जोरू का गुलाम।

**स्त्रीतंत्र** पुं० (सं) वह शासन व्यवस्था जो केवल स्त्रियों द्वारा चलाई जाये। (आइनैरकी)।

**स्त्रीता** स्त्री० (सं) दे० 'स्त्रीत्व'।

**स्त्रीत्व** पुं० (सं) १-स्त्री का भाव या धर्म। नारीत्व। २-व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्रीलिङ्ग का सूचक होता है।

**स्त्रीधन** पुं० (सं) १-स्त्री को उसके मायके या सुसराल से मिला हुआ वह धन जिस पर केवल उसका ही अधिकार होता है। २-स्त्री की निजी सम्पत्ति।

**स्त्रीधर्म** पुं० (सं) १-स्त्री का मासिक धर्म। २-स्त्री का कर्तव्य।

**स्त्रीधर्मिणी** स्त्री० (सं) रजस्वला स्त्री।

**स्त्रीनाथ** पुं० (सं) वह स्त्री जिसकी रक्षा कोई स्त्री करती हो।

**स्त्रीपण्योपजीवी** पुं० (सं) स्त्री की कमाई खाने वाला।

**स्त्रीपर** वि० (सं) स्त्री-प्रेमी। कामी।

**स्त्रीपुर** पुं० (सं) अन्तःपुर।

**स्त्रीप्रसंग** पुं० (स) मैथुन।

**स्त्रीप्रिय** पुं० (सं) १-अशोक वृक्ष। २-आम का वृक्ष

**स्त्रीभोग** पुं० (सं) संभोग।

**स्त्रीरंजन** पुं० (सं) पान।

**स्त्रीरत** वि० (सं) जो स्त्री की ओर बहुत अनुराग रखता हो।

**स्त्रीराज्य** पुं० (सं) दे० 'स्त्रीतंत्र'।

**स्त्रीरोग** पुं० (सं) स्त्रियों के योनि सम्बन्धी रोग।

**स्त्रीलंपट** वि० (सं) कामी। लंपट।

**स्त्रीलक्षण** पुं० (सं) स्त्री सम्बन्धी कोई भी चिह्न-भग, स्तन आदि।

**स्त्रीलिंग** पुं० (सं) १-योनि। २-हिन्दी व्याकरण के दो लिंगों में से एक जो स्त्री जाति के रूप का वाचक होता है।

**स्त्रीलोल** वि० (हिं) लंपट। कामी।

**स्त्रीलौल्य** पुं० (सं) स्त्री की इच्छा।

**स्त्रीवश** वि० (सं) स्त्री का कहना मानने वाला।

**स्त्रीवित्त** पुं०(सं) वह धन जो स्त्री से प्राप्त हुआ हो

**स्त्रीवियोग** पुं० (सं) स्त्री से जुदा होना।

**स्त्री[illegible]** पुं० (सं) संभोग।

**स्त्रीव्यंजन** पुं० (सं) दे० 'स्त्रीलक्षण'।

**स्त्रीव्रत** पुं० (सं) एकपत्नी व्रत।

**स्त्रीशेष** वि०(सं) जिसमें केवल औरतें ही बच रही हों

**स्त्रीसंग** पुं० (सं) १-संभोग। २-स्त्रियों का संग या साथ।

**स्त्रीसंग्रहण** पुं० (सं) स्त्री के साथ बलात् सम्भोग करना।

**स्त्रीसंज्ञ** वि० (सं) जिसके नाम का अन्त स्त्रीलिंग-वाचक शब्द से हो।

**स्त्रीसंभोग** पुं० (सं) मैथुन। संभोग।

**स्त्रीसंसर्ग** पुं० (सं) मैथुन।

**स्त्रीसमागम** पुं० (सं) मैथुन।

**स्त्रीसुख** पुं० (सं) संभोग।

**स्त्रीसेवन** पुं० (सं) संभोग। मैथुन।

**स्त्रीस्वभाव** पुं० (सं) १-स्त्री की प्रकृति। २-अन्तःपुर रक्षक।

**स्त्रीहरण** पुं०(सं) किसी स्त्री को बलात् उठा लेजाना।

**स्त्रीहारी** पुं० (सं) वह पुरुष जो स्त्री का बलात् हरण करता हो।

**स्त्रैण** वि० (सं) १-स्त्री सम्बन्धी। स्त्रियों का। २-स्त्री के योग्य। ३-जोरू का गुलाम।

**स्त्र्यागार** पुं० (सं) अन्तःपुर।

**स्त्र्याजीव** पुं० (स) स्त्रियों की कमाई खाने वाला।

**स्थंडिल** पुं० (सं) १-भूमि। २-यज्ञ के लिये साफ की गई भूमि। ३-सीमा। हद। ४-मिट्टी का ढेर।

**स्थंडिलशायी** पुं० (स) किसी व्रत के कारण भूमि पर सोने वाला।

**स्थ** प्रत्य० (सं) एक प्रत्यय-जो शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है-स्थित, कायम, उपस्थित, विद्यमान, निवासी, लीन, रत, मग्न आदि।

**स्थगित** वि०(स) १-ढका हुआ। २-ठहराया या रोका हुआ। ३-मुलतवी (पड़ा रहने)।

**स्थपति** पुं० (सं) १-राजा। सामंत। २-शासक। ३-अन्तःपुर रक्षक। ४-सारथि। वि० १-मुख्य। प्रधान २-श्रेष्ठ।

**स्थल** पुं० (सं) १-भूमि। २-जल से रहित भूमि। ३-स्थान। जगह। ४-अवसर। मौका।

**स्थलकंद** पुं० (सं) जंगली सूरन।

**स्थलकमल** पुं० (सं) कमल की तरह का एक फूल जो भूमि पर उगता है।

**स्थलचर** वि० (सं) जमीन पर रहने वाला।

**स्थलच्युत** वि० (सं) किसी स्थान से उठाया हुआ।

**स्थलदेवता** पुं० (सं) किसी स्थान का देवता।

**स्थलनीरज** पुं० (सं) स्थलकमल।

**स्थलपथ** पुं० (सं) खुश्की का रास्ता।

**स्थलमार्ग** पुं० (सं) दे० 'स्थलपथ'।

**स्थलयुद्ध** पुं० (सं) भूभाग पर होने वाली लड़ाई।

स्थलवर्त्म पुं० (सं) दे० 'स्थलपथ'।

स्थलशुद्धि स्त्री० (सं) जमीन की सफाई।

स्थलसेना पुं०(सं) भूमि पर लड़ने वाली सेना। (लैंड-फोर्सेस)।

स्थली स्त्री० (सं) जल रहित भूमि। २-स्थान। जगह ३-ऊँचाई पर समतल भूमि।

स्थलीय वि० (सं) १-जमीन सम्बन्धी। २-स्थानीय।

स्थलेशय वि० (सं) जमीन पर सोने वाला। पुं० स्थलचर जीव।

स्थविर पुं० (सं) १-वृद्ध पुरुष। २-पूज्य बौद्ध भिक्षु ३-ब्रह्मा। ४-एक बौद्ध संप्रदाय।

स्थविरता स्त्री० (सं) बुढ़ापा।

स्थाई वि० (हि) दे० 'स्थायी'।

स्थाणु वि० (सं) स्थिर। अचल। पुं० १-खंभा। २-वृक्ष का ठूँठ। ३-स्थावर या स्थिर वस्तु।

स्थातव्य वि० (सं) निवास करने या ठहरने योग्य।

स्थान पुं० (सं) १-स्थिति। २-भूमि। ३-मैदान। ४-स्थल। जगह। ५-पद। ओहदा। (पोस्ट)। ६-देवालय। ७-अवसर। मौका। ८-राज्य। देश। ९-किसी राज्य के मुख्य चार आधार। १०-भंडार गुलाम। ११-अवस्था। १२-कारण। १३-परिच्छेद १४-वेदी। १५-किसी अभिनेता का अभिनय।

स्थानग्राही-पदाधिकारी पुं० (सं) वह अधिकारी जो किसी बड़े अधिकारी के छुट्टी पर जाने से या अवकाश ग्रहण करने पर कुछ समय तक कार्य चलाने के लिए नियुक्त होता है। (रिलीविंग-आफीसर)।

स्थानच्युत वि० (सं) अपने पद या स्थान से हटाया हुआ।

स्थानत्याग पुं० (सं) जगह को छोड़ देना।

स्थानपति पुं०(सं) १-किसी विहार आदि का अध्यक्ष २-किसी स्थल का स्वामी।

स्थानपाल पुं० (सं) १-स्थान या देश का रक्षक। २-चौकीदार। ३-प्रधान निरीक्षक।

स्थानप्राप्ति पुं० (सं) किसी स्थान या पद की प्राप्ति।

स्थानबद्ध करना क्रि० (हि) किसी व्यक्ति की गति-विधि एक ही स्थान के भीतर बांध देना (टु इन्टर्न)

स्थानभंग पुं० (सं) किसी स्थान का पतन होना।

स्थानमाहात्म्य पुं० (सं) वह स्थान जिसका किसी मन्दिर आदि के कारण महत्व हो गया हो।

स्थानवंचित वि० (सं) अनासीन। जिसे किसी पद पर से हटा दिया गया हो। (अनसीटेड)।

स्थानसीमन पुं० (सं) १-इधर-उधर फैलाए हुए व्यापार को एक स्थान पर ही इकट्ठा करना। २-किसी विशेष उद्योग आदि क्षेत्र का एक ही क्षेत्र विशेष के अन्दर सीमित करना। (लोकेलाइजेशन)

स्थानांतर पुं० (सं) प्रस्तुत से भिन्न स्थान। दूसरा स्थान।

स्थानांतरण पुं०(सं) किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटा कर दूसरे स्थान पर पहुँचाना रखना या भेजना। तबादला करना। (ट्रांसफर)।

स्थानांतरित वि० (सं) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया गया हो।

स्थानाध्यक्ष पुं० (सं) वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो।

स्थानापन्न वि० (सं) किसी के उपस्थित न होने पर उसके स्थान पर बैठने वाला। (आफीशियेटिंग)।

स्थानाबद्धकारी अधिनियम पुं० (सं) वह अधिनियम जिसके अनुसार काले वर्ण की जाति को किसी विशेष क्षेत्र में रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है। (पैगिंग एक्ट)।

स्थानाश्रय पुं०(सं) आधार। खड़े होने भर का स्थान

स्थानासेध पुं० (सं) किसी को किसी स्थान पर रोके रखना।

स्थानिक वि० (सं) १-उस स्थान का जिसकी चर्चा हो। २-उस स्थान का जहां से कोई बात कही जाय (लोकल)। पुं० १-राज कर उगाने वाला कर्मचारी २-वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो।

स्थानिक-स्वशासन पुं० (सं) किसी देश के नगरों को अपनी शासन व्यवस्था चलाने के लिए मिला हुआ अधिकार।

स्थानीय वि० (सं) १-उस स्थान का जहां से कोई बात की जाय। २-उस स्थान का जिसका कोई उल्लेख हो। पुं० १-नगर। २-आठ गांवों के बीच में बना हुआ क़िला।

स्थानीयकरण पुं० (सं) चारों ओर फैले हुए उपद्रव, शक्तियों, वस्तुओं को घेर कर किसी एक स्थान पर एकत्र करना। (लोकेलाइजेशन)।

स्थानीय-स्वशासन पुं० (सं) राज्य या देश के नगरों में सफाई आदि की शासन व्यवस्था चलाने का अधिकार या ऐसे अधिकार देने की प्रणाली (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट)।

स्थानेश्वर पुं० (सं) एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम थानेश्वर।

स्थापक वि० (सं) स्थापन करने वाला। पुं० १-मूर्ति बनाने वाला। २-संस्थापक। ३-अमानत रखने वाला।

स्थापत्य पुं० (सं) १-भवन निर्माण आदि की कला २-किसी भूभाग के शासन का पद।

स्थापत्यकला स्त्री० (सं) वस्तुविद्या।

स्थापत्यवेद पुं० (सं) वास्तुशास्त्र।

स्थापन पुं० (सं) १-दृढ़तापूर्वक जमाना। २-किसी आधार पर स्थित करना। स्थायी रूप देना। ३-कोई नया व्यापारिक कारबार खड़ा करना। ४

प्रतिपादन । निरूपण । (एस्टेबलिशमेंट) । ५-नियत करना । (पोस्टिंग) । ६-(शरीर की) रक्षा या आयु-वृद्धि का उपाय । ७-समाधि । ८-घर । ९-अन्न की राशि ।
**स्थापना** स्त्री० (सं) १-जमा कर रखना । २-किसी बात को सिद्ध करना । प्रतिपादन । ३-व्यवस्थान ।
**स्थापनीय** वि० (सं) स्थापित करने योग्य ।
**स्थापयिता** वि० (सं) स्थापन करने वाला । संस्थापक
**स्थापित** वि० (सं) १-जिसकी कल्पना की गई हो । २-जो जमा करके रखा गया हो । रक्षित । ३-व्यवस्थित । ४-निश्चित । ५-दृढ़ । ६-विवाहित । ७-जिसकी स्थापना की गई हो ।
**स्थाप्य** वि० (सं) जो स्थापित करने के योग्य हो । पु० १-धरोहर । अमानत । २-देव प्रतिमा ।
**स्थायिता** स्त्री० (सं) दे० 'स्थायित्व' ।
**स्थायित्व** पु० (सं) १-ठहराव । टिकाव । २-स्थिरता दृढ़ता ।
**स्थायी** वि० (सं) १-सदा स्थिर रहने वाला । (परमानेन्ट) । २-बहुत दिन चलने वाला । ३-विश्वस्त ।
**स्थायीभाव** पु० (सं) साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जो रस में सदा स्थायी रूप से स्थित रहता है ।
**स्थायीसमिति** स्त्री० (सं) १-वह समिति जो स्थायी-रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो । २-किसी सम्मेलन, महासभा आदि की वह समिति जो उस सम्मेलन के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है । (स्टैंडिंग कमिटी) ।
**स्थाल** पु० (सं) १-स्थल । परत । २-देग । देगची । ३-दांतों के नीचे का तथा मसूड़ों का भीतरी भाग । ४-आधार । पात्र ।
**स्थाली** स्त्री० (सं) १-मिट्टी की रकाबी । २-हँडिया । ३-सोमरस तैयार करने का पात्र विशेष ।
**स्थालीपुलाक** पु० (सं) हँडिया में पकाया हुआ भात ।
**स्थालीपुलाक न्याय** पु० (सं) एक चावल की परीक्षा से सारे का पता लग जाने की तरह एक अंश के आधार पर संपूर्ण का पता लगाना ।
**स्थावर** वि० (सं) १-अचल । स्थिर । २-जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न हट सके । (इम्मूवेबल) पु० १-पर्वत । २-अचल संपत्ति । ३-धनुष की डोरी ४-जो संपत्ति वंशपरंपरा से हो तथा बेची न जासके
**स्थित** वि० (सं) १-आसीन । टिका हुआ । २-उपस्थित । ३-अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ । ४-अवस्थ । बसा हुआ । ५-खड़ा हुआ । ६-अचल । स्थिर । पु० (सं) कुल । मर्यादा । २-निवास ।
**स्थितप्रज्ञ** वि० (सं) जो संयमी तथा निष्काम हो ।
**स्थिति** स्त्री० (सं) १-एक ही स्थान पर एक रूप में बना रहना । २-अवस्था । दशा । ३-सीमा । ४-आकार । ५-संयोग । मौका । ६-किसी संस्था, व्यक्ति आदि की निश्चित सीमा जो उसे अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होता है तथा उसकी मर्यादा, मान आदि की सूचक होती है । (स्टेटस) ।
**स्थितिप्रद** वि० (सं) दृढ़ता प्रदान करने वाला ।
**स्थितिस्थापक** वि०(सं) पहले जैसी अव्यवस्था प्रदान करने वाला ।
**स्थितिस्थापकत्व** पु० (सं) किसी बात, वस्तु या धातु आदि का वह गुण जो उसके खींचे या मोड़े जाने पर भी फिर उसे अपनी पहली अवस्था में ले जाता है । (इलास्टिसिटी) ।
**स्थिर** वि० (सं) निश्चित । २-शांत । दृढ़ । ४-स्थायी । ५-नियत । पु० १-शिव । २-साँड । ३-शनिग्रह ।
**स्थिरक** पु० (सं) सागौन ।
**स्थिरचित्त** वि० (सं) जिसका मन या चित्त दृढ़ हो ।
**स्थिरता** स्त्री० (सं) दे० 'स्थिरत्व' ।
**स्थिरत्व** पु० (सं) १-निश्चलता । २-दृढ़ता । ३-स्थायित्व । ४-धीरता ।
**स्थिरबुद्धि** वि० (सं) दृढ़चित्त ।
**स्थिरमता** वि० (सं) स्थिरचित्त ।
**स्थिरा** स्त्री० (सं) १-दृढ़ चित्त वाली स्त्री । २-पृथ्वी ३-सेमल ।
**स्थिरात्मा** वि० (सं) दृढ़चित्त ।
**स्थिरानुराग** पु० (सं) सच्चा प्रेम ।
**स्थिरीकरण** पु० (सं) घटती बढ़ती वस्तुओं का स्वरूप स्थिर करना । (स्टैबिलाइजेशन) । २-समर्थन । पुष्टि ।
**स्थूल** वि० (सं) १-मोटा । २-जो आसानी से समझ में आ सके । ३-जिसका तल सम हो । पु० १-वह पदार्थ जिसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण हो सके । २-विष्णु । ३-समूह । ४-ईख ।
**स्थूल बुद्धि** वि० (सं) मोटी अकल वाला । मूर्ख ।
**स्थैर्य** पु० (सं) १-स्थिरता । २-दृढ़ता ।
**स्थौल्य** पु० (सं) १-भारीपन । स्थूलता । २-मोटापन ।
**स्नपित** वि० (सं) स्नान किया हुआ ।
**स्नात** वि० (सं) नहाया हुआ ।
**स्नातक** पु०(सं) वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो । २-वह जिसने विश्वविद्यालय की परीक्षा पास की हो । (ग्रेजुएट) ।
**स्नातकव्रत** पु० (सं) स्नातक के कर्तव्य ।
**स्नातकव्रती** वि०(सं) जिसने स्नातक का व्रत लिया हो
**स्नातकोत्तर-अध्ययन** पु० (सं) वह अध्ययन जो

स्नातक होने के बाद भी जारी रखा जाय। (पोस्ट-ग्रेजुएट स्टडी)।
स्नातव्य *वि०* (सं) नहाने के योग्य।
स्नान पुं० (सं) १-स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना। नहाना। २-धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना कि उसका पूरा प्रभाव पड़े। ३-इस प्रकार का कोई प्रभाव।
स्नानगृह पुं० (सं) स्नान करने का कमरा।
स्नानतीर्थ पुं० (सं) वह तीर्थ जहां स्नान किया जाय
स्नानवेश्म पुं० (सं) स्नानगृह।
स्नानशाला *स्त्री०* (सं) स्नानगृह।
स्नानांबु पुं० (सं) स्नान करने का जल।
स्नानागार पुं० (सं) स्नानगृह।
स्नानी *वि०* (सं) स्नान करने वाला।
स्नानोदक पुं० (सं) स्नान करने का जल।
स्नापक पुं०(सं) स्नान कराने वाला नौकर या स्नान करने के लिए जल लाने वाला नौकर।
स्नापित *वि०* (सं) जिसको स्नान कराया गया हो।
स्नायविक *वि०* (सं) स्नायु सम्बन्धी।
स्नायी पुं० (सं) वह जो नहाता हो।
स्नायु *स्त्री०* (सं) सारे शरीर में फैली हुई सूक्ष्म नसों का वह जाल जिससे स्पर्श, पीड़ा आदि की अनुभूति होती है। (नर्व्स)।
स्नायुमंडल पुं०(सं) दे० 'स्नायुसंस्थान'।
स्नायुरोग पुं० (सं) नहरुआ नामक रोग।
स्नायुशूल पुं० (सं) स्नायुओं में होने वाली पीड़ा।
स्नायुसंस्थान पुं० (सं) मस्तिष्क की तथा शरीर के अन्य-अन्य भागों की नाड़ियों का समूह। (नर्वस-सिस्टम)।
स्निग्ध पुं० (सं) १-मोम। २-दूध पर की मलाई। ३-गन्धा बिरोजा। *वि०* १-जिसमें स्नेह या प्रेम हो २-चिकना।
स्निग्धजन पुं० (सं) प्रियजन।
स्नुषा पुं० (सं) १-पुत्रवधू। २-थूहर।
स्नुहा *स्त्री०* (सं) थूहर।
स्नेह पुं० (सं) १-प्रेम। प्रणय। प्यार। २-चिकना पदार्थ। तेल। ३-कोमलता। ५-सरसों। ५-एक राग। ६-सिर के भीतर का गूदा। ७-दूध के ऊपर की मलाई।
स्नेहक *वि०* (सं) प्रेमी। प्रेम करने वाला।
स्नेहकुंभ पुं० (सं) तेल रखने का पात्र या कुप्पा।
स्नेहगर्भ पुं० (सं) तिल।
स्नेहघट पुं० (सं) तेल रखने का घड़ा या कुप्पा।
स्नेहन पुं० (सं) १-शरीर पर तेल मलना। २-कफ। श्लेष्मा। ३-मक्खन।
स्नेहपात्र पुं० (सं) वह जिससे स्नेह किया जाय। प्रिय।
स्नेहपान पुं०(सं) कुछ रोगों में तेल घी चरबी आदि पीने की विधि।
स्नेहप्रिय पुं० (सं) दीपक।
स्नेहबद्ध *वि०* (सं) प्रेम में बँधा हुआ।
स्नेहभांड पुं० (सं) तेल रखने का पात्र।
स्नेहसम्मेलन पुं० (सं) दे० 'प्रीतिसम्मेलन'।
स्नेहसार पुं० (सं) मज्जा। अस्थिसार।
स्नेहाकुल *वि०* (सं) प्रेम के कारण व्याकुल।
स्नेहाश पुं० (सं) दीपक।
स्नेहित *वि०* (सं) १-प्यार किया हुआ। २-चिकना किया हुआ।
स्नेही पुं० (सं) वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी।
स्नेहोत्तम पुं० (सं) तिल का तेल।
स्नेह्य *वि०* (सं) स्नेह या प्रेम करने के योग्य।
स्पंज पुं० (अं) झावे की तरह एक प्रकार का मुलायम या रेशेदार पदार्थ जिसमें छोटे-छोटे छेद होते हैं।
स्पंद पुं० (सं) दे० 'स्पंदन'।
स्पंदन पुं० (सं) १-धीरे-धीरे हिलना। कांपना। २-अंगों आदि का धड़कना।
स्पंदित *वि०* (सं) हिलता या कांपता हुआ। फड़कता हुआ।
स्पर्द्धन, स्पर्धन पुं० (सं) १-प्रतियोगिता। होड़। २-ईर्ष्या।
स्पर्द्धा, स्पर्धा *स्त्री०* (सं) १-प्रतियोगिता आदि में होड़ २-योग्यता से अधिक पाने या करने की इच्छा। ३-साहस। ४-ईर्ष्या।
स्पर्द्धी, स्पर्धी *वि०* (सं) स्पर्द्धा करने वाला। ज्यामिति में किसी कोण में की उतनी कमी जिसकी वृद्धि से वह कोण १८० अंश का होता है।
स्पर्श पुं० (सं) १-त्वचा का वह गुण जिससे छूने दबने आदि का अनुभव होता है। २-एक वस्तु के तल से दूसरे वस्तु के स्थल का भिड़ना या छूना। ३-व्याकरण में उच्चारण अभ्यन्तर प्रयत्न के चार भेदों में से 'स्पष्ट' नामक भेद।
स्पर्शकोण पुं० (सं) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई रेखा के कारण वृत्त तथा स्पर्श रेखा के बीच में बनता है।
स्पर्शक पुं० (सं) १-छूने वाला। २-अनुभव करने वाला।
स्पर्शज *वि०* (सं) स्पर्श से पैदा होने वाला।
स्पर्शदिशा *स्त्री०* (सं) वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगा हो।
स्पर्शमणि पुं० (सं) पारस पत्थर।
स्पर्शरेखा *स्त्री०* (सं) रेखागणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त के एक बिंदु से स्पर्श करती हुई खींची जाय। (टेन्जेंट)।

**स्पर्शवर्ण** पुं० (सं) 'क' से 'म' तक के सब वर्ण।
**स्पर्शवेद्य** वि० (सं) जिसका ज्ञान स्पर्श द्वारा हो।
**स्पर्शसंचारी** पुं० (सं) एक प्रकार का शूक रोग।
**स्पर्शसुख** वि० (सं) जिसका स्पर्श सुखदायक हो।
**स्पर्शस्नान** पुं० (सं) वह स्नान जो ग्रहण आरम्भ होने से पहले किया जाता है।
**स्पर्शहानि** स्त्री० (सं) शूक रोग में रक्त के दूषित होने पर चमड़ी में स्पर्श ज्ञान का अभाव होना।
**स्पर्शी** वि० (सं) स्पर्श करने वाला। छूने वाला।
**स्पर्शेन्द्रिय** स्त्री० (सं) त्वचा। चमड़ा।
**स्पर्शोपल** पुं० (सं) पारस पत्थर।
**स्पष्ट** वि० (सं) १-साफ दिखाई देने वाला या समझ में आने वाला। २-जिसके सम्बन्ध में कोई धोका न हो (क्लियर)। पुं० १-ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का स्फुट साधन। २-व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न।
**स्पष्टगर्भा** स्त्री० (सं) वह स्त्री जिसमें गर्भ के लक्षण, साफ दिखाई दें।
**स्पष्टतारक** वि० (सं) (आकाश) जिसमें तारे साफ दिखाई दें।
**स्पष्टभाषी** वि० (सं) स्पष्ट रूप से कहने वाला।
**स्पष्टवादी** वि० (सं) दे० 'स्पष्टभाषी'।
**स्पष्टार्थ** वि० (सं) जिसका अर्थ स्पष्ट या साफ हो।
**स्पष्टीकरण** पुं० (सं) कोई बात इस तरह साफ करना कि उसके सम्बन्ध में कोई भ्रम न रहे। (एलूसिडेशन)।
**स्पष्टीकृत** वि० (सं) जिसका स्पष्टीकरण किया गया हो
**स्पृश्य** वि० (सं) जो स्पर्श करने के योग्य हो।
**स्पृष्ट** वि० (सं) जिससे या जिसका स्पर्श हुआ हो। पुं० (सं) व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रयत्न।
**स्पृष्टास्पृष्टि** स्त्री०(सं) छूआछूत। आपस में एक दूसरे को छूने की क्रिया।
**स्पृहणीय** वि० (सं) जिसके लिए कामना की जा सके २-गौरवशाली।
**स्पृहयालु** वि० (सं) १-जो कामना करे। २-लालची
**स्पृहा** स्त्री० (सं) १-इच्छा। अभिलाषा। २-किसी ऐसे पदार्थ की अभिलाषा जो धर्म के अनुकूल हो। (न्याय०)।
**स्पृही** वि० (सं) कामना करने वाला।
**स्पृह्य** वि० (सं) जिसके लिए कामना की जा सके। वांछनीय।
**स्फटन** पुं० (सं) दे० 'स्फटिकीकरण'।
**स्फटिकीकरण** पुं० (सं) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी वस्तु का स्फटिक रूप बनाया जाय। (क्रिस्टेलाइजेशन)।
**स्फटा** स्त्री० (सं) सर्प का फन।
**स्फटिक** पुं० (सं) १-एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर। बिल्लौर। २-सूर्यकांतमणि। ३-शीशा। कांच ४-कपूर। ५-फिटकरी।
**स्फटिकप्रभ** वि० (सं) स्फटिक जैसी चमक वाला। पारदर्शी।
**स्फटिकमणि** पुं० (सं) सूर्यकांतमणि।
**स्फटिकाचल** पुं० (सं) स्फटिक के समान दिखाई देने वाला बरफ से ढका हुआ कैलास पर्वत।
**स्फटिकाद्रि** पुं० (सं) कैलास पर्वत।
**स्फटित** वि० (सं) फटा हुआ। विदीर्ण।
**स्फटी** स्त्री० (सं) फिटकरी।
**स्फरण** पुं० (सं) १-कंप कंपाना। २-प्रवेश करना।
**स्फार** वि० (सं) १-प्रचुर। विपुल। २-विकट।
**स्फारण** पुं० (सं) दे० 'स्फुरण'।
**स्फारित** वि० (सं) बहुत अधिक फैलाया हुआ।
**स्फालन** पुं० (सं) १-कँपकँपाना। २-मलना। ३-हिलाना।
**स्फीत** वि० (सं) १-बढ़ा हुआ। २-फूला या उभरा हुआ। ३-समृद्ध।
**स्फीति** स्त्री० (सं) १-फूलना। उभारना। २-बढ़ना। अधिक बढ़ जाना।
**स्फुट** वि० (सं) १-व्यक्त। २-विकसित। ३-साफ। ४-सफेद। ५-फुटकर। पुं० ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली में ग्रहों की राशि में स्थान दिखाना।
**स्फुटचंद्रतारक** वि० (सं) चन्द्रमा तथा तारों से जगमगाती हुई (रात्रि)।
**स्फुटन** पुं० (सं) १-फटना। २-टुकड़े-टुकड़े होना। ३-विकसित होना। ४-चटकना।
**स्फुटपुंडरीक** पुं०(सं) खिला हुआ कमल (हृदय का)
**स्फुटा** स्त्री० (सं) सांप का फन।
**स्फुटित** वि० (सं) १-विकसित। २-विदीर्ण।
**स्फुटीकरण** पुं० (सं) १-स्पष्ट या प्रकट करना। २-ठीक करना।
**स्फुत्कार** पुं० (सं) फुत्कार।
**स्फुरण** पुं० (सं) १-(अंग का) फड़कना। २-कुछ-कुछ हिलना।
**स्फुरति** स्त्री० (हि) दे० 'स्फूर्ति'।
**स्फुरना** क्रि० (हि) १-व्यक्त होना। २-फड़कना। ३-कांपना।
**स्फुरित** वि० (सं) हिलने या फड़कने वाला।
**स्फुर्ती** स्त्री०(हि) १-किसी बात का अचानक प्रकाश में आना। २-साफ दिखाई पड़ना।
**स्फुलिंग** पुं० (सं) चिनगारी।
**स्फुलिंगिनी** स्त्री० (सं) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
**स्फूर्ज** पुं०(सं) १-इन्द्र का वज्र। २-बादलों की गड़गड़ाहट।

**स्फूर्ति** स्त्री० (सं) १-फड़कना। २-धीरे-धीरे हिलना। ३-उत्साह। ४-फुर्ती। तेजी।
**स्फोट** पुं० (सं) १-किसी वस्तु का अपने आवरण को वेग सहित फाड़कर निकलना। फूटना। २-फोड़ा-फुन्सी आदि। ३-मोती।
**स्फोटक** पुं० (सं) १-फोड़ा-फुन्सी। २-भिलावां।
**स्फोटन** पुं० (सं) १-फाड़ना। विदारण। २-शब्द। ध्वनि। ३-अन्दर से फोड़ना। ४-वायु प्रकोप से होने वाली पीड़ा।
**स्फोटा** स्त्री० (सं) सांप का फन।
**स्फोटित** वि० (सं) जिसका स्फोट किया गया हो।
**स्फोटितनयन** वि०(सं) जिसके नेत्र फोड़ दिये गये हों
**स्फोटिनी** स्त्री० (सं) ककड़ी।
**स्मयन** पुं० (सं) मुस्कान।
**स्मयी** वि० (सं) मुसकराने वाला।
**स्मर** पुं०(सं) १-किसी देखी या सुनी बात का मन में ध्यान रहना। २-नौ प्रकार की भक्तियों में से एक।
**स्मरणपत्र** पुं० (सं) याद दिलाने के लिए लिखित पत्र (मेमोरेन्डम)।
**स्मरणशक्ति** स्त्री० (सं) वह मानसिक-शक्ति जिसमें बातें याद रहती है। (मेमोरी)।
**स्मरणीय** वि० (सं) याद रखने योग्य।
**स्मरना** क्रि० (हि) याद करना।
**स्मर्ण** पुं० (हि) दे० 'स्मरण'।
**स्मर्तव्य** वि० (सं) स्मरणीय।
**स्मर्ता** पुं० (सं) याद रखने वाला।
**स्मर्य** वि० (सं) स्मरणीय।
**स्मशान** पुं० (हि) दे० 'श्मशान'।
**स्मसान** पुं० (हि) दे० 'श्मशान'।
**स्मार** पुं० (सं) ज्ञापन (मेमो)।
**स्मारक** वि० (सं) स्मरण करने वाला। पु० १-वह काम या रचना जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिए हो। यादगार (मेमोरियल)। २-वह वस्तु जो किसी को याद बनाए रखने के लिए दी जाय।
**स्मारकग्रंथ** पुं०(सं) वह ग्रन्थ जो किसी विद्वान, नेता या दार्शनिक की स्मृति बनाए रखने के लिए लिखा जाय (कमेमोरेशन वॉल्यूम)।
**स्मारी** वि० (सं) स्मरण या याद दिलाने वाला।
**स्मार्त** वि० (सं) स्मृति का। पुं० १-वह जो स्मृतियों का अनुयायी हो। २-स्मृतियों को मानने वाला एक संप्रदाय।
**स्मित** पुं० (सं) धीमी हँसी। मन्द हास्य। वि० १-मुस्कराता हुआ। २-खिला हुआ।
**स्मितमुख** वि० (स) हँसमुख।
**स्मिति** स्त्री० (स) दे० 'स्मित'।
**स्मृत** वि० (स) याद किया हुआ।
**स्मृति** स्त्री० (सं) १-वह ज्ञान जो स्मरण शक्ति द्वारा प्राप्त होता है। याद। २-हिन्दू धर्मशास्त्र। ३-इच्छा। कामना।
**स्मृतिउपायन** पुं० (सं) किसी व्यक्ति या घटना को याद बनाए रखने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा भेंट की गई वस्तुओं या रखे गये चित्रों आदि का संग्रह (सॉवेनीर)।
**स्मृतिकार** पु० (सं) स्मृति या धर्मशास्त्र बनाने वाला
**स्मृतिकारक** पुं० (सं) वह दवा जिससे स्मरण शक्ति बढ़ती हो।
**स्मृतिविभ्रम** पुं० (सं) ठीक तरह याद न होना।
**स्मृतिशेष** वि० (सं) १-मृत। २-जिसकी केवल याद शेष रह गई हो। पुं० किसी महापुरुष या महात्मा की अस्थि, वस्त्र, खड़ाऊँ आदि जो उसकी मृत्यु के बाद स्मृति के रूप में सुरक्षित रखे गये हों। (रेलिक्स)।
**स्मृतिशैथिल्य** वि० (सं) स्मरण-शक्ति कम हो जाना
**स्मृतिहीन** वि० (सं) जो किसी बात को याद न रख सके।
**स्यंद** पुं० (सं) १-चूना। टपकना। २-रिसना। ३-एक नेत्र रोग। ४-पसीना निकलना। ५-चन्द्रमा।
**स्यंदन** पुं० (सं) १-रथ। २-टपकना। ३-लगना। ४-गमन। ५-चित्र। ६-घोड़ा। ७-जल।
**स्यंदनारूढ़** पुं० (सं) वह जो रथ पर सवार हो।
**स्यंदी** वि० (सं) रिसने या टपकने वाला।
**स्यमंतक** पुं० (सं) एक प्रकार का बहुमूल्य मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था।
**स्यात्** अव्य० (सं) कदाचित्। शायद।
**स्याद्वाद** पुं०(सं) अनेकांतवाद (जैन)।
**स्यान** वि० (स) स्याना।
**स्यानपन** पुं० (हि) १-चतुरता। २-चालाकी।
**स्याना** वि० (हि) १-चतुर। बुद्धिमान। २-वयस्क। पुं०१-बड़ा-बूढ़ा। २-झाड़ फूँक करने वाला। ओझा ३-चिकित्सक।
**स्यानाचारी** स्त्री० (हि) गांव के मुखिया को दी जाने वाली रसूम।
**स्यानापन** पुं० (हि) दे० 'स्यानपन'।
**स्यापा** पुं० (हि) दे० 'सियापा'।
**स्याबास** अव्य० (हि) दे० 'शाबास'।
**स्याम** पु०(हि) १-दे० 'श्याम'। २-एक देश का नाम
**स्यामक** पुं० (हि) दे० 'श्यामक'।
**स्यामल** वि० (हि) दे० 'श्यामल'।
**स्यामलता** स्त्री० (हि) साँवलापन।
**स्यामलिया** पुं० (हि) दे० 'सांवला'।
**स्यामा** स्त्री० (हि) दे० 'श्यामा'।
**स्यार** पुं० (हि) गीदड़। सियार।
**स्यारी** स्त्री० (हि) सियारिन। गीदड़।

स्याल पुं०(सं) साला। पत्नी का भाई। (हिं) सियार
स्यालक पुं० (सं) साला।
स्यालिका स्त्री० (सं) साली। पत्नी की छोटी बहन।
स्याली पुं० (हिं) साली।
स्यालू पुं० (हिं) स्त्रियों की ओढ़ने की चादर।
स्यावज पुं० (हिं) शिकार।
स्याह वि० (फा) कृष्ण वर्ण का। काला। पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहा पुं० (हिं) दे० 'सियाहा'।
स्याही स्त्री० (हिं) साही नामक जन्तु। (फा) १-वह रङ्गीन तरल पदार्थ जो प्रायः काले रङ्ग का होता है और कागज पर लिखने के काम आता है। रोशनाई। २-कालिमा। ३-कालापन। ४-एक प्रकार का काजल।
स्याहीचट पुं० (फा) कागज पर की स्याही सोखने वाला मोटा गत्ता।
स्याहीसोख पुं० (फा) दे० 'स्याहीचट'।
स्यूत वि० (सं) सीया या बुना हुआ। पुं० मोटे कपड़े का थैला।
स्यूति स्त्री० (सं) १-सीवन। सीना। २-बुनना। ३-संतति। संतान। ४-थैला।
स्यूना स्त्री० (सं) १-कमरबन्द। २-किरण।
स्यूम पुं० (सं) १-रश्मि। किरण। २-जल।
स्यूमक पुं० (सं) आनन्द।
स्यों अव्य० (हिं) १-सहित। २-पास। समीप।
स्योनाक पुं० (सं) सोनपाढ़ा नामक एक वृक्ष।
स्रंग पुं० (हिं) दे० 'शृङ्ग'।
स्रंसित वि०(सं) १-ढीला किया हो। २-जिसे गिराया गया हो।
स्रंसी वि०(सं) १-गिरने वाला। २-असमय में गिरने वाला (गर्भ)। पुं० सुपारी का पेड़।
स्रक् स्त्री० (सं) १-फूलों की माला। २-एक वर्णवृत्त ३-ज्योतिष में एक योग।
स्रग स्त्री० (हिं) फूलों की माला।
स्रगाल पुं० (हिं) गीदड़।
स्रग्धरा स्त्री० (सं) १-एक वर्णवृत्त। २-एक बौद्ध देवी का नाम।
स्रग्विणी स्त्री० (सं) १-एक देवी का नाम। २-एक वर्णवृत्त।
स्रजन पुं० (हिं) सृष्टि।
स्रजना क्रि० (हिं) दे० 'सृजना'।
स्रद्धा स्त्री० (हिं) दे० 'श्रद्धा'।
स्रम पुं० (हिं) दे० 'श्रम'।
स्रमना क्रि० (हिं) थकना।
स्रमित वि० (हिं) दे० 'श्रमित'।
स्रवंती स्त्री० (सं) १-नदी। २-एक प्रकार की वनस्पति।
स्रव पुं० (सं) १-प्रवाह। बहाव। २-झरना।
स्रवण पुं० (सं) १-प्रवाह। २-झरना। ३-पसीना। ४-मूत्र।
स्रवन पुं० (हिं) दे० 'श्रवण'।
स्रवना क्रि० (हिं) १-टपकना। २-बहना। ३-गिरना। ४-बहाना। ५-टपकाना।
स्रष्टव्य वि० (सं) जिसकी सृष्टि की जा सके।
स्रष्टा पुं० (सं) १-सृष्टि करने वाला। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। वि० बनाने वाला।
स्रस्त वि० (सं) १-च्युत। २-शिथिल। ३-हिलता हुआ। ३-अलगाया हुआ।
स्राध पुं० (हिं) दे० 'श्राद्ध'।
स्राप पुं० (हिं) दे० 'शाप'।
स्रापित वि० (हिं) दे० 'शापित'।
स्राव पुं०(सं) १-रसकर या बहकर निकलना। २-गर्भपात। २-रस। निर्यास।
स्रावक वि० (सं) टपकने या चुआने वाला।
स्रावनी स्त्री० (हिं) दे० 'श्रावणी'।
स्रावित वि० (सं) बहकर या चू-कर निकला हुआ।
स्रावी वि० (सं) स्राव कराने वाला।
स्राव्य वि० (सं) बहने योग्य।
स्रिंग पुं० (हिं) दे० 'शृङ्ग'।
स्रिजन पुं० (हिं) दे० 'सृजन'।
स्रुक् स्त्री० (सं) यज्ञ में घी डालने के लिये लकड़ी की बनी स्रुवा।
स्रुत वि० (सं) चुआ या बहा हुआ। (हिं) दे० 'श्रुत'
स्रुति स्त्री० (सं) बहाव। क्षरण। (हिं) श्रुति।
स्रुवा स्त्री० (सं) काठ की छोटी करछी जिससे हवन आदि में घी की आहुति देते हैं।
स्रेनी स्त्री० (हिं) दे० 'श्रेणी'।
स्रोत पुं० (सं) १-जल प्रवाह। २-झरना। ३-वह आधार जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती आती हो (सोर्स)।
स्रोतस्वती स्त्री० (सं) नदी।
स्रोतांजन पुं० (सं) सुरमा।
स्रोता पुं० (हिं) दे० 'सोता'।
स्रोन पुं० (हिं) दे० 'श्रवण'।
स्रोनित पुं० (हिं) दे० 'शोणित'।
स्लीपर पुं० (अं) १-चौपहला लकड़ी का लम्बा टुकड़ा जो प्रायः रेल की पटड़ियों के नीचे बिछाया जाता है। २-एक प्रकार की हल्की जूती।
स्लेट स्त्री० (अं) एक प्रकार की चिकने पत्थर की पटिया जिस पर विद्यार्थी अंक लिखते हैं।
स्वः पुं० (सं) स्वर्ग।
स्व वि० (सं) अपना। निजी। प्रत्य० जो शब्द के अन्त में लगकर भाववाचक अर्थ देता है-जैसे राजस्व।

**स्वकीय** *वि०* (सं) निजी। अपना।
**स्वकीया** *स्त्री०*(सं) अपने ही पति को प्रेम करने वाली नायिका (साहित्य)।
**स्वक्ष** *वि०* (हि) दे० 'स्वच्छ'।
**स्वगत** *अव्य०* (सं) दे० स्वतः। *वि०* १-आत्मगत। २-मन में आया हुआ। मनोगत।
**स्वगृहस्मारी** *वि०* (सं) जिसे बहुत दिनों तक विदेश में रहने के कारण घर की याद आये। (होम सिक)
**स्वच्छंदचारिणी** *स्त्री०* (सं) वेश्या।
**स्वच्छंदचारी** *वि०* (सं) स्वतंत्र। अपनी इच्छा से काम करने वाला।
**स्वच्छ** *वि०* (सं) १-निर्मल। २-उज्ज्वल। ३-शुद्ध। पवित्र। ४-निष्कपट।
**स्वच्छता** *स्त्री०* (सं) निर्मलता। सफाई।
**स्वच्छतावर्धक** *वि०* (सं) गन्दगी दूर करके मकान आदि के चारों ओर की स्वच्छता। (सेनिटरी)।
**स्वच्छत्व** पु० (सं) स्वच्छता।
**स्वच्छना** *क्रि०* (हि) साफ करना।
**स्वच्छी** *वि०* (हि) साफ। निर्मल।
**स्वजन** पुं० (सं) १-अपने परिवार के लोग। २-रिश्तेदार।
**स्वजन-पक्षपात** पुं० (सं) (नौकरी आदि या शासन व्यवस्था में) अपने रिश्तेदारों, मित्रों आदि का पक्षपात लेना। (नेपोटिज्म)।
**स्वजनी** *स्त्री०* (सं) सखी। सहेली।
**स्वजा** *स्त्री०* (सं) पुत्री। बेटी।
**स्वजाति** *स्त्री०* (सं) अपनी जाति। पुं० पुत्र। बेटा
**स्वतंत्र** *वि०*(सं)१-स्वाधीन। आजाद (इन्डिपेन्डेन्ट) २-स्वेच्छाचारी। ३-अलग। ४-नियम आदि के बन्धन से मुक्त (फ्री)।
**स्वतंत्रता** *स्त्री०* (सं) स्वाधीनता। आजादी।
**स्वतंत्रपत्रकार** पुं० (सं) वह पत्रकार जो वेतन भोगी किसी संस्था का कर्मचारी न होकर स्वतंत्र रूप में समाचार पत्र में लेखादि लिख कर जीविका चलाता हो। (फ्रीलांस जर्नेलिस्ट)।
**स्वतः** *अव्य०* (सं) स्वयं। आप से आप।
**स्वतःसिद्ध** *वि०* (सं) स्वयंसिद्ध।
**स्वतोविरोधी** *वि०* (सं) स्वयं अपना ही विरोध या खंडन करने वाला।
**स्वत्व** पुं० (सं) १-स्व का भाव। अपनापन। २-वह अधिकार जिसके आधार पर कोई वस्तु मांगी जाती है। हक। अधिकार। (राइट)।
**स्वत्वसंलेख** पुं० (सं) वह संलेख या पत्रक जिसमें जमीन, संपत्ति आदि पर किसी का पूर्ण रूप से अधिकार माना गया हो। (टाइटिल डीड)।
**स्वत्वस्व** पु० (सं) स्वामित्व (रायल्टी)।
**स्वत्वहस्तांतरण** पुं० (सं) किसी संपत्ति आदि का अधिकार किसी दूसरे को प्रदान करना। (एलिय-नेट)।
**स्वत्वहानि** पुं० (सं) किसी के स्वत्व या अधिकार का न रहना।
**स्वत्वाधिकारी** पुं० (सं) स्वामी।
**स्वदन** पुं० (सं) १-लोहा। २-स्वाद लेना। खाना।
**स्वदार** *स्त्री०* (सं) अपनी स्त्री या पत्नी।
**स्वदेश** पुं० (सं) अपना देश। मातृभूमि।
**स्वदेशनिस्सारण** पुं० (सं) किसी को अपने देश से बलात् बाहर भेज देना। (एक्सपेट्रियेशन)।
**स्वदेशप्रतिप्रेषण** पुं० (सं) किसी को उसके देश बलात् भेज देना। (रिपेट्रियेशन)।
**स्वदेशी** *वि०* (हि) दे० 'स्वदेशीय'।
**स्वदेशीय** *वि०* (सं) १-अपने देश से सम्बन्ध रखने वाला। २-स्वदेश में बना हुआ।
**स्वधर्म** पुं० (सं) अपना धर्म या कर्तव्य।
**स्वधर्मच्युत** *वि०* (सं) अपने कर्तव्य का पालन न करने वाला।
**स्वधा** *अव्य०* (सं) एक मंत्र जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देते समय किया जाता है
**स्वधाधिप** पुं० (सं) अग्नि।
**स्वधाशन** पुं० (सं) पितर।
**स्वधीत** *वि०* (सं) जिसका भली भांति अध्ययन किया गया हो।
**स्वनंदा** *स्त्री०* (सं) दुर्गा।
**स्वन** पुं० (सं) शब्द। आवाज।
**स्वनामा** *वि०*(सं) अपने नाम से विख्यात होने वाला
**स्वनि** पुं० (सं) १-शब्द। आवाज। २-अग्नि।
**स्वनित** *वि०* (सं) ध्वनित। पुं० १-शब्द। २-गर्जन ३-बादल की गड़गड़ाहट।
**स्वपक्ष** पु० (सं) अपना दल या पक्ष।
**स्वपक्षत्यागी** *वि०* (सं) अपने पहले विचार वालों या सिद्धांतों वाले दल को छोड़ देने वाला (रेनीगेड)।
**स्वपच** पुं० (हि) दे० 'श्वपच'।
**स्वपन** पुं० (सं) दे० 'स्वप्न'।
**स्वपना** पुं० (हि) दे० 'स्वप्न'।
**स्वपनीय** *वि०* (सं) निद्रा के योग्य।
**स्वप्रकाश** *वि०* (सं) जो अपने आप प्रकाशित हो।
**स्वप्न** पुं० (सं) १-निद्रा। नींद। २-सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण घटनाएँ आदि दिखाई देना। २-मन में उठने वाली ऊँची कल्पना जो पूरी न हो सके। ३-नींद में दिखाई देने वाली घटनाएँ आदि।
**स्वप्नकर** *वि०* (सं) नींद लाने वाला।
**स्वप्नदोष** पुं० (सं) सोते में इच्छा न रहते हुए भी वीर्यपात होना।
**स्वप्नविनिश्वर** *वि०* (सं) स्वप्न के समान थोड़ी देर

रहने वाला।
स्वप्नशील वि० (सं) निद्रालु।
स्वप्नाना क्रि० (हि) स्वप्न देखना या दिखाना।
स्वप्नालु वि० (सं) निद्रालु। सोने वाला।
स्वप्नावस्था स्त्री० (सं) स्वप्न या सोने की अवस्था।
स्वप्निल वि० (सं) १-स्वप्न देखता हुआ। २-सोता हुआ। ३-स्वप्न का।
स्वप्नोपम वि० (सं) स्वप्न के समान।
स्वबंधु पुं० (सं) अपना मित्र या बन्धु।
स्वबरन पुं० (हि) दे० 'स्वर्ण'।
स्वभाउ पुं० (हि) दे० 'स्वभाव'।
स्वभाव पुं० (सं) १-मुख्य गुण। प्रकृति। (नेचर)। २-आदत (हेबिट)।
स्वभाविक वि० (हि) दे० 'स्वाभाविक'।
स्वभावोक्ति स्त्री० (सं) एक काव्यालंकार जिसमें रूप गुण स्वभाव जैसे हों वैसे ही वर्णन किए जाते हैं।
स्वभू पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयं अव्य० (सं) १-आप। खुद। २-आप से आप।
स्वयंकृत वि० (सं) १-अपने आप किया हुआ। २-गोद लिया हुआ।
स्वयंकृष्ट वि० (सं) जो अपने आप जोता हुआ हो।
स्वयंपतित वि० (सं) जो अपने आप पतित हुआ हो।
स्वयंप्रज्वलित वि० (सं) जो अपने आप ही जल रहा हो।
स्वयंप्रभा वि० (सं) इन्द्र की एक अप्सरा का नाम।
स्वयंप्रमाण वि० (सं) जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं हो।
स्वयंभू पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-शिव। ३-वेद। वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंभूत वि० (सं) अपने आप उत्पन्न होने वाला।
स्वयंवर पुं० (सं) १-प्राचीन काल की एक प्रथा जिसमें कन्या वर को अपने आप चुनती थी। २-वह स्थान जहां कन्या वर को चुने।
स्वयंवरण पुं० (सं) अपने आप पति का चुनाव।
स्वयंवरमित्री पुं० (सं) पति का चुनाव स्वयं करने वाली कन्या।
स्वयंवरा स्त्री० (सं) पति का चुनाव अपने आप करने वाली कन्या।
स्वयंसिद्ध वि०(सं) जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के आप ही ठीक हो। सर्वमान्य।
स्वयंसिद्धि स्त्री० (सं) वह सिद्धांत जिसको प्रमाणित करने की आवश्यकता न हो। (एक्जियम)।
स्वयंसेवक पुं० (सं) वह जो अपनी इच्छा से आप ही आप किसी काम में विशेषतः सैनिक ढंग के काम में सम्मिलित हो। (वालेन्टियर)।
स्वयंसेविका स्त्री० (सं) स्त्री स्वयंसेवक।
स्वयम अव्य० (सं) दे० 'स्वयं'।
स्वयमर्जित पुं०(सं) वह संपत्ति जो स्वयं उपार्जित की की गई हो।
स्वयमागत वि०(सं) किसी बात में टांग अड़ाने वाला।
स्वयमुद्घाटित वि० (सं) जो स्वयं खुल गया हो। (दरवाजा)।
स्वमेव अव्य० (सं) आप ही। खुद ही।
स्वर पुं० (सं) १-कोमलता, तीव्रता या उतार-चढ़ाव आदि से युक्त वह शब्द जो प्राणियों के गले या बाद्ययंत्रों से निकलता है। २-संगीत में इस प्रकार के सात स्वरों का समूह। सरगम। ३-व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रता पूर्वक होता है। ४-नाक से निकलने वाली श्वास। पुं० (हि) आकाश।
स्वरकंप पुं० (सं) स्वर में कंप उत्पन्न करना।
स्वरग पुं० (सं) दे० 'स्वर्ग'।
स्वरग्राम पुं०(सं) संगीत में 'सा' से 'नी' तक के सात स्वरों का समूह। सरगम।
स्वरछिद्र पुं० (सं) बांसुरी के स्वर वाले छेद।
स्वरपात पुं० (सं) शब्द के उच्चारण करने में किसी अक्षर पर रुक जाना। (एक्सेन्ट)।
स्वरप्रधान वि० (सं) (संगीत में) जिसमें स्वर की प्रधानता हो।
स्वरभेद पुं० (सं) आवाज़ या गले का बैठ जाना।
स्वरमात्रा स्त्री० (सं) उच्चारण की मात्रा।
स्वरलहरी स्त्री० (सं) स्वरों की तरंग या लहर।
स्वरलिपि स्त्री० (सं) संगीत में किसी गीत या ताल आदि में आने वाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख (नोटेशन)।
स्वरविज्ञान पुं० (सं) वह विद्या जिसमें स्वर सम्बन्धी सभी बातों का विवेचन हो।
स्वरशून्य वि० (सं) बेसुरा। जो सुर में न हो।
स्वरसंधि स्त्री० (सं) स्वर वर्णों में स्वर के अंत और स्वर के पहले पदों में होने वाली सन्धि।
स्वरसंपद स्त्री० (सं) (संगीत) स्वरों का मेल।
स्वरसंपन्न वि० (सं) सुरीला।
स्वरस पुं० (सं) पत्तियों आदि को कूट कर निकाला गया रस। (वैद्यक)।
स्वरसप्तक पुं० (सं) सरगम।
स्वरसाधन पुं० (सं) सरगम के विभिन्न स्वरों के उच्चारण का अभ्यास करना।
स्वरांत वि० (सं) (वह शब्द) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।
स्वरांतर पुं० (सं) दो स्वरों के उच्चारण में मध्य का विराम।
स्वरांश पुं० (सं) संगीत में स्वर का आधा पाद।

**स्वराजी** *वि०* (हि) स्वराज्य के लिए कोई आन्दोलन करने वाला।
**स्वराज्य** पुं० (सं) वह शासन-प्रणाली जिसमें कोई देश किसी दूसरे देश के आधीन न होकर स्वतंत्र होता है। अपना राज्य।
**स्वराट्** पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-परमात्मा। ३-स्वराज्य शासनप्रणाली वाले देश का राजा।
**स्वराष्ट्र** पुं०(सं)१-अपना देश या राज्य। २-प्राचीन सुराष्ट्र नामक देश।
**स्वराष्ट्रमंत्री** पुं० (सं) किसी देश या राज्य के मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके आधीन, पुलिस, जेलखाने, फौजदारी शासन-प्रबन्ध आदि हों। (होम-मिनिस्टर)
**स्वरित** *वि०*(सं)१-जिसमें स्वर हो। गूँजता हुआ। पुं० स्वर का वह उच्चारण जो न अधिक तीव्र और न ही अधिक मन्द हो।
**स्वरुचि** *वि०* (सं) अपनी इच्छा या रुचि।
**स्वरूप** पुं० (सं) १-मूर्त्ति चित्रादि। २-व्यक्ति पदार्थ आदि की आकृति। ३-स्वभाव। आत्मा। ४-वह जिसने देवता का रूप धारण किया हो। *वि०* १-सुन्दर। २-तुल्य। *अव्य०* रूप में। तौर पर।
**स्वरूपप्रतिष्ठा** *स्त्री०* (सं) जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों से युक्त होना।
**स्वरूपमान्** पुं० (हि) सुन्दर।
**स्वरोदय** पुं० (सं) स्वरों या श्वासों से सब प्रकार के अशुभ या शुभ फल जानने की विद्या।
**स्वरोपघात** पुं० (सं) स्वरभंग।
**स्वर्** पुं० (सं) १-आकाश। २-स्वर्ग। ३-परलोक।
**स्वर्ग** पुं० (सं) १-देवलोक। हिन्दुओं के मतानुसार सात लोकों में से एक जिसमें सत्कर्म करने वाली आत्माएँ जाती है। २-इस प्रकार का अन्य धर्मों में आकाश में माना जाने वाला स्थान। ३-वह स्थान जहां बहुत सुख मिले।
**स्वर्गकाम** *वि०* (सं) स्वर्ग कीइच्छा करने वाला।
**स्वर्गगंगा** *स्त्री०* (सं) आकाशगंगा।
**स्वर्गगामी** *वि०* (सं) स्वर्ग में जाने वाला। मृत। स्वर्गीय।
**स्वर्गतरंगिणी** *स्त्री०* (सं) मंदाकिनी। स्वर्गगंगा।
**स्वर्गतरु** पुं० (सं) पारिजात।
**स्वर्गधाम** पुं० (सं) स्वर्गलोक।
**स्वर्गभर्ता** पुं० (सं) इन्द्र।
**स्वर्गलोक** पुं० (स) देवलोक।
**स्वर्गवधू** *स्त्री०* (सं) अप्सरा।
**स्वर्गवास** पुं० (सं) १-मरना। २-स्वर्ग में निवास करना।
**स्वर्गवासी** *वि०* (सं) १-जो मर गया हो। मृत। २-स्वर्ग में रहने वाला।
**स्वर्गश्री** *स्त्री०* (सं) स्वर्ग का वैभव।
**स्वर्गसंपादन** पुं० (सं) स्वर्ग को प्राप्त होना।
**स्वर्गसुख** पुं० (सं) स्वर्ग में मिलने वाला सुख।
**स्वर्गस्थ** *वि०* (सं) मृत। स्वर्ग में स्थित।
**स्वर्गस्थित** *वि०* (सं) स्वर्गस्थ।
**स्वर्गापगा** *स्त्री०* (सं) आकाशगङ्गा।
**स्वर्गाभिकाम** *वि०* (सं) स्वर्ग की अभिलाषा करने वाला।
**स्वर्गारूढ** *वि०* (सं) स्वर्ग सिधारा हुआ। मृत।
**स्वर्गारोहण** पुं० (सं) स्वर्ग की ओर जाना।
**स्वर्गिक** *वि०* (स) दे० 'स्वर्गीय'।
**स्वर्गी** *वि०* (स) स्वर्गवासी।
**स्वर्गीय** *वि०* (सं) १-स्वर्ग सम्बन्धी। २-जो मर कर स्वर्ग गया हो। मृत।
**स्वर्ग्य** *वि०* (सं) १-स्वर्ग सम्बन्धी। २-स्वर्ग दिलाने वाला।
**स्वर्जिका** *स्त्री०* (सं) १-सज्जी। २-शोरा।
**स्वर्जी** *स्त्री०* (स) १-सज्जी। २-शोरा।
**स्वर्ण** पुं०(सं)१-सोना नामक प्रसिद्ध धातु। सुवर्ण। २-नागकेसर। ३-एक पुराणोक्त नदी।
**स्वर्णक** पुं० (सं) सोना। *वि०* सुनहला। सोने का।
**स्वर्णकार** पुं० (सं) सुनार।
**स्वर्णगिरि** पुं० (सं) सुमेरु पर्वत।
**स्वर्णचूड** पुं० (सं) नीलकंठ नामक पक्षी।
**स्वर्णचूल** पुं० (सं) दे० 'स्वर्णचूड'।
**स्वर्णजीवी** पुं० (सं) सुनार।
**स्वर्णमुद्रा** *स्त्री०* (सं) सोने का सिक्का।
**स्वर्णरेखा** *स्त्री०* (सं) (कसौटी पर पड़ी) सोने की लकीर।
**स्वर्णविद्या** *स्त्री०* (सं) कीमियागरी। सोना बनाने की विद्या।
**स्वर्णाभ** *वि०* (सं) सुनहला। सोने के रंग का।
**स्वर्णोपधातु** पुं० (सं) दे० 'सोनामक्खी'।
**स्वलक्षण** पुं० (सं) गुण। विशेषता।
**स्वलिखित** *वि०* (सं) स्वयं का लिखा हुआ।
**स्वल्प** *वि०* (सं) बहुत थोड़ा। बहुत कम।
**स्वल्पकंद** पुं० (सं) कसेरू।
**स्वल्पजंबुक** पुं० (सं) लोमड़ी।
**स्वल्पभाषी** *वि०* (सं) कम बोलने वाला।
**स्वल्पव्यक्तितंत्र** *वि०* (स) कुछ लोगों का शासन। (ओलिगार्की)।
**स्वल्प शरीर** *वि०* (सं) ठिगना। छोटे कद का।
**स्वल्पस्मृति** *वि०*(सं) जिसे बहुत कम स्मरण रहता हो।
**स्वल्पांगुली** *स्त्री०* (सं) कनिष्ठका।
**स्वल्पायु** *वि०* (सं) कम आयु वाला।
**स्वल्पाहार** *वि०* (सं) कम भोजन करने वाला।
**स्वल्पिष्ट** *वि०* (सं) कम से कम। छोटे से छोटा।

**स्वल्पेच्छ** वि० (सं) जिसकी इच्छाएँ बहुत ही कम हों
**स्ववंश्य** वि० (सं) अपने ही वंश का।
**स्ववरन** पुं० (हि) दे० 'स्वर्ण'।
**स्ववासिनी** स्त्री० (सं) अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री।
**स्ववृत्ति** स्त्री० (सं) आत्मनिर्भरता।
**स्वशुर** पुं० (हि) ससुर।
**स्वश्लाघा** स्त्री० (सं) अपनी बड़ाई अपने आप करना आत्मप्रशंसा।
**स्वसंभूत** वि० (सं) आत्मसम्भव।
**स्वसंवेदन** पुं० (सं) अपने आप प्राप्त किया हुआ ज्ञान।
**स्वसचिव** पुं० (सं) निज सचिव। (प्राइवेट सेक्रेटरी)।
**स्वसा** स्त्री० (सं) बहन। भगिनी।
**स्वस्ति** अव्य० (सं) कल्याण या मङ्गल हो। भला हो। (आशीर्वाद)। स्त्री० मंगल। कल्याण।
**स्वस्तिक** पुं० (सं) एक प्रकार का मंगलसूचक चिह्न।
**स्वस्तिमती** स्त्री० (सं) कार्त्तिकेय की एक मातृका।
**स्वस्त्ययन** पुं० (सं) अशुभ बातों का नाश करके शुभ की स्थापना के विचार से किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।
**स्वस्थ** वि० (सं) १-नीरोग। चंगा। २-सावधान। ३-जिसमें कोई दोष न हो। (हेल्थी)।
**स्वस्थचित्त** वि०(सं) जिसका चित्त ठिकाने हो। शांत चित्त।
**स्वस्थित** वि० (सं) स्वाधीन।
**स्वस्रीय** पुं० (सं) बहन का बेटा। भानजा।
**स्वस्रीया** स्त्री० (सं) बहन की पुत्री। भानजी।
**स्वहंता** वि० (सं) आत्महत्या करने वाला।
**स्वहरण** पुं० (सं) धन सम्पत्ति का हरण।
**स्वहस्त** पुं० (सं) हस्ताक्षर।
**स्वहस्तिका** स्त्री० (सं) कुदाल।
**स्वहाना** क्रि० (हि) दे० 'सुहाना'।
**स्वहित** वि० (सं) अपने लिये लाभप्रद।
**स्वांग** पुं० (सं) अपना ही अंग। पुं० (हि) १-परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। नकल। २-आडंबर। ३-किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला बनावटी रूप।
**स्वांगना** क्रि० (हि) स्वांग बनाना। बनावटी रूप धारण करना।
**स्वांगी** पुं० (हि) वह जो स्वांग भरकर जीविका चलाता हो। वि० बनावटी रूप धारण करने वाला
**स्वांगीकरण** पुं० (सं) किसी वस्तु को अपने शरीर में पूर्णतया मिला कर लीन या एक करना। आत्मसात् करना। (एसिमिलेशन)।
**स्वांतः सुखाय** वि० (सं) केवल अपने सुख या लाभ के लिये।
**स्वांत** पुं० (सं) १-अन्तःकरण। मन। २-मृत्यु। ३-अपना राज्य या प्रदेश। ४-गुफा।
**स्वांतज** पुं० (सं) १-प्रेम। २-कामदेव।
**स्वांस** स्त्री० (हि) दे० 'साँस'।
**स्वांसा** पुं० (देश) तांबे का खोट मिला हुआ सोना पुं० (हि) दे० 'सांस'।
**स्वाक्षर** पुं० (सं) १-हस्ताक्षर। दस्तखत। २-किसी बड़े नेता या प्रसिद्ध व्यक्ति के स्वहस्ताक्षर (ऑटोग्राफ)।
**स्वाक्षरयुक्त** वि० (सं) जिसमें हस्ताक्षर किये हुए हों।
**स्वागत** पुं० (सं) किसी प्रिय या मान्य के आने पर उसका अभिवादन करना। अभ्यर्थना। अगवानी (वेल्कम)।
**स्वागतकारिणी समिति** स्त्री० (सं) वह सभा जो किसी सम्मेलन आदि में आने वालों का स्वागत-सत्कार के लिये बनाई गई हो। (रिसेप्शन कमिटी)
**स्वागतकारी** वि० (सं) स्वागत करने वाला।
**स्वागत प्रश्न** पुं० (सं) किसी से भेंट होने पर उसके स्वास्थ्य आदि का हाल पूछना।
**स्वागत भाषण** पुं० (सं) स्वागत-समिति के अध्यक्ष का स्वागत के रूप में दिया हुआ भाषण।
**स्वागतम** पुं० (सं) सुखागमन।
**स्वागतिक** वि० (सं) स्वागत या अभ्यर्थना करने वाला।
**स्वाच्छंद्य** पुं० (सं) स्वच्छन्दता।
**स्वातंत्र्य** पुं० (सं) दे० 'स्वतंत्रता'।
**स्वातंत्र्ययुद्ध** पुं० (सं) विदेशी शासन से छुटकारा पाने के लिये किया गया युद्ध।
**स्वातंत्र्य संग्राम** पुं० (सं) आजादी की लड़ाई।
**स्वात** स्त्री० (हि) दे० 'स्वाति'।
**स्वाति** स्त्री०(सं) सत्ताइस नक्षत्रों में से पंद्रहवां नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी गई है।
**स्वातिकारी** स्त्री० (सं) कृषि की देवी।
**स्वातिपंथ** पुं० (सं) आकाशगंगा।
**स्वातियोग** पुं० (सं) आषाढ़ के शुक्लपक्ष में स्वाति-नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ योग।
**स्वातिसुत** पुं० (सं) मोती। मुक्ता।
**स्वाती** स्त्री० (हि) दे० 'स्वाति'।
**स्वाद** पुं०(सं) १-किसी बात में मिलने वाला आनन्द २-चाह। इच्छा। कामना। ३-जायका। खाने पीने में मुँह या जीभ को होने वाला अनुभव।
**स्वादक** पुं० (सं) जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।
**स्वादन** पुं०(सं) १-स्वाद लेना। चखना। २-आनन्द लेना।
**स्वादनीय** वि० (सं) १-स्वाद लेने योग्य। २-आनन्द

लेने योग्य।
**स्वादित** वि० (सं) १-स्वाद लिया हुआ। २-प्रसन्न। ३-जायकेदार।
**स्वादिष्ट** वि० (सं) सुस्वादु। जायकेदार।
**स्वादी** वि० (हि) स्वाद लेने वाला।
**स्वादीला** वि० (हि) दे० 'स्वादिष्ट'।
**स्वादु** पु० (सं) १-मधुरता। २-गुड़। ३-महुआ। ४-दूध। सेंधा नमक। ६-अगर। वि० १-मीठा। २-जायकेदार। स्वादिष्ट। ३-सुन्दर।
**स्वादेशिक** वि० (सं) स्वदेश सम्बन्धी।
**स्वाद्य** वि० (सं) स्वाद लेने या चखने योग्य।
**स्वाधिकार** पु० (सं) १-अपना अधिकार। २-स्वाधीनता। स्वतंत्रता।
**स्वाधिकार-पत्र** पु० (सं) राज्य से प्राप्त अधिकार, जिससे किसी आविष्कारक का सर्वाधिकार सुरक्षित रहे। (पेटेन्ट लेटर्स)।
**स्वाधिष्ठान** पु० (सं) हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम।
**स्वाधीन** वि०(सं) जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र आजाद।
**स्वाधीनता** स्त्री० (सं) स्वतंत्रता। आजादी।
**स्वाधीनपतिका** स्त्री०(सं) पति को वशीभूत करने वाली नायिका।
**स्वाधीनी** स्त्री० (हि) आजादी। स्वतंत्रता।
**स्वाध्याय** पु० (सं) १-वेदों का नियमपूर्वक या ठीक अध्ययन। २-किसी विषय का अनुशीलन। अध्ययन
**स्वाध्यायार्थी** (सं) वह विद्यार्थी जो अध्ययन काल में अपनी जीविका स्वयं चलाने का प्रयत्न करे।
**स्वाध्यायी** वि० (सं) स्वाध्याय करने वाला।
**स्वान** पु०(सं) शब्द। आवाज। पु०(हि) दे० 'श्वान'
**स्वाना** क्रि० (हि) दे० 'सुलाना'।
**स्वानुभव** पु० (सं) अपना अनुभव।
**स्वानुरूप** वि० (सं) १-सहज। आसान। २-अपने अनुरूप।
**स्वाप** पु० (सं) १-निद्रा। २-स्वप्न। ३-निस्पंदता। ४-अज्ञान।
**स्वापक** वि० (सं) नींद लाने वाला।
**स्वापन** पु० (सं) १-नींद लाने वाली औषध। २-प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसे चलाने पर शत्रु सेना निद्रित अवस्था में हो जाती थी। वि० नींद लाने वाला।
**स्वापराध** पु० (सं) स्वयं के प्रति अपराध।
**स्वापी** वि० (सं) नींद लाने वाला।
**स्वाप्त** वि० (सं) १-अपने प्रयत्न से प्राप्त। २-अत्यधिक कुशल।
**स्वाप्त-समाचार** पु० (सं) वह महत्व वाला समाचार जो किसी संवाददाता ने अपने प्रयत्न से खोज निकाला हो तथा पहले उसी के पत्र में छपा हो। (स्कूप न्यूज़)।
**स्वाभाविक** वि० (सं) १-अपने आप ही होने वाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। २-स्वभाव से सम्बन्धित।
**स्वाभाविक-वर्णन** पु० (सं) वह वर्णन जिसमें कोई बनावट न हो।
**स्वाभिमान** पु० (सं) अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान।
**स्वामि** पु० (हि) दे० 'स्वामी'।
**स्वामित** पु० (हि) दे० 'स्वामित्व'।
**स्वामिता** स्त्री० (सं) स्वामित्व।
**स्वामित्व** पु० (सं) स्वामी होने का भाव। (ओनरशिप)।
**स्वामिनी** स्त्री० (सं) १-मालकिन। २-गृहिणी। ३-अपने स्वामी की पत्नी।
**स्वामी** पु० (सं) १-वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे तथा सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। (ओनर) २-पति। ३-साधु-संन्यासी आदि का संबोधन। ४-सेना का नायक। ५-शिव।
**स्वामीभक्त** वि० (सं) वफादार।
**स्वामीस्व** पु०(सं) किसी ग्रंथ के लेखक को या किसी आविष्कार के आविष्कारक को लाभ होने वाले धन में से मिलने वाली निश्चित रकम। (रायल्टी)।
**स्वामीहीनत्व** पु० (सं) किसी वस्तु के मिलने पर उसका कोई भी स्वामी न मालूम पड़ना। (ओनावेकेंशिया)
**स्वाम्य** पु० (सं) स्वामित्व।
**स्वाम्युपकारक** पु० (सं) घोड़ा। अश्व। वि० अपने स्वामी का भला करने वाला।
**स्वायंभुव** पु० (सं) पुराणोक्त चौदह मनुओं में से पहले जो ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।
**स्वायंभू** पु० (सं) दे० 'स्वायंभुव'।
**स्वायत्त** वि० (सं) १-जिस पर केवल अपना ही अधिकार हो। २-जो किसी दूसरे के शासन में न हो और स्वयं कार्य संचालन करता हो। (ऑटोनोमस)।
**स्वायत्तशासन** पु०(सं) वह शासन जो अपने अधिकार में हो। (ऑटोनोमी)।
**स्वायत्तशासी** वि० (सं) (वह राज्य या देश) जिसे अपना शासन स्वयं चलाने का अधिकार मिला हुआ हो। (आटोनोमस)।
**स्वारथ** पु० (हि) दे० 'स्वार्थ'।
**स्वारथी** वि० (हि) दे० 'स्वार्थी'।
**स्वारस्य** त्रि०(सं)१-सरसता। रसीलापन। २-स्वाभाविकता।
**स्वाराज्य** पु० (सं) १-वह शासन-प्रणाली जिसके संचालन का भार लोगों पर हो। २-स्वर्गलोक।
**स्वारी** स्त्री० (हि) दे० 'सवारी'।

**स्वार्जित** *वि०*(सं) अपने आप कमाया हुआ।
**स्वार्थ** पुं०(सं) १-अपना उद्देश्य या मतलब। २-ऐसी बात जिसमें अपना हित हो। ३-प्रयोजन।
**स्वार्थत्याग** पुं० (सं) किसी अच्छे काम के लिए अपने लाभ या हित को छोड़ देना।
**स्वार्थपरायण** *वि०* (सं) स्वार्थी। मतलबी।
**स्वार्थसाधन** पुं० (सं) अपना मतलब साधना या काम निकालना।
**स्वार्थसाधनतत्पर** *वि०* (सं) जो अपना मतलब साधने के लिए तत्पर हो।
**स्वार्थसिद्धि** *स्त्री०* (सं) अपना काम निकालना।
**स्वार्थांध** *वि०* (सं) अपने हित के सामने किसी दूसरे के हित या किसी और बात का विचार न करने वाला।
**स्वार्थी** *वि०* (सं) मतलबी। अपना काम निकालने वाला।
**स्वाल** पुं० (हिं) दे० 'सवाल'।
**स्वावमानन** पुं०(सं) आत्मभर्त्सना।
**स्वावलंबन** पुं० (सं) अपने भरोसे पर ही रह कर अपने बल से काम करना।
**स्वावलंबी** *वि०* (सं) जो अपने भरोसे या सहारे पर रहता हो।
**स्वाश्रय** पुं० (सं) अपने ही भरोसे पर रहना।
**स्वाश्रित** *वि०* (सं) स्वावलंबी।
**स्वास** पुं० (सं) सांस। श्वास।
**स्वासा** *स्त्री०* (हिं) श्वास। सांस।
**स्वास्थ्य** पुं०(सं) निरोग रहने की अवस्था। आरोग्य तंदुरुस्ती। (हैल्थ)।
**स्वास्थ्यकर** *वि०*(सं) तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाला।
**स्वास्थ्यनिवास** पुं०(सं) वह स्थान जहां लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। (सेनिटोरियम)।
**स्वास्थ्य-विज्ञान** पुं० (सं) वह विज्ञान जिसमें शरीर को निरोग बनाये रखने के नियमों तथा सिद्धांतों का विवेचन होता है। (हाइजीन)।
**स्वास्थ्यविभाग** पुं० (सं) किसी राज्य, नगरपालिका आदि का वह विभाग जिसमें जन-स्वास्थ्य की रक्षा का प्रबंध किया जाता है। (हैल्थ डिपार्टमेंट)।
**स्वास्थ्यसदन** पुं० (सं) दे० 'स्वास्थ्यनिवास'।
**स्वास्थ्यहानि** *स्त्री०* (सं) तन्दुरुस्ती का बिगड़ जाना।
**स्वाहा** *स्त्री०* (सं) हवि। अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है। *वि०* जो जलकर राख हो गया हो। पूर्णतया नष्ट।
**स्वाहाप्रिय** पुं० (सं) अग्नि।
**स्विन्न** *वि०* (सं) १-जिसे पसीना आ गया हो। २-पिघला हुआ।
**स्विन्न** *वि०* (सं) १-पसीने से युक्त। २-उबला हुआ
**स्वीकरण** पुं० (सं) १-मानना। स्वीकार करना। २-विवाह करना।
**स्वीकरणीय** *वि०* (सं) स्वीकार करने योग्य।
**स्वीकर्तव्य** *वि०* (सं) स्वीकार करने के योग्य।
**स्वीकर्ता** *वि०* (सं) स्वीकार करने वाला।
**स्वीकार** पुं० (सं) १-ग्रहण या अंगीकार करने की क्रिया। मंजूरी। अंगीकार। २-वचन। ३-पत्नी के रूप में ग्रहण करना।
**स्वीकारना** *क्रि०* (हि) स्वीकार करना। मानना।
**स्वीकारात्मक** *वि०* (सं) ऐसा कोई वाक्य, उत्तर आदि जिसमें कोई बात मान ली गई हो (अफर्मेटिव)।
**स्वीकारोक्ति** *स्त्री०*(सं) अपना अपराध आदि स्वीकार कर लेना।
**स्वीकार्य** *वि०* (सं) ग्रहण करने या मानने योग्य।
**स्वीकृच्छ्र** पुं०(सं) प्राचीन काल में किया जाने वाला एक व्रत।
**स्वीकृत** *वि०* (सं) स्वीकार किया हुआ। मंजूर।
**स्वीय** *वि०* (सं) अपना। निज का। पुं० आत्मीय। स्वजन।
**स्वे** *वि०* (हिं) दे० 'स्व'।
**स्वेच्छा** *स्त्री०* (सं) अपनी इच्छा या मर्जी।
**स्वेच्छाकृत** *वि०* (सं) जो केवल अपनी इच्छा से ही किया या दिया गया हो। (वालंटरी)।
**स्वेच्छाचार** पुं०(सं) भला बुरा जो मन में आये वही करना।
**स्वेच्छाचारिता** *स्त्री०* (सं) निरंकुशता। उच्छृंखलता।
**स्वेच्छाचारी** *वि०* (सं) मनमाना काम करने वाला।
**स्वेच्छासैनिकदल** पुं० (सं) अपनी इच्छा से ही सैन्य सेवा में अपना नाम देने वाले लोगों का दल। (वालंटियर कोर)।
**स्वेत** *वि०* (हि) दे० 'श्वेत'।
**स्वेद** पुं० (सं) १-पसीना। २-भाप। ३-ताप। गरमी ४-पसीना लाने वाली दवा। *वि०* पसीना लाने वाली
**स्वेदक** *वि०* (सं) पसीना लाने वाला।
**स्वेदचूषक** पुं०(सं) ठण्डी हवा।
**स्वेदज** पुं०(सं) पसीने से उत्पन्न होने वाले जीव-जूँ, खटमल आदि।
**स्वेदजल** पुं० (सं) पसीना।
**स्वेदजलकणिका** *स्त्री०* (सं) पसीने की बूँद।
**स्वेदन** पुं० (सं) १-पसीना निकलना। २-एक वैद्यक यंत्र जिसमें औषधियां शोधी जाती हैं।
**स्वेदनी** *स्त्री०*(सं) तवा।
**स्वेदबिंदु** पुं० (सं) पसीने की बूँद।
**स्वेदांबु** पुं० (सं) पसीना।
**स्वेदित** *वि०* (सं) १-पसीने से युक्त। २-भफारा दिया हुआ।
**स्वेदोदक** पुं० (सं) पसीना।
**स्वै** *वि०* (हि) अपना। निज का। सर्व० दे० 'सो'।

स्वैर वि० (सं) १-स्वेच्छाचारी। २-स्वतंत्र। ३-मनमाना। ४-धीमा। मन्द। पु० स्वच्छंदता। मनमानी।
स्वैरकथा स्त्री० (सं) बकवास।
स्वैरगति स्त्री० (सं) स्वाधीन गति।
स्वैरचारी वि० (सं) १-मनमाना काम करने वाला। कामुक। व्यभिचारी।
स्वैरता स्त्री० (सं) स्वच्छन्दता।
स्वैरवृत्ति वि० (स) इच्छानुसार काम करने वाला। स्त्री० मनमानापन।
स्वैराचार वि० (स) स्वेच्छाचार।
स्वैराचारी वि० (सं) स्वेच्छाचारी।
स्वैरिणी स्त्री० (सं) व्यभिचारिणी।
स्वैरी वि०(सं) स्वेच्छाचारी।
स्वोपार्जित वि० (सं) अपने आप कमाया हुआ।
स्वोरस पु० (सं) तैलीय पदार्थों का छापने के बाद बचा हुआ तलछट।
स्वोवशीय पु० (सं) आनन्द। सुख। वृद्धि (विशेषकर भविष्य जीवन संबंधी)।
स्वौजस पु० (सं) अपना तेज या ओज।

[शब्दसंख्या--५८८८३]

# ह

ह देवनागरी वर्णमाला का तेतीसवाँ तथा अन्तिम व्यञ्जन जो उच्चारण के विचार से ऊष्मवर्ण कहलाता है।
हंक स्त्री० (हि) दे० 'हांक'।
हँकड़ना क्रि० (हि) १-ललकारना। २-जोर से चिल्लाना।
हँकड़ान पु० (हि) ललकारने की क्रिया।
हँकरना क्रि० (हि) दे० 'हँकड़ना'।
हंकराना क्रि० (हि) पुकारना। बुलाना।
हँकवा पु० (हि) शेर, चीते आदि को बहुत से लोगों का घेर कर लाना।
हँकवाना क्रि० (हि) १-हांक लगाना। पुकारना। २-चौपायों को आवाज देकर हटवाना।
हँकवैया पु० (हि) हांकने वाला।
हंका स्त्री० (हि) डपट। ललकार।
हँकाई स्त्री० (हि) हांकने की क्रिया, भाव या मजदूरी
हँकाना क्रि० (हि) १-हांकना। २-पुकारना। ३-हँकवाना।
हंकार स्त्री० (हि) जोर से बुलाने की क्रिया या भाव पुकार। पु० (हि) १-अहङ्कार। २-ललकार।
हंकारना क्रि० (हि) १-ऊंचे स्वर से बुलाना। २-पुकारना। ३-ललकारना।
हंकारा पु० (हि) १-निमन्त्रण। बुलावा। २-पुकार
हंकारी पु० (हि) १-दूत। २-लोगों को बुला कर लाने वाला व्यक्ति। ३-बुलाहट।
हंगामा पु० (फा) १-उत्पात। उपद्रव। २-शोरगुल। ३-भीड़भाड़।
हंटर पु० (मं) लम्बा चाबुक। कोड़ा।
हंडना क्रि० (हि) १-घूमना। चलना। २-इधर-उधर ढूँढना। ३-वस्त्र का व्यवहार आने पर कुछ समय चलना।
हंडा पु० (हि) पानी रखने का पीतल या तांबे का बरतन।
हंडिका स्त्री० (सं) पतीली जैसी मिट्टी की हांडी।
हँड़िया स्त्री० (हि) १-मिट्टी का एक प्रकार का बरतन २-विवाहोत्सव आदि पर ऊपर से लटकाया जाने वाला शीशे का झाड़-फानूस। ३-चावल से बनाई मदिरा।
हंडी स्त्री० (हि) दे० 'हंडिया'।
हंत अव्य० (सं) एक दुःखसूचक शब्द।
हंतव्य वि० (सं) मार डालने योग्य।
हंता पु० (सं) मारने या वध करने वाला।
हंत्री स्त्री० (सं) वध करने वाली।
हंथोरी स्त्री० (हि) दे० 'हथेली'।
हंथौरा पु० (हि) दे० 'हथौड़ा'।
हंथौरी स्त्री० (हि) दे० 'हथौड़ी'।
हंफनि स्त्री० (हि) हांफने की क्रिया।
हंबा अव्य० (हि) हां (राजस्थान)।
हंभा स्त्री०(स) गाय आदि पशुओं के रँभाने का शब्द
हंस पु० (सं) १-बत्तख के आकार का एक जल पक्षी जो बड़ी-बड़ी झीलों में पाया जाता है।२-जीवात्मा ३-विष्णु। ४-प्राणवायु। ५-शिव। ६-ईर्ष्या। ७-भैंसा। ८-कामदेव।
हंसक पु० (सं) १-हंस पक्षी। २-पैर में पहनने का बिछुआ।
हंसगति स्त्री० (सं)१-हंस जैसी मन्द चाल। २-ब्रह्मत्व प्राप्ति। ३-एक छन्द।
हंसगामिनी स्त्री० (सं) हंस जैसी चाल चलने वाली स्त्री।
हंसजा स्त्री० (सं) यमुना।
हँसन स्त्री० (हि) १-हँसने की क्रिया या भाव। २-हँसने का ढंग।
हँसना क्रि० (हि) १-प्रसन्नता प्रकट करने के लिये किसी का मुँह खोलकर हाहा करना। २-परिहास

करना। ३-रमणीय लगना। ४-खुशी मनाना।
हँसनामुह पुं०(हि) प्रसन्न मुख।
हँसनि स्त्री० (हि) दे० 'हँसन'।
हँसनी स्त्री० (हि) हंस की मादा।
हँसमुख वि० (हि) १-सदा हँसते रहने वाला। २-विनोदशील। मसखरा।
हंसराज पुं० (सं) १-एक प्रकार का अगहनी धान। २-एक पहाड़ी बूटी।
हँसली स्त्री० (हि) गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियां।
हंसवाहन पुं० (सं) ब्रह्मा।
हंससुता स्त्री० (सं) यमुना नदी।
हँसाई स्त्री० (हि) १-हँसी। २-लोक में होने वाली निन्दा या बदनामी।
हंसाधिरूढ़ा स्त्री० (सं) सरस्वती।
हँसाना क्रि० (हि) किसी को हँसाने में प्रवृत्त करना।
हँसाय स्त्री० (हि) हँसाई।
हंसारूढ़ पुं० (सं) ब्रह्मा।
हंसारूढ़ा स्त्री० (सं) ब्रह्मा।
हंसावली स्त्री० (हि) हंसों की पंक्ति।
हंसिका स्त्री० (हि) दे० 'हंसिनी'।
हंसिनी स्त्री० (सं) हंस की मादा। हंसी।
हँसिया पुं० (देश) खेत की फसल, तरकारी आदि काटने का एक अर्द्धचन्द्राकार औजार। स्त्री० (हि) गरदन के नीचे की धन्वाकार हड्डी।
हंसी स्त्री० (सं) १-हंस की मादा। २-दुधारू गाय की अच्छी नस्ल। ३-एक वर्णवृत्त। (हि) १-हास २-परिहास। दिल्लगी। ३-लोक में होने वाली उपहास पूर्ण निंदा।
हँसीखेल पुं० (म) १-दिल्लगी। २-सरल काम।
हँसीठठोली स्त्री० (हि) हास परिहास। दिल्लगी।
हँसुली स्त्री० (हि) दे० 'हँसली'।
हँसोड़ वि० (हि) विनोद करने वाला।
हँसोर वि० (हि) दे० 'हँसोड़'।
हँसोहाँ वि० (हि) १-कुछ। हँसी लिये हुए। २-शीघ्र हँस पड़ने वाला।
ह पुं० (सं) १-जल। २-आकाश। ३-हास। ४-शिव ५-शून्य। ६-रक्त। ७-कारण। ८-शुभ। ९-भय। १०-वैद्य।
हई पुं० (हि) घुड़सवार। स्त्री० अचरज।
हउँ अव्य० (हि) दे० 'हौं'।
हक पुं० (हि) सहसा घबरा जाने से दिल में लगाने वाला धक्का। वि०(म) १-सत्य। २-वाजिब। उचित १-अधिकार। २-कर्तव्य। ३-वह वस्तु जो न्यायानुसार प्राप्त की गई हो। ४-उचित या ठीक बात या पक्ष। ५-ईश्वर। ६-लेन-देन में बंधेज के अनुसार मिलने वाला धन।
हकअसासाइश पुं०(म) पड़ोसी की भूमि पर आने जाने का रास्ता पाने का अधिकार।
हकतलफी स्त्री० (म) किसी का अधिकार या हक मारना। अन्याय।
हकदक वि० (हि) चकित। आश्चर्यान्वित।
हकदार पुं० (म) हक या अधिकार रखने वाला।
हकनाहक अव्य० (म) १-जबरदस्ती। २-व्यर्थ।
हकपरस्त वि० (म) १-सच्चा। २-ईश्वर भक्त।
हकबकाना क्रि० (हि) घबरा जाना।
हकमौरूसी पुं० (म) वह अधिकार जो बाप दादों से चला आता हो।
हकरसी स्त्री० (म) न्याय पाना।
हकला वि० (हि) रुक-रुक कर बोलने वाला।
हकलाना क्रि० (हि) शब्दों का ठीक प्रकार से उच्चारण कर सकने के कारण रुक-रुक कर बोलना।
हकलापन पुं० (हि) हकलाने का भाव या क्रिया।
हकलाहट स्त्री० (हि) हकलापन।
हकलाहा वि० (हि) दे० 'हकला'।
हकशुफा पुं० (म) मकान, भूमि आदि को खरीदने का वह हक जो गांव के हिस्सेदारों को या पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
हकार पुं० (सं) 'ह' अक्षर का वर्ण।
हकारत स्त्री० (म) तुच्छता। हलकापन। नीचता।
हकीकत स्त्री० (म) १-वास्तविक बात। असलियत। २-सच्चा वृतांत।
हकीकतन अव्य० (म) वास्तव में।
हकीकी वि० (म) १-सच्चा। २-खास। ठीक। ३-भगवत्संबन्धी।
हकीम पुं० (म) १-विद्वान। पंडित। २-यूनानी चिकित्सा पद्धति से इलाज करने वाला। चिकित्सक।
हकीमी स्त्री० (म) १-हकीम का काम। २-यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। वि० हकीम सम्बन्धी।
हकूक पुं० (म) कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।
हक्क पुं० (हि) हाथी को बुलाने का शब्द।
हक्काक पुं० (म) १-नग जड़ने वाला। २-मुहर खोदने वाला।
हक्काबक्का वि० (हि) बहुत घबराया हुआ। चकित
हक्कार पुं० (सं) पुकार। जोर से बोल कर बुलाने का शब्द।
हक्कारना क्रि० (हि) ललकारना।
हक्केमालिकाना पुं० (म) मालिक का अधिकार।
हगना क्रि० (हि) १-मलत्याग करना। २-कोई वस्तु दबाव के कारण दे देना। ३-अत्यधिक मात्रा में दे देना। वि० अधिक मलत्याग करने वाला।
हगनेटी स्त्री० (हि) शौचालय। पाखाना।
हगनौटी स्त्री० (हि) दे० 'हगनेटी'।

हगाना क्रि० (हि) १-मल त्याग कराना। २-किसी को हगने पर विवश करना।
हगास स्त्री० (हि) हगने की इच्छा।
हगोड़ा वि० (हि) बहुत हगने वाला।
हग्गू वि० (हि) हगोड़ा।
हचक पुं० (हि) झोंका। धक्का।
हचकना क्रि० (हि) धक्के से हिलाना।
हचका पुं० (हि) दे० 'हचक'।
हचकाना क्रि० (हि) धक्के या झोंके से हिलाना।
हचकोला वि० (हि) झोंके से हिलने वाला।
हचकोला पुं० (हि) धक्का। गाड़ी आदि का हिलने-डोलने वाला धक्का।
हचना क्रि० (हि) हिचकना।
हज पुं० (अ) मुसलमानों की मक्का की तीर्थ यात्रा।
हज़म पुं० (अ) पचने की क्रिया या भाव। वि० पेट में पचा हुआ।
हज़रत पुं० (अ) १-महापुरुष। महात्मा। २-आदर-सूचक एक सम्बोधन। ३-नटखट या खोटा आदमी
हजामत स्त्री० (अ) १-बाल काटना या मूँडना। २-सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जो कटवाने हों।
हज़ार वि० (फा) १-सहस्र। दस सौ। २-अनेक। पुं० दस-सौ की संख्या का अंक १०००। अव्य० बहुतेरा। चाहे जितना अधिक।
हज़ारहा वि० (फा) १-हज़ारों। सहस्रों। २-बहुत से
हज़ारा वि०(फा) (वह पुष्प) जिसमें बहुत सारी पंखड़ियां हों। पुं० एक प्रकार की आतिशबाजी।
हज़ारी पुं० (फा) एक सहस्र सिपाहियों का सरदार। २-व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र। दोगला।
हज़ारों वि० (हि) दे० 'हज़ारहा'।
हजूम पुं० (अ) भीड़भाड़। जमघट।
हजूर पुं० (हि) दे० 'हुजूर'।
हजूरी स्त्री० (हि) दे० 'हुजूरी'।
हजो स्त्री० (अ) निंदा। अपकीर्ति।
हज्ज पुं० (अ) दे० 'हज'।
हज्जाम पुं० (अ) हजामत बनाने वाला। नाई।
हज्जामी स्त्री० (हि) हज्जाम का पेशा।
हटक स्त्री० (हि) १-वर्जन। २-गायों या चौपायों को हांकने की क्रिया या भाव।
हटकन स्त्री० (हि) १-पशुओं को हांकने की लाठी। २-मना करने की क्रिया।
हटकना क्रि० (हि) १-मना करना। रोकना। २-पशुओं को किसी तरफ़ हांकना।
हटका पुं० (हि) किवाड़ों को रोकने की अर्गल।
हटतार पुं० (हि) माला का सूत।
हटताल स्त्री० (हि) दे० 'हड़ताल'।
हटना क्रि० १-अपना स्थान छोड़कर इधर उधर को होना। खिसकना। २-टलना। ३-अपने स्थान से पीछे की ओर हटना। ४-न रह जाना। ५-व्रत या प्रतिज्ञा आदि से विचलित होना।
हटवया पुं० (हि) दूकानदार।
हटवाई स्त्री० (हि) हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना। २-हटाने की मजदूरी।
हटवाना क्रि०(हि) किसी से हटाने का काम कराना।
हटवार पुं० (हि) दूकानदार।
हटवैया वि० (हि) हटाने वाला।
हटाना क्रि० (हि) १-सरकाना। २-दूर करना। ३-स्थान छोड़ने पर विवश करना। ४-जाने देना। ५-प्रतिज्ञा तोड़ना।
हटुवाई स्त्री० (देश) दूकानदारी।
हट्ट पुं० (सं) १-बाजार। हाट। २-मेला।
हट्टा-कट्टा वि० (हि) बलवान। मोटाताजा। हृष्टपुष्ट
हट्टाध्यक्ष पुं० (सं) बाजार का निरीक्षक।
हट्टी पुं० (हि) दूकान।
हठ पुं० (सं) १-किसी बात की होने वाली अड़ या ज़िद। २-दृढ़ प्रतिज्ञा। ३-जबरदस्ती। ४-अवश्य होने का भाव।
हठकर्म पुं० (सं) बल प्रयोग का कार्य।
हठधर्मी स्त्री० (हि) अनुचित बात पर अड़े रहना। दुराग्रह।
हठना क्रि० (हि) १-हठ करना। २-दृढ़संकल्प।
हठयोगी पुं० (हि) हठयोग करने वाला व्यक्ति।
हठात् अ० (सं)१-हठपूर्वक। २-अचानक। ३-जबरदस्ती।
हठात्कार पुं० (सं) बलात्कार। जबरदस्ती।
हठादेशी वि० (सं) किसी के खिलाफ बल प्रयोग का हुक्म बताने वाला।
हठाश्लेष पुं० (सं) जबरदस्ती अभिलिंगन करना।
हठी वि० (हि) हठ या ज़िद करने वाला। जिद्दी।
हठीला वि० (हि)१-जिद्दी। २-दृढ़प्रतिज्ञ। ३-बात का पक्का।
हड़ स्त्री० (हि) १-एक बड़ा वृक्ष जिसका फल दवा के काम आता है। २-उक्त फल के आकार का एक गहना।
हड़कंप पुं० (हि) लोगों में घबड़ाहट फैलाने वाली भारी हलचल। तहलका।
हड़क क्रि० (हि) १-पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये होने वाली व्याकुलता। २-कुछ पाने की उत्कट लालसा।
हड़कना क्रि० (हि) कोई वस्तु न मिलने पर बहुत व्याकुल होना।
हड़कन पुं० (हि) तरसने या हड़कने का भाव। ललक
हड़काना क्रि० (हि) १-तंग करने के लिये किसी के पीछे लगना। २-तरसाना। ३-दूर हटना।

हड़काया वि० (हि) १-पागल (कुत्ता)। २-किसी वस्तु के लिये उतावला।
हड़ताल स्त्री० (हि) १-दुःख, विरोध, असन्तोष आदि प्रकट करने के लिये, कल-कारखानों, बाजारों तथा दूकानों आदि का बन्द होना। २-हरताल।
हड़ताल तोड़क पुं० (हि) वह कर्मचारी जो किसी कारखाने आदि में हड़ताल होने पर मालिक का काम करने के लिये तथा हड़ताल को विफल करने के लिये कटिबद्ध हों। (ब्लेक-लैग)।
हड़प वि० (हि) १-खाया या निगला हुआ। २-अनुचित रूप से लिया हुआ।
हड़पना क्रि० (हि) १-निगल जाना। २-अनुचित रूप से ले लेना।
हड़प्पा पुं०(हि)१-दे० 'हड़प'। २-सिन्ध (पाकिस्तान) में स्थित एक स्थान जहां पर खुदाई करने से बहुत प्राचीन चिह्न मिले थे।
हड़बड़ स्त्री० (हि) दे० 'हड़बड़ी'।
हड़बड़ाना क्रि०(हि) १-जल्दी मचाना। २-किसी को जल्दी करने के लिए कहना।
हड़बड़िया वि०(हि) जल्दबाज। हड़बड़ी करने वाला
हड़बड़ी स्त्री० (हि) १-जल्दी। उतावली। २-जल्दी होने के कारण होने वाली घबड़ाहट।
हड़हड़ाना क्रि० (हि) जल्दी करने के लिए किसी को उकसाना। २-घबराहट पैदा करना।
हड़हा पुं०(देश) जंगली बैल। पुं०(हि) वह जिसने किसी पुरखे की हत्या की हो। वि० दुबला -पतला।
हड़ावरि स्त्री० (हि) १-हड्डियों का ढांचा। ठठरी। २-हड्डियों की माला।
हड़ीला वि० (हि) १-जिसमें केवल हड्डी शेष रह गई हो। २-बहुत दुबला-पतला।
हड्ड पुं० (सं) १-अस्थि। हड्डी। हाड़।
हड्डा पुं० (सं) भिड़ की जाति का एक कीड़ा।
हड्डी पुं० (हि) मनुष्यों पशुओं के शरीर में वह कड़ी वस्तु जो भीतरी ढांचे के रूप में होती है। अस्थि। २-वंश।
हत वि० (सं) १-मारा हुआ। २-ताड़ित। ३-रहित। विहीन। ४-जिसे ठोकर लगी हो। ५-बिगड़ा हुआ नष्ट। ६-हैरान। ७-पीड़ित। ८-निकृष्ट। ९-गुणा किया हुआ
हतक स्त्री० (अ) बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। हेटी। वि० जिसे चोट पहुँचाई गई हो। २-दुःखी। पापी।
हतकइज्जती स्त्री० (अ) मानहानि।
हतकिल्बिष वि० (सं) जिसके पाप नष्ट होगये हो।
हतचित्त वि० (सं) घबड़ाया हुआ। बेसुध।
हतत्रप वि० (सं) जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज।
हतध्वांत वि० (सं) जिसमें अंधकार न हो।
हतना क्रि०(हि) १-मारना। पीटना। २-मार डालना ३-न मानना।
हतपुत्र वि० (सं) जिसका पुत्र मर गया हो।
हतप्रभाव वि० (सं) जिसका प्रभाव न रह गया हो।
हतवाना क्रि० (हि) मरवाना। वध करवाना।
हतश्री वि० (सं) १-जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो। २-उदास। मुरझाया हुआ।
हता क्रि० (हि) होने का भूतकाल 'था'। वि० (सं) व्यभिचारिणी।
हताना क्रि० (हि) मरवाना। वध करवाना।
हतावशेष क्रि० (हि) जो जीवित बच गया हो।
हताश वि० (सं) जिसकी आशा नष्ट हो गई हो।
हताश्रय वि० (सं) जिसका सहारा न रहा हो।
हताहत वि० (सं) मारे हुए और घायल।
हते क्रि० (हि) 'होना' का भूतकालिक रूप 'थे'।
हतोज वि० (हि) दे० 'हतौजा'।
हतोत्तर वि० (सं) जो कुछ उत्तर न दे सके।
हतोत्साह वि० (सं) जिसमें उत्साह न रह गया हो।
हतोद्यम वि० (स) जिसका प्रयत्न विफल हो गया हो
हतौजा वि० (सं) ओज या तेजहीन।
हत्थ पुं० (हि) हाथ।
हत्था पुं० (हि) २-मूठ। दस्ता। १-केले के फूलों का गुच्छा। ३-लकड़ी का बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारो ओर उलीचा जाता है। ४-हाथ की छाया। ५-निवार बुनने की कंघी। ६-दण्ड निकालते समय हाथ के नीचे रखने की ईंट या पत्थर।
हत्थि पुं० (हि) हाथी।
हत्थी स्त्री० (हि) १-औजार की मूठ। दस्ता। २-दे० 'हत्था'।
हत्थे अव्य० (हि) हाथ में। द्वारा। हाथ से।
हत्या स्त्री० (सं) १-मार डालने की क्रिया। खून। २-झंझट। बखेड़ा। ३-अनजाने या संयोगवश किसी के प्राण ले लेना।
हत्यारा पुं०(हि) हत्या करने या मार डालने वाला।
हत्यारी स्त्री० (हि) हत्या करने वाली स्त्री।
हथ पुं० (हि) हाथ शब्द का संक्षिप्त रूप।
हथउधार पुं० (हि) अल्पकाल के लिये दिया हुआ कर्ज या उधार।
हथकंडा पुं० (हि) १-हाथ की चालाकी। २-गुप्त चालबाजी।
हथछुट वि० (हि) जिसका हाथ मारने के लिये जल्दी उठता हो।
हथनाल पुं० (हि) वह तोप जो हाथियों पर रखकर चलाई जाती है।
हथनी स्त्री० (हि)१-हाथी की मादा। २-घाटों आदि पर बड़ी तथा ऊँची सीढ़ियों की बनावट।
हथफूल पुं० (हि) एक प्रकार का गहना जो हथेली

की पीठ पर पहना जाता है।

**हथफेर** पुं० (हि) १-प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। २-चालाकी से किसी का माल उड़ाना।

**हथलपक्का** पुं० (हि) आंख बचाकर चोरी से कोई वस्तु गायब कर देना।

**हथवांस** पुं० (हि) नाव चलाने की डांड।

**हथवांसना** क्रि० (हि) व्यवहार या काम में लाना।

**हथसांकल** पुं०(हि) हथफूल नामक गहना।

**हथसार** स्त्री० (हि) हाथीखाना। गजशाला।

**हथाहथी** अव्य० (हि) तुरन्त। झटपट।

**हथिनी** स्त्री० (सं) हाथी की मादा।

**हथिया** पुं० (हि) हस्तनक्षत्र।

**हथियाना** क्रि० (हि) १-अधिकार में लेना। हाथ में लेना। २-हाथ में पकड़ना। ३-धोखा देकर लेना।

**हथियार** पुं० (हि) १-हाथ में लेकर चलाया जाने वाला अस्त्र। २-औजार। उपकरण।

**हथियारघर** पुं० (हि) शस्त्रागार।

**हथियारबंद** वि० (हि) सशस्त्र। जो हथियार धारण किये हुए हो।

**हथुईरोटी** स्त्री० (हि) हाथ से गढ़ कर बनाई हुई रोटी।

**हथेरा** पुं० (हि) हत्था।

**हथेली** स्त्री० (हि) १-हाथ की कलाई का वह भाग जिसमें उँगलियां होती हैं। २-चरखे की मुठिया।

**हथोड़ा** पुं० (हि) दे० 'हथौड़ा'।

**हथोरी** स्त्री० (हि) दे० 'हथेली'।

**हथौटी** स्त्री० (हि) हाथ से काम करने का ठीक ढंग।

**हथौड़ा** पुं० (हि) एक प्रकार का उपकरण जिससे कारीगर लोग कोई वस्तु तोड़ने, पीटते, ठोकते या गाढ़ते हैं (हैमर)।

**हथ्याना** क्रि०(हि) दे० 'हथियाना'।

**हथ्यार** वि० (हि) दे० 'हथियार'।

**हद** स्त्री० (हि) १-सीमा। २-मर्यादा। ३-वह परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो।

**हदका** पुं० (हि) धक्का। हचका।

**हदस** स्त्री० (हि) वह भय जिसमें मनुष्य किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाय।

**हदसना** क्रि० (हि) डरना। मन में भय उत्पन्न होना।

**हद्द** स्त्री० (अ) दे० 'हद'।

**हनन** पुं० (सं) क्रि० (सं) १-वध करना। २-मार डालना। ३-आघात करना। ४-गुणा करना।

**हननशील** वि० (सं) निष्ठुर। जिसको वध करते हुए संकोच न होता हो।

**हनना** पुं० (सं) क्रि० (हि) १-मार डालना। २-चोट मारना। ३-ठोकना। पीटना।

**हननीय** वि०(सं)१-मारने योग्य। २-जिसे मारना हो

**हनवाना** क्रि० (हि) १-मरवाना। २-नहवाना।

**हनाना** क्रि० (हि) नहाना।

**हनितवंत** पुं० (हि) हनुमान।

**हनु** स्त्री० (सं) १-ऊपर का जबड़ा। दाढ़ की हड्डी। २-ठोड़ी।

**हनुमंत** पुं० (हि) हनुमान्।

**हनुमज्जयंती** स्त्री०(सं) चैत्र पूर्णिमा या कार्तिक की कृष्णा चतुर्दशी जिसे हनुमान जी का जन्म दिन मानते हैं।

**हनुमत** पुं० (हि) दे० 'हनुमान्'।

**हनुमान** पुं० (हि) दे० 'हनुमान्'।

**हनुमानबैठक** स्त्री०(हि) कसरत में एक प्रकार की बैठक

**हनुमान्** पुं० (सं) एक वीर वानर जो पवन के पुत्र तथा अंजना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और राम के परम भक्त थे। महावीर।

**हनुमान-कवच** पुं० (सं) १-हनुमान स्तुति। २-एक मंत्र जिससे हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।

**हनुव** पुं० (हि) दे० 'हनुमान्'।

**हनू** स्त्री० (सं) दे० 'हनु'।

**हनूमान** पुं० (स) दे० 'हनुमान्'।

**हनोद** पुं०(हि) एक प्रकार का संपूर्ण जाति का राग।

**हन्यमान** वि० (सं) वध करने योग्य। हननीय।

**हफ्त** वि० (फा) सात।

**हफ्ता** पुं० (फा) सप्ताह।

**हबकना** क्रि० (हि) किसी फल आदि को दांत से काट कर खाना। चट कर जाना। २-व्यक्ति को झपट कर बन्दर की तरह काटना।

**हबड़ा** वि० (देश) बड़े बड़े दांतों वाला। २-कुरूप।

**हबरदबर** अव्य० (हि) उतावली से। शीघ्रता से। शीघ्रता के कारण। ठीक प्रकार से नहीं।

**हबरहबर** अव्य० (हि) दे० 'हबरदबर'।

**हबराना** क्रि० (हि) दे० 'हड़बड़ाना'।

**हबश** पुं० (फा) अफ्रीका का एक देश।

**हबशा** पुं० (फा) दे० 'हबश'।

**हबशी** वि० (फा) काला-कलूटा। भद्दा। पुं० १-हबश देश का निवासी। २-एक जाति। जामुन की तरह काला अंगूर।

**हबीब** पुं० (अ) १-मित्र। दोस्त। २-प्रिय। प्यारा।

**हबेली** स्त्री० (हि) दे० 'हथेली'।

**हब्बा** पुं० (अ) १-रत्ती। अनाज का दाना। २-बहुत थोड़ी मात्रा। ३-पैसा-कौड़ी।

**हब्बाडब्बा** पुं० (अ) बच्चों की पसली चलने की बीमारी।

**हब्बाभर** वि० (अ) रत्तीभर। अल्प।

**हब्बा-हब्बा** वि० (अ) पैसा-पैसा। कौड़ी-कौड़ी।

**हब्स** पुं० (अ) १-कारावास। कैद। २-अवरोध।

**हम** सर्व०(हि) मैं का बहुवचन। उत्तमपुरुष का बहुवचन सूचक सर्वनाम। पुं० (हि) अहंकार। अव्य०

(फा) १-संग । साथ । २-तुल्य । समान । यौगिक के आरम्भ में जैसे-हमसफर ।
हमअसर वि०(फा) एक जैसे प्रभाव या असर वाले ।
हमउम्र वि० (फा) समवयस्क । बराबर आयु का ।
हमक़ौम वि० (फा) सजातीय ।
हमख्वाबा वि० (फा) साथ शयन करने वाली । स्त्री० पत्नी । स्त्री ।
हमजिंस वि०(फा) एक ही वर्ग या जाति के (प्राणी) ।
हमजोली वि०(फा) १-समवयस्क । २-बचपन में साथ खेला हुआ ।
हमदर्द वि० (फा) जो सहानुभूति रखता हो ।
हमदर्दी स्त्री० (फा) सहानुभूति ।
हमन सर्व० (देश) दे० 'हम' ।
हमपेशा वि० (फा) स-व्यवसायी । एक जैसा पेशा करने वाले ।
हमबिस्तर वि०(फा) एक ही बिस्तर पर साथ सोने वाले
हमबिस्तरी स्त्री० (फा) एक ही बिस्तर पर साथ सोने वाली स्त्री । पत्नी ।
हममज़हब वि०(फा) सहधर्मी । एक ही धर्म को मानने वाले ।
हमरा सर्व० (हि) दे० 'हमारा' ।
हमराह वि०(फा) साथ सफर करने वाले । साथ चलने वाले । अव्य० साथ में ।
हमराही वि० (फा) साथ चलने वाले । सहगामी ।
हमरो सर्व० (हि) दे० 'हमारा' ।
हमल पु'० (अ) गर्भ ।
हमला पु'० (अ) १-चढ़ाई । आक्रमण । २-प्रहार । वार । ३-शब्द द्वारा आक्षेप ।
हमलावर वि० (अ) आक्रमणकारी ।
हमलेहराम पु'०(अ) वह गर्भ जो व्यभिचार से हुआ हो
हमवतन वि० (फा) स्वदेशवासी ।
हमवार वि० (फा) सपाट । समतल ।
हमसफर वि० (फा) साथ में यात्रा करने वाला ।
हमसबक वि० (फा) सहपाठी ।
हमसाया पु'० (फा) पड़ोसी ।
हमसिन वि० (फा) समवयस्क ।
हमाकत स्त्री० (अ) नासमझी । मूर्खता ।
हमायल स्त्री० (अ) गले में पहनने का एक गहना ।
हमार सर्व० (देश) दे० 'हमारा' ।
हमारा सर्व० (हि) 'हम' का सम्बन्धकारक रूप ।
हमाल पु'० (अ) १-रक्षक । रखवाला । २-बोझ ढोने वाला मजदूर ।
हमाहमी स्त्री०(हि) १-अपने लाभ के लिए होने वाला आतुर प्रयत्न । ३-अहंकार ।
हमीर पु'० (हि) दे० 'हम्मीर' ।
हमें सर्व०(हि) हमको । 'हम' का सम्प्रदानकारक रूप
हमेल स्त्री० (हि) गले में पहनने की एक प्रकार की माला जिसमें सिक्के जैसे गोल टुकड़े लगे होते हैं
हमेव पु'० (हि) अभिमान । अहंकार ।
हमेशा अव्य० (फा) सदा । सदैव ।
हमेस अव्य० (हि) हमेशा । सदा । सदैव ।
हमेसा अव्य० (हि) दे० 'हमेशा' ।
हमैं अव्य० (हि) दे० 'हमें' ।
हम्द पु'० (फा) ईश्वर की स्तुति ।
हम्माम स्त्री० (अ) चारों ओर से बन्द कोठरी जिसमें गरम जल से स्नान करते हैं ।
हम्मार सर्व० (हि) दे० 'हमारा' ।
हम्माल पु'० (अ) बोझ उठाने वाला मजदूर ।
हम्मीर पु'० (सं) १-संपूर्ण जाति का एक राग । २-रणथम्भौरगढ़ के एक अत्यन्त वीर चौहान राजा ।
हम्मीरनट पु'० (सं) नट और हम्मीर राग के योग से बना एक संपूर्ण जाति का संकर राग ।
हयंद पु'० (हि) बड़ा तथा उत्तम कोटि का घोड़ा ।
हय पु'० (सं) १-घोड़ा । २-इन्द्र । ३-धनुराशि । ४-कविता में सात की मात्रा सूचित करने वाला एक शब्द । ५-चार मात्राओं का एक छन्द ।
हयकोविद वि० (सं) घोड़ों के पालन-पोषण करने तथा सिखाने में निपुण ।
हयगृह पु'० (सं) घुड़साल । अश्वशाला ।
हयग्रीव पु० (सं) १-विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक । २-एक असुर जो ब्रह्मा की निद्रित अवस्था में वेद चुराकर ले गया था ।
हयज्ञ पु'० (सं) १-घोड़ों का व्यापारी । २-साईस ।
हयना क्रि० (हि) दे० 'हनना' ।
हयनाल स्त्री० (सं) वह तोप जो घोड़ों द्वारा खींची जाती है ।
हयनिर्घोष पु'० (सं) घोड़े की टाप का शब्द ।
हयप पु'० (सं) साईस ।
हयप्रिय पु'० (सं) जौ । यव ।
हयविद्या स्त्री० (सं) घोड़े से सम्बन्धित विद्या ।
हयशाला स्त्री० (सं) घुड़साल । अश्वशाला ।
हयशास्त्र स्त्री० (सं) घोड़े को शिक्षा देने की विद्या ।
हयशिक्षा स्त्री० (सं) दे० 'हयशास्त्र' ।
हयशीर्ष पु'० (सं) विष्णु का हयग्रीव रूप ।
हयांग पु'० (सं) धनुराशि ।
हया स्त्री० (अ) लाज । शर्म ।
हयात स्त्री० (अ) जीवन । जिन्दगी ।
हयादार वि० (अ) शर्मदार । लज्जाशील ।
हयादारी स्त्री० (अ) लज्जाशीलता । शर्मदारी ।
हयाध्यक्ष पु'० (सं) १-घोड़ों का निरीक्षक । २-अश्वपाल ।
हयानन पु'० (सं) १-हयग्रीव । २-हयग्रीव के रहने का स्थान ।
हयायुर्वेद पु'० (सं) घोड़ों की चिकित्सा का शास्त्र ।

हयारूढ़ पुं० (सं) घुड़सवार। घोड़े पर सवार होना।
हयारोह पुं० (सं) दे० 'हयारूढ़'।
हयालय पुं० (सं) अस्तबल। अश्वशाला।
हयी स्त्री० (सं) घोड़ी। पुं० (हि) घुड़सवार।
हर वि० (सं) १-छीनने या हरण करने वाला। २-मिटाने वाला। ३-वध या नाश करने वाला। ४-वाहक। ले जाने वाला। पुं० १-शिव। २-भाजक (गणित)। ३-भिन्न के नीचे की संख्या। ४-अग्नि ५-छप्पय छन्द का दसवां भेद। (हि) हल। (फा) प्रत्येक। एक-एक।
हरएं अव्य० (हि) १-मन्द गति से। २-चुपके से। ३-क्रम-क्रम से।
हरएक वि० (फा) प्रत्येक।
हरकत स्त्री० (अ) १-हिलना। गति। डोलना। २-क्रिया। चेष्टा।
हरकना क्रि० (हि) रोकना। अवरुद्ध करना।
हरकहीं अव्य०(फा) हर जगह।
हरकारा पुं० (फा) पत्रादि पहुँचाने वाला दूत। पत्र-वाह।
हरख पुं० (हि) दे० 'हर्ष'।
हरखाना क्रि० (हि) प्रसन्न होना।
हरगिज अव्य०(फा) कभी। कदापि।
हरगिरि पुं० (सं) कैलास पर्वत।
हरगौरी स्त्री० (सं) शिव की अर्धनारीश्वर मूर्ति।
हरचंद अव्य० (फा) १-यद्यपि। २-बार-बार। बहुत बार।
हरज पुं० (अ) १-काम में पड़ने वाली अड़चन। बाधा। २-क्षति। हानि।
हरजा पुं०(फा)संगतराशों की चौरस करने की छेनी चौरसी। १-हरजाना। २-हरज।
हरजाई पुं० (फा) १-हर जगह घूमने वाला। २-आवारा। हर किसी से अनुचित प्रेम सम्बन्ध स्थापित करनेवाला। स्त्री०१-व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा २-वेश्या।
हरजाना पुं० (फा) १-क्षतिपूर्ति। हानि के बदले में दिया जाने वाला धन। (कम्पन्सेशन)।
हरट्ट वि० (हि) हृष्टपुष्ट।
हरण पुं० (सं) १-दूर करना। हटाना। २-जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध लेना। ३-संहार। विनाश। ४-दहेज। ५-वाहन। ले जाना। ६-भाग देना (गणित)। ७-यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा।
हरणीय वि० (सं) हरण करने योग्य। छीनने योग्य।
हरतरह अव्य० (फा) हर हालत में।
हरता पुं० (हि) दे० 'हर्त्ता'।
हरता-धरता पुं० (हि) १-सर्वशक्तिमान। २-बनाने या बिगाड़ने वाला।
हरतार स्त्री० (हि) दे० 'हरताल'।
हरताल स्त्री० (हि) पीले रङ्ग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो दवा के काम आता है। गोदन्त।
हरताली वि० (हि) हरताल के रंग का। पुं० एक प्रकार का गन्धकी पीला रंग।
हरद स्त्री० (हि) दे० 'हल्दी'।
हरदम अव्य० (फा) सदा। सदैव। हमेशा।
हरद्वार पुं० (हि) दे० 'हरिद्वार'।
हरदिया वि०(हि) हल्दी के रंग का। पीला। पुं० (हि) पीले रङ्ग का घोड़ा।
हरदियादेव पुं० (हि) दे० 'हरदौल'।
हरदी स्त्री० (हि) दे० 'हल्दी'।
हरदौल पुं० (हि) ओरछा के राजा जुझारसिंह का छोटा भाई जो वीरता के लिये तथा मातृभक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
हरना क्रि० (हि) १-हरण करना। २-हटाना। ३-मिटाना। नाश करना। ४-ले जाना। वहन करना ५-हराना।
हरनाकस पुं० (हि) दे० 'हिरण्यकशिपु'।
हरनाच्छ पुं० (हि) दे० 'हिरण्याक्ष'।
हरनी स्त्री० (हि) हिरन की मादा।
हरनौटा पुं० (हि) हिरन का बच्चा।
हरपा पुं० (देश) १-सिंदूर रखने की डिबिया। २-डिब्बा।
हरपुजी स्त्री० (हि) कार्तिक में किसानों द्वारा किया जाने वाला हल पूजन।
हरफ पुं० (अ) अक्षर। वर्ण।
हरफनमौला वि० (फा) हर एक फन जानने वाला।
हरफारेवड़ी स्त्री० (हि) १-कमरख की जाति का एक पेड़। २-उक्त पेड़ का फल।
हरबर पुं० (हि) दे० 'हड़बड़ी'।
हरबराना क्रि० (हि) हड़बड़ाना।
हरबा पुं० (अ) हथियार। अस्त्र।
हरबाहथियार पुं० (अ) अस्त्रशस्त्र।
हरबीज पुं० (सं) १-पारा। २-शिव का वीर्य।
हरबोंग वि० (हि) १-मूर्ख। २-लट्ठधारी। गुण्डा।
हरबोंगपुर पुं० (हि) अन्धेरनगरी।
हरम पुं० (अ)१-अन्तःपुर। जनानखाना। २-विवाहिता स्त्री। ३-रखेल स्त्री।
हरमखाना पुं० (अ) हरमखाना। अन्तःपुर।
हरमजदगी स्त्री० (फा) बदमाशी। शरारत।
हरयाल स्त्री० (हि) दे० 'हरियाली'।
हरये अव्य० (हि) दे० 'हरएँ'।
हरवल पुं० (हि) हलवाहे को बिना ब्याज दिया हुआ धन।
हरवाना क्रि० (हि) उतावली या जल्दी करना।
हरवाह पुं० (हि) दे० 'हलवाहा'।

हरवाहन पुं० (सं) शिव की सवारी । बैल ।
हरवाहा पुं० (हि) हल जोतने वाला ।
हरवाही स्त्री० (हि) हलवाहे का काम या मजदूरी ।
हरशेखरा स्त्री० (सं) (शिव के सिर पर रहने वाली) गंगा ।
हरष पुं० (हि) दे० 'हर्ष' ।
हरषना क्रि० (हि) १-प्रसन्न होना । २-पुलकित होना ।
हरषाना १-हर्षित करना । २-प्रसन्न करना ।
हरषित वि० (सं) दे० 'हर्षित' ।
हरसना क्रि० (हि) दे० 'हरषना' ।
हरसाना क्रि० (हि) दे० 'हरषाना' ।
हरसिंगार पुं० (हि) मझोले कद का एक वृक्ष जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं ।
हरसूनु पुं० (सं) कार्त्तिकेय । गणेश ।
हरहट वि० (सं) नटखट (बैल) ।
हरहा वि० (सं) नटखट (बैल) । पुं० (देश) भेड़िया
हरहाई वि० (हि) नटखट (गाय) ।
हरहार पुं० (सं) (शिव के गले का हार) सर्प । सांप
हरांस पुं० (हि) १-भय । डर । २-चिन्ता । दुःख । ३-थकावट । ४-हरारत ।
हरा वि० (हि)१-घास या पत्तियों के रंग का । सब्ज २-प्रसन्न । प्रफुल्ल । ३-ताजा । ४-हरे रंग का । चौपायों के खाने का हरा चारा । स्त्री० (सं) पार्वती
हराना क्रि० (हि) १-परास्त करना । २-थकाना । ३-शत्रु को विफल-मनोरथ करना ।
हराभरा वि० (हि) १-जो सूखा न हो । २-हरे पेड़ पौधों से भरा हुआ ।
हराम वि० (अ) १-जो इस्लाम धर्मशास्त्र में वर्जित हो । २-बुरा । दूषित । पुं० (अ) १-अधर्म । पाप । २-स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध । व्यभिचार । ३-बदकारी ।
हरामकार पुं० (अ) १-बुरा काम करने वाला । २-व्यभिचारी । लंपट । पापी ।
हरामकारी स्त्री० (अ) १-पाप । बुराई । २-व्यभिचार
हरामखोर पुं०(अ)१-किसी के सिर मुफ्त खाने वाला २-धन लेकर भी काम न करने वाला ।
हरामखोरी स्त्री० (अ) हरामखोर बने रहने की क्रिया या भाव ।
हरामज़ादा पुं० (अ) १-वर्णसंकर । दोगला । २-बड़ा पापी । दुष्ट ।
हरामज़ादी स्त्री० (अ) १-दोगली स्त्री । २-व्यभिचारिणी स्त्री ।
हरामी वि० (अ) १-दुष्ट । पाजी । २-व्यभिचार से उत्पन्न ।
हरारत स्त्री० (अ) १-ताप । गरमी । २-हल्का ज्वर ।
हरावर पुं० (हि) दे० 'हरावल' ।
हरावरि स्त्री० (हि) दे० 'हरावल' ।
हरावल पुं०(तु०) सेना में सबसे आगे चलने वाला सिपाहियों का दल ।
हरास पुं० (हि) १-भय । डर । २-आकाश । ३-दुःख निराशा । ह्रास ।
हराहर पुं० (हि) दे० 'हलाहल' ।
हराहरि स्त्री० (हि) थकावट । क्लांति ।
हरि वि० (सं) १-भूरा बादामी (रङ्ग) । २-पीला । ३-हरे रङ्ग का । पुं० १-विष्णु । २-शिव । ३-चन्द्र ४-अग्नि । ५-विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण । ६-श्रीराम । ७-इन्द्र । ८-घोड़ा । ९-सिंह । १०-सूर्य । ११-चन्द्रमा । १२-गीदड़ । १३-शुक । तोता । १४-कोयल । १५-हंस । १६-मेंढक । १७-सर्प । १८-वायु । १९-यम । २०-अठारह वर्णों का एक छन्द । २१-एक संवत्सर का नाम । अव्य० (हि) धीरे । आहिस्ते ।
हरिअर वि० (हि) हरा । सब्ज़ (रङ्ग) ।
हरिअराना क्रि० (हि) दे० 'हरिआना' ।
हरिअरी स्त्री० (हि) १-हरे रङ्ग का विस्तार । २-हरियाली ।
हरिआना क्रि० (हि) १-हरा होना । २-मुरझाया न रहना ।
हरिआली स्त्री० (हि) दे० 'हरियाली' ।
हरिकथा स्त्री० (सं) भगवान या उसके अवतारों के चरित्र का वर्णन ।
हरिकीर्तन पुं० (सं) भगवान या उनके अवतारों के गुणों का गान ।
हरिगण पुं०(सं) घोड़ों का समूह ।
हरिगिरी पुं० (सं) एक पर्वत का नाम ।
हरिगीतिका स्त्री०(सं) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द
हरिचंद पुं० (हि) दे० 'हरिश्चन्द्र' ।
हरिचंदन पुं० (सं) १-एक प्रकार का चन्दन । स्वर्ग के पांच वृक्षों में से एक । ३-कमल का पराग । ४-केसर । ५-चांदनी ।
हरिचाप पुं० (सं) इन्द्रधनुष ।
हरिजन पुं० (सं) १-ईश्वर का भक्त । २-पद-दलित तथा अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम ।
हरिजाई स्त्री० (हि) दे० 'हरजाई' ।
हरिजान पुं० (हि) दे० 'हरियान' ।
हरिण पुं० (सं) १-हिरन । मृग । २-सूर्य । हंस । ३-हिरन की एक जाति । ४-विष्णु । ५-शिव । ६-एक लोक का नाव । ७-एक नाग । वि० भूरे या बादामी रङ्ग का ।
हरिणकलंक पुं० (सं) चन्द्रमा ।
हरिणचर्म पुं० (सं) मृगछाला ।
हरिणनयनी वि० (सं) हिरन की आंखों के समान सुन्दर नेत्रों वाली ।

हरिणलक्षण पु० (सं) चन्द्रमा।
हरिणलांछन पु० (स) चन्द्रमा।
हरिणलोचन स्त्री० (सं) दे० 'हरिणनयनी'।
हरिणलोलाक्षी स्त्री० (सं) हिरन जैसे चंचल नेत्रों वाली स्त्री।
हरिणहृदय वि० (सं) (हिरन की भांति) डरपोक।
हरिणांक पु० (सं) चन्द्रमा।
हरिणाक्षी वि० (सं) हरिणनयनी।
हरिणाधिप पु० (सं) सिंह।
हरिणारि पु० (सं) सिंह।
हरिणी स्त्री० (सं) १-हिरन की मादा। २-मजीठ। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, मगण, रगण, सगण, और लघु गुरु होते हैं
हरिणीदृशी स्त्री० (सं) हिरनी के सदृश्य सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।
हरिणीनयना स्त्री० (सं) दे० 'हरिणीदृशी'।
हरिणेश पु० (सं) सिंह।
हरित वि० (सं) १-हरा। २-ताजा। ३-गहरा नीला। ४-पीला। ५-भूरा। पु० १-हरा रङ्ग। २-भूरा रङ्ग ३-पीला रङ्ग। ४-इन रङ्गों का पदार्थ। ५-पीलिया नामक रोग।
हरितकपिश वि० (सं) पीलापन लिए हुए भूरा।
हरितगोमय पु० (सं) ताजा गोबर।
हरितधान्य पु० (सं) हरा अन्न। कच्चा अन्न।
हरितनेमी पु० (सं) शिव। जिसके रथ के पहिये सोने के हों।
हरितप्रभ वि० (सं) जिसका रंग पीला हो गया हो।
हरितभेषज पु० (सं) कमला रोग की दवा।
हरितमणि पु० (सं) मरकत। पन्ना।
हरितालिका स्त्री० (सं) भादों के शुक्लपक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिये व्रत की तिथि है। तीज।
हरिताश्म पु० (स) तूतिया। २-पन्ना।
हरितुरंगम पु० (सं) इन्द्र का घोड़ा।
हरितुरग पु० (सं) हरितुरंगम।
हरितोपल पु० (सं) मरकत। पन्ना।
हरित् वि० (सं) १-हरे या सब्ज रंग का। २-भूरे या बादामी रंग का। पु० १-सूर्य का घोड़ा। २-विष्णु। ३-सिंह। ४-हल्दी। ५-सूर्य।
हरिदंबर वि० (सं) हरा या पीला वस्त्र धारण करने वाला।
हरिदास पु० (सं) भगवान का भक्त।
हरिदिक् स्त्री० (सं) पूर्वदिशा।
हरिद्र पु० (स) पीला चन्दन।
हरिद्रा स्त्री० १-हलदी। २-वन। जङ्गल। ३-सीसा नामक धातु। ४-मंगल। ५-एक नदी।
हरिद्रा गणपति पु० (सं) गणेश जी की मूर्त्ति जिस पर मंत्र पढ़कर हलदी चढ़ाई जाती है।
हरिद्रा प्रमेह पु० (सं) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिस में हलदी जैसा पीला पेशाब आता है।
हरिद्राभ वि० (सं) पीला। हलदी के रंग का।
हरिद्वार पु० (सं) उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो गंगा के तट पर स्थित है।
हरिद्विट पु० (सं) असुर।
हरिधनुष पु० (सं) इन्द्रधनुष।
हरिधाम पु० (सं) वैकुण्ठ।
हरिन पु० (सं) मृग। हिरन।
हरिनख पु० (सं) सिंह या बाघ का नाखून।
हरिनग पु० (सं) सांप की मणि।
हरिनाकुस पु० (हि) दे० 'हरिण्यकशिपु'।
हरिनाक्ष पु० (सं) दे० 'हरिण्याक्ष'।
हरिनाथ पु० (सं) हनुमान्।
हरिनीदृग वि० (सं) मृगनयनी।
हरिन्मणि पु० (सं) मरकत। पन्ना।
हरिपद पु० (सं) १-वैकुण्ठ। २-एक छन्द।
हरिपर्ण पु० (सं) कृष्ण चन्दन।
हरिपर्वत पु० (सं) एक पर्वत।
हरिपुर पु० (सं) वैकुण्ठ।
हरिप्रिय पु० (सं) १-कदम्ब। २-शंख। ३-मूर्ख। पागल आदमी। ४-सनाद। ५-गुलदुपहरिया।
हरिप्रिया स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी। २-पृथ्वी। ३-तुलसी ४-मधु। ५-मद्य। ६-द्वादशी। ७-लाल चन्दन। ८-एक छन्द।
हरिबीज पु० (सं) हरताल।
हरिबोधिनी स्त्री० (सं) कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।
हरिभक्त पु० (सं) विष्णु या भगवान का भक्त।
हरिभक्ति स्त्री० (सं) ईश्वर की भक्ति या प्रेम।
हरिभुक् पु० (सं) सर्प। सांप।
हरिमंदिर पु० (स) विष्णुमंदिर।
हरिमणि पु० (सं) सर्प का मणि।
हरिमा स्त्री० (सं) १-हरापन। २-पीलापन।
हरिमेध पु० (सं) १-अश्वमेध। २-विष्णु का नाम।
हरियर पु० (हि) दे० 'हरीरा'। वि० हरा।
हरियराना क्रि० (हि) दे० 'हरिआराना'।
हरियाई स्त्री० (हि) दे० 'हरियाली'।
हरियाथोथा पु० (हि) नीलाथोथा। तूतिया।
हरियान पु० (सं) विष्णु के वाहन गरुड़।
हरियाना क्रि० (हि) दे० 'हरिआना'। पु० रोहतक, हिसार तथा करनाल का बाँगड़ा प्रदेश।
हरियानी स्त्री० (हि) हरियाना प्रदेश की बोली।
हरियाली स्त्री० (हि) १-हरे भरे पेड़ पौधों का विस्तार २-हरा चारा। ३-दूब।
हरिल पु० (देश) हारिल पक्षी।
हरिवंश पु० (सं) १-श्रीकृष्ण का कुल। २-एक ग्रंथ जो महाभारत का परिशिष्ट माना जाता है।

हरिवर्ष पुं० (सं) जम्बूद्वीप के नौ खण्डों में से

हरिवल्लभा स्त्री० (सं) १-लक्ष्मी । २-तुलसी । ३-मलमास की कृष्णा-एकादशी ।

हरिवास पुं० (सं) पीपल ।

हरिवासर पुं०(सं) १-रविवार । २-विष्णु का दिन एकादशी ।

हरिवाहन पुं० (सं) १-गरुड़ । २-सूर्य । ३-इन्द्र ।

हरिशयनी पुं० (सं) आषाढ़-शुक्ला-एकादशी ।

हरिश्चंद्र वि० (सं) स्वर्ण जैसी चमक वाला । पुं० सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा का नाम ।

हरिसंकीर्तन पुं० (सं) विष्णु के गुणों का गान ।

हरिस स्त्री० (हि) हल का वह लट्ठा जो एक सिरे पर जूआ और दूसरे सिरे पर फाल वाली लकड़ी रहती है ।

हरिसिंगार पुं० (हि) दे० 'हर सिंगार' ।

हरिसुत पुं० (सं) १-कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न । २-इन्द्र पुत्र अर्जुन ।

हरिसूनु पुं० (सं) अर्जुन ।

हरिहय पुं० (सं) १-इन्द्र का घोड़ा । २-सूर्य । ३-गणेश ।

हरिहर पुं० (सं) शिव तथा विष्णु ।

हरिहरक्षेत्र पुं० (सं) बिहार क्षेत्र का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान ।

हरिहाई वि० (हि) दे० 'हरहाई' ।

हरी वि०(हि) हरित । सब्ज । स्त्री०(सं) एक वर्णवृत्त । स्त्री०(हि) जमींदार के खेत में आसामियों का सहायता देना । पुं० दे० 'हरि' ।

हरीक्षणा स्त्री० (सं) मृगनयनी ।

हरीत पुं० (हि) दे० 'हारीत' ।

हरीतकी स्त्री० (सं) हड़ । हर्रे ।

हरीतिमा स्त्री०(सं) १-हरापन । २-हरियाली ।

हरीफ पुं० (अ) १-शत्रु । २-प्रतिद्वंद्वी । विरोधी ।

हरीरा स्त्री० (हि) दूध में मेवे-मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ । वि० १-प्रसन्न । २-हरा ।

हरीश पुं० (सं) १-हनुमान । २-सुग्रीव । ३-बन्दरों का राजा ।

हरीसा स्त्री० (सं) मांस का बना हुआ एक व्यंजन ।

हरीस स्त्री०(सं) दे० 'हरिस' । वि०(अ) लोभी । लालच

हरुआ वि० (हि) जो भारी न हो । हलका ।

हरुआई स्त्री० (हि) १-हलकापन । २-फुरती ।

हरुआना क्रि० (हि) १-हलका होना । २-फुरती करना । ३-जल्दी मचाना ।

हरुए क्रि० (हि) दे० 'हरएँ' ।

हरुवाई स्त्री० (हि) दे० 'हरुआई' ।

हरू वि० (हि) हलका ।

हरूफ पुं० (अ) अक्षर । हरफ । वर्ण ।

हरें अव्य० (हि) दे० 'हरएँ' ।

हरें-हरें अव्य० (हि) धीरे-धीरे ।

हरे अव्य० (हि) धीरे-धीरे । शनैः-शनैः ।

हरेक वि० (हि) दे० 'हरएक' ।

हरें अव्य० (हि) दे० 'हरे' ।

हरैना पुं०(हि) हल में लगी वह मोटी लकड़ी जिसमें लोहे की फाल ठुकी होती है ।

हरैया पुं० (हि) १-हरण करने वाला । २-दूर करने या हटाने वाला ।

हरोल पुं० (हि) दे० 'हरावल' ।

हरौती स्त्री० (हि) दे० 'हलवत' ।

हर्ज पुं० (अ) १-अड़चन । बाधा । २-हानि । नुकसान ।

हर्तव्य वि० (सं) हरण करने योग्य ।

हर्ता पुं० (हि) १-हरण करने वाला । २-नाश करने वाला ।

हर्दी स्त्री० (हि) दे० 'हलदी' ।

हर्फ पुं० (अ) दे० 'हरफ' ।

हर्ब पुं० (अ) युद्ध । लड़ाई ।

हर्बगाह पुं० (अ) रणभूमि ।

हर्बा पुं० (हि) दे० 'हरबा' ।

हर्म्य पुं० (सं) १-प्रासाद । महल । २-हवेली । ३-नरक ।

हर्र पुं० (सं) दे० 'हड़' ।

हर्रे पुं० (सं) दे० 'हड़' ।

हर्रेया स्त्री० (हि) १-हाथ में पहनने का एक गहना । २-माला के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना। जिसके आगे सुराही होती है ।

हर्ष पुं० (सं) १-प्रसन्नता या भय के कारण रोंगटे खड़े हो जाना । रोमांच । २-प्रसन्नता ।

हर्षक पुं० (सं) आनन्ददायक ।

हर्षकारक वि० (सं) आनन्द देने वाला ।

हर्षगद्गद वि० (सं) जिसकी आवाज आनन्द के कारण भर्रा गई हो ।

हर्षचरित पुं० (सं) सम्राट हर्षवर्द्धन के चरित्र का बाणभट्ट द्वारा रचित गद्यकाव्य में वर्णन ।

हर्षज वि० (सं) हर्ष या प्रसन्नता से उत्पन्न ।

हर्षण पुं०(सं) १-भय या प्रसन्नता के कारण रोंगटे खड़े होना । २-प्रसन्न होना । ३-आंख का एक रोग ।

हर्षदान पुं० (सं) वह दान जो प्रसन्नतापूर्वक दिया गया हो ।

हर्षध्वनि स्त्री० (सं) दे० 'हर्षनाद' ।

हर्षना क्रि० (हि) प्रसन्न होना ।

हर्षनाद पुं० (हि) आनन्दसूचक ध्वनि या शब्द ।

हर्षमाण वि० (सं) प्रसन्न । आनन्दयुक्त ।

हर्षवर्द्धन, हर्षवर्धन पुं०(सं) विक्रम संवत् की सातवीं

सदी में होने वाले भारत के अंतिम सम्राट।
हर्षविवर्धन वि० (सं) प्रसन्नता अथवा आनन्द बढ़ाने वाला।
हर्षविह्वल वि० (सं) आनन्दविभोर।
हर्षसमन्वित वि० (सं) आनन्दयुक्त।
हर्षस्वन पुं०(सं) आनन्द ध्वनि।
हर्षातिशय पुं० (सं) अत्यधिक आनन्द।
हर्षाना क्रि० (हि) प्रसन्न होना या करना।
हर्षान्वित वि० (सं) प्रसन्न। आनन्दयुक्त।
हर्षाश्रु पुं० (सं) अत्यधिक आनन्द के कारण निकले आँसू।
हर्षित वि० (सं) आनन्दित। प्रफुल्ल। प्रसन्न।
हर्षोत्फुल्ललोचन वि० (सं) जिसके नेत्र अत्यधिक आनन्द के कारण खिले हुए हों।
हलंत वि० (सं) जिसके अंत में स्वररहित व्यंजन हो
हल पुं० (सं) १-भूमि जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण। २-जमीन नापने का लट्ठा। ३-पैर की एक रेखा या चिह्न। पुं० (अ) १-हिसाब लगाना। २-किसी समस्या का समाधान करना।
हलकंप पुं० (हि) दे० 'हड़कंप'।
हलक पुं० (अ) गले की नली। कंठ।
हलकई स्त्री० (हि) १-ओछापन। हलकापन। २-अप्रतिष्ठा।
हलकन स्त्री० (हि) हिलना-डुलना।
हलकना क्रि० (सं) १-पानी का हिलकोरे मारना। २-हिलना-डोलना।
हलका वि० (सं) १-जो कम वजन का हो। २-जो तेज या चमकीला न हो। ३-जो गहरा न हो। ४-कम। थोड़ा। ५-ओछा। ६-सरल। सहज। ७-प्रसन्न। ८-महीन। पतला। ९-घटिया। १०-खाली ११-जो उपजाऊ न हो। पुं०(अ) १-वृत्त। गोलाई २-घेरा। परिधि। ३-झुण्ड। समूह। ४-किसी विशेष कार्य के लिये निर्धारित कुछ गांवों का समूह ५-हाथियों का झुण्ड।
हलकान वि० (हि) दे० 'हलाकान'।
हलकाना क्रि० (हि) १-बोझ कम होना। हलका होना २-हिलोरा देना।
हलकापन पु० (हि) १-लघुता। २-ओछापन। नीचता। ३-अप्रतिष्ठा।
हलकारा पुं० (हि) दे० 'हरकारा'।
हलकुठ पुं० (सं) हल के नीचे का वह भाग जिसमें फाल जड़ा होता है।
हलकोरा पुं० (हि) तरंग। हिलोरा। लहर।
[illegible] वि० (सं) हल चला कर खेत जोतने वाला। पुं० किसान।
हलचल स्त्री० (हि) १-जन-साधारण में घबराहट फैलाने वाली दौड़ धूप। २-हिलना-डोलना। वि०
डगमगाता हुआ।
हलजीवी पुं० (सं) किसान। हल चलाकर खेती करने वाला।
हलजुता पुं० (सं) १-मामूली किसान। २-गँवार।
हलदंड पुं० (सं) दे० 'हरिस'।
हलदिया पुं०(हि) एक रोग जिसमें आंख तथा सारा शरीर पीला पड़ जाता है।
हलदी स्त्री० (हि) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़ गांठ के रूप में होती है तथा मसाले और रंगने के काम आती है।
हलद्दी स्त्री० (सं) हलदी।
हलधर पुं० (सं) बलराम।
हलना क्रि० (हि) १-हिलना। २-घुसना। पैठना।
हलपाणि पुं० (हि) बलराम।
हलफ पु० (अ) ईश्वर को साक्षी मान कर कही गई बात। शपथ।
हलफन् अव्य० (अ) शपथपूर्वक।
हलफनामा पुं० (अ) शपथ-पत्र।
हलफा पुं० (हि) हिलोर। तरंग। लहर।
हलफी वि० (अ) शपथ या हलफ लेकर दिया हुआ। (बयान)।
हलब पुं० (देश) फारस की ओर का देश जहां का कांच प्रसिद्ध था।
हलबल पुं० (हि) हलचल। खलबली।
हलबी वि० (हि) हलब देश का (कांच)।
हलब्बी वि० (हि) दे० 'हलबी'।
हलबलाना क्रि० (हि) १-घबड़ाना। २-दूसरों को घबड़ाना।
हलबली स्त्री० (हि) हलचल।
हलभल पु० (हि) खलबली। हलचल।
हलभली स्त्री० (हि) १-खलबली। २-घबराहट। ३-हड़बड़ाहट।
हलभृति स्त्री० (सं) किसान का पेशा या काम।
हलमार्ग पुं० (सं) हल के फाल से बनी हुई लकीर।
हलमुख पुं० (सं) हल का फाल।
हलराना क्रि० (हि) बच्चों को थपक कर तथा हिला-कर सुलाना।
हलवंश पुं० (सं) दे० 'हरिस'।
हलवत स्त्री० (हि) वर्ष में पहले-पहल खेत में हल चलाने की रीति।
हलवा पु० (हि) १-एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य पदार्थ। २-गीली तथा मुलायम वस्तु।
हलवाई पु० (हि) मिठाई बनाने या बेचने वाला।
हलवासोहन पुं० (हि) घी या मैदे से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पकवान जिसमें मेवे पड़े होते हैं।
हलवाह पुं० (हि) हल जोतने या चलाने का काम।
हलवाहा पुं० (हि) किसान।

**हलहलाना** क्रि० (हि) १-झकझोरना। जोर से हिलाना। २-कांपना। थरथराना।
**हला** स्त्री० (सं) १-पृथ्वी। २-जल। ३-सखी। ४-मदिरा।
**हलाक** वि० (अ) वध किया हुआ। मारा हुआ। हत।
**हलाकान** वि० (हि) परेशान। तंग। हैरान।
**हलाकानी** स्त्री० (हि) परेशानी। हैरानी।
**हलाकू** वि० (हि) मार डालने वाला। हलाक करने वाला।
**हलाना** क्रि० (हि) दे० 'हिलाना'।
**हलाभला** पुं० (हि) निबटारा। निर्णय।
**हलायुध** पुं० (सं) बलराम।
**हलाल** वि० (अ) जो इस्लाम शास्त्र के अनुकूल हो। जायज। पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की इस्लाम से आज्ञा हो।
**हलालखोर** पुं० (अ) १-हलाल की कमाई खाने वाला। २-मेहतर। भंगी।
**हलालखोरी** स्त्री० (अ) १-हलालखोर स्त्री। भंगन। २-हलालखोरी का काम या भाव।
**हलाहल** पुं० (सं) १-समुद्रमंथन के समय निकला हुआ भयंकर विष। २-भयङ्कर विष। ३-एक जहरीला पौधा।
**हली** पुं० (सं) १-बलराम। २-किसान।
**हलीम** पुं० (सं) केतकी। पुं० (देश) मटर का डंठल वि० (अ) सुशील तथा शान्त। पुं० (अ) मुहर्रम के दिनों में खाया जाने वाला एक खाद्यान्न।
**हलुआ** पु० (हि) दे० 'हलवा'।
**हलुका** वि० (हि) दे० 'हलका'।
**हलोर** स्त्री० (सं) तरंग। लहर।
**हलोरना** क्रि० (हि) १-पानी में लहर उत्पन्न करना। २-अनाज फटकना। ३-दोनों हाथों से समेटना।
**हलोरा** पुं० (हि) लहर। तरंग।
**हल्** पु० (सं) स्वरहीन व्यञ्जन (जिसके नीचे ) चिह्न लगाया जाता है।
**हल्क** पुं० (अ) दे० 'हलक'।
**हल्का** वि० (हि) दे० 'हलका'।
**हल्दी** स्त्री० (हि) दे० 'हलदी'।
**हल्य** वि० (सं) हल चलाने योग्य।
**हल्ला** पु० (हि) १-कोलाहल। शोरगुल। २-आक्रमण। चढ़ाई। ३-लड़ाई के समय की ललकार या शोर।
**हल्ला गुल्ला** पुं० (हि) कोलाहल। शोरगुल।
**हल्लीश** पुं० (सं) १-मंडल बांधकर होने वाला एक प्रकार का नाच। २-एक प्रकार का उपरूपक जिसमें नृत्य-गान प्रधान होता है।
**हल्लीशक** पुं० (सं) स्त्रियों का मंडल बांधकर होने वाला नृत्य।
**हवन** पुं० (सं) १-होम। मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिलादि अग्नि में डालने का कृत्य। २-अग्नि। ३-अग्निकुण्ड ४-हवन करने का चमचा। स्रुवा।
**हवनीय** वि० (सं) जो हवन करने के योग्य हो। पुं० हवन करते समय अग्नि में डाला जाने वाला पदार्थ।
**हवलदार** पुं० (हि) १-सेना या पुलिस का छोटा अधिकारी। २-बादशाही जमाने का वह कर्मचारी जो कर-संग्रह आदि का निरीक्षण करता था।
**हवस** स्त्री० (अ) १-लालसा। चाह। २-तृष्णा।
**हवा** स्त्री० (अ) १-वह तत्व जो प्रायः सर्वत्र चलता रहता है तथा जिसमें प्राणी सांस लेता है। वायु। पवन। २-यश। कीर्ति। ३-भूत। प्रेत। ४-महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख। ५-किसी बात की सनक। ६-आडंबर। ७-चकमा।
**हवाई** वि० (अ) १-वायु सम्बन्धी। वायु का। २-हवा में चलने वाला। ३-कल्पित। झूठ। निर्मूल। ४-तीव्र गति वाला। ५-चालाक। आवारा।
**हवाई-अड्डा** पुं० (हि) वह स्थान जहां हवाई-जहाज यात्रियों को उतारने-चढ़ाने के लिए ठहरते हैं। (एयरो ड्रोम)।
**हवाई-आंख** पुं० (हि) वह आंख जो एक स्थान पर न रहे।
**हवाई-किला** पुं० (हि) ख्याली पुलाव।
**हवाई-जहाज** पु० (हि) हवा में उड़ने वाला जहाज। वायुयान। (एयरोप्लेन)।
**हवाई-डाक** स्त्री० (हि) वह डाक जो वायुयान द्वारा भेजी जाती है। (एयरमेल)।
**हवाई-तोपची** पुं० (हि) वायुयान में लगी हुई तोप को चलाने वाला कर्मचारी। (एयरगनर)।
**हवाईपत्र-चित्र** पुं० (हि) हवाई जहाज द्वारा भेजी जाने वाली डाक का लिया गया लघुचित्र। (एयर ग्राफ)।
**हवाईफैर** पु० (हि) डराने या धमकाने के लिए हवा में किया गया फायर।
**हवाई-बंदूक** स्त्री० (हि) नकली बन्दूक।
**हवाई-बात** स्त्री० (हि) दे० 'हवाई-किला'।
**हवाई-मार्ग** पुं० (हि) वायुयानों का वह मार्ग जिससे वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं।
**हवाई-मुठभेड़** स्त्री० (हि) लड़ाकू वायुयानों की भिड़न्त।
**हवाईलड़ाई** स्त्री० (हि) वायुयान द्वारा लड़ी जाने वाली लड़ाई।
**हवाई-हमला** पुं० (हि) शत्रु के वायुयानों द्वारा किसी नगर की जनता तथा सार्वजनिक उपयोग के स्थानों या वस्तुओं पर की जाने वाली हवाई बमबारी। (एयररेड)।

**हवाखोरी** पुं०(अ) टहलना। हवा खाने के लिए मैदान में घूमना।
**हवाचक्की** स्त्री० (हि) हवा की शक्ति से चलने वाली आटे की चक्की। इस प्रकार का कोई यन्त्र। (विंड मिल)।
**हवादार** वि० (फा) जिसमें हवा आने जाने के लिए खिड़कियां हों। पु० सवारी के काम आने वाला एक प्रकार का तख्त।
**हवापानी** पुं० (हि) आबहवा।
**हवाबाज** पुं० (अ) वह जो हवाई जहाज चलाता हो उड़ाका। (पाइलट)।
**हवारोक** पुं० (अ) जिसमें से होकर वायु आ या जा न सके (एयर टाइट)।
**हवाल** पुं० (अ) १-हाल। दशा। २-वृत्तांत। ३-परिणाम।
**हवालदार** पुं० (हि) दे० 'हवलदार'।
**हवाला** पुं० (अ) १-दृष्टांत। मिसाल। २-प्रमाण का उल्लेख। ३-जिम्मेदारी।
**हवालात** स्त्री० (अ) १-वह स्थान जहां विचार होने तक अभियुक्त को पहरे में रखा जाता है। २-पहरे में रखा जाना।
**हवालाती** वि०(अ)१-हवालात-सम्बन्धी। २-हवालात में रखा हुआ (अभियुक्त)।
**हवाली** पुं० (अ) आसपास के स्थान विशेषतः नगर के आसपास के गांव आदि।
**हवास** पुं० (अ) १-इन्द्रियां। २-चेतना। सुध। होश ३-संवेदन।
**हवासबाख्ता** वि० (अ) घबड़ाया हुआ।
**हवि** पुं० (सं) आहुति देने की वस्तु या सामग्री।
**हविर्भू** स्त्री० (सं) हवनकुण्ड।
**हविष्मती** स्त्री० (सं) कामधेनु।
**हविष्य** वि० (सं) १-जिसकी आहुति दी जाने वाली हो। २-हवन करने योग्य। पु० देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जाने वाली बलि। २-हविष्यान्न।
**हविष्यान्न** पुं० (सं) व्रत, यज्ञ आदि के दिन किया जाने वाला विशिष्ट भोजन।
**हविस** स्त्री० (हि) दे० 'हवस'।
**हवेली** स्त्री० (अ) १-पक्का बड़ा मकान। २-पत्नी। स्त्री। ३-महल।
**हव्य** पुं० (स) हवन की वस्तु।
**हव्यकव्य** पुं० (सं) देवताओं तथा पितरों को क्रम से दी जाने वाली आहुति।
**हव्याद** वि० (सं) हव्य खाने वाला।
**हव्याश** पुं० (सं) अग्नि।
**हव्याशन** पुं० (सं) अग्नि।
**हश्र** पुं० (अ) १-प्रलय। कयामत। २-झगड़ा। उपद्रव।
**हसद** पुं० (अ) ईर्ष्या। डाह।
**हसन** पुं० (सं) १-हँसना। २-परिहास। दिल्लगी। (अ) अली के दो बेटों में से एक जिनके शोक में शिया मुसलमान मुहर्रम मनाते हैं।
**हसनीय** वि० (सं) उपहास या हँसने योग्य।
**हसरत** स्त्री० (अ) १-दुःख। अफसोस। २-हार्दिक कामना।
**हसरतभरा** वि० (अ) लालसाओं से युक्त।
**हसित** वि० (सं) १-हँसने वाला। २-जिस पर लोग हँसते हों। ३-खिला हुआ। पु० १-हँसना। २-उपहास। ३-कामदेव का धनुष।
**हसिता** वि० (सं) हँसने वाला।
**हसीन** वि० (अ) बहुत सुन्दर। लुभावना।
**हस्त** पुं० (सं) १-हाथ। २-हाथी की सूँड। ३-एक नक्षत्र जिसमें पचास तारे हैं। ४-हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५-संगीत या नृत्य में हाथ हिलाकर भाव बताना। ६-छन्द का एक चरण। ७-समूह। गुच्छा। ८-वासुदेव के एक पुत्र का नाम
**हस्तक** पुं० (सं) १-हाथ। २-सङ्गीत की ताल। ३-करताल। ४-नृत्य में हाथों की मुद्रा। ५-हाथ से बजाई हुई ताली।
**हस्तकला** स्त्री० (सं) १-हाथ से की गई कलात्मक रचना। (मैन्युअल आर्ट)। २-हस्तकौशल।
**हस्तकार्य** पुं० (स) १-दस्तकारी। २-हाथ का काम।
**हस्तकौशल** पु० (सं) हाथ की कारीगरी।
**हस्तक्रिया** स्त्री० (सं) १-दस्तकारी। २-हस्तमैथुन।
**हस्तक्षेप** पु० (सं) किसी होते हुए या चलते हुए काम में कुछ हेर फेर करने के लिए हाथ डालना या कुछ कहना। दखल देना। (इन्टरफियरेन्स)।
**हस्तगत** वि० (सं) १-प्राप्त। हासिल। २-हाथ में आया या मिला हुआ।
**हस्तग्रह** पुं० (स) १-हाथ पकड़ना। २-पाणिग्रहण। विवाह।
**हस्तचापल्य** पुं० (सं) हाथ की सफाई।
**हस्तचालन** पुं०(सं) हाथ से संकेत या इशारा करना
**हस्ततल** पुं० (सं) हथेली।
**हस्तत्राण** पुं० (सं) अस्त्रों के आघात से बचने के लिए हाथ में पहनने का दस्ताना।
**हस्तदीप** पुं० (सं) हाथ की लालटैन।
**हस्तदोष** पु० (सं) हाथ से डांडी मारने या नापने में अन्तर डालने का अपराध।
**हस्तधारण** पु० (सं) १-हाथ पकड़ना। २-विवाह करना। ३-हाथ का सहारा देना। ४-वार को हाथ पर रोकना।
**हस्तपाद** पुं० (स) हाथ-पैर।
**हस्तपुस्तिका** स्त्री०(स) वह छोटी पुस्तक जिसमें किसी लम्बे चौड़े विषय का संक्षिप्त विवरण हो और

मुमकिन हो से हाथ में ली जा सके। (मैन्युअल)।
हस्तपृष्ठ पुं० (सं) हथेली का पिछला या उल्टा भाग।
हस्तप्रद वि० (सं) (हाथ का) सहारा देने वाला।
हस्तप्राप्त वि० (सं) दे० 'हस्तगत'।
हस्तमणि पुं० (सं) कलाई में पहनने का रत्न।
हस्तमुद्रा स्त्री० (सं) नृत्य आदि में भाव बताने के लिए हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने क ढंग।
हस्तमैथुन पुं० (सं) हाथ द्वारा इन्द्रिय का संचालन (मास्टरबेशन)।
हस्तरेखा स्त्री० (सं) हथेली पर की रेखाएँ जिन्हें देख कर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य घटनाएँ बताई जाती हैं।
हस्तलक्षण पुं० (सं) १-हथेली की रेखाओं द्वारा शुभाशुभ बताना। २-अथर्ववेद का एक प्रकरण।
हस्तलाघव पुं० (सं) हाथ की चालाकी। फुर्ती या सफाई।
हस्तलिखित वि० (सं) हाथ का लिखा हुआ। (ग्रन्थ लेखादि)।
हस्तलिपि स्त्री० (सं) किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)।
हस्तलेख पुं०(सं) हाथ की लिखावट या चित्र आदि।
हस्तविज्ञापनक पुं०(सं) दवाओं, सिनेमाओं आदि के वे छोटे विज्ञापन जो प्रचार के लिए हाथ से बांटे जाते हैं। (हैण्डबिल)।
हस्तविन्यास पुं० (सं) हाथों की स्थिति।
हस्त-विस्मकारी पुं० (सं) हाथ की सफाई से बाजी जीतने वाला।
हस्तश्रम पुं० (सं) १-हाथ का श्रम। २-शारीरिक परिश्रम। (मैन्युअल लेबर)।
हस्तसंवाहन पुं० (सं) हाथ में मालिश करना या दबाना।
हस्तसिद्धि स्त्री० (सं) १-शरीरिक श्रम। २-मजदूरी। वेतन।
हस्तसूत्र पुं० (सं) हाथ की कलाई पर बांधा जाने वाला डोरा। (मंगलसूत्र)।
हस्तसूत्रक पुं० (सं) दे० 'हस्तसूत्र'।
हस्तांकितऋणपत्र पुं०(सं) वह हस्तलिखित जो ऋण लेते समय लिखा जाता है तथा जिसमें ऋण की अवधि तथा राशि लिखी जाती है (प्रोनोट, हैंड-नोट)।
हस्तांजलि स्त्री० (सं) हाथों की वह स्थिति जिसमें दोनों हथेलियां मिली हुई होती हैं।
हस्तांतर पुं० (सं) १-दूसरे हाथ में जाना। २-दूसरा हाथ।
हस्तांतरण पुं० (सं) (संपत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में दिया जाना। (ट्रान्सफरेन्स)।
हस्तांतर-पत्र पुं० (सं) सपत्ति आदि के हस्तांतरण-सम्बन्धी पत्रक। (कन्वेयन्स)।
हस्तांतरित वि०(सं) १-किसी दूसरे के हाथ में दिया हुआ (ट्रान्सफर्ड)। २-(वह सम्पत्ति आदि) जो दूसरे को दी गई हो।
हस्ता स्त्री० (सं) हस्तनक्षत्र।
हस्ताक्षर पुं० (सं) लेख आदि के नीचे अपने हाथों से लिखा हुआ अपना नाम जो उस लेख के अथवा उसके उत्तरदायित्व की स्वीकृति का सूचक होता है। (सिगनेचर)।
हस्ताक्षरकर्ता पुं०(सं)वह जिसने किसी संधिपत्रादि पर हस्ताक्षर किये हों। (सिग्नेटरी)।
हस्ताक्षरित वि० (सं) जिस पर हस्ताक्षर हुए हों।
हस्ताग्र पुं० (सं) उँगली। हाथ का अगला भाग।
हस्तामलक पुं० (सं) १-वह वस्तु या बात जिसके सामने आते ही सब अंग स्पष्ट प्रकट हो जाते हैं। २-आंवला।
हस्ताहस्ति स्त्री० (सं) हाथापाई। चपत या घूँसे की लड़ाई।
हस्ताहस्तिका स्त्री० (सं) लड़ाई। गुत्थमगुत्था।
हस्तिनापुर पुं० (सं) दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तर-पूर्व के कोने में अवस्थित नगर जो चन्द्र-वंशियों या कौरवों की राजधानी था।
हस्तिनी स्त्री० (सं) १-हाथी की मादा। २-कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक।
हस्ती पुं० (सं) १-हाथी। २-चन्द्रवंशी राजा सुहोत्र के एक पुत्र जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया था। स्त्री० (फा) १-अस्तित्व। व्यक्तित्व।
हस्तीपाल पुं० (सं) पीलवान। महावत।
हस्तीराज पुं० (सं) १-बहुत बड़ा हाथी। २-हाथियों के झुण्ड का मुखिया।
हस्तीव्यूह स्त्री० (सं) हाथी की सूँड।
हस्तीशाला स्त्री० (सं) हाथीखाना। फीलखाना।
हस्तीशुंड पुं० (सं) हाथी की सूँड।
हस्ते अव्य० (सं) हाथ से। मारफत। के द्वारा।
हस्त्य वि० (सं) १-हाथ संबन्धी। २-हाथ से दिया या लिखा हुआ।
हस्त्यध्यक्ष पुं० (सं) हाथियों का निरीक्षक।
हस्त्यायुर्वेद पुं० (सं) हस्तचिकित्सा संबन्धी शास्त्र।
हस्त्यारोह पुं० (सं) पीलवान। महावत।
हस्त्यारोही वि० (सं) हाथी पर सवार होने वाला।
हस्ब अव्य० (अ) अनुसार। मुताबिक।
हस्बजाबिता अव्य० (अ) यथानियम। कानून के अनुसार।
हस्बे-हैसियत अव्य० (अ) अपनी हैसियत के अनुसार

**हहर** स्त्री० (हि) १-कंपकंपी । थरथराहट । २-डर । भय ।

**हहरना** क्रि० (हि) १-कांपना । दहलना । थर्राना । ३-चकित होना । ईर्ष्या या डाह करना ।

**हहराना** क्रि० (हि) १-कंपाना । २-दहलाना । ३-दह लाना । ४-भयभीत करना ।

**हहल** स्त्री० (हि) दे० 'हहर' ।

**हहलना** क्रि० (हि) दे० 'हहरना' .

**हहलाना** क्रि० (हि) दे० 'हहराना' ।

**हहा** स्त्री० (हि) १-हँसने का शब्द । ठट्ठा । २-हाहाकार । ३-दीनता प्रकट करने का शब्द ।

**हां** अव्य०(हि) १-स्वीकृति, समर्थनादि का सूचक शब्द २-दे० यहां । स्त्री० (हि) स्वीकृति ।

**हांक** स्त्री (हि) किसी को ज़ोर से पुकारने के लिये कहा गया शब्द । पुकार । २-ललकार । ३-दुहाई । ४-बढ़ावा ।

**हांकना** क्रि० (हि) चिल्लाकर बुलाना । २-ललकारना ३-बढ़बढ़कर बोलना । ४-गाड़ी रथ आदि चलाना ५-जानवरों को चलाने या हटाने के लिये आगे बढ़ाना या इधर-उधर करना ।

**हांका** पु'० (हि) १-पुकार । टेर । २-ललकार । ३-गरज ।

**हांकारी** पु० (हि) किसी प्रस्ताव को समर्थन करने के लिये 'हाँ' कहने वाले सदस्य । (आइज) ।

**हांगर** पु० (देश) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

**हांगा** पु'० (हि) १-शरीर का बल । २-जबरदस्ती । ३-अत्याचार ।

**हांमी** स्त्री० (हि) स्वीकृति । हामी ।

**हांड़ना** क्रि० (हि) आवारा घूमना । व्यर्थ इधर-उधर घूमना । वि० आवारा फिरने वाला ।

**हांड़ी** स्त्री० (हि) १-अटलाई या पतीली के आकार का एक मिट्टी का बरतन । हँड़िया । २-उक्त प्रकार का शीशे का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं ।

**हांता** वि० (हि) १-छेड़ा हुआ । २-हटाया हुआ । दूर किया हुआ ।

**हांपना** क्रि० (हि) दे० 'हांफना' ।

**हांफना** क्रि० (हि) परिश्रम करने या दौड़ने के कारण ज़ोर ज़ोर से सांस लेना ।

**हांफा** पु० (हि) हाँफने की क्रिया या भाव ।

**हांफी** स्त्री० (हि) दे० 'हाँफा' ।

**हांसना** क्रि० (हि) दे० 'हँसना ।

**हांसल** पु'० (देश) लाल रंग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों ।

**हांसी** स्त्री० (हि) दे० 'हँसी' ।

**हांसु** स्त्री० (हि) १-हँसली । २-हँसी ।

**हा** अव्य० (सं) १-दुःख, शोक, भय आदि का सूचक शब्द । २-आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द । प्रत्य० (सं) हनन करना । मारने वाला (यौगिक अन्त में) ।

**हाइ** स्त्री० (हि) १-दशा । हालत । २-घात । ३-तौर ढंग । वि० (पं) ऊँचा । बड़ा ।

**हाइल** वि० (हि) दे० 'हायल' ।

**हाई** स्त्री० (हि) १-दशा । हालत । २-ढंग । तौर । वि० (पं) ऊँचा । बड़ा ।

**हाईकोर्ट** पु'० (अं) किसी प्रांत या राज्य की दीवानी या फौजदारी की सबसे बड़ी अदालत ।

**हाईस्कूल** पु'० (अं) अंग्रेजी पढ़ाने की वह बड़ी पाठशाला जहां दसवीं तक पढ़ाई होती है ।

**हाऊ** पु'० (हि) छोटे बच्चों को डराने के लिये एक कल्पित डरावने जीव का नाम । हौवा ।

**हाकिम** पु'० (अ) १-शासक । २-बड़ा अधिकारी ।

**हाकिमाना** वि० (अ) १-शासक जैसा । २-अधिकारी के योग्य ।

**हाकिमी** स्त्री० (अ) शासन । हाकिम का काम । वि० हाकिम सम्बन्धी ।

**हॉकी** स्त्री० (अं) १-एक खेल जो नीचे की ओर मुड़ी हुई लकड़ी तथा गेंद से खेला जाता है । २-वह लकड़ी या डण्डा जिससे वह खेल खेला जाता है ।

**हाजत** स्त्री० (अ)१-आवश्यकता । २-चाह । ३-हिरासत । ४-शौचादि का वेग ।

**हाजतख्वाह** वि०(अ) प्रार्थी । जिसे आवश्यकता हो ।

**हाजतमंद** वि० (अ) इच्छुक ।

**हाजतरवां** वि० (अ) आवश्यकता पूरी करने वाला ।

**हाजतरवाई** स्त्री० (अ) किसी की आवश्यकता पूरी करना ।

**हाजती** पु० (अ) १-प्रार्थी । २-फकीर । स्त्री० (हि) वह बरतन जो रोगी के पास शौचादि के लिये रखा रहता है ।

**हाजमा** पु० (अ) पाचन क्रिया या शक्ति ।

**हाजिर** वि० (अ) १-उपस्थित । मौजूद । २-प्रस्तुत ।

**हाज़िरजवाब** वि० (अ) हर बात का तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देने वाला ।

**हाज़िरजवाबी** स्त्री० (अ) चटपट और उपयुक्त उत्तर देने की कला ।

**हाज़िरज़ामिन** पु'० (अ) वह जो किसी को अदालत में पेश करने का उत्तरदायित्व ले ।

**हाज़िरनाज़िर** वि० (अ) उपस्थित और देखने वाला

**हाज़िरात** स्त्री० (फा) एक प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आत्मा बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती हैं ।

**हाज़िरी** स्त्री० (फा) १-उपस्थिति । मौजूदगी । २-भोजन, विशेषतः दोपहर का । ३-हाजिर होने की क्रिया या भाव ।

**हाज़िरीन** पु० (अ) (सभा आदि में) उपस्थित जन । श्रोतागण ।

हाज़िरीने-जलसा पुं० (अ) सभा या जलसे में उपस्थित जन।
हाजी पुं० (अ) वह जो हज कर आया हो।
हाट स्त्री० (हि) १-दूकान। २-बाजार। ३-बाजार लगने का दिन।
हाटक पुं० (सं) १-स्वर्ण। सोना। २-महाभारत में वर्णित एक देश का नाम।
हाटकगिरि पुं० (सं) सुमेरुपर्वत।
हाटकपुर पुं० (सं) लङ्का।
हाटकलोचन पुं० (सं) हिरण्याक्ष दैत्य।
हाटकेश पुं० (सं) शिव की एक मूर्ति या रूप का नाम।
हाटकेश्वर पुं० (सं) दे० 'हाटकेश'।
हाटव्यवस्था स्त्री० (सं) उत्पादन की हुई वस्तुओं को बेचने की व्यवस्था। (मार्केटिंग)।
हाड़ पुं० (हि) १-अस्थि। हड्डी। २-वंश की मर्यादा
हाड़ा पुं० (हि) १-लाल ततैया। २-क्षत्रियों की एक शाखा।
हातव्य वि० (सं) छोड़ने योग्य। त्याज्य।
हाता पुं० (हि) अहाता। रोक। वि० अलग या दूर किया हुआ। पुं० वध करने वाला। (समास में)।
हातिम पुं० (अ) १-निपुण। २-उस्ताद। ३-एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार था। ४-बहुत बड़ा दानी।
हातिमताई पुं० (अ) १-हातिम। २-हातिम का किस्सा
हात्र पुं० (सं) वेतन। मजदूरी। पारिश्रमिक।
हाथ पुं० (हि) १-कन्धे से पंजे तक का वह भाग जिससे चीजें पकड़ते और काम करते हैं। कर। हस्त। २-कोहनी से पंजे तक की लम्बाई का नाप। ३-दांव। ४-दस्ता। मुठिया।
हाथकंडा पुं० (हि) दे० 'हथकंडा'।
हाथतोड़ पुं० (हि) कुश्ती का एक पेच।
हाथपान पुं० (हि) हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।
हाथफूल पुं० (हि) दे० 'हाथपान'।
हाथा पुं० (हि) १-दस्ता। मूठ। मंगल अवसरों पर दीवार आदि पर लगाई जाने वाली पंजों की छाप
हाथाछाँहों स्त्री० (हि) लेन-देन के व्यवहार में कपट करना।
हाथापाई स्त्री० (हि) भिड़न्त। हाथ पैर से परस्पर खींचने तथा ढकेलने की क्रिया।
हाथाबाँही स्त्री० (हि) दे० 'हाथापाई'।
हाथी पुं० (हि) १-एक बहुत बड़ा स्तनपायी चौपाया जो अपनी सूँड के कारण सब जानवरों में विलक्षण होता है। २-शतरंज की एक गोट।
हाथीखाना पुं० (हि) वह स्थान जहाँ पालतू हाथी रखा जाय। पीलखाना।
हाथीदांत पुं० (हि) हाथी के मुँह के दोनों ओर निकले हुए लम्बे दांत जिनकी कई प्रकार की वस्तुएँ बनती हैं।
हाथीपांव पुं० (हि) फीलपांव नाम का एक रोग। २-एक प्रकार का बढ़िया कत्था।
हाथीवान पुं० (हि) पीलवान। महावत।
हादसा पुं० (अ) दुर्घटना।
हादिसा पुं० (अ) दुर्घटना।
हान पुं० (सं) दे० 'हानि'।
हानि स्त्री० (सं) १-टूटने-फूटने आदि से होने वाला नाश (डैमेज)। २-आर्थिक क्षति। नुकसान (लास) ३-टोटा। घाटा। ४-अपकार। ५-स्वास्थ्य को पहुँचने वाली खराबी।
हानिकारक वि० (सं) १-जिससे नुकसान हो। २-स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला। (इन्जूरियस)।
हानिलाभ पुं० (सं) व्यापार आदि में होने वाला या और किसी प्रकार का नुकसान और लाभ (प्रोफिट-एण्ड लॉस)।
हाफ़िज़ पुं० (अ) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुराने-शरीफ कंठस्थ हो। वि० रक्षक।
हामिल वि० (अ) बोझ उठाने वाला।
हामिला स्त्री० (अ) गर्भवती स्त्री।
हामी स्त्री० (हि) स्वीकृति। वि०(अ) हिमायत करने वाला। सहायक।
हाय अव्य०(हि) १-दुःख, शोक, पीड़ा आदि का सूचक शब्द। स्त्री० (हि) कष्ट। पीड़ा। तकलीफ। व्यथा।
हायन पुं० (सं) वर्ष। साल।
हायल वि० (हि) १-घायल। २-मूर्च्छित। ३-थका हुआ। वि० (अ) बीच में आड़ करने वाला।
हायहाय अव्य० (हि) शोक दुःख आदि प्रकट करने का शब्द। स्त्री० कष्ट। दुःख।
हार स्त्री० (हि) १-पराजय। २-शिथिलता। थकावट ३-हानि। पुं० (सं) १-राज्य द्वारा हरण। २-विरह ३-गले में पहनने की माला। ४-अंकगणित में भाजक।
हारक वि० (सं) १-मनोहर। सुन्दर। २-हरण करने वाला। पुं० १-चोर। लुटेरा। २-गणित में भाजक ३-हार। माला।
हारगुटिका स्त्री० (सं) माला के दाने।
हारजीत स्त्री० (सं) जय-पराजय।
हारद वि० (हि) दे० 'हार्दिक'। पुं० मन की बात, अभिप्राय, वासना आदि।
हारना क्रि० (हि) १-युद्ध, प्रतिद्वंद्विता आदि में पराजित होना। २-थक जाना। ३-प्रयत्न में असफल होना। ४-खोना। गँवाना। ५-न रख सकने के कारण जाने देना।
हारमोनियम पुं०(अ) सन्दूक के आकार का एक वाद्य-

यन्त्र जिस पर उँगली रखने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।
हारल पुं० (हि) दे० 'हारिल'।
हारबार स्त्री० (हिं) दे० 'हड़बड़ी'।
हारा प्रत्य० (हि) 'वाला' अर्थ सूचक एक प्रत्यय। स्त्री० (देश) दक्षिण-पश्चिम की ओर से आने वाली हवा।
हारावलि स्त्री० (सं) दे० 'हारावली'।
हारावली स्त्री० (सं) मोतियों की लड़ी।
हारि पुं० (सं) १-पराजय। हार। २-पथिकों का दल कारवाँ। ३-हरण करने वाला। ४-मन को हरने वाला।
हारिल पुं०(देश) एक हरे रङ्ग की चिड़िया जो प्रायः चंगुल में तिनका लिए रहती है।
हारी वि० (सं) १-ले जाने वाला। २-हरण करने वाला। ३-दूर करने वाला। ४-चुराने वाला। ५-जीतने वाला। ६-मन हरने वाला। ७-हार पहनने वाला। ८-उगाहने वाला। पुं० (सं) एक वर्णवृत्त
हारीत पुं० (सं) १-चोर। २-डाकू। ३-कबूतर।
हारौल पुं० (हिं) दे० 'हरावल'।
हार्दिक वि० (सं) १-हृदय सम्बन्धी। २-हृदय से निकला हुआ। ठीक और सत्य।
हार्य वि० (सं) १-हरण करने योग्य। २-हिल जाने योग्य। ३-वश करने योग्य। ४-भाज्य (गणित)। ५-लूट लेने योग्य। ६-जिसका अभिनय किया जाने वाला हो (नाटक)।
हाल पुं० (अ) १-अवस्था। दशा। २-समाचार। वृतांत। ३-विवरण। ४-तन्मयता। लीनता। वि० वर्तमान। मौजूद। अव्य० अभी। तुरन्त। स्त्री०(हिं) १-कम्प। २-झटका। धक्का। झोंका। बहुत बड़ा कमरा।
हालगोला पुं० (हिं) गेंद।
हालडोल पुं०(हि) १-हलचल। २-कम्प। ३-हिलना-डोलना।
हालत स्त्री० (अ) १-आर्थिक स्थिति। २-दशा। अवस्था। ३-परिस्थिति।
हालना क्रि० (हि) दे० 'हिलना'।
हालरा पुं० (हि) १-झोंका। २-लहर। हिलोर। ३-बच्चे को गोद में लेकर हिलाना-डुलाना।
हालाहल पुं० (सं) दे० 'हलाहल'।
हालांकि अव्य० (हिं) यद्यपि।
हाला स्त्री० (सं) शराब। मद्य। मदिरा।
हालात पुं० (फा) १-परिस्थिति। २-समाचार। ३-'हाल' का बहुवचन।
हालाहल पुं० (सं) दे० 'हलाहल'।
हालाहली स्त्री० (सं) मदिरा। शराब।
हालिक वि० (सं) १-हल सम्बन्धी। पुं० १-किसान। कृषक। २-कसाई। ३-एक छन्द विशेष।
हालिनी स्त्री० (सं) एक प्रकार की छिपकली।
हाली अव्य० (हि) शीघ्र। जल्दी। वि० (अ) हाल का। वर्तमान काल का।
हाव पुं०(सं) १-संयोग के समय नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती है। २-पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट।
हावन पुं० (फा) कूटने का पात्र। खल।
हावनदस्ता पुं० (फा) खलबट्टा।
हावभाव पुं० (सं) पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ। नाज़-नखरा।
हावी वि० (अ) दबा कर रखने वाली।
हाशिया पुं०(अ) १-किनारा। २-गोट। मगजी। ३-लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह। उपांत। ४-किसी बात पर की गई टीका टिप्पणी।
हास पुं० (सं) १-हँसी। २-दिल्लगी। ठठोली। ३-उपहास। वि० उज्ज्वल। श्वेतवर्ण।
हासक वि० (सं) हँसाने वाला।
हासिल वि०(अ) मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। पुं० १-जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अंतिम अंक के नीचे लिखे जाने पर बच रहे। २-पैदावार। उपज। ३-लाभ। ४-जमीन का लगान।
हास्तिक वि० (सं) हाथी का। हाथी-सम्बन्धी। पुं० १-पीलवान। महावत। २-हाथियों का समूह।
हास्य वि० (सं) १-हँसने के योग्य। २-उपहास के योग्य। पुं० १-हँसी। २-नौ स्थायी भावों या रसों में से एक, जिसमें हँसी की बातें होती हैं। ३-दिल्लगी। मज़ाक।
हास्यकथा स्त्री० (सं) हँसी की बात।
हास्यकर वि०(सं) हँसाने वाला। जिससे हँसी आये
हास्यकौतुक पुं० (सं) १-खेल-तमाशा। हँसी खेल
हास्यजनक वि० (सं) हँसने वाला।
हास्यारस पुं० (सं) नौ स्थायी भाव रसों में से एक जिसमें हँसी की बातें होती हैं।
हास्यरसात्मक वि० (सं) वह काव्य जिसमें हास्यरस हो।
हास्यरसिक वि० (सं) विनोदप्रिय।
हास्यास्पद वि०(सं) जिसके बेढंगेपन की लोग हँसी उड़ायें। हँसी उत्पन्न करने वाला।
हास्योत्पादक वि०(सं) जिससे लोगों को हँसी आये।
हा हंत अव्य०(सं) हे ईश्वर यह क्या हो गया।
हाहा पुं०(सं) एक गंधर्व। अव्य० १-हँसने का शब्द २-गिड़गिड़ाने का शब्द। पुं०(हि) खुलकर हँसने की आवाज। २-गिड़गिड़ाने की आवाज।
हाहाकार पुं० (सं) घबराहट के समय बहुत से लोगों के मुँह से निकलने वाली चिल्लाहट। कुहराम।

हाहा-ठीठी स्त्री० (हि) हँसी-ठट्ठा।
हाहाल पु० (अ) हाहा का शब्द करके चिल्लाने की आवाज।
हाहाहोही पुं० (हि) दे० 'हाहा-ठीठी'।
हाहाहूहू पुं० (हि) हाहा करके हँसने की क्रिया। हँसी-ठट्ठा।
हाही स्त्री० (हि) कुछ पाने के लिए बहुत हाय-हाय करना। चरम सीमा का लोभ।
हाहू पुं० (हि) १-शोरगुल। कोलाहल। २-हलचल।
हिंकरना क्रि० (हि) १-घोड़ों का हिनहिनाना। २-रँभाना।
हिंकार पुं० (सं) गाय के रँभाने का शब्द। २-बाघ के गरजने का शब्द। ३-व्याघ्र। ४-सामगान का एक अंग।
हिंग पु० (हि) दे० 'हिंगु'।
हिंगु पुं० (सं) १-एक प्रकार का वृक्ष जो विशेषतः खुरासान तथा मुलतान में होता है। २-इसके मूल का निर्यास। हींग।
हिंगुक पुं० (सं) हिंगु वृक्ष।
हिंगुल पुं० (सं) सिंगरफ। ईंगुर।
हिंगोट पु० (हि) एक कटीला जङ्गली पेड़ जिसके फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा स्त्री० (हि) इच्छा।
हिंडक वि० (सं) घूमने वाला। भ्रमणशील।
हिंडकपोत पुं० (सं) गश्ती जङ्गी जहाज। (क्रूजर)।
हिंडन पुं० (सं) घूमना-फिरना।
हिंडोरना पुं० (देश) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोरा पुं० (हि) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोरी स्त्री० (हि) छोटा हिंडोला।
हिंडोल पुं०(हि) १-संगीत में एक राग। २-हिंडोला।
हिंडोलना पुं० (हि) दे० 'हिंडोला'।
हिंडोला पुं० (हि) १-पालना। २-झूलना। ३-काठ का बना हुआ बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए छोटे-छोटे चौखटे लगे होते हैं।
हिंडोली स्त्री० (स) एक रागनी।
हिंताल पुं० (सं) एक प्रकार की जङ्गली खजूर।
हिंद पुं० (फा) भारतवर्ष। हिंदुस्तान।
हिंदवी स्त्री० (फा) हिंद या हिंदुस्तान की भाषा।
हिंदी वि० (फा) हिन्द या हिन्दुस्तान का। भारतीय। पु० (फा) भारतवासी। स्त्री० १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-उत्तरी और मध्यभारत की वह भाषा जिसके अन्तर्गत कई उपभाषाएँ या बोलियां हैं और जो भारत देश की राष्ट्रभाषा है।
हिंदुत्व पुं० (हि) दे० 'हिन्दूपन'।
हिंदुस्तान पु० (फा) १-भारतवर्ष। २-हिंदुओं का निवास स्थान। ३-दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरी और मध्य भाग। ४-आधुनिक भारत जो उत्तर में कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक फैला हुआ है। (इण्डिया)।
हिंदुस्तानी वि० (फा)हिन्दुस्तान का। पु० भारतवासी स्त्री० (फा) १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-बोलचाल या व्यवहार की वह भाषा (हिन्दी) जिसमें न तो बहुत अरबी-फारसी के शब्द हों न संस्कृत के।
हिंदुस्थान पु० (हि) भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।
हिंदू पु० (फा) भारतीय आर्यों के वर्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृति पुराण आदि को अपना ग्रन्थ मानते हैं और उन पर चलते हैं।
हिंदूकुश पु०(फा) वह पर्वतश्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है।
हिंदूपन पुं० (हि) हिंदू होने का भाव या धर्म।
हिंदोल पुं० (सं) १-हिंडोला। झूला। २-हिंडोल नामक एक राग।
हिंदोलक स्त्री० (सं) १-हिंडोला। २-पालना।
हिंदोस्तानी स्त्री० (हि) दे० 'हिंदुस्तानी'।
हिंयाँ अव्य० (हि) यहाँ।
हिंवार पुं० (देश) हिम। बर्फ।
हिंस स्त्री० (हि) हिनहिनाहट। हींस।
हिंसक पु० (सं) १-हिंसा करने वाला या मार डालने वाला। घातक। २-दूसरों की हानि चाहने वाला।
हिंसन पुं० (सं) १-जीवों का वध करना। २-जीवों को हानि पहुँचाना। ३-बुराई या अनिष्ट करना।
हिंसना क्रि० (हि) १-हिंसा या हत्या करना। २-बुरा-भला करना।
हिंसा स्त्री० (सं) १-प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति। २-किसी को हानि पहुँचाना।
हिंसाकर्म पुं० (सं) १-मारने या सताने का काम। २-तंत्र प्रयोग द्वारा किसी को मारने का कर्म।
हिंसात्मक वि० (सं) जिसमें हिंसा हो। हिंसा से युक्त
हिंसालु वि० (सं)हिंसा करने वाला। हिंसा की प्रवृत्ति वाला।
हिंस्र वि० (सं) हिंसा करने वाला। खूँखार।
हिंस्रक वि० (सं) दे० 'हिंस्र'।
हिंस्रजंतु पु० (सं) खूँखार जानवर।
हिंस्रपशु पु० (सं) खूँखार जानवर।
हि प्रत्य० (हि) एक प्राचीन विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सब कारकों में होता था। पर बाद में 'को' के अर्थ में रह गई थी। अव्य० (हि) ही।
हिअ पुं० (हि) दे० 'हिया'।
हिआ पुं० (हि) हृदय। छाती।
हिआउ पुं० (हि) दे० 'हियाव'।
हिआव पु० (हि) साहस। हिम्मत।
हिकमत स्त्री० (अ) १-विद्या। [illegible]। २-कला-कौशल। ३-उपाय। ४-चाल। चतुराई का ढंग।

(पाक्सिसी)। ५-यूनानी चिकित्सा का शास्त्र या पेशा हकीमी।
हिकमती वि० (अ) १-कार्यपटु। २-चतुर। चालाक।
हिकारत स्त्री० (हि) दे० 'हकारत'।
हिक्का स्त्री० (सं) १-हिचकी। २-एक रोग जिसमें हिचकी आती हैं।
हिक्किका स्त्री० (सं) हिक्का। हिचकी।
हिचक स्त्री० (हि) आगापीछा। कोई काम करने से पहले मन में होने वाली रुकावट।
हिचकना क्रि०(हि) कोई काम करने से पहले आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि के कारण कुछ रुकना २-हिचकी लेना।
हिचकिचाना क्रि० (हि) दे० 'हिचकना'।
हिचकिचाहट स्त्री० (हि) दे० 'हिचक'।
हिचकी स्त्री० (हि) १-एक शारीरिक व्यवहार जिसमें पेट या कलेजे की वायु कुछ रुककर गले के रास्ते से निकलने का प्रयत्न करती है। २-इसी प्रकार का शारीरिक व्यवहार अधिक रोने पर होता है।
हिचर-मिचर पु० (हि) १-सोच-विचार। २-आगा-पीछा। टालमटोल।
हिजड़ा पु० (हि) खोजा। नपुंसक।
हिजरी पु० (अ) मुसलमानी संवत जो मुहम्मद-साहब के मक्के से मदीने भागने या हिजरत करने की तिथि। (१५जुलाई ६२२ ई०) से चला है।
हिजाब पु० (अ) परदा। २-शर्म। लाज। हया।
हिज्जे पु० (अ) किसी शब्द में आये हुए अक्षरों, मात्राओं आदि का क्रम। अखरी।
हिज्र पु० (अ) वियोग। जुदाई।
हिडिंब पु० (सं) १-भैंसा। २-एक राक्षस जिसे भीम ने वनवास के समय मारा था।
हिडिंबजित् पु० (सं) भीम।
हिडिंबभिद् पु० (सं) भीम।
हिडिंबरिपु पु०(सं) भीम।
हिडिंबा स्त्री०(सं) हिडिंब नामक राक्षस की बहन जो भीम की पत्नी थी।
हिडिंबापति पु० (सं) भीम।
हिडिंबारमण पु० (सं) भीम।
हित वि० (सं) १-कल्याण। मंगल। भलाई। २-लाभ फायदा। ३-स्नेह। मुहब्बत। ४-वह जो किसी की भलाई चाहता या करता हो। सम्बन्धी। रिश्तेदार। अव्य० (स) (किसी की भलाई, प्रसन्नता आदि के) लिए। वास्ते।
हितकर वि० (सं) १-भलाई या उपकार करने वाला २-उपयोगी। ३-स्वास्थ्यकर।
हितकर्ता पु० (सं) भलाई करने वाला।
हितकाम पु० (सं) १-भलाई या उपकार करने वाला २-उपयोगी। ३-स्वास्थ्यकर।
हितकारक वि० (सं) दे० 'हितकर'।
हितकारी वि० (सं) हित या भलाई करने वाला।
हितचिंतक पु० (सं) भला चाहने वाला। शुभचिंतक हितैषी।
हितचिंतन पु० (सं) किसी की भलाई की कामना या इच्छा।
हितबुद्धि स्त्री० (सं) मैत्रीपूर्ण कामना।
हितमित्र पु० (सं) १-सम्बन्धी। भाईबन्द। २-उदार मित्र।
हितवचन पु० (सं) कल्याण का उपदेश।
हितवना क्रि० (हि) दे० 'हिताना'।
हितवाक्य पु० (सं) कल्याण का परामर्श।
हितवादी वि० (सं) हित की बात कहने वाला।
हितवार पु० (हि) प्रेम। स्नेह।
हिताई स्त्री० (हि) १-सम्बन्ध। रिश्तेदारी। २-हितचिंतन।
हिताकांक्षी वि० (सं) हित या भलाई चाहने वाला।
हिताधिकारी पु०(सं) वह जिसे किसी वस्तु से लाभ हो रहा हो या होने वाला हो। (बेनीफिशियरी)।
हिताना क्रि० (हि) १-हितकारी या लाभदायक होना २-प्रेम या स्नेह करना। ३-उपकार या भलाई करना
हितार्थी वि० (सं) भलाई चाहने वाला।
हितावह वि० (सं) हितकारी। कल्याणकारी।
हिताहित पु० (सं) भलाई और बुराई। नफा और नुकसान।
हिती पु० (हि) १-हितैषी। २-रिश्तेदार। सम्बन्धी। ३-स्नेही।
हितु पु० (हि) दे० 'हिती'।
हितू पु० (हि) दे० 'हिती'।
हितेच्छा स्त्री० (सं) उपकार का ध्यान। भलाई की चाह।
हितेच्छु वि० (सं) भला चाहने वाला।
हितैषिता स्त्री० (सं) भलाई चाहने की वृत्ति।
हितैषी वि० (सं) भला चाहने वाला। पु० सुहृद। मित्र।
हितोक्ति स्त्री० (सं) नेक सलाह।
हितोपदेश पु० (सं) भलाई का उपदेश।
हितौना क्रि० (हि) दे० 'हिताना'।
हिदायत स्त्री० (अ) १-आदेश। निर्देश। २-बड़े का छोटे को यह उपदेश देना कि अमुक काम इस प्रकार होना चाहिए।
हिदायतनामा पु० (अ) आदेश या हिदायतों आदि की किताब।
हिनती स्त्री० (हि) हीनता।
हिनवाना पु० (हि) तरबूज।
हिनहिनाना क्रि० (हि) घोड़े का बोलना।
हिनहिनाहट स्त्री० (हि) घोड़े की बोली।

हिना स्त्री० (अ) मेंहदी।
हिनाई वि० (अ) मेंहदी के रङ्ग का। पु० २-पीलापन लिए लाल रङ्ग। २-हीनता।
हिनाबंदी स्त्री० (अ) मुसलमानों में विवाह की एक रीति।
हिफाजत स्त्री० (अ) रक्षा। रखवाली।
हिब्बा पु० (अ) १-कौड़ी। २-दान।
हिब्बानामा पु० (अ) दानपत्र।
हिमंचल पु० (हि) दे० 'हिमाचल'।
हिमंत पु० (हि) दे० 'हेमन्त'।
हिम पु० (सं) १-पाला। तुषार। २-जाड़ा। ठंडा। ३-जाड़े का मौसम। ४-चन्द्रमा। ५-कपूर। ६-मोती। ७-राँगा। ८-कमल। ९-ताजा मक्खन। वि० ठंडा।
हिमउपल पु० (सं) ओला। पत्थर।
हिमऋतु स्त्री० (सं) जाड़े की मौसम।
हिमकण पु० (सं) तुशार या पाले के बहुत छोटे-छोटे कण या टुकड़े।
हिमकर पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
हिमकरतनय पु० (सं) बुध।
हिमकिरण पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमकूट पु० (सं) १-शीतकाल। २-हिमालय पर्वत।
हिमखंड पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमगर्भ वि० (सं) बर्फ से भरा हुआ।
हिमगिरि पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमगिरि-सुता स्त्री०(सं) पार्वती।
हिमगु पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमगृह पु० (सं) घर में सब से ठण्डी कोठरी अथवा कमरा।
हिमगृहक पु० (सं) दे० 'हिमगृह'।
हिमगौर वि० (सं) बर्फ जैसा सफेद।
हिमघ्न वि० (सं) हिम का निवारण अथवा दूर करने वाला।
हिमजा स्त्री० (सं) पार्वती।
हिमज्वर पु०(सं) जाड़ा-बुखार।
हिमदीधिति पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमदुर्दिन पु० (सं) १-पाला। २-बहुत ठंड पड़ने के कारण बुरा मौसम।
हिमद्युति पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमधर पु० (सं) हिमालय-पर्वत।
हिमधामा पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमध्वस्त वि० (सं) पाले का मारा हुआ।
हिमपात पु० (सं) १-पाला पड़ना। २-बर्फ गिरना।
हिमभानु पु०(सं) चन्द्रमा।
हिममय-वृष्टि स्त्री० (सं) वह वर्षा जिस के साथ ओले या बर्फ भी गिरे। (स्लीट)।
हिममयूख पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरश्मि पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरुचि पु० (सं) चन्द्रमा।
हिमरेखा स्त्री० (सं) पर्वतों की ऊँचाई की वह रेखा जहां निरन्तर बर्फ गिरती रहती है और गर्मी के कारण पिघलती नहीं। (स्नो लाईन)।
हिमर्तु स्त्री० (सं) जाड़े का मौसम।
हिमवान वि० (हि) जिसमें बर्फ या पाला हो। पु० १-हिमालय। २-चन्द्रमा।
हिमवान्-सुत पु० (सं) मैनक।
हिमवान्-सुता स्त्री०(सं) १-पार्वती। २-गंगा।
हिमवृष्टि स्त्री० (सं) १-बरफ का गिरना। २-ओले गिरना।
हिमशिलास्खलन पु० (सं) हिमराशि का पत्थर, मट्टी आदि के साथ चट्टान के रूप में बन कर गिरना। (एवेलांश)।
हिमशीतल वि० (सं) जमा देने वाली ठण्ड।
हिमशुभ्र वि० (सं) हिम जैसा सफेद।
हिमशैल पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमसंघात पु० (सं) बर्फ का ढेर या राशि।
हिमसंहति पु० (सं) बर्फ का ढेर।
हिमांक पु० (सं) वह तापमान जिस पर पानी जम कर बर्फ बनने लगता है। यह ३२ अंश फारेनहाईट और शून्य अंश सैंटीग्रेड होता है। (फ्रीजिंग पॉइन्ट)।
हिमांत पु०(सं) सर्दी के मौसम का अन्त।
हिमांबु पु० (सं) १-ओस। २-शीतल जल।
हिमांभ पु० (सं) दे० 'हिमांबु'।
हिमांशु पु० (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
हिमाकत स्त्री०(हि) दे० 'हमाकत'।
हिमाचल पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमाच्छन्न वि० (सं) बर्फ से ढका हुआ।
हिमाद्रि पु० (सं) हिमालय पर्वत।
हिमाद्रिजा स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-गंगा।
हिमाद्रितनया स्त्री० (सं) १-पार्वती। २-दुर्गा। ३-गंगा।
हिमानिल पु० (सं) बर्फीली हवा।
हिमानी स्त्री (सं) १-तुषार। २-पाला। ३-बरफ की वह बड़ी चट्टानें जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं (ग्लेशियर)।
हिमाब्ज पु० (सं) नीलकमल।
हिमायत स्त्री० (अ) १-पक्षपात। २-किसी पक्ष का समर्थन।
हिमायती वि० (फा) पक्ष लेने या समर्थन करने वाला।
हिमाराति पु०(सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-चित्रक-वृक्ष।
हिमारि पु० (सं) अग्नि।
हिमार्त वि० (सं) ठिठुरा हुआ। पाले से जमा हुआ।

हिमाल पुं० (हिं) दे० 'हिमालय'।
हिमालय पु० (सं) १-भारत के उत्तर का प्रसिद्ध तथा संसार में सब से बड़ा और ऊँचा पर्वत। २-सफेद खैर।
हिमालयसुता स्त्री० (सं) पार्वती।
हिमि पुं० (हिं) दे० 'हिम'।
हिमिका स्त्री० (सं) घास पर गिरी हुई बर्फ।
हिमीकर वि० (सं) हिम या बर्फ की तरह ठण्डा बना देने वाला। पुं० (सं) वह यंत्र जो ठण्डा बना कर खाद्य पदार्थों को सड़ने से बचाता है। (रेफ्रिजरेटर)
हिमेश पु० (सं) हिमालय।
हिम्मत स्त्री० (अ) साहस।
हिम्मती वि० (अ) साहसी। वीर।
हिय पु० (हिं) दे० 'हियरा'
हियरा पुं० (हिं) १-मन। हृदय। २-वक्षस्थल। छाती
हियाँ अव्य० (हिं) दे० 'यहाँ'।
हिया पुं० (हि) दे० 'हियरा'।
हियाव पुं० (हिं) साहस।
हिरकना क्रि० (हिं) १-पास आना। २-सटना। ३-परचना।
हिरकाना क्रि० (हिं)१-निकट आना। २-पास करना। ३-भिड़ाना। सटाना।
हिरण पुं० (सं)१-स्वर्ण। सोना। २-वीर्य। ३-कौड़ी पुं० (हिं) हिरन।
हिरण्मय वि० (सं) सोने का। सुनहरा। पुं० (सं) १-ब्रह्मा। २-एक ऋषि। ३-संसार के नौ खण्डों में से एक।
हिरण्मयकोश पुं० (सं) १-आत्मा के सात आवरणों में से अन्तिम। २-सूक्ष्म शरीर।
हिरण्य पुं० (सं) १-सोना। सुवर्ण। २-वीर्य। ३-कौड़ी। ४-नित्य। ५-ज्ञान। ६-अमृत। ७-प्रकाश
हिरण्यकंठ वि० (सं) सोने के कण्ठ वाला।
हिरण्यकर्त्ता पुं० (सं) सुनार।
हिरण्यकवच वि० (सं) सोने के कवच वाला।
हिरण्यकशिपु पुं० (सं) एक दैत्य जो प्रह्लाद भक्त का पिता था जिसे नृसिंह अवतार में विष्णु ने मारा था।
हिरण्यकश्यप पुं० (सं) दे० 'हिरण्यकशिपु'।
हिरण्यकार पुं० (सं) सुनार।
हिरण्यकेश पु० (सं) विष्णु।
हिरण्यगर्भ पुं० (सं)१-ब्रह्मा। २-वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा तथा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई। ३-३-सूक्ष्म शरीरयुक्त आत्मा। ४-विष्णु। ५-एक मंत्रकार ऋषि।
हिरण्यपुरुष पुं० (सं)सोने की बनी मनुष्य की प्रतिमा
हिरण्यरेता पुं० (सं) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-शिव ४-बारह आदित्यों में से एक
हिरण्यवर्चस वि० (सं) सोने की जैसी चमक वाला।
हिरण्यवाह पुं० (सं) १-शिव। २-सोन नदी।
हिरण्यवीर्य पुं० (सं) १-अग्नि। २-सूर्य।
हिरण्यस्रक् स्त्री० (सं) सोने की माला।
हिरण्याक्ष पुं०(सं)१-हरिण्यकशिपु के भाई का नाम वासुदेव के छोटे भाई का नाम।
हिरदय पुं० (हिं) दे० 'हृदय'।
हिरदा पुं० (हिं) हृदय।
हिरदावल पुं० (हिं) घोड़े की छाती पर की एक भौंरी जो शुभ मानी जाती है।
हिरन पुं० (हिं) मृग। हरिन।
हिरनाकुस पुं० (हिं) दे० 'हिरण्यकशिपु'।
हिरनौटा पुं० (हिं) हिरन का बच्चा।
हिरमजी स्त्री० (अ) एक प्रकार लाल रङ्ग की मिट्टी।
हिरवा पुं० (हिं) दे० 'हीरा'।
हिरस स्त्री० (हिं) दे० 'हिर्स'।
हिराती पुं० (सं) अफगानिस्तान के उत्तर में स्थित हिरात नाम के देश का घोड़ा।
हिराना क्रि० (हिं) १-अभाव होना। २-खो जाना। ३-मिटना। दूर होना। ४-दंग रह जाना। ५-अपने को भूल जाना। ६-खेत में गोबर आदि खाद के लिए रखना। ७-भूल जाना।
हिरास स्त्री० (फा) १-भय। २-नैराश्य। ३-खिन्नता। खेद। वि० १-हताश। २-खिन्न।
हिरासत स्त्री० (अ) १-किसी व्यक्ति पर रखा जाने वाला पहरा। चौकी। २-हवालात।
हिरासाँ वि० (फा) १-निराश। २-पस्त। हिम्मत हारा हुआ। ३-उदासीन। खिन्न।
हिरौल पुं० (हिं) दे० 'हरावल'।
हिर्स स्त्री० (अ) १-लोभ। २-वासना। स्पर्द्धा।
हिर्साहिर्सी अव्य० (हिं) देखा-देखी।
हिर्सी वि० (फा) लालची।
हिलकना क्रि० (हिं) १-हिचकियां लेना। हिचकना। २-सिसकना।
हिलकी स्त्री० (हिं) १-हिचकी। २-सिसकने का शब्द
हिलकोर पुं० (हिं) दे० 'हिलकोरा'।
हिलकोरना क्रि०(हिं) पानी को हिलाकर तरंगें उत्पन्न करना।
हिलकोरा पुं० (हिं) हिलोर। तरंग। लहर।
हिलग स्त्री० (हिं) १-प्रेम। लगन। २-परिचय। ३-लगाव। सम्बन्ध।
हिलगना क्रि० (हिं) १-टँगना। अटकना। २-फँसना ३-हिलमिल जाना। ४-समीप होना।
हिलगाना क्रि० (हिं) १-अटकाना। २-टाँगना। ३-फँसाना। ४-सटाना। ५-घनिष्ठता स्थापित करना।
हिलना क्रि०(हिं) १-अपने स्थान से इधर उधर होना। २-सरकना। ३-कांपना। ४-ढीला होना। ५-

झूमना। ६-घुसना। पैठना। ७-(मन) चंचल होना। ८-हेलमेल में होना।
हिलमोचि स्त्री० (सं) एक शाक।
हिलमोचिका स्त्री० (सं) एक शाक।
हिलसा स्त्री० (हि) एक प्रकार की मछली।
हिलाना क्रि० १-चलायमान करना। २-हटाना। ३-कँपाना। ४-घुसाना। ५-घनिष्ठता स्थापित करना
हिलाल पुं० (अ) नया चांद।
हिलोर स्त्री० (हि) पानी की लहर। तरंग।
हिलोरना क्रि० (हि) १-जल को तरंगित करना। २-लहराना।
हिलोरा पुं० (हि) हिलोर। तरंग।
हिलोल पुं० (हि) दे० 'हिल्लोल'।
हिल्लोल पुं० (सं) १-पानी की लहर। तरंग। २-आनन्द की तरंग। मौज। उमंग। हिंडोल नामक राग।
हिल्वला स्त्री० (सं) वह छोटे पांच तारे जो मृगशिरा-नक्षत्र के सिर के पास दिखाई देते हैं।
हिवँ पुं० (हि) हिम। पाला। बर्फ।
हिवंचल पुं०(हि) १-तुषार। हिम। पाला। हिमालय।
हिवाँर पुं० (हि) हिम। पाला।
हिस स्त्री० (अ) अनुभव। ज्ञान। संज्ञा। चेतना।
हिसाब पुं० (अ) १-गिनकर लेखा तैयार करने का काम या विद्या। लेन-देन, आय-व्यय आदि का लिखा हुआ वर्णन। ३-गणित सम्बन्धी प्रश्न। ४-भाव। दर। ५-धारणा। समझ। ६-अवस्था। ७-मितव्यय।
हिसाब-किताब पुं० (अ) १-आय-व्यय का ब्योरा। २-व्यावहारिक लेन-देन का ढंग। ३-रीति। ढंग।
हिसाब-चोर पुं०(हि) वह जो हिसाब किताब में बेई-मानी करता हो।
हिसाबदाँ पुं० (अ) गणितज्ञ।
हिसाबदार वि० (अ) हिस्सा रखने वाला।
हिसाब-बही स्त्री० (हि) आय-व्यय के विवरण वाली बही।
हिसाबी वि० (अ) हिसाब सम्बन्धी। पुं०(अ) हिसाब या गणित का जानकार।
हिसार पुं० (फा) १-फारसी संगीत की २४ शोभाओं में से एक। २-घेरा। परकोटा।
हिसिषा स्त्री० (हि) १-स्पर्द्धा। होड़। २-समता। ३-ईर्ष्या।
हिस्सा पुं० (अ) १-समष्टि या समूह का कोई अंश। अवयव। २-खंड। टुकड़ा। ३-बँटने पर मिलने वाला अंश। भाग। ४-व्यापार आदि में होने वाला साझा।
हिस्सा-बखरा पुं० (अ) अंश। भाग।
हिस्सारसदी अव्य० (अ) मिलना जिसके हिस्से में आये।
हिस्सेदार पुं० (अ) १-अंश या हिस्से का मालिक। साझेदार। २-वह जिसे कुछ हिस्सा मिलने को हो।
हिस्सेदारी स्त्री० (अ) साझा।
हिहिनाना क्रि० (हि) (घोड़े का) हिनहिनाना।
हींग स्त्री० (हि) दे० 'हिंगु'।
हींछना क्रि० (हि) चाहना। इच्छा करना।
हींछा स्त्री० (हि) इच्छा।
हींताल पुं० (सं) हिंताल वृक्ष।
हींस स्त्री०(सं) घोड़ों का हिनहिनाना या गधे की रेंक।
हींसना क्रि० (हि) दे० 'हिनहिनाना'।
हींस पुं० (हि) दे० 'हिस्सा'।
ही अव्य०(हि) एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय, स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिए होता है। पुं० हृदय। क्रि० (हि) ब्रजभाषा के 'हो' (था) का स्त्रीलिंग रूप।
हीअ पुं० (हि) दे० 'हिय'।
हीक स्त्री० (हि) १-हिचकी। २-हलकी अरुचिकर गंध।
हीकना क्रि० (हि) दे० 'हिचकना'।
हीछना क्रि० (हि) चाहना। इच्छा करना।
हीन वि० (स) १-छोड़ा हुआ। परित्यक्त। २-ओछा। नीच। ३-रहित। शून्य। ४-तुच्छ। ५-दीन। ६-पथभ्रष्ट। ७-कम। अल्प। ८-नम्र।
हीनकर्मा वि० (सं) १-बुरा काम करने वाला। २-अपना निर्दिष्ट कर्म करने वाला।
हीनकुल वि० (सं) अकुलीन। नीच या बुरे कुल का।
हीनक्रम पुं० (सं) काव्य का वह दोष जहाँ जिस क्रम में गुण गिनाए गये हों उसी स्थान पर उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।
हीनचरित वि० (सं) बुरे आचरण वाला।
हीनता स्त्री० (सं) १-अभाव। कमी। २-तुच्छता। ३-ओछापन। ४-बुराई।
हीनत्व पुं० (सं) हीनता।
हीननायक वि० (सं) (वह नाटक) जिसका नायक नीच या अधम हो।
हीनपक्ष पुं० (सं) १-गिरा हुआ पक्ष। २-कमजोर मुकदमा।
हीनबल वि० (सं) शक्ति रहित। कमजोर। दुर्बल।
हीनबुद्धि वि० (सं) मूर्ख।
हीनमति वि० (सं) मूर्ख।
हीनयान पुं० (सं) बौद्ध धर्म की वह शाखा जिसका विकास बरमा, स्याम आदि देशों में हुआ था।
हीनयोनि वि० (सं) नीच कुल या जाति का।
हीनरस पुं० (सं) काव्य का वह दोष जिसमें किसी रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरा रस प्रयोग किया जाता है।
हीनरोमा वि० (सं) जिसके बाल न हों। गंजा।

हीनवर्ण पुं० (सं) दे० 'हीनवर्ण'।
हीनवर्ण पुं० (सं) नीच जाति या वर्ण।
हीनवाद पुं० (सं) १-मिथ्या तर्क। व्यर्थ की बहस २-झूठी गवाही जिसमें पूर्वा पर विरोध हो।
हीनवादी पुं० (सं) १-वह जिसका लगाया हुआ अभियोग गिर गया हो। २-विरुद्ध बयान देने वाला गवाह।
हीनांग वि० (सं) १-खण्डित अंग वाला। २-अधूरा
हीनोपमा स्त्री० (सं) काव्य में वह उपमा जिससे बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लाया जाय।
हीय पुं० (हि) हृदय।
हीयरा पुं० (हि) हृदय।
हीया पुं० (हि) हृदय।
हीर पुं० (हि) १-किसी वस्तु का तत्व या सार भाग २-शक्ति। बल। ३-वीर्य। पुं०(सं) १-हीरा। रत्न २-वज्र। ३-शिव। ४-एक वर्णवृत्त। ५-छप्पय छंद का एक भेद।
हीरक पुं० (सं) हीरा नामक रत्न। २-हीर छंद।
हीरकजयंती स्त्री० (सं) किसी व्यक्ति, संस्था, महत्व-पूर्ण कार्य आदि की वह जयन्ती जो उसके जन्म या आरम्भ के ६० वें वर्ष होती है। (डायमण्ड जुबिली)
हीरा पुं० (सं) १-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो चमक तथा कठोरता के लिये प्रसिद्ध है। २-नररत्न ३-बहुत उत्तम वस्तु। ४-दुम्बे की एक जाति।
हीरा-आदमी पुं० (हि) नर रत्न। बहुत नेक आदमी
हीरा-कसीस पुं० (हि) गंधक के योग से लोहे का एक विकार जो हरे तथा मटमैले रंग का होता है।
हीरामन पुं० (हि) एक प्रकार का तोता जिसका मन सोने की तरह का माना गया है।
हीलना क्रि० (हि) दे० 'हिलना'।
हीला पुं०(अ) १-मिस। बहाना। २-निमित्त। साधन
हीला-हवाला पुं० (अ) बहाना।
हीलेगर पुं० (अ) बहाने बनाने वाला।
हीलेबाज़ पुं० (अ) हीलेगर।
हीलेसाज़ पुं० (अ) हीलेगर।
हीसका स्त्री० (हि) १-ईर्ष्या। डाह। २-प्रतियोगिता। होड़।
हीही स्त्री० (हि) हँसने का शब्द।
हुँ अव्य० (हि) १-दे० 'हूँ'। २-दे० 'हाँ'।
हुंकना क्रि० (हि) दे० 'हुंकारना'।
हुंकरना क्रि० (हि) दे० 'हुंकारना'।
हुंकार पुं० (सं) १-ललकार। २-गर्जन। भयभीत करने के लिये जोर से किया गया शब्द। ३-चीत्कार।
हुंकारना क्रि० (हि) १-ललकारना। २-चिल्लाना। ३-डरने के लिये जोर का शब्द करना।
हुंकारी स्त्री० (हि) १-'हूँ' करने की क्रिया। २-स्वीकृति-सूचक शब्द। ३-घुमाव के साथ झुकी हुई लकीर जो अंक के आगे रकम सूचित करने लिये लगा दी जाती है। जैसे ₹ा)।
हुंकृत पुं० (सं) १-सूअर के गुर्राने का शब्द। २-मेघ का गर्जन। ३-हुंकार।
हुंकृति स्त्री० (सं) दे० 'हुंकार'।
हुँड़ार पुं०(हि) भेड़िया।
हुंडावन पुं०(हि) हुण्डी से रुपया भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।
हुंडी स्त्री० (हि) १-महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो ऋण देते समय प्रमाणस्वरूप ऋण देने वाले को दिया जाता है जिस पर यह लिखा होता है कि इतना धन इतने समय में ब्याज सहित चुका दिया जायगा। २-अपने धन को प्राप्त करने का वह पत्र जिस में यह लिखा होता है कि इतना धन अमुक व्यक्ति. बैंक आदि को दे दिया जाय। (ड्राफ्ट)।
हुंडीबही स्त्री० (हि) वह बही जिसमें सब प्रकार की हुण्डियों की नकल रहती है।
हुँत अव्य० (हि) से (पुरानी हिन्दी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति)। लिए। वास्ते। निमित्त।
हुँते अव्य० (हि) दे० 'हुँत'।
हु अव्य० (हि) भी।
हुआँ अव्य० (हि) दे० 'वहां'। पुं० गीदड़ों के बोलने का शब्द।
हुआ क्रि० (हि) 'होना' क्रिया का भूत।
हुआना क्रि० (हि) गीदड़ों का बोलना या हुआँ-हुआँ करना।
हुक पुं०(अ) १-टेढ़ी कील। २-अँकुसी। स्त्री० (देश) एक प्रकार का नस का दर्द जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर होता है।
हुकरना क्रि०(हि) दे० 'हुंकारना'।
हुकुम पुं० (हि) दे० 'हुक्म'।
हुकुर-पुकुर स्त्री० (हि) भय या शारीरिक दुर्बलता के कारण दिल का जल्दी-जल्दी धड़कना।
हुकुर-हुकुर स्त्री० (हि) दे० 'हुकुर-पुकुर'।
हुकूक पुं० (अ) हक का बहुवचन।
हुकूमत स्त्री० (अ) १-शासन। आधिपत्य। अधिकार ३-राजनैतिक शासन या अधिपत्य।
हुक्का पुं० (अ) तम्बाकू का धूआं खींचने के लिए विशेष रूप से बना एक नल यन्त्र। गुड़गुड़ी।
हुक्कापानी पुं० (हि) बिरादरी का बरताव। एक बिरादरी के लोगों का आपस में, मेल जोल पानी, हुक्का आदि पीने का व्यवहार।
हुक्का-बरदार पुं० (अ) हुक्का लेकर साथ चलने वाला नौकर।
हुक्काबाज़ वि० (सं) बहुत हुक्का पीने वाला।
हुक्काम पुं० (अ) हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग।
हुक्म पुं० (अ) १-आज्ञा। आदेश। २-शासन।

प्रभुत्व। ३-ताश का रङ्ग। ४-जन साधारण के लिए राज्य या शासन द्वारा निकली हुई आज्ञा। ५-धर्मशास्त्रादि में बतलाई हुई विधि।
**हुक्मकतई** पुं० (अ) आखिरी फैसला।
**हुक्मगश्ती** पुं० (अ) वह आज्ञा जिसको सब तरफ फिराया जाय।
**हुक्मबरमियानी** पुं०(अ)वह आज्ञा जो अंतिम निर्णय से पहले दी गई हो।
**हुक्मनामा** पुं० (अ) आज्ञापत्र।
**हुक्मबरदार** पुं० (अ) आज्ञाकारी। सेवक।
**हुक्मबरदारी** स्त्री० (अ) १-आज्ञा पालन। २-सेवा। नौकरी।
**हुक्मरान** वि० (अ) १-शासन करने वाला। २-आज्ञा देने वाला।
**हुक्मरानी** स्त्री० (अ) शासन।
**हुक्मी** वि०(अ)१-आज्ञा के अनुसार काम करने वाला। पराधीन। २-अव्यर्थ। अचूक। ३-लाज़मी। जरूरी
**हुक्मीबंदा** पु० (अ) आज्ञा के आधीन। हुक्म का बन्दा।
**हुचकी** स्त्री० (हि) दे० 'हिचकी'।
**हुजूम** पुं०(अ) भीड़ (जमावड़ा)।
**हुजूर** पुं० (अ) १-किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २-कचहरी। ३-बहुत बड़ों का संबोधन का शब्द।
**हुजूरवाला** पुं० (अ) एक सम्मानसूचक संबोधन।
**हुजूरी** स्त्री०(अ) समक्षता। किसी बड़े का सामीप्य। पुं०। १-नौकर। २-दरबारी। वि० (अ) सरकारी। हजूर का।
**हुज्जत** स्त्री० (अ) व्यर्थ का विवाद। तकरार।
**हुज्जती** वि० (अ) बहुत झगड़ा करने वाला। झगड़ालू।
**हुड़क** स्त्री० (हि) हुड़कने की क्रिया या भाव।
**हुड़कना** क्रि० (हि) १-वियोग के कारण बहुत दुःखी होना (विशेषतः छोटों का)। २-भयभीत या चिंतित होना।
**हुड़का** पुं० (हि) वियोग के कारण होने वाली मानसिक व्यथा (बच्चों की)।
**हुड़काना** क्रि० (हि) हुड़कने का सकर्मक रूप।
**हुड़दंग** पुं० (हि) दे० 'हुड़दंगा'।
**हुड़दंगा** पुं० (हि) [illegible] उछलकूद।
**हुडुन** पुं० (सं) भूना हुआ चिउड़ा।
**हुडुक** पुं० (हि) एक प्रकार का छोटा ढोल।
**हुडुक्क** पुं० (सं) १-एक प्रकार का छोटा ढोल। २-मतवाला आदमी। ३-अर्गल।
**हुढक्क** पुं० (हि) दे० 'हुडुक्क'।
**हुत** वि०(सं) १-हवन किया हुआ। २-आहुति के रूप में दिया हुआ। पुं० १-हवन की सामग्री। २-शिव क्रि० (हि) था (पुराना रूप)।
**हुतभक्ष** पुं० (सं) अग्नि
**हुतभुक्** पुं०(सं) अग्नि।
**हुतशिष्ट** पुं० (सं) दे० 'हुतशेष'।
**हुतशेष** पुं० (सं) हवन करने के उपरांत बची हुई सामग्री।
**हुता** वि० (हि) 'होना' क्रिया का प्राचीन रूप 'था'।
**हुताग्नि** पुं० (सं) १-अग्निहोत्री। २-हवन की अग्नि
**हुताशन** पुं० (सं) अग्नि। आग।
**हुति** अव्य० (हि) १-करण और अपादान का चिह्न से। द्वारा। २-ओर से। तरफ से। स्त्री० (सं) हवन यज्ञ।
**हुतो** वि० (हि) था।
**हुदकना** क्रि० (देश) उभारना। उकसाना।
**हुदना** क्रि०(हि) १-स्तब्ध होना। २-चकपकाना। ३-ठिठकना।
**हुदहुद** पुं० (अ) एक प्रकार का पक्षी।
**हुदूद** पुं० (अ) सीमा। हद।
**हुन** पुं० (हि) १-अशरफी। मोहर। २-सोना। स्वर्ण
**हुनना** क्रि० (हि) १-आहुति देना। २-हवन करना।
**हुनर** पुं० (फा) १-कला। कारीगरी। २-गुण। करतब। ३-कोई काम करने का कौशल।
**हुनरमंद** वि० (फा)१-कलाविद्। हुनर जानने वाला। २-निपुण। कुशल।
**हुनरमंदी** स्त्री० (फा) कला-कुशलता। निपुणता।
**हुन्न** पुं० (हि) दे० 'हुन'।
**हुन्ना** पुं० (हि) दे० 'हुन'।
**हुब्ब** पुं० (अ) १-प्रेम। २-श्रद्धा। ३-हौसला। उमङ्ग
**हुब्बलवतन** स्त्री० (अ) स्वदेश-प्रेम।
**हुब्बेवतन** स्त्री० (अ) स्वदेश प्रेम।
**हुमकना** क्रि० (हि) १-दे० 'हुमचना'। २-ठमकना (बच्चों का)।
**हुमगना** क्रि० (हि) दे० 'हुमचना'।
**हुमचना** क्रि० (हि) १-किसी वस्तु पर चढ़कर उसे जोर से नीचे दबाना। २-उछलना। कूदना।
**हुमसाना** क्रि० (हि) १-ऊपर की ओर जोर से उठाना। उछालना। २-[illegible]।
**हुमसावना** क्रि० (हि) दे० 'हुमसाना'।
**हुमा** स्त्री० (फा) एक कल्पित पक्षी (जिसकी छाया पड़ने पर कहा जाता है कि व्यक्ति राजा हो जाता है)
**हुमेल** स्त्री०(हि) १-रुपयों अथवा अशर्फियों को गूँथ कर बनाई हुई माला। २-घोड़े के गले का एक गहना।
**हुरदंग** पुं० (हि) दे० 'हुड़दंग'।
**हुरदंगा** पुं० (हि) दे० 'हुड़दंग'।
**हुरमत** स्त्री० (अ) आबरू। इज्ज़त। मर्यादा। मान।
**हुरमति** स्त्री० (हि) दे० 'हुरमत'।
**हुरहुर** पुं० (सं) दे० 'हुलहुल'।
**हुरिहार** पुं० (हि) होली खेलने वाला।

हुलकना क्रि० (हिं) उल्टी करना। कै करना।
हुलकी स्त्री० (हिं) १-उल्टी, कै। २-हैज़े की बीमारी।
हुलना क्रि० (हिं) लाठी आदि को ठेलना।
हुलसना क्रि०(हिं) १-बहुत प्रसन्न होना। २-उभरना। ३-उमड़ना।
हुलसाना क्रि० (हिं) १-आनन्दित करना। २-प्रसन्न होना। ३-उभरना।
हुलसी स्त्री० (हिं) १-हुलास। २-उल्लास। ३-कुछ लोगों के मतानुसार तुलसीदास जी की माता का नाम।
हुलहुल पुं० (देश) एक प्रकार का बरसाती पौधा।
हुलास पुं० (हिं) १-विशेष आनन्द। उल्लास। २-उत्साह। ३-बढ़ना। उमगना। स्त्री० सुँघनी।
हुलासदानी स्त्री० (हिं) सुँघनीदानी।
हुलासी वि० (हिं) १-आनन्दी। २-उत्साही।
हुलिया पुं०(अ) १-आकृति। रूप। २-किसी व्यक्ति के रूप रंग का विवरण जिससे वह पहचाना जाता है।
हुलियानामा पुं० (अ) आकृति या रूप आदि का विवरण-पत्र।
हुल्लड़ पुं० (हिं) १-कोलाहल। होहल्ला। २-उपद्रव। उत्पात।
हुश अव्य० (हिं) एक निषेधवाचक शब्द।
हुश्कारना क्रि०(हिं) कुत्ते को हुशहुश करके उकसाना
हुसियार वि० (हिं) दे० 'होशियार'।
हुसैन पुं०(अ) मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये।
हुस्न पुं० (अ) १-सौन्दर्य। उत्तम रूप। २-उत्कर्ष। खूबी। ३-अनूठापन।
हुस्नपरस्त पुं०(अ) सौन्दर्योपासक। रूप का लोभी।
हुस्नपरस्ती स्त्री०(अ) सौन्दर्योपासना। रूप का लोभ।
हुस्यार वि० (हिं) दे० 'होशियार'।
हूँ अव्य०(हिं) स्वीकृतिसूचक शब्द। सर्व० वर्त्तमान-कालिक क्रिया 'है' का उत्तमपुरुष एकवचन रूप।
हूँकना क्रि० (हिं) १-बछड़े की याद में या और कोई दुःख सूचित करने को गाय का धीरे-धीरे बोलना। २-वीरों का ललकारना। ३-सिसक कर रोना।
हूँकार पुं० (सं) दे० 'हुँकार'।
हूँठ वि० (हिं) साढ़े तीन।
हूँठा पुं० (हिं) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूँड़ स्त्री० (हिं) खेतों की सिंचाई में किसानों का परस्पर योग देना।
हूँस स्त्री० (हिं) १-ईर्ष्या। जलन। २-आंख गड़ाना। ३-बुरी नजर। टोक।
हूँसना क्रि० (हिं) १-नजर लगाना। २-बराबर डाँट सुनाते रहना। कोसना। ३-ललचाना।
हू अव्य०(हिं) भी। पुं० गीदड़ के बोलने का शब्द।
हूक स्त्री० (हिं) १-हृदय की पीड़ा। २-दर्द। वेदना। ३-आशंका।
हूकना क्रि०(हिं) १-सालना। कसकना। २-पीड़ा से चौंक उठना।
हूटना क्रि०(हिं) १-हटना। टलना। २-मुड़ना। पीठ फेरना।
हूठा पुं० (हिं) १-ठेंगा। २-भद्दी या गँवार चेष्टा।
हूड़ वि० (हिं) १-हुड़। उजड्ड। २-असावधान। ३-अनाड़ी। ४-हठी।
हूण पुं० (सं) दे० 'हून'।
हूत वि० (सं) बुलाया हुआ।
हूति स्त्री० (सं) १-संज्ञा। नाम। २-पुकार। ३-ललकार।
हूतो अव्य० (हिं) दे० 'हुति'।
हूदा पुं० (हिं) १-धक्का। २-पीड़ा। शूल।
हून पुं० (सं) १-एक स्वर्ण मुद्रा। २-एक म्लेच्छ जाति जिसने विक्रमादित्य के राज्य काल में भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया था।
हूनना क्रि० (हिं) १-आग में डालना। २-विपत्ति में फँसना।
हू-बहू वि० (अ) ज्यों का त्यों। बिलकुल समान या अनुरूप।
हूर स्त्री० (अ) मुसलमानों के धर्मानुसार स्वर्ग की अप्सरा।
हूरना क्रि० (हिं) १-चुभाना। गाड़ना। ठेलना।
हूरा पुं० (हिं) लाठी आदि का किनारा।
हूल स्त्री० (हिं) १-भोंकना। हूक। २-टीस। ३-कोलाहल। ४-ललकार। ५-हर्षध्वनि। ६-लाठी, तलवार आदि की नोक तेजी से भोंकने की क्रिया।
हूलना क्रि० (हिं) लाठी आदि का किनारा जोर से घुसाना। २-शूल उत्पन्न करना।
हूला पुं० (हिं) हूलने की क्रिया।
हूश वि०(हिं) १-उजड्ड। असभ्य। २-अशिष्ट। गँवार बेहूदा।
हूह स्त्री० (हिं) हुङ्कार।
हूहू पुं० (सं) एक गंधर्व का नाम। पुं० अग्नि के जलने का शब्द।
हृत वि० (सं)१-लिया हुआ। हरण किया हुआ। २-पहुँचाया हुआ। पुं०(स) हिस्सा। भाग।
हृतदार क्रि०(सं) जिसकी पत्नी न हो।
हृतद्रव्य क्रि० (स) संपत्ति रहित।
हृत-प्रतिदान पुं० (सं) जब्त की हुई या छीनी हुई संपत्ति फिर वापिस लौटा देना। (रेस्टीट्यूशन)।
हृतप्रत्यर्पण पुं० (सं) छीनी हुई वस्तु, राज्य आदि का पुन उसी व्यक्ति को लौटा देना। (रेस्टोरेशन)।
हृतवास वि० (सं) वस्त्ररहित।
हृतसर्वस्व वि० (सं) जिसका सब कुछ हरण कर

लिया गया हो।
**हृताधिकार** *वि०* (सं) पदच्युत।
**हृति** *स्त्री०* (सं) १-ले जाना। हरण। २-लूट। ३-नाश।
**हृत** *वि०* (सं) (समास में) हरण करने वाला। पुं० हृदय।
**हृत्कंप** पुं० (सं) १-जी दहलना। दिल की धड़कन।
**हृत्तल** पुं० (सं) हृदय या दिल।
**हृदयंगम** *वि०* (हिं) मन में आया हुआ।
**हृदय** पुं० (सं) १-छाती के भीतर बाँई ओर का एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध रक्त शरीर की नाड़ियों में पहुँचता है। दिल। २-किसी वस्तु या स्थान का भीतरी भाग। ३-तत्व। सारांश। ४-मन। ५-विवेक। बुद्धि। अंतःपुर।
**हृदयक्षोभ** पुं० (सं) मन की चिंता।
**हृदयगत** *वि०* (सं) हृदय-सम्बन्धी। हार्दिक।
**हृदयग्रंथि** स्त्री० (सं) हृदय को कष्ट देने वाली बात।
**हृदयग्राही** पुं० (सं) मन को आकृष्ट करने वाला।
**हृदयचोर** पुं० (हिं) मन को मोहने वाला।
**हृदयच्छिद्** *वि०* (सं) मन को छेदने या कष्ट पहुँचाने वाला।
**हृदयज** *वि०* (सं) अन्तःकरण से उत्पन्न।
**हृदयज्ञ** *वि०* (सं) मन के भावों को जानने वाला।
**हृदयज्वर** पुं० (सं) मन की जलन।
**हृदयदाही** *वि०* (सं) हृदयपीड़क।
**हृदयदौर्बल्य** पुं० (सं) दिल की दुर्बलता।
**हृदयनिकेतन** पुं० (सं) कामदेव।
**हृदयप्रमाथी** *वि०* (सं) १-मन को मोहने वाला। २-मन को चंचल या क्षुब्ध करने वाला।
**हृदयप्रिय** *वि०* (सं) १-स्वादिष्ट। २-मन को प्यारा लगने वाला।
**हृदयरोग** पुं० (सं) दिल की बीमारी।
**हृदयवल्लभ** पुं० (सं) प्रेमपात्र। प्रियतम।
**हृदयवान्** *वि०* (सं) १-रसिक। भावुक। २-सहृदय।
**हृदयविदारक** *वि०* (सं) १-मन को अत्यधिक कष्ट देने वाला। २-करुणा या दया करने वाला।
**हृदयविध्** *वि०*(सं) १-मन को अत्यधिक मोहित करने वाला। २-अत्यंत कटु।
**हृदयव्यथा** स्त्री० (सं) मानसिक पीड़ा।
**हृदयव्याधि** स्त्री० (सं) दिल या हृदय का रोग।
**हृदयशल्य** पुं० (सं) दिल का कांटा।
**हृदयशून्य** *वि०* (सं) हृदयहीन।
**हृदयस्थ** *वि०* (सं) दिल में रहने वाला।
**हृदयस्थली** स्त्री० (सं) वक्षःस्थल।
**हृदयस्थान** पुं० (सं) वक्षस्थल।
**हृदयस्पर्शी** *वि०* (सं) दिल पर असर करने वाला।
**हृदयहारी** *वि०* (सं) मनोहर। मन को हरने वाला।
**हृदयहीन** *वि०* (सं) निष्ठुर।
**हृदयालु** *वि०* (सं)१-साहसी। २-उदार। ३-सहृदय।
**हृदयिक** *वि०* (सं) दे० 'हृदयवान्'।
**हृदयी** *वि०* दे० 'हृदयवान्'
**हृदयेश** पुं० (सं) दे० 'हृदयेश्वर'।
**हृदयेश्वर** पुं० (सं) १-प्रियतम। प्रेमपात्र। २-प्यारा
**हृद्** पुं० (सं) १-हृदय। २-किसी वस्तु का भीतरी भाग। ३-हीर।
**हृद्य** *वि०* (सं) १-भीतरी। हृदय का। २-सुन्दर। ३-मन भाने वाला। ४-स्वादिष्ट। पुं० (सं) १-कैथ। २-सफेद जीरा। ३-दही। ४-महुए की शराब।
**हृषीकेश** पुं० (सं) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। ३-पूस का महीना। ४-एक तीर्थस्थान जो हरिद्वार से आगे है।
**हृष्ट** *वि०* (सं) १-प्रसन्न। हर्षित। २-उठा हुआ (रोयाँ)।
**हृष्टचित्त** *वि०* (सं) प्रसन्नचित्त।
**हृष्टपुष्ट** *वि०* (सं) मोटा-ताजा।
**हृष्टमना** *वि०* (सं) प्रसन्नचित्त।
**हृष्टरोम** *वि०*(सं) रोमांचयुक्त।
**हृष्टवदन** *वि०* (सं) प्रसन्न मुद्रा वाला।
**हृष्टि** स्त्री० (सं) १-हर्ष। प्रसन्नता २-इतराना।
**हेंगा** पुं० (हिं) वह पाटा जिस से जुते हुए खेतों की मिट्टी बराबर करते हैं। मड़ा।
**हेंहे** पुं० अव्य० (हिं) १-धीरे-धीरे हँसने का शब्द २-गिड़गिड़ाने का शब्द।
**हे** अव्य० (सं) सम्बोधन सूचक एक अव्यय। क्रि० (हिं) थे।
**हेकड़** *वि०*(हिं) १-मोटा-ताजा। हृष्टपुष्ट। २-प्रबल। प्रचंड। ३-अक्खड़पन।
**हेकड़ी** स्त्री० (हिं) १-अक्खड़पन। उग्रता। २-जबरदस्ती।
**हेच** *वि०* (फा) तुच्छ। हीन।
**हेचपोच** *वि०* (फा) निकम्मा। घटिया।
**हेठ** अव्य० (हिं) नीचे। *वि०* १-नीचा। २-कम। पुं० (सं) १-विघ्न। बाधा। २-हानि। ३-चोट।
**हेठा** *वि०* (हिं) १-नीचा २-घटिया। ३-तुच्छ।
**हेठी** स्त्री० (हिं) अप्रतिष्ठा।
**हेडिंग** पुं० (अं) शीर्षक।
**हेत** पुं० (हिं) १-हित। २-हेतु।
**हेति** स्त्री० (सं) १-वज्र। २-अस्त्र। ३-लौ। आग की लपट। ४-घाव। ५-अंकुर। ६-धनुष की टंकार। ७-यंत्र। औज़ार।
**हेती** पुं० (सं) १-संबन्धी। रिश्तेदार। २-मित्र।
**हेतु** पुं० (सं) १-वह बात जिसको ध्यान में रख कर कोई कार्य किया जाय। उद्देश्य। अभिप्राय। २-वह बात जिसके होने से कोई बात घटित हो। ३-

तर्क। दलील। ४-प्रमाणित करने वाली बात। ५-मूल कारण। ६-कारण। वजह। सबब। ७-एक अर्थालंकार। पु० (सं) १-लगाव। २-प्रेम।
हेतुता स्त्री० (सं) कारण का होना।
हेतुत्व पु० (सं) हेतुता।
हेतुमान वि० (सं) जिसका कुछ हेतु या कारण हो। पु० वह जिसका कुछ कारण हो। कार्य।
हेतुयुक्त वि० (सं) कारण युक्त।
हेतुवादी वि०(सं) १-तार्किक। २-दलील करने वाला।
हेतुविद्या स्त्री० (सं) तर्कशास्त्र।
हेतुशास्त्र पुं० (सं) तर्कशास्त्र।
हेतुशून्य वि० (सं) निराधार।
हेतुहेतुमद्भूत पुं० (सं) व्याकरण में क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिसमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है।
हेतूत्प्रेक्षा स्त्री० (सं) वह उपेक्षा अलंकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।
हेत्वपह्नुति स्त्री० (सं) वह अलङ्कार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय।
हेत्वाभास पु० (सं) कोई बात सिद्ध करने के लिये बतलाया जाने वाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़े पर वास्तव में ठीक न हो।
हेमंत पुं० (सं) जाड़े का मौसम जो अगहन और पूस में होता है। शीतकाल।
हेमंतसमय पु० (सं) जाड़े का मौसम।
हेम पुं० (सं) १-हिम। पाला। २-सोना। स्वर्ण। ३-कैथ। ४-एक मासे का तोला। ५-बादामी रंग का घोड़ा। ६-नागकेसर।
हेमकार पुं० (सं) सुनार।
हेमकूट पुं० (सं) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत।
हेमतरु पुं० (सं) धतूरा।
हेमप्रतिमा स्त्री० (सं) सोने की मूर्ति।
हेममाली पुं० (सं) १-सूर्य। २-एक राक्षस जो खर का सेनापति था।
हेमाढ्य वि० (सं) सोने से भरपूर।
हेमाद्रि पुं०(सं) सुमेरु पर्वत।
हेय वि० (सं) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-तुच्छ। ३-खराब।
हेरंब पुं० (सं) १-गणेश। २-भैंसा। ३-एक बुद्ध का नाम। ४-धीरोद्धत नायक।
हेर पुं० (सं) १-किरीट। २-हलदी। ३-आसुरी माया। स्त्री० (हि) तलाश। खोज।
हेरना क्रि०(हि) १-खोजना। ढूंढना। २-ताकना। देखना। ३-जाँचना। परखना।
हेरफेर पुं० (हि) १-चक्कर। घुमाव। फिराव। २-दाँवपेंच। चालबाजी। ३-अदल-बदल। ४-कुछ बेचना और कुछ खरीदना।
हेरवाना क्रि० (हि) १-खोना। गँवाना। २-तलाश करना।
हेराना क्रि० (हि) १-खो जाना। २-लुप्त हो जाना। ३-किसी के सामने फीका या मंद पड़ना। ४-सुध बुध भूलना। ५-गँवाना। कोई वस्तु खोना।
हेराफेरी स्त्री० (हि) १-अदल-बदल। २-बराबर आना-जाना। ३-इधर का उधर होना या करना।
हेरी स्त्री० (हि) पुकार। टेर।
हेलन पु० (सं) तिरस्कार या अवज्ञा करना। २-तुच्छ समझना। ३-अपराध। ४-क्रीड़ा करना।
हेलना क्रि० (हि) क्रीड़ा या मनोविनोद करना। २-मन बहलाना। ३-पैठना। ४-तैरना। ५-तुच्छ या हेय समझना। ६-अवहेलना करना। उपेक्षा करना।
हेलनीय वि० (सं) उपेक्षा के योग्य।
हेलमेल पुं० (हि) मेलजोल।
हेला स्त्री० (सं) १-तिरस्कार। २-क्रीड़ा। ३-प्रेम की क्रीड़ा। केलि। ४-सरल कार्य। ५-साहित्य में नायिका की वह विनोदपूर्ण चेष्टा जिससे वह नायक पर अपने मिलने की चेष्टा प्रकट करती है। पुं० (हि) १-पुकार। हाँक। २-धावा। चढ़ाई। ३-रेला। धक्का।
हेली अव्य० (हि) हे सखी! स्त्री० (हि) सखी। सहेली।
हेलीमेली वि० (हि) जिससे हेलमेल हो।
हेवंत पुं० (हि) दे० 'हेमंत'।
हैं अव्य० (हि) एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। क्रि० (हि) 'होना'। क्रिया के वर्त्तमान रूप 'है' का बहुवचन।
हैंडबैग पुं० (अ) चमड़े का छोटा सन्दूक जिसे यात्रा में हाथ में रखते हैं।
है क्रि० (हि) 'होना' का वर्त्तमानकालिक एकवचन रूप। पुं० (देश) दे० 'हय'।
हैकड़ वि० (हि) दे० 'हेकड़'।
हैकल स्त्री० (हि) १-घोड़ों के गले में पहनने का गहना। २-गले में पहनने का गहना।
हैज पुं० (अ) स्त्रियों को होने वाला मासिक धर्म।
हैजा पुं० (अ) एक घातक तथा संक्रामक रोग जिसमें दस्त और कै आती है। (कोलेरा)।
हैट पुं० (अ) छज्जेदार अंग्रेजी टोपी जिससे धूप का बचाव होता है।
हैदर पुं० (अ) शेर। सिंह।
हैना क्रि० (हि) मार डालना।
हैफ अव्य० (अ) खेद या शोक सूचक शब्द-अफसोस। हा। हाय।
हैबत स्त्री० (अ) भय। त्रास।
हैबतजदा वि० (अ) डरा हुआ।
हैबतनाक वि०(अ) भयानक। डरावना।

हैमंत वि० (सं) हेमंत संबन्धी।
हैम वि० (सं) १-स्वर्णमय। सोने का। २-सुनहरा। ३-हिम या पाले-संबंधी। ४-जाड़े में होने वाला। ५-बर्फ में होने वाला। पुं० १-पाला। २-ओस। ३-शिव। ४-चिरायता।
हैम मुद्रिका स्त्री० (सं) स्वर्ण की मुद्रा।
हैमवल्कल वि० (सं) सोने का पत्तर चढ़ा हुआ।
हैरत स्त्री० (अ) आश्चर्य। अचंभा।
हैरतअंगेज वि० (अ) विस्मयजनक।
हैरतजदा वि० (अ) विस्मित। भौचक्का।
हैरान वि० (अ) चकित। आश्चर्य से स्तब्ध। २-परेशान। व्यग्र।
हैरानी स्त्री० (अ) १-आश्चर्य। २-परेशानी। ३-विस्मय।
हैवान पुं० (अ) पशु। जानवर।
हैवानियत स्त्री० (अ) जंगलीपन। पशुता।
हैसियत स्त्री० (अ) १-सामर्थ्य। शक्ति। २-आर्थिक योग्यता। ३-बिसात। ४-धन-संपत्ति।
हैसियतदार वि०(अ) जिसके पास धन या संपत्ति हो।
हैहय पुं० (सं) १-एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। २-सहस्रार्जुन।
हैहयराज पुं० (सं) सहस्रार्जुन।
है-है अव्य० (हि) अफसोस। हाय।
हों क्रि० (हि) 'होना' क्रिया का संभाव्यकाल का बहुवचन रूप।
होंठ पुं० (हि) ओंठ। ओष्ठ।
होंठल वि० (हि) मोटे होठों वाला।
हो पुं० (स) पुकारने का शब्द या संबोधन। क्रि० (हि) 'होना' क्रिया के अन्यपुरुष, संभाव्यकाल और मध्यमपुरुष बहुवचन के काल का रूप।
होटल पुं० (अ) वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर लोगों के भोजन तथा रहने का प्रबन्ध होता है।
होड़ स्त्री (सं) १-शर्त। बाजी। २-प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ३-हठ। जिद। पुं० (सं) नाव।
होड़ाबादी स्त्री० (हि) दे० 'होड़ाहोड़ी'।
होड़ाहोड़ी स्त्री० (हि) १-प्रतियोगिता। २-शर्त। बाजी।
होतब पुं० (हि) होनहार।
होतव्य पुं० (हि) होनहार।
होतव्य पुं० (सं) हवन करने योग्य।
होता पुं० (हि) १-यज्ञ में आहुति देने वाला। २-यज्ञ कराने वाला पुरोहित।
होनहार वि०० (हि) १-जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २-अच्छे लक्षणों वाला। स्त्री०(हि) वह बात जो अवश्य होने को हो। होनी।
होना क्रि० (हि) १-सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करने वाली सबसे अधिक प्रचलित क्रिया। उपस्थित रहना। २-पहला रूप छोड़ कर दूसरों में आना। ३-कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से आना। ४-बनना। निर्माण किया जाना। ५-कार्य का सम्पन्न किया जाना। सरना। भुगतान। ६-रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा आदि का आना। ७-बीतना। गुजरना। ८-परिणाम निकलना। ८-प्रभाव या गुण दीख पड़ना। ९-जन्म लेना। १०-प्रयोजन साधन।
होनिहार पुं० (हि) दे०'होनहार'।
होनी स्त्री० (हि) १-पैदाइश। उत्पत्ति। २-अवश्य होकर रहने वाली घटना या बात।
होम पुं० (सं) यज्ञ। हवन।
होमकर्म पुं०(सं) यज्ञ से सम्बन्धित विधियाँ।
होमद्रव्य पुं० (सं) यज्ञ की सामग्री
होमधान्य पुं० (सं) तिल।
होमधूप पुं० (सं) होम की अग्नि का धूआँ।
होमना क्रि० (हि) १-होम या हवन करना। २-नष्ट करना।
होमभस्म स्त्री० (सं) होम की राख।
होमशाला स्त्री० (सं) यज्ञशाला।
होमाग्नि पुं० (सं) यज्ञ की अग्नि।
होमियोपैथ पुं० (अं) होमियोपैथिक पद्धति के अनुसार चिकित्सा करने वाला।
होमियोपैथी स्त्री० (अ) पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धांत जिसमें विष की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग दूर किये जाते हैं।
होरसा पुं० (हि) पत्थर का वह चकला जिस पर चन्दन घिसते हैं।
होरहा पुं० (हि) चूट। चने का हरा पौधा।
होरा स्त्री० (यू०) १-दिन का चौबीसवाँ भाग। घंटा २-जन्मकुण्डली। पुं० (हि) दे० 'होला'।
होराविद् वि० (स) जन्मपत्री देखने में कुशल।
होरिल पुं० (हि) बहुत छोटा बच्चा अथवा बालक। शिशु।
होरिला पुं० (हि) दे० 'होरिल'।
होरिहार पुं० (हि) होली खेलने वाला।
होरी स्त्री० (हि) १-होली। २-एक प्रकार की बड़ी नाव जो जहाज पर माल उतारने या चढ़ाने के काम आती है।
होला पुं० (हि) १-सिक्खों की होली जो होली जलाने के दूसरे दिन होती है २-आग में भुने हरे चने या मटर। ३-चूट। होरहा। पुं०(हि) होली का त्यौहार।
होलाका स्त्री० (सं) होली का त्यौहार।
होला खेलना पुं०(हि) फाग खेलना।
होलाष्टक पुं० (स) होली से पहले आठ दिन जिनमें विवाह नहीं होते।

**होलिका** स्त्री० (सं) १-होली का त्यौहार। २-लकड़ी, घास, फूस, आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३-एक राक्षसी का नाम।
**होली** स्त्री० (हि) १-हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है, जिसमें आग जलाते हैं और एक दूसरे पर रंग डालते हैं। २-लकड़ियों आदि का वह ढेर जो उस दिन जलाया जाता है। ३-माघ, फाल्गुन में गाया जाने वाला गीत।
**होश** पुं० (फा) १-ज्ञान कराने वाली मानसिक शक्ति। चेतना। २-बुद्धि। समझ।
**होशमंद** वि० (फा) बुद्धिमान्। समझदार।
**होशहवास** पुं० (फा) सुधबुध।
**होशियार** वि० (फा) १-समझदार। बुद्धिमान्। २-दक्ष। कुशल। ३-सावधान। ४-जो वय के विचार से समझने-बूझने योग्य हो गया हो। ५-धूर्त। चालाक।
**होशियारी** स्त्री० (फा) १-समझदारी। चतुराई। २-दक्षता। निपुणता। ३-कौशल। युक्ति।
**होस** पुं० (हि) दे० 'होश'।
**होस्टल** पुं० (अं) छात्रावास।
**हौं** अव्य० (हि) मैं। क्रि० (हि) दे० 'हूँ'।
**हौंकना** क्रि० (हि) १-गरजना। २-हाँफना। ३-धौंकना।
**हौंस** स्त्री० (हि) दे० 'हौस'।
**हौंसला** पुं० (हि) दे० 'हौसला'।
**हौ** क्रि० (हि) दे० 'था'। २-दे० 'हो'। अव्य० (हि) स्वीकृतिसूचक शब्द 'हाँ'।
**हौआ** पुं० (हि) बच्चों को डराने के लिये कल्पित भयानक जीव। स्त्री० (हि) दे० 'हौवा'।
**हौका** पुं०(हि) १-किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा। २-दीर्घ निश्वास।
**हौज** पुं० (अ) १-पानी का छोटा कुण्ड। २-नाँद।
**हौजा** पुं० (फा) दे० 'हौदा'।
**हौड़** स्त्री० (हि) दे० 'होड़'।
**हौद** पुं० (हि) कुण्ड। हौज। नदी।
**हौदा** पुं० (हि) १-हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला आसन। २-नाँद।
**हौरा** पुं० (हि) कोलाहल। शोरगुल। हल्ला।
**हौरे-हौरे** अव्य० (हि) धीरे-धीरे।
**हौल** पुं० (अ) भय। डर।
**हौलखौल** स्त्री० (हि) दे० 'हौलजौल'।
**हौल-जौल** स्त्री० (हि) उतावली। घबराहट। जल्दी-बाजी।
**हौलदिल** पुं० (फा) १-दिल या कलेजा धड़कने का रोग। २-दिल की धड़कन।
**हौल-दिला** वि० (फा) डरपोक।
**हौलनाक** वि०(अ) डरावना। भयानक।
**हौली** स्त्री० (हि) देशी शराब बनाने या बिकने की जगह।
**हौले-हौले** अव्य० (हि) धीरे-धीरे।
**हौवा** स्त्री० (अ) पैगम्बर मुहम्मद साहब के मतानुसार संसार की वह पहली स्त्री जो आदम की पत्नी थी और समस्त मनुष्य जाति की उत्पत्ति मानी जाती है। पुं० (हि) 'हौआ'।
**हौस** स्त्री० (हि) १-लालसा। चाह। कामना। २-उत्साह। ३-उमंग।
**हौसला** पुं० (अ) १-कोई काम करने की उमंग। प्रबल उत्कंठा। २-उत्साह।
**हौसलामंद** वि०(अ) साहसी। उत्साही। हौसले वाला।
**ह्याँ** अव्य० (हि) दे० 'यहाँ'।
**ह्यो** पुं० (हि) हृदय। दिल। हिया।
**ह्रद** पुं० (सं) १-बड़ा ताल। झील। २-सरोवर। तालाब। ३-ध्वनि। ४-किरण। ५-मेढ़ा।
**ह्रदिनी** स्त्री० (सं) नदी।
**ह्रसित** वि० (सं) छोटा किया हुआ। घटाया हुआ।
**ह्रस्व** वि० (सं) १-छोटा। २-नाटा। ३-थोड़ा। ४-नीचा। तुच्छ। पुं० दीर्घ की अपेक्षा कुछ कम खींचकर बोले जाने वाले स्वर जैसे अ,इ,उ आदि।
**ह्रस्वांग** वि० (सं) नाटा। बौना। पुं० (सं) जीवक नामक पौधा।
**ह्रास** पुं० (सं) १-कमी। घटती। २-उतार। घटाव। ३-ध्वनि। आवाज।
**ह्रासन** पुं० (सं) कम करना। घटाना।
**ह्रासनीय** वि० (सं) कम करने योग्य। घटाने योग्य।
**ह्रित** वि० (सं) १-हरण किया हुआ। २-लाया हुआ।
**ह्री** स्त्री० (सं) १-लज्जा। व्रीडा। २-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। ३-जैनमतानुसार महापद्म नामक सरोवर की देवी का नाम।
**ह्रीजित** वि० (सं) लज्जाशील। संकोची।
**ह्लादक** वि० (सं) प्रसन्न करने वाला।
**ह्लादित** वि० (सं) आनन्दित।
**ह्वाँ** अव्य० (हि) वहाँ।
**ह्वान** पुं० (सं) आह्वान। बुलावा।
**ह्वै** पूर्व का० क्रि० (हि) होकर।

[कुल शब्दसंख्या-६०५००]

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
*L B.S. National Academy of Administration, Library*

मसूरी

MUSSOORIE

यह पुस्तक निम्नांकित तारीख तक वापिस करनी है ।

This book is to be returned on the date last stamped

| दिनांक Date | उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No. | दिनांक Date | उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No. |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

GL H 491.433
NAL

123741
LBSNAA

R
491.433
नालन्दा

अवाप्ति सं० 303
ACC. No..................

वर्ग सं. पुस्तक सं.
Class No................ Book No..............

लेखक
Author..............................................

शीर्षक नालन्दा अधतन कोश ।
Title...............................................

.....................................................

| निर्गम दिनांक Date of Issue | उधारकर्ता की सं. Borrower's No. | हस्ताक्षर Signature |
|---|---|---|

491.433
नालन्दा
303

LIBRARY
LAL BAHADUR SHASTRI
National Academy of Administration
MUSSOORIE

*Accession No.* 123741

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

*Help to keep this book fresh, clean & moving*